सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै

निहकलंक हरिशबद भंडार

इक्कीवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती-सम्मत — नाम — स्थान — पंना नं:

१ पहली चेत शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १
५ चेत शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १६
५ चेत शहनशाही सम्मत ४ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे घर तों बाहर भलाईपुर २०
५ चेत शहनशाही सम्मत ४ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह पिंड भलाईपुर २१
६ चेत शहनशाही सम्मत ४ सुखदेव सिँघ दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ४२
७ चेत शहनशाही सम्मत ४ गुरबचन सिँघ दे गृह पिंड उुस्मा ज़िला अमृतसर ४६
८ चेत शहनशाही सम्मत ४ सूबेदार राम सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ५०
९ चेत शहनशाही सम्मत ४ सूबेदार राम सिँघ दे गृह फिरोज़पुर छाउणी ५६
१० चेत शहनशाही सम्मत ४ सुदागर सिँघ दे गृह पिंड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ६३
११ चेत शहनशाही सम्मत ४ बूड़ सिँघ दे गृह पिंड नाथेवाल हरि संगत ६८
१२ चेत शहनशाही सम्मत ४ निरंजण सिँघ दे गृह हरि संगत लुधिआणा ७३
१३ चेत शहनशाही सम्मत ४ पिंड सुधार ज़िला लुधिआणा मिल्खा सिँघ दे गृह ७७
१३ चेत शहनशाही सम्मत ४ निरंजण सिँघ दे गृह लुधिआणा ८७
१४ चेत शहनशाही सम्मत ४ लछमण सिँघ गुरमेज़ सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलाँ ९२
१५ चेत शहनशाही सम्मत ४ लछमण सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलाँ जलन्धर १००
१५ चेत शहनशाही सम्मत ४ लाल सिँघ दे गृह पिंड हेर ज़िला जलन्धर १०२
१६ चेत शहनशाही सम्मत ४ करतार सिँघ दे गृह महल्ला जट्ट पुरा कपूरथला १०६
१७ चेत शहनशाही सम्मत ४ डा० पाल सिँघ दे गृह पिंड दाउुदपुर १०९
१८ चेत शहनशाही सम्मत ४ पिंड बलो वाली गिरधारा सिँघ दे गृह ११४
१९ चेत शहनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह बटाला ११७

1 २१

1 २१

2
२१

२० चेत शहनशाही सम्मत ४ चेला सिँघ दे गृह जम्मू १२५

२१ चेत शहनशाही सम्मत ४ चेला सिँघ दे गृह जम्मू १२६

२२ चेत शहनशाही सम्मत ४ हरसज्जण सिँघ दे गृह गांधी नगर जम्मू १४०

२२ चेत शहनशाही सम्मत ४ गुरदित सिँघ दे घर छम्ब जम्मू १४२

२३ चेत शहनशाही सम्मत ४ फुम्मण सिँघ भाग कौर दे गृह छम्ब जम्मू १४३

२३ चेत शहनशाही सम्मत ४ छंब जम्मू शाहणी देवी दे गृह छम्ब जम्मू १४६

२३ चेत शहनशाही सम्मत ४ गिआन चंद दे गृह कैम्प खैरोवाली जम्मू १४७

२३ चेत शहनशाही सम्मत ४ खोजू राम दे गृह पिंड खैरोवाली जम्मू १४८

२३ चेत शहनशाही सम्मत ४ रसाल सिँघ दे गृह कैम्प मनावर जम्मू १४६

२३ चेत शहनशाही सम्मत ४ हंसराज दे घर पिंड नगिआल जम्मू १५१

२३ चेत शहिनशही सम्मत ४ इन्दरो देवी दे घर पिंड नगिआल जम्मू १५२

२३ चेत शहनशाही सम्मत ४ प्रकाशो देवी दे गृह पिंड नगिआल जम्मू १५३

२३ चेत शहनशाही सम्मत ४ भाग सिँघ दे गृह मलक कम्प जम्मू १५४

२४ चेत शहनशाही सम्मत ४ पूरन सिँघ दे गृह मलक कम्प जम्मू १५५

२४ चेत शहनशाही सम्मत ४ प्रकाश सिँघ दे गृह पिंड दड़ जम्मू १५७

२४ चेत शहनशाही सम्मत ४ ईशर सिँघ दे गृह पिंड दड़ जम्मू १५६

२४ चेत शहनशाही सम्मत ४ प्रताप सिँघ दे गृह पिंड दड़ जम्मू १५६

२४ चेत शहनशाही सम्मत ४ शिव सिँघ दे गृह बख्शी नगर जम्मू १६०

२५ चेत शहनशाही सम्मत ४ तेज भान दे गृह बख्शी नगर जम्मू १६१

२५ चेत शहनशाही सम्मत ४ करतार सिँघ दे गृह पिंड पंज ढेरा हुशिआरपुर १६२

२६ चेत शहनशाही सम्मत ४ हज़ारा सिँघ दे गृह पिंड पंज ढेरा हुशिआरपुर १६४

२६ चेत शहनशाही सम्मत ४ राम सिँघ दे गृह पिंड गाल्ड़ी ज़िला हुशिआरपुर १६६

२६ चेत शहनशाही सम्मत ४ जुगिंदर सिँघ बग्गा दे गृह तलवाड़ा १६६
२७ चेत शहनशाही सम्मत ४ नरायण सिँघ दे गृह तलवाड़ा १७०
२७ चेत शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १७१
१ विसाख शहनशाही सम्मत ४ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिंड मैणीआं १७३
१ विसाख शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १७४
२ विसाख शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १८३
२६ विसाख शहनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह बाबू पुर ज़िला गुरदासपुर १८६
३० विसाख शहनशाही सम्मत ४ जमांदार किशन सिँघ दे गृह अल्लड़ पिंडी १६५
३० विसाख शहनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर गुरदासपुर १६७
३० विसाख शहनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर गुरदासपुर १६८
३० विसाख शहनशाही सम्मत ४ जागीर सिँघ दे गृह पिंड सोहल गुरदासपुर २००

3 3

२१ २१

१ जेठ शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर २०३
२ जेठ शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर २१४
५ जेठ शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर २१६
६ जेठ शहनशाही सम्मत ४ गुरशरन सिँघ सुरजीत सिँघ दे गृह नंगल २१८
१० जेठ शहनशाही सम्मत ४ जागीर सिँघ दे गृह रंगील पुर ज़िला अंबाला २२१
११ जेठ शहनशाही सम्मत ४ तारा सिँघ दे गृह जगाधरी २२२
१२ जेठ शहनशाही सम्मत ४ सरमैल सिँघ जगजीत सिँघ दे गृह मेरठ कैंट २२४
१३ जेठ शहनशाही सम्मत ४ बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ २२७
१४ जेठ शहनशाही सम्मत ४ कैप्टन महिन्दर सिँघ दे गृह दिल्ली कैंट २२८
१४ जेठ शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर दिल्ली २३१
१६ जेठ शहनशाही सम्मत ४ मंगल सिँघ दे गृह भोपाल शहर मध्ध प्रदेश २३२

१८ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	भगत सिँघ दे गृह	इटारसी मध्ध प्रदेश	२३४
१६ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	हरदित सिँघ दे गृह	इटारसी मध्ध प्रदेश	२३५
२० जेठ	शहनशाही सम्मत ४	कौड़ा मल सदन मल दे गृह	इटारसी मध्ध प्रदेश	२३७
२० जेठ	शहनशाही सम्मत ४	जसवंत सिँघ दे गृह	इटारसी मध्ध प्रदेश	२३८
२१ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	सुरिंदर सिँघ दे गृह	इटारसी मध्ध प्रदेश	२४०
२२ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	टोपन राम दे गृह	इटारसी मध्ध प्रदेश	२४०
२३ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	संत सिँघ दे गृह	इटारसी मध्ध प्रदेश	२४४
२३ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	करतार सिँघ दे गृह	इटारसी मध्ध प्रदेश	२४६
२३ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	तिवारी लाल दे गृह	इटारसी मध्ध प्रदेश	२४७
२३ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	जुगिंदर सिँघ दे गृह	इटारसी मध्ध प्रदेश	२४६
२४ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	किरपाल सिँघ दे गृह	आगरा ऊतर प्रदेश	२५०
२५ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर	दिल्ली	२५१
२६ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	गुरमेज सिँघ दे गृह	करनाल	२५२
२७ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	अरजन सिँघ दे गृह	ब्लोचपुरा	२५५
२८ जेठ	शहनशाही सम्मत ४	सी राम दे गृह	पिंड मकसूदड़ा	२५७
२६ जेठ	शहिनशही सम्मत ४	जसवंत सिँघ दे गृह	करतार पुर ज़िला जलन्धर	२५६
३० जेठ	शहनशाही सम्मत ४	बंना सिँघ दे गृह	करतार पुर ज़िला जलन्धर	२६०
३० जेठ	शहनशाही सम्मत ४		करतार पुर ज़िला जलन्धर	२६१
१ हाड़	शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर	जेठूवाल ज़िला अमृतसर	२६१
२ हाड़	शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर	जेठूवाल ज़िला अमृतसर	२७२
२ हाड़	शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर	जेठुवाल ज़िला अमृतसर	२७३
१७ हाड़	शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर	जेठूवाल ज़िला अमृतसर	२७४

4 २१

4 २१

१८ हाड़ शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर जेठूवाल	ज़िला अमृतसर	३०१
१६ हाड़ शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर जेठूवाल	ज़िला अमृतसर	३०६
१ सावण शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर जेठूवाल	ज़िला अमृतसर	३१४
७ सावण शहनशाही सम्मत ४	दीदार सिँघ दे गृह शफी पुर	ज़िला अमृतसर	३२५
१७ सावण शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर जेठूवाल	ज़िला अमृतसर	३२७
१८ सावण शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर जेठूवाल	ज़िला अमृतसर	३३३
२१ सावण शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर जेठूवाल	ज़िला अमृतसर	३३७
१ भादरों शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर जेठूवाल	ज़िला अमृतसर	३३६
२ भादरों शहनशाही सम्मत ४	हरि भगत दुआर जेठूवाल	ज़िला अमृतसर	३५६
२ भादरों शहनशाही सम्मत ४	प्रीतम सिँघ दे गृह पिंड कल्ला	ज़िला अमृतसर	३५७
३ भादरों शहनशाही सम्मत ४	हरदीप सिँघ दे घर पिंड कल्ला	ज़िला अमृतसर	३५६
३ भादरों शहनशाही सम्मत ४	कुंदन सिँघ दे गृह पिंड कल्ला	ज़िला अमृतसर	३५६
३ भादरों शहनशाही सम्मत ४	सरदारा सिँघ दे गृह पिंड कल्ला	ज़िला अमृतसर	३६०
३ भादरों शहनशाही सम्मत ४	सरमुक्ख सिँघ दे गृह पिंड कल्ला	ज़िला अमृतसर	३६१
३ भादरों शहनशाही सम्मत ४	करम सिँघ दे गृह पिंड कल्ला	ज़िला अमृतसर	३६१
३ भादरों शहनशाही सम्मत ४	गुरबचन सिँघ दे घर पिंड कल्ला	ज़िला अमृतसर	३६२
३ भादरों शहनशाही सम्मत ४	सुखदेव राज दे घर पिंड कल्ला	ज़िला अमृतसर	३६३
३ भादरों शहनशाही सम्मत ४	सोहण सिँघ दे घर तरनतारन	ज़िला अमृतसर	३६४
४ भादरों शहनशाही सम्मत ४	मॅखण सिँघ दे गृह पिंड नौरंगाबाद	अिमृतसर	३६५
५ भादरों शहनशाही सम्मत ४	करनैल सिँघ दे गृह नौरंगाबादि	ज़ला अमृतसर	३७०
५ भादरों शहनशाही सम्मत ४	दारा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद	ज़िला अमृतसर	३७३
५ भादरों शहनशाही सम्मत ४	मस्सा सिँघ दे गृह पिंड नौरंगाबाद	ज़िला अमृतसर	३७४

5 २१

5 २१

५ भादरों शहनशाही सम्मत ४ गुरमुख सिँघ दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ३७५
२० भादरों शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ३७६
२३ भादरों शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर दिल्ली-६ ३७७
१ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ३८३
२ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ३६५
३ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ३६८
७ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ४०२
१३ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ सुरजीत सिँघ दे गृह पिंड फ़ैज़पुर बटाला ४०४
१३ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ बटाला मौलाना खलीलऊल रहिमान लुधिआणवी,
जामा मस्जिद फगवाड़ा कूचा रहिमान चांदनी चौक मकान नं० ५२६६ ४०६
१४ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ सुरजीत सिँघ दे गृह फैजपुर बटाला गुरदासपुर ४१०
१४ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह बटाला गरुदासपुर ४१२
१४ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ सरब हिंद अकाली कानफरेन्स बटाला ज़िला गुदासपुर ४१३
१४ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ यज्ञादत्त ऐम० पी० नाल बटाला ज़िला गुदासपुर ४१३
१४ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ मस्सा सिँघ दे गृहपिंड बल ज़िला गुरदासपुर ४१६
१५ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ अमराऊ सिँघ दे गृह पिंड बल ज़िला गुरदासपुर ४१८
१५ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह पिंड बल ज़िला गुरदासपुर ४२१
१५ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ बख़शीश सिँघ दे गृह कादराबाद ज़िला अमृतसर ४२४
१६ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ चन्नण सिँघ दे गृह पिंड कादराबाद अमृतसर ४२५
१६ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ करनैल सिँघ दे गृह कादराबाद ज़िला अमृतसर ४२७
१६ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ सवरन सिँघ दे गृह पिंड कादराबाद अमृतसर ४३१
१६ अस्सू शहनशाही सम्मत ४ बूड़ सिँघ दे गृह पिंड कादराबाद ज़िला अमृतसर ४३४

6
२१

6
२१

पहली कत्तक शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ४४०
२ कत्तक शहनशाही सम्मत ४ गरधारा सिँघ दे नवित्त हरि भगत दुआर जेठूवाल ४६५
४ कत्तक शहनशाही सम्मत ४ साधू सिँघ सूफ़ी कोट मुहम्मद खां वाले नाल
वेदांत समेलन अमृतसर ४६६
४ कत्तक शहनशाही सम्मत ४ वेदांत समेलन स्वामी हरी गिरी बकलो वाले
वेदांत समेलन नाल अमृतसर ४६९
५ कत्तक शहनशाही सम्मत ४ महां रिशी महेश जोगी दे नाल बचन अमृतसर ४७१
५ कत्तक शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल सुवामी देव मूरती,
जर्मन वाले नाल बचन होए ४७२
१४ कत्तक शहनशाही सम्मत ४ शब्द सिँघासण हरि भगत दुआर धीरपुर दिल्ली-६ ४७७
१ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ४८१
२ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ४६५
२ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह जंडिआला गुरू ज़िला अमृतसर ४६८
३ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ सवरन सिँघ दे गृह जंडिआला गुरू ज़िला अमृतसर ५०४
३ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ सुरैण सिँघ दे गृह जंडिआला गुरू ज़िला अमृतसर ५०६
३ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ नरायण सिँघ दे गृह पिंड कंग ज़िला अमृतसर ५०७
४ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ गुरनाम सिँघ दे गृह पिंड कंग ज़िला अमृतसर ५१३
४ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ कुंदन सिँघ दे गृह पिंड माल चक ज़िला अमृतसर ५१४
५ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ बुध्ध सिँघ दे गृह डीणे वाल ज़िला अमृतसर ५१८
५ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ सुखदेव राज दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ५१६
५ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ तेज कौर दे नवित्त पिंड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ५२०
५ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिंड जलालाबाद ५२१

7
२१

7
२१

६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ ऊधम सिँघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ५२६
६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ बलवंत सिँघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ५२७
६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ प्रीतम कौर दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ५२९
६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ गुरमुख सिँघ दे गृह पिंड भलाई पुर डोगरा ५३०
६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ तृप्त कौर दे गृह पिंड वैरोवाल ज़िला अमृतसर ५३२
७ मध्धर शहिनशहाही सम्मत ४ सोहण सिँघ दे गृह राम पुर ज़िला अमृतसर ५४५
७ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ अमीर चंद गुलाटी दे नवित्त हरि भगत दुआर ५४७
१४ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ साधू सिँघ दे गृह तेगा सिँघ वाली बस्ती ५४९
१५ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ गुरचरन कौर दे गृह हीरा मंडी फ़िरोज़पुर ५५२
१५ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ जरनैल सिँघ दे गृह शाहवाला ज़िला फिरोज़पुर ५५५
१६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ गुरदास सिँघ दे गृह शाहवाला ज़िला फिरोज़पुर ५५७
8 २१ १६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ करनैल सिँघ दे गृह शाहवाला ज़िला फिरोज़पुर ५५८ 8 २१
१६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ महिंदर कौर दे गृह शाहवाला ज़िला फिरोज़पुर ५६०
१६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ सरदारा सिँघ दे गृह पिंड मनावां ५६०
१६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ प्रीतम सिँघ दे गृह पिंड जंडिआला ज़िला जलन्धर ५६२
१७ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ समां कौर दे गृह पिंड सुंनड़ा ज़िला जलन्धर ५६३
१७ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलाँ ५६५
१८ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ लछमण सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलाँ ५६८
१८ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ आतमा सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलाँ ५६९
१८ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ केहर सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलाँ ५७०
१८ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ गुरमेज सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलाँ ५७०
१८ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ लाल सिँघ दे गृह पिंड डल्ले वाल ५७२

9
२१

१६	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	गुरदेव सिँघ दे गृह नवां पिंड	५७४
१६	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	हजूरा सिँघ दे गृह पिंड गुराया	५७७
२०	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	नछत्तर कौर दे गृह गुराया	५७६
२०	मध्धर	शहिशाही	सम्मत	४	नसीब कौर दे गृह पिंड डविडा हरिआणा	५८०
२१	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	सेवा सिँघ दे गृह पिंड भाणा	५८४
२१	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	जसवंत सिँघ दे गृह पिंड भाम	५८५
२२	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	धर्मजीत दे गृह मौजू मुजारा	५८८
२२	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	हरभजन सिँघ दे गृह डांडीआं	५६०
२२	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	प्रीतम सिँघ दे गृह गोबिन्द पुरा फगवाड़ा	५६१
२३	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	महल सिँघ दे गृह फगवाड़ा	५६३
२३	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	साधू सिँघ दे गृह फगवाड़ा	५६८
२३	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	गुरमीत सिँघ दे गृह फराला ज़िला जलन्धर	५६६
२४	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	मनसा सिँघ दे गृह फराला ज़िला जलन्धर	६०३
२४	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	चरन कौर दे गृह फराला ज़िला जलन्धर	६०५
२४	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	बीबी हरभजन कौर दे गृह कोटली थान सिँघ	६०६
२४	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	नगीना सिँघ दे गृह माडल हाउस जलन्धर	६०८
२५	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	हरदिआल सिँघ दे गृह जलन्धर	६११
२५	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	महिंगा सिँघ दे गृह हरीपुर	६१४
२६	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	हरभजन कौर दे गृह हरीपुर	६१६
२६	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	गुरबचन सिँघ दे गृह अहमदपुर ज़िला कपूरथला	६१६
२७	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	जुगिंदर सिँघ दे गृह अहमदपुर ज़िला कपूरथला	६२१
२७	मध्धर	शहनशाही	सम्मत	४	तरसेम सिँघ दे गृह पिंड अहमदपुर ज़िला कपूरथला	६२२

9
२१

२७ मध्धर शहनशाह सम्मत ४ फुंमण सिँघ दे गृह पिंड अहमदपुर ज़िला कपूरथला ६२४
२७ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ कर्म सिँघ दे गृह पिंड अहमदपुर ज़िला कपूरथला ६२५
२७ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ करतार सिँघ दे गृह कपूरथला ६२७
२७ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ मनजीत कौर दे गृह पिंड मंगूपुर ६३२
२८ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ फकीर सिँघ मजीद पुर महिंदर सिँघ हरनाम पुर ६३४
२८ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ जगीर सिँघ दे गृह पिंड शिकार पुर ज़िला कपूरथला ६३६
२६ मध्धर शहनशाही सम्मत ४ ज्ञान सिँघ दे गृह पिंड सुरखपुर ज़िला कपूरथला ६४०
पहली पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ६४४
६ पोह शहनशाही सम्मत ४ ठेकेदार ठाकर सिँघ दे गृह पिंड जेठूवाल ६४६
७ पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ६५३
८ पोह शहनशाही सम्मत ४ चेला सिँघ दे गृह वज़ारत रोड जम्मू ६५४
६ पोह शहनशाही सम्मत ४ हरभजन सिँघ ईशर सिँघ दे गृह ऊधम पुर ६५७
६ पोह शहनशाही सम्मत ४ चेला सिँघ दे गृह वज़ारत रोड जम्मू ६५६
६ पोह शहनशाही सम्मत ४ गुरचरन सिँघ दे गृह जम्मू ६५६
६ पोह शहनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह जम्मू ६६०
६ पोह शहनशाही सम्मत ४ प्रकाश चंद दे गृह जम्मू ६६१
६ पोह शहनशाही सम्मत ४ लाल चंद दे गृह जम्मू ६६२
६ पोह शहनशाही सम्मत ४ लीलावती दे गृह जम्मू ६६२
६ पोह शहनशाही सम्मत ४ गुरदित सिँघ दे गृह छम्ब जम्मू ६६४
१० पोह शहनशाही सम्मत ४ संसार सिँघ दे गृह पिंड छम्ब जम्मू ६६५
१० पोह शहनशाही सम्मत ४ ज्ञान चंद, फुम्मण सिँघ, भाग सिँघ, पूरन चंद,
शंकर दास, ज्ञान सिँघ दे गृह छम्ब जम्मू ६६६

10
२१

१०	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	बलवंत कौर दे गृह	छम्ब	जम्मू	६७०
१०	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	प्रताप सिँघ दे गृह पिंड	दड़	जम्मू	६७१
१०	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	ईशर सिँघ दे गृह	पिंड दड़	जम्मू	६७३
१०	पोह	शहिनशाही	सम्मत	४	प्रकाश सिँघ दे गृह	पिंड दड़	जम्मू	६७३
१०	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	झंडू राम दे गृह	पिंड जौड़ीआं	जम्मू	६७४
१०	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	सूबेदार तेजभान दे गृह	बख़शी नगर	जम्मू	६७६
११	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	अजमेर सिँघ दे गृह	गांधी नगर	जम्मू	६७६
११	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	केसरी देवी	सतवारी	जम्मू	६८१
११	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	जसवंत कौर दे गृह कोठा	निहाल सिंबल	जम्मू	६८३
११	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	भगत सिँघ दे गृह	पिंड कीर	जम्मू	६८५
११	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	सेवा सिँघ दे गृह	पिंड कीर	जम्मू	६८६
११	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	शिव सिँघ दे गृह	सई कैम्प	जम्मू	६८७
१२	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	तेज भान दे गृह	सई कैम्प	जम्मू	६८६
१२	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	गूड़ा राम दे गृह	सई कैम्प	जम्मू	६६०
१२	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	नंदू शाह दे गृह	सई कैम्प	जम्मू	६६१
१२	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	रंगीला राम दे गृह	सई कैम्प	जम्मू	६६३
१२	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	नानक चंद दे गृह	सई कैम्प	जम्मू	६६४
१२	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	अमरो देवी दे गृह	सई खुर्द कैम्प	जम्मू	६६५
१२	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	राम चंद दे गृह	निकोवाल	जम्मू	६६६
१२	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	शांती देवी दे गृह	सई खुर्द कैम्प	जम्मू	६६७
१२	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	बंसो देवी दे गृह	सई खुर्द कैम्प	जम्मू	६६८
१२	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	लछमण सिँघ दे गृह	कैम्प सई कलाँ	जम्मू	६६६

१३	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	बचन सिँघ दे गृह	कैम्प सई कलाँ	जम्मू	७०१
१३	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	खेम कौर दे गृह	कैम्प सई कलाँ	जम्मू	७०२
१३	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	कुलवंत सिँघ दे गृह	कैम्प सई कलाँ	जम्मू	७०३
१३	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	इन्दरो देवी दे गृह	कैम्प सेई कलाँ	जम्मू	७०३
१३	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	शाहणी देवी दे गृह	पिंड माज़रा	जम्मू	७०४
१३	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	किरपाल सिँघ दे गृह	कैम्प सेई कलाँ	जम्मू	७०४
१३	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	फरंगी राम दे गृह	पिंड तरेवा	जम्मू	७०५
१३	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	साईं दास दे गृह	पिंड तरेवा	जम्मू	७०७
१३	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	प्रेमी देवी दे गृह	पिंड तरेवा	जम्मू	७०८
१३	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	देवा सिँघ दे गृह	सेई कलाँ	जम्मू	७०६
१४	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	राजो देवी दे गृह	सेई कलाँ	जम्मू	७१०
१४	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	पूरन सिँघ राजा सिँघ दे गृह	सेई कला	जम्मू	७११
१४	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	इंदर राम दे गृह	सेई कलाँ	जम्मू	७१३
१४	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	बेला सिँघ दे गृह	सेई कलाँ	जम्मू	७१४
१४	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	सोभा सिँघ दे गृह	सेई	जम्मू	७१५
१४	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	थोड़ू राम दे गृह	सेई	जम्मू	७१८
१४	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	अंगरेज़ सिँघ दे गृह	सेई कलाँ	जम्मू	७१६
१५	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	मंगल सिँघ दे गृह	सेई कलाँ	जम्मू	७२१
१५	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	वकील सिँघ दे गृह	सेई कलाँ	जम्मू	७२२
१५	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	दौलत सिँघ दे गृह	कोटली	जम्मू	७२३
१५	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	देवी सिँघ दे गृह	मध्धो वाली	जम्मू	७२५
१६	पोह	शहनशाही	सम्मत	४	माया देवी दे गृह	मध्धो वाली	जम्मू	७२६

12
२१

13
२१

13
२१

१६ पोह शहनशाही सम्मत ४ परकाश चंद दे गृह मध्घो वाली जम्मू ७२७
१६ पोह शहनशाही सम्मत ४ प्रीतो देवी दे गृह पिंड जिंदड़ मेलू जम्मू ७२८
१६ पोह शहनशाही सम्मत ४ सरदार सिँघ दे गृह पंड सीड़ जम्मू ७२६
१७ पोह शहनशाही सम्मत ४ मान कौर दे गृह पिंड सीड़ जम्मू ७३१
१७ पोह शहनशाही सम्मत ४ बंती देवी दे गृह पिंड खौड़ सलारीआं जम्मू ७३२
१७ पोह शहनशाही सम्मत ४ लछमी देवी दे गृह पिंड सीड़ जम्मू ७३३
१७ पोह शहनशाही सम्मत ४ गुरनाम सिँघ दे गृह पिंड सीड़ जम्मू ७३४
१७ पोह शहनशाही सम्मत ४ खज़ान सिँघ दे गृह रणबीर सिँघ पुरा जम्मू ७३५
१७ पोह शहनशाही सम्मत ४ रणीआ राम दे गृह कलोए जम्मू ७३८
१७ पोह शहिनशाह सम्मत ४ प्यारे राम दे गृह कलोए जम्मू ७३६
१७ पोह शहनशाही सम्मत ४ सेवा राम दे गृह कलोए जम्मू ७४०
१७ पोह शहनशाही सम्मत ४ वकील सिघ दे गृह पिंड हंसा जम्मू ७४१
१८ पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर चौथी मंज़ल जेठूवाल ७४२
१८ पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ७४३
२० पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ७४५
२२ पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ७४८
२४ पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ७५१
२६ पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ७५५
२६ पोह शहनशाही सम्मत ४ इशनान करन समें ७५७
२७ पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ७८७
२८ पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ८०३
२६ पोह शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ८०६

पहली माघ शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ८०८
६ माघ शहनशाही सम्मत ४ केहर सिँघ दे गृह रजी वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ८१०
१० माघ शहनशाही सम्मत ४ मल सिँघ दे गृह रजी वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ८१५
१० माघ शहनशाही सम्मत ४ कपूर सिँघ दे गृह मोगा ज़िला फिरोज़पुर ८१८
११ माघ शहनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह पिंड बधनी ८२३
११ माघ शहनशाही सम्मत ४ सुखराम दे गृह पिंड चल्कर ८२५
११ माघ शहनशाही सम्मत ४ दरबारी दास दे नाल पिंड लोपो ८२७
११ माघ शहनशाही सम्मत ४ गुरदयाल सिँघ दे गृह रामूवाला ८२६
१२ माघ शहनशाही सम्मत ४ हरदिआल सिँघ दे गृह रामूवाला ८३०
१२ माघ शहनशाही सम्मत ४ बलविंदर सिँघ दे गृह चड़िक ज़िला फिरोज़पुर ८३२
१२ माघ शहनशाही सम्मत ४ करतार सिँघ दे गृह चड़िक ज़िला फिरोज़पुर ८३४
१२ माघ शहनशाही सम्मत ४ नाज़र सिँघ जागीर सिँघ दे गृह माड़ी मुस्तफा ८३५
१३ माघ शहनशाही सम्मत ४ भाग सिँघ कुलवंत सिँघ दे गृह पिंड माड़ी मुस्तफा ८३७
१३ माघ शहनशाही सम्मत ४ सुदागर सिँघ दे घर नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ८३६
१४ माघ शहनशाही सम्मत ४ बूड़ सिँघ दे गृह पिंड नाथेवाल ज़िला फिरोज़पुर ८४१
१४ माघ शहनशाही सम्मत ४ जसवंत सिँघ दे गृह पिंड राजेआणा ज़िला फिरोज़पुर ८४३
१४ माघ शहनशाही सम्मत ४ बसंत कौर दे गृह पिंड समालसर ज़िला फिरोज़पुर ८४५
१४ माघ शहनशाही सम्मत ४ सुहावा सिँघ दे गृह पंज गराईंआ ज़िला फिरोज़पुर ८४६
१५ माघ शहनशाही सम्मत ४ बिशन सिँघ दे गृह पिंड पंज गराईंआ ८४७
१५ माघ शहनशाही सम्मत ४ चन्नण सिँघ दे गृह पिंड वांदर ८४६
१५ माघ शहनशाही सम्मत ४ खेम सिँघ दे गृह कोटकपूरा ८५०
१६ माघ शहनशाही सम्मत ४ ऊशा राणी दे गृह पुराणा महल्ला कोटकपूरा ८५३

14
२१

१६ माघ शहनशाही सम्मत ४ मुखतिआर कौर दे गृह डोगर बस्ती फरीदकोट ८५५
१६ माघ शहनशाही सम्मत ४ चरनजीत कौर दे गृह फ़रीदकोट ८५८
१६ माघ शहनशाही सम्मत ४ शिव इन्दर सिँघ दे गृह फरीदकोट ८५६
१६ माघ शहनशाही सम्मत ४ किरपाल सिँघ दे गृह गोले वाल ज़िला फिरोज़पुर ८६०
१७ माघ शहनशाही सम्मत ४ गुरचरन सिँघ दे गृह पिंड गोलेवाल ज़िला फिरोज़पुर ८६३
१७ माघ शहनशाही सम्मत ४ निहाल कौर दे गृह पिंड गोलेवाल ज़िला फिरोज़पुर ८६४
१७ माघ शहनशाही सम्मत ४ हजूरा सिँघ दे गृह पिंड गोलेवाल ज़िला फिरोज़पुर ८६६
१७ माघ शहनशाही सम्मत ४ सुल्लखण सिँघ दे गृह पिंड मूंगला ज़िला फिरोज़पुर ८६८
१८ माघ शहनशाही सम्मत ४ राम सिँघ दे गृह फिरोज़पुर छाउणी ८६६
१६ माघ शहनशाही सम्मत ४ जोगिन्दर कौर दे गृह फिरोज़पुर छाउणी ८७४
१६ माघ शहनशाही सम्मत ४ सोभा सिँघ दे गृह पिंड वलूर ज़िला फिरोज़पुर ८७८

१६ माघ शहनशाही सम्मत ४ कुलवन्त कौर दे गृह बस्ती खलील ज़िला फिरोज़पुर ८८६
२० माघ शहनशाही सम्मत ४ महिन्दर सिँघ दे गृह बस्ती खलील ज़िला फिरोज़पुर ८८१
२० माघ शहनशाही सम्मत ४ सुअक्खण सिँघ दे गृह पिंड फिरोज़शाह फिरोज़पुर ८८३
२१ माघ शहनशाही सम्मत ४ संपूरन सिँघ दे गृह पिंड फिरोज़शाह ज़िला फिरोज़पुर ८८५
२१ माघ शहनशाही सम्मत ४ सीतल सिँघ दे गृह पिंड डगरू ज़िला फिरोज़पुर ८८७
२१ माघ शहनशाही सम्मत ४ धंना सिँघ दे गृह पिंड डगरू ज़िला फिरोज़पुर ८८८
२१ माघ शहनशाही सम्मत ४ मेला सिँघ दे गृह पिंड डगरू ज़िला फिरोज़पुर ८८६
२१ माघ शहनशाही सम्मत ४ जगीर दास दे गृह पिंड डगर ज़िला फिरोज़पुर ८८६
२१ माघ शहनशाही सम्मत ४ गुरबचन सिँघ दे गृह पिंड सदा सिँघ वाला ८६०
२२ माघ शहिनशाही सम्मत ४ गुरदयाल सिँघ दे घर पिंड सदा सिँघ वाला ८६२
२२ माघ शहनशाही सम्मत ४ सरदारा सिँघ दे घर पिंड मनावां ज़िला फिरोज़पुर ८६३

15
२१

२३ माघ शहनशाही सम्मत ४ सुरजीत कौर दे गृह पिंड मनावा ज़िला फिरोज़पुर ८९५
२३ माघ शहनशाही सम्मत ४ बलवंत सिँघ दे घर पिंड तलवंडी ज़िला फिरोज़पुर ८९७
२३ माघ शहिनशाही सम्मत ४ सोहण सिँघ दे गृह पिंड शाह बुक्कर ज़िला फिरोज़पुर ८९९
२४ माघ शहनशाही सम्मत ४ कैप्टन तारू सिँघ दे गृह पिंड जंडीरे ९०२
२५ माघ शहनशाही सम्मत ४ प्यारा सिँघ दे घर भोगपुर शूगर मिल ९०५
२५ माघ शहनशाही सम्मत ४ महिन्दर कौर दे गृह पिंड सुसाणा ९०८
२५ माघ शहनशाही सम्मत ४ राम सिँघ दे गृह पिंड फतोवाल ज़िला हुशिआरपुर ९१०
२६ माघ शहनशाही सम्मत ४ मंगल सिँघ दे घर पिंड फतूवाल ज़िला हुशिआपुर ९१२
२६ माघ शहनशाही सम्मत ४ हरबंस सिँघ दे घर पिंड फतूवाल ज़िला हुशिआपुर ९१४
२६ माघ शहनशाही सम्मत ४ अमरीक सिँघ दे घर पिंड सराईं ज़िला हुशिआरपुर ९१६
२७ माघ शहनशाही सम्मत ४ मुन्शी राम दे गृह बेगोवाल ज़िला हुशिआरपुर ९१८
२७ माघ शहनशाही सम्मत ४ अरजन सिँघ दे गृह सलीमपुर ज़िला हुशिआरपुर ९२०
२८ माघ शहनशाही सम्मत ४ नसीब कौर दे गृह पिंड सरींपुर ज़िला हुशिआरपुर ९२२
२८ माघ शहनशाही सम्मत ४ दिआल सिँघ दे गृह पिंड डड्ड ज़िला हुशिआरपुर ९२४
२८ माघ शहनशाही सम्मत ४ हज़ारा सिँघ दे गृह पंज ढेरा ज़िला हुशिआरपुर ९२५
२८ माघ शहनशाही सम्मत ४ लाल सिँघ दे गृह पिंड पंज ढेरा ज़िला हुशिआरपुर ९२६
२९ माघ शहनशाही सम्मत ४ करतार सिँघ दे गृह पंज ढेरा ज़िला हुशिआरपुर ९२८
२९ माघ शहनशाही सम्मत ४ दरबारा सिँघ दे गृह पिंड गालड़ी ९३०
२९ माघ शहनशाही सम्मत ४ जुगिंदर सिंघ दे गृह पिंड तलवाड़ा ९३२
३० माघ शहनशाही सम्मत ४ ज्ञान चंद दे गृह तलवाड़ा ९३३
३० माघ शहनशाही सम्मत ४ जीआ लाल दे गृह तलवाड़ा ९३४
३० माघ शहनशाही सम्मत ४ परमेशवरी राणी दे गृह तलवाड़ा ९३५

16
२१

३० माघ शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ९३५
पहली फग्गण शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ९३६
२ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ९४५
२ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह गुमानपुर ज़िला अमृतसर ९४६
३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ सवरन सिँघ दे गृह पिंड गुमानपुर ज़िला अमृतसर ९४९
३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ हरनाम सिँघ दे गृह पिंड गुमानपुर ज़िला अमृतसर ९५२
३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ९५५
७ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ९५६
१० फग्गण शहनशाही सम्मत ४ महिंदर सिँघ दे गृह पिंड दईआ ज़िला गुरदासपुर ९५७
११ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ बंता सिँघ दे गृह पंज गराईआं ज़िला गुरदासपुर ९५९
17 ११ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ प्रीतम कौर दे गृह पिंड ठीकरी ज़िला गुरदासपुर ९६२ 17
२१ ११ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ करतार सिँघ दे गृह पिंड भूमली ज़िला गुरदासपुर ९६३ २१
११ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ जोगिंदर सिँघ दे गृह पिंड डडवां ९६४
१२ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ जगीर सिँघ दे घर पिंड सोहल ९६६
१२ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ शम्भू नाथ दे नाल गुरदास पुर ९६९
१२ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ चरन सिँघ दे गृह पिंड हेमराजपुर ९७०
२३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ राज सिँघ दे घर पिंड हेमराज पुरा ९७४
२३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ महिन्दर कौर दे गृह काला नंगल ९७६
२३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ करम सिँघ दे गृह निआशाला ९७७
१३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह पिंड कत्तोवाल ९७९
१४ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ गुरचरन सिँघ दे गृह कत्तोवाल ज़िला गुरदासपुर ९८४
१४ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ जवंद सिँघ दे गृह नवां पिंड ज़िला गुरदासपुर ९८६

१४ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ चरन सिँघ दे गृह नवां पिंड ६८८
१४ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ दुरगी दे गृह नवां पिंड ६८६
१४ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ शहिनशाह जी दे नाल पिंड कलीच पुर ६६०
१४ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ बलदेव राज दे गृह पिंड कोठी भीम पुर ६६०
१४ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ लाल सिँघ दे गृह पिंड गुजरात ६६१
१५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ कंस राज गृह पिंड गुजरात ज़िला गरदासपुर ६६६
१५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ दर्शन लाल दे गृह पिंड गुज़रात ६६६
१५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ चरन सिँघ दे गृह पिंड अंतोर ज़िला गुरदासपुर १०००
१६ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ चरन सिँघ दे गृह पिंड अंतोर १००१
१६ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ रावी कंढे १००६
१६ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ बचन सिँघ दे गृह पिंड सिम्मल सकोर गुरदासपुर १००६

१७ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ सन्तोख सिँघ दे घर पिंड सिम्मल सकोर गुरदासपुर १०११
१७ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ सोहण सिँघ दे घर पिंड सिम्मल सकोर गुरदासपुर १०१४
१७ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ संसार सिँघ दे गृह पिंड मऱ्राजपुर १०१७
१७ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ बीबी ज्ञानो दे गृह पिंड सिम्मल सकोर १०१८
१७ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ चरन सिँघ दे गृह पिंड सिम्मल सकोर गुरदासपुर १०१६
१८ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ रावी दा कंढा शब्दी धार गुर अवतार पैग़म्बरां दा पुज्जणा शब्द रूप गुर अवतार पैग़म्बरां, गंगा गोदावरी जमना सुरसती दा इक्कठ्ठयां होणा, नारद दा पुज्जणा, भगत भगवान दा इक्ठ होणा, सभ दा पूरब लेखा चुकौणा शब्द दी धार विच धर्म धार दी गोली जुगिन्दर कौर लाल सूट पा के विहार कारन साथ सी १०२४
१८ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ चतर सिँघ अतर सिँघ दे गृह पिंड ओगरा १०४५
१६ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ हरदीप सिँघ दे गृह पिंड ओगरा १०५०

18
२१

१९ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ ज्ञान सिँघ दे घर पिंड उँगरा १०५१
२० फग्गण शहनशाही सम्मत ४ महिंदर सिँघ दे गृह पिंड फतिह नंगल गुरदासपुर १०५६
२० फग्गण शहनशाही सम्मत ४ महिंगा सिँघ दे घर पिंड सद्दा ज़िला गुरदासपुर १०५९
२० फग्गण शहनशाही सम्मत ४ करम सिँघ दे घर काका जगीर सिँघ दे नवित
(सरीर छड्डण समें) पिंड सद्दा १०६०
२० फग्गण शहनशाही सम्मत ४ गुरबख्श सिँघ दे घर पिंड नुशहिरा १०६२
२० फग्गण शहनशाही सम्मत ४ बूड़ सिँघ दे घर पिंड वज़ीर पुर १०६४
२० फग्गण शहनशाही सम्मत ४ मेला सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर १०६५
२१ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ सन्ता सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर १०७१
२१ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ रवेल कौर दे गृह पिंड बाबूपुर १०७३
२१ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर १०७६
२२ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ विरसा सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर १०७७
२२ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ बीबी करतार कौर दर्शन कौर दे घर पिंड बाबूपुर १०८०
२२ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ मुणशा सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर १०८२
२२ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ हज़ारा सिँघ दलीप सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर १०८३
२३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ पिआरा सिँघ ते हज़ारा सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर १०८५
२३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ भाग सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर १०९०
२३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ वरखा सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर १०९३
२३ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ आसा सिँघ बलाका सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर १०९५
२४ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ मक्खण सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर १०९७
२४ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ दीदार सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर ११०१
२४ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ जमादार किशन सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़ पिंडी ११०३

19
२१

२५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ आसा सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़ पिंडी ११२२

२५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ दारा सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़ पिंडी ११२३

२५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ सरूप सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़ पिंडी ११२५

२५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ हज़ारा सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़ पिंडी ११२६

२५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ अच्छर सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़ पिंडी ११२७

२५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ वकील सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़ पिंडी ११२८

२५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ भजन सिँघ दे गृह पिंड दोस्तपुरा ११२३

२५ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ धिरता सिँघ दे गृह पिंड कलानौर ११२५

२६ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ मंगल सिँघ जुगिंदर सिँघ दे गृह डेढ गुवाड़ ११२७

२६ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ गुलजार सिँघ दे गृह पिंड डेढ गुवाड़ ११३०

२६ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ समां सिँघ दे गृह पिंड डेढ ११३१

२६ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ दिआल सिँघ दे गृह पिंड गवाड़ ११३२

२६ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिंड गवाड़ ११३३

२६ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ काशी राम दे गृह पिंड सन्नयीआ ११३४

२७ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ बीबी भजनो दे गृह ११३६

२७ फग्गण शहनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह बटाला ११३६

पहली चेत शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर पिंड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ११३७

२ चेत शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर पिंड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ११५७

३ चेत शहनशाही सम्मत ५ अमर सिँघ दे गृह पिंड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ११६१

३ चेतर शहनशाही सम्मत ५ संतोख सिँघ दे गृह पिंड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ११६३

४ चेत शहनशाही सम्मत ५ प्रीतम सिँघ दे गृह पिंड जेठूवाल ज़िला अमृतसर ११६३

५ चेत शहनशाही सम्मत ५ सुरजन सिँघ दे गृह लुधिआणा ११६५

20
२१

६ चेत शहनशाही सम्मत ५ लाल सिँघ दे गृह लुधिआणा ११६६
६ चेत शहनशाही सम्मत ५ निरञ्जण सिँघ दे गृह लुधिआणा ११६७
६ चेत शहनशाही सम्मत ५ सुखवन्त कौर दे गृह लुधिआणा ११६७
६ चेत शहनशाही सम्मत ५ निरवैर सिँघ दे गृह लुधिआणा ११६८
६ चेत शहनशाही सम्मत ५ गुरदेव सिँघ दे गृह लुधिआणा ११६९
६ चेत शहनशाही सम्मत ५ मदन लाल दे गृह लुधिआणा ११७०
६ चेत शहनशाही सम्मत ५ गुरमीत सिँघ दे गृह लुधिआणा ११७०
६ चेत शहनशाही सम्मत ५ करम सिँघ दे गृह पिंड पक्खोवाल ज़िला लुधिआणा ११७१
७ चेत शहनशाही सम्मत ५ साधू सिँघ दे गृह पिंड पक्खोवाल ज़िला लुधिआणा ११७२
७ चेत शहनशाही सम्मत ५ सरवण सिँघ दे गृह पंड पक्खोवाल ज़िला लुधिआणा ११७५
७ चेत शहनशाही सम्मत ५ सरदारा सिँघ दे गृह पिंड पक्खोवाल ज़िला लुधिआणा ११७६
७ चेत शहनशाही सम्मत ५ अजीत सिँघ दे गृह पिंड आंडलू ११७७
७ चेत शहनशाही सम्मत ५ भाग सिँघ बसरावां वाले दे गृह पिंड पक्खोवाल ११७८
७ चेत शहनशाही सम्मत ५ भगवान कौर दे गृह पिंड पक्खोवाल ज़िला लुधिआणा ११७९
७ चेत शहनशाही सम्मत ५ मंगल सिँघ दे गृह पिंड पक्खोवाल ज़िला लुधिआणा ११८०
७ चेत शहिनसाही सम्मत ५ नाज़र सिँघ दे गृह पिंड पक्खोवाल ज़िला लुधिआणा ११८१
७ चेत शहनशाही सम्मत ५ धन्ना सिँघ दे गृह पिंड ढै पई ज़िला लुधिआणा ११८२
८ चेत शहनशाही सम्मत ५ हरी सिँघ दे गृह पिंड महिंमा सिँघ वाला ११८४
८ चेत शहनशाही सम्मत ५ नछत्तर सिँघ दे गृह दुराहा ११८६
९ चेत शहनशाही सम्मत ५ गज्जण सिँघ दे गृह दुराहा ११८८
९ चेत शहनशाही सम्मत ५ जसवंत कौर दे गृह दुराहा मंडी ११९०
९ चेत शहनशाही सम्मत ५ गुरनाम कौर दे गृह दुराहा मंडी ११९१

21
२१

९	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	गुरनाम सिँघ दे गृह	पिंड हरबंस पुरा	११९३
१०	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	किरपाल सिँघ दे गृह	पिंड हरबंस पुरा	११९७
१०	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	सरदारा सिँघ दे गृह	पिंड रौणी	११९९
१०	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	आसा सिँघ दे गृह	पिंड कलसाणी	१२०१
११	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	सुरैण सिँघ दे गृह	पिंड कलसाणी	१२०३
११	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	बंता सिँघ दे गृह	पिंड मुग़ल माजरा	१२०५
११	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	बंता सिँघ दे गृह	पिंड मुग़ल माजरा	१२०८
१२	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	गुरमेज़ सिँघ दे गृह	थानेसर	१२११
१२	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	निरञ्जण सिँघ दे घर	गुरूकुल खान	१२१४
१२	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	ठाकर सिँघ दे गृह	नानक पुरा	१२१६
१३	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	सोहण सिँघ दे गृह	नानक पुरा	१२२०
१३	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	अरजन सिँघ दे गृह	ब्लोच पुर	१२२३
१४	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	रणधीर सिँघ दे गृह	पहेवा	१२२६
१४	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	आतमा सिँघ दे गृह	पहेवा	१२३०
१४	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	मंदर विच पंडत दे नाल	पहेवा	१२३४
१४	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	सुदागर सिँघ दे गृह	भट्ठा माजरा	१२३८
१४	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	हरबंस सिँघ दे गृह	ठीकरी	१२४०
१५	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	संपूरन सिँघ दे गृह	ठीकरी छन्ना	१२४२
१५	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	मोहन सिँघ दे गृह	गढ़ी लांगरी	१२४४
१५	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	रण सिँघ दे गृह	अजीत नगर	१२४६
१५	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	करतार सिँघ दे गृह	कौमी फारम	१२४८
१५	चेत	शहनशाही	सम्मत ५	महिंदर सिँघ दे गृह	पिंड गढ़ी लांगरी	१२५१

22
२१

१६ चेत शहनशाही सम्मत ५ सन्त किरपाल सिँघ सावण आश्रम गुड़ मंडी दिल्ली १२५२
१६ चेत शहनशाही सम्मत ५ सुरिंदर कौर दे नवित्त हरि भगत दुआर दिल्ली १२५४
१७ चेत शहनशाही सम्मत ५ रतन सिँघ दे प्रशाद कराउण ते धीरपुर दिल्ली १२५५
१८ चेत शहनशाही सम्मत ५ अवतार सिँघ दे गृह २५७-६ शस्त्री नगर कानपुर १२५६
१६ चेत शहनशाही सम्मत ५ किरपा सिँघ दे गृह शस्त्री नगर कानपुर १२६२
१६ चेत शहनशाही सम्मत ५ गुरदित सिँघ दे गृह शस्त्री नगर कानपुर १२६५
२० चेत शहनशाही सम्मत ५ किरपाल सिँघ गुरबचन सिँघ दे गृह लाल बंगला कानपुर १२६७
२० चेत शहनशाही सम्मत ५ सतवंत कौर दे गृह शस्त्री नगर कानपुर १२६६
२१ चेत शहनशाही सम्मत ५ महिल सिँघ दे गृह शस्त्री नगर कानपुर १२७१
२१ चेत शहनशाही सम्मत ५ गुरबख़श सिँघ महू निवासी दे नवित्त १२७५
२२ चेत शहनशाही सम्मत ५ भगत सिँघ दे गृह इटारसी १२७८
२३ चेत शहनशाही सम्मत ५ भगत सिँघ दे गृह इटारसी १२८०
२३ चेत शहनशाही सम्मत ५ टोपन राम दे गृह इटारसी १२८४
२४ चेत शहनशाही सम्मत ५ हरदित सिँघ दे गृह इटारसी १२८५
२५ चेत शहनशाही सम्मत ५ सुवामी अमृता नंद जी दे नाल नरबदा घाट १२६१
२५ चेत शहनशाही सम्मत ५ सुरिंदर सिँघ दे गृह इटारसी १२६२
२६ चेत शहनशाही सम्मत ५ सुरिंदर सिँघ दे गृह इटारसी १२६४
२६ चेत शहनशाही सम्मत ५ कौड़ा मल सदन मल दे गृह इटारसी १२६६
२६ चेत शहनशाही सम्मत ५ इटारसी १३०१
२६ चेत शहनशाही सम्मत ५ जसवंत सिँघ दे गृह इटारसी १३०४
२७ चेत शहनशाही सम्मत ५ कृष्न कांत दे गृह इटारसी १३०६
२८ चेत शहनशाही सम्मत ५ महिंदर सिँघ दे गृह दिल्ली १३०८

23
२१

२६ चेत शहनशाही सम्मत ५ महिंदर सिँघ बलविंदर सिँघ दे गृह दिल्ली १३११
२६ चेत शहनशाही सम्मत ५ गुरदयाल कौर दे गृह दिल्ली १३१२
२६ चेत शहनशाही सम्मत ५ सेवा सिँघ दे गृह गुड़गाउँ १३१३
३० चेत शहनशाही सम्मत ५ संता सिँघ दे गृह दिल्ली १३१५
३० चेत शहनशाही सम्मत ५ गोराया हज़ूरा सिँघ दे गृह दुआबा संगत १३१८
पहली वसाख शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल १३२०
२ वसाख शहनशाही सम्मत ५ रजनीश जी नाल अमृतसर १३२८
१० वसाख शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल माझा संगत १३२६
२१ वसाख शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १३३१
२२ वसाख शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १२३४
२३ वसाख शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १३३६
२३ वसाख शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १३३७
२६ वसाख शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १३३६
पहली जेठ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १३४२
५ जेठ शहनशाही सम्मत ५ लाल सिँघ दे गृह पिंड हेर १३५२
५ जेठ शहनशाही सम्मत ५ सरवण सिँघ दे गृह पिंड हेर १३६०
७ जेठ शहनशाही सम्मत ५ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह भलाई पुर डोगरा १३६२
१४ जेठ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १३६७
१६ जेठ शहनशाही सम्मत ५ गुरमुख सिँघ दे गृह भलाईपुर डोगरा ज़िला अमृतसर १३७६
१८ जेठ शहनशाही सम्मत ५ दलीप सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर १३७६
१६ जेठ शहनशाही सम्मत ५ मेला सिँघ सरपंच दे गृह पिंड बाबूपुर गुरदासपुर १३८३
१६ जेठ शहनशाही सम्मत ५ दलीप सिँघ दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर १३८७

24
२१

१९ जेठ शहनशाही सम्मत ५ बीबी चंनी दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदासपुर १३८९
१९ जेठ शहनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे गृह अल्लड़पिंडी गुरदासपुर १३९०
२० जेठ शहनशाही सम्मत ५ आसा सिँघ दे गृह अल्लड़पिंडी गुरदासपुर १३९६
२३ जेठ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १९९
१ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४००
२ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ मोता सिँघ दे गृह पिंड कलसीआं ज़िला अमृतसर १४०७
५ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरभजन कौर सुपत्नी पिशौरा सिँघ वेरका दे नवित्त
हरि भगत दुआर जेठूवाल १४११
११ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४१२
१२ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४२१
१३ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४२२
१४ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४२३
१५ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४२६
१६ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४२९
१७ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ सवेरे ढाई वजे हरि भगत दुआर जेठूवाल अमृतसर १४३१
१७ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ साढे नौ वजे हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४३५
१८ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४५८
१८ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४५७
१९ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ फिरोजपुर वाले रणजीत सिँघ दे सगण पैण समें
हरि भगत दुआर जेठूवाल १४७०
१९ हाड़ शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४७१
१ सावण शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १४७१

25
२१

२ सावण शहनशाही सम्मत ५ करतार सिँघ ते सरबजीत दे ब्याह नवित
हरि भगत दुआर जेठूवाल १४७६
२ सावण शहनशाही सम्मत ५ अजीत सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए अमृतसर १४८२
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ बीबी चरनो दे गृह पिंड मांगा सराए अमृतसर १४८४
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ दर्शन सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए अमृतसर १४८४
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ सुरजन सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए अमृतसर १४८५
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ प्रीतम सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए अमृतसर १४८६
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ बचन सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए अमृतसर १४८६
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ महिन्दर सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए अमृतसर १४८७
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ जगीर सिँघ दे गृह पिंड मैणीआं अमृतसर १४८८
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ मुखतिआर सिँघ दे गृह पिंड गम्गोबूआ अमृतसर १४६१
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ कर्म सिँघ दे गृह पिंड गम्गोबूआ ज़िला अमृतसर १४६२
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ जगीर सिँघ दे गृह पिंड गम्गोबूआ ज़िला अमृतसर १४६३
३ सावण शहनशाही सम्मत ५ गुरबख़श सिँघ दे गृह पिंड गम्गोबूआअमृतसर १४६५
४ सावण शहनशाही सम्मत ५ चंनण सिँघ दे गृह पिंड गम्गोबूआ अमृतसर १४६७
४ सावण शहनशाही सम्मत ५ दलीप सिँघ दे गृह पिंड गम्गोबूआ अमृतसर १४६६
४ सावण शहनशाही सम्मत ५ कर्म सिँघ दे गृह पिंड गम्गोबूआ अमृतसर १५०१
४ सावण शहनशाही सम्मत ५ अजीत सिँघ दे गृह वेरका ज़िला अमृतसर १५०२
४ सावण शहनशाही सम्मत ५ गुरनाम सिँघ दे गृह वेरका ज़िला अमृतसर १५०३
४ सावण शहनशाही सम्मत ५ डाक्टर बलवंत सिँघ दे गृह वेरका अमृतसर १५०५
७ सावण शहनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे नवित्त हरि भगत दुआर १५०७

26
२१

१७ सावण शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल
तृप्त कौर जुगिंदर कौर दे प्रशाद करौण ते १५०६
२१ सावण शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १५१६
२७ सावण शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल १६
बीबी चरनजीत कौर दे फरीदकोट (प्रशाद करौण ते) १५२०
३१ सावण शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल
लैफटीनैंट चेला सिँघ ते तेजभान जम्मू दे नवित १५२१
३१ सावण शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल रात दे समें १५२७
१ भादरों शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल अमृत वेले सवा पंज वजे १५३०
१ भादरों शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल रात दे समें १५३४
३ भादरों शहनशाही सम्मत ५ हरि भगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर १५४३
७ भादरों शहनशाही सम्मत ५ हज़ारा सिँघ दे गृह अमृतसर १५४६
८ भादरों शहनशाही सम्मत ५ महिंदर सिँघ दे नवित अमृतसर शहिर १५५१
८ भादरों शहनशाही सम्मत ५ लाल सिँघ दे गृह अमृतसर छाउणी १५५२
८ भादरों शहनशाही सम्मत ५ भाग सिँघ दे गृह पिंड माहलां ज़िला अमृतसर १५५४
८ भादरों शहनशाही सम्मत ५ हरबंस सिँघ दे गृह पिंड माहलां १५५७
८ भादरों शहनशाही सम्मत ५ अवतार सिँघ दे गृह पिंड काउँके ज़िला अमृतसर १५५८
१५ भादरों शहनशाही सम्मत ५ अवतार सिँघ दे गृह पिंड माड़ी पनूआं १५६५
१६ भादरों शहनशाही सम्मत ५ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिंड माड़ी पनूआं १५६८
१६ भादरों शहनशाही सम्मत ५ विरसा सिँघ दे गृह पिंड सी हरि गोबिन्द पुरा १५७०
१६ भादरों शहनशाही सम्मत ५ बख्शीश सिँघ दे गृह पिंड कादराबाद १५७३

27
२१

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

✻ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सचखण्ड निवासी सचखण्ड दरबार, दरगाह साची सच लगाइंदा। तख्त निवासी नर निरँकार, निरगुण जोत डगमगाइंदा। शाहो भूपी सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। निरगुण धार गुरु अवतार, पैगम्बर भेव खुल्हाइंदा। नेत्र वेखो नैण उघाड़, परदा ओहला आप चुकाइंदा। चार जुग दे मित्र प्यार, प्रेम प्रीती विच समाइंदा। सृष्टी दृष्टी वेखो अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आप जणाइंदा। जो संदेसा दे के आए वारो वार, नाम सुनेहड़ा इक प्रगटाइंदा। लेखा लिख के आए आपणी धार, धुर दा धर्म आप जणाइंदा। सो वेला वक्त पहुंचया आण, आनण फ़ानण परदा लाहइंदा। पुरख अबिनाशी घट निवासी नौजुआना मर्द मर्दाना इक्को होया निगाहबान, निगाह निगाह विच्चों बदलाइंदा। लेखा चुक्के ज़िमीं असमान, योद्धा सूरबीर मर्द मर्दान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे करतार, हरि वड्डा वड वड्याईआ। लेखा जाण सच दरबार, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। लहिणा देणा गुरु अवतार, पैगम्बर झोली डाहीआ। सुणो शब्द अगम्मी आवाज़, राज़ पिछला दए खुल्हाईआ। जिस दे कारण नाम कलमे पढ़दे आए निमाज़, निवाज़श विच लोकाईआ। उह खोल्हे नाम आग़ाज़, उह भेव दए चुकाईआ। शाहो भूप वड सुल्तान दो जहानां दस्से इक्को राज़, रहमत आपणी आप कमाईआ। प्रेम प्रीती साची नीती अंदर होए ममताज, लाशरीक सांझा यार परवरदिगार धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक वखाईआ। गुरु अवतार पैगम्बर मारो झाकी, हरि करता आप जणाईआ। तुहाडा जिस्म रिहा ना ख़ाकी, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। तुहाडा नज़र ना आवे कोए साथी, सगला संग ना कोए निभाईआ। तुहाडी मन्ने कोए ना आखी,

आख़र मंज़ल चढ़ के दरस कोए ना पाईआ। जीवण विच्चों बदले ना कोए हयाती, आबे हयात मुख ना कोए चवाईआ। साचा दिसे कोए ना साकी, अमृत रस ना कोए चखाईआ। मनुआ शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी तों होया आकी, अक्ल बुद्धी वंड ना कोए वंडाईआ। धर्म दा बणया कोइ ना पाठी, रसना जिह्वा सर्ब हिलाईआ। झगड़ा वेखो काग़ज़ाती, ज़ात सफ़ाती परदा ना कोए उठाईआ। जगत दा झगड़ा रहिण ना देवे समाजी, समझ सब दी दए बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक दूजे नूं करन इशारा, सचखण्ड साचे सीस निवाईआ। की हुक्म देवे निरँकारा, परवरदिगारा आप जणाईआ। वेखो दीन दुनी किनारा, चार कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए जैकारा, सति सच ना कोए वड्याईआ। भय रिहा ना गुर अवतारा, पैगम्बर सीस ना कोए झुकाईआ। सृष्टी दृष्टी होए खुआरा, इष्टी नूर ना कोए चमकाईआ। भाग लग्गे ना डूँघी गारा, काया काअबा ना कोए वखाईआ। मन्दिर मिले ना किसे गुरुदुआरा, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। शब्द नाद ना कोए धुन्कारा, आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। अमृत रस मिले ना ठंडा ठारा, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए विच संसारा, परदा अन्तर निरंतर ना कोए उठाईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गवारा, रसना जेह्वा बत्ती दन्द वड्याईआ। घर सुआमी ठाकर मिले ना किसे प्रीतम प्यारा, प्रीती सच ना कोए वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण लहिणा देणा चुक्कया विच संसारा, अग्गे अवर रिहा ना राईआ। अगला हुक्म इक करतारा, क़ुदरत दा मालक आप वरताईआ। जिस नूं कहिंदे आए चौवीआं अवतारा, निरगुण जोत जन्मे कोए ना माईआ। जिस दा खेल सब तों बाहरा, अपरम्पर आप वखाईआ। कागद क़लम ना लिखणहारा, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग इक्को दए वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की खेल होवे करतार, करता की वड्याईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। असीं सारे सेवादार, याचक रूप वखाईआ। झुक झुक करदे रहे निमस्कार, सजद्यां विच सीस झुकाईआ। लिख लिख करदे रहे इज़हार, सिफ्तां विच सालाहीआ। शब्द अनादी सुण गुफ्तार, गुफ्त शनीद करी रुशनाईआ। अन्तिम आई ओसे दी वार, जो वारस ख़लक खुदाईआ। कलयुग अंदर बदले सतिजुग धार, धरनी धरत धौल दए वड्याईआ। जिस दा लहिणा देणा लेखा दिसे नाल रविदास चमार, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। उह सब नूं करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। दो जहानां नौजुआना मर्द मर्दाना श्री भगवाना एकँकार, इक इकल्ला परवरदिगार सांझा यार पावे सार, दूजा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेखो सज्जण मीत, मित्र प्यारा दईए जणाईआ। जो

सब दी बदलण वाला रीत, रीतीवान दईए जणाईआ। जिस ने बणाए मन्दिर मसीत, शिवदवाले वंड वंडाईआ। सो खेल करे अनडीठ, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। धुर फ़रमाना दे के इक अतीत, त्रैगुण झगड़ा रिहा मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के गीत, गहर गम्भीर मेल मिलाईआ। जन भगतां काया करे ठांडी सीत, अगनी अग्ग बुझाईआ। सब नूं करनी पए तस्दीक, शहादत इक भुगताईआ। सब दा समां गया बीत, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस ने रहमत विच नाम दिता बख़्शीश, सो लेखा आपणे नाल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण उठ्ठो चलीए लोकमात, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। समां वेख सुहञ्जणी रात, भिन्नड़ी रैण वड वड्याईआ। साडी सांझी होई जमात, दरगाह वंड ना कोए वंडाईआ। प्रेम दी तक्कीए प्रभात, अमृत रस चखाईआ। दीन मज़हब दे प्रभ दे कोलों पढ़वाईए कागज़ात, झगड़ा शरअ रहे ना राईआ। सति सति दा मँगीए प्रशाद, अवर रस ना कोए चखाईआ। इक्को नूर ओसे दी ज़ात, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो नाम कलमा दस्से बहुभांत, ओसे दी सिफ्त सालाहीआ। अज्ज पक्की कर लओ बात, बातन परदा लाहीआ। सब दा इक्को पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करता वाहिद, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा हुक्म होणा राइज, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साडा चार जुग दा वेख ल्या नताइज, नतीजा सब नूं दिता समझाईआ। असां जो कीता सो जाइज़, सानूं मन्नण वाले नजाइज़ विच दिते फसाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो मशवरे विच कहो असीं किसे दी करनी नहीं हिमाइत, हमसाजण नज़र कोए ना आईआ। शरअ विच रहिण नहीं देणी कोई कफ़ायत, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा रिहा दृढ़ाईआ। तेई अवतार कहिण इक्ठे करीए सलाह, मता सच पकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहे वेखो बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। नानक गोबिन्द कहे अग्गे सीस दयो झुका, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जो सब दा मालक इक खुदा, खुदी तक्बर दए मिटाईआ। ओसे दी मन्नो हक़ रज़ा, जो रहमत विच समाईआ। बिना सीस जगदीश आपणा आप दयो झुका, निउँ निउँ लागां पाईआ। दीन दुनी तों खैड़ा लओ छुडा, छुट्टे कूड़ लोकाईआ। दीन मज़हब तों पल्लू लओ छुडा, वाली रहिण कोए ना पाईआ। सांझे घर करो दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। वेखो खेल बेपरवाह, की करनी कार कमाईआ। किस बिध कलयुग विच सतिजुग देवे ला, लहर लहर विच्चों बदलाईआ। साडे हुक्म करे रफ़ा, रफ़ाक़त पिछली तोड़ वखाईआ। अग्गे दे के नाम नवां, नर नरायण होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण शब्द अगम्मी धुर दी साखी, लिखण पढ़न विच कदे

४ २१

ना आईआ। चार जुग दी कथा कहाणी आखी, भविख्तां विच सुणाईआ। सो साहिब करे प्रभ साची, सति सतिवादी दया कमाईआ। जिस काया माटी वेखणी काची, लख चुरासी फोल फुलाईआ। जन भगत सुहेले लभ्भणे साथी, गुरमुख धुर दे मेल मिलाईआ। जिन्हां दे अन्तर बण के पाठी, पाठशाला काया दिती जणाईआ। दूजा कोई रहे ना भाटी, भटनागर रहिण कोए ना पाईआ। मंज़ल कूड़ी मेट के वाटी, रस्ता इक्को दए वखाईआ। जिथ्थे ना कोई मज़हब ना कोई ज़ाती, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। ना कोई दिवस ना कोई राती, ना कोई रवि ससि रुशनाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठी, सिमरन जोग अभ्यास ना कोए बणाईआ। ना कोई गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती ताटी, सरोवर लहर ना कोए लहराईआ। ना कोई शिवदवाला मन्दिर मस्जिद माठी, गुरुदुआर वंड ना कोई वंडाईआ। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी झगड़ा काग़ज़ाती, अक्खरां विच सथ्थर ना कोई विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। साची करनी कार कमावेगा। दीन दयाल दया कमावेगा। निरगुण धार जोत चमकावेगा। शब्द डंका इक वजावेगा। राउ रंकां आप उठावेगा। दुआर बंका इक सुहावेगा। साचे सन्तां वेख वखावेगा। नारी कन्ता जोड़ जुड़ावेगा। रुत बसन्ता आप सुहावेगा। अबिनाशी करता आपणा भेव खुल्हावेगा। गुरमुखां उज्जल कर के मुख, दुरमति मैल धुआवेगा। पंच विकारा अंदरों कढ्ढे कुट्ट, माया ममता मोह मिटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप खिलावेगा। साची खेल करे गोबिन्द, परम पुरख सरनाईआ। जिस दा लेखा लहिणा देणा हिन्द, हर हिरदा फोल फुलाईआ। जन भगत बणा के धुर दी बिन्द, बन्दना इक समझाईआ। तृष्ना मेट के चिन्द, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। अमृत धार वहा के सागर सिन्ध, दुरमति मैल धुआईआ। परदा लाह के जीउ पिंड, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। जिथ्थे वस्से गहर गम्भीर गुणी गहिन्द, गवर धुरदरगाहीआ। साचे नाम दी वज्जे किंग, तन्द सितार ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेखीए धरनी धरत धवल, आपणा ध्यान लगाईआ। जिथ्थे नूर इलाही अव्वल, आलमीन बेपरवाहीआ। जिस दा ज़हूर साँवल सवल, शहिनशाह अख्वाईआ। जो लख चुरासी अमृत धार देवे कँवल, नवाबी सवाबी वेख वखाईआ। जो हर घट आत्म परमात्म जावे मवल, मौला नूर इलाहीआ। उस दा लेखा जाणे कवण, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। जिस दी शब्दी धार कोई ना जाणे पवण, अवण गवण डेरा ढाहीआ। उह सब नूं आपणे विच करे दमन, दमां वाले गुरुआं दा लेखा रिहा मुकाईआ। बाकी दे कढ्ढके सारे सम्मण, समें दे धोखेबाज़ां फड़ वखाईआ।

४ २१

अग्गे नूं कूड़े सन्त मूल ना जम्मण, जो धोखा देण लोकाईआ। इक्को सतिगुर शब्द सब दा थम्मण, जो दो जहानां कंध उठाईआ। जिस तों गुर अवतार पैगम्बर सारे थर थर कम्बण, सिर सके ना कोए उठाईआ। ओस झगड़ा चुकाणा माटी चम्मण, चम्म दृष्टी कूड़ी दए गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण चलो वेखीए शब्द गुरु दा हिसाब, लेखा कवण बिध चुकाईआ। जिस ने चार जुग दे अक्खर लिखाए उपर किताब, कुतबख़ान्यां वंड वंडाईआ। हिस्सयां वाले बणाए बाब, बाबत आपणी हुक्म जणाईआ। जिस दा लैंदे आए ख्वाब, ख़ालस आपणी खेल वखाईआ। ओस दी वजदी वेखीए रबाब, जो बिना तन्द सितार हिलाईआ। जो सब दा बणे अहिबाब, मित्र प्यारा नूर इलाहीआ। जिस ने साथों मँगणा जुआब, जुआब तल्बी लई कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सांझी कर लओ इक आवाज़, दुतिया भउ रहे ना राईआ। ना कोई मस्तक तिलक ललाटी ना पढ़नी पए निमाज़, रोज़ा बांग ना कोए जणाईआ। ना कोई खड़काउणा पए साज, ना ढोलक छैणा आवाज़, सब दे अंदर आत्म परमात्म खुलाउणा राज़, शब्द धुर दी धार जणाईआ। निरगुण सरगुण करना काज, एहो खेल प्रभू महाराज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा निधान वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेखीए पहली चेत दी रुत, रुतड़ी कवण महकाईआ । की खेल अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। की हुक्म दुलारे सुत, सति सतिवादी आप सुणाईआ। किस बिध बदले रुख, रुख़सत सानूं दए कराईआ। केहड़ी नाम दी दे के तुक, तुख्म ताअसीर दए बदलाईआ। कवण धार करे सुच्च, संजम दए बदलाईआ। कूड़ी क्रिया देवे पुट्ट, सति धर्म करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए वखाईआ। पहली चेत कहे दर आउ गुरु अवतार, पैगम्बर पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लिआउ नाल, बचया रहिण कोए ना पाईआ। करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द लओ उठाल, आलस निंदरा दूर कराईआ। दर ठांडे आयो बण कंगाल, जगत माण ना कोए वड्याईआ। दीन मज़हब दा रिहो ना कोए दलाल, दलाली छडणी कूड़ लोकाईआ। धन्न दौलत समझयो कुछ ना आपणा माल, कूड़ ख़ज़ाना कम्म कोए ना आईआ। दीन मज़हब दा तोड़ जंजाल, जागरत जोत तक्को नूर रुशनाईआ। प्रभ दा चरण दुआरा वेखो सच्ची धर्मसाल, दूजे दर ना कोए वड्याईआ। जिथ्थे वसदे शाह कंगाल, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ । जन्म कर्म दी पूरी होवे घाल, कीती घाल लेखे लाईआ। कोई बेनन्ती आपणी दस्सो सवाल, आशा इक प्रगटाईआ । आपणी सृष्टी वेखो हाल, हालत की लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। पहली चेत कहे मैं सदके वारी घोली, आपणा आप घोल घुमाईआ। गुर अवतार

पैगम्बरो प्रभ दे दुआरे आपणी बदल लओ बोली, अनबोलत विच समाईआ। तुहाडी दिसदी नहीं पंजां तत्तां वाली चोली, जो चोल्लयां रंग चढ़ाईआ। तुसीं ओस दुआरे दी गोली, जो गोलक बेपरवाहीआ। अग्गे दीन मज़हब दी पावे कोई ना रौली, मानव वंड ना कोए वंडाईआ। सदी चौधवीं सब दी पक्कणी हाढ़ी सौणी, लेखा सब दा झोली पाईआ। तुहाडी उम्मत चार दिन दी परौहणी, महिमानी इक्को वार खवाईआ। अग्गे सति दी कला वरताउणी, क़ुदरत कला कला क़ुदरत विच टिकाईआ। पुरख अबिनाशी आपणी धार चलाउणी, धर्म दी धार प्रगटाईआ। इक्को नाम दी तुक पढ़ाउणी, दूजी अवर ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को घर दसाउणी, वास्ता इक्को घर पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वखाईआ। पहली चेत कहे प्रभ बदल देणा समाज, पिछला लेखा सर्ब मुकाईआ। इक्को सीस जगदीस सोहे ताज, तख्त निवासी हुक्म वरताईआ। सति सच चलाउणा काज, करनी करता कार कमाईआ। कूड़ी क्रिया डोब जहाज़, नईआ नौका शौह दरया रुड़ाईआ। सब दी दृष्टी खोल्ह जाग, नेत्र लोचन नैण करे रुशनाईआ। हँस बुद्धी बणाए काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ । शब्द अगम्मी वखा के बाज़, बाज़ां वाला दए जणाईआ। दुरमति मैल धो के दाग़, दुरमति मैल धुआईआ। लेखा जाणे मोहन माधव माध, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। राम रामा हो विस्माद, बिस्मिल आपणी खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां सुणा के इक आवाज़, रोज़ा बांग दा लेखा दए चुकाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदे रहे तांघ, सो साहिब सुआमी हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण चेत की खेल होणा जल्दी, सच दे जणाईआ। चेत कहे चार कुण्ट अग्ग वेखो बलदी, दह दिशा रही जलाईआ। एह खेल कलयुग कल दी, जिस कलमे दिते भुलाईआ। माया ममता मोह विकार विच सृष्टी रहे सलदी, सलल नज़र कोए ना आईआ। वड्याई रही ना किसे तीर्थ तट जल दी, अमृत रूप ना कोए बदलाईआ। दरोही वेखो मईअल जल थल दी, पर्बत टिल्ले अस्गाह देण दुहाईआ। वड्याई रही ना किसे काया माटी खल्ल दी, निरगुण नूर जोत ना कोए रुशनाईआ । किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, कोटन कोटि साधू समाधीआं विच बैठे डेरे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। पहली चेत कहे गुर अवतार पैगम्बरो किसे दा रहे ना माला मणका तसबी, पुस्तक हथ्थ ना कोए उठाईआ। पुरख अकाल दा इक्को नाम सब तों वड्डा कसबी, जो करतव आपणा दए वखाईआ। मन कल्पणा दी चलण ना देवे मर्ज़ी, कूड़ी क्रिया दे मरीज़ां दी करे सफ़ाईआ। पुरख अकाल दे नाम दी होण ना देवे बेअदबी, अदब सब नूं दए सिखाईआ। मनुषां विच वंड रहे

कोए ना मज़हबी, आत्मा परमात्मा दा मेला दए कराईआ। कोई जगत छुरी शरअ हलाल ना करे करदी, क़तलगाह ना कोए वखाईआ। इक्को दीन दयाल पुरख अकाल सब दा बणे दर्दी, दीनां अनाथां दर्द वंडाईआ। पहली चेत कहे जिस दी कला होणी चढ़दी, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। मैं संदेसा देवां ओसे दी तुक सारी सृष्टी होवे पढ़दी, तूं मेरा मैं तेरा दूजा ढोला ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। साचे हुक्म दा सुणो संदेस, पात्र पत्रका इक दृढ़ाईआ। जेहड़ा नाम रहे हमेश, नाम नाम विच समाईआ। उस दे अग्गे गुर अवतार पैगम्बर होण पेश, पेशीनगोई सब नूं दए सुणाईआ। सो लेखा जाणे देस परदेस, दो जहानां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। साचा रंग कहे मेरी वेखो रंगत, रंग अगम्मा दयां चढ़ाईआ। मैनूं समझे कोए ना पंडत, विद्या विच ना कोए वड्याईआ। मेरा लेखा नहीं कोई बहिश्त जन्नत, स्वर्गां विच ना कोए रुशनाईआ। मैं फिरदा नहीं विच किसे सिम्मत, दह दिशा ना भज्जां वाहो दाहीआ। मेरी आशा वाली नहीं हिम्मत, आपणा बल धराईआ। मेरी इक दे अग्गे मिन्नत, पुरख अकाल सीस निवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा मिटी चिन्त, चिन्ता जग ना कोए वखाईआ। कदी मेल ना होवे तेरे निन्दक, गुरमुखां नाल मिल के वज्जे वधाईआ। सच प्रेम दा देवीं सिदक, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। रंग कहे मैं अजब रंगीला, रंगत बेपरवाहीआ। पुरख अकाल आदि जुगादी इक वसीला, वसले यार नूर खुदाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा भगतां वाला क़बीला, गृह मन्दिर इक वड्याईआ। अज्ज उस दा खुशीआं वाला महीना, रुत अगम्मी दए वखाईआ। शाह सुल्ताना आउणा पसीना, पसीना साफ़ ना कोए कराईआ। नेत्र रोवे माया तीना, रजो तमो सतो दए दुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण खेल किस कीना, कवण हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण कवण भगतां चाढ़े रंग भीन्ना, भिन्नड़ी रैण वड्याईआ। जिस दे अग्गे सारे होए अधीना, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस लेखे लाउणा शाह कंगाल कमीना, कोझे कमल्यां गोद उठाईआ। सो सुआमी अन्तरजामी वड प्रबीना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। सन्त सुहेले आप बणाए सच नगीना, निगाह आपणी नाल बदलाईआ। धर्म दा धर्म वखाए जीणा, जीवण जुगत जगत दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। पहली चेत कहे सुणो हुक्म रब्बी, रहमत इक दरसाईआ। गुर अवतार पैगम्बर पंज चेत नूं सारे आयो सभी, सभा सच दी इक वखाईआ। हुक्मे अंदर सृष्टी होणी बद्धी, बन्दना इक जणाईआ। हुक्म नाल अग्गे तों सब दी साफ़ करनी गद्दी, हुक्मरान रहिण कोए ना पाईआ। ना कोई पैगम्बर रहे ना नबी, रसूलां

दा रिश्ता देणा गवाईआ। ना कोई काया अंदर हकीम रहे ना तबी, तबीअत सब दी देणी बदलाईआ। सृष्टी विच्चों तुहाडे दस्सणे कितने करदे बदी, बन्दना विच ना कोए समाईआ। तुहाडी जोत मेरी धार विच्चों जगी, जगत जोत करी रुशनाईआ। खोज्यां मात किसे ना लभ्भी, भरमे भुल्ली कूड़ लोकाईआ। सिफ्त सदीआं दी गठड़ी सब ने बद्धी, घर घर भार उठाईआ। अक्खरां वाली वखाई डग्गी, अंदर ढौंका ना कोए लगाईआ। सृष्टी भवाई उत्ते पाणी वाली नदी, अन्तर आत्म रस ना कोए चखाईआ। भरम भुला के सुदी वदी, किशना शुक्ला पक्ख दरसाईआ। किसे नूं हड्ड जणाया किसे दा तन सड़ाया अग्गी, किसे नूं जल धार वहाईआ। किसे नूं किहा तूं घर बाहर छड्डीं, किसे नूं जंगलां विच रुलाईआ। किसे दी तन सुकाई हड्डी, किसे नूं जल मीन खुवाई मच्छी, किसे दे मुख सूर गां किसे दे वच्छी, रसना जेह्वा मात हल्काईआ। बिन भगतां तों प्रभ ने साची रमज़ किसे ना दस्सी, दस्तगीर नज़र ना आईआ। एसे कर के काया माटी कल्लर कंध कच्ची, कंचन रूप ना कोए बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां नाल जो कीती पक्की, शब्दी हुक्म सुणाईआ। सो दुआर भगत आपणा पन्ध मुका के आ गई नठ्ठी, लोकमात डेरा लाईआ। अग्गे किसे दी निक्की निक्की चलणी नहीं हट्टी, जगत वणजारा वणज ना कोए कराईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सब नूं मार्ग रिहा दस्सी, दह दिशा करे पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला पढ़ना पट्टी, पटने वाला दए गवाहीआ। जमां दी भरनी पए ना चट्टी, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो पंज चेत नूं वेख्यो किस बिध भगतां दी हुंदी गति, नाम लभ्भणा पए ना रती, किसे नूं सिखणी पए ना मती, खोजणा पए ना कमलापती, घर परमेश्वर नज़री आईआ। जेहड़ी मंजल अग्गे किसे नहीं टप्पी, ओस दी पोथी रही ठप्पी, अक्खरां विच्चों किसे ना लभ्भी, पत्थरां विच रही दब्बी, रोंदे गए औलीए नबी, हाहाकार कर सुणाईआ। जन भगतां नूं भगवान मिलदा कदी कदी, क़दीम दी रीती चली आईआ। हुण सब दी मिटदी जाए सदी, सदमे विच वेखो लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना रिहा सुणाईआ। चेत कहे मेरा हुक्म आहला, अलाही इक सुणाईआ। जिस नूं कहिंदे खुदा तुआला, सो ताले भगतां दए खुल्हाईआ। जिस दी फिरदी तसबी माला, सो मन दा मणका दए भुआईआ। साचा दस्स के राह सुखाला, मार्ग इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे रहे ना कोई जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। झगड़ा मुके शाह कंगाला, कोझे कमल्यां वेख वखाईआ। एह खेल माज़ी नहीं सब ने वेखणा हाला, हालत दए बदलाईआ। चार जुग दा कढ्ढके अन्तिम दवाला, लेखा सब दा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। चेत कहे गुर अवतार पैगम्बरो वक्त सोहणा होए सुहञ्जणा, सति सच वड्याईआ। खेल खेले आदि निरञ्जणा,

आदि पुरख बेपरवाहीआ। जिस नूं कहिंदे गए दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भव सागर पार कराईआ। मेहर प्यार मुहब्बत विच नेत्र नाम पावे अञ्जणा, अज्ञान अन्धेरा दए चुकाईआ। आत्म परमात्म बण के साक सज्जणा, धुर दा साचा संग निभाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ हँकारी भाण्डा भज्जणा, भय भउ दए मिटाईआ। लेखे ला के आहला अदना, इक्को रंग दए चढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव आपणे दर ते सद्दणा, सद्दा शब्द हुक्म सुणाईआ। ओथे इक नगारा वज्जणा, नौबत हक़ खुदाईआ। सब नूं पिछला झगड़ा पैणा छड्डणा, जगत दुनी ना कोए लड़ाईआ। इक्को हुक्म पए मन्नणा, हड्ड मास ना कोए वड्याईआ। सच दुआरे पए लँघणा, सीस जगदीश इक निवाईआ। नेत्रहीण रहे कोई ना अन्धना, निज लोचन करे रुशनाईआ। जन भगतां मुड़ के फेर पए ना जम्मणा, लख चुरासी गेड़ कटाईआ। दीन दयाल हो के बेड़ा बन्न्हणा, संसार धार ना कोए रुड़्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। सच संदेसा सुणो भगत, भगवन इक दृढ़ाईआ। सब दे नाल पूरी करनी शर्त, शर्तीया आपणी कार कमाईआ। जिन्हां दे कारण आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जामा धर के धरत, धरनी धवल धौल वेख वखाईआ। जन्म जन्म दी मेट के हरस, हवस दए गवाईआ। आत्म उत्ते कर के तरस, रहमत सच कमाईआ। घर वखा के अगम्मा उत्ते अर्श अर्शी प्रीतम नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। साचा हुक्म सुणो हरिसंगत, सच सच समझाईआ। अग्गे वेखणा नहीं कोई पंडत, क़िस्मत हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। सीस निवाउणा नहीं किसे सन्त, जो विद्या ढोले गाईआ। आसा रखणी नहीं स्वर्ग जन्नत, बहिश्त कम्म किसे ना आईआ। पिछला ढोला नहीं गाउणा मंत, पूजा पाठ ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल मनाउणा इक्को कन्त, जो गुर अवतार पैगम्बरां रिहा प्रनाईआ। जिस दी महिमा सदा अनन्त, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। सो सब दी मेटे चिन्त, दकुखां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। भेव अभेदा वेखो खुल्हदा, परदा दए चुकाईआ। जन भगतो पंज चेत नूं घृत पाइओ ना कोई मुल्ल दा, दूजे दर ना कोए मँगण जाईआ। अन्न पक्के ना दूजी किसे चुल्ह दा, जन भगत गृह मिले वड्याईआ। राग गाउणा नहीं किसे बुल्ल्ह दा, अंदरे अंदर ध्यान लगाईआ। नज़ारा वेखणा प्रभू दी कुल दा, जो कुल मालक दए वखाईआ। जेहड़ा गुरमुख पिच्छे रिहा रुलदा, चुरासी गेड़ ना कोए कटाईआ। ओह अन्तिम ओस कंडे तुलदा, जिस दा तराज़ू नज़र ना कोए पाईआ। गुरमुख बूटा कदे ना हुलदा, सिम्मल रूप ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप वखाईआ। जन भगतो जिस वेले आउ भलाई पुर, पुरीआं लोआं तुहाडे

चरणां हेठ रखाईआ। एह लहिणा पिछला धुर, मस्तक रेखा दए बदलाईआ। अन्तर आत्मा जाए जुड़, बाहरों करनी ना पए पढ़ाईआ। अग्गे रहिण ना दए थुड़, भुक्खे नंगिआं दए रजाईआ। अंदरों कढ्ढके कूड़े चोर, चुराहे विच करे रुशनाईआ। झगड़ा मुका के मोर तोर, तुरत आपणा रंग रंगाईआ। मनुआ पाए कोई ना शोर, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, लोचण निज दए रुशनाईआ। आत्म परमात्म पा के डोर, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। इक्को मालक ख़ालक प्रितपालक सालस हो के जाए बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करनी ना पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रंगण रंग रंगाईआ। साची रंगण चाढ़े रंग अनोखा, हरि करता आप रंगाईआ। सृष्ट सबाई नाल कर के धोखा, भरमीआं भरम विच भुलाईआ। जन भगतां दे के आपणा मौका, मुकम्मल रस्ता दए वखाईआ। अगली मंज़ल चढ़ना होए सौखा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। चरणां हेठ दबा के चौदां लोका, चौदां तबक डेरा ढाहीआ। इक्को सुणा सच सलोका, सो पुरख निरञ्जण आपणा मेल मिलाईआ। जिथ्थे जगे अगम्मी जोता, तेल बाती लोड़ रहे ना राईआ। छप्पर छन्न दिसे ना कोठा, चार दीवार ना कोए वड्याईआ। इक्को पुरख अकाल दीन दयाल जो सब दी आसा मनसा पूरी करे लोचा, लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। पंज चेत कहे मेरा वेला होए सवा पंज, पंझी पंझी गुरमुख लाईन लैण बणाईआ। किसे दे अंदर होवे ना रंज, ग़मी लहर ना कोए दृढ़ाईआ। सब दी उँगलां उपर होण पंज, बाहां उपर उठाईआ। उस तों पहलों सब ने पुज जाणा मार के पन्ध, भज्जणा वाहो दाहीआ। भरमां दी ढाह के आउणा कंध, विच द्वैत ना कोए रखाईआ। कर्मां दी लँघ के आउणा हद्द, हद्द इक्को इक रखाईआ। सब नूं बणाउणा धुर दी यद, यदी आपणा हुक्म मनाईआ। सब दी मंज़ल इक्को पद, घराना इक्को देणा वखाईआ। वड्डे छोटयाँ सारयां दा सांझा रिश्ता करे जग, जगजीवण दाता बेपरवाहीआ। जिस वेले लोह थल्ले डाहुणी होवे अग्ग, पाल सिँघ माचस देणी लगाईआ। कोल पाणी भर के रखणा जग, सवा सेर तों घट ना तोल तुलाईआ। इक मुठ्ठी राख कोल देणी दब्ब, जेहड़ी मक़बरिआं दए फुलाईआ। नाल कपड़ा रखणा सवा गज़, जो कबीर जुलाहा हेठ विछाईआ। इक पाटे कपड़े दी रखणी जेब जिस नूं कोई कहिंदे डब्ब, रविदास चमारा राह तकाईआ। इक पाटी पुराणी रखणी पग्ग, बैणी बैठा अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पंज चेत कहे जिस वेले पक्कण लग्गे रोटी, लंगर बेपरवाहीआ। ओस वेले किसे दे गल कमीज़ उत्ते ना होवे कोटी, दूसरा कपड़ा ना कोए वखाईआ। सिर तों नंगी होवे ना चोटी, परदा सीस जगदीश सुहाईआ। अंदर वासना होवे ना खोटी, ममता

मन ना कोए वधाईआ। जिस ने मास दी खाधी होवे बोटी, अग्गे हो ना सेव कमाईआ। कोल कोरी रखणी धोती, लम्बी ढाई गज़ जणाईआ। दीवे विच जगदी होवे जोती, घृत नाल सुहाईआ। विंगी टेडी कोल होवे सोटी, साढे तिन्न हथ्थ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। पंज चेत कहे सब ने पा के आउणा बस्तर चिट्टे, चन्द नूर चमकाईआ। आपणे जीवण दे निकलदे वेख्यो सिट्टे, मेहरवान दया कमाईआ। सब ने मौली तन्द बन्न्णे खब्बे गिटे, स्त्री पुरुष वंड ना कोए वंडाईआ।

बच्या रहिण ना कोए पाईआ। कोई ध्यान ना करयो पिच्छे, भावें पिच्छों मर जाए पिता माईआ। जिधर वेखो उधर साहिब स्वामी इक्को दिसे, जिस दे हथ्थ वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। रोटी कहे जिस वेले गुन्ने आटा, पाणी विच मिलाईआ। किसे दा खुल्ला ना होवे झाटा, मेंढी सीस सीस गुंदाईआ। किसे दा बस्तर ना होवे पाटा, कण्पड़ कूड़ ना कोए वड्याईआ। नाल इक खुल्ले जल दा रखणा बाटा, उँगल विच ना कोए छुहाईआ। अग्गे आवे ना फेर घाटा, एह बणत देणी बणाईआ। ओस वेले सेवा करे ज़रुर अष्टभुज ज्वाला जिस नूं देवी कहिंदे वाली लाटा, आप आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक वखाईआ। रोटी कहे जेहड़ी मेरे नाल बणनी दाल, दलिद्री कोई ना उहनूं पकाईआ। ओस दी सेवा सिँघ बख्शीश लैणी संभाल, काशी राम नाल लगाईआ। गिरधारा सिँघ पाणी देवे डाल, अग्ग सुरिंदर सिँघ डाहीआ। उहनूं ढकणा नहीं उत्तों किसे नाल थाल, परदा ना कोए पाईआ। उहदे विच पाउणी नहीं मिर्च लाल, कलयुग काली विच देणी सुटाईआ। इस तों अग्गे दा बहुता हाल, गुरमुखां दे खाण पिच्छों दए लिखाईआ। कुछ गुर अवतार पैगम्बर चार जुग इसदी बाबत पुछदे गए सवाल, सवाल दा जवाब ना किसे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दाल कहे मेरे विच फेरयो ना कड़छी, हुक्म धुर दा दयां सुणाईआ। मेरे लागे पुट्ठी टंगिओ इक बरछी, जेहड़ी गोबिन्द लोह गढ़ विच गया दबाईआ। फेर मैं दस्सां ओस उत्ते लिखी केहड़ी पर्ची, पर्ची दा पर्चा जगत रिहा वखाईआ। ओस विच लेखा जिस वेले प्रीतम आवे अर्शी, हरि करता बेपरवाहीआ। उह दीन दुनी दी धार मेटे फ़रज़ी, फ़रद ज़ुलम सब ते दए लगाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां कर मन्ज़ूर अर्ज़ी, आरज़ू सब दी वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे कलयुग कल दी, सतिजुग साचा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा परदा लाहीआ। दाल कहे मेरी खुल्दी जांदी अक्ख, अक्खां वाल्लयो दयां जणाईआ। तुहानूं नहीं

पता बलि दुआरे क्यों ना बावन ने ल्या चक्ख, रसना रस ना कोए जणाईआ। रिषी मुनी तपीशर तपीआं दा तोड़ के हड्ड, तत अठ्ठ दा डेरा ढाहीआ। संदेसा दे के इक सति, सच गया समझाईआ। एह खेल पुरख समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आप कराईआ। जिस वेले सतिजुग त्रेता द्वापर पैंडा मुक्या नठ नठ, सदी चौधवीं वज्जी वधाईआ। निरगुण निराकार निरवैर निरँकार होवे प्रगट, जोती जाता पुरख बिधाता नूर इलाहीआ। सच प्रेम प्यार दा जन भगतां देवे रस, रस्ता इक्को दए वखाईआ। जिन्हां दी दाल नूं खांदयां अंदरों खुल्ह जाए अक्ख, जोग अभ्यास दी लोड़ रहे ना राईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर जोत निरँकार दिसे सच, सच सति विच समाईआ। जन भगतो एह तुहाडा पिछला हक़, हक़ीक़त विच्चों झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। पंज चेत कहे गुरमुखो सब ने दो दो हो के पाउणी गलवकड़ी, गोबिन्द रंग रंगाईआ। जेहड़ी गुर नानक ने तोली तक्कड़ी, उस दा छाबा दुआबे वाला लै के आईआ। केहर सिँघ उस वेले गुआंढी हुंदा सी खत्री, कक्षत्री कहि के उस नूं रहे गाईआ। एह किसे ब्रह्मण दी वाची नहीं पत्री, ग्रह नछत्र ना वेख वखाईआ। एह ओह धार जेहड़ी लिखी गई बिना अक्खरीं, अक्खरां वाल्यां दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म दयां सुणाईआ। पंज चेत कहे मैं आया देस जम्बु, जो वेद व्यास ध्यान लगाईआ। जां निगाह मारी तां गोबिन्द नज़री आवे विच तम्बु, जो पंज प्यारे रिहा बणाईआ। जे उपर तक्कां ते कैलाश उपर दिसे शम्भू, शंकर कहि के जिस नूं गाईआ। जे गोबिन्द दा साथी तक्कां जिस नूं ज़ालम कहिंदे औरंगा नहीं औरंगू पिछला कंगू, जिस काग दा लहिणा दिता चुकाईआ। ओथे होर दस्सणा क्यों अर्जन नूं तत्ती लोह बहाया चन्दू, त्रेते दा लहिणा की समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पंज चेत कहे जन भगतो सब ने देणी आपणी ज़मानत, ज़ामन पहलों लैणा बणाईआ। सब दे अंदरों शब्द दे नाल पिछली दस्सणी अमानत, जो चार जुग रखी टिकाईआ। अग्गे किस तरां तुसीं रहिणा सही सलामत, एह वी परदा दयां उठाईआ। अमृत रस देणा ओह निआमत, जेहड़ा तीर्थ तटां हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। मनुआ करे ना कोए बग़ावत, झगड़ा द्वैत देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र इक समझाईआ। पंज चेत कहे मैं अजे कुझ नहीं दस्सया, चार जुग दा लेखा आपणे विच छुपाईआ। जिस वक्त प्रभ भगतां दे अंदर वसिआ, मैं परदा देणा खुल्हाईआ। मैं पैहला बस्ता अजे ठप्पिआ, गंढु ना कोए खुल्हाईआ। जिस वेले भगत भगवान दुआरे टप्पया, टप्पा अगला देणा पढ़ाईआ। ओस टप्पे नाल पिछला लेखा जावे कटया, दुरमति मैल ना रहे राईआ। गुरमुख रुलणा पए ना विच घट्टया, धूढ़ी टिक्का मस्तक

देणा रमाईआ। किसे नूं पूजणा पए ना वट्टया, वट्टयां दे पिच्छे वट्टा सब नूं दिता लाईआ। जन भगत अणिआले तीर नाल जाए फट्टया, सुरती सुरत आप भुलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। पंज चेत कहे गुरमुखो बणना सुघड़ सुचज्जी सवाणी, सति सरूप समाईआ। आत्म परमात्म प्रभ मिले इक्को हाणी, रूप अनूप इक दरसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आदि जुगादि जिस दी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। सब दी लेखे लावे तरल जवानी, जोबन इक्को दए चढ़ाईआ। प्रेम प्यार अंदर सब नूं साहिब प्याउणा पाणी, सेवा सच कमाईआ। एह खेल दो जहानी, जहां तहां वेख वखाईआ। सच नाम दी दए निशानी, वस्त इक दृढ़ाईआ। जन भगतो तुहाडी आसा ना रहे बेगानी, धुर दे दर दए बहाईआ। सब तों अख़ीरी मंज़ल इक रुहानी, परमात्मा आत्मा आपणे नाल मिलाईआ। किसे नूं देणी पए ना कोए क़ुरबानी, करबल्यां विच ना कोए दुहाईआ। लभ्भणी पए ना जोत विच्चों पेशानी, अक्खां मीट ना कोए ध्यान लगाईआ। देणी पए ना कोए दवानी, मस्तानी मस्ती आपणी दए जणाईआ। तुहाडा प्राणपत आपणी करे मेहरवानी, प्राणी आपणे विच लए मिलाईआ। लेख मुका के दो जहानी, दोहरा आपणा रंग रंगाईआ। जिस नूं तक्कदे उपर असमानी, ओह साख्यात नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंज चेत कहे मैनूं कुछ वहन्गी रही दस्स, कहि कहि सुणाईआ। मेरे वल वेख अक्ख, आपणा नैण उठाईआ। मेरा लहिणा की हक़, मैनूं दए जणाईआ। मेरा दूर होवे शक़, सहिंसा रहे ना राईआ। मैं चार जुग रही नट्ठ, भज्जी वाहो दाहीआ। कलयुग अन्त अख़ीरी मेरा बाकी रिहा ना कोई हज्ज, काअबे वाले पल्लू गए छुडाईआ। मैं रोंदी फिरां जग, चार कुण्ट दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा की समझाईआ। चेत कहे मैनूं पुच्छ लैण दयो कोलों गहर गम्भीर की हुक्म देवे अख़ीर, आख़र दयां सुणाईआ। शब्द संदेस दिता धुर दे पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों बाहर दिता जणाईआ। एह वहन्गी नज़र आई सी इक कबीर, जो चोटी चढ़ के ध्यान लगाईआ। इस दे विच सब दी रखी तक़दीर, तदबीर आपणे नाल मिलाईआ। इस दे विच शरअ दी कटे ज़ंजीर, जो गुर अवतार पैगम्बरां दए फड़ाईआ। इस दे विच दूई द्वैती दा लाह ख़मीर, जो दीनां मज़हबां दए चखाईआ। इस दे विच झगड़ा रख्या अमीर ग़रीब, मानव मानव वंड वंडाईआ। इस दे विच जुग बदलण दी रखी तदबीर, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। इस दे विच रखी ओह तमहीद, जो लेखा दए समझाईआ। इस दे विच रखी ओह पाटी क़मीज़, जिस दे विच रविदास नूं दरस दिखाईआ। एस विच प्यारे रखे ओह अज़ीज़, जेहड़े आजिज़ लए बणाईआ। एस विच रखी ओह तमीज़, जो भगतां दी झोली पाईआ। इस

वहन्गी नूं लभ्भदा गया फ़रीद, पुट्ठे लटक्यां हथ्थ किसे ना आईआ। एसे नूं मनसूर तक्कदा रिहा नाल दीद, बिना अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। एसे विच ईद बकरीद, जो पैगम्बरां छुरी रिहा चलाईआ। एसे विच बत्ती सपारा जो लहिणा दस्से क़ुरान मज़ीद, मसला पुठ्ठा इक बणाईआ। एस दे विच ओह अशीश, जो मेहर नज़र टिकाईआ। एस वैहन्गी विच ओह बख्शीश, जो बिन क़ीमत दए वरताईआ। जिन्हां गुरमुखां ने अजे तक केहड़ी मँगणी भीख, भिच्छया की दए वरताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। वैहन्गी कहे मैं जगत वाला नहीं वैहन्गा, झीवर कन्ध ना कोए उठाईआ। मेरे विच्चों प्रभ सब नूं वस्तू देंदा, आदि जुगादि रिहा वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर रिहा लैंदा, निरगुण हो निरगुण अग्गे झोली डाहीआ। एस दे विच सति सच सदा बैहन्दा, जो निरगुण निरगुण निरगुण आसण लाईआ। मैं इक खेल दस्सणी की खेल होणी दिशा लहिंदा, लहिंदी दिशा पए दुहाईआ। मूसा मुहम्मद किवें खहन्दा, ईसा विच करे लड़ाईआ। बुरज हँकारी किवें ढहन्दा, जड़ कौण उखड़ाईआ । क्यों सब दा मुक्कण वाला पैंडा, पाँधी मंज़ल बण के आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। वहन्गी कहे मैनूं चुकणा सिँघ सुरजीत, सरजू नदी दए गवाहीआ। जिथ्थे राम ने गाया इक गीत, धुर दा राग इक सुणाईआ। राम राम नाल मिल के जां तक्कया बीस बीस, कलयुग अन्त वेख वखाईआ। ओस वेले झगड़ा प्या मन्दिर मसीत, गुरदुआर जगत दुहाईआ। ओस नूं याद आए बेर भीलणी वाले नीच, नीचों ऊँच बणाईआ। सति धर्म दी निकली चीक, कूक कूक सुणाईआ। राम ने पाणी ते मारी लीक, उँगली सज्जा हथ्थ टिकाईआ। इक ओस राम दी करो उडीक, जो घट घट रिहा समाईआ। जिस ने गोबिन्द नाल लाउणी प्रीत, प्रीतम धुरदरगाहीआ। सच चलाउणी इक रीत, बच्चयां भेंट चढ़ाईआ। अग्गे आप करे तसदीक़, शहादत अवर ना कोए रखाईआ। दूर दुराडा आ नज़दीक, पिछला अगला पन्ध चुकाईआ। सति सच नूं कर ठीक, ठाकर हो के कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ । वैहन्गी कहे मैनूं चुक्कण वाला ओह जवान, जोबनवन्ता नज़री आईआ। जिस ने हुक्म कीता परवान, सीस साहिब झुकाईआ। खेल करे श्री भगवान, वस्त अमोलक दे के दान, दयावान दया कमाईआ। सेवादार बणा देवे आप फ़रमान, फ़ुरनिउँ बाहर जणाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख हरिभगत देणा इक निशान, निशाना कूड़ मिटाईआ। सब दे अंदरों गेड़ा खिचणा कूड़ अभिमान, एसे विच टिकाईआ। जन भगतो जूझणा पए ना किसे नूं विच मैदान, जगत भगत ना कोए लड़ाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द करे ना कोए अहसान, अहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। तुहाडा पिछला क़र्ज़ा आया चुकाउण, लहिणा पिछला झोली पाईआ। एह कोई भड़भूंजिआं वाली

नहीं दुकान, चने भुन्न ना विच टिकाईआ। एह वहन्नी नहीं अबिनाशी करते दा ओह निशान, जिस नाल साचा तोल तुलाईआ। एस दा लेखा पूरा दस्सणा जिस वेले पंझी इक्की दा आया विच दरम्यान, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। एस वहन्नी ने कहिणा किस तरां सृष्टी विच होवे घमसाण, घुंमण घेर विच लोकाईआ। झुके ज़िमीं असमान, सुणे धुर फ़रमान, संदेसे सधरां वाले सुणाईआ। पंज चेत कहे जन भगतो तुहाडे उत्ते इक दा मालक इक होए मेहरवान, पंज दस पंझी त्रै दा त्रैगुण अतीता लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। पंज चेत कहे भगत दवारिउँ इक्ठे तुरने इक्की, एकँकार सब नूं नज़री आईआ। तुरन लग्गिआं इक शब्द लिखाउणी चिठ्ठी, जेहड़ी गीता लिखदयां कृष्ण अर्जन तों लई छुपाईआ। ओस दी रस धार ढाई अक्खरां विच लिखी, बारां अक्खर सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जिस विच सृष्टी जाए जित्ती, समझ आ जावे मिती, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जेहड़ी धार अजे नहीं लिखी, अलिफ़ वंड ना कोए वंडाईआ। किसे मंजल उत्ते दिसदी नहीं टिकी, टिकटिकी ला के वेखे लोकाईआ। ओह उस दुआरे सुट्टी, जिथों सके ना कोए बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। पंज चेत कहे धुर दा हुक्म होणा अणहोणा, चार वेद समझ ना आईआ। इक कलमा दस्सणा अगम्मी सोहणा, हज़रतां तों परे कर पढ़ाईआ। इक दस्सणा ओह लोइणा, जो लोइणा तीजे नेत्र तों परे परे दरसाईआ। इक दस्सणा ओह वछाउणा, जिस सेज उत्ते सोभावन्त सोभा पाईआ। इक समझाउणा अगम्मी गाउणा, जेहड़ा राग गुर अवतार पैगम्बरां सचखण्ड आउण तों पैहलां सचखण्ड दुआरे गुर अवतार पैगम्बरां दए सुणाईआ। ओसे राग दा सुहाग वैराग विच लोकमात विच गाउणा, जिस नूं शब्द नाद बाणी कहि के दुनी रहे सुणाईआ। एह अक्खरां वाली बाणी बच्चया नूं पर्चाउणा, प्रभ दा भेद इस तों परे जिथ्थे जोत इक्को हरे, निरगुण निराकार निंरकार सोभा पाईआ। जेहड़ा अक्खरां दी विद्या पढ़े, ओह सन्त सचखण्ड कदे ना वड़े, ओह थल्ले दा थल्ले अड़े, मंजल हकीकी मूल ना चढ़े सच दुआर वड़े ना घरे, घराना नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां नूं आप आपे घल्ले, उन्हां दे नाम बन्ने पल्ले, किसे दे हुक्म दे रहन्दे नहीं थल्ले, जो आया सो आपणा नाम सुणाईआ। जद गुर अवतार पैगम्बर आवे तां प्रभ भेजे इकल्ले इकल्ले, साधां वांगू मण्डलीआं ना दए लगाईआ। कोटां विच्चों जिन्हां नूं नाम खुमारी दे के कर लए झल्ले, झलक आपणी अंदर दए वखाईआ। उहनां ने ओस प्रभू दे चरण कँवल सिँघासण मल्ले, तक्की ओट बेपरवाहीआ। जन भगतों सदी चौधवीं जेहड़ा बच गया कलयुग दे कूड़े हल्ले, ओस दा लेखा धुर दा नज़री आईआ। कूड़ क़ज़ा किसे तों ना टले, टिल्लआं वाले देण गवाहीआ। बिन भगतां दीपक जोत किसे ना बले, बलधारी

रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निराकार निरँकार आपे उपर आपे थल्ले, आपे लख चुरासी काया वस्से महल्ले, आपे लेखा जाणे जले थले, महबूब मुहब्बत विच आपणी कार कमाईआ।

✻ ५ चेत शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

मुक्दसे जिवल इलहा अजूने नबो नाज़िज़ते हज़ी उलज़वानो कनज़जीके नूरे तनहा पैगम्बरो वसीके रसूले दुआ मुहम्मदे अक़ीदे वाहिदे खुदा क़दम बोसी दरे मुखद लेज़ीहा जानिस्तो दानिस्तो काबूले क़ज़ा हज़रते हाज़र वज़रते कासर नज़रते अनासर कलुजते, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साइले सवा अहले दुआ मुहले मबा ज़ाहिले नवा काइले अक़ीदा दीवाने दरस दीदा अमामे ईदा पैग़ामे तमहीदा सदरे पेचीदा चे ज़िकवन ताअना कुरसे अरशे आहला फ़र्शे घाला दरसे आमाला कायनाते नवाला नबीउल नबा रबीउल अज़ा मनसफ़े खुदा अनहरफ़े दुआ यक्कतरफ़े यूया पैगम्बरे पिसत नूरे इसत ज़हूरे चिसत रसूले फ़रिसत खुदाए गृहस्त तोबा बहिश्त किशर्ते मशूते ताने मिस्तत मुहम्मदे नवाने क़ुराने अफ़सान जिस्मे क़ुरबाने इस्मे नहाने नैगुलज़ी नाखिलज़ी ख़ताबे नसज़दा अदाबे नामसयदे महिराबे नासहिरा सहिराबे नाकिनज़ने नाआबे ना दस्ते रबाबे ना गोशे ना काअबे गदागर गोज़िशता ना पैगम्बरां कलमा ना पैग़ामे फ़रिश्ता हुक्मे हज़ूर दीदा दानिस्ता मुहम्मदे क़बूल लेखा गुज़िशता अगला लेखा फ़ज़ूल हुक्मी फ़ाशिसता अलाही असूल माअकूल आहिस्ता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, क़ुदरते क़ादर क़ादरे पैगम्बर पैगम्बरां रसूल रसू इल इिलाह नबी नबीउल नवाह वाहिदे खुदा मुहम्मदे सदा आख़रे दुआ कासरे नवा नाकदमो काज़िसत तलाके बहिश्त ना ख़ाके इश्क ना इत्तफाके अलज़ी महिज़ूके इष्ट ना एक एक एक बेपरवाहीआ। मुहम्मद कहे तेरी पिछली खेल पुराणी, प्रभ पूरन नज़री आईआ। तेरी अक्खरां वाली बाणी, कलमयां वाली पढ़ाईआ। तेरी रूह वाली रुहानी, रहमत बेपरवाहीआ। तेरी नज़रे नज़र रहमानी, करमे कर्म कमाईआ। तेरी मक़बरिआं वाली निशानी, हौक्यां विच अज़ांईआ। तेरी करबल्यां वाली क़ुरबानी, दरदां वाली वड्याईआ। ऐ मेरे खुदा मैं मांगां दुआ बिन तेरे मुहम्मद अहिमद सारे दिसन फ़ानी, जिस्मानी नज़र कोए ना आईआ। मेरी हरफ़ां वाली बिआनी, सदी चौधवीं तुग्यानी, कायनात दिसे बेगानी, दर दुआर ना कोए सहाईआ। मेरा लहिणा चुका जो किसे लेखा नहीं क़लम कानी, करबले दा लेखा आबे दा पाणी, अली दा लहिणा ज़ोरू जुआनी, कलमे दा कहिणा तेरी मेहरवानी, सदीआं दा देणा अगली निशानी, जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपणा रंग इक वखाईआ। मुहम्मद कहे जल्वागर तेरा ताबिआदार, तबीब नज़र कोए ना आईआ। हज़ूर हाज़र होया दरबार, दर इक्को नज़री आईआ। गुज़िशता अर्ज़ दयां गुज़ार, गोशे नोशे ख़ाना बदोषे सीस निवाईआ। तेरा तल्बे इक़रार, वायदा वहिद पूर कराईआ। मकरूज दा मकरूज क़र्ज़दार, क़रजे दा क़र्ज़ा देणा चुकाईआ। कलमे दा कलमा उह देणा सिखाल, जिस दा लेख ना कोए बणाईआ। जिस नाल बदल जाए ज़माना हाल, मुसतकबिल आपणा रूप वटाईआ। इक्को वार दस्स आप अहिवाल, दीन दयाल होणा आप सहाईआ। अज्ज दी रात मेरा मन्नी इक सवाल, जो फ़िकरिआं तों बाहर देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। मुहम्मद कहे तेरे नूरी जल्वे दा इजलास, मुशतरी चारों तबक दयां कराईआ। तेरा हुक्म खेल ख़ास, ख़ाहिश पैगम्बरां पूर कराईआ। तेरे दरे दरबार सानूं पूरा विश्वास, क्यों तेरा विशा इक्को नज़री आईआ। इक रात नूं ज़रूर पाणी दा मँगां ग्लास, मुहम्मद साह साह रिहा सुणाईआ। ओस वक्त ईसा नूं ख़बर करनी वक्त यारां दा पूरा उत्ते होणा कलाक, कला इक्को देणी वखाईआ। वायदे नाल उम्मत नूं लिख के दे दईए तलाक, किताब उत्ते हरफ़ लिखाईआ। चौदां सदीआं बणे रहे चलाक, शरअ हुक्म वरताईआ। साथों होया कोई ना पाक, पाकीज़ा नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट उडी ख़ाक, कायनात रही कुरलाईआ। धुर दी समझे कोई ना बात, बातन परदा कोए ना लाहीआ। अन्त अख़ीरी तैनूं देणा आख, आख़र देणा जणाईआ। तेरी सृष्टी तेरी कायनात, तेरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। असीं हो जाणा आज़ाद, पल्लू लैणा छुडाईआ। सब नूं साफ़ दे देणा जवाब, हुक्म धुर दी धार अलाहीआ। बिना तेरे दूजा रहे ना कोई अहबाब, मित्र प्यारा ना कोए अख्वाईआ। ऐ ख़ुदा जेहड़े भुन्न के खांदे कबाब, क़बरां विच देणी सज़ाईआ। तेरे क़दमां विच इक अदाब, सीस जगदीश इक निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाईआ। मुहम्मद कहे मेरे ख़ुदा कुछ याद कर कौल, कँवल दयां जणाईआ। तेरा वायदा जिस वेले आवां उपर धौल, धरनी उत्ते फेरा पाईआ। सृष्टी नाल मारां रोल, भुलेखे विच ख़ुदाईआ। उन्हां वसां कोल, जो अन्तर मेरा कलमा गाईआ। मुहम्मद कहे याद कर मैं ओस वेले मेहन्दी दिती सी घोल, मख़ौल नाल तेरे हथ्थां दिती लगाईआ। तूं ओसे वेले मेरे अंदर वजा दिता ढोल, डंका इक खड़काईआ। अंदर वड़ के पिउँ बोल, होका हक़ सुणाईआ। संदेसा दिता अनमोल, फ़रमाना धुरदरगाहीआ। मुहम्मद जिस वेले भगतां सूफ़ीआं दे आया कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सति सच दा तोलां तोल, कंडा आपणे हथ्थ उठाईआ। धर्म दुआरा देवां खोल्ह, ख़ालक ख़लक इक रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। ख़ुदा कहे मुहम्मद तेरी मैहन्दी सोहणा

रंग, रंग रतड़ी सोभा पाईआ। जाह कलमे वाल्लयो सारे करोगे जंग, झगड़यां विच दुहाईआ। घोड़यां दे कसो तंग, भज्जो वाहो दाहीआ। खाणा पीणा मिले लंङे डंग, सुख दी सेज ना कोए हंढाईआ। मेरे कोल अनोखा वक्खरा ढंग, पैगम्बरां तों बाद गुरु देवां प्रगटाईआ। सब नूं कर के खण्ड खण्ड, खण्डा दयां चमकाईआ। फिर सब नूं दे के कंड, करवट दयां बदलाईआ। भगतां दे हो के संग, साचा संग निभाईआ। प्रकाश दे के नूरी चन्द, चन्द दयां चमकाईआ। आसा मनसा पूरी करके उमँग, तृष्ना दयां मिटाईआ। गुरमुखां चाढ़ां उह रंग, मुहम्मद जेहड़ा रंग मेरी भेंट कराईआ। एस दे नाल इक मौली दा होवे तन्द, जो खुद खुदा नबीआं नूं मुशरफ़ हो के दए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। खुदा कहे एह मेहन्दी घोल घोली, रंग सोहणा रही वखाईआ। मुहम्मदा जिस वेले मैं चार जुग दे कलमयां दी बदल दित्ती बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। ओस वेले खेल करना आपणा उपर धौली, धरनी धरत धवल वड्याईआ। गुरमुखां कोलों कराउणी एहदी बौहणी, गुरमुख गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। ओथे उड के आ गई इक काँ कौणी, कांए कांए कर सुणाईआ। ऐ खुदा, साडी आशा एस मेहन्दी दे विच पाउणी, बिना मैहन्दी अमाम तों लेखा सके ना कोए मुकाईआ। क्यों एसे तरां दुनियां दी अन्तर वासना असां रवाउणी, कूड़ विश्टा मुख सब दे देणा धराईआ। तेरी तुक किसे ना गाउणी, कलमयां वाले करन लड़ाईआ। खुदा किहा एह वी खेल चार जुग दी परौहणी, फिर नज़र कोए ना आईआ। मैं नवीं धार चलाउणी, चलत करां लोकाईआ। सच आवाज़ इक सुणाउणी, सुत्यां लैणा उठाईआ। साची नगरी इक वखाउणी, भगत दुआर वज्जे वधाईआ। जिथ्थे सच प्यारयां दी मजलस बहाउणी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ओथे एस मैहन्दी नाल ओस गुरमुख आपणी आसा छुहाउणी, जिस नूं शहिनशाह देवे वड्याईआ। पंजां कलमयां नाल जिस ने कलमे वाल्यां दी खेल मिटाउणी, पिछला लेख मुकाईआ। ओस दे पंजे उत्ते पंज धार लगाउणी, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। मुहम्मद किहा कवण वेला होए कायनात, क़ादर क़ुदरत दे जणाईआ। पुरख अकाल वेख आपणी लुगात, बिन अक्खरां तों लिखी होई अबादत विच्चों दित्ता सुणाईआ। मुहम्मद सम्मत शहिनशाही चार, चौथे जुग दी पंचम चेत रात, रुतड़ी आपणा रंग रंगाईआ। ओस दिन तों सब दी हो जाणी वफ़ात, फ़ातिहा पढ़ के लेखा दए मुकाईआ। मुहम्मद ओसे वेले इक कुंनी लै आया जिस नूं कहिंदे परात, पुरातन हाल सुणाईआ। कुछ इस विच दे दात, दाते तेरी वड वड्याईआ। परवरदिगार इक उँगल नाल धरती उत्तों छुहाई ख़ाक, उह ख़ाक सवा सेर वज़न बणाईआ। परवरदिगार मार के चांट, मुहम्मद दिता दृढ़ाईआ। ओह वेख सदी चौधवीं

दी वाट, पीरां दा पीर पैगम्बरां दा पैगम्बर आपणा वेस वटाईआ। मुहम्मद तक्कया हैरान होया एह की वेखी बात, की परदा दिता उठाईआ। जां समझया भगतां दी नज़री आई जमात, धुर दे प्रेमी बैठे सोभा पाईआ। जिन्हां दे कोल उह खाज, जिहनूं खा खा शुकर मनाईआ। जगत तृष्ना मेट के कूड़ा राज, राजा इक्को वेख वखाईआ। जिस दे सीस सोहे ताज, तख्त निवासी धुरदरगाहीआ। ओस सवा सेर दा भेव खुलाउणा आज, अज्ज दी रात वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। मुहम्मद छेती नाल कर अदाब, सर दिता झुकाईआ। तेरा लेखा लिखां विच किस किताब, अक्खर कवण बणाईआ। अग्गों कोरा मिल्या जवाब, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद एह लेखा फेर दस्सां जिस वेले सदी चौधवीं भगत दवारिउँ भगतां दी नाल लै के निकलां बरात, सोहणी आपणी खेल खिलाईआ। इक्को इष्ट ते इक्को होए जमात, इस्म इक्को नज़री आईआ। जिन्हां दा झगड़ा नहीं कोई माटी ख़ाकी लाश, लक्ष्मण सीता राम ना कोए दुहाईआ। ओस वेले लेखा दस्सां आप, आपणा भेव चुकाईआ। मुहम्मद निगाह मारी दो इक दा साथ, इक्की इक्की इक्की सोभा पाईआ। मुहम्मद जोड़ के हाथ, क़दम सीस टिकाईआ। परवरदिगार किहा ओह वेख आपणी मुकी वाट, पैंडा रिहा ना राईआ। अग्गे हुक्म इक्को पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे भगतन बरात किस बिध होए रवाना, रवानगी कवण रखाईआ। परवरदिगार किहा तूं ख़बर करीं ज़िमीं असमानां, चौदां तबक डंक वजाईआ। मैं सारी दुनियां नूं कर बेगाना, आपणा पासा लैणा बदलाईआ। साचे भगतां कर परवाना, अग्गे आपणा संग रखाईआ। हरिजन रहे ना कोए बेगाना, बग़लगीर लवां बणाईआ। गुरमुख दे हथ्थ नूं पंज पंज दा होवे निशाना, निशाने पिछले दयां मिटाईआ। फेर निक्कलां बण मस्ताना, मस्ती आपणी इक वखाईआ। सच प्रेम दा पी पैमाना, लबरेज़ ना कोए रखाईआ। सब दा पिछला मेट के ख़ाना, ख़ानाबदोश देणे कराईआ। एह प्रभ दा वेख्यो बहाना, किस बिध आपणी कार कमाईआ। पिछल्यां नालों तोड़ याराना, अग्गे आपणे लए उपजाईआ। एह कोई दीनां वाला नहीं अफ्साना, क़ुरानां वाली ना कोए पढ़ाईआ। उह मर्दां दा इक मर्दाना, मुद्दतां दा मालक वेख वखाईआ। जिस नूं झुकण ज़िमीं असमानां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। ओह वेखो सूफ़ी मस्त फ़कीर, फिकरे रिहा सुणाईआ। कवण शरअ दे पाए ज़ंजीर, शरीअत झगड़ा कवण गवाईआ। भज्जा आएयों क्यों कबीर, मैनूं दे समझाईआ। कबीर कहे मैं हो गया उत्ते दिलगीर, मेरी धीर ना कोए धराईआ। जां मैं तक्कया अमामां दा अमाम, जिस दी वक्खरी सब तों तस्वीर, तसबी माला लोड़ रहे ना राईआ। जिस दा लेखा

शाह हकीर, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। पैगम्बर कहिण किथ्थे बण गया मस्त दीवाना, आपणा खेल खिलाईआ। जिस ने सब नूं कीता बेगाना, बेपरवाह बेपरवाहीआ। पुठ्ठा सिध्धा करे दो जहानां, आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा शब्दी राग तराना, चौतरफ़ आपणा खेल खिलाईआ। जिस दा महल अटल आलीशाना, आलीशान दरगाह साची सोभा पाईआ। ओस दे क़दम क़दम क़ुरबाना, सीस सीस भेंट कराईआ। रहमत दा रहमाना, शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना, महबूब इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ। पैगम्बर कहिण वेखो हो गया झल्ला, सुध रही ना राईआ। जिस नूं कहिंदे नूरी अल्ला, आलम दा मालक बेपरवाहीआ। सब दा छोड़ के पल्ला, भज्जिआ वाहो दाहीआ। जां तक्कीए इक इकल्ला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। फिर वेख्या भगतां दे विच रला, रल मिल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। पैगम्बर कहिण सजदा करीए झुक, सीस ना कोए उठाईआ। जे साडी समझ आ गई इक तुक, तुरत लए मिलाईआ। साडा लेखा रिहा मुक, मुकम्मल हुक्म सुणाईआ। भगतां नूं दे के सब कुछ, ख़ाली सब नूं दिता कराईआ। मुहम्मद कहे मैं हैरान हो गया जिस ने वारे आपणे सुत, ओस नूं आपणे नाल मिलाईआ। लुकीए केहड़ी गुठ्ठ, राह नज़र कोए ना आईआ। अज्ज तों साडा दीन दुनी दा लहिणा देणा गया छुट, छुट्टी दो जहान कराईआ। अग्गे वास्ते इक पवरदिगार दा धुर हुक्म सब ने लैणा पुच्छ, आपणी पुच्छ ना कोए पुआईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान कर नहीं सके कुछ, बलहीण रहे कुरलाईआ। हुण इक आप रहिणा ते इक ओस दा शब्द दुलारा रहिणा सुत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सब दे नाल शब्दी धार जाणा जुट्ट, धर्म दी धार इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करन चलया ख़ुश, ख़ुशीआं विच आपणा भेव खुल्हाईआ।

❊ ५ चेत शहिनशाही सम्मत चार ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे घर तों बाहर लिख्त होई भलाईपुर ❊

दोवें हथ्थ कहिण साडी दुहाई, दो जहान कूक सुणाईआ। तेरा खेल बेपरवाही, पीर पैगम्बर गुर अवतार वेखण चाँईं चाँईंआ। नाम संदेसा मिले थाउँ थाईं, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। तूं परवरदिगार करनहार हक़ निआईं, अदल अदालत इक वखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेला करना चाँईं चाँईं, गलवकड़ी दोहां इक्को रूप बणाईआ। तत्तां वाली छड जाए लोकाई, मुहब्बत तेरी इक प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ।

दोवें हथ्थ कहिण आत्मा परमात्मा सांझी पा लै जफ्फी, जफ़ाकश तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे नफ़ी, नफ़ा आपणे नाम दा दे वरताईआ। कूड़ी कल्पना रहे ना कफ़ी, कफ्न दा झगड़ा देणा चुकाईआ। जेहड़ी तेरी सच दुआरे बस्ती बसी, घर ओहो देणा समझाईआ। जिस विच लख चुरासी फसी, जगत ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। नस्सणा नहीं देणा हथ्थो हथ्थी, मेहर नज़र उठाईआ। जेहड़ी कलमे तों पैहलां मुहम्मद ने पढ़ी पट्टी, बिना अलिफ़ ये समझाईआ। तेरे प्रेम दी धार मौली अट्टी, इट्टां पत्थरां दा खैड़ा दिता छुडाईआ। उस दा लेखा करदे नटी, नटूए नाम हुक्म वरताईआ। अग्गे दो जहान तेरी कथा कहाणी मिले सची, गुर अवतार पैगम्बर सके ना कोए बदलाईआ। तेरी रीती सति सतिवादी सब तों अच्छी, अच्छी तरां देणी दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल देणा वखाईआ। हथ्थ कहिण एह नाता जुढ़या पंझी, प्रकृतीआं देण दुहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल भगतां दी आत्म सेज सुहाउणी धुर दी मंजी, सिँघासण इक्को इक वड्याईआ। जिथ्थे ना कोई रोग सोग चिन्ता ग़म रंजी, रंजश अंदरों देणी कढ्ढाईआ। दीन मज़हब दी रहे ना कोए पाबन्दी, शरअ विच बंधन ना कोए रखाईआ। गुरमुखां निज नेत्र अक्ख मूल रहे ना अन्धी, अज्ञान अन्धेरा देणा मिटाईआ। गोबिन्द दी लिख्त पुरख अकाल दी सन्धी, संध्या तों देणा बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हथ्थ कहिण साडी सिध्धी वेख उँगल, इशारा धुर दा नज़री आईआ। घट निवासी रहे कोई ना गुंझल, परदा भेव देणा मिटाईआ। तैनूं रहिण नहीं देणा नैण मूदन, लुक लुक के वक्त लँघाईआ। तेरे भगत सुहेले चारों कुण्ट तैनूं पूजण, मिल मिल वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक्को इक सुहाईआ।

✻ ५ चेत शहिनशाही सम्मत ४ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह पिंड भलाई पुर ✻

गुरमुख दवारिउँ बण के जाणा गुरमुख, गुर सतिगुर दया कमाईआ। हरिसंगत विच रहे कोई ना दु:ख, द्वैत अंदरों देणी कढ्ढाईआ। प्रेम प्यार दी लै के जाणा सुच्च, संजम इक्को इक दरसाईआ। बिना धर्म तों पल्ले नहीं किसे दे कुछ, ख़ाली दिसे जगत लोकाईआ। पुरख अकाल दे जन भगत सुहेले बणयों सुत, अपराधी रहिण कोए ना पाईआ। लेखे ला के जाणे काया बुत, बुतखाने कर सफ़ाईआ। तुहाडी प्रीत जावे ना टुट्ट, टुटयां गंढ्ढ पुआईआ। सब दा आवण जावण जाए छुट, लख चुरासी गेड़ रहे ना राईआ। अन्तर आत्म परमात्म उपजावे साचा सुख, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रस चखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। गुरमुख दुआरे बण के जाणा सज्जण मीत, हरिसंगत वैरी रहिण कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सांझी कर प्रीत, प्रीतम इक्को राह रिहा वखाईआ। सब ने अंदरों निर्मल करनी मन कल्पणा नीत, बुध्ध बबेक लैणी कराईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला वस्से सब दे चीत, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाउणा गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर दए समझाईआ। लेखा चुक्क जाए मन्दिर मसीत, काया काअबे वज्जे वधाईआ। तुहाडे अन्तर निरंतर हरि करता वस्से वीच, भेव अभेदा दए खुल्लाईआ। हउमे रहे ऊँच ना नीच, राउ रंक ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। गुरमुख दुआरे बण के जाणा धुर दे सज्जण, हरि साजण इक प्रनाईआ। सच प्रीती धूढ़ी लै के जाणा मजन, दुरमति मैल धुआईआ। निज नेत्र नाम निधाना पा के जाणा अञ्जन, नेत्र अक्ख प्रतख कर रुशनाईआ। जो साहिब सतिगुर सन्त सुहेले आया लभ्भण, लख चुरासी खोज खुजाईआ। सो तुहाडा धर्म दा वेखण लग्गा लग्न, लग मातर रहिण कोए ना पाईआ। त्रैगुण माया बुझावण आया अगन, अगनी तत ना कोए तपाईआ। सच दुआरे कर के मग्न, मगरला लेखा दए मुकाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर करदे गए यतन, जुग चौकड़ी आपणी सेव कमाईआ। उह वखावणहारा इक्को पतण, पत्रका सब दी फोल फुलाईआ। जन भगतो तुहाडी लज्जया आया रखण, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। गुरमुख दुआर क्यों होया इक्ठ, सहज नाल समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस वेले आवण नठ, बण के पाँधी राहीआ। उह आपणी वस्त नाल ल्या के सब कुछ मिलाउण हथ्थ, हथ्थो हथ्थ फड़ाईआ। एह कथा कहाणी अकथ, रसना कहि सके ना राईआ। सब दा लेखा पूरा करना जिस वेले होए सवा अठ्ठ, अठ्ठ दस वंड ना कोए वंडाईआ। सब ने पिछला ख्याल घर दा देणा छड्ड, अज्ज दी रात निगाह ना कोए बदलाईआ। इक्को अन्तर ढोला लैणा रट, चलदयां फिरदयां आपणा राग सुणाईआ। पिछला झगड़ा द्वैत दी ढाउणी हंगता वाली वट्ट, वटना नाम दा दए लगाईआ। इक संदेसा नर नरेशा चार जुग दा सांझा दए दस्स, दह दिशा तों बाहर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। गुरमुख धार कहे सुण लओ साची सिख्या, साहिब सच दृढ़ाईआ। जेहड़ा लेख सदा अनलिख्या, उस दा परदा दए उठाईआ। जेहड़ी सृष्टी समझदे मिथ्या, मिथ्या जगत लोकाईआ। उन्हां गुर अवतार पैगम्बरां दी दस्सणी पिछली इच्छआ, निरिच्छत आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक वखाईआ। गुरमुख कहे इक बेनन्ती करे कबीर, काअबे तों परे दुहाईआ। जन भगतो

अज्ज दी रात कोई ना समझयो आपणा सरीर, सरीर तत ना कोए वड्याईआ। आत्मा बन्नूणी नाल ओस ज़ंजीर, जिथों शरअ ना कोए तुड़ाईआ। ज़ात पात दीन मज़हब दा कढुके जाणा खमीर, ख़ालस आपणा आप बणाईआ। अग्गे भगतां दा काया मन्दिर करना ताअमीर, आपणी हथ्थीं नींह रखाईआ। जिस नूं दुनियां कहे तक़दीर, उस दी तदबीर देणी दृढ़ाईआ। जिस दे नाल बदले ज़मीर, ज़र्रे ज़र्रे करे रुशनाईआ। उह इक्को नुक्ता दस्सणा अख़ीर, आखर परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। कबीर कहे रात नूं बैठण लग्गे चारे इक्ठे करयो अंगूठे, अंगूठा अंगूठे उत्ते टिकाईआ। फिर ख़ैर पए तुहाडे ठूठे, ढुमरी दए सुणाईआ। जिस सारे कर दिते झूठे, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। तत रहिण नहीं दिते पंज भूते, ख़ाकी ख़ाक विच मिलाईआ। डंके वजदे रहिण ना देवे गली कूचे, कोना कोना फोल फुलाईआ। जन भगतो तुसीं ओस प्रभू दे बूटे, जो मालक माली धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा माण दए वड्याईआ। चारे अंगूठे इक दूजे नूं लग्गण, सोहणा वक्त सुहाईआ। नेत्रमीट होवन मग्न, इक्की मिन्ट अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जो तुहानूं आया सद्दण, सद्दे घर घर दए सुणाईआ। इक्की मिन्टां विच कोई हिसाब किताब लेखा कर के आवे विच अदन, अद्धो अद्ध वखाईआ। जिस ने गुर अवतारां पैगम्बरां नूं दिता बदन, उह बदली सब दी रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दी महूर्त वेख लग्न, सूरत सच दी दए जणाईआ।

पंज चेत कहे चार जुग दी मिटण लग्गी समाधी, समां प्रभ रिहा बदलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ऋषीआं मुनीआं वाली वादी, वायदे नाल पूर कराईआ। सच संदेसा देवे धुर दा नादी, हरि करता बेपरवाहीआ। नाम निधान सुणाए शब्द अनरागी, ताल तलवाड़ा इक वजाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ख़तम करे बाज़ी, बाज़ां वाला दए गवाहीआ। मुहम्मद दा दुलदुल शब्द अगम्मा ताजी, ताजना वेखे थाउँ थाईंआ। झगड़ा रहे ना किसे निमाज़ी, निवाज़श सब दी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। पंज चेत कहे पिछली वेखे साधना साध, हरि करता बेपरवाहीआ। किस बिध भगत सुहेले होण विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। किस बिध हरि करता देवे आपणी दात, दाता दानी दया कमाईआ। सति धर्म दी लेखे लावे रात, भिन्नड़ी रैण वज्जे वधाईआ। गुरमुखां पूरी करे ख़ाहिश, तृष्ना तृप्त कराईआ। सच दुआरे वखा रास, गोपी काहन इक दरसाईआ। जो रचना रचे आदि, जुग जुग

वेस वटाईआ। सो कलयुग कूड़ी क्रिया करे बरबाद, माया ममता मोह मिटाईआ। सतिजुग साची साजना साज, सन्त सुहेले लए उठाईआ । आत्म परमात्म रच के काज, नाता निरगुण नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच समाधी इक समझाईआ। सच समाधी वेखो आ के गुर अवतार पैगम्बर पीर, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर नाल मिलाईआ। भगत सुहेला दिसे ना कोई दिलगीर, काया मन्दिर अंदर वज्जदी दिसे वधाईआ। चारों कुण्ट भज्जा फिरे कबीर, सेवक हो के वाहो दाहीआ। धन्न वड्याई पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जिस ने सब दे कटे शरअ ज़ंजीर, मज़हब दी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को पढ़ हक़ तकबीर, तदबीर दिती सुणाईआ। जन भगत मंज़ल चोटी चाढ़ अख़ीर, आख़र आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा मुका के शाह हकीर, आहला अदना होए सहाईआ। निरगुण धार दस्स तस्वीर, तसबी माला मणके तों झगड़ा दिता मुकाईआ। अंदर वड़ बदल ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर करी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। चेत कहे गुर अवतार पैगम्बर आ गए नेड़े, आपणा पन्ध मुकाईआ। भगत दुआर सुहा के खेड़े, खिड़की अंदरों दए खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी विछड़े जेहड़े, सारे बैठे ध्यान लगाईआ। परम पुरख दे चढ़ गए बेड़े, खेवट खेटा इक्को नज़री आईआ। इक्को रंग रंगा के रुत सुहाए सञ्ज सवेरे, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच करे मेहरे, निगाहबान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्ची रंगण रंग रंगाईआ । पंज चेत कहे गुर अवतार पैगम्बरो वेखो आपणा पिछला वरका वरका, बिन अक्खर वेख वखाईआ। ओस दी ख़ैर ओसे दा सदका, बीख़ैर इक्को नूर अलाहीआ। जो निरगुण धार हो के परता, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस दा लेखा उत्ते अर्शा, अर्शी प्रीतम वेस वटाईआ। सो भाग लगाए धरनी धरत धौल फ़र्शा, निरवैर खेल खिलाईआ । जन भगतां दा देवण आया क़र्ज़ा, मक़रूज़ हो के वेख वखाईआ। आत्म परमात्म सांझी कर के गर्ज़ा, आशा मनसा मनसा आशा आपणे विच समाईआ। सन्त सुहेला बण के बरदा, दर दरवेश वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगत जन हो गए सुन्न मुन्न, मन का मोह मिटाईआ। अन्तर इक प्रेम दी धुन, धुन आत्मक वज्जे वधाईआ। बाकी रिहा कोए ना मुन, मुनीश्र नज़र कोए ना आईआ। चुरासी विच्चों पुरख अकाल दीन दयाल लए चुण, चार कुण्ट खोज खुजाईआ। नाम संदेसा दे के फ़ुन, फ़ुरनिआं विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सच दुआर दे के गुण, औगुण डेरा दिता ढाहीआ। एकँकार बणा के आपणी कुल, कुल मालक होए सहाईआ। नाम भण्डारा दे अनमुल्ल, क़ीमत करता कोए ना लाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो भगत दुआर दी वेख लओ चुल्ह, चार जुग ना कोए तपाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर फिरन चार चुफेरे, चारों कुण्ट चाँईं चाँईंआ। वेखो पुरख अकाल करे मेहरे, मेहरवान दया कमाईआ। चार वरन चढ़न बेड़े, नईआ नौका इक सुहाईआ। साचे भगत दे आ गए खेड़े, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। जिथ्थे दीन मज़हब दे रहिणे नहीं झेड़े, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। गुर गोबिन्द लाउणे डेरे, डंडावत इक्को रिहा समझाईआ। शब्द धार सिँघ शेरे, भबक पुरख अकाल समझाईआ। लख चुरासी गेड़ गेड़े, जुग चौकड़ी आप भुआईआ। सतिजुग आउँदा अग्गे नेड़े, कलयुग कूड़ा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पंज चेत की दस्सी कथा, कहाणी समझ कोए ना आईआ। असीं जाणीए सच यथार्थ यथा, यदी आपणी अक्ख खुल्हाईआ। साडे कोल अगम्मी अक्खा, बिन नैणां नैण रुशनाईआ। एह खेल प्रभू दा सच्चा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जुग चौकड़ी लेखा दिसदा कच्चा, कल्लर कंध दुहाईआ। एथे भगत भगवान दा जुढ़या मथ्था, मस्तक नूर होवे रुशनाईआ। शब्दी धार गोबिन्द भथ्था, कन्धे कंध उठाईआ। लेखा जाण के तत अट्ठा, त्रै पंज खोज खुजाईआ। सच दुआर खोल्ह के हट्टा, वस्त अमोलक आप वरताईआ। दूई द्वैत मेट के फट्टा, नाम पट्टी इक बंधाईआ। एह खेल पुरख समर्था, हरि करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सब दे इक्ठे होए अंगूठे चार, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। साडा रिहा ना कोई अख्त्यार, बेअख्त्यार दिसी लोकाईआ। पैरां नाल छुहण वाले छूह गए आपणी धार, धार धर्म बदलाईआ। दोहां तों हो गए चार, चार कुण्ट दुहाईआ। एह लेखा असीं समझा ना सके विच संसार, संसारी भण्डारी भेव कोए ना पाईआ। खेल करदे गए वारो वार, वारता जगत विच वड्याईआ। एह सब तों वक्खरा विवहार, रिषी मुनी समझ किसे ना आईआ। एह मंजल उह दुष्वार, जो बिना पुरख अकाल चढ़न कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण समाधी एहो सुध, जो विष्न ब्रह्मा शिव लगाईआ। एसे दी नकल कीती बुध, बुद्धी आपणी लई बदलाईआ। एहो नानक भेव रख्या गुझ, परदा ना किसे उठाईआ। एहो खेल कीती हेंम कुण्ट, दुष्ट दमन ध्यान लगाईआ। एहो धार नैणां देवी कीती लुक, गोबिन्द आपणी कार कमाईआ। एसे धार विच्चों निकले ओह तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जन्म दा लेखा पूर कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण एह समाधी किसे ना लभ्भी, सारे शास्त्र देण दुहाईआ। हथ्थ ना आवे कँवल नभी, कँवल कँवला मुख भुआईआ। गुर अवतार पैगम्बर किसे ना बद्धी, बन्दना सिख्या ना कोए दृढ़ाईआ।

हथ्थ ना आवे पैगम्बरां वाली गद्दी, वदी सुदी ना कोए समझाईआ। कलयुग अन्त अख़ीरी सदी, सद्दा धुर दा रही सुणाईआ। चारों कुण्ट होई बदी, बद सके ना कोए लुकाईआ। मोह विकार दी वहे नदी, कलयुग जीवां रही रुड़्हाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी बद्धी डग्गी, डग्गा काया अंदर खड़काईआ। ममता मोह मार के अड्डी, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। खेल वेखणा प्रभ ने आपणी सदी, सद्दे सब नूं दए सुणाईआ। एह वक्त सुहञ्जणा हुंदा कदी, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी हथ्थ कदे ना आईआ। जिस वेले जोत अकालण धार आवे रब्बी, नूरो नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण समाधी सच समूह, साहिब तेरी सरनाईआ। असीं खेल वेख्या हूबहू, हूबहू नाअरा लगाईआ। तेरे भगतां दा पवित्र होया बुत रूह, दुरमति मैल रही ना राईआ। सब दा शब्द अगम्मा गुरु, तत्तां वाली ना कोए वड्याईआ। जो आत्म परमात्म नाल जुड़ू, जोड़ी धुर दी रिहा बणाईआ। चार जुग दा कलमा पिच्छे मुड़ू, अग्गे वज्जे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे गुर अवतार पैगम्बरो क्यों भगतां अंदर धरया ध्यान, ध्यानी हो के ध्यान लगाईआ। क्यों सांझा होया ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। क्यों हुक्म होया परवान, परवाने रिहा सुणाईआ। खड़ग खिच के विच्चों म्यान, खण्डा रिहा चमकाईआ। जो सब दी करे कल्याण, उह कलमा इक पढ़ाईआ। सारे आपणा पिछला वेखो ज्ञान, जो संदेश्यां विच सुणाईआ। मैं दस्सां इक फ़रमान, फ़ुरनिआं विच्चों प्रगटाईआ। अज्ज उह दिवस महान, जिस दी महिमा शास्त्र सिमरत ना कोए गाईआ। विष्नूं नेत्र नीर लग्गा वहाण, हन्झूआ हार बणाईआ। ब्रह्मा हथ्थ मल लग्गा पछतान, पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। शंकर कूक लग्गा सुणान, टिल्ले पर्बत देण दुहाईआ। तेई अवतार वेखण लग्गे निशान, निशाना एहो आपणा हथ्थ रखाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करन लग्गे पहचान, बेपहचान राह तकाईआ। नानक गोबिन्द खेल महान, हरि करता आप समझाईआ। गोबिन्द किहा अज्ज भगतां चार अंगूठे क्यों इक्ठे कीते आण, चौंह जुगां विच समझ किसे ना आईआ। गोबिन्द कहे मैं लोहगढ़ किले़ विच रीती दस्सी सी पकवान, पक्की इक्को गल्ल सुणाईआ। जिस वेले आवे योद्धा सूरबीर बली बलवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। ओह पिछला सब दा लेखा मुकावे विच जहान, जहालत कूड़ी दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण गोबिन्द की कुछ पक्का, पकवान दे दृढ़ाईआ। क्यों चार जुग तों मिल्या धक्का, चार कुण्ट दुहाईआ। दीन मज़हब रिहा ना सका, ज़ात पात लड़ाईआ। झगड़ा प्या मदीना मक्का, मन्दिर मठ गुरुदुआर रहे कुरलाईआ। क्यों पैगम्बरां बदलीआं

अक्खां, गुर गुर गोद ना कोए उठाईआ। इक बचन दस्स दे सच्चा, सच तेरी वड्याईआ। गोबिन्द किहा मैं इक्को पुरख अकाल दा बच्चा, अन्त अख़ीरी सोभा पाईआ। बाकी सब दा लेखा ओस दे हथ्था, जो समरथ धुरदरगाहीआ। एह वक्त सुहञ्जणा सब नूं कीता इक्ठा, इक्को दर वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। गोबिन्द किहा एह उह पक्का रिध्धा, रिद्धि सिद्धि रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग सच धर्म दी बिधा, रिश्ता इक्को इक दृढ़ाईआ। मार्ग कर के सिध्धा, आत्म परमात्म राह चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार इक बंधाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो एह विवहार नहीं हुंदा जल्दी, चार जुग ना कोए वड्याईआ। एह खेल अछल अछल्ल दी, हरि करता आप कराईआ। जिस वेले नौ सौं चुरानवे चौकड़ी जुग जवानी ढलदी, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप अग्ग होवे बलदी, बिन पुरख अकाल ना कोए बुझाईआ। होणी क़ज़ा किसे तों ना टल्दी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। किसे नूं समझ नहीं घड़ी पल दी, पलक दे अंदर की कराईआ। ओस वेले धार प्रगटे भगतां दे दल दी, दलिद्रयां दलिद्र दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच समग्री इक उपजाईआ। गोबिन्द कहे एह लंगर नहीं लग मातर, लग्न इक लगाईआ। सब दा सुनेहड़ा धुर दा पात्र, पत्रका
२७ विच लिखाईआ। जिस वेले दीन दुनी होवे आतर, अदल इन्साफ़ आप कराईआ। ओस वेले प्रभ भगतां करे ख़ातर, सेवक २७
२१ सेवादार रूप प्रगटाईआ। कोझे कमले बणा के चातर, चातरक आपणे दए वखाईआ। मनुआ मन करे सांतक, सति सरूप २१
विच समाईआ। कलयुग कूड़ी बुझा के आतश, अन्तशकरन दए बदलाईआ। जिन्हां दे पिच्छे जा के आवे वापस, विच आपस जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच भण्डार इक वखाईआ। जन भगतां लंगर मेल घृत घिओ, घिरना विच ना कोए रखाईआ। गुरमुखो पुरख अकाल तुहाडा इक्को सांझा पिउ, गोबिन्द गुर ल्या मनाईआ। सच प्रीती ओस नूं दयो, सीस जगदीश भेंट कराईआ। दूसर जगत किसे ना निउँ, इष्ट अवर ना कोए रखाईआ। तुहाडे अमृत बरखे मिहों, मेघला इक्को धार बरसाईआ। अज्ज पक्का कर ल्यो निहों, अग्गे ना कोए तुड़ाईआ। रहिणा सचखण्ड दुआरे दूजा ना कोए थाउँ ना कोई थिउँ, दुआरा दर ना कोए वड्याईआ। भरम भुलेखे विच ना रिहो, रहिबर बेपरवाहीआ। वस्त अमोलक इक लिओ, जो दो जहानां पार कराईआ। सच दुआरे धुर दे बिहो, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। भुल्लके कदी ना किहो, क्यों कामल मुर्शद वेख वखाईआ। सब दे अंदर तीर निराला लाणा बिरहों, विछोड़े विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच प्यार दा सांझा घृत, खोल्हणहारा सुरत निरत, दो

जहानां आवे फिरत, फिरत भगतां नाल कमाईआ। पंज चेत कहे जन भगतो दूजी चुल्ह कोई ना रोटी, अन्न पकवान ना कोए वड्याईआ। जिन्हां दे अंदर वासना खोटी, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। जिन्हां रसना लाई बोटी, गोबिन्द गुरु ना दए गवाहीआ। ओह रोंदे कोटन कोटी, राए धर्म दए सज़ाईआ। ना सन्यासी ना उह जोगी, वैरागी तिआगी सर्ब सजाईआ। सहारा मिले ना लोक परलोकी, चरण कँवल ना कोए वड्याईआ। किसे कम्म ना आवे पढ़ी पोथी, पुस्तक बग़लां विच टिकाईआ। जिन्हां ने प्रभ दी मंज़ल सोची, सोच समझ दए गवाहीआ। उन्हां दा विचोला बणदा देखो रविदास चमारा मोची, गुरमुख नाम बदलाईआ। जो सुक्की खा के रोटी, आपणा झट लँघाईआ। हुण भगतां दे भण्डारे भराउण लग्गा किसे दी ख़ाली होवे तन ना कोठी, आक़ा नज़र कोए ना आईआ। लओ इक अकाल दी ओटी, ओड़क ओहो होए सहाईआ। अन्न खाधयां मंज़ल चढ़ गए चोटी, छड कूड़ लोकाईआ। दूजी चुल्ह सदा थोथी, बिना काया चुल्ह तों बाकी वस्त सर्ब पराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा वखाईआ। सवा पंज दा आया वक्त, पंज चेत दए वड्याईआ। मैं इक्ठे हुंदे वेखे भगत, भगवान मिल मिल वज्जी वधाईआ। इस नूं समझे कोई ना जगत, जीवन जुगत ना कोए दृढ़ाईआ। एह खेल ओस शक्त, जो शख्सीअत सब दी दए बदलाईआ। जिस वेले राम दुहाई पाई सी भरत, बाहवां सक्खणीआं संग उठाईआ। ओस वेले राम इक्की मिन्ट गया सी अटक, राम राम विच ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल ने निगाह मारी उपर धरत, अयुध्या वासी देण दुहाईआ। ओस वेले लाई शर्त, हुक्म हुक्म विच्चों सुणाईआ। जिस वेले आवां उपर धरत, आपणा वेस वटाईआ। जेहड़े राम तेरे दरस नूं रहे तरस, तेरा राम हो के उन्हां लवां मिलाईआ। एह पूरब दा लेखा पिछला क़र्ज़, क़र्ज़ा दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा वेख वखाईआ। पंझी पंझी होया जोड़, जोड़ी धुरदरगाहीआ। जिस वेले बुध नूं ज्ञान होया हेठां बोहड़, पीपल पीतल रूप वखाईआ। ओस ने वेख्या तक्क के ग़ौर, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कलयुग वीहवीं सदी मचिआ शोर, चारों कुण्ट दुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर छड्डके डोर, पल्लू आपणा गए छुडाईआ। किसे दी रही किसे ना लोड़, आसा पूर ना कोए कराईआ। ओस वेले पुरख अकाला रिहा बौहड़, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। कलयुग दिसे अन्धेरा घोर, चन्द नूर ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा प्या पंज चोर, गृह मन्दिर रहे लुटाईआ। उस नूं नज़री आया भगतां दी प्रभ ने आपणे हथ्थ रखी डोर, शब्दी तन्द बंधाईआ। पंझी पंझी इक दूजे दे वसण कोल, पंझी पंझी जोड़ जुड़ाईआ। उन्हां दे अन्तर नाम अनमोल, तूं मेरा मैं तेरा दिता टिकाईआ। गलवकड़ी पा के आपणा आप लैणा तोल, तराज़ू नज़र कोए ना आईआ। बुध ने खेल वेख्या उपर धौल, बीस बीसा ध्यान

लगाईआ। एसे कारण किसे नाल नहीं मारया रोल, लहिणा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। पंज उँगलीआं नीचे देण शहादत, शबे रोज़ शनवाईआ। उह गुरुआं दी इबादत, जगत तों ओहले सेव कमाईआ। एसे विच परम पुरख करदा रिहा सख़ावत, रहमत आप कमाईआ। बख़्शदा रिहा नाम अमानत, अमलां विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, पंजां उँगलीआं दे अगले पोटे पुरख अकाल दे दीनां मज़हबां वाले टोटे, टुकड़यां दे इशारे शरअ विच वखाईआ। क्यों पाल सिँघ ने डाही अग्ग, अगनी अग्ग तपाईआ। एह मर्यादा जग, बिना भगत भगवान दे दूजा यज्ञ कम्म किसे ना आईआ। भावें कोटन कोटि साधू लओ सद्द, साधना विच ना कोए सफ़ाईआ। जेहड़े आप मंज़ल चढ़ ना सके अद्ध, अगला भेव की खुल्हाईआ। जिन्हां सूर गाँ ख़ाधी वढ्ढ, मच्छिआं मास वटाईआ। उह श्री भगवान तों सदा लई हो गए अड्ड, राए धर्म दए सज़ाईआ। जिस ने धर्म निशाना देणा गड्ड, सतिजुग साची धार प्रगटाईआ। ओह सब तों खेल करे अलग, वखरी नीती दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक समझाईआ। क्यों पाणी दा जग रख्या नेड़े, सवा सेर भराईआ। जिस वेले गोबिन्द ने सरसा विच रोड़्हे सी बेड़े, तुलहा हथ्थ ना कोए रखाईआ। ओस ने पंज बुक भरे एहो मैनूं बथेरे, तोल सवा सेर वखाईआ। जेहड़े आ गए मेरे घेरे, उन्हां नूं तृखा रहे ना राईआ। ओहो जल अन्त नाल लै गया विच नदेड़े, गोदावरी विच सुटाईआ। फिर फड़ के खण्डा फेरे, दो जहान दए हिलाईआ। इक्को घर वखा के गुरु गुर चेरे, चेला गुर वड्याईआ। जिन्हां उत्ते पुरख अकाल करे मेहरे, मेरा अमृत उन्हां अंदर दए टिकाईआ। उन्हां मारना ना पए चुरासी वाला गेड़े, जम की फाँसी दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सो सब दे अन्तर अमृत दए टिकाईआ। क्यों राख मुट्ठी दब्बी, स्वाह ख़ाक रूप समझाईआ। एह खेल इलाही रब्बी, नूरो नूर रुशनाईआ। जिस दा भेव दस्से कोई ना गद्दी, सदीआं दा राह तकाईआ। परदयां विच्चों किसे ना लभ्भी, खोज्यां हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जिस वेले गोबिन्द पार करनी सी सरसा नदी, मुट्ठी ख़ाक चरण जोड़े विच छुपाईआ। उत्तों ज़ोर नाल दब्बी अड्डी, भार दिता पाईआ। जिस वेले आवे वीहवीं सदी, सदमा पए लोकाईआ। हँस बुद्धी होई कग्गी, काग वांग कुरलाईआ। चारों कुण्ट लग्गणी अग्गी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। ओस वेले परम पुरख दीन दयाल जोत इक्को जगी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन प्रेम विच जाए बझी, नाता धर्म दा धर्म बणाईआ। हरिसंगत सच पकवान वास्ते जाए सद्दी, होका धुर दा इक सुणाईआ। जेहड़ी मन कल्पणा किसे दुआरिउँ नहीं रज्जी, उस दी तृष्णा पूर कराईआ। ख़ाक

कहे मैं लुक के विच डब्बी, आपणा झट रही लँघाईआ। मैनूं सारे कहिंदे रहे वड्डी, रिशवत खोर जगत लोकाईआ। जिस वेले मैं धार वेखी बग्गी, सति सफ़ैदी सोभा पाईआ। मैं कुद्दी नच्ची टप्पी, आपणी खुशी लई बणाईआ। गोबिन्द नाल कर के पक्की, अगली गंढु रखाईआ। ओस कथा कहाणी दस्सी, सहज नाल समझाईआ। जिस वेले सति धर्म दी धार दो जहानों नस्सी, चारों कुण्ट कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, साचा रंग इक वखाईआ । सवा गज़ कपड़ा गुर अर्जन दी धार, रावी कन्ढ्ढ दए दुहाईआ। थल्ले रखी ना कोए दुशाल, मृगशाला ना कोए वड्याईआ। इस दी बण के सच्ची धर्मसाल, बैठा ध्यान लगाईआ। निगाह कर के परे दो जहान, पुरख अकाल विच समाईआ। सच संदेसा दे श्री भगवान, हुक्मी हुक्म दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ा कूड़ दिसे निशान, चारों कुण्ट दुहाईआ। पुरख अकाला देवे धुर फ़रमान, नाम संदेसा इक सुणाईआ। सदी बीसवीं चारों कुण्ट होए हैरान, हैरानी सब दे अंदर आईआ। सन्त रहे ना कोए जिस नूं होवे ब्रह्म ज्ञान, जगत विद्या विच वड्याईआ। ओस वेले लेखा होवे भगत भगवान, भगवन भगतां मेल मिलाईआ। सवा गज़ दा दे के इक्ठा दान, सब दे अंदरों आसण दए बदलाईआ। उन्हां नूं लभ्भणा पए ना विच्चों बीआबान, काया मन्दिर करे रुशनाईआ। गुर अर्जन खुशी नाल किहा वाह वाह तेरी खेल महान, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ।

३० ३०

२१ २१

सो वेला वक्त पहुंचिआ आण, सवा गज़ दा गज़ सवा सवार्थ सब दा पूर कराईआ। एह पुराणे कपड़े दी जेब, जिस नूं जेबकुतरा ना कोए चुराईआ। जिस वेले भीलनी नाल राम कीता फ़रेब, चरण धो के खुशी बणाईआ। ओस ने किहा बेर, राम ने किहा सेब, मुख नाल मुफ्त सालाहीआ। भीलणी किहा कुछ लिख दे उत्ते कतेब, अक्खरां नाल वड्याईआ। राम किहा भीलनी भगत भगवान दी खेल जाणदे नहीं चार वेद, शास्त्रां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ । एह लभ्भदा नहीं भेव, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जिस दा निशाना इक्को सेध, मंज़ल धुरदरगाहीआ। उह आपे खेले आपणी खेड, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्त जिस वेले भगतां दे पकवान दी बणाउण देग, रिध्धा पक्का आप सुहाईआ। ओस वेले ग़रीब निमाणयां दी आपणे नाम नाल भर देवे जेब, ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। सच भण्डारा धुर दरगाहों देवे भेज, भजन बन्दगी दा झगड़ा देवे चुकाईआ। कमलिए अंदर वड़ के देवे जोती तेज, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सदा आत्मा दी माणे सेज, सच सिँघासण सोभा पाईआ। भीलणीएं एह पुराणी इस कर के रखी शायद कोई गुरसिख भुल्ल के इहनूं ना आवे वेच, लालच टकयां वाला रखाईआ। क्यों कलयुग ने अमीरां ग़रीबां नूं धोखे फ़रेब दी पा दिती गेझ, शाह कंगाल बचया नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा सब दा

रिहा मुकाईआ। पाटी पुराणी पगड़ी कहे ओ बावन, बलि दुआरे ध्यान लगाईआ। तेरा बणया कोई ना ज़ामन, ज़ुम्मेवारी ना कोए रखाईआ। जगत तृष्ना कूड़ी कामन, कामना कूड़ लोकाईआ। प्रभ दा खेल आहमणो साहमण, समां समें विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पगड़ी कहे मैनूं बाहमण बावन आया बन्न्ह के, वेस ग़रीबां वाला वटाईआ। इक ईन आया मन्न के, हुक्म धुरदरगाहीआ। पैंडा मारया चल के, भज्जिआ वाहो दाहीआ। इक आवाज़ आई खल के, तूं मेरा मैं तेरा ढोला दिता गाईआ। फेर दुआारा बहि गया मल्ल के, आपणी सुरत रही ना राईआ। ढाई करमां विच छल के, माण दित्ता मिटाईआ। ओस वेले बलि ने आपणी पगड़ी उत्ते धर के, धरनी दान कराईआ। अग्गों बावन किहा हस्स के, बलि ख़ाली हथ्थ दे वखाईआ। उह आया कोल नस्स के, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कुछ मैनूं जा दस्स के, की वेस ल्या वटाईआ। बावन किहा फिर वेख अक्ख पट्ट के, हुक्म दिता जणाईआ। जां अक्ख पट्टी ते वेखे खेल ओस समरथ दे, जो हर घट रिहा समाईआ। फिर किहा कुछ दान भगत दी झोली घत्त दे, मेरी तेरे अग्गे अरज़ोईआ। बावन किहा तुसीं भगत प्रभू दे सच दे, आह पाटी पगड़ी तेरे सिर टिकाईआ। जे तूं नहीं सांभणी फिर रविदास दे हथ्थ दे, जो चमरेटा धुर दा नज़री आईआ। चमरेटे कोलों जाणी कोल ओस जट्ट दे, जो जटा जूट सारे दए विकाईआ। जिस ने भण्डारे खोल्हणे धुर दे हट्ट दे, हटवाणा रहिण कोए ना पाईआ। ओस दे भगत प्रेम विच होणे सच दे, गुरमुख गुरसिख सोभा पाईआ। पाट्टीआं लीरां एह तन्द ओस पट्ट दे, जो भगत भगवान दी धार विच्चों खिचाईआ। एहो जिहे बस्तर संसार विच किते नहीं लभ्भदे, खोज खोज थक्की लोकाईआ। इहो खेल पुरख समरथ दे, जुग जन्म दे लहिणे रिहा मुकाईआ। लंगर पकाउण लग्गिआं किसे गल ना होवे होर कोटी, कोटी नहीं कोट जन्म दा ध्यान लगाईआ। जिस तरह तन दा इक्को बस्तर ते इक्को पकवान ते प्रेम दी रोटी, रट्टा जगत ना कोए वखाईआ। क़मीज़ नालों एह हुंदी सदा उत्ते छोटी, छोटी नहीं छोटयाँ तों वड्डे देणा बणाईआ। एह विचार फ़रीद ने सी सोची, जिस वेले रोटी काठ खा के शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला रिहा उठाईआ। जिस वेले सीता राम दा हुंदा सी विआह, चिल्ला धनुश तीर चलाईआ। ओस वेले महारिषी मल के आए सुआह, तन भबूत रमाईआ। इक्कठयां कीती सलाह, आपणी आस दृढ़ाईआ। जे कोई कुछ सानूं दए खुवा, आसा तृप्त कराईआ। ओधरों सीता दी सहेली गई आ, नंचणी जिस दा नाम सुणाईआ। ओहने हस्स के किहा तुहाडे मुख मिट्ठा देवां पा, खुशी दयां बणाईआ। उन्न्हां नैण लए उठा, अक्ख इक्को वार टिकाईआ। उधरों तेज़ आई हवा, ओढ़न दिता उडाईआ। बिखड़े वाल हवा ने

दिते फैला, इधर ओधर भज्जण वाहो दाहीआ। ओधरो जनक गया आ, राज मन्त्री पंज नाल सलाहीआ। सब दे नैण गए शरमा, साधू सिर ना कोए उठाईआ। की खाणा खाओ ग़िज़ा, मैनूं दयो समझाईआ। ओस सहेली किहा राजन इन्हां नूं होया शुदा, बदी लई बदलाईआ। मेरे वाल खुल्ल्हे वेख के हँसी दिती उडा, ताली दिती वजाईआ। मेरे नैण दिते रुआा, हन्झूआं धार वहाईआ। जनक किहा इहना दा एहो जिहा सुभाअ, की सज़ा देवां भुगताईआ। मैनूं ऐं दिसदा जिस वेले कलयुग अन्त अख़ीरी गया आ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जगत सन्त सारे होण रफ़ा, रफ़ाक़त सच ना कोए कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया इनां नूं तूं खुल्हा झाटा दे वखा, बाटा हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। ओस वेले किरपा करे बेपरवाह, निरगुण आपणी दया कमाईआ। साचे भगतां लए मिला, मेला हरि जगदीश कराईआ। सतिजुग दी साची मरियादा लए चला, त्रेता द्वापर कलयुग पैंडा दए मुकाईआ। साचा पकवान लए पका, पक्की सब नूं दए कराईआ। प्रभ नूं मिल्यां रंडीआं तों दुहागण रूप ना लए वटा, बिना दुहागणां तों खुल्हा सिर नज़र किसे ना आईआ। एसे कारण एह हुक्म दिता वरता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा सब दा पूर कराईआ। जिस ने जीवां दा खाधा होवे मास, रसना रस वखाईआ। उह भगतां दी पूरी कर ना सके आस, जिस दी आशा मन विच हल्काईआ। जुग जुग जन भगतां दी भगवन करे तलाश, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। उन्हां नूं जन्म तों पहलों दी मिली शाबाश, जो रसना जेह्वा मुख ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साख्यात, साहिब स्वामी दया कमाईआ। ढाई गज़ लम्मी कोरी धोती, धोबी खुम्ब ना कोए चढ़ाईआ। एह राधा दी आसा लोची, कृष्ण ओढुन दिता टिकाईआ। इक दिन वेख के चमकदी जोती, उत्ते परदा दिता पाईआ। आप आपणी उँगल रख के उत्ते ठोडी, सोच सोचां विच डुबाईआ। की मैं हो गई इहदे जोगी, जोगणां वाला वेस वटाईआ। की एह रसीआ की एह भोगी, की एह अनरस विच समाईआ। की एह संजोगी की एह विजोगी, की एह नाथ त्रैलोकी, की सलोकी रिहा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। धोती कहे मैं साफ़ सुथरी कोरी, कोरापन दयां समझाईआ। राधा बांकी नढ्ढी छोहरी, शौहर आपणा वेख वखाईआ। मैं बण के डूँघी घोरी, घोर अन्धेरा राह तकाईआ। जां तक्कया प्रभ सब दे अंदर वढ़या चोरी चोरी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं कीती बौहड़ी बौहड़ी, दिती हक़ दुहाईआ। मैनूं आवाज़ आई ओस समझ विच कुछ अगली गल्ल औड़ी, परदा दिता उठाईआ। ओह वेख कलयुग चौधवीं सदी आई दौड़ी, मुहम्मद दए गवाहीआ। चारों कुण्ट उम्मत वेल होणी कौड़ी, अमृत रस ना कोए भराईआ। तेरे तन्द तन्द दी डोरी, डौरु सब दा दए वजाईआ। ओस वेले

इक पुरख अकाला दीन दयाला शब्द अगम्मे चढ़ना घोड़ी, अस्व आसन नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पिछला लेखा वेख वखाईआ। दीपक कहे मैं जगदा चिराग़, चरागाहां विच रुशनाईआ। बिना भगतां तों रिहा कोई ना जाग, सुत्ती जगत लोकाईआ। अबिनाशी करता बदल रिहा समाज, समग्री मेरे विच टिकाईआ। मैनूं खुशी होई आज, आपणा रूप बदलाईआ। सति धर्म दा सच रिवाज, रवादार ना कोए बणाईआ। जन भगतो आपणे काया मन्दिर साचा नूर वेख्यो प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। परम पुरख ते करना इक विश्वास, विशा इक्को इक समझाईआ। दीपक कहे मेरी जुगां जुगां दी पूरी कर के आस, भगतां नाल दिती वड्याईआ। मैं जा के सब नूं कीता तलाश, बाहरों अंदर वेख वखाईआ। भगत भगवान इक दूजे दे दास, सेवक विच सेवक सेवा सच सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दी विंगी टेडी सोटी, सुत्यां रही उठाईआ। जिस विच फसे दीन दुनी लोकी, अलोकक भेव ना कोए खुल्हाईआ। समझ ना आए अगम्मी पोथी, नादी धुन ना कोए शनवाईआ। मन बुद्धी होई थोथी, बबेकी रूप ना कोए वटाईआ। मंज़ल चढ़या कोए ना चोटी, अद्धविच्चकारे डेरा लाईआ। धुर दी सोच किसे ना सोची, समझ समझ ना कोए बदलाईआ। एह खेल खेलणी नाल रविदास चमारे मोची, निरगुण आपणी कार कमाईआ। इक दिन अंदरों बुझा के जोती, अन्ध अन्धेरा दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल इक प्रगटाईआ। रविदास वेखे चार चुफेरा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जिधर तक्के उधर अन्धेरा, सुखमन टेडी बंक रही कुरलाईआ। कोई ना बन्न्हे बेड़ा, पार किनारा ना कोए समझाईआ। अंदर कूड़ा मच गया झेड़ा, पलक पलक लड़ाईआ। ओस ज़ोर लाया बथेरा, नूर नज़र कोए ना आईआ। फेर रो के किहा प्रभू तूं मेरा मैं तेरा, दूजा झगड़ा दिता मुकाईआ। भगतां नाल टेडी बंक दा कदी ना करीं बखेड़ा, इस दे विच भुआईआ। इस तों अग्गे दुआरा तेरा, बिना तुध दूजा नज़र कोए ना आईआ। अज्ज तों एह वी छुट गया खैह्ड़ा, पैंडा दिता मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, विंगे टेडे रसते राह, पुरख अबिनाशी बण मलाह, शब्दी सतिगुर दे सलाह, सिध्धे इक्के वार कराईआ। सब ने बस्तर पहनणे चिट्टे, चिट्टी धार समाईआ। किसे ने पूजणे नहीं पत्थर वट्टे, इट्टां सीस निवाईआ। किसे चड़ाउणे नहीं टके, भेंटा विच वड्याईआ। तुहाडी आत्मा परमात्मा दे नाते सके, सज्जण इक्को दिता समझाईआ। बाकी चुक्क गए दीन दुनी दे रट्टे, रट्टण इक्को लैणी लगाईआ। माणक हो के रुलणा नहीं विच घट्टे, माटी ख़ाक सीस पुआईआ। जन भगतो तुसीं ओस दवारे वस्से, जिथ्थे वस्से धुरदरगाहीआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा चुकावे हक़े, हक़ीक़त दा मालक ख़लक दा ख़ालक इक्को बेपरवाहीआ। जन भगतां मौली तन्द बद्धा खब्बे गिटे, मुहम्मद खुशी मनाईआ। चौदां तबक दुहथ्थढ़ मार के पिट्टे, दरोही दरोही नूर खुदाईआ। सानूं केहड़े खाते सुट्टें, जगह दे समझाईआ। साडे दवारे जाणे लुट्टे, मच्चे लुट्टे लोकाईआ। भगत भगवान दी धारों फुट्टे, जोती जोत डगमगाईआ। ओसे दे कलमे विच जुट्टे, गुर अवतार पैगम्बरां दी छड गए पढ़ाईआ। साडे किसे कम्म नहीं आउणे कीते गुस्से, ताअने नाल सुणाईआ। अबिनाशी करते भाग लगाया उन्हां दे जुस्से, जिस्म ज़मीर दिती बदलाईआ। निरगुण हो के उन्हां पुच्छे, सरगुण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा सच घर, सचखण्ड दी साची धार, दरगाह साची दा दर्द प्यार, मुर्शदां दा मुर्शद मुरीदां दा मुरीद मददां दा मददगार, मुद्दतां दा मूल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मौली दा तन्द मुहम्मद दी मँग, सूरा सरबंग अनन्द दा अनन्द चन्द दा चन्द करे रुशनाईआ। आटा गुन्हणा नहीं खुल्ल्हे झाटे, शिव पार्बती समझाईआ। एह वस्त लभ्भणी नहीं किसे हाटे, वणजारा वणज ना कोए कराईआ। चार जुग प्रभ ने वेखणे खेल तमाशे, गुर अवतार पैगम्बरां कार भुगताईआ। अन्तिम लेखा जाणे पृथ्मी आकाशे, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। दीन दुनी जिस वेले होवे विच घाटे, साचा वणज ना कोए कराईआ। गोबिन्द दा भुल्ल जाण अमृत पीता बाटे, मन विकार हँकार कुरलाईआ। ओस वेले करे खेल पुरख समराथे, हरि करता धुरदरगाहीआ। मार्ग लावे साचे, सति सच इक समझाईआ। सतिजुग साचे आखे, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जो उत्तम पकवान प्रभ रस चाखे, तिस दा द्वैत दलिद्र रहे ना राईआ। ओस अन्न नूं बणाए ना कोए खुल्ल्हे झाटे, वेसवा रूप ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जन भगतो किसे दा बस्तर पाटा ना होवे पुराणा, प्राणीआं प्रान दए वड्याईआ। प्रभू दा प्यार ना होवे बेगाना, बेगानी धार ना कोए वखाईआ। तुहाडे साहमणे बदल जाणा ज़माना, ज़ुम्मेवार रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा पैणा ज़िमीं असमाना, अफ़गानां विच दुहाईआ। पुरख अकाल ने करनी इक कमाना, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। जिस कारण बणया अज्ज दीवाना, दीवाने सारे देणे वखाईआ। इक्को नूर इलाही प्रगट होवे अमामा, अमल वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस दा वज्जणा हक़ दमामा, शब्द डंके नाल शनवाईआ। ओस नूं झुकणे कृष्णा रामा, सिर सके ना कोए उठाईआ। एह खेल करे श्री भगवाना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक आपणा परदा दए उठाईआ। खुल्ल्हे जल दा बाटा कहे मैं द्रोपती

दी दस्सां पुकार, जो निउँ निउँ सीस निवाईआ। जिस वेले दोसासण बस्तर रिहा सी उतार, दर्योधन अक्ख उठाईआ। नेत्र रो पई ज़ारो ज़ार, नैणां नीर वहाईआ। पांडो होया ना कोई ख़बरदार, बल बाहू ना कोए धराईआ। अन्तर कीती इक पुकार, वाह वाह तेरी बेपरवाहीआ। जे तूं काहना कृष्ण मुरार, सखीआँ दा हो सहाईआ। मैं तेरे चरण कँवल बलिहार, हउँ वारी घोल घुमाईआ। इक वारी दरस विखाल, मुकन्द मनोहर तेरी सरनाईआ। शब्द अगम्मी आवाज़ आई कुछ सुणाण, सहज दिता दृढ़ाईआ। पिच्छे मार ध्यान, जल बाटा पाणी भरया सोभा पाईआ। ओस विच्चों मूर्ती नज़र आई भगवान, नूरी नूर नूर रुशनाईआ। आह किसे प्रेम दा दान, तेरी झोली पाईआ। तेरी लजपत रख विच जहान, परदा सके ना कोए उठाईआ। द्रोपत रो के किहा श्री भगवान, बेनन्ती इक सुणाईआ। फेर कद होवें मेहरवान, मैनूं दे दृढ़ाईआ। अबिनाशी करते किहा हुण बंसरी वाला शाम, जिस वेले कलयुग अन्धेरा होया शाम, ओस वेले शाम विच शमां ना कोए जगाईआ। राम कृष्ण हो जाणे बदनाम, बदीआं दा झगड़ा ना कोए मुकाईआ। कलमयां वाली ना रहे कलाम, मन्त्रां वाली ना कोए शनवाईआ। ओस वेले खेल करां महान, मेहर नज़र उठाईआ। द्रोपत आपणयां भगतां दे अंदर एह जल करां परवान, जिस विच्चों काहनां दा काहन तैनूं नज़री आईआ। ओस हो के किहा हैरान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। प्रभू की एह ठीक तेरा बिआन, हुक्म नाल वड्याईआ। श्री भगवान किहा जिस वेले मन कल्पणा होवे शैतान, चार कुण्ट कुरलाईआ। ओस वेले ज़रूर भगतां दी सहायता करां आण, एहो मेरी वड्याईआ। चुरासी विच्चों कर पहिचाण, बेपहिचाण लवां मिलाईआ। ओस दा लेखा चुकाया आण, बाटा नहीं एह पिछला घाटा सब दा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। काशी राम बख़्शीश ने सांझी रिध्धी दाल, दलिद्र दिता गुआईआ। गोबिन्द दी लेखे लग्गे घाल, जिस धायल हो के सेव कमाईआ। माछूवाड़े दा सवाल, बेनन्ती पुरख अकाल जणाईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ नगारा वज्जा काल, चारों कुण्ट दुहाईआ। ओस वेले कवण करे संभाल, अवतार पैगम्बर नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द, शब्द गुरु सब दी करे भाल, गुरमुख गुरसिख वेख वखाईआ। उन्हां नूं फड़ के मेले मेरे नाल, जगत विछोड़ा पन्ध कटाईआ। उन्हां दी सेवा इक महान, महिमा बेपरवाहीआ। भगतां दा पक्कणा इक पकवान, श्री भगवान वेख वखाईआ। एह योद्धे सूरबीर उह बलवान, जो बलि दुआरे दुआरपाल सोभा पाईआ। जिन्हां नूं बावन पहलों मिल्या आण, डंडावत कर के बण गया अन्जाण, समझ विच समझ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा खेल रिहा वखाईआ। क्यों पाणी पाए गिरधारा, गोदावरी दए गवाहीआ। जिस दा गोतम सुहाया किनारा,

अन्त बैठा डेरा लाईआ। जिथ्थे गुज़री दा गया दुलारा, गोबिन्द गुर शहिनशाहीआ। ओस दा शब्द दा इशारा, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जिस वेले आवे कल कल्की अवतारा, निरगुण निरवैर नूर खुदाईआ। साचे भगतां पावे सारा, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। सच प्रेम दा बण पनिहारा, सेवा धुर दी आप कमाईआ। भगतां दा भगत बणया सहारा, नाता दुनियां नालों तुड़ाईआ। सब दा सांझा कर प्यारा, प्रीती प्रेम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गिरधारे दा दस्स के इक इशारा, गुरमुख सारे सोहे सच दुआरा, जिस दुआरे दा वरतारा बेपरवाहीआ। क्यों सुरिंदर सिँघ दिती अग्ग डाह, पत्त टहिणी फूक फुकाईआ। इस ने साढे तिन्न दिन राम दी सेव लई कमा, पंचबटी विच आपणी धूणी ताईआ। इक दिन मथ्थे उत्ते त्रसूल निशान लगा, जञ्ञू कन्नां नाल लटकाईआ। जल पाणी गड़वी हथ्थ उठा, धोती तेड़ लई सुहाईआ। हरीअँ हरीअँ कहिंदा गोदावरी कन्ढे गया आ, आपणी खुशी मनाईआ। ओधरों राम ने फड़ के बांह, हलूणा दिता लगाईआ। अज्ज ते कुछ खुवा, भुक्ख रही सताईआ। इधर उधर मारया इस ध्याँ, अक्ख प्रतख आप उठाईआ। कोई ईंधन माचस लकड़ी हथ्थ गया ना आ, रो के दिता सुणाईआ। गल पल्लू वास्ता पा, राम तेरे नाम दुहाईआ। मैनूं सेवा होर समझा, जेहड़ी हथ्थां नाल कमाईआ। राम ने किहा ओह वेख बेपरवाह गया आ, राम दा मालक राम फेरा पाईआ। कुछ हौली हौली रिहा सुणा, गीत अगम्म दृढ़ाईआ। राम तेरा त्रेता द्वापर कलयुग जाए विहा, वहिंदा वहिण वगाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा जाए छा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। ओस वेले गुर अवतार पैगम्बर कोई ना होवे सहा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। बिना भगवन तों भगतां नूं साची वस्तू सके ना कोई खुवा, बनावण वाला नज़र कोए ना आईआ। राम ने किहा प्रभू इहनूं बणा लै विच गवाह, शहादत दए भुगताईआ। अज्ज एस दे कोल ना कोई माचस ना स्वाह, ना धूणी नज़री आईआ। पुरख अकाल किहा जे तेरी राम एहो आशा ते फेर एसे तों अगनी देवां बला, सेवा सच कमाईआ। जिथ्थे भगत भगवान इक्ठे होवण आ, मिल के वज्जे वधाईआ। एसे कारण एह खेल दिता खिला, क्यों राम दा राम विचोला, भगत दा भगत गोला, दोहां दा सांझा बोला, रौला विच रिहा ना राईआ। उत्तों दाल मूल नहीं ढकणा, परदा जगत वाला पाईआ। जिस प्रभू ने तुहाडा परदा कज्जणा, ओह वेखे चाँईं चाँईंआ। ओस दे दवारिउँ खा के जाए कोई ना सक्खणा, भुक्खयां भुक्ख मिटाईआ। एह मिठ्ठा रस नालों मक्खणा, जे काहन नूं पुच्छो उह वी तुहाडी दए सफ़ाईआ। क्यों जिस पकवान दा प्रभ ने रस चखणा, ओस नूं चक्षू दिब्ब नेत्र ज्ञान नेत्र निज नेत्र वेख ना सके राईआ। जिस ने सब दे भण्डारे कीते सक्खणा, ख़ाली देण दुहाईआ। सो भगतो तुहाडा पूरा करन आया बचना, लेखा पिछला वेख वखाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। कलयुग कहे मेरी काली धार, जन भगतो कालख दयो मिटाईआ। मैनूं सुट्ट के विच दाल, मेरा दलिद्र दयो गवाईआ। मेरी लेखे लग्गे कीती घाल, मैं धायल कीती ख़लक खुदाईआ। बेनन्ती विच करां सवाल, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मैं समझदा तुसीं ओस प्रभू दे लाल, जो लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। तुसीं बैठे ओस सच्ची धर्मसाल, जो धर्म दुआरा इक्को सोभा पाईआ। मेरा ओस नूं दस्सओ हाल, हालत देणी जणाईआ। सदी चौधवीं सब दे सिर ते कूके काल, डौरु डंक रिहा वजाईआ। जन भगतो तुहाडे नेड़ ना आवे की उहदी मजाल, आपणा बल ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। बरछी कहे मेरा गोबिन्द वाला निशाना, निशाने देणे बदलाईआ। कड़छी कहे मैं वेखां कच्चा पक्का दाणा, दाणा दाणा फोल फुलाईआ। बरछी कहे मैं वेखणा ओह जवाना, जो सूरबीर बेपरवाहीआ। कड़छी कहे मैं सुणना ओह गाणा, जो निरगुण निरगुण परदा लाहीआ। बरछी कहे मैं गोबिन्द नालों गुरमुख रहिण नहीं देणा बेगाना, शब्द शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। कड़छी कहे मैं खुवाणा ओह खाणा, जो खाने दए बदलाईआ। बरछी कहे लोह गढ़ दा मालक हुण गया विच श्री भगवाना, जिस नूं समझे ना कोए ज़माना, जिस दा चिल्ला तीर कमाना, निशाना रखे दो जहानां, अणयाला आपणा आप जणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी शब्द हुक्म वरताईआ। सब ने दो दो हो के पाई गलवकड़ी, प्रेम प्रीत बणाईआ। इक्ठे हो गए शूद्र वैश ब्राह्मण खत्री, ख़तरा दीन मज़हब रिहा ना राईआ। तोल तुल गए इक्के तक्कड़ी, धर्म दुआर वज्जे वधाईआ। ब्राह्मणां कोलों फलाउणी नहीं पत्री, नछत्र ग्रह नेड़ कोए ना आईआ। नानक धार निरगुण पैंती अक्खरी, बावन अक्खरी गोबिन्द विच समाईआ। जिस दी खेल सदा वक्खरी, जुग रीती दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा धुर दा घर, गृह साचा इक समझाईआ। केहर सिँघ दुआबिउँ लिआया तक्कड़ी दा छाबा, आपणा पन्ध मुकाईआ। नानक दा धड़वाई सी एहदा बाबा, जो नित उठ के सेव कमाईआ। ओह मुस्लिमीन नानक दे चरण मन्नदा सी काअबा, इस तों परे ना कोए खुदाईआ। इक दिन केहर सिँघ नाँ नूरा सत्त साल दा कोल आ के मारे आवाज़ा, अब्बा अब्बा कहि के सुणाईआ। ओस किहा अग्गे नेड़े आ जा, कुछ तैनूं दयां खुवाईआ। बालक कोल आ के गुस्से विच मारया दाबा, की मेरे हथ्थ फड़ाईआ। झट नानक किहा शाबा, हथ्थ फड़ उत्ते टिकाईआ। उन किहा तूं मेरे अब्बा दा राजा, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। तेरी तक्कड़ी विच की खाजा, कुछ मैनूं दे खवाईआ। नानक किहा इस दा सब तों वक्खरा स्वादा, रसना चख समझ ना आईआ। ओह बच्चा कहे तेरे शब्द नाल मैं जागा, मेरे अंदर होई रुशनाईआ।

मैनूं ऐं दिसदा तूं तोलण वाला डाहढा, घाटा रहिण कोए ना पाईआ। मैं वी वस्त लैणी रो प्या मार के डाडां, कूक कूक दुहाईआ। नानक गोदी चुक्या नाल लाडां, उँगली नाल दिता वखाईआ। ओह वेख जिस वेले गोबिन्द पिता ते पुरख अकाल आवे तेरा दादा, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। भगतां दा रचे काजा, सोहणी वंड वंडाईआ। भाग लगावे देस माझा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। बच्चू आह लै तक्कड़ी ते ओस दे अग्गे डाहवीं छाबा, जो भगतां झोली दए भराईआ। मैं तेरा बाबा ओह मेरा बाबा, बाबे दा बाबा इक्को रूप समाईआ। ओसे दा खेल ओसे दा काजा, ओह आपे रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे विच्चों लहिणे रिहा चुकाईआ। नौ दिन दा वक्खरा होणा विहार, नौ खण्ड संदेसा दए सुणाईआ। पंज चेत दी रात नूं जगत दे सुत्तयां उन्हां नूं करे ख़बरदार, जिन्हां सुरती शब्द मिलाईआ। नौवां खण्डां दी अज्ज तों बझ गई वार, वारो वारी थाँ थां फेरा पाईआ। किधरे जोत नूर उज्यार, किधरे शब्द बोल जैकार, किधरे शहिनशाह सिक्दार, किधरे धर्म दी धार प्यार, किधरे जल्वागर उज्यार, किधरे गदागर फिरे दर दुआर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ खण्ड पृथ्मी देवे वर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। पंज चेत दी रात लेखा पंज सत, सति सतिवादी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वखावे उह मत, जो ब्रह्ममत दी अगली धार प्रगटाईआ। जिथ्थे सन्त सुहेले रहे वस, वास्ता ओसे घर जुड़ाईआ। चार कुण्ट दह दिशा आपे नस्स, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जन भगतां खोल्ह के आपणी अक्ख, निज लोचन नैण करे रुशनाईआ। धुर दा साथी बण के देणा साथ, संगी संग निभाईआ। पंज सत दी सांझी कर बरात, नव नौ चार दए वखाईआ। एह लेखा हो जाणा अज्ज दी प्रभात, प्रभाती आपणे नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कर वखाईआ। गुरमुख दे हथ्थ नूं लाई मैहन्दी, पंज पंज निशान लगाईआ। एह खेल वखाउणी दिशा लहिंदी, मता मुहम्मद नाल पकाईआ। जिस दी कला चढ़दी ओसे दी अन्तिम ढहन्दी, प्रभ ढाह ढाह ख़ाक मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा भाणा सहन्दी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख रंग रंगाईआ। हथ्थ हथेली कलयुग कूड़ी क्रिया सृष्टी करे वेहली, वेहला हो के आपणी कार कमाईआ। सुरजीत सिंघ ने चुक्की वैहन्गी उत्ते कन्धे, मोढे उत्ते टिकाईआ। जिहनूं समझण बुद्धी वाले मूल ना बन्दे, बन्दगी वाल्यां भेव खुल्हाईआ। जिन्हां दे अंदरों तोड़े जिंदे, ज़िंदगी दिती बदलाईआ। करमहीण रहे ना गंदे, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। मंज़ल चाढ़ अख़ीरी डंडे, डंडावत इक्को दिती समझाईआ। उह दुआरा लँघे, जिथ्थे बैठा धुरदरगाहीआ। गोबिन्द शब्द जिथ्थे वर मँगे, आपणी झोली डाहीआ। पुरख अकाल इक्को वंडे, देवणहार

अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। इस वहन्गी दी वहिंदी धार, गुर अवतार पैगम्बर ध्यान लगाईआ। इस दे विच वस्त अपार, जो निरगुण सरगुण झोली पाईआ। इस दे विच अगम्म भण्डार, जो खोज्यां हथ्थ किसे ना आईआ। एसे नूं लभ्भदे गए गुर अवतार, पैगम्बर अक्ख खुल्हाईआ। एसे दा राह तकदे गए सूफ़ी सूली चढ़ होए खुआर, पुठ्ठी खल्ल लुहाईआ। बिना गोबिन्द दे हथ्थ ना फड़ाई किसे करतार, क़ुदरत वंड ना किसे वंडाईआ। एह लेखा ओस वेले जिस वेले झूजण लग्गा सी जुझार, गढ़ी चमकौर दए दुहाईआ। वहन्गी नज़र आई जिस ने सब दा चुक्कणा भार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। गोबिन्द तेरे उत्तों बलिहार, जो सुत दुलारे रिहा वार, गुरमुख प्यारे कर संसार, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। गोबिन्द किहा जिस वेले आवां दूजी वार, जोत सरूपी खेल करतार, शब्द डंका वजावां धुर दी धार, धरनी धरत धवल सुहाईआ। ओस वेले गुरमुखां भार लवां उठाल, नाता तोड़ के शाह कंगाल, सेवा ला के आपणे लाल, लालन धुर दा रंग रंगाईआ। चुरासी विच्चों कर बहाल, बहावां कोल सिँघ पाल, जिथ्थे दीपक जोत बेमिसाल, नाता रहे ना माटी खाल, सचखण्ड दुआरा सच्ची धर्मसाल, दूजा दर नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। लहिंदे पासे पुरख अकाल दा खाड़ा, गोबिन्द कला दिती बदलाईआ। दूल्हा बण के धुर दा लाड़ा, आपणा बल प्रगटाईआ। पिता पूत दा इक अखाड़ा, डंका धुरदरगाहीआ। बोल के इक ललकारा, शब्द दिता सुणाईआ। भगतां दा विवहारा, तेरे नाल वड्याईआ। लैहन्दे तों चढ़दे दा वेख नज़ारा, नज़रीआ दिता बदलाईआ। क्यों एथे गुरमुख दा दुआरा, जिस नूं पिच्छे कहिंदे रविदास चमारा, सतिजुग दा साचा बणना सहारा, इशारा अगले साल कराईआ। नवां होणा इक विहारा, कुछ लेखा रैह गया इट्टां गारा, भेव अभेदा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सवा पंज सेर एह जोती धार घृत, अष्टभुज मँग मँगाईआ। ओह वी अज्ज पूरी कर के जाए आपणी हिरस, सिँघ अस्वार फेरा पाईआ। ओह बैठी वेखो कोल बिरख, अठ्ठ भुजां सीस निवाईआ। नाले कहे प्रभू बड़ा बेकिरक, रहमत तरस ना कोए कमाईआ। श्री भगवान कहे मैं उन्हां मिलां बिछरत, जो विछोड़े विच कुरलाईआ। जेहड़े आपणे इष्ट दी करन ऐशो इशर्त, उन्हां दी करन आया सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक वरताईआ। गोबिन्द गोबिन्दे उपदेसा, ब्रह्मा महेसा विष्नूं शेषा, गणपति गणेशा सुणौंणा आदेसा, पुरख अकाले संदेसा, निरगुण धारे वेसा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। गोबिन्दे कलाम कहिंदे अमाम, नाछिन्दे असलाम, बख़शिंदे तमाम ज़ाहरा ज़हूर नज़री आईआ। गोशे कुनिंन रहमाने नविंन

मुफ़लिसाने बख़शिंद मज़जहाने चिन्द इवज़ाने हिन्द अज़ीमुलशान बेपरवाहीआ। दरगाह दाईज़े रहिबरे अज़ीज़े ज़ेबाने ज़मीज़े क़ुराने तमीज़े शलीउल युज़ाह रबीउलरबा हज़रते दुआ खुदाए नवा रहमते रहमान रहीम इक अख्वाईआ। बज़ाते बाईद निज़ाते नज़ीद खुमाते ईद दीवाने दीद दीदा दानिस्ता दरे दरबार सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्दे खुरे ईद साहिबे ज़मीद उलज़नी ज़कीद ज़ाज़े ज़ूर ज़रा ज़रा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलामे गोबिन्द गोबिन्दे कलाम, कलमा कायनात सोभा पाईआ। गुरमुख सिँघ टके कोल रखे नौं, नौ खण्ड माया दए रुलाईआ। इक नाल प्रभ दा पूरा कीता गौं, गहर गम्भीर दी खुशी दिती बणाईआ। जेहड़े माया विच वड़ के रहे सौं, कलयुग माया चार कुण्ट वहाईआ। ओस नूं भगतां नाल नहीं कोई गौं, लुक के आपणा झट लँघाईआ। गोबिन्द नौ खण्ड पृथमी शब्दी धार आया भौ, भाण्डा भरम भन्नाईआ। प्रभू हुण भुक्खयां वल कर लै रउँ, दर्दीआं दर्द गुआईआ। जेहड़े मिट्टी ख़ाक उत्ते रहे सौं, जागत सोवत तेरा ध्यान लगाईआ। अग्गे उन्हां जोगा हो, कलयुग कूड़ी क्रिया कर सफ़ाईआ। मायाधारी दुबधा विच दो, एका रूप ना कोए समाईआ। झूठी वस्त सब दे कोलों लैणी खोह, ख़ाली दए कराईआ। साचे सन्तां करे निर्मोह, गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। नाता पक्का कर लै मोह, मुहब्बत इक बणाईआ। बिना टक्यां तों जो तेरे नाल जावण छोह, उन्हां दा लोइण देणा खुल्हाईआ। पिछले तैनूं कहिंदे आए सारे निर्मोह, मुहब्बत हक़ ना कोए कमाईआ। हुण असीं इक्ठे बण के आए गिरोह, मजलस धुर दी इक कमाईआ। सब दे अंदर आपणा रस चो, अमृत बूँद चुआईआ। झगड़ा रहे ना एका दो, दूआ एके विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग देणा चढ़ाईआ। पंज चेत दी कहे रात, रुतड़ी इक महकाईआ। एह गोबिन्द वाली दात, जो नंगे तन छुहाईआ। जिस दा लेखा लिखे ना कोई क़लम दवात, शाही चले ना कोए चतुराईआ। जिस ने बदल देणा समाज, दीन दुनी उलटाईआ। इक पुरख अकाल दा करना राज, रईयत दो जहान वखाईआ। चार वरन सुहाउणा काज, करनी करता हुक्म वरताईआ। इक दे सीस ते होणा ताज, ताजां वाले देणे मिटाईआ। नौ खण्ड पृथमी विच शब्द अगम्मी सुणाउणी आवाज़, बचया कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। किरपान कहे मैं कोई करन नहीं आई किरपा, किरपनां दयां वड्याईआ। बिना पुरख अकाल कटे कोई ना बिपता, जुग जुग ना होए सहाईआ। माण होणा धुर दे पित दा, पतिपरमेश्वर दए वड्याईआ। जो दो जहानां जित्तदा, बिन शस्त्र करे लड़ाईआ। उस ने हुक्म वरताउणा इक दा, गोबिन्द नाल चतुराईआ। जो लहिणे देणे पुछदा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। किसे दुआरे

४०
२१

कदे नहीं विकदा, क़ीमत ना कोए चुकाईआ। पन्ध मुका के ऊँच नीच दा, इक्को घर देणा वसाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा बीच दा, विच्चला परदा दए उठाईआ। करना खेल ओस जगदीश दा, जिस जगत दृष्टी देणी बदलाईआ। कलयुग कूड़ कुढ़यार वेख्यो पीसदा, पसचाताप विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। नौ छुहारे नौ बदाम, सौगी नौ वंड वंडाईआ। एह वशिष्ट ने सगन दिता सी राम, झोली आत्म वाली भराईआ। एहो सगन मुहम्मद ने दिता जदों सुणी अगम्मी कलाम, कलमा धुरदरगाहीआ। सजदे विच कर सलाम, सीस जगदीश दिता निवाईआ। एह खेल बड़ा महान, वशिष्ट राम रिहा दृढ़ाईआ। बिना सतिगुर तों जीउणा नहीं विच जहान, मनुशा जन्म कम्म किसे ना आईआ। भावें विद्या पढ़ लओ ते चढ़ जाओ उत्ते असमान, अभिमान विच ना कोए चतुराईआ। सतिगुरु तों अग्गे जिंनां चिर ना मिले भगवान, जोत विच जोत ना कोए समाईआ। एहो शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी दए ज्ञान, हरफ़ हरूफ़ां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। पैग़ामे मुहम्मद वाहिदे ख़ुदा अलाही हमद जुदाई ज़ुज़ा जिहनाई ज़नां बेनाई अजां ख़ुदाई सहम ख़ुदाई ख़ुदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हुक्मे हज़ू हज़ीअल वज़ू वज़िमते वज़ीने वनिज़ वाज़िआ दिता कराईआ। हुक्मे रब्बी अलाही कलाम कलमा कुज्जिते कविज़ने करां ज़ागिज़ने ज़वा ज़ातुल ज़मां आज़मा आज़मा आज़मा अज़ीज़े जणा अमामे नवां ज़ाखोने गुनाह बाज़ीते बज़ुलब नामाते नमलद नाज़माते ज़वलद ज़ुकरे बज़ीउल ज़विद ज़ऊ ज़ाह ज़ूआ ज़ाहरा ज़हूर नज़री आईआ। सवा गिठ एह गोबिन्द दी नीली टाकी, जिन्ह जोगीआं अभ्यासीआं दा लेखा दिता मुकाईआ। बिना पुरख अकाल तों दूजा रहिण नहीं दिता साक़ी, सब दे प्याले दिते रुड़्हाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों गुरु रहे ना कोए तन ख़ाकी, गुरु ग्रन्थ दए गवाहीआ। बिना परम पुरख परमात्मा तों लहिणा देणा चुकाए कोई ना बाकी, बाक़ाइदा दिता सुणाईआ। बिना गोबिन्द दे अमृत जाम तों बदले ना किसे दी हयाती, जीवण विच जीवण ना कोए बदलाईआ। सब नूं मन्नणी पैणी परम पुरख दी आखी, जिस गुर अवतार पैगम्बर सारे सीस निवाईआ। एह नीली सब दी पिठ उत्ते उह टाकी, जेहड़ी टकयां नाल हथ्थ कितों ना आईआ। इस विच ना कोई मज़हब ते ना कोई ज़ाती, चार वरनां दी सांझी साखी, जो नानक निरगुण सरगुण सृष्टी गया समझाईआ। बिना अबिनाशी करते दिसे कोई ना मंजल साची, जो घाटे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सज्जण धुरदरगाहीआ। इट्ठ कहे मेरी रविदास दे नाल प्रीती, जो घुटने हेठ दबाईआ। मैं वेखां जुग जुग रीती, नित नित ध्यान लगाईआ। अज्ज खुशी होई भगतां दी

बग़ीची, श्री भगवान दिती सुहाईआ। मैं वी सीस झुकावां जगदीश आपणा सीसी, सरन इक समझाईआ। मैं निक्की जिही गल्ल पिच्छे रविदास नाल कीती, उस दी समझ ना कोए समझाईआ। हस्स के किहा ओए भुक्ख्य। जिस वेले सदी चौधवीं बीती, कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल धुर दी खेल कीती, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। ओस वेले सब दी बदल जाणी नीती, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। मेरी इक याद कर लै चिठ्ठी, बिना हथ्थां तेरे हथ्थ फड़ाईआ। प्रभू दी धार होणी भगतां दी इक्की, गोबिन्द दी इक्की सिखी सिख्या विच वड्याईआ। फेर मैं इक कुल्ली बणाणी निक्की, आपणी वंड इक्की हज़ार रखाईआ। जिथ्थे चार जुग दे भगतां ने सिख्या सिखी, सिख्या लै के प्रभ दा शुकर मनाईआ। शहिनशाही सम्मत पंज विच पूरी करां इहो मेरी इच्छी, इच्छया लै के इथ्थे आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी धार रखे सिध्धी, भगत भगवान दे मिलण दी रही बिधी, बिदना दा लेखा रहे ना राईआ।

❋ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ४ सुखदेव सिँघ दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ❋

चौंकी कहे मेरा अगम्मी तूल अर्ज़, इक सत्त सतारां जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ममता मोह विकारा लग्गी मर्ज़, नव नौ चार चार कुण्ट कुरलाईआ। धरनी धरत धवल करे अर्ज़, दरगाह साची सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल भगत उधारना तेरा फ़रज़, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। सदी चौधवीं सब दी पूरी कर गर्ज़, निरवैर निराकार आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वेख फ़रद, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां जगत जिज्ञासुआं वंड दरद, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। चौंकी कहे मैं दस्सां पिछला लेखा, पारब्रह्म भेव रिहा जणाईआ। जिस वेले सब दा होवे लेखा, एकँकार दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां खुल्ल्हे भेता, परदा सर्ब उठाईआ। सारे मन्नण इक्को नेता, नर निरँकार धुरदरगाहीआ। भाग लग्गे साचे देसा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। लोकमात मिले संदेसा, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। नज़री आवे नर नरेशा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। चौंकी कहे जिस वेले लेखा मुके चार जुग, चौकड़ी आपणा पन्ध मुकाईआ। दो जहान पढ़न इक्को तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण धारों पए उठ, जोती जाता कर रुशनाईआ। जन भगत सुहेले बणाए आपणे सुत, सति

सतिवादी दया कमाईआ। परदा रहे ना उहला लुक, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। चौंकी कहे मेरे अन्तर चढ़या चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। हुक्म देवे बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं कहिंदे जल्वागर खुदा, नूर नुराना डगमगाईआ। जो लहिणा देणा वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। जिस वेले मुहम्मद नूं नूरी धार पहली वार पकड़या बांह, बिन कल्मयों कलमा दृढ़ाईआ। पहलों चरण कँवल वखाया थाँ, थानंतर इक समझाईआ। फिर रचना अगम्म रचा, इक सत्त दी वंड वंडाईआ। चार कुण्ट कर रुशना, अन्ध अन्धेर गुआईआ। सहजे नाल उपर टिका, आसण दिता समझाईआ। धूढ़ी चरण मस्तक ला, ख़ाकी ख़ाक भेव खुल्हाईआ। मुहम्मद नेत्र रो के मारे आह, हौक्यां विच सुणाईआ। तेरा खेल बेपरवाह, परवरदिगार तेरी वड्याईआ। चौदां तबक दस्सया राह, रहिबर नूर खुदाईआ। पुरख अकाल मस्तक उँगली दिती ला, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। मुहम्मद अग्गे कर ध्याँ, पैंडा पन्ध समझाईआ। सदी चौधवीं हुंदा वेख निआं, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। करे खेल शहिनशाह, शाह पातशाह वडी वड्याईआ। जिन्हां ने सूर खाधी गाँ, दोहां दए सज़ाईआ। साची करे कोई ना हां, पैगम्बर होवे ना कोए सहाईआ। मुहम्मद झुक के क़दम बोसी कर के किहा तूंही वाहिद अल्ला खुदा, खुदी नज़र कोए ना आईआ। तेरा लेखा दो जहां, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। चौंकी कहे मैं देवां इक शहादत, गवाही इक भुगताईआ। जिस वेले खुदा ने मुहम्मद नूं दस्सी इबादत, मेरे उपर बहाईआ। मन बुध्धी दी दूर कर लिआकत, धुर दा कलमा इक समझाईआ। निरगुण नूर तेरी रफ़ाक़त, सवागत बेपरवाहीआ। फेर वेख अगम्मी आफ्त, आफ्ताब ना कोए रुशनाईआ। सदी सदीवी करे बग़ावत, बग़लगीर ना कोए अख्वाईआ। कलमा नाम होवे अदावत, झगड़ा कूड़ लोकाईआ। साचा नाम करे ना कोए सखावत, रहमत हक़ ना कोए कमाईआ। कूड़ी क्रिया दिसे बनावट, अन्तर निरंतर भेव ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक सत्त दी धार सतारां इंच बिन हरि किरपा आबेहयात अमृत मेघ देवे कोई ना सिंच, अगनी तत ततव सके ना कोए बुझाईआ। चौंकी कहे मुहम्मद ने चार कुण्ट लाया चक्र, आपणयां क़दमां क़दम उठाईआ। साचा दिस्सया कोई ना फ़क्कर, जो फ़िकरा इक सुणाईआ। दीन मज़हब दी लग्गी वेख टक्कर, टुकड़े जगत लोकाईआ। सति धर्म होया फट्टड़, सूफ़ी रंग ना कोए रंगाईआ। कंडा तोल ना तोले कोई तक्कड़, तराज़ू मेहर ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा लहिणे विच्चों लहिणा देणे विच्चों देणा देवणहार वेख वखाईआ।

धुर दा शब्द कहे मेरी धार सच पैमाना, पैमाइश दो जहान कराईआ। मेरा खेल जुग चौकड़ी दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। मैनूं समझे बुध्धीवान ना कोए इन्साना, अक्ल आक्ल ना कोए वड्याईआ। मेरा लेखा ज़िमीं असमानां, लोक परलोक खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा रिहा ज़माना, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पैमाना कहे मेरा नाप नहीं कोई फ़ुट, लम्मा चौड़ा समझ किसे ना आईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ी क्रिया पावे लुट्ट, लुट्टी जाए जगत लोकाईआ। अन्तर लिव सब दी जावे छुट, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। आत्म परमात्म नाता जाए तुट, तुट्टी गंढ ना कोए वखाईआ। सच नाम दी पढ़े कोई ना तुक, सोहला ढोला राग ना कोए अल़ाईआ। अमृत धार जाए मुक, नीर सीर ना कोए प्याईआ। ख़ाली भाण्डे होवण ठुड्ठ, वस्त अमोलक मुख छुपाईआ। साचा रहे कोई ना सुत, अपराधी रूप वखाईआ। झगड़ा पए काया माटी बुत, ब्रह्म धार ना कोए दरसाईआ। साचे मार्ग चलदयां दीन दुनी जाए रुक, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। पैमाना कहे मैं वेख्या परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस नूं झुकदे पैगम्बर गुर अवतार, डंडावत सजदा सीस झुकाईआ। हुक्मे विच संदेसे देण संसार, कलमे कायनात दृढ़ाईआ। मार्ग दस्स आपणी धार, धरनी धरत धवल सुहाईआ। शब्द संदेसा बोल इक जैकार, जै जैकार जणाईआ। लेखा समझ धुर दरबार, दरगाह साची भेव खुल़ाईआ। जिस ने रचना रची खेले खेल जुग चार, चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। उस दी पावे कोई ना सार, अन्त कहिण कोए ना आईआ। सो सृष्टी दृष्टी वेखणहार, इष्टी इष्ट देव वड्याईआ। सति सरूपी दो जहान, आत्म परमात्म सेज हंढाईआ। निरगुण नूर जोत महान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। इक इक्केला नौजवान, मर्द मर्दान आप अख्वाईआ। सूरबीर वड बलवान, बलधारी करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पैमाना कहे मेरा लेखा शब्द गुरु दे नाल, नाप ओसे हथ्थ फड़ाईआ। जो थिर घर वस्से सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड प्रभ दा दर्शन पाईआ। जुग चौकड़ी घाले घाल, नित नवित्त वेस वटाईआ। जो सृष्टी दा हल करे सवाल, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा हुक्म इक कमाल, लाईन सिध्धी दए लगाईआ। दूजा वज्जे ना कोई ताल, तालब इल्म गुर अवतार पैगम्बर लए बणाईआ। साची सिख्या इक सिखाल, निरअक्खर विच्चों अक्खर दए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पैमाना कहे मैनूं जाणे इक जगदीश, जगदीशर वड वड्याईआ। जिस दे छत्र झुल्ले सीस, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जो नित नवित्त बदले रीत, रीतीवान

इक अख्वाईआ। जिस दा आदि जुगादी गीत, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। सो बैठा इक अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। पैमाना कहे जुगां दी वंड वास्ते मेरे नाल मारदा लीक, दूजी वस्त हथ्थ ना कोए उठाईआ। जिस दी शब्द गुरु करे तसदीक़, तत्तां वाला नज़र कोए ना आईआ। कलयुग वेला रिहा बीत, सदी चौदवीं खोज खुजाईआ। जिस दी सारे करन उडीक, नेत्र नैण राह तकाईआ। ओह करे खेल लाशरीक, धुर करता शहिनशाहीआ। जिस दा मार्ग सदा बारीक, बेपरवाह वेख वखाईआ। हक़ हक़ दी रख तौफीक़, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। पैमाना कहे मेरी आसा मनसा पूरी होए उम्मीद, आमद विच अक्ख खुल्हाईआ। जिस ने झगड़ा मिटाउणा हस्त कीट, ऊचां नीचां जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची धाम सुहञ्जणा करे खेल आदि निरँजणा, दीवा बाती कमलापाती दूजा अवर ना कोए वखाईआ। भगत दुआरिउँ पुट्ठे पैर, क़दम क़दम बदलाईआ। सृष्टी दृष्टी होवे कहर, कयामत विच दुहाईआ। कोई ना लेखा जाणे गम्भीर गहर, परदा सके ना कोए उठाईआ। पुरख अकाल दी अगम्मी लहर, जोत शब्द धार चलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे वैर, वैरी शत्रु वेख वखाईआ। सति दवारे रहे कोई ना ग़ैर, धर्म दी धार इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। भगत दुआरिउँ पुट्ठा तुरदा, पुरख अकाला नज़री आईआ। जो कलयुग कूड़ कुड़िआरा करे मुर्दा, मुर्शद हो के मुरीदां वेख वखाईआ। भेव खुल्हावे इक्को सतिगुर दा, जो सतिगुर सच दुआरे सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी आपणी करनी करन तों कदे ना मुड़दा, ना कोई रोके रोक रुकाईआ। नाम संदेसा देवे सदा धुर दा, नाद अनादा नाद वजाईआ। झगड़ा मुकावे ठग चोर दा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जन भगतां सज्जण मिलावे लोड़ दा, लोड़ींदा जोड़ जुड़ाईआ। अगला संग निभावे तोड़ दा, अद्धविच्चकार ना कोए अटकाईआ। जिथ्थे प्रकाश अगम्मी जोत दा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। ओथे पुरख अकाल दीन दयाल इक्को भगतां लोचदा, दूजी याद ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरसावणहारा सच दर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। पुट्ठी पैरीं चलया पाँधी, आपणा पन्ध मुकाईआ। सदी चौधवीं थक्की मांदी, मुहम्मद आसा दए दुहाईआ। वड्याई रही किसे ना थाँ दी, धरनी धरत धवल कुरलाईआ। अदालत रही ना सच निआं दी, कूड़ कुड़िआर वज्जी वधाईआ। शरअ रही ना सूर गाँ दी, सति धर्म ना कोए कमाईआ। लज्जया करे ना कोए पिता माँ दी, पूत सपूत ना कोए वखाईआ। कलयुग बुध्धी होई काँ दी, काग वांग कुरलाईआ। वड्याई रही ना किसे नाँ दी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। ठंढक रही ना किसे छाँ दी, कलयुग अगनी अग्ग तपाईआ। लाज रही ना पकड़ी बांह दी, सज्जण साथी

साथ गए छुडाईआ। जोड़ी जुड़ी ना आत्मा परमात्मा वाले सच विआह दी, धुर दा कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। सफ़ा वेखो कूड़ गराँ दी, चार कुण्ट रहे कुरलाईआ। बुध्ध बिबेक रही ना किसे दाना दी, दानशमंद नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पुट्ठी मति सर्ब कराईआ। पुट्ठी करे जगत मति, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। अन्तर मिले ना कोई ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या ना कोए समझाईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, अगनी तत तपाईआ। धीरज रहे कोई ना जति, सति सरूप ना कोए समाईआ। कलयुग कूड़ बदल जाए अक्ख, नेत्रहीण लोकाईआ। मिले मेल ना पुरख समरथ, साहिब स्वामी दरस कोए ना पाईआ। सच प्रीती करे ना कोई हड्ड, कूड़ कल्पना राग अल्लाईआ। सच सरोवर नुहाए कोई ना तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती समझ कोए ना आईआ। वस्त अमोलक मिले ना किसे हट्ट, हटवाणे मुख भुआईआ। साचा राग सुणाए कोई ना भट्ट, ताल तलवाड़ा ना कोए वजाईआ। गुर चेला इक दूजे दा साथ जाण छड, संगी संग ना कोए निभाईआ। बिन हरि नामे सब दे ख़ाली होवण हड्ड, चम्म दृष्टी ना कोए बदलाईआ। सत्या रहे ना होम यज्ञ, हवन विच ना कोए वड्याईआ। पूजा पाठ जो ढोले गावण सद, छन्दां विच जणाईआ। उह सारे बैठे अद्ध, मंज़ल पन्ध ना कोए चुकाईआ। जिस कारण पुट्ठीं पैरीं प्या भज्ज, भाजड़ पावे जगत लोकाईआ। भगत सुहेले लए लभ्भ, गुर चेले खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं वेख के हद्द, हदूद अगली दए समझाईआ। वेखो खेल प्रभू दा जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी समझ ना आउण देवे किसे दर, क़दीम दा क़ादर क़ुदरत दा मालक ख़लक दा ख़ालक भगत दा सालस कलयुग कूड़ी क्रिया घर घर वेखे आलस, निंदरा ग़फ़लत विच्चों गुरमुख गुर गुर सन्त सुहेले जन भगत धुर दे वक्त नाल जगाईआ।

* ७ चेत शहिनशाही सम्मत ४ गुरबचन सिँघ दे गृह पिंड उसमा ज़िला अमृतसर *

सतिगुर शब्द धार कहे धुरदरगाही इक सटिक, लकड़ी बनास्पत रूप वटाईआ। जो धुर संदेसा देवे पुरख अबिनाशी करता वेखो इक्क, एकँकार परवरदिगर धुरदरगाहीआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर लहिणा देणा आए लिख, जुग चौकड़ी सेवक चाकर हो के सेव कमाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी दो जहानां लख चुरासी पित, पारब्रह्म

पतिपरमेश्वर एका नूर करे रुशनाईआ। निरगुण निरवैर निराकार जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवणहारा सिख्या सिख, सति संदेसा नर नरेशा इक्को इक जणाईआ। प्रेम प्रीती धुर दी नीती आत्म परमात्म एका हित, दुतिया भउ रहिण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर चार कुण्ट दह दिशा नैण लोचन नेत्र आवे किसे ना दिस, सति सरूप शाहो भूप दरस कोए ना पाईआ । बीस बीसा हरि जगदीशा सब दी नंगी वेखे पिट्ठ, पुश्त पनाह दो जहान निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सटिक कहे मैनूं पंजाबी बोली कहिंदे सोटी, सुत्यां दयां उठाईआ। प्रभ नूं लभदे कोटन कोटी, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। साची मंज़ल चढ़या कोई ना चोटी, अध्धवाटे रोंदी वेखी लोकाईआ। साचा नाम शब्द सुणे ना कोए हक़ सलोकी, सोहला ढोला अनरागी राग ना कोए जणाईआ। नेत्र रोंदे अभ्यासी वैरागी तिआगी जोगी, जुगीशर तपीश्र सार कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मन कल्पणा सारे वेखे रोगी, हउमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। साचा मेला मेल करे ना धुर संजोगी, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। परम पुरख दी बहे कोई ना गोदी, गोदावरी कन्ढे गोबिन्द धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। अन्तिम लेखा कोई ना जाणे वेदी सोढी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सोटी कहे मैनूं कहिंदे डंडा, दो जहानां दयां जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला वेखणहारा पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक नहीं कोई बन्दा, माया ममता मोह विकार ना कोए हल्काईआ । शाह सुल्तान धुर दा मालक नेत्रहीण कदे ना अन्धा, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना वेखे चाँईं चाँईंआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हुक्मे नाल मेटे गंदा, सति धर्म दा मार्ग इक वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर धर्म शहादत इक्को दिन्दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। सोटी कहे मेरा वेखो तन सरीर, नन्हा नज़री आईआ। मेरी शहादत देवे कबीर, कामल मुर्शद मिल के ख़ुशी मनाईआ। जिस दे हथ्थ जगत तक़दीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। मंज़ल चाढ़ अख़ीर, आख़र परदा दए उठाईआ। भेव मिटा के शाह हकीर, इक्को रंग दए चढ़ाईआ। जलवा दस्स के बेनज़ीर, नूरे नज़र कर रुशनाईआ। सतिजुग साची कर ताअमीर, कलयुग कूड़ी जड़ उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्ह्लाईआ। सटिक कहे मैं सुणावां धुर संदेसा, दीन दुनी जणाईआ। परम पुरख प्रभ इक नरेशा, नर नरायण नज़री आईआ। जो जुग चौकड़ी धारे वेसा, निरगुण सरगुण सोभा पाईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ।

जिस दी रखदे सारे टेका, टिकटिकी इक्को नाल लगाईआ। जिस दा शब्द दुलारा बेटा, जन्मे जगत ना कोए माईआ। ओह वस्से थिर घर साचे देसा, सचखण्ड प्रभ दा दर्शन पाईआ। आदि जुगादी रखदा चेता, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। इक्को मालक हो के आए नेता, न्याउँ आपणे हथ्थ रखाईआ। चार जुग दा सब नूं कराए चेता, पूरब परदा आप उठाईआ। लहिणा देण वेखो वेखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सोटी कहे मैं दस्सां सच सबूत, सोहबत नाल दृढ़ाईआ। सब दा मालक इक महबूब, मुहब्बत विच समाईआ। जिस दा खेल अर्श अरूज, फ़र्श वज्जे वधाईआ। हद्द विच ना होए महिदूद, बंधन बन्द ना कोए कराईआ। झगड़ा मिटे तन वजूद, ख़ाकी ख़ाक करे सफ़ाईआ। परदा लाहे चारे कूट, दह दिशा फोल फुलाईआ। झगड़ा मिटे जूठ झूठ, सति धर्म वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सोटी कहे प्रभ चाढ़े साचा रंग, रंग रंगीला धुरदरगाहीआ। आत्म सेज वेख पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाईआ। नाम निधान वजा मृदँग, सोई सुरत दए उठाईआ। जगत दुआरा कूड़ा लँघ, भगत दुआरा वेख वखाईआ। जिथ्थे इक्को सच अनन्द, पुरी अनन्द मिल के वज्जे वधाईआ। होए प्रकाश बिन सूरज चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए वखाईआ। लोड़ रहे ना धारा गंग, अमृत लहर इक वहाईआ। साचे हुक्म दा कर पाबन्द, गृह इक्को इक समझाईआ । जिथ्थे तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सांझा छन्द, ढोला अवर ना कोए सुणाईआ । जगत जन्म दयां विछड़यां पवे गंढु, नाता तुट्टे कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दए चुकाईआ । सोटी कहे मैं सब नूं मारदी सट्टां, अपणा बल धराईआ। लहिणा देणा मुकावां चौदां लोक चौदां तबक हट्टां, हटवाणे वेखां थाउँ थाईंआ। निरगुण धार हो के सेवादार बण के नट्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। जन भगतां सच संदेसा दस्सां, खुशीआं नाल दृढ़ाईआ। गुरमुखो आपणीआं खोल्हो अक्खां, घर मिले बेपरवाहीआ। जिस दीआं ना बाहवां ना लत्तां, पंज तत ना कोए जणाईआ। सब दे अंदर वड़ के बदल जावे मत्तां, मनमति दूर कराईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच नाम भोरी दे जावे रता, रतन अमोलक गुरमुख लए बणाईआ। भेव खुल्हा के आपणी चेतन सत्ता, सति सतिवाद दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता नूर इलाहीआ। सोटी कहे मैं गुरमुख उठाउणे सच, सच दयां समझाईआ। भाग लगाउणा काया माटी कच्च, कंचन गढ़ वड्याईआ। भगत भगवान मिल के पयो हस्स, हस्ती हस्ती विच्चों बदलाईआ। जेहड़ा बाहरों लम्भया कितों नहीं रस, सो अन्तर देणा चखाईआ। सांझा कर के आत्म परमात्म जस, वेद पुराणां दा खैहड़ा देणा छुडाईआ। जन भगत पूजा पाठ दी मंज़ल जाण टप, पुस्तक बग़ल ना कोए टिकाईआ।

इक्को कलमा लैण रट, जिस नाल रट्टा मुके कूड़ लोकाईआ। घर स्वामी मिले पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सोटी कहे मैं भगतां करना ख़बरदार, ग़फ्लत विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। झगड़ा मुकाउणा नौ दुआर, सुखमन टेडी बंक ना कोए भुआईआ। ईड़ा पिंगल मार के मार, पैंडा देणा मुकाईआ। अमृत रस ठंडा प्याल, अगनी तत बुझाईआ। शब्द नाद दे सच्ची धुनकान, अनरागी राग सुणाईआ। दीआ बाती कमलापाती घर स्वामी देवे बाल, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। काया काअबा दो दुआबा वखाउणी सच सची धर्मसाल, जिथ्थे एका नूर होवे रुशनाईआ। हरि सन्त सुहेले बणा के धुर दे लाल, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। कलयुग विच सतिजुग बदल देणी चाल, चाल निराली इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सोटी कहे मैं वखावां कलयुग अन्त अख़ीरी कन्ढा, कन्ढी वाला नाल मिलाईआ। जिस दा शब्दी धार अगम्मी खण्डा, दो जहानां रिहा डराईआ। जे कोई हुण कहे उह तत्तां वाला गुज़री दा चन्दा, तत नहीं ओह जोत शब्द रुशनाईआ। खाण पीण वाला नहीं कोई बन्दा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा रूप बदलाईआ। उस नूं समझे कोई ना पंडा, शास्त्र सिमरत कुछ कहि ना सके राईआ। जिस ने खेल खिलाया पुरी अनन्दा, अनन्द सागर विच समाईआ। सो कलयुग अन्त जन भगतां टुटय्यां पावे गंढ्ढां, गंढ्ढणहार इक अख्वाईआ। जिस दा पाठ कदे ना होया नाल दन्दा, सद अजपा जाप विच समाईआ। ओह ग़रीब निमाणा कोझा कमला गुरसिख बणाए सब तों चंगा, जो ओसे दा ध्यान लगाईआ । कलयुग कूड़ी क्रिया सृष्टी मेटे धन्दा, धुँदूकार दए गुआईआ। लहिणा देणा मुका के जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, गहर गम्भीर बेनज़ीर परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सोटी कहे मैनूं आई इक विचार, विच्चरके दयां जणाईआ। जिस वेले एह रीत चली अवतार, आदि पुरख प्रगटाईआ। साचे हुक्म नूं कर के ख़बरदार, बलधार आप जणाईआ। वेखणा जगत संसार, संसारी भण्डारी निउँ निउँ सीस निवाईआ। हुक्म सदा चले जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शब्द डण्डा सर्ब सरदार, जगत दा मालक इक बणाईआ। जिस दा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आप कराईआ। सो जाणणहार सच्ची सरकार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सटिक कहे मैं वंडां दरद, दीन दुनी ध्यान लगाईआ। करां बेनन्ती अग्गे प्रभ स्वामी मर्दाने मर्द, मदद इक्को मँग मँगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल छुरी शरअ मेट करद, क़ातल मक़तूल क़तलगाह ना कोए वखाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी मन्ज़ूर कर अर्ज़, आरज़ू दिती सुणाईआ। सदी

चौधवीं साचे नाम दी बदल तर्ज़, तराज़ू अपणे हथ्थ रखाईआ। सृष्टी कायनात ख़ालक ख़लक तैनूं गर्ज़, बेगर्ज़ रहिण ना पाईआ। मन ममता सब दी वरज, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। तेरा खेल वेखीए असचरज, अचरज लीला देणी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग दे चढ़ाईआ। धुर दा रंग चाढ़ दे एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। सब नूं बख़्श आपणी टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। चार वरन अठारां बरन बुध्ध कर बिबेक, दुरमति मैल दे धुआईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अगनी तत ना कोए तपाईआ। आत्म परमात्म कर हेत, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। सटिक कहे मैं वेखणी तेरी खेड, खिलाड़ी हो के देणी वखाईआ। जिस कारण भगत सुहेले दिते मात भेज, भजन बन्दगी विच वड्याईआ। उन्हां बख़्श आपणा तेज, नूरी जोत कर रुशनाईआ। सच सुहञ्जणी कर सेज, सिँघासण इक वखाईआ। परदयां विच्चों खोल्ह दे भेद, अभेद आप समझाईआ। झगड़ा रहे ना चार वेद, विद्या दी विद्दत आपणी झोली पाईआ। पढ़ पढ़ भरया किसे ना पेट, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। तूं सब दा बण खेवट खेट, जगत जहान पार कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रेख, ऋषी मुनी नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मुका दे मुल्ला शेख़, मुसायक देण दुहाईआ। आत्म परमात्म खोल्ह दे भेत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। लेखे ला लै प्रभू गुरु अर्जन दे सीस विच पई रेत, तत्ती लोह दए दुहाईआ। सन्त सुहेले लै जा आपणे देस, गुर चेले जोड़ जुड़ाईआ। तूं आदि जुगादि सदा रहें हमेश, मर जीवत रूप वटाईआ। तेरे क़दमां इक आदेस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द अगम्मी दे दान, सृष्टी दृष्टी कर कल्याण कायनात कलमा महबूब मुहब्बत वाला इक समझाईआ।

✻ ८ चेत शहिनशाही सम्मत ४ सूबेदार राम सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ✻

काना कहे मैं साढे तिन्न हथ्थ, रविदास चमारा दए गवाहीआ। जिस दा लेखा नाल पुरख समरथ, दीन दुनी वंड ना कोए वंडाईआ। मैं भेव अभेदा दस्सां सच, परदा अन्तर निरंतर इक उठाईआ। लेखा वेख के काया माटी कच्च, ततव तत खोज खुजाईआ। मेरी अंदरों खुल्ही अक्ख, तक्कया धुरदरगाहीआ। जिस दी आदि जुगादि हक़ीक़त हक़, कलमा हक़ नाम समझाईआ। जो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी धुर संदेसा गया दस्स, बिन अक्खरां इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप दृढ़ाईआ। काना कहे मैं वसां जंगल विच प्रभास,

टिल्लयां सोभा पाईआ। मेरी जुग चौकड़ी आस, तृष्ना इक वधाईआ। मेरा लहिणा देणा धुर दा ख़ास, ख़सूसीअत आपणी दयां दृढ़ाईआ। मेरे नाल सारे दिन्दे रहे साथ, आदि जुगादि संग निभाईआ। जुग चौकड़ी लिखदे रहे गाथ, क़लम कालम वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। काना कहे मैं दस्सां कायनात, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। सारे वेखो मार के झात, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छे ध्यान लगाईआ। जिस दा समझे ना कोए हालात, परदा सके ना कोए उठाईआ। मैं ओस दी दस्सां बात, जो बातन भेव खुल्हाईआ। जिस दी नज़र ना आवे ज़ात, अज़ाती धुरदरगाहीआ। सच संदेसा अगम्मी आख, आख़र दयां दृढ़ाईआ। जो मैनूं रिहा भाख, सो संदेशा हक़ सुणाईआ। मैनूं इक दे उत्ते विश्वास, विश्यां वाला गुरु ना कोए मनाईआ। मैं गोपी काहन वाली वेखां कदे ना रास, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। मैं कलमे पढ़ां ना कदी लिख्या नाल क़लम दवात, अक्खरां विच गुण वखाईआ। मैं खेल वेख्या रविदास नाल परम पुरख दी मिली ज़ात, निरगुण नूर नूर विच समाईआ। दोहां दा इक्को पतण इक्को घाट, इक्को दर वज्जे वधाईआ। इक्को सेजा इक्को बस्तर इक्को सोहे खाट, सिंघासण आसण इक वड्याईआ। इक्को नाम गीत इक्को कलमा हक़ इक्को अगम्मी आवाज़, राज़ रहिण कोए ना पाईआ। इक्को सीस इक्को जगदीश इक्को सजदा इक अदाब, इक्को नमस्ते इक्को इक जणाईआ। जां तक्कया नूर नूर विच वाहिद, वाहवा वजदी वेखी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। काना कहे मैं की दस्सां भेव अनोखा, परदा सच उठाईआ। चार जुग मेरा वेला लँघ गया विच सोचा, सोचदयां समझ चली ना कोई चतुराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मैं लिख लिख थक्कया सलोका, रागां नादां सोहल्यां विच वड्याईआ। काग़ज़ पकड़ बणाया पोथा, पुस्तक वंड वंडाईआ। भेव खुल्हाया चौदां लोका, चार कुण्ट दह दिशा आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। काना कहे साढे तिन्न हथ्थ मेरा वेखो सरीर, जग नेत्र अक्ख उठाईआ। मेरे अंदर शरअ ज़ंजीर, जो सके ना कोए तुड़ाईआ। मैनूं तिन्न वार हथ्थ फड़िआ कबीर, क़बरां उत्ते फिराईआ। अन्त मार के इक लकीर, लाईन दिती लगाईआ। जिस विच्चों मैनूं नज़र आई उह तस्वीर, जिस दा रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। उह जलवा बेनज़ीर, नूरे नज़र नूर अलाहीआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं शरअ ज़ंजीर, ज़रा ज़रा विच समाईआ। सति सच दस्से तदबीर, तरीका इक्को इक जणाईआ। जिस ने मंज़ल चोटी चढ़ना अख़ीर, आख़र पन्ध मुकाईआ। उह परम पुरख परमात्म परवदिगार मन्नो धुर दा पीर, जो पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

५१
२१

किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। काना कहे मैनूं आया अगम्म ख्याल, इखलाक दयां दृढ़ाईआ। मेरा मालक इक दयाल, दीनां होए सहाईआ। मैं रविदास अग्गे कीता इक सवाल, बेनन्ती सच सुणाईआ। तूं क्यों होया जगत कंगाल, भुक्खा रह के झट लँघाईआ। तेरा मालक सदा प्रितपाल, धुर दा दाता नज़री आईआ। क्यों ना पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार इक समझाईआ। काना कहे मैनूं रवी ने दिता जवाब, प्रेम नाल दृढ़ाईआ। मेरे मुख छुहा के पाहणे वाला आब, आबरू दिती बणाईआ। मैनूं वखा के मंज़ल उह महिराब, महबूब दिता समझाईआ। बिन अक्खरां तों दस्स किताब, निरअक्खर दिता दृढ़ाईआ। कलयुग अख़ीरी जणा हिसाब, अंकड़े दिते बदलाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बर होए लाजवाब, सिर सके ना कोए उठाईआ। ओस वेले निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आवे आप, जोती जाता फेरा पाईआ। दो जहानां बण के धुर दा बाप, भगत सुहेले सुत दुलारे गोद उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के जाप, जीवण जुगत इक दृढ़ाईआ। सतिजुग साची थापण देवे थाप, कलयुग कूड़ी क्रिया कूड़ मिटाईआ। रूह बुत दोवें कर के पाक, पतित पुनीत दए बणाईआ। लेखे ला के काया माटी ख़ाक, ख़ालस गुरमुख रंग रंगाईआ। निरगुण धार दरस दिखावे साख्यात, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। ओस वेले तेरी वेखे ज़ात, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाईआ। काना कहे मैनूं रविदास ने लाया अंग, अंगीकार अख्वाईआ। मेरा बणा के संग, सगला संग तुड़ाईआ। दे के सच अनन्द, अनन्द दिता वखाईआ । कर के इक पाबन्द, हुक्म दिता समझाईआ। तेरा लहिणा देणा नाल गुजरी चन्द, नाता गोबिन्द नाल रखाईआ। फिर साढे तिन्न हथ्थ आपणे सरीर दी वंड के वंड, धुर संदेसा इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा पर्दा आप उठाईआ। काना कहे मेरा गोबिन्द नाल प्रेम, सच दयां समझाईआ। जिस वेले दुष्ट दमन गया सी उत्ते हेम, हेम कुण्ड कुण्ड आपणी धार चलाईआ। उस वेले प्रभ दे नाल कीता नेम, कौल इक़रार इक बणाईआ। प्रभू जिंनां चिर साढे तिन्न हथ्थ विच ना आवें मैनूं कदी ना आवे चैन, सांतक सति ना कोए समाईआ। सृष्टी दृष्टी वेखें ना इक्को नैण, एकँकार आपणा वेस वटाईआ। चार वरन अठारां बरन बणाएं ना भाई भैण, साक सज्जण इक हो जाईआ। आपणा नाम ना देवें अगम्म रसायन, रसीआ हो के रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला मेल मिलाईआ। काना कहे पुरख अकाल ने कीता वायदा, इक़रार इक जणाईआ। साढे तिन्न हथ्थ होया मुवाइदा, भरम रिहा ना राईआ। इक संदेसा दिता पहलों जन भगतां करां फ़ायदा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

फिर कलयुग कूड़ी क्रिया बदल के क़ाइदा, क़ानूंन अगला इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दए समझाईआ। काना कहे की होया कौल, दुष्ट दमन वड्याईआ। जिस वेले झगड़ा होवे उपर धौल, धर्म दी धार ना कोए समझाईआ। लेखा समझे ना कोई पंडत रौल, पुस्तक चले ना कोए वड्याईआ। आत्मा जाए ना कोई मौल, परमात्मा विच समाईआ। ओस वेले सब दे लेखे लवां फोल, जुग चौकड़ी खोज खुजाईआ। किसे नाल ना मारां रोल, धुर दी साची कार कमाईआ। सचखण्ड दुआरे बैठ अडोल, लख चुरासी दयां डुलाईआ। दीन मज़हब दा पा के घोल, ज़ात पात दयां लड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वजा के ढोल, डंका जूठ झूठ दए शनवाईआ। आप रह्वां ना किसे दे कोल, अंदर वड़िआ नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका खेल रिहा वखाईआ। काना कहे मैं ओस वेले प्या हस्स, आपणी खुशी बणाईआ। पुठ्ठी पैरीं प्या नस्स, भज्जिआ वाहो दाहीआ। साढे तिन्न क़दम ते गया ढट्ठ, आपणी बुध्ध भुलाईआ। मैनूं सोझी आई झट, अन्तर अक्ख खुल्हाईआ। मैं वी वस्त मँगां जे सौदा मिले धुर दे हट्ट, हटवाणा बेपरवाहीआ। जिस दे क़दम दुष्ट दमन रिहा ढठ, निउँ निउँ लागे पाईंआ। ओह मेरी जाणे मित गत, परदा दए खुल्हाईआ। मैं निउँ के टेकया मथ, सीस दिता झुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मेरी पिट्ठ ते रख के हथ्थ, ठोकर दिती लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाण्डा भरम भउ दिता भन्नाईआ। काना कहे ठोकर नाल मैं प्या जाग, प्रभ सुरती सुरत खुल्हाईआ। मेरे अन्तर आया इक वैराग, बिरहों विच दुहाईआ। प्रभ तेरे चरण गया लाग, तक्की इक सरनाईआ। मेरा लहिणा मुका दे आज, अज़ल तों लै छुडाईआ। तेरी जोत दा वेखां चिराग़, निरगुण नूर विच रुशनाईआ। रसना जाम प्या दे आब, हयाती हयाती विच्चों बदलाईआ। तेरे क़दमां इक अदाब, सजदा सीस निवाईआ। धुर दा बख्श इक ख़िताब, ख़ता रहिण कोए ना पाईआ। अबिनाशी करते किहा मैं रखां तैनूं याद, याददाशत आपणे विच छुपाईआ। जिस वेले कलयुग विच सतिजुग करां राइज, धुर दा हुक्म वरताईआ। जन भगतां दुरमति मैल धोवां दाग़, पतित पुनीत बणाईआ। तेरा लेखा वेखां विच समाज, समग्री फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। पुरख अकाल किहा सुण गंढ्ढां वाले काने, काहन धुर दा दए जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल महाने, भेव अभेद किसे ना आईआ। करे खेल श्री भगवाने, हरि करता धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर होवण बेगाने, साचा संग ना कोए निभाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होणे याराने, नाता जूठ झूठ वखाईआ। लोभ विकार होवे प्रधाने, माया ममता नाच नचाईआ। विषे विकारी बणन सुघड़ स्याणे, साध सन्त ना कोए चतुराईआ। झगड़ा पए राजे

राणे, नौ खण्ड पृथ्मी कूक सुणाईआ। सच नाम दे भुल्लणे गाणे, कलमे हक़ ना कोए सुणाईआ। माण रहे किसे ना थाणे, थान थनंतर समझ कोए ना पाईआ। सज्जण मीत होण बेगाने, पिता पूत ना सोभा पाईआ। ओस वेले करे खेल श्री भगवाने, हरि करता बेपरवाहीआ। लख चुरासी विच्चों धुर दे भगत पहचाने, काया मन्दिर फोल फुलाईआ। निरगुण धार जोत सरूप पहर के बाणे, शब्दी आपणा डंक वजाईआ। लख चुरासी विच फिरे चार कुण्ट कर बहाने, परदा तत वजूद छुपाईआ। लेखा जाण ज़िमीं असमाने, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। तेरा लेखा भगतां नाल सदा काने, कदमां दा गेड़ कटाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दे बदल देवे ज़माने, ज़ामन तैनूं विच रखाईआ। आत्म परमात्म दी आपणे हथ्थ लै के कमाने, कामल मुर्शद हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। काना कहे मैं हो गया खुश, आपणी खुशी प्रगटाईआ। धन्न भाग जे प्रभ ने ल्या पुच्छ, जन भगतां मेल मिलाईआ। मेरे पल्लू नहीं कुछ, वस्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। मैनूं इक्को सुणाई अगम्मी तुक, ढोला धुर दा इक दृढ़ाईआ। मेरा आवण जावण लख चुरासी पैंडा गया मुक, मुकी खलक खुदाईआ। मैं सवाधान हो के गया उठ, आपणा बल प्रगटाईआ। जो भगतां उपर रिहा तुठ्ठ, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। ओस दे क़दमां जावां झुक, निउँ निउँ लागां पाईआ। मेरा रहे कोई ना दुःख, दर्दीआं दर्द गुआईआ। घर ठांडे देवे सुख, सति सच विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। काना कहे मैं दस्सां सुहागी गीत, जन भगतो इक दृढ़ाईआ। प्रभ दी वेखो अगम्मी रीत, रीतीवान आप समझाईआ। तुहाडा झगड़ा मुक गया मन्दिर मसीत, काया काअबा सोभा पाईआ। जिथ्थे वस्से त्रैगुण अतीत, त्रै भवन धनी सोभा पाईआ। आदि जुगादी धुर दा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। स्वामी हो के वस्से चीत, मन ठगौरी रहे ना राईआ। लहिणा देणा चुका के बीस इक्कीस, हरि जगदीश करे रुशनाईआ। जिस दे छत्र झुलणा सीस, वजणी नाम वधाईआ। ओसे दी सदी रही बीत, जो बीती कहाणी रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। काना कहे कलमा पढ़ना एक, एकँकार जणाईआ। सब नूं दस्सां टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी लाईआ। जन भगतो नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों एह महीना चेत, सम्मत चार नाल वड्याईआ। सब दे अंदर खोल्ह देणा भेत, परदा रहिण कोए ना पाईआ। पूरब जन्म दा बदल देणा लेख, रेख देणी मिटाईआ। सच वखाउणा अगम्मड़ा देस, जिथ्थे वस्से शहिनशाहीआ। तुहाडा नाता जुड़े हमेश, हम साजण मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची दए वड्याईआ। दरगाह

साची धाम सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाईआ। जिस दा भाण्डा ओसे दर ते भज्जणा, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। जिस ने हुक्म संदेसे नाल सद्दणा, सुनेहड़ा इक जणाईआ। चरण धूढ़ी करा के मजना, दुरमति मैल धुआईआ। लेखे ला के माटी बदना, बदली अंदरों कर वखाईआ। सदी चौधवीं जिस ने करना अदला, इन्साफ इक्को इक दृढ़ाईआ। सो लेखा जाणे चार कुण्ट कोटी मंज़ला, मंज़ल आपणी इक समझाईआ। जन भगतो फिरना पए ना तुहानूं विच जंगला, बन खण्ड खोजण ना जाईआ। इक्को दर दुआरा पए लँघणा, जिथ्थे वज्जे नाम वधाईआ। दूजा दर किसे ना मँगणा, भिखारी रूप ना कोए वटाईआ। तुहाडा मालक ख़ालक प्रितपालक इक सूरा सरबंगणा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। काना कहे साढे तिन्न हथ्थ काया माटी सब दा भन्न्हणा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। सुणो संदेसा आपणे कन्नना, सरवण सच दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दा हुक्म सब नूं पैणा मन्नणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। बिना भगतां तों सब नूं पैणा जम्मणा, लख चुरासी विच भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा इक वखाईआ। काना कहे मैं संदेसा देवां मुफ्त, क़ीमत ना कोए लगाईआ। प्रभ ने करना खेल दरुस्त, दुतिया भाउ देणा मिटाईआ। भेव चुकाउणा इक अंगुशत, परदा रहे ना राईआ। हथ्थ टिकाउणा भगतां पुश्त, पनाह इक्को इक समझाईआ। गुरमुखो हो जाओ चुस्त, आलस निंदरा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग आप बणाईआ। काना कहे मैं करदा नहीं लिहाज़, तन माटी वंड वंडाईआ। मेरी वारी आई आज, अठू चेत संग निभाईआ। मैं सदा रिहा जाग, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। मैनूं इक्को इक वैराग, बिरहों रोग सताईआ। जिंनां चिर प्रभ ना देवे साथ, सगला संग निभाईआ। जन भगतो उनां चिर किसे कम्म नहीं आउँदा पूजा पाठ, जोग अभ्यास ना कोए सलाहीआ। जिन्हां दे अन्तर आत्म प्रभ मिले आप, आपणा मेल मिलाईआ। उन्हां ने फेर काहदा करना जाप, किस दी करन पढ़ाईआ। जिन्हां दा सदा लई खुल्ह गया अंदरों ताक, बाहरों कुण्डे काहदे लई खड़काईआ। उह आत्म परमात्म रूप हो गई साच, सच सच विच समाईआ। काना कहे पुरख अकाल इक्को मन्नो बाप, जो धुर दा पिता माईआ। गुर अवतार पैगम्बर चार जुग दे पिछले चाचे अग्गे तुट जाए साथ, साथी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। काना कहे मैं दस्सणा अन्त अख़ीरी, बीख़ैर अल्लाह इक जणाईआ। साढे तिन्न हथ्थ शरअ दी रहे ना कोए ज़ंजीरी, कड़ी कड़ी देणी बदलाईआ। सदी चौधवीं तों बाद किसे दी रहिणी नहीं पीरी, पैगम्बर नज़र कोए ना आईआ। एसे साल विच पा देणी दिलगीरी, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। किसे हथ्थ ना आउणी सच फ़कीरी, फ़िकरा हक़ ना कोए दृढ़ाईआ। एह

५५
२१

खेल होणा तक़दीरी, अगम्म अगम्म जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दी प्रभ ने आपणे विच समाउणी पीहड़ी, अग्गे इक्को हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना शब्दी धार ब्रह्मण्ड खण्ड करे आप सफ़ीरी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। काना कहे मेरी अन्त इक अरदास, बेनन्ती सच समझाईआ। परम पुरख ते रखणा विश्वास, जगत विचार ना कोए वड्याईआ। जिस दे हुक्मे अंदर गोपी काहन पाउँदे रास, सीता राम जंगलां खेल खिलाईआ। पैगम्बर ढोले कलमे गाउँदे गाथ, गुरु गुरदेव स्वामी इक मनाईआ। उस दा वेखणा खेल तमाश, की कलयुग कल वरताईआ। काना कहे रवीदास तेरा वेखणा उह बाप, जो बप्पड़े दए बदलाईआ। पूरब रहे कोई ना पाप, पतित पुनीत कराईआ। लेखा मुकावे इक्के दिन इक्के रात, इक्के वार होए सहाईआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, नाता आपणे नाल रखाईआ। जन भगतो धुर दी याद रखणी बात, बातन रिहा सुणाईआ। सब दा मालक कमलापात, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। दर्शन देवे साख्यात, स्वच्छ सरूपी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी वेखणहार हालात, हालत विच अदालत आपणा नाम जणाईआ।

❋ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ४ सूबेदार राम सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ❋

काले बस्तर बाणा दरवेश, हरि करता वेस वटाईआ। सचखण्ड निवासी करे खेल मातलोक अगम्मड़े देस, निरगुण निरवैर आपणी दया कमाईआ। हुक्म संदेसा देवे नर नरेश, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जिस दे गुर अवतार पैगम्बर होए पेश, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। चार जुग दा पिछला वेखो लेख, जो लिख्या नाल क़लम शाहीआ। रमज़ इशारे खोल्ह्रो भेद, अभेद इक जणाईआ। की सृष्टी दृष्टी अन्तर कीती सेव, साची करनी कार कमाईआ। की फल प्राप्त होया मेव, अहिमेव दयो जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल इक प्रगटाईआ। काला कपड़ा तन वजूद, पंचम चेत वज्जी वधाईआ। करे खेल धुर महबूब, बेअन्त बेपरवाहीआ। जिस दा सदी सदीवी देवे सबूत, साहिब स्वामी आप अख्वाईआ। चार कुण्ट दह दिशा कूड़ी क्रिया लेखा करे कूच, कूचा गली फोल फोलाईआ। परदा लाहे लख चुरासी ताणा पेटा सूत, सोई सुरती आप उठाईआ। परदा रहे ना काया कलबूत, कलमा कायनात जणाईआ। चार कुण्ट दह दिशा हो मौजूद, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल

आप वखाईआ। काला बाणा लिबास धुर दा अल्फ़ी, अलिफ़ ये समझ ना आईआ। करे खेल सदा यक्कतरफ़ी, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। अबादत करे अगम्मी हरफ़ी, हरूफ़ां वंड ना कोए वंडाईआ। सति पुरख दी चौथे जुग दी चौथी बरसी, बारश मेघ इक बरसाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सचखण्ड निवासी जोती जाता आया बण के निध्रति, प्रीतम प्यारा आपणी दया कमाईआ। लेखा जाणे चार कुण्ट दह दिशा धवल धौल उपर धरती, अंदर बाहर खोज खुजाईआ। शाहो भूप वड सुल्तान नौजुआन मेटणहारा कूड़ गर्दी, गिरदोनवा वेखणहारा थाउँ थाईंआ। नौ चेत चार जुग दी सब दी पिछली वेखे अर्ज़ी, जो आरज़ू गुर अवतार पैगम्बर गए रखाईआ। परम पुरख परमात्म पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कदे ना बणे खुदगर्ज़ी, गर्ज़ सब दी पूर कराईआ। एह खेल अगम्मे हरि दी, जो हर हिरदा वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर वेखे जलदी, चारों कुण्ट अगन तपाईआ। कुछ आसा मनसा बलि दुआरे भगवन दी, धुर फ़रमान अल्हाईआ। जिस वेले कलयुग कल्पणा वधणी मन दी, ममता मोह होवे हल्काईआ। सीतल धारा किसे ना चन्न दी, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। भगत सुहेला जननी होवे ना कोए जणदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। काले कपड़े कहिण मुहम्मद दी अन्त अन्त ख़ाहिश, आसा इक रखाईआ जिस वेले अख़ीरी निकलया स्वास, साह साह वड्याईआ। बिन अक्खां ल्या झाक, बिन नैण नैण खुल्हाईआ। सुणी अगम्मी आवाज़, ढोला धुरदरगाहीआ। इक कर लै बिना हथ्थां अदाब, बिना सीस सीस झुकाईआ। गृह वेख अगम्म महिराब, महबूब नूर अलाहीआ। मुख़ातब हो के दे जवाब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। संदेसा सुण मुहम्मदे ज़नू नागिज़लते ज़विस्ता जो ज़मीनन नविज़्ज़ुल ज़कातुल ज़नन ज़ाहदे ज़बी ज़नामे मज़ी मुवाइदा फ़री बीदो अज़ीं महिबाने नज़ीं मेहरबान दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। काला कण्पड़ कहे मैं वेखणा उह वतन, जिथ्थे बेवतन होई लोकाईआ। तकणा उह पतण, जिथ्थे नौका नज़र कोए ना आईआ। भालणा उह सज्जण, जिस नूं खोजे सृष्ट लोकाईआ। कराउणा उह मज्जन, जो मजलसां करे सफ़ाईआ। भालणा उह बदन, जो बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। कराउणा उह अदल, जो अदालत इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। काले बस्तर क्यों पहनया भगत दुआरे, भगवन रंग रंगाईआ। जिस नूं वेखण तेई अवतारे, दर ठांडे फेरा पाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद नैण उघाड़े, लोचन अक्ख खुल्हाईआ। नानक गोबिन्द तक्कण एह नज़ारे, नज़रीआ नर नरायण बदलाईआ। कलयुग कूड़ आया किनारे, लहर नाल लहर टकराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कढुण हाढ़े, निउँ निउँ लागण पाईआ। एह खेल अगम्म

अपारे, अलख अगोचर आप कराईआ। जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोए विचारे, ग्रन्थां पन्थां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी जिस दे दिन्दा आया लारे, शब्द सुनेहड़ा हुक्म सुणाईआ। उह कलयुग अन्त श्री भगवन्त करे खेल अपारे, अपरम्पर सुआमी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धरनी धरत धौल धवल वेख वखाईआ। बस्तर कहिण असीं उच्ची दईए होका, हुक्म धुरदरगाहीआ। पीर पैगम्बरां अन्तिम होया मौका, मुकम्मल इक दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना तबकां चौदां लोका, सच सलोका इक सुणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जो मालक जोती जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। उस दे अग्गे चले कोई ना सोचा, बुद्धी कम्म कोए ना आईआ। जो लहिणा देणा जाणे साढे तिन्न हथ्थ माटी कोठा, कुटीआ काया कण्पड़ फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दो जहानां वेख वखाईआ। काला कपड़ा कलयुग धार, धर्म दुआर जणाईआ। खेल करे आप करतार, क़ुदरत करता बेपरवाहीआ। निरगुण निरवैर लै अवतार, निराकार करे रुशनाईआ। चार कुण्ट कुण्ट उज्यार, दह दिशा डगमगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करे ख़बरदार, पुरी लोअ आकाश पाताल, गगन गगनंतर लए उठाईआ। दो जहानां पावे सार, महासार्थी आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। धुर संदेसा देवे आपणी धार, नर निरँकार आप जणाईआ। वेखो खेल गुरु अवतार, पैगम्बर ध्यान लगाईआ। साचा रिहा ना कोए सिक्दार, सिर सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। खुदी तक्ब्बर विच संसार, मुहब्बत हक़ ना कोए कमाईआ। घट घट अंदर धूआँधार, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। तुहाडा रिहा ना कोए कुछ अख्त्यार, मुख्त्यारनामे सब दे मनसूख़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तन वेस इक वखाईआ। तन वेस अनोखा, धुर दा संदेसा सुणो पक्का, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। ख़िदमतगारो तुहाडे नाल करे कोई ना धक्का, पूरब लेखा पूर कराईआ। अग्गे छडणा पए मदीना मक्का, काअबयां विच ना कोए वड्याईआ। चार कुण्ट दह दिशा निरगुण धार फिरे नट्ठा, शिवदवाले मट्ठां पन्ध मुकाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे तीर्थ तटां, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। देवत सुर नेत्र रोवण हथ्थ मार के उत्ते पट्टां, पटने वाला करे सर्ब सफ़ाईआ। इष्ट रहिण नहीं देणा कोई पत्थर इट्टां, सिल पूजस नज़र कोए ना आईआ। सब दा लहिणा करना चिट्टा, चेटक देणा गुआईआ। शब्द गुरु गुरदेव स्वामी मस्तक ला के टिक्का, दो जहान देणी वड्याईआ। जिस दा पुरख अकाल इक्को पिता, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। सो भगतां करे हिता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जिस दा खेल नित नवित्ता, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। ओह करवट विच बदले आपणी पिट्ठा, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। सच प्रीती बिना किसे दुआर कदे ना विका,

क़ीमत सके ना कोए चुकाईआ। धुर दे प्रेम अंदर निक्का, निक्क्यों निक्का आप दरसाईआ। जेहड़ा चार कुण्ट नहीं दिसा, जग नैण ना कोए रुशनाईआ। उह भगतां दा पूरा करे पिच्छा, लेखा पूरब झोली पाईआ। सब दी मनसा दे के इच्छा, निरिच्छत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा रंग रंगाईआ। काले बस्तर कहिण एह गोबिन्द दी मँग, उच्च पीर वड्याईआ। नीली धार चों धार लँघ, नंगी पैर सेव कमाईआ। सच सिँघासण छड पलँघ, माछूवाड़ा सेज सुहाईआ। इक इक्क दा लै अनन्द, अनन्द अनन्द विच जणाईआ। निरगुण निरवैर भगतां संग, सगला संग निभाईआ। ओस वेले शब्द अगम्मी पुरख अकाल सुणाया बिना दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। गोबिन्द तेरा मेरा लेखा बाहर चार खाणी सेत्ज उत्भुज जेरज अंड, तत्तां विच बन्द ना कोए कराईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ी क्रिया ढाउणी कंध, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। सब दा सांझा करना छन्द, सोहला धुरदरगाहीआ । ओस वेले इक दुआरा लँघ, साचा दर देणा सुहाईआ। जन भगतां चाढ़ के रंग, रंगत पिछली देणी बदलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। काले कपड़े कहिण असीं जगत दे काले बस्तर, बस्ती वेखीए कूड़ लोकाईआ। जिस वेले गोबिन्द ने खोल्हे सी शस्त्र, भथ्था ज़िमीं उत्ते टिकाईआ । इक प्रेम चलाया अस्त्र, हस्त हस्त नाल छुहाईआ। ओस वेले हाज़र होया बेटा राम दसरथ, आपणी आस पुचाईआ। गोबिन्द अग्गे लहिणा लेखा किस दवारे करना बसरत, बिछरत कवण मिलाईआ। एह मेरी त्रेते जुग दी हसरत, सहज देणा समझाईआ। तूं योद्धा सूरबीर बहादर केहड़ी करदा कसरत, कवण खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा दृढ़ाईआ। गोबिन्द कहे सुण राम प्यारे, राम दे राम वड्याईआ। मेरे प्रभ दे खेल निआरे, जुग चौकड़ी आप वखाईआ। मैं आदि ओस दे सहारे, अन्त ओसे विच समाईआ। ओह वेख मेरे जगत वाले दुलारे, जो नाता गए तुड़ाईआ। आह वेख शब्द नाल इशारे, गुरमुख दयां जणाईआ। जिन्हां दे काया मन्दिर अंदर मेरे उह चुबारे, जिस दी इट्ट नज़र कोए ना आईआ । जो मेरा मैं उस दे सदा दुआरे, दूर दुराडे पन्ध मुकाईआ। इहो हुक्म सच्ची सरकारे, पुरख अकाल दिता समझाईआ। राम किहा मैं तैथों बलिहारे, सदके घोल घुमाईआ। गोबिन्द किहा ओह वेख जोत निरँकारे, जोती नूर करे रुशनाईआ। कुछ शब्दी बोल सुणाए जैकारे, करे अगम्म पढ़ाईआ। जिस वेले चौथा जुग आवे किनारे, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां पूरे करे लारे, लहिणा मूल चुकाईआ। निरगुण निरवैर आप आवे विच संसारे, जोती जामा वेस वटाईआ। गोबिन्द किहा मैं कल्की वाला उह कल्की अवतारे, जिस दी कला समझ किसे ना आईआ। ओह वस्से सदा भगतां दुआरे, दूजे दर नज़र

ना आईआ। असां सारयां ओस दे होणा पनिहारे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा इक समझाईआ। राम किहा गोबिन्द एह खेल निराला, हरि करता आप कराईआ। गोबिन्द किहा जुग चौकड़ी बदले चाला, राम कृष्ण रहिण कोए ना पाईआ। राम किहा मैं वेखां खेल सची धर्मसाला, धर्म दवारिउँ नज़री आईआ। गोबिन्द किहा मैं ओस दा नढ्ढा बाला, नन्हा सोभा पाईआ। जिस कलयुग अन्त सब दा कढ्ढणा दवाला, लेखा मँगे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं बस्तर तक्के उह, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जिस दुनियां भार मिटाउणा दो, दूआ एके विच समाईआ। सतिजुग साची करनी लो, लोआं पूरीआं परदा लाहीआ। जन भगतां कूड़ी क्रिया विच्चों कर निर्मोह, मुहब्बत इक्को नाल जुड़ाईआ। परमात्म हो के आत्म जावे छोह, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। किसे नाल ना करे धरोह, ज़ुल्म सितम ना कोए ढाहीआ। गुरमुखां दे अंदरों कूड़ी क्रिया दे कढ्ढे गिरोह, पतित पुनीत बणाईआ। निझर रस अमृत बूँद स्वांती देवे चो, लोचण नैण इक खुल्हाईआ। भगत भगवान इक रूप जावण हो, इक्को रंग रंगाईआ। दुरमति मैल देवे धो, पतित पुनीत बणाईआ। धुर दी वस्त नाम निधाना ढोआ देवे ढोअ, हरि करता आप वरताईआ। जिस दा भेत ना जाणे को, परदा सके ना कोए उठाईआ। जोती
६० जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ कुड़िआरा दए मिटाईआ। काले कपड़े कहिण असीं काली धार रहिण नहीं ६०
२१ देणी निन्दक, नाता कूड़ देणा तुड़ाईआ। सति धर्म दा दे के सिदक, सबूरी सबर देणी जणाईआ। प्रेम प्यार दी दस्स २१
के मिलत, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। मन कल्पणा रहिण नहीं देणी इल्लत, इल्म आलम ना कोए लड़ाईआ। सच धर्म दी देणी हिम्मत, बुध्ध बबेक जणाईआ। जन भगतां दस्सणी प्रभू दी सिम्मत, मार्ग इक उपजाईआ। जिस दी महिमा चार जुग दे ग्रन्थ लिख्त, भविख्त विच वड्याईआ। उह दीन दयाला आदि जुगादी इष्ट, जिस नूं सके ना कोए बदलाईआ। सो महबूब मुहब्बत विच गुरमुखां खोल्हे दृष्ट, दृष्टी आपणी उत्ते पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दस्स के साचा गृहस्त, गहर गम्भीर दए सरनाईआ। जिस दे कोल जुग चौकड़ी सब दी सदा फ़रिसत, अभुल भुल कदे ना जाईआ। गुरमुखो तुहाडे चरणां हेठ रोल के स्वर्ग बहिश्त, सच दुआरा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा धर्म इक जणाईआ। काले कपड़े कहिण काला रंग अपार, अपरम्पर स्वामी दए जणाईआ। जिस दा लहिणा सदा जुग चार, चौकड़ी वंड वंडाईआ। ओह वेखणहार संसार, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। निरगुण निरवैर हो के उज्यार, जागरत जोत करे रुशनाईआ। खेल करे विच संसार, साहिब अन्तरजामी परदा आप उठाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले

दर ठांडे पावे सार, अगनी तत बुझाईआ। सोई सुरती अकाल मूर्ती शब्द धुन लए उठाल, सुन्न मुन्न डेरा ढाहीआ। घर स्वामी मुरीदां पुच्छे हाल, मुर्शद हो के धुरदरगाहीआ। उन्हां पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जिन्हां दी लेखे लाए घाल, कीती घाल झोली पाईआ। गुरमुखां बणा के आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। काया सुहा के सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वखाईआ। जिथ्थे सतिगुर वस्से नाल, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ। काले बस्तर कहिण वेखणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद नूर इलाहीआ। कलयुग अन्त अवल्लड़ी चल के चाल, चाल निराली इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हरि वड्डा दाता बेपरवाह, बेअन्त इक अख्वाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां दए सलाह, हुक्मे हुक्म सुणाईआ। सो कलयुग अन्तिम बणे मलाह, खेवट खेटा नूर खुदाईआ। सति बेड़ा लए चला, नईआ नौका नाम प्रगटाईआ। वाहिद जलवा कर रुशना, खुदा खुदी दए गंवाईआ। वाहिद कलमा दए पढ़ा, अबादत इक्को दए समझाईआ। वाहिद मंज़ल दए वखा, अर्श कुर्श डेरा ढाहीआ। वाहिद महबूब दए मिला, मेला इक्को नाल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। काला बस्तर कहे जिस वेले मुहम्मद रख्या विच क़बर, मक़बरा दए दुहाईआ। जाम हकीकी पीता मलकुल मौत सबर, साबर सबर वड्याईआ। छड उम्मती कूड़ कुड़िआरां वाले टब्बर, सुन्नत वाले तजाईआ। वेख्या जलवा इक्को नूर शेर बब्बर, चौदस चौदस चौदस रुशनाईआ। मुहम्मद चुम्मे एका क़दम, क़दम बोसी विच सीस निवाईआ। सच दुआरा लग्गा लभ्भण, जिथ्थे नूर इक रुशनाईआ। इक मुहब्बत विच हो के मग्न, नाअरा दिता लाईआ। परवरदिगर सांझे यार किस वेले करें आपणा अदल, इन्साफ सच कमाईआ। नूरी अल्ला कहे जिस वेले सदी चौधवीं देवां बदल, बदलां ख़लक खुदाईआ। कूड़ी क्रिया कर के क़त्ल, क़ातल मक़तूल वेख वखाईआ। सूफ़ी फ़कीर उठा के रतन, अमोलक आप उपजाईआ। साचे बहि के पतण, वेखां थाउँ थाईंआ। मुहम्मदा तैनूं फेर वखावां काअबयां वाला वतन, आपणा हुक्म जणाईआ। जिथ्थे तेरा कलमा दस्सया होया जपण, होका हक़ दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा इक जणाईआ। धुर दा लेखा लैणा समझ, बिन समझ समझ समझाईआ। बिन कल्मयों बिन नाम निधान बिन नाद धुन बिन आवाज़ रमज़, रहीम रहमान लगाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पैगम्बर जम्मण, तन वजूद हंढ्ढाईआ। अन्त पुरख अकाला दीन दयाला कढ्ढके सब दे सम्मण, हुक्म नाल आपणे दर बहाईआ। दरवेश हो के हमेश मँगण, गल पल्लू वास्ता पाईआ। क़दमां उत्ते झुक झुक डिग्गण, सिर सके ना कोए उठाईआ। जुग चौकड़ी जिस वेले चाहवां लोकमात चाढ़ देवां रंगण, तत वजूद वड्याईआ।

जिस वेले हुक्म करां मँगा के आपणे अंगण, आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद कहे मेरी तोबा अमीन, आलमीन सरनाईआ। मोहे तोहे यक्क यकीन, निउँ निउँ लागां पाईआ। तेरे हुक्म दी सच तालीम, तुलबे गुर अवतार पैगम्बर अख्वाईआ। तेरा घराना उच्च अज़ीम, आलीशान सोभा पाईआ। तूं मालक सद क़दीम, क़ुदरत क़ादर इक अख्वाईआ। असीं सदा तेरे अधीन, सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरी सिफ्तां रहे चीन, चिन्ता ग़म गुआईआ। तैनूं कहि के इक मोबीन, वाह वाह तेरी सिफ्त सालाहीआ। तेरा खेल उत्ते ज़मीन, असमान जमान खेल खिलाईआ। तूं साहिब सदा प्रबीन, पारब्रह्म वड्याईआ। तेरा लेखा नहीं नर मदीन, आत्म नूर तेरी रुशनाईआ। तूं साहिब नहीं मस्कीन, देवणहार अख्वाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त पैगम्बरो तुहाडी होई तौहीन, आबरू रहिण कोए ना पाईआ। फेर मैं लेखा मुकावां प्राचीन, पिछला झगड़ा दयां मुकाईआ। नवां नूर वखा के सीन, अलिफ़ ये दा डेरा ढाहीआ। शरअ विच रहिण ना देवां कोई ग़मगीन, ग़मी विच्चों खुशी दयां बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा धुर दा घर, जिस गृह बैठा आसण लाईआ। काले कपड़े वेखो काली धार, कलमयां बाहर पढ़ाईआ। मज़ीउल मजा रवीउल अज़ा नबीउल जहां शामे नमां रोशे अवां शाइरे शुरु नवज़लके रुहिन्दगी ना आफ्ताबे तलूह ज़ाहरे नगां अज़ीने असमां शाने सज़ग लहिज़ते ज़वग सूरा सर्बग्ग पुरख समरथ महिमा अकथ कथनी कथ ना सके राईआ। जाहीने दहन्द गुज़ीने बख़शिंद नज़ीने चिन्द मज़ीने गोबिन्द पोज़ीने शहिन्द नाज़ूने ज़मीं आसमाने अमाम पैगम्बरे अयाम ख़ाना तमाम खुदाए सलाम रहमते नज़ाम ज़ागुरते कलाम मुहम्मदे बेज़बान ज़वीचिसत नाचूज़े नज़ां रहीम रिहा महिबान बीदो बी खैरीया अलाह अलाही नूर नज़री आईआ। काले बस्तर कहिण एह खेल प्रभू दा नवां, जिस ने बदल देणा समां, पैगम्बरां दी पूरी करनी तमअ, सब दा लेखा होणा जम्हां, बिना परवरदिगार सांझे यार सब दी गुल होणी शमा, शमादान नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा हुक्म होण लग्गा रवां, रवानगी विच परवानगी एहसानगी बेपहचानगी मर्द मर्दानगी मदद अदद अदालत विच इन्साफ़, कूड़ा रहिण ना देवे कोई गुस्ताख़, जन भगतां कर के मुआफ़, अगले पिछले लहिणे देणे लेखे कर के साफ़, साबत सबूत तन वजूद कलबूत महदूद मुहब्बत विच आपणी हद्द लए लँघाईआ।

✻ १० चेत शहिनशाही सम्मत ४ सुदागर सिँघ दे गृह पिंड नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

स्याही कहे मैं दस्सां भेव शहिनशाह, हरि करता वड वड्याईआ। आदि जुगादी बेपरवाह, बेअन्त बेअन्त सारे गाईआ। सो पुरख निरँजण आपणी खेल रिहा खिला, हरि करता धुरदरगाहीआ। एकँकारा हुक्म वरता, आदि निरँजण वेख वखाईआ। अबिनाशी करता हो सहा, श्री भगवान सोभा पाईआ। पारब्रह्म परदा लाह, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। निरगुण नूर जोत कर रुशना, जल्वागर इक अख्वाईआ। सच सिँघासण सोभा पा, दर ठांडे डेरा लाईआ। शब्दी सुत दुलारा जा, बणे धन्न जणेंदी माईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उपजा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। धुर संदेसा इक सुणा, ब्रह्मे दिता उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दिता चुकाईआ। सच संदेसा ब्रह्मे दिता दस्स, बिन अक्खरां अक्खर जणाईआ। इक बणौंणी अगम्मी मस्स, लेखा तेरे नाल प्रगटाईआ। वेख आपणी ओस अक्ख, जिस अक्ख मेरी रुशनाईआ। लभ्भे इक हक़ीक़त हक़, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। मिले किसे दुआरे ना हट्ट, खोज्यां हथ्थ कोए ना आईआ। ब्रह्मा चरण गया ढठ्ठ, सीस जगदीश झुकाईआ। पुरख अकाले आपे दे दस्स, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल किहा सुण मेरे सुत दुलारे, शब्दी धार धार जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर प्यारे, तिन्नां मेला सहज सुभाईआ। वेखो नेत्र इक उघाड़े, अक्ख प्रतख गुसाईंआ। लेखा जाण धुर दरबारे, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। निवण निवण निवण कर निमस्कारे, नमो नमो डंडावत सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव होवो इक्ठे, आपणा बल धराईआ। हरि सरनाई ढठ्ठे, ढहि ढह खुशी बणाईआ। दीन दयाला हरि किरपाला सच संदेसा दस्से हक़े, हक़ीक़त इक जणाईआ। प्रेम प्रीती विच जाओ मॅते, विस्मादी हो के बिस्मिल आपणा आप कराईआ। कौल इक़रार करो पक्के, अग्गे सके ना कोए भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या देवे ब्रह्म, हरि करता वड वड्याईआ। धुर दा हुक्म अगम्मी करम, निहकरमी आप जणाईआ। सच दुआरे कर प्रन, परमानंद विच समाईआ। किस कारण मस्स नूं देणा जरम, जननी बणे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दिता खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा तिन्ने झुक जाओ वार एक, एकँकार इक दृढ़ाईआ। इक्को नूर अगम्मी टेक, टिक्के मस्तक लाईआ। इक्का निगाह लओ वेख, अक्ख अक्ख ना कोए बदलाईआ। इक्को तक्को सच्चा देस, जिथ्थे बैठा बेपरवाहीआ। इक्को सदा रहे हमेश, जोती जाता इक अख्वाईआ। जिस दे अग्गे होए पेश, पेशीनगोई दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, परदा उहला आप चुकाईआ। पुरख अकाल किहा चरण कँवल जाओ लग्ग, आपणा आप मिटाईआ। वेखे खेल सूरा सर्बग्ग, हरि करता दए दृढ़ाईआ। जेहड़ी रचना रचाउणी जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। उस दा लहिणा देवां अज्ज, आज़ज हो के झोली डाहीआ। जिस कारण ल्या सद्द, शब्दी धार प्रगटाईआ। वखाई आपणी हद्द, परदा दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धुर दा हुक्म देवे हज़ूर, हरि करता दया कमाईआ। ब्रह्मे करे आसा पूर, मनसा पूर कराईआ। आह लै चरण कँवल धूल, धूढ़ ना कोए वखाईआ। जिस दे नाल सब दा बणे मूल, अमुल्ल मुल्ल ना कोए वखाईआ। फ़रमाना दस्स असूल, हुक्म इक वरताईआ। दर ठांडे करो क़बूल, किँवल आप जणाईआ। करनी दा करता कार करे माअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साची वस्त होई वसूल, ब्रह्मे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक वखाईआ। ब्रह्मे मिली धूल चरण, चरण कँवल सरनाईआ। अन्तर अन्तर लग्गा पढ़न, नाद अगम्मी ढोले गाईआ। निरगुण दर्शन लग्गा करन, जोत नूर रुशनाईआ। सच दुआरे लग्गा खड़न, सन्मुख सोभा पाईआ। भय विच लग्गा डरन, निउँ निउँ सीस निवाईआ। तूं करता करनी करन, सब कुछ तेरे हथ्थ वड्याईआ। नेत्र हन्झू लग्गा किरन, जल धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा राग सुणाईआ। ब्रह्मे तुसीं तिन्ने वहाओ नीर, नैणां छहिबर लाईआ। इक खिच्च के अगम्म लकीर, पुरख अकाल दिती लाईआ। तुहाडे अन्तर मेरी तदबीर, तरीका इक समझाईआ। जिस दे नाल बदलां तामीर, भेव अभेद खुल्ह़ाईआ। जेहड़ी मेरी सुणो तकरीर, एह तहिरीर देणी बणाईआ। मैं पातशाह तुसीं मेरे वज़ीर, धुर दा हुक्म रिहा दृढ़ाईआ। आदि जुगादि रहिणा अधीन, सिर सके ना कोए उठाईआ। सति भरोसा सति यकीन, इक इकल्ला आप रखाईआ। वेख्यो कदे ना होयो ग़मगीन, अन्तर रंग चढ़ाईआ। जिस वेले खेल करां आसमान ज़मीन, ब्रह्मण्ड खण्ड प्रगटाईआ। तिन्नां दे के इक तालीम, सिख्या साची इक समझाईआ। दवारा दस्स अगम्म अज़ीम, आलीशान सुहाईआ। थोड़ी थोड़ी कर तक्सीम, हुक्म हुक्म विच जणाईआ। मेरा खेल सदा क़दीम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला रिहा चुकाईआ। पुरख अकाल किहा ब्रह्मे चरण धूल दी मस्स, मस्ती विच वड्याईआ। एह तेरे फड़ाउणी हथ्थ, हथेली उत्ते टिकाईआ। ओधरों वैराग दिता झट, अंदरों कल बदलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गए ढठ्ठ, चरणां सीस निवाईआ। कर प्रकाश जोत लट्ट लट्ट, नूर नुराना डगमगाईआ। वहिंदी धार खोल्ह़ के हट्ट, वस्त अगम्मी इक वरताईआ। बिरहों वैराग लगाया फट्ट, नेत्र रोवण नैणां नीर वहाईआ। दीन दयाल ने ब्रह्मे दा अक्खां हेठां डाहिआ हथ्थ, मस्स जिस

उत्ते टिकाईआ। फेर बचन कीता हस्स, खुशीआं नाल जणाईआ। तुहाडा नेत्र पाणी मेरी धूढ़ दा रस, रस्ता अगला दए बणाईआ। दोहां दा मेल करो इक्ठ, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। फिर दोवें जोड़ के हथ्थ, सीस दयो झुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला लओ रट, निरगुण निरगुण धार चलाईआ। एह धूल नीर नूं सांभ के लैणा रख, मिल्या मेल ना कोए तुड़ाईआ। जिस वेले ब्रह्मा शब्द सुनेहड़ा देवां सच, हुक्म इक सुणाईआ। ओस वेले इस नूं सज्जे पट्ट उत्ते लईं रख, सहज सहज नाल टिकाईआ। विच्चों प्रकाश होवे झट, नूर नूर डगमगाईआ। तेरी राण ते लग्गे फट्ट, मुकाम नजर कोए ना आईआ । जो तेरी मिलावे विच रत्त, रत्ती रत्त विच छुपाईआ। फेर मेरा फ़रमाना लिखणा खुशख़त, खतो खताबत जगत वल कराईआ। एह खेल पुरख समरथ, सच स्वामी दिती दृढ़ाईआ। साचा दे के हक़, हक़ीक़त दिती समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप वखाईआ। धूढ़ नूर दा बणया अगम्म मिलाप, मिलणी हरि कराईआ। दोहां दा रिहा ना आपा आप, आपा आपणे विच मिलाईआ। पुरख अकाल मन्न के बाप, सीस दिता झुकाईआ। तेरा खेल तेरा प्रताप, तेरी बेपरवाहीआ। धूल नीर ने जपया सोहँ जाप, बिन रसना जेहवा गाईआ। पुरख अकाल अगम्मी दस्स बात, बातन दिता दृढ़ाईआ। तुहानूं हुण पाउणा विच दवात, हिसिआं विच वंड वंडाईआ। तुहाडी मिट गई आपणी ज़ात, दीन दुनी दी ज़ात देणी प्रगटाईआ। तुहाडा लेखा काग़ज़ात, क़लम नाल बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणा के भेजां दास, सेवक सेवा रूप वटाईआ। ओह कातब बण के मेरा लेखा लिखण हिसाब, जगत जुगत दृढ़ाईआ। विद्या वाली नहीं किताब, करतब धुर दा दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। मस्स कहे प्रभ बेपरवाही, तेरी वड वड्याईआ। दर बेनन्ती इक सुणाई, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। संदेसा पुच्छां चाँईं चाँईं, परदा देणा उठाईआ। किस कारण मैनूं रिहा उपजाई, क्यों एह बणत बणाईआ। पुरख अकाल कहे मैं दयां वधाई, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। बिन तेरे मेरी चले कोई ना शाही, शहिनशाह सके ना कोए प्रगटाईआ। चार जुग दी तेरी सेवा लाई, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। बिना तेरे मेरी याद ना कोए जणाई, हरि का नाम ना कोए समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आउणे वाहो दाही, यके बाद दीगरे पन्ध मुकाईआ। जिन्हां तेरे नाल करनी इक वड्याई, धुर दा ढोला सिफ्त सालाहीआ। तेरी शहादत जगत ग्रन्थ गवाही, गवाह शुद आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी बणत रिहा बणाईआ। शाही कहे की मैं मेटां जुग जुग शाही, शाह पातशाह रहिण कोए ना पाईआ। की मैं भज्जां वाहो दाही, नित नित पन्ध मुकाईआ। की मैं गुर अवतार पैगम्बर तकां राही, रहिबर हो के सेव कमाईआ।

की मैं तेरा नाम संदेसा देवां जणाई, जग जीवण दाते तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा परदा देणा उठाईआ। पुरख अकाल कहे तेरी मेरे नाल ज़ात, अज़ाती दयां जणाईआ। तेरा रहिणा विच दवात, सच घराना इक दसाईआ। जुग चौकड़ी धुर दी दस्सां गाथ, बोध अगाध पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवां साथ, सगला संग बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो जाइण आख, अक्खरां विच वड्याईआ। लहिणा देणा वेखीं साख्यात, बिन शाही नैणां अक्ख उठाईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सति धर्म दा तुट्टे नात, कूड़ कुड़िआरा डंक वजाईआ। सतिगुर दिसे कोई ना मात, धरनी धरत धवल दुहाईआ। सृष्टी दृष्टी विगड़े हालात, हल्ल सवाल ना कोए कराईआ। मन मनुआ होए बदमाश, बदी नाल चतुराईआ। परम पुरख हथ्थ ना आवे कीत्यां तलाश, खोजी खोज ना कोए खुजाईआ। तेरी सेवा इक ख़ास, हरि ख़ालस दए वड्याईआ। शब्द अगम्मी हुक्म संदेसा देवे आप, हरि करता धुरदरगाहीआ। तूं निरगुण सरगुण देणा साथ, सगला संग बणाईआ। तूं झगड़ा मुकाउणा ज़ात पात, दीन मज़हब ना कोए लड़ाईआ। सच दुआरे बण के दास, धुर दी सेव देणी कमाईआ। जो गोबिन्द जाए आख, सूलां सथ्थर सेज हंढ्ढाईआ। ओह लहिणा काग़ज़ात, कलमयां तों बाहर देणा समझाईआ। साचा सजदा कर अदाब, नमो सीस झुकाईआ। धुर दा हुक्म लिखणा भाग, भगवन इक्को इक समझाईआ। इक्को नूर जोत चराग़, अन्ध अन्धेर गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दए उठाईआ। शाही कहे तेरा लेखा अगम्म अपार, अपरम्पर बेपरवाहीआ। लिखदे रहे गुरु अवतार, पैगम्बर सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गए हार, भज्जे वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं किसे दा रिहा ना कोई अख्त्यार, मुख़तारनामे सब दे मनसूख़ कराईआ। तेरा लेखा वेखणा तेरी धार, धरनी धरत धौल ना कोई वड्याईआ। की करनी करते करनी कार, क़ुदरत दे मालक दे वड्याईआ। की हुक्म लिखाउणा आपणी वार, वारता पिछली मेट मिटाईआ। दर खड़ी तेरे दरबार, दरगाह साची सीस निवाईआ। मेरा पूरा कर कौल इक़रार, वेला वक्त दए गवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करां खुआर, तेरा नाम शब्द शनवाईआ। सतिजुग साचे करां प्यार, मैं लिख लिख लेख दयां बणाईआ। जन भगत सुहेले भगत पकड़ उठावां दुलार, दूल्हे धुर दे मेल मिलाईआ। सदा सदा सद जावां बलिहार, बलिहारी घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। शाही कहे मैं लिख के दयां शहादत, चार जुग दे शब्दां नाल मिलाईआ। परम पुरख प्रभ बदल दे आपणी अबादत, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। सब दे अंदर दे लिआकत, बुध्ध बबेक कराईआ। सच दुआरे बख्श सदाकत, मेहर नज़र इक उठाईआ। मुहब्बत विच

कर रफ़ाक़त, फ़िरका रहिण कोए ना पाईआ। मनुआ मन ना करे अदावत, झगड़ा दीन ना कोए लड़ाईआ। तेरे नाम दी होए सखावत, रहमत आप कमाईआ। मेरे नाल लिख के बिना मचलक्यों लै ला ज़मानत, बरीख़ाना आप वखाईआ। जीव जंत तेरी अमानत, गुर अवतार पैगम्बर तेरी झोली पाईआ। तूं साहिब सही सलामत, जन्म मरन विच ना आईआ। तेरे हुक्मे अंदर क्यामत, कलमे वाले देण दुहाईआ। सदी चौधवीं सारे होए अनजानत, सोच समझ ना कोई वखाईआ। शाही कहे मैं तैनूं भुल्लयां सब नूं दयां लाअनत, लम्हा लम्हा दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला देणा चुकाईआ। शाही कहे मैं लेखा लिखां अनोखा, निरगुण निरवैर निरँकार देणा दृढ़ाईआ। किसे नाल करीं कदे ना धोखा, अछल छल आपणी कार कमाईआ। लख चुरासी तेरा नूर जोता, घट घट नज़री आईआ। मेहरवान हो के सब नूं आपणे मिलण दा दे मौका, लख चुरासी विच्चों मानस लै तराईआ। आत्मा परमात्मा बख्श ओटा, ओड़क आपणा परदा लाहीआ। सब जीव जंत तेरा खरा खोटा, खोटे खरे लै बणाईआ। तेरे कोल केहड़ा नाम दा टोटा, अतुट भण्डार दे भराईआ। क्यों एह लिख के गया गुरु गोबिन्द सब तों अन्त अख़ीरी गुरु आयू विच छोटा, मुहब्बत विच वड्डा नज़री आईआ। जो सिध्धा हो गया गुरमुखां जोगा, बच्चयां नीहां हेठ दबाईआ। साचे अमृत दा दे के चोगा, चुगली निन्दिआ तों गया बचाईआ। हउमे रहे कोई ना रोगा, जगत संताप ना कोए सताईआ। ओहना दा लेखा पार कर दे चौदां लोका, चौदां तबकां पन्ध मुकाईआ। जिन्हां तेरे नाम दा गाया इक सलोका, सोहला धुरदरगाहीआ। ओहनां नाल करीं ना रोसा, जुग जन्म दयां रुस्सयां लईं मनाईआ। तेरा इक्को लेख लिख्या प्रभ जी बहुता, बहुता लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। क्यों गुरमुखां दा गोबिन्द गुरु पिता पुरख अकाल गुरसिख तेरा पोता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरा उन्हां नाल काहदा रोसा, जिन्हां नूं आपे रिहा भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। शाही कहे मैं माटी ख़ाक, प्रभ धूल तेरी सरनाईआ। तिन्नां नीर कीता पाक, पुनीत दिता बणाईआ। मैं पै के विच दवात, काना क़लम कटाईआ। तेरी सिफ्तां दी लिख किताब, कुतबख़ाने दिते भराईआ। तेरा बदलदी रही रिवाज़, जुग जुग सेव कमाईआ। बख्शदी रही ताज, राज राजानां वड वड्याईआ। लगाउँदी रही आग, सृष्टी दृष्टी विच तपाईआ। मिलाउँदी रही कन्त सुहाग, हरि करता धुरदरगाहीआ। लिख लिख दीन दुनी दा बदलदी रही समाज, समें नाल टकराईआ। अगला लेखा दस्स आज, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। किस बिध कलयुग कूड़ी क्रिया नईआ नौका डोबे जहाज़, कूड़ी जहालत बाहर कढ्ढाईआ। आपणे शब्द दी दे आवाज़, मैं लिखां नाल सफ़ाईआ। जिस दी झल्ले कोई ना ताब, नेत्र अक्ख ना कोए

उठाईआ। मैं ओस दे हथ्थ फड़ाउणी वाग, जो वाग सब दी रिहा भुआईआ। जिस दे हथ्थ उत्ते उडदा रिहा बाज़, कल्गी सीस सुहाईआ। ओसे ने इक बणाउणा समाज, जो पुरख अकाल तेरा इष्ट मनाईआ। फल फुलवाड़ी महकणा बाग़, गुरमुख बूटे सोहणे लाईआ। जिस नूं समझे ना कोई दिमाग़, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। शाही कहे मैं होई मँगती, दरवेशी रूप वटाईआ। मैं लिखां इक्को पंगती, पंडत पांधे दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं तेरा भाणा रही मन्नदी, जुग जुग सीस निवाईआ। वेंहदी रही तन दी, झगड़ा जगत लोकाईआ। मैं तक्की खेल गुज़री चन्न दी, जो चन्द चांदनी इक चमकाईआ। उहदे अंदरों आवाज़ सुणी धन्न धन्न दी, धन्न विच तेरा शुकर मनाईआ। ओहो जिहा सुत दुलारा जननी होर कोए ना जणदी, गोदी गोद ना कोए सुहाईआ। जिस ने कूड़ी क्रिया मेटणी कलयुग कल दी, ओह शब्दी शब्द शब्द आपणी खेल खिलाईआ। मेरी सेवा लेखे लाए विष्न ब्रह्मा नीर जल दी, जो रो रो दिता वहाईआ। मैं तेरा विछोड़ा मूल ना झलदी, वखरा रहिण कदे ना पाईआ। मैं कथा कहाणी पा जल दी, की बावन आया दृढ़ाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं अग्गे पल दी, पलकां दे पिच्छे बैठा की की हुक्म वरताईआ। सृष्टी भुक्खी दिसे अन्न दी, भुक्खयां अक्ख ना कोए खुलाईआ। दुनियां स्वादी हो गई कन्न दी, अनादी नाद ना कोए वजाईआ। पुजारन हो गई काया माटी तन दी, ततव तत ना कोए दृढ़ाईआ। शाही कहे मैं पिछले लेखे भन्नदी, घड़न भन्नणहार तेरे नाल मिल के खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, इक्को धार प्रगटा अगम्मी आपणे नाम दी, नाउँ निरँकार इक जणाईआ।

६८ ६८

२१ २१

✻ ११ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर बूड़ सिँघ दे गृह हरि संगत ✻

रोटी कहे मैं सवा सेर, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल करे मेहर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी वेखदी रही फेर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख उठाईआ। धर्म दुआरा तकदी रही गेड़, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वेखदी रही खेड, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। मैं दस्सां आपणी आसा, आशा इक प्रगटाईआ। एहो खेल पुरख अबिनाशा, हरि करता कार कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर के दासा, सेवक सेवा इक समझाईआ। सदा मन्नणा अगम्मी आखा, शब्द सुनेहड़ा इक सुणाईआ। नूर इलाही दे के दातां, वड भण्डारी भण्डारा

दिता भराईआ। प्रभ दी चरण धूढ़ दा आटा, पीसण पीस सेव ना कोए कमाईआ। जिस दा सचखण्ड दुआर खाता, दूजा दर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। रोटी कहे मैं दस्सां बात, बातन दयां जणाईआ। जिस वेले विष्नूं मिली दात, हरि करते दया कमाईआ। ओस ने चरण कँवल कीते साफ़, सेवक हो के सेव कमाईआ। जेहड़ी प्रेम दी उत्तों लथ्थी राख, धूढ़ धूल नज़र किसे ना आईआ। ओह रखी गई ना विच किसे परात, बरतन हथ्थ ना कोए उठाईआ। लेखा लिख्या ना कागज़ात, क़लम शाही ना वंड वंडाईआ। नजर आई ना किसे ज़ात, रूप अनूप ना कोए दरसाईआ। एह अगम्मा खेल तमाश, हरि करता आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना हुक्म दृढ़ाईआ। प्रभ चरणां दी सच प्रेम दी धूढ़, धूल नाल वड्याईआ। जिस दा खेल अगम्म ज़रुर, ज़रुरत आपणी नाल कराईआ। सति सतिवादी कर भरपूर, आपणा दर भराईआ। जलवा दे के धुर दा नूर, ज़हूर इक वखाईआ। वस्त अमोलक कर मन्जूर, आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। साची धूढ़ अमोलक वस्त अगम्म, हरि करता आप प्रगटाईआ। जेहड़ी लथ्थी नहीं उत्तों किसे चम्म, हड्ड मास नाड़ी ना कोए रगड़ाईआ। जिस दी सेवा कीती नहीं किसे पवण स्वास दम, तन वजूद नज़र कोए ना आईआ। करनी दे करते आपे कर के आपणे कम्म, कामना आपणे नाल रखाईआ। आपे सेवक साजण बण के हम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप वरताईआ। धूढ़ कहे जद होई मेहर, चरण कँवल सरनाईआ। प्रभ दा वज़न आदि तों सवा सेर, जुगादि विच रखाईआ। जिस दा लहिणा सके ना कोए नबेड़, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। सवा सेर चरण धूढ़ अपार, हरि करते आप प्रगटाईआ। हुक्म दिता धुर दरबार, धुर दरबारी आप सुणाईआ। शब्द दुलारा कर ख़बरदार, बेख़बर ख़बर उठाईआ। एहदा चलणा इक विवहार, विवहारी हो के आप जणाईआ। इस नूं कर त्यार, अमृत जल विच छुहाईआ। दोहां दा विहार, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ। जोती जोत अगम्मी बाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। शब्द गुर सुण संदेसा हक़, हरि करता आप जणाईआ। बिना निगाह नैण तक्क, तैनूं दयां वखाईआ। फ़रमाना होवे यक्क, इक्को एक दृढ़ाईआ। एह पकवान जाए पक्क, जिस दी समझ किसे ना आईआ। पहलों शब्द धार लैणा छक, फिर विष्न ब्रह्मा शिव भोरा देणा चखाईआ। मेरे चरण कँवल सचखण्ड दुआरे देणा रख, जिथ्थे नज़र कोए ना पाईआ। प्रेम प्रीती अंदर देणा ढक, ओढन उपर ना कोए टिकाईआ। मैं करना खेल हो के पुरख समरथ,

महिमा अकथ कथ जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म दे के वक्ख वक्ख, हुक्मरान देणे उपजाईआ। त्रैगुण माया झोली घत्त, पंचम तत माया जोड़ जुड़ाईआ। वंड वंडाउण चुरासी लख, चारे खाणी खेल खिलाईआ। चारे बाणी कर प्रगट, नाम डंका देणा वजाईआ। पंजां तत्तां खोल्ह के हट्ट, काया माटी सोभा पाईआ। आपणी नूर जोत कर प्रतख, लोकमात सोभा पाईआ। अवतार पैगम्बर आपणा नाम दस्स, करां सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं रोटी पक्की तेरी जोती अग्ग, दूजी अगन ना कोए तपाईआ। तूं वेख सूरे सर्बग्ग, बेपरवाह तेरी वड्याईआ । मैं सब तों रखां अलग, हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। तेरे चरण कँवल देवां ढक, रहमत तेरी विच छुपाईआ। कुछ आपणा भेव दस्स, पुरख अकाल परदा लाहीआ। अबिनाशी करता प्या हस्स, सोहणा राग सुणाईआ। मेरे वल खोल्ह के अक्ख, नैणां नैण लैणा तकाईआ। मैं करना खेल अगम्मी जग, जागरत जोत डगमगाईआ। चुरासी अंदर जाणा वस्स, आत्म परमात्म सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला आप चुकाईआ। शब्द कहे रोटी सोहणी हरि जू वेख, तेरे दर टिकाईआ। सांभ के रखीं आपणे देस, सुहञ्जणे घर वड्याईआ। जिस दा कोई ना समझे भेत, परदा ना कोए चुकाईआ। मैं मँगां वर एक, एकँकारा झोली डाहीआ। तूं बख्शीं साची टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। किस बिध धारें लोकमात भेस, आपणा आप बदलाईआ। पुरख अकाल किहा मैं धुर दा बण नरेश, नर नरायण अख्वाईआ। शब्दी सुत लोकमात तैनूं देवां भेज, भजन बन्दगी तेरी झोली पाईआ। जोती जलवा दे के तेज, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। सदा तेरी माणां सेज, घर साचे वज्जे वधाईआ। मेरा रूप रंग ना कोई रेख, चक्र चिन्न्ह नज़र ना आईआ। तेरी सदा बाल जवानी अल्हड़ रखां वरेस, बिरध रूप ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे एह रोटी सोहणी सुहञ्जणी, सोभावन्त वड्याईआ। एह किस दुआरे रखणी, कवण बिध खुआईआ। पुरख अकाल कहे पहलों तूं मैं चक्खणी, रसीआ रस ना कोए बणाईआ । फेर अगम्म दुआरे टंगणी, जिथों सके ना कोए उठाईआ। जिस वेले मैं निरगुण धार सरगुण नाल आत्म शब्द जोत करां मँगणी, गुर अवतार पैगम्बर रूप बणाईआ। उन्हां जाण तों पहलों सचखण्ड दुआरे मेरे कोलों मँगणी, भोरा भोरा चार जुग खुआईआ। जिस दा खेल होणा विच वरभण्डणी, ब्रह्मण्ड फोल फुलाईआ। उह देवे सच अनन्दनी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ । पुरख अबिनाशी दया कमाउँदा ए। सुत दुलारे सच दृढ़ाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव उठाउँदा ए। भोरा भोरा सर्ब चखाउँदा ए। अगली लोड़ आप दृढ़ाउँदा ए। गुर अवतार

पैगम्बर नाल मिलाउँदा ए। सच सुअम्बर मात रचाउँदा ए। जुग चौकड़ी मेट के अडम्बर, कूड़ी क्रिया दूर कराउँदा ए। सर्ब कला भरतम्बर, भरपूर आप अख्वाउँदा ए। जिस वेले कलयुग अन्तिम कूड़ी वासना होवे मन बन्दर, दह दिशा आप भटकाउँदा ए। अंदरों खुल्हे किसे ना जंदर, जीवन जुगत ना कोए जणाउँदा ए। हरि का मन्दिर दिसे खण्डर, खण्डा खड़ग ना कोए चमकाउँदा ए। लेखा मुके ना जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पन्ध ना कोए मुकाउँदा ए। नज़री आए ना कोई पंडत, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाउँदा ए। मुल्ला शेख़ दिसण नंगत, ओढ़ुन सीस ना कोए टिकाउँदा ए। सृष्टी दृष्टी होवे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए मिलाउँदा ए। गुर अवतार पैगम्बर ओस वेले प्रभ दर ते करन मिन्नत, सीस जगदीश सर्ब निवाउँदा ए। अख़ीरी रहे कोई ना हिम्मत, हौसले सर्ब ढाउँदा ए। मन मनुआ करे इल्लत, धीरज धीर ना कोए धराउँदा ए। गुर अवतार पैगम्बरां दे सारे होवण निन्दक, इक दूजे नूं सिफ्त ना कोए सलाउँदा ए। ओस वेले पुरख अकाला वखावे आपणी सिम्मत, रहिबर इक्को राह जणाउँदा ए। जन भगतां मेटे चिन्त, दुखड़ा दर्द वंडाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाउँदा ए। धुर फ़रमाना इक सुणावांगा। दरगाह साची सच कमावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव उठावांगा। गुर अवतार पैगम्बर खेल खिलावांगा। सृष्ट सबाई रच स्वयम्बर, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगा। जुग चौकड़ी मेट अम्बर, कलयुग कूड़ी क्रिया वेख वखावांगा। लख चुरासी वेखां अंदर, काया माटी परदा लाहवांगा। मनुआ दह दिशा जो भज्जे बन्दर, मन कल्पणा खोज खुजावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमावांगा। धुर दी करनी कार कमाएगा। पुरख अबिनाशी वेख वखाएगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पार कराएगा। कलयुग कूड़ कुड़िआर चारों कुण्ट डंक वजाएगा। लेखा लिखण गुरु अवतार, भविक्खतां वंड वंडाएगा। धुर दी रोटी दा सारे करन सवाल, सवाली बचया रहिण कोए ना पाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाएगा। धुर दा हुक्म सुणावेगा। पुरख अबिनाशी दया कमावेगा। घट निवासी वेख वखावेगा। शाहो शाबाशी फेरा पावेगा। धुर दा साथी रंग रंगावेगा। जो आदि कथा आखी, अन्त ओसे पूर करावेगा। जेहड़ी गुर अवतार पैगम्बरां रोटी खाधी, खाण तों पहलों उन्हां आपणा नूर चमकावेगा। एह वस्त अमोलक किसे ना लाधी, जगत जहान ना कोए वरतावेगा। इक वार नज़री आए जो गोबिन्द दे बच्चयां दी दादी, गुजरी अक्ख दरसाईआ। जिस दे नाल पक्की नहीं कोई हांडी, रसना रस ना कोए चखाईआ। उह ओसे वेले बुरज अंदर गांदी, सरहँद दए दुहाईआ। किसे कम्म नहीं आउणा सोना चांदी, जगत माया ना कोए वड्याईआ। तिन्न वेरां उठ के सरहाणयों होई पवांदी, पवांदिउँ सरहाणा आप बदलाईआ। तूं

ही तूं ही ढोला गांदी, पुरख अकाल इक मनाईआ। हथ्थ जोड़ के होई बांदी, बन्दना सीस निवाईआ। प्रभू तेरी खेल किस तरां दी, मैनूं अग्गे दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुजरी सुण पुकार, पुरख अकाल दिती वड्याईआ। उठ वेख आपणा लाल, जो लालां घोल घुमाईआ। अन्त आपणी बदल के चाल, गोदावरी कन्ढा सुहाईआ। जोती मिल के पुरख अकाल, शब्दी रूप वटाईआ। जिस वेले मुर्शद हो के मुरीदां पुच्छे हाल, निरगुण वेस वटाईआ। आपणी पिछली लेखे लावे घाल, अग्गे चले हक़ रज़ाईआ। एह वस्त अमोलक रखे नाल, धुर दी धार विच्चों वखाईआ। भगत सुहेले होवण बाल, गुरमुख रंग रंगाईआ। जिस वेले गुरमुखां नूं रोटी खाण ना देवे विच किसे थाल, ख़ाली हथ्थ फड़ाईआ। इहो खेल सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, जिस धार विच गुर अवतार पैगम्बर चख के आपणी खुशी बणाईआ। ओथे खाणा ढक्या नहीं जांदा नाल किसे रुमाल, प्रभ दी किरपा सच प्रशाद अख्वाईआ। सदा निक्के निक्के गुर अवतार पैगम्बर खांदे रहन्दे बाल, बिन रसना जिह्वा मुख मुख लगाईआ। जिस नूं खा के कदी ना हुंदे कंगाल, कंगाली नज़र कोए ना आईआ। जिस ने खाधा ओह दो जहानां बणया दलाल, दलाली शब्द धार कमाईआ। एह खेल सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, जो लोकमात दिता वखाईआ। सवा सेर कहे मैं नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग घाली घाल, जुग जुग राह तकाईआ। कवण वेला आवे दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। साचे भगतां करे संभाल, सम्बल विच आपणा डेरा लाईआ। लेखे ला के शाह कंगाल, इक्को रंग रंगाईआ। सच भण्डारा दए खवाल, भुक्खयां भुक्ख मिटाईआ। मुहब्बत विच होवे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। सति धर्म दा सच लगावे निशान, निशाना इक्को इक झुलाईआ। धुर संदेसा देवे आण, अनक कल धारी आप दृढ़ाईआ। जन भगतां दा लेखे लाए पकवान, परम पुरख प्रभ बेपरवाहीआ। सवा सेर दी रोटी कहे मैं जगत वाला नहीं अन्न, उत्भुज रूप ना कोए वटाईआ। मैं प्रभ दी चरण धूढ़ दा दान, जो विष्नूं झोली पाईआ। मैं ढक्या ओस मकान, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सिरफ़ मातलोक आई भगतां नूं समझाण, आपणा रूप बदलाईआ। गुरमुखो किसे कम्म नहीं आउँदा पीण खाण, जिंनां चिर मिले ना धुरदरगाहीआ। नेत्र खोल्ह के वेखो मार ध्यान, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। जो भगतां दी लाउण आया मीज़ान, जुग विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे तमाम, तमअ दी तमन्ना दए गवाईआ। सच दुआरे बख्शे इक बिसराम, बिस्तर अवर ना कोए रखाईआ। जिथ्थे आत्मा परमात्मा मिल के खुशी मनाण, नूर नूर विच समाईआ। गुरमुखो अन्त अख़ीरी तुहाडा उह मकान, जिथ्थे दीआ बाती कमलापाती इक रुशनाईआ। ओह साहिब सुहेला इक इक्केला दुहेला करे जगत जहान, वेला वक्त आप सुहाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजवान, देवणहारा धुर दा दान, दाता दानी दयावान दयानिध ठाकर स्वामी अन्तरजामी अबिनाशी करता दु:ख दर्द हरता मर्दाना मर्द वंडे दर्दा दीनां नाथ दयानिध इक अख्वाईआ।

❋ १२ चेत शहिनशाही सम्मत ४ निरँजण सिँघ दे गृह हरि संगत लुधियाणा ❋

चिट्ठा पोणा कहे मैं सब दा परदा ढकदा, ओढुन जगत जगदीश जणाईआ। लहिणा देणा आदि जुगादि सुणावां हक़ दा, हक़ीक़त विच्चों निरगुण सरगुण फोल फुलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी आया तकदा, बिन अक्खां नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। परम पुरख परमात्म चार कुण्ट दह दिशा आया लभ्भदा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण ध्यान लगाईआ। नाम संदेसा दो जहानां मर्द मर्दाना देंदा आया सच दा, सति सतिवादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी इक दृढ़ाईआ। नित नवित्त बण के पाँधी आया नचदा, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त खेल वखावे पुरख समरथ दा, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी आपणी कल वरताईआ। झगड़ा मुके कूड़ कुड़िआरे रथ दा, अगनी तत अगनी अग्ग जलाईआ। इक्को ढोला गीत संगीत दो जहान सृष्ट सबाई अन्तर आत्म होवे जपदा, जग जीवण दाता ध्याईआ। सचखण्ड दुआरा भगत सुहेला सद रहे वसदा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पोणा कहे मैं सब दा ढकणा परदा, लिखण पढ़ण दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं सच दुआरे मंज़ल इक्को चढ़दा, जिस दी पौड़ी डण्डा नज़र किसे ना आईआ। बिन नेत्र लोचण नैण मैं दरस इक्को दा करदा, जो निराकार साकार आपणी खेल खिलाईआ। सति दुआरे सीस जगदीश चरण कँवल धरदा, धरनी धरत धवल धर्म दुआरा वेख वखाईआ। ना जम्मदा ना कदे मरदा, जीवण मरन विच कदे ना आईआ। अन्तिम खेल वेखां कलयुग कल दा, कूड़ी क्रिया फोल फुलाईआ। जगत संसार माया ममता अगनी विच जलदा, ततव तत सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक दृढ़ाईआ। पोणा कहे मेरी प्रणाम, नमो नमो सीस झुकाईआ। सचखण्ड निवासी श्री भगवान, भगवन तेरा राह तकाईआ। थिर घर निवासी वड बलवान, शब्दी दाते लै अंगड़ाईआ। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, हरि पुरख निरँजण फेरा पाईआ। एकँकारे धुर दे काहन, आदि निरँजण कर रुशनाईआ। अबिनाशी करते खेल महान, श्री भगवान परदा उहला दे उठाईआ।

७३
२१

पारब्रह्म ब्रह्म लेखा वेख जहान, लख चुरासी फोल फुलाईआ। धुर दा हुक्म संदेसा दे आण, आनन फ़ानन आपणी कार कमाईआ। चार जुग दा झगड़ा मुके तमाम, तमअ तमन्ना कूड़ी दे गुआईआ। साचा मार्ग दस्स आसान, अहसान सिर ना कोए रखाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त तेरा नाम गाण, इक्को ढोला बण विचोला दे समझाईआ। तूं आत्म परमात्म धुर दा काहन, सीता सुरती आप प्रनाईआ। मनुआ मन ना रहे शैतान, शरअ दा लेखा देणा मुकाईआ। काया मन्दिर भाग लगाउणा मकान, काअबा इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे दीवा बाती जगे महान, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। अमृत आत्म परमात्म रस दे पीण खाण, जगत तृष्ना लेख रहे ना राईआ। दरगाह साची ठांडे दर कर परवान, परम पुरख प्रतख तेरी ओट तकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण होवे गान, दूजी विद्या अवर ना कोए पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सजदयां विच सारे सीस झुकाण, नमो नमो नमस्ते डंडावत विच आपणा आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक सुणाईआ। पोणा कहे मैं परम पुरख दी ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वटाईआ। मैं सच संदेसा देवां आख, आख़र इक्को हुक्म सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द जलवा नूर कर रुशनाईआ। परम पुरख परमात्म आपणा खेले खेल तमाश, ख़ालक ख़लक फ़लक अर्श कुर्श सारे खोज खुजाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेखणहारा गोपी काहन रास, मण्डल मण्डप परदा दए उठाईआ। सर सरोवर अन्तर आत्म निरंतर हो के वेखे तीर्थ ताट, घाट किनारा इक्को सोभा पाईआ। जन भगतां जुग चौकड़ी जन्म कर्म दे विछड़यां पूरी करे आस, आसा मनसा आपणे रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सच दुआरे सदा वस्से पास, जगत विछोड़ा रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा सति सतिवादी इक सुणाईआ। सवा गज़ कहे मैनूं कहिण सवाया, सद सद ढोला गाईआ। इक इक्क मेरा खेल वखाया, भेव अभेदा आप जणाईआ। इक दा सवा निरगुण सरगुण वंड वंडाया, दूजी धार ना कोए बणाईआ। जिस विच गुर अवतार पैगम्बर आप टिकाया, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर एसे विच समाईआ। जिस लख चुरासी वंड वंडाया, त्रैगुण माया पंज तत अगम्मी घाड़त लए घड़ाईआ। जो जोती जाता पुरख बिधाता आप अख्वाया, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा परदा आप चुकाईआ। सवा गज़ कहे मैं अगम्म दुपट्टा, ताणा पेटा नज़र कोए ना आईआ। किसे हथ्थ ना आवां चौदां तबकां चौदां लोकां हट्टां, चार कुण्ट दह दिशा फोल फुलाईआ। मैं ओस दुआरे वसां, जिथ्थे वसल मिले नूर अलाहीआ। सब कुछ नज़र आवे बिना अक्खां, चारों कुण्ट खोज

खुजाईआ। वेखां खेल पुरख समर्था, जो करनी दा करता आप कराईआ। किस बिध कलयुग अन्तिम जन भगतां लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्था, पूरब पूरब खोज खुजाईआ। जिन्हां दा भाग बदले मस्तक मथ्था, धूढ़ी ख़ाक रेण चरण कँवल छुहाईआ। निज आत्म परमात्म देवे आपणा रसा, रसीआ हो के आप चखाईआ। भगतां दे अंदर प्रेम प्रीती अंदर वसा, घट घट बैठा सोभा पाईआ। निरगुण धार निरवैर हो के सदी चौधवीं फिरे नठ्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सवा गज़ कहे मेरी वखरी धार, धरनी धवल समझ कोए ना पाईआ। मेरी आसा रख के गए तेई अवतार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता आपणी कार कमाईआ। जग नेत्र नज़र ना आवे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सारे बैठे सीस निवाईआ। सो खेल करे आप करतार, क़ुदरत दा करता कार कमाईआ। जिस नूं लभ्भदे रहे सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। सो जोती जाता पुरख बिधाता सति स्वामी अन्तरजामी हो उज्यार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी कार कमाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर निरगुण सरगुण पावे सार, महासार्थी आपणी सेव कमाईआ। जिस दा लेखा लिख्या ना जाए जगत इबारती, उतारी जाए ना किसे तों आरती, खेल करे ना पुरख नार दी, तत्तां वाली वंड ना कोए वंडाईआ। एह रमज़ सच्ची सरकार दी, जो जुग चौकड़ी लख चुरासी जन्म कर्म विचारदी, भरमां दा भरम दए मिटाईआ। ओह वाट तक्के खुशीआं वाले सतारां हाढ़ दी, हर हिरदा वेख वखाईआ। जन भगतां मुहब्बत देवे अगम्मे यार दी, जिस दा याराना ना कोए तुड़ाईआ। जगत सृष्टी वेखणी हारदी, लहिणा देणा अन्त मुकाईआ। ठोकर वेखणी अगम्मे ठठयार दी, जो साढे तिन्न हथ्थ काया माटी भाण्डे लए ठुकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सवा गज़ कहे मेरी पिछली वेखो मिणती, मिन्नतां विच जणाईआ। मेरा वक्त लँघया कर कर गिणती, सदी चौधवीं फेरा पाईआ। मैं झगड़ा छड्डां सिम्मती, समें नूं सीस निवाईआ। गुर अवताार पैगम्बर रिहा कोई ना हिम्मती, बलहीण जगत लोकाईआ। साचे धर्म दी करे कोई ना मिणती, पैमाना हथ्थ ना कोए रखाईआ। शरअ विच सब दा मन होया इलती, इल्म इल्म नाल करे लड़ाईआ। रमज़ समझे ना कोई सूफ़ीआं वाले दिल दी, दिलबर दिलदार ना कोए मिलाईआ। हुण प्रभ ने खेल नहीं रहिण देणी ढिल्ल दी, धुर दी करनी कार भुगताईआ। वेखणी खेल अम्बर नील दी, नीले वाला आपणा हुक्म वरताईआ। गुंजाइश रहिण नहीं देणी किसे अपील दी, अपरम्पर स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। ख़ाहिश बदले ना कोए दलील दी, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। दुनियां उत्ते घड़ी आउणी ज़लील दी, ज़िल्लत विच लोकाईआ। एह खेल ओहो अर्जन भील दी, मिले माण वड्याईआ। धार प्रगटणी छैल छबील

दी, बांका इक्को नज़री आईआ। कुछ आसा कहे कबीर दी, क़बरां तों बाहर दए दुहाईआ। सदी चौधवीं मंज़ल रही ना किसे फ़कीर दी, फ़िकरा सच ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाल नूं लोड़ पई सतिजुग वाली तामीर दी, कलयुग कूड़ी जड़ उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दए उठाईआ। सवा गज़ कहे मैं लम्मा चौड़ा, जुग चौकड़ी खेल वखाईआ। मेरा समझे कोई ना पौड़ा, डण्डा हथ्थ किसे ना आईआ। जगत वासना दो जहान फिरे दौड़ा, भज्जे वाहो दाहीआ। काया अमृत रस सब दा होया कौड़ा, मिठ्ठा रस ना कोए चखाईआ । गृह मन्दिर होया अन्धघोरा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा पाया पंजां चोरां, चोरी चोरी लुकण थाउँ थाईंआ। माया ममता पाया लोहड़ा, बौहड़ी बौहड़ी करे ख़लक खुदाईआ। किसे समझ ना आई क्यों सस्से उपर लग्गा होड़ा, निरगुण आपणी कार कमाईआ। क्यों हँ ब्रह्म भेव चुकाए तोरा मोरा, तुरत दए दृढ़ाईआ। कूड़ कुड़िआरा जवाब दे के कोरा, काया कुड़ा दए बदलाईआ। सतिजुग सच सुणा के दोहरा, दोवें रूप दए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सवा गज़ कहे मेरा नज़र ना आया किसे रंग, रंगत सच ना कोए जणाईआ। मेरी विष्नूं मँगी मँग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। मेरा ब्रह्मे मंगिआ संग, सगला संग बणाईआ। मेरे नाल शंकर ढक्या नंग, ओढुन तन टिकाईआ। तेई अवतारां वंडी वंड, धुर दी आस रखाईआ। मैनूं मूसे चुक्या कन्ध, आपणा भार बणाईआ। मेरे उत्तों दी ईसा गया लँघ, क़दम क़दम नाल बदलाईआ। मैनूं मुहम्मद ने बन्नूया घोड़े दी तंग, रासां नाल छुहाईआ। मेरी नानक दित्ती गंढु, बग़दाद दए गवाहीआ। मैनूं अर्जन पाई ठंड, रावी कन्ढे डेरा लाईआ । मैनूं तेग़ बहादर कीता बन्द, गठड़ी करमां वाली टिकाईआ । मेरा गोबिन्द ढक्या नंग, आसण पलाणे उत्ते छुहाईआ। उत्ते बैठा सूरा सरबंग, खण्डा खड़ग इक खड़काईआ। पुरख अकाल दी मँगी मँग, वड तेरी बेपरवाहीआ। जिस वेले सदी सदीवीं गई लँघ, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। दीन दुनी होई नंग, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। नाम झगड़ा पए विच वरभण्ड, वरभण्डी कूड़ लोकाईआ। मन कल्पणा वधे गन्द, रसना जिह्वा हल्काईआ। साचा गावे कोई ना छन्द, सहिंसा कूड़ ना कोए मिटाईआ। आत्म मिले ना परमानंद, निजानंद ना कोए समाईआ। निरगुण जोत चढ़े ना चन्द, घर विच घर ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा मिटे ना जगत खण्ड, नव नौ चार ना डेरा ढाहीआ। पैंडा मुके ना जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज लेखा ना कोए मुकाईआ। नेत्र रोवे गोदावरी गंग, जमना सुरस्ती दए दुहाईआ । मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ्ठ होवण रंड, गुरुदुआर हाहाकार सुणाईआ। सच दुआर जाए कोई ना लँघ, मंज़ल हक़ ना कोए वखाईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल दीन दयाल ओस वेले मैं मँगां एहो मँग, मांगत हो के झोली डाहीआ। सवा

गज़ दी तेरी धार जन भगतां दी आत्म सेज विछा पलँघ, जगत सिँघासण दी लोड़ रहे ना राईआ। ओह सदा गावण तूं मेरा मैं तेरा छन्द, खुशी होवे बन्द बन्द, बन्दगी इक्को इक दृढ़ाईआ। तेरे नाल जावां हंढ, झगड़ा छड खण्ड ब्रह्मण्ड, सचखण्ड दुआर जावां लँघ, जिथ्थे तेरा नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। सवा गज़ कहे मैं भगतां बणां अगम्मी सेज, सुहञ्जणा वक्त सुहाईआ। सचखण्ड निवासी हुक्मे अंदर मैनूं दिता भेज, भजन बन्दगी इक दृढ़ाईआ। सन्त सुहेले जा के वेख, गुरमुख ध्यान लगाईआ। जिन्हां दे अंदरों बदलदी रेख, बाहरों करनी ना पए पढ़ाईआ। काया मन्दिर चुकावां भेत, परदा आप उठाईआ। नज़री आवां नेतन नेत, निज नैण करां रुशनाईआ। साचा करां हेत, मिल मिल वज्जे वधाईआ। स्वामी रहां हमेश, विछड़ कदे ना जाईआ। वखावां आपणा देस, सचखण्ड दुआरा सोभा पाईआ। जिथ्थे बैठा इक नरेश, नर नरायण नज़री आईआ। ना मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। जो खेल करे हमेश, जुग जुग हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ। सवा गज़ भगतां अन्तर विछाउणा, विषयां तों बाहर रखाईआ। निरगुण आपणा रंग रंगाउणा, अगम्म अथाह वड्याईआ। साची सेव लगाउणा, लग मातर ना कोए समझाईआ। घर सुहञ्जणा इक सुहाउणा, घर घर विच सोभा पाईआ। धुर दा दीपक इक जगाउणा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। भगत सुहेला उपर बहाउणा, फड़ बाहों आप टिकाईआ। सतिजुग साचा धर्म चलाउणा, कलयुग कूड़ा चलित्र गुवाईआ। आत्म परमात्म इक्को नज़री आउणा, दूजा रंग ना कोए वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउणा, गावण गा गा खुशी बणाईआ। धर्म दुआरा इक वसाउणा, वाहवा वजदी रहे वधाईआ। जिथ्थे लेखा मुके उनन्जा पाउणा, बिन पवणां चवर झुलाईआ। धुर दे गुरमुखां रंग रंगाउणा, भगतां सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जन भगतां देवे धुर दा दान, आत्म परमात्म कर परवान, सच सिँघासण सुहाए श्री भगवान, अबिनाशी करता करनी दा मालक, ख़लक दा ख़ालक, हरिजन साचे जिउ पिंड तन काचे, लहिणे देणे चुकाए मस्तक माथे, मस्त खुमारी नाम इक रखाईआ।

✻ १३ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड सुधार ज़िला लुधियाणा मिल्खा सिँघ दे गृह ✻

तेरां चेत कहे सब ने करना सुधार, सुधार निवासीआं सिध्ध सुणाईआ। एका सतिगुर शब्द करना प्यार, जो आदि

जुगादि जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। जिस दा खेल पैगम्बर गुर अवतार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस वटाईआ। सो सच संदेसा देवां आपणी धार, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। चार कुण्ट दह दिशा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल करे ख़बरदार, गगन गगनंतर आप जगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़हब ज़ात पात राउ रंक झगड़ा जगत खुआर, साचा रंग दए रंगाईआ। काया मन्दिर अंदर काया माटी खोल्ह के वेखो किवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। गोबिन्द अमृत रस निझर झिरना पीओ ठंडा ठार, अगनी तत रहिण ना पाईआ। अनहद नादी शब्द सुणो धुन्कार, आत्मक राग सुणाईआ। घर दीआ बाती जोत वेखो निरँकार, गृह मन्दिर करे रुशनाईआ। दर दुआरा एकँकारा इक्को दए वखाल, जिस घर बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी एक, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी आप लगाईआ। धुर फ़रमाना देंदा रहे हमेश, सति सतिवादी हो के इक दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान लिखाउँदा रिहा लेख, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वखाउँदा रहां भेख, रूप रंग रेख आपणे विच समाईआ। चार कुण्ट दह दिशा बिन अक्खां लवां वेख, नूरो नूर नूर कर रुशनाईआ। जिस कारण खेल होणा जगत वाले चेत, चेतन सुरती सब दी दयां कराईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर भविख्तां विच दस्स के गए भेत, परदा उहला आप चुकाईआ। मन कल्पणा बुद्धी करो बबेक, स्वच्छ सरूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाईआ। साचा रंग चाढ़ो तन वजूद, माटी ख़ाक मिले वड्याईआ। सतिगुर शब्द देवे आपणा हक़ सबूत, जोती जाता भेव खुल्हाईआ। जिधर तक्को सदा मौजूद, हर घट रिहा समाईआ। कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढे दूज, द्वैत रहिण कोए ना पाईआ। एकँकार इक्को सब नूं जाए सूझ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखां कलयुग राज, सदी चौधवीं खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट जगत अपाहज, धुर दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। भरमे भुल्ला त्रैगुण माया साध, पंज तत लड़ाईआ। निरगुण धार समझे ना आदि, निरंतर अन्तर परदा ना कोए लाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर जो बणा के गए समाज, रीती नीती मात रखाईआ। ओह अगम्मी समझे ना कोई बात, बातन भेव ना कोए चुकाईआ। अमृत रस लए ना कोए स्वाद, जिह्वा जगत हल्काईआ। धुन आत्मक सुणे कोई ना नाद, साज बाहरों रहे खड़काईआ। गोबिन्द धार होए ना कोए विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। मन

कल्पणा सब दी पकड़ी वाग, दह दिशा रही भुआईआ। बिन सतिगुर शब्द निर्मल जोत जगाए ना कोए चराग़, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। हँस बुद्धी होई काग, माणक मोती चोग नाम ना कोए चुगाईआ। माया कारण करन वैराग, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ दुरमति मैल धोवे ना कोई दाग़, पतित पुनीत ना कोए जणाईआ। कलयुग मानव जाणा जाग, आलस निंदरा देणा गवाईआ। तेरा आदि जुगादी आत्म परमात्म साथ, सगला संग लैणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर इक वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बदलदा आया रीत, कलयुग अन्तिम लेखा दयां चुकाईआ। खेल अगम्मा दस्सां अनडीठ, जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद कहिण कोए ना पाईआ। परदा लाहवां बिन मन्दिर मसीत, काया काअबा इक जणाईआ। जिथ्थे झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। दीन मज़हब दी नहीं कोई लीक, ज़ात पात ना वंड वडाईआ। ओथे नानक गोबिन्द करे तस्दीक, शहादत इक भुगताईआ। परवरदिगारा लाशरीक, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस दे विच हक़ तौफीक़, देवणहार धुरदरगाहीआ। सब दी आसा मनसा करे पूरी उम्मीद, नित नवित्त वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणयों धुर फ़रमाना, ब्रह्मण्डां खण्डां बाहर जणाईआ। करे खेल श्री भगवाना, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस दा इक्को सुत दुलारा शब्दी गोबिन्द नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। लेखा जाणे जीव जहाना, लख चुरासी खोज खुजाईआ। सचखण्ड दुआरे हो प्रधाना, दरगाह साची डंक वजाईआ। संदेसा देवे तेई अवतार निगाह मारो जगत जहाना, वीहवीं सदी अक्ख खुल्हाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद होवे निगाहबाना, नैण नैण नाल मिलाईआ। नानक गोबिन्द जो दे के आया परवाना, परम पुरख नाल मिलाईआ। सो नाता तुटिआ कूड़ जहाना, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। माण रिहा ना शास्त्र सिमरत वेद पुराणा, खाणी बाणी सीस ना कोए निवाईआ। मन मनुआ बण के सब दा राणा, हुक्म आपणा इक मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म समझे कोई ना गाणा, निरगुण निरगुण मेल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हे आप, हरि करता वड वड्याईआ। सृष्टी दी दृष्टी विच्चों भुल्ला जाप, गुर अवतार पैगम्बरां सिख्या गए भुलाईआ। रूह बुत रिहा कोई ना पाक, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। झगड़ा प्या तन माटी ख़ाक, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी करे लड़ाईआ। आत्म परमात्म खोल्ह के वेखे कोई ना ताक, जलवा नूर ना कोए रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दा देवे साथ, सगला संग निभाईआ। जो भविख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच दृष्टां विच गुर अवतार पैगम्बर गए

आख, संदेसा धुर दृढ़ाईआ। सो पूरा प्रभ करना वाक, क्या वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं देवां धुर दा हुक्म, हरि करता आप जणाईआ। कलयुग रही धर्म ना सुच्चम, संजम संग ना कोए निभाईआ। निर्मल आत्म दिसे कोई ना उत्तम, बुध्ध बबेक ना कोए बणाईआ। जीव जंत साध सन्त इक दूजे नूं लुट्टण, घर घर पई लड़ाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद दा वेला आया मुक्कण, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। मूसा ईसा धुरदरगाहे झुकण, निउँ निउँ सीस निवाईआ। तेई अवतार आपणी अंगड़ाई लै के उठण, वेद व्यासा दए गवाहीआ। नानक गोबिन्द धार शब्दी रूप सब नूं आए पुच्छण, घट घट अंदर वेख वखाईआ। किस बिध जिज्ञासू प्रभ तों रुस्सण, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। मन कल्पणा दीन दुनी विच जुट्टण, झगड़ा कूड़ ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे जगत वेखां थक्का मांदा, चार कुण्ट दह दिशा नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया अंदर बांधा, बन्दगी सच ना कोए कमाईआ। मन विकारी तीर्थ नहांदा, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। बेशक गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ जांदा, काया काअबा दरस कोए ना पाईआ। साचा दर प्रभ चरण मिले किसे ना ठांडा, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला लख चुरासी वेखणहारा भाण्डा, काया माटी खोज खुजाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त आउँदा जांदा, आवत जावत आपणी खेल खिलाईआ। जिस दा लेखा समझे कोई ना पंडत पांधा, मुल्ला शेख़ भेव ना आए राईआ। सो लहिणा देणा लेखा जाणे सचखण्ड दुआर धुरां दा, दरगाह साची परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा रिहा वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो जगत जग सज्जण, हर हिरदे दयां सुणाईआ। कलयुग ठीकर वेला होया भज्जण, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। प्रभ प्रीती विच होवो मग्न, सुरती शब्द जुड़ाईआ। त्रैगुण माया बुझे अगन, ततव तत ना कोए जलाईआ। सच दुआरा मिले इक्को लँघण, पाँधी पन्ध गवाईआ। जिथ्थे निरगुण जोत दीपक जगण, दिवस रैण होए रुशनाईआ। नाद अनादी ताल वज्जण, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। दर्शन होए सूरे सरबंगन, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव दर ठांडे मँगण, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए जणाईआ। धुर दा शब्द कहे तेई अवतार वेखो मँगदे, मांगत हो के झोली डाहीआ। सच दुआर बहि बहि मूल ना संगदे, नेत्र नैण चरण कँवल ध्यान लगाईआ। जिन्हां दे खेल अंदर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गए लँघ के, आपणा पन्ध मुकाईआ। ओसे ने आपणी धार विच्चों ईसा मूसा मुहम्मद घल्ले वंड

८० २१

के, धुर दा कलमा झोली पाईआ। ओसे दे नूर विच्चों नानक निरगुण सरगुण धुर फ़रमाना आया मन्न के, मनसा सब दी पूर कराईआ। ओसे दी जोत धार गोबिन्द तन वजूद आया चल के, काया माटी सोभा पाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर ओसे विच रल के, जोती शब्दी रूप समाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा जाणे जल थल के, महीअल खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सां एको मालक, हरि करता वड वड्याईआ। जो सृष्टी दृष्टी दा ख़ालक, ख़लक विच समाईआ। सदी चौधवीं जिस ने बणना सालस, साहिब सुल्ताना नज़री आईआ। चार वरन अठारां बरन जिस ने ख़ालसा बणाउणा ख़ालस, दुरमति मैल अंदरों दए धुआईआ। मन कल्पणा रहिण ना देवे नालश, शब्द खण्डा इक चमकाईआ। सन्त सुहेले बणाए आजज़, गुरमुख गुर गुर बूझ बुझाईआ। जोती नूर अगनी ला के आतश, कूड़ी क्रिया दए जलाईआ। गुरसिख बणा के धुर दे याचक, गोबिन्द शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। सब दे अंदर आपे होए वाचक, विच्चरण दी लोड़ रहे ना राईआ। लेखा जाणे निन्दक साकत, साख़िआत भेव दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कलयुग कूड़ी क्रिया ज़ुलम ना करे बरदाशत, दरगाह साची वेख वखाईआ। जिस ने लख चुरासी कीती काश्त, अन्तिम आपे कट वखाईआ। शब्द गुरु कहे प्रभ मैनूं देण वाला इजाज़त, धुर दी धार हुक्म सुणाईआ। फेर चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप धुर दे हुक्म दी होवे आफ्त, आफ्ताब ना कोए रुशनाईआ। मनुआ मनसा विच करे बग़ावत, बग़लगीर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक उपजाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं झुक के प्रभू दे क़दमा, क़दीम दा लेखा दयां जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दीआं गाउँदे गए नज़मां, ढोले रागां नादां शब्दां विच शनवाईआ। ओस दा तन वजूद माटी ख़ाकी नहीं बदना, ममता मोह ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म बण के सज्जणा, निरगुण निरगुण मेला मेले सहज सुभाईआ। जिस दा दीप प्रकाश जोत अगम्मी इक्को जगणा, जागरत जोत करे रुशनाईआ जिस ने सन्त सुहेले गुरमुख हरिभगत दुआरे सद्दणा, दर ठांडा इक वखाईआ। जिस दा फ़तिह डंका नाम नगारा नव नौ चार वज्जणा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सो खेल करे सूरा सर्बग्गना, लेखा जाणे विच अदना, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भाण्डा भज्जणा, सतिजुग साचा मात लग्गणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, क़ुदरत दा क़ादर बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे कलयुग कूड़ी क्रिया हटाउणा हट्ट, कूड़ वणजारा रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म दा साचा मार्ग दस्स, चार वरनां करनी इक पढ़ाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अन्तर अक्ख, निरंतर परदा देणा उठाईआ।

तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म नाता सच, तत्तां वाली ना कोए लड़ाईआ। भाग लगाउणा काया माटी कच्च, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जगत विकार विभचार हँकार पार करा के हद्द, हदूद धुर दी देणी वखाईआ। जिथ्थे वज्जे अगम्मी नद, अनहद नादी नाद शनवाईआ। झगड़ा दिसे ना माया जग, जागरत जोत डगमगाईआ। भगत सुहेले गुरमुख सज्जण सद्द, सदमे देणे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्टी दृष्टी वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखां सृष्टी, सिरजणहार दए वड्याईआ। चार जुग दे गुर अवतार पैगम्बर वेखां इष्टी, इष्ट देव जो आत्म नाल करन कुड़माईआ। धर्म दुआर बण गृहस्ती, सेज सुहञ्जणी रहे हंढ्ढाईआ। उनां दी धुरदरगाहे इक फ़रिसती, बिन अक्खरां लेख बणाईआ। जग नेत्र किसे ना दिसदी, बुद्धिवान पढ़न कोए ना पाईआ। ओथे झगड़ा नहीं स्वर्ग बहिश्ती, जन्नत लोड़ रहे ना राईआ। साची खेल नर निरँकार इक दी, जो एकँकार आपणी कल वरताईआ। उस ने पिठ ठकोरी कलयुग सिख दी, सिख्या सच समझाईआ। बिन तेरे मन कल्पना किसे ना जित्तदी, कूड़ा डंक ना कोए सुणाईआ। टक्कर लवा दे पत्थर इट्ट दी, मन्दिर मसीतां वंड वंडाईआ। किसे नूं समझ ना आवे अगम्मी धार ओस चिट दी, जो गोबिन्द माछूवाड़े पुरख अकाल नाल आपणी गंढ्ढ पुआईआ। सदी चौधवीं दीन दुनी सारी पिटदी, पटने वाला नज़र किसे ना आईआ। क़लम शाही लेख लिखदी, लिख्या लेख ना कोए बदलाईआ। जिस ने खेल मुकाउणी कूड़ी क्रिया नित दी, सति सति करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सां गोबिन्द दाता, जो गहर गम्भीर अख्वाईआ। जिस ने मेटणी कलयुग अन्तिम अन्धेरी राता, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। उस नूं जन्मे कोई ना माता, बिना पिता पुरख अकाल गोद ना कोए सुहाईआ। उह गुरमुखां दे अन्तर आत्म रखे नाता, ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। धुर दी सुणाए अनोखी गाथा, जिस नूं पढ़न कोए ना पाईआ। लख चुरासी मेट के वाटा, पैंडा अगला दए मुकाईआ। मेल मिलावे नाल पुरख समराथा, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। इक्को नूर इक्को जोती इक्को जाता, जोती जोत जोत समाईआ। सदी चौधवीं सब दा वेखे खाता, चौदां लोक चौदां तबक चौदां विद्या खोज खुजाईआ। साचा दिसे कोई ना आका, अकल बुद्धी करे लड़ाईआ। अन्त अख़ीरी चीथड़ दिसे पाटा, ओढ्ढुन सीस ना कोए टिकाईआ। जिस ने चार वरन अठारां बरन अमृत धार पिआया आपणे बाटा, बातन वेखे चाँईं चाँईंआ। ओस ने कलयुग करना खेल तमाशा, मण्डल रास खोज खुजाईआ। जोती शब्दी धार प्रकाशा, नूर नुराना डगमगाईआ। बिन सतिगुर शब्द खोल्हे ना कोई खुलासा, परदा अग्गे ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर शब्द

दए वड्याईआ। सतिगुर शब्द दाता सूर, सूरबीर अखवाइंदा। जो सचखण्ड वस्से सदा हज़ूर, हरि चरणी सीस निवाइंदा। थिर घर दुआरे हो मशकूर, धूढ़ी टिक्के खाक रमाइंदा। जुग चौकड़ी पार करावे पूर, नईआ नौका नाम प्रगटाइंदा। सो कलयुग अन्तिम क्रिया मेटे कूड़, कूड़ कुटम्ब रहिण ना पाइंदा। सतिजुग सच धर्म करे ज़रुर, साची करनी कार कमाइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, मुख अन्तर निरंतर भेव खुल्हाइंदा। हउमे हंगता गढ़ तोड़े ग़रूर, गुरबत मेट मिटाइंदा। मनुआ मन ना पावे फ़तूर, फ़तवा दीन मज़हब समझाइंदा। इक्को पुरख अकाला आपणा नाम करे मशहूर, मशवरे गुर अवतार पैगम्बरां नाल सुणाइंदा। सो स्वामी सर्ब कला भरपूर, समरथ आपणी खेल खिलाइंदा। ना नेड़े ना दिसे दूर, घट घट अन्तर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। सतिगुर शब्द कहे मेरा लहिणा जगत जहान, जग जीवण दाता रिहा जणाईआ। मैं वेखणा सर्ब इन्सान, काया माटी फोल फुलाईआ। किस दे अंदर मिल्या रस पीण खाण, वस्त अमोलक सोभा पाईआ। किस दा नूर जोत होवे नुरान, कौण निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। कवण साची सेजा सुत्ता बण जवान, जगत विकारा डेरा ढाहीआ। किस नूं गोबिन्द करे परवान, आप आपणी गोद टिकाईआ। किस दा लेखा वेखे श्री भगवान, हरि करता बेपरवाहीआ। किस दे अंदर फिरे शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। कवण मंजल चढ़े महान, महबूब मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। धुर दा लेखा कहे मेरी अगम्मी लिख्त, अक्खरां विच वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दे हुक्म नाल गुर अवतार पैगम्बरां दस्सया भविख्त, भविश दए जणाईआ। जिस दा अग्गे इक्को सांझा होणा इष्ट, दूजा नज़र कोए ना आईआ। एह संदेसा दिता त्रेते राम वशिष्ट, विषयां वाला गुरु कलयुग अन्तिम रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर शब्द धुर स्वामी, स्वयम्बर लख चुरासी वेख वखाईआ। हर घट निवासी अन्तरजामी, अन्तर आत्म परदा लाहीआ। बोध अगाध अगम्मी बोल बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। अमृत रस दे के ठांडा पाणी, निझर आप झिराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस सेवा लाए चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। जिस दा तन वजूद खेल जगत दुआर अंदर रुहानी, रहमानी असमानी आपणी कल वरताईआ। सो पुरख निरँजण सतिजुग अंदर कलयुग मेटे कूड़ निशानी, काया कुटीआ साफ़ कराईआ। चार जुग दा झगड़ा मेट दीवानी, धुर दा हुक्म इक उपजाईआ। इक्को इष्ट जीव जहानी, साहिब सुल्तान सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा धुर दा घर, धर्म दुआरा इक जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं खोल्हां भेव गुझा, रमज़ आपणा नाम

लगाईआ। दूजा रहे कोई ना उघा, उगण आथण वेख वखाईआ। जो ध्यान कर के गया बुधा, बुद्धी तों परे परदा लाहीआ। जो ईसा मूसा मुहम्मद खेल वखाया लुका, नूरे नज़र नज़र रुशनाईआ। शब्दी जोती धार हरि रसना कहिणा नानक जुस्सा, जिस्म इस्म इक प्रगटाईआ। जो दसवीं धार उठा, गोबिन्द गुर वड वड्याईआ। ओह गुरमुखां उपर तुठ्ठा, मेहर नज़र उठाईआ। जिस ने चार वरन अठारां बरन बणाउणे इक्को मुठा, अग्गे वंड रहे ना राईआ। अगम्मा अमृत जाम देवे निझर रस घुट्टा, स्वांत स्वांती बूँद टपकाईआ। सब नूं कहे आउ मेरे पुत्ता, पतिपरमेश्वर नाल जुड़ाईआ। जिस दा निशाना तीर कदे ना उक्का, दो जहानां वेख वखाईआ। ओस दा खेल होणा जगत जहान जिस दीआं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान देंदे आए पुच्छां, संदेसयां विच सुणाईआ। जो सच प्रेम प्यार भगती दा भुक्खा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। उस ने कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण नहीं देणी लुट्टा, कूड़ लुटेरे देणे मिटाईआ। जेहड़ा आत्म परमात्म नालों तुट्टा, तुट्टी गंढु देणी पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकरमी हो के आपणी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं धुर दा धर्म गुलाम, सेवा सच कमाईआ। वेखां ज़िमी असमान, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। पैगम्बरां देवां पैग़ाम, सुनेहड़ा सच सुणाईआ। जिस नूं कहिंदे अमाम, अमलां तों रहित नूर खुदाईआ। सदी चौधवीं ओसे ने करना इंतज़ाम, नव नौ चार वेख वखाईआ। जिन्हां परम पुरख परमात्म दा नाम कीता बदनाम, बदीआं दा डेरा ढाहीआ। अग्गे सब नूं सांझा दस्सणा इस्लाम, इस्म आज़म इक दरसाईआ। जिथ्थे झुक झुक सजदयां विच आपणा मेटणा निशान, निशाना कलमा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो लेखा दए वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे संदेसा देणा ईसा मूसा मुहम्मद यार, मुसलसल दयां जणाईआ। आपणा अगला पिछला सुणो इज़हार, कलमयां वाली खोज खुजाईआ। गुफ्त शुनीद जाणो गुफ्तार, बिन रसना जिह्वा राग अलाईआ। जिस ने तुहानूं बणाया मुख़तियार, लोकमात दिती वड्याईआ। सो लहिणा देणा लेखा मँगे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी बचया रहिण कोए ना पाईआ। आपणी उम्मत वेखो वारो वार, अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के काया काअबा फोल फुलाईआ। कवण मिल्या परवरदिगार, कट के मंज़ल जगत दुष्वार, जगत शरीअत हो के सूफ़ी सफ़ा कूड़ उठाईआ। मुहब्बत विच बण के ख़िदमतगार, सेवा करनी अपर अपार, दर्शन पाया इक करतार, क़ुदरत दा क़ादर जो अख्वाईआ। आपणा लेखा लओ विचार, सदी चौधवीं मुकणी धार, अग्गे चलणा अगम्म विहार, जिस दी पावे कोई ना सार, अक्खरां विच बणया ना कोई लिखार, कातब हो के क़लम ना कोए चलाईआ। जिस दा हुक्म सदा जुग चार, ओह खेल करे निरँकार, शब्दी सुरत उठाए इक दुआर, जो कूड़ी क्रिया

दए निवार, सति धर्म करे उज्यार, सन्त सुहेले लए उठाईआ। गुर चेले वेखे आण, सुरती शब्दी कराए ध्यान, अकाल मूर्ती करे परवान, नाम तूरती इक निधान, सृष्टी कूड़ी क्रिया मेटे मनुआ मन ना रहे शैतान, शरअ दी शरीअत दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, लख चुरासी अन्तर अन्तर निरंतर हो के वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सां अगम्मी हस्ती, जो हस्त कँवलां विच हथ्थ किसे ना आईआ। जिस नूं कहिंदे मालक अर्शी, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। सो सचखण्ड दुआरे चार जुग दी पिछली वेखे अर्ज़ी, जो गुर अवतार पैगम्बर आए सुणाईआ। ग़रीब निमाणयां बणे अन्तिम दर्दी, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेरगर्दी, चारों कुण्ट रुशनाईआ। जिस दी खेल सदा अचरज दी, असचरज लीला आप वरताईआ। ओसे दी धार अगम्मे मर्द दी, मर्द मर्दाना इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सृष्टी वर, दृष्टी इष्टी इक वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे सारे हो जाओ शुद्ध, सुध सिध सुधार जणाईआ। नरम कर लओ बुध्ध, बिबेक रूप वटाईआ। गोबिन्द शब्द लओ बुझ, जो आदि जुगादि खेल खिलाईआ। ओसे दी याद विच जाओ रुझ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जिस दे कोल सब कुझ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक, लख चुरासी रहे ना राईआ। जिस दी इक्को नाम दी धार तुक, तुख्म तासीर दए बदलाईआ। जन भगतां उजल कर के मुख, मुक्खीए दो जहान वखाईआ। अमृत जाम देवे घुट, रस निझर इक झिराईआ। शब्दी धार पए फुट्ट, आपणी आप लए अंगड़ाईआ। करे प्रकाश अन्धेरे घुप्प, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। बिना रसना जिह्वा बोल्यां रहे चुप, चुप चुपीता सोभा पाईआ । साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर रहे लुक, बाहरों नज़र कोए ना आईआ । जो दीन दुनी दा मेटे दुःख, चिन्ता ग़म चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर मन्दिर इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो सुधार वासी, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द सरनाईआ। साहिब सतिगुर दी मन्नो आखी, जो अक्खरां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जो नाम प्याला देवे बण के साकी, रस अगम्मी इक चखाईआ। मनुआ मन रहिण ना देवे आकी, गढ़ हँकार तुड़ाईआ। मंज़ल चढ़ अगम्मी घाटी, घर साचा इक वखाईआ। जिथ्थे ना कोई दिवस ना कोई राती, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। ना संध्या ना प्रभाती, वेला वक्त ना कोए वखाईआ। इक्को नूर जोत प्रकाशी, कमलापाती पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा गोबिन्द सदा साथी, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दए चुकाईआ। तेरां चेत कहे सुणो सच संदेस, हरिजन साचे रिहा सुणाईआ। पुरख अकाल करो आदेस, जो सब दा पिता माईआ। जो बदल देवे रेख, जन्म मरन दा डेरा ढाहीआ।

अन्तर खोल्हे भेत, परदा आप चुकाईआ। आत्म परमात्म करे हेत, साचा संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर इक वखाईआ। तेरां चेत कहे वेखो घर सुहञ्जणा, काया माटी नज़री आईआ। जिथ्थे जगे जोत आदि निरँजणा, अठ्ठे पहर होवे रुशनाईआ। मिले दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। निज नेत्र पावे नाम अंजना, अन्ध अज्ञान मिटाईआ। सच डंडावत दस्से बन्दना, नमो नमो नमस्ते सजदा सीस झुकाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया भाण्डा भन्नणा, ठोकर आपणा नाम लगाईआ। जिस दा नूर नुराना गोबिन्द चन्द अर्शां फ़र्शां उत्ते सब ने मन्नणा, आखर रहिण कोए ना पाईआ। ओह खेल करे ब्रह्मण्डणा, वरभण्डण खोज खुजाईआ। जिस दा नाम तेज चण्ड प्रचण्डणा, चण्डका रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दे दर, धुर दी धार इक दरसाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो नगर निवासी, निवास अस्थान इक वखाईआ। जिथ्थे परम पुरख जोत प्रकाशी, प्रकाशवान सोभा पाईआ। जिस दी धार ना कदे विनासी, जन्म मरन ना वंड वंडाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर मन्नण आखी, हुक्मे अंदर भज्जण वाहो दाहीआ। सो भगत सुहेला सब दा साथी, सगला संग निभाईआ। काया दे अंदर दा बणे पाठी, सिमरन इक्को इक दृढ़ाईआ। जिस दी बिन अक्खरां तों पोथी जाए वाची, लिखण पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। उह कलयुग अन्तिम मेटे अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। चार वरन सांझी बणा के जमाती, जुम्मला अक्खर इक्को इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखण मार के वाटी, अगला पन्ध मुकाईआ। एह खेल पुरख अबिनाशी, हरि करता आप कराईआ। जिस दा मण्डल ओसे दी रासी, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। जिस दी सृष्ट ओसे दी प्रभासी, बिन सीता राम लख चुरासी सुरती शब्द नाल वड्याईआ। जिस दा जीवण ओसे दी फाँसी, ईसा दे के गया दुहाईआ। जिस दा नूर ओसे दी ज़ाती, मूसा मूँह दे भार सुटाईआ। जिस दा कलमा ओसे दी कायनाती, मुहम्मद हू हू नाअरा लाईआ। जिस दी खेल अगम्मी साची, सो साजण सतिगुर नानक गया दृढ़ाईआ। जिस दी सब तों औखी घाटी, सो गोबिन्द पूरी कर वखाईआ। बंस सरबंस बच्चयां दी प्रभ चरण जोड़ के नाती, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। गुरसिखां अन्त संदेसा गया आखी, सच सुनेहड़ा इक समझाईआ। मेरा ओस दे अंदर वस्सेरा मैं ओसे घर दा वासी, जिथ्थे जन्म मरन रहे ना राईआ। लेखा वेखां फेर कलयुग अन्धेरी राती, ढईआ ढौंका इक लगाईआ। जिस दी समझ ना सके कोई वाटी, पैंडा पन्ध ना कोए दृढ़ाईआ। उह खेल करे आप अबिनाशी, करनी दा करता मिल के धुर दी वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी देवे वर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग

जाए हर, सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण लख चुरासी विच्चों लए फड़, चरण धूढ़ करा के मजन, काया मन्दिर अंदर निज सिँघासण बहे वड़, दूजा धाम धुर दा राम अगम्मी काहन हक़ीक़ी पैग़ाम शब्दी तरान विच जहान नौजवान श्री भगवान साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी एकँकार इक इकल्ला सच महल्ला सच संदेस सति सति दृढ़ाईआ।

✻ १३ चेत शहिनशाही सम्मत ४ निरँजण सिँघ दे गृह लुधियाणा ✻

लाल सूहा कंचन रंग तिन्न रंग दी मिट्टी, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक बदलाईआ। जिस दी खेल जुग चौकड़ी सदा निक्की, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जिस वेले गुर अवतार पैग़म्बरां प्रभ नाम संदेसा देंदा रिहा चिट्ठी, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। ओस वेले त्रैगुण माया प्रभ दुआरे दुहत्थड़ मार के पिट्टी, लोचण नैणां नीर वहाईआ। जग नेत्र दो जहान किसे ना दिस्सी, रूप अनूप नज़र कोए ना आईआ। जिस दी धार किसे ना लिखी, शास्त्र देवे ना कोए गवाहीआ। जुग चौकड़ी समझे कोई ना मिती, वार थित ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सूहा लाल कंचन प्रभ दी अगम्मी धार, धरनी धरत धवल सुहाईआ। जिस वेले हुक्म देंदा रिहा निरँकार, निरगुण निरवैर आपणी कार कमाईआ । सचखण्ड दुआरे मारदा रिहा लकार, त्रैभवण धनी त्रिलोकी तों पार दए समझाईआ। आपणा खेल दस्सदा रिहा अपार, अपरम्पर स्वामी परदा लाहीआ। लाल रंग कहे मैं वेखां ओह यार, जो यराना धुर लगाईआ। कंचन कहे मैं तक्कया ओह घर बाहर, जिथ्थे नज़र नूर अलाहीआ। सूहा कहे मैं सुहावां सच दरबार, जिथ्थे दर दरबान नज़र कोए ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने बणे भिखार, दर ठांडे सीस निवाईआ। जिस वेले त्रैगुण माया पुरख अबिनाशी आपणी धारों कढ्ढी बाहर, जन्म वाली ना कोए माईआ। उन्हां दे मस्तक तिलक लगाया इक इकल्ले एका वार, दूजा समझ कोए ना पाईआ। तिन्ने रंग कहिण असीं जगत दा शृंगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। तिन्ने रंग कहिण साडा अवल्ला वेस, सच दईए जणाईआ । सच दुआरे होए पेश, दर ठांडे सीस निवाईआ। पुरख अकाल दिता संदेस, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। तुसीं तिन्ने ढोला बोलो एक, इक आवाज़ लगाईआ। दूजा रहे ना कोई भेख, भिक्षू सारे देणे बदलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तक्के नेत, नेत नेत जणाईआ। जिस कारण तुहाडे नाल कीता हेत, हितकारी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ। मिट्टी कहे मेरे त्रै रंग, रंगत बेपरवाहीआ। जिस वेले विष्न ब्रह्मा शिव पूरी होई मँग, मांगत बैठे सीस झुकाईआ। सुणया फेर अगम्मी

मृदँग, ढोला धुरदरगाहीआ। सुणया धुर दा छन्द, वज्जी सच वधाईआ। आया इक अनन्द, अनन्द विच समाईआ। तक्कया नूरी चन्द, चन्द विच रुशनाईआ। त्रै त्रै वेख के पई ठंड, सांतक सति समाईआ। ओधरों हुक्म दिता सूरे सरबंग, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। आपणा आपणा अंगण वखाओ अंग, की अंगीकार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला रिहा चुकाईआ। मिट्टी कहे मेरा रंग वक्खरा, वक्खरा नज़री आईआ। मेरा लहिणा नहीं अक्खरा, अक्खरां ना कोए पढ़ाईआ। मेरा लेखा नहीं सतरा, लाईनां विच ना कोए सालाहीआ। मेरी वड्याई नहीं नाल पत्थरा, सिल पूजस सिफ्त ना कोए सालाहीआ। मैं वेखणा नहीं कोई पत्रा, नाता क़लम शाहीआ। मैनूं नहीं कोई ख़तरा, बेख़तर दयां सुणाईआ। मेरे विच उह प्रेम प्यार दा नख़रा, जिस दा परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। मिट्टी कहे मैं दस्सां सच पुकार, कूक कूक सुणाईआ। पुरख अकाल कीता विहार, बिवहारी कार कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव टिक्के लाए आपणी धार, बिना उँगल उँगल टिकाईआ। सुरस्ती लक्ष्मी पार्बती उधार, तिन्नां रंगत दिती चढ़ाईआ। उन खुशीआं नाल बोल जैकार, ढोला दिता सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आधार, दोहां विचोला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा समझाईआ। तिन्ने रंग कहिण जिस वेले त्रै त्रै लग्गे मथ्थे, मस्तक नाल वड्याईआ। पुरख अकाल वेख आपणी अक्खे, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। असीं तिन्ने खिड़ खिड़ हस्से, खुशीआं वज्जी वधाईआ। फिर रो के हाल दस्से, नैणां नीर वहाईआ। प्रभू जिस तरह्रां विष्न ब्रह्मा शिव फब्बे, सोहणा रंग रंगाईआ। साडी बेनन्ती तेरे अग्गे, दर ठांडे देईए सुणाईआ। जिस वेले तेरी जोत निरगुण सरगुण धार जगे, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले भगत लभ्भे, खोजे थाउँ थाईंआ। सच प्रेम अंदर बद्धे, बन्दना इक दृढ़ाईआ। अमृत नाम दे दे के मज़े, मज़ाक़ कूड़ा दए मिटाईआ। सच दुआरे सद्दे, होका हक़ सुणाईआ। साडी सेवा ओस वेले लग्गे, खुशीआं नाल आपणा रंग चढ़ाईआ। धुर फ़रमान दिता सूरे सर्बग्गे, संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दए उठाईआ। पुरख अकाल किहा सुणो रंग तीन, त्रैलोक तों बाहर दयां जणाईआ। तुसीं सारे कहो आमीन, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साची सिखो इक ताअलीम, हुक्म धुरदरगाहीआ। खेल वेखो नर मदीन, लख चुरासी वंड वंडाईआ। धाम सुहञ्जणा रहे क़दीम, क़ुदरत दा मालक दया कमाईआ। जुग चौकड़ी खेल वेखो नवीन, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस वटाईआ। तुसीं कदे नहीं होणा ग़मगीन, चिन्ता नेड़ कोए ना आईआ। तिन्ने मेरे उत्ते करो यकीन, भरोसा इक समझाईआ। आपणा आप ना मंनिओ हुसीन, गढ़ हँकार ना कोए बणाईआ। सदा

रहिणा हुक्म अधीन, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। तिन्न रंग सुणो अगम्मी बात, हरि बातन दए जणाईआ। तुहाडी मेरे विच्चों उपजी ज़ात, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। तुहाडा लेखा नहीं कागज़ात, क़लम शाही ना जोड़ जुड़ाईआ। तुहाडा झगड़ा नहीं किसे समाज, सच समग्री इक वरताईआ। सति सतिवादी हो के देवां दात, प्रेम प्रीती झोली पाईआ। तिन्नां मिल के गाउणी धुर दी गाथ, सोहँ सच पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मस्तक लाउणा माथ, टिक्के नाम छुहाईआ। जिस वेले बोलण भविख्त वाक्, उँगलां उत्ते उँगलां नाल घसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा इक सुणाईआ। तिन्न रंग तुसां रहिणा सवाधान, हरि करता आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खुशी मनाण, वजदी रहे वधाईआ। जुग चौकड़ी वेखणा खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढ्ढाईआ। गुर अवतार पैगम्बर देण ज्ञान, सृष्टी दृष्टी हुक्म वरताईआ। कलमयां विच करन कल्याण, काअबयां सीस निवाईआ। भेव दस्सण श्री भगवान, पर्दा ओहला जगत चुकाईआ। सचखण्ड दवारिउँ आप रहिणा अंजाण, प्रभ दा भेव कोए ना पाईआ। सजदे झुक झुक करन सलाम, नमो नमो सीस निवाईआ। बरदे बण गुलाम, भज्जण वाहो दाहीआ। मँगते हो के मँगण दान, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। किरपा कर धुर अमाम, अमलां तों रहित करे खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा खिलाईआ। तिन्न रंग कहिण प्रभ होई हैरानी, हैरत विच दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी निशानी, निरगुण सरगुण सोभा पाईआ। बाकी सृष्टी दिसे फ़ानी, तत रहिण कोए ना पाईआ। धन दौलत दिसे बेगानी, हक़दार ना कोए अख्वाईआ। की झगड़ा पावें जिस्मानी, तत्तां वंड वंडाईआ। की मंज़ल देवें रुहानी, रूह बुत जोड़ जुड़ाईआ। की खेल करें दरम्यानी, परदा सके ना कोए उठाईआ। की बुध्ध करें नादानी, द्वैती रूप ना कोए वटाईआ। की तेरी होवे अल्लड़ जवानी, जोबनवन्ता सोभा पाईआ। की भगतां देवे महिमानी, वस्त अमोलक काया गोलक देवें टिकाईआ। की झगड़ा मुकावें चारे खाणी, चारे बाणी राग अलाईआ। की लेखा जाणे पाउण पाणी, बसन्तर फोल फुलाईआ। तिन्न रंग कहिण इक तेरे चरण ध्यानी, धर्म दुआरे सीस निवाईआ। तेरा हुक्म शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल देणा वखाईआ। तिन्न रंग कहिण असीं लगदे रहे ललाट, लाटां वाली ध्यान लगाईआ। विकदे रहे तेरे हाट, क़ीमत अवर ना कोए चुकाईआ। साडी पुच्छे कोई ना वात, नवां रूप ना कोए बदलाईआ। असीं मँगीए मँग ख़ास, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जेहड़ा तेरा प्रेमी तैनूं गावे स्वास स्वास, साह साह वड्याईआ। ओस दी पूरी करनी आस, आसा आसा विच्चों लैणी बदलाईआ। जगत जहान कर

८९ २१

तलाश, खोजणा थाउँ थाईंआ। पुरख अकाल किहा सुणो अगम्मी बात, सच दयां जणाईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्धेरी रात, सतिजुग त्रेता द्वापर रहिण कोए ना पाईआ। ओस वेले वेखां खेल तमाश, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। प्रगट हो पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता हो के राह तकाईआ। साचे मण्डल पा के रास, बण गोपी काहन नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। तिन्न रंग कहिण असीं नहीं कोई मिट्टी घट्टा, घटिआ रूप ना कोए वखाईआ। सानूं शंकर सुट्टया विच आपणीआं जटां, जिस वेले गंगा धार दिती वहाईआ। सानूं छुहाया अष्टभुज सिँघ सवार जिस वधाईआं लिटां, सीस जगदीश गुंदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सेवा इक समझाईआ। तिन्न रंग कहिण की दस्सीए आपणा हाल, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिस वेले प्यार कीता काल, महाकाल दए वड्याईआ। तिन्ने रंग ओस नूं दिते वखाल, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला रिहा चुकाईआ। तिन्न रंग कहिण असीं मिट्टी नहीं ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक रूप वटाईआ। जिस वेले पैगम्बर गुर अवतारां मिले दात, दाता दानी झोली पाईआ। ओस वेले सानूं रखे साथ, सगला संग निभाईआ। हौली जिही देवे आख, सुनेहड़े विच समझाईआ। वेख्यो विकिओ किसे ना हाट, गुर अवतार पैगम्बर क़ीमत ना कोए चुकाईआ। इक्को परम पुरख दी रखयो आस, दूजा संग ना कोए निभाईआ। जुग चौकड़ी रख के पूरा विश्वास, बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। तिन्न रंग कहिण असीं सोहणे चंगे, सुथरे नज़री आईआ। एह लहिणा देणा गोदावरी गंगे, जमना सुरस्ती सीस निवाईआ। जिस वेले प्रभ ने उत्भुज सेत्ज खेल खलाउणा जेरज अंडे, त्रैगुण नाता पंज तत जुड़ाईआ। लख चुरासी विच्चों मानस ज़ात बणाई बन्दे, बन्दगी विच समझाईआ। सति धर्म दे ला के धंदे, धर्म दवारा इक प्रगटाईआ। सचखण्ड दवारे रंग कहिण असीं प्रभ चरणां विच टंगे, जिथ्थे आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव रिहा खुल्हाईआ। तिन्न रंग कहिण असीं कीती अरदास, दर ठांडे दिती सुणाईआ। प्रभ तेरा खेल तमाश, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। कद साडी पूरी करें आस, आहिस्ता आहिस्ता पन्ध मुकाईआ। असीं चौहन्दे तेरा जगत विच दईए साथ, लोकमात वड्याईआ। चरण प्रीती बज्झे नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। चार वरन बणाईए इक ज़ात, दुतिया भाउ रहे ना राईआ। जिधर तक्कीए तेरा वास, ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला पिट्ठ ठोक के कहे शाबाश, वाहवा वड्डी वड्याईआ। जिस वेले कलयुग होई अन्धेरी रात, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां भुल्ले बात, गाथ

सच ना कोए दृढ़ाईआ। ओस वेले जन भगतां खोल्हां राज़, परदा आप चुकाईआ। ओस वेले तूं मेरा मैं तेरा मार आवाज़, सोए जगत उठाईआ। तिन्ने रंग कहिण ओस वेले की करीए असीं काज, करनी दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा एह लेखा विच मात, धरनी धरत धवल वड्याईआ। जिस वेले सतिजुग चले रिवाज, धर्म दी धार बदलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला बदल देवे समाज, समग्री धुर दी वंड वंडाईआ। इक इकल्ला सीस सुहाए ताज, ताजां वाले ख़ाक मिलाईआ। तुसां तिन्नां आउणा भाज, भज्जणा वाहो दाहीआ। आपणा वड्डा समझणा भाग, हिस्सा लैणा झोली डाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखणी आग, अगनी तत तपाईआ। दुरमति मैल धोवे कोई ना दाग़, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। आत्म जोत ना जगे चराग़, अन्ध अंध्यार ना कोए मिटाईआ। कन्त मिले ना किसे सुहाग, जगत रंडेपा ना कोए कटाईआ। ओस वेले प्रभ किरपा करे आप, आपणी दया कमाईआ। जन भगतां दस्से के सोहँ जाप, त्रैगुण नाता दए तुड़ाईआ। रूह बुत करे पाक, पतित पुनीत बणाईआ। तुसीं तिन्ने रंग सुण लओ साच, सच दयां समझाईआ। चौथे जुग दा चौथा सम्मत जिस वेले महीना चढ़या बैसाख, वाहवा खुशी मनाईआ। तुहाडा लहिणा देणा करां बिबाक, पिछला रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां देवां दात, अनमुलड़ी दात वरताईआ। सोभावन्त बणा के रात, मस्तक टिक्के दयां छुहाईआ। ओस वेले हाज़र होण गुर अवतार पैगम्बर त्रैलोकी नाथ, नाथ अनाथां दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंगत इक्को दए रंगाईआ। तिन्न रंग कहिण सानूं होई खुशी, खुश क़िस्मत नज़री आईआ। साडी औध रही मुकी, प्रभ देवे माण वड्याईआ। असां मिट्टी नहीं रहिणा सुक्की, सच दईए समझाईआ। जिथों अमृत धार फुट्टी, उथों अमृत रस देणा चखाईआ। साडी प्रीत अजे ना टुट्टी, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ध्यान लगाईआ। प्रभू तेरे गुर अवतार पैगम्बर कट के गए बुत्त, बुतखाने विच समाईआ। धन्न भाग मेरी तेरे नाल मौली रुती, रुत रुतड़ी वेख वखाईआ। सच तिउहार साथों पुच्छीं, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। असां हुण बन्द नहीं रहिणा विच गुट्टीं, बाहर निकल के रंग देणा चढ़ाईआ। भगतां दी अन्तर मैल करनी सुच्ची, संजम इक समझाईआ। साची वस्त जाए ना लुट्टी, घरों लुटेरे देणे कढ्ढाईआ। भाग लगा के काया कुटी, कोट जन्म दा पैंडा देणा मुकाईआ। जन भगतो लख चुरासी विच्चों तुहानूं छुट्टी, छुटकारा धुर दा देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि दी अन्त तक धार रहिण ना देवे गुज्झी, गुज्झा भेद अभेद अभेव सारा दए खुल्हाईआ।

९२
२१

✻ १४ चेत शहिनशाही सम्मत ४ लक्ष्मण सिँघ गुरमेज सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलां ज़िला जलन्धर ✻

ढाई इंच लकड़ी दी गिट्टी, चार कुण्ट तूल अर्ज़ ना वंड वंडाईआ। एह गुर अवतार पैगम्बरां दी धार अनडिठी, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। इहदे उत्ते लिखी जांदी ओह चिठ्ठी, जिस दे हरफ़ हरूफ़ ना कोए बणाईआ। एहदी समझ ना आवे कोई मिती, सनद वंड ना कोए वंडाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां एसे विच्चों अगम्मी सिख्या सिखी, जो सिखर चोटी चढ़ के दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल खिलाईआ। ढाई इंच दी गिट्टी कहे मैं दस्सां आपणी बात, बातन दयां जणाईआ। जिथ्थे नहीं कोई कलम दवात, काग़ज़ नज़र कोए ना आईआ। कातब लिखे ना कोए किताब, अक्खर वंड ना कोए वंडाईआ। लहिणा जाणे ना कोए हिसाब, निस्बत समझ कोए ना आईआ। हिस्सा वंडे ना कोई बाब, बाबत प्रभ दे भेव ना कोए खुल्हाईआ। सजदा दिसे ना कोई अदाब, डंडावत सीस ना कोए झुकाईआ। महल अटल ना कोए महराब, महबूब नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे नहीं नाद आवाज़, रागनी राग ना कोए सुणाईआ। झगड़ा नहीं सवाल जवाब, जवाब तल्बी ना कोए वखाईआ। ओथे खेल प्रभू महाराज, राजन राज आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव दए खुल्हाईआ। ढाई इंच कहे मैं लम्मी चौड़ी दिसां लक्कड़ी, लक्कड़हारा समझ ना कोए पाईआ। तोल तुली ना किसे तक्कड़ी, तराजू वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी समझ ना आई किसे शूद्र वैश ब्राह्मण खत्री, छत्रधारी गए फेरीआं पाईआ। लेखा जाणे कोई ना पत्री, पत्रका दस्से ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। ढाई इंच कहे मेरी वेखो अगम्मी गिट्टी, गिटीआं गिणन दी लोड़ रहे ना राईआ। साध सन्त फ़कीरां अंदर इक अंगुशट धार ढकी, हद्द हद्द विच बंधाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां ढाई इंच इक प्रकाश वाली धार रखी, जो काया मन्दिर अंदर करे रुशनाईआ। इस दे चार कुण्ट शरअ ज़ंजीर दी रस्सी, जो पुरख अकाल दिती बंधाईआ। शब्दी हुक्म नाल कसी, गंढु उत्ते ना कोए समझाईआ। बिना गोबिन्द तों होर किसे ना दस्सी, इशारा समझ कोए ना पाईआ। जिस वेले बेईमान होवे जीव लख चार अस्सी, असल रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर होए बेबसी, आपणा बल ना कोए धराईआ। साची दिसे कोई ना हट्टी, साचा वणज ना कोए कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पिछली लेखे लावे खट्टी, खटका अगला दए चुकाईआ। ढाई इंच दी थाँ पुरख अकाल आपणी जोत प्रगटावे समर्थी, जिस दा अग्गा पिच्छा नज़र कोए ना आईआ। दो जहान पढ़ाए धुर दी पट्टी, पटने वाला नाल मिलाईआ। भगतां लोड़ रहे ना गति, स्वर्ग बहिश्त ना कोए समझाईआ। कथा कहाणी धुर दी दस्स के सच्ची, सुच संजम इक दरसाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक वखाईआ । गिट्टी कहे मेरा ढाई इंच दा नुक़ता, दसम दुआरी तों अग्गे नज़री आईआ। जिथ्थे सन्तां भगतां दा पैंडा मुकदा, अग्गे मंज़ल बेपरवाहीआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर झुकदा, निउँ निउँ लागण पाईंआ। ओथे जैकारा इक्को तुक दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। दीन मज़हब दा झगड़ा होवे चुकदा, कलमा वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला घर सुहञ्जणा सुहाए सुख दा, धुर दा नूर कर रुशनाईआ। लेखा मुका के काया बुत दा, जोती जोत डगमगाईआ। चार जुग दी कूड़ी क्रिया पुट्टदा, बूटा कूड़ रहिण ना पाईआ। सति धर्म दा बीज अगम्मी सुट्टदा, धरनी धरत धवल धौल उपजाईआ। लहिणा जाण मानस मनुक्ख दा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला आप उठाईआ। गिट्टी कहे मैं ढाई इंच चार चौंह तरफ़, सोहणा रंग वखाईआ। मैं विद्या पढ़ी नहीं कोई हरफ़, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। मैं वेखां जो निरगुण धार आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी सब दे नाल शर्त, शरअ रिहा बदलाईआ। भाग लगा के उत्ते फ़र्श, फ़ैसला हक़ सुणाईआ। लेखा जाण अर्श, अर्शी प्रीतम दया कमाईआ। सब दा लहिणा देणा पूर कर के क़र्ज़, आपणा पन्ध चुकाईआ। सदी चौधवीं गुर अवतार पैगम्बरां वेखे फ़र्ज़, निरगुण निरगुण लए उठाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे अन्धेर गरद, गरदश मेटे जगत लोकाईआ। गिट्टी कहे एह खेल असचरज, जो अचरज लीला रिहा वरताईआ। बण के दाता योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मन्न के अर्ज़, आरज़ू सब दी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गिट्टी कहे मैं दस्सण आई वाक्, वाक़फ्कार जगत लोकाईआ। मैं विचोलण बणना जिस वेले मुहम्मद उम्मत नूं देणा तलाक, नाता छुट्टे कूड़ लोकाईआ। खेल वेखणी उपर धरती ख़ाक, ख़ालक हो के खोज खुजाईआ। मैं संदेसा देवां आज, धुर दी धार धर्म दृढ़ाईआ । पुरख अकाल बदल देणा समाज, समां समें विच्चों बदलाईआ। जन भगतो जाणा जाग, जागरत जोत डगमगाईआ । तन काया बुझाउणी आग, ममता मोह मिटाईआ। घर सुआमी जगावे चराग़, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। हँस बुद्धी बणाउणी काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। एकँकारा इक्को लओ अराध, सिमरन सिमरन विच समाईआ । जिस नूं मालक कहिंदे वाहिद, पैगम्बर नूर अलाहीआ। ओह खेल करे शाहद, शहादत आपणी आप भुगताईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए वखाईआ। गिट्टी कहे मैं विच रहिण देणा नहीं कोई गट्टा, अड़चन नज़र कोए ना आईआ। गुरमुखो पूजणा नहीं पत्थर वट्टा, पत्थरां सीस ना कोए निवाईआ। किधरे चढ़ाउणा नहीं पैसा टका, टिकटिकी इक्को नाल

लगाईआ। सब दा लेखा लहिणा देणा इक्ठा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। तुहाडा झगड़ा मुकणा अठ्ठां सठ्ठां, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नहावण कोए ना जाईआ। निज धार निराकार नर नरायण खोल्हे अक्खां, आख़र परदा लाहीआ। सच सुनेहड़ा धुर दा दस्सां, दह दिशा कर पढ़ाईआ। चावां विच चार कुण्ट भज्जां नस्सां, नस्स नस्स आपणी सेव कमाईआ। साधां सन्तां भगतां सूफ़ी फ़कीरां कहां अक्खां वाल्यो खोल्ह लओ अक्खां, नेत्र नैण नैण उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आया हक़ा, हक़ीक़त दए जणाईआ। जिस नूं लभ्भदे मदीना मक्का, मक़बरिआं उत्ते सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दए चुकाईआ। गिट्टी कहे मैं इक निशान सर्ब डिट्ठा, जगत जहान नज़री आईआ। जिस दा निकलण वाला सिट्टा, सिट्टेबाज़ी जगत लोकाईआ। जन भगतो झगड़ा रहिणा नहीं पत्थर इट्टां, पत्तन सब दा देणा बदलाईआ। धुर दा दस्स अगम्मी चिठ्ठा, सच फ़रमाना इक समझाईआ। जिथ्थे लिख्या गोबिन्द ने गुरसिख आ मेरया पुत्ता, पतिपरमेश्वर विच समाईआ। ओथे भेव रहे ना लुका, ओहला नज़र कोए ना आईआ। जन भगतो पिच्छे तुसीं प्रभ ते सारे करदे आए गुस्सा, रुस्स रुस्स वक्त लँघाईआ। दीन दयाल दा भेत सदा गुज्झा, जुग जुग वेला वक्त आपणी वंड वंडाईआ। जेहड़ा सदा प्रेम प्यार दा भुक्खा, प्रीती विच समाईआ। उह वस्से अगम्मे तन वजूद जुस्सा, जिस जुस्से दा जिस्म ज़मीर आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गिट्टी कहे मेरा जोत नूर प्रकाश, काया मन्दिर सोभा पाईआ। ढाई इंच तों बौहती नहीं दिती दात, पुरख अकाले आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। इस तों अग्गे मिला के आपणी ज़ात, जोत विच समाईआ। जिथ्थे ना कोई कलमा ना कोई बात, ना कोई बातन करे पढ़ाईआ । ना कोई ढोला गीत ना कोई शब्द धुन नाद, ना कोई शरअ आवाज़ सुणाईआ। ना कोई ममता मोह विकार आग, अमृत धार मेघ ना कोए बरसाईआ। ना कोई सेवक चेला गुर ना कोई दिसे दास, मुरीद मुर्शद वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई पृथ्मी ना कोई आकाश, ना कोई टुकड़ा करे फाश, ना कोई तना ना कोई शाख, ना कोई ढोला ना कोई रिहा आख, ना कोई विद्या ना कोई रिहा भाख, जिधर तक्कां पुरख अबिनाश, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गिट्टी कहे मेरी सुहञ्जणी दिसे रात, चौदां तबक कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। गिट्टी कहे जिस वेले किरपा करी भगवान, गोबिन्द दिती वड्याईआ। पहलों वखा के सच निशान, जलवा नूर कर रुशनाईआ। फिर साचे अमृत करा इश्नान, काया कुम्भ दिता भराईआ। शब्द संदेसा दिता नाल ज़बान, बिन अक्खरां आप सुणाईआ। कलयुग अन्तिम वेख मार ध्यान, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा रिहा ना कोए ज्ञान, सति धर्म ना

कोए दृढ़ाईआ। गोबिन्द वेख के होया हैरान, हैरत विच समाईआ। फिर तक्कके उपर असमान, सच संदेसा दिता सुणाईआ। शाह पातशाह धुर सुल्तान, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गिट्टी कहे जिस वेले गोबिन्द नहाता, मिली माण वड्याईआ। किरपा करे परम पुरख दाता, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सच संदेसा इक्को आखा, आख़र इक जणाईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्धेरी राता, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ओस वेले गोबिन्द अमृत रहे किसे ना बाटा, पंचम पंच ना कोए वड्याईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआरा मारे ठाठां, लहर लहर विच्चों उठाईआ। ओस वेले आवां नाठा, भज्जां वाहो दाहीआ। गोबिन्द किहा मैनूं टेक लैण दे माथा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मेरी सुण लै इक्को बाता, प्रेम नाल जणाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाशा, तेरे विच समाईआ। साचे सन्तां दा पूरा करीं घाटा, ऊणता रहिण कोए ना पाईआ। उन्हां दा काया माटी वेखीं भाण्डा काचा, साढे तिन्न हथ्थ फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ क्यों मैनूं रिहा टुम्ब, हौली हौली उठाईआ। मैनूं याद आ गया जिस वेले लहिणा देणा मुकाया सुंभ निसुंभ, दुर्गा धार प्रगटाईआ। ओस वेले अमृत धार अगम्मी सति सरूपी ल्यांदी आपणे कुम्भ, जगत माटी नज़र कोए ना आईआ। तेरी धार ने तेरा चरण ल्या चुम्म, रस तेरे विच्चों प्रगटाईआ। फेर चार कुण्ट घुंम, परदक्खणा विच सीस निवाईआ। तूं संदेसा दस्सया आपणा गुण, सहज नाल दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम सृष्टी दी दृष्टी नूं मन कल्पणा दा खा गया घुण, साबत रहिण कोए ना पाईआ। नज़र ना आए कोई रिख मुन, मानव सच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे एह कुम्भ नहीं उह घड़ा, जो घाड़त प्रहलाद लई बणाईआ। एसे विच प्रभू बिल्ली दा बच्चा हो के वड़ा, भगतां होया सहाईआ। ओदों दा कौल इक़रार कीता कड़ा, चार जुग दिते लँघाईआ। हुण समां बीतिआ बड़ा, बौहड़ी बौहड़ी कर रहे कुरलाईआ। जन भगतो तुसां ने पूजणा नहीं कोई मढ़ी थड़ा, सीस ना कोए निवाईआ। तुहाडी शहादत देवे माटी भाण्डा साहमणे तुहाडे खड़ा, संदेसा इक जणाईआ। गुरमुखो मेरे विच बाहरों भर दयो जला, पाणी नाल सुहाईआ। मैनूं ऐं दिसदा पुरख अबिनाशी तुहाडे अंदर रला, तृष्ना अगनी दए मिटाईआ। एहो नानक जल कुम्भ दी दस्सी कला, इशारा कलाधारी लगाईआ। मैं ज़ामन, तुहाडा ओस ने फड़िआ पल्ला, जो पल्लू ना सके छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पूरब लेखा सब दा वेख वखाईआ। घड़ा कहे मेरा होर साथी, गुल्ली डण्डा नज़री आईआ। जिस वेले पुरख अकाल ते शब्द दुलारा इक दूजे दे बणे साथी, दरगाह साची सचखण्ड थिर

घर वज्जी वधाईआ। दोहां ने आपणी लाई बाज़ी, खेल इक वरताईआ। पुरख अकाल किहा मैं डण्डा वड्डा शाह ताजी, शहिनशाह अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। डण्डा कहे मैं पुरख सुल्तान, सचखण्ड निवासी नज़री आईआ। गुल्ली कहे मैं बाल अंञाण, शब्दी सुत सोभा पाईआ। मेरे दोवें सिरे तिक्खे सोहणे आपणा दस्सण निशान, निशाना सच जणाईआ। गुल्ली कहे जिस वेले मैनूं डण्डा लग्गे श्री भगवान, मैं भज्जां वाहो दाहीआ। मेरा निशाना श्री भगवान, दो जहानां फोल फुलाईआ। एहो डण्डा ते एहो गुल्ली प्रभ ने विष्नूं दिता दान, हत्थ इक्के वार फड़ाईआ। ओस तों लै के फेर ब्रह्मे लग्गा पर्चाण, बच्चयां वांग खिलाईआ। ब्रह्मे तों लै के शंकर दिता दान, हत्थां दोहां विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। गुल्ली कहे मैं की दस्सां हाल, डण्डा दए जणाईआ। जिस वेले प्रभ निरगुण सरगुण बदलण लग्गा चाल, आपणी कार कमाईआ। आपणे विच्चों धार कढ्ढी जिस नूं बणाउणा अवतार, अवतरी रूप वटाईआ। ओस नूं दूरों दिता वखाल, हत्थ ना किसे फड़ाईआ। पैगम्बरां वखाया आपणे नाल, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। नानक गोबिन्द दसाई चाल, चलत आपणा भेव चुकाईआ। फेर टंग के सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, उपर नीचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। डण्डा कहे मैं सब नूं दस्सदा रिहा डंडावत, धुर दा हुक्म सुणाईआ। गुल्ली कहे मैं वेखदी रही बनावट, दो जहानां भज्जी वाहो दाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे रहे सख़ावत, वस्त अमोलक जगत वरताईआ। इक दिन गुल्ली कहे मैं किहा प्रभू कुछ मैनूं दे निआमत, वस्त अमोलक झोली पाईआ। ओस हस्स के किहा कमलिए जिस वेले गुर अवतार पैगम्बरां लोकमात पाई बग़ावत, बग़लगीर नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़हब धर्म किसे दी देवे ना कोए ज़मानत, बदीआं विच्चों बरी ना कोए कराईआ। ओस वेले मैं आवां सही सलामत, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। तेरा खेल कर देवां अचानक, चार जुग दा शास्त्र समझ कोए ना पाईआ। तेरा प्यार बणा के भगतां दी अमानत, धुर दा साथ दयां वखाईआ। जेहड़े गुरमुख होए अन्जाणत, उन्हां देवां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुल्ली कहे प्रभू मैनूं ज़ोर नाल ला दे फ़ाका, फ़ैसला दे मुकाईआ। मैं चार कुण्ट मार के आवां हाका, सुत्यां दयां उठाईआ। पीरो फ़कीरो पैगम्बरो उठो वेखो आपणा अगम्मी आका, अकलां वाल्लयो अक्ख खुल्हाईआ। सब दा खोल्हां ताका, करां हिसाब बेबाका, तेरा संदेसा कमलापाता, पतिपरमेश्वर आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुल्ली कहे इक वेरी मेरी लैहन्दे नूं दे दे राभ, गुल्ली डंडे नाल उडाईआ। फेर मैं सब दा

लेखा वेखां हिसाब, खाते फोल फुलाईआ। तेरी ख़बर देवां जनाब, जनाबे आली देणा समझाईआ। कूक सुणावां वेखो पुरख अकाला आया आप, आप आपणा फेरा पाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया करनी साफ़, सफ़र सब दा पूर कराईआ। बिना भगतां तों किसे नूं करे ना कदे मुआफ़, गुस्ताख़ां नूं मिले सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक वखाईआ। गुल्ली कहे प्रभू मेरी इक अर्ज़, एह वी दयां जणाईआ। जिस वेले तेरा भगत भगतां दे घर जम्मे योद्धा मर्द, तन माटी मिले वड्याईआ। ओस दी वंडणी दरद, सहायता विच सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। गुल्ली डण्डा कहे असीं वेखे पंज जुट्ट, पंज तत नज़री आईआ। जेहड़े प्रभ दी धारों पए फुट्ट, धुर दी लै अंगड़ाईआ। निराकार नालों छुट्ट, रचना विच समाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रहे झुक, आपणा हाल ना कोए सुणाईआ। रहे अन्धेरे घुप्प, परदा ना कोए उठाईआ। जिस वेले गुज़री घर गोबिन्द जम्मया सुत, ओस वेले प्रभू ने सगन ल्या मनाईआ। पंजां तत्तां नूं प्यार नाल ल्या घुट्ट, फेर गोबिन्द नूं किहा तत्तां वाला मेरा पुत, जिहदे विच अबिनाशी अचुत, जिस दी दूजी वार मौलणी रुत, रुतड़ी जगत विच महकाईआ। मैं आपणा आप उहदे अंदर रख देणा सब कुछ, कलमयां तों परे कलमा देणा पढ़ाईआ । सो वेला वक्त पहुंचया ढुक, पुरख अकाला वेख वखाईआ। जोत निरँकार निराकार सब दे वेंहदयां पंजां तत्तां विच रिहा छुप, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा पूर कराईआ। जुट्ट कहे साडे नाल बदाम छुहारे, शहिनशाह दिती वड्याईआ। चार जुग जन भगत लोकमात रहे कँवारे, प्रगट हो के कन्त ना कोए हंढाईआ । जिहनूं दिते शब्द जोत वाले इशारे, सन्मुख हो के सोभा कदे ना पाईआ। इक छिन्न विच प्रहलाद ध्रू वरगे तारे, सदना सैण छिन्न भंगर पार कराईआ। उन्हां सारयां दे अन्त अख़ीरी हाढ़े, जो मिन्नतां कर कर गए सुणाईआ। जे प्रभू लोकमात आवें आपणी वारे, वारता पिछली देणी बदलाईआ। जन भगतां नूं चुक्कीं आपणे कंधाड़े, मोढ्यां उत्ते लैणा टिकाईआ। तूं उन्हां दा पिता उह तेरे दूल्हे दुलारे लाड़े, दरगाह साची सोभा पाईआ। उन्हां दे सगन गिरीआं बदाम छुहारे, जिस दा लेख ना कोए विचारे, विच्चरके सके ना कोए समझाईआ। बदाम कहिण साडे नाल मौली दा तन्द, तन्दन तन्द जुड़ाईआ। जिस नूं चरण छुहा के गया गुज़री दा चन्द, सज्जे अंगूठे नाल वड्याईआ। जिस वेले पहले दिन चढ़या सी जंग, कमरकसा तन बंधाईआ। एह कौल इक़रार कीता पुरी अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों जणाईआ। जिस वेले फेर पुरख अकाल नूं लै के आवां संग, धुर दा साथ बणाईआ। जन भगतां दी आत्म सेज माणा पलँघ, सच सिँघासण सोभा पाईआ। चिट्टा ते लाल दोवें चाढ़ देवां रंग, दसम दुआरी

तों अग्गे सचखण्ड मंज़ल इक बणाईआ। मुहब्बत विच बन्नृ जावां तन्द, जेहड़ा तन्द तन्दूआ कटके गज दा होया सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। मौली तन्द कहे मेरा साथी होर केसर, क़िस्मत दए बदलाईआ। एह कौल इक़रार युधिष्टर दे नाल कृष्ण दा विच थानेसर, अशवथामा निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त काहना दा काहन आवे सृष्टी नालों भगत उठावे पेशतर, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। युधिष्टर किहा केहड़ी रुत मैनूं लिख दे उत्ते पेपर, अंकड़े दे बदलाईआ। कृष्ण किहा प्रभ दा सम्मत शहिनशाही चौथा जुग चौथा साल महीना होवे चेत्र, ते कलयुग दी चौदस ते चौधवीं वाला चन्द करे सफ़ाईआ। आपणयां भगतां आवे वेखण, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तिलक ललाटी इक चमकाईआ। केसर कहे मैं जिस नूं तिलक लगावां, दयां माण वड्याईआ। उस दे पल्ले बन्नृां धुर दा नावां, इक ज़ीरो इक माया वल्लों इक सौ इक गंढु दयां बन्नृाईआ। जिंनां चिर इक ज़ीरो ना होवे इक्क, उनां चिर गोबिन्द दा बणे कोई ना सिख, भावें कोटन कोटि शास्त्र सिमरत वेद पुराण गए लिख, लिख्खयां पढ़यां प्रभ नूं मिलण कोए ना पाईआ। जिस मिल्या तिस करया आपणा हित, हितकारी हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। सौगी कहे मैं सग्गारिती, क़बीले दयां बणाईआ। मेरे प्रभू दी आ गई मिती, मैं मित्रां दयां जुड़ाईआ। मैं राम कोलो सिख्या सिखी, जिस वेले बण विच राम ने सीता नूं आपणी चीची दिती फड़ाईआ। ओस ज़ोर नाल खिच्ची, राम ने चीक मारी निक्की, सीता नूं सिखी दिसी इक्की, इक्कीआं दा एका रूप दरसाईआ। उस ने आपणी धौण पुट्ठी राम दे चरणां उत्ते सुट्टी, नेत्र उपर लए उठाईआ। राम ने दोवें हथ्थ थल्ले रख के ओस दी उपर गिच्ची, थोड़ा ल्या उठाईआ। ओस नूं उह कला दिसी, जो हर घट करे रुशनाईआ। फेर राम ने उहदे मस्तक उत्ते लकीर खिच्ची, ज़ोर नाल दबाईआ। उहनूं बिना अक्खरां तों दिसी चिट्ठी, जो सदी चौधवीं रही समझाईआ। ओस विच की दिस्सया ना सस्सा ना हाहा इक प्रभ दे नाम दी टिप्पी, जो टप्पे सारे रही भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। सौगी कहे मैं की दस्सां स्वाद, रसीआ रस जणाईआ। जिस वेले बिदर दा अलूणा खादा साग, कृष्ण ने कड़छी चट्ट के खुशी बणाईआ। इक थोड़ा जिहा विच सी काला दाग़, ओस उत्ते नक्क दिता घसाईआ। जिस पंछी ने भगत दे घर सेवा कीती आज, तत्ती हांडी विच वड़ के आपणा आप तपाईआ। इस नूं ज़रूर करां साफ़, दुरमति मैल धुआईआ। झट कड़छी ने मुख विच्चों कढुया वाक्, सहज नाल सुणाईआ। उह काहना इक दा दे के साथ, की तेरी वड्याईआ।

ज़रा कलयुग अन्तिम झाक, दुनियां वेख वखाईआ। राम कृष्ण गुर अवतार पैगम्बरां दे हुन्दयां सब ने करना पाप, बचया रहिण कोए ना पाईआ। पहलों तुहाडी गीता दा करन पाठ, फेर तुहाडे सरोवर नहावण ताट, फेर मूर्तीआं नूं उपर वेखण घाट, टल्लां दी खड़कावण आवाज़, राज़ समझ कोए ना पाईआ। गोपीआं वाली वेखण रास, बण के काहन ते काहन होण बदमाश, तुसीं कुझ ना सको आख, एह मेरा अगम्मी वाक्, क्या दयां सुणाईआ। मैनूं दस्स आपणी कुझ बात, जिस वेले होई अन्धेरी रात, कोई ना देवे साथ, की खेल करे अबिनाश, करनी दा करता वड वड्याईआ। कृष्ण ने फड़ के विच हाथ, ला के नाल माथ, दे के धुर दी दात, बचन दिता साच, जिस वेले होवे अन्धेरी रात, पुरख अकाल आवे आप, आपणयां भगतां दा बणे बाप, तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, रूह बुत दोवें कर के पाक, जन्म कर्म कर के मुआफ़, अगला लेखा वखा के साफ़, सुहणे सुथरे गोद वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। कड़छी कहे काहन मैनूं दस्सीं साच, सच सच समझाईआ। तूं वलीआ छलीआ बड़ा चलाक, चलाकी विच ना देणा भरमाईआ। काहन किहा नहीं एह भविक्खत दा वाक्, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला प्रगट होवे साख्यात, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां चरण प्रीती जोड़ के नात, रंग धुर दा दए बणाईआ। लेख बणा के नाल क़लम दवात, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा धुर दा वेख वखाईआ। कड़छी कहे मैनूं दिसदी होर निशानी, निशाना दयां जणाईआ। जेहड़ी शंकर दी सुआणी, पार्बती सोभा पाईआ। ओह इक दिन बैठी सी विच मसाणी, घूंगट टेडी अक्ख रखाईआ। शंकर मेरी बदल दे जवानी, जोबन विच वखाईआ। ओस ने मार के कानी, कायनात दिता दृढ़ाईआ। कमलिए एह पंज तत फ़ानी, रहिण कोए ना पाईआ। तूं अज्ज मेरी ते फेर बेगानी, धुर दा साथ ना कोए निभाईआ। उस नूं होई हैरानी, निउँ के सीस झुकाईआ। शंकर किहा तक्क उपर असमानी, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। पार्बती कहे सोहणा सुहञ्जणा दुपट्टा, नैण मुँधारी वेख वखाईआ। शंकर अज्ज ख़ुशी नाल मेरा मुख वेख लै मेरे हथ्थ विच देदे कुझ टका, माया झोली पाईआ। शंकर मार के हथ्थ पट्टां, ख़ाली हथ्थ वेख वखाईआ। उठ वेख जोती नूर लट्ट लटा, निरगुण निराकार करे रुशनाईआ। जिस ने चार जुग कूड़ माया दा खोल्हणा हट्टा, जगत जीव हल्काईआ। पार्बती जे तूं चौहन्दी प्रभू दे चरणा इक्ठा कर लै घट्टा, इस तों वड्डी दौलत नज़र कोए ना आईआ। ओह वेख जिस धूढ़ी नाल चार जुग दा लिखदा पट्टा, पटेदारी गुर अवतार पैगम्बरां लई बणाईआ। फेर किहा नाल मख़ौल ठट्ठा,

९९
२१

कन्नों फड़ के दिती हिलाईआ। पार्बती तेरा शंकर बण जाणा वट्टा, मेरी क़ीमत रहिणी नहीं कोई टका, पर्बतां उत्तों फड़ के मैनूं सीस देण निवाईआ। जुग चौकड़ी बाद फेर करना खेल समर्था, सब दा लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्था, ओस वेले गुर अवतार पैगम्बरां दी विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिल के शरमाउणी अक्खा, मुख घूंगट उठा के कलयुग कूड़ी क्रिया तों नैण शरमाईआ। पार्बती किहा भोले नाथ की एह बचन सच्चा, सच सच दे समझाईआ। ओस किहा एह धुर दा हुक्म हक़ा, हक़ीक़त विच सुणाईआ। ज़रूर अबिनाशी करता नव नौं चार पिच्छों आवे नट्ठा, बण के पाँधी राहीआ। ओस वेले सानूं सब नूं होवे ठट्ठा, जगत मज़ाक़ विच दुहाईआ। अबिनाशी करते चार जुग दा विछड़िआ भगत सुहेला करना इक्ठा, गुरमुख आपणी गोद बहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पढ़ा के टप्पा, दो जहान दे टापूआं तों बाहर देणा लँघाईआ। जिथ्थे शर्म विच ना शरमावण अक्खां, जोती नूर लट्ट लटा, ज़हूर ज़हूर विच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा रिहा दृढ़ाईआ। दुपट्टा कहे मैं सब दे उत्ते पावां परदा, सेवा धुर दी मात कमाईआ। जो प्रभ दा होवे बरदा, उस दे निउँ निउँ लागां पाईंआ। एह खेल ओस दे घर दा, जो भगत घराने रिहा वसाईआ। जन भगतो नौ दिन तों बाद एह विहार वेखो वखरा वखरा, वखरी कार कमाईआ। जो आपणा आप आदि जुगादी बदलणहारा पत्रा, शब्द शब्द विच्चो उलटाईआ। जिस तों सब नूं बणया रहे ख़तरा, ख़ातर विच भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, चार जुग दे भविख्त वाक् पूरे करे बचनां, कौल इक़रार कीता भुल्ल कदे ना जाईआ।

१०० २१

✻ १५ चेत शहिनशाही सम्मत ४ लक्ष्मण सिंघ दे गृह पिंड रुड़का कलां ज़िला जलन्धर ✻

श्री भगवान कहे सुण चेत चात्रिक, चात्रिक गुरमुख दे बणाईआ। मन कल्पणा रहे ना कोए नास्तिक, कूड़ कुड़िआरा देणा गुआईआ। प्रेम प्रीती अन्तर कर अस्तिक, इशारा धुर दा नाम लगाईआ। इक्को नाता जुड़े परम पुरख वास्तक, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। विष्नूं लै अंगड़ाई उत्ते सेजा बाशक, सांगोपांग भेव खुल्हाईआ। चार जुग दा लेखा वेखणा जो अज्ज तक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फोल फुलाईआ। आदि दा सगन जो सांभ के रख्या चौदस दी रात, चौदां लोक चौदां तबक धुर दा भेव दृढ़ाईआ। लख चुरासी अंदर वेखणा खेल हाल तक हालत, जहालत की दीन दुनियां नजरी आईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। चेत्र हो चेतंन, चंचलता दे मिटाईआ। शब्द सुनेहड़ा सुण अगम्मी कन्न, हरि करता आप जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी मनसा मन, मनसा मोह विकार गुआईआ। लालच झूठ रहे ना धन, धर्म दुआर दए प्रगटाईआ। झगड़ा मुका के खुशी ग़म, इक्को रंग देणा रंगाईआ। परदा रहे ना माटी तन, ततव तत देणा समझाईआ। सच प्रकाश कर के नूरी चन्न, अन्ध अन्धेर देणा मिटाईआ। भेव खुल्हा के ब्रह्म हँ, पारब्रह्म मेला लैणा मिलाईआ। जन भगत सुहेला अबिनाशी करते घर पए जम्म, दूजी अवर ना कोई जणेंदी माईआ। लेखे लावे स्वास दम, दामनगीर इक्को नज़री आईआ। निहकरमी करे आपणा कम्म, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। लेखा मुका के वरन बरन, छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को घर वसाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सब दा इक्को होवे धर्म, धर्म आत्मा परमात्मा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे सुण चेत धुर दा लेखा चितवित, ठगौरी मन रहे ना राईआ। जो पुरख अकाल खेल करे नित नवित्त, जुग जुग वेस वटाईआ। जग नेत्र किसे ना आवे दिस, लोचन वेखण कोए ना पाईआ। करवट विच बदले कदे ना पिठ, सन्मुख रूप ना कोई सुहाईआ। बिन साचे भगतां कदे ना करे हित, हितकारी वेस ना कोए वटाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर गए लिख, भविख्तां विच वड्याईआ। सो लहिणा देणा लए नजिट्ठ, दो जहानां होए सहाईआ। जिस दा प्रकाश अन्तर निरंतर सवा गिठ, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। खेल करे अगम्मी अनडिठ, बातन आपणा खेल खिलाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां बण के धुर दा पित, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। जिस दी मौलण वाली थित, रुत तेरे नाल वड्याईआ। गुरमुखां अन्तर आत्म लावे खिच्च, सुरती शब्द तार हिलाईआ। मेहर मुहब्बत कारण वड़े विच्च, निरगुण निरगुण मेला सहज सुभाईआ। सन्त सुहेले बणा अगम्मी रिख, ऋषीआं मुनीआं पैंडा दए मुकाईआ। जो प्रभ दी सिख्या लए सिख, सो सिख सतिगुर विच समाईआ। मानस जन्म लए जित्त, आवण जावण पन्ध दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा अगम्मी देवे चिट, फ़रमाने विच्चों राणा आपणा हुक्म सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सुण चेत्र खोल्ह के नैण अक्ख, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। प्रभ दा खेल वेख प्रतख, पारब्रह्म रिहा दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी जो कर के बैठे रहे हठ, सति सन्तोख विच समाईआ। दिवस रैण रहे रट, रट्टा मेट जगत लोकाईआ। अन्तर अन्तर वास्ता रहे घत्त, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बिरहों वैराग विच उबलदी रही रत, अगनी अग्ग ना कोए लगाईआ। सदा बोलदे रहे सच, तूंही तूंही राग सुणाईआ। खेल वेखदे रहे काया माटी कच्च, कंचन

गढ़ ध्यान लगाईआ। जे पुरख अकाल दीन दयाल हिरदे अंदर जावे वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। निझर झिरना अमृत देवे रस, रसना रस देवे मुकाईआ। शब्द अनाद सुणा अनहद, नादी धुन दए उपजाईआ। जोती जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। आत्म परमात्म देवे साथ, सगला संग बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्से गाथ, सोहँ आदि अन्त शब्द पढ़ाईआ। सन्त सुहेले बठाए इक जमात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को धर्म बणाए कायनात, कलमा हक़ हक़ सुणाईआ। इक्को महबूब मिले साच, महराब मुहब्बत विच वड्याईआ। इक्को संदेसा देवे ख़ताब, ख़तूतां दी लोड़ रहे ना राईआ। इक्को सजदा दस्से आदाब, नमस्ते बन्दना डंडावत इक्को दए समझाईआ। इक्को नाम मधाणा आवाज़, राज इक्को दए हिलाईआ। इक्को नेत्र सारे जावण जाग, जिन्हां उपर रहमत आप कमाईआ। इक्को रोज़ा निमाज़ दस्से बांग, अज़ां इक्को इक दए समझाईआ। इक्को उपजाए आपणा वैराग, वैरी अंदरों दए कढ्ढाईआ। इक्को खेल वखाए त्रबैणी अयुध्या प्रयाग, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग सुणाईआ। इक्को दीपक जोत जगाए चराग़, चरागाहां विच लोड़ रहे ना राईआ। इक्को त्रैगुण अतीता बुझाए कूड़ दी आग, तृष्ना तृखा ना कोए गवाईआ। इक्को साहिब सतिगुर दीन दुनी दा बदल देवे समाज, सच समग्री आपणी आप वरताईआ। सति धर्म दा सति सतिवाद बणा के राज, रईयत वेखे चार कुण्ट दह दिशा थाउँ थाईंआ। गुरमुखां हँस बुद्धी बणाए काग, विश्टा कूड़ ना कोए फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा खेल आदि जुगादि, जुग चौकड़ी देवणहारा दात, दाता दानी गहर गम्भीर बेनज़ीर इक्को नज़री आईआ।

✻ १५ चेत शहिनशाही सम्मत ४ लाल सिँघ दे गृह पिंड हेर ज़िला जलन्धर ✻

धर्म धार कहे मैं धुर दी टिप्पी, टीका टिप्पणी वेखां जगत लोकाईआ। कलयुग विच्चों सतिजुग प्रभ दे नाम दी बदल देणी लिपी, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। चार वरन अठारां बरन दी वेखणी धर्म दी सिखी, साख़िआत सोभा पाईआ। जेहड़ी धार गुर अवतार पैगम्बर लिखी, लेखा बणया क़लम शाहीआ। गोबिन्द वाली खोल्ह के चिठ्ठी, बिन अक्खरां खोल्ह के देणा दृढ़ाईआ। जिस दी धार सदा सद निक्की, निक्कयों वड्डे दए बणाईआ। समझे कोए ना मुनी ऋषी, विद्यावान ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। टिप्पी कहे मेरी क़ीमत पाई रविदास टका, प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। मैं आत्म परमात्म बणावां सका, सज्जण सच मिलाईआ। जन भगतां खोल्हां

अक्खां, आख़र दयां दृढ़ाईआ। धुर संदेसा देवां हक़ा, सच सच समझाईआ। चार कुण्ट दह दिशा तक्कां, दो जहान वेख वखाईआ। किस वेले पुरख अकाल आवे नस्सा, बण बण पाँधी राहीआ। जन भगतां गलों तुड़ावे फाँसी रस्सा, चुरासी रहिण कोए ना पाईआ। सच प्रीती देवे गफ्फ़ा, अनमुल्ली दात वरताईआ। टिप्पी कहे जे कोई परम पुरख दा समझ जावे पप्पा, पन्ने लिखण दी लोड़ रहे ना राईआ। इक्को बिना नम्बर तों लग्ग जाए ठप्पा, ठोकर दो जहान लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिट जाए सफ़ा, मलेछ रहिण कोए ना पाईआ। चार जुग दा हुक्म होवे रफ़ा, सतिजुग सच वज्जे वधाईआ। दीन मज़हब होए कोई ना ख़फ़ा, गुस्सा ग़म ना कोए वखाईआ। बिन भगतां किसे हथ्थ नहीं आउणा नफ़ा, घाटे विच जगत लोकाईआ। टिप्पी कहे जिन्हां ने हाहा टिप्पी वाला सस्सा होड़े नाल मिला के सोहँ जपा, रसना गीत अल्हाईआ। उन्हां तन वजूद कदे ना तपा, त्रैगुण नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल मिले सका, हरि सज्जण धुरदरगाहीआ। आत्म परमात्म नाता जोड़े पक्का, पारब्रह्म मेला मेले सहज सुभाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ममता मोह विकार करे इक्ठा, वहिंदे वहिण दए रुड़्हाईआ। सो गुरमुख सूरा नौजवान सच्चा, बच्चा प्रभ दा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। टिप्पी कहे मेरा आत्मा दे नाल निशान, चक्र आपणा दयां वखाईआ। जिस दी धार खेल महान, महिमा अकथ ना कोए दृढ़ाईआ। टिप्पी कहे मेरा रूप गोबिन्द दी कमान, जो चिल्ला चढ़ाए शहिनशाहीआ। जिस दी महिमा करे ना कोए ज़बान, रसना गीत ना कोए सुणाईआ। मैं सर्ब आत्मा उत्ते करां कमान, हुक्म मन्न के धुरदरगाहीआ। एहो रूप मुहम्मद नूं चन्द वखाया उत्ते असमान, जो चन्द चन्द सतार सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। टिप्पी कहे मैनूं वेखो हाहे उत्ते, हँ ब्रह्म रूप वटाईआ। मैं भगत सुहेले उठावां सुत्ते, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गुरमुख रहिण ना देवां लुके, परदयां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जिन्हां दे जन्म जन्म दे पैंडे मुके, उन्हां मेला सहज सुभाईआ। जो जुग चौकड़ी रुसे, तिन्हां लवां मिलाईआ। जेहड़े पुरख अकाल झुके, तिन्हां दर दरवाज़ा दयां सुहाईआ। जो सवाधान हो के उठे, आपणी लै अंगड़ाईआ। उन्हां दा प्रेम कदे ना टुट्टे, टुटयां प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। टिप्पी कहे जेहड़े गाने रावी दे कन्ढे बन्न्हे चिट्टे, गुट्टां नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वरताईआ। टिप्पी कहे मैं भगत जनां दी टोपी, सीस ताज सुहाईआ। जिस वेले कृष्ण खेल कीता सी नाल राधा गोपी, प्रेम प्यार जणाईआ। ओस वेले उस ने खेल अगम्मी सोची, आपणा ध्यान लगाईआ। कलयुग वेख्या आउणा रविदास चमारा मोची, ज़ातहीण वड्याईआ। भुक्खे रहिणा जिस दी कार गुज़ारी रोज़ी, राजक

रिज़क रहीम वेख वखाईआ। उस संदेसा दिता प्रीतम चोजी, गोबिन्द गुर वड्याईआ। लेख लिखाउणा परे बोधी, बुद्धी समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। टिप्पी कहे मैं दीन मज़हब दे वेखां टापू, हिस्से मानव मानव पाईआ। मैं जगत वंगार के अन्तिम आखूं, दो जहान सुणाईआ। वेखो ऊड़ा ऐड़ा ईड़ी सस्सा अलिफ़ ये बणाण वाला इक्को बापू, पिता पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जो कलयुग अंदर सतिजुग थापणा थापू, थिर घर धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक्को आखू, आख़र इक्को कर पढ़ाईआ। टिप्पी कहे मैं क्यों अद्धी गोल, अद्धा रूप वटाईआ। मेरा तोले कोई ना तोल, तराज़ू ना कोए टिकाईआ। मैं कूक सुणावां बोल, नाअरा हू हू लाईआ। मेरा पूरा होण लग्गा कौल, इक़रार गया आईआ। लेखा चुक्कण लग्गा धौल, धरनी धरत सुहाईआ। जिस दा लेखा समझे कोई ना रौल, पंडत पांधा ना कोए मुकाईआ। सो स्वामी वसण लग्गा भगतां कोल, दूर नेड़ा पन्ध मुकाईआ। सच दुआरा एका खोलू, घर मन्दिर इक प्रगटाईआ। धुर धर्म वजा के ढोल, डंका करे शनवाईआ। जो आत्म परमात्म जाए मौल, मौला विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। टिप्पी कहे मैं बैठी उत्ते टाप, मंज़ल वेख वखाईआ। खोलूं सब दे ताक, ताक़तवर इक अख्वाईआ।
१०४ झगड़ा मुका के माटी खाक, ख़ालस रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी वेखां आस, आहिस्ता आहिस्ता दयां जणाईआ। १०४
२१ पुरख अकाल दा खेल होणा ख़ास, ख़सूसीअत धुर दी देणी दृढ़ाईआ। जन भगतां दे विश्वास, चार जुग दा लहिणा देणा २१
कर बरख़ासत, दरख़ास्त सब दी वेख वखाईआ। सन्त सुहेला रहे ना कोए निरास, निरास्ता सब दी दए मिटाईआ। जन भगतां देणी आप शाबाश, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखो सदी चौधवीं मनुआ होए गुस्ताख़, मन विकार ना कोए दरसाईआ। दो जहानां प्रभ दे हथ्थ करामात, करमां दा गेड़ा दए चुकाईआ। जिस चार वरन बणाउणी इक जमात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। सति धर्म प्रगटावे धुर समाज, बदली कूड़ लोकाईआ। टिप्पी कहे मैं वेखण आई मात, धरनी धरत धौल ध्यान लगाईआ। जां तक्कया चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। करया खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते दया कमाईआ। मेरी पूरी कीती आस, असल आपणा आप समझाईआ। खेल वेख पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। गुरमुख होण ना देवां कोई उदास, कल्पणा अंदरों दयां कढ्ढाईआ। टिप्पी कहे जन भगतो मैं सब नूं करावां पास, मिसल दी फ़ाईल प्रभ हथ्थ ना कोए उठाईआ। तुसीं इक ते करयो विश्वास, जो विश्व रंग रंगाईआ। जिस दा नूर जोत प्रकाश, निरवैर डगमगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जपा के जाप, प्रताप आपणा दए

दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। टिप्पी कहे जिस वेले मैनूं अंगद ने उलीका, उँगली सज्जा हथ्थ छुहाईआ। प्रभ ने दस्सया धुर तरीका, भेव दिता खुल्हाईआ। तेरा किसे दे नाल नहीं शरीका, मज़हबी वंड ना कोए वंडाईआ। तूं इक दे नाल रखीं प्रीता, जो प्रीतम बेपरवाहीआ। जिस दा कलमा हक़ हदीसा, हज़रतां करे पढ़ाईआ। तेरी आसा मनसा पूरी करे उम्मीदा, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। जिस वेले कलयुग अन्त गुर अवतार पैगम्बर रिहा ना कोए नज़दीका, दूर दुराडा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा परदा दए उठाईआ। टिप्पी कहे मैं टिप्पी नहीं कोई चक्र, चक्रवर्ती दयां हिलाईआ। कूड़ फ़कीर रहिण ना देवां कोई फक्कर, फ़ाक़े वेखां जगत लोकाईआ। जिस दी नज़र आउँदी नहीं कोई शकल, जल्वागर धुरदरगाहीआ। ओस दे कोलों कलयुग जीवां पुट्ठी कराउणी अकल, हक़ुलयकीन ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा तक्कण, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। मन कल्पणा सारे नस्सण, भज्जण वाहो दाहीआ। त्रैगुण माया साध सन्त फसण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। अमृत रस कोई ना आवे चट्टण, हरया सिंच ना कोए कराईआ। सज्जण मीत सारे नट्ठण, पल्लू जगत छुडाईआ। ओस वेले साहिब स्वामी अन्तरजामी धुर दा नाम आवे दस्सण, सच सुनेहड़ा इक जणाईआ। जन भगतां दे काया मन्दिर अंदर आवे वस्सण, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। टिप्पी कहे मेरा क्यों नहीं हेठला हिस्सा अद्ध, अद्धयां दयां जणाईआ। उत्ते आत्मा थल्ले परमात्मा दोहां दी सांझी यद, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। भगतो टिप्पी काया दे मन्दिर दी अख़ीरी हद्द, इस दे अंदर सारे छन्द, अन्तिम एसे दी धार सालाहीआ। जिस दा लम्मा चौड़ा नहीं कोई कद, खण्डा खड़ग कर सके कोई ना बध, धरनी ख़ाक रखे कोई ना दब्ब, जिस दा लहिणा देणा आत्म धार सब, सो सन्त सुहेले गुरमुख भगत लए लभ्भ, देवे वड्याई माण विच जग, भरम मिटाए दरस दिखाए उपर शाहरग, गुरमुख उपजाए धुर दे हीरे अगम्मी नग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, चार युग दे गुर अवतार पैगम्बरां वेख ब्यान, चारे खाणी कर ध्यान, सब दा लहिणा देणा चुकाए आण, पावे सार ज़िमीं असमान, पवण पाणी होण हैरान, टिप्पी कहे मेरा निक्का जिहा बिआन, बिआना सतिजुग रिहा जणाईआ।

१०६ २१

✻ १६ चेत शहिनशाही सम्मत ४ करतार सिंघ दे गृह महल्ला जट्ट पुरा कपूरथला ✻

निरगुण धार शब्द जोत अगम्मी अरसा, दिवस रैण घड़ी पल मास बरख जगत वंड ना कोए वंडाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार गुरुदुआर पैगम्बरां नाल करे चर्चा, भेव भउ भउ आपणा आप जणाईआ। अगले साल सब ते पै जाणा पर्चा, प्राचीन दा लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां सचखण्ड दवारिउँ चार कुण्ट दा लैणा खर्चा, वस्त अमोलक धुर दी दात हरि दए वरताईआ। सति धर्म शाह पातशाह शहिनशाह आपणे नाम दा होण ना देवे हरजा, हरजाने पूरब पूर कराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो करदे आए अरज़ा, बेनन्ती विच आपणी ख़ाहिश दृढ़ाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार उन्हां वंडे दर्दां, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। सति सुआमी अन्तरजामी भगत सुहेला बण के धुर दा बरदा, मेहर नज़र इक उठाईआ। अरसा कहे मैं करां हक़ अरजोई, सति सच दृढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी देवे ढोई, दर ठांडे माण वड्याईआ। जिस दा खेल ना जाणे कोई, क़बरां विच मुर्शद देण दुहाईआ। ओसे दे नाम दी इक दरोही, तोबा तोबा कर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक टिकाईआ। अरसा कहे मैं ख़ादम हो अधीन, आहला अदना नज़र कोए ना आईआ। दर ठांडे बण मस्कीन, निउँ निउँ लागां पाईंआ। पुरख अकाल दे तालीम, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। कलयुग अन्त वेख ग़मगीन, ग़मी खुशी ना कोए बदलाईआ। तेरा नूरे नज़र ना आए सीन, जल्वागर जोत ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा वेख ख़ाके ज़मीन, ख़ालस आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक प्रगटाईआ। अरसा कहे मुहम्मदे ज़लू ज़वीने ज़गज़ तज़ी ज़ोते मजाजे नज़ू जाइज़े ज़जा आसमाने रहमान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दए चुकाईआ। अरसा कहे मैं क़दमे क़दीम निवासे यकीन नाज़ोगल ज़सी ज़ामिज़े मुबी चाग़िसते गज़ी भाविस्ते तबी दो जहाना दयावाना बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। अरसा कहे मैं देवां सच रिपोर्ट, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीरी साल लग्गणी चोट, नगारा नर निरँकार वजाईआ। ओस वेले चार कुण्ट दह दिशा धुर दे नाम दी घर घर होणी तोट, काया महबूब मिलण कोए ना पाईआ। ख़ाली होणे बंक दवारे कोट, कुटीआ अंदर ना कोए सुहाईआ। नेत्र रोणे चौदां लोक, चौदां तबक बिन सबक कुरलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा हुक्मे अंदर फिरे मलकुलमौत, काल महाकाल आपणी खेल खिलाईआ। मुहम्मद दा पूरा कर के शौक, शक शकूक रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। अरसा कहे मेरी मुहम्मद नाल लग्गी आदि प्रीत, इष्ट

देव जणाईआ। उन्हां दी फ़िकरिआं तों बाहर वसीअत, जिस विच वसले यार हक़ खुदाईआ। किसे हथ्थ ना आई असलीअत, भेव सक्कया ना कोए जणाईआ। जिस ने सब दी बदल देणी तबीअत, ताबिआदार करे ख़लक खुदाईआ। साचा शब्द पढ़ के ओस नवीअत, डंका इक्को इक सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सदी चौधवीं तों बाद पहले साल सब दी इक्को कर देणी वलदीअत, वालद वालदा हरि करता नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर ओसे तारीख़ नूं देण अहिमीअत, जो तवारीख़ दए बदलाईआ। जिस दी सब तों वक्खरी कौमीअत, शख्सीअत इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वखाईआ। अरसा कहे मैं किसे दा नहीं ग़ुलाम, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मैं हुक्म मन्नणा इक अमाम, जिस नूं पैगम्बर वेखण चाँईं चाँईआ। जिस दे धर्म दा होणा इस्लाम, इस्म आज़म नूर अलाहीआ। हक़ीक़त दा दए पैग़ाम, कलमयां तों बाहर पढ़ाईआ। अमृत दा पिलाए जाम, बिन रसना रस चखाईआ। चौदां लोक चौदां विद्या चौदां साल नूं सब दा कर लए इंतज़ाम, बेइंतज़ामी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी दा करता श्री भगवान भाग हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। चेत कहे प्रभ मेरी मँग, मांगत हो के झोली डाहीआ। साहिब सुल्तान सूरे सरबंग, शाह पातशाह तेरी शरनाईआ। नाम निधाना दे अनन्द,
१०७ २१ १०७ २१
अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोत अकालण चाढ़ चन्द, कलयुग कूड़ अन्धेर मिटाईआ। धर्म जैकार होवे छन्द, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। अमृत धार वहे गंग, सर सरोवर इक वहाईआ। कर प्रकाश बन्द बन्द, बन्दीख़ाना दे तुड़ाईआ। तेरा नूर ब्रह्म हँ, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। झगड़ा मुका दे काया माटी चम्म, कंचन गढ़ इक सुहाईआ। लेखे ला पवण स्वासी दम, दामन हो के पार कराईआ। भटकना रहे ना मनुआ मन, मनसा मोह दे गुआईआ। कर प्रकाश काया माटी तन, ततव तत आप समझाईआ। सुणा राग बिना कन्न, संदेसा इक अल्लाईआ। कलयुग अन्तिम बेड़ा बन्न्ह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। चेत कहे प्रभ धुर दी दे अगम्मी शक्ती, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दा अर्शी , अर्शी प्रीतम नूर अलाहीआ। जन भगत सुहेले वेख उपर धरती, धरनी धवल धौल फोल फुलाईआ। सब दी आसा मनसा ख़ाहिश पूरी कर मर्ज़ी, मरीज़ां तबीब हो के शफ़ा दे कराईआ । गुरमुख रहे ना कोए खुदगर्ज़ी, गर्ज़ आपणे नाल जुड़ाईआ। तेरी खेल नरायण नर दी, नर हरि आपणा परदा उहला दे उठाईआ। तेरी आत्मा तेरा नाम होवे पढ़दी, दूजी सिख्या ना कोई पढ़ाईआ। तेरी मंज़ल अगम्म अथाह बेपरवाह होवे चढ़दी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। निर्भय किसे कोलों ना होवे डरदी, मंज़ल पैंडा आपणा पन्ध मुकाईआ। सिध्धी सचखण्ड

दुआरे होवे वड़दी, दरगाह साची मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी तेरी बेपरवाहीआ। जन भगत सुहेले वेख आपणे आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। तूं अन्तर आत्म धुर दा बण साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। चरण धूढ़ी सरन सरनाई दे ख़ाक, मस्तक धूढ़ी टिक्के लैण रमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, निरगुण नूर चन्द कर रुशनाईआ। तूं साहिब सुहेला इक अकेला सच दवारे बख्श दात, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। साचे मण्डल वखा अगम्मी रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नाच नचाईआ। लेखे ला घट पवण स्वास, साह साह तेरी इक वड्याईआ। तेरे दवारे जाए ना कोए निरास, निरासा विच आसा दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड दवारे ठांडे दरबार, हरि करते मँग मँगाईआ। चेत कहे मैं मँगां डाह के झोली, भिखक हो के आस रखाईआ। जन भगत सुहेले बणा आपणे घर दी गोली, सेवा सच सच समझाईआ। बिन रंग रंगत चाढ़ दे काया चोली, एथे ओथे उतर कदे ना जाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के बोली, धुर संदेसा आपणा राग सुणाईआ। तूं शब्द गुरु प्रभ ब्रह्मण्डां खण्डां बण अगम्मा ढोली, डंका दे वजाईआ। चार कुण्ट दह दिशा फिरे दरोही तेरे नाम दी रौली, कूक कूक सर्ब कुरलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सदी चौधवीं जगत कुड़िआर खेल दे होली, हौली हौली आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। चेत कहे मैं जगावां अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह दयां जणाईआ। जन भगतां मेला कर प्रतख, साख्यात जोड़ जुड़ाईआ। सदा लई खोल्ह दे अक्ख, निज नेत्र कर रुशनाईआ। नाम भण्डारा वखा दे हट्ट, हटवाणा इक्को नज़री आईआ। ग़रीब निमाणयां आत्म झोली दे घत्त, भोरी भोरी मज़ा आप चखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों पुरख अकाल तेरा आउणा होवे वत, बेवतनां वतन दे समझाईआ। जिथ्थे इक्को तेरी गाथ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। मंज़ल चाढ़ अगम्मे घाट, घाटा जन्म कर्म पूर कराईआ। मानस जन्म अग्गे रहे कोए ना वाट, लख चुरासी ना कोए भुआईआ। तूं शहिनशाह सुल्तान धुर दा कमलापात, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सब दी पूरी कर दे आस, मनसा आपणे विच मिलाईआ। धीरज धर्म दे धरवास, भाण्डा भरम भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडा इक वखाईआ। चेत करे मैं निउँ निउँ लागां पग, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। किरपा कर सूरे सर्बग्ग, साहिब तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बुझा अग्ग, चार कुण्ट ना कोए खपाईआ। हक़ दुआर दस्स हज्ज, हाजत सब दी वेख वखाईआ। तूं नूर अलाही अगम्मी

१०८
२१

रब्ब, यामबीन तेरी सरनाईआ। जगत जुगत मेट दे हद्द, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। भगत सुहेले उपजा आपणी यद्द, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। मैं उच्ची कूक पुकारां गज्ज, गज वांग हो सहाईआ। तेरे सन्त सुहेले तेरा दर्शन करन रज्ज, रजो तमो सतो सति विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। चेत कहे मैं दर तेरे दा मँगता, भिखारी नज़री आईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। बोध अगाधा बण पंडता, सति सतिवादी दे समझाईआ। तेरे दर ते करां मिन्नता, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मनुआ करे कोई ना इलता, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। जो जुग जुग लेखा रिहा लिखदा, उह पूरा देणा कराईआ। झगड़ा रहे ना पत्थर इट्ट दा, माटी ख़ाक ना कोए लड़ाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला गहर गम्भीर आत्म परमात्म रहें दिसदा, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। प्यार पा के धुर दे पित दा, पतिपरमेश्वर गोद उठाईआ। अग्गे मार्ग दस्सणा इक दा, एकँकार जणाईआ। जो मानव रूप निराले सिख दा, सतिगुर हो के विच जाणा समाईआ। उहदा झगड़ा मिट जाए नित दा, आवण जावण रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। चेत कहे मेरे दयाल, दीनन वेख वखाईआ। सदी चौधवीं सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा डंक वजाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। सच प्रीती देदे दान, दर्दी हो के झोली पाईआ। सच दुआर करीं परवान, परम पुरख तेरी सरनाईआ। तेरी किरपा तों परे नहीं कोए ज्ञान, मिलावण वाला नज़र कोए ना आईआ। मेहर कर के लोकमात जन भगतां वेखीं आण, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादी धुर दे काहन, सच सरनाई देणा माण, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ।

✻ १७ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड दाउदपुर ज़िला कपूरथला डा० पाल सिँघ दे गृह ✻

गोबिन्द प्यार दी छोटी करद, क़दर गुरमुखां रही पाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दरद, जग दुखियां वेख वखाईआ। डल्ले दी अंदरे अंदर दी अर्ज़, बेनन्ती सच सुणाईआ। जिस नूं हउमे दी होवे मर्ज़, हंगता कूड़ लोकाईआ। गोबिन्द फेर तेरा की फ़रज़, सच सच दे जणाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा जिस वेले कलयुग होवे अन्धेरा गरद, चार कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मैं निरगुण धार प्रगट होवां योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, निराकार निरँकार आपणा संग बणाईआ। खेल वेखां फ़र्श

१०९
२१

अर्श, अर्श फर्श आपणी कार कमाईआ। जन भगतां जन्म जन्म दी मेटां हरस, पूरब हवस पूर कराईआ। जोती शब्दी धार देवां दरस, आदर्श आपणा इक जणाईआ। उह सम्मत सुहावणा सम्मत शहिनशाही दे चौथे बरस, चौथे जुग परदा लाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा चार वरन अठारां बरन पुठ्ठी करां नरद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। छोटी करद कहे मैं जुग जुग वेखी क़तलगाह, क़ातल मक़तूल ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हिरदे विच रा, रहिबर बण के भज्जण वाहो दाहीआ। शब्दी शब्द संदेसे देंदे रहे सलाह, कलमयां विच वड्याईआ। नाउँ निरँकारा गए जणा, शाह सिक्दारा इक दरसाईआ। भविख्तां विच गए लिखा, इष्टां दा डेरा ढाहीआ। जिस वेले जल्वागर आवे आप खुदा, जगत तक्बरी दए मिटाईआ। लेखा जाणे दो जहां, जहालत वेखे ख़लक खुदाईआ। साहिब सुआमी फेरा पा, अन्तरजामी परदा लाहीआ। नाम खण्डा ब्रह्मण्डां इक्को दए चमका, दो जहानां नज़र किसे ना आईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया दंगा दए मिटा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप समझाईआ। करद कहे मैं वेख्या क़ादर, क़ुदरत दा करता नज़री आईआ। दो जहानां योद्धा सूरबीर बहादर, बलधारी धुरदरगाहीआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां बणाउँदा रिहा सौदागर, जगत वणजारे रूप वटाईआ। दरगाहि साचे सच दुआरे देंदा रिहा आदर, मेहरवान महबूब मेहर नज़र टिकाईआ। सृष्टी दृष्टी दीन दुनी सब दे कर्म करदा रिहा उजागर, उजरत अग्गे ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा दरसाईआ। छोटी करद कहे मैं दस्सां हाल क़दीम, क़ुदरत दा मालक दया कमाईआ। जिस दा वस्सेरा महल अटल उच्च मकान अज़ीम, आलीशान सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी करदा रिहा तकसीम, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाउँदा रिहा मुनीम, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान राह प्रगटाईआ। निरगुण सरगुण दस्सदा रिहा सीन, जोती जाता पुरख बिधाता आपणा परदा आप उठाईआ। खेल खलाउँदा रिहा लख चुरासी नर मदीन, तन वजूद महबूब आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्म दिन्दा रिहा शब्द अगम्मी गोईपेशीन, पेशतर आपणी कार कमाईआ। मार्ग दस्सदा रिहा नवीन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला आप चुकाईआ। करद कहे मैं सब तों निक्की, निक्कयों वड्डे दए बणाईआ। मैं जाच शब्द खण्डे तों सिक्खी, जो सचखण्ड सोभा पाईआ। मेरी वारता चार जुग किसे ना डिठ्ठी, कातब क़लम ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्तिम मार दुहथ्थढ़ पिट्टी, दरगाहि साची हाल सुणाईआ। प्रभू मैं मिल गई विच मिट्टी, मैनूं मिली ना माण वड्याईआ। आह लै अष्टभुज वाली चिठ्ठी, जो तेरी देवा दुर्गा फड़ाईआ। जिस दे पिच्छे बणी टिप्पी, टप्पा अग्गे ना कोए दृढ़ाईआ।

तेरी धार अग्गे कोए ना दिसी, दह दिशा फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं आई विच्ची, दुःखां विच कुरलाईआ। तेरी बदल
के आ गई मिती, मित्र प्यारा दए गवाहीआ। जन भगतां अन्तर धार दे मिट्ठी, रस आपणा आप चखाईआ। खेल वखा
जगत अनडिठी, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जो आत्मा तेरे दुआरे विकी, क़ीमत उनां दे चुकाईआ। जोती जोत
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर परदा दे उठाईआ। करद कहे मैं सब दा करां क़दर, क़ुदरत तेरी वेख वखाईआ।
प्रभ मेरी पूरी कर दे सध्धर, सधना साफ़ हो के दए दुहाईआ। जेहड़ा करदा सी बक्करे क़तल, क़तलगाह बणाईआ। जिस
वेले वखाया तूं ओस नूं आपणा वतन, परदा अन्तर उठाईआ। उस कर के प्रेम दी बन्दन, बेनन्ती तेरे चरणां विच टिकाईआ।
तूं खुशीआं नाल लग्गों हस्सण, ताली दिती वजाईआ। प्रेम नाल कीता बचन, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जिस वेले कलयुग
कूड़ी क्रिया सृष्ट सबाई लग्गी फसण, धर्म धार ना कोए प्रगटाईआ। सन्त सुहेले कूड़ कुड़िआरे प्रभ चरण दुआरिउँ लग्गे
नठ्ठण, भज्जण वाहो दाहीआ। जगत आसा कारण प्रभ दा नाम सारे जपण, निरिच्छत नज़र कोए ना आईआ। काया माटी
भाण्डे होए सक्खण, वस्त हक़ ना कोए वखाईआ। त्रैगुण माया अग्ग लग्गी मच्चण, चार कुण्ट ना कोए बुझाईआ। गुर
११९ अवतार पैगम्बर पत ना रखण, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मन कल्पणा सारे टप्पण, कूक कूक दुहाईआ। किस बिध ११९
२१ ओस वेले भगतां आवें पैज रखण, निरगुण आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर २१
नज़र इक उठाईआ। सधने उह वेख करद छुरी, साची शरअ दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग जीवां आसा होई बुरी,
बुरयार दिसे लोकाईआ। सब दी मनसा होई निगुरी, सतिगुर शब्द ना कोए शनवाईआ। माया ममता विच जाए रुढ़ी, नाम
मुहाणा वञ्झ ना कोए वखाईआ। पिता तक्के आपणी कुड़ी, नेत्र अक्ख उठाईआ। सुरती रहे किसे ना जुड़ी, शब्द रंग
ना कोए रंगाईआ। दीन दुनी जावे रुढ़ी, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे सधने तक्क लै आपणी करद ओहो हक़ीक़ी, हक़ दयां जणाईआ। जिस विच
रही ना किसे कोई तौफीक़ी, तोहफ़ा देवे ना धुर खुदाईआ। दीन मज़हब बणे शरीकी, लाशरीक मेल ना कोए मिलाईआ।
ओस वेले सदी चौधवीं जाणी बीती, आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल सब दी बदल देवे रीती, रीतीवान वेख वखाईआ।
झगड़ा मुका के मन्दिर मसीती, मसला इक्को दए समझाईआ। वेखो खेल जगत अनडीठी, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जन
भगतां ला इक बग़ीची, माली हो के सेव कमाईआ। जेहड़ी गोबिन्द खून धार कढ्ढे आपणी विच्चों चीची, मस्तक टिक्के
धुर दा रंग रंगाईआ। साचा कलमा दस्स नाम हक़ीक़ी, सच सच दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, वखावणहारा धुर दा घर, गृह मन्दिर अंदर परदा आप उठाईआ। सधना कहे मैं करद की तक्कां, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। मैं तेरा विकारी बच्चा, विभचारी नज़री आईआ। तूं साहिब सुआमी सच्चा, सच तेरी सरनाईआ। मेरीआं शरमावण तैथों अक्खां, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। तेरे चरण कँवल ढठ्ठां, मँगां इक सरनाईआ। प्रभू सदा ग़लतीआं हुंदीआं पंजां तत्तां अठ्ठां, साफ़ नज़र कोए ना आईआ। तेरे अग्गे वास्ता घत्तां, निउँ निउँ लागां पाईआ। सदी चौधवीं सब दीआं मारीआं जाणीआं मत्तां, बुद्धी बबेक ना कोए रखाईआ। वास्ता पावां जोड़ के हथ्थां, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। सधना कहे मेरे मेहरवान, महबान तेरी सरनाईआ। मैं मँगां मँग बण अन्जाण, बुध्धहीण अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम वेख मार ध्यान, तेरी बेपरवाहीआ। चारों कुण्ट शरअ शैतान, शरीअत करे लड़ाईआ। सति धर्म ते दिसे ना कोई इन्सान, इन्सानीअत नाता गई तुड़ाईआ। तेरे सन्त सुहेले जन भगत अन्तर अन्तर कुरलाण, कूक कूक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाण, गावत गा गा वज्जे वधाईआ। उन्हां किस बिध मिल्या आण, हरि प्रभ साचे दे दृढ़ाईआ। अबिनाशी करता कहे सधने कर ध्यान, सदा इक सुणाईआ। मैं ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहान, लख चुरासी फोल फुलाईआ। जिस वेले मेरा वेला वक्त पहुंचया आण, घड़ी पल आपणी वंड वखाईआ। ओस वेले प्रगट होवां निरगुण धार नौजवान, जोती जाता फेरा पाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरमुख लवां पछाण, लख चुरासी विच्चों फोल फुलाईआ। दर घर ठांडे स्वामी हो के अन्तजामी हो के मिलां आण, आप अपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा पर्दा रिहा उठाईआ। परदा चुक्कके मिटावां उहला, भेव रहे ना राईआ। कर प्रकाश काया चोला, चोला चोले विच्चों बदलाईआ। प्रगट हो के उपर धौला, धरनी धरत धवल सुहाईआ। निरगुण धार हो के मौला, हर घट वेखां चाँईं चाँईंआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तक्को रौला, दह दिशा फोल फुलाईआ। जन भगतां भार करां हौला, करमां गंढु ना कोए उठाईआ। इक्को दस्सां धुर दा ढोला, तूं मेरा मैं तेरा दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा पूरा करां इक़रार कौला, कीता कौल भुल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए वखाईआ। सधने एसे तेरी करद नूं लावां धक्का, जो हथ्थों दिती सुटाईआ। कसाई कोई रहिण ना देवां मदीना मक्का, मक़बरिआं वाले नाल मिलाईआ। जन भगतां दा नाता करां पक्का, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। आत्म परमात्म बणा सका, सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। लहिणा देणा देवां हथ्थो हथ्था, जगत उधार ना कोए वखाईआ। सब दे अन्तर निरंतर आपणे नाम दी भर के सत्ता, सति सतिवादी हो के दया कमाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्खां, घर घर करां रुशनाईआ।

भगतां दे अंदर बहि के वसां, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेटां मस्सा, अमावस परदा आप उठाईआ। धुर दा मार्ग इक्को दस्सां, दह दिशा कर पढ़ाईआ। जन भगत तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा जाप जपा, नाम इक्को इक वड्याईआ। धुरदरगाही दे के अगम्मी गफ़्फ़ा, शब्द भण्डारे नाल भराईआ। पिछली क्रिया कर के रफ़ा, रफ़ाक़त इक्को नाल जुड़ाईआ। तेरी निक्की करद दा नफ़ा, जन भगतां दी झोली पाईआ। फेर उठ जाए मलेछ दी सफ़ा, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। धुर दी धार हुक्म लगा के दफ़ा, जिस दी हिन्दसा वंड ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल कदे ना होवे ख़फ़ा, करमां दी सज़ा दए भुगताईआ। उनां चिर लग्गे ना किसे नूं पता, जिंनां चिर ना आप समझाईआ। भेव पाए ना कोई तपा, तपीशर अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बरां दा कलयुग लहिणे दा ख़तम कीता टप्पा, अग्गे मुनिआद ना कोए वधाईआ। चार जुग दा लेखा ठप्पा, मोहर आपणी नाम लगाईआ। अग्गे भगतां मार्ग दस्स के सच्चा, सच सच जणाईआ। कर प्रकाश काया माटी कोठा कच्चा, कंचन गढ़ सुहाईआ। सति धर्म दा खोल्ह के हट्टा, इक्को वणज वखाईआ। प्रभ दे नाम दा पूजा पाठ विच अग्गे लए ना कोई पैसा टका, रीती नीती देणी समझाईआ। जेहड़ा मुला शेख़ मुसायक पंडतां प्रभ दे नाम उत्ते गफ़्फ़ा छका, सब नूं देणी सज़ाईआ। राए धर्म उन्हां दीआं बन्न्हे नसां, बन्दीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए समझाईआ। करद कहे सुण मेरे भगवन्त, हरि करते दयां जणाईआ। मैं वी वेखां तेरा कलयुग अन्त, अन्तश्करन परदा दयां उठाईआ। मैं पहलों कटणे जेहड़े तेरे नाम दे झूठे सन्त, सति सति ना कोए समाईआ। पढ़ के पुस्तक धोखे दिन्दे जंत, जुगत सके ना कोए वखाईआ। जिन्हां तक्कया नहीं तूं स्वामी कन्त, मिलावा मेल ना कोए मिलाईआ। ओह रहिण नहीं देणे पंडत, जेहड़े अक्खरां दी करन पढ़ाईआ। ओह ग्रन्थी नहीं रहिण देणे जेहड़े पाठ दे होवण मँगत, गुरमुखां अग्गे झोलीआं डाहीआ। सब तों उत्तम श्रेष्ट गुरमुखां दी बणाउणी सँगत, चार वरन अठारां बरन खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नज़र कोए ना आईआ। करद कहे प्रभ मेरी मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। कूड़ कल्पना मेट दे इल्लत, शरअ ना कोए लड़ाईआ। धरती उत्ते रहे ना कोई तेरा निन्दक, दुष्ट दुराचार दे खपाईआ। मैं सदा मँगदी तेरे भगतां दी मिल्लत, मिल मिल ख़ुशी मनाईआ। धन्न भाग मैं तकी धुर दी इक्को सिम्मत, जिस दा रुख ना कोए उलटाईआ। मेरा संसा मिटिआ दूर होई चिन्त, ग़मी ग़मख़ार दिती गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सति सतिवाद तेरे धर्म दा होवे सिदक, सबर विच साबर हो के इक्को नज़री आईआ।

११३ २१

✼ १८ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड बलो वाली ज़िला अमृतसर गिरधारा सिँघ दे गृह ✼

चेत कहे मैं फिरदा चार कूट, दह दिशा भज्जां वाहो दाहीआ। परम पुरख दा लभ्भदा फिरां सबूत, लख चुरासी जीव जंत फोल फुलाईआ। राह तक्कां हक़ महबूब, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ध्यान लगाईआ। निरगुण सरगुण पार कर हदूद, घर इक्को वेख वखाईआ। जिथ्थे नहीं द्वैत दूज, दुतिया भाउ ना कोए बणाईआ। सच स्वामी जाए सूझ, अन्तरजामी सोभा पाईआ। मंज़ल मिले हक़ मक़सूद, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करावे कूच, कूचा गली करे सफ़ाईआ। भाग लगा के काया माटी पंज भूत, अदभुत आपणा रूप वखाईआ। शब्द अगम्मा उठाए दूत, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। निरवैर पुरख होवे मौजूद, मजलस भगतां नाल रखाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार करे नेसतोनाबूद, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी मात प्रगटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। चेत कहे मैं उठ उठ नठ्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। चार वरन अठारां बरन खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दस्सां, दह दिशा हुक्म वरताईआ। साध सन्त जगत फ़कीर शाह हकीर निज नेत्र खोल्हो अक्खां, आख़र परदा दयां चुकाईआ। भेव खुल्हावां निरगुण धार तीर्थ तटां, अठ्ठ सट्ठां परदा लाहीआ। जन भगतां अन्तर निरंतर हो के वसां, रूप रंग रेख समझ कोए ना पाईआ। सुनेहड़े विच नाता करां पक्का, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जगत वासना रहे कोई ना रट्टा, झगड़ा दिसे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा अगम्म अपारा आपणा आप जणाईआ। चेत कहे मैं चार कुण्ट रिहा नस्स, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। हुक्म संदेसा रिहा दस्स, अगम्म नाद शनवाईआ। प्रेम प्रीती मुहब्बत देवां रस, रस्ता इक्को इक प्रगटाईआ। वेखो खेल पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलावे रथ, बण रथवाही आपणा हुक्म वरताईआ। सो दीन दयाला, पुरख अकाला जोती जाता हो प्रगट, धर्म दुआरा हट्ट इक खुल्हाईआ। दुरमति मैल जगत जिज्ञासू देवे कट, कटाकश आपणा नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक समझाईआ। दर ठांडा वेखो अगम्म, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हरख सोग रहे ना ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। झगड़ा मुके पवण स्वासी दम, दामनगीर इक्को बेपरवाहीआ। सति सच दा देवे अगम्मा धन, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। हड्ड मास झगड़ा रहे ना चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। चार वरन अठारां बरन बेड़ा देवे बन्न्ह, खेवट खेटा धुरदरगाहीआ। नेत्र नैण रहे कोए ना अन्न्ह, निज लोचन नैण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक

प्रगटाईआ। दर ठांडा वेखो हरि का दुआर, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। जिस गृह बैठा शाह पातशाह सच्ची सरकार, शाहो भूप सोभा पाईआ। करनी दा करता क़ुदरत दा मालक खेल करे अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर दिता निवार, कलयुग अन्तिम लहिणा दए मुकाईआ। लेखा लै गुरु अवतार, पैगम्बरां आपणा हुक्म मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर दर भिखार, दर ठांडे बैठे अलख जगाईआ। हुक्म देवे हाकम आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल मिले वड्याईआ। नाम डंका राउ रंकां सृष्ट सबाई करे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर जणाईआ। स्वामी मीता ठांडा सीता त्रैगुण अतीता त्रैभवन देवे उठाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा एकँकारा वड भण्डारी आप भराईआ। चेत कहे मैं रिहा तक, ताक़त अवर रही ना राईआ। चार जुग गए थक्क, बण बण पाँधी राहीआ। क़ीमत मिले किसे ना हक़, असलीअत असल ना कोए वड्याईआ। धर्म दुआर रिहा ना हट्ट, हटवाणे बैठे मुख छुपाईआ। दुरमति मैल सके कोई ना कट, कटाकश निराला तीर ना कोए चलाईआ। करे खेल पुरख समरथ, हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण जोत कर प्रगट, ऊचो ऊँच परदा दए उठाईआ। शब्द अगम्मी ला के सट्ट, सोई सुरती लए जगाईआ। कर प्रकाश लट्ट लट्ट, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। बहत्तर नाड़ ना उबले रत, गुरमुख रतन अमोलक हीरे लए प्रगटाईआ। अन्तर निरंतर दे के धीरज सति, सति सन्तोख इक समझाईआ। प्रेम प्रीती अंदर बख्श ब्रह्म मति, ब्रह्म परदा दए उठाईआ। शब्द अनराग सुणाए अनहद, नादी धुन आप उपजाईआ। दया कमाए दरस वखाए उपर शाह रग, जगत दुआरे डेरा ढाहीआ। लख चुरासी विच्चों भगत सुहेले गुरमुख कढ्ढ, सन्त सुहेले आपणे रंग रंगाईआ। लेखे ला के काया माटी हड्ड, कंचन गढ़ रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सर्बग्ग, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। चेत कहे मैं चार कुण्ट करया पन्ध, पाँधी हो के फेरा पाईआ। जगत अन्धेरा दिस्सया धुंद, धुँदूकार ना कोए मिटाईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया वेखी गंद, सुगंध रूप ना कोए बणाईआ। सच दुआर चढ़या कोई ना चन्द, नूरी नूर ना कोए रुशनाईआ। दीन मज़हब दी दुनी होई पाबन्द, पारब्रह्म मिलण कोए ना पाईआ। झगड़ा प्या जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज करे लड़ाईआ। सच दुआरा एकँकारा मंज़ल हक़ीक़ी लाशरीकी जाए कोई ना लँघ, दरवाज़ा बन्द ना कोए खुल्हाईआ। साचा मिले ना किसे अनन्द, निजानंद ना कोए रसाईआ। टुट्टी सके कोई ना गंढ, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी हरि करता आप दृढ़ाईआ। चेत कहे मैं दस्सां अगम्म कहाणी, कहावत रहे ना राईआ। करे खेल शाह सुल्तानी,

शहिनशाह धुरदरगाहीआ। लहिणा देणा वेखे दो जहानी, निरगुण सरगुण फोल फुलाईआ। सृष्टी दृष्टी वेखे अमृत रस पाणी, गृह मन्दिर अंदर परदा आप चुकाईआ। कवण गुरमुख सन्त सुहेला मंज़ल चढ़या रुहानी, असमानी महबानी पन्ध मुकाईआ। कवण भगत सुहेला प्रभ दे नाल करे बेईमानी, माया ममता मोह विकार हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए चुकाईआ। चेत कहे मैं दस्सां मित्र मित्र प्यारे अहबाब, कलकाती दरसाईआ। परवरदिगार धुर अहबाब, मित्र प्यारा नज़री आईआ। सदी चौधवीं लेखा वेखे हिसाब, अंकड़े फोल फुलाईआ। पैगम्बरां कर लाजवाब, नेत्र नैण अक्ख भुआईआ। धुर दा कलमा बदल अदाब, रूप आपणा इक जणाईआ। झगड़ा चुके मज़हब मज़ाब, मजलस इक्को हक़ सुणाईआ। ख़ता विच्चों देवे खताब, खातर आपणी इक जणाईआ। कूड़ी क्रिया बदल मिज़ाज, मिसल आपणी इक समझाईआ। महबूब मुहब्बत करो आदाब, सजदा सिर निवाईआ। जेहड़ा कदी ना होवे ग़ायब, नूर नज़र ना कोए बदलाईआ। फसे विच ना किसे ऐब, गुनाह ना वंड वंडाईआ। सद भगतां करे हमाइत, हमसाजण नज़री आईआ। नाम निधान दे इनाइत, मेहर नज़र उठाईआ। सो कलयुग अन्तिम पूरा करे फ़राइज़, फ़रद जुर्म लग्गे उपर लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मन्न अराइज़, अर्ज़ी पिछली वेख वखाईआ। जिस दा सदी चौधवीं अन्त अख़ीर निकलणा नताइज, नतीजा वेखे थाउँ थाईंआ। जो करना सो प्रभ ने करना जाइज़, नाजाइज़ विच कदे ना आईआ। हुक्म देणा इक्को वाहिद, वाहिद कलमा इक पढ़ाईआ। धर्म दी धार सच हदाइत, हदीस इक सुणाईआ। कूड़ी क्रिया करे ना कोए रयाइत, धुर दे हुक्म नाल भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, गृह परदा इक चुकाईआ। चेत कहे कल वेखां प्रभ दी रीत, रीतीवान दया कमाईआ। जो आत्म परमात्म दस्से गीत, गहर गम्भीर परदा लाहीआ। जन भगतां करे त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी वेख वखाईआ। काया माटी कर के ठांडी सीत, कलयुग कूड़ी अग्ग बुझाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, आत्म ब्रह्म जणाईआ। लेखा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गीत, गहर गम्भीर परदा रिहा उठाईआ। दीन मज़हब दे उत्ते फेर के लीक, जगत हद्द रिहा गवाईआ। मेल मिलावे नाल लाशरीक, शरकत अंदरों दए कढ्ढाईआ। जिस दे विच हक़ तौफीक़, महबान बीदो अख्वाईआ। दरगाह साची दा वसनीक, सचखण्ड दुआरे बैठा डगमगाईआ। जन भगतां करे हक़ प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। जिस दी सदी रही जग बीत, बीतिआ लेखा दए चुकाईआ। झगड़ा मुका के ऊँच नीच, राउ रंक इक्को नज़री आईआ। जिस दी गुर अवतार करन तस्दीक, शहादत इक्को दर भुगताईआ। करे खेल साहिब अनडीठ, अनडिठड़ा हुक्म वरताईआ। जन भगतो

करवट विच बदल के पीठ, सन्मुख हो के नज़री आईआ। मानस जन्म सब ने लैणा जीत, जिन्हां मिले धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच मेला इक सुहाईआ। चेत कहे मैं वेखां खेल सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाइंदा। भेव खुल्हाए आदि निरँजणा, निरवैर दया कमाइंदा। भगतां वेखे दर्द दु:ख भय भञ्जणा, भवसागर पन्ध चुकाइंदा। नेत्र पाए नाम अञ्जणा, अन्ध अन्धेरा दूर कराइंदा। सच दुआरा दस्से मँगणा, जिथ्थे पुरख अकाला दीन दयाला सोभा पाइंदा। सच दुआरा दस्से लँघणा, जिथ्थे अग्गे हो ना कोए अटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धरनी धरत धवल दया कमाइंदा। चेत कहे जन भगतो संदेसा देवां सति, सच सच दृढ़ाईआ। जिस भाग लगाउणा काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। धुर दा मार्ग देवे दस्स, दह दिशा कर पढ़ाईआ। सब दी पूरी करे आस, मनसा मनसा विच मिलाईआ। सच भण्डारा दे के दात, दाता दानी दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ । जन भगत सुहेल्यां पुच्छे वात, दाता दानी वेखे थाउँ थाईंआ। सति सतिवादी दस्स अगम्मी गाथ, अलख अगोचर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया अगनी बुझाए आंच, अंचल ओहले हो के परदा आपणा आप उठाईआ।

❋ १६ चेत शहिनशाही सम्मत ४ बटाला अजीत सिँघ दे गृह ❋

निमस्कार कर के हटे दोवें हथ्थ, बन्दना डंडावत जगदीश सरन सरनाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी साहिब सदा समरथ, दो जहानां मालक ख़ालक धुर दा शहिनशाहीआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण महिमां सके कोई ना कथ, कातब लेख ना कोए समझाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी लेखा जाणे हर घट, घट निवासी वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण आत्म परमात्म चलावणहारा रथ, धुर रथवाही इक्को नज़री आईआ। जिस दा रसना जिह्वा बत्ती दन्द सोहले ढोले राग कलमे गाउँदे जस, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। ओह नेत्र लोचन नैण निरगुण धार एकँकार इक इकल्ला अगम्मी खोल्हे अक्ख, प्रतख आपणा नूर करे रुशनाईआ। सच दवारा एकंकारा खोल्ह आपणा हट्ट, वस्त अमोलक एका एक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप चुकाईआ। हथ्थ कहिण असीं जुग जुग जुड़दे, आपणा कर्म कमाईआ। निरमाणता विच सदा तुरदे, भज्जीए चाँईं चाँईंआ। दर्शन करीए ओस सतिगुर

ਦੇ, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। ढोले पढ़ीए उहदे धुर दे, जो जुग जुग कलमा दए दृढ़ाईआ। जिस दे प्रेम नाल जीवत होवण मुरदे, तन माटी ख़ाकी वज्जे वधाईआ। राग सुणाए अगम्मी सुर दे, सुरती शब्द विच मिलाईआ। प्रकाश देवे अगम्मे नूर दे, जोती जोत जोत रुशनाईआ। दर्शन तक्कीए ओस हज़ूर दे, जो हज़रतां करे पढ़ाईआ। जिस पैंडे मुकाए नेड़े दूर दे, निज आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। कलयुग झगड़े मुकाए क्रिया कूड़ दे, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। हथ्थ कहिण असीं वणजारे प्रभ चरण धूढ़ दे, निउँ निउँ लागे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। हथ्थ कहिण असीं दोवें इक्ठे, मता धुर दा ल्या पकाईआ। सच सरनाई एका एकँकार ढठ्ठे, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। धुर दरबारे कौल इक़रार करने सच्चे, संजम सच इक्को नज़री आईआ। भाग लगाउणा काया माटी कच्चे, कंचन गढ़ वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मिन्नतां कर कर रहे सद्दे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कढु दे दग़े, मन ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। गुरमुख गुरसिख दर दवारे आए तेरे बच्चे, बचपन आपणा आपणी झोली पाईआ। प्रेम प्यार दे नाते कर दे पक्के, एथे ओथे दो जहान ना कोए तुड़ाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक देदे आपणे हट्टे, सच भण्डारा इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। हथ्थ कहिण असीं दोवें हस्त, हस्ती तकणी बेपरवाहीआ। नाम खुमारी विच होणा मस्त, ग़फ़लत निंदरा रहे ना राईआ। नूर नुराना तकणा उपर अर्श, अर्श दा मालक फ़र्श सोभा पाईआ। जो ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां वंडे दरद, दीनां अनाथां होए सहाईआ। दूई द्वैती बजर कपाटी अंदरों लाह के पड़द, परदा उहला निझर दए चुकाईआ। शब्द अनाद सुणाए अगम्मी तर्ज, तुरीआ तों परे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक वखाईआ। हथ्थ कहिण प्रभ कमलापाती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जो सुहावण आया भगत सुहेल्यां अज्ज दी राती, रुतड़ी आपणे नाम महकाईआ। देवणहार धुर संदेसा अगम्मी बाती, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जन भगत सुहेले गुरमुख सज्जण मीत मुरार सच धर्म दे बणा के इक जमाती, इक्को विद्या अंदर दए टिकाईआ। जन्म जन्म दी कर्म करम दी पूरी करे आसी, आसा तृष्ना रहे ना कोए लोकाईआ। मन कल्पणा मोह विकार दुरमति मैल अंदरों जाए लाथी, तन वजूद रहिण ना पाईआ। जो सतिगुर शब्दी अन्तर आत्म मन्नण आखी, आख़र मंज़ल दए चढ़ाईआ। जिथ्थे मिले पुरख अबिनाशी, दरगाह साची सोभा पाईआ। आवण जावण लख चुरासी मेटे वाटी, पाँधी पन्ध ना कोए भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे विच्चों वेख वखाईआ। हथ्थ कहिण हथ्थ जोड़दे गुरु पीर अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। विष्न

ब्रह्मा शिव दर भिखार, दर ठांडे झोलीआं डाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे प्यार, त्रै पंज चरण कँवल सरनाईआ। नाद शब्द धुन गावण वारो वार, वारता बेपरवाहीआ । पुरख अबिनाशी शाहो शाबाशी धुर फ़रमाना करे उज्यार, नाम संदेसा इक दृढ़ाईआ। मेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल करां संसार, संसारी भण्डारी सँघारी हुक्मे विच भुआईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यार, लहिणा देणा लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। गुरमुख सन्त सुहेले सोए लए उठाल, शब्द हलूणा इक लगाईआ। उठो वेखो सच सच्ची धर्मसाल, जिथ्थे बैठा बेपरवाहीआ। नाम खज़ाना देवे धुर दा माल, दौलत अनमुल्ली झोली पाईआ। प्रभ सरनाई आ रहे ना कोई कंगाल, कंगालां शाह दए बणाईआ। शब्द विचोला दो जहानां बण दलाल, एथे ओथे करे सफ़ाईआ। मुर्शद हो के पुच्छे मुरीदां हाल, मेहरवान महबूब आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। दोए हथ्थ कहिण प्रेम प्रीती बणया रंग, रंगत बेपरवाहीआ। जन भगतो आत्म परमात्म निभाउणा संग, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को गाउणा छन्द, सोहला राग वज्जे वधाईआ। निज घर आपणा लैणा अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। घर जोती नूर वेखणा चन्द, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। अन्तर आत्म देवे ठंड, निझर झिरना रस झिराईआ। शब्द नाद सुणना अनहद, नादी नाद जणाईआ। नेत्र खोल्ह अगम्मी अक्ख, लोचन लोच करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले बणो प्रभू दी यद, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया दयो छड्ड, जगत तृष्ना ना कोए हल्काईआ। अगनी तत बुझाउणी अग्ग, ममता मोह मिटाईआ। बिन मक्कयों बिन काअबिउँ कराए हज्ज, हुजरा इक्को हक़ सुहाईआ। सचखण्ड दुआरे बहिणा सज, चौकड़ी सच सिँघासण उपर लगाईआ। गुरमुखो तुहाडी बदले कदे ना अक्ख, निंदरा विच कदे ना आईआ। जो बाहरों अक्ख नेत्र निगाह रही तक्क, चमक शक वाली लुकाईआ। जेहड़े एह मंज़ल गए टप्प, उन्हां दी सुरती ग़फ्लत विच कदे ना आईआ। जगत जहानों हो के अड्ड, सच दुआरे डेरा लाईआ। जिथ्थे वस्से पुरख समरथ, निरगुण दाता नूर इलाहीआ। ओथे फेर नहीं जुड़दे हथ्थ, हथ्थ नज़र कोए ना आईआ। स्वाद तों परे ओह रस, जिस नूं रसना चख ना कोए समझाईआ। भगत भगवान इक्ठे हो के जाणा वस, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। जगत जहान दी मंज़ल जाणा टप, मंज़ल पिछला पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए वखाईआ। हथ्थ कहिण असीं जुड़ जुड़ थक्के, थकावट विच वखाईआ। असीं लभदे फिरे मदीने मक्के, काअबयां विच दुहाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले फिरे नट्ठे, भज्जे वाहो दाहीआ। पन्ध मुकाए तीर्थ तटे, गंगा गोदावरी

जमना सुरस्ती वेख वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराणां वरके बड़े उलट्टे, सफ़िआं नूं बृड़ाईआ। जगत सन्यासीआं वैरागीआं तिआगीआं साधूआं दे क़दम बड़े चट्टे, हथ्थां नाल कीती सफ़ाईआ। देंदे रहे पत्थर वट्टे, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। बिना साहिब सतिगुर संगत हित्त साचा मार्ग कोए ना दस्से, मंज़ल हक़ ना कोए चढ़ाईआ। सब दे धन्न भाग अच्छे, जो आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। धुर दी धार देवे पते, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। हथ्थ कहिण असीं सदा रहीए बद्धे, बन्दना विच सीस निवाईआ। जो जन्म कर्म दे साडे मेटे धब्बे, कूड़ विकारा दए धुआईआ। जिधर वेखीए ओधर लभ्भे, हर घट नज़री आईआ। जां वेखीए आत्म सेज सिँघासण फब्बे, सोहणा बांका नज़री आईआ। साडा विछोड़ा होवे ना कदे, क़दीम दे विछड़े लए मिलाईआ। सच प्रेम मुहब्बत देवे मज़े, मज़ाक़ जगत रहे ना राईआ। अन्त नेड़ ना आए क़ज़े, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जो साहिब सरनाई लग्गे, नाता कूड़ जगत तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। हथ्थ कहिण असीं जुड़ करीए अरदास, बेनन्ती इक सुणाईआ। निरगुण रूप प्रभ सद वसीं भगतां पास, निरगुण आत्मा सरगुण तत लैणा मिलाईआ। ग़रीब निमाणयां आसा मनसा पूरी करीं ख्वाहिश, ख़ालस आपणा परदा लाहीआ। तेरी करनी ना पए तलाश, घर घर विच नज़री आईआ। तेरी किरपा नाल जाईए जाग, आलस निंदरा देणी मिटाईआ। मेहरवान हो के देणा ओह वैराग, जिस दे नाल वैरी अंदरों देईए भजाईआ। कूड़ी क्रिया दा होवे तिआग, तेरा मेला कन्त सुहाग, घर वज्जे सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच लैणा मिलाईआ। हथ्थ कहिण साडी धुर दी जोड़ी, जोड़ी जगत वड्याईआ। पुरख अकाला दीन दयाला किरपा कर के चाढ़े शब्द घोड़ी, मेला मेले सहज सुभाईआ। जन भगतां दी जिज्ञासुआं नालों चंगी चोरी, चोरी चोरी अंदरे अंदर प्रभ नूं रहे पाईआ। इन्हां नूं सुट्ट लओ आपणी काया वाली बोरी, साढे तिन्न हथ्थ लम्मी नज़री आईआ। फेर झुक के चढ़ गए ओस पौड़ी, जिस दा पौड़ी डण्डा ना कोए वखाईआ। भार रख ल्या आपणी मौरीं, भज्जण चाँईं चाँईंआ। इन्हां दा सतिगुर बड़ा घोरी, शब्दी हो के अंदर वेख वखाईआ। गुरमुखो करयो ना बौहड़ी बौहड़ी, बौहड़ ल्या मिलाईआ। तुहाडी अन्तर निरंतर जगत धार रहे ना कौड़ी, अनरस मिट्ठा दयां वखाईआ। परम पुरख परमात्मा दा आत्मा साचा जौहरी, हीरे नग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। हथ्थ कहिण एह कलयुग दी चलदी रेल, मुसाफ़र गुरमुख मनमुख नज़री आईआ। जिन्हां दा जगत घाट ते मेल, किनारे इक्का डेरा लाईआ। सारयां दे डब्बयां विच वेहल, ख़ाली नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ।

हथ्थ कहिण गुरमुख वड्डा सेठ, लाल आत्म प्रभ ने दिता टिकाईआ। मनमुख वड्डा ढीठ, आपणी वस्त हथ्थ ना आईआ। दोहां दा सफ़र रिहा बीत, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। जिस वेले आत्मा दा परमात्मा कोल बन्दे वाला स्टेशन आया ठीक, ठाकर हो के वेख वखाईआ। ओह निरगुण लाल दिसे अतीत, त्रैगुण विच ना कदे लुटाईआ। जगत कुड़िआरा सदा वेखे ला के नीझ, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। जिस दी सति सच तसदीक़, शहादत इक भुगताईआ। मिसल मिसालां सारीआं ठीक, बिना ठाकर दे तोड़ ना कोए निभाईआ। जन भगतो इक दी इक नाल रहे प्रीत, इक विच सृष्ट सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। हथ्थ कहिण साडी डंडावत, पोटे उँगलीआं देण गवाहीआ। पुरख अकाले कर सख़ावत, वस्त अमोलक इक वरताईआ। मनुआ मन ना करे बग़ावत, काया गृह ना कोए लड़ाईआ। दूई रहे ना कोए अदावत, झगड़ा कूड़ देणा मिटाईआ। तेरे प्रेम दा रस मिले अगम्मी निआमत, धुर वस्त देणी वरताईआ। बुद्धी स्वच्छ करनी लिआकत, अक़ल अक़ल विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। हथ्थ कहिण प्रभ सब दी मुका दे वाट, आपणी दया कमाईआ। जेहड़ा मन बैठा इन्द्रियां दे घाट, विषयां विच विहाईआ। रसना रस रिहा चाट, चेटक कूड़ लोकाईआ। करी अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ । कल्पणा वाली ख्वाहिश, ममता विच हल्काईआ। दीन दुनी कीती नास, नास्तिक करे ख़लक खुदाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, तेरी बेपरवाहीआ। बुद्धी करे प्रकाश, परदा रहे ना राईआ। आत्म तेरी ज़ात, जल्वागर दया कमाईआ। आपणा वेख खेल तमाश, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। सेज सुहञ्जणी सोभावन्त मिल के कर बात, बातन लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेला धुर दा लैणा कराईआ। हथ्थ कहिण, मन इन्द्रियां दे घाट क्यों होया वस्स, इन्द्रियां मन दे वस्स क्यों कराईआ। क्यों बुद्धी होई बस, बस्ता बन्ह के आपणा आप छुपाईआ। क्यों आत्मा दूर दुराडा रिहा नस्स, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, दर तेरे मँग मँगाईआ। शब्द अगम्मी इक्को मार सट्ट, सोई सुरती दे जगाईआ। जगत विकार जाए नठ्ठ, आत्म प्रकाश होवे झट, एका नूर डगमगाईआ। साचा पतण साचा घाट साचा मार्ग उपर होए इक्को बस, दह दिशा कर रुशनाईआ। हथ्थ कहिण असीं बोल के कहीए हस्स, खुशीआं नाल जणाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी मस्स, सति सच कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दे उठाईआ। हथ्थ कहिण मन दी की मनसा, ममता की वड्याईआ। क्यों हँकारी बणया कंसा, कूड़ बल प्रगटाईआ। अपराध उठाया धनुशा, रावण रट समझाईआ। गढ़ बणाया हंगता, हउमे नाल चतुराईआ। कुकर्म

१२१
२१

करनों मूल ना संगदा, भज्जे वाहो दाहीआ। विशा विकार नित नवित्त मँगदा, मनसा मनसा विच्चों प्रगटाईआ। प्रभू, क्यों नहीं भेव खुल्हाउँदा हँ ब्रह्म दा, परदा इक चुकाईआ। जेहड़ा आत्मा तेरी धार विच्चों जम्मदा, जणनी कुख ना कोए टिकाईआ। जिस नूं सहारा तेरे प्रेम दा, प्रेम प्रीती लैणी बणाईआ। तूं वणजारा इक नेम दा, हँ विच आपणी कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडा देणा वखाईआ। हथ्थ कहिण असीं हस्त कँवल, हस्ती वेखी धुरदरगाहीआ। जिस दा लहिणा देणा उपर धवल, धरनी धौल धरत दए दृढ़ाईआ। जिस नूं नूर खुदाई कहिंदे अव्वल, आलमीन बेपरवाहीआ। सो सब घट रिहा मवल, नूर नुराना डगमगाईआ। किरपा कर के घट घट अन्तर निरंतर उलटा कर दे नाभ कँवल, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सुण हथ्थ प्यारे, सच दयां सुणाईआ। वेखां खेल सृष्ट दृष्ट संसारे, लोक परलोक खोज खुजाईआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी पावां सारे, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। जो सन्त सुहेले भगत जन इक दे बैठे सहारे, इष्ट देव इक मनाईआ। उन्हां दे अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के बजर कपाटी खोल्हां ताले, जिंदा रहिण कोए ना पाईआ। अमृत रस दे दयां अगम्म प्याले, तृष्ना जगत जहान मिटाईआ। शब्द अनादी सुणावां गाणे, अनुरागी राग अल्हाईआ। दीआ बाती जोत जगावां महाने, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। आत्मा परमात्मा निरगुण निरगुण जोत जोत इक दूजे दे आहमणे साहमणे, सन्मुख मेला आप कराईआ। दोहां ने मिल के इक दूजे दे गीत गाणे, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। हथ्थो उन्हां दे बणे आप ज़ामने, ज़ुम्मेवारी आपणे उत्ते रखाईआ। कम्म करन वाले सारे कामने, कम्म कर कर थक्की लोकाईआ। जिन्हां दी साहिब सतिगुर पूरी करे आप भावने, भावी नेड़ कदे ना आईआ। दामनगीर हो के पकड़े दामने, पल्लू शब्द नाम फड़ाईआ। कलयुग कूड़ी नींद ग़फ्लत विच्चों भगत सुहेले आप उठावने, अंदर वड़ के दए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक समझाईआ। पुरख अकाल कहे हथ्थो तुहाडा जोड़ अनोखा, मैं वेख के खुशी मनाईआ। दीन दयाला कदे करे ना कोए धोखा, वल छल ना कोए कराईआ। भेव खुल्हा के चौदां लोका, चौदां तबकां परदा दए उठाईआ। नाम जणा के इक सलोका, सोहला धुर दा आप पढ़ाईआ। जिन्हां नूं प्रेम प्यार विच दर्शन करन दा दिता मौका, मुकम्मल प्रभ दे नाल मिलाईआ। उन्हां दे अन्तर जणा के इक्को ओटा, चोट शब्द शब्द लगाईआ। भगत सुहेला रहे ना कोए खोटा, खोटिउँ खरे दए बणाईआ। जिन्हां दा दुरमति मैल पाप आप धोता, पतित पुनीत करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम

खुमारी अंदर करे मधहोशा, मधुर धुन अगम्मी सुन्न सुन्न तों परे आप बणाईआ। अबिनाशी करता कहे हथ्थो तुहाथों सदा बलिहारे बलिहारी, बलि बलि दयां वड्याईआ। जिन्हां मार्ग दस्सया जीव संसारी, निरमाणता निम्रता दिती जणाईआ। बिना बन्दना बन्दगी कोई ना उतरे पारी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। जिंनां चिर किरपा करे ना आप निरँकारी, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। उनां चिर साचा वणज करे ना कोए व्यपारी, जगत माया कम्म किसे ना आईआ। भगत भगवान दोवें मुहब्बत दे खिलाड़ी, बाज़ी आपणी आपणी लाईआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेले गुरमुख विरले आवे वारी, जिस दा मेला होवे नाल धुरदरगाहीआ। हस्त कँवलो, तुहाडी सदा सदा अरदास प्रभू नूं इक निमस्कारी, जिस नूं नमो नमो नमो करन पैगम्बर गुर अवतारी, डंडावत विच सजदयां विच बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म दी परमात्म हो के करे सदा दारी, करां दा लेखा कल कल्की मेट मिटाईआ।

१२३ २१ इकत्ती मार्च नूं दो जहानां हिसाब, वहीखाते सब दे वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दयो जवाब, भेव अभेद इक खुल्हाईआ। मुर्शदो किन्ने मुरीद कीते आज़ाद, चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। गुरुओ किन्ने घराने कीते आबाद, काया माटी सोभा पाईआ। अवतारो किन्नयां नूं दिती इमदाद, मेरा नाम भण्डार वरताईआ। किस दा मन्ज़ूर कीता आदाब, कौण बन्दना लेखे लाईआ। किस दी मंज़ल चढ़या हक़ जनाब, दरगाह साची सोभा पाईआ। कितने पढ़ के पास होए तुहाडी अक्खरां वाली किताब, लेखा देणा जणाईआ। कितनयां दा अंदरों बदलया मज़ाज, कितनी कीती हक़ सफ़ाईआ। कितनयां दे भाग लगाया महराब, काया काअबा कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरो खोल्हो आपणे बस्ते, चार जुग दा लेखा वेख वखाईआ। जो लोकमात धुर संदेसा रहे दस्सदे, हुक्मरान हो के हुक्म मनाईआ। धुर फ़रमाना रहे पढ़दे, कलमयां विच वड्याईआ। लिख लिख काग़ज़ां उत्ते रहे धरदे, धरनी धरत सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला रिहा चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो आपणी पट्टी, इबारत केहड़ी नज़री आईआ। केहड़ी कथा कहाणी सच्ची, सच दयो दृढ़ाईआ। क्यों सृष्टी दी दृष्टी विच अगनी मच्ची, तामस रिहा तपाईआ। क्यों माया ममता रही नस्सी, भज्जे वाहो दाहीआ। किथ्थे गई तुहाडे प्रेम वाली रस्सी, बंधन सके ना कोए अटकाईआ। किधर गई तुहाडी शास्त्रां वाली हट्टी, सौदा सच ना कोए वखाईआ। १२३ २१

सच दस्सो तुहाडे नाम तों कितनयां ने खट्टी खट्टी, अंकड़यां विच देणा जणाईआ। नहीं ते सब नूं भरनी पए चट्टी, बचया रहिण कोए ना पाईआ। निक्की निक्की जगण नहीं देणी मोमबत्ती, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। मैं जुग चौकड़ी भविख्तां विच तुहाडे नाल करदा आया पक्की, धुर संदेसा हुक्म सुणाईआ। मैं लेखा जाणा लख चुरासी जेहड़ी ममता विच फसी, फाँसी सब नूं दयां वखाईआ। मैं गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं धुर दी कहाणी रिहा दस्सी, सच संदेसा रिहा जणाईआ। तुहाडी सिफ्तां वाली महिमा वाली गाथा जेहड़ी छपी, क्यों छुप के बैठे झट लँघाईआ। दुनियां आपणी हद्द तों टप्पी, सब दी धार दिसे नटी, साची डोर गई कटी, कटाक्ष नाम ना कोए लगाईआ। धीरज वाला रिहा कोए ना जती, नार रही ना कोई वरता पती, अमृत रस दा रिहा कोई ना रसी, मंज़ल चढ़े कोई ना सच्ची, रसन गाथा दिसे कच्ची, मन कल्पणा रही नच्ची, चार कुण्ट दह दिशा घर घर आपणा नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की लेखा दईए लिख, लिखण पढ़न विच कदे ना आईआ। सानूं थोड़े दिसदे जिन्नां धुर दी सिख्या लई सिख, साख्यात तेरा दर्शन पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मन्नण इक्को पित, पतिपरमेश्वर तेरी गोद बहि के खुशी मनाईआ। सच घराणे रहे टिक, टिकटिकी इक्को नाल लगाईआ। बाकी सब दी साडी धर्म दी धार गई फिट, कलयुग कूडी क्रिया जाग दिती लगाईआ। साचा रिहा ना कोए मुन रिख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल साडी होई बस, लेखा देण वाला नज़र कोए ना आईआ। असीं सारे तेरे अग्गे जोड़ के हत्थ, वास्ता रहे पाईआ। पारब्रह्म पुरख समरथ, तेरी बेपरवाहीआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। असीं लहिणा देणा तेरे उत्ते रहे छड्ड, साडी चली ना कोए चतुराईआ। दीन दुनी नालों हो के अड्ड, चरण कँवल तेरे सीस निवाईआ। साडे हिसाब किताब वाली नहीं कोई हद्द, लेखा सके ना कोए समझाईआ। तेरी दुनियां तेरी सृष्टी पुरख अकाल रुले तेरा जग, जगजीवण दाते तेरी झोली पाईआ। असीं उच्ची कूक पुकार कहीए गज्ज, तेरा नाम दुहाईआ। सच सरनाई तेरी गए ढठ्ठ, इक्को ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म लैणा वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरे हिसाब विच्चों समझया नहीं कोई नुक़ता, भेव कवण खुल्लाईआ। हत्थ जोड़ के साडा पल्लू छुटदा, एहो दर मँग मँगाईआ। कलयुग आपे वेख ज़माना लुटदा, लुट्टी जाए लोकाईआ। अमृत जाम मिले ना किसे घुट दा, सांतक सति ना कोए कराईआ। सानूं सहारा तेरी ओट दा, ओड़क सीस जगदीश झुकाईआ। असीं सारे प्रकाश तकणा चौहन्दे तेरी जोत दा, तत्तां वाली

ना कोए लड़ाईआ। खेल करदे शब्द गुरु गुर मौज दा, मजलस दो जहान लगाईआ। सब दा झगड़ा मुक जाए रोज दा, रोज़ी आपणा नाम पुचाईआ। लेखा मुका दे कूड़ वियोग दा, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। पुरख अकाल तेरी धार कोई ना सोचदा, सोच विच समझ विच बुद्धी विच अकल विच आकल भेव कोए ना पाईआ। विद्वान नहीं कोई दिसदा तेरे कोश कोच दा, अक्खरां दी तफ़सील दलील नाल ना कोए दृढ़ाईआ। तूं मालक लख चुरासी काया कोट दा, घर घर बैठा आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझे यार अन्तिम लहिणा देणा झगड़ा मुका दे हरख सोग दा, चिन्ता ग़म ग़मखार हो के आपणी झोली पाईआ।

✻ २० चेत शहिनशाही सम्मत ४ जम्मू चेला सिंघ दे गृह ✻

वीह चेत कहे दूए नाल वेखो ज़ीरो, ज़ेर ज़बर दी लोड़ रहे ना राईआ। चार युग दे गुर अवतार पैगम्बर पीरो, परा पसन्ती मद्धम बैख़री परे ध्यान लगाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ तट किनारे छड्ड नीरो, निरवैर निराकार निरँकार वेखो खेल ख़लक

१२५

२१

खुदाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला साहिब सुल्ताना वाली दो जहानां तक्को इक हीरो, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। माया ममता मोह विकार हँकार कूड़ी क्रिया छड्डो सूफ़ी सन्त फ़कीरो, फ़िकरा इक्को एकँकार लैणा प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना रिहा दृढ़ाईआ। बीस कहे मैं दूआ ज़ीरो सिफ़रा, सिफ्ती सिफ्त दयां सालाहीआ। साचे नाम दा दस्सां इक्को फ़िकरा, फ़िकरां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी करदे आए ज़िकरा, ढोल्यां सोहल्यां विच सुणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निरगुण धार जोत विच्चों आपे निकला, जम्मण वाली दिसे कोई ना माईआ। जिस ने चार वरन अठारां बरन इक्ठा कीता विछड़ा, जन भगत सुहेले बिछरत आप मिलाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां दूर करना दुखड़ा, दरदवंद हो के दर्दीआं दर्द वंडाईआ। सन्त सुहेला रहिण नहीं देणा कोई लुक्या विच नुकरा, चार कुण्ट दह दिशा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। बीस कहे मैनूं सारे कहिंदे बीस बीसा, सरगुण ज़ीरो रूप समाईआ। लेखा जाणे ना कोए हरि जगदीशा, जगदीशर आपणी की की कार कमाईआ। जो दो जहानां मर्द मर्दाना देवे इक हदीसा, हज़रतां दा हज़ूर हो के करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुकावे हस्त कीटा, ऊचां नीचां परदा लाहीआ। अगला मार्ग दस्से इक अनडीठा,

जिस नूं जगत नैण ना कोए तकाईआ। लहिणा देणा पूर कराए गोबिन्द वाला अंगीठा, भेव अभेदा अछल अछेदा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म चला के अगम्मी रीता, रीतीवान एका हुक्म दए सुणाईआ। बीस कहे मैं वेखां हो के विस्माद, बिस्मिल की की कार कमाईआ। जिस रचना रची आदि, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां देवे दाद, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव रहे अराध, निउँ निउँ लागण पाईंआ। जिस नूं भगत सुहेले जुग चौकड़ी करन याद, सोहले ढोल्यां विच गाईआ। ओह खेले खेल तमाश, करनी दा करता बेपरवाहीआ। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए चुकाईआ। जन भगतां देवे धुर दा साथ, सगला संग निभाईआ। जो निरगुण सरगुण धार गुर अवातर गए आख, आख़र सब दा लहिणा झोली पाईआ। धुर दा हुक्म कोई ना सके वाच, वाचक ज्ञानी वज़ह ना कोए समझाईआ। जिधर तक्कां ओधर नफ़ाक़, इत्तफाक वंड ना कोए वंडाईआ। सब दी उडदी दिसे ख़ाक, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए चुकाईआ। बीस चेत कहे मैं कहां तेई अवतार, हुक्म इक सुणाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद करां ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर जणाईआ। नानक निरगुण गोबिन्द शब्दी धार उठाल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जणावां नाल, बचया रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा वेखो शाह कंगाल, दीन दुनी दए दुहाईआ। विष्नूं कर ना सके प्रितपाल, ब्रह्मा ब्रह्म परदा ना कोए उठाईआ। शंकर लेखे ला ना सके घाल, कूड़ चण्डाल ना मेट मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चुरासी विच्चों करे ना कोए बहाल, जम की फाँसी ना कोए तुड़ाईआ। साचा देवे ना कोए धन माल, वस्त अमोलक नाम ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट सब दे सिर ते कूके काल, कूड़ नगारा रिहा वजाईआ। ज़माना बदले कोई ना हाल, माज़ी दा लेखा सर्ब सुणाईआ। शास्त्रां दी देण मिसाल, मसला अगला ना कोए पढ़ाईआ। बीस कहे मैं चार कुण्ट वेख्या कूड़ा वजदा ताल, साची सच करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। बीस कहे मैं वार थित नहीं कोई चेत, चेतन सब नूं दयां कराईआ। जन भगतो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तक्को नेत, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जो वस्से तुहाडे देस, काया मन्दिर सोभा पाईआ। आत्मा परमात्मा करे हेत, हितकारी हो के दया कमाईआ। जन्म कर्म दी बदल देवे रेख, लेखा आपणे नाल मिलाईआ। मेहर करे धुर दा नरेश, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। तुसीं आदि अन्त दे एक, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर शब्द साची टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। अंदर वड़ के तुहाडी बुद्धी करे बिबेक, दुरमति मैल धुआईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अगनी अग्ग

ना कोए जलाईआ। साहिब समरथ सद रखे आपणी साया हेठ, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग इक रंगाईआ। बीस कहे एका वेखो बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं कहिंदे जल्वागर खुदा, खुदी तक्बर दए मिटाईआ। जिस दा लेखा लहिणा देणा दो जहां, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। सो शाह पातशाह, दाता धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्तिम लेखा दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर रख गवाह, शहादत सब दी दए भुगताईआ। पूरब लहिणा देणा झोली पा, पिछला लेखा रहे ना राईआ। अग्गे सतिजुग साचा मार्ग इक लगा, लग मातर दा खेड़ा दए छुडाईआ। तख़त निवासी इक्को हुक्म दए चला, चार कुण्ट चार वरन चारे खाणी चारे बाणी सीस निवाईआ। इक्को दस्से सलाम दुआ, सजदा इक्को इक सरनाईआ। इक्को डंडावत बन्दना दए दृढ़ा, नमो नमो इक समझाईआ। इक्को विद्या दए पढ़ा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। साची मंज़ल दए चढ़ा, अन्तर आत्म वेख वखाईआ। सिर आपणा हथ्थ दए टिका, टिक्के मस्तक धूढ़ी नाम लगाईआ। रहमत विच रहम दए कमा, मेहरवान मेहर नज़र नज़रीए विच्चों बदलाईआ। सन्त सुहेले लए मिला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। दर दरवाज़ा लए खुल्हा, मन्दिर इक्को वज्जे वधाईआ। निर्मल नूर जोत कर रुशना, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। अनहद नादी धुन सुणा, सुन अगम्म झगड़ा दए चुकाईआ। अमृत आत्म रस दए प्या, जाम हक़ीक़ी इक वखाईआ। आवण जावण लख चुरासी गेड़ा दए कटा, कटाक्ष आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा मेहरवान, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले मेला मेले सहज सुभाईआ। बीस कहे मैं दस्सणी इक्को बस्ती, दूजा नगर नज़र कोए ना आईआ। जिस गृह वस्से परम पुरख दी हस्ती, हस्त कीटां आपणी गोद उठाईआ। नाम खुमारी देवे मस्ती, दुरमति मैल अंदरों दए कढाईआ। सूझ बूझ देवे आपणे घर दी, गृह मन्दिर अंदर कुण्डा दए खुल्हाईआ। आत्मा परमात्मा होवे वरदी, नार कन्त मेला मेले सहज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला होवे पढ़दी, तूंही तूंही राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। बीस चेत कहे सुणो सदा हउ सदके वारी, वारता दयां जणाईआ। खेल वेखण पैगम्बर गुर अवतारी, अवतर आपणा फेरा पाईआ। कल्ह नूं इक्की ओस चेत दी वारी, जिस ने लाज रखी गोबिन्द दाढ़ी, मौत लाड़ी गुरमुखां प्रनाउण कदे ना आईआ। भेद खोल्हणा किस बिध भगतां दी भगवान नाल लगदी यारी, आत्मा मात ना होए कँवारी, दूजे घर ना होवे खुआरी, मेला मिले जोत निरँकारी, निराकार आपणे विच समाईआ। लेखा सोहणा लिखे लिखारी, गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं दस्सणी ताबिआदारी,

दीन मज़हब दी रहे ना कोए सिक्दारी, सिक्दार निरँकार इक्को इक सोभा पाईआ। जेहड़े कलयुग कूड़ कुड़िआरे होए इशतिहारी, उन्हां दे शब्दी वरंट कढ्ढे हुक्म नाल करे जारी, जराइम वाला रहिण कोए ना पाईआ। दो जहानां वेखे मार उडारी, चौदां तबकां परदा रिहा उतारी, चौदां लोक एका नूर कर उज्यारी, उजाला गोपाला दयाला निरगुण निरवैर निराकार खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप दृढ़ाईआ। वीह चेत कहे मैं दस्स दस्स थक्का, थकावट मेरे विच आईआ। मैं हुक्म सुणावां हक़ा, हक़ीक़त धुरदरगाहीआ। झगड़ा पैण लग्गा मदीना मक्का, काअबे करबल्यां वाले अक्ख उठाईआ। नाते तुट्टण मुहम्मद मूसा रहे ना सका, मित्र प्यारा अंग ना कोए लगाईआ। करे खेल पुरख समर्था, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। लहिणा देणा सब दा मुकावे हथ्थो हथ्था, जुग चौकड़ी पूरब लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं सब ने चखणा मज़ा, मज़ाक़ कूड़ा देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक प्रगटाईआ। बीस कहे मैं की दस्सां बोल, अनबोलत आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा नाद अगम्म अगम्मा ढोल, शब्दी धुन करे शनवाईआ। सच दुआरा देवे खोल्ह, ख़ालक ख़लक परदा इक उठाईआ। भण्डारा रख वस्त नाम अनतोल, अनमुलड़ी आप टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां भविख कहि के बोल, कौल पिछला तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। वीह चेत कहे गुरसिखो तुहानूं दस्सां इक अगम्मी बात, बातन दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले आवे इक्की चेत दी रात, राती रुती सोभा पाईआ। तुसां सब ने खाणी भात, अन्न रसन ना कोए लगाईआ। साढे बारां वजे तक जाणा जाग, नेत्र अक्ख ना कोए बदलाईआ। सब दी जेब विच इक इक्क काग़ज़ दा होणा काट, काग़ज़ रफ़ वंड वंडाईआ। इक जल दी भर के रखणी परात, प्राताःकाल वेख वखाईआ। इक अक्खरां वाली कोल रखणी लुगात, जिस दी तरमीम ना कोए समझाईआ। नाल रविदास ने लिखणी दरख़ासत, वास्ता प्रभ दे अग्गे पाईआ। बेनन्ती करनी प्रभ जन भगत रहे ना कोए बदमाश, बदी सब दे अंदरों देणी कढ्ढाईआ। बजर कपाटी खोल्ह दे ताक, परदा उहला रहे ना राईआ। हरिजन सोया जाए जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मुहब्बत विच दे इक वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। हँस बुद्धी ना रहे काग, काग हँस दए बणाईआ। दुरमति मैल धो के दाग़, पतित पुनीत कर वखाईआ। तेरी जोत दा जगे सच चराग़, चरागाहां विच्चों लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। तेरे नाम दी सुणन इक आवाज़, ढोला धुरदरगाहीआ। सब ने हिरदे अंदर तूं मेरा मैं तेरा करना जाप, रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोलण रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां बण के धुर दा सुहेला साथ, साकी हो के आपणा नाम जाम प्याईआ।

✻ २१ चेत शहिनशाही सम्मत ४ जम्मू चेला सिँघ दे गृह ✻

पुरख अकाल कहे सतिगुर शब्द की वेखी दीन दुनी, दुनियांदार ध्यान लगाईआ। कवण तक्कया ऋषी मुनी, मानव परदा देणा उठाईआ। किस किस दी पुकार सुणी, सहज सहज देणा दृढ़ाईआ। किस दे अंदर अगम्मी धुनी, नादी धुन होवे शनवाईआ। कवण सति धर्म दा गुणी, गहर गम्भीर विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे साहिब सुआमी मैं रिहा फिरदा, दिवस रैण भज्जिआ वाहो दाहीआ। मैं लेखा वेख्या नौ सौ चुरानवे चौकड़ी चिर दा, वेद शास्त्रां बाहर ध्यान लगाईआ। नज़ारा तक्कया तेरा निर दा, निरवैर निराकार निरँकार तेरी वड वड्याईआ। भेव वेख्या अगम्मी पिर दा, पतिपरमेश्वर जो दिता वखाईआ। चुरासी विच्चों जन भगत सुहेला रखे साफ़ हिरदा, जो हिरदे विच हरि हरि रिहा वसाईआ। बाकी सब दे अंदर इष्ट दृष्ट दा गेड़ा गिड़दा, वशिष्ट रूप ना कोए वटाईआ। आत्मा परमात्मा तक्कया नहीं मिलदा, सुरत शब्द ना कोए कुड़माईआ। मन कल्पना अन्तर जगत जहान हिलदा, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। बिन गुरमुखां अमृत झिरना किते ना झिरदा, बूँद स्वांती मेघ ना कोए टपकाईआ। जगत जहान जो कल्पणा विच वेख्या फिरदा, चार कुण्ट दुहाईआ। साचे सन्तां नाभी कँवल फुल्ल वेख्या खिड़दा, खिड़की ताक कुण्डा अंदरों दिता खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआरा उलटा गेड़ा वेख्या गिड़दा, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा वेख वखाईआ। पुरख अकाल कहे सुण शब्द दुलारे सुत, सतिगुर धुर दे दयां जणाईआ। उठ मेरे लाडले पुत, पिता पूत वेस वटाईआ। भेव खुल्हा अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं दे कराईआ। साची सदी दी मौले रुत, सद्दे घर घर आप दृढ़ाईआ। पुरख अकाला रिहा पुच्छ, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सच दुआरे आए पुज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ। लेखा नाल लै के आए सब कुझ, पिच्छे वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दे विच रख्या भेव गुज्झ, अक्खरां विच ना सिफ्त सालाहीआ। दीन दुनी दा दस्सया दुःख, दर्दां विच दुहाईआ। जिस विच प्रभ दा खेल बाहर मानव मनुक्ख, निरगुण आपणी कार कमाईआ। नज़री दिसे ना सुफल किसे कुख, जननी जणे ना जणेंदी माईआ। जो जुग चौकड़ी रिहा

१२९
२१

चुप्प, ख़ामोशी विच समाईआ। सो कलयुग अन्धेरा वेख के घुप्प, परदा उहला सब तों रिहा उठाईआ। माया ममता वेख के लुट्ट, सूरबीर लए अंगड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी आत्म परमात्म नालों रही तुट्ट, टुट्टी गंढु ना कोए पुआईआ। धर्म भण्डारा रिहा निखुट्ट, जगत वणजारा ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच फ़रमाना इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द धुर दे दुलारे, दूल्हे तैनूं दयां वड्याईआ। वेख खेल सच सच्चे दरबारे, दर घर वज्जे इक वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ल्या पनिहारे, पनघट डेरा इक दृढ़ाईआ। इक्ठे होवण गुर अवतारे, पैगम्बरां मेल मिलाईआ। सिर झुकाउण जुग चारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। त्रैगुण माया पंज तत निउँ निउँ कढुण हाढ़े, हउँक्यां विच दुहाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी आपणी करे हाहाकारे, हउक्यां विच सुणाईआ। चारे बाणी नैण रोवे ज़ारो ज़ारे, ज़ाहर ज़हूर अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। चारे खाणी धाहां मारे, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। चारे वरन मँगण दुआरे, दर ठांडे अलख जगाईआ। एह खेल वेखे एका एक एकँकारे, इक इकल्ला; रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुकम इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द चार जुग दे इक्ठे कर सृष्टी किरदार, क़ुदरत दा मालक क़ादर आप जणाईआ। की खेल होवे विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी दयो जणाईआ। की हुक्म वरते गुर अवतार, पैगम्बर परदा दयो उठाईआ। कवण हुक्म संदेसा देवे वारो वार, धुर फ़रमाना शब्द जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी कल कल्की अवतार, अवतर तेरी धार समझ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी नेत्र रोंदे ज़ारो ज़ार, ज़ाहरा ज़हूर तेरे हथ्थ वडी वड्याईआ। समझे ना कोए गुफ्तार, गुफ्त शनीद परदा देणा उठाईआ। जगत विद्या विच्चों दीन दुनी नूं कढु दे बाहर, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म भेव खुल्हाईआ। एथे बुद्धी दा नहीं विस्थार, मन दा नहीं विचार, सुरती शब्द अगम्मी धार, धरनी धरत धवल उपर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कर वड दलेरी, दिलबर हो के दयां दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं इक पुरख अकाल दी अगम्मी फेरी, फिरत फिरत वेखे जगत लोकाईआ। जुग चौकड़ी देर कीती बथेरी, समां समें विच लँघाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चलाउँदे रहे जगत दी बेड़ी, मलाह नईआ नौका वाले नज़री आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लख चुरासी जीव जंत साध सन्त उलटी लट्ठ गेड़ी, गेड़ा सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची रंगण

रिहा रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर हाज़र हज़ूर, साहिब सुल्तान श्री भगवान तेरी इक सरनाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार निरगुण धार वेख ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर आपणा जलवा नूर कर रुशनाईआ। सति सुआमी अन्तरजामी घट निवासी तेरा बेड़ा भरया पूर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर लहिणा देणा थाउँ थाईंआ। तेरे नूर दा चमके इक्को नूर, जोती जोत जोत होवे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कूड़, कर्मां दा डेरा दे ढाहीआ। साची बख्श अगम्मी धूढ़, चरण चरणोधक दे प्याईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मनसा रहे ना कोए ग़रूर, गुरबत अंदरों दे कढ्ढाईआ। साडी बेनन्ती कर मन्ज़ूर, आरज़ू इक्को इक सुणाईआ। बख्शणहार क़ुसूर, कसर इशारीए नाल सब दी करे सफ़ाईआ। भगत उधारना तेरा दस्तूर, दस्त बदस्त दर तेरे मँग मँगाईआ। मेहरवान महिबान कर मन्ज़ूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। श्री भगवान कहे सुण शब्द दुलारे मेरे, मेहरवान हो के दयां सुणाईआ। जुग चौकड़ी वेखे बथेरे, कोटन कोटि काल लँघाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे गए झेड़े, झेड़ा जगत विच लोकाईआ । वसदे उजड़दे रहे खेड़े, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। उडीकदयां उडीकदयां समां कलयुग अन्तिम आ गया नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां दे अन्तर निरंतर वेखे जेरे, सबर सबूरी खोज खुजाईआ। जिन्हां ने ढोले गाए तेरे मेरे, आत्म पारमातम राग अलाईआ। उन्हां चाढ़ के आपणे बेड़े, पतण धुर दा इक वखाईआ। जिथ्थे दीन मज़हब दे नहीं झेड़े, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। जगत जिज्ञासुआं नहीं डेरे, डंडावत वाला इक्को नज़री आईआ। जो आदि अन्त जुगा जुगन्त हक़ीक़त हक़ करे नबेड़े, अदल इन्साफ़ आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे साहिब सच्चे सुल्तान, हरि करते वड वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे दरबान, दर बरदे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, निउँ निउँ लागण पाईआ। चरण चुम्मदे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। चार जुग तेरे ग़ुलाम, सिर सके ना कोए उठाईआ। शास्त्र सिमरत तेरी महिमा गाण, सिफ्त सिफ्त विच सालाहीआ। तेरा लेखा नौजवान, मर्द मर्दान ना कोए दृढ़ाईआ। मैं वेख के होया हैरान, हैरानी मेरे अन्तर छाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रिहा ना कोए नौजवान, नौबत डंक ना कोए सुणाईआ। बेनन्ती करां श्री भगवान, नमो नमो सरनाईआ। उठ वेख प्रभू मेहरवान, महबूब तेरी वड्याईआ। हरिजन तेरा राह तकाण, वेखण थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्ह दे आप, आप आपणी दया कमाईआ। तेरा मेला होवे नाल इतफ़ाक़, इतमीनान दे धराईआ। हरिजन

रहे ना कोए गुस्ताख़, गुस्सा अंदरों दे कढ्ढाईआ। जन्म कर्म दा क़ुसूर कर मुआफ़, रहमत विच कर सफ़ाईआ। तूं धुर दा माई बाप, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर गए आख, भविखतां विच सुणाईआ। उस दा लहिणा देणा दे हिसाब, लेखा अवर रहे ना राईआ। बिन अक्खरां वाली खोल्ह किताब, जेहड़ी कुतबख़ाने विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। तेरा वेखीए खेल तमाश, दो जहान वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्ह स्वामी, समां सुहञ्जणा दए गवाहीआ। तूं आदि जुगादी अन्तरजामी, घट भीतर रिहा समाईआ। तेरी बोध अगाध शब्दी बाणी, बाण अणयाला तीर दे लगाईआ। झगड़ा मुका दे चारे खाणी, चारों कुण्ट कर सफ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर तेरे चरण कँवल विटों क़ुरबानी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरे नाम दी नर निरँकार मँगण इक निशानी, निशाने दो जहान देणे बदलाईआ। आपणी मंज़ल दस्सणी इक आसानी, असल परदा देणा उठाईआ। साची रंगत नाम निधान दे जवानी, जोबनवन्ते आपणी अक्ख उठाईआ। सूरबीर शाहो भूप कलयुग लेखा वेख विच मैदानी, मदद आपणी आप बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ तेरा दर ठंडा, अगनी तत वंड ना कोए वंडाईआ। जिस नूं समझे कोई ना बन्दा, बन्दगी वाले बैठे मुख छुपाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट वध्या धन्दा, धरनी धरत धवल धौल दए दुहाईआ। मन कल्पणा मानव होया गंदा, सच सुगंध ना कोए प्रगटाईआ। दोए नैण होया अन्धा, निज नैण ना कोए रुशनाईआ। सति धर्म रिहा कोई ना चंगा, चार कुण्ट कुरलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ वेख दंगा, कर्म कुकर्म करे लड़ाईआ। साची मंज़ल पौड़ी चढ़े कोई ना डंडा, डंडावत आपणी दे समझाईआ। सच प्यार मुहब्बत बख़्श अगम्मी अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तेरा नूर तक्कणा ज़हूर वाला चन्दा, चन्द चांदनी इक रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे गहर गम्भीर, गवर तेरी इक सरनाईआ। किरपा कर शाह सुल्तान शरअ कट ज़ंजीर, शरीअत रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग साची सति सतिवादी दस्स तदबीर, तरीका नीकण नीका इक जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर, झगड़ा रहे ना पैगम्बर पीर, बेनज़ीर हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी अरज़ोई, बेनन्ती दयां जणाईआ। तेरा नाम दरोही, तोबा तोब दुहाईआ। तेरा भगत प्रभ कोई कोई, चुरासी विच्चों नज़री आईआ। बाकी सब ने पत खोई, पतिपरमेश्वर दरस कोए ना पाईआ। दरगाह साची मिले किसे ना

ढोई, दर ठांडा ना कोए वखाईआ। सब दी आसा अन्तर रही रोई, रुदन विच दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ तेरा हुक्म अलाही एक, एका एक वड्याईआ। सब ने दस्सी तेरी टेक, टिक्के मस्तक लाईआ। भाग लगा दे आपणे देस, देस देसन्तर खोज खुजाईआ। तेरा जोत सरूपी वेस, जग नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। तेरा शब्दी धार दस्मेश, भज्जे वाहो दाहीआ। तेरा सम्बल धाम एक, साढे तिन्न हथ्थ वजदी रहे वधाईआ। तेरा बोध अगाधा लेख, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। तूं सदा रहें हमेश, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख कलेश, रामा कृष्णा रहे समझाईआ। सारे दवारे तेरे होए पेश, पेशीनगोईआं हथ्थां विच उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओह वेख गोई पेशीन, पेशतर ध्यान लगाईआ। हिकमत रहे ना किसे मदीन, मुद्दा सब नूं रिहा दृढ़ाईआ। झगड़ा वेखे जगत ज़मीन, ज़ामन नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल तेरी समझे ना कोए ताअलीम, तालब इल्म ना कोए वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी होई ग़मगीन, ग़मी ग़मख़ार ना कोए बदलाईआ। तेरा लेखा वड रहीम, रहमत विच ना कोए जणाईआ। तेरा हुक्म आदि क़दीम, धुर दा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। सतिगुर भेव अभेदा खोल्ह के दस्स, दह दिशा दे समझाईआ। की लहिणा हथ्थो हथ्थ, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। की महिमा शब्द अकथ, बोध अगाध पढ़ाईआ। की कलयुग चले रथ, आपणा पन्ध मुकाईआ। की शब्द अगम्मी वज्जे सट्ट, सुत्यां दए उठाईआ। की नाम निधाना खोल्हया हट्ट, वणजारा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। श्री भगवान कहे सुण शब्द अगम्मे आदी, अदल नाल जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लोकमात वधाई अबादी, बहु गिणती विच वड्याईआ। तन वजूद कराउँदे रहे शादी, शादिआनिआं विच खुशी मनाईआ। कलयुग अन्तिम एसे कारण हुंदी बरबादी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। धर्म दा धुर संदेसा देवे कोई ना रागी, अनरागी राग सुणाईआ। सोई सुरत किसे ना जागी, जागरत रूप ना कोए वटाईआ। मानव बणे ना कोए तिआगी, ममता मोह चुकाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। अमृत वेला ना किसे प्रभाती, प्रभ मिलण कोए ना आईआ। निरगुण जोत जगे ना बाती, कमलापाती ना कोए वड्याईआ। साची मन्ने कोए ना आखी, आख़र प्रभ नूं गए भुलाईआ। जिस दा खेल सदा बहुभाती, भावना वेखे थाउँ थाईंआ। भगत उधारना जिस दी वादी, वाइदे नाल होए सहाईआ। ओस दी कला अगम्मी डाहढी, डंडावत सब नूं दए समझाईआ। जिस दा राग गावे कोई ना ढाडी, तालां विच ना कोए

सुणाईआ। ओह सब दा बण के बाडी, बणत धुर दी इक दृढ़ाईआ। मनुआ रहिण ना देवे बाग़ी, गढ़ हँकार तुड़ाईआ। जन भगतां आत्म जावे साधी, साधना इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। शब्द गुरु कहे प्रभ तेरा इक्को दाअवा, लेखा मेरे नाल जणाईआ। जन भगतां आत्म सेज रावां, कन्त कन्तूहल हो के सोभा पाईआ। सच अगम्मी दे के नावां, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। गुरमुख रहिण ना देवां कोई निथावां, दुआरा इक्को इक सुहाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़ के बाहवां, फड़ बाहों गोद उठाईआ। धुर दे नाम दी दे के छावां, अगनी तत गवाईआ। झगड़ा मुका के धुर गरावां, दरगाह साची घर सुहाईआ। जिथ्थे भगत भगवान दा तोल होवे सावां, वज़न इक्को इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ तेरा इक सहारा, ओट ओट तकाईआ। लेखा मुक्या गुरु अवतारा, पैगम्बर पन्ध मुकाईआ। तेरा भगत मँगे तेरा चरण दुआरा, दूजी ओट ना कोए रखाईआ । गुर अवतार पैगम्बर तेरा करदे गए इशारा, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। तूं गोबिन्द धार सरगुण तों निरगुण हो के आएयों दुबारा, एकँकारा नाल मिलाईआ। तेरा धुर दा इक जैकारा, एका शब्द शनवाईआ। रविदास दा मन्न लै हाढ़ा, देवे सच दुहाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगारा सांझा यारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। शब्द गुरु कहे ओह वेख भगत दी दरख़ासत, दर्दां विच दुहाईआ। कूड़ी क्रिया कर बरख़ासत, बरखुरदार आपणे लै बणाईआ । गुरमुख रहे ना कोए नास्तिक, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सच दुआरे बणा अस्तिक, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। तेरा नूर अगम्मी वास्तक, वायदा आपणे घर समझाईआ। झगड़ा रहे ना किसे शास्त्र, शरअ ज़ंजीर देणा कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ वेख खेल हाला, हालात दयां जणाईआ। बाकी निकलया अन्त दवाला, हिसाब बेबाक ना कोए जणाईआ। साधां सन्तां अंदर ला दे ताला, बिन तेरी किरपा कुंजी हथ्थ किसे ना आईआ। दुरमति मैल धो के दाग़ काला, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। सति धर्म रहे ना किसे धर्मसाला, चारों कुण्ट दुहाईआ। फल फुल्ल रहे ना डाला, पत्त डाली दए दुहाईआ। जो इशारा कीता नानक बाला, बाली बुध्ध वखाईआ। जिस दा अवतारां दिता अहिवाला, पैगम्बर सिफ्त सालाहीआ। जिस नूं झुकी जोत ज्वाला, अष्टभुज सरनाईआ। जिस दा नूर नूर उजाला, निरगुण सरगुण डगमगाईआ। सो खेले खेल कमाला, कामल मुर्शद धुरदरगाहीआ। खोज्यां हथ्थ ना आवे भाला, ब्रह्मण्ड खण्ड रोवण मारन धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।

१३५
२१

सतिगुर शब्द कहे तेरी करनी दिसे शदीद, शिद्दत विच लोकाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, आमद आपणी दे दृढ़ाईआ। मैं सदा करां ताईद, ताकीद तेरी नज़री आईआ। सन्त सहेले वेख अज़ीज़, आलीजाह खोज खुजाईआ। जिन्हां तेरे मिलण दी रीझ, जग बैठे ध्यान लगाईआ। जग नेत्र करन उडीक, अक्ख प्रतख तक्कण इक गुसाईंआ। तूं ओस दवारे बण वसनीक, जिथ्थे वसल असल देवे यार खुदाईआ। जन भगतां बदल दे तबीअत, तबअ कूड़ रहिण ना पाईआ। आपणे घर वखा असलीअत, परदा उहला दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रविदास कहे मैं तेरी किरपा नाल लिखदा, शब्द गुरु समझाईआ। पुरख अकाल सब नूं रूप दे दे साचे सिख दा, सिख्या इक समझाईआ। लहिणा चुका दे गोबिन्द वाली चिट्ट दा, जिस दा अक्खर वंड ना कोए वंडाईआ। भाग पूरा कर दे रविदास वाली इट्ट दा, इट्टां पत्थरां दी लोड़ रहे ना राईआ। झगड़ा मुका दे कूड़ कुड़िआर नित दा, नवित्त आपणा फेरा पाईआ। तूं साहिब सुल्तान इक्को दिसदा, दो जहान सोभा पाईआ। तेरी हकूमत कोई ना जित्तदा, वैरी शत्रु मीत निउँ निउँ सीस निवाईआ। तूं लहिणे देणे आदि जुगादि नजिड्ड दा, तेरे हथ्थ वड्याईआ। भेव खोल्ह दे आपणे नूर अलाही इक दा, एकँकार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे अरज़ी उत्ते की तहिरीर, तक़रीर नाल सुणाईआ। प्रभ कलयुग अन्तिम वाट अख़ीर, आख़र ध्यान लगाईआ। जन भगतां बदल दे तक़दीर, कर्मा दा गेड़ आप कटाईआ। शरअ दा रहे ना कोए ज़ंजीर, शरीअत लेखा देणा मुकाईआ। भरम रहे ना ग़रीब अमीर, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। सब दी बदल दे तदबीर, तक़दीर तों परे तअलीम आपणी इक समझाईआ। धुर दी फेरदे आप लकीर, लाईन नरायण हो के आप लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ मैनूं आई याद, कथा पिछली दयां सुणाईआ। जिस वेले चौथे जुग तों जगत होवे आज़ाद, आज़ादी अंदर दीन दुनी वड्याईआ। जगत कल्पणा दा रहे कोई ना साध, विद्या वाली ना कोए चतुराईआ। संखां वाला वज्जे कोए ना नाद, धुन धार ना कोए वड्याईआ। अल्ला वाहिगुरु सतिनाम ओम वंड होवे कोई ना गॉड, नाअरा इक्को इक जणाईआ। बुद्धी रहे ना कोई डाग, काग वांग कुरलाईआ। शब्द डण्डा अगम्मी राड, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा सच दए खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण बेनन्ती इक, आरज़ू वड वड्याईआ। पुरख अबिनाशी कर हित, हितकारी हो के दया कमाईआ। तेरे भगत सुहेले सदा नित, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम ला खिच्च, अंदरे अंदर मेल मिलाईआ। धाम

वखा इक अनडिठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। याद कर लै प्रहलाद वाली चिट्ट, जो बिन चिठ्ठी रसैण दिती पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रहलाद नाल कीता इक़रार, सच सच समझाईआ। दे शब्द धुन्कार, अगम्म आवाज़ लगाईआ। बोल इक जैकार, सोहला दिता सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक्को धार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। प्रभ किरपा कर मेरे निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। जे भगतां दा तेरे विच प्यार, प्रेमी हो के तोड़ निभाईआ। मेरे वांग ना करीं खुआर, गेड़ा गेड़े विच वखाईआ। आप बहुरूपीआ हो के आवें विच संसार, नर सिँघ नर नरायण हो के देह तजाईआ। तूं शहिनशाह सिक्दार, वाली दो जहान अख्वाईआ। जद आवें ते आवीं जोती जामा धार, नूर नूर रुशनाईआ। साचिआं भगतां लईं उठाल, अंदर वड़ के आप जगाईआ। तेरी इहो सच्ची धर्मसाल, सच दुआरे वज्जी वधाईआ। अग्गों हस्स के किहा पुरख अकाल, इशारे नाल दृढ़ाईआ। प्रहलाद कलयुग अन्तिम मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जां तक्कया ते होया हैरान, सृष्टी दृष्टी अंदर सच प्रेम ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दिता चुकाईआ। प्रहलाद कहे प्रभ वखाया की, सच दे दृढ़ाईआ। निर्मल वेख्या कोए ना जीअ, कूड़ क्रिया रही कुरलाईआ। अमृत रस कोई रिहा ना पी, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। संसार कल्पणा पुत्तर धी, माया ममता विच हल्काईआ। रविदास तक्कया जिस आस रखाई साढे तिन्न हथ्थ सीं, जगत वासना डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र लैणी उठाईआ। प्रहलाद कहे मैं कलयुग वेख्या कूड़ा, प्रभू काहनूं दिता वखाईआ। मैं मँगण वाला तेरी चरण धूढ़ा, बिन तेरे दरस कोए ना पाईआ। तूं मैनूं वखा दिता लोकी मन्नदे ऐड़ा ऊड़ा, अक्खरां पत्थरां सीस निवाईआ। पुरख अकाल तैनूं बणा के चूहड़ा, घर विच्चों सब ने दिता कढ्ढाईआ। तेरा तक्कके खुश नहीं कोई नूरा, पढ़ पढ़ विद्या ढोले जगत सुणाईआ। इक रविदास वेख्या जो बैठा उपर टुट्टी फूड़ा, पानहा गंढ्ढ के खुशी मनाईआ। प्रहलाद कहे मैं जां तक्कया माया राणी घर घर पा के रंगला चूड़ा, जोबनवन्ती भज्जे वाहो दाहीआ। साध सन्त जिस दा होया वेख्या मशकूरा, शुकरीआ कर कर सीस निवाईआ। साचा रंग चढ़े किसे ना गूढ़ा, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। मन कल्पना झूटदे सारे पंघूड़ा, आत्म सेज ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। प्रहलाद कहे मेरे अन्तर आई हैरानी, हैरत विच सुणाईआ। सच धर्म दी दिसी ना कोए निशानी, निशाने सारे गए भुलाईआ। रोंदी वेखी चारे खाणी, ख़ाने विच्चों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। झगड़ा वेख्या चारे बाणी, बाण निराला तीर ना कोए लगाईआ। रस रिहा ना किसे पाणी, सरोवर

सर ना कोए वड्याईआ। पुरख अकाल कर मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल करनी वेख वखाईआ। श्री भगवान कहे सुण मेरे दुलारे प्रहलाद, परम पुरख हो के दयां जणाईआ। तूं हरनाख़श दी औलाद, भगतां विच्चों भगत दिती वड्याईआ। जिस वेले कलयुग अन्त कल धारा गई जाग, लोकमात लए अंगड़ाईआ। ओस वेले साचा रहिणा नहीं कोई साध, साधना सच ना कोए कमाईआ। सुरती जाए कोई ना जाग, शब्दी मेल ना कोए मिलाईआ। मन कल्पणा होवे राज, बुद्धी बलहीण हो जाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार बण के दामाद, दर दर डेरा लाईआ। साची सुणे ना कोए आवाज़, जूठ झूठ कुरलाईआ। धर्म दी देवे ना कोए आवाज़, कर्म कांड लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे जिस वेले कलयुग सृष्टी दिसी फ़ानी, फ़ैसला हक़ ना कोए सुणाईआ। मंज़ल रहे ना कोए रुहानी, रहमत राम ना कोए कमाईआ। दीन दुनी होए बेगानी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सति धर्म दी दिसे ना कोए निशानी, निशाना हक़ ना कोए झुलाईआ। चार कुण्ट होए बेईमानी, बेवा होवे ख़लक ख़ुदाईआ। मंज़ल रहे ना कोए रुहानी, नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। साची क़लम रहे ना कानी, कातब करे ना कोए वड्याईआ। ओस वेले प्रभ जन भगतां दुआरे खावण आवे महिमानी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। वस्त अमोलक देवे बण के दानी, धुर दी दात आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। प्रहलाद कहे की देवें दात, साहिब दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा मैं दर्शन देवां आप, आपणा भेव चुकाईआ। प्रहलाद किहा की दस्सें जाप, विद्या कवण पढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा मैं आत्म परमात्म बणा के साक, सज्जण हो के वेख वखाईआ। प्रहलाद किहा की खोल्हें ताक, परदा कवण चुकाईआ। पुरख अकाल किहा मैं निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दयां मिटाईआ। प्रहलाद किहा की बचन देवें साफ़, वलीए छलीए दे दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा मैं जन्म जन्म दे कर्म कर्म दे क़ुसूर कर के मुआफ़, साफ़ सुथरे दयां बणाईआ। प्रहलाद हस्स के किहा प्रभू लिख दे नाल क़लम दवात, प्रेम प्रीती जोड़ जुड़ाईआ। श्री भगवान किहा आपणा अग्गे रख दे प्रेम भगती दा काट, जिस नूं लिखां बिन क़लम शाहीआ। प्रहलाद किहा एह पुराणा चोला ख़रीदिआ नहीं आज, नवां नकोर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा दृढ़ाईआ। प्रहलाद किहा मैनूं लिख दे लेख, तेरा लेखा बेपरवाहीआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम धारें भेख, भेखाधारी भेख वटाईआ। जन भगतां जावें देस, आपणा पन्ध मुकाईआ। उन्हां लवें वेख, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। ओस वेले जन्म कर्म दी बदल देवें रेख, मेरी

लिख्त विच गवाहीआ। पुरख अकाल किहा मैं नहीं एह लहिणा हथ्थ दस दस्मेश, गोबिन्द वड वड्याईआ। जिस ने भगत सुहेले मेरे करने पेश, पेशतर आपणा हुक्म सुणाईआ। निरगुण धार करां फिर हेत, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। ओह इहो महीना ते इहो दिवस इक्की चेत, चेतन सर्ब कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। प्रहलाद कहे प्रभू मेरी निशानी काट, जिस नूं कार्ड कहे लोकाईआ। जन भगतां दी अगली मेट दे वाट, पिछला लेख रहे ना राईआ। क़ीमत पा लै आपणे हाट, दूजा दर ना कोए वखाईआ। तेरा लहिणा देणा बिना क़लम दवात, बिन अक्खरां बणत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र उठा दे अभी, अबचल वासी दया कमाईआ। तेरी परत के आई सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। भगतां दा काट सुट्टी विच कदे ना रद्दी, रद्दीख़ाने ना कोए वड्याईआ। इस दे उत्ते तुहानूं सचखण्ड दी दिती गद्दी, गदागर रहिण कोए ना पाईआ। तुहाडी आत्मा परमात्मा आपणे नाल बद्धी, बदीआं तों लए बचाईआ। तुहाडी लेखे ला के जन्म वाली सदी, सदीआं दे विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। तुहाडी जोबन वाली जवानी मस्तानी निरमाणता विच नढ्ढी, नर निरँकारा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप

१३८ हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। काट कहे मेरे उत्ते पा शहादत, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। १३८

२१ जिन्हां तेरी कीती अबादत, अमलां तों रहत कराईआ। उन्हां दी करे ना कोई मज़्हामत, झगड़े विच ना कोए लोकाईआ। २१

साचे नाम दी बख्श निआमत, वस्त अगम्म इक वरताईआ। जिन्हां ने मुहब्बत विच कीती तेरी दावत, महिमानी दिती खुआईआ। उन्हां दी कूड़ी क्रिया मेट अलामत, आलमां तों अग्गे कर पढ़ाईआ। एथे ओथे रख सही सलामत, सवाल जवाब ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कहे मैं रही झाक, झाकी दो जहान लगाईआ। मैनूं सुहञ्जणी दिसे अज्ज दी रात, भगत भगवान वज्जे वधाईआ। जिन्हां दा लेखा बणया बिन क़लम दवात, कलमयां तों बाहर पढ़ाईआ। मिली अगम्म सौग़ात, वस्त धुरदरगाहीआ। ओधर ओह नेत्र रो के कहे परात, जलधारा विच दुहाईआ। मेरा खेल अगम्म तमाश, सच देणा दृढ़ाईआ। जिस दिन गोबिन्द ने हथ्थ उत्ते बहाया सी बाज़, बाज़ां वाला नाउँ रखाईआ। आपणे अंदर सति बणाया राज, रईयत सच प्रगटाईआ। ओस वेले भर के पाणी दे इक्की ग्लास, इक परात विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। परात कहे जिस वेले मैनूं भरया, मिली माण वड्याईआ। गोबिन्द दा बाज़ खुशी नाल मेरे विच तरया, क़दम तिन्न तिन्न उठाईआ। मैं हस्स के किहा अड़िआ, की तेरी वड्याईआ। मैंनूं सच दस्स की गोबिन्द कोलों अक्खर पढ़या, जेहड़ा विद्या दए बदलाईआ।

उस रो के किहा मैं ते इक्को चरण कँवल सीस धरया, दूजी मँग ना कोए मँगाईआ। मैं ओसे लई जींदा मरया, आपणी वंड ना कोए वंडाईआ। फड़ के इक्को पल्लू मंज़ल चढ़या, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बाज़ कहे सुण जल वाली पराते, प्राताःकाल दयां जणाईआ। तूं कमलिए वेखें सुबह प्रभाते, सरघी वेले समझाईआ। इक हुक्म देणा धुर दे दाते, दरगाह विच्चों सुणाईआ। सच संदेसा अगम्मी आखे, धर्म दी धार पढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग दी अन्तिम आवे राते, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। गुर अवतारां पैगम्बरां छुटणे नाते, साचा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। वस्त रहिणी ना किसे हाटे, वणजारा वणज ना कोए कराईआ। सब दे चीथड़ होणे पाटे, ओढ़ुन सीस ना कोए टिकाईआ। प्रभ दी जाग कोई ना जागे, आलस निंदरा विच लोकाईआ। झगड़ा पए मज़हब समाजे, दीन दुनी लड़ाईआ। करे खेल पुरख अबिनाशे, आपणा वेस वटाईआ। बाज़ किहा कमलिए ओस आउणा देस माझे, मजलस भगतां नाल रखाईआ। ओस ने पाणी पीणा भगतां दी ढाबे, समुंद सागर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। परात कहे वे मैं पाणी भरी, सोहणी नज़री आईआ। बाज़ किहा तूं ओस प्रभू तों डरीं, जो साहिब धुरदरगाहीआ। परात किहा मैं सेवा करनी बड़ी, अपणा बल वधाईआ। बाज़ किहा हँकार विच करीं ना अड़ी, हंगता कम्म किसे ना आईआ। परात किहा मैं विछोड़े विच मरी, आपणा आप तजाईआ। बाज़ किहा उठ निगाह मार ज़री, ज़र्रे ज़र्रे विच समाईआ। इक ख़बर देवां जो सब नूं करे बरी, बरीख़ाना इक दरसाईआ। जां वेला आवे तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़ीं, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेल लए मिलाईआ। परात कहे जन भगतो मैं पढ़दी अगम्मी तुक, सोहँ ढोला गाईआ। सजदा करां झुक, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जे तुसीं लैणा चाउंदे ओस दा सुख, सुखमन टेडी बंक डेरा ढाहीआ। सिध्धे बण जाओ ओस दे पुत, पिता पुरख अकाल मनाईआ। आपे मेटे अन्धेरा घुप्प, तुहाडे अंदर करे रुशनाईआ। जगत विछड़यां लए पुच्छ, फड़ बाहों गोद बहाईआ। अबिनाशी करता कदे ना जावे रुस, रुस्सयां लए जुड़ाईआ। तुहाडा वेला वक्त गया ढुक, इक्की चेत दए गवाहीआ। परदा उहला रहे ना लुक, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक चढ़ाईआ। साचा रंग चाढ़े अगम्मा, हरि करता आप रंगाईआ। नाता तोड़ के काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। लेखे ला के पवण स्वास दमां, दामनगीर आप हो जाईआ। जन भगतो तुहाडा मार्ग जगत विच नवां, सृष्ट सबाई कहे लोकाईआ। अग्गे बदल देणा समां, समझ समझ विच्चों समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। इक्की चेत कहे इक्की सिखां दी अरदास, दो इक वज्जे वधाईआ। भगत सुहेला जन भगतां वस्से पास, पासा सके ना कोए बदलाईआ। चरण प्रीती दे धरवास, मन बदमाश डेरा ढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, धुर संदेसा इक सुणाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बणा जमात, सिख्या धुर दी इक पढ़ाईआ। दीनां मज़हबां विच्चों कर आज़ाद, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। प्रेम प्रीती अंदर कर विस्माद, कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। भेव खुल्ला के बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। गुरमुखो जिस कारण अज्ज दी रात गए जाग, जागरत जोत घर घर दरस दिखाईआ। हँस रूप बणाए काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। तुहाडा सच दा इक समाज, घर समग्री बेपरवाहीआ। जो बेनन्ती कीती प्रहलाद, आदि अनादी मँग मँगाईआ। उस दा लहिणा देणा पूरा कर हिसाब, हासल ज़रब वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लोकमात कर के आबाद, मेहरबान महबूब मुहब्बत विच सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

❋ २२ चेत शहिनशाही सम्मत ४ गांधी नगर जम्मू हरसज्जण सिँघ दे गृह ❋

बख्शिश करे सतिगुर शब्द अगम्मी मीता, थिर घर वासी दया कमाईआ। जिस दा मालक पुरख अकाल सचखण्ड निवासी ठांडा सीता, दो जहान वेख वखाईआ। सो साहिब समरथ साचा देवे नाम अनडीठा, निरगुण निरवैर निरँकार निराकार आपणा रंग रंगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के वस्से काया मन्दिर अंदर चीता, मन चंचल चित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया बदल देवे नीता, त्रैगुण अतीता, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। दूर दुराडा जोती जाता वस्से काया मन्दिर अंदर नज़दीका, एथे ओथे दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त गुरमुख सन्त सुहेले हरिजन आपणा वेखे लोकमात बग़ीचा, फुल्ल फुलवाड़ी पत्त टहिणी एका एक महकाईआ। लहिणा देणा लख चुरासी जीव जंत जाणे जी का, जागरत जोत बिन वरन गोत भेव अभेदा आप खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाईआ। बख्शिश करे दीन दयाल, दयानिध वड्डी वड्याईआ। भाग लगाए काया माटी सच्ची धर्मसाल, साढे तिन्न हथ्थ देवे माण वड्याईआ। जन्म कर्म दा पूरब लेखा करे बहाल, रहमत विच आपणा तरस कमाईआ। जगत मँग बख्शे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। वस्त अमोलक देवे नाम सच्चा धन माल, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। परदा उहला दए चुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी वेख वखाईआ।

बख्शिश करे साहिब समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जो देवणहारा धुर दी वथ, नाद अनादी दया कमाईआ। मेहरवान मुहब्बत विच महबूब लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्थ, दस्त बदस्त लेखा दए चुकाईआ। सच प्रेम निज नेत्र नैण खोल्ह के अक्ख, प्रतख आपणा दरस कराईआ। हक़ीक़त विच्चों देवणहारा हक़, लाशरीक शिरकत जगत दए मिटाईआ। शत्रु दुश्मन मित्र कर के वस्स, वास्ता सच नाल जुड़ाईआ। जीवण विच जगत पत लए रख, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। धीरज देवे सन्तोख धुर दा हड्ड, अगनी तत ना कोए तपाईआ। जगत जंजाला देवे कट, कटाकश आपणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। बख्शिश करे पारब्रह्म प्रभ अन्तरजामी, अन्तश्करन वेख वखाईआ। जो लख चुरासी जीव जंत हर घट जाण जाणी, घट निवासी अन्तरजामी भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जिस दा नाम निधान अगम्मी बाणी, जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर सिफ्तां विच सालाहीआ। सो अन्तर निरंतर आत्म परमात्म मंजल जणावे रुहानी, रूह बुत अबिनाशी अचुत वेख वखाईआ। कलयुग झगड़ा कूड़ मेटे जिस्मानी, जिस्म इस्म ज़मीर ज़ाहर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि

१४१ वड्डा वड वड्याईआ। बख्शिश करे दीना बंधप दीनानाथ, दयानिध दया कमाईआ। गुरमुखां वस्से सदा साथ, हरिजन साचा संग निभाईआ। भाग लगा के काया माटी काच, पंज तत देवे माण वड्याईआ। त्रैगुण माया पोह ना सके आंच, अमृत मेघ इक बरसाईआ। मेहरवान हो के लवे राख, सीस जगदीश आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म कर्म दा पूरा करे वाक, वाक़फ़कार पिछला परदा दए उठाईआ। कुछ लहिणा देणा गुजरी चन्द गोबिन्द साथ, गढ़ी चमकौर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। बख्शिश करे गोबिन्द गुरदेव, गोबिन्द वड वड्याईआ। जिस दी तेंसठ दिन कीती सेव, सेवक हो के सेव कमाईआ। चौदां हज़ार दफ़ा रोज़ रसना गाउँदी जेहव, गुणवन्त गुण निधान ध्यान लगाईआ। एह अगम्मा भेद, जगत बुद्धी ना कोए समझाईआ। जिस दा लहिणा देणा निहचल धाम नाल निहकेव, निहकरर्म आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बख्शिश करे दाता सूरबीर, साहिब सुल्तान सच्ची सरनाईआ। सेवा विच चुकदा रिहा गोबिन्द दे तीर, भथ्था हथ्थां विच उठाईआ। खुशी नाल प्याउँदा रिहा सीर, सुरत सतिगुर चरण टिकाईआ। आसा रखी अन्त अखीर, बेनन्ती इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सच बेनन्ती कीती अरदास, बख्शिश विच मँग मँगाईआ। गोबिन्द पुरख अकाल तकणा तेरा बाप, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। ओह आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण

साथ, सगला संग बणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी जिस दी गाउँदी गाथ, अक्खरां विच वंड वंडाईआ। जिस ने गुर अवतार पैगम्बर भेजे त्रैलोकी नाथ, लोक परलोक आपणा हुक्म वरताईआ। मैं वेखणा ओस दा खेल तमाश, जो ख़ालक ख़लक विच समाईआ। गोबिन्द हस्स के पुश्त पनाह लाई थाप, थपकी इक थपकाईआ। जिस वेले निरगुण नूर जोत होवे प्रकाश, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। मैं शब्दी योद्धा सदा होवां साथ, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा लिखां बिन अक्खरां वाली किताब, जिस काग़ज़ दा पन्ना नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं दे ख़िताब, मुख़ातब हो के आप दृढ़ाईआ। इशारे नाल दिता आख, आख़र इक्को हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्डी वड्याईआ। बख़्शिश कीती दात, दौलत धुर दी झोली पाईआ। जिस वेले कल होवे अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। जूठ झूठ वधे प्रताप, सच सुच बैठे मुख छुपाईआ। ओस वेले गुरमुख तेरी खोलूं जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। दुरमति मैल धो दाग़, पतित पुनीत दयां कराईआ। काया मन्दिर अंदर शब्द सुरती दे आवाज़, आलस निंदरा दयां मिटाईआ। एह खेल गोबिन्द दी धार शब्दी सतिगुर करे आप, आपणा रंग वखाईआ। बख़्शिश विच रहमत विच दीन दयाला अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर देवे साथ, सगला संग रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म सुरत शब्द इक्को ज़ात, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बख़्शिश विच बख़्शीश, जगदीश सच प्रीती झोली पाईआ।

✻ २२ चेत शहिनशाही सम्मत ४ छम्ब जम्मू गुरदित सिँघ दे घर ✻

चेत कहे सुण मेरे धुर दे बाबल, पिता पुरख अकाल दयां जणाईआ। चुरासी विच्चों सन्त सुहेले वेखणे काबल, वलदीअत विच्चों असलीअत लैणी प्रगटाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी करना इक्को आदल, इन्साफ़ विच गुस्ताख़ रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया जगत अन्धेर दूर करना बादल, नूर नुराने शाह सुल्ताने एका जोत कर रुशनाईआ। शरअ छुरी ना रहे कोए मक़तूल क़ातल, क़तलगाह वंड ना कोए वंडाईआ। भेव अभेदा खोलणा बातन, परदा परदयां विच्चों चुकाईआ। संदेसा दे के धुर अबिनाशन, अबिनाशी करते आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे दासी दासन, दर ठांडे सीस झुकाईआ। सेवा विच पृथ्वी आकाशन, कोटन ब्रह्मण्ड खण्ड भज्जण वाहो दाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे नाम दा कलमा ढोला सोहला वाचन, पढ़ पढ़ आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

एका देणा धुर दा वर, दर ठांडा इक सुहाईआ। चेत कहे प्रभ वेख आपणी खेल निराली, निराकार ध्यान लगाईआ। तेरा निरगुण नूर जोत अकाली, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। तेरे दर ते खड़े अनक सवाली, झोली अपणी रहे डाहीआ। बिन तेरी किरपा तेरी करे ना कोए दलाली, विचोला विचर ना कोए समझाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच भर दे भण्डारे ख़ाली, ख़ालक ख़लक दे माण वड्याईआ। तेरे दवारे धुन्कार वज्जे साची ताली, ताबिआदारी सब नूं दे दृढ़ाईआ । लहिणा देणा हक़ीक़त वेख हाली, हर घट वसण वाले धुरदरगाहीआ। तेरा जलवा तक्कीए नूर जमाली, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सोभा पाईआ । चेत कहे साहिब सुल्तान तेरा दर ठंडा, ठंडक दूजी नज़र कोए ना आईआ। तेरा आदि जुगादी नूरी चन्दा, चन्द चांदनी करे रुशनाईआ। तेरा लेखा गहर गम्भीर जोती शब्दी धार संदा, सनद सब दी वेख वखाईआ । सदी चौधवीं तक्क अख़ीरी कन्ढा, कन्ढी वाले आपणा रंग रंगाईआ। जिस दी महिमां हो ना सके नाल दन्दा, रसना विच रस ना कोए चखाईआ। सो साहिब सतिगुर देवणहारा इक अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चो प्रगटाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़ा के आपणा डंडा, डंडावत इक्को दए समझाईआ।
१४३ श्री भगवान तूं साहिब स्वामी सदा बख़्शंदा, बख़्शिश रहमत तेरे विच नज़री आईआ। हरि सन्त सुहेले लगा आपणे अंगा, १४३
अंगीकार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण
२१ नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी कूड़ कुड़िआर मेट दे दंगा, दग़ेबाज़ी विच दग़ा ना कोए कमाईआ। २१

❊ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ४ छम्ब जम्मू फुम्मण सिँघ भाग कौर दे गृह ❊

विष्नूं कहे मैं प्रभ दी महिमा दस्सणी, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस वेले ब्रह्मे नूं किहा सृष्टी वसणी, हुक्म अगम्म सुणाईआ। मैनूं इशारा दिता सवाधान कर लक्ष्मी, चरण कँवल लै अंगड़ाईआ। दोहां ने इक्को तुक रटणी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। फिर अग्गे झोली डौहणी सक्खणी, मेहरवान हो के देणी भराईआ। फिर अक्ख खुल्हावां आपणी अक्खणी, आख़र परदा लाहीआ। शब्द इशारा रमज़ लगावां उत्तर पच्छिम पूरब दक्खणी, चारे कुण्टां फोल फुलाईआ। जलवा नूर तेज दे के सूर्या अग्नी, प्रकाश अन्ध सोभा पाईआ। निरगुण जोत कर बेवतनी, वतन मातलोक प्रगटाईआ। धार बख़्श अगम्म अलखणी, अलख अगोचर दयां समझाईआ। रोम रोम रस दे रसनी, रस्ता आपणा इक वखाईआ। धर्म दवारा दस्स पत्तणी, पत्रा पत्रका इक्को इक पढ़ाईआ। तेरी सेवा इक्को रखणी, सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। विष्नूं कहे जिस वेले प्रभ रचना लग्गा रचण, आप आपणी दया कमाईआ। मेरे नाल कीता अगम्मी बचन, जिस नूं चार जुग ना कोए समझाईआ। खुशीआं विच लग्गा हस्सण, हस्ती मस्ती विच्चों प्रगटाईआ। मैनूं ला के प्रेम दी लग्न, लागे ल्या बहाईआ। फेर अगनी वांगूं लग्गा मच्चण, जोती जोत जोत तपाईआ। मैं उठ के लग्गा भज्जण, आपणा पल्लू छुडाईआ। पुरख अकाल किहा आह लै चरण धूढ़ी मज्जन, मस्तक दयां टिकाईआ। नाल इशारा कीता ब्रह्मे सज्जण, दोस्त दिता वखाईआ। शंकर परदा लग्गा कज्जण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक अगम्मी नगारा लग्गा वज्जण, शब्दी शब्द शनवाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लग्गा वस्सण, अनडिठी कार कमाईआ। साडी पलक लग्गा झमकण, अक्ख अक्ख बदलाईआ। चारों कुण्ट तेज लग्गा चमकण, नूरो नूर रुशनाईआ। अमृत मेघ लग्गा बरसण, अगम्मी बरखा लाईआ। फेर सानूं प्रभ दा निरगुण धार होया दर्शन, दो जहान वज्जी वधाईआ। असीं तिन्ने लग्गे तड़फण, बौहड़ी बौहड़ी कर कुरलाईआ। साडे अंदर लग्गी भटकण, अन्तर रही उठाईआ। इक अगम्मी आवाज़ लग्गी कड़कण, ज़ोरदार जणाईआ। फेर सानूं कर के मर्दन, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। इशारा कर के साडी गरदन, गरदश दिती वखाईआ। फेर वखा अगम्मी बरतन, शब्द प्याला दिता चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला रिहा उठाईआ। विष्नूं कहे मैनूं कोल बहा के नेड़े, सहज नाल समझाईआ। फेर पुच्छया केहड़े केहड़े, तेरा पल्लू गंढु बंधाईआ। विष्नूं ब्रह्मा शिव ढहि के हो गए ढेरे, डेरा चरणां विच टिकाईआ। पुरख अकाल असीं तेरे, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। अबिनाशी करते किहा मैनूं तुसीं तिन्न बथेरे, मेरी चलणा हुक्म रज़ाईआ। सतिगुर शब्द दे रहिणा घेरे, डोरी तन्द आप बंधाईआ। ज़रा निगाह मारो अन्धेरे, अन्ध कूप वखाईआ। फेर सब दे उत्ते उँगली फेरे, मस्तक विच छुहाईआ। फेर उलटा चक्र फेरे, पिच्छे दिता भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। विष्नूं कहे मैनूं आई आवाज़, ज़ोरदार सुणाईआ। मेरा खुल्ह गया राज़, परदा रिहा ना राईआ। सदा लई गया जाग, आलस निंदरा ना रूप वटाईआ। जिध्धर तक्कां उधर दिसे आग, अगनी तत तपाईआ। ओसे वेले उड्डया भाग, भज्जया वाहो दाहीआ। अग्गे पुरख अकाल वरतया स्वांग, स्वांगी आपणा रूप बदलाईआ। शब्द अगम्मी लै के डांग, भय नाल डराईआ। मेरी भज्जणो रह गई टांग, बल ना कोए रखाईआ। मेरी रो के निकली चांग, हौकयां विच सुणाईआ। अबिनाशी करते किहा आह वेख वखावां तेरी तांघ, आसा विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। विष्नूं कहे मैं हैरानी विच कीती इच्छा, आसा समझ कोए ना आईआ। चार कुण्ट एका नूर दिसा, निरगुण

नूर नूर रुशनाईआ। जिध्धर वेखां उधर पिच्छा, अग्गे पिच्छे सोभा पाईआ। प्यार विच करे हिता, मुहब्बत विच वड्याईआ। खेल अगम्मी डिठ्ठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। फेर पा के आपणी भिच्छा, मेरे अन्तर दिती टिकाईआ। इक धुर दा दिता चिठ्ठा, जिस दा रूप रंग रेख नज़र ना आईआ। उस दे उत्ते तूं मेरा मैं तेरा नाम लिखा, जिस दी आदि अन्त वजदी रहे वधाईआ। फेर वखा के लहिंदी दिशा, चार कुण्ट परदा दिता चुकाईआ। फेर रूप धार के निक्का, निरगुण निरवैर करी रुशनाईआ। फेर हुक्म दा चला के सिक्का, मोहर आपणा नाम छुहाईआ। फेर प्रेम प्रीती अंदर विका, क़ीमत करता ना कोए रखाईआ। फेर सारा रस कर के फिक्का, नाता सब दे नालों तुड़ाईआ। फेर सब दा वंड के हिस्सा, निरगुण निरगुण वंड वंडाईआ। फेर महिमा दा दस्स के किस्सा, सिफ्तां विच सालाहीआ। फेर बणा के चिखा, आपणा आप जलाईआ। फेर सर्ब सुआमी बण के पिता, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। फेर करवट बदल के दिती पिठ्ठ, सन्मुख सोभा कोए ना पाईआ। फेर लेख वखाया पत्थर इट्टां, माटी कीचड़ वज्जी वधाईआ। फेर दुहथ्थड़ मार के पिट्टा, ऊची कूक कूक सुणाईआ। फेर ख़ाली वखाया खिटा, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार

१४५ कमाईआ। विष्नूं कहे मैनूं कोल बहा के मारी चपेड़, सहज सहज लगाईआ। मैनूं आ गए नौ गेड़, चिक्कड़ चिक्कड़ विच भुआईआ। फेर मस्तक उँगली दिती फेर, प्रेम नाल छुहाईआ। मैं हो गया दलेर, सबर सन्तोख मेरे विच टिकाईआ। १४५

२१ फेर कढ्ढके अन्धेर, निरगुण नूर दिता चमकाईआ। फेर बणा के आपणा चेर, धुर दा हुक्म दिता सुणाईआ। फिर बण के २१

निरवैर निराकार केहर, भय विच डराईआ। फिर वसा के आपणा खेड़, घराना दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। विष्नूं कहे मैनूं दिता हलूणा, सहज नाल हिलाईआ। फिर दस्सया कूणा, शब्द विच समझाईआ। फिर बल दिता दूणा, ताक़त होर प्रगटाईआ। फिर हस्स के किहा मासूमा, बच्चयां वांग गोद टिकाईआ। फिर हुक्म दिता नामालूमा, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। फिर बण के वड्डा सूमा, भण्डारा मेरी झोली पाईआ। फिर मँगता बणया वांग डूंमां, गृह आपणे अलख जगाईआ। फिर आपणा क़दम आपे चूमां, बिन रसना रस वखाईआ। फिर आपणी जोती धार आपणा आप भूंना, अगनी तत तपाईआ। फिर आपणा चोटी सीस मुंना, मूंड मुंडाया सोभा पाईआ। फिर प्रेमी धार बणा के खल्हा, कुल आलम खेल बणाईआ । फिर बण के सुल्हकुला, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। फिर हस्स के बिना बुल्लां, खुशी दिती प्रगटाईआ। फिर मुहब्बत दा दे के तुला, बेड़े उत्ते चढ़ाईआ। फिर ब्रह्मण्ड खण्ड वेहड़ा वखा के खुल्हा, चारों कुण्ट दिता भुआईआ। फिर पाउण दा दे के बुल्ला, हुलारिआं विच भुआईआ। फिर सुगंधी

दे के फुल्लां, लख चुरासी कँवल धार प्रगटाईआ। फिर बण आप अनभुल्ला, भुल्ल सब दे अंदर वखाईआ। फिर वस्त दे अनमुल्ला, नाम निधाना इक वरताईआ। फिर काया माटी बणा के चुल्ला, अगनी तत तपाईआ। फिर बणके धुर दा दूल्हा, आपणी दस्से माण वड्याईआ। फिर चुका के मूला, आदि दा परदा दिता उठाईआ। हुकम दिता माक़ूला, सहज नाल समझाईआ। विष्नूं वेख मेरा असूला, असलीअत परदा दयां उठाईआ। मैं आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरवैर निरँकार निराकार सब दा बणया रहां कन्त कन्तूहला, बिना मेरे मालक सेज दा दूजा नज़र कोए ना आईआ।

❋ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ४ छम्ब जम्मू शाहणी देवी दे गृह ❋

विष्नूं कहे प्रभ मेरी पिठ्ठ ठकोरी, ठोकर प्रेम लगाईआ। मेरी साची बण गई जोड़ी, आपणा जोड़ जुड़ाईआ। मैनूं वखाई अगम्मी पौड़ी, जेहड़ी मंजल दए पहुंचाईआ। फेर नज़र आए धुर दी डोरी, जिस दा आकार नज़र कोए ना आईआ। फिर किरपा कीती थोड़ी, परदा दिता चुकाईआ। मैनूं आसा दिसी मेरी लोड़ी, ख्वाहिश दिती प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रिहा रंगाईआ। विष्नूं कहे मैनूं कोल बहा के थोड़ा दिता दब्ब, उपरों थल्ले रिहा नपाईआ। मेरा नेत्र खुल्हिआ झब्ब, जोती जोत रुशनाईआ। मैनूं नज़री आया कुछ सब, सबब नाल दिता दृढ़ाईआ। निराकार गया लभ्भ, निरवैर कर रुशनाईआ। जिस दा समझ ना सक्कया क़द, वड्डा छोटा ना कोए वड्याईआ। मैं वेख्या मैं ओसे दी यद, मालक इक्को नज़री आईआ। ओसे दी वसिआ हद्द, घराना इक्को सोभा पाईआ। ओसे दा गावां छन्द, ढोला अगम्म अथाहीआ। ओसे दा सुणां नद, धुर संदेस सुणाईआ। ओसे दी रचना वेखां जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। ओसे दा खेल तक्कां अलग, निराला बैठा सोभा पाईआ। ओसे दा रूप वेखां सर्बग्ग, शहिनशाह अख्वाईआ। ओह हर घट रिहा रच, रचना रिहा बणाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या खेल सच, सच सच दयां दृढ़ाईआ। जिस ने साथों भाण्डे बणाउणे काया माटी कच्च, सेवा सति कमाईआ। आप लूं लूं अंदर जावे रच, घर घर सोभा पाईआ। साडा इशारा इक्को अक्ख, नैण इक्को इक जणाईआ। आप उस तों अग्गे जाए वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। फिर मार के पिठ्ठ मेरी उत्ते हथ्थ, हथेली नाल दबाईआ। जां वेख्या प्रकाश देवण रवि ससि, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। फिर किरपा कीती झट, मेरे अंदर कीती रुशनाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खुल्हिआ वेख्या हट्ट, वज्जे सच वधाईआ। आपणे चरणां दी धूढ़ लाह के झट, मेरे उत्तों अग्गे दिती सुटाईआ। धरनी धरत धवल ओसे धार विच्चों गई वस, जिस दी बणत समझ किसे ना आईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। विष्नूं कहे मैनूं मारया छोटा जिहा झटका, सहज नाल हिलाईआ। मेरे अन्तर होया खटका, भय विच ध्यान लगाईआ। पुरख अबिनाशी ओसे वेले सिर ते बन्ह् के पटका, बहुरूपीआ रूप वटाईआ। मालक बण के घट घट का, आपणा घट समझाईआ। नज़ारा दे के आपणी सद दा, सुत्यां ल्या जगाईआ। फिर दो जहान आपणे अंदर वेख्या घतदा, लख चुरासी रिहा छुपाईआ। फिर खेल कीता सति दा, सति सतिवादी प्रगटाईआ। फिर मैनूं इशारा कीता हड्ड मास नाड़ी रत्त दा, ततव तत्तां रंग चढ़ाईआ। फिर मेरा ध्यान धराया हथ्थ मूँह नक्क दा, कन्न अक्खां वंड वंडाईआ। फिर मैनूं लेख वखाया आपणे खुशख़त दा, जो बिन हरफ़ां हरफ़ समझाईआ। फिर प्रेम दस्सया सच दुआरे चरण कँवल नत्त दा, नाता इक जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच खेल वखाया आपणे जस दा, सिफ्तां विच बेसिफ्ती ढोले गाईआ।

१४७ ✻ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ४ कैंप ख़ैरोवाली ज़िला जम्मू ज्ञान चन्द दे गृह ✻ १४७

२१ विष्नूं कहे मैनूं प्रभू ने ल्या चुक, चुकन्ना कर के प्रभ ने दिता वखाईआ। फिर संदेसे विच किहा झुक, हुक्म धुरदरगाहीआ। २१

फिर हुक्म कीता अगम्मे मुख, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। इशारे विच दस्सया तत्तां अंदर केहड़ा दु:ख, माया विच समाईआ। केहड़ा अहार देणा टुक, टुकड़यां झोली पाईआ। केहड़ा अमृत देणा घुट, कवण रस जल वखाईआ। किस बिध उपजाउणा सुख, सांतक सति कराईआ। किस वेले पैंडा जावे मुक, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। कवण वेला प्रभू होवे खुश, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कवण वक्त सब नूं लए पुच्छ, पूरब लहिणा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। शंकर कहे मैं वेख्या निराकार, विष्नूं किहा नहीं निराकार दा आकार दयां जणाईआ। ओस दी जोत ओस दी धार, धार तों बिना ना कोए रुशनाईआ। आपणा नूर उहदा उज्यार, उजाला आप प्रगटाईआ। आपणी करनी दा खुदमुख़्यार, मुख़्यारनामे आपणे हथ्थ फड़ाईआ। मैं सदा निरगुण जोत करां दीदार, नूर विच समाईआ। मैनूं कर के ख़बरदार, बेख़बर ख़बर दिती सुणाईआ। हुक्मे अंदर कर इक़रार, वायदे विच वड्याईआ। सृष्टी करनी त्यार, त्रैगुण वज्जे वधाईआ। पंज तत परिवार, मेला लैणा मिलाईआ। विष्नूं सेवादार, बण सेवक साची सेव कमाईआ। भण्डारा अगम्म दिता वखाल, वखरे धाम टिकाईआ। जिथ्थे वस्से दीन दयाल, दयानिध सोभा पाईआ।

सदा रखे संभाल, आपणे विच छुपाईआ। जिस नूं खाण शाह कंगाल, हिस्सा सब दी झोली पाईआ। अगला लेखा बेमिसाल, मिसल विच ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आपणी सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को इक सुहाईआ।

❊ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड ख़ैरोवाली जम्मू खोजू राम दे गृह ❊

विष्नूं कहे मेरे अवतर दिती ख़बर, रुची दिती बदलाईआ। सन्तोख बख्श सबर, सबब नाल दृढ़ाईआ। हो के गहर गम्भीर गवर, परदा दिता उठाईआ। हुक्म दस्स के अवर, अवरी कार कमाईआ। लख चुरासी जणा आपणा टब्बर, कुनबा इक प्रगटाईआ। भय देणा तूं प्रभू पैगम्बर, भयानक सोभा पाईआ। नज़ारा दे उपर अम्बर, आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण धार रच स्वयम्बर, साचा खेल वखाईआ। विष्नूं विषयां वाला वेख अडम्बर, वशेषता विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। विष्नूं कहे मैं वेखां खेल सच दा, सच सच दृढ़ाईआ। आपणी इच्छया अंदर विष्न ब्रह्मा शिव रचदा, माया तत गुण वड्याईआ। सच सिँघासण बहि के सजदा, तख़त निवासी धुरदरगाहीआ।
१४८ २१ लेख उपजा अगम्मे जग दा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। लहिणा देणा सुहा नाड़ी मास हड्ड दा, आपणी कल वरताईआ। १४८ २१
घर वस्सेरा बणा उपर शाह रग दा, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। राग सुणा अगम्मी अनहद नद दा, नादी नाद जणाईआ। प्रकाश हो के जगदा, नूरो नूर डगमगाईआ। आकार हो के वधदा, निराकार सच्ची शहिनशाहीआ। लेखा जाण आपणी हद्द दा, हदूद आपणी आप बणाईआ। खेल कर अलग दा, वखरी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाहि साची खेल वखाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या एक इकल्ला, एकँकारा नज़री आईआ। जिस दा वस्से सच महल्ला, दर ठांडा सोभा पाईआ। जिथ्थे लोड़ नहीं जला थला, जल थल महीअल आपणी कार कमाईआ। सच दुआरे आपणी जोती धार बला, बलधारी आपणा बल आप प्रगटाईआ। निरगुण नूर आपे रला, नूर नूर विच समाईआ। घर वखा के इक निहचल अटला, अटल पदवी इक समझाईआ। जिथ्थे विछोड़ा ना होवे पला, पलक विच ना होए जुदाईआ। विष्नूं कहे मैं विश्वास विच फड़िआ पल्ला, भरोसे नाल भरोसा ल्या बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरा एकँकारा इक एक हो के खला, ख़ालक ख़लक नज़र किसे ना आईआ।

❊ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ४ कैंप मनावर जम्मू रसाल सिंघ दे गृह ❊

विष्नूं कहे प्रभ किरपा कीती आदी, अदल इन्साफ आपणा आप कमाईआ। चरण कँवलां विच लगाई मेरी समाधी, नूर आपणे विच समाईआ। मेरी सुरती सदा लई जागी, आलस निंदरा ना कोए वखाईआ। मैं होया वड वड भागी, प्रभ चरण सीस निवाईआ। फेर सुणी अगम्मी आवाज़ी, जो निरगुण निरवैर निरँकार दिती सुणाईआ। विष्नूं तेरी सेवा लावां डाहढी, दावत विच लैणा सीस निवाईआ। जेहड़ा खेल खेलिआ बण के बाडी, सगला संग तेरा उपजाईआ। तूं इक्को इक एकँकारा अराधीं, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। विष्नूं कहे समाधी अंदर खोल्ह्या मेरा ताक, ओहला रहिण कोए न पाईआ। मैनूं संदेसा दिता अगम्मी वाक्, सृष्टी तों पहलां दिता जणाईआ। निगाह मार साख्यात, साहिब स्वामी रिहा जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा देवे साथ, धुर दा संग बणाईआ। तिन्नां बणाउणी इक जमात, विद्या इक्को इक पढ़ाईआ। अन्तर कर नूर प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। फिर दस्सणी अगम्मी अनोखी बात, बातन दयां दृढ़ाईआ। तिन्नां मेरे चरणां दे हेठां रखणे हाथ, फिर उत्ते लैणे टिकाईआ। इन्हां पिच्छे सृष्टी विच बण जाए दिन रात, थित आपणे रंग रंगाईआ। मेरे नूर विच्चों नूरी नूर होवे प्रकाश, प्रकाश आकाश आकाश विश्वास विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। विष्नूं कहे समाधी अंदर किहा सच दुलारे सुत, सति सतिवादी नाल मिलाईआ। फिर हो गया चुप, नाद अनाद ना कोए शनवाईआ। फिर खलोता उठ, निरगुण निरगुण लए अंगड़ाईआ। फिर वखाया अन्धेरा घुप, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। फिर वखाया सृष्ट सबाई दुःख, दर्दां विच दुहाईआ। फिर वखाया सब दे अंदर बैठा लुक, निज घर आपणा डेरा लाईआ। फिर वखाया उजल करे मुख, जिन्हां आपणा रंग रंगाईआ। फिर वखाया जुग चौकड़ी रहे लुक, बण बण पाँधी राहीआ। फिर वखाया आपणे नाल सांझी तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला दिता जणाईआ। फिर वखाया अमृत रस अगम्मा घुट, जाम हक़ीक़ी इक जणाईआ। फिर वखाया सृष्टी दृष्टी रही टुट्ट, टुट्टी गंढु ना कोए पुआईआ। फिर वखाया कूड़ कुड़िआर पई लुट्ट, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। फिर वखाया जुग चौकड़ी पैंडा रिहा मुक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दर ठांडे इक वड्याईआ। विष्नूं कहे समाधी अंदर तक्कया, हरि तक्कया बेपरवाह। जिस भण्डारा आपणे अंदर रख्या, अंदरों मेरी झोली दिता पा। मैं अनोखा भोरा चक्खया, जुग चौकड़ी आदि अन्त लई दिता रजा। मैं बड़ा खुशीआं नाल हस्सया, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गा। पुरख अकाल

कुछ अगला दस्स पतिआ, पतिपरमेश्वर परदा दे उठा। पुरख अकाल बचन कीता सच्चया, सुणाया सहज सभा। विष्नूं लख चुरासी जीव जंत तेरी सेवा वास्ते रख्या, ब्रह्मा तेरे नाल मिला। जुग चौकड़ी वेख फिरदा नट्ठया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुका। चारों कुण्ट वेख उडदा घट्टया, धूआँधार सके ना कोए मिटा। गुर अवतार पैगम्बर वेख मेरा बच्चया, साचा बचपन दयां समझा। जो नाम संदेसा लै के मातलोक जावे नस्सया, पाँधी हो के चले अपणे राह। दीनां मज़हबां पावे रट्टया, मानव ज़ाती वंड वंडा। भाग लगावे काया मट्टया, साढे तिन्न हथ्थ भेव खुल्हा। धुर संदेसा दे के आवे पक्कया, नाम सुनेहड़ा इक जणा। जिस वेले कलयुग रैण अन्धेरी होवे मस्सया, साचा नूर ना कोए रुशना। पुरख अकाल जोती धार शब्द गुरु भेजे तत सरीर दे वट्टया, अदली विच बदली करे खुदा। ओह चार जुग दे मेटे रट्टया, झगड़ा दए गवा। सच सुनेहड़ा इक्को देवे सच्चया, सन्त सुहेले गुरमुख आप जगा। धुर दी धार दे के मत्तया, मनमति खैहड़ा दए छुडा। प्रेम प्रीती अंदर नाम निधान जाए रँतिआ, रंग अगम्मड़ा इक चढ़ा। जिस वेले गुर अवतारां पीर पैगम्बरां वेला वक्त जाए टप्पिआ, सदी बीसवीं बणे गवाह। ओस वेले इक एकँकारा करे खेल पुरख समरथ्या, दो जहाना वेखे थाउँ थाँ। निरगुण नूर जोत करे परवेश्या, अन्ध अन्धेरा दए गवा। लोकमात वेखे वाक़िआ, मौके सिर फेरा पा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरता। विष्नूं कहे समाधी अंदर वेख्या अबिनाशी अचुता, चेतन सब नूं दयां कराईआ। सति सुहञ्जणी सुहा के आपणी रुता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। गुरमुख सन्त सुहेला वेखे जगत जन्म दा रुस्सा, रुस्सयां आप मनाईआ। गोबिन्द धार बणा के सुता, सुत अपराधी पार कराईआ। जेहड़ा आत्म परमात्म धारों टुट्टा, टुट्टयां रिहा जुड़ाईआ। जिस दा नाता सुरती शब्द नालों छुट्टा, शब्दी सुरती मेला मेले सहज सुभाईआ। लेखा जाणे काया माटी मात कुखा, जन जननी वेख वखाईआ। सन्त सुहेला रहिण ना देवे कोई सुत्ता, आलस निंदरा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। दुरमति मैल धोवे साचे मुक्खा, पतित पुनीत कराईआ। दूई द्वैत मेट के दुक्खा, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। प्रेम प्यार दा टुक्कर खा के रुक्खा, सुख दो जहानां तों परे दए समझाईआ। सो वेला वक्त विष्नूं विश्व धार ढुका, वशेषता विच विश्व विश्व दृढ़ाईआ। जिस नेत्र इक्को पुट्टा, अक्ख नैण खुल्हाईआ। ओह बदल के आपणा रुखा, रुख़सत सब नूं रिहा कराईआ। विष्नूं कहे समाधी अंदर आदि तों अन्त तक कलयुग सुझा, साहिब सुआमी दिता समझाईआ। बिना भगतां तों साचा दिसे ना कोए झुग्गा, काया मन्दिर अंदर वज्जे ना कोए वधाईआ। जिस कारण नच्चआ टप्पया बुढ्ढा, बुढेपे विच शनवाईआ। पिछले जन्म दा नौ सौ तरयासी बरस एथे कुछ इहदा लहिणा देणा लुका, हिसाब आपणा वेख वखाईआ।

साडीआं नौ अशरफ़ीआं दब्ब के गया विच कुज्जा, मोहर मुहम्मद वाली वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जागरत जोत करे उग्घा, बिन वरन गोत आपणे रंग रंगाईआ।

✻ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड नगिआल ज़िला जम्मू हँसराज दे घर ✻

विष्नूं कहे समाधी विच दस्सया अगम्मी राज़, रईयत दो जहान दिती वखाईआ। सति सच दा दस्स के काज, करनी करता कार कमाईआ। वस्त अमोलक दे के दाद, मेरा भण्डारा दिता भराईआ। ब्रह्मा शिव नाल बणाया समाज, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। फिर रख सीस ते ताज, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। मार अगम्मी आवाज़, हुक्म दिता सुणाईआ। कुछ अगली सिख लओ जाच, जाचक हो के झोली पाईआ। जिस खेल खिलाउणा काया माटी काच, मेला सहज सुभाईआ। किस बिध होवे काज, गृह मन्दिर अंदर खोज खुजाईआ। किस बिध चले पाउण स्वास, साह साह वड्याईआ। किस बिध रसना जिह्वा लए भाख, किस बिध मनमति बुध्ध धराईआ। किस बिध अन्तर जावे राच, आपणा डेरा लाईआ। किस बिध आत्म बख्शे आपणी ज़ात, ब्रह्म लेखा लेखे लाईआ। किस बिध निंदरा देवे जाग, आलस कवण रूप वटाईआ। कवण अन्तर रखे वैराग, कवण वैरी शत्रु सोभा पाईआ। कवण त्रैगुण मेटे आग, कवण अमृत मेघ बरसाईआ। कवण बख्शे सवाल जवाब, धुर फ़रमाना हुक्म दृढ़ाईआ। विष्नूं कहे मैं निउँ के टेकया माथ, सीस दिता झुकाईआ। पुरख अकाल सब कुछ तेरे हाथ, साडी चले ना कोए चतुराईआ। हुक्मे अंदर जुग चौकड़ी चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जो शब्दी धार देवें आख, संदेसा हक़ सुणाईआ। ओस नूं लईए वाच, विद्या दी लोड़ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि दा परदा देणा उठाईआ। विष्नूं कहे समाधी अंदर दस्सया एका राह, एकँकार दिता दृढ़ाईआ। साची सेवा दिती लगा, सेवक धुर दा ल्या बणाईआ। सच भण्डारा दिता भरा, भण्डारी हो के दया कमाईआ। परदा उहला दिता चुका, त्रै पंज भरम रिहा ना राईआ। लख चुरासी जीव जंत दिता वखा, चारे खाणी सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रूप दिता बदला, निरगुण सरगुण वज्जी वधाईआ। नाम संदेसा ढोला दिता सुणा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अन्जील क़ुरान खाणी बाणी वेख वखाईआ। अमृत धार रस दिता वहा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणी कार कमाईआ। भगत सुहेले दिते प्रगटा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। दो जहानां वेख वखा, श्री भगवाना आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग

१५१
२१

त्रेता द्वापर कलयुग पैंडे दए मुका, पाँधी नज़र कोए ना आईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर एका नूर कर रुशना, जोती जोत जोत रुशनाईआ। तन वजूद रिहा ना रा, कायनात करी सफ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रिहा ना कोए गवाह, शहादत सके ना कोए भुगताईआ। दीन मज़हब ज़ात पात हिस्सा ना कोए पा, हसबेज़ैल ना कोए पाईआ। सब दा लेखा आपणे हथ्थ रखा, ख़तो ख़ताबत आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार जोती जामा वेस वटा, जुग चौकड़ी वाट मिटाईआ। धुर फ़रमाना इक दृढ़ा, सच संदेसा ल्या सुणाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या नाल ध्याँ, दूर दुराडा राह तकाईआ। साहिब सुआमी हो मेहरवां, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर आपणी खेल रिहा खिला, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। भगत सुहेले रिहा तरा, तारनहार इक अख्वाईआ। जुग जन्म दे विछड़े रिहा मिला, मेला मेले सहज सुभाईआ। सब दा लहिणा देणा रिहा चुका, नाता छुट्टे कूड़ लोकाईआ। सच दुआरा एकँकारा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को रिहा रखा, जिस गृह आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव अभेदा रिहा चुका, भाव भविश आपणे नाल मिलाईआ।

✲ २३ चेत शहिनशही सम्मत ४ पिंड नगिआल ज़िला जम्मू इंदरो देवी दे घर ✲

समाधी अंदर दस्सी साधना, विष्नूं विश्व दए जणाईआ। इक्को पुरख अकाल अराधना, जो आदि जुगादि समाईआ। जिस ने सच दी कीती साजना, सति सच प्रगटाईआ। नाम सुणाया नादना, धुन अगम्म अथाहीआ । नूर कराया प्रकाशना, प्रकाश्त रूप वखाईआ। निरगुण दिता साथना, सगला संग बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथना, कीती अगम्म पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरताईआ। विष्नूं कहे समाधी अंदर दिता समझा, आपणा हुक्म वरताईआ। सदा चलणा मेरी इक रज़ा, राज़क रिज़क रहीम इक्को लैणा मनाईआ। मेरा नाम इलाही ख़ुदा, खुद मालक इक अख्वाईआ । जिस दे नालों नहीं होणा जुदा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा नूर होणा आदम हव्वा, हरि आपणी कार कमाईआ। निरगण सरगुण खेल करना रवां, रहमत करे बेपरवाहीआ। साज साजणा हुक्मे अंदर कहां, संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग समाईआ। समाधी अंदर दिता इशारा, इक्को इक जणाईआ। आदि अन्त दा वेख नज़ारा, जुग चौकड़ी परदा लाहीआ। निरगुण तों

सरगुण खेल खिलावां दुबारा, लोकमात वज्जे वधाईआ। सरगुण तों कर के आप किनारा, जोती जोत मिलाईआ । जुग चौकड़ी दे अधारा, नाम निधाना झोली पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीते विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी वेखे ध्यान लगाईआ। फिर खेल होवे अपारा, अपरम्पर दयां सुणाईआ। निरगुण जोत लवां अवतारा, परवरदिगारा रूप वटाईआ। लख चुरासी पावां सारा, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। जो तुहानूं दस्सया जैकारा, इहो भगतां दयां पढ़ाईआ। तुसां वेखणा आ के प्रभू दा भगत दुआरा, जिथ्थे भगवन वज्जे वधाईआ। एह लेखा होणा जुग चौकड़ी बाहरा, चार जुग समझ ना कोए समझाईआ। विष्नूं कहे मैं निउँ के कीती निमस्कारा, सीस दिता निवाईआ। चरण धूढ़ मस्तक ला छारा, टिक्का इक रमाईआ। फिर प्रभ ने देणा हुलारा, सहज नाल उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर एथे वखा के इक कतारा, कतरा कतरा जोत सब दे अंदर टिकाईआ। आप वस सब तों निआरा, निआंकार आप हो जाईआ। निरगुण नूर जोती जामा अगम्म अपारा, अलख अगोचर खेल खिलाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या अगम्म अखाड़ा, प्रभ अगम्मड़े दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सब दा इक सहारा, सहायता विच नाम इनाइत दए कराईआ।

❋ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड नगिआल ज़िला जम्मू प्रकाशो देवी दे गृह ❋

विष्नूं कहे मैं वेख्या दीन दयाल, दयानिध अख्वाईआ। जिस दा खेल विशेष विशाल, विश्व आपणी धार प्रगटाईआ। मैनूं बणा के आपणा लाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोत दा दे जमाल, नूर कीता रुशनाईआ। मैं निउँ के कीता सवाल, बेनन्ती इक दृढ़ाईआ। किरपा कर पुरख अकाल, सच तेरी सरनाईआ । की खेलणा खेल कमाल, कवण रंग रंगाईआ। की सेवा लवां घाल, सेवक रूप वटाईआ। किस वस्सां धर्मसाल, घर आसण कवण लगाईआ। की करें मेरी प्रितपाल, मेरी पालणा लख चुरासी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दए समझाईआ। विष्नूं कहे मेरी नमस्ते, नमो नमो सीस निवाईआ । इक मार्ग आपणा दस्स दे, सहज नाम समझाईआ। किस बिध ब्रह्मण्ड खण्ड होवण वसदे, पुरी लोआं सोभा पाईआ। किस बिध लख चुरासी भाण्डे बणाउणे कच्च दे, तन वजूद सुहाईआ। किस बिध प्रकाश होणे अक्ख दे, लोचन नैण दृढ़ाईआ। किस बिध आत्म परमात्म होणे वसदे, घर मेला सहज सुभाईआ। किस बिध मन बुद्धी होणे नचदे, आपणा खेल जणाईआ। पुरख अकाल बचन कीता हस्सदे, सहज नाल सुणाईआ।

पहलों अमृत लै मेरे रस दे, रस्ता आपे नज़री आईआ। तुसां ढोले गाउणे मेरे जस दे, सिफ्तां नाल सालाहीआ। अग्गे खेल पुरख समरथ दे, आपणी कार आपे लए भुगताईआ। जुग चौकड़ी वेख्यो नठदे, गुर अवतार पैगम्बर वेख्यो नचदे, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। फिर लहिणे देणे सब दे हक़ दे, हक़ीक़त विच्चों खोज खुजाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर दो जहान वेख्यो मचदे, बिन माचस अगनी दयां लगाईआ। एहो कौल इक़रार विष्नूं पक्क दे, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जो जन होए रटदे, तिन्हां रट्टा अवर रहे ना राईआ।

❊ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ४ मलक कैंप ज़िला जम्मू भाग सिंघ दे गृह ❊

विष्नूं कहे प्रभ दिता अगम्मी रंग, रसीआ रस रसना समझ कोए ना पाईआ। परम पुरख जणाया आपणा परमानंद, प्रेम प्यार प्रीती विच्चों प्रगटाईआ। निरगुण निरवैर आपणा जोड़ जुड़ाईआ। मेरी मनसा वेख उमँग , आसा दिती समझाईआ। भेव खोल्ह के ब्रह्म हँ, आत्म अन्तर निरंतर दित्ता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दए उठाईआ। विष्नूं कहे मैं वेखी अनोखी धार, धरनी धरत धवल धौल सोभा पाईआ। मैं सुणी अगम्मी गुफ्तार, जो गुफ्त शुनीद दए कराईआ। मैं वेखी ओह रफ्तार, जो रफ्ता रफ्ता सब दा पन्ध मुकाईआ। मैं वेखी ओह गुलज़ार, जो गुलशन गुरदेव शब्द सुआमी आप महकाईआ। मैं वेखी अगम्म बहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा रिहा दृढ़ाईआ। विष्नूं कहे मैनूं दे के अगम्मी झलक, झल्ला दिता बणाईआ। नज़ारा दे के ख़लक, ख़ालस रंग रंगाईआ। परदा लाह के उपर फ़लक, फ़र्श दए समझाईआ। भेव चुका के आपणी पलक, पतिपरमेश्वर परदा रिहा उठाईआ। धुर दा हुक्म कदे ना होवे ग़लत, सच सच विच समाईआ। जिस दा लेखा हलत पलत, दो जहानां वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला दए उठाईआ। विष्नूं कहे मैं वेख के अगम्मी प्रभ दी धार, दर ठांडे सीस निवाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। हउँ बाल अंञाणे नढ्ढे तेरे सेवादर, सेवक हो के सेव कमाईआ। तेरी मौले रुत खुशी वखाए बसन्त बहार, पत्त टैहणी नाल महकाईआ। लख चुरासी चारे खाणी तेरा लेखा पुरख नार, नर नरायण तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पुरख अकाल कहे सुण साजण धुर दे मित्र, मित्रा दयां जणाईआ। जोती

धारों आवां निकल, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। सृष्ट सबाई कर के सिथ्थल, सथ्थर दयां विछाईआ। कूड़ मुलम्मा लाह के पित्तल, पतिपरमेश्वर दयां वखाईआ। जुग चौकड़ी जगत जहान बीतन, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर उडीकण, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। क़ागज़ क़लम शाही लिख के जावण गुर लीकण, भविख्तां विच दृढ़ाईआ। दीन दुनी जीव जंत जिज्ञासू जग चीकण, हाहाकार लोकाईआ। जगत साधू बिना साधना तों अक्खां मीटण, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। झगड़ा पै जाए हस्त कीटण, आत्म परमात्म ज्ञान ना कोए प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जीव पीसण, सिर सके ना कोए उठाईआ। नेत्र रोवे मुहम्मद ईसण मूसण, मुख तोबा तोब सुणाईआ। अगनी अग्ग लग्गे पंज भूतन, भूत भविख्त पर्दा ना कोए उठाईआ। फिरी दरोही चारे कूटण, दह दिशा होए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म संदेसा इक सुणाईआ। विष्नूं कहे मैं कुछ कहिण नहीं योग, योगता नज़र कोए ना आईआ। मैं मँगां धुर संजोग, संजोगी हो के जोड़ जुड़ाईआ। आदि जुगादी तेरा चोज, चोजी प्रीतम हो के वेख वखाईआ। जन भगत सुहेले लैणे खोज, लख चुरासी विच्चों आप उठाईआ। आत्म परमात्म दे के मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। हउमे हंगता रहे ना रोग, अज्ञान अन्धेरा दए चुकाईआ। चिन्ता ग़म रहे ना सोग, सुरती शब्द विच समाईआ। जन भगतां बख्श आपणी ओट, ओड़क आपणे घर वसाईआ। जिथ्थे प्रकाश निर्मल जोत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच महबूब तेरे नाल होवां मोहत, धार इक्को इक बंधाईआ। आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा आदि जुगादी सच दी गोत, गौतम गुर गुर दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त दो जहानां तेरी ओट, निओटयां ओट देणी बणाईआ।

१५५ २१

❋ २४ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड मलक कैंप ज़िला जम्मू पूरन सिँघ दे गृह ❋

विष्नूं कहे मैं वेखी चोटी, जिथ्थे चोटी मुन्नी नज़र कोए ना आईआ। इक्को प्रकाश अगम्मी गोती, गोतां वाली वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को नाम कलाम सलोकी, सोहला सच सुणाईआ। इक्को मंज़ल चढ़नी दिसी औखी, अगला पन्ध ना कोए चुकाईआ। पुरख अकाल इशारा रमज़ दिती सौखी, सहज नाल दृढ़ाईआ। खेल वखा कोटन कोटी, कोटन कोटां तों बाहर कुटीआ इक वड्याईआ। फेर वखाई अगम्म दी रोटी, हिस्सा मेरा मेरी झोली पाईआ। मैंनूं सब कुछ प्या समझ

अग्गे पिच्छे दी आई सोझी, सुध शुद्ध दिती कराईआ। मैं प्रेम प्यार अंदर गया रुझ, आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। विष्नूं कहे मैं तक्क तकवे वाला प्रकाश, तकवा ल्या बन्हाईआ। रख आपणी आस, आसा आसा विच रखाईआ। हो के सेवक दास, सीस जगदीश झुकाईआ। पुरख अकाला वेख्या पास, साथी धुरदरगाहीआ। मेरा सिर दब्ब के वखा दिते अनक आकाश, कण किणका नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी दा दस्सया ग्रास, धीरज धरवास नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मैं वेख जोत अगम्मी चमक, दमक विच गया समझाईआ। मैनूं नज़री आया पुरख अकाल दा सम्मत, जो समें रिहा बदलाईआ। लेखा मुकाउँदा दिस्सया अहिमक, सहिमत आपणे नाल कराईआ। जुग चौकड़ी वेखण लग्गा मेहनत, मेहरवान दया कमाईआ। बुद्धी अविष्कार वेखे ज़हनीअत, दिमाग़ जेहन खोज खुजाईआ। शब्द इशारा कर के सैनत, सीमा तों पार रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा धुरदरगाहीआ। विष्नूं कहे मैं वेख्या परम पुरख बणाउँदा माटो, मैटीरीअल नज़र कोए ना आईआ। वंड करदा दिवस रातो, हुक्म आपणा इक जणाईआ। खेल वखा धुर दा साचो, सच रिहा दृढ़ाईआ। हौली जिही ला इक तमाचो, मेरी सुरती दिती खुल्हाईआ। फेर गुस्से विच किहा तूं मेरा मैं तेरा ढोला आखो, अठ्ठे पहर भुल्ल कदे ना जाईआ। इस दे विच्चों मेरी असलीअत वाचो, वाचक हो के दयां जणाईआ। राह तक्को लोकमातो, मता इक्को इक पकाईआ। मेरे नाम दी दस्सणी गाथो, गहर गम्भीर दृढ़ाईआ। हुक्म अंदर जुग चौकड़ी नाठो, भज्जो वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। विष्नूं कहे मैं निरगुण जोत वेख्या मलाह, बेड़ा धुर दा कंध उठाईआ। बच्चयां वांग दए सलाह, सहज सहज समझाईआ। शहादत वाले बणा दे गवाह, अन्त हुक्म नाल भुगताईआ। रहिबर बण वखाया राह, निशाना इक्को इक दृढ़ाईआ। मेरे नूर दा नूर होवे खुदा, खुदा खुद आपणा हुक्म वरताईआ। तुसां हुंदे रहिणा फ़िदा, सेवक सेवक सेवा विच समाईआ। मेरी बदलदी रहे अदा, जुग चौकड़ी वंड वंडाईआ। तुसां सुणदे रहिणा सदा, सद आपणा हुक्म वरताईआ। मन्नदे रहिणा रज़ा, सिर सके ना कोए उठाईआ। तुसीं मेरे निक्के निक्के अजज़ा, हिस्से आपणे लए प्रगटाईआ। जिस दी समझे ना कोई वजह, वजूहात ना कोए दृढ़ाईआ। मैं सब दा इक्को अब्बा, आलमीन नूर खुदाईआ। वेख्यो तुहानूं लग्ग ना जाए किते धब्बा, पापां मैल धुआईआ। तुहाडा बन्द ना होवे डब्बा, इक्को रंग चढ़ाईआ। तुसां सेवा करनी सदा, नित नवित्त सीस झुकाईआ। तुहाडी बदल देवां तबा, तबीअत विच करां सफ़ाईआ। सदा मगर रहे लग्गा, हुक्मी हुक्म हुक्म दृढ़ाईआ। विष्नूं जिस वेले निरगुण जोत

कलयुग आवां भज्जा, आपणा पन्ध मुकाईआ। ओस वेले तेरे तन दा होवे झग्गा, ओढ़ुन नज़र कोए ना आईआ। इक्को नाम दा वज्जे डग्गा, डंडावत सब नूं दयां दृढ़ाईआ। किसे दी क़ीमत रहे ना टका, टका रविदास दा लेखे पाईआ। दीन दुनी मिले विच घट्टा, घाटी चढ़न कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लेखा मुके पटा, पटेदारी दए तुड़ाईआ। साचे नाम दा ला के ठप्पा, मोहर इक्को इक वखाईआ। चार जुग दे अक्खरां नालों इक्को लेखे लग्गे पप्पा, जिस पप्पे विच्चों पूरन पूरन विच समाईआ। एह वी विष्नूं तेरी इच्छा, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। मेरी सांभ के रख भिच्छा, चार जुग हथ्थ ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, धुर फ़रमान दी देवां सिखा, सिख्या विच आपणा हुक्म सुणाईआ।

✻ २४ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड दड़ ज़िला जम्मू प्रकाश सिंघ दे गृह ✻

विष्नूं कहे मैनूं दिती प्रभ ने थापी, हथ्थ पुश्त पनाह टिकाईआ। बण के वड प्रतापी, प्रताप आपणा दिता दरसाईआ। इक रमज़ अगम्मी आखी, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। तूं मेरा बणया छोटा जिहा साथी, सगला संग निभाईआ। जुग चौकड़ी वरताउँदा रहें भाती, भण्डारा बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां बणदा रहें साकी, साचा संग रखाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त होई अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी मन्ने कोए ना आखी, साचा धर्म ना कोए कमाईआ। झगड़ा पै जाए तन वजूद माटी ख़ाकी, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। सति धर्म नज़र ना आए साख्याती, जूठ झूठ वज्जे वधाईआ। धरनी धरत धवल रोवे लोकमाती, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। लख चुरासी अन्तर आई उदासी, सच्ची खुशी ना कोए प्रगटाईआ। धर्म दा रहे ना कोए पाठी, पूजा सच ना कोए कराईआ। पवित्र रहे ना तीर्थ ताटी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दए दुहाईआ। साचा नाम मिले किसे ना हाटी, वणजारा वणज ना कोए कराईआ। कलयुग खेल होवे बाज़ीगर नाटी, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। मंज़ल हक़ीक़ी चढ़े कोए ना घाटी, साचा पन्ध ना कोए मुकाईआ। आत्म सेजा सोहे कोए ना खाटी, सिंघासण सच ना कोए वड्याईआ। दुरमति मैल जाए ना काटी, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। आवण जावण मुके ना वाटी, लख चुरासी पैंडा ना कोए मुकाईआ। आत्म परमात्म बणे कोए ना साथी, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। ओस वेले मेरा वेखणा खेल तमाशी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रिहा वखाईआ। निरगुण नूर जोत हो के आवां पुरख अबिनाशी, धुर दी करनी कार कमाईआ। सच भगत बणा जमाती,

पट्टी इक्को नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका साचा देवणहारा वर, सच सुल्तान रिहा सुणाईआ। विष्नूं कहे मेरी निमस्कार, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। मैं जुग जुग सेवादार, नित नित सेव कमाईआ। तेरा बरदा बरखुरदार, बच्चा नन्हा नज़री आईआ। तूं साहिब मेरा सिक्दार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। मैं वेखां जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे चरण कँवल जावां बलिहार, निउँ निउँ लागां पाईंआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच करना प्यार, धुर दा साथी हो के संग निभाईआ। ओस वेले मैनूं करीं ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। मैं तक्कां तेरा दीदार, नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। पुरख अबिनाशी हस्स के किहा मेरी चरण धूढ़ लै छार, मस्तक टिक्का इक लगाईआ। जिस वेले निरगुण नूर निरवैर निराकार निरँकार हो के लवां अवतार, जोती जामा वेस वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ भगतां दस्स जैकार, दोहां मेला सहज सुभाईआ। ओस वेले तेरा लहिणा देणा क़र्ज़ देवां उतार, मैं मालक ते तूं ख़िदमतगार, ख़ादम आपणा रंग रंगाईआ। शहिनशाह बण दो जहानां सिक्दार, नाम निधाना बोल जैकार, जै जैकार आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। विष्नूं किहा मेरे जगदीश, तेरी बेपरवाहीआ। मैं तेरा पीसण लवां पीस, चाकर हो के सीस निवाईआ। तेरी सुण सच हदीस, हिरदे अन्तर वसाईआ। मैं वेखणा चौहदां किस बिध छत्र झुल्ले तेरे सीस, सच दुआर वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल किहा तूं इक्को मनसा रखीं उडीक, आपणी आस बणाईआ। जिस वेले मैं सब दी बदल देणी तवारीख़, तारीख़ आपणी दयां समझाईआ। आपणे नाल तेरे नाम दी होवे बख़्शीश, बख़्शिश तेरी झोली पाईआ। जिथ्थे परमात्मा आत्मा दा होवे गीत, ओथे विष्नूं भगवान तेरा मीत, इक्को डोरी तन्द बंधाईआ। शहिनशाह बण साहिब अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। कलयुग अन्तर सतिजुग धर्म धार दी बदल के रीत, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, जन भगतां काया काअबा धुर दा मन्दिर इक सुहाईआ। जिथ्थे बैठा रहां अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। एहो खेल होणा बीस बीस, हरि जगदीश धार चलाए इक्कीस, एकँकार आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि लेखा जाणे लहिणा वेखे जो पिच्छे गया बीत, अग्गे आपणा हुक्म हुक्म विच चलाईआ।

✻ २४ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड दड़ ज़िला जम्मू ईशर सिँघ दे गृह ✻

विष्नूं वेख आपणा भाग, भगवन दिता बणाईआ। जिथ्थे आत्मा परमात्मा दा जगे चराग़, निरगुण जोत होवे रुशनाईआ। ओथे तेरा मेरा बणया साक, सज्जण इक अख्वाईआ। झगड़ा रिहा ना ज़ात पात, दीन मज़हब ना वंड वंडाईआ। सति धर्म दा खोल्हणा ताक, परदा इक उठाईआ। पूरा करना भविख्त वाक्, सब दा लहिणा झोली पाईआ। आपणी बख्श के धूढ़ी ख़ाक, चरण कँवल सरनाईआ। मंज़ल चढ़ा अगम्मी वाट, पैंडा पन्ध मुकाईआ। सच दुआर कर निवास, घर इक्को इक सुहाईआ। जिथ्थे सदा रहे प्रकाश, दिवस रैण ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी पूरी करे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। विष्नूं वेख तेरा लहिणा, लहिणेदार झोली पाईआ। जिथ्थे आत्मा परमात्मा मिल के रहिणा, ओथे तैनूं मिले वड्याईआ। जिथ्थे भगत भगवान इक दूजे नूं कहिणा, ढोला तेरे नाल मिलाईआ। जिस दा लेखा लिख सक्कया ना कोई शास्त्र विच रमायणा, ज्ञान विच गुणवन्त ना कोए समझाईआ। सो खेल वखावे नेत्र नैणां, लोचन लोइन आप खुल्हाईआ। तीजा रहे ना कोई तरफ़ैणा, दो इक विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि दर घर साचे दए वड्याईआ। विष्नूं वेख आपणी खुशी, खुशामंद मेरे नाल नज़री आईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म दी लग्गी रुची, मेला सहज सुभाईआ। ओथे तूं वी होयों मुक्खी, वड्याई देवे धुरदरगाहीआ। जिथ्थे आत्मा परमात्मा लेखा दो तुकी, एकँकार आपणे रंग रंगाईआ। ओथे तूं वी झुकीं, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मंज़ल पन्ध अख़ीरी सब दी मुकी, गुर अवतार पैगम्बर देण दुहाईआ। जन भगतां आत्मा ओथे सुत्ती, सवाधान देणी कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जन्म दा लहिणा देणा सब नूं रिहा पुच्छी, पूरब दा पिछला पिछले तों अगला नाल मिलाईआ।

✻ २४ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड दड़ ज़िला जम्मू प्रताप सिँघ दे गृह ✻

विष्नूं कहे मेरे समरथ, साहिब तेरी सरनाईआ। तेरी महिमा मेरा जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। तूं परमात्मा आत्मा तेरा रस, रस्ता इक्को दिता वखाईआ। चौथे जुग कर इक्ठ, आप आपणा जोड़ जुड़ाईआ। अग्गे मार्ग ला सच, सच देणा दरसाईआ। भाग लग्गे काया माटी कच्च, जन भगत वज्जे वधाईआ। तीर अणयाला मारना कस, तिक्खी मुक्खी धार उठाईआ। जगत विकारा होवे भट्ठ, अगनी तत बुझाईआ। अमृत रस देणा झट्ट, झिरना इक झिराईआ। जैकारा बोल

अलख, अलख अगोचर परदा देणा उठाईआ। तेरा नूर नज़र आए प्रतख, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। तेरा तैथों रहे कोई ना वक्ख, अड्डरा राह ना कोए चलाईआ। तेरा फ़रमाना सुणया यक्क, मेरी आसा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म नाम अग्गे चलणा अवष्श, अवश्क्कता अग्गे रहिण कोए ना पाईआ।

❊ २४ चेत शहिनशाही सम्मत ४ बख्शी नगर जम्मू शिव सिँघ दे गृह ❊

विष्नूं कहे प्रभ तेरे मेरे नाम दी पई गंढु, गंढुणहार गोपाल सुआमी तेरी बेपरवाहीआ। मैं वेख हैरान होया दंग, परेशानी विच तेरा ध्यान लगाईआ। झट सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गया लँघ, चौकड़ी आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जोत धार वेख सचखण्ड, तेरे तेरे विच समाईआ। दो जहानां बिन सरवण सुणी डंड, कूक कूक दुहाईआ। जां निगाह मारी जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। सृष्टी दृष्टी होई नंग, परदा सके ना कोए पाईआ। साहिब सुआमी अन्तरजामी क्यों दिती कंड, करवट विच अपणा मुख भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा
१६० वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। विष्नूं कहे मेरे प्रीतम प्यारे पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। सति सतिवादी साचा १६०
२१ दस्स अगम्म धर्म, धरनी धरत धवल मिले वड्याईआ। कूड़ी क्रिया जगत जिज्ञासू मेट कुकर्म, निहकरमी आपणा कर्म कमाईआ। २१
चार वरन अठारां बरन निरगुण धार बख्श आपणी शरन, सरनगति इक्को इक जणाईआ। दो जहान मर्द मर्दान नौजवान परसण तेरे चरण, चरण चरणोदक आपणा अनरस दे चखाईआ। तेरी मेहर मुहब्बत अंदर निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका ढोला पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। तेरी मंज़ल अन्तर निरंतर हक़ीक़त वाली हक़ीक़ी चढ़न, नाअरा हक़ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वज्जे वधाईआ। विष्नूं कहे मेरे साहिब सतिगुरु पुरख अकाल दयानिध, दीन दयाल तेरी वड्याईआ। निरगुण धार कारज कर सिद्व, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। नव नौ चार दस्स आपणी बिध, बदला मुके कूड़ लोकाईआ। आत्मा परमात्मा सब दी नाम अणिआले तीर नाल विध, ब्रह्म विद्या इक समझाईआ। साचा मार्ग दस्स सिध्ध, साध साधक तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडा इक वखाईआ। घर ठांडा दस्स दे आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। नाम संदेसा दे साच, सच सच विच्चों प्रगटाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, रैण सुहञ्जणी सोभा पाईआ। सति सच कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा

दे गवाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर गए आख, आख़र मंज़ल सब दी वेख वखाईआ। मनुआ रहे ना कोए गुस्ताख़, ममता मोह दे मिटाईआ। सच दुआर खोल्ह के ताक, परदा परदानशीं दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे बिन सजदयां कर आदाब, अदब विच सीस जगदीश झुकाईआ। विष्नूं कहे मेरे शहिनशाह स्वामी, परवरदिगार तेरी वड्याईआ। घट निवासी अन्तरजामी, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। चार जुग दी शहादत तेरी बाणी, बणीआं वाले हट्ट रही चलाईआ। तेरा खेल दिसे दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान आपणी कर मेहरवानी, महबूब मुहब्बत विच हो सहाईआ। जन भगतां मंज़ल दे इक रुहानी, रूह बुत आपणे रंग रंगाईआ। तेरा दरस धुर दी मंज़ल पद निरबाणी, निराकार तेरी वड्याईआ। तूं लख चुरासी जाण जाणी, घट घट वेखें थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा निरगुण नूर जोत महानी, जोती जाते पुरख बिधाते आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त एका एक एकँकारा सोभा पाईआ।

❊ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ४ बख्शी नगर जम्मू तेज भान दे गृह ❊

विष्नूं भगवान धर्म धार दा संग, हरि संगी संग बणाईआ। सति सच शब्द नाम वजाए मृदँग, मर्दानगी इक वखाईआ। धुर धाम दस्से अनन्द, सुख सागर रूप वटाईआ। निराकार प्रकाश नूर चन्द, अन्ध अन्धेर गवाईआ। विकार हँकार करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। जन भगतां आत्म परमात्म मेला टुट्टी जाए गंढ, शब्द डोरी धुर दा तन्द जुड़ाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार निराकार लाए अंग, अंगीकार मेला मेले सहज सुभाईआ। कूड़ कुड़िआरिआं रहे ना कोए पाबन्द, पाबन्दी आपणा हुक्म समझाईआ। आसा मनसा पूरी कर मँग, दात दातार इक वरताईआ। सच दुआर एकँकार धुर दा लँघ, पैंडा पिछला पन्ध चुकाईआ। कर खेल सूरा सरबंग, सति स्वामी परदा लाहीआ। जगत विकार दे के डंन, डंका इक्को इक शनवाईआ। सवाधान कर के कन्न, सरवणां समझ समझाईआ। कल्पणा कूड़ कढुके मन, ममता पुरख अकाल वधाईआ। जगत नईआ नौका बेड़ा बन्न्ह, सईआ साहिब आपे रिहा चलाईआ। लेखा जाण काया माटी तन, तत वेता खोज खुजाईआ। रूप दरसा के ब्रह्म हं, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याईआ। मेट के कूड़ी तृष्ना तम, तामस तमआ विच्चों बाहर कढाईआ। भाग लगा के काया चम्म, माटी हाटी वज्जे वधाईआ। भेव खुल्ह के पवण स्वास दम, दामनगीर हो

के दया कमाईआ। चिन्ता मेट के कूड़ा ग़म, रोग सोग डेरा ढाहीआ। जुग चौकड़ी करनहारा आपणा कम्म, काम क्रोध लोभ मोह हँकार लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप चढ़ाईआ। विष्नूं भगवान एका धार, इक इक्क नाल जणाईआ। इक दा मेला इक दुआर, इक इक्क घर वज्जे वधाईआ। इक दा साहिब इक सिक्दार, इक इक्क हुक्म मनाईआ। इक इक्क दा देवणहार, झोली इक इक्क भराईआ। इक इक्क दा दरवेश भिखार, इक इक्क दा लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। इक इक्क दा वणज व्यपार, इक इक्क दए कराईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सति सच कर प्यार, प्रेम प्रीती परम पुरख निभाईआ। विष्नूं भगवान नाल होया उज्यार, मुरीद मुर्शद मिल के वज्जे वधाईआ। भगत भगवन्त इक अधार, सहारा इक्को इक समझाईआ। लहिणा देणा सब दा दए निवार, लेखा पूरब झोली पाईआ। विष्नूं भगवान आत्म परमात्म दा इक जैकार, जै जै कार धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दो चार दा सांझा कर प्यार, इक दो दा रूप आप निरँकार, दो इक नज़र आए विच संसार, संसारी भण्डारी हुक्मे अंदर सीस निवाईआ।

१६२ २१

❋ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड पंज ढेरा ज़िला हुश्यिारपुर करतार सिंघ दे गृह ❋

सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सां भेव अवल्ला, आदि जुगादी दया कमाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी करे खेल इक इकल्ला, एकँकार परवरदिगारा धुरदरगाहीआ। सच दुआरा अगम्म अपारा वस्से इक महल्ला, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना इक अखवाईआ। जिस गृह दीपक जोत निरगुण धार इक्को बला, अज्ञान अन्धेरा नज़र कोए ना आईआ। मन कल्पणा दूई द्वैत रहे ना कोए सला, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। भेव खुल्हाए दया कमाए जला थला, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत पैंडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुआमी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी करनी दा करता क़ुदरत दा मालक आपणी दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेखां खेल सूरबीर सुल्ताना, हरि वड्डा वड वड्याईआ। लेखा जाणे एथे ओथे दो जहानां, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी कार कमाईआ। नव नौ चार निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भेव अभेद खोल्हे आप महाना, परदा ओहला बण विचोला सति सतिवादी आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा एकँकारा इक्को इक दृढ़ाईआ। शब्द गुरु कहे मैं दस्सां सच सति सतिवाद, धुर दी धार इक दृढ़ाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश,

अबिनाशी करता वड वड्याईआ। जो लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल खोज खुजाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरी करे आस, गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी जीव जंत तन वजूद माटी ख़ाकी पावणहारा सार, महासार्थी आपणी कार कमाईआ। सो साहिब सुल्ताना नौजुआना मर्द मर्दाना जोती जाता पुरख बिधाता हो उज्यार, चार वरन अठारां बरन वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेस नर नरेश इक इकल्ला आप दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं दस्सां धुर फ़रमाना, संदेसा बेपरवाहीआ। पुरख अकाल दा सब नूं मन्नणा पैणा भाणा, गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे विच जहाना, सतिजुग साचा सति सच करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म परदा लाहे गुण निधाना, अन्ध अंध्यार रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा लख चुरासी जीव जंत गावण गाणा, गा गा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा एकँकारा इक इकल्ला दो जहानां इक वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं प्रभ दी दस्सणी साची रीत, रीतीवान दया कमाईआ। त्रैगुण माया कर अतीत, त्रैभवन धनी देणा मिलाईआ। जन भगतां काया माटी कर के ठांडी सीत, अगनी तत देणा बुझाईआ। काया काअबा वखा के हक़ मसीत, मसला इक्को इक दृढ़ाईआ। दूर दुराडा नज़री आए इक नज़दीक, नेरन नेरा हो के पन्ध दए चुकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादी शब्द अनादी धुर दा मीत, मित्र प्यारा सच दुआरा इक्को सोभा पाईआ। लहिणा देणा चुकाए हस्त कीट, आपणा खेल करे अनडीठ, जग नेत्र जीव जहान वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा विच संसार एकँकार इक्को इक प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं लहिणा देणा जाणां जुग, जुग चौकड़ी वेखां ध्यान लगाईआ। निरगुण धारों आपे उठ, नूरी नूर करां रुशनाईआ। कलयुग कूड़ अन्धेरा मेटां घुप, रैण अन्ध रहिण ना पाईआ। गुरमुख वेखां प्रभ दे दुलारे सुत, अपराधी अंग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे अबिनाशी अचुत, चार वरन अठारां बरन पर्दा दए उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं देणा अगम्म होका, हुक्म प्रभ दा देणा जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत निरगुण धार मिलण दा मौका, सरगुण मिल के वज्जे वधाईआ। इक्को पुरख अकाल इक्को ओटा, जो ओड़क सब दा पिता माईआ। जिस दा प्रकाश निर्मल जोता, घर घर करे रुशनाईआ। जो भेव खुल्हाए चौदां लोका, चौदां तबकां डेरा ढाहीआ। जिस दा नाम धर्म सलोका, सोहले ढोले राग नाद सिफ्तां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सतिगुर

शब्द कहे मैं वेखां खेल अपारा, अपरम्पर सुआमी आप वखाईआ। लहिणा देणा जाण गुर अवतारा, पैगम्बरां परदा रिहा उठाईआ। सदी चौधवीं लहिणा देणा जाणे विच संसारा, सदीवी भुल्ल रहे ना राईआ। करनी दा करता धुर दा मालक क़दीम दा क़ादर करनी दे करनेहारा, कायनात दा मालक इक अख्वाईआ। जिस दा संदेसा देंदे आए विच संसारा, सो जोती नूर कर उज्यारा, दृष्टी सृष्टी पाए सारा, सार्थी आपणी कार कमाईआ। जोती जाता हो उज्यारा, वरन गोती वस्से बाहरा, कोटन कोटां कर उज्यारा, जन भगतां देवणहार सहारा, बख्शणहारा चरण दुआरा, चरण चरणोधक इक्को जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त श्री भगवन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलाए अगम्म अपारा, अलख अगोचर अगम्म अथाह, सृष्टी दृष्टी अंदर दस्से इक्को राह, जोती शब्दी बण मलाह, खेवट खेटा नईआ नौका नाउँ निरँकारा इक्को इक चलाईआ।

✻ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड पंज ढेरा ज़िला हुश्यिारपुर हज़ारा सिंघ दे गृह ✻

पुरख अकाल कहे शब्दी धार गोबिन्द वेख जल्दी, चार कुण्ट दह दिशा ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया नौ खण्ड पृथमी अग्ग बलदी, सांतक सति ना कोए कराईआ। हालत वेख जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत जल थल दी, मईअल महीप खोज खुजाईआ। माया ममता सब नूं फिरे छलदी, घर घर वेसवा नाच नचाईआ। की खेल वरते कलयुग कल दी, कल कल्की दया कमाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, पलकां दे पिच्छे प्रभ नज़र किसे ना आईआ। सच सिंघासण पुरख अबिनाशण निरगुण धार आत्म कोए ना मलदी, सच दुआरे सोभा कोए ना पाईआ। वेख लहर काम क्रोध लोभ मोह हँकार कूड़े दल दी, जगत दलिद्री कीती लोकाईआ। किसे सार ना पाई निहचल धाम अटल दी, हक़ीक़ी मंज़ल हक़ ना कोए समझाईआ। दूई द्वैत सब नूं अंदरों सल्लदी, कूड़ कुड़िआरा तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। शब्दी धार गोबिन्द वेख दीन दुनी दा हाल, बेहाल दिसे लोकाईआ। अमृत सोहे कोए ना ताल, धुर दा रस नज़र कोए ना आईआ। सब दे सिर ते कूके काल, कलयुग कूड़ कुड़िआरा डौरु डंक वजाईआ। धर्म रिहा ना किसे धर्मसाल, धर्म दुआरा सोभा कोए ना पाईआ। त्रैगुण माया जाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होई कंगाल, धुर दा नाम धन दौलत वणज ना कोए कराईआ। जा के वेख

मुरीदां हाल, मुर्शद हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा रिहा सुणाईआ। शब्दी धार गोबिन्द सूरे, परम पुरख दए समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरब लहिणे होए पूरे, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। इक्को कर प्रकाश अगम्मी नूरे, अन्ध अज्ञान अन्धेरा दए चुकाईआ। कलयुग क्रिया मेटे कूड़े, सति सच डगमगाईआ। जन भगतां बख़्श अगम्मी धूढ़े, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ । चतुर सुघड़ बणन मूर्ख मूढ़े, मेहर नज़र देणी टिकाईआ। गुरमुखां रंग चाढ़्ना गूढ़े, एथे ओथे दो जहान उतर कदे ना जाईआ। नाम अगम्मी देणे तूरे, तुरिया तों परे परदा ओहला देणा चुकाईआ। पन्ध रहे ना नेड़ दूरे, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। हुक्म देवे समरथ पुरख सर्ब कला भरपूरे, सति सतिवादी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। शब्दी धार गोबिन्द सृष्टी दृष्टी वेख बुध्ध, मन मति रही कुरलाईआ। निर्मल रही ना किसे सुध, शुद्ध आत्मा ना कोए जणाईआ। जगत विकार विच गए रुझ, अन्तश्करन ना कोए सफ़ाईआ। कूड़ी दृष्टी गए लुझ, इष्टी नज़र कोए ना आईआ। चार वरन भरया दु:ख, सुख सच ना कोए कमाईआ। सुफल करे ना कोए जननी कुख, भगत भगवान मिल के वज्जे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दी ओट, मेहर नज़र इक उठाईआ। शब्दी धार गोबिन्द वेख तन वजूद माटी ख़ाकी, ख़ालक ख़लक फोल फुलाईआ। धुर दा मिले ना कोए साथी, सगला संग ना कोए वखाईआ। काया अंदर सब दे अन्धेरी राती, निरगुण नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। अमृत देवे ना कोए बूँद स्वांती, निझर रस ना कोए झिराईआ। शब्द नाद सुणे ना कोई धुन अनहद नादी, अगम्मी आवाज़ ना कोए सुणाईआ। मनुआ सब दा होया बाग़ी, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। जगत झगड़ा मुल्ला शेख़ पंडत क़ाज़ी, शरअ शरीअत विच दुहाईआ । सच दुआरा एकँकारा बणे कोए ना दासी, धुर दी सेवा सच ना कोए कमाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां भविख्तां विच बाणी आखी, आख़र ओह पूरी देणी कराईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर पूरी करे वाटी, पैंडा पन्ध मुकाईआ । लेखा जाणे शाह पातशाह शहिनशाह धुर दा कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। गोबिन्द शब्द शब्द गोबिन्द निरगुण निरगुण निरगुण साथी, निराकार निराकार निराकार विच समाईआ। परम पुरख आत्मा परमात्मा बणावे आपणा हक़ समाजी, समाज दा रिवाज इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साची मंज़ल दस्से जिथ्थे इश्क ना हक़ीक़ी ना मजाज़ी, मुहब्बत करन वाला तन वजूद ख़ाकी काया माटी चम्म दृष्टी नज़र कोए ना आईआ।

१६६ २१

✲ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ४ पिंड गालड़ी ज़िला हुशियारपुर राम सिँघ दे गृह ✲

धरनी कहे मैं आशावन्ती, नित नित आस रखाईआ। सच स्वामी सुणी बेनन्ती, घिर घिर दया कमाईआ। चाढ़या रंग बसन्ती, सिर सिर रूप महकाईआ। सुणाई अगम्मी पंगती, थिर थिर वज्जी वधाईआ। लेखा वेख्या सनदी, सति सति वड्याईआ। धार वखाई अगम्मे चन्न दी, चन्न चन्न कर रुशनाईआ। घड़ी मिटी चिन्ता ग़म दी, सुख सुख विच्चों बदलाईआ। धार प्रगटाई पारब्रह्म दी, ब्रह्म परदा आप चुकाईआ। लहर वेखां सच धर्म दी, परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाईआ। एह खेल ओस अगम्म दी, जो अगम्म अथाह बेपरवाह अख्वाईआ। वड्याई रही ना किसे मन दी, कल ममता मोह मिटाईआ। धरनी कहे मैं नेत्र नीर आपणा थंमदी, अन्तर अन्तर बल प्रगटाईआ। धुर फ़रमाना इक्को मन्नदी, मनसा विच सीस निवाईआ। जेहड़ी धार कदे नहीं जम्मदी, जोत नूर करे रुशनाईआ। भुक्खी नहीं लालच तम दी, तृष्ना ना कोए वधाईआ। सदा प्यास जन भगत पिरम दी, प्रेम प्रीती विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुलाईआ। धरनी कहे मैं वेखां हरि निरँकारा, निराकार सोभा पाईआ। जिस दा आदि इक दरबारा, अन्त इक्को इक सुहाईआ। तख़त निवासी बण सिक्दारा, हुक्मी हुक्म चलाईआ । शाहो भूप शाह पातशाह होए उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। चार कुण्ट दह दिशा चौथे जुग दए सहारा, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां दे के इक अधारा, जगत तृष्ना रिहा मिटाईआ। धरनी कहे मेरा भाग मथारा, मिथ्या छड्डां लोकाईआ । मूर्ख मुगध रहे ना कोए विच संसारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूपी जोत सिक्दारा, हुक्मे अंदर हुक्म करे वरतारा, वारता इबारतां विच जणाईआ।

✲ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ४ तलवाड़ा जुगिंदर सिँघ बग्गा दे गृह ✲

सूई नक्के धार विच्चों जो लँघदा, मंज़ल बामंज़ल पन्ध मुकाईआ। सो खेल वेखे सूरे सरबंग दा, दर ठांडे वज्जे वधाईआ। जिथ्थे प्रकाश नहीं सूरज चन्द दा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तख़त वेखे सूरे सरबंग दा, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर ओथे मँगदा, दर ठांडे झोली डाहीआ। प्रेम प्रीती अन्तर निरंतर हो के रंगदा, रंग अगम्म चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सूई नक्का जो दिसे जगत बारीक, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। एह जगत शहादत करे तसदीक़, हुक्म इक दृढ़ाईआ। जिन्हां मिलणा

लाशरीक, परवरदिगार बेपरवाहीआ। परम पुरख दी रखणी उम्मीद, आसा तृष्ना विच वधाईआ। उन्हां बख्शे हक़ तौफीक़, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। सूई नक्का धार निक्की, निहकरमी आप जणाइंदा। जिस दे विच गोबिन्द दस्सी सिक्खी, सिख्या अगम्म अथाह दृढ़ांइंदा। उहदी पट्टी जाए ना लिखी, कातब क़लम ना कोए उठाइंदा। समझ ना आवे मिती, वार थित ना वंड वंडाइंदा। जिस नाल लख चुरासी जावे जित्ती, जन्म मरन गेड़ मुकाइंदा। नंगी होवे ना पिट्ठी, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाइंदा। नाम निधान मिले अगम्मी चिट्ठी, धुर संदेसा फ़रमाना इक दृढ़ांइंदा। जिस नूं समझे कोए ना मुनी ऋषी, रखीशरां हथ्थ कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। सूई नक्का जे कोई जाणे जगत, जगजीवण दाता दए दृढ़ाईआ। सो सन्त सुहेला बणे धुर दा भगत, भगवन मेला सहज सुभाईआ। झगड़ा मुके बूंद रक्त, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। खेल वेखे उपर अर्श, फ़र्श पैंडा कूड़ मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा, इक्को इक सुणाईआ। सूई नक्का कहे मैं बलिहारी, वारी घोली घोल घुमाईआ। जिन्हां परम पुरख मिल्या नर निरँकारी, नर नरायण सच्चा शहिनशाहीआ। मानस जन्म पैज जाए संवारी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अंदरों कढ्ढे बीमारी, माया ममता ना कोए चुकाईआ। जगत दुआरे पार उतारी, सुखमन टेडी बंक पन्ध मुकाईआ। अमृत रस देवे ठंडा ठारी, बूंद स्वांती इक टपकाईआ। शब्द अनहद नाद जणाए धुर दी धुन्कारी, अनरागी राग सुणाईआ। निरगुण जोत बिन वरन गोत करे उज्यारी, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। आत्म सेजा सच सिंघासण वेखे आपणी धारी, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। भगत सुहेला इक अकेला साजण मीता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सूई नक्का कहे सुणो धुर संदेस, सच दयां दृढ़ाईआ। जिस ने बदलणी आपणी रेख, लेखा लहिणा चुकाईआ। ओह इष्ट मन्नो एक, दृष्ट विच समाईआ। आपा कर के भेंट, माया ममता मोह चुकाईआ। पुरख अकाला वेखो खेवट खेट, बेड़ा दो जहानां आपणे कन्ध उठाईआ। जो दो जहानां लै के जाए आपणे देस, सच दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी आपणे रंग रंगाईआ। सूई नक्का कहे मैं दस्सां बात अनोखी, धुर दी धार जणाईआ। जिन्हां मिलणा प्रभ दी जोती, जोत जोत रुशनाईआ। उन्हां झगड़ा मुके वरन गोती, दीन मज़हब ना कोए लड़ाईआ। ओह चढ़ गए ओस चोटी, जिथ्थे मन चोटा रहिण ना पाईआ। अन्तर वासना रहे ना खोटी, सच सुगंधी दए भराईआ। ओह

एका गावण सलोकी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला धुरदरगाहीआ। उन्हां झगड़ा मुक जाए रसना जिह्वा पढ़ना पोथी, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंज़ल रहिण ना देवे कोई औखी, सच दुआरा इक सुहाईआ। सूई नक्का कहे मैं देवां सच संदेसा, चार वरन उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मन्नो इक नरेशा, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी आत्म परमात्म करे हेता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। वसणहारा सचखण्ड दुआरे धुर दे देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। भगत उधारना पैज सुआरना जिस दा पेशा, पच्छिम दक्खण वेखे थाउँ थाईंआ। चरण कँवल प्रीती देवे अगम्मी टेका, टिक्के मस्तक धूढ़ी नाम रमाईआ। निरंतर अन्तर करे बुध्ध बिबेका, मन कल्पणा बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, दर घर ठांडा इक प्रगटाईआ। सूई नक्का कहे मैं कोई काया लावां कटाक्ष, कटड़ा इक सुहाईआ। जन भगतां अन्तर मनुआ रूप धरे ना राक्ष, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। अगनी तत बुझावां आतश, मेहर मेघ बरसाईआ। कल्पणा रहे कोए ना साज़श, झगड़ा कूड़ ना कोए वड्याईआ। निरंतर बदलां प्रेम दी आदत, सच सच जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सच इबारत, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी मेला सहज सुभाईआ। सच प्रीती बख्श धुर निआमत, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सूई नक्का कहे मैं दस्सां हक़ तलीम, तुआरफ़ बेपरवाहीआ। जो मालक ख़ालक प्रितपालक आलीशान अज़ीम, अर्श फ़र्श सोभा पाईआ। सो लेखा जाणे जुग चौकड़ी क़दीम, क़ुदरत दा मालक धुरदरगाहीआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कीती तक्सीम, हिस्से बंधना विच बंधाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सदी चौधवीं करन आया तरमीम, धुर फ़रमाना हुक्म इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी धार इक जणाईआ। सूई नक्का कहे मैं दस्सणा की जोग, जुगती दयां दृढ़ाईआ। आत्म रस साचा भोगो भोग, नाता तुट्टे कूड़ लोकाईआ। घर स्वामी वेखो निरगुण जोत, निराकार डगमगाईआ। जो सब दी मेटे चिन्ता सोग, हरख ग़म ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म दस्से मौज, मुहब्बत विच मेला लए मिलाईआ। सोवत जागत दर्शन करे रोज़, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। बाहरों करनी पए ना खोज, दर ठांडे मिल के वज्जे वधाईआ। ओस प्रभू दा साचा चोज, चुगली निन्दिआ विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। कदे होण ना देवे विजोग, विछड़यां लए मिलाईआ। सद दे के दरस अमोघ, प्रतख रूप गुसाईंआ। झगड़ा मुका के लोक परलोक, आवण जावण गेड़ कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सूई नक्का कहे मैं उठावां सुत्ते, सोई सुरत

जगाईआ। वेखो खेल अबिनाशी अचुते, पारब्रह्म प्रभ परदा रिहा उठाईआ। जिस दा नूर कदे ना मिटे, निरगुण धार डगमगाईआ। सो भगत सुहेले साचे पुच्छे, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया फड़ फड़ कुट्टे, नाम खण्डा खड़ग चमकाईआ। माया ममता मेटे दुखे, दीनां अनाथां दर्द मिटाईआ। आत्म परमात्म देवे सुखे, सुखसागर विच समाईआ। लेखे लावे जननी कुक्खे, जो चल आइण सरनाईआ। अन्तिम दरस्स के इक ओटे, ओड़क आपणे नाल मिलाईआ। सूई नक्के विच्चों लँघ के जन भगत ओथे पहुंचे, जिथ्थे मिलदा धुरदरगाहीआ। जगत बुद्धी दी रहे कोई ना सोचे, मन चंचल ना कोए चतुराईआ। इक्को दरस प्रभू दा लोचे, लोचण अक्ख खुल्हाईआ। नेत्र तक्के आपणे गोशे, परदा पड़दे विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा अगम्म घर, जिथ्थे छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सूई नक्का कहे मेरी अरदास, जगत जीव जहान दृढ़ाईआ। साचे मण्डल वेखां रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। आत्मा परमात्मा इक दूजे दे वसो पास, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा कर के जाप, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सारे गए आख, गुर अवतार पैगम्बर सिफ्त सालाहीआ। ओसे मेल मेलणा आपणी ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेला धुर जोड़ना नात, सगला संग रखाईआ। सो स्वामी कन्त कन्तूहला देवे आपणी दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। कलयुग मानव सृष्टी अंदर दृष्टी विच्चों जाणा जाग, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। तन वजूद मन कल्पणा बुझे आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। हरि स्वामी वेखो कन्त सुहाग, जिस दा रंडेपा रहिण कोए ना पाईआ। सदा सुहेला वस्से साथ, इक इकेला तोड़ निभाईआ। रूह बुत दोवें कर के पाक, पतित पुनीत दए वड्याईआ। सूई नक्का कहे प्रभ सब दी पूरी करे आस, तृष्ना तृप्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण लहिणा देणा लेखा सब दा पूर कराईआ। हथ्थ कहिण असीं लग्गे नाल चरण कँवल, कँवल चरण मिले सरनाईआ। मानस जन्म लेखे लग्गे उपर धवल, धरनी धरत धौल सोभा पाईआ। अन्तर आत्म परमात्म जाणा मवल, मौला रूप नूर खुदाईआ। तेरा जलवा तक्कीए अव्वल, नूरो नूर अलाहीआ। उलटा कर दे कँवल, नाभी मेघ बरसाईआ। गुफ़ा रहे ना डूंग्घी भँवर, भौरे वांग लैणा उडाईआ। बाहर कढु लैणा विच्चों काया माटी क़बर, मक़बरिआं विच ना कदे फिराईआ। सच प्रीती देणा सबर, सन्तोख तेरी सरनाईआ। जाम हक़ीक़ी देणा मधुर, रसना रस चखाईआ। जे करन आएयों प्रभ अदल, इन्साफ बेपरवाहीआ। फेर अंदरों ज़मीर देणी बदल, नज़रे कर्म आप उठाईआ। आसा मनसा पूरी करनी सध्धर, सदमा

अंदर रहिण ना पाईआ। लेखे लाउणा झुकया क़दम, क़दीम दा लेखा पूर कराईआ। झगड़ा मुकाउणा पंज तत काया माटी ख़ाकी बदन, लख चुरासी गेड़ कटाईआ। अन्तिम आत्म परमात्म जोती जोत विच रचन, रचना आपणी दे वखाईआ। अज्ज दा कौल अग्गे दा बचन, पूरा दे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रातीं सुत्यां घर सब कुछ आवे दस्सण, रसना पुच्छण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वखावणहारा घर विच घर, जिस घर विच आपणा डेरा लाईआ।

✻ २७ चेत शहिनशाही सम्मत ४ तलवाड़ा नरायण सिँघ दे गृह ✻

भगत सुहेला हरिजन मीता, मित्र प्यारा इक अखवाइंदा। काया माटी करे ठांडी सीता, अगनी तत बुझाइंदा। प्रेम प्यार मुहब्बत दस्से रीता, परदा उहला आप उठाइंदा। लेखा जाणे जीव जी का, जागरत जोत डगमगाइंदा। आवण जावण पन्ध मुकाए साढे तिन्न हथ्थ सीं का, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणे रंग रंगाइंदा। झगड़ा रहिण ना देवे ऊचां नीचां, राउ रंक इक्को घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाइंदा। भगत जनां प्रभ चाढ़े रंग, रंगत आपणी इक रंगाईआ। नाम निधान वजा मृदँग, सोई सुरत आप उठाईआ। निज आत्म दे निझर रस अनन्द, सुखसागर विच समाईआ। घर जोत प्रकाश कर चन्द, अन्ध अन्धेरा दए कढ्ढाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाईआ। मन कल्पना रहे ना कोए जंग, झगड़ा कूड़ ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबंग, सच संदेस इक्को इक सुणाईआ। जन भगतां प्रभ होए सहायक, जुग चौकड़ी दया कमाईआ। नाम भण्डारा अनमुल्ल करे इनाइत, बख़्शिश रहमत झोली पाईआ। एथे ओथे दो जहानां होए सहायक, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मुगध अंजाण बणा के लायक, बुध्ध बिबेक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचा मेल मिलाईआ। जन भगतां सो मेले हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जन्म कर्म भउ चुकाए भय डर, भवसागर पार कराईआ। परमात्म हो के आत्म लए वर, नार कन्त श्री भगवन्त आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सच दुआरा एकँकारा खोल्ह दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा आपणा आप खुल्हाईआ। अमृत बणाए धुर दे सर, सर सरोवर इक्को इक प्रगटाईआ। जिथ्थे ना जन्मे ना जाए मर, मर जीवत रूप ना कोए वटाईआ। सो साहिब दयाला पुरख अकाला भगत सुहेले साजण लए फड़, चुरासी फाँसी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नड़, नाड़ी नाड़ी

डगमगाईआ। निरगुण धार अन्तर आत्म फड़ाए आपणा शब्द पल्लू लड़, साची मंज़ल दए चढ़ाईआ। किरपा करे नरायण नर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरा एकँकारा एका ओहला परदा दए उठाईआ। जन भगतां प्रभ करे सदा वंड, वरभण्ड वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया देवे दंड, डंडावत बन्दना इक समझाईआ। सच प्रेम दा देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, सहिंसा पिछला दए चुकाईआ। जो सच दुआरा एकँकारा आए लँघ, बण के पाँधी राहीआ। ओस दी सेज सुहञ्जणी होवे आत्म पलँघ, पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। जिस सिँघासण सच बिराजे पुरख अबिनाशी धुर दा अनन्द, अनक कलधारी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त दीन दयाल सदा बख़्शंद, बख़्शिश रहमत रहमत बख़्शिश इक्को घर वरताईआ।

❋ २७ चेत शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

हरिभगत दुआरे आ गिआ, शब्द दीवाना मस्त। दो जहानां खेल खिला लिआ, लेखा जाणे उदय अस्त। ब्रह्मण्ड खण्ड उठा लिआ, हुक्म संदेसा दे दस्त। गुर अवतार पैगम्बर पुच्छ पुच्छा लिआ, नाम अनमुल्ली धुर दी वस्त। परदा ओहला भेव खुल्हा लिआ, लेखा जाण कीट हस्त। निरगुण जोत धार धर्म कमा लिआ, जन भगतां बण सरपरस्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर साचा इक सुहा लिआ, सोभावन्त उपर अर्श। मस्त दीवाना आया विच मस्ती, मस्ती सब दी दए मिटाईआ। सच दुआरा वसा इक बस्ती, बिस्तरे सब दे गोल कराईआ। इक्को प्रकाश कर धुर दी हस्ती, हसद वाला लेखा दए मुकाईआ। भाग लगा के उपर धरती, धरनी धवल धौल दए वड्याईआ। कूड़ी खेल मिटा दे कलयुग कल दी, कल कल्की नाउँ धराईआ। कर खेल अछल अछल्ल दी, लख चुरासी रिहा भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरताईआ। मस्त दीवाना परम पुरख परमात्म, मस्ती आपणी विच वड्याईआ। परदा राज़ खोल्ह के बातन, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जन भगतां मेला कर के अन्तर आत्म, लहिणा देणा लेखा देवे थाउँ थाईंआ। निज घर स्वामी कर के वासन, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। धुर दा दस्स के पूजा पाठण, काया पाठशाला दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़ा

मेट के ज़ात पातन, पतण किनारा इक्को इक वखाईआ। मस्त दीवाना फिरया आपणी धार, दो जहानां खेल खिलाईआ। हुक्म विच हुक्म सच्ची सरकार, शहिनशाह शाह सुल्तान दिता जणाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां कर ख़बरदार, संदेस नरेश सर्ब जणाईआ। जन भगतां दे अधार, घर घर रिज़क रिहा पुचाईआ। माण वड्याई दे के विच संसार, सहिंसे रोगां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। फड़ फड़ बाहों आया तार, तारनहारा दया कमाईआ। पूरन पुरख पुरखोतम पारब्रह्म आपणा कर विहार, विवहारी हो के भज्जिआ वाहो दाहीआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण करया ख़बरदार, गुर अवतार पैगम्बर नाल मिलाईआ। सति धर्म दा सच जैकार, सति सतिवादी आप सुणाईआ। सचखण्ड दा सच दरबार, भगत दुआरा इक प्रगटाईआ। जिथ्थे भगत भगवान नाल मिल के आत्म परमात्म परमात्म आत्म वेखण धार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। मस्त दीवाना जिस नूं किहा जग, जगजीवण दाता वड वड्याईआ। खेल करे सूरा सर्बग्ग, अलपग्ग खोज खुजाईआ। दीन मज़हब तोड़ के हद्द, बेहद्द विच समाईआ। जन भगतां इक्को मंज़ल दे के पद, पैंडा अगला पिछला दिता मुकाईआ। इक्को वार परदा कज्ज, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। वखरा रिहा ना कोए अलग, जन्म जन्म दे विछड़े मेल मिलाईआ। सच प्रेम दा बन्न्ह के मौली तग, तन्द आपणे नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। मस्त दीवाना चार जुग दा लाह के आया क़र्ज़ा, मक़रूज़ हो के आपणा खेल खिलाईआ। जन भगतां होण ना दिता हरजा, हरजाने तों पहले हाज़र हो के आपणी दया कमाईआ। जन भगत बणा के आपणे वरगा, वर्ग कूड़ा दिता तुड़ाईआ। माण दवा के आपणे घर दा, घर घर विच दए वड्याईआ। खेल कर अगम्मे हरि दा, हर हिरदा वेख वखाईआ। भेव खुल्ह्ा साचे दर दा, दर दरबार दए दृढ़ाईआ। जिथ्थे नर नरायण निराकार आत्म परमात्म वरदा, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। ना जीवत ना कदे मरदा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। साची मंज़ल आपे चढ़दा, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। जन भगतां पिच्छे उहदा ढोला आपे पढ़दा, पढ़न लिखण दा लेखा रिहा मुकाईआ। जिन्हां उत्ते किरपा करदा, मेहर नज़र नैण नाल तराईआ। इश्नान करा के चरण धूढ़ सरोवर सर दा, सरासर लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मस्त दीवाना आ गया चाढ़्ह के रंग, रंगत इक रंगाईआ। जन भगतां आसा मनसा पूरी कर के मँग, मँगतिआं झोली आया भराईआ। माण वड्याई दे के विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड पार लँघाईआ। नाता रिहा ना जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के छन्द, शहिनशाह हो के जोड़ जुड़ाईआ। सच दुआरा आया लँघ, सच पलँघ

सोभा पाईआ। एह खेल सूरा सरबंग, हरि करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दना बन्दगी विच आपणी इक समझाईआ।

१७३

२१

✻ १ बैसाख शहिनशाही सम्मत ४ पिंड मैणीआं ज़िला अमृतसर गुरदयाल सिँघ दे गृह ✻

चेत कहे मैं कीता अन्त अख़ीर, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं तकदा रिहा शाह हकीर, हर घट अन्तर खोज खुजाईआ। वेखदा रिहा शहिनशाह फ़कीर, चार कुण्ट दह दिशा ध्यान लगाईआ। इक आवाज़ दिती कबीर, संदेसे विच सुणाईआ। उठ वेख लातस्वीर, जिस दा नूर जोत रुशनाईआ। शब्द खण्डा फड़ शमशीर, शरअ शरीअत रिहा तुड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी कर दिलगीर, चारों कुण्ट हुक्म वरताईआ। सांतक रहे ना कोए धीर, धीरज धर्म ना कोए वड्याईआ। कूड़ कुड़िआरा दिसे ख़मीर, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। जिस ने सतिजुग साचा करना तामीर, तमअ तमन्ना मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा रंग दए रंगाईआ। चेत कहे मेरा पन्ध रिहा मुक, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं बोलां धुर दी तुक, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाईआ। पुरख अबिनशी मेहरवान हो के मेटे सृष्ट सबाई दुःख, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। जन भगतां सुफ़ल कराए जननी कुख, स्वच्छ सरूपी होए सहाईआ। सन्त सुहेले उठावे आपणे सुत, अपराधी रहिण कोए ना पाईआ। किरपा करे अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं दए कराईआ। जो आत्म धार परमात्म नालों गई तुट, तुट्टयां लए मिलाईआ। मानस जन्म भाग ना जाए निखुट, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा दए चुकाईआ। चेत कहे मेरा पूरा होया पन्ध, पाँधी हो के सेव कमाईआ। अन्तिम पढ़ के इक्को छन्द, तूं मेरा मैं तेरा खुशी मनाईआ। अग्गे होर अगम्मी मँग, मांगत हो के झोली डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबंग, शाह पातशाह तेरी शरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरा अन्ध, सतिजुग साचा चन्द कर रुशनाईआ। दीन मज़हब दी रहे कोई ना कंध, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। चार वरन अठारां बरन लगाउणा अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरे बख्श इक अनन्द, अनरस रस धुर दा दे वखाईआ।

❋ १ बैसाख शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

हाज़र हो के वेखण पैगम्बर गुर अगतार, सच दुआरे सोभा पाईआ। वेखो खेल अगम्मी हरि निरँकार, करनी दा करता क़ुदरत दा मालक आप कराईआ। जिस दा राह तकदे रहे सदा जुग चार, चौकड़ी बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। सच संदेसा देंदे गए अपार, सिफ्तां विच ढोले रागां नादां विच गाईआ। सो साहिब सुआमी अन्तरजामी होया ख़बरदार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा परदा दए उठाईआ। जिस ने लहिणा देणा चुकाउणा चार लख बत्ती हज़ार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सच दुआरे बहि बहि हस्से, हस्ती तक्कण बेपरवाहीआ। खेल तक्कण पुरख समर्थे, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। चलो वेखीए आपणी निरगुण धार अक्खे, सरगुण तत वजूद नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दह दिशा जीव जंत किसे ना लभ्भे, नव नौ चार पर्दा ना कोए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म संदेसे सद्दे, धुर संदेसा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेखो खेल अवल्ला, हरि करता आप कराईआ। जिस नूं कहिंदे आए नूर अलाही अल्ला, वाहिद जल्वागर खुदाईआ। जिस दा सचखण्ड दुआरे फड़दे रहे पल्ला, जोती जाता पुरख बिधाता इक अख्वाईआ। जो वसणहारा जलां थलां, महीअल आपणा रंग रंगाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैगम्बर घल्ला, तन वजूद बण महबूब कलमा हक हक़ीक़त इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा अछल अछेदा परदा उहला आप चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण वेखो बिना अक्खां अगम्म नज़ारा, नज़रीआ हरिजू रिहा बदलाईआ। लहिणा देणा पूर कर गुरु अवतारा, पैगम्बरां झोली रिहा भराईआ। धुर दा हुक्म दे शब्द अगम्मी विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी अक्ख खुल्हाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेखो वारो वारा, वारस नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होया धुँदूकारा, धूआँधार ना कोए मिटाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरवैर निराकार निरँकार इक्को इक सुणाईआ। सुणो संदेसा अगम्म अथाह, हरि करता आप दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर परदा लओ लाह, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। लोकमात करो ध्याँ, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। आपणे आपणे लओ बचा, बचपन आपणे नाल समझाईआ। इशारे नाल दयो समझा, कवण गुरमुख सोभा पाईआ। कवण बैठा रंग चढ़ा, अन्तर आत्म वज्जी वधाईआ। किस दे बणो तुसीं गुआह, शहादत इक्को वार भुगताईआ।

अग्गे लेखा रहे ना रा, राउ रंक दा झगड़ा देणा गुआईआ। दीन दुनी तों पल्लू लओ छुडा, नाता तुट्टे कूड़ लोकाईआ। सदा लई मेरी जोत विच जाओ समा, जोती जोत डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तेरे चरण पनाह, सहारा इक्को इक दृढ़ाईआ। असीं कीती हक़ सलाह, हक़ीक़त विच समझाईआ। पूरब लहिणा दे चुका, लहिणा अवर रहे ना राईआ। तूं सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक इक खुदा, ख़ादम हो के तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। दर दरवेश दरे दरबार मँगण दुआ, निउँ निउँ लागण पाईंआ। तेरा नूर ज़हूर अलाह, आलमीन तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सुणो हदीसा हक़, हरि करता आप जणाईआ। अग्गे शिकवा रहे ना शक्क, शरीकत देणी गुआईआ। दीन मज़हब तोड़नी हद्द, हदूद इक्को लैणी बणाईआ। नूरी जोत धार दी बणी यद्द, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। दीन मज़हब दा खैड़ा दयो छड्ड, अग्गे होए ना कोए सहाईआ। पिछली कीती चार जुग दी अग्गे होणी रद्द, हुक्म चले धुरदरगाहीआ। सच प्रीत विच सब ने जाणा बज्झ, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। इक्को नाम जैकारा एकँकारा बोलणा गज्ज, गहर गम्भीर बेनज़ीर धुर संदेसा देणा दृढ़ाईआ। नाम निधाना नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना दो जहानां सुणाए छन्द, ढोला इक्को इक अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक प्रगटाईआ। साचा हुक्म दे करतार, करनी दे करते दे वड्याईआ। सारे झुकण गुरु अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। तेरा धुर दा इक दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। तेरी जोत जगे अपार, अपरम्पर स्वामी तेरा नूर नूर रुशनाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, सचखण्ड निवासी सोभा पाईआ। हउँ सेवक ख़िदमतगार, ख़ादम दर तेरे अलख जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या विच संसार, संसारी हो के सेव कमाईआ। अन्तिम गए हार, हिरदे करे ना कोए सफ़ाईआ। तेरा हुक्म होया दुष्वार, दुश्मन दर दर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी रही कोए ना हिम्मत, हौसला नज़र कोए ना आईआ। साची समझे कोई ना सिम्मत, दर गृह ना कोए खुल्हाईआ। जिधर वेखीए इक दूजे दे निन्दक, सति सच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू दर मँगते, मांगत झोली डाहीआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगते, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। कलयुग जीव सानूं ना मन्नदे, मन कल्पणा विच कुरलाईआ। हुक्म भुल्ल गए गुजरी चन्न दे, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। रूप नज़र ना आवे

किसे साचे जन दे, जणेंदी दिसे कोए ना माईआ। विकारी भाण्डे होए माटी चम्म दे, चम्म दृष्टी ना कोए बदलाईआ। वणजारे होए हरख ग़म दे, कूड़ी क्रिया नाल दुहाईआ। तेरा दुआरा कोई ना लँघदे, मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी अन्त अख़ीर, आख़र दईए जणाईआ। साडी चले ना कोए तदबीर, तक़दीर सके ना कोए मिटाईआ। चार कुण्ट होया ख़मीर, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी होई दिलगीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र उठा दे ठाकर, गुर अवतार पैगम्बर ध्यान लगाईआ। कलयुग भँवरी वेख डूँघा सागर, नव नौ चार खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मिले किसे ना आदर, अदली अदल ना कोए कमाईआ। झगड़ा प्या साढे तिन्न हथ्थ काया माटी गागर, गहर गम्भीर मेल ना कोए मिलाईआ। साचा वणज करे ना कोए सौदागर, अमोलक वस्त हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। तेरा खेल करीम क़ादर, क़ुदरत दे मालक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो अवतार गुरु पैगम्बर शहिज़ादे, शहिनशाह हो के दयां जणाईआ। क्यों तुसां साफ़ नहीं कीते सृष्टी वाले इरादे, इरादा आपणा दयो जणाईआ। क्यों ना दुरमति मैल धोते दाग़े, पतित पुनीत कराईआ। क्यों हँस बुद्धी होई कागे, काग वांग कुरलाईआ। क्यों ना आत्म परमात्म लडा लए लाडे, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। क्यों ना वस्से अंदर वड़ के लागे, लागत ना मूल चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो क्यों मुरीदां सिखां वास्ते नहीं जागे, ग़फ्लत विच आपणा वक्त लँघाईआ। क्यों दर दुआरे मेरे आए भाजे, भजन बन्दगी मात दृढ़ाईआ। क्यों ना अन्तर अनहद नाद वजाए नादे, मैनूं दयो जणाईआ। क्यों सुणाउँदे आए सिफ्तां वाले रागे, शाहरग तों उत्ते दरस ना कोए वखाईआ। क्यों खड़काउँदे आए ढाडे, भेव अभेदा विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो क्यों ना खुल्ही तुहाथों सुरती, सूरत सच ना कोए दृढ़ाईआ। क्यों ना धार दस्सी धुर दी, धुर मस्तक लेख बणाईआ। गोबिन्द किहा मैनूं याद आ गई अनन्द पुर दी, पुरीआं लोआं तों बाहर समझाईआ। पुरख अकाल मैनूं सृष्टी वखाई रुढ़दी, मलाह नज़र कोए ना आईआ। वड्याई दिसी ना किसे पीर गुर दी, अवतार संग ना कोए निभाईआ। दरोही वेखी ठग चोर दी, हँकार विकार विच लड़ाईआ। ओस वेले मैं बेनन्ती कीती आपणी लोड़ दी, पुरख अकाल दिता जणाईआ। जिस वेले खेल होणी अन्ध घोर दी, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। लड़ी रहिणी नहीं सति धर्म डोर दी, टुट्टी गंढु ना कोए पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, मेहर नज़र नाल जणाईआ। गोबिन्द कहे मैं मंगिआ की, भेव अभेद जणाईआ। पुरख अकाल जिस वेले सृष्टी तेरी चार जुग दी भुल्ली लीह, रस्ता हक़ ना कोए वखाईआ। प्यार रिहा ना माता पिता पुत्तर धी, सज्जण सैण संग ना कोए निभाईआ। ओस वेले सम्मत होणा जगत शहादत वाला वीह, दूआ सिफ़रा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ । गोबिन्द कहे मैं सीस दिता झुका, नेत्र नैण बन्द कराईआ। पुरख अकाल बेपरवाह, की तेरी वड्याईआ। बिन अक्खरां दे समझा, धुर दा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाल किहा सुण गोबिन्द सच दुलार, दूल्ले दयां जणाईआ। मेरा खेल सदा जुग चार, जुग चौकड़ी वज्जे वधाईआ। सेवा करन पैगम्बर अवतार, गुर गुर भज्जण वाहो दाहीआ। तूं होणा ख़बरदार, संदेसा इक अलाईआ। जिस नूं समझ विच करे ना कोए विचार, वंडण वंड ना कोए वंडाईआ। चरण धूढ़ी ला छार, मस्तक टिक्का इक रमाईआ। फिर लहिणा दस्सां जगत संसार, भगवन हो के भेव खुलाईआ। तेरा जीवण जिस्म वाला दिन चार, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। साचा हुक्म इक सुणावांगा। गोबिन्द, अगम्मड़ा भेव खुलावांगा। बिन रसना जेहवा बत्ती दन्द गावांगा। तैथों छुडा के पुरी अनन्द, अनन्द आपणा इक प्रगटावांगा। तेरे बंस सरबँस दी कर के वंड, वंडण आपणी इक जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकावांगा। गोबिन्द किहा प्रभ पुरी अनन्द दी नहीं लोड़, लोड़ींदा सज्जण वेख वखाईआ। मैनूं आपणे नाल जोड़, जोड़ी दो जहान बणाईआ। आदि अन्त निभावीं तोड़, लग्गी प्रीत ना कोए तुड़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्धेरा होवे घोर, चार कुण्ट नूर ना कोए चमकाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर पावे शोर, कल्पणा मन विच कुरलाईआ। ओस वेले गुर अवतार पैगम्बरां तेरी पैणी लोड़, दूजा नज़र कोए ना आईआ। साधां सन्तां दे अंदर वड़ जाणे चोर, चोरी चोरी धन लैण चुराईआ। शाह पातशाह हो जाण हरामख़ोर, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सति वस्त रहिणी किसे नहीं कोल, ख़ाली भण्डारे देण दुहाईआ। मैनूं ऐं जापदा तूं प्रगट होणा उपर धौल, धरनी सोभा पाईआ। मेरे नाल कर लै कौल, इक़रार अगला लैणा बणाईआ। मैं तेरे अमृत नाम दी निझर देवां पाहुल, रस इक्को इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। पुरख अकाल किहा सुण गोबिन्द शब्द अगम्मी मन्नणी आखी, आख़र दयां दृढ़ाईआ। मेरे हुक्म अंदर लिखणी सौ साखी, सौ साखी विच्चों इक समझ किसे ना आईआ। एह तेरी धोखे वाली पाती, पतणां उत्ते सब नूं दए भुआईआ। एह विकणी विद्या वाली

हाटी, अनभव परदा ना कोए उठाईआ। अगला खेल पुरख समराथी, हरि करता आप जणाईआ। कलयुग पूरी करे अन्तिम वाटी, पैंडा पन्ध दए चुकाईआ। सब दा लहिणा देणा देवे बाकी, बचया नज़र कोए ना आईआ। तूं जाम प्याला पिआउणा बण के साकी, साख्यात बण के रंग रंगाईआ। तेरा मेरा वजूद नहीं होणा तन ख़ाकी, जोती शब्दी धार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार आप जणाईआ। गोबिन्द किहा प्रभ केहड़ा समां, सहज नाल समझाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले कोई गुरु नहीं होणा वाला दमां, तत्तां वाला तत ना कोए समझाईआ। साची जगे कोई ना शमां, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ओस वेले खेल करना नवां, नौ सत्त वज्जे वधाईआ। निरगुण धार आवां भन्ना, लोकमात फेरा पाईआ। तैनूं नाल मिलावां चन्ना, तेरा नूर करां रुशनाईआ। सच संदेसा इक्को कहां, दो जहान वड्याईआ। दीन मज़हब दी सानूं दोहां नूं होणी नहीं कोई तमां, सृष्ट सबाई वेख वखाईआ। ना कोई हरख़ होवे ना ग़मा, चिन्ता रोग ना कोए सताईआ। ओस वेले तेरा साथ लवां, मेला मेलां सहज सुभाईआ। साचे धाम अवल्लड़े

१७८ बह्वां, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा धुर दा घर, गृह मन्दिर इक वड्याईआ। पुरख अकाल किहा सुण मेरे बाल निधाने, निरवैर हो के दयां जणाईआ। मेरा खेल होवे दो जहाने, १७८

२१ ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म वरताईआ। तूं संदेसा देणा सृष्ट सबाई आत्म परमात्म गुण निधाने, गुणवन्ता गुण जणाईआ। जिस २१

ने चार जुग दे बदल देणे निशाने, निशाना आपणा इक प्रगटाईआ। चुरासी विच्चों सन्त सुहेले पहचाने, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। जुग जन्म दे विछड़े होण ना देवे बेगाने, बेपरवाह आपणी गोद उठाईआ। साचा दर वखा इक मकाने, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। जिथ्थे जगे जोत महाने, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ । ओस वेले गोबिन्द तूं मेरा मैं तेरा तूं सब नूं दस्सणे गाणे, गावत गा गा वज्जे वधाईआ। भगत सुहेले होण मस्ताने, मस्त खुमारी देणी चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण निरवैर निराकार इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा मेरे परम पुरख करतार, क़ुदरत दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। ओह समां मैनूं पहलों दे वखाल, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ । मैं तेरा तत दुलारा लाल, लाडला नज़री आईआ। किस बिध कलयुग अन्तिम करें काल, कालख टिक्का दएं धुआईआ । सतिजुग सच वखाएं सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक प्रगटाईआ। जिथ्थे भगत सुहेले बहिण आण, आप आपणा जोड़ जुड़ाईआ। चरण दुआर एकँकार देवें माण, मेहर नज़र इक उठाईआ। अग्गों हस्स के किहा श्री भगवान, उठ गोबिन्द नौजवान, तैनूं दयां वखाईआ। ओह शहिनशाह जिस नूं सके ना कोए पहिचाण, दह दिशा जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ।

मेरा खेल दो जहान, धुर दा देवां अगम्मी दान, जोती जामा हो प्रधान, शब्दी नाद देवां धुनकान, अनरागी आपणा राग सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करन ध्यान, नेत्र तक्कण ज़िमीं असमान, लोआं पुरीआं नैण शरमाईआ। देवत सुर होण हैरान, विष्न ब्रह्मा शिव पछताण, की करे खेल श्री भगवान, भेव समझ किसे ना आईआ। मैं सच बणावां विधान, सचखण्ड दुआरे करां परवान, सत्त रंग झुलावां निशान, गुर अवतार पैगम्बरां पहलों दे के ज्ञान, धुर संदेसा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा, गोबिन्द साची बणत बणावांगा। सचखण्ड निवासी निरगुण धार, जोत अगम्म जगावांगा। पुरख अबिनाशी सच सरकार, धुर दा हुक्म इक मनावांगा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स जैकार, सोहँ ढोला इक दृढ़ावांगा। सत्त रंग निशाना दो जहानां शब्दी चाढ़, चारों कुण्ट वंड वंडावांगा। चार वरन अठारां बरन वखा के इक दुआर, भगत दुआर आप प्रगटावांगा। सति धर्म दा मार्ग दस्स सुखाल, रहिबर हो के पर्दा लाहवांगा। मेल मिला के शाह कंगाल, ऊचां नीचां डेरा ढाहवांगा। जन भगतां वसां सदा नाल, आत्म परमात्म जोड़ जुड़वांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा अछल अछेदा चार वेदां तों बाहर आप जणावांगा।

चार वेद की करन विचारे, प्रभ दी सार किसे ना आईआ। ब्रह्मे लिखे नाल विस्थारे, जो प्रभ ने दिता जणाईआ। अन्तिम थक्क थक्क गए हारे, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। ढहि ढहि डिग्गे चरण दुआरे, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलयुग जीव कोई ना पावे सारे, परदा सके ना कोए उठाईआ। सानूं ला दे अन्त किनारे, नईआ आपणी विच टिकाईआ। दर तेरे कढ्ढीए हाढ़े, हाहाकार कर सुणाईआ। पुरख अकाल कहे तुसीं वेखो मेरे दुलारे, जन भगत सुहेले सोभा पाईआ। जेहड़े बिन पौड़ी डंडे चढ़ गए मेरे मुनारे, मंज़ल आपणी ख़तम कराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण लैणे ना पए सहारे, ओट इक अकाल तकाईआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर मेरा नूर दिसे उज्यारे, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा अगम्म घर, जिस गृह वजदी रहे वधाईआ। वधाई कहे मैनूं चाउ घनेरा, खुशीआं हाल सुणाईआ। धन्न वड्याई जिन्हां गाया तेरा मेरा, मेरा तेरा राग अलाईआ। उन्हां इक्को रंग होया सञ्ज सवेरा, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। उन्हां नूं एहो मानस जन्म बथेरा, अग्गे जन्म लैण दी लोड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाल चाढ़ के आपणे बेड़ा, चप्पू गोबिन्द हथ्थ उठाईआ। जिन्हां दे कारण मारया फेरा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। उन्हां

दा कर के हक़ नबेड़ा, चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह इक वखाईआ। साचा राह दस्सया इक रस्ता, रहिबर इक जणाईआ। जन भगतो पिछला बन्द कर दयो बस्ता, बस्ती आपणी काया लैणी खुल्हाईआ। जिथ्थे प्रभू दा नाम मिले सस्ता, क़ीमत लग्गे कोई ना राईआ। सद अमृत मेघ होवे वरसा, अगनी तत ना कोए तपाईआ। तुसां श्री भगवान तों पिछला लैणा क़र्ज़ा, पूरब झोली पाईआ। वेख्यो गुरमुख कोए रिहो ना डरदा, भय भउ देणा मिटाईआ। जन भगतो भगवान प्रीतम तुहाडे घर दा, सदा मिल के खुशी मनाईआ। सन्त सुहेला उस नूं वरदा, जो वारस दो जहान बण जाईआ। गुरमुख ओस दुआरे तरदा, जो डुबदयां पार लँघाईआ। गुरसिख ओस दा पल्लू फड़दा, जिस दा सके ना कोए छुडाईआ। जो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान ढोला पढ़दा, तिन्हां नूं जन्मे फेर कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गोबिन्द कहे प्रभू जो तेरा हुक्म मन्नण आखी, आख़र ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द उन्हां दी सदा तेरी अमृत धार वाली वसाखी, घड़ी पल विछड़ कदे ना जाईआ। उन्हां दे अंदरों सुरती जागी, शब्द नाल कुड़माईआ। सदा खुल्ही रखां ताकी, मेहर नज़र टिकाईआ। मंज़ल चाढ़ के आपणी घाटी, घाटे पिछले पूर कराईआ। लेखे ला चुरासी वाटी, वटणा अग्गे आपणा नाम जणाईआ। रूह बुत कर के पाकी, पतित पुनीत वखाईआ। साचा जाम हक़ीक़ी देवां बण के साकी, नाम खुमारी इक चढ़ाईआ। कोट जन्म नालों उन्हां दी इक्को बथेरी अज्ज दी राती, बौहड़ जन्म दी लोड़ रहे ना राईआ। जिन्हां दे अंदर दा पुरख अकाल बण गया पाठी, पढ़न लिखण दा लेखा दिता मुकाईआ। जन भगतो तुहाडे प्रेम दी प्रभ दे कोल उह नक़ल ते उह कापी, जिस दी कापी कर ना कोए वखाईआ। तुहाडे नाल ओह वी तर गया जेहड़ा जन्म कर्म दा आ गया पापी, पतित पुनीता दया कमाईआ। गोबिन्द कोलों दवाउणी ओह थापी, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अगम्म आप वरताईआ। गोबिन्द कहे मैं शब्दी देवां थपक, प्रेम प्यार जणाईआ। गुरमुखो तुहाडा पैंडा मुकणा चौदां तबक, चौदां लोक चरणां हेठ दबाईआ। तुसां आत्मा परमात्मा पढ़ना इक्को सबक, सिख्या धुरदरगाहीआ। तुहाडे अन्तर नूर नुरानी आवे उह चमक, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जन भगत सुहेला रहे कोई ना अहमक, मूर्ख मुग्ध चतुर सुघड़ देवे बणाईआ। गोबिन्द जिस दे उत्ते कर दए रहमत, रहम नाल पार कराईआ। प्रीती विच हो के सहमत, सहम अंदरों दए कढ्ढाईआ। तुहाडी जन्म जन्म दी कट देवे जहमत, कर्म कर्म दा रोग गवाईआ। तुहाडी लेखे लावे पिछले जन्म दी मेहनत, मुशक्कत सब दी झोली पाईआ। आत्मा नाल परमात्मा होवे सहमत, सहज सहज आपणा

भेव खुल्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर देवे वड्याईआ। बैसाख कहे प्रभ दा की वसाह, अछल अछल्ल वखाईआ। गोबिन्द कहे मैं मौक्यां दा गवाह, शहादत इक भुगताईआ। पुरख अकाल कहे मैं उन्हां गोदी लवां टिका, आपणे अंग लगाईआ। जिन्हां मैनूं ल्या आपणा, मेरे विच समाईआ। उहनां मातलोक दयां वडया, लोक परलोक वज्जे वधाईआ। जिन्हां दे पिच्छे सतिजुग मार्ग देणा लगा, कूड़ा पन्ध मुकाईआ। सच संदेसा देणा सुणा, फ़रमाना धुरदरगाहीआ। चारे वरनां देणा पढ़ा, अठारां बरन सर्ब जस गाईआ। पीर पैगम्बर बैठण सीस निवा, सिर सके ना कोए उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मन्नण रज़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। बैसाख कहे जन भगतो प्रभ दे बणो गोती, गोतम रो के दए दुहाईआ। चढ़यो मंज़ल चोटी, आख़र पन्ध मुकाईआ। तकयो निर्मल जोती, जोत करे रुशनाईआ। तुहानूं अमृत दी थाँ खवाउणी अज्ज ओह सुक्की रोटी, जेहड़ी प्रभ चरण धूढ़ लै के विष्नूं लई बणाईआ। इस नूं लभ्भदे गए कोटन कोटी, चार जुग हथ्थ किसे ना आईआ। राह तक्कण लोक परलोकी, नेत्र नैण अक्ख खुल्लाईआ। किसे दी आस ओथे ना पहुंची, कबीर जुलाहा दए दुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सोच ना सोची, समझ समझ ना कोए बदलाईआ। कुछ इशारा कीता रविदास चमारे मोची, प्रभ मुश्किल हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वस्त इक वखाईआ। रोटी कहे मेरा रसना वाला नहीं स्वाद, बत्ती दन्द ना खुशी मनाईआ। मैनूं प्रभ ने बणाया आदि, आपणे घर टिकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मारदे रहे आवाज़, कूक कूक सुणाईआ। मैं चार जुग ना खोल्ही जाग, नेत्र नैण उठाईआ। माणदी रही अगम्मा राज, सच दुआरे सोभा पाईआ। सुणदी रही प्रभू दा ओह ढोला संदेसा जिस विच खुल्लणा राज़, परदा दए उठाईआ। सो वेला वक्त सुहञ्जणा दिसे आज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। जिस ने सति धर्म चलाउणा रिवाज, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जिस ने भगत भगवान बणाउणा समाज, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी करन आया काज, करनी दा करता धुरदरगाहीआ। जन भगतां नूं देणा ओह अगम्मा खाज, जिस नूं खा के ख़ालस प्रभ दे विच समाईआ। दूजे दा रहे ना कोए मुहताज, लोड़ सब दी दए मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर दए वड्याईआ। रोटी कहे मैनूं खावे कौण, कवण दए वड्याईआ। अग्गे रो के किहा उनन्जा पाउण, नैणां नीर वहाईआ। जे प्रभू सानूं लावें वरताउण, दो जहान दईए वरताईआ। ओधरों गोबिन्द आ गया हुक्म सुणाउण, संदेसा धुरदरगाहीआ। एह ते प्रभू ने रखी वास्ते बच्चयां परचाउण, चार जुग हथ्थ किसे ना आईआ। किसे गुर अवतार पैगम्बर नूं वखाई नहीं एह ताउण, नेत्र नज़र कोए ना

पाईआ। कोई सवाणी इहनूं लग्गी नहीं सी पकाउण, जोती अगनी अग्ग तपाईआ। एह किसे दे हथ्थ नहीं आया फड़ाउण, दूजा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। रोटी कहे मैनूं खाण नाल मिट जाए रट्टा, भोरी भोरी रस वखाईआ। मेरी क़ीमत नहीं कोई पैसा टका, जगत धन ना कोए वखाईआ। मैं इक्को आसा रखां, ध्यान ध्यान विच प्रगटाईआ। जो भगत प्रभू दा सखा, मित्र प्यारा सोभा पाईआ। मैं ओस दा रस चक्खां, दूजा मुख ना कोए छुहाईआ। मै पक्का नहीं नाल कक्खां, अगनी अग्ग मिलाईआ। मेरा खेल हक़ीक़त हक़ा, हक़ हक़ मेरी वड्याईआ। मैं जुग चौकड़ी राह तक्कां, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। धन्न भाग जे वेला मिल गया मसां, समां गया आईआ। मैं भगतां दे अंदर वड़ के वस्सां, घर साचे डेरा लाईआ। फिर शाहरग तों उपर नस्सां, जगत दुआरे पन्ध मुकाईआ। इक नाल ला के अंदरों अक्खां, इक्के दा दर्शन पाईआ। इक्के उत्ते आपणी आसा सट्टां, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। इक संदेसा देणा, रोटी कहे, जन भगतो अग्गे नूं कोई ना मंनिओ पत्थर इट्टां, बिना प्रभू तों सीस ना कोए निवाईआ। तुहाडा नाता होया पक्का, लोकमात ना कोए तुड़ाईआ। जिस ने कूड़ी उठाउणी सफ़ा, मलेछ रहिण कोए ना पाईआ। ओस दी किरपा प्यार मुहब्बत दा गफ़्फ़ा, विष्नूं दा विश्व भण्डारा तुहाडे अंदर टिकाईआ। एथे ओथे दो जहान सदा तुहानूं नफ़ा, घाटे विच्चों बाहर दिता कढ्ढाईआ। अज्ज तों तुहाडा सचखण्ड लिख्या गया पटा, मोहर धुर दी नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। रोटी कहे मैं होणा रुक्खी सुक्खी, सुख सांद सब नूं दयां समझाईआ। मैनूं खाण नाल तुहाडा उजल होणा मुखी, दरगाह साची दयां वड्याईआ। चुरासी भोग कर के रहे कोई ना दुखी, जूनी जून ना कोए भुआईआ। जिन्हां दे मैं अंदर वड़ गई कुखीं, उन्हां नूं कुख विच जन्म लैण दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं जुग चौकड़ी रही सुत्ती, कलयुग अन्त लई अंगड़ाईआ। हुक्म नाल पंज चेत नूं उठी, आपणा बल वधाईआ। फेर लटकी रही पुठ्ठी, मेरा पासा ना कोए बदलाईआ। अज्ज मेरी आ गई ओह वदी सुदी, जिस दा पक्ख ना कोए बदलाईआ। जन भगतो तुहाडी निर्मल करनी बुद्धि, बिबेक रूप बणाईआ। तुहाडी बेड़ी कदे ना डुब्बी, डुबदयां पार लँघाईआ। मैं आ गई भगत दुआरे दी साची झुग्गी, झुग्गे गुरमुखां देणे वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा पूर कराईआ। मेरा लेखा पूरन करे आप, आपणी दया कमाईआ। बण के धुर दा बाप, पिता पुरख अकाल गोद सुहाईआ। दस्से के सोहँ जाप, जगजीवण दाते दिती वड्याईआ। मेरा तोल पूरा कर के नाप, सवा सेर रंग रंगाईआ। मैं रूह बुत कर के जाणे पाक, पवित्र दयां बणाईआ। जन भगत बणाउणे सज्जण

साक, साथी तुहाडे नाल रलाईआ। वड्याई वेखणी तन ख़ाकी ख़ाक, ख़ालस रंग चढ़ाईआ। अन्तर खोल्ह के ताक, निरंतर मेला देणा मिलाईआ। दस्स अगम्मी बात, बातन परदा देणा चुकाईआ। लेखे ला के सुहञ्जणी रात, रुत रुतड़ी नाल महकाईआ। कोई ना लभ्भयो मेरा स्वाद, रसां तों बाहर दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा रिहा मुकाईआ। मेरा लेखा मुक्कण लग्गा जग, जग जीवण दाता दए वड्याईआ। जन भगतो मैनूं खा के जाइओ अज्ज, अज़ल तों लवां बचाईआ। मैं ओस प्रभू दी यद्द, जिस ने विष्न ब्रह्मा शिव लए प्रगटाईआ। मैं जदों वसी ते वसी विच प्रभू दी हद्द, दूजे घर कदे ना आईआ। जे मातलोक आया ते मैनूं ल्या सद्द, संदेसा धुर सुणाईआ। मैं निमाणी हो के आई भज्ज, बैठी पन्ध मुकाईआ । मेरा अंदर रिहा हस्स, खुशीआं विच वधाईआ। मेरा नाता जुड़िआ जेहड़े प्रभ दा गाउँदे जस, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सन्मुख दर्शन कर के अक्ख, प्रतख मिलण गुसाईंआ। मैं उन्हां दे अन्तर निरंतर जाणा वस्स, वास्ता प्रेम प्रीत विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। ओह आस रखे कमलिए निक्की, पुरख अकाल दए दृढ़ाईआ। मैं तेरे नाल बणाउणी सतिजुग दी सिक्खी, चार वरन जोड़ जुड़ाईआ। जिस दा लहिणा गोबिन्द वाली इक्की, एकँकार पूर कराईआ । तूं सवा सेर दी टिक्की, टिकटिकी भगतां देणी जणाईआ। जेहड़ी चार जुग किसे ना डिट्ठी, सो गुरमुखां झोली पाईआ। उठ वेख पुराणी चिठ्ठी, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। जिस दी पुज्ज गई सम्मत शहिनशाही चार दी मिती, मित्र प्यारा मिल्या धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त कर कर हित, करे खेल सदा अनडिठ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अवतार पैगम्बर गुर दीन दुनी जगत जहान लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड ज़िमीं असमान विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर रमज़ समझ इशारा इशारे विच्चों ना कोए जणाईआ।

❊ २ बैसाख शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सचखण्ड निवासी शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह वाली दो जहान तेरी सरनाईआ। निउँ निउँ नमस्ते करन तेई अवतार, नमो नमो सीस जगदीश झुकाईआ। पैगम्बर ख़ादम हो के सजदयां विच करन इज़हार, परवरदिगार सांझे यार तेरी सरनाईआ। गुरु गुरदेव स्वामी चरण धूढ़ी मँगण छार, मस्तक टिक्के अगम्मे ख़ाक रमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव

दर भिखार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। त्रैगुण माया पंज तत नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गल पल्लू रहे डार, विकार हँकार नज़र कोए ना आईआ । किरपा कर पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार, दर तेरे मँग मँगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड दुआरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर निरगुण धार देण बिआन, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। लहिणा देणा दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी ओट तकाईआ। सृष्टी दृष्टी वेख मार ध्यान, अनभव परदा आपणा लाहीआ। जुग चौकड़ी असीं दे के आए ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी जीव जंत सर्ब समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख तेरा राज, दरगाह साची सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण तेरा काज, करनी करते भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी तेरा वेखदे रहे समाज, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मानव मानव वंड वंडाईआ। तेरा धुर संदेसा नाम अगम्मा गाउँदे रहे गाथ, कलमयां विच पढ़ाईआ। तन वजूद माटी ख़ाकी सरीर बणाउँदे रहे साथ, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दे ख़ाली होए हाथ, वस्त अमोलक नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दिसे अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन छत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बणाए ना कोई इक जमात, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई शरअ विच करन लड़ाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच झगड़ा मेट कायनात, दीन दुनी दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। जो भविख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच दृष्टां विच गुर अवतार पैगम्बर गए आख, धुर संदेसा तेरा हुक्म सुणाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, शब्दी डंका राउ रंकां इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किरपा कर दीन दयाल, दयानिध तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना काया माटी सच सच्ची धर्मसाल, ममता मोह विकार देणा गुआईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले वेख आपणे लाल, भगत भगवन्त आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सदी चौधवीं दीन दुनी होई बेहाल, बिहबल हो के रही कुरलाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, आपणा डोरू डंक वजाईआ । सच प्रीती किसे दिसे ना तेरे नाल, पुरख अकाल तेरी ओट ना कोए तकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्के जीव जहान, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। घर स्वामी ठाकर मिले कोई ना आण, गृह मन्दिर परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

१८५ २१

आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड दुआर एकँकार इक इकल्ला आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण मेरे साहिब सच्चे परमात्म, परवरदिगार तेरी वड्याईआ। सतिजुग साचा मेला कर धुर दे आत्म, ब्रह्म पारब्रह्म लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। भेव अभेदा खोल्ह अगम्मा बातन, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार कर रुशनाईआ। दर तेरे ठांडे चार जुग दे भिखारी आखण, दर दरवेश हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग देणा रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ सतिजुग साची बदल दे रीत, कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण कोए ना पाईआ। तूं हर घट वस्सें बीच, गृह गृह अंदर डेरा लाईआ। झगड़ा मुका दे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। आत्म परमात्म ढोला होवे तेरा गीत, सोहँ सच पढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। मानव माणस मानुख साचा नाम दस्स हदीस, कलमा इक्को इक पढ़ाईआ। तूं ठाकर स्वामी नज़री आवें नीकन नीक, गहर गम्भीर बेनज़ीर परदा देणा उठाईआ। पिछली बदल दे तवारीख, तरीका अगला इक जणाईआ। इक्को रंग रंगा दे हस्त कीट, राउ रंक भेव देणा मिटाईआ। साची दस्स आत्म प्रीत, परमात्म हो के जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो गुर अवतार पैगम्बर बच्चे, सच दयां दृढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तुसीं फिरे नस्से, लोकमात भज्जे वाहो दाहीआ। मेरे सिफ्तां वाले नाम अनेक दस्से, राम कृष्ण अल्ला वाहिगुरु नाम सति कहि के ढोले गाईआ। दीनां मज़हबां पाए रट्टे, झगड़ा जणाया जगत लोकाईआ। अन्तिम पत कोई ना रखे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। अन्त अख़ीरी इक सरनाई ढठ्ठे, प्रभ चरण ओट तकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट रट्टे, झगड़ा मिटे ख़लक खुदाईआ। साडा माण कोई ना रखे, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ पई दुहाईआ। तेरा खेल पुरख समर्थे, दो जहान राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। पुरख अकाल कहे सुण मेरे सुत दुलारे, सति सच दयां दृढ़ाईआ। कलयुग आया अन्त किनारे, नईआ नौका रिहा रुड़्हाईआ। सतिजुग सच होए उज्यारे, धरनी धरत धौल सुहाईआ। करे खेल अगम्म अपारे, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। साचा मार्ग दस्से इक संसारे, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म नाता जोड़ सच्ची सरकारे मेला अगम्म लए मिलाईआ। तत वजूद फेर शृंगारे, तन माटी ख़ाकी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह चलाईआ। सतिजुग चले साचा राह, हरि रहिबर आप चलाइंदा। खेल खेले बेपरवाह, बेपरवाही विच वेख वखाइंदा। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई एका रंग रंगा, दुतिया भाउ ना कोए जणाइंदा।

जगत शरअ दा बंधन दए कटा, शरीअत वंड ना कोए वंडाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सच दा कर ब्याह, तन वजूद माटी ख़ाक सृष्टी दृष्टी नाल जुड़ाइंदा। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच सिर आपणा हथ्थ टिका, सन्त सुहेले आपणे घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी परदा आप उठाइंदा। सति सतिवादी परदा खोल्ह, हरि करता किरपा आप कराईआ। सति धर्म दे कंडे तोल, सति सतिवादी वेख वखाईआ। देवे वस्त नाम अनमोल, अनमुलड़ी झोली पाईआ। सच स्वामी वस्से कोल, घर बैठा काया सोभा पाईआ। मिले वड्याई उपर धौल, धरनी धरत वज्जे वधाईआ। पूरा करे गुर अवतार पैगम्बरां कौल, पिछला लहिणा झोली पाईआ। अग्गे दस्स के धुर दा बोल, अनरागी आपणा राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र करे निरँकार, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिजुग सच्चा खेल अपर अपार, अपरम्पर सुआमी आप समझाईआ। चार जुग दा लहिणा देणा क़र्ज उतार, पिछला लेखा झोली पाईआ। अग्गे हुक्म एका एकँकार, दूजी चले ना कोए चतुराईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बन्न्हणी धुर दी धार, धर्म दुआरा इक प्रगटाईआ। शरअ ज़ंजीर ना रहे संसार, शरीअत विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बोल के सच जैकार, नाता धुर दा दए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा नर हरि इक्को इक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ तेरा हुक्म परवान, निउँ निउँ सीस निवाईआ। बुद्धी तों परे शब्द ज्ञान, अनभव परदा देणा उठाईआ। पढ़न लिखण तों परे तेरा ध्यान, निज नेत्र अक्ख देणी खुल्हाईआ। तेरा मन्दिर सच मकान, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ । जिथ्थे इक्को नाद धुनकान, अगम्मी राग सुणाईआ। दीआ बाती कमलापाती जगे जोत महान, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। तूं तख्त निवासी आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। अवतार पैगम्बरां गुरुआं देंदा रिहों दान, नाम भण्डारा झोली पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण नूर जोत हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। सतिजुग साचा सच धर्म दा बणा विधान, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। चार वरनां करना पए परवान, नव सत्त वज्जे वधाईआ। सति धर्म दा झुलणा इक निशान, दो जहान वेख वखाईआ। आत्म परमात्म मेला गोपी काहन, सुरती शब्द जोड़ जुड़ाईआ। तन वजूद ओस दा निशान, जो निशाना निरगुण सरगुण गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ । गुर अवतार पैगम्बर सारे कहिण तेरी खाईए क़सम, सुगंद तेरी नज़री आईआ। सतिजुग साची चला रसम, रहिबर बण नूर खुदाईआ। खेल करे आपणे दीद चश्म, सन्मुख हो के वजे वधाईआ। नाता जोड़ पंज

१८६
२१

तत माटी जिस्म, ज़मीर अंदरों आप बदलाईआ। तेरा नूर अलाही इस्म, आज़म देणा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग इक्को इक रखाईआ। इक्को मार्ग तेरा रस्ता ठीक, ठाकर देणा समझाईआ। सति धर्म दी सतिजुग चले रीत, रीतीवान तेरी बेपरवाहीआ। तूं बैठा रहें अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। जन भगतां काया माटी कर दे ठांडी सीत, अगनी तत ना कोए तपाईआ। अन्तर निरंतर तेरा गावण गीत, नाउँ निरँकार वज्जे वधाईआ। तूं रहमत विच साचा नाम कर बख़्शीश, अनमुलड़ी दात झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी निरगुण निराकार निरँकार तेरी ओट तकाईआ। पुरख अकाल कहे हुक्म देवां धुर दरबार, दरगाह साची सच जणाईआ। सतिजुग साचा कर त्यार, त्रैगुण लेखा दयां मुकाईआ। आत्म परमात्म दे अधार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। साचा मार्ग दस्स संसार, सोई सुरत दयां उठाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर आवे विचार, बुध्ध बिबेक आप बणाईआ। मन कल्पणा करे ना कोए खुआर, गढ़ हँकार दयां तुड़ाईआ। चार वरनां दस्स के इक दुआर, मन्दिर इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे वस्से इक्को पुरख अकाल, दीन दयाल सोभा पाईआ। सो सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। ओथे पोह ना सके काल, महाकाल ना कोए वड्याईआ। इक्को नूर जोत जमाल, जल्वागर करे रुशनाईआ। सृष्टी नाता वेख दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। साचा मार्ग दए वखाल, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। राउ रंक ऊँच नीच दीन मज़हब ज़ात पात शरअ विच्चों कर बहाल, मानव मानव जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख वेखे सन्त सुहेले आपणे लाल, लाल गुलाला दीन दयाला साहिब सतिगुर बण रखवाला, एथे ओथे दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

कीती अरदास मुनी अगरस्सत, गशत चार कुण्ट लगाईआ। वस्त अमोलक दे वस्त, वस्त वस्त विच्चों प्रगटाईआ। ख़ाली भण्डारा भर दस्त, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर हरस, हरस हवस पन्ध मुकाईआ। मेहरवान हो के कर तरस, तरस विच रहमत आप कमाईआ। अमृत मेघ अगम्मा बरस, बरखा धुर दी इक बरसाईआ। तेरे विछोड़े विच रिहा तड़फ, तड़फना दे गुआईआ। सच मुहब्बत रिहा भटक, भटकना अवर दे चुकाईआ। जगत विवहार ना रहे कोई कटक, कटाख़श आपणा इक लगाईआ। तेरा मेल होए बेखटक, खटका कूड़ देणा चुकाईआ। सच दुआर

पुज्जया निघ्ड़क, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। अगों पुरख अकाल किहा कड़क, शब्द अगम्मी आवाज़ सुणाईआ। मेरी चाल निराली वखरी जुग जुग मटक, भेव आपणा आप खुल्हाईआ। जो जुग चौकड़ी रहे लटक, पल्लू आशा गंढु पुआईआ। इक्को लोचन नैण वेखण दरस, आदर्श इक्को ध्यान लगाईआ। उन्हां दा लहिणा वेखणा उत्ते अर्श, फ़र्श आपणा खेल खिलाईआ। जिस वेले निरगुण धार आवां परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। चार जुग दा लेखा वेखां फ़रद, परदा उहला आप चुकाईआ। साचे सन्तां वंडां दरद, दीनां आपणे गले लगाईआ। छुरी रहे कोई ना करद, क़ातल मक़तूल रूप ना कोए बणाईआ । कूड़ी क्रिया मेटां गरद, गरदिश वेखां जगत लोकाईआ। सूरबीर योद्धा बण के आवां मर्द, मद्दद मँग ना कोए मँगाईआ। जन भगतां वण्डां दरद, दीनां अनाथां हो सहाईआ। इक्को नाम सुणावां तर्ज़, तराज़ू कंडे आपणे तोल तुलाईआ। तेरी उस वेले पूरी करां अर्ज़, बेनन्ती झोली पाईआ। जन भगतां मिलण दी इक्को गर्ज़, ग़रीब निमाणे गोद उठाईआ। किसे दा होण ना देवां हरज, हरजाने सब दे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद इक्को हुक्म वरताईआ। मुनी अगस्सत कहे मेरे मुनीर, मुज़क्कर मुअन्नस तेरी समझ कोए ना आईआ। केहड़ी दस्सी तक़रीर, तरीका की दृढ़ाईआ। फेर मार के इक लकीर, निशाना दिता वखाईआ। जिस वेले एह मंज़ल लंग्घया कबीर, क़बरां दा डेरा ढाहीआ। फेर गोबिन्द फड़ी शमशीर, खण्डा इक्को इक चमकाईआ। दो जहानां वेख जागीर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। फेर नाता छड्ड सरीर, जोती शब्दी धार समाईआ। फेर चोटी चढ़ अख़ीर, आख़र मंज़ल खोज खुजाईआ। दर्शन देवे बेनज़ीर, नज़रीआ नज़र विच्चों बदलाईआ। लहिणा वेख शाह हकीर, राउ रंक दए वड्याईआ। जन भगतां होण ना दए दिलगीर, निंदरा आलस ना कोए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक समझाईआ । मुनी अगस्सत कहे पुरख अकाल तूं नहीं कोई मनुक्ख, मानव देव ना कोए वड्याईआ। मैं तेरी सुगंधी सुक्खणा लवां सुक्ख, पाबन्दी अवर ना कोए जणाईआ। तूं निरगुण धारों पैणा उठ, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जन भगत सुहेले बणाउणे धुर दे सुत, साजण हो के गोद टिकाईआ। मेहरवान हो के लैणा पुच्छ, मेहर नज़र आपणी आप कराईआ। सति धर्म देणा सुच, संजम इक्को देणा जणाईआ। धुर दी मौले अगम्मी रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। सब दा पैंडा जाणा मुक, अन्त अख़ीर दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग इक रंगाईआ। मुनी अगस्सत कहे तेरा खेल सदा आहिस्ता, हौली हौली वज्जे वधाईआ। मैं वेखणा उह फ़रिश्ता, जेहड़ा पैगग्बरां हुक्म सुणाईआ। जग नेत्र किसे ना दिसदा, जगत मुहब्बत विच कुरलाईआ। एह खेल होणा अगम्मी इक दा, एकँकार वड्डी

१८८
२१

वड्याईआ। जो लख चुरासी जीव जंत साध सन्त जित्तदा, बल भय आपणा आप प्रगटाईआ। ओह जन भगतां झगड़ा मुकावे नित दा, जन्म मरन दा लेखा रहे ना राईआ। मेल दस्से आपणे हित दा, हितकारी हो के खोज खुजाईआ। गुरमुखां झगड़ा मुका के नित दा, नवित्त आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त कर के हित्त धुर दा पित जन भगतां साचे लेख लिखदा, जिस दा लिख्या लेख अग्गे सके ना कोए मिटाईआ।

✻ २६ बैसाख शहिनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह बाबू पुर ज़िला गुरदासपुर ✻

आदि जुगादि पुरख अकाल वड प्रतापी, ताब्यादारी सब दी वेख वखाईआ। धुर संदेसा देवे धुर दी अगम्मी राती, जिस रैण दी चार जुग वंड ना किसे वंडाईआ। योद्धा सूरबीर बहादर निरगुण सरगुण धार मार थापी, बलधारी आपणा बल प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर निरअक्खर धार वेखो आपणी कापी, जिस दी कापी जगत विद्या ना कोए समझाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग किन किन कितने तारे पापी, पतित पुनीत बणाईआ। की सृष्टी दृष्टी अंदर रहन्दा बाकी, लेखा सब दा दयो दृढ़ाईआ। की खेल कराया काया माटी तन ख़ाकी, वजूद महबूब वेख वखाईआ। की जाम पिआया बण के धुर दे साकी, रस अमृत इक चुआईआ। की मन्दिर अंदर खोल्लयाा बन्द किवाड़ा ताकी, भेव अभेदा दिता खुल्हाईआ। सच दस्सो, क्यों मनुआ हर घट अंदर होया आकी, ममता मोह विच हल्काईआ। क्यों झगड़ा पाया ज़ात पाती, दीन मज़हब वंड वंडाईआ। की खेल कीता पृथमी आकाशी, गगन गगनंतर देणा जणाईआ। की हुक्म मन्नया पुरख अबिनाशी, हरि जगदीश जो जणाईआ। की मंज़ल चढ़े घाटी, कौण दुआरे वज्जी वधाईआ। की पदारथ नाम दिता दाती, दौलत धुर दी इक वरताईआ। की कथा कहाणी दस्सी गाथी, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। की सुरती सोवत धार जागी, जागरत आपणा रंग रंगाईआ। क्यों दीन दुनी होई बाग़ी, वैरागी नज़र कोए ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणया कौण बाडी, घाड़त किस बिध रिहा घड़ाईआ। की रसना जिह्वा बत्ती दन्द गाइन सोहले ढोले केते ढाडी, जगत रागां विच अल्हाईआ। क्यों झगड़ा पाया मानव मानव समाजी, समां समझ ना कोए समझाईआ। धुर दा हुक्म इक जवाबी, जवाब मँगे थाउँ थाईंआ। की सजदा दस्से आदाबी, नमस्ते कौण वड्याईआ। की खेल वखाया महिराबी, मन्दिरां वज्जे वधाईआ। की नाद सुणाए नादी, अनहद नादी धुन उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच फ़रमाना

इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो आपो आपणा हिसाब, अंकड़े आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा इक्को वार जवाब, दूजा फिकरा ना कोए अलाईआ। कवण शाह कवण शहिनशाह कवण पातशाह नवाब, नौबत नाम हक़ कवण वजाईआ। कवण निरगुण सरगुण देंदा रिहा ख़ताब, ख़तो ख़ताबत शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी दिती समझाईआ। कवण देंदा रिहा अमृत रस अम्मउँ स्वाद, बिन रसना रस चखाईआ। कवण दस्सदा रिहा आपणा नाम अल्ला वाहिगुरु राम गॉड, धुर संदेसयां विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो आपणा लेखा, लिख्त सके ना कोए समझाईआ। की सुणदे रहे धुर दा संदेसा, जिस दी सनद लोकमात हथ्थ किसे ना आईआ। केहड़ा वेखदे रहे वेसा, कवण दुआरे वजदी रही वधाईआ। कवण बणदा रिहा खेवट खेटा, नईआ सईआ इक वखाईआ। कवण बणाउँदा रिहा पिता पूत आपणा बेटा, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। चार जुग दा पिछला सारे कर लओ चेता, चेतन आपणा हुक्म उपजाईआ। किस बिध सब दा पूरा होणा ठेका, ठेकेदारी रहिण कोए ना पाईआ। किस बिध तत्तां वाले सरीर दी लैंदे रहे भेंटा, धुर दा नाम अक्खरां विच वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो चुक्कके आपणा परदा, ओहला रहिण कोए ना पाईआ। तुहाडा लहिणा देणा की चेतन जड़ दा, सहजे देणा समझाईआ। कवण धार निरअक्खर रिहा पढ़दा, अक्खरां की वड्याईआ। सच दस्सो गुर अवतार पैगम्बर हो के क्यों रिहा मरदा, तत्तां वाला सरीर तजाईआ। क्यों ना भेव पाया धुर दे हरि दा, सद हरि हरि विच समाईआ। क्यों खेल करदे रहे पहले दूजे तीजे चौथे घर दा, हिस्से बच्चयां वाले वंडाईआ। क्यों मानव मानव गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडे ज़रीए रिहा लड़दा, दीनां मज़हबां विच लड़ाईआ। जिस ने भेव पाया मेरे घर दा, नाता दीन दुनी गया तुड़ाईआ। शरअ विच कदे ना वड़दा, हक़ महबूब मिल के आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो क्यों बणे कुतबफ़रोश, कातब कलमां वाले अख्वाईआ। क्यों वेखी जगत वाली सोच, बुद्धी नाल वड्याईआ। क्यों झगड़ा पाया चौदां लोक, चौदां तबक देण दुहाईआ। क्यों शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरानां वाली दस्सी खोज, सिफ्तां विच सिफ्ती नाम लड़ाईआ। क्यों सतिगुर हो के अवतार हो के पैगम्बर हो के गुस्से विच चढ़दा रिहा जोश, खण्डे खड़ग तीर कमान मोढ्या उत्ते रखाईआ। क्यों इक दूजे उत्ते पाउँदे रहे बोझ, भार मज़हबां वाला बणाईआ। मेरे अंदर वड़ के मेरा पुच्छ लैंदो गोझ, परदा उहला रहे ना राईआ। फेर मेरे नाम दा देंदा कोई ना दोष, नाम दा नाम करे ना

कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप सुणाईआ। गुर अवतर पैगम्बरो क्यों पाउँदे रहे वण्डां, आपणा डंक वजाईआ। क्यों खड़काउँदे रहे खण्डा, खड़गां हथ्थ विच चमकाईआ। क्यों मानव मानव लड़ाउँदे रहे बन्दा, बन्दगी विच बन्दे क्यों ना बणाईआ। क्यों हिस्से पाए तारा चन्दा, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। क्यों खेल खेलया केस कंघा, बोदी जञ्जू ना कोए वड्याईआ। क्यों योद्धे सूरबीर अख्वा के कीता दंगा, क्यों जंगलां विच बणां विच आपणा आप भुआईआ। क्यों दीन दुनी वेख्या दंगा, हैरानी विच ख़लक खुदाईआ। क्यों ना मेरा वेख्या धुरदरगाही डंडा, जिस नूं डंडावत कर के सारे सीस निवाईआ। जिथ्थे दीन दयाल पुरख अकाल इक्को बख्शंदा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो आपणी पुस्तक, जो पुष्त दर पुष्त चली आईआ। जिस दे विच अक्खरां विच सिफ्तां वाली प्रभ दी उस्तत, महिमा विच वड्याईआ। क्यों नहीं इक्को नाम ते इक्को मन्नया मुर्शद, कलमा इक समझाईआ। क्यों दीन दुनी वलों कर के बैठे रुख़सत, आपणा पल्लू रहे छुडाईआ। जैकार करो विवहार करो फिर सदी चौधवीं किसे ना मिले फ़ुरस्त, वेला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखो आपणी करनी, हरि करता आप दृढ़ाईआ। क्यों झगड़ा वरनी बरनी, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग ना कोए रंगाईआ। क्यों ना पुरख अकाल दी दस्सी धुर दी सरनी, जगत दुनी वंड वंडाईआ। क्यों ना इक्को तुक दस्सी पढ़नी, जुग जुग नाम दिते बदलाईआ। क्यों ना इक्को मंज़ल दस्सी चढ़नी, जिथ्थे मिले धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दईए की जवाब, तोबा तोबा सीस निवाईआ। तेरा खेल हक़ जनाब, महबूब तेरी बेपरवाहीआ। जुग जुग सजदे करदे आए आदाब, नमस्ते विच सीस झुकाईआ। तेरे प्रेम दा लै के ख़ताब, खुद मालक तेरी ओट तकाईआ। कलयुग द्वापर त्रेता सतिजुग दस्सदे आए आदाब, सीस जगदीश इक निवाईआ। अंकड़यां दा रख्या नहीं कोई हिसाब, लेखा वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को तेरी ओट रख के आदि, अन्त तेरा राह तकाईआ। तेरी किरपा गए जाग, अन्त तेरे विच समाईआ। तेरा हुक्म तेरा समाज, दीन दुनी तेरी वड्याईआ। तेरा फ़रमाना धुर दा राज, रईयत वेखी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सारे करीए चेता, पूरब ध्यान लगाईआ। राम ने किहा, वशिष्ट ने दस्सया मैनूं मेरा नेता, राम राम दा मालक नज़री आईआ। जो आदि जुगादि

सब नाल करे हेता, हितकारी धुरदरगाहीआ। उन्नती बैसाख वशिष्ट सुत्ता सी विच खेतां, ओढ्ढन नज़र कोए ना आईआ। चरणां विच सी लेटा, दसरथ बेटा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग चढ़ाईआ। वशिष्ट किहा सुण राम रामे, राम दयां जणाईआ। अवतार पैगम्बर जिस दे कामे, गुरु गुरदेव सेव कमाईआ। जुग जुग बदलदे रहिण जामे, निरगुण सरगुण सोभा पाईआ। डंके शब्द वजदे रहिण दमामे, जगत जहान शनवाईआ। ढोले गाउँदे रहिण हरि नामे, सिफ्तां विच सालाहीआ। की तक्कण दो जहाने, पुरी लोअ आकाश वेख वखाईआ। अन्तिम चलण धुर दे भाणे, सिर सके ना कोए उठाईआ। उठ वेख गेहूं दे दो चार दाणे, जिस नूं गंदम कहे लोकाईआ। कुछ वड्डे कुछ छोटे कुछ बुढ्ढे कुछ बाल अंञाणे, कुछ कच्चे पक्के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए जणाईआ। राम किहा एह दाणा कणक, वशिष्ट किहा कणक कामनी दोवें दए तजाईआ। राम किहा आह मेरा धनुख, वशिष्ट किहा धनुष बाण कम्म किसे ना आईआ। राम किहा आह मेरे अन्तर अणख, वशिष्ट किहा हँकार कम्म किसे ना आईआ। राम किहा आह मेरे कोल संख, वशिष्ट किहा जगत आवाज़ ना कोए सुणाईआ। राम किहा आह मेरा लेखा वेख टंक, चौदां भार सोभा पाईआ। वशिष्ट किहा तेरा लहिणा नाल जनक, जानकी देवणहार वड्याईआ। राम खोल्ह के वेखी पलक, नेत्र नैण उठाईआ। वशिष्ट किहा विषयां तों परे वेख लै झलक, जो झल्ले सब नूं रही बणाईआ। नूरी नूर जणा के ख़लक, ख़ालक मख़लूक दोवें परदा लाहीआ। मस्तक नज़र ना आया तिलक, ललाटी जोत नूर रुशनाईआ। कलयुग वखाया जो नेत्र रो के रिहा विलक, बौहड़ी बौहड़ी दए दुहाईआ। सति धर्म वखाया जो हर हिरदउँ गया खिसक, तन मन्दिर अंदर नज़र ना आईआ। प्रेम वखाया जो वहिंदी धार गया तिलक, सच दुआरे सोभा कोए ना पाईआ। वशिष्ट किहा राम उह वेख जां तक्कया ते सृष्टी दिसी निन्दक, निन्दया विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। वशिष्ट किहा एह राम किस दी खेती, कवण ख़ातर रिहा कराईआ। असीं दोवें परदेसी, मालक नज़र कोए ना आईआ। वशिष्ट किहा ज़रा निगाह मार के वेखीं, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जां तक्कया इक नज़र आई नौ साल दी बेटी, कन्या रूप बदलाईआ। चार कुण्ट रही वेखी, दह दिशा फोल फुलाईआ। नाले हस्स के किहा राम वशिष्ट तेरी की शेख़ी, शरअ विच दयो जणाईआ। की दुनियां दी रेखी, ऋषीआं विच की वड्याईआ। की क़लम कातब वाली लेखी, लिख्त दए भुगताईआ। जे तुसीं दोवें परदेसी, देस वाला नज़र कोए ना आईआ। एस भुल दी प्रभ दे कोल भुगतो पेशी, पेशनगोई दयां जणाईआ। जिस वेले मालक आवे नर नरेशी, नर नरायण धुरदरगाहीआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप जणाईआ। राम वशिष्ट दे कोल आ गया किरसाण, खुशीआं पन्ध मुकाईआ। वेख्या नाल ध्यान, पलक अक्ख बदलाईआ। अन्तर होया ज्ञान, वज्जी सच वधाईआ। चरणी डिग्गा आण, सीस सर निवाईआ। बोल के नाल ज़बान, बेनन्ती इक सुणाईआ। तुसीं परदेसी मेरे महिमान, भोजन देवां चखाईआ। राम ने पकड़ के ओस दा कान, चारों कुण्ट दिता भुआईआ। चरण मारया ओस दी उत्ते टांग, बदन दिता हिलाईआ। ओस दी निकल गई चांघ, रो के दिती दुहाईआ। राम प्रेम दी अंदर दिती कांग, अमृत मेघ बरसाईआ। उन वेख्या अगम्मी स्वांग, हैरानी विच आपणा आप बदलाईआ। की मँगां एथों मांग, इच्छया इक प्रगटाईआ। फेर पुट्ट के इक पलांघ, अग्गे हो के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। किरसान कहे मेरी वेखो पिछली किरस, सहज नाल समझाईआ। मैनूं इक मिलण दी हिरस, हवस देणी बुझाईआ। वेख्यो तुसीं परदेसी हो के ना जाइओ खिसक, पल्लू ना जाणा छुडाईआ। तुसीं टांक ते नहीं दोवें जिस्त, राम वशिष्ट सोभा पाईआ। तुसीं सतिगुरु जगत जगत वाला भोगो गृहस्त, गृहस्तीआं विच लोकाईआ। मैनूं इक ओस दा इश्क, जो आशक माशूकां तों परे डेरा लाईआ। ओ राम ओ वशिष्ट तुहाडे दोहां तों परे इष्ट, ओस इष्ट दी आशा मैं तकाईआ। मैनूं सच दस्सो कवण वेले आवे विच सृष्ट, निरगुण हो के फेरा पाईआ। बिन क़लम शाही लिख दयो लिख्त, लेखा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। वशिष्ट किहा सुण किरसाणा, किरस नाल जणाईआ। करे खेल श्री भगवाना, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस वेले त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम होवे जहाना, जहालत कूड़ लोकाईआ। साचा प्यार ना रहे किसे रामा, रमईआ राम ना कोए मनाईआ। ओस वेले प्रभू पहरे अगम्मी जामा, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। खेले खेल दो जहानां, जहालत मेटे कूड़ लोकाईआ। प्रगट होवे वड अमामा, अमलां तों बाहर सोभा पाईआ। जिस दा झुल्ले इक निशाना, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन सलामां, नमो नमो कहि के चरणां ख़ाक रमाईआ। ओस दा वज्जणा इक दमामा, डंका धुर दा करे शनवाईआ। हर घट होवे जाणी जाणा, लख चुरासी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक चढ़ाईआ। राम कहे सुण किरसाण वेख आपणी खेती बाड़ी, खेत्रपाल सेव कमाईआ। जिस वेले चौथे जुग विच चौथे सम्मत दी आवे हाढ़ी, हाढ़ा तेरा वेख वखाईआ। प्रभ करे खेल अपर अपारी, अपरम्पर स्वामी धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां सब दी चुक्के वारी, वारस रहिण कोए ना पाईआ। निरगुण नूर जोत करे उज्यारी, नूर नुराना डगमगाईआ। तेरा लहिणा देणा मुकावे वड संसारी, महासार्थी आप

हो जाईआ। धुर दा हुक्म बण लिखारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। वशिष्ट कहे मैं दस्सां विशाल, धुर दा हुक्म समझाईआ। किरपा करे दीन दयाल, दयानिध इक सरनाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बरां दा चुक्के काल, समां रहिण कोए ना पाईआ। सब दा लेखा पिछला कर बहाल, बिहबल आपणी धार समझाईआ। भगत सुहेले उपजा लाल, हरिजन आपणी गोद उठाईआ। साचा मार्ग दए सुखाल, रस्ता इक्को इक प्रगटाईआ। जिथ्थे चलण शाह कंगाल, ऊँच नीच ना वेख वखाईआ। ओस वेले तेरा पूरा होवे सवाल, बेनन्ती आपणे लेखे पाईआ। असीं वी वेखण आईए सुहञ्जणा समां अगम्मी हाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा परदा लाहीआ। राम वशिष्ट दोहां कीता इक़रार, कौल नाल समझाईआ। रसना वाला नहीं तकरार, जिह्वा वाली ना कोए लड़ाईआ। एह हुक्म सच्ची सरकार, धुर फ़रमाना दईए जणाईआ। जिस वेले आवे कलयुग अन्तिम वार, वारता पिछली दए मुकाईआ। साचा नाम कर उज्यार, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले लए उठाल, हरिजन आप जगाईआ। सुरत लए संभाल, धुर दा मेल मिलाईआ। वखा इक धर्मसाल, धर्म दुआर वज्जे वधाईआ। बदल के आपणी चाल, चाल निराली इक जणाईआ। पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा पूर कराईआ। किरसाण किहा की मेरा होवे कसब, सच दयो समझाईआ। की ज़ाती होवे मज़हब, परदा देणा उठाईआ। किस नूं करां अदब, किस नूं सीस निवाईआ। किस दे चुम्मां क़दम, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। वशिष्ट ने हथ्थ फेरया उत्ते बदन, बदी अंदरों दिती कढ्ढाईआ। राम ने आपणे चरण दे विच्चों वखाया पदम, पदमां जन्मां दा लेखा दिता मुकाईआ। इक प्रीती विच कर के मग्न, सुरती शब्द जुड़ाईआ। सच प्रेम दी ला के लग्न, लग मातर दिती मिटाईआ। कलयुग लग्गी वखाई अगन, चार कुण्ट दुहाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बरां चले कोई ना यतन, यथार्थ हुक्म ना कोए वरताईआ। साचा रहे कोई ना पतण, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। ओस वेले पुरख अबिनाशी घट निवासी आपणी धारों आवे निकल भगतां पैज रखण, जोती जाता वेस वटाईआ। सन्त सुहेले आवे दस्सण, गुरमुख गुर गुर जोड़ जुड़ाईआ। सब दी पूरी करे आसण, इच्छया पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। राम किहा सुण किरसाण किरसाणे, क्रिया कर्म दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले मित्र सज्जण दोस्त साक होए बेगाने, प्रेमी नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी देवे ताअने, झगड़े विच लोकाईआ । ओस वेले प्रभ करे खेल महाने, मेहरवान वेस वटाईआ। पन्ध मुका ज़िमीं असमाने, दर घर साचे सोभा पाईआ। जिथ्थे हरिजन भगत करे परवाने, परवाना आपणा नाम फड़ाईआ।

वशिष्ट राम किहा साडे कोलों बणावे बहाने, बचन मुख तों रिहा कढ्ढाईआ। वाली दो जहाने, जुग जुग करता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे विच समाईआ। वशिष्ट किहा आह वेख मेरी थापी, पुश्त पनाह लगाईआ। कलयुग अन्तिम आवे वड प्रतापी, हरि करता फेरा पाईआ। जिस मेहर निगाह नाल तारने पापी, पतित पुनीत कराईआ। जन भगत बणाउणे धुर दे जापी, इक्को नाम जपाईआ। जे तुहाडे कोल नहीं ओस प्रभू दे कोल भगतां दी कापी, जुग जुग लेखा भुल्ल कदे ना जाईआ। एह ओहो दिन उन्नती बैसाख दी राती, राती रुती रुत आपणे नाल महकाईआ। किरसाण पिछले किरसाणां दा साथी, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी करे आखी, आखी दा आख़र, सर्ब दा ठाकर, किरसाणां दा चाकर, शब्दां दा पात्र, प्रेम दा साथण, वेखणहारा खेल तमाशण, तमाशा नहीं ताअमील, खेल नहीं सुणी अपील, अपील नहीं भगत दी वेखी दलील, दलील दा मालक, ख़लक दा ख़ालक, धर्म दा सालस, पिछला किरसाण एह दलीप बालक, बाल्याँ दा बालम इक्को नज़री आईआ।

❋ ३० बैसाख शहिनशाही सम्मत ४ जमांदार किशन सिँघ दे गृह अल्लड़ पिंडी ज़िला गुरदास पुर ❋

अक्खर कहिण क्यों साडी पाई वंडी, जुग जुग आपणा नाम बदलाईआ। शरअ मज़ब ला के पाबन्दी, हिस्सयां विच रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणा के जंगी, मानव दिता लड़ाईआ। आपणी सिफ्त नूं कर पखण्डी, सिफ्त विच दुहाईआ। की एह खेल तेरी चंगी, परदा देणा उठाईआ। अछल छलधारी क्यों सृष्टी कीती अन्धी, नैण मूंद नैण बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की आपणा हुक्म वरताईआ। अक्खर कहिण क्यों अक्खरां विच करदा रिहों बदली, जुग जुग आपणा नाम रखाईआ। की इन्साफ तेरा धुर दे अदली, शाह सुल्तान देणा समझाईआ। की खेल खिलाया वेख वखाएं विच जंगलीं, जगह जगह तेरी दुहाईआ। किसे नूं समझ आउण नहीं दिती अगली, परदा भेव ना कोए चुकाईआ। सिफ्ती नाम दी दे के बग़ली, धरनी धरत धवल उत्ते दिता फिराईआ। तेरे हो के तेरी धार नूं कहिंदे गए कमली, कामल मुर्शद की तेरी चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की आपणा खेल वखाईआ। अक्खर कहिण क्यों बदलदा रिहा असूल, असल दे जणाईआ। क्यों अवतार पैगम्बर बणउँ रसूल, रूप अनूप धराईआ। क्यों ना दस्सया धुर दा हुक्म माअकूल, एकँकार इक्को वार जणाईआ। क्यों नित नवित्त बदलदा रिहों रूल, फ़रमाना राणा इक सुणाईआ।

क्यों गुर अवतारां पैगम्बरां तैनूं किहा कन्तूहल, कन्त भगवन्त इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब परदा दे उठाईआ। अक्खर कहिण जुग जुग साडी हुंदी रही बदनामी, तेरे नाम पिच्छे दुहाईआ। दीन दुनी वेख बेइंतज़ामी, इंतक़ाम लैण वाला नज़र कोए ना आईआ। तेरी सिफ्तां वाली सलामी, साहिब सिरताज रही बणाईआ। असीं गुर अवतार पैगम्बरां दी कटदे रहे गुलामी, ज़ंजीर शरअ वाले पुआईआ । तूं मालक इक असमानी, मूसा ईसा दए दुहाईआ। मुहम्मद करबले वाली क़ुरबानी, काअबा अंदरों मारे धाहीआ । अवतार जंगलां वाली निशानी, पर्बतां विच कुरलाईआ। गुरु दस्स तेरी कहाणी, भेव अभेद जणाईआ। क्यों निरगुण धार झगड़ा पाया जिस्मानी, तत शरीर वंड वंडाईआ। क्यों ना मंज़ल इक्को रखी रुहानी, रहमत आप कमाईआ। अक्खरां विच साडी प्रगट हुंदी रही बेईमानी, इन्साफ अदल ना कोए कमाईआ। असीं मंज़ल मँगदे नहीं कोई दरम्यानी, दर दरबार इक्को वज्जे वधाईआ। किरपा कर शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। धुर दा मार्ग दस्स आसानी, जिस नूं सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा परदा लाहीआ। अक्खर कहिण क्यों सानूं बणाउँदा रिहों कलमा नाम, सिफ्तां विच सालाहीआ। किरपा कर धुर अमाम, परदा दे उठाईआ। क्यों चर्चां मस्जिदां हुंदा सलाम, मठ मन्दिरां सीस निवाईआ। क्यों तटां हुंदा इश्नान, पाणी नाल सफ़ाईआ। क्यों पत्थरां वाले मन्नदे राम, सथ्थरां वाले कृष्ण ताज पहनाईआ। क्यों अक्खरां दी दीन दुनी दे लगाम, रुख़ मनुक्ख दिता बदलाईआ। तेरा भेव समझया ना किसे जाणी जाण, क्यों परदा रिहा रखाईआ। अक्खर पढ़ पढ़ सारे होए हैरान, सड़ सड़ मरी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर देणा वखाईआ। अक्खर कहिण प्रभू असीं तेरे मज़दूर, मज़दूरी सद कमाईआ। क़लम शाही लिखणा जगत बणाया दस्तूर, हुक्म इक अलाहीआ। अक्खर कहिण साडे पिच्छे प्रभू तैनूं भुल्ल गए हज़ूर, हज़ूर सानूं बैठे बणाईआ। अक्खर कहिण असीं जाणीए तेरा नहीं तेरे अवतार पैगम्बरां दा क़ुसूर, जिन्हां नूं शरअ विच दिता भुआईआ। उन्हां तेरा भाणा मन्नया कि दुनी विच पाया फ़तूर, फ़तवे सब दे उत्ते लगाईआ। तेरे नाम नूं बदल के हुंदे रहे मशहूर, मशहूरी आपणी नाल रखाईआ। जे समझदे असीं सारे तेरा नूर, फेर अल्ला वाहिगुरु ओम वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला रिहा मिलाईआ। अक्खर कहे की प्रभू तूं वड़िआ विच अक्खरां, अक्खरां तों परे ना कोए वड्याईआ। की लभ्भें विच्चों पत्थरां, सिल पूजस पाहन मिले सरनाईआ। की वस्सें विच लक्कड़ां, धूंणीआँ जगत तपाईआ। की खेल तेरा वक्खरा, सच देणा समझाईआ। जुग चौकड़ी करदा रिहों नख़रा, घूँगट सक्कया ना कोए उठाईआ। की खेल खेलदा रिहों मथरा,

अयुध्या की चतुराईआ। की लहिणा बग़दाद बसरा, भेव देणा समझाईआ। क्यों गुर अवतार पैगम्बर पसारा पसरा, नाता जगत जुड़ाईआ। अक्खर कहिण अबिनाशी करते असीं ते तेरयां दा बणाउण वाले शजरा, शरअ विच सारे दिते लड़ाईआ। किसे नूं हथ्थ ना आया तेरा नम्बर ख़सरा, जिस नम्बर विच कोटन कोटि अम्बरां दे स्वयम्बर दिते रचाईआ। ओथे पता नहीं लगदा गुर अवतारां पैगम्बरां, अनगिणत तेरे विच्चों निकल के तेरे विच समाईआ। कोई चढ़या नहीं वेख्या तेरे मुनारे उपर मिम्बरा, आवाज़ हक़ हक़ अल्लाईआ। अक्खर कहिण असीं जेहड़े वेखीए ओह अन्त सुत्ते विच मढ़ीआं क़बरां, गोरां विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा रिहा वखाईआ। अक्खर कहिण तेरे नाम दी सानूं मिलदी रही शाबाश, गुर अवतार पैगम्बर देण वड्याईआ। प्रभू तेरा नाम समझया ना किसे ख़ास, एसे कर के तेरे अग्गे दईए दुहाईआ । तेरे नाम उत्ते पैगम्बरां दा जांदा रिहा विश्वास, गुरुआं गुर दिता बदलाईआ। असीं हस्सदे रहे एह सारे प्रभ दी निक्की जिही शाख़, शनाख़त करन वाला नज़र कोए ना आईआ। सिफ्तां वाली दस्स के बात, कथा कहाणी गए सुणाईआ। जे समझदे असीं ओहो नूर ते ओहो ज़ात, फेर अक्खरां दी वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरी बिन अक्खरां तों तेरे दुआरे किताब, कुतबख़ान्यां विच ना कदे टिकाईआ। जगत विद्या विच उहदा सिफ्तां वाला प्रकाश, तेरा नाउँ बदलदे रहे गुर अवतार पैगम्बर पंजां तत्तां वाली लाश, लाशरीक शरीक तेरे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा रूप इक्को आदि जुगादि साख्यात, काग़ज़ात विच बन्द ना कोए कराईआ।

❋ ३० बैसाख शहिनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ❋

अक्खर कहिण तेरे नाम दी तेरा नाम करे तसदीक़, शहादत इक्को इक भुगताईआ। अक्खरां विच्चों अक्खरां दी बदलदा रिहों तवारीख, तारीख आपणी ना किसे समझाईआ। अक्खरां विच अक्खरां दी देंदा रिहों भीख, भिच्छया धुरदरगाहीआ । अक्खरां विच अक्खरां दी कराउँदा रिहों रीस, रस्ता रसते विच्चों जणाईआ। अक्खरां विच्चों अक्खरां दी जणाउँदा रिहों हदीस, हज़रतां कर पढ़ाईआ। अक्खरां विच आपणी दस्सदा रिहों उम्मीद, आशा आप वधाईआ। अक्खरां नाल अक्खरां दी करदा रिहों ताईद, ताबिआदारी सर्ब समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग अगम्म चढ़ाईआ। अक्खरां विच अक्खर देण शहादत, शायद वाला लेखा रहे ना राईआ । अक्खरां नाल अक्खरां दी बदल दिती इबादत,

बन्दगी बंदयां ताईं समझाईआ। अक्खरां नाल अक्खरां लाई अलामत, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। अक्खरां नाल समझाया सही सलामत, सति दुआरे सोभा पाईआ। अक्खरां नाल दस्सी नाम सच निआमत, वस्त अमोलक इक दृढ़ाईआ। अक्खरां विच गुर अवतार पैगम्बरां दिती ज़मानत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक समझाईआ। अक्खर कहिण असीं अक्खर बणे सके, नाता क़लम शाही तुड़ाईआ। तेरे हुक्म दे दिते पते, पतिपरमेश्वर तेरी सिफ्त सालाहीआ। जुग चौकड़ी सेवा कर कर थक्के, भज्जे वाहो दाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां लेख लिखाए हथ्थे, दिवस रैण सेव कमाईआ। तेरे अखवाउँदे रहे बच्चे, बचपन तेरी झोली पाईआ। सानूं ऐं जाप्या इक गल्ल तों रैह गए कच्चे, जो तेरा नाम अक्खरां वाला अक्खरां विच उलटाईआ। आपणी कलाम नूं दस्सदे रहे सच्चे, सच्चा हुक्म दृढ़ाईआ। खेल हुंदा रिहा दीगरे बाद यक्के, नित नवित्त वेख वखाईआ। क्यों पैगम्बरां मारे अवतारां नूं धक्के, क्यों गुरुआं पैगम्बरां नाल करी लड़ाईआ। अक्खरां नाल अक्खर फटे, फट्ट घाउ दिता वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणे नाम दे दस्स के निक्के जिहे टप्पे, टापूआं विच सारे बन्द कराईआ। असीं हैरान होए क्यों ना सृष्टी तेरा इक्को नाम जपे, जुग जुग इक्को ढोला गाईआ। मेहरवान महबूब अग्गे वास्ते इक़रार कर पक्के, पक्की साडे नाल पकाईआ। बिन तेरे हिरदे अवर कोई ना वस्से, दूजा नजर कोए
१९८
२१
ना आईआ। जे गाईए ते असीं तेरा धुर दा जस्से, सिफ्त सलाह तेरी सरनाईआ। सीस झुकाईए धूढ़ी लाईए मस्तक मथ्थे, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। चार कुण्ट दह दिशा एका हुक्म अंदर नठ्ठे, भज्जीए वाहो दाहीआ। पिछले रहिण ना देवीं कोई हिस्यां वाले पट्टे, पट्टेदारी देणी गुआईआ। अक्खरां नूं चढ़ावे कोई ना टके, टक्यां वाली क़ीमत ना कोए रखाईआ। सच बेनन्ती तेरे अग्गे, बिरहों दिती सुणाईआ। सच सरनाई तेरी लग्गे, सरनगति इक्को नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्मा परमात्मा तेरा नूर तेरा नाम जपे, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर जो उपज्या सो तेरे विच खपे, वखरा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाम दी होवे इक्को सते, सति सति विच रखाईआ।

✻ ३० बैसाख शहिनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✻

अक्खर कहिण जुग जुग तेरे नाम दे देंदे रहे होके, हुक्म फ़रमाना इक सुणाईआ। तेरे सिफ्ती नाम जणाए चोखे, चार कुण्ट चार जुग वजदी रही वधाईआ। गुर अवतर पैगम्बर सानूं वेखदे रहे काया माटी अंदर झरोखे, निगाह निगाह विच्चों

बदलाईआ। सदा सेवा करदे रहे तेरी मुहब्बत विच मोह दे, प्यार नाल प्यार बणाईआ। प्रकाश दस्सदे रहे तेरी लो दे, लोआं पुरीआं गणत गिणाईआ। संदेसे देंदे रहे तेरी सो दे, साहिब सुआमी तेरी वड वड्याईआ। पैंडे मुकाउँदे रहे योजन कोह दे, पाँधी रसत्यां विच भुआईआ। इशारे दस्सदे रहे तेरी छोह दे, शहिनशाह तेरा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा परदा लाहीआ। अक्खर कहिण तेरी गा गा थक्के बाणी, जुग जुग महिमा सिफ्त सालाहीआ। तेरी दस्सदे रहे कहाणी, रागां नादां वंड वंडाईआ। तेरा खेल जणाउँदे रहे दो जहानी, जीव जहान जगत दृढ़ाईआ। सेवक हो के भरदे रहे तेरा पाणी, पनघट तेरा चरण कँवल वखाईआ। तेरा मेला मेलदे रहे नाल चारे खाणी, चारे जुग जुगत जगत समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां तूं बणया रिहा दानी, दाता इक अख्वाईआ। अक्खरां विच्चों अक्खरां वाली मार के कानी, कलमा कायनात बदलाईआ। अन्तिम सारे दिसदे फ़ानी, जगत वजूद दिते मिटाईआ। तेरी मंज़ल की रुहानी, रहमत विच समझाईआ। अक्खर कहिण चार जुग तेरी अक्खरां वाली रही निशानी, निरगुण नूर जोत नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी झगड़ा चलया रिहा दीवानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग देणा समझाईआ। अक्खर कहिण क्यों मिटाउँदा रिहों नाम, वट्टा आपणा आप लगाईआ। क्यों बदलाउँदा रिहों निज़ाम, हकूमत धुरदरगाहीआ। क्यों नाम धराउँदा रिहों राम, कृष्ण कहि के गाईआ। क्यों हुंदा रिहों बदनाम, बदी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे जणाईआ। क्यों धरया नाम मूसा, मुश्किल विच पाई लोकाईआ। क्यों पहनया काला सूसा, कूड़ी क्रिया रंग चढ़ाईआ। क्यों खेल खिलाया मसीह ईसा, असल आपणा आप बदलाईआ। क्यों मुहम्मद दिती हदीसा, हज़रत कर पढ़ाईआ। जे सब नूं इक्को आपणा साफ़ दस्स देंदों शीशा, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। पैगम्बर बण के क्यों आपणी बदलदा रिहों रीता, रीतीवान हो के आपणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा दे समझाईआ। क्यों बणयों राम अल्ला, इलाही दे जणाईआ। अक्खरां वाला बणा जगत महल्ला, खेड़ा दिता जणाईआ। कर के वल छला, सब नूं दिता भुलाईआ। जे तूं आदि विच इकल्ला, मध इकल्ला क्यों ना अख्वाईआ। क्यों अल्ला तों नानक फड़ाया पल्ला, नाम सति दिता सुणाईआ। जगत विच कर के झल्ला, झलक विच झिलमिल दिता चमकाईआ। अमृत दस्स के जला, अंमिउँ रस इक चखाईआ। वखा के चरण कँवल थल्ला, जलां थलां परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दे सुणाईआ। अक्खर कहिण क्यों बदलाया आपणा तत्त, तत्तां विच वड्याईआ। क्यों उबली जगत रत्त, रतन अमोलक हीरे दे बणाईआ। की वड्याई विच नाम सति, क्यों अल्ला

दिता दुरकाईआ। क्यों नाम सति दिता छड्ड, वाहिगुरु ढोला गाईआ। क्यों बदलदा रिहों हड्ड, जोती जोत जोत रुशनाईआ। क्यों गोबिन्द निशाना दिता गड्ड, गॉड वाहिगुरु आपणा रंग रंगाईआ। अक्खर कहिण क्यों गुर अवतार पैगम्बर बन्नृ के रखे विच आपणी डब्ब, डब्बी निक्की जिही विच टिकाईआ। जेहड़े तेरे नाम दी सिफ्त विच लोकमात गए टप्प, टप्पे तेरे नाम सुणाईआ। माणस माणस द्वैती ला के फट्ट, फट्टड़ कर के गए लोकाईआ। निक्का निक्का जिहा खोलृ के हट्ट, हटवाणे बण के हट्ट चलाईआ। जां कलयुग अन्त वेख्या सब दे ख़ाली हथ्थ, दोवां हथ्थां देण दुहाईआ। अक्खर कहिण बिना पुरख अकाल दे लेखे लग्गा किसे ना जस, वेद पुराण शास्त्र पढ़ पढ़ रसना जेहवा जीव जगत होए हल्काईआ। असीं इक्को हुक्म मन्नणा तेरा साहिब स्वामी यक्क, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा गृह वेखणा हक़, हक़ीक़त विच समाईआ। तूं परमात्मा सृष्ट आत्मा तेरे वस, गुर अवतार पैगम्बर चाकर बैठे सेव कमाईआ। सो साहिब स्वामी इक्को मार्ग सब तों वखरा दे दस्स, दह दिशा कर पढ़ाईआ। अग्गे बिना तेरे असीं किसे दा करना नहीं जस, जिस्म इस्म रहिण कोए ना पाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक पुरख अकाला दीन दयाला सर्ब कला समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त सब कुछ तेरे वस, वास्ता बावास्ता हो के तेरे नाल जुड़ाईआ।

२०० २१

❊ ३० बैसाख शहिनशाही सम्मत ४ जागीर सिँघ दे गृह पिंड सोहल ज़िला गुरदासपुर ❊

चौथा जुग कहे प्रभ किरपा कर कुझ, करनी दे करते तेरी बेपरवाहीआ। सृष्टी दी दृष्टी अंदर बख़्श अगम्मी सुध, कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार हँकार मिटाईआ। निरंतर अन्तर भेव खुलृा गुज्झ, घट निवासी पुरख अबिनाशी आपणा परदा दे उठाईआ। निर्मल निरवैर निराकार निरँकार कर बुध्ध, बिबेक टेक इक्को इक समझाईआ। गरमुख सन्त सुहेले उत्तम श्रेष्ट कर सीर दुध्ध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। दर ठांडा कहे तेरा दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। किरपा कर आप निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी राह तकाईआ। झुकदे वेख गुरु अवतार, पैगम्बर सजदयां विच धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तूं ख़ालक मालक प्रितपालक तेरा लेखा अगम्म अपार, अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। दर तेरा ठंडा साहिब सर्ब सुल्तान, सति सतिवादी नज़री

आईआ। हुक्म संदेसा दे हुक्मरान, हकूमत कलयुग कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। सति धर्म तेरा झुल्ले इक निशान, नौजवान मर्द मर्दान तेरी वज्जे इक वधाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त निरगुण हो के वेख आण, सरगुण परदा आप उठाईआ। सच बेनन्ती कर परवान, परम पुरख परमात्म आत्म लेखा दे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रगाईआ। श्री भगवान कहे सति सतिवादी रख धरवास, धर्म दी धार दयां जणाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, कलयुग अन्ध अन्धेर दयां गुआईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के वसां पास, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। वेखां खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। साचे मण्डल वेखां रास, बिन गोपी काहन आपणा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म शब्द अगम्मी ख़ास, सुनेहड़ा इक दृढ़ाईआ। चौथे जुग जन भगत दवारिउँ निर्मल दुध्ध दे मँग के चार ग्लास, चार जुग दा झगड़ा दयां मुकाईआ। मानस जन्म जन भगतां कर के रास, रस्ता इक्को दयां समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा मनसा सध्धर पूरी कर दरख़ासत, दीनां अनाथां दुखियां दर्द फोल फुलाईआ। जेहड़ी वस्त अमोलक चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप किसे ना आई हाथ, दस्त बदस्त ना कोए फड़ाईआ। सो लेखा लिखा के धुर फ़रमाना नाल क़लम दवात, शाही शहिनशाह दए बदलाईआ। खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सच दुआर सोहे इक जमात, जुमला अक्खर इक्को इक पढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना कोई काग़ज़ात, सृष्टी दृष्टी अंदर इक्को नाम जणाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा सति सतिवादी साचा चन्द चमकाईआ। सन्त सुहेले जावण जाग, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। हँस बुद्धी बणाए काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। निर्मल निरवैर नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर गवाईआ। दरस दिखाए साख्यात, स्वच्छ सरूपी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी धुरदररगाहीआ। धुरदरगाही मालक एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। चारे वरन कर बिबेक, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आपणा रंग चढ़ाईआ। चारे ग्लास दस्सण भेत, चारों कुण्ट वेख वखाईआ इक्को पुरख अकाल होवे टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी आप रमाईआ। सति दुआर जणा के साचे देस, परदेसी परदा दए उठाईआ। जो मालक ख़ालक रहे हमेश, हमसाजण हो के मिल के वज्जे वधाईआ। नर नरायण इक नरेश, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग इक दृढ़ाईआ। दुध्ध कहे मेरा रूप चार चार, चारे खाणी दयां जणाईआ। पुरख अबिनाशी सब दा सांझा यार, मित्र प्यारा धुरदरगाहीआ। जिस दे हुक्मे अंदर गुर अवतार, पैगम्बर भज्जण वाहो दाहीआ। रवि ससि होए उज्यार, मण्डल मण्डप सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, नित नवित्त सेव

कमाईआ। सो खेल खेले खेलणहार, ख़ालक खलक फोल फुलाईआ। सच संदेसा देवे एका एकँकार, अकल कलधारी आप प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया देवे निवार, माया ममता मोह मिटाईआ। सतिजुग साचा सति धर्म कर उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। भगत सुहेला पावे सार, सन्त सुहेले आप उठाईआ। गुरमुखां गुर सतिगुर चले नाल, नालिश मन रहिण ना पाईआ। झगड़ा मुका के शाह कंगाल, एकँकारा इक्को रंग चढ़ाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर निरगुण धार करे प्रितपाल, प्रितपालक ख़ालक आपणी दया कमाईआ। काया काअबा हक महबूब मुहब्बत विच वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा एकँकारा इक्को इक जणाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए बणाईआ। आपे वेखणहारा मुरीदां हाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे रंग रंगाईआ। चार ग्लास कहिण साडे अंदर वस्त भरी अपार, राम वशिष्ट दए गवाहीआ। काहना कृष्णा गया चितार, सुदामा मिल के वज्जे वधाईआ। ईसा युहन्ना कर प्यार, कलमा संदेसे विच सुणाईआ। मुहम्मद आख के चार यार, परदा उहला इक उठाईआ। नानक चार वरनां बन्ह धार, खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश जोड़ जुड़ाईआ। गोबिन्द चारे सुत दुलारे वार, वारता अवर वखाईआ। जिस वेले लोकमात बीते जुग चार, चार कुण्ट विहाईआ। ओस वेले किरपा करे आप निरँकार, निरवैर धुरदरगाहीआ। सब दा लहिणा देणा पूरब क़र्ज़ दए उतार, मक़रूज़ आपणा हिसाब बेबाक कराईआ। अमृत रस भगतां अंदर भर के सच प्रेम दी धार, दूध दा दूध दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। दूध कहे क्यों चार ग्लासां भरया, समझ किसे ना आईआ। क्यों जगीर सिँघ हथ्थ फड़िआ, पूरब लहिणा देणा दृढ़ाईआ। जिस कारण करते वरया, वारता देणी जणाईआ। क्यों जीवत होया मरया, मर जीवत सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सच सच दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे सुण दूध प्यारे चिट्टे, चिट्टी धारों दयां जणाईआ। गोबिन्द दी निशानी गुरमुख दे सिट्टे, सिट्टे बाज़ी जगत ना कोए जणाईआ। जिस दे लेख किसे नहीं लिखे, क़लम शाही ना कोए चतुराईआ। ओह परम पुरख दे हिस्से, लेखे धुर दे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा रिहा उठाईआ। पुरख अकाल किहा; मैं परदा चुक्कां आप, ओहला आप उठाईआ। गोबिन्द दा सिख ज़ात हीणी सदा गोबिन्द नूं कहिंदा सी बाप, दूजी आवाज़ ना कोए सुणाईआ। इक दिन गोबिन्द हस्स के उहदी पिट्ठ ते रख्या हाथ, परदा अंदरों दिता खुल्हाईआ। प्रकाश विच नज़र आया पुरख अबिनाश, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर बैठे सेवक दास, सिर सके ना कोए उठाईआ। गोबिन्द फिर हौली जिही पिट्ठ ते दिती दाब,

उँगलां नाल दबाईआ। जां वेख्या ते आपणा आप, नूर जोत रुशनाईआ। दर्शन वेख्या साख्यात, जलवा धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा सुण दुध्ध चिट्टे पवित्र, पुनीत दयां बणाईआ। ओह वेख गोबिन्द दा मित्र, मित्र प्यारे दयां समझाईआ। जेहड़ा चोटी चढ़या सिख़र, सिख्या धुर दी इक दृढ़ाईआ। सो निरगुण धारों आवे निकल, जन्मे कोई ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गोबिन्द किहा एह नीघा सिख मेरे पास, पूरब पूरब नज़री आईआ। इक रख प्रेम दी आस, चरण कँवलां सीस निवाईआ। किरपा रख मेरे बाप, दोए जोड़ बेनन्ती दिती सुणाईआ। मैं भर के लिआवां चार ग्लास, दुध्धा धारीआं दयां प्याईआ। जिन्हां नूं अजीत जुझार ज़ोरावर फ़तिह सारे रहे आख, रसना जिह्वा नाल सुणाईआ। गोबिन्द किहा इन्हां दा लहिणा देणा पुरख अकाल हाथ, दूसर हथ्थ ना कोए वड्याईआ। सांभ के रख आपणे ग्लास, कलयुग अन्तिम लहिणा दयां चुकाईआ । जिस वेले जोती धार आवे पुरख अबिनाश, गोबिन्द शब्द रूप वटाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा कराए आप, आप आपणा रंग रंगाईआ। ओस वेले सतारां सौ छपंजा बिक्रमी एहो तीह बैसाख दी सी रात, रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। जगीर सिँघ कट के आ गया वाट, जोत जन्म जन्म जोत गुरु विच्चों बदलाईआ। पूरब लहिणा देणा लेखा पूरा कीता आज, समाज दा झगड़ा रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवन, वेखणहारा पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी खेल खिलाईआ।

❊ १ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

कलयुग कहे प्रभ वेख आपणी लिख्त, दर ठांडे सीस निवाईआ। साचा रिहा किसे ना इष्ट, गुर अवतार पैगम्बर भय ना कोए जणाईआ। मानव खुल्ही किसे ना दृष्ट, अनुभव तेरा भेव कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी तेरे कोल फ़रिसत, नाम बेनाम खोज खुजाईआ। झगड़ा मुका दे दोज़ख बहिश्त, स्वर्ग सूझ रहे ना राईआ। सच सबूरी दे सिदक, भरोसा इक दृढ़ाईआ। मेरा लेखा मुका कूड़ कुड़िआरे निन्दक, निरवैर तेरी सरनाईआ। शब्दी धार कर हिम्मत, सतिगुर इक्को वेस वटाईआ। चार जुग दे गुर अवतार पैगम्बर जो भोगदे गए गृहस्त, गृहस्तीआं विच आपणा रूप वखाईआ। उन्हां दा लहिणा देणा पूरा होया भविख्त, भाख्या धुर दी विच जणाईआ। लेखा रहे ना टांक जिसत, इक्को तेरे हथ्थ वड्याईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा वेख वखाईआ। कलयुग कहे मैं बोलां तेरा बच्चा, धुरदरगाही सीस निवाईआ। सच दुआरे तेरे सच्चा, सच सच दयां दृढ़ाईआ। मैं चार जुग दा लेखा कीता कच्चा, साबत नज़र कोए ना आईआ। तेरे घर दा लग्गण ना दिता पता, पतिपरमेश्वर जीव जंत दिते भुलाईआ। गुरु चेला रिहा कोए सका, साजण मिलण कोए ना आईआ। दीनां मज़हबां ला के धक्का, चारों कुण्ट दिता हिलाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठा, गुरुदुआर रहे कुरलाईआ। सति रहिण ना दिता तीर्थ तटां, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे नैणां नीर वहाईआ। साधां सन्तां पवित्र रहिण नहीं दितीआं अक्खां, सांतक सति ना कोए राईआ। जगत विदवानां मारीआं मत्तां, बुद्धिवान ना कोए चतुराईआ। भरम भुलाए धारी जटां, जटा जूट रहे कुरलाईआ। हाहाकार मचाई जगत दुआरे हट्टां, साची वस्त ना कोए विकाईआ। तेरा नाम जैकारा लाउँदे फिरदे लखां, पर तेरे मिलण वाला नज़र कोए ना आईआ। मैं दिवस रैण तेरी सेवा अंदर लख चुरासी नठ्ठां, भज्जां वाहो दाहीआ। मोह विकार हँकार मार के सट्टां, जगत जिज्ञासू दिते सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। कलयुग कहे मेरी सुण इक अरदास, आरज़ू हरि सुणाईआ। तूं साहिब स्वामी सर्ब गुणतास, वड दाता बेपरवाहीआ। मेरी पूरी कर दे आस, तृष्ना तेरे अग्गे टिकाईआ। मैं सेवा करदा ख़ास, दिवस रैण आपणी कार कमाईआ। किसे दा रहिण नहीं दिता तेरे उत्ते विश्वास, विषयां विच सारे दिते भुलाईआ। नाम भण्डारा मिले किसे ना साच, वस्त अमोलक हथ्थ किसे ना आईआ। मन मनूए अंदर सारे रहे नाच, नटुआ हो के आपणा स्वांग वरताईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, निरगुण तेरा नूर ना कोए रुशनाईआ। सति धर्म दी रहिण नहीं दिती कोई जमात, विभचार विच लोकाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर दस्स के गए गाथ, अक्खरां वाली कर पढ़ाईआ। मैं सब दा कीता घात, घाउ गहरा दिता लगाईआ। झगड़ा पुवा के ज़ात पात, दीनां मजहबां दिता लड़ाईआ। सब दा पूरा कर के भविख्त वाक्, क्या तैनूं देणा वखाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, दर तेरे सीस निवाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी कमलापात, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। तेरी मंज़ल चढ़न ना दिता कोई घाट, अधवाटे वेखी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तेरा सुत दुलारा, दूल्ला धुर दा नज़री आईआ। चौथे जुग हो उज्यारा, चारों कुण्ट डगमगाईआ। तेरा हुक्म संदेसा दे के विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी सीस ना कोए उठाईआ। कर खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर तेरी कार कमाईआ। चार कुण्ट कर अन्धयारा, साचा नूर करे ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर,

दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग कहे मैं तेरा पूत सपूता, सुत दुलारा नज़री आईआ। कलयुग जीव भुलाया चारे कूटा, दह दिशा ना कोए शनवाईआ। सति धर्म दा मूधा कर के ठूठा, ख़ाली सारे दिते कराईआ। मन कल्पणा विच कर के झूठा, ममता मोह जगत हल्काईआ। भाग लग्गे ना किसे काया माटी तन वजूद पंज तत भूता, पतिपरमेश्वर तेरा दरस कोए ना पाईआ। तेरा नूर नज़र ना आया सति सरूपा, सति सतिवादी तेरी सेव ना कोए कमाईआ। चार कुण्ट दह दिशा साचा मार्ग लम्भया किसे गली ना कूचा, कुटिया समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। कलयुग कहे प्रभू दे मैनूं शाबाश, दर तेरे सीस निवाईआ। मैं तेरा सुत दुलारा ख़ास, ख़सूसीअत दयां दृढ़ाईआ। किसे गोपी काहन दी सुरती शब्दी पैण ना देवां रास, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना घाट, साध सन्त फ़कीर सदी चौधवीं तेरा नूरी दरस कोए ना पाईआ। मैं अग्गे हो के लख चुरासी जोह के रिषीआं मुनीआं मंज़ल दिसण ना दिती वाट, वट्टा सब नूं दिता लगाईआ। दुरमति मैल कोई ना सके अंदरों काट, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पढ़दयां पतित पुनीत ना कोए कराईआ। मैं सच संदेसा धुर नरेशा देवां आख, आख़र इक जणाईआ। जूठ झूठ दी तेरी बख़्शी होई दात, मैं घर घर अंदर सब दे दिती वरताईआ। सब नूं भुला के तूं धुर दा बाप, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठां इट्टां पत्थरां उत्ते मस्तक दिते रगड़ाईआ। तेरे नाम दी महिमा दस्से ग्रन्थ उन्हां दा कर के पाठ, अग्गे तैनूं मिलण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी साची इक आवाज़, जो आवाज़ आवाज़ विच्चों बदलाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं सुत दुलारा चंगा, सोहणा नज़री आईआ। मैं साबत रहिण नहीं दिता कोई बन्दगी वाला बन्दा, बंधना विच सारे दिते फसाईआ। पवित्र रहिण नहीं दिता कोई तीर्थ तट किनारा जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, कूड़ी क्रिया कर्म कांड सब दी झोली पाईआ। कोई सन्त फ़कीर शाह हकीर लाशरीक परवरदिगार सांझे यार तेरी मंज़ल चढ़े कोई ना डंडा, कलयुग कहे प्रभू एह मेरी वड वड्याईआ। खाण पीण दा सब ने बणाया धन्दा, जे अंदरों वेखें आप जो बाहरों साफ़ ते अंदरों गंदा, निर्मल नज़र कोए ना आईआ। किसे क़दर ना पाया क्यों गोबिन्द सीस विच रखाया कंघा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग कहे मैं सोहणा छैल छबीला, बांका जोबनवन्ता नज़री आईआ। पुरख अकाले दीन दयाले मैं साबत रहिण नहीं दिता कोई क़बीला, कामल मुर्शद तैनूं मिलण कोए ना आईआ। फ़ेल कर वखाया तेरे मिलण वाला वसीला, तेरे सिफ्ती नाम दी चले ना कोए चतुराईआ। सदी चौधवीं सन्त फ़कीर तेरे अक्खरां दा देंदे नाम वसीला,

वसल यार ना कोए कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। साचा हुक्म दे करतार, दर तेरे मँग मँगाईआ। मैं तेरा छोटा सुत दुलार, जुग चौथा सोभा पाईआ। मेरा खेल वेख विच संसार, वड संसारी आपणी अक्ख खुल्हाईआ। चार कुण्ट कीता विभचार सति धर्म ना कोए दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गए हार, सिर सके ना कोए उठाईआ। मुरीद मुर्शद रहिण नहीं दिता कोई एतबार, गुरु चेला जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया तन वजूद करा शृंगार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार जगत हल्काईआ। तृष्ना विच रोवण ज़ारो ज़ार, दीर्घ रोग ना कोए गवाईआ। तेरा खेल सच्ची सरकार, साहिब स्वामी दिता भुगताईआ। इक वार निगाह प्रभ मार, निज लोचन नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा परदा लाहीआ। पुरख अकाल कहे सुण कलयुग बच्चे नन्हे, नादान दयां जणाईआ। जे अन्त अखीरी इक बचन मन्नें, तेरी मनसा पूर कराईआ। जे एसे साल विच सति रहिण ना देवें किसे तने, बन्दगी वाला बन्दा नज़र कोए ना आईआ। विदवानां विकार हँकार अंदर बन्ने, अकल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। मायाधारी कर दे अन्ने, जो सन्त सतिगुर गए भुलाईआ। उन्हां फड़ना ओस कन्ने, जिथों सके ना कोए छुडाईआ। अग्गे आपे प्रभ डंने, दए मात सज़ाईआ। सतिजुग विच कूड़ा सन्त फेर कोई ना जम्मे, सब दा लेखा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग कहे प्रभू हउँ चरण घोल घोली, आपणा आप घोल घुमाईआ। तूं मेरा तराज़ू तोलीं, तोलणहार तेरी सरनाईआ। मेरे अन्तर मारी बोली, अनबोलत दिता जणाईआ। मैं सब दी वेखणी काया पाटी चोली, मानव अंदर खोज खुजाईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी कोयल वाली मिट्ठी बोली, काग अंदरों देणे बणाईआ। मन कल्पणा अंदर सारे पावण रौली, झगड़ा वेखणा जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी लज्जया लैणी रखाईआ। पुरख अकाल कहे सुण मेरे लाल, लालण दयां जणाईआ। घर घर अंदर वेखीं सृष्टी दृष्टी हाल, इष्टी रहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां खाधा झटका हलाल, परदा उहनां देणा उठाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, बचया रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करे ना कोए संभाल, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सब नूं पाउणा माया ममता जाल, कूड़ी क्रिया विच फसाईआ। सति धर्म फल रहे किसे ना डाल, टहिणी महक ना कोए महकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सतिजुग कहे मैं प्रभू सीस निवावांगा। दर ठांडे तेरे मँग मँगावांगा। इक गोबिन्द देदे संग, शब्दी जोड़ जुड़ावांगा। जो छड्डके गया पुरी अनन्द, अनन्द तेरे विच्चों प्रगटावांगा। ओह ला के आपणे अंग, अंगीकार अख्वावांगा। सृष्टी दृष्टी सारी दे के दंड, डंडावत

तेरी इक समझावांगा। दीन मज़हब दी रहिण ना देवां कंध, भाण्डे भरम भन्नावांगा। जेहड़ा ना गावे तेरा छन्द, नाता धर्म राए दे नाल जुड़ावांगा। फिर फिर जूनी आवे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज आप वखावांगा। मेरी खेल वेख होवीं ना दंग, हैरानी सब दे अंदर वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगावांगा। पुरख अकाल कहे सुण मेरे सुत दुलारे, चौथे जुग दयां वड्याईआ। तेई अवतार खड़े अन्त किनारे, लेखा सब दा रिहा मुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद वेखण नैण उघाड़े, अक्ख अक्ख विच्चों बदलाईआ। नानक गोबिन्द कर रहे इशारे, बिन सैनत रमज़ समझ विच टिकाईआ। किरपा करे आप निरँकारे, निरवैर धुरदरगाहीआ। कूड़ी क्रिया जगत वासना माया ममता मोह विकार साड़े, अगनी तत तत्त जलाईआ। एह लेखा पूर कराउणा, तेरे कोलों सतारां हाढ़े, हाढ़ा कढ्ढे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं बड़ा दलेर, दर तेरे सीस निवाईआ। तूं मेरे उत्ते होर करीं मेहर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मैं सब नूं देवां उलटा गेड़, बचया रहिण कोए ना पाईआ। शाह सुल्तानां देवां भेड़, राज राजानां दयां लड़ाईआ। तेरे नाम दी भबक भय वाली सुणे ना कोई केहर, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरा सोभा पाईआ। पुरख अकाल कहे सुण मेरे लाल लाले, लालण दयां जणाईआ। किसे शक्त रहिण ना देवीं जोत ज्वाले, अष्टभुज ना कोए वड्याईआ। तेई अवतार मेरे नन्हे बाले, जुग जुग लोकमात सेव कमाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सदा बणे रहे कंगाले, दरगाह साची मँग मँगाईआ। नानक गोबिन्द रहे भाले, वेखणहार थाउँ थाईंआ। जुग जुग जिन्नां मार्ग दस्से सुखाले, रहिबर राह दृढ़ाईआ। मेरे नाम दी महिमा लिख लिख भर छड्डे जगत विदयाले, विद्या विच चतुराईआ। मेरा लेखा कोई ना समझे हाले, हरि करता की खेल वरताईआ। थोड़ा इशारा दिता नानक बाले, बालम भेव खुल्हाईआ। गोबिन्द कल कल्की दे देके गया अहिवाले, परदा अवर ना कोए उठाईआ। जिस ने सब दे बदल देणे चाले, बाज़ी आपणे हथ्थ रखाईआ। ओह खेल करे निराले, निरवैर धुरदरगाहीआ। जिस दा हल्ल ना होया सवाले, जवाब विच जवाब ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक उपजाईआ। कलयुग कहे मैं तेरा योद्धा सूरबीर, परम पुरख सरनाईआ। प्रभू मेरा जूठ झूठ दा वज्जा इक्को तीर, धायल कीती सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां ने छोटे छोटे हिस्से मज़हबां दे पाए ज़ंजीर, बाकीआं दी तक़दीर सक्कया ना कोए बदलाईआ। मैं, वेख लै, सब दा वड्डा पीर, मुरीद कलयुग जीव लए बणाईआ। बचया रिहा ना शाह फ़कीर,

उच्ची बांह कर के ना कोए सुणाईआ। चलण दिती नहीं किसे दी तदबीर, तस्वीर तेरी नज़र किसे ना आईआ। विदवानां कोलों पूजा करा दिती जंड करीर, झगड़ा पुआ दिता विच तन सरीर, थोड़ी जिही विकार दी अंदर पा के ख़मीर, गहर गम्भीर तेरा परदा दिता रखाईआ। जे तूं सच्चा पातशाह, कलयुग कहे, अग्गे वास्ते मैनूं बख्श दे सारी जगीर, इहो जिहा सूरमा पुत तेरा नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर अवतारां कोलों तूं फेर करा लएं ताअमीर, नाम निक्के निक्के झोली पाईआ। प्रभू मैथों डरदे गए तेरे गुरु पीर, भविख्तां विच दे के गए दुहाईआ। जिंनां चिर आप ना आया उनां चिर कलयुग दी बदले ना कोए तक़दीर, अगला राह ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर दरवेश हो के मँग मँगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं इक्को सुत दुलारा तेरा बहुत, बहुतिआं दी लोड़ रही ना राईआ। मैं ओस मंज़ल ते गया पहुंच, जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर तोबा तोबा कर के पल्लू गए छुडाईआ। मेरा भाणा सक्कया कोई ना रोक, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़न वाल्यां दी चलण ना दिती सोच, समझ सब दी दिती बदलाईआ। जेहड़े अमृत वेले उठ के बाहरों काया भाण्डे रहे पोच, दिन चढ़दयां नूं उन्हां दे अंदर जूठ झूठ दयां वसाईआ। भावें किसे ने सिर ते पगड़ी बन्नी भावें रख्या टोप, पोप साफ़ नज़र कोए ना आईआ। सारी सृष्टी विच्चों मैनूं पंज दस चंगा कहिंदे लोक, बाकी सारे मेरे विच रल के आपणा रंग रहे वखाईआ। कलयुग कहे प्रभू किथ्थे तेरा शब्द ते किथ्थे तेरी जोत, किथ्थे तेरा बंक किथ्थे तेरा कोट, मैं तेरा भिखारी हो के कलयुग जीवां कूड़ी क्रिया दा भण्डारा दिता थोक, तेरे नाम परचून दा ख़रीददार नज़र कोए ना आईआ। जेहड़े सन्त साधू फ़कीर तेरा नाम बाणी दा सदका दस्सण जगत सलोक, सोहला रसना नाल गाईआ। उन्हां दी दशा ओह जेहड़ी कामनी वाली कोक, ओह कोक पंडत तेरे दर ते पढ़न कोए ना आईआ। क्यों मुग्ध अंञाण घल्ले डरपोक, जेहड़े अक्खरां पढ़ के झट लँघाईआ। कलयुग कहे मैं उन्हां नूं चुरासी विच देणा झोक, पिच्छों फड़ ना कोए खिचाईआ। मैं कहिणा वजा के ठोक, आपणा बल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं बड़ा बलधारी, योद्धा सूरबीर अख्वाईआ। मेरे अन्त अख़ीर विच जा मैनूं लभ्भदे आपणी कोई गुरमुख नारी, नर नरायण तेरा संग ना कोए निभाईआ। जिधर तक्केंगा ओधर दुनियां दिसू विभचारी, कुकर्मा विच कुरलाईआ। ज़रा निगाह मार के वेख लै जिन्हां नूं जगत कहिंदा सन्त ओह अन्तर कन्या नहीं कँवारी, विषयां वाली चोली नज़री आईआ। मेरी रुत बसन्ती वेख महकी इक बहारी, कूड़ कुड़िआरा नाल लिआईआ। पुरख अकाल तेरे नालों तोड़ के यारी, यराने जगत विच वधाईआ।

मेरा बल अजे होर वेखीं आह लँघ जाण दे हाढ़ी, हाहाकार ख़लक खुदाईआ। चार जुग दा नाम कोई कर ना सके दारी, द्वैत अंदरों ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरी वजदी रहे वधाईआ। पुरख अकाल किहा कलयुग वाह, वाहवा तेरी वड्याईआ। एसे कर के गोबिन्द वाहिगुरु गया गा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। बिन अबिनाशी करते तेरा लेखा जाणे कोई ना, परदा भेव ना कोए चुकाईआ। तैनूं शाबाश दयां गुर अवतारां पैगम्बरां दे हुन्दयां सब दे अंदर भरया गुनाह, बचया रहिण कोए ना पाईआ। एसे कारण सब ने होणा फ़नाह, फ़ैसला हक़ दए दृढ़ाईआ। लेखा जाणे धुर अलाह, अल्ला आलमीन वेख वखाईआ। खुदगर्ज़ मेटे आप खुदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग कहे मैं तक्कके वेख्या नज़री आया जेठ महीना, हैरानी मेरे अंदर आईआ। मेरे बदन आया पसीना, पसचाताप विच दुहाईआ। मेरा कम्बदा दिस्सया सीना, साह साह विच हल्काईआ। मैं समझया क्यों होया कमीना, आपणा आप छुपाईआ। जां निगाह मारी निरगुण नूर तक्कया उत्ते ज़मीना, फ़र्श ख़ाकी सोभा पाईआ। जिस दा समझे ना कोई ज़मीमा, परदा परदा ना कोए उठाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां करदा रिहा तरमीमां, दरुस्ती आपणा नाम समझाईआ। सब नूं करे आप अधीना, आहला अदना वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा परदा लाहीआ। कलयुग कहे मैं जेठ तक्कया, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। ख़ाली होया मदीना मक्कया, मक़बरे रहे कुरलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद फिरे नस्सया, जोती धार वाहो दाहीआ। चारों कुण्ट अन्धेरा मस्सया, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जिन्हां कलमा नबी रसूलां जपया, जिह्वा रसना नाल हल्काईआ। नूर इलाही अगम्मी तक्कया, जोती जाता धुरदरगाहीआ। ओहनां पिछला लेखा छड्डया, अग्गे वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा लेख समझाईआ। कलयुग कहे मैं तक्कया इक नज़ारा, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जिस नूं कहिंदे चवीआं अवतारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा लहिणा देणा अन्त संसारा, नव सत्त परदा दए उठाईआ। सो जोती जोत उज्यारा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। मैनूं देवणहार सहारा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं रहिण नहीं देणा मन्दिर मस्जिद मठ शिवदवाला गुरुदुआरा, गुरु गुरदेव इक्को देणा समझाईआ। जिस नूं अवतार पैगम्बर करन निमस्कारा, सीस जगदीश इक झुकाईआ। सो सब दा मित्र प्यारा, पारब्रह्म इक अख्वाईआ। लेखा जाण धुर दरबारा, दरगाह साची खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। कलयुग कहे जेठ महीना चढ़या, चढ़दी कला दयां दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा पल्लू फड़िआ, धुर दी गंढु पुआईआ। मैं

चरण कँवल खढ़या, सीस जगदीश निवाईआ। किरपा कर मेरे अवतरया, तारनहार तेरी सरनाईआ। कलयुग बेड़ा वेख भरया, बचया नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां कोलों कोए ना डरया, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जिन्हां ने शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान ढोला नगमा पढ़या, पुस्तकां विच ध्यान लगाईआ। ओह जीवत जीव कोए ना मरया, मर जीवत रूप ना कोए वखाईआ। त्रैगुण माया अंदर सड़िआ, अगनी तत जलाईआ। तेरी मंज़ल हक़ीक़ी कोई ना चढ़या, निरगुण दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा देणा चुकाईआ। पुरख अकाल कहे कलयुग एह जेठ जगत दी धारा, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेपरवाहीआ। जिस दा चार जुग मिलदा रिहा इशारा, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण जोत लए अवतारा, लख चुरासी वेख वखाईआ। सन्त सुहेला इक इक्केला खेले खेल धुर दरबारा, दरगाह साची सचखण्ड वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया नईआ नौका डोबे विच मँझधारा, पार किनारा नज़र किसे ना आईआ। जो सरगुण निरगुण हो के आया दुबारा, दो जहानां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। धुर दा हुक्म अगम्मा पैग़ाम, पैगम्बरां देणा जणाईआ। सवाधान होणा राम, कृष्ण काहन अक्ख खुल्हाईआ। गुरु गुरदेव ना रहिणा अञ्याण, चतुर सुजान दए जणाईआ। सृष्टी दृष्टी वेखो जीव जहान, चुरासी अन्तर निरंतर खोज खुजाईआ। कवण रसना कवण जिह्वा कवण मन कवण बुद्धी कवण सुरती धुर दा शब्दी गाए गान, गहर गम्भीर विच समाईआ। कवण काया काअबा दो दोआबा हक़ महराबा दस्से काया सच मकान, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। कवण नाम निधाना नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवान, पुरख अकाल ओट रखाईआ। कवण तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म मिल के गाए गाण, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। कलयुग साचे काया माटी वेख भाण्डे काचे तत वजूद हक़ महबूब किस दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक इकल्ला आप दृढ़ाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं मार के वेखां झाकी, तेरी झलक खोज खुजाईआ। चुरासी विच्चों थोड़े दिसे बाकी, जो बकाया तेरे हथ्थ रखाईआ। आत्म ब्रह्म बण के साथी, पारब्रह्म तेरा संग निभाईआ। तेरा नूर समझ के ज़ाती, झगड़ा दीन दुनी गवाईआ। तेरे नाम दी सुण के साखी, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जगत मंज़ल मुका के वाटी, दर तेरे डेरा लाईआ। जिथ्थे वस्सें पुरख अबिनाशी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ना कोई दीवा ना कोई बाती, सुर्या चन्द ना कोए चमकाईआ। ना कोई विद्या ना कोई पाठी, ना कोई ढोले रिहा गाईआ। ना

कोई दिवस ना कोई राती, ना कोई घड़ी पल वंड वंडाईआ। ना कोई रूह बुत दिसे ख़ाकी, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। ना कोई ज़िंदगी ना कोई जीवण ना कोई हयाती, ना कोई आयू वंड वंडाईआ। जां तक्कया ते कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। पुरख अकाले कोटां विच्चों थोड़े मन्नदे तेरी आखी, जो आख़र तेरे विच समाईआ। कलयुग कहे मैं वी उन्हां दी करनी राखी, सेवक हो के सेव कमाईआ। मैं संदेसा देवां पाती, पत्रका इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा देणा चुकाईआ। कलयुग कहे प्रभू मैं तक्कया जगत जहान, जहालत वेखी ख़लक खुदाईआ। तेरी किरपा होई महान, मेहर नज़र उठाईआ। मैं मारया फेर ध्यान, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। चुरासी विच्चों भगत सुहेले लभ्भे आण, चार वरन ना वंड वंडाईआ। जेहड़े तेरा ढोला गाउँदे गाण, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। तेरे चरण धूढ़ करन इश्नान, अठसठ तीर्थ नहावण कोए ना जाईआ। तेरा जलवा नूर तक्कण महान, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। इक्को दर ते मँगदे दान, धुरदरगाही झोली डाहीआ। इक्को वस्त अमोलक दे महान, नाम भण्डारा इक वरताईआ। बाली बुध्ध ना रहे अंञाण, चतुर सुघड़ देणे बणाईआ। तेरा वेखणा धर्म निशान, निशाने सारे देणे गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पल्लू आपणा लैणा फड़ाईआ। कलयुग कहे मैं वेख होया हैरान, हैरत अंदर दयां दुहाईआ। भगत सुहेले वेखे तेरे निशान, निशाने तेरे नाल मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउँदे गाण, करन अगम्म पढ़ाईआ। साचा मन्दिर इक तकाण, जिथ्थे वस्से शहिनशाहीआ। अबिनाशी करता होवे हुक्मरान, धुर दरबारी सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भिखारी दिसण करन चरण ध्यान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचा इक सुहाईआ। कलयुग कहे प्रभू तेरा दर घर सुहञ्जणा, सोभावन्त तेरी वड्याईआ। तेरा नूर आदि निरंजना, जुग जुग निरगुण सरगुण जोत करे रुशनाईआ। तेरा लेखा दीना नाथ दर्द दु:ख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। कोटां विच्चों थोड़े वेखे तेरा करदे चरण धूढ़ मजना, दुरमति मैल धुआईआ। जिन्हां दा डंका धर्म दा वज्जणा, चार कुण्ट शनवाईआ। झगड़ा रहिणा नहीं आहला अदना, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। सचखण्ड दुआरे जिन्हां नूं सद्दणा, संदेसा शब्द नाम दृढ़ाईआ। उन्हां तेरे चरण कँवलां विच वसणा, दरगाह साची सोभा पाईआ। खुशीआं विच बहि बहि हस्सणा, हस्ती वेख धुरदरगाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल ने उन्हां नूं प्यार नाल कहिणा ओह भगत दुलारे मक्खणा, सीस जगदीश हथ्थ टिकाईआ। कलयुग कहे पुरख अकाल मैनूं फेर याद आउणा ओह पटना, जिथ्थे गोबिन्द पट्टी लिख के गया समझाईआ। जिस दी समझे कोई ना घटना, घाटे विच लोकाईआ। जेहड़ा अक्खीआं तों ओहले गोबिन्द

अजीत जुझार नूं लाया वटणा, नाम धर्म सगन मनाईआ। उन्हां दे पिच्छे उन्हां दा लेखा कटणा, जिन्हां दी सरसे होई जुदाईआ। अग्गे रहिण नहीं देणा गुरमुख कोई बेवतना, वतन सब नूं देणा वखाईआ। जेहड़ा पुरख अकाल दीन दयाल किसे हथ्थ ना आया चार जुग करदे रहे तपणा, यथार्थ ओहो देणा मिलाईआ। कलयुग कहे बिना भगत भगवान दे दूजा खेड़ा कोई ना वसणा, सच दुआर वज्जे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलयुग कहे मेरे भगवन्त, प्रभू दयां जणाईआ। मैं तेरे तक्के ओह सन्त, जो सति विच समाईआ। इक्को तेरे नाम दा गाउँदे मंत, बाकी छड्डी सर्ब पढ़ाईआ। इक्को मन्नदे तैनूं धुर दा कन्त, कन्त कन्तूहल तेरी सेज हंढ्ढाईआ। तूं किरपा करनी आप अन्त, अन्तश्करन सब दा वेख वखाईआ। जन भगतां अन्तर गढ़ रहे ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। तूं बोध अगाधा शब्द अनादा पंडत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर देणा वखाईआ। कलयुग कहे मैं वेख्या खेल अपार, अपरम्पर ध्यान लगाईआ। तेरे भगत सुहेले दीन दुनी तों बाहर, पिछला लेखा गए मुकाईआ। इक्को ओट तेरे चरण दुआर, दूजी आस ना कोए रखाईआ। जां मँगण ते तेरा दरस दीदार, दूसर मिलण कदे ना जाईआ। छड्डके दीन दुनी दे यार, यारड़े तेरा सत्थर हंढ्ढाईआ। तूं बख्श अगम्मी प्यार, प्रीती इक्को इक लगाईआ। तूं साहिब स्वामी धुर दा पुरख गुरमुख तेरी सुहञ्जणी नार, नर नरायण तेरी सरनाईआ। तेरी किरपा करे ना कोए विभचार, क्रिया कूड़ ना कोए हल्काईआ। साचा मन्दिर इक वखाल, जिथ्थे वस्से दीन दयाल, पोह सके कदे ना काल, त्रैगुण माया ना कोए जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जिथ्थे वसदे शाह कंगाल, आपे वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणी दया कमाईआ। तेरे अग्गे इक सवाल, लख चुरासी होए ज़वाल, तेरे भगत सोहण तेरे नाल, वखरा घर ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची मेल मिलाईआ। दरगाह साची मेल मिलावांगा। बिन तेल बाती जोत जगावांगा। बिन वरन गोत आपणे रंग रंगावांगा। बिन समझ सूझ पैंडा पन्ध मुकावांगा। झगड़ा मुका के लोक परलोक, सच दुआर इक वखावांगा। जिथ्थे जगे निर्मल जोत, जोती जोत विच मिलावांगा। गुरमुख कदे ना आलणयों डिग्गे बोट, फड़ बाहों आप टिकावांगा। जिथ्थे सके कोई ना रोक, ओस दुआरे आप वसावांगा। मेरे प्यार दा होवे कोट, कुटिया काया गढ़ तुड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां संग रखावांगा। जन भगत संग रहिणगे। पूरब जन्म दा लाहा लैणगे। सचखण्ड दुआरे बैहणगे। कूड़े वहिण कदे ना वहिणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच भाणा

सदा सहणगे। सद भाणे विच रखावांगा। कलयुग अन्तिम दया कमावांगा। फड़ बाहों गोद बिठावांगा। सचखण्ड दी दे के मौज, मजलस आपणे नाल रखावांगा। किसे नूं मेरे लभ्भण दी करनी पए ना खोज, दिने जागदयां राती सुत्यां फड़ उठावांगा। सोहँ नाम दी दे के चोग, चुगली निन्दिया तों बाहर कढावांगा। उन्हां नूं पोह ना सके मौत, जिन्हां नूं मतलब आपणा नाम दृढ़ावांगा। उन्हां दा इक्को इष्ट बहुत, पल्लू सब दे कोलों छुडावांगा। धुर दा मालक हो के खौंत, ख़सम हो के डोरी आपणे हथ्थ जणावांगा। भगत सुहेला कदी ना जाए औंत, सच दुआरे सोभा पावांगा। मरन तों पैहलां ज़रूर जावां पहुंच, अन्तिम आपणे नाल लिजावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक दृढ़वांगा। कलयुग मेरे भगतां करीं निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जिन्हां छड्ड जगत संसार, इक्को ओट तकाईआ। बण के दर भिखार, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। किरपा करे आप निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। दीनां मज़हबां तों हो के बाहर, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। इक्को मँगदे सचखण्ड दुआर, दूजी आस ना कोए वधाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगत जन्मे ना दूजी वार, तन वजूद ना कोए हंढाईआ। जे आवां ते फेर लिआवां नाल, सदा नाता आपणे नाल रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी सिख्या गए सिखाल, निरअक्खर अक्खरां विच बदलाईआ। सो साहिब स्वामी जन भगतां करे प्रितपाल, प्रितपालक हो के खोज खुजाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण करे संभाल, सम्बल दा मालक ख़लक दा ख़ालक गोबिन्द दा सालस वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडे आप टिकाईआ। दर ठांडा इक दरबारा, अगनी तत नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे झुकदे गुर अवतारा, पैगम्बर सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव भिखारा, दर ठांडे अलख जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चरण कँवल पनिहारा, पनघट बैठे राह तकाईआ। तिस दा लेखा जाणे हरि करता आप करतारा, क़ुदरत दा मालक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी हरि करता वड वड्याईआ। कलयुग कहे ओ जेठ महीने साथी, मेरा संग निभाईआ। कुछ याद कर लै की कथा कहाणी गोबिन्द आखी, आख़र गया दृढ़ाईआ। केहड़ी मंज़ल गुरसिख चढ़े अगम्मी घाटी, घाटा रहिण कोए ना पाईआ। केहड़ा पैंडा मुके वाटी, राह विच ना कोए फिराईआ। कलयुग कहे, गोबिन्द किहा, जे मन्नउ ते मन्नउ पुरख अबिनाशी, बिना पुरख अकाल दे सीस ना कोए निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो जनमिया सो अन्त विनासी, विषयां वाला रहिण कोए ना पाईआ। चार जुग दे शास्त्र ग्रन्थ एह निक्की पत्रका पाती, सुनेहड़े प्रभ दे रही सुणाईआ। जे कोई मन्नदा गोबिन्द दी आखी, इट्टां पत्थरां

सीस ना कोए निवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म समझदा ओस दी ज़ाती, परमात्म विच समाईआ। झगड़ा छुटदा तन ख़ाकी, उहला अवर रहे ना राईआ। जे कोई गोबिन्द दा जाम पींदा जिस नूं प्याउँदा बण के साकी, साख्यात नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दे लेखे पूर कराईआ। कलयुग कहे मैं सुण के होया अतीत, त्रैभवन तेरी सरनाईआ। परम पुरख दी साची प्रीत, प्रीतम धुरदरगाहीआ। जिस दी आदि जुगादी रीत, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। जिस ने रचन रचाई मन्दिर मसीत, शिवदवाले मठ गुरुदुआरे वंड वंडाईआ। सो ठाकर स्वामी सब दी परखे नीत, नीतीवान वेख वखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त दस्सण आया इक हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। सब दा लेखा पूरा बीस इक्कीस, हरि जगदीश आप जणाईआ। अग्गे छत्र झुलणा इक दे सीस, साहिब सुल्तान सर्ब सरनाईआ। जन भगतां पार कीती जगत दी लीक, जग नेत्र जेहड़ी नज़र किसे ना आईआ। पुरख अकाल ने बख़्शी ओह तौफीक़, ताक़त दिती धुरदरगाहीआ। जो सतिगुर शब्द दी उम्मीद, आदि मध्ध राह तकाईआ। जिस दी गोबिन्द कर के गया ताकीद, फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जिस दी अवतार पैगम्बर रखदे गए उडीक, बिन नैणां नैण उठाईआ। सो कलयुग अन्त अन्धेरा मेटे तारीक, निरगुण चन्द करे रुशनाईआ। जन भगतां नाम कर बख़्शीश, रहमत हक़ कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग तेरा लेखा वेखे मार ध्यान, धन्न वड्याई तेरी जिन्ह सृष्टी दी दृष्टी विच्चों कढ्ढआ ज्ञान, सति धर्म दा रहिण नहीं दिता निशान, दीन दुनी कीती बेईमान, ईमान विच इन्सान नज़र कोए ना आईआ।

❊ २ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

गोबिन्द सीस रख्या कंघा, कंगण हथ्थ नाल छुहाईआ। एह मँग मँगी निरमाणता विच गंगा, जटा जूट शंकर ध्यान लगाईआ। निरगुण धार सरगुण मेल संगा, सगला संग निभाईआ। जिस मंज़ल ते बन्दगी वाला पहुंचे कोई बन्दा, बन्दना विच आपणी दया कमाईआ। साढे तिन्न हथ्थ चोटी शरीर दा वेख के कन्ढा, अन्त अख़ीर खोज खुजाईआ। मंज़ल टोह अगम्मी डंडा, पाबन्दी पन्ध खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धार वेख अगम्मी खण्डा, खड़ग आपणी कार कमाईआ। कंघा कहे मैं दस्सां आपणी बात, बातन दयां जणाईआ। शंकर गया आख, बिन अक्खरां

लेख दृढ़ाईआ। मेरी अगम्मी आस, आसा विच वधाईआ। जुग चौकड़ी होवे खेल तमाश, पुरख अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। नित नवित्त देवे दात, वस्त अगम्मी आप वरताईआ। अन्तर वेखे मार झात, परदा हक़ उठाईआ। चारों कुण्ट होए अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। ओस वेले खेल करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता हुक्म दृढ़ाईआ। शब्दी सतिगुर तन वजूद कर प्रकाश, प्रकाश आपणा आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। कंघा कहे मैनूं आख्या क्यों कंघा, की कर्म वड्याईआ। शंकर जटा धार विच्चों जिस वेले चरण छोहे गंगा, उँगली दस बीस सोभा पाईआ। जोती धार निकलया मम्बा, वहिण दिता वहाईआ। शंकर सीस धड़ उत्तों नंगा, ओढुन नज़र कोए ना आईआ। छार कारण सीस होया गंदा, पवित्र रूप ना कोए वखाईआ। एह खेल अगम्म अचंभा, परदा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। धुर दा हुक्म दस्से आप, शब्दी शब्द जणाईआ। सीस वेख जटा जूट धार, शंकर अक्ख खुल्हाईआ। क्यों माटी ख़ाक पाई छार, सति सार ना कोए कराईआ। शंकर कहे खेल तेरा अपार, बेपरवाह नज़री आईआ। तेरा खेल होणा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्म वरताईआ। तूं निरगुण सरगुण खेल खेलणा अवतार, पैगम्बर गुरु रूप वटाईआ। सृष्टी दी दृष्टी पूरा करे

२१५ २१

ना कोए उधार, अद्ववाटे राह तकाईआ। मैं दोए जोड़ करां निमस्कार, नमस्ते विच सीस झुकाईआ। मेरी साफ़ करे छार, जेहड़ा तेरा कलयुग सुत होवे दुलार, गोबिन्द सूरा नाउँ धराईआ। मेरी जटा जूट नाल करे प्यार, वख वख कराए इक इक्क वाल, वाली तैनूं इक बणाईआ। अग्गे लेखा कर बहाल, किरपा करे तेरा लाल, जिस दी मंज़ल इक सुखाल, रस्ता इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। शंकर कहे गोबिन्द धार कंघा वंड इक्की, इक्की इक्की वेख वखाईआ। मेरे लहिणे पिच्छे गोबिन्द ने सिर तों शुरु कीती सिक्खी, केस कंघे नाल वड्याईआ। नाम धार कटार कर के तिक्खी, तन वजूद लई छुहाईआ। कड़ा खेल दस्स के निक्की, कड़ी कर्म दिती बदलाईआ। कछैहरा धर्म यति दी चिठ्ठी, सुनेहड़ा इक सुणाईआ। शंकर कहे फेर पंचम हाहे उत्तेवखा के टिप्पी, टीका टिप्पणी सब दी दिती जणाईआ। इशारे नाल किहा जेहड़ी वारता किसे नहीं लिखी, लेखा लेख ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा आप उठाईआ। गोबिन्द रख के कंघा शंकर लाहिआ उधार, पूरब लेख चुकाईआ। जटा जूट सुथरे वाल कर त्यार, त्रैगुण झगड़ा दिता मुकाईआ। प्रेम प्रीती बन्न्ह सच दस्तार, दासतां अगली आप जणाईआ। कंघे दा खेल महान, कांग नाम वाली चढ़ाईआ। एह लेखा चुकाया श्री भगवान, भगवन बेपरवाहीआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन हो के भाग सब दा आपणे हथ्थ रखाईआ।

✻ ५ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

कलयुग कहे प्रभ मैं तेरा अन्त दुलारा सूर, सूरबीर इक अख्वाईआ। हरि हिरदे अंदरों कढ्ढुया तेरा नाम हज़ूर, तेरे हज़ूरीआं दी चलण दिती ना कोए चतुराईआ। आपणा हुक्म कर मशहूर, चार कुण्ट दिता सुणाईआ। सृष्ट सबाई नाता जोड़ के नाल कूड़, सति धर्म दा पल्लू दिता छुडाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, माया ममता विच रुलाईआ। किसे मस्तक लग्गण ना देवां तेरी धूढ़, धूढ़ी टिक्का ख़ाक ना कोए रमाईआ। निज लोचन परसे कोए ना नूर, अन्ध अन्धेरा कीता लोकाईआ। गृह गृह वेख हउमे हंगता गढ़ ग़रूर, निवण सु अक्खर ना कोए जणाईआ। मैं सच्ची सेवा करां ज़रूर, ज़रूरत आपणी वेख वखाईआ। हे प्रभू तूं जुग चौकड़ी बणया पहलों मज़दूर, लोकमात हथ्थ किसे ना आईआ। पैंडा दस्सदा रिहों दूरन दूर, नेरन नेर पन्ध ना कोए चुकाईआ। शब्दी दस्सदा रिहों अनादी तूर, तुरिया पद इक वड्याईआ। निरगुण सरगुण पाउँदा रिहों फ़तूर, फ़तवे कलमे वाले लाईआ। तेरे हुक्म अंदर मैं साफ़ रहिण नहीं दिता कोए काफ़ूर, कपूर रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा खेल वेख ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर तेरी सेव कमाईआ। कलयुग कहे प्रभ मैं सेवा कीती वड्डी, प्रभ वड्डे दे वड्याईआ। मनुशां खा के मच्छी डड्डी, तेरी डंडावत दिती भुलाईआ। ज़बान नाल रस चूसदे हड्डी, तेरा अमृत रस रस ना कोए चखाईआ। धर्म दुआरिआं वधी बदी, बदकारी विच दिसे लोकाईआ। मैनूं खुशी मुहम्मद दी बीत रही सदी, चौधवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरे हुक्म नाल गुर अवतार पैगम्बरां रहिण नहीं देणी गद्दी, गदागर सारे देणे बणाईआ। जेहड़ी धरती पापां कारण दब्बी, पतित पुनीत ना कोए वखाईआ। एह मेरी खेल अच्छी, जो अच्छी तरां रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गृह इक वड्याईआ। कलयुग कहे मैनूं कोई ना कहे कमला कोझा, मेहरवान तेरी वड्याईआ। मैं करमां दा सब दे उत्ते लद्दया बोझा, भार हेठ सारे देण दुहाईआ। साचा राह किसे ना सोधा, सुदी वदी पन्ध ना कोए मुकाईआ। बिन भगतां कोई होया ना पुरख अकाल जोगा, जोगी जुगीशर तपीशर मुनीशर सारे रहे कुरलाईआ। जगत तृष्ना सब ने भोग भोगा, भसमड़ रूप ना कोए बदलाईआ। हउमे मिटे कोए ना रोगा, हंगता विच सर्ब कुरलाईआ। मैं दुहाई फेरी विच चौदां लोका, चौदां विद्या रही कुरलाईआ।

साचा गाइण ना दिता नाम सलोका, सोहल्यां वाले दिते भुलाईआ। बिन तेरे नाम तों ख़ाली दिसण लोथां, तन वजूद वज्जे ना कोए वधाईआ। जीव जंत होया थोथा, करते कीमत ना कोए चुकाईआ। मैं पै गया विच सोचां, सोच समझ के तैनूं दयां जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तैनूं मेरे वरगा इक्को सूरमा पुत्त बहुता, जिन्ह चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी सारे दिते भुलाईआ। किसे नाल नहीं करदा धोखा, अंदर वड़ के अंदरों दयां उठाईआ। मेरा रूप कोई पगड़ी टोपी वाला नहीं कोई बोदा, बोदीआं वाले मन मति बुध्ध ना कोए रखाईआ। मैं इक्को वार पुरख अकाल तेरा अरदासा सोधा, सुध सब दी दिती भुलाईआ । अठसठ तीर्थ लाउँदे वेखे डोबा, डुबकीआं दे के सारे चुरासी विच भुआईआ। तेरे नाम दा चार जुग जेहड़े उडाउँदे रहे गोगा, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। उन्हां दा अन्तिम वेख्या मौका, मुकम्मल तेरी सेव कमाईआ। सब दा पोचिआ रह गया चौंका, चौकड़ी अन्तिम दए दुहाईआ। गोबिन्द दा पूरा होया ढौंका, ढईआ आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर भरन हौका, साह साह विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, दर तेरे वजदी रहे वधाईआ। कलयुग कहे प्रभ मैनूं सदा याद रखीं, रक्ख्या करीं थाउँ थाईंआ। मैं तेरे काहन दी साबत रहिण नहीं दिती कोई सखी, सति धर्म ना कोए वड्याईआ। चार कुण्ट दह दिशा खेल वेख आपणी अक्खीं, आख़र बेनन्ती दिती जणाईआ। तैनूं किसे दा बणया रहिण नहीं दिता पती, पतिपरमेश्वर तेरा नाता सृष्टी नालों तुड़ाईआ। साध सन्त फ़कीर कोई रहिण नहीं दिता यती, यथार्थ सारे दिते भुलाईआ। किसे नूं पढ़न नहीं दिती तेरी निरअक्खर धार पट्टी, बिन पटने वाले सब दी कीती सफ़ाईआ। मैं ते सतिजुग त्रेता द्वापर वांग नहीं चलदा चाल मट्ठी, हौली हौली पन्ध मुकाईआ। मैं तेरे हुक्म नाल अगनी अग्ग तपा के भट्ठी, सृष्टी दृष्टी दिती जलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भरन चट्टी, चटक हो के चेटक दिते बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। कलयुग कहे प्रभ मैनूं बणा लै आपणा सुत जेठा, सतिजुग सुत्ता ना लए अंगड़ाईआ। मैं शाह सुल्तानां रखां तेरे चरणां हेठा, सिर सके ना कोए उठाईआ। मैं तेरा बणया सुत दुलारा बेटा, बेटी बेटे सारे वेख वखाईआ। धरनी धरत धवल दा वेखां पेटा, अंदरों बाहरों फोल फुलाईआ। अन्त अख़ीरी दस्स के सब नूं इक्को नेता, नेत्र अन्तर दयां वखाईआ। कुछ कौल इक़रार याद कर लै चेता, पारब्रह्म तेरी वड वड्याईआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बरां नूं दिता ठेका, बोली अनबोलत आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर वखाईआ। कलयुग कहे प्रभ मेरा वेख सफ़र, जल्दी जल्दी रिहा मुकाईआ। पैगम्बरां दे वेख कफ़न, मुर्शद देण दुहाईआ।

२१७
२१

जेहड़े मक़बरिआं विच हो गए दफ़न, उन्हां दी लग्गी दफ़ा कम्म किसे ना आईआ। जेहड़े आ के चले गए तेरे वतन, मुड़ के फेरा कोए ना पाईआ। उन्हां दी याद फ़ज़ूल जगत वाला यतन, जेहड़े यतीम तेरे विच गए समाईआ। मैं चौहन्दा तेरा साचा इक्को होवे पतन, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। तूं आपे होवें पैज रखण, रक्ख्या करें थाउँ थाईंआ। जन भगत सुहेला रहे कोई ना सक्खण, ख़ाली भण्डारे दएं भराईआ। सच प्रीती जोड़ के नत्तन, नाता आपणे नाल रखाईआ। धुर संदेसा आवें दस्सण, नाम निधाना इक जणाईआ। मेरा इक्को मन्न लै बचन, बच्चा हो के सीस निवाईआ। वेखीं चौधवीं सदी देवीं ना टप्पण, टप्पयां दा झगड़ा देणा मुकाईआ। अगनी जेठ वांग गुरमुख भगत कदे ना तपण, तपदे हिरदे शांत कराईआ। इक्को तेरा नाम जपण, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। सदा सरन सरनाई तेरी वसण, नाता तोड़ कूड़ लोकाईआ। पुरख अकाले तेरा प्यारा नाम जपण, जगजीवत रूप वटाईआ। सच दुआरा धुर दा लभ्भण, भज्जण वाहो दहीआ। खुशीआं विच मिल के हस्सण, हस्ती हस्ती विच्चों बदलाईआ। धन्न भाग जे आएयों पैज रखण, रखक हो के रक्ख्या करें थाउँ थाईंआ। पर मेरे अग्गे किसे दा चलया नहीं कोई यतन, जुगती कम्म कोए ना आईआ। मेरा खेल वेख चारों कुण्ट अन्धेरा कीता मस्सण, मस्ती सब दी दिती गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। कलयुग कहे प्रभ मैनूं सारे कहिंदे शरअ बुरी, बुरयाई सिर ना कोए उठाईआ। मेरे अन्तर वासना इक फुरी, फ़ुरने विच दयां जणाईआ। जिस वेले गोबिन्द छड्डी अनन्द पुरी, पुर अनन्द दिता तजाईआ। ओस वेले बचन कीता सृष्टी दृष्टी अंदरों होणी नगुरी, सतिगुर शब्द ना कोए मनाईआ। सुरत सवाणी सुहागण बणाउणी नहीं किसे कुड़ी, नर हरि कन्त भगवन्त ना कोए मनाईआ। सब दी जगत वासना होणी बुरी, सति धर्म ना कोए कमाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते फिरनी छुरी, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जगत वासना तृष्ना मेट कूड़ी, कूड़ कुटम्ब क़ुदरत दे मालक देणा खपाईआ।

❊ ६ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ गुरशरन सिँघ सुरजीत सिँघ दे गृह नंगल ज़िला हुश्यिारपुर ❊

अक्खर बाणी परम पुरख दी सिफ्त, गुर अवतार पैगम्बर रसना ढोले गाईआ। शास्त्र सिमरत गुरु ग्रन्थ महिमा वाली लिख्त, नाम बाणी रहे जणाईआ। भेव अभेदा खोल्ह दृष्ट वाली सृष्ट, एकँकारा रिहा जणाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त

गुर अवतारां छोटी छोटी सब दी रखदा रिहा फ़रिसत, फ़ार फ़ार नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी कार कमाईआ। गुरु ग्रन्थ कलयुग बाणी, वाहिगुरु अक्खर छत्ती जुग वड्याईआ। नाम सति चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज अन्तर इक समझाईआ। सतिगुर शब्द जुग चौकड़ी खेल महानी, गुर अवतार पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल वाली दो जहानी, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। आदि जुगादि लख चुरासी जीव जंत हर घट अन्तरजामी, घट निवासी पुरख अबिनाशी आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी परदा ओहला आप उठाईआ। जिस पुरख अकाल नूं गुर अवतार पैगम्बर कहि के गए बेअन्त, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। उच्ची कूक सुणाउँदे गए सन्त, सोहले ढोले रागां विच गाईआ। जिस दी सारे करदे गए मिन्नत, दर दरवेश सीस जगदीश झुकाईआ। सति अग्गे सति दी रही कोई ना हिम्मत, हौसला सके ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा परदा आप उठाईआ। गुरु ग्रन्थ निक्की जिही गाथ, गुरु अर्जन सहजे दिता समझाईआ। इस तों परे पुरख समराथ, जो निरअक्खर धार विच्चों अक्खर रिहा समझाईआ। जिस दा आदि जुगादि प्रकाश, रविया हर घट थाईंआ। कदे ना होवे नाश, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। बाणी ओस सिफ्त दी दस्से गाथ, कथनी कथ कथ वड्याईआ। अगला लेखा ना सके आख, परदा भँवर ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। पारब्रह्म बेअन्त बेपरवाह, परवरदिगार वड्डी वड्याईआ। जुग जुग हुक्म दए बदला, बदली अपणे हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक प्रगटाईआ। अक्खरां विच सत्थरां विच पत्थरां विच प्रभ नूं बन्द सके ना कोए करा, अंकड़यां विच हिसाब ना कोए लगाईआ। कोटन कोटि जुग चौकड़ी गए विहा, अनगिणत गुर अवतार पैगम्बर नित नवित्त सेव कमाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक नूरी खुदा, परदा सके ना कोए उठाईआ। कलमा कायनात अलिफ़ ये नाल जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी साहिब सुल्तान आपणा भेव आपणे विच छुपाईआ। गुरु ग्रन्थ बाणी गुरुआं वाली पूरी, पूरन ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। इस तों अग्गे जलवा नूरी, नूर नुराना करे रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम आसा कर के पूरी, पूरब लेखा दए मुकाईआ। सतिजुग सति बख्श के चरण धूढ़ी, मस्तक टिक्का ख़ाक रमाईआ। फ़रमाना दे के इक हज़ूरी, हरि हज़रतां करे पढ़ाईआ। वेखो खेल करे हदूरी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। पुरख अकाल दीन

दयाल सदा सदा सच आपणा नाम करे मशहूरी, मशवरे वाला संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सच सति इक्को रंग वखाईआ। गुरु ग्रन्थ बाणी जगत विद्या गुरदेव, बाणी पैंती बावन सोभा पाईआ। अगला खेल अलख अभेव, अलख अगोचर वड्डी वड्याईआ। समें नाल गुर अवतार पैगम्बरां बाणी जगत लावे सेव, सेवक रूप दृढ़ाईआ। अन्तिम हो के आप निहकेव, निहचल धाम आपणा हुक्म जणाईआ। जिस दा पिच्छे नहीं आया भेव, अगला भेव आप खुल्हाईआ। जिस नूं गा नहीं सकी रसना जिह्व, बत्ती दन्द आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। गुरु ग्रन्थ प्रभ दी महिमा कर ना सके अन्त, अन्तश्करन जुग जुग बदले जगत लोकाईआ। प्रभ मालक ख़ालक धुर दा कन्त, कन्त कन्तूहल धुर दी वडी वड्याईआ। ज्यों ज्यों अग्गे जगत विच भेजे आपणे सन्त, महिमा आपणी नाल दृढ़ाईआ। दस्स अगम्मी मंत, मंतव आपणा इक समझाईआ। जिस दी कोई गण ना सके गणत, लेखा लिख ना कोए मुकाईआ। एसे कर के निरगुण नानक सरगुण नानक नाल मिल के किहा बेअन्त, बेअन्त हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। गुरु ग्रन्थ तों अग्गे होर बड़ा विस्थार, जो पुरख अकाल आपणा आप जणाईआ। जिस नूं कातब बण के लिख सक्कया ना कोए लिखार, लिख्त भविख्त ना कोए दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गए हार, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जिस वेले कल कल्की आवे अवतार, निहकलंक अमाम अमामा रूप वटाईआ। ओह धुर फ़रमाना देवे सच्ची सरकार, शाह पातशाह सच्ची शहिनशाहीआ। जिस दी गुप्त शनीद गुफ़्तार, बिन रसना जिह्वा राग अल्हाईआ। सो मर्द मर्दाना नौजुआना होवे ख़बरदार, बेखबरां ख़बर सुणाईआ। जिस दा आदि जुगादि अन्त ना पारावार, पारब्रह्म प्रभ आपणा परदा लाहीआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी महासार्थी विद्यार्थी गुर अवतार, आपणे लए बणाईआ। उस दी अग्गे अगम्मड़ी कार, जोती शब्दी धार अपार, विद्या अक्खर सके ना कोए विचार, खाणी बाणी तों वस्से बाहर, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं कहिंदे दीनां दा दातार, चुरासी दा सिरजणहार, मुरीदां दा परवरदिगार, दरगाह साची मुकामे हक़ सचखण्ड निरवैर सोभा पाईआ। सदा सदा सद उस दे अख्त्यार, जिस वेले चाहवे आपणे नाम दी महिमा फेर दए उच्चार, ग्रन्थां विच हदूद बन्द ना कोए कराईआ। एह बुद्धी दा विचार, अनुभव इस तों परे धार, जो खेल समझ सके निरँकार, जिस दा सारे करन विस्थार, महिमा विच सिफ्त रहे सुणाईआ। कागद क़लम सेवादर, शाही बण के ख़िदमतगार, रसना जिह्वा दा विवहार, अनबोलत बोल आपणा दए

दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा एकँकारा, धुरदरगाही बण वरतारा, नाम शब्द बाणी धर्म भण्डारा, नित नवित्त जुग चौकड़ी आपणा आपणे हुक्म विच्चों हुक्म हुक्म नाल बदलाईआ।

❊ १० जेठ शहिनशाही सम्मत ४ जागीर सिँघ दे गृह रंगील पुर ज़िला अम्बाला ❊

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ खेल वेख कलयुग कल दी, चार कुण्ट दह दिशा नव सत्त पई दुहाईआ। अमृत धार रही ना जल थल दी, महीअल रो रो मारे धाहींआ। कूड़ विकारा अगनी बलदी, हउमे हंगता करे लड़ाईआ। किसे ख़बर नहीं अगले पल दी, पलकां पिच्छे बैठा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार कहिण मेरे भगवन्त, पारब्रह्म तेरी इक सरनाईआ। सदी चौधवीं परवरदिगार सांझे यार नूर खुदाई कर अन्त, बेअन्त तेरे अग्गे मँग मँगाईआ। मन विकार कूड़ी क्रिया तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक दृढ़ाईआ। राह तक्कदे निज नेत्र लोचन तेरे सन्त, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरा राह तकाईआ। दर दरवेश दर ठांडे करदे मिन्नत, निउँ निउँ बन्दना सीस जगदीश इक झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर साचे खुशी वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण किरपा कर बेनज़ीर, नज़रीआ सब दा दे बदलाईआ। तेरे हथ्थ दो जहानां तक़दीर, तक्ब्बर कूड़ा दे मिटाईआ। लेखा वेख शाह हकीर, मर्द मर्दाना खोज खुजाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक वड पीरन पीर, पैगम्बर सजदयां विच सीस निवाईआ। मँगां मँगदे गए अन्त अख़ीर, ख़ालक ख़लक तेरी ओट तकाईआ। तेरे कोल अगम्मी शमशीर, जिस दी बाडी बणत ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर साचे सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग वेख अन्धेरी रैण, परम पुरख परमात्म पर्दा आप उठाईआ। कूड़ी क्रिया वहिंदा वहिण, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। माया ममता खावे डैण, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। नाता तुट्टा भाई भैण, पिता पूत संग ना कोए निभाईआ। सृष्टी दृष्टी होई तरफ़ैण, तुरिया पद तेरा दरस करे कोए ना राईआ। निज नेत्र खुल्ल्हे कोई ना नैण, प्रतख मिले ना कोए गुसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण कलयुग अन्तिम वेख साखी, साख्यात नज़री आईआ। मन कल्पणा जगत विकार करे गुस्ताख़ी, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे नाम दी संदेसे विच दे के आए पाती, पत्रका भूमिका उपर दृढ़ाईआ। कागज़

क़लम शाही लिख लिख थक्की गाथी, सोहले ढोले रागां नादां विच करे शनवाईआ। कलमा कायनात तेरा दस्से इल्म सफ़ाती, अलिफ़ ये मंज़ल हक़ ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी दर ठांडे आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दईए तेरा सद्दा, होका तेरा नाम जणाईआ। दीन दुनी तेरे नाम नाल करे दग़ा, कूड़ फ़रेबां विच दुहाईआ। माया ममता मोह विकार लैंदे मज़ा, अन्तर आत्म निझर झिरना ना कोए झिराईआ। चार कुण्ट दह दिशा असीं कर के वेख्या गदा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जो तक्कया सो तेरे हुक्म अंदर बद्दा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। मन कल्पणा रोवे बुड्ढा नढ्ढा, नौजुआना नौबत हक़ ना कोए सुणाईआ । तेरा नूर नज़र ना आया साहिब सूरे सर्बग्गा, निरंतर अन्तर जोत ना कोए रुशनाईआ। असीं सारे चलदे विच तेरी रज़ा, राज़क रहीम तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं हुक्मे अंदर बेअसूली दी सब नूं दे दे सज़ा, असूल नाल असलीअत देणी दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवन, तेरा लेखा हर घट अन्तर निरंतर उपर शाह रगा, रहिबर हो के रस्ता आपणा देणा जणाईआ।

✻ ११ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ तारा सिँघ दे गृह जगाधरी ✻

साध संगत गुर विच नहीं कोई भेत, भेव नज़र कोए ना आईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी साचा दस्सदा हेत, प्रेम प्यार विच महबूब दए वड्याईआ। दरस दिखाए निज नेत्र नेत, लोचन अक्ख इक खुल्हाईआ। रुत बसन्ती महके सदा चेत, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। नाम संदेसा काया मन्दिर अंदर दए भेज, भजन बन्दगी इक दृढ़ाईआ। भाग लगा के आत्म सुहञ्जणी सेज, सोभावन्त आप सुहाईआ। जोती जलवा दे के तेज, जलवा नूर करे रुशनाईआ। हर घट अन्तर लए वेख, वेखणहारा बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दी कर्म कर्म दी बदल देवे रेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। गुरसंगत गुर कोई ना ओहला, परदा रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर वेखणहारा काया माटी चोला, चोली आपणे नाम रंगाईआ। धुर संदेसा नाम जणाए अगम्मी बोला, अनरागी राग दृढ़ाईआ। सरगुण निरगुण बण विचोला, विचला भेव दए खुल्हाईआ। मनुआ मन ना पाए रौला, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। नाभी कँवल कर के उलटा कौला, निझर झिरना इक झिराईआ। लेखा जाणे धरनी धरत धौला, धर्म दुआर इक प्रगटाईआ। जोती

२२३

२१

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, घर घर मेला सहज सुभाईआ। सतिगुर संगत ना वस्से दूर नेड़े, पाँधी पन्ध ना कोए पुआईआ। सद भाग लग्गे काया माटी खेड़े, काया माटी बजर कपाटी दए खुल्हाईआ। पंच विकारा करे ढेरे, हउमे गढ़ आप तुड़ाईआ। जन्म कर्म दा लहिणा देणा नबेड़े, लख चुरासी फंद कटाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल करे मेहरे, महबूब आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दी वस्त आप वरताईआ। सतिगुर संगत ना कोए विछोड़ा, सद विछड़े मेल मिलाईआ। भेव खुल्हा के तोरा मोरा, आत्म परमात्म परदा लाहीआ। सच संदेस सुणा के दोहरा, दूई द्वैत बाहर कढ्ढाईआ। काया माटी साफ़ कर के चोला, पतित पुनीत दए कराईआ। धर्म दुआर बणा के गोला, सेवा साची सच दृढ़ाईआ। धुर दा मेल मिला के मौला, मलकुल मौत दा डेरा ढाहीआ। दूजे दर बणन ना देवे गोला, बिन पुरख अकाल सीस ना कोए निवाईआ। सतिगुर संगत सदा सदा सद इक दुआर खोल्हा, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच घर, जिस गृह होवे रुशनाईआ। सतिगुर संगत साजण मीत, मित्र प्यारा हरि हरि नज़री आईआ। सति धर्म दी सांझी कर के रीत, रीतीवान दए वड्याईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक इक्को दर बहाईआ। एका धाम दस्स अनडीठ, सचखण्ड दुआरा दए जणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म निरगुण निरगुण कर प्रीत, प्रीतम हो के तोड़ निभाईआ। हरिसंगत सतिगुर काया रखे ठांडी सीत, अगनी तत ना कोए जलाईआ। मन कल्पणा कर के भय भीत, भाण्डा भरम दए भन्नाईआ। साचे नाम दी कर नसीहत, असल वसल इक वखाईआ। सच दवारिउँ बदलण ना देवे कदे तबीअत, तबीब हो के वेख वखाईआ। धर्म प्यार दोहां दी सांझी सच मलकीअत, क़ीमत अवर ना कोए रखाईआ। सतिगुर संगत किसे दी बदलण ना देवे अंदरों नीअत, विकार हँकार दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सतिगुर संगत आदि जुगादी संग, मेला धुरदरगाहीआ। नाम प्रीती चाढ़े रंग, दुरमति मैल दए धुवाईआ। अनहद नाद वजा मृदँग, धुन आत्मक राग सुणाईआ। पंच विकारा दे के डंन, डंका आपणा नाम शनवाईआ। भुलेखा भरम मिटावे जंन, भाण्डा भय भउ भन्नाईआ। धुर दा राग सुणा के कन्न, काम क्रोध लोभ मोह हँकार विकार दए मिटाईआ। निरगुण नूर जोत चाढ़ के चन्न, अन्ध अन्धेरा दए गुआईआ। सतिगुर संगत मातलोक बेड़ा बन्न्ह, भार आपणे कंध उठाईआ। राए धर्म दा लग्गण ना देवे डंन, फाँसी जम ना कोए लटकाईआ। चिन्ता सोग मिटा के ग़म, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर ब्रह्म, पारब्रह्म मिलाईआ । सति सच दा होवे धर्म, कुकर्म नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड

दुआरे दे के आपणी सरन, सरनगति इक समझाईआ। संगत सतिगुर जगत रीती कदे ना देवे मरन, मर जीवत रूप बदलाईआ। साची मंज़ल चढ़न, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़न, आत्म परमात्म वजदी रहे वधाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआरे वड़न, जोती जोत मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे गृह वसाईआ। सतिगुर संगत देवे भूमिका अगम्म अस्थान, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिथ्थे निरगुण जोत सति सरूप भगवान, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिथ्थे झुकदे ज़िमीं असमान, चौदां लोक चौदां तबक सिर सके ना कोए उठाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर मँगदे दान, ख़ाली झोलीआं रहे भराईआ। निरगुण जोत जोती जोत जगे महान, महिमा कथ ना कोए सुणाईआ। सतिगुर संगत दा सदा निगाहबान, बिन अक्खां वेख वखाईआ। सुरती दा शब्दी बण के काहन, धुर दा राम लए मिलाईआ। अन्त रहिण ना देवे जम की कान, चारे खाणी पन्ध मुकाईआ। सच दुआरा दे मकान, मक़बरिआं विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। संगत सतिगुर सतिगुर संगत शब्दी सुरत सुरत शब्दी इक दूजे दे सदा महमान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आवण जावण जावण आवण लोकमात वेख वखाईआ।

✻ १२ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ सरमैल सिँघ जगजीत सिँघ दे गृह मेरठ कैंट ✻

गुर अवतार पैगम्बर कहिण छड्डया दीन दुनी दा झेड़ा, झगड़ा कूड़ कुड़िआर रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार शब्दी हथ्थ रखे केहड़ा, अबिनाशी करते श्री भगवान तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं शाह सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान वक्त आ गया नेड़ा, दूर दुराडे आपणा परदा देणा उठाईआ । जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर तेरा भाणा मोड़े केहड़ा, सीस जगदीश सके ना कोए उठाईआ। लख चुरासी काया माटी हाटी वेख मनुक्खी खेड़ा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सति धर्म विच रिहा ना कोए गुरु चेरा, मुरीद मुर्शद मिलण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ विकार विभचार भरया बेड़ा, नईआ नौका ममता दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू तेरे अग्गे अरज़ोई, अर्ज़ बन्दना इक जणाईआ । सच दुआर नज़र ना आवे कोई, कोटां विच्चों गुरमुख रहिण कोए ना पाईआ। तेरा कलमा नाम दरोही, तोबा तोबा सीस झुकाईआ। सच दुआरे मिले किसे ना ढोई, चरण कँवल ना कोए सरनाईआ। सुरती उठे ना कोई सोई, शब्दी नाद ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर

तेरे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सुण साहिब सच्चे सुल्तान, दर ठांडे सीस निवाईआ। सति रिहा ना धर्म ईमान, अमानत नाम ना कोए टिकाईआ। हुक्मे अंदर दिसे ना कोए ग़ुलाम, ग़ुरबत घर घर डेरा लाईआ। छत्तीं ब्रह्मण शूद्र वैश तेरा विगड़ गया निज़ाम, नौबत नाम हक़ ना कोए सुणाईआ । तन वजूद झगड़ा करे मन शैतान, शरअ शरीअत विच दुहाईआ । मन्दिर सोहे ना कोए हक़ मकान, मेहरवान महबूब तेरा दरस कोए ना पाईआ। बीस बीसे हरि जगदीशे असीं होए सर्ब हैरान, हैरानी अन्तर निरंतर नज़री आईआ। साची रही ना कोई सन्तान, सुत अपराधी देण दुहाईआ। चारों कुण्ट कूड़ निशान, गढ़ हँकार रिहा लहराईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सच बेनन्ती सुण भगवान, भगवन एका एक जणाईआ। योद्धे सूरबीर बलवान, मर्द मर्दाने तेरी ओट तकाईआ। वस्त अमोलक दे दान, धुर दी दात झोली पाईआ। सतिजुग साचा आप उठा नौजवान, पुश्त पनाह बेपरवाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म निरगुण निरगुण दस्स साचा कलमा कलाम, कायनात इक्को घर कर पढ़ाईआ। तेरी मंज़ल महबूब होई आसान, बेपहचान परदा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर वजदी रहे वधाईआ। पुरख अकाल कहे मैं आपणा खेल खिलावांगा। गुर अवतार पैगम्बरो नेत्र लोचन नैण परदा सर्ब आप उठावांगा। कूड़ी क्रिया जगत वासना मेट मोह अडम्बर, डंका धुर दा इक वजावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखावांगा। कलयुग कूड़ा कूड़ मिटाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। शाह पातशाह वेस वटाएगा। रहिबर हो के फेरा पाएगा। निरगुण नूर जोत डगमगाएगा। शब्द अनादी नाद सुणाएगा। कलयुग कूड़ी क्रिया झगड़ा मेट मिटाएगा। साचा आत्म परमात्म बोध अगाध दृढ़ाएगा। मनुआ मन रहे ना अनाड़ी, निज़ाम दीन दुनी बदलाएगा। लेखा वेख के मुल्ला क़ाज़ी, कलमा कायनात समझाएगा। नाम निधान सुणाए पंडत पाँधी, पन्ध पिछला आप मुकाएगा। सृष्टी दृष्टी जाए साधी, सदा इक्को नाम जणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा आप प्रगटाएगा। सतिजुग साचा आप प्रगटावांगा। दीन दुनी वेख वखावांगा। ऋषी मुनी झगड़ा आप चुकावांगा। बण के गहर गम्भीर गुणी, गुणवन्ता सोभा पावांगा। भाग लगा के काया कुल्ली, सन्त सुहेले आप जगावांगा। दे के नाम वस्त अनमुल्ली, अतोट अतुॅट झोली भरावांगा। खेल दस्स के सुल्हकुली, कुल मालक हो के इक्को घर जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर ठांडा इक प्रगटावांगा। दर ठांडा इक प्रगटाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। भगत सुहेले मेल मिलाएगा। गुर चेले खोज खुजाएगा। कलयुग क्रिया कूड़ गुआएगा। सति धर्म निशान झुलाएगा। सच दुआरा

एकँकार इक प्रगटाएगा। सदमा पिछला रहिण कोए ना पाएगा। क़दमां उत्ते दीन दुनी सीस निवाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, खेल दस्से उच्च अगम्म अथाह, ऊचो ऊँच पदवी इक दृढ़ाएगा। ऊचो ऊँच पदवी इक दृढ़ावांगा। गुर अवतार पैगम्बर सच दुआरे नाल रखावांगा। चार कुंट दह दिशा कर के मेहर नज़र, नज़रीआ सब दा आप बदलावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के ग़दर, गहर गम्भीर हो के आपणा रंग रंगावांगा। सतिजुग तेरी आसा मनसा पूरी कर के सध्धर, सदके वारी घोल घुमावांगा। सचखण्ड तेरा कर के कदर, कलयुग क़तलगाह विच्चों हरिजन साचे पार लँघावांगा। जुग चौकड़ी करनहारा अदल, इन्साफ इक्को इक प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी इक्को राग ढोला गीत कलमा कायनात जणावांगा। गुर अवतार पैगम्बरो सुणो अगम्मी बात, हरि करता आप दृढ़ाईआ। अन्त अख़ीरी मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। सब नूं गाउणी पए इक्को गाथ, तूं मेरा मैं तेरा दूजा ढोला अवर ना कोए सुणाईआ। झगड़ा रहिण ना देणा ज़ात पात, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा निरगुण जोत जुड़ना नात, तत्तां वाला अंक नज़र कोए ना आईआ। मनमुखता कुलखणी रहिण नहीं देणी नार कमज़ात, बुध्ध बबेक देणी बणाईआ। जन भगतां दृष्टी देणी साख्यात, स्वच्छ सरूपी आपणा नूर कर रुशनाईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार परवरदिगर सांझा यार मंज़ल दस्से अगम्मी घाट, किनारा इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा नर निरँकारा आप दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो जाणा जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के दुरमति दाग़, पतित पुनीत दए कराईआ। निरगुण नूर जोत जगाए चिराग़, दीवा बाती लोड़ रहे ना राईआ। माया ममता मोह मिटाए आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जो हिरदे अंदर परम पुरख परमात्म रहे अराध, अदना आहला जोड़ जुड़ाईआ। सच दुआर बणाए साध, सुर धुर दी इक सुणाईआ। शब्द सुणाए बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। भाग लगा के काया माटी हाड, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। भेव खुल्हावे सच करता वाहिद, वाहवा वजदी रहे वधाईआ। धुर दा हुक्म करे राइज, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साचे नाम दा शौक रहे ना कोई शायद, शनाख़त आपणी दए कराईआ। वस्त अमोलक कर इनाइत, धुर दी दात झोली पाईआ। सच दुआरे कर रहाइश, पर्दा उहला आप उठाईआ। दीन दुनी कर पैमाइश, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडे दए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरो वेखणा खोल्ह के अक्ख, हरि करता आप जणाईआ। करां खेल शब्द धार प्रतख,

पारब्रह्म ब्रह्म लवां मिलाईआ। जगत वासना मेट के हद्द, हदूद इक्को दयां समझाईआ। नाम नगारा वजाए नद, जगत नादान दयां जगाईआ। सन्त सुहेले सज्जण सद्द, सति दुआरा दयां वखाईआ। नाम प्याला दे के मद, सच खुमारी दयां चढ़ाईआ। भाग लगा के माटी हड्ड, काया काअबा वज्जे वधाईआ। किसे नूं रहिण ना देवां अलग, वखरा गृह ना कोए वसाईआ। सृष्टी दृष्टी इष्टी इक्को नाम लए जप, जप तप संजम सुच सच दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, महिमा बोध अगाध अकथ, करनी रखे आपणे हथ्थ, करता क़ुदरत आपणे हुक्म विच रखाईआ।

* १३ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ *

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू लहिणा देणा तेरे हथ्थ बाकी, चौथे जुग दर ठांडे सीस निवाईआ। लहिणा देणा वेख तन वजूद माटी ख़ाकी, त्रै पंज परदा उहला आप उठाईआ। मन विकारी हँकारी होया सब तों आकी, अकल बुद्धी दी रहिण देवे ना कोए चतुराईआ । अमृत जाम दे के बदले ना कोए हयाती, जीवण विच जीवण रंग ना कोए रंगाईआ। अन्तर निरंतर मंज़ल चढ़े ना कोए घाटी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। मेहरवान महबूब आपणा परदा खोल्ह ताकी, निज नेत्र लोचण नैण कर रुशनाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद सुआंती प्या बण के साकी, साख्यात आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर साचे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साहिब सतिगुर पुरख अकाल अगम्म, अलख अगोचर अथाह तेरी वड्याईआ। भाग लगा काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी इष्टी सृष्टी अंदरों दे बदलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हरख सोग मेट ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। शब्द अनाद सुणा नाम निधाना एका कन्न, सरवण अन्तर वज्जे वधाईआ। पवण स्वासी साह साह लेखे ला दम, दामनगीर हो के आपणा मेल मिलाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश आपणा कर चन्न, अन्ध अन्धेरा सञ्झ सवेरा इक्को दे वखाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर बेड़ा दे बन्न्ह, बन्दगी विच सजदा कर के साहिब सुल्तान सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दरबारे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू चार कुण्ट वेख कल काती, कलमा हक़ ना कोए जणाईआ। प्रकाश मिले ना किसे धुर दी बाती, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। नज़र आए ना कमलापाती, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पाती, साचे पतण बहि के चरण धूढ़

इश्नान इन्सान कर कोए ना पाईआ। दुरमति मैल ना उतरे न्ाती, अन्तर ब्रह्म परदा ना कोए उठाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल कूड़ी क्रिया मेट बदमाशी, मुश्किल सब दी हल्ल कराईआ। एका नाम शब्द धुन दे अनादी, अनहद आपणा राग सुणाईआ। आत्म परमात्म होए विस्मादी, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। बिन तेरी किरपा सोई सुरत किसे ना जागी, आलस निंदरा ना कोए मिटाईआ। किरपा कर पुरख वड भागी, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सतिगुर तेरी आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल अन्त अख़ीरी वेख सजदा, सीस जगदीश इक झुकाईआ। भेव पा घर घर दा, साढे तिन्न हथ्थ बंक दुआरा वेख वखाईआ। जो सन्त सुहेला होवे तेरा बरदा, बन्दगी विच तेरा ध्यान लगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला होवे पढ़दा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परदा देणा उठाईआ। नौजवान मर्द मर्दान मंज़ल हक़ीक़ी होवे चढ़दा, जगत दुआरा कूड़ कुड़िआरा पार कराईआ। नित नवित्त नर नरायण निज लोचण तेरा होवे दर्शन करदा, आत्म ब्रह्म वजदी रहे वधाईआ। सो गुरमुख सज्जण मीत मुरार ना जन्मे ना कदे मर्दा, अन्तिम जोती जोत समाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दयाल पुरख अकाल एकँकार वेख लेखा कलयुग कल दा, जो कलमा सब नूं रिहा भुलाईआ। साधां सन्तां वेख छलदा, अछल छलधारी तेरा हुक्म सुणाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सति संदेसा रिहा घॅलदा, नाम निधाना इक वरताईआ। मैं वेखां तेरा धाम जिथ्थे लेखा निहचल धाम अटल दा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जो चरण दुआरा तेरा मल्लदा, मालक ख़ालक हो के आपणी गोद उठाईआ।

२२८

२१

✻ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ कैपटन महिन्दर सिंघ दे गृह दिल्ली कैंट ✻

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ नाम दे दे इक्क, एकँकार परवरदिगार दर ठांडे मँग मँगाईआ। चार जुग भविख्तां विच लेखा आए लिख, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले चार वरन बणा अगम्मी सिख, सिख्या धुर दी इक दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त, लहिणा देणा लै नजिट्ठ , सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी तेरी ओट तकाईआ। मन कल्पना कूड़ी क्रिया सब दी जित्त, शाह सुल्ताना नौजवाना सद आपणा हुक्म वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स साचा हित, हितकारी निरँकारी हो के वेख वखाईआ। चार कुण्ट दह दिशा एका नूर आवे दिस, जोती जोत डगमगाईआ।

कूड़ी क्रिया बदल दे पिठ, करवट विच लै अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरे नाम दी इक्को होवे टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी दे लगाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर निरंतर कर बिबेक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। सचखण्ड दुआर इक्को घर वखा आपणा देस, दह दिशा झगड़ा दे मुकाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक नज़री आ इक नरेश, नर नरायण तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर तेरे दर ते होए पेश, पेशीनगोई पिछली रहे वखाईआ। साडे बदल दे लेख, लेखा आपणा हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साचा दस्स दे इक्को नाम, अकल कल तेरी सरनाईआ। सच प्रीती दे जाम, अमिउँ रस इक चखाईआ। शरअ ज़ंजीर कट गुलाम, गुरबत अंदरों दे कढ्ढाईआ। किरपा कर वड अमाम, मैहदी तेरी सरनाईआ। भाग लगा काया माटी चाम, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। घर सुआमी मिल राम, रमता रमता फेरा पाईआ। नज़री आ इक्को काहन, घनईआ नईआ इक चलाईआ। वाहिद सुणा कलमा धुर पैग़ाम, हदीसां विच जणाईआ। मन्त्र सोहे तेरा सच्चा सतिनाम, वाहवा गुरु वजदी रहे वधाईआ। साडा अन्त अख़ीर सजदा क़बूल कर सलाम, नमस्ते नमो कर बन्दना डंडावत इक दृढ़ाईआ। तूं दाता दानी मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच समाईआ। साचा मार्ग दस्स आसान, असल आपणा भेव खुल्ह्राईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना कोए विधान, सति सच परदा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी ओट इक तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साची सिख्या दे साख्यात, साहिब स्वामी तेरी इक सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, निरगुण नूरी चन्द कर रुशनाईआ। चार वरन बणा इक जमात, जुम्मला अक्खर आपणा इक दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना काग़ज़ात, सिमरन इक्को देणा समझाईआ। अन्तर परदा खोल्ह राज़, चश्म नूर कर रुशनाईआ। पन्ध मुका पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर लेखा दे मुकाईआ। निरगुण हो के सरगुण बण साथ, सगला संग निभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स साची गाथ, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लैणा मिलाईआ। कूड़ क्रिया विच्चों अगनी तत बुझा आग, त्रैगुण लेखा दे मुकाईआ। घर मेला मेल कन्त सुहाग, साहिब सतिगुर तेरी ओट तकाईआ। बिन तेरी किरपा सोई सुरत ना सके जाग, जीवण जुगत ना कोए जणाईआ। काया माटी लग्गे कोए ना भाग, भगवन दरस कोए ना पाईआ। घर स्वामी मिले ना कन्त सुहाग, ठाकर हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वैराग, वैरी अंदरों देणे कढ्ढाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाले रहे दस्स, दस्तगीर

तेरी इक सरनाईआ। कलयुग अन्त साडा रिहा कोए ना वस्स, वसल यार मिले ना नूर खुदाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदली सब दी अक्ख, आख़र मंज़ल चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। अक्खरां वाला पत्थरां वाला सृष्टी दृष्टी करे जस, अनहद नादी नाद सुणन कोए ना पाईआ। मंज़ल मिले ना कोए हक़ीक़ी हक़, दरगाह साची समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सद वजदी रहे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा खेल प्रभ अनडिठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। असीं सारे दे गए पिच्छा, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। बिन तेरे जगत जहान करे कोई ना रच्छा, रच्छक जगत नज़र कोए ना आईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेले मँगण भिच्छा, भिक्खक हो के झोली डाहीआ। उहनां निज नेत्र जोत प्रकाश हो के दिसा, दह दिशा वजदी रहे वधाईआ। गोद उठा के दया कमा के सिर हथ्थ टिकाया बण के धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। तेरा रूप अनूप सति सरूप कोई ना जाणे वड्डा निक्का, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे वजदी रहे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ दे दे इक संदेसा, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे कोई ना पेशा, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। झगड़ा मुका दे गनपत गनेशा, गहर गम्भीर आपणा परदा देणा उठाईआ। सचखण्ड वखा एकँकार एका देसा, दिशा अवर ना कोए जणाईआ। जिस घर वसदा रहे हमेशा, परदा उहला देणा उठाईआ। भगत उधारना तेरा पेशा, पारब्रह्म तेरी इक सरनाईआ। तूं निरगुण सरगुण धार अगम्मी नेता, नेत्रां पिच्छे बहि के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठाडे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरे हथ्थ सब दी डोर, डोरी तेरे उत्ते रखाईआ। साथों कलयुग जीव हो गए चोर, चोरी सब दे नाल कमाईआ। झगड़ा वेख अन्धघोर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। बिन साहिब सतिगुर कोई ना सके बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे ख़लक खुदाईआ। नाम प्रीती निभावे कोई ना तोड़, अद्धवाटे बैठे रोवन मारन धाहींआ। जिन्हां उपर पुरख अबिनाशी कीता ग़ौर, परदा आप चुकाईआ। उन्हां दा मानस जन्म गया सौर, सौहरे पेईए वजदी रहे वधाईआ। जगत वासना रहे ना कौड़, मन कूड़ कल्पणा ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आदि जुगादी इक्को नूर, नूर नुराने शाह सुल्ताने नौजवाने मर्द मर्दाने वाली दो जहाने जहां तहां तेरी आस रखाईआ।

✻ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर दिल्ली ✻

भगत दुआर कहे एह की खेल ब्रह्मण गौड़ा, गहर गम्भीर देणा जणाईआ। की मार्ग तेरा लम्बा चौड़ा, बेनज़ीर देणा वखाईआ। की निरगुण सरगुण धार लगाएं पौड़ा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर देणा वखाईआ। की निरगुण निरवैर निराकार निरँकार कर के वेखें ग़ौरा, गहर गवर आपणी अक्ख खुल्हाईआ। की चार कुण्ट दह दिशा फिरें दौड़ा, ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहानां आपणा पन्ध मुकाईआ। की लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेखें रस मिट्ठा कौड़ा, अन्तर निरंतर हो के खोज खुजाईआ। की बूँद स्वांती अमृत रस देवें नाम निधाना भोरा, जगत भँवरी पर्दा आप चुकाईआ। की सदी चौधवीं अन्त अख़ीर लेख मोरा तोरा, तुरत सुरत निरत आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा परदा लाहीआ। परदा कहे चुक्क दे मेरा आंचल, ओहला रहे ना राईआ। भेव खुल्हा दे बातन, परदानशीं मँग मँगाईआ। साचे हुक्म दा दस्स महातम, महातम वेख ख़लक ख़ुदाईआ। धर्म रहे ना कोई सनातन, सति सति ना कोए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया जगत हाटन, वणजारे बैठे मुख छुपाईआ। थिर दस्से कोई ना आसन, ओसिथर नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करते तेरी बेपरवाहीआ। जगत किनारा वेखो पातण, पत्रका चार जुग दी फोल फुलाईआ । दर दरवेश गुर अवतार पैगम्बर आखन, बिन रसना जिह्वा देण दुहाईआ। पूरा कर भविक्ख्त वाक्न, वाह वाह इक्को वज्जे वधाईआ। तेरा जलवा नूर होवे प्रकाशन, अन्ध अन्धेर देणा गवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चुक्के वाटन, धंदे नाम देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर साचे वज्जे वधाईआ। वधाई कहे मैं वज्जां मातलोक, दस्सणा तेरा नाम शनवाईआ। नाम सुणावां धुर सलोक, सोहला इक दृढ़ाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत करां रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण ना देवां सोच, सोच समझ दयां बदलाईआ। साचे भगतां दस्स के तेरी खोज, खोजत खोजत वेख वखाईआ। तेरे ब्रह्म दी मिले इक्को मौज, मुहब्बत विच धुर दा रंग चढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना हरख सोग, चिन्ता ग़म देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वजदी रहे वधाईआ। वधाई कहे मैं दस्सणा वाधा, भेव अभेव खुल्हाईआ। गुरमुखो गोबिन्द पिता पुरख अकाल दादा, दीदा दानिस्ता दोहां इक्को नूर टपकाईआ। सुरती शब्दी खेल जिस नूं कहिंदे कृष्णा राधा, सीता राम नाल वड्याईआ । जिस दी महिमा गाउँदे विच रागां, नादां विच सुणाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला इक्को जागा, जागरत करे सर्ब लोकाईआ। जन भगतां धोए दुरमति मैल दाग़ा, पतित पुनीत कराईआ। गृह मन्दिर अंदर होवे राखा, दिवस

रैण वेख वखाईआ। जिन्हां मन्नया धुर दा आखा, आखर प्रभ नूं मिल के खुशी मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया छड्डके साका, साख्यात इक्को वेख वखाईआ। जो ब्रह्मण्ड खण्डां दा आका, अकल बुद्धी तों परे डेरा लाईआ। जिस दा खिच्च ना सके कोई ख़ाका, तसव्वर कर ना कोए दृढ़ाईआ। ओह देवणहारा सब दा बाका, पूरब लेखा झोली पाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी राता, निरगुण नूरी चन्द करे रुशनाईआ। जो कलयुग अन्त अन्तर बणया जोती जाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरवैर निराकार निरँकार इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे करदे सजदे, सीस जगदीश झुकाईआ। पुरख अकाल तेरे बरदे, बन्दगी विच तेरा बंधन पाईआ। खेल वेखीए तेरे घर दे, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़दे, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तेरे क़दमां तेरी मंज़ल चढ़दे, चढ़ के वेख्या नूर अलाहीआ। दरवेश तेरे दर दे, दरे दरबार मँग मँगाईआ। तेरे खेल अगम्मी नर दे, नरायण तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात सारे विच्चों कढ्ढदे, कड़ी कड़ी विच्चों बदलाईआ। सच धर्म निशाना इक्को गड्डदे, गॉड हू खुदा अलाह राम कृष्ण तूंही इक्को नूर नज़री आईआ। दीन मज़हब दे झगड़े छड्डदे, झगड़ा मिटे कूड़ लोकाईआ। जन भगत सुहेले सदा तेरे दर दे बरदे, सच दुआरे बहि के तेरा दर्शन पाईआ। जंगलां विच कदे ना लभ्भदे, टिल्ले फिरन ना वाहो दाहीआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला कारज पूरे करें सब दे, हर घट थाँ वेखें थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़े मुका दे आत्म परमात्म रहिणे अलग दे, वखरा घर सत्थरां वाला ना कोई जणाईआ।

✻ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ मँगल सिँघ दे गृह भूपाल शहर मध्ध प्रदेश ✻

सतिजुग कहे प्रभ मैं हाज़र हज़ूर, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी सरनाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दे आपणा नूर, नूर नुराने कर रुशनाईआ। ममता मोह विकार हंगता कर दूर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआरा लोकमात पाए फ़तूर, फ़तवा गुर अवतार पैगम्बरां उत्ते लाईआ। मन कल्पणा सृष्टी दृष्टी करे क़ुसूर, सति सच नज़र कोए ना आईआ। जगत कल्पणा वेख कूड़, मेरा अन्तर लए अंगड़ाईआ। दीन दुनी होए मूर्ख मूढ़, बुध्ध बबेक ना कोए कराईआ। तेरी चरण सरन चरण कँवल मस्तक लग्गे किसे ना धूढ़, मस्तक टिक्का ख़ाक ना कोए रमाईआ। चार कुण्ट दह दिशा नव सत्त गढ़ होया ग़रूर, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ बख्श अगम्मी दात, दाते दानी तेरे हथ्थ वड्याईआ। सच प्रीती जोड़ नात, नाता बिधाता आपणे नाल रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दे अगम्मी गाथ, सोहला ढोला इक सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटां अन्धेरी रात, सति धर्म साचा नूर कर रुशनाईआ। झगड़ा रहिण ना देवां ज़ात पात, दीन मज़हब एका रंग रंगाईआ। चार वरन अठारां बरन बणावां तेरे दास, दास्तान तेरी इक सुणाईआ। परदा लाहवां पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर तेरा नूर करां रुशनाईआ। अक्खरां वाला झगड़ा रहे ना कोए लुगात, लग मातर वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा नाम निधान सृष्टी दृष्टी अंदर लए वाच, वास्तक तेरा रंग रंगाईआ। भाग लगावां काया माटी काच, कंचन गढ़ पंज तत दयां बणाईआ। निज नेत्र खोल्हां आंख, आखर तेरा मेल मिलाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक रूह बुत करां पाक, पतित पुनीत तेरी इक सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर पूरी होवे आस, आसा तृष्ना पिछली मेट मिटाईआ। लख चुरासी अंदर वेखां तेरी रास, सुरती शब्दी गोपी काहन वजदी रहे वधाईआ। दुरमति मैल देवां काट, कटाकश तेरा नाम लगाईआ। मन कल्पणा कर के घात, सति सच इक उपजाईआ। चरण प्रीती दे विश्वास, विषयां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआर ख़ाली करां लाश, तेरा खण्डा नाम इक चमकाईआ। धरनी धरत धौल होवे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दयां गवाईआ। साचा हुक्म दे ख़ास, ख़सलत कूड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची मँग मँगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ दे दे नाम निधान, निरगुण निरवैर तेरी सरनाईआ। सति सच दे निशान, निशाना कूड़ देणा बदलाईआ। नाम मन्त्र दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। अमृत रस दे पीण खाण, झिरना निझर इक झिराईआ। जोती नूर दे महान, घर घर करां रुशनाईआ। नाम शब्द दे धुनकान, अनहद नादी नाद वजाईआ। किरपा कर प्रभू मेहरवान, महबूब तेरी शरनाईआ। वस्त अमोलक दे दे दान, दाते दानी तेरी ओट तकाईआ। सति धर्म करां प्रधान, जूठ झूठ रहे ना राईआ। तेरी मंज़ल दस्स आसान, रस्ता इक्को दयां वखाईआ। जिथ्थे बैठे सीता राम, गोपी काहन सीस झुकाईआ । सजदे करन पैगम्बर आण, ईसा मूसा मुहम्मद धूढ़ी ख़ाक रमाईआ । गुरु गुरदेव स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी धुर दा हुक्म दे हुक्मरान, संदेस नर नरेश इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची सचखण्ड दुआर एकँकार तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग कहे प्रभू दे दे नाम खुमारी, सद इक्को रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़ां यारी, मित्र प्यारा इक्को दयां दरसाईआ। तेरा निरगुण नूर जोत करां उज्यारी, जोती जाते तेरी बेपरवाहीआ। जन भगतां साचे सन्तां रहे ना कोए खुआरी, ख़ालस

तेरा रंग रंगाईआ। धुर दा नाम दस्स जैकारी, जै जैकार दयां कराईआ। लेखा लेख वेख पैगम्बर गुर अवतारी, पूरब सब दा झोली पाईआ। तूं सचखण्ड निवासी शहिनशाह वड सिक्दारी, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। कलयुग अन्तिम वेख वारी, वारता पिछली रिहा दुहराईआ । बिन तेरी किरपा अगन बुझे किसे ना बहत्तर नाड़ी, ततव तत सांत किसे ना आईआ। साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर, सतिजुग कहे, प्रभ मेरी आई वारी, वारस हो के आपणा हुक्म दे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल अगम्म अपारी, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सलाह कहिण कोए ना पाईआ।

✻ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ भगत सिँघ दे गृह इटारसी मध्ध प्रदेश ✻

सतिजुग कहे प्रभू मैं तेरे चरण ढठ्ठा, निउँ निउँ चरण कँवल मँगां शरनाईआ। किरपा कर पंज तत त्रैगुण माया अठ्ठां, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। दिवस रैण तेरे प्यार अंदर नठ्ठां, सति सतिवादी हो के भज्जां वाहो दाहीआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनन्ती इक्को दस्सां, दह दिशा वेख भेख जगत लोकाईआ। साबत रहीआं ना किसे दीआं अक्खां, नेत्र अक्ख ना कोए शरमाईआ। तन मन्दिर अंदर कूड़ीआं ढक्कां, पंच विकारा दए दुहाईआ। मैं तेरा खेल अगम्मी तक्कां, ताक़तवर तेरी शरनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल शब्दी डोरी पा नथ्थां, नर नरायण आपणा बल प्रगटाईआ। दीन मज़हब दीआं रहिण नहीं देणीआं वट्टां, वाट पिछली पन्ध चुकाईआ। झगड़ा मुकाउणा तीर्थ अठ्ठां सठ्ठां, तट सरोवर इक्को देणा सुहाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा मूंड मुंडाए सीस जूट जटां, वैरागी तिआगी आपणा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ सोध दे सब दी बुद्धि, बुध्ध अन्त अख़ीर गया जणाईआ। जिस वेले निरगुण धार आवे गुज्झी, अलख अगोचर आपणा फेरा पाईआ। जगत वासना रहिण ना देवे दूजी, एकँकार एका रंग रंगाईआ। लहिणा देणा मुकावे चौंह जुगी, जगत जुगीशर बैठण सीस निवाईआ । भाग लगावे धर्म दुआर साढे तिन्न हथ्थ झुग्गी, झगड़ा अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा अगम्मी वर, अगम्मड़े आपणी दया कमाईआ। सति धर्म कहे प्रभ दे दे धुर दी हिम्मत, हरि हौसला दे वधाईआ। मैं वेखां तेरी सिम्मत, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। रहिण ना देवां कोई निन्दक, रसना जिह्वा सब तेरा नाम ध्याईआ। मन वासना करे कोई ना इल्लत, इल्म आलमां उल्मा हो के दयां पढ़ाईआ। जन भगतां मेट के सगली चिन्तक, सांतक

सति दयां वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे वज्जे वधाईआ। सतिजुग कहे प्रभ साचे नाम दी दे दे धार, धरनी धरत धवल दयां वरताईआ। सृष्ट दृष्ट अंदर परदा खोल्हां सर्ब संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सोया रहिण कोए ना पाईआ । धुर फ़रमाने अंदर दस्सां कल कल्की अवतार, इक इकल्ला सच महल्ला एकँकारा इक सुहाईआ। जिस दा राह तकदे गए पैगम्बर गुर अवतार, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। साहिब सुआमी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पावणहारा सार, महासार्थी आपणा परदा आप उठाईआ। जन भगतां साचे सन्तां मंज़ल रहिण ना देवे कोई दुष्वार, दूती दुश्मण दर ठांडे काया मन्दिर अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले मेले मीत मुरार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल दीन दयाल आपणे घर वसाईआ। जिथ्थे ना कोई पुरख ना कोई नार, जोती जोत जगे अगम्म अपार, सति धर्म देवे इक सहार, इक इकल्ला वसणहारा निहचल धाम अटला, जलां थलां आपणा परदा दए उठाईआ।

❊ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ हरदित सिँघ दे गृह इटारसी मध्ध प्रदेश ❊

सतिजुग कहे प्रभ तेरे नाम दी दस्सां साची जुगती, जागरत जोत बिन वरन गोत करां रुशनाईआ। अन्तर निरंतर सदा खुल्ही रखावां सुरती, शब्द ढोला नाम गीत संगीत सुणाईआ। धार प्रगटावां जणावां खेल सच्चे सतिगुर दी, जो आदि जुगादी सति सतिवादी एको एक नज़री आईआ। जिस दी खेल एथे ओथे दो जहान अगम्मे घर दी, गृह मन्दिर सचखण्ड दुआर बैठा सोभा पाईआ। जिस दे सिफ्तां वाले ढोले सृष्टी दृष्टी मन बुद्धी रसना जिह्वा पढ़दी, याचक वाचक पाठक हो के राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मैं निर्मल करां बुद्धि, बन्दना तेरी इक दृढ़ाईआ। रमज़ रहिण ना देवां गुज्झी, इशारा इक्को नाम समझाईआ। धार रहे कोए ना दूजी, धर्म दुआर इक प्रगटाईआ । भेव चुका के वदी सुदी, सिध्धा मार्ग इक दरसाईआ। मंज़ल दस्स हक़ीक़ी उच्ची, उच्च अगम्म अथाह दयां समझाईआ। आत्म परमात्म लगा के रुची, रचना तेरी दयां वखाईआ। जन भगत सुहेला विछोड़े विच कोई रहे कोए ना दुखी, दर्दी हो के दर्दीआं वंड वंडाईआ। भाग लगावां काया माटी तन वजूद कुटी, कूड़ कुटम्ब अंदरों दयां कढ्ढाईआ। सुरती रहे कोए ना सुत्ती, नाम निधाना इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर वजदी रहे वधाईआ। सतिजुग कहे प्रभ दीन दुनी करां बिबेक, पारब्रह्म

ब्रह्म पर्दा दयां उठाईआ। सचखण्ड दुआरा तेरे चरण दस्सां टेक, टिक्का चरण धूढ़ी मस्तक नाम खुमारी इक वखाईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक दस्सां एक, एकँकार निरँकार तेरी सच सरनाईआ । कलयुग कूड़ी क्रिया मेटां भेख, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दयां उठाईआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा पंडत पांधा मुल्ला शेख़, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान करे ना कोए लड़ाईआ। सचखण्ड दुआरा तेरा दस्सां धुर दा देस, दरगाह साची मुकामे हक़ जिथ्थे वज्जे हक़ वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रेख, माया ममता मोह विकार कूड़ देणा मिटाईआ। सतिजुग कहे धर्म दुआरा तेरा देवां खोल्ह, ख़ालक ख़लक दयां दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स अगम्मा बोल, अनबोलत तेरा राग सुणाईआ। निज आत्म परमात्म दरसावां सब नूं कोल, निज घर बैठा सोभा पाईआ। अबिनाशी करते किरपा कर उपर धौल, धरनी धरत धवल मिले माण वड्याईआ । घट निवासी पुरख अबिनाशी तत ब्रह्म निरगुण धार जाणा मौल, मौला हो के आपणी खेल खिलाईआ । गुर अवतार पैगम्बर अन्त अख़ीरी पूरा होवे कौल, इक़रारनामा सब दे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सतिजुग कहे मैं करां साफ़ हिरदा, हर हिरदे तेरा नाम दृढ़ाईआ। भगत सुहेला रहे कोई ना फिरदा, फिरत फिरत तेरे नाल मिलाईआ। जो विछड़यां होवे जुग जन्म चिर दा, जन्म जन्म दा कर्म कर्म दा लेखा दयां बदलाईआ। दरस करावां इक्को अगम्मी नर नरायण पिर दा, प्रीतम प्रीती अंदर तेरा नाता दयां जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर दरवेश हो के अलख जगाईआ। सतिजुग कहे मैं तेरा बणां धर्म दी धार याचक, यथार्थ तेरी सेव कमाईआ। जगत विचार दा रहिण ना देवां कोई वाचक, विद्या धुर दी दयां समझाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक रहे कोई ना आशक, आत्म परमात्म मेला मेलां सहज सुभाईआ। सृष्टी दृष्टी रहे कोई ना नास्तिक, अस्तिक अन्तर निरंतर मेल मिलाईआ। भेव अभेद खुल्हावां वास्तक, विश्व विशेष तेरा परदा दयां उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण ना देवां वरासत, माया ममता मोह मिटाईआ। मेरी बेनन्ती मंज़ूर कर दरख़ासत, अर्ज़ आरज़ू इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, मेरी आसा मेरी मनसा मेरी ख्वाहिश तेरे अग्गे करे सफ़ारश, इबारत विच हुक्म आपणा दे जणाईआ।

* २० जेठ शहिनशाही सम्मत ४ कौड़ा मल सदन मल दे गृह इटारसी मध्ध प्रदेश *

सतिजुग कहे प्रभ आपणा भगत बणाईं चंगा, चार जुग दा कालख टिक्का देणा मिटाईआ। तेरे नूर विच्चों उपज्या होवे बन्दा, बन्दगी आपणी देणी समझाईआ। मन वासना विच रहे ना गंदा, गंदगी अंदरों देणी चुकाईआ। निज आत्म दे के परमानंदा, परम पुरख आपणा परदा देणा उठाईआ। मंज़ल पौड़ी चढ़ा अगम्मी डंडा, जगत दुआरे पन्ध मुकाईआ। ओस दे चरण चुम्मदी होवे गंगा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। तेरा प्रकाश होवे संगा, सगला संग वखाईआ। जगत कूड़ जणा के धन्दा, धर्म आपणा देणा दृढ़ाईआ। तन वजूद ख़ाकी माटी रहे ना नंगा, ओढ़ुन सीस जगदीश इक्को नाम टिकाईआ। सच दुआर दरगाह साची बणा आपणा फ़रज़ंदा, अज़ीज़ तमीज़ देणी जणाईआ। भेव रहे ना हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा जोड़ जुड़ाईआ। नाता तोड़ के काया माटी चम्मा, जोती जोत जोत विच समाईआ। पवण स्वास लेखे लाउणा दमा, दामनगीर हो के आपणा घर वखाईआ। जन्म मरन दी रहिण नहीं देणी तमअ, तामस तृष्ना देणी गवाईआ। हरख सोग मिटा के ग़मा, ग़मख़ार गृह आपणा देणा जणाईआ। जिथ्थे तेरा नूर प्रकाश इक्को चन्ना, सुर्या चन्न होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ जन भगत दे आपणी सोझी, संजम इक्को इक जणाईआ। हउमे दा रहे कोई ना रोगी, ममता कूड़ देणी मिटाईआ। आपणा खेल वखाउणा चोजी, प्रीतम हो के प्रेम वधाईआ। मन कल्पणा रहिण ना देणा कोए भोगी, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। तेरे प्यार दा बणे सच्चा जोगी, जुगत इक्को देणी दृढ़ाईआ। इक्को रंग रंगा के वेदी सोढी, शुद्ध गुरमुख देणे बणाईआ। पुरख अकाल चुकणा गोदी, गोदावरी दा लहिणा देणा मुकाईआ। मेरे धुर दे ठाकर मौजी, महबूब बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर सद देणी सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ भगत बख़्श दे आपणा नूर, जोती जोत कर रुशनाईआ। दरस दिखा हाज़र हज़ूर, हर हिरदे नज़री आईआ। पन्ध मुका नेड़ा दूर, काया मन्दिर सोभा पाईआ। नाता तोड़ क्रिया कूड़, कूड़ कुटम्ब देणा छुडाईआ। चरण कँवल बख़्श आपणी धूढ़, धूल मस्तक आप रमाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, दुरमति मैल देणी धुआईआ। साचा मार्ग दस्स ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर परदा दे उठाईआ। मैं तेरा होवां मशकूर, शुक्रिए विच सीस निवाईआ। जन भगत रहे ना कोए मग़रूर, निवण सु अक्खर देणा पढ़ाईआ। पंज तत नाम धुन वजदी रहे तम्बूर, अगम्म अगम्मड़ा राग सुणाईआ। जन्म कर्म दा बख़्श क़ुसूर, क़िस्मत बदल क़िस्म आपणी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ जन भगतां

मेट अन्धेरा अन्ध, अन्तर निरंतर बूझ बुझाईआ। जगत वासना मेट पन्ध, पाँधी पन्ध ना कोए वखाईआ। नूर प्रकाश दे चन्द, चन्द सूरज दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म टुट्टी गंढ, गंढणहार तेरी वड्याईआ। जगत अगनी पा ठंड, सांतक सति सति वरताईआ। धुर दा नाम दस्स छन्द, तूं मेरा मैं तेरा ढोला इक सुणाईआ। अंगीकार हो के ला अंग, अंगन आपणा इक वखाईआ। सच प्रीती चाढ़ रंग, रंगत पिछली दे बदलाईआ। माणस जन्म ना होवे भंग, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। हुक्मे अंदर कर पाबन्द, बन्दगी इक्को इक जणाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर रिहा लँघ, सतिजुग साचा तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच वर, सच स्वामी अन्तरजामी दर ठांडे होणा सहाईआ। सतिजुग कहे प्रभ भगतां पूरी कर दे आसा, तृष्ना तृखा दे बुझाईआ। चरण कँवल बख्श भरवासा, धरनी धवल वज्जे वधाईआ। लेखे ला पवण स्वासा, समरथ स्वामी तेरी वड्याईआ। तेरे नाम दी गावण गाथा, गहर गम्भीर इक सरनाईआ। तूं दीन दयाला नाथ अनाथा, दयानिध धुरदरगाहीआ। आदि जुगादि जोती जाता, जागरत जोत डगमगाईआ। निरगुण धार पिता माता, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। सतिजुग कहे प्रभ सति सच चला राथा, रथ रथवाही हो के सेव कमाईआ। मैं तेरा बणां दासी दासा, निउँ निउँ लागां पाईआ। जन भगत मेरा सांझा कर साका, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर होवे पूरा भविख्त वाक्‌, वाकिफ़कार तेरी वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी तैनूं मन्ने धुर दा आका, अकल बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। सच दुआर एकँकार जन भगत गृह प्रभ तेरी पावे रासा, रस्ता वाबस्ता हो के आपणा देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा धर्म दा खेल तमाशा, कूड़ कुकर्म दा लेखा देणा मिटाईआ।

✻ २० जेठ शहिनशाही सम्मत ४ जसवन्त सिँघ दे गृह इटारसी मध्य प्रदेश ✻

सतिजुग कहे प्रभ भगत उधारी, उदर दा लेखा देणा मुकाईआ। तेरे नाम दे होण पुजारी, पूजा इक्को देणी समझाईआ। निरगुण नूर जोत तक्कण निरँकारी, निरवैर दर्शन पाईआ। सच प्रेम दी रहे ख़ुमारी, अमृत रस देणा चखाईआ। आत्म परमात्म लग्गे यारी, याराने कूड़े देणे तुड़ाईआ। शब्दी धार बण लिखारी, लेखा लिख्त विच वड्याईआ। पूरब क़र्ज़ा दे उतारी, मक़रूज़ वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे ना कोए ग़द्दारी, गदागरां दा लहिणा देणा चुकाईआ। जो मँग मँगी कृष्ण मुरारी, मुरली मुहब्बत विच वजाईआ। जो सीता आसा रखी दुख्यारी, राम दिती दुहाईआ। जो मूसा चरण छुहाई

दाढ़ी, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जो ईसा मँगी वाड़ी, सजदयां सीस निवाईआ। जो मुहम्मद कीता इशारी, इशारिआं विच जणाईआ। जो नानक वखाया दरबारी, दरगाह भेव मिटाईआ। जो गोबिन्द पैज सुआरी, पारब्रह्म परदा देणा उठाईआ। कलयुग अन्तिम तेरी वारी, वारता पिछली वेख वखाईआ। सतिजुग कहे मैं चरण कँवल करां निमस्कारी, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जन भगतां साची मंज़ल जा चाढ़ी, जिथ्थे चढ़ के फेर उतर कोए ना आईआ। सदा पिच्छे रहीं अगाड़ी, मेहरवान महबूब आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ वेख आपणा परवाना, परम पुरख ध्यान लगाईआ। जिस विच लेखा लिख्या दो जहानां, विष्न ब्रह्मा शिव देण गवाहीआ। अवतार पैगम्बर गुर मँगण दाना, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरा खेल अगम्म दो जहानां, जहां तहां वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो झुलाउँदे गए तेरा निशाना, निशाना निशाने नाल बदलाईआ। तैनूं दस्सदे गए उपर असमानां, बेपहचान नूर खुदाईआ। मुहब्बत विच कहिंदे गए रहमाना, रहमत विच नूर ख़ुदाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा आया ज़माना, ज़ामन पैगम्बर विच रखाईआ। कलयुग अन्तिम तैनूं कहिंदे सारे इक अमामा, आमद आपणी इक जणाईआ। साचे नाम दा वजा दमामा, दामनगीर तेरी वड्याईआ। खेल वेख काया मकाना, जगत काअबयां डेरा ढाहीआ। तेरा भगत रहे ना कोए बेगाना, गाणा आपणा देणा सुणाईआ। तेरा खेल दो जहानां, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मैं तेरे दर करां सलामा, नमस्ते नमों कहि के सीस झुकाईआ। तूं आदि जुगादी शाह सुल्ताना, शहिनशाह अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ । सतिजुग कहे प्रभ आपणी धार कला, कलकाती वेख वखाईआ। तेरा लहिणा पूरा होण वाला अल्ला, अल्लाह आपणा परदा देणा उठाईआ। जगत जहान छुट्टण वाला पल्ला, साथी संग ना कोए निभाईआ। जगत विकार चढ़या दला, दह दिशा वेख दुहाईआ। द्वैती मेटे कोए ना सला, सुल्हकुल नज़र कोए ना आईआ। जो संदेसा जुग चौकड़ी घल्ला, भविख्तां विच समझाईआ। ओस दा सब नूं दे दे फला, फलीभूत वेख वखाईआ। तेरा जगत जहान होया झल्ला, झलक आपणी कर रुशनाईआ। तेरा भगत रहे ना इकल्ला, भगवन हो के मेला लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लहिणा देणा लेखा जलां थलां, जल थल महीअल महबूब हो के महिव आपणा परदा देणा उठाईआ।

२३९
२१

❋ २१ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ सुरिंदर सिँघ दे गृह इटारसी मध्ध प्रदेश ❋

सतिजुग कहे प्रभ साचा नाम दे सलोक, सुल्हकुल तेरे हथ्थ वड्याईआ। सिफ्तां विच गावण चौदां लोक, चौदां तबक राग अलाईआ। चौदां विद्या रहे ना सोच, चौदस चौदां चन्द कर रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी मिटा हरख सोग, चिन्ता ग़म देणा गुआईआ। हउमे हंगता रहे कोई ना रोग, कूड़ कुड़िआरा पन्ध देणा मुकाईआ। जन भगतां कट विजोग, परदा दूई देणा उठाईआ। मेला मेल धुर संजोग, आत्म परमात्म गंढु पुआईआ। देणी पए ना किसे नूं मोख, मुफ्त आपणा रंग रंगाईआ। साचे नाम दी दे के चोग, चार वरन बणाणा भैण भाईआ। गुरमुखां हिरदा देणा सोध, वदी सुदी लेखा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वज्जे वधाईआ। सतिजुग कहे प्रभ सति दा दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दे मिटाईआ। सुरती शब्द धरे ध्यान, मन चंचलता चले ना कोए चतुराईआ। सन्त सुहेला ढोला गाण, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दूजा नज़र कोए ना आईआ। शरअ रहे ना कोए शैतान, लेखा पिछला देणा मुकाईआ। तेरा जलवा नूर होवे महान, प्रकाश तक्कां ख़लक खुदाईआ। तूं योद्धा सूरबीर नौजवान, मर्द मर्दान इक अख्वाईआ। तैनूं झुकदे ज़िमीं असमान, बिन सजदे सीस निवाईआ। सदी चौधवीं हो मेहरवान, निगाह मेहर इक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद एका घर वसाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे नाम दा वज्जे डंका, ख़बर दो जहान सुणाईआ। सवाधान कर राउ रंका, शाह सुल्तान लै उठाईआ। दीन दुनी दा फेर दे मणका, ममता मन रहे ना राईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। माण दवाउणा साचे सन्ता, जो मँगण तेरी सच्ची सरनाईआ। तूं बोध अगाधा बण पंडता, पारब्रह्म ब्रह्म निरअक्खर शब्द कर शनवाईआ। झगड़ा रहे ना कोई मन दा, मनसा मन ही विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, नेहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, डंका वज्जे तेरे जस दा, परदा खुल्ह जाए नेत्र अक्ख दा, प्रतख स्वच्छ तेरा नूर नज़री आईआ।

❋ २२ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ टोपन राम दे गृह इटारसी मध्ध प्रदेश ❋

पुरख अकाल कहे सुण दसरथ बेटे राम, रमते दयां जणाईआ। लहिणा लेखा वेख काम, करनी दा करता आप समझाईआ। धरनी धवल वेख ग्राम, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। आपणे मित्र प्यारे पहिचाण, परदा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दे जणाईआ। पुरख अकाल कहे वेख बनबासी पंचबटी, राम रामे दयां जणाईआ।

धरनी धवल कहे जिथ्थे उदासी दी हुंदी सी हट्टी, वैरागी तिआगी नाल मिलाईआ। धर्म दी करदे खट्टी, खटका अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। एह खेल अगम्मी अच्छी, अच्छी तरां प्रभू दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। पुरख अकाल किहा राम वेख आपणा टिकाणा, रमणीक दयां जणाईआ। जिस नूं कहिंदे बीआबाना, बीज नज़र कोए ना आईआ। हुंदा सी सुंञ मसाणा, आसण सच ना कोए सुहाईआ। खेल अगम्म महाना, लेख लिख्त ना कोए वड्याईआ। दस्से ना कोए निशाना, परदा सके ना कोए उठाईआ। एह खेल श्री भगवाना, परम पुरख आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे सुण राम आरस, अर्शी हो के दयां जणाईआ। धरनी धरत धवल करे सफ़ारश, शहादत विच गवाहीआ। शब्दी लेख दस्से इबारत, हुक्मी हुक्म इक दृढ़ाईआ। तिन्नां कोल हुंदा सी इक पारस, वैरागी तिआगी मिल के वज्जे वधाईआ। इक दिन आंधी आई नाल बारश, हवा ज़ोर नाल चलाईआ। महा खेल होया भयानक, प्रभू आपणा हुक्म वरताईआ। उनां दी रसैण गुम्मी अचानक, लम्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस नूं रखदे हथ्थ अमानत, पल्लू गई छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
२४१ आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। पुरख अकाल कहे राम वेख पिछली लीला, बिन लालच दयां जणाईआ। २४१
२१ तूं छड्ड जगत क़बीला, भज्जिआ वाहो दाहीआ। पैंडा पन्ध मुका के मीलां, कोसां योजनां डेरा ढाहीआ। छड्ड ज़िले तहिसीलां, २१
आया वाहो दाहीआ। एथे बिसराम कीता इक महीना, सीआ लकशमण नाल वड्याईआ। सोहणा बणाया जीणा, जीवण जगत सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। ओधर पारस गया गुम्म, आंधी छप्पर छन्न हिलाईआ। साधू तिन्ने रहे घुम्म, ममता मन ललचाईआ। लै गया कवण, समझ कोए ना पाईआ। उडया केहड़ी पवण, आपणा रूप बदलाईआ। किस ने कीता दमन, आपणे विच छुपाईआ। खलोते विच चमन, बग़ीचा इक सुहाईआ। अंदर ना आवे अमन, कल्पना विच कुरलाईआ। प्रभ दे कोलों सारे मँगण, अन्तर अन्तर ध्यान रखाईआ। बिना पारस तों सारे हो गए नग्न, वस्त कोल रही ना राईआ। जां वेख्या निरगुण जोती लग्गी जगण, नूर होया रुशनाईआ। तिन्ने हो गए मग्न, मस्ती विच वड्याईआ। राम दा कीता भजन, भजन विच राम नज़री आईआ। जिस ने अन्तर निरंतर पारस दा वखाया वज़न, लग मातर ना कोए रखाईआ। कम्बण लग्गा बदन, नेत्र नैण दुहाईआ। केहड़ा करीए यतन, पारस लभ्भीए केहड़ी थाईंआ। ओधरों राम आ गिआ, नेड़े आ के लग्गा हस्सण, ताली दिती वजाईआ। आपणी काया दा खोल्ह के वेखो कफ़न, पारस किस दे अंदर नज़र आईआ। जां तिन्नां तक्कया इक दूजे दे अन्तर निरंतर वेखण, आपणा नज़र

किसे ना आईआ। गुस्से विच राम दे चरणां उत्ते लग्गे लेटण, रो रो दिती दुहाईआ। राम ने किहा इक दूजे दे कढ्ढो विच्चों पेटण, सहज नाल समझाईआ। मैं आया परदेसी परदेसण, आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। इक ने तक्कया पारस दूजे दे अंदर, सोहणा नज़री आईआ। दूजे ने तक्कया तीजे लुकाया आपणी कंदर, बैठा तन विच छुपाईआ। तीजे ने वेख्या सानूं मूर्ख बणा के डंगर, आपणे पेट रिहा टिकाईआ। इक पारस हुण असीं तिन्ने लग्गे वंडण, लम्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। इक दूजे नूं लग्गे फंडण, कीती मार कुटाईआ। राम परे हो के खलो गया बूटे कोल चन्दन, पासा गया बदलाईआ। जिस वेले लड़ लड़ के लग्गे कम्बण, आपणा बल गुआईआ। कुट्ट कुट्ट के लग्गे हम्बण, बाहवां लईआं थकाईआ। दन्दीआं लग्गे चब्बण, दन्द दन्दां उत्ते घसाईआ। निशान पै गए उत्ते बदन, खल्ल लहू नाल भराईआ। गुस्से विच लग्गे अगन, अगनी तत जलाईआ। इक दूजे नूं लग्गे वढ्ढण, साधू मति दिती गुआईआ। इक दूजे दे पिच्छे लग्गे भज्जण, नट्ठण वाहो दाहीआ। एह वेख के सीता लग्गी हस्सण, इशारा राम वल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणे हथ्थ रखाईआ। राम किहा सीता कर ध्यान, तैनूं दयां जणाईआ। एह भगती वाले जवान, घर बाहर छड्डके बैठे आसण लाईआ। तूं वेख हो हैरान, की की कार वरताईआ। इन्हां अंदर ममता दा शैतान, सब नूं रिहा लड़ाईआ। काया माया दी बणा दुकान, पारस अंदर बैठे छुपाईआ। कर सके ना कोए पहिचाण, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा वखाईआ। सीता वेख संसार जगत, जगत दयां जणाईआ। सीता किहा प्रभू जो तेरा नाम जपदे फेर वी तेरे भगत, क्यों भरमां विच भुलाईआ। जिन्हां तेरा तेरे कोल आ के कीता दरस, क्यों अगनी अग्ग लगाईआ। क्यों नहीं करदा तरस, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जिस कारण रहे भटक, ओह संसा दे चुकाईआ। राम ने तक्कया उपर अर्श, निगाह लई उठाईआ। फेर निउँ के उपर फ़र्श, सीस दिता झुकाईआ। सीता एह मेरा नहीं दिसदा फ़रज़, इन्हां दी अंदरों करां सफ़ाईआ। तेरी मंज़ूर कर के अर्ज़, राम दे राम कोल दयां पुचाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त आप आवे उत्ते धरत, धौल उत्ते डेरा लाईआ। इन्हां दा लहिणा देवां लेखा पूरा करां क़र्ज़, मेहरवान सिर आपणे हथ्थ टिकाईआ। सीता किहा राम की खेल दस्सया अचरज, असचरज दे जणाईआ। प्रभ नूं पैणी गर्ज़, किस कारण फेरा पाईआ। राम किहा उस दे कोल जुग जुग भगतां दी फ़रद, कलयुग अन्त सब दा लेखा दए मुकाईआ। सीता फेर कीती अर्ज़, मस्तक चरणां उत्ते टिकाईआ। किस बिध एथे आवे परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। राम किहा लहिणा देणा पूरा करना एह उस दी आपणी गर्ज़, गर्ज़

सब दी वेख वखाईआ। किसे दा होण ना देवे हरज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सीता कहे राम एह तेरा नाम पढ़दे, नाले राम राम दुहाईआ। तेरे साहमणे क्यों लड़दे, क्यों परदा बैठा पाईआ। क्यों झगड़े पुआए इन्हां दे घर दे, काया मन्दिर अंदर पारस इक दूजे दे अंदर दिता वखाईआ। राम किहा एह लहिणा देवे कलयुग कल दे, पुरख अकाल रिहा दृढ़ाईआ। कुझ लेखे दिसदे बावन दुआरे बलि दे, भेव अभेदा आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दे जणाईआ। सीता कहे राम इन्हां नूं दे मति, अगनी तत बुझाईआ। राम किहा तूं वेख मार झात, परदा पड़दे विच्चों चुकाईआ। जां तक्कया कलयुग दिसदी अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। राम दा दिसे कोई ना दास, रमिआ राम नज़र कोए ना आईआ। साध सन्त दिसे बदमाश, बदी सारे रहे कमाईआ। फेर सीता ने तक्कया उपर आकाश, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। धुर हुक्म दिता पुरख अबिनाश, सच संदेसा इक जणाईआ। सीता इन्हां तिन्नां दा शरीर होणा हुण नाश, राम स्वास स्वास मेरे विच टिकाईआ। फेर जन्म होणा लोकमात, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। ओस वेले लहिणा देणा लेखा मेटां सर्ब हिसाब, गिणती गणत समझ कोए ना पाईआ। बिन अक्खरां तों मेरे चरण रहे किताब, कुतबख़ान्यां विच ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा बणाईआ। सीता कहे किस बिध प्रभ देवें सौग़ात, नाम आपणा दया कमाईआ। पुरख अकाल किहा एह सब कुछ मेरे हाथ, अंदर बाहर वेख वखाईआ। फेर वेखां एह प्रभास, जंगल जूहां डेरा लाईआ। कलयुग होवे अन्धेरी रात, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दए चुकाईआ। सीता किहा राम सुणी अकथ कहाणी, कहिण किछ ना पाईआ। आई अगम्मी बाणी, बाण निराला दिता लगाईआ। जिथ्थे त्रेते सुंञ मसाणी, मानव नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्तिम प्रभ खेल करे महानी, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। इन्हां तिन्नां दी त्रैगुण नाल प्रगटावे निशानी, माया मोह विच वड्याईआ। एह पारस आपणी करे शैतानी, तन वजूद वेख वखाईआ। अन्तर निंरतर सब दी जणाए बेईमानी, साबत समझ कोए ना पाईआ। फेर कार करे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर महबूब हो के मेहरवानी, महिव आपणा रंग रंगाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी जाण जाणी, घट घट वेखे थाउँ थाईंआ। उहदा लहिणा देणा लेखा बाहर क़लम कानी, शाही वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। राम किहा सीता वेख अगम्मी चिन्न्ह, चरणां विच ध्यान लगाईआ। सुभाग दिहाढ़ा बाई जेठ दा दिन, राम सीता दिता समझाईआ। पुरख अकाल जिस खेल करना भिन्न भिन्न, भिन्नड़ी रैण वड्याईआ। त्रेता

द्वापर कलयुग तीजे जुग झगड़ा रखणा तिन्न दिन, दिवस रैण वेख वखाईआ। पूरबला लेखा जन्म दा कर्म गिण, लहिणा देवे थाउँ थाईंआ। नाम पैमाना साचा नाम लए मिण, मिणती आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। राम किहा सीता हुण राम दा बनबास, बस्ती नज़र कोए ना आईआ। फेर खेल पुरख अबिनाश, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। हुण पारस दा ख्वाब, फेर माया विच लड़ाईआ। दोहां दा हिसाब, आपणे हथ्थ रखाईआ। भगतां दा साधूआं तों बदल के रिवाज, रवादार एका लए कराईआ। अन्तर खोल्ह के जाग, आलस बाहरों दए मिटाईआ। ओसे दा हिस्सा ओसे दा भाग, ओसे दे हथ्थ फड़ाईआ। जो लहिणा देणा लेखा अन्त सब दा करे बेबाक, बाकी नज़र कोए ना आईआ। तन वजूद माटी लेखे लाए ख़ास, ख़ालस आपणे रंग रंगाईआ। सीता हुण तेरे वेंहदयां एह साधू छड्ड गए स्वास, फेर जीउदयां बख्श के इत्तफाक, मार्ग आपणा इक चलाईआ। राम किहा मेरा राम मेरा करे भविख्त वाला पूरा वाक्, भगवान नाल नाता जोड़ के आपणा भगती साक, सज्जण हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा देणा लेखा पूरा कर हिसाब,जगत जुग दे वेख खाते ते रोकड़, पैहले दिन साफ़ कराईआ।

❋ २३ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ सन्त सिँघ दे गृह इटारसी मध्ध प्रदेश ❋

कर्म कहे प्रभ मिले एक निहकरमी, कर्म कांड दा लेखा दए मुकाईआ। सच दुआर दी बख्शे सरनी, चरण धूल वड्याईआ। धुर दे नाम दी पट्टी दस्से पढ़नी, सिख्या अगम्म सुणाईआ। मंज़ल निरगुण दस्से चढ़नी, जगत पन्ध मुकाईआ। नेत्र खोल्हे हरनी फरनी, फ़ुरने मन बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कर्म कहे प्रभ मिले एक निहकामी, निहकरमण रहिण कोए ना पाईआ। नाम निधान देवे अगम्मी बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। अमृत रस दे के ठंडा पाणी, अगनी अग्ग दए बुझाईआ। सति धर्म दी दे निशानी, निशाना अगला दए जणाईआ। जिथ्थे जगे जोत नुरानी, नूर नुराना डगमगाईआ। मंज़ल हक़ दिसे आसानी, परदा महबूब दए उठाईआ। झगड़ा रहे ना कोए जिस्मानी, जिस्म ज़मीर दए बदलाईआ। बोध अगाध दस्स अकथ कहाणी, धुन राग इक उपजाईआ। झगड़ा मुका के चारे खाणी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। हर घट अन्तर हो के जाण जाणी, हरिजन आपणे मेल मिलाईआ। एका देवे धुर दा पद निरबाणी, निरवैर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला लए मिलाईआ।

कर्म कहे प्रभ मिले परम पुरख जग मीता, जीवण जुगत दए बदलाईआ। नाम निधान दए अनडीठा, संदेसा इक्को इक जणाईआ। अंदरों बदल मन दी रीता, रस्ता रहिबर दए वखाईआ। जगत वासना मन जाए जीता, चंचल चित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। साचा नाम दस्स हदीसा, हज़रत हरिजू करे पढ़ाईआ। रंगत चाढ़ रंग मजीठा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साढे तिन्न हथ्थ तपण ना देवे अंगीठा, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सति धर्म दी दस्स के रीता, रस्ता इक्को दए वखाईआ। जिथ्थे ना कोई मन्दिर ना मसीता, मसला पढ़ ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे दए वड्याईआ। कर्म कहे प्रभ मिले नर नरेशा, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशा, नित नवित्त आपणी कार कमाईआ। जन भगतां देवे नाम संदेसा, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जन्म जन्म दा मेट के लेखा, कर्म कर्म दा गेड़ कटाईआ। सच दुआर दा बण के नेता, नेत्र अंदरों दए खुल्हाईआ। सच दुआर वखाए आपणा देसा, जिथ्थे इक्को नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद परदा आप उठाईआ। कर्म कहे जे मिल जाए पारब्रह्म प्रभ दाता, दयावान दया कमाईआ। चरण कँवल बंधाए नाता, सगला संग रखाईआ। पूरी करे आसा, जन भगतां दए वड्याईआ। रहे ना कोए निरासा, निहचल धाम सुहाईआ। कर जोत प्रकाशा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। मैं सति सच कर के आखां, कर्म कहे, बिन पुरख अकाल कर्म दा कर्म ना कोए मिटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी ओसे दी गावे गाथा, सिफ्तां विच दिवस रैण ढोले गाईआ । सो साहिब सुआमी पुरख समराथा, अन्तरजामी वड वड्याईआ। सदा सहाई नाथ अनाथा, ग़रीब निमाणयां गोद उठाईआ। जागरत सोवत करे बाता, शब्दी शब्द हुक्म वरताईआ। सो कलयुग अन्त मेटे अन्धेरी राता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जिन्हां गुरमुखां प्रेम प्रीती अंदर मन्नया आखा, कर्म कुकर्म दा लेखा दए मुकाईआ। चरण कँवल दे भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। अन्तर आत्म दे शाबाशा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। कर्म कहे मैं वी निउँ निउँ टेकां माथा, मस्तक चरण कँवल छुहाईआ। जिन्हां साहिब सतिगुर पुरख अकाल मिल्या छैल छबील बांका, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। तिन्हां कोई तोड़ ना सके नाता, नातवां हो के नर नरायण विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां पिच्छे लोकमात मारन आया वाटा, वटांदरे विच गुर अवतार पैग़म्बरां लेखा दए मुकाईआ।

✻ २३ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ करतार सिँघ दे गृह इटारसी मध्ध प्रदेश ✻

अन्त बेनन्ती सुणे अरदास, लेखा अरध उरध मुकाईआ । किरपा कर सर्ब गुणतास, गहर गम्भीर दया कमाईआ। गोबिन्द बूटे दी शाख़, निक्की जिही नज़री आईआ। जिस ने पुर अनन्द दिता साथ, अन्त माझे वाल्यां नाल गया मुख भुआईआ। अख़ीरी गया आख, अन्तर अन्तर अंदर इक जणाईआ। गोबिन्द जोड़ के दोवें हाथ, दूरों सीस दिता निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द किहा मेरा तत्तां वाला विछोड़ा, विछड़ विछड़ आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस वेले पुरख अकाल दा मेरे नाल बणया जोड़ा, जोती शब्दी खेल खिलाईआ। ओस वेले भुल्यां नूं फेर मोड़ां, आपणे रंग रंगाईआ। तुसीं छड्ड के चले कल्गी तोड़ा, बाज़ां वाला बाज़ नज़र ना आईआ। जिस वेले खेल कीता दोहरा, निरगुण हो के निरगुण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सिख किहा तेरे नाल झल्लया दुःख, दुक्खां विच दुहाईआ। झल्ली ना जाए भुक्ख, भुक्खिआं ना कोए रजाईआ। मोड़ के तैथों मुख, भज्जे वाहो दाहीआ। ओट रख अबिनाशी अचुत, आसा होर वधाईआ। गोबिन्द हस्स के किहा तुसीं आत्म दे मेरे पुत, परमेश्वर दा मेला सहज सुभाईआ। तुहाडा लहिणा देणा नाल रखावां अबिनाशी अचुत, चेतन हो के दयां जणाईआ। तुहानूं आउणा पए फेर माता कुख, रक्त बूँद वंड वंडाईआ। गोबिन्द तुहाथों रहे लुक, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। अबिनाशी करता अन्त अख़ीर आपणी गोदी लए चुक, चम्म दृष्टी दा डेरा देवे ढाहीआ। अपराधी रहिण ना देवे कोए सुत, सुत्यां आप उठाईआ। उजल कर के मुख, दुरमति मैल धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। गोबिन्द किहा तुसीं दे के चले पिच्छा, पिच्छा याद किसे ना आईआ। कुछ लेखा वेखो सुगरीव नाल तुहाडी इच्छा, रामा लेख जणाईआ । अगला भेव किसे ना दिसा, पल्लू रहे छुडाईआ । गोबिन्द खेल नहीं कोई निक्का, बच्चयां वाली वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडा मेरे नाल पै गया हिस्सा, गुरसिख हो के कंड बदलाईआ। जिस वेले मेरे नाल आवे पुरख अकाल धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गोबिन्द किहा गुरसिख रहे ना कोए भुलेखा, भुल्लयां देवां जणाईआ। पुरख अकाल जाणे धुर दा लेखा, दूसर समझ किसे ना आईआ। माझे वाल्लयो जिस वेले प्रगट होया माझे देसा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। फेर वेखे देस परदेसा, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। पूरब रखे चेता, अभुल भुल कदे ना जाईआ। अन्त अख़ीरी कर के हेता, हितकारी आपणे रंग रंगाईआ। शब्दी धार बण के खेवट खेटा, जगत सागर पार कराईआ।

जो गोबिन्द दा गुरसिख बण के बणया बेटा, नाता पिता पूत जणाईआ। ओस दा अन्तिम ला के लेखा, लेखे विच टिकाईआ। लाज रख के मुच्छ दाढ़ी केसा, क़िस्मत क़िस्मत विच्चों बदलाईआ। आत्म धार वखा के सचखण्ड साचा देसा, घर इक्को इक सुहाईआ। जिथ्थे गोबिन्द रहे हमेशा, ना मरे ना जाईआ। करतार सिँघ खत्री पुत्त पिछला वड्डे घर दा सेठा, भय विच पल्लू आया छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एको बण के धुर दा नेता, नित दे विछड़े मेल मिलाईआ।

✻ २३ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ तिवारी लाल दे गृह इटारसी मध्ध प्रदेश ✻

गोबिन्द कहे मेरी धर्म दी धार शर्त, शरीअत नज़र कोए ना आईआ। नवित्त आवां परत, पतिपरमेश्वर मेल मिलाईआ। भाग लगावां धरनी धरत, धवल धार दृढ़ाईआ। खेल करां असचरज, आपणी कार कमाईआ। सूरबीर मर्दाना बणां मर्द, मदद अवर ना कोए रखाईआ। पिछले जन्म दी कढ्ढके फरद, फ़ैसला धुर दा दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सो कहे मेरा लेखा सदा अनादी, अनद बनोदी आप कराईआ। मेरी धार होवे सादी, सिद्ध साधक वेख वखाईआ। मेरा नाम होवे रागी, अनरागी राग सुणाईआ। मेरी मुहब्बत होवे शादी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। मेरा जैकारा होवे ढाडी, धुर दा ताल वजाईआ। मेरा रखवाला होवे गॉडी, जिस नूं गॉड कहे लोकाईआ। झगड़ा मुकावां माज़ी, पूरब वेख वखाईआ। लेखा जाणां क़ाज़ी, कुतबां डेरा ढाहीआ। धरनी वेखां अराज़ी, ज़िमीं ख़ाक फोल फुलाईआ। जुग जुग वेखां बाज़ी, बाज़ां वाला वेस वटाईआ। अस्व सोहे ताजी, ताजां वाले दए खपाईआ। मनुआ रहे कोए ना ग़ाज़ी, ग़ज़ब वेखे जगत लोकाईआ। सच दुआरे दा बण के हाजी, हज़रत हो के फोल फुलाईआ। माणस धार बण निमाज़ी, सीस जगदीश इक झुकाईआ। सजदा दस्स आदाबी, अदब नाल वड्याईआ। तार सितार रबाबी, अहिबाब इक जणाईआ। लहिणा देणा तोड़ इश्क हक़ीक़ी मजाज़ी, मज़ा इक्को नाम चखाईआ। गुरमुख रहिण देवां ना कोई दाग़ी, दुरमति मैल करां सफ़ाईआ। मेरा खेल प्रभ दे नाल आदी, अन्त आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे एह धरती भूमी, भूमिका इक सरनाईआ। एथे रहन्दा सी इक नजूमी, शास्त्र ज्ञाता आप अख्वाईआ। राम नाम दा बण कानूनी, कायदा जगत विच वड्याईआ। सिफ्त लिखदा सी मज़मूनी, मजमूआ अक्खरां वाला बणाईआ। उहनूं झलक मिली मामूली, बेपरवाह दिती वखाईआ। वेख खेल

असूली, असल रंग रंगाईआ। जिस दा हुक्म ना कदे अदूली, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। नजूमी सी इक ब्राह्मण बुड्ढा, नाम शीघा नज़री आईआ। दोहां पैरां तों सी डुड्ढा, ऊंधा हो के झट लँघाईआ। छोटा जिहा सी झुग्गा, नौ सत्त हथ्थ वंड वंडाईआ। उहदे विच सी मूर्त बुधा, बुधे सीस निवाईआ। राह लभ्भे गुज्झा, अन्तर ध्यान लगाईआ। अचानक गोबिन्द आ गया भुक्खा, खाण पीण ना मुख लगाईआ। नेड़े आ के वेख्या दुक्खा, दर्द विच कुरलाईआ। नजूमी किहा कुछ मैथों पुच्छ लै पुच्छा, तैनूं दयां समझाईआ। क्यों रखी दाढ़ी मुच्छा, केसां नाल वड्याईआ। तेरा सोहणा सुशील जुस्सा, सडौल सोभा पाईआ। किस कारण एथे पुज्जा, भज्जिआ वाहो दाहीआ। मैथों भेव लै लै गुज्झा, पर्दा दयां उठाईआ। जे तूं सतिगुर होवें उग्घा, उगण आथण तेरी सरनाईआ। मैनूं टुक्कर दे दे सुक्का, क्यों भुक्खया भुक्खयां रिहा सताईआ। जां मैनूं हस्स के कहि दे तूं बुड्ढा नहीं मेरा पुत्ता, बच्चयां वांग गोद टिकाईआ। वेखीं मेरे बचन दा करीं कदे ना गुस्सा, गुस्से वाली ना अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। गोबिन्द कहे की कहिंदी तेरी पत्री, पात्र दे बताईआ। मैनूं दस्स मैं ब्रह्मण के खत्री, कि शूद्र वैश नजरी आईआ। मैं केहड़ी चलावां हट्टड़ी, कवण वस्त टिकाईआ। कवण उठावां गट्ठड़ी, बोझल सीस टिकाईआ। कवण तोलां तक्कड़ी, तराज़ू देणा समझाईआ। नजूमी किहा मैं समझ गया तेरे बचनीं, जो अमोलक रिहा सुणाईआ। आह लै मेरी रखड़ी, तेरे हथ्थ तन्द बंधाईआ। तूं जाणा देस दक्खणी, आपणा पन्ध मुकाईआ। वेखीं एह भूमी ना रह जाए सक्खणी, चरण धूढ़ देणी शाहीआ। नजूमी लकीर खिच्च के किहा कौल दे के फेर टप्पणी, अग्गे क़दम ना कोए उठाईआ। गोबिन्द किहा मैं ज़रूर तेरी पैज रखणी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरे पिच्छे एह नगरी इक वसणी, आपणा रंग बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। गोबिन्द किहा एह नगर वस्से खेड़ा, खिड़की तेरी दयां खुल्हाईआ। जिस थाँ ते तेरा डेरा, फेर आवां चाँईं चाँईंआ। इक ढईए दा विच गेड़ा, लेखा दीन दुनी बणाईआ। फेर करां हक़ नबेड़ा, पूरब लेखा झोली पाईआ। नाल पुरख अकाल होवे मेरा, महबूब धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ होवे अन्धेरा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। नजूमी किहा मैं सुणी कथा कहाणी, रसना सोहणी जिह्वा गाईआ। मैनूं दिसे अगम्मी कहाणी, धुर दा राज़ जणाईआ। मैं बुड्ढा बिरध जगत जीव प्राणी, प्राण छड्ड के नाता तत्तां होवे जुदाईआ। कोई मंज़ल दस्स आसानी, सहज नाल समझाईआ। जिस वेले मेरा लेखा मुक्के जिस्म जिस्मानी, किस बिध असमानी मिले

नूर अलाहीआ। मैं चौहन्दा जे फेर मिले ते मेरी बिरध तों होवे जवानी, जोबनवन्ता नज़री आईआ। गोबिन्द किहा मस्तक धूढ़ दी ला निशानी, निशान आपणा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द किहा सुण इक अख़ीरी बाती, बातन दयां जणाईआ। एह खेल पुरख अबिनाशी, जो मैथों रिहा कराईआ। जिस वेले होवे अन्धेरी राती, कलयुग आपणा रंग रंगाईआ। तेरा जन्म होवे फेर लोकमाती, धरनी धरत धवल वड्याईआ। तेरा लहिणा देणा मेरे नाल मेटे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता झोली पाईआ। एसे धरती नूं लग्गे भाग, भगत भगवान नज़री आईआ। जिथ्थे जगदा नहीं कोई चराग़, चरागाहां विच होए रुशनाईआ। उस दा लहिणा देणा पूरब देणा आज, आजिज़ां वेखे थाउँ थाईंआ। नजूमी बिरध दा तत्तां वाला बदल के समाज, सिख्या आपणी इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को लैणा अराध, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। तेरी साधनां लवां साध, सति सति विच समाईआ। पिछले जन्म दी दाद, पूरब रिहा वरताईआ। नजूमी दा नात, तिवारी दा साक, शब्द दी गाथ, कर्म दी आस, धर्म दी रास, गोबिन्द दी शाख़, लेखे ला सर्ब गुणतास, गुणवन्ता देवे माण वड्याईआ।

✻ २३ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ जुगिंदर सिँघ दे गृह इटारसी मध्ध प्रदेश ✻

मिले वड्याई साहिब हरि संगत, पुरख अकाल दीन दयाल दया कमाईआ। नाम अगम्मी चाढ़े धुर दी रंगत, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुर दा रंग रंगाईआ। जगत वासना कटके भुक्ख नंगत, नाम निधान वस्त अमोलक झोली आप भराईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। जन भगत सुहेले उपजा के धुर दे सन्त, गुरमुखां गुर गुर गोद टिकाईआ। धर्म मिलावा नार कन्त, आत्म सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जिथ्थे तूं मेरा मैं तेरा इक्को छंत, सोहँ राग अनाद सुणाईआ। सति धर्म बणाए बणत, कूड़ी क्रिया पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। करनी कार करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। जिस दा खेल सदा जुग चार, चौकड़ी आपणा हुक्म चलाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, तन वजूद वज्जे वधाईआ। सन्त सुहेला कर के ख़बरदर, बेख़बरां आपणी ख़बर जणाईआ। पूरब जन्म दा दे उधार, लेखा आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। हरि संगत होए वड वड भाग, वड भागी पुरख निरंजन पाईआ। मात दीपक बुझा जगाए चिराग़, निरगुण निरवैर नूर कर रुशनाईआ। जन भगत मेट के कूड़ा

पाप, पतित पापी गोद उठाईआ। साचे मण्डल दस्स के रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर के भविख्त वाक्, लहिणा देणा धुर दा खोज खुजाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, हरि करता वड वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे घात, नाम खण्डा इक चमकाईआ। जन भगत पूरी करे आस, तृष्ना कूड़ी मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे लख चुरासी पवण स्वास, ग्रास ग्रास गिणती धुर दी विच जणाईआ।

✻ २४ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ किरपाल सिँघ दे गृह आगरा ✻

हथ्थ जोड़ करी नमस्ते, नमो नमो सरनाईआ। पुरख अकाल पा अगम्मे रसते, मार्ग इक्को देणा दरसाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर वसदे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। इक्को तेरा नाम जपदे, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। इशारे नहीं कोई ओथे अक्ख दे, धुन धुन विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सच देणा वखाईआ। हथ्थ जोड़ अन्तर कीता ध्यान, ध्यान ध्यान विच लगाईआ। किरपा कर श्री भगवान, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। शब्द नाद दे धुनकान, अनरागी राग सुणाईआ। भाग लग्गे काया सच मकान, काअबा इक्को देणा सुहाईआ। तेरा नूर मिले महान, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा चढ़ाईआ। हथ्थ जोड़ कीती बन्दना, डंडावत बेपरवाहीआ। पुरख अकाल दे अनन्दना, आत्म परमात्म विच समाईआ । नूरी जोत चमके चन्दना, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। सति दुआरा मिले लँघणा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा ओहला देणा उठाईआ। हथ्थ कहिण असां कीती डंडावत, सीस जगदीश झुकाईआ। मन रहे ना बग़ावत, कल्पना कूड़ रहे ना राईआ। साहिब स्वामी साचा नाम कर सख़ावत, वस्त अमोलक इक वरताईआ। तत विकार रहे ना अदावत, झगड़ा कूड़ देणा चुकाईआ। आत्म तेरी अमानत, पंजां तत्तां विच रखाईआ। किरपा कर सही सलामत, तेरी ओट तकाईआ। कूड़ी रहे ना कोए अलामत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच बख़्श इक सरनाईआ। हथ्थ जोड़ कहिण असीं कीता सजदा, परवरदिगार नूर खुदाईआ। जिस दा दो जहान बरदा, बन्दगी विच बन्दे रिहा बणाईआ। सो लेखा जाणे काया माटी घर दा, गृह गृह खोज खुजाईआ। सुख दे के अमृत सरोवर साचे सर दा, दुरमति मैल दए धुआईआ। माया ममता मोह विकार चुक्के परदा, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक सुहाईआ। हत्थ कहे असीं जुड़िआ वेख्या घर सुहञ्जणा, वज्जी हक़ीक़त हक़ वधाईआ। लेखा जाणे आदि निरँजणा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणे हत्थ रखे वड्याईआ। घट निवासी पुरख अबिनाशी दीनां नाथां दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण धार बणे सज्जणा, सच स्वामी वेख वखाईआ । चरण धूढ़ अमृत रस देवे बिन रसना चक्खणा, जिह्वा गुण ना कोए जणाईआ । उन्हां दी लेखे लग्गे बन्दना, जिन्हां ने इक्को दुआरा मँगणा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सीस जगदीश झुकाईआ। हत्थ कहिण असीं जुड़ के कीती सलाह, मशवरा इक पकाईआ । वेखो खेल बेपरवाह, की करता कार कमाईआ। किरपाल विच बणा गवाह, जो शहादत दए भुगताईआ । किरपा करे आप मेहरवां, महबूब नूर अलाहीआ। जो दर ते गए आ, आजिज़ बण के सोभा पाईआ। तिन्हां क़बूल होवे दुआ, रहम विच वड्याईआ। सुत्यां जगत जागदयां सब नूं दरस दए दिखा, जो नेत्र लोचन दर्शन पाईआ। हत्थ कहिण साडा मस्तक नाल नाता ल्या बणा, अगला संग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। हत्थ कहिण साडी अन्तर इक्को आस, आहिस्ता आहिस्ता दईए सुणाईआ। जो दर ते आए सब दा दुखड़ा करना नास, रोगी रहिण कोए ना पाईआ। इक लख अस्सी हज़ार भूत प्रेत तेरे दास, चुरासी विच्चों वंड वंडाईआ। सब दा लेखे लाउणा स्वास स्वास, पाउण पवणां नाल जुड़ाईआ। हत्थ कहिण सुहञ्जणी दिसे अज्ज दी रात, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। जिस आत्म परमात्म बणाई आपणी ज़ात, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी पुरख अबिनशी आसा मनसा सब दी पूर कराईआ।

❊ २५ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर दिल्ली ❊

सतिजुग कहे प्रभ दस्स अगम्म सलोक, सोहला सोहल्यां विच्चों वड्याईआ। मैं सुणावां लोक परलोक, परम पुरख तेरी वड्याईआ। झगड़ा मुक जाए चर्च पोप, पेचीदा पोशीदा राज़ देणा खुल्हाईआ। क्यों बणया रिहों रूहपोश, जुग चौकड़ी हत्थ किसे ना आईआ। साची नाम खुमारी दे मदहोश, मधुर तेरी कार कमाईआ। कूड़ी समझ रहे ना सोच, बुध्ध विशेष देणी वड्याईआ। जो तेरा दर्शन रहे लोच, लोचन नैणा नाल मिलाईआ। प्यार मुहब्बत दे के मौज, मौजूदा हो के मेल मिलाईआ। हउमे हंगता रहे कोई ना रोग, दुखियां दर्द देणा वंडाईआ। बिन तेरी चरण धूढ़ी अवर रहे कोए ना जोग, जुगती

दो जहान जणाईआ। निरगुण धार बख्श के ओट, ओड़क सारे लै मिलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा तेरे नाम दी लग्गे चोट, चोटी चढ़ के लै उठाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढ खोट, खरे आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। सतिजुग कहे प्रभ खोल्ह दे आपणा जंदर, दिलबर भण्डारा दे वरताईआ। परदा लाह दे अंदर, अन्तश्करन दे बदलाईआ। साचा तन सुहा के मन्दिर, मन मन्दिर डेरा लाईआ। तेरा प्रकाश होवे अन्धेरी कंदर, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जन भगतां जाणा पए ना विच जंगल, जूह खोज ना कोए खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर दे वड्याईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरा होवे इक्को गीत, गीता ज्ञान लोड़ रहे ना राईआ। झुकणा पए ना किसे मसीत, मसला हक़ देणा सुणाईआ। तेरे चरण लग्गे प्रीत, प्रीतम हो के देणी वड्याईआ। सब दी बदल दे नीत, नीतीवान इक हो जाईआ। झगड़ा मुका दे हस्त कीट, कटाकश आपणा नाम रखाईआ। दीन दुनी होवे भय भीत, भय भउ चारों कुण्ट नज़री आईआ। पिछली कूड़ दी मेट दे लीक, लाईन आपणी दे वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां बदल दे तवारीख, तारीख आपणी इक समझाईआ। तेरे दर ते मँगदा भीख, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, आमद विच अमल दे दृढ़ाईआ। तूं वसणहार सदा नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तेरा नाम कलमा होवे इक्को लाशरीक, शिरकत जगत देणी मिटाईआ। तेरे अन्तर सच तौफीक़, दाअवेदार इक अख्वाईआ। साचा दरस दे दीद, नेत्र लोचन अक्ख खुल्हाईआ। तेरे प्यार दी रहे ईद, ईदुल फ़ितर ना कोए वड्याईआ। जन भगत सुहेले बणा अज़ीज़, प्यारे प्रीतम मेल मिलाईआ। साची सिख्या दे तमीज़, तमां कूड़ देणी गवाईआ। एका छत्र झुल्ले तेरे सीस, साहिब सुल्तान तेरी शरनाईआ। तूं परवरदिगार ठाकर स्वामी जगदीश, जगदीशर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, परदा लाह खेल जगत अनडीठ, अनडिठ आपणा हुक्म इक वरताईआ।

२५२

२१

२५२

२१

❊ २६ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ गुरमेज सिँघ दे गृह करनाल ❊

सतिजुग कहे प्रभ किरपा कर साहिब सतिगुर सागर, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरी शरनाईआ। निरगुण धार योद्धे सूरबीर बहादर, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। मेहरवान महबूब दीन दुनी दे क़ादर, करते करीम तेरी शरनाईआ। जन भगत सुहेले बाल अंञाणे धुर दे आजिज़, अज़ीज़ तमीज़ देणी जणाईआ। धुर संदेसा हुक्म दे वाजब, वाहिद आपणा

रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिजुग कहे सुण साहिब पुरख समरथ, कथा अकथ दयां जणाईआ। जिथ्थे बलि टेक के आपणा मथ्थ, मस्तक ल्या रगड़ाईआ। जिथ्थे सप्त ऋषी चरण गए झस्स, भारद्वाज नाल वड्याईआ। जिथ्थे युधिष्टर चरण गया ढठ्ठ, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। जिथ्थे प्यार मुहब्बत दा हुंदा सी हट्ट, जगत जहान वज्जे वधाईआ। सो खेल अगम्मा रिहा दस्स, दह दिशा समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ । सतिजुग कहे एथे रहन्दा सी वणजारा, वणज सति सति कमाईआ। मन्दिर बणाउँदा सी इट्टां गारा, ठाकर आपणे हथ्थ टिकाईआ। सदा करदा सी निमस्कारा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। बस्तर भूषण पहनाए अपारा, तन वजूद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ एह धरनी की कहिंदी, कहि कहि रही सुणाईआ। ज़रा वेख दिशा लहिंदी, बिन लोचन नैण अक्ख उठाईआ। जिस नूं कहिंदे अमाम मैहन्दी, अमाम अमामा वेस वटाईआ। सब दी कला करे ढहन्दी, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। धरनी कहे एथे हुंदा सी इक आरफ़, बिन अलिफ़ ये पढ़ाईआ। नूरी नूर करे तुआरफ़, तसबी माला ना कोए रखाईआ। बिन कल्मयों करे ज़िआरत, ज़ाहर ज़हूर रुशनाईआ। संदेसा पढ़े सुणे बिना इबारत, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। आपणी वेख के तन वजूद इमारत, असल वसल खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। धरनी कहे एथे नौ दिन कटे फ़रीद, फ़ाका फ़िकर विच रखाईआ। बिन लोचन कर के दीद, दरस दीदार रुशनाईआ। अन्तश्करन कर उम्मीद, आमद विच वड्याईआ। कलमा सिफ्त तमहीद, रहमत नूर अलाहीआ। जो कदे ना पढ़े क़ुरान मजीद, नग़मा धुर दा इक सुणाईआ। उस दा खेल इक असलीअत, असल नूर अलाहीआ। जिस ने सब दी बदल देणी तबीअत, तबीब हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। धरनी कहे जिस वेले युधिष्टर उतरया उत्तों रथ, अक्ख कृष्ण नाल मिलाईआ। कृष्ण मार के दोवें हथ्थ, मिट्टी ख़ाक दिती मिलाईआ। सहज सुभाओ प्या हस्स, हस्ती आपणी दिती समझाईआ। धर्म सुत खोल्ह के वेख अक्ख, आख़र दयां जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल वेख प्रतख, परमात्म परदा लाहीआ। जो निरगुण धार होए प्रगट, जोती जाता वेस वटाईआ। जिस शम्भू दा एथे हट्ट, झौपड़ी कखां वाली सुहाईआ। ओह जामा फेर आवे पलट्ट, माणस माणस रूप धराईआ। किरपा करे पुरख समरथ, पारब्रह्म प्रभ आपणा परदा लाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा धुर

दा नाम दस्स, सच संदेसा नाम सुणाईआ। भाग लगा काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। जगत दुआरा आए छड्ड, मिटे नाता कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। धरनी कहे जिस दी निक्की जिही दुकान, वस्तू जग ना कोए विकाईआ। किरपा करे काहन, काहन भगवान धुरदरगाहीआ। धुर दा ला निशान, निशाना गया सुहाईआ। बोल के नाल ज़बान, ज़माना गया बदलाईआ। जिस वेले कल अन्त आवे श्री भगवान, भगवन आपणा वेस वटाईआ। एह धरनी वेखे आण, धवल खोज खुजाईआ। तेरा लहिणा देणा चुकावे विच जहान, जहां तहां होए सहाईआ। साचे दर कर परवान, परवाना धुर दा हथ्थ फड़ाईआ। भाग लगा के विच बीआबान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी कहे मेरा पूरा होया वर, वारता दिती दुहराईआ। निरगुण धार पाया घर, गृह मन्दिर वज्जी वधाईआ। नहा के साचे सर, दुरमति मैल लई धुआईआ। निरअक्खर धार ल्या पढ़, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। मंज़ल हक़ीक़ी गई चढ़, सच मुनारे सोभा पाईआ। जिथ्थे भगत भगवान रहे खड़, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। धरनी कहे मेरा जागिआ भाग, भगवान दिती वड्याईआ। जिथ्थे गुरमुख उपजे चराग़, चरागाहां करे रुशनाईआ। हरि संगत बणे समाज, वरन बरन दा डेरा ढाहीआ। दुरमति रहे ना कोए दाग़, पापां करे सफ़ाईआ। माया डस्से ना डसनी नाग, ममता मोह दए चुकाईआ। हँस बणाए फड़ के काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। शब्द अगम्मी मार के आवाज़, सोई सुरत लई उठाईआ। खोल्ह के आपणा राज़, राज़क़ रहीम रिहा जणाईआ। जिस थाँ फ़रीद ने पढ़ी निमाज़, सजदयां विच सीस झुकाईआ। उस दा लहिणा देणा दिता आज, अदद तशदद् नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां बख्श प्रेम वैराग, वैरी अंदरों दए कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म मेल मिला के कन्त सुहाग, दरगाह साची जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी कहे मेरे अन्तर चाउ घनेरा, खुशीआं विच जणाईआ। परम पुरख ठाकर मिल्या मेरा, ममता मोह रिहा मिटाईआ। जिस कलयुग अन्त देणा गेड़ा, लख चुरासी वेख वखाईआ। जन भगतां उत्ते कर के मेहरा, महबूब मुहब्बत विच देणा दृढ़ाईआ। निज घर निज गृह निज आत्म दिसणा नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जिस थाँ ते हट्टी वाले दा वस्सेरा, कृष्ण लेखे विच वड्याईआ। ओसे दा बन्न्हण आया बेड़ा, जो जन्म विच्चों जन्म गया बदलाईआ। गुरमेज़ सिँघ तेरा बणावे डेरा, डेरा आपणे विच रखाईआ। कौल इक़रार पिछला कीता जेहड़ा, पूरब जन्म रिहा चुकाईआ। वीह सौ पंदरां बिक्रमी थानेसर दा लेखा लिख्या बथेरा, जगह भूमका अज्ज मिली वड्याईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण जन भगतां एथे ओथे दो जहानां बन्ह्रे बेड़ा, खेवट खेटा हो के भार आपणे कन्ध उठाईआ।

✻ २७ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ अर्जन सिँघ दे गृह बलोचपुरा ✻

सतिजुग कहे किरपा कर मेरे जगदीश, जगदीशर तेरी ओट तकाईआ । निरगुण सरगुण तेरा खेल बीस इक्कीस, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण धार गए बीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। बिन तेरी किरपा साहिब सुल्तान नौजवान बदले कोए ना रीत, मन्दिर मसीत पन्ध ना कोए चुकाईआ। एका रंग रंगे ना कोए हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा कोए ना ढाहीआ। सदी चौधवीं परवरदिगार रही बीत, बातन भेव ना कोए खुल्हाईआ। नाउँ निरँकार तेरा कलमा हक़ हदीस, हज़रतां हज़ूर देणा जणाईआ। तेरा प्रकाश होवे अगम्म दीप, दीपक नूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा देणा चुकाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मैं
२५५
दर दरवेश मँगता, निर्धन हो के आस रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे जणाईआ। झगड़ा
२१
रहे ना कोई ममता मन दा, मनसा मोह मेट मिटाईआ। भेव खुल्हावां काया माटी तन दा, तन्द सतार अंदर इक वजाईआ। रूप जणावां भगत जन जन दा, जागरत जोत डगमगाईआ। पन्ध मुकावां चिन्ता हरख सोग ग़म दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरी तेरे अगे अरदास, बेनन्ती इक जणाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होवे नास, नास्तिक रहिण कोए ना पाईआ। हर घट अंदर तेरी पवे रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नाच नचाईआ। रूह बुत दोवें होवण पाक, पतित पुनीत तेरी सरनाईआ। सच दुआर खुल्हा के हाट, वस्त अमोलक इक वरताईआ। धर्म दुआर जणा के घाट, पत्तण कूड़ कुकर्म दयां गुआईआ। नव नौ चार ना रहे अन्धेरी रात, इक्को तेरा नूर जोत होवे रुशनाईआ। जन भगतां पूरी कर के आस, जन्म जन्म दी तृष्ना प्यास मिटाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को इक जणा के बाप, चाचे गुर अवतार पैगम्बर तों खैह्ड़ा दयां छुडाईआ। जिधर तक्कण नज़री आवे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची सीस निवाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरी पिछ्छु

ते देदे थपकी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं अन्तर निरंतर सुरत बदलावां सब दी, निरगुण हो के निरगुण वेख वखाईआ। घट घट अन्तर तेरी जोत होवे जगदी, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। त्रैगुण अगनी मेटां अग्ग दी, पंज तत ना कोए जलाईआ। रसना जिह्वा इक्को नाम तेरा होवे जपदी, जगजीवण दाते तेरी ओट रखाईआ। कल्पणा रहिण ना देवां मनमति दी, गुरमति इक्को इक समझाईआ। नज़र खुल्हा के निज नेत्र लोचन नैण अक्ख दी, आख़र इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरी आसा इक अगम्मी, लिखण विच कदे ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हो के मन्नीं, मेहरवान महबूब तेरी सरनाईआ। मैं तेरा नाउँ सुणाउणा चौहन्दा नहीं किसे कन्नीं, निरंतर अन्तर हिरदे विच दयां टिकाईआ। तूं साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान धुर दा धनी, धर्म दी दात दे वरताईआ। सृष्टी दृष्टी विच रहे ना अन्ही, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर वजदी रहे वधाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरे नाम दा दस्सां ढोला, ढोल माही दयां समझाईआ। विछड़िआ रहे कोई ना गोला, काया गोलक फोल फुलाईआ। तेरा भेव खुल्हा के मौला, हर घट मौलिआ दयां समझाईआ। दीन मज़हब दा रहिण ना दयां रौला, रहिबर इक्को दयां वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर पूरा कर इक़रार कौला, कँवल नैण तेरी ओट तकाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सुत्ता अनभोला, बिन तेरी किरपा लए ना कोए अंगड़ाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक भाग लग्गे किसे ना चोला, चोजी प्रीतम तेरा दरस किसे ना पाईआ। तेरी किरपा सब दे अंदरों चुकावां पर्दा उहला, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। भगत सुहेला गुरु गुर चेला, तेरे दुआर बणावां गोला, गहर गम्भीर बेनज़ीर मेल मिला के सहज सुभाईआ। तूं कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार बणा तोला, तोलणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग कहे मेरे मालक धुर दे अर्शी , साहिब सुल्तान तेरी वड्याईआ। निगाह मार उपर फ़र्शी, फ़रिश्ते चारे देण दुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मन्ज़ूर कर अर्ज़ी, आजज़ हो के सीस निवाईआ । ग़रीब निमाणयां बण दर्दी, दरदवंद हो के दर्द वंडाईआ। वेखीं कलयुग अन्त मूल ना बणीं अलगर्ज़ी, बेपरवाही विच समाईआ। एह खेल तेरे अनोखे घर दी, जिस दी ख़बर ना कोए सुणाईआ। सतिजुग कहे मैं चौहन्दा सब रसना तेरा इक्को नाउँ होवे पढ़दी, परदा अंदर रहे ना राईआ। सुरती मंज़ल होवे चढ़दी, शब्दी ढोला नाम गाईआ। निरगुण जोत होवे जगदी, घर विच घर करे रुशनाईआ। तेरी आसा होवे सद दी, मनसा विच मिलाईआ। मंज़ल मुक जाए जगत हदूद हद्द दी, राह इक्को वज्जे वधाईआ। सुणे आवाज़ अगम्मी नद

दी, अनहद नाद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सति साची मँग मँगाईआ। सतिजुग कहे मेरे अन्तर आवे खुशी, खुशख़बरी दयां जणाईआ। सृष्टी दी तेरे नाल लगावां रुची, रचना तेरी दयां समझाईआ। सब दी बुद्धी करां सुच्ची, सच संजम इक प्रगटाईआ। कूड़ी क्रिया जड़ जाए पुट्टी, पटने वाला करे सफ़ाईआ। जन भगतां मन रहे ना कोए त्रिकुटी, ईड़ा पिंगल सुखमन वंड ना कोए वंडाईआ। सहिंस दल दी करे ना कोई बुत्ती, मनसा मोह ना कोए जणाईआ। इक्को तेरी मंज़ल दस्सां उच्ची, घर घर विच होवे रुशनाईआ। जन भगत विछोड़े विच रहे कोए ना दुखी, आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच समाईआ। आउणा पवे ना किसे मात कुक्खी, गर्भ जून ना कोए भुआईआ। सच सुहञ्जणी कर के रुत्ती, रुतड़ी तेरा नाम महकाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरी अन्त वात पुच्छीं, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। झगड़ा रहिण ना देवां काया बुत्तीं, बुतख़ाने दयां गवाईआ। तेरी जोत रहे ना लुकी, लोक परलोक वज्जे वधाईआ। निरगुण धार हो के उठीं, निरवैर दया कमाईआ। साहिब सतिगुर हो के तुठ्ठीं, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जाए कुट्टी, कूड़ कुटम्ब देणा मिटाईआ। जन भगत उजल करीं मुखी, मानुख आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर नौजवान, तेरा खेल मर्द मर्दान, हरिजन आत्म रहे कोए ना सुत्ती, सुते प्रकाश आपणा देणा वखाईआ।

✻ २८ जेठ शहिनशाही सम्मत ४ श्री राम दे गृह पिंड मक्सूदड़ा ✻

सतिजुग कहे प्रभ तेरे चरण जावां झुक, निउँ निउँ निरवैर सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दुःख, दीनां अनाथां दया कमाईआ। चार वरन अठारां बरन दे सुख, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। तृष्ना कूड़ रहे ना भुक्ख, ममता मोह देणा चुकाईआ। अन्तर उहला रहे ना लुक, परदा प्रेम देणा उठाईआ। उजल कर मात मुख, दुरमति मैल धवाईआ। भगत सुहेला बणा सुत, अपराधी रहिण कोए ना पाईआ। तूं मालक अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। सतिजुग कहे प्रभ वेख अन्तर निरंतर, निरवैर दया कमाईआ। धुर दा दस्स अगम्मी मन्त्र, मंतव सब दा हल्ल कराईआ। सति धर्म बणा बणतर, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। तेरा खेल जुगा जुगन्तर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। सतिजुग कहे मेरे साहिब स्वामी पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरी वड्याईआ। दीनां

बंधप दीन दयाल, दयानिध तेरी सरनाईआ। जन भगतां लेखे ला घाल, जो नित नवित्त तेरा नाम ध्याईआ। कर प्रकाश काया माटी साची धर्मसाल, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, पंच विकार रहिण ना पाईआ। शब्द अनादी धुन आत्मक वजा ताल, अगम्मी राग सुणाईआ। दीपक जोत जगे बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए समझाईआ। झगड़ा रहे ना काल महाकाल, भय भउ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा वेख वखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरे भगवन्त, परमात्म तेरी ओट तकाईआ। सृष्ट सबाई बण अगम्मी कन्त, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। काया चोली चाढ़ रंग बसन्त, निरवैर उतर कदे ना जाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बण पंडत, निरअक्खर अक्खर विच्चों समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक प्रगटाईआ। सतिजुग कहे मेरे साहिब पुरख समरथ, हरि करते तेरी वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी तूं चलावणहारा रथ, बण रथवाही वेस वटाईआ। तेरी बोध अगाध महिमा नाम अकथ, रसना जिह्वा कहिण कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया नाम मधाणे दे मथ, ममता मोह दे गुआईआ। जन भगतां आपणे मिलण दी खोल्ह अक्ख, निज नेत्र जोड़ जुड़ाईआ। वस्त अमोलक दे के सच, संजम इक्को देणा समझाईआ। भाग लगा दे काया माटी कच्च, कंचन गढ़ मिले वड्याईआ। मनुआ मन ना सके नच्च, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। सिर सब दे रखणा हत्थ, पुशत पनाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म धर्म दे वथ, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। सतिजुग कहे मेरे भगत वछल गिरधार, गहर गम्भीर तेरी बेपरवाहीआ। चरण झुकण तेई अवतार, पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। निमस्कार करे गुरु गुर धार, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। तेरा हुक्म सच्ची सरकार, शाह पातशाह ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नव नौ चार बीते संसार, जुग चौकड़ी आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त वेख धूआँधार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सति रिहा ना कोए उज्यार, कूड़ कुड़िआर ना कोए मिटाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर हाहाकार, इष्टी बैठे मुख भवाईआ। खेल वेख अगम्म अपार, अलख अगोचर दया कमाईआ। चार वरन हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। साचे भगतां दे दीदार, नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। मैं मँगता तेरे दरबार, दर ठांडे सीस निवाईआ। सतिजुग उच्ची कूक करे पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा झुलदा वेखां इक निशान, जिस नूं डंडावत करे दो जहान, सजदयां विच सिर सर ना कोए उठाईआ।

❋ २६ जेठ शहिनशही सम्मत ४ जसवन्त सिँघ दे गृह करतार पुर ज़िला जलन्धर ❋

सतिजुग कहे प्रभ कूड़ी क्रिया बदल दे सिक्का, सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद आपणा नाम प्रगटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल नज़र आ सब नूं पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाह आपणा परदा दे उठाईआ। एका रंग रंगा वड्डा निक्का, ऊँच नीच राउ रंक झगड़ा देणा मुकाईआ। आत्म प्यार ब्रह्म धार कर हित्ता, सच स्वामी आपणा रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त तेरा लेख लिखा, महिमा विच सिफ्त सालाहीआ। चार जुग दे शास्त्र तेरा सिफ्त सालाही चिठ्ठा, जुग चौकड़ी देण गवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा भाणा मन्निआ मिट्ठा, सीस जगदीश सक्कया ना कोए उठाईआ। तेरा हुक्म सदा नित नवित्ता, नर निरँकार वजदी रहे वधाईआ। कलयुग अन्तिम वेख रस सब दा होया फिक्का, फल फुल्ल देण दुहाईआ। जगत विकार वध्या विषा, विष्न ब्रह्मा शिव होए ना कोए सहाईआ। मैं तक्कया चार कुण्ट दह दिशा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण ध्यान लगाईआ। आत्म सेज सिँघासण कोई ना विछा, विषयां भरी दिसी लोकाईआ। मेरी अंदरों बदल गई इच्छा, सतिजुग कहे निरिच्छत हो के दयां दुहाईआ। तेरा लेख अगम्मी किसे ना लिखा, शाही क़लम ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरे नाम दी वजदी रहे वधाईआ। सतिजुग कहे प्रभ सब दा अन्तर कर दे शुद्ध, सुदी वदी दी लोड़ रहे ना राईआ। बिन जल पाणी पवित्र कर दे बुध्ध, बिबेक एक आपणी धार समझाईआ। सच दुआर एकँकार तेरा जावे सुज्झ, दूजा गृह मन्दिर नज़र कोए ना आईआ। परदा उहला रहे कोई ना लुक, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तैनूं रहे झुक, चार जुग डंडावत बन्दना सजदयां विच सीस निवाईआ। जन भगत सुहेले तेरे सुत, सति धर्म दा मार्ग देणा समझाईआ। निरगुण धारों निरवैर निराकार निरँकार हो के उठ, सति पुरख निरँजण आपणी लै अंगड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जड़्ह दे पुट्ट, पटनेवाला सब दी करे सफ़ाईआ। दीन दुनी अंदर रहिण ना देवे कोई फुट्ट, अमृत रस चार वरन अनरस रस विच चखाईआ। जन्म मरन दा रहे कोई ना दु:ख, दीनां अनाथां दर्द लए वंडाईआ। सफ़ल कराए मातलोक जननी कुक्ख, साहिब समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति दुआरे वज्जे वधाईआ। सतिजुग कहे प्रभ खोल्ह दे आपणी खिड़की, खटका अवर रहे ना राईआ। जन भगत अन्तर वेख बिरती, बिरहों वैराग विच कुरलाईआ। धार बख्श दे सुरती निरती, निज लोचन लोइण कर रुशनाईआ। खेल दस्स अगम्मी सतिगुर दी, जो सति सतिवादी हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मैनूं ला दे उत्ते धरती, धरनी

धवल धौल दयां वड्याईआ। झगड़ा मुका के गर्मी सर्दी, साज़श कूड़ी अंदरों दयां कढ्ढाईआ। रमज़ ला के आपणे घर दी, सच घराना दयां वखाईआ। जिथ्थे आत्म कदे ना मरदी, निरगुण जोत जोत विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आदि जुगादि जुग चौकड़ी ढोला पढ़दी, सिफ्तां विच सिफ्त वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कल दी, कलमे वाले देणे गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी खेल सदा अछल अछल्ल दी, वल छल अंदर झगड़ा काया मन्दिर देणा मुकाईआ।

✻ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ४ बन्ना सिँघ दे गृह करतार पुर ज़िला जलन्धर ✻

सति कहे मैं धरनी धरत धवल आवां, आमद विच खुशामद तेरी सेव कमाईआ। इक्को नाम अगम्मी ढोला गावां, लख चुरासी करां सफ़ाईआ। तेरा इष्ट इक मनावां, दृष्ट अंदर देणी खुल्हाईआ। कन्त कन्तूहल तैनूं रावां, रहिबर हो के वज्जे वधाईआ। तेरा नाउँ अगम्मी जणावां, सिफ्त दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगत रहे ना कोए निथावां, तेरी गोदी दयां टिकाईआ। तूं करें प्यार ज्यों पुत्तरां मावां, मात पित आप अख्वाईआ । मेरा सति धर्म दा साचा दाअवा, दाअवेदार अख्वाईआ। मैं नाता जोड़ां मानव मानव चार विछड़े भरावां, भाण्डा भरम भरम भन्नाईआ। मैं गोबिन्द दा तेरे कोलों पूर करावां जो पिछला दिसे बेदावा, वेदी सोढी जिस दी देण गवाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा तैनूं कहिण वाहवा, वाहिद इक्को नज़री आईआ। हँस बुद्धी रहे ना कोए वांग कावां, जूठ झूठ ना मुख लगाईआ। करां प्रकाश काया नगर खेड़ा गरावां, गृह गृह आपणा रंग रंगाईआ। पन्ध मुके जगत वहिण दरयावां, दर किनारा इक्को दयां दृढ़ाईआ। साचे भगतां सिर रखां ठंडीआं छावां, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। तत कृष्ण जो पाली अख्वाए गावां, गहर गम्भीर गऊ ग़रीब दयां वड्याईआ। चार जुग दा समाज बदल के आत्म परमात्म सांझीआं करां लावां, लाशरीक तेरा जोड़ जुड़ाईआ। तेरा नाउँ निरँकार सुणावां नाल चावां, चाउ घनेरा मैनूं नज़री आईआ। जुग जन्म दे विछड़े सन्त सुहेले गुरमुख मिलावां, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। मैनूं याद आवे की कौल कीता राम भरत आशा रख के जगत खड़ावां, ख़ैर तेरी ओट तकाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर इक्को तेरा नाम पढ़ावां, विदयाला साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। मंज़ल अगम्मी तेरी चरण कँवल चढ़ावां, जिथ्थे चढ़दा लहिंदा नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां रखणीआं पैण ना कोए जटावां, जटा जूटां तों मंज़ल अग्गे दयां वखाईआ। साचा समाज इक बणावां, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। साचा राह तेरे मिलण दा सच चलावां, जग चलदी

दिसे लोकाईआ। गुरमुख दीआं अंदर वेख इच्छावां, इच्छिआ सब दी पूर कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अगनी जलावां, जल थल महीअल खोज खुजाईआ। सतिजुग कहे मैं सति धर्म दा सुत अख्वावां, सति सति नाल वड्याईआ। सच सुच तेरे चरणां विच्चों लिआवां, लोकमात दयां वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी किरपा नाल दीन दुनी दा बदल देवां नावां, नाम निधान इक्को इक जणाईआ।

२६१

२१

✻ ३० जेठ शहिनशाही सम्मत ४ करतार पुर ज़िला जलन्धर ✻

सतिजुग कहे प्रभ तेरा खेल सदा चहुं जुगी, जुग जुग वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम औध रही पुग्गी, पैंडा पन्ध आप अन्त कराईआ। सति सच दुआर वसा झुग्गी, झगड़ा मन्दिर मस्जिद दे मिटाईआ। मानव निर्मल कर बुद्धि, बिबेक एक समझाईआ। तेरे नाम दी रमज़ रहे ना गुज्झी, भेव अभेद दे खुल्हाईआ। आपणी धार निरँकार कर उग्घी, उघण आथण वज्जे वधाईआ। कलयुग सृष्टी वहिण विच डुब्बी, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाईआ। जन भगत आत्म रोवे भुब्बीं, साचा मेला लैणा मिलाईआ। हँकार विकार मेट के खुदी, खुद आपणा पर्दा लाहीआ। धार रहे कोई ना दूजी, दूआ एके विच समाईआ। तेरी मंज़ल महबूब कदे ना मुकी, चढ़ चढ़ थक्के पाँधी राहीआ। तेरी दरगाह अगम्म अथाह उच्ची, ऊचो ऊँच तेरी सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ सन्त सुहेले बणा आपणे मुक्खी, मुख अन्तिम दे वड्याईआ। जगत रहे कोई ना दुखी, दुखियां दर्द गवाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर तेरे विच लग्गे सब दी रुची, वासना कूड़ी दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुरसिख हरिजन साचे आप पुच्छीं, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✻ १ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

शब्द कहे सुण पुरख अकाल बापू, बाबत तेरी दयां जणाईआ। आदि जुगादी धुर दे डाकू, तेरा परदा दयां खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर उठा के तेरे काकू, निक्कयां वड्डुयां अक्ख खुल्हाईआ। दस्सां अगम्मी अनोखी बातू, बातन दयां जणाईआ। मेरे वल कोए ना झाकू, नेत्र नैण ना अक्ख उठाईआ। निरगुण रूप सरगुण दे साकू, सगले संगी तेरी बेपरवाहीआ। मैं

अन्त अख़ीरी तैनूं आखूं, कहि कहि दयां जणाईआ। की संदेसा देंदा रिहा पातू, पत्रका मात वड्याईआ। शरअ विच बणया रिहों अफ़लातू, फ़लासफ़ी तेरी हथ्थ किसे ना आईआ। क्यों अमृत नाल छकाया तमाकू, तबा दिती बदलाईआ। की तेरा भेव अवल्लड़ा भाखू, परदा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे पुरख अकाल अब्बा, अम्मी नज़र कोए ना आईआ। ऐवें दो जहान रखदा रिहों दब्बा, भय आपणा इक समझाईआ। वेख्यां नेत्र किसे ना लभ्भा, लबां उत्ते सब नूं रिहा भुआईआ। जुग चौकड़ी बणया रिहों कब्बा, साचा राह ना कोए चलाईआ। तेरा खेल सज्जा खब्बा, खैरखाही ना कोए कमाईआ। लेखा रख्या विच मद्धा, अग्गा पिच्छा ना कोए समझाईआ। हुक्में अंदर सब नूं बद्धा, बन्दगी विच लई वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी सरनी लग्गा, लग मातर ढोले गए सुणाईआ। तेरा समझया किसे ना अग्गा, पिछली कहाणी रहे बतलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल देणा वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वेख्या तेरा ज़ोर, जोरू ज़र दुहाईआ। तूं जुग चौकड़ी बणया रिहा चोर, चोरी घर घर आप कमाईआ। आपणी खिच्च के पिच्छे डोर, तन्दी गुर अवतार पैगम्बरां नाल जुड़ाईआ। सति नाल कर के खोर, झूठ नाल दिता टकराईआ। चार कुण्ट अन्धेरा कर घोर, घुरने वड़ के आपणा मुख छुपाईआ। किसे तेरा वक्त ना समझया भोर, अमृत वेला अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। शब्दी दस्स के मन्त्र फोर, फ़ुरनिआं विच आपणी कल वरताईआ। आप बण के निरगुण होर, सरगुण होर रिहा समझाईआ। नाले वस के सदा कोल, कुल्ली विच डेरा लाईआ। नाद धुन वजा के ढोल, नाम करें शनवाईआ। जुग चौकड़ी बदलदा आएयों बोल, अनबोलत आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। शब्द सुत कहे प्रभ धुर दे सुत्ते, सुत्तिआ लै अंगड़ाईआ। जुग चौकड़ी तैनूं कोई ना पुच्छे, भय विच सारे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हंढ्ढा के गए जुस्से, इस्म जिस्म विच वखाईआ। बंक दुआरे रहे लुके, अंदर वड़ के झट लँघाईआ। क्यों नाम दी धार नाल मुख रसना लगाए हुक्के, हुक्म देणा जणाईआ। क्यों दीन मज़हब लेखे कुट्टे, मानव झगड़ा दिता पुआईआ। क्यों गाने बन्नृदा रिहों गुट्टे, सगनां वंड वंडाईआ। क्यों लुकदा रिहों गुठे, आपणा आप छुपाईआ। क्यों हुंदा रिहों गुस्से, भय विच सर्ब डराईआ। की खेल तेरा काया बुत्ते, बुतख़ाने की वड्याईआ। की सुहाउँदा रिहों रुते, रुतड़ी नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दे जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे क्यों कराउँदा रिहों इश्नान, जलधारा नाल वड्याईआ। क्यों चखाउँदा रिहों पान, रंगत रंग वड्याईआ। क्यों सुणाउँदा रिहों गान, अनुरागी राग जणाईआ।

क्यों बणाउँदा रिहों राम, रमते राम दुहाईआ। क्यों वडयाउँदा रिहों काहन, सखीआँ संग बणाईआ। क्यों पैगम्बरां देंदा रिहों दान, दानशमंदां नाल लड़ाईआ। क्यों सखाउँदा रिहों प्रणाम, सजदे सीस झुकाईआ। क्यों सुणाउँदा रिहों कलाम, कलमा कायनात अलाहीआ। क्यों बदलाउँदा रिहों विधान, नानक निरगुण दए गवाहीआ। क्यों पहनाउँदा रिहों किरपान, किरपानिध समझाईआ। क्यों तत मिटाउँदा रिहों निशान, जग रहिण कोए ना पाईआ। भेव खोलू के दस्स श्री भगवान, हरि करते मँग मँगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा देणा समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे क्यों बणाया जञ्जू बोदी, चोटी सीस सुहाईआ। क्यों वंड वंडाई वेदी सोढी, बंसां विच वधाईआ। क्यों गुर अवतार पैगम्बरां दिती आपणी सोझी, रमज़ समझ विच लगाईआ। क्यों बणाए वैरागी जोगी, तपीआं अगन तपाईआ। क्यों रसीआ बणयों भोगी, परदा देणा उठाईआ। क्यों साहिब होयों संजोगी, साचा मेल मिलाईआ। क्यों बोध अगाधा बणयों बोधी, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। क्यों हर घट बणयों गोझी, गृह गृह वेख वखाईआ। क्यों रचना रची लोक परलोकी, पारब्रह्म देणा सुणाईआ। क्यों शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान अक्खरां वाली बणाई पोथी, पुस्तक की वड्याईआ। क्यों बणाए जटा जूटी, हरि शब्दी मँग मँगाईआ। क्यों वंड वंडाई दिशा कूटी, चार कुण्ट सुहाईआ। क्यों खेल खिलाया जूठ झूठ,
२६३ सच सुच्च समाईआ। क्यों भरम बणाया दूख, दर्दी दर्द सुणाईआ। क्यों रचन रचाया पंज भूत, पंचम नाल महकाईआ। २६३
२१ क्यों खेलिआ खेल वड्डा मज़बूत, जिस नूं सके ना कोए बदलाईआ। क्यों हर घट होयों मौजूद, घर घर डेरा लाईआ। २१
पुरख अकाल दीन दयाल तूं आपणा दे ना सक्यों कोई सबूत, तेरी साबत सूरत ना कोए कराईआ। जिस नूं माण दिता सोई तन वखाया फूक, तत रहिण कोए ना पाईआ। आप सुत्ता रिहों घूक, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। बणया रिहों सोहल मलूक, छैल छबीला नाउँ उपजाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैनूं याद जो गुर अवतार पैगम्बरां नाल कीता सलूक, शरअ विच दिते लड़ाईआ। द्वैत विच सब नूं फूक, फ़तवा सब दे उत्ते लगाईआ। सब नूं वखरी वखरी दस्स के पूज, पूजनयोग आपणा मुख छुपाईआ। की होया जे तेरे उत्तों गए झूज, झूजण वाला सतिगुर थिर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल देणा वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे क्यों जगत रखी सुन्नत, लबां नाल कटाईआ। की लभ्भा तैनूं विच्चों उम्मत, अमल दिता बदलाईआ। क्यों द्वैत दी भेज के कुमक, पैगम्बरां अंदर दिता भराईआ। क्यों ममता मोह दी दे के हिम्मत, हौसला दिता वधाईआ। जे तूं राम तों अल्ला हो के बणयों निन्दक, निन्दिआ विच पैगम्बर दिते लगाईआ। मैं हैरान प्रभू तेरे नाम दी वैरी किड्डी कीती हिम्मत, हौसला आप वधाईआ। राम कृष्ण दी बदल के सिम्मत,

सिमरन दा समां दिता चुकाईआ। तैनूं वड्डा कहि के तेरे नाल गए चिमट, चिमटा उम्मत हथ्थ फड़ाईआ। ज़रा निगाह मार आपणे वक्त विच्चों इक मिन्ट, मिन्नत नाल सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुरख अकाल क्यों रखी मुच्छ दाढ़ी, केसां की वड्याईआ। क्यों अगली पिछली खेल विगाड़ी, धुर दा हुक्म सुणाईआ। की मौज दिसे बहारी, की रस रिहा चखाईआ। की पिच्छे तेरे नाल ला सक्कया कोई ना यारी, याराने वाला नजर कोए ना आईआ। भेव खोल्ह जोत निरँकारी, निरवैर देणा समझाईआ। की खेल अग्गे अगाड़ी, की करनी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे क्यों बन्ही पगड़ी टोपी, नंगा सिर क्यों रखाईआ। क्यों सखी बणाई गोपी, बण जंगलां विच वड्याईआ। क्यों तेड़ बंधाई धोती, की सिफ्तां सिफ्त सालाहीआ। क्यों थालां विच रखाई जोती, दीपक घृत नाल सुहाईआ। क्यों भेंटा आपणी करदा रिहों पकवान बणा के रोटी, दुद्धाधारी आप अख्वाईआ। क्यों हर घट अंदर वासना रखी खोटी, खोल्ह के देणा समझाईआ। क्यों आत्म बणा के आपणा गोती, परदयां विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा सहिंसा देणा मिटाईआ। सतिगुर शब्द कहे क्यों फड़िआ तीर कमान, क्यों तुरंगा ल्या दुड़ाईआ। क्यों वसिआ बीआबान, जंगलां विच कुरलाईआ। क्यों लड़िआ विच मैदान, निरगुण सरगुण रूप बदलाईआ। क्यों रथ चलाया विच जहान, महासार्थी की तेरी बेपरवाहीआ। क्यों फाँसी चढ़या आण, क्यों मूसा मुशकां बंध बंधाईआ। क्यों कीती क़तलेआम, मुहम्मद की सुणाईआ। क्यों नानक दिता नाम, अला तों सतिनाम बदलाईआ। सतिनाम दा बदल विधान, वहिगुरु जोड़ जुड़ाईआ। क्यों अमृत कीता पान, पानां दा रस गुआईआ। की खेल तेरा भगवान, सच देणा दृढ़ाईआ। मैं जुग चौकड़ी हुंदा रिहा हैरान, शब्द धार कहे तेरी बेपरवाहीआ। जे प्रभ तेरे वल छलां दी लावां मीज़ान, अनगिणत दयां जणाईआ। जे बेनन्ती करें परवान, परवाना तेरा दयां सुणाईआ। जे साहिब होवें मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जे सच पुच्छें मैं अज्ज तक शब्द कहे तैनूं किहा नहीं श्री भगवान, श्री भगवान तेरा नाउँ ना कोए दृढ़ाईआ। तेरे सिफ्ती नावां नूं कर के प्रधान, पचीआं गुर अवतारां पैगम्बरां हथ्थ फड़ाईआ। पिट्ठ ठोक के कहिंदा रिहा लोकमात जाओ जुआन, पुश्त पनाह दे वड्याईआ। नाल शरअ दा दस्स ईमान, अमल दिता दृढ़ाईआ। उन्हां प्रभू तेरे पैहले नाम नूं कर बदनाम, आपणा नाम नवां दिता जणाईआ। तूं कराउँदा रिहों क़त्लेआम, जगत क़तलगाह बणाईआ। झगड़ा पुआ के पैगम्बरां अवतारां विच शरेआम, शरअ विच लड़ाईआ। एह खेल तेरा तमाम, तमन्ना विच लड़ाईआ। मैं एसे करके तैनूं अजे तक नहीं किहा भगवान, क्यों तूं आपणा भेत ना किसे

समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दे वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे बौहड़ी बापू तेरीआं वंडां, पिता हो के बच्चयां दिता लड़ाईआ। मैं रो के पावां डंडां, कूक कूक सुणाईआ। मैं तेरा परदा करना नंगा, खोल्ह के दयां सुणाईआ। मैं हैरान होया तूं आपणा अमृत छड्ड के संसार नूं नहाउँदा विच जमना गंगा, सुरस्ती गोदावरी विच भुआईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ बणा के विच कराया दंगा, दंगल दिता लड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां शरअ लड़ाई दे के धन्दा, धर्म दा धड़ा दिता वखाईआ। जे प्रभू तूं वी होवें पंजां तत्तां वाला बन्दा, तैनूं बंधन विच फसाईआ। मैं हैरान होया किसे नूं धोती किसे दे तेड़ पुआया तम्बा, किसे नूं तहिमत नाल समझाईआ। एह खेल तेरा अचम्भा, अछल तेरी वड्याईआ। अजे तक किसे नूं वखाया नहीं आपणा कन्ढा, पार किनारा ना कोए दृढ़ाईआ। तेरा सफ़र सारे दस्स के गए लम्बा, नेरन नेर ना कोए वखाईआ। मैं तेरी खेल वेख के कम्बा, कम्बणी गई आईआ। प्रभ दे कोल किड्डा फ़रेबां वाला मम्बा, जुग जुग सब नूं दए भुलाईआ। की तैनूं प्राप्त होया केसां विच रखा के कंघा, क्यों कंगण हथ्थ पुआईआ। क्यों खड़ग फड़ाया टम्बा, शत्रू रूप बदलाईआ। क्यो तन कच्छ लगाया अंगा, कपड़ा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा देणा जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभू तेरी वेखी चलाकी, चाल निराली नज़री आईआ। तेरा खेल नुरानी ख़ाकी, आपणी वंड वंडाईआ। तेरा मेला नार कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तूं साहिब स्वामी जोत जाती, जागरत नज़री आईआ। सच दस्स दे पुरख अकाल की संदेसा दिता गोबिन्द अन्त अख़ीरी राती, मातलोक समझाईआ। की लहिणा देणा रख्या बाकी, पंजां कक्किआं विच ना आईआ। तेरी जोत पुरख अकाल ओह फफ्फे कुटणी जेहड़ी बिन असमानां लावे टाकी, टाकरे वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दे मुकाईआ। शब्द गुरु कहे सुण साहिब मेरे हज़ूर, तेरा हज़ूरीआ नज़र कोए ना आईआ। हुण बिन तेरे लभ्भां किहनूं ज़रूर, ज़रूरत वाले बैठे मुख छुपाईआ। पिछला जुग चौकड़ी दा तूं वी दिसें मफ़रूर, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी बेड़े चढ़दे वेखे तेरे पूर, पुरीआं लोआं समझ किसे ना आईआ। पता नहीं तूं ऊणा कि सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब थाईंआ। मैनूं ऐं दिसदा तैथों डरदे गुर अवतार पैगम्बर तैनूं सिफ्तां विच कर के गए मशहूर, तेरे मिलण दा मसला हल्ल ना कोए कराईआ। ओए धुर दे झगड़ालू तूं लोकमात पा के फ़तूर, फ़तिह दा टिक्का मस्तक ना किसे वखाईआ। जो आया सो तेरे नाम दा मज़हबी कर ग़रूर, जगत विच वड्याईआ। मानव लड़ा के तेरा होया मशकूर, शुकरीआ कहि के सीस निवाईआ। प्रभू एह की तेरा दस्तूर, दूसर नालों दूजा दूजे नालों तीजा तीजे

नालों चौथा चौथे जुग विच सब आपणा आपणा माण रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरे चरण मिले सरनाईआ। पुरख अकाल कहे शब्द बच्चे कर ना शैतानी, क्यों सहज सहज सुणाईआ। मेरी खेल दो जहानी, दोहरी धार प्रगटाईआ। मेरा जलवा नूर असमानी, जोती डगमगाईआ। जे मैं हुक्म विच ना करां बेईमानी, बेवा कदे ना होए लोकाईआ। मैं जुग जुग गुर अवतार पैगम्बरां दी बदल देवां ख़ानदानी, ख़ानदान आपणा नाम नाम समझाईआ। किसे दी क़ायम रहिण ना देवां जवानी, जोबन सदा ना कोए हंढाईआ। जिस नूं मातलोक भेजां उस नूं दस्सां एह तेरी जूह बेगानी, दाअवेदार ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा जणाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे शब्द दुलारे हट्टे कट्टे, नौजवान दयां जणाईआ । प्रभ दी विद्या सब तों वखरे हिसाब वाले बटे, जिस दी हासल ज़रब समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दस्स के निक्के निक्के टप्पे, टापूआं विच दिता टिकाईआ। बिना दस्ख्तां तों दे के पटे, लोकमात मुजारे दिते वखाईआ। अन्त सारे हो गए नाम कटे, हुक्म मिल्या धुरदरगाहीआ। जो धुर दे लेख लिखे सो पूरे करने सच्चे, सच दयां समझाईआ। कीते कौल नहीं होणे कच्चे, कंचनगढ़ दयां वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जो हुक्मे लेख लिखे, लिख्त विच सालाहीआ। सो पूरे करने इक्के, एकँकार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। शब्द गुरु कहे प्रभ क्यों रखदा ओहला, सच दे दृढ़ाईआ । की अन्त गोबिन्द नाल बोल बोला, अनबोलत देणा समझाईआ। ओह निशानी देदे जेहड़ी गोबिन्द नूं दिती छड्डण लग्गिआं चोला, ओह तेरा उधेड़ ना कोए कराईआ। जिथ्थे ना कोई कहार चुक्कण वाला डोला, काहनी कन्ध ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव देणा खुलाईआ। सतिगुर शब्द कहे की गोबिन्द मँगी मँग, जिस वेले अख़ीरी सास आईआ। की बख़श्या तूं अनन्द, एह वी देणा जणाईआ। वेखीं पुरख अकाल हुण ना होवीं दंग, हैरानी दी लोड़ रहे ना राईआ। जिन्ह सब कुछ तेरे पिच्छे दिता वंड, वरभण्ड विच लुटाईआ। जिस नूं सृष्टी कहे गुजरी चन्द, ते गोबिन्द कहे मेरा पुरख अकाल पिता माईआ। मैं बोलणा नहीं नाल रसना दन्द, जिह्वा जगत ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले गोबिन्द बैठा चन्नण चौकी, चौकड़ा इक लगाईआ। मैनूं ख़बर अगम्मी पहुंची, भज्जिआ वाहो दाहीआ। उह घड़ी बड़ी सी सौखी, सोहणी नज़री आईआ। मैं गोबिन्द दे चार चुफेरे फिर के लांव लई चौथी, चौथे जुग कुड़माईआ। गोबिन्द तेरी सिखी ना जावे औंती, औंते जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद तेरा होए सहाईआ।

गोबिन्द किहा जे तूं मेरा बाप, पिता इक अख्वाईआ। मैनूं समझा आपणा आप, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। मैं इक्को बचन जाणा आख, जिस नूं समझे ना कोए लोकाईआ। भावें मैं लड़ाका पुत तेरा गुस्ताख़, गुस्से वाला अख्वाईआ। मैं फिर वी तेरे सिख बणाए तेरी शाख़, तेरे हथ्थ फड़ाईआ। मेरा लेखा ना कोई जिस्त ना कोई टांक, टक्यां वाली वंड ना कोए वंडाईआ। गोबिन्द अन्त अख़ीर मस्तक उत्ते दोवें रखे हाथ, अक्खां लईआं दबाईआ। मैं सब कुछ तैनूं दिता बांट, । पुरख अकाल कहे जिस वेले मैं वेख्या झाक, झाकी इक लगाईआ। गोबिन्द दा खुल्ह गया ताक, मेरी जोत होवे रुशनाईआ। ओस दी पूरी कीती आस, हरि साचे बेपरवाहीआ। अगनी दी निकली लाट, धूआँधार समाईआ। मैं पन्ध मेटी वाट, वटना दिता लगाईआ। गोबिन्द तेरी मेरी इक ज़ात, पिछली कीती सफ़ाईआ। मैं तेरी मन्नां बात, परदा दयां चुकाईआ। गोबिन्द तेरा होवे साथ, सदा सदा वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। गोबिन्द चौंकी उत्ते टेक दिते गुटने, गुट हथ्थ हथ्थ विच फड़ाईआ। प्रभू क्यों जन्म दिता पटने, माता दे पट्टां विच टिकाईआ। जिस गोदी तों गोबिन्द होया सक्खणे, माता गुजरी नज़र कोए ना आईआ। अग्गे वास्ते मैं एहो जिहे मात पिता नहीं रखणे, जो जन्म के मर जाईआ। हुण जाणां तेरे वतने, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे मेरा इक अख़ीरी संदेसा, सति सतिवादी दयां जणाईआ। मेरा अन्त अख़ीरी लेखा, तत्तां होणी जुदाईआ। मेरा अन्त अख़ीरी रखीं चेता, चेतन दयां दृढ़ाईआ। मैं तेरा सूरबीर बेटा, मरन जम्मण विच फेरा कदे ना पाईआ। जद वसां तेरे चरणां हेठां, आपणा आसण लाईआ। प्रभ जे तैनूं लोड़ होवे ते तैनूं आप टिकावां आपणे पेटा, आपणे पेट विच छुपाईआ। फेर अंदर वड़ के तैनूं वेखां, उत्ते लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। मैनूं सदा रखीं थल्ले आपणयां केसां, तेरी क़िस्म दयां बदलाईआ। अग्गे तूं गुर अवतार पैगम्बरां नूं देंदा रिहों ठेका, बोली लोकमात कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द किहा मैं चलया छड्ड जगत, प्रभ तेरी सेव कमाईआ। अन्त अख़ीरी वक्त, तेरे विच समाईआ। कौल कर प्रभ दोवें आईए परत, पत्रका दे लिखाईआ । पिता पूत दी इक्को होवे शर्त, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल थोड़्हा गया अटक, ख़ामोशी विच समाईआ। गोबिन्द ने खड़ग कढ्ढी झटक, हथ्थ विच उठाईआ। जे मैं तेरा जिगरे लख़त, लिख के दे फड़ाईआ । जे तूं मैनूं बणाया सख्त, नरमी विच कदे ना आईआ। ओ बाप, कदी बच्चयां तों कर के रखीं ना कोई बचत, वखरा घर सुहाईआ। मैं मातलोक तक्कया हुण वेखणा तैनूं उत्ते अर्श, फ़र्श देणा तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी

आसा पूर कराईआ। गोबिन्द किहा मेरी आसा इक अन्त, अन्त दयां जणाईआ। तूं साहिब मेरा भगवन्त, प्रभू तेरी वड्याईआ। तूं सच स्वामी कन्त, साहिब तेरी सरनाईआ। मैं कोई करनी नहीं मिन्नत, खुशीआं विच जणाईआ। अग्गे वसणा तेरी सिम्मत, कूड़ नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल धुर दी देणी वखाईआ। पुरख अकाल किहा, गोबिन्द आपणी हथ्थ फेर के दाढ़ी, दाअवे नाल जणाईआ। हुण छड्ड दे सरीर ते नाता टुट्ट जाए नाड़ी, चिखा विच समाईआ। मैं लेखा दस्सां अगाड़ी, भेव अभेद खुल्हाईआ। जिस वेले तेरे मेरे सम्मत दी आवे चौथी हाढ़ी, चार कुण्ट रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी मनसा पूर कराईआ। गोबिन्द कहे प्रभू ला लै घुट्ट के अंग, अंगीकार अख्वाईआ। ओह वेख गुरमुख मेरे चन्द, तेरी जोत रुशनाईआ। जिन्हां नूं छड्ड गया पुरी अनन्द, सरसे दिते रुड़ाईआ। सचखण्ड दिते टंग, तेरे दर सुहाईआ। मैं उन्हां दा मँगदा संग, छड्डी जगत लोकाईआ। उन्हां पिच्छे फेर मारना पन्ध, लोकमात जन्म दुआईआ। पर याद रखीं, मैं फिर नीले दा कसणा नहीं तंग, पाखर ज़ीन ना कोए सुहाईआ। मैं फिरना विच ब्रह्मण्ड, बिन लत्तां बाहवां वाहो दाहीआ। मानणा इक अनन्द, रस तेरा सोभा पाईआ। खड़ग खण्डे दा करना नहीं जंग, शब्दी आपणी धार देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेरा संग रखाईआ। गोबिन्द कहे गुर अवतार पैगम्बरां बद्धे गाने, मौली तन्द सुहाईआ। प्रभू एह सारे सगन पुराणे, अग्गे मैनूं मूल ना भाईआ। जिस तरां तेरे मेरे नाल याराने, सचखण्ड बहि के खुशी मनाईआ। एसे तरां तेरे भगत मेरे महिमाने, परौहणे धुर दे नज़री आईआ। जिन्हां ने वसणा हेठां सत्त रंग निशाने, निशाने पिछले देणे गुआईआ। पुरख अकाल उन्हां दे पिच्छे सानूं आउणा पए नाल बहाने, दूजा राह नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। सत्त रंग बोलिआ झट, गोबिन्द दिता सुणाईआ। क्यों सूरे मारया फट्ट, अणयाला तीर चलाईआ। मैनूं दस्स दे कुझ झट, सहजे पुच्छ पुच्छाईआ। तुहाडा केहड़ा खुल्हणा हट्ट, दुआरा कवण सुहाईआ। मैं वी उथ्थे आवां नट्ठ, आपणा पन्ध मुकाईआ। वेखां खेल जग, जागरत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा देणा मुकाईआ। गोबिन्द किहा मेरे सिख धुर दे धर्मी, पुरख अकाल सरनाईआ। जोड़ जुड़िआ नाल निहकरमी, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। अन्त उन्हां ने आउणा एस दी सरनी, चरण कँवल सरनाईआ। झगड़ा मुकणा मरनी डरनी, भय भउ ना कोए वखाईआ। इक्को तुक अगम्मी पढ़नी, छड्डणी जगत पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सुण के बचन सत्त रंग गया डिग्ग, चरणी सीस निवाईआ। जे तेरा पुरख अकाल इक्क,

इक्को पिता माईआ। जे तेरे लाडले सिख, मैनूं वी आपणा सिख लै बणाईआ। गोबिन्द किहा हुण नहीं अग्गे देवां लिख, बिन अक्खरां अक्खर वखाईआ। तेरा सांझा कर के हित्त, नाता भगतां नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा वेख वखाईआ। सत्त रंग सुण मेरा होर विचार, तैनूं दयां जणाईआ। तूं रहिणा ख़बरदार, आलस निंदरा बाहर कढ्ढाईआ। जिस वेले मेरे पुरख अकाल दा सम्मत आवे चार, चार कुण्ट दुहाईआ। तैनूं भगतां दा बणावां यार, साचा जोड़ जुड़ाईआ। लहिणा देणा पूरा करां उधार, क़र्ज़ा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा सत्त रंग तूं मँगी मँग कमाल, कमलापति दए दृढ़ाईआ। उठ सोहणे खुशीआं नाल पा धमाल, नच्च टप्प के दे वखाईआ। गोबिन्द ने अन्त अख़ीर अन्तिम सास आपणे कढ्ढके सत्त रुमाल, कमरकसे विच्चों चिखा उत्ते दिते टिकाईआ। सति जोत दा होया जमाल, जोत जोत विच रुशनाईआ। नूर चमक्या उत्ते असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड डगमगाईआ। ताड़ी ला के किहा श्री भगवान, दो जहानां तेरी सिफ्त सालाहीआ। गोबिन्द किहा औह चिल्ला ते गई कमान, कमान इक्को हथ्थ रखाईआ। जिस नूं सके ना कोए पहचान, जग नेत्र ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। गोबिन्द किहा सत्त रंग, तैनूं भगतां नाल मिलावांगा। जिस वेले मेरे चमके उह चन्द, चांदनी तेरे उत्ते पवावांगा। सोहणा बणा के संग, आपे वेख वखावांगा। मेरे कोल अनोखा ढंग, धुर दा हुक्म इक जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर दुआरा इक सुहावांगा। सत्त रंग कहिण साडा प्रेमी पहला लाल, लाल रंग वड्याईआ। गोबिन्द किहा मैं हो के दीन दयाल, दया आप कमाईआ। सिख्या सच सिखाल, समझ दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले शहिनशाही चौथा आवे साल, सम्मत सोभा पाईआ। ओस वेले माझे वाल्यां बन्न्हणे लाल रुमाल, गुट सज्जे नाल सोभा पाईआ। खुशीआं नाल पाउँदे आउण धमाल, गोबिन्द तूं ही पिता माईआ। असीं तेरे लाडले बाल, होए ना कदे जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। कंचन रंग कहे गोबिन्द मैनूं दस्स तरीका, तरीक दे समझाईआ। गोबिन्द किहा ओह तेरा बावन बलि ते पिछला रिषीआं नाल शरीका, साथीआं दयां मिलाईआ। तेरे नाल उन्नां दी होवे प्रीता, जिन्नां नूं प्रीतम मेल मिलाईआ। पर याद रखीं उन्नां विच्चों इक दे हथ्थ विच होणी गीता, नवीं नकोर सोभा पाईआ। उहदे उत्ते सवा इंच दा फीता, कंचन देणा लगाईआ। बाकी सब ने रुमाल बन्न्हणे ठीका, गुट खब्बे नाल सजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जम्मू वाले जमा लए कराईआ। सूहा लाल कहे सुण गोबिन्द मेरे सोहणे,

सोहणिआ दयां जणाईआ। जिस ने सब दे धोण धोणे, दुरमति मैल गवाईआ। गोबिन्द किहा मैं सब दे पिछले लेखे खोहणे, बचया रहिण कोए ना पाईआ। प्रभ नूं भुल्ले सारे रोणे, रोन्दयां चुप ना कोए कराईआ। ओह सूहे रंग तेरे जगत ने बणाउणे पोणे, चीथड़ पाटे वेख वखाईआ। पर तेरे लेख दुआबे वाल्यां नाल परोणे, परौहणे बण के आवण चाँईं चईंआ। सब दे खुल्ल्हे होण लोइणे, नेत्र अक्ख सुरमे संग मटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा तेरे लेखे पाईआ। चिट्टा कहे वाह मेरे सूरबीर सुल्तान, गोबिन्द तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द किहा मेरे पिछले ओह महमान, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। जिन्हां विच्चों डल्ले कीती पहचाण, बेपहचाण आप समझाईआ। तेरा लेखा उन्हां नाल, नाल नाल वड्याईआ। झगड़ा रहे ना शाह कंगाल, इक्को रंग देणे रंगाईआ। नौ नौ इंच दे होण रुमाल, वड्डा छोटा ना कोए बणाईआ। खब्बे हथ्थ होवण परवान, पारब्रह्म वेख वखाईआ। इक्की क़दम चल के हथ्थ रख के उत्ते कान, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जैकारा देण लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। पीला रंग कहे मैं गोबिन्द तेरी पोशाक, दिवस रैण तेरी सेव कमाईआ। ज़रा मेरे वल झाक, मैं आपणा आप वखाईआ। गोबिन्द किहा ओ मैं नहीं मेरे सिख तेरे साक, सन्बंधी दिते बणाईआ। ओह मेरे नालों पाक, पवित्र वेख वखाईआ। मैनूं ना समझीं गोबिन्द एह तत्तां वाली ख़ाक, जिस वेले गोबिन्द आया गोबिन्द विच समाईआ। ना कोई सेवक ते ना कोई चाक, मेला मेलां नाल इतफ़ाक़, नफ़ाक़ अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। ओह पीलिआ रंगा गोबिन्द नाल छूह के हो ना जावीं गुस्ताख़, गुस्ताख़ी मोहे कदे ना भाईआ। तैनूं फिराउणा शंकर दी जूह, परस राम दी हू, कृष्ण दी रजूह, करनाल वाल्यां जोड़ जुड़ाईआ। तेरा खेल सज्जे हथ्थ तों होणा शुरु, शहिनशाह वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नीला रंग कहे मेरे नीले वाले बांके, तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द किहा भुल्ल जाओ पिछले साके, अगला लेखा दयां दृढ़ाईआ। जो कुछ मेरा पिता पुरख अकाल आखे, ओहो रिहा सुणाईआ। जिस दा खेल होणा साचे, वज्जणी सच वधाईआ। हुण गोबिन्द तन वेखो सड़दा आंचे, अगनी रही तपाईआ। फिर आवां ते आवां नाल आपणे बापे, दूजा संग ना कोए बणाईआ। भर भर के टोह टोह के लभ्भ लभ्भ के आपणे लभ्भ लां साथे, गुरमुख जोड़ जुड़ाईआ। क्यों पुरख अकाल दी सलाह नाल शब्द गुरु ने लिख्या जिन्हां लेखा मस्तक धुर दे माथे, उन्हां होवे आप सहाईआ। एह मंत कोई ना वाचे, सन्त समझ किसे ना आईआ। जेहड़े मिल गए गुर तेग़ बहादर नूं चांदनी चौंक दिल्ली वाले अहाते, उन्हां नूं ओसे थाँ प्रगटाईआ । ओह नीले रुमाल बन्न्ह के आउणगे खब्बे हाथे, सदी चौधवीं दी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। काला रंग कहे गोबिन्द तूं वी बद्धी सी इक दिन तहिमत, काले रंग रंगाईआ। मैं तेरे नाल हो के सहिमत, सोहणी सेव कमाईआ। दुनियां तैनूं किहा अहिमक, जो उच्च दा पीर वेस वटाईआ। पुरख अकाल ने कीती रहमत, धुर संदेसा दिता सुणाईआ। ओह याद कर लै जिस वेले अक्ख नाल लाई सैनत, इशारा सिखां वल कराईआ। तेरी ज़रूर लेखे लावां कीती मेहनत, मज़दूरी सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द किहा उह काले रंग तैनूं बन्न्हणगे सिख नौ, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। तेरी कन्नी बन्न्ह के रखणगे इक इक्क दाणा जौं, जिस दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। जिस वेले पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सृष्टी दी दृष्टी अंदर आवे भौं, भूमिका वेख वखाईआ। ओस वेले मैनूं दिसदा आपणा इक नाउँ, निरँकार दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गोबिन्द किहा सुण काले रंग सालसी, तैनूं दयां जणाईआ। जिस वेले मैं पहले दिन पढ़ी सी फ़ारसी, पहला अक्खर रसना नाल गाईआ। पहला हरफ़ लिख्या सी इबारती, क़लम शाही जोड़ जुड़ाईआ। ओस वेले समझ दिती सी आरफ़ी, आरफ़ां माण वड्याईआ। फेर नज़ारा तक्कया जेहड़ी नानक ने कीती आरती, दीपक सोहणे वेख वखाईआ। फेर वेख्या जोत अगम्मी ओस परवरदिगार दी, जो परवरिश करे लोकाईआ। फेर सुणी आवाज़ ओस सरकार दी, जो हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। गोबिन्द किहा काले रंग तेरा रंग अपारा, अपरम्पर सुआमी तेरी वड्याईआ। तेरा लेखा कलयुग अन्त किनारा, अगला भेव कोए ना पाईआ। गोबिन्द तेरा बण सहारा, सच देवे माण वड्याईआ। जिन्हां गुरमुखां दे अंदर प्यारा, प्रेम प्रीती तोड़ निभाईआ। जिन्हां दा भारत विच अखाड़ा, दिवस रैण आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सज्जे हथ्थ तेरा मेल मिलाईआ। सत्त रंग कहिण असीं उठे सुत्ते, सुत्तयां लई अंगड़ाईआ। पूरब लेखे चुके, चुके रैण पढ़ाईआ। वेखीए पुरख अबिनाशी अचुते, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। लहिणे मूल रहे ना लुके, परदा देणा उठाईआ। गुरमुखो सत्त रंग कहिण साडे नाल ना रिहो गुस्से, पिछला गिला देणा गुआईआ। असां लग्गणा नाल तुहाडे जुस्से, जिस्म जमीर इक बणाईआ। फिर आपे सतारां हाढ़ नूं गोबिन्द सानूं पुच्छे, किस बिध आए चाँईं चाँईंआ। सब दे सज्जे खब्बे हथ्थ अग्गे जाण झुके, झुक झुक सीस निवाईआ। सब ने कहिणा असीं ओस दुआरे पुज्जे, जिथों होवे ना कदे जुदाईआ। जिस ने उजाड़ के आपणे झुग्गे, गुरमुखां दे घराने दिते वसाईआ। ओस दिन नूं सब दे प्यार हो जाणे समुचे, सांझा जोड़ जुड़ाईआ। सत्त रंग कहिण असीं ताअ दईए मुच्छे, प्रभू मुश्किल हल्ल कराईआ।

धन्न भाग जे तूं सानूं पुच्छें, अगला लेखा दएं दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं गोदी आपणी चुक्के, चाकर हो के सेव कमाईआ।

❋ २ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

सत्त रंग कहिण असीं बज्झणा नाल गुट, सज्जे खब्बे सोभा पाईआ। धुर दा नाता ना जाए तुट, तुट्टयां नाल गंढु पुआईआ। उजल होवे मुख, मुखीए गुरमुख नज़री आईआ। विछोड़े वाला मिटे दुःख, घर साचे वज्जे वधाईआ। जुग चौकड़ी रहे चुप, आपणा हाल ना किसे सुणाईआ। कलयुग वेख अन्धेरा घुप, आपणी लई अंगड़ाईआ। जिस ने गोबिन्द बणाया सुत, तिस अबिनाशी अचुत, चरण कँवल सरनाईआ। जो सरगुण तों निरगुण बदल के आया रुख, भेव अभेदा आप खुल्ह्ाईआ। सो सानूं देवे सुख, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सत्त रंग कहिण क्यों सानूं गुट नाल कीता इशारा, आशा दयां जणाईआ। एह शब्दी खेल दस्सदा रिहा तेई अवतारा, तरूं तरूं नाल दृढ़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद वेखदा रिहा नज़ारा, निज नैण अक्ख खुल्ह्ाईआ। नानक गोबिन्द जणाउँदा गया लारा, हुक्म संदेसा इक सुणाईआ। एह खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आप कराईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार चौवीवां अवतारा, चार जुग दा लेखा दए मुकाईआ। जन भगतां नाल बन्नू प्यारा, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। सति धर्म दा खोल्ह् दुआरा, चारे वरनां दए वड्याईआ। सत्त रंग कहिण सब ने करनी इक निमस्कारा, सीस इक जगदीश झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रुमाल कहिण असीं छोहणा तन वजूद, सत रंग साचा सोभा पाईआ। सब दा इक्ठा होणा इक महबूब, मुहब्बत विच आपणा मेल मिलाईआ। दीन मज़हब दी कट हदूद, शरअ ज़ंजीर देणी कटाईआ। झगड़ा मुका के ऊँच नीच, ज़ात पात आत्म ब्रह्म समझाईआ। सच धर्म दी दस्स के सूच, सिख्या इक्को देणी दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सत्त रंग कहिण असीं खुशीआं विच हसदे, हस्ती तक्क बेपरवाहीआ। एह खेल अलखणा अलख दे, लेखा लेख ना कोए मुकाईआ। नज़ारे वेखणे पुरख समरथ दे, जो साहिब स्वामी सोभा पाईआ। वेस तकणे नरेश अक्ख दे, पारब्रह्म प्रभ नज़री आईआ। भण्डारे वेखणे धर्म दुआरे हट्ट दे, जो हरि करता आप वरताईआ। सत्त रंग कहिण असीं आईए टप्पदे नच्चदे, नाच खुशीआं वाला

वखाईआ। जैकारे बोल पुरख अलख दे, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सारे इक्को घर वसदे, दूजा दर ना कोए बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ जाप जपदे, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। झगड़े मुक जावण आवण जावण जन्म कर्म पप्प दे, पतित पुनीत दए कराईआ। लहिणा मुका दे जगत तृष्ना मनमति दे, बुध्ध बिबेकी आप कराईआ। हिसाब किताब पूरे करने जो लेखे बिना दस्ख़त दे, खाते सब दे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेल मिलाए सच दुआर इक्ठ दे, इक्ठे हो के काठ कूड़ा अगनी देणा जलाईआ।

❊ २ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठुवाल ❊

२७३ सतिगुर शब्द कहे ओ हाढ़ू सब कुछ कर जा हड़प्प, आपणा पेट भराईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे तड़प, धड़कण ना कोए मिटाईआ। दीन मज़ब रहे भटक, अगनी अग्ग लगाईआ। आपणा खेल कर चटक, चार कुण्ट फोल फुलाईआ। २७३

२१ सृष्टी वेख होई बेखटक, खटका रिहा ना राईआ। चार कुण्ट चढ़या कटक, कटाकश कूड़ ना कोए मिटाईआ। मनुआ मन होया कमबख्त, कामना विच दुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां चुकणा वक्त, वेला दए गवाहीआ। तेरा हुक्म इक्को फ़कत, फ़िकरे सारे दए भुलाईआ। नेत्र रोवे धरनी धरत, धौल दए दुहाईआ। जे साहिब आया परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। मेरी पूरी करे शर्त, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। कामना रहे कोई ना हरस, हवस देवे गुआईआ। बेनन्ती मन्जूर करे अर्ज़, आरज़ू शहिनशाहीआ। आपणा पूरा करे फ़रज़, फ़ैसला हक़ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव इक खुल्लाईआ। सतिगुर शब्द कहे हाढ़ आपणी ला दे चोट, चोटी वाले वेख वखाईआ। सब दी नट्टी पा दे गोट, सार पासा दए दुहाईआ। जीवां बुद्धी वेख खोट, कुकर्म कांड हल्काईआ। इक्को तक्क निर्मल जोत, जोत जोत रुशनाईआ। कूड़ी मेटे कोई ना सोच, सच सुच्च ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे हाढ़ तेरा इक अड़िक्का, अटकण धुर दी नज़री आईआ। जन भगत सुहेला विछड़िआ चिर का, चिरी विछुन्ने मेल मिलाईआ। लहिणा देणा पूरा कर बाप पिर का, पतिपरमेश्वर हो सहाईआ। घर सुहञ्जणा कर थिर का, थिर दरबार वज्जे वधाईआ। जन भगतां मारे कोई ना झिड़कां, झंजट कूड़ा देणा मुकाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे हाढ़ ना बण नाबीना, नबीआं लै उठाईआ। हसन हुसैन दा वेख पसीना, ऐली नाल गवाहीआ। लेखा जाण जगत ज़मीना, ज़ामन हो के फेरा पाईआ। तेरे हुक्म दा चढ़या उह महीना, जिस विच महबूब मुहब्बत विच समाईआ। हाढ़ कहे मुहम्मद अहमद दा वेख्या इक आईना, ऐन आईना नज़री आईआ। जां तक्कया वजूद है ना, वजह सक्कया ना कोए समझाईआ। धुर कलमे नाल किहा की कहिणा, कहि के दे जणाईआ। मुहम्मद किहा मैं तैथों सब कुछ लैणा, लै के खुशी बणाईआ। परवरदिगार किहा आह अगम्मी लै गहिणा, तन वजूद नाल छुहाईआ। तेरी सेवा करे कुछ सैना, सैनापत वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। हाढ़ कहे मैं मुहम्मद अहमद तक्कया इक्क, इक इक्क विच समाईआ। दोहां ने लिख्या धन्न प्रभू तेरा सिख, जो सिख सिख विच वड्याईआ। प्रेम तों बाहर हित, हित हित विच नवित्त नित रिहा समाईआ। जगत जुआनी जित्त, भार लाह के पिठ्ठ, पन्ध मुका के सवा गिठ्ठ, झगड़ा मुका के पत्थर इट्ट, पातण इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। हाढ़ कहे मैं जुग चौकड़ी रिहा गुंगा, मुख बचन ना कोए सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दीन मज़हब दा लैंदे रहे भुंगा, लब विच आपणी वंड वंडाईआ।
२७४ एसे कारण होया कलयुग अन्धेर धुंदा, कूड़ी धुंद ना कोए मिटाईआ। शरअ विच रहे कोई ना गुंडा, गरदश आपणी सर्ब गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। हाढ़ कहे मेरे अंदर गोबिन्द कढया हाढ़ा, हाढ़ी अन्त वेख वखाईआ। पुरख अकाल तक्कया लाड़ा, लाड़ी नाल ना कोए सुहाईआ। सोहणा लावे अखाड़ा, सुरती शब्द काहन नचाईआ। जन भगतां रंग चाढ़े गाढ़ा, अग्गे पिच्छे रुक कदे ना जाईआ। सब दा पूरा कर के हाढ़ा, हर हिरदा खोज खुजाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़ा, नाड़ी नाड़ी डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां दे के इक इशारा, इशारे दा सहारा आप अखवाईआ।

२१

✵ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✵

पुरख अकाल शब्द अगम्मी कहिणा, बिन अक्खर निरअक्खर धार विच्चों प्रगटाईआ। गोबिन्द वेख आपणे नैणां, जिस लोचन नूं समझे कोए ना राईआ। अबिनाशी करते तेरा देणा, निरवैर पुरख झोली पाईआ। साचे भगतां गुरमुखां संग रहिणा,

हरिजन मेला सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्डी वड्याईआ। गोबिन्द वेख अगम्मी धार, हरि करता आप दृढ़ाईआ। चरण झुकदे वेख तेई अवतार, बिन सीस जगदीश सीस निवाईआ। निउँ निउँ सजदे करन ईसा मूसा मुहम्मद बरखुरदार, हक़ीक़त विच हक़ीक़ी राह जणाईआ। निरगुण नानक सरगुण नाता तोड़ संसार, दर ठांडे सोभा पाईआ। भगत सुहेले धुर दी धूढ़ी चरण लावण छार, मस्तक आपणा आप छुहाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर करन दीदार, बिन दीद ईद चन्द रुशनाईआ। साचा वक्त सुहञ्जणा, साहिब सुआमी सुहाए विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी दर बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा रिहा वखाईआ। गोबिन्द वेख लै आपणा लेखा, लिख्त विच कदे ना आईआ। एह खेल पुरख अबिनाशी करे कराए जो वस्से सचखण्ड देसा, दिशा वंड ना कोए वंडाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी नित नवित्त सरगुण निरगुण जिस ने रख्या चेता, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करता बण के खेवट खेटा, नईआ नौका जगत दुनी वेख वखाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार लोकमात सब दा पूरा करे ठेका, अग्गे मुणिआद ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे गोबिन्द सुत, दुलारे दयां जणाईआ। उठ वेख तेरी मौली रुत, जिस नूं जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग मैं हर घट अंदर लेखा रख्या लुक, पतिपरमेश्वर हो के आपणा नूर ना कोए चमकाईआ। जुग चौकड़ी अवतार पैगम्बर गुर मैनूं रहे झुक, सजदयां विच सीस सीस निवाईआ। अन्त वेख आपणा देस परदेसीआं दा पैंडा गया मुक, तत्तां वाला गुरु रहिण कोए ना पाईआ। इक्को सतिगुर शब्द अगम्मी तेरी धार जावे उठ, जोती जोत डगमगाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म हो के लए पुच्छ, पारब्रह्म ब्रह्म परदा दए चुकाईआ। अमृत रस निझर धार बूँद स्वांती बिना जगत प्याले देवे उह घुट, नाम खुमारी धुर दी आप चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा परवरदिगारा सांझा यारा नर निरँकारा आप दृढ़ाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल मेरे पिता पुरख, पुरखोतम दयां जणाईआ। बिना साचिआं गुरमुखां तों किते नहीं मिलदा सुख, दो जहान कम्म किसे ना आईआ। मैं इन्हां प्यारयां नूं गोदी लवां चुक, बच्चे नीहां हेठ दबाईआ। तेरे चरण कँवलां विच देवां सुट, जिथ्थे कदे ना होवे जुदाईआ। जे कदी गोबिन्द तों फेर लवें पुच्छ, तैनूं अगला भेव दयां समझाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी मेरे वास्ते मेरे सिख सब कुछ, दूजा नज़र कुछ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पुरख अकाल कहे सुण गोबिन्द मीते, मित्र प्यारे दयां दृढ़ाईआ। मेरे आदि जुगादी ठांडे सीते, शब्दी धार तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाए नीके, नन्हे नन्हे बाल सुहाईआ। हुक्म संदेसे नाम कलमे देंदा रिहा विच हदीसे, हज़रतां कर पढ़ाईआ। अन्तिम सब दा लेखा सदी चौधवीं बीते, अग्गे होर ना कोए वधाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल सब थाईं करे आप तस्दीके, जगत वसीका कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे मेरे परम पुरख प्रभ दयाल, दीनन हो के दयां जणाईआ। मैनूं वेख लैण दे आपणे लाल, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। तेरे भगत सुहेले लवां भाल, जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलाईआ। जिन्हां नूं कदे पोह ना सके काल, चुरासी विच ना कोए भुआईआ। जद वसण वसण सचखण्ड तेरी धर्मसाल, सच दुआरे सोभा पाईआ। जे तूं निरगुण सरगुण हो के आवें ते मातलोक आवण तेरे नाल, जगत जुग जुगत देणी दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची आस रखाईआ। गोबिन्द कहे दरगाह साची दे परवरदिगार, परम पुरख तेरी वड्याईआ। जे तूं सब दा सांझा यार, लाशरीक इक अख्वाईआ। जल्वागर नूर उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। तेरा सिफ्तां विच इज़हार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान रही दृढ़ाईआ। ज़रा खोल्ह के वेख आपणा किवाड़, बन्द ताकी कुंडा लाहीआ। क्यों प्रभू तेरे भगत सड़न विच अगनी हाढ़, अमृत मेघ दे बरसाईआ। जे गोबिन्द तेरा सच्चा सुत्त दुलार, शब्दी जोती हो के खुशी मनाईआ। मेरिआं प्यारयां सिखां नूं बिन हथ्थां लै उठाल, बाहवां दी लोड़ रहे ना राईआ। गुरमुख ना कोई शाह ना कोई कंगाल, प्रेम प्यारा नज़री आईआ। ऐ प्रभ मेरे गुरसिखां दा बण दलाल, तत्तां वाले गुरु दी लोड़ रहे ना राईआ। निरगुण हो के आत्मा दा मालक हो के परमात्मा कर संभाल, सब थाईं लहिणा देणा दे चुकाईआ। त्रैगुण माया रहे ना कोए जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद बेपरवाहीआ। चारों कुण्ट कूके काल, दह दिशा दए दुहाईआ। कोई सके ना सुरत संभाल, साध सन्त तेरी मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। साचा दिसे ना धन माल, नाम ख़ज़ाना हथ्थ किसे ना आईआ। परम पुरख परमात्म आपणयां भगतां दे अंदर आपणा दीपक बाल, जोती जोत कर रुशनाईआ। गुरमुख मेरे ना होण बेहाल, बिहबल सारे लैणे कराईआ। चार जुग तों वखरी चलदे चाल, पिछला लहिणा दे मुकाईआ। अन्तर निरंतर निरगुण निरगुण हो निहाल, सरगुण सरगुण मेला सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा वेख वखाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द मैं वेख होया हैरान,

हैरानी इक आईआ। चार जुग दा भुल्ल ज्ञान, विद्या कूड़ जगत लोकाईआ। निज आत्म धरे ना कोई ध्यान, रसना पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। पंडत पांधे मुल्ला शेख़ बणे शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। निरगुण नूर जोत जगे ना कोई महान, अन्ध अन्धेर ना कोए गवाईआ। शब्द नाद सुणे ना कोई धुनकान, अनहद नादी नाद ना कोए सुणाईआ। आत्मा दी करे ना कोए पहचान, परमात्मा दरस कोए ना पाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया धरती सब दी होई बीआबान, हरी सिंच ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। गोबिन्द कहे एह नहीं मन्ज़ूर, सच दयां जणाईआ। सारयां विच नहीं क़ुसूर, क्यों फ़तवा रिहा लाईआ। उठ वेख तेरे भगत तेरे मज़दूर, जो चाकरी तेरा नाम सेव कमाईआ। जिन्हां दे अंदर तेरे नाम दी तूर, तुरिया नूं थल्ले छड्डके, दसम दुआरी नूं पैरां थल्ले दब्बके, तेरे शब्द दी मंज़ल चढ़ के, तेरी जोत विच समाईआ। ओह ना मूर्ख ना मूढ़, जिन्हां ने नेत्र नैण तक्कया उन्हां नूं मिल्या प्रकाश ज़रूर, जो तुरत तेरा दर्शन पाईआ। तूं साहिब हाज़र हज़ूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। गोबिन्द कहे प्रभ कलयुग अन्त सारे नहीं झूठे, शब्दी धार जणाईआ। चुरासी विच्चों गुरमुख मेरे बूटे, जो तेरे चरणां विच लगाईआ। तेरे नाम दे लैंदे हूटे, हुलारा प्रेम रस रखाईआ। तैनूं तक्कण हर कूटे, हर घट रमिआ नज़री आईआ। उन्हां दे अंदर इक्को सूझे, जगत समझ दिती गुआईआ। निरगुण धार अगम्मी बूझे, बुझया दीपक रहे जगाईआ। ओह बेशक वसदे साढे तिन्न हथ्थ काया माटी कूजे, मन्दिर तेरे सोभा पाईआ। उन्हां दे अंदर भाउ नहीं कोई दूजे, दुतिया धार ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे दुलारे बच्चे, सच दयां समझाईआ। जेहड़े प्रेम तेरे विच रत्ते, रतन अमोलक दयां वखाईआ। भाग लगा के पंज तत्ते, त्रैगुण डेरा देवां ढाहीआ। उन्हां नूं दरस देवां निज अक्खे, दोए लोचन बन्द कराईआ। आत्म परमात्म नाते जोड़ के सके, सगला संग निभाईआ। उन्हां दी पैज तेरा पिता आपे रखे, गोबिन्द तेरे सुत दुलारे गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। उह भाण्डे तन रहिण ना कच्चे, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। जिन्हां दे अंदर लूं लूं रचे, साढे तिन्न करोड़ दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सुण के बात गुफ्त शनीद, वज्जी हक़ वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करन दीद, दीदा दानिस्ता दर्शन पाईआ। जिस दी सिफ्तां विच करदे आए तमहीद, सोहल्यां विच गाईआ। जिस दे बणे जगत अज़ीज़, नन्हे बच्चे रूप वखाईआ। जिस ने नाम कलमा दिती तमीज़, तबीअत दिती बदलाईआ। जो दस्सदा रिहा हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ।

उह खेल करे जगदीश, जागरत जोत नूर रुशनाईआ। जिस नूं गोबिन्द तक्कया बीस बीस, बीस बीसा बेपरवाहीआ। जो लख चुरासी जाणे नीत, घट घट अंदर खोज खुजाईआ। जिस झगड़ा पुआया मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ गुरुदुआर वंड वंडाईआ। सो लेखा जाणे हस्त कीट, चारे खाणी फोल फुलाईआ। जन भगतां कदे ना देवे पीठ, करवट आपणी लए बदलाईआ। गोबिन्द धाम वखावां उह अनडीठ, जिस नूं जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिथ्थे इक्को ढोला इक्को नाम इक्को कलमा होवे गीत, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा दए वखाईआ। गोबिन्द किहा प्रभ मैं तेरा आदि जुगादी भेती, शब्दी गुर अख्वाईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरी जाणा नेकी, जो निक्कयां वड्डयां नाल कराईआ। उह सब दा मालक गुर अवतार पैगम्बर बणा परदेसी, लोकमात सेव कमाईआ। किसे दे मोढे धर के खेसी, किसे नूं जंगलां विच भुआईआ । किसे दा खेल किसे दा मेल किसे दा हेती, किसे दा नेती, किसे आपणा नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वाहवा दर तेरे वजदी रहे वधाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा सम्मत आया चार, चार जुग दा लेख वेख वखाईआ। दर झुकदे तेई अवतार, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ । पैगम्बर करन पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चरण धूढ़ी लावण छार, शहिनशाह ओट रखाईआ। देवत सुर हाहाकार, गण गंधर्ब रहे कुरलाईआ। दो जहान वेखण आपणी धार, ब्रह्मण्ड खण्ड राह रहे तकाईआ। की खेल करे निरँकार, हरि करता वड वड्याईआ। धुर संदेसा देवे आपणी धार, सो पुरख निरँजण आपणा आप प्रगटाईआ। हरि पुरख निरँजण मीत मुरार, एकँकार आपणा रंग रंगाईआ। आदि निरँजण जोत करे उज्यार, अबिनाशी करता परदा लाहीआ। श्री भगवान दे दीदार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा मेल मिलाईआ। सचखण्ड दुआरा कर त्यार, थिर घर साचा दए समझाईआ। भगत सुहेले लए उठाल, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप फोल फुलाईआ। चुरासी विच्चों करे प्यार, चारे खाणी आपणा भेव चुकाईआ। नौ दस यारां बीस तीस चार दर रहे ना कोए हिसाब, लेखा सब दा पूर कराईआ। निरअक्खर धार विच्चों वेखे उह बाब, जिस दा हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द उठ वेख खोल्ह के ताकी, तकवा इक्को दयां जणाईआ। तेरा लहिणा देणा अन्त अख़ीर बाकी, दीन दयाल हो के झोली पाईआ। जो धुर दी धार शब्द अगम्मी आखी, आख़र पूरी दयां कराईआ। कलयुग मेट अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द करां रुशनाईआ। तेरे प्यार दी नाम सौग़ाती, चार वरनां दयां वरताईआ। मनमति रहिण ना दयां नार कमज़ाती, कुलखणी घर घर अंदरों दयां कढ्ढाईआ। झगड़ा रहिण ना देवां

ज़ात पाती, दीन मज़हब ना कोए लड़ाईआ। इक्को कलमा देणा सफ़ाती, सफ़ा मलेछां दयां उठाईआ। मेरी याद कर लै बिन अक्खरां वाली पाती, जो पत्रका बिन कागज़ तैनूं वखाईआ। धुर संदेसा नाम अगम्मी बाती, बातन दिती दृढ़ाईआ। शब्दी रूप तेरी हयाती, इक्को जोत जोत समाईआ। मंज़ल वेख अगम्मी घाटी, जिस दा अन्त कोए ना पाईआ। बिन पुरख अकाल दीन दयाल दूजा दिसे कोई ना साथी, सगला संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। गोबिन्द कहे लहिणा देणा जग, जगजीवण दाते तेरी वड्याईआ। मैं मँग मँगणी अज्ज, हाढ़ सतारां दए गवाहीआ। पहलों दीन दुनी विच कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे हद्द, माया ममता मोह विकार रहिण ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन मानव ज़ाती बणा आपणी यद्द, आत्म परमात्म दे समझाईआ। दीन मज़हब दा झगड़ा हर हिरदे विच्चों कढ्ढ, दह दिशा ना कोए लड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारी सृष्टी गावे छन्द, सहिंसा रोग रहे ना राईआ। करवट बदल के आपणी कंड, कन्ढ्ढा कलयुग पार कराईआ। जन भगतां पा दे आपणी ठंड, अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के आपणा दरस दिखाईआ। जे गोबिन्द नाल तेरी गंढ, ते मेरा लेखा याद कर पुरी अनन्द, सरसे वाली दुहाईआ। ओह मेरे लाडले चन्द, जिन्हां दा खुशी बन्द बन्द, चुरासी वाला मेट के पन्ध, दर तेरे सोभा पाईआ। इन्हां दे चरणां थल्ले वहिंदी गोदावरी गंग, जमना सुरस्ती नैणां नीर वहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव इन्हां तों मँगां रहे मँग, प्रभ दा दर्शन दयो कराईआ। इन्हां दे अन्तर रोवण पंज, काम क्रोध लोभ मोह हँकार कूक कूक सुणाईआ। त्रैगुण माया होई दंग, रजो तमो सतो दर तों बाहर बैठी वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकल मैं तेरे पिच्छे खण्डे वाला कीता जंग, खड़ग कटार हथ्थ उठाईआ। अकाल अकाल पुआई डंड, डंका दो जहान वजाईआ। हुण क्यों नहीं हुंदा भगतां संग, आपणा रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा पिंड, दूजा नगर ना कोए दिसाईआ। तत शरीर पंज मात पिता दी बिन्द, आत्म तेरा रूप नज़री आईआ। क्यों नहीं वजाउँदा आपणे नाम दी घर घर किंग, तत्तां तों परे आपणे परपंच दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। पुरख अकाल कहे मैं पूरा करां इक़रार, दाअवे नाल जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करे ना कोए तकरार, इसरार विच ना कोए आईआ। सब दे अंदरे अंदर देवां अगम्मी गुफ्तार, गुफ्त शनीद करां शनवाईआ। निरगुण नूर मिलावां सांझा यार, जो जल्वागर खुदाईआ। जो वस्से सच महल अटल उच्च मुनार, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे रवि ससि सूरज चन्द ना कोए उज्यार, मण्डल मण्डप नज़र कोए ना आईआ। एका नूर एका जोत एका खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, सच आपणा रंग रंगाईआ। गोबिन्द कहे प्रभू की रंग रंगावेंगा, मैनूं दे जणाईआ। की मेरे गुरमुख गोद बहावेंगा, आपणी गोद टिकाईआ। की जुग जन्म दे विछड़े मेल मिलावेंगा, मानस मानुख लेखे लाईआ। की साची मंज़ल इक चढ़ावेंगा, जिथ्थे नज़र कोए ना आईआ। की जोती जोत मिलावेंगा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। की शब्दी धुन सुणावेंगा, अनहद राग अलाईआ। की अमृत जाम प्यावेंगा, बिन बुल्लां रस चखाईआ। की दरगाह साची बहावेंगा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द, सो मन्ना जो मन्नावेंगा, मनसा तेरी पूर कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग आप वखाईआ। गोबिन्द कहे प्रभू मैं कोई करना नहीं झेड़ा, झगड़ा अवर ना होर वखाईआ। चुरासी वाला बदल दे गेड़ा, आपणा हुक्म वरताईआ। जेहड़ा हुक्म कीता नंदेड़ा, अन्त दयां सुणाईआ। उस दा करना पए नबेड़ा, कूड़ी वंड ना कोए जणाईआ। मैं ढईआ कर के बैठा रिहा जेरा, ज़ेर ज़बर ना कोए जणाईआ। जिस कारण पाया फेरा, आपणा वेस वटाईआ। हुण पुरख अकाल कर दे मेहरा, मेहरवान तेरी सरनाईआ। दीन दयाल सदी चौधवीं चार कुण्ट वेख अन्धेरा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया भरया बेड़ा, कन्ढी बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द मैं अवतार पैगम्बरां देण लग्गा सद्दा, सदी चौधवीं विच जणाईआ। निरगुण धार उठो जिस धार विच्चों तुहाडा दीपक जगा, जोत नूर होया रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम मारो निगाह, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जेहड़ी मेरे मिलण दी दस्स के आए बिधा, ओस मार्ग ते चले कोई ना सिध्धा, साची मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। जगत विकार हँकार विभचार दुराचार अंदर मुल्ला शेख़ मुसायक विका, आपणी क़ीमत गए गुआईआ। बचया रिहा ना कोई वड्डा निक्का, काम क्रोध विच हल्काईआ। जो कलमयां वाला बदलदा रिहा सिक्का, नाम वाली मोहर लगाईआ। उहदी रही कोई ना दिशा, साची वंड ना कोए वंडाईआ। सब नूं भुल्ल गया पुरख अकाल सब दा पिता, इक्को जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। भेव अभेदा सच खुल्हावांगा। चारे वेदां पन्ध मुकावांगा। अछल अछेदा हो के वेख वखावांगा, जिन्हां दा अंदरों बदलया दीदा, निगाह उन्हां दी आप बदलावांगा। जिन्हां ने कूड़ी रसना खाधा सीधा, तिन्हां नूं चुरासी विच भुआवांगा। जिन्हां गोबिन्द तेरे प्यार दा बीज बीजा, फल तिन्हां फुलवाड़ी आप लगवांगा। मैनूं भगतां पालण दी सदा रीझा, पाल के लोकमात वखावांगा। साची अंदर देवां तमीज़ा, बिन विद्या आप दृढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखावांगा। सुण के शब्द अगम्मी बोले सत्त रंग, प्रभ तेरी की वड्याईआ । असीं गोबिन्द वेख्या

२८१

२१

पुरी अनन्द, माछूवाड़े ध्यान लगाईआ। जिस दे नाल साडा संग, संगत बण के झट लँघाईआ। उह वंडदा गया वंड, हिस्से धुर दे तेरी झोली पाईआ। साडा नाता जोड़ के तोड़ के जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज नालों तुड़ाईआ। इक्को तेरी सेज विछा के पलँघ, सच सिँघासण गया सुहाईआ। जिस वेले अन्त अख़ीर नीले दा खोल्ह्या तंग, पाखर ज़ीन फेर ना पाईआ। दोवें हथ्थ जोड़ के सीस निवाया वरभण्ड, निउँ निउँ तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। मैं पुरख अकाल तेरा सुत दुलारा अगम्मी चन्द, गुरमुख मेरे चन्द नज़री आईआ। जे मैं तेरा दुआरा जावां लँघ, गुरमुख मेरे पिच्छे आवण चाँईं चाँईंआ। इन्हां दा विछोड़ा मैं सहि ना सकां रंड, अकेला रहिण कदे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा रिहा सुणाईआ। पुरख अकाल धुर दा शब्द सुणा बोली, अनबोलत राग अल्हाईआ। गोबिन्द वेख अगम्मी डोली, बिन कहारां रिहा प्रगटाईआ। जिथ्थे पावे कोए ना रौली, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। नज़र आवे कोई ना धौली, धरनी धरत धवल ना कोए वखाईआ। सगन बन्न्हे कोई ना मौली, रंगण रंग ना कोए रंगाईआ। परदा रहे कोई ना ओहली, भेव अभेद रिहा खुल्हाईआ। तूं सदी चौधवीं आपणी रुत वेखीं मौली, मौला विच मिल के मौला रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गोबिन्द कहे की गुरमुख मेरे तारेंगा, तारनहार देणा जणाईआ। की उन्हां पैज सुआरेंगा, बिन तत्तां पार कराईआ। की उन्हां जोत उज्यारेंगा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। की उन्हां शब्द अनादी धुन धुनकावेंगा, अन्तर राग सुणाईआ। की उन्हां अमृत रस निझर झिरना धुर दी धार झिरावेंगा, बूँद बूँद विच्चों टपकाईआ। की उन्हां दा खेड़ा मन्दिर इक उसारेंगा, जिस दी नींह ना कोए उखड़ाईआ। की चार वरनां अठारां बरनां आपणे दर बहावेंगा, बौहड़ी बौहड़ी करे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। गोबिन्द, सच शब्द सुणाउँदा हां। भेव अभेद खुलाउँदा हां। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिछला लेख वेख वखाउँदा हां। गुर अवतार पैगम्बर जो धरदा रिहा भेख, निरगुण सरगुण वेस वटाउँदा हां। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जो लिखदा रिहा लेख, निरअक्खर विच्चों अक्खर वंड वंडाउँदा हां। लोकमात वखाउँदा रिहा देस, लख चुरासी अंदर सोभा पाउँदा हां। आदि जुगादी रहां हमेश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाउँदा हां। विष्न ब्रह्मा शिव महेष गणेश, सेवक सेवा सच लगाउँदा हां। आपणा दस्सया किसे ना भेत, बेअन्त बेअन्त बेअन्त अखवाउँदा हां। जिस नूं किरपा कीती ओस ने ल्या चेत, सब नूं याद विच अलाउँदा हां। जिस वेले साचे भगत देवां भेज, ओस वेले लोकमात आपणा आप प्रगटाउँदा हां। उन्हां दे अंदर माणा सेज, काया काअबे डेरा लाउँदा हां। जोती जलवा दे के तेज, अन्ध

अन्धेर गवाउँदा हां। आत्म परमात्म दस्स के भेत, बजर कपाटी कुण्डा लाहुंदा हां । घर सुआमी लैणा वेख, बाहरली भटकना जगत मिटाउँदा हां । जन्म कर्म दी बदल के रेख, घर आपणा इक दृढ़ाउँदा हां। नज़री आवां नेतन नेत, निज आत्म परमात्म हो के सोभा पाउँदा हां। उन्हां दा काया खेड़ा कदे ना होवे खेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच अपणा परदा लौहन्दा हां। गोबिन्द कहे की पर्दा प्रभू लाहवेंगा। दीन दयाल दया कमावेंगा। जिन्हां दी मैं करदा रिहा प्रितपाल, प्रितपालक हो के गोद उठावेंगा। सचखण्ड वसा के सच्ची धर्मसाल, सच्ची दरगाह इक जणावेंगा। जिथ्थे ना कोई शाह ना कंगाल, ज़ात पात ना वंड वंडावेंगा। जिधर वेखां ओधर दिसें नाल, हर घट रमिआ नज़री आवेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप लिखावेंगा। गोबिन्द, चौथे जुग दा आया हाढ़, हाढ़ा कढ्ढे लोकाईआ। फिरी दरोही जंगल जूह उजाड़, टिल्ले पर्बत पहाड़ रहे कुरलाईआ। सांतक सति ना दिसे कोई पुरख नार, नेत्र नैण नीर रहे वहाईआ। मुहब्बत विच दिसे ना कोई यार, याराने कूड़े कूड़ लोकाईआ। गुर चेले दा रिहा ना कोई प्यार, ठग्गी चोरी घर घर डेरा लाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ हाहाकार, गुरुदुआर रोवण मारन धाईंआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सुणे ना कोई गुफ्तार, अञ्जील क़ुरान काया कुन्हा परदा ना कोए उठाईआ। मन ममता मोह चलया विकार, हँकार गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। धुर दी मंज़ल जगत होई दुष्वार, दुश्मण अंदरों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। जो लिख्त दे के आए गुरु अवतार, पैगम्बर पैरिआं विच सुणाईआ। उह भुल्लया सर्ब संसार, सुंञी दिसे लोकाईआ। हुण सुत दुलारा शब्दी करना त्यार, त्रैगुण अतीता आप प्रगटाईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी इष्टी वेखणी चार कुण्ट दह दिशा आपणी वार, वारता सब दी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द तूं तत्तां वाला नहीं शरीर, तन वजूद नजर कोए ना आईआ। तूं कोई अक्खरां वाला नहीं पीर, पैगम्बरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। तेरी कोई तत्तां वाली नहीं तस्वीर, तसबी माला नज़र कोए ना आईआ। तेरी कोई विद्या वाली नहीं ज़मीर, बुद्धी वाली ना कोए चतुराईआ। तेरी कोई सृष्टी वाली नहीं तक़दीर, हरफ़ां वाली तहिरीर बणाईआ। तूं कोई शहिनशाह नहीं अमीर, माया ममता विच हल्काईआ। तूं कोई चिन्ता वाला नहीं दिलगीर, ग़मी विच कदे ना आईआ। तूं कोई टुकड़े मँगण वाला नहीं फ़कीर, घर घर अलख जगाईआ। तूं कोई गोबिन्द काग़ज़ां वाली नहीं बीड़, सिर ते चुक्कके भज्जण वाहो दाहीआ। तूं कोई द्वैत वाली नहीं पीड़, दीन मज़हब दा झगड़ा देवें पाईआ। तूं कोई फुट्टण वाली नहीं ख़मीर, सद आपणा रंग रंगाईआ। दृष्ट खोल्ह के बोल गया कबीर, तोबा तोबा तेरा नाम खुदाईआ।

जे तूं दीन दुनी दी बदल देवें तक़दीर, तदबीर आपणी दएं समझाईआ। पुरख अकाल जे तूं पातशाह ते गोबिन्द तेरा वज़ीर, बिना गोबिन्द तों तेरा लोकमात दा मसला हल्ल ना कोए कराईआ। वेख जूठयां झूठयां दी वधी भीड़, गुरुआं अवतारां पैगम्बरां दी सिख्या कम्म किसे ना आईआ । अग्गे वास्ते दीन मज़हब उत्ते मार दे लकीर, झगड़ा ऊँच नीच रहे ना राईआ। शरअ दी कट ज़ंजीर, आत्म परमात्म दे समझाईआ। तेरे कोल नाम दा खण्डा शब्दी शमशीर, हुक्म तेरा धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं एथे कर दे अखीर, अग्गे वधण कोए ना पाईआ। सतिजुग साचा कर तामीर, मता भगतां नाल रखाईआ । गुरसिख गोबिन्द दे बग़लगीर, यार धुर दे लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लए मिलाईआ। गोबिन्द कहे, पुरख अकाल चार जुग तूं रिहों लुकदा, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर तैथों मिन्नतां विच तेरा नाम रिहा पुछदा, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। तूं इशारा देंदा रिहों इक छोटी छोटी तुक दा, नाम नाम विच्चों बदलाईआ। तेरा भेव कोए ना बुझदा, सारे ढोले गए गाईआ। तत शरीर वज़ूद अंदर आ के तेरे प्यार विच रुझदा, नाता जगत नाल कराईआ। तूं फेर करें खेल होर दा होर कुझ कुझ दा, परदा परदयां विच्चों चुकाईआ। किसे
२८३ गुर अवतार पैगम्बर नूं समझ नहीं दिती किस तरां लेखा मुकणा अन्तिम कलयुग दा, इशारिआं विच सारे गए सुणाईआ। जोती २८३
२१ जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, परदा उहला दे चुकाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द २१
मैं बड़ा वल छल धारी, अछल अछल्ल अख्वाईआ। मैं निरगुण नूर जोत निरँकारी, निरवैर वड वड्याईआ। मैं जुग जुग सरगुण तत नाल लावां यारी, अन्तर नाता ना कोए तुड़ाईआ। जे परत के आवां दूजी वारी, ते नाम आपणा लवां बदलाईआ। एह खेल अपर अपारी, शास्त्र सिमरत कहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मेरे दर दे जगत पनिहारी, नित नवित्त सेव कमाईआ। किसे दी बोदी किसे दी कटाई मुच्छ दाढ़ी, किसे नूं केसां नाल वड्याईआ। सारयां दा लेखा अन्तिम एसे सतारां हाढ़ी, हाढ़ा कढ्ढके देण दुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दे प्रगटाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ मेरा वेख बग़ीचा, गुरमुख गुरसिख नज़री आईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं ऊचां नीचां, राउ रंक ना वंड वंडाईआ। जिथ्थे वड्याई नहीं शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता, ग्रन्थां हिस्सा ना कोए वंडाईआ। उन्हां दा अन्तर निरंतर तेरे नाम नाल होया ठांडा सीता, उह जगत वाली छड्ड गए पढ़ाईआ। जिन्हां ने अमृत रस मेरे प्रेम दा पीता, अठसठ तीर्थ डेरा गए ढाहीआ। उन्हां दे अंदर इक्को हदीसा, हज़रत नूं मिल के वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेख त्रैगुण अतीता, त्रैभवन धनी तैनूं दयां वखाईआ। पुरख अकाल वेख लाल दुलारे, लालन

दयां जणाईआ। जेहड़े चार जुग रहे कँवारे, बिना परमात्म दे आत्म ना सके प्रनाईआ। ओह छड्ड गए काया महल्ल मुनारे, जगत लोभ ना कोए हल्काईआ। उन्हां जन्म ल्या विच संसारे, सरसे दा लेखा दे मुकाईआ। उन्हां कोई कढ्डणे नहीं तेरे अग्गे हाढ़े, मिन्नतां विच ना कोए मनाईआ। गोबिन्द दे सिख गोबिन्द दे लाड़े, दर गोबिन्द दे सोभा पाईआ। जिथ्थे ना कोई पुरख ना कोई नारे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेई अवतारां दे इशारे, ईसा मूसा मुहम्मद अक्ख उठाईआ। नानक बण के गया लिखारे, लेखा लिख्या बेपरवाहीआ। जिस वेले अर्जन ने सतिनाम लिख्या निरअक्खर दी धारे, अक्खर विच बदलाईआ। ओस नूं नज़री आया नूर जोत निरँकारे, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल मैं इक्को मँगण वाला तेरे दुआरे, दूजा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर निगाह इक उठाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ वेख लै मेरे दूल्हे, जिन्हां दुल्हन तेरी जोत प्रनाईआ। ओह तेरे शब्द दे झूलदे झूले, जो तन माटी ख़ाक विच रखाईआ। मेरे कौल कदे ना भूले, अभुल्ल भुल्ल विच कदे ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणा बदल दे असूले, असलीअत तैनूं दयां समझाईआ। जिंनां चिर साचे सिख दरगाह साची ना क़बूलें, आपणी ख़ुशी बणाईआ। चरण धूढ़ी ना देवें धूले, धौल धवल ना कोए वड्याईआ। तूं साहिब सुआमी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार कन्त कन्तूहले, क़ादर करता नज़री आईआ। की होया जे गोबिन्द तेरे कोलों आपणा लहिणा देणा वसूले, झगड़ा अवर ना कोए रखाईआ। दीन दयाल आपणा शब्द हुक्म दे माकूले, महबूब देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। गोबिन्द कहे वेख गुरमुख सोहणे सजे, सज्जण धुर दे दयां जणाईआ। जिन्हां दे पड़दे लैणे कज्जे, कज्जल धार रहे वखाईआ। निरगुण तेरा आउणा कदे कदे, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग समझ किसे ना आईआ। परम पुरख परमात्म गुर अवतार पैगम्बर तेरे हुक्म अंदर बद्धे, बन्दना विच डंडावत विच सजदयां विच तैनूं सीस निवाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले तेरे प्रेम विच मधे, मधुर धुन उन्हां दे सुणाईआ। मैं चौहन्दा गुरमुखां दे अंदर तेरी जोत जगे, दिवस रैण होवे रुशनाईआ। तैनूं मिल के फेर कोई ना भज्जे, भजन बन्दगी आपणा नाम देणा दृढ़ाईआ। चार जुग विच गुर अवतार पैगम्बरां मनुशां दे रंग कर दिते डब्बे, मज़हबां वाली वंड वंडाईआ। दीनां वाली हद्द कोई ना टप्पे, रुड़्दी वेख लोकाईआ। सदी चौधवीं सब ने वेख लए मज़े, मज़ाक़ तेरा नाम उडाईआ। साध सन्त समझ सके कोई ना वजहे, परदा अग्गे ना कोए उठाईआ। जिधर वेखे सारे करदे दग़े, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी किसे अंदर ना लभ्भें, एह तेरी बेपरवाहीआ। जे तूं आएयों जोत सरूप लोकमात पैर दब्बे, खटका करन कोए

ना पाईआ। वेखीं हुण खेल रहिण नहीं देणा गभ्भे, दुआबे वाले रहे जणाईआ। जिस कारण माझे वाले सद्दे, लेखा पिछला देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ इन्हां दा आपणे घर विच ला लै नावां, नाम निधान दे जणाईआ। जिन्हां ने सत्तां रंगां नाल सजाईआ बाहवां, बाहवां मैनूं रहे वखाईआ। जो तूं गोबिंद नाल लईआं लावां, गुरमुख गोबिन्द लै प्रनाईआ। अज्ज तोल कर दे सावां, काणी वंड ना कोए रखाईआ। मेरा कौल इक़रार पूरा होवे नाल चावां, चाउ घनेरा देणा प्रगटाईआ। मेरा तेरे उत्ते दाअवा, दाअवे नाल सुणाईआ। इन्हां गुरमुखां इन्हां भगतां नाते छड्ड दिते पुत्रां मावां, तेरी गोद वेख वखाईआ। हँस बणा दे बंस बणा दे बुद्धी रहे ना वांग कावां, माणक मोती चोग चुगाईआ। तेरे चरणां बलि बलि जावां, गुरमुख रहे ना कोए निथावां, दरगाह साची दे वड्याईआ। जिस तरां प्रभू मैं तेरी सेज रावां, गुरमुखां नूं ओसे थाँ बहावां, जिथ्थे इक्को नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। गोबिन्द कहे प्रभू आह वेख अगम्मी हँस, गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। एह जोत धार दा बंस, शब्द नाल कुड़माईआ। मन हँकारी रहे ना कंस, रावण क्रोध देणा कढ्ढाईआ। की होया जे तेरा नाम गाया जिह्वा नाल सहँस, दोए सहँसर कम्म कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा पूर कराईआ। गोबिन्द कहे आह वेख उह गुरमुख सज्जण, जेहड़े धुर दे नज़री आईआ। जिन्हां बिना पुरख अकाल तों करना नहीं होर भजन, पिछली बन्दगी झोली पाईआ। इन्हां दा लेखे लाउणा बदन, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। बिना तेल बाती तों दीपक जगण, जोत नूर होवे रुशनाईआ। जे पुरख अकाल अज्ज ना पावें सगन, सच प्रेम ना करें कुड़माईआ। घर घर ना वाजे वज्जण, अनहद नाद ना कोए शनवाईआ। इन्हां प्यारयां ने जंगलां विच नहीं जाणा लभ्भण, मन्दिर मसीतां फेरा कोए ना पाईआ। रातीं सुत्तयां दिने जागदयां चाढ़ रंगण, रंग आपणा देणा रंगाईआ। इन्हां नहावण नहीं जाणा गंगा जमन, गोदावरी सुरस्ती फेरा कोए ना पाईआ। जे मैं गोबिन्द ते पिछला दुष्ट दमन, दमां दा लेखा रहे ना राईआ। इन्हां दी आपणी जोत विच मिला लै पवण, सुवास सुवास विच मिलाईआ। जे कोई मैनूं पुच्छे पुरख अकाल कवण, घट घट रम्यां दयां वखाईआ। इन्हां दे उत्ते मेघ बरस दे सवण, अगनी तत दे गवाईआ। कूड़ी क्रिया कर दे दमन, आपणे विच छुपाईआ। एह गोबिन्द दा चमन, कली कली महकाईआ। हुण मैं कोई नैणां देवी करन नहीं जाणा हवन, धूणी अग्ग ना कोए तपाईआ। कुछ लेखा वेख बावन, बलि रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा वेख वखाईआ। गोबिन्द कहे वेख मेरे प्रेमी, प्रीतम दयां जणाईआ। जेहड़े अंदरों धुर दे नेमी, निम्रता

विच सीस निवाईआ। साचे साक सैणी, मित्र रहे अख्वाईआ। अज्ज दरस कर लै बिना नैणी, नैण मुँधारी तैनूं दयां दृढ़ाईआ। एह कथा कहाणी फेर गोबिन्द नहीं सुणाउणी, शब्द शब्द ना कोए सुणाईआ। वेखीं किस बिध कूड़ी क्रिया धार वहिणी, रुड़्दी दिसे लोकाईआ। किसे कम्म नहीं आउणा नहावण कीता त्रबैणी, त्रैगुण लेखा ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा दे मुकाईआ। गोबिन्द कहे सुण पुरख अकाल वेख लै गुरमुख चंगे मंदे, साहिब दयां सुणाईआ। बाहरों दिसदे तत्तां वाले बन्दे, जगत मनुष नज़री आईआ। जे अंदरों तक्कें तेरे प्रेम विच रंगे, तूंही तूंही ढोला गाईआ। दीन मज़हब दी मंज़ल लँघे, ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। एह फिरदे तेरे विच ब्रह्मण्डे, जीउ पिंड दा लेखा दे मुकाईआ। इन्हां दी लाज रखणी जिन्हां ने सीस रखाए कंघे, मुच्छ दाढ़ी नाल वड्याईआ। जेहड़े चल के आए पैरीं नंगे, तेरे प्रेम विच समाईआ। नेत्रहीण ना होवण अन्धे, निज लोचण नैण देणा खुल्हाईआ। गोबिन्द आपणी वस्त कोई ना मँगे, बिन गुरमुखां वस्त कोए ना भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लैणा मिलाईआ। गोबिन्द कहे एह वेख वड्डे छोटे, बाले नढ्ढे नज़री आईआ। जिन्हां पिच्छे मैं वारे जिगर दे टोटे, नीहां हेठ दबाईआ। मेरे गुरसिख कदे ना होवण खोटे, खोटिउँ खरे बणाईआ। जिन्हां दे वास्ते धर्म दे आ गए लंगोटे, तेल मालश वाला सुहाईआ। तेरे प्यार विच मारन गोते, शौह दरया ना कोए रुड़्हाईआ। मेरे भगवान पुरख अकाल, गोबिन्द बिना गुरमुखां सोच कोई ना सोचे, समझ अवर ना कोए रखाईआ। जेहड़े हो गए तेरे मेरे जोगे, गिणती उन्हां दिती समझाईआ। अज्ज लेखा बाकी रहे ना काया चोगे, जन्म जन्म दा गेड़ा देणा मुकाईआ। उन्हां दे हिरदे जाण सोधे, सिध्धी आपणी देणी वखाईआ। झगड़ा मुक जाए लोक परलोके, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाईआ। जिन्हां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पढ़या सलोके, सुल्हकुल तेरे नाल मिल के आपणा आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द तख़लल्ले खल्लल खुदा ख़ादम ख़दू खुदी मौज़ू ज़ाहरा वज़ल ज़िमी ज़माने असमाने ज़वल नाद शनवाईआ। तमीज़े रो महबूबे मज़ा गज़ाने ज़ाहरे जोहाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, तेरा लहिणा तेरी झोली पाईआ। लहिणा तूं पा दे झोली, साहिब स्वामीआं। तेरी अन्तर दी गोली, प्रभ अन्तरजामीआं। बदल दे कलयुग बोली, शब्दी धुन बाणीआं। खेड दे साची होली, वेखां मैं चारे खाणीआं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाणीआं। पुरख अकाल कहे की होली वेखेंगा, गोबिन्द दयां वखाईआ। गोबिन्द किहा की खेल अगम्मी खेडेंगा, मेरे ख़ालक ख़लक नूर खुदाईआ। पुरख अकाल किहा की मेरा शब्द संदेस भेजेंगा, चारों कुण्ट

थाउँ थाईंआ। गोबिन्द किहा की फिर वी आपणा नाम वेचेंगा, जुग जुग जगत बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा दे उठाईआ। गोबिन्द कहे मैं क्यों तैनूं किहा अकाल, तेरा नाम वड्याईआ। मैं क्यों नहीं कही चंगी धर्मसाल, ग्रथां वाली पढ़ाईआ। मैं क्यों नहीं किहा दयाल ते काल, दोवें रूप वटाईआ। मैं क्यों नहीं बदली आपणी चाल, नाअरा नाम सुणाईआ। मैं जां तक्कया तूं सब दी सुरत रिहों संभाल, गुर अवतार पैगम्बर तेरे नन्हे बच्चे तेरे चरणां विच सीस निवाईआ। मैं जाणिआ तूं वल छल कीता विच जहान, अछल छलधारी तेरी बेपरवाहीआ। किसे नूं बणा के राम, किसे नूं बणा के काहन, बंसरीआं दी धुन दिती सुणाईआ। किसे नूं अल्ला किसे नूं सतिनाम दा दस्सया इंतज़ाम, किसे नूं वाहवा गुरु दिता समझाईआ। प्रभू तेरे नाम ने तेरे प्यारयां दा कीता क़त्लेआम, सूफ़ीआं नूं सूलीआं उत्ते चढ़ाईआ। तेरा बदलण वाला नाम, तैनूं करदा रिहा बदनाम, बदला सक्कया ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाए भेजे बणा के गुलाम, सजदयां विच तैनूं सीस झुकाईआ। अक्खरां वाली दस्स के कलाम, कायनात विच भटकाईआ। मैं गोबिन्द निरगुण धार शब्द अमाम, महदी मैंहदी तेरा नाम रंगाईआ। मैनूं कहिंदे कल कल्की ते उस दा तेरे सिर ना कोए इल्ज़ाम, ज़ुलम जगत ना कोए कमाईआ। मज़हबां वाला करे ना कोए घमसान, घुम्मण घेर विच ना पाए लोकाईआ। जे प्रगट होवां ते प्रगट होवां शरेआम, काग़ज़ां वाली सिफ्त मोहे ना भाईआ। हुण मैं राम नहीं जंगलां विच कटां बनबास, सीता पिच्छे रो रो नीर वहाईआ। मैं कृष्ण नहीं मुकट बैण नहीं कँवल नैण नहीं सख़ीआँ तों कराउण वाला इश्नान, गऊआं पिच्छे पाली बण के वृंदावन फेरा पाईआ। मैं मूसा नहीं मूँह प्रने डिग्ग के आपणा आप ना सकां थाम, जोत दी झलक पलक ना कोए समझाईआ। मैं ईसा नहीं फाँसी दा तेरा सुण पैग़ाम, फिर वी तेरा ढोला गाईआ। मैं मुहम्मद नहीं कर के क़त्लेआम, क़त्लगाह तेरी दर घर दयां बणाईआ। मैं नानक नहीं फड़ के सतिनाम, भज्जां थाउँ थाईंआ। मैं गोबिन्द नहीं पा के किरपान, खण्डा खड़ग जगत झटकाईआ। मैं तेरा शब्द सुत बलवान, जिस दा दिसे ना कोए निशान, नज़र आवे ना विच जहान, रसना करे ना कोए वखान, बाणी देवे ना कोए ज्ञान, बुद्धिवान ना कोए वड्याईआ। मैं लभ्भां ना उत्ते असमान, ज़िमीं उत्ते नहीं कोई दुकान, ब्रह्मण्डां खण्डां विच नहीं कोई कान, मँगण वाला नहीं कोई दान, पूजण वाला नहीं कोई पत्थरां वाला भगवान, तिलकां वाली लोड़ ना कोए रखाईआ। प्रभू इक तेरा शब्द सुत्त बलवान, बिरध बाल रूप ना कोए वटाईआ। जिस नूं माई जम्मे ना कोई आण, पिता गोद ना कोए सुहाईआ। कदे ना जाए विच मसाण, पैगम्बरां वांग क़बरां विच ना कोए दबाईआ। अक्खरां विच गाए ना कोई गाण, सिफ्तां विच ना कोए वड्याईआ। प्रभू ना मैं बणया किसे दा जजमान, ना

मँगता हो के झोली डाहीआ। जद देवां देवां तेरा हुक्म फ़रमान, धुर संदेसा इक सुणाईआ। जुग चौकड़ी बदलणा एह मेरा इंतज़ाम, तेरे हुक्म विच हुक्म बदलाईआ। क्या कोई जाणे एह तत्तां वाला इन्सान, तत्तां विच मति ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर इक्को देणा जणाईआ। गोबिन्द कहे प्रभू मैं नहीं तेरा मँगता, मँगण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं प्यार मंगिआ तेरीआं संगतां, नाता भगतां नाल जुड़ाईआ। इन्नां दे अंदरों कढ्ढ दे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। उन्नां नूं कोई आस ना रहे स्वर्ग बहिश्त जन्नतां, जन्नत बहिश्त इन्नां दे चरणां हेठां देणे दबाईआ। तेरे दुआरे रहे कोई ना भुक्खा नंगता, नाम भण्डार देणा भराईआ। तूं बोध अगाधा पंडता, बुद्धी तों परे देणा समझाईआ। जे पूजण ते इक्को करन तेरी मन्नता, जम्मण मरन वाले गुरु नूं सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा वेख वखाईआ। पुरख अकाल कहे तेरी आसा बहु वड्डी, वड्डे नाल वड्याईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी आपणे प्रेम नाल बद्धी, इष्टी सब दा आप अख्वाईआ। गोबिन्द पूरी हो लैण दे चौधवीं सदी, बारां साल लँघदयां देर लग्गे ना राईआ। मैं कोई रहिण नहीं देणा जेहड़ा खांदा वच्छी ढग्गी, सारे धर्म राए दी चाढ़ने गड्डी, गॉड अल्ला वाहिगुरु राम कृष्ण इक्को नाम देणा समझाईआ। निरगुण जोत निरँकार दी जगी, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। सब नूं मन्नणा पए

२८८ पतिपरमेश्वर कमलापती, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिन्नां नूं नाम नहीं मिल्या रती, उन्नां दे भण्डारे देणे भराईआ। गुरमुखो २८८

२१ किसे नूं दूजे कोल जाण नहीं देणा वास्ते गति, आवण जावण दा पन्ध देणा मुकाईआ। किसे साध सन्त विच जगणी नहीं २१

मोमबत्ती, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ । जिधर वेखो वा वगणी तत्ती, तत्तां दए तपाईआ। एह कलयुग दी अन्त अख़ीरी भट्ठी, पटने वाला रिहा जलाईआ। जिस दी पुरख अकाल नाल पै गई पत्ती, हिस्सेदार अख्वाईआ। एह उस नूं खेल लग्गी अच्छी, अच्छी तरां दृढ़ाईआ। जेहड़ी दुनियां कायनात मन वासना फिरे भज्जी, चारों कुण्ट दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। गोबिन्द कहे मेरे साहिब सरबंग, दीन तेरी सरनाईआ। साचा दे अगम्मा अनन्द, अगम्मड़ा भेव खुल्हाईआ। नूरी वखा आपणा चन्द, चन्द नूर होवे रुशनाईआ। जेहड़े सन्त सुहेले गुरमुख तेरे प्यार दे होए पाबन्द, आपा भेंट कराईआ। अज्ज उन्नां नूं कुछ वंड, आपणी गंढु खुल्हाईआ। जन्म जन्म दे सड़दयां पा ठंड, तत्ती वा ना लग्गे राईआ । निज आत्म दे अनन्द, परमानंद विच समाईआ । जो तेरा गाउँदे छन्द, गोबिन्द तूं ही पिता माईआ। काया चोली देणी रंग, जगत ललारी लोड़ रहे ना राईआ । भेव खुल्हा दे ब्रह्म हं, हँ ब्रह्म आप दृढ़ाईआ। जेहड़े भगत सुहेले तेरे घर पए जम्म, भगत दुआरे सोभा पाईआ। इन्नां दा लेखे ला लै दम, दामनगीर आप हो जाईआ।

झगड़ा रहे ना माटी चम्म, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। जन्म मरन दा रहे कोई ना ग़म, ग़मखार होणा सहाईआ। चुरासी विच्चों बेड़ा बन्न्ह, भवजल पार कराईआ। जो तेरे प्रेम नाल गए मन्न, मन उन्हां देणा बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर आयां गुरमुखां साचिआं सिखां भगतां सन्तां हुण खा लैण दे अन्न, अन्नदाते तेरी वड वड्याईआ। फेर सारयां दे फड़ के कन्न, सवाधान लैणे कराईआ। आउ तुहानूं वखावां उह चन्न, जिस नूं गुजरी चन्न कहे लोकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करन धन्न धन्न, धरनी धरत धवल धौल सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वस्सेरा रखे बिन सदा छप्परी छन्न, मन्दिर महल अटल उच्च मनार जगत संसार नज़र किसे ना आईआ।

गोबिन्द किहा शिवा वर मोहे दयो, दयो देव वड्याईआ। निरगुण निरगुण लग्गे नेहों, निरँकार तेरी शरनाईआ। पुरख अकाल बणया पिउ, मात इक हो जाईआ। जो आदि जुगादि रहिओ, रहिबर नूर खुदाईआ। अमृत बरखे मेंहों, सीतल धार वहाईआ। निर्मल करे जीउ, पतित पुनीत बणाईआ। दाता अलख अभेउ, भय भंजन वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। वर दयो मोहे मेरे दाता, दयाल दया कमाईआ। नूर अलाही होवे नाता, निधान तेरी सरनाईआ। वेखां खेल इक्कांता, अकल कल बेपरवाहीआ। भरम ना रहे भरांता, भय भउ चुकाईआ। वखा अगम्मी खाता, परदा इक उठाईआ। तूं सुआमी साहिब बिधाता, पारब्रह्म सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला मेल मिलाईआ। साचा दे वर मोहे मेरे महबूब, मुहब्बत विच सरनाईआ। मैं मँगां तेरा अर्श अरूज, शाह सुल्तान तेरी वड्याईआ। मैनूं हद्द विच ना करीं महिदूद, बंधन बन्द ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट होणा मौजूद, हर घट नज़री आईआ। तेरी मंज़ल इक मक़सूद, अगम्म अथाह वड्याईआ। तेरे प्यार विच जावां झूज, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग रंगाईआ। दे दे दात मेरे पारब्रह्म, एका मँग मँगाईआ। शुभ कर्म मेरा अगम्मी धर्म, जिस धर्म दी सार किसे ना पाईआ। लेखा रहे ना माटी चर्म, ततव तत ना कोए वड्याईआ। भुलेखा मेट दूई दा भरम, भय भउ चुकाईआ। मेरा तेरे घर दा जन्म, गुजरी तत्तां वाली माईआ। मैं झगड़ा छड्डुया मरन जन्म, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। इक्को तक्कके तेरी सरन, दर ठांडे सीस झुकाईआ। बिना तेरे तों विद्या होर ना जावां पढ़न, सिख्या समझ ना कोए समझाईआ। तेरी मंज़ल आवां चढ़न, हक़ मुकामे डेरा लाईआ।

मज़लूमां पिच्छे आवां लड़न, आपणी आस ना कोए बणाईआ। झगड़ा मेट के वरन बरन, ज़ात पाती डेरा ढाहीआ। तूं करनी दा करता करन, क़ुदरत दा मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मेला लैणा मिलाईआ। गोबिन्द किहा मैं करां शुभ कर्मा, निहकरमी देणा वखाईआ। मेरा तेरे नाल प्रना, परम पुरख तेरी वड्याईआ। मैं खेल अगम्मी करना, जिहनूं समझे कोए ना राईआ। साची घाड़त घड़ना, घड़िआल तेरी वज्जे वधाईआ। मेरे साहिब सुआमी अन्तरजामी तूं मेरा लड़ फड़ना, मैं पल्लू तेरा फड़ के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर मेहर मेहर निगाह इक उठाईआ। पुरख अकाल कहे सुण गोबिन्द दुलारे सुत, सति दयां जणाईआ। निरगुण धार हो अबिनाशी अचुत, चात्रक तृखा दयां गवाईआ। धुर दा दे अगम्मा सुख, सुख सागर विच समाईआ। तूं जंमिउँ मेरी अगम्मी कुख, जिथ्थे जोत नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दा बूटा लोकमात लाया पुट्ट, पटने वज्जी वधाईआ। तेरा नाता कदे ना जावे तुट्ट, धुर दी गंढु वखाईआ। योद्धा सूरबीर बण के उठ, शब्दी रूप प्रगटाईआ। जाम प्याला पी घुट, रस रसीआ देवां चखाईआ। कूड़ी क्रिया लै लुट्ट, माया ममता मोह गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। पुरख अकाल किहा मैथों लै ला वर, वर दाता दया कमाईआ। इक्को वसणा घर, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। तेरा मेला नरायण नर, पुरख पुरखोतम सोभा पाईआ। नाम खण्डा लै फड़, दो जहानां भय जणाईआ। सृष्टी दृष्टी नाल लड़, आपणा बल वधाईआ। तेरा नाम तीर चले कड़ कड़, तिक्खी मुक्खी धार सुहाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। नुहा ला इक्को सर, सरोवर धुरदरगाहीआ। भाणा लैणा जर, जरवाणे दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द तेरी मेरी धार शिव शक्ती, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं मालक धुर अर्शी, प्रीतम बेपरवाहीआ। तेरा खेल उपर धरती, धरनी धवल दए गवाहीआ। आह लै मेरे प्यार दी पर्ची, पर्चा दो जहान वखाईआ। कूड़ी मेट अन्धेर गर्दी, झगड़ा दुनी दे चुकाईआ। गोबिन्द फेर कीती अर्ज़ी, सीस जगदीश निवाईआ। वेखीं प्रभू, किते बाप ना बणी फ़रज़ी, धोखा मेरे नाल कराईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द मैं तेरा गरज़ी, नाता सच्चा ल्या जुड़ाईआ। एथे ओथे बण के दर्दी, दो जहानां वेख वखाईआ। एह खेल मेरे आपणे घर दी, बेगाना नज़र कोए ना आईआ। तेरी कला रखां चढ़दी, सीस जगदीश आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरी धार मेरा नाम होवे पढ़दी, दूजा राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। शिव शक्ती मेरा रूप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं मालक सति सरूप, साहिब सुल्तान धुरदरगाहीआ।

उच्च अगम्मा भूप, पुरीआं लोआं हुक्म वरताईआ। वसां चारे कूट, दह दिशा सोभा पाईआ। मेटां जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। गोबिन्द मैं तेरे उत्ते गया तुठ्ठ, मेहर नज़र उठाईआ। फिर पुरख अकाल ने फड़ के गुट्ट, खण्डा हथ्थ दिता चमकाईआ। उठ ज़ुल्म नाल जुट्ट, आपणा बल दृढ़ाईआ। हँकार विकार फड़ के कुट्ट, काया कुटीआ कर सफ़ाईआ। गोबिन्द तेरा धन कोए ना लए लुट्ट, तेरे अंदर दिता टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। शिव शक्ती निरगुण धार पुरख अकाल, अकल कल सच जणाईआ। जो मेरा नाम बोले सो निहाल, अन्तर अन्तर वज्जे वधाईआ। सति नाल श्री श्री नाल अकाल, अकाल श्री सति बिना समझ किसे ना आईआ। जिस कारण एह शब्द ल्या रच, रचना एसे विच जणाईआ। पढ़ पढ़ सृष्टी दी दृष्टी गई थक्क, रसना कूक कूक सुणाईआ। हक़ीक़त लभ्भी किसे ना हक़, महबूब परदा ना कोए उठाईआ। एह खेल पुरख समरथ, शहिनशाह आपणे विच समाईआ। इक संदेसा नर नरेशा गोबिन्द ओस वेले दिता दस्स, जिस नूं लिखण विच वंड ना कोए वंडाईआ। शब्दी धार प्या हस्स, जोती जोत डगमगाईआ। जिस वेले तेरी मेरी वेखण वाली हो गई अक्ख, तत्तां वाला नज़र कोए ना आईआ। लोड़ रहे ना किसे भट्ट, गावत गा गा ना कोए जणाईआ। सच धर्म दे दे हट्ट, वस्त अमोलक धुरदरगाहीआ। चार वरन लाहा लैण खट्ट, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश खुशी मनाईआ। तेरा प्रेम होवे सति, सति तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। शिव शक्ती कहे गोबिन्द मैं तेरी दासी, दास्तान समझ किसे ना आईआ। ईसा ने आह मारी जिस वेले लटक्या नाल फाँसी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ओ मेरे मालक खुदा अबिनाशी, तेरी बेपरवाहीआ। पहलों मैनूं बणा के आपणी ज़ाती, जलवा नूर कीता रुशनाईआ। हुण बण ग्यों वड्डा घाती, घाउ मेरे उत्ते लगाईआ। मेरी जगा के अंदरों बाती, जोत आपणे विच रलाईआ। मैं बचन दस्सां साची, सच खुदाए तैनूं इक दृढ़ाईआ। जिस वेले गोबिन्द आया तेरा सूरबीर सुत हाठी, बलधारी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा साचा दए उठाईआ। शिवोम शक्त कहे मैं सेवादार, सेवक नज़री आईआ। मेरा सारे करदे गए इंतज़ार, सिफ्तां विच सालाहीआ। मेरे नाल करया ना किसे प्यार, मुहब्बत विच जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मैं टेडी अक्खे वेंहदी रही संसार, दीन दुनी खोज खुजाईआ। मैं इशारिआं विच लँघा दिते तेई अवतार, आपणी बांह ना किसे फड़ाईआ। मूसा नूं सुट्ट के मूँह दे भार, शुधी सुध विच्चों कढ्ढाईआ। ईसा नूं असमानां दे उत्ते चाढ़, फेर तख़तिआं उत्ते लटकाईआ। शिवोम शक्ती कहे मैं किसे दी बणी नहीं यार, याराना लाण कदे ना आईआ। करां सब नूं ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर जणाईआ। मैनूं भावें शक्ती समझो भावें

पुरख अकाल, मेरी कला दी सार किसे ना पाईआ। गोबिन्द जे तैनूं मेरी भाल, मैं बिना भाल्यां तेरे विच समाईआ। उठ ज़रा अग्गे कर ख्याल, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। उठ वेख आपणे लाल, सुत दुलारे ध्यान लगाईआ। जेहड़े नीहां हेठां देणे सुआल, दादी गुजरी दए दुहाईआ। जिन्हां करना जगत कमाल, चमकौर सोभा पाईआ। जे होर पुच्छणा ई हाल, नंगी पैरीं दयां फिराईआ। होर दस्सां कमाल, तन चीथड़ लीरो लीर वखाईआ। सूलां दी सेजा देवां सवाल, एह मेरी बेपरवाहीआ। सरहाणा कोई ना तकिया कोई ना जेहड़ा थल्लउँ सिर दए उठाल, घास तिनका सोभा पाईआ। तैनूं ओथे भोजन देवे ना कोई खुवाल, प्रेमी प्यारा सिख नज़र कोए ना आईआ। इक कीड़ी दा प्यार, तेरे चरण सीस निवाईआ। ओह आ के कहे गुजरी दे लाल, तूं शहिनशाह धुरदरगाहीआ। तैनूं किस ने एथे दिता सवाल, सोहणा आसण विछाईआ। तूं मेरे घर दा महमान, बांके सूरे नज़री आईआ। अज्ज तैनूं देवां कुझ खुवाल, तेरा पेट भराईआ। मैं रिध्धी नहीं कोई दाल, जगत स्वाद ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच रंग इक वखाईआ। शिवोम शक्ती कहे दर मेरे दहलीज़े, दहलीज़ दयां लँघाईआ। जेहड़ा मेरे उपर पतीजे, पतिपरमेश्वर कहि के सीस निवाईआ। मैं ओस दी पूरी करां रीझे, मनसा विच वड्याईआ। घर मिलावां सहजे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। ज़रा मार के वेख नीझे, तैनूं दयां वखाईआ। जेहड़े गोबिन्द तेरे बग़ीचे, गुरुमुख सोहणे नज़री आईआ। उन्हां दा वक्त अख़ीरी बीते, लोकमात समझाईआ। करे खेल त्रैगुण अतीते, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दे उठाईआ। शिवोम शक्ती कहे मैं बड़ी चालाक, नज़र किसे ना आईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर उपजाए फेर मिलाए विच ख़ाक, तन माटी स्वाह कराईआ। निक्के निक्के खोल्ह के ताक, पड़दे अंदरे अंदर उठाईआ। निरगुण नाल बणा के साक, सज्जण लोकमात समझाईआ। शब्द संदेसे दे के वाक्, वाक़फ्कार आप हो जाईआ। अन्तिम लेखा सब दा कर बेबाक, लहिणा रहिण कोए ना पाईआ। याद कर लईं माछूवाड़े वाली रात, सथ्थर सेज हंढ्ढाईआ। ओह सोहणी चंगी प्रभात, जिस विच मिल्या धुरदरगाहीआ। ओस कढ्ढके बिन अक्खरां तों किताब, गोबिन्द दिती वखाईआ। आह वेख लै अगला हिसाब, जिस दा अंकड़ा ना कोए जणाईआ। तेरा सब तों उत्ते सब तों हेठां अहबाब, बाब वंड ना कोए वंडाईआ। जां तक्क लै ते दिसे आज़ाद, आज़ादी तेरे नाल रलाईआ। गोबिन्द पहलों तेरा जगत खेड़ा करना बरबाद, घराना जगत नज़र ना आईआ। गोबिन्द हो के शाद, खुशीआं ताली दिती लगाईआ। फिर आई अगम्मी आवाज़, पुरख अकाल दिता सुणाईआ। गोबिन्द आख्या मेरा खुल्हिआ राज़, रहमत तेरी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

धुर दा लेखा वेख वखाईआ। शिव शक्ती कहे मेरा वर चंगा, चंगिआं दयां जणाईआ। गोबिन्द हुण तूं कर जंगा, जंग जू रूप वखाईआ। बाहरों दिसें तत्तां वाला बन्दा, अंदर जलवा नूर रुशनाईआ। तेरा खेल जहान संगा, सगला दयां बणाईआ। पुरख अकाल दे नाम दा वजा मृदँगा, डंका इक्को इक शनवाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम आवे कन्ढा, पैंडा पन्ध मुकाईआ। तेरा साहिब होवे बख़शिंदा, वड दाता बेपरवाहीआ। तैथों छुडा के पुरी अनन्दा, अनन्द आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गोबिन्द किहा वर तेरा दातार, मोहे सदा भाईआ। तूं सुआमी एक निरँकार, निरवैर तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरी धार, सति सतिवादी चली आईआ। तेरा खेल सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वजदी रहे वधाईआ। मैं निउँ निउँ करां निमस्कार, चरण चरण सरनाईआ। तेरा घर सच्चा घर बाहर, धुर दरबारा सोभा पाईआ। जिथ्थे जोत जगे अपार, दीवा बाती लोड़ रही ना राईआ। शब्दी नाद वज्जे धुन्कार, सुन्न समाधी दिती गुआईआ। तेरा खेल अपर अपार, अपरम्पर सुआमी वेख वखाईआ। बेशक मेरा घराना दे उजाड़, पुत्रां प्यार ना कोए वधाईआ। पर याद रखीं निरँकार, तैनूं दयां जणाईआ। मेरिआं सिखां दा अधार, जुग चौकड़ी तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। शिव शक्ती कहे ओ गोबिन्द वेख लै मेरा सपना, ख्वाब खुदा दा दयां जणाईआ। तूं शरीर विच्चों अन्त लँघणा, जगत नज़र किसे ना आईआ। तेरा खाणा पीणा मुकणा, तन ना कोए वड्याईआ। तूं ओस दुआरे पुजणा, जिथ्थे वस्से शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए वखाईआ। गोबिन्द कहे मेरा सुफ़ना अनोखा, परम पुरख दिता जणाईआ। मैं प्रभू दा पुत ते गुरसिख बणे ओस दा पोता, नाता जगत जुड़ाईआ। झगड़ा मुक जाए चौदां लोका, चौदां तबकां डेरा ढाहीआ। मैं छड्ड जाणा पटना पौंटा, पटेदारी रहिण कोए ना पाईआ। शब्दी धार मारना गोता, जोती लहर विच समाईआ। गुरमुख चाढ़ के नाम दी नौका, खेवट खेटा इक्को देणा वखाईआ। जिस नूं चुरासी विच्चों इक्को वार मिलण दा मिलदा मौका, मुड़ के मिलण कोए ना आईआ। साचा मार्ग दस्सणा सौखा, रस्ता इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे पढ़ना पए कोई ना पोथा, पुस्तक बग़ल ना कोए उठाईआ। पोचणा पए कोई ना चौंका, तिलक ललाट ना कोए लगाईआ। लभ्भणा पए ना किसे मन्दिर मस्जिद कोठा, शिवदवाले फोल ना कोए फुलाईआ। प्रेम प्रीती अंदर गुरमुख मिला के आपणी जोता, जोती जोत जोत समाईआ। शब्दी शब्द जणा के होका, हुक्म धुर दा देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। गोबिन्द किहा मैं सुणी अगम्मी तुका, हरि साहिब दिता दृढ़ाईआ।

२९४ २१

मैं फिर के वेख्या मदीना मक्का, मक़बरिआं विच्चों मुर्शद फोल फुलाईआ। जो मिट्टी अंदर ढक्का, परदयां विच लुकाईआ। जो सड़ गिआं नाल कक्खां, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। मैं हथ्थ मारया उत्ते पट्टां, बौहड़ी दिती दुहाईआ। पुरख अकाल एह की तेरीआं वट्टां, अवतारां पैगम्बरां नूं वंडां विच भुआईआ। की तूं आपणी धार नाल करदा एं ठट्ठा, धोख्यां विच फसाईआ। किसे नूं चौदां सदीआं दा दिता पटा, हुक्म धुर दा इक दृढ़ाईआ। तेरा खेल तत्तां अट्ठां, पंज तिन्न वज्जे वधाईआ। मैं तेरे हुक्म अंदर इक माछूवाड़े रात कटां, फेर कटण दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं चार जुग दी मंज़ल टप्पां, भज्जा वाहो दाहीआ। बणया रहां तेरा बच्चा, बचपन तेरी झोली पाईआ। फेर शब्द गुरु होवां कदे ना बणा तत्तां वाला कच्चा, काची गगरीआ ना कोए सुहाईआ। ऐंवें हां विच हां करां ना अच्छा, भय विच सीस ना कदे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द कहे मैं सुफ्ने विच तक्कया की जग, जगजीवण दाते दिता दृढ़ाईआ। जिधर वेखां लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण हड्ड, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। कोई चढ़े ना उपर शाहरग, साध सन्त रहे कुरलाईआ। धुन आत्मक सुणे कोई ना नद, अनहद नादी नाद ना कोई वजाईआ। कूड़ी पी प्याले वाली मदि, मधुर रस ना कोए चखाईआ। बाहरों हो के बप्पड़े बग, अन्तर काग वांग कुरलाईआ। साचा मिले किसे ना हज्ज, हुजरा हक़ ना कोए सुहाईआ। मन वासना रहे भज्ज, भटकणा विच लोकाईआ। जीआं कर रहे बध, सूर गाँ रही कुरलाईआ। धर्म राए दा सारे दिसण वग्ग, वाली वारस गुर अवतार पैगम्बर बैठे मुख छुपाईआ। कूड़ नगारा रिहा वज्ज, डंका काल रिहा सुणाईआ। आत्मा परमात्मा हो के अड्ड, वखरा घर बैठा बणाईआ। हँकार निशाना रहे गड्ड, शाह सुल्तान करन कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दे जणाईआ। गोबिन्द कहे मेरा सुफना हक़ीक़ी, हिकमत समझ किसे ना आईआ। करे खेल लाशरीकी, शरकत विच लड़ाईआ। जिस दे विच हक़ तौफीक़ी, तोअफ़े घर घर रिहा पुचाईआ। सच प्यार रहे अज़ीज़ी, मुहब्बत विच मेल ना कोए मिलाईआ। साची करे ना कोए तमीज़ी, तोहमत करे जगत लोकाईआ। गोबिन्द कहे मैं फिर चार कुण्ट तक्कया मैनूं गुरमुखां दी नज़री आई थोड़ी बग़ीची, जिस दा पालक बेपरवाहीआ। फेर आपणा लहू कढया विच्चों चीची, ख़ून दिता वहाईआ। कलयुग एह खेल प्रभू ने कीती, क़ुदरत क़ादर रिहा वड्याईआ। कलधार होए अनडिट्ठी, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दे वखाईआ। गोबिन्द कहे मेरा सुफ़ना की कहिंदा, कहि कहि रिहा सुणाईआ। मैं वेख्या चढ़दा लहिंदा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फोल फुलाईआ। तेरा भाणा रिहा सहन्दा, निउँ निउँ सीस

निवाईआ। जिस दी चरणी रिहा ढहन्दा, नमो नमो दुहाईआ। दुआरे रिहा बहन्दा, आसण इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। गोबिन्द मेरे सुफ्ने किहा तेरा अन्त अख़ीर नंदेड़, दक्खण दिशा दृढ़ाईआ। पुरख अकाल करे मेहर, मेहरवान होए सहाईआ। अन्त वेले ना लावे देर, दूर दुराडा चल के आईआ। तेरा बणा के सोहणा ढेर, अगनी अग्ग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। गोबिन्द ने वेख्या खेल अपार, हरि करते दिता वखाईआ। अंगीठे दे तपे अंगिआर, अगनी अग्ग दुहाईआ। विच्चों रो पए सत्त रुमाल, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किरपा कर दीन दयाल, तेरे हथ्थ वड्याईआ। गोबिन्द किहा मैं तुहाडी करां प्रितपाल, आपणे नाल मिलाईआ। ओह वेख खेल दीन दयाल, जो दयानिध अख्वाईआ। कलयुग अन्त बदल के चाल, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जन भगतां कर संभाल, सम्बल बहि के खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल खिलाईआ। सुफ्ना कहे गोबिन्द वेख अन्त अख़ीर, आख़र दयां जणाईआ। तक्कया पीरां दा पीर, पैगम्बर धुरदरगाहीआ। जिस ने कटे शरअ ज़ंजीर, त्रिप्त दए कराईआ। सीरत दे के सीर, गुरमुख बच्चे गोद उठाईआ। बदल के तक़दीर, तदबीर दिती समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा वखाईआ। लेखा कहे मैं लेख लिखदा, लिख लिख खुशी मनाईआ। लहिणा देणा गोबिन्द सिख दा, सिख्या विच वड्याईआ। जो पुत हो गया इक पित दा, पुरख अकाल मनाईआ। मानस जन्म जावे जित्तदा, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। वेखो नबेड़ा होणा हित दा, हित विच समाईआ। चुरासी विच नहीं पिसदा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा कहे सत्त रंगे, तैनूं दयां वड्याईआ। आह वेख मेरे भगत चंगे, सोहणे सोभा पाईआ। जिन्हां नाल तैनूं मिल्या संगे, सगला संग रखाईआ। वेखीं भगतां दे हथ्थ होण ना देवीं गंदे, जिन्हां नाल बन्ह के तेरा मेरा ढोला गाईआ। किसे कोल ना जावीं पंडे, हिस्से हद्द मँगण किसे ना जाईआ। एह टुट्टी पिछली गंढ्ढ, अग्गे ना कोए तुड़ाईआ। सब दा याराना सांझा हंढ्ढ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सत्त रंग कहिण असीं बज्झ गए नाल गुट, गंढ्ढ उत्ते लई पुआईआ। जिस दा गोबिन्द साचा सुत, तुहानूं बच्चे लैणा बणाईआ। साडे कोल नहीं कुछ, ख़ाली हथ्थ दईए दुहाईआ। तेरी मंजल गए पुज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ। राह तक्के तिन्न जुग, धन्न भाग जे वेला गया आईआ। सुक्खणा रहे सुक्ख, तेरा राह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए वखाईआ। सत्त रंग कहिण साडी लग्गी रहे प्रीत, प्रीतम जिस दा विचोला

बणया शब्दी गुर अख्वाईआ । अज्ज तों तेरी संगत विच कोए ना रिहा नीच, गुरमुख साचे सोभा पाईआ। पिछला लेखा पिच्छे गया बीत, अग्गे दए माण वड्याईआ। जेहड़े गाउँदे तेरा गीत, सोहँ ढोला राग अलाईआ। जिस दा रंग जाणे हस्त कीट, इक्को घर लैणा वसाईआ। इक्को झुके तेरे दर ते सीस, दूसर डंडौत ना कोए वखाईआ। जेहड़ा लेखा आपणे नाल बणांदा, रंग कहिण, असीं भगतां दे साथी, सोहणे नज़री आईआ। गोबिन्द वेख जे असां तेरी मन्न लई आखी, सेवक बण के सेव कमाईआ। हुण आपे करीं राखी, वेखीं थाउँ थाईंआ। असीं चौहन्दे तेरे सिख अग्गे कर ना जाण गुस्ताख़ी, गुस्से विच जदों आवें आण के तारें पापी, पतितां पुनीत कराईआ। हुण सानूं दे दे थापी, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। पिछले हिसाब दी आपणी ना देवीं कापी, नम्बर देणा गुआईआ। झगड़ा रहे ना किसे ज़ाती, दीन मज़हब ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सानूं कथा कहाणी दस्स साची, सच सच समझाईआ। सत्त रंग कहिण असीं रुमाल हो गए टोटे, टुकड़े टुकड़े नज़री आईआ । थोड़िआं तों हो के बहुते, आपणा अंक वधाईआ। गुरमुखो तुसीं ना रिहो सोते, सुत्यां दईए जगाईआ । चुरासी विच्चों वेखो बड़े थोड़े कोई नहीं चोखे, गिणती दे नज़री आईआ। बाकी राए धर्म दर झोके, जेहड़े मस्तक ना सीस निवाईआ। काया दे ख़ाली दिसण खोखे, वस्त विच ना कोए रखाईआ। भावें किन्ने पढ़न पोथे, प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। सच दुआरे कोए ना पहुंचे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची दए वड्याईआ। सत्त रंग कहिण असीं गुट्टा नाल निशाना, निशान गोबिन्द रिहा जणाईआ। गुरसिख रहे ना कोए बेगाना, घर मिलणा बेपरवाहीआ। जिस ने कूड़ा तुड़ाउणा याराना, हथ्थों लाह के सानूं दिता सुटाईआ। जिन्हां ने मन्नणा इक श्री भगवाना, हथ्थ उपर देणा उठाईआ। हुण छड्डया रिवाज पुराणा, पुराणां वाली ना कोए पढ़ाईआ। नापण वाला गया पैमाना, पैमाइश आपणे हथ्थ रखाईआ। हुण माला मणक्यां वाला नहीं ज़माना, ज़ामन इक्को नज़री आईआ। जेहड़ा शहिनशाह शाहाना, पातशाह धुरदरगाहीआ। मस्ती विच करे मस्ताना, नाम खुमारी इक चढ़ाईआ। गुरमुख बणया रहे दीवाना, नाता तुट्टे कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सत्त रंग कहिण गरमुखो जे नहीं करनी सच प्रीत, मैनूं दयो जणाईआ। ओह रहे ना संगत बीच, पल्लू जाए छुडाईआ। सोहँ रसना ना गाए सुहागी गीत, ढोला धुरदरगाहीआ। जिस नूं चाहीदी नहीं एह बख्शीश, ओह मुखड़ा लओ भुआईआ। फिर वी जांन्दयां दी देवे ठोक पीठ, शाबाश कहि के दए सुणाईआ। तुहाडा निशाना उक्या ठीक, ठाकर नालों होई जुदाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों गोबिन्द पुरख अकाल नाल तुहाडी भुगतण आया तारीख, तवारीख़ पिछली दए बदलाईआ।

अंदरों कर के ठंडे सीत, अगनी अग्ग दए बुझाईआ। कोई ना मँगे फ़ीस, पूजा पाठ ना कोए कराईआ। जिस दा इक वेरां झुक जाए सीस, फड़ बाहों पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वसाईआ। सत्त रंग कहिण जन भगतो जिस ने जाणा छड्ड, हथ्थ दयो उठाईआ। जिस ने खाणी मच्छी डड्ड, ओह मूँह लओ खुल्हाईआ। जिस ने चुरासी विच फिरना जग, ओह अंदरों सीस ना कोए निवाईआ। जिस ने मात गर्भ विच सड़ना अग्ग, ओह अक्खां लओ बदलाईआ। जिस ने बणना कग्ग, ओह निन्दिआ लओ कराईआ। एह वेला जे अज्ज, कल्ह नूं हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। सत्त रंग कहिण असीं बद्धे नहीं गाने, गुट्टा नाल सुहाईआ। असीं तुहाडे नाल पाउण आए याराने, यारी इक बणाईआ। हुण छड्डणे घर बेगाने, घर आपणे सोभा पाईआ। जिथ्थे मिले श्री भगवाने, निरगुण नूर इलाहीआ। किसे ने उहनूं किहा वस्से देस अनामे, अनामी देस कहिण वाले समझ किसे ना पाईआ। ओह नापदे रहे सुरती वाले पैमाने, शब्द विच छुपाईआ। अकाल पुरख करदा रिहा बहाने, थोड़े थोड़े दीपक डगमगाईआ। अक्खरां वाले मना के फ़रमाने, परदा लए बणाईआ। हुक्म दे ला के कामे, कमाल मज़हब विच फसाईआ। वजाऔंदे रहे वक्खो वक्खरे दमामे, आपणा डंका हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। बैहन्दे रहे ला के शाम्याने, आसण डेरे लाईआ। करदे रहे ध्याने, अन्तर वेख वखाईआ। सुणदे रहे तराने, शब्द नाद शनवाईआ। जां तक्कया गोबिन्द ने जिस वेले सूलां दी सेज ते बांह दिती सर्हाणे, साहिब नज़री आईआ। पुरख अकाल ने फड़ के काने, चारों कुण्ट दिता भुआईआ। गोबिन्द वेख लै किते फेर ना करीं बहाने, बहाने वाला साथ ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा रिहा चुकाईआ। सत्त रंग कहिण साडे रंग वेखो वखरे, अड्डो अड्डी नज़री आईआ। साडे तक्को नखरे, सोहणा खेल खिलाईआ। गोबिन्द दे याद कर लओ सथ्थरे, सत्थर की वड्याईआ। धन्ने दे वेख लओ पत्थरे, पत्थरां सोभा पाईआ। सत्त रंग कहिण गुरसिखो हुण ना बणयो मकरे, फ़रेब देणा गवाईआ। जिन्हां ने खाधे बक्करे छत्तरे, गोबिन्द उन्हां नूं दए सज़ाईआ। क्यों ओस छड्ड दिते पटने, पौंटे पटने वाली पिछली रीती ना कोए रखाईआ। हुण सब दे लेखे कटणे, पिछला बचया रहिण कोए ना पाईआ। बिना भगतां तों घर कोई नहीं वसणे, उजड़ी दिसे लोकाईआ। सब दे आसण सक्खणे, ख़ाली ठूठे रहे वखाईआ। गुरमुखां दे दीपक जगणे, गोबिन्द करे रुशनाईआ। तुसीं मेरे मुख मुखणे, जेहड़े सवा लख नाल लड़ाईआ। हुण तूं ओस देस ढकणे, जिथ्थे दिसे धुरदरगाहीआ। हुण पाले नाल मक्खणे, । चलो चलीए ओस वतने, जिथों फेर ना कोए कढ्ढाईआ। चौदां लोक तुसीं खुशीआं नाल टप्पणे, विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार बण के रसते

राह तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तुहानूं वेख के हस्सणे, दोहां हथ्थां दी ताली देणी लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सत्त रंग कहिण असीं इंच नौ नौं, नौ दुआरे वेख वखाईआ। सारी दृष्टी रहे भौं, सृष्टी खोज खुजाईआ। वेख्यो कोई अजे ना जाइओ सौं, सुत्यां वक्त लँघाईआ। तुहाडे पिच्छे गोबिन्द ने खाधा सी इक इक्क जौं, नौ दिन झट लँघाईआ। अज्ज दी रात विच कर लओ आपणे बारां पौं, नट्टी वाली नरद दयो गुआईआ। सचखण्ड वल्ल सिध्धा कर लओ रौं, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। हुण प्रभ नूं तुहाडा गौं, तुहाडी फड़न आया बाहों, आपणा फेरा पाईआ। जे प्रभू तुहाडा बणे पिता माउँ, तुसीं क्यों ना बच्चे बण के गोद सुहाईआ। अज्ज तों तुहाडा बदल गया नाउँ, निरँकारा दए वड्याईआ। तुसीं हँस बण गए काउँ, काग बुद्धी ना कोए कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। सत्त रंग कहिण असीं लाल लाले, लालां दईए वड्याईआ। अज्ज तों बदलो आपणी चाले, पिछली मति देणी गुआईआ। ओस दे बण जाओ बाले, जो बालम इक अख्वाईआ। जेहड़ा सदा करे प्रितपाले, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कुछ याद कर लओ की नानक किहा बाले, सहज नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब मेला लए मिलाईआ। सत्त रंग कहिण असीं रंग अपार, अपरम्पर स्वामी दिती वड्याईआ। जन भगतो तुहाडी वेखण आए बहार, बसन्ती सोहणी सोभा पाईआ। जिस विच तुसीं गुल ते गुलशन सोहणी खिली गुलज़ार, महक महक विच महकाईआ। जेहड़ा झुक गया पुरख ते नार, गुरमुख इक्को रंग समाईआ। आत्म दा कर विचार, परमात्म वज्जे वधाईआ। जे बाहरों करो श्रृंगार, कज्जल नैण मटकाईआ। अंदरों रखो धुआँधार, एह प्रीत कदे ना भाईआ। बाहरों भावें पाटे चीथड़ दयो वखाल, भुक्खे नंगे नज़री आईआ। अंदरों बण जाओ ओस दे लाल, जेहड़ा लाल तुहाडे उत्तों भेंट गया कराईआ। एह दुनियां जगत दिहाढ़े चार, सदा रहिण कोए ना पाईआ। किथ्थे गए तुहाडे यार, प्यो दादा संग ना कोए निभाईआ। क्यों एह घड़न भन्न्हण वाला वड्डा घुम्यार, ठठयार धुरदरगाहीआ। जिन्ह ठोक वजा के वेखणा संसार, संसारी भण्डारी सँघारी दी चले ना कोए चतुराईआ। हुण आई तुहाडी वार, वारता पिछली दयां समझाईआ। जिस वेले गोबिन्द अंगीठे विच अगनी दिती बाल, आपणा आप भेंट कराईआ। पुरख अकाल अग्गे कीता सवाल, सवाली हो के अग्गे झोली डाहीआ। प्रभू हुण आवां तेरे नाल, निरगुण हो के फेरा पाईआ। ओस वेले मेरे सिख वखावीं बाल, बाले नढ्ढे नाल रलाईआ। गुरमुखो एह वेला लओ संभाल, सम्बल विच बैठा आपणा खेल कराईआ। जिस नूं सारे रहे भाल, कूचा गली हथ्थ किसे ना आईआ। पुच्छण आया मुरीदां हाल, मुर्शद हो के वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

२९९

२१

किरपा कर, साचा दर दए सुहाईआ। सत्त रंग कहिण ओए आपणे अंदर वेखो पिता, तत्तां परदयां विच्चों पर्दा लओ उठाईआ। तुसां की लैणा कोलों पत्थर इट्टां, कंधां सीस झुकाईआ। बिना गोबिन्द तों किसे नहीं करना हित्ता, साफ़ हिसाब ना कोए कराईआ। सारयां अन्त दे जाणीआं पिट्ठां, अगला संग ना कोए निभाईआ। गुरमुखो वेला प्रभ दा चरण धूढ़ी ला लओ टिक्का, टक्यां दी लोड़ रहे ना राईआ। गोबिन्द दा सीर कदे ना फिटा, अमृत रस अगम्मा दए चखाईआ। फेर जगत दी कहाणी शास्त्र वाला चिट्ठा, चिट्ठीआं पढ़ पढ़ के चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। सत्त रंग कहिण ओए गुरमुखो मेरयो वीरो, वीरनां दयां जणाईआ। ज़रा अपणा सीना चीरो, चिर दे विछुंनिउँ दयां जणाईआ। सारी दुनियां दा लेखा हो गया ज़ीरो, तुहानूं इक दा अंक ल्या बणाईआ। एह खेल आख़र अख़ीरो, आख़र दिता समझाईआ। किसे कम्म नहीं आउणी धरती धन माल जगीरो, महल अटल ना कोए वड्याईआ। गुरमुखो बण जाओ साचे हीरो, दर साचे सोभा पाईआ। वैराग अंदर वहाओ सदा नीरो, नैणां छहिबर लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा घर दए वखाईआ। सत्त रंग कहिण ओए आपणा आप कर लओ सफ़ैद, चिट्टा नज़री आईआ। पुरख अकाल ते गोबिन्द दा वेखो अहद, अहदनामा दयां वखाईआ। भगतो धर्म राए दी विच ना वड़ना क़ैद, बन्दीख़ाने ना कोए भुआईआ। बिना सतिगुर शब्द किसे कम्म नहीं आउणा कवाइद, पढ़यां हथ्थ कुछ ना आईआ। जे तुहानूं मिल गया सबब नाल धुर दा वैद, अंदरों रोग लओ गवाईआ। हुण अक्खरां वाली छड्ड दयो बहस, झगड़े विच ना कोए लड़ाईआ। जिन्हां ने सचखण्ड करनी रिहाइश, बाहवां उपर दयो उठाईआ। तुसीं चुरासी विच्चों थोड़े मिली नुमाइश, नुमाइंदे आपणे लए बणाईआ। तुहाडी झोली पा के नाम कैश, कैशीअर धुर दे दिते बणाईआ। वेख्यो किते आ ना जाइओ विच तैश, गुस्से विच झट लओ बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सत्त रंग कहिण सारे कर लओ सलाह, अंदरे अंदर ध्यान लगाईआ। अग्गे करीए ना कोई गुनाह, प्रभ नूं दयो बतलाईआ। भावें किन्नां गुस्से होवे पिता माँ, फिर वी प्रभू दे चरण छड्डिओ ना, नानक दादक भावें सारे जाण तजाईआ। आपणा दरगाह विच लवां लओ नाँ, नानक गोबिन्द दए वड्याईआ। वेख्यो भुल्लके कदी ना खाइओ सूर गाँ, सुत्तयां रिहा जगाईआ। जिन्हां मानणी ठंडी छाँ, सीस दयो झुकाईआ। वसणा साचे गराँ, सचखण्ड डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भरम भुलेखा दए कढ्ढाईआ। सत्त रंग कहिण जन भगतो साडी मन्नो अरदास, अरदासिआं विच जणाईआ। एह धुर दा विहार ख़ास, ख़ालस रिहा कराईआ। जिस तरां गोबिन्द पुरख अकाल दिसे उपर

२९९

२१

आकाश, जोत शब्द वड वड्याईआ। ओसे तरां धरती उत्ते आया तुहाडे पास, पासा रिहा बदलाईआ। अग्गे तत्तां दी पैंदी रास, हुण निरगुण निरगुण खुशी मनाईआ। जे समझ लओ निक्की जिही बात, बातन परदा इक उठाईआ। पता लग्ग जाए पुरख अकाल इक्को सब दा बाप, दूजा होर ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सत्त रंग कहिण गुरमुखो की अन्तर आई दलील, सच देणी सुणाईआ। जे कोई करना चौहन्दा अपील, उठ के दयो सुणाईआ। जे कोई करना चौहन्दा वकील, गुर अवतार पैगम्बर लओ मँगाईआ। जे कोई जाणा चौहन्दा विच तहसील, मन मनुआ लओ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सत्त रंग कहिण साडे विच नहीं कोई धब्बा, इक्को रंग वखाईआ। जन भगतो सब दा सांझा होया अब्बा, पुरख अकाल लैणा मनाईआ। तुसीं वी बदल दयो अंदरों तबअ, तबीअत लैणी बदलाईआ। फेर ना किहो हाए रब्बा, जगत रिहों सताईआ। जुग चौकड़ी लभ्भयां किसे ना लभ्भा, मेहर नज़र मेल मिलाईआ। तुहानूं दे के सद्दा, सम्मत चौथे ल्या जुड़ाईआ। भगत दुआर दे के जगह, सच दुआरे सोभा पाईआ। संवार लओ आपणा अग्गा, मिले माण वड्याईआ। मन कल्पणा करयो कोए ना दग़ा, फ़रेबां विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर दए वसाईआ। सत्त रंग कहिण जन भगतो चुरासी विच्चों लै लओ छुट्टी, छुटकारा लओ कराईआ। पन्ध मुका लओ त्रैकुटी, ईड़ा पिंगल सुखमन दी लोड़ रहे ना राईआ। असीं बज्झ गए तुहाडी गुट्टीं, सत्ते मंज़लां पार कराईआ। जिथ्थे इक्को जोत दी पोह फुट्टी, सूरज चन्न नज़र कोए ना आईआ। भगतां दी प्रीत कदे ना टुट्टी, टुट्टयां रिहा जुड़ाईआ। भाग लग्गा उन्हां कुखीं, जो जन्म जन्म दी टुट्टी रहे जुड़ाईआ। सदा रहो सुखी, सुख सागर विच समाईआ। बणे रहो वड मुक्खी, गुरमुख नज़री आईआ। गांदे रहो दो तुकी, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। अन्त सब दी मंज़ल रही मुकी, मुकम्मल दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। सत्त रंग कहिण सारे हो गए इक्ठे, मिली माण वड्याईआ। अग्गे इक दूजे नूं करदे रहे ठट्ठे, वड्डे छोटे कहि कैह रहे सताईआ। पिछली मंज़ल टप्पे, सद इक्को वेख वखाईआ। जिथ्थे भगत रहे भाई भैण सके, गुरमुख सोहणा सोभा पाईआ। प्रेम प्रीती अंदर पक्के, नाता कूड़ ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्म कांड सदा दए सुहाईआ। सत्त रंग कहिण सचखण्ड बैठे ला के डेरा, घर इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे ढोला तेरा मेरा, इक्को सिफ्त सालाहीआ। पिछला होवे नबेड़ा, सोहणा वस्से खेड़ा, निरगुण दीपक जोत रुशनाईआ। पुरख अकाल करे मेहरा, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच दए वड्याईआ। सत्त रंग कहिण जिस

कारण गोबिन्द पुरख अकाल मारया फेरा, आपणा वेस वटाईआ। सो तुहाडा कर के हक़ नबेड़ा, पिछला लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बख्शण लग्गिआं ना लावे देरा, देर दे विछड़े जोड़ जुड़ाईआ।

✻ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सत्त रंग कहिण साडी इक अपीले, बेनन्ती दईए जणाईआ। जन भगतो बणयो मात वसीले, वसल मिले यार खुदाईआ। बणीए सच क़बीले, क़िबल दा मालक दए वड्याईआ। बदले ना कदे दलीले, दिलबर दिलदार नज़री आईआ। कौल इक़रार हाढ़ महीने, महा थित वज्जे वधाईआ। रंग चढ़े रहिण भीन्ने, भिन्नड़ी रैण खुशी मनाईआ। झगड़े मुक जाण लोक तीने, त्रैगुण लेखा देणा गुआईआ। साहिब याद रखयों सीने, सीना इक्को वेख वखाईआ। जगत विकार ना बणयों कमीने, ममता मोह दुहाईआ। झगड़ा छड्डुओ नर मदीने, आत्म परमात्म नज़री आईआ। तुहाडे लेखे लगण पसीने, जो बणे पाँधी राहीआ। सच दुआर रहिणा अधीने, आहला अदना मिले वड्याईआ। हिरदे हरि हरि लैणा चीने, चिन्ता कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ। तुहाडे सुफल होवण जीणे, जीवण जुगत जगत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा साथी दया कमाईआ। सत्त रंग कहिण जन भगतो देणा धुर दा साथ, सगला संग निभाईआ। मस्तक झुकणा माथ, मिली माण वड्याईआ। नाता जुड़िआ सज्जे खब्बे हाथ, सीस हथेली उत्ते टिकाईआ। जो गोबिन्द गया आख, पुरख अबिनाशी पूर कराईआ। ज़रा सारे लओ झाक, नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। निरगुण धार लभ्भो साक, सज्जण नूर खुदाईआ। सांझी कर लओ ज़ात, झगड़ा दुनी रहे ना राईआ। तन वजूद कर लओ पाक, पतित पुनीत आप कराईआ। सच दवारिउँ मँगो दात, दाता दानी आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। सत्त रंग कहिण वेखो खेल पुरख अगम्मा, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। सब दा लेखे लावे दमा, दामनगीर आप हो जाईआ। जगत राज चलाया नवां, नौ खण्ड वज्जे वधाईआ। धुर संदेसा धुर दा कहां, धुर दी धार धुर प्रगटाईआ। खुशीआं नाल फिरां चावां, भज्जां वाहो दाहीआ। अग्गे बदलण वाला समां, साहिब स्वामी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला रिहा मिलाईआ। सत्त रंग कहिण जन भगतो बण गई साची जोड़ी, हरि सज्जण ल्या जुड़ाईआ। जुग चौकड़ी करदे रहे बौहड़ी बौहड़ी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सानूं लभ्भी ना मंज़ल पौड़ी, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। कलयुग

अन्तिम साडी करनी सौरी, साहिब सुल्तान दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा दए सुहाईआ। सत्त रंग कहिण भगतो साचे बण जाओ जोगी, जुगीशरां पन्ध मुकाईआ। हउमे दा रहे कोई ना रोगी, हंगता देणी गवाईआ। हक़ हक़ीक़त बणो भोगी, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। आत्म परमात्म हो संजोगी, घर मेला सहज सुभाईआ। नाम गाओ सलोकी, सोहँ ढोला राग अलाईआ। झगड़ा मुक जाए नाथ त्रैलोकी, तिन्नां लोकां पन्ध मुकाईआ। सचखण्ड दे बण जाओ मौजी, मजलस प्रभ दे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि देवणहार सरनाईआ। सत्त रंग कहिण असीं दस्सण आए असलीअत, असल दईए समझाईआ। गोबिन्द ने कीती वसीअत, शब्दी हुक्म सुणाईआ। जन भगतां बदल दिती तबीअत, तबअ कूड़ रहे ना राईआ। जगत विच दिसण अकलीअत, अकल कलधारी वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआर तुहाडी अहिमीअत, अहमक़ रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा दए सुहाईआ। सत्त रंग कहिण जन भगतो तुट्टे ना नाता, नातवां रहिण ना पाईआ। धुर दा बणे साका, सज्जण इक अख्वाईआ। दो जहानां राखा, दिवस रैण वेख वखाईआ। सांझा बण के आका, सीस हथ्थ टिकाईआ। तुसां इक्को शब्द हुक्म मन्नणा आखा, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला रिहा मिलाईआ। सत्त रंग कहिण असां तक्कया सिंघ शेर, शहिनशाह नज़री आईआ। जो तुहाडे उत्ते करे मेहर, मेहरवान दया कमाईआ। सृष्टी नाल कर के हेर फेर, भरमां विच भुलाईआ। भगतां वस के नेरन नेर, आपणा परदा रिहा उठाईआ। दीन दुनी पा के विच गेड़, उलटी लट्ठ रिहा गिड़ाईआ। कूड़ी क्रिया छेड़ां छेड़, झगड़ा करे लोकाईआ। गोबिन्द दा लेखा वेख नंदेड़, परदयां विच्चों फुलाईआ। अन्त रिहा नबेड़, हक़ीक़त हक़ झोली पाईआ। इक्को रंग रंगा के सञ्ज सवेर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला मेल वखाईआ। सत्त रंग कहिण असीं वेखीए तत्तां वाले शेर सिंघ दा परवार, नाता जगत तकाईआ। जिन्हां नूं अजे तक नहीं आया एतबार, अंदरे अंदर अन्तर ना कोए मनाईआ। रसना करदे रहे पुकार, मन का मणका ना कोए भुआईआ। सिख बणे ना विच संसार, सिख्या सच ना कोए समझाईआ। एह खेल अपर अपार, पतिपरमेश्वर आप कराईआ। ग़फ़लत विच हो खुआर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। सत्त रंग कहिण शेर सिंघ दे वेखे बच्चे, बच्चयां वाले नज़री आईआ। तन भाण्डे दिसे अजे कच्चे, साबत नज़र कोए ना आईआ। चोरी चोरी चाढ़दे भट्ठे, मदि मटक्यां विच टिकाईआ। उहदे वटदे टके, क़ीमत घरां विच रखाईआ। अजे तक ना बणे सके, साजण मिल्या ना बेपरवाहीआ। मन

वासना नाल बणाउँदे मते, मन का मणका ना कोए भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। सत्त रंग कहिण असीं करना नहीं लिहाज, सब नूं देणा जणाईआ। जिस गोबिन्द दे सिर ताज, ओह हुक्म रिहा सुणाईआ। असीं कूक सुणाउणी आवाज़, ढोला बेपरवाहीआ। जिथ्थे नहीं सवाल जवाब, हुक्मी हुक्म विच वरताईआ। पैगम्बर करन आदाब, सजदे सीस झुकाईआ। लहिणा देणा आज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सत्त रंग कहिण एह चौथे साल दी हाढ़ी, सच दयां सुणाईआ। तत्तां वाले शेर सिँघ दे बच्चयो अग्गे कोई ना कटाइओ मुच्छ दाढ़ी, फ़रमाना इक्को इक जणाईआ। चौवीआं सालां पिच्छों तुहाडी आई वारी, चौवीआं अवतार रिहा जणाईआ। एह खेल अगम्म अपारी, बुद्धी वाली कथा ना कोए प्रगटाईआ। पुत्रां नाल किसे दी नहीं यारी, सिखां भगतां नाल मिल के आपणी खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। जे मुच्छ दाढ़ी लैणी कट, सत रंग कहिण सच दईए जणाईआ। फिर बेशक भगत दुआरिउँ पिच्छे जाणा हट, आउण दी लोड़ रहे ना राईआ। जे मदि प्याले पीणे गट गट, नाता जाणा तुड़ाईआ। जे वेखणा साचा हट्ट, सीस क़दमां उत्ते झुकाईआ। ओह तत्तां वाला पिउ सब नूं गया छड्ड, सका बण के तुहानूं गोद ना कोए उठाईआ। एह खेल पुरख समरथ, जो सब दा पिता माईआ। जेहड़े गुरमुख सच सरनाई गए ढठ्ठ, ढहि ढहि सीस निवाईआ। उह सच दुआरे रहे सज, सज्जण मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। सत्त रंग कहिण जे बणना शेर सिँघ दे बच्चे, शेर हो के दयो वखाईआ। जे अंदरों रहिणा कच्चे, मुखड़ा लैणा भुआईआ। तुसीं उपजे ओस दी रत्ते, जो रतन अमोलक गुरमुख रिहा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए लिखाईआ। सत्त रंग कहिण जे एह बचन होवे मन्ज़ूर, सच सच सुणाईआ। फेर पिछले बख्शे जाण क़ुसूर, लेखा अवर रहे ना राईआ। अग्गे भण्डारा करां भरपूर, भुक्खयां दयां रजाईआ। जे रहिणा मूर्ख मूढ़, पल्लू लओ छुडाईआ। भगतां नूं उधारना गुरसिखां नूं तारना एह आदि जुगादी दस्तूर, धुर दी रीती चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। सत्त रंग कहिण सुणो इक अरदास, बेनन्ती दयां जणाईआ। सतारां हाढ़ दिहाढ़ा ख़ास, ख़ालस रंग रंगाईआ। जे प्रभ दे होणा दास, दासी हो के सेव कमाईआ। अंदरों करो विश्वास, विषयां दयो तजाईआ। मानस जन्म होवे रास, रस्ता देवे धुरदरगाहीआ। पूरी कर दे घाट, घाटा रहे ना राईआ। मंज़ल वेख्यो घाट, मन्दिर वज्जे वधाईआ। सुत्ते पओ जाग, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। सतिगुरु दुआरे सच्चा इक समाज, जूठ झूठ कम्म किसे ना

३०३
२१

आईआ। जे मुच्छ दाढ़ी दा शेर सिँघ दे घर होवे रिवाज, बाकी गुरमुख लुकण केहड़ी थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला दए मिलाईआ । सत्त रंग कहिण असीं कहि के जाणा दस्स, दास्तान सुणाईआ। एह खेल पुरख समरथ, जो दाता इक अख्वाईआ । मुहब्बत विच करदा वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जगत वाली बदल लओ अक्ख, निज नेत्र अक्ख उठाईआ । जगत विकारा दयो सट्ट, घरों बाहर कढ्ढाईआ। नाम भण्डारा लओ झट, पुरख अबिनाशी झोली पाईआ। मदि वाले भन्न दयो मट, अगनी हेठ ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा पूर कराईआ। सत्त रंग कहिण की लैणा विच्चों शराब, शरअ दयो तजाईआ। घर लओ हयाते आब, जो अमृत रस चखाईआ। मुख तों लाह दयो नक़ाब, परदा नज़र कोए ना आईआ। अगली करो याद, पिछला मूल मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा इक वखाईआ। सत्त रंग कहिण मोता सिँघ जे घर दी कढ्ढुणी ग़रीबी, तैनूं दईए जणाईआ। शेर सिँघ दे घर क्यों आई बदनसीबी, बैठी डेरा लाईआ। सोहणी सवाणी बण के बीबी, नख़रा रही वखाईआ। जिस तरां तुहाडी उत्तों उत्तों गाउँदी जीभी, एसे तरां अंदरों मन लओ मनाईआ। फेर गंढ्ढु जाए पीची, पेचा प्रभ आपणा नाम पाईआ। अज्ज तों रल जाओ भगतां वाली विच बग़ीची, जो गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। एह सति धर्म दी रीती, तत्तां वाला प्यार ना कोए वखाईआ। सब दी बदल जाए नीती, नीतीवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला रिहा उठाईआ। सत्त रंग कहिण रल जाओ नाल विच सिखी, अंदरों माण दयो गुआईआ। प्रभ दी धार सब नालों तिक्खी, खण्डे धार ना कोए चतुराईआ। एह लिख्त तुहाडी अन्त अख़ीरी चिठ्ठी, फेर सके ना कोए बदलाईआ। जेहड़ी धार अंदर टिकी, उहनूं दयो तजाईआ। वेखो पूरी हो गई मिती, चौवी साल तुहाडे नाल ना अक्ख मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुरदरगाहीआ। जे सतिगुर चलो भाओ, भय भउ जणाईआ। चोरी चोरी कदे ना लाइओ दाओ, समझणहार हर घट थाईंआ। करे सच न्याउँ, अदल इन्साफ इक कमाईआ। चरणी डिगिआं फड़े बाहों, फड़ बाहों गले लगाईआ। किसे गुरसिख तों ना घुटाइओ आपणे पाउँ, गुरुआं वाली रीत ना कोए चलाईआ। जे मँगणी ते इक्को परम पुरख दी छाउँ, जो शहिनशाह मालक शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बणत रिहा बणाईआ । कदी ना करयो अंदर विचार, सत्त रंग रहे जणाईआ। इस गद्दी दे असीं सां सरदार, पिता साडा नज़री आईआ। क्यों हो गए घर तों बाहर, मिली ना माण वड्याईआ। एह खेल सच्ची सरकार, जो सब नूं रिहा वखाईआ। बिना भगतां तों देवां ना कदे किसे दीदार,

जगत बचया अंक देणा लाईआ। गुरसिखां गोदी लवां उठाल, एहो मेरी बेपरवाहीआ। एह मंज़ल बड़ी दुष्वार, बिन किरपा चढ़न कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जे कहो पूरन सिँघ कीता दग़ा, सत्त रंग कहिण एह वी दईए जणाईआ। बिना पूरन तों पूरन प्रभ दा चले कोई ना अग्गा , पिच्छा समझ ना किसे समझाईआ। एह एथे ओथे सदा इक्को लैंदे मज़ा, दूजा रस ना कोए वखाईआ। हुण लोकमात दी करन आए गजा, भगतां अंदर फिर फिर वेख वखाईआ। बिना पूरन तों पूरन प्रभ नूं लभ्भी कोई ना जगह, आसण सोभा कोए ना पाईआ। छड्डके दीन दुनी दी हद्दा, हरिजू आपणे घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा वखाईआ। सत्त रंग कहिण पूरन नहीं परमेश्वर पूरन, पूरन पूरन विच समाईआ। जिस नूं गुरु अवतार पैगम्बर मन्नण हज़ूरन, हज़ूरीए सारे लए बणाईआ। ओह आपणे सदा चले दस्तूरन, हुक्म हुक्म विच प्रगटाईआ। सिख भगत बणाउण वास्ते करे कदे ना किसे मजबूरन, मजबूरी विच नाता ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सत्त रंग कहिण अज्ज दी घड़ी सुलखणी, सोभावन्त सुहाईआ। जन भगतां पैज रखणी, देवे माण वड्याईआ। नाता जोड़ना पत पत्नी, परम पुरख बख्शणी इक सरनाईआ। मेल मिलाउणा धुर दे वतनी, बेवतना जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। सत्त रंग कहिण सानूं हुक्म आया जल्दी, सच दईए सुणाईआ। कुछ खेल होई कल दी, की कला प्रभू वरताईआ। कलयुग अग्ग दिसे बलदी, बलि राजा दए दुहाईआ। कुछ धार वहिणी जल दी, वरुण रिहा कुरलाईआ। किसे ख़बर नहीं घड़ी पल दी, पलकां पिच्छे ध्यान ना कोए लगाईआ। प्रभ दी खेल वल छल दी, अछल छलधारी आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला रिहा चुकाईआ। सत्त रंग कहिण शेर सिँघ दे परवार दी आई वारी, दूजी वार आप रखाईआ। मोता सिँघ ज़रा उठ के आ अगाड़ी, हुक्म दयां सुणाईआ। जगत जुग आई वारी, वारस तैनूं दयां बणाईआ। बचन कर लै कौल इक़रारी, वायदा इक जणाईआ। एस परवार विच्चों मुनाइओ कोई ना दाढ़ी, रोम भंग ना कोए कराईआ। फिर पैज जाए सुआरी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । हरि संगत नूं बोल के दस्स दे तिन्न तिन्न वारी, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। जे कोई भुल्ल गया फेर एथे आउणा नहीं दूजी वारी, भगतां विच बहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। जे मन्न जाओ प्रेम दी दयां खुमारी, नाम मस्ती विच समाईआ। एह अन्त अखीर जगत दा विहारी, विवहार आपणा आप चलाईआ। वेख्यो किते भुल्ल के बण ना जायो इशतहारी, भगौड़े जगत नज़री आईआ। एह सिख्या नर नारी, सब नूं रिहा समझाईआ। भट्ठी

उत्ते शराब वाली तौड़ी फिर कदे ना जावे चाढ़ी, एह रीती देणी बदलाईआ। आह फेर नहीं आउणी हाढ़ी, हाढ़ा कढुया कम्म किसे ना आईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा दरबारी, चौवीआं सालां पिच्छों तुहाडी मिसल इक वार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे सच दुआरी, दर दुआर इक्को इक वसाईआ।

✲ १६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✲

सत्त रंग कहिण मंज़ल मिली अख़ीरी, अक्खरां तों बाहर दिती वड्याईआ। जुग जन्म दी गई दिलगीरी, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। शरअ कटी गई ज़ंजीरी, ज़ाहर ज़हूर मिली सरनाईआ। साडी पूरी होई फ़कीरी, फ़िकरा सुणया धुरदरगाहीआ। सब दी बदल गई तक़दीरी, मुकद्दर लेख दिता बदलाईआ। मिल गई धुर धाम अमीरी, अमरापद सोभा पाईआ। जिथ्थे शाही चले बिना वज़ीरी, तख़त निवासी इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी निक्की जेही पनीरी, बूटे नन्हे नन्हे वेख वखाईआ। पन्ध रिहा ना गली भीड़ी, मन्दिर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडा इक सुहाईआ। सत्त रंग कहिण मिली धुर दी सरन, सरनगति वड्याईआ। पूरा होया प्रन, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। झगड़ा चुक्कया मरन, जीवत रूप धराईआ। झगड़ा गया बरन, वरन डेरा ढाहीआ। इक्को ढोला लग्गे पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। साची मंज़ल लग्गे चढ़न, कलयुग कूड़ा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सत्त रंग कहिण चढ़ गई नाम खुमारी, ख़िमा प्रभ दिती कमाईआ। निरगुण धार ला के यारी, सरगुण मेला ल्या मिलाईआ। संदेसा देवे वड संसारी, सहिंसा अंदर रहिण ना पाईआ। कर प्रकाश जोत निरँकारी, निरवैर वेख वखाईआ। जन भगतां पैज जाए सुआरी, सुआरथ आपणा ना कोए बणाईआ। प्रगट होया आपणी वारी, वारता सब दी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। सत्त रंग कहिण वेख्या अबिनाशी अचुता, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस दा तन वजूद कोई ना बुत्ता, बुतख़ान्यां करे सफ़ाईआ। सति सच सुहाए रुत्ता, रुतड़ी आप महकाईआ। पिछला पैंडा जाए मुक्का, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। किसे दे मुख अग्गे लग्गण ना देवे हुक्का, गुरमुखां आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार इक वखाईआ। सत्त रंग कहिण वेख्या उह सुआमी, जो समां रिहा बदलाईआ। बण के हर घट अन्तरजामी, लख चुरासी खोज

खुजाईआ। शब्द अगम्मी बोल बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। महिमा दस्स अकथ कहाणी, पर्दा उहला रिहा उठाईआ। की समझे जीव प्राणी, वेद पुराणां समझ कोए ना आईआ। कलयुग अन्तिम जोत नूरानी, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस दा खेल उपर असमानी, धरनी धरत धवल आप सुहाईआ। परदा लाहवे चारे खाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग धुर दा इक दृढ़ाईआ। चार चार दा मेला सत्त रंग, रंग सत्त रहे सुणाईआ। तेरा खेल प्रभू दा रंग, मलंग चारों कुण्ट वेख वखाईआ। सृष्टी अंदरों करके नंग, ओढुन सीस ना कोए टिकाईआ। कूड़ विकार वहा के कंग, लोभ लहर विच रुढ़ाईआ। भंडी पा के विच वरभण्ड, चार वरन दए रुड़्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर वजदी रहे वधाईआ। सत्त रंग कहिण असीं वेख्या सारा जगत, जगजीवण दाते दिता वखाईआ। फेर वखाए आपणे भगत, जो भगवन विच समाईआ। सोहण उत्ते धरत, धवल दए गवाहीआ। वसण उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम मेल मिलाईआ। अग्गे रहे ना कोई हरस, जन्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। आपणा पूरा कर के फ़र्ज़, सेवक हो के सेव कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा संग लए बणाईआ। रुमाल कहिण असीं सतरंग दा रूप, रूप अनूप जणाईआ। सब दा सांझा इक्को भूप, जिस नूं पुरीआं लोआं सीस निवाईआ। वस्से अर्श अरूज, दरगाह साची डेरा लाईआ। जन भगतां करे महफ़ूज, अगनी अग्ग ना कोए तपाईआ। जिधर तक्कण ओधर मौजूद, हर घट वसिआ नज़री आईआ। मंज़ल दे के हक़ मक्सूद, सच दुआरे दए टिकाईआ। जिथ्थे नाता रहे ना कूड़ी क्रिया कूड़, क्रिया कूड़ जन्म ना कोए वखाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, धन्दा आपणा नाम लगाईआ। गढ़ हँकारी तोड़ ग़रूर, ग़ुरबत अंदरों दए कढ्ढाईआ। तन तपे ना वांग तन्दूर, अमृत मेघ मेघ बरसाईआ। मनुआ पाए ना कोए फ़तूर, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। सत्त रंग कहिण असीं सोहणे सत्ते, सति विच समाईआ। गोबिन्द भगतां दे दस्से पते, पतिपरमेश्वर लए मिलाईआ। जिस दा इक्को डंका वज्जणा फ़तह, फ़तवा सब दे उत्ते लाईआ। सन्त सुहेले कढ्ढे सच्चे, सच पिता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सत्त रंग कहिण साडा रंग सदा पक्का, पक्की भगतां नाल कराईआ। छड्डुया मदीना मक्का, मक़बरिआं डेरा ढाहीआ। पढ़या इक्को टप्पा, सोहँ राग अलाईआ। अक्खरां विच्चों मन्ज़ूर होया इक्को पप्पा, पूरन परमेश्वर देवे माण वड्याईआ। जिस ने सारयां दा धोणा धप्पा, धब्बा दए मिटाईआ। दिवस रैण फिरे नठ्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। सारयां नूं कर इक्ठा, सहजे ल्या मिलाईआ। जो गोबिन्द दी चरणी ढठ्ठा, पुरख अकाल सीस निवाईआ।

३०८
२१

उन्हां दा शब्दी धार बणा के जथा, यथार्थ आपणा रंग वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द ते सोहँ कथा, कहाणी अवर ना कोए बणाईआ। धुर दे नाम दा आत्म उत्ते ला के ठप्पा, ठप्पी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे होए सहाईआ। सत्त रंग कहे सानूं बख़श्या इक सन्तोख, धीरज धीर धराईआ। प्रेम दी दे के मोख, मुफ्त ल्या बचाईआ। बख्श के निर्मल जोत, जोत करे रुशनाईआ। बणा के आत्म गोत, परमात्म विच समाईआ। भुला के पिछली सोच, अगली समझ जणाईआ। जिस दे दर्शन नूं रहे लोच, निरगुण धार गोबिन्द ओहो माहीआ। जो सब दे काया माटी भाण्डे दए पोच, पतित पुनीत कराईआ। अग्गे कदे ना होवे फ़ौंत, मरन जन्म विच ना आईआ। सब दा सांझा बण के खौंत, मालक इक अख्वाईआ। गलों कूड़ा लाहे तौंक, तबअ ज़मीर दए बदलाईआ। जिस नूं भगतां मिलण दा शौंक, जुग जुग वेस वटाईआ। ओस दुआरे गए पहुंच, छुट्टी कूड़ी लोकाईआ। सत्त रंग कहिण जन भगतो रखयो ना कोई अदौत, अदावत नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर भुल्लण नालों चंगी मौत, जीवण कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा वेख वखाईआ। सत्त रंग कहिण जन भगतो प्रभ वेखो सज्जे खब्बे, दोवें हथ्थ देण दुहाईआ। अग्गे पिच्छे सदा लभ्भे, जो लबां तों पिच्छे रहे ध्याईआ। काया मन्दिर घर घर फिरदा पैर दब्बे, चोरी चोरी पन्ध मुकाईआ। हुक्म संदेसा दे के सद्दे, सुत्ते लए उठाईआ। जिस दे कारण आए भज्जे, आपणा पन्ध मुकाईआ। कर लओ दर्शन रज्जे, रजो तमो डेरा ढाहीआ। लभ्भयां जगत किसे ना लभ्भे, मेहर नज़र नाल मिलाईआ। अग्गे बण जाओ शेर बग्गे, शरअ ज़ंजीर तुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मूल ना चुकिओ बण के गधे, काग हँस रूप बदलाईआ। आत्म परमात्म लै लओ मज़े, मज़ाक़ छड्डो कूड़ लोकाईआ। तुहाडे नेड़ ना आवे क़ज़े, कज्जल धार देवे गवाहीआ। इक दूजे नाल करने छड्ड दयो दग़े, फ़रेबी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सत्त रंग कहिण सुरती खोल्हो औरत मर्द, सब नूं दयां जणाईआ। जिस कारण आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। तुहाडा सांझा करे दरद, दुखियां दर्द वंडाईआ। गोबिन्द दी अन्त अख़ीरी मन्ज़ूर कर के अर्ज़, आजज़ लए बणाईआ। सचखण्ड विच्चों घल्ल के उत्ते धरत, धवल दिती वड्याईआ। फेर खोल्ह के पिछली फ़रद, लेखा ल्या बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा रंगाईआ। सत्त रंग कहिण वेखो आपणा माही, मेहरवान वखाईआ। असीं देवण आए गवाही, शहादत देणी भुगताईआ। जिस ने बूटा पुट्टिआ काही, ओह तुहाडी जड़्ह लगाईआ। जिस दे अग्गे पीर पैगम्बर देण दुहाई, उह गोबिन्द तुहाडा पिता माईआ। सब दीआं इक्ठीआं पकड़े बाहीं, अग्गे हो ना

कोए छुडाईआ। वेखो धुर दा मालक बणया राही, रहिबर हो के वेख वखाईआ। सन्त सुहेले मेले चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक जणाईआ। जेहड़े गोबिन्द दे झीवर छींबे नाई, भगतां नाल लए मिलाईआ। जन भगतो तुहाडी ज़मीन तों उत्तों असमानां तों परे नहीं रहिणी आवाजाई, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। बिना प्रभू तों तुहानूं जम्मण वाली नहीं कोई माई, जमां दा लेखा दिता मुकाईआ। सब दा मालक इक गुसाईं, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची रिहा सुहाईआ। सत्त रंग कहिण वेखो सोहणा जुड़िआ जोड़ा, जोड़ी आप बणाईआ। छड्डके बांका घोड़ा, घोड़ी चढ़या बेपरवाहीआ। कलयुग वेख अन्ध घोरा, भज्जिआ थाउँ थाईंआ। बण के डाकू चोरा, चोरी घर घर रिहा कमाईआ। गुरमुख वेख के बांका छोहरा, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। रातीं सुत्तयां दर्शन दे के भोरा, भरमां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। अन्तर वड़ के मन नूं लाया मोड़ा, दीन दुनी दिती भुलाईआ। सस्से उपर लगा के होड़ा, होका दिता जणाईआ। प्रेम प्यार दा ला के पौड़ा, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। सुरती शब्द बन्नू के डोरा, तन्दी आप खिचाईआ। भगत भगवान दी रख के लोड़ा, लोड़ींदे साजण लए मिलाईआ। बाकी जवाब दे के कोरा, गुरमुखां दा कोरम पूरा ल्या कराईआ। जिन्नां दा पिछला भाग मथोरा, मिथ्या दस्स सर्ब लोकाईआ। आपणा मन्त्र दस्स के फोरा, फ़ुरने पिछले दिते तजाईआ। क्यों गोबिन्द नूं याद आया फ़तह सिँघ ते जोरा, जो जोरू ज़र गए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। सत्त रंग कहिण असीं वेख होए खुशहाल, खुशीआं विच दुहाईआ। बण के गोबिन्द लाल, लालन वेख वखाईआ। जिन्नां दी आप कीती भाल, खोजे थाउँ थाईंआ। आप मुढ्ढ गुरसिख बणा के डाल, बूटा इक्को रिहा सुहाईआ। गोदी चुक्कके आपणे बाल, बचपन आपणे लेखे लाईआ। दीना नाथ हो दयाल, दयानिध दया कमाईआ। चार जुग तों वखरी चल के चाल, चाल निराली इक दरसाईआ। सब तों वखरे कीते शाह कंगाल, भगत सुहेले रूप वटाईआ। जन्म दी लेखे ला के घाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लए मिलाईआ। सत्त रंग कहिण तक्कया अजब नज़ारा, सोहणा नज़री आईआ। मिल्या मीत मुरारा, हरि करता बेपरवाहीआ। धर्म लग्गा अखाड़ा, गुरमुख रिहा नचाईआ। दे वड्याई सतारां हाढ़ा, हाढ़ा सब दा पूर कराईआ। गुरमुख सखीआँ ते गोबिन्द इक्को लाड़ा, गुर गुर वजदी दिसे वधाईआ। झगड़ा मुका के पंचम धाड़ा, धाड़वी शब्द गोद उठाईआ। मानस जन्म जाए संवारा, हरिजन दए वड्याईआ। क्रिया कूड़ कर किनारा, नईआ नौका दए डुबाईआ। अग्गे लै के वञ्झ मुहाणा, नाम निधाना दए वखाईआ। जिस दा मालक धुर दा राणा, शहिनशाह बेपरवाहीआ। जिन्नां सोहँ गाणा गाणा, गावत खुशी

मनाईआ। उन्हां सचखण्ड दुआरे जाणा, अगला पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल दा गोबिन्द धार बाणा, पुराणा खेल ना कोए वखाईआ। अगला दस्स के सच निशाना, निशाना आपणा इक झुलाईआ। जन भगत रहे ना कोए बेगाना, वैरी वैर ना कोए कमाईआ। सुणो धर्म दा इक तराना, तार सितार रिहा हिलाईआ। सत्त रंग कहिण जन भगतो प्रभ दे नाल लाया याराना, यारी धुर दी तोड़ निभाईआ। दीन मज़हब दा जिस ने टिंड विच रहिण नहीं देणा काना, कायनात करे सफ़ाईआ। मेल होणा जगत इन्सानां, हैवानां परदा आप चुकाईआ। लै के आया नाम पैमाना, नापे ख़लक ख़ुदाईआ। सन्त सुहेला होए ना कोए परेशाना, सांतक सति दए कराईआ । गोबिन्द छड्डके चिल्ला तीर कमाना, जगत खण्डा ना कोए उठाईआ। एका दे के धुर फ़रमाना, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। योद्धा सूरबीर बलवाना, शब्दी नाउँ प्रगटाईआ। जिस दी सूरत नज़र ना आए उत्ते जहाना, चिन्न्ह जगत ना कोए जणाईआ। जेहड़ा बदल के गुर अवतार पैगम्बरां तों बाहर ख़ाना, ज़िमीं असमाना आपणा डेरा लाईआ। शहिनशाह बण के शाह शहाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निगाह निगाह विच्चों उठाईआ। जिस कूड़ी मेटणी बग़ावत, बग़लगीर देणे बणाईआ। साचे नाम दी दे सख़ावत, सख़ी सुल्तान देणे प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ दी लाह अलामत, आलम उल्मा देणे समझाईआ। मुहब्बत मेहर बख़्श निआमत, तोहफ़ा घर घर देणा पुचाईआ। जन भगत सुहेला रख के सही सलामत, समें विच्चों पार कराईआ। धर्म दी धार दे ज़मानत, ज़ाहर ज़हूर लए जुड़ाईआ। सदी चौधवीं दी सब ने वेखणी क्यामत, कीमिआ होवे जगत लोकाईआ। अग्गे नूं बन्द करनी जगत हजामत, हुक्म हक़ हक़ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा वेख वखाईआ। सत्त रंग कहे साडा पूरा अरसा, अर्श फ़र्श दुहाईआ। सोहणा लग्गा बरसा, बरसी वज्जी वधाईआ। गोबिन्द वाचिआ पर्चा, प्राचीन खोज खुजाईआ। जिस दी चार जुग करदे रहे चर्चा, चर्चां विच दुहाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी खर्चा, खरचखाह परदा लाहीआ । जिस दी समझे कोए ना आरजा, परदा अग्गे ना कोए चुकाईआ। ओह सब तों लैण लग्गा चारजा, चारज सब दे उत्ते लाईआ। शब्दी लावण लग्गा गारदा, गर्दन सके ना कोए उठाईआ। खेल होण लग्गा पुरख सरकार दा, धुर सरकार आप जणाईआ। झगड़ा मुक्कण लग्गा लख हज़ार दा, करोड़ी गणत ना कोए गणाईआ। तेज चमकण लग्गा इक्को सुत दुलार दा, जो सूरबीर अख्वाईआ। सतिगुर शब्द सदा ललकारदा, भय भउ विच डराईआ । एह ख़ुशी महीना सत्त रंग कहिण हाढ़ दा, हरि आपणा मन्दिर वखाईआ। सब दा लेखा मुक्या जंगल जूह उजाड़ पहाड़ दा, जूहां विच ना कोए भुआईआ। पैंडा मुक्या उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण पहाड़ दा, पारब्रह्म पिछला पन्ध मुकाईआ। सत्त

रंग कहिण वेखो खेल सच्ची सरकार दा, जो शरेआम रिहा भुगताईआ। हुक्म चलणा इक मुख़तिआर दा, हिस्से वंड ना कोई वंडाईआ। नज़ारा तकणा ओस दरबार दा, जिथ्थे धुर दरबारी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला मेल मिलाईआ। सत्त रंग कहिण सति विच हो जाओ सती, सति विच समाईआ । सब दा मालक इक्को कमलापती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। इक्को सिख्या पढ़ लओ पट्टी, पटने नूं छड्डके घट विच करे पढ़ाईआ। हुण सदी चौधवीं जांदी टप्पी, टप्पयां दे गाव्वयां दा लेखा देणा मुकाईआ। जिस प्रभ पिच्छे चार जुग सृष्टी लभ्भ लभ्भ थक्की, खोज्यां हथ्थ किसे ना आईआ। सड़ गए विच भट्ठी, अगनी अग्ग जलाईआ। बणदे रहे हठी, हठ योग प्रगटाईआ। फिरदे रहे अठ्ठ सट्ठी, तटां उत्ते कुरलाईआ। खोजदे रहे मन्दिर मठी, शिवदुआले राह तकाईआ। बणदे रहे यती, नार कन्त जुदाईआ। प्रभ दा किसे दरस ना पाया रती, काया रंग ना कोए रंगाईआ। एस तरां किसे नहीं वेख्या अक्खीं, चार जुग देण दुहाईआ। भगतां दी नगरी नहीं कदे कोई वस्सी, भगत दुआरा ना कोए बणाईआ। दीनां मज़हबां विच सृष्टी फसी, फ़ैसला हक़ ना कोए सुणाईआ। हुण वेखो सब नूं पैंदी गशी, की प्रभ खेल वरताईआ। साची धार नहीं लग्गदी अच्छी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे रहे कुरलाईआ। भावें ओसे नूं रहे जपी, नाम कलमयां विच गाईआ। रसना नाल रहे दस्सी, सिफ्तां विच सालाहीआ। अन्तर प्रीत किसे नहीं लग्गी, लग्गी तोड़ ना कोए निभाईआ। जे कुछ लहिणा वेखो पूरब बधक हुण "राम" नाम दा जगी, जगत जुगत समझाईआ। सारे हैरान होणा हुण प्रभ ने माण नहीं देणा वच्छी ढग्गी, सूरां सिर ना कोए कटाईआ। अमृत रहिण नहीं देणा विच किसे नदी, पाणी पाणी ना कोए चतुराईआ। बिना पुरख अकाल तों साची सरनी रहिणी नहीं कोई चंगी, चंगी मिले ना कोए वड्याईआ। दीनां मज़हबां वाल्यां होणी तंगी, तंग हो के आपे देण दुहाईआ। घर घर होणी खाना जंगी, झगड़ा पए लोकाईआ। खाणा पीणा इक इक्क डंगी, भुक्खयां भुक्ख ना कोए मिटाईआ। चढ़ लैण दयो साल बिक्रमी वीह सौ पंझी, पंझी पंझी दयां वखाईआ। सृष्टी सिर तों होणी नंगी, परदा नज़र कोए ना आईआ। जेहड़े आसण ला के बैठे उत्ते मंजी, मजलस विच वड्याईआ। ओह सारे ख़तम करने दम्बी, डम्बी रहिण कोए ना पाईआ। धरनी धरत रही कम्बी, बौहड़ी बौहड़ी कुरलाईआ। हाए हुण नहीं रही सब दी अम्मी, अम्मी कहि के रहे सुणाईआ। की खेल होणा विच काया माटी चम्मी, चमड़यां वंड वंडाईआ। किसे नूं समझ नहीं आउणी सरघी वेला के धंमी, धमाके विच दुहाईआ। प्रभ ने ढुड्ड मार के सति धर्म दी डेग देणी थम्मी, थंमण वाला नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो सब नूं सुणा के कन्नीं, कन्ना मन्ना कुरल कहि के राग सुणाईआ। ओह पढ़दे सुणदे वेंहदे वेखदे सृष्टी दृष्टी अंदर

करनी अन्नी, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। बिन भगतां तों भगत दा रहे कोई ना तनी, नाते छुटने जगत लोकाईआ। जिस वेले जगत जहान औकड़ बणी, बणां विच सारे देण दुहाईआ। बिसीअर काले नाग फनी, फुंकारा नाल तपाईआ। अमृत रस मिले ना नमीं, नमों नमों ना कोई वड्याईआ। बिना भगतां तों बाकी धर्म राए दे कम्मी, सच दुआर ना कोई सहाईआ। अग्गे खेल करनी नवीं, नवां जुग बदलाईआ। जन भगतो इक्को हुक्म जाइओ मन्नी, दूजी लोड़ ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा झोली पाईआ। सत्त रंग कहिण असीं भज्जे नठ्ठे कुदे, अंगन अंगन वेख वखाईआ। की इशारे दिते बुध्द्धे, अन्तर अन्तर इक जणाईआ। क्यों गोबिन्द ने भीखण हथ्थ रखाया उत्ते कुज्जे, आपणा आप जणाईआ। क्यों अजीत जुझार झूजे, खण्डा खड़ग तेग़ चमकाईआ। क्यों खेल निरगुण सरगुण धार दूजे, दूआ एका रूप बदलाईआ। क्यों सब दे भाण्डे कीते मूधे, अमृत रस ना कोई टपकाईआ। क्यों जन भगत किते ना ढूंडे, घर बैठयां दरस वखाईआ। एह बचन किहा सी नानक जिस वेले मोढे खेस ते हथ्थ विच खूंडे, पाली मझीआं नज़री आईआ। एह गोबिन्द किहा जिस वेले हथ्थ रखाया गुरसिखां उत्ते चूंडे, बोदीउँ केस वधाईआ। एह ख़बर सुणाई हरिकृष्ण गूंगे, गीता ज्ञान विच्चों उपजाईआ। हरिकृष्ण दा मित्र तेज भान ल्या ढूंडे, जो गीता फड़ के सीस टिकाईआ। एह भेव बड़े ने डूँघे, बिना पुरख अकाल समझ कोए ना पाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर आए रोंदयां दे अथ्थरू गए पूंझे, निज नैण ना कोए खुल्हाईआ। अल्ला वाहिगुरु राम सति सति कहि के रहे कूंदे, रसना जिह्वा नाल सालाहीआ। बिना भगतां तों प्रभ दा रस कोई ना चूंघे, सति विच ना कोई समाईआ। जन भगतां खुशीआं नाल मारने हूंगे, होकर देणी सुणाईआ। असीं ओस प्रभू दी बूँदे, जो सब दा पिता माईआ। पुरख अकाल दी झोली पा गोबिन्द ने सानूं विच झूंगे, भेव आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। रुमाल कहिण सत्त रंग दा करयो कोई ना खटका, खटके विच लोकाईआ। गोबिन्द ने नहीं किहा गुरमुखो खाइओ झटका, झटके वाला गुरमुख रहिण कोए ना पाईआ। लाज लगाइओ ना गोबिन्द पटका, पटने दा मालक गया दृढ़ाईआ। एह खेल पुरख समरथ दा, गोबिन्द सेवा विच समाईआ। मैं उस दी सिफ्त कथदा, जिस नूं कथनी सके कोए ना गाईआ। ओसदी चरणी ढठ्ठदा, जो मेरा पिता माईआ। मैं वणजारा तत अठ्ठ दा, अन्तिम होए जुदाईआ। इक खेल अगम्मा दस्सदा, दह दिशा तों बाहर पढ़ाईआ। जिथ्थे मेरा साहिब स्वामी वसदा, सचखण्ड डेरा लाईआ। ओथे इशारा नहीं किसे अक्ख दा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। इक्को जोत नुराना दीपक जगदा, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। जे मातलोक नाता जुड़ जाए सच दा, अग्गे ना होए जुदाईआ।

जो आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा ढोला जपदा, जगजीवण दाता वेख वखाईआ। झगड़ा मुक जाए साढे तिन्न हथ्थ दा, काया गढ़ पार कराईआ। एह खेल पुरख समरथ दा, गोबिन्द सहजे गया समझाईआ। बिना भगतां प्रभ दा खेड़ा कदे ना वसदा, सोभनीक ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। सत्त रंग कहिण जन भगतो की तुहाडी ख़ाहिश, सारे दयो जणाईआ। प्रभ तों बिना होर कीहदी करो तलाश, लभ्भो थाउँ थाईंआ। गोबिन्द ने नहीं किहा मेरा गुरसिख खावे मास, नानक तेग़ बहादर दए दुहाईआ। जो सिख सो गावे स्वास स्वास, साह साह समाईआ। कूड़ विकारा करे नास, ममता मोह मिटाईआ। निरगुण नूर करे प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। पीवे जाम आबेहयात, हयाती लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची होए सहाईआ। सत्त रंग कहिण गोबिन्द झटकाए नहीं बक्करे, सच दयां समझाईआ। गोबिन्द किसे ग्रन्थ दे पढ़े नहीं अक्खरे, वरके ना कोए उलटाईआ। उँगल रखी नहीं उत्ते किसे सतरे, सज्जे खब्बे चलाईआ। इक्को सेज वछाई ते हंढ्ढाया यार सथ्थरे, दूजी लोड़ ना कोए रखाईआ। सिख बणन नहीं दिते मकरे, झटका करे ना कोए कसाईआ। जेहड़ा गोबिन्द नाल टक्करे, टक्कर ज़िमीं नाल लुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाईआ। सत्त रंग कहे गोबिन्द कदी धरया नहीं सी हथ्थ गिच्ची, पिच्छे हथ्थ ना कदे रखाईआ। उस नूं प्रभ दी धार अगे दिसी, जिस दे अगे झोली डाहीआ। मेरी गोदी पा दे मेरी सिखी, एहो मँग मँगाईआ। चुरासी विच्चों निक्की, निक्यों वड्डे दे बणाईआ। आपणे नाम दी दे टिक्की, भुख्खयां दे रजाईआ। सोहणी सुहा मिती, थित वार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। सत्त रंग कहे गोबिन्द तरताली साल विच नौ कीते अरदासे, रोज़ सीस ना कोए झुकाईआ। अंदरे अंदर करदा बाते, गुफ्तार प्यार विच दुहाईआ। कदी अक्खां खोल्हीआं नहीं सी अमृत वेले प्रभाते, अक्खां खोल्ह इश्नान ना कदे कराईआ। कदी फोले नहीं सी खाते, हिसाब किताब ना अक्ख उठाईआ। वेखे नहीं सी वाधे घाटे, हिन्दसे जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जदों तकदा सी गुरमुखां दा लंगर ते प्रेम वाले आटे, दूसर अक्ख ना कदे मिलाईआ। इक वेरां वेख्या झाक के विच बाटे, निगाह नौ वार टिकाईआ। फेर पुच्छया पुरख अबिनाशे, दोए जोड़ सीस निवाईआ। मेरे दीन दयाला मेरा सिख कदी ना जावे विच घाटे, घाटा तेरे कोलों पूर कराईआ। जिन्हां पिच्छे मैं फेर मारनी वाटे, आपणा फेरा पाईआ। अग्गों पुरख अकाल किहा दाते, दयावान दिता जणाईआ। जे तूं गोबिन्द मेरे लग्गा आखे, आख़र मेला लवां मिलाईआ। मैं प्रभू सदा अबिनाशे, जन्म मरन विच ना आईआ। कोटन कोटि अवतार गुर पैगम्बर जिन्हां दे वेखदा

३१३
२१

रिहा तमाशे, सरगुण नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा दए उठाईआ। सत्त रंग कहिण गोबिन्द नौ वार आपणे चरणां तों लाहिआ जोड़ा, नौ दुआरे देण गवाहीआ। नौ वार नीला हथ्थ विच फड़िआ घोड़ा, सौ सौ क़दम पन्ध चलाईआ। नौ वार सोहँ शब्द पढ़दा सी ढोला, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। नौ वार रातीं सुत्यां छड्डके शरीर दा चोला, पुरख अकाल विच समाईआ। नौ वार परत के फेर विच बोला, लागे सुत्यां समझ किसे ना आईआ। नौ वार सचखण्ड दा दुआरा आप खोल्हा, कुंजी ताला हथ्थ ना कोए उठाईआ। नौ वारी प्रभ दा बण के गोला, नानक दा बोला पूर कराईआ। नौ वारां सारे जीवन विच पढ़या कीरतन सोहला, रसना नाल गाईआ। नौ वारां खुशीआं वाला खेलिआ होला, गुरमुखां रंग चढ़ाईआ। नौ वारां हथ्थ विच तक्कड़ी फड़ के बणया तोला, बिना सेर धड़ी हथ्थ उठाईआ। नौ वारां आपणे पलँघ दा बणा के डोला, परदा उपर ल्या पाईआ। नौ वारां आपणी रसना नाल किहा तूं हैं मेरे कोला, जल्वागर नूर अलाहीआ। नौ वेरां कहे प्रभू तैथों कलयुग अन्त ज़रूर पुवाणा रौला, गुर अवतार पैगम्बरां दी चले ना कोए चतुराईआ। नौ वेरां गोबिन्द ने खब्बे हथ्थ नाल आपणा पकड़िआ सी डौला, उपर दिता उठाईआ। नौ वार प्रभ दे नाल कीता कौला, इक़रारनामा ल्या लिखाईआ। नौ वार मनाया तैनूं आउणा पए उपर धौला, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। नौ वार गोबिन्द किहा प्रभू तूं मेरी सेजे सौणा, आसण इक बणाईआ। नौ वार गोबिन्द नूं पक्खा झल्लया पाउणा, आपणी सेव कमाईआ। नौ वार प्रभ ने दर्शन दिता सी दुष्ट दमना, दामन आपणा इक फड़ाईआ। नौ वार गोबिन्द किहा प्रभू मेरा खिड़िआ रहे चमना, बग़ीचा गोबिन्द नज़री आईआ। नौ वार किहा मैं इक्को तेरा दुआरा मँगणा, दूजी आस ना कोए रखाईआ। नौ वार किहा साचे भगतां चढ़ावीं रंगणा, रंग आप रंगाईआ। नौ वार किहा गुरमुखां दा आपणे नाल करीं मँगणा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गोबिन्द ने सब दी सांझी ते इक्को मँगी बन्दना, बंदयां नूं बन्दीख़ाने विच्चों देणा छुडाईआ।

३१४
२१

✻ १ सावण शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

गोबिन्द शब्द कहे प्रभ सम्मत चौथा रिहा लँघ, लंगड़ा लूल्हा वेख वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण धार वेख सचखण्ड, दरगाह साची परदा आप चुकाईआ। निरवैर निराकार निरँकार सुत्ता रहीं ना सेज पलँघ, आसण सिँघासण

अबिनाशण डेरा लाईआ। सुत दुलारा तेरा चन्द, आदि जुगादी सेव कमाईआ। चरण कँवलां मँगां मँग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जगत प्यार ना कोई अनन्द, कूड़ी क्रिया दिती तजाईआ। धुर दा मेला मँगां संग, सगला संग रखाईआ। कलयुग कूड़ मेट दे गंद, कुकरमी डेरा ढाहीआ। धुर संदेसा जणा छन्द, अगम्मी राग अलाईआ। ममता मोह मेट दे पन्ध, मंज़ल इक्को इक मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गोबिन्द शब्द कहे मेरे धुर दे अगम्मी नूरे, नुराने सीस झुकाईआ। कौल इक़रार कर दे पूरे, पूरन ब्रह्म दे दृढ़ाईआ। तेरे वाजे अनहद तूरे, तुरत आपणा नाद कर शनवाईआ। कलयुग नाते तोड़ कूड़े, कूड़ी क्रिया दे मिटाईआ। साचे रंग चाढ़ गूढ़े, अन्तर बाहर आप रंगाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूढ़े, मूर्खां आपणे घर बहाईआ। समरथ सर्ब कला भरपूरे, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां बचन ना होण अधूरे, हज़रतां हो सहाईआ। तेरी लोड़ पई ज़रूरे, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर होए मजबूरे, मुश्किल हल ना कोए कराईआ। सब दा तुट्टा माण ग़रूरे, गुरबत नज़र कोए ना आईआ। इक्को नाम कर मशहूरे, मशवरा इक्को दे सलाहीआ। लख चुरासी तेरा शुकर करे मशकूरे, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। इक्को मस्तक लग्गे धूढ़े, टिक्का तेरा नाम ख़ाक रमाईआ। झगड़ा रहे ना बोदी जूड़े, सम्मत समां देणा बदलाईआ। सच चढ़ा शब्द पंघूड़े, पलँघ रंगीला इक वखाईआ। लेखा मुक जाए जलवा कोहतूरे, फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। सरगुण धार कोई ना घूरे, निरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सतिगुर शब्द कहे तेरा सम्मत चौथा जांदा भज्जा, भजन बन्दगी वेख वखाईआ। पवित्र रही कोई ना जगह, जागरत जोत ना कोए वखाईआ। हँस रूप होए कग्गा, माणक चोग ना कोए चुगाईआ। गुरु चेले इक दूजे नाल करदे दग़ा, फ़रेबां विच सृष्ट हल्काईआ। तेरा नूर किसे ना लभ्भा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे कुरलाईआ। दीनां मजहबां मेट दे हद्दा, हदूद इक्को दे जणाईआ। सृष्ट सबाई बण अब्बा, पिता पुरख अकाल बेपरवाहीआ। झगड़ा मुका दे गुर अवतार पैगम्बर कोई उच्चा लम्मा नज़र ना आवे कद्दा, क़दीम दे मालक आपणा भेव खुल्हाईआ। सति दुआरे दे दे सद्दा, सदीआं दा लेखा दे मुकाईआ। तेरा नाम बेपहचान कोई वज़न भार चुक्कण वाला नहीं गधा, गदागर वेख थाउँ थाईंआ। बिन तेरी किरपा दुरमति मैल धोवे कोई ना धब्बा, धोबी धार ना कोए लगाईआ। साचा वधे किसे ना अग्गा, कूड़ी क्रिया जगत हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। गोबिन्द शब्द कहे तेरा शहिनशाही सम्मत मारदा फिरे कूकां, कूक कूक सुणाईआ। मैं

केहड़ी कूट फूकां, फुंकारे रिहा लगाईआ। मैं किस दुआरे जा के चूकां, चुकन्नी करां ख़लक ख़ुदाईआ। कवण दिशा जा के सूतां, सूत्रधारी नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा वेखां पंज भूता, तन वजूद फोल फुलाईआ। ख़ाली करां ठूठा, ठोकर दयां लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बिना हथ्थां तों लावण आपणा अंगूठा, अख़ीरी निशान देणा जणाईआ। जेहड़ा खेल किसे नहीं सूझा, उह समझ दयां समझाईआ। जिस दी याद विच साढे तिन्न साल रोंदा रिहा बुधा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नौ महीने नौ दिन नानक गोडा कर के मूधा, सवा पहर झट लँघाईआ। इक दिन नज़ारा वेख्या बाबे बुढ्ढा, अर्जन अक्ख खुल्हाईआ। गोबिन्द तिन्न वार बणया डुडा, साढे बारां रात चल के नौ नौ पन्ध मुकाईआ। पंजां प्यारयां कोलों बिक्रमी सतारां सौ सङ्ग बणाया गुड्डा, गुड्डी रंग नाल रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा दए जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे तेरा सम्मत शहिनशाही करे हाल हाल, देवणहार दुहाईआ। पुरख अबिनशी घट निवासी बदल दे आपणी चाल, चाल निराली दे जणाईआ। जुग चौकड़ी जिन्हां शब्दी घाली घाल, घाल उन्हां लेखे पाईआ। अवतार पैगम्बर जिन्हां बणे दलाल, गुरु विचोले लै उठाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेख हाल, हालत विगड़ी जगत लोकाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। सच दुआरा रिहा ना कोई धर्मसाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। सतिगुर शब्द कहे चौथे सम्मत दे मालक, मलबा वेख जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे निक्के निक्के बालक, बाल अंञाणे सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे नालश, माया ममता मोह गवाईआ। जगत फ़रेब रहे ना साज़श, साजणहारे तेरे अग्गे दुहाईआ। आपणी कूटे ला आतश, लैहन्दा पहाड़ नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ प्रभू देवण वाले लारे, वेला तेरा गया आईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे हारे, हरिजू तेरी ओट तकाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप तेरा वेखण इक अखाड़े, खण्डा खड़ग हथ्थ ना कोए रखाईआ। सारे बोले नहीं डरदे तेरे कोल सतारां हाढ़े, हाढ़ा कढके पल्लू गए छुडाईआ। जेहड़े आउँदे रहे लोकमात बण के लाड़े, अन्त लाड़ी मौत उन्हां गई प्रनाईआ। तत्तां वाले गुरु सुत्ते विच उजाड़े, मसाण मक़बरिआं विच डेरा लाईआ। चार दिन कटके गए दिहाढ़े, दिहाढ़ी तेरा नाम सेव कमाईआ। ठरदे रहे विच जाड़े, गर्मीआं विच अगनी अग्ग लगाईआ। बणदे रहे तेरे वणजारे, चार कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। सारे वस के तेरे सहारे, साहिब ओट इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर सच दुआरा वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे शहिनशाही सम्मत वेख लै चौथे जुग, आपणा ध्यान

लगाईआ। दरोही साडी औध गई पुग, गुर अवतार पैगम्बर गए जणाईआ। पुरख अकाल निरवैर हो के कुद्द, क़दम आपणा इक उठाईआ। हाज़र हो के नेत्र रोवे बुध, बुद्धी तों परे रिहा जणाईआ। तेरा लहिणा देणा आसा मनसा सब दी बुझ, घट घट अन्तर वेख वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्त अख़ीरी ना जाईं लुक, परदा आपणा दे चुकाईआ। हुक्मे अंदर मूल ना रुक, रुक्के सब दे हथ्थ फड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर पहलों पढ़न तेरी इक्को तुक, फिर दो जहान धुर दा ढोला गाईआ। शब्द गुरु कहे प्रभू अज्ज तों किसे दे कोल रहे ना कुछ, ख़ाली कच्छां बग़लां सब दीआं दे कराईआ। खड़ी रहे किसे ना मुच्छ, मुश्किल विच पवे लोकाईआ। लुक्या रवीं ना किसे गुट्ठ, परदयां अंदर परदा पाईआ। हुण शब्द गुरु नहीं करना चुप, बिना ज़बान तों चारे कुण्ट करे दुहाईआ। जन भगतां रहिण नहीं देणा अन्धेरे घुप, साचा चन्द कर रुशनाईआ। तूं कोई तन वजूद नहीं तत्तां वाला कुप, अन्तर मन्त्र नज़र कोए ना पाईआ। सच स्वामी बदल दे रुख़, रुख़स्त दे के गुर अवतार पैगम्बर छुट्टी आपणे घर घलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे शहिनशाही सम्मत दे राखे, रखक हो के दे वखाईआ। चार जुग तत्तां वाला गुरु तैनूं कोई ना आखे, रसना नाल कहिण कोए ना पाईआ। तेरे नाम दे कहिंदे गए साके, सिफ्तां विच सालाहीआ। तैनूं अल्ला गाहिगुरु राम खुदा गॉड कहि के तेरे बणाउँदे गए ख़ाके, अन्त ख़ाक विच मिलाईआ। तेरा हिसाब लाउँदे रहे एका सिफ़रा बणा के दहाके, दसम दुआरी विच सृष्टी दिती भुआईआ। जेहड़े अवतार पैगम्बर गुरु तेरे काके, कर्मां दा लेखा गए समझाईआ। तेरा नाम संदेसा काया मन्दिर अंदर वाचे, वाचक हो के कर के गए पढ़ाईआ। तत्तां वाले सरीर बंधन पा के नाते, नाता जगत रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरा वेख वखाईआ। शब्द गुरु गोबिन्द तेरा शहिनशाही सम्मत तक्के, ज्ञान ध्यान इक दृढ़ाईआ। परवरदिगार खुदा सांझे यार मार ध्यान मदीने मक्के, मक़बरिआं उत्तों झण्डीआं दे उठाईआ। हज़रतां दे पैरां थल्लों कढ्ढ दे टके, टक्यां दी लोड़ रहे ना राईआ। साची मंज़ल कोई ना दस्से, दह दिशा ना कोए समझाईआ। कलयुग वेख वेख हस्से, हस्ती मिटी बेपरवाहीआ। दीनां मज़हबां विच जगत जहान फसे, फाँसी गलों ना कोए कटाईआ। जिन्हां पैगम्बरां नूं बद्धा नाल रस्से, उह रसतिआं दे इशारे गए कराईआ। जिंनां चिर नूरी नूर खुदा ना लभ्भे, जल्वागर गुसाईंआ। दीपक जोत कोई ना जगे, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। प्रभू तेरा खेल हुंदा जुग चौकड़ी कदे, क़दीम दे क़ादर दया कमाईआ। तेरे अग्गे दस्त बद्धे, दस्तगीर तेरी सरनाईआ। चारों कुण्ट हलूणा लग्गे, हिल्ले सर्ब लोकाईआ। सदी चौधवीं देदे मज़े, मज़ाक़ वेख ख़लक खुदाईआ। तेरे हुक्मे अंदर क़ज़े, सिर सके

ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच खेड़ा दे वसाईआ। शब्द गुरु कहे चौथे सम्मत दे सांझे प्यारे मीत, मित्र प्यारे दे दृढ़ाईआ। तेरी किस दे नाल प्रीत, प्रीतम हो के दे समझाईआ। तूं किस दे वस्सें बीच, आपणा आप छुपाईआ। कवण सुणाएं गीत, ढोला धुरदरगाहीआ। बद कीती सृष्टी नीत, नीतीवान वड वड्याईआ। झगड़ा मुकाईं हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। परदा खोल्ह साहिब अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। किरपा निधान बदल लै पीठ, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा देणा समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं गोबिन्द वेखां सज्जण, सज्जण तेरी वड्याईआ। चारे कूटां चलया लभ्भण, फोलां थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पैगम्बरां चलया कढ्ढण, फड़ बाहों लवां उठाईआ। आउ वेखो तुहाडा सुआह मिट्टी होया बदन, बदला दयो चुकाईआ। सदी चौधवीं केहड़ा करना यतन, यथार्थ दयो दृढ़ाईआ। पिछला वेखो आपणा वतन, जिस विच्चों होई जुदाईआ। नेत्र लोचन वेखो अक्ख ण, चार कुण्ट दयां भुआईआ। साचा दिसे कोई ना पतण, नईआ नौका नाम ना कोए चढ़ाईआ। सदी चौधवीं सारे हो गए शक्कण, शिकवा सके ना कोए गवाईआ। नेत्र रो रो सारे दस्सण, कूक कूक सुणाईआ। बिना प्रभू तेरे कोई ना आवे रखण, होए ना अन्त सहाईआ। असीं गुर अवतार पैगम्बर खावण वाले मक्खण, बिस्तरिआं सेज हंढ्ढाईआ। तुध बिन कोई ना आवे चुरासी कटण, कांटयां भरी लोकाईआ। सच दुआर खोल्ह दे हट्टण, गृह इक्को इक वखाईआ। चार कुण्ट दह दिशा तेरा नाम जपण, साह साह वड्याईआ। कलयुग रैण मिटे अन्धेरी मस्सण, निरगुण नूर चन्द कर रुशनाईआ। तेरे फल गुरमुख साचे पक्कण, फुल्ल सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे चौथे सम्मत की तेरा नाता गोबिन्द, गोबिन्द दे जणाईआ। पुरख अकाल किहा मैं आपणी कर के रहमत, रहम विच सहिम दिता गवाईआ। जोती शब्द धार हो के सहमत, समां दिता बदलाईआ। जन भगत रहिण देणा नहीं कोई अहिमक़, मूर्ख मुगध ना कोए अख्वाईआ। किसे दी धोती किसे दी तहिमत, तंबिआं वाले पार कराईआ। चुरासी दी रहिण ना देवां ज़हमत, आवण जावण पन्ध कटाईआ। जिस नूं शब्द इशारे दी लाई सैनत, सुत्यां ल्या उठाईआ। चार जुग दी झोली पावां पिछली मेहनत, मज़दूरी मज़ा दयां चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा घर वखाईआ। शब्द गुरु कहे दस्स अगम्मी बाप, आपणी कल धराईआ। जे सब कुछ तूं आपे आप, आपणी बणत बणाईआ। हर घट हो साख्यात, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। क्यों तत्तां दा देवें साथ, सगला संग बणाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द अन्त अख़ीरी गया आख, आख़र आस रखाईआ। मेरे साहिब पुरख अबिनाश, तेरी वड वड्याईआ।

मेरे अंदर तेरा होवे वास, वास्ता मेरे नाल जुड़ाईआ। तेरा नूर मेरा होवे प्रकाश, तेरी जोत शब्द धुन मेरी शनवाईआ। सदा वसां पास, निरगुण हो के निरगुण वेख वखाईआ। नज़र ना आवां पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल डेरा ढाहीआ। गोबिन्द मिल के पावां रास, साची खुशी इक प्रगटाईआ। जगत दा खेल तमाश, सृष्टी दयां वखाईआ। प्रगट कर के आपणा आप, आपणे विच टिकाईआ। जिस गोबिन्द दा बणया बाप, ओस गोबिन्द मिले वड्याईआ। तन माटी ख़ाक सदा रहे पाक, पतित पुनीत आप कराईआ। सृष्टी तों ओहला रख के साख्यात, हरिजन सज्जण मेल मिलाईआ। भेद खुल्हा के नाल क़लम दुआत, कायनात दा कलमा दए बदलाईआ। विदवानां पा के भरम भरांत, अकल बुद्धी दी चल्लण ना देवे कोए चतुराईआ। गुरमुखां दे के दरस इकांत, इक इक्क फड़ के लए उठाईआ। सब दा पिछला फोल के खात, जिन्हां दी ख़ातर फेरा पाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पात, पतण आपणा इक समझाईआ। नाम शब्द दी दे के दात, दयावान दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सके कोई ना झाक, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। जिस तरां पूरा करना भविख्त वाक्, पूरन विच पूरन हो के डेरा लाईआ। थोड़ा समां सृष्टी दी दृष्टी वाला छड्ड जाणा साक, साका अगला देणा बदलाईआ। जिस वल निगह कर के ल्या झाक, परदा सहजे देणा खुल्हाईआ। आत्मा परमात्मा दा मेल कर के इत्तफाक, इत्तफाकीआ आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जन्म कर्म दी मैल देणी काट, कुटीआ काया गढ़ सुहाईआ। जेहड़े चरण कँवल पन्ध मार के आउँदे वाट, उन्हां दी वाट अगली देणी मुकाईआ। एह पूरन नहीं पुरीआं तों परे तुहाडा घाट, तत्तां वाला वेख के भुल्ल ना कोए कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी शाख़, साख्यात बैठा सोभा पाईआ। पिच्छे याद कराउणा गोबिन्द ने सिखी बणाई पहली बैसाख, गुरमुखां दी सिखी सदा देणी बणाईआ। तुसीं दूर रिहो मैं वसां तुहाडे पास, रातीं सुत्यां फड़ फड़ लवां उठाईआ। फेर दस्सां तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सांझा जाप, दूजा नजर कोए ना आईआ। गोदी विच चुक्कके कहां उह तुहाडा बाप, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख वखाईआ। सम्मत कहे शब्द गुरु मैं आया चौथा, चौथे जुग वेस वटाईआ। सब ते वक्त आउणा औखा, औखी घड़ी दए गवाहीआ। किसे कम्म नहीं आउणा पढ़या पोथा, पुस्तक रहे कुरलाईआ। नेत्र रोवण चौदां लोका, चौदां तबक देण दुहाईआ। साबत रहे ना किसे जगत साध दा कोठा, तन माटी ख़ाक ना कोए वड्याईआ। सब दा ख़ाली होणा लोटा, लुटीया सब दी देणी रुड़्हाईआ। कोई मंज़ल चढ़ ना सके पोटा, पुट्टके जड़्ह बूटे देणे सुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर सज्जण दए वड्याईआ। सम्मत कहे मैनूं मारो ना मूल ताअना, सच दयां समझाईआ। जन भगतो पहलों

गोबिन्द नाल जोड़ के यराना, यारी साची इक बणाईआ। रहिण देवां ना कोए बेगाना, दर ठांडे मेल मिलाईआ। फेर मिला के नाल श्री भगवाना, भाग सब दा दिता जणाईआ। जेहड़ा लख चुरासी दा काहना, सो साहिब स्वामी तुहाडी सेव कमाईआ। वेखणहारा दो जहानां, दोहरी आपणी कार कमाईआ। जिस ने बदल देणा ज़माना, ज़िमीं असमान कुरलाईआ। लख चुरासी नापे इक पैमाना, पैमाइश करे ख़लक खुदाईआ। सोया रहे ना कोए निधाना, नेत्र अक्ख दए जणाईआ। सब नूं मन्नणा पए भाणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस ने जोत सरूपी पहरया बाणा, बाण अणयाला तीर चलाईआ। सो वस्से सचखण्ड सच्चे मकाना, दरगाह सची सोभा पाईआ। निरगुण धार हो प्रधाना, दो जहानां हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, योद्धा सूरबीर बण बलवाना, बलधारी आपणी खेल खिलाईआ। सम्मत कहे मैं समें दा समीप सविस सेस, सहस साहिब गोबिन्द गया जणाईआ। चार जुग जिस दी हुंदी रही बहस, चार जुग दे शास्त्र देण दुहाईआ। जिस दी समझ ना सक्कया कोई रहाइश, आसण सिँघासण ना कोए दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जो देंदा रिहा तैश, गुस्से नाम विच लड़ाईआ। मात गर्भ कर के उन्हां दी पैदाइश, तत वजूद विच वड्याईआ। हुक्मे अंदर कर के क़ैद, हुक्मी हुक्म ल्या मनाईआ। आपणे आप नूं दस्स के वाहिद, वाहवा कलमा दिता पढ़ाईआ। अन्त अख़ीर कर के अहद, कौल इक़रार इक जणाईआ। सब नूं दस्सया गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं समझयो आवां शायद, शहिनशाह भेव ना कोए जणाईआ। तत्तां नालों कर के अलाइद, आहला आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा जाइज़, जाइज़ा लै ना कोए समझाईआ। सम्मत चौथा कहे गुर शब्द ना ऐवें मार धक्का, आपणा बल वखाईआ। जाह वेख आपणा मदीना मक्का, मक़बरिआं फोल फुलाईआ। ओह पढ़ लै आपणा कक्का खख्खा, छे खख्खे देण दुहाईआ। ओह वेख लै सड़दे कख्खां, जेहड़े तेरे कलमे ढोले गाईआ। ओह तक्क लै नाल अक्खां, जेहड़े आख़र मंज़ल चढ़ के देण दुहाईआ। ओह वेख लै ख़ाली हथ्थां, खण्डा खड़ग कटार नज़र कोए ना आईआ। ओह वेख लै चौदां हट्टां, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। ओह वेख लै गुर अवतार पैगम्बर हथ्थ मारदे उत्ते पट्टां, पटने वाला रिहा समझाईआ। ओह वेख लै जिन्हां ने दीन मज़हब दा लाया ठप्पा, ठोकर सारे रहे खाईआ। ओह वेख लै जो पुरख अकाल दा बण के गया पट्ठा, पूजा पाठ जगत समझाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर निरगुण धार निरँकार जोत सरूप कीता इक्ठा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। सब दा समां पूरा होया जो लोकमात दा पटा, पट्टेदारी सब दी वेख वखाईआ। अग्गे प्रभू दे नाम दा मुल्ल पए कोई ना टका, हट्टां विच ना कोए विकाईआ। जिस दा भेव समझ नहीं आया रता, सो रतन अमोलक

गुरमुख लए उपजाईआ। सांझा दस्स के जसा, चार वरन करे पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को जाप अगम्मी जपा, बिन रसना जेहवा ढोला गाईआ। जिस अक्खर रूप निरवैर बणाया पप्पा, सो पूर रिहा सब थाईंआ। ओस नूं क्या कोई देवे मत्तां, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। उहदा खेल आपणा नाल तत्तां, ततव तत आपणी धार वखाईआ। तक्क सकण ना जगत नेत्र अक्खां, लोचन दो ना कोए वड्याईआ। उहदा नाता आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगतां नाल पक्का, पकवान पिच्छे भगवान फेरा कदे ना पाईआ। जे कोई कहे वड्याई विच प्रभू अच्छा, अच्छे दी लोड़ ना कोए रखाईआ। जे अच्छा बणना हुंदा क्यों वेस वटाउँदा कच्छां मच्छां, बराह नाम धराईआ। क्यों ग्वाला बण के चारदा गाईं वच्छा, बंसरी जगत धुंन शनवाईआ। क्यों धोती तहमत छड्डके तेड़ पाउँदा कच्छा, किशन बिशन तों पल्लू आप छुडाईआ। क्यों सब नूं दे पिच्छा, लुक्या अगम्म थाईंआ। जद चाहे ते भगतां करे रच्छा, रच्छक हो के वेख वखाईआ। जे लभ्भो हथ्थ ना आवे किसे दिशा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण सब भज्जण वाहो दाहीआ। जे प्रेम करो ते सब दी पूरी करे इच्छा, मनसा आपणे नाल मिलाईआ। जे रसना नाल मन कल्पणा विच कहिंदे जाओ वाहवा गुरु अच्छा, सोहणा बांका नज़री आईआ। फेर ओह कदी ना बणावे आपणा बच्चा, गोदी गोद ना कोए उठाईआ। जे प्रीती अंदर नीती अंदर इक्को गा लओ सोहँ टप्पा, टापूआं तों परे दए लँघाईआ। जिथ्थे निरगुण धार नाता जुड़े पक्का, पतिपरमेश्वर आपणा मेल मिलाईआ। जे कोई जाणे असीं गुरु नाल मिलाईआं अक्खां, अक्खां विच अक्ख रखाईआ। उह सड़दा वेखो कक्खां, गुरु दा नेत्र जग नेत्र नज़र कदे ना आईआ। एह जगत साधां दीआं वट्टां, जिन्हां पुजाए पत्थर इट्टां, पत्थरां सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडे होए सहाईआ। सम्मत कहे सतिगुर शब्द ना करीं सौदेबाज़ी, बाज़ीगर आपणा स्वांग वरताईआ। वेखीं किते डंडावत बन्दना विच सजदयां वाले तैनूं कर लैण ना राज़ी, रिज़क रहीम तेरी घर घर वड्याईआ। बेशक तूं खेल जाणदा आदी, जुग जुगादी वेख वखाईआ। पर याद कर लै की अन्त अख़ीरी बचन जोरावर सिँघ नूं आख्या गुजरी दादी, दाअवे नाल जणाईआ। बच्चयो गोबिन्द दे गुरमुखां दी बहुती वधणी नहीं आबादी, अनगिणतां विच्चों थोड़े नज़री आईआ। जिन्हां दे अंदरों सुरती होणी जागी, सुत्यां आप उठाईआ। उन्हां छड्ड देणी नहाउणी बैसाखी माघी, मग्न आपणे संग रखाईआ। सतिगुर हो के उन्हां दा बणया रहे वागी, नीले वाली वाग देणी तजाईआ। लहिणा पूरा करना नानक वाला बग़दादी, बग़लगीर आप बणाईआ। नूर दा नूर होवे इमदादी, दूजी लोड़ ना कोए वखाईआ। झगड़ा रहे ना कोए समाजी, साची समझ देणी दृढ़ाईआ। धुर दा मालक बण के गाडी, गारडीअन सारे देणे हटाईआ। जेहड़ा मालक धुर दा आदी, अन्त ओहो वेख वखाईआ।

जन भगतो भगवान नाल तुहाडी सदा सदीव दी हो गई शादी, शादिआने सदा दे दए वजाईआ। बिना पूरन तों पूरी मौज नहीं लभ्भणी जगत बहार बाग़ीं, बाग़बान दूजा नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द ने कौल कीता महा सिँघ दे नाल उत्ते ढाबी, सिर पट्टां उत्ते रखाईआ। पुश्त पनाह मार के थापी, थप्पड़ सहजे नाल मुख उत्ते लगाईआ। कमरकसे विच्चों कढ्ढ के कापी, कुछ लिखण लग्गा नाल क़लम शाहीआ। महा सिँघ ने अर्ज़ कीती गोबिन्द मैनूं ना तारीं तारीं मेरे पापी, पापीआं पार कराईआ। मैं मँगां तूं गुरमुखां दी सदा करीं राखी, राखा हो के वेख वखाईआ। कुछ लहिणा देणा लैणा नहीं बाकी, बाकी लेखा तेरी झोली पाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त होवे अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरी मन्ने कोई ना आखी, गोबिन्द तेरा दरस कोए ना पाईआ। ओस वेले सच दुआर दी खोल्हीं हाटी, घर इक्को लैणा प्रगटाईआ। ग़रीब निमाणयां नूं देणी हयाती, जीवण जीवण विच्चों बदलाईआ। जेहड़े अज्ज तक्क तेरे नालों विछड़े गुरमुख तेरे साथी, ओह सारे लैणे मिलाईआ। एहो मेरी मंज़ल इहो मेरी वाटी, एहो पन्ध देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सम्मत कहे मैं चौथा फिरां चार चुफेरा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जिथ्थे गुरमुख गाउँदा होवे तूं मेरा मैं तेरा, वेखां चाँईं चाँईंआ। अंदर वड़ के घर दस्सां नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जन्म मरन चुका के गेड़ा, गेड़ा गेड़े विच्चों भुआईआ। सच दुआरे बन्न्ह के बेड़ा, पतण इक्को दयां वखाईआ । जिथ्थे साहिब स्वामी अन्तरजामी करदा होवे मेहरा, महबूब मुहब्बत विच समाईआ। गुरमुखो दर्शन कर लओ इक वार केरां, किरन किरन विच्चों प्रगटाईआ। सम्मत कहे एह कोई जन भगत करे जेरा, जो जेरज अण्डज दा लेखा दए चुकाईआ। बड़ा औखा कोल आउणा शेरा, शेर दी भबक सुण के भज्जण वाहो दाहीआ । जिन्हां दा आप वसाए खेड़ा, खिड़की अंदरों आप खुल्हाईआ। ओह गुरमुख पिच्छे रह जाए केहड़ा, मात पित भाई भैण साक सज्जण जाए तजाईआ। उहनूं चंगा लग्गे प्रभ चरण कँवल दा डेरा, वेखे इक्को गृह मिले वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। सम्मत चौथा कहे शब्द गुरु अग्गे चलण ना देवीं चलाकी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। झगड़ा वेख लै तत वजूद ख़ाकी, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। घर घर मनुआ होया आकी, कूड़ तमन्ना ना कोए मिटाईआ। साची देवे कोई ना दाती, दातार दया ना कोए कमाईआ। सम्मत चौथा कहे मैनूं याद आया जेहड़ी अन्त अख़ीर कृष्ण अर्जन नूं गल्ल आखी, संदेसा धुर दा इक दृढ़ाईआ। जिस वेले गीता ज्ञान दा रिहा कोई ना पाठी, पाठशाला ना कोए वड्याईआ। ओस वेले खेल करना पुरख अबिनाशी, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। चार जुग दे भगत बणाउणे साथी, सब दे लेखे

पूर कराईआ। कलयुग पूरी कर के मंज़ल वाटी, वाइदे सब दे खोज खुजाईआ। अग्गे धार दस्स के साची, सतिजुग साचा दए प्रगटाईआ। इक्को मण्डल पावे रासी, निरगुण निरगुण आपणी रास रचाईआ। हर घट अंदर हो के वासी, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी शब्द गुरु गुरु शब्द दोहां दी इक जमाती, अगली पट्टी बिन पटने वाले ना कोए पढ़ाईआ।

पट्टी कहे मैं सब दे पट्टे कराउणे तसदीक़, शहादत हक़ भुगताईआ। जेहड़े कलमयां दी करदे गए तबलीक, तमअ विच प्रभ दा नाम वड्याईआ। अन्त सब ते फेरनी लीक, लाईन ऐण देणी लगाईआ। सांझा दस्स के ढोला गीत, गीदी शेर देणे बणाईआ। झगड़ा छड्ड जाण मन्दिर मसीत, मसला सब दा हल कराईआ। सब दी लग्गे इक नाल प्रीत, प्रीतम इक्को नज़री आईआ। सब नूं पता लग्ग जावे परमात्मा वड़िआ किस दे बीच, कवण दुआरे बहि के झट लँघाईआ। पंजवें सम्मत नूं सब नूं धुर ख़बर दी दे देवे रसीद, संदेसा सच इक सुणाईआ। खुल्ह जाए जगत दी नींद, आलस दए मिटाईआ। कोई मार ना सके डींग, नाम दा नाम ना कोए समझाईआ। हुलारे चढ़ी सब दी टुट्ट जाए पींघ, पींघी होर ना कोए अलाहीआ। बिंग कसाईआं दा गोबिन्द दा कहिणा बींग, जिस प्याले दी सार कोए ना पाईआ। शब्द गुरु मनसा आसा पूरी होवे उम्मीद, आमद विच वज्जे वधाईआ। जगत वाली जगत भुल्ल जाए ईद, ईद दी आदत इबादत अंदरों दए बदलाईआ । सतिगुर शब्द करे तरदीद, ताईद विच गुर अवतार पैगम्बर तालीआं देण लगाईआ। गुरमुखो भगतो खण्डे खड़ग नाल होण नहीं देणा किसे शहीद, शहिनशाह हो के धुर दी दौलत प्रेम विच वरताईआ। हैरान ना होइओ कि वक्त गया बीत, बीती कहाणी ना कोए दुहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। शहिनशाही सम्मत कहे शब्द गुरु तूं नहीं कोई भुक्खा नंगा, भिखारी रूप वटाईआ। चार जुग तूं कराउँदा रिहों दंगा, दग़े फ़रेबां विच गुर अवतार पैगम्बर लड़ाईआ। मौली तन्द दा बन्न्ह के तग्गा, गाने दिते सजाईआ। किसे गुर अवतार पैगम्बर दा वधण नहीं दिता अग्गा, पुत पोतरे जोत ना कोए हंढ्ढुईआ। आप बण के शेर बग्गा, शरअ विच सारे दिते फसाईआ। थोड़ा जिहा नाम दा दे के मज़ा, अन्तर अमृत रस चखाईआ । थापी दे के धरती उत्ते जगह, भूमिका दिती सुहाईआ। आपणे नाम दी अंदर लगा के अग्गा, द्वैत विच दिता लड़ाईआ। किसे नूं टोपी किसे नूं बोदी किसे दे सीस बन्न्हा के पग्गा, आपणा भेव

ना कोए खुल्हाईआ। किसे नूं अलिफ़ किसे नूं ये किसे नूं ऊड़ा घेरा पा के सारयां नूं विच घंगा, घरां दे घुरे दिते बणाईआ। किसे नूं नहीं दस्सया खेल कीता किस वजह, बिधी बिध ना कोए दृढ़ाईआ। आपणे हुक्म दा रख के दब्बा, गुर अवतार पैगम्बर लए डराईआ। किसे ने पिता किहा किसे ने किहा अब्बा, कोई बाप कहि के सीस निवाईआ। किसे राम किहा किसे कृष्ण किहा किसे अल्ला वाहिगुरु किहा रब्बा, राह सब दे दिते बदलाईआ। किसे दा धर्म किसे दा ईमान जगत निशाना गड्डा, गाडी गड्डयां वाले बणाईआ। निक्का जिहा मज़हब दा दे के डब्बा, विच सहजे दिता टिकाईआ। उन्हां दुनी नूं किहा सानूं इक्को इक लभ्भा, जो लबां तों पिच्छे बैठा आसण लाईआ। हुक्मे अंदर देवे सद्दा, संदेसा रिहा सुणाईआ। जिस दी सरनाई गुर अवतार पैगम्बर रहिबर हो के लग्गा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ओह प्रभू वेखो किसे दा बणया नहीं सका, सब दे लेखे वेख वखाईआ। आपणे हुक्मे अंदर पक्का, जुग चौकड़ी पैंडा रिहा मुकाईआ। सिफ्ती नाम दा जुग जुग दस्स के टप्पा, बच्चयां वाली करी पढ़ाईआ। नाले धौल मारे नाले मारे धफ्फा, नाले हुक्में विच भुलाईआ। भोरा नाम दे के किहा बच्चयो तुहानूं दिता गफ्फ़ा, छको छुकाओ चाँईं चाँईंआ। फेर ओस नूं कर के रफ़ा दफ़ा, दफ़ा आपणी नाल हुक्म दिता बदलाईआ। सम्मत चौथा कहे प्रभू सत्तां वरक्यां विच्चों हुण पहला परत लै सफ़ा, सफ़ा मलेछां दे उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा हो गया ख़फ़ा, सांतक सति ना कोए वरताईआ। किसे दीन मज़हब कोल तेरे नाम दा रिहा नहीं नफ़ा, घाटे विच लोकाईआ। दीन दुनी होई बेवफ़ा, वफ़ादार ना कोए दिसाईआ। ऐंवें कहिंदे पाणी ढोवां फेरां पक्खा, सेवा सेव कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पढ़ के कहिंदे तेरा नाम जपा, जपुजी पढ़ के झट लँघाईआ। किसे नूं लग्गा तेरा ना पता, पतिपरमेश्वर समझ कोए ना पाईआ। तूं मेहरवान हो के आपणे नाम भण्डारे विच्चों गुरमुखां थोड़िआं दिता फक्का, जो मँगण तेरे दर ते आईआ। मात गर्भ लग्गे ना धब्बा, जूनी जून ना कोए भुआईआ। सच दुआरे वसा, बस्ती तेरी डेरा लाईआ। जिथ्थे तक्कण वालीआं नहीं कोई अक्खां, जोती जोत जोत समाईआ। तूं स्वामी सतिगुर सखा, सखी सहेली जोड़ जुड़ाईआ। सतिगुर शब्द तेरीआं सब नूं रखां, पंजाबी बोली विच वड्याईआ। जन भगतां देवे कोई ना मत्तां, मतिआं विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। साचे प्रेम रंग विच रत्ता, रतन अमोलक हीरा नज़री आईआ। जिस ने तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला जपा, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। सम्मत चौथा कहे चौथे जुग बिन सतिगुर शब्द तों झूठीआं सब दीआं गप्पां, धुर दा गाहक नज़र कोए ना आईआ। अन्त अख़ीर सब नूं नप्पां, सिर सके ना कोए उठाईआ। बिन खण्डे कटार सब नूं कप्पां, कपीन हथ्थ ना कोए उठाईआ। अक्खीं वेंहदयां सब दे अंदर छुपां, छप्पर छन्न ना कोए

वखाईआ । भगत सुहेल्यां अंदर वड़ के पुच्छां, पोशीदा परदा लाहीआ । गुर अवतार पैगम्बरां वांगू आउ तुहानूं गोद उठावां वांग पुत्तां, धुर दी बणां जणेंदी माईआ । सोहणी वेखां सुहञ्जणी रुता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जन्म कर्म दा रहे ना कोए विगुता, विगड़ी दयां बणाईआ। मात गर्भ लटके कोई ना पुट्ठा, जो दर ठांडे सीस निवाईआ। सम्मत चौथा कहे जन भगतो प्रेम प्यार दीआं लुट्ट लओ लुट्टां, लुट्टी जाणी कूड़ लोकाईआ। सृष्टी भरी नाल दुक्खां, सांतक सति ना कोए कराईआ। पत्त झड़ने नालों रुक्खां, रुक्खी सुक्खी हथ्थ किसे ना आईआ। की हाल होए मनुक्खां, मानव होए दुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे सम्मत चौथे मैं प्यार विच मुहब्बत विच उन्नां भगतां झुकां, जो झुक झुक प्रभ नूं सीस निवाईआ। जिन्नां महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै पढ़ लईआं तुकां, तुख्म ताअसीर दयां बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, प्रेम प्रीती अंदर भुक्खा, भुक्खयां भुक्ख दए गवाईआ।

❋ ७ सावण शहिनशाही सम्मत ४ दीदार सिँघ दे गृह शफ़ी पुर ज़िला अमृतसर ❋

सुण गोबिन्द शब्द सूरे सरबंगे, पुरख अकाल इक दृढ़ाईआ। लख चुरासी अन्तर निरंतर निरगुण हो के वेखां जंगे, जागरत जोत बिन वरन गोत डगमगाईआ। सन्त सुहेले जन भगत लभ्भां धुर दे बन्दे, बन्दगी विच मशंदगी अवर ना कोए रखाईआ। कूड़ कुड़िआर वखाया जीवण जुगत जगत धंदे, तन वजूद माटी ख़ाक फोल फोलाईआ। प्रीतम हो के प्रेमीआं देवे इक अनन्दे, अनन्द आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक जणाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी हो के वसां संगे, सगला संग बहुरंग आपणा आप जणाईआ। जो सच सरनाई साहिब सतिगुर लग्गे, लग मातर दा लेखा दयां मुकाईआ। त्रैगुण माया अगनी तत कोई ना तपे, तामस तृष्ना दयां मिटाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को नाम जपे, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआर शब्दी धार देवां पते, पतिपरमेश्वर हो के परदा उहला दयां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा नर नरेशा एक एकँकारा इक्को इक जणाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द देवां नाम अगम्मा सच, साजण धुर दा इक दृढ़ाईआ। भाग लगावां काया माटी कच्च, कंचन गढ़ अंदर वड़ दयां वखाईआ। मन कल्पना कोई ना सके नच्च, दह दिशा उठ ना कोए धाईआ। आत्म परमात्म धीरज दे के सति, सति धर्म दा मार्ग इक दृढ़ाईआ। नाड़ बहत्तर किसे ना उबले रत्त, रतन अमोलक हीरा नाम धुर दा झोली

पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म साचा होवे जस, दूसर सिफ्त ना कोए सालाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी होवे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। खेल वेखां पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर परदा दयां उठाईआ। जन भगतां लेखे लाए स्वास स्वास, पवण पवणा अवण गवणा गेड़ा दयां मुकाईआ। निरगुण नूर जोत जोत कर प्रकाश, प्रकाशत हो के वेखां सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा नर नरायण इक्को इक दृढ़ाईआ। सुण गोबिन्द शब्द दुलारे, धुरदरगाही दयां जणाईआ। पिछले बीते जुग चारे, चारे खाणी खोज खुजाईआ। चारे बाणी वाजां मारे, परा पसन्ती मद्धम बैखरी रो रो दए दुहाईआ। किरपा कर आप निरँकारे, निरवैर तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं सारे हारे, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। बिना तेरी किरपा डुबदे पाथर कोई ना तारे, पाहन पार ना कोए कराईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी दीन दुनी तेरे सहारे, सहायक नायक दूजा नज़र कोए ना आईआ। दीनन दीन दयाल दर तेरे सर्ब पुकारे, पुनह पुनह सीस सर्ब झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, सचखण्ड दुआरे एकँकारे तेरी आस रखाईआ। गोबिन्द शब्द सुण धुर दे मीते, मित्र प्यारे दयां दृढ़ाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग बदल दे रीते, रीतीवान वेख वखाईआ। झगड़ा मुके मन्दिर मसीते, काया काअबे होए रुशनाईआ। घर वखा इक अनडीठे, गृह मन्दिर दे सुहाईआ। जिथ्थे नाम निधान अमृत रस जाण पीते, सर सरोवर इक्को सोभा पाईआ। पढ़नी पए कोए ना गीते, अक्खर वक्खर ना वंड वंडाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीचे, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के होवण ठांडे सीते, अगनी तत ना कोए तपाईआ। पंच विकार तन वजूद माटी ख़ाकी होण भय भीते, काम क्रोध लोभ मोह हँकार सिर सके ना कोए उठाईआ। करे खेल समरथ स्वामी त्रैगुण अतीते, त्रैभवण धनी मेहरवान मेहर नज़र इक तकाईआ। किसे तपणा पए ना विच अंगीठे, गोबिन्द अन्तिम लेखा गया मुकाईआ। एका ताज सोहे सीस जगदीशे, दो जहान नौजवान मर्द मर्दान आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सारे जाण बीते, बातन परदा सके ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरी ओट तकाईआ। गोबिन्द शब्द सुण सूरबीर बहादर, योद्धे धुर दे दयां जणाईआ। करे खेल करीम करता कादर, क़ुदरत कायनात सृष्टी वेख वखाईआ। दो जहान करे अगम्मा आदल, इन्साफ वेखे थाउँ थाईंआ। झगड़ा मुकाए मक़तूल क़ात्ल, क़त्लगाह बेपरवाह परदा दए उठाईआ। मुक्दस जणाए धाम बातल, बैतुलमुक्दस इक वखाईआ। चार वरन अठारां बरन धर्म दुआर होवे पातण, नईआ

नौका इक्का नाम चढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दा होवे पूजा पाठन, सिमरन जोग अभ्यास इक्को दए दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर जो मिल के आखण, आख़र लहिणा देणा सब दी झोली पाईआ। परदा उहला बण विचोला खोल्हे बातन, बेवतनां वतन दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर बण के साथन, धुर दा संगी आपणा संग निभाईआ। गोबिन्द शब्द सुण हुक्मरान, संदेसा धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होवे वैरान, वैरी मित्र इक्को रंग वखाईआ। दीन दुनी बदल जाए विधान, वायदे विच वाहिद दस्से जगत लोकाईआ। सिदक सबूरी साबत कर ईमान, अमल इक्को दए जणाईआ। धर्म दुआर रहे ना कोई बेईमान, बेवा रूप ना कोए दुहाईआ। उत्तम श्रेष्ट सृष्टी दृष्टी बुद्धी तों परे जन भगतां होवे ख़ानदान, भगवन नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। पंज तत दे ब्रह्म मति निरगुण निरगुण देवे पहचान, सरगुण मेला सहज सुभाईआ। चार कुण्ट दह दिशा पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार ढोला इक्को गाण, कलमा कायनात क़ाइम हो के दए जणाईआ। साची मंज़ल दरगाह साची हक़ दस्स आसान, अहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म देवे जीव जंत दान, जगत जुगत जोग जागरत जीव ईश दए दृढ़ाईआ।

३२७ २१

✻ १७ सावण शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

धुर दा हुक्म श्री भगवान, भगवन आपणा दए जणाईआ। मन वासना सारे कुरलाण, अन्तर प्रेम ना कोए रखाईआ। जगत विकार कीता बेईमान, धर्म दी धार ना कोए वड्याईआ। शरअ विच बण शैतान, कूड़ करन वड्याईआ। पुरख अबिनाशी जाणी जाण, हर घट बैठा वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल विच जहान, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। मेल मिलाउँदा रहे भगत भगवान, धुर दी आपणी कार कमाईआ। विष्नूं वेख होया हैरान, ब्रह्मा नेत्र अक्ख शरमाईआ। शंकर मस्तक टिक्के लग्गा लाहण, बौहड़ी बौहड़ी कुरलाईआ। मनजीत मारया ध्यान, छोटा बाला अक्ख उठाईआ। वेख जगदीश नौजवान, सूरबीर लै अंगड़ाईआ। पाल सिंघ लग्गा तकाण, बिन अक्ख अक्ख उठाईआ। गुरदयाल लग्गा सुणाण, चेत बेपरवाहीआ। सवरन लग्गा गाण, बिन कान खेल वखाईआ। ब्राह्मण हो प्रधान, सब नूं दिता जणाईआ। लोकमात मारो ध्यान, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। जिस नूं सचखण्ड बैठे कहिंदे असीं भगवान, उस नूं मातलोक मिले ना कोए वड्याईआ। मता

पकाईए इक्ठे हो आण, मशवरा इक दृढ़ाईआ। प्रभू छड्ड दे झूठा जहान, कलयुग अन्तर सचखण्ड आजा चाँईं चाँईंआ। रोंदा रहे इन्सान, आंसू नैणां वाले वहाईआ। सानूं दर कर परवान, परवाने धुर दे रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जगदीश कहे सुण मनजीत काका, वीर छोटे दयां जणाईआ। पुरख अकाल साडा आका, ओहो पिता माईआ। बेनन्ती करीए छड्ड दे दुनियां वाला साका, लोकमात लेखा दे मुकाईआ। अगे साडा दे साथा, सचखण्ड रह के ख़ुशी मनाईआ। तेरे विछोड़े दा पए ना घाटा, पंचम हो के सीस निवाईआ। तेरा भुल्ल गया गोबिन्द बाटा, तैनूं जल पाणी ना कोए प्याईआ। कूड़ सृष्टी कूड़ी रासा, कूड़ कूड़ा रूप बणाईआ। अगे बदल दे पाशा, बाज़ी आपणी दे उलटाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे कर लै वासा, काया तत दे तजाईआ। तेरा नूर सदा होवे प्रकाशा, प्रकाश विच मिल के साडी वजदी रहे वधाईआ। तूं ही साडा सांझा बापा, तेरे चरण ओट तकाईआ। तैनूं केहड़ा कोई चढ़ना तापा, आपा आपणे विच्चों लै के साडे कोल आईआ। सचखण्ड बहि के सब दा बण जा राखा, तैनूं प्रिया जगत दी लोड़ रहे ना राईआ। तैनूं भोजन खाणा ना पीहणा पए आटा, जगत तृष्ना ना कोए वखाईआ। तेरी चरण धूढ़ी मँगे जोत ज्वाला वाली लाटा, सेवक हो के सेव कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा दासी दासा, गुर अवतार पैगम्बर तेरे चरणां विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडी आसा पूर कराईआ। मनजीत जगदीश तुहानूं रहे सद्द, वारी साडी देणी आईआ। उन्नां नूं आवीं छड्ड, जेहड़े नाता रहे तुड़ाईआ। सचखण्ड दुआरे बहि सज, सज्जण हो के धुरदरगाहीआ। आपणे नाम दा वजाऔंदा रहे नद, दो जहानां दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा खेड़ा दए सुहाईआ। जगदीश कहे सुण मेरे नन्हे वीर, वारता दयां सुणाईआ। इक वार उठाईए सारे अवतार पैगम्बर गुर पीर, वास्ता देणा पाईआ। पुरख अकाल घत के आ वहीर, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। फिर आपे तेरी लभदे रहिण तस्वीर, खोज्यां हथ्थ किसे ना आईआ। तूं कोई मँगता नहीं पाणी नीर, समुंद सागर तेरी बेपरवाहीआ। कोई दरवेश नहीं फ़कीर, बग़ली हथ्थ उठाईआ। तूं शाह पातशाह असीं तेरे अज़ीज़, सचखण्ड बैठे सीस निवाईआ। जे चौवी साल विच किसे नूं आई नहीं तमीज़, चौवीएं अवतार आपणी चाल लै बदलाईआ। शरीर छडणा तेरा इक छोटा पाटा होया क़मीज़, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। असीं बैठे रख के तेरी उम्मीद, आसा विच राह तकाईआ। मुहम्मद कहे मेरी वेख क़ुरान मजीद, मुजस्म रही दृढ़ाईआ। ईसा कहे मेरी एहो तमहीद, तमअ तों बाहर रखाईआ। मूसा कहे मेरी सजदे वाली मज़ीद, निस्बत वंड ना कोए वंडाईआ। नानक किहा ग़रीब, एहो दे के आया दुहाईआ। गोबिन्द किहा तेरी समझे

ना कोए तरकीब, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। सब दी आसा मनसा पूरी कर लिख्ती लै रसीद, धुर फ़रमाना हुक्म दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आपणा दे समझाईआ। मनजीत कहे जगदीश प्रभू नूं कहीए आ जा छेती, बच्चे तेरा ध्यान लगाईआ। तूं सब दा अन्तर भेती, सचखण्ड तेरी वज्जे वधाईआ। तैनूं बाहरों जगत वासना मथ्था रहे टेकी, अंदरों प्रेम ना कोए रखाईआ। क़दमां उत्ते रहे लेटी, चरण धूढ़ ना कोए रमाईआ। क्यों साहिब होयों परदेसी, सचखण्ड साचा दे सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर मेला लै मिलाईआ। जगदीश कहे मनजीत आ वेख जगत अन्धेरी रात, रातीं दयां जणाईआ। सब नूं भुल्ली मानस ज़ात, मानव रूप ना कोए जणाईआ। जिस साहिब तों गुरु अवतार पैगम्बर मँगदे आबेहयात, उस नूं पाणी जल हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। कुछ लेखा लिख दे नाल क़लम दवात, कायनात विच हुक्म वरताईआ। एह खेल साख्यात, परदयां विच ना कोए छुपाईआ। इक होर अगम्मी बात, तैनूं दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। मनजीत कहे इक आवाज़ अगम्मी वज्जी, वजह दयां समझाईआ। ज़रा वेख तरफ़ सज्जी, हरि सज्जण रिहा दृढ़ाईआ। जिस दी जोत मात जगी, अन्तिम ओहो रिहा बुझाईआ। जिस दी समझे कोई ना सुदी वदी, सुधी सुध ना कोए बणाईआ।
३२९
२१
हुक्मे अंदर सृष्टी बद्धी, दृष्टी दए गवाहीआ। जिस ने सब दी करनी कीती रद्दी, माण वड्याई ना कोए रखाईआ। ओह नाता तोड़ देवे आपणा तन वजूद हड्डी, जोत दी बख्श देवे आपणी गद्दी, गदागरां शहिनशाह बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी कार कमाईआ। जगदीश कहे मनजीत की सुणया तारा सिँघ कहे हाए पाणी, पाणी हथ्थ कोए ना आईआ। इक सौ सैंती दिन एसे पाणी दी चलदी रही कहाणी, कहावत सब नूं रिहा दृढ़ाईआ। सारे समझदे रहे शैतानी, अन्तर भेव ना कोए खुल्हाईआ। हुण होण लगी हैरानी, जिस वेले तत्तां दी होणी जुदाईआ। जीव छडदे तन वजूद प्राणी, प्राण प्राणपति विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। जगदीश कहे मनजीत कर दे हां, मेरी हां नाल मिलाईआ। ओह वेख आ गया नाँ, बिना अक्खरां तों नज़री आईआ। तूं दो साल तरेठ दिन पहले किहा मैं बणावा थाँ, सोहणा सुथरा इक सुहाईआ। फेर आवे मेरी रणजीत कौर माँ, सचखण्ड जावे चाँईं चाँईंआ। सो वक्त पहुंचया आ, घड़ी पल दयां दृढ़ाईआ। अठारां सावण साढे नौ दा रात दा वक्त देणा सुहा, नाता तत शरीर तुड़ाईआ। तूं मिलीं नाल चाअ, सचखण्ड साचे खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल इक दृढ़ाईआ। मनजीत किहा मेरी माता आवे विच्चों लोकमात, मातर भूमी जगत तजाईआ।

३२९
२१

सिरफ़ अज्ज दी कटणी ओस ने रात, फिर तत शरीर रहे ना राईआ। तूं खोल् के तक्कीं ताक, परदा लैणा उठाईआ। तैनूं आ के देवे शाबाश, प्यार नाल आपणे गले लगाईआ। तेरा सोहणे धाम वास, सच दुआरा सोभा पाईआ। जिथ्थे इक्को नूर जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। मनजीत कहे एह लेखा किधरों आया लेख, कवण रिहा वखाईआ। जगदीश किहा एह शब्द अगम्मी मिले संदेस, देवे धुरदरगाहीआ। उस दे अग्गे हो जा पेश, आपणी लै अंगड़ाईआ। जो मालक इक नरेश, नर नरायण इक अख्वाईआ। सदा रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। मनजीत कहे मेरे शब्द गुरदेव स्वामी, साहिब तेरी वड्याईआ। तूं आदि जुगादी अन्तरजामी, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। तूं वस्सें सच दुआर अनामी, दरगाह साची सोभा पाईआ। तूं वेख जूह बेगानी, लोकमात अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा दे चुकाईआ। मनजीत कहे शब्द गुरदेव मेरा इक सवाल, सवाली हो के दयां जणाईआ। कुछ पिछला वेख अहिवाल, भरम दयां कढ्ढाईआ। मेरी माता दा होण लग्गा सी ज़वाल, नाता तत नालों तुड़ाईआ। ओस वेले हुक्म कीता सी मेहरवान, शब्द इक सुणाईआ। तैनूं जीवण दा दिता दान, ज़िंदगी विच वड्याईआ। मैं वेख होया हैरान, मैनूं जगदीश दिता दृढ़ाईआ। किस बिध मेरी माता दा समां पहुंचया आण, मैनूं दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुण मनजीत धुर दुलारे, दूले दयां सुणाईआ। जग जीवण दिन चारे, आयू कम्म किसे ना आईआ। जो आए सचखण्ड दुआरे, दरगाह साची सोभा पाईआ। सद वस्से इक महल अटल मुनारे, जिथ्थे वजदी होए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए सुहाईआ। मनजीत कहे मेरी बेनन्ती इक अरदास, अर्ज़ दयां सुणाईआ। मेरा प्रभ दे उत्ते विश्वास, वास्ता ओसे नाल जुड़ाईआ। जो कदे ना करे निराश, आसा विच रखाईआ। जो पिछला लेखा लिख्या नाल क़लम दवात, दाअवे नाल ओहो पूर कराईआ। पिछले पाड़ दे काग़ज़ात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म देणा वरताईआ। मनजीत कहे मैं आया सब तों निक्का, निक्कयां वड्डयां दयां जणाईआ। मेरा इक्को धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस ने बदल देणा जुस्सा, तत वजूद चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार इक वखाईआ। मनजीत कहे साहिब सतिगुर मार झाकी, तेरा ध्यान लगाईआ। वेख जिस्म ख़ाकी, ख़ाक विच समाईआ। रहे कोई ना आकी, चले ना कोए चतुराईआ। बख्श अगम्मी दाती, दातार तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। मनजीत कहे तूं प्रभू सब दा बापा, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। मैं मन्नया तेरा आखा, तैनूं आपणे आखे लैणा लगाईआ। तेरे सचखण्ड दुआरे विच तेरिआं भगतां कीता सिआपा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सब दा खुल्हा वेख झाटा, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। तेरी अन्त अख़ीरी बाता, बातन दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मनजीत कहे प्रभू तेरा करौाउणा विहार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सब ने कीता गिरयाज़ार, हाहाकार नाल दुहाईआ। तूं बख्श इक वार, वारता पिछली दे बदलाईआ। मेरा तत्तां वाला नहीं प्यार, मुहब्बत विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी तेरे हथ्थ नज़री आईआ। मनजीत कहे मेरी आसा तेरा रंग, रंगत दे चढ़ाईआ। मैं निक्के बच्चे मँगी मँग, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरी माता दा शरीर होण ना देवीं भंग, जगत होवे ना तत जुदाईआ। आपणे लिखे हुक्म पूरे साल लैण दे लँघ, फेर खेल देणा वरताईआ। झगड़ा करां ना फेर वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। मनजीत कहे मैं आखां नाल हासी, हस्स हस्स दयां जणाईआ। परम पुरख मैं तेरा साथी, तेरा संग निभाईआ। तूं वेख खेल माती, लोकमात नैण उठाईआ। जिस दी नेड़े आई वाटी, ओस दी वाट दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा दयां चुकाईआ। पुरख अकाल कहे सुण बाल बाले, बाली बुध्ध दयां जणाईआ। मेरे खेल सदा निराले, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। जे इक वेरां कहि देवे सिँघ पाले, रसना आवाज़ लगाईआ। पिछली कीती दा दे के अहिवाले, अहिवाल इक दृढ़ाईआ। फिर लेखे लावां घाले, कीती घाल लेखे पाईआ। जगत मृत्यु फेर ज्वाले, ज्वाला अगन ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मनजीत कहे मेरी अन्त अख़ीरी निमस्कार, चरण कँवल सरनाईआ। मँगता बण भिखार, झोली दिती डाहीआ। बख्श दे इक वार, एकँकार तेरी सरनाईआ। फेर होवे सच विवहार, विवहारी लैणा भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब तेरे हथ्थ वड्याईआ। जगदीश किहा मनजीत ना कर एनी मिन्नत, सच दयां समझाईआ। आपणे प्यार दी कर हिम्मत, मैनूं नाल मिलाईआ। प्रभ दी बदल दईए सिम्मत, चरण कँवल सीस झुकाईआ। असीं केहड़े तेरे निन्दक, तेरे हुक्मे अंदर सचखण्ड बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा देणा चुकाईआ। मनजीत कहे असीं होईए दोवें इक्ठे, इक्को वार जणाईआ। प्रभ तेरी सरन ढठ्ठे, ढहि पए सरनाईआ। असीं आए प्यार दे वट्टे, मुहब्बत विच तेरी झोली पाईआ। तेरा

लेखा लेख कोई ना कटे, कटाकश अवर ना कोए लगाईआ। जेहड़ा विक गया तेरे हट्टे, दूसर तोल ना कोए तुलाईआ। असीं दोवें भाई सके, सचखण्ड दुआरे बहि के खुशी मनाईआ। तेरे दर्शन कर के हस्से, हस्ती वेखी धुरदरगाहीआ। एसे कर के फिरदे नस्से, कल नूं साडी माता दी तत्तां नालों होणी जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा पूरब वेख वखाईआ। मनजीत कहे असीं दोवें छोटे वड्डे, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। इक्के हुक्म अंदर बद्धे, बन्दना इक्को सीस निवाईआ। किसे नाल नहीं कीते दग़े, बाल अवस्था दीन दुनी दिती तजाईआ। दो जहान रहे सच्चे, सच सुच मिली वड्याईआ। हुण भाण्डे नहीं कच्चे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। पुरख अकाल तेरे बच्चे, बच्चे हो के सीस झुकाईआ। तूं मेहर कर दे रते, रहम आपणा साडी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे बच्चयो तुहानूं किथ्थों आई याद, कवण याद कराईआ। क्यों करो फ़रयाद, उच्ची कूक सुणाईआ। मनजीत किहा मैं तेरिआं भगतां दा जगदीश नाल मिल के खेड़ा कर के आया आबाद, लोकमात सोभा पाईआ। जिथ्थे तेरे नाम दा वज्जे नाद, होवे सच शनवाईआ। असीं ओस माता दी दाद, जिस ने जन्म दे के तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। मनजीत कहे सानूं याद क्यों आई माता, मातर भूमी वेख वखाईआ। एह जुग चौकड़ी गाथा, निरगुण सरगुण वजदी रहे वधाईआ। धुर दा बणया साथा, सगला संग बणाईआ। छड्डआ तत आठा, नौवां पन्ध मुकाईआ। मंज़ल मुकी वाटा, घर पाया धुरदरगाहीआ । जिथ्थे जन्म नहीं कोई घाटा, कर्म ना कोए चतुराईआ। वेख के तेरा खाता, बेनन्ती दिती सुणाईआ। मेहरवान दे दे दातां, दातार तेरी शरनाईआ। तूं साहिब सतिगुर साचा, सज्जण इक अख्वाईआ। ना भन्नी तन काचा, माटी ख़ाक मिलाईआ। जिस दा लेखा अजे बाका, तेरी लिख्त दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। पुरख अकाल कहे बच्चयो सच प्रीत, प्रीतम हो के दयां जणाईआ। तुसां मात बणाई मेरी रीत, धुर दा रंग चढ़ाईआ। नाता छड्डके मन्दिर मसीत, भगत दुआरा दिता प्रगटाईआ। जिथ्थे साहिब वस्से ठीक, ठाकर हो के डेरा लाईआ। तुसां वेले सिर बदल लई तरीक, तारीख दयां बदलाईआ। जिस नूं सारे रहे उडीक, ओस दा समां दयां वधाईआ। पा के झोली भीख, भिच्छया इक वरताईआ। साचे नाम दी कर तसदीक़, शहादत दयां भुगताईआ । आसा कर मनसा विच्चों उम्मीद, खुशी विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र नाल तराईआ। मनजीत खुशीआं नाल प्या हस्स, चरण कँवल सीस निवाईआ। जगदीश नूं मार के अक्ख, बिन अक्ख दिता समझाईआ। साडा

पूरा होया हट्ठ, हट्ठ ल्या निभाईआ। सच दुआरे कर इक्ठ, प्रभू ल्या मनाईआ। जेहड़ा बुरज जाणा सी ढठ्ठ, नाता तत्तां नालों तुड़ाईआ। ओह बणया रहे हट्ट, प्रभ रहमत आप कराईआ। हुण खुशीआं नाल जाईए वस, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। पुरख अकाल लोकमात जाणा नस्स, बिन क़दमां क़दम उठाईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड जाणा टप्प, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। मनजीत कहे असीं बाले नढ्ढे अंञाण, साहिब सतिगुर देणा जणाईआ। नौ दिन शरीर दा किसे कोलों नहीं कराउणा इश्नान, सेवा जगत ना कोए वखाईआ। नौ दिन किसे दे हथ्थों जल नहीं करना पान, रसना रस ना कोए वखाईआ। नौ दिन कोई चरण झुके ना आण, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। एह सब नूं करना पैणा परवान, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। एथे ओथे दो जहान खेले खेल महान, महिमा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, नाता छड्ड जगत जहान, खेल वेख ज़िमीं असमान, आप हो के बेपहचान, महबान आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

✻ १८ सावण शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

मनजीत कहे मैं तेरा छोटा बाला, बच्चा धुर दा नज़री आईआ। तूं पिता पुरख मेरा दीन दयाला, दयानिध तेरी वड्याईआ। मैं रातीं वेख होया बेहाला, बिहबल हो के दिती दुहाईआ। हुक्म दिता छिआनवें करोड़ मेघ माला, तेरा फरमाना इक जणाईआ। जाओ सेवा करो विच जहाना, मातलोक राह वखाईआ। बूंद बूंद भर दयो प्याला, आपणा बल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा लेखे लाईआ। मनजीत कहे मैं तेरा इन्द इंदरासन, सिंघासण तेरे मिली वड्याईआ। मैं तेरा नूर प्रकाशण, परम जोत अख्वाईआ। हो के दास दासन, सेवक सेवा सच रखाईआ। मैं हैरान होया उत्ते आकाशन, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। तेरा खेल खेल तमाशन, दो जहान तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लैणा लगाईआ। मनजीत कहे मैं सेवा करनी निक्की, निक्की दयां जणाईआ। मैं बणना तेरी ओह सिखी, जिस नूं सिख्या दिती समझाईआ। तेरे चरण दुआर दी धार तिक्खी, तिक्खी धार मुख शरमाईआ। तेरी लेख लेखनी लिखी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा वस्सेरा नहीं पत्थर इट्टी, सच दुआरे सोभा पाईआ। चार जुग दी आशा साचे दर ते रो के पिट्टी, गुर अवतार पैगम्बर रहे कुरलाईआ। तेरी वेख के सम्मत वाली

मिती, समां रिहा कुरलाईआ। होका देवे गोबिन्द वाली चिठ्ठी, हरफ़ बहरफ़ कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मेरे विच्चों लेखा पाईआ। मनजीत कहे मैं लै के आवां प्रेम पाणी, पतिपरमेश्वर सेव कमाईआ। नाल लै के गुरमुख तेरा हाणी, भज्जिआ वाहो दाहीआ। भगत दुआर दी वेख निशानी, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। झगड़ा मुका के चारे खाणी, दर इक्को सोभा पाईआ। तूं साहिब सतिगुर जाण जाणी, जानणहार तेरी वड्याईआ। मैं चढ़ के गया तेरे शब्द बबाणी, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। मेरे अंदर आई हैरानी, हैरत विच दुहाईआ। कोई भगत नहीं कोई सिख नहीं जेहड़ा मेरे साहिब नूं देवे पाणी, सेवा सच ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेरे साहिब सतिगुर धुर दे पिता, पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। बेशक मैं बाला तेरा निक्का, निक्कयां वड्डयां दयां समझाईआ। राती संदेसा मैनूं दिता, मैं सुणया चाँईं चाँईंआ। मैं करया तेरा पिच्छा, भज्जिआ वाहो दाहीआ। तूं करीं मेरी रच्छा, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। जल पाणी दा कढुके जावां सिट्टा, लेखा सब दा वेख वखाईआ। जे हुक्म देवें नौवां दिनां विच सारी सृष्टी डोब देवां किसे दी नज़र ना आवे पिट्ठा, पाणी पाणी विच रुड़्हाईआ। तेरा अमृत रस मिट्ठा, बिन तेरी किरपा हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा पूर कराईआ। मनजीत कहे मैं हुक्म दित्ता तेरा धुर दी धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। मेघ माला तेरी पनिहार, सेवक सेवा विच रखाईआ। सत्त सागर जल धार, पवण हवा विच उडाईआ। टिल्ले पर्बत टक्करां मारन वारो वार, सिर सके ना कोए निवाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अपरम्पर तेरी बेपरवाहीआ। मैं सुत दुलारा तेरा तेरे चरण दुआर, सेवक हो के सेव कमाईआ। तेरी किरपा अंदर मेघ बरसां बरखाधार, बूंद बूँद तेरे चरण कँवल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरा नाम मिले वड्याईआ। मनजीत कहे प्रभू मैं तेरा बच्चा नहीं कोई भुक्खा नंगा, मांगत नज़र कोए ना आईआ। कोटन कोटि मेरे चरणां हेठां वहिंदी गंगा, साहिब दिती वड्याईआ। संसारी तैनूं समझदे बन्दा, तत्तां वाला वेख के आपणी अक्ख बदलाईआ। मैं चढ़ के उत्ते ब्रह्मण्डां, नज़ारा तक्कया चाँईं चाँईंआ। जिस दा किसे नज़र ना आया कन्ढा, ओथे बैठा सहज सुभाईआ। सच प्रेम दा लै के अनन्दा, अनन्द तेरे विच समाईआ। इक्को मँग अखीरी मँगां, दरवेश हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा वेख वखाईआ। मनजीत कहे प्रभ मेरे वल वेख नाल अक्ख, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मेरे प्रेम दा पाणी चक्ख, मेरी मनसा तेरे विच नज़री आईआ। तेरे चरण जावां ढठ्ठ, डिगिआं लैणा उठाईआ। जे कहें ते रखां एसे तरह्रां दिन अठ्ठ, जिउदा नज़र कोए

ना आईआ। ना कोई दुआरा रहे ना मठ, मनुश मनुश करां सफ़ाईआ। तेरे प्रेम दा वेखां हक, तेरी वस्त धुरदरगाहीआ। जेहड़े तेरे हो के तैनूं जाण छड्ड, उन्हां दयां सज़ाईआ। किसे कम्म नहीं आउणा मास हड्ड, नाड़ी नाड़ी दयां तपाईआ। भगत भगवान सच निशाना देवां गड्ड, गॉड तेरी ओट रखाईआ। जे तेरा तत प्यासा होवे जग, जगजीवण दाते साडा जीवण कम्म किसे ना आईआ। मैं धुरदरगाह बैठा सज, तेरे हुक्म अंदर आपणा सीस झुकाईआ। मेरा मेघ तेरा अमृत तेरा नीर तूं साहिब पी लै रज्ज रज्ज, दिवस रैण मुक कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा लेखे लाईआ। मनजीत कहे जे कहें ते रखां बूँदा बांदी, बादल घनघोर घटा छाईआ। जे कहें ते तेरे हुक्म दी चला देवां आंधी, अन्धी करां जगत लोकाईआ। जेहड़ी दुनियां पींदी खांदी, अठ्ठां दिनां अंदर करां सफ़ाईआ। किसे कम्म ना आवे सोना चांदी, माया ममता ना कोए वड्याईआ। दो जहान तेरी बांदी, बन्दना विच सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा आपणे दर रखाईआ। साहिब स्वामी मेरा पी लै अमृत तेरा प्यार रस, रसना रस दे तजाईआ। जे कहि देवें इक वार बस, बस्ते सब दे दयां बंधाईआ। तूं बचन कीता नौ दिन जल नहीं लैणा छक, एसे कर के मैं उत्तों भज्जिआ वाहो दाहीआ। जोड़ के दोवें हथ्थ, सीस रिहा निवाईआ। तेरी खेल अकथ, वड वड्डे तेरी वड्याईआ। तूं सर्ब कला समरथ, दाता धुरदरगाहीआ। सद तेरा गावां जस, सिफ्तां विच सालाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर देणी कराईआ। ऐ प्रभू नौ दिन दा कीता क्यों हठ्ठ, हठीए दे दृढ़ाईआ। क्यों गेड़न लग्गा उलटी लठ्ठ, तबा रिहा बदलाईआ। बिन तेरी किरपा तेरे कोलों सारे जाण नठ, सेवादार रहिण कोए ना पाईआ। तूं इकल्ला ते इकल्ला तेरा हट्ट, वणजारन वेखी ख़लक खुदाईआ। मैं पुरीआं लोआं आया टप्प, टप्पे ढोले गाउँदा फिरां चाँईं चाँईंआ। तूं करनहारा किछ सब, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान देणी माण वड्याईआ। मनजीत कहे मेरे हुन्दयां तूं क्यों रहें प्यासा, जो प्यास सब दी दए बुझाईआ। तूं सब दी पूरी कीती आसा, तृष्ना दिती गुआईआ। मैं बण के दासी दासा, सेवक सेवा सच कमाईआ। मन्न के तेरा आखा, आया चाँईं चाँईंआ। तूं मेरा होणा राखा, रच्छआ करनी थाउँ थाईंआ। मैनूं तेरा इक भरवासा, सत्त महीने तिन्न दिन तेरी सेव कमाईआ। मैं लैण आया शाबाशा, सृष्टी रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। मनजीत कहे मैं सेवा करां दिवस रैण, वक्त वक्त नाल सुहाईआ। जिस वेले तेरा हुक्म आवे चिठ्ठी रसैण, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। ओसे वेले जल जल वहा दयां वहिण, थलां दयां रुढ़ाईआ। तेरा हुक्म मन्नां ऐन, तेरा हो

के तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। मनजीत कहे मेरे अन्तर आई खुशहाली, खुशीआं विच वड्याईआ। मेरी वेख के बुध बाली, बाल ल्या उठाईआ। चाढ़ी मस्तक लाली, लाल गुलाला रंग रंगाईआ। जोत जगाई इक अकाली, अकल कल आप अख्वाईआ। लहिणा वेख्या माझी हाली, परदा अन्तर बाहर उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। मनजीत कहे असीं तेरे तल्बगार, तालब तुलबे नज़री आईआ। तूं साहिब परवरदिगार, पारब्रह्म अख्वाईआ। असीं हाज़र विच दरबार, दर ठांडे खुशी बणाईआ। तेरे हुक्म दा सदा करदे रहीए इंतज़ार, इंतशार ना कोए रखाईआ। सुणदे रहीए गुफ्तार, गुफ्त शनीद ध्यान लगाईआ। रातीं सुभाविक कीता ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर दृढ़ाईआ। वेख्या विच संसार, संसारी भण्डारी नाल मिलाईआ। जेहड़े तेरे नाल बाहरों करदे प्यार, अंदर प्रेम ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी मनसा पूर कराईआ। मनजीत कहे ना कोई सोग ना कोई हरखा, चिन्ता ग़म ना कोए वड्याईआ। तेरे प्रेम दी होवे बरखा, छहबर खुशी मनाईआ। मिटे मेरी हरसा, हवस दयां गुआईआ। तेरा हल्ल करे ना कोई पर्चा, प्राचीन तों रीती चली आईआ। जगत विवहारां विच हुंदी चर्चा, चर्चा विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ। मनजीत कहे जगदीश मार निगाह, निगाहवान रिहा दृढ़ाईआ। जिस दा मार्ग इक सिध्धा, सिद्ध साधक सीस निवाईआ। उहदी कौण जाणे बिधा, भेव अभेद कवण खुल्हाईआ। बेशक मैं उमर विच निक्का, सत्त महीने तिन्न दिन अख्वाईआ। मेरा लेखा प्रभू ने लिखा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मैं सब नूं देणी सिखा, सिख्या इक दृढ़ाईआ। वेखो खेल प्रभू दी इच्छा, निरिच्छत धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रेम दी पा दे भिच्छा, भिछक हो के मँग मँगाईआ। जगदीश कहे मनजीत प्रेम विच ना होए करोपी, छहबर जगत अधार वहाईआ। जेहड़ी सेवा प्रभ ने सौंपी, सहज सहज लैणी कमाईआ। जेहड़ी ख़बर शब्द संदेसे विच पहुंची, तैनूं दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राह वखाईआ। जगदीश कहे मैं बचन कहां सच्चा, सच दयां दृढ़ाईआ। तूं जगत जवानी विच बच्चा, बचन विच वड्याईआ। सृष्टी नाल करीं ना धक्का, वहिणा वहिण वहाईआ। पहलों कुछ खेल हो लैण दे मदीना मक्का, मक़बरिआं विच पए दुहाईआ। फेर हुक्म आवे सच्चा, धुर फ़रमान इक जणाईआ। लहिंदी दिशा पाणी लभ्भे ना किसे नाल लप्पा, लबां प्यास ना कोए बुझाईआ। पूरन दा प्रगट होवे इक्को पप्पा, पप्पू पापा दोवें देण दुहाईआ। साहिब सतिगुर बिन प्यार भगत भगती किसे दा नहीं सका, सज्जण सच ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरे प्रेम दा अमृत मेघा रसा, रस्ता बावस्ता देणा सुणाईआ।

✻ २१ सावण शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

परदेसी पहले जन्म दा अरोड़ा, पिंड सभरा सोभा पाईआ। कोल काग़ज़ रखदा सी कोरा, क़लम शाही नाल लेख बणाईआ। प्रशाद रखदा सी थोड़ा, पंजां पैसिआं गंढु बंधाईआ। मोढे रखदा सी दोहरा, दोहरी धार उठाईआ । इक दिन घेर ल्या चोरां, राह विच अटकाईआ । मारया थोड़ा थोड़ा, भय विच डराईआ । रैण दा अन्धेर घोरा, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। चले कोई ना ज़ोरा, नेत्र नैणा नीर वहाईआ। कोई सहायक होवे मोरा, मेहर नज़र उठाईआ। सतारां सौ अठविंजा बिक्रमी इक्की सावण गोबिन्द चढ़ाए शब्दी घोड़ा, सन्मुख हो के दया कमाईआ। दे के दरस भोरा, जल्वागर रुशनाईआ। बण के बांका छोहरा, आपणा रूप दिता वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पाया दरस आसा वधी, खुशी विच वड्याईआ। ओधरों रात बीती सी अध्धी, समां रुत सुहाईआ। सतारवीं सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। ब्यासा दी वगदी नदी, सतलुज विच रलाईआ। गोबिन्द धार इक लध्धी, निरवैर रूप चमकाईआ । प्रकाश रूप जगी, नूर डगमगाईआ। पवण ठंडी वगी, सोहणी रुत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा समझाईआ। रोड़े पाया दरस अनोखा, नाम शामू वज्जी वधाईआ। गोबिन्द मिलण दा मिल्या मौका, मुकम्मल वेख वखाईआ। जिस दे हथ्थ विच सति धर्म दा सोटा, भय ठग्गां चोरां रिहा वखाईआ । सुणाया इक सलोका, नाम शब्द समझाईआ। मैं मारन नहीं देंदा किसे बेदोषा, दोषीआं देवां सज़ाईआ। तूं मेरी अन्तर कीती लोचा, हाज़र हो के होया सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुलाईआ। शामू किहा वेखी शमां, नूर विच रुशनाईआ। मैनूं भुल्लया वणज व्यपार दा तमअ, ध्यान गोबिन्द चरण लगाईआ। मैनूं भुल्ल गई जम्मण वाली अम्मा, पिता नज़र कोए ना आईआ। मैं हथ्थ जोड़ के आवाज़ कढ्ढी आपणे दमां, दामनगीर लैणा बचाईआ। तेरे चरणां नाल रवां, चरण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। चोरां विच्चों इक चोर समझदार, जिस नूं धींदा कहि बुलाईआ। वणज व्यपार दा करे विहार, ठग्गां चोरां यारां नाल सलाह पकाईआ। ओस वेख्या नूरी चमत्कार, जगी जोत अलाहीआ। गोबिन्द शब्दी आवाज़ मार, नेड़े ल्या बुलाईआ। ओस कर

निमस्कार, चरण धूढ़ ख़ाक रमाईआ। गोबिन्द दोहां नूं बणा के यार, सांझा नाता दिता वखाईआ। दोनां दे अंदर आई विचार, की खेल दिती रचाईआ। गोबिन्द इक नूर दा दे के चमतकार, अन्ध अन्धेरा दिता गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। धींदा कहे ओह शामू कुझ जाण, तैनूं दयां जणाईआ। गोबिन्द नौजवान, सूरबीर बेपरवाहीआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मेला मिलाया आण, होया सच सहाईआ। कुछ मँगीए इस तों दान, व्यपारी हो के आपणा वणज बणाईआ। एह देवणहारा मेहरवान, दे के ख़ुशी बणाईआ। दोहां अर्ज कीती चरण कँवल कर ध्यान, नैणां नीर वहाईआ। गोबिन्द ने उँगल कीती असमान, इशारा दिता कराईआ। जिस वेले मैं ते मेरे नाल आया भगवान, निरगुण निरगुण हो के खेल खिलाईआ। फिर लहिणा देणा चुकावां विच जहान, लेखा पूरब झोली पाईआ। मानस विच्चों तुहानूं मानस जन्म देवां इन्सान, दूजी जूनी विच ना कोए भवाईआ। समें नाल करां पहचान, एह मेरे हथ्थ वड्याईआ। दोहां मिल के गाया गाण, तूंही तूंही राग अलाईआ। असीं दोवें बड़े अंजाण, सानूं समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। पिछला लेखा नाँ धींदा हुण अमीर चन्द गुलाटी, आवाज़ एसे कर के लगाईआ। वेख लै आपणा साथी, गोबिन्द दिता मिलाईआ। मनुआ रहे कोई ना आकी, ममता मोह मिटाईआ। आपणा अमृत जाम देवे बण के साकी, धुर प्याला हथ्थ उठाईआ। अंदरों खोल्ह के बन्द ताकी, परदा दए चुकाईआ। निरगुण जोत जगे बाती, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। तुसां पिच्छे इक्ठी सुणी आखी, हुण अक्खां नाल अक्ख लओ मिलाईआ। तुहाडी पहली सांभ के रखी पाती, जिस उत्ते हरफ़ ना कोए बणाईआ। अज्ज मेल मिलाया मुकी वाटी, पन्ध पन्ध मुकाईआ। मंज़ल चढ़ी घाटी, विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख उठाईआ। साहिब सतिगुर करे राखी, रखक होवे थाउँ थाईंआ। जिस दी जोत जगे ओसे दी बाती, जागरत जोत वेख वखाईआ। लहिणा देणा चुकाए लोकमाती, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। मेल मिलाए नाल पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पिछला प्यार तार तूम्बी, तूंही तूंही राग अलाईआ। एह रसना नाल नहीं कूंदी, कूक कूक सुणाईआ। एह वेखे खेल जूह दी, जंगल उजाड़ पहाड़ खोज खुजाईआ। एह वणजारन बुत विच रूह दी, रूह रूह नाल मिलाईआ। एह खेल सचे सतिगुरु दी, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा लेखे लाईआ। परदेसी क्यों आया भज्जा, भज्जिआ वाहो दाहीआ। गुलाटी नूं क्यों दिता सद्दा, सहजे ल्या बुलाईआ। एस दी ओह जाणे वजह, जो वजूद दे अंदर बैठा डेरा लाईआ। जो

३३८
२१

आदि जुगादी सब दा अब्बा, पिता पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जगत लभ्भयां कदे ना लभ्भा, खोज्यां हथ्थ किसे ना आईआ। जिन्नां वेखे पूरब हक़ा, हक़ीक़त वाले लए मिलाईआ। आपणे प्रेम दा दे के रसा, रस्ता दए समझाईआ। जो हरि हिरदे अंदर वसा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। हुण खुशीआं विच मारदे रहो कच्छां, कच्छ मच्छ दा लेखा दिता मुकाईआ। एथे ओथे दो जहानां करे रच्छा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाडा पिछला टिकाणा पिछला गृह सुभद्रा वाला पता, पीड़ी यारवीं अजे वी चलदी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेख वखाए बिन जगत नेत्र अक्खां, सख्ा सखाई आपणे रंग रंगाईआ।

३३९

२१

✻ १ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सो पुरख निरञ्जण सूरा सरबंग, हरि करता वड वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा संग, निरगुण निरवैर देवे सच अनन्द, अनन्द आपणा आप प्रगटाईआ। एकँकार दीन दयाल बण बख्शंद, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। आदि निरँजण नूर अलाही प्रकाश चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। श्री भगवान मेटणहारा अन्धेर अन्ध, बेपरवाह अगम्म अथाह आपणी दया कमाईआ। अबिनाशी करता अमृत धार वहावणहारा अगम्मी गंग, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी कल वरताईआ। पतिपरमेश्वर लेखा जाण आदि जुगादि जुग चौकड़ी सरगुण निरगुण करे कम्म, पुरख अकाला दीन दयाला आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी कल वरताईआ। सति सतिवादी हरि करतारा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। नूर नूर कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। सुहावणहारा सचखण्ड सच्चा दरबारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यारा, आदि जुगादि डगमगाईआ। शब्द अगम्मी आपणी धार बोल जैकारा, नाद अनादा आप सुणाईआ। तख़त निवासी शाहो भूप बण सिक्दारा, आपणा खेल आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी रूप अनूप शाहो भूप आप प्रगटाईआ। शाहो भूप हरि सुल्ताना, वड्डा वड वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे बैठ अगम्म मकाना, बिन तेल बाती दीपक जोत करे रुशनाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण पहरे बाणा, निरवैर पुरख निराकार निरँकार आपणी कार वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवणहारा साचा दाना, सच स्वामी अन्तरजामी आपणी दात वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर खेल खिलाए विच जहाना, पृथ्मी आकाश ब्रह्म प्रकाश आप कराईआ। नाद धुन शब्द सुणाए अगम्मी गाणा, अनबोलत

आपणी धार प्रगटाईआ। जिस दा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमानां दो जहानां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सच करनी क़ादर रिहा कर, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस तों मँगदे अवतार पैगम्बर गुर वर, विष्न ब्रह्मा शिव खड़े दर सीस झुकाईआ। जो निरगुण निराकार सब दा घाड़न दए घड़, भन्नणहार आप हो जाईआ। हक़ मुकाम दरगाह साची बैठा चढ़, चार कुण्ट दह दिशा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। साची करनी पुरख अकाल, हरि करता आप जणाईआ। दीना बंधप दीन दयाल, दयानिध वड वड्याईआ। सम्मत शहिनशाही वेख चौथा साल, साल गिरह सब दी फोल फुलाईआ। सच दुआरा सुत दुलारा शब्दी उठा अगम्मा लाल, धुर फ़रमाना इक्को इक जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त बदलणी चाल, चाल निराली इक प्रगटाईआ। सच दुआरा दस्स सच्ची धर्मसाल, दर इक्को इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। भेव अभेदा रखे आपणे हथ्थ, हरि करता वड वड्याईआ। करे खेल पुरख समरथ, परवरदिगार धुरदरगाहीआ। जिस दा चार जुग गाउँदे आए जस, सिफ्त सलाहां विच वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरन अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी क़लम दुआरा दस्से सच, सति सतिवादी इक पढ़ाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी गया वस, बेपरवाह आपणा डेरा लाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दे चरण कँवल गया ढठ्ठ, बिन सीस जगदीश झुकाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर कर के इक्ठ, शहिनशाह वेखे चाँईं चाँईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गया नठ्ठ, कलयुग अन्तिम वेला दए दुहाईआ। सति धर्म दा रिहा कोई ना हट्ट, मन्दिर मट्ठ शिवदुआले गुरुदुआर रहे कुरलाईआ। फिरी दरोही अठ्ठ सट्ठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र नैणा नीर वहाईआ। घट घट अंदर मन कामना रही नच्च, काम क्रोध लोभ हँकार सृष्ट दृष्ट हल्काईआ। नाड़ बहत्तर उबली रत्त, सांतक सति ना कोए कराईआ। सति धर्म दी भुल्ली मति, गुरमति बैठी मुख छुपाईआ। धीरज रिहा कोई ना जत, साध सन्त ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। दर ठांडा कहे प्रभू तेरा दरबारा, दो जहानां सच नज़री आइंदा। तेरा खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव कोए ना पाइंदा। सदी चौधवीं वेख किनारा, ईसा मूसा मुहम्मद सीस झुकाइंदा। नानक गोबिन्द उच्ची कूक करे पुकारा, तेई अवतार हाहाकार सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव रोवे ज़ारो ज़ारा, करोड़ तेतीसा नेत्र नैणा नीर वहाइंदा। सति धर्म दा रिहा ना कोए जैकारा, जागरत जोत ना कोए डगमगाइंदा। भरमे

भुल्ला सर्ब संसारा, सर्ब कला समरथ स्वामी तेरा दरस कोए ना पाइंदा। मन्दिर चढ़ निर्मल नूर जोत करे ना कोए दीदारा, दीद ईद ना कोए रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मँग मँगाइंदा। तेरा दर ठांडा सीत, हरि करते वड वड्याईआ। शब्द गुरु तेरा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। झगड़ा मुका दे मन्दिर मसीत, काया काअबा कर रुशनाईआ। सतिजुग साची दस्स दे रीत, कलयुग कूड़ी रीती रहे ना राईआ। धाम वखा इक अनडीठ, जल्वागर नूर रुशनाईआ। चार वरन अठारां बरन क्यों सुत्ता कर के पीठ, करवट आपणी लै बदलाईआ। क्यों सच स्वामी धुर दे मीत, मित्र प्यारा गोबिन्द गया समझाईआ। लेखा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी कराए भय भीत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सदी चौधवीं सारे करन तस्दीक, शहादत इक्को वार भुगताईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक जगदीश, जगदीशर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरे छत्र झुल्ले सीस, शास्त्र सिमरत वेद पुराण दए गवाहीआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच कर बख्शीश, रहमत आपणी इक कमाईआ। झगड़ा मेट हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। साचा कलमा दस्स हदीस, धुर दे हज़रत कर पढ़ाईआ। सदी बीसवीं रही बीत, बातन पर्दा दे उठाईआ। जन भगत तेरे अज़ीज़, गुरमुख गुरसिख गोदी लै उठाईआ। साचे नाम दी दे तमीज़, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे गाउण गीत, गोबिन्द मेला सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी आसा पूर कराईआ। सब दी आसा पूरी कर दे मनसा, मेहरवान तेरी सरनाईआ। गुरमुख हरि सन्त बणा दे हँसा, सोहँ मोती चोग चुगाईआ । चार वरन अठारां बरन तेरा बंसा, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। मन हँकारी मार दे कंसा, सोई सुरती आप उठाईआ। सतिजुग सच बणा दे बणता, घड़न भन्नणहार तेरी सरनाईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी आदिन अन्ता, नित नवित्त वेस वटाईआ। मेहरवान मेहर कर दे उपर संगता, सति सतिवादी आपणा राह जणाईआ। तेरा भगत दूजे दर होवे ना मँगता, भिक्खक हो के झोली तेरे अग्गे डाहीआ । तूं लख चुरासी आत्म परमात्म साचा कन्ता, कन्तूहल तेरी वड्याईआ। कूड़ा मोह मेट दे ममता, विकार हँकार ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। दर तेरे अलख महबूब, मुहब्बत विच सरनाईआ। वखा इक अर्श अरूज, जल्वागर डगमगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट हदूद, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। तेरा नज़र ना आए कोई वजूद, जिस्म ज़मीर दे बदलाईआ । तेरा खेल पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सोभा पाईआ। निरगुण जोत बिन वरन गोत पुरख अकाल आपणा दे सबूत, साहिब स्वामी पर्दा आप उठाईआ। हर घट वस्सें मौजूद, गुरमुखां

लएं तराईआ। तेरी मंज़ल इक मक्सूद, मुकामे हक़ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे वज्जे वधाईआ। दर ठांडा दिसे एक, एकँकार वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई दस्स दे टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। दीन दुनी दी बुद्धी कर बिबेक, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। निज नेत्र तैनूं लैण वेख, लोचन अंदरों कर रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना मुल्ला शेख़, पंडत पांधा ना कोए पढ़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ खोलॣ भेत, नौ दुआर डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म दस्स हेत, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। पंच विकारा कर खेत, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। नज़री आएं नेतन नेत, निरवैर तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर दे लेख, भविख्तां विच तेरी आस तकाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी तूं बैठा रिहों सचखण्ड आपणे देस, दरगाह साची सोभा पाईआ। भगतां कारण हुंदा रिहों पेश, पेशीनगोई सब दी दए गवाहीआ। तूं रहिण वाला हमेश, जम्मण मरन रूप ना कोए बदलाईआ। तेरा मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, चोटी मूंड ना कोए मुंडाईआ। तेरा अन्त अख़ीर गुरु दस दस्मेश, दह दिशा कर के गया पढ़ाईआ। आप आपा कर के भेंट, बंस सरबन्स तेरे लेखे लाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक खेवट खेट, तट किनारा दूजा नज़र कोए ना आईआ। निरवैर हो के सृष्ट सबाई वेख, दीनां मज़हबां पर्दा दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा मनसा पूर कराईआ। सम्मत कहे मैं चौथा आया, निरगुण निरवैर तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे माया, ममता मोह विकार गुआईआ। तूं साहिब सज्जण सुखदाया, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। लख चुरासी रचन रचाया, चारे खाणी वंड वंडाईआ। चारे बाणी राग अलॣाया, चारे कूटां कर शनवाईआ। चारे जुग खेल रचाया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी कल धराईआ। अवतार पैगम्बर गुरु वेस वटाया, नित नवित्त आपणी कार कमाईआ। पारब्रह्म तेरा भेव किसे ना आया, पर्दा सक्कया ना कोए चुकाईआ। सब ने झुक झुक तैनूं सीस झुकाया, सजदयां विच लोकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला गाया, चार जुग करी जगत पढ़ाईआ। क़लम शाही लेख लिखाया, कागज़ बणत बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जुग जुग आपणा फेरा पाया, पारब्रह्म तेरी ओट तकाईआ। अन्त संदेसा तेरा इक सुणाया, ढोला सोहला राग अलॣाईआ। जिस वेले कलयुग वेला अन्तिम आया, कल कल्की वेस वटाईआ। जिस नूं जन्मे कोए ना माया, गोदी गोद ना कोए सुहाईआ। जिस नूं खिलाए कोई ना दाया, दर दुआर ना कोए सुहाईआ। तूं ख़ालक ख़लक बेपरवाह नूर रुशनाया, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दे उठाईआ। सम्मत कहे मैं साल चौथा आया जग, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। चार कुण्ट लग्गी अग्ग, तृष्ना जगत ना कोए बुझाईआ।

हँस बुद्धी होई कग्ग, सृष्टी दृष्टी तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। मोह हँकार विकार गया वध, काम क्रोध करे लड़ाईआ। साध सन्त जीव जंत तेरा प्रेम गए छड्ड, आत्म परमात्म नाता ना कोए जुड़ाईआ। ख़ाली दिसण साढे तिन्न हथ्थ काया माटी हड्ड, तेरी हद्द पार ना कोए कराईआ। एसे कर के अवतार पैगम्बर गुरु तैनूं गए सद्द, होका नाम वाला सुणाईआ। तूं साहिब सूरा सर्बग्ग, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। तेरा नाम अगम्मा नद, दो जहानां करे शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे भज्ज, संसारी भण्डारी सँघारी सेव कमाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, कल तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, प्रगट आपणी कल धराईआ। सति धर्म दा खोल्ह दे हट्ट, हट्टवाणा इक्को नजरी आईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे गावण जस, सिफ्तां विच तेरा नाम सालाहीआ। जन भगतां अंदरों खोल्ह दे अक्ख, निज नेत्र कर रुशनाईआ। सच स्वामी हो प्रतख, पारखू गुरमुख लै उपजाईआ। अग्गे होवीं कदे ना वक्ख, वखरा घर सुहाईआ। कुछ लहिणा दस्स के गया रामा बेटा दसरथ, वशिष्ट नाल गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख जिस वेले कृष्ण चलाया रथ, रथवाही हो के आपणी कार कमाईआ। चौथा साल कहे मेरे परम पुरख अबिनाशी, हरि करते तेरी सरनाईआ। तेरा खेल वेख्या मण्डल रासी, गगन गगनंतर वज्जी वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखे तेरे साथी, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। देवत सुर मन्नदे आखी, गण गंधर्ब राग अल्हाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण वेखी तेरी पाती, संदेसे शब्द वाले जणाईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आत्म तेरी ज़ाती, जागरत जोत डगमगाईआ। निरगुण हो के कर राखी, सरगुण मेला मेल सहज सुभाईआ। की लेखा दस्स के गया गोबिन्द इक सत्त पंज छे दी वसाखी, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। ओह लहिणा देणा वेख बाकी, बाकी नवीस फोल फुलाईआ। पुरख अकाल तेरा तन वजूद नहीं कोई ख़ाकी, तत्तां विच ना कोए चतुराईआ। सदी चौधवीं अन्धेरी राती, कलयुग कूड़ क्रिया हल्काईआ। धर्म दा रिहा कोई ना पाठी, तिलक ललाट ना कोए लगाईआ । बग़ल क़ुरान रखाए ना कोई साची, मसला हक़ ना कोए सुणाईआ । जीवण बदले ना कोए हयाती, सन्त कन्त ना कोए मिलाईआ। किरपा कर कमलापती, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। तूं साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना सूरबीर हाठी, योद्धा इक्को धुरदरगाहीआ। साची मंज़ल चढ़ा दे घाटी, घाटा सब दा पूर कराईआ। सदी वीहवीं पूरी कर दे वाटी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल कहे सुण सम्मत मेरे चार, चौथे जुग दयां वड्याईआ। उठ वेख मात संसार, लख चुरासी अन्तर खोज खुजाईआ। साचा रिहा ना कोई प्यार, मुहब्बत विच महबूब ना कोए मिलाईआ। साचा आत्म परमात्म नाता जुड़िआ ना कन्त भतार, आत्म सेज

ना कोए सुहाईआ। रसना जिह्वा कथनी कहि कहि सारे रहे उचार, हिरदे हरि ना कोए सुहाईआ। मैं तेरे सम्मत विच सब नूं कर देवां खबरदार, बेखबरां खबर सुणाईआ। हुक्म देवां पैगम्बर गुरु अवतार, अवतरा आपणी कार कमाईआ। जा के वेखो आपणी वार, निरगुण सरगुण पर्दा लाहीआ। जो दस्स के आए विहार, भरमे भुल्ली कूड़ लोकाईआ। की करनी कमाउँदे कार, करता पुरख दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए बणाईआ। पुरख अकाल किहा गुर अवतार आउ अगे, अगला लेखा दयां वखाईआ। हुक्मे अंदर सब नूं रिहा सद्दे, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। क्यों मातलोक विच्चों आए भज्जे, भजन बन्दगी आपणा नाम दृढ़ाईआ। सवाधान होवो बुड्ढे नढ्ढे, नौजवान लवो अंगड़ाईआ। तुसीं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वारो वारी गए कदे कदे, क़दीम दा लेखा दयां मुकाईआ। दीन मज़हब दे चखदे रहे मज़े, मानस मानस नाल लड़ाईआ। चढ़ाउँदे रहे अपणी मंज़ल आपणी हद्दे, महबूब मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। किसे याद ना आई केहड़ी पुश्त केहड़ी यद्दे, यके बाद दीगरे सारे कर के गए शनवाईआ। सदी चौधवीं साबत सिदक किसे ना लभ्भे, सूफ़ी फ़कीर रहे कुरलाईआ। लेखे साधां सन्तां दिसण ना बग्गे, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान ग्रन्थां पन्थां भार बद्धे, बन्धन सके ना कोए तुड़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण धार किसे ना लभ्भे, अंदर बहि बहि सारे रहे ध्याईआ। शब्द संदेसा नर नरेशा मूल किसे ना घल्ले, धायल होई खलक खुदाईआ। निरगुण नूर ज़हूर विच कदे ना रले, रौला पवे थाउँ थाईंआ। बिन जन भगतां सदी चौधवीं कोई ना फले, पत्त डाली फुल्ल रुक्ख लहराईआ। जिन्हां नूं आप फड़ाए पल्ले, पल्लू आपणी गंढु बंधाईआ। सच दुआर उन्हां ने मल्ले, जिथ्थे वस्से धुरदरगाहीआ। झगड़ा मुक जाए जले थले, अस्गाहां विच ना कोए भवाईआ। सचखण्ड दुआरे जोत अगम्मी बले, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। सोहणा सुहञ्जणा इक महल्ले, महबूब इक्को नज़री आईआ। जिस दे ना कोई उपर ना कोई थल्ले, मध्ध समझ ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो खोल्ह के ताकी, पर्दा धर्म उठाईआ। तुहाडा दिसे कोई ना साथी, सज्जण संग ना कोए बणाईआ। ऊँच नीच नज़र ना आए कोए पाकी, पतित होई जगत लोकाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तुहाडा बणया ना कोए जमाती, जुम्मला अक्खर ना कोए समझाईआ। जो संदेसा दे के आए कागज़ाती, क़लम शाही नाल लिखाईआ। ओह समझे ना इल्म सफ़ाती, सफा सब दी रिहा उठाईआ। प्रभ दा खेल वेखो इत्तफाकी, इत्तफाकीआ आपणी कार कमाईआ। जो तुहानूं भेजदा रिहा बहु बिध भाती, भावना आपणे नाल मिलाईआ। आपणा

३४४
२१

दीन मज़हब वेखो प्रांती, परम पुरख रिहा दृढ़ाईआ। अंदर वेखो पवण स्वासी, हर हिरदा फोल फुलाईआ। जिन्हां दे पिच्छे चढ़ के आए फाँसी, तत्तां नालों तत कर जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला रिहा उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सुणो अगम्मी फ़रमान, योद्धे सूरबीर बणो जुआन, मर्द मर्दान दए वड्याईआ। आपणे गुरमुख सन्त सुहेले सूफ़ी लओ पछाण, चुरासी विच्चों फोल फुलाईआ। जिन्हां नूं अक्खरां दा दिता ज्ञान, निरअक्खर लओ मिलाईआ। चढ़ाओ ओस बिबान, जिस नूं दो जहान ना कोए अटकाईआ। झगड़ा मुक्के पवण मसाण, तत वजूद करो सफ़ाईआ। मिलाओ धुर दे काहन, जो सखीआँ संग निभाईआ। वखाओ ओस राम, जो राम रामा रिहा प्रगटाईआ। जो पैगम्बरां करे पहिचाण, कलमा कायनात जणाईआ। जिस ने दस्सया सतिनाम, नानक निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। जो फ़तहि डंक वजाए आण, गोबिन्द हुक्म सुणाईआ। सो सूरा साहिब सुल्तान, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सब नूं कर के सवाधान, सुत्यां रिहा उठाईआ। कलयुग शरअ होई शैतान, धर्म धीर ना कोए धराईआ। जो नाम कलमा दे के आए पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी विच समझाईआ। ओह मिल्या ना किसे मकाम, मकामे हक़ ना कोए सहाईआ। कलयुग कूड़ चढ़या तुफ़ान, घर घर अंदर रिहा रुढ़ाईआ। क्यों तुहानूं मन्नण वाले होए बेईमान, बेवा दिसे लोकाईआ। जिन्हां ने मसले पढ़े क़ुरान, काया काअबे दरस कोए ना पाईआ। जिन्हां वाचे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, पूरब जन्म दा लेखा ना कोए मुकाईआ। जेहड़े रसना गाउँदे सतिनाम, क्यों नहीं अंदरों हुंदी सफ़ाईआ। जेहड़े फ़तहि जैकारा कहिण नाल ज़बान, क्यों पिछ्वां रहे वढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरो सदी चौधवीं तुहाडी धर्म दी लुट्टी गई दुकान, दाअवेदार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। चौथे साल कर लै सोझी, समझ दयां समझाईआ। साबत रिहा कोई ना जोगी, जुगीशर रहे कुरलाईआ। सन्त रिहा ना कोए संजोगी, मेला मेल ना कोए कराईआ। दीन दुनी होई काम दी भोगी, भगवन रंग ना कोए रंगाईआ। किसे कम्म ना आई जञ्जू नाल बोदी, तिलक त्रसूल नाल वड्याईआ। किसे लेखे ना लग्गी मुंनी होई ठोडी, लबां दा कटया कटाकश तीर ना कोए चलाईआ। भुल्ल गई सिख्या वेदी सोढ़ी, सूरबीर रणखेत आपणा आप ना कोए मिटाईआ। जे कोई भगत सुहेला बचया उह वी प्रभ दे प्रेम प्यार दी विच डोडी, जिस दा पर्दा ना कोए खुल्हाईआ। क्यों सृष्टी होई हउमे दी रोगी, गुर अवतार पैगम्बरो दयो जणाईआ। जां कहो असीं नहीं अंदर दे धोबी, सकीए ना कर सफ़ाईआ। फिर खेल करे प्रभ ठाकर धुरदरगाही मौजी, मौजूदा हो के वेख वखाईआ। जिस नूं आदि जुगादि दीन मज़हब दा हिरस नहीं उह कलमयां दा नहीं लोभी, जमातां वंड ना कोए वंडाईआ। जिथ्थे रमज़

किसे नहीं पहुंची, सारे गए सुणाईआ। ओस प्रभू दी कुल गुर अवतार पैगम्बरो कदे ना औंती, जन भगत सुहेले जुग जुग लए प्रगटाईआ। जिस वड्याई दिती रविदास चमारे मोची, मेहरवान मेहर नज़र तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या आप जणाईआ। सम्मत चार कहे गुर अवतार पैगम्बरो लोकमात मारो आपणा दब्बा, भय दयो वखाईआ। ज़ोर लाओ चोटी पब्बां, पारब्रह्म दयो दृढ़ाईआ। जेहड़ा साहिब किसे नहीं लभ्भा, ओह नेत्रां दयो वखाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर ब्रह्मण्ड खण्ड बज्झा, पुरी लोअ सीस निवाईआ। जिस दी हर घट अंदर जगह, घर घर अंदर डेरा लाईआ। जो वस्से उपर शाह रगा, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। जो नाम प्यावे मधा, खुमारी इक चढ़ाईआ। जो शब्दी देवे सद्दा, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जो जुग चौकड़ी फिर फिर भज्जा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। ओस दे हुक्म दी लभ्भ लओ वजह, वज़ाहत नाल दृढ़ाईआ। क्यों बोदी टोपी सीस रखाई पग्गा, पगड़ी देवे ना कोए सफ़ाईआ। कलयुग अन्तिम सब दे नाल कर के दग़ा, दाग़ सब नूं दिता लगाईआ। किसे ने सूर खाधा किसे ने गाँ वच्छा ढग्गा, बचया रहिण कोए ना पाईआ। किसे ने अलिफ़ पढ़ी किसे ने ऊड़ा ऐड़ा बब्बा, बाहों फड़ के पार ना कोए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की आपणी कल दृढ़ाईआ। चौथा सम्मत कहे गुर अवतार पैगम्बरो क्यों तुसीं सुत्ते, सचखण्ड लओ अंगड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों दुखे, दर्दां विच दुहाईआ। ग़रीब निमाणे मरदे भुक्खे, भुक्खआं ना कोए रजाईआ। भगत जम्मे किसे ना कुक्खे, जणेंदी कम्म किसे ना आईआ। लहिणा मुक्के ना उलटे रुक्खे, दस दस मास ना अगन बुझाईआ। सदी चौधवीं क्यों सारे बैठे चुप्पे, चुप चुपीते लओ अंगड़ाईआ। जगत मात सुहाओ रुत्ते, रुतड़ी प्रभ दे नाम महकाईआ। भाग लगाओ काया बुत्ते, पंज तत होए रुशनाईआ। क्यों गुरमुखां नाल होए गुस्से, गिला अंदरों दयो गुआईआ। क्यों आपणे प्रेम दे हथियार सुट्टे, शस्त्रधारी हो के आपणा बल वधाईआ। क्यों मुहब्बत विच टुट्टे, टुट्टयां लओ जुड़ाईआ। क्यों नहीं गाने बन्नदे प्यार दे गुट्टे, साचा सगन मनाईआ। सदी चौधवीं सुहाओ रुत्ते, रुत धुर दी दयो वखाईआ। सारे गाओ मुझे, मुश्किल दीन दुनी पार कराईआ। चौथा सम्मत तुहानूं पुच्छे, पेशीनगोई दयो वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तूं आया चार सम्मत, समें मिली वड्याईआ। साडी रही कोई ना हिम्मत, हरि हौसला दिता ढाहीआ। जाईए केहड़ी सिम्मत, चारे कुण्ट दुहाईआ। जेहड़े विदवान ओहो बण गए निन्दक, पंडतां मुल्ला मुल्ल ल्या चुकाईआ। झगड़ा वेख्या जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए

३४६
२१

वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की दस्सीए अगम्मी बात, बातन भेव खुल्हाईआ। सचखण्ड विच साडी सब दी इक जमात, इक्को इक पढ़ाईआ। खेल कीता की लोकमात, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। प्रभ दी वखरी वखरी दस्स के याद, नाम नाम दिता बदलाईआ। भेव खुलाउँदे रहे बोध अगाध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। पर समझया नहीं किसे ओस दा राज़, जो राज़क़ रहीम अख्वाईआ। करदा रिहा आपणा नाज़, निरवैर पुरख धुरदरगाहीआ। साडी खुल्हण ना दिती जाग, चार कुण्ट आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं असीं वेखणा ओस दा भाग, जो भाग हिस्सा सब दी झोली पाईआ। साडा गुल्ल होया चराग़, चश्म दीद ना कोए रुशनाईआ। अन्त ओस दे हथ्थ फड़ाउणी वाग, जो वारस दीन दुनी दा नज़री आईआ। जिस गोबिन्द दा शरअ तों परे उडया बाज़, बाज़ां वाला नाउँ प्रगटाईआ। ओस दा धर्म दा वेखणा राज, रईयत दो जहान लए प्रगटाईआ। भविख्तां विच मार के आए आवाज़, संदेशयां विच सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तूं सब दा करना काज, करते पुरख तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा पूरा हो गया समां, समाप्त दिता कराईआ। पुरख अकाल दा खेल होणा नवां, नव नौ चार दए गवाहीआ। सृष्टी दृष्टी दुखी होणी बिन दमा, दामनगीर ना कोए अख्वाईआ।
३४७
पुरख अकाल दीन दयाल कूड़ा लालच मिटाउणी तमअ, ताअबेदारी इक बनाईआ। जिस वेले पंजवां साल होणां रवां, राम
२१
कृष्ण सीस निवाईआ। चरण चुम्मे जगत माई हव्वा, आदम आदम दा खेल वखाईआ। दीन मज़हब दा जिस ने तोड़ना बन्न्हा, बावन बलि दए वड्याईआ। जन भगतां लेखा मिटाउणा जमां, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सब ने हुक्म ओस दा मन्ना, सिर सक्कया ना कोए उठाईआ। जिस दा प्रकाश नूरी धार गोबिन्द चन्ना, चन्न चांदनी करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा धुर दा आप समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी बदल देणी आदत, हरि करते हथ्थ वड्याईआ। सृष्ट सबाई दस्स इक इबादत, अमल इक्को इक जणाईआ। मन दी रहे ना कोई अदावत, अदल इन्साफ ना कोए दृढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया कर ममानत, सति सच दए प्रगटाईआ। जन भगतां दी दे के नाम ज़मानत, दो जहानां होए सहाईआ। जेहड़े सन्त सुहेले चार जुग दी सांभ के रखे अमानत, सो कलयुग अन्त दए प्रगटाईआ। धुर दी दे के नाम निआमत, तोहफ़ा अगम्म अथाह दृढ़ाईआ। अगनी तत बुझा के करे सांत सांतक, रजो तमो सतो ना कोए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे नास्तिक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सम्मत चौथा कहे गुर अवतार पैगम्बरो इक वार लावो ज़ोर, जोरू ज़र वेख वखाईआ। तुसीं

होर प्रभ नहीं कोई होर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। क्यों तुहाडा इष्ट मन्नण वाले बणे चोर, ठग्गी तुहाडे नाल कमाईआ। तुसीं सचखण्ड बैठे उन्हां दी अंदरों खिच्चो डोर, सुरती आपणे नाल मिलाईआ। तुसां केहड़ा चढ़ के जाणा उपर घोड़, लोआं पुरीआं पैंडा पन्ध मुकाईआ। चार कुण्ट ना करनी पए दौड़, क़दम क़दम ना कोए उठाईआ। सब दे मन दे फ़ुरने दा अंदरों मिटा दयो शोर, छोहर हो के वेख वखाईआ। सारे तक्क के वेखो नाल ग़ौर, गहर गम्भीर रिहा समझाईआ। सदी चौधवीं साधां सन्तां बदल गए तौर, तबा तबीअत तबीब ना कोए बदलाईआ। रसना बचन करदे कौड़, कूड़ी क्रिया नाल वड्याईआ। सचखण्ड लग्गा ना किसे दा पौड़, पौड़ी चढ़न कोए ना पाईआ। ग्रन्थ पढ़ के मारन फौड़, नाता जगत नाल रखाईआ। बिना शब्द गुरु तों किसे दे सीस ना झुल्ले चौर, पवण चवर ना कोए कराईआ। किसे दे कोल अन्तर नूर नहीं भोर, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। बाहरों जगत गुरु बणे बतौर, बातन पर्दा ना कोए उठाईआ। मन्त्र फुरे ना किसे फोर, फ़ुरना मन ना कोए गुआईआ। काया वड़ के डूँघी गोर, आप आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। चौथा सम्मत कहे गुर अवतार पैगम्बरो तुसीं फेर पहनो तन ख़ाकी, लोकमात वेस वटाईआ। क्यों तुहाडे होए तुहाथों आकी, अकल बुद्धी दयो समझाईआ। तुहाडी रमज़ किसे ना जाती, जागरत जोत ना कोए जगाईआ। जे तुसीं पुराणे हो गए वागी, फिर शब्द डंगोरे हथ्थों दयो सुटाईआ। प्रभ नूं इक वार कहि दयो तेरी सृष्टी साथों नहीं जांदी सांभी, जाह सम्बल विच आपणा डेरा लाईआ। तेरी दृष्टी दीन दुनी भुलाया भरम सोने चांदी, रूपा रूप नाल वड्याईआ। नाम धर्म दी दिसे कोई ना बांदी, बन्दन सारे गए भुलाईआ। चारों कुण्ट कूड़ दी आंधी, जड़्ह सब दी रहे उखड़ाईआ। बेशक बाहरों दुनियां सारी नहांदी, अंदर करे ना कोए सफ़ाईआ। तेरा नाम रागां नादां विच गांदी, अनहद नाद ना कोए शनवाईआ। पवण मिले ना किसे ठांडी, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। मुसाफ़र बणे पाँधी, मंज़ल हक़ ना कोए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला लेखा दे जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भर के लम्मा हौका, हाए कर सुणाईआ। कलयुग अन्तिम डुब्बण वाली नौका, नईआ पार ना कोए कराईआ। जिस गोबिन्द छड्डुआ पटना पौंटा, पाटल हो के वेस वटाईआ। इक ढईए दा ला के ढौंका, कलयुग अन्तिम लए अंगड़ाईआ। दीन दुनी नूं वेखे नाल शौंका, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। आपणा आपणे हथ्थ रखे मौका, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। बेख़बरी विच कदे ना करे धोखा, सुत्यां लए उठाईआ। पर्दा लाह के काया कोठा, कण्पड़ गढ़ करे सफ़ाईआ। जन भगत उठा के पुरख अकाल दा पोता, गोबिन्द पिता दए वड्याईआ। सिध्धा मेल मिला के नाल निर्मल जोता, जोती जोत विच रखाईआ। चुरासी विच मारन ना

देवे गोता, डूँघे वहिण ना कोए वहाईआ। कलयुग जीव रहिण ना देवे खोटा, खोटे खरे फोल फुलाईआ। साचे नाम दा सच दुआरे नहीं कोई तोटा, अतोट अतुट दए वरताईआ। साचा मार्ग दस्स के सौखा, मंज़ल इक्को इक चढ़ाईआ। जिथ्थे पढ़ना पए ना पोथा, बग़ल क़ुरान ना कोए उठाईआ। रखणा पए कोई ना रोज़ा, राज़क़ रिज़क़ रहीम दए सरनाईआ। जो गुरमुख हो गया प्रभ दे जोगा, जुगत आपणी दए समझाईआ। अंदरों कढ्ढके हउमे रोगा, हँ ब्रह्म दए वखाईआ। पर्दा लाह के चौदां लोका, चौदां तबकां करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर इक सुहाईआ। अवतार कहिण असीं मातलोक तेई, त्रै पंज विच समाईआ। अगली खेल वेखणी नई, नर निरँकार दए वड्याईआ। कुछ बचन सुणाया राम चन्द कैकई, अयुध्आ रसना गाईआ। तूं नहीं माँ मतरेई, मति तेरी मोहे भाईआ। जिस वेले पुरख अकाल आया बण के बड़ेई, रूप अनूप आप वटाईआ। उस दी सब अवतार पैगम्बरां गुरुआं पाउणी सही, शहादत इक भुगताईआ। जिस दा लेखा लिख्या नहीं जांदा उत्ते बही, वाहिद मालक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला आप उठाईआ। पैगम्बर कहिंदे असीं ओस दा अगम्मा नूर, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। जिस ने दिता सच ज़हूर, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। उहदा कलमा करन आए मशहूर, मशवरा इक पकाईआ। जिस दा सिफ्तां वाला दस्तूर, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। उहदा सजदा कर मन्ज़ूर, सीस रहे निवाईआ। जिस दा झगड़ा नाल कूड़, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, मुफ़लिसां दए तराईआ। क़दमां दी दे के धूढ़, क़दीम दे विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। माटी वजूद चाढ़ के रंग गूढ़, रंगत आपणी इक चमकाईआ। मेहर निगाह नाल बख्श देवे हज़ूर, कलमे रोज़े दी लोड़ रहे ना राईआ। सूफ़ीआं रहिण ना देवे मग़रूर, फ़कीरां फ़िकरा इक जणाईआ। सब दा तोड़ के माण ग़रूर, गुरबत अंदरों दए कढ्ढाईआ। उहदा हुक्म फ़रमाना सब नूं करना पए मन्ज़ूर, जिस दे पिच्छे सूली चढ़या मनसूर, मनसा आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। पैगम्बर कहिण असीं ओस दे नज़दीकी, जो नेरन नेरा नज़री आईआ। जिस दी शरअ नहीं शरीकी, शिरकत दए मिटाईआ। जिस दी मुहब्बत विच तौफीक़ी, तुआरफ करे ख़लक ख़ुदाईआ। जिस दे चरण कँवल अज़ीज़ी, क़दम बोसी रहमत ख़ुदाईआ। जो देवे हक़ तमीज़ी, तमां तमन्ना दए गवाईआ। जिस दी चौदां लोक बग़ीची, चौदां तबक वेख वखाईआ। ओस दा कलमा गाईए हक़ीक़ी, नगमा धुर दा रिहा दृढ़ाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीदी, आमद आपणी इक जणाईआ। हज़रत करन आए ताईदी, ताकीद धुरदरगाहीआ। जिस दी सिफ्त करे क़ुरान मजीदी, मजमूआं अक्खरां वाला बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, धुर दा खेल आप बणाईआ। पैगम्बर कहिण मूसा वेख आपणा मसला, मुश्किल हल्ल कवण कराईआ। ईसा वेख आपणा असला, असलीअत दे दृढ़ाईआ। मुहम्मद चौधवीं सदी दा की मसला, साहिब मुसाहिब की समझाईआ। केहड़ा कलमा परवरदिगार ने दस्सणा, कलमयां तों बाहर कर पढ़ाईआ। केहड़ा जींवदयां गाउणा रसना, रसना दए वखाईआ। जिस दे क़दमां अंदर वसणा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। मुहम्मद किहा मैं ओस अमाम नूं सद्दणा, जो नबीआं दा नबी रसूलां दा रसूल माकूल नज़री आईआ। जिस दा अग्गा अग्गे वधणा, वहदत विच लोकाईआ। जिस दी वाहिद होणी बन्दना, बन्दगी इक दृढ़ाईआ। चढ़ के आपणी मंज़ला, महबूब हो के पर्दा दए उठाईआ। उस दा चराग़ दीपक इक्को जगणा, जगह जगह करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। दस गुरु कहिण ओह सब दा इक ख़ावंद, ख़सम नानक कहि के गाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर पाबन्द, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस दी महिमा गाउँदे छन्द, ढोले सिफ्त सालाहीआ। जिस दा लेखा अन्तिम पुरी अनन्द, अनन्द गोबिन्द विच प्रगटाईआ। जलवा नूर चाढ़ के चन्द, ज़हूर दए चमकाईआ। तन वजूद कर के खण्ड, खण्डा खड़ग इक उठाईआ। अस्व घोड़े कसे तंग, वेखे सर्ब लोकाईआ। गुरमुखां दे के संग, सगला संग निभाईआ। अन्तिम हो के मात विच्चों नंग, नंगी पैरीं माछूवाड़े डेरा लाईआ। पुरख अकाल तों मँगे मँग, सत्थर यारड़ा इक हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। दस गुरु कहिण नानक निरगुण धार, निरवैर विच समाईआ। तन वजूद आकार, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाईआ। जोत नूर उज्यार, शब्द धार शनवाईआ। खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आप समझाईआ। मंज़ल चढ़ दुष्वार, दर साचे वज्जे वधाईआ। हुक्म धुर दरबार, संदेसा इक अल्ाईआ। कल कल्की लए अवतार, निहकलंक नाउँ प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे खुआर, ख़ालस आप जणाईआ। जीवण जुगत जाणे जुग चार, चौकड़ी पर्दा दए उठाईआ। वेला वक्त लए संभाल, सम्बल आपणा आसण लाईआ। साढे तिन्न हत्थ काया मन्दिर कर त्यार, बंक सुहञ्जणा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। नानक गोबिन्द कहे तूं धुर दा कमलापाती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जो आदि जुगादि भगतां साथी, सगला संग निभाईआ। जिन्हां नूं चौदां रतनां विच्चों सीस निवाउँदा ऐराप्त हाथी, गज दिती माण वड्याईआ। जिस दी चार जुग गुर अवतार पैगम्बर गाउँदे साखी, साख्यात निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। सति धर्म दी खोल्हे हाटी, वणज वणजारा इक्को दए समझाईआ। कलयुग अन्तिम मेट अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। राम नाम दी दे के गाथी, मन्त्र इक्को दए सिखाईआ। सच

सुनेहड़ा जणावे पाती, पतण इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे गुरमुख आत्मा हँस सरोवर नहाती, दुरमति मैल रहे ना राईआ। मनसा मन रहे ना नार कमज़ाती, कुलखणी कूड़ दए गुआईआ। सुरती सदा रहे जागी, आलस निंदरा दए मिटाईआ। प्रेम प्यार दे वैरागी, वैरी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। गुरमुख दीन दुनी दा बणा के तिआगी, घर इक्को दए समझाईआ। अन्तिम हारनी ना पए बाज़ी, बाज़ां वाला गोद उठाईआ। जेहड़े अन्तिम कलयुग हो गए बाग़ी, बाहर मिले सज़ाईआ। जिन्हां दे अंदर नानक निरगुण रबाबी, तार सितार रिहा हिलाईआ। ओह मिल गए नाल पुरख अबिनाशी आदी, जो अन्त होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सम्मत कहे मेरा भाद्रों आया महीना, गुर अवतार पैगम्बर वेख वखाईआ। प्रभ दा भगत वेखो नगीना, जिस दी क़ीमत कोए ना पाईआ। जिन्हां हरि का नाम चीना, चिन्ता अंदरों गए गुआईआ। कूड़ विकार उन्हां तों छीना, छिन्न भंगर करे जणाईआ। लेखा मुका के लोक तीना, त्रैभवन धनी दए सरनाईआ। तड़फण देवे ना वांग जल मीना, अमृत जाम प्याईआ। जिन्हां नूं पैदल चलदयां आया पसीना, पुश्त पनाह उन्हां दी हथ्थ टिकाईआ। गुरमुख ना कोए कमीना, कामल मुर्शद दए गवाहीआ। जिस नूं मुहम्मद किहा आमीना, सजदयां विच सीस झुकाईआ। उह देवण आया सच तालीमा, गुरमुख तुलबिआं करे पढ़ाईआ। जिस दा किसे नहीं समझया ज़मीमा, ज़रा ज़रा ना वंड वंडाईआ। उस दा लेखा हक़ तख़मीना, तमां कूड़ ना कोए गवाईआ। जो खेल खेलदा असमानां तों उत्ते थल्ले ज़मीना, ज़ामन धुरदरगाहीआ। गुरमुखां ठंडा करे सीना, कलयुग अगनी अग्ग बुझाईआ। जो मालक वड प्रबीना, पर्बतां दा खैड़ा रिहा छुडाईआ। जन भगतो प्रभ दे चरण दुआरे जीणा, दूजा जीवण कम्म किसे ना आईआ। आबेहयात अमृत पीणा, रसना रस देणा गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। चौथा साल कहे मेरा भादों आया भला भद्र, भावना सब दी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडीआं उम्मतां विच पैणा ग़दर, गदागर बणे लोकाईआ। किसे दी पूरी होणी नहीं कोई सध्धर, सदमे विच दिसे लोकाईआ। कलमयां दी पवे कोई ना कदर, कायनात दए दुहाईआ। बिना परवरदिगार तों करे कोई ना अदल, इन्साफ रहिण कोए ना पाईआ। तुहाडे वस्स विच तुहाडा मज़हब रिहा कोई ना टब्बर, पुत्तर धी माण ना कोए रखाईआ। हुण सारे कर लओ सबर, शुकराने विच सीस निवाईआ। पुरख अकाल दा शब्दी योद्धा शेर बब्बर, भबक आपणी लए लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो महरम होए ना किसे विच क़बर, मक़बरा दए ना कोए दुहाईआ। तुहाडा लेखा लिख्या कोई कर ना सके रबड़, भविख्तां विच भेख बदलाईआ। कलयुग जीव बाहरों हो गए बगले बप्पड़, अंदरों नूर ना कोए चमकाईआ। अठसठ तीर्थ बण गए छप्पड़, दुरमति मैल ना कोए

३५१
२१

धुआईआ। सदी चौधवीं सन्त फ़कीर दरगाह साची कोई ना सके अप्पड़, अद्धवाटे सारे बैठे मारन धाईआ। माया ममता वाले फक्कड़, फ़िकरे ढोले तुहाडे रहे गाईआ। दुनियां विच मार के चक्र, चक्रवर्ती रहे अख्वाईआ। घिउ खण्ड खा के करन शुकर, शुकरीआ जगत दा रहे कराईआ। नाले साध ते सच दे नाल लावण टक्कर, टुकड़े मँग के झट लँघाईआ। कोई नहीं दिसदा जेहड़ा पहुंचिआ होवे पत्तण, किनारे बैठा सोभा पाईआ। राम अल्ला वाहिगुरु गॉड कहि के आपणा करदे यत्न, यथार्थ मिले ना धुरदरगाहीआ। ओह सन्त नहीं उह भगत नहीं उह अवतार नहीं उह गुर नहीं उह पैगम्बर नहीं जेहड़े मिन्नतां कर के प्रभ दा नाम जपण, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जिन्हां दी पैज आप आवे प्रभ रखण, उह उठ उठ वेखण चाँईं चाँईंआ। इक्को चरण दुआरे नस्सण, आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रभ दा दर्शन कर के हस्सण, बहुतिआं दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। चौथा साल कहे गुर अवतार पैगम्बरो भादों महीना प्रभ दा भुजंगी, हरि भुजंगम वेख वखाईआ। सूरबीर बहादर नौजवान योद्धा जंगी, जंगजू इक्को इक वड्याईआ। तुसीं वेखो सारे सृष्टी अंदर तंगी, तंगदस्त दिसे लोकाईआ । दीनां मज़हबां दी तुसां ने पाई कन्धी, हद्दां वंड वंडाईआ। प्रभ दे सिफ्ती नाम दी दस्स के डंडी, राम कृष्ण अल्ला वाहिगुरु सतिनाम दी कीती लड़ाईआ। वरभण्ड विच पा के भंडी, प्रभ नूं भंडया थाउँ थाईंआ। कलमे गा के आपणे दन्दी, दानशमंद दिते भुलाईआ। हुण वेखो मातलोक तुहाडी केहड़ी सभा चंगी, मजलस कवण वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जां तक्कण सब दी पिठ नंगी, ओढ्न सीस ना कोए टिकाईआ। अंदरो कहिण आत्म अन्धी, कन्त कन्तूहल ना कोए हंढ्ाईआ। बाहरों कहिण विदवानां दी लग्गी मंडी, पुस्तकां दी करन पढ़ाईआ। विद्या दे बण पाखण्डी, पारब्रह्म ना कोए मिलाईआ । कलयुग खेल कीती बहुरंगी, रंगत आपणी दिती वखाईआ। रसना कर के गन्दी, कूड़ी क्रिया विच मिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। चौथा साल कहे वेखो भाद्रों आया भज्जा, भाजड़ दिसे जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आपणा हथ्थ अगे करो सज्जा, हरि साजण वेख वखाईआ । सब दी तली दे विच दाग़ लग्गा, मुहम्मद दए गवाहीआ। सदी चौधवीं गुरुआं नाल चेल्यां करना दग़ा, मुरीद मुर्शदां सीस ना कोए निवाईआ। जगत विकार हींगणा वांग गधा, गदागर करे शनवाईआ। माया रस दा कौड़ा सब ने लैणा मज़ा, अमृत रस ना कोए चखाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ गुरुदुआर पवित्र रहे कोई ना जगह, नेत्रहीण दिसे जगत लोकाईआ। हँस बुद्धी होवे कग्गा, काग वांग कुरलाईआ। ओस वेले सब ने कहिणा हाए अल्ला दरोही रब्बा, अब्बा नज़र कोए ना आईआ। किसे ने कहिणा पुरख अकाल सूरा सर्बग्गा,

बग़लगीर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव आपणा दए खुल्हाईआ। भाद्रों कहे मैं महीना बेशक जग, जुग चौकड़ी साल बसाला मैनूं गाईआ। मेरे विच कीता किसे ना हज्ज, हाजी रुत ना कोए सुहाईआ। जगत जिज्ञासूओ लओ भज्ज, भज्जयां पार ना कोए लँघाईआ। सब दा मालक इक समरथ, हरि करता वड वड्याईआ। जिस दे कोल धुर दा हक़, हक़ीक़त इक समझाईआ। कर के कक्खों लख, कख्खों दए वड्याईआ। ज्यों भावे त्यों लए रख, मेहर नज़र उठाईआ। सदी चौधवीं सब ने होणा भड्ड, बचया रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मिटणा अठसठ, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। माण रहे ना मन्दिर मठ, शिवदुआले मसीतां हाल दुहाईआ। चार वरन हँकारी बुरज जाणा ढठ्ठ, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। अन्त प्रभ दा होणा इक्ठ, जुग जन्म दे विछड़यां लए मिलाईआ। इक्को नाम ढोला गीत सब ने लैणा रट, पिछला रट्टा देणा मुकाईआ। स्वामी नज़री आउणा कमलापति, पतिपरमेश्वर नूर खुदाईआ। जन भगतो भाद्रों कहे मैं दस्सण आया सच, सुनेहड़ा इक सुणाईआ। किसे कम्म नहीं आउणा काया माटी कच्च, कंचन गढ़ ना कोए वड्याईआ। ओस प्रभू दी चरणी जाओ ढठ्ठ, जो ढठ्ठयां लए उठाईआ। जिस दा वड्डा छोटा नहीं कद्द, क़दीम तों क़ुदरत दा मालक आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। भादों कहे मैनूं वेख के आउँदी हासी, खुशीआं विच जणाईआ। साचे मण्डल पवे कोई ना रासी, गोपी काहन नाच ना कोए नचाईआ। नूर चमके ना पृथ्मी आकाशी, गगन मण्डल ना कोए रुशनाईआ। साची दिसे ना कोए दासी, हँकार विच दुहाईआ। क्यों मूसा चढ़या उपर घाटी, मूँह दे भार सुटाईआ। क्यों ईसा लटक्या फाँसी, सलीब गल छुहाईआ। क्यों मुहम्मद कटी वाटी, जंगलां विच दुहाईआ। क्यों नानक निरगुण सरगुण बणया साथी, सगला संग निभाईआ। क्यों गोबिन्द चार वरन बणाया जमाती, इक्को रंग रंगाईआ। क्यों तेई अवतारां मन्नी प्रभ दी आखी, हुक्मे विच सीस निवाईआ। क्यों कलयुग अन्तिम रखी आसी, आशा इक प्रगटाईआ। सदी चौधवीं प्रगट होवे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता वेस वटाईआ। जो दीन दुनी दी वेखे गुस्ताख़ी, काया मन्दिर अंदर फोल फुलाईआ। जन भगतां सन्तां करे राखी, रखक हो के दए वड्याईआ। जागरत जोत दस्स के धुर दी जाती, आत्म परमात्म लए मिलाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे दीवा बाती, नूरो नूर डगमगाईआ। गुरमुखां बदल के जगत हयाती, जन्म सतिगुर घर वखाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे काग़ज़ाती, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। बकाया रहे कोई ना बाकी, लेखा सब दा साफ़ कराईआ। सच प्रेम दी दे के पाती, पतण अगला पार कराईआ। जिथ्थे वस्से शाह पातशाह हर घट निवासी, निवास अस्थान इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड

दुआरा इक खुल्हाईआ । भाद्रों कहे मैं दस्सां हुक्म खुल्हा, खालक खलक रिहा दृढ़ाईआ। जन भगतो प्रभ दुआरे लग्गे कोई ना मुल्ला, क़ीमत करता ना कोए पाईआ। जन भगत कदे ना रुला, रुलदयां लए उठाईआ। भावें तुसीं जाप करयो कदे ना नाल बुल्लां, हिरदे अंदर लैणा वसाईआ। साहिब सतिगुर कदे ना भुल्ला, जुग जुग भुल्लयां लए समझाईआ। जेहड़ा सतिगुर दे कन्ढे तोल तुला, अनमोल अतुल बणाईआ। उहदा चराग़ नहीं होणा गुल्ला, दीपक जोत सदा रुशनाईआ। साचे गुलशन विच जन भगत सुहेला गुंचे तों बाहर गुला, फूल डाली आप महकाईआ। जिस दा फुल्ल कदे ना हुल्ला, ओह आपणा कलमा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भाद्रों कहे जन भगतो इक दी कर लओ पूजा, सीस जगदीश झुकाईआ। बिना पुरख अकाल तों अवर नहीं कोई दूजा, दुतिया भाउ देणा गवाईआ। जो बन्द होया तुहाडे काया अंदर कुज्जा, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। जिस ने इशारा दिता महात्मा बुधा, बड़ बोहड़ दए दुहाईआ। भेव खुल्हाया गुज्झा, रमज़ इक जणाईआ। कलयुग अन्तिम मेरा नूर रहिणा नहीं लुका, लोक परलोक होवे रुशनाईआ। सदा प्रभू प्रेम दा भुक्खा, बिदर दए गवाहीआ। रविदास दा खा के टुक्कर रुक्खा, सुख सागर विच समाईआ। नामे दा मेट के दुक्खा, देहुरा दिता भुआईआ। धन्ने दा गुआ के गुस्सा, बजर विच्चों सध्धर पूर कराईआ। लहिणा मुका के कच्छ मच्छा, कशमकश वेखे जगत लोकाईआ। जन भगतो तुसां बचन मन्नणा सच्चा, चलणा इक रज़ाईआ। गुरमुखो रिहो कोई ना कच्चा, कच्चा तन्द कम्म किसे ना आईआ। रसना नाल कहो ना अच्छा, अंदरों आत्म लैणा मनाईआ। जो प्रभू दा बण गया बच्चा, बचपन आपणी झोली पाईआ। देवे घर हक़ीक़ी हक़ा, हक़ीक़त इक दरसाईआ। तुहाडे अंदर मदीना मक्का, काअबे तों परे नूर खुदाईआ। तुहाडे मन्दिर वेखो सजा, आत्म सेजा डेरा लाहीआ। काया दुआरा वेखो जगह, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साचे नाम दा दे के सद्दा, भगतां ल्या उठाईआ। साचे प्रेम दा लै लओ मज़ा, तुहानूं मज़ाक़ करे लोकाईआ। जिन्हां दे सिर ते कूकदी क़ज़ा, कलयुग कसाई छुरी रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा पूर कराईआ । भादों कहे जन भगतो बण जाओ जोबनवन्ते, घर घर वज्जे वधाईआ। मन्नो इक श्री भगवन्ते, जो सब दा पिता माईआ। चार वरन रूप धरो हरि संगते, द्वैत रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल आपे तुहाडे चोले रंग दए, रंगण इक चढ़ाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर मँगदे, उह देवणहार गुसाईंआ। तुसीं साथी उहदे अंग दे, अंगीकार आप हो जाईआ। दिन थोड़े होर मँग दे, मँगणी सब दी दए गुआईआ। वेखो विष्न ब्रह्मा शिव हथ्थ बन्न्हदे, सीस सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

मेला सांझा लए मिलाईआ। भाद्रों कहे जन भगतो सुणयो मेरी अरदास, बेनन्ती इक जणाईआ। साहिब सतिगुर तुहाडे पास, अंदर बैठा डेरा लाईआ। जिस दा नूर जोत प्रकाश, ब्रह्म करे रुशनाईआ। मण्डल पा के रास, सुरती शब्दी नाच नचाईआ। घर वखाए पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर दए जणाईआ। लेखे लाए पवण स्वास, साह साह विच वड्याईआ। तुहाडी पूरी कर के जावे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुका के जगत जात, जागरत जोत विच समाईआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, नाता बिधाता लए बंधाईआ। मंज़ल चाढ़ के औखे घाट, घाटा सब दा पूर कराईआ। जन्म जन्म दी मेट के वाट, वटना मले चाँईं चाँईंआ। आत्म सेजा बहि के खाट, खटका अंदरों दए कढ्ढाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। अन्त अख़ीरी जावां आख, संदेसा सच समझाईआ। जन भगत रहे ना कोई गुस्ताख़, गुस्सा अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा पूरा करना भविख्त वाक्, क्या वेखे चाँईं चाँईंआ। साचे सन्तां दा बण के चाक, चाकर हो के सेव कमाईआ। गुरमुखां चरण धूढ़ी दे के ख़ाक, मस्तक टिक्के देणे रमाईआ। प्रेम प्रीती दा बख्श इतफ़ाक़, निफ़ाक़ अंदरों देणा कढ्ढाईआ। तुसीं ओस प्रभू दे साक, जिथों होवे ना कदे जुदाईआ। बिना सजदयां तों सब नूं करे पाक, पतित पुनीत दए कराईआ। भाद्रों कहे मेरी शहिनशाही सम्मत दी पहली रात, सगनां नाल मनाईआ। जन भगतां पए ना जम की फास, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। भाद्रों कहे मेरा भगवान, भगवन इक अख्वाईआ। जिस दा आदि जुगादि धर्म निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। सब नूं देवणहारा दान, नाम अनमुल्ला झोली पाईआ। सचखण्ड दा हुक्मरान, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। अवतार पैगम्बर कर परवान, गुरुआं वेख वखाईआ। लेखा जाण जीव जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। हुक्म संदेसा दे फ़रमान, शब्दी शब्द पढ़ाईआ। कलमे दस्स कलाम, कायनात सिखलाईआ। अन्त हो प्रधान, डंका इक वजाईआ। कूड़ी क्रिया मेट शैतान, कलयुग शरअ दए बदलाईआ। सतिजुग सति बणा विधान, वायदा सब दा पूर कराईआ। शाहो भूप बण सुल्तान, धुर फ़रमाना इक उपजाईआ। लख चुरासी गोपी बणके काहन, नाम शब्द धुन सुणाईआ। सीता सुरती प्रना के राम, रमईआ राम वेख वखाईआ। अमाम हो के देवे पैग़ाम, पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। धर्म दस्स सच इस्लाम, इस्म आज़म इक वखाईआ। सजदयां नाल प्रणाम, नमस्ते विच वड्याईआ। प्रगटा के धुर मकान, मुक़ाम इक्को इक जणाईआ। जिथ्थे वस्से ना कोए इन्सान, तत्तां वाला नज़र कोए ना आईआ। इक्को दीपक जोत जगे महान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जिथ्थे कोई अवतार पैगम्बर गुरु देवे ना कोई बलिदान, तन सीस ना कोए कटाईआ। ओह धाम लामुक़ाम, बेमुक़ाम आप

सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल श्री भगवान, भगवन आपणी खेल रचाईआ। भाद्रों कहे जन भगतो निर्मल कर लओ बुद्धि, बुध्ध बबेक कराईआ। लेखा रहिणा नहीं वदी सुदी, किशना शुक्ला पक्ख ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल दा आउणा नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों जुगी, जुग जुग गुरु अवतार पैगम्बर सेव कमाईआ। एह खेल नहीं कोई गुज्झी, रमज़ इशारे नाल दृढ़ाईआ। जिस ने धार मिटाउणी दूजी, दूआ एके विच समाईआ। जन भगतां मंज़ल रखणी सौखी, दुखीआं दु:ख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मंज़ल चाढ़ दए उच्ची, जिथ्थे उच्च अगम्म अथाह आपणा डेरा लाईआ।

❋ २ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ज़िला अमृतसर ❋

भाद्रों कहे मेटां भरम, भरमीआं भरम गवाईआ। झगड़ा मेटां माटी चर्म, चम्म दृष्टी दयां बदलाईआ। सति सच दस्सां धर्म, धर्म आत्मा इक समझाईआ। निहकरमी दा वेखां करम, जो निहकरमण लए तराईआ। बख्शे साची सरन, सरनगति इक वखाईआ। जन भगतां आया फड़न, फड़ बाहों लए उठाईआ। साचा ढोला नाम पढ़न, आत्म परमात्म राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। साचा मेला कर मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराइंदा। सब दा मालक बण के आप, आपणे घर वसाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, जग जीवण दाता जोत जगाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट संताप, सहिसा अंदरों बाहर कढाइंदा। रूह बुत कर के पाक, पतित पुनीत वेख वखाइंदा। पूरा कर के आपणा वाक्, वाक़फकार हो के खेल खिलाइंदा। सृष्ट सबाई बणा के दासी दास, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जन भगतां दे के पूरा विश्वास, विशा इक्को इक दरसाइंदा। जिस दा नूर जोत प्रकाश, प्रकाश आपणा खेल खिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा इक सुहाइंदा। दर ठांडा होए सांतक सति, सच मिले वड्याईआ। पूरन विद्या दे के ब्रह्म मत, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। सति सन्तोख दे के धीरज जत, यथार्थ आपणा पर्दा दए उठाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, लोचन नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, नाम महिमा दस्स अकथ, भेव अभेदा आपणा दए खुल्हाईआ।

❋ २ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ प्रीतम सिँघ दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ❋

दे वड्याई प्रभू जन भगत, भगवन आपणी दया कमाईआ। गुरमुख प्रगट कर साचे सन्त, सति सतिवादी वेख वखाईआ। आत्म परमात्म मेला करना हरि कन्त, सच स्वामी अन्तरजामी आप सुहाईआ। गढ़ तोड़ीं हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाईआ। बोध अगाधा बण धुर दा पंडत, निरअक्खर निरवैर दे समझाईआ। चार वरन बणा धर्म दी संगत, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे दुआरे निउँ निउँ करां मिन्नत, सीस जगदीश झुकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले हर घट अन्तर बख़्श आपणी हिम्मत, हौसला दे वधाईआ। चार कुण्ट दह दिशा तेरी दिसे सिम्मत, नव नौ चार वज्जे वधाईआ। मनुआ मन करे ना इल्लत, कूड़ी क्रिया दे गवाईआ। मानस रहे कोई ना निन्दक, गढ़ हँकारी देणा तुड़ाईआ। जगत विकारा मेट दे चिन्नत, चिन्ता चिखा ना कोई तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान वेख वखाईआ। जन भगतां देदे साची सिख्या, धुर दी कर पढ़ाईआ। दीन दुनी समझ मिथ्या, थिर रहिण कोई ना पाईआ। तन वजूद जाए ना भिटिआ, जिस अन्तर वस्से हरि रघुराईआ। झगड़ा मिटा दे काया बुतिआ, ऊचो ऊँच तेरी सरनाईआ। आत्म परमात्म बण मितिआ, मीत मुरारे वेख वखाईआ। घर वखा अगम्म अनडिठया, जिस घर बैठा सोभा पाईआ। लेखा सब दा कर दे चिट्टया, दुरमति मैल धुआईआ। जो सन्त सुहेला तेरे चरण कँवल भिटिआ, क़ीमत करता दए चुकाईआ। रसना रस रहे ना फिक्या, अमृत जाम देणा प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग देणा रंगाईआ। जन भगतां देदे शब्द ज्ञान, विद्या अवर ना कोए पढ़ाईआ। निरंतर अन्तर दे ध्यान, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। अमृत रस करा इश्नान, निझर झिरना आप झिराईआ। शब्द अनाद सुणा धुनकान, अनहद नादी नाद वजाईआ। घर विच घर वखा मकान, बिन तेल बाती दीपक जोत कर रुशनाईआ। पुरख अकाले मेहरवान, महबूब तेरी ओट तकाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा वेस वटाईआ। तेरी महिमा करदे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गुर अवतार पैगम्बर तेरा ढोला गाईआ। सति धर्म दा तेरा इक विधान, जिस दी तरमीम करे ना कोए विच लोकाईआ। झगड़ा वेख ज़िमीं असमान, बेपहचान फेरा पाईआ। जीव जंत सर्ब कुरलाण, नेत्र रोवण मारन धाईंआ। साचा दिसे ना कोई अमाम, अमल हक़ ना कोई कमाईआ। मन ममता कीते गुलाम, गुरबत घर घर डेरा लाईआ। तेरा कलमा भुल्लिआ कलाम, कायनात नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं विगड़ गया नज़ाम, भय भउ ना कोए वखाईआ। तेरा नाम होया बदनाम, बदी विच बदला रहे चुकाईआ। किरपा कर श्री भगवान, मेहरवान वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी

अंदर आप पहचान, कर्म कुकर्म दा लेखा फोल फुलाईआ। सति धर्म दी दिसे ना कोई दुकान, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ काअबे देण दुहाईआ। तूं हर घट जाणी जाण, जानणहार तेरी सरनाईआ। जन भगतां दे दे नाम दान, दाता हो के आप वरताईआ। चरण प्रीती बख्श ध्यान, पद निरबान इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी वड्याईआ। जन भगतां दे दे आपणा जोग, जुगती धुर दी आप दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म कर संजोग, सज्जण मेला लैणा मिलाईआ। आत्म सेजा कर भोग, भसमड़ आपणा खेल वखाईआ। सब दा हिरदा लैणा सोध, सुदी वदी ना वंड वंडाईआ। हउमे हंगता कढ्ढणा रोग, हँ ब्रह्म देणा जणाईआ। साचे नाम दा दे के चोग, चुगली निन्दिआ तों लैणा बचाईआ। भाग लगा के काया कोट, काम क्रोध लोभ मोह हँकार कूड़ कुटम्ब देणा छुडाईआ। साचे शब्द दी ला के चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। भगत भगवान तेरी गोत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मुका दे चौदां लोक, चौदां तबक चार कुण्ट दुहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के इक सलोक, सोहला धुर दा देणा पढ़ाईआ। चरणां हेठ रुलादे भगतां दे मुकती मोख, मुफ्त आपणी दया कमाईआ। आवण जावण झगड़ा रहे ना सोच, चिन्ता अंदरों देणी मुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा दर्शन करन रोज़, रोज़ा निमाज़ बांग दा खैड़ा देणा छुडाईआ। मुहब्बत विच कर अगम्मी चोज, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां देदे मौज, मजलस आपणे नाल बणाईआ। जन भगतां दे दे नाम अगम्मा रस, रस्ता अंदरों दे वखाईआ। मनुआ मन कर के वस, वसल दस्स यार खुदाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, नर नरायण दे चमकाईआ। शब्द अगम्मी मार के सट्ट, सोई सुरती लै उठाईआ। नाम भण्डारा वखा के हट्ट, वस्त अमोलक झोली पाईआ। झगड़ा मुका के तीर्थ तट, आत्म सरोवर देणा नुहाईआ। जन भगतां अन्तर मैल कट, बाहरों करन हक़ सफ़ाईआ। तेरा नाम पुरख समरथ, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं सब कुछ तेरे हथ्थ, सिर सके ना कोए उठाईआ। चार कुण्ट दह दिशा नौजवान मर्द मर्दान नठ्ठ, ज़िमीं असमानां वेख वखाईआ। तेरा खेल अनोखा लख चुरासी घट, घट भीतर पर्दा दे उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सृष्ट सबाई गावे जस, सिफ्तां विच तेरी सिफ्त सालाहीआ। साचा मार्ग सच स्वामी अन्तरजामी एक एकँकार एकँकारे एका दस्स, दह दिशा लेखा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं दे धीरज यति, सति सन्तोख सति सतिवाद आप प्रगटाईआ।

❊ ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ हरदीप सिँघ दे घर पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ❊

सम्मत कहे प्रभ सन्त कोल रही ना कुंजी, क़ुफ़ल सके ना कोए खुल्हाईआ। जगत माया दुआर बण गए महसूल खाना चुंगी, चुगली निन्दिआ विच वड्याईआ। जूठ झूठ चखदे नाल चुंझी, चार कुण्ट भज्जण वाहो दाहीआ। सच नाम दी रहे कोए ना पूंजी, पंचम पंच ना कोई शनवाईआ। कँवल नाभ ना होई ऊंधी, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। मन कल्पणा सब दी कूंदी, कूक कूक सुणाईआ। समझ आई ना शब्द सतिगुरु दी, गुरदेव स्वामी सीस ना कोई झुकाईआ। धार जाण ना सके शुरु दी, शरअ विच पई लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। सम्मत कहे साचा रिहा कोई ना रस, रस्ता भुल्ली जगत लोकाईआ। जगत विद्या विच रहे वस, वास्ता अक्खरां नाल बणाईआ। सिफ्तां विच रहे फस, सालाह सिफ्त ना कोई समझाईआ। नेत्र लोचण ना खुल्ही अक्ख, आख़र मंज़ल चढ़न कोई ना पाईआ। मानस जन्म कौडी होया कक्ख, क़ीमत अग्गे ना कोई टिकाईआ। महबूब मिले किसे ना हक़, हक़ीक़त लाशरीक ना कोए पाईआ। मैं फिर के वेख्या नठ्ठ, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। नेत्र रोवण अठ्ठ सठ्ठ, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ रहे कुरलाईआ। सब दा खेड़ा हुंदा दिसे भठ्ठ, भठियाले अगनी देणी बुझाईआ। किरपा कर महबूब मेहरवान झट्ट, झटके हलाली वाल्यां दे मुकाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी धार छत, छत्रधारी हो सहाईआ। दुनी दीन दी सांझी कर मत, मनमति कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ। तूं साहिब स्वामी कमलापति, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। तेरे चरण कँवलां अग्गे ढठ्ठ, ढहि ढहि सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाम दा इक्को होवे हट्ट, हटवाणा दूजा नज़र कोए ना आईआ।

❊ ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ कुंदन सिँघ दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ❊

सम्मत कहे साचे नाम दी रहे ना कोई लिआक़त, लाइक़ नज़र कोए ना आईआ। धर्म दवारिआं फिरे सिआसत, स्याह काला आपणा रंग रंगाईआ। तेरे नाम दी खुस्सी सर्ब विरासत, विषयां विच दुनी हल्काईआ। माया कारण होए इबादत, हिरदे नाम ना कोए वसाईआ। साचे हुजरे करे ना कोई ज़िआरत, नूर ज़हूर ना कोए चमकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी लैंदे आढ़त, धड़त वट्टा माया ममता नाल मिलाईआ। सिफ्तां विच वेख तेरी इबारत, पढ़ पढ़ रसना जेहवा खुशी मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सब नूं देवे लानत, लहिंदा चढ़दा दक्खण पहाड़ खोज खुजाईआ।

सदी चौधवीं दिसे क़िआमत, क़ाइम मुकाम नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर मेहरवान मुहब्बत विच कर सख़ावत, सुख़न गुर अवतार पैगम्बरां पूर कराईआ। सति धर्म बणा बणावट, बंधन दीन मज़हब दे तुड़ाईआ। नाम निधाना इक्को दे निआमत, नर नरायण तेरी सरनाईआ। बोदी टिक्का जञ्ञू सुनत वेख हजामत, हाज़र हो के खोज खुजाईआ। शब्दी धार जगत ममानत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी सारे वेखण आमद, खुशामद विच आपणा रंग रंगाईआ।

✻ ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ सरदारा सिँघ दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ✻

सम्मत कहे गुरमुख कदे ना मरदा, गुरमुख गुर गुर दया कमाईआ। साची मंज़ल अगम्मी चढ़दा, पैंडा पिछला मात चुकाईआ। सच दुआरे इक्को वड़दा, जिथ्थे मिले माण वड्याईआ। पुरख अकाल दर्शन करदा, दीन दयाल होए सहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़दा, वजदी रहे वधाईआ। झगड़ा मुका के जगत दर दा, घर साचा इक सुहाईआ। जिथ्थे दीपक नूर नुराना जगदा, जोती जोत डगमगाईआ। लेखा मुक्या सड़ना अगनी अग्ग दा, तन वजूद ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देवे माण वड्याईआ। गुरमुख कहे मेरा पूरा होया जरम, जन्म मिली वड्याईआ। पिछला मिटिआ भरम, भरम दिता गवाईआ। आया साची सरन, साहिब दिती सरनाईआ। लेखे लग्गा मरन, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। झूठा नाता काया माटी चर्म, चम्मदृष्टी विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गुरमुख कहे वड्डा जिगरा मेरे गुर दा, गुरदेव मिली वड्याईआ। राह तक्कया देवत सुर दा, मुन जन बैठे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेख्या तुरदा, भज्जे वाहो दाहीआ। नज़ारा तक्कया अन्ध घोर दा, घोरी बैठे सीस निवाईआ। झगड़ा मुकाया ठग चोर दा, याराने कूड़े दिते तजाईआ। नाता छड्डुया जोरू ज़र जोर दा, ज़ोरावर मिल के खुशी बणाईआ। खेल वेख्या अगम्म होर होर दा, होका दे के दयां सुणाईआ। जिन्हां नूं साहिब सतिगुर मातलोक विच्चों तोरदा, तुरत आपणे नाल मिलाईआ। प्रभ मालक आत्मा दी डोर दा, टुट्टयां गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां पिच्छे जुग चौकड़ी निरधार धार सदा रहया दौड़दा, मर्द मर्दाना भज्जे वाहो दाहीआ।

३६१
२१

✻ ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ सरमुख सिँघ दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ✻

सम्मत कहे मैं चौथे जुग पिच्छों आया मात चहारम, चविस्ता वेख वखाईआ। हुक्म संदेसा धुर दा लै के आया सालम, शाह पातशाह दिता दृढ़ाईआ। देवां फ़रमान सृष्ट सबाई आलम, उल्मा उलम मज़मून इक जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दे वेख के आया कालम, इनडैक्सां फोल फुलाईआ। मानव धार वेख के आया ज़ालम, ज़ुलम सितम नाल दुहाईआ। पीआ प्रीतम दिसे किसे ना बालम, बलीदान ना कोए कराईआ। चार जुग दा लहिणा देणा वेख्या सालम, सही सलामत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देणा इक सुहाईआ। सम्मत कहे मैं चौथा आया चौंह जुगी, जुग जुग वेख वखाईआ। पुरख अकाल धार मर किसे ना बुज्झी, बुझा दीपक ना कोए जगाईआ। जगत वड्याई विच बुद्धि, बुद्धी बुध्धहीण दुनी दिती बणाईआ। माया वहिण विच डुब्बी, डुबकणी पार ना कोए कराईआ। कूड़ कुड़िआर चिक्कड़ गार खुभ्भी, खूबसूरत रंग ना कोए रंगाईआ। शाह सुल्तान रोंदे वेखे भुब्बी, भबक शेर ना कोए सुणाईआ। आत्मा परमात्मा होई जुदी, साचा मेल ना कोई मिलाईआ। सति असति दी खेल वेख के दूजी, दोहरा डंका दिता वजाईआ। काल कल्पणा हर घट अंदर कुद्दी, भज्जी वाहो दाहीआ। साची रमज़ किसे ना सुझी, सूरज चन्द शहादत देण गवाहीआ। अन्तिम औध दिसे मुक्की, मुकम्मल करे धुरदरगाहीआ। भाग लग्गे किसे ना कुक्खी, कलयुग कूड़ होए कुड़माईआ। दीन दुनी होई दुखी, दर्दी दर्द ना कोए वंडाईआ। बिना भगतां तों आत्म दा दिसे कोई ना सुखी, सुख सागर विच समाईआ। सम्मत कहे मैं कूक पुकारां उच्ची, ऊँच अगम्म अथाह दयां सुणाईआ। मन वासना हर घट अंदरों कढु दे लुच्ची, लोचण आपणा दे खुल्हाईआ। अन्त अखीर कलयुग औध पुज्जी, पूजा पाठ दा लेखा दे बदलाईआ। तेरी नाम धारना होवे उग्घी, उगण आथण वज्जे वधाईआ। भगतां रसना रहे ना गुंगी, गोबिन्द मेला लैणा मिलाईआ। तेरे नाम दा ख़ाना रहे कोई ना चुंगी, हिस्सा वंड ना कोई वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पार किनारा कर दे विच्चों लहर डूँघी, कहर विच शहर शौहर आपणा दे वखाईआ।

✻ ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ करम सिँघ दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ✻

चौथा सम्मत कहे मैं वेखे कपड़े गेरू, गिरवर गिरधार नज़र कोए ना आईआ। मन वासना जगत बणे पंखेरू, चार कुण्ट दह दिशा भज्जण वाहो दाहीआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए बेड़ू, मलाह बेपरवाह संग ना कोए निभाईआ। काया

भाग ना लग्गा खेड़ू, खिड़की बन्द ना कोए खुलाईआ । बिन साहिब तेरे कोए करे ना मेहरू, निगाह नज़र ना कोए बदलाईआ। कलयुग सतिजुग जूठ झूठ धर्म करे भेड़ू, टक्कर निरगुण सरगुण आप वखाईआ। सच सुआमी दिसे ना किसे नेड़ू, नर नरायण दर्शन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका साचा मेला लैणा मिलाईआ। सम्मत कहे मैं बस्तर भूशन वेखे बसन्ती, बसन्त रुत्त ना कोए महकाईआ। तेरे नाम दा मिले ना कोए महंती, मस्तक सारे रहे रगड़ाईआ । खुशीआं विच मनाउँदे जंनती, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ । होया विछोड़ा धुर दे कन्ती, कन्तूहल तेरा दरस कोए ना पाईआ। जगत भिखारन वासना होई मँगती, भुख्यां भुक्ख ना कोए गवाईआ। मंज़ल मिली ना किसे अनन्द दी, अनन्द अनन्द ना कोए महकाईआ। डोर कच्ची दिसे तन्द दी, बंधन हक़ ना कोए बंधाईआ। वासना कूड़ी भरी गंद दी, अमृत जाम ना कोए प्याईआ। कलयुग घड़ी रही लँघदी, मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी रमज़ साचे छन्द दी, छिन्दे गुरमुख आप बणाईआ।

३६२
२१

❊ ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ गुरबचन सिँघ दे घर पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ❊

सम्मत कहे सुण मेरे साहिब चावीज़ा, चावगुन चार चार तेरी सरनाईआ। तेरा खेल समझे ना कोए ज़ावीज़ा, हज़ूर हाज़र नज़र किसे ना आईआ। गोबिन्द धार बदल गवीज़ा, गर्ज़ सब दी फोल फुलाईआ। बन्दगी बदल नवीज़ा, नाउँ निरवैर इक दृढ़ाईआ। दर किसे ना दिसे तमीज़ा, तमन्ना तदर जगत लोकाईआ। मज़हब रिहा ना कोए अज़ीज़ा, ज़ामन पल्लू गए छुडाईआ। अक्खरां वाली गई हदीसा, हज़रत नहिविज हवज़ ना कोए कराईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडा वेख वखाईआ । सम्मत कहे मेरे साहिब सतिगुर लवज़ीने, लव मुहब्बत रहिण कोए ना पाईआ। भरमे भुल्ले जगत लवज़ीने, जेहवा रस ना कोए वखाईआ। तसबी माला होई नज़मीने, ज़मीमे जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ होए लगज़ीने, नियम नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। सम्मत कहे मेरे परवरदिगार अलज़ज़ू, वाहिद कलमा समझ कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर फ़रमाने नज़ीज़े ममनू, मज़ा मज़हब ना कोए चखाईआ। पवित्र दिसे ना कोई परवरदिगार पाकीज़े रूह, राहज़न बणी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख वखाईआ।

सम्मत कहे प्रभ कलयुग काला कालज़वित, कला आपणी रिहा वरताईआ। मुरीद मुर्शद हित रिहा नहीं नवज़ित, तबीब यतीम दिसे लोकाईआ। कलमा गाए ना कोए हक़ मलज़ित, मलकीअत असलीअत नज़र किसे ना आईआ। तेरा खेल महानी असमानी रुहानी नवज़लइत, इत्यादिक तेरी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल कलमे ज़ज़ूखे जविंने ज़ज़जित, सीना जीना सब दा वेख वखाईआ।

✳ ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ सुखदेव राज दे घर पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ✳

जीव इस तरीके ढंग नाल विरचे बच्चे, बचपन सतिगुर झोली पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साहिब स्वामी मिले सच्चे, सच साजण इक्को नज़री आईआ। जो भाग लगावे काया माटी कच्चे, कंचन गढ़ दए सुहाईआ। मेहरवान महबूब हो के लूं लूं अंदर रचे, रचना आपणी दए वखाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलावे नाता जोड़े सके, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा रंग रंगाईआ। निज नेत्र लोचण दर्शन देवे अक्खे, आख़र मंज़ल चढ़ के पर्दा दए उठाईआ। धर्म दुआरे दस्से पते, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। नाम निधाना दे के आपणी अमोलक सते, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। जिस वेले काया माटी बुत ढठ्ठे, तत्तां होए जुदाईआ। ओस वेले निरगुण धार हो के गुरमुख आपणी गोदी चुक्के, चाकर हो के साची सेव कमाईआ। दो जहान रह जाण हक्के बक्के, गुर अवतार पैगम्बर वेखण अक्ख उठाईआ। सचखण्ड दुआरे चरण कँवल आपणे घत्ते, जिथ्थे घाउ अवर ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। जीव, बचण दा सुण लओ ढंग, तरीका इक जणाईआ। सच दुआरे मँगो मँग, मिन्नत अगे करो धुरदरगाहीआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर नूरी चमक्या चन्द, जोती जोत रुशनाईआ। सो दीन दयाल सदा बख्शंद, मेहरवान महबूब आपणी मुहब्बत विच समाईआ। आत्म परमात्म बणाए सच्चा संग, सगला संग आप कराईआ। पर्दा लाह के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म मेला लए मिलाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी चम्म, चम्मदृष्टी दए बदलाईआ। सतिगुर दे घर पओ जम्म, जन्म जन्म दा गेड़ा दए मुकाईआ। नाता तोड़ के तृष्ना तम, रजो सतो तमो दी करे सफ़ाईआ। लेखे लावे पवण स्वास दम, दामनगीर हो के आपणा पल्लू नाम फड़ाईआ। बिन रसना जेहवा राग सुणाए कन्न, अनहद नादी नाद वजाईआ। सन्त सुहेले बणो जन, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ पैंडा दए मुकाईआ। भाग लगाए काया माटी तन, वजूद मिले चाँईं चाँईआ। जीवण जीवण जुगत

बेड़ा दए बन्न्, बंधन अगला पिछला दए कटाईआ। गुरमुख गुर सतिगुर सचखण्ड दुआर पुचाए आपणा चन्न, सुर्या चन्न जिस नूं सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर कहिण धन्न धन्न, प्रभू धन्न तेरी बेपरवाहीआ। जो प्रेम प्रीती अंदर एका बचन जाए मन्न, मनसा मन दी पूर कराईआ। मुड़ के मात गर्भ फिर कदे ना पए जम्म, जननी गोद ना कोए रखाईआ। हरश सोग मिटा के ग़म, गहर गम्भीर आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची दए सुहाईआ । जीव सुण लै किस बिध होवे छुटकारा, छुट्टी लख चुरासी विच्चों पाईआ। साचा मन्दिर मिले धुरदरबारा, दरगाह साची सद सुहाईआ। जिथ्थे दीआ दीपक इक उज्यारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सजदे करन गुरु अवतारा, पैगम्बर सीस जगदीश झुकाईआ। तन वजूद ना कोए सहारा, माटी ख़ाक ना सोभा पाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दरबारी वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम बण सहारा, साहिब सुल्तान होए सहाईआ। जिन्हां नूं दस्सया एका नाम जैकारा, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करी पढ़ाईआ। सो उतरे पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। एह खेल गुप्त नहीं प्रगट कीता ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर वडी वड्याईआ। वेखो ओस साहिब दा किनारा, जिस दा घाट पत्तण जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां प्रभ बणे आप सहारा, सहायक हो के आपणी दया कमाईआ। जगत बचन, बिन सतिगुर चरण होर नहीं कोई चारा, चार वेद देण गवाहीआ। शब्दी धार निरगुण इक इशारा, इशारीआ आपणा ना किसे समझाईआ। जो पुरख अकाल दीन दयाल दे ढहि प्या दुआरा, फड़ बाहों पार लँघाईआ। कदे ना करे उधारा, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चौवीआं अवतार जिस दी गुर अवतार पैगम्बर गावण वारा, वारस हो के लावारसां आपणे घर वसाईआ।

❊ ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ सोहण सिँघ दे घर तरनतारन ज़िला अमृतसर ❊

चौथा सम्मत कहे प्रभ दा साचा इक्को सोहला, सो पुरख निरँजण आप दृढ़ाईआ। निरगुण निरवैर दस्से आपणा ढोला, ढोआ देवे बेपरवाहीआ। प्रेम प्रीती अंदर बणा के गोला, गोलक विच वस्त अमोलक इक टिकाईआ। मन वासना मेटे रौला, कल्पना कूड़ ना कोए सताईआ। निरगुण धार नज़री आए मौला, मलकुलमौत ना दए सज़ाईआ। विछोड़े विच ना पाउणा पए रौला, दोहरा धुर दा इक दृढ़ाईआ। गुरमुखां भार करे हौला, गठ्ठड़ी सीस ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा वेख वखाईआ। सम्मत करे मेरे अन्तर आवे हैरानी, हर घट हिरदा वेख वखाईआ। पर्दा लाहवां जूह बेगानी, नूरी जोत कर रुशनाईआ। खेल वेखां सृष्ट असमानी, इस्म आज़म इक जणाईआ। कलमा सुणावां धुर कलामी, कायनात अगम्म पढ़ाईआ। जगत कूड़ मेटां बेईमानी, बेपरवाह हो के वेख वखाईआ। गुरमुखां लेखे लावां दर सच जुआनी, जगत जवानी खैड़ा दयां छुडाईआ। देणी पए ना कोए क़ुरबानी, करबल्यां दा पन्ध दयां मुकाईआ। धुर दा बण के दानी, दातार हो के झोली दयां भराईआ। लेखा मुका के चारे खाणी, खानगाहां दी करां सफ़ाईआ। मंज़ल दस्स के इक रुहानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सम्मत कहे मैं कोई वेख्या नहीं जगत सौदागर, सौदा हट्ट ना कोए रखाईआ। भाग लग्गा काया गागर, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। जो देवणहारा साचा आदर, आदर्श आपणा दए वखाईआ। करनी दा करता क़ुदरत दा क़ादर, क़दीम अज़ीम इक दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं बण के आवे साजण, सज्जण साहिब धुरदरगाहीआ। गुरमुख सन्त सहेले जागण, आलस निंदरा परे कराईआ। सो साहिब स्वामी मारे आवाज़ण, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। सति सच दा करे काजण, नाता इक्को नाल जुड़ाईआ। परम पुरख कोई बणीआ नहीं महाजन, बेपरवाह बेपरवाही आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाहो भूप वड राज राजन, झगड़ा मुकावे जगत समाजन, समें दा साथ स्वामी रघुनाथ आपणा पूर कराईआ।

❊ ४ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ मक्खण सिँघ दे गृह पिंड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ❊

सम्मत कहे मेरे चार जुग दे मालक, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी धुर दे ख़ालक, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दो जहानां बण सालस, परवरदिगार आपणी दया कमाईआ। नाम निधाना मर्द मर्दाना नौजवाना बण के दे ख़ालस, ख़सूसीअत विच असलीअत दे दृढ़ाईआ। माया ममता मोह विकार बुझा आतश, त्रैगुण अतीते ठांडे सीते आपणा रंग रंगाईआ। वरन बरन ज़ात पात दीन मज़हब राउ रंक रहे कोई ना साज़श, सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक पर्दा दे उठाईआ। तेरा नाम कलमा बन्दगी डंडावत इक्को होए हक़ीक़ी इबादत, चार कुण्ट दह दिशा ढोला सोहँ तेरा नाम वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप निरगुण धार बदल

दे आदत, अदल इन्साफ निरगुण निरवैर आप कमाईआ। मन कल्पणा कूड़ रहे ना कोए बग़ावत, शरअ शरीअत लेखा देणा चुकाईआ। तेरा नाउँ निरँकारा तूं सदा साहिब सही सलामत, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सम्मत कहे मेरे पुरख अबिनाशी, पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। नौ सौ चुरानवे नव नौ चार वेख मण्डल रासी, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच फेरा पाईआ। वस्त अमोलक नाम धार मिले कोई ना साची, साचे सज्जण तेरी रीत मन्दिर मसीत गए भुलाईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया सब दा देवे साथी, नव नौ कूड़ी क्रिया वज्जे वधाईआ। आदि निरँजण दर्द दुःख भंजन, गुर अवतार पैगम्बरां पूरी कर आखी, आख़र मंज़ल चढ़ के सच दुआरे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा सब दा वेख वखाईआ। सम्मत कहे प्रभ वेख विष्न ब्रह्मा शिव धार, शहिनशाह बिन नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। लहिणा देणा जाण तेई अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग परदा आप चुकाईआ। भरम भुलेखा रहे ना मूसा ईसा मुहम्मद चार यार, चार यारी नक़ाब नज़र कोए ना आईआ। उहला काया चोला वेख गुरु गुर धार, दह दिशा पर्दा आप उठाईआ। चार कुण्ट होई हाहाकार, हरि हरि तेरे नाम दुहाईआ। तेरी मंज़ल महबूब होई दुश्वार, हक़ हक़ीक़त चढ़न कोए ना पाईआ। आबेहयात अमृत रस सति मिले ना ठंडी ठार, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरी बेपरवाहीआ। हउँ बालक सेवक तेरा सेवादार, जुग जुग धुर दी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सम्मत कहे मेरे साहिब सतिगुर सुल्ताना, सति सच तेरी सरनाईआ। तेरा खेल वेख्या दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। तेरा नाउँ प्रगट होवे गुण निधाना, डंका चारों कूट महबूब कर शनवाईआ। संदेस नरेश हमेश तेरा सुणावां गाणा, गहर गम्भीर पर्दा आप चुकाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा हुक्म फ़रमान संदेस करन परवाना, परम पुरख तेरी बेपरवाहीआ। साचा कलमा शब्द अगम्मी दे कलामा, कायनात अमाम अमामा आप सुणाईआ। कल कल्की निहकलंक जोती नूर तेरा जामा, तन वजूद नज़र किसे ना आईआ। शब्द अगम्मी तीर तेरा निशाना, नौजवाना वेख खुशी मनाईआ। झगड़ा मुका ज़िमीं असमाना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो मेहरवाना, परवरदिगार सांझे यार तेरी ओट तकाईआ। तैनूं झुकदे ज़िमीं असमाना, चरण कँवल दे सरनाईआ। पैगम्बर तैथों मँगदे दाना, गुरु गुरदेव अमृत रस पीवण महाना, दर ठांडे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

धुर दा वर, सचखण्ड दुआर एकँकार कल आपणी आप प्रगटाईआ। सम्मत कहे मेरी नमों नमों निमस्कार, डंडावत बन्दना इक जणाईआ। किरपा कर धुर दे यार, याद तेरी रही सताईआ। सदी चौधवीं सृष्टी दृष्टी अंदर आई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। वध्या काम क्रोध लोभ मोह हँकार, तृष्ना कूड़ करे लड़ाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए दुष्वार, नौ दुआरे पन्ध ना कोए मुकाईआ। सुरती शब्द करे ना कोए प्यार, गोबिन्द मिले ना सच्चा माहीआ। घर ठाकर स्वामी जोती दीपक देवे कोई ना बाल, अन्ध अन्धेर ना कोए गुआईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद दाते तेरी वड वड्याईआ। सदी चौधवीं चार वरन अठारां बरन दीन दुनी त्रैगुण माया महा जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। नेत्र रोंदे शाह कंगाल, दीन दुनी दए दुहाईआ। फल रिहा ना किसे डाल, सिम्मल मानव रहे लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी घट हो वासी तेरी आसा ओट इक्को इक तकाईआ। सम्मत कहे मेरी मन्ज़ूर कर अर्ज़ी, अर्ज़ बेनन्ती दिती जणाईआ। जन भगतां आसा मनसा पूरी कर गर्ज़ी, ग़रीब निमाणे वेख वखाईआ। धुर दे नाम दी बदल तरज़ी, तरीका नाम दे जणाईआ। झगड़ा मुका दे शरअ छुरी करदी, यक्क हुक्म दे समझाईआ। चार वरनां वंड दर्दी, दीनां अनाथां गोद उठाईआ। तेरा अन्त की हरजी, हरजाने सारे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दीन दयाल दया कमाउँदा ए। पुरख अकाल शब्द अगम्म अलाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा नूं आप दृढ़ाउँदा ए। करोड़ तेतीसा सुर नर मुन जन भेव अभेद खुलाउँदा ए। गुर अवतार पैगम्बर निरगुण सरगुण धार आप पढ़ौंदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सोया आप उठाउँदा हे। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान, खाणी बाणी परदा आप लौहुन्दा ए। नाम निधान श्री भगवान, मेहरवान आप प्रगटाउँदा ए। धरनी धरत धवल धौल दे के दान, दयानिध ठाकर स्वामी आपणी खेल आप वखाउँदा ए। किरपाल दयाल किरपा निधान, एका डंका शब्द वजाओंदा ए। अमृत आत्म रस सब नूं करा पान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निझर झिरना इक झिराउँदा ए। तूं मेरा मैं तेरा दे के सच ज्ञान, बोध अगाधा शब्दी नाद आप सुणाउँदा ए। साचा मन्दिर वखा महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाउँदा ए। दीआ बाती कमलापाती जोत जगा महान, अन्ध अन्धेर कूड़ बाहर कढाउँदा ए। चरण प्रीती साची रीती बख्श के धुर दा दान, दाता दानी आपणी गोद उठाउँदा ए। भाग लगा के काया काअबे मन्दिर हक़ मकान, महबूब मुहब्बत विच आपणा मेल मिलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा, नर निरँकारा इक्को इक दृढ़ाउँदा ए। पुरख अकाल कहे सुण सम्मत मेरे मीत, मित्र प्यारे दयां बणाईआ। सतिजुग बदल देवां रीत, कूड़ी

क्रिया रहिण ना पाईआ । झगड़ा मेट के मन्दिर मसीत, काया काअबा दयां समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गीत, गहर गम्भीर मेला सहज सुभाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। घर वखा आपणा अनडीठ, घर घर मन्दिर अंदर करां रुशनाईआ। पारब्रह्म प्रेम दसाए आपणी प्रीत, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। शब्दी गुरु गुरु गुरदेव होए करां तसदीक़, शहादत गुर अवतार पैगम्बर दयां भुगताईआ। कलयुग वेला वक्त अन्त नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। खेले खेल हरि लाशरीक, शिरकत वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। साचा नाम दस्स हदीस, हज़ूर हज़रतां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा झोली पाईआ। पुरख अकाल कहे सुण सम्मत बाले नढ्ढे, बच्चयां दयां जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दिते सद्दे, हुक्मे नाल उठाईआ। हुक्म विच तबदीली दी केहड़ी वज्ह, वजाहत नाल दयो दृढ़ाईआ। क्यों ना तुहाडा दीपक जगे, दीन मज़हब होए रुशनाईआ। मन कल्पणा सारे लैंदे मज़े, आत्म रस ना कोए चखाईआ। भाग लग्गे ना काया हड्डे, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। सच दुआरे आउ भज्जे, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। साचे सम्मत गुर अवतार पैगम्बर आउणगे। चार जुग दी करनी हरि करते अग्गे टिकाउणगे। क्यों झगड़ा वरनी बरनी, बिन रसना बोल सुणाउणगे। क्यों लग्गण ना हरि दी चरणी, चारे वरन भेव खुल्हाउणगे। क्यों तुक अगम्मी पढ़नी, साचा राग अलाउणगे। किस बिध मंज़ल पौड़ी चढ़नी, सच दुआर सुहाउणगे। सब ने ढहिणा इक्को सरनी, सरनगति इक दरसाउणगे। पुरख अकाल आपणी खेल करनी, करनी दे करते अगे आपणी कार कमाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर साचा इक सुहाउणगे। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दर साचा सच सुहावांगे। चार जुग दा लेखा लेख लिखावांगे। सदी चौधवीं भरम भुलेखा, भरमां विच्चों बाहर कढावांगे। जो कर के आए लोकमात आदेसा, दिशा आपणी आप समझावांगे। क्यों मज़हब दीन चलाया पेशा, पेशीनगोई विच सुणावांगे। क्यों मूंड मुंडाई बोदी जञ्ञू लबां कटाईआं वेस वटाया धारी केसा, क़िस्म क़िस्म नाल प्रगटावांगे। की लहिणा देणा गोबिन्द दस दस्मेशा, दह दिशा आख सुणावांगे। पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे हमेशा, वास्ता ओस दे अग्गे पावांगे। जिस सतिजुग त्रेता द्वापर बदली रेखा, कलयुग अन्त अख़ीर ओसे हथ्थ फड़ावांगे। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण खेवट खेटा, दो जहान मलाह इक प्रगटावांगे। जिस दा शब्दी धार गोबिन्द सुत बेटा, पारब्रह्म पुरख अकाल इक्को इक मनावांगे। पिछला चार जुग दा कर के चेता, चेतन सब नूं आप करावांगे। सब दा बणना इक्को नेता, नर नरायण सर्ब दृढ़ावांगे। जिस ने सतिजुग खोल्हणा भेता, भाण्डा

भरम सर्ब भन्नावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद साची खेल दरसावांगे। सम्मत कहे मेरे अन्तर चढ़दी लाली, लालन लाल दए वड्याईआ। जिन्हां ने पूरब घाल घाली, घर साचे सोभा पाईआ। लहिणा देणा चुकावे धुर दा माली, हरि करता वड वड्याईआ। दर तों जावे कोई ना ख़ाली, ख़ाली झोली दए भराईआ। गुर अवतार पैगम्बर बण सवाली, मँगण इक्को मँग मँगाईआ। तूं निरगुण शब्द जोत अकाली, अकल कल अख्वाईआ। लम्भयां हथ्थ ना आवें भाली, चारों कुण्ट दुहाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दी पूरी कर दलाली, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। साचा मेला कर मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। दो जहानां तेरा अगम्मा जाप, जगजीवण दाते देणा दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर साफ़, दुरमति मैल धुआईआ। घर घर अंदरों कढु पाप, पतित पुनीत दे बणाईआ। प्रगट हो साख्यात, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। लख चुरासी आत्म तेरी ज़ात, अज़ाती नज़र कोए ना आईआ। तूं सब दा पिता माई बाप, ख़ालक ख़लक तेरी वड्याईआ। रूह बुत कर दे पाक, पाकीज़ा तेरा नूर करे रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो भविख्तां विच गए आख, आख़र लहिणा दए चुकाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, निरगुण नूर चन्द कर रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सृष्टी दृष्टी अंदर दस्स दे जाप, रसना जेहवा ढोले सिफ्तां नाल सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरे दर तेरी वजदी रहे वधाईआ। सम्मत कहे तेरे नाम दा होवे वाधा, वाहिद इक दे जणाईआ। गरमुखां दा गोबिन्द पिता ते पुरख अकाल दादा, दाअवे नाल दृढ़ाईआ। भेव खोल्ह दे बोध अगाधा, ब्रह्म विद्या इक समझाईआ। त्रैगुण माया बुझा दे आगा, ततव तत ना कोए तपाईआ। सतिजुग हिस्सा दे दे भागा, भगवन आपणी दया कमाईआ। गुरमुखां अन्तर निर्मल जोत जगा चराग़ा, तेल बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। सदी चौधवीं सृष्ट सबाई बदल समाजा, समझ समझ विच समझाईआ। गुरमुख हँस रहे कोई ना कागा, कागों हँस बणाईआ। धुन आत्मक राग अनहद सुणा नादा, नादी आप वजाईआ। तेरे नाम दा होवे वाधा, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। प्रगट होवे तेरा गोबिन्द जिस नूं कहिंदे वाला बाज़ा, बाज़ी दीन दुनी वखाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करते तेरी शरनाईआ। तेरा खेल सदा उत्ते आकाशा, धरनी धरत धवल भाग लगाईआ। कूड़ी मेट रैण अन्धेरी राता, रुतड़ी आपणी आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल जुग चौकड़ी आदि जुगादा, नव नौ चार दा लेखा देणा मुकाईआ।

❊ ५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ करनैल सिँघ दे गृह पिंड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ❊

गुर अवतार पैगम्बर कहिण परम पुरख तेरा भरवासा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव निक्कीआं निक्कीआं तेरीआं शाख़ां, शनाख़त विच समझ ना कोए दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण असीं सुणाउँदे रहे तेरीआं भाशां, नाम कलमा शब्द ढोला रागां नादां विच सुणाईआ। परम पुरख परमात्म तेरा खोल्ह्या ना किसे ख़लासा, सति स्वामी अन्तरजामी परदा सक्कया ना कोए उठाईआ। तेरी किरपा नाल तेरे नाल जुड़दा रिहा नाता, मेहरवान महबूब मुहब्बत तेरे नाल रखाईआ। तन वजूद काया माटी पंज तत चलदा रिहा राथा, रथ रथवाही बेपरवाही शहिनशाही तेरी वज्जी वधाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी तेरी सुणाउँदे गए गाथा, गहर गम्भीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। दीनां मज़हबां विच वंडदे आए तेरा इलाका, मानव विच मानव हिस्सा आए पाईआ। तेरे हुक्मे अंदर कटदे आए फ़ाका, फक्कर तेरे हो के सेव कमाईआ। तूं साहिब स्वामी नौजवाना मर्द मर्दाना आदि जुगादी इक्को एकँकारा आका, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर दीन दुनी दा वेख वाका, वाक़फ़कार हो के खोज खुजाईआ। जन्म कर्म दा साफ़ रिहा किसे ना खाता, सति धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां मानस जन्म प्या घाटा, घाटी मंज़ल पौड़ी ना कोए चढ़ाईआ। अमृत रस पिच्छे हथ्थ ना आवे गोबिन्द बाटा, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। साची मंज़ल पूरी करे कोई ना वाटा, अद्धवाटे बैठी जगत लोकाईआ। काया चीथड़ सब दा दिसे पाटा, नाम निधान तेरा ओढ़ुन सीस ना कोए टिकाईआ। कलयुग अन्त वेख अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। माण वड्याई रही ना पिता माता, पूत सपूता नज़र कोए ना आईआ। साची सिख्या सुणाए कोई ना साका, धुर फ़रमान ना कोए दृढ़ाईआ । गृह मन्दिर अंदर करे कोई ना वासा, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ । साध सन्त फिरे उदासा, उदासी वैरागी तिआगी बैरागी देण दुहाईआ। दुरमति मैल तन वजूद पकड़ किसे ना काटा, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। बिन तेरे दूजा रिहा कोई ना दाता, देवणहार तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल साडा मन्न लै आखा, अक्खीं रो रो नीर वहाईआ। हो सहाई दीनां अनाथा, दीन दयाल दया कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम झगड़ा प्या ज़ात पाता, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। सच दुआर दा रिहा कोई ना हाटा, गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ कूक कूक सुणाईआ। सर सरोवर नज़र ना आए तीर्थ अठ्ठ साठा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कूड़ क्रिया बदल दे पासा, पेशीनगोई सब दी पूर कराईआ। तेरा खेल

३७०
२१

सदा बहु भांता, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। वेखणहार इक इकांता, सचखण्ड साचे लए अंगड़ाईआ। तेरे नाम नूं चार कुण्ट वजदा डाका, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। हउँ सेवक तेरे दासी दासा, दास्तान सारे रहे सुणाईआ। साचे मण्डल पवे कोई ना रासा, गोपी काहन रहे कुरलाईआ। नेत्र रोवे राम विच बनवासा, सीता सति ना कोए मिलाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला जोती जाता, आत्म परमात्म कर रुशनाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार जोड़ आपणा नाता, नातवां गुर अवतार पैगम्बरां लेखा दे मुकाईआ। सच धर्म दी चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दस्स जा जाचा, याचक गुरमुख गुरसिख लै प्रगटाईआ। झगड़ा मुका दे काया माटी पंज तत काचा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे ना कोए लड़ाईआ। मन कल्पणा अंदर संसार चार कुण्ट नाचा, दृष्ट इष्ट ना कोए खुल्हाईआ। त्रैगुण माया घर घर चढ़या तापा, कलयुग जीवां रिहा तपाईआ। रूह बुत किसे ना होया पाका, आबेहयात अमृत रस ना कोए चखाईआ। किसे कम्म ना आया सिमरन जोग पूजा पाठा, अभ्यास विच तेरा नूर नज़र कोए ना पाईआ। फिरी दरोही तीर्थ ताटा, टक्यां वाले गुरु रहे कुरलाईआ। धरनी धरत धौल धवल नेत्र रोवे खुल्हा झाटा, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। प्यार रिहा ना भैण भ्राता, साक सज्जण सैण मित्र मीत ना कोए वड्याईआ। माया ममता मोह विकार हँकार चार कुण्ट जगत चढ़ी बराता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा खेल समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा भविख्त लिख के आए क़लम दुआता, शाही शुकर वाली वड्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे पुरख अबिनाशा, निहकलंक कल कल्की वेस वटाईआ। जन्म जन्म दा कर्म करम दा धर्म धर्म दा पूरा कर दे घाटा, नाम अमोलक काया गोलक आप वरताईआ। तेरा प्रेम हर घट अंदर मारे ठाठा, लहर लहर नाल टकराईआ। भाग लगा दे तत आठा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध्ध सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी तेरी समझी किसे ना करामाता, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। जगत विकार हँकार विभचार कुकर्म मानव दे अंदरों कढ्ढ बिधाता, बुद्धी विच बदी ना कोए लोकाईआ। अन्त अख़ीर सब दी एहो ख्वाहिशा, ख़ालस गुरमुख लै प्रगटाईआ। जिन्हां दे अन्तर तेरा वासा, निरंतर उन्हां लै जगाईआ। अग्गे किसे नूं कटणा पए ना कोई जगराता, जगजीवण दाते देणा दरसाईआ। बन्द किवाड़ी अंदरों खोल्ह ताका, बजर कपाटी हाटी परदा दे उठाईआ। शब्द नाम सुणा अगम्मा अनाहता, धुन आत्मक राग अल्हाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाशा, अन्ध अन्धेरा दे मिटाईआ। सच दुआर वखा खेल तमाशा, दरगाहि साची वज्जे वधाईआ। जिथ्थे तूं तेरा मैं तेरा निरगुण निरगुण जुड़े नाता, सरगुण तत खेड़ा देणा छुडाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल दीन दयाल समरथ स्वामी अन्तरजामी असीं सब नूं दे के आए

झांसा, सिफ्तां विच तेरी सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचा इक सुहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल इक्को दे दे सबक, सिख्या दीन दुनी दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना चौदां तबक, चौदां लोक वज्जे वधाईआ। मेल मिला दे दीन दुनी बण मर्दाना मर्द, मदद अवर ना मँग मँगाईआ। शरअ छुरी हलाल करे कोई ना करद, क़तलगाह दा लेखा दे मुकाईआ। ग़रीब निमाणयां वंड दरद, दीनां दुखीआं दर्द वंडाईआ। अन्त अख़ीर सब दी मन्न अर्ज़, नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। विछोड़े वाली मेट दे मर्ज़, मरीज़ अज़ीज़ आपणे लै बणाईआ। तेरा खेल वेखीए असचरज, अचरज लीला तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं सब नूं तेरी गर्ज़, बिन अक्खां अक्ख रहे उठाईआ। सब दी पुठ्ठी होई नरद, पाशा सार समझ कोए ना पाईआ। लहिणा देणा सब दा पूरा कर दे क़र्ज़, मक़रूज हो के वेख वखाईआ। तेरे कोल नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दी पिछली फ़रद, फ़ैसला हक़ देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआरा देणा सुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण बणया रहीं ना वली छली, अछल छलधारी आपणी खेल खिलाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना बली, बलधारी इक अख्वाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लख चुरासी जीव जंत वेख गली गली, गृह मन्दिर अंदर परदा आप उठाईआ। तेरी नूर धार जोत आत्म परमात्म हो के सब में रली, रला रहिण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं बीत चली, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। पूरा कौल इक़रार जो कीता मुहम्मद नाल अली, आलम फ़ाज़ल समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा सब दा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाल चारों कुण्ट वेख हैरानी, हैरत सब दे अंदर आईआ। साबत रही ना किसे जवानी, जोबन हक़ ना कोए हंढाईआ । कलयुग कूड़ी क्रिया चढ़ी तुग्यानी, चारों कुण्ट रही रुड़्हाईआ। सति धर्म दी नज़र ना आई निशानी, नज़रहीण होई लोकाईआ। चार जुग दा साडा लेख भुल्लया जो लिख्या नाल कानी, ग्रन्थ शास्त्र देण गवाहीआ। हर घट अंदर आई बेईमानी, बेवा रूप दिसी लोकाईआ। मंज़ल पाए ना कोई पद निरबाणी, निरवैर तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। झगड़ा प्या चारे खाणी, चारे बाणी परदा ना कोए उठाईआ। सुरत शब्द मिले कोई ना हाणी, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहां वाली सारे पढ़दे बाणी, अन्तर आत्म परमात्म तेरा दरस कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण हउँ विटों तेरे क़ुरबानी, चरण कँवल आपणा आप भेंट कराईआ। कलयुग अन्त सब दी मेट परेशानी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों अगला लेखा दे जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी विद्या होई पुराणी, पुराण अठारां पार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह शहिनशाह वाली दो जहानी, जहालत अदालत विच्चों दीन दुनी देणी कढ्ढाईआ।

✻ ५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ दारा सिँघ दे गृह औरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✻

गुर अवतार पैगम्बर कहिण जुग जुग तेरे मुजारे, मुज़ाहरा तेरा नाम लगाईआ। देंदे रहे इशारे, तेरी शरअ जगत समझाईआ। बख्शदे रहे सहारे, तेरी ओट धुरदरगाहीआ। लगाउँदे रहे अखाड़े, हुक्म विच लड़ाईआ । अन्तिम पहुंचे ओस किनारे, पिछला पन्ध मुकाईआ। जिथ्थे मेला कल्की अवतारे, कल कलेश दए गुआईआ। शब्दी सगन चढ़ खारे, ख़ालस आपणी कार कमाईआ। दुनियां भरी चिक्कड़ गारे, ग़रीब निवाज़ लैणा धुआईआ। भगत सुहेले कढ्ढुण हाढ़े, हउक्यां विच जणाईआ। कर प्रकाश उन्हां दी नाड़े, नूर जोत चमकाईआ। भाग लगा काया उजाड़े, सच भूमी दे सुहाईआ। तेरा मेल होवे दिन दिहाढ़े, राती लभ्भण कोए ना जाईआ। धुर दे रंग चढ़ा गाढ़े, आपणी दया कमाईआ। लेखा याद रख जिस वेले गोबिन्द लुक्या विच झाड़े, माछूवाड़े आपणा आप छुपाईआ। अक्खीआं ला के ताड़े, ताड़ी तेरे विच टिकाईआ। तेरा प्रेम तन मन ठारे, सूलां सेज ना कोए तपाईआ। हिम्मत हौसला मूल ना हारे, हिरदे तेरा नाम ध्याईआ। मुहब्बत विच ललकारे, कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर खड़े कतारे, लाइन इक्को रहे जणाईआ। तेरा नूर चमकां मारे, जोत जोत रुशनाईआ । तेरा नाम वजाए सतारे, सति सति वड्याईआ। गोबिन्द आपणा बल उभारे, खण्डा खड़ग चमकाईआ । एह वेखण वाले नज़ारे, पुरख अकाल आप वखाईआ। मेल होया सच दरबारे, दरगाह साची सोभा पाईआ। थल्ले रोवण चन्द सतारे, सुर्या नीर वहाईआ। उपर खेल अगम्म अपारे, अलख अगोचर आप जणाईआ। निगाह धरनी धरत धवल मारे, निर्धन हो के वेख वखाईआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट दिसे धाड़े, धाड़वी मन नज़री आईआ । साध सन्त टटू दिसण भाड़े, धुर दी मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। सन्यासी वैरागी तिआगी नार कमज़ात दिसण डारे, डाइरी कूड़ दी रहे बणाईआ। बिन पुरख अकाल चार वरन कोई ना तारे, तारनहार ना कोए अख्वाईआ। भट्ठ हो गए सारे दुआरे, दुआरकावासी दए सुणाईआ। मंज़ल मिले ना किसे थारे, थर थर कम्बे सृष्ट सबाईआ। नाव लाए ना कोए किनारे, नईआ नौका जगत रुड़्हाईआ। प्रगट हो आप निरँकारे, निरवैर दए वड्याईआ। सन्त सुहेले पकड़ उठाले, फड़ बाहों गोद बिठाईआ। रहिण ना देवे दाग़ काले, कूड़ी क्रिया दए धुआईआ। अंदरों खोल्ह कपाटी ताले, तल्ब आपणी इक जणाईआ। सृष्ट दृष्ट तोड़ जंजाले, जागरत जोत करे खेल

सबाईआ। जिस दे देंदे आए अहवाले, हाल वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैगम्बरां मन्न सवाले, सब दी मनसा पूर कराईआ।

✻ ५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ मस्सा सिँघ दे गृह पिंड नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✻

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ असीं लग्गे रहे काया कोठी, हुक्म ज़ंजीर तेरा नजरी आईआ। जुग जुग तेरे नाम दे बणे रहे टोडी, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। किसे दी दाढ़ी रहिण नहीं दिती उत्ते ठोडी, किसे दी रगड़ के दिती मुंनाईआ। किसे फल लगा के साची डोडी, मुच्छ दाढ़ी केस सुहाईआ। किसे बणा के सन्यासी जोगी, रस भोगी खेल खिलाईआ। किसे करा कमाई बण विजोगी, संजोगी हो के कोए सीस निवाईआ। किसे दा खेल खिलाया वेदी सोढी, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। ख़ाना चला के धुर दा मोदी, मुद्दतां दा लेखा वेख वखाईआ। साचे नाम दी सब नूं दे के रोज़ी, रोज़यां विच दिता फसाईआ। इशारे नाल देंदा रिहों सोझी, शब्द नाल उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मालक सतिगुर बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सानूं देंदा रिहों झलकां, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। इशारा करदा रिहों पिच्छे पलकां, पारब्रह्म आपणा परदा लाहीआ। नाम संदेसा रिहों घलदा, सुनेहड़ा इक समझाईआ। मंज़ल मंज़ल रिहों चलदा, पौड़ी डण्डा इक दृढ़ाईआ। जोती धार हो के रिहों रलदा, तन वजूद सोभा पाईआ। सच सिँघासन रिहों मल्लदा, घर विच घर डेरा लाईआ। धाम दसदा रिहों अटल दा, अटल पदवी इक समझाईआ। खेल वखाउँदा रिहों जल थल दा, अस्गाहां विच वसाईआ। दीपक हो के रिहों बलदा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। सोमा हो के फुटदा रिहों जल दा, अमृत धार इक सुहाईआ। अन्त खेल वेख कलयुग कल दा, कलकाती होई लोकाईआ। डंका वज्जया काम क्रोध लोभ मोह हँकार दल दा, दलिद्री सिर ना कोए उठाईआ। एह खेल कपट विकार छल दा, अछल छलधारी तेरा राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू क़दीमी सूरे, सूरबीर वेख वखाईआ। साडे कारज होए अधूरे, हज़रत रोवण मारन धाईंआ। उम्मत उम्मती होई मूढ़े, मूढ़ मुग्ध रूप बणाईआ। मस्तक लाए कोई ना धूढ़े, टिक्के ख़ाक ना कोए रमाईआ। दीन मज़हब नाते हो गए कूड़े, कूड़ कुटम्ब दिसे लोकाईआ। गुरु गुरदेव कहिण जो माण वड्याई दिती केसां वाले जूड़े, जटा जूट होए

सहाईआ। ओह सदी चौधवीं कोई कर ना सक्कया पूरे, पूरन ब्रह्म ना कोए दृढ़ाईआ। तेरे नाद वजदे सुणे कोए ना तूरे, तुरिया तों परे ना कोए समझाईआ। तूं समरथ सुवामी सर्ब कला भरपूरे, पारब्रह्म आपणा परदा लैणा चुकाईआ। सदी चौधवीं वेख दूर नेड़े, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतां वस काया खेड़े, खिड़की अंदरों दे खुल्हाईआ। लख चुरासी मिटा गेड़े, आवण जावण रहे ना राईआ। सन्त सुहेले चढ़ा आपणे बेड़े, नईआ नौका नाम चलाईआ। जेहड़े हो गए आत्म रूप तेरे, तेरा मेरा वंड ना कोए वंडाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख भगत सचखण्ड लै जा आपणे डेरे, ढेरी ख़ाक लहिणा देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगा सञ्झ सवेरे, सुबह शाम दा लेखा दे मुकाईआ।

३७५ ३७५

२१ २१

✻ ५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ गुरमुख सिँघ दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ✻

गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा रिहा कोई ना ज़ोर, जोरू ज़र जगत लड़ाईआ। सदी चौधवीं अंदर सारे हो गए चोर, ठग्गी चोरी मात कमाईआ। मानस हो के खावण ढोर, मनुखता दिती गंवाईआ। चारों कुण्ट साहिब सुल्तान तेरी लोड़, दो जहान ध्यान लगाईआ। माया ममता मेटे ना कोई शोर, शरअ शरीअत ना कोए प्रगटाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले अन्त बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। भगत भगवान निरगुण जोड़, जोती जाता मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी रही कोई ना ताक़त, तकवा तेरे उत्ते रखाईआ। दीनां मज़हबां भुल्ली जगत लिआक़त, धर्म दुआर ना कोए वखाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत रही ना विच रफ़ाक़त, रस्ता हक़ ना कोए दृढ़ाईआ। बुध्ध बिबेक ना दिसे लिआकत, लाइक़ नजर कोए ना आईआ। कलमा धुर सुणे ना कोए इबादत, मन्दिर मस्जिद सारे देण दुहाईआ। सदी चौधवीं सब दी विगड़ी हालत, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। नाम निधान लभ्भे ना कोए निआमत, निमख निमख आपणा आप ना कोए कटाईआ। बिन तेरी किरपा मूढ़ मुग्ध बणे कोई ना सुथरा स्याणप, सच सच ना कोए समाईआ। दीन दुनी होई अणजानत, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर दे वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तेरा खेल पुरख अबिनाशी, हरि करते बेपरवाहीआ। जो सतिजुर त्रेता द्वापर कलयुग थापण थापी, पड़दे ओहले अंदरों बाहर चुकाईआ। भगतां दा बणया कोई ना साथी, सगला संग ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म रमज़ किसे ना जाती, जागरत

जोत ना कोए रुशनाईआ। माया कारण बणदे पाठी, बिन भगतां तेरा ध्यान ना कोए रखाईआ। हउँ सेवक तेरा दासी, दासी हो के सेव कमाईआ। जन भगतां मानस जन्म कर रासी, रस्ता आपणा दे दृढ़ाईआ। जिथ्थे मिले ना जम की फाँसी, राए धर्म ना कोए सज़ाईआ। चरण कँवल बंधा नाती, नर नरायण तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची मंज़ल चार वरन अठारां बरन चढ़ा अगम्मी घाटी, घाटा सब दा पूर कराईआ।

⁕ २० भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ⁕

गोबिन्द तेरी पूरब आस, हरि करता वेख वखाईआ। लहिणा देणा देवे पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो पुरख अकाल अग्गे कीती अरदास, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा राख, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। कलयुग मेटणी अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। वशिष्ट वेखे मार झात, राम रामा अक्ख खुल्हाईआ। परस राम गया आख, पुष्कर देवे सच गवाहीआ। गोबिन्द मँगे धुर दा साथ, सगला संग बणाईआ। सति प्रीती जुड़े नात, नातवां पूरब वेख वखाईआ। जिथ्थे सप्त रिषीआं कटी रात, रैण वस्सेरा झट लँघाईआ। सो स्वामी खोल्हणा हाट, दर दरबारा इक वड्याईआ। मँग मँगे गोबिन्द सूरा राठ, रहिबर तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं गुर अवतार पैगम्बरां पुच्छणी वात, वातावरन वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। गोबिन्द अन्तर आत्म कीती अरज़ोई, अर्ज़ अज़ीज़ दिती जणाईआ। तेरे नाम दी हक़ दरोही, तोबा करे ख़लक खुदाईआ। धरनी धरत धवल देवे कोई ना ढोई, सहारा किनारा नज़र कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर रोई, बिन नैणां नीर वहाईआ। पुरख अकाल सार ना पावे तुध बिन कोई, महासार्थी नज़र कोए ना आईआ। शाह सुल्तान राज राजान पत रहे खोई, ख़ालस रूप ना कोए वटाईआ। जो नानक बेनन्ती कीती तलवंडी भोई, भूमिका उपर अक्ख टिकाईआ। जो कबीर नूं हस्स के किहा लोई, लोइणां तों परे कर रुशनाईआ। तेरा भेद जाणे प्रभ कोई, गोबिन्द कहि के रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब स्वामी तेरी वड्याईआ। गोबिन्द किहा मेरे निरँकार, नव नौ चार वेख वखाईआ। कलयुग वेखां अन्तिम धार, सदी चौधवीं फोल फुलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ होए खुआर, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। जीव जंत साध सन्त करे हाहाकार, अमृत रस निझर झिरना ना कोए झिराईआ।

मैं वेखां खेल अपार, अपरम्पर स्वामी तेरी खेल बेपरवाहीआ। सच बेनन्ती रिहा गुज़ार, गुज़ारिश विच तेरी सरनाईआ। जिस वेले कल कल्की लए अवतार, अमाम अमामा वेस वटाईआ। तेरा सांझा होए दरबार, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे धर्म दा खुल्ल्हे भण्डार, संसारी भण्डारी सँघारी मिल के सेव कमाईआ। गोबिन्द आसा तृष्ना प्रभ तेरे चरण दुआर, भिक्खक हो के अगम्मी मँग मँगाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, दो जहानां तेरी वड वड्याईआ। पुरख अकाल किहा मैं आदि जुगादी देवणहार, जुग चौकड़ी पावां सार, निरगुण सरगुण खेल अपार, कलयुग अन्तिम हो उज्यार, तेरा लहिणा देणा क़र्ज देवां उतार, सच धर्म कर जैकार, एको डंका नाम वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दुआरा इक सुहाईआ।

३७७ ३७७

२१ २१

❊ २३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर दिल्ली-६ ❊

सदी चौधवीं कहे किसे समझ ना आई तारा क़ुतब, कातब लेख ना कोए लिखाईआ। चार जुग दे शास्त्र दिसण मुग्ध, पर्दा सक्कया ना कोए उठाईआ। भेव खोल्ह्या ना किसे नाल जुगत, जगह हक़ ना कोए दृढ़ाईआ। लेखा लाया ना किसे दरुस्त, दरुस्ती विच ना कोए समझाईआ। भेव खोल्हे ना कोए मुर्शद, मुरीदां मज़मून ना कोए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मिली किसे ना फ़ुरसत, तेई अवतार सीस निवाईआ। सिफ्त जणाई ना किसे उलफत, मूसा ईसा मुहम्मद हक़ीक़त हक़ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा जणाईआ। ज़िमीं असमान कहे जगत विद्या कहे क़ुतबी तारा, सिम्मत विच वड्याईआ। जगत विद्या कीता इशारा, बुद्धी नाल टकराईआ। विचार विच दस्सया सयारा, आपणी कर वड्याईआ। लेखा लिखदे गए हुक्मे विच कहिण तयारा, तोए तरफ़ ना कोए दृढ़ाईआ। सिफ्तां विच कीता इज़हारा, क़लम नाल शाहीआ। इक इक्क दा अंक जोड़ के मुहम्मद किहा गिआरां, अलिफ़ अलिफ़ नाल मिलाईआ। प्रेम भगती दा दस्स दुआरा, ध्रू प्रहलाद दिती गवाहीआ। मेहर मुहब्बत दी उपजा आबशारा, अमृत वहिण दिता वहाईआ। रूप अनूप दस्स निआरा, खेल कीता धुरदरगाहीआ। समझ आया ना किसे विचारा, भेव सक्कया ना कोए खुल्ह्राईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे गए निमस्कारा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। चारे खाणी देंदे गए लारा, हुक्मे अंदर हुक्म दृढ़ाईआ। जिस दा लेखा जाणे कल कल्की चौवीआं अवतारा, अवतरी आपणी कार कमाईआ। जिस दी समझे कोई ना धारा, धरनी धरत धवल ना कोए वड्याईआ। जो सरगुण निरगुण खेल करे दुबारा, दो इक विच्चों प्रगटाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए खुल्हाईआ। क़ुतबी कहे मैनूं लिखे ना कोई कातब, क़दीम दा लेखा दयां जणाईआ। मैं करां सर्ब मुख़ातब, मुखबरां लवां उठाईआ। जिन्हां मेरी खोज विच कीता तुआकब, भज्जे वाहो दाहीआ। बिआन देंदे रहे मेरी मारफ़त, महिव आपणा खेल जणाईआ। समझ सक्कया ना कोई आरफ़, इल्म आलम ना कोए वड्याईआ। करा सक्कया ना कोए तुआरफ़, सन्मुख वज्जी ना कोए वधाईआ। शास्त्रां मेरी कीती सफ़ारश, क़ाइदा कलमा गए समझाईआ। अक्खरां वाली लिख इबारत, सिफ्तां नाल जगत वड्याईआ। मैनूं समझया ना किसे विच भारत, भेव सक्कया ना कोए जणाईआ। मैं जुग चौकड़ी सब दी वेखदा रिहा साज़श, दीन दुनी खोज खुजाईआ। चार कुण्ट लगाउँदा रिहा आतश, अगनी अग्ग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। क़ुतबी कहे मैनूं कहिंदे क़ुतब नुमा, नुमाइश वेखी जगत लोकाईआ। चार जुग दे तक्के रहनुमा, जो रहिबर हो के फेरा गए पाईआ। सारे सजदा करदे गए खुदा, खुद मालक नज़र ना आईआ। दस्त बदस्त मँगदे गए दुआ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तन वजूद लेखा देंदे रहे वबा, शफ़ा हथ्थ किसे ना आईआ। तेरी आदि जुगादी इक दुआ, अदब नाल दृढ़ाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बर तन वज़ूदों हुंदे रहे जुदा, माटी ख़ाकी डेरा ढाहीआ। मैं वेखदा रिहा नाल चाअ, चाउ घनेरा इक सुहाईआ। तकदा रिहा राह, रस्ता फोल फुलाईआ। खेल वेखदा रिहा बेपरवाह, बेपरवाह आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ। क़ुतबी कहे मेरे क़ुतब दा समझया किसे ना कुतरा, रूप नज़र कोए ना आईआ। सब नूं मेरे उत्तों बणया रिहा ख़तरा, ख़ौफ़ विच सारे सीस निवाईआ। अक्खरां वाले लिखदे रहे मेरा ख़सरा, नम्बर सक्कया ना कोए लगाईआ। ज़िमीं असमान समझया ना किसे शजरा, अकल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। मेरा खेल सब तों वक्खरा, मण्डल मण्डप दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच साहिब तेरी सरनाईआ। क़ुतबी कहे मैं वेखी तेरी क़ुदरत, क़ादर करीम बेपरवाहीआ। सिफ्तां विच करे उल्फ़त, महिमा विच वड्याईआ। सदी चौधवीं किसे ना रही फ़ुरसत, जगत विकार पल्लू ना कोए छुडाईआ। साबत रिहा कोई ना मुर्शद, मुरीदां मदद ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका रंग देणा वखाईआ। क़ुतबी कहे मेरे क़ुतबुदीन, दीन इलाही दयां जणाईआ। जिस वेले मुहम्मद बणया तेरा मस्कीन, सजदे विच सीस झुकाईआ। ईसा दस्सी हक़ तालीम, तुलबा दिता पढ़ाईआ। मूसा लेखा ला क़दीम, क़ादर आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण नूर दस्स के सीन, सीना बसीना कीती पढ़ाईआ। गृह वखा इक अज़ीम, इस्म आज़म दिता जणाईआ। जगत

वंड कर तक्सीम, कुरह काया दिता प्रगटाईआ। झगड़ा पा उत्ते ज़मीन, फ़र्श ख़ाकी तन ख़ाक ख़ाक नाल लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दुनी बणा यतीम, याद आपणी दिती भुलाईआ। क़ुतबी कहे करीं ना कोई क्रोध, साहिब दयां सुणाईआ। कौल इक़रार वेख लै नाल बोध, बुध्ध दए गवाहीआ। जिस वेले गोबिन्द अरदासा ल्या सोध, सिध्धा तेरा राह तकाईआ। जिस वेले नानक दर्शन कीता रोज़, रमज़ अगम्मी इक जणाईआ। पैगम्बरां कीती खोज, भज्जे वाहो दाहीआ। अवतारां दस्स के चोज, चरण कँवल दिती सरनाईआ। भगतां दे के मौज, मजलस आपणे नाल रखाईआ। भेव खुल्ला के गोझ, परदा उहला दिता चुकाईआ। हउमे मेट के रोग, हंगता दिती मिटाईआ। दूर करा के चिन्ता सोग, संगम इक्को दिता समझाईआ। नाम जपा के बिना होंट, रमज़ निरंतर अन्तर इक समझाईआ। जुग बिता के कोटी कोट, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पार कराईआ। मैनूं मंज़ल चाढ़ के आपणी चोट, चोटा दिता उपजाईआ। नज़ारा तक्कदा रिहा तेरी जोत, बिन वरन गोत सोभा पाईआ। तूं आदि जुगादि कदे ना होया फ़ौत, गुर अवतार पैगम्बर मढ़ी गोर दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। क़ुतबी कहे मैं क्यों रिहा थिर, थिर घर वासी दे जणाईआ। तूं मालक मेरा इक्को पिर, पीआ प्रीतम नज़री आईआ। सति धर्म दी साची धिर, धर्म दुआरा इक प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी गेड़ा रिहा गिड़, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। चरण कँवल दिसे कोई ना नेड़, दूर दुराडे सारे सीस निवाईआ। सच सुहञ्जणा तेरा खेड़, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। मेहरवान कर मेहर, महबूब तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। क़ुतबी कहे तूं आदि जुगादी अदली, इन्साफ तेरे हथ्थ नज़री आईआ। जिस वेले जुग दी करें बदली, बदला चुक्के जगत लोकाईआ। खेल वेखें मंज़लो मंज़ली, मंज़ल आपणा डेरा लाईआ। धार वखाई आपणी रंगली, तेरी रंगत बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां तेरे कोलों वस्त मँग लई, मांगत हो के झोली पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार कलयुग अन्त श्री भगवन्त जिस वेले दो जहानां चढ़ें जंग लई, जागरत जोत कर रुशनाईआ। शस्त्र बस्तर अस्त्र खण्डा खड़ग कोई ना संग लईं, सगला संग ना कोए बणाईआ। भगत अरदास एकँकार इक्को मन्न लईं, ममता छड्डणी जगत लोकाईआ। सुत दुलारे शब्द कोलों आपणा कम्म लईं, काया कण्पड़ तन वजूद ना कोए वड्याईआ। सच संदेस नर नरेश धुर फ़रमाना बिना कन्न कहीं, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी तों परे कर पढ़ाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान हुक्मे अंदर बन्न्ह लईं, बन्दना आपणी इक जणाईआ । जे प्रगट होवें गोबिन्द होवीं आपणे चन्न लई, चार जुग दा चार

कुण्ट अन्धेरा देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा देणा मुकाईआ। क़ुतब कहे मैं वेख्या दो जहानां कुरह, कायनात फोल फुलाईआ। दीन दुनी विच कोई ना दिसे बुरा, कूड़ कुड़िआर ना कोए चतुराईआ। पुरख अकाल तूं चलावणहारा दीन मज़हब दा छुरा, जगत कसाई रूप वटाईआ। झगड़ा छेड़िआ वड़ के काया कुरह, माटी हाटी काया कोठे सोभा पाईआ। सदी चौधवीं सब दा बेड़ा वेख रुड़्हा, वहिंदे वहिण वहे लोकाईआ। तेरा प्यार किसे ना जुड़ा, आत्म परमात्म गंढु ना कोए रखाईआ। सति धर्म दी दिसे थुड़ा, वस्त अमोलक ना कोए वरताईआ। सृष्ट सबाई होई दड़ा, सच कर्म रहिण ना पाईआ। तेरे इष्ट दा मिट गया खुरा, खोज करन कोए ना आईआ। जिधर वेखां जगत जीव दिसे निगुरा, सतिगुर पुरख अकाल इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। क़ुतबी कहे मैनूं कहिण तारा चंगा, थिर इक्को नज़री आईआ। की वास्ता पाया कबीर विच गंगा, जल पाणी धार समाईआ। की आस रखी अशटावक्कर होया अशटंगा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। की इशारा कीता कृष्ण किनारे जमना कन्ढा, कंडा वाड़ वेखणा जगत लोकाईआ। की मँग मँगी राम राम बण के बन्दा, राम राम खोज खुजाईआ। की लेख लिखाया बावन संदा, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। की इशारा कीता गौतम नाल चन्दा, नेत्र नैण अक्ख शरमाईआ। की खेल जणाया दुर्गा अष्टभुज खण्डा, सार खड़ग परदा देणा उठाईआ। की विष्न ब्रह्मा शिव वखाया डंडा, डंडावत आपणी इक जणाईआ। की सुत दुलारे शब्द चढ़ाया चन्दा, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। तूं साहिब स्वामी आदि जुगादि जुग चौकड़ी बख्शंदा, बख्शणहार बेपरवाहीआ। क़ुतबी कहे ना मैं मानस ना मैं तत वजूदी बन्दा, माटी ख़ाक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। क़ुतबी कहे मैं जुग चौकड़ी दस्सां हाल, हालत दयां दृढ़ाईआ। पिच्छे बीते कोटन काल, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर खेल खेलदे गए कमाल, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। माया तत वजूद पैंदा रिहा जाल, शमां तमअ विच छुपाईआ। खेल हुंदा रिहा शाह कंगाल, ऊँच नीच वज्जी वधाईआ। निरगुण अग्गे सरगुण करदा रिहा सवाल, सवाल जवाब आपणी कार कमाईआ। सन्त भगत घालदे रहे घाल, सूफ़ी फ़कीर सजदयां विच सीस झुकाईआ। पुरख अकाल हुंदा रिहा दयाल, दीनन देवे माण वड्याईआ। जुग चौकड़ी बदलदा रिहा चाल, भेव सक्कया ना कोए खुल्हाईआ। जिस वेले सृष्टी ते आउँदा रिहा काल, डौरु डंका हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे मँग मँगाईआ। क़ुतबी कहे जुग चौकड़ी बदलदा रिहा जग, जगजीवण दाते हथ्थ वड्याईआ।

मैं खेल वेखदा रिहा सद, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। सब दी पार करदा रिहा हद्द, हदूद वंड ना कोए वंडाईआ। खेल वेखदा रिहा अग्गे वध, बिन क़दमां क़दम उठाईआ। निरगुण जोत दी सरगुण यद, जुग चौकड़ी वज्जी वधाईआ। की कौल कीता जिस वेले गोबिन्द अंगीठे लाई अग्ग, अगनी अग्ग विच्चों तपाईआ। किस बिध नाड़ी सड़े हड्ड, मास मसला हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच संदेसा देणा सुणाईआ। क़ुतबी कहे मैं सुणया अन्त अख़ीरी वाक्, वाकिफ़कार हो के दयां जणाईआ। इक इकल्ले खोल्या ताक, परदा दिता चुकाईआ। गोबिन्द मार आवाज़, संदेसा इक सुणाईआ। मैनूं ओसे वेले आई जाग, निंदरा दिती मिटाईआ। मैं भरया विच वैराग, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तूं पुरख अकाल खोल् के वेख लै किताब, जिथ्थे हरफ़ ना कोए वखाईआ। ना कोए लिखण वाली क़लम दवात, क़ाइदा क़ानून ना कोए समझाईआ। ना कोई दीन मज़हब समाज, शरअ वंड ना कोए रखाईआ। ना कोई लेखा समझे आदि जुगादि, जुग चौकड़ी भेव ना कोए खुल्हाईआ। ना कोई वसिआ सुन्न समाध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। क़ुतबी कहे पुरख अकाल मैं वेख्या तेरा असूल, असली दयां जणाईआ। मैं तेरे चरण कँवल दी ला धूल, जिस नूं धूढ़ वाला समझ सके ना राईआ। मेरा लेखा तेरे नाल जगत विहार विच अस्थूल, कारण तेरी कार कमाईआ। तेरा हुक्म तेरा तत वजूद माअकूल, मुकम्मल रूप वटाईआ। जुग चौकड़ी धर्म वाला ना बदलां असूल, असलीअत विच तेरा राह दरसाईआ। खुशी विच रहां मशग़ूल, शुकराने विच सीस निवाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक मेरा साहिब स्वामी कन्त कन्तूहल, गृह मन्दिर अंदर वज्जे वधाईआ। सच पंघूड़ा तेरा रिहा झूल, हुलारा दो किनारा पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सतिगुर तेरी ओट रखाईआ। क़ुतबी कहे मेरा सब तों वखरा भविख्त, चार जुग समझ किसे ना आईआ। मेरी पुरख अकाल करा दे सदा लिख्त, दूसर क़लम ना कोए वड्याईआ। क्यों मेरा आदि तों इक्को इष्ट, गुर अवतार पैगम्बरां सीस ना कदे झुकाईआ। सदा खुल्ही रखाई दृष्ट, दिशा इक्को वेख वखाईआ। मैं कोटन कोटि वेखे रामा वशिष्ट, विषयां वाले गुरु गए सीस निवाईआ। तत वजूद भोगदे गए गृहस्त, पैगम्बरां परा पसन्ती मद्धम बैखरी विच दिता फसाईआ। नाम धार दे के टांक जिसत, जिस्म इस्म क़िस्म विच जणाईआ। क़ुतबी कहे मैनूं आदि तों अन्त तक इक्को इश्क, आशक माशूक दा रूप ना कोए वटाईआ। जो लोकमात आया गुर अवतार पैगम्बर सो गया ख़िसक, थिर रहिण कोए ना पाईआ। किसे इशारा कीता स्वर्ग किसे दस्सया बहिश्त, दोज़ख़ विच दरोही नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

३८२
२१

कर, साचा खेल देणा वखाईआ। क़ुतबी कहे जिस वेले मेरा लेख लिखदा, देवे माण वड्याईआ। मेरा रूप होवे साचे सिख दा, सिख्या साहिब सतिगुर देवे सुणाईआ। नाता मुक जाए कूड़े हित दा, हितकारी इक्को नज़री आईआ। पुरख अकाल दीन दुनी ओस वेले जित्तदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। क़ुतब किहा मैं संदेसा देवां अग्गे इष्ट होणा इक दा, एकँकार इक्को नज़री आईआ। जो रूप धार पुरख अकाल पित दा, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जिस ने झगड़ा मुकाउणा पत्थर इट्ट दा, सिल पाहन पूजण कोए ना पाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त दो जहानां कारज नजिट्ठ दा, निरवैर हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक सुहाईआ। क़ुतबी कहे मैं देवां इक संदेसा, सच दयां जणाईआ। जुग बदलणा जिस दा पेशा, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। जिस वेले गोबिन्द पन्थ बणाया धारी केसा, केसगढ़ ध्यान लगाईआ। मँग मँगी इक हमेशा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अकाल तेरा दुआरा सचखण्ड देसा, दिशा देशंतर वेख वखाईआ। मैं इक बचन करावां चेता, चेतन हो के सीस निवाईआ। जिस वेले लोकमात आवें भगतन बण के हेता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। दो जहानां बणी नेता, निरँकार बेपरवाहीआ। तेरी अगम्मी होवे खेडा, जगत बुद्धी ना कोए समझाईआ। गोबिन्द पहलों होवे भेजा, भजन बन्दगी तों रैहत आप कराईआ। उस दे अंदर होवे तेरी सेजा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। हथ्थ फड़ना ना पए कोई कटार नेजा, निगाह तेरी दो जहान नज़री आईआ। जलवा नूर होवे तेजा, जोती जोत डगमगाईआ। पढ़ना पए कोई ना वेदा, विद्या तों बाहर आपणा हुक्म देणा सुणाईआ। जन भगतां वल्ल सिध्धा रखणा दीदा, निगाह निगाह नाल रखाईआ। निआज़ देणी ना पए किसे ईदा, सजदा सीस ना किसे झुकाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करनी उम्मीदा, आमद आपणी विच वड्याईआ। क़ुतबी कहे पुरख अकाल तेरा राज़ रहे पोशीदा, समझ किसे ना आईआ। सिफ्तां विच जगत अक्खर अल्फ़ाज़ करन तमहीदा, गा गा ढोले गीत सुणाईआ। मैं तेरा इक अज़ीज़ा, पूत सपूता धुर दा नज़री आईआ। जुग चौकड़ी तेरे प्रेम विच आई तमीज़ा, तमअ कूड़ ना कोए मनाईआ। जुग चौकड़ी तेरा वसदा उजड़दा वेखदा रिहा बग़ीचा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। तूं मालक ख़ालक ऊचां नीचां, आत्म ब्रह्म तेरा नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर राज़ खोलणा आपणा भेव पेचीदा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। क़ुतबी कहे मैं सृष्टी दा मेटणा भरम, भरम दयां गवाईआ। मेरा तेरे नूर विच्चों जरम, जन्म देण वाली अवर ना कोए माईआ। इक्को ओट साची सरन, सरनगति समझाईआ। किसे दुआरे गया नहीं पढ़न, तेरी विद्या बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी मेरा

३८३ २१

होया ना मरन, मर जीवत तेरे विच समाईआ। मेरा सच प्यार दा प्रन, प्रणाम कर के सीस निवाईआ। सदा रखीं आपणी सरन, सरनगति इक दृढ़ाईआ। जिस वेले भगतां आवें खड़न, लोकमात वेस वटाईआ। भाग लगावें उपर धरन, धवल धौल खुशी बणाईआ। मैं वी परसां तेरे चरण, चरणोदक मुख देणा चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लैणा मिलाईआ। क़ुतब कहे मैनूं वेखदे विच शमाल, शरकण ग़रबण वंड ना कोए वंडाईआ। मेरा तेरे नाल जमाल, जलवा नूर तेरा रुशनाईआ। जुग चौकड़ी बेनन्ती करदा रिहा सवाल, सवाली हो के मँग मँगाईआ। पुरख अकाल कलयुग अन्तिम दस्स हाल, हालत दीन दुनी देणी दृढ़ाईआ। तूं हुक्म संदेसे अंदर सदा दिता टाल, भेव आत्म ना कोए जणाईआ। गोबिन्द संदेसा दिता इक कमाल, अल्फ़ी काया तन छुहाईआ। सदी चौधवीं जिस वेले सृष्टी दृष्टी अंदर प्या जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। दीपक जगे ना किसे बेमिसाल, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। सति सच ना रहे माल, लुट्टी जाए जगत लोकाईआ। इक्को खेल खेले शब्द गुरु धुर दा बाल, बाली बाला नाउँ धराईआ। कलयुग अंदर सतिजुग बदल के चाल, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। मुरीदां वेखे मुर्शद हाल, बेहाल होए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी लेखे लाए घाल, घालण विच लालण लाल आपणे लए उपजाईआ।

❋ १ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

अस्सू कहे मैं आसावंद, पुरख अकाल दीन दयाल तेरी इक सरनाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दे ख़ावंद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। निरगुण धार अगम्मी नूर इलाही चन्द, निरवैर पुरख तेरी सिफ्त सालाहीआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी दे अनन्द, परमानंद विच समाईआ। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान निरगुण धार निरगुण नाल गंढु, सरगुण झगड़ा दे मुकाईआ। अमृत रस निझर धार सति सतिवादी पा ठंड, अगनी तत ना कोए तपाईआ। मन विकार कूड़ हँकार कढु गंद, सच सुच इक उपजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दीन दुनी गावे छन्द, सोहला ढोला इक्को राग अलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे हुक्म होवण पाबन्द, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। अस्सू कहे मैं आया मात, मातर भूमी वेख वखाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाश, जुग चौकड़ी समझ कोए ना पाईआ। कातब लेखा लिख ना सके ख़ास, ख़ालस

सक्कया ना कोए समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां धराया इक विश्वास, विशा तेरा नाम ध्याईआ। तूं साहिब सर्ब गुणतास, गहर गम्भीर बेनज़ीर इक अख्वाईआ। मण्डल मण्डप पा अगम्मी रास, तन वजूद नाच ना कोए नचाईआ। आत्म परमात्म वेख आपणी ज़ात, अज़ाती झगड़ा दे गुआईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, रुतड़ी आपणा नाम महकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर गए जो आख, आख़र लेखा पूर कराईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार प्रगट हो साख्यात, साहिब सतिगुर आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची वज्जे नाम वधाईआ। अस्सू कहे मैं मांगत हो के मँगां मँग, मांगत हो के सीस निवाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, मेहरवान तेरी वड्याईआ। मैं बोलां बिना ज़बान दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। जिस कारण गोबिन्द छड्डुआ पुरी अनन्द, अनन्द तेरे विच समाईआ। सदी चौधवीं रही हंढु, मुहम्मद अहमद दए गवाहीआ। जगत विकार कूड़ हँकार ढाह कंध, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। मन वासना पाए कोई ना डंड, डंडावत इक्को दे जणाईआ। चार वरन अठारां बरन खत्री ब्राह्मण शूद्र वैशां होए संग, सगला संग इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। अस्सू कहे मेरे स्वामी, हरि करते तेरी बेपरवाहीआ। तूं आदि अनादी अन्तरजामी, घट निवासी धुरदरगाहीआ। बोध अगाध शब्द अगम्मी तेरी बाणी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी सिफ्त सालाहीआ। तेरा खेल चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज नज़री आईआ। आत्म नूर तेरा नुरानी, जल्वागर तेरी रुशनाईआ। तेरा लेखा लहिणा देणा दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर परदा दे उठाईआ। जिस कारण तत्ती लोह उत्ते बैठा सुत भानी, भाणा आपणा दे वखाईआ। गोबिन्द कर के बच्चयां दी क़ुरबानी, करबला दा लेखा गया मुकाईआ। सदी चौधवीं मुरीदां मुर्शदां अंदर आवे बेईमानी, बेवा होवे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। अस्सू कहे सचखण्ड दुआरे मेरी पुकार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। की आसा रख के गए तेरी अवतार, तरूां तरूां नाल जणाईआ। की पैगम्बरां कीती गुफ्तार, गुफ्त शनीद की समझाईआ। की गुरुआं कीता इज़हार, परदा उहला दे उठाईआ। की भगतां कीता तकरार, तकरारनामा वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी, दए दुहाईआ। देवत सुर रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। चार कुण्ट दह दिशा हाहाकार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। माया ममता मोह होया विभचार, कुकर्म धर्म करे लड़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सृष्टी पढ़ पढ़ गई हार, इष्टी इष्ट ना कोए मनाईआ।

तेरा लेखा सब तों बाहर, क़ुदरत दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं बेनज़ीर हो उज्यार, उजाला आपणा इक कराईआ। नाम संदेसा धुर दा कलमा एका दे एकँकार, इक इकल्ले आपणी दया कमाईआ। जिस दा कातब बणे ना कोए लिखार, क़लम शाही ना कोए वड्याईआ। अलिफ़ ये ना पावे सार, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। मेरी मँग तेरे दरबार, सचखण्ड साचे सीस निवाईआ। तूं क़ुदरत दा करता करनी दा करतार, महिबान बीदो बीखैर या अलाह, जल्वागर नूर इलाहीआ। वेख दीन दुनी दा हाल, माज़ी करे ना कोए ख्याल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे इक अरज़ोईआ। अस्सू कहे मेरी आसा रही लोड़, लोड़ींदे सज्जण दयां दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं सब नूं तेरी लोड़, घट घट अन्तर तेरा नाम दुहाईआ। नाम निधान श्री भगवान साचा मन्त्र फ़ुरना दे फ़ोर, फ़ौरन आपणा हुक्म वरताईआ। सृष्टी दृष्टी उत्ते कर ग़ौर, गहर गम्भीर खोज खुजाईआ। कूड़ी क्रिया मन वासना अंदरों कढु कौड़, गुरबत अंदरों दे कढ्ढाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां मात बौहड़, मायाधारी ममता विच फसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अकाल किहा सुण अस्सू मेरे प्यारे, सच दयां जणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेरे खेल निआरे, निरवैर हो के आपणी कार कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण ना कोई विचारे, अक्खरां तों बाहर मेरी पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सदा पनिहारे, नित नवित्त सेव कमाईआ। सदी चौधवीं जो दे के गए इशारे, धुर दे कलमे नाल समझाईआ। प्रगट होवे कल कल्की अवतारे, निहकलंका निरगुण नूर करे रुशनाईआ। पावे सार जंगल जूह उजाड़ पहाड़े, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी चारे बाणी आप संभाले, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। गोबिन्द शब्द सतिगुर पूरा होवे नाले, नालश मेटे कूड़ लोकाईआ। साची विद्या अन्तर निरंतर मन्त्र इक सिखाले, संदेसा देवे धुरदरगाहीआ। कूड़ा तोड़ जगत जंजाले, जागरत जोत करे रुशनाईआ। नूर अगम्मा दीपक इक्को बाले, दो जहानां डगमगाईआ। भाग लगाए सचखण्ड सच्ची धर्मसाले, धर्म दुआरा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरे दए वड्याईआ। अस्सू सुण नन्हे बच्चे, हरि करता दए वड्याईआ। कलयुग जीव भाण्डे कच्चे, कंचन गढ़ ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जो मार्ग दस्से, हुक्मे अंदर रहिबर हो के राह वखाईआ। ओह सदी चौधवीं चार वरन लगदे अच्छे, अच्छी तरां समझ किसे ना आईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया तन वजूद माटी अंदर नच्चे, नौ दुआर दए दुहाईआ। सारे सति दुआरे होवो इक्ठे, सच महल्ला उच्च अटला इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा नर

नरायण इक सुणाईआ। अस्सू सुण देवां सच दुलारा, गोबिन्द तेरा मेल मिलाईआ। जिस दा अजीब अजब जगत तों वखरा नज़ारा, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं जिस ने करना पार किनारा, कलयुग कूड़ी क्रिया नईआ शौह दरया रुड़्हाईआ। साचा दस्स के इक दुआरा, चार वरनां लैणा मिलाईआ। दीन मज़हब दा झगड़ा मेटे विच संसारा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई नाता जोड़े थाउँ थाईंआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत रहे ना कोए ग़द्दारा, ग़दर मन दा अंदरों देणा कढ्ढाईआ। जिसदा लेखा लिखे रविदास चमारा, गुरदास हाज़र हो के दए गवाहीआ। नानक निरगुण सरगुण खेल करे अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी वेख वखाईआ। साध सन्त जीव जंत जगत विद्या चले कोए ना चारा, चारों कुण्ट सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान महबूब इक अख्वाईआ। अस्सू कहे प्रभ गोबिन्द देवे केहड़ी ताअलीम, तुलबे कवण पढ़ाईआ। कवण वस्से धाम अज़ीम, अर्श फ़र्श तों परे दए समझाईआ। किस बिध मेटे जगत मज़हब तक्सीम, द्वैती दए गवाईआ। सच धर्म दा प्रचलत करे नेम, नर निरँकार तेरे नाल मिलाईआ। की कहि के गया नाई सैण, सैनत नाल समझाईआ। की मुहम्मद इशारा दिता जिस वेले हरफ़ लिख्या ऐन, आरफ़ समझ किसे ना आईआ। की लेख होया नाल हसन हुसैन, हसीना लाड़ी मौत दए गवाहीआ। की मूसा ईसा अगम्मी इशारे विच कहिण, रसना जेहवा ना कोए हिलाईआ। तेरा खेल नर नरायण, नर नारी समझ कोए ना पाईआ। भेव खुल्हिआ ना बाल्मीक कोलों विच रमाइण, रामा दसरथ बेटा लेखा आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर दर तेरी वजदी रहे वधाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा गोबिन्द सुत दुलारा, दूल्हा धुर दा नज़री आईआ। जिस ने कलयुग करना अन्त किनारा, कायनात वेख वखाईआ। मेरे नाम दा बोल इक जैकारा, जै जै कार दो जहान सुणाईआ। शब्दी शब्द धार इशारा, ऐशो इशर्त विच कदे ना आईआ। जिस गोबिन्द ने तत सरीर छड्डके शब्दी रूप धरया दुबारा, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। ओस दा लेखा आउणा नहीं विच किसे अख़बारा, एडीटर औडिट विच ना कोए लिआईआ। जिस ने दो जहान चारे खाणी लाउणा अखाड़ा, चारे बाणी डंक वजाईआ। खेल करना बहत्तर नाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध्ध फोल फुलाईआ। उस दा हुक्म सब तों निआरा, निआंकारी धुरदरगाहीआ। सब दा मीत प्यारा, मित्र इक अख्वाईआ। सो कल कल्की लए अवतारा, अमाम अमामा वेस वटाईआ। निरगुण नूर करे उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। सब दा पीर होवे ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे मैं पुरख अकाल दा योद्धा, जुग जुग वेस वटाईआ। मैं आदि

जुगादी ज्ञान बोधा, बुद्धी तों परे करां पढ़ाईआ। माया ममता मेटां रोगा, हउमे तृष्ना कूड़ मिटाईआ। हुक्म सुणावां चौदां लोका, चौदां तबक करां शनवाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान बणावां पोथा, अक्खरां वंड वंडाईआ। करां प्रकाश साढे तिन्न हथ्थ काया माटी कोठा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। मेल मिलावां नाल निर्मल जोता, जोती जोत विच समाईआ। साचे नाम दा देवां होका, हुक्म दस्सां धुरदरगाहीआ। पहली अस्सू लोकमात किसे विरले गुरमुख मिले मौका, लख चुरासी अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। गोबिन्द ला के इक्को ढौंका, ढईए पिच्छों लए अंगड़ाईआ। जिस छड्डया पटना पौंटा, माछूवाड़े सेज सुहाईआ। नंदेड़ दे के सब नूं धोखा, अगनी तत आपणा आप जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सुण अस्सू जग दे मीत, मित्र प्यारे दयां जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दी बदले रीत, रीतीवान मेहरवान इक अख्वाईआ। सम्मत चौथा जाण दे बीत, बीती कहाणी ना कोए दृढ़ाईआ। झगड़ा पैणा हस्त कीट, रंक राजान करन लड़ाईआ। सब दी नंगी होणी पीठ, ओढ्डन सीस ना कोए टिकाईआ। सिआसत विरासत सब दी रहिणी बीच, पार किनारा ना कोए दृढ़ाईआ। गोबिन्द शब्द पुरख अकाल नाल गंढु लैणी पीच, पेचीदा पेचा आपणा लैणा पाईआ। जिस भविख्त दी सारे करदे गए उडीक, ओह वेला नेड़े आईआ। जिस दी महिमा गा सके ना कोई रसना जीभ, जेहड़ा ना कोए शनवाईआ। ओस ने सब नूं देणी तरतीब, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई लैणे समझाईआ। मानव हो जाओ इक दूजे दे क़रीब, काया काअबे सोभा पाईआ। वेखो लेखा लिख्या सपारे सतारवें विच क़ुरान मजीद, मजलस महबूब नाल कराईआ। जिस दी कर ना सक्कया कोई तमहीद, तहरीर तक़रीर विच ना कोए जणाईआ। ओस दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, आमद विच वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्त धुर दे शब्द मनाउणी इक्को ईद, आदत इबादत विच बदलाईआ। साचे कलमे दी कर ताकीद, तरफ़ यकतरफ़ दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। अस्सू कहे मेरे अन्तर चाउ घनेरा, वज्जे नाम वधाईआ। शब्द गोबिन्द पावे फेरा, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। पुरख अकाल मेटे झेड़ा, दीन मज़हब ना कोए लड़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल वस्से खेड़ा, गृह मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। इक्को रंग होवे गुरु चेरा, चेला गुरु विच समाईआ। नाम ढोला तूं मेरा मैं तेरा, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। थोड़े दिन होर कर लओ जेरा, जेरज अण्डज दए दुहाईआ। पुरख अकाल दा खेल जाणे केहड़ा, जगत सिआसत समझ कोए ना पाईआ। किस बिध दीन दुनी दा बन्ने बेड़ा, बेड़े आपणे नाल चढ़ाईआ। सति धर्म दा खुल्हा करे वेहड़ा, वहम अंदरों दए कढ्ढाईआ। नज़री आए नेरन नेरा, दूर दुराडा

पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। अस्सू कहे मैं वेखां गोबिन्द सूरा, सूरबीर वड्याईआ । जिस दा होवे जोती नूरा, नूर नूर विच्चों चमकाईआ। बचन दा होवे पूरा, पूरन ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। साचा नाम करे मशहूरा, मशवरा इक्को नाल रखाईआ। जिस दा खेल ना होवे अधूरा, कूड़ी क्रिया दए गवाईआ। गुरमुखां बख्श के चरण धूढ़ा, दुरमति मैल दए धुआईआ। चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़ा, साचा रंग इक रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। अस्सू कहे मैनूं गोबिन्द चाढ़े मस्ती, मस्त दीवाना दए बणाईआ। पुरख अकाल जिस दी वेखां हस्ती, जो हस्त कीट विच समाईआ। जिस भाग लगाउणा साढे तिन्न हथ्थ काया बस्ती, सम्बल सोभा पाईआ। किरपा करनी अगम्मे अर्शी , अर्शी प्रीतम आपणी दया कमाईआ। सब दा लहिणा देणा बेबाक करना क़रज़ी, मक़रूज झोली सर्ब भराईआ। खेल दस्से आपणे घर दी, जिथ्थे गुरु अवतार पैगम्बर निउँ निउँ सीस निवाईआ। कुछ खेल होणी दिशा चढ़दी, चढ़े तुफ़ान बेपरवाहीआ। लहिंदी दिशा वेखो डरदी, डरपोक पोप रहे जणाईआ। दक्खण आशा की पढ़दी, परा पसन्ती तों परे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अगम्मा जल्दी, जल धारा रही कुरलाईआ। अस्सू कहे मैं खुशीआं विच करदा हासा, हस्स हस्स रिहा जणाईआ। पुरख अकाल दा वेखां खेल पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। जिस ने दीन दुनी दा बदलणा पासा, करवट आपणी नाल बदलाईआ। कूड़ी क्रिया मेटणी शाख़ा, शनाख़त आपणी देणी समझाईआ। सब दा मालक इक्को नज़री आवे आका, अकल बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। जो सब दी जोत सर्ब दा जाता, जागरत जोत डगमगाईआ। गोबिन्द ओसे दा दे के गया भरवासा, जिस ने वेस वटाया गुरु दस जगत दहाका, दह दिशा करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा बण के पिता माता, पतिपरमेश्वर आपे वेख वखाईआ। अस्सू कहे मैनूं गोबिन्द दिसे चंगा, चार कुण्ट रुशनाईआ। जिस दे चरण चुम्मे सुरस्ती गंगा, गोदावरी सीस निवाईआ। जिस दा लेखा सूरा सरबंगा, सुर्या चन्न सिर ना कोए उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जिस मेटणा दंगा, दगे तों लए बचाईआ। जगत सिआसत नाच कराउणा नंगा, चार कुण्ट वखाईआ। जेहड़े गुरमुख गोबिन्द नाल लाउणगे कंधा, फड़ बाहों लए उठाईआ। जो भुल्ल गया वांग बैरागी बन्दा, बन्दगी विच दुहाईआ। जिस निशान मिटाउणा तारा चन्दा, इक्को जोत करे रुशनाईआ। ओस फड़ अगम्मी खण्डा, खण्डां ब्रह्मण्डां देणा हिलाईआ। साचे प्रेम दा गुरमुखां दे के अगम्म अनन्दा, अनन्दपुरी दा लहिणा देणा मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा छन्दा, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। झगड़ा मुका के जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज

लेखा रहे ना राईआ। धुर दे नाम दा फेर के रंदा, कूड़ी क्रिया साफ़ कराईआ। सति धर्म चढ़ा के डंडा, पौड़ा इक्को देणा प्रगटाईआ। जिथ्थे वस्से साहिब बख्शंदा, पुरख अकाल धुर दा राम हक़ गुसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। गोबिन्द कहे मेरी धर्म धार सिआसत, सिआह नज़र कोए ना आईआ। जगत माया ना कोए विरासत, मोह विच ना कोए वड्याईआ। जेहड़ा मैनूं भुल्लया मैं सब नूं लैणा विच हिरासत, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जे कोई साध सन्त करे शरारत, शरअ विच्चों देणा कढ्ढाईआ। गोबिन्द बिन अक्खरां तों लिख के गया इबारत, बिन हरफ़ां हरफ़ प्रगटाईआ। जिस ने दीन दुनी दी बदल देणी आदत, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। पुरख अकाल दी दस्स इक इबादत, झगड़ा दुनी देणा मिटाईआ। सच मुहब्बत कर सख़ावत, सुख़न पिछला पूर कराईआ। नाम निधान दे के निआमत, नाउँ निरँकारा देणा जणाईआ। ममता मोह मेट अलामत, आलमां इल्म देणा समझाईआ। जगत सिआसत वेखो अगले साल होणी शामत, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। जिन्हां दे कोल प्रभ दे नाम दी सची निआमत, अमलां विच वड्याईआ । कूड़ी क्रिया करे ना कोए बग़ावत, बग़लगीर करे ख़लक खुदाईआ। जिस दा मालक सही सलामत, साहिब स्वामी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नजर इक उठाईआ। अस्सू कहे जे मेरे विच पन्थ ख़ालसे करनी कानफ़रंस, मता आत्म ब्रह्म पकाईआ। सारे गुरमुख रूप बण जाओ हँस, ममता मोह विकार गुआईआ। सच धर्म दा नज़री आउ बंस, वड्डा रूप ना कोए वटाईआ। मन हँकारी मारो कंस, काया काअबे होए रुशनाईआ। जिस ने तुहाडी बणाई बणत, सो सतिगुर होए सहाईआ। पुरख अकाल मिल के बणो सन्त, जगत वड्याई दी लोड़ रहे ना राईआ। नर निरँकार मिलो कन्त, कन्तूहल इक्को सोभा पाईआ । जो चाढ़े सब नूं रंग बसन्त, चोली आपणे प्रेम रंगाईआ। भेव खुल्हावे जीव जंत, जागरत जोत डगमगाईआ। फिर सांझा होवे फ़रंट, फ़ैसला इक्को इक वखाईआ। प्रभ दे नाम दा झूठा रहे ना कोए एजंट, एजंसी जगत वाली ना कोए खुल्हाईआ। जे तुसां धर्म दे लाउणे टैंट, तम्बु कनातां विच वड्याईआ। जे इक्ठे करने धोती बोदी केस मुच्छ दाढ़ी वाले जिन्हां हैट टोपी पहनी पैंट, प्रेम प्रीती विच बंधाईआ। फिर सति दी सुहाउणी ओह कैंट, जिथ्थे ट्रेनिंग देवे धुरदरगाहीआ। बिना प्रेम तों साचा दिसे कोई ना एजंट, जांइंट करे ना कोए लोकाईआ। बाहरों भावें किन्ने लाओ सैंट, अंदरों दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। गोबिन्द धार बणो महंत, महिमा इक्को देणी सुणाईआ । लीडर जगत दिसण सन्त, गुरमुख विरले नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। जो कानफ़रंस दा बणे प्रधान, प्रधानगी हरि कमाईआ। ओसे दे अंदर वसिआ

होवे भगवान, शब्दी शब्द करे पढ़ाईआ। सच संदेसा देवे आण, जो गोबिन्द गुर जणाईआ। जो राम कृष्ण दी करे पहचाण, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। जो मूसा ईसा मुहम्मद दा देवे फ़रमान, फ़रमांदार दए दृढ़ाईआ। सति धर्म दी दस्स पहचान, बेपहचान दए मिलाईआ। जे कोई अक्खर बोले नाल ज़बान, ओह वी धुर दा हुक्म सुणाईआ। जगत विद्या दी कल्याण, गोबिन्द वंड ना कोए वंडाईआ। जिस पन्थ दी पुरख अकाल नाल मिल के शान, शहिनशाह गोबिन्द गया समझाईआ। ओस दा हुक्म होवे परवान, परवाने वेखणे थाउँ थाईंआ। सर्ब सम्मतीआं वाले इक्ठे होवो आण, आपणा आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। अस्सू कहे जिन्हां सब ने होणा इक्ठा, मता इक पकाईआ। अग्गे नूं दीन मज़हब दा रहे कोई ना रट्टा, झगड़े विच ना कोए दुहाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वेखो गुर अवतार पैगम्बरां जेहड़ा प्रभ दे कोल लिख्या पट्टा, पटने वाला दए गवाहीआ। चार जुग दे अन्त अख़ीर बेनज़ीर धर्म दी धार जणाउणा टप्पा, टिप्पी बिन्दी दा लेखा दए मुकाईआ। जो कौल इक़रार विच संसार निरगुण धार जोत निरँकार कीता पक्का, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। कहे ना कोए चूंकि चुनाचे अलबत्ता, आलम फ़ाज़ल इल्म उलूम विच सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। अस्सू कहे मेरा गोबिन्द बणया सज्जण, हरि मिल्या धुरदरगाहीआ। जो चरण धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल धुआईआ। साचे नाम दी चाढ़े रंगण, रंगत इक्को दए वखाईआ। जे सच वस्त कोई आए मँगण, मँगो मेला होवे नाल धुरदरगाहीआ। पीण खाण वाले पार कदे ना लँघण, दरगाह सच ना कोए पुचाईआ। सोहणे धर्म दे बणो प्रबंधण, प्रबंधक आपणा नाउँ दिसाईआ। जगत प्रीती जे मिल के टुट्टी सारे गंढुण, गंढु पवे थाउँ थाईंआ। झगड़ा पवे ना माटी बदन, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। जे प्रेम प्रीती विच आए सद्दण, सदके वारी घोल घुमाईआ। बाजवे तिन्न दिन सतारां सौ अठवंजा ब्रिकमी गोबिन्द चरण कँवल कीता मजन, धूढ़ मस्तक नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख वखाईआ। लेखा कहे मैनूं लभ्भे कोई ना लिख्त, लिख लिख थक्की क़लम शाहीआ। परदा लाहिआ ना अंदरों किसे दृष्ट, दृष्टी दृष्ट ना कोए खुल्हाईआ। मैनूं याद आया इक वेरां सलाह कीती राम वशिष्ट, मता गुरु गुरदेव बणाईआ। हक़ीक़ी मजाज़ी तों परे केहड़ा इश्क, जो तन वजूद तों बिना ल्या हंढ्ढाईआ। जां तक्कया इक्को पुरख अकाल आपणी आया विच फ़रिसत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। बाकी जो उपज्या सो तन माटी ख़ाक विच्चों गृहस्त, गृह मन्दिर इक वड्याईआ। इशारा दे के गया स्वर्ग बहिश्त, सुख सागर मात समझाईआ। अस्सू कहे मैं ओस वेले सदा

जावां ख़िसक, आपणा पल्लू छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा पूर कराईआ। अस्सू कहे मैं आस रखावांगा। घट निवासी वेख वखावांगा। जोत प्रकाशी नूर चमकावांगा। बण के दास दासी, सेव कमावांगा। फिर के पृथ्मी आकाशी, निरगुण सरगुण खोज खुजावांगा। जेहड़ी कथा चार जुग किसे नहीं वाची, वाचक हो के आप दृढ़ावांगा। जो अन्त अख़ीरी गोबिन्द नंदेड़ शब्द सुनेहुड़े विच आपणी धार आखी, आख़र अक्खरां विच्चों प्रगटावांगा। जिस दा लेख लेखा नहीं किसे पाती, पत्रका सब नूं ओह जणावांगा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेटे अन्धेरी राती, रुतड़ी नूर चन्द चमकावांगा। साची सेज बणा के खाटी, आत्म ब्रह्म भेव चुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दी प्रगट कर प्रभाती, प्रभ दा नाम इक जपावांगा। जपो नाम प्रभू प्रभ एक, एकँकार दृढ़ाईआ। सतिजुग साची बख़्शे टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी लाईआ। बुध्ध करे बिबेक, दुरमति मैल धुआईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अगनी तत बुझाईआ। जन्म कर्म दी मेट के रेख, लेखा अगला दए वखाईआ। सचखण्ड जणा के देस, पिछला खैड़ा दए छुडाईआ। प्रभ चरण रहो हमेश, दानी दाते सीस निवाईआ। जिथों गुर अवतार पैगम्बर रिहा भेज, भगत भगवान लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। साचे मेले दा देवे समां, हरि सतिगुर धुरदरगाहीआ। जिस ने जुग बदलणा नवां, नव नौ चार करे रुशनाईआ। नाम जपाउणा दम दमा, स्वास स्वासां विच्चों प्रगटाईआ। भाग लगाउणा काया माटी चम्मां, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। वेखो की लेख लिख्या चौदां सौ तीह अंक पन्ना, पनाह देवे थाउँ थाईंआ। जिस भाग लगाउणा काया माटी तंना, तमअ कूड़ी दए गवाईआ। सच प्रकाश कर के अगम्मी शमां, शमांदान साढे तिन्न हथ्थ सुहाईआ। वेख्यो कोई बणयो ना ब्राह्मण पंमा, धोखा गोबिन्द नाल रखाईआ। पुरख अकाल सब दा पिता ते सब दी अम्मा, जम्मण वाली इक्को माईआ। सच प्रेम दा मार्ग होण लग्गा रवां, रमता रमता मिले वड्याईआ। जिस ने गगन रहाया बिना थम्मा, थान थनंतर वेख वखाईआ। उह शब्द सुणावे जगत सरोते कन्नां, जो कन्ना गोबिन्द आपणा गया लगाईआ। जिस शब्द इशारा दिता धन्ना, बजर कपाटी पत्थर तोड़ तुड़ाईआ। ओस ने मेटणा हद्द बन्ना, वट रहिण कोए ना पाईआ। इक सिआसी कुछ दुखी हुंदा विच खंना, मन कल्पणा विच कुरलाईआ। सारे गोबिन्द दे बणो नूरी चन्ना, चन्द नूर करो रुशनाईआ। अस्सू कहे पुरख अकाल ने ज़रूर बदलणा समां, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। चतुराई चले ना जगत दे ब्रह्मा, विष्न शिव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। हरिजन साचे मेला जगत, हरि जगदीशर आप कराईआ। मेल मिलावे धुर दे

भगत, भगवन आपणा रंग चढ़ाईआ। मातलोक सुहाए वेला वक्त, घड़ी पल वार थित दए दरसाईआ। सब दी पूरी करे शर्त, शरअ दा मालक वेख वखाईआ। जे इक्ठ करना जगत वाला ना होवे फ़क़त, फ़िकरा गोबिन्द देणा दुहराईआ। जिस दा प्रकाश होणा उत्ते फ़र्श, ज़िमीं असमान नूर रुशनाईआ। उह सब नूं देण वाला आपणे नाम प्यार दा खरच, ख़ज़ानची गुरमुख लए बणाईआ। जो धुर दे दुआरे उत्ते होए दरज, जिथों सके ना कोए बदलाईआ। संसारी रखयो कोई ना गर्ज़, गर्ज़ प्रेम वाली बणाईआ। क्यों पुरख अकाल कोल आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी फ़रद, सन्त सुहेले वेखे थाउँ थाईंआ। स्टेज बणाउण तों पहलों पंजां प्यारयां कोलों कराइओ अर्ज़, आरज़ू आपणी नाल रखाईआ। जे तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मदद कर थाउँ थाईंआ। ग़रीब निमाणयां नाल वंड दर्द, दुखियां हो सहाईआ। सिआसत छुरी शरअ किसे उत्ते ना चले करद, धर्म दुआर बणे ना कोए कसाईआ। कूड़ी क्रिया मेटिओ अन्धेर गरद, गरदिश झूठ रहे ना राईआ। सति धर्म दी साची चुकिओ खड़ग, खण्डा खैरखाही वाला उठाईआ। फेर किसे दा होवे कोई ना हरज, हरजाने पूरे होवण थाउँ थाईंआ। जिस ने पुठ्ठी सिध्धी करनी नरद, ना उह नर ते ना मदीन नरां दा नरायण नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त भगतन हित करे खेल सदा असचरज, अचरज लीला मालक हो के नीला, नीले वाला आपणा हुक्म वरताईआ।

बाजवा गोबिन्द कोल फेरदा हुंदा सी मूंगली, पहलवान साढे तरताली साल दा पिछला नज़री आईआ। इक दिन गोबिन्द प्रेम विच लाई उँगली, कंधा दिता दबाईआ। रमज़ इशारे वाली बुज्झ लई, तन मन्दिर दिती दृढ़ाईआ। हुण तेरी एस जन्म दी औध पुग्ग गई, नाता जाणा तुड़ाईआ। तेरा हिस्सा रखणा कलयुग अन्तिम जुग लई, जगत विच मिलाईआ। एसे कारण एह अंदरे अंदर सुझ गई, समझ दिती समझाईआ। द्वैत वाली अगनी बुझ गई, ममता कूड़ दिती छुडाईआ। एह खेल होणी प्रेम प्यार धार दुद्ध लई, सीर शीर इक उपजाईआ। एह खेल होणी धर्म सिआसत मुद्ध लई, जगत विच वधाईआ। जो एस निशानिउँ उक गई, गोबिन्द अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्यार बंधाए मानस मनुक्ख लई, दुःख दूई वाले कढ्ढाईआ। माज़ूलले मसीह, हज़रत मुहम्मदे ज़वीह, हसन हुसैने तवज़ीह, खुदा उलज़वा, ख़ज़ीज़न नज़ा, जमविस्ते फ़िज़ा, पाज़ल नज़ूचे वज़हिलका वज़ीअल हकूके, हुक्मरान इक

दृढ़ाईआ। मज़सत नालिसविल वजिंग जंग जूने मुहम्मदे नवज़ी हज़रते तमज़ीह पैगम्बरे अज़ी चश्माने नज़ी, रौशआने वज़ी, वज़ीउल वज़ा रहमत उल दवा, मुक़द्धसे खुदा, खुदी मरकूबे नज़ू, नज़ीमा निज़ा, ज़ामीने जमा, आसमाने किशां, दरगाह हिज़ां, आलमीने अमां, महबान महबूब नज़री आईआ। मुहम्मदे दुआ, दरोही खुदा, वनोही सदर, जोही जदा, अज़रबे अदाख, नोविस्तो नज़ां, चाज़ीन चाज़ू चज़े चविज़ चार कुण्ट नज़री आईआ। करबलाए खुदा, करबलाए वबा, करबलाए रबा, करबलाए नूरा, करबलाए सवा, करबलाए ख़ता, ऐलीए दुआ, हज़रते ज़ुरा, ज़ावीर ज़ेर ज़बर विच मिलाईआ। गोबिन्दे कससत, पैग़ाम चगसत, दीयामे चीशे नवस्त चौजू चार वरन वेख वखाईआ। फ़रज़ंदे गोबिन्द, नाखंदे नाहइंद, नाबूदे बन्देबिन्द, बदने ज़मा, रबूतते अज़ां चश्मे नुरां, कलमे क़ुरां दसमे गुर वड वड्याईआ। करबला कुरलाहट, मानवे सनाहट, क़दमे आहट, कुनो कुंन क़ज़ा क़ज़ी वेख वखाईआ। गोबिन्दे गुलेज़ज़ जिसता परवरदिगारे निशचा, मुहब्बते मबा, प्यार सिख दा, सिख दे पिच्छे बच्चे आपणे भेंट कराईआ। भरवासा इक दा, जो लेख सब दे लिखदा, अक्खां नाल नहीं जगत दिसदा, करे खेल गुर अवतार पैगम्बरां नाल नित दा, जुग चौकड़ी सब दा जन्म जित्तदा, यथार्थ आपणा खेल वखाईआ। गोबिन्द प्यार नहीं कीता किसे इक दा, चार वरनां भेव खोल्या विच दा, जिथ्थे पुरख अकाल तन वजूद विच टिकदा, आत्मा तों परमात्मा हो के कदे नहीं भिटदा, ज़ात पात दा झगड़ा दिता मुकाईआ। गोबिन्द किहा मेरा गुरसिख मेरा दुध्ध कदे नहीं फिटदा, फुटकल रूप ना कोए वटाईआ। गुरु गोबिन्द कोई रूप नहीं सी पत्थर इट्ट दा, इक्को जोत जो पुरख अकाल विच्चों प्रगटाईआ। गुरसिखां नाल मेला कर के गया नित दा, जुग चौकड़ी दा डेरा ढाहीआ। जे कोई रूप बण जाए गोबिन्द दे सच्चे सिख दा, गोबिन्द ओसे विच समाईआ। क्यों गोबिन्द गुरमुख प्रेम विच विकदा, जगत वणजारिआं हथ्थ किसे ना आईआ। उहदा रूप नहीं किसे मुन रिख दा, जो माले मणक्यां वाले भुआईआ। ओह सुत दुलारा ओस पुरख अकाल पित दा, जिस नूं पतिपरमेश्वर कहके गुर अवतार पैगम्बर रहे गाईआ। ओस झगड़ा नहीं पाया कोई मिस्स दा, ख़ालस चार वरन दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। मुहम्मद ने हक़ सलाम दा दिता होका, कुरह क़ुरान वाला जणाईआ। गोबिन्द ने शत्री ब्राह्मण शूद्र वैश नूं इक्ठा दिता मौका, जट्ट झीवर छींबे सारे दिते मिलाईआ। इक्को पुरख अकाल दी दस्स के जोता, जगत जुगीशरां तों परे कीती पढ़ाईआ। जिस दी बुद्धी विच कर ना सक्कया कोई सोचा, समझ विच समझ ना कोए रखाईआ। गोबिन्द ने गुरमुखां पिच्छे आपणे बच्चयां दी भेंटा करके लोथा, तन वजूद झगड़ा दिता मुकाईआ। गुरसिख दा साचा सरीर समझ के कोठा, आपणा आसण दिता जमाईआ। एसे

कर के पहलों अमृत पंजां प्यारयां दिता बहुता, प्रेम नाल छकाईआ। फेर हो के उन्हां जोगा, हथ्थ उन्हां अग्गे डाहीआ। गुरसिखो मैं पुरख अकाल दा सिख ते गुरसिख होवे ओस दा पोता, बंस गोबिन्द नज़री आईआ। गोबिन्द किहा गुरसिखो कोई रखणा नहीं रोज़ा, वंड के खाणा तुहाडी रीती दिती बणाईआ। निरगुण धार बदल के चोगा, चोरां यारां ठग्गां वेख वखाईआ। मेरे सिर ते कोई चोटी वाला नहीं होणा बोदा, क़दम चल ना पन्ध मुकाईआ। निर्मल धार हो के जोता, शब्दी शब्द खेल कराईआ। साचे प्रेम दी दे के ओटा, ओड़क आपणा रंग रंगाईआ। गुरसिख रहिण ना देवां कोई खोटा, खोटे खरे लवां बणाईआ। सब नूं दस्सां सतिगुर शब्द इक्को बहुता, बहुते गुरूआं दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए वखाईआ। करबला कहे मेरा खेल वेख गए घबरा, घर घर पई दुहाईआ। गढ़ी चमकौर कहे गोबिन्द मेरे विच कीती दुआ, पुरख अकाल ध्यान लगाईआ। तेरी अमानत तेरे दर देवां पुचा, साची सेवा लोकमात कमाईआ। मुहम्मद किहा मेरे ख़ुदा, तेरा नाम दुहाईआ। क्यों प्रेम वाले कीते जुदा, जुज़ हिस्सा वंड वंडाईआ। गोबिन्द बच्चे भेंट चढ़ा के दो हथ्थां ख़ाली दित्ता वजा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। जो कुछ तेरा तेरी झोली दिता पा, आपणा पल्लू ल्या छुडाईआ। ना कोई घर रिहा गराँ, ना कोई मन्दिर मकान दिसाईआ। ऐ प्रभू मैनूं गुरसिखां दे अंदर सोहणा लग्गे थाँ, जिथ्थे आसण लाईआ। जींवदयां जपावां तेरा नाँ, मरन तों पिच्छों आत्मा तेरे विच मिलाईआ। क्यों तूं सब दा पिता माँ, गुरमुख तेरी गोदी देणे टिकाईआ। मुहम्मद कहि के गया तुहानूं मक़बरिआं विच देवां सुवा, कफ़न क़बरां वाला टिकाईआ। जिस वेले अन्त क़िआमत जावे आ, क़िआमगाह बणे लोकाईआ। मेरा अमाम आवे वेस वटा, जल्वागर वेस वटाईआ। ओस अग्गे मैं फेर करां दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। इन्हां सुत्यां नूं लै जगा, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिन्हां नूं मैं नहीं सक्कया मिला, तूं आपे आपणे विच रखाईआ। गोबिन्द किहा गुरमुखां दी पकड़ां बांह, धुर दा साथी आप हो जाईआ। कोट जन्म दे बख़्श गुनाह, चुरासी वाला फंद कटाईआ। सचखण्ड दुआरे दयां बहा, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस ने प्यार मुहब्बत विच कहि दिती हां, हरि दे पौड़े दयां चढ़ाईआ। निथाव्याँ देवां थाँ, निमाणयां होवां सहाईआ। पतित पापीआं देवां तरा, अपराधीआं रंग रंगाईआ। जिस प्यार मुहब्बत विच इक वार सीस दिता निवा, नौवां खण्डां तों लेखा दयां मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाईआ। करबले विच होई हाहाकार, सिपा सालार देण दुहाईआ। गोबिन्द दे सिंघ मार के ललकार, शहीदी खुशीआं वाली पाईआ। जिस वेले झूजे अजीत जुझार, गोबिन्द चिल्ला हथ्थ उठाईआ। फेर रख के दस्त उत्ते कटार, खण्डा खड़ग ल्या चमकाईआ। आह

वेख मेरे निरँकार, तैनूं दयां वखाईआ। जे कोई मेरा इक सिख करदा होवे गिरयाज़ार, दकुखां विच कुरलाईआ। अग्गे तों मैं गुरसिखां नाल कदे ना करां प्यार, तेरी जोत विच डेरा लाईआ। मैं अमृत दित्ती उह धार, जिस ने धरनी धरत धवल दिती सुहाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द एह गुरमुख थोड़ा चिर रहिण विच संसार, फेर नीती जाण बदलाईआ। अमृत छक के करन दुराचार, नार वेसवा जगत हंढ्ढाईआ। धर्म दवारिआं विच करन विभचार, आपणी पत गुआईआ। गोबिन्द किहा पुरख अकाल मैं फिर आवां दूजी वार, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। आपणे नाम दी मार के मार, अंदरों सब दी करां सफ़ाईआ। एह खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणे नाल रखाईआ। मुहम्मद दा कलयुग नाल प्यार, गोबिन्द दा लहिणा पुरख अकाल, एह खेल जगत बेमिसाल, जिस दी मिसल असल विच ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जगत बुद्धी तों दिसे बाहर, अनभव विच अनदृष्ट दृष्टी गरमुखां दए खुलाईआ।

३९५
२१

❊ २ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

पुरख अकाल सब दा पूरा करे कौल, काल महाकाल बैठे सीस निवाईआ। लेखा जाणे उपर धरनी धरत धौल, धवल वेखणहारा बेपरवाहीआ। जो हर घट अंदर रिहा मौल, मौला हो के दया कमाईआ। जिस गोबिन्द ने अमृत धार बख़्शी पाहुल, बिना रसना रस चखाईआ। जिस खेल खेलिआ साँवल सुंदर सौल, मुकन्द मनोहर लख़मी नरायण नाउँ धराईआ। ओस दा भेव जाणे कोई ना पंडत पांधा रौल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा दए उठाईआ। धुर दा परदा कहे मैं जाणा लथ्थ, हरि देवे माण वड्याईआ। लहिणा देणा पूरा करे पुरख समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गाउँदे आए गथ, गुर अवतार पैगम्बर सोहलयां ढोल्लयां रागां नादां विच सुणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी खेल करे दो जहानां सच, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया पार कर के हद्द, हदूद इक्को इक दए समझाईआ। धर्म दुआर एकँकार सन्त सुहेले सज्जण सद्द, सूफ़ी सन्तां जोड़ जुड़ाईआ। दीन दुनी नालों कर के अड्ड, मार्ग आपणा इक वखाईआ। जिथ्थे तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गावे जस, वेद पुराणां लोड़ रहे ना राईआ। जगत समाज समग्री होवे बस, बस्ता विद्या पुस्तक दए बंधाईआ। इक्को नाम निधान श्री भगवान लए रट, दूजी अवर ना कोए सिखलाईआ। नाड़ बहत्तर उबले

कोई ना रत्त, रतन अमोलक हीरे लए उपजाईआ। निर्मल बबेक बुद्धी कर के मति, मस्त मस्ताने लए बणाईआ। अन्तर बाहर गृह भीतर जाणे मित गत, गहर गम्भीर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडे वेख वखाईआ। दर ठंडा कहे मैं आदि जुगादी एक, एकँकार दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे साची टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। दरगाह साची वेखां अगम्मा देस, दूजी दिशा वंड ना कोए वंडाईआ। जिथ्थे परम पुरख परमात्म रहे हमेश, सच सिँघासण बैठा सोभा पाईआ। तिस निउँ निउँ करां आदेस, डंडावत बन्दना सजदा कहि के आपणी ख़ुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अगम्मी आप वरताईआ। वस्त अगम्मी कहे मेरा ना कोई रूप, रंग रेख समझ कोए ना आईआ। मेरा खेल सति सरूप, सति सतिवादी लए प्रगटाईआ। मेरा मालक शाहो भूप, हरि शहिनशाह अख्वाईआ। मैं फिरां चारे कूट, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण भज्जां वाहो दाहीआ। लहिणा देणा मैं चुकावां पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश परदा दयां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, रंग साचा देणा रंगाईआ। रंग कहे मेरा रंग अनोखा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी पुरख अकाल देवे कदे किसे ना धोखा, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। आपणा मार्ग दस्स के सौखा, हरिजन साचे लए मिलाईआ। पढ़ना पए कोई ना पोथा, जगत विद्या ना कोए हल्काईआ। कर प्रकाश निर्मल जोता, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। दुरमति मैल पाप जाए धोता, पतित पुनीत आप कराईआ। सन्त सुहेला रहे कोई ना खोटा, खोटे खरे आप बणाईआ। जीवदयां जग देणा पए ना किसे महोछा, मरिआं भेंट ना कोए कराईआ। झगड़ा मुका के मातलोका, परलोक आपणा रंग रंगाईआ। साचा दे के नाम सलोका, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची सोभा पाईआ। दर घर साचा सोभावन्त, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म मेल मिले नार कन्त, कन्तूहल इक्को नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना बहिश्त जन्नत, स्वर्ग संग ना कोए निभाईआ। इक्को नाम निधाना गा के मंत, मंतव आपणा हल्ल कराईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। गुरमुख सज्जण बणा के सन्त, सति सतिवादी वेख वखाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक उपजाईआ। जगत प्यार बणा के बणत, बसन बनवारी वेख वखाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, जगत विद्या तों परे करे पढ़ाईआ। जिस दे कोल चार जुग दी सनद, भगत सुहेले लए उठाईआ। दे के नाम निधान अन्त, अनन कलधारी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचा इक सुहाईआ। दर

घर साचा सच सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाईआ। किरपा कर पुरख निरँजणा, निरवैर वेख वखाईआ। दाता दानी बण दर्द दुःख भंजना, भव सागर पार कराईआ। नाउँ नाम निरँकारा पा के अंजना, नेत्र अक्ख खुल्ह्राईआ। सतिगुर साहिब बण के सज्जणा, गुरमुख मेला लए मिलाईआ। रंग अनडिठ चाढ़ के रंगणा, रंगत इक्को दए प्रगटाईआ। पुरख अकाल दस्स के आपणी बन्दना, बंधन शरअ दए तुड़ाईआ। जोती नूर चाढ़ के चन्दना, अन्ध अज्ञान दए गवाईआ। साची गोदी चुक्कके अंगणा, अंगीकार आप अख्वाईआ। दूई द्वैती ढाह के कंधणा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। आत्म परमात्म सच दुआरे जिस दा होवे मँगणा, तन वजूद माटी ख़ाक वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबंगणा, सूरबीर धुरदरगाहीआ। साहिब सतिगुर सूरबीरा, हरि सज्जण इक अख्वाईआ। जिस दा नज़र ना आवे बस्तर तन कोई चीरा, चारों कुण्ट खेल खिलाईआ। जो बदल देवे जन्म मरन तक़दीरा, तदबीर आपणी इक दृढ़ाईआ। गुरमुख सिख बणाए हीरा, माणक आपणा आप उपजाईआ। अमृत रस दे के सीरा, अगनी तत दए गवाईआ। साचे सगन दा पा कलीरा, कायनात विच्चों परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म दा बन्न्ह के बीड़ा, बेड़ा वेखे थाउँ थाईंआ। बेड़ा कहे मैं जुग जुग बज्झा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। जगत वासना लैंदा रिहा मज़ा, मज़ाक़ विच वेखी ख़लक ख़ुदाईआ। सब दे सिर ते कूकदी क़ज़ा, काल कसाई डंक रिहा वजाईआ। गुरमुख विरला चले प्रभ दी रज़ा, राज़क़ रहीम इक्को लए मनाईआ। माया ममता कूड़ी क्रिया छड्डे दग़ा, दाग़ तन वजूद दए वखाईआ। उन्ह्रां गुरमुखां दो जहान वधे अग्गा, आगमन विच गुर अवतार पैगम्बर ख़ुशी मनाईआ। दर सोहे उपर शाहरगा, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। सच दुआर एकँकार देवे अगम्मी जगह, अस्थान भूमिका धुर दी नज़री आईआ। जिस दी कोई समझ ना सके वजह, वज़ाहत विच ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जिन्ह्रां नाम निधाना गाना बद्धा, सगन धुर दा इक मनाईआ। सगन कहे मैं धुर दा मीता, हरि करता दए वड्याईआ। जिस कलयुग विच सतिजुग बदली रीता, राती रुतड़ी वेख वखाईआ। पिछला लहिणा देणा गुर अवतार पैगम्बरां नाल बीता, बीती कहाणी ना कोए दृढ़ाईआ। अग्गे पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार आपणा हुक्म चलावे ठीका, ठाकर हो के वेख वखाईआ। मार्ग पन्थ दस्से नीकण नीका, निरवैर हो के आपणी खेल खिलाईआ। भेव जाणे साध सन्त जीव जी का, घट घट अंदर फोल फुलाईआ। सति सच बख़्शे आपणी प्रीता, प्रीतम हो के दया कमाईआ। नाम रस निझर बरसे मीठा, अनडिठ आपणी खेल खिलाईआ। करवट लै बदल लए पीठा, सन्मुख हो के नज़री आईआ। साचे नाम दी

दे हदीसा, हरि हज़रत करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा मनसा सब दी पूरी करे उम्मीदा, निरासा नज़र कोए ना आईआ। उम्मीद कहे मैं आसा तक्की, तकवा इक रखाईआ। दरस पावां साहिब सुल्तान हक़ी, जो हक़ीक़त दए समझाईआ। सदी चौधवीं सृष्ट सबाई हो गई शक्की, शिकवा सके ना कोए चुकाईआ। मैं चार कुण्ट दह दिशा निरगुण धार हो के नस्सी, भज्जी वाहो दाहीआ। साची मंज़ल इशारे नाल किसे ना दस्सी, परदा सक्कया ना कोए उठाईआ। दीनां मज़हबां ज़ातां पातां विच दीन दुनी फसी, फ़ैसला हक़ ना कोए सुणाईआ। एसे कर के जून प्रगट हो के वधदी जाए इक लख हज़ार अस्सी, हाकण डाकण वेस वटाईआ। जेहड़ी रीत नानक निरगुण धार दस्सी, साची प्रभ दे नाल कुड़माईआ। उह समझ किसे ना लग्गी अच्छी, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। जिंनां चिर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिले ना कमलापती, जगत सन्त कन्त मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरे दए वड्याईआ। सच दुआरा हरि वेखे आप, धुर करता वड वड्याईआ। जन भगतां दस्स के अगम्मा जाप, जगजीवण दाता वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे संताप, सति साचा चन्द चमकाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर गए आख, मनसा सब दी पूर कराईआ। आत्म परमात्म सृष्ट सबाई सांझा कर के पाठ, पाठशाला इक्को लए प्रगटाईआ। सति धर्म दा खोल्ह के हाट, नाम भण्डारा देवे चाँईं चाँईंआ। मेल मिला के लोकमात, धरनी धरत धवल खुशी मनाईआ। सच दुआरा गुरमुखां दा साचा साक, मनमुख संग ना कोए रखाईआ। प्यार मुहब्बत विच इक दूजे दे रहिण दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा साचा दे विश्वास, विशा कूड़ा दए गवाईआ।

३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल

कोटन कोटि अस्सू बीते, बातन ध्यान इक लगाईआ। राह तकदे गए हरि जगदीशे, जगदीशर मिले बेपरवाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीते, आसा मनसा नाल वधाईआ। निरगुण धार करदे रहे उडीके, राह रहिबर वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो दस्स के गए तरीके, तऱां तऱां नाल जणाईआ। भेव भाउ खुल्हौंदे रहे हरी के, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। लेख दस्सदे गए जीव जीअ के, कर्म धर्म जन्म विच समझाईआ। नाम कलमा पढ़ाउंदे गए हदीसे, धुर संदेसा इक सुणाईआ।

इशारा देंदे गए बीस बीसे, बहिस विच नाम शब्द शनवाईआ। पुरख अकाल आवे नीचे, निरवैर निराकार वेस वटाईआ। लख चुरासी जीव जंत वेखे बग़ीचे, चारे खाणी फोल फुलाईआ। जन भगतां चाढ़े रंग मजीठे, निरगुण धार उतर कदे ना जाईआ। भेव खुल्हाए साहिब अनडीठे, अनडिठड़ी कार कमाईआ। गोबिन्द दा लहिणा देणा पूरा करे कौल अन्त इक़रार अंगीठे, अगनी तत अगन वड्याईआ। साचे नाम दा शब्दी धार करे टीके, टीका टिप्पणी रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुकावे सिल पत्थर पाहन ईंटे, छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। लहिणा देणा लेखे लावे तीर्थ तीटे, तट किनारे मिले वड्याईआ। जन भगतां नाल प्रेम प्रीती गंढु पीचे, पेचीदा आपणा राज़ समांईआ। लख चुरासी जीव जंत चीके, चार कुण्ट कुरलाईआ। शाह सुल्तानां ख़ाली होवण ख़ीसे, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। जगत जहान दी बन्द करे फ़ीसे, सतिगुर नाम हट्ट ना कोए विकाईआ। दीन दुनी कूड़ कुड़िआर पीसे, पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। साचा छत्र झुल्ले इक जगदीशे, चार कुण्ट वज्जे वधाईआ। सृष्टी दृष्टी होवे भय भीते, भय भउ इक्को वेख वखाईआ। लहिणा देणा चुकावे पिछले जुग बीते, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। लहिणा देणा देवे जन्म कर्म जो कीते, क़ुदरत दा मालक वेख वखाईआ। साचा नाम प्रगटाए अगम्मी गीते, गहर गम्भीर आप सुणाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीते, हरिभगत दुआरे नूर करे रशनाईआ। त्रैगुण माया हो अतीते, त्रैभवण धनी आपणी खेल खिलाईआ। सति धर्म दी सच चलाए रीते, रीती धुर दी आप प्रगटाईआ। गुरमुख साचे करे ठांडे सीते, अगनी तत ना कोए जलाईआ। दीन दुनी वेखे चुप चुपीते, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। हरिजन बण के धुर दे मीते, मातर भूमी होए सहाईआ। थान सुहाए बिन जगत कालीन गलीचे, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। चरण टिकाए ओस दहलीज़े, जिथ्थे नूर करे रुशनाईआ। हरिभगत बणा आपणे अज़ीज़े, बाल अन्जाणे गोद टिकाईआ। साचे नाम दी दे तमीज़े, तमअ अंदरों दए गवाईआ। निज नेत्र लावे नीझे, निरअक्खर कर पढ़ाईआ। मार्ग दस्से धुर दे सीधे, सिद्ध साधना इक अख्वाईआ। जगत हया मिटाए नैण दीदे, दीदा दानिस्ता नज़री आईआ। साचा नूर चन्द चमके अगम्मी ईदे, अदम तशदद् झगड़ा दए मुकाईआ। लहिणा देणा पूरा करे क़ुरान मजीदे, शरीफ़ शुरफ़ा वेख वखाईआ। निरगुण धार वस नज़दीके, निरवैर परदा आप उठाईआ। झगड़ा मिटा के हस्त कीटे, काया कुटिआ लए बदलाईआ। मिट्ठे करे कौड़े रीठे, रस अमृत नाम भराईआ। हरिजन रहिण सदा सद जीते, जन्म मरन कटाईआ। जगत विकार चढ़े कोई ना चिखा चीते, चेतन सब नूं आप कराईआ। अमृत नाम रस जिन्हां प्याले पीते, प्रीतम हो के लए उठाईआ। जिस दी याद विच नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग बीते, बातन लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। जिस दी धार बारीके, पतिपरमेश्वर आपणी कार कमाईआ।

कलयुग कूड़ी क्रिया मेट शरीके, शिरकत अंदरों दए गवाईआ। चार जुग दे पिछले वेखे वसीके, परदा उहला आप उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो दस्स के गए ठीके, ठाकर हो के पूर कराईआ। जो चार जुग कागज़ कोरे रखे चीटे, लेख अगम्मा दए लिखाईआ। सदी चौधवीं जगत विद्या रही पीटे, पटने वाले अग्गे इक दुहाईआ। गुरमुख दुध्ध कदे ना फीटे, फुटकल दिसे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरी वजदी रहे वधाईआ। कोटन कोटि अस्सू लँघे, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर देंदे रहे संगे, समां समें नाल सुहाईआ। जुग चौकड़ी रहे मँगे, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबंगे, तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल वेख्या गोबिन्द धार पुरी अनन्दे, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। अमृत रस चख्खया विच्चों खण्डे, खड़ग खण्डा सोभा पाईआ। मंज़ल तेरी चढ़े डंडे, डंडावत इक्को दिती जणाईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्तिम कन्ढे, किनारे मिले ना कोए वड्याईआ। वेखे खेल विच वरभण्डे, ब्रह्मण्ड फोल फुलाईआ। जन भगतां भार चुक्के आपणे कंधे, बोझल कूड़ी दिसे लोकाईआ। नाम निधाना दस्से धुर दा चन्दे, सोहँ ढोला इक समझाईआ । अमृत धार वहाए गंगे, गहर गम्भीर परदा आप उठाईआ । माण रखाए गोबिन्द कन्धे, काल महाकाल बैठण सीस निवाईआ। लेखे लावे नीले मँगे, आसण पलाणा सिँघासण दए वड्याईआ। लहिणा देणा चुकाए तारा चन्दे, सत्ा सितार वेख वखाईआ। जन भगतां बजर कपाटी खोल्े जिंदे, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। सन्त सुहेले कर के बन्दे, बन्दगी डंडौत इक जणाईआ। साचे नाम दा दे के परमानंदे, परम पुरख खोज खुजाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे हँ ब्रह्मे, ब्रह्म हँ मेल मिलाईआ। नेत्रहीण गुरमुख मूल रहिण ना अन्धे, अन्ध अन्धेरा दए चुकाईआ। काया माटी भाण्डे तन वजूद चोली रंगे, रंगत आपणी इक चढ़ाईआ। चार कुण्ट कराए दंगे, दंगल वेखे कूड़ लोकाईआ। माण मिटाए जगत तरंगे, सत्त रंगे आपणे रंग रंगाईआ। गुरसिख रहिण ना देवे दो रंगे, धर्म दी धार इक जणाईआ। दूजा दर कदी ना मँगे, मांगत हो ना झोली डाहीआ। लेख मुकावे विद्या पंडे, बोध अगाध करे शनवाईआ। धर्म निशाना इक्को टंगे, दो जहानां लहर लहराईआ। मंज़ल पौड़ी चाढ़ के डंडे, डर भय भउ दए मिटाईआ। सच दुआरा इक्को लँघे, सच सिँघासण डेरा लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिथ्थे रहन्दे, किरत कर कर खुशी मनाईआ। ओथे कलयुग जीव रहिण ना देवे मूर्ख मूड़ दरिंदे, दर दुआरे दए हटाईआ। माण रहे ना किसे परिंदे, गोबिन्द बाज़ दए गवाहीआ। पुरख अकाल कोई ना निंदे, निन्दक नईआ नौका दए डुबाईआ। करे प्रकाश जीउ पिंडे, पंज भूतक सोभा पाईआ। जो सन्त सुहेले गुरमुख जुग जुग दे खिण्डे, फड़ फड़ बाहों लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, सच साची कार कमाईआ। अस्सू कहे कोटन कोटि अस्सू मुके, मुकम्मल भेव कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के गए रुक्के, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी अक्खरां नाल लिखाईआ। एके उत्ते मारदे गए दुक्के, दूआ एका करे लड़ाईआ। पुरख अकाल लुक्या रिहा गुट्ठे, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पा के राह पुठ्ठे, आपणे नाम नाल नाम दिता टकराईआ। प्रेम खुमारी दे के घुटे, घाट अगला दिता जणाईआ। जिथ्थे प्रीत कोई ना टुट्टे, गंढुणहार आप हो जाईआ। खेल करे अबिनाशी अचुत्ते, पारब्रह्म मेल मिलाईआ। जिस वेले चाहवे बदल देवे रुख़े, रसते बसतिआं विच बंधाईआ । भाग लगावे रसना जेहवा मुक्खे, मुख तों बाणी सिफ्तां नाल सालाहीआ । सन्त मनी सिँघ नौ दिन रोंदा रिहा पिंड बड्डुक्खे, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पुरख अकाल हुंदा रिहा गुस्से, धुर संदेसा इक जणाईआ। मेरा भार कवण चुक्के, कन्धा लए उठाईआ। मनी सिँघ चरण कँवल घुट्टे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सूरबीर दिसे ना कोई बिना तेरे गोबिन्द सुत्ते, साडी चले ना कोए चतुराईआ। असीं साध सन्त नाम पंजाली फड़ के जुते, जोतरे वाला हल्ल मैथों क़लम रिहा चलाईआ। जे मैनूं सच पुच्छें, पारब्रह्म तेरा भेव कोए ना पाईआ। पुरख अकाल किहा मनी सिँघ जिस वेले मैं आया गोबिन्द जुस्से, जिस्म इस्म बदलाईआ। जगत जन्म दे विछड़े मेलां रुसे, रस्सी डोरी नाम बंधाईआ। ओधरों भौंक पए दो कुत्ते, कूक कूक सुणाईआ। प्रभू साडी डोर तेरे नालों ना टुट्टे, साडे हिरदे लई अंगड़ाईआ। धर्म राए टंगे कोई ना पुठ्ठे, अग्गे मिले ना कोए सज़ाईआ। ऐस जन्म विच गए लुट्टे, अग्गे होणा आप सहाईआ। जे गुरमुख करने इक मुट्ठे, सानूं लैणा नाल मिलाईआ। तेरी धार विच परोते, परौहणे आपणे लैणा बणाईआ। पुरख अकाल किहा मैं आउणा जगत रुत बरुते, छे रुत भेव कोए ना पाईआ। किसे समझ नहीं आउणी चोटी गुत्ते, गौतम रो के दए दुहाईआ। जेहड़े मार्ग रसत्यों घुँसे, मंजल पन्ध ना कोए चुकाईआ। गुरमुखां दे के साचा सुक्खे, सुख सागर विच टिकाईआ। खा के टुक्कर रुक्खे, रस्ता वेखण चाँईं चाँईंआ। दो जहान ओथे झुके, सिर सर इक निवाईआ। चरण कँवल प्रभ छोह के, शहिनशाह मिल के मिले वड्याईआ। निरगुण धार सरगुण हो के, सरगुण निरगुण वेख वखाईआ। जन भगतां दुरमति मैल धो के, पतित पुनीत आप कराईआ। जेहड़े मातलोक गए रो के, उन्हां दा लहिणा झोली पाईआ। जो जग नेत्र गए सौं के, अक्ख प्रतख ना कोए खुल्हाईआ। झगड़े मुका दे इक दो के, तूं मेरा मैं तेरा सच जणाईआ। साचा अमृत जावे चो के, रस निझर इक वहाईआ। सब दे कोलों नाम भण्डारा जावे खोह के, धर्म दुआरा इक्को इक प्रगटाईआ। जन भगतां कोलों कुछ ना रखे लको के, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। देवे नेत्र आपणी लो दे, लोचन अंदरों इक खुल्हाईआ। जैकारे दस्स

के सोहँ सो दे, सुत्यां लए जगाईआ। झगड़े मुका दे जोजन जगत कोह दे, कोहतूर डेरा ढाहीआ। जन भगतां दे सन्मुख खलो के, खुल्ल्हे दर्शन दए कराईआ। साचा बीज जावे बो के, पत्त टहिणी फल फुल्ल आप महकाईआ। साचे तागे जाए परो के, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। दुरमति मैल जावे धो के, पतित पुनीत आप कराईआ। जन भगतां जिहा हो के, होका नाम दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साचा ढोआ देवे ढो के, ढोल मृदँग अनन्द आपणा नाम जणाईआ।

✻ ७ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

गुरमुख साचा नाम करन ग्रहण, ग्रहण सुर्या ना कोए वड्याईआ। मिटे अंदरों अन्धेरी रैण, चन्द अन्धेर ना कोए वखाईआ। नेत्र पेखण आपणे नैण, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। दर्शन होवे नर नरायण, निहकरमी पर्दा लाहीआ। भरम रहे ना कोए हिन्दवैण, हिन्दू हिन्दसा इक जणाईआ। बाल्मीक इशारा कीता विच रमायण, रामा राह तकाईआ। कृष्ण अर्जन लग्गा कहिण, नाम संदेसा इक दृढ़ाईआ। जो परम पुरख तों होए तरफ़ैण, नाता भगवन नालों तुड़ाईआ। उन्हां अमृत रस मिले ना कोए कामधेन, ऐराप्त ना कोए चतुराईआ। भेव खुल्ल्हे ना कोए ऐन, रसाइन हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। ग्रहण सुर्या उपर साया, साएबान उपर फ़लक नज़री आईआ। एह खेल बेप्रवाहिआ, पारब्रह्म आप कराईआ। जिन्हां तोड़े नाता त्रैगुण माया, ममता मोह चुकाईआ। साचा नाम दए सुणाया, सुन्न समाधी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। आपणा गृह दए वखाया, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। जिथ्थे सुर्या चन्द नज़र कोए ना आया, नछत्र वंड ना कोए वंडाईआ। मण्डल मण्डप पन्ध मुकाया, गगन गगनंतर लेखा आप मुकाईआ। जिस गृह गुरमुख रिहा वसाया, वस्त आपणी इक जणाईआ। ओथे ग्रहण ग्रहा विच कदे ना आया, नेत्र अक्ख ना कोए दरसाईआ। जगत विद्या लेखा दिसे पराया, पारब्रह्म प्रभ आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पक्खां जगत वंड वंडाईआ । सच ग्रहण जो ग्रहण करे हरिदेव, हरि करता नज़री आईआ। एह धरनी दी सेव, धवल विच दुहाईआ। ब्रह्मा दी कथनी जेहव, वेदां विच वड्याईआ। पुरख अकाल लेखा सदा निहकेव, निहचल आसण इक वखाईआ । जिस नूं गा ना सके रसना जेहव, बत्ती दन्द ना सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सच ग्रहण जगत दी धुज, धुरा धर्म ना कोए वड्याईआ। जगत

विद्या खेल जुग, जुग चौकड़ी मात चली आईआ। जिस धारों सारे रहे उग, उगण आथण वज्जे वधाईआ। उस दी समझ दस्से ना कोई कुझ, परदा भेव ना कोए खुल्हाईआ। नौ वार ग्रहण वेख के रोया बुध, नेत्र नैणां नीर वहाईआ । मेरे अन्तर लग्गा दुःख, दर्द दए दुहाईआ। पुरख अकाल मैथों पुच्छ, सच दयां सुणाईआ। क्यों जगत कनक्क नूं सारे रहे झुक, तैनूं सीस ना कोए निवाईआ। किसे कोल नहीं कुछ, सुर्या नेत्र रो के मारे धाहीआ। चन्द्र चन्द ना सके उठ, परदा परे ना कोए हटाईआ। तेरी धारा खेल उलट्ट, सिद्धी साध ना कोए वड्याईआ। तेरा खेल क़दीमी मुढ्ढ,, भेव सक्कया कोए ना पाईआ। जगत निगाह असमानां विच रही उड, अन्तर निरंतर तेरा दरस कोए ना पाईआ। मसीह ग्रहण वेख के किहा गुड, गौड गोल्डन तेरी इक सरनाईआ । जेहड़े सड़दे नाल वुड, विडो दिसे जगत लोकाईआ। बीते पिच्छे जुग, झगड़यां विच दुहाईआ। करदे रहे युद्ध, युधिष्टर गया सुणाईआ। कृष्ण उपर कर के मुख, रसना दिता सुणाईआ। एह खेल कारण टुक, बुद्धिवानां वंड वंडाईआ। टुक दे बदले जिन्हां पैणी कुट्ट, काया कुटिआ मिले सज़ाईआ। खाली भाण्डे वेखणे ठुड्ठ, ठाकर ठूठे फोल फुलाईआ। जिस दी सिफ्त करदे बत्ती दन्द बुल्लां नाल बुॅट, महिमा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। जगत विचार ग्रहण वसीह, धर्म धर्म विच दुहाईआ। कुछ ध्यान कर के गया मूसा मुसलसल इक वसीह, वास्ता प्रभ दे नाल रखाईआ। ऐ नूर इलाही रब्बी, रबीउल अमाम तेरी वड्याईआ। क्यों सुर्या चन्द रिहा दब्बी, भार निराला उपर पाईआ। क्यों खेल तेरा काया माटी हड्डी, नाड़ी मास जणाईआ। इक ज़िमीं ते मार के अड्डी, वास्ता दिता पाईआ। सच खुदा क्यों तेरी सब तों छुट्टी गद्दी, गदागर दिसे लोकाईआ। तूं आवें कदी कदी, क़दीम दे मालक धुरदरगाहीआ। क्यों पाणी पूजा हुंदी नदी, वहिणां विच वहाईआ। मैनूं दिसदा तेरा लेखा वीहवीं सदी, सदमा सब नूं रिहा वखाईआ। किसे नूं पता नहीं केहड़ी कीती बदी, बदला वेखे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए खुल्हाईआ। जगत ग्रहण जगत अन्धेरा, अन्धला अन्ध वखाईआ। मुहम्मद बिन काअबिउँ ला के डेरा, सफ़ा सूफ़ीआं वाली विछाईआ। चौदां तबकां केहड़ा गेड़ा, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। पिच्छे भरम रिहा बथेरा, भुलेख्यां विच लोकाईआ। प्रभू किसे इष्ट ना मन्नया तेरा, देवी देवतिआं सीस निवाईआ। सुर्या चन्द करे ना कोए नबेड़ा, मंज़ल हक़ ना कोए पुचाईआ। साहिब स्वामी कर हक़ निबेड़ा, निरवैर तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। जगत ग्रहण जगत जिज्ञासू, जुगीशर दिती वड्याईआ। नाले पूजा करदे नाले पींदे तमाकू, राम काम दोवें कम्म किसे ना आईआ। जगत विद्या बण के डाकू, डावांडोल कीती

लोकाईआ। लेखा लिख्या मुनीश्र बासू, वासदेव हुक्म सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जगत भरम ग्रहण सब दा साकू, सज्जण रिषीआं नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दए उठाईआ। जगत ग्रहण गृहस्ती धार, रिषीआं वड वड्याईआ। सुर्या चन्द करन पुकार, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। साचा होए सुधार, सुदी वदी ना वंड वंडाईआ। किरपा करे करतार, क़ुदरत दा मालक दया कमाईआ। जिस दे हुक्म अंदर जुग चार, मंज़ल मंजल आपणा पन्ध मुकाईआ। सो खेल करे करतार, करनी दा करता आप हो जाईआ। जगत ग्रहण जग विचार, विच्चर के गए सुणाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले ग्रहण अर्थ तों सदा बाहर, अर्थात अथवा जिस नूं इक्को दिता जणाईआ। जिथ्थे सचखण्ड दरबार जोत जगे एकँकार, दीआ बाती ना कोए उज्यार, गुर पैगम्बर ना कोए अवतार, सुर्या चन्द ना कोए चमत्कार, धरनी धरत धवल ना कोए आकार, दानी मँगता ना कोए भिखार, रसना बोले ना कोए उच्चार, जेहवा करे ना कोए गुफ्तार, दिने होए ना कोए गिरफ्तार, परदा सके ना कोई डार, पंडत पांधा पावे कोई ना सार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण जानणहार, जिस दर बैठे आप सच्ची सरकार, सरोवर सरासर जन भगतां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल आप करतार, करनी दा करता एका एक अख्वाईआ।

४०४ २१

✻ १३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ सुरजीत सिँघ दे गृह पिंड फ़ैज़पुर बटाला ज़िला गुरदासपुर ✻

सतिगुर शब्द चौधवीं चन्दा, सदी सदी दए गवाहीआ। नूरी इस्म दिसे कोई ना बन्दा, बन्दगी विच बंधन ना कोए तुड़ाईआ। मानव रिहा कोई ना चंगा, मानुख रंग ना कोए रंगाईआ। मुहम्मद धार अख़ीरी कन्ढा, वेला वक्त वज्जे वधाईआ। बिन पुरख अकाल कूड़ा धन्दा, धर्म दी धार समझ किसे ना आईआ। कलयुग जीव जगत जहान नंगा, ओढुन नाम सीस ना कोए टिकाईआ। गोबिन्द घर ना आए कोई खण्डा, खड़ग हथ्थ ना कोए उठाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना डंडा, डंडावत विच सीस ना कोए झुकाईआ। ब्रह्म विद्या रिहा कोई ना पंडा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे कुरलाईआ। अमृत धार वहे ना गंगा, जल थल महीअल नेत्र रोवे मारे धाहीआ। आत्म परमात्म बणया कोई ना संगा, सतिगुर मेल ना कोए मिलाईआ। पर्दा चुक्या ना हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रंग ना कोए रंगाईआ । सृष्ट सबाई गाउँदी रसना जेहवा दन्दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे सतिगुर

शब्द अगम्मी मीता, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जो जुग चौकड़ी बदले रीता, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस वटाईआ। जो भेव जाणे लख चुरासी जीव जी का, चार वरन अठारां बरन खोज खुजाईआ। धुर दा कलमा दए हदीसा, हज़रतां करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा जाणे बीस बीसा, सदी बीसवीं नाल मिलाईआ। जो कौल इक़रार पुरख अकाल गोबिद नाल कीता, बिन अक्खरां अक्खर बणाईआ। जग नेत्र नैणां किसे ना डीठा, लोचन वेखण कोए ना आईआ। उह करनी करे हरि जगदीशा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जेहड़ा पिछला लेखा बीता, बातन परदा दए चुकाईआ। साची करे ना कोए प्रीता, प्रीतम मिलण कोए ना आईआ। झगड़ा रिहा हस्त कीटा, ऊचां नीचां मन कल्पणा रही लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सदके घोली वारी, सतिगुर शब्द मिले वड्याईआ। साची दिसे ना कोए सरदारी, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। गुरुआं अवतारां पैगम्बरां नाल जगत करे गदारी, धर्म दी धार नज़र कोए ना आईआ। साची रही कोई ना यारी, याराना तोड़ ना कोए निभाईआ। सब दी बाज़ी अन्तिम हारी, बाज़ां वाला वेख वखाईआ। जिस दा नाम खण्डा तेज कटारी, खड़ग शब्द नाम चमकाईआ। दो जहानां पावे सारी, ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों आई जिस दी वारी, वारता सब दी वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता मोह विकार हँकार करे कारी, विभचार डेरा ढाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी मन्नदे गए ताबिआदारी, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। खेल करे वड संसारी, संसारी भण्डारी सारे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मेरा सारे करदे सौदा, बटवारे बैठे हट्ट खुल्हाईआ। झगड़ा पाया प्रभ दे नाउँ दा, अल्ला वाहिगुरु राम कहि के मानव रहे लड़ाईआ। खेल वेख्या भय भउ का, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। ज़ाती पाती बाज़ी वेखी जगत दाओ का, दर तेरे विच्चों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं रोंदे वेखे साध सन्त, फ़कीर सूफ़ी मारन धाहीआ। साचा मिल्या किसे ना कन्त, धुर दा मेल ना कोए मिलाईआ। होया विछोड़ा जगत भगवन्त, भगवन भाग ना कोए लगाईआ। गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म नज़र किसे ना आईआ। बोध अगाधा बणे कोए ना पंडत, अक्खरां दी सारे करन पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन साची बणे कोई ना संगत, नानक गोबिन्द लेखा गए बदलाईआ। शाह सुल्तान राज राजान सन्त भिखारी हो के मँगण, दर दर अलख जगाईआ। साचे नाम दा हथ्थ दिसे किसे ना कंगण, दीन दयाल गाना हक़ ना कोए जणाईआ। धर्म दुआर करे ना कोई बन्दन, बंदयां नूं बन्दना

कर के आपणा झट लँघाईआ। सब दी आशा होई नग्न, ममता मोह फिरे हल्काईआ। झगड़ा प्या विकार भजन, सच मेला ना कोए मिलाईआ। नज़री आए ना दाता दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर रुढ़दी दिसे लोकाईआ। नेत्र नाम पाए कोई ना अन्जण, अन्ध अन्धेर ना कोए चुकाईआ। बिन सतिगुर शब्द साचा रिहा कोई ना सज्जण, ठग चोर यार चारों कुण्ट बैठे धूंणीआँ लाईआ। आत्म परमात्म देवे ना कोई अनन्दन, परमानंद ना कोए समाईआ। सतिगुर धूढ़ी टिक्का मस्तक लाए कोई ना चन्दन, सुर्या चन्द निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वेख खेल विच वरभण्डण, ब्रह्मण्ड परदा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा धुरदरगाह होका, हक़ीक़त हक़ दयां दृढ़ाईआ। फिरी दुहाई चौदां लोका, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। साचा गाए ना कोए सलोका, सोहला राग ना कोए वड्याईआ। प्रभ मिलण दा मिले किसे ना मौका, जगत जिज्ञासू नेत्र नैणां दरस कोए ना पाईआ। भाग ना लग्गे काया माटी खोखा, साढे तिन्न हथ्थ ना वज्जे वधाईआ। प्रकाश दिसे ना निर्मल जोता, जागरत जोत ना करे रुशनाईआ। माया ममता विच सारे मारन गोता, फड़ बाहों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। मन बुद्धी दा लेखा होया थोथा, थिर घर बैठा सच स्वामी नज़र किसे ना आईआ। सदी चौधवीं कहे मैं लेखे लाउणी नहीं किसे दी लोथा, मिट्टी ख़ाक देणी मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वाहवा तेरी वजदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे आ बीस बीसे, सच दयां समझाईआ। पिछले चार जुग लोकमात बीते, शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी दए गवाहीआ। उस तों पिछला लेख लिखे ना कोए हदीसे, हज़रत समझ किसे ना आईआ। अन्तिम सब दे ख़ाली खीसे, नाम भण्डारा हथ्थ ना कोए रखाईआ। भेव खुल्ले ना जीव जी के, जागरत जोत ना कोए जगाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां लोकमात करनी कर्म कीते, काडां विच वंड वंडाईआ। हरि हरि नाउँ रसना जेहवा बत्ती दन्द गाया गीते, गहर गम्भीर परदा दिता उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा साचा संग निभाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा चारों कुण्ट फेरा, फिर फिर वेखां जगत लोकाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी एकँकार मार आपणा फेरा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। झगड़ा प्या मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर देहुरा, साचा रंग तेरा नाउँ ना कोए चढ़ाईआ। साध सन्त जीव जंत मन बुद्धी पाया झेड़ा, कल्पणा कूड़ होई हल्काईआ। चार वरन अठारां बरन दे दे गेड़ा, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश परदा दे उठाईआ। तेरी याद विच समां बीतिआ बथेरा, गुर अवतार पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। भेव खुल्ला गुरु गुर चेरा, चेला गुर आपणा नाउँ जणाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी तेरा वेला, वाहवा तेरे

नाम दी वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पुरख अकाल दीन दयाल दयानिध तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे उठ वेख मार झाकी, पर्दा दो जहान उठाईआ। साचा जाम प्यावे ना कोई साकी, अमृत रस ना कोए चखाईआ। लहिणा देणा पूरा कर जो गोबिन्द रख्या बाकी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी राती, सति धर्म सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। तूं आत्म नूर सर्ब दा ज़ाती, जोती जाता इक अख्वाईआ। तेरी सब तों वखरी निराली गाथी, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला दे जणाईआ। दिवस रैण अठ्ठे पहर तेरे प्रेम दी होवे प्रभाती, घड़ी पल हिस्सा ना वंड वंडाईआ। झगड़ा मुका काग़ज़ाती, क़लम शाही लहिणा पूर कराईआ। मानव मानव दीन मज़हब विच्चों चार कुण्ट लै आज़ादी, झगड़ा अवर रहे ना राईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आत्म परमात्म कर शादी, शादिआना काया मन्दिर अंदर दे वजाईआ। तैनूं निरगुण धार सरगुण रहे अराधी, राधा कृष्ण राम सीता अल्ला वाहिगुरु गौड तेरी सिफ्त सालाहीआ। बिन तेरी किरपा काया मन्दिर अंदर सुरत किसे ना जागी, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। गोबिन्द धार बणया कोए ना साथी, साचा सिख रूप ना कोए वटाईआ। पंचम मीते मन्ने कोए ना आखी, आख़र लेखा वेख वखाईआ। जगत विद्या दे सारे बणे पाठी, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। सुणे शब्द ना कोए अनादी, नादी धुन ना कोए उपजाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे विच होणी बरबादी, चारों कुण्ट नेत्र रोवे मारे धाहींआ। मैनूं दुःख होया पुरख अकाल तेरे गोबिन्द पन्थ दा दिसे कोई ना वागी, वाग नूं हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जगत वारां गाउँदे ढाडी, ढोलक छैणे रहे खड़काईआ। सति धर्म दी दिसे ना कोए आबादी, आबरू सारे गए गवाईआ। तूं साहिब स्वामी हर घट विस्मादी, बिस्मिल आपणी खेल खिलाईआ। हुक्मे अंदर सारे कर के बाग़ी, बग़लगीर नज़र कोए ना आईआ। सच दुआर दा रहे ना कोए दिमाग़ी, दमां विच दम मिला के दामन सब नूं रहे फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चारों कुण्ट नस्सां, भज्जां वाहो दाहीआ। मैं तक्कां तेरीआं अक्खां, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मैं वेखां अरबां पदमां करोड़ां लखां, कोटन कोटि खोज खुजाईआ। पुरख अबिनाशी सच सच तैनूं दस्सां, दस्त बदस्त सीस झुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप विच्चों मैं तेरा प्यार वेख्या उन्नां जट्टां, जिन्नां नूं जटा जूट समझ विच ना कोए रखाईआ। मैं फिरी भज्जी विच पत्थरां इट्टां, टिल्ले पर्बत वाहो दाहीआ। तेरे दुआरे दुहथ्थढ़ मार के पिट्टां, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जे तूं पुरख अकाल सब दा पिता, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। कलयुग अन्त वेख वड्डा निक्का, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। तेरा नूर किते ना दिसा, दह दिशा अन्धेरा छाईआ। ग़रीब

४०८
२१

निमाणा जगत जिज्ञासू हो के पिसा, फड़ बाहों गले ना कोए लगाईआ। क्यों सब नूं दिता पिच्छा, उत्तर पुरब पच्छिम दक्खण करवट लै बदलाईआ। तेरा साहिब सतिगुर शब्द गुरु इक्को टिका, जो धुर दा नज़री आईआ। जिस ने गोबिन्द दिता चिट्ठा, शब्द अगम्मा इक समझाईआ। ओस दा अन्त अख़ीरी कढु सिट्टा, सिट्टेबाज़ी मेट कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां चार कुण्ट फ़रक़, फ़िरके वाले नज़री आईआ। सच दुआरा कर गए तरक, तुरत तेरा नाउँ भुलाईआ। मध माया विच होए ग़रक़, किनारा पार ना कोए दिसाईआ। मानव मानव खुश होवे ना कोए कर के दरस, दीद ईद ना कोए मनाईआ। तूं बैठा उत्ते अर्श, फ़र्श रिहा कुरलाईआ। पुरख अकाल वेख परत, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। नेत्र रोवे धरनी धरत, धवल दए गवाहीआ। तेरी गोबिन्द नाल शर्त, कलयुग शरअ दे बदलाईआ। झगड़ा मिटा मन्दिर मस्जिद चर्च, चर्चा कूड़ रहे ना राईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते कर तरस, रहमत आप कराईआ। सब दी मेट हरस, हवस दे बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट रखाईआ । सदी चौधवीं कहे सतिगुर शब्द कदे ना बुड्ढा, नड्ढा नौजवान नज़री आईआ । लोकमात गुरमुखां कदे ना देवे दग़ा, दग़े फ़रेब विच्चों बाहर कढ्ढाईआ । बिना गोबिन्द दे गोबिन्द दा वधे कदे ना अग्गा, एह पुरख अकाल तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग जीव हँस होए कग्गा, बुद्धी काग वांग कुरलाईआ। बाहरों बण के बगड़ा बप्पा, अन्तर विख रहे लुकाईआ। तेरे धर्म दा रिहा कोए ना सका, साजण संग ना कोए बणाईआ। माया ममता अंदर वड़ गई दे के धक्का, जोरू ज़र ज़ोर रिहा वखाईआ। तेरा अमृत रस सच प्रेम किसे ना छका, शाकर हो के सीस ना कोए निवाईआ। सति धर्म दा पहनया किसे ना कच्छा, धीरज वंड ना कोए वंडाईआ। मुच्छ दाढ़ी केस सब ने रखा, रखक तेरा मिल के दरस कोए ना पाईआ। किरपा कर पुरख समर्था, साहिब तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वाहवा तेरी वजदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आ डिग्गी दर, परवरदिगार अलख जगाईआ। किरपा कर अगम्मी हरि, हर हिरदा वेख वखाईआ। सच नुहा इक सर, सरोवर अमृत इक प्रगटाईआ। जिथ्थे बहे नरायण नर, मन्दिर इक्को दे समझाईआ। झगड़ा मिटे चोटी जड़, चेतन तेरी वज्जे वधाईआ। सच दुआरे आपे खड़, काया खिड़की पर्दा दे उठाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख लै फड़, फड़ बाहों जोड़ जुड़ाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच किरपा कर, किरपा निधान तेरी सरनाईआ। अर्ज़ बन्दना बन्दगी दर दरवेश हो के रहे कर, करनी दे करते क़ादर देणी माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल ज़िमीं असमान, लेखा आदि जुगादी दो जहान, गुर अवतार पैगम्बरां देवें दान, निरगुण सरगुण खेलें खेल विच जहान, जागरत जोत बिन वरन गोत कोटन कोटि आपणा रूप अनूप बदलाईआ।

❋ १३ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ बटाला मौलाना ख़लीलओल रहमान लुधियाणवी, जामा मस्जिद फगवाड़ा कूचा रहमान चांदनी चौक मकान नं० ५२६६ ❋

आप ने प्रेम प्यार मुहब्बत दी बड़ी कीती तशरीह, तफ़सील दलील नाल जणाईआ। जिस खुदावंद करीम दा सिहन वडा वसीह, पैमानिआं विच नाप ना कोए वखाईआ। ओह अवतारां पैगम्बरां गुरुआं सदा देवे तरजीह, तरतीब वार सिलसला धुर दा दए समझाईआ। जलवा नूर दे के रब्बी, आलमीन उल्मा करे पढ़ाईआ। कायनात मानव अंदर वेखे नेकी बदी, नूरी हो के नूर खोज खुजाईआ। जहालत होई चौधवीं सदी, सदमा घर घर वेखो ख़लक खुदाईआ। जो फ़रमान धुर कलमा संदेस दे के गए नबी, इन्सान महिबान परदा उठाईआ। ओस दा खेल होणा यदी, शाह पातशाह शहिनशाह हज़रते हज़रान धुरदरगाहीआ। कूड़ कुड़िआर जूठ झूठ जगत निफ़ाक़ दी जिस मेटणी गद्दी, गदागार करे लोकाईआ। सो नूरे अलाह खुद खुदा बेपरवाह सृष्ट सबाई देवे पनाह, मेहरवान महिबान बीदो बीख़ैरया अलाह आलमीन होए सहाईआ। आप ने बड़ी कीती सिफ्त सलाह, रसना ज़बान कलाम सच जणाईआ। खेल वेखे ख़ालक ख़लक बेपरवाह, खुद खुदा नूर अलाहीआ। जो रहिबर हो के साचा दस्से राह, रास्ता बरास्ता आपणा हुक्म जणाईआ। सजदयां विच कलमयां विच करनी दस्से दुआ, अबारत विच आदत दए बदलाईआ। लेखा जाणे रूहे रवां, बेनज़ीर लाशरीक शिरकत अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। जिस ने हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब दा सांझा मार्ग दस्सणा नवां, चार वरन अठारां बरन भैण भाई भाईआ। सो साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान लेखा जाणे सब दे पवण स्वास दमां, दामनगीर बेनज़ीर मेहर नज़र आप उठाईआ। दीन दुनी झगड़ा मिटावे काया माटी चम्मां, जलवा नूर ज़हूर रूहे बुत ख़ाकी, पाकी पाक आप जणाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट वेखी अन्धेरी राती, नूर नुराना नूरी चन्द आप चमकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर साचे नाम कलमे दे सदा इक जमाती, तुलबिआं वाली वंड ना कोए वंडाईआ। जिन्हां पढ़या इल्म सिफ़ाती, उन्हां बदल गई हयाती, हज़रत हज़ूर हाज़र इक्को नज़री आईआ। जिस दा लेखा अलिफ़ ये लिख ना सके क़लम दवाती, कातब भेव ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

लेखा जाणे धुरदरगाहीआ। आप ने सिफ्त कीती जिह्वा नाल कलाम, लफ़ज़ बलफ़ज़ अल्फ़ाज़ सोहणे जोड़ जुड़ाईआ। सब दा सांझा इक अमाम, अमल वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जिस दे हथ्थ चौदां तबकां निज़ाम, दीन दुनी आपणा हुक्म मनाईआ। सो वाहिद लाशरीक हक़ दा दए पैग़ाम, हक़ीक़त देवे थाउँ थाईंआ। सब दा बदल देवे निज़ाम, जूठ झूठ कूड़ कुड़िआर दए मुकाईआ। प्यार मुहब्बत मिलत करे विच अवाम, अमन दा ज़ामन इक वचाईआ। चार कुण्ट दह दिशा उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण इक इकल्ला करे इंतज़ाम, सच महल्ला सृष्टी दए वखाईआ। जिस दा नूर इक्को जिहा सुबह शाम, दिवस रैण वंड ना कोए वंडाईआ। सो मेटणहारा बदी खुदी हराम, हर हिरदे करे सफ़ाईआ। सच पैग़ाम बिना रसना सुणाए बणाए काने इलहाम, इल्म तों बाहर जणाईआ। काया काअबे सच महबूब मुहब्बत विच करे क़िआम, क़िआमत दा परदा आप उठाईआ। मेल मिलाए इन्सानां नाल इन्सान, साचे कलमे नाम दे सूफ़ी फ़कीर सन्त बणाए किसान, इस्म जिस्म अंदर आपणा इक समझाईआ। सो साहिब होए मेहरवान, जो वाली दो जहान, जिस दा खेल जगत तमाम, दामनगीर शाह हकीर आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच नाता सब दा लए जुड़ाईआ। ज़रूरत सब दुनियां नूं काफ़ी, काफ़ीआ काफ़ समझ किसे ना आईआ। मन शैतान शरअ करे गुस्ताख़ी, गुस्सा काया अंदर तन वजूद घर घर रिहा टिकाईआ। पैगम्बरां गुरुआं अवतारां दी मन्ने कोई ना आखी, पढ़ पढ़ जगत वक्त लँघाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना घाटी, अंदर बन्द ना खोल्हे ताकी, तकवा इक ना कोई रखाईआ। दरगाह साची बणे कोए ना साथी, मुकामे हक़ डेरा कोए ना लाईआ। जगत विवहार कार खेल बाज़ीगर नाटी, साचा मार्ग सारे गए भुलाईआ। शमां नूर सच खुदा जगे किसे ना राती, सरघी प्रभाती नूरे आफ्ताब तलूह रुशना नज़र किसे ना आईआ। जिधर वेखो दीनां मज़हबां इख़तलाफ़ी, निफ़ाक़ अंदरों ना कोए कढ्ढाईआ। जब तक इन्सान इन्सान दा प्रेम मुहब्बत दा बणया ना साकी, साका सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दा हरि, जिस दरगाह विच दरदवंद नूरी खुदा इक्को नज़री आईआ।

४१० २१

❋ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ सुरजीत सिँघ दे गृह फ़ैजपुर बटाला ज़िला गुरदासपुर ❋

सदी चौधवीं कहे दीन दुनी वेख चलाकी, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। शरअ शैतान होई जिस्म ख़ाकी, ख़ाक पाक रूप ना कोए बदलाईआ। जिधर तक्कां अन्धेरी राती, निरगुण चन्द ना कोए चमकाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर दिसे ना कोए

जमाती, साचा अक्खर विद्या ना कोए जणाईआ। तेरा खेल अनोखा कमलापाती, पतिपरमेश्वर समझ ना कोए समझाईआ। चमके नूर ना कोए बाती, दीपक दीआ ना कोए रुशनाईआ। अंदर वड़ के सब दे मार झाती, पर्दानशीं पर्दा आप उठाईआ। बन्द किवाड़ा खुल्ही किसे ना ताकी, साध सन्त रोवण मारन धाईंआ। मन मनुआ हर घट बणया आकी, अकल बुध्ध दी चले ना कोए चतुराईआ। तेरी धार ना किसे पछाती, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण भेव कोए ना पाईआ। सच नाउँ निरँकार दस्स अगम्मी गाथी, गा गा आपणा राग अल्हाईआ। तूं साहिब स्वामी पुरख समराथी, गुणवन्ता धुरदरगाहीआ। तेरी खेल अगम्मी डाहढी, डंडावत बन्दना जीव जंत दे समझाईआ। तेरी महिमा गा सके कोई ना ढाडी, ढोलक छैणां ना कोए खड़काईआ। बिन तेरी किरपा सुरती निरंतर किसे ना जागी, अन्तर अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मुहब्बत विच बणया ना कोए वैरागी, वैरी अंदरों ना बाहर कराईआ। धुन सुणे ना कोए अनादी, अनहद नाद ना कोए शनवाईआ। सृष्टी फसी विच इश्क हक़ीक़ी मजाज़ी, दोहां तों परे तेरा नूर ना कोए चमकाईआ। लहिणा देणा पूरा कर नानक वाला बग़दादी, कौल इक़रार पूरा आप कराईआ। खेल वेख उच्च दे पीर पैगम्बर हाजी, हज़रत आपणा ध्यान लगाईआ। शरअ तों परे दस्स निमाज़ी, नवाज़िश विच हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कूड़ी क्रिया वेख बाज़ी, बाज़ां वाले तेरी बेपरवाहीआ। हरिजन जन भगतां बण
४११
२१
इमदादी, मदद तेरी मँग मँगाईआ। अछल अछल पिछली छड्ड वादी, वायदा गुर अवतार पैगम्बरां पूरा दे कराईआ। सन्त सुहेला तेरा रहे कोई ना दाग़ी, दग़ा वेख जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तूं साहिब सुल्तान धुर दा आदी, आदि पुरख तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे निगाह मार चार कुण्ट, कुटंम्ब आपणा वेख वखाईआ। सवाधान हो निवासी बैकुण्ठ, स्वर्ग बहिश्त चरणां हेठ दबाईआ। झगड़ा प्या जञ्जू बोदी सुन्नत, मुच्छ दाढ़ी केस करे लड़ाईआ। फिरी दरोही विच उम्मत, आलम इल्म ना कोए समझाईआ। सति धर्म विच रही कोई ना हिम्मत, हौसला सारे बैठे ढाहीआ। कलयुग कूड़ा करे इल्लत, जगत शरअ रिहा लड़ाईआ। शाह सुल्तानां होवे ज़िल्लत, खुआरी घर घर वेख वखाईआ। पुरख अकाल तेरे अग्गे मिन्नत, सीस जगदीश इक झुकाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते रहे कोई ना निन्दक, धौल वज्जे इक वधाईआ। मेरी सगली मेट चिन्नत, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे पुरख अकाले परवरदिगार, परा पसन्ती मद्धम बैख़री तेरी सिफ्त सालाहीआ। दीन दुनी दे आदि जुगादी सांझे यार, यारड़े सत्थर वेख जो गोबिन्द ल्या विछाईआ। संदेसा दिता तेरी धार, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दूजा अवर ना कोए प्यार, पीआ प्रीतम इक मनाईआ। बीस

बीसा खोलृ किवाड़, बन्द ताकी आप खुलृाईआ। चारों कुण्ट दिसे उजाड़, धूआँधार दिसे लोकाईआ। अन्धेरा दिसे ढूँघी गार, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। चार कुण्ट तेरे अख्त्यार, दो जहानां वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे ना कोए मुखतिआर, मुक्खीए आपणे विच मिलाईआ। तेरा हुक्म होवे गुफ्तार, गुफ्तगू वेखे जगत लोकाईआ। तेरे कलमे दा इज़हार, तेरा नाम सिफ्त सालाहीआ। तूं कल कल्की अवतार, निहकलंका नाउँ प्रगटाईआ। अमाम अमामां दा सिक्दार, हज़रत हक़ करे पढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी तेरे चरण कँवल निमस्कार, क़दमां विच आपणा सीस झुकाईआ। तूं क़ुदरत दा क़ादर करनी दा करनेहार, करीम अज़ीम नज़री आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरी बेपरवाहीआ।

✻ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह बटाला ✻

सदी कहे मेरे वास्ते रो के गया सधना, सदम्यां विच कुरलाईआ । ओस झगड़ा तक्कया आहला अदना, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। झगड़ा जाणिआ माटी बदना, तन वजूद दिसे लड़ाईआ। सृष्ट सबाई होई बेवतना, घर सच ना कोए मिलाईआ। धर्म नईआ चढ़े कोई ना पतणा, जगत नाम वञ्झ मुहाणे कम्म किसे ना आईआ। साचा गुरमुख हीरा दिसे कोई ना रतना, अमोलक आपणा रूप वटाईआ। जगत लबास दिसे स्वांगी नटना, नटुआ कलयुग नाल रलाईआ। रूप धारे वासी पटना, पटा आपणा वेख वखाईआ। जिस ने जगत विहार कार ठप्पणा, ठप्पा प्रभ दा नाम लगाईआ। साध सन्त करे सक्खणा, सखी सुल्तान ना कोए वड्याईआ । हभ किछ वेखे आपणी अक्ख ना, नेत्र नैण उठाईआ। सति सरूप हो प्रतखणा, पारब्रह्म प्रभ परदा लाहीआ। किसे दा चले कोई ना यत्ना, यथार्थ आपणी कार कमाईआ। गुरमुख विरला ओस ने रखणा, रखक हो के होए सहाईआ । सच दुआरा इक्को वसणा, जिथ्थे वसल मिले नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेला सति धर्म दा सद्दणा, सदा आपणा नाम सुणाईआ।

✻ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ सर्ब हिन्द अकाली कानफ़रंस बटाला ✻

पन्थ ख़ालसा कोई नहीं तैनूं ख़तरा, पुरख अकाल इक सरनाईआ। आपणे काया मन्दिर अंदर आपणा उलट्ट दे पत्रा, जो पाती गुर गोबिन्द गया जणाईआ। जिस ने माछूवाड़े तुहाडे पिच्छे हंढुाई सेज सत्थरा, यारड़ा इक ध्यान लगाईआ। ओह गोबिन्द तुहाथों कदे रहे ना वक्खरा, हर हिरदे होए सहाईआ। तुसीं आ गए हुण ओस किनारे पत्तना, जिस पत्तण दा मालक बेपरवाहीआ। भावें दूती दुश्मण किन्ना करन यत्ना, पन्थ ख़ालसा तुहानूं मिले वड्याईआ। अज्ज खुशीआं नाल सांझा ला के जाइओ वटणा, प्रीत प्यार रंग चढ़ाईआ। जेहड़ा पहलों प्रगट होया विच पटना, हुण निरगुण जोत सरूप करे रुशनाईआ। गुरसिख गोबिन्द प्यार नालों कोई रिहो ना सक्खणा, ख़ाली झोली सब ने लैणी भराईआ। इक दो मिन्ट विच एनां कुछ प्या दस्सणा।

✻ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ यज्ञादत्त ऐम० पी० नाल बटाला ✻

यज्ञयादत्त जी धर्म क्षेत्र दा सच्चा यज्ञ, युगां तों रिषीआं मुनीआं रीती चली आईआ। जिस नाल मिले सूरा सर्बग्ग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। दर्शन देवे उपर शाह रग, निरगुण निरवैर नूर जोत कर रुशनाईआ। सदी चौधवीं कलयुग कूड़ी मेटे अगनी अग्ग, जो सृष्टी दृष्टी रही तपाईआ। मानव मानुख होया कग्ग, माणक मोती हँस चोग ना कोए चुगाईआ। कूड़ विकार हँकार विभचार कुकर्म अन्धेर रिहा वग, हुलारा देवे थाउँ थाईंआ। जगत सिआसत सति धर्म तों सब दे ख़ाली कीते हड्ड, नाड़ी मास दए दुहाईआ। धर्म मर्यादा गए छड्ड, गुर अवतार पैगम्बरां दा रस्ता गए भुलाईआ। किसे नूं समझ नहीं की खेल होणा कद, क़दीम दा क़ादर क़ुदरत दा मालक दए कराईआ। जिस दी चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सारी यद्द, आत्म परमात्म आपणा रंग वखाईआ। दीन मज़हब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक दी मेट के हद्द, घर सांझा इक वखाईआ। माया ममता मोह विकार देवे मथ, मधुर धुन नाम खुमारी इक सुणाईआ। जो जगत व्यपार विच होए वड्ड, वखरा वखरा राह चलाईआ। उहनां सारयां नूं सच प्रेमी लैण सद्द, सद्दा मुहब्बत वाला समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर हिरदे करे सफ़ाईआ। यज्ञादत्त जी याद करो आपणा बयान, जो रसना जिह्वा आए सुणाईआ। जिस नूं बोलिआ नाल ज़बान, अक्खरां विच सिफ्त सालाहीआ। मन्नया इक भगवान, पतिपरमेश्वर नूर खुदाईआ। सब दी करे कल्याण, कायनात खोज खुजाईआ । जीवण विच ज़िंदगी दा बदल दए विधान, वाहवा करे हक़

पढ़ाईआ। उह लेखा जाणे दो जहान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, लोक परलोक राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, समें दा मालक इक अख्वाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे कहिंदे, कहि कहि रहे जणाईआ। सांझी सटेज उत्ते मिल मिल बैहन्दे, कन्धा कन्धे नाल मिलाईआ। बहुते जगत ममता दे वहिण वहिंदे, माया विच हल्काईआ। थोड़े धर्म दे रसते पैंदे, जिन्हां छड्डी कूड़ लोकाईआ। ओह हुक्म धुर दा सहन्दे, सीस जगदीश झुकाईआ। ओह वेखण चढ़दे लहिंदे, दक्खण पहाड़ अक्ख उठाईआ। पिठ ला कदी ना ढहन्दे, जो सूरबीर आपणा बल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। जगत सिआसत रही हार, सौदे बाज़ी नज़री आईआ। सारे करदे टक्यां दा व्यपार, माया ममता नाल वड्याईआ। बाहरों बण के मित्र यार, अंदरों दग़ा रहे कमाईआ। जे लीडर हो जाण समझदार, समझ समझ विच्चों उलटाईआ। फिर झगड़ा रहे ना विच संसार, दीन मज़हब करे ना कोए लड़ाईआ। एह प्रधानां दा अख्त्यार, इख़तलाफ़ अंदरों देण तजाईआ। सारे प्रभू दे बण जाण बरख़ुरदार, बच्चे हो के सेव कमाईआ। राम कृष्ण ओम अलाह वाहिगुरु गॉड उसे नूं कहि के करन निमस्कार, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। ओसे दी रईयत ते ओसे दी सरकार, ओसे दा हुक्म ओसे दा प्रचार, दीन दुनी ओसे दी नज़री आईआ। जे अंदरों निकल जावे हँकार, कूड़ी क्रिया रहे ना विभचार, दुराचार कर्म ना कोए कमाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई धर्म दा इक प्यार, मज़हब दा झगड़ा देण गवाईआ। जे सन्त सुहेले उठण पंज सत्त दो चार, आपणा बल धराईआ। भय रखण ना शरअ दी कोई कटार, निरवैर हो के आपणी सेव कमाईआ। उन्हां नूं कोई कर ना सके गिरफ्तार, वारंट सके ना कोए कढ्ढाईआ। जिन्हां दा धर्म दा बोल सच दा जैकार, मुहब्बत दा प्यार मेहनत विच जनता दी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा इक्को नूर ख़लक ख़ुदाईआ। यज्ञादत्त जी जे सारयां लीडरां नूं मिल जाए सच्ची दात, अंदर मिल के वज्जे वधाईआ। बाहरों मिट जाए अन्धेरी रात, धर्म दा चन्द करे रुशनाईआ। बाहरों सूफ़ीआं वाली गुफ्तार, अंदर मूर्ख मति रखाईआ। बहुते स्टेज तों उतर के जिस वेले हुंदे बाहर, फेर आपणे मन दा डंका देंदे वजाईआ। जे हर हिरदे विच आ जाए सति दी विचार, धर्म दे नेते बण के सब दी करन अगवाईआ। फेर सुखां विच सुख रूप बण जाए संसार, दुःखां दा दुःख देण गवाईआ। एह अजे थोड़ी थोड़ी आउण लग्गी विचार, जो विचर के लीडर रहे सुणाईआ। जिस वेले किरपा करी आप निरँकार, हर हिरदे करे सफ़ाईआ। जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान रही पुकार, भविख्तां विच

गुरु अवतार पैगम्बर राह तकाईआ। ओह खेल करे धुरदरगाही परवरदिगार सांझा यार, हक़ हक़ीक़त वेख वखाईआ। जिस दा सचखण्ड सचा दरबार, सदी चौधवीं पूरा करे कौल इक़रार, कल कल्की इक अवतार, अमामां दा अमाम चौदां तबकां दा सिक्दार, साची सिख्या पा के भिच्छया, पूरब मस्तक दा देवे लेख लिख्या, भविख्त दा इश्क प्रेम विच बदलाईआ। यज्ञादत्त जी स्टेज उत्ते बोलणा यथार्थ, यदी यदी सर्ब समझाईआ। जिंना चिर आपणा ना छड्डे स्वार्थ, भावना सेवा वाली प्रगटाईआ। उनां चिर धर्म दी बण ना सके कदे वज़ारत, अदल इन्साफ ना कोए कमाईआ। बहुते विच्चों मन दी रखदे शरारत, थोड़े साफ़ हिरदे वाले नज़री आईआ। स्टेज उत्ते सन्तां दी थोड़ी जेही साफ़ इबारत, बाकी मन दी ममता विच हल्काईआ। धर्म युद्ध विच धर्म धर्म दी करे सफ़ारश, दूजी आस ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। तुहाडी सोहणी सुणी तकरीर, लफ़ज़ बलफ़ज़ दयां दोहराईआ। नानक गोबिन्द भावें छड्ड के गए सरीर, तत्तां वाला नाता जगत तुड़ाईआ। राम कृष्ण दी ओहो तस्वीर, चारे वेद ओहो करन पढ़ाईआ। पुराण शास्त्र दस्सण सच तदबीर, गीता ज्ञान इक जणाईआ। जिथ्थे एकता दी प्यार मुहब्बत दी फड़ी जाए शमशीर, उह शमां सब दी गुल कराईआ। झगड़ा मुकावे शाह हकीर, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। बिना सच्चिआं पुरुषां तों दीन दुनी दी कोई बदल ना सके तक़दीर, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। सारे कट्ठे हो क़रीब, नेरन नेर हो के दूई द्वैत बाहर कढ्ढाईआ। सज्जण मीत बणो रक़ीब, दोस्त दस्त दस्त नाल मिलाईआ। सारीआं पारटीआं दी सांझी होवे तरतीब, तरीका इक इक्क समझाईआ। हिन्दू सिख प्यार मुहब्बत विच भाई भाई इक दूजे दे अज़ीज़, तमीज़ अंदरों देण जणाईआ। जिन्हां दे पिच्छे गोबिन्द दुलारे कीते शहीद, शहादत पिता वाली भुगताईआ। तुसां बड़ी सोहणी कीती तमहीद, नानक दी नगरी दा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति धर्म दा साचा एका, बिन नेत्र लोचण नैण अक्खां रिहा वखा, हर हिरदे अंतर निरंतर हो के वेख वखाईआ। तुहाडी रसना किहा वाह, वाहवा वज्जे वधाईआ। जे सांझे फ़रंट दा सिध्धा कर दयो राह, रहिबर हो के करो अगवाईआ। एह सारे तुहाडे गवाह, शहादत इक भुगताईआ। तुहाडी मन्ज़ूर होवे दुआ, धुर दा राम झोली दए भराईआ। कूड़ी क्रिया मेटो वबा, दुःख दलिद्र जगत अंदरों देणा कढ्ढाईआ। सब दा इक्को इक खुदा, खुदी तक्ब्बर दा डेरा ढाहीआ। जो मिल के आवे मज़ा, ओह रस देणा चखाईआ। दूई द्वैत दी रहे कोई ना क़ज़ा, मलकुल मौत कोलों सब नूं बरी देणा कराईआ। सब दा माण करो जगह जगह, अभिमान अंदरों देणा तजाईआ। आपे इक्ठे हो जाण सारे विछड़न दी रहे कोई ना वजह, वजूहात अगला देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, वाहवा विच वाहवा आपे लभ्भा जो लबां तों निकले होंटां दे बचन हिरदे दी विचार नाल मिलाईआ। पूरबला जन्म बड़ा दूर, बलि नाल नज़री आईआ। एह सेवादार मज़दूर, पहरेदार हो के आपणी सेव कमाईआ। जिस वेले बावन आया हज़ूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। एन बन्दना कीती नाल दस्तूर, सीस दिता झुकाईआ। ओस खुशी नाल किहा तेरा माणस जन्म होया मन्ज़ूर, मन्ज़ूरी धुर दे घर बणाईआ। राम कृष्ण नाल तेरा चलदा रहे पूर, त्रेता द्वापर वजदी रहे वधाईआ। जिस वेले कलयुग सदी चौधवीं लोकमात वध्या कूड़, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होई मूर्ख मूढ़, हउमे हंगता विच कुरलाईआ। ओस वेले तेरी जोत दा चमके फेर नूर, पंजां तत्तां सोभा पाईआ। तैनूं मुहब्बत दा बणाउणा मज़दूर, जनता दी सेव लगाईआ। फेर मिले हाज़र हज़ूर, हरि करता शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा मनसा सब दी रिहा पूर, पूरन ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। पिछला रिश्ता नाल निरँकार, बावन दए गवाहीआ। राम नाल रिहा दिन चार, पंचवटी मिली वड्याईआ। कृष्ण नाल गऊआं लईआं चार, साढे तिन्न साल नाल भज्जिआ वाहो दाहीआ । कलयुग मिल्या इक आधार, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। लिख्या लेख ना मेटे कोई संसार, बिधना बिध आपणी आप समझाईआ। जेहड़ी ढाई सतरां दी कतार, जिस दे अक्खर दो पंज सत्त चार, चार जुग दा लेखा रहे समझाईआ । ओसे कारण जन्म ल्या धार, तत वजूद मिली वड्याईआ । हिरदे अंदर वस के आप करतार, काया कित्ता खोज खुजाईआ। जित्थे आत्मा परमात्मा ब्रह्म पारब्रह्म दी धार, शिव शक्ती आपणा खेल खिलाईआ । अष्टभुज दा अधार, रामा कृष्णा नूर उज्यार, वेद व्यासा दए अधार, पारब्रह्म आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा पिछला क़र्ज़ा दए उतार, जो मिल्या तिस मिल के मिल्लत विच मन दी इल्लत दए गवाईआ।

४१६ २१

✻ १४ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ मस्सा सिँघ दे गृह पिंड बल ज़िला गुरदासपुर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं फिरां नठ्ठी, चौदां तबक वेखां चाँईं चाँईंआ। चार कुण्ट तपण वाली भठ्ठी, अगनी अग्ग आपणा शोअला रही उठाईआ। उम्मत नबी रसूलां दी हद्द टप्पी, इस्लाम अमाम ना कोए बणाईआ। जेहड़ी इबारत दस्सी पट्टी, लिखत लेख विच समझाईआ। ओस तों खट्टी किसे ना खट्टी, खटके अंदर दयां दुहाईआ। सब नूं भरनी पैणी चट्टी, बचया रहिण कोए ना पाईआ। मेरी लुट्टी जाणी हट्टी, वणजारे बैठे मुख छुपाईआ। मेरी तृष्ना जाणी फट्टी, पाटे चीथड़ रही कुरलाईआ। मेरी फोड़ दिती मट्टी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ।

४१७
२१

सदी चौधवीं कहे मैं फिरी भज्जी, भजन बन्दगी वेखां थाउँ थाईंआ। मन वासना दीन दुनी नच्ची, कूड़ कल्पणा विच कुरलाईआ। कथा कहाणी दस्से कोए ना सच्ची, सच संजम सारे बैठे तजाईआ। माया ममता मोह विकार अगनी मच्ची, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सति धर्म दी पत किसे ना रखी, कलमा कायनात ना कोए वड्याईआ। मैं सब नूं वेख के आई अक्खीं, आख़र रो रो रही जणाईआ। धुर दा रिहा कोई ना पक्खी, प्रभ दा मेला सच दुआर ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं भज्जी दौड़ी, बण बण पाँधी राहीआ। सृष्टी दी दृष्टी वेखी कौड़ी, कल्पणा कूड़ विच हल्काईआ। साची मंज़ल मिले कोई ना पौड़ी, डण्डा डंडौत वाला हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जीव जंत साध सन्त होए खोरी, हँकार विकार करे लड़ाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक करन चोरी, पंडत पांधा लुट्टे चाँईं चाँईंआ। बिन परवरदिगार सांझे यार मेरी फड़े कोए ना डोरी, डावां डोल दयां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं भज्ज भज्ज थक्की, थकावट मेरे अंदर आईआ। मिल्या ना कोई सख़ावत वाला सखी, वस्त अमोलक झोली कोए ना पाईआ। मैं दीन दुनी वेखी तक्की, ताक़त सारे बैठे गवाईआ। साचे कलमे दी गाए कोए ना गाथी, नाअरा हक़ ना कोए सुणाईआ। मैं वेख के आपणी सदी, सदमे विच रही कुरलाईआ। हुक्मे अंदर बद्धी, बन्दना कर के सीस झुकाईआ। परम पुरख परमात्म परवरदिगार साची दिसे कोई ना गद्दी, गदागार होई लोकाईआ। तेरी वेखां नूह दी नदी, लहर लहर विच्चों प्रगटाईआ। आपणा हुक्म दे दे यदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं देवां सच इतलाह, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। मेरे गुर अवतार पैगम्बर बणन गवाह, शहादत धुर दी देण भुगताईआ। मेरी कलमे वाली सलाह, नग़मा नाम करां शनवाईआ। दीन दुनी दा वेखो लेखा नाल क़तलगाह, क़िआमत सब दे सिर ते छाईआ। नेत्र रो के बावा आदम कहे हवा, हवास हवास हिरस ना कोए मिटाईआ। सच पैग़ाम देवे आप ख़ुदा, ख़ुदी तक्बबर वेखे थाउँ थाईंआ। हज़रतां दी मन्ज़ूर करे दुआ, जो तोबा तोबा कर के सीस निवाईआ। वायदत विच वाहिद कलमा दए पढ़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना श्री भगवाना इक जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी अन्त वेखो लकीर, लाईन दिती लगाईआ। हक़ीक़त दा रिहा ना कोए फ़कीर, फ़िकरा हक़ ना कोए सुणाईआ। शरअ दा तोड़े ना कोए ज़ंजीर, शरीअत विच देण दुहाईआ। साची पढ़े ना कोए तकबीर, तदबीर सके ना कोए जणाईआ। बदली करे ना कोए ज़मीर, ज़ामन हो के मुर्शद देवे ना कोए गवाहीआ। दूर दराडा मंज़ल चढ़या वेखे

कबीर, क़बरां अंदर फोल फुलाईआ। मुहब्बत वाला होया ना कोए बग़लगीर, दस्तगीर दस्त ना कोए मिलाईआ। लेखा दस्स अन्त अख़ीर, आख़र इक जणाईआ। जिस दे हथ्थ निरगुण खण्डा ओह शमशीर, जिस दी धार सके ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वजदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं खोल्ह के देवां बिआन, कूक कूक सुणाईआ। सति दा दिसे ना कोए निशान, निशाना धर्म ना कोए झुलाईआ। साबत रिहा ना कोए ईमान, अमल छड्डया ख़लक खुदाईआ। सृष्टी होई बेईमान, बेवा आपणा रूप वटाईआ। मैं संदेसा देवां पैग़ाम, पैगम्बरां तों परे करां शनवाईआ। पुरख अकाल सतिजुग करन वाला इंतज़ाम, इंतक़ाम आपणे हथ्थ रखाईआ। मैं चार कुण्ट होई बदनाम, बदी मेरी झोली सब ने दिती पाईआ। लड़ाई करे शरअ शैतान, शरीअत रही कुरलाईआ। मैं मँगी मँग अग्गे मेहरवान, महबूब कोल वास्ता पाईआ। किरपा कर मेरे भगवान, भगवन हो के वेख वखाईआ। मैं बाली बुध्ध अंजाण, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। बिन तेरी किरपा मेरा लेखा मुके ना विच जहान, जहालत सके ना कोए कढ्ढाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दाते दानी दे दान, दौलतवंद मेरी झोली दे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नौजवान, सूरबीर सच सुल्तान, मेहरवान हो के मेहर नज़र इक उठाईआ।

४१८ २१

दीन दयाल दयानिध सागर, गहर गम्भीर इक अखवाइंदा। भाग लगा के काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ आप सुहाइंदा। निर्मल कर्म कर उजागर, जुगती जोग जुगत दृढ़ांइंदा। सच दुआरे देवे आदर, आदर्श इक्को इक समझाइंदा। साहिब करीम हो के क़ादर, क़ुदरत दा मालक वेख वखाइंदा। जगत सांझ सच्ची करे साबत, सबूत कलबूत विच जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच वस्त अगम्मी दात जगत जुग सुत अबिनाशी अचुत झोली पाइंदा।

✻ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ अमराउ सिँघ दे गृह पिंड बल जिला गुरदासपुर ✻

पन्थ ख़ालसा गोबिन्द धार, धर्म रूप वड्याईआ। चार वरन इक प्यार, खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। निझर अमृत रस देवे ठार, बूँद स्वांती इक चुआईआ। अन्तर खोल्हे इक किवाड़, बजर कपाटी पर्दा लाहीआ। माया ममता

मोह मेट के धूंआधार, अन्ध अन्धेरा दए चुकाईआ। दीआ बाती कमलापाती निरगुण नूर जोत कर उज्यार, नूरो नूर करे रुशनाईआ। साचा मन्दिर धुर दा इक वखाल, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। दीनां बंधप हो के दीन दयाल, दयानिध आपणी दया कमाईआ। इक्को रंग रंगा के शाह कंगाल, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। गुरमुख बणा के धुर दे लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। वस्त अमोलक दे के माल, धन्न दौलत नाम ख़ज़ाना झोली पाईआ। प्रगट हो के वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद बण के नूर खुदाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिन्हां पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। दिवस रैण करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सो गुरमुख साचे बाल, बाल अंञाणे गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। गोबिन्द दा ख़ालसा आदि जुगादी ख़ालस, धर्म दुआरा मिले वड्याईआ। माया ममता नहीं कोई लालस, कल्पणा विच ना कोए कुरलाईआ। ग़फ्लत निंदरा नहीं कोई आलस, मनुआ मन ना कोए भुवाईआ। प्रेम प्रीती दा बण के बालक, सीस जगदीश इक झुकाईआ। प्रभ मिलण दी सच्ची होवे आदत, अन्तर अन्तर ध्यान रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावे इबादत, ढोला इक्को इक सुणाईआ।
४१९ सब तों उत्तम श्रेष्ट होवे नाज़क, मलूक सोहणा नज़री आईआ। कूड़ मारे कोई ना साज़श, हर हिरदे अंदर होए सफ़ाईआ। ४१९
अगनी तत ना तपाए आतश, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा
२१ रंग इक रंगाईआ। गोबिन्द ख़ालसा अगम्मी पन्थ, जिन्हां सिख्या धुरदरगाहीआ। जिस दी सेवक गुर अवतार पैगम्बर असंख, २१
गिणती गिणत ना कोए गिणाईआ। जिस दी महिमा सिफ्त करदा गुरु ग्रन्थ, अकावन बावन आपणा राह चलाईआ। सो दीन दयाला हरिजन बणा आपणे हँस, बुद्धी काग दए बदलाईआ। मेल मिला के कोटां विच्चों सहँस, हरिजन आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सति धर्म बणा के बणत, घड़न भन्न्हणहार वेख वखाईआ। सो गुरमुख सच्चा सन्त, जो सतिगुर विच समाईआ। गढ़ तुट्टे अंदरों हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। गोबिन्द सूरा बोध अगाधा बण के पंडत, निरगुण विद्या इक पढ़ाईआ। झगड़ा मुकावे स्वर्ग बहिश्त जन्नत, चरण कँवल इक सरनाईआ। नेड़े रहिण ना देवे कोई निन्दक, दुष्ट दुराचार विकार हँकार करे सफ़ाईआ। मनुआ मन वेखे कोई ना इल्लत, इल्म आलमां इक जणाईआ। सच प्रेम दी दे के हिम्मत, हौसले धुर दे दए वधाईआ। गोबिन्द ख़ालसा चार कुण्ट होणा साची सिम्मत, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। सरगुण निरगुण धार दोहां दी मिलत, मिलाप आप जाप विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए दृढ़ाईआ। गोबिन्द ख़ालसा सति निराला, निराकार दए वड्याईआ। जिस नूं ओट इक अकाला, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ।

सति सच दी घाले घाला, सेवक हो के सेव कमाईआ। तिस दा होवे आप रखवाला, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। फल लगा के आपणे डाला, पत्त डाली आप महकाईआ। साचा सब दा हल्ल करे सवाला, पूरब लेखा फोल फुलाईआ। झगड़ा मुका के काल महाकाला, मेहरवान महबूब आपणी मुहब्बत विच रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे आप प्रगटाईआ। साचा गुरमुख मति होवे ना थोथी, कूड़ी क्रिया ना कोए रखाईआ। जिस गोबिन्द नाम दी पढ़ी अगम्मी पोथी, पुस्तकां तों पल्लू जाए छुडाईआ। ओस ने मंज़ल इक्को सोची, जिथ्थे मिले बेपरवाहीआ। जिथ्थे पुज्ज गए रविदास चमारे वरगे मोची, कबीर जुलाहा डेरा लाईआ। रुक्खी सुक्खी खा के रोटी, प्रेम प्रीती विच झट लँघाईआ। चढ़ के अगम्मी चोटी, चोट तन नगारे इक सुणाईआ। अंदरों कढ्ढके वासना खोटी, प्रेम प्रीती विच परम पुरख इक मनाईआ। परमात्मा दा बण के गोती, आत्मा आपणा संग जणाईआ। जिथ्थे जगे बिन तेल बाती जोती, निराकार करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दए वड्याईआ। गोबिन्द ख़ालसा पीवे अमृत नीर, रस इक्को इक जणाईआ। जिस नाल बदल जावे तक़दीर, जीवन जीवन विच्चों वटाईआ। प्रकाश होवे काया माटी तत शरीर, तन वजूद वज्जे वधाईआ। झगड़ा रहे ना शाह हकीर, अमीर ग़रीब ना कोए वखाईआ। साचे धर्म दी समझ तदबीर, तरीका इक्को लैण अपणाईआ। कूड़ी क्रिया जगत छड्ड लकीर, रस्ता आपणा लैणा बदलाईआ । साचे सन्त बण फ़कीर, ढोले सूफ़ीआं वाले गाईआ। वेख खेल बेनज़ीर, नज़र आपणी इक उठाईआ। जिथ्थे शरअ दी नहीं कोई शमशीर, कटाकश तीर ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिन्हां अंदरों बदले ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। गोबिन्द ख़ालसा तक्के विच ख़लकत, ख़ालक मख़लूक खोज खुजाईआ। जिन्हां दे अन्तर निरंतर निरगुण निराकार करे हरकत, नूर नुराना आपणी कार कमाईआ। माया ममता मोह विकार मेटे हसरत, हसद अंदरों दए कढ्ढाईआ। नाता तोड़ के ऐशो इशर्त, आसा मनसा आपणे नाल मिलाईआ। ज़ाहरा दरस दिखाए अगम्मा हज़रत, हज़ूर नूर करे रुशनाईआ। जिस दे नालों गुरसिख कोई ना जाए विछड़त, बिछरत सब नूं लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला मेले सहज सुभाईआ। गोबिन्द ख़ालसा आत्म ब्रह्म चंगा, तन वजूद करे सफ़ाईआ। न्हावण जाए कदे ना गंगा, जमना सुरस्ती गोदावरी राह ना कोए तकाईआ। लभ्भण जाए कोए ना पंडा, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ । इक्को माणे सच अनन्दा, निजानंद विच रसाईआ। शब्दी पौड़ी चढ़ के डंडा, डंडावत विच सीस झुकाईआ। जिथ्थे पहुंचिआ नहीं कोई बन्दा, बन्दीख़ाना नज़र कोए ना आईआ। उथ्थे रूप इक अगम्मा, जोती जोत नूर रुशनाईआ। पुरख अकाल दी धारों

गोबिन्द ज़रीए पन्थ ख़ालसा जम्मा, जिस दी जम्मण वाली इक्को माईआ। जिस दे अंदर होए कोई ना तमां, लालच कूड़ ना कोए जणाईआ। हरख सोग ना होवे ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। पुरख अकाल ध्यावे दम दमा, दामनगीर इक्को लए बणाईआ। झगड़ा छड्ड के काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी अंदरों लए बदलाईआ। सो प्रगट होवे नाल समां, समाप्त पिछल्यां दए कराईआ। एह खेल अनोखा नवां, नर नरायण आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वड वड्डा वड वड्याईआ। गोबिन्द ख़ालसा सोहणा होवे रूप, अनूप दए वड्याईआ। शब्दी धार उपजे पूत, पिता पुरख अकाल मनाईआ। ताणा पेटा इक्को होवे सूत, सूत्रधारी खोज खुजाईआ। फिरे दरोही चारे कूट, डंका वज्जे थाउँ थाईंआ। लेखा मेटे जूठ झूठ, सच सुच लए प्रगटाईआ। कूड़ कुड़िआरा रहिण ना देवे कपूत, कुलखणी रहे ना जम्मण वाली माईआ। शब्द अगम्मा भेज के दूत, दुतिया भाउ दए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सच दा रंग चढ़ाईआ। गोबिन्द ख़ालसा चार वरन दी धार, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। सांझा बोले इक जैकार, धुर दा ढोला अगम्म अथाहीआ। इक्को इष्ट मन्ने निरँकार, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। इक्को मन्दिर वेख दुआर, इक्को आसण सिँघासण सोभा पाईआ। इक्को पिआउणा अमृत ठंडा ठार, अगनी अग्ग तत बुझाईआ। सो ख़ालसा गोबिन्द गोबिन्द करे त्यार, गोबिन्द गोबिन्द विच्चों प्रगटाईआ। जो जूए जन्म ना जाए हार, माणस मानव मानुख आपणा रंग रंगाईआ। साचा मार्ग दस्से संसार, संसारी भण्डारी सँघारी वेखण चाँईं चाँईंआ। सो ख़ालसा जिस ख़ालस करे आप करतार, करनी दा करता दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी शाह पातशाह शहिनशाह सच्ची सरकार, रस्ता मार्ग पन्थ राह जुग जुग आप जणाईआ।

✻ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह पिंड बल ज़िला गुरदासपुर ✻

सदी चौधवीं कहे प्रभ थक्के गुर अवतार पैगम्बर सारे, महासाथीं वेख थाउँ थाईंआ। फ़लक उत्ते रोवण नेत्र नैण सितारे, सतह ज़िमीं ज़मा ना कोए वड्याईआ। नबी नूह करे इशारे, अगम्मी सैनत नाल समझाईआ। कलयुग नईआ आई ओस किनारे, जिथ्थे खेवट खेटा सके ना कोए बचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कढ्ढण हाढ़े, मिन्नतां विच सीस जगदीश झुकाईआ। चार वरन अठारां बरन दिसण कूड़ अखाड़े, माया ममता आपणा नाच नचाईआ। फिरी दरोही जंगल जूह विच पहाड़े, समुंद

सागर डूँघे वहिण ना कोए सहाईआ। झगड़ा प्या पुरख नारे, नार कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। साची मंज़ल तेरी चढ़े ना कोई निरँकारे, नौ दुआरे सृष्टी दृष्टी रही कुरलाईआ। अलख अगोचार तेरा खेल अगम्म अपारे, अपरम्पर स्वामी नज़र किसे ना आईआ। कायनात मख़लूकात ख़ालक ख़लक तेरे सहारे, साहिब सुल्तान मेहरवान तेरी बेपवाहीआ। बीत गए पिछले जुग सारे, सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम दिसे धूआँधारे, निरगुण सुर्या चन्द ना कोए चढ़ाईआ। साची रहे ना किसे यादगारे, यादाशत तेरी बैठे भुलाईआ। किरपा कर मेरे परवरदिगारे, महबूब मुहब्बत विच तेरे क़दमां सिर सर झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग देणा जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं झुक झुक करां सलाम, क़दम बोसी विच दुहाईआ। पैगम्बरां दा लेखा वेख पैग़ाम, संदेसयां विच शनवाईआ। तेरी दीन दुनी दा विगड़ गया निज़ाम, नौबत हक़ ना कोए वजाईआ। जगत विषयां सृष्टी होई गुलाम, ज़ंजीर कूड़ ना कोए तुड़ाईआ। नज़री आ धुर अमाम, अमल वेख ख़लक खुदाईआ। तूं आदि जुगादी हर घट जाणी जाण, लख चुरासी वेख वखाईआ। गुरमुख भगत सुहेले कर पहचान, बेपहचान आपणा परदा दे उठाईआ। तूं आत्म धार परमात्म सब दा काहन, गोपी गोप गोपाले लै प्रनाईआ। सीता सुरती वेख आपणी राम, रमईआ राम रमिआ हो के परदा देणा चुकाईआ। हक़ खुदा हक़ीक़त विच हो मेहरवान, महव आपणा फेरा पाईआ। जिस तेरा पढ़या मन्त्र सति नाम, सो सति विच तेरा राह तकाईआ। जिस फ़तिह डंका वजाया विच जहान, जै जैकार इक कराईआ। ओह आसा तेरी रखे श्री भगवान, भगवन भाग हिस्सा आपणा झोली देणा पाईआ। तेरा भगत ख़ालसा होवे बलवान, बलधारी इक प्रगटाईआ। जिस दे हथ्थ होवे धर्म निशान, चार कुण्ट दह दिशा दए झुलाईआ। सजदे करन ज़िमीं असमान, लोक परलोक डंडावत विच आपणा आप मिटाईआ। तेरे नाम दी होवे कल्याण, सब दी सांझी होवे ज़बान, बेज़बानां आपणा नाम देणा दृढ़ाईआ। मानव ज़ाती बणाउणी इन्सान, सदी चौधवीं अन्त करना इक एहसान, बख्शिश विच रहमत झोली पाईआ। एह जीउ पिंड सब तेरा तत प्राण, स्वास साह तेरा नज़री आईआ। फ़नाह होण वाला मकान, मुक़ाम आपणा देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे सुण मेरे गुरु, वाहवा तेरी वजदी रहे वधाईआ। धर्म ख़ालसा होवे शुरु, शरीअत शरअ दी लोड़ ना कोए रखाईआ। गोबिन्द हुक्म अंदर तुरू, तुरिया तों परे तेरा दर्शन पाईआ। साचे मार्ग तों कदे ना मुड़ू, चले वाहो दाहीआ। आत्म हो के परमात्म नाल जुड़ू, जोड़ी आपणी लए बणाईआ। मन्त्र तेरा अगम्म निरंतर हो के फुरू, फुरने मन दे बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा झोली पाईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं वेखां पन्थ सचे दी ख़सूसीअत, घर घर काया मन्दिर अंदर फोल फुलाईआ। किस बिध गोबिन्द धार असलीअत, असल वसल यार कर के आपणी खुशी मनाईआ। किस नूं याद बिन अक्खरां वाली वसीअत, वसीह विशाल वेख वखाईआ। जिंनां चिर गुरसिख पुरख अकाल दी साची ना समझण वलदीअत, जगत वलद वालदा कम्म किसे ना आईआ। बिना तिआग भगती तों धर्म दी नहीं कोई अहमीअत, अमल अमर ना कोए कराईआ। साची धार दी खेल नव नवीअत, नव खण्ड वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा देणा उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे नेत्र आवे शरम, नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। साचा दिसे कोए ना धर्म, धर्मातमा धर्म ना कोए कमाईआ। जगत ममता सब ने बणाया आपणा करम, कर्म कांड दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। प्यार लग्गा काया माटी चम्म चर्म, चम्म दृष्टी ना कोए बदलाईआ। भावें सिखां दे घर सिखां दा हुंदा जरम, बिना गोबिन्द मिलण तों सिख ना कोए अख्वाईआ । एहो सृष्टी दी दृष्टी विच भरम, जो बिना गोबिन्द दे परदा ना सके उठाईआ। भावें नित गुरदुआरिआं विच वड़न, निज नेत्र दरस कोए ना पाईआ। जिंनां चिर मस्तक धूड़ी लग्गे ना गोबिन्द चरण, चरणोदक जाम अमृत हत्थ किसे ना आईआ। झगड़ा मुके ना वरन बरन, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक रंग ना कोए रंगाईआ। कोटन कोटि सिख जम्म के फेर मरन, मर के फेर जूनीआं विच आपणा आप भवाईआ। जेहड़े गुरसिख गोबिन्द दे पौड़े चढ़न, ओह सचखण्ड दुआरे वड़न, जित्थे पुरख अकाल पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गोबिन्द ने पन्थ पाया पुरख अकाल दी झोली, सहारा इक्को दिता समझाईआ। धुर दे शब्द दी दस्स के बोली, अनबोलत राग अल्हाईआ। किसे कम्म नहीं आउणी पंज तत काया माटी चोली, बिन चोजी प्रीतम सिर हत्थ ना कोए टिकाईआ। गोबिन्द किहा गुरसिखो मैं तुहाडा सेवक ते तुहाडी गोली, चाकर हो के सेव कमाईआ। मैं धर्म नगारे दा बण के आया ढोली, होका देवां थाउँ थाईंआ। जिस प्रभू ने मेरी हट्ट खोल्ही, अमृत जाम दिता टिकाईआ। ओह भाग लगावे उपर धौली, धरनी धरत वज्जे वधाईआ । ओस विच दीन दुनी विच पए रौली, मज़हब मज़हब नाल लड़ाईआ। किसे दे कोल मेरी अमृत धार रहे ना पाहुली, अमृत छक के जूठ झूठ नाल आपणा झट लँघाईआ। एह खेल होवे अनहोणी जिस नूं समझे कोए ना राईआ। चार वरनां नेत्र अक्ख रोणी, नैणा नीर वहाईआ। बिन सतिगुर गोबिन्द दुरमति मैल किसे ना धोणी, धोबी धार रूप ना कोए बदलाईआ। एह दुनियां चार दिन दी परौहणी, झट आपणा रही लँघाईआ। जिस दी आत्मा परमात्मा नाल छोहणी, ओह छोहरा बांका गुरमुख नज़री आईआ। जिस ने अचरज खेल रचाउणी, चार जुग दा लेखा वेख वखाईआ। चार वरन दी

हरि संगत इक बणाउणी, फड़ बाहों मेल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया शब्दी भार नाल दबाउणी, मढ़ी गोर विच टिकाईआ। साची रीत इक चलाउणी, बिना मन्दिर मसीत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण जोत इक जगाउणी, जागरत जोत डगमगाईआ।

✻ १५ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ बख्शीश सिँघ दे गृह क़ादराबाद ज़िला अमृतसर ✻

गुरु गोबिन्द सतिगुर पूरा, पूर रिहा सर्ब थाईंआ। गुरसिख बचन होण ना देवे अधूरा, हाज़र हो के वेख वखाईआ। अन्तर दे के आत्म नूरा, जोती जोत करे रुशनाईआ। नाता तोड़ के जगत कूड़ा, तन वजूद करे सफ़ाईआ। साची ला के मस्तक धूढ़ा, टिक्का ख़ाक नाम रमाईआ। सेवक हो के सच मज़दूरा, सीस तली उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुरदरगाहीआ। गोबिन्द सतिगुर सब दा सांझा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। गुरमुखां दे प्रेम अंदर बांधा, बन्दगी विच बन्दे रिहा बणाईआ। गुरसिखां दे ढोले सदा गांदा, गुरमुखां दए माण वड्याईआ। गुरमुखां दा प्रेम प्यार पींदा खादा, आपणी आस ना कोए रखाईआ। गुरसिखां दे अंदर बाहर आउँदा जांदा, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। गोबिन्द सतिगुर सदा साथी, सगला संग निभाईआ। गुरमुख पूरी करे आखी, आख़र आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सवा पहर करदा रिहा राखी, पैदल नाल चलया चाँईं चाँईंआ। सति धर्म दी खोल्ह के हाटी, वस्त आपणा नाम वरताईआ। तूं मेरा मैं तेरी ज़ाती, दूजा नज़र ना कोए वखाईआ । नाम संदेसा देवे पाती, पत्रका इक जणाईआ । जिस वेले आवे कलयुग अन्धेरी राती, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साची पढ़े कोई ना गाथी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। ओस वेले मैं गुरमुखां दी चढ़ां उपर छाती, शहिनशाह हो के दया कमाईआ। तेरा पन्ध मुकावां वाटी, क़दम क़दम नाल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सिख किहा गोबिन्द एह मेरा मन तन धन, तेरी झोली पाईआ। मैं सेवा करन वाला तेरा जन, जम्मण वाली नज़र आए कोई ना माईआ । आपणी किरपा बेड़ा बन्न्ह, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ । गोबिन्द हस्स के किहा तूं मेरा लाडला चन्न, मैं तेरी करां वड्याईआ । तेरा बेड़ा देवां बन्न्ह, बंधन जगत वाला तुड़ाईआ। गुरसिख रसना कहे धन्न धन्न, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द किहा सिर कटया ते गुरमुख मेरे घर गया जम्म, गोदी आपणी लवां रखाईआ। गुरसिख तारना मेरा कम्म, बाण धुर दी बणी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

देवणहार वड्डी वड्याईआ। गोबिन्द चार कुण्ट दह दिशा फिरदा, दिवस रैण आलस निंदरा ना कोए रखाईआ। गुरमुखां दा वेंहदा फिरदा हिरदा, घट घट अंदर खोज खुजाईआ। जेहड़ा पिछल्यां चहुं जुगां दा विछड़िआ चिर दा, उन्हां वी लए मिलाईआ। बिना गोबिन्द तों माणस जन्म पैंडा किसे ना निबड़दा, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक समझाईआ। गुरु गोबिन्द सब दा प्यारा मीत, मित्र इक्को नज़री आईआ। गुरसिखां दस्स साची रीत, रीतीवान दयां जणाईआ। गुरसिखो मेरे हथ्थ उत्ते सब दा सीस, सच दयां सरनाईआ। तुहानूं मिलावां नाल ओस जगदीश, जो जगदीशर धुरदरगाहीआ। जेहड़ा तुहाडे वसिआ बीच, अंदर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडी वड्याईआ। गोबिन्द कहे मेरा गुरसिख जाए भज्जा, भजन बिन रसना रिहा चलाईआ। वाहवा गुरु बिन रसना देवे सद्दा, नाअरा अकाल अकाल सुणाईआ। उस दा खेल कराया हथ्थ खब्बा सज्जा, साजण हो के वेख वखाईआ। उहनूं पुचाया ओस जगह, जिथ्थे बैठा ध्यान लगाईआ। जिथ्थे बगला बप्पड़ा हँस होवे बग्गा, सर सरोवर अमृत इक नुहाईआ। गोबिन्द गुरसिख नाल कदे करे ना दग़ा, दाग़ दुरमति मैल सदा धुआईआ। जे किरपा ना करदा ते गोबिन्द दा कदे ना वधदा अग्गा, सिख सारे जांदे मूँह भुआईआ। एहो ही पन्थ वधण दी वजह, गोबिन्द अंदर वड़ के वेखे चाँईं चाँईंआ। आपणे अमृत रस दा देवे मज़ा, निरंतर अन्तर इक चखाईआ। उन्हां दे नेड़ ना आवे क़ज़ा, लाड़ी मौत ना सके प्रनाईआ। सतिगुर दी गुरसिख दुआरे हद्दा, गुरसिख हद्द सतिगुर विच सीस टिकाईआ। पर एह खेल हुंदा कदे कदा, क़दीम दी रीती चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआरे हरिजन देवे सदा सद्दा, सधना सैण शहादत रहे भुगताईआ।

❊ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ चन्नण सिँघ दे गृह पिंड क़ादराबाद ज़िला अमृतसर ❊

सदी चौधवीं कहे मैं वेखी दुनियां ख़ाकी, ख़ाक छाणी थाउँ थाईंआ। चारों कुण्ट तक्की अन्धेरी राती, निरगुण चन्द ना कोए चमकाईआ। गोबिन्द वाली पढ़ के वेखी पाती, जो पत्रका गया समझाईआ। गुरुआं दी सुणी भविख्त वाली साखी, जो साख्यात दए गवाहीआ। पैगम्बरां दा जीवण वेख्या हयाती, जन्म जन्म खोज खुजाईआ। जिस ने मैनूं बणाया दासी, हुक्म दिता धुरदरगाहीआ। मैं सूफ़ी सन्त फ़कीर चढ़दे वेखे फाँसी, फ़ैसला हक़ ना कोए कमाईआ। एसे कर के मैनूं अन्त

अख़ीर वर मिल्या पुरख अबिनाशी, नाते कूड़े दिते तुड़ाईआ। जो सचखण्ड दुआर दा सच्चा वासी, वास्ता भगतां नाल रखाईआ। जिस नूं लभ्भे कोई ना पंडत काशी, मुल्ला शेख़ रहे कुरलाईआ। ओह करे खेल अलखणा अलाखी, अलख अगोचर वड वड्याईआ। मैं राह तक्कदी जगत तक़दीर वाली बैसाखी, वसाह के गोबिन्द फेरा पाईआ। जिस विच पुरख अकाल होणा प्रतापी, प्रताप आपणा दए दृढ़ाईआ। कलयुग दी पुश्त पनाह ते ला के थापी, थप्पड़ मार के लए उठाईआ। उठ वेख लै आपणे पापी, पारब्रह्म दए जणाईआ। जिन्नां तेरी मन्नी आखी, मेरा नाउँ गए भुलाईआ। कलयुग कहिणा एह प्रभू मेरी नहीं गुस्ताख़ी, हुक्म तेरा पूर कराईआ। जे तेरी निरगुण नूर जोत प्रकाशी, प्रकाशवान हो के वेख वखाईआ। बाकी झगड़ा मुका लहिणा देणा बाकी, हिसाब लेखा साचा देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सहज सहज तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखे जगत निमाज़ी, निवाज़श वाला नज़र कोए ना आईआ। जगत जहान वेखे हाजी, हज़रत तेरा दरस कोए ना पाईआ। मेरी अन्त अख़ीर कल काती नाल बाज़ी, बाज़ां वाला वेख वखाईआ। जो प्रभ दे भाणे अंदर सदा राज़ी, रज़ा विच चलके आपणी ख़ुशी बणाईआ। ओथे शरअ पोह ना सके क़ाज़ी, क़ज़ा दा झगड़ा दए मुकाईआ। खेल खेले परे इश्क हक़ीक़ी ते मजाज़ी, मज़हबां दा महबूब डेरा ढाहीआ। साचे भगतां दा बणया रहे इमदादी, मदद विच अदद आपणे वंड वंडाईआ। निरगुण जोत जगा महताबी, आफ्ताब दा लेखा दए मुकाईआ। मनसा आसा पूर कराए नानक निरगुण बग़दादी, बग़लगीर दस्तगीर शाह हकीर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ कुड़िआर रहिण ना देवे नाज़ी, नाज़क वेला आपणा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं की दस्सां हाल, हरफ़ बहरफ़ जणाईआ। जिस दी करदे रहे भाल, लभ्भण थाउँ थाईंआ। जिस दी धार शाह कंगाल, कोझे कमले रूप बदलाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाल, दयानिध आप हो जाईआ। त्रैगुण माया तोड़नहार जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गुर दर मन्दिर जिस दी धर्मसाल, मठ देहुरे मसीतां दए वड्याईआ। उस दा खेल वेखणा कमाल, जो करनी दा करता आप कराईआ। जन भगतां देवे नाम सच्चा धन माल, दौलत दौलतख़ाना आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा हुक्म करे हर साल, अरसा विरसा आपणे हथ्थ रखाईआ।

✻ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ करनैल सिँघ दे गृह क़ादराबाद ज़िला अमृतसर ✻

सदी चौधवीं कहे मैनूं आ मिली जमना सुरस्ती गोदावरी गंगी, गंगोतरी आपणा पन्ध मुकाईआ। हस्स के कहिण नहा धो सीस वाह कंघी, मेंढी सगनां वाली लै गुंदाईआ। साचा वटणा मल हो के नंगी, तन वजूद कर सफ़ाईआ। वेख मुहम्मद दी आसा जो आस विच मँग मँगी, परवरदिगार अग्गे झोली डाहीआ। सदी चौधवीं किहा मैं तक्कणा नूर नुराना चन्दी, चौधवीं दा नूर नज़री आईआ। मैनूं ऐं जापदा मैं पै गई टेडी डंडी, भज्ज भज्ज थक्की वाहो दाहीआ। उम्मत दी मनसा हो गई गंदी, सुन्नत कम्म किसे ना आईआ। जां पलक चुक्की तां वेख्या गोबिन्द सूरा जंगी, जंगजू बहादर इक्को नज़री आईआ। जिस दी तलवार धार बहु रंगी, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। ओह फिरदा चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप कन्ढी, चले चाँईं चाँईंआ। सब दे उत्ते लाउँदा जाए पाबन्दी, अवतार पैगम्बरां रिहा डराईआ। छुडाउँदा जाए मज़हबां दी हद्दबन्दी, बन्दगी विच्चों बन्दगी रिहा बदलाईआ। मैं डरदी डरदी पीहवां दन्दी, दन्दासा मलिआ कम्म किसे ना आईआ। मेरी औध जांदी हंढी, अन्त अख़ीरी वेख वखाईआ। मेरी टुट्टी जगत मंजी, पावा चूल ना कोए सुहाईआ। मैं फिर फिर चारे कूट हम्भी, कूट कुण्ट वेख वखाईआ। ऐस वेले रही कम्बी, डर अन्तर मेरे छाईआ। क्यों जगत फ़कीर सन्त हो गए डम्बी, हक़ विच हक़ीक़त ना कोए समझाईआ। पवण मिले कोए ना ठंडी, अगनी तत रही तपाईआ। टुट्टी सके कोए ना गंढी, गंढणहार ना दया कमाईआ। फिरी दरोही विच वरभण्डी, ब्रह्मण्ड देण दुहाईआ। दीन दुनी होई अन्धी, नेत्र अक्ख ना कोए खुलाईआ। मैं हार थक्क के अन्त इक दुआरा लँघी, पिछला पन्ध मुकाईआ। जिथ्थे बैठा सूरा सरबंगी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। ओथे वासना दिसे कोई ना मंदी, मंद भागां लए तराईआ। धार रहे ना कोए दो रंगी, एका रंग रिहा चढ़ाईआ। जिस दा गोबिन्द सूरा भुजंगी, अष्टभुज बैठी सीस निवाईआ। रविदास चमारा छड्ड के आर रम्बी, रब्बी नूर दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नहा धो के धोता मूँह, नैण कज्जल ल्या पाईआ। आपणी पाक कर के रूह, रहिबर वल वेख वखाईआ। की हुक्म देवे शब्द गुरु, गुरदेव की जणाईआ। की आशा दस्से धूह, धर्म दी धार प्रगटाईआ। की मार्ग होणा शुरु, शरअ दए बदलाईआ। की मन्त्र मात फुरू, फ़ुरने मन दे बन्द कराईआ। किस बिध पुरख अकाला मुड़ू, लोकमात वेस वटाईआ। किस बिध भगतां नाल जुड़ू, जोड़ी आपणी लए बणाईआ। किस बिध कलयुग कूड़ी क्रिया बेड़ा रुढू, वहिण वहिण दए दुहाईआ। किस बिध मालक ख़ालक हो के तुरू, तुरत आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा

हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे नी मैं की करां इक्केली, कल्ली समझ कुछ ना आईआ। मुहम्मदा बण मेरी सहेली, सखी हो के संग निभाईआ। मैनूं मातलोक विच्चों कर दे वेहली, पिछला पैंडा दे मुकाईआ। मैं चौदां सौ बरस बणी रही तेरी चेली, सेवक हो के सेव कमाईआ। वड़ी रही चौदां तबकां दी हवेली, हवालात नज़री आईआ। हुण मैं जोबनवन्ती नौजवान अलबेली, आपणा बेली लभ्भणा चाँईं चाँईंआ। जिस ने खेल जुगो जुग खेली, ख़ालक ख़लक दए वड्याईआ। सगनां दी धार लै के जावां मिट्ठी भेली, रस रस विच्चों प्रगटाईआ। भेंट चढ़ावां मुहब्बत वाली छेली, ईद बकरीद ना कोए मनाईआ। चौदां बरस दी मैं सडौल गेली, गली वेखणी धुर दे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ । सदी चौधवीं कहे मैं नहा धो के पाया बुरका, मुख आपणा ल्या छुपाईआ। पहलों फेरा मारां विच तुरकां, तुरकी वाले लवां उठाईआ। फेर अरब खावां फुलका, रुक्खी मिस्सी खा के आपणा झट लँघाईआ। फेर खेल करां दीवा गुल का, चन्द नूर ना कोए चमकाईआ। रंग वखावां आपणे बुल्ल का, बुलबुल हो के नज़री आईआ । लहिणा देणा मुकावां मुहम्मद वाली कुल दा, कुल्ल मालक नाल करां सालाहीआ। धूंआं धुखदा रहे ना किसे चुल्ह दा, चुली पाणी दयां तड़फाईआ। लहिणा मुकावां अली दे दुलदुल दा, दुबले वेखां थाउँ थाईंआ। उम्मती बूटा वेखां हुलदा, फल फुल्ल ना कोए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा जी करदा मैं नक्क पावां नथ, ब्लाक साढे तिन्न टिकाईआ। फेर मक्के मदीनिउँ जावां नठ, पगली हो के भज्जां वाहो दाहीआ। चौदां तबकां वेखां हट्ट, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। सारी सृष्टी वेखां तक्क, किथ्थों मिले नूर खुदाईआ। मैं चरणी डिग्गां झट, खुल्ल्हे झाटे सीस निवाईआ। जां वेख्या मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ, गुरुदुआर ख़ाली नज़री आईआ। नेत्र रोवण तीर्थ तट, किनारे देण दुहाईआ। मैं नाले रोई ते नाले पई हस्स, दोवें वेस वटाईआ। मैनूं लभ्भे ना मेरा हक़, हक़ीक़त भेव ना कोए खुल्हाईआ। सब दे उत्ते प्या शक्क, शिकवे विच दुहाईआ। मेरी थोड़्हे समें वास्ते सोचदयां सोचदयां लग्ग गई अक्ख, आलस निंदरा विच समाईआ। मैनूं आवाज़ किसे सुणाई नाअरा हक़, हक़ हक़ जणाईआ। ओ कमलिए जे नूर मिलणा मुहम्मद दी धार दा सच, जल्वागर खुदाईआ। उह वस्से विच साढे तिन्न हथ्थ, जगत काअबे गया तजाईआ। उह नौजवान गोबिन्द सूरा सर्ब कला समरथ, साहिब स्वामी इक अख्वाईआ। जे लोकां तों पुच्छेंगी ते तैनूं दस्सणगे जट्ट, तत्तां वाला जगत जणाईआ। वेखीं सुण के पिच्छे ना आवीं हट्ट, आपणी पिठ्ठ बदलाईआ। सुण के जा धुर दी मति, मता धुर दा दयां सुणाईआ। उहदे चरणां जा के ढठ्ठ, आपणा सीस निवाईआ। जे किरपा कर के तैनूं लए रख, घर आपणे लए वसाईआ। सच प्यार

दा देवे रस, रस्ता अगला दए दृढ़ाईआ। फेर तैनूं चौदां तबक दिसण ख़ाली कख्ख, क़ीमत करता ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नहा धो के कीती गुत्त, सोहणा आपणा रूप बणाईआ। मैं वेखणा अबिनाशी अचुत, परवरदिगार नूर खुदाईआ। मेरे अंदर आवाज़ आई हाए उफ़, उल्फ्त विच जणाईआ। नी मुखों कर चुॅप, क्यों रही कुरलाईआ। जिंनां चिर पहलों मिलें ना पुरख अकाल दे गोबिन्द सुत, तेरी सुत्ती दी अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। उहदे अंदर तेरा परवरदिगार बैठा लुक, लुक्या नज़र किसे ना आईआ। दुनियां कहे उह सुत्ता घूक, नी ओह वेखे सृष्ट सबाईआ। तेरा अन्त अख़ीरी वेला रिहा ढुक, साल बसाला दए दुहाईआ। हुण हिम्मत कर के उठ, आपणी लै अंगड़ाईआ। चरण कँवल ओस दे घुट्ट, जे घुट आबेहयात दए प्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या चारे रुख, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जां तक्कया ईसा मूसा मुहम्मद ओसे दे कोलों रहे पुच्छ, की अगली कार कमाईआ। क्यों होया अन्धेरा घुप, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं हैरान हो गई मुहम्मद दी कटी वेख के मुच्छ, लबां उत्ते नूर ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मैहन्दी दा लाया सगन, अमाम मैहदी दिता जणाईआ। मैं वेखण लग्गी उत्ते गगन, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। कुछ अंदरों लग्गी मँगण, वास्ता दिता पाईआ। धुर हुक्म होया ओस दे कोल जाह जिस दे हथ्थ नाल सोहे धुर दा कंगण, कंघा आपणी कार कमाईआ। ओह प्रभ दा नूर चन्दन, चांदनी चन्द करे रुशनाईआ। डंडावत कर बन्दन, सीस सजदयां विच झुकाईआ। जे किरपा कर के लावे तैनूं अंगण, आपणी गोदी लए बिठाईआ। उस दा तत्तां वाला ना वेखीं बदन, ओहो नूर नूर खुदाईआ। अलाही ज़ात अलाही रब्बन, अल्लाह आपणी कार कमाईआ। औह वेख गुर अवतार पैगम्बर ओसे नूं जपण, जिस दा जाप दीन दुनी रसना नाल गाईआ। तेरा फल लग्गा पक्कण, वेला वक्त दए दुहाईआ। जगत संसार लग्गा तपण, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। उह इक्को आया सब नूं रखण, रक्ख्या करे थाउँ थाईंआ। जिस दा इक्को किनारा घाट पत्तन, नईआ नौका इक्को इक वखाईआ। ओथे कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड तबक टप्पण, क़दम क़दम नाल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आपणी सोहणी सूरत बणाई चिट्टे वेखां दन्द, दन्दासा धुर दा इक लगाईआ। मैं चौदां तबकां दी खलो के नाल कन्ध, आपणा पासा ल्या रगड़ाईआ। अल्ला हू दा ला के छन्द, नाअरा ल्या सुणाईआ। मैं तक्कया असमान उत्ते चन्द, तारिआं विच सोभा पाईआ। मेरा खुशी हो गया बन्द बन्द, बन्दगी कर के सीस निवाईआ। मैनूं आवाज़ आई उच्ची पवे डंड, रौला

दो जहान दए सुणाईआ। नी तेरी चौधवीं सदी रही हंढु, आपणा पन्ध मुकाईआ। अग्गे बिना गोबिन्द तों देणा नहीं किसे ने अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों ना कोए प्रगटाईआ। ओह छुपण वाला नहीं चन्द, आदि जुगादि करे रुशनाईआ। कुझ ओस दे कोलों मँग, जो देवणहार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा पूरा करे पन्ध, रस्ते सके ना कोए अटकाईआ।

पहला इष्ट सी नानक गोबिन्द धार, आशा गोबिन्द नाल प्रनाईआ। पिछले जन्म तूं पुरी अनन्द सेवा कीती साल चार, धीरा तेरा नाम नज़री आईआ। तेरा जन्म घर सी ज़िमींदार, जो कौम ठाकर दा अख्वाईआ। तेरे अन्तर उपज्या इक प्यार, आत्म लई अंगड़ाईआ। मैं जन्म लवां सुधार, गोबिन्द संग बणाईआ। जेहड़ा दुखियां दा यार, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। तूं छड्ड के घर बाहर, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। हो के सिख त्यार, मुच्छ दाढ़ी केस वधाईआ। रोज़ नौ वेरां चरणां उत्ते करदा रिहा निमस्कार, चार साल साची सेव कमाईआ। इक दिन गोबिन्द पुच्छया नाल प्यार, प्रेम नाल बुलाईआ। बच्चया की सोहणा लग्गे संसार, की चंगी जगत वड्याईआ। तूं रो के किहा मैं तेरा दरस मँगां वसां तेरे दरबार, दर तेरी आस रखाईआ। जे तेरा पिता पुरख अकाल, मैनूं वी लै जा आपणे नाल, दरस कराउणा चाँईं चाँईंआ। गोबिन्द किहा तेरा पूरा करां सवाल, लोकमात आवां नाल लै के पुरख अकाल, मनुशा जन्म विच तेरा जन्म बदलाईआ। जिस वेले खेल करना भगत भगवान, तैनूं पंजां तत्तां दा देवां दान, वस्त आपणी झोली पाईआ। तेरा सुहा के पंज तत मकान, दरस करावां श्री भगवान, जिथ्थे झुलदा इक निशान, नानक गोबिन्द होए परवान, पहरेदार गोबिन्द आपणा रूप वटाईआ। एह पिछला लेखा दिता आण, लहिणा देणा मुकाया जगत चुकाई काण, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। फेर दस्सया ओहो गोबिन्द जोत सरूपी धुर दा प्रगट हो विच इन्सान, पंज तत पूरन पूरन पूरन ब्रह्म विच मिलाईआ। ओहो मंज़ल ते ओहो मकान, ओहो नानक ते ओहो गोबिन्द दी दुकान, सौदा इक्को हट्ट विकाईआ। सति जोत दी साची धार, जिस नूं कहिंदे अगम्म अपार, ओहो खेल करे करतार, करनी दा करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग दा लहिणा जगत जुग वेख वखाईआ। गुरसिख दा धरवास जे होवे टुट्टदा, जोगे वांग लए बचाईआ। दे के प्याला अमृत घुट दा, अंदरों करे सफ़ाईआ। जे भाग होवे निखुट दा, मेहर नज़र नाल तराईआ। क्यों साक जो बण गया पिता पुत दा, नाता सके ना कदे छुडाईआ। बेशक बच्चा कोटन वार बाप नालों रुसदा, ओह रुस्सिआं गोद बिठाईआ।

ओह जन्म जन्म दे विछड़यां नूं पुछदा, पसचाताप विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। गुरसिखो तुहाडा लहिणा देणा कदे नहीं मुकदा, जुग चौकड़ी चलया आईआ। तुहानूं नज़ारा देणा ओस सच्चे सुख दा, जिस सुख विच गोबिन्द आसण लाईआ। एसे कारण जामा दिता मनुक्ख दा, चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, क़ीमत पाए आपणे नाम दी इक तुक दा, तुख्म ताअसीर शाह हकीर दए बदलाईआ।

✻ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ सवरन सिँघ दे गृह पिंड कादराबाद ज़िला अमृतसर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं निशान लाया उत्ते आपणी ठोडी, लाल रंग ल्या चढ़ाईआ। मैं बहिणा ओस दी गोदी, जो गोदावरी कन्ढे गया समझाईआ। मैं छड्डणे सुन्नत बोदी, सम्मत प्रभ दा वेख वखाईआ। मैं चौदां सदीआं मुहम्मद दी खाणी रोज़ी, राज़क रहीम रिहा वरताईआ। फिर मिलणा प्रीतम चोजी, जो चोज निराले रिहा कराईआ। हंगता दी रहिणा नहीं फिर रोगी,
४३१ रोग अंदरो देणा कढ्ढाईआ। साचे दर दी पा के सोझी, समझ विच्चों समझ लैणी बदलाईआ। खोज के धुर दा धोबी, दुरमति ४३१
२१ मैल लैणी धुआईआ। बण के कमली कोझी, गल पल्लू लैणा पाईआ । जे तेरा खेल वेदी सोढी, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। २१
मेरी पुगदी वेख औधी, औध आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बदल देणा वरतीरा, लिबास आपणा लैणा उलटाईआ। मैं होई बड़ी दिलगीरा, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। मैं लभ्भदी ओह हीरा, जो निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जिस दे सीस होवे सोहणा चीरा, चीरे वाला धुर दा माहीआ। फिरदा होवे वांग फ़कीरा, फ़िकरे धुर दे ढोले गाईआ। मैं पुच्छां वे गुरु मेरे वीरा, कुछ मैनूं दे समझाईआ। जेहड़ा देंदा अमृत सीरा, किथे लुक्या शहिनशाहीआ। जो शरअ दीआं कट ज़ंजीरां, शरीअत विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। ओह पैगम्बरां दा पैगम्बर पीरन दा पीरा, पारब्रह्म अख्वाईआ। जिस नूं सजदा करे कबीरा, मक़बरयां वाली धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जिस दे कोल शब्द अगम्मी तीरा, कमान कंध नाम उठाईआ। जो पार कराए मार्ग रस्ता भीड़ा, भीड़ी गली ना कोए वखाईआ। मैं चौहन्दी उहदे दर ते मिले रंगला पीड़ा, सुहागण हो के जावां चाँईं चाँईंआ। मेरी बदल देवे तक़दीरा, तदबीर दए समझाईआ। खेल वेखां शाह हकीरा, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं मँग मँगां गुरमुखो जे इक इक्क मैनूं ल्या दयो कलीरा, कलीआं कौडीआं नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं बदल लैणा आपणा बदन, बदीआं विच्चों बाहर डेरा लाईआ। प्रभ खेल करन लग्गा कुछ विच अदन, तमद्दन वेखे थाउँ थाईंआ। कूड़ी कफ़नी लग्गा दब्बण, अल्फ़ी सच इक प्रगटाईआ। आ के आपणे पत्तण, होका रिहा सुणाईआ। जो तूं मेरा मैं तेरा नाम जपण, तिन्हां मिले वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं फिर के आई पाक पटन, पटने वाला ओथे रिहा सुणाईआ। मैं लहिंदी दिशा आई दस्सण, दह दिशा कहि सुणाईआ। मैं अक्खीं आई तक्कण, वेखां थाउँ थाईंआ। किथ्थों मैनूं प्रभ दा हीरा मिलदा रतन, हरिजन सोहणा रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बुल्लां लाई सुरख़ी, स्याह सुरख़ लए बणाईआ। चौदां तबकां दी मुहम्मद कोलों खुस्सण लग्गी कुरसी, अर्श कुर्श दए दुहाईआ। अग्गे रीती चलणी महापुरुष दी, गुर अवतार पैगम्बर सीस जगदीश झुकाईआ। हुण खेल वरतणी धुर दी, जिस नूं ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। एह कला वरतणी अनन्दपुर दी, पुरीआं तों बाहर डेरा लाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आई फिरदी तुरदी, चलां चाँईं चाँईंआ। मैनूं ख़बर मिले सच्चे सतिगुर दी, ढहि ढहि लागां पाईआ। मैं पिच्छे कदे ना मुड़दी, भावें मुहम्मद वरगे कोटां राह विच बैठे डेरा लाईआ। मैनूं इक्को लोड़ प्रभ दर्शन दे थुड़ दी, जेहड़ी पूर ना कदे कराईआ। मैं ओस मुहब्बत विच जुड़दी, जिथ्थे क़ाअबिआं वाले आपणा आप गए गवाईआ। मैं चौदां सदीआं रही झुरदी, हौकयां विच आपणा झट्ट लँघाईआ। हौली हौली रही खुरदी, खुर खुर के आपणी खलड़ी लई लुहाईआ। जिस वेले मैं ख़बर सुणी गोबिन्द बांके छोहर दी, शहिनशाह आया धुरदरगाहीआ। मैं कूक मारी उच्ची ज़ोर दी, चीखां नाल कुरलाईआ। मेरी आसा तेरे चरणां बौहड़ दी, बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ। मैं नंगी पैरीं दौड़दी, टिल्ले पर्बत समुंद सागर तक्के चाँईं चाँईंआ। मैनूं प्यास सी ओस दे प्रेम औड़ दी, ओड़क ओसे दा राह तकाईआ। दुनियां लभ्भे ज़ात ब्राह्मण गौड़ दी, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे ख़ुदा दी खेल खेले खेल चोर दी, चोरी चोरी भगतां रिहा मिलाईआ। मैं स्याणू मैं वाक़फ़ ओस दी तोर दी, जो जुग जुग आपणा कदम बदलाईआ। मैं निशानी रखी रवीदास वाली दोहर दी, जेहड़ी हेठां उत्ते लए टिकाईआ। मैं कोई ख़्वाहिश नहीं कमज़ोर दी, मुहम्मद ने हमदलिल्ला कहि के मैनूं ल्या प्रगटाईआ। मैं कोई बणी नहीं हिरदे कठोर दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच्चा मालक इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मथ्थे ला के बिन्दी, बिट बिट वेखां जगत लोकाईआ। झगड़ा प्या फ़ारसी उर्दू हिन्दी, गुरमुखी गुरमुख ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां नूं सारे जांदे निंदी, निन्दक होई लोकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गुरु ग्रन्थ नूं विका के विच टाकी चिन्दी, चन्दोइआ ताण के आपणा

सीस निवाईआ। किसे धार ना जाणी प्रभ दी धार सिन्धी, सागरां वहिण वहाईआ। दीन दुनी होई टेडी विंगी, रस्ता हक़ ना कोए अपनाईआ। सुफल होए ना किसे दी ज़िंदी, ज़िंदगी जीवण ना कोए बदलाईआ। धर्म दी प्यार दी वज्जे कोई ना किंगी, आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। रस माणदा जगत संसार निंदी, अमृत धार ना कोए चुआईआ। सदी चौधवीं कहे मैं उमर भोग लई इन्नी, अग्गे वधाउण दी लोड़ रही ना राईआ। मैं पोटयां उत्ते रही गिणी, गिण गिण झट लँघाईआ। मेरे साहिब ने खेल करना लोकमात विच दिन तिन्नी, तिन्नां लोकां झगड़ा देणा मुकाईआ। सृष्टी वधी दिनीं, जमां दे हथ्थ देणी फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक प्रगटाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मथ्थे पा के टिक्का, टिकटिकी इक्के विच लगाईआ। जिस ने लेख धुर दा लिखा, मुहम्मद दिती वड्याईआ। अन्त अख़ीर ओह सब नूं देण वाला पिच्छा, आपणी करवट लए बदलाईआ। मैं कूक पुकारां सुण लै धुर दिआ सिखा, सच सच सुणाईआ। इक्को मन्न लै पुरख अकाल पिता, पतिपरमेश्वर इक्को माईआ। जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा सिक्का, सिकम विच्चों झगड़ा दए उठाईआ। ओहदा तीर अणयाला तिक्खा, तृखा विच दो जहान तड़फाईआ। जिस दा भाणा सब ने कर के मन्नया मिट्ठा, सिर सक्कया ना कोए उठाईआ। अग्गे खेल करना अनडिठा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं काले तों सिर ते ओढ़ुन लैणा चिट्टा, चिट्टी धार गुरमुखां नाल मिलाईआ। मेरी इक्को आसा मनसा इक्का, इक्को दी सरनाईआ। गुरमुखो मैं पहली कत्तक तुहाडे नाल पाउण आउणा हिस्सा, हिस्सेदारी लैणी बणाईआ। नाले दस्सांगी की गोबिन्द ने मेरे वास्ते लिख्या चिठ्ठा, सरसे विच गया दबाईआ। जेहड़ा लम्मा चौड़ा सी सवा गिट्ठा, चौदां सौ अक्खरां वंड वंडाईआ। ओहनूं छुहा के आपणे नाल गिट्टा, फेर चरणां नाल दिता दबाईआ। चौदां तबकां दी दरम्यानी धार वेख के विंथा, दोहां दे विच दिता टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो जे तुसां बणना मेरे वीरे, वीरता लैणी अपणाईआ। मेल करना ज़ाहरे पीरे, पारब्रह्म प्रभ जोड़ जुड़ाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू वाल्लयो नाल लै के आउणे कलीरे, पंज पंज जोड़ जुड़ाईआ। एह खेल करना दस्तगीरे, जो दस्त बरदार करे लोकाईआ। मैं बहणा ओस रंगले पीढ़े, जेहड़ा सतारां हाढ़ उत्ते करनाल वाले लै के आईआ। इक्ठे करने सर्ब फ़कीरे, फक्के झोलीआं विच पाईआ। वेख्यो अग्गे रिहो ना कोए ख़मीरे, ख़मीर दूई दा देणा कढ्ढाईआ। पुरख अकाल बदल देवे ज़मीरे, ज़ामन हो के होए सहाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा खेल शुरु होणा धीरे धीरे, धरती धवल धौल उत्ते वेख वखाईआ।
. . . .

❋ १६ अस्सू शहिनशाही सम्मत ४ बूड़ सिँघ दे गृह क़ादराबाद ज़िला अमृतसर ❋

सदी चौधवीं कहे मैं आवां पैर दब्बी, हौली हौली पन्ध मुकाईआ। नूर तकदी आवां अलाही रब्बी, रब्बीउल अमाम शहिनशाहीआ। नाल लै के आवां रसूल नबी, पैगम्बर पीरां नाल मिलाईआ। मेरी मेंढी सीस नंगी होवे अद्धी, अद्धा ओढुन नाल ढकाईआ। नाले चुक्की आवां आपणी गद्दी, जो लिख के दिती धुरदरगाहीआ। क़बरां विच्चों कढ्ढ के लिआवां इक हड्डी, जो शाह रग दी घंडी रूप वटाईआ। निशानी लिआवां नाल मुहम्मद दी अड्डी, सवा इंच वेख वखाईआ। संदेसा दे के आवां नूह नदी, हुक्म धुर दा इक जणाईआ। सब नूं होका दे सुणावां एह मातलोक समां मिलदा कदी कदी, जुग चौकड़ी नज़र किसे ना आईआ। चार कुण्ट जणाउँदी आवां दुनियांदारो छड्ड दयो गद्दी, बदला देणा पए धुरदरगाहीआ। मेरी वेखो बीतदी सदी, सदमे घर घर देवां पाईआ । मेरा संदेसा सुटिओ ना कोए विच रद्दी, कूड़ क्रिया ना कोए मिलाईआ। जिस ने गोबिन्द दे सिर ते पग्ग बद्धी, ओह बन्दना सब नूं दए समझाईआ। उहदी जोत इक्को जगी, दो जहानां करे रुशनाईआ। मैनूं वी अजे चंगी तरां नहीं लभ्भी, सोआं सुण के फिरां चाँईं चाँईंआ। मैनूं हुणे ओस दी अंदर लग्न लग्गी, लगां मातरां पिछली गई भुलाईआ। मेरे अंदर पवण वगी ठंडी, सांतक सति रही कराईआ। मैनूं ऐं जापदा ओह सारयां नूं इक्को धार नाल रिहा गंढी, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। मैं हैरान होई उहनूं सारे कहिंदे पखण्डी, जगत दए दुहाईआ। उन मेरे अन्त तक सारे पा देणे इक डंडी, डण्डा धुर दा हथ्थ उठाईआ । गुरमुख आत्मा रहिण देणी नहीं कोई रंडी, सुहागी कन्त लैणा मिलाईआ। इक फ़रमान दी ला पाबन्दी, तुफ़ान कूड़ा देणा गुआईआ। ओह योद्धा सूरबीर जंगी, जंगल जूह वेख वखाईआ। तेरां सौ नड़िनवें तक सब दे उत्ते आउँदी जाणी तंगी, तंग दस्त ना कोए छुडाईआ। मैं अज्ज तक किसे नूं गल्ल दस्सी नहीं कोई चंगी, बूँद बूँद नालों प्रगटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप प्रगटाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो आयो नाल रीझां, पहली कत्तक खुशी मनाईआ। मैं तुहानूं दस्सणीआं आपणीआं ईदां, अगलीआं थितां दयां दृढ़ाईआ । तुसां वेखणा ला के नीझां, नेत्र अक्ख इक खुलाईआ। मेरीआं आसा मनसा पूरीआं होणीआं उम्मीदां, आमद विच वज्जे वधाईआ। सब दे अंदर आउणीआं तमीज़ां, तमअ देणी गुआईआ। तुहानूं वखावां तुहाडा पिता पुरख अकाल ते मेरे वलों तुहाडा जीजा, जग जीवण दाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं लाणा हार श्रृंगार, सोहणा रूप सुहाईआ। मैं प्रनाउणा इक परवरदिगार, जल्वागर नूर खुदाईआ। जिस दा सच्चा होवे प्यार, आदि जुगादि ना कोए जुदाईआ। बणी रहवां सेवादार,

सद चरणां सेव कमाईआ। हो के ख़िदमतगार, ख़ादम आपणा रूप वखाईआ। कर के निमस्कार, डंडावत विच दुहाईआ। किरपा कर सांझे यार, यारड़ा सथ्थर वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट संसार, संसारी भण्डारी चले ना कोए चतुराईआ। तेरा सोहणा दिसे दरबार, दर दुआरा इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे झुकण नर नार, नर नरायण वज्जे वधाईआ। तेरा हुक्म होवे मुख्त्यार, मुख़तारनामे सब दे पूरे देणे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा देणा वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बणना जोबनवन्ती, सोहणा रूप बणाईआ। मैं वेखणा रंग बसन्ती, रुत बहार महकाईआ। मैं प्रनाउणा धुर दा कन्ती, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस दे नाम दी इक्को पंगती, बहुता पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। उह माण देवे हरि संगती, सच सज्जण नूर खुदाईआ। झगड़ा मुका के बहिश्त जन्नती, स्वर्गी डेरा ढाहीआ। लोड़ रहे ना किसे अन्न दी, तृखा तृष्ना ना कोए तपाईआ। ओस दा हुक्म रहवां मन्नदी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। सूरत वेखां ओस चन्न दी, जो दो जहान करे रुशनाईआ। उहदी महिमा होवे धन्न धन्न दी, रसना जिह्वा सारे ढोले गाईआ। सरोत मुक जाए सरवण कन्न दी, अनहद नादी नाद दए सुणाईआ। चिन्ता रहे ना हरख सोग ग़म दी, सांतक सति दए वरताईआ। लेखे ला लए धार पवण स्वास दम दी, दामनगीर आप हो जाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं निंज मुहम्मद दे घर जम्मदी, अन्तिम होणी जुदाईआ। मेरी काया नहीं किसे काया माटी चम्म दी, तन वजूद ना कोए वखाईआ। मैं ओसे दी धार विच पलदी, पलक पलक ना झल्लां जुदाईआ। मेरे अंदर ओसे दी जोत बलदी, जिस नूं बलीदान दे के गुर अवतार पैगम्बर आपणा बैठे सीस निवाईआ। एह खेल ओस अछल अछल्ल दी, जो वल छलधारी आपणी कार कमाईआ। मैं धुर संदेसा घल्लदी, घल्लूघारा होणा लोकाईआ। प्रभ दी खेल कदे ना टल्दी, टल्लीआं मन्दिर विच वजा के ना सकण बचाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, पलकां दे पिच्छे की की कार वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं करनी इक अरदास, बेनन्ती देणी जणाईआ। मैनूं पूरा भरोसा सब दे उत्ते विश्वास, विशा आपणा देणा जणाईआ। मैं फिरदी रही विच प्रभास, जंगलां विच दुहाईआ। मैं तकदी रही उत्ते आकाश, काश चौदां सदीआं विच मैनूं मिलण कदे ना आईआ। मैनूं लग्गी रही प्यास, तृखा ना कोए बुझाईआ। जे जुझार नूं गोबिन्द दे देंदा इक ग्लास, फेर सदी चौधवीं कहे मेरी क़ीमत रहन्दी ना राईआ। मैं एसे कर के रही भाज, भज्जां चाँईं चाँईंआ। जिस ने बदल देणा समाज, समां देणा उलटाईआ। मेरा ओस दे नाल होवे काज, अनन्द ओसे विच्चों प्रगटाईआ। नाले कन्त कहां नाले भगवन्त कहां नाले कहां गुरु महाराज, तेरे चरणां सीस झुकाईआ। अगला लेखा मैं फेर दस्सां जिस वेले

सिर ते लग्गा वेखूं ताज, ताजां वाला धुरदरगाहीआ। उहदे हथ्थां उत्ते गुरमुख उडदा होवे बाज़, बाजां वाला सोभा पाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं फेर ओह सुणाऊँ राग, जिस नूं अज्ज तक सक्कया कोए ना गाईआ। जिस दा मुहम्मद मुहताज, रोज़यां विच पढ़े निमाज़, भुक्खा रैह के झट्ट लँघाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं ओस दी तुहानूं दस्सणी अगम्मी आवाज़, जेहड़ी क़ुरान शरीफ विच अलिफ ये दे नाल ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो मैं आवां नीवीं, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मस्ती विच होवां खीवीं, ख्वाजा ख़िज़र चरण धोण नूं नाल उठाईआ। एह सदी होणी वीहवीं, ईसा दए गवाहीआ। मैनूं उम्मत वाल्यां कहिणा ओह सदी चौधवीं ओस दी बण गई बीवी, जिस ने बेवा करनी लोकाईआ। मैनूं कोई डर नहीं भावें लख चुरासी कहे प्रभू दी तीवीं, मैं खुशीआं विच आपणा झट लँघाईआ। मैं चौदां सौ बरस ओसे दे आसरे उत्ते जीवी, आपणा झट ल्या लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आवां नेत्र रोंदी, बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ। ढोला आवां गाउँदी, गा गा जगत सुणाईआ। मैनूं लोड़ नहीं किसे माँ पिउ दी, भैण भाई साक सज्जण कम्म किसे ना आईआ। मैनूं प्रीती ओसे दे नेहों दी, जो लग्गी तोड़ निभाईआ। मैं निआज़ लिआउणी ओस अगम्मी घिउ दी, जिस घृत नूं जोतां वाली हथ्थ कोए ना पाईआ। मैं सेवा करनी ओस दयो दी, जिस नूं मसीह क़दमां विच झुक के सीस निवाईआ। मैं धार मँगणी ओस अमृत मेंहों दी, जो बिना रसना रस चखाईआ। सारी दुनियां ने समझणा एह खेल केहड़ी क्यों दी, क़ीमत करता कोए ना पाईआ। सच पुच्छो चौदां सौ बरस मैनूं अग्ग लग्गी रही बिरहों दी, विछोड़े विच तड़प तड़प के आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण कँवल दए सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं डरना नहीं किसे इस्लाम, पैगम्बरां भय ना कोए रखाईआ। मैं सुणनी नहीं कलाम, कलमयां देणा तजाईआ। मैं वेखणा नहीं कोई हजाम, मुच्छ दाढ़ी दए कटाईआ। मैं नबी छड्डुणे तमाम, चार यारां नालो यारी लैणी तुड़ाईआ। मैं वेखणा नहीं अराम, सुख कम्म कोए ना आईआ। मैं रहिणा नहीं गुलाम, शरअ ज़ंजीर देणा कटाईआ। मैं मँगणा नहीं इनाम, झोली अग्गे ना किसे फैलाईआ। मेरे अंदर चाउ घनेरा मैं वेखणा ओह अमाम, जिस नूं पैगम्बर सारे सीस निवाईआ। जिस दे हुक्म नाल आउँदे रहे जहान, लोकमात ढोले गाईआ। मैं ओस दा वेखणा मकान, जो मुकामे हक़ सोभा पाईआ। ओस दा जपणा नाम, जो नाउँ निरँकारा इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, मेरी आसा मनसा आपणे विच मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मथ्थे लाउँदी आवां ख़ाक, ख़ाकसार रूप वटाईआ। धन्न

भाग जे मिलण दा होया इतफाक़, इतफाक़ीआ मिल्या बेपरवाहीआ। मित्र प्यारा धुर दा अहिबाब, सज्जण मीत सोभा पाईआ। सति सच वजाए रबाब, जो तूंही तूंही राग अलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं ओस दी याद विच अजे तक भुन्न नहीं खाधा कबाब, रसना रस ना कोए चखाईआ। किसे नाल अंग लगा के लगाया नहीं दाग़, दग़ेबाज़ छड्डी लोकाईआ। नाता तोड़ दिता समाज, बंधन रिहा ना राईआ। मैं मँगदी ओस दा राज, जो राउ रंकां लए बचाईआ। जिस ने खेल कीती आदि, अन्त ओहो वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा मेरी झोली पाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आयू विच लम्मी, मानवां दयां सुणाईआ। मैं मुहम्मद दी आशा विच जम्मी, कलमे विच आपणा नाँ धराईआ। धुर दे हुक्म नाल मन्नी, रज़ा विच सेव कमाईआ। सुख़न सुणया आपणी कन्नीं, संदेसा धुरदरगाहीआ। सुण मेरी लाडली चन्नी, चन्द सितारा तेरी दए गवाहीआ। चौदां सदीआं उम्मत धार बन्नी, बंना हद्द दिता वखाईआ। जिस वेले कायनात होणी अन्नी, नेत्रहीण दए दुहाईआ। मित्र प्यारा रिहा कोए ना तनी, मुल्ला शेख़ मुसायक पल्लू जाण छुडाईआ। ओस वेले तूं इक परवरदिगार दी बणी वंनी, ख़ावंद इक लैणा हंढाईआ। जिस दा वस्सेरा नहीं छप्पर छन्नी, जंगल जूह ना डेरा लाईआ। प्यार मुहब्बत विच तेरे नाल बन्नू लए आपणी कन्नी, चौदां सौ साल दी कँवारी कन्या लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दा मित्र प्यारा धुरदरगाही तनी, तन मन दा राखा आप अख्वाईआ।

४३७ २१

सदी चौधवीं कहे मेरा सत्त रंग दा होवे कलीरा, हिस्से पंज पंज बणाईआ। माझे विच्चों लिआवे नरैण सिंघ मेरा वीरा, पुर गुमान सोभा पाईआ। दुआबे विच्चों लाल सिंघ बण के हीरा, हथ्थ आपणे लए टिकाईआ। मालवे विच्चों सुदागर सिंघ बन्नू के लाल चीरा, धुर दी सेवा लए कमाईआ। जम्मू विच्चों चेला सिंघ आवे धीरा धीरा, धर्म दी धार रूप बदलाईआ। चौहां दा होवे इक वतीरा, हथ्थ हथ्थ नाल मिलाईआ। वीहां दा वीहवीं सदी होए अख़ीरा, वाहवा वज्जे वधाईआ। किशन सिंघ डाहवे पीहड़ा, ढाई गज़ पुराणा दुपट्टा उपर पाईआ। मेरे लागे थाँ ना होवे भीड़ा, सत्त सत्त क़दम जगह देणी बणाईआ। इक फड़ के काला कीड़ा, मार के पीहड़े उत्ते देणा टिकाईआ। इक दाणा लै के ज़ीरा, नाल देणा रखाईआ। सवा पा दुध्ध होवे शीरा, मिट्ठा रस चखाईआ। इक किरपान दा होवे बीड़ा, शस्त्र देणा टिकाईआ। लाल रंग दी मार लकीरा, हद्द देणी सुहाईआ। केअर सिंघ बण के हाल फ़क़ीरा, बग़ली गल विच लटकाईआ। आसा सिंघ संगल गल पा ज़ंजीरा,

वल तिन्न तिन्न वखाईआ। भजन सिँघ लै के इक गडीरा, बच्चयां वांग भज्जे चाँईं चाँईंआ। दविंदर लै के लाल लीड़ा, नन्ही बच्ची रूप वटाईआ। जुगिंदर सब दी बण हमशीरा, पाणी ग्लास हथ्थ उठाईआ। प्रीतम सिँघ दुआबे वाला आपणी नंगी करके हड्डी रीड़ा, काला दाग़ लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे कोल होवे इक गूंगा, मुख कहिण कुछ ना पाईआ। अमीर चन्द गुलाटी फुल्लीआं दा लै के आवे झूंगा, पिछला लहिणा झोली पाईआ। नाल छोटा बच्चा होवे मुंडा, कुक्ख कश्मीरो दए सुहाईआ। गुरसिख इक लत्तां तों होवे टुंडा, सहारा लाठी वाला बणाईआ। रणजीत कौर कन्न विच पा के बुंदा, केस खुल्ल्हे दए रखाईआ। अग्गे वेखो खेल केहड़ा फेर हुंदा, हिन्दुस्तान विच दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे गिरधारे कोल होवे टुकड़ा बरफ़ी, हथ्थ सज्जे विच उठाईआ। चरणी कोल होवे कड़छी, जो घर बाहर छड्ड के प्रभ दी सेव कमाईआ। राम सिँघ कोल होवे पर्ची, बधक दा लेखा दए चुकाईआ। बिशन कौर दे कोल होवे चरखी, सूत्र तन्द इक वखाईआ। बसन्त कौर दी चिट्ठी होवे वरदी, अन्त दा लेखा दए मुकाईआ। हरबंस कौर प्रभ दी बाणी होवे पढ़दी, शब्दी राग अल्ल्हाईआ। सब दा मुख होणा दिशा चढ़दी, मनजीत दए गवाहीआ। लहिंदी दिशा वेखो लड़दी, सदी चौधवीं आख सुणाईआ। एह खेल आपणे घर दी, घर विच लैणी बणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं आई हक़ विचार, विच्चर के दयां जणाईआ। मैं आउणा भगत दुआर, खुशीआं विच चाँईं चाँईंआ। बाहर करां निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। नौ दा वक्त लैणा विचार, वद्ध घट्ट ना कोए रखाईआ। पंज प्यारे मैनूं मिलण पहली वार, बस्तर पीले तन छुहाईआ। नंगी कढ्ढ के हथ्थ कटार, कटाकश धुर दा देण लगाईआ। मैं कर के निमस्कार, सीस दयां झुकाईआ। मैं सुणया तुहाडा वस्से एथे यार, करता धुरदरगाहीआ। जे तुहानूं उहदे उत्ते एतबार, मैनूं दयो मिलाईआ। मैं सगन मनाउणा विच संसार, संसारी भण्डारी नाल रखाईआ। नबी रसूल डरदे कुछ ना सकण उच्चार, भय विच अक्ख ना कोए खुल्ल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणा उह आसण, चिरां तों आस रखाईआ। जिथ्थे बहे पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। वछाउणी ओह चादर, जेहड़ी कौर तृप्त दी सेव लगाईआ। बख्शीश सिँघ होवे नाल साथन, कन्नी कन्नी नाल उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दुहाई दे के कहां मैं सदीआं दी पापण, मेरा पाप ना कोए गवाईआ। जिस वेले मुहम्मद दी उम्मत लग्गी गवाचण, मैं विच्चों पैर आई ख़िसकाईआ। मेरा सुखी होया स्वासन, जन भगतां दर्शन पाईआ। मुनी मुनीश्र सारे आखण, एहो धुरदरगाहीआ। अज्ज मेरी लेखे लग्गी सगनां

वाली कीती दातण, आपणा रंग बदलाईआ। मैनूं सारे अंदरों प्रभू दे प्यारे जापण, जो सोहँ जप के आपणा झट लँघाईआ। जेहड़े इक्को अक्खर वाचण, जगत विद्या डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं वखाइओ काली अल्फ़ी, अलिफ़ ये दिती तजाईआ। मेरे ख़ुदा दी चौथी बरसी, चौथा जुग दए दुहाईआ। जन भगतो मैं तुहाडे विच हो जाणा भरती, आपणा नावां लैणा लगाईआ। फिर तुहाडे अग्गे करांगी अर्ज़ी, अर्ज़ देणी सुणाईआ। सतिगुर कदे ना मन्निओ फ़रज़ी, जो जम्म के फेर मर जाईआ। पुरख अकाल बिना कोई नहीं तुहाडा दर्दी, मात पित भाई भैण झूठे नाते जाण छुडाईआ। नार कन्त इक दूजे दे गर्ज़ी, अन्त तोड़ ना कोए निभाईआ। मैं चौहन्दी तुहाडी सारयां दी प्रभ दे नाल हो जाए मर्ज़ी, जन्म मरन दी मर्ज़ रहे ना राईआ। जे तुसीं रोको प्रभ दर्शन तों मैं नहीं रहिणा वरजी, वाजब बचन दिता सुणाईआ। मेरे वास्ते साढे तिन्न गज़ दी अल्फ़ी सीं के लिआवे लाल सिँघ दरज़ी, जो याराना पिछला मुहम्मद नाल रखाईआ। मैं फिर भेद खोल्ह़ांगी अगली गल्ल दी, की आशा होर वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे इक्को मेरा अब्बा, आलमीन अख्वाईआ। जिस दा दो जहान दब्बा, भय विच डराईआ। ओह लम्भयां किसे ना लभ्भा, खोजे जगत लोकाईआ। वस्से आपणी हद्दा, सचखण्ड डेरा लाईआ। सब तों वखरा अड्डा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जे भगत देवे ओहनूं सद्दा, ओह लोकमात आवे चाँईं चाँईंआ। जुग चौकड़ी प्रेम प्यार दा बद्धा, बन्दना विच सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, तारनहारा मच्छ कच्छ डड्डां, डंडावत विच मनौत आपणी इक जणाईआ।

गुरमुख इक्की लाल बन्न्ह़ण दस्तारे, इक्कीआं गंढु पुआईआ। दस विआहे दस कँवारे, इक्कीवां रंडां नज़री आईआ। सारयां दे हथ्थ विच होण पंज पंज छुहारे, वड्डा छोटा ना वेख वखाईआ। इक्की इक्की बोलण जैकारे, ढोला धुरदरगाहीआ। सुरजीत सिँघ होवे विचकारे, बैठा उडुया इक्को रंग रंगाईआ। जिस दा विआह होणा सी दुबारे, ओसदा लहिणा पूर कराईआ। गुरदर्शन दे थोड़े दिन रहन्दे सी विच संसारे, नौ माघ अन्त अख़ीर समझाईआ। ओस नूं जन्म देणा फेर विच्चों आपणी धारे, पिछले कर्म दा लेख बणाईआ। बावन बलि बलि बावन दोवें करन निमस्कारे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरा खेल सच्ची सरकारे, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला वेख वखाईआ।

सदी चौधवीं कहे एह खेल प्रभू महाना, मैं सच दयां जणाईआ। जेहड़ा पीड़ा मँगाया सी नाल बहाना, विआह गुरदर्शन दा याद कराईआ। अजे तक ओस नूं हुक्म नहीं दिता तेरा एस उत्ते मालकाना, तेरी वंड वंडाईआ। ओहनूं रख्या कर बेगाना, सदी चौधवीं नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल दया कमाईआ। गुरदर्शन दा लेखा पिछले सतिजुग दी धार, चार जुग तों चली आईआ। सदी चौधवीं कल होई त्यार, मुहम्मद नाल वड्याईआ। खेल करन वाला करतार, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जिस कन्या ने घर घर भगतां दे दुआरे भोग दा कराया विहार, राउ रंक इक्को जेहे दिते बणाईआ। ओस दी जगह सदी चौधवीं नूं पीहड़े उत्ते देणा बैठाल, मौत नाल लाड़ी देणी प्रनाईआ। प्रभ दा खेल कोई ना जाणे सारे जीव बाल, बाली बुध्ध ना कोए वड्याईआ। बिना वक्त तों पुरख अकाल कदे नहीं करदा इक़बाल, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। बलि वेले दा सवरन सिँघ एस घर दा इक निक्का जिहा बाल, जो बावन दा दर्शन पाईआ। एसे कर के एथे खोल्या हाल, अगला लेखा फेर दयां समझाईआ। प्रभ दी मर्ज़ी जिस नूं चाहे मारे जिस नूं चाहे दए ज्वाल, पुच्छण वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ।

२१ २१

✻ पहली कत्तक शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सदी चौधवीं कहे मैं आई भज्जी नट्ठी, बन्दगी बंदयां वाली तजाईआ। चौदां तबकां टप्पी, पल्ला आई छुडाईआ । आशा कर के पक्की, पहुंची चाँईं चाँईंआ। मेरी प्रीत होवे ना कच्ची, कच्चा तन्द ना रूप वखाईआ। जो पिछली आसा रखी, सहजे पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हक़ीक़त हक़ी, हक़ दयां दृढ़ाईआ । सदी चौधवीं कहे मैं आ गई नाल चा, चाउ घनेरा इक जणाईआ। मैं भगत दुआरे अग्गे ल्या साह, साह साह विच्चों बदलाईआ। पंजां प्यारयां कोलों मँगी पनाह, सीस सीस झुकाईआ। मेरा पिछला बख्शो गुनाह, दुखड़ा रहे ना राईआ। मुहब्बत विच करो हां, हामी भरो थाईं थाईंआ। मैं वी जा के दर्शन करां, जो मालक धुरदरगाहीआ। जिस ने जीवण देणा नवां, नव नौ चार डेरा ढाहीआ। मेरा पूरा होया समां, सहज सहज सुणाईआ। मैं ओस दी चरणी पवां, पवण पाणी जिस दी सेव कमाईआ। ओस दुआरे बहवां, जिथ्थे बैठयां ना कोए उठाईआ। मैनूं जगत दी नहीं कोई तमअ, लालच विच ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा वेखो

तन वजूद, अंदर बाहर वज्जे वधाईआ। मिल्या मालक इक महबूब, महव नूर खुदाईआ। जिस दा सारे देंदे गए सबूत, भविख्तां विच लिखाईआ। जिधर वेखां ओधर मौजूद, चारों कुण्ट नूर रुशनाईआ। मंज़ल दस्स हक़ मक़सूद, दरगाह साची इक वड्याईआ। जिथ्थे अक्खर नहीं हज़ारा दरूद, बसरी इस्म ना कोए शनवाईआ। ना कोई हथ्थां वाली पूज, ना कोई सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आई भज्जी दौड़ी, पिछला पन्ध मुकाईआ। चौदां तबकां ला के पौड़ी, पौड़ी डंडे आई तजाईआ। उम्मत अन्तिम वेखी कौड़ी, मिट्ठा रस ना कोए चखाईआ। मेरी दुहाई बौहड़ी बौहड़ी, होका हक़ अल्लाईआ। मैं वेखणा तक्क के ग़ौरी, बिन नेत्र अक्ख खुल्लाईआ। नज़र आया अवर दा औरी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आई दूर दुराडी नस्सी, नसां आपणीआं रही वखाईआ। चौदां वार मैं चौदां तबकां विच फसी, कन्ढे उत्ते डिग्ग डिग्ग आपणा आप भन्नाईआ। शरअ दी तोड़ के सहजे रस्सी, रस्ता आपणा ल्या अपनाईआ। मैं हैरान होई जिस वेले चार कुण्ट वेख्या आपणी अक्खीं, धुर दी अक्ख खुल्लाईआ। परवरदिगार दी दिसे कोई ना सखी, सख़ावत वाला हथ्थ ना कोए उठाईआ। मुहम्मद रिहा कोए ना हड्डी, ईमान अमाम ना कोए जणाईआ। सारे अलिफ़ ये दी पढ़दे पट्टी, अक्खरां वाली सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आई भगत दुआर, पिछला पन्ध मुकाईआ। मैं छड्ड के चौदां तबक चुबार, चारे कुण्टां डेरा ढाहीआ। मस्तक धूढ़ी ला के शार, टिक्के नूर जोत रुशनाईआ। दूरों कढ्ढदी आई हाढ़, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तेरी दरोही मेरे परवरदिगार, यामुबीन तेरी सरनाईआ। जिस ने मेरे लेख विचार, पूरबले खोज खुजाईआ। दरस कराया पंज प्यार, जो गोबिन्द रंग चढ़ाईआ। जिन्हां दे हथ्थ तेज़ कटार, मेरे पापां करी सफ़ाईआ। मैनूं सोहणे लग्गे लाड़, जोबनवन्ते नज़री आईआ। मैं चरण उत्ते कर निमस्कार, आपणी आसा पूर बणाईआ। मैं चौहन्दी इक्की गुरसिख बोलण हक़ जैकार, जै जै कार करे लोकाईआ। एह धुर दे उह अगम्मी नाअर, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर सुणन चाँईं चाँईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव खड़े पनिहार, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आ गई थक्की मांदी, बलहीण दुहाईआ। मैं तूं ही तूं ही आई गांदी, इक्को तेरा नाम ध्याईआ। मैं छड्ड के सोना चांदी, लालच दिता मिटाईआ। मैं वेखी नहीं पवण ठांडी, अगनी तत ना कोए तपाईआ। मैं किसे सरोवर नहीं नहांदी, जलधार ना कोए वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा

देणा चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां भगत दुआरा, जिथ्थे मिले माण वड्याईआ। धुर दा मिले इशारा, ऐशो इशरत डेरा ढाहीआ। मेरा हो गया अन्त किनारा, नईआ नौका रही डुलाईआ। की करे मुहम्मद विचारा, विच्चरके दस्से ना कोए सुणाईआ। मेरा महबूब परवरदिगारा, जल्वागर नूर इलाहीआ। जिस दा मुकामे हक़ दरबारा, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। कलमयां तों बाहर अखाड़ा, बिन रसना ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं उम्मत कहिंदी हो गई बुढ्ढी, आपणा रूप बदलाईआ। बुड़ापे विच फिरे डुड्डी, चल सके ना राईआ। पा ना सके लुड्डी, क़दम क़दम नाल उठाईआ। मेरे अंदर विचार सुज्झी, आशा लई प्रगटाईआ। कोई रमज़ मारदा गुज्झी, मैनूं अंदरों रिहा हिलाईआ। जिस ने सब दी बदल देणी बुद्धि, बुद्धिवान ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बेशक दूर दुराडी आई थक्की, थकावट विच दुहाईआ। भगत दुआरे आउँदी मूल ना अक्की, अकल बुद्धी तों परे दस्सां पढ़ाईआ। मैनूं ऐं जापदा एह भगतां दी संगत कद्दी, गुरमुख धुर दे नज़री आईआ। जिन्हां तूं मेरा मैं तेरा पुरख अकाल दी पढ़ लई पट्टी, पटने वाला विचोला इक्को माहीआ। जिस दे दुआरे उत्ते गुर अवतार पैगम्बर हुंदे सती, सति सतिवादी कहि के सीस निवाईआ। मैं वी ओस दी आसा रखी, जो रक्ख्या करे थाईं थाईंआ। ओस दे चरणां वसी, जो वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जन भगतो जे सच पुच्छो ते मैं आई मसी मसी, चारों कुण्ट ठोकरां खाईआ । तिन्न वेरां मैनूं राह विच पै गई गशी, मुख विच जल ना कोए टिकाईआ। प्रभू दे प्यार विच हुंदी रही अच्छी, एहो वज्जदी रही वधाईआ। मैनूं वेखो मैं सुक्क के हो गई पच्छी, पच्छिम तों भज्जी ते पूरब डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग दए चढ़ाईआ। जन भगतो मैं जन्म कर्म दी माढ़ी, मुड़ मुड़ दयां सुणाईआ। मैं चौदां सदीआं बणी नहीं किसे दी लाड़ी, प्रनावण वाला नज़र कोए ना आईआ। मैं नौ वेरां गोबिन्द दी तक्की दाढ़ी, चौदां वेरां सीस निवाईआ। तिन्न वेरां मुहम्मद दे सिर ते रखी खारी, फुल्लां गंढु टिकाईआ। एह मेरी खेल निआरी, कलमे वाले ना किसे समझाईआ। सच पुच्छो मैं खुदा तों बिना हुंदी रही दुख्यारी, मेरा दर्द ना कोए गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे पंज प्यारे करो मन्ज़ूर, मैं निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मैनूं आई नूं करो क़बूल, तुहाडे क़दमां दयां दुहाईआ। दर्शन कर लैण दयो इक हज़ूर, जो दाता धुरदरगाहीआ। बख्शे मेरे क़ुसूर, क़सम खा के दयां सुणाईआ। मैं छड्ड के माण ग़रूर, बैठी वास्ता पाईआ। जे मिल जावे इक चरण दी धूढ़, टिक्का लवां छुहाईआ। फेर मैं दो जहानां हो जावां मशहूर,

मशवरा तुहाडे नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला दए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे पंज प्आरयो मेरी इक अरज़ोई, अर्ज़ दयां जणाईआ। बिना गोबिन्द तों किसे ना मिलदी ढोई, सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मेरी इक हक़ खुदा दी दरोही, तोबा तोबा कर सुणाईआ। मैनूं आण मिलावे कोई, प्रीतम मेला होवे सहज सुभाईआ। मैं आपणी पत खोही, लज्जया रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे की तुसीं प्यारे पंजे, इक्को रूप बणाईआ। मेरा दूर करोगे रंजे, रंजश दयो गुआईआ। मैं जीव जहान वेखे अन्धे, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। चुरासी विच्चों थोड़े दिसे बन्दगी वाले बन्दे, जो प्रभ दा दर्शन पाईआ। मैं आ गई ओस आपणे कन्ढे, जिथ्थे कन्ढी दा मालक आपणा खेल कराईआ। हुण इक वार सारी सृष्टी ते कराउणे दंगे, दग़िआं वाले देणे खपाईआ। गोबिन्द ने जिथ्थे लाए पंजे, पंच परपंच देणा गुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं कहे पंज प्आरयो मेरी इक अरदास, खुशीआं नाल जणाईआ। मैं वेखणा खेल तमाश, परदा देणा उठाईआ। मैंनूं दिसदा पुरख अबिनाश, जो अबिनाशी आपणी कल वरताईआ। तुसीं मेरा दयो साथ, अग्गे चलो चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं की दस्सां बात, कहाणी की जणाईआ। तुहाडी पंजां दी जमात, सोहणी नज़री आईआ। मैं चौहन्दी अज्ज तों बिशन सिँघ दा दुःखड़ा हो जाए नास, दर्द रहे ना राईआ। सुखाला होवे स्वास, रंग चढ़े इक अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। सदी चौधवीं कहे दया सिँघ नहीं बुढ्ढा, सूरबीर नज़री आईआ। जिस दा लहिणा गोबिन्द नाल सुधा, वदी सुदी ना कोए समझाईआ। जिस दा भाग होणा उदा, निरगुण नूर डगमगाईआ। मैं कोई मँगण नहीं आई भुग्गा, हिस्सा विच ना कोए जणाईआ। मैं खुश होई जिस वेले भगतां दा भगत दुआरा वेख्या झुग्गा, चौदां तबक दी झुग्गी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां आपणे वीरे, जो सोहणे नज़री आईआ। जिन्हां दे हथ्थां विच कलीरे, अग्गे आवण चाँईं चाँईंआ। हथ्थ मिलावण धीरे धीरे, प्रेम प्रीती इक सिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वज्जदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे की मेरे लई लिआए सौग़ात, वीरो मैनूं दयो जणाईआ। एह चंगी सोहणी रात, भिन्नड़ी खुशी बणाईआ। पहलों कहो असीं सारे इक जमात, दूजा नजर कोए ना आईआ। फेर मैं तुहाडी दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। तुहाडी मुहब्बत मेरा स्वास, साह साह

समाईआ। मैं नहीं तक्कया उपर आकाश, ख़ाक उत्ते ख़ाक धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे वखाओ केहड़ा सत्त रंग, सज्जे हथ्थ नाल उठाईआ। ओ गुरमुखो एह ते मेरी पहली मँग, मैं इशारे नाल जणाईआ। भगत दुआरे आउण दा बणा के ढंग, बैठी डेरा लाईआ। एह पंजां दी पंज पंज वार गंढु, तन्दन तन्द जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे एह कलीरे नहीं एह कलमे दी दात, कलामां वाल्यां दयां सुणाईआ। सुणो अर्श फ़र्श दी बात, बातन दयां दृढ़ाईआ। भगतां दी इक जमात, इक्को नूर नूर रुशनाईआ। जो मुहम्मद गया आख, सो परवरदिगार आशा पूर कराईआ। मैं रहिणा नहीं गुस्ताख़, गुस्सा गिला देणा गवाईआ। जन भगतो मैं सिखण आई जाच, याचक हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं बन्न्हो हथ्थ कलीरे, मुखों सोहँ ढोला गाईआ । सदी चौधवीं कहे मैं प्रेम कलीरे बन्न्हे, दरगाह साची वज्जी वधाईआ। मैं चौदां तबकां फिर के आई बन्ने, कन्ढी कन्ढे आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं हुक्म सुणदी आई आपणे कन्ने, की कलमा धुरदरगाहीआ। जेहड़ी सदी माता कुक्ख विच्चों ना जम्मे, मरिआं ख़ाक ना कोए दफ़नाईआ। उस दा बेड़ा मालक इक्को बन्न्हे, जो बन्न्हणहार इक अख्वाईआ। धन्न वड्याई जे महबूब मेरी मन्ने, मनसा पिछली पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा आपणे विच छुपाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अल्फ़ो ज़ुलीओ उम्मते नज़ी शाजो कुज़ू कुलज़ा अर्ज़ी मुहम्मदे सहा क़बरे कलू दुआए खुदा, ख़सूसेजमां ज़ूने ज़हद्द चसते कदुल, दस्ते बज़ूल, मस्ते रसूल, इस्लामे दुआ, तेरी रज़ा रहमते खुदा, ख़ादमे अदा, नादाने नदां, तेरी नज़रे मेहर नज़री आईआ। मैं सख्ते सुख़न, ऐली दुहाई हुसन, हुसन्ने ज़कुल्ल महबूबे हक़ तनवलज़ज़ी मौज़ुखली ज़ख़तानू किसत कनू कुदरते क़ादर क़ादर क़रीम नज़री आईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा इक्को अल्ला, अली रसूलां रिहा बणाईआ। जिस दा फड़िआ धुर दा पल्ला, पल्लू सब तों ल्या छुडाईआ। जिस दा लेखा जलां थलां, दो जहान रिहा चलाईआ। वस्से निहचल धाम अटॅला, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। मेरा मेटे अन्तिम सल्ला, सलल हो के आपणा नूर दए चमकाईआ। हाए उफ़ मेरा मुहम्मद रह गया इकल्ला, कलमा कज़ू, किसे दी रही ना कोए रज़ूह, कम्म ना आया उज़ू, वजह सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा रंग दए बदलाईआ। ओए प्रभू केहड़ा तेरा सत्त रंगा, सति सति दे समझाईआ । मैनूं ते जापदा एह जम्मू वाल्यां दा डंडा, जो डंडौत सब नूं दए समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी विच कोई रहिण ना देवे गंदा, कलमा

सब नूं दए पढ़ाईआ। जेहड़ा गोबिन्द ने बिना हथ्थां तों माछूवाड़े लाया पंजा, पंजां दी शहादत दए भुगताईआ। वेखो सदी चौधवीं कहे उम्मत दा पाटण लग्गा तम्बा, टाकी फेर ना कोए लगाईआ। मेरा भगतो होण लग्गा कारज अनन्दा, अनन्द इक्को देवां समझाईआ। ओह जिस नूं तुसीं समझदे बन्दा, ओह मालक नूर अलाहीआ। मैं मंगिआ ओस दा संगा, सगल सृष्टी दिती तजाईआ। मैनूं झूठा दिसे धन्दा, धर्म दा मार्ग इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी खेल रिहा बणाईआ। ओह कलीरे कहिण असीं तेरीआं बाहवां लमके, लम्मी आयू रहे वखाईआ। नी असीं वी प्रभ दी धारों जम्म के, सत्त रंग लए बदलाईआ। जे तूं आई पैंडा भन्न के, भज्जी वाहो दाहीआ। सुण लै नाल कन्न दे, बिन कन्नां दईए सुणाईआ। जे कोई खेल कीते भगतां विच छल दे, अक्ख लई मटकाईआ। फेर वेखीं तैनूं तेरीआं सत्तां ज़मीनां तों थल्ले घलदे, असमानां उत्ते ना कोए चढ़ाईआ। असीं भगत ओस प्रभ दी गोदी विच पलदे, जो पलक विच कोटन कोटि गुर अवतार पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव आपणी धार विच्चों उपजाईआ। अज्ज लेखे मुकणे ओह दुआरे बलि दे, जिस दी बावन दए गवाहीआ। ओह सदी चौधवीं कमलिए तूं ते चली अज्ज ते भगत जन कहिण असीं चले कल्ह दे, भज्ज भज्ज पन्ध मुकाईआ। जे तूं शरअ रखणी असीं नहीं तेरे विच रलदे, तैथों मुख जाणा भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा घर देणा वसाईआ। सत्त रंग कहिण असीं हो गए इक दूजे दे साथी, सोहणा संग बणाईआ। हुण मन्नणी पऊ तैनूं आखी, सीस जगदीश झुकाईआ। हुण चलणी नहीं कोई हाटी, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। तैनूं अज्ज दी मिली राती, आपणी रुतड़ी लैणी महकाईआ। कुछ लेखा रैह जाणा छब्बी पोह नूं बाकी, बाक़ाइदा दईए दृढ़ाईआ। ओस वेले पुरख अकाल ने सवा घंटा अलाही कलमे दा बणना पाठी, जिस नूं नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग विच फेर कोई ना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे कलीरे सोहणे फब्बे, मैनूं दयो जणाईआ। एह समां मिलदा कदे कदे, क़दीम दी रीती चली आईआ। जिस वेले पुरख अकाल दी जोत जगे, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। ओस वेले भगतां नूं आउँदे मज़े, बिना भजन बन्दगी तों पार लँघाईआ। किसे नूं टेकणे नहीं पैंदे मथ्थे, पत्थरां सीस ना कोए रगड़ाईआ। चढ़ाउणे नहीं पैंदे टके, आपणी क़ीमत ना कोए बणाईआ। जिस वेले सारी सृष्टी दीनां मज़हबां वेद शास्त्र पुराण क़ुरान अञ्जीलां तों अक्के, पढ़ पढ़ होए हल्काईआ। ओस वेले आवे पुरख समर्थे, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ जाप दस्से, दह दिशा दा डेरा ढाहीआ। जन भगतां हिरदे वस्से, हर हिरदे करे सफ़ाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी मस्से, कूड़ कुड़िआरा डेरा ढाहीआ। गुर अवतार

पैगम्बरां दे पूरे कर के पट्टे, पिछला लहिणा झोली पाईआ। फेर सारी सृष्टी प्रभू दा इक्को नाम जपे, जगजीवण दाता इष्ट मनाईआ। खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई भैण भाई बणन सके, दूजा नाता ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा नैण नैण दए चमकाईआ। सदी चौधवीं हौली जिही बोले, बुल्ल हौली हौली हिलाईआ। मैं आई भगतां कोले, कोइल वांग कूक कुरलाईआ। जिन्हां माण वड्याई मिले उत्ते धौले, धवल वज्जे वधाईआ। मेरे पूरे होए कौल कँवले, कँवल नैण दए वड्याईआ। जिस नूं नानक किहा नूर अव्वले, आलमीन बेपरवाहीआ। हर घट अंदर नूरी जोत हो के मौले, मौला रूप अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे किथ्थे किशन सिँघ सूरबीरा, लालो नानक नज़री आईआ। मेरा हथ्थ नाल डाहवे पीहढ़ा, पीहड़ी आपणी लए बदलाईआ। जिस दा गोबिन्द बन्हणा बीड़ा, बेड़ा पुरख अकाल कंध टिकाईआ। जिस दा लाल रंग दा चीरा, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। पूरब जन्म दा मरया वेखो कीड़ा, लहिणा सब दी झोली टिकाईआ। जिस दा उधार दाणा ज़ीरा, ज़ेर ज़बर दा पन्ध मुकाईआ। चारों तरफ़ वेखो लकीरा, आपणा रंग रही चढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा किड्डा सोहणा वीरा, जो मेरे सगन रिहा बणाईआ। मैनूं इक वेरां देवे धीरा, धीरज नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं फिरां पुट्ठी पैरीं, परा पसन्ती मद्धम बैखरी दी लोड़ रही ना राईआ। मैं चौदां सदीआं तहिरी, जिस दी तहिरीर ना कोए बणाईआ। मेरे प्रभू दी रमज़ गहरी, गहर गम्भीर ना किसे जणाईआ। जिस ने गुर अवतार पैगम्बर बणाए शाइरी, शरअ कलमयां वाली दिती सिखाईआ। गल विच फाँसी पा के बेड़ी, जगत दिते लटकाईआ। मैं हैरान हो गई भगत तारन लग्गिआं ना लावे देरी, डेरा गुरमुखां विच लगाईआ। जिस दे कोल जगत मुहाणिआं वाली नहीं बेड़ी, चप्पूआं वाली कार ना कोए कमाईआ। जिस वल मेहर नज़र इक फेरी, फिरदयां तुरदयां पार लँघाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वी बणन आई ओस दी चेरी, चिरी विछुन्नी दयां दुहाईआ। जिस निरगुण हो के मारी फेरी, फिर फिर वेखी ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं पतणां तों पार वेखां फ़रंगी, फ़ारस परे दुहाईआ। जिन्हां धार दो रंगी, ईसा दए गवाहीआ। मूसा चढ़ के वेखे कंधी, आपणी अक्ख उठाईआ। जिस ने सब दी बदल देणी डंडी, रसते देणे उलटाईआ। सब दी पिट्ठ करनी नंगी, पुश्त पुनाह हथ्थ ना कोए रखाईआ। मज़हब दी रहिण नहीं देणी कोई पाबन्दी, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। जन भगतां बण के संगी, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा नाता

लै जुड़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा बदलदा जांदा इरादा, हिरदिउँ दयां जणाईआ। मैं छड्ड के सन्तां साधां, सिध्धा इक्को राह तकाईआ। जिथ्थे हुक्म मिले बोध अगाधा, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। उहदे नाम दा इक्को कैदा, का खा ना कोए वड्याईआ। जिस दे चरण चुम्मदे कृष्णा राधा, सीता राम सीस झुकाईआ। जिस दा साथी गोबिन्द वाला बाजां, बाज़ी आपणे नाल जणाईआ। ओह करे आपणा खेल अगम्मी वाधा, वाधल करे कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा रंग दए बदलाईआ। सदी चौधवीं कहे जे मैं वड़ जां चार विच दीवारी, निमाणी हो के दयां सुणाईआ। मुहम्मद दी रहिणी नहीं चार यारी, याराना सब ने जाणा तुड़ाईआ। मैं चार कुण्ट फिर फिर थक्की हारी, हौक्यां नाल सुणाईआ। मैं चौदां सदीआं रही कँवारी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बौहड़ी मुहम्मद दी हो गई रत्ती दाढ़ी, मैहन्दी रंग रंगाईआ। मैनूं छड्ड के गया पछाड़ी, पिच्छा गया बदलाईआ। मेरी लग्ग गई अग्ग नाड़ी, नाड़ नाड़ रही कुरलाईआ। मैं डिगदी फिरी विच झाड़ी, झाटा खुल्हा दयां दुहाईआ। किथ्थों मिले नी मेरा परवरदिगारी, जो परवरिश करे थाउँ थाईंआ। जां वेख्या उस दी खेल निआरी, निरँकार आपणा रूप बदलाईआ। शब्दी हुक्म धुर दा सद्दा देवे विच्चों आपणी धारी, धरती उत्ते ना किसे समझाईआ। सदी चौधवीं तूं सेवा कीती भारी, किसे भरम रहे ना राईआ। एसे कर के लग्गें प्यारी, तैनूं प्यारयां विच मिलाईआ। छब्बी पोह नूं साढे तिन्न घंटे देवीं एथे बहारी, अंदर बाहर सेव कमाईआ। फेर दस्सांगा तेरे मुहम्मद दी किहो जिही आवे हाढ़ी, हाए हाए नाल दुहाईआ। मेरे कोल हुक्म दी लाउण वाली चंगिआड़ी, जो सब नूं दए जलाईआ। वेखीं किते भगतां नाल ना करीं ग़द्दारी, नहीं ते गधे ते चाढ़ के चारों कुण्ट दयां फिराईआ। अग्गे इक दी होणी सिक्दारी, हुक्म चले धुरदरगाहीआ। गुर अवतारां पैगम्बरां दे गलों दीनां मज़हबां दी लाह देणी पंजाली, हौला भार भार ना कोई वखाईआ। इक्को दीपक जगणा सब दे काया मन्दिर विच थाली, जो गगन दा लेखा नानक गया समझाईआ। ओह पुरख अकाला दीन दयाला, परवरदिगार सांझा यार सृष्ट सबाई दा बणे इक्को हाली, हलत पलत सब दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग दए चढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बहवां उत्ते पीहड़ा, पीड़ पिछली रहे ना राईआ। उत्ते लवां लाल लीड़ा, जो गुरमुखां रंग चढ़ाईआ। मेरा सोहणा फब्बे कलीरा, कलीआं पंज पंज बणाईआ। जेहड़ा मरया निक्का जिहा कीड़ा, कीट हस्त दए वड्याईआ। जेहड़ा सोहणा दाणा ज़ीरा, ज़ीरो दा लेखा देवे चुकाईआ। मैं तक्कां ला के आपणी नज़ीरा, नज़र नज़र विच्चों बदलाईआ। किथ्थे मेरा लाल लीड़ा, मैं मुख ल्यां छुपाईआ। आह वेखो सज्जे पासे आण बैठा कबीरा, कवीआं दा कवी सोभा पाईआ। मैनूं कहे इक अक्ख चों वहा दे नीरा, नैणां छहबर

दे लगाईआ। मैं हस्स के किहा ना हो दिलगीरा, तैनूं दिलबर दयां मिलाईआ। जिस दा तूं राह दस्स के ग्यों भीड़ा, सहजे मिलण कोए ना पाईआ। वे कबीरा सहजे मुख तों लाह दे लीड़ा, निरगुण नूर नज़री आईआ। जो सभदी बदल देवे तक़दीरा, जन्मां दा लेखा ठुड्डिआं नाल गुआईआ। जिस दे हथ्थ सच नाम दी शमशीरा, शरअ दे बंधन रिहा तुड़ाईआ। जे सच पुच्छें उहदे कोल भगतां दे प्रेम दा गडीरा, बच्चयां वांग खेलां रिहा खिलाईआ। चल ओए मेरे माल जगीरा, जगह जगह दयां बदलाईआ। जेहड़ा फिरदा वांग फ़कीरां, बग़ली लै के अग्गे आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, । शहिनशाह ते नाल कंगाल दिसे, कंगाली कंगल्यां विच छुपाई होई ए। फेर तक्को ते पातशाह ग़रीबां दा रखवाल दिसे, जोड़ी आपणे नाल बणाई होई ए। फेर वेखो ते दीनां दा दीन दयाल दिसे, दर्दीआं आपणा दर्द वंडाई होई ए। फेर वेखो ते सुरत संभाल दिसे, गलवकड़ी गल विच पाई होई ए। फेर वेखो यार दा यार दिसे, यारी धुर दी तोड़ निभाई होई ए। फेर वेखो ते जोत अकाल दिसे, बच्चयां आपणी गोद उठाई होई ए। फेर वेखो ते सचखण्ड सच्ची धर्मसाल दिसे, जिथ्थे भुक्खिआं रंग रंगाई होई ए। फेर वेखो ते जगत तों वखरी चाल दिसे, पिछली रीती सर्ब गंवाई होई ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी खेल खिलाई होई ए। फेर वेखो आपणा रंग रंगाई जांदा। फेर वेखो भगतां दो जहाना पार कराई जांदा। फेर वेखो सचखण्ड दुआर बठाई जांदा। फेर वेखो खुशीआं नाल ढोले गाई जांदा। फेर वेखो भगतां दी छाती उत्ते आसण लाई जांदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जेहड़ी किसे नहीं कीती ओह कर करके वखाई जांदा। उठ यार पुराणे सूफ़ी, सुतिआं दयां जगाईआ। पिछली खेल होणी मनसूख़ी, मुसलसल दयां दृढ़ाईआ। गुरमुख रहिण नहीं देणा दुखी, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। भाग लगाउणा मावां कुक्खी, जो भगत जणेंदी माईआ। दो जहानां गोदी जावां चुक्की, चारों कुण्ट सेव कमाईआ। जन भगतो मेरी खेल अजे नहीं मुक्की, अगला लेखा दयां समझाईआ। जेहड़ी कथा कहाणी गुर अवतार पैगम्बरां नहीं मैथों पुच्छी, ओह सब नूं देणी समझाईआ। तुसीं मेरे जजमान मैं तुहाडी कटण आया बुत्ती, बुतख़ान्यां करां सफ़ाईआ। तुसीं मेरे सोहणे सच मुक्खी, मुखड़े दयां धुआईआ। तुहाडा लेखा मुक्या उलटे रुक्खीं, रुख़स्त लख चुरासी विच्चों कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। ओह यार प्यारे सांझे, बग़ली दे फड़ाईआ। तुसीं चार जुग दे सारे थक्के मांदे, गुरमुख पिछले नज़री आईआ। जन्म जन्म रहे जस गांदे, ढोला सिफ्त सालाहीआ। हुण केहड़ी गल्लों शरमांदे, लोक लज्जया देणी गवाईआ। मैं कोई चारन नहीं आया ढांडे, मझीआं पाल बण के गऊआं वृंदावन फिराईआ। मैं चौहन्दा तुसीं रहो पींदे खांदे, खुशीआं झट लँघाईआ।

मैं तुहाडे रहवां परांद सरांदे, पैरां वल खलो के तुहाडे मथ्थे दा दर्शन पाईआ। जे तुसीं इक सरोवर नहांदे, मैं सरोवर तुहाडा दयां बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। आह लै बग़ली आपणी फ़कीरा, फ़िकर दिता मुकाईआ। ज़रा आ जा अग्गे संगल वाल्या पा के ज़ंजीरा, ज़ंजीरी तेरी दयां खिचाईआ। तूं पीता दुध्ध मात दा सीरा, रसना रस वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए वखाईआ। आह वेख लओ शरअ दा संगल, सगल दयां जणाईआ। प्रभ दी ख़ातर फिरदे जूहां जंगल, टिल्ले पर्बत ध्यान लगाईआ। खा के मूल कंदन, आपणा झट लँघाईआ। ला के मथ्थे चन्दन, त्रसूल रहे बणाईआ। डंडावत कर के बन्दन, मथ्थे रहे घसाईआ। कर इश्नान गंगन, सूरज देवता पाणी चढ़ाईआ। पुज गोदावरी कन्ढुण, पाणी नासां विच टिकाईआ। बण के पुजारी ब्राह्मण, नैण नैण रहे समझाईआ। जन भगतो बिना प्रभू तों सारे ऐवें वञ्जण, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। तुहाडा इक्को वार दा मजन, मंज़ल दो जहान चुकाईआ। जिन्हां दा मालक धुर दा सज्जण, शहिनशाह नूर अलाहीआ। चाढ़ देवे आपणी रंगण, रंगत इक रंगाईआ। गुरमुख किसे दुआरे जावे ना मँगण, मांगत हो ना झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। ओह संगल वाले दस्स केहड़ा ख़रीदोगे संग, संगी कवण बणाईआ। किहदे कोलों मँगोंगे मँग, देवणवाला कवण अख्वाईआ। वेखो प्रभ दा सोहणा ढंग, नाम दा संगल सब दे गल विच देवे पाईआ। जे तुसां प्रेम तों होणा तंग, बाहवां उपर लओ उठाईआ। जे सच पुच्छो मैनूं भगतां नूं मिल के पैंदी ठंड, वड्डे छोटे इक्को रंग रंगाईआ। किते हैरान ना हो जाइओ इस ने चंगे कीते प्यारे पंज, मैनूं पंजां दा रूप सारे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। संगल कहे मैं सगला साथी, सांझा यार अख्वाईआ । जिस वेले तेरा ऐराप्त हाथी, चौधवें रतन दिती दुहाईआ। जिस वेले गोबिन्द ने नीले उत्ते पाई काठी, ज़ीन दिती टिकाईआ। ओस वेले शब्द अगम्मी बाणी आखी, बिना अक्खरां कर पढ़ाईआ। जिस वेले मेरा आया पुरख अबिनाशी, करता धुरदरगाहीआ। गुरमुखां दे गलों सदा वास्ते कट देवे जमां दी फाँसी, संगल आपणे हथ्थ तुड़ाईआ। लिहाज़ करदा नहीं किसे साक सज्जण सैण भाई भैण ते फुफी मासी, नाता गुरमुखां नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। संगल कहे मैं बणया नाल लोहा, मेरा घाड़न दिता घड़ाईआ। जिस वेले मैं सुणया सोहँ दोहा, दुहाई दे के दयां जणाईआ। ओए गुरमुखो मैं वी गया मोहिआ, मोह मेरे अंदर उपजाईआ। मैं भुब्बां मार के रोया, दिती हाल दुहाईआ। जीहनूं कहिंदे चूंके चुंनाचे गोया, सो मढ़ी गोर दा लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए वखाईआ। संगल कहे मैं देवां अन्त संदेसा, सदी चौधवीं नाल दुहाईआ। जन भगतो भगत उधारना प्रभ दा पेशा, पेशीनगोईआं विच सारे गए समझाईआ। जिस दा निरगुण नूर रूप अगम्मी जोता, जोती जाता इक अख्वाईआ। धुर दा दस्स सच सलोका, नाम निधाना रिहा पढ़ाईआ। धन्न भाग संगल कहे मैनूं तुहाडे नाल मिल गया मौका, मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए वखाईआ। संगल कहे मेरा दुःख मिटिआ पीड़ा, दर्द रिहा ना राईआ। लेखा वेखणा नन्ही बच्ची दविंदर जिस दे सिर ते लाल लीड़ा, अग्गे हो के सीस निवाईआ। जिस दा जगत भगत वतीरा, वितकरा विच ना कोए बणाईआ। अमृत देणा अन्तर सीरा, रस देणा चखाईआ। दे के नाम जगीरा, जागरत जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ। मुखों बोल के कहे लाल चुन्नी, चुन्नीआं वालीआं दयां जणाईआ। वेखो निक्की जिही मुंनी, जो मुनीआं माण तुड़ाईआ। जिस दे अंदर नाम दी धुनी, धुर दा राग इक अलाईआ। भाग लग्गा साढे तिन्न हथ्थ कुली, काया वज्जे वधाईआ। रस प्रेम मुख दा बुल्लीं, चश्म दीद चमकाईआ। सच प्रीती घोल घुली, मुहम्मद दए गवाहीआ। भगत दुआरे फली फुल्ली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। छोटी नन्ही बणी गवाह, शहादत दए भुगताईआ। जन भगतो प्रभू सब दा पिता माँ, बच्चयां वांग गोद उठाईआ। कदे ना करे नांह, जो चरण दुआरे सीस झुकाईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। मेरीआं फड़ के दोवें बांह, उपर रिहा उठाईआ। लाल चीरे वाल्यां लए उठा, उठो मेरे भाईआ। इक्कीआं वेख लओ रंग दिता रंगा, सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। इन्हां तों वखरा होर कोई ना, संगत दा रूप इन्हां विच मिलाईआ। जन भगतो असीं सारे भैण भ्रा, सोहँ ढोला लईए गाईआ। हुण सारे बहि जाओ नाल चाअ, चाउ घनेरा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। सदी चौधवीं कहे हज़रत क्यों हुंदा जाएं उदास, मुहम्मद दे जणाईआ। मुहम्मद कहे मैं मंगिआ पाणी दा ग्लास, जो पिछला लेखा झोली पाईआ। मेरा मेरे कोलों हुंदा जाए नास, साबत रहिण कोए ना पाईआ। शेख़ रिहा कोई ना पाक, पतित पुनीत ना कोए जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं धूढ़ी ला के मस्तक ख़ाक, ख़ाली हथ्थ दयां दुहाईआ। हज़रता मेरा ओस दे नाल होया मिलाप, जो मिलदा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां कायनात, क़ायम मुकाम हक़ाम खोज खुजाईआ। मैं तक्का अलिफ़ ये दी लुगात, ओ मुहम्मदा मुर्शद हो के क्यों पा ग्यों वफात, वफादारी तोड़ ना कोए निभाईआ। वेख प्रभ दे प्यारयां दी याद, यादाशत सब नूं रिहा

कराईआ। जिस दे कोल इक पाणी दा ग्लास, चौदां सदीआं दी बच्ची नज़री आईआ। एथों देणा प्रभ ने सब नूं आबेहयात, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। जो आ गया उपर धरती ख़ाक, ख़ाक ख़ाक विच्चों उठाईआ। सब दा खोल्ह के अंदरों ताक, परदा देणा चुकाईआ। तुसीं ओस प्रभू दे साक, जो सब दा पिता माईआ। तुहाडे जन्म जन्म दे कट के पाप, पतित पुनीत दिता बणाईआ। अग्गे कोई ना रिहो गुस्ताख़, गुस्सा गिला देणा गवाईआ। एह सोहणी सुहन्जणी रात, रुतड़ी इक महकाईआ। तुहानूं करना पए ना पूजा पाठ, लेखा सब दा दिता मुकाईआ। नहाउणा पए ना तीर्थ ताट, तट किनारा ना कोए वड्याईआ। एह उह आबेहयात, जिस नूं करबले वाले तरस तरस के आपणा नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। सदी चौधवीं कहे जिस वेले आबेहयात मुहम्मद दे लग्गा नाल लबां, प्याला लबरेज़ नज़री आईआ। उन हो के भार पब्बां, पब्लिक नूं दिता सुणाईआ। ओ मुरीदो मेरा इक्को अब्बा, मालक धुरदरगाहीआ। जेहड़ा कदे नहीं करदा दग़ा, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। चौदां सदीआं मेरा वधाउणा अग्गा, अगला भेव आपणे विच छुपाईआ। मैनूं पता नहीं लगदा ओस ने प्रगट होणा केहड़ी जगह, कवण धाम वड्याईआ। मुहम्मद ने सिर तों हो के नंगा, पुट्ठा हो के सजदा दिता कराईआ। परवरदिगार अमृत पा के विच शाहरगा, रग रग कीती रुशनाईआ। मुहम्मद पुच्छया मैनूं दस्स कुछ वजह, वज़ाहत नाल समझाईआ। हुक्म मिल्या मेरी चलणा विच रज़ा, रमज़ान दा महीना भुक्खा रह के झट लँघाईआ। जिस वेले मैं आया निरगुण नूर हो के शेर बग्गा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। तुसीं गुर अवतार पैगम्बर मेरे नाम दा वजाइओ डग्गा, ते डुगडुगीआं मेरे नाम दीआं हथ्थों देणीआं सुटाईआ। मैं कोई जाप नहीं करना हो के इक टंगा, अष्टभुज देवीआं वाला ना रूप बदलाईआ। जिस वेले जन भगत देण सद्दा, फिर लोकमात करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग चढ़ाईआ। पाणी कहे मुहम्मद दी कदी ना लहे उदासी, उदय असत दयां दुहाईआ। ईसा दी कटे कोई ना फाँसी, फ़ैसला हक़ सुणाईआ। मूसा दी मूँह दे भार डिग्गण वाली गाथी, सारे रहे गाईआ। तेरी प्रभू खेल किसे ना जाती, जोती जाते तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी बहु भाती, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। साचे मण्डल तेरी रासी, गुर अवतार पैगम्बर तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरा लेखा झोली पाईआ। मुहम्मद कहे मैं पीता हयात आबे, अव्वल दिता प्याईआ। तक्कया नूर इक महराबे, जलवा हक़ रुशनाईआ। जिस कारण भज्जिआ विच्चों मक्के काअबे, काया लई बदलाईआ। पाणी पीता मदीने वाली ढाबे, चुल्लीआं सत्त सत्त कराईआ। मैनूं आवाज़ दिती आदम मेरे बाबे, अम्मां हवा कीती शनवाईआ ।

सुण नगमा अगम्मी रागे, पैग़ाम इक अलाहीआ। जिस वेले मुहब्बत रही ना इश्क हक़ीक़ी मजाज़े, मजलस कूड़ होवे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा आपणे लेखे पाईआ । मुहम्मद कहे मेरा सजदा डंडावत निमस्कार, चरण बन्दना कदमबोसी विच सीस जगदीश झुकाईआ। अमृत आबेहयात भगतां दी हयाती उत्तों देवे वार, वारस हो के वेख वखाईआ। लहिणा देणा पूरा क़र्ज़ा कराउणा उधार, उदर दे विच वेख वखाईआ। जे तेरा भगतां नाल प्यार, पारब्रह्म हो के आपणी सेव कमाईआ। सब नूं बच्चयां वांग गोद उठाल, छोटा वड्डा रहिण कोए ना पाईआ। जिस तरां बिशन सिँघ तेरा बाल, बचपन आपणा रंग चढ़ाईआ। तेरे हुन्दयां भगतां दे कोल ना जाए काल, फिर तैनूं सीस ना कोए झुकाईआ। जे तूं कर नहीं सकदा प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। फिर खुल्ल्हे खोल्ह लै आपणे वाल, दरवेशां वाला रूप वटाईआ। जिथ्थे किते होऊगा आपणे परमात्मा नूं लवांगे भाल, तेरी लोड़ रहे ना राईआ। मुहम्मद कहे प्रभ सदी चौधवीं दी जेहड़ी बदलण लग्गा चाल, गोबिन्द मेला सहज सुभाईआ। जन भगतो तुहाडे प्रेम दी तुहाडे अंदरों खिच्च के ढाल, आपणे हथ्थ लए टिकाईआ। एह खेल बेमिसाल, भगतां नूं कन्नो फड़ के चारों कुण्ट लए भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर आई खुशहाली, सोहणी खुशी बणाईआ। फल वेखण आया आपणी डाली, पत्ता पत्ता फोल फुलाईआ। बेशक कलयुग रैण अन्धेरी काली, कल्लआं कल्लआं नूं लख चुरासी विच्चों ल्या उठाईआ। एह खेल वेखो हाली, माज़ी दा लहिणा दयां मुकाईआ। जन भगतो तुहाडी मंज़ल हो गई सुखाली, सुक्खी सांदी आपणे घर लए पुचाईआ। जिथ्थे जगे जोत अकाली, अकल कल बैठा बेपरवाहीआ। भगत उधारना प्रभ दी रसम पुराणी, पुरीआं लोआं तों परे डेरा लाईआ। अग्गे कबीर सधने रविदास दी पढ़दे रहे कहाणी, हुण भगतां गणत ना कोए गिणाईआ। जिस ने तार देणी चारे खाणी, ख़ाने सब दे वेख वखाईआ। तुहाडी क़बूल हो गई सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दी पढ़ी बाणी, बाण अणयाला दिता लगाईआ। एस नन्ही बच्ची दा पाणी, पारब्रह्म दा मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं पढ़ के दस्सो वारता, की मैं आई सुणाईआ। मैं रूप नहीं कोई नार दा, तत्तां वाली ना वंड वंडाईआ। मैं दर्शन करना अगम्मी यार दा, जो धुर दा नूर खुदाईआ। जाम पीणा हक़ीक़ी प्यार दा, जो प्रीतम हो के दए पिलाईआ। मेरा रोग मेट दए चौदां सदीआं विछोड़े वाले बीमार दा, अंदरों दुःख गवाईआ। फेर मैं कहां एह अमाम महिदी रूप कल्गी अवतार दा, जो गोबिन्द गया जणाईआ। जो डुब्बआं दे बेड़े तारदा, डिग्गयां नूं पार लँघाईआ। जन भगतो समझ लओ हुण वेला

रहिणा हुशियार दा, होश आपणी ना लैणी गवाईआ। एथे आउणा कम्म नहीं किसे नार बदकार दा, बदी वाला बदन ना कोए वखाईआ। मेरा प्रभू बिना भगतां तों सब नूं दुरकारदा, वेखो दुर्गा तुहाडयां चरणां विच सीस निवाईआ। जे मेरा नाता ना हुंदा एस रविदास चम्यार दा, मुख चुम्म के किस नूं गले लगाईआ। जे मैं मालक ना हुंदा इन्हां नबीआं प्यारयां दी सरकार दा, सदी दा डेरा कवण ढाहीआ। जे मैं माली ना हुंदा एस गुलज़ार दा, एह गुलशन कवण महकाईआ। जन भगतो मैं कोई भुक्खा नहीं खाण पीण दे रुज़गार दा, ख़ाली हथ्थ तुहाडी सेव कमाईआ। मैं भरया तुहाडे महज़ प्यार दा, मुहब्बत विच आपणा झट लँघाईआ। तुहानूं पता नहीं क्यों नानक ने नाम जपया सति करतार दा, करता पुरख इक मनाईआ। क्यों जामे दस आपणे रिहा धारदा, रूप अनूप दरसाईआ। ओह भगतो तुहाडी पैज रिहा संवारदा, सवार्थ परमारथ प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। तुहाडे पंजां तत्तां नूं रिहा शृंगारदा, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मुहम्मद दी आसा, अहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। मेरी मिट गई प्यासा, तृखा दिती गवाईआ। जन भगतो सब ने बच्चयां वांग खुशीआं दा करना हासा, हस्ती आपणे अंदर लैणी वसाईआ। भगतां दा भगवान उत्ते भरवासा, बिना भगतां तों भगवान कम्म किसे ना आईआ। तुसीं ओस प्रभू दीआं शाखां, जो शनाख़त कर के चार कुण्ट वेख के सृष्टी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। तुहाडा ओस दे नाल जुड़िआ नाता, जिस नूं नर नरायण कहि के सारे रहे गाईआ। जे सच पुच्छो इस दे कोल मेरा खाता, जिस दे कोल अक्खरां वाली करां पढ़ाईआ। मैं उन्हां इक्कीआं दा राखा, जो छुहारे मुड्डां विच बन्द कर के बैठण चाँईं चाँईंआ। ज़रा उठ के ताड़ी मार के करो हासा, सगन पाया धुरदरगाहीआ। पर साडा नाल नहीं कोई ताया चाचा, भाई भैण नज़र कोए ना आईआ। किसे गाई नहीं गाथा, थालीआं वेल ना कोए उलटाईआ। जंञ चढ़े नहीं मार के ठाठां, धौण मोढ्ढिआं उत्ते अकड़ाईआ। तुहाडे सन्बंधीआं नूं एहो घाटा, साडे तों बिना प्रभ ने आपणयां नाल कीती कुड़माईआ। नाले करके खुल्ला झाटा, वेस आपणा ल्या बदलाईआ। दूरों फ़रंगीआं वांग कहि के टा टा, समुंदरां तों पार डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जिहदी पिठ विच काला दाग़, हड्डी रीड़ दए वखाईआ। जिस दे अंदर इक दा राग, साचा ढोला गाईआ। सिरों गंजी ते फिरे नाल मजाज, आकड़ रिहा वखाईआ। यार मुहम्मद दा एह प्रभ ने कीता काज, बिन कज्जल नैण ल्या चमकाईआ। साचे बेड़े चाढ़ जहाज़, पत्तण दिता वखाईआ। एह वेखो अगला रिवाज, भगतां नाल करे कुड़माईआ। कदी हथ्थ ते उडदा सी बाज़, कदी गुरमुखां नूं गोद टिकाईआ। नाता जोड़ के कन्त सुहाग, स्वर्ग बहिश्तां

दा डेरा ढाहीआ। हुण कोई सोटी दा दे जवाब, डांग वाला नज़री आईआ। अग्गे समझ मुहम्मद हुण सूरबीर बणया जाट, जटा जूट करे सफ़ाईआ। हुण केहड़ा मसल्ला विछाउणा फड़ के टाट, लोटा उज़ूआं वाला हत्थ उठाईआ। अग्गे वास्ते मत्थे विच मार के खोल्ह देणा कपाट, कँवल नैण दयां मिलाईआ। ज़रा इन्हां वल झाक, आपणी दे सफ़ाईआ। जन भगतो मैं भुक्खा मैं नंगा ते मेरी पुच्छो वात, वाक़फ्कार पिछला नज़री आईआ। एह पातशाह ते मैं अनाथ, अनाथां दी नाथ सेव कमाईआ। पर इक फ़र्क एह सरीर सड़न वाला विच काठ, ते मैं निरगुण नूर जोत प्रकाश, मैनूं जन्मे कोई ना मात, गर्भ विच कदे ना आईआ। जद देवां भगतां नूं नाम दी दात, दाता हो के धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। काला दाग़ कहे मेरी हो गई चिट्टी चरबी, चिरां बाद मिली वड्याईआ। अग्गे मैं सुणदा सां आवाज़ विच अरबी, अरबां दा लेखा रिहा मुकाईआ। हुण संदेसा देवे राम सिँघ लिआवे उह पर्ची, जो पर्चा बधक वाला जणाईआ। बिशन कौर लिआवे चरखी, जो बधक वेले दी इस दी पिछली माईआ। एसे कर के प्रभू बणया रिहा दर्दी, जुग जुग दा लेखा झोली पाईआ। बसन्त कौर जिस दी चिट्टी वरदी, उठ के दए गवाहीआ। एहदी आशा प्रभ दे प्यार अंदर रही सड़दी, द्वापर जुग दए गवाहीआ। इहदा रैण वस्सेरा होया विच दसोंटा जिथ्थे धार किल्हे कोट गढ़ दी, पांडवां संग वड्याईआ। कृष्ण कृष्ण नौ महीने रही पढ़दी, द्रोपत मिल के खुशी मनाईआ। एह खेल सांझे घर दी, पिछल्यां सारयां रिहा जणाईआ। शाख़ मेटणी चोटी जड़्ह दी, आत्म परमात्म नाता लैणा जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। राम सिँघ दा की ख़ाली कहे पर्चा, प्राचीन रिहा दृढ़ाईआ। तेरे कोल पिछले जुग दा खर्चा, हिसाब लेखा झोली देणा पाईआ। मैं कर कर थक्का अर्ज़ां, बाण अणयाला तीर चरण लगाईआ। मैनूं तेरे मिलण दीआं गर्ज़ां, ग़ज़ब विछोड़ा सहि सकां ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर देणा सुहाईआ। पर्ची कहे मेरी लिख्त इक इलाही, सच दयां जणाईआ। बधक दा इक वेरां मेल होया सी शांती नाल इत्तफाकी, अजीत सिँघ ओहो नज़री आईआ। एह फड़ लै आपणे दस्त हाथी, प्रेम प्यार धुर दा रिहा बंधाईआ। सब तों वखरी प्रभ ने रविदास दे हत्थ फड़ा देणी कापी, जिस दी कापी करन वाला नज़र कोए ना आईआ । जिस ने उधारने जन्म कर्म दे पापी, पतित पुनीत बणाईआ। सदी चौधवीं करनी राखी, रखक हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं गल्ल करां यकतरफ़ी, तरफ़दारी ना कोए जणाईआ। गरधारा सिँघ लिआवे बरफ़ी, पीहड़े ते बैठी नूं दए खुवाईआ। चरणी हत्थ लिआवे कड़छी, लंगर दी सेवा दए समझाईआ। मैं पिच्छे

रही डरदी, भगतां कोलों अक्ख चुराईआ। जिस वेले पता लग्गा इन्हां दे अंदर धार नरायण नर दी, निरगुण नूर विच समाईआ। मैं खेल वेखी घर घर दी, जो गुरदर्शन वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा साहिब होवे राज़ी, राज़क रिज़क रहीम दए वड्याईआ। मैं प्रेम नाल रिन्हां भाजी, भजन बन्दगी इहो नज़री आईआ। जन भगत होवण साथी, सगला संग रखाईआ। मैं मन्नां सब दी आखी, आख़र सीस झुकाईआ। जन भगतो घर बाहर छड्डणा सब तों औखी घाटी, पुत्तर धीआं नार कन्त ना कोए तजाईआ। जिस ने परम पुरख मन्न ल्या इक्को कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा सीस निवाईआ। उह जन्म कर्म धर्म दी बण के साची, सच रही वखाईआ। ओस दी साहिब सतिगुर सिर हथ्थ दे के आपे करे राखी, रक्ख्या करे थाईं थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कड़छी नूं देवां आदर, अदनी हो के सीस निवाईआ। हुण मैं वेखणी ओह चादर, जेहड़ी तृप्त कौर लै के आईआ। बख्शीश सिँघ जेहड़ा रहन्दा बाद क़ादर, क़ादर दी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक चढ़ाईआ। दोवें चादर लैण चुक्क, चारे कन्नीआं हथ्थ उठाईआ। एह खेल अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म रिहा कराईआ। जिस दे अंदर रिहा छुप, छपंजा करोड़ सीस झुकाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड अन्धेरा घुप, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मुहम्मद दे घरों हौली हौली सब कुछ लिआउणा चुक, बिस्तरिआं थल्लों करां सफ़ाईआ। वैरागण हो के आउणा उठ, नीवीं नज़र आपणा मुख छुपाईआ। चुपके चुपके पैर लैणा पुट्ट, आहट सुणन कोए ना पाईआ। सुक्का नाल लै के टुक, इक डंग दा बोझे विच टिकाईआ। आटे दी लै के मुट्ठ, मूँह लैणा रंगाईआ। कच्चा फड़ के ठुठ्ठ, किनारी बग़लां विच छुपाईआ। मैं आ के वेखणे किथ्थे ओस प्रभू दे पुत, जो बैठे डेरा लाईआ। मैं राह विच मँगदी आवां सुख, वास्ता इक्को अग्गे रखाईआ। मेरा पैंडा सहजे सहजे जावे मुक, मुकम्मल मिले माण वड्याईआ। पर इक गल्ल चंगी कत्तक दी पहली ते मैनूं लग्गी नहीं धुप, प्यास राह विच ना कोए सताईआ। मैं भगत दुआरे आ के पंजां प्यारयां नूं ल्या पुच्छ, किथ्थे दिसे तुहाडा धुर गुसाईंआ। उन्हां अग्गों बदल के रुख़, सीस दिता झुकाईआ। मैं कहि ना सकी कुछ, पीर पैगम्बर कच्छ मच्छ मेरे नाल जो चल के आए चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा रंग रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं हौली हौली आ गई पैरीं दब्बी, दादा पोता वेखण कोए ना पाईआ। जिस वेले वेख्या नूर रब्बी, अलाह इक अलाहीआ। उहदी मैनूं सोहणी लग्गी गद्दी, जो गदागरां दए वड्याईआ। मेरा सिर ते भार बोझल हो गई डग्गी, मेरी धौण रही अकड़ाईआ। मेरी

दर्द करन लग्गी हड्डी, हड्डी हड्डी रही कुरलाईआ। मेरी दुखण लग्गी अड्डी, पब्बां भार हो के चली वाहो दाहीआ। जां मैनूं पता लग्गा मैं मुहम्मद दी चौधवीं सदी, सद्दे नाल प्रभ दे दुआरे आईआ। मैं खुशीआं विच हस्सी, हस्ती वेखी शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा खेल रिहा जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आ गई नाल मजाज, आपणा रुख़ बदलाईआ। मेरी सुत्ती दी खुल्ह गई जाग, नैण अक्ख मटकाईआ। मैं सुणी अगम्मी आवाज़, ढोला धुरदरगाहीआ। उठ वेख कमलिए बदलदा वेख समाज, समां रिहा कुरलाईआ। मैं खुशीआं विच पई नाच, अड्डी पैर वाली बदलाईआ। इक वारी चोरी नाल मैं गुरमखां वल ल्या झाक, टेडी अक्ख जणाईआ। वास्ता पाया मेरी पत ल्यो राख, तुहाडे हथ्थ वड्याईआ। झट पुरख अबिनाशी दिता आख, एथे मेरी इक्को शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा संग रिहा निभाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं आख्या नाल प्यार, सहज नाल समझाईआ। ओ कमलिए भगतां तों घुंड दे उतार, क्यों बैठी मुख छुपाईआ। बेशक तूं चौदां सौ साल पिच्छों अजे मुटिआर, तेरा जोबन ना कोए हढ्ढाईआ। आह वेख आपणा करतार, क़ुदरत दा मालक नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा लेखे विच लगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं भागां भरी सुहागण, सोभावन्त अख्वाईआ। मैं पीहड़े उत्ते आई बिराजण, सुखआसण डेरा लाईआ। वेखणा धुर दा काजण, की करता दए वड्याईआ। कवण भगत सुहेले जागण, जो नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। बिरहों विच वैरागण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा दस्से निरँकार, हरि वड्डा वड वड्याईआ। बलि बावन लै के इशतिहार, पिछला लहिणा रहे वखाईआ। सदी चौधवीं कल्ह दी मटिआर, जोबनवन्ती भज्जे चाँईं चाँईंआ। जिस दा अजे तक ना बणया कोई श्रृंगार, रंगत रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुहागण जुग दी, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। मेरी औध वेख पुगदी, पंजाबण हो के दयां वखाईआ। मेरी जोती जावे बुझदी, लोचन नूर ना कोए रुशनाईआ। मैनूं धार नहीं कोई सुझदी, बौहड़ी कर के दयां दुहाईआ। जे कोई घुट प्यावे दुध्ध दी, सवा पा ग्लास हथ्थ फड़ाईआ। फिर मैं चादर विच कदे नीं लुकदी, पल्लू मुख ना कोए रखाईआ। जन भगतां कोलों पुछदी, वे वीरा किथ्थे मेरा माहीआ। मैं ओस दुआरे किवें पुजदी, घूँगट अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। राह विच कदे ना रुकदी, अग्गे ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे आह मैं दुध्ध घुट पीता, पीत पीतम्बर सीस टिकाईआ। प्रभ दा गुरमुख रहे जीता, मैं जुगां दी मँग मँगाईआ। इन्हां दी सुरती ओस राम दी हो

४५६ २१

जाए सीता, जेहड़ा कदे ना करे जुदाईआ। जो आत्मा परमात्मा दा साचा मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जे कोई बच्चयां वांग साफ़ कर लए नीता, सच दुआर मिले वड्याईआ। फिर पढ़ने दी लोड़ रहे ना गीता, पुराणां वरका ना कोए उलटाईआ। जेहड़ा पंजां प्यारयां मंगिआ रस मीठा, उह सब नूं दिता चखाईआ। नानक ने मिट्ठा कीता रीठा, प्रभ गुरमुख रिहा बणाईआ। जन भगत सदा रहे जग जीता, रविदास चमारा करे लिखाईआ। झगड़ा मुक गया ऊचां नीचां, हिन्दू मुस्लिम वंड ना कोए वंडाईआ। माण रिहा ना बीस बीसा, सदी बीसवीं रही कुरलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं होर दस्सणी रीता, साहिब सतिगुर अग्गे वास्ता पाईआ। जे तूं मालक नीकण नीका, वड वड्डा आप अख्वाईआ। गुरमुखां कदी ना देवीं पीठा, पिच्छा ना जाणा बदलाईआ। वेखीं अगले जन्म दी पाईं ना कोई तारीखा, एसे जन्म विच खैहड़ा देणा छुडाईआ। तेरी कर सक्कया ना कोई परीखा, गुर अवतार पैगम्बर सीस झुकाईआ। जिस वेले फाँसी चढ़या ईसा, खुदा ने दुध्ध ग्लास दिता वखाईआ। जिस वेले मूसा मूँह दे भार डिग्गा ठीका, ओस वेले दुध्ध दिता प्याईआ। जिस वेले मुहम्मद खुदा ने कलमयां विच घसीटा, बदन खल्ल नालों लुहाईआ। उस ने मँग के सवा पा दुध्ध पीता, मुखों किहा जांगजंद मुजरा आपणा दे वखाईआ। खुदा ने किहा मुहम्मदा मैं मालक कुल्ल, आलम मेरा नूर रुशनाईआ। जद मैं भगतां क़ीमत देवां ते चुकावां जन्म मरन दा मुल्ल, अमृत रस मुख चुआईआ। उन्हां बच्चयां दा दीवा कदे ना हुंदा गुल, जिन्हां दा ओढ्ढन सिर ते नज़री आईआ। वेख्यो अंदरों कोई ना जाइओ डुल्ल, अडुल्ल शब्दी धार रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा चढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कहि बैठी जुगिंदर कौर सब दी हमशीरा, भैण भैण नज़री आईआ। ओह रविदास जिस दे कोल इक कसीरा, ब्राह्मण रंग चढ़ाईआ। इक खेल होर बेनज़ीरा, नज़र विच ना कोए टिकाईआ। कोई समझे ना प्रभू दी तदबीरा, तरीका ढंग ना कोए दृढ़ाईआ। इक मिन्नत कीती इक हिम्मत कीती इक इल्लत कीती भगत कबीरा, क़बर विच जाण तों पहलों दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए वखाईआ। कबीर किहा सुण मेरे बंधू, बन्दना विच जणाईआ। अर्जन दा लेखा होणा नाल चन्दू, चन्द सूरज दए गवाहीआ। ओस दा प्रेमी होणा इक ठंडू, ज़ात खत्री वंड वंडाईआ। उहदा भराता होणा गंडू, नाम प्रभ दा ढोला गाईआ। भतीजा होणा गंगू, जमना जम्मण वाली माईआ। गल विच होणा जञ्जू, तन्दा तन्द कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं याद आ गई पिछला आ गया चेता, चेतन हो के दयां जणाईआ। इक दिन रविदास नूं हरिजू मिल गया विच खेतां, राह विच जांन्दयां जफ्फी पाईआ। किहा चम्यारा मेरे कोल दुध्ध दा

ठेका, मैं भगतां दयां प्याईआ। रविदास किहा पहलों बदल दे मेरी रेखा, मुनीआं ऋषीआं तों बाहर कर पढ़ाईआ। फिर उँगलां मार के विच केसां, पंज वार दिता हिलाईआ। जे तूं मालक रहिण वाला हमेशा, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। मैनूं दस्स की तेरा लहिणा होणा नाल गुर दसमेसा, गोबिन्द नाल वड्याईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले कोई रहे ना मुल्ला शेखा, शक्ती अष्टभुज ना कोए वखाईआ। राम कृष्ण छड्ड जाण मातलोक दा देसा, परदेसी हो के डेरा लाईआ। गुरु बणाए ना कोई गुरमुख बेटा, गोदी गोद ना कोए टिकाईआ। फेर बहुती देर करां ना वेटा, वीटो आपणा अधिकार लवां जमाईआ। सब दा अंदर वेखां पेटा, पटने वाला नाल जुड़ाईआ। प्रभ नूं मिलण दा मुहब्बत नाम रख देवां रेटा, क़ीमत वद्ध घट्ट ना कोए कराईआ। आप वसां भगतां दे साचे देसा, दिशा अवर ना कोए समझाईआ। करां सफ़ाई बिन कुहाड़ी तेसा, दुरमति मैल देवां धुआईआ। ऐसा अंदर वड़ के मारां पेचा, जिस दी गंढु ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं कहे ओए रविदास मेरया वीरा, वीरनां दयां जणाईआ। सब दे सिर ते प्रेम दा चीरा, चीरे वाला वेख वखाईआ। मेरा सुहागां वाला कलीरा, कली कली रिहा महकाईआ। तूं कट शरअ ज़ंजीरा, शयद फिर मिलण कोए ना आईआ। तूं साहिब गुणी गहीरा, गवर तेरी वड्याईआ। बदल दे तक़दीरा, तदबीर इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दे उठाईआ। सदी चौधवीं कहे की नानक कोलों जुगिंदर रखी तांघ, मैनूं दे जणाईआ। जिस वेले मम्बरां मुनारिआं ते चढ़ के तेरी देंदे बांग, अल्ला हू तेरा नाम अलाईआ। मैं वेख अगम्मी स्वांग, निगाह चमार वल्ल टिकाईआ। तूं वी ज़रा जाग, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। दुनियां हो गई काग, हँस रूप ना कोए बदलाईआ। हाए केहदे हथ्थ फड़ाईए वाग, डोरी कवण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए वखाईआ। रविदास किहा सदी चौधवीं खुशीआ वाली रात, सच दयां दृढ़ाईआ। प्रभ दे कोल अगम्मी सौग़ात, जेहड़ी नज़र किसे ना आईआ। ओह बणाई सत्त धात, वाधा घाटा ना कोए रखाईआ। नन्हीआं बच्चीआं दी दिसे जमात, दो इक जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला रिहा मिलाईआ। रविदास कहे ओह वेखो बिशन सिँघ दी धी, अमरजीत नज़री आईआ। जिस ने तेरा अमृत लैणा पी, बूँदां त्रै मेरे कोलों मुख पुआईआ। एह मेरे पाटे चीथड़ दरजी दी बेटी लैंदी सीं, सीवण अद्धविच्चकार लगाईआ। मैं दिता नहीं सी कदे कुछ उह सदा मैनूं कहिंदी सी जी, मैं जी आयां कहि के सिर हथ्थ देंदा रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ । सदी चौधवीं कहे साहिब मेरी जोबन भरी जवानी, भगवन्त कन्त नज़री आईआ।

तैथों जुगिंदर मँगी इक निशानी, निशाना अंदर दिता लगाईआ। तूं हुण कर दे मेहरवानी, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला आपणे नाल कराईआ। सदी चौधवीं कहे फड़ा दे दुध्ध वाला ग्लास, तेरी बेपरवाहीआ। इक्कीआं कन्या दी पूरी कर आस, तेरे हथ्थ वड्याईआ। रविदास दा कसीरा हो गया पाक, पवित्र रूप बणाईआ। सत्तां धातां दी तेरे हथ्थ विच ओह मुंदरी ते ओह छाप, इक्की वेखो नज़री आईआ। जन भगतो सब दे कटे जाणे पाप, पतित पुनीत दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। इक्की कन्या उठण इक धार, हिरदे अन्तर खुशी मनाईआ। वीहवीं सदी दा वीहां नाल विहार, जो कँवार प्रभ दा रंग चढ़ाईआ। इक्कीवीं धर्म दी धार, सच दा राह वखाईआ। वड्डे छोटे इक्को रंग रहिणा विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सीस निवाईआ। जिस दा लेखा जुग चौकड़ी चार, चार जुग वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मुंदरी दए पहनाईआ। साची मुंदरी नाम दा मुंदरा, मुद्दत दा लेखा दए चुकाईआ। प्रभ नूं लभणा पए ना विच्चों कुंदरा, जंगलां विच ना खोजण जाईआ। सब दीआं प्रेम प्यार वालीआं उँगला, जो हरि संगत सेव कमाईआ। अंदर रहिण ना देवे गुंझलां, हर हिरदे करे सफ़ाईआ। एह खेल अख़ीरी एहो खेल मुढ्ढला, दोहां दा मालक आप हो जाईआ। जोती जोत

४५९ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सची सरनाईआ। सत्त धात दी सोहणी दिसे अंगूठी, सति विच समाईआ। ४५९

२१ एह प्रभू दे नाम दी बूटी, जो बूटा जगत दए लगाईआ। दर्शन होवे निरवैर त्रैकुटी, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। सच सुहञ्जणी होवे रुती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची देवे माण वड्याईआ। मुंदरी कहे मैनूं याद आ गई बलि बावन दी धार, धरनी धरत धवल जणाईआ। पीहड़ा कहे मैं चौदां सदीआं बिना ख़बरां तों बिना अक्खरां तों पढ़दा रिहा अख़बार, बिना नैणां तों नैण मिलाईआ। जिस विच आवाज़ आउँदी रही अगम्मी यार, यार याराने विच जणाईआ। की होणा अन्त विहार, विवहारी हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। लाल सिँघ अल्फ़ी ल्या दे काली, कलमे विच दुहाईआ। जेहड़ी सेवा चौदां सदीआं घाली, धायल हो के सेव कमाईआ। मैथों मेहनत कीती नहीं जांदी बाहली, बौहड़ी बौहड़ी मेरी दुहाईआ। मैं किसे दे अग्गे नहीं होणा सवाली, सवाल आपणा इक जणाईआ। मैं कहिणा तूं प्रभू जीउदा शाहली, शाला तेरी वड्याईआ। मैं की तक्कया अज्ज तरकालीं, तकले वाली बुढड़ी माईआ। जिस दी फल लग्गा सच डाली, गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। कोई दवारिउँ जाए ना ख़ाली, भुक्खिआं भुक्ख दे मिटाईआ। प्रभू दुनियां दी दीव्याँ वाली दीवाली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सच साची कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे गुलाटी ल्या दे सानूं फुल्लीआं, मुहम्मद खुशी मनाईआ। कश्मीरो तेरीआं रोंदीआं रहन्दीआं बुल्लीआं, बच्चा नन्हा दे वखाईआ। तेरीआं आंदरां अंदरों डुॅलीआं, धीरज धीर ना कोए धराईआ। हुण खुशीआं देणीआं खुल्लीआं, मेहर नज़र टिकाईआ। जन भगतो दाजां दीआं कम्म नहीं आउँदीआं जुलीआं, ज़र ज़ेवर ना कोए वड्याईआ। जेहड़ीआं आत्मा मेरे उत्ते तुलीआं, तोला बण के दयां वखाईआ। प्रभ दीआं बच्चीआं कदे ना रुलीआं, सच दुआरे दयां वड्याईआ। किसे दे खाण नहीं जांदीआं गुलीआं, जगत भुक्ख ना कोए बणाईआ। वसण नहीं जांदीआं विच कुल्लीआं, भैण भ्रावां कर जुदाईआ। एस बच्चे दे मुख नूं लावां फुल्लीआं, जिस दी जगत होणी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे सारे रखो इक्के ते भरवासा, भरम दयो गवाईआ। जिस दे कोल जन्म कर्म दा खाता, ख़तरे दए गवाईआ। लैण देण दा नहीं कोई घाटा, नाम भण्डारे दए भराईआ। जिन्हां पिच्छे सतिजुग तों कलयुग अन्तिम मारीआं वाटां, गुरदर्शन दए गवाहीआ। जिस ने माघ महीने विच सोई जाणा सी उत्ते कहारां वाली खाटा, कान्हीआं कंध रखाईआ। ओस दे पिच्छे रणजीत कौर दा खुल्हा कर के झाटा, समां दिता बदलाईआ। सदी चौधवीं तैनूं मन्नणा पए आखा, अक्ख ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर दए वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ तेरे खेल निआरे, इक्को रंग रंगाईआ। जाओ आपणे दुआरे, होए सदा सहाईआ। उठो दस विआहे दस कँवारे, बाहवां उपर लओ उठाईआ। इक्कीवां रंडा होवे नाले, सोहणा मेल मिलाईआ। वेखो सब दी सुरत संभाले, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दुआरे दए वड्याईआ। विआहे कँवारे इक्ठे कीते रंडे, इक्को रंग रंगाईआ। तुसीं सारे चढ़ो प्रभू दे डंडे, डंडावत इक जणाईआ। माढ़े कीते चंगे, मेरे चन्द नूर रुशनाईआ। जिधर वेखो सदा तुहाडे संगे, आपणा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। अल्फ़ी कहे मैं काली कि गोरी, मैनूं दयो समझाईआ। मैं साहमणे आवां कि चोरी, चोरां वांग फेरा पाईआ। किस दे नाल बन्न्हां डोरी, तन्द लवां जुड़ाईआ। मैं किस दे नाल जोड़ां जोड़ी, आपणा संग वखाईआ। नी सखीओ जे किते प्रभू नूं चाढ़्हो प्रेम दी घोड़ी, बाजां वाला नाल मिलाईआ। मैं फिर हो जावां होर दी होरी, नूर जोत रुशनाईआ। मैनूं सारे तक्कण एह चौदां सदीआं दी बांकी छोहरी, किथ्थों आई रूप बदलाईआ। जे तुसां भगतो मेरी सफ़ारश ना कीती मैं हो जावांगी कोढ़ी, चल्यां पन्ध ना कोए मुकाईआ। किसे नूं कहांगी मेरी पिट्ठ ते निकली फोड़ी, दर्द रही सताईआ। मेरी उमर रह गई थोड़ी, बारां साल नज़री आईआ। आह वे भगतो मेरी

बौहड़ी, दुहथ्थढ़ा मार के दयां सुणाईआ। जे भगत कहि देण प्रीत लग्ग गई मोरी तोरी, तुरत आपणा रूप लवां बदलाईआ। पीहड़े उत्ते बहि जावां कहां नवीं नकौरी, जोबनवन्ती सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी मनसा पूर कराईआ। अल्फ़ी कहे, हा हाए, मैनूं कहिंदे अल्लाह राणी दी गोली, मैं मुहम्मद दी सेव कमाईआ। मैं चुप कर के कदे ना बोली, बुल्लां तों पिच्छे आपणी आसा दयां दबाईआ। मैनूं बड़ा चाअ कदी मैं वी बहवांगी डोली, आपणा रंग रंगाईआ। फिर सुणया चौदां तबकां पै गई रौली, हाए हाए दिती सुणाईआ। मुहम्मद किहा ओह क्यों पई एं तौली, तौले तौले भज्जें चाँईं चाँईंआ। मैनूं चाअ आउँदा जे रुड़के वाल्लयो तन्द ल्या दयो मौली, मेरा कलीरा दयो वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। वेखो रुड़के वाल्यां दा विहार, शब्दी खेल खिलाईआ। चल के आए दरबार, आपणा पन्ध मुकाईआ। जगत वाला विहार, कलीरा कौडीआं वाला बंधाईआ। किते रुस्स ना जाए सदी चौधवीं मुटिआर, सहेलीआं नूं बाहवां किवें वखाईआ। इक रुपईआ ते इक पैसा एह सगनां दी कार, क्योंकि आपे मुंडा ते आपे कुड़ी रुपईआ इक्को कम्म आईआ। ओह गुरसिख लाग्यों इक पैसा मुंडे कुड़ी दे उत्तों दिता वार, तुहाडी झोली दिती भराईआ। जे इक रुपईआ ना अउदा ते गुरदर्शन कदी ना ज़िंदा रहन्दी विच संसार, एह बिन रसना तों शब्द दे नाल ल्या मँगाईआ। लक्ष्मण सिँघ ते तेज कौर दोहां दा नाता अपर अपार, इस दे नाल पिछला चलया आईआ। एह वेखो खेल सची सरकार, जिस नूं चाहे ओसे नूं लए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर अपणा हथ्थ टिकाईआ। एह रुपईआ बड़ा चिट्टा, टणक टणक रिहा जणाईआ। कुड़ी मुंडे दा सोहणा निकले सिट्टा, इक मूर्ती इक्को जोत नज़री आईआ। इक्को दोहां दा सांझा चिठ्ठा, इक्को इक पढ़ाईआ। इक्को दोहां दा धाम अनडिठा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। कुछ होर लभ्भीए जे विच्चों कुछ निकल आवे सिट्टा, एह ठूठी एह डोरी एह कौडी एह रविदास दा कसीरा, पर मुंडा लभ्भा ओह वी बिना चीरा, जे कुड़ी लभ्भी ते मुच्छां दाढ़ी वाली बैठी उपर पीहड़ा, जिस दी पीढ़ी पिछली ना कोए समझाईआ। ना एह जम्मदी ना एह मरदी ना एह सड़दी ते ना इहनूं क़बरां विच खाए कीड़ा, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। ना होवे कदे दिलगीरा, ना खावे मंडा सीरा, नानक दादक मिलण कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे सगन नाल कुछ रुपईए जिन्हां नूं कहिंदे नोट, काग़ज़ां वंड वंडाईआ। वे भरावो मैं ते मिलणा नाल ओस जोत, जो जोती जाता इक अख्वाईआ। तुसीं ते कहिंदे इस दी होर कोई गोत, ते मैनूं ऐं दिसदा सारयां गोतां दा मालक नूर खुदाईआ। तुसीं लभ्भदे फिरदे तुहाडे साहमणे लुक के बहि गया विच

काया दे पोश, कोश विच समझ किसे ना आईआ। जिस दी आसा रहे लोच, उह लोचणां दे पिच्छे डेरा लाईआ। जिथ्थे सन्त ना सकण सोच, अक्खीं मीटीआं अक्ख ना कोए चमकाईआ। ज़बान नाल कहिंदे लोक परलोक, सलोक ढोले रहे गाईआ। नाले पाठ करदे नाले पूजा करदे नाले माला फेरदे नाले कहिंदे प्रभू किते दे दे मोख, मुकती मँग के आपणा झट लँघाईआ। कहिंदे नाम जपणा रोज़, एह रोजी स्वासां दी बण आईआ। जिन्हां ने साहिब सतिगुर दे वेखे चोज, चरण लगदयां ही पार कराईआ। जन्म मरन कर्म दा रहे कोई ना रोग, धुर दा संजोग आपणे नाल कराईआ। सदी चौधवीं कहे ओए हाए मेरया रामा, राम दए जणाईआ। मेरी अल्फ़ी पा के तेड़ों लाह दे पजामा, पुनह पुनह सरनाईआ। मैं वेख्या मुहम्मद तेरा ग़ुलामा, सजदे सीस निवाईआ। सुण अगम्मी कलामा, कलमा रिहा भुलाईआ। जे तूं महदी अमामा, अमलां तों बाहर नूर खुदाईआ। फेर वजा दे आपणे नाम दा इक दमामा, दामनगीर हो के आपणा पल्लू लैणा फड़ाईआ। तेरा खेल नहीं जिस्माना, असमानां तों परे तेरी रुशनाईआ। सच दस्स अल्फ़ी वाले इन्हां विच्चों केहड़ा तेरा बेगाना, केहड़ा दुश्मन नज़री आईआ। मैं तक्कके आई तेरा वड्डयां छोटयाँ नाल याराना, यारी सब दे नाल रखाईआ। मैनूं ऐं जापदा तेरा धर्म राज दे कोल इक निक्का जिहा थाणा, पुलीस अबलीस दिता बहाईआ। किसे नूं पुछदा नहीं पीणा खाणा, खाह मखाह सब नूं दए सज़ाईआ। जिस वेले भगतां दा होवे जाणा, अंदर वड़ के आपणा आप जणाईआ। क्यों आपणयां दे पिच्छे इन्हां दा सतिगुर नौजवाना, शब्द दा रूप सोभा पाईआ। उस वेले धर्म राए दा निकल जाए पाखाना, भय विच आपणी सुरत भुलाईआ। ते जन भगत गाउँदा जाए तराना, सोहँ ढोला गाईआ। मैं चलया विच मैदाना, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। सचखण्ड करना बिसरामा, जिथ्थे विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। ते गुरु अवतार पैगम्बर सेवा करन बण के कामा, काम वाला गुरु नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा घर दए वसाईआ। अल्फ़ी कहे मैनूं सारे आखो काली, काला रंग रंगाईआ। दोहां हथ्थां दी मारो ताली, सोहणा ताल बणाईआ। मैं डर गई जिन्हां दे अंदर प्रभ ने जोत बाली, बाल बुढ्ढे इक्को रंग सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी मनसा पूर कराईआ। अल्फ़ी कहे मैं पढ़नी इक्को अलिफ़, गुरमुखो दयो पढ़ाईआ। मैं चुक्कण आई हल्फ़, क़सम खा के दयां सुणाईआ। मैनूं पता नहीं कहिंदे क्यों मुशर्फ़, मुश्किल दए तुड़ाईआ। इन्हां दस्सया प्रभ दी इक्को पक्की शर्त, शरअ तों बाहर कढ्ढाईआ। मैं डरदी गई जरक, तोबा तोबा मेरी दुहाईआ। मैं सब कुछ कर के तरक, तुरत भगतां सीस निवाईआ। जन भगतो मेरे कोल नहीं कोई खरच, पल्ले गंढ ना कोए वखाईआ। मैं राह विच आउँदी आउँदी यसू दे वड़ गई विच

चर्च, चुगली वाले सारे नज़री आईआ। मैं भज्ज उठी मेरे चूकणे विच होण लग्गा दरद, दारा सिंहां डुब्बिया ओए उठ मेरा साथ दे वंडाईआ। हुण मैं प्रभ दे भुल्लयां नूं भिजवा देवांगी विच नर्क, स्वर्ग दी आस ना कोए रखाईआ। जिन्हां ने शरअ दी फेरी करद, क़तल कीती लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा घर दए वसाईआ। अल्फ़ी कहे मैनूं दस्स दे मेरा सबक, इंदर सिंघ बहुता पढ़या नज़री आईआ। जां वेख्या दुहाई दुहाई दुहाई चौदां तबक, तोबा तोबा रहे सुणाईआ। फेर वेख्या भगतां दे अंदरों दिसी चमक, नूर ज़हूर चमकाईआ। मैनूं भुल्ल गया तबरेज़ शमस, मनसूर सूली उत्ते दए दुहाईआ। क्यों गोबिन्द दे हथ्थ विच ओह कमच, जिस नूं ख़ंजर कहे लोकाईआ। जे कोई समझ जाए एस दी रमज़, ते रमज़ान दे रोज़े कराए ख़तम, भुक्खिआं झट ना कोए लँघाईआ। जे प्रेम प्यार दा दे दए इक चमच, बूँद बूँद विच्चों उठाईआ। फेर बुद्धी विच आ जाए समझ, समझ बुद्धी विच समाईआ। फेर एहो एहदी मेहरबानी एहो एहदी शैतानी एहो करदा ग़ज़ब, गर्ज़ सब दे नालों तुड़ाईआ। जदों दिल चाहे भगतां विच हो जाए जज़्ब, जज़्बात सब दए बदलाईआ। कफ़णी कहे मैं भज्जी विच्चो अरब, अरबानीआं अलबानीआं ऐलानीआं सारे आई तजाईआ। भला मैनूं दयो खां ज़रब, लम्मी चौड़ी पढ़े लिखे मेरा तूल अर्ज़ दयो कढ्ढाईआ। जे कोई सार पाशा जानण वाला दस्सो मेरी नॅटी क्यों पवे नरद, पौं विच्चों हटाईआ। मेरा रंग काला किते समझो ना ज़रद, लाल गुलाल ना कोए वखाईआ। मैं ते गुरमुखो अजे पहली वेरां करन आई अर्ज़, पता नहीं छब्बी पोह नूं की की हाल सुणाईआ। जे मैनूं पता लग्ग गया कि एह मर्दाना मर्द, जिस दी मदद ऐली मँग मँगाईआ। मैनूं डर लगदा किते मैं हो ना जावां ग़रक़, आपणा आप गवाईआ। सच पुच्छो मुहम्मद ने मारी अरक, कूहणीआं नाल हिलाईआ। विच्चों अबू नूं आया हरख, गुस्से विच आपणा आप जलाईआ। इक सूफ़ी भर के आ गया चरस, सूटा खिच्चे धूंआं दिता उडाईआ। ओधरों मेघ प्या बरस, आपणी छहबर लाईआ। मुहम्मद ने कर के अर्ज़, अक्खां पुट्टीआं लईआं उलटाईआ। खुदा ने राग अल्हाया नखतूसनो सन मेरी तर्ज़, तुल्हा तुलाज़े तालब तुलबिआं दए समझाईआ। वेख्यो किते क़ुरान शरीफ़ ते क़ुरान मजीद विच्चों मेरी ना समझो तरफ़, कोनयां किनारयां विच रह के झट ना कोए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे नी भैणो इक गाओ सुहागी गीत, सज विआही दुल्हन आईआ। कोई कहो बाहमणी कोई कहो मुस्लमानी कोई कहो नीच, आपो आपणी बोली दयो समझाईआ। कोई कहो सलवार जंपर पाई क़मीज़, कोई कहो अल्फ़ी पा के आपणा झट लँघाईआ। कोई कहो परदा चुक्क के मुख वेखीए ला के नीझ, किते अन्न्ही काणी ना डोली पाईआ। सारयां कहिणा ओदों वेखांगीआं

४६३
२१

जदों पाणी वारांगे जदों लँघण लग्गी दहलीज़, बूहे विच सगन मनाईआ। पर हाए ना इहदा कोई सौहरा ते ना कोई सस्स ते ना इहदा कोई तत्तां वाला ख़सम केहड़ा करे रीझ, अक्खां वेख वेख सारयां झट लँघाईआ। नी ना एह डोली बैहन्दी मारे चीक, हाए माँ ना कर सुणाईआ। खबरे इस ने किथ्थों सिख लई तमीज़, जदों बोले ते बोले किथ्थे गया मेरा धुर दा माहीआ। मैं ओस दे नाल गई पतीज, पतिपरमेश्वर इक हंढाईआ। जो सारयां नूं बणा दए अज़ीज़, आहला अदना इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर दए वड्याईआ। आंढणां गवांढणां कहिण किथ्थों आई बहू, बेटी किस दी जाईआ। केहड़े मन्दिर मुनारे रहू, कवण दुआरे डेरा लाईआ। किस दा हुक्म सहू, सीस किस झुकाईआ। बुढड़ीआं किहा इस ने बेसगनां दा लीड़ा उत्ते ल्या जेहड़ा वांग लहू, सूहा रंग ना कोए रंगाईआ। विच्चों माई हव्वा बोली नी भैणो एहदी वड्याई झूठयां नूं सारयां नूं खाऊ, डैण बण के किधरों आईआ। बाहमणीआं कहिण ओहो वेखो फिरदे केतू राहू, आपणा नखत्र रहे बदलाईआ। जे कोई सानूं मिणस देवे गऊ, पिंडी धो के ठाकर लईए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। इक आ गई बुढड़ी सवाणी, मुख दन्द ना कोए रखाईआ। चलो वेखीए बहू राणी, क्यों साथों परदा रही कराईआ। एह ज़रूर अक्खों होवेगी काणी, नक्क वढ्ढी नज़री आईआ। बुल्ल चीरया होवेगा वांग मधाणी, दन्द कौडीआं वांग बाहर लमकाईआ। साडा मुंडा नहीं एस दा हाणी, एह परौहणी बैठी परदा पाईआ। ना कोई गल विच गानी, हथ्थीं बाहवां छल्ले छापां ना कोए छणकाईआ। सारीआं कहिंदीआं बेबे एह जदों बोले बोले अगम्म दी बाणी, प्रीत प्रभ दे नाल रखाईआ। जेहड़ा जुलाहा तणदा सी ताणी, कबीर जुलाहा थोड़ी अक्ख चुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सारीआं कहिण बीबी तूं चुक्क दे मुख तों परदा, सारीआं दर्शन लैण पाईआ। बीबी कहे मैनूं वखाओ पहलों घर दा, जेहड़ा सहेड़ के लिआया चाँईं चाँईंआ। मेरा अंदरे अंदर दिल सड़दा, दुखी हो के रही सुणाईआ। नी मैं भुल्ल गई जेहड़ा मेरा विछड़िआ चौदां सौ साल चिर दा, चिरी विछुन्निआं ना कोए मिलाईआ। जे किधरों आ जाए फिरदा तुरदा, मैं परदा दयां उठाईआ। मेरा डर लथ जाए मेरा पती कदी नहीं हुंदा मुर्दा, मुद्दतां दे मेले लए कराईआ। जिस नूं भेत आ गया सच्चे सतिगुर दा, ओह सन्त सुआणी दूजे मिलण कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। अल्फ़ी कहे जिस दे कोल शब्द हुक्म दी निशानी, अग्गे दयो टिकाईआ। मेरी पूरी होण लग्गी क़ुरबानी, करबले दा पन्ध मुकाईआ। मैं शरअ छडणी शैतानी, शरीअत लैणी बदलाईआ। जलवा तकणा असमानी, नूर इक खुदाईआ। जूह रहिण नहीं देणी बेगानी,

बग़लगीर देणे वखाईआ। पतित रहे ना कोए प्राणी, पुराणां वाल्यां देणा समझाईआ। आत्म परमात्म सब दी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जिस दा लेखा चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। सो आदि जुगादी धुर दा बानी, समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखा पार कराए आलमे ज़ाबदानी, दरगाह साची सच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वड्याईआ। जिस दे कोल शब्दी धार दा पटका, दुपट्टा अग्गे दयो टिकाईआ । सदी चौधवीं कहे मैं अन्तिम सब दा करना झटका, हलाली वाले हलाल बणाईआ। चारों कुण्ट पए खटका, खट्टी सके ना कोए कमाईआ। मैदान दिसे रत्त का, रत्ती रत्त ना रंग रंगाईआ। एह खेल कमलापति दा, पतिपरमेश्वर रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा बदला रिहा चुकाईआ। पटका कहे मैं आया थल्ले पैर, चरण हेठ सरनाईआ। वरते सृष्टी कहर, कहर विच लोकाईआ। मैं भगतां दी मँगां खै़र, बीखै़र तेरी वड्याईआ । कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे लहर, लहर लहर नाल टकराईआ। तेरा भगत दुआरा दिसे शहर, जिथ्थे शहिनशाह सोभा पाईआ। दूई द्वैती रहे कोई ना ज़हर, ज़हरीलापन देणा चुकाईआ। अल्फ़ी कहे सदी चौधवीं कहे मैं दस्सणा किस तरां वरतणा कहर सवा पहर, पहरेदार नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरइण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दृष्टी देवे भेड़, छेड़ अंदरे अंदर छिड़ाईआ।

४६५
२१

✻ २ कत्तक शहिनशाही सम्मत ४ गरधारा सिँघ दे नवित्त हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सिर गंजा वाल दो चार, माटी चर्म नज़री आईआ। तिन्न सौ सट्ठ हाडी सोभा बहत्तर नाड़, नाड़ी लख लख दुहाईआ। तन वजूद बणया कन्डयां झाड़, कांटे चुभण थाईं थाईंआ। पैरीं पन्ध ना मुक्के वाट, गोडे गिट्टे देण दुहाईआ। तूं शब्द भुल्ल गया जेहड़ा सुत्यां दिता रात, नावां हिस्सा याद रखाईआ। इक सौ सतारां वार इस तों पहलों तैनूं पुच्छया, पूरा दे सुणाईआ। नाल दुःख कदे ना मुक्या, बहाने विच ना कदे रखाईआ । तेरे अंदरों निशाना उक्या, भरम रिहा भरमाईआ। सताई वार तैनूं चढ़या ग़ुस्सया, आपणा आप तपाईआ। अजे दुःख तेरा नहीं मुक्कया, कलेश करे लड़ाईआ। जेहड़ा रहिणा नहीं सी जुसिआ, जिस्म तन नज़री आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की करता खेल कराईआ। दो चार वाल कहिण क्यों हथ्थ पैर होए डुड्डे, डुगडुगी रहे वजाईआ। क्यों पीड़ करदे गोडे, दर्दां विच दुहाईआ। सानूं

ऐवें कहिंदे बीर योद्धे, युद्ध कीती ना कोए लड़ाईआ। जे हो जाईए प्रभू जोगे, जुगती आपणी ना कोए चतुराईआ। जो बदल देवे काया चोगे, चंगे घर दए वसाईआ। दु:ख दर्द मेटे रोगे, रोगीआं वेख वखाईआ। अजे पीड़ पैणी सज्जे मोढ्ढे, दु:ख आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा खिलाईआ। मोढ्ढा कहे मेरे पीड़ पैणी कन्धे, कुंदन रूप ना कोए वखाईआ। जगत वासना वेखणे धंदे, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। तन्दरुस्तीआं नाल कदे ना हुंदे चंगे, अन्तर प्रेम ना कोए वखाईआ। जेहड़े सूलीआं उत्ते टंगे, ओह सब तों बहुता प्रभ दा नाम ध्याईआ। अजे ते राह वखाया अग्गे होर चढ़ाउणा डंडे, जिथ्थे डाडां मार के दएं दुहाईआ। ओथे दु:ख कोई ना वंडे, वंडणहार नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए वखाईआ। पीड़ विच पैंदीआं चीसां, चश्म नज़र किछ ना आईआ। वेखण वाला सम्मत बीसा, बीसवीं सदी नाल दुहाईआ। जो पिछला पीसण पीसा, ओह लेखा देवे थाउँ थाईंआ। अगले सम्मत मिट्ठा कर देवे कौड़ा रीठा, कूड़ी विख गवाईआ। पैसिआं नाल भर दए खीसा, घसुन्न मुक्की तों लए छुडाईआ। शरीर होवे शीशा, शमां नूर चमकाईआ। धुर दा बण के मीता, मित्र हो के होए सहाईआ। बेशक तेरे नाल धोखा कीता, लारिआं विच वक्त लँघाईआ। अन्तर करे ठांडा सीता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखे लावे दो चार वाल, सहायक हो के करे प्रितपाल, नायक हो के होवे रखवाल, रखणहारा दया कमाईआ।

* ४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ४ साधू सिँघ सूफ़ी कोट मुहम्मद खां वाले नाल वेदांत समेलन अमृतसर *

सन्त साधू कदे ना भूले, भुल्ल विच कदे ना आईआ। जिन्हां दा आत्म परमात्म इक्को रूप कन्त कन्तूहले, साची सेजा सोभा पाईआ। जिस दा लहिणा ओस दा ओसे कोलों वसूले, राजा भिखारी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दा खेल पैगम्बर रसूले, गुर अवतार परदा लाहीआ। सच मुहब्बत प्रेम प्यार दा दे के झूले, झलक पलक ख़लक तों परे दए वखाईआ। नित नवित्त निरगुण निरवैर दा निराकार असूले, नेम विच निआं इक्को इक समझाईआ। हुक्म फ़ुरमान संदेसा देवे माकूले, महिरम हो के आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नित नवित्त आपणी खेल खिलाईआ। सन्त सज्जण कदे ना भुल्लदा, सिख्या देवे जगत लोकाईआ। माया ममता विच कदे ना रुलदा, हउमे हंगता ना कोए बणाईआ। इक्को नाम तराज़ू तुलदा, साचे कंडे चढ़ के आपणा वज़न बणाईआ। संग रख के सुल्हकुल दा, सही सलामत वेखे थाउँ

थाईआ। जेहड़ा रूप ओस अमुल्ल दा, जिस दी क़ीमत ना कोए चुकाईआ। सो सच प्रीती अंदर मुहब्बत धार धुलदा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जिथ्थे सन्तां दा दुआरा खुल्हदा, जगत जिज्ञासू सो चरण प्रीती घोल घुलदा, कर्म कांड दा लेखा जाए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हर इक अंदर बैठा वड़, निरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। सन्त सूफ़ी हक़ कलाम, हक़ीक़त दए जणाईआ। जिथ्थे ना कोई शरअ ना कोई मज़हबां वाली सलाम, सजदयां वाला सीस ना कोए झुकाईआ। ना कोई अलिफ़ ये ना कोई क़ायदयां किताबां दा करन वाला इंतज़ाम, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ मकान, देहरा हुजरा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई मुरीद मुर्शद दए पैग़ाम, इलहाम इल्म आलम ना कोए दृढ़ाईआ। ना कोई सिफ्ती सिफ्तां दा दए इनाम, ना कोई गृहस्ती परदा लाहीआ। जिथ्थे आप आपणा एका होवे इष्टी, कायनात रहे ना दृष्टी, दृष्टांत दा लेखा दए मुकाईआ। ओह धार साधू इक दी, जिस विच इक दा एका इक्को नज़री आईआ। एसे कारण साधूआं अंदर भुल्ल ना दिसदी, जो भुल्लिआं रसते रहे वखाईआ। सन्त मुहब्बत कोई वासना नहीं फुल्ल दी, सुक्क के सुगंधी देण मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

४६७ घर घर, काया मन्दिर अंदर आपणा नूर चमकाईआ। सन्त सूफ़ी ज़लीलो ज़गल ज़ेवा ज़िबते ज़जहक़ तनज़ीह ज़ुकशा वलीउल ४६७

२१ अलमा वाहिदे नूर नूर अलाहीआ। क़दमे बोसी कज़ूत महिबाने रुहाने अज़ाने ज़वीने जोचिसते काया माटी ख़ाकी बुत बुतख़ाने २१

डेरा ढाहीआ। सन्त बचन भुल्ल विच भगवान नालों कदे ना जाण रुठ, रुठयां जगत मनाईआ। जो आपणी आत्म सेजा बैठा तुठ्ठ, आपणे अंदरों पी के अमृत आपणा घुट, जगत विकार बाहर कढ्ढ कुट, काया कुटीआ अंदर निरगुण जोत बिन वरन गोत दीआ बाती कमलापाती सच स्वामी अन्तरजामी घटनिवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझा यार जल्वागर आपणा नूर नूर नूर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे परमात्मा आत्मा इक्को ज़ाती, जोती दा जाता आप अख्वाईआ। तुहाडी रसना पवित्र कहे वाह वाह, वाहवा वजदी रहे वधाईआ। अंदरों मिले उल्फ़त मुहब्बत वाला राह, रहिबर होवे नूर ख़ुदाईआ। साची देवे शब्द अगम्मी सलाह, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। आत्मा दा परमात्मा परमात्मा दा आत्मा दोवें इक दूजे दे गुआह, दूजी शहादत ना कोए भुगताईआ। निज नेत्र सदा होवे रुशना, दोए लोचन वंड ना कोए वंडाईआ। बिना मंज़ल तों मंज़ल वेखे जिस मंज़ल दा मालक बेपरवाह, जिस नूं ख़ुदा कहि के सारे रहे गाईआ। आपे ख़ुदा आपे जुदा, जुदा ख़ुदा वंड विच कदे ना आईआ। महरम दा महरम होवे अलाह, तन रबाब बिन तन्द सितार हिलाईआ। ओसे दा सजदा ओसे दा कलमा ओसे दी दुआ, ओसे दे अन्तर ओसे दे निरंतर ओसे दी झोली पाईआ। जिस

दी वजह सके ना कोए समझा, वजूद तों बाहर लभ्भण महबूब एसे करके हथ्थ किसे ना आईआ। सूफ़ीआं सन्तां राह सब नूं अंदरों दस्सया सदा, नौ दुआरे चढ़ के दसम दवारी सहज वड़ के, मन मनसा ममता तज के, निरगुण धार विच सज्ज के, जोती जाता निरवैर पुरख लभ्भ के, आप आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सदा हक़ीक़ी हक़ दे, शरीकत विच कदे ना आईआ। आदि जुगादी विष्नूं भगवान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान जे जैकार कराईआ। जो त्रैगुण माया पंज तत सुरती निरती विच्चों देवणहारा दान, चारे खाणी चारे बाणी सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां संदेसे देवे धुर फ़रमान, कलमा कायनात नबी रसूल दृढ़ाईआ। भगत भगवान प्रगटा के अगम्म निशान, दीन दुनी दा मालक लए उपजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्मा परमात्मा दोहां दा इक्को गान, इक्को राग इक्को नाद इक्को धुन इक्को सार शब्द दी धार साज वजाईआ। इक्को मन्दिर इक्को मकान, इक्को खेले खेल महान, इक्को रूप धरे ध्यान, इक्को लेखा जाणे दो जहान, इक्को घट घट रविआ नौजवान, इक्को धर्म झुलाए निशान, इक्को पैगम्बर गुरु अवतार बणे महमान, लोकमात फेरा पाईआ। इक्को देवे नाम शब्द दान, इक्को देवे धर्म पूजस अस्थान, इक्को दीआ जोती जगाए महान, गोती घर घर सब दा नज़री आईआ। अमृत रस आबेहयात देवे पीण खाण, इक्को आत्म सेजा बिस्तर दिसे जिथ्थे सुत्तयां आवे आराम, जगत खटीआ कम्म किसे ना आईआ। इक्को सब नूं देवे अमृत रस, जिस नाल होवे मन वस्स, दह दिशा ना जावे नस्स, नाता तोड़ के कूड़ी अक्ख, प्रतख घर विच घर मिलाए आप गुसाईंआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्मा परमात्मा दोहां दा इक्को जस, वक्खरा रहिण कोए ना पाईआ। मैं मालक तन वजूद माटी ख़ाक नक्क मूँह पैर हथ्थ, एह सारे सेवादार लए बणाईआ। क्यों मैं मेरा ते एह हट्ट, जिस दे विच वस्त बेपरवाहीआ। जेहड़ा अंदर वड़िआ फेर ओसे मन्दिर चढ़या साचा लाहा लए खट्ट, जगत खट्टी कूड़ी रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक दूजे दा नाम लए रट, रट्टा अवर रहे ना राईआ। मैं आत्मा सच तूं परमात्मा सच ते दोहां दा प्यार काया माटी कच्च, कंचन गढ़ अंदर वड़ मन्दिर चढ़ दोवें बैठे आसण लाईआ। जगत नेत्र सानूं कोई ना सके फड़, खोज्यां हथ्थ किसे ना आईआ। आदि जुगादि कदे ना जाईए मर, सद जीवत जीवत विच समाईआ। क्यों दोहां दा इक्को जिहा घर, दोवें रूप नर नारी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सन्त भुल्ल विच भुलेखा ना कदे रखाईआ। धन्न धन्न इक स्वामी, जो हर घट अंदर डेरा लाईआ। लख चुरासी दा अन्तरजामी, अन्तर अन्तश्करन वेख वखाईआ। जिस दा हुक्म फ़रमान गुर अवतार पैगम्बरां गाई बाणी, कलाम कलमयां विच जणाईआ। उह शहिनशाह

सुल्तानी, वेखे जगत अवामी, खेल करे तमामी, तमा तों परे इस्लामी, सन्तां दी तोड़ गुलामी, जवानी आपणे नाल हंढाईआ। विद्या तों बाहर विदवानी, निशानां तों परे निशानी, पर हैरानगी कि जदों आवे ते आवे विच जिस्म जिस्मानी, असमानी ज़िमी जमानी आपणी कार कमाईआ। जल्वागर नूर नुरानी, सन्तां समझे धार ना कदे बेगानी, प्यार विच आपणा प्यार वखाईआ। जदों मँगे सच दी कुरबानी, सदा वखाए आलमे जावदानी, मुकामे हक़ अस्थानी, दरगाह साची सचखण्ड सच दुआरा सोभा पाईआ। एह वेदांत दी खेल भावें पुराणी, विदवानां दी विदवानी सदा चढ़े विच नवीं जवानी, अगली दिसे होर कहाणी, जिस नूं पहली बाणी ना कोए समझाईआ। जेहड़े चढ़ गए मंज़ल रुहानी, उह टप्प गए ज़िमीं असमानी, छड्ड गए अञ्जील क़ुरानी, निरअक्खर विच्चों निष्अक्खर बिन अक्खां तों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हर घट मेला मेले सहज सुभाईआ।

४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ४ वेदांत समेलन स्वामी हरी गिरी बकलो वाले नाल अमृतसर

तुहाडा प्रेम बुरश दी दातन, दर दुआर दए खुल्हाईआ। जिथ्थे नूर नूर दा साथण, आत्म परमात्म परमात्म आत्म नज़री आईआ। उपजे अगम्मी नादन, तुरिया तों परे सच शनवाईआ। खेल वेखे ब्रह्म ब्रह्मादन, ब्रह्मांड फोल फुलाईआ। भेव खुल्हाए बोध अगाधण, बुद्धी तों परे समझाईआ। लेखा जाण आदि जुगादण, जुग जुग पर्दा लाहीआ। वेखे खेल अन्धेरी रातन, कूड़ी क्रिया फोल फुलाईआ। परदा लाहुन्दे बातन, जल्वागर नूर खुदाईआ। जिस तरां दन्द साफ़ करे दातन, आपणी सेव कमाईआ। एसे तरां सन्त मन नूं अंदरों मांजण, मजन धूढ़ी इश्नान कराईआ। ब्रह्म दा ब्रह्म होवे काजण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह वेखे चाँईं चाँईंआ। दातन कहे मेरी सेवा अपार, अपरम्पर स्वामी दिती लगाईआ। मैं आ गया विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट तक्कां नैण उघाड़, बिन अक्खां अक्ख तकाईआ। किस दे अन्तर निरंतर हक़ प्यार, मुहब्बत विच महबूब मिल के खुशी मनाईआ। आत्मा दा आत्मा परमात्मा रूप यार, ब्रह्म परम आत्मा परम पुरख सिफ्त सालाहीआ। दोहां दा मन्दिर इक दुआर, काया बंक सोभा पाईआ। दीआ बाती जगे अगम्म अपार, अगम्म अथाह करे रुशनाईआ। एह दातन कहे मैं ओस दी सखी सहेली प्यारी नार, जो नर नरायण नर हरि हरी गिरी हरि दा रूप वटाईआ। जिस दी जगत मंज़ल दुष्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। दातन कहे जिस वेले अंदर वड़दी, आपणा ज़ोर लगाईआ। तूं ही तूं ही राग पढ़दी, दूजी अलख ना कोए जगाईआ। सच दुआरे चढ़दी, आपणा पन्ध मुकाईआ। खेल वेखां नाड़ नड़ दी, हड्ड मास खोज खुजाईआ। निरगुण जोत अगम्मी बलदी, घर मन्दिर होए रुशनाईआ। भूमिका सोहे निहचल धाम अटल दी, सति सतिवादी आप समझाईआ। जेहड़ी धार शब्द अगम्मी आवाज़ काया मन्दिर अंदर घलदी, बिन राज़ रमज़ दए जणाईआ। जे मेरी लेखे लग्ग जावे सेवा घड़ी पल दी, क्यों हरी गिरी स्वामी जी चाह प्याली विच दिता भराईआ। दातन कहे मैं भरी विच प्याली, प्याला काया वेख वखाईआ। जिस दे नूर जोत अगम्मी लाली, जल्वागर करे रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दी धर्मसाली, मन्दिर इक्को वज्जे वधाईआ। त्रैगुण माया तुट्टे जंजाली, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। मन मनसा रहे ना काली, कालख टिक्का दए धुआईआ। दातन कहे मैं कोई सेवा कीती नहीं बाहली, थोड़े समें विच सन्तां नाल मिल के आपणी ख़ुशी बणाईआ। दातन कहे जिस वेले हरी गिरी लाई हथेली हथ्थ, उँगलां विच दबाईआ। मैं अंदरे अंदर पई हस्स, हस्ती वेखी बेपरवाहीआ। इन्नां दे बुल्लां नालों आया ज्यादा मैनूं रस, क्यों मैनूं अंदरों रस्ता दिता समझाईआ। मैं ओथे गई वस, जिथ्थे आत्मा दा आत्मा बेली नज़री आईआ। सुणी ओह कथा अकथ, जिस नूं रसना जेहवा बत्ती दन्द ना कोए सुणाईआ। मेरा नाता छुट गया तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश तों परे बैठी डेरा लाईआ। मैं ख़ुशी नाल दस्सां सच, दातन उठ के लए अंगड़ाईआ। मेरे लूं लूं अंदर स्वामी दा प्यार गया रच, क्यों एन मैनूं रचना प्रभ दी दिती वखाईआ। मैं मेज़ ओते पई नच्च, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं नहीं कोई वख, वखरा घर ना कोए बणाईआ। बेशक मेरी वेखण वाली नहीं अक्ख, शाख टहिणी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तर अन्तर निरंतर निरंतर लहिणा सब दा दए चुकाईआ।

वेदांत दा विद्या तों बाहर विशा, विशेष ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म विच वड्याईआ। एह कोई कथा कहाणी नहीं किस्सा, जो सिफ्तां नाल सालाहीआ। एह कोई जगत वंड नहीं हिस्सा, कायनात वखरा घर समझाईआ। एह दातन वजूद नहीं कोई निक्का, वड्डा छोटा ना कोए समझाईआ। जे समझो वेदांत सारयां दा पिता, जिस विच्चों फ़लासफ़ी निकल के आरफ़ां करे पढ़ाईआ। अन्त निरगुण दा निरगुण दे नाल सिट्टा, जिस दे उत्ते काला अक्खर नहीं कोई निरअक्खर धार चिट्टा, अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। सर्ब दा प्यार ते सर्ब नाल करे हित्ता, हितकारी इक्को वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तर आत्म आपणा रंग वखाईआ। स्वामी किहा बहुत सुंदर, पवित्र बचन रसना विच्चों जणाईआ। किरपा कर के खोल्ह दयो गुंझल, परदा दयां उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान चौदां लोक चौदां तबक विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर बिन अक्खां तों दिसण, गुर अवतार पैगम्बर जिस दर बैठे डेरा लाईआ। चार वेद कवण केहड़ी क़लम शाही नाल लिखण, कवण धार अगम्म अपार निरअक्खर करे पढ़ाईआ। जिन्हां नाल सारी सृष्टी दिसे मिथण, मिथ्या दिसे लोकाईआ। इक गल्ल ब्रह्म दी क्यों ब्रह्म कोलों आवे सिखण, एह परदा देणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ।

❋ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ४ महा रिषी महेष जोगी दे नाल बचन अमृतसर ❋

हाथ से हाथ मिल के होवे अनन्द, अनन्द आत्मा देणा जणाईआ। जिस दा प्रकाश परे सुर्या चन्द, गगन गगनंतर तों बाहर करे रुशनाईआ। परदा रहे ना कोई ब्रह्म, पारब्रह्म ब्रह्ममत नज़री आईआ। जगत मिट जाए तृष्ना तम, रजो तमो सतो बैठे मुख छुपाईआ। चिन्ता रहे ना हरख सोग ग़म, मन ममता विच ना कोए हल्काईआ। होवे प्रकाश काया माटी चम्म, अन्तर निरंतर दृष्टी देणी बदलाईआ। बिना रसना जिह्वा तों नाम चले अगम्म, निरवैर निराकार निरँकार इक्को नज़री आईआ। अन्तर निरंतर बाहर बातन रहे ना कोए भरम, सति सति सति विच समाईआ। लेखे लग्गे चुरासी विच्चों मानस जन्म, जन्म दा दाता कर्म करम दा बिधाता, आत्म दा नाता परमात्म दी ज़ाता, ज़ात ज़ात विच्चों समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग दए वखाईआ। शुभ नाम सुणया आप जी दा मुनी महेष, विष्न ब्रह्मा शिव शंका रहे ना राईआ । इक आत्मा इक ब्रह्म ते इक होवे आदेस, इक एकँकार इक इक्क विच वड्याईआ। असीं जाणा चौहन्दे ओस देस, जिथ्थे आपणा आप नरेश, दूजा नज़र कोए ना आईआ। बिना कन्नां तों सुणना संदेस, बिन अक्खरां तों विद्या लैणी वेख, जिथ्थे अलिफ़ ये ना कोए बणाईआ। सदा नज़र आवे चेतन चेत, मन बुद्धी सदा रहे बिबेक, भाव कूड़ कुड़िआरा दूर कराईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक दूजे विच प्रवेश, रूप रंग रेख बिन अक्खां देणा समझाईआ। जिस दा ना कोई मुच्छ दाढ़ी केस, मूंड मुंडाया सीस ना कोए वखाईआ। जो सदा रहे हमेश, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणा खेल खिलाईआ। सो नज़री आवे नेतन नेत, निज लोचन नैण अक्ख प्रतख आपणा आप दरसाईआ। महेष जोगी जी दस्सणी उह जुगती, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। मगर भज्जी फिरे मुकती, निउँ निउँ लागे पाईआ। दसम दुआरी

तों अग्गे जावे सुरती, शब्द नाद धुन विच शनवाईआ। समझ आवे आपणे सतिगुर दी, जो बिना अक्खरां तों करे पढ़ाईआ। अवस्था मिले ओस आत्मा अनन्दपुर दी, जिथों आत्मा अनन्द अनन्द अनन्द विच समाईआ। जिथ्थे मंज़ल जोगीआं दी तुरदी, अन्त जिस दे दर समाईआ। साडी ख़ाहिश ओस लोड़ दी, जिथ्थे जगत लोइन कम्म कोए ना आईआ। वासना रहे ना काम क्रोध लोभ मोह हँकार ठग चोर दी, चिन्ता चिखा देणी जलाईआ। ब्रह्म धार ब्रह्म आत्मा खेल की जगत घनघोर दी, घर विच घर देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। हथ्थ कहे मैं सोहणा चंगा, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। रिषीआं दे चरणां हेठां वहिंदी गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती आपणा सीस झुकाईआ। बाहरों तन वजूद वाला दिसे बन्दा, अंदर नूर नूर रुशनाईआ। जिस दा अमृत रस रहन्दा चोंदा, तृष्ना भुक्ख जगत मिटाईआ। देवे सदा सच अनन्दा, अनन्द आत्मा विच्चों समझाईआ। मन कदे ना होवे गंदा, प्यार मुहब्बत विच भज्जे वाहो दाहीआ। जगत कल्पणा विच करे दंगा, हउमे विच लड़ाईआ। जिस वेले रिषीआं दा हो जावे संगा, संगदिल हो के अपणा रंग रंगाईआ। घर सन्त कन्त भगवन्त आत्म परमात्म इक्को सेजा ते इक्को सौण मंजा, दूजी चारपाई वंड ना किसे वंडाईआ। इक्को मंज़ल इक्को डंडा, इक्को खेल विच ब्रह्मण्डा, जिस दा सति सरूप सब तों चंगा, जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी, महेष योगी धुर संजोगी आत्म रस भोगी, रसना रस ना कोए वड्याईआ। हथ्थ उत्ते हथ्थ मारे थपकी, सोहणी आवाज़ बणाईआ। आवाज़ विच रमज़ ओस सच दी, जो सुत्तयां लए जगाईआ। बेशक एह काया माटी कच्च दी, पंजां तत्तां नाल वड्याईआ। इहदे अंदर जोत जगदी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। मानव मन वासना ओसे दे आखे लगदी, हुक्मे विच बैठी सीस निवाईआ। एह खेल ओस समरथ दी, जो सर्ब विआपी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हथ्थ नाल हथ्थ मिल के जगत दी इल्लत दए गवाईआ।

✻ ५ कत्तक शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल स्वामी देव मूर्ती जर्मन वाले नाल बचन होए ✻

जर्मन विच्चों आए मूर्ती देव, देव आत्मा नूर अलाहीआ। आत्म धार करदे सेव, परमात्म वड वड्याईआ। लेखा जाणे अलख भेव, अलख अगोचर वड वड्याईआ। दरस के धाम निहकेव, निहचल इक्को आसण लाईआ। जिथ्थे गावण वाली

नहीं कोई जिह्व, रसना सिफ्त ना कोए सालाहीआ। अमृत रस मिले मेव, हँ ब्रह्म वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। देव मूर्ती मूर्त वेख अकाल, अकल कलधारी आप जणाईआ। जिस दा लहिणा देणा नाल दीन दयाल, दीन दुनी तों परे करे रुशनाईआ। जिथ्थे पोह ना सके काल, महाकाल सीस झुकाईआ। सच दुआर सची धर्मसाल, धर्म दुआर नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म धुर दी भाल, काया मन्दिर अंदर मेला सहज सुभाईआ। जगत जुग नालों वखरी निराली चाल, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आत्म परमात्म भेव खुलाईआ। हुण वेखणा अग्गे दा मौजूदा हाल, हालत वेखणी जगत लोकाईआ। किसे दी लेखे पई कोई ना घाल, धायल होवे कूड़ खुदाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी साथ देवे ना कोए दलाल, अगला रंग ना कोए रंगाईआ। वस्त अमोलक काया गोलक साची वस्त रही ना धन माल, जगत ख़ज़ाना ख़ाली दए दुहाईआ। तन वजूद माटी ख़ाकी फल दिसे ना काया डाल, फल फुल्ल सिम्मल रुक्ख वांग नेत्र रोवण मारन धाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, परदा उहला अंदरों दए चुकाईआ। देव मूर्ती आया विच्चों जर्मन, जन्म जन्म दा लेखा वेख वखाईआ। मन ममता अंदर कोए ना भरमण, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। लेखा वेखे निहकरमी हो के आप निहकरमण, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। सृष्टी विच कोटां विच्चों भगत सुहेले जम्मण, जन्म मानस विच मानव रूप वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म साची विद्या पढ़न, इक्को पट्टी नूर अलाहीआ। साचे जोगी हो के मंज़ल उह अगम्मी चढ़न, जिथ्थे पौड़ी डण्डा नज़र कोए ना आईआ। नाता तोड़ के जन्म मरन, चुरासी फाँसी गलों कटाईआ। सच दुआरे ओस वड़न, जिथ्थे नूर नूर विच समाईआ। झगड़ा दिसे ना कोई ज़ात पात वरन बरन, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। निज नेत्र खोल्ह के हरन फरन, इक्को तक्कण नूर अलाहीआ। जो हिरदे अन्तर कर के प्रण, प्रणाम श्री भगवान वेखे चाँईं चाँईंआ। आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा नूं देवे सरन, सरनगति इक्को देवे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। देव मूर्ती तेरा पिछला लेखा नाल राम, वशिष्ट विशेष दए गवाहीआ। जिस दा सेवा करनी साढे तिन्न घंटे रोज़ दा काम, कर्म विच आपणा धर्म बणाईआ। बिस्तर साफ़ करदा रिहा तमाम, तमअ लालच ना कोए जणाईआ। अयुधया तों नौ मील ओस वेले कनबंसी हुंदा सी ग्राम, दिशा चढ़दी सोभा पाईआ। पिछले जन्म दा धीरो सी नाम, धीरज विच आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए दृढ़ाईआ। देव मूर्ती पिछला नाम धीर, धर्म धार दृढ़ाईआ। इक दिन राम दे फड़ के तीर,

उँगल मुक्खी उत्ते लगाईआ। किस बिध एस दे नाल देवें चीर, आपणा बल वधाईआ। की हुंदी किसे नूं पीड़, दु:ख दर्द सताईआ। राम ने किहा एह खेल अन्त अख़ीर, दिसण विच कदे ना आईआ। जिस ने दीन दुनी कीती ताअमीर, हुक्मे अंदर आपे ढाहीआ। जिस दे कोल नाम शमशीर, धार दो धार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। धीरो ने किहा दस्स वशिष्ट मुनी मेहरवान, विषयां तों बाहर की वड्याईआ। किस बिध मानस जन्म होवे कल्याण, आवण जावण रहे ना राईआ। किस गृह मिले भगवान, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। केहड़ा जपीए नाम, परदा उहला देणा उठाईआ। वशिष्ट हस्स के किहा हुण तेरा करां इंतज़ाम, मेहर नज़र इक उठाईआ। अंदर होवां निगाहबान, परदयां विच्चों परदा फोल फुलाईआ। अग्गे देवां साचा दान, धर्म दी धार इक वखाईआ। जिस वेले त्रेता द्वापर बीते विच जहान, कलयुग आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं शरअ होवे शैतान, कलमा हक़ ना कोए पढ़ाईआ। कायनात दिसे बेईमान, दीन दुनी दए वखाईआ। शाह सुल्तान सहायता करे कोई ना आण, ग़रीब निमाणयां गले ना कोए लगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी दए ना कोए ज्ञान, बुद्धी तों परे करे ना कोए पढ़ाईआ। ओस वेले खेल होवे महान, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आप कराईआ। तेरा लहिणा देणा रखे विच जहान, जहालत कूड़ी खोज खुजाईआ। अन्तर निरंतर दे के आपणा ध्यान, योग युगती वाला समझाईआ। आत्म परमात्म होवे परवान, परम पुरख मेला सहज सुभाईआ। जो वेखणहारा दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर वेख वखाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर हज़रत ईसा मूसा देवणहारा दान, मुहम्मद कलमा झोली नाम भराईआ। ओह साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझा यार निरगुण दीवा बाती कमलापाती जोत जगाए आण, आनन फ़ानन आपणा खेल खिलाईआ। सच दुआर एकँकार किरपा धार विच संसार मेला मेल मिलाए आप भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा पूरब झोली पाईआ। धीरो किहा सुण वशिष्ट राम दोवें दिसो गुर, सतिगुर रूप वटाईआ। किस बिध लोकमात आवां मुड़, मानस मानस रूप धराईआ। वशिष्ट किहा सुरती धार जावे जोड़, शब्दी अगम्मी गंढु पुआईआ। साचे पौड़े चढ़ें तोड़, लग्गी प्रीत ना कोए तुड़ाईआ। चार कुण्ट जावे बौहड़, जिस वेले बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। वशिष्ट ने किहा सुण ओस वेले इक पुरख अकाल दी पवे लोड़, हर हिरदा इक्को आस रखाईआ। जिस दे अग्गे चले कोई ना ज़ोर, जोरू ज़र सीस निवाईआ। जो परमात्म हो के सर्ब आत्म पकड़े डोर, जोती जाता पुरख बिधाता इक्को नज़री आईआ। दीन मज़हब ज़ात पात ऊँच नीच झगड़ा शौह दरया देवे रोड़, बेड़ा इक्को नाम वखाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनहार प्रकाश अन्धघोर, काया माटी वेख वखाईआ। धीरो किहा मेरे राम, राम दे वखाईआ। कवण देवे पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। राम हस्स के किहा एह खेल प्रभू भगवान, जो भगतां रंग रंगाईआ। सारी सृष्टी दृष्टी वेखे आण, दह दिशा खोज खुजाईआ। एसे कर के देव मूर्ती मूर्त होई ओस मेहरवान, जो नाद तूरत तुरिया तों परे रिहा वजाईआ। सर्ब घटा घट आसा मनसा पूरत, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। सच मुहब्बत प्रेम प्यार दी नाम अगम्मी धूढ़त, टिक्का मस्तक अगम्म अथाहीआ। आसा मनसा सब दी पूरत, तृष्ना जगत दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, गृह मन्दिर वेख वखाईआ।

ज़िमीं असमान सूरज चन्द जितने सितारे, ज़िमीं असमान दो जहान नज़री आईआ। नानक लख करोड़ी रसना नाल उच्चारे, सिफतां विच वड्याईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान खेल अपारे, अपरम्पर स्वामी आप जणाईआ। तेई अवतार हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद रसना कहि ना सके उच्चारे, इशारिआं विच ना
४७५ कोए जणाईआ। दस गुरु पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हक़ खुदा करदे गए निमस्कारे, निउँ निउँ सजदयां विच सीस झुकाईआ। ४७५
२१ लख चुरासी जून चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज जल विचकारे, धौल धवल दे दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान बाईबल तुरैत लिख लिख थक्के हारे, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। आदि अन्त श्री भगवन्त परवरदिगार सांझा यार वाहिद गौड लेखा जाणे आपणी धारे, विदवान विद्या विच समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी आप आपणा रंग रंगाईआ। जो दीसे ज़िमीं असमान, ज़ाहर ज़हूर नेत्र नैण रुशनाईआ। जिस दा मालक इक अमाम, मेहरवान महबूब नूर खुदाईआ। रवि ससि सूर्या चन्द चलण थाउँ थाँ, दिवस रैण आपणी कार कमाईआ। बिना धरनी धरत धवल तों मनुशां दे वसण वाला होर नहीं कोई थाँ, गगनां उपर डेरा कोई ना लाईआ। मण्डल मण्डप जो शास्त्र रहे जणा, विस्थार विच इज़हार विच गुफ्तार विच रफ्तार विच आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर हर घट अन्तर वेख वखाईआ। ज़िमीं असमानां उत्ते अनभव कोई ना करदा, अनदृष्ट ना कोए समझाईआ। नानक एका एकँकार चरणां उत्ते सीस धरदा, जगदीश देवणहार सरनाईआ। मातलोक अन्त शब्द अगम्मी हुक्म करदा, संदेसा राग अलाहीआ।

कोई मानव मानुख मानस तारिआं सतारिआं उपर नहीं वसदा, मुनारिआं उत्ते डेरा कोए ना लाईआ। राकटां विच जगत विज्ञान फिरे लभ्भदा, खोज्यां हथ्थ किछ ना आईआ। अगम्मी खेल ओस रब्ब दा, जो हँकार सब दा दए गवाईआ। थोड़े समें पिच्छों मानस आपणी हिम्मत हार के वेख्यो सब कुछ छड्डदा, सन मून उपर लभ्भण कोए ना जाईआ।

देव मूर्ती जर्मन संगी साथी, लेडी जैंट सोभा पाईआ। जिन्हां दे अन्तर नूर साखी, गॉड गुड दए वड्याईआ। मिटी कूड़ अन्धेरी राती, नाईट लाईट करे रुशनाईआ। प्रेम प्रीती दिसे साची, लव अब्बव वेख वखाईआ। आत्म परमात्म इक्को ज़ाती, सोल सोल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाईआ। देव मूर्ती सुहाई सोहणी नाईट, शबेरोज वज्जी वधाईआ। जिन्हां दा हिरदा अंदरों पवित्र वाईट, बलैक रूप ना कोए वखाईआ। आत्मा परमात्मा दी लै के साईड, गाईड बण के बणया बेपरवाहीआ। जिस दा रस्ता मार्ग वसीह वाईड, चारों कुण्ट नज़री आईआ। ख़ुशी विच ग़मी होई डाईड, डैथ गई पाईआ। मुहब्बत उत्ते हो के राईड, शाह अस्वार भज्जा चाँईं चाँईंआ। जिस नूं थैंक यू करके किहा जाए कुआईट, ठीक ठाकर मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग रंगाईआ। देव मूर्ती जर्मन विच्चों लै के आया फ़रैंड, दोस्त सज्जण वेख वखाईआ। दस्त नाल मिलाया हैंड, हथ्थ हथ्थ विच वड्याईआ। सन्तां नूं मिल के कोई ना रहे ब्लाइन्ड, निज नेत्र नूर होवे रुशनाईआ। ज़रा वेखो मस्तक पिच्छे बीहाईंड, परदा अन्तर उठाईआ। जिथ्थे महबूब वस्से बिन सन मून लाईट, निराकार नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, काया मन्दिर अंदर वेख वखाईआ। देव मूर्ती आया विच पंजाब, पंज आबी वेख वखाईआ। नाल लिआया मित्र अहिबाब, प्यारे संग रलाईआ। वेख्यो जर्मन वाले साथी छड्ड गए कबाब, रसना मुख ना कोए लगाईआ। जै सीता राम दा करन अदाब, साचा राग अल्हाईआ। इन्हां दा लहिणा देणा हिसाब, पिछला नानक नाल चलया आईआ। पहलों रहन्दे सी विच बग़दाद, बग़लीआं गलां विच पाईआ। जिस वेले नानक दी सुणी रबाब, मन अन्तर वज्जी वधाईआ। भुल्ल गया ज़िंदगी वाला ख्वाब, ख़ालस इक्को राह तकाईआ। नानक किहा तुहानूं एस तों होर आवे स्वाद, बिन रसना रस चखाईआ। जिस वेले परमात्म आत्म मेला करे आप, आप आपणा जोड़ जुड़ाईआ। राम वशिष्ट दा बख़श्या होया तुहाडा विचोला बणे साक, देव मूर्ती चल आईआ। सब दी माटी ख़ाक अंदरों होवे पाक, रूह बुत मिले सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए समझाईआ। देव

मूर्ती चल के आया दूर, आपणा पन्ध मुकाईआ। खिच्च के लिआया ओह हज़ूर, जिस नूं हज़रत सीस निवाईआ। जिस दा कलमा कलामां तों बाहर दस्तूर, अक्खरां तों बाहर पढ़ाईआ। बख्श के जोती नूर, नूरे चश्म करे रुशनाईआ। मुहब्बत नाल कर भरपूर, लव लव नाल जुड़ाईआ। भगत भगवान दा मिलणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी दा दस्तूर, राम वशिष्ट दए गवाहीआ। भावें हुण पूरब विच कराउणा मशहूर, मशहूरी वास्ते मशवरा तुसां आपे दिता सुणाईआ। जिस वेले सद्दोगे आवांगे ज़रूर, नौ खण्ड पृथ्मी दा परदा दयां चुकाईआ। जिस जरमन विच्चों वार शुरु होई ओसे विच अन्त होवे क़ाफ़ूर, धरनी धरत उत्ते रहिण कोए ना पाईआ। जो राकटां राहीं पाउँदे फ़तूर, रशीआ अमरीका सब दा पन्ध मुकाईआ। किसे दा रहिण नहीं देणा ग़रूर, गुरबत अंदरों देणी कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। स्वामी आ गया ओस दुआर, जिथ्थे नज़रे नूर खुदा। सच मुहब्बत दा इक प्यार, जल्वागर ना होए जुदा। आत्म परमात्म दा इक अधार, सच स्वामी दिलरुबा। जर्मन वाल्लयो प्यारयो जिस ने तुहानूं दिता जगा, नाम बत्ती इक लगाईआ। योग अभ्यास दिता सखा, सिख्या अगम्म अथाहीआ। पिछलयां विछड़यां नूं दिता मिला, मिल्या मेल सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। देव मूर्ती महिमा महान, राम राम विच राम रिहा जपाईआ। जिस दा मार्ग इक आसान, राह सिध्धा रिहा समझाईआ। तुसीं पिंडां वाले किरसान, खेती वाह के झट लँघाईआ। सोहणा वक्त पहुंचया आण, वज्जी सच वधाईआ। सारे इक दा करो ध्यान, जो वाहिद गॉड खुदा नज़री आईआ। ओसे नूं करो प्रणाम, जो हर घट अंदर बैठा आसण जमाईआ। ओसे दा करो ध्यान, जो निरगुण नूर नूर चमकाईआ। शुकराने विच सिफ्तां वाला बयान, मुहब्बत विच प्यार नाल वड्याईआ। हुण वक्त हो गया सब ने लग्गणा पीण खाण, खाण पीण आपणा आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर आयां नूं श्री भगवान करे परवान, परवाना नाम दा हथ्थो हथ्थ फड़ाईआ।

❊ १४ कत्तक शहिनशाही सम्मत ४ शब्द सिँघासण हरिभगत दुआर धीरपुर दिल्ली-६ ❊

क़दम बिना क़दम ना जाए चुक्कया, चार कुण्ट दह दिशा क़दमां हेठ रखाईआ। बिना जग नेत्र पैंडा जाए मुक्कया, मंज़ल बामंज़ल पन्ध मुकाईआ। घर स्वामी मिले लुक्कया, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। बसन्त सुहाए अगम्मी

रुत्तया, पत्त डाली फल फुल्ल आप महकाईआ। परमात्म आत्म उठाए सुत्तया, आलस निंदरा दूर कराईआ। जन्म जन्म गंवाए गुस्सया, खुशी ग़मी विच्चों गवाईआ। शब्दी धार रहिण ना देवे रुस्सिआ, कर किरपा जोड़ जुड़ाईआ। जिन्हां नूं साहिब सतिगुर आ के पुच्छया, लोकमात वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। सतिगुर चरण क़दम झुकणा बड़ा सौखा, भज्जणा पए ना वाहो दाहीआ। पढ़ना पए कोई ना पोथा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। रखणा पए कोई ना रोज़ा, निमाज़ां विच सीस ना कोए झुकाईआ। भाग लगा के काया माटी गोशा, कोना कोना खोज खुजाईआ। सही तुआम दा दे के तोसा, जगत रसना लेख मुकाईआ। पूरब जन्म दा मेट के रोसा, रसिया हो के अक्ख खुल्हाईआ। दुःख सहे ना कोए बेदोषा, दोषीआं लए उठाईआ। सुन्न समाधी विच ना रहे ख़ामोशा, शब्द अनाद करे शनवाईआ। बुद्धी दी रहिण ना देवे सोचा, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। निज नेत्र खोल्ह पूरी करे लोचा, लोइण आपणा नूर चमकाईआ। मानस जन्म विच देवे मौका, मुकम्मल आपणा रंग रंगाईआ। जीवण नईआ चलाए नौका, नौ दुआरे जगत दरया पार कराईआ। विछोड़े विच भरे ना हौका, हँ ब्रह्म परदा दए उठाईआ। मुहब्बत विच करे कोई ना धोखा, धर्म दी धार इक जणाईआ। सच दुआर दी बख्श के ओटा, ओड़क इक्को घर समझाईआ। नाम निधान लगा के चोटा, चोटी चढ़के वेख वखाईआ। मन कल्पणा विच रहिण ना देवे खोटा, खोटे खरे रूप बदलाईआ। कर परकाश निर्मल जोता, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। चौदां लोक चौदां तबक सुणाए होका, हुक्म इक्को बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। सतिगुर दुआर कदम पए ना चुक्कणा, रस्ता बन्द ना कोए वड्याईआ। दर्शन कीत्यां पैंडा मुकणा, आवण जावण चुरासी तुट्टे फाहीआ। पूजा पाठ दी सुखणी पए ना सुक्खणा, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ वंड ना कोए वंडाईआ। तीर्थ तटां उपर पए ना धुपणा, दुरमति मैल दए धुआईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन पए ना वेखणा, त्रबैणी नैणी आपे पार कराईआ। किसे दुआरे सिर पए ना सुट्टणा, बख्शणहार आप वड्याईआ। कर्म कांड दा सहणा पए ना दुखणा, दर्दी हो के दर्दीआं दर्द वंडाईआ। मात गर्भ उलटा होणा पए ना रुक्खणा, दस दस मास ना कोए तपाईआ। साहिब सतिगुर शब्दी धार कहे मेरे पुत्तणा, पिता पूत मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। साचा क़दम जन भगतां उठे, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिन्हां उत्ते साहिब सतिगुर पुरख अकाला तुट्ठे, दीन दुनी दा मालक ख़ालक प्रितपालक वेख वखाईआ। नाम निधान श्री भगवान गाना बन्न्हे तेरे गुट्टे, आत्म

४७८
२१

परमात्म धुर दा शगन मनाईआ। निझर धारों निरवैर हो के उठे, निराकार निरँकार कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले जगाए सुत्ते, सोवत जागत आपणा रंग रंगाईआ। भाग लगाए काया माटी पंज तत बुते, बुतख़ाना दए सुहाईआ। मालक हो के कदे ना लुके, परदा उहला दए चुकाईआ। जो सिर सर सतिगुर पूरे झुके, हिरदे अन्तर निरंतर सीस झुकाईआ। उहदा आवण जावण पैंडा मुक्के, मुकम्मल सतिगुर देवे इक सरनाईआ। आउणा पए ना जननी कुख्खे, नौ अठारां ना वंड वंडाईआ। कल्पणा विच ना कोए दुखे, सुख सागर रूप समझाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हो के वेखे, प्रीती विच आपणा जोड़ जुड़ाईआ। साची मंज़ल क़दम कदे ना रुके, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार सच्ची वड्याईआ। क़दम चुक्कण उत्ते लाउणा पए ना ज़ोर, जोरू ज़र ना कोए वड्याईआ। जिस वेले साहिब सतिगुर करे दौर, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। झगड़ा मुका के पंज चोर, पंचम शब्द धुन करे शनवाईआ। भेव खुल्हाए तूं कोई होर नहीं मैं तरूां तरूां कोई होर, अवर अवरा नज़र कोए ना आईआ। परवरदिगार आत्मा इक्को कोर, आदि जुगादी दयां प्रगटाईआ। जिस दी तबीअत समझे ना कोए तौर, तरह तरह ना कोए जणाईआ। सो होवे ना कदे कमज़ोर, बलहीण ना कदे अख्वाईआ।

४७९ जिस दी दो जहानां दौड़, ब्रह्मण्ड खण्ड पृथमी आकाश वेखे चाँईं चाँईंआ। सो साहिब सतिगुर जिन्हां गुरमुखां गया बौहड़, ४७९

२१ बौहड़ी बौहड़ी करे ना कोए दुहाईआ। जन्म जन्म दी तृष्ना मेटे औड़, ओड़क आपणा अमृत मेघ बरसाईआ। काया रस २१

मिट्ठा करे कौड़, अनरस आपणा आप चखाईआ। मनुआ पाए कोई ना शोर, शरअ दा लेखा दए गवाईआ। हरिजन करके भाग मथोर, मिथ्या दस्से कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार सदा नवां नकोर, बिरध बाल रूप ना कोए वखाईआ। क़दम चुक्कण तों सतिगुर किरपा करे पहलां, पहले दर दए वड्याईआ। मार्ग आपणा सहला, सहज सुभाउ लए मिलाईआ। सच दुआर लै जाए अगम्मी महलां, महल महल्ल जिस दी सिफ्त सालाहीआ। साचे नाम दा दे के शोअला, थाली दीपक दए समझाईआ। दीन दुनी तों हो के वेहला, वाहवा आपणी करे पढ़ाईआ। काया मन्दिर अंदर वेख के जूह बेला, जंगल टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। चुरासी विच्चों जन भगतां तक्के सज्जण सुहेला, गुरमुखां आपणा रंग रंगाईआ। आत्म परमात्म करके मेला, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आपे गुर आपे चेला, आत्म परमात्म आपणा खेल खिलाईआ। आपे वस्से धाम नवेला, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। आपे कटणहारा धर्म राए दी जेल्हा, चित्रगुप्त लेखा दए गवाईआ। आपे करे अगम्मी खेला, जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर बेअन्त कहि के गए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सतिगुर बेपरवाहीआ।

क़दम चुक्कण दी केहड़ी लोड़, लोड़ींदा साजण घर आईआ। जगत विछड़यां जग लवे जोड़, जोड़ी आत्म परमात्म लवे बणाईआ। शब्दी चाढ़ अगम्मी घोड़, तुरिया तों परे दए टिकाईआ। जिथ्थे अवर नहीं कोई शोर, शरअ दी वंड ना कोए वंडाईआ। करनी दा करता खेल करे बतौर, बातन आपणा भेव खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। क़दम चुक्कणा पए क्यों, कौण दए वड्याईआ। जन भगतां नाल प्रभ आपे लाए नेंहों, निरगुण हो के सरगुण मेल मिलाईआ। तूं ही मैं परमात्मा रहे ज्यों दा त्यों, तूं मैं झगड़ा दए गवाईआ। अमृत बरख अगम्मा मेहों, तृष्ना भुक्ख दए मिटाईआ। लेखे लावे ख़ाधी कणक गंदम गेहों, तन वजूद दए वड्याईआ। सब दा मालक बण के पिउ, पिता पूत गोद उठाईआ। जिस नूं पंच कहिंदे दयो, देव आत्मा वेख वखाईआ। मालक हो के अलख अभिउ, भय भउ भरम दए मिटाईआ। लहिणा देणा मुकाए पिंड जिउ, तन सरीर वेख वखाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण धार एकँकार परवरदिगार पुरख अकाल इक्को इहो, रहिबर बणे ख़लक ख़ुदाईआ। झगड़ा मिटाए साढे तिन्न हथ्थ सीआं सिउँ, सेवक हो के आपणी कार कमाईआ। जन भगतां तीर लगाए बिरहों, अणयाला आपणा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता इक अख्वाईआ। क़दम चुक्कण तों लवे रोक, रुक्का अगम्मी इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दा सलोक, सोहला साहिब आप समझाईआ। चरणां हेठां दब्ब के मुकती मोख, मुफ्त आपणा घर वखाईआ। जिथ्थे प्रकाश इक्को जोत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए समझाईआ। ना कोई बुद्धी करन वाली सोच, ना कोई मन दह दिशा उठ उठ धाईआ। ना कोई लगावणहारा चोट, ना कोई सुत्तयां रिहा जगाईआ। ना कोई पंडत पांधा दिसे परोहत, ना कोई मुल्ला शेख़ मुसायक नायक नज़री आईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला बहुत, जो बहुभांती आपणी खेल खिलाईआ। क़दम चुक्कण तों पैहलां भगतां दे अंदर पहुंच, क़दम दा सज्जण क़ुदरत दा मालक क़ादर दया कमाईआ। उन्हां दर्शन देवे रोज़, जागत सोवत आपणी खेल खिलाईआ। मुहब्बत प्यार दी दे के मौज, मजलस आपणे नाल जणाईआ। बाहर करनी पए ना खोज, काया काअबे करे रुशनाईआ। भेव खुल्ा के गोझ, परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म बहिमादी शब्द अनादी आपणा राग सुणाईआ। क़दम चुक्कण तों पैहलां जावे आ, जिस नूं अलाह कहे लोकाईआ। हाज़र हज़ूर होए ख़ुदा, ख़ुदगर्ज़ी आपणी डेरा ढाहीआ। कदी ना होवे जुदा, जुज़ वखरा ना कोए वखाईआ। बण के मुहब्बत दा दिलरुबा, महबूब नूर अलाहीआ। मुर्शद हो के

मुरीदां नूं मिलण दी पूरी करे अदा, अदब वाला प्रगटाईआ। हक़ीक़त दी हक़ीक़त विच्चों रबाब वजा, बिना तन्द सतार हिलाईआ। अमृत आबेहयात पला, पल्लू आपणे नाल जुड़ाईआ। जिस नूं कहिंदे रब्ब अलाह, बिना वजह आपणा रंग रंगाईआ। अंदरों आत्मा आपणे नाल लए रला, अगम्मी गली विच भवाईआ। धर्म दी दए सलाह, सिफ्तां विच दृढ़ाईआ। हक़ दा बण मलाह, बेड़ा लए उठाईआ। मार्ग दस्स के नवां, नव नौ चार दा डेरा ढाहीआ। दीन दुनी दा बदल के समां, समाइत समाज दी दए कराईआ। चार वरन दा बण के मीआं अम्मां, आप आपणी लए अंगड़ाईआ। ममता वाला रहिण ना देवे कोए पम्मा, पारब्रह्म प्रभ आपणा परदा लाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा जाप जपाए सृष्टी अंदर दमा, दामनगीर आप हो जाईआ। चिन्ता हरख सोग मिटाए ग़मा, ग़मखार वेख वखाईआ। भाग लगा के काया माटी तना, तन वजूद करे रुशनाईआ। भटकण ना देवे मनसा अंदर मना, कामल मुर्शद वेख वखाईआ। बेशक तुसीं वाले दो कन्नां, सरोते सरवण रूप धराईआ। बोलण वाली जो जिह्वा जिस दा हद्द कोई ना बन्ना, ओह रसना बोल बोल आपणा राग अल्हाईआ। जिन्हां उत्ते साहिब सतिगुर आपे मन्ना, ममता मोह विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। चन्द सतारिआं तों परे चमकाए आपणे चन्नां, जिथ्थे सुर्या बैठा मुख छुपाईआ। शंकर नाल सीस निवाए ब्रह्मा, विष्नूं अक्ख ना कोए उठाईआ। जन भगतां सुख देवे आपणे चरणा, अनन्द निजानंद तों अग्गे करे रसाईआ। गुरमुखां साचा दस्स के धर्मा, धर्म दी धार मेल मिलाईआ। नाता तोड़ के कर्म कुकर्मी, कर्म कांड तों लए बचाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे वरनां, बरनां डेरा ढाहीआ। जिस दा सिर झुक गया इक वार उत्ते सतिगुर चरणा, आवण जावण लख चुरासी पैंडा दए चुकाईआ। नेत्र खोल्ह के हरना फरना, फ़ुरने अंदर फ़ुरना दए जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ अक्खर इक्को पढ़ना, जगत विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। बिना क़दम तों मंज़ल उह चढ़ना, जिथ्थे बैठा धुर दा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, परमात्म हो के आत्म साची वरना, वरयाम हो के वारस हो के ख़ालस आपणे विच समाईआ।

४८१ २१

✻ १ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सदी चौधवीं कहे ज़बलीआ ज़र्रे ज़र नूर रुशनाईआ। सदी चौधवीं कहे किँवले बा, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मिसले शाह पा, परम पुरख परदा इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे दल ज़ेता, तालब तुलबिआं कर पढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे नागुज़ले टा, टाईम वक्त दे जणाईआ। सदी चौधवीं कहे नोवीज़ा सा, साबत साहिब इक फ़रमाईआ।

सदी चौधवीं कहे गलज़ाऊ ज़ा, चश्मे चश नूर रुशनाईआ। सदी चौधवीं कहे दखलसे चा, चविनी चू ज़ज़ा वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मज़ीके हा, हज़ुल गीज़े खुदाईआ। सदी चौधवीं कहे कनज़विते खा, प्रनज़ू ज़ग शाहीआ। सदी चौधवीं कहे नकुसदे दा, दामन दस्ते पाज़ित अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे तकमुआले डा, ज़ैडिन ज़ीके नूर अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे तामुखती ज़ा, ज़ाहिद निद चवज़े ज़ा अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहब्बते रा, राम कृष्ण दुहाईआ। सदी चौधवीं कहे उल्फ़ते ड़ा, ड़ाड़ वेख ख़लक खुदाईआ। सदी चौधवीं कहे मुफ़लसे ज़ा, ज़वी ज़नुक फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं कहे काज़ुज़सू ज़ा, ज़मने नमों नरायण इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे तेरा लेखा सीन अलिफ़ सा, साकार तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे तेरा झगड़ा शीन अलिफ़ शा, शहिनशाह ख़ाक रुलाईआ। सदी चौधवीं कहे परदा उठा स्वाद अलिफ़ सा, साहिब तेरी बेपरवाहीआ । सदी चौधवीं कहे मंज़ल हक़ दस्स रज़ा, ज़ुआद ज़ाहर नूर रुशनाईआ। सदी चौधवीं कहे तोए ज़ोए नाल मिला, तालब तुलबा रूप जणाईआ। सदी चौधवीं कहे ऐन ग़ैन गंढु पुआ, अक्खर अक्खरां विच समाईआ। सदी चौधवीं कहे फ़े कुआफ़ कुदरत वेख वखा, नूर नुराने नूर रुशनाईआ। सदी चौधवीं कहे कीफ़ गाफ़ जोड़ा लए जुड़ा, नून सीन मेल मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे लाम मीम भेव चुका, मुर्दा मुरीद लै उठाईआ। सदी चौधवीं कहे नून निरगुण नूर जोत रुशना, नून मून सून अन्ध अन्धेरा डेरा ढाहीआ। सदी चौधवीं कहे कलज़मू तोए वा, वास्ता तेरे अग्गे रखाईआ। सदी चौधवीं कहे हव्वा आदम तेरी रज़ा, ज़गज़े नूथ चारों कुण्ट नज़री आईआ। हमज़ा ये वास्ता रहे पा, अलिफ़ अलाह इक खुदा, जुग चौकड़ी लेखा रिहा मुका, लहिणा सब दा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुनेहड़ा इक जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं भगतां आउँदा दरद, दरदवंद हो के दयां जणाईआ। मैं पुरख अकाल दी वेखी फ़रद, जिस नूं राए धर्म ना समझे राईआ। चित्रगुप्त जाणे मूल ना मर्द, ज़ोरावर ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर करदे अर्ज़, नमसतिआं विच सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सब दे रंग होए ज़रद, सिर सके ना कोए उठाईआ । जगत शरअ दी टुट्टी करद, क़तलगाह ना कोए बणाईआ। जिन्हां नूं मारे कोई ना मर्ज़, मरीज़ आपणे लए तराईआ। मानस जन्म होण ना देवे हरज, हज़रतां दा मालक नूर खुदाईआ। सदी चौधवीं कहे भगतां दी मैं आप कराई अर्ज़, निमाणी हो के सीस निवाईआ। प्रभू सानूं तेरी गर्ज़, गर्ज़ तेरी आपणे नाल रखाईआ। की खेल होणा असचरज, मैं परदा दयां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां अजब नज़ारा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जलवा तक्कां परवरदिगारा, पारब्रह्म नूर खुदाईआ।

दर दुआरे कढ्डां हाढ़ा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साहिब स्वामी तेरा हुक्म होए कोई ना माढ़ा, माढ़ी मण्डप डेरा ढाहीआ। मैं तक्कां गुरमुख लाड़ा, साजण सोहणा सोभा पाईआ। प्रेम प्रीती रंग चाढ़ दे गाढ़ा, निरगुण सरगुण उतर कदे ना जाईआ। अमृत बख्श ठंडी ठारा, निझर झिरना आप झिराईआ। शब्द नाद दे धुन्कारा, अनहद नादी राग अलाईआ। दीआ बाती कर उज्यारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा खेल अपारा, जग जीवण दाते तेरा भेव कोए ना आईआ। तेरा सब तों वखरा विहारा, जुग जुग देवें माण वड्याईआ। भेव चुका पुरख नारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे साल गिणदयां घस गए पोटे, उँगलां देण दुहाईआ। राह तकदी रही चौदां तबक चढ़ के उपर कोठे, इक्को दर्शन तेरा लोइण लोचे, लोचन बैठा राह तकाईआ। सो सोहणे मिल गए मौके, मुकम्मल तेरी सरनाईआ। तेरा भाणा कोई ना रोके, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जन भगतां मौत मारे कोई नाल ना धोखे, धर्म दी धार प्रगटाईआ। मैं उच्ची उच्ची देवां होके, हुक्म मिलणा धुरदरगाहीआ। तेरे चरण कोई ना पहुंचे, परपंच विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं भगतो तुहाडी गोली, गुलाम जगत अख्वाईआ। धुर दी रमज़ समझ के बोली, अनबोलत राग समझाईआ। आ गई उपर धौली, धवल वेख वखाईआ। प्यार मुहब्बत विच मौली, मेला मेल मिल के खुशी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा परदा दे उठाईआ। सदी चौधवी कहे जन भगतो दयां इशारा, ऐश नाल जणाईआ। वेखो खेल सच्ची सरकारा, हरि करता आप कराईआ। जो आदि जुगादी इक अवतारा, नर नरायण अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां बण सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम कलमा दे अपारा, अपरम्पर सुआमी करे पढ़ाईआ। लख चुरासी ला अखाड़ा, चारे खाणी फोल फुलाईआ। लेखा जाण जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। जिस नूं कहिंदे कल कल्की अवतारा, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं खोल्ह के दस्सां परदा, अगला भेव खुल्हाईआ। वेख के लहिंदा चढ़दा, पहाड़ दक्खण अक्ख उठाईआ। ऐउँ जापया पुरख अगम्मा खेल करदा, करनी दा करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं दस्सां सच अज्ज, धर्म दी धार सुणाईआ। वेखो खेल उपर शाह रग, हरि करता की जणाईआ। जिन्हां दा नाता टुट्टणा जग, दिन थोड़े पन्ध मुकाईआ। मानस जन्म

दी मुक्कण वाली हद्द, अग्गे क़दम ना कोए टिकाईआ। मैं सुण के हुक्म संदेसे वाला छद, भज्जी वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं पिछला दस्सां लेखा, जगत लिख्त ना कोए वड्याईआ। खेल वेख्या विच अरब देसा, बालू रेत रही कुरलाईआ। पाणी ढोणा जिन्हां दा पेशा, मशकां कन्ध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं रोवां ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दरोही मेरे परवरदिगार, तेरी सरन सरनाईआ। पिछला लेखा रही विचार, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। मुहम्मद वेले दे उह हक़दार, हक़ीक़त इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रंगण दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं की दस्सां, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बेशक लोकमात विच कोटन मर गए लखां, अनगिणत आपणा आप तजाईआ। सड़ गए नाल कक्खां, गोरां विच बैठे ढेरीआं ढाहीआ। मैं मँगदी जन भगतां दीआं रखां, निमाणी हो के सीस निवाईआ। जन भगतो मारदी नहीं गप्पां, पप्पा पूरन ब्रह्म दृढ़ाईआ। मेरा नाता जुड़िआ पक्का, पारब्रह्म सरनाईआ। मक्का मदीना दिता धक्का, भज्जी वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र उठाईआ। सदी चौधवी कहे मेरे गोबिन्द आ गया कोल, आपणा पन्ध मुकाईआ। शब्दी धार गया बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। सुत्ती रहो ना मूल अनभोल, आलस निंदरा दे तजाईआ। मेरा नाम वजा ढोल, डंका धुरदरगाहीआ। सच दुआरा देवां खोल्ह, ख़ालक खलक इक दृढ़ाईआ। हर घट अन्तर जावां मौल, मेहरवान महबूब आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द मैनूं मारदा मुक्का, हौली हौली जगाईआ। वेख पिछला भन्नया हुक्का, हुक्म अग्गे बेपरवाहीआ। पिछला रिहा कोई ना दुखा, दु:ख दर्द गवाईआ। सुफल कर के कुक्खा, कुलखणी दए वड्याईआ। उजल कर के मुखा, दुरमति मैल धुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द मैनूं दिता हुलारा, सहज नाल हिलाईआ। कमलिए ओह वेख मेरा दुलारा, जिस दा अन्तिम नेड़े आईआ। नाता तुट्टण वाला संसारा, तन वजूद होए जुदाईआ। छड्डणा पए घर बाहरा, बंस सर्बंस तजाईआ। आउणा पए चरण दुआरा, चरण कँवल सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं भगतां दी करनी क़दर, क़ुदरत दे मालक ध्यान लगाईआ। आपणी आसा पूरी करनी सध्धर, सदके वारी घोल घुमाईआ। बेशक तेरे लखते जिगर, पूत सपूत वड्याईआ। मैं सेवा

करनी महीना मम्घर, फिरां चाँईं चाँईंआ। तेरे कोलों कराउणा अदल, इन्साफ़ इक वड्याईआ। भाग लगाउणा काया माटी बदन, बदला दयां चुकाईआ। आपणा पूरा लावां यतन, यथार्थ दयां दृढ़ाईआ। आ गई तेरे पतण, डेरा कन्ढ़ी उत्ते रखाईआ। गुरमुख सखीआँ विच वसण, वास्ता तेरे नाल जुड़ाईआ। मेरा पूरा करना बचन, बच्चयां वांग झोली रही डाहीआ। जे तूं आएयों इन्हां रखण, एका करीं थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला देणा चुकाईआ। गोबिन्द कहे सदी चौधवीं पिच्छे कर ध्यान, तैनूं दयां जणाईआ। भैणां भरावां दी होवे पहचान, परदा उहला रहे ना राईआ। एह धर्म दा खेल महान, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। मेरी सहजे पिच्छे होई ज़बान, उहनूं पूरा देणा कराईआ। जिस वेले युद्ध हुंदा सी घमसान, चमकौर विच दुहाईआ। गुरसिख कर परवान, ताज सीस उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गोबिन्द कहे सदी चौधवीं पिच्छे मारे झाकी, आपणा नैण उठाईआ। जिस नूं ताज दिता उस दे तिन्न भ्रा ते दो भैणां पिच्छे सी बाकी, बंस सरबंस सोहणा सोभा पाईआ। उस दी ख़ाहिश उन्हां दा लेखा लेखे विच रिहा वाची, अंदरे अंदर अक्ख खुल्हाईआ। डरदा मुख कहे ना बाती, रसना जिह्वा ना कोए जणाईआ। गोबिन्द इक फड़ा के लाची, थापी पुश्त पनाह टिकाईआ। फ़िकर ना कर तेरे फेर बणा दयां साथी, जम्मण वाली वखरी वखरी होवे माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गोबिन्द किहा सदी चौधवीं पिच्छे रख उडीक, तैनूं दयां वखाईआ। बिन अक्खरां तों वेख तवारीख, तारीख हिन्दसिआं नाल ना कोए जणाईआ। जिस दी मेरे नाल प्रीत, प्रीतम हो के होवां सहाईआ। मेरी पाउणी उत्ते लीक, तसदीक़ पुरख अकाल कोलों करवाईआ। जो करां सो जुग जुग ठीक, ठाकर हो के आपणा हुक्म मनाईआ। मेरे विच ओह तौफीक़, जो तरफ़ दोतरफ़ यकतरफ़ इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे नरैण सिँघ दे उह भैण भ्रा, मैनूं पिछले नज़री आईआ। जिस दा शब्द गुरु गुआह, संदेसे घर घर रिहा पुचाईआ। दलीप सिँघ जंडयाले वाला समझा, जिस दी नौ मम्घर नूं होणी सी जुदाईआ। जंडयाले विच्चों महिन्दर कौर दुआबिउँ लई उठा, नन्ही बच्ची चल के आईआ। मेरा पिछला ना मरे भ्रा, प्रभू तेरे अग्गे दुहाईआ। मैं सगन लवां मना, सब कुछ तेरी भेंट चढ़ाईआ। जिस थाली विच खाणा देवां खुवा, उह वी चुक्क लिआईआ। पगड़ी सीस वाली उठा, भज्जी वाहो दाहीआ। जे इक वारी लएं बचा, होवें आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आशा पूर कराईआ। महिन्दरो कहे मेरा होर इक वीरा, सच दयां सुणाईआ। उहदी बदल दे तक़दीरा, तेरी बेपरवाहीआ। ओहदे वास्ते होर

लिआई चीरा, चिरी विछुन्ने जोड़ जुड़ाईआ। अग्गे दिसे राह भीड़ा, तुध बिन होए ना कोए सहाईआ। मेरा नेत्र वगे नीरा, लोचन रहे कुरलाईआ। शहादत देवे भगत कबीरा, क़बरां तों बाहर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं दिसदा सिँघ कुंदन, माल चक्क वड्याईआ। मैं उहदे घर दयां दे अथरू जावां पूंझण, नैणां करां सफ़ाईआ। साचा थाँ जावां हूंझण, रीती प्रेम वंड वंडाईआ। वेखां खेल नैण मूंदन, साहिब तेरी सरनाईआ। गुरमुखां जावां पूजण, जे उहनां लएं बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी तेरे चरणां आवाज़, कूक कूक सुणाईआ। सुत्ती दी खुली जाग, लई मात अंगड़ाईआ। जन भगतां फड़ वाग, तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुरमुख दी लज्जया रख आज, होए ना मात जुदाईआ। एह जन्म मरन दा तेरे हथ्थ काज, दूसर देवे ना कोए सज़ाईआ। मैं चौहन्दी अग्गे तों तेरा बदल जाए रवाज, बिना तेरे हुक्म तों गुरमुख मरन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे दे दे अमृत नाम घुट, घुटने टेक के दयां दुहाईआ। मैनूं ऐं दिसदा नरायण सिँघ दा इक्की मम्घर नूं नाता जाणा सी टुट्ट, हुंदी जगत जुग जुदाईआ। घर दयां नालों जाणा सी रुट्ठ, रुस्सयां ना कोए मनाईआ। एसे कारण तिन्न महीने लँघाए कर के चुप, चरण चरण ना कोए उठाईआ। सदा करदा रिहा पुच्छ, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरे गृह सुहाओ रुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे नरायण सिँघ नूं बख्श दे दात, दाते दानी तेरी सरनाईआ। बीबी महिन्दरो उहदे लई लै के आई सौग़ात, पगड़ी आपणे कन्ध उठाईआ। साडी भैण भ्रावां दी गोबिन्द तेरे चरणां विच बणी रहे जमात, अग्गे ना होवे जुदाईआ। किसे कम्म नहीं आउणी मिट्टी राख, हड्डीआं बालण देण जलाईआ। जे भगतां पुच्छें वात, दाता हो के धुरदरगाहीआ। मेरी लेखे लग्ग जाए अज्ज दी रात, रुतड़ी इक महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं की दस्सां मैनूं आउँदा जांदा चेता, चेतन रिहा कराईआ। पुरख अकाल वेख के इक्को नेता, मेरे नेत्र देण दुहाईआ। भगत उधारना जिस कोल ठेका, गुर अवतार पैगम्बरां पैंडा दिता मुकाईआ। जोत सरूपी धार के भेखा, लोकमात आया चाँईं चाँईंआ। शाहो भूप बण नरेशा, निरगुण निरवैर वेख वखाईआ। ना कोई मुच्छ दाढ़ी केसा, क़िस्मत सब दी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। महिन्दरो कहे मेरी होर इक अरदास, सच दयां जणाईआ। मैं गुलज़ार सिँघ दे जाणा पास, जो पिछला मेरा भाईआ। ओस दी आयू रहन्दी सिरफ़ तिन्न मास, अग्गे होर

ना कोए वधाईआ। एसे कर के मैं चौथी पगड़ी लै के आई ख़ास, सिर भरावां आवां बन्हाईआ। जींवदयां दी बणी रहे जमात, वजदी रहे वधाईआ । मैं चौहन्दी भागां वाली होवे भलक दी रात, सिँघ दलीप सिर पगड़ी दयां बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फेर ओदूं अगला आवे भलक, भरम दए मिटाईआ। मालक हो के ख़ालक ख़लक, ख़ालस रंग रंगाईआ। दे के आपणी झलक, नूर जोत रुशनाईआ। डेरा ढाह के मौत मलक, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नरायण सिँघ नैण मिलाईआ। पगड़ी कहे मैं गोबिन्द वाली दस्तार, दस्त नाल वड्याईआ। मेरा फेर वेख्यो परसों हुंदा विहार, की करता कार कमाईआ। जेहड़ा लेख लिख्या नहीं विच संसार, उहदा लहिणा दए जणाईआ। पिछला क़र्ज़ा दए उतार, जो गोबिन्द कन्नां विच गया सुणाईआ। दूजा सुणे ना कोए गुफ्तार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं खुशी होवे हब्ब, सच दयां जणाईआ। जिस वेले कुंदन सिँघ दे घर दी वेखां हद्द, बेहद नाल वड्याईआ। उहदे सिर उत्ते गुरमुख सिँघ बन्हे पग्ग, रविदास चमारा संग निभाईआ। धर्म नगारा जावे वज्ज, वजदी रहे वधाईआ। गुरमुख प्रभ दा भाणा वेखण जग, की करता खेल खिलाईआ। छेती सड़ना पए ना विच अग्ग, अगनी दा डेरा ढाहीआ। अगले दिन ओथों भज्ज, गुलज़ार सिँघ लैणा तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुलज़ार सिँघ नूं पग्ग बन्हणी पुठ्ठी, पुठ्ठी कला भुआईआ। जिस कारण मैं मुहम्मद नालों रुठ्ठी, सदी चौधवीं दए समझाईआ। हुण लुकी नहीं रहिणा विच गुठ्ठी, पड़दे सब दे फोल फुलाईआ। जे मैं वी गई लुट्टी, लुटाउणी जगत लोकाईआ। मेरी प्रीत प्रभू नालों नहीं टुट्टी, टोटे पैणे सारे देणे तजाईआ। बथेरे मैनूं फड़दे रहे कोलों गुट्टीं, आपणे वल्ल खिचाईआ। मैं दोवें मीट के मुठ्ठी, अंगूठे सब नूं आई वखाईआ। चौदां तबकां टंग के पुठ्ठी जुत्ती, जूएबाज़ां आई हराईआ। इशारा दे के आई रुक्खी रुक्खी, कलमयां विच समझाईआ। तुसीं सारे कटो प्रभ दी बुत्ती, बुतख़ान्यां विच वड़ के दयो दुहाईआ। मेरी औध पिछली पुग्गी, पैंडा ल्या मुकाईआ। तुहाडे कोल गुटकूं गुटकूं करन वाली घुग्गी, घुंमण घेरी विच अटकाईआ। तुसीं ते मैनूं कहिंदे डुड्डी, मैं डौरु डंक खड़काईआ। खुशीआं विच पावां लुड्डी, लोहड़े पैणयों तुहानूं दयां समझाईआ। पैगम्बर हो के मेरे प्रभ दी रमज ना सुज्झी, सुत्यां दयां उठाईआ। तुहाडी शरअ बन्द करावां विच कुज्जी, कूज़ा सब नूं इक वखाईआ। चार कुण्ट वेखो भ्रिष्ट होई बुद्धि, साचा इष्ट ना कोए रखाईआ। बिना वहिण तों दुनियां सारी डुब्बी, पीर पैगम्बर ना कोए तराईआ। मैं हस्सां कुँदां तुसीं रोणा सब ने भुब्बीं, हौक्यां विच दुहाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं ऐं दिसदा गोबिन्द ने नरायण सिँघ दे सिर ते रख्या ताज, ताजां वाले दिती वड्याईआ। कुझ भैण भ्रावां दा होर रिवाज, जग दी रीती चली आईआ। जिस वेले कोई चंगा हुंदा काज, घर घर वजदी वधाईआ। वेखो खेल तुसीं आज, अजब लीला रिहा बणाईआ। पिछला नाता ते भगतां दा समाज, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा दए मुकाईआ। इन्हां दी दूजी भैण वेखो मनजीत, मँगू पुरे तों चल के आईआ। दलीप सिँघ दा सुआ के क़मीज़, भज्जी चाँईं चाँईंआ। कुंदन सिँघ दे करनी रीझ, गल देणा पहनाईआ। गुलज़ार सिँघ नूं एसे नाल देणा पतीज, प्रेम प्यार विच वड्याईआ। कुछ रुड़क्यों आई चीज़, ओह वी हथ्थ देणी फड़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बुढ्ढी हो गई बुढड़ीए तेरी करदी उडीक, नाता तेरे नाल रखाईआ। मैं भुलदी नहीं तारीख, तवारीख दिती बदलाईआ। मैं वेंहदी रही किस तरां कबाब भुन्न के खांदे उपर सीख, सिखर चोटी चढ़ के ध्यान लगाईआ। वाहवा मेरे परवरदिगार कीती तसदीक़, पैगम्बरां दी शहादत दिती गवाहीआ। मैनूं ओसे उत्ते उम्मीद, जो अमलां दी करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे सड़न तों पिच्छों पिच्छे गुरमुखो रह जांदा कड़ा, हड्ड नाड़ी मास नज़र कोए ना आईआ। वेख्यो हुण अग्गे रिहो कोई ना दड़ा, खालस गुरमुख लैणे बणाईआ। सतिगुर इक्को शब्द बड़ा, जुग जुग दा पन्ध मुकाईआ। ना जन्मा ना मरा, मढ़ी गोर ना कोए दफ़नाईआ। जद वेखो ते हाज़र हज़ूर खड़ा, पड़दे अंदरों दए चुकाईआ। सदा भगतां दा पाले धड़ा, दूसर संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। जन भगतो गुरमुख सब तों हुंदा चंगा, चंगी तरां जणाईआ। गुरमुख दी निशानी गोबिन्द दा कंघा, शहादत रिहा भुगताईआ। हड्डी कोई सुट्टण ना जावे किसे गंगा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती बैठी राह तकाईआ। सदी चौधवीं कहे वेख लओ धोखा देण वाला बण गया बन्दा, भुलेख्यां विच भुलाईआ। हथ्थ विच फड़ के मूरखां वाला टम्बा, सत्तरंगा रिहा हिलाईआ। छड्ड के गोबिन्द वाला खण्डा, धुर दा हुक्म रिहा वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आख्या प्रभू तूं कदे ना होवीं रंडा, कलीरे बन्न्ह के सगन भगतां नाल मनाईआ। तेरा प्यार दो जहान तों ठंडा, ठाकर तेरे दुआरे नज़री आईआ। जन भगतां लेख होवे ना मंदा, मंदभागां लैणा तराईआ। तूं कोई पत्री वाचण वाला नहीं पंडा, गरोह का ग्रह दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे जिस दा तेरे नाल प्यार, पीआ प्रीतम होणा सहाईआ। कूड़ा झगड़ा देणा निवार, मेहर नज़र इक उठाईआ। माया दी वासना नौ दुआर, नौ रुपए

देण गवाहीआ। दवारिउँ लँघाए सच्ची सरकार, शब्द हुक्म वाला जणाईआ। रसना नाल नहीं किहा पुकार, पगड़ी दस्तार नाल वड्याईआ। थाली ग्लिास लिआए उठाल, घृत विच सवा पा पाईआ। भैण कहे प्रभू मेरे भ्रा दे ज्वाल, मुख वेखां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं होर दस्सां भविख्त, हथ्थ गुरमुख नाल मिलाईआ। आत्मा परमात्मा दा इक्को इष्ट, दूसर नज़र कोए ना आईआ । शहादत देवे राम वशिष्ट, विषयां तों बाहर रिहा समझाईआ। जन भगतां दी बुद्धी कदे ना होवे भरिशट, भरम दा डेरा ढाहीआ। गुलज़ार सिँघ दे कोलों आउणा कौर तरिप्त, बाल्मीक दा आसण रिहा तकाईआ। ओथे दस्सणा लेखा टांक जिस्त, इक दो क्यों प्रभ ने वंड वंडाईआ। केहड़ा स्वर्ग ते केहड़ा बहिश्त, दोज़ख़ दी अगन कवण तपाईआ। की संजोग की विजोग की आत्मा परमात्मा गृहस्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए दृढ़ाईआ। पाल सिँघ, ओथे आउणा पए ज़रूर, बाल्मीक तेरी धूणी दए दुहाईआ। जिथ्थे बूटा हुंदा सी खजूर, सताई हथ्थ सोभा पाईआ। एह तरिप्त कौर तेरा हुंदा सी मज़दूर, पाणी ल्या के तेरी सेव कमाईआ। नौ वार मस्तक लाउँदा सी धूढ़, सीस चरणां उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। बाल्मीक दी तिन्न चार दी हुंदी सी बस्ती, छप्पर छन्न छुहाईआ। जिथ्थे प्रभ दी वेखदा सी हस्ती, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मुहब्बत मिलदी सी सस्ती, क़ीमत ना कोए रखाईआ। मंज़ल सदा मुकी सी शाहरग दी, रिग वेद दए गवाहीआ। पूजा छड्डी लाल अग्ग दी, अगनी अग्ग ना कोए तपाईआ । लहर छड्डी नशे मदि दी, मधुर धुन इक शनवाईआ। ज़ात वेखी अलाही रब्ब दी, जो जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए लिखाईआ। बाल्मीक तेरा ओह स्थान, कुटिया कांटयां वाली नज़री आईआ। जिथ्थे छुप छुप आउँदा सी भगवान, लुक लुक दरस दिखाईआ। सो देवणहारा दान, दाता दानी धुरदरगाहीआ। ओथे हरि संगत तेरा होवे पकवान, पक्की गुरमुखां नाल पकाईआ। सत्त रंग दा खड़ना नाल निशान, धर्म दी धार देणा झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। बाल्मीक कहे मेरे कोल सवा पंज सेर पाणी हुंदा सी कोसा, कुशलता नाल सुणाईआ। जिस वेले बहन्दा सां विच इक गोशा, आत्मा परमात्मा विच समाईआ। नाम खुमारी मिलदी सी मदहोशा, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। भुल्ल जांदी सी जगत दी सोचा, मन वासना ना कोए हल्काईआ। मेरे अंदर आई इक दिन लोचा, आसा लई प्रगटाईआ। साफ़ सुथरा फेर के पोचा, गोबर नाल लिपाईआ। राह तक्कां अगम्मा मौका, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। प्रभू कोई मार्ग दस्से

४८९
२१

सौखा, मेला सहज मिलाईआ । पढ़ना पए कोई ना पोथा, पुस्तक हथ्थ ना कोए उठाईआ । किरपा करे बिन छप्पर छन्न कोठा, काया कुटिया दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आशा पूर कराईआ। बाल्मीक कहे मेरे अंदर वज्जी धुनी, नादी नाद सुणाईआ। पुरख अकाला वड गुण गुणी, गहर गम्भीर दृढ़ाईआ। तेरी पुकार जाए सुणी, सुन्न समाधी विच समझाईआ। जिस नूं याद कीता पिच्छे बुलीं, बिन रसना मुख हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे दर दए वड्याईआ। बाल्मीक कहे प्रभू कर मेहर, दीन दयाल दया कमाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले होवे अन्धेरा जगत अन्धेर, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। प्रगट होवे शब्दी शेर, भबक आपणा नाम लगाईआ। तेरा लहिणा चुकाए फेर, फिरत फिरत आपणी सेव कमाईआ । कलयुग अन्तिम गेड़े गेड़, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। लालो दा लहिणा देणा सवा सेर, रविदास दा नाता जोड़ जुड़ाईआ। किरपा कर ना लावे देर, जगत विछुन्ने जोड़ जुड़ाईआ। सब दा लेखा लहिणा देणा दए निबेड़, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सदी चौधवीं कहे मैं हुण किथ्थे फिरदी, फेर लवां अंगड़ाईआ। मैं विछड़ी चिर दी, चिरी विछुंने दयां मिलाईआ। सेवा करां ओस पिर दी, जो प्रीतम धुरदरगाहीआ। धार वेखां निरवैर निर दी, निरँकार नज़री आईआ। जिस दी लट्ठ जुग जुग गिड़दी, गेड़े विच दुहाईआ। सृष्टी वेखां भिड़दी, भज्जे वाहो दाहीआ। गुलज़ार वेखां खिड़दी, जन भगतां गुलशन इक महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे छब्बी पोह नूं आउणे मेरे संगी साथी, जन भगत स्वांग बणाईआ। इक्की सिखां दे कोल होवे इक इक्क पाथी, माझा मालवा जम्मू दुआबा सारे सोभा पाईआ। चौहां दे कोल होवे इक इक्क राकी, ज़ीन पाखर नाल रलाईआ। संवारां दी पिट्ठ उत्ते होवे काली टाकी, छाती उत्ते सोहँ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो सब ने कढ्ढ के आउणा तुरले, कलगे सोहणे बणाईआ। तुहाडे लेख दस्सणे धुर दे, पड़दे आप चुकाईआ। मेले मेलणे शब्द गुर ने, नाता तोड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल बणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वास्ता पा के कहिंदी, कलमयां विच दुहाईआ। बीबीआं सब ने सज्जे हथ्थ नूं ला के आउणी मैहन्दी, सोहणा रंग रंगाईआ। गिरधारा सिँघ ने चाटी भर के रखणी दहीं दी, धुर दा हुक्म अलाईआ। इक जोड़ी होणी महीं दी, सोहणी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो आउणा जोटे जोटे, हथ्थ

हथ्थां नाल मिलाईआ। खब्बे हथ्थ दे रंग के अगले पोटे, सोहणे लैणे चमकाईआ। कन्नां ताईं उच्चे होण सोटे, हथ्थां विच उठाईआ। बुढड़े ज़रूर नाल लिआउण पोते, पीहड़ी अगली दए वधाईआ। गुरमुख सिँघ चढ़ना उत्ते बोते, आसण आपणा इक जणाईआ। माझे वाल्यां गिआरां डागां नूं लाउणे टोके, तिक्खी धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देवणहार सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे हर इक बीबी सज्जे हथ्थ नूं चाढ़े पंज पंज चूड़ी, पंजे रंग वखाईआ। घरों नीत बदल के आवे कूड़ी, प्रेम प्रभ दे नाल वधाईआ। भगत दुआर नौ नौ वार लावे धूढ़ी, मस्तक ख़ाक रमाईआ। बिशन कौर दे हथ्थ विच होवे कस्तूरी, रती नौ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे माझा मालवा दुआबा जम्मू लै के आवे इक इक्क ढोली, डंका ढोल उत्ते लगाईआ। इक इक्क बणा के लिआवण डोली, चार कहारां रूप वटाईआ। साचे नाम दी बोलण बोली, तूही तूही राग अल्लाईआ। इक इक्क डांग लिआउणी विच्चों पोली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे, बीबीआं गावण गोबिन्द गीत, खुशीआं नाल सुणाईआ। सतिगुर छड्ड के मन्दिर मसीत, तेरा दर्शन पाईआ। कलयुग अन्त बदल दे रीत, सतिजुग राह वखाईआ। अंदरों बदले किसे ना नीत, सारे दिसण भैण भाईआ। इक्को पुरख अकाल दी उडीक, सो मिल्या चाँईं चाँईंआ। मानस जन्म जाईए जीत, जीवण सतिगुर झोली पाईआ। पिछला पिच्छे गया बीत, अग्गे मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए वखाईआ। गुरमुखां सिर ते कीते होण मड़ासे, आपणा बल वधाईआ। करदे आउण खुशीआं नाल हासे, हस्ती वेखी बेपरवाहीआ। सब दे कोल पंज पंज होण पतासे, सगन गोबिन्द वाला समझाईआ। इक्को रंग रंगाए वड्डे छोटे बुढ्ढे नढ्ढे ताए चाचे, पिता पूत दए सरनाईआ। सतिगुर शब्द जो जन वाचे, हिरदे हरि करे सफ़ाईआ। जन्म जन्म दे पूरे कर के घाटे, घाटी मंज़ल दए चढ़ाईआ। हरिजन रहे ना कोए अद्धवाटे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे सब दे कोल होवे इक इक पर्ची, बुढ्ढा नढ्ढा बचया रहिण कोए ना पाईआ। भगत दुआरे होणा भरती, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। चिट्ठी सब दी होवे वरदी, वायदा पिछला याद कराईआ। एह खेल सांझे घर दी, ऊँच नीच ना कोए वखाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, पलकां दे ओहले बैठा आप गुसाईंआ। जोत वखाए अगम्मी बलदी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। पाउण ठंडी होवे चलदी, आपणा रंग रंगाईआ। वेख्यो खेल भगतां दे दल दी, वजे चार लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे पंज

बण के आयो मुल्लां, मुलाणे रूप वटाईआ। जम्मू वाल्लयो सिर ते रखणा कुल्ला, विच्चों लम्मा सोभा पाईआ। शिव सिँघ ने मगरां ते बन्नणा टुट्टा जुल्ला, टुट्टी जुत्ती गंढु पुआईआ। गल विच चोला रखणा खुल्ला, गिटयां ताईं लमकाईआ। जेहड़ा वेस कीता सी बुल्ला, इनाइत ताईं रिझाईआ। नाल मिट्टी दा चुक्कया होवे चुल्ला, छोटा जिहा हथ्थ उठाईआ। छाती ते लिख के आपणा नाँ लगाउणा दुल्ला, दोहरी धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे पंजां बीबीआं ने मिट्टी दी लिआउणी कुन्नी, छाबड़ी उत्ते इक टिकाईआ। लिआउण ओह जिन्नां दे पती ने दाढ़ी कदी ना होवे मुन्नी, गुरमुख सोहणे सोभा पाईआ। उन्नां दे सिर ते सूहे रंग दी होवे चुन्नी, माझा मालवा दुआबा जम्मू इक इक्क वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुख इक्की खेडण गतका, आपणी खुशी बणाईआ। उन्नां दे सिर ते होवे पटका, पटने वाला वेख वखाईआ। जिन्नां ने कदी ना खाधा होवे झटका, उह हथ्थ लैण उठाईआ। अंदर कूड़ रहे ना खटका, धर्म दा राह तकाईआ। प्यार होवे परमेश्वर पति का, पारब्रह्म ध्यान लगाईआ। सब दा वेस होवे सिध्धा जट्ट का, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा खेल इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे सब दे लग्गे होण बोझे, पाकट नज़री आईआ। जिस कारण मुहम्मद रखे रोज़े, उस दा लेखा दए समझाईआ। गुरमुख ज़रूर लभ्भणे दो खोदे, खुदी तक्बर देण गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह दए समझाईआ। सदी चौधवीं कहे सब दी जेब विच होवे इक इक्क लाची, सगन राम वाला समझाईआ। किस तरां मन्नी सतिगुर जावे आखी, आखर दयां दृढ़ाईआ। जन भगतो तुहाडी जुग चौकड़ी रहिणी साखी, सिखावत करां चाँईं चाँईंआ। सब दी बदल देणी रासी, रस्ता इक दृढ़ाईआ। सचखण्ड दुआर बणा के वासी, वास्ता आपणे नाल बणाईआ। तुहाडी पिछली प्रीत अजे नहीं बासी, रस सक्कया ना कोए बदलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल डूंम बण के तुहाडा बणया मरासी, जजमानां दीआं सिफ्तां रिहा सुणाईआ। अमरजीत सिँघ ने कपड़े पाउणे ख़ाकी, पेटी लक्क नाल बंधाईआ। घोड़े उत्ते चढ़ना मार पलाकी, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। बसन्त कौर दे हथ्थ होवे ग्लासी, बच्चयां वांग लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दुआबे वाल्यां चुकणी इक पौड़ी, डंडे गिआरां नज़री आईआ। मालवे वाल्यां लिआउणी इक फौड़ी, जो मसाणां विच्चों हड्डीआं फोल फुलाईआ। माझे वाल्यां लिआउणी डोरी, अस्सी गज़ सोभा पाईआ। जम्मू वाल्यां दो सिखां बणाउणी आपणी जोड़ी, बाज़ू बाज़ू नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

साचा परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे सवरन सिँघ ने लिआउणी तसबी, मणके इक्कीआं नाल वड्याईआ। अजीत सिँघ नाल होणा कसबी, जो शरअ शरारत दए जणाईआ। चेला सिँघ ने याद कर के आउणी फ़ारसी अरबी, पंज लाइनां विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चौदां लोकां चौदां तबकां कहि के आई टाटा, इशारा हथ्थां नाल कराईआ। मंज़ल मार के पिछलीआं वाटां, पैंडा आई मुकाईआ। आ के खुल्ला वाहया झाटा, मेंढी सीस गुंदाईआ। अमृत वेख्या बाटा, भरया अगम्म अथाहीआ। रस अनोखा चाटा, पिछला चेटक दिता तजाईआ। जन भगतां सवा सेर दा आटा, सिदक सबूरी विच खाईआ। जेहड़ा बस्तर भूषण पाटा, छब्बी पोह लैणा बदलाईआ। मेरा काज वेखे देवी लाटां, आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा परदयां विच्चों उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मालवे वाल्लयो लिआउणी बिन्दी सुरखी, सवा इंच जणाईआ। मैं खेल दस्सणी अनन्द पुर दी, क्यों गोबिन्द कीती जुदाईआ। क्यों लोड़ पै गई सच्चे सतिगुर दी, शब्दी मेला सहज सुभाईआ। क्यों सृष्टी जांदी रुढ़दी, दीनां विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए दरसाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो तुसीं आयो सर्ब इक्ठे, आपणी खुशी बणाईआ। प्रेम प्यार अंदर नठ्ठे, रस्ता पन्ध चुकाईआ। योद्धे बण के हट्टे कट्टे, बल देणा वधाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दे पूरे होए पटे, पटने वाला दए समझाईआ। सब ने रुलणा विच घट्टे, मिट्टी ख़ाक उडाईआ। किसे दी क़ीमत पैणी नहीं दो टके, करोड़ी शाह देण दुहाईआ। पुरख अकाल ने पाउणे रट्टे, झगड़े विच लोकाईआ। जो दीन मज़हब दी हद्द टप्पे, टप्पा सोहँ ढोला गाईआ। ओह भगत सुहेले हो गए पक्के, कच्चा तन्द ना कोए तुड़ाईआ। प्रेम मुहब्बत अंदर रत्ते, रतन अमोलक नज़री आईआ। सच दुआरे बहि के हस्से, हस्ती वेख नूर इलाहीआ। हुण कोई धन्ने वांग चारने नहीं वच्छे, भगत वछल हो के आपणी दया कमाईआ। कटोरिआं विच दुध्ध ना छके, घर घर आपणा दरस दिखाईआ। तुसीं जुग जन्म दे थक्के, अन्तिम पैंडा दए मुकाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू पंज पंज बीबीआं घर विच्चों पका के लिआउणे भत्ते, फुलके पंज पंज रखाईआ। वेख्यो सब दे कारज हुंदे फतेह, फतेह डंका इक वजाईआ। कोई खेल ना जाणे चुनांचे चूंके अलबत्ते, आलम इल्म ना कोए वड्याईआ। शब्द गुरु आया पंजां तत्तां दे वट्टे, बदली कीती बेप्रवाईआ। अंदर वड़ के सब दे हिरदे फट्टे, फट्ट घाउ दए लगाईआ। उतले हेठां कर के बटे, अंकड़े दिते बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। सदी चौधवी कहे मैं छड्ड के पिछली यारी, सच सच सुणाईआ। रह के जगत कँवारी, आपणी आस वधाईआ। मिले इक पुरख

निरँकारी, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जन्म मरन दी कटे बीमारी, दकुखां डेरा ढाहीआ। मेरी पैज दए सुआरी, सुआरथ आपणे नाल रखाईआ। बणावे ओह लाड़ी, जिस दा रूप जग नेत्र नजर कोए ना आईआ। फिरां पिच्छे अगाड़ी, निउँ निउँ लागां पाईआ। जन भगतो छब्बी पोह नूं ज़रूर फेरां बहारी, अंदर बाहर करां सफ़ाईआ। मेरे कोल कोई लफ़ज़ नहीं जिस दे नाल करां तकरारी, झगड़ा दयां मुकाईआ। मैं परम पुरख दी नारी, जिस नूं झुकदे पैगम्बर गुर अवतारी, विष्न ब्रह्मा शिव लागण पाईआ। उस दी करां बरखुरदारी, जेहड़ा आया मातलोक दुबारी, सरगुण तों निरगुण वेस वटाईआ। सच पुच्छो मैनूं आपणे विच करयो शुमारी, मेरी शमां लैणी जगाईआ। मैनूं ऐं दिसदा धुर दा शहिनशाह जगत दा मदारी, खेल आपणी रिहा खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा साथ दए निभाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे लई लै के आयो मेरा राम, राम मेरी दुहाईआ। मेरे लई लै के आयो मेरे मुर्शद दा पैग़ाम, जो पैगम्बरां दए वड्याईआ। मेरे लई लै के आयो मेरा काहन, जो लख चुरासी सखी रिहा प्रनाईआ। मेरे लई लै के आयो इक इक्क बादाम, जो बदन दी बदली दए कराईआ। मेरे लई लै के आयो गुरमुख सोहणे आपणी शान, खुशीआं विच ढोले गाईआ। मैं अग्गों सब नूं करां प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। वेख्यो सब दा इक्को दिसे भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नौवां सिखां उठाणे नौ निशान, नवां रंग बदलाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू चार चार गुरमुख उठाणे विच्चों पहलवान, मोटे ताजे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे इक्की इक्की बीबीआं सिर ते चुन्नी बद्धी होवे पुट्ठी, गंढु पिछले पासे रखाईआ। ज़ोर नाल ना होवे घुट्टी, हौली जेही लटकाईआ। इक इक्क गाना बन्नृणा गुट्टीं, लाल रंग चढ़ाईआ। शरीर होवे किसे ना दुखी, तन्दरुस्त सोभा पाईआ। बच्चा होवे किसे ना कुखीं, इक इकल्ली वेख वखाईआ। जिस ने बुल्लीं कदे लाई होवे ना सुरखी, ओह हिस्सा लवे चाँईं चाँईंआ। पती दे साहमणे कदे बैठी होवे ना उत्ते कुरसी, माण रखे थाउँ थाईंआ। झूठी कदे कीती होवे ना फ़ुरती, चलाकी आपणी इक जणाईआ। किसे दी जूठी ख़ाधी होवे कदी ना बुरकी, बिना गुरमुखां तों दूसर नाल हिस्सा ना कदे वंडाईआ। उह सार जाणे सच्चे सतिगुर दी, जिस दे अंदर इक्को सिक ते इक्को वेखे नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे दए वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं बुढ्ढी नूं बणा दयो नढ्ढी, गुरमुखो मेरी दुहाईआ। मेरी सध्धर रहे ना दब्बी, मेरी आशा लए अंगड़ाईआ। तुसीं मैनूं नूर दिसदे रब्बी, जोती जोत डगमगाईआ। मैं खलोती हथ्थ बद्धी, वास्ता रही पाईआ। सच प्रीती इक नाल लग्गी, छुट्टी जगत लोकाईआ। दीन दुनी कोलों अक्की, नाता आई तुड़ाईआ।

४९४
२१

परवरदिगार वेख के हक़ी, सीस ल्या झुकाईआ। जिस दे दुआरे कदे ना होवां शक्की, शकायत करन वाला रहिण कोए ना पाईआ। मेरे नाल कर लओ पक्की, पारब्रह्म मन्नणा इक गुसांईआ। जो आदि जुगादी सब दा कमलापती, पतिपरमेश्वर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि संगत कर इक्ठी, इक्ठे आपणे नाल मिलाईआ।

✻ २ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सदी चौधवीं कहे खेल वेखणा सच्चे सतिगुर का, गुरु गुर सारे नाल मिलाईआ। दर्शन करना ओस अनन्द पुर दा, जो पुरीआं लोआं तों बाहर नज़री आईआ। नाद सुणना अनोखी सुर दा, जिस नूं तालां विच ना कोए सुणाईआ। जिस नाल जीवत होवे मुर्दा, मुरीद मुर्शद वज्जे वधाईआ। रूप धारां अगम्मी हूर दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे दए वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा नीला होवे बुरका, अक्ख बुरिआं कोलों चुराईआ। हलूणा देवां सृष्टी तुरकां, तुरत दयां हिलाईआ। किसे नूं सम्भलण ना देवां सुरता, सुरती सुरत बदलाईआ। सत्त रंग दा मेरा होवे कुड़ता, कली कली नाल जुड़ाईआ। पंजां प्यारयां सगन लिआउणा गुड़ दा, सवा सेर हथ्थ उठाईआ। कूड़ कुड़िआरां बेड़ा वेख्यो रुढ़दा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ । झगड़ा पैणा ठग चोर दा, ममता मोह विच लड़ाईआ। हुक्म वरतणा पुरख अकाल ज़ोर दा, जोरू ज़र दए दुहाईआ। झगड़ा पैणा जगत शोर दा, छुरी शरअ रूप कसाईआ। लेखा बदल जाणा दीन दुनी भगोल दा, हदूद हद्द ना कोए समझाईआ। प्रकाश होणा जोत नरोल दा, निरवैर नूर चमकाईआ। जो आदि जुगादी तोल तोलदा, दो जहानां आप उठाईआ। शब्द अनाद अगम्मी बोलदा, अनबोलत राग सुणाईआ। खेल करे मात विचोल दा, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। किशन सिँघ ने डंका लाउणा ढोल दा, डग्गा तिन्न वार खड़काईआ। इक गेंद रूप धरे गोल दा, वड्डा छोटा ना कोए वड्याईआ। नौ फ़ुट नेज़ा लम्मा होणा पोल दा, मुक्खी तिक्खी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवी कहे मेरी बग़ल होए तलवार, तरफ़ दो तरफ़ ना कोए वखाईआ। मूँह विच होवे कटार, आपणा रूप बदलाईआ। इक्को होवे चोबदार, दर्शन सिँघ काला रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। सदी चौधवी कहे मेरा होवे इक्को टिक्का, टक्यां वणज ना कोए वखाईआ। बणे सच धात दा सिक्का, सतिगुर साचा दए वड्याईआ। उत्ते लिख्या होवे

एकँकारा इक्का, अकल कल धारी धुरदरगाहीआ । जिस दा साफ़ होवे पिच्छा, इक्को धार दए दृढ़ाईआ। मेरी आसा पूरी करे इच्छा, निरिच्छत वेख वखाईआ। अगला लेख जावे लिखा, लिख्त भविख्त दए गवाहीआ। सरूप सिंघ लै के आवे मिट्ठा, पाओ पाओ नाल जुड़ाईआ । रुमाल होवे सवा गिट्ठा, चिट्टी धार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मैनूं दए माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे माझा मालवा दुआबा जम्मू मैनूं देवे छल्ला, शाला मिले माण वड्याईआ। मैं वेखणा ओह अल्ला, जो आलमीन अख्वाईआ। सद वस्से इक इकल्ला, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। रविआ रहे जला थला, घट घट रूप समाईआ। अन्त अख़ीरी फड़े मेरा पल्ला, अग्गे पलक ना होए जुदाईआ। दूई द्वैत मेटे सल्ला, विछोड़ा जगत वाला कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां कोलों करावे हल्ला, नाअरा इक्को वार लगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी चांदी दी होवे ज़ंजीरी, ज़ंजीर शरअ देणा कटाईआ। जन भगतां दस्सणी हक़ फ़कीरी, फ़िकरा सूफ़ीआं वाला समझाईआ। गोबिन्द दी ज़ाहर करनी मीरी पीरी, हरि गोबिन्द दे वड्याईआ। अग्गे बदल जाणी प्रभ दी पीड़ी, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। एह खेल होणा तक़दीरी, तदबीर सके ना कोए समझाईआ। झगड़ा मुक्कणा पातशाह वज़ीरी, वज़ारत इक्को नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं चढ़ना सोहणा रूप, रूपवन्त दए वड्याईआ। मालक मिलणा इक्को भूप, भूपत धुरदरगाहीआ। जिस दी महिमा सदा अनूप, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। लख चुरासी जिस दा ताणा पेटा सूत, सूत्रधारी इक हो जाईआ । गुर अवतार पैगम्बरां करावे कूच, कूचा गली करे सफ़ाईआ। लेखा जाणे काया माटी पंज तत भूत, भूत भविख्त काल खोज खुजाईआ। जिधर वेखां तक्कां मौजूद, हाजर हज़ूर नूर अलाहीआ। जेहड़ा कदे ना होवे नेसतो नाबूद, आदि अन्त जड़्ह ना कोए उखड़ाईआ। मुहब्बत वाला ओह महबूब, मुहब्बत करे चाँईं चाँईंआ। भाग लगा के काया कलबूत, काअबा आपणा दए दृढ़ाईआ। पिछली करनी कर मनसूख़, अगला हुक्म इक वरताईआ। जन भगतां कर महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साचा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे इक सौ पंज सिखां दे मस्तक होवे धार, सोहँ पट्टी नाम बंधाईआ। थल्ले लग्गी होवे छार, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मोढ्यां उत्ते नंगी होवे तलवार, चण्डी आपणा रूप बदलाईआ। पाणी दी पैंदी आवे फुहार, अमृत बरसे चाँईं चाँईंआ। विच होवे ना कोई ग़द्दार, कूड़ा संग ना कोए निभाईआ। अन्तर रहे ना कोए हँकार, विभचार कर्म ना कोए कमाईआ। सब दा सांझा होवे प्यार, मुहब्बत इक्को नाल दरसाईआ। उन्हां दा मुख पहलों होवे वल पहाड़, आपणी पिठ बदलाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे लेखे दए लगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी गुंदी होवे चूंडी, पट्टी सीस उत्ते रखाईआ। जेहड़ी वस्त हथ्थ ना आवे ढूंडी, खोज्यां खोज कोए ना पाईआ। धार चले बुत रूह दी, रुहेरवां मिले वड्याईआ। खेल वखाउणी सच्चे सतिगुरु दी, गुरदेव इक्को वेख वखाईआ। एह मेरी कथा कहाणी शुरु दी, शरअ ज़ंजीर दयां कटाईआ। जिस वेले जन भगतां संगत जुड़ूगी, जोग अगला दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे नीले होण पैर, नीली बिन्दी मथ्थे विच छुहाईआ। सेवा करे कोई ना ग़ैर, गुरमुख सोहणे संग रखाईआ। भेत दस्सां ओस सवा पहर, जिस नूं भविख्तां विच गए गाईआ। परदा लाहवां केहड़ा लहौर शहर, जिथ्थे मौत क़ज़ा दए दुहाईआ। केहड़ा दूती दुश्मण कमाए वैर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर दी आसा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी सज्जी उँगल होवे पोटी, नाखुन नज़र कोए ना आईआ। सत्त रंग दी बणी होवे टोपी, सतिगुर सोहणी जड़त जड़ाईआ। मैं बणना ओस काहन दी गोपी, जिस नूं गवाल्या वाले काहन सीस झुकाईआ। मेरी आयू हो गई चोखी, चोखर रूप दिसे लोकाईआ। मैं छड्ड दिती पढ़नी पोथी, पुस्तक दिती तजाईआ। मेरी मति रही ना होछी, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। मैनूं ताअने मिलदे चौदां लोकी, तबकां विच पई दुहाईआ। मेरी बन्द हो गई रोज़ी, रोज़ा रख के झट लँघाईआ। प्रभ मिलणा ठाकर मौजी, जो मजलस भगतां विच लगाईआ। अन्तिम हो गई ओसे जोगी, जो जुगीशरां दए वड्याईआ। मैं प्रीतम सिँघ दे चढ़ना उत्ते मोढ्ढीं, मोढ्ढयां उत्ते आसण लाईआ। इक गुलाब दी हथ्थ विच रखणी डोडी, गुरनाम सिँघ लै के आईआ। थोड़ा नूर चमकाउणा उत्ते ठोडी, जिस दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। गुरमुखां दे हथ्थ लगाउणा गोडीं, निउँ निउँ दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धर्म दी धार दए जणाईआ। सदी चौधवीं कहे बचन सिँघ जो रहन्दा काणे कौंटे, धर्म धर्म विच वड्याईआ। मेरे लई बणा के लिआए पौंटे, लेखा पिछला दयां जणाईआ। जिस दा हिसाब ढईआ औंटे, साढे तिन्न तिन्न वखाईआ। गोबिन्द उठ्ठया ला के ढौंके, आपणा पन्ध मुकाईआ। सृष्टी वक्त गंवाए सौं के, सुत्तयां ना कोए उठाईआ। मेरा परवरदिगार आया भौं के, आपणा रूप बदलाईआ। मैं सोहणा गाउण सुणावां गौं के, कलमयां तों बाहर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पूरब लेख चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरदासपुरीआं मार के लिआउणी घुग्गी, डोरी सवा हथ्थ बंधाईआ। फड़ के लिआवे रवेल कौर माई बुढ्ढी, पिछले जन्म दा लहिणा दयां चुकाईआ। माझे वाल्यां सत्त रंग दी लिआउणी गुड्डी, असमानां उत्ते उडाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा लेखा अजे बहुत, सहज सहज समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा बहुता वध्या ओत पोत, वेखां थाउँ थाईंआ। दीनां मज़हबां दे तोड़ के किले़ कोट, हद्दां देवां गवाईआ। धर्म दुआरे ला के चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। जिथ्थे इक्को निर्मल जोत, जोत नूर रुशनाईआ। ओथे चले कोई ना सोच, समझ ना कोए वड्याईआ। एह खेल प्रभू दी मौज, जो मौला हो के रिहा कराईआ। मेहरवान हो के जावे पहुंच, पारब्रह्म दया कमाईआ। झगड़ा पैणा दीप पुष्कर नाल करौच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी ना कोई वरन ना कोई गोत, गोती सब दा नज़री आईआ।

४९८

२१

✻ २ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर ✻

सदी चौधवीं कहे मेरा सजदा श्री भगवान, पारब्रह्म परवरदिगार सीस झुकाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआरे जिस दा इक निशान, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना रिहा झुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर जिस दी मन्नण आण, गुर अवतार पैगम्बर दर ठांडे बैठे सीस निवाईआ। नाम संदेसा धुर दा कलमा देवे पैग़ाम, निरगुण निरवैर निरँकार आप जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख शरअ शैतान, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा परदा दए उठाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दे के ब्रह्म ज्ञान, भेव अभेदा अछल अछेदा दए चुकाईआ। काया माटी साची हाटी, साढे तिन्न हथ्थ वेख मकान, माया ममता लोभ मोह विकार हँकार डेरा ढाहीआ। घर स्वामी अन्तरजामी घट निवासी मेरे राम, रमता रमता आपणी खेल खिलाईआ। जोत अकाला शब्द निराला मारे बाण, अणयाला आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक दरसाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं रही झुक, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मेरा पैंडा रिहा मुक, दयां कूक दुहाईआ। पुरख अकाल रिहा उठ, परवरदिगार शहिनशाहीआ। चारों कुण्ट बदल के रुख, दीन दुनी फोल फुलाईआ। उजल दिसे किसे ना मुख, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। सृष्टी दृष्टी भरी नाल दुःख, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। भेव समझे ना कोई कलयुग, जुगती जगत ना कोए जणाईआ। माया ममता चोग रहे चुग, चुगली निन्दिआ रही कुरलाईआ। निर्मल दिसे कोए ना बुध्ध, बुद्धिवान नज़र कोए ना आईआ। सब दी औध रही पुग्ग, निरगुण सरगुण डेरा ढाहीआ। भेव खोले़ ना कोई गुज्झ, परदा अन्तर निरंतर ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

४९८

२१

हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखी जगत अलामत, दह दिशा फोल फुलाईआ। साचा नाम मिले ना कोए निआमत, नग़मा हक़ ना कोए सुणाईआ। काया मन्दिर अंदर करे बग़ावत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार लड़ाईआ। धर्म देवे ना कोए सख़ावत, सच कर्म ना कोए कमाईआ। बाहरों कूड़ी क्रिया दिसे गिलाज़त, अन्तर करे ना कोए सफ़ाईआ। चारों कुण्ट दिसे गिरावट, सिर सके ना कोए उठाईआ। दीनां मज़हबां होई थकावट, ज़ात पात बैठे ढेरीआं ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे चारों कुण्ट अन्धेरा घुप, घुम्मण घेर विच लोकाईआ। सृष्टी दृष्टी रोंदी कराए कोई ना चुप, चप्पू नाम ना कोए लगाईआ। झगड़ा प्या पिउ पुत, पुत्तर माँ ना कोए वड्याईआ। नार कन्त नाल रही रुस्स, दुहागण हो के नीती रही बदलाईआ। सति धर्म गया छुप, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। घर घर अंदर दिसे दुःख, अमृत मेघ ना कोए चवाईआ। जन भगत जणे कोई ना कुख, जननी कम्म किसे ना आईआ। पैंडा मुके ना किसे उलटा रुख, चुरासी फंद ना कोए कटाईआ। सच दवारिउँ सृष्टी गई रुस्स, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर चाउ घनेरा, घनईआ राह वेख वखाईआ। पुरख अकाला गेड़े गेड़ा, दीन दयाला दया कमाईआ। चारों कुण्ट होवे झेड़ा, झगड़े विच जगत दुहाईआ। धरनी धरत धवल उजड़े खेड़ा, गुलशन हक़ ना कोए महकाईआ। माया ममता डुब्बे बेड़ा, नईआ नौका नाम ना कोए चढ़ाईआ। मैं थोड़ा समां होर करना जेरा, ज़ेर ज़बर मेरी दए गवाहीआ। अगला वक्त दस्सणा नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। धुर दा भाणा रोके केहड़ा, गुर अवतार पैगम्बर सिर सके ना कोए उठाईआ। जगत वासना ढहिणा डेरा, थल अस्गाह देण दुहाईआ। मन्दिर मसीत रहे ना देहरा, शिवदवाला मठ ना कोए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर आई रुची, सच सच समझाईआ। मैं ओस मंज़ल पुज्जी, जिथ्थे पन्ध रिहा ना राईआ। रमज़ लग्गी गुज्झी, गहर गम्भीर दिता समझाईआ। चारों कुण्ट होणा उधी, उम्घण आथण सेव कमाईआ। जगत वासना वेखणी बुद्धि, बुध्ध रो के दए दुहाईआ। नईआ नौका सब दी डुब्बी, खेवट खेटा पार ना कोए लँघाईआ। जगत धार वेखी युद्धी, युधिष्टर वास्ता रिहा पाईआ। झगड़ा वेखणा मानस मनुक्खी, मानव दानव देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, दर ठांडे वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो प्रेम प्रीती अंदर मारो गोता, ग़मख़ार तक्को चाँईं चाँईंआ। दुआबे वाल्यां लिआउणा इक तोता, तऱां तऱां समझाईआ। जो

संदेसा देवे चौदां लोका, चौदां तबक करे अगवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं खुशीआं गावां गीत, गहर गम्भीर सुणाईआ। जन भगतो बदल के आउणा रीत, रीती अगली इक समझाईआ। झगड़ा छड्डुके मन्दिर मसीत, पुरख अकाला नाल मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां औध गई बीत, बीती कहाणी कम्म किसे ना आईआ। इक्को छत्र झुले प्रभू दे सीस, जगदीश दो जहानां सोभा पाईआ। इक्को कलमा नाम हदीस, हरि हज़रत करे पढ़ाईआ। लेखा वेखे हस्त कीट, ऊचां नीचां फोल फुलाईआ। सच जणा के इक प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। काया करे ठंडी सीत, अगनी तत गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे वास्ते काली लिआउणी सूसी, मेरा समां दए गवाहीआ। जिस दी धार होवे रूसी, रशीआ विच वड्याईआ। आशा होवे मूसी, ईसा सिफ्त सालाहीआ। दूसर करे ना कोए महिसूसी, मिसरा पढ़ ना कोए सुणाईआ। पैगम्बर कर सके ना कोए प्रभ दी जासूसी, खुफिआ राज़ ना कोए खुल्हाईआ। उन्हां नूं हक़ दिता मौरूसी, मालक नज़र कोए ना आईआ। अन्त बण के ख़ाक भबूती, माटी विच समाईआ। वेस अनेक प्रभू बहु रूपी, परदा परदयां विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणी जोत अलाही नूर रब्बी, आलमीन वड्याईआ। जो लख चुरासी तबी, तबीअत वेखे थाउँ थाईंआ। जिस नूं झुकदे रसूल नबी, पैगम्बर ख़ादम हो के धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। ओसे दे हुक्मे अंदर बद्धी, चारों कुण्ट भज्जां चाँईं चाँईंआ। ओसे दी जोत जगी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस ने सब दी बदल देणी गद्दी, गदागर होवे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं होणा सुच्ची, संजम भगतां नाल बणाईआ। मेरी अन्तर बदले रुची, रचना वेख धुरदरगाहीआ। जेहड़ी चौदां तेरां अंदर रही लुकी, बारां परदा आप उठाईआ। मालवे वाल्यां लिआउणी इक कुत्ती, जो डब्बे रंग दी मुहम्मद दा दर्शन पाईआ। ओस दस्सणा किस तर्हां कलमे वाले हुंदे सुखी, कायनात विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सच स्वामी अन्तरजामी आपणा मेल मिलाईआ। सदी चौधवी कहे जम्मू विच लत्तों लंङा राम गूढ़ा, अष्टभुज नाल वड्याईआ। लाल रंग दा लै के आवे चूड़ा, सुंभ निसुंभ सीस झुकाईआ। सुरिंदर सिँघ मस्तक कीता होवे जूड़ा, इटारसी परदा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं मँगां चिट्टी चादर, चौदां तबकां वेख वखाईआ। जेहड़ी बकाले रखी उत्ते तेग़ बहादर, अवस्था पंताली

साल वड्याईआ। लहिणा दस्से ओह अगम्मी क़ादर, जो कलमयां दए वड्याईआ। निर्मल कर्म कर उजगर, दुरमति मैल धुआईआ। साचे नाम बणा सौदागर, वणज व्यपारा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी आसा हो गई तगड़ी, आपणा बल धराईआ। दलीप सिँघ दे सिर ते बन्ह्णो पगड़ी, परम पुरख सरनाईआ। जिस दी आत्मा परमात्मा नाल जाए जकड़ी, जुग चौकड़ी मिले वड्याईआ। तुले तोल ओस अगम्मी तक्कड़ी, नाम तराज़ू जो अख्वाईआ। जिस दा लेखा जाणे शूद्र वैश ना कोए ब्रह्मण खत्री, ख़ता विच सर्ब लोकाईआ। फोल दस्से कोई ना पत्री, रासी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा पूरा कर दे जो दस्स के गया भारद्वाज अत्री, सप्त ऋषीआं विच्चों सालाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं जुग जुग जागी, निंदरा विच कदे ना आईआ। धुर दे प्रेम अंदर भागी, भज्जी वाहो दाहीआ। जुग जुग अवतार पैगम्बर गुरु वेखे रागी, जो परा पसन्ती मद्धम बैखरी प्रभ दा नाम सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस दी खेल आदि अन्त आदी, अनन्त कल वड्याईआ। हर घट हो विस्मादी, बिस्मिल आपणी कार कमाईआ। चार कुण्ट बण समाजी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे दलीप सिँघ ने पाउणा कुड़ता, पिछला कर्म कांड गवाईआ। गुरमुख जगत होवे ना मुर्दा, मुर्शद आपणे रंग रंगाईआ। एहो लहिणा सतिगुर दा, जो शब्दी शब्द शब्द धार उपजाईआ। एह खेल सतिजुग शुरु होणा धुर दा, धुर मस्तक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग इक रखाईआ। क़मीज कहे मैं तन माटी ख़ाक छोहिआ वजूद, पंज तत मिली वड्याईआ। किरपा करे हक़ महबूब, मेहरवान नूर खुदाईआ। जो सदा सदा मौजूद, मुफ़लिसां लए तराईआ। सद वस्से भगतां दी हदूद, काया मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। कूड़ी क्रिया देवे हूंझ, माया ममता मोह गवाईआ। साक सन्बंधीआं नेत्र नैण हन्झू देवे पूंझ, रोण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। पगड़ी कहे मैं सिर उत्ते जाणा चढ़, आपणा बल धराईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला लैणा पढ़, वाहवा वज्जे सच वधाईआ। जिस ने खेल खेलया चोटी जड़, चेतन आपणे घर वसाईआ। गुरमुख ना जन्मे ना जाए मर, आवे जावे प्रभ रज़ाईआ। सचखण्ड दुआरे जाए वड़, जिथ्थे निर्मल जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। पगड़ी कहे मैनूं गुरमुख लए बन्ह्, बन्ना दीन दुनी तजाईआ। नाम संदेसा सुणे सरवण कन्न, कलमा धुर दा इक अलाहीआ। जिस नूं माता लए जम्म, पिता जीउदा जगत ना कोए रखाईआ। बिना साहिब सतिगुर तों पवण स्वास दात देवे कोई ना

धन, आत्म रास ना कोए वधाईआ। सज्जण मीत किसे ना आउँदे कम्म, घर दी नार होवे पराईआ। नाता रहे ना माटी चम्म, हड्डीआं बालण साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पगड़ी कहे मैं बज्झ गई गुरमुख सिर, श्री सर दिती वड्याईआ। सति धर्म दी बण के धिर, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। गोबिन्द नालों विछड़यां नहीं होया चिर, नेरन नेरे पन्ध मुकाईआ। सतिगुर दी गोदी विच्चों गुरमुख कोई ना जावे गिर, गिरयां गोद उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला धुर दा पिर, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। गुरमुखां देवे धाम थिर, थिर घर साचा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा अन्तर होया राज़ी, राज़क़ रहीम दिती वड्याईआ। मैं प्रेम प्यार दी वंडां भाजी, भजन बन्दगी विच समाईआ। जिस ने सब दी साजणा साजी, साजणहार अख्वाईआ। ओह कलयुग कूड़ी वेखे बाज़ी, बाज़ीगर नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुख सोहणा सिँघ दलीप, दीआ बाती इक रुशनाईआ। जिस नूं राए धर्म ना दए सलीब, फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। पुरख अकाला वस्से क़रीब, काया मन्दिर अंदर सोभा पाईआ। जिस ने जन्म विच जन्म दी बदल दिती तरतीब, तौर तरीका आपणा इक बणाईआ। सिफ्त कर सके ना कोए क़ुरान मजीद, सपारयां विच ना कोए वड्याईआ। जुग जुग भगतां दए तरतीब, यके बाद दीगरे सारे दए तराईआ। आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, आमद विच खुशामद ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं कहे वेखो भज्जा आ गया विष्न ब्रह्मा शिव सुरप्त नाल इंदर, इंदरासन आया तजाईआ। भगतां दी भैण वेखां ओह महिन्दर, जो सगन प्रेम विच मनाईआ। जिस दा अंदरों खुल्ह्आि जंदर, शब्द जोत नूर रुशनाईआ। जिस दा मालक ओह पिंदर, जो शिवां दी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सोहणी वेखी जुगती, जुग पिछले दिते भुलाईआ। जन भगतो प्रभ कोलों कदे ना मंगिओ मुकती, मुकती कम्म किसे ना आईआ। धुर जोत विच मिलण दी करयो फुरती, आत्म परमात्म विच समाईआ। तुहाडी आदि जुगादी जोड़ी धुर दी, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। इक आसा गोबिन्द रखी अनन्दपुर दी, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। जिस वेले सृष्टी होवे रुढ़दी, लोकमात ना कोए तराईआ। ओस वेले लोड़ पवे पुरख अकाल सच्चे सतिगुर दी, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्ह्ईआ। सदी चौधवीं कहे हुण चुक्के कोए ना कान्ही, कंधिआं

५०२ २१

उत्ते ना कोए टिकाईआ। गुरमुख सोहँ पढ़े बाणी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। अमृत रस पीवे पाणी, निझर झिरना इक झिराईआ। अग्गे माणे होर जवानी, आयू बिना अर्ज़ तों दिती वधाईआ। भगतां नाल भगवन कदे ना करे बेईमानी, बेवा रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर दा नाता नहीं जिस्मानी, जिस्म ज़मीर तों परे करे शनवाईआ। क्यों भगत दी धार नहीं बेगानी, आप आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाण ज़िमीं असमानी, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर आवे हासा, खुशीआं विच जणाईआ। जन भगतां दे दिलासा, प्रभ दी गोद टिकाईआ। रखयो इक भरवासा, भाण्डा भरम भन्नाईआ। श्री भगवान सर्ब गुण तासा, गुणवन्ता इक हो आईआ। साचे मण्डल पावे रासा, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। तुहाडी पूरी करे आसा, तृष्ना दए बुझाईआ। जीवण ज़िंदगी खोल्ह खुलासा, परदा दिता मिटाईआ। गुरमुखो तुहानूं समझाउण लई सरल रखी भाषा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे दए वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे माझे वाल्लयो लिआउणी इक सूई, धागा नक्के विच लँघाईआ। सवा पा लिआउणी रूई, रहमत रहीम नाल रखाईआ। गाउँदे आउणा तुंही तूंही, अन्तर आत्म राग अल्हाईआ। अंदरों कढुके आउणा दूई, द्वैत डेरा ढाहीआ। इक बक्करी लिआणी जेहड़ी सजरी होवे सूई, सोहणा रंग चमकाईआ। दुआबे वाल्लयो मार के लिआउणी चूही, लाल सिँघ हथ्थ विच लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा एकँकारा इक खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणा चौहन्दी अबिनाशी अचुत, अबिनाशी करता भेव खुल्हाईआ। जम्मू वाल्यां मेरी गुंदणी गुत्त, परांदी काली नाल सुहाईआ। तिन्न दिन दा सुक्का लिआउणा टुक, टुकड़ा मेरे हथ्थ फड़ाईआ। दुआबे वाल्लयो डविडे वाली माई लिआउणी जिस दा संसार सिँघ मरया पुत, संदेसा धुर दा दए जणाईआ। माझे वाल्लयो इक कफ्न लिआउणा चुक, लाल रंग विच रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सदी चौधवीं कहे मैं फेर होवां खुश, खुशीआं विच आपणा हाल सुणाईआ। मैं खुशीआं अंदर गावांगी। परवरदिगार इक मनावांगी। निरगुण धार नूर चमकावांगी। दीन दयाल वेख वखावांगी। काल महाकाल डेरा ढाहवांगी। सच दुआर सीस झुकावांगी। मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमावांगी। ढोला गीत इक अलावांगी। जगत मसीत डेरा ढाहवांगी। सतिजुग साची रीत दरसावांगी। ऊँच नीच मेल मिलावांगी। प्रभू प्रीत घोल घुमावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगावांगी। तेरे दुआरे अलख जगेगी। इक खेल होणी अगम्मी मज़े दी। मेरी धार किसे ना लभ्भेगी। नर निरँकार तेरी जोत इक्को जगेगी। गुर अवतार पैगम्बरां सब नूं सद्देगी।

दीनां मज़हबां दे भार नाल लोकमात विच्चों लद्देगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआरे तेरे बहि के सजेगी। सच दुआरा इक सजावांगी। पुरख अकाल तेरा ध्यान लगावांगी। वेख सच सच्ची धर्मसाल, सच सिँघासण सोभा पावांगी। नाम भण्डारा लै धुर दा माल, ख़ाली झोली आप भरावांगी। गुरमुख सन्त सुहेले लै के नाल, दर तेरे हाल सुणावांगी। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे चाल, सतिजुग साचा तेरे कोलों लवावांगी। प्रेम प्यार मुहब्बत दा दे उछाल, सोमें अमृत तेरी धार वहांवांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वखा दे आपणा घर, जिस घर बहि के झट लँघावांगी। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां इक दुआरा, जिथ्थे दुआरका वासी बैठे सीस निवाईआ। जगे जोत अगम्म अपारा, बिन तेल बाती होए रुशनाईआ। झुकदे दिसण गुरु अवतारा, पैगम्बर सजदयां विच ख़ाक रमाईआ। सोहणा लग्गा होवे दरबारा, सचखण्ड दवारे वज्जे इक वधाईआ। तेरे हुक्म दा होवे इशारा, सैनत बिन अक्खां तों आप समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तेरे कोलों कराउणा पार किनारा, अन्त कन्त भगवन्त फ़ैसला देणा सुणाईआ। जिस कारण निरगुण जोत आएयों दुबारा, सरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तैनूं निरगुण धार कहिंदे चवीआं अवतारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान गुर अवतार पैगम्बर सूफ़ी सन्त फ़कीर बेनज़ीर सारे तेरे दर ते देण गवाहीआ। पिछला तेरा हुक्म चलया जुग चारा, अगला खेल दस्स सच्ची सरकारा, सिर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरिआं भगतां दा सदा लग्गा रहे अखाड़ा, सदी चौधवीं कहे मैं मँगदी रहां कढुके हाढ़ा, तकदी रहां दलीप सिँघ वरगा लाड़ा, जिस दा पिछले जन्म दी भैण नाल प्यारा, उधार सतिगुर घर पिछला रिहा ना राईआ।

✻ ३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ सवरन सिँघ दे गृह जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर ✻

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद रिहा भज्ज, हज़रत चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। दीन दुनी उत्ते पै गया शक्क, उम्मत अमल हक़ ना कोए कमाईआ। धुर दा कलमा सारे गए छड्ड, नबी रसूल रहे कुरलाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक साचे काअबे करे कोए ना हज्ज, जलवा नूर नज़र कोए ना आईआ। जगत वासना कायनात रही दग, अगनी कूड़ कुड़िआर रही जलाईआ। झगड़ा प्या सृष्टी दृष्टी अंदर जग, चार वरन अठारां बरन धीरज धीर ना कोए वखाईआ। आबेहयात नाम खुमारी पीए कोए ना मदि, मधुर धुन नाम बंसरी साचा काहन ना कोए उपजाईआ। पिछली कीती सब दी हुंदी जांदी रद्द, शास्त्र सिमरत

वेद पुरन अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी नेत्र रोवे मारे धाईंआ। चुरासी विच्चों कोई किसे ना सके कढ्ढ, जम की फाँसी ना कोए तुड़ाईआ। बिन हरि नामे सब दे ख़ाली दिसण हड्ड, धुन आत्मक राग ना कोए अलाईआ। सति धर्म दा रिहा कोई ना तग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, गृह गृह अंदर फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद होया सदमा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। क़दमबोसी करे कोई ना परवरदिगार क़दमा, क़दीम दी रीती रहे भुलाईआ। झगड़ा पै गया आहला अदना, अमीर ग़रीब दए दुहाईआ। साचा रस मिले कोई ना चक्खणा, अमृत जाम निझर झिरना ना कोए चवाईआ। चौदां तबकां मुश्किल हो गया वसणा, ज़िमीं असमान मारन धाईंआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर हक़ ख़ुदा किसे ना लभ्भणा, चार कुण्ट दह दिशा नज़र कोए ना पाईआ। दीन दुनी घड़िआ भाण्डा भज्जणा, भजन बन्दगी वाला सूफ़ी सन्त फ़कीर परदा सके ना कोए उठाईआ। चार वरन अठारां बरन काम क्रोध लोभ मोह हंकार विच दगणा, त्रैगुण माया अगनी तत तपाईआ। दीन दुनी मलकुल मौत डौरु वज्जणा, फ़तह फ़ौत वाली वखाईआ। साची रही कोई ना बन्दना, सजदा सीस ना कोए निवाईआ। जगत जहान होया अन्धना, निज नेत्र लोचन नैण ना कोए रुशनाईआ। चुरासी विच्चों किसे ना कढ्ढणा, अण्डज जेरज उतभुज सेतज चारे खाणी विच भवाईआ। किसे कम्म नहीं आउणा काया माटी बदना, तत वजूद ना सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची भेव खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे हज़रत नेत्र नैण वहाए नीर, छहबर शाह सुल्तान वखाईआ। अन्त होया दिलगीर, धीरज धीर ना कोए बंधाईआ। शरअ दा टुट्टण वाला ज़ंजीर, कड़ी कड़ी ना कोए जुड़ाईआ। कलयुग बदलण वाली तक़दीर, सतिजुग साचा लए अंगड़ाईआ। परवरदिगार नाम खण्डा फड़े शमशीर, शहिनशाह आपणी धार चमकाईआ। चौदां तबक खुसदी दिसे जागीर, पटेदारी दा झगड़ा दए गवाईआ। लहिणा देणा मुके शाह हकीर, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। आत्मा परमात्मा खेल होणा पातशाह वज़ीर, गुरुआं दी लोड़ रहे ना राईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को धुर दा पीर, जिस नूं वाहिगुरु अल्ला राम गॉड कहि के सारे गाईआ। उहदा खेल बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब स्वामी होए सहाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद अन्तिम भरे हौका, हाए उफ़ कर सुणाईआ। कूड़ी डुब्बण लग्गी नौका, खेवट खेटा मलाह नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। डर चुक्या प्रभ के भउ का, भय रखे सिर ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद दा सिर रिहा झुक, नेत्र नैण बन्द कराईआ। कुछ बोले नाहीं मुख, रसना जिह्वा

ना कोए हिलाईआ। खुशी नाल ना सके उठ, आपणी लै अंगड़ाईआ। आपणी आसा आपणे अंदर घुट, विच्चे विच दबाईआ। परवरदिगार कोलों रिहा पुच्छ, संदेसा संदेसयां विच सुणाईआ। की मेरा पैंडा रिहा मुक, वेला अन्त दे जणाईआ। मैं कीता की कुछ, बुद्धी तों परे की पढ़ाईआ। जिस कारण कटी मुच्छ, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। क्यों बदलया आपणा रुख़, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। मेरे अन्तर एहो दुःख, भरमे भुल्ली कूड़ लोकाईआ। तेरा बणे कोए ना पुत, पुत पोतरे जगत रिहा हंढ्ढाईआ। मैनूं इक्को तेरी ओट, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। सच नगारे ला चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। दीन दुनी दे अंदरों कढ्ढ खोट, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। कर प्रकाश अगम्मी जोत, नूरो नूर डगमगाईआ। मेरी पिछली मिट जाए सोच, अग्गे समझ देणी समझाईआ। मैं लेखा छड्डिआ चौदां तबक चौदां लोक, सलोक इक्को देणा सुणाईआ। चिन्ता ग़म हरख रहे ना सोग, संसा देणा मिटाईआ। सच प्रीती बख्शणा योग, जुगती आपणी इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सच दुआरे तेरा होवे संजोग, पिछला विजोग लोकमात देणा गवाईआ।

५०६ २१

✻ ३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ सुरैण सिंघ दे गृह जंडयाला गुरु ज़िला अमृतसर ✻

सदी चौधवीं कहे प्रभ दा खेल अगम्मा गहरा, गहर गम्भीर आपणे विच छुपाईआ। चार जुग गुर अवतार पैगम्बरां कोलों कराउँदा रहे मुशाइरा, नाम कलमा कलमा नाम नाल टकराईआ। दो जहानां शब्दी गुर कोलों दवाउँदा रहे पहरा, हुक्म अंदर हुक्म मनाईआ। दीनां मज़हबां दा वंड के दायरा, हद्द विच बेहद दए कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया प्रधान कर के कायरा, क़ायम मुक़ाम दिती कराईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कुछ खेल वेखणा विच काहिरा, मूसा मुहम्मद नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा राह जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया वल ज़िमीं, असमानां अक्ख बदलाईआ। कायनात धार दिस्सी निंमी, सच नूर ना कोए चमकाईआ। आवाज़ होई धीमी, धुर दा राग ना कोए अलाईआ। पुरख अकाल दी नज़री आए कोए ना तीवीं, तिरया तृष्ना वाली वेखी जगत लोकाईआ। मैं होर हो गई नीवीं, आपणी अक्ख झुकाईआ। जिस आसरे जुग चौकड़ी जीवी, कलयुग विच भज्जी वाहो दाहीआ। ओस दी बणां बीवी, जो ख़ावंद खुदावंद हो के आपणा फेरा पाईआ। जिस दी सदी चिरी सदीवी, पूरब चली आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां

उत्ते धरती, धवल धौल खोज खुजाईआ। किस दे कोल गोबिन्द वाली पर्ची, प्राचीन दा लेखा रिहा वखाईआ। तक्कण मालक इक्को अर्शी , जो अरशे आज़म डेरा लाईआ। जिस दी सदा सदी ते सदा बरसी, वड़िआं वाली गंढु ना कोए बन्हाईआ। जदों चाहे जुग जुग करे आपणी मर्ज़ी, खुद मालक आप अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बर आपणे बणाए सारे गर्ज़ी, ज़रूरत विच आपणा नाम दिता समझाईआ। थोड़ी थोड़ी दात दे के मातलोक दी खरची, अक्खरां नाम दस्सी पढ़ाईआ। तन वजूद पहना के वरदी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दिते समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं भज्जी फिरदी साल भर दी, पिछले साल राह तकाईआ। पुरख अकाल तों रही डरदी, क्यों, उह गुर अवतार पैगम्बरां दा लेखा पिछला पूर कराईआ। हुण मेरी कला होई चढ़दी, लैहदिउँ चढ़दे चली आईआ। मैं धार ओस अगम्मे नर दी, जिस नूं नर नरायण कहि के सारे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या मुहम्मद हो गया कुब्बा, हथ्थ काअबे वल उठाईआ। जगत वासना उम्मत वाली विच खुम्भा, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। किस कारण बकरीद विच देंदे रहे दुम्बा, दुम दबा के भज्जण थाउँ थाईंआ। जिस दी खल्ल दा बणाउँदे रहे तूम्बा, तूम्बड़ी आपणी पवित्र साफ़ ना कोए कराईआ। कुछ खेल होणा सवा पा रूं दा, रोम रोम मुहम्मद दा दए गवाहीआ। झगड़ा पैणा नबी नूह दा, ज़ूह ज़ूह विच दुहाईआ। सच्चा खेल आत्मा परमात्मा निरगुण धार रूह दा, बुत्तां विच पुत बणा के डेरा दिता जमाईआ। खेल होणा इक्को सतिगुर शब्द गुरु दा, जो गौर मढ़ी तों बाहर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, धुर दी करनी तों कदे ना मुड़ूगा, मुड़ मुड़ आपणा हुक्म वरताईआ।

५०७

२१

५०७

२१

❊ ३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ नरायण सिँघ दे गृह पिंड कंग ज़िला अमृतसर ❊

सदी चौधवीं कहे धुर दी शब्द कहाणी दस्सूं, चार कुण्ट दह दिशा नैण उठाईआ। पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां अंदर वड़ वड़ हस्सू, हस्ती वेख शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। निरमाणता विच संदेसा देऊं मस्सू, मूसा लवां उठाईआ। पैग़ाम जणा के इक यसू, मसीह दा मसला दयां दृढ़ाईआ। मुहम्मद वल प्रेम नाल तक्कूं, निगाह नैण नाल मिलाईआ। चौदां तबकां अंदर नच्चूं, निरगुण हो के खेल खिलाईआ। पुरख अकाल नूं कहूं वेख आपणे बच्चू, बच्चया परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं खोल्

के वेखां नैण, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। की लहिणा देणा सिँघ नरायण, चमकौर गढ़ी लेखा फोल फुलाईआ। गोबिन्द देवे केहड़ा देण, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। साचे नाम दी बख्श रसाइण, रस अमृत इक चखाईआ। नुक़ता दूई मेट के ग़ैन, ऐन आपणा रूप समझाईआ। जेहड़ा लेखा पिछला नाल महिन्दर भैण, सो मेला मिले सहज सुभाईआ। जगत धार बण के सैण, साक इक्को गंढु रखाईआ। मिले धुर सरनाई प्रभ चरणां विच चैन, अगनी तत ना कोए तपाईआ। कूड़ी क्रिया होए पराइण, परम पुरख प्रभ साचा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी वधदी जाए आसा, इच्छिआ विच वड्याईआ। मैं वेखां खेल तमाशा, चारों कुण्ट दुहाईआ। की करे खेल पुरख अबिनाशा, हरि करता वड वड्याईआ। गुरमुखां खोल्ह के पिछला खाता, लहिणा देणा बाहर कराईआ। कलयुग कूड़ी फोल अन्धेरी राता, परदा उहला विच्चों चुकाईआ। पिछले गुरमुख हुण जिन्हां दी वखरी वखरी माता, नाता भैण भाई समझाईआ। गोबिन्द दा पूरा कर के भविख्त वाक्, वाकफ्कार वेखे चाँईं चाँईंआ। जो लै के आई पगड़ी वाली सौग़ाता, दुआबे विच्चों पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे जिस दे सिर ते गोबिन्द धरया ताज, ताजां वाले दिती वड्याईआ। प्रेम प्यार दा दे के राज, दर घर साचा इक वखाईआ। जिथ्थे परम पुरख दा काज, दूजा नज़र कोए ना आईआ। शब्दी गोबिन्द उडदा बाज़, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। प्रीती नीले वाली वाग, शाहसवारा हथ्थ उठाईआ। मुहब्बत विच दए वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। माया ममता कर तिआग, त्रैगुण अतीता वेख वखाईआ। नाता जोड़ के कन्त सुहाग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां खेल अगम्मा रिश्ता, भगत भगवान दए जणाईआ। चले चतुराई ना किसे फ़रिश्ता, जबराईल मेकाईल इजराईल असराफ़ील नेत्र नैण अक्ख चुराईआ। गोबिन्द खेल आहिस्ता आहिस्ता, ढईआ नईआ आपणी कार कमाईआ। जन भगतां नाल आपणा आप कीता वाबस्ता, संगी साथी सोहणा रूप धराईआ। ढोला दस्स के धुर जस दा, वेद पुराणां खैहड़ा दिता छुडाईआ। पर्दा लाह के निज नेत्र लोचण नैण अक्ख दा, घर विच घर दिता समझाईआ। दान दे के मुहब्बत सच दा, माया ममता कूड़ गवाईआ। घर वखा के पुरख समरथ दा, मेला मेलिआ सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां आपणा हाल, हालत दयां जणाईआ। परवरदिगार सांझा यार करे खेल बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए वखाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, डौरु डंक रिहा वजाईआ। दीन

दुनी दिसे बेहाल, साची मंज़ल चढ़न कोए ना आईआ। गुरमुखां लेखे लग्गे पूरी घाल, धायल अंदरों कूड़ कुड़िआर दए कराईआ। हरिजन वेख आपणे लाल, लालन आपणी गोद टिकाईआ। एथे ओथे करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। सच धार दी दे के आपणी बिना मणक्यां तों माल, मन का मणका दए भुआईआ। दीआ बाती कमलापाती घर अगम्मी दीपक देवे बाल, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द वेखणहारा मीत, मित्र प्यारा धुरदरगाहीआ। जिस झगड़ा मुकाया ऊँच नीच, राउ रंकां डेरा ढाहीआ। पुरख अकाल दी दस्स प्रीत, फ़तिह डंका गया समझाईआ। सृष्टी दृष्टी होवे भय भीत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। झगड़ा मुके मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को नूर नज़री आईआ। इक्को कलमा होए हदीस, इक्को हज़रत करे पढ़ाईआ। इक्को सब दी होए उडीक, जुग चौकड़ी बैठे राह तकाईआ। जिस ने बदल देणी तवारीख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुआमी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे सति दा खोल्ह के वेखां ताक, तक्बर दूर कराईआ। जलवा तक्कके नूर पाक, पतित पुनीत आपणा रूप बदलाईआ। धूढ़ी मस्तक ला के ख़ाक, दुरमति मैल गवाईआ। जो गोबिन्द गया आख, सो सहजे वेख वखाईआ। भैण भ्रा दा जुड़िआ पिछला साक, नाता बिधाता आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर ठांडा इक दरसाईआ। सदी चौधवीं कहे एह पगड़ी जगत वाला नहीं दान, देवणहार वड्डी वड्याईआ। जुग जुग भगतां रखे माण, मेहरवान महबूब हो सहाईआ। चुरासी विच्चों लए पहचान, घट निवासी फोल फुलाईआ। नाम संदेसा दे पैग़ाम, सोई सुरती शब्द जगाईआ। काया बंक दस्स मकान, घर घर विच मेला मेले सहज सुभाईआ। अमृत रस दस्से पीण खाण, कूड़ी क्रिया तृष्न मिटाईआ। शब्द नाद दे धुनकान, धुन आत्मक राग सुणाईआ। निरगुण नूर जोत जगा महान, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। मेल मिला के शाह सुल्तान, दरगाह साची इक सुहाईआ। जिथ्थे ना कोई ज़िमीं ना असमान, सूंया चन्द ना कोए रुशनाईआ। ना कोई गोपी ना कोई काहन, ना कोई सीता राम वड्याईआ। ना कोई गुर अवतार पैगम्बर देवे ज्ञान, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई तीर चिल्ला ना खड़ग खण्डा किरपान, म्यान ढाल हथ्थ ना कोए टिकाईआ। ना कोई दीन मज़हब ना कोई शरअ छुरी शैतान, कत्लगाह रंग ना कोए रंगाईआ। ना कोई हिन्दू मुस्लमान, ईसाई अक्ख ना कोए मटकाईआ। इक्को खेल नौजवान, मर्द मर्दाना आपणा आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं

आवां हसदी, खुशीआं विच वड्याईआ। मैं कुट्ठी ओस प्रभू दे जस दी, जिस दे ढोले सारे रहे गाईआ। मैं बिरहों विछोड़े विच तपदी, मिल के अगन लवां बुझाईआ । सूरत तक्कां ओस पती पति दी, जो पतित उधारी एका नूर जोत डगमगाईआ। रमज़ समझे मेरी अगम्मी अक्ख दी, नेत्र लोचन झगड़ा दए चुकाईआ। कथा कहाणी दस्से सच दी, सति सतिवादी आप दृढ़ाईआ। माण वड्याई रहे ना बुद्धी मति दी, मन कल्पणा लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रेम प्यार दी साची धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ। वेखी खेल सच्ची सरकार, हरि करता आप वखाईआ। गोबिन्द पिछला जाणे उधार, लहिणा लहिणे विच्चों प्रगटाईआ। वेखे विगसे पावे सार, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। जिस दा सदी चौधवीं करदी रही इंतज़ार, बिन नैणां राह तकाईआ। सो खेल करे परवरदिगार, हरि करता वड वड्याईआ। दो जहानां पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड परदा आप उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर गिरफ्तार, हुक्म धुर दे विच बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सही सलामत नज़री आईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मालक मैं निउँ के करां सलाम, सजदयां विच सीस निवाईआ। मेरा नूर अलाही अमाम, अमलां तों बाहर सोभा पाईआ। जिस दी समझे ना कोए कलाम, कलमा कायनात ना कोए वड्याईआ। तीस बत्तीसा करे ना कोए पहचान, हदीसां विच ना सिफ्त सालाहीआ। सच तौफीक़ इक मेहरवान, मिहबान बीदो जल्वागर नूर खुदाईआ। जो वस्से उत्ते असमानां असमान, इस्म आज़म नज़र किसे ना आईआ। जिस तों हुंदे गए सारे क़ुरबान, करबले वाले देण दुहाईआ। सो देवणहारा पैग़ाम, पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। रसूलां दे हक़ीक़ी जाम, नबीआं परदा दए उठाईआ। सिफ्तां करन वाला गुलाम, नज़मां विच अलिफ़ ये पढ़ाईआ। दरगाह साची करन वाला बिसराम, बिस्मिल हो के आपणा खेल खिलाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त सदी चौधवीं विगड़िआ वेखण वाला इंतज़ाम, इंतज़ामी विच इंतकाम सब दा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी अनरागी आपणा राग सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे भरावां सदा भैण प्यारी, भईआ बिन मईआ नाल वड्याईआ। आसां विच सधरां विच मनसा विच आवाज़ां रही मारी, रसना जिह्वा ज़बान ना कोए हिलाईआ। गोबिन्द नूर हाज़र हज़ूर मेला कर फेर दुबारी, तेरी सरन इक सरनाईआ। सानूं पता ना लग्गे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, टिल्ले पर्बत डूंघी कंदर फोल फुलाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक लख चुरासी फिरें पिच्छे अगाड़ी, घट घट अन्तर हो निरंतर निरवैर निराकार निरँकार वेख वखाईआ। तेरे चरण कँवल उपर धवल जावां बलिहारी, हउँ वारी घोली

घोल घोल घुमाईआ। मैं वैरागण बिरहों विछोड़े विच दुख्यारी, दुखियां दर्द लैणा वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे दुआबे दी माझे वाल्यां नाल प्रीत, नाता बाहमी रिहा बणाईआ। नरैण सिँघ दी पिछली भैण नाम मनजीत, क़मीज़ सोहणा लै के आईआ। पिच्छा गोबिन्द नाल गया बीत, अग्गे पुरख अकाल नाल वड्याईआ। सांझी दोहां दी होवे रीझ, खुशीआं अंदर ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो भैण भाई दा नाता सका, अक्ख सके ना कोए बदलाईआ। मैं एसे कर के छड्डके आई मदीना मक्का, काअबे विच सिदक सबूरी ना कोए वखाईआ। विषयां विच रुढ़या बूरा कक्का, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। साजन रिहा कोई ना सख़ा, सगला संग ना कोए बणाईआ। मैं आपणे नाल पका के आई मता, मशवरा इक्को इक रखाईआ। मेरे साहिब दा जिस नूं मिल गया पता, सो पत्तण बहि के आपणा बेड़ा लए तराईआ। जन्म जन्म दा कर्म करम दा मेटे धब्बा, कालख टिक्का लाहीआ। मैं कूक सुणावां कायनात सृष्ट सबाई परवरदिगार सब दा इक्को अब्बा, अम्मी आपणा रूप समझाईआ। जुग जुग नाम संदेसा देवे सद्दा, सद छन्द ढोल्यां वाले गाईआ। जन भगतो छब्बी पोह नूं माझे वाले नाल लिआयो इक गधा, गदागर दा लेखा दए समझाईआ। जिस दे मथ्थे उत्ते लिख के लाउणा हाए मेरया रब्बा, रहमत हक़ ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर एकँकार आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे कोई मैनूं पुच्छो सहेली, सहेलीआं दयां जणाईआ। केहड़ी खेल प्रभू ने खेली, निरगुण आपणी कार कमाईआ। की धार रखे नवेली, निरगुण निरवैर वड्डी वड्याईआ। की भगतां रिहा मेली, जुग जुग विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। की साहिब स्वामी सज्जण बेली, बेल्यां जंगलां विच्चों बाहर कढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, घर ठांडा इक प्रगटाईआ। सदी चौधवीं कहे घर वेखां ठंडा ठार, ठोकर जगत ना कोए वखाईआ। जिथ्थे नाम कलमा शब्द जैकार, बिन रसना जिह्वा ढोला गीत इक अलाईआ। निरगुण जोत होए उज्यार, दीवा बाती तेल ना कोए प्रगटाईआ। सच सिँघासण सोहे सच्ची सरकार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दे उत्ते सब नूं एतबार, गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, सिर सिर आपणा हुक्म मनाईआ। देवत सुर मँगण धूढ़ी छार, टिक्के ख़ाक वाले रमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जण वारो वार, दिवस रैण आपणा पन्ध मुकाईआ। घड़ी पल वेखण नैण उघाड़, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। सो वेखणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मेरा हल्ल करे सवाल, नम्बरी आपणी

फोल फुलाईआ। झगड़ा मेट के काल महाकाल, दीन दयाल दया कमाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सचखण्ड दुआर वखा सची धर्मसाल, दरगाह साची परदा दए उठाईआ। जिथ्थे वसण शाह कंगाल, दीन मज़हब वंड ना कोए वखाईआ। सब दी लेखे लावे घाल, जो प्रभ दा नाम ध्याईआ। जो सिख्या गोबिन्द गया सिखाल, तत वजूद फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच घर, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। गृह मन्दिर होवे सोहणा, प्रभ सोहणी बणत बणाईआ। जिथ्थे नेत्र नीर पए ना रोणा, हन्झूआं हार ना कोए बणाईआ। रसना नाल पए ना गाउणा, बत्ती दन्द ना कोए जणाईआ। बस्तर पए ना तन छुहाउणा, साढे तिन्न हथ्थ ना वंड वंडाईआ। मस्तक किसे ना पए घसाउणा, निउँ निउँ कोए ना लागे पाईआ। इक्को पुरख अकाल दीन दयाल नज़री आउणा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिस ने सतिजुग अंदर आपणा हुक्म वरताउणा, कलयुग कूड़ा डेरा ढाहीआ। चार वरनां इक्को रंग रंगाउणा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दुरमति मैल धुआईआ। आत्म परमात्म साचा नाम जपाउणा, जो सोहँ ढोला नानक गया गाईआ। इक्को खड़ग खण्डा दो जहान चमकाउणा, जो तीर भथ्था सोहँ गोबिन्द गुरु गया समझाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ ने साचा मार्ग लाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चारों कुण्ट कीती तलाशी, दह दिशा फोल फुलाईआ। जिधर वेखां ओधर मदिरा मासी, मस्ती नाम खुमारी ना कोए चढ़ाईआ। धर्म अस्थानां उत्ते हुंदी वेखी बदमाशी, साध सन्त धीआं भैणां रहे तकाईआ। जूठे झूठे वेखे गुरु ग्रन्थ दे पाठी, बुद्धी बिबेक ना कोए बणाईआ। साचा अमृत ना देवे कोई गोबिन्द वाली बाटी, पंजां प्यारयां विच्चों साबत नज़र कोए ना आईआ। चार वरनां बदले ना कोए हयाती, हज़ारां लखां नेत्र रो के रहे कुरलाईआ। जेहड़ी कथा कहाणी गोबिन्द ने अन्त आखी, बिन अक्खरां दिती सुणाईआ। ओस दा लहिणा वेखणा जन भगतो एसे वसाखी, वसाह के सब नूं दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दी सांभ के रखी बिन अक्खरां वाली उह पाती, जिस दा लेख जगत विद्या ना कोए समझाईआ। सदी चौधवीं कहे की गोबिन्द रिहा लिखदा, लेखा बिन क़लम शाहीआ। की रूप होवे मेरे सिख दा, सिख्या लवे धुरदरगाहीआ। इष्ट रखे एकँकार इक दा, दूसर सीस ना कदे झुकाईआ। पुत बणे अगम्मे पित दा, जो एथे ओथे होए सहाईआ। झगड़ा मुके आवण जावण नित दा, चुरासी डेरा ढाहीआ। सो गुरमुख मानस जन्म जित्तदा, जो गुर गुर सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड

पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमी असमान निरगुण नूर हो के दिसदा, जोती जाता पुरख बिधाता, अगम्म अथाह बेपरवाह परवरदिगार सांझा यार जल्वागर नूर खुदाईआ।

❊ ४ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ गुरनाम सिँघ दे गृह पिंड कंग ज़िला अमृतसर ❊

सदी चौधवीं कहे मैं रातीं फिरी विच मदीने, मुद्दा सब दा वेख वखाईआ। नूर दिस्सया ना विच किसे दीने, मज़हब ग़ज़ब तुअज्जब विच दए दुहाईआ। मुहम्मद होया पसीनो पसीने, हैरानी चारों कुण्ट छाईआ। क्यों कलमयां वाले होए कमीने, कमज़ात कुलखणी रूप वटाईआ। सजदा करे ना कोए हो अधीने, वाअज़ हक़ ना कोए दृढ़ाईआ। प्रीती रही ना जल मीने, आबेहयात जाम ना कोए प्याईआ। की खेल होणा अगले रमज़ान महीने, रमज़ इशारे वाली समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखी मदीने दी चार दीवारी, दीआ बाती ना कोए डगमगाईआ। मुरीद मुर्शदां टुट्टदी वेखी यारी, याराना हक़ ना कोए वखाईआ। कलमे उत्ते होई बेएतबारी, सिदक भरोसा यकीन ना कोए दरसाईआ। रसूल रसूलां नाल करन गदारी, मसूल शरअ वाला वखाईआ। उम्मत विच होई बेज़ारी, ज़ारो ज़ार नेत्र नैणां नीर वहाईआ। लुकदी फिरदी पहाड़ उजाड़ीं, दरगाह मिले ना कोए वड्याईआ। लग्गी अग्ग बहत्तर नाड़ी, सांतक सति ना कोए कराईआ। शेखां मुल्लां दी वेखी रत्ती दाढ़ी, रंग मैहन्दी वाला चढ़ाईआ। इक ओहले छुपी वेखी बारी, जिस विच बारां माह बहि के मुहम्मद आपणे चरणां उत्ते आपणी अक्ख टिकाईआ। आसां दी फेरदा रिहा बहारी, सधरां दी सेव कमाईआ। लागे रख के फुल्लां दी खारी, कांटे नौ उत्ते टिकाईआ। लाल मैहन्दी घोल के गाढ़ी, पंजां पोटयां नाल छुहाईआ। खेल वेखदा रिहा जगत बाज़ारी, बाज़ां वाला अंदर बैठे नूं नज़री आईआ। फेर बणया सच पुजारी, सजदे विच सीस झुकाईआ। की खेल करे मदारी, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। पढ़या दरूद इक हज़ारी, हिजर विच गाईआ। तेरी खेल बेशुमारी, शुमार अन्त ना कोए समझाईआ। उफ़ हाए कर के चौधवीं सदी पुकारी, रो रो मारे धाईंआ। मेरे मालक प्रितपालक दातारी, दयावान तेरी सरनाईआ। तेरे हुक्मे अंदर रवां कँवारी, जगत खौंत ना कोए हंढाईआ। मैं बणना नहीं लाटां वाली जो वस्से उत्ते पहाड़ीं, मन्दिरां विच डेरा लाईआ। मैं सदा फिरां तेरे पिच्छे अगाड़ी, दूजा अवर ना कोए तकाईआ। सच इष्ट दी रहां पुजारी, पुस्तक हथ्थ ना कोए उठाईआ। जिस वेले खेल करे एकँकारी, दुबारी आपणी कार कमाईआ। लेखा वेखे दोबारी तिबारी, चौबारी आपणी वंड वंडाईआ। पंचम मेला बाहर परपंच धारी, पारब्रह्म

आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखी इक बारी जिस विच दिस्सया इक कबूतर, नैण मूंद ध्यान लगाईआ। कुछ पुकार करे अबूतर, बिना तर्ज ताल दुहाईआ। मुहम्मद दा केहड़ा बणया घर, हमद विच इक ध्यान जणाईआ। अन्धेरा भय विच आवे डर, भयानक रूप खुदाईआ। साचा पल्लू कोई ना फड़े लड़, लड़ी लड़ी ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब कुछ हब्ब आपे वेखे खड़्, खिड़की विच्चों आपणा परदा लाहीआ।

❊ ४ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ कुंदन सिँघ दे गृह पिंड माल चक ज़िला अमृतसर ❊

सदी चौधवीं कहे नेत्र रोवे चन्द सतारा, सतह बस्तह समझ किसे ना आईआ। करे खेल की परवरदिगारा, पारब्रह्म परमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दा नाम लोक परलोक वजे नगारा, नौबत हक़ हक़ सुणाईआ। अवतार पैगम्बर ख़िदमतगारा, गुर गुर बैठे सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव भिखारा, हव्वा आदम ना कोए वड्याईआ। खेले खेल आपणी धारा, धरनी धरत धवल धोल खोज खुजाईआ। चार कुण्ट हो उज्यारा, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। लख चुरासी पावे सारा, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे चन्द सतारा रिहा रो, बिन लोचन नैण नीर वहाईआ। की खेल रिहा हो, होका हू हू अलाहीआ। साडे नाल होया धरोह, ध्रू प्रहलाद दए गवाहीआ। परवरदिगार दा टुट्टा मोह, मुहब्बत हक़ ना कोए जणाईआ। सब कुछ रिहा खोह, ख़ालक ख़लक दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी वड वड्याईआ। चन्द सतारा रोवे मारे धाह, कूक कूक सुणाईआ। करे खेल की बेपरवाह, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। सानूं करन लग्गा जुदा, जुज़ आपणे हथ्थ रखाईआ। दीन दुनी दी बदल अदा, अदावत कूड़ी रिहा गुआईआ। साचे नाम दी दस्स सदा, रहिबर हो के परदा लाहीआ। साडी क़बूल करे दुआ, सजदयां विच सीस झुकाईआ। माया ममता मेट वबा, मोह विकार डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि करता शहिनशाहीआ। चन्द सतारा कहे वेखीए खेल बेनज़ीर, नजर तों ओहले दए जणाईआ। इशारे दे रिहा कबीर, बिन अक्खां सैनत रिहा लगाईआ। वेखो परम पुरख दी तदबीर, तरीका अवर ना कोए जणाईआ। सब दी बदल देवे तक़दीर,

रहिबर हो के वेख वखाईआ। अगम्मी दस्स उह तस्वीर, जिस नूं मुसव्वर तसव्वर कर ना कोए वखाईआ। सदी चौधवीं पवे भीड़, चारो कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। झगड़ा पए ग़रीब अमीर, अमरापद ना कोए वखाईआ। नाम खण्डा खड़ग शमशीर, निरगुण धार इक चमकाईआ। वेख वखाणे शाह हकीर, काया काअबा खोज खुजाईआ। नेत्र रो के कहे क़ुरान मजीद, तीस बत्तीस ढोला इक अलाहीआ। साची रही कोई ना दीद, नेत्र नैण अक्ख ना कोए मिलाईआ। माण रिहा ना कोए ईद, ईदुल फ़ितर ढोला हक़ ना कोए जणाईआ। मुहम्मद बिन अलिफ़ ये तों कीती वसीअत, असलीअत आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दा हरि, दरगाह साची वेख वखाईआ। चन्द सतारा कहे मेरे महबूब, मेहरवान तेरी वड्याईआ। तेरा खेल उच्च अरूज, अर्श फ़र्श तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं कर महिदूद, हदूद आपणी इक प्रगटाईआ। चारों कुण्ट दिसें मौजूद, मजलस भगतां विच लगाईआ। भाग लगा उम्मत काया कलबूत, कलमा कलमे विच्चों उपजाईआ। साचा संदेसा दे जबराईल दूत, असराईल नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। चन्द सतारा कहे मेरी अन्तर अन्तर आह, हौका लै के दयां जणाईआ। पीर पैगम्बर मेरे गवाह, शहादत तेरे दर भुगताईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर गया आ, आपणा बैठी पन्ध मुकाईआ। मनसा सब दी वेख शहिनशाह, शाह पातशाह तेरी बेपरवाहीआ। तूं जल्वागर इक खुदा, नूरी नूर डगमगाईआ। असीं चलीए तेरी विच रज़ा, राज़क़ रिज़क रहीम तेरी सेव कमाईआ। किरपा कर मेरे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मांगत हो के झोली रहे डाहीआ। सदी चौधवीं कहे चन्द सतार मुर्शद वेख आपणा मुरीद, मुरीदां वेख वखाईआ। जो तेरा राह तक्कण बिन दीद, नेत्र लोचन नैण सेव कमाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर कर के गए ताकीद, धुर फ़रमान इक दृढ़ाईआ। उन्हां आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, बचया रहिण कोए ना पाईआ। ग़फ्लत वाली खोल्ह नींद, आलस कूड़ा दे गवाईआ। साहिब स्वामी तैनूं लवण चीत, चित ठगौरी मन ना कोए रखाईआ। मैं तेरा तूं मेरा आत्म परमात्म गावण गीत, धुर दा ढोला अगम्म अथाहीआ। झगड़ा मिटा हस्त कीट, ऊचां नीचां रंग रंगाईआ। तेरे चरण कँवल होवे प्रीत, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। सदा दिसे हाज़र हज़ूर नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। किरपा कर लाशरीक, शिरकत कूड़ी देणी कढ्ढाईआ। तेरे अंदर हक़ तौफीक़, तोहफ़ा नाम झोली देणा भराईआ। तेरी धार सब तों मुफ़ीद, मुफ़लिसां दे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दरवेश हो के आस रखाईआ। चन्द सतार कहे मेरे साहिब साहिब सुल्तान, सुत्तयां लै उठाईआ।

५१६ २१

गोबिन्द वाला लेखा मार ध्यान, गढ़ी चमकौर दए दुहाईआ। गुरमुख साचे कर परवान, परम पुरख प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। धुर दा दे अगम्मी ज्ञान, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। सति वखा इक निशान, जिथ्थे छत्र झुल्ले शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वाहवा तेरी वजदी रहे वधाईआ। चन्द सतार कहे मेरे साहिब पुरख अबिनाशी, हरि करते वड वड्याईआ। गुरमुखां अंदर वड़ के कर तलाशी, घट घट अंदर फोल फुलाईआ। किस नूं तेरे मिलण दी आसी, आसा विच बैठा राह तकाईआ। मनुआ मूल ना करे बदमाशी, बदी दा डेरा बैठे ढाहीआ। याद करदे दिवस राती, घड़ी पल साह साह समाईआ। तेरा नूर बण के ज़ाती, आत्म हो के परमात्म वेख वखाईआ। कर प्रकाश बिन दीवा बाती, कँवल नैण डगमगाईआ। चरण प्रीती सच्ची हयाती, जीवण जीवण विच्चों समझाईआ। अमृत दे बूँद स्वांती, मधुर प्याला हथ्थ उठाईआ। लहिणा देणा रहे कोई ना बाकी, बाक़ायदा आपणी कार कमाईआ। भाग लगा दे काया माटी ख़ाकी, ख़ालक खलक हो सहाईआ। तेरा मेल होवे इत्तफाकी, वायदे पूरे दे कराईआ। आत्म परमात्म जुड़े नाती, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं धुर दरगाह दा साकी, जाम हक़ीक़ी दे पिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। चन्द सतार कहे मेरी होर इक आसा, आसा विच वड्याईआ। जिस नूं गोबिन्द उत्ते भरवासा, हिरदे अंदर वेख वखाईआ। ओस आपे होवीं राखा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पूरब पूरा करना घाटा, बाकी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मँग मगांईआ। सदी चौधवीं वेख गोबिन्द वाली धार, धर्म दुआरे नज़री आईआ। भैण भ्रा दा सच प्यार, संगत सिँघ नाल वड्याईआ। कर्म धर्म दी करदा कार, निहकरमी कर्म कमाईआ। उस दे सीस बज्झे दस्तार, एथे ओथे दो जहान मिले वड्याईआ। कुंदन सिँघ मेला नाल कन्त भतार, पारब्रह्म परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं सोहणा तन दा होवे बस्तर, माटी ख़ाक मिले वड्याईआ। सच प्रीती होवे शस्त्र, लुहार तरखान ना कोए घड़ाईआ। जगत नज़र तों बाहर होवे बणतर, दोए अक्खां वेखण कोए ना पाईआ। भेव मुकाउणा काया माटी मन तन, बुध्ध बिबेक देणी कराईआ। लहिणा देणा चुकाउणा साचे सन्तन, सति सतिवादी तेरी वडी बेपरवाहीआ। मेल मिलाउणा आत्म कन्तन, नर नरायण जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांढे सीस निवाईआ। सदी चौधवीं कहे पिछले जन्म दी भैण महिन्दर, नाता पूरब नज़री आईआ। वेख खेल रोवे इंदर, सुरप्त नैणां नीर वहाईआ। काहन छड्डके बनबिन्दर, गोकल मथरा रिहा तजाईआ। राम

५१६ २१

खोल्ह के नींदन, नैण अक्ख मटकाईआ। साहिब तेरी सच प्रीतन, पीआ प्रीतम सोभा पाईआ। बेशक कितने कोट काल जुग बीतण, सतिगुर शब्द भुल्ल कदे ना जाईआ। बणे विचोला जुग जुग मीतण, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग फोल फुलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलावे रीतण, मार्ग आप प्रगटाईआ। साचा कलमा दस्स अगम्म हक़ीक़ण, हदीस हज़रतां इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी अतोट अतुट वरताईआ। सदी चौधवीं कहे साचा प्यार भैण भ्राता, भईआ भरम भउ मिटाईआ। एका बख़्शी सच सौग़ाता, क़मीज़ तमीज़ नाल पहनाईआ। दोहां दा होवे इक्को राखा, पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी चलदी रहे शाखा, भगत भगतां नाल वड्याईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। गुरमुखां दी जम्मण वाली वखरी वखरी माता, आत्म दा पिता माता पुरख अकाल अख्वाईआ। साचे नाम दी दस्स के गाथा, अक्खरां तों बाहर करे पढ़ाईआ। जन्म जन्म दा पूरा कर के घाटा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे होवे साचा संग, सगल मिले वड्याईआ। पुरख अकाला दीन दयाला चाढ़े रंग, काया माटी आप रंगाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म वज्जे सच मृदँग, नाउँ निधाना मर्द मर्दाना आप जणाईआ। आसा मनसा सध्धर पूरी सब दी करे मँग, ममता मोह ना कोए जणाईआ। खेल वेखे तारा चन्द, ज़िमीं असमान दए दुहाईआ। जिस ने नीले दा कसिआ तंग, शाह सवार वड्डी वड्याईआ। ओह ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आवे लँघ, चौदां तबकां चरणां हेठ दबाईआ। वेखे खेल विच वरभण्ड, फोल फुलाए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज परदा दए चुकाईआ। अमृत धार वहाए गंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख़्शणहारा धुर दा वर, धुर स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार आपणी दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कूक के मारां हाकां, हुक्म दयां जणाईआ। सारी सृष्टी दा इक्को आक़ा, कायनात हुक्म वरताईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बरां मन्नया बापा, पिता पुरख अकाल समझाईआ। सो हर घट अंदर वेखे आपणा आपा, आत्म ब्रह्म परदा लाहीआ। निज घर खोल्हण वाला ताका, ताक़त आपणी इक समझाईआ। दीन दुनी दा बदल देवे ख़ाका, ख़ालस आपणी खेल वखाईआ। चार वरन अठारां बरन दस्से अगम्मी गाथा, गहर गम्भीर पढ़ाईआ। लेखा जाणे पुरख समराथा, हरि करता नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, रंग साचे आप रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखां उजल करना मुखड़ा, मुख मुखीए दया कमाईआ। हरिजन रहे कोई ना दुखड़ा, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। तेरी सुहञ्जणी होवे रुतड़ा,

५१७
२१

रुतड़ी आपणे नाम महकाईआ। गुरमुख रहे कोई ना सुत्तड़ा, सुत्तयां लैणा जगाईआ। भाग लगाउणा जननी कुखड़ा, जो भगत जणेंदी माईआ। तेरा नूर अगम्मी आपणी धारों उतरा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरा शब्दी धार पुत्तरा, पतिपरमेश्वर देणी वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे तेरा शुकरा, शुकराने विच सीस झुकाईआ। ठग चोर यार लुक्या रहे ना कोई किसे नुक्करा, नव नौ चार खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे अग्गे कोई ना मुकरा, मुजरम हो के सारे बैठण सीस झुकाईआ।

५१८

२१

✻ ५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ बुध्ध सिँघ दे गृह डीणे वाल ✻

बुध्ध सिँघ पाल सिँघ दे कोल देवां भेज, सचखण्ड साचे खुशी बणाईआ। जिथ्थे इक्को नूर दा तेज, जोती जोत डगमगाईआ। पुरख अकाल दी माणे सेज, सुखआसण इक टिकाईआ। आपणी अक्खीं लवें वेख, शरीर छड्डुण तों पैहलां दर्शन देवां चाँईं चाँईंआ। गुरमुख दा सतिगुर दा इक्को मेच, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। तेरा उह बौलद जेहड़ा वौंहदा रिहा शेर सिँघ दा खेत, सेवा खुशी नाल कमाईआ। हुण वसणा ओसे दे देश, जिथ्थे जन्म मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। बुध्ध सिँघ तूं ओहो सूरबीर बलवान, सताई चक्क वाला नज़री आईआ। जेहड़ा खुशीआं नाल करदा सी दान, सेवा साध संगत कमाईआ। तेरे घर दा नौ वारी खाधा पकवान, भोग लगा के धुर दा रंग रंगाईआ। पिछली कीती कर परवान, हुण भुल्लआं गले लगाईआ। बख्शां उह सच्चा अस्थान, जिथ्थे सन्त भगत गुरु अवतार पैगम्बर बैठे तेरा राह तकाईआ। सतिगुरु कदी ना गुरसिखां दी भुल्ले पहचान, बेपहचान हो के आपणा फेरा पाईआ। मुकती दा की मँगणा दान, मुकत दुआरे तों अग्गे सचखण्ड साचे दए पुचाईआ। जिथ्थे इक्को वस्से श्री भगवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। तकड़ा हो फेर इक वार नौजवान, आपणा बल धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत रस देवे पीण खाण, सुख दा सागर काया गागर विच वखाईआ।

५१८

२१

✻ ५ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ सुखदेव राज दे गृह पिंड कल्ला ज़िला अमृतसर ✻

सदी चौधवीं कहे मेरे वास्ते बूटा लिआउणा तुलसी, तुल्ा कख्खां वाला बणाईआ। सच प्रेम दी कर के आउणा सुरती, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। बैठण वास्ते लिआउणी कुरसी, बाज़ू दो चार समझाईआ। इक चिड़ीआ लिआउणी उडदी, नच्चे टप्पे चाँईं चाँईंआ। मैं वेखां खेल सच्चे सतिगुर दी, जो साहिब स्वामी आप कराईआ। मैं जीवत होवां मुरदी, मुरीद मुर्शद मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे वास्ते भगतां लिआउणी नाम दी पूंजी, भण्डारा अंदरे अंदर भराईआ। संगत सोहँ सोहँ होवे कूंदी, चारे कुण्ट आवाज़ सुणाईआ। खेल वेखां बुत रूह दी, रूह बुत वजे वधाईआ। शकल तक्कां हूबहू दी, जो निरगुण नूर करे रुशनाईआ। घाल वेखां भगत ध्रू दी, प्रहलाद नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे सुखदेव मस्तक लाउणा तिलक, लाल रंग संधूर बणाईआ। सोहणा लिआउणा इक ख़िलत, मुख़ातब हो के दयां जणाईआ। काले रंग दी होवे सिलक, सूसा सोहणा सोभा पाईआ। मनुआ करे कोई ना इल्लत, बुद्धी सति विच समाईआ। खुआरी दिसे कोई ना ज़िल्लत, कूड़ कुड़िआरा डेरा ढाहीआ। नाल सवा पाओ लिआउणा निमक, निमक हराम ना कोए अख्वाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के आउणा चिन्त, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। हरि संगत कर के आउणा हिम्मत, हौसला इक वधाईआ। मेरी सब दे अग्गे मिन्नत, निम्रता विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख के हस्सां, खुशीआं विच वड्याईआ। शब्द संदेसा दस्सां सिँघ मस्सा, मिसरा पिछला याद कराईआ। लक्क नूं बन्न्ह के आउणा मोटा रस्सा, साढे तिन्न हथ्थ लमकाईआ। तेड़ पाउणा पाटा कच्छा, मिट्टी घट्टे नाल भराईआ। हथ्थ विच फड़ना इक निक्का जिहा वच्छा, देवी अष्टभुज जणाईआ। पुरख अकाल सब दी करे रच्छा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां नेत्र खोल्ह, अक्ख अक्ख नाल उठाईआ। धुर संदेसे रही बोल, अनबोलत रिहा जणाईआ। माझे विच्चों प्रीतम सिँघ दे नेज़ा होवे कोल, लम्मा उच्चा सोहणा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं ढोले सुणने विच बैंती, सिफ्तां विच सालाहीआ। सरमुख सिँघ हथ्थ विच लै के कैंची, निक्की वड्डी नज़र कोए ना आईआ। कुंदन सिँघ छाती उत्ते लिख के लाउणी पैंती, अक्खर गोबिन्द वाले दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

५१९
२१

साचा हरि, लेखा जाणे देव दैंती, दानव मानव वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं उठ उठ तक्कां, आपणा ध्यान लगाईआ। सच सुनेहड़ा इक्को दस्सां, दह दिशा दयां जणाईआ। जन भगतां नाता जोड़ां पक्का, पक्की धुर दी गंढु वखाईआ। साहिब सतिगुर सरनाई ढठ्ठां, ढहि ढहि सीस निवाईआ। कल्ले वाले गुरमुखां लाल पग्गां बन्न्हणीआं अठ्ठां, अठ्ठां दा इक्को रंग नज़री आईआ। लाल तागा बन्न्ह के आउणा नाल पट्टां, पिछला लेखा दए जणाईआ। सदी चौधवीं परम पुरख अकाल जे आ गया विच जट्टां, जटा जूटां दा लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा रखे आपणे हथ्थां, हथ्थो हथ्थी सब दा लेखा पूर कराईआ।

५२० २१

❊ ५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ तेज कौर दे नवित्त पिंड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ❊

सतिगुर शरन सदा पित माता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अखवाइंदा। आत्म परमात्म आदि जुगादी जोड़े नाता, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणे अंग लगाइंदा। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच देवे अगम्मी दाता, दानी हो के दयावान आप दया कमाइंदा। वेखणहारा काया माटी तन वजूद जीउ पिंड काचा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध्ध फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे मेल मिलाइंदा। सतिगुर शब्द कहे जो बणी धर्म दी माता, नाता पुत्र धी जुड़ाईआ। किरपा करे पुरख अबिनाशा, पुरख अकाल दीन दयाल दया कमाईआ। सच दुआरे करे वासा, आत्म परमात्म मेला मेले सहज सुभाईआ। लख चुरासी आवण जावण कटके जन्म फासा, सति स्वामी अन्तरजामी दर दुआर एकँकार इक्को इक वखाईआ। साहिब सुल्तान नौजुवान मर्द मर्दान पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्त कन्त भगवन्त पुच्छे वाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणे घर वसाईआ। किरपा होवे उत्ते कौर तेज, तेज जोती नूर नूर विच चमकाईआ। पतिपरमेश्वर दे के आपणे अगम्मी सेज, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण इक्को इक वखाईआ। शब्दी सतिगुर हुक्मे अंदर देवे भेज, बिन भजन बन्दगी तों लेखा दए मुकाईआ। कर्म करम दी बदल के रेख, जन्म जन्म दा डेरा ढाहीआ। सचखण्ड दुआरे रखे हमेश, निरगुण जोती जोत विच मिलाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर करदे आदेस, डंडावत बन्दना सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे देवे माण वड्याईआ। तेज कौर नाता टुट्टा मात पित भाई भैण, साक सज्जण सैण पुत्तर धी ओत

५२१

२१

पोत गई तजाईआ। पारब्रह्म इक्को मिले धुर दा सज्जण सैण, निरवैर निराकार आपणा रंग रंगाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी थिर घर देवे धुर दा बैहण, आवण जावण लख चुरासी पैंडा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सच दुआरा एकँकारा इक्को इक दए वखाईआ। तेज कौर कहे मेरा तत्तां वाला ना समझयो जवाई, मीता धुर दा नज़री आईआ। मेरा लहिणा देणा रिहा मुकाई, मुकम्मल आपणा रंग रंगाईआ। मैं खुशीआं विच देवां दुहाई, दोहरा ढोला सोहला धुर दा राग सुणाईआ। मैनूं मिल गया उह राही, जो रहिबर हो के सचखण्ड दुआरा दए वखाईआ। जिथ्थे सूरज चन्द ना कोई रुशनाई, इक्को जोत डगमगाईआ। नाता छड्डुया जगत कुटम्ब कुड़माई, कर्म कांड दा लेखा दिता मुकाईआ। भटकदी भरमदी नूं सच दुआर रिहा पुचाई, पूरब लहिणा झोली पाईआ। राए धर्म चित्रगुप्त नेत्र रोवण मारन धाईं, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची देवे माण वड्याईआ। तेज कौर कहे मैं आसां विच नहीं होई बुढ्ढी, बुड़ापा नज़र कोए ना आईआ। मेरी सदा प्यार मुहब्बत वाली रही बुद्धि, हिरस विच आपणी हवस वधाईआ। बच्चयां नूं वेख के सदा टप्पी कुद्दी, ग़मी ग़मख़ार दी झोली पाईआ। मेरी शान होई उच्ची, आत्म दिसी सुच्ची, पदवी मिली अदुती, त्रैगुण लेखा दिता मुकाईआ। भाग लग्गे जगत वाले पुतीं, मेरी सुरत उठाई सुत्ती, सुहावणी कीती रुत्ती, राहे पाई घुथ्थी, मंज़ल धुर दी दिता चढ़ाईआ। मेरी आवण जावण खेल मुकी, मेरी सच प्यार नाल भर गई मुट्ठी, जगत विकार विच गई नहीं लुट्टी, आत्म परमात्म धार मूल नहीं टुट्टी, गंढुणहार गोपाल स्वामी गोबिन्द हो के आपणा रंग रंगाईआ। जेहड़ा रस देंदी रही दुध्धी, एसे कर के मात होई उग्घी, औध जगत वाली पुग्गी, निरगुण धार हो के उडी, आकाशां तों परे प्रकाश विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा मुका के वदी सुदी, हुक्म अंदर जीवण पख प्रतख रूप बदलाईआ।

५२१

२१

❋ ५ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ गुरदयाल सिँघ दे गृह पिंड जलालाबाद ज़िला अमृतसर ❋

सदी चौधवीं कहे मैं चार जुग दे ग्रन्थां वेख्या पत्रा पत्रा, अक्खरां हरफ़ां फोल फुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वेख्या शजरा, पुश्त दर पुश्त आपणा नैण उठाईआ। चार कुण्ट दह दिशा कोई ना मेटे ख़तरा, भय भउ ना कोए गवाईआ। हज़रत मुहम्मद होया दिसदा सत्तरा बहत्तरा, अवस्था आपणी रिहा बदलाईआ। उम्मत विच नूर दिसे ना कतरा, क़ातल होई लोकाईआ।

माया राणी घर घर करे नख़रा, ममता विच आपणा नैण मटकाईआ। मैं तक्कया पूरब दक्खणा, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। बिना परवरदिगार दीन दुनी किसे ना रखणा, रखक नज़र कोए ना आईआ। चार वरन अठारां बरन होया सक्खणा, वस्त अमोलक काया गोलक ना कोए टिकाईआ। मैनूं फिरदी फिरदी नूं याद आ गया पटना, पटने वाला वेखां मालक धुरदरगाहीआ। जिस ने शरअ ज़ंजीर कटणा, कटाकश धुर दा देणा लगाईआ। आपणी करनी तों मूल ना हटणा, सदी चौधवीं वेखे चाँईं चाँईंआ। जो खेले खेल आपणे वतना, बेवतनां डेरा देवे ढाहीआ। लहिणा जाण हक़ीक़त हक़ना, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। फिरे दुहाई मदीना मकना, काअबे रहे कुरलाईआ। नेत्र रोवे बूरा ककना, सांतक सति ना कोए वरताईआ। हुक्म मन्ने यक्क यक्कना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कां नैण उघाड़, लोचन अक्ख खुल्हाईआ। टिल्ले पर्बत वेखां पहाड़, चोटीआं उपर सोभा पाईआ। बेले जंगल वेखां उजाड़, डूँघी कंदर ध्यान लगाईआ। समुंद सागर वेखां आर पार, जल थल मईअल फोल फुलाईआ। बालू टिल्ले तक्कां छार, अगनी जगत अंगिआर रही तपाईआ। साचा मिले ना किसे मीत मुरार, मित्र प्यारा होए आप सहाईआ। नाता टुट्टण लग्गा मुहम्मदी चार यार, चौथा जुग आपणा खेल खिलाईआ। क़ुदरत दा क़ादर हो उज्यार, नूर नुराना डगमगाईआ। मैं हाज़र हो के वेखां विच दरबार, दरे दरबार सीस निवाईआ। सद तेरी ख़िदमतग़ार, ख़ादम हो के निउँ निउँ लागां पाईआ। सिफ्तां विच करां इज़हार, गुण महिमा विच वड्याईआ। सच दस्स सच्ची सरकार, साहिब सुल्तान दे समझाईआ। क्यों गुलज़ार सिँघ ने बन्हणी पुठ्ठी दस्तार, खब्बा सज्जा हथ्थ चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे पुठ्ठी पगड़ी सज्जी खब्बी, साजण साचे दयां जणाईआ। मुहब्बत दा नाता तोड़ के भज्जी, मुहम्मद छड्डया यार अलाहीआ। तेरा जलवा तक्क के नूर रब्बी, आलमीन दिता सीस झुकाईआ। हज़रत रोंदे वेखे नबी, रसूलां पई दुहाईआ। मेरी आह तेरे चरणां हेठां दब्बी, साह साह समझाईआ। जिथ्थे तेरी अगम्मी जोत जगी, नूरो नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साचा परदा देणा उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद होण लग्गा दस्त बरदार, दरे दरबार दुहाईआ। रोण लग्गा बरख़ुरदार, बरख़लाफ़ी विच कुरलाईआ। जिस ख़ुदा नूं समझया परवरदिगार, मुद्दतां तों साथी चलया आईआ। जिस दा करदा रिहा इज़हार, कलमयां विच वड्याईआ। ओह सहज सुभाउ शब्दी हुक्म विच कर के इन्कार, इनक़लाबी आपणा डंक वजाईआ। चौदां तबक ना कोए सहार, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ।

सदी चौधवीं कहे जिस वेले मुहम्मद चार यारां नूं पाई क़सम, क़िसम खुदा दी इक समझाईआ। ओस वेले पुठ्ठी पगड़ी दी कीती सी रसम, वणजारा गुलज़ार सिँघ जिस तों ख़रीद के चौहां दे सिर ते दिती बंधाईआ। नाल तागा रख्या सी पशम, एसे कर के पच्छिम नूं काअबे सारे सीस झुकाईआ। हुक्म दिता संदेसा दिता ओस खुदा दा मन्नो इस्म, जो आज़म नूर अलाहीआ। तत्तां वाला नहीं जिस्म, वजूद वंड ना कोए वंडाईआ। जलवा तक्को इक्को चश्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच फ़रमाना इक समझाईआ। सदी चौधवीं कहे जिस वेले चार यारां पगड़ी बद्धी पुठ्ठी, पिच्छे गंढु पवाईआ। चारे बहा के मुहम्मद आपणी चारे गुठीं, कोना गोशा वेख वखाईआ। चौहां दे मैहन्दी ला के पंजां पोटीं, लाल रंग दिता चढ़ाईआ। क़सम खाओ दीन विच लिआउणा जो रखे बोदी धोती, धुर दा हुक्म सुणाईआ। इस्लाम नूं बणाउणा आपणा गोती, दूजा प्रेम ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा दए दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद ने चौहां दे पिच्छे दिती आप गंढु, हौली हौली हत्थां नाल बंधाईआ। हत्थ मारदा गया उत्ते कंड, पुश्त पनाह टिकाईआ । तुहाडे नाल मैनूं पवे ठंड, मेरे नाल तुहाडी वज्जे वधाईआ। झगड़ा करना नाल जंग, शरअ विच दुहाईआ। चौदां सदीआं मेरी मँग, आसा एह वखाईआ। जिस वेले वेला वक्त जावे लँघ, आपणा पैंडा पन्ध मुकाईआ।
५२३ २१ सृष्टी दुनियां कायनात साचे कलमे तों होवे नंग, परदा सिर ना कोए रखाईआ। ओस वेले मेरा अमाम मेरे चौदां तबकां ५२३ २१
आवे लँघ, लम्मा चौड़ा वेखण कोए ना पाईआ। नज़र ना आवे किसे कोई टंग, बांह हत्थ ना कोए हिलाईआ। कर वखरा अनोखा ढंग, नूरो नूर करे रुशनाईआ। लेखा जाण सर्ब ब्रह्मण्ड, वरभण्ड फोल फुलाईआ । परदा लाह के जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज दए समझाईआ। दूई द्वैती ढाहवे कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। शरअ शरीअत मेट के कूड़ पखण्ड, आत्म परमात्म मेला लए मिलाईआ। सच दुआर दा दे के अनन्द, रस इक्को इक चखाईआ। शस्त्र नाल करे ना जंग, हुक्मे अंदर करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर वज्जे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे चार यारां पुठ्ठे बद्धे पटके, आपणा वेस बदलाईआ। अग्गों पिछांह कोई ना परते, हुक्म सुणना चाँईं चाँईंआ। मुहम्मद किहा मैनूं कुछ खेल दिसदा विच सरसे, दूर दुराडा दयां जणाईआ। उस तों बाद परवरदिगार परते, पारब्रह्म नूर अलाहीआ। करे खेल उपर धरते, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जो आपणे नाम दे दिते खरचे, अन्तिम आपणे लेखे पाईआ। चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी वाले वेखे परचे, सच सवाल कवण हल कराईआ। झगड़ा मुकाए चूंकि चुनाचे अगरचे, अगर मगर रहिण कोए ना पाईआ। चार जुग दी

कीती करनी सब दी वेखे पढ़ के, बिन अक्खरां निरअक्खर धार विच्चों समझाईआ। दीन मज़हबां दी चोटी वेखे चढ़ के, मंज़ल बमंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। उन्हां खोजे जो नहावण उठ के तड़के, बाहरों धोते अंदरों काम चेष्टा सताईआ। लेखे जाणे चोटी जड़् दे, अस्थूल कारण परदा दए चुकाईआ। उन्हां वेखे जो जीवत होए मर के, मर जीवत रूप बदलाईआ। उन्हां वेखे जो भाणा आए जर के, हुक्मे अंदर सीस निवाईआ । उन्हां वेखे जो सतिगुर सरनाई आए तर के, कूड़ कुड़िआरा डेरा ढाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपणी किरपा कर के, हरि करता होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे जाणे आपणे घर के, गृह गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं जगत विचार रुस्सी, रुस्तम मुहम्मद आई तजाईआ । मेरी मेंढी वेखो खुस्सी, सीस पट्टी ना कोए गुंदाईआ। कन्नां तों हो के बुच्ची, भज्जी वाहो दाहीआ। मैनूं उम्मत वाल्यां कीता लुच्ची, कलमा हक़ ना कोए गाईआ। मैथों कूड़ दी गंढु जावे ना चुक्की, सुट्ट के भज्जी वाहो दाहीआ। मैनूं कहिंदे एह कमज़ातन कुत्ती, जो घर घर करे लड़ाईआ। मेरी जड़् मुल्लां शेख़ां मुसायकां पुट्टी, जो बग़ल क़ुरान रहे रखाईआ। मैं कटके आई बुत्ती, डूम मरासण बण के झट लँघाईआ। मेरी अन्त मुहब्बत वाली धार निखुट्टी, सच प्यार ना कोए वधाईआ। मैं कूक सुणावां उच्ची, बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद ने मीटीआं दोवें मुट्ठी, घुट के मस्तक उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे नाम दी सच दुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुणया अगम्म कड़ाका, काहड़ काहड़ दिता जणाईआ । सतिगुर शब्द बणया लड़ाका, घर घर आपणा बल वखाईआ। चौदां तबकां तोड़ के ताका, तक़दीर सब दी रिहा बदलाईआ। दो जहानां वेख के ख़ाका, इशारे धुर दे रिहा समझाईआ। रहिण देणा कोई नहीं आका, अकल बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। साफ़ रहे कोई ना पाका, पतित रूप होवे लोकाईआ। क़ीमत रहे किसे ना धाता, धर्म दी धार देणी बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे कोई ना दाता, सब दा पैंडा देणा चुकाईआ । चार जुग दी रहे कोई ना गाथा, रसना जिह्वा ना कोए पढ़ाईआ। जगत दुआरे टेके कोई ना माथा, मस्तक सीस ना कोए झुकाईआ। कूड़ा रहे ना पिता माता, पूत सपूत ना कोए सहाईआ। कलयुग मेटणी अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। आपे बण के जोती जाता, जागरत जोत वेख वखाईआ। जन भगतां बण के धुर दा राखा, रक्ख्या करां थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर उठदी हुक, हू हू विच सुणाईआ। मैं वेखां ओह कुख, जिथों जननी भगत जन जाईआ। उन्हां नाल वंडावां दु:ख, दरदन हो के दर्द लवां कमाईआ। उजल करां मुख, प्रेम प्रीती नाल

धुआईआ। सहजे लवां पुच्छ, जन भगतो केहड़ा तुहाडा पिता माईआ। जो कलयुग अन्तिम रिहा तुठ, मेहर नज़र इक उठाईआ। हरिजन कहिण कमलिए साथों ना पुच्छ, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। जिस दे कोल सब कुछ, ओहो साडा आदि जुगादी पिता माईआ। जो दूर दुराडा नेड़े बैठा ढुक, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआरा कढ्ढे कुट, काया कुटिआ कर सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर आई विचारी, विच्चर के दयां सुणाईआ। गुलज़ार सिँघ ने बण के आउणा मदारी, बग़लीआं गल विच दो लटकाईआ। हथ्थ विच कुत्ता लिआउणा शिकारी, पतला लम्मा सोहणा नज़री आईआ। आपणी पुठ्ठी चाढ़नी दाढ़ी, रुख़ वालां वाला बदलाईआ। इक हथ्थ विच होवे कुहाढ़ी, हथ्था छोटा जेहा पुआईआ। निक्की जिही होवे पटारी, पत्ते खजूर नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे साची भैण दा पा लै कुड़ता, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। छब्बी पोह नूं आवीं तुरदा, क़दम क़दम पन्ध मुकाईआ। गीत गाउँदा आवीं सुर दा, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। तेरा विछोड़ा अनन्द पुर दा, अन्तिम सहजे पूर कराईआ। जिस वेले गोबिन्द घोड़े उत्ते तुरदा, शब्द शब्दी खेल खिलाईआ। तूं मदारी हुंदा सैं ओस सच्चे सतिगुर दा, औंदयां जांन्दयां आपणी खेल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेला मेले चाँईं चाँईंआ। सदी चौधवीं कहे मदारी दा केहड़ा होवे रूप, तन बस्तर कवण छुहाईआ। किस वेले करे कूच, चले बण के राहीआ। हिरदे विच रहे ना दूज, लज्जया लोक लाज गवाईआ। नाले कहे मैं प्रभू दा दूत, सतिगुर शब्द नाल कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी पुराणी सध्धर, सदीआं दी दयां जणाईआ। गुलज़ार सिँघ दा पीले रंग दा चोला होवे खद्दर, गिटयां ताईं लमकाईआ। दोवें भैणां मिल के सोहँ उस दे उपर कढ्ढण, छाती उत्ते सुहाईआ। एह आत्मा परमात्मा दा सगन, स्त्री पुरुष वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतो तुहाडे दीपक लग्गे जगण, जगत जुग होवे रुशनाईआ। मस्तक लग्गण लग्गा मजन, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। पूरब जन्म दा लेखे लाए भजन, बन्दगी विच बन्दे लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे नाम दी चाढ़ के रंगण, अंगण आपणा इक सुहाईआ।

✻ ६ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ ऊधम सिँघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं सोचदी रही सोच, सुच संजम विच आपणा आप टिकाईआ। सच दुआरे गई पहुंच, दरगाह साची सीस निवाईआ। हुक्म सुणया निर्मल जोत, परवरदिगार दिता अल्लाईआ। मसीह दी आसा पंज बण के आवण पोप, करास यसू वाला लटकाईआ। सदा गावण साची ढोक, हू गॉड गॉड हू नाअरा लाईआ। चार रूप धारन परोहत, जञ्ञू बोदी तिलकां नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ करनी खेल अदुती, दुतिया भाउ मिटाईआ। पंज मल के आउण भबूती, गिलती गल विच बंधाईआ। पंज बस्तर पहनण सूती, खद्दर पुराणा सोभा पाईआ। पंज पी के आवण बूटी, भंगीआं वाला रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। सदी चौधवीं कहे पंजां बद्धे होण दमाले, सीस उत्ते सुहाईआ। पंजां मस्तक कीते होण काले, काली धार मिले वड्याईआ। पंजां हत्थ विच होवे ढाले, गोबिन्द रंग रंगाईआ। पंजां हत्थ विच होवण फाले, तिक्खी मुक्खी नाल जणाईआ। पंज बणे होण गवाले, दोहणे हत्थां विच उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणा भेव चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे इक्की होवण सोहणे जवान, मुच्छ फुट्ट नज़री आईआ। हत्थां विच होवण तीर कमान, राम लछमन वेख वखाईआ। अग्गे होवे हनुवन्त बलवान, शिव सिँघ जुल्ला पिट्ठ उत्ते टिकाईआ। पंज पिच्छे होण पठान, तम्बे ख़ानां वाले सुहाईआ। पंज गुरमुख लैणे छाण, लम्मे दाढ़े जो वधाईआ। पंज वेखणे जो ताज़ा सिर मुनाण, सीस साफ़ सुथरा बणाईआ। पंज जनेऊ लटकावण उपर कान, धोती अग्गों पिच्छे लैण बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार सच्ची वड्याईआ। पंजां हत्थ होवे त्रसूल, शंकर सीस निवाईआ। पंज उडाउँदे आवण धूल, पैरां नाल हिलाईआ। पंज बरसौंदे आवण फूल, बरखा सोहणी लाईआ। पंज गुरमुख होण माअक़ूल, सोहँ मस्तक विच लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां खेल अनोखा, अनोखी धार बणाईआ। पंजां सिखां दे कोल गुरु ग्रन्थ दा होवे पोथा, चवर नरायण सिँघ झुलाईआ। पंजां दे कोल उज़ू वाला होवे लोटा, खब्बे हत्थ विच सोभा पाईआ। पंजां कोल इक इक्क रुपईआ होवे खोटा, जिस दी क़ीमत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे पंज वजाऔंदे आवण संख, धुन नाद शनवाईआ। पंज हिलाउँदे आउण पंख, मोर चकोर समझाईआ। पंज

सुणाउँदे आउण छंत, सोहँ ढोला गाईआ। पंज कढ्ढदे आउण मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पंज वेखण चढ़दी सिम्मत, आपणा सिर भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर देवे माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं कोई ना किहओ बुरी, बुरिआं दयां खपाईआ। पंजां दे हथ्थ विच होवे इक इक्क छुरी, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। मैं रहिणा नहीं निगुरी, साहिब सीस दिता निवाईआ। मैं जोबनवन्ती बणना ओह कुड़ी, जिस दा रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। मैं होणा नहीं बुढ़ी, बुढ़ापा वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी होए सहाईआ। सदी चौधवीं कहे इक दे हथ्थ विच होवे क़ुरान, माला मणके गल विच पाईआ। भरया होवे नाल गुमान, फ़तवा शरअ वाला समझाईआ। नाल जगदा होवे शमादान, चार मुखीआ गुरमुख सोहणा हथ्थ उठाईआ। नाल पहरा होवे किरपान, दो धारा नज़री आईआ। नाल फड़िआ होवे इक फ़ारम जो करन वाला चालान, कोरट वाला सोभा पाईआ। इक लिखण वाला होवे क़लमदान, शाही लाल नीली नाल वड्याईआ। इक बणया होवे प्रधान, टोपी गांधी वाली टिकाईआ। फेर सुणना हुक्म श्री भगवान, की संदेसा दए जणाईआ। सब दी मिटण लग्गी शान, शमशान भूमी दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्टी दा इष्ट वाला वखाए मैदान, मेहरवान आपणी कार कमाईआ।

५२७
२१

६ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ बलवन्त सिँघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर

सदी चौधवीं कहे तेरा नाम दुहाई, तोबा कर सुणाईआ। पंज बणे होण कसाई, छुरीआ हथ्थां विच लमकाईआ। पंज बणे होण शुदाई, वाल खुल्ले नज़री आईआ। पंज गाउँदे होण तेरा नाम खुदाई, खुद मालक तेरी बेपरवाहीआ। पंजां गल विच पाई होवे फाही, रस्सीआं नाल बंधाईआ। पंज भुल्ले होण राही, अग्गड़ पिच्छड़ भज्जण वाहो दाहीआ। पंज देंदे आउण दुहाई, प्रभ मिल्या धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे माईओ बीबीओ जागो, जगह जगह सुणाईआ। इक्की कमरकस्सा कसणा वांग भागो, किरपानां मोढ्यां उत्ते टिकाईआ। मुखों कहिणा लज्जया रहे ना सतिगुर बाझों, गोबिन्द बिना ना कोए सहाईआ। आपणा आप आपे साधो, साधां दी लोड़ रहे ना राईआ। ऊधम सिँघ ने बणना बन्दा वैरागी माधो, बन्दगी विच जणाईआ। पंज बणने बंस जादो, जादव रूप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ।

सदी चौधवीं कहे पंजां दा वेस होवे तुरकी, बासकाट कुड़तिआं उत्तों पाईआ। पंजां ने खाधी होवे घिओ खण्ड दी बुरकी, रस मिट्ठे नाल सुहाईआ। पंजां ने खेल करनी वांग दुरगी, दुर्गा अष्टभुज बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे इक्की बीबीआं दे सिर ते होवे टोपी, गोल चारों तरफ़ रखाईआ। सिर ते पहनाए रविदास चमारा मोची, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। पंज पंज नाल लग्गे होण मोती, रंग पीले विच वड्याईआ। इक कन्या होवे विच छोटी, दविंदर कौर दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे इक्कीआं दे खुल्ल्हे होवण केस, केसाधारी वेख वखाईआ। एह बिवहार गुरु दस दस्मेश, जो अन्त नंदेड़ गया दृढ़ाईआ। जिस वेले चले ना कोई किसे दी पेश, पेशीनगोई समझ किसे ना आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला करे अवल्लड़ा वेस, अनेका आपणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। इक्की बीबीआं दे सोहँ लिख्या होवे उपर छाती, पिस्तान दे अंदर नज़री आईआ। जिन्हां ने मालक मन्नणा इक्को कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। इक्को उमर ते इक्को होवे ज़ाती, इक्को रंग रंगाईआ। इक्को सतिगुर इक्को बणे साथी, सगला जोड़ जुड़ाईआ। गोबिन्द दी पूरी करे आखी, जो अन्त नंदेड़ गया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सर्ब कला समराथी, समरथ अकथ महिमा आपणी आप जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी आसा इक होर, हौली जेही सुणाईआ। मुहम्मद ने इक दिन सवा पहर हथ्थ विच फड़ी सी चकोर, बग़ल विच टिकाईआ। फेर वेख्या वल मोर, निगाह नैण उठाईआ। दोहां दी वेख के तोर, तुरत आपणी आस वधाईआ। मेरे खुदा नूं जे इन्हां दी पै जाए लोड़, झट भेंटा दयां चढ़ाईआ। अग्गों हुक्म आइआ मोड़, हरि करता आप जणाईआ। हज़रता, तेरा केहड़ा ज़ोर, जोरू ज़र पिच्छे तेरी उम्मत होए हल्काईआ। मैं हुण होर ते फेर कोई होर, मेरी समझ गुर अवतार पैगम्बर किसे ना आईआ। मैं आदि दा जुगादि दा जुग चौकड़ी दा चोर, चोरी चोरी आपणा खेल वखाईआ। मैं की करने चकोर ते मोर, मेरे गुरमुख तेरे नालों चंगे सोभा पाईआ। जिन्हां दी मेरे नाल बझणी डोर, तन्द सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा नव नवां नकोर, बिरध बढ़ापे विच कदे ना आईआ।

५२८
२१

✻ ६ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ प्रीतम कौर दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✻

सदी चौधवीं कहे मेरे मालक दी हक़ तौफीक़, दातार धुरदरगाहीआ। चौदां मणक्यां वाली माला होवे हकीक, हक़ीक़त दए जणाईआ। टोपन राम लिआवे ख़रीद, हुक्म मन्ने चाँईं चाँईंआ। चार यारां दी आसा मनसा पूरी होए उम्मीद, अली नाल गवाहीआ। झगड़ा मुक जाए मुर्शद मुरीद, पीर मुरीदां आपणा रंग रंगाईआ। लेखा दस्से क़ुरान मजीद, खुलासा अक्खरां वाला जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचे लए अंगड़ाईआ। सदी चौधवीं कहे साहिब दे लक्क नूं होवे हरी पेटी, पटने वाला सेव कमाईआ। ख़रीद के लिआवे जोगिंदर कौर बेटी, अमरजीत कौर गुड़गावां नाल मिलाईआ। इक खंज़र होवे देसी, दर्शन सिँघ दिल्लीउँ लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची सोभा पाईआ। सदी चौधवीं कहे वेखां खेल अगम्मी अमाम, खुशीआं विच सीस निवाईआ। जिस दा हरया लबास होवे तमाम, महदी दी महिमा बेपरवाहीआ। नाल नफ़र होवे गुलाम, कपूर सिँघ सिँघ समझाईआ। नाल पढ़दा होवे कलाम, ढोला गोबिन्द अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर देवे माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे हरे उत्ते होवण नौ सतारे, लाल नीला सोभा पाईआ। अली अलाह नूं इशारे, अलाह अली गया जणाईआ। जिस वेले उतरां आपणी धारे, धरती ख़ाक सोभा पाईआ। चारों कुण्ट होवे रैण अन्धेर ग़ुबारे, चन्द नूर ना कोए चमकाईआ। कलमा भुल्ले विच संसारे, सिहरफ़ी राग ना कोए अलाईआ। करां खेल अपारे, अपरम्पर भेव चुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां इक होर प्रीत, प्रीतम नाल वड्याईआ। मेरे लई बणाउणा तवीत, इंच चारों कुट वखाईआ। सेवा करे गुरदर्शन ते मनजीत, मनसा पिछली वेख वखाईआ। कश्मीरो तागा काला लिआवे ठीक, इंच सताई नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां पिछली धार, नैण अक्ख उठाईआ। लहिणा क़र्ज उधार, पूरब चलया आईआ। खेल सच्ची सरकार, समझ ना कोए समझाईआ । जो आया आपणी वार, वारस हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे सुरजीत कौर ने साढे तिन्न इंच लिआउणा फ़ीता, काले रंग विच नजरी आईआ। लहिणा चुकाउणा पूरब राम सीता, बाल्मीक दए गवाहीआ। जेहड़ा अग्गे पिच्छे जूड़ा कीता, सेवा धुर दी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर वज्जे हलूणा, सहज सहज हिलाईआ। तूं बहुता नहीं कूणा, कथा अवर ना कोए वधाईआ । हरिजन

रहे ना कोए कर्म विहूणा, भाग भाग देणा समझाईआ। भगत दुआरे नौ दिन पहलों लाउणा चूना, चुन्नी चिट्टी विच्चों साफ़ कराईआ। उत्ते गोबिन्द दा दस्सां उँगलीआं विच्चों कढुके लाउणा खूना, चारे कूटां रंग रंगाईआ। जन भगतां माण बख्शणा दूणा, दुनियां दे देवत देणे बणाईआ। कोई सिफ्त कर सके ना मूँह ना, रसना मुख ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि सच दुआरा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे याद नहीं कीती मौली अट्टी, अटकन दयां गुवाईआ। जिस नाल प्रभ दी चलदी हट्टी, जुग जुग आपणी वंड वंडाईआ। पैगम्बरां नूं एहो मिलदी खट्टी, सुअम्बरां विच सीस निवाईआ। पढ़ के बिन अक्खरां वाली पट्टी, लोकमात देणा दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं मैं भरनी नहीं किसे दी चट्टी, पिछला झगड़ा देणा चुकाईआ। मैं बण के सति सरूप दी जट्टी, पुरख अकाल लैणा मनाईआ। जगणा नहीं बण के मोमबत्ती, नूर ज़हूर करां रुशनाईआ। मैं होणा नहीं सती, अगनी अग्ग जलाईआ। मैं समझणा नहीं पती, गुर अवतार पैगम्बर जो मज़हबां वंड वंडाईआ। मैं फिरना सदा नठ्ठी, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे भगतां दी संगत होवे इक्ठी, निउँ निउँ लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आपणी कर दे रती, रतन अमोलक हीरे लै बणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बणना जगत शौकीन, छोकरी बांकी सोहणा रूप वटाईआ। जिस नाल मेरे प्रभ दी ना होए तौहीन, नाम नेत्र नैण कज्जल लैणा छुहाईआ। जिस नाल मेरा मेरे विच ना होए ग़मगीन, सो सोहँ ढोला लैणा गाईआ। मैं अर्शां दा मालक तकणा उत्ते ज़मीन, जो ज़र्रे ज़र्रे विच समाईआ। नज़रे नूर तक्कणा सीन, साख्यात सोभा पाईआ। मैं बणना नहीं जल मीन, फड़ जल विच्चों कोई बाहर कढ्ढाईआ। मैं वेखणी धार महीन, जो बारीक तारीक दए गवाईआ। सजदयां विच हो मस्कीन, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेरा लहिणा मेरा देण प्राचीन, चिरां दा चलया आईआ। मैं शहिनशाही धार सदा हुसीन, जोबनवन्ती सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद रखे आपणे अधीन, आहला अदना इक्को रंग वखाईआ।

❋ ६ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ गुरमुख सिँघ दे गृह पिंड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ❋

सदी चौधवीं कहे गुरमुख सिँघ होवे अस्वार, सांढणी उत्ते सोभा पाईआ। जोड़ा होवे तिल्लेदार, नवां नकोर नज़री आईआ। सिर ते तुरले वाली होवे दस्तार, रंग नीला सोभा पाईआ। हथ्थ विच फड़ी होवे कटार, बिना म्यान तों चमक

विच चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेख बणाईआ। गुरमुख चढ़े उत्ते ऊँठ, ओटा ढईआ रंग रंगाईआ। गेड़ा लिआवे चार कूट, संगत इरद गिर्द भुआईआ। नाल कच्चे तन्द दा रखे सूत, धागा सोहणा सोभा पाईआ। अग्गे बिठाया होवे सुरजीत सिँघ सच सपूत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। अजमेर सिँघ फड़ी होवे मुहार, सदी चौधवीं घोली वारी आपा घोल घुमाईआ। इस दी टेडी होवे दस्तार, खब्बा कन्न पड़दे विच छुपाईआ। हत्थ विच फड़ी होवे सतार, किंग निक्की जिही वड्याईआ। गावे मस्ती वाली धार, तूंही तूंही राग अलाईआ। पाल सिँघ लाल पगड़ी बन्न टेडी रूप बणे घुम्यार, पेच विंगे टेडे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म बदलाईआ। सदी चौधवीं कहे पंज बणे होण राकश, दुर्गा नाल दुहाईआ। पंज लाउँदे होण आतश, अनार फुहारिआं वाले चलाईआ। पंज करदे आउण साज़श, झगड़ा इक दूजे नाल बणाईआ। पंज चुक्की आउण बालक, छोटे नन्हे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे इक बणया होवे गंगू, ब्राह्मण रूप वटाईआ। इक बणया होवे अन्धू, नैणहीण शुदाईआ। इक पाउँदा आवे डंडू, रौला वाहो दाहीआ। इक बण के दीनां बंधू, बंधन आपणा आप पवाईआ। इन्हां पिच्छे होवे पंजां प्यारयां दा इक पंजू, पंजे लाल रंग रंगाईआ। सिर तों नंगा होवे तेजा सिँघ गंजू, गिरधारा सिँघ सिर तेल नाल चमकाईआ। बुढड़ा नाल होवे नंदू, भज्जे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दी साची खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे रणजीत कौर कोल होवे ठंडा पाणी, सवा सेर वंड वंडाईआ। इक्की बीबीआं पढ़न धुर दी बाणी, शब्द धुर दा नाद सुणाईआ। इन्हां विच इक होवे काणी, दोए लोचन रूप ना कोए चमकाईआ। इक होवे तरखाणी, ज़ात बाडी वंड वंडाईआ। जिस दे हत्थ होवे मधाणी, सिरी नवीं नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे नाल लैणी तेज भान वाली गीता, पुराण भविख्त लैणा उठाईआ। अञ्जील उत्ते ला के काला फीता, बग़ल लैणी छुपाईआ। प्रभ ने वेखणा सब दा कीता, की अक्खर देण गवाहीआ। परदा लौहणा सत्त दीपां, लोआं खोज खुजाईआ। पंजां सिखां चढ़ के उपर जीपा, तिन्न चक्र देणे लगाईआ। जिन्हां विच इक होवे ज़रूर दीपा, दलीप सिँघ नाउँ वड्याईआ। ओह खड़काउँदा जाए पीपा, मुखों कहे वेखो धुर दा माहीआ। इक बणया होवे सीता, इक राम रूप जणाईआ। इक खेल करे कृष्ण अनडीठा, इक राधा रंग रंगाईआ। इक अष्टभुज दी लै सीटा, हथ्थां बाहवां जोड़ जुड़ाईआ। इक मँगदा होवे भीखा, कोई भिच्छया नाम झोली देवे पाईआ। इक तत्ती कर के हत्थ विच

सीखा, मोढुयां उत्ते टिकाईआ। इक काला मुख कर के मारे चीकां, हाल हाल दुहाईआ। इक जोड़ा होवे पुत्र धी का, प्रेम प्रीती विच समझाईआ। इक रोगी होवे रींह का, जिस दा हड्ड हड्ड दर्द नाल सताईआ। इक हिन्दसा लिख्या होवे वीह का, जो गुरसिख सब नूं दए जणाईआ। इक दाणा होवे बी का, जिस बीज दी समझ ना कोए समझाईआ। इक हिस्सा होणा हीह का, चूल पावे विच्चों कढ्ढाईआ। इक डब्बा होणा सवा पा घी का, घृत नानक राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां धार नीली, नीले वाला सोभा पाईआ। नौआं बीबीआं दे नक्क विच होवे तीली, नग सूहे नाल वड्याईआ। इक इक्क हथ्थ विच होवे कीली, नौ नौ इंच वड्डी छोटी ना कोए समझाईआ। उनृां उत्ते चुन्नी होवे गीली, सर्दी ठंड ना कोए डराईआ। जिस दी धार होवे पीली, रंग धुर दा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहर नज़र इक उठाईआ।

६ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ तरिप्त कौर दे गृह पिंड वैरोवाल ज़िला अमृतसर

सदी चौधवीं कहे बाल्मीक कुटिया वेख ठीक, ठाकर हो के दया कमाईआ। त्रेता द्वापर कलयुग तेरी करदी रही उडीक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा ध्यान लगाईआ। आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, तृष्ना तृखा दे बुझाईआ। धुर दे हुक्म नाल कर तस्दीक, सतिगुर शब्द तेरी ओट तकाईआ। तूं साहिब सुल्तान सचखण्ड दुआर सदा वसनीक, दूर नेड़े सोभा पाईआ। भगत भगवान दे प्रीत, प्रीतम तेरी वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावां गीत, गहर गम्भीर ढोला धुरदरगाहीआ। काया माटी कर ठांडी सीत, अगनी ततव तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे भगत वेख अस्थान, भूमिका बैठी राह तकाईआ। परवरदिगार वड मेहरवान, महबूब तेरी इक सरनाईआ। योद्धे सूरबीर नौजवान, नर नरायण पर्दा दे उठाईआ। सच दुआरे बख्श माण, मेहर मुहब्बत विच आपणा रंग रंगाईआ। सति धर्म प्रगटा निशान, निशाने कूड़े दे चुकाईआ। तैनूं झुकदे ज़िमीं असमान, दो जहानां वज्जे वधाईआ। हुक्म संदेसा दे फ़रमान, फ़ुरना मन रहे ना राईआ। शरअ कूड़ी मेट शैतान, शरीअत विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। तेरा हक़ीक़ी इक ईमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे पुरख अकाल आपणी वेख धरनी धरत, धवल धौल बैठी आस लगाईआ।

५३२
२१

निरगुण धार हो के आवीं परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। बाल्मीक दी पूरी कर दे शर्त, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धेर गरद, नूरी जोत कर रुशनाईआ। तेरा खेल सदा असचरज, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, दर ठांडे सीस निवाईआ। ग़रीब निमाणयां नाल वंड दरद, दीन दयाल हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वाहवा वजदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे एह भूमिका वेखो भूमी, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। तूं गहर गम्भीर दाता गुणी, गुणवन्त तेरी सरनाईआ। साचे नाम दी बख्श धुनी, आत्मक राग दे उपजाईआ। पुकार तेरे दुआरे जावे सुणी, अनबोलत आपणा परदा देणा उठाईआ। सारे छड्ड गए ऋषी मुनी, रखीशर नज़र कोए ना आईआ। जाप जगत दी रिहा बुल्लीं, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा सीस वेख झुकदा, हरि करते मेहरवान। क्यों नहीं मात आ के पुछदा, जीव जंत होए हैरान। नाम दस्स इक्को आपणी तुक दा, लेखा मुके आवण जाण। नाता जोड़ मुहब्बत सुख दा, कूड़ी क्रिया मेट शैतान। घर सुहा पिता पुत दा, आत्म परमात्म दे ज्ञान। सदी चौधवीं क्यों फिरें लुकदा, चौदां तबक होए हैरान। कौल इक़रार पूरा कर ईसा मूसा मुहम्मद मुख दा, तीस बत्तीसा की हुक्म देवे क़ुरान। क्यों नहीं आपणी धारों उठदा, सति स्वामी नौजवान। झगड़ा मुका दे कलयुग दा, सतिजुग साचा कर परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा वेख मानव मानुख दा, पारब्रह्म प्रभ निरगुण मार ध्यान। सदी चौधवीं कहे एह भूमिका वेख सोहणी, धरनी धरत धवल वड्याईआ। तेरी सूरत कोई ना जाणे मोहणी, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। ऐं दिसदा दुनी दीन सारी रोणी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तेरे शब्द कसाई कोहणी, शरअ छुरी जगत वाली झटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की होया जे द्वापर अठारां लेख लेखा होया अकशूणी, अठाई लख इक इक्क वंड वंडाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दे कन्त दीन दुनियां होई दूणी, हिंसिआं विच अंकड़यां विच हिसाब ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे दर तेरा ठंडा, परवरदिगार नज़री आईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआरा मेट दे कन्ढा, शौह दरया विच रुड़्हाईआ। साचे नाम दी बख्श सुगंधा, काया मन्दिर अंदर महक महकाईआ। साची मंज़ल चढ़ा डंडा, अद्धविच्चकार ना कोए अटकाईआ। निज आत्म दे अनन्दा, परमानंद विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म होवे छन्दा, अंदर बाहर वजदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा अन्त

अखीरी कन्ढा, कन्ढी वाले वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे रंग रंगाईआ। पुरख अकाल कहे सदी चौधवीं ना मारीं धाह, धर्म धार समझाईआ। प्रभ मालक बेपरवाह, परवरदिगार रूप अलाहीआ। खुदी तक्बर तों बाहर रहे खुदा, खुद मालक वड वड्याईआ। आत्म होण ना देवे जुदा, जो परमात्म ढोला गाईआ। हर हिरदे सुणदा रहे सदा, नाद धुन शनवाईआ। सच संदेसा दए जणा, कलमयां बाहर पढ़ाईआ। चार कुण्ट डंका दए वजा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण दए हिलाईआ। खेल खेल अगम्म नवां, चार कुण्ट परदा लाहीआ। सदी चौधवीं ज़रूर बदले तेरा समां, समाप्त होए लोकाईआ। नेत्र रोंदी फिरे हव्वा अम्मां, बावा आदम रिहा कुरलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नीर वहावण छमछमा, छहबर रहे वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां होया ग़मा, ग़मख़ार की की खेल कराईआ। सब नूं दीनां मज़हबां दी छड्डणी पैणी तमां, लालच नज़र कोए ना आईआ। धुर संदेसा इक्को कहां, जिस दा भेत ना कोए खुल्हाईआ। बाल्मीक दा थाउँ फेर बणना नवां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। बाल्मीक कहे मैं तेरा रखीशर रिषी, अन्तर ध्यान लगाईआ। जिस ने तक़दीर तदबीर बेनज़ीर लिखी, बिन लकीर फ़कीर समझाईआ। ज़रा खोल्ह के वेख राम वशिष्ट वाली चिठ्ठी, जिस दे हरफ़ ना कोए वंड वंडाईआ। अक्खरां विच किसे ना डिठ्ठी, नेत्र लोचन नज़र कोए ना पाईआ। ना कोई सिहारी बिन्दी टिप्पी, औंकड़ दुलैंकड़ लांव ना कोए वखाईआ। ना कोई वड्डी ना कोई निक्की, रूप रही बदलाईआ। जां वेखां तेरे सतिगुर प्रेम प्यार दी सिखी, जिस विच सिख्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माण देवे एकँकारा इक्की, इक इकल्ला दया कमाईआ। बाल्मीक तेरी सुहावे मात झुग्गी, झगड़ा मिटे लोकाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं औध पुग्गी, ख़ाक दर ख़ाक होए लोकाईआ। साचा राह किसे कोए ना सुझी, बुद्धी अकल ना कोए चतुराईआ। पुरख अकाला रमज़ लगावे गुज्झी, बिन सैनत अक्ख खुल्हाईआ। धार रहिण ना देवे दूजी, दुवैत परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दरगाह साची इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणा खेल अपार, अपरम्पर स्वामी दयां जणाईआ। मैं तकणे तेई अवतार, जो तेरी जोत विच समाईआ। मैं पैगम्बरां वेखणा नूर उज्यार, ज़हूर देणा चमकाईआ। मैं गुरूआं तकणा अखाड़, जो आपणी धार वखाईआ। मैं रंग वेखणा जो दीसे एसे हाढ़, हाढ़ा कढ्ढके रही सुणाईआ। तेरे हुक्म दा लग्गे अखाड़, ब्रह्मण्ड खण्ड देणा नचाईआ। निगाह मारनी टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़, समुंद सागर डूँघी कंदर फोल फुलाईआ। तेरा नाउँ इक निरँकार, निरवैर तेरी

सरनाईआ। मैं जुग जुग फिर फिर गई हार, थक्की मांदी दयां दुहाईआ। चार कुण्ट दिसे ना कोए गुलज़ार, गुलशन महक ना कोए महकाईआ। मनुषां अंदर कूड़ी क्रिया ख़िज़ां दी आई बहार, पत्त टहिणी रही कुमलाईआ। पुरख अकाले तेरा करदी रही इंतज़ार, सदी चौधवीं अक्ख उठाईआ। आ मिल मेरे धुरदरगाही यार, तेरी मुहब्बत विच दुहाईआ। मैं तेरी ख़िदमतगार, दर ठांडे सेव कमाईआ। ग़फ्लत विच्चों कर बेदार, निंदरा आलस दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हउँ मांगत ढहि पई सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे नबी उल ज़वा, ज़ईके ज़मू जन्नते जलाल सोभा पाईआ। तैनूं वलीआं किहा ख़ुदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बण गई तेरी मँगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। चार जुगां विच्चों मैनूं तेरे नाम दी लभ्भी कोई ना पंगती, वरके वरके दिते उलटाईआ। मैं पिच्छे रही संगदी, नेत्र नैण ना अक्ख उठाईआ। जिस वेले मैं खेल तक्की भगत भगवान दे संग दी, निरगुण सरगुण वजदी वेखी वधाईआ। मेरी मंज़ल मुक गई पिछले पन्ध दी, अग्गा नेड़े नज़री आईआ। कुछ धार होणी मिसल मशहूर तेरे जंग दी, जगह जगह दुहाईआ। धार वेख ओस दुलदुल तंग दी, अली अल्ला हू कहि के रिहा सुणाईआ। निशानी मिटणी तारा चन्द दी, तेरा नूर इक्को जोत रुशनाईआ। की हालत होणी वरभण्ड दी, नौ खण्ड दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, धर्म दुआरे तेरा राह तकाईआ। धर्म दुआरे तक्कां राह, हरि रहिबर वेख वखाईआ। किरपा कर मेरे शहिनशाह, शाह पातशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीन दुनी दा झगड़ा दे मुका, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। चार वरन अठारां बरन दस्स इक रज़ा, रहमत हक़ दे समझाईआ। ख़ालक खलक मख़लूक जीवण दे नवां, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। माया ममता रहे ना तमां, तामस तृष्ना देणी गवाईआ। घर घर अंदर परवरदिगार जगा शमां, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सच भण्डारा दे आपणा धना, नाम ख़ज़ाना झोली दे टिकाईआ। सतिजुग साचा होवे रवां, कलयुग कूड़ी क्रिया बैठे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, रहमत धुर दी आप कमाईआ। सदी चौधवीं उठ वेख प्यारी नन्ही, बिन नैणां दयां जणाईआ। जो गंढु दे के रखी आपणी कन्नी, मुहम्मद वाले हथ्थ छुहाईआ। उस नूं खोलू दे बच्ची चन्नी, तारा चन्द दए दुहाईआ। तेरा रिहा कोई ना तनी, साचा संग ना कोए बणाईआ। तूं चौदां तबकां फिरी भन्नी, भज्जी वाहो दाहीआ। उम्मत वेखी अन्नी, नैण अक्ख ना कोए रुशनाईआ। सब नूं रोटी मिले कोई ना खंनी, रोज़यां वाला दए दुहाईआ। जिस ने हुक्मे अंदर घल्ली, सुनेहड़ा इक

समझाईआ। उस नूं सीस झुकाउँदा अली, मुहम्मद चरण धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सब नूं देणी पैणी बली, बलीवान वेख वखाईआ। तूं जगत वासना विच फली, फलीभूत दिता कराईआ। अन्तिम जाणा दली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हउँ निउँ निउँ लागां पाईआ। सदी चौधवीं सुण ला बात अगम्मी एक, एकँकार रिहा जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां बख़्शां इक्को टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। दीन मज़हब तों सब नूं कर बिबेक, नाता जगत वाला छुडाईआ। सचखण्ड दुआर वखा के देस, दह दिशा दा डेरा ढाहीआ। जिथ्थे सुवामी हो के वसां हमेश, अन्तरजामी हो के खोज खुजाईआ। झगड़ा मेट के मुल्ला शेख़, मुसायकां लेखा दयां मुकाईआ। जगत रहे कोई ना भेख, भेखाधारी दयां गवाईआ। सतिगुर नाम कोई ना सके वेच, हट्टां विच मुल्ल पवाईआ। सब नूं मातलोक समझावां तुहाडा परदेस, देसी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, वर दाता आपणी दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे सुण शब्द संदेसा आदि, जुग चौकड़ी दयां जणाईआ। जिस ने खेल रचया ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। शब्द अगम्म वजा के नाद, दो जहानां रिहा सुणाईआ। कलयुग बदल देवे समाज, साची सिख्या इक उपजाईआ। जिस नूं कहिंदे अल्ला वाहिगुरु गॉड, राम रहीम कहि के ढोला गाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द लैंदे स्वाद, सिफ्तां सिफ्त विच वड्याईआ। सो सब दी खोल्हे अन्तर जाग, निरंतर हो के वेख वखाईआ। जिस गोबिन्द दा सारे उडदा तकदे बाज़, बाज़ां वाला नज़र किसे ना आईआ। सो हर हिरदे हो विस्माद, बिस्मिल हो के आपणी कार कमाईआ। सति धर्म दा बख़्श के राज, रईआत चार वरन उपजाईआ। लेखा जाणे मोहण माधव माध, मुकन्द मनोहर लख़मी नरायण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ मैनूं नहीं कोई लालच, तमअ ना कोए रखाईआ। मैं चौहन्दी तेरा रूप ख़ालस, सृष्टी दृष्टी अंदर रुशनाईआ। तेरे मिलण दी सब नूं होवे लालस, लालन तेरा राह तकाईआ। मैं बुध्धहीण अन्जाणत, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। लख चुरासी तेरी धार अमानत, धरनी धरत धवल उत्ते नज़री आईआ। तूं आदि जुगादी सही सलामत, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। साचा कलमा नाम दे निआमत, रस अनडिठा आप चखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ना रहे बग़ावत, झगड़ा कूड़ देणा चुकाईआ। चरण प्रीती दे सख़ावत, सुख़न आपणे नाल तराईआ। ममता मोह ना रहे बनावट, पंच विकारा डेरा ढाहीआ। जिधर तक्कां तेरे प्यार दी दिसे सजावट, गुरमुख सोहणे नज़री आईआ। मेरी तेरां सौ अठासी साल दी लाह थकावट, थक्की मांदी दयां दुहाईआ। मेरे पल्लू रहे ना कोए अलामत,

इल्म वाल्यां तों पल्ला देणा छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, किसे कम्म ना आई अलिफ़ ये दे अक्खरां वाली ज़मानत, बिना निरअक्खर तेरी धार ना कोए मिलाईआ। सदी चौधवीं ना कर झगड़ा, परवरदिगार रिहा दृढ़ाईआ। तैनूं खेल वखावां अगला, परदा आप उठाईआ। कलयुग जीव बगड़ा बगला, नहाता धोता सोभा पाईआ। अंदर नामहीण कंगला, धन दौलत ना कोए वड्याईआ। चुरासी फिरे वांग पग़ला, भज्जे वाहो दाहीआ। घर सुणे ना चार मँगला, धुन शब्द ना कोए शनवाईआ। धर्म राए बन्नूण वाला नाल संगला, गुर अवतार पैगम्बर ना कोए सहाईआ। दीन मज़हबां फिरनां विच जंगलां, हद हदूद डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। बाल्मीक कहे सदी चौधवीं तूं क्यों पाया विच रौला, मुख़ातब मोहे प्रभ दे नाल कराईआ। जिस नूं पैगम्बरां किहा मौला, मौला हो के रिहा समाईआ। नानक किहा अव्वल औला, आहला आलमीन वड्याईआ। मैं ओस दे कोलों पूर कराउणा कौला, जो कँवल नैण निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। भाग लगाउणा ओस धौला, जिस धरनी साचा रंग रंगाईआ। कूड़ी क्रिया भार करे हौला, जन भगत सुहेले संग मिलाईआ। उन्हां अंदर आपणा रहिण ना देवे उहला, आत्म परमात्म परदा दए उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सांझा होवे बोला, अनबोलत राग समझाईआ। सदी चौधवीं मेरा साहिब सुल्तान इक्को दो जहानां होवे तोला, तराज़ू आपणा नाम हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे बाल्मीक, पुरख अकाल सब दा वसीला, विषयां तों बाहर वेख वखाईआ। जिस दा भगत सन्त आदि जुगादि क़बीला, जुग चौकड़ी मेल मिलाईआ। त्रेते दी पिछले जन्म दी भैण शीला, शीलवन्त सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। बाल्मीक कहे मैनूं मार लैण दयो झाकी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। की ओहो बन्दा ख़ाकी, जो मेरा संग निभाईआ। बण के सेवक दासी, जल धारा नाल वड्याईआ। इक दिन होया अन्धेरा राती, झक्खड़ मींह वहाईआ। वक्त समझया ना कोए प्रभाती, वजे डेड़ उठ के धाईआ। अग्गे आई डूँघी खाडी, मूँह दे भार सुटाईआ। ढाई वार लग्गी बाज़ी, पिठ रगड़ नाल रगड़ाईआ। ओधरों आ गया शाहसवारा इक ताजी, आपणा रूप बदलाईआ। हस्स के किहा वाह वाह जी, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। सेवक किहा हां जी, हां हां विच रखाईआ। घोड़े वाले किहा इक वार लैणा मेरा नाँ जी, नाउँ निरँकारा गया समझाईआ। एह सोहणा चंगा थाँ जी, थान थनंतर मिले वड्याईआ। बाल्मीक उच्ची कर के किहा बांह जी, बाज़ां वाला मेरी लज्जया लए रखाईआ। पुरख अकाल सब दा पिता माँ जी, दूजी जम्मण

५३८
२१

वाली ना कोए माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। सताई हथ्थ खज़ूर कहे मैं उच्चा लम्मा बिरछ, मेरी सार ना कोए पाईआ। मेरे अंदर प्रभ मिलण दी हिरस, हवस दिती वधाईआ। मैं सदा छाँ देण दी करदा रिहा किरत, औन्दयां जांन्दयां आपणी सेव कमाईआ । मैनूं विश्वास होया दृढ़त, मेरा हिरदा दए गवाहीआ । पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगारा सांझा यारा ज़रूर मेले जो गए विछड़त, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर धाम सोभा पाईआ। बाल्मीक कहे मेरी निक्की हुंदी सी कुल्ली, कुल भगतां दए वड्याईआ। मेरी पाटी हुंदी सी जुल्ली, आसण सिँघासण ना कोए सुहाईआ। मेरी ढठ्ठी हुंदी सी चुल्ली, दोवें वेले अग्ग ना कदे तपाईआ। मेरी सुक्की हुंदी सी गुल्ली, रुक्खी खा के झट लँघाईआ। मेरी आसा हुंदी सी डुल्ली, प्रभ चरणां हेठ दबाईआ। मेरी खाहश हुंदी सी फुल्ली, गुलशन रूप महकाईआ। मैं प्रभ नूं याद कीता नहीं सी कदे नाल बुल्लीं, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। बाल्मीक कहे मेरे कोल हुंदा सी तूम्बे दा इक प्याला, जिस विच पलक झलक रुशनाईआ। ओस दे विच्चों नज़र आउँदा सी दीन दयाला, दयानिध दया कमाईआ । मैं इक दिन उस नूं टंगिआ नाल खजूर दे पत्ते जिस दा नहीं कोई डाला, सहज दिता लमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। धरती कहे तुसीं सारे पावो शोर, मैनूं रहे सुणाईआ। मैं वेखां कलयुग अन्धेरा घोर, अंदर वड़ के खोज खुजाईआ। दीन दुनी होई चोर, ठग्गी प्रभ दे नाल कमाईआ। बाहरों होर ते अंदर होर, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। मैनूं ओह चंगा लग्गे जेहड़ा रविदास चम्मढ़ी लाहवे ढोर, आपणी कार कमाईआ। नाता छड्डके मढ़ी गोर, गुर सतिगुर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचे देवे वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे की कहिणा ऋषीकेश, केशव की समझाईआ। की दस्सदे ब्रह्मा विष्न महेष, शंकर की दृढ़ाईआ। की लेखा गोबिन्द दस दस्मेश, दह दिशा देणा सुणाईआ। की लहिणा देणा हमेश, जुग जुग झोली पाईआ। मैं निमाणी होई पेश, पेशीनगोई दयां दृढ़ाईआ। प्रभ भगतां नाल करे हेत, हितकारी हो के वेख वखाईआ। जिस दा लहिणा देणा नेतन नेत, निज घर बैठा सोभा पाईआ। धुर संदेसा देवे भेज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी आसा पूर कराईआ। बाल्मीक कहे मेरे धुर दे भगवन्त, भगवन दे समझाईआ। केहड़ा कलयुग विच सन्त, जो सतिगुर तेरे विच समाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म डेरा ढाहीआ। बोध अगाधा बण के पंडत,

सोहला ढोला तेरा राग सुणाईआ। झगड़ा छड्ड बहिश्त जन्नत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। दूसर अग्गे कदे करे ना मिन्नत, सीस जगदीश इक्को इक निवाईआ। मैं हैरान हो गया किसे विच रही कोई ना हिम्मत, हौसले सारे बैठे ढाहीआ। माला घड़ के मणके फेर के जेहड़े करदे प्रभू तेरे अग्गे मिन्नत, की दूज्जयां लैण तराईआ। ग्रन्थां पढ़ के मेटदे चिन्नत, ढोले गीत सालाहीआ। मनुआ रुक ना सके करनों इल्लत, आलम उल्मा चले ना कोए चतुराईआ। सारे तेरे होए निन्दक, ग्रन्थां दी करन वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। बाल्मीक प्रभ कदे ना चाहवे उल्फ़त, महिमा विच ना कोए वड्याईआ। उस नूं गा सके कोई ना पुस्तक, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। भेव जाणे कोई ना मुर्शद, मुरीदां की वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दे दुआरे सारे बैठे मुफ़लिस, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। सदी चौधवीं किसे नूं मिलण जोगी प्रभ ने रखी नहीं कोई फ़ुरसत, वेहला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। धरनी कहे मेरा मालक धुर दा अब्बा, नूर इक अलाहीआ। जिस दा दो जहानां दब्बा, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भज्जदे उत्ते पब्बां, निउँ निउँ सीस निवाईआ। साचे नाम दी गाउँदे सदा, ढोला धुरदरगाहीआ। जिस दी निरगुण सरगुण बण गए यद्दा, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। उस दा हुक्म सदा सूरा सर्बग्गा, शहिनशाह शाह पातशाह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर आई हैरानी, हैरत विच दुहाईआ। क्यों चारों कुण्ट वधी बेईमानी, बेवा होई लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो किथ्थे गई तुहाडी मेहरवानी, महबूब नाल ना कोए वड्याईआ। किधर गई करबल्यां वाली क़ुरबानी, गढ़ी चमकौर दए दुहाईआ। क्यों कलयुग कूड़ी चढ़ी तुग्यानी, साधां सन्तां रही रुड़्हाईआ। सति धर्म दी मिटी निशानी, निशाने सारे गई चुकाईआ। नेत्र रोवे चारे खाणी, चारे बाणी सार कोए ना पाईआ। धाहीं मारे अठसठ तीर्थ पाणी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सार कोए ना आईआ। नठ्ठी भज्जी फिरे अल्ला राणी, हू हू नाअरिआं विच सुणाईआ। किधर गई ब्रह्मा दी मिशराणी, गाना सगन ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर आसा इक वधाईआ। धरती कहे एथे बाल्मीक दी झुग्गी, झौंपड़ी सोहणी नज़री आईआ। जिस दा लहिणा चौंह जुगी, जुग करता आप समझाईआ। अन्तिम उह वी औध पुग्गी, समां रिहा सुहाईआ। जन भगतां निर्मल करे बुद्धि, मन ममता मोह मिटाईआ। आत्मा परमात्मा कोलों रहे ना लुकी, घर स्वामी जोड़ जुड़ाईआ। ब्रह्म धार रहे ना रुठ्ठी, पारब्रह्म आप मनाईआ। गुरमुखो कदी विचार

ना करयो त्रकुटी, ईड़ा पिंगल सुखमन तुहाडे चरणां हेठ दबाईआ। तुहाडी जगत वासना जाए टुट्टी, मनुआ दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। जिस कारण बाल्मीक दुआरे लोह पुट्टी, त्रैगुण भेंटा दिती कराईआ। तुहानूं लख चुरासी विच्चों दे के छुट्टी, पुरख अकाल नाल मिलाईआ। वेख्यो किसे दी करयो कोई ना बुत्ती, बुतख़ान्यां तों लेखा दिता मुकाईआ। सदा भगतां दी शान उच्ची, उच्च अगम्म दए वड्याईआ। एह रमज़ रहे ना लुकी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं करनी क़दमबोसी, निउँ निउँ लागां पाईआ। बाल्मीक कहे मैं रखणी नहीं ख़ामोशी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। धरनी कहे मैं बैठी हां निर्दोषी, पाप पुन्न ना कोए दरसाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब दे वास्ते रिहा सोची, बुद्धी तों परे मेरी पढ़ाईआ। बाल्मीक तेरा साथी रविदास चमारा मोची, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर वजदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आ गई दूर दुराडी नेड़े, पाँधी हो के पन्ध मुकाईआ। बाल्मीक कहे तूं वसजा ओस खेड़े, जिथ्थे खड़ा खड़ोता प्रभ नज़र किसे ना आईआ। धरनी कहे तूं छड्ड दे पिछले झेड़े, दीनां मज़हबां वाली लड़ाईआ। चढ़ जा ओस प्रभू दे बेड़े, जिथ्थे नईआ नौका इक्को नाम नज़री आईआ। अग्गे सिर ते निगाह प्रेम दी फेरे, फेरी जगत वाली रखाईआ। लै जाए ओस सचे डेरे, जिथ्थे डेरिआं वाला पहुंच सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं धूढ़ी लावां ख़ाक, मस्तक नाल छुहाईआ। बाल्मीक कहे कमलिए हो जा पाक, प्रभ पतित पुनीत बणाईआ। धरनी कहे मेरा खोल्ह के वेख ताक, परदा अंदरों इक उठाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब दा पूरा करना अन्त वाक्, वायदा धुर दा चलया आईआ। एह सुहञ्जणी भागां वाली रात, मम्घर छे मिले वड्याईआ। पिछली फेर करावां याद, याददाशत अग्गे नाल रलाईआ। वास्ता पा के कहे सतिगुर गुरमुखां अंदरों धोणा दाग़, दुरमति मैल धुआईआ। दीपक जोत जगाउणा चराग़, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। निझर रस दा देणा स्वाद, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। भगतां नूं कढ्ढके विच्चों समाज, आत्म ब्रह्म देणा दृढ़ाईआ। गुरमुख तेरा लंगड़ा लूल्हा रहे ना कोए अपाहज, बलधारी देणा बणाईआ। हर हिरदे अंदर हो विस्माद, विश्व आपणी कल वरताईआ। निज नेत्र खोल्ह के आपणी जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणा आप दरसाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां दर सुहञ्जणा, सोभावन्त नूर। बाल्मीक कहे मेरा आदि पुरख निरँजणा, नूर ज़हूर। धरनी कहे मेरा सुवामी दर्द दुःख भय भंजना, सर्ब कला भरपूर। गुरमुखां करावे चरण धूढ़ी सद मजना, निरगुण सरगुण एह दस्तूर।

प्रेम प्रीती चाढ़े रंगणा, नाता तोड़ के कूड़ो कूड़। धुर दरगाह दी दस्स के बन्दना, सजदा इक्को करे मशहूर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच स्वामी हाज़र हज़ूर। बाल्मीक कहे मेरे नेत्र रोंदे नीर, छहबर देण दुहाईआ। सदी चौधवीं कहे उफ़ हाए मेरा अख़ीर, आख़र रही कुरलाईआ। धरनी कहे मेरा मौला बदले तक़दीर, तदबीर आपणी इक जणाईआ। हस्स के कहे कबीर, सचखण्ड बैठा ताड़ी लाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो दीन मज़हब दी रहे ना कोए जागीर, हिस्से वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला पिछली उत्ते मारन लग्गा लकीर, लाईन आपणी आप खिचाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्त रिहा ना कोए फ़कीर, जो फ़िकरा ढोला धुर दा गाईआ। त्रैगुण माया सब दा अंदर तक्कया ख़मीर, ताअसीर दिती बदलाईआ। किसे नज़र ना आवे बेनज़ीर, नेत्र नैण उठाईआ। तोबा मेरी जिस दी क़सम पाई नाँ दस्सया ख़ंजीर, मुहम्मद गया समझाईआ। ओह ममता ओह माया ओह कल्पणा सब दी होई बग़लगीर, दस्तगीरां तों पल्लू रही छुडाईआ। आलम फ़ाज़ल साफ़ दिसे ना कोए ज़मीर, अक़ल चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। बाल्मीक कहे मेरे सेवक दा नाम हुंदा सी मधोसा, मधू कहि के सारे गाईआ। रखदा सी सच भरोसा, सिदक विच सीस झुकाईआ। पाणी रखदा सी कोसा, अगनी तत तपाईआ। अंदर सुणदा सी इक्को नाम दा होका, हरि हिरदे विच टिकाईआ। चौहन्दा सी जद मिलां ते नाल पुरख अकाल दी जोता, तत्तां वाले गुरु दी लोड़ रहे ना राईआ। भावें जुगां पिच्छों मिले मौका, जुग बीतदयां देर ना कोए लगाईआ। बिना पुरख अकाल तों जीवण जहान थोथा, होछी मति दिसाईआ। भावें परवार वध जाए पोत पोता, दोहत पोत नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दे के मार्ग सौखा, घर आपणा इक दृढ़ाईआ। मधू कहे मैं इक दिन पुच्छया कोलों बाल्मीक, निम्रता विच सीस निवाईआ। कुछ मैनूं दस्स गीत, गोबिन्द किस बिध गाईआ। ओस ने दे दिती तारीख, सहज नाल सुणाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त होया ठीक, ठाकर मिले धुरदरगाहीआ। आत्मा परमात्मा दी ओह आपे दस्से प्रीत, मेरे दस्सण दी लोड़ रहे ना राईआ। अजे ते मैं ओस नूं रिहा उडीक, आसा विच ध्यान लगाईआ। जद ओह तेरे मेरे आपे आ गया नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। क्यों ओस दे विच सच तौफीक़, तोहफ़े घर घर दए टिकाईआ। मधू किहा की कोई होणा पए शहीद, शहादत तन वाली भुगताईआ। बाल्मीक किहा हुण ओहदे चरणां विच रखणी आपणी दीद, दीदा दानिस्ता मेल मिलाईआ। एहो आसा ते एहो उम्मीद, एहो ख़ाहिश विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

धुर मस्तक वेख वखाईआ। धरनी कहे की बाल्मीक दए संदेसा, सच सच दए समझाईआ। बाल्मीक किहा भगत उधारना जिस दा पेशा, पेशीनगोई ओसे दी रिहा दृढ़ाईआ। धरनी कहे की धार के आवे वेसा, कवण रूप बदलाईआ। बाल्मीक किहा मैनूं वेख ला जटा जूट ज्यों धारी केसा, दस दस्मेशा खेल कराईआ। वेखीं भुल्ल ना जावीं चेता, चेतन सुरती नाल कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मुका दए ठेका, ठाकर हो के फेरा पाईआ। सब दा मालक बण जाए एका, एकँकार नूर ख़ुदाईआ। तीर अणियाले नाल करे छेका, शिकम विच गुरमुखां करे जणाईआ। लेखा जाण के सच संदेसा, लोकमात फोल फुलाईआ। जिस दा शब्दी धार इक्को बेटा, जो घर घर भगतां दए पुचाईआ। जुग चौकड़ी बण के खेवट खेटा, जगत जहान पार कराईआ। सच मिलावे धुर दा नेता, नर नरायण सचा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे दए वड्याईआ। धरनी कहे बाल्मीक किस बैठें गोशे गुट्ठे, नुकर दे समझाईआ। जिथ्थे साहिब स्वामी तुट्ठे, मेहर नैण उठाईआ। भगत सुहेले गोदी चुक्के, धुर दी गोद बहाईआ। जगत उठाए सुत्ते, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। भाग लगावे एसे मम्घर दी रुत्ते, छे प्रविष्टा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लहिणा दए मुकाईआ। सदी चौधवीं कहे सुण धुर दे दास दासी, दास्तान दयां जणाईआ। प्रभ दा खेल अगम्म तमाशी, तमाशबीन जगत लोकाईआ। जो सचखण्ड वस्से साहिब अबिनाशी, निराकार नूर अलाहीआ। उस दी मन्नणी सब ने आखी, जो अक्खरां तों बाहर करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दे बणे भाटी, रागां नादां विच सिफ्त सालाहीआ। ओह खेल करे जोत प्रभ जाती, जागरत जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा दर वखाईआ। सदी चौधवीं कहे डाकटर पाल सिँघ लै के आवे तिक्खी धार चाकू, चकनाचूर होवे लोकाईआ। प्रगट सिँघ बण के आवे डाकू, भेख अवल्लड़ा इक वटाईआ। हरचरण सिँघ बणा के लिआवे माटू, रंग सत्त विच समझाईआ। तरिपत लिख के लिआवे सोहँ परमात्म आत्म दा बापू, आदि जुगादि नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चौदां लोकां वेखणी हट्टी, चौदां तबकां फोल फुलाईआ। मैं पतिपरमेश्वर नूर अलाही जगत वसना वेखणी सती, सति सतिवाद विच कवण समाईआ। किस दी हुंदी अन्तिम गति, गुर अवतार पैगम्बर की की सेव कमाईआ। साधां सन्तां अंदर वेखणी जोत दी जगदी निंम्ही निंम्ही मोमबत्ती, किस गृह नूर होवे रुशनाईआ। जगत मण्डलेशवर वेखणे यती, हठ कवण निभाईआ। विद्धवानां दी पढ़ी वेखणी पट्टी, पटने वाला करे अगवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुरदरगाही

इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणी दीन दुनी दी दृष्ट, अन्तर निरंतर फोल फुलाईआ। किस दा पुरख अकाल इष्ट, इष्टदेव कवण मनाईआ। किस दी बुद्धी होई भ्रिष्ट, कुकर्मा विच हल्काईआ। किस दा धुर दा सचा इश्क, हक़ीकी मजाज़ी तों बाहर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर मालक दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं अंदर दी बणां खोजी, खोजत खोजत वेख वखाईआ। किस घर वस्से प्रीतम मेरा चोजी, हरि करता डेरा लाईआ। कवण होया ममता दा रोगी, हउमे हंगता विच कुरलाईआ। कवण बणया धुर संजोगी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। कवण नार कन्त दा भोगी, कवण आत्म परमात्म मिल के खुशी बणाईआ। कवण कर्म कांड दा बोझी, भार कुकर्मा वाला उठाईआ। कवण पा के बैठा सोझी, घर ठाकर वेख वखाईआ। कवण सिर ते रख के बोदी, राम कृष्ण नैण मिलाईआ। कवण बण के वेस धार जोगी, जुगती विच समाईआ। कवण मुंडी कर के रोडी, मिले शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, दर मेला लए मिलाईआ। छे मग्घर कहे मेरी सोहणी थित, सम्मत शहिनशाही वड्याईआ। धन्न वड्याई मिल्या धुर दा मित, मित्र प्यारा बेपरवाहीआ। सदा स्वामी वस्से चित, मन ठगौरी रहे ना राईआ। बिन अक्खां पए दिस, चारों कुण्ट नूर रुशनाईआ। धुर दा वंडे हिस्स, नाता तोड़ कूड़ लोकाईआ। अन्तर आत्म मारे खिच, सुरती शब्द विच समाईआ। जन भगतां दर्शन देवे नित, जागत सोवत सोभा पाईआ। आत्म सेजा जाए लिट्ट, सच सिँघासण डेरा लाईआ। गुरमुखो किसे नूं तारे कोई ना पत्थर इट्ट, पाहन पूजन कोए ना जाईआ। बिना सतिगुर तों सुरती किसे ना जावे टिक, समाधीआं विच समझ ना कोए पाईआ। जिन्हां दे कोल धुर दे नाम दी चिट, चिट्ठी धारी दसम दुआरी लए मिलाईआ। पंजां दा झगड़ा आपे लए नजिट्ठ, एह सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। पूरा सतिगुर कदे ना देवे पिट्ठ, सन्मुख हो के गोद टिकाईआ। कूड़ी क्रिया विच होण ना देवे जिच, औखे राह ना कोए पाईआ। जिस प्रेम प्यार नाल कीता हित, ओसे नूं लख चुरासी विच्चों कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडे दए टिकाईआ। धरनी कहे मेरा साहिब सतिगुर ठंडा, अगनी अग्ग बुझाईआ। आत्म ब्रह्म दा देवे अनन्दा, निजानंद परमानंद विच समाईआ। बिना बन्दगी तों पार करावे बन्दा, बंधन सारे दए तुड़ाईआ। नहाउणा पए किसे ना गंगा, जल धारा ना कोए वहाईआ। खलोणा पए ना कोए इक टंगा, अक्खीं मीट ध्यान लगाईआ। जिस दे उत्ते साहिब सतिगुर होवे बख़शिंदा, बख्शीश रहमत नाम कमाईआ। उह गुरमुख नेत्र नैण कदे ना होवे अन्धा, निज लोचन नैण करे रुशनाईआ। सतिगुर शब्द दसवें हिस्से दा कदे नहीं लैंदा चन्दा, चुंगीख़ान्यां

५४३
२१

उत्ते मसूल ना कोए लगाईआ। जदों चाहवे भगतां नूं चाढ़ देवे उत्ते ब्रह्मण्डां, पौड़ी डण्डा नेड़ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। बाल्मीक कहे मैं की दस्सां हाल, हालत विगड़ी जगत लोकाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, कूड़ नगारा रिहा वजाईआ । मौत लाड़ी वजावे ताल, ताल तलवाड़ा समझ किसे ना आईआ। चित्रगुप्त लेखा रिहा संभाल, वरका वरके नाल उलटाईआ। राए धर्म तक्के शाह कंगाल, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर खेल होणा बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए बणाईआ। की थोड़्हा जिहा खेल कीता कृष्ण खेलण वाले नाल गवाल, गोकल वृंदावन की समझाईआ। कौरव पांडव फड़ के शस्त्र ढाल, तीर तलवार नाल लड़ाईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं मर्यादा विच बदल गई चाल, चालाकी विच बन्दे ख़ाकी देणे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर दा मालक ख़लक दा ख़ालक ख़लक दे उत्ते आपणी दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो परवरदिगार दा तक्को हुजरा, जिस नूं मुहब्बत करे लोकाईआ। जिस दी याद विच बुल्लेशाह कर के गया मुजरा, इनाइत वाली मंज़ल ना कोए चढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर प्रभ दी मर्दमशुमारी विच ख़ुसरा, वलद वालदा रूप ना कोए बणाईआ। निरगुण सरगुण एको धार नहीं कोई दूसरा, दोए लोचन नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सची सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे वाह मेरे भगवान, तेरी बेपरवाहीआ। बाल्मीक दा लेखे ला पकवान, पक्का रिध्धा आपणे विच समाईआ। जन भगतां साचे दर कर परवान, परवाने धुर दे लए उपजाईआ । तेरी जोत दा वेखण शमादान, जिथ्थे सड़न दी लोड़ रहे ना राईआ। तूं दाता दानी मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच तेरी बेपरवाहीआ। इक सौ सतारां साल पिच्छों सत्त रंगा झुल्ले निशान, निशानी सतिजुग दए उपजाईआ। दूरों तक्के सख़ीआँ वाला काहन, नेत्र नैण उठाईआ। ख़ुशी होवे सीता नाल राम, राम राम नाल सिफ्त सालाहीआ। ईद मनाए मुहम्मद वाला अमाम, मैहन्दी दिशा लहिंदी डेरा ढाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखणी शाम, सतिजुग साचा सच करे रुशनाईआ। इक्को पुरख अकाल नूं सृष्टी मन्ने तमाम, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे सीस निवाईआ। इक्को इष्ट दे होण ग़ुलाम, इक्को दृष्ट मिले वड्याईआ। इक्को सब दा होवे पीण खाण, मदिरा मास रसन ना कोए छुहाईआ। कुछ छेती आउण वाला जपान, जैपन विच आपणा हुक्म वरताईआ। जगत बेड़े दा सतिगुर शब्द बणया कप्तान, समुंद सागर दीन दुनी विच भवाईआ। पता नहीं किस बिध जगत कूड़ा डुब्बे ईमान, अमल वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दी कर पहचान, बेपहचान आपणी

कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं देवां अन्तिम होका, हुक्म इक सुणाईआ। सुणो चौदां लोका, परलोक मेरी दुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गावो सलोका, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जाण ना दयो मौका, मुकम्मल परदा दयां उठाईआ। अन्त अख़ीर सब दे नाल होण वाला धोखा, धूंआं धुखदा दिसे लोकाईआ। साबत रहिणा नहीं किसे दा साढे तिन्न हथ्थ काया कोठा, पंज तत ना कोए बचाईआ। पुरख अकाल बण के निरगुण धार चोटा, चोट सब नूं रिहा लगाईआ। धरती उत्ते रहिण नहीं देणा कोई खोटा, मन मणका दए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अन्तर जगा के जोता, जोती जोत लए मिलाईआ।

❋ ७ मम्घर शहिनशहाही सम्मत ४ सोहण सिँघ दे गृह पिंड राम पुर ज़िला अमृतसर ❋

सदी चौधवीं कहे रातीं पुरख अकाल ने मैनूं मारया धफ्फा, मेरी गरदन दिती हिलाईआ। जा के वेख मुरीदां पीरां मुर्शदां दी सफा, फूड़ीआं सब दीआं फोल फुलाईआ। मेरी हुक्म वाली लग्गण लग्गी दफ़ा, जिस नूं सके ना कोए तुड़ाईआ। गुस्से विच हो के ख़फ़ा, तिउड़ी मथ्थे उत्ते चढ़ाईआ। की दुनियां दीनां विच्चों खट्टया नफ़ा, लेखा सब दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर आपणे दए माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे फिर पोली जिही मार चपेड़, गल्लू लाल दिती कराईआ। हुक्म दिता जा के वेख नंदेड़, क्यों गोबिन्द बैठा मूँह भवाईआ। ख़ाली दिसे वेहड़, धरनी धरत धवल धौल ना कोए वड्याईआ। की अग्गे छेड़े छेड़, आपणी कल प्रगटाईआ। की उलटा देवे गेड़, उलटी जगत लठ भवाईआ। फेर आख्या जा के वेख भीलणी वाले बेर, जो राम अग्गे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं पीड़ होई गिच्ची, रग पट्ठे देण दुहाईआ। मेरे अंदर पई खिच्ची, उफ़ हाए नाल दुहाईआ। मैं वड्डीउँ हो गई निक्की आपणा माण गवाईआ। हुक्म सुणया जा के वेख भगतां वाली सिखी, वरन बरन तों बाहर सोभा पाईआ। प्रभ दे चरणां विच्चों कढ गोबिन्द वाली चिठ्ठी, जो पिछली रखी छुपाईआ। फेर वेख हाहे वाली टिप्पी, जो आपणा रूप दरसाईआ। फेर भय वखाया जिस विच मैं उच्ची रो रो पिट्टी, दुहथ्थड़ां नाल दुहाईआ। विष्नूं कोल दिसी निक्की जिही टिक्की, जो सब नूं रिज़क पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे मस्तक लाई मिट्टी, उँगल आपणी नाल छुहाईआ। सदी चौधवीं

कहे मैं सुणया संदेसा कन्नी, कन्ना मन्ना कुरल कर सुणाईआ। तेरा मालक धुर दा धनी, धनाढ वड वड्याईआ। जेहड़ा वस्से बिन छप्पर छन्नी, सच दुआरे सोभा पाईआ। नी तूं ओस दी बणना वन्नी, वन्न सुवन्ना वेस वटाईआ। तैनूं बस्तर पहनाए दातो लंडी, डगोरी बग़ल विच टिकाईआ। सवा रुपईआ बन्नू के लिआवे कन्नी, दुपट्टे चिट्टे गंढु रखाईआ। नाल रोटी होवे खंनी, अध्ध विच्चों तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर दए वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे कोल आउणा अबलीस, जामा लाअनत वाला गल विच पाईआ। नौ जवान होण पुलीस, बावरदी नज़री आईआ। ओस नूं फड़ के लैण घसीट, खिच्चण वाहो दाहीआ। कढुके रोल शीट, सृष्टी देण वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मँगदी इक धोबी, धोबण आपणी नाल लिआईआ। जिस दे सिर ते बद्धा होवे फुल्ल गोभी, मुख उपर वल उठाईआ। गठड़ी चुक्की होवे मोढ्ढीं, बस्तर मैले बंध बंधाईआ। इक नाल होवे जोगी, वहन्नी मोढ्ढे उत्ते सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सची सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे पंज मँगते होण फ़कीर, चीथड़ पाटे नज़री आईआ। गल विच संगल होवे ज़ंजीर, पैरां विच लटके वाहो दाहीआ। पिच्छे पाउँदा आवे लकीर, निशान दए गवाहीआ। एह होण सारे घरां दे अमीर, भुक्खा विच ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे थाँइआ। सदी चौधवीं कहे पंजां कोल होवे ढोलक छैणा, चिमटयां नाल खड़काईआ। हत्थ विच फड़ी होवे रमाइणा, बाल्मीक वड्याईआ। सब दे हत्थीं कड़ा कंगण होवे गहिणा, बचया नज़र कोए ना आईआ। साथी बणे सिंघ नरैणा, सगला संग निभाईआ। पाग़ल होवे नाल सुरैणा, केस खुल्ले गल जणाईआ। पंजां सिखां दे गल होवे बनैणां, क़मीज़ गल ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंजां दे कज्जल वेखे नैणां, नेत्र धार वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे पंज वखाउँदे आउण मुक्का, आपणा ज़ोर वधाईआ। भाग सिंघ दे हत्थ विच होवे हुक्का, जिस नूं झारी कहे लोकाईआ। दीदार सिंघ फड़िआ होवे डब्बा कुत्ता, ढांगे लम्मे नाल हिलाईआ। मेला सिंघ दे हत्थ विच होवे कुप्पा, तेलीआं वाला रूप वटाईआ। सदी चौधवीं कहे पंजां बीबीआं दे सिर ते होण बनौटी केस, पुट्ठे सिध्धे वाल बंधाईआ। जिन्हां नूं वेखे आप साहिब दस्मेश, गुर गोबिन्द फोल फुलाईआ। फेर कहे वाहवा कलयुग तेरे विच सिख होए मलेश, जो गुरमुख वेसवा रूप बणाईआ। मैं कोई वसदा नहीं परदेस, अक्खां तों ओहले डेरा लाईआ। गुरमुखो मैं ते वसां तुहाडे विच हमेश, क्यों सतिगुर तों चोरी रहे कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, सच सच्चा धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे इक गुरमुख चक्की होवे डग्गी, होका अग्गे पिच्छे लगाईआ। मेरे कोलों खरीदो कोई झग्गी, नवीं नकोर दयां वखाईआ। इहनूं पा के सारे छड दयो अंदरों बदी, बदकारी दा डेरा ढाहीआ। कलयुग अन्तिम रहिणी नहीं किसे दी गद्दी, गदागर होवे लोकाईआ। वेखो जोबनवन्ती चौधवीं सदी, सद्दे घर घर रही सुणाईआ। झगड़ा छड्डो रसूल नबी, पैगम्बरां पन्ध मुकाईआ। शरअ दा रहे कोई ना लबी, लबां दा झगड़ा देणा मुकाईआ। वेख्यो नूर अलाही रब्बी, जल्वागर खुदाईआ। जो लख चुरासी तबी, तबीअत दए बदलाईआ। मैं एसे कर के फिरदी भज्जी, नठ्ठां चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म निशाना रिहा गड्डी, गॉड गुड आपणी कार कमाईआ।

❋ ७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ अमीर चन्द गुलाटी दे नवित्त हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

अमीर चन्द याद रख सुनान वाली खेडा, पूरब भेव चुकाईआ। उहदीआं सूरीआं ते तेरीआं हुंदीआं सी भेडां, दोवें मिल के झट लँघाईआ। इक दिन तैनूं लग्गा सी ठेडा, मुख भार डिग्ग के हाए दिता जणाईआ। सुनान ने चुक्कके कीता टेडा, मुखों कहे क्यों रौला रिहा पाईआ। ऐवें नख़रा करे वेदा, मसख़रा रूप बणाईआ। तलाशी लै के विच्चों जेबां, रुपईए सतारां ढाई बाहर कढ्ढाईआ। फेर रोण लग्गा नाल फ़रेबां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। सुनान कहे भेडां नाल वेख चरदी सूरी, बच्चे बच्चीआं विच मिलाईआ। सदा मथ्थे रखदी घूरी, घुरक घुरक डराईआ। बण के मूर्ख मूढ़ी, मुख विशटे नाल सुहाईआ। इहो भेड करे मज़दूरी, रस कूड़ विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर लेखा वेख वखाईआ। सुनान किहा तूं डिग्गा नाल चलाकी, सच दयां जणाईआ। ज़रा मेरे वले झाकीं, मैं वी नबीआं विच्चों नाउँ रखाईआ। मेरा वी ओहो अल्ला पाकी, जो पाकीज़ा करे लोकाईआ। वस्त देवे साची, कलमा नूर अलाहीआ। ओस वेले तेरा जन्म हुंदा सी घर मरासी, नाँ रसूला कहि के सारे गाईआ। सुनान नूं करन लग्गा हासी, ताली हथ्थां वाली वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला दए मिलाईआ। सुनान किहा ना कर बेसबरी, सबर विच जणाईआ। मालक वेख अगम्मा अम्बरी, जो अम्बरां तों बाहर डेरा लाईआ। लेखा जाणे जगत धार सुवम्बरी, सभा विच समझाईआ। हिसाब किताब रखे लेखे वाली नम्बरी, जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। रसूले ने किहा सुण सुनान यार, यराने विच जणाईआ। मैनूं नहीं तेरा एतबार, तेरे खुदा दी की वड्याईआ। मैं तैनूं छड्डके तेरे कोलों तेरे दवारिउँ होवां बाहर, मुड़ के आउण दी लोड़ रहे ना राईआ। फेर कदे ना करां इंतज़ार, आस उम्मीद ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर आपणा भेव खुल्हाईआ। रसूले किहा मैं तैनूं जावां छोड़, पिछला साथ तुड़ाईआ। मैनूं किसे पैगम्बर दी नहीं लोड़, मैं आपणा झट लँघाईआ । मैं ठग नहीं कोई चोर, साफ़ सुथरा इष्ट मनाईआ। मैं मन्नदा नहीं मढ़ी गोर, तत्तां विच ना कोए वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता इक वखाईआ। सुनान किहा छड्डुण वाली छड दे बात, बातन दयां जणाईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्धेरी रात, रैण आपणा रूप बदलाईआ। वेखे खेल पुरख अबिनाश, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। तूं ओस दी करनी मुहब्बत विच तलाश, प्यार विच बूझ बुझाईआ। लेखे लावे स्वास स्वास, साह साह वड्याईआ। रहिणा दासी दास, सेवक सेवक रूप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सुनान किहा वेखीं प्रभ छड्ड ना जावीं, नबीआं दा नबी नज़री आईआ। सेवा करीं नाल चावीं, चाउ घनेरा इक बणाईआ। चरण धूढ़ धुर दी न्हावीं, मस्तक ख़ाक रमाईआ। पुत्र धीआं सर्ब तजावीं, बन्स सरबन्स ना कोए वड्याईआ। धुर दा साचा राग अलावीं, तूं मेरा मैं तेरा राग सुणाईआ। बिना सतिगुर तों बल हुंदा नहीं किसे बाहवीं, बलधारी कोटन गए फेरीआं पाईआ। सतिगुर दुआरा छड्ड जगत विच किते ना जावीं, आवण जावण एसे विच दए कटाईआ। तेरी धार फेर होवे मर्दावीं, तत शरीर नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक सुहाईआ। सुनान किहा आउण जाण दा छड्डीं झगड़ा, जगत पन्ध ना कोए भवाईआ। मार्ग वेखीं अगला, पतित पुनीत जणाईआ। कलयुग क्रिया करना हमला, भय भीत दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हुक्मे अंदर आप रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया नाल ख्याली, ध्यान ध्यान विच प्रगटाईआ। साहिब सतिगुर की करे मेहरवानी, महबूब आपणी दया कमाईआ। मंज़ल वेख रुहानी, रोम रोम फोल फुलाईआ। झगड़ा मुका दीन दुनी इस्लामी, इस्म आज़म इक वखाईआ। झगड़ा रहे ना कोए गुलामी, गुरबत अंदरों देणी कढ्ढाईआ। गुरमुख कहिण साडे पिच्छे ना होए बदनामी, बदी दा डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे एह खेल पुरख समरथ, दया दिती कमाईआ। मेरे कारण लग्गी

थोड़ी सट्ट, अंग भन्न ना कोए जणाईआ। जीवण सुआरथ देणे सी ठप्प, ठप्पा मोहर वाला लगाईआ। मैं बोल के दस्सां सच, सच दयां दृढ़ाईआ। आवण जावण तों सदी चौधवीं कहे मैं वी गई अक्क, आख़र दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मौत दे बदले लग्गी चोट, चुटकीआं रही वजाईआ। किरपा कीती निर्मल जोत, मेहर नूर नाल चमकाईआ। मेरी आपणी मुक गई सोच, बुद्धी देवे ना कोए वड्याईआ। मैं दर्शन लोचां रोज़, रोज़ा रखण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे दुःख दलिद्र होवे दूर, दमां विच समाईआ। मनुआ पाए ना कोए फ़तूर, फ़ीतिआं अंदर बन्द कराईआ। गुरमुख रहे ना कोए मग़रूर, निरमाणता विच मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, मनुआ मन करे ना कोए फ़तूर, फ़तवा सब दे उत्ते लगाईआ।

❋ १४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ साधू सिँघ दे गृह तेगा सिँघ वाली बस्ती ज़िला फ़िरोज़पुर ❋

सदी चौधवीं कहे नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप घुम्मी, घुम्मण घेरी विच वेखी जगत लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरी वेखी दीन दुनी, कायनात कलमयां वाली खोज खुजाईआ। हक़ पुकार एकँकार सच दुआर किसे ना सुणी, अनसुणत बैठी कूड़ लोकाईआ। सति धर्म दा दिस्सया कोए ना मुनी, मुनीश्र जुगीशर तपीशर रखीशर भेव ना कोए खुलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा सब दी चोटी गई मुन्नी, माया ममता मोह विकार हँकार दिसे लोकाईआ। तेरा नाउँ जपदे कलयुग जीव रसना बुल्लीं, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सच फुलवाड़ी कोई दिसे ना फुल्ली, पत्त टहणी ना कोए महकाईआ। मन वासना जगत दुहागण नारी भुल्ली, सुहागी कन्त ना कोए हंढुाईआ। भाग लग्गे ना साढे तिन्न हथ्थ काया कुल्ली, मन्दिर अंदर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। सदी कहे मेरा अन्त अख़ीरी इक्को मुद्दा, मुद्दतां तों विछड़ी दयां जणाईआ। की करया खेल उत्ते बसुधा, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। तेरा नाम होवे उघा, उगण आथण सारे ढोला गाईआ। कलयुग कूड़ा बदल दे जुगा, सतिजुग साचे दे माण वड्याईआ। की आशा रख के गया बुधा, बुद्धी तों परे देणा समझाईआ। करना पए कोई ना युद्धा, युधिशटर दी आशा रही कुरलाईआ। मेरा लेखा जगत जहान मुक्का, मुकम्मल मिले इक सरनाईआ। कूड़ कुड़िआरा

भन्न हुक्का, हुक्म मिले धुरदरगाहीआ। विछोड़े वाला रहे ना दुःखा, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। गोबिन्द वाला वेख पढ़ के रुक्का, जो बिन अक्खरां गया लिखाईआ। झगड़ा मेट मानस मनुखा, मानव आपणे रंग रंगाईआ। सन्त सुहेले बणा पुत्ता, पूत सपूते गोद टिकाईआ। जिस दा चरण कँवल तेरे सीस झुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुख चल के आवण पंज बुड्ढे, बुढ़ापा अन्त अख़ीर नज़री आईआ। जिन्हां दे कोल लाल रंग दे होवण गुड्डे, सोहणे हथ्थां विच टिकाईआ। पंज गुरमुख इक लत्तों होण डुड्डे, फौड़ीआं बग़लां विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच साहिब तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी धुर दी आसा, मनसा मेहरवान तेरी सरनाईआ। कुछ लेखा धुर अवतारी तेरा हँसा, माणक मोती चोग जगत वड्याईआ। अगम्मा नाम तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्को मंता, मंतव सब दा हल्ल कराईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट बणाउणी आपणी बणता, घड़न भन्नृणहार तेरी सरनाईआ। सच संदेसा देवां धुर दी संगता, सगला नाता जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुख किसे दुआरे कदे होए ना मँगता, बिना जगदीश सीस ना किसे झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दर तेरे ममनून, मिन्नतां विच दुहाईआ। अन्त अख़ीरी बदल दे क़ानूंन, क़ायदा आपणा इक दृढ़ाईआ। तेरे नाम दा सांझा वाहिद होवे मज़मून, अक्खरां वाली वंड ना कोए वंडाईआ। भगत दुआरे उत्ते लग्गणा खून, इट्टां सत्तर देण गवाहीआ। अगला खेल नामालूम, परदा सके ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार धुर सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे वेखो सच सच मनार, भगत दुआरा सोभा पाईआ। जो खेल अगम्म अपार, हरि करता दए वड्याईआ। मैं सुणदी रही गुफ्तार, गुफ्त शनीद धुर कलमे विच जणाईआ। की खेल सच्ची सरकार, की करता कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर मस्तक आप छुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं खेल वेखां अपारा, अपरम्पर वेख वखाईआ। मेरा अन्त अख़ीर किनारा, नईआ डोले थाउँ थाईंआ। मुहम्मद की करे बेचारा, परवरदिगार चलणा हुक्म रज़ाईआ। सजदयां विच करे निमस्कारा, क़दमबोसी करके सीस झुकाईआ। हक़ हू दा ला के नाअरा, धूढ़ी ख़ाक वाली रमाईआ। मालक ख़ालक इक दातारा, दयावान इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा शब्द संदेसा पत्र, गुरमुखां दयां जणाईआ। मेरे साथीआं मेरे लई दाज लिआउणा इट्ट सत्तर, रविदास चमारा दए गवाहीआ।

चौदां नाल लिआउणे पत्थर, चौदां लोक लिख्त विच लिखाईआ। चार जुग दे इल्म तों वखरे होण अक्खर, जिस दी अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे वज्जदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे सब ने आउणा नाल शौक, संगल शरअ वाला तुड़ाईआ। केहर सिँघ दे गल विच लिख्या होवे झोक, सवा हथ्थ विच लम्बाईआ। जूड़ा कीता होवे चौंक, पगड़ी सीस ना कोए टिकाईआ। लाल कीते होण होंट, दाढ़ी खुल्ही नाल वधाईआ। तेड़ बंधा होवे लंगोट, भसम लत्तां उत्ते रमाईआ। कुज्जी विच पाई होवे जोक, मिट्टी अद्ध सेर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे पंज गुरमुख आउण पैरीं नंगीं, जोड़ा चरण ना कोए छुहाईआ। केसां विच पिच्छे नूं वाही होवे कंघी, चीर अद्ध विच्चों कढ्ढाईआ। हथ्थ विच छापी फड़ी होवे जंडी, हरी ताज़ी सोभा पाईआ। तूंही तूंही गावण छन्दी, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सद चलां हक़ रज़ाईआ। सदी चौधवीं कहे पंजां बीबीआं बद्धी होवे पग्ग, तुरले हेठां उत्ते रखाईआ। इक इक्क हथ्थ विच फड़िआ होवे कग, जो काँ कां कुरलाईआ। नाल पाणी दा होवे जग, ठंडा सीतल धार वहाईआ। ओह तुरन उत्ते पब्ब, अड्डी ज़मीन ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, वाहवा आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे पंज बणावण इक हुज़रा, रूप काअबे वाला दरसाईआ। पंज बुल्हे वाला लाउण मुजरा, घूँगट कढ्ढके नाच नचाईआ। पंज हथ्थ विच फड़ के मुंगला, मुतहिरे मोढ्ढयां उत्ते टिकाईआ। पंज कन्नां नूं चूड़ीआं वाले पा के कुण्डला, गोरख दा लेखा देणा मुकाईआ। पंज मुच्छां नूं पा के गुंझलां, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहे पंज बीबीआं हथ्थ विच फड़े होण छुरे, हू हू कर के रौला पाईआ। मुखों कहिण असीं भैण भ्रा छड्ड दिते निगुरे, नाता गुरमुखां नाल रखाईआ। जो हुक्म दिता गोबिन्द अनन्दपुरे, पुरीआं लोआं तों बाहर दए जणाईआ। जिस कारण सरसे विच रुड़्हे, वहिंदे वहिण वहाईआ। जिस कारण नाते मात जुड़े, विछड़यां ल्या मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरे वजदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं हारी थक्की, थकावट विच दुहाईआ। जन भगतो तुहाडे नाल गल्ल करां पक्की, पाक़ीज़ा हो के आख सुणाईआ। मालवे वाल्यां मेरे लई लिआउणी इक पक्खी, जो धुर जड़त जड़ाईआ। उहनूं हथ्थ विच पकड़े ओह सखी, जो सुख़न मन्ने धुरदरगाहीआ। जिस दी दूजे वल्ल ना जाए अक्खी, नेत्र नैण ना

कोए चतुराईआ। इक्को तूं मेरा मैं तेरा पढ़े पट्टी, बिन पटने वाले सीस ना किसे निवाईआ। दीन मज़हब दी हद्द जाए टप्पी, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद तेरे चरण धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चौदां तबकां चुकणा चुकाउणा उहला, परदा परदयां विच्चों उठाईआ। की खेल करदा मौला, मौलवीआं दिती वड्याईआ। की गोबिन्द इक़रार कौला, कवण कौल रिहा निभाईआ। की खेल होणा उपर धौला, धरनी धरत धवल मिले की वड्याईआ। कवण करे भार हौला, कूड़ी क्रिया शौह दरया रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी नूर अलाही आलमीन अव्वला, अमल वेख ख़ालक ख़लक ख़ुदाईआ।

५५२
२१

❋ १५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ गुरचरण कौर दे गृह हीरा मंडी फ़िरोज़पुर ❋

सदी चौधवीं कहे मैनूं आए ना कदे बुढापा, बिरध रूप ना कोए वटाईआ। मेरा परवरदिगार पुरख अकाल इक्को पापा, अब्बा कहि के जिस नूं आवाज़ लगाईआ। निरगुण धार मेरा साका, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हुक्म देण वाला धुर दा आका, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी धुर दा देवे साथा, सगला संग निभाईआ। मुहम्मद दी बेनन्ती आरज़ू मन्न के आखा, आख़र आपणा घर समझाईआ। दीन दुनी दा बण के राखा, मेहरवान महबूब मेहर नज़र उठाईआ। ज़िमीं असमानां भेव खुल्हा के साता, चौदां तबकां रंग रंगाईआ। धुर दा कलमा दस्स के पाठा, कायनात दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सुल्तान धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मेरी आयू कदे ना बीते, साल बसाल वंड ना कोए वंडाईआ। मैं जुग जुग खेल अगम्मे कीते, गुर अवतार पैगम्बर नाल मिलाईआ। कलमयां विच दस्सदी रही हदीसे, सिफ्तां विच ढोले नाम सालाहीआ। सब दी परखदी रही नीते, चुरासी अंदर खोज खुजाईआ। पारब्रह्म दी करदी रही तमहीदे, अक्खरां नाम दृढ़ाईआ। लेटदी रही धरती उपर ख़ाक नीचे, नीचों ऊँच राह तकाईआ। फल फुलवाड़ी वेखदी रही बग़ीचे, दीनां मज़हबां फोल फोलाईआ। पड़दे लौहन्दी रही मन्दिर मसीते, शिवदवाले मठ भज्जी वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी कदे ना मिटे जवानी, जोबनवन्ती नज़री आईआ। आबेहयात सद पीवां ठंडा पाणी, अमृत रस झिरना निझर झिराईआ। तूं मेरा मैं तेरा पढ़ां अगम्मी धुर दी बाणी, चारे

खाणी डेरा ढाहीआ। सच दुआर बण निमाणी, निउँ निउँ साहिब सुल्तान लागां पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान वेखां कथा कहाणी, सिफ्तां वाले ढोले सारे गए गाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा हौक्यां विच भरदे पाणी, सिसकीआं विच आपणा झट लँघाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दे दर दरबानी, दर दरवेश हो के आपणी अलख जगाईआ। नबी रसूल जिस दी वेंहदे रहे क़ुरबानी, करबला रोवे मारे धाईंआ। शरअ शरीअत विच वंड कीती जगत जहानी, मानव मानव नाल टकराईआ। मेरी जुग चौकड़ी किसे समझ ना आई ख़ानदानी, खुदावंद करीम अज़ीम मेरा गृह ना किसे समझाईआ। मैं सदा वसां आलमे ज़ाविदानी, जिस घर मिले नूर अलाहीआ। अन्त अख़ीर मेरे अंदर सब दे अंदर आवे परेशानी, पसचाताप करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा एकँकारा इक्को रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सदा बाली नढ्ढी, निरगुण देवे माण वड्याईआ। मेरा तन वजूद माटी ख़ाक नहीं हड्डी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मैं अक्खरां वाली नहीं सदी, एका सिफ़रा सिफ़रा वंड वंडाईआ। मेरी कोई गुर अवतार पैगम्बर वाली नहीं गद्दी, गदागर हो के भज्जां वाहो दाहीआ। मैं इक अकाल दे हुक्म अंदर बज्झी, जिस नूं बन्दना कर के दो जहान सीस झुकाईआ। जिस दी जोत अगम्म अथाह जगी, जागरत जोत रुशनाईआ। मैं ओस दी शरनी लग्गी, जो लग मातर दा डेरा देवे ढाहीआ। प्रीतम प्यार मुहब्बत विच बद्धी, मदहोश हो के नाम खुमारी लई चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी आयू कदे ना जावे बीत, बातन भेव दयां जणाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग बदले रीत, रीतीवान दए वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन दस्सणा इक्को गीत, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करनी हक़ पढ़ाईआ। मेरे मालक ख़ालक प्रितपालक अंदर हक़ तौफीक़, हक़ीक़त वेखे चाँईं चाँईंआ। आसा मनसा मेरी पूरी करे उम्मीद, आह विच धाह ना कोए लगाईआ। लहिणा देणा मुकाए अन्त क़ुरान मजीद, तीस बत्तीस आपणे पेटे पाईआ। साचे नूर दी बख़्श के दीद, दीदा दानिस्ता नूर दए चमकाईआ। मैं ओस दी बणां अज़ीज़, जो आहला अदना वेखे चाँईं चाँईंआ। सच दुआर दी दए तमीज़, तहज़ीब इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक्को इक समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी औध नहीं गई लँघ, वेला वक्त दयां दृढ़ाईआ। मैं बैठणा ओस पलँघ, जिस नूं गुरमुख चार लैण उठाईआ। कोल खलोता होवे तुरंग, ज़ीन पाखर नज़री आईआ। नाल वजदा होवे मृदँग, नौबत डंका नाम सुणाईआ। कोल चमकदा होवे चन्द,

सतारा अद्ध विच डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे दए वड्याईआ । सदी चौधवीं कहे मेरी आयू नहीं लम्मी, सदीआं विच ना कोए वड्याईआ। मैं ओस दी धारों जम्मी, जिस दा जन्म मरन ना कोए समझाईआ। मेरी इक्को अम्मी, पिच्छा पुरख अकाल धुरदरगाहीआ। मैं सदा नकोर नवीं, जोबनवन्ती सोभा पाईआ। मैं कुछ संदेसा सुणया कन्नीं, अबिनाशी करता रिहा सुणाईआ। इक गुरमुख दो मुखां वाला आवे बण के धनी, नारी पुरुष दोवें रूप वटाईआ। तेड़ धोती होवे बन्नी, साड़ी सीस उत्ते सुहाईआ । लाल होवे कन्नी, सवा गिठ वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार सची सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा परवरदिगार इक वसीला, विषयां तों बाहर नज़री आईआ। अवतार पैगम्बर गुरु जिस दा क़बीला, बंस सरबंस रिहा सुहाईआ। मुहम्मद दी जानण वाला दलीला, भविश भविख नाल दसाईआ। जिस नूं किहा आलमीना, आलमीन कहि के सीस झुकाईआ। तिस दी सब तों वखरी तालीमा, अलिफ़ ये तों बाहर पढ़ाईआ। उस दा नूर ज़हूर हुसीना, रूप रंग तों बाहर करे रुशनाईआ । कदे ना होवे कमीना, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। एका रंग चाढ़े भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल वड्याईआ। इक गुरमुख दे हथ्थ विच होवे मीना, मछली पाणी विच सुहाईआ। इक वजाऔंदा आवे बीना, तूंही तूंही राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नहीं कोई कोझी कमली, बुध्धहीण ना कोए अख्वाईआ। मैं कोई मँगण वाली फड़ी नहीं बग़ली, मांगत हो के झोली कोए ना डाहीआ। मैं फिरदी नहीं विच जंगलीं, टिल्ले पर्बत वेखां वाहो दाहीआ। मैं रूप नहीं धरया कोई नकली, नकलीआं वांग वेस वटाईआ। मैं परवरदिगार दी धार असली, असलीअत विच्चों असल दयां दृढ़ाईआ। इक्को महबूब मुहब्बत यार खुदा वेखां वसली, दूजे अक्ख ना कदे मिलाईआ। ना मोटी ना पतली, उच्ची लम्मी वंड ना कोए वंडाईआ। ना तन वजूद बदनी, शरीर रंग ना कोए चढ़ाईआ। ना नैण सुहावां कज्जली, लोचन अक्ख बदलाईआ। मैं चौदां सदीआं पन्ध मुकाया मज़लो मज़ली, मंज़ल आपणी वेखी चाँईं चाँईआ। जिथ्थे कलयुग सतिजुग दोहां दी होवे बदली, बदला चुकावे धुरदरगाहीआ। इन्साफ़ कमाए एकँकार अदली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी सृष्ट सबाई जग लई, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ।

✻ १५ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ जरनैल सिँघ दे गृह पिंड शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

सदी चौधवीं कहे मेरा प्रीतम इक नरायण, हरि करता नज़री आईआ। जिस नूं कहिंदे मुकट बैण, बंसरीआं वाले नाद सुणाईआ। शहादत देवे बाल्मीकी रमाइण, राम राम रूप वटाईआ। मैं सब नूं आई कहिण, संदेसयां विच दृढ़ाईआ। इक जोड़ा आवे भाई भैण, जो नाता प्रभ दे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं फिरदी उच्ची अड्डी, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। मेरी बीतदी जावे सदी, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। हज़रत नूह लै के आया आपणी नदी, तट किनारे घाट रिहा वखाईआ। हौली हौली फिरदा पैर दब्बी, खटका सुणे कोए ना राईआ। भय रखे जोत रब्बी, डर कन्नी रिहा कतराईआ। हथ्थ विच फड़ के निक्की जिही डब्बी, बिना ढक्कण रिहा वखाईआ। जिस विच कूड़ कुड़िआरा आशा बद्धी, माया ममता नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आई आहिस्ता आहिस्ता, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुरमुख चार रूप धराउण वांग फ़रिश्ता, जबराईल असराईल असराफ़ील मेकाईल आपणा खेल खिलाईआ। मैं फेर वेख्या भगतां दा नविस्ता, धुर मस्तक खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तिन्न वार करना हाए हाए, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। जन भगत बणना इक धर्म राए, संगल मोढुयां हथ्थां विच लटकाईआ। इक चित्रगुप्त बण के लेखा दए वखाए, सफ़ा सफ़े नाल बदलाईआ। चार जमदूतां दन्द होण वधाए, नौ नौ इंच लम्बे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सद तेरी सच सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे इक होवे धुर दी आशा, इशारिआं नाल जणाईआ। इक बोले अगम्मी भाषा, भाषन समझे कोई ना राईआ। इक गुरमुख लेट के तिन्न वार बदले आपणा पासा, पिट्ठ उपर नीचे वखाईआ। इक ताली मार के करे हासा, हा हा कर के राग अलाईआ। इक बीबी नौ साल दा बच्चा कुच्छड़ चुक्कके ढाका, नेत्र रोवे मारे धाईंआ। मेरा विछड़न लग्गा काका, कोई मरदयां लए बचाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बचन दस्सां साचा, सच दयां वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि स्वामी अन्तरजामी आपणा खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चौदां तबकां आई टप्पी, क़दम क़दम नाल बदलाईआ। साची सिख के आई पट्टी, पटने वाले दिती दृढ़ाईआ। सति धर्म चलाउणी हट्टी, गाँ जिबह ना कोए वखाईआ। नाम भण्डारा बख्श के रती, रतन अमोलक गुरमुख लैणे उपजाईआ। जिन्हां दी

उजल होवे मती, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। नाता जोड़ हकीकत वाला हक़ी, हुक्म धुर वाला मनाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां धुर दा कमलापती, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं फिरदी चार चुफेरे, बिन क़दमा पन्ध मुकाईआ। सृष्टी दृष्टी दिसे विच अन्धेरे, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। अवतार पैगम्बर वेखे बथेरे, नाम ढोले गीत सुणाईआ। मुरीद मुर्शद वेखे चेरे, निउँ निउँ लागण पाईंआ। दीन मज़हब दे वेखे बेड़े, घाट पत्तण डेरे लाईआ। लहिणा अन्त ना कोए नबेड़े, लेखा साफ़ ना कोए कराईआ। मैं बैठी रही कर के जेरे, सदीआं इक्को राह वेख वखाईआ। कवण वेला पुरख अकाल करे मेहरे, मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। जिस दी याद विच तसबी माला मणके बड़े फेरे, फेरी विच देंदी रही दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दी धार देणी समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या नैण उघाड़, अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। तक्कया जंगल जूह उजाड़ पहाड़, टिल्ले पर्बत फेरी पाईआ। चारों कुण्ट कूड़ कुड़िआरी धाड़, माया ममता मोह हल्काईआ। साची नज़र ना आई कोई नार, कमलापति जो रही हंढाईआ। नव नौ चार दिसे विभचार, दुराचारी देण दुहाईआ। मैं रो के किहा पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। किरपा कर मेरे परवरदिगार, पारब्रह्म तेरी ओट रखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर कर सुधार, वदी सुदी दा पैंडा दे मुकाईआ। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, जोत अकाला दीन दयाला कर रुशनाईआ। सच वखा सचा दरबार, धुरदरबारी परदा लाहीआ। तेरे नाम दा सुणां इक जैकार, तूंही तूंही राग अलाईआ। नमो नमो मेरी निमस्कार, सजदयां विच धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। क़दमां उत्तों जावां बलिहार, ख़ादम हो के तेरा राह तकाईआ। आदम हव्वा करे गिरयाज़ार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चारों कुण्ट वेख कम्बी, बलहीण दयां दुहाईआ। साध सन्त जगत फ़कीर होए डम्बी, डम्ब ममता नाल बणाईआ। किसे टोपी पाई किसे पहनी तम्बी, धोती वाला धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। मेरे निरंतर अन्तर आई ग़मी, ग़मख़ार ग़मगीन हो के दयां सुणाईआ। मेरी सुकदी जाए चम्मी, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। हुण धार दस्स नवीं, नव जोबन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी धुर दी इक अरदास, बेनन्ती दयां जणाईआ। सदा वसीं भगतां पास, मुरीद आपणा रंग रंगाईआ। निरगुण नूर देणा प्रकाश, अन्धेरा तत देणा गवाईआ। तेरी याद विच आवे स्वास, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग

साचा चन्द चमकाईआ। चार वरन दिसे इक जमात, इक्को तुलबिआं कर पढ़ाईआ। इक्को नाम अक्खर दस्स आपणी ओस अगम्मी लुगात, जो निरअक्खर आपणे विच छुपाईआ। दर दुआरे तेरे रहे आख, आख़र मेला लैणा मिलाईआ। प्रभू आत्मा तेरी शाख़, परमात्म तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहान देणा साथ, सगला संगी बहुरंगी आपणी खेल वखाईआ।

✳ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ गुरदास सिँघ दे गृह पिंड शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✳

सदी चौधवीं कहे सीस सुहञ्जणा सोहणा गुंदां, मींढी नौ नौ बणाईआ। कन्न विच पा के निक्का बुंदा, बन्दगी करां चाँईं चाँईंआ। इक गुरमुख दे हथ्थ विच फड़िआ वेखां दुम्बा, दुम्ब आपणी रिहा हिलाईआ। इक ने सिर ते भरया होवे कुम्भा, पाणी जल नाल वड्याईआ। इक दे हथ्थ विच होवे गोल कुण्डा, साढे तिन्न हथ्थ डंडी नाल सुहाईआ। इक बणया होवे गुंडा, बदमाशां वाला रूप वटाईआ। इक हथ्थों होवे टुंडा, बाज़ू सिध्धे पुठ्ठे हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मेरे दन्दी होवे दन्दासा, दह दिशा वेख वखाईआ। चार गुरमुख मेरे कोल खेडण सार पाशा, लहिणा कौरवां पांडवां वाला समझाईआ। इक बेरी टहिणी होवे जिस दीआं होवण तिन्न शाखां, हरीआं पत्तीआं नाल सोभा पाईआ। इक मिट्टी दा ख़ाली होवे कासा, नवां नकोर दयां जणाईआ। जिस नूं फड़िआ होवे भतीजे नाल चाचा, चाचा भतीजा दोवें हथ्थ छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा इक्को नुक़ता, दूसर ध्यान ना कदे लगाईआ। इक गुरमुख ज़ोर नाल आवे बुक्कदा, बुलबुलीआं रिहा वजाईआ। इक निउँ निउँ आवे झुकदा, धूढ़ी मस्तक ख़ाक छुहाईआ। इक वड्डा रोगी होवे दुःख दा, हाए हाए कर दए दुहाईआ। इक नूं होवे विछोड़ा पुत्त दा, बेउलादा नाल मिलाईआ। इक भुक्खा होवे टुक्क दा, ग़रीबी विच पल्लू सारे गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सच सुनेहड़ा आंहदी, आदम हव्वा नाल मिलाईआ। मेरे नाल इक बीबी होवे बांदी, गोलीआं वांग सेव कमाईआ। जिस दे हथ्थ विच कंगण होवे चांदी, बोर पंज पंज छुहाईआ। इक दे हथ्थ विच होवे ढांडी, बग़ल छुरी नाल सुहाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं ख़बर सुणावां चंगी, जन भगतां दयां जणाईआ। किसे वासना मूल ना होवे गन्दी, पतित पुनीत दयां बणाईआ। पंजां गुरमुखां पिट्ठ कर के आउणा नंगी, काला निशान मगरां उत्ते लगाईआ। कूक कूक पाउँदे आउणा भंडी, वरभण्ड विच दुहाईआ। उन्हां पिच्छे इक बीबी होवे रंडी, जिस दी कन्त नाल होवे जुदाईआ। उस दे हत्थ विच होवे चण्डी, लाल रंग नाल रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे होए सहाईआ। पंजां गुरमुखां बन्न्ही होवे तेड़ तहमत, कन्नी वाली नज़री आईआ। ओह बणे होण अहमक़, मूरखां वाला वेस समझाईआ। इशारे करन नाल सैनत, अक्खां नाल वड्याईआ। पुट्ठी लग्गी होवे ऐनक, शीशा साबत ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, वड दाता दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां हो चुकन्नी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। कवण मेरा साचा तनी, प्रेम प्रीती रिहा बणाईआ। धुर फ़रमान रिहा मन्नी, संदेसा शहिनशाहीआ। इक बीबी आवे भन्नी, वाल खुल्ल्हे दए दुहाईआ। उस दा नाँ होवे चन्नी, चार वार कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा बेड़ा रिहा बन्न्हीं, बन्न्हणहार आपणे रंग रंगाईआ।

✻ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ करनैल सिँघ दे गृह पिंड शाहवाला ज़िला फ़िरोजपुर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां जोड़ के दोवें हत्थ, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। मालवे विच्चों इक बीबी ने नक्क विच पाई होवे नत्थ, बलाकां तिन्नां नाल वड्याईआ। ओह प्रभ दा गीत गावे छब्बी पोह विच सत्थ, हत्थ ढाकां उपर रखाईआ। उच्ची बांह कर के कहे वेखो पुरख समरथ, जो मालक धुरदरगाहीआ। सारे चरणी जाओ ढठ्ठ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जो वस्से घट घट, आपणा खेल रिहा वखाईआ। पंज गुरमुख बणे होण भट्ट, लेखा गुर अर्जन वाला वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह मिले माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा प्यार मेरी अंदर छाती, छत्त छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। खेल दस्सां आपणी अगम्मी राती, रुतड़ी प्रभ दे नाल सुहाईआ। मंज़ल वखावां अगम्मी घाटी, घाटे सब दे पूर कराईआ। नाजर सिँघ दी माँ दे हत्थ विच होवे बाटी, घिउ खण्ड नाल भराईआ। उत्ते दिती होवे नीले रंग दी खद्दर वाली टाकी, उनती घर विच सोभा पाईआ।

चल के आवे खुली झाटी, मेंढी सीस ना कोए सुहाईआ। हथ्थ विच फड़ी होवे मोमबाती, बातन परदा दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, लेखा पिछला वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे चार गुरमुख होवण मेरे बूरे कक्के, काला नज़र कोए ना आईआ। इक दूजे नूं मारन धक्के, धक्कयां नाल हिलाईआ। फिर बंधन पावण इक्ठे, बाहवां बाहवां विच फसाईआ। फिर इक दूजे दे खिच्चण पटे, वाल केस फड़ के देण दुहाईआ। मुखों कहिण माही मिल्या सच्चे, सच सच्ची सरनाईआ। इक दूजे नूं कहिण असीं हुण नहीं रहिणा कच्चे, गुरमुख बण के देणा वखाईआ। साडी साहिब आपे पत रखे, लेखा करे थाईं थाईंआ। एह होवण उह चार जिन्हां मुस्लमानां गुरु गोबिन्द नूं बुलाई सी फ़तिह, सलाम दी जगह सजदा कर के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेद दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे इक बीबी बण के आवे मिशराणी, पंडताणी आपणा वेस वटाईआ। हरीओम तत सति दी पढ़दी आवे बाणी, ओम ओम रसना नाल गाईआ। गड़वी विच भरया होवे पाणी, छिटे मार के आपणा आप पवित्र लए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं करां फ़रमादारी, सेवक हो के सेव कमाईआ। बिना क़र्ज तों लाहवां उधारी, पूरब लेख चुकाईआ। सीस झुकावां जोत निरँकारी, निरवैर सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, दर घर साचे बहि के खुशी मनाईआ। सदी चौधवीं कहे पंजां गुरमुखां दे कोल होवे गुरज, कंधिआं उत्ते रखाईआ। पंजां दे कोल उपर उडाउण वाले होण बुरज, जो आतश नाल उडाईआ। पंजां ने ताली वजावण दी लाई होवे बुरद, आवाज़ ज़ोर ज़ोर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दरबारा इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कां ओह चन्दा, जो सुर्या चन्द देवे रुशनाईआ। मैं तक्कां ओह बन्दा, जो बन्दगी तों बाहर डेरा लाईआ। मैं तक्कां ओह फंदा, जो चुरासी बंधन आपणे विच बंधाईआ। मैं तक्कां ओह रंदा, जो दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। मैं तक्कां ओह खण्डा, जो दूतां दुष्टां घाउ लगाईआ। मैं तक्कां ओह कन्ढा, जिथ्थे भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो कोट जन्म दी भगती नालों प्रभ दा दर्शन इक्को वार चंगा, जो चार जुग दा लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सुहेला धुर दा संगा, साथी हो के संग निभाईआ।

❊ १६ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ बीबी महिन्दर कौर दे गृह पिंड शाहवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ❊

सदी चौधवीं कहे मैं चौदां तबकां तों बाहर आई घुम्मण, घुंमणघेरी वेखां जगत लोकाईआ। जन भगतां दे पैर आई चुम्मण, बिन रसना मुख मुख छुहाईआ। मनमुखां चोटीआं आई मुन्नण, सर सिर सीस ना कोए वड्याईआ। सन्त सुहेले आई चुन्नण, चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। नाम दी धार बणाउण आई कुन्दन, सच मुहब्बत विच कर सफ़ाईआ। दर्शन कर के नैण मूंदन, नेत्र लोचन नैण होई रुशनाईआ। अमृत पीण आई बूँदन, स्वांती सतिगुर दए चखाईआ। उच्ची उच्ची आई कूकण, कूक कूक दयां दुहाईआ। लेखे ला लओ आपणा काया माटी पंज भूतन, आत्म परमात्म नाता लैणा जुड़ाईआ। जोत अकालण जगत अंगिआरी माया ममता लग्गी फूकण, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मशवरा हुंदा दिसे रूसण, रशीआ एशीआ विच दुहाईआ। खेल करना ईसा मूसण, मुस्लिम सोए लैणे जगाईआ। मुहम्मद होण लग्गा कूचण, कूचा गली दयां दुहाईआ। अन्त अथरू लग्गा पूंझण, हन्झू साफ़ कराईआ। कूड़ा लग्गा हूंझण, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दस्से साची पूजण, दूजा इष्ट ना कोए बणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नहाती धोती चमकी, सोहणा नूर बणाईआ। मैं वेखां धार शमसी, तबरेज़ रिहा कुरलाईआ। मनसूर इशारा देवे नाल रमज़ी, सैनत विच जणाईआ। सृष्टी उत्ते घड़ी आउणी ग़म दी, चिन्ता विच कुरलाईआ। खेल वेखणी छप्पर छन्न दी, मन्दिर महल्ल फोल फुलाईआ। हद्द मुकणी काया माटी तन दी, मज़हबां वंड ना कोए वंडाईआ। वड्याई होणी भगत जन दी, सतिजुग साचे खुशी बणाईआ। खेल मुकणी ममता मन दी, मोह विकार ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचा इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे भगतां निर्मल करनी बुद्धि, भगत देणे बणाईआ । गुरमुख इक लिआवे डुगडुगी, डमरू वांग खड़काईआ। एह खेल वेखणा अन्त अख़ीर चौंह जुगी, कलयुग कूड़ कुटम्ब दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अंदर दे के आपणी रुची, रचना धुर दी दए वखाईआ।

❊ १६ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ सरदारा सिँघ दे गृह पिंड मनावां ज़िला फ़िरोज़पुर ❊

सदी चौधवीं कहे मेरे परवरदिगार मेरी पुश्त पनाह दे थापी, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं उम्मत विच रहिण देणा

कोई नहीं पाकी, पाकीज़ा रूप ना कोए दरसाईआ। तेरी खूब मन्नी आखी, आखर वास्ता पा के दयां दुहाईआ। मेरी मुआफ़ कर गुस्ताख़ी, गुस्सा गिला देणा गवाईआ। मैं कथा कहाणी दस्सां साची, साहिब सतिगुर सच समझाईआ। अग्गे गोबिन्द दे धुर दा साथी, जो बच्चयां नीहां हेठ दबाईआ। मैं मंज़ल चढ़ के वेखां अगम्मी घाटी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। इक गुरमुख होवे जो कुकर्मां दा होवे पापी, पतित आपणा आप बणाईआ। तूं मेहर निगाह नाल झाकीं, नेत्र लोचन नैण अक्ख उठाईआ। नाम प्याला देवीं बण के साकी, जाम धुर दा आप पिलाईआ। मैं सेवक तेरी दासी, दर ठांडे सीस निवाईआ। तूं परम पुरख अबिनाशी, कल करते तेरी बेपरवाहीआ। खेल वेख मण्डल रासी, दो जहानां खोज खुजाईआ। मुहम्मद दे अंदर होवे उदासी, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। ईसा नूं याद आवे फाँसी, पूरब लेखा दयां समझाईआ। जो करवत पंडत देंदे रहे काशी, कसाईआं वाला रूप धराईआ। सवेर वेले नहाउँदे रहे प्रभाती, अमृत वेले गंगा उठ उठ धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे तेरे उत्ते इक भरवासा, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। मैं चौदां तबकां छड्डया साथा, उम्मत नबी रसूल आई तजाईआ। मेरा अगला पूरा कर दे ख्वाबा, भविख्तां विच तेरे अग्गे मँग मँगाईआ। प्रेम प्रीती जोड़ नाता, नातवां आपणे नाल बंधाईआ। साचे नाम दी बख्श दाता, दीन मज़हब ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी सांझी होवे गाथा, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। तैनूं झुकदे राम वशिष्ट त्रैलोकी नाथा, ईसा मूसा मुहम्मद सजदयां विच सीस झुकाईआ। नानक निरगुण सरगुण टेके माथा, गोबिन्द निउँ निउँ लागे पाईंआ। तूं आदि जुगादी एकँकार इक्को पिता माता, मति मतांतर दे गवाईआ। दीन दुनी दा बदल दे साका, साख्यात हो के आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर अन्त रहे कोई ना चाचा, पिता हो के गुरमुख आपणी गोद उठाईआ। एथे ओथे दो जहानां बण राखा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी कमलापाता, पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब सतिगुर तेरी ओट तकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखी चार कुण्ट, दह दिशा फोल फुलाईआ। मैं तक्कया तेरा बैकुण्ठ, स्वर्गां विच फेरा पाईआ। तेरा नाम शब्द सदा अनसुन्त, सरवण समझे कोए ना राईआ। तेरी महिमा दो जहानां अगणत, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे दुआरे करां मिन्नत, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जन भगतां दे हिम्मत, हौसला अंदर दे बन्हाईआ। ओह सिध्धे आवण तेरी सिम्मत, राह विच ना कोए अटकाईआ।

छब्बी पोह नूं पंज नाल लिआवण निन्दक, जो निन्दिआ विच तेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं चार कुण्ट वेखां अन्धेरी आंधी, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखां पाँधी, रस्तयां विच बस्ते चुक्कके भज्जण वाहो दाहीआ। मैं तीर्थ तटां आई नहांदी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फोल फुलाईआ। मैं दुनियां सूर गाँ वेखी खांदी, बक्करे दुम्बे मुखां विच लगाईआ। मोह वध्या सोना चांदी, तेरा प्रेम ना कोए समझाईआ। तन वजूद त्रैगुण माया उबले हांडी, सांतक सति ना कोए कराईआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदआरे थाउँ थाईं थाँ दी, अन्तर निरंतर तेरा परदा ना कोए उठाईआ कलयुग जीवां बुद्धी होई काँ दी, दिवस रैण काग वांग कुरलाईआ। लज्जया रही ना पुत्र माँ दी, भैण भाई ना कोए शरमाईआ। अदालत रही ना कोए निआं दी, पंडत पांधे मुल्ला शेख़ ग्रन्थी पन्थी आपणा आप गए गवाईआ । वड्याई रही ना किसे गराँ दी, साचा धर्म ना किसे समझाईआ । ओट गई सतिगुर वाली छाँ दी, छप्पर छन्न नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आसा मनसा पूरी कर आदम बावा माई हव्वा दी, हवा विच हवा दे बदलाईआ।

✻ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ प्रीतम सिँघ दे गृह पिंड जंडयाला ज़िला जलन्धर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं भज्ज भज्ज थक्की, थकावट विच पैंडा पन्ध मुकाईआ । चार कुण्ट दह दिशा मैनूं दिसी शक्की, सति सच विच ना कोए समाईआ। मैं जिधरों दी लँघी मैनूं सारे मारन अक्खीं, सैनतां नाल समझाईआ। साडे नाल कर लै पक्की, नाता आपणा लैणा जुड़ाईआ। मैं खिड़ खिड़ा के हस्सी, ताली हथ्थां दिती वजाईआ। कमल्यो मैं पुरख अकाल बणाया इक्को पती, दूसर अंग ना कदे लगाईआ। मैनूं साध सन्त कहिण ना एह बूरी ना एह कक्की, काला सूहा रूप ना कोए बणाईआ। जोबनवन्ती पुरीआं लोआं जाए टप्पी, भज्जे वाहो दाहीआ। इहनूं फड़ लओ सारे हथ्थो हथ्थी, आपणा बल धराईआ। विकार नाल लओ नथ्थी, हँकार विच दबाईआ। केहड़ी गल्लों अच्छी, कवण विद्या रही सिखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वाहो दाही नस्सी, आपणा बल प्रगटाईआ। ओस दुआरे आ के वसी, जिथ्थे वसल मिले नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वड दाता इक अख्वाईआ।

वेखणा खेल सचे पिर दा, पीआ प्रीतम दए वखाईआ। इक गुरमुख विछड़िआ होवे चिर दा, नाता मुहम्मद नाल बणाईआ। ओह आवे फिरदा फिरदा, मंज़ल पन्ध मुकाईआ। भेव दस्सां नरायण निर दा, नर निरँकार परदा दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्शणहार सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणा छब्बी पोह, परोहत पंडत फोल फुलाईआ। मुल्लां दा तकणा गिरोह, जो कन्धा कन्धे नाल छुहाईआ। कर्म धर्म दा लेखा वेखणा दो, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ। जगत विकार दा तोड़ना मोह, मुहब्बत विच समाईआ। सब दे कोलों सब कुछ लैणा खोह, ख़ाली हथ्थ देणे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर आशा इक प्रगटाईआ। सदी चौधवीं कहे इक गुरमुख सौहरा नाल लिआवे जीजा, जी आयां कहि के खुशी मनाईआ। इक चाचा नाल लिआवे भतीजा, जो सीस निवावण धुरदरगाहीआ। तिन्नां दा दल होवे तीजा, जो त्रैगुण माया नाउँ धराईआ। चौथे जुग दा लहिणा वेख्यो पूरी हुंदी रीझा, मेहरवान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं होई चुकन्नी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। शब्द संदेसा देवां ओस बीबी मन्नी, जिस दा मालक सवरन ध्रू नाल वड्याईआ। दो जहानां खेल वेखां संन्ी, गभ्भे भज्जां चाँईं चाँईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सतिगुर बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं चार कुण्ट देवां होका, हुक्म दस्सणा धुरदरगाहीआ। कलमा सुणाउणा चौदां लोका, लेखा रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया बदल के सोचा, समझ समझ नाल बदलाईआ। सृष्टी इष्टी हिस्सा रहिणा चौथा, चौथा जुग दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हथ्थ वड्याईआ।

५६३ ५६३

२१ २१

❋ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ समां कौर दे गृह पिंड सुन्नड़ा ज़िला जलन्धर ❋

सदी चौधवीं कहे मैं नव नौ चार लाया चक्र, दह दिशा अनभव दृष्टी फोल फुलाईआ । साहिब स्वामी तेरा दिस्सया कोई ना फ़क्कर, जो फ़िकरा ढोला तेरा नाम सुणाईआ। अक्खरां नाल अक्खरां दी हुंदी वेखी टक्कर, झगड़े विच दीन दुनी देवे दुहाईआ। साचे तोल तुले कोई ना तक्कड़, नाम पदारथ हथ्थ किसे ना आईआ। माया ममता मोह विकार बणाया मकर, फ़रेबां विच आपणा झट लँघाईआ। जगत गुरु दिसे कोई ना धारी छत्र, छत्रधारी तेरा रूप ना कोए दरसाईआ।

मैं फोल के वेखे शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पत्त, पत्तनां उत्ते भज्जी वाहो दाहीआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाही तेरा सिफ्तां वाला दस्सण पत्तण, यथार्थ तेरा परदा ना कोए उठाईआ। वरन बरन ज़ात पात तन वजूद माटी ख़ाक होया छट्टण, शाह पातशाह तेरा वसल असल मिले ना यार खुदाईआ। साची मंज़ल दरगाह साची सचखण्ड वेखे ना कोए आपणा वतन, बेवतन हो के सारे रहे कुरलाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर शाह सुल्तान तन वजूद ओढुन वाले कफ़न, काफ़ गाफ़ दा नुक़ता नून ना कोए समझाईआ। सदी चौधवीं कहे हक़ीक़त विच लाशरीक सारे करदे दफ़न, मुर्दा मुरीद मुर्शद आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची सच दुआरे धुर दी आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चार कुण्ट दह दिशा भज्जी नट्ठी, भजन बन्दगी वाला नज़र कोए ना आईआ। काया मन्दिर अंदर सति वस्त लभ्भी कोए ना चंगी, माया ममता मोह विकार हँकार भरी लोकाईआ। जगत तृष्ना आशा होई गन्दी, पतित पुनीत तेरा मीत ना कोए दरसाईआ। मैं खेल तक्कया चार कुण्ट विच वरभण्डी, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप फोल फुलाईआ। दीन मज़हब ज़ात पात औझड़ हो गई डंडी, डंडावत बन्दना वाला सजदयां विच सीस ना कोए झुकाईआ। सच सुहागण नार प्रेम प्रीती दर कदे ना लँघी, नेत्र नैणां नाम धार कज्जल ना कोए पाईआ। मैनूं ऐं दिसदा दृष्टी सृष्टी माया मोह विच फंदी, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। साहिब सुल्तान दीन दयाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त सदा बहु ढंगी, तरीका साधन आपणा दे समझाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म चार वरन अठारां बरन दे सुख अनन्दी, अनन्द परमानंद विच्चों प्रगटाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मैं आई तेरे दुआरे कन्ढी, परवरदिगार सांझे यार पर्दा ओहला अंदरों देणा चुकाईआ। मैं चौदां तबक बिन क़दमां आई लँघी, पदमां अरबां दा डेरा ढाहीआ। हक़ महबूब लाशरीक जल्वागर तेरे कोलों मूल ना संगी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मेला एकँकार आपणा देणा जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं की दस्सां हाल, हालत नज़र कोए ना आईआ। सब दे सिर ते कूके काल, डोरू डंक रिहा वजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हल्ल कर सक्कया ना कोए सवाल, नम्बरी सब दी एके दूए नाल मिल के मारे धाईंआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्त आउण वाला ज़ुआल, ज़ेर ज़बर दा लेखा दे चुकाईआ। आलम फ़ाज़ल धर्म विद्या वलों होए कंगाल, वस्त अमोलक नाम दौलत झोली ना कोए भराईआ। त्रैगुण माया तोड़ सके ना कोए जंजाल, जागरत जोत करे ना कोए रुशनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निरगुण सरगुण तेरी समझे कोई ना चाल, चार वरन अठारां बरन परदा ओहला ना कोए चुकाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गगन दीपक वेख अगम्मी थाल, त्रै वस्तू जगत रूप रंग रेख तों बाहर दए समझाईआ।

✻ १७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलां ज़िला जलन्धर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं साची दात आई मँगण, जन भगतो दर दरवेश हो के दयां सुणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब ने रखणा अंगण, गृह मन्दिर अंदर काया विच छुपाईआ। नाम खुमारी सच प्रीती चाढ़े अगम्मी रंगण, निरवैर निराकार निरँकार आपणी दया कमाईआ। गुरमुख भागहीण होए कोए ना मंदन, मंदभागी नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म देवे सच अनन्दन, कूड़ी क्रिया कर्म कांड दा डेरा देवे ढाहीआ। साहिब सतिगुर इश्नान कराउणा चौंकी चन्दन, चन्द सितारा नूर जोत रुशनाईआ। सब दे कटणहारा बंधन, बिना बन्दगीउँ बन्दे दए बणाईआ। जगत शरअ शरीअत करे खण्डन, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। नाम भण्डारा आया वंडण, भय भउ इक जणाईआ। जन भगतां अंदर आया लँघण, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। करे खेल सूरा सरबंगण, बेअन्त आपणा परदा दए उठाईआ। जिस दे कोल अनोखा ढंगन, तरीका तवारीख़ ना कोए समझाईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां आया गंढुण, आत्म परमात्म मेला मेले सहज सुभाईआ। शब्द अधारी चुक्के कंधन, बाहों पकड़ गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां की दलील, सोच समझ रही ना राईआ। मेरी मन्जूर होई अपील, अपरम्पर स्वामी वेख वखाईआ। शरअ दा रहे ना कोए वकील, उकला दा लेखा रिहा मुकाईआ। जिस ने बस्तर पहनणे नील, नीले वाला धुरदरगाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखे कुचील, जगत कामनी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर लेखा इक समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कां ओह राह, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। वेखां ओह खुदा, जो मुहब्बत विच समाईआ। होए ना कदे जुदा, जुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। दो जहानां बणे मलाह, नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। शौह दरया पकड़े बांह, वहिंदे वहिण ना कोए वहाईआ। नाम अगम्मा दे के नाँ, आत्म परमात्म मेला मेले सहज सुभाईआ। सदा सुहेला हो के देवे ठंडी छाँ, अगनी तत बुझाईआ। चुरासी विच्चों करे हक़ निआं, अदल इन्साफ आपणा दए दृढ़ाईआ। जन भगतां बण के पिता माँ, बाल अंञाणे आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी

चौधवीं कहे मैं उठ उठ वेख्या चार कुण्ट, बिन नेत्र नैणां अक्ख खुल्हाईआ। क्यों कीती मात सुन्नत, शरअ विच दुहाईआ। मेरी अन्त रहे ना उम्मत, अमल हक़ ना कोए कमाईआ। क्यों सीस कराया मूंडत, मुंडी ख़ाक विच दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद हथ्थ रखे उत्ते छाती, इक दूजा रिहा दबाईआ। वेला रिहा कोए ना प्रभाती, संध्या रंग ना कोए रंगाईआ। उत्तम रही कोई ना ज़ाती, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। मंज़ल चढ़े कोई ना घाटी, अद्धवाटे बैठी कूड़ लोकाईआ। साचा बणे कोई ना साथी, सगला संग ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल परवरदिगार दा बणया ना कोए जमाती, निष्अक्खर विच्चों निरअक्खर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभू मैनूं देण वाला शाबाश, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं पंजां गुरमुखां दा सोहणा वेखणा चौहन्दी लबास, नैण नैण मटकाईआ। नीली धार होवे प्रकाश, नीले रंग नाल वड्याईआ। अंदर वसिआ होवे अबिनाश, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। रूह बुत करे पाक, पतित पुनीत आप हो जाईआ। खोल्ह के अंदरों ताक, परदा दए उठाईआ। उन्हां इक आयत पढ़नी निमाज़, बिना उज़ू तों निमाज़ कराईआ। एह मेरी अन्त अख़ीरी ख़ाहिश, सदी चौधवीं रही सुणाईआ। मैं करदी रही तलाश, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। सारी उम्मत दिसी बदमाश, रूह पाक तन वजूद ना कोए कराईआ। सब ने गाँ दा खाधा मास, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। अन्त रहे कोई ना शाख़, शनाख़त करे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, साहिब सुल्तान इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ दे उडदे रहे गोगे, हक़ीक़त सच ना कोए सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जितने जोगे, जुगतां विच गए दृढ़ाईआ। अन्त अख़ीर पाए कोई ना मौके, मुकम्मल भेव कोए ना पाईआ। जो आया सो गया रो के, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। लोकमात खटीआ खाट उत्ते सौं के, तत्तां वाला सरीर हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे तक्कणा ओह नज़ारा, जो नज़रीआ दए बदलाईआ। पंजां सिखां ने ढिढ्ढ उत्ते बद्धीआं होण तलवारां, तिक्खी धार वखाईआ। खुशीआं नाल लाउँदे आवण टाहरां, ढोले गोबिन्द वाले गाईआ। दस्सणा खेल सरसे वाला उह किनारा, जिस दा पार सक्कया ना कोए समझाईआ। जिस कारण गोबिन्द खेल करे दुबारा, पुरख अकाल देवे वड वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा ला के नाअरा, नर नरायण दए मिलाईआ। एह खेल अगम्मी सरकारा, सिरजणहार रिहा दृढ़ाईआ। पंजां गुरमुखां दीआं पग्गां नूं काला रंग होवे

गाड़ा, डब्ब नज़र कोए ना आईआ। गलों कुड़ता होवे उतारा, क़मीज़ तन ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सतिगुर धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां हक़ निशानी, निछावर आपणा आप कराईआ। संदेसा देवे धुर पैग़ामी, पैगम्बरां तों परे पढ़ाईआ। जिस दा खेल नहीं जिस्मानी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। देणी पए ना कोए क़ुरबानी, करबला रूप ना कोए वखाईआ। धुरदरगाही बण के आया दानी, दयावान बेपरवाहीआ। साची मंज़ल दस्स आसानी, असल आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो करयो कदे ना बेईमानी, बेवा रूप ना कोए बणाईआ। मेरे अन्त होणी ओह तुग्यानी, जिस नूं सके ना कोए अटकाईआ। एह सृष्टी दिसदी फ़ानी, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। मातलोक तुहाडी जूह बेगानी, दरगाह साची सच महल्ल समझाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बदल देणी धार पुराणी, पुराणां वेदां झगड़ा देणा चुकाईआ। भेव खुलाउणा चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आप उठाईआ। परदा लाहुणा चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी लेखा दए दृढ़ाईआ। इक्को देवे पद निरबाणी, निरवैर आपणी कार कमाईआ। आत्म परमात्म मेला मिला के साचे हाणी, सुरती शब्द विच मिलाईआ। मंज़ल इक्को गुरमुखो सदा रुहानी, दूजी नज़र कोए ना आईआ। बणना ओस परम पुरख दी राणी, जो रहमत हक़ कमाईआ। झगड़ा मुक जाए जगत मसाणी, मढ़ी गोर दा डेरा ढाहीआ। अमृत देवे ठंडा पाणी, आबेहयात मुख चवाईआ। तुहाडी इक्को घर सदा जवानी, जोबनवन्ता वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो सोहँ धार धुर निशानी, निछावर निशाने सारे दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त श्री भगवन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे कोए अभिमानी, माण निमाणयां आप हो जाईआ।

गुरसिख सिर ते बन्नृ दस्तार, पगड़ी गुरमुख भेंट कराईआ। माछूवाड़े दा उधार, चिउँटी चार वरन तों बाहर दरसाईआ। हरि संगत दा बणया रहे प्यार, मुहब्बत बख्शे चाँईं चाँईंआ। सोहणा दिसदा रहे शृंगार, शरअ विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। पेच मारदा वारो वार, खब्बा सज्जा हथ्थ बदलाईआ। एह खेल करे निरँकार, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो जन भगतां पैज रिहा सुआर, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। दस्तार कहे मेरा ताणा पेटा सूत, चिट्टा नज़री आईआ। धुर दरगाहों आवे दूत, शब्द संदेसे गुरमुखां

५६८
२१

दए सुणाईआ। दूसर अवर ना करयो पूज, नमस्ते सीस ना कोए झुकाईआ। साहिब सतिगुर जिधर वेखो सदा मौजूद, हाज़र हज़ूर नज़री आईआ। जिस दी इक्को मंज़ले मक़सूद, इक्को घर वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभू तेरा बदलदा जाए सिक्का, सिक गुरमुखां पूर कराईआ। जेहड़ा धुर दा लेख लिखा, सब दा पूर कर वखाईआ। जन भगत किसे दुआरे लैण जावे ना भिच्छा, भण्डारा नाम देणा भराईआ। आपणा तीर अणयाला ला तिक्खा, तिक्खी मुक्खी आप बणाईआ। धर्म दी धार बणा हिस्सा, क़िस्मत सब दी दे बदलाईआ। मैनूं याद आउँदा पिच्छा, सूलां सत्थर दए गवाहीआ। चिउँटी जे तेरा रूप निक्का, निक्यों वड्डा दयां बणाईआ। बण के धुर दा पिता, पूत सपूत आपणी गोद टिकाईआ। माणस जन्म जावे जित्ता, हार निउँ निउँ लागे पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, रविदास कोलों लाल दे मस्तक चमकावे टिक्का, टिकटिकी इक्को नाल लगाईआ।

✲ १८ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ लक्ष्मण सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलां ज़िला जलन्धर ✲

सदी चौधवीं कहे मैं रातीं चढ़ी मुनारिआं उत्ते मम्बर, मम्बा दीन दुनी वेख वखाईआ। अवतार पैग़म्बर सारे बैठे कम्बण, थर थराहट विच दुहाईआ। मुर्शद मुरीदां ताईं लभ्भण, कायनात खोज खुजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे करदे भजन, सोहँ ढोला रहे गाईआ। किसे दा दिस्सया नहीं बदन, जोती शब्दी धार वड्याईआ। पुरख अकाल वेख्या मग्न, सति सरूप समाईआ। जिस दे लख चुरासी दीपक जोती जगण, चारे खाणी करे रुशनाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर लग्गी वेखी अगन, ततव तत रही जलाईआ। मैं निगाह मारी वल्ल गगन, असमानां नैण उठाईआ। नज़र आया ना कोए त्रैलोकी नंदन, राम दए दुहाईआ। करदा दिस्सया कोई ना बन्दन, बन्दगी विच सीस ना कोए झुकाईआ। टुट्टी कोई ना आवे गंढुण, विछड़यां मेल ना कोए मिलाईआ । फिरी दरोही विच वरभण्डण, ब्रह्मण्ड रिहा कुरलाईआ। तिक्खी धार चमके चण्डण, प्रचण्ड खेल खिलाईआ। अबिनाशी करता सब नूं लग्गा दंडण, हुक्मे अंदर हुक्म वरताईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले चाढ़े रंगण, रंगत रंग रंगीला धुरदरगाहीआ। धरती दा ख़ाली दिस्सया अंगण, गृह वज्जी ना कोए वधाईआ। गोबिन्द दे मस्तक तिलक लगाउणा नाल चन्दन, चन्द सूरज सीस निवाईआ। रसना ढोला गीत गाउणा बत्ती दन्दन, सिफ्तां नाल सालाहीआ। विहार करना पंकज पंजन, पंचम मेला सहज सुभाईआ। करे प्रकाश आदि निरँजण, निरवैर नूर गुसाईंआ।

दाता दानी दर्द दुःख भय भञ्जण, भव सागर पार कराईआ। गुरमुखां सब ने नेत्र पा के आउणा अञ्जण, नैण काली धार मटकाईआ। धुर दे हुक्म दी करे ना कोए उलँघण, मनमति ना कोए वखाईआ। जिस वेले चार कहार गुरमुख चुक्कण पलँघण, धरती उत्तों उपर उठाईआ। मैं ओस वेले सदी चौधवीं कहे सब दे चरणां करनी बन्दन, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे नाजर सिँघ कलयुग धार बणाउणी नईआ, नौका सोहणी खूब सुहाईआ। छब्बी पोह रात बारां वजे सब ने उस विच पाउणा इक इक्क रुपईआ, रुपा रेख ना कोए बदलाईआ। मुखों कहिणा हरि संगत बण गई भैणा भईआ, नाता धर्म दा धर्म बणाईआ। रविदास चमारे लेख लिखणा ओस साची वहीआ, जिस नूं सके ना कोए बदलाईआ। बुल्ले शाह वेस वाल्यां नच्च के कहिणा दईआ दईआ, पैर धरती उत्ते हिलाईआ। इक गुरमुख ने हथ्थ विच लिख के फड़या होवे ढईआ, गोबिन्द दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि लेखा सब दा फोल फुलईआ, लेखा पूरब वेख वखाईआ।

५६९ २१ ५६९ २१

✲ १८ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ आत्मा सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलां ज़िला जलन्धर ✲

सदी चौधवीं कहे हाए मेरया अल्ला, अलाह तेरी बेपरवाहीआ। जगत शरअ दा ख़ाली वेख्या मुसल्ला, मुस्लिम मुसलसल तेरा प्यार ना कोए बणाईआ। मुहम्मद दिसे इकल्ला, इक एका एक ध्यान लगाईआ। लहिंदी दिशा उजड़न वाला महल्ला, सुंञ मसाण दए दुहाईआ। उम्मत दी करनी दा फला, सब दी झोली रिहा पाईआ। जिस दीआं जुग चौकड़ी सुणदे रहे गल्लां, भविख्तां नाल मन प्रचाईआ। सो स्वामी प्रकाश आपणे दीपक बला, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। पावे सार जला थला, अस्गाह थल खोज खुजाईआ। धर्म दुआरे हुक्म देवे दला, शब्द शहीद आप उठाईआ। चार कुण्ट पावे तरथल्ला, धीरज धीर ना कोए धराईआ। रविदास चमारे दी टुट्टी जुत्ती दा चमकण लग्गा तिल्ला, छब्बी पोह राह तकाईआ। लाल सिँघ दे हथ्थ विच चूही नाल फड़या होवे इक बिल्ला, रंग चिट्टा सोभा पाईआ। इस विच होणा नहीं ढिल्ला, हुक्म मन्नणा शहिनशाहीआ। इक्कीआं कमान चढ़ाउणा चिल्ला, हथ्थ असमान वल्ल उठाईआ। इक गुरमुख विच रलाउणा बिल्ला, अक्खीं विच्चों काली ना कोए प्रगटाईआ। सवा फ़ुट नाल लिआउणी सिला, जिस नूं राम चरण गया छुहाईआ। नौ इंच लम्बा लिआउणा किल्ला, लोहे धात देणी वड्याईआ। नौ इंच रेत दा बणाउणा टिल्ला, मुहम्मद

मंज़ल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा वेखे इल्ललिल्ला, ला इलाह, परदा दए उठाईआ।

५७० ५७०

२१ २१

※ १८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ केहर सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलां ज़िला जलन्धर ※

सदी चौधवीं कहे मैं नाल रलावां दीन दुनी दे रहिबर, जो रस्ता गए वखाईआ। साचे भगतां उत्ते लावां नाम दी छहबर, मेघ अगम्मा इक बरसाईआ। जगत वासना कूड़ी क्रिया करां बेहतर, बेहतरीन आपणा खेल खिलाईआ। सृष्टी वाला खोल्ह के नेत्र, निज नैण दयां चमकाईआ। धरनी धरत धवल दा वेखां खेत्र, कूड़ कुड़िआरा डेरा ढाहीआ। सब दा हल्ल कर सक्कया कोई ना पेपर, सवाल समझ कोए ना पाईआ। इक गुरमुख रती तिन्न लिआवे केसर, जो किशती विच टिकाईआ। जिस टिक्का लाउणा कलयुग छेकड़, पिछोकड़ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं नाल रलाउणे पैगम्बर औलीए गौंस, काया ग़ुस्लखाने विच्चों साफ़ कराईआ। धर्म दी धार दस्सणी नाल धौंस, धौल उत्ते डंका इक वजाईआ। इक बीबी मैहन्दी लिआवे इक औंस, पुड़ी काग़ज़ विच बंधाईआ। जिस दा बुढड़ा होवे खौंत, चल फिर सके ना राईआ। ओस सिर विच गुंदिआ होवे नाल चौंक, ढूठी सग्गी नाल नज़री आईआ। इक दे हथ्थ विच लिख्या होवे गुरमुख मनमुख दी मरे कोई ना मौत, सतिगुर शरन सची सरनाईआ। इक ने लाटां वाली दी जगाई होवे जोत, नौ दीवे थाल विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों जन भगतां दा खेल करावे नाल शौंक, शौकीन दे बच्चे तौहीन विच कदे ना आईआ।

※ १८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ गुरमेज सिँघ दे गृह पिंड रुड़का कलां ज़िला जलन्धर ※

सदी चौधवीं कहे मैं दस्सणा अगम्मी खेल, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दयां समझाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म करो सचा मेल, काया माटी तन वजूद वज्जे वधाईआ। निरगुण जोत प्रकाश तक्को बिन बाती तेल, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट करे रुशनाईआ। आवण जावण लख चुरासी धर्म राए दी कटो जेल्ह, चित्रगुप्त दा लेखा रहे ना राईआ।

पुरख अकाला दीन दयाला एकँकारा इक्को मन्नो सज्जण सुहेल, गुर अवतार पैगम्बर जिस नूं बैठे सीस निवाईआ। आदि जुगादि नित नवित्त सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो करदा आया खेल, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाईआ। सो साहिब सतिगुर वसणहारा धाम नवेल, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिथ्थे मेला गोबिन्द धार गुरु गुर चेल, तत वजूद दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, नाम निधाना इक दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मुहम्मद दी दस्सां ख़ाहिश, अन्तर अन्तर भेव खुल्हाईआ। जिस दी नानक करी तलाश, गोबिन्द हुक्मे अंदर सीस निवाईआ। सो साहिब पुरख अबिनाश, हरि करता वड वड्याईआ। मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन वेख वखाईआ। लख चुरासी लेखा जाणे पवण स्वास, साह साह आपणी धार प्रगटाईआ। जुग जुग जन भगतां पूरी करे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। परवरदिगार सांझा यार सर्ब गुणां गुणतास, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वडा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ मालक रिज़क रहीम, रहमत हक़ कमाईआ। जिस ने दीन मज़हब ज़ात पात कीती तक्सीम, नाम कलमा जुग जुग बदलाईआ। ओह मालक ख़ालक प्रितपालक सचखण्ड निवासी क़दीम, क़ुदरत दा करता इक अख्वाईआ। जिस दे उत्ते अवतार पैगम्बरां कीता यकीन, सिदक भरोसा गुरु गुरदेव गए समझाईआ। जिस ने शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी दस्सी सच तालीम, अक्खरां विच लोकमात समझाईआ। उस दा खेल सच दुआरे आलीशान अज़ीम, आहला अदना इक्को रंग रंगाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जोती धार सद हुसीन, रूप रंग रेख सके ना कोए समझाईआ। जिस दा मार्ग रस्ता काया मन्दिर अंदर महीन, नौ दुआरे पार ना कोए कराईआ। सो जन भगत सुहेला खेल खिलाए जिस नूं समझे ना कोए जन्मीन, चन्द चकोर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा लहिणा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं गुर अवतार पैगम्बरां रही आख, सुनेहड़ा सच सुणाईआ। लोकमात वेखो अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। साची सुणे कोई ना गाथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे कुरलाईआ। अमृत रस देवे कोई ना दात, अठसठ तीर्थ रोवण मारन धाईंआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बणे ना कोए जमात, गृह मन्दिर अंदर घर घर पई लड़ाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना घाट, पुरख अबिनाशी दरस कोए ना पाईआ। नौ सौ चुरानवें चौकड़ी पिच्छे पुच्छी किसे ना वात, वातावरन बदलया सर्ब लोकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला साहिब स्वामी हर घट अंदर वेखे मार झाक,

५७१
२१

परदा उहला अन्तर निरंतर दए वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा करे भविख्त वाक्, वाक़फ्कार हो के खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अंदर सतिजुग बदल जावे समाज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वड दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे अवतार पैगम्बर की रहे दस्स, दह दिशा ध्यान जणाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता खेल करे समरथ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। चार वरन अठारां बरन दीनां मज़हबां लाहे सथ, सत्थर यारड़ा इक हंढ्ढाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां गगन पातालां ज़िमीं असमानां नेत्र रोणा अक्ख, धीरज धीर ना कोए धराईआ। आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा करे कोई ना जस, सिफ्तां वाली सिफ्त ना कोए सालाहीआ। मन कल्पणा दीन दुनियां जगत दुआरे रही नठ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। मन का मणका गेड़े ना कोई उलटी लठ, माला मणक्यां वाली कम्म किसे ना आईआ। काया तन सरोवर अंदर निझर झिरना देवे कोई ना झट्ट, अठसठ तीर्थ अमृत जाम ना कोए प्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दिवस रैण रही नठ, मंज़ल मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मुहम्मद उठ उठ वेखे झट, बिन अक्खां अक्ख खुल्ाईआ। कवण दीन मज़हब दी मेटण लग्गा वट्ट, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। साचा नाम धुर दा कलमा अगम्मी लाए सट्ट, सोई सुरती शब्द नाद उठाईआ। सतिजुग मार्ग सृष्टी दृष्टी अंदर देवे रख, रक्ख्या करे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पैगम्बर जो बोल के गए सच, सो सच स्वामी सच सच विच समाईआ। जन भगतां भाग लगा के काया माटी कच्च, कंचन गढ़ दए वड्याईआ। मनुआ मन ना पए नच्च, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अगनी तत बुझाईआ। एका मेला कर पुरख समरथ, नाता जोड़े सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी महिमा सदा अकथ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द कथनी कथ सके ना राईआ।

✻ १८ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ लाल सिँघ दे गृह पिंड डॅलेवाल ज़िला जलन्धर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं सुणया धुर पैग़ाम, हरि करता आप दृढ़ाईआ। चार कुण्ट दह दिशा विगड़िआ जगत निज़ाम, नौबत नाम हक़ ना कोए सुणाईआ। सृष्टी दृष्टी मन कल्पणा बणी ग़ुलाम, शरअ ज़ंजीर ना कोए तुड़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ होए हराम, नेत्र नैण अक्ख ना कोए शरमाईआ। घर घर वड़िआ क्रोध काम, लोभ मोह विकार हँकार

हल्काईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण होए बदनाम, बदी तों परे परदा ना कोए उठाईआ। हिरदे वसिआ दिसे ना किसे हरि नाम, नादी धुन ना कोए शनवाईआ। उजड़िआ दिसे काया खेड़ा ग्राम, पंज तत रूप ना कोए सुहाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए पहचान, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सच जगदीश बिन हदीस करे ना कोए सलाम, सिर सर ना कोए निवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पढ़े ना कोई कलाम, कायनात कर्म कांड दा लेख ना कोए मुकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा ना मेटे कोई अन्धेरी शाम, शमां नूर जोत नूर ना कोए रुशनाईआ। करया खेल पुरख अकाल साहिब सुल्तान, शाह पातशाह तेरी ओट तकाईआ। चार वरन अठारां बरन अन्तर निरंतर दे आराम, सांतक सति सति वरताईआ। तेरा अमृत झिरना निझर झिरे महान, महिमा कथ कथ सुणाईआ। लेखे ला पवण स्वासी प्राण, पुनह पुनह सीस निवाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे मालक ख़ालक प्रितपालक अगम्मी धुर दे हक़ अमाम, कलयुग कूड़ी क्रिया अमलां दा डेरा देणा ढाहीआ। सदी चौधवीं कहे परवरदिगार हक़ुल कर यकीन, यकतरफ़ दे समझाईआ। धुर दी धार दे तालीम, तालब तुलबे कर पढ़ाईआ। घर वखा आहला अज़ीम, आलीशान तेरी शरनाईआ। तूं शहिनशाह क़दीम, क़ुदरत दा मालक इक अख्वाईआ। तेरा आत्मा ना नर ना मदीन, नारी पुरुष वंड ना कोए वंडाईआ। दीन मज़हब विच आए ना कदे तक्सीम, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश नाउँ ना कोए प्रगटाईआ। सदा सदा सद लख चुरासी तेरे अधीन, विष्न ब्रह्मा शिव तेरे हुक्मे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि वड्डे तेरी वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे दीन दुनी दी वेख गुरबत, हँकार भरी लोकाईआ। तूं पुरख अकाला इक्को मुर्शद, मुरीदां परदा दएं उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया नालों कर के फ़ुरसत, नाता बंधन देणा तुड़ाईआ। तेरे नाम दी महिमा इक्को होवे उल्फ़त, हर हिरदे तेरा नाद करे शनवाईआ। तेरा खेल आदि जुगादी जुग जुग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी अन्त अख़ीर औध रही पुग्ग, जीवण जुगती तेरे हथ्थ फड़ाईआ। मैनूं सच दुआर एकँकार इक्को रिहा सुझ, जिथ्थे सूझ समझ बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। दीनां बंधू दीन दयाल भेव अभेदा खोल्ह गुझ, रमज़ इशारा नर निरँकारा इक्को देणा लगाईआ। साहिब सुल्तान नौजवान मेहरवान सब दी निर्मल कर बुध्ध, बिबेक हो के अनेक लै तराईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, सतिजुग सुहा अगम्मी रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। निरगुण धारों आपे उठ, जन भगतां उपर तुठ्ठ, अमृत जाम दे घुट, रस इक्को इक वखाईआ। माया ममता रहे ना लुट्ट, दूई द्वैती कढ्ढ फुट्ट, सन्त सुहेले बणा आपणे सुत, कलयुग जीव अपराधी लै तराईआ। भाग लगा काया माटी बुत, कर

५७३
२१

प्रकाश निर्मल जोत, झगड़ा रहे ना वरन गोत, दीन मज़हब इक्को रंग रंगाईआ। अन्त अख़ीर होणा ख़ुश, जगत जहान लैणा पुच्छ, क्यों तेरा आत्म तेरे नाल गया रुस, रुस्सयां नूं रुस्तम हो के मेल मिलाईआ। झगड़ा पैणा चार कुण्ट, धर्म दुआरा बणाउणा इक बैकुण्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दरबारे तेरी आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे नेत्र वेख मेरे भगवन्त, साहिब तेरी सरनाईआ। आत्म नारी दिसे मिल्या कोई ना कन्त, सुहञ्जणी सेज ना कोए सुहाईआ। कलयुग भरमे भुल्ले सन्त, तेरे विच ना कोए समाईआ। गढ़ तोड़े कोई ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव ना कोए जणाईआ। बोध अगाधा बणे कोई ना पंडत, अक्खरां दी सारे करन पढ़ाईआ। धर्म दी धार दिसे कोई ना संगत, गुरसिख गुर गुर रूप ना कोए समाईआ।। माया ममता मोह विकार कर खण्डत, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। झगड़ा मुका दे आवण जावण जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज डेरा देणा ढाहीआ। तेरे दर दुआरे एकँकारे मेरी मिन्नत, सदी चौधवीं निउँ निउँ लागे पाईंआ। मनुआ कोई ना करे इल्लत, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। चारों कुण्ट तेरी होवे सिफ्त, सिफ्तां विच जगत सालाहीआ। सच प्रीती अंदर कर गिरफत, माया ममता मोह गवाईआ। नाम बस्तर दे खिलत, तन पोशाक हक़ वखाईआ। जगत ख़ुआरी ना होवे ज़िल्लत, ज़लील दलील देणी बदलाईआ। परम पुरख तेरा रहे कोई ना निन्दक, दुष्ट दुराचार लेखा देणा मुकाईआ। तेरा शब्द गुरु जिस दे विच आदि जुगादी हिम्मत, बलधारी नज़री आईआ। लेखा अन्त करा दे सुन्नत, समाज दा समां आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा धुर दा इक्को सजदा, सीस जगदीश झुकाईआ। खेल वेख आपणे घर दा, धरनी उत्ते फेरा पाईआ। तेरा नाम कोई ना पढ़दा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। तेरी मंज़ल कोई ना चढ़दा, परदा अंदरों ना कोए उठाईआ। जीवत जीव कोई ना मरदा, मुर्दा मुरीद गोर ना कोए टिकाईआ। जिधर वेखो जगत जहान लड़दा, झगड़यां विच दुहाईआ। माया ममता विच सड़दा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मैं राह तक्कां तेरा नरायण नर दा, शाह पातशाह तेरी ओट तकाईआ। कवण वेला जन भगतां आ के वरदा, गुरमुख आपणी गोद बिठाईआ। सन्त सुहेले साजण फड़दा, लख चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद वेख्या हाढ़े कढ्ढदा, चौदां तबकां पई दुहाईआ। धुर अमाम तैनूं सद्दा, उच्ची कूक कूक जणाईआ। खेल वेखणा ओस अलाही हक़ दा, जो महबूब नूर ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर तेरी आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद रिहा विचार, हज़रत रिहा ध्यान लगाईआ

। की करे खेल परवरदिगार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। मेरी उम्मत दी खिड़ी गुलज़ार, गुलशन जगत विच महकाईआ। हुण आउण वाली खिज़ां बहार, पत्त टहिणी ना कोए महकाईआ। गिरिअज़ारी विच इज़हार, दरोही दरोही रिहा सुणाईआ। यामुबीन सची सरकार, बीख़ैर या अलाह तेरी वड वड्याईआ। सजदा नमस्ते डंडावत बन्दना मस्तक ला के धूढ़ी छार, ख़ाक पाक पर्वित रिहा बणाईआ। नाता रिहा ना किसे यार, सदी अन्त ना रही वफ़ादार, उम्मत मेरी होई ग़द्दार, गदागर हो के भज्जे वाहो दाहीआ। मेरा रिहा ना कोए एतबार, किरपा कर सची सरकार, आदि जुगादि तेरे अख्त्यार, मैं चौदां सदीआं दा मुख्त्यार, अन्त मुख्त्यारनामा तेरे चरणां विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी जोत सचे सुल्तान, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच तेरी ओट तकाईआ।

५७५

२१

❋ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ गुरदेव सिँघ दे गृह नवां पिंड ज़िला जलन्धर ❋

सदी चौधवीं कहे मैनूं हुक्म देवे ईसा, ईसुलसलाम रिहा जणाईआ। वेख खेल हरि जगदीसा, जगदीशर आपणा हुक्म वरताईआ। सम्मत चल रिहा बीसा, बीसवीं सदी दए दुहाईआ। इक ढाई फ़ुट दा लिआउणा शीशा, ढाई सवा वंड वंडाईआ। तेरी पूरी होवे इच्छा, मिले माण वड्याईआ। मार्ग दस्से सिध्धा, हरि शहिनशाह बेपरवाहीआ। मनसा पूरी होवे उम्मीदा, धुर दा अमल इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वड तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं ख़बर दस्से मूसा, मूरशद आप कराईआ। इक नवां लिआउणा फीता, जर्मन रूप बदलाईआ। इक गुरमुख कोल होवे चूचा, छोटी अवस्था विच वड्याईआ। एह खेल अगम्मी रूह दा, जो रूह बुत विच समाईआ। इक गुरमुख बणया होवे मीत धुर दा, धर्म दी धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे , मोह मुहब्बत कूड़ तुड़ाईआ। सुण मेरी अगम्मी रमज़, सैनत जगत ना कोए लगाईआ। की होण लग्गा ग़ज़ब, मेरी दुहाई विच दुहाईआ। मेरा कोई ना करे अदब, बेअदबी विच शरमाईआ। मेटण लग्गा मज़हब, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। मैं हैरान होया तुअजब, परेशानी विच कुरलाईआ। मेरा किध्धर गया मुत्तसब, मुतला कर ना कोए समझाईआ। चार यारी दा नज़र ना आवे वफ़द, संगी संग ना कोए रखाईआ। सिफ्तां वाला गाए कोई ना लफ़ज़, बेमाअनी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि वड्डे वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद कहि के रिहा बोल, बिन रसना जिह्वा गाईआ। नौवां सिखां दे कोल, झण्डे नीले सोभा पाईआ। जिस वेले डग्गा लग्गे उपर धौल, ओह सारे देण हिलाईआ। अल्ला हू अकबर मुखों कहिण बोल, मेरी आशा दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मूसा दस्से आपणा मसला, मुसाहिब हो जणाईआ। खेल होण लग्गा असला, असलीअत विच वड्याईआ। दीन दुनी दी बदलण लग्गी नसला, मानव ज़ाती इक्को रंग रंगाईआ। प्रभ मिलण दा मिलण लग्गा इक्को रसाइल रसला, दूजा राह ना कोए जणाईआ। सच सुनेहड़ा इक्को दस्सणा, दह दिशा कर पढ़ाईआ। परवरदिगार दे चरणां वसणा, दूसर थान ना कोए वड्याईआ। मैनूं मातलोक पए नस्सणा, भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं दस्से ईसुलसलाम, सलामअलेकम कहि के रिहा जणाईआ। उठ वेख अगम्मी अमाम, अमलां तों बाहर सोभा पाईआ। धुर दी दे कलाम, कलमा कायनात जणाईआ। सानूं बरदे बणा ग़ुलाम, सच साची सेवा विच रखाईआ। सदी बीसवीं असीं होए बदनाम, बदी कमावे जगत लोकाईआ। घर घर दिसे कूड़ा हराम, सति धर्म ना कोए रखाईआ। निम्रता विच करे ना कोए प्रणाम, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। मेरी निगाह गई विच जपान, जैपन विच अक्ख खुल्ह्राईआ। फेर मात तक्के अफ़ग़ान, ख़ानां वेख वखाईआ। फेर वेख्या दीन दुनी दा विधान, जिस दी धार ना कोए बदलाईआ। फेर धुर दी वेखी कलाम, जो धुर दा शब्द करे शनवाईआ। जां तक्कया चार कुण्ट विगड़िआ निज़ाम, बन्दोबस्त हक़ ना कोए कराईआ। मैं वेख होया हैरान, हैरानी मेरे अंदर छाईआ। सब दे अंदर वड़िआ शैतान, शरअ शर्म हया दिता मिटाईआ। परवरदिगार दा दिस्सया ना कोई ख़ानदान, सूफ़ी नज़र कोए ना आईआ। मेरी आशा मनशा कहे मेरे मेहरवान, महबूब तेरी सरनाईआ। सब दा लेखा मेट विच जहान, जहालत जगत रहे ना राईआ। निरगुण दाते आ विच मैदान, लोकमात आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा झुल्ले धर्म निशान, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप इक्को नज़री आईआ। आदि जुगादी सदा पैहलवान, फेरी पा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे भगतां दे आपणी पहचान, बेपहचान उहला देणा चुकाईआ।

✻ १६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ हजूरा सिँघ दे गृह पिंड गुराया ज़िला जलन्धर ✻

सदी चौधवीं कहे मैनूं पैंदीआं हाकां, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। मुहम्मद वखावे आपणा खाका, ख़ाक मिट्टी धूढ़ उडाईआ। परदा लाह के ताका, झलक रिहा झमकाईआ। उम्मत टुट्टण लग्गा साका, साथी रहिण कोए ना पाईआ। हुक्म देवे धुर दा आक़ा, परवरदिगार देवे नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं ख़ुशीआं नाल आया हासा, हस्स के ताली दिती वजाईआ। मैं हथ्थ रख के उपर ढाका, बिना तन लई अंगड़ाईआ। वे मुहम्मदा तूं कल दा निक्का जेहा काका, कलमयां विच प्रभ दा ढोला गाईआ। मैं दस्सणा नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा साका, जिस दी चार जुग गुर अवतार पैगम्बर शास्त्र देण ना कोए गवाहीआ। मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को बापा, पिता पुरख अकाल दृढ़ाईआ। मैं जोड़िआ ओस नाल नाता, घर साचे वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद बोलिआ नाल ज़ोर, जोरू ज़र दुहाईआ। मेरी टुट्टण लग्गी डोर, बंधन बन्दा ना कोए रखाईआ। चौदां तबक अन्धेरा घोर, जलवा नूर ना कोए रुशनाईआ। मेरी उम्मत हो गई चोर, ठग्गी विच दुहाईआ। चारों कुण्ट प्या शोर, शौहर सच ना कोए हंढ़ाईआ। मैं तक्कया नाल ग़ौर, की गहर गम्भीर खेल वरताईआ। मेरी रही कोई ना दौड़, बलहीण रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद कहे हाए उफ़, उल्फ़त नज़र कोए ना आईआ। ग़मी विच ना सकां उठ, ताकत अवर रही ना राईआ। मेरे घर विच पैणी लुट्ट, मक्का मदीना मारे धाईंआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन हो के वेख वखाईआ। मेरी बदलण वाली रुत, ख़िज़ां आपणा रंग रंगाईआ। परदा उहला रहे ना लुक, भेव अभेदा दए जणाईआ। जिस नूं सजदयां विच रिहा झुक, क़दमां उत्ते सीस निवाईआ। उह दस्स के इक्को तुक, तुख्म ताअसीर सब दी रिहा बदलाईआ। किसे कम्म ना आई कटी मुच्छ, अन्त अख़ीर प्रभ देवणहार सज़ाईआ। सदी चौधवीं कहे वेला रिहा ढुक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग इक वखाईआ। मुहम्मद कहे मेरया अल्ला, अजब तेरी सरनाईआ। जन भगत मेरे लई लिआवण इक मुसल्ला, सोहणा सफ़री हेठ विछाईआ। नाल होवे इक चमड़े दी खल्ला, ख़ालक खलक तेरी चतुराईआ। लोटा भरया होवे जला, वज़ू वजह नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद तक्के इक्को राह, रहिबर हो के वेख वखाईआ। की करे खेल ख़ुदा,

ख़ुदी तक्ब्बर डेरा ढाहीआ। चले चलाए आपणी हक़ रज़ा, रहमत रहमान रहीम बेपरवाहीआ। हुक्म देवणहार क़ज़ा, क़ज़ा अज़ल नाल चतुराईआ। मेरी शहादत इक भुगता, भगौती वाला रिहा उठाईआ। जिस दा लेखा जाणे कोई ना, नबी नूह ढहि ढहि पए सरनाईआ। लहिणा जाणे थाउँ थाँ, हर घट वेखे नूर ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद दा ढाई गज़ होवे दुपट्टा, रंग नीले नाल रंगाईआ। विच काला होवे पटा, पटने वाला वेख वखाईआ। कन्नी धागा होवे खट्टा, डोरी नौ वंड वंडाईआ। इक सवा हथ्थ दा होवे गत्ता, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। उस दे उत्ते लिख्या होवे मक्का, अक्खर अलिफ़ वाले सालाहीआ। इक गुरमुख पिच्छे लाउँदा आवे धक्का, ज़ोर ज़ोर हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे पंजां गुरमुखां सुबह तों रख्या होवे रोज़ा, महीना रमज़ान दयां समझाईआ। जिन्हां ने बिना बाहवां तों गल विच पाया होवे चोगा, चुगली निन्दिआ ना कोए सुणाईआ। अद्धवाटे मुन्नया होवे बोदा, हिन्दू सिख ना रूप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, सद आपणा खेल खिलाईआ । सदी चौधवीं कहे मेरी अन्त अख़ीर बात, बातन दयां जणाईआ। साहिब स्वामी बख्श दात, दयावान तेरी वड्याईआ। निरगुण सरगुण दे साथ, सगला संग निभाईआ। चार वरनां बणा इक जमात, इक्को अक्खर कर पढ़ाईआ। नूरी नज़र आ साख्यात, सन्मुख हो के सोभा पाईआ। अमृत दे आबेहयात, हयाती दीन दुनी बदलाईआ। सच दुआरा वखा घाट, जिथ्थे मंज़ल धुरदरगाहीआ। झगड़ा दिसे ना ज़ात पात, दीन मज़हब ना कोए लड़ाईआ। इक्को पतिपरमेश्वर कमलापात, लख चुरासी नारी कन्त हंढ्ढाईआ। आत्म परमात्म बणा के धुर दा साक, सज्जण हो के वेख वखाईआ। जीवण जन्म दा पूरा कर दे घाट, लेखा सब दा आप चुकाईआ। माया ममता मेट दे वाट, वायदा कर के तोड़ निभाईआ। आत्म सेजा सुहा दे खाट, खटका अवर रहे ना राईआ। तूं धुरदरगाही पुरख समराथ, जल्वागर नूर ख़ुदाईआ। रूह बुत कर पाक, पतित पुनीत दे कराईआ। सब दा पूरा कर भविख्त वाक्, वाकफ्कार तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को अमृत वेला धर्म दी होवे प्रभात, सति सच मिले वड्याईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा राख, रक्ख्या करनी थाउँ थाईंआ। सदी चौधवीं सृष्टी दृष्टी अंदर उडे ख़ाक, ख़ालस रूप ना कोए समझाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म त्रैगुण माया दी बदल दे पोशाक, गलाफ़ कूड़ा देणा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरी वजदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद हो रिहा दिलगीर, धीरज धीर

ना कोए रखाईआ। की करे खेल अगम्मा पीर, पीर पीरां बेपरवाहीआ। जिस दा नूर बेनज़ीर, जग नेत्र वेखण कोए ना आईआ। जिस दी दुहाई देवे कबीर, क़बरां तों बाहर रिहा समझाईआ। सो तोड़न लग्गा शरअ ज़ंजीर, शरीअत डेरा ढाहीआ। चिट्टे उत्ते पा के नाम लकीर, लेखा सब दा रिहा बदलाईआ। की होया उम्मत तक़दीर, कवण तदबीर रिहा जणाईआ। कुछ लेखा सदी चौधवीं कहे मेरा कश्मीर, कशमकश विच दुहाईआ। मूसा फड़न वाला शमशीर, मुहम्मदी अग्गे करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद उठ के रिहा तक्क, तकवा इक रखाईआ। की हुक्म हक़ीक़त हक़, हाकम कवण जणाईआ। की मेरा लेखा होवण लग्गा ठप, हिसाब अन्त रिहा चुकाईआ। मैं किधर जावां नठ, कवण क़दम लवां उठाईआ। अगम्मी हुक्म आया झट, सहज दिता दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं तैनूं होणा पए वक्ख, वक्खरा आपणा राह तकाईआ। करे खेल पुरख समरथ, दूजा अवर ना कोए समझाईआ। लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थ, जगत उधार दा डेरा ढाहीआ। अन्तिम कलयुग होणा भट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां देवणहारा दान, दाता दानी कर मेहरवानी महबूब मुहब्बत विच महिव आपणा भेव खुल्हाईआ।

✻ २० मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ नछत्र कौर दे गृह गुराया ज़िला जलन्धर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं खेल तक्कां प्रीतम अर्शी , जो अरशे आज़म नूर रुशनाईआ। जिस दी सोहणी सुहावणी सुहञ्जणी होवे बरसी, बरसां दे विछड़े मेल मिलाईआ। खेल समझावे आपणे घर दी, गृह परदा आप उठाईआ । जन भगतां भगत दुआरे कर के भरती, भाओ भावना पिछली पूर कराईआ। चले खेल अगम्मे नर दी, नर नरायण दए वड्याईआ। अमृत बख्शे धार सचे सर दी, सरोवर चरण धूढ़ इश्नान कराईआ। दीन दुनी होवे सड़दी, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। हरि संगत तूं मेरा मैं तेरा ढोला होवे पढ़दी, आत्म परमात्म वजदी रहे वधाईआ। धाड़ मुका दे कपट छल दी, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। इक जोत प्रकाश करे बलदी, बलि बावन सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखी सृष्टी वाली सीवां, सीआं साढे तिन्न हथ्थ फोल फुलाईआ। संदेसा देवां जगत जीवां, जीवण जुगत आप समझाईआ। मन आपणा कर लओ नीवां, हँकार विकार देणा

गवाईआ। प्रभ सरनाई सिख लओ थीवां, थिर मेला सहज सुभाईआ। पर्दा खोल्हे अन्तर निरंतर अन्तरीवां, अन्तश्करन भेव रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे लेख लिख्या होवे चौदां तबक, गुरमुख हथ्थ उठाईआ। पुरख अबिनाशी अगला देवे सबक, अगम्म अथाह करे पढ़ाईआ। झगड़ा मेटे दीन दुनी ख़ालक ख़लक, मख़लूक परदा दए उठाईआ। करे प्रकाश ख़ालक ख़लक, असमानां डगमगाईआ। जोती नूर दे के झलक, झल्ले गुरमुख लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, परदा उहला दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे इक गुरमुख मम्बर मुनारे चढ़ के देवे बांग, अल्ला हू अकबर नाअरा लाईआ। इक गुरमुख चौदां रंग दा बदले स्वांग, टाकी टाकी नाल जुड़ाईआ। इक मारदा होवे चांग, उच्ची कूक कूक दए दुहाईआ। इक वड्डी पट्टे पलांघ, चौदां क़दम चल के नाअरा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा पूरा होया तप, तपदा हिरदा सांत कराईआ । इक गुरमुख कोल मरया होवे सप्प, छोटा लम्मा हिस्सा ना कोए वंडाईआ । इक ने काले गोडयां उपरों कीते होण पट्ट, स्याह रूप वखाईआ। इक ओस नूं कुट्टदा आवे पिच्छों ठप ठप, सट्ट पिठ उत्ते लगाईआ। दो बणे होवण नट, स्वांगी आपणा भेख जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा खेल जणाए पक्क, कच्ची गंढु ना कोए वखाईआ।

❋ २० मम्घर शहिशाही सम्मत ४ नसीब कौर दे गृह पिंड डविडा हरयाणा ज़िला हुश्यिारपुर ❋

सदी चौधवीं कहे मैं आई भगत दुआर, भगवन देवे माण वड्याईआ। चरण बन्दना निउँ निउँ करां निमस्कार, सजदयां विच बैठी सीस झुकाईआ । वेखां खेल सची सरकार, हरि करता कार कमाईआ । भगत वछल बण गिरवर गिरधार, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। मैं हैरान होई जो छड्ड गया संसार, संसार सिँघ सरसे वाल्यां विच रलिआ चाँईं चाँईंआ। जिस दे अंदर इक जैकार, तूंही तूंही राग अल्हाईआ। बैठ सचखण्ड सचे दुआर, दरगाह साची सोभा पाईआ। जित्थे झुकदे गुर अवतार, पैगम्बर नैण शरमाईआ। धूढ़ी ख़ाक रमाउँदे विष्न ब्रह्मा शिव वारो वार, करोड़ तत्तीसा दए दुहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बरखुरदार, बाल निमाणे रूप वटाईआ। त्रैगुण माया पंज तत पनिहार, सेवक चाकर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं

कहे मैं वेख्या धुर दा भगत, हरि भगवान दए वड्याईआ। नाता तोड़ के आया कूड़े जगत, जागरत जोत होई रुशनाईआ। लहिणा लेखा उत्ते फ़र्श, धरनी धरत धवल डेरा ढाहीआ। खुशी नाल चढ़या उपर अर्श, अर्शी प्रीतम वेख वखाईआ। जिथ्थे मेघ रिहा बरस, अमृत बूँद स्वांती आप टपकाईआ। जन्म जन्म दी कर्म करम दी पूरी कर के हरस, हवस अगली देणी बुझाईआ। रहमत विच कीता तरस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार शरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या गुरमुख मीत, हरिजन सोहणा सोभा पाईआ। जिस दी सतिगुर नाल प्रीत, प्रीतम इक्को रिहा मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के गीत, ढोला सुणया धुरदरगाहीआ। नाता छड्डके मन्दिर मसीत, काया काअबा खोज खुजाईआ। त्रैगुण माया विच्चों हो अतीत, माया ममता मोह मिटाईआ। काया माटी कर के ठांडी सीत, अगनी तत गया बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नेत्र नैण नैण उठाईआ। उस दे चरण चुम्मे गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती निउँ निउँ लागे पाईंआ। सतिगुर शब्द सुणावे मृदँगा, अनहद नादी नाद वजाईआ। गोबिन्द सूरा सदा संगा, साथी इक्को धुरदरगाहीआ। घर वखावे उह पुरी अनन्दा, जिथ्थे सुर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। थल्ले दिसण कोट ब्रह्मण्डा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी कहे मैं चौदवीं ओह, ओड़क दयां जणाईआ। संसार सिँघ नाता कूड़ा तोड़ के मोह, माता पिता नालों कीती जुदाईआ। भैणां भाईआं छड गरोह, पुरख अकाल इक मनाईआ। आत्म परमात्म नाल गई छोह, रंग चढ़या धुरदरगाहीआ। इक दा रूप इक अग्गे ना रहे दो, सरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। दरगाह साची वेखी लो, अन्ध अन्धेरा दिता मिटाईआ। जिथ्थे काल सके ना पोह, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सच सिँघासण गया सौं, जिथ्थे सोया ना कोए उठाईआ। जोती नूर गया हो, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप खुल्हाईआ। संसार सिँघ कहे सदी चौधवीं तूं की दस्सें मेरी बात, कमलिए तैनूं समझ कुछ ना आईआ। ज़रा बिन अक्खां मेरे वल झाक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। आ के मेरा वेख पुरख समराथ, जो गोदी रिहा टिकाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश, जिथ्थे ना कोई दिवस ना कोई रात, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। मैं कदे ना होवां उदास, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। जिधर वेखां मेरे पास, पुरख अकाल दीन दयाल नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। संसार सिँघ कहे सुण मेरी जगत माता, मातर भूमी उत्ते दयां जणाईआ। तेरा मुहब्बत वाला टुट्टे कदे ना नाता, प्यार प्रभू ना कदे भुलाईआ।

तेरा पुत्र तेरा पुत्र बणया साचा, छड्डी कूड़ी दुनी लोकाईआ। वखरा होए तन माटी ख़ाका, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। इक्को मिल्या अगम्मी बापा, फड़ बाहों गले लगाईआ। अमृत जाम पिआया बाटा, रस धुर दा दयां चखाईआ। मैं मिल गया विच जोती जाता, जागरत जोत डगमगाईआ। सब ने मन्नणा मेरा आखा, भैण भ्रावां दयां दृढ़ाईआ। तुहानूं रहे कोई ना घाटा, घाटी मंज़ल इक चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर हिरदा फोल फुलाईआ। संसार सिँघ कहे मेरे सुण जगत वीर, वीर नूं दयां जणाईआ। मेरे पिच्छे वहाइओ कोई ना नीर, नेत्र नैण ना कोए वहाईआ। मैं मंज़ल चढ़या ओह अख़ीर, जिथ्थे मंज़ल मिले बेपरवाहीआ। मेरे कोल बैठा वेखो कबीर, क़बरां दा डेरा ढाहीआ। मैनूं मिल गई ओह जगीर, जिस दा हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी बदल गई तक़दीर, तदबीर प्रभ ने दिती समझाईआ। मैं पुरीआं लोआं ब्रह्यण्डां खण्डां पैंडा आया चीर, विष्न ब्रह्मा शिव राह विच बैठे सीस निवाईआ। मेरा अन्तर ना होया दिलगीर, ख़ुशी विच भज्जिआ चाँईं चाँईंआ। मेरी आसा मनसा पूरी होई उम्मीद, तृष्ना अवर रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता बेपरवाहीआ। संसार सिँघ कहे मेरा वेखो धाम अनोखा, सरबंस दयां जणाईआ। जिथ्थे जन्म दा होवे कदे ना धोखा, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। पढ़ना पए कोई ना पोथा, बिन अक्खरां मिले वड्याईआ। रखणा पए कोई ना रोज़ा, राज़क रिज़क रहीम दए सरनाईआ। मेरे जीवण दा मैनूं सोहणा मिल गया मौका, सतिगुर पूरे ल्या उठाईआ। मैं राह विच खेल वेख्या चौदां लोका, चौदां तबकां अक्ख उठाईआ। सारे सोहँ पढ़न सलोका, धरती तों उपर पैंदी एह दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे सच सरनाईआ। संसार सिँघ कहे मेरा लोकमात निशाना, मेरा सतिगुर नज़री आईआ। धीआं पुत्त भैण भ्रा जगत बेगाना, मात पित संग ना कोए निभाईआ। जिस दा मैनूं सारे देंदे रहे ताअना, ओह तनी मेरा इक्को नज़री आईआ। लै के आया सचखण्ड मकाना, सच दुआरे दिता टिकाईआ। मेरे विछोड़े वाला पूरा कर के ख़ाना, अगला लेखा दिता मुकाईआ। साचा दस्स के अगम्म तराना, तुरिया तों अग्गे कीती पढ़ाईआ। चरण प्रीती दे के माणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरा इक सुहाईआ। संसार सिँघ कहे मेरा घर सुहञ्जणा सोहणा, छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। नेत्र नाल पए ना रोणा, हन्झूआं हार ना कोए बणाईआ। आपणा आप ना पए कुहणा, दुहथ्थड़ां नाल ना कोए दुहाईआ। जिधर तक्कां प्रभ दा खेल बड़ा अनहोणा, समझ सके ना राईआ। आपणा बख्श अगम्मी लोइणा, मेरे अन्तर कीती रुशनाईआ। मेरे भरावो मैं मातलोक विच मात

पिता दे घर जंम्मआ चार दिन दा परौहणा, अन्तिम आपणे घर विच गया आईआ। जिथ्थे सुखां दी नींद सौणा, सुत्तयां ना कोए उठाईआ। जद जागां ते तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाउणा, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद आपणे घर वसाईआ। संसार सिंघ कहे सुण माता मेरी कौर नसीब, नसीबां वालीए दयां जणाईआ। सचखण्ड धाम वेख अजीब, मेरे अंदर वज्जी वधाईआ। जिस वेले तूं आवेंगी मेरे नज़दीक, सब कुछ सहजे दयां वखाईआ। एथे सब बैठे नाल तरतीब, सूफ़ीआं डेरे लए जमाईआ। ना कोई अमीर ना कोई ग़रीब, इक्को रंग सोभा पाईआ। जिधर वेखां सारे प्रभ नाल करन प्रीत, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सदा सदा बैठे ठांडे सीत, अगनी तत ना कोए तपाईआ। मैं वी उन्हां दे बैठां बीच, जो चार जुग दे मैथों पल्लू गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां नाल ल्या मिलाईआ। संसार सिँघ कहे माता मैं तेरी ओह औलाद, जिस मिले माण वड्याईआ। उठ वेख मेरे नाल हथ्थ मिलावे प्रहलाद, धू्र हस्स हस्स रिहा सुणाईआ। रविदास चमारा कर के याद, हलीमी ग़रीबी रिहा दृढ़ाईआ। मैं सुण के अगम्मा नाद, ताली बिन हथ्थां दिती वजाईआ। वेखीं कदे रो के करीं मैनूं ना याद, सद खुशीआं विच मेरा ढोला गाईआ। मुखों कदे ना कहिणा मैनूं संसार सिँघ कर के गया बरबाद, बरबादी विच्चों लवां बचाईआ। मेरी अंदरों खुल्ह गई जाग, सोवण दा झगड़ा आप चुकाईआ। जीवण दी हरस बुझणी आग, तृष्ना दिती मुकाईआ। तेरा पुत नहीं बणया काग, हँसां विच वड़िआ चाँईं चाँईंआ। आपणी ज़िंदगी विच माता पिता नूं लग्गण नहीं दिता दाग़, कूड़ी अक्ख ना कोए बदलाईआ। चार जुग मेरा जगदा रहे चराग़, शमांदान प्रभ आपणे हथ्थ रखाईआ। बेशक तैनूं ताअने देवे समाज, धक्के मारे लोकाईआ। पर तेरे पुत्तर नूं मिल्या ओह राज, जिथ्थे अटल बैठा डेरा लाईआ। वड्डा होया वक्त सुहंञ्णा सुभाग, सोहणी मिली सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। संसार सिँघ कहे मैं सच सिँघासण सुत्ता, सुत्तयां ना कोई उठाईआ। मिल्या मेल अबिनाशी अचुता, चेतन सुरती दिती कराईआ। सचखण्ड सुहाई रुता, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। मैनूं टंगे कोई ना पुठ्ठा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। मेरा प्यार अजे नहीं टुट्टा, टुट्टदी वेखणी अन्त लोकाईआ। मैं किसे नालों नहीं रुठ्ठा, नाता इक्को घर समझाईआ। पुरख अकाल दी मिली ओटा, ओड़क आपणा रंग रंगाईआ। मेरा तन वजूद होया नहीं खोटा, क़ीमत खरिआं वाली पाईआ। बेशक मेरे घर पुत माता तेरा होया नहीं कोई पोता, नाता जगत ना कोए वखाईआ। एह कदे करीं ना सोचा, समझ विच कदे ना आईआ। जगत परिवार माया ममता दा धोखा, अन्त

रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा एको वर, हरि करता बेपरवाहीआ। संसार सिँघ कहे गुरमुख वेख मेरे वीर, वीर सज्जण नज़री आईआ। कदे ना होणा दिलगीर, कल्पणा विच कुरलाईआ। अमृत पीणा सीर, सांतक सति वरताईआ। बंस सरबंस सज्जण मित्र जगत क़बीला नाता तुटिआ अख़ीर, आख़र आया तजाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आत्म परमात्म मेल मिलाया पातशाह वज़ीर, वज़ारत आपणी लई बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार दा पैंडा आवे चीर, पाँधी हो के आपणा पन्ध मुकाईआ।

५८४ ५८४

२१ २१

✻ २१ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ सेवा सिँघ दे गृह पिंड भाणा ज़िला जलन्धर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं कूकदी वेखी शरअ, रसूल पैगम्बरां रही जणाईआ। मुरीद रिहा कोए ना खरा, मुर्शद बैठे मुख छुपाईआ। चौदां तबकां उजड़दा दिसे घरा, गृह मन्दिर ना कोए सुहाईआ। धुर दा हुक्म देवे नरायण नरा, शाह पातशाह सचा शहिनशाहीआ। जिस दा दो जहानां पए डरा, गुर अवतार पैगम्बर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिधर वेखां ओधर खड़ा, खण्डा खड़ग नाम रिहा चमकाईआ। जिस दा भगतां नाल अगम्मी धड़ा, संगी हो के संग रखाईआ। सच दुआर दा लँघ के दरा, दर्द दर्दीआं रिहा दृढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वहिण वेखे हड़ा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुरशदो मुरीद रिहा कोई ना साबत, सिदक सबूरी हक़ ना कोए निभाईआ। साचे कलमे वाली छुट्टी इबादत, इल्म आलमा रिहा लड़ाईआ। नेकी विच्चों बुरी वाली आदत, अदल इन्साफ ना कोए कमाईआ। अकल बुद्धी रही ना किसे दी लिआकत, मूर्ख मूढ़ होई लोकाईआ। बाहरों मज़हबां वाली बनावट, अन्तर कूड़ कुड़िआर बैठा डेरा लाईआ। मेरे अन्तर आई थकावट, चौदां सदीआं भज्जी वाहो दाहीआ। अन्तिम होण लग्गी बग़ावत, झगड़ा दिसे कूड़ लोकाईआ। साचा नाम कलमा करे ना कोए सख़ावत, वस्त अमोलक झोली ना कोए पाईआ। माया ममता आसा तृष्ना लग्गी अदावत, दूई द्वैती रोग ना कोए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तूं सतिगुर सही सलामत, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहे पीर पैगम्बरो किसे कोल रिहा ना हक़, हक़ीक़त सच ना कोए दृढ़ाईआ। उच्ची शान रिहा ना नक्क, शरअ मिट्टी ख़ाक मिलाईआ। मैनूं सब ते प्या शक्क, साबत रूप

ना कोए दरसाईआ। मन कल्पणा सारे रहे नठ, वासना अंदर भज्जण थाउँ थाईआ। धीरज सन्तोख रिहा ना हट्ठ, सबर सबूरी ना कोए हंढ्ढाईआ। कलयुग खेल कीता बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। नाम वस्त रहिण दिती ना किसे हट्ट, ख़ाली भण्डारे दिते कराईआ। झगड़ा प्या मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ, गुरदुआर रहे कुरलाईआ। नेत्र रोंदे अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मारे धाईंआ। मक्का काअबा रिहा ढठ्ठ, मदीने मुद्दा ना कोए जणाईआ। मैं अन्त अख़ीर पन्ध मुकाया नठ, साल बसाला खेल वखाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, हरि करता बेपरवाहीआ। तेरे चरण कँवल चरणां जावां ढठ्ठ, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जन भगतां जणा मार्ग सच, ऊँच नीच ज़ात पात दा डेरा ढाहीआ। भाग लगाया काया माटी कच्च, आत्म ब्रह्म परदा दए उठाईआ। हर हिरदे अंदर वस, वसल दए महबूब नूर खुदाईआ। चारों कुण्ट तेरा होवे जस, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तेरा ढोला गाईआ। तूं साहिब सर्ब कला समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं जोड़ के दोवें हथ्थ, सजदयां विच बैठी सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा घट घट, घट भीतर गृह मन्दिर काया अंदर वेख वखाईआ।

✻ २१ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ जसवन्त सिँघ दे गृह पिंड भाम ज़िला हुशियारपुर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं हस्स के किहा ईसा, ईसुल इस्लाम दिता दृढ़ाईआ। उठ वेख आपणा बीतदा बीसा, बीसवीं सदी नाल मिलाईआ। सब दा ख़ाली होया खीसा, वस्त अमोलक नज़र कोए ना आईआ। की करे खेल हरि धुर जगदीशा, जगदीशर आपणी कार कमाईआ। अन्त अख़ीर सब दी बदलणहारा रीता, रीतीवान वेख वखाईआ। जो भेव चुकाए शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गीता, गहर गम्भीर बेनज़ीर परदा आप उठाईआ। जन भगतां अन्तर आत्म करे ठांडा सीता, अगनी तत दए बुझाईआ। भेव खुल्हा के ऊचां नीचां, राउ रंकां इक्को घर वसाईआ। साचा नाम कलमा दस्से हक़ हदीसा, हज़रतां तों परे दिसे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म बण के धुर दा मीता, मित्र प्यारा एकँकारा नज़री आईआ। सति सतिवाद ब्रह्म ब्रह्माद करे अगम्म नसीहता, नसीहत गुर अवतार पैगम्बर जो कर के गए वसीअता, ओह वसीका वेखे थाउँ थाईंआ। दीन दुनी दी बदलण वाला तबीअता, ताबिआदारी सब नूं दए जणाईआ। घट निवासी पुरख अबिनाशी पवित्र करे नीअता, नीतीवान आपणी कार कमाईआ। भेव खुल्हावे मन्दिर मसीता,

मुल्ला शेख़ पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी आपणा राह जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को चरण कँवल सच प्रीता, पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं हज़रत ईसा रिहा वखा, परदा अन्तर निरंतर इक उठाईआ। जो धुरदरगाहों लेखा रिहा लिखा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जो दीन दुनी विच हिस्सा ल्या पा, सो परवरदिगार झोली पाईआ। जिस नूं कलमयां विच दस्सदे आए खुदा, खुद मालक नूर अलाहीआ। जिस तों हो के आए जुदा, फ़ासी गल दे विच लटकाईआ। उस दा समझया ना कोए मुद्दा, मुद्दत तों बैठे राह तकाईआ। ओह करे खेल उपर बसुधा, धरनी धरत धवल आपणा डेरा लाईआ। शब्दी धार हो के कुद्दा, जोती नूर डगमगाईआ । नौ सौ चुरानवे चौकड़ी नव नौ चार कराए युद्धा, अनभव अनदृष्ट भेव ना कोए समझाईआ। जो आसा मनसा रख के गया महात्मा बुधा, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं ईसा रिहा समझा, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। रमज़ इशारे रिहा लगा, लग मातर डेरा ढाहीआ। जुग बदलण दी प्रभ नूं पई अदा, नित नवित्त आपणी खेल खिलाईआ। अन्तिम साथों होण लग्गा जुदा, भेव अभेदा सके ना कोए समझाईआ। लेखा मुकाउण लग्गा एका दूजा, दूआ एके विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे ईसा निउँ निउँ करे सलाम, सम्मत सम्मती वेख वखाईआ। कौण बदलण लग्गा कलाम, कायनात परदा दए उठाईआ। कौण वेखण लग्गा नज़ाम, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। कौण संदेसा देवे पैग़ाम, धुर संदेसा नूर अलाहीआ। साचा करन आए इंतज़ाम, दह दिशा आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणा के आपणे ग़ुलाम, हुक्मे अंदर हुक्म जणाईआ। मैं अन्त अख़ीर होया हैरान, हैरानी विच वखाईआ। सब दा मेटण लग्गा निशान, निशाने कूड़े रिहा चुकाईआ । आत्म परमात्म दे के इक ज्ञान, सिख्या सिख सच समझाईआ। जन भगत सुहेले कर परवान, परम पुरख प्रभ देवे माण वड्याईआ। चरण प्रीती एका ध्यान, इष्ट देव इक समझाईआ। सच दुआरे बख्श के माण, माया ममता मोह मिटाईआ। धुर दे शब्द चढ़ा बबान, कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया काअबा सुहा मकान, घर विच घर करे रुशनाईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म मेला होवे आण, सच वजदी रहे वधाईआ। अमृत रस मिले पीण खाण, जगत कूड़ी त्रिष्न बुझाईआ । अनहद शब्द सुणे सची धुनकान, अनरागी आपणा राग अलाईआ। जोती जोत मिले भगवान, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

५८७
२१

आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ । सदी चौधवीं कहे की दस्से ईसा हज़रत, हज़ूरीआ रिहा जणाईआ। बीस सदी कीती ऐशो इशर्त, खुशीआं विच दुहाईआ। मेरी ख़ाहिशां वाली वेख हसरत, हर घट अंदर दयां समझाईआ। मैं करदा रिहा कसरत, दिवस रैण आपणा बल रिहा वधाईआ। अन्त अख़ीर आई गरदश, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। अग्गे करे कोई ना परवरिश, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। ईसा कहे मैं सुणावां कूक, कूक कूक जणाईआ। वेखो की होण लग्गा सलूक, निरवैर निरँकार निराकार खेल खिलाईआ। सृष्टी दृष्टी चारों कुण्ट जाए चूक, आलस निंदरा दए मिटाईआ। की खेल होणा काया पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश परदा दए उठाईआ। की झगड़ा होणा चारे कूट, दह दिशा दिसे लड़ाईआ। लहिणा देणा मुकाउणा जूठ झूठ, माया ममता मोह नाल मिलाईआ । पवित्र रिहा ना कोए कलबूत, कलमे वाले रहे कुरलाईआ। परवरदिगार हो मौजूद, मजलस वेखे थाउँ थाईंआ । माया ममता करे नेसतो नाबूद, जड़ सब दी रिहा उखड़ाईआ। जन भगतां कर महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । घर वखा अर्श अरूज, आलीशान दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सतिजुग साचे देवे माण वड्याईआ। ईसा कहे मैं लावां हक़ नाअरा, बिन रसना जिह्वा गाईआ। वेखो खेल परवरदिगारा, यामुबीन तेरी सरनाईआ। मेरा अन्तिम आया किनारा, नईआ डोले थाउँ थाईंआ। जो दे के गया इशारा, पोपां ताईं दृढ़ाईआ। ओह होण लग्गा ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर नूर खुदाईआ । जो निरगुण धार आए दुबारा, तत्तां वाला डेरा ढाहीआ। जोती जोत जोत चमतकारा, अन्ध अन्धेर गवाईआ। सृष्टी दृष्टी दए अधारा, धीरज धीर आप धराईआ। चार वरन अठारां बरन वखाए इक दुआरा, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस नूं कल कल्की कहिंदे निहकलंक अवतारा, अमाम अमामा धुरदरगाहीआ। ओह खेले खेल सर्ब संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। नाल रलाए तेई अवतारा, मूसा ईसा मुहम्मद बचया रहिण कोए ना पाईआ। नानक गोबिन्द दे सहारा, सगले संगी रिहा जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर भिखारा, दर मांगत झोली रिहा भराईआ। देवत सुर करोड़ तेतीसा रोंदे ज़ारो ज़ारा, इन्द इंदरासण रिहा हिलाईआ। रवि ससि करन पुकारा, मण्डल मण्डप सीस झुकाईआ। दर डिगदे सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वारो वारा, वास्ता रहे पाईआ। तेरा खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर कहिण कोए ना आईआ। कागद क़लम ना लिखणहारा, मस समुंद ना कोए वड्याईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी परवरदिगारा, सांझा यारा इक अख्वाईआ। तेरा खेल सदा जुग चारा, चौकड़ी

बैठी ढेरीआं ढाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर पार किनारा, सति धर्म दा मार्ग देणा लाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं निउँ निउँ करां निमस्कारा, सजदयां विच धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा नूर चवीआं अवतारा, ज़हूर हज़ूर आपणा देणा वखाईआ।

✻ २२ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ धर्मजीत दे गृह मौजू मुजारा ✻

सदी चौधवीं कहे सति दिसे ना कोए निशाना, कूड़ कुड़िआरा चारों तरफ़ नज़री आईआ। शरअ पैगम्बर होया बेगाना, बग़लगीर ना कोए अख्वाईआ। हक़ीक़ी जाम देवे ना कोए पैमाना, आबेहयात ना कोए चखाईआ। विद्या रही ना किसे उल्माना, इल्म आलम दए दुहाईआ। नूरी जोत काया जगे ना कोए शमादाना, अन्ध अन्धेरा गया छाईआ। धुँदूकार होया ज़िमीं असमाना, चौदां तबकां परदा ना कोए उठाईआ। मसला हल्ल ना करे कोई क़ुराना, तीस बत्तीसा भेव ना कोए खुल्हाईआ। साचा सुणाए ना कोए नाम तराना, नाअरा हक़ ना कोए जणाईआ। मुहम्मद होया परेशाना, हैरानी हिरदे अंदर आईआ। की खेल करे रहमाना, राज़क़ रिज़क रहीम धुरदरगाहीआ। जिस दी याद करे ना कोए कलामा, धुर दा कलमा ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी परदा लाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहब्बत दिसे ना मुरीद मुर्शद, जगत ममता रही कुरलाईआ। निरगुण धार करे कोई ना उल्फ़त, पंजां तत्तां जगत वड्याईआ। कल्पणा विच्चों मिले किसे ना फ़ुरसत, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। चार कुण्ट दह दिशा सब ते आई मुश्किल, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक दिसे कोई ना खुशदिल, ग़मी घर घर डेरा लाईआ। नेत्र नज़र ना आए किसे अली दा दुलदुल, दाअवेदार ना कोए अख्वाईआ। उम्मत फुलवाड़ी विच चहिके ना कोए बुलबुल, नाम सुरीली आवाज़ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, जल्वागर नूर इलाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां चार कुण्ट फ़रेब, दीन दुनी दग़े विच हल्काईआ। माया ममता भरी किसे ना जेब, हिरदे हवस ना कोए मिटाईआ। पढ़ पढ़ थक्के शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान कतेब, काअबयां वल्ल सीस निवाईआ। परवरदिगार सांझा यार कोई ना सक्कया वेख, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। जिधर तक्कां ओधर कूड़ा भेख, कूड़ पखण्ड डण्ड रिहा पाईआ। भरमे भुल्ले मुल्लां शेख़, मुसायकां मसला हल्ल ना

कोए कराईआ। लोकमात समझे ना कोए प्रदेश, साचा घर नज़र किसे ना आईआ। जिथ्थे परमात्मा रहे हमेश, आत्म मेला मेले सहज सुभाईआ। सदी चौधवीं कहे सच संदेसा दे के गया गुर दस्मेश, बाज़ां वाला आवाज़ लगाईआ। इक प्रगट होवे योद्धा नर नरेश, नर नरायण धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि रहे हमेश, जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां सेवा मात लगाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सृष्टी दृष्टी लए वेख, लख चुरासी फोल फुलाईआ। जग नेत्र नज़र ना आए बिन रूप रंग रेख, ऋषीआं मुनीआं दा परदा दए खुल्हाईआ। जिस दी महिमा शास्त्रां तों बाहर विशेष, विषयां विच विचार ना कोए प्रगटाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआरे वस्से एक, एकँकारा आपणा डेरा लाईआ। सो स्वामी बख्शणहारा टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सद आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दुनियां वेखी कर्म कांड दी रोगी, ममता दुःख ना कोए मिटाईआ। आत्म परमात्म बणे ना कोए संजोगी, धुर दा मेल ना कोए मिलाईआ। मैं चौहन्दी पंजां भगतां दे सिर ते होवे बोदी, लम्मी सोहणी सोभा पाईआ। काला निशान होवे उत्ते गोडीं, दूर दुराडा नज़री आईआ। नीली बिन्दी होवे उपर ठोडी, आपणा रंग चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखे दस्तगीर, पीर पीरां खोज खुजाईआ। सब नूं शरअ दा बज्झा ज़ंजीर, कड़ी कड़ी नाल बंधाईआ। अक्खरां वाली पढ़न तकबीर, तहिरीर तक़रीर विच जणाईआ। जेहड़ी आसा रखी कबीर, काअबयां तों परे गया समझाईआ। ओह मंज़ल इक अख़ीर, जिथ्थे वस्से धुरदरगाहीआ। जिस नूं समझे बुद्धी ना कोए ज़मीर, अनभव आपणी खेल खिलाईआ। सो दाता दानी गहर गम्भीर, गुणवन्ता वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे बेनज़ीर, नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अमृत रस मिले सीर, जगत तृष्ना कूड़ी देणी गवाईआ।

तेरा जन्म नानक धार, तलवंडी नज़री आईआ। तेरा पिच्छा हुंदा सी घुम्यार, कच्चे भाण्डे आवीआं विच तपाईआ। इक दिन नानक लंघिआ ओस बाज़ार, गिआरां साल दी उमर सोभा पाईआ। तूं छोटा बच्चा सैं ढाई साल, माता पिता गोद सुहाईआ। भज्ज के मारी छाल, आपणी लई अंगड़ाईआ। इक निक्का जिहा प्याला ल्यांदा उठाल, नानक हथ्थ फड़ाईआ। ओस हस्स के किहा, वाह नन्हे बाल, तेरा पुरख अकाल होवे सहाईआ। कोलों कढ्ढके इक रुमाल, मुख

तेरे दिता छुहाईआ। दर्शन दिता कमाल, अंदर होई रुशनाईआ। तूं कीता हाल हाल, रौला दिता पाईआ। तेरी भैण आई भज्जी मैं वीर नूं लवां संभाल, की दुखड़ा लग्गा अनिआईआ। नानक ने किहा ऐधर धरो ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। तुहाडा मेल करावां अन्त नाल ओस श्री भगवान, जिस नालों विछोड़ा अग्गे होवे ना राईआ। ओसे कारण तुहानूं जन्म मिल्या फेर इन्सान, नाता भैण भाई दिता बणाईआ। अग्गे दी चुक्क गई काण, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जद वसो चरण कँवल श्री भगवान, दूजा दर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त सब दी आसा मनसा पूर कराईआ।

५९० २१

❊ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ हरभजन सिँघ दे गृह डांडीआं ज़िला हुश्यिारपुर ❊

सदी चौधवीं कहे सृष्टी दी दृष्टी होई मूढ़, मूर्ख मुगध चार वरन नज़री आईआ। अन्तर सब दा नाता जुड़िआ कूड़, सच धर्म दी चले ना कोए चतुराईआ। माया ममता मोह रंग चढ़या गूढ़, हउमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। पुरख अकाल चरण लावे कोई ना धूढ़, मस्तक टिक्के ख़ाक ना कोए रमाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह भुल्ल गए हज़ूर, जो गुर अवतार पैगम्बर गए समझाईआ। निरगुण जोती दिसे किसे ना नूर, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ सारे देण दुहाईआ। नाम भण्डारा करे ना कोए भरपूर, ख़ाली कासे घर घर नज़री आईआ। मन वासना दुनियां होई मज़दूर, दिवस रैण भज्जे थाउँ थाईंआ। जीवण ज़िंदगी दा समझे ना कोए क़ुसूर, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। चारों कुण्ट प्या फ़तूर, फ़ैसला हक़ ना कोए सुणाईआ। अमृत नाम देवे ना कोए सरूर, मदि प्याले कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे चारों कुण्ट दीन दुनी भुल्ली, भरम विच लोकाईआ। भाग लग्गा दिसे ना किसे काया कुल्ली, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर ना कोए सुहाईआ। दुनियां प्रभ दा नाम जपदी बुल्लीं, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सच तराज़ू तोल कोई ना तुली, कंडा नाम निरँकार नज़र किसे ना आईआ। अमृत निझर धार किसे ना डुल्ली, सरोवर प्याले कम्म किसे ना आईआ। सति धर्म फुलवाड़ी कोई ना फुल्ली, कर्म कांड पत्त टहिणी ना कोए महकाईआ। प्रभ चरण प्रीती गुरमुख सवाणी कोए ना घोल घुल्ली, निछावर आपणा आप ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे सृष्टी वेखी करदी हाहाकार, तट किनारे रहे कुरलाईआ। रसना जिह्वा पढ़ पढ़ थक्का

५९१

२१

संसार, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुराना रहे उच्चार, ग्रन्थां रहे सुणाईआ। निर्मल जोत किसे अन्तर ना दिसे उज्यार, दीआ बाती कमलापाती नूर करे ना कोए रुशनाईआ। अमृत आत्म रस किसे मिल्या ना ठंडा ठार, निझर झिरना बूँद स्वांत ना कोए चुआईआ। चारों कुण्ट दिसे धूआँधार, अनभव दृष्टी अन्तर निरंतर ना कोए जणाईआ। की खेल करे हरि करतार, क़ुदरत दा मालक आपणी कार कमाईआ। भय रिहा ना किसे तेई अवतार, ईसा मूसा मुहम्मद डर ना कोए रखाईआ। नानक गोबिन्द हिरदिउँ दिता विसार, सिदक सबूरी वाला सिख नज़र कोए ना आईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गए हार, तीर्थ तट नेत्र रो के मारन धाईंआ। किरपा कर सच्ची सरकार, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। दीन दुनी सोई सुरती कर ख़बरदार, बेख़बरां आप उठाईआ। तेरा सच रिहा ना कोए प्यार, चरण कँवल मँगे ना कोए सरनाईआ। दीनां मज़हबां सब नूं कीता खुआर, ज़ात पात घर घर करे लड़ाईआ। परमात्म आत्म आत्म परमात्म इक वखा सच्चा घर बाहर, गृह एकँकारा आप दृढ़ाईआ। तूं पति पतवन्ता शाह पातशाह शहिनशाह गुरमुख सुलखणी होवे तेरी नार, नार कन्त मिल के आत्म सेजा वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों कढ्ढ बाहर, हर हिरदे कर सफ़ाईआ। सतिजुग साचा धर क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक वखा धर्म दुआर, आत्म ब्रह्म परदा आप उठाईआ। किरपा निधान जगत प्रकृती निवृत्ति कर आप परवरदिगार, सचखण्ड निवासी आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चार कुण्ट उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख्या वारो वार, चौदां लोक चौदां तबक साचा सबक ना कोए समझाईआ। सन्त सुहेला भगत गुरमुख गुरसिख सूफ़ी फ़कीर तेरा दिसे कोई ना बरख़ुरदार, आजज़ हो के नवाज़श विच तैनूं सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, धुर दे हुक्म अंदर अनदृष्ट विकार दृष्टी सब दी कर गिरफ्तार, धुर फ़रमाना बंधन एको पाईआ।

❊ २२ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ प्रीतम सिँघ दे गृह गोबिन्द पुरा फगवाड़ा ❊

सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां नाल ईमान, अमल दीन दुनी वेख वखाईआ। सति धर्म दा रिहा ना कोए ज्ञान, बुध्ध बिबेक ना कोए कराईआ। सच सुच दिसे ना कोए निशान, कूड़ निशाना जगत लोकाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ दिसे हराम, तीर्थ तटां काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दिसे अन्धेरी शाम, सतिजुग

साचा नूर चन्द ना कोए चमकाईआ। भाग लग्गा दिसे ना किसे काया माटी ग्राम, बंक दुआरा सोभा कोए ना पाईआ। धुर संदेसा जणाए ना कोए पैग़ाम, जन्म कर्म दा मसला हल ना कोए कराईआ। चार कुण्ट विगड़िआ इंतज़ाम, दीन दुनी पई दुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं रो रो करां प्रणाम, नमस्तयां विच सीस झुकाईआ। किरपा कर मेरे मेहरवान, महबूब तेरी सरनाईआ। प्रगट हो अमामा अमाम, मुहम्मद देवे जगत दुहाईआ। सति धर्म दा पूरा कर काम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दीन दुनी दा वेख्या अंदर, निगाह तन वजूद टिकाईआ। साचा सोहे कोई ना मन्दिर, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए रुशनाईआ । बज़र कपाटी तोड़े कोई ना जंदर, परदा दुनी ना कोए उठाईआ। मनुआ चारों कुण्ट भज्जे बन्दर, सुरती शब्द ना कोए बंधाईआ। प्रकाश होए ना अन्धेरी कंदर, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं सच वस्त आई मँगण, दर ठांडे सीस झुकाईआ। पुरख अकाल चाढ़ दे रंगण, निरवैर आपणा रंग रंगाईआ। दीन मज़हब दा तोड़ दे बंधन, बन्दगी इक्को दे समझाईआ। चरण धूढ़ी करा मजन, सर सरोवर इक नुहाईआ। मैनूं झगड़ा दिसदा विच अदन, अदालत हक़ ना कोए कमाईआ। मैं वेख्या उपर गगन, मुहम्मद नैणां राह तकाईआ। तूं बैठा इक इकल्ला मग्न, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या खेल ख़ास, ख़सूसीअत विच दयां दृढ़ाईआ। पुरख अकाला बदलण लगा लिबास, दीन दुनी धार बदलाईआ। झगड़ा मुकाउण लग्गा गोपी काहनां वाली रास, तट किनारे खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहिण ना देवे शाख़, शनाख़त आपणी इक कराईआ । निरगुण नूर कर प्रकाश, कलयुग कूड़ अन्धेरा दए गवाईआ। मनुआ मन ना रहे बदमाश, मन का मणका दए भवाईआ। मोह विकार कर के नास, नास्तिक अस्तिक दए जणाईआ। साचे मण्डल सुहा के रास, रस्ता आपणा इक वखाईआ। जिथ्थे निर्मल नूर जोत प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे चारों कुण्ट हुंदे चर्चे, चर्चा विच पए दुहाईआ। इक्की बीबीआं हथ्थ विच फड़ने बरछे, बुरछा गर्दी देणी मिटाईआ। जेहड़ा खेल वेख्या गुरमुखां उपर सरसे, सो साहिब दए समझाईआ। एह कलयुग दे अन्त अख़ीरी परचे, प्राचीन दा लेखा दए मुकाईआ। करने खेल अगम्मे नर दे, नर नरायण धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां जगत बिवहारा, बिवहारी हो के खोज खुजाईआ। छब्बी पोह नूं इक होणा विच सुनिआरा, जिस

दी ज़ात मिले वड्याईआ। मस्तक निशान लाया होवे नाल गारा, गहर गम्भीर फोल फुलाईआ। जिस दा जन्म होया दुबारा, गोबिन्द हिस्सा गया वंडाईआ। उस दा भेव खोल्हणा सारा, क्यों सरसिउँ कीती जुदाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दीन दुनी दा तक्कणा तत वजूद, काया माटी वेख वखाईआ। किस दे अंदर वस्से महबूब, मुहब्बत विच मेल मिलाईआ। कवण चढ़या मंज़ले मक्सूद, सच दुआरे डेरा लाईआ। कवण प्यार विच गया झूज, एका दूआ दूज मिटाईआ। किस नूं धुर दी आई सूझ, समझ लई बदलाईआ। तक्कके अर्श अरूज, आलम पैंडा दिता मुकाईआ। जन्म कर्म दा लेखा कर मनसूख़, दुःख दर्द दा डेरा ढाहीआ। आवण जावण गेड़ मुका के उलटा रुख़, चुरासी फाँसी लए कटाईआ। धर्म दुआरे बण के सुत, भगत भगवान विच समाईआ। मेल मिल के नाल अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती लई कराईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चार कुण्ट दह दिशा जन भगतां वेखणा की काया अन्तर दुःख, दकुखां दा दारू धुर दा नाम देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा अन्त मुकाउणा मानव मानुख, माणस आपणा रंग रंगाईआ।

५९३ ५९३

२१ २१

❋ २३ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ महल सिँघ दे गृह फगवाड़ा ❋

सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां हक़ीक़त हक़े, हक़ हक़ दयां दृढ़ाईआ। जो वेख्या बिन नेत्र लोचण नैण अक्खे, आख़र मंज़ल चढ़ के ध्यान लगाईआ। जिस वेले नानक निरगुण सरगुण धार गया मक्के, मक़बरिआं तों परे आपणा खेल खिलाईआ। जीवण जीवत रूप मारे धक्के, हथ्थां पैरां ताईं हिलाईआ। नानक असमानां तों उपर परे तक्के, तकवा इक्को इक रखाईआ। धुर फ़रमाना आया तेरी पत आपे रखे, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस ने अवतार पैगम्बर गुरु भेजे दीगरे बाद यक्के, यक्क मालक इक अख्वाईआ। चार कुण्ट दह दिशा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे नानक किहा नाल प्यार, प्रेम प्रीती विच जणाईआ। ज़रा निगाह अगम्मी मार, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। जिध्धर नहीं महबूब दा दरबार, ओधर पासा दे बदलाईआ। जिथ्थे मक्के काअबे दा नहीं मनार, हुजरा नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे मम्बरां उत्ते नहीं आवाज़, गीत नाद नग़मा नाम ना कोए सुणाईआ। जिथ्थे पढ़ीदी नहीं नमाज़, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा बेपरवाहीआ। जीवण अंदर मारी झाकी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। नानक खोल्ह के परदा ताकी, दूई द्वैत दिती मिटाईआ। आबेहयात दिता बण के साकी, अमृत रस चखाईआ। जीवण विच्चों ज़िंदगी बदल हयाती, हिरदे अंदर करी सफ़ाईआ। जिधर वेखे ओधर नूर अलाही कमलापाती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। चारों कुण्ट धरती ख़ाकी, धवल रो के दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, महबूब मुहब्बत विच भेव खुल्हाईआ। नानक किरपा कीती अन्तर, जीवण वज्जी वधाईआ। खुल्हिआ भेव निरंतर, परदा रिहा ना राईआ। वड़िआ ओस अंदर, जिथ्थे तारा चन्द ना कोए रुशनाईआ। तक्कया ओह गगनंतर, चौदां तबकां परे रुशनाईआ। जिथ्थे इक्को सति दा मन्त्र, पीर पैगम्बर बिन रसना जिह्वा नाअरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ । नानक किहा सुण मुबीन मुहब्बत क़ाज़ी, क़ज़ा तों परे दयां समझाईआ। जिथ्थे परवरदिगार अगम्म अथाह राज़ी, राज़क रिज़क रहीम सोभा पाईआ। जिस दी मंज़ल चढ़े ना कोए नमाज़ी, सफ़री पन्ध ना कोए मुकाईआ। जिथ्थे महिराब हुजरिआं वाली नहीं महिराबी, मम्बर मनारा नज़र कोए ना आईआ। दुलदुल दिसे कोए ना ताजी, मक़बरा सार ना कोए समझाईआ । ओथे शाह पातशाह शहिनशाह इक्को जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर करन आदाबी, सजदयां विच सीस झुकाईआ। मेरा खेल ओस दा जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणी रज़ा विच राज़ी, दूसर खेल ना कोए वखाईआ। की होया तूं वस्सें विच बग़दादी, बग़लगीर मुहम्मद ध्यान लगाईआ। मेरा पुरख अकाला दीन दयाला इक इमदादी, नित नवित्त साचा संग निभाईआ। होछी मति रहिण ना देवे पाजी, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नानक किहा वेख अगम्म मसल्ला, हक़ दयां दृढ़ाईआ। जिथ्थे वस्से इक रसूल अल्ला, आलमीन डेरा लाईआ। सूफ़ीआं पकड़न वाला पल्ला, वाहिद जल्वागर नूर रुशनाईआ । लेखा जाणे जला थला, घट भीतर खोज खुजाईआ। सो स्वामी मेरे अन्तर निरगुण नूर हो के रला, जोती जाता डगमगाईआ। ख़ाली दिसे ना कोए महल्ला, महबूब मेहर नज़र आपणी नाल दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। क़ाज़ी अंदरों होया नज़दीक, निम्रता विच ध्यान लगाईआ। मैं सफ़री तेरा अज़ीज़, ढहि ढहि लागे पाईंआ। हथ्थां नाल ना ल्या घसीट, टंगां चुक्क ना कोए बदलाईआ। नानक किरपा कर के काया काअबा हक़ वखाई मसीत, मसला अगला हल्ल कराईआ। बिरहों विच निकल गई चीक, जीवण रोवे मारे धाहींआ। इस दे विच हक़ तौफीक़, ताअरीफ़ विच नूर

अलाहीआ। जिस दी कलमा करे तसदीक़, क़ुरान दए गवाहीआ। मेरी मनसा आसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना तृखा बुझाईआ। धुर दा कलमा दस्से हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। पतितां करे पुनीत, दुरमति मैल गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या नानक रूप अनोखा, सेली टोपी सीस सुहाईआ। किसे नाल ना करदा धोखा, धोखे वाल्यां लए तराईआ। बग़ल मार क़ुरान दा पोथा, तीस बत्तीसा सिफ्त सालाहीआ। खेल दस्से उपर चौदां तबकां चौदां लोका, परदा उहला आप उठाईआ। ख़ुदा मिलण दा वाहिद इक्को मौका, माणस जन्म रिहा समझाईआ। अल्ला हू सति नाम दा सति धर्म दा होका, हुक्म इक्को बेपरवाहीआ। मन बुद्धी दी करो कोई ना सोचा, अनभव वेखो नूर अलाहीआ। जिथ्थे रखणा पए कोए ना रोज़ा, रमज़ान वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्को इक सुणाईआ। नानक किहा सुणो मुहम्मदी मीत, मित्र प्यारयो दयां जणाईआ। ओस महबूब दा वेखो काअबा हक़ मसीत, जिथ्थे हक़ो हक़ नज़री आईआ। अन्तर वड़दयां बदल जावे नीत, मन ममता डेरा ढाहीआ। तूं मेरा मेरा तेरा अन्तर उपजे गीत, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तन माटी ख़ाक होवे ठंडी सीत, अगनी तत दए गवाईआ। जिधर तक्को ओधर दूर दुराडा नेरन नेरा सदा नज़दीक, निरगुण सरगुण आपणी खेल खिलाईआ। आत्म परमात्म बख़्शे सच प्रीत, अल्ला हू अन्ना हू हू हू आपणा भेव चुकाईआ। सब दी ख़ुश करे तबीअत, ताबेदारी इक दृढ़ाईआ। सुणो मेरी सच नसीहत, हुक्म संदेसे विच समझाईआ। हिन्दू मुस्लिम इक्को जिही अहमीयत, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। किसे दी बदले ना कदे बदनीअत, नीतीवान बणना थाउँ थाईंआ। सच ख़ुदा सच मुर्शद हक़ मुरीद सब दे अंदर निरगुण नूर जोत असलीअत, तत वजूद माटी ख़ाक कम्म किसे ना आईआ। परदा खोल्ह वेखो जो मुहम्मद कर के गया वसीअत, वसल यार इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। नानक जीवण वखाया ओह हुजरा, जिथ्थे हुजत ना कोए कराईआ। जल्वागर दा इक्को मुजरा, नूर नुराना नाच नचाईआ। सृष्टी उत्ते जिस दा नक़शा नहीं कोई शजरा, नैण अक्ख ना कोए समझाईआ। ओह खेल करे करीम क़ादर क़दरा, क़ुदरत दा मालक नूर इलाहीआ। जो सब दीआं पूरीआं करे सध्धरां, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। दीनां मज़हबां विच रूप धरे कोई ना वखरा, इक्को जोत नूर अलाहीआ। ज़रा वेखो नौवां खोल्ह क़ुरान दा पत्रा, जिस विच भेव दिता जणाईआ। बिना हक़ नाम हक़ीक़ी कलमे तों मुल्ला शेख़ मुसायक क़ाज़ी सब सक्खणा, तन वजूद सच रबाब ना कोए वजाईआ। इक्को

मुर्शद इक्को दी सरनी ढठणा, इक्को गृह इक्को मन्दिर इक्को घर इक्को दुआरा दए वखाईआ। इक्को मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को दा नाम जपणा, इक्को दाता सिफ्त सालाहीआ। जिस ने एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण धार रखणा, रच्छया करे थाईं थाईंआ। जीवण नीवण नीवां हो के चरण धूढ़ी ख़ाक लावे मथ्थणा, टिक्का टिकटिकी नाल रमाईआ। नानक सच तेरे दुआर वसणा, जिथ्थे दूई द्वैत रहे कोई ना राईआ। नानक हस्स के किहा तेरा मालक ओह प्रभू सुलखणा, जिस दीआं सुक्खां सुक्ख के निआज़ां रहे चढ़ाईआ। अन्त अख़ीरी ओस ने लहिणा देणा मेरा पूरा करना फेर जन्म लै विच पटना, पट्टेदारी सब दी वेख वखाईआ। फेर तन वजूद दी कर के घटना, नाता तत्तां वाला मिटाईआ। जोती जोत सरूप हो के शब्द नगारे जिस दा डंका वज्जणा, चौदां तबक दए उठाईआ। जीवण ओस वेले पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार दो जहानां नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमानां इक्को नस्सणा, नर नरायण निराकार निरवैर आपणी कार कमाईआ। तेरा लहिणा देणा मुकावे हथ्थो हथ्थना, पूरब करमां वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे जो सुण सुणा के सुण के आए दुआरे, दर मांगत सीस निवाईआ। तिस उपर किरपा करे आप निरँकारे, निरगुण निरवैर वेख वखाईआ। पंज तत काया माटी पैज संवारे, दुरमति अंदरों मैल धवाईआ। अमृत बख्शे सच भण्डारे, निझर झिरना आप चुआईआ। शब्द अनाद दए सच्ची धुन्कारे, अनहद रागी राग सुणाईआ। जोती जोत करे उज्यारे, आत्म ब्रह्म ब्रह्म रुशनाईआ। मंज़ल चाढ़े हक़ दुआरे, जिथ्थे सुर्या चन्न नज़र ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दिसण पनिहारे, दर बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर निउँ निउँ कढ्ढण हाढ़े, ख़ाली झोलीआं रहे वखाईआ। ओह दुआरा एकँकारा सचखण्ड सच्ची सरकारे, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को सोभा पाईआ। देंदा आया जुग चौकड़ी वारो वारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। भगतां नाल करे हक़ प्यारे, भाव भगती इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद बख्शणहार इक सरनाईआ। जो मँगण आया बण के मँगता, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। तिस दा गढ़ तोड़े हउमे हंगता, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। भेव खुल्हाए बण के बोध अगाधा पंडता, अनभव आपणी धार जणाईआ। झगड़ा मुका के जेरज अंडता, उत्भुज सेत्ज लेखा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, काया मन्दिर अंदर करे रुशनाईआ। सुण सुणा के जो आए नठ्ठे, बण बण पाँधी राहीआ। किरपा करे पुरख समर्थे, हरि वड्डा वड वड्याईआ। नाम प्रीती

काया चोली रते, रंग मजीठ चढ़ाईआ। आत्म परमात्म नाता जोड़े सके, साजन इक्को इक अख्वाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे, जन्म मरन दा गेड़ मुकाईआ। सचखण्ड दुआरे आपणे छड्डे, जिथ्थे राए धर्म ना दए सज़ाईआ। नाम निधाना नौबत वज्जे, जलवा जोत नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सन्त भगत सूफ़ी फ़कीर बैठे इक्ठे, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। ओथे दीन मज़हब दे नहीं रट्टे, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। इक्को पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण धार सच्ची सरकार शाह पातशाह शहिनशाह सच प्रीती आपणी धार रत्ते, रतन अमोलक गुरमुख हीरे लए बणाईआ। जो भगत दुआरे आए बण भिखारी, भिखक भिच्छया देवे चाँईं चाँईंआ। नाता जोड़ नाल जोत निरँकारी, निराकार साकार मेला मेले सहज सुभाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हँकारी, मन मनसा ममता दए गवाईआ। नाद शब्द दे धुन्कारी, आत्म परमात्म आपणा राग जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म आदि दी सच्ची यारी, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर हुक्मे अंदर जुग जुग सेवादारी, चाकर आपणी कार कमाईआ। जन भगतां कारण भगवन निरगुण सरगुण रूप धरे अवतारी, अवतर आपणा वेस वटाईआ। धन्न भाग जो सतिगुर नाम बणे व्यपारी, वणज इक्को हट्ट जणाईआ। जिथ्थे जन्म कर्म दी उतरे बीमारी, कर्मां दा रोग रहे ना राईआ। देवणहारा दरस नैण मुँधारी, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। घर विच घर वखा सच्चा घर बारी, दसम दुआरी आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर आयां दए वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या वजदा वाजा, सुर ताल नाल वड्याईआ। गीत गाया ग़रीब निवाज़ा, सिफ्तां नाल सालाहीआ। नाउँ सुणया गोबिन्द जिस दे सीस उत्ते ताजा, कल्गी वाला सोभा पाईआ। दो जहान राज महाराजा, महबूब नूर अलाहीआ। जो लहिणा देणा जाणे सन्त साधा, सिदक सबूरी सब दी वेख वखाईआ। जिस कलयुग अन्तिम रचया आपणा काजा, करनी दा करता हो के वेख वखाईआ। निरगुण नूर जोत परकाश करे देस माझा, मजलस भगतां नाल बणाईआ। धुर प्रेम दा बख्श अनुरागा, आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुणया नाल तबला, आवाज़ आपणी रिहा सुणाईआ। कलयुग जीव नार रिहो कोई ना अबला, मालक इक्को लैणा प्रनाईआ। जिस नूं कहिंदे परमेश्वर पति कमला, कँवल नैण धुरदरगाहीआ। जो सदा रहत बिन अमलां, कर्म कांड विच कदे ना आईआ। जिस ने रूप बणाया त्रैलोकी नाथ उपर जमना, तटां उत्ते खेल खिलाईआ। जिस ने ईसा मूसा मुहम्मद खिलाया चमना, गुलशन उम्मत दिता महकाईआ। जिस ने नानक भेज्या वास्ते अमना, सिदक सबूरी झोली पाईआ। जिस ने

गोबिन्द हुक्म सुणाया दूतां दुष्टां दंडणा, खण्डा खड़ग इक चमकाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सब नूं दस्सणी इक्को बन्दना, बन्दगी इक्को इक समझाईआ। आत्म ब्रह्म देणा अनन्दना, रसना रस ना कोए वड्याईआ। साचा नूर चमकाउणा चन्दना, जोती जोत जोत रुशनाईआ। साचे गुरमुखां लाउणा अंगना, गोदी धुर दी लैणा बहाईआ। साचा नाम किसे दवारिउँ पए ना मँगणा, घर भण्डारा देणा भराईआ। तेरा नाउँ सूरा सरबंगणा, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। गोबिन्द दी महिमा की करे लाल नंदना, नंद लाल जी थोड़ी गया सुणाईआ। फ़ारसी दे दो चार अक्खर जिस नूं दिते गंढुणा, ओह गंढु गया पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। जोड़ी वाजा कहे असां दोहां गाया प्रभ दा राग, नानक नाम वड्याईआ। साडी उँगलां हथ्थां नाल खुल्ह गई जाग, सोई सुरती लई अंगड़ाईआ। साडे अन्तर आया वैराग, वैरी दुश्मन बाहर कढ्ढाईआ। साडी हँस बुद्धी होई काग, जिस वेले नाद सुणया धुरदरगाहीआ। साडा खेड़ा होया आबाद, काया वज्जी वधाईआ। ओसे वेले सच सरनाई गए लाग, निवण सु अक्खर सिख्या आपणे विच समाईआ। कर के वड वड भाग, भागांवाला आपणा आप बणाईआ। जिस दा मुहब्बत वाला शब्दी धार उडदा बाज़, बाजां वाला होए सहाईआ। वाजा जोड़ी कहे सुलखणी घड़ी होई आज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। जेहड़े प्रेम प्रीती अंदर पतित पुनीती आए भाज, भजन बन्दगी दिता सुणाईआ। एन्हां गोबिन्द नाल तिन्न दिन पिछले जन्म विच कीता सी साथ, आपणा संग बणाईआ। एह नकलीए हुंदे सी भाट, सोभा सतिगुर घर समझाईआ। उन्हां दा लेखा पूरब जन्म चुकाया हथ्थो हाथ, बाकी अवर ना कोए रखाईआ। रसना गाई सतिगुर महिमा दी गाथ, लेखे प्रभ साचा लए लगाईआ। आसा मनसा मन कल्पणा तों परे पूरी करे आस, प्रेम मुहब्बत प्यार विच सतिगुर दरस दी तृष्ना तृखा दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म ब्रह्म हर घट देवणहारा प्रकाश, अन्ध अज्ञान विच्चों आपणा नाम करे रुशनाईआ।

५९८ ५९८

२१ २१

❊ २३ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ साधू सिँघ दे गृह फगवाड़ा ❊

सदी चौधवीं कहे मैनूं दस्से फ़लक वाला सतारा, सतह बुलंदी उत्ते ध्यान लगाईआ। दूर दुराडा चन्द करे इशारा, चन्द्रमा दी धार बेपरवाहीआ। दोहां दा की लेखा विच संसारा, संसार सागर भेव देणा खुल्हाईआ। जिस कारण निरगुण धार आया दुबारा, निरवैर आपणा फेरा पाईआ। की करे खेल सच निरँकारा, निराकार हुक्म वरताईआ। लख चुरासी

वेखे जीव गवारा, गदागर हो के फोल फुलाईआ। जेहड़े करदे चरण कँवल निमस्कारा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। उन्हां मेला मेले सच दरबारा, दरगाह साची इक सुहाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर वेखण इक उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता बेपरवाहीआ। चन्द सितारा कहे की खेल करे भगवान, हरि करता बेपरवाहीआ। क्यों साडा उठाए निशान, निशाने विच समझाईआ। असीं सुण के होए हैरान, हैरानी साडे अन्तर आईआ। साडी चुक्कण लग्गी काण, वेला वक्त दए गवाहीआ। मुहम्मद सुणे ना कोए फ़रमान, फ़रमांबरदार नज़र कोए ना आईआ। सारे होए हैरान, हैरानी अंदर ढेरीआं ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरा वेख वखाईआ। चन्द सितार कहे साडा कलमे वाला निशान, कायनात उडाईआ। साडा जोबन नौजवान, नूर नुराना सोभा पाईआ। साडा मन्दिर सच मकान, सच दुआरा इक वखाईआ। साडा सतिगुर मेहरवान, महबूब धुरदरगाहीआ। साडा मालक वाली दो जहान, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। साडा दाता देवे दान, दयावान झोली आप भराईआ। साडा साहिब देवे ज्ञान, बिन अक्खरां कर पढ़ाईआ। असीं वेख होए हैरान, हैरानी साडे अंदर छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार सब दी करे पहचान, बेपहचान रहिण कोए ना पाईआ।

✻ २३ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ गुरमीत सिँघ दे गृह फराला ज़िला जलन्धर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं गई मुहम्मद वाली उत्ते क़बर, मक़बरा वेख्या चाँईं चाँईंआ। धाहीं मार के किहा किथ्थे तेरा उम्मत वाला टब्बर, साक सन्बंध मुख छुपाईआ। अगम्मी आवाज़ आई निगाह मार वल्ल शेर बब्बर, जो भय भयानक आपणी खेल खिलाईआ। थोड़ा समां कर होर सबर, बेसबरी चारों कुण्ट दयां वखाईआ। मेरी बदल रही नज़र, नदरी नदर निहाल ना कोए कराईआ। किसे दा रहिणा नहीं कोई क़दर, क़ुदरत दा मालक हुक्म वरताईआ। चारों कुण्ट पैणा ग़दर, गदागर होवे लोकाईआ। दीनां मज़हबां करना पध्धर, हद्द बन्नां विच ना कोए अटकाईआ। सब दी पूरी आसा करां सध्धर, सदमे सब दे वेख वखाईआ। नी मैं की करन आया अदल, इन्साफ धुर दा इक जणाईआ। दीन दुनी दा ख़ाका देणा बदल, बदला चुकावां चाँईं चाँईंआ। सच दुआरा इक्को दस्सां लँघण, जिथ्थे मेला मिले शहिनशाहीआ। धर्म धार वखावां पलँघन, जिस दी बाडी बणत ना कोए बणाईआ। नाम निधान वज्जे मृदँगण, तम्बुरा तन्द सितार ना

६०० २१

कोए हिलाईआ। करे खेल सूरा सरबंगन, हरि करता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं सब नूं दस्सां इक्को बन्दन, डंडावत सजदा इक दृढ़ाईआ। भेव चुकावां खण्ड ब्रह्मण्डण, वरभण्डण परदा लाहीआ। झगड़ा रहे ना काया माटी बदन, आत्म ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। चरण धूढ़ी करावां इक्को मजन, दुरमति मैल धुआईआ। सृष्ट सबाई बण के सज्जण, सगला संगी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि देवणहार सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मुहम्मद दी क़बर दे अंदर मारी झाकी, आपणी अक्ख चुराईआ। ओथे दिस्सया कोई ना साथी, मेरी राम दुहाईआ। पुच्छे कोई किसे ना वाती, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मैं सुणाई अगम्मी बाती, फ़रमाना धुरदरगाहीआ। किथे गए मुहम्मदा साथी, सगला संग तजाईआ। मैं तेरी मन्नदी रही आखी, आख़र तोड़ निभाईआ। हुण मिल गई मैनूं परम पुरख दी पाती, सुनेहड़ा दिता सुणाईआ। नाता तोड़ के ताई चाची, मासी फुफी देणी तजाईआ। मंज़ल चढ़ के वेख घाटी, चौदां तबकां पन्ध मुकाईआ। जिथ्थे वस्से पुरख अबिनाशी, हरि करता धुरदरगाहीआ। ओथे तेरी धार धार बणाए साची, सच सच वड्याईआ। मैं कोई तन वजूद नहीं तन माटी ख़ाकी, रजो तमो सतो नाल वड्याईआ। मैं निरगुण नूर जोत प्रकाशी, प्रकाशत कीता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे क़बरस्तान विच दिस्सया इक रुक्का, बिन अक्खरां नज़री आईआ। इक मूधा उलटिआ हुक्का, हुक्म धुर दा राह तकाईआ। जिस दे विच नहीं कोई तुक्का, तुख्म तासीर रिहा बदलाईआ। इक रूप दिस्सया चार जुग दा भुक्खा, जिस दी तृष्ना ना कोए बुझाईआ। इक बिन छप्पर छन्न तों दिस्सया झुग्गा, जो परवरदिगार आप सुहाईआ। हज़रत मुहम्मद होया बुढ्ढा, हथ्थ कमर उत्ते टिकाईआ। हथ्थ विच फड़या मोटा गुंदा, हौली हौली चले आपणा पन्ध मुकाईआ। पता नहीं की हाल होणा उत्ते बसुधा, धरनी की की खेल वखाईआ। पुरख अकाला बदलण वाला जुगा, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा समझया किसे ना मुद्दा, मुद्दतां तों बैठे राह तकाईआ। ओह अन्त अख़ीर आपे पुज्जा, पूजनीक शहिनशाहीआ। जिस दा खेल रहे ना लुका, लुक़मान बैठा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं क़बर दे अंदर वेख्या परदा, पर्दानशीं दया कमाईआ। जगत जहान तक्कया सड़दा, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। कूड़े वहिण वेख्या हढ़दा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। पर्दा खुल्हिआ किसे ना सच्चे दर दा, मंज़ल हक़ ना कोए चढ़ाईआ। मुरीद मुर्शद साथ जावे छडदा, संगी संग ना कोए बणाईआ। नाता मुकदा जावे मास नाड़ी हड्ड दा, तन वजूद ना कोए वड्याईआ।

६०१
२१

मार्ग मिले ना साचे पद दा, मंज़ल महबूब ना कोए चढ़ाईआ। नज़ारा तक्कया कलयुग बद दा, बदी घर घर रिहा वखाईआ। खेल वेख्या दीन मज़हब दी हद्द दा, वंडां विच वंडीआं आप जणाईआ। नज़ारा वेख्या ओस पुरख समरथ दा, जो सर्ब कला अख्वाईआ। जो जुग जुग पैज रखदा, नित नित होए सहाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मार्ग दस्सदा, शब्द संदेसे विच सुणाईआ। अन्तिम खेल करे हक़ीक़ी हक़ दा, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेशा इक सुणाईआ। मुहम्मद दी क़बर कहे सुण सदी चौधवीं बुढड़ी माई, सच दयां सुणाईआ। मेरी परदयां विच दुहाई, बौहड़ी बौहड़ी रही कुरलाईआ। मुहम्मद दी शरअ बणी कसाई, छुरीआं हथ्थां विच उठाईआ। उम्मत होण लग्गी जुदाई, साचा संग ना कोए निभाईआ। जेहड़ा गोबिन्द बूटा पुटया काही, ओह जड़् रिहा उखड़ाईआ। जेहड़े बच्चे नीहां हेठ दबाई, ओह मैनूं रहे हिलाईआ। मेरा अन्तर ख़ाली विच वस्त कोए नाहीं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर दा धर्म आप उपजाईआ। क़बर कहे मेरे अंदर ना कोई मिट्टी ना कोई ख़ाक, हड्ड मास नाड़ी नज़र कोए ना आईआ। मैं मुरीदां मुर्दा होण दी दस्सां जाच, जीवत आपणा रूप लवो बदलाईआ। धुर दे मुर्शद दा रखो सदा साथ, सगला संग बणाईआ। सदी चौधवीं आई अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मुहम्मद दी महरम वाली ख़ाहिश, ख़ालस आपणा रंग वखाईआ। जिस दी सारे करन तलाश, खोजण थाउँ थाईंआ। ओह करनी दा करता करे जोत प्रकाश, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। पैगम्बरां करे दासी दास, सेवक सेवा रूप प्रगटाईआ । मेरे अंदरों सब कुछ रिहा भाख, भाख्या धुर दी देवां सुणाईआ। मुहम्मद दा पूरा होण लग्गा भविख्त वाक्, पेशीनगोई वेख वखाईआ। मेरे अंदर किसे नबी दी छुपी नहीं कोई ज़ात, जलवा नूर ना कोए चमकाईआ । मैं ते धरती विच पुट्टी खाड, बैठी आपणा आसण लाईआ । ईसा मेरे विच वड़न लग्गयां तिन्न वारी मुखों किहा गॉड, बिना रूह तों कलमा गाईआ। मुहम्मद अंदर वड़ के किहा मैनूं वाहिद, मेरा मालक नूर खुदाईआ । मैनूं इक्को गल्ल मुहम्मद दी रही याद, सो सब नूं दयां सुणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सब ने होणा बरबाद, बदी करन वाला रहिण कोए ना पाईआ। जेहड़ा खुशीआं नाल लगाया बाग़, गुलशन मात महकाईआ। इहदा बुझणा अन्त चराग़, दीवा बाती ना कोए रुशनाईआ। क़बर कहे एह मेरी धीमी जेही आवाज़, हौली हौली सुणाईआ। सारा छब्बी पोह नूं दस्सूं राज़, की मुहम्मद आपणी हमद विच आसा गया रखाईआ। की नानक ने नौ फ़िकरे बोले विच बग़दाद, जिस नूं अज्ज तक ना कोए समझाईआ। की नग़मा किहा जिस वेले गोबिन्द ने उँगल उत्तों उडाया बाज़, बाजां वाले

६०२
२१

आपणा ध्यान लगाईआ। क़बर कहे मैं सब दी सुणदी रही आवाज़, सुण सुण आपणा झट लँघाईआ। इक दिन सारयां कट्ठयां किहा साडे मालक दे सिर ते होणा ताज, दूजा नज़र कोए ना आईआ। उस दे अग्गे ना कोई सवाल ना कोई जवाब, बोलबाला अग्गे ना कोए सुणाईआ। सारयां झुक झुक करना आदाब, नमस्तयां विच सीस निवाईआ। कबर कहे मुहम्मद ने होर दस्सया ओस दे कोल अगम्मी किताब, कुतबख़ाने विच ना कोए टिकाईआ। जिस दा लेखा नहीं हिसाब, गिणती विच गणत ना कोए गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। क़बर कहे मुहम्मद ने तिन्न वार किहा अल्ला मेरे अहिबाब, तेरी बेपरवाहीआ। मेरे पिच्छों नानक आवे लै के तेरी रबाब, तूं ही तूं ही राग अलाईआ। ना ओह सन्त होवे ना ओह जगत वाला साध, पैगम्बरां वाला रूप ना कोए धराईआ। ना ओह हक़ीक़ी होवे ना होवे इश्क मजाज़, दोहां तों परे तेरा खेल बेपरवाहीआ। ओहनूं बख्शणा ओह ख़ताब, जो ख़ता सब दी मुआफ़ कराईआ । ओह फिर तैनूं करे याद, तेरा ध्यान लगाईआ । अन्तर अन्तर मार आवाज़, परवरदिगार दए सुणाईआ। जिस वेले सृष्टी दी दृष्टी होण लग्गे बरबाद, साधना सच ना कोए कराईआ। दीन दुनी दा विगड़न लग्गे समाज, गुर अवतार पैगम्बर ना कोए सहाईआ। तूं खेल खिलाउणा आप, आपणी दया कमाईआ। मैं परवरदिगार तैनूं मन्नया बाप, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। नानक ने गाउणा तेरा सोहँ जाप, आसा मुहम्मद इक जणाईआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट वधणा पाप, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। मनुआ मन होणा गुस्ताख़, मनमति करे लड़ाईआ। ओस वेले तूं प्रगट होवीं साख्यात, निरगुण निरवैर निराकार आपणी दया कमाईआ। झगड़ा मुका देईं दीन मज़हब काग़ज़ात, हिस्सा वंड ना कोए वखाईआ। सानूं सब नूं देईं शाबाश, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। असीं तक्कीए तेरा नूर जोत प्रकाश, चारों कुण्ट डगमगाईआ। क़बरां विच्चों पैगम्बरां नूं करीं ख़लास, मक़बरिआं विच ना कोए वड्याईआ। सन्त सुहेले करीं तलाश, काया काअबा फोल फुलाईआ। कूड़ कल्पणा करीं फ़ाश, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। मेरी इक्को आसा मनसा इक्को अन्त अख़ीरी सास, साह साह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते तेरी वड्याईआ। मुहम्मद क़बर कहे तूं सारे करने क़ाबू, बचया रहिण कोए ना पाईआ। दीन दुनी दा झगड़ा मेटणा वाधू, वाधल रूप ना कोए दरसाईआ। दीन मज़हब इक दूजे नाल मिलावण बाज़ू, बाज़ीगर आपणा डंक देणा वजाईआ। तेरे भगत धुर दे होण साधू, साधना सच देणी समझाईआ। जो जन सरन सरनाई तेरी लागू, लग मातर दा डेरा देणा ढाहीआ। तेरे धर्म दुआरे सतिजुग विच कोए ना पीए तमाकू, मुहम्मद रो के रिहा

सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर निगाह इक उठाईआ। मुहम्मद क़बर कहे प्रभ मेट देणा तूं धब्बा, धोबी हो के करीं सफ़ाईआ। सच पैगम्बरां दा बण के अब्बा, अम्मी आपणी गोद उठाईआ। तेरा नूर ज़हूर जल्वागर खेल होवे बग्गा, बग़लगीर करीं लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दा लेखे ला के अग्गा, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग साचे ना कोई बक्करी गाँ खाए ढग्गा, छुरी चले ना जगत कसाईआ। सारे मन्नण तेरी रज़ा, सिर सके ना कोए उठाईआ। अमृत रस दा देणा मज़ा, आबेहयात प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदी चौधवीं कहे नौ गुरमुख चढ़े होण उपर गड्डा, गाईड गॉड वेख वखाईआ।

* २४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ मनसा सिँघ दे गृह फराला ज़िला जलन्धर *

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद क़बर चौदां हथ्थ डूँघी, चौदस चन्द चमकाईआ। जिस दे नाल रखी इक खूंडी, क़दमां नाल छुहाईआ। इक रेत दी भर के चूंडी, दोहां चरणां विच रखाईआ। ढाई फ़ुट दी कोल टिकाई तूम्बी, लहिंदी दिशा सोभा पाईआ। इक पोटली रखी सवा पा रूं दी, चिट्टी सफ़ैद दिती टिकाईआ। इक बेड़ी रखी नबी नूह दी, छोटी जेही बणाईआ। इक लज्ज टिकाई नाल खूह दी, मोटी पतली ना कोए समझाईआ। इक बेरी टाहणी ल्यांदी जूह दी, जंगल विच सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे जिस वेले मुहम्मद नूं कीता दफ़न, दफ़ा दफ़तर विच लगाईआ। चार कन्नीआं वाला उत्ते पाया कफ़न, चारों तरफ़ रंग रंगाईआ। उपर किउड़ा लग्गा बरसण, गुल रूप महकाईआ। मुरीदां कीता दर्शन, पर्दा ठोडी तों उपर उठाईआ। सब दा दिल लग्गा भटकण, हौक्यां विच हिलाईआ। ओस वेले बद्दल लग्गा सी गरजण, घनघोर घटा छाईआ। सूफ़ी फ़कीरां दा टोला सी इक दरजन, बारां मस्त नज़री आईआ। ओह करन लग्गे अर्ज़न, खुद खुदा तेरी बेपरवाहीआ। एह खेल तेरा असचरजन, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं करां की ताअरीफ़, सिफ्तां विच सालाहीआ। क़बर दे कोल आया इक ज़ईफ़, ज़ईफ़उलउमर नज़री आईआ। उस दे हथ्थ विच फड़ी निक्की जिही मसीत, हुजरां हथ्थां नाल बणाईआ। इक वलज़ाज़ू लिख्या अक्खर उत्ते तवीत, ताज़ा ल्या बणाईआ। मुखों कहे मुहम्मदा तूं ते राज़ी करदा सैं मरीज़, क्यों मुर्दा हो के गोर समाईआ। नाल

सपारे पढ़ क़ुरान मजीद, मुखों रिहा अल्लाईआ। जिस खुदा दी कर के ग्यों ताईद, उहदा परदा कवण उठाईआ। हुक्मे अंदर कीती ताकीद, फ़रमानिआं विच जणाईआ। आप ओस दा बण के अज़ीज़, सेवा आज़म वाली कमाईआ। अक्खरां दा बण हफ़ीज़, हरफ़ हिफ़ज़ गया कराईआ। केहड़ा लुतफ़ ते केहड़ा लतीफ़, लतीफ़ा अगला कवण समझाईआ। क्यों तत्तां तुट्टी प्रीत, रूह कीती जुदाईआ। तन होया क्यों पलीत, ख़ाक विच दबाईआ। किधर गई तेरी बख्शीश, रहमत नूर अलाहीआ। जिस दे चरणां क़दमां झुकदा सीस, क्यों चलया ख़ाक लुकाईआ। वड़ बैठों काया माटी रख के क़बरां बीच, मक़बरिआं विच सालाहीआ। फेर करीए कदों उडीक, सच देणा समझाईआ। मुहम्मद आशा कहे मैं नाचीज़, जगत निमाणी सेव कमाईआ। मेरे अमाम दी रखो उम्मीद, जो अमलां तों बाहर नूर खुदाईआ। सदी चौधवीं जाण दयो बीत, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। फिर आपे आवे साहिब परवरदिगार जो लहिणा देणा मुकाए अबलीस, चार यारी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर ठांडा इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे क़बर विच दो कबूतर दे रखे खम्ब, सज्जे खब्बे टिकाईआ। नौ पत्ते रखे अम्ब, दूर दुराडे लए मँगाईआ। इक टोटा रख्या नाल चम्म, सवा हथ्थ सोभा पाईआ। इक लिख के रख्या खुशी ग़म, दोवें रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे क़बर विच सवा पा रखी निआज़, सत्तां रंगां सोभा पाईआ। इक तांबे दा रख्या एज़ाज़, मुहम्मद अहमद नाम लिखाईआ। इक यसू सुहाया करास, सज्जे हथ्थ नाल छुहाईआ। इक पाणी दा भर ग्लास, सीस नाल टिकाईआ। इक टुकड़ा रख के चाक, आपणी खुशी बणाईआ। इक फट्टी रख के ताक, खिड़की दिती सुहाईआ। इक कोरी रख किताब, कानी क़लम नाल टिकाईआ। इक चार मुरीदां सिर तों पुट्ट के झाट, वाल पंज पंज टिकाईआ। इक टुट्टी रस्सी कढ्ढ के विच्चों खाट, अंदर दिती रखाईआ। इक नीला रूप बणा आकाश, गत्ते उत्ते रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे कबर अंदर रख्या रंग नीला, नीलम विच्चों वंड वंडाईआ। सवा गिठ दा रख्या तीला, माशे नौ वज़न समझाईआ। इक दोपट्टा धरया गीला, ढाई गज़ वंड वंडाईआ। इक अक्खरां दा बणा क़बीला, उम्मत नबी नाल मिलाईआ। इक बस्तर रंग के पीला, थल्ले दिता विछाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चाढ़नहारा रंग भीन्ना, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

✻ २४ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ चरण कौर दे गृह फराला ज़िला जलन्धर ✻

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद नूं अन्त वेले होई दरद, दर्द दर्द विच्चों उपजाईआ। ओसे वेले ओहनूं नज़री आई चौदां तबक दी फ़रद, लेखा वेख्या थाउँ थाईंआ। नाल चमकदी दिसी करद, जो शरअ कसाई रूप वटाईआ। अन्त उडदी दिसी गरद, अन्ध अन्धेर लोकाईआ। प्रगट वेख्या सूरबीर मर्दाना मर्द, अकल कलधारी नूर अलाहीआ। आपा होया ज़रद, लाली रही ना राईआ। निगाह मारी उम्मत कोल नहीं कोई खरच, कलमा हक़ नज़र कोए ना आईआ। ख़ाली वेखे चर्च, चरागाहां विच दुहाईआ। तक्कया उपर फ़र्श, फ़लक परे रुशनाईआ। झाती मारी ख़लक, चारों कुण्ट दुहाईआ। पुठ्ठी होई नरद, सारपाशा रिहा समझाईआ। आवाज़ सुणी गरज, फ़रमाना धुरदरगाहीआ। कुछ अन्त कर ला अर्ज़, आरज़ू दे दृढ़ाईआ। अगला खेल वेख असचरज, की करता कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद तक्कया अजब नज़ारा, अमीर ग़रीब वेख वखाईआ। सदी दा सदमे वाला किनारा, आहला अदना रिहा कुरलाईआ। करे खेल परवरदिगारा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जो निरगुण धार लए अवतारा, नूर नुराना नूर अलाहीआ। खेल वेखे विच संसारा, शरअ शरीअत फोल फुलाईआ। वेस वटा के आप दुबारा, दो जहानां परदा लाहीआ। लहिणा चुका तेई अवतारा, मूसा ईसा मुहम्मद लेखा झोली पाईआ। अग्गे वेख्या दसां गुरुआं दा पसारा, नानक गोबिन्द वज्जे वधाईआ। इस तों परे अमामां दा अमाम बण सिक्दारा, शाहो भूप खेल खिलाईआ। जिस नूं कहिंदे कहिणगे कल्की अवतारा, कल आपणी कार कमाईआ। सृष्टी दी दृष्टी कर गिरफ्तारा, फ़रिशितिआं दा इष्ट दए बदलाईआ। चार जुग दी बदल के धर्म धार दी धारा, दफ़ा आपणी इक समझाईआ। जिस दा लेख लिखे आपणे हुक्म नाम नाल इशारा, बुद्धी विच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सुल्तान धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद दे अन्तर पई चीस, दुःख दिता सताईआ। वट्ट के हक़ कसीस, क़सम खा के दिता जणाईआ। मेरे साहिब स्वामी जगदीश, तेरी बेपरवाहीआ। मैं बिना खंजर तों होण लग्गा शहीद, शहादत दयां भुगताईआ। मेरी मनसा पूरी करनी उम्मीद, आमद विच तेरा राह तकाईआ। हुण सौणा मुहब्बत वाली नींद, ग़फ्लत ग़ाफ़ल रहे ना राईआ। मैं बरदा तेरा नाचीज़, अज़ीज़ बण के सेव कमाईआ। मेरे कलमे दी करीं तसदीक़, मेहर नज़र इक उठाईआ। चौदां सदीआं दिसण नज़दीक, पैंडा दूर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे

मुहम्मद दे अंदर पई हुक्क, हू अल्ला अल्ला हू नाअरा दिता लाईआ । उहनूं नज़री आया ओस वेले सुक्का इक टुक्क, टुकड़ा बेहा रूप वखाईआ। फिर बिना कन्नां तों सुणी तुक, सोहँ राग अगम्म अथाहीआ। फिर किसे ने हौली जिही ल्या पुच्छ, मुहम्मदा की आशा होर वधाईआ। फेर अनडिठा गया छुप, नेत्र नूर ना कोए चमकाईआ। फेर हौली जिही चुक्क, हलूणा दिता लगाईआ। वेख तेरे पिच्छों मेरा गोबिन्द आउण वाला पुत, सुत दुलारा दयां वखाईआ। जिस नूं देवां सब कुछ, कशमकश दा झगड़ा दयां मुकाईआ। जिस कटाउणी नहीं दाढ़ी मुच्छ, केस सीस जगदीश सोभा पाईआ। मेरे प्यार दी सोहणी सुहञ्जणी रुत, रुतड़ी धुर दे नाल महकाईआ। जिस दा सजदा बिना क़दमां तों मेरे चरण जावे झुक, झाकी अगली फेर दृढ़ाईआ। तत सरीर दा मिटा के दुःख, दर्दां दा डेरा ढाहीआ। बदला के रूप मानस मनुक्ख, शब्दी धार करां अगवाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी माणे आप मौज, माण निमाणयां आपणा रंग रंगाईआ।

६०६
२१

❋ २४ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ बीबी हरभजन कौर दे गृह पिंड कोटली थान सिँघ ज़िला जलन्धर ❋

सदी चौधवीं कहे मैं क़बरां नूं कीती हासी, हस्स के ताली दिती वजाईआ। नी तुहाडे विच वड़े जो चढ़ गए उत्ते फाँसी, सलीब गल दे विच लटकाईआ। जिन्हां रीती मिटाई पंडतां वाली काशी, कशमकश कीती नाम खुदाईआ। अज्ज रिहा ना कोई साथी, तत्तां वाला संग ना कोए निभाईआ। अञ्जील क़ुरान लिख के दे गए पाती, सुनेहड़ा इक सुणाईआ। सिफ्तां वाले अक्खर बणाए लुगाती, मैहनिआं विच छुपाईआ। इक दूजे दा रिहा ना कोए जमाती, सगला संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की करता खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मक़बरिआं वेख मारी मैं ताली, तली तली नाल ठुकराईआ। हुण अन्त दी करे कवण दलाली, विचोला गया मुख छुपाईआ। किधर मँगता जाए सवाली, किस अग्गे झोली डाहीआ। तत्तां वाला होया ख़ाली, ख़ालक ख़लक भेव ना राईआ। बाग़ दा रिहा अन्त ना माली, हरया सिंच ना कोए कराईआ। हुण कवण वेखे शाली, शाला कवण दए वड्याईआ। सिरफ़ हरफ़ां वाली रैह गई कवाली, सदां विच आवाज़ सुणाईआ। लेखा वेख्या मैं हाली, हालत दयां जणाईआ। जिथ्थे मुहम्मद दा मक़बरा ओथे बिरछ हुंदा सी टाहली, शीशम कहि जगत सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, सद आपणा भेव चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मक़बरे वेखे नाल अक्खां, बिन नेत्र नैण खुल्हाईआ। फिर हथ्थ मारया उत्ते पट्टां, आवाज़ लई प्रगटाईआ। फेर ठोडी उत्ते उँगली रखां, सोचां विच आपणा आप डुबाईआ। फिर चार कुण्ट नस्सां, भज्जी वाहो दाहीआ। फेर दुहथ्थढ़ मारी पट्टा, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। केहड़ा लाहा खट्टां, कवण मिले वड्याईआ। फिर चौदां तबक तक्कां, चारों तरफ़ वेख वखाईआ। फिर भज्ज के नठ्ठ के थक्कां, हिम्मत रहे ना राईआ। फेर लुक के विच कक्खां, ओढुन ल्या बणाईआ। फिर खाण नूं लभ्भां भत्ता, खोज्यां हथ्थ किछ ना आईआ। फिर पाणी लभ्भां तत्तां, नहा धो के खुशी मनाईआ। फिर मैं घुट्टण लग्गी आपणीआं लत्तां, उँगलीआं नाल दबाईआ। मैनूं समझ आई इक रता, किसे अंदरों दिता हिलाईआ। झट वखाया अगम्मी गत्ता, जिस दी गति मित आपणे हथ्थ रखाईआ। उत्ते नज़री आया मक्का, मुकम्मल दिता समझाईआ। फिर आपणे अंदर ढका, नूर ना कोए रुशनाईआ। फिर कढुके इक टका, क़ीमत दिती वखाईआ। फिर सूई दा वखा के नक्का, मार्ग छोटा दिता समझाईआ। फिर मेरी धौण ते मारया धफ्फा, पैर दिता हिलाईआ। फिर गुस्से विच होया ख़फ़ा, आपणा भय वखाईआ। अन्त सब दा लेखा कर के रफ़ा, लोकमात रहिण ना पाईआ। एकँकार दी इक्को धारा लभ्भ के दफ़ा, जिस दी तरमीम ना कोए कराईआ। बिन अक्खरां वाला वेख तीजा सफ़ा, जो सफ़ा सब दी साफ़ कराईआ। फिर मेहरवान हो के दिता गफ्फा, वस्त अमोलक झोली पाईआ। इस दे विच्चों तैनूं होवे नफ़ा, वाधा भगतां नाल बणाईआ। मैं जोड़ के दोवें हथ्थां, सीस दिता निवाईआ। ओधरों वगण लग्गा ठक्का, ठंडी पवण चलाईआ। मेरे पैर विच चुभ गया डक्का, दर्द नाल सताईआ। ओधरों कोई बण के आ गया हट्टा कट्टा, सूरबीर नाउँ धराईआ। हथ्थ मारे उपर पट्टां, गुर अवतार पैगम्बरां रिहा हिलाईआ। कहे तीर निशाने नाल फटां, नाम अणयाला रिहा चलाईआ। फिर वधा के आपणीआं जटां, जटा जूट दिता समझाईआ। फिर मख़ौल विच करन लग प्या ठट्ठा, ठोकरां नाल सताईआ। मैं खेल वेखणा तत्तां अठ्ठां, पंज तिन्न परदा लाहीआ। सब दा लहिणा मुकाउणा इक्ठा, चार जुग दा पन्ध चुकाईआ। दीन मज़हब दा मेटणा रट्टा, राटीकीन ना कोए वड्याईआ। इक्को धुर दा दस्सणा टप्पा, तूं मेरा मैं तेरा इक पढ़ाईआ। सदी चौधवीं सब दे उत्ते पाउणा छप्पा, सिर सके ना कोए उठाईआ। मेरे प्रेम दा पैहला पप्पा, पूरन परमेश्वर रूप अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जो नाम दा दिता फक्का, फक्क सब दा हिस्सा कराईआ। इक्को हुक्म दे के सच्चा, सच दयां समझाईआ। सतिगुर रहे कोई ना कच्चा, कूड़ कुड़िआरां डेरा ढाहीआ। गुर शब्द होवे घर पक्का, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। जिस दा लेख मिटे ना रता, रतन अमोलक गुरमुख

६०७
२१

हीरे लए बणाईआ। बीज बीज आपणे वत्ता, फल फुलवाड़ी आप महकाईआ। चारों कुण्ट फिरे नस्सा, भज्जे वाहो दाहीआ। नाम भण्डारा दे के रसा, रस्ता अंदरों दए वखाईआ। सदी चौदवीं मक़बरिआं तों बाहर साहिब स्वामी सदा वसा, वसल आपणा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द शब्द दी धार सब नूं मारनहार जफ्फा, बचया नज़र कोए ना आईआ।

❊ २४ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ नगीना सिँघ दे गृह माडल हाउस जलन्धर ❊

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद थोड़ा रह गया समां, समाप्त होवे कूड़ लोकाईआ। की खेल वखावे बावा आदम हव्वा, भेव अभेदा दए जणाईआ। की संदेसा देवे धुर दी अम्मां, अम्मढ़ी कहि के जिस नूं सीस निवाईआ। कवण जगत तृष्ना मिटावे तमां, अन्तर तृप्त दए कराईआ। हरख सोग चुकाए ग़मा, ग़मख़ार वेख वखाईआ। अगला मार्ग दस्से नवां, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाईआ। झगड़ा मुकावे काया माटी चम्मा, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। एका रंग रंगाए पवण स्वास दमां, दामनगीर आप हो जाईआ। ममता मोह रहे ना मना, मन का मणका दए भुआईआ। इक्को फ़रमान कलमा सुणाए कन्नां, संदेसा शहिनशाहीआ। किथ्थे तेरा निशान जाणा तारा चन्ना, चन्द धुर दे दे दृढ़ाईआ। नबी रसूलां मुक्कण लग्गा बन्ना, बन्दगी अगली कवण समझाईआ। मुहम्मद रो के नेत्र छमछम्मा, छहिबर रिहा वखाईआ। मैं अन्त अख़ीरी इक इकल्ला, कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दीआं भविख्तां विच करदे आए गल्लां, पेशीनगोईआं विच सुणाईआ। ओह लेखा जाणे धुर दा अल्ला, आलमीन बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद उठ वेख बल धार, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। किधर गए तेरे चार यार, बेमुहार होई लोकाईआ। दह दिशा हाहाकार, हू हू नाअरा कोए ना लाईआ। कलमे विच प्या तकरार, झगड़े विच दुहाईआ। तेरे प्रेम दी करे ना कोए गुफ्तार, गुफ्त शनीद परदा ना कोए चुकाईआ। जलवा नूर ना कोए उज्यार, अन्ध अन्धेरा गया छाईआ। उम्मत उम्मती करे ना कोए ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। मुहम्मद कहे मेरे कोल चौदां सदीआं दा पटा, लिख्त बिन क़लम शाही रिहा वखाईआ। अग्गे पैणा दीन दुनी विच रट्टा, झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। औह वेख ईसा फिरदा नट्ठा, वीहवीं सदी दए दुहाईआ। औह वेख गोबिन्द सूरबीर हट्टा कट्टा, जोबनवन्ता नज़री आईआ। पुरख अकाल जो वस्से घट घटा,

सो खेल रिहा खलाईआ। निज नेत्र खोल्ह वेख आपणीआं अक्खां, नैणां नूर नूर चमकाईआ। मैं सच संदेसा दस्सां, दह दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद वेख की होया जगत हयाती, जीवण जुगती नज़र किसे ना आईआ । किधर गई तेरी प्रभाती, संध्या रोवे मारे धाहीआ। तेरी उम्मत अजे ना जागी, सोई सुरत ना कोए उठाईआ। सब दी काया दिसे ख़ाली हांडी, वस्त अमोलक ना कोए टिकाईआ। जिन्हां ने रसना ख़ाधी ढांडी, उन्हां अन्त मिले सज़ाईआ। दुहाई देवे तेरा ईसा गवांढी, कूक कूक सुणाईआ। बिन पुरख अकाल दोहां दी पत जांदी, बिन परवरदिगार होए ना कोए सहाईआ। मैं तेरां सौ अठासी साल दी थक्की मांदी, पन्ध मुकाया चाँईं चाँईंआ। अन्तिम ओह राह तकांदी, जिस वेले अमाम अमामां फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच स्वामी अन्तरजामी, घट निवासी पुरख अबिनाशी आपणा भेव खुल्हाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं उठ छेती नाल झाक, इशारा दयां जणाईआ। तत वजूद तक्क ख़ाक, माया पड़दे फोल फुलाईआ। अन्त अख़ीरी वेख आपणा वाक, जो सब नूं आया सुणाईआ। परदा खोल्ह के वेख ताक, तकवा रख नूर अलाहीआ। अन्तिम होई अन्धेरी रात, चौदस चन्द ना कोए चमकाईआ। मेरी ज़ात होई बदमाश, बदी घर घर डेरा लाईआ। रिहा रूह कोई ना पाक, पतित पापी रहे कुरलाईआ। मेरा देवे कोई ना साथ, संगी संग ना कोए सुहाईआ। मेरे हेठ नहीं कोई खाट, खटीआ रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, वर दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद की खेल उत्ते असमानां, इस्म आज़म की जणाईआ। कवण हुक्म मिले फ़रमाना, फ़रमांबरदार बण के देणा सुणाईआ। की लिख्या लेख विच क़ुराना, मजीद दए दुहाईआ। की दे के आया बिआना, सौदा हक़ खुदा दृढ़ाईआ। तेरी आशा दा बदल जाणा ज़माना, ज़िमीं ज़मां दए दुहाईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलामा, ज़ंजीर बेनज़ीर दए कटाईआ। जिस दा वजणा इक दमामा, नौबत हक़ नाम सुणाईआ। सतिजुग साची दस्स कलामा, कलमयां तों बाहर दए समझाईआ । जिथ्थे मिले मेल श्री भगवाना, दूसर नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म दा झुल्ले निशाना, निशाने कूड़े दए खपाईआ। मानव रहे ना कोए बेगाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण धार नूर नुराना धुरदरगाहीआ। मुहम्मद कहे सुण चौधवीं सदी मेरी अगम्मी आस, आहिस्ता आहिस्ता दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले मेरा अन्तिम पूरन होण लग्गा सी स्वास, जान लबां उत्ते आईआ। इक संदेसा गया सां आख, आख़र दिता दृढ़ाईआ। मुरीदो होइओ ना कोए गुस्ताख़, मुर्शद नाल करयो ना बेवफ़ाईआ। इक्को अल्ला नूं

करना याद, याददाशत इक दृढ़ाईआ। ईसा जिस नूं किहा गॉड, वाहिद लाशरीक नूर खुदाईआ। जिस ने तुहानूं कीता आबाद, उम्मत दिती बणाईआ। अन्तिम ओसे ने करना बरबाद, सब दा लेख चुकाईआ। सृष्टी दा बदल देवे समाज, साहिब सुल्तान धुरदरगाहीआ। अल्ला हू अन्ना हू इक्को लए आवाज़, तूं मेरा मैं तेरा ढोला दए जणाईआ। जिस दे अग्गे गुर अवतार पैगम्बर असीं सारे होणे लाजवाब, सिर सके ना कोए उठाईआ। उहदे जोती नूर दा झल सके कोई ना ताब, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। उस दे कोल बिन अक्खरां दी आदि जुगादी ओह लुग़ात, जिस दा नाम ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे की दस्सी गल्ल चंगी, मेरे अन्तर दे समझाईआ। मैनूं ऐं जापदा परवरदिगार बड़ा बहु ढंगी, अछल अछल्ल बेपरवाहीआ। जिस दी धार सदा दो रंगी, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। किस बिध सदी चौधवीं करे अन्त कन्ढी, पैंडा पन्ध मुकाईआ। पवण देवे ठंडी, स्वासां विच समाईआ। सृष्टी करे रंडी, धुर दा कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। दीन मज़हब वखावे डंडी, डंडावत आपणे विच छुपाईआ। अन्त सब दी कंड करे नंगी, हथ्थ पुश्त पनाह ना कोए रखाईआ। फेर प्रगट होवे सूरा सरबंगी, हरि करता नूर अलाहीआ। शब्दी गुरु उठाए जंगी, सूरबीर इक अख्वाईआ। झगड़ा मुकाए विच वरभण्डी, ब्रह्मण्डी डेरा लाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दी वेखे लिखी होई सन्धी, सनद सब दी फोल फुलाईआ। दीनां मज़हबां दी तोड़े पाबन्दी, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। नेत्र अक्ख रहिण ना देवे अन्धी, लोचण नैण करे रुशनाईआ। कल्पणा कूड़ कढ्ढे गन्दी, सुगंधी इक भराईआ। गुरमुख सन्त फ़कीर बणाए सच फ़रज़ंदी, अज़ीज़ आपणे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, देवणहार इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं संदेसा देवां पोप, पूरन ब्रह्म दृढ़ाईआ। क्यों सच हो गया अलोप, भेव दयो खुल्हाईआ। किधर गई निर्मल जोत, जोती जाता नूर गुसाईंआ। सोच रही किसे ना खोज, परदा सके ना कोए उठाईआ। किस नूं सजदे करदे रोज़, अक्खीं नूर ना कोए चमकाईआ। आत्म करे कदे ना भोग, परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। होया घर ना सच संजोग, विछोड़े विच सर्ब दुहाईआ। करास वाली काहदी मौज, गल विच रहे लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां उपर थल्ले नीचे, नीचां ऊचां वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां जो लाए बाग़ीचे, पत्त टहिणी जगत महकाईआ। मानव मानव वखरे वखरे आपणे कीते, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई लए बणाईआ। नाप के शरअ दे फीते, हद्दां वंड वंडाईआ। सुणा के ढोले गीते, अक्खरां नाल सुणाईआ। वखा के मन्दिर मसीते, शिवदवाल्यां मट्ठां विच भवाईआ।

मँगा के धुर दी भीखे, भिखारी लए बणाईआ। प्रभू दी सच हक़ मिली ना किसे प्रीते, प्रीतम मिल के वज्जे ना कोए वधाईआ। तेरां सौ अठासी साल एसे तड़ां बीते, बीती कहाणी देवां जणाईआ। झगड़ा प्या हस्त कीटे, ऊचां नीचां रही लड़ाईआ। रंग चढ़या ना किसे तन चोली जगत मजीठे, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। नाम प्याले जाम किसे ना पीते, तृष्ना तृखा ना कोए गवाईआ। चौदां सदीआं दी मुहम्मदा तेरे कोल रसीदे, अग्गे मुणिआद ना कोए वधाईआ। आपणी दीन दुनी वल तक्क ला नाल दीदे, दीदा दानिस्ता अक्ख उठाईआ। फिर याद रहिणे दिन पिछले बीते, अगला भेव ना कोए खुल्हाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार बदलण वाला रीते, मन्दिर मसीतां खेड़ा दए छुडाईआ। दीन दुनी दी अंदर साफ़ करे नीते, नीतीवान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद कहे हाए उफ़ बौहड़ी, सदी चौदवीं दयां सुणाईआ। क्यों उम्मत हो गई कौड़ी, फल रस ना कोए चखाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना पौड़ी, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। निरगुण धार निरगुण बन्ह्रे कोई ना डोरी, नईआ डोले थाउँ थाईंआ। मेरे मेरे नालों करदे चोरी, चोरी ठग्गी जगत लोकाईआ। सच ईमान दी रही कोई ना जोड़ी, धुर दा मेल ना कोए रखाईआ। कुछ लेखा बाकी दिसदा सक्खर रोड़ी, नूर नबीआं नज़री आईआ। जिस दे कोल दात भोरी, भोरे विच बहि के झट लँघाईआ। घर छड्डुके तेरां साल दी छोहरी, नाता दुनी आया तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर लेखा वेख वखाईआ। मुहम्मद कहे मैं की करां मता, मतल्ब भरी कूड़ लोकाईआ। साचा दिसे ना कोई भत्ता, आहार विचार ना कोए वड्याईआ। ख़ाली होया मक्का, काअबयां पई दुहाईआ। चारों कुण्ट पैंदा धक्का, ममता विच लड़ाईआ। भाई भाई रिहा ना सका, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। ऐं दिसदा झगड़ा पैणा बूरा कक्का, उम्मत नाल लड़ाईआ। एह खेल वेखणा अक्खां, सदी चौधवीं दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौजवान मर्द मर्दान, दो जहान वेखणहारा बिना अक्खां, जोती जाता पुरख बिधाता परवरदिगार सांझा यार जल्वागर नूर अलाहीआ।

६११

२१

✻ २५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ हरदयाल सिँघ दे गृह जलन्धर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं जल्वागर वेख्या नूर नुराना, मुबैण महिबान मेहरवान नज़री आईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेहरवाना, सूरबीर सुल्तान शहिनशाहीआ। नाम संदेसा नित नवित्त देवे दो जहानां, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां संदेसा

इक सुणाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां देवणहारा दाना, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी झुलावणहारा इक निशाना, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं हो प्रधाना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म रिहा सुणाईआ। जिस नूं सजदे करदे ज़िमीं असमाना, रवि ससि सुर्या चन्द बैठे सीस निवाईआ। जो लख चुरासी सति सरूपी धुर दा काहना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या मालक हक़, हक़ीक़त वाला नज़री आईआ। साहिब सुहेला सदा समरथ, सति सतिवादी सोभा पाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गाउँदी जस, ढोले सिफ्तां वाले सालाहीआ। जिस दी सरन सरनाई विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर रहे ढठ्ठ, गुर अवतार पैगम्बर सीस रहे निवाईआ। जिस खेल खिलाया पंज तत त्रैगुण नाल अठ्ठ, आसा मनसा दिती भराईआ। सो संदेसा नर नरेशा देवणहारा सच, सति सतिवादी आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया इक हज़ूर, हज़रतां दा हज़रत नज़री आईआ। जिस ने मूसा बख़श्या जोती जलवा कोहतूर, तुरिया तों परे कीती पढ़ाईआ। जिस ने लेखे लाया शाह मनसूर, मनसा सूफ़ीआं वेख वखाईआ। जो जुग चौकड़ी खेल करे ज़रूर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी कार कमाईआ। जिस नूं कहिंदे पातशाह ग़फ़ूर, ग़फ्लत सब दी मेट मिटाईआ। भगत उधारना जिस दा दस्तूर, दस्तबरदार करे लोकाईआ। कूड़ी क्रिया कर ना मन्ज़ूर, अन्त अख़ीर धक्का देवे लाईआ। माया ममता मेट के कूड़, सच सुच्च दए वड्याईआ। गुरमुखां बख़्श अगम्मी धूढ़, टिक्के मस्तक नाम रमाईआ । आसा मनसा पारब्रह्म ब्रह्म आपे पूर, आत्म परमात्म नाता जोड़े सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक एक, एकँकार नज़री आईआ। सतिजुग साची बख़्शणहारा धर्म धार दी टेक, माया ममता कूड़ विकार मिटाईआ। खेल खिलाए बिन रूप रंग रेख, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी कल वरताईआ। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ काया माटी सच आपणे देस, दिशा निरंतर अन्तर फोल फुलाईआ। सच संदेसा देवे नाम संदेस, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। भगत सुहेला इक इक्केला जोती जाता हो के करे हेत, हितकारी हो के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी परदा उहला आप चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या धुरदरगाही परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस नूं डंडावत बन्दना सजदे करदे गुरु अवतार, पैगम्बर निउँ निउँ लागण पईंआ। सो हुक्म संदेसा देवे आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल रिहा समझाईआ।

६१२
२१

सदी चौधवीं सृष्टी दृष्टी गई हार, इष्टी नज़र कोए ना आईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी नूर जोत कर उज्यार, उजाला करे थाउँ थाईंआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप देवे आपणी धार, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। जिस नूं बुद्धी विच समझ सके ना कोए संसार, अनभव आपणा हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धर्म दी धार आप बंधाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मालक इक महबूब, मुहब्बत विच वड्याईआ। बैठा सच अरूज, आलीशान डेरा लाईआ। जिस दी मंज़ल हक़ मक्सूद, मेहरवान मेहरवान मेहरवान करे रुशनाईआ। जिधर तक्कां ओधर मौजूद, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। जगत कूड़ी क्रिया तोड़े हदूद, दीनां मजहबां लेखा दए चुकाईआ। सति सच दस्से इक असूल, असलीअत आपणी दए समझाईआ। धुर संदेसा नाम देवे माकूल, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। हक़ मुहब्बत विच रहे मशगूल, दिवस रैण आपणा रंग रंगाईआ। मालक हो के कन्त कन्तूहल, नार भतार लए प्रनाईआ। जन भगतां बख्श के चरण धूढ़, धूढ़ी टिक्के ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा नर नरेशा, नर निरँकारा इक्को इक जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं करां इक अरज़ोई, आरज़ू सच सुणाईआ। मेरा साहिब मिलावे कोई, कोना कोना फोल फुलाईआ। जिस दी मुहम्मद पाई दरोही, दरोही नाम खुदाईआ। उस दे दर मिले जग ढोई, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ओसे दी मुहब्बत विच मोई, ज़िंदगी जीवण कम्म किसे ना आईआ। बिन नेत्र नैणां रोई, हन्झूआं हार बणाईआ। मैनूं सच सुभावे मेल मिलावे जो सोई, सो पुरख निरँजण रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणा चौहन्दी कोई आपणा गोती, गौतम दा साथी नज़री आईआ। जिस दी सत्त रंग दी होवे धोती, कन्नी कन्नी नाल बंधाईआ। सिर दे उत्ते होवे बोदी, मुखों राम राम दुहाईआ। संधूर मलिआ होवे उपर ठोडी, त्रसूल मस्तक विच बणाईआ। गल चोला पाया होवे वांग जोगी, बाज़ू नज़र कोए ना आईआ। ओह ज़ात दा होवे सोढी, गोबिन्द वेखे चाँईं चाँईंआ। उस दी बुध्ध होवे ना कोझी, उजल नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तकणा खेल अपार, अपरम्पर दए वखाईआ। चार होवण मुहम्मदी यार, बलधारी नज़री आईआ। मुखों नाअरा कहिण पुकार, हू अल्ला तेरी बेपरवाहीआ। बग़लां विच होवे तलवार, मुख तिक्खा उपर रखाईआ। भज्जे फिरन चार चुफ़ार, घट्टा पैरां नाल उडाईआ। मुखों कहिण मुहम्मदी यार, महिबान बीदो तेरी वड्याईआ। या मुबीन इस्तिग़फ़ार, नाअरा हक़ हक़ सुणाईआ। छाती उत्ते खिच्ची होवे लकार, नाअरा हक़ हक़ सुणाईआ। उन्हां विच इक होवे घुम्यार, जिस दा पिछला

जन्म दयां समझाईआ। एह खेल सच्ची सरकार, हरि करता आप कराईआ। सदी चौधवीं कहे मैं अन्तिम ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। संदेसयां विच करां इज़हार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। वेखो खेल परवरदिगार, पारब्रह्म आपणा परदा रिहा उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं छब्बी पोह दा करदी इंतज़ार, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। सो सहुञ्जणा आवे वार, वाहवा वज्जे हक़ वधाईआ। मैं निउँ निउँ करां निमस्कार, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा आदि अन्त ना पारावार, बेपरवाह बेअन्त आपणा हुक्म वरताईआ।

✻ २५ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ महिंगा सिँघ दे गृह हरी पुर ✻

सदी चौधवीं कहे प्रभ तेरी धार बारीक, जग नेत्र लोचण नैण नज़र किसे ना आईआ। पैगम्बर नक्क नाल कढुदे वेखे लीक, लाईन आपणी आपणी जणाईआ। इक दूजे दी शहादत विच करन तसदीक़, सन्मुख हो के देण गवाहीआ। बौहड़ी दरोही यामबीन तेरी उडीक, लाशरीक तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त इक तेरे विच तौफीक़, ताबेदारी सब नूं देणी समझाईआ। साडी आसा मनसा पूरी करनी उम्मीद, तृष्ना पिछली देणी गवाईआ। भविक्खतां विच लिख्तां विच असीं करा के आए उडीक, सदी सदीवी राह जणाईआ। सो वक्त पहुंचया नज़दीक, दूर दुराडे नेरन नेरा पर्दा देणा उठाईआ। किसे सन्त भगत सूफ़ी होणा ना पए शहीद, कलयुग कूड़ी क्रिया देणी मिटाईआ। निरगुण धार वेख आपणी दीद, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। धुर स्वामी बण रफ़ीक़, रिश्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। दीन दुनी होई फ़रीक़, फ़िरक्यां विच रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, अलख अगोचर अगम्म अथाह, दर तेरे सीस झुकाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बर रहे सहिम, सिर सके ना कोए उठाईआ। उम्मत किसे रही ना क़ायम, क़िआमत अन्तिम दए दुहाईआ। बिन तेरे करे कोए ना रहम, रहमत हक़ ना कोए कमाईआ। हिरदे अन्तर ना आवे चैन, सांतक सति ना कोए कराईआ। नेत्र खुल्ल्हे किसे ना ऐन, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। मुरीद मुर्शद होए तरफ़ैन, यकतरफ़ रंग ना कोए रंगाईआ। किरपा कर मेरे मुबैन, बी ख़ैर अल्लाह तेरी दुहाईआ। तूं निरगुण धार आदि नरायण, नर हरि तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे पीर पैगम्बर वेखण उपर थल्ले, ज़िमीं असमानां ध्यान लगाईआ। धुर संदेसा कवण घल्ले, पैग़ामां विच करे

शनवाईआ। मुरीदां मुर्शदां छुट्टण लग्गे पल्ले, पल्लू गंढु ना कोए बंधाईआ। बौहड़ी सब ने रह जाणा कल्ले, दूजा नज़र कोए ना आईआ। करे खेल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जो वस्से निहचल धाम अटले, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बर धरे कोए ना धीर, धीरज नज़र कोए ना आईआ। शरअ टुट्टण लग्गा ज़ंजीर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। सब दी बदलण लग्गी तक़दीर, तदबीर दस्से धुरदरगाहीआ। झगड़ा रहे ना ग़रीब अमीर, अमरापद इक समझाईआ। नाम खण्डा फड़ शमशीर, चारों कुंट रिहा चमकाईआ। दीन दुनी कर दिलगीर, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। हालत विगड़ी वेखे ज़मीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बरां अन्तर दिसे हैरानी, हैरत विच दुहाईआ। साडी उम्मत होई बेगानी, नाता जगत तुड़ाईआ। भुल्ली अगम्म कलामी, कायनात मुख भवाईआ। छड्डी मुहब्बत वाली गुलामी, ग़ुरबत सब दे अंदर डेरा लाईआ। साडे नाम दी होई बदनामी, बदी विच कूड़ कुकर्म कमाईआ। अन्तिम सारे दिसण फ़ानी, बचया नज़र कोए ना पाईआ। लँघ गई बाल अवसथा नाल जवानी, बुढापा कलयुग रूप वटाईआ। पैगम्बर कहिण रहिणा नहीं कोई हुण बानी, दस्त बदस्त सारे सीस झुकाईआ। असीं देंदे आए बकरिआं क़ुरबानी, ईद बकरीद विच मनाईआ। हुण आउण वाली तुग्यानी, चारों कुण्ट लए रुड़ाईआ। ममता मेटे शरअ बेईमानी, बेवा करे ख़लक खुदाईआ। पुरख अकाला शाह सुल्तानी, धुर फ़रमाने रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंज़ल वेखणहारा रुहानी जिस्मानी, हर घट वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बरां पै गया फ़िकर, फ़िकरिआं विच सुणाईआ। परवरदिगार आपणी धारों आवे निकल, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। किसे नज़र ना आए शकल, बिन रूप रंग रेख खेल कराईआ। बुद्धी समझे कोए ना अक़ल, मनमति ना कोए चतुराईआ। आपणा खेल करे हरि हक़ल, हक़ीक़त आपणा राह चलाईआ। कूड़ी क्रिया कर के क़तल, धर्म दी धार लए प्रगटाईआ। जन भगतां वखा के आपणा वतन, सच दुआरा दए समझाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला जपण, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार सच सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर मथ्थे उत्ते मारन हथ्थ, हथेली पेशानी. नाल मिलाईआ। की खेल करे पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। साडा मुनारा रिहा ढठ्ठ, निशाना कूड़ दए गवाईआ। ज़ोर चले किसे ना हट्ट, तेज तप ना कोए धराईआ। दीन मज़हब दी मेट के वट्ट, रस्ता साफ़ रिहा बणाईआ। इक्को नाम इक्को कलमा सृष्ट सबाई लैणा रट, रट्टा मज़हब रहे ना राईआ।

इक्को तीर्थ इक्को तट, इक्को घर दए समझाईआ। इक्को मन्दिर मसीत शिवदवाला मठ्ठ, गुरदुआरा इक्को नज़री आईआ। इक्को नूर नुराना शब्द अगम्मी मारे सट्ट, सोई सुरती सर्ब जगाईआ। इक्को नाउँ निरँकार खोल्ह के हट्ट, वणज व्यपारा दए समझाईआ। इक्को तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म परमात्म आत्म होवे सांझा जस, सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगारा सांझा यारा करे सच पढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख वेख के करां हासी, खुशी विच्चों खुशी प्रगटाईआ। की हुक्म देवे पुरख अबिनाशी, हरि करता धुरदरगाहीआ। किस बिध मेटे कलयुग अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। दीन मज़हब बणाए इक जमाती, इक्को पट्टी नाम दए समझाईआ। सब दा मालक पुरख अकाला बणे कमलापाती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। चार कुण्ट दह दिशा दीन दुनी दी करे राखी, रखक हो के वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण देवे सच्चा साथी, आत्म परमात्म नाता जोड़े सहज सुभाईआ। मंज़ल अन्त कन्त भगवन्त चाढ़े अगम्मी घाटी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जिथ्थे झुकदे राम वशिष्ट त्रिलोकी नाथी, ईसा मूसा मुहम्मद सजदयां विच सीस निवाईआ। नानक निरगुण गोबिन्द धार जोत प्रकाशी, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मेरा साहिब स्वामी कलयुग अन्त सब दी बदल देवे हयाती, जीवण जीवण विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण धार सर्ब दा साथी, सरगुण मेला मेले सहज सुभाईआ।

६१६
२१

❊ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ हरभजन कौर दे गृह हरीपुर ❊

सदी चौधवीं कहे तेई अवतार करो ध्यान, अनदृष्ट वेख वखाईआ। सति सच दा रिहा ना कोए निशान, नव सति रिहा कुरलाईआ। माया ममता मोह वधी शैतान, शरअ शरीअत रही कुरलाईआ। धुर दा हुक्म मन्ने ना कोए फ़रमान, फ़रमांबरदार ना कोए अख्वाईआ। दीन दुनी होई बेईमान, बेवा वेखी कूड़ लोकाईआ। सोहे बंक ना कोए मकान, दुआरा तन ना कोए वड्याईआ। भुल्ले भरमे राज राजान, जगत शाह रहे कुरलाईआ। चारों कुण्ट होया वैरान, वैरी घर घर सोभा पाईआ। आत्म ब्रह्म सके ना कोए पहचान, निज नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। रस मिले ना किसे पीण खाण, अमृत धार ना कोए वहाईआ। जोत जगे ना नूर महान, अन्ध अन्धेर ना कोए गवाईआ। सच स्वामी मिले ना आण, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। खेल वेखो श्री भगवान, हरि करता की कार कमाईआ। जोती जाता हो बलवान, पुरख बिधाता हुक्म सुणाईआ। सदी चौधवीं बदल देणे हुक्मरान, हुक्म हुक्म विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, हरि करता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे वेखो पैगम्बर पीर, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे दयां जणाईआ। नाम कलमा अणयाला मारे कोई ना तीर, तिक्खी मुक्खी धार ना कोए वखाईआ। ज़ात अज़ाती होई दिलगीर, धीरज धीर ना कोए बंधाईआ। शरअ टुट्टे ना कोए ज़ंजीर, छुरी दिसे जगत कसाईआ। साबत रिहा ना कोए फ़कीर, उल्मा इल्म ना कोए वड्याईआ। प्रभ दे पुज्जा ना कोए क़रीब, नेरन नेर ना दर्शन पाईआ। झगड़ा प्या अमीर ग़रीब, माया ममता होई हल्काईआ। साची देवे ना कोए तरतीब, तरीका ढंग ना कोए जणाईआ। प्रभ दा बणे ना कोए अज़ीज़, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सति सच दी करे ना कोए तमीज़, मुहब्बत हक़ ना कोए कमाईआ। वेखो खेल प्रभू अजीब, अजब निराला रिहा कराईआ। जो मालक ख़ालक आदि जुगादि क़दीम, क़ुदरत दा क़ादर बेपरवाहीआ। जिस दा महल अटल आलीशान अज़ीम, अर्श फ़र्श तों परे सोभा पाईआ। सो वखावणहारा अगम्मा सीन, सीमा सब दी फोल फुलाईआ। हुक्मे अंदर करे तरमीम, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। जिस दा मार्ग कहिंदे महीन, सो रस्ता दए प्रगटाईआ। जन भगतां बुद्धी पवित्र करे मलीन, मलेछ वेखे कूड़ लोकाईआ। दीन मज़हब दी मेटे तक्सीम, आत्म परमात्म इक्को ब्रह्म जणाईआ। झगड़ा मुका के नर मदीन, नर नरायण दए दरसाईआ। कलयुग नूं अन्त कहे आफ़रीन, हथ्थ पुश्त पनाह टिकाईआ। तेरे उत्ते किरपा करी आप करीम, रहमत सच कमाईआ। सति दा रिहा ना कोए अधीन, कूड़ कुड़िआरा डंका दिता वजाईआ। माया ममता कर शौकीन, शरअ शरअ नाल दिती टकराईआ। नूर दा रिहा ना कोए हुसीन, चम्म दृष्टी भरमी कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सति संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर दस मारो झाती, परदा अन्तर निरंतर खोल्ह खुल्हाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म ब्रह्म बणे कोई ना पाठी, पाठशाला रही कुरलाईआ। निरगुण धार दिसे कोई ना साथी, सरगुण पूजण चाँईं चाँईंआ। बिरहों तीर लगावे कोई ना काती, काया कूड़ विकार ना कोए मिटाईआ। अमृत किसे मिले ना बूँद स्वांती, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। झगड़ा वेखो ज़ाती पाती, तुहाडी कीती सारे रहे उलटाईआ। पुरख अकाला लेखा मँगे बाकी, वही ख़ाता आपणा रिहा समझाईआ। ख़बर संदेसा देवे धुर दी कथा कहाणी साची, सुच संजम इक समझाईआ। आपणी आपणी खोल्ह के वेखो पाती, जो पत्रका दिती फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे लख चुरासी वेख आपणा करम, घर घर अंदर दयां सुणाईआ। मानव दस्स तेरा केहड़ा धर्म, धीरज धार कवण जणाईआ। किस बिध मेटें आपणा भरम, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। किस बिध भाग

लग्गे काया माटी चर्म, निरगुण नूर जोत होवे रुशनाईआ। किस बिध लहिणा देणा मुक्के जन्म मरन, आवण जावण रहे ना राईआ। किस बिध साहिब स्वामी देवे सरन, चरण कँवल इक सरनाईआ। किस बिध आपणा पूरा करे प्रन, पतिपरमेश्वर अग्गे सीस निवाईआ। किस बिध झगड़ा मुके वरन बरन, ज़ात पात करे ना कोए लड़ाईआ। किस बिध आपणी मंज़ल सिखे चढ़न, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। किस बिध धुन आत्मक राग लग्गे पढ़न, बिन अक्खरां तों होए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वज्जदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे अवतार पैगम्बर सुणो गुरु गुरदेव, माणस ज़ाती दयां जणाईआ। केहड़ी रसना केहड़ी जिह्व, जीभा कवण सिफ्त सालाहीआ। केहड़ा इष्ट गुरु गुरदेव, देव आत्मा कवण मनाईआ। केहड़ा लेखा जाणे अलख अभेव, अगम्म अथाह दयो समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर बिन अक्खां नेत्र नैण तक्को, तकवा इक्को इक जणाईआ। मैं शब्द संदेसा देवां हक़ीक़त हक़ो, धुर दा हाकम रिहा सुणाईआ। दीन मज़हब ज़ात पात झगड़ा छड्डो, अन्तिम छड्डुणी पए जगत लोकाईआ। आत्म धार परमात्म निरगुण धार नाता बन्न्हो, बन्न्हणहार इक अख्वाईआ। कूड़ी क्रिया जगत विकार सृष्टी दी दृष्टी विच्चों बाहर कढ्ढो, अन्तर निरंतर रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला घर स्वामी ठाकर एका सद्दो, जिस दी आसा गए रखाईआ। नाम खुमारी साचा जाम प्यावो मॅधो, मदहोश दयो कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर सुहावो राती रुती, रुतड़ी दयो महकाईआ। सृष्टी दुनी रहे ना सुत्ती, नेत्र अक्ख दयो खुल्हाईआ। किसे नूं करनी पए ना किसे दी बुत्ती, डूंम मरासी झगड़ा दयो चुकाईआ। जेहड़ी दुहागण राहों घुथ्थी, सुहागण दरगाह साची दयो बणाईआ। भाग लगाओ काया बुत्ती, बुतख़ान्यां करो सफ़ाईआ। मन कल्पणा रहिण ना देवे लुच्ची, सच सुच देणा वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं ओस प्रभू दे दर्शन दी भुक्खी, जिस नूं भविख्तां विच आए गाईआ । ओस दुआरे सब ने होणा सुखी, सुख सागर विच समाईआ। माया ममता जड़्ह जाए पुट्टी, पटने वाला देवे माण वड्याईआ। आपणी गंढ पावो टुट्टी, आत्म परमात्म नाता जोड़ो सहज सुभाईआ। दीन मज़हब नूं दे दयो अग्गे छुट्टी, छुटकारा होवे कोलों लोकाईआ। सब दी अन्त अख़ीरी वाट मुकी, मुकम्मल धुर दा हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगली खेल रहिण ना देवे लुकी, लोक परलोक सलोक आपणा इक सुणाईआ।

✻ २६ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ गुरबचन सिँघ दे गृह अहमद पुर ज़िला कपूरथला ✻

सदी चौधवीं कहे पैगम्बर देवण होका, हुक्म धुर दा रहे जणाईआ। लेखा मुक्कण लग्गा चौदां तबक चौदां लोका, लुक्या भेव रहे ना राईआ। परवरदिगार सांझे यार दा आया मौका, मुकम्मल आपणा खेल खिलाईआ। दीन दुनी दे नाल करे ना धोखा, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर मार्ग दस्से सौखा, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ना पए कोई ना पोथा, हिरदे अन्तर निरंतर आपणा नाम दए उपजाईआ। भाग लगा के काया माटी साढे तिन्न हथ्थ अगम्मी कोठा, नौ दुआर नर निरँकार कूड़ा पन्ध मुकाईआ। मनमति दी रहिण ना देवे सोचा, बुद्धी तों परे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बर उच्ची उच्ची रहे कूक, दरोही नाम खुदाईआ। साडी चुक्कण लग्गी चूक, वेला अन्त गया आईआ। झगड़ा पैणा चारे कूट, दह दिशा होए लड़ाईआ। साबत रहे ना कोई पंज भूत, त्रैगुण रंग ना कोए चढ़ाईआ। कलमे वाल्यां होणा कूच, गली कूचे दरोही नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बर चारों कुण्ट तकदे, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। वेखण खेल पुरख समरथ दे, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। बिन क़दमां तों चौदां तबकां नठदे, भज्जण वाहो दाहीआ। साचा कलमा फिरन दस्सदे, अल्ला हू अन्ना हू सुणाईआ। इशारे देंदे निज नेत्र नैण अक्ख दे, प्रतख वेखो गुसाईंआ। हुण खेल रहे नहीं साडे वस्स दे, वास्ता प्रभ दे अग्गे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बर इक दूजे दा तक्कण राह, रहिबर वेखण नूर अलाहीआ। की खेल करे खुदा, खुदी तक्बर मेट मिटाईआ। उम्मत उम्मती कर जुदा, जुज जुज दा डेरा ढाहीआ। जलवा नूर कर रुशना, ज़ाहर ज़हूर परदा दए उठाईआ। साचा मार्ग दस्स नवां, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। दीन मज़हब मेट के तमअ, तामस तृष्ना दए गवाईआ। आत्म ब्रह्म जगा के शमां, कूड़ अन्धेरा दए मिटाईआ। हरख सोग गवा के ग़मा, ग़मख़ार वेख वखाईआ। सतिजुग साचा करे रवां, रहमत आपणी हक़ कमाईआ। लेखे लावे यार चौहां, मुहम्मद निउँ निउँ लागे पाईंआ। भरोसा किसे नहीं कोई दमां, दामनगीर होवे नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं सुहञ्जणा होवे समां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निरगुण दाता आप अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बर करदे हाहाकार, हौक्यां विच दुहाईआ। खेल करे परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। अन्त आई सब नूं हार, हिरदे

६२०
२१

हरि ना कोए वसाईआ। धर्म दा रिहा ना ख़िदमतगार, ख़ादम रूप ना कोए वटाईआ। कागद क़लम शाही पाए ना सार, कलमे कायनात दुहाईआ। दीन दुनी ना होवे ताबिआदार, ग़फ़लत विच अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। चारों कुण्ट धूआँधार, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। मुहब्बत हक़ ना दिसे प्यार, माया ममता होए हल्काईआ। सजदा करे ना कोए निमस्कार, डंडावत विच ना कोए वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे सारे करदे ओस दा इंतज़ार, जो आदि अन्त इक अख्वाईआ। जिस दा सिफ्तां विच कर के आए इज़हार, रागां नादां विच सुणाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार सृष्टी दृष्टी विच करे गिरफ्तार, दह दिशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर सारे रहे वेख, दरगाह साची ध्यान लगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला अन्त कन्त भगवन्त करे केहड़ा वेस, अवल्लड़ा आपणा रूप धराईआ। जो संदेसा दे के गया गुर दस दस्मेश, भविख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच जगत समझाईआ। जिस दा मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाया नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सचखण्ड दुआरे वस्से हमेश, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार नूर रुशनाईआ। जिस ने सदी चौधवीं चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करने एक, एकँकार आपणी कल धराईआ। दीन दुनी दी बुद्धी करे बिबेक, मनमति कूड़ कल्पना काया मन्दिर अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। झगड़ा मुकावे पंडत क़ाज़ी मुल्ला शेख़, शरअ दा लेखा दए चुकाईआ। धुर फ़रमाना देवे हक़ संदेस, नाउँ निरँकारा इक जणाईआ। जिस दे अग्गे चले कोए किसे ना पेश, पेशतर सारे ओसे दा राह तकाईआ। सो स्वामी चार वरन अठारां बरन मेटे फ़रेब, दगेदार रहिण कोए ना पाईआ। माया ममता सब दी ख़ाली करे जेब, जिह्वा कूड़ विकार ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर ठाकर इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बर करदे सजदे, सिर सर झुकाईआ। हउँ सेवक तेरे बरदे, बन्दगी विच दुहाईआ। हुक्म रज़ाई चलदे, भाणे विच वड्याईआ। चौदां सदीआं रहे पलदे, आपणा बल प्रगटाईआ। खेल वेखदे रहे कलयुग कल दे, जिस कलमे दिते भुलाईआ। सच फ़रमाने रहे फलदे, संदेसयां विच वड्याईआ। राह तकदे रहे निहचल धाम अटल दे, दूर दुराडे नूर अलाहीआ। घोल वेखे जल थल दे, महीअल पई दुहाईआ। तेरे हुक्म भाणे कदे ना टल्दे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बर कहिण नाल ईमान, सति सति विच समझाईआ। साडी उम्मत होई बेईमान, बेवा दिसे लोकाईआ। सिदक सबूरी वाला रिहा ना कोए ख़ानदान, रूप

६२०
२१

ख़ानगी वाला रहे वटाईआ। हक़ीक़त विच समझे ना कोई इस्लाम, इस्म आज़म ना कोए वड्याईआ। मसला दिसे ना कोए क़ुरान, काया कुरह ना कोए जणाईआ। जगत शरअ बणी ग़ुलाम, ग़ुरबत अंदर डेरा लाईआ। सदी चौधवीं सानूं कीता बदनाम, बदी घर घर गई समाईआ। सिख्या रही ना सच कलाम, कायनात ना कोए वड्याईआ । असीं आसा रखदे साडा आवे अमाम, हरि करता धुरदरगाहीआ। दीन दा दुनी करे आप इंतज़ाम, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ । कलयुग मिटे अन्धेरी शाम, सतिजुग शमां करे रुशनाईआ। मज़हब दा रहे ना कोई ग़ुलाम, शरअ ज़ंजीर दए तुड़ाईआ। इक्को नाम जपण तमाम, तारा चन्द दए गवाहीआ। करे खेल श्री भगवान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। धर्म झुलाए इक निशान, निशाने पिछले दए गंवाईआ। साचा मन्दिर सुहाए मकान, काया काअबा इक वड्याईआ। जिथ्थे दीवा जोती जगे महान, अमृत रस निझर झिरना आप झिराईआ। साची सेजा करे बिसराम, सिँघासण इक्को इक वड्याईआ। पैगम्बर कहिण सदी चौधवीं वेख खेल दो जहान, दो जहानां वाली आप कराईआ । जिस दा भेव पाए ना कोए इन्सान, अक़ल बुद्धी विच किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा मार ध्यान, एथे ओथे दो जहानां योद्धा सूरबीर मर्द मर्दान, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार इक अख्वाईआ।

✻ २७ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ जुगिंदर सिँघ दे गृह अहिमद पुर ज़िला कपूरथला ✻

सदी चौधवीं कहे मैं खेल दरसां सभी, सबब प्रभ ने दिता बणाईआ। साहिब सतिगुर कोल चल के आए रातीं इक सौ गिआरां नबी, गल पल्लू वास्ता पाईआ। नौ नौ क़दम पुठ्ठीं पैंरी चले उपर पब्बीं, एड़ी ज़िमीं नाल ना कोए छुहाईआ। परवरदिगार सब दी लेखे ला लै सदी, सदीव दा लेखा दे चुकाईआ। मेहरवान तूं आउँदा कदी कदी, क़दीम दे क़ादर हो सहाईआ। साडी कीती होई रद्दी, क़ीमत नज़र कोए ना आईआ। तेरी जोत अगम्मी जगी, नूर नूर होया रुशनाईआ। साडी रोवे पसली हड्डी, मक़बरिआं विच दुहाईआ। वहिण वहिण वाला तेरा अगम्मा नूह नदी, जिस दी नूह समझ कोए ना पाईआ। पिछली मिटण लग्गी हद्दी, हदूद अगली नज़री आईआ। तेरा जलवा नूर अलाही रब्बी, रबीउलसानी भेव ना कोए खुल्हाईआ। उम्मत आलम बण तबी, तबीअत सब दी दे बदलाईआ। साडी आशा तेरे क़दमां हेठां दब्बी, धूढ़ ला के धूल विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी खेल खिलाईआ।

सदी चौधवीं कहे नबीआं पुट्ठे जोड़े हथ्थ, पुश्त पुश्त नाल मिलाईआ। दूर दुराडे गए नठ, रींग रींग के पन्ध मुकाईआ। ओधरों ईसा दा कलाक करे टक टक, वक्त ढाई वाला सुहाईआ। मूसा बदल आपणी करवट, नेत्र नैण नैण अक्ख उठाईआ। की खेल पुरख समरथ, हरि करता कार कमाईआ। नबी झुके झट, क़दमबोसी ख़ाक रमाईआ। अंदर कलमा ल्या रट, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। पिछली साडी डोरी कट, अग्गे आपणा तन्द जुड़ाईआ। चौदां तबक रिहा ना हट्ट, हटवाणे बैठे ढेरी ढाहीआ। तेरा भाणा मन्नणा दर सच, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ । असीं तेरे निक्के जिहे बच्च, बचपन तेरी गोद सुहाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, मेहरवान तेरी ओट तकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी मेहर नज़र साडे उत्ते रहे अक्ख, आख़र लेखा देणा मुकाईआ।

६२२

२१

❋ २७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ तरसेम सिँघ दे गृह पिंड अहिमद पुर ज़िला कपूरथला ❋

सदी चौधवीं कहे नबी लै के आए गुलदस्ता, गुलदान मुहब्बत वाला बणाईआ। सिर झुकाया आहिस्ता आहिस्ता, निउँ निउँ चरण धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। हौली हौली बोले तेरे नाल होए वाबस्ता, मालक ख़ालक तेरी ओट रखाईआ। असीं हैरान हो गए तेरे भगत दा रूप धरनी लग्गे फ़रिश्ता, संदेसे धुर दे कवण जणाईआ। नाप मिणती ख़त्म होण लग्गी बालिशता, हथ्थ गिरहा ना कोए जणाईआ। गुरमुखां दा बदलण लग्गा नविशता, पैगम्बरां दी रही ना कोई चतुराईआ। दर्शन होण लग्गा दीदा दानिस्ता, नूर ज़हूर तेरा रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे गुलदस्ते विच अगम्मी गुल, जगत गुलशन नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे चहके ना कोई बुलबुल, कोइल राग ना कोए अलाईआ। क़ीमत पाए कोई ना मुल्ल, खारी विच ना कोए टिकाईआ। पत्त टहिणी जाए ना हुल, खिज़ां रुत्त ना कोए बदलाईआ। एह खेल तेरा सुल्हकुल, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बर कहिण नबी कहिण तेरे भगत जाण ना रुल, रुलदयां आपणी गोद उठाईआ। मैं वेखणा चौहन्दी तेरी होवे इक्को कुल, कुलमालक ख़ालक तेरा नूर नज़री आईआ। तेरे दुआरे जाए कोई ना भुल्ल, भगतां मार्ग देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नाम प्यार मुहब्बत विच अनमुल्ल, करते क़ीमत सके कोए ना पाईआ।

सदी चौधवीं कहे नबी वजाऔंदे आए नौबत, डग्गा प्रेम वाला लगाईआ। परवरदिगार तेरी चारों कुण्ट सुणी सोभत, लोक परलोक रहे जस गाईआ। दरोही दुहाई तेरी सानूं होर दे दे मोहलत, क़दमां उत्ते सिर झुकाईआ। साडी ख़ाली कर ना गोलक, भण्डारा दे वरताईआ। तेरा हुक्म बचन अमोलक, अमुल्ल तेरी बेपरवाहीआ। किरपा कर साहिब अनबोलत, शब्दी हुक्म जणाईआ। तेरा सहारा सदा अनडोलत, डोलदयां लए बचाईआ। समरथ स्वामी सब कुछ तेरे कोलत, कुलमालक रहमत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरे नाम दुहाईआ। सदी चौधवीं कहे नबी हथ्थ विच फड़ के आए तिनका, काही कक्ख नज़री आईआ। तेरा खेल इन बिन का, भेव सके ना कोए जणाईआ। अन्तिम लेखा तिन्न दिन का, वदी सुदी ना कोए वड्याईआ। लहिणा देणा चुका जन जन का, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मुहम्मद चौदां तबक फिरे मिणदा, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। चौदां सदीआं तेरा भेव ना पाया भिन्न का, परदा उहला ना कोए चुकाईआ। तूं सानूं नूर दिता किनका किनका, बच्चयां वांग परचाईआ। साल बसाला तेरा लेखा रिहा गिणदा, हिसाब अंकड़यां विच लगाईआ। नज़ारा दस्सदा रिहा तेरे चिन्न्ह दा, चन्द सतार समझाईआ। नबी कहिण छब्बी पोह नूं इक बूटा लिआउणा निम्म दा, जिस दे पत्तयां दी सेज मुहम्मद गिआरां साल हंढ्ढाईआ। इक बुत लिआउणा शिव लिंग दा, इक पार्बती सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे नबी हथ्थ विच फड़ के आए महिताबी, नूर विच चमकाईआ। क्यों करे प्रभू शताबी, शरअ रिहा बदलाईआ। निगाह मार हक़ महिराबी, महबूब नूर अलाहीआ। असीं सब तेरे असहाबी, हज़रत सीस निवाईआ। छड्डी मुहब्बत इश्क हकीकी ते मजाज़ी, मज़ा तेरे विच्चों पाईआ। तेरा फ़रमान सुणया इक जुवाबी, तल्ब इक वधाईआ। तेरा हुक्म अन्त अगम्मा विच पंजाबी, तेरे पंजे मिले वड्याईआ। साडी उम्मत हो गई बाग़ी, दाअवेदार ना कोए अख्वाईआ। तेरा खेल सदा जुग आदी, अन्त तेरी सरनाईआ। होका देंदा फिरे नानक रबाबी, रब्बुल आलमीन जणाईआ। जगत भुन्न खांदा रिहा कबाबी, काअबयां विच दुहाईआ। सच्ची रही ना कोई अदाबी, अदब आदाब ना कोए दृढ़ाईआ। नबी कहिण इक ढाई गज़ दुपट्टा होणा उनाबी, जो मुहम्मद तेंतीवें साल आपणी गरदन उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ।

✻ २७ मम्घर शहिनशाह सम्मत ४ फुंमण सिंघ दे गृह पिंड अहिमद पुर ज़िला कपूरथला ✻

६२४

२१

सदी चौधवीं कहे नबी छड्ड के आए बुत, बुत्तखान्यां डेरा ढाहीआ। सारे कहिण प्रभू तेरे सुत, सुत दुलारे लै मिलाईआ। तेरे चरण रहे झुक, सजदा सीस सुहाईआ। साडा पैंडा रिहा मुक, अन्त तेरे हथ्थ वड्याईआ। सानूं समझा अगम्मी तुक, झगड़ा कलमयां दे गवाईआ। तेरे दुआरे जाईए रुक, बाहर जाण दी लोड़ रहे ना राईआ। अगला हुक्म लईए पुच्छ, की तेरी बेपरवाहीआ। सानूं सब कुछ जावे सुज्झ, परवरदिगार पर्दा देणा उठाईआ। पन्ध रहे ना चौदां लोक, चौदां तबक भज्जणा पए ना वाहो दाहीआ। सदा तेरी वेखीए मौज, मजलस भगतां नाल बणाईआ। तेरे गुरमुखां दी सब तों निराली दिसदी फ़ौज, फ़ौजदारी जगत दी देणी गवाईआ। इक सुगंधी लिआउणी जेहड़ी बणी होवे विच कनौज, महक नाल महकाईआ। एह सानूं तेरे भगतां नूं लावण दा शौक, खुशीआं नाल सेवा करीए चाँईं चाँईंआ। फेर छब्बी पोह नूं सारे जाईए पहुंच, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस वेले तेरे नगारे ते वज्जी धौंस, डंका बेपरवाहीआ। बेदार होईए बरदे बणीए तेरे धुर दे खौंत, ख़सम तेरी वड्याईआ। तुध बिन अन्त जाईए ना ऐवें औंत, बंधन नाता लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग देणा रंगाईआ। नबी कहिण तेरे प्रेम दा वेखणा तग़मा, सोहँ उपर लिखाईआ। असीं फिर मिल के गाईए नग़मा, संदेसा तेरा अलाहीआ। झुकीए तेरे क़दमां, सद मिले सरनाईआ। अगला रहे ना सदमा, दर्द देणा मिटाईआ। सुंभ निसुंभ दा लेखा मुकणा पदमां, दुर्गा दए दुहाईआ। तेरा जलवा तकणा चश्मां, नूर तेरी रुशनाईआ। सब दे पूरे करीं बचनां, इक़रारां तोड़ निभाईआ। अगम्मी वेखीए घटना, की तेरा खेल नज़री आईआ। छब्बी पोह नूं नाल लिआउणा वटना, जो सोहणा सगन बणाईआ । अग्गे प्रकाश होणा जिस ने खेल कराया पटना, पट्टी सब नूं दए पढ़ाईआ। पिछला लेखा सब दा कटणा, हुक्म धुरदरगाहीआ। तेरे भगत दुआरे नबीआं बहि के सोहँ नाम रटणा, राती रुती वज्जे वधाईआ। अग्गे अवर ना कोई यतना, यथार्थ दिता समझाईआ। सद वसणा तेरे वतना, बेवतन पन्ध मुकाईआ। प्रभू कोई रहे ना सक्खणा, सखी सुल्तान सब नूं देणी सरनाईआ। तेरा प्रशाद तेरे हथ्थों सब ने छकणा, दूजा अवर ना कोए वरताईआ। जो खावे उस अन्तर तेरा नूर तेरी धार रखणा, तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरे नाम दी इक सरनाईआ। नबी कहिण लाल सिंघ ने रात नूं पाउणे काले बस्तर, सोहणा रंग रंगाईआ । पंज तलवारां पहनणीआं शस्त्र, शमां हथ्थ उत्ते टिकाईआ। चिट्टा काग़ज़ पढ़ना पत्र, पंदरां इंच लम्बाई चौड़ाईआ । उत्ते परदा करना गुरमुखां छत्र, चिट्टी चादर नाल वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अगला परदा आप उठाईआ।

※ २७ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ कर्म सिँघ दे गृह पिंड अहिमदपुर ज़िला कपूरथला ※

सदी चौधवीं कहे नबी लै के आए टोपी सेलीआ, सिलसले वार वखाईआ। सुण पुरख अकाल धुर अलबेलीआ, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। तेरा खेल रंग नवेलीआ, बेऐब तेरे हथ्थ साडी चतुराईआ। असीं रहिणा नहीं अकेलीआं, अकल कलधारी तेरे विच समाईआ। तूं मुर्शद असीं तेरीआं चेलीआं, चिला कटण दी लोड़ रहे ना राईआ। जगत जहानों होईआं वेहलीआं, नाता ल्या तुड़ाईआ। चौदां तबकां बाज़ीआं पेलीआं, आपणी खेल खिलाईआ। अन्त पसीने विच आईआं तरेलीआं, अगनी तत रही जलाईआ। साडी उमत सानूं कढ्ढदी डेलीआं, भय सिर ना कोए मनाईआ। झगड़ा प्या ज़ातां पातां डूम मरासी नाई तेलीआं, धुर दी तुलबिआं करे ना कोए पढ़ाईआ। जगत डराया मन ममता झमेल्यां, कूड़ कुड़िआर नाल मिलाईआ। आहार बणाया बक्करे छेल्यां, गऊ मास जगत कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दाते तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे नबी झुक झुक करन सलाम, सही सलामत ध्यान लगाईआ। साडा विगड़ गया निज़ाम, नाज़म वेख जगत लोकाईआ। बरदा रिहा ना कोए ग़ुलाम, कोट ग़ुरबत भरी लोकाईआ। साचा रिहा ना कोए इंतजाम, भय डर ना कोए मनाईआ। तारा चन्द रोवे निशान, निशाना नूर ना कोए चमकाईआ। जहालत वधी जीव जहान, अदालत सच ना कोए कमाईआ। छुरी शरअ होई शैतान, शरीअत घर घर करे लड़ाईआ। पैगम्बर कहिण छड्ड आए मैदान, धरनी धरत धवल पन्ध मुकाईआ। अगला सुणन आए फ़रमान, की संदेसा नूर अलाहीआ। चौदां तबकां लुट्टी जाणी दुकान, वस्त अनमुल्ल ना कोए वरताईआ। किरपा कर हरि मेहरवान, महबूब मँग मँगाईआ। की तेरा हुक्म ढंडोरा होवे शरेआम, की तेरा हुक्म सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे नबी धूढ़ी लाउँदे छार, शहिनशाह ख़ाक रमाईआ। असीं तेरे बरखुरदार, खुदी तक्बबर दिता गवाईआ। मँगदे दरस दीदार, नूर चशम रुशनाईआ। दरगाह साची दे बणा हक़दार, घर घराने दे वड्याईआ। साडी उम्मत होई ग़द्दार, भय डर ना कोए वखाईआ। असीं छड्ड दिता संसार, नाता ल्या तुड़ाईआ। कलमयां वाला रख्या ना कोए बाज़ार, होका कूक ना कोए सुणाईआ। अग्गे सब कुछ तेरे अख्त्यार, मुखतारनामे तेरी झोली भराईआ। तूं साहिब सच्चा सिक्दार, तेरा हुक्म रज़ाईआ। करे करावें करनेहार, क़ुदरत क़ादर तेरी नजरी आईआ। सचखण्ड सचा

तेरा दरबार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। नबी कहिण असीं तेरे बरखुरदार, बरखुरदारी विच सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे हुक्म दा इंतज़ार, इंतज़ारी विच बैठे राह तकाईआ।

गुरमुख सिँघ धुर दा गुरमुख, गुरमुख गुरमुख रूप वटाईआ। तेग़ बहादर नाल ढाई साल माणिआ सुख, बकाले दुआले सेव कमाईआ। नौ वार सतिगुर नूं कंधिआं उत्ते चुक्क, बाहरों अंदर ते अंदरों बाहर दिता टिकाईआ। जिस वेले तेग़ बहादर नूं तरतालीवें साल पेट विच हुंदा सी दुःख, दर्द दर्द नाल सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। नावीं वार जिस दिन चुक्कया, बाबल सोहणा नज़री आईआ। कंधे सहारे नाल उठ्ठया, तेग़ बहादर लई अंगड़ाईआ। गुरमुख सिँघ ने पुच्छया, सतिगुर तेरी वड वड्याईआ। हिरदिउँ अंदर झुकया, निम्रता विच सीस निवाईआ। तेरा मैनूं लग्ग जाए दुक्खया, तूं सतिगुर सोहणा सोभा पाईआ। तेग़ बहादर ओसे वेले नवां नरोआ हो के उठ्ठया, आपणी लई अंगड़ाईआ। छाती नाल लगाया ते किहा मेरे पुत्तया, बच्चया दयां समझाईआ। जेहड़ा पुरख अकाल जुग चौकड़ी रिहा लुक्या, तेरा मेला मेलां सहज सुभाईआ। सोहणी सुहावे रुत्तया, लोकमात महक महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा घर वसाईआ। गुरमुख किहा साहिब सतिगुर तेरी लोड़, मैं सेवक नज़री आईआ। तेग़ बहादर किहा मैं गुरु तैनूं पुरख अकाल नाल देवां जोड़, एह मेरी सेवा बण आईआ। गुरमुख किहा मेरी तुट्टे ना तेरे नालों डोर, प्रीती तेरे नाल रखाईआ। तेग़ बहादर किहा मैं तैनूं ओस दे नाल देवां तोर, जो तेरा मेरा लेखा सब दा वेख वखाईआ। जिस वेले कलयुग अन्धेरा होया घोर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। अमृत वेला सरघी रहे ना भोर, भोरी दरस ना कोए कराईआ। साध सन्त बण जावण ठग चोर, सति विच ना कोए समाईआ। ओस वेले पुरख अकाला दीन दयाला आपणीआं वागां आवे मोड़, निरगुण हो के आपणा नूर लए चमकाईआ। सारी दुनियां सृष्टी पावे शोर, कूके हाल दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। गुरमुख सिँघ किहा कि मेरी फेर केहड़ी होवे ज़ाती, फेर सतिगुर दे समझाईआ। तेग़ बहादर किहा तूं हुण वी गुरमुख फेर वी गुरमुख एह मेरी देण वाली दाती, गुरमुख नूं गुरमुख विच्चों प्रगटाईआ। नाल प्रेम नाल लाया उत्ते छाती, तिन्न वार पाणी उत्ते दिता धराईआ। फेर किहा गुरमुख सिँघ एह मेरी रखणी यादी, याददाशत पिछली तेरे विच लुकाईआ। जिस वेले प्रेम प्यार उतशाह नाल इश्नान करावेंगा फेर

तेरी बदल देवां हयाती, जीवण आपणे लेखे पाईआ। पर याद रखीं नौ महीने अठारां दिन तैनूं करनी पऊ फ़रयादी, मात गर्भ दा अग्गे लेखा रहे ना राईआ। गुरमुख सिँघ किहा प्रभू सतिगुर मैं ज़रूर मन्ना तेरी आखी, अंदर वड़ के मैनूं देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुरमुख सिँघ नूं पिछला सी ज्ञान, अंदरे अंदर रिहा हिलाईआ। तेग़ बहादर दी धार कहे ओस प्रभू दा करा इश्नान, जिथ्थे दुरमति मैल रहे ना राईआ। ओह काया वरगा मकान, पत्थरां इट्टां नाल वड्याईआ। सतिगुरु दा अमृत उपरों आवे असमान, गुरमुख ने अमृत धरती विच्चों ल्या कढ्ढाईआ। किसे दे घरों मँगण गया नहीं दान, घड़ा कुम्भ मोढ्ढयां उत्ते ना कोए रखाईआ। सतिगुरु दा हुक्म मन्निआ ते मन्निआ होया परवान, परवाना आ गया धुरदरगाहीआ। जिंने चिर विच कराया इश्नान, उने चिर तों पहलों लेखा दिता मुकाईआ। दीन दुनी दा दु:ख दर्द रोग ना वेख्या विच जहान, हस्सदा हस्सदा वसदा वसदा आपणे घर गया चाँईं चाँईंआ। गुरमुख सिँघ दा गुरमुख गुरमुख सिँघ फेर बणया आण, जिस दे घर दा धर्म निशान बंस सरबंस नूं प्रभू देवे माण, वड्डे निक्के बिरध बाल सारे पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडे सिर कोई करन नहीं आउँदा एहसान, पूरब दा लेखा समें अनुसार सब दी झोली पाईआ।

६२७ २१

✻ २७ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ करतार सिँघ दे गृह कपूरथला ✻

सदी चौधवीं कहे मैनूं दिसदा आपणा अन्त अख़ीर, आख़र धुर करता रिहा वखाईआ। देवे हुक्म शाह पातशाह शहिनशाह बेनज़ीर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ । जो लेखा जानणहारा शाह हकीर, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाईआ। चार कुण्ट दह दिशा बदलण वाला तक़दीर, तदबीर नाम निधान आपणी इक उपजाईआ। शरअ शरीअत कटण वाला ज़ंजीर, लाशरीक आपणा खेल खिलाईआ। सर्ब स्वामी अन्तरजामी आत्म परमात्म बणन वाला दस्तगीर, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे थाउँ थाईंआ। दीन मज़हब ज़ात पात ऊँच नीच हदूद वंड रहिण ना देवे लकीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवाद आपणा खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा अन्त अख़ीर आया नेड़े, नेरन नेर हो के दयां जणाईआ। चार कुण्ट दह दिशा छिड़न वाले झेड़े, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण बचया रहिण कोए ना पाईआ। परवरदिगार सांझा यार दीन दुनी देवे गेड़े, चार कुण्ट दह दिशा निरगुण सरगुण लड्ड भवाईआ। तन वजूद काया

माटी वेखे खेड़े, बन्द किवाड़ी खिड़की परदा अंदरों दए उठाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सूफ़ी फ़कीर जेहड़े, वरनां बरनां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। भेव खुल्हाए आत्म परमात्म परमात्म आत्म तूं मेरा मैं तेरे, अनभव आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा अन्त अख़ीरी चक्र, चक्रवर्ती रहिण कोए ना पाईआ। सूफ़ी सुरती वाला दिसे कोई ना फ़क्कर, फ़िकरे अलिफ़ ये ढोले सारी सृष्टी रही गाईआ। नाम निधान तुले कोई ना तक्कड़, जगत विद्या तराज़ू कम्म किसे ना आईआ। आलम उल्मा दीन मज़हब दी लाउँदे टक्कर, ज़ात पात विच दुहाईआ। सच दुआर धुरदरबार दरगाह साची मुक़ामे हक़ कोई ना सके अप्पड़, निरगुण धार निरवैर निरँकार निर्मल जोत ना कोए मिलाईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया जगत जहान कीता फट्टड़, धुर दी पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां खेल दो जहानां, जहालत भरी जगत लोकाईआ। संदेसा देवां धुर फ़रमाना, पुरख अकाला रिहा दृढ़ाईआ। जगत बुद्धी पढ़ पढ़ थक्की शास्त्र सिमरत वेद पुराणां, अञ्जील क़ुरान रसना जिह्वा नाल गाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए नौजवाना, नौ दुआरे काया मन्दिर अंदर पन्ध मुकाईआ। दीवा बाती कमलापाती जगाए ना कोई जोती नूर महाना, अमृत बूँद स्वांती ठांडी ठार निझर झिरना ना कोए झिराईआ। आत्म ब्रह्म सति सरूप ना किसे पहचाना, भेव अभेदा भेव ना कोए खुल्हाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाही अल्ला वाहिगुरु राम गॉड सतिनाम सारे गाउँदे गाणा, अजपा जाप विच आपणा आप ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी करनी दा करता आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे पढ़ पढ़ थक्के, थकावट विच वेखी लोकाईआ। हक़ हक़ीक़त मिले ना मदीने मक्के, काअबे अंदर पई दुहाईआ। हुजरा हक़ कोई ना दस्से, महिराब अहिबाब रबाब ना कोए सुणाईआ। मन कल्पणा सारे फिरदे नट्ठे, कलमा नाद धुन करे ना कोए शनवाईआ। बुद्धी विचार बण गए सच्चे, अक़ल विद्या नाल वड्याईआ। मंज़ल मिली किसे ना हक़े, हक़लुयकीन ना कोए रखाईआ। मैं चार वरन अठारां बरन तक्के, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश फोल फुलाईआ। दिवस रैण शास्त्र सिमरत वेद पुराणां लाए रट्टे, माला मणक्यां वाली भुवाईआ। अमृत रस निझर धार बूँद स्वांती कोई ना चट्टे, चात्रिक तृखा ना कोए बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बिन रसना जिह्वा जाप कोई ना जपे, सुरती शब्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, कोटां विच्चों सन्त सुहेले

आपणे प्रेम प्यार विच रखे, रखक हो के वेखे चाँईं चाँईंआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या गुरदर मन्दिर मसीत, शिवदवाले मट्ठां फोल फुलाईआ। दीनां मज़हबां वाली रीत, मानव मानव हिस्सयां विच वंड वंडाईआ। त्रैगुण तों बाहर नज़र आया ना कोए अतीत, त्रैभवण विच ना कोए समाईआ। साचा छत्र झुल्ले किसे ना सीस, सतिगुर सति ना कोए वरताईआ। झगड़ा प्या चारों कुण्ट हस्त कीट, आत्म ब्रह्म परदा ना कोए उठाईआ। मैं सब दी अंदर वड़ के वेखी नीत, नौ दुआरे भज्जण चाँईं चाँईंआ। तन वजूद ख़ाकी माटी त्रैगुण अगनी विच्चो किसे ना होई सीत, सांतक सति ना कोए कराईआ। परम पुरख दा गाए कोए ना गीत, गुर अवतार पैगम्बरां दे ढोले रहे गाईआ। अबिनाशी करता घट निवासी परवरदिगार सांझा यार वसिआ किसे ना चीत, मन चित ठगौरी चारों कुण्ट नज़री आईआ। सच संदेसा धुर दा कलमा अगम्मी धार समझे ना कोए हदीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार इक इकल्ला इक्को इक दरसाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या मक्का काअबा, काया उम्मत फोल फुलाईआ। रस मिले ना कोए दोआबा, आबेहयात ना कोए प्याईआ। झिरना झिरे कोई ना नाभा, कँवली कँवल ना कोए वड्याईआ। सजदा सीस ना कोए अदाबा, क़दमबोसी धूढ़ ना कोए रमाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। नबी रसूलां टुट्टा नाता, पैगम्बर गंढु ना कोए पुआईआ। सब दा फोल के वेख्या खाता, परदा उहला आप चुकाईआ। की अग्गे खेल करे जोती जाता, पारब्रह्म प्रभ धुरदरगाहीआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर भविख्तां विच बोल के गए अगम्मी भाशा, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। सो वेखणहारा दीन दुनी तमाशा, लोक परलोक सलोक आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख वेख होई हैरान, हर हिरदा फोल फुलाईआ। घर घर शरअ फिरी शैतान, छुरी ममता करद उठाईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, सच अमल ना कोए जणाईआ। नेत्र रोंदी वेखी क़ुरान, मसल्यां विच दुहाईआ। जलवा नूर करे ना कोए पहचान, नेत्र अक्ख ना कोए बदलाईआ। अल्ला हू अकबर सारे गाण, नाअरे हुजरिआं विच सुणाईआ। धुर दा सुणे ना कोए फ़रमान, परवरदिगार की समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद दी मिटण लग्गी शान, शहिनशाह आपणा खेल खिलाईआ। अन्त अख़ीर होणा वैरान, वैरी घर घर नज़री आईआ। प्रभ उत्ते किसे दा रिहा ना इतमीनान, तसल्ली तसव्वर ना कोए कराईआ। दीन दुनी होई नादान, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल मर्द मर्दान, नौजवान आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ दा कलमा अगम्म अथाह, अक्खरां विच ना वंड वंडाईआ। जेहड़ा जपया जाए बिना साह,

६३०
२१

पवण स्वास ना कोए वड्याईआ। नाम निधान निरगुण धार जाए समा, सरगुण वेखण कोए ना पाईआ। नाद धुन धुन नाद विच्चों उपजा, नाद अनादी आपे गाईआ। जोती नूर कर रुशना, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वड दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चार कुण्ट तक्कया पाप, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। बिना भगत तों कोई जप सके ना अजपा जाप, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं त्रैगुण ताप, रजो तमो सतो ना कोए वड्याईआ। रूह बुत होवे पाक, माटी ख़ाक नूर जोत चमकाईआ। अक्खरां वाली रही ना गाथ, निरअक्खर विच समाईआ। जिथ्थे मिले परम पुरख प्रभ आप, आप आपणा जोड़ जुड़ाईआ। आत्म बणा के सच्चा साक, सज्जण हो के वेख वखाईआ। सदा खुल्ला रखे ताक, बजर कपाटी कम्म किसे ना आईआ। साची पाउँदा दिसे रास, बिन गोपी काहन नचाईआ। साचा नूर कर प्रकाश, बिन तेल बाती डगमगाईआ। किरपा करे पुरख अबिनाश, मेहरवान महबूब आपणे रंग रंगाईआ। उन्हां पूरब पूरी करे आस, जन्म जन्म दा लेखा लेखे विच लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दरगाह साची इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे अजपा जाप उह गुरमुख जपदा, जिस नूं जगजीवण दाता दए वड्याईआ। जगत दुआरे मंज़ल टपदा, सुखमन टेडी बंक ईड़ा पिंगल पैरां हेठ दबाईआ। प्यार छड्डके निज अमृत रस दा, कँवल नाभी मुख भवाईआ। सुण आवाज़ अगम्मे नद दा, शब्दी धुन धुन वड्याईआ। दे प्रकाश नूरी सति दा, सति सति विच समाईआ। नाता तोड़ के पंज तत दा, सुरती अकाल मूर्ती आपणे रंग रंगाईआ। ज्यों भावे त्यों रखदा, बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। ओथे इशारा नहीं कोई अक्ख दा, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दुआरा इक्को इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे अजपा जाप जगत धार निराला, निरवैर आप जणाईआ। मणक्यां वाली फेरनी पए ना माला, मन का मणका दए भवाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, जागरत जोत करे रुशनाईआ। काया मन्दिर बणा के सच्ची धर्मसाला, घर विच घर परदा दए उठाईआ। दीआ बाती कर उजाला, कमलापाती वेख वखाईआ। झगड़ा मुका के काल महाकाला, आवण जावण गेड़ चुकाईआ। साचा मार्ग दस्स सुखाला, सुख आसण विच भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरा इक्को इक सुहाईआ। अजपा जाप जपाए काया मन्दिर, मनसा मन रहिण ना पाईआ। भाग लगा के डूँघी कंदर, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। बजर कपाटी तोड़ के जंदर, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। मनसा विच फिरे ना मन बन्दर, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। कर प्रकाश अन्धेरा खण्डर, नूरी जोत डगमगाईआ। बोध अगाधा

बण पंडत, साची सिख्या इक समझाईआ। झगड़ा मुका के जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझा यार जल्वागर आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे अजपा जाप नहीं कोई औखा, एह सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। पढ़ना पए कोए ना पोथा, पुस्तक लोड़ रहे ना राईआ। वड़ना पए किसे ना कोठा, मन्दिरां विच ना फेरा पाईआ। देणा पए किसे ना रोटा, पुन्न दान ना कोए समझाईआ। पाणी विच मारना पए ना गोता, अठसठ ना पन्ध मुकाईआ। मन कल्पणा करनी पए ना लोचा, जग नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। बुद्धी करनी पए ना सोचा, अक़ल विच ना कोए चतुराईआ। करना पए कोई ना धोखा, जगत फ़रेब ना कोए जणाईआ। जिन्हां नूं साहिब सतिगुर पुरख अकाला दीन दयाला आपणे मिलण दा देवे मौका, जन्म जन्म दा पूरब लेख वेख वखाईआ। ओह अजपा जाप जपदे नाल शौंका, रसना जिह्वा बत्ती दन्द आत्म परमात्म परमात्म आत्म ढोला गाईआ। उन्हां दा काया मन्दिर दीन दयाला सदा साफ़ रखे चौंका, पतित पुनीत आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, गृह मन्दिर इक वखाईआ। अजपा जाप जपदा जिस नूं धुर दी लोड़, लोड़ींदा सज्जण वेख वखाईआ । सतिगुर शब्द आपे लए जोड़, अन्तर निरंतर मेल मिलाईआ। भटकणा पए ना विच काया गोर, मनसा मन ना कोए हल्काईआ। ठग्गी करे ना कोई पंज चोर, तृष्ना तृखा ना कोए वधाईआ। सतिगुर सज्जण स्वामी अन्तर जाए बौहड़, बौहड़ आपणा मेल मिलाईआ। सच दुआर दा ला के पौड़, मंज़ल हक़ीक़ी इक वखाईआ। जिस नूर नूं आत्म तकदा नाल ग़ौर, गहर गम्भीर दए वखाईआ। उस दा फ़ुरना फुरदा फोर, पिछला फ़ुरना रहिण कोए ना पाईआ। अजपा जाप आत्म परमात्म तों बिना नहीं कोई होर, होरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा धुर दा घर, घर परदा आप चुकाईआ। अजपा जाप विच जिस होया वासा, वसल मिले नूर अलाहीआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक भरवासा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। चंचल मन करे कोई ना हासा, बुद्धी भरम ना कोए भुलाईआ। समरथ पुरख इक्को जाता, जोती जाता धुरदरगाहीआ। जिस ने चार जुग अक्खरां वाले शब्द बणाई गाथा, गुर अवतार पैगम्बरां वंड वंडाईआ। सो वेखणहारा खेल तमाशा, पृथ्मी आकाश खोज खुजाईआ। जिस नूं झुकदे त्रैलोकी नाथा, राम वशिष्ट सीस निवाईआ। तेई अवतार टेकण माथा, ईसा मूसा मुहम्मद सजदयां विच धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। नानक गोबिन्द मन्नया पिता माता, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। सो साहिब स्वामी आदि जुगादी सतिगुर साचा, हरि सज्जण इक अख्वाईआ । जिन्हां भगतां दे अंदर लूं लूं अंदर राचा, साढे तिन्न करोड़ दए गवाहीआ।

ओह गुरसिख अजपा जाप जपदे बिना पवण स्वासा, साह तों बिना साहिब तुरत शब्द विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार नूर जोत प्रकाशा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ।

✲ २७ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ मनजीत कौर दे गृह पिंड मँगूपुर ✲

सदी चौधवीं कहे की हाल होणा इत्तल, इत्तलाह मुहम्मद दे जणाईआ। की खेल वेखणा मित्तल, मित्र प्यारे परदा दे उठाईआ। की रंग रंगाउणा सित्तल, साहिब स्वामी दया कमाईआ। तेरा कलमा जाए कित्तल, कातब कवण करे लिखाईआ। धातू रूप वटाए पित्तल, क़ीमत कर्म ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे की होणा चौदां तबक, सच तबीअत नाल दे जणाईआ। की पढ़ना सब ने सबक, सिख्या कवण सुणाईआ। की नूर अलाही देणी झलक, जल्वागर डगमगाईआ। की संदेसा दस्सणा हमद, लाशरीक पढ़ाईआ। की इशारा मार रमज़, रहमत हक़ कमाईआ। की अन्त अख़ीर करे ग़ज़ब, मेहरवान महबूब धुरदरगाहीआ। किस दा अग्गे होवे अदब, सजदयां विच सीस झुकाईआ। की सब दा सांझा होवे मज़हब, परदा उहला दे उठाईआ। मैं हैरान होई तअज्जुब, परेशानी विच कुरलाईआ। मुनारा दिसे कोई ना मस्जिद, हुजरा हक़ ना कोए सुहाईआ। माण दिसे ना मुरीद मुर्शद, सिर सर ना कोए निवाईआ। धर्म दी धार रही ना उल्फ़त, कलमा कलाम ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद दस्स अगम्मी राज़, भेव अभेद खुल्हाईआ। फेर पढ़े कवण निमाज़, सजदयां विच सीस झुकाईआ। की उम्मत मिलणा इज़ाज़, कवण देवे वड्याईआ। की परदा खोल्हे आग़ाज़, सहज देणा समझाईआ। निगाह मार उपर आकाश, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। कवण नूर करे प्रकाश, चन्द चांदनी डेरा ढाहीआ। मैं अन्तिम होई उदास, हैरानी मेरे अंदर छाईआ। साचा देवे कोई ना साथ, संगी संग गए तजाईआ। मंज़ल मिले कोई ना घाट, अद्धवाटे बैठी डेरा लाईआ। मुहब्बत जुड़े कोई ना नात, नातवां हो के दयां दुहाईआ। पैगम्बरां दी फिरदी वेखी जमात, जुम्मला अक्खर ना कोए समझाईआ। बग़ले रही ना कोई किताब, कुतबखानिआं होई सफ़ाईआ। पुरख अकाल दा समझे कवण मजाज़, परदा उहला दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं पुच्छण लग्गी आज, आजिज़ हो के सीस निवाईआ। सति धर्म दा केहड़ा होवे समाज, मानव मानव

एका घर वसाईआ। झगड़ा रहे ना किसे ज़ात, जोरू ज़र ना कोए लड़ाईआ। नाम उपजे इक्को साच, सति सति मिले वड्याईआ। भाग लग्गे काया माटी काच, कंचन गढ़ सोभा पाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। पुरख अकाला देवे दात, दानी हो के आप वरताईआ। कूड़ी क्रिया पाए वफ़ात, मढ़ी गोर विच दबाईआ। मज़हबां कोलों मिले नजात, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। सब दे अंदरों तूंही तूंही दी निकले आवाज़, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। सृष्टी दी दृष्टी जावे जाग, आलस निंदरा मेट मिटाईआ। हिरदे उपजे हक़ वैराग, वैरी अंदरों देणे कढ्ढाईआ। कूड़ क्रिया होवे त्याग, धर्म दी धार इक उपजाईआ। सच स्वामी मिले सुहाग, जगत रंडेपा डेरा ढाहीआ। गुरमुख हँस बणन काग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद कुछ पर्दा खोल्ह बातन, बेवतन दयां जणाईआ। की खेल होवे मातन, मातर भूमी वेख वखाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रातन, रुती नूर ना कोए रुशनाईआ। बाहरों मानव तत्तां वाले जापण, अन्तर करे ना कोए सफ़ाईआ। बुत होया किसे ना पाकन, पलीत वेखी जगत लोकाईआ। धूढ़ी मिले ना किसे ख़ाकन, मट्टी मस्तक ना कोए रमाईआ। परदा लथ्थे किसे ना ताकन, तकवा हक़ ना कोए जणाईआ। हक़ बन्दगी विच मूल ना जागण, सोई सुरत ना कोए उठाईआ। मूर्ख मूढ़ होए कागन, हँस रूप ना कोए बणाईआ। माया डस्से डस्सणी नागण, घर घर आपणा डंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की करे खेल धुर दा हरि, धुर दी धार देणी दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद कुछ ते आख, बिन अक्खरां दे समझाईआ। कलमा अगम्मी इशारा दे भाख, परदा अंदरों आप चुकाईआ। की उम्मत नाल खेल होणा महीने विच बैसाख, वसाह के की करता कार कमाईआ। परदा खोल्ह अगली बात, बातन भेव रहे ना राईआ। क्यों बदलण लग्गा जाप, जग जीवण दाता आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे मिलण दा दए आप इतफ़ाक़, बेवफ़ाई दूर कराईआ। मुहम्मद कहे सुण चौधवीं सदी मेरी साथण, सच दयां दृढ़ाईआ। मैं सुनेहड़ा आया आखण, बिन अक्खरां राग अल्हाईआ। सब दे कर्म आया वाचण, जन्म फोल फुलाईआ। घाट आया पातण, तटां वेख वखाईआ। सब दी वेखां आसण, घर घर फोल फुलाईआ। रूह बुत रिहा कोई ना पाकन, पतित पुनीत ना कोए जणाईआ। मेरा सब नालों तुट्टा नातण, संगी संग ना कोए निभाईआ। परवरदिगार वेखे खेल तमाशण, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा धर्म इक उपजाईआ। सदी चौधवीं कहे की प्रभ दी अग्गे मनसा, मनसूर तों

पुच्छ के दे समझाईआ। किथ्थे भगत भगवान दा वसदा बंसा, बंसी वाले जिथ्थे सीस निवाईआ। मेरा अन्तिम मेट दे संसा, भरम रहे ना राईआ। केहड़ी धार बणे प्रभ साचे दी अंसा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मन हँकारी रहे ना कंसा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। गुरमुख रूप धरे जग हँसा, हँ ब्रह्म भेव खुल्हाईआ। सति धर्म दी साची होवे बणता, घड़न भन्न्हणहार देणा दृढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी इक्को होवे कन्ता, क़दीम दा मालक ख़सम गोसाईंआ। झगड़ा मुकावे बहिश्त जन्नता, सच दुआरे दए इक सरनाईआ। कलमयां विच नामां विच अक्खरां विच पत्थरां विच सथ्थरां विच कढावे कोई ना मिन्नता, अगनी तत ना कोए तपाईआ। अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के आपणे मिलण दी देवे साची हिम्मता, हौसला इक वधाईआ। नज़री आवे चार कुण्ट दह दिशा साची सिम्मता, सिमरन पूजा पाठ जोग अभ्यास दा लेखा दए चुकाईआ। जन्म मरन दी कर्म कांड दी रहिण ना देवे इल्लता, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सच पोशाक तन माटी ख़ाक देवे ख़िलता, ख़ालक ख़लक दया कमाईआ। करनी पए कोई ना सुन्नता, सीस मुंडाउणा पए कोई ना मुनता, लबां कटाउण दी लोड़ रहे ना राईआ। एका नाम निधान देवे शब्द अगम्मी धुन दा, धुन आत्मक राग सुणाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक साहिब स्वामी बणे कुल्ल दा, मजहबां वंड ना कोए वंडाईआ। धूढ़ी टिक्का लावे सब नूं आपणी धूल दा, धर्म दी धार इक जणाईआ। हुक्म संदेसा देवे धुर माअक़ूल दा, मुकम्मल कर पढ़ाईआ। मार्ग दस्स आत्म परमात्म परमात्म आत्म सच असूल दा, असलीअत विच्चों आपणा असल समझाईआ। नाता जोड़ के पारब्रह्म ब्रह्म कन्त कन्तूहल दा, मेला मेले सहज सुभाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद कवण लहिणे देणे लेखे सर्ब वसूलदा, हिसाब मँगे थाउँ थाईंआ। जिस कोल थाँ टिकाणा नहीं कोई पूल दा, आरज़ी खेल ना कोए वखाईआ। उस दा हुक्म संदेसा इक्को शब्द अगम्मी मज़मून दा, जिस नूं पढ़े कोए ना विच लोकाईआ। उस दा मार्ग धर्म दुआर क़ानूंन दा, क़ाइदे विच तरमीम ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां लेखा कदे ना भूलदा, अभुल्ल हो के लेखे सब दे लेखे लाईआ।

✲ २८ मग्घर शहिनशाही सम्मत ४ फ़कीर सिँघ मजीद पुर महिन्दर सिँघ हरनाम पुर ✲

सदी चौधवीं कहे रातीं नानक अलिफ़ नाल मिलाया ऊड़ा, दोवें अक्खां दोहां उत्ते टिकाईआ। तक्कया रंग गूढ़ा, सोहणा सोभा पाईआ। अन्तर कहे किस नूं कहां कूड़ा, कूड़ा नज़र कोए ना आईआ। जां धरनी वेखे जगत जहान हो गया मूढ़ा,

बुध्ध बिबेक ना कोए बणाईआ। मस्तक लग्गे किसे ना धूढ़ा, टिक्के ख़ाक ना कोए रमाईआ। फेर तक्कया ये दा वक्त होया पूरा, ड़ाड़ा ड़ाड़ि रिहा मिटाईआ। पुरख अकाल दा सच दस्तूरा, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जो भविख्त दस्सया हुक्म विच हज़ूरा, हज़ूरीए हो के जगत सुणाईआ। सो वक्त रिहा ना दूरा, नेरन नेरा पैंडा गया मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि दाता शहिनशाहीआ। नानक कहे मैं वेखी प्यार नाल अलिफ़, अल्फ़ी नजर कोए ना आईआ। जिस ने इक्को चुक्कया हल्फ़, हल्फ़ीआ बिआन आपणे विच छुपाईआ। मैं सदा रहिणा यक्क तरफ़, दो तरफ़ ना वंड वंडाईआ। मैं खुदा नूं कहिणा शरफ़, मुशर्फ़ कहि के सीस निवाईआ। मैं तकणा उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम ध्यान लगाईआ। मैं वेखणा उत्ते फ़र्श, जल्वागर नूर नूर रुशनाईआ। मैं निरगुण करना दरस, दरस प्यासी तिहाईआ। मैं आपणी बुझाउणी हरस, हवस रहे ना राईआ। अमृत देवे बरस, रहमत विच वड्याईआ। मेरी मन्ज़ूर करे अर्ज़, बेनन्ती दयां सुणाईआ। आपणा खेल वेख असचरज, अलिफ़ ये दी चले ना कोए चतुराईआ। तेरे कलमे दी रही ना कोए गर्ज़, ग़ुरबत अंदर भरी लोकाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा गरद, गरदश विच पई दुहाईआ। दुखियां वंडे कोए ना दरद, दीनां गोद ना कोए टिकाईआ। तेरी शरअ कसाई होई करद, क़तलगाह वेखी लोकाईआ। हउमे दी मेटे कोई ना मर्ज़, मरीज़ घर घर रोवण मारन धाईंआ। साचा पल्ले नहीं किसे खरच, दामन दामनगीर ना कोए फड़ाईआ। नफ़ा वेख्या ना किसे चर्च, मस्जिद ख़ाली झोली रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा आपणा हुक्म वरताईआ। ऊड़ा कहे मैं वेख्या उठ, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। वस्त दिसी कोए ना मुठ, नाम निधान ना कोए वरताईआ। सब नूं ख़ाली दिसे ठुठ, प्याले ठूठे मूधे होई सफ़ाईआ। जगत विकार पाई लुट्ट, घर घर दिसे लड़ाईआ। दीन दुनी आपणे अंदरों धर्म दा बूटा दिता पुट्ट, बिन हथ्थां बाहर सुटाईआ। सारे बण गए अपराधी पुत, सुत दुलारा रहिण कोए ना पाईआ। माया ममता रहे चुक्क, लड़ लावण चाँईं चाँईंआ। हउमे हंगता विच खुश, खुशी आपणी रहे प्रगटाईआ। जगत विकार सुहाई रुत, भोग बिलास विच लोकाईआ। सति सच गया छुप, कलयुग रैण अन्धेरा छाईआ। नानक दी सारे भुल्ल गए तुक, सोहँ ढोला कोए ना गाईआ। ऊड़ा कहे मैनूं होया बड़ा दुःख, दुखी हो के दयां सुणाईआ। अमृत मिले किसे ना घुट, जाम हक़ीक़ी ना कोए प्याईआ। ख़ाली दिसण बुत, तत अगनी रिहा तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे अलिफ़ ऊड़ा अग्गे पिच्छे पिच्छे अग्गे, पासा रहे बदलाईआ। अक्खरां वाले रहिण ना दईए हिस्से, हिस्सयां वाली वंड ना कोए

वंडाईआ। साडे अंदर इक्को नूर दिसे, दूजी चमक ना कोए चमकाईआ। असीं इक्के चढ़ीए चिखे, जिथ्थे अगनी अग्ग ना कोए तपाईआ। इक्को मन्नीए पिते, जो पतिपरमेश्वर नूर खुदाईआ। हुण छड्ड दईए दीनां मज़हबां दे कित्ते, किते साडी वी होए सफ़ाईआ। जिस ने सानूं भण्डारे दित्ते, अक्खरां वाला रूप प्रगटाईआ। मातलोक चलाए सिक्के, हुक्मरान दिता जणाईआ। अन्त डोरी पिच्छे ना खिच्चे, साडी करे सफ़ाईआ। असीं काले उत्ते फेर होईए चिट्टे, जिन्हां चिट्टे तों काले दिते बणाईआ। अन्त अख़ीरी निकलण लग्गे सिट्टे, क़ीमत करता सब दी दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। अलिफ़ कहे सुण ऊड़े वीर, वीरना दयां जणाईआ। साडी सांझी होवे तक़दीर, तक्बर विच रहे ना राईआ। बंधन तुट्टे ज़ंजीर, हद्द देणी गुआईआ। मन्नीए इक्को पीर, जिस नूं वाहिगुरु कहि के गाईआ। तक्कीए ओह तस्वीर, जिस नूं मसव्वर ना कोए खिचाईआ। बदलीए ओह ज़मीर, जिथ्थे ज़ामन रहे ना राईआ। चढ़ीए चोटी अख़ीर, जिथ्थे साडे अक्खरां दी मुके पढ़ाईआ। द्वैती वाला रहे ना कोए ख़मीर, ख़ुमारी सब नूं इक रखाईआ। मंज़ल दा पैंडा रिहा चीर, चिरी विछुन्ने जोड़ जुड़ाईआ। अलिफ़ कहे झगड़ा मिटाईए शाह अमीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक सुणाईआ। ऊड़ा कहे सुण अलिफ़ मेरी हमशीरा, हमद विच सुणाईआ। दोवें तक्कीए बेनज़ीरा, जो नज़रां तों ओहले डेरा लाईआ। प्यार मुहब्बत दा चुकीए बीड़ा, धर्म धार दी गंढु पुआईआ। मैनूं दे दे आपणा लीड़ा, मेरा बस्तर तेरे हिस्से आईआ। जेहड़ीआं ग्रन्थां दीआं बन्नीआं बीड़ां, सिफ्तां विच सालाहीआ। उस दा खेल वेख अख़ीरा, जो आख़र रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। अलिफ़ कहे ऊड़ा तेरी वेखणी लिखी होई पैंती, पैंतीस अक्खरां विच वड्याईआ। गुरमुख दे हथ्थ विच होणी कैंची, शरअ ज़ंजीर कटाईआ। मैं ढोला गावां बैंती, बैतुलमुक्कदस मेरी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। ऊड़ा कहे सुण अलिफ़ भैण ए, एका दयां जणाईआ। जे मेरी पैंती ते तेरा वी लेख लिख्या जाए नाल ये, हिन्दसे विच्चले अक्खर नाल मिलाईआ। पर सच जाणी धर्म दुआरे दोहां दा लग्गणा नेंह, भगतां विच सोभा पाईआ। पुरख अकाला बरखे मेंह, अमृत धार वहाईआ। दीन दुनी माटी होणी खेह, ख़ाक ख़ाक नाल उडाईआ। साडी पवित्र होवे देह, अक्खर अक्खर सोभा पाईआ। हँकार रहे कोई ना मैं, मैं ममता देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा परदा देणा उठाईआ। अलिफ़ कहे मैनूं केहड़ा लिखे कातब, क़लम शाही नाल वड्याईआ। मेरे साहमणे होवे मुख़ातब, परदा

रहे ना राईआ। मैं जावां ओस दी जानब, रस्ता राह तकाईआ। उह मेरा करे तुआक़ब, वेखे चाँईं चाँईंआ। मेरी बदल जावे आदत, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। मैं वी कहां सांझी होवे इक इबादत, मालक इक अख्वाईआ। मिले अगम्म निआमत, वस्त धुरदरगाहीआ। रहीए सही सलामत, दुःख ना लागे राईआ। तूं मेरी मैं तेरी देवां ज़मानत, ज़ामन अवर ना कोए जणाईआ। अलिफ़ कहे मैनूं दिसदा ज़रूर आवे क़िआमत, कामल मुर्शद हुक्म मनाईआ। ऊड़ा कहे एसे कर के पंजां ने करा के आउणा हजामत, चोटी सब दी दए मुनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा परदा लाहीआ। अलिफ़ कहे सुण भईआ ऊड़ा, ऊड़ी दे कोल दुहाईआ। पंजां बीबीआं गिच्ची तों थल्ले चार उँगल करना जूड़ा, वद्ध घट्ट ना कोए बणाईआ। मथ्थे लग्गी होवे धूढ़ा, छार छार शंकर वाली छुहाईआ। बुल्लां नूं नीला रंग चढ़या होवे गूढ़ा, दूसर रंग ना कोए बदलाईआ। ऊच्ची ऊच्ची मारदीआं आउण खंगूरा, ख़बरदार हो के अक्ख लओ खुल्हाईआ। हथ्थ विच फड़या होवे इक इक्क मूहड़ा, कदी कदी सिर उत्ते लैण टिकाईआ। पाउँदीआं आउण फ़तूरा, ढोला ज़ोर ज़ोर सुणाईआ। पुरख अकाल करन मशहूरा, निहकलंक तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा मुकावे बहिश्तां वालीआं हूरां, पैगम्बरां दे हुजरिआं विच्चों करे सफ़ाईआ।

६३७
२१

❊ २८ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ जगीर सिँघ दे गृह पिंड शिकार पुर ज़िला कपूरथला ❊

सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां नाल ईमान, अमल दीन दुनी जणाईआ। तीस बत्तीसा भेव खुल्हे ना कोई क़ुरान, काया काअबा ना कोए वड्याईआ। तन वजूद दिसे शैतान, शरअ शरीअत विच दुहाईआ। सजदा हक़ करे ना कोए सलाम, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। हुजरिआं अंदर दिसे हराम, माया ममता मोह हल्काईआ। खुदी तक्ब्बर कीता ग़ुलाम, ग़ुरबत करे ना कोए सफ़ाईआ। चारों कुण्ट विगड़िआ निज़ाम, नौबत हक़ ना कोए वजाईआ। जूठ झूठ दिसे निशान, सति सच ना कोए वखाईआ। की खेल करे अमाम, हरि दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, सृष्टी दृष्टी खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं कहे चारों कुण्ट तक्कया अन्धयारा, नेत्र नैण ना कोए रुशनाईआ। मुहब्बत करे ना कोए प्यारा, प्रेम प्रीती ना कोए जणाईआ। जीव जंत होया गवारा, साध सन्त रिहा कुरलाईआ। सूफ़ी मंज़ल चढ़े ना कोई चुबारा, जलवा नूर ना कोए रुशनाईआ। मुहम्मद हो गया बेएतबारा, सगला संग ना कोए निभाईआ।

चार यारी होए खुआरा, ख़ालस भेव ना कोए खुल्हाईआ। अल्ला हू रिहा ना नाअरा, तूं ही तूं ही ना राग अल्हाईआ। मन मनुआ होया गदारा, कल्पना विच रिहा कुरलाईआ। शरअ छुरी बणी कटारा, क़त्लगाह दीन दुनी वेख वखाईआ। सजदा झुके ना परवरदिगारा, सति सन्तोख ना कोए वखाईआ। नेत्र रोवे चन्द सतारा, चौदस नूर ना कोए चमकाईआ। चौदां तबक हाहाकारा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्के खेल अनोखे, अन्त दयां दृढ़ाईआ। मुरीद मुर्शदां करदे धोखे, मुर्शद मुरीदां रहे भरमाईआ। विद्या पढ़ पढ़ थक्के अक्के पोथे, मंज़ल हक़ क़दम ना कोए टिकाईआ। काया तक्कया किसे ना गोशे, काया कुरह ना फोल फुलाईआ। अगली धार कोई ना सोचे, पिछली करदे सर्ब पढ़ाईआ। नेत्र अक्ख खुल्ही ना लोचे, दोए लोचन कम्म किसे ना आईआ। भुक्खे मर के रखे रोज़े, राज़क रिज़क रहीम ना कोए वड्याईआ। नीली धार पहने चोगे, हरया वेस वटाईआ। सीस कटाए बोदे, लबां कीती सफ़ाईआ। भेव खुल्ल्हे किसे ना गोझे, परदा अन्तर ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा धुर दा दर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया हक़ हक़ीक़ी नूर, नुराना नज़री आईआ। जिस दा सति सच दस्तूर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। मेरा लहिणा देणा लेखे लाए ज़रूर, गुर अवतार पैगम्बरां नाल मिलाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर वखाए हज़ूर, हज़रतां तों परे कर पढ़ाईआ। धुर दा हुक्म सब नूं करे मजबूर, मजबूरी पिछली दए गुआईआ। जन्म जन्म दा मेट क़ुसूर, कुशलता आपणी इक दृढ़ाईआ। नाम भण्डारा कर भरपूर, कलमा कायनात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनहार इक अख्वाईआ। पैगम्बर कहिण अग्गे केहड़ा कलमा लईए रट, रिटन नज़र कोए ना आईआ। ईसा कहे मेरा कलाक करे टक टक, वीहवीं सदी वक्त समझाईआ। मूसा कहे पिछला सारा छड्डीए हट्ट, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। सीस निवाईए परवरदिगार झट, निउँ निउँ लागे पाईंआ। दीन मज़हब दी डोरी देवे कट, नाम कटाकश इक लगाईआ। सच दुआर दा खोल्ह के हट्ट, धुर दी वस्त दए वरताईआ। पैगम्बर अवतारां नाल करीए इक्ठ, अवतार पैगम्बरां नाल मिलाईआ। दीन मज़हब दे झगड़े देणे छड्ड, छड्डीए कूड़ लोकाईआ। पैगम्बर कहिण जे असीं हड्डीआं आए दब्ब, क़बरां विच टिकाईआ। अन्त ओस दी पूरी होवे हद्द, लेखा अवर रहे ना राईआ। सारे मिल के इक्को कलमा इक्को नाम इक्को गाईए छद, छन्द इक्को इक जणाईआ। सच दुआर एकँकार वेखीए लोकमात जग, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। बिन मक्के काअबिउँ काया अंदर कराए हज्ज, हुजरा हक़ हक़ सुहाईआ। बिन मन्दिर शिवदवाले मट्ठ, परदा उहला

दए उठाईआ। सच सरोवर वखाए अगम्मी तट, किनारा रहिण कोए ना पाईआ। अमृत आत्म देवे रस, रसना जिह्वा ना होए हल्काईआ। नाम अणयाला तीर मारे कस, दूई द्वैती अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दो जहान गावण जस, सिफ्तां विच साहिब सालाहीआ। कलयुग मिटे अन्धेरी मस्स, सतिजुग साचा चन्द नूर होवे रुशनाईआ। जगत विकारा बुरज जावे ढठ्ठ, हँकार गढ़ रहिण ना पाईआ। किरपा करे उपर तत अठ्ठ, नौ दुआरे होए सहाईआ। दसम दुआरी मिले हक़, वस्त अमोलक झोली पाईआ। नाड़ नाड़ ना उबले रत्त, लूं लूं अंदर निरगुण नूर करे रुशनाईआ। बुध्ध बिबेक उजल होवे मत, मन का मणका दए भवाईआ। चार वरन इक्को धार बणे जगत, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे जिधर तक्कां सूफ़ी सन्त फ़कीर भगत, जो भगवन ढोला गाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला वखावे धुर दा वक्त, मेहर नज़र इक उठाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां लहिणा पूरा करे फ़क़त, फ़िकरा आपणा इक सुणाईआ। निरगुण धार देवे दरस, तृष्ना तृखा गवाईआ। अर्शां तों आवे उपर फ़र्श, ज़मीन ख़ाकी सोभा पाईआ। आबेहयात अमृत मेघ देवे बरस, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। चिन्ता सोग मिटावे हरख, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। चुरासी लवे परख, चारे खाणी फोल फुलाईआ।
६३९ सब दी पूरी करे शर्त, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर के ग़रक़, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। पिछला ६३९
२१ लहिणा कर के तरक, तुरत अगला हुक्म समझाईआ। मानव मानव विच रहे ना फ़रक़, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को २१
रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे बौहड़ी मेरे रहन्दे बारां बरस, बहुती देर लागे ना राईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा करे क़र्ज़, मक़रूज लेखा दए चुकाईआ। अन्तिम खेल होणा असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। प्रगट होवे सूरबीर मर्दाना मर्द, निरगुण नूर जोत होवे रुशनाईआ। सब दी लेखे लाए अर्ज़, आजज़ आपणी गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी भेव खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या ओह महबूब, जो महिव मुहब्बत विच समाईआ। दीन दुनी विच्चों कढ्ढे दूज, दुतिया भाउ दए मिटाईआ। सच धर्म दी बख्शे सूझ, ममता मोह रहे ना राईआ। नज़री आवे चारे कूट, दह दिशा करे रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदरों कढ्ढे जूठ झूठ, सति सच इक समझाईआ। भगत सुहेले उठाए पूत, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। भाग लगा के काया माटी पंज भूत, पंचम नाद धुन करे शनवाईआ। सच सुहञ्जणी होवे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। अन्त अख़ीर पैंडा रिहा मुक, सफ़री लेखे सफ़र लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी जीव जंत गाईए इक्को तुक, तुख्म ताअसीर दए बदलाईआ। सति धर्म सति सतिवाद सतिजुग सच मिले सुख, पतिपरमेश्वर आपणा रंग रंगाईआ। इष्ट देव स्वामी इक्को मन्नण जगत जहान मनुख,

चार वरन अठारां बरन दूजा राह ना कोए तकाईआ । सदी चौधवीं कहे मैं परवरदिगार कोलों लैणा पुच्छ, निम्रता विच सीस झुकाईआ। की अग्गे करना कुछ, कुशलता नाल दे समझाईआ। किस बिध पैगम्बरां मेटें दुःख, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। पवित्र होवे धरत धरनी दी कुख्ख, धौली धौल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती सब दी दे कराईआ।

✻ २६ मम्घर शहिनशाही सम्मत ४ ज्ञान सिँघ दे गृह पिंड सुरखपुर ज़िला कपूरथला ✻

सदी चौधवीं कहे मैं बोल सुणावां सब्बा, साहिब सुल्तान दयां दृढ़ाईआ। मैनूं गोबिन्द मारया दब्बा, भय विच रिहा समझाईआ। कमलिए उठ वेख पुरख अकाल धुर दा अब्बा, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। जिस दा दीपक अगम्मी जगा, जगह जगह करे रुशनाईआ। किसे नाल करे ना दग़ा, फ़रेब कूड़ा दए मिटाईआ। सति धर्म दा साचा लावे अग्गा, आगमन आपणे हथ्थ रखाईआ। नाम खुमारी देवे मधा, मधुर धुन इक सुणाईआ। साचे सन्तां देवे सद्दा, हुक्म सुनेहड़ा इक प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे धब्बा, माया ममता मोह चुकाईआ । करे खेल सूरा सर्बग्गा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। कूड़ कुड़िआर लावे धक्का, लख चुरासी खोज खुजाईआ । झगड़ा मुके काअबा मक्का, काया काअबा दए दृढ़ाईआ। चार वरन भैण भाई बणाए सका, नाता धुर दा आप वखाईआ। लेखा मुके बूरा कक्का, कामल मुरशद होए सहाईआ। कलयुग अन्त अखीर वेख थक्का, थकावट विच दुहाईआ। बिना गुरमुखां किसे दी क़ीमत पैणी नहीं टका, टक्यां वाला कम्म किसे ना आईआ। चार कुण्ट पैणा रट्टा, रट्टा सके ना कोए मिटाईआ। मुहम्मद दा चौधवीं सदी दा पूरा होणा पटा, पटने वाला करे सफ़ाईआ । मूसा ईसा मुहम्मद फिरे नट्ठा, भज्जे वाहो दाहीआ। सब दा लेखा मुकणा इक्ठा, हरि करता आप चुकाईआ। झगड़ा रहे ना चूंकि चुनाचे अलबता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच्चा बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं गोबिन्द किहा नाल ज़ोर, भय विच डराईआ। तकणा नाल ग़ौर, गहर गम्भीर दयां वखाईआ। जिस दे सिर ते छत्र अगम्मी झुल्ले चौर, चार जुग दा मालक नज़री आईआ। जो हर थाँ जावे बौहड़, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं रिहा दौड़, धरनी धरत धवल खोजे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी फल वेखे मिट्ठा कौड़, जून अजूनी फोल फुलाईआ। दो जहानां ला अगम्मी पौड़, शब्दी डंडे आप चढ़ाईआ। कलयुग कूड़ कल्पणा

६४१

२१

मेटे शोर, शरअ दा झगड़ा दए गवाईआ। करे प्रकाश अन्ध घोर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मेट मिटाए पंज चोर, काया मन्दिर अंदर करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साचा बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं गोबिन्द दिता जाम, रस अनोखा दिता चखाईआ। शब्दी दे पैग़ाम, सुनेहड़ा हक़ सुणाईआ। संदेसा दे इस्लाम, इस्म आज़म इक जणाईआ। खेले खेल धुर अमाम, अमल वेखे ख़लक खुदाईआ। ख़ाकी पर्दे वेखे इन्सान, तन वजूद फोल फुलाईआ। कवण दरगाह साची होया गुलाम, नफ़स हवस विच मिटाईआ। खेल वेखे शरअ शैतान, शरीअत परदा आप चुकाईआ। साबत तके उम्मत ईमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं गोबिन्द दिता संदेस, हक़ हक़ीक़त दिती दृढ़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल उत्ते वेख, मक्का काअबा फोल फुलाईआ। की करदे मुल्ला शेख़, शख्सीअत नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट कूड़ा भेख, माया ममता विच दुनी हल्काईआ। साची करे ना कोई हदाइत, ममता मोह ना कोए चुकाईआ। कलमा मिले ना किसे इनाइत, वस्त अगम्म ना कोए वखाईआ। जिधर वेखां सारे होए नालायक, बुद्धिवान ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरा करे आपणा हक़ फ़राइज़, फ़र्ज वेखे ख़लक खुदाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे गोबिन्द रख्या हथ्थ सीस, सिर दिता झुकाईआ। सजदा कर इक जगदीश, जगदीशर धुरदरगाहीआ। जिस ने लेखा मुकाउणा मूसा दा बीस, ईसा नाल वज्जे वधाईआ। प्रगट होवे अवतार चौबीस, कल कल्की सोभा पाईआ। धुर दा कलमा दए हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। झगड़ा मुकाए ऊँच नीच, ज़ात पात डेरा ढाहीआ। लेखा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबे करे रुशनाईआ। जिस दी सारे करदे उडीक, पेशीनगोईआं विच सुणाईआ। सो आसा मनसा पूरी करे सर्ब उम्मीद, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण नूर नूर ज़हूर आप वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं गोबिन्द वेख्या खण्डा, शब्द धार जणाईआ। जो फिरे विच ब्रह्मण्डा, ब्रह्माद रिहा घुमाईआ। वखावे अगम्म अनन्दा, निजानंद विच्चों प्रगटाईआ। चढ़ावे ओह डंडा, जिथ्थे मंज़ल रहे ना राईआ। सुणावे ओह छन्दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। लगावे ओस कन्ढा, जिथ्थे नईआ नौका नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान महबूब बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं भय विच कीती सलाम, अलेकम कहि के सीस निवाईआ। मैं संदेसा देवां तमाम, तमन्ना आपणी नाल रलाईआ। कलयुग तेरा विगड़ जाणा इंतज़ाम, बन्दोबस्त ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट होवे क़तलेआम, क़ातल मक़तूल समझ कोए ना पाईआ। पैगम्बर

नबी होण बदनाम, इस्म आज़म ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट दिसे अन्धेरी शाम, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। हुजरिआं विच होए हराम, मक्का काअबा दए दुहाईआ। लेखा जाणे ना कोए पिसर पिसरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण धार नूर रुशनाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द कीती मेरे उत्ते रहमत, रहम रहीम दिता वखाईआ। मैं निउँ के चरणां उत्ते ढहि के होई सहिमत, सहिम अंदरों दिता चुकाईआ। मेरी लेखे लग्गी मेहनत, मेरे अंदर वज्जी वधाईआ। फिर शब्द इशारे कीती सैनत, बिन अक्खां अक्खां नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट हैरानी होवे हैबत, भय विच लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द दस्सया खोल्ह खुलासा, शब्दी धार जणाईआ। पुरख अकाल दा रख भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जिस ने चौदां तबक चौधवीं सदी वेखणा तमाशा, तमाशबीन नज़र किसे ना आईआ। दीन दुनी दा उलटाउणा पासा, करवट बदल सके कोए ना राईआ। कूड़ कुड़िआर करना नासा, मोह विकार डेरा ढाहीआ। सच धर्म दा जोड़ना नाता, सतिजुग सच लए प्रगटाईआ। आत्म परमात्म दस्सणी गाथा, तूं मेरा मैं तेरा परदा दए चुकाईआ। भाग लगाए काया माटी काचा, कंचन गढ़ दए सुहाईआ। मनुआ दह दिशा ना उठ उठ नाचा, नौ दुआर डेरा ढाहीआ। करे प्रकाश अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाईआ। सतिगुर शब्द जिन्हां जन हो के वाचा, वास्ता धुर दे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सर्ब कला समराथा, समरथ स्वामी अन्तरजामी आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द मैनूं वखाया मुक्का, मुकम्मल दिता जणाईआ। औह वेख पैगम्बर अवतार झुका, सिर सके ना कोए उठाईआ। पैंडा सब दा अन्तिम मुक्का, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला दीन मज़हब दा भन्न्हणवाला हुक्का, हुक्म आपणा इक प्रगटाईआ। धरनी दी सफ़ली करे कुक्खा, दूतां दुष्टां डेरा ढाहीआ। भगतां उजल कराए मुखा, दुरमति मैल धुआईआ। चार वरन कराए सुखा, एका रंग रंगाईआ। देवे वड्याई माणस मानुखा, मानव आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल उपर बसुधा, बुद्धी सब दी फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं कहे शब्दी गोबिन्द आख्या नाल प्रीत, प्रीतम दयां मिलाईआ। जेहड़ा वस्से बाहर मन्दिर मसीत, अंदर वड़ ना मुख छुपाईआ। जिस दी जुग जुग वखरी रीत, रीतीवान धुरदरगाहीआ। काया माटी करे ठांडी सीत, अगनी तत बुझाईआ। झगड़ा मुकाए ऊँच नीच, ज़ात पात डेरा ढाहीआ। निरगुण धार वस्से सब दे बीच, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। आदि जुगादि रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जन भगतां अमृत बख्शे ठांडा सीत, मेघ मेघला इक बरसाईआ। साचे

६४२
२१

नाम दी पावे भीख, भिखकां झोली दए भराईआ। सदी चौधवीं तेरे अन्त अख़ीर बेनज़ीर चार जुग दी बदल देवे तवारीख़, तारीख आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर निराकार आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं गोबिन्द वखाया चिल्ला, तरकश वेख दुहाईआ। मेरे मुखों निकलया इललिल्ला, ला इल्ला कहि के दिता सुणाईआ। सीस झुका के किहा बिस्मिल्ला, बिस्मिल तेरी धार नज़री आईआ। चौदां तबक वेख्या हिल्ला, धीरज धीर ना कोए धराईआ। फेर अम्बर तक्कया नीला, नेत्र नैण उठाईआ। चारों कुण्ट ना कोए वसीला, वसल यार ना कोए कराईआ। मुहम्मद दा विछड़या दिसे क़बीला, काअबा रिहा कुरलाईआ। नाअरा सुणया कोए ना हक़ आमीना, निउँ निउँ सीस ना कोए निवाईआ। अन्तिम मुक्कण लग्गी तालीमा, अलिफ़ ये ना कोए वड्याईआ। झगड़ा रहे ना शरअ तक्सीमा, यकतरफ़ करे सफ़ाईआ। करे खेल हरि अज़ीमा, आलीशान नूर अलाहीआ। जिस दी इक्को मंज़ल ते इक्को ज़ीना, इक्को डंडे दए चढ़ाईआ। झगड़ा मुका के नर मदीना, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट कमीना, कामल मुर्शद होए सहाईआ। सृष्टी दी दृष्टी करे अधीना, मन का मणका आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वडा बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं गोबिन्द प्रेम नाल लाया हथ्थ, हथ्थ पुश्त पनाह टिकाईआ। मैं चरणां गई ढठ्ठ, निउँ निउँ सीस निवाईआ। फेर वेख्या झट, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। अवतार पैगम्बरां कीता इक्ठ, बैठे राह तकाईआ। साडा पूरा होया हठ, सदी चौधवीं तेरे नाल वड्याईआ। हुण किधर जाईए नठ, चारों कुण्ट दुहाईआ। दीन मज़हब गए छड, साडा संग ना कोए बणाईआ। कल्मयों होए अड्ड, कायनात रही कुरलाईआ। मक़बरिआं विच रिहा कोई ना हड्ड, मिट्टी ख़ाक ख़ाक समाईआ। परवरदिगार लईए सद्द, सद्दा होका इक जणाईआ। किरपा कर आपणे जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। दीन दुनी बुझा अग्ग, आबेहयात मुख चुआईआ। हँस होए कग, कागों हँस दे उपजाईआ। किरपा कर उपर शाह रग, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। मन कल्पणा जाए बज्झ, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। दीन मज़हब दी मेट दे हद्द, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। सृष्ट सबाई तेरा गावे छद, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। नाम खुमारी प्यावे मदि, मधुर धुन इक सुणाईआ। तेरा आत्म तैथों रहे ना कोए अलग, विछड़यां जोड़ लैणा जड़ाईआ। तूं साहिब सर्ब कला समरथ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा गाउँदे जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। कलयुग अन्तर सतिजुग लाउणा तेरे वस्स, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चरणां पई ढठ्ठ, ढहि पई सरनाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, रखक हो के वेख वखाईआ। कलयुग मेट रैण अन्धेरी मस्स, नूरी चन्द

कर रुशनाईआ। मैं निर्धन हो के जोड़ां हथ्थ, साहिब स्वामी तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा सच धर्म दा वेखां इक्को हट्ट, जगत हटवाणा रहिण कोए ना पाईआ।

❊ पहली पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सदी चौधवीं कहे मैं फिर के वेखी लख चुरासी जूनी, जूएबाज़ जगत लोकाईआ। की होया जे द्वापर खेल खेलिआ अठारां खूहणी, युद्ध बुध्ध नाल लड़ाईआ। कलयुग सृष्टी दी दृष्टी विकार विच अनन्त गुणा हो गई दूणी, दुनीदार समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर प्रभ दे गोड़े विच्चों कत्त के गए नहीं पूणी, तन्द कच्चे जगत खिचाईआ। अग्गे खेल वेखणी अनहोणी, जिस नूं सके ना कोए समझाईआ। ख़ालक दी ख़लकत चारों कुण्ट रोणी, रोन्दयां चुप्प ना कोए कराईआ। प्रभ दी धार वेखणी मन मोहणी, जिस दा रूप रंग रेख जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं खेल वेखां मुफ्त, मुफ्तीआं डेरा ढाहीआ। प्रभ दी धार वेखणी अंगुशत, जो गुप्त शनीद दए रुशनाईआ। मुहम्मद दा लेखा वेखणा दरुस्त, जो लिख्या बिन क़लम शाहीआ। धुरदरगाही तकणा इक्को मुर्शद, जल्वागर नूर अलाहीआ। जिस दी कर सके कोए ना उल्फ़त, अक्खरां विच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचा हरि, हरि करता इक अखवाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां खेल निराला, निराकार दए वखाईआ। सब दा हल्ल करे सवाला, सवाली बैठे आस रखाईआ। चार कुण्ट करे बेहाला, बिहबल हो के सारे देण दुहाईआ। चार कुण्ट दह दिशा आपणी बदल देवे चाला, चाल निराली इक प्रगटाईआ। सारे गीत गाउँदे माज़ी कोई समझ सके ना हाला, अगला परदा ना कोए चुकाईआ। फल दिसे ना किसे डाला, सृष्टी सिम्मल रुक्ख कूड़ लहराईआ। चार जुग गुर अवतार पैगम्बर जिस दा दे के गए अहिवाला, भविख्तां विच लिख्तां विच सालाहीआ। सो लेखा जाणे दो जहानां, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। शाहो भूप बण राजाना, लख चुरासी रईयत वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण धार नूर रुशनाईआ। सदी चौधवीं कहे हुक्म देवे पुरख अबिनाशन, अबिनाशी आप जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे बणने साथन, सगला संग प्रगटाईआ। सेवा करन त्रिलोकी नाथन, नाथ अनाथां दया कमाईआ। पैगम्बर सीस जगदीश

नवाजन, नवाज़श विच ध्यान लगाईआ। गुरु गुरदेव शब्द सुणन अगम्मी भाषण, जिस दी भाषा सके ना कोए दृढ़ाईआ। करे खेल अन्त तमाशन, पारब्रह्म प्रभ धुरदरगाहीआ। सब दा लेखा आया वाचण, घट भीतर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सदी चौधवीं तेरा सीस गुंदे ओह मरासण, जो मिसरा प्रभ दा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुणया हुक्म अपारा, अपरम्पर दिता जणाईआ। तेरा खेल जगत तों निआरा, निरँकार रिहा कराईआ। चरण प्रीती दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा संग होवे पंज प्यारा, पंच विकार मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साजन इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ मेरी होर आस, असल दयां समझाईआ। जो गुरमुख तेरी शाख़, शनाख़त देणी दृढ़ाईआ। इक्कीआं दे हथ्थ विच होवे इक इक्क चाक, जो चाकरी तेरी कमाईआ। उह वक्त सुहावण छब्बी पोह दी रात, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। बांह कढुके देण आख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रभू साडा लेखा मेट दे बिन शाही कलम दवात, चिट्टे उत्ते चिट्टा दे लगाईआ। आत्म परमात्म जुड़े नात, पारब्रह्म ब्रह्म तेरे विच समाईआ। साडा पिछला फोलीं ना खात, अगला रंग देणा रंगाईआ। सारे तैथों सिख के जाईए जाच, याचक बण के सीस निवाईआ। किस बिध प्रभ दे रही दा दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। तूं किरपा करनी सब दे अंदर विच स्वास, साह साह आपणा आप समाईआ। जन भगतां अंदर कर जोत प्रकाश, निरगुण नूर देणा चमकाईआ। बिना कन्नां तों सुणन तेरी आवाज़, नाद शब्द धुन शनवाईआ। बिना रसना तों तेरा अमृत रस लैण चाख, अनरस देणा वखाईआ। तेरी सुणन अगम्मी गाथ, रातीं सुत्यां दे अंदर वड़ के करीं पढ़ाईआ। मंज़ल आपणी चढ़ाउणा घाट, पैंडा इक्को वार मुकाईआ। मेहरवान हो के बख्शणी दात, दाते झोली देणी भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा अन्तिम आया कन्ढी, कन्ढे खलोती दयां दुहाईआ। गुरमुखो वासना रखयों कोई ना गन्दी, सुगंधी अंदर लैणी प्रगटाईआ। दीन मज़हब दी रहे ना कोए पाबन्दी, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। भगतो नेत्र अक्ख रहे ना ऊंदी, साचे लोचन होई रुशनाईआ। तुसीं गोबिन्द दे सुत दुलारे जंगी, जिन्हां सरसे कीती जुदाईआ। हुण वरभण्ड विच पाओ भंडी, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। तुहाडा मार्ग सिध्धा जगत जहान दी औझड़ डंडी, डंडावत वाला नज़र कोए ना आईआ। तुसीं ओस प्रभू दे संगी, जो सगला संग निभाईआ। वेख्यो कोई पंजां तत्तां वाला वजूद ना मन्निओ डम्बी, निरगुण नूर पुरख अकाल सब दा पिता माईआ। जगत ने तोड़ी अन्त जगत दे मालक गंढी, गंढणहार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

सदी चौधवीं कहे मैनूं संदेसा देवे पुरख अकाल पापा, भापा कहि के मैं वी दयां जणाईआ। इक्की बीबीआं वेस करन जिवें नौजवान दा करन सिआपा, बस्तर आपणे लैण सजाईआ। जन भगतां दे अंदरों कढुणा त्रैगुण तापा, तपदे हिरदे शांत कराईआ। मुखों कहिणा सोहँ पाठा, हाए हाए आवाज़ लगाईआ। हाए हाए सतिगुर प्रेम मारदा ठाठां, हाए प्रभ दे नाम दुहाईआ। हाए छड दिती देवी वाली लाटां, हाए जोत ना कोए जगाईआ। हाए हाए गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कीता ना घाटा, हाए साहिब सुल्तान ना कोए मिलाईआ। हाए हाए मिल्या पुरख समराथा, हाए हाए तों ल्या बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं गुरमुख वेखणे पंज शिकारी, जो भज्जे फिरन वाहो दाहीआ। सब दे हथ्थ विच होवे इक इक्क कुहाढ़ी, तिक्खी धार बणाईआ। सब दे मुख उत्ते आई होवे दाढ़ी, बच्चा विच ना कोए रलाईआ । मुच्छां नूं वट्ट आवण चाढ़ी, चढ़दिउँ लहिंदे वेख वखाईआ। बोली बोलण उह पहाड़ी, मिंझो तिंझो कर सुणाईआ। मेघी तेघी रसना नाल उच्चारी, आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे पंजां बीबीआं गुंदे होण सीस, मेंढी मेंढी उपर चढ़ाईआ। रसना बोलण पहाड़ी गीत, उच्चे टिल्ले पर्बत देण दुहाईआ। इक्की क़दम चल के इक विच्चों मारे चीक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रभू गुर अवतार पैगम्बर रहिण ना देणे शरीक, शरकत कूड़ी देणी मिटाईआ । इक तेरे विच तौफीक़, तेरी बेपरवाहीआ। ओस वेले सिआपे वालीआं बीबीआं पट्टां उत्ते हथ्थ मार के कहिण तेरी उडीक, बौहड़ी बौहड़ी देण दुहाईआ। हाए हाए साडी बदल दे नीत, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। पहाड़नां कहिण साडी काया कर दे ठंडी सीत, अगनी तत देणा बुझाईआ। साची दात कर बख्शीश, रहमत आप कमाईआ। जे प्रभू तूं दूर वसदा साडे काया मन्दिर आ नज़दीक, बाहर लभ्भण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखी नूरी झलक, मैनूं झल्ली दिता बणाईआ। मैं वेखी अगम्मी चमक, बिना चन्द सूरज रुशनाईआ। मेरी विच ना आई समझ, की साहिब रिहा दृढ़ाईआ। मैनूं गोबिन्द मारी रमज़, सहज नाल समझाईआ। जिस लेखे लाया सूफ़ी फ़कीर शमस, तबरेज़ नीर वहाईआ। ओस दुनियां कीती अहमक, मूर्ख रूप चतुराईआ। किसे ने धोती किसे ने पहनी तहमत, कोई हैट पैंट विच वड्याईआ। प्रभू जां तक्कया तेरे नाल कोई ना सहमत, सच दुआरे मिलण कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दी अन्त बिअरथ गई मेहनत, मज़दूरी झोली कोए ना पाईआ। जिधर तक्कां दूई द्वैत दी ज़हमत, घर घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं

कहे गुरमुखो सब दे अंदर होवे मस्ती, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। हरिसंगत आवे हसदी, हस्ती तकणी बेपरवाहीआ। सिफ्त होवे इक्को दे जस दी, महिमा धुरदरगाहीआ। खेल मुकाउणी रहिणा वक्ख दी, दूजा दर ना नज़री आईआ। मंज़ल तकणी हक़ दी, मिले महबूब शहिनशाहीआ। वस्त देवे सति दी, सति विच समाईआ। परवाह नहीं करनी जग दी, जागरत जोत विच समाईआ। एह खेल भगतो संसार वाली अग्ग दी, अगनी त्रैगुण सर्ब तपाईआ। जिस दी प्रीत धुर नाल लग्ग गई, लग्गी अग्गे ना कोए तुड़ाईआ। तुहाडी ज़िंदगी कोई भैण भ्रा साक सज्जण मात पित पुत्तर नहीं जग लई, जगजीवण दाता आपणा रंग रंगाईआ। जिस ने कर्म विछुन्नी सृष्टी छड लई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि मालक वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे धुर दे हुक्म दा कोई ना समझे माइना, मतलब हल्ल ना कोए कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरां किसे नाम उत्ते कर के नहीं दिते साइना, दस्ख़त ना कोए वखाईआ। जुग चौकड़ी पिच्छों सब दा मामला साफ़ कर के कहे उह मालक हुण हैना, जेहड़े अक्खर अलिफ़ ये ऊड़े ऐड़े विच वंड वंडाईआ। फिर किरपा करे निरगुण धार सतिगुर पंज तत गुर अवतार पैगम्बर बन्ह के वखाए बिना नैणां, प्रतख बेपरवाहीआ। जिस दा हुक्म सब ने मन्नणा कहिणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दी धार इक समझाईआ। सदी चौधवीं कहे बोल सुणावां कूक, कूकर धुरदरगाहीआ। सब ने सांझा करना सलूक, सुल्हकुल दए वड्याईआ। हक़ ख़ालक दी बणयो मख़लूक, ख़ालक वेखो बेपरवाहीआ। जिस ने पिछला हुक्म करना मनसूख़, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बख्श सलूक, भेव अभेदा देणा जणाईआ। कूड़ी क्रिया चुके चूक, चुकन्नी करे लोकाईआ। जो माया नींदे सुत्ते घूक, शब्द इशारे नाल उठाईआ। भाग लगा के काया पंज भूत, भूत भविक्खत दए समझाईआ। सति सतिवाद सुहाए रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। भगत सुहेले गोदी चुक्क, साहिब स्वामी गले लए लगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सब तों लैणा पुच्छ, पुच्छणा घर घर पाईआ। दस्सो किसे दे कोल की कुछ, जो प्रभ दी भेंट चढ़ाईआ। पैग़म्बरो क्यों दाढ़ी मुन्नी मुच्छ, लबां देण दुहाईआ। तुहानूं चौदां सदीआं तों अग्गे गया कुछ नहीं सुझ, भेव भाव ना कोए समझाईआ। कुछ उत्तर दयो मुझ, मुजरम बण के सीस निवाईआ। की संदेसा मिल्या तुध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेरी मनसा पूर कराईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी बेनन्ती इक अरदास, खुशीआं विच सुणाईआ। जन भगतो तुहाडी जन्म जन्म दी बुझे प्यास, तृष्ना कर्म रहे ना राईआ। छब्बी पोह सुहाउणी रात, बिना हुक्म तों सौण कोए ना पाईआ। तुहानूं मुहब्बत विच लैणा डाट, शब्दी धार लैणा उठाईआ। तुहाडे

सब दे बणने धर्म दुआरे दे काट, पिछला लेखा देणा कटाईआ। जन्म कर्म मिटाउणी वाट, आवण जावण रहे ना राईआ। सेज सुहाउणी खाट, आसण सिँघासण इक वड्याईआ। जिथ्थे मिले पुरख अबिनाश, ओस मंज़ल देणा चढ़ाईआ। लेखे ला के स्वास, पवण पवणां विच समाईआ। जे जन्म ल्या ते लै के जाइओ शाबाश, लाअनत रहिण कोए ना पाईआ। जे तत वजूद ल्या ते कर के जाइओ पाक, पतित पुनीत बणाईआ। जे सीस निवाया परमात्म रखयो साथ, आत्म जोड़ जुड़ाईआ। जे सोहँ गाया पाठ, शाला तन मिले वड्याईआ। तुहानूं मंज़ल चोटी अख़ीर चढ़ाउणा टाप, जिथ्थे टप्पा कहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडा लेखे लग्गे आवण जावण चलणा फिरना वाक, वाक् गुर अवतार पैगम्बरां पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति धर्म बख़्श इतफ़ाक़, निफ़ाक़ अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो छब्बी पोह दी रात करनी चुस्ती, चुस्त चलाक आपणा आप लैणा बणाईआ। तुहाडे जन्म दी होणी दरुस्ती, जीवण नवां देणा बणाईआ। शब्दी धार जणाउणी सुरती, सुरत शब्द विच मिलाईआ। धुर दे नाम दी देणी गुढ़ती, पुरख अकाल बणना धुर दी दाईआ। सिख्या सुणाउणी शब्दी गुर दी, जो सतिगुर इक अख्वाईआ। जेहड़ी मनसा कूड़ अंदरों फुरदी, ओह ममता देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो छब्बी पोह रात दे बारां वजे मारयो ताली, तली तली नाल खड़काईआ। मुखों कहिणा प्रभ मिल्या जोत अकाली, जो अकल कल अख्वाईआ। जिस दे दुआरे इक्को वार बणना सवाली, फिर मँगण दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगत रहे कोई ना ख़ाली, नाम भण्डारा देवे चाँईं चाँईंआ। दीन दयाला धुर दा दानी, दयावान इक अख्वाईआ। जन भगतो तुसां धार खड़काउणी इक सौ पंजां इक दूजे नाल किरपानी, आवाज़ टप्प टप्प लगाईआ। फेर नज़ारा तक्किओ जगत मैदानी, जगत शरअ दयां भिड़ाईआ। लेखा वेखां चार जुग दीवानी, जिस दीआं गुर अवतार पैगम्बर तारीखां गए पाईआ। चालान फ़ारम भरना ओह असमानी, जिस दा जिस्मानी भेव कोए ना पाईआ। मंज़ल वेखणी दीन दुनी रुहानी, रूह बुत फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच्चा सच जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी निमस्कार, डंडावत बन्दना सजदे विच सीस झुकाईआ। जन भगतो रात नूं बहिणा विच कतार, लाईन लाईन नाल मिलाईआ। जेहड़ा अग्गे पिच्छे होवे पुलीस वाले ओस नूं करनगे गिरफ्तार, एसे कर के लए बुलाईआ। जेहड़े शोर करनगे फौजी उन्हां नूं मारनगे मार, चारों कुण्ट कर तकड़ाईआ। जेहड़े अंदर गाउणगे तूं मेरा मैं तेरा यार, उन्हां दे अंदर वड़ के सब नूं दरस देवां वखाईआ। एह मेरा सब तों वखरा विहार, निरगुण हो के निरगुण मेला मेलां सहज सुभाईआ।

अग्गे सुणदे रहे पढ़दे रहे आसमानां तों उत्ते वस्से निरँकार, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। सो साहिब सुहेला इक अकेला एकँकारा परवरदिगारा सांझा यारा खेल करे अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी आपणा प्रेम बणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बहुत कुछ दस्सणा, दस्त दस्त नाल मिलाईआ । सदी चौधवीं कहे मैं बहुत कुछ बकणा, जिस नूं बकवास कहे लोकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बहुत कुछ लभ्भणा, लख चुरासी वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुख तेरे बिना नहीं मेरा कोई सज्जणा, मित्र नजर कोए ना आईआ । जिन्नां पुरख अकाल इक्को जपणा, गोबिन्द गुर दए वड्याईआ। सृष्टी रोणा जन भगतां हस्सणा, हस्सदयां खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे उत्तर पूरब पच्छिम दक्खणा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। मुजगीआलेज़ाह ज़ालेज़ाह वालेज़ा वालज़ा कज़ालेया।

✻ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ ठेकेदार ठाकर सिँघ दे गृह पिंड जेठूवाल ✻

६४९
२१

सदी चौधवीं कहे कुछ आसा रखी अष्टभुज ज्वाला, पूरब भेव अभेद खुल्हाईआ। पंजां गुरमुखां दे हत्थ विच होण मसालां, मिसल महबूब वाली समझाईआ। वंड नहीं कोई शाह कंगाला, हरिजन साचे सोभा पाईआ। गल विच इक्कीआं मणक्यां दी होवे माला, मन के मणके नाल सालाहीआ। जगत खेल करे निराला, निरवैर निराकार धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या जगत अहमक़, मूर्ख मुगध कूड़ लोकाईआ। मुरीद मुर्शद होया कोई ना सहिमत, साचा संग ना कोए बणाईआ। मोह विकार लग्गी ज़हिमत, हँकार गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। परवरदिगार करे ना रहमत, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। लेखे लग्गे कोए ना मेहनत, मज़दूरी हत्थ ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ । सदी चौधवीं कहे मैं फोलण लग्गी आपणा बस्ता, बस्ती वेख जगत लोकाईआ। दीन दुनी दा बदलण लग्गी रस्ता, रहिबर मिल्या धुरदरगाहीआ। जिस दा नाम भण्डारा सस्ता, क़ीमत जगत ना कोए लगाईआ। जिस नूं तकदी उपर अर्शां, बिन नैणां नैण उठाईआ। उस दा खेल वेखां उपर फ़र्शा, फ़रमांबरदार हो के सेव कमाईआ। चरण धूढ़ी नूं तरसां, निउँ निउँ लागां पाईआ। पंजां बीबीआं हत्थ विच बणा लिआउणा गुलदस्ता, गुल गुलशन विच्चों महकाईआ।

प्रेम प्याला देणा अगम्मी रस दा, बिन रसना रस चखाईआ। ढोला गाउणा धुर दे जस दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, परदा उहला दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां अजब कहाणी, कहावत नज़र किसे ना आईआ। किसे ने मँगणा आब किसे ने मँगणा पाणी, आब बेताब विच दुहाईआ। पैगम्बरां होए परेशानी, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। भेव खोल्हणा जगत जिस्मानी, जिस्म ज़मीर सब दे फोल फुलाईआ। मंज़ल निरंतर तकणी रुहानी, अन्तर आपणा पन्ध मुकाईआ। लेखा जाण दो जहानी, ब्रह्मण्डां खण्डां धुर संदेसा देणा सुणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगारा सांझा यारा सब दा जाण जाणी, अनबोलत अनदृष्ट आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां विच्चों झरोखे, चौदां तबकां ध्यान लगाईआ। जिस दी सोच कोई ना सोचे, बुद्धी विच ना कोए वड्याईआ। जिस नूं लोचण कोई ना लोचे, नैण अक्ख ना राह तकाईआ। मैं खेल तकणा ओथे, जिथ्थे वसिआ बेपरवाहीआ। जीव जंत कलयुग जगत जहान खावे गोते, नईआ नौका नाम ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, गृह मन्दिर इक दरसाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मन्दिर वेखणा अगम्म अथाह, परवरदिगार दए जणाईआ। जिथ्थे वस्से निरगुण नूर जोत शहिनशाह, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। बिन तेल बाती जोती जोत होवे रुशना, आदि निरँजण डगमगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बिना तत वजूद बैठे होण सीस झुका, नमस्ते डंडावत सजदा कर के शुकर मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा धुर दा ढोला लैवण गा, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। जिस नूं वाहिद वहदत विच सब ने किहा खुदा, खुद मालक नज़री आईआ। निरगुण धार ना होवे जुदा, सरगुण मेला मेले सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां रुत सुहञ्जणी, सोभनीक अतिअन्त। जगे जोत आदि निरँजणी, किरपा करे श्री भगवन्त। सब दे नेत्र पाए अंजणी, नाम निधाना दस्से मणीआ मंत। दीन दुनी जगत जहान कूड़े विच्चों वञ्झणी, कोई गुरमुख विरला रहसी सन्त। धूढ़ मिले किसे ना मजनी, होए विछोड़ा नार कन्त। भगत सुहेला सूफ़ी धुर दा सजणी, होए मिलावा आदि अन्त। झगड़ा रहे ना काया बदनी, गढ़ तोड़े हउमे हंगत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल जुगा जुगन्त। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणा जुग करता करतार, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस नूं झुकदे गुरु अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गाउँदे वार, अञ्जील क़ुरान सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव निउँ निउँ करदे निमस्कार,

संसारी भण्डारी सँघारी भज्जण वाहो दाहीआ। जिस दा हुक्म सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस दा लख चुरासी आत्म परमात्म नूर उज्यार, दीआ बाती कमलापाती घट घट करे रुशनाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना वेखणहार, निरवैर निराकार निरँकार आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सब नूं करना ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। ग़फ़लत विच्चों होवो बेदार, आलस निंदरा देणी तजाईआ। हक़ीक़त दा मालक ख़लक दा ख़ालक इक्को तक्को हक़ीक़ी यार, जो याराने कूड़े दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा एकँकारा इक इकल्ला दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सच संदेसा देणा लोकमात, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मेटे अन्धेरी रात, चार कुण्ट दह दिशा भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। लेखा रहिण ना देवे ज़ात पात, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। नाम निधाना नौजवाना देवे अगम्मी दात, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। सति धर्म दी साची बख़्श सौग़ात, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म भेव दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा आदि जुगादी अल्ला, आलमीन बेपरवाहीआ। जिस वसाया सच महल्ला, महबूब हो के वेख वखाईआ। नबी रसूलां फड़ाया पल्ला, नबीआं नाता जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण धार अछल अछल्ला, वल छल आपणी कार कमाईआ। अन्तिम सब नूं कर के झल्ला, झलक आपणी आए दृढ़ाईआ। अरशों फ़र्श ज़मीन ख़ाकी वेखे थला, जल थल महीअल खोज खुजाईआ। बिन तेल बाती आपणे नूर बला, बलधारी वड वड्याईआ। करे खेल इक इकल्ला, अकल कल आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मालक इक्क, एकँकार अख्वाईआ। जिस दा लेखा सारे गए लिख, नाता जोड़ क़लम शाहीआ। ओस पूरा करना भविख, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। इशारा कीता जिस जिस, जिस्म ज़मीर तों बाहर दए वखाईआ। जग नेत्र किसे ना आवे दिस, दह दिशा आपणा हुक्म सुणाईआ। जो सदा रहे हमेशां नित, नवित्त आपणी कार कमाईआ। ओह बण परमेश्वर पित, पतवन्ता वेस वटाईआ। लख चुरासी आशा लए जित्त, मनसा सब दी आपणे विच छुपाईआ। सब दी नंगी कर के पिट्ठ, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। खेल करे अनडिठ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मालक नवलज़ू ज़लाकाल, कुल ज़मां बेपरवाहीआ। जिस दा महल्ल आलीशान, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। पैगम्बरां लै के बलीदान, शहादत शरअ वाली भुगताईआ।

जोत जगा के उपर असमान, ज़िमीं ज़मां खोज खुजाईआ। सिफ्तां विच बण के रहीम रहमान, अलिफ़ ये अक्खरां विच वड्याईआ। पोशीदा रख के धुर कलाम, कलमा कायनात सिफ्तां वाला समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मनज़ऊ मेरा मुहब्बत वाला अमाम, मज़हबां वाला मज़मून ना कोए दृढ़ाईआ। मेरा इस्म दा इस्लाम, जिस दा बदले ना कोए नज़ाम, नौबत हक़ हक़ सुणाईआ। चौथे जुग लै इक दाम, झगड़ा मेटे दुनी तमाम, तमअ दा लेखा दए गवाईआ। धुर दा दे सच पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों अग्गे करे पढ़ाईआ। जिथ्थे बुद्धी समझे ना कोए इन्सान, अक़ल चले ना कोए चतुराईआ। सो खेल करे भगवान, हरि करता बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे शैतान, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी होणी सुहञ्जणी रुती, रुतड़ी प्रभ महकाईआ। मैं पिछली पूरी कीती बुत्ती, बुतख़ाने वेख वखाईआ। जगत लालस विच रही सुत्ती, अन्त लई अंगड़ाईआ। भगतां नाल मिलाउणी रुची, रचना वेखणी धुरदरगाहीआ। सच दुआरे बण के सुच्ची, संजम लैणा बदलाईआ। आसण ला के साची कुटी, चारे कुण्ट देणी तजाईआ। मुहम्मद कोलों लै के छुट्टी, आपणा लेखा लैणा मुकाईआ। गाना बन्ह के भगतां गुट्टीं, साचा सगन देणा वखाईआ। जिस रविदास चमारे दी जुत्ती टुट्टी, टुट्टयां गंढु पुआईआ। ओस फिरना अड्डी उच्ची, उच्च अगम्म दए वड्याईआ। जन भगतो खेल वेखणा तुसीं, तुरिया तों परे देणा समझाईआ। जिथ्थे आत्मा परमात्मा नालों कदे ना रुसी, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। एह खेल सदा अदुती, अनभव परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा वड्डा मालक, मेहरवान नज़री आईआ। जिस नूं कहिंदे ख़लक ख़ालक, मख़लूक नूर करे रुशनाईआ। अन्त मेरा बणे सालस, साहिब स्वामी दया कमाईआ। चार वरन दे गुरमुख वेखे ख़ालस, ख़ालस ख़ालसा आप प्रगटाईआ। जिन्हां दे अंदरों बदले हालत, जहालत कूड़ी दए कढ्ढाईआ। नाम निधाना दे निआमत, रस अगम्मा दए चखाईआ। कूड़ी क्रिया विच्चों रख सही सलामत, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुग दी गुरमुख वेख अमानत, अमन नाल दामन आपणे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

❋ ७ पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

सतिगुर शब्द महिमा अकथ, कथनी कथ सके ना राईआ। जुग जुग हुक्म संदेसा देवे पुरख समरथ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म जणावे साचा जस, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। निज नेत्र लोचण नैण खोल्हे अक्ख, दूई द्वैती परदा दए चुकाईआ। भेव अभेद जणाए हक़ीक़त हक़, हर हिरदे कर सफ़ाईआ। मन कल्पणा कर के वस, माया ममता मोह गवाईआ। अमृत झिरना दे के रस, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता धुरदरगाहीआ। सतिगुर शब्द आदि जुगादी धुर दा दाता, दयावान दया कमाईआ। जन भगतां बण के पिता माता, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नित नवित्त वेखे खेल तमाशा, निरगुण सरगुण आपणा वेस वटाईआ। कलयुग चारों कुण्ट अन्धेरी राता, साचा नूर चन्द ना कोए चमकाईआ। शाह पातशाह सब दा हारदा दिसे पासा, पेशीनगोई समझ किसे ना आईआ। जो साहिब सतिगुर गोबिन्द चरण दासी दासा, सेवक हो के सेव कमाईआ। तिस दी निरंतर अन्तर पूरी होवे आसा, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। किरपा करे पुरख समराथा, परवरदिगार नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता धुरदरगाहीआ। सतिगुर शब्द कहे आदि जुगादी इक मेहरवान, महबूब बेपरवाहीआ। जिस दा सति धर्म निशान, दो जहानां रिहा झुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मन्नण आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। हुक्म संदेसा देवे नौजवान, मर्द मर्दाना अगम्म अथाहीआ। सो लहिणा देणा लेखा वेखे जीव जहान, तन वजूद काया माटी फोल फुलाईआ। जो गोबिन्द चरण सरन करे ध्यान, दोए लोचण राह तकाईआ। उस दा होए मात कल्याण, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर गोबिन्द इक भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। दर आयां पूरी होवे आसा, निरासा नजर कोए ना आईआ। दीन दुनी दा जगत बिवहारी खेल तमाशा, नित नवित्त वेख वखाईआ। जिस दे हिरदे अन्तर सुच्च संजम होवे साचा, सति नाल वड्याईआ। तिस भाग लग्गे काया माटी काचा, कंचन गढ़ सोभा पाईआ। प्रभ दुआर दासी दासा, सेवक हो के सेव कमाईआ। तिस दा कर्म होवे रासा, जन्म मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सद आपणा खेल वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे जे आसा लोक राज, रईयत नाल वड्याईआ। फेर वेखो ओह गोबिन्द जिस सीस कल्गी ते कल्गी वाला ताज, तख्त निवासी सोभा पाईआ। घर बैठयां माण वड्याई देवे दात, दाता दानी होए सहाईआ। अंदर बाहर चार कुण्ट

६५३
२१

दह दिशा देवे साथ, सगला संग निभाईआ। पंज वार गोबिन्द गुर नूं ज़रूर करना याद, अमृत वेले उठ के नाम ध्याईआ। आपे उजड़िआ खेड़ा करे आबाद, वसदयां नाल वसाईआ। प्रेमीआं दी प्रेम विच पूरी होवे इमदाद, आमद खुशामद इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, जगत दा कर्म जगत विच बदलाईआ।

✻ ८ पोह शहिनशाही सम्मत ४ चेला सिँघ दे गृह वज़ारत रोड जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं कर कर थक्की बन्दगी, बंधन बंधनां विच दुहाईआ। सरगुण धार करदी रही मशंदगी, मुश्किल विच भज्जी वाहो दाहीआ। खेल वेखदी रही तारा चन्द दी, सुर्या नूर जोत रुशनाईआ। परवरदिगार रही मन्नदी, जल्वागर नूर अलाहीआ। खेल तकदी रही उम्मत वाले तन दी, वजूदां विच ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं होई मँगती, प्रभ देवणहार वड्याईआ। मैं खेल जणाउणी हँ ब्रह्म दी, पारब्रह्म परदा रहे ना राईआ । जोत प्रकाश करनी अगम्मे चन्न दी, जो दो जहानां डगमगाईआ। खेल वखाउणी अगम्मे भगवन दी, जो भाग सब दा दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ । सदी चौधवीं कहे मैं अन्तिम करना सजदा, बिन सीस सीस झुकाईआ। परम पुरख तेरा दिसे कोई ना बरदा, बन्दगी विच बंधन ना कोए कटाईआ। झगड़ा मेट चौदां तबक आपणे घर दा, गृह इक्को इक दृढ़ाईआ। जिथ्थे दीपक नूर अलाही होवे जगदा, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तूं ही तूं ही होवे जपदा, रसना वाली ना कोए पढ़ाईआ। जैकारा होवे इक अलख दा, अलख अगोचर तेरी वड्याईआ। मार्ग मिले धुर दे सच दा, सति सच विच्चों प्रगटाईआ । झगड़ा मिटा दे काया माटी कच्च दा, कंचन गढ़ दे सुहाईआ । हर घट अन्तर निरंतर हो के वसदा, वसल देणा यार खुदाईआ। नज़ारा दे अगम्मी अक्ख दा, निज नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। जगत जहान वेख तपदा, त्रैगुण अगन ना कोए मिटाईआ। झगड़ा प्या मनमति दा, बुद्धी अक़ल ना कोए वखाईआ। उबाला आया बहत्तर नाड़ी रत दा, सांतक सति ना कोए कराईआ। सन्तोख रिहा किसे ना हड्ड दा, धीरज यति ना कोए जणाईआ। माण रिहा ना अठ्ठ सठ्ठ दा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। मक्का काअबा वेख ढठ्ठदा, मसीत मसला हल ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआर तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां जगत जवानी, जोबनवन्त ध्यान लगाईआ। मुहम्मद दे के गया इक निशानी, निशाना अवर

६५४
२१

ना कोए समझाईआ। जिस वेले मुल्ला शेख़ मुसायकां अंदर आई बेईमानी, बेवा रूप होवे लोकाईआ। चारों कुण्ट कूड़ चढ़े तुग्यानी, तरफ़ दो तरफ़ ना कोए बचाईआ। मेरे कलमे होवे बदनामी, बदी घर घर डेरा लाईआ। आबेहयात मिले ना पाणी, रूह बुत ना कोए सफ़ाईआ। कलमा हक़ ना समझे कलामी, कायनात दए दुहाईआ। झगड़ा पैणा चारे खाणी, चारे बाणी संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं याद आई कहावत, हज़रत सहजे गया जणाईआ। मेरे नाम होवे बग़ावत, बग़लगीर नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट दिसे अदावत, अदल इन्साफ ना कोए कमाईआ। साचा कलमा मिले ना नाम निआमत, नाअरा हक़ ना कोए सुणाईआ। महबूब दिसे ना सही सलामत, सति सति ना कोए दृढ़ाईआ। माया ममता मोह लग्गे अलामत, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। पैगम्बर देवे ना कोए ज़मानत, शरअ शरीअत करे लड़ाईआ। चारों कुण्ट दिसे जहालत, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। कूड़ी उम्मत रहे बनावट, हक़ हक़ीक़त समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दरगाह साची वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कीती हक़ क़दमबोसी, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। फेर आपणे अन्तर कीती ख़ामोशी, जगत बोल ना कोए सुणाईआ। मुहब्बत विच होई मदहोशी, आपणा आप भुलाईआ। अन्त अख़ीर सोच अगम्मी सोची, सच साहिब दिती समझाईआ। साचे नाम दी रहे कोई ना रोज़ी, कलमा रस ना कोए चखाईआ। मन वासना सृष्टी होवे भोगी, कल्पणा तन वजूद हल्काईआ। साबत रहे ना कोए जञ्जू बोदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद दस्स के गया सहज नाल इशारे, बिन नेत्र नैण अक्ख हिलाईआ। खेल वेखणा आपणे अन्त किनारे, जगत नईआ डोले थाउँ थाईंआ। पीर पैगम्बरां रहे ना कोए सहारे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। निरगुण धार आवे मेरा परवरदिगारे, महबूब बेपरवाह नूर खुदाईआ। जोती जोत करे उज्यारे, कूड़ अन्धेरा दए गवाईआ। धुर दा कलमा इक उच्चारे, कायनात सच पढ़ाईआ। दीन मज़हब कर गिरफ्तारे, बंधन आपणा देवे पाईआ। धुर दा बोल इक जैकारे, चार वरनां दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद किहा साडा हक़ मौरूसी, परवरदिगार दिता बणाईआ। सदी चौधवीं तूं उम्मत अंदर करनी जासूसी, तन वजूद वेख वखाईआ। सब दी असलीअत दस्सणी ख़सूसी, ख़सूसीअत देणी जणाईआ। अन्त खेल तकणी रूसी, रहिबर हो के दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं

कहे संदेसा देवे श्री भगवान, हरि करता वड वड्याईआ। पंजां बीबीआं मस्तक होवे निशान, काला पीला सूहा रंग सुहाईआ। आयू वीह तीह साल दे होवे दरम्यान, वड्डा छोटा ना नाल रलाईआ। तन तिक्खी होवे किरपान, वजूद महबूब वेख वखाईआ। सज्जे हथ्थ विच होण रुमाल, लाल रंग नाल रंगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला एको गाण, रसना जिह्वा नाल वड्याईआ। कदी वेखण उपर असमान, नेत्र नैणां निगाह बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे हुक्म देवे धुर दरबारी, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस दी खेल अजब निआरी, रचना आपणी रिहा रचाईआ। जिस दा नूर जोत उज्यारी, निरगुण निरवैर करे रुशनाईआ। लेखा जाणे वड संसारी, संसारी भण्डारी परदा दए उठाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलकारी, शब्दी धार लए अंगड़ाईआ। जिस दे गुर अवतार पैगम्बर रहे पुजारी, बिना सीस सीस जगदीश झुकाईआ। सो लेखा जाणे धुर दी धारी, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साचा बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे पंज गुरमुख होण छोटे बच्चे, बचपन अगला दयां समझाईआ। जिन्नां दी रसना तूं मेरा मैं तेरा नाम जपे, ढोला सोहँ वाला गाईआ । इक दूजे मोढ्यां उत्ते हथ्थ होण रखे, प्यार मुहब्बत विच वड्याईआ। खुशीआं नाल जावण नस्से, आपणा पन्ध मुकाईआ। तेड़ होवण निक्के निक्के कच्छे, तहमत अवर ना कोए बंधाईआ। हथ्थ विच फड़े होण लिख के पप्पे, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ । सदी चौधवीं कहे पंजां बीबीआं बद्धा होवे कर्म कांड दा बस्ता, नीली टाकी विच बंधाईआ। कपड़ा होवे सब तों सस्ता, क़ीमत वद्ध ना कोए लगाईआ। नाल चिट्टे काग़ज़ दा होवे पर्चा, लाईन लकीर ना कोए बणाईआ। जिस दा दूजा होवे दरजा, पहली वंड ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं चार कुण्ट फिरां भज्जी, भजन बन्दगी वेख वखाईआ । दह दिशा फिरां अज्जी पज्जी, निरगुण आपणा रूप बदलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर जावां पैर दब्बी, आहट सुणन कोए ना पाईआ। साध सन्त वेखां किस दे अंदर नूर रब्बी, जलवा जोत करे रुशनाईआ। केहड़ा नाम दारू देवे बण के तबी, तबीअत अंदरों दए बदलाईआ। जां तक्कया माया ममता दे रोगी सभी, हउमे हंगता विच लड़ाईआ। चारों कुण्ट दिसे बदी, बदन पवित्त पुनीत ना कोए रखाईआ। मन वासना किसे ना कढ्ढी, कूड़ क्रिया घर घर डेरा लाईआ। बिन गुरमुखां भगतां प्रभ दी जोत किते ना जगी, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। हज़रत नूह वेखे अगम्मी नदी, किनारे बैठा डेरा लाईआ। अन्त बीतदी जावे चौधवीं सदी, सदमा

सब नूं दए वखाईआ। पैगम्बरां रहे कोई ना गद्दी, गदागर करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साजण इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या दूर नेड़ा, निरगुण हो के दया कमाईआ। सरगुण तत्तां वाला झेड़ा, झगड़े विच जगत दुहाईआ। धर्म दुआर बन्ने कोई ना बेड़ा, भार कन्ध ना कोए उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी उजड़दा दिसे खेड़ा, बस्ती हक़ ना कोए वसाईआ। परवरदिगार देवणहारा गेड़ा, कलयुग उलटी लठ भवाईआ। अदन अदल नाल छेड़े छेड़ां, इन्साफ धुर दा हक़ समझाईआ। धुर फ़रमाना मेटे केहड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सृष्ट भुलाए दृष्ट अंदर कर कर हेरा फेरा, फेरे विच अन्धेरा वेखे जगत लोकाईआ।

❋ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरभजन सिंघ ईशर सिंघ दे गृह ऊधम पुर ❋

सदी चौधवीं कहे मैं संदेसा सुणया अगम्म कलामी, बिन रसना जिह्वा दिता सुणाईआ। जिस ने नाता जोड़ना दीन दुनी बाहमी, वरन बरन डेरा ढाहीआ। कलयुग मेटे अन्धेरी शामी, शमां निरगुण जोत करे रुशनाईआ। दीन मज़हब दी रहे ना कोए गुलामी, गुरबत अंदरों दए कढ्ढाईआ। साची मंज़ल दस्से आसानी, रहमत आपणी हक़ कमाईआ। ममता मोह मेटे बदइंतज़ामी, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। लख चुरासी होवे जाण जाणी, घट घट अन्तर वेख वखाईआ। जन भगतां भगती दी पूरी करे क़ुरबानी, काया करबला कर सफ़ाईआ। हउमे हंगता गढ़ ना रहे तुग्यानी, अमृत धार इक वहाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला करे आप आपणी मेहरवानी, महबूब मुहब्बत विच आपणा रंग रंगाईआ। सृष्टी दृष्टी वेखे चार कुण्ट नादानी, निगाह आपणी इक उठाईआ। जो झगड़ा प्या शास्त्र सिमरत वेद पुराणी, काया काअबे करे सफ़ाईआ। साची मंज़ल दस्स इक रुहानी, रूह बुत मेला मेले सहज सुभाईआ। तत विछोड़ा कट जिस्मानी, जिस्म ज़मीर दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मालक इक अहिबाब, हरि करता नज़री आईआ। तन वजूद वजाए रबाब, अनहद नादी नाद सुणाईआ। झगड़ा लग्गा पुन्न सवाब, सुहबत आपणी दए दृढ़ाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर होवण लाजवाब, मंज़ल हक़ीक़ी दए चढ़ाईआ। चरण प्रीती दे ख़ताब, ख़ता भुल्ल मुआफ़ कराईआ। सजदा सीस दस्स अदाब, जगदीश चरण धूढ़ी टिक्का मस्तक दए छुहाईआ। शाहो भूप बण नवाब, नौबत नाम हक़ सुणाईआ। जिथ्थे पढ़नी ना पए कोए किताब, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। साचा

हुजरा सुहाए महिराब, महबूब आपणा परदा दए उठाईआ। दुरमति मैल रहे ना दाग़, पतित पुनीत आप कराईआ। घर शमां जगाए चराग़, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। निरगुण धार देवे साथ, सरगुण मेला सहज सुभाईआ। सोई सुरती जावे जाग, आलस निंदरा दए मिटाईआ। मन ममता मेट वाद विवाद, विख कूड़ी बाहर कढ्ढाईआ। साचा शब्द करे अहलाद, धुन अगम्मी नाद सुणाईआ। ततव तत खोल्हे राज़, भेव अभेदा आप समझाईआ। झगड़ा रहे ना उज़ू निमाज़, बन्दगी बन्दना इक प्रगटाईआ। धुर दा कलमा करे वाअज़, वज़ाहत नाल दए समझाईआ। धर्म दुआरे रहे ना कोए नराज़, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ । साचे धर्म दा करे आग़ाज़, दो जहानां दए वड्याईआ । लहिणा देणा मुक्के इश्क हक़ीक़ी जगत मजाज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर आया सनाटा, सुन्न समाध विच समाईआ । चौदां तबक वेख्या हाटा, हटवाणे बैठे मुख छुपाईआ। मेरा चीथड़ होया पाटा, बस्तर तन ना कोए दरसाईआ। कूड़ विकारा चुभे कांटा, दिवस रैण होया दुखदाईआ। कलयुग खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। पवित्र रिहा ना तीर्थ ताटा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदवाले माठा, गुरुदुआर नैणां नीर वहाईआ। जोत जगे ना देवी लाटां, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। चार वरन प्या घाटा, चार कुण्ट समझ किसे ना आईआ। अमृत मिले किसे ना बाटा, गोबिन्द रस ना कोए चखाईआ । आत्म परमात्म जुड़े कोई ना नाता, नातवां होई लोकाईआ । सब दा धर्म राए वेखे खाता, चित्रगुप्त रिहा जणाईआ। अन्त अख़ीर अठाई कुण्ड दस्सदे अहाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं लाउणा इक्को नाअरा, हक़ हक़ देणा जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखणा मज़ाहरा, मज़हबां वाले लैणे उठाईआ। आपणा करना अन्त किनारा, अगला पन्ध ना कोए समझाईआ। मुहम्मद पूरा करना इशारा, जो इशाअत नाल गया दृढ़ाईआ। जिस निरगुण धार आउणा दुबारा, नर नरायण वेस वटाईआ। निरगुण नूर करे उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। जन भगतां बण सच्चा बख्शणहारा, मुरीद मुर्शद लए मनाईआ। चार वरन सुहाए इक दुआरा, दूजा दर ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, जिस दा खेल आदि अन्त बेशुमारा, शुमार विच कथण कोए ना पाईआ।

✽ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ चेला सिँघ दे गृह वज़ारत रोड जम्मू ✽

सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर आई चुस्ती, चलाकी दीन दुनी वेख वखाईआ। पुरख अकाल करनी दरुस्ती, परवरदिगार अंकड़े दए बदलाईआ। झगड़ा पैणा उपर खुशकी, तरी वाले रहे कुरलाईआ। मुल्ला शेख़ वेखणे मुफ्ती, मुसायकां परदा देणा उठाईआ। कलयुग लड्ड गेड़नी उलटी, वहिंदे वहिण दए वहाईआ। खेल होणी सच्चे सतिगुर दी, शब्दी धार आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणी जगत चलाकी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। पंज तत माया ख़ाकी, पंचम पंचां मेल मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखणे साथी, कवण सगला संग निभाईआ। कवण मेटे धुर दी आखी, इष्ट देव वेख वखाईआ। किस दी होई अन्तिम जाती, जगत जाती डेरा ढाहीआ। कवण महिमा लिखे काग़ज़ क़लम दवाती, सिफ्तां विच वड्याईआ। कवण ब्रह्म धार रिहा अराधी, पारब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। कवण जिस्म ज़मीर रिहा साधी, सिदक सबूरी विच झट लँघाईआ। कवण कलयुग कूड़ी क्रिया कीता दाग़ी, माया ममता मोह हल्काईआ। कवण खेल करे कन्त सुहागी, नार सुहञ्जणी रूप वटाईआ। कवण सुरती सोई कवण जागी, कवण आपणा पन्ध मुकाईआ। कवण बणया धर्म तिआगी, प्रीतम इक्को रिहा मनाईआ । कवण पुरख अकाल तों होया बाग़ी, माया ममता विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे कराए आदी, जुग चौकड़ी सद आपणा हुक्म वरताईआ।

✽ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ गुरचरण सिँघ दे गृह जम्मू ✽

सदी चौधवीं कहे मैनूं नज़र आया रविदास दा कसीरा, क़सम खा के दयां जणाईआ। जिस दे अन्तर निरगुण धार जोती जोत दी तस्वीरा, जिस नूं मुसव्वर तसव्वर ना कोए कराईआ। जिस नूं नूर चमकदा दिसे कबीरा, जो क़बरां तों बाहर डेरा लाईआ। ओस दे विच लिखी अगम्मी तदबीरा, जिस दा तरीका ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दा खेल वेख्या बेनज़ीरा, जो नज़रीआ रिहा बदलाईआ। जिस दे विच दीन दुनी दी तक़दीरा, तक्ब्बरी दा रूप दरसाईआ। नज़र आया जिस वेले सदी चौधवीं दीन दुनी दा रस होया ख़मीरा, सति रहिण कोए ना पाईआ । भराता तक्के जगत हमशीरा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार जगत हल्काईआ। धर्म कर्म दी बदल जाणी तासीरा, तसबी माला कम्म कोए ना आईआ। सूफ़ी सन्त होणे दिलगीरा,

धीरज धीर ना कोए धराईआ। झगड़ा पैणा पातशाह वजीरा, जनो मर्द ना कोए शनवाईआ। चार वरन भृष्ट होणा वतीरा, दृष्टी सच ना कोए खुल्हाईआ । शरअ दा बज्झ जाणा ज़ंजीरा, बंधन सके ना कोए तुड़ाईआ। फिरे दुहाई अमीरा, ग़रीबां गृह ना कोए सुहाईआ । ओस वेले खेल होणा तक़दीरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच देवे वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे रविदास कसीरे नूं कहिंदे कौडी, कौडी जगत ना कोए रखाईआ। ओस विच्चों मैनूं दिसी गुलाब दी डोडी, जिस दा पत्त टहिणी नज़र कोए ना आईआ। विच्चों नज़र आया अगम्मा जोगी, जो जुगीशरां करे पढ़ाईआ। ठाकर तक्कया मौजी, जो बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। जिस दे हथ्थ दो जहानां रोज़ी, राज़क रहीम इक अख्वाईआ। लख चुरासी जीव जंत आत्म ब्रह्म दा खोजी, पारब्रह्म आपणा नाउँ समझाईआ। जुग चौकड़ी धुर संदेसा देवे अगाध बोधी, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। नाम सुणाए अगम्म सलोकी, सोहला सच जणाईआ। वेखणहारा लोक परलोकी, परदा दीन दुनी उठाईआ। मंज़ल दस्स सौखी, दर घर साचा इक वखाईआ। जिथ्थे पढ़नी पए कोई ना पोथी, पुस्तक हथ्थ ना कोए उठाईआ। बुद्धी रहे कोए ना थोथी, मन मनसा ना कोए हल्काईआ। आत्म दी आवे सोझी, समझ विच्चों समझ बदलाईआ। रमज़ इशारा दे के गोझी, परदा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं जन भगतां हथ्थ लगावां गोडीं, घुटने टेक के आपणा सीस निवाईआ।

✻ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे दीन दुनियां बज्झी दीन वाली रस्सी, रस्ता हक़ गई भुलाईआ। छप्पर छन्नां विच वसी, वसल यार ना कोए कराईआ। जूनी गिणदे लख चार अस्सी, हिस्सयां वाली वंड ना कोए समझाईआ। रसना कहिंदी पुरख अकाल सब दा कमलापती, पतिपरमेश्वर जगत ना कोए हंढ्ढाईआ। कलयुग अन्तिम रिहा कोए ना यती, यथार्थ प्रभ दी सेव ना कोए कमाईआ। सच वस्त रही ना रती, रतन अमोलक हीरा नज़र कोए ना आईआ । तीर्थ तटां उत्ते जा के कराउँदे गति, प्रभ दी सार कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन पत लथ्थी, मेहरवान महबूब सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा सृष्टी दृष्टी फिरदी नठ्ठी, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। जम की फ़ासी किसे ना कटी, कटाकश नाम तीर ना कोए लगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी चार वरन दी हट्टी, जगत परचून वाला

६६०
२१

हट्ट दिता खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव अभेदा जाणे तत अठ्ठी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश रजो तमो सतो सति आपणे नाल बदलाईआ।

✻ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ प्रकाश चन्द दे गृह जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे जगत विद्या दीन दुनी कीती आलम, इल्म वाला सच अमल ना कोए कमाईआ। शाह सुल्तान चार कुण्ट होए ज़ालम, प्यार मुहब्बत नाता सच ना कोए जुड़ाईआ। सति धर्म दी ख़ाली दिसे कालम, कलमयां वाले रोवण मारन धाहींआ। मन ममता विच सृष्टी फसी सालम, गिरहा पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। सच दुआरा किसे ना मालम, नामालूम नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साहिब धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे जगत विद्या बणया जगत नसीब, निस्बत सच ना कोए कढ्ढाईआ। दीन दुनी वेखी ग़रीब, नाम धन पल्ले गंढु ना कोए बन्हाईआ। मन मनसा वेखी अजीब, ममता मोह विच हल्काईआ। गुर अवतार पैगम्बर जो दे के गए तरतीब, सिलसलेवार समें समें समझाईआ। ओस मंज़ल दे पुज्या ना कोए क़रीब, दूर दुराडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। सदी चौधवीं कहे नेत्र रो के किहा फ़रीद, फिरका प्रभ दे नाल बणाईआ। परवरदिगार तेरी विगड़ जाणी तरतीब, तरीका ढंग तेरा अनोखा नज़री आईआ। उह वेला दूर दुराडा आवे नज़दीक, नेरन नेरा पन्ध मुकाईआ। दीन मज़हब बणन शरीक, गुर अवतार पैगम्बरां होवे लड़ाईआ। हथ्थ आवे किसे ना जीत, हार विच हारदी दिसे लोकाईआ। बिन तेरी किरपा आसा मनसा पूरी होवे ना किसे उम्मीद, तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ। तेरा हुक्म फ़रमाना शब्द संदेसा इक जदीद, यदी आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा लेखा जाए बीत, भीतर हो ना कोए अटकाईआ। ख़ाली दिसे मनारा मसीत, मिसरा सच ना कोए सुणाईआ। सब दी टुट्टदी दिसे प्रीत, प्रीतम प्रेम ना कोए रखाईआ। बिन तेरी किरपा रहे ना कोए अतीत, त्रैगुण लेखा सके ना कोए चुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल रहमत विच करनी बख़्शीश, मेहरवान महबूब मुहब्बत धुर दी देणी वरताईआ। तेरा नाम कलमा इक्को होवे हदीस, हज़रतां तों परे देणा समझाईआ। तूं मालक ख़ालक साहिब प्रितपालक इक जगदीश, जगदीशर मेला लैणा मिलाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। धुर दा चाढ़्ना रंग मजीठ, बसीठ आपणा प्रेम रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार जुग दी पिछली मेट लीक, सतिजुग सति धर्म सच निशान देणा वखाईआ।

✻ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ लाल चन्द दे गृह जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे दीन दुनी भरी नाल गुनाह, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। मुल्ला शेख़ करन जनाह, हदीस हक़ ना कोए सालाहीआ। कलमा करे कोई ना मन्नां, मनफ़ी वाला सारे रूप वटाईआ। कूड़ी अगनी लग्गी तनां, वजूद रही जलाईआ। सच प्रकाश मिले ना शमां, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। मार्ग दस्से कोए ना नवां, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। दीन मज़हब दी वध गई तमां, लालच मज़हब वाला रखाईआ। मैं धुर संदेसा कहवां, कहि के रही दृढ़ाईआ। सचखण्ड दुआर गुर अवतार पैगम्बर होए जम्मा, इक्ठे हो के सीस निवाईआ। पुरख अकाल लख चुरासी लेखा वेख दमा, दामनगीर हो के फोल फुलाईआ। धुर दा मार्ग दस्स नवां, नर निरँकार तेरी सरनाईआ। निउँ निउँ तेरे चरणां ढह्वां, जगत रहे ना माण वड्याईआ। इक्को ढोला धुर दा गवां, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। तेरी सेज सुहञ्जणी सवां, जिथों सुत्तयां ना कोए जगाईआ। सचखण्ड दुआरे तेरे बहवां, चरण सरन मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हर हिरदा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी सीतल होवे छाती, छहबर आपणी दए लगाईआ। तेरा खेल कमलापाती, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। कलयुग मेट अन्धरी राती, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। तूं वसणहारा इक इक्कांती, इक इकल्ला नूर अलाहीआ। धुर संदेसा दे दे क़लम दवाती, काग़ज़ शाही नाल वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणा इक जमाती, इक्को सिख्या दे समझाईआ। साचा नूर प्रकाश कर बाती, बातन भेव रहे ना राईआ। जन भगत सुहेले उठा दासन दासी, दास्तान पिछली दे समझाईआ। तेरा नाउँ पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करते दे वड्याईआ। तूं साहिब सतिगुर नाथ अनाथी, दीनन दीनां हो सहाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरा नूर इक्को ज़ाती, ज़ात पात दा झगड़ा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा लिख ना सके कोई लफ़ज़ लुगाती, अलिफ़ ये दी विद्या कम्म किसे ना आईआ।

✻ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ लीलावती दे गृह जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं बणना जोबनवन्ती, निरगुण नूर जोत चमकाईआ। सच दुआरे होणा सोभावन्ती, साहिब सुल्तान लागां सरनाईआ। पुरख अकाल मनाउणा धुर दा कन्ती, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगती, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के पंगती, सोहँ नाद करां शनवाईआ। कला वेखणी प्रभ अनन्ती, अकल कलधारी

६६२
२१

दए वखाईआ। जन भगत दुआरे बण के मँगती, दरवेश हो के अलख जगाईआ। शत्तरी ब्राह्मण शूद्र वैश बण जाओ इक संगती, वरन बरन झगड़ा रहे ना राईआ। लेखा मुक जाए मुल्ला शेख़ मुसायक पंडती, ग्रन्थी गृह कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां धुर दी पूजा, पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हाईआ। इष्ट रहे कोई ना दूजा, दुतिया भाओ देणा चुकाईआ। जन भगतां नेत्र खोल्ह तीजा, निज लोइण करां रुशनाईआ। धुर दा मार्ग दस्स के सीधा, रस्ता इक्को दयां वखाईआ। जिथ्थे नूर राम सीता, राधा कृष्ण सोभा पाईआ। पुरख अकाल इक अतीता, त्रैभवण धनी डेरा लाईआ। परवरदिगार ठांडा सीता, जल्वागर सोभा पाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करां उम्मीदा, जगत तृष्ना रहे ना राईआ। गुरमुखो सब दा पूरा होवे अक़ीदा, अक़ीदत विच क़ाइदा इक दृढ़ाईआ। जो लेखा लिख्या मुहम्मद विच क़ुरान मजीदा, मुफ़लिस हो के ध्यान लगाईआ। जिस दी आयत करे तमहीदा, सिफ्तां विच सालाहीआ। उस दा लेख ज़लू वज़ीदा, वज़ित ज़ूह दृढ़ाईआ। सो खेल वेखणा चश्मदीदा, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जिस नूं कहिंदे मेहरवान महिबान बीदा, बीख़ैर या अलाह तेरी सरनाईआ। उस दा हुक्म अगम्म पेचीदा, परदा सके ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेरी आसा मनसा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर अगम्म आवाज़, बिन रसना दयां सुणाईआ। दीन दुनी खोल्हे राज़, परदा निरंतर रहे ना राईआ। जिस कारण पढ़ी निमाज़, रोज़ा रख के झट लँघाईआ। उस दा मिलण लग्गा इहज़ाज़, परवरदिगार झोली पाईआ। चारों कुण्ट करे साज बाज, अछल अछल्ल आपणी खेल खिलाईआ। सोई सुरत किसे ना गई जाग, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। हँस बुद्धी होई काग, दिवस रैण रही कुरलाईआ। साचे काअबे जगे ना कोए चराग़, महिराब हक़ ना कोए सुहाईआ। मंजल महबूब ना कोई आबाद, सच सिँघासण नज़र कोए ना आईआ। सजदा सीस ना कोए आदाब, नमों नमों ना कोए दृढ़ाईआ। मिल्या मेल ना एका वाहिद, वाहवा वज्जी ना कोए वधाईआ। जो मुहम्मद कलमा कीता आइद, आयतां विच सुणाईआ। धुर फ़रमाने कर के गया हदाइत, हदीसां विच वंड वंडाईआ। मुहब्बत विच कर के गया इनाइत, आहला अदना जगत समझाईआ। जगत शरअ दस्स शरायत, शरीअत दिती वड्याईआ। अन्त सारे हुक्म होए जाइज़, जाइज़ा लैण कोए ना आईआ। माया ममता होई राइज, रईयत मोह विकार ल्या बणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्त अख़ीर सब दा निकलण वाला नताइज, नतीजा सब नूं दए वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा होया फ़राइज़, फ़र्ज आपणा गए निभाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर वेखणहारा नालायक लायक, उम्मत उम्मती फोल फुलाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो करे कराए सदा जाइज़, नाजाइज़ वंड ना कोए वंडाईआ।

❋ ६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ गुरदित सिँघ दे गृह छम्ब ज़िला जम्मू ❋

सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरां बदलणी गद्दी, गदागर होवे लोकाईआ। मेरी अन्त अख़ीर अनहोणी होणी सदी, सदमा घर घर रही वखाईआ। हज़रत नूह दी वहिणी नदी, जगत नईआ नौका कम्म किसे ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां ख़ाहिश रहे ना दब्बी, परदयां विच्चों परदा दए चुकाईआ। पुरख अकाल खेल कराउणा यदी, यदप आपणा खेल कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी बदी, बदला देवे थाउँ थाईंआ। साचे नाम दा बण के तबी, तबीअत सब दी दए बदलाईआ। निरगुण जोत जगा के रब्बी, रब्बुलआलमीन वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख अन्धेरा घुप, हैरानी अंदर ध्यान लगाईआ। सति धर्म गया छुप, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। भाग लग्गे किसे ना बुत, काया काअबा ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट दिसे दुःख, दर्दां भरी लोकाईआ। उजल करे कोई ना मुख, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। जननी लेखे लग्गे कोई ना कुक्ख, भगत रूप ना कोए धराईआ। भरमे भुल्ला मानव मानुख, मन मनसा विच हल्काईआ। सीस जगदीश किसे ना जावे झुक, डंडावत बन्दना ना कोए दृढ़ाईआ। मैं चार कुण्ट वेख्या उठ, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। दस्त रिहा नाम ना मुट्ठ, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाईआ। आत्म परमात्म नाता गया तुट्ट, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। सब दे भाग गए निखुट, कर्म कांड रिहा कुरलाईआ। अमृत जाम मिले ना घुट, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। कलयुग जीव अपराधी होए सुत, साहिब सतिगुर मिलण कोए ना जाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, हरि करता धुरदरगाहीआ। मेरी सुहञ्जणी करे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, मेहरवान धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे चार कुण्ट दिसे ना कोई सज्जण, सैण मीत ना कोए अख्वाईआ। सच प्रीती होए कोई ना मग्न, परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। मैं चढ़ के वेख्या उपर गगन, निरंतर हो के अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे मँगण, दरगाह साची ख़ाली झोलीआं डाहीआ। त्रैगुण माया चार कुण्ट दह दिशा लगाई अगन, सदी चौधवीं सके ना कोए बुझाईआ। दीन मज़हब असीं सारे लग्गे छड्डण, बौहड़ी तेरा नाम खुदाईआ। तेरा दरस दीदार लग्गे मँगण, इक्को नूर चश्म रुशनाईआ। पंचम मीते

६६४ २१

पा दे सगन, समग्री आपणी दे वड्याईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी बदन, बदली करनी थाउँ थाईंआ। तेरे हथ्थ इन्साफ अदल, अदालत आपणी देणी दृढ़ाईआ । मन कल्पणा करनी क़तल, क़ातल मक़तूल आपणी खेल वखाईआ । साडा पूरा ना होया यतन, यथार्थ सारे रहे सुणाईआ। नईआ लग्गी किसे ना पत्तण, अद्धवाटे घुम्मण घेरी विच घुंमाईआ। लोकमात वेख आपणा वतन, बेवतनां लै मिलाईआ। निरगुण धार तैनूं सारे सद्दण, सरगुण बैठा सीस निवाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदवारिआं विच्चों लभ्भण, खोज्यां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां उपर अर्शां, अर्शी प्रीतम ध्यान लगाईआ। की वेस वटाए उपर फ़र्शां, फ़र्ज आपणा की समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरीआं करे गरज़ां, गर्जे कि सब नूं वेखे थाउँ थाईंआ। बेनन्तीआं लेखे लावे अरज़ां, आरज़ू सब दी झोली पाईआ। जो सिफ्तां विच आपणे नाम कलमे दीआं दस्सीआं तरज़ां, तऱां तऱां दृढ़ाईआ। अन्तिम सब दीआं पुठ्ठीआं कर के नरदां, नर नरायण वेखे थाउँ थाईंआ। दीन मज़हब शरअ छुरी बण गई करदां, क़तल होवे अन्त लोकाईआ। साचा रिहा कोई ना बरदा, बन्दगी विच ना सीस निवाईआ। जगत जहान जाए हरदा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भेव खुल्ल्हे ना किसे घर दा, गृह मन्दिर मंज़ल पन्ध ना कोए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ ढोला कोई ना पढ़दा, पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। तेरी मंज़ल रुहानी असमानी जिस्मानी पौड़ी डण्डा कोए ना चढ़दा, मंज़ल पन्ध ना कोए चुकाईआ। तेरा खेल अगम्मे हरि दा, नर नरायण तेरी बेपरवाहीआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच चुक्क दे परदा, परवरदिगार आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त एथे ओथे दो जहान सच दुआरे जोती धार खड़्हदा, हुक्म संदेसा शब्दी शब्द जणाईआ।

✻ १० पोह शहिनशाही सम्मत ४ संसार सिंघ दे गृह पिंड छम्ब ज़िला जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे हज़रत मुहम्मद किहा अलाह, अल्ला आलमीन वड्याईआ। जोती नूर सदा मलाह, लोक परलोक इक अख्वाईआ। नाम कलमा दए सलाह, सिफ्ती सिफ्त विच वड्याईआ। रसूल लिल्लाह बणे खुदा, असूल आपणा इक प्रगटाईआ। सजदा करना दस्से दुआ, लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। मुहब्बत प्यार विच बणे दिलरुबा, दिलदार इक

अख्वाईआ। धुर दी दस्से हक़ सदा, सद ढोला इक सुणाईआ। दरगाह साची जणाए राह, रहिबर हो के आप समझाईआ। सूफ़ीआं बख्शणहार गुनाह, रहमत आपणी विच रखाईआ। दीन दुनी करनहार फ़नाह, बिस्मिल आपणी खेल खिलाईआ। धुर फ़रमाना देवणहार नवां, नौजवाना आप सुणाईआ। हरख सोग मेट के ग़मां, चिन्ता चिखा दए गवाईआ। लहिणा वेखणहारा दम दमां, दामनगीर इक हो आईआ। फोल फुलाए माटी चम्मां, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर वेखे समां, समाप्त हुंदी दिसे लोकाईआ। निरगुण धार करे आपणा कम्मा, कमतरीन गुर अवतार पैगम्बर वेख वखाईआ। सच प्रकाश कर के शमां, दीपक जोत करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के तमां, तृष्ना दए गवाईआ। साचा मार्ग कर के रवां, कूड़ क्रिया रवानगी दए कराईआ। लेखा वेखे बावा आदम हव्वा, हरि करता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार सच्ची सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद नौ वार रंगे होंट, अठत्ती साल दी आयू सोभा पाईआ। आपणे तन लगाई चोट, डंक नगारे नाल छुहाईआ। एकँकारा रख एका ओट, इक ध्यान जणाईआ। नज़ारा मिल्या निर्मल जोत, जोती जोत रुशनाईआ। अन्तर निरंतर खुल्ले सोत, सुरती शब्द विच समाईआ। आपणी धार वेखी धुर दी गोत, गौतम बुध दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख्शे सच सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे जिस वेले मुहम्मद होया ज्ञान, वक्त पंज पंज सोभा पाईआ। आफ्ताब ग़रूब होण लग्गा सी शाम, किरन किरन विच्चों चमकाईआ। परवरदिगार देण लग्गा हक़ीक़ी जाम, रस अगम्मा आप चखाईआ। पहली आयत आई कलाम, अल्ला हू हू अल्ला दिता समझाईआ। फिर परदा खोल्ह तमाम, तमां दिती चुकाईआ। नफ़र बणा गुलाम, सेवा सच समझाईआ। कलमा दस्सणा कलाम, चार कुण्ट शनवाईआ। फिर गुस्ल कर हमाम, बाहर कीती सफ़ाईआ। फिर आया पैग़ाम, नाद धुन वड्याईआ। फिर वखाया निशान, तारा चन्द वड्याईआ। फिर कराया ध्यान, सुरती सुरत बदलाईआ । फिर नज़र आया अमाम, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। फिर कलमा दस्स अमाम, क़ाइदा बक़ाइदा दिता पढ़ाईआ। फिर हुक्मी दस्स इंतज़ाम, बन्दोबस्त समझाईआ । फिर नूर दस्स जवान, बिरध बाल पन्ध मुकाईआ। फिर मन्दिर खोल्ह मकान, दरगाह साची दिती वखाईआ। फिर तख़त निवासी बण राजान, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। फिर चौदां तबकां वंड महान, हिस्सा झोली दिता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद इशारा होया वेख्या अम्बर, लोचन नैण नाल मिलाईआ। फिर दरसाया धुर दा मम्बर, मुनारिआं विच वड्याईआ। उह महीना सी सतम्बर, यसू दए गवाहीआ। नूर चमक्या नूरी

६६६
२१

अंदर, नूर जोत रुशनाईआ। खुल्हिआ जीवण जंदर, परदा दिता उठाईआ। प्रकाश होया कंदर, नूर जोत रुशनाईआ। तक्कण लग्गा उपर गगन, गहर गम्भीर राह तकाईआ। मुहब्बत विच होया मग्न, मस्ती विच लई अंगड़ाईआ। सुरत रही ना तन वजूद बदन, माटी ख़ाक ना कोए वड्याईआ। सच दुआर दरवाज़ा लग्गा लँघण, बिना क़दम तों क़दम उठाईआ। दरवेश हो के लग्गा मँगण, ख़ाली झोली अग्गे रखाईआ। अग्गों हुक्म सुण सूरा सरबंगण, जो संदेसे रिहा दृढ़ाईआ। मैं वेखां खेल विच वरभण्डण, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। शब्दी धार लै प्रचण्डण, चण्ड प्रचण्ड दयां चमकाईआ। चार जुग दी करनी कर के खण्डण, खण्डा खड़ग इक्को इक सुहाईआ। हुण मुहम्मद कुछ दात आया वंडण, तेरी झोली देवां पाईआ। जिस वेले चौदां सदीआं लँघन, आपणा पन्ध मुकाईआ। सृष्ट सबाई दिसे अन्धन, नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। मस्तक दिसे किसे ना चन्दन, धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। माण रहे ना किसे पंडण, पंकज लेखा दए मुकाईआ। सच सुणाए कोई ना छन्दण, संसा भरम ना कोए मिटाईआ। चुरासी तोड़े कोई ना बंधन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा सच अनन्दन, अनन्द परमानंद विच समाईआ।

६६७
२१

जे गुरमुखो तुसां आसरा रख्या इक्क, इक एक एकँकार हो के लवां मिलाईआ। तुहानूं बणा के सचखण्ड दुआरे दे सिख, सिख्या धुर दी नाल पढ़ाईआ। अग्गे सदा वसां तुहाडे विच्च, हर घट काया अंदर डेरा लाईआ। सौन्दयां जागदयां तुरदयां फिरदयां नूं लाई रखां खिच्च, प्रेम प्रीती विच बंधाईआ। तुहाडा मात पित भाई भैण साक सज्जण बण के करां हित, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। लोकमात तुहाडी लग्गण ना देवां पिट्ठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाडे जन्म कर्म दा लहिणा देणा देवां नजिट्ठ , आवण जावण झगड़ा दयां मुकाईआ। प्रेम प्रीती दी तुहाडे अंदर पैदा करां सिक, दिवस रैण इक्को रंग रंगाईआ। क़लम शाही नाल तुहाडा लेखा जावां लिख, जिस नूं चार जुग ना कोए मिटाईआ। भगत भगवान विच रहे कोई ना विथ, फ़िरका फ़िरक्यां वाला गुआईआ। अज्ज दी सुहञ्जणी होई थित, पोह दस दए गवाहीआ। बाल्मीक एथे आ के कागज़ लिख्या सी सवा गिठ, कलयुग दा अन्त राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। जन भगतो तुसां रख्या इक सहारा, सहायक हो के दयां वड्याईआ। वखावां ओह दरबारा, जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। चमकावां ओह सतारा, जिस नूं सुर्या चन्द सीस निवाईआ। प्रगटावां ओह नज़ारा,

६६८
२१

जो जग नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जन भगतो जिस कारण तुहानूं एथे वसाया फेर दुबारा, बावन दा लहिणा झोली पाईआ। तुहाडे पिच्छे धरती दा लग्गे अखाड़ा, हाहाकार कुरलाईआ। गुरमुखां रंग चढ़े गाढ़ा, प्रेम प्रीती विच रंगाईआ। चार कुण्ट होवे हाहाकारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। वेखो खेल पुरख करतारा, हरि करता आपणी खेल वरताईआ। तुहाडा पूरब क़र्ज देणा उधारा, लहिणा सब दी झोली पाईआ। जो रसना नाल लाया जैकारा, जै जै कार देणा कराईआ। प्रभ दा लेख छपदा नहीं विच अख़बारां, जगत संदेसा ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार चरण कँवल सहारा, दूसर ओट ना कोए समझाईआ। जन भगतो तुसां आसरा ल्या तक्क, तकवा इक्को उत्ते रखाईआ। तुहाडा ज़रूर पूरा करां हक़, कमी रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया मेट के शक्क, सहिंसा अंदरों दयां कढ्ढाईआ। तुहाडे हिरदे अंदर वस, रस आपणा दयां चखाईआ। तुसीं मेरे मैं तुहाडा दोहां दा सांझा जस, सिफ्तां विच जगत सालाहीआ। मार्ग अगला अगम्मा दस्स, दह दिशा दा डेरा ढाहीआ। जिस कारण तुसीं आए नस्स, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर घर साचे लए मिलाईआ। जन भगतो तुसां इक दी रखी आस, आसा विच वड्याईआ। तुहाडी जन्म जन्म दी मुक्की प्यास, तृखा अगली दिती गवाईआ। तुसां वसणा उत्ते आकाश, जिथ्थे बैठा धुरदरगाहीआ। तुसां मिलणा ओस विच प्रकाश, जिस दी महिमा गुर अवतार पैगम्बर गए गाईआ। तुहाडा लेखे लाउणा स्वास स्वास, साह आपणे विच रलाईआ। सेवक बण के दास, जन भगतो तुहाडी सेवा लैणी कमाईआ। बख्श अगम्मी दात, नाम भण्डारा देणा भराईआ। तुसीं वड्डुयां छोटयाँ दी सोहणी लग्गो जमात, वरन बरन ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडी सच प्रीती ते प्रभू दा सच्चा नात, सति सच विच समाईआ। जो कुछ रसना दयोगे आख, सो पूरा कर वखाईआ। हर हिरदे दी सुणन आया बात, आशा सब दी पूर कराईआ। तुसीं कदी कदी वेखदे ते मैं सदा तुहाडे अंदर रिहा झाक, अट्ठे पहर तुहाडा राह तकाईआ। तुसीं मेरे सज्जण सुहेले तुहाडा धुर दा साथ, बिना भगतां तों सचखण्ड चढ़न कोए ना पाईआ। तुसीं मंज़ल ते मैं तुहाडा घाट, किनारा दोहां दा इक्को देणा बणाईआ । सृष्टी सुत्ती ते तुसीं गए जाग, सतिगुर शब्द ल्या जगाईआ। तुहाडी जीउदयां दी आपणे हथ्थ विच फड़ के वाग, दीन दुनी वलों मुख दिता भवाईआ। तुसीं हँस बण गए काग, काग हँस रूप बदलाईआ। तुहाडी शमां दा पुरख अकाल चराग़, चरागाहां विच होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे अंदर आपणे नाम रस दा देवे स्वाद, विख अंदरों बाहर कढ्ढाईआ।

✻ १० पोह शहिनशाही सम्मत ४ ज्ञान चन्द फुम्मण सिँघ भाग सिँघ पूरन चन्द शंकर दास ज्ञान सिँघ दे गृह छम्ब जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया उपर फ़लक, आसमानां परे ध्यान लगाईआ। नूर नुराने दिती चमक, प्रकाश प्रकाश विच्चों प्रगटाईआ। शब्द इशारे मारी रमज़, संदेसा इक सुणाईआ। अन्त अख़ीर जाह समझ, सिख्या इक दृढ़ाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक वेख विच ख़लक, हरि करता धुरदरगाहीआ। झमक के तक आपणी पलक, पर्दा उहला अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया मैनूं अगम्मी आई झलक, झल्ली रिहा बणाईआ। मेरे नेत्र नैणां नीर आया छलक, हन्झूआं धार वहाईआ। की खेल होणा भलक, परदा सके ना कोए चुकाईआ। बड़े बड़े सूरबीर बहादर योद्धे बैठे मलक, बलधारी नज़री आईआ। सच मार्ग तों सारे गए तिलक, सम्भल क़दम ना कोए उठाईआ। मनुआ चारों कुण्ट करे इल्लत, कूड़ी तृष्ना जगत वधाईआ। शाह सुल्तानां होई ज़िल्लत, खुआरी सके ना कोए मिटाईआ । सति धर्म दी देवे कोई ना खिल्लत, तन पुशाक ना कोए सुहाईआ। जिधर तक्कां सारे दिसण निन्दक, प्रभ दी सिफ्त ना कोए सालाहीआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरले दिती हिम्मत, जो प्रभ नूं सीस निवाईआ। जिन्हां दा इक निशाना इक्को सिम्मत, इक्को बणे पाँधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया उपर असमान, आसा होर वधाईआ । सुणया धुर फ़रमान, अगम्म दिता जणाईआ। तेरा मालक निगाहबान, निरवैर नूर अलाहीआ। धरनी उत्ते करे कल्याण, धवल धौल वेख वखाईआ। ओस दे चरण कर प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। देवे साचा नाम, कलमा इक वड्याईआ। वेख वखाए चौदां तबक तेरा ग्राम, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। सजदे विच ओस महबूब नूं कर सलाम, जो सुल्हकुल अख्वाईआ। पैगम्बर बरदे तक्क गुलाम, सिर सके ना कोए उठाईआ। सो देवणहारा हक़ीक़ी जाम, अनडिठा रस प्याईआ। जिस ने बदल दिती धुर दी कलाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। सो खेल करे अमाम, दरगाह साची दा मालक नूर अलाहीआ। कल मेट अन्धेरी शाम, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। झगड़ा कूड़ मेट अवाम, कामल मुर्शद होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दी धार चलाए इक निशान, नौजवान मर्द मर्दाना इक्को इक वखाईआ।

जन भगतो मैं सदा तुहाडे नाल, इकल्ला नज़र कोए ना आईआ। तुसीं मेरे शाह मैं तुहाडा कंगाल, प्रेम प्रीती तुहाडी मँगण आईआ। नाम विचोले बणा दलाल, वणज धुर दा दए कराईआ। जिस गोबिन्द ने वार के आपणे लाल, बच्चे गुरमुख आपणे लए अपनाईआ। उह तुहाडी सदा करे संभाल, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ज़रा वेखदे जावो किस तरां दीन दुनी दी बदल देवे चाल, आपणी चाल ना किसे समझाईआ। सब दे पूरे करे सवाल, आसा मनसा दी तृखा दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा साथी इक अख्वाईआ। जन भगतो तुसीं कदे नहीं इकल्ले, इकल्ला भगत ना कोए अख्वाईआ। तुसीं वसो उस प्रभू दे महल्ले, जिथ्थे भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। तुहाडे अन्तर दीपक उह बले, जिस दा नूर होवे रुशनाईआ। तुहाडी सहायता करे जले थले, हर थाँ वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस प्यार मुहब्बत विच तुसीं पले, पलक होण ना देवे जुदाईआ। पूरब जन्म दे कीते कर्म कुछ हुण फले, अग्गे फलीभूत दए कराईआ। कितनी ख़ुशी मनावे जेहड़ी धरनी तुहाडे चरणां थल्ले, धूढ़ी चुम्म के ख़ुशी बणाईआ। धन्न भाग जो प्रभ जोत विच रले, नाता जगत कूड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर दए वड्याईआ। गुरमुखो कदे ना इकल्लिआं देणा आख, इकल्ला नज़र कोए ना आईआ। जदों तुसीं अंदर करो याद, हाज़र हो के दरस दिखाईआ। तुसीं उजड़ के होए आबाद, अबादी भगतां दयां वधाईआ। तुहाडा लेखा लिख्या विच ओस किताब, जेहड़ी गुर अवतार पैगम्बरां हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। जदों चाहां भगतां दा करां आप हिसाब, लेखा लिखां बिन क़लम शाहीआ। झगड़ा मुका के पुन्न सवाब, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। तुहाडा लेखे लाया आउणा जाणा आज, अज्ज दी घड़ी सुलखणी दिती बणाईआ। तुसीं प्रभू दा बग़ीचा सोहणा सुहञ्जणा बाग़, प्रेम सुगंधी तुहाडे विच्चों नज़री आईआ। जन भगतो तुहाडे तों वड्डा होर नहीं कोई साध, समाजां विच पई दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद तुहाडी रखे लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

✻ १० पोह शहिनशाही सम्मत ४ बलवन्त कौर दे गृह छम्ब ज़िला जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं ख़ुशी वेखी अलल्ल सुबह, सुबहान अल्ला तेरी वड्याईआ। मेहरवान होया वेख्या खुदा, खुद मालक दया कमाईआ। सूफ़ीआं दा बण के दिल रुबा, दिलदार दया कमाईआ। साचे नाम दी दस्स सदा, आवाज़ इक्को

इक उपजाईआ। आपणे मिलण दी बणा अदा, आदत पिछली दिती गवाईआ। सन्त सुहेले मात जगा, जागरत जोत करी रुशनाईआ। शब्दी हुक्म लए उठा, ग़फ्लत निंदरा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा रंग रिहा रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर आई बहु खुशहाली, खुशी विच दयां जणाईआ। प्रभ दे भगत प्रभ दे वेखे सवाली, दर ठांडे मँग मँगाईआ। मुहब्बत प्यार दी गाउँदे ओह कव्वाली, जो कायल कर के ज़ख़म धायल वाला लगाईआ। निरंतर उपजे धार निराली, निराकार नाल वड्याईआ। मिल के जोत अकाली, अकल कल आपणी रहे बणाईआ। जेहड़ी वस्त चौदां सदीआं मैनूं हथ्थ ना आई भाली, भज्जी नट्ठी वाहो दाहीआ। सो गुरमुखां सहज सुभाउ पा लई, करता क़ीमत ना कोए लगाईआ। मैं खेल वेख्या हाली, माज़ी झगड़ा दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या सच सवेरा, धुँदूकार नज़र ना आईआ। जन भगत गाउँदे तूं मेरा मैं तेरा, साचा ढोला धुरदरगाहीआ। पुरख अकाल कर के मेहरा, मेहर नज़र इक उठाईआ। दूर दुराडा पैंडा दस्से नेरन नेरा, नेड़ा आपणा घर समझाईआ। जिथ्थे वस्से गुरु गुर चेरा, चेला गुर इक्को जोत रुशनाईआ। भाग लग्गे धर्म दुआरे खेड़ा, काया मन्दिर अंदर खिड़की दए खुलाईआ। सदी

६७१ २१

चौधवीं कहे नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा अन्तिम वेखणा गेड़ा, चार जुग दी कथा कहाणी फोल फुलाईआ। दीन मज़हब दा मेरे साहिब मेटणा झेड़ा, झगड़ा दुनी विच्चों गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सज्जण इक अखवाईआ। सदी चौधवीं कहे सुबह होया उजाला, उजल गुरमुख वेखे चाँईं चाँईंआ। जेहड़े वसदे इक सच्ची धर्मसाला, सचखण्ड दुआरे साचे सोभा पाईआ। सोहँ जप के नाम सुखाला, सुख सागर विच डेरा लाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाला, पंच विकारा डेरा ढाहीआ। दर्शन कर पुरख अकाला, अकल कलधारी विच समाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर देंदे गए अहिवाला, रागां नादां विच सालाहीआ। सो खेले खेल पुरख अकाला, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगत सुहेला बण दलाला, धर्म दुआरे देवे माण वड्याईआ।

❋ १० पोह शहिनशाही सम्मत ४ प्रताप सिँघ दे गृह पिंड दड़ ज़िला जम्मू ❋

सदी चौधवीं कहे ईसा मूसा मुहम्मद रहे सोच, ध्यान ध्यान विच लगाईआ। परवरदिगार साडी आसा मनसा पूरी करे

लोच, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार लोचण दए वखाईआ। की खेल करना पुष्कर विच करौच, हुक्म फरमाना इक सुणाईआ। जिथ्थे साडी नहीं कोई पहुंच, सो स्वामी आपणी कल वरताईआ। असां खेल वेख्या बहुत, सदी चौधवीं बीसवीं नाल वड्याईआ। अन्त अन्धेरा होया मातलोक, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ । धुर दा कलमा भुल्लिया सलोक, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। गृह गृह वध्या हरख सोग, चिन्ता ग़म ना कोए मिटाईआ। सति धर्म दा रिहा कोई ना जोग, जुगीशर बैठे मुख भवाईआ। पुरख अकाल दी रखे कोई ना ओट, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। दरस मिले किसे ना निर्मल जोत, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ बैठे राह तकाईआ। चर्चा विच रोवण पोप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मूसा ईसा मुहम्मद रहे आख, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। बौहड़ी साडी उम्मत होई गुस्ताख़, सजदा सीस ना कोए निवाईआ। मन कल्पणा कीता बदमाश, सांतक सति ना कोए कराईआ। कूड़ कल्पणा वधी ख़ाहिश, धीरज धीर ना कोए धराईआ । सच मुहब्बत करे ना कोए तलाश, माया ममता मोह हल्काईआ। निगाह मारे ना कोई उपर आकाश, ज़िमीं असमानां पन्ध मुकाईआ। रूह बुत करे कोई ना पाक, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, सच नूर ना कोए चमकाईआ। जो भविख्तां विच आए आख, पेशीनगोईआं विच कर शनवाईआ। सो करे खेल पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। साडी करनी होणी नास, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट उडणी ख़ाक, ख़ाकसार दिसे लोकाईआ। वक्त सुहंञ्जणा सानूं याद, वेला वक्त दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर साचा इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मूसा कहे सुण ईसा साजण मीत, सच दयां समझाईआ। परवरदिगार बदलण वाला रीत, रहमत आपणी हक़ कमाईआ । मुहम्मद दी चौधवीं सदी रही बीत, अन्त किनारा नेड़े आईआ। झगड़ा मुकणा जगत मसीत, काया काअबे होए रुशनाईआ। करे खेल साहिब अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। असीं बरदे ओहदे नाचीज़, सरगुण आए सेव कमाईआ। कलमयां विच दस्स के आए तमीज़, तहिज़ीब नाल सिखाईआ। सारे हक़ ख़ुदा दे बणो अज़ीज़, आहला अदना इक्को रंग रंगाईआ। धर्म दी धार दस्स के आए हदीस, सिफ्तां विच सालाहीआ। सो खेल करे जगदीश, हरि करता बेपरवाहीआ। लहिणा देणा चुकाए बीस बीस, सरगुण लेखा आपणी झोली पाईआ। सदी चौधवीं आसा मनसा पूरी करे उडीक, तृष्ना तृखा देवे गवाईआ। कलयुग अन्तिम बदल देवे तवारीख, तरीका आपणा इक प्रगटाईआ। शाह सुल्तानां मँगावे भीख, राउ रंकां खोज खुजाईआ। कूड़ी क्रिया कर शहीद, शहादत धर्म धार उपजाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद तिन्नां आसा मनसा पूरी कर

उम्मीद, आमद वेखे थाउँ थाईंआ। धुर दा हुक्म देवे शदीद, धुर फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी खेले खेल अजब अजीब, निराली आपणी कार कमाईआ।

✻ १० पोह शहिनशाही सम्मत ४ ईशर सिँघ दे गृह पिंड दड़ ज़िला जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे ईसा मूसा मुहम्मद छड्डुण लग्गे तसबी, मणके माला वाले तजाईआ। अक्खर बदलण लग्गे अरबी, लेख लेख विच्चों समझाईआ। परवरदिगार सब दा सांझा बणया दर्दी, दीनां दा झगड़ा रिहा चुकाईआ। खेल वखा आपणे घर दी, घराने सारे वेख वखाईआ। कर प्रकाश जोत नरायण नर दी, आपणा नूर रिहा चमकाईआ। संदेशा देवण वाला जल्दी, जल थल महीअल फोल फुलाईआ। जेहड़ी धार संदेसे रही घलदी, कलमे कायनात सुणाईआ। ओह खेल करे अछल अछल्ल दी, वल छलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। सानूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, की करता कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे ईसा मूसा मुहम्मद कहे हाए रब्बा, खुदा खुद तेरी सरनाईआ। क्यों साथों जीव कराए ज़िबह, बेज़बान दिते मरवाईआ। तूं सारयां दा इक्को सांझा अब्बा, पिता पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। साडी उम्मत लग्गा धब्बा, अग्गे हो ना कोए मिटाईआ। तेरा नूर किसे ना लभ्भा, जगत अन्धेरे विच दुहाईआ। किसे दी अंदरों बदले ना तबा, तबीब तबीअत ना कोए उलटाईआ। असीं संदेसा दे के आए तेरा सद्दा, हुक्म हुक्मरान इक जणाईआ। अन्त अख़ीर सानूं समझ ना आई कोई वजह, भेव अभेव ना कोए खुल्हाईआ। किस बिध साडा मेटे अग्गा, अगली खेल ना कोए वखाईआ। भेद दस्सया नहीं प्रगट होवां केहड़ी जगह, ज़िमीं असमान ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भय विच सारे मन्नदे तेरा दब्बा, सिर सके ना कोए उठाईआ।

✻ १० पोह शहिनशाह सम्मत ४ प्रकाश सिँघ दे गृह पिंड दड़ जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे पैग़म्बरो मेरा खुदा सदा क़दीमी, क़ुदरत दा क़ादर नज़री आईआ। तुहानूं दे के विद्या अक्खरां वाली तालीमी, तमअ विच ल्या फसाईआ। माण दे के फ़र्श उत्ते ज़मीनी, ज़िमनी आपणी दिती दृढ़ाईआ। तन वजूद बख्श के

जीणी, जीवण जुगत दिती समझाईआ। आपणी धार दस्स महीनी, रस्तयां उत्ते भवाईआ। शरअ दस्स कमीनी, तत्तां नाल लड़ाईआ। जुग जुग करन वाला तरमीमी, बदला सब दा दए चुकाईआ। आपणी दस्सी नहीं किसे हलीमी, निम्रता विच निरवैर ना किसे बणाईआ। अन्त सब नूं होए ग़मगीनी, चिन्ता वेखो थाउँ थाईंआ। झगड़ा पैणा मक्का मदीनी, योरोशलम ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनहार इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे पैग़म्बरो मेरा मालक एका आदी, अन्त इक अख्वाईआ। जेहड़ा सदा करे आबादी, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। अवतारां पैगम्बरां कोलों कराए बरबादी, मानव मानव नाल लड़ाईआ। तुहानूं बणा के आपणे हाजी, दरगाह साची दिती वखाईआ। कायनात बणा फ़सादी, हुजरा काअबे वाला सुहाईआ। शरीअत विच लड़ा गवांढी, असलीअत परदा ल्या छुपाईआ। पैगम्बरो राम कृष्ण नालों तुहाडी वखरी कर के हांडी, अगनी तत दिता तपाईआ। उन्हां तों चरवाउँदा रिहा ढांडी, तुहानूं छुरीआं फड़ा के बणा दिता कसाईआ। हुण वेखो सब दी औध बीतदी जांदी, अग्गे होर ना कोए वधाईआ। तुसां बदली कीती हुक्मे अंदर प्रभ दे नाँ दी, सिफ्तां वाला ढोला गाईआ। एह खेल अगम्म अथाह दी, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। एह ख़लकत खेल अन्त फ़नाह दी, फ़िलहाल हालत ना कोए दृढ़ाईआ। जिस्म ज़मीर तक्को ते उम्मत भरी गुनाह दी, पवित्त पाक ना कोए वखाईआ। तुहाडी रमज़ नहीं कोई सुलह दी, सुल्हकुल वेख वखाईआ। तुहाडी शरअ चली मुल्ला दी, फ़तव्याँ विच दुहाईआ। तुहाडी निमाज़ चली बुल्लां दी, हिरदे हरि ना कोए टिकाईआ। अन्त खेल मुकणी छोटीआं छोटीआं कुलां दी, जो कुल्ल मालक दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अग्गे बरखा बरसावे फुल्लां दी, फुल्ल पत्ती आपणे विच्चों प्रगटाईआ।

✻ १० पोह शहिनशाही सम्मत ४ झण्डू राम दे गृह पिंड जिउड़ीआं जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे पैगम्बरो वेखो प्रभ दी मर्ज़ी, मरीज सब नूं दिता बणाईआ। तुहानूं समझ ना दिती तुहाडे घर दी, आदि अन्त ना कोए समझाईआ। मैं चार कुण्ट फिरदी रही डरदी डरदी, भय विच आपणा पन्ध मुकाईआ। शरीअत विच दुनियां वेखी लड़दी, मज़हबां विच कुरलाईआ। सति दा मिल्या कोए ना दर्दी, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। जगत अन्धेरी वेखी कलयुग कल दी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। माया ममता फिरे छलदी, वेसवा घर घर फेरा पाईआ। मैनूं याद

आई राजे बलि दी, जो बावन गया सुणाईआ। जिस वेले खेल होणी भगतां दे दल दी, सच दरबार वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मुहब्बत विच समाईआ। सदी चौधवीं कहे बावन दे के गया दलासा, बलधारी आप समझाईआ। प्रभ दे उत्ते रखो भरवासा, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम जिस ने सब दा फोलणा खाता, अक्खर अक्खर वेख वखाईआ। चौदां लोकां टोहे अहाता, चौदां तबकां परदा लाहीआ। झगड़ा मुकाए ज़िमीं साता, सत्त असमानां पन्ध मुकाईआ। वेस वटाए जोती जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। भगतां संग जोड़ के नाता, नर नरायण वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक खुल्हाईआ। सदी चौधवीं किहा की संदेसा दिता बावन, बलधारी आप जणाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरी होवे शामण, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। मात पूत सेज रावण, भैण भईआ ना कोए वड्याईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे गावण, प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। अवतार पैगम्बर रहे ना कोए ज़ामन, गुरु गुरदेव पल्लू जाण छुडाईआ। निरगुण मिले कितों ना चान्नण, अन्ध गुबार ना कोए गवाईआ। मन ममता रंग सारे माणण, हिंसा विच दुहाईआ। साची करे कोए ना वातन, तमअ कूड़ फिरे लोकाईआ। धर्म रहे किसे ना बाहमण, ब्राह्मण ब्रह्म ना कोए दरसाईआ। जगत जीव होण ना दानण, निज नैण ना कोए खुल्हाईआ। मदिरा मास करे पानण, अमृत रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सदी चौधवीं कहे बावन बलि नूं मारी मुक्की, पिठ्ठ उत्ते लगाईआ। हथ्थ रोटी वखा के सुक्की, सहज नाल समझाईआ। दो धारी कढ्ढके दुक्की, सहज दिती वखाईआ। कलयुग आसा प्रगटा के भुक्खी, परदा दिता उठाईआ। भाग लग्गा किसे ना कुखी, जननी जन दिता समझाईआ। चारों कुण्ट सृष्टी दुखी, दर्दां विच कुरलाईआ। नाम वस्त मिले किते ना मुट्ठी, भण्डारे ख़ाली रोवण मारन धाहींआ। सब दी मति होई पुठ्ठी, अक़ल बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। बावन किहा बलि पुरख अकाल वेस वटाए जुग जुगी, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जिस वेले कलयुग औध पुग्गी, वेला वक्त गया आईआ। सति धर्म जोत बुझी, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे बावन बलि दी पिठ्ठ ते रख चार उँगल , निशान दिता लगाईआ। चौथे जुग दी वेख गुंझल, गंढ्ढ सके ना कोए खुल्हाईआ। प्रभ दा नाम बाहरों सारे लँघण, अंदर टिकण किसे ना पाईआ। रसना वाला रस चुंघण, प्रेम रस ना कोए चखाईआ। नज़र आए ना नैण मूंदन, नेत्र लोचण ना कोए वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। बावन किहा बलि आह वेख मेरे पोटे, पुनह पुनह दयां जणाईआ। मेरी जान होई टोटे टोटे, मज़हबां वंड वंडाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां प्रभ दे नाम करने खोटे, खरे आपणे नाम समझाईआ। दूई द्वैत विच कसणे लंगोटे, पहलवान बण के करन लड़ाईआ। जगत जहान मारे गोते, डूँघी धार वेख वखाईआ। आत्म ब्रह्म कोई ना सोचे, पारब्रह्म ना कोए मिलाईआ। अन्तिम सारे वेखे रोते, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलयुग अन्त गुर अवतार पैगम्बर हो जाणे चोखे, पुरख अकाल आपणा हुक्म सुणाईआ। साचा वज़न कोई ना जोखे, तराज़ू हक़ ना कोए उठाईआ। आपो आपणे लिख के पोथे, पुस्तक जगत विच वड्याईआ। अन्त सारे होए थोथे, करता क़ीमत दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आपे पहुंचे, लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ।

६७६

२१

✻ १० पोह शहिनशाही सम्मत ४ सूबेदार तेजभान दे गृह बख्शी नगर जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं दरगाह साची हो उज्यार, सचखण्ड दुआर लवां अंगड़ाईआ। नेत्र लोचण नैण वेखां अक्ख उघाड़, बिन तत्तां तत प्रगटाईआ। निउँ के प्रभ दे चरण कँवल कर निमस्कार, डंडावत विच सीस झुकाईआ। हुक्म दे सच्ची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी सरनाईआ। तूं तख्त निवासी निरवैर निराकार, मेहरवान तेरी वड्याईआ। मैं जुग चौकड़ी तेरा खेल तक्कया विच संसार, नव नौ चार फोल फुलाईआ। कलयुग अन्त धूढ़ी दे छार, मस्तक टिक्का ख़ाक रमाईआ। तेरा खेल तक्कणा अगम्म अपार, अलख अगोचर परदा देणा उठाईआ। धुर संदेसा देवे आप निरँकार, हरि करता हक़ जणाईआ। सदी चौधवीं सब नूं करना ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुणया धुर फ़रमाना, धुर दी धार विच्चों प्रगटाईआ। देवणहारा नौजवाना, मर्द मर्दाना सोभा पाईआ। जो वस्से सचखण्ड मकाना, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। जिस ने बदल देणा ज़माना, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। शब्द संदेसा दे फ़रमाना, फ़ुरने कूड़े बन्द कराईआ। मानव रहिण देवे ना कोए बेगाना, हरिजन आपणे नाल जुड़ाईआ। शब्दी दे के राग तराना, तुरिया तों परे दए समझाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत महाना, बिन तेल बाती डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं संदेसा देणा विष्नूं धार, विश्व विच जणाईआ। ब्रह्मा वेता करना ख़बरदार, पूरब

६७६

२१

परदा आप उठाईआ। शंकर आपणा बल धार, निरगुण धार लए अंगड़ाईआ। सुरप्त इन्द कर प्यार, प्रेम प्रीती देणा समझाईआ। करोड़ तेतीसा लैणा नाल, बचया रहिण कोए ना पाईआ। छब्बी पोह दिवस लैणा विचार, विच्चर के सब नूं दयां समझाईआ। सब ने आउणा पन्ध मार, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। वेखणा खेल सच्ची सरकार, हरि करता आप कराईआ। भाग लगाउणा भगत दुआर, भगवन मिल के वज्जी वधाईआ। जुग बीत गए नौ सौ चुरानवे चौकड़ी विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कहिणा सन्त कुमार, सच सच सुणाईआ। ब्राह उठ के हो त्यार, आपणा पन्ध मुकाईआ। हाव गरीव चलणा नाल, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। यज्ञे पुरुष तेरा खेल कमाल, भेव अभेदा दयां खुलाईआ। नर नरायण मेरे दातार, लोकमात लै अंगड़ाईआ। दत्ता त्रै वेख विवहार, विवहारी हो के दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सब नूं कहिणा पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। उठो जगत दयो अवतार, आपणा रूप बदलाईआ। रिखभ देव ख़बरदार, पृथू साचा संग समझाईआ। मत्स करनी ना पए विचार, कच्छप भज्जणा वाहो दाहीआ। धनंतर नैण लैणा उघाड़, बावन आपणा राह तकाईआ। हँस होणा तूं हुश्यिार, मन मति बुद्धी तों परे दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, गृह तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नर सिँघ नूं कहिणा नाल ज़ोर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। हरी हरि नूं लैणा तोर, लेखा मुक्के चाँईं चाँईंआ। नर नरायण पकड़नी डोर, तन्द सितार लैणी जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र लैणी उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कहिणा दसरथ बेटे रामचन्द, चन्द चांदना वेख वखाईआ। जो तूं गाया अगम्मी छन्द, ढोला राग अलाहीआ। अन्तिम वेख परमानंद, निजानंद दा डेरा ढाहीआ। परस राम लैणा संग, सोहणा संग वखाईआ। जिस कारण कीता जंग, युद्धां विच लड़ाईआ। सो वेखणा साहिब सूरा सरबंग, निरगुण धार नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुनेहड़ा देणा वेद व्यास, बिना विद्या तों देणा समझाईआ। उठ कलयुग वेख आई प्रभास, प्रभाती आपणा रूप बदलाईआ। काहना कृष्णा लैणा साथ, त्रैलोकी नंदन नाल जुड़ाईआ। जो भविख्तां विच गया आख, संदेसा लोकमात समझाईआ। सो लहिणा देणा पूरा करे पुरख समराथ, हरि दाता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कहिणा जा के मूसा, मुसलसल देणा जणाईआ। बस्तर पहन लै काला सूसा, सोहणा आपणा रंग बणाईआ। वेख खेल बिना पंज भूता, तत वजूद नज़र

ना आईआ। निगाह फेर चारे कूटा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फोल फुलाईआ। तेरा बचन होवे ना झूठा, परवरदिगारा सच कराईआ। दीन दुनी दा वेख ठूठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। मैं संदेसा देणा ईसा, ईसुलसलाम दयां जणाईआ। उठ तक लै आपणा बीसा, दूआ ज़ीरो नाल वड्याईआ। सब दा ख़ाली होया ख़ीसा, कलमा हक़ ना कोए रखाईआ। दीन दुनी बदली नीता, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। तेरे वास्ते साढे तिन्न हथ्थ दा फीता, साढे तिन्न इंच रूप बदलाईआ। भेव खोल्हणा जीव जी का, चुरासी परदा देणा उठाईआ। जिस दे नाल ला के गए प्रीता, सो प्रीतम वेख वखाईआ। पिछला समां सब दा बीता, कलयुग अन्त दए गवाहीआ। अग्गे बदल जाणी रीता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़ा मुकाए मन्दिर मसीता, मसला इक्को इक समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कहिणा मुहम्मद यार, याराना धुर दा वेख वखाईआ। करे खेल परवरदिगार, बेऐब नूर अलाहीआ। जिस नूं सजदे कीते वारो वार, बिन क़दमां सीस निवाईआ। सो खेल करे करतार, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। अन्त अख़ीरी पावे सार, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। मेरे दिन थोड़े रह गए विच संसार, लेखा अवर ना कोए वधाईआ। नेत्र रोवां धाहां मार, नैणां हन्झूआं धार बणाईआ। तेरा भविख्त रही विचार, अक़ल बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। चारों कुण्ट धूआँधार, चौदस चन्द ना कोए चमकाईआ। साचा दिसे ना कोए ख़िदमतगार, ख़ादम रूप ना कोए बणाईआ। मैं कर कर थक्की इंतज़ार, नेत्र नैण रही उठाईआ। किस वेले प्रगट होवे सांझा यार, लाशरीक नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हर दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं कहिणा नानक गोबिन्द, धुर दा हुक्म सुणाईआ। पुरख अकाल खेल करे गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। भाग लगाए भारत हिन्द, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, गहर गम्भीर दया कमाईआ। जन भगत बणाए आपणी बिन्द, गुरमुख साचे लए प्रगटाईआ। जन्म कर्म दी मेट के चिन्द, चिन्ता चिखा विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे सुणो अवतार पैगम्बर गुर, गुरदेव दयां जणाईआ। पूरब नाता वेखो धुर, धुर मस्तक फोल फुलाईआ। जिस दी सब नूं पई लोड़, हरि करता नूर अलाहीआ। उस दे अग्गे नहीं ज़ोर, जोरू ज़र सीस निवाईआ। सो चार कुण्ट वेखणहारा कर के ग़ौर, दीन दुनी फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं जाए बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी वेखे करदी लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं संदेसा देवां सुंहञ्जणी रात, भिन्नड़ी

नाल रलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां धर्म धार दी लै के आउणा सौग़ात, सच संदेसा रही सुणाईआ। निरअक्खर पढ़ के आउणा प्रभू दी अगम्मी विच्चों लुग़ात, जिथ्थे अक्खर भेव कोए ना पाईआ। सब दी सांझी होए जमात, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउणी गाथ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। लोकमात इक बणाउणी जमात, दूजा हिस्सा ना कोए वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरो पुरख अकाल दीन दयाल नाल जोड़ना नात, परवरदिगार सांझा यार इक समझाईआ। फेर दस्सां अनोखी बात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचे मण्डल पावे आपणी रास, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान दो जहान मर्द मर्दान श्री भगवान आपणा नाच नचाईआ।

* ११ पोह शहिनशाही सम्मत ४ अजमेर सिँघ दे गृह गांधी नगर जम्मू *

सदी चौधवीं कहे परवरदिगार मैथों रिहा पुच्छी, दीन दुनी लोकमात जगत की वड्याईआ। मैं निरमाणता विच चरणां उत्ते झुकी, डंडावत बन्दना सजदा कर के सीस झुकाईआ। नेत्र रो के किहा चार वरन अठारां बरन वेखे दुखी, सांतक सति ना कोए कराईआ। धर्म दी धार औध दिसे मुकी, कूड़ी क्रिया चार कुण्ट नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कर के आए छुट्टी, लोकमात वेखण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म सब दी प्रीत टुट्टी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सच सुहञ्जणी सोहे कोए ना रुती, रुतड़ी नाम ना कोए महकाईआ। दुनियां ग़फ्लत अंदर सुत्ती, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। जो भेज्या सो कर के आया बुत्ती, बुतख़ान्यां आया तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार पैगम्बरां वंडण वंड वंडी जुस्सीं, तन वजूद हिस्से आए पाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं पवरदिगार लाया अग्गे, शब्द इशारा इक दृढ़ाईआ। सच दस्स जोत कवण दुआरे जगे, चौदां तबक ध्यान लगाईआ। मैं रो के किहा परम पुरख कलयुग जीव माया ममता अगनी तपे, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। किसे नूं तेरा दरस ना होए उपर शाह रगे, नौ दुआरे पन्ध ना कोए मुकाईआ। मन वासना विच चार वरन बद्धे, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश पल्लू ना कोए छुडाईआ। काम क्रोध लोभ मोह अंदर बज्झे, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। अमृत नाम मिले ना किसे रसे, रस्ता रहिबर ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट फिरदे नट्ठे, ममता मोह फिरी दुहाईआ। तन वजूद काया चीथड़ सब दे फट्टे, मजीठी रंग ना कोए चढ़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठे, गुरदुआर गुरदेव नज़र कोए ना आईआ। साध सन्त सूफ़ी फ़कीर कलयुग अन्त

घर घर मँगदे फिरदे टके, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरे हो गए पटे, उत्ते मुद्दत ना कोए वधाईआ। किरपा कर साहिब स्वामी झटे, झटका खा खा थक्की जगत लोकाईआ। तेरे नाम दी थाँ खांदी कट्टे वच्छे, शरअ छुरी जगत विच कसाईआ। मैनूं चौदां सदीआं दिन गिण गिण टप्पे, टापूआं विच भज्जी थाउँ थाईंआ। कवण वेला साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी लभ्भे, परवरदिगार सांझा यार जल्वागर नज़री आईआ। चार जुग जो आया सो कर के गया दग़े, फ़रेबां विच सब नूं गया फसाईआ। दीन मज़हब दे भार लद्दे वांग गधे, गदागर कीती लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच दुआर एकँकार तेरा किसे ना लभ्भे, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी अक्खरां विच संदेसा रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं खुदा ने सद्दिया उपर अम्बर, रहमत हक़ कमाईआ। की खेल हुंदा मुनारे मम्बर, परदा देणा चुकाईआ। की लहिणा देणा मुहम्मद उम्मत टब्बर, रसूल लिल्ला कर समझाईआ। मैं रो के किहा तेरां सौ अठासी साल बैठी रही कर के सबर, सिदक सबूरी तेरा नाम रखाईआ। हुण जिधर वेखां चारों कुण्ट प्या ग़दर, धूंआँधार ना कोए मिटाईआ। शाह पातशाह राज राजान करे कोई ना अदल, कूड़ी क्रिया घर घर होई हल्काईआ। किरपा कर मेरे साहिब स्वामी कलयुग विच सतिजुग दे बदल, धर्म दुआरा अन्त प्रगटाईआ। चार वरन अठारां बरन खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश तेरी सरन लगण, एकँकार तेरा इक्को इष्ट मनाईआ। काया मन्दिर अंदर आत्म परमात्म पावे सगन, नाता धुर दा बाहमी लै जुड़ाईआ। जिधर वेखां तेरे दीपक जोती जगण, जगत अन्धेरा दे गवाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुर गुर हरिजन भगत सुहेले तेरे प्रेम अंदर होवण मग्न, नाम खुमारी आपणी दे चढ़ाईआ। काया माटी तन वजूद पंज तत अंदरों पवित्र कर बदन, दुरमति मैल दुराचारी दे गवाईआ। मन कल्पणा नाम खण्डे कर क़त्ल, क़ातल मक़तूल आपणा हुक्म वरताईआ। चौथे जुग गुर अवतार पैगम्बरां चले कोई ना यतन, यथार्थ तेरा दरस कोए ना पाईआ। सारी दुनियां दृष्टी अंदर होई बेवतन, सचखण्ड दुआर एकँकार नज़र किसे ना आईआ। मेरा अन्त अख़ीरी इक्को घाट ते इक्को पतण, इक्को तट सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं पुच्छे पुरख अगम्म, हरि करता धुरदरगाहीआ। की गुर अवतार पैगम्बरां कीता कम्म, मैनूं दे समझाईआ। मैं नेत्र रो के छम्म छम्म, मैं हन्झू दिते वहाईआ। चारों कुण्ट प्या ग़म, चिन्ता चिखा रही जलाईआ। घर घर वधे तृष्ना तम, माया ममता मोह हल्काईआ। पवण स्वास तेरा नाम लए कोए ना दम, वरन गोत पल्लू ना कोए फड़ाईआ। तेरे गुर अवतार पैगम्बर

तन वजूद माटी ख़ाक वंड के आए चम्म, दीन मज़हब जगत नाम धराईआ। जिधर तक्कां चार कुण्ट अन्धेरा साचा दिसे कोए ना चन्द, नूरी नूर ना कोए डगमगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दोए लोचन हुन्दयां सृष्ट सबाई होई अन्न्, निज नेत्र तेरा दरस कोए ना पाईआ। किरपा कर परम पुरख श्री भगवन, दर तेरे सीस झुकाईआ। दीन दुनी दा बेड़ा बन्न्, नाम भण्डारा दे धन, शब्द अगम्मी नाद सुणा बिना कन्न, जोत प्रकाश कर बिना छप्परी छन्न, परदा रहे ना हँ ब्रह्म, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणे रंग रंगाईआ।

✻ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ४ केसरी देवी सतवारी जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद पुच्छे मैनूं दस्स दीन दुनी दा अक़ीदा, अक़ीदत विच कवण वड्याईआ। कवण दुआर वेखी धुर दी साची ईदा, आदत इबादत विच बदलाईआ। की उम्मत ख्वाहिश अन्त उम्मीदा, पर्दा उहला दे चुकाईआ। की कलमा सिफ्त करे तमहीदा, कायनात दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या ला के नीझा, लोचन नैण नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। अन्त अख़ीर खेल होया पेचीदा, परदा सके ना कोए खुल्हाईआ। दुनियां सुत्ती ग़फ्लत वाली नींदा, बेदार ना कोए कराईआ। मुर्दा मुरीद बणे कोई ना जींदा, मर जीवत रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साजण खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं की उम्मत वेख्या हाल, हालत सब दी दे समझाईआ। की घालण आई घाल, चार कुण्ट आपणा पन्ध मुकाईआ। की हक़ीक़त वाला वज्जे ताल, हक़ हक़ देणा समझाईआ। की जो मैं सिख्या आया सिखाल, क़ाइदे क़ानूंन विच दृढ़ाईआ। की सारे झुक के करन सलाम, सजदयां विच सीस निवाईआ। की राह तक्कण अगम्मी अमाम, जो जल्वागर नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद विगड़ गया निज़ाम, भय भउ ना कोए रखाईआ। अन्तर वस्से ना किसे कलाम, कायनात पई दुहाईआ। आबेहयात पीवे कोए ना जाम, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। मन कल्पना सारे कीते ग़ुलाम, शरअ ज़ंजीर ना कोए तुड़ाईआ। तेरा नाउँ करन बदनाम, बदी घर घर डेरा लाईआ। हक़ीक़ी सुणे ना कोए पैग़ाम, रसना जिह्वा ढोले सारे गाईआ। हुजरा हक़ मिले ना कोए निशान, महबूब मिलण कोए ना पाईआ। मैं वेख होई हैरान, हैरानी मेरे अंदर आईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, मुल्ला शेख़ मुसायक रहे कुरलाईआ। फिरी दरोही ज़िमीं असमान, चौदां तबक रोवे मारे धाईंआ। परवरदिगार वेखणहारा दो जहान, निरगुण आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता इक अख्वाईआ।

सदी चौधवीं उम्मत वेखे केहड़ा काअबा, अमलां विच देणा दृढ़ाईआ। केहड़ा तक्कण शहिनशाह नवाबा, जो नौबत नाम हक़ सुणाईआ। केहड़ा अमृत पीवण दो दोआबा, जो जीवण ज़िंदगी दए बदलाईआ। कवण अक्खर पढ़न उत्ते किताबा, अलिफ़ ये समझ किसे ना आईआ। कवण सीस निवाए विच महिराबा, हुजरे बहि के खुशी बणाईआ। कवण सजदा करे आदाबा, क़दमबोसी विच वड्याईआ। कवण छड्ड के बैठा इश्क हक़ीक़ी नाल मजाज़ा, दोहां तों परे नूर जोत रुशनाईआ। कवण साचा रोज़ा रखे पढ़े निमाज़ा, वेला वक्त पंज पंज शनवाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद एह तेरा पूरा होवे ना ख्वाबा, ख़ालस नज़र कोए ना आईआ। उच्ची कूक सुणाए माई हव्वा प्रभ बुड्ढा आदम बाबा, बौहड़ी बौहड़ी कर जणाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लेखा जाणे दो दो आबा, शाह सुल्ताना नूर अलाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा फिरे भाजा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक सुहाईआ। सदी चौधवीं दस्स बख्शणा केहड़ा हुजरा, हुज्जत नज़र कोए ना आईआ। कवण खुशीआं वाला मुजरा, मुहब्बत विच नाच नचाईआ। किथ्थे लेखा चार यारी उमरा, बैठा सोभा पाईआ। किथे खेल मुहम्मद अहमद हमरा, हर हिरदे देणा दृढ़ाईआ। क्यों सृष्टी दृष्टी होई गुमराह, सिर भय ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मदा तेरी उम्मत भुल्ली राह, रहिबर वेखण कोए ना पाईआ। तूं दस्स के आया मन्नणा इक खुदा, नूर ज़हूर नूर रुशनाईआ। सारे मक़बरिआं सीस रहे झुका, क़बरां विच बेसबर डेरा लाईआ। किसे दी क़बूल ना होवे दुआ, दरगाह साची वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं की मेरा हुक्म माअक़ूल, चार कुण्ट देणा समझाईआ। दीन दुनी मन्ने सच असूल, असलीअत भेव देणा खुलाईआ। क़दमबोसी धूढ़ी टिक्का लावे धूल, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। सदी चौधवीं किहा सब दा माणस जामा दिसे फ़ज़ूल, फ़ज़ल रहमत ना कोए कमाईआ। तेरा कलमा कायनात गई भूल, अभुल्ल समझ कोए ना पाईआ। असल रिहा किसे कोल ना मूल, धुर दा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद मैंथों की रिहा पुच्छ, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। उम्मत उम्मती गई रुस्स, रुस्सयां मेल ना कोए मिलाईआ। मैं निमाणी मेरी बुद्धी तुछ, वरनण कर ना कुछ सुणाईआ। उठ वेख आपणी धार रहु ना लुक, परदा उहला आप चुकाईआ। धुरदरगाही रिहा कोई ना झुक, सजदा सीस ना कोए निवाईआ। सारे भुल्ल गए आत्म परमात्म दी तुक, तूं मेरा मैं तेरा धुर दा राग ना कोए सुणाईआ। एसे कारण सब दा पैंडा रिहा मुक, अन्त अख़ीर वेला नज़री आईआ। मैनूं चार कुण्ट

वेख होवे दुःख, दहि दिशा हैरानी अंदर आईआ। सच धर्म दा रिहा कोई ना सुत, अपराधी कूड़ होई लोकाईआ। जिस कारण कटाई मुच्छ, लबां दुनी वंड वंडाईआ। ओह बूटा रिहा सुक्क, आबेहयात जाम ना कोए प्याईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार बदल के आपणा रुख, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी कल वरताईआ। जोती जाता पुरख बिधाता सचखण्ड दवारिउँ आपे उठ, दरगाह साची लए अंगड़ाईआ। जगत इछिआ मन कामना वेखे जूठ झूठ, तन वजूद माटी ख़ाक फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद वेख आपणी कुल्ली, कायनात ध्यान लगाईआ। चौदां तबक तेरी धार रहे ना भुल्ली, अभुल्ल परदा देणा उठाईआ। सति धार दी दिसे कोई ना गुल्ली, अनरस हथ्थ किसे ना आईआ। सारे कलमा पढ़दे बुल्लीं, अन्तर निरंतर ना कोए वसाईआ। बेशक तेरी फुलवाड़ी फली फुली, प्रफ़ुल्लत नज़री आईआ। अन्त माटी ख़ाक मिलणी जुल्ली, ओढ़ुन अवर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दृष्टी वेखे रुली, चार कुण्ट दह दिशा निरगुण हो के सरगुण वेख वखाईआ।

* ११ पोह शहिनशाही सम्मत ४ जसवन्त कौर दे गृह कोठा निहालपुर सिम्बल जम्मू *

सदी चौधवीं कहे मुहम्मद वेखे उत्ते बसुधा, ज़मीन धरती ख़ाक ध्यान लगाईआ। ज़ईफ़ उलउमर होया अन्तिम बुढ्ढा, बलहीण रिहा सुणाईआ। मेरा तन वजूद होया कुब्बा, काअबे वाला हुजरा दए गवाहीआ। परवरदिगार दा समझया कोई ना मुद्दा, मुद्दत तों बैठा ध्यान लगाईआ। की लहिणा देणा लेखा नाल बुधा, परदा सक्कया ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद धरती उत्ते मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। सति सच दा दिसे ना कोए निशान, निशाना जगत गया बदलाईआ। धुर दा कलमा पढ़े ना कोए कलाम, कायनात रही कुरलाईआ। सजदा सीस ना कोए सलाम, सही सलामत नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा प्या जगत अवाम, नेकी बदी रही कुरलाईआ। शरअ ज़ंजीर कीता गुलाम, बंधन सके ना कोए तुड़ाईआ। नज़र आए ना निगाहबान, निज लोइण ना कोए रुशनाईआ। चारों कुण्ट दिसे वैरान, वैरी घर घर डेरा लाईआ। असल वसल मिले ना किसे मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल धुर दा हरि, निरगुण दाता निरवैर वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद धरती वल रिहा तक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। उम्मत उत्ते प्या शक्क, शिकवा सके ना कोए गवाईआ। हक़ीक़त मिले किसे ना हक़, सति सच ना कोए वड्याईआ । अन्तिम खेड़ा हुंदा दिसे भठ, कलयुग अगनी रिहा डाहीआ। चौदां तबकां वेख्या नठ, बण पाँधी पन्ध मुकाईआ। सच नगार लग्गे कोई ना सट्ट, हुजरा हक़ ना कोए वड्याईआ। अन्त जोड़ के दोवें हत्थ, बरदा हो के सीस निवाईआ। तूं साहिब सर्ब कला समरथ, बेअन्त तेरी सरनाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा रख, ढहि ढहि लागे पाईंआ। चार दीवार रिहा ना हट्ट, साची वस्त ना कोए वरताईआ। मेरा वेला रिहा टप, अन्त अख़ीरी सोभा पाईआ। तूं निरगुण धार रखणी पत, पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ । तेरा खेल अलखणा अलख, अलख अगोचर कहिण कोइ ना पाईआ। मैं जगत मसले बिना मसले सारे देणे ठप्प, बन्दगी तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। मुहम्मद कहे मैं धरती उत्ते मारी झाकी, अनडिठी अक्ख खुल्हाईआ। तन वजूद तक्कया दीन दुनी ख़ाकी, रूह बुत वेख वखाईआ। लहिणा देणा लेखा किसे ना बाकी, हिसाब हत्थ ना कोए फड़ाईआ। दीन मज़हब विच आई गुस्ताख़ी, गुस्से भरी लोकाईआ। अन्त अख़ीर करे कोई ना राखी, रखक हो के सिर हत्थ ना कोए टिकाईआ। झगड़ा मुके ना ज़ात पाती, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। बिन शब्दी धार साचा रिहा कोई ना साकी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद कहे क्यों धरनी पाई वंडा, कलमयां विच शनवाईआ। जां तक्कां दो जहानां शब्दी धार दिसे खण्डा, गोबिन्द गुर गहर गम्भीर रिहा चमकाईआ। जिस ने छड्डुया पुरी अनन्दा, अनन्द प्रभ दे विच समाईआ। अन्त वेखणहार दृष्टी इष्टी विच वरभण्डा, नव सत्त फोल फुलाईआ। जिहनूं झुकदे तारा चन्दा, सुर्या बैठा सीस निवाईआ। सो साहिब सतिगुर दीन दयाल बण बख़्शंदा, बख़्शिश रहमत आप कमाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सब दा सीस होणा नंगा, ओढ़ुन नाम नज़र कोए ना आईआ। लेखा मुकणा जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, तीर्थ तट देण दुहाईआ। भेव खुल्हाए सूरा सरबंगा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। मुहम्मद कहे मैं जिधर तक्कां मैनूं दिसे दंगा, सति सति ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजी धार नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद वेखे मेरी पूरी होई शर्त, शरअ शरीअत रहिण ना पाईआ। परवरदिगार आवे परत, जल्वागर नूर अलाहीआ। कूड़ी क्रिया मेटे गरद, क़ज़ा कसाई दए उठाईआ। चार वरनां वंडे दरद, दीन दुखी गोद टिकाईआ। माया ममता मेट

के मर्ज़, मज़ा आपणा नाम दए चखाईआ। धुर दा खेल करे असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। चार जुग दी पिछली कढुके फ़रद, तेई अवतारां लहिणा झोली पाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद होए कोए ना हरज, हरजाने सब दे वेख वखाईआ। नानक गोबिन्द जो कर के गया अर्ज़, बेनन्ती सच सुणाईआ। सो खेल करे अर्शां दा मालक उपर धरत, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण मर्द, शब्दी डंका इक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त हुक्मे अंदर एथे ओथे दो जहान पैण ना देवे फर्क, फ़िरकेदारी कूड़ी मेट मिटाईआ।

✻ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ४ भगत सिँघ दे गृह पिंड कीर जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे पुरख अकाल मेटिआ मेरा संसा, चिन्ता अंदरों दिती गवाईआ। चार वरन अठारां बरन बणावां साचा बंसा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश मेल मिलाईआ। सति धर्म दी प्रगट कर के अंसा, सन्त सुहेले मात वड्याईआ। माया ममता मोह विकार हँकार करां अन्ता, सृष्टी दृष्टी अन्तश्करन दयां बदलाईआ। बोध अगाधा हो के पंडता, नाम संदेसा धुर दा कलमा दयां दृढ़ाईआ। हरिजन बणा के साचा हँसा, काग बुद्धी डेरा ढाहीआ। सतिजुग सच बणा के बणता, धर्म दुआरा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता इक रघुराईआ। सदी चौधवीं कहे पुरख अकाल किरपा करदा, करनहार वड्डी वड्याईआ। सब दा साफ़ करे हिरदा, दीन दुनी खोज खुजाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण धार रहे फिरदा, गुर अवतार पैगम्बर नाउँ धराईआ। भेव खोले आपणे घर गृह निरवैर निर दा, निरँकार आपणी कार कमाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गेड़ा रिहा गिड़दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे पुरख अकाल मैनूं देवे हक़ प्यार, मुहब्बत विच जणाईआ। कूड़ी क्रिया करां खुआर, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा होए उज्यार, धरनी धरत धवल धौल सोभा पाईआ। सब दा इष्ट होवे पुरख अकाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सच दुआरा इक्को होवे धर्मसाल, चार वरन बहि के आपणा एका इष्ट मनाईआ। किरपा करे सतिगुर शब्द कृपाल, किरपन वेखे चाँईं चाँईंआ। लहिणा देणा चुकाए दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल, ज़िमीं असमान डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे पुरख अकाल मेरे अंदर

खोल्ह जाग, जागरत जोत कीती रुशनाईआ। सच मुहब्बत दा दे वैराग, बिरहों चोट इक लगाईआ। दीन मज़हब दा कर तिआग, उम्मत झगड़ा रहे ना राईआ। सति धर्म जगा चराग़, कलयुग अन्धेरा देणा मिटाईआ। हँस बुद्धी बणाउणी काग, काग हँस रूप बदलाईआ। सतिजुग साची साजण साज, सति दुआरा इक खुल्हाईआ। चार वरन बणे इक समाज, आत्म ब्रह्म परदा देणा उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सांझी होए आवाज़, रसना रस देणा चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे पुरख अकाल आपणा भेव रिहा खोल्ह, पर्दा उहला हक़ चुकाईआ। साचे नाम दा वज्जे ढोल, दो जहानां करे शनवाईआ। भगत भण्डारा देवे खोल्ह, निरगुण सरगुण आप वरताईआ। वस्त अगम्म अनमोल, अनडिठी झोली पाईआ। सदा सदा सद वसां भगतां कोल, निज घर बैठा डेरा लाईआ। परमात्म हो के जावां मौल, आत्म आपणा रंग वखाईआ। खेलां खेल उपर धौल, धरनी धरत आसा मनसा पूर कराईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा करां बोल, भविख्तां दा लेखा लिख्तां विच दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण बैठा रहे अडोल, सचखण्ड दुआर एकँकार इक इकल्ला सच महल्ला आपणा आप सुहाईआ।

६८६
२१

❊ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ४ सेवा सिँघ दे गृह पिंड कीर जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे पुरख अकाला धुर दा राही, रहिबर आदि अन्त अखवाइंदा। जिस नूं सारे कहिंदे माही, महबूब मुहब्बत विच समाइंदा। मालक बण के धुरदरगाही, दो जहानां वेख वखाइंदा। जुग जुग बदलणहारा शाही, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप उलटाइंदा। शास्त्र सिमरत जिस दी देण गवाही, गुर अवतार पैगम्बर सिफ्त सालाहइंदा। जिस दे चार जुग नाम दुहाई, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। सद वस्से निहचल धाम अगम्म अथाही, दरगाह साची सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच सच वड्याइंदा। सदी चौधवीं कहे पुरख अकाल मेरा दर्दी, दरदवंद इक अखवाइंदा। मैं गोली ओसे घर दी, जो गोलक नाम भराइंदा। सद भय विच रहां डरदी, जो भय भउ सर्ब वखाइंदा। ओसे दी याद रहां करदी, जो नित नित वेस वटाइंदा। ओसे दी पट्टी रहां पढ़दी, जो पारब्रह्म अखवाइंदा। ओसे दी चोटी रहां चढ़दी, जो सच दुआरे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, हरि करता इक अखवाइंदा। सदी चौधवीं कहे मेरा मालक धुर दा पूजनीक, पतित पावन नज़री आईआ। आदि जुगादि लाशरीक, शरकत वंड ना कोए वंडाईआ। सब दी मनसा पूरी करे उम्मीद, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। दीन दुनी दी ग़फ्लत विच्चों खोल्हे नींद, नेत्र लोचण नैण इक चमकाईआ। जिस दी सदी जांदी बीत, बीती आपणी कहाणी रही सुणाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग लावे रीत, मार्ग धुर दा इक उपजाईआ। आत्म परमात्म दस्स के प्रीत, नाता धुर दा लए जुड़ाईआ। कर के काया ठांडी सीत, अगनी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर मेरा मालक वजावे ताड़ी, बिन हथ्थां हथ्थ लगाईआ। प्रकाश कर के नाड़ी नाड़ी, अन्ध अज्ञान दिता गवाईआ। मैं भुल्ल गई वरन बरन मज़हबां वाली अखाड़ी, गृह इक्को वेख वखाईआ। जिथ्थे जगे जोत निरँकारी, निरवैर सोभा पाईआ। उस दे चरण कँवल बलिहारी, निउँ निउँ लागां पाईंआ। कलयुग अन्तिम ओसे दी वारी, वारता पिछली वेख वखाईआ। लेखा जाणे जगत जुआरी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद चरण कँवल बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ।

✻ ११ पोह शहिनशाही सम्मत ४ शिव सिँघ दे गृह सई कैंप जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं पुरख अकाल अग्गे कीती अर्ज़, आरज़ू तमन्ना आपणी दिती दृढ़ाईआ। परवरदिगार सांझे यार, गुर अवतार पैगम्बरां वेख गर्ज़, गर्ज़े कि सारे तेरी ओट तकाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। तेरा जुग चौकड़ी खेल असचरज, अचरज लीला आपणी दए वरताईआ । क्यों दीन मज़हब ज़ात पात मानव पाया फ़र्क, फ़िरक्यां विच वंड वंडाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर कूड़ी क्रिया करदे तरक, तुरत आपणा हुक्म सुणाईआ। मेरी दुहाई उत्ते अर्श, फ़र्श निउँ निउँ सीस झुकाईआ। अमृत अगम्मा मेघ बरस, अगनी तत देणा गवाईआ। तुध बिन करे कोई ना तरस, रहमत रहीम ना कोए जणाईआ । सब दा पूरा कर पिछला क़र्ज़, मक़रूज़ आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे मालक नौजवाने, हरि करते तेरी शरनाईआ। दीन दुनी दे वेख ख़ाने, मुख़ातब हो के दे दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर भविख्तां दा दे के गए बयाने, भेव अभेदा अगला दे जणाईआ। चार कुण्ट दह दिशा कलयुग कूड़े मेट दे निशाने,

धर्म निशाना इक वखाईआ। जुग चौकड़ी बदलदे वेखे बेअन्त ज़माने, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा फेरा पाईआ। तुध बिन अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर ना कोई पहचाने, नेत्रहीण होई लोकाईआ। किरपा कर शहिनशाह सुल्ताने, हरि सतिगुर तेरी वड वड्याईआ। जनभगत सुहेले लोकमात ना रहिण बेगाने, सच दुआरे मेला लैणा मिलाईआ। निरंतर हो के दस्सणे ब्रह्म तराने, तुरिया तों अग्गे करनी पढ़ाईआ। तेरा निरगुण नूर जोत जगे महाने, चारों कुण्ट कुण्ट रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे खेल आपणा दस्स फ़रमान, फ़रमांबरदार हो के सीस निवाईआ। की लेखा जीव जहान, चार कुण्ट परदा दे उठाईआ। पुरख अकाल कहे संदेसा देवां धुर फ़रमान, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बर दे के गए बिआन, लहिणा देणा सब दा झोली पाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त काया काअबा वेख मकान, मक़बरे दीन दुनी फोल फुलाईआ। नेत्र नैण तक्कां फ़लक ख़लक उपर असमान, ज़िमीं ज़मां वेख वखाईआ। मेरा लहिणा देणा निरगुण सरगुण आदि जुगादी दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी कार कराईआ। नित नवित्त धर्म दी धार देंदा रहवां दान, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट चार वरन लवां छाण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत सुहेले लोकमात पहचान, पर्दा अंदरों दयां उठाईआ। घर स्वामी मिल के राम, सीता सुरत लवां प्रनाईआ। नज़री आ के धुर दा काहन, घनईआ नईआ इक वखाईआ। सच संदेसा दे पैग़ाम, पैगम्बरां वेखां थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दा मालक बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे पुरख अकाला दीन दयाला धर्म धार दा दिसे जोगी, जोगीशरां दए वड्याईआ। आत्म परमात्म निरगुण धार दा दिसे भोगी, जगत वासना सेज ना कोए हंढाईआ। आत्म परमात्म बण के धुर संजोगी, जुग चौकड़ी विछड़े मेल मिलाईआ। नाम संदेसा दे के अगाध बोधी, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। भेव चुका के लोक परलोकी, ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाईआ। साचा कलमा दस्स सलोकी, धुर दा ढोला इक सुणाईआ। पुरख अकाला ठाकर बण के मौजी, मौजूदा आपणा दरस वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां हिरदा रिहा सोधी, सुध विच बुद्धी उजल दए कराईआ।

६८८ २१

भगतां दी माता दा इक्को मता, दूजी सलाह ना कोए वखाईआ। नाता छड्ड के पंज तत्तां, जगत जहान करे जुदाईआ। पुरख अकाल चुक्के हथ्थां, मेहरवान आपणा रंग रंगाईआ। जिस हिरदिउँ इक वार टेक ल्या मथ्था, चुरासी विच फेर कदे ना आईआ। सदा चरण कँवल दुआरे रखां, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां भगतां नूं सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै जपाया टप्पा, ब्रह्मण्ड खण्ड टापूआं तों परे आपणे घर वसाईआ।

✻ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ तेज भान दे गृह सई कैंप जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं बचन अगम्मे सुणे, बिन सरवण प्रभ ने दिते जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां तों लेखा मँगे हुणे, अनहोणी आपणी कार कमाईआ। जिस कारण सृष्टी दे पाए गुणे, हिस्सिआं विच वंड वंडाईआ। तुसां गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेले सूफ़ी कितने चुणे, मैनूं लेखा दयो वखाईआ। चार वरन अठारां बरन क्यों अन्त अख़ीरी बणे बुरे, बुरयाई आपणे तन सुहाईआ। तुहाडे हुन्दयां माणस दिसदे क्यों निगुरे, गुरदेव स्वामी इष्ट ना कोए मनाईआ। चारों कुण्ट सति धर्म हुंदा दुरे, दुराचार करन लड़ाईआ। क्यों शरअ वाले चलदे छुरे, शरीअत करे लड़ाईआ। मन्त्र हक़ किसे ना फुरे, फ़ुरना मन ना कोए तजाईआ। वहिंदे वहिण जांदे रुढ़े, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। आत्म परमात्म किसे ना जुड़े, धुर दा मेल ना कोए मिलाईआ। सच वस्त तों सारे दिसण थुड़े, अगम्म झोली ना कोए भराईआ। कूड़ी क्रिया करनों मूल ना मुड़े, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुणी आवाज़ धीमी, धर्म धार जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो क्यों पाई नीवीं, सिर सके ना कोए उठाईआ। आत्म मुहब्बत विच रही किसे ना तीवीं, तींमत रंग ना कोए रंगाईआ। मस्ती विच ना होई खीवी, ख़ैरखाही नज़र कोए ना आईआ। वेखो आपणी सदी सदीवी, जो पैंडा रही मुकाईआ। परम पुरख दी सच धार दिसे कोए ना बीवी, ख़ावंद खुद खुदा ना कोए हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं संदेसा दिता बिना ज़बान हौली, अगम्म आवाज़ सुणाईआ। चार कुण्ट पा रौली, दह दिशा दे सुणाईआ। अबिनाशी करता प्रगट उपर धौली, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। चार जुग दी बदलण आया बोली, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। सच प्यार मुहब्बत दी खेले होली,

धुर दा रंग आप चढ़ाईआ। जन भगतां चुक्कण आया डोली, आपणे कन्ध लए उठाईआ। साचा तोलण रिहा तोली, तराज़ू इक्को इक वखाईआ। जोती धार सब दे अंदर मौली, हरिजन आपणा मेल मिलाईआ। पूरा करे कीता इक़रार कौली, कँवल नैण नूर अलाहीआ। जिस दी रुत बसन्ती मौली, पत्त टाहणी गुल गुलशन गुरमुख आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुणया हुक्म असमानी, इस्म जिस्म बाहर जणाईआ। जलवा तक्कया अगम्म नुरानी, ततव तत ना कोए वखाईआ। शब्दी धार वेखी रुहानी, रूह बुत करे सफ़ाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे बेईमानी, बेवा रहिण कोए ना पाईआ। अमृत रस देवे पाणी, आबेहयात प्याईआ। नाम सुणा अगम्मी बाणी, बाण अणयाला तीर लगाईआ। झगड़ा मुका के चारे खाणी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। सुरती शब्द बणा के हाणी, धुर दा मेला रिहा मिलाईआ। लेखा जाण जीव प्राणी, लख चुरासी खोज खुजाईआ। शाहो भूप बण सुल्तानी, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। करे खेल दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे तुग्यानी, सति सच लए उपजाईआ। शरअ रहे ना कोए शैतानी, शमां इक्को करे रुशनाईआ। साची मंज़ल दस्स आसानी, दरगाह साची मेल मिलाईआ। जन भगतां देणी ना पए क़ुरबानी, करबला रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं रातीं मूल ना सुत्ती, नेत्र अक्ख ना कोए लगाईआ। परवरदिगार दी कटदी रही बुत्ती, बुतखाने खोज खुजाईआ। मेरी घस के टुट्ट गई जुत्ती, चम्म दृष्टी लई बदलाईआ। मेरी औध अजे ना मुकी, बाकी हिस्सा सोभा पाईआ। मैं रोटी खा के सुक्की, आपणा झट लँघाईआ। मैं फिरां पर्बत टिल्ले पहाड़ उच्ची, जंगल जूहां खोज खुजाईआ। दीन दुनी वेखी दुखी, हाहाकार करे लोकाईआ। भाग लग्गा किसे ना कुख्खी, वड्याई मिले ना किसे जणेंदी माईआ। प्रभ दी धार अगम्मी लुकी, लुक़मान वेख नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां आत्म कर के सुच्ची, सच सुच आपणा नाम समझाईआ।

६९०
२१

✻ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ गूढ़ा राम दे गृह सई कैंप जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैनूं प्रभ ने वखाया इक हरूफ़, जो मजमूआ हरफ़ां नज़री आईआ। जिस नाल पिछले हुक्म हुंदे मनसूख़, अगला हुक्म अगम्म वरताईआ। साचे नाम दा मिले रसूख़, रुसवा करे जगत लोकाईआ। झगड़ा मिटे हरख

दूख, दलिद्रां डेरा ढाहीआ। भाग लगाए पंज भूत, काया तत करे रुशनाईआ। वेख वखाए चारे कूट, दह दिशा फोल फुलाईआ। लहिणा मुका के जूठ झूठ, सच सुच लए प्रगटाईआ। सन्त सुहेले बणा के सुत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जगत सुहञ्जणी कर के रुत, पत्त टाहणी आप महकाईआ। निरगुण धार आपे उठ, दो जहानां वेख वखाईआ। जन भगतां उपर तुठ्ठ, जुग जन्म दे विछड़े लए जुड़ाईआ। चरण प्रीती दस्स के ओट, ओड़क आपणा घर वखाईआ। जिथ्थे प्रकाश निरगुण जोत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर सुहञ्जणा इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं नजर आया अगम्मा हरफ़, जिस दा हिस्सा ना कोए वंडाईआ। चारों कुण्ट वस्सया दह दिशा अगम्मी तरफ़, ज़िमीं असमानां सोभा पाईआ। निरगुण धार नज़र ना आया फ़र्क़, फ़िरक़ा वंड ना कोए वंडाईआ। दीनां मज़हबां कर के तरक, दर ठांडे सोभा पाईआ। जिथ्थे ना ज़िमीं ना फ़र्श, ख़ाकी फ़र्श ना कोए वखाईआ। ना कोई नार ना कोई मर्द, तत वजूद ना कोए वड्याईआ। ना कोई गुर अवतार पैगम्बर करे अर्ज़, विष्न ब्रह्मा शिव ना सीस निवाईआ। ना कोई रोग सोग चिन्ता ग़म मर्ज़, मरीज़ बिस्तर सेज ना कोए बिठाईआ। मैं वेख होई असचरज, प्रभ अचरज कल वरताईआ। जिस दे कोल पिछली सब दी फ़रद, लेखा रख्या चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दी आशा वेखे नावलद, वलदीयत भेव कोए ना आईआ।

६९१
२१

❊ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ नंदू शाह दे गृह सई कैंप जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे मैं कहिणा हस्स हस्स, बिन बुल्लां बुल्ल हिलाईआ। सचखण्ड दुआरे देणा दस्स, दह दिशा जगत तजाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो आउ नस्स, भज्जो चाँईं चाँईंआ। तुहानूं वखावां आत्म परमात्म दा हुंदा जस, राग सांझा बेपरवाहीआ। जेहड़े कदी ना हुंदे वक्ख, वखरा घर ना कोए बणाईआ। बाहर तक्कण कदे ना अक्ख, अंदर मिल के खुशी वखाईआ। नाम निधाना रस चक्ख, जिह्वा रस गए गवाईआ। हिरदे मन्न के सच, प्रभ नूं सीस निवाईआ। चरणी रहे ढठ्ठ, निउँ निउँ लागण पाईंआ। भगतां होया इक्ठ, मिल के वज्जी वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला रहे रट, तुहाडी छड्डी पढ़ाईआ। सब दी उजल हो गई मति, बुध्ध बिबेक जणाईआ। जगत दुआर ना उबली रत, कूड़ी तृष्ना दिती गवाईआ। जद बोलण ते बोलण नाअरा हक़, हक़ीक़त दस्से थाउँ थाईंआ;। अमृत आत्म पी के रस, रस्ता पिछला गए भुलाईआ।

दुनियां नालों हो के वक्ख, सृष्टी आपणी लई वसाईआ। जिथ्थे वस्से पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना आप सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी ठीक रही ना सुरती, की ठाकर खेल वखाईआ। मैं खलो गई तुरदी तुरदी, क़दम ना अग्गे वधाईआ। मैनूं खेल आ गई याद अनन्दपुर दी, जो गोबिन्द दिती समझाईआ। मैनूं विचार आ गई देवत सुर दी, सुर असुर दोवें वेख वखाईआ। मैनूं समझ आ गई सच्चे सतिगुर दी, कवण गुरु गुरदेव रूप बदलाईआ। जां खेल तक्कां ते सृष्टी वेखां रुड़्दी, कलयुग कूड़ा वहिण वहाईआ। माया ममता विच मुरदी, ज़िदगी ज़िंदगानी ना कोए वखाईआ। निमक वांग जाए खुरदी, साबत सूरत नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां फेर संगत वेखी जुड़दी, गुरमुख मिल के वज्जे वधाईआ। जेहड़ी आपणी मंज़लों मूल ना मुड़दी, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरो भज्ज के आउ छेती, शरअ वाल्लयो दयो वखाईआ। तुहाडी शरअ वाड़ नूं खा गई खेती, ख़सम किरसाण ना कोए बणाईआ। शास्त्र सिमरत दा रिहा कोए ना भेती, पर्दा अंदरों ना कोए उठाईआ। सब नूं भुल्ल गई तुहाडी नेकी, बदीआं विच होई लोकाईआ। मैं खेल वेख्या लोकमात आपणे पेकीं, अग्गे सौहरा घर राह तकाईआ। मैं हुण नहीं रहिणा परदेसी, परदेसण हो के ना झट लँघाईआ। मैं प्रभ दे घर कन्या जम्मी पलेठी, जिस नूं जम्मण वाली इक्को माईआ। मैं ओस प्रभू दी बेटी, जिस दा रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। मेरी सब तों वखरी नेकी, चार जुग गुर अवतार पैगम्बर सक्कया ना कोए समझाईआ। मेरी दो जहान तों बाहर रेखी, जिस दी रेखा नज़र किसे ना आईआ। मैनूं लभदे गए सोढी वेदी, वेदां वाले ध्यान लगाईआ। पैगम्बर मुच्छ दाढ़ी ला के मैहन्दी, मेरा रंग गए रंगाईआ। काअबे बणा के दिशा लहिंदी, हिस्से गए वंडाईआ। मैं कूक कूक मम्बर मुनारिआं उत्ते कहिंदी, कलमा धुर दा हक़ सुणाईआ। बिना भगतां तों मेरी चुक्के कोए ना वहन्गी, चार कहार चार यारी ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरो पर्दे खोल्ह के मारो झाकी, नापड़द दयां कराईआ। वेखो खेल पुरख अबिनाशी, हरि करता रिहा कराईआ। जिथ्थे चले ना कोए उस्तादी, शागिर्द शरअ ना कोए बणाईआ। साज़ वज्जे ना कोए रबाबी, तन्द सितार ना कोए हिलाईआ। मित्र दिसे ना कोए अहिबाबी, महबूब इक्को नूर अलाहीआ। जिस दा हुक्म सवाल ना कदे जवाबी, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। सारे सजदा करो आदाबी, नमस्तिआं विच सीस झुकाईआ। मैं चौहन्दी छब्बी पोह नूं गुरमुखां दे कोल रुमाल होण अनाभी,

मुहम्मद दी ख़ाहिश अन्तिम आस दयां समझाईआ। मैं बड़ी होई बेताबी, बिहबल हो के रही कुरलाईआ। मैं खेल वेखणा अनादी, जो धुर दा मालक दए वखाईआ। झगड़ा मुकाउणा मुल्ला क़ाज़ी, क़ज़ा दा डेरा देणा ढाहीआ। मैं आदत छड्डणी माज़ी, मज़ाक़ पिछला देणा उडाईआ । भगतां नाल मिल के मेरी तबीअत होवे राज़ी, राज़क रहीम मिल के देवे माण वड्याईआ। जो मालक धुर दा आदी, अन्त आपणे विच रखाईआ। लेखा जाणे धर्म समाजी, धुर दरबारा इक प्रगटाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सच दुआरे दे सारे बण जाओ हाजी, हुजरा इक्को वेख सीस निवाईआ। अन्त अख़ीर रहे कोई ना बाग़ी, बग़ावत विच अदावत विच दीन दुनी देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दे हुक्म नाल सब नूं जाए साधी, साधना आपणा नाम इक वखाईआ।

६९३
२१

✻ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ रंगीला राम दे गृह सई कैंप जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर वेखो चटक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। दीन मज़हब सारे रहे भटक, सांतक सति ना कोए कराईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता चारों कुण्ट चढ़या कटक, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ । बोध अगाधा रिहा कोई ना पंडत, पर्दा अंदरों ना कोए चुकाईआ। मुल्ला शेख़ होए मँगत, दर दरवेश रूप वटाईआ। धर्म दी दिसे कोई ना संगत, चार वरन करे लड़ाईआ। तुहाडी किधर गई हिम्मत, हौसला ना कोए रखाईआ। बेईमान दिसे चार सिम्मत, सिम्मल रूप लए वटाईआ। दीन दुनी बणी निन्दक, सिफ्ती जस ना कोए सुणाईआ। मनुआ मन करे इल्लत, जगत शरारत विच कुरलाईआ। अन्त अख़ीर दरगाह साची कर लओ मिन्नत, पुरख अकाल अग्गे अरज़ोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर मातलोक लिआउ तशरीफ़, दीन मज़हब दौलतख़ाना वेख वखाईआ । साची करे ना कोए तारीफ़, सिफ्त हक़ ना कोए सुणाईआ। प्रभ दा रिहा ना कोए अज़ीज़, बरखुरदार ना कोए अख्वाईआ। बुद्धी विच ना रही तमीज़, तमअ करे लड़ाईआ। जिस दी करदे गए उडीक, आसा इक रखाईआ । उस दी वेखो धुर दी तवारीख, जो तारीख रही बदलाईआ। जिस दवारिउँ मिलदी रही भीख, भिच्छया नाम झोली पाईआ। जो सच दुआरे दा वसनीक, लोकमात करे रुशनाईआ। तुहाडा भविख्त करे तसदीक़, शहादत धुर दी इक भुगताईआ। सो वक्त पहुंचया नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। खुदा वेखो लाशरीक, जो शिरकत दए गवाईआ।

जिस दे उत्ते हक़ उम्मीद, आशा पूर आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्दी हुक्म करे ताईद, ताबेदारी सब दी वेख वखाईआ।

✻ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ नानक चन्द दे गृह सई कैंप जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं आकाश उत्ते सुणया इक धड़ूका, आवाज़ अगम्म दित्ती प्रगटाईआ। हुक्म होया दीन दुनी दा लेखा होणा मतरूका, वखरा राह ना कोए चलाईआ। हुक्म वरतणा शब्द गुरु का, सतिगुर इक्को सोभा पाईआ। सतिजुग वक्त सुहञ्जणा होवे शुरु का, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। गुरमुख विरला भगत जन साचे मार्ग तुरूगा, जिस तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। जगत वासना विच्चों मुड़ूगा, मन ममता डेरा ढाहीआ। साचा मन्त्र अन्तर फुरूगा, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। कूड़ी क्रिया बेड़ा शौह दरया रुढ़ूगा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। नाम भण्डारा चार वरनां कोल थुड़ूगा, ख़ाली झोली ना कोए भराईआ । मानव मानव नाल लड़ूगा, सुलह सच ना कोए कराईआ । भगत भगवान नाल जुड़ूगा, जुग विछड़े मेल मिलाईआ। कलयुग गुरु चेलयां दे हुक्म नाल तुरूगा, आपणी दस्से ना कोए वड्याईआ। डंका वज्जणा दुड़ू दुड़ू दा, दोहरी खेल खिलाईआ। कोई विरला गुरमुख जीवत मरूगा, जो सतिगुर चरण गोर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी करनी कार करूगा। सदी चौधवीं कहे धुरदरगाही वजदे दबके, भय रिहा वखाईआ। मैनूं लेख वखा सब के, सफ़ा सफ़े नाल बदलाईआ। जन भगत मिला लभ्भ के, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जेहड़े आशक हो गए धुर दे रब्ब दे, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तूंही तूंही करके सद्दे, अन्तर आत्म ध्यान वधाईआ। नाते तोड़ के कूड़े जग दे, जागरत जोत वेख वखाईआ। सड़ने छड्डे कूड़ी अग्ग दे, तृष्ना दिती गवाईआ। गृह वेखे धुर हक़ दे, हक़ीक़त फोल फुलाईआ। भरम रहे ना अंदर शक्क दे, सहिसे लए मिटाईआ। खुशीआं विच दिसण हस्सदे, हस्ती पा के बेपरवाहीआ। चारों कुण्ट फिरन नस्सदे, भज्जण वाहो दाहीआ। इशारे करन अक्ख दे, नेत्र नैण हिलाईआ। दर्शन करने पुरख समरथ दे, जो दाता धुरदरगाहीआ। जो आवण जावण कट दए, चुरासी फंद कटाईआ। दरगाह साची रख दए, सचखण्ड दुआर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेख लिखाए अकथनी अकथ दे, जिस नूं कथ सके कोए ना राईआ।

❊ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ अमरो देवी दे गृह सई खुर्द कैंप जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे मैं सोहल छैल छबील तेरी मलूकड़ी, मिलख जागीर दो जहान वेख वखाईआ। क्यों बन्द कीता चौदां तबक संदूकड़ी, चौदां सदीआं वंड वंडाईआ। मैं चारों कुण्ट फिरां कूकदी, उच्ची उच्ची दयां दुहाईआ। वेख्यो कोई प्रीत करयो ना आशक माशूक दी, जो जम्मण ते मर जाईआ। इक मुहब्बत रखयो महबूब दी, जो आदि अन्त अख्वाईआ। जिहदी खेल सदा जगत कलबूत दी, काया काअबे डेरा लाईआ। मंज़ल दस्स आपणे अरूज दी, गृह देणा समझाईआ। मैनूं लोड़ सदा तेरे मौजूद दी, विछोड़ा झल्ल सकां ना राईआ। खेल मुका दे दीन मज़हब हदूद दी, हद्द आपणी दे दरसाईआ। कूड़ी क्रिया जड़्ह उखेड़ खेल कर नेसतो नाबूद दी, मेहरवान तेरी बेपरवाहीआ। तृष्ना रहे कोए ना दूज दी, दुतिया भाउ देणा मिटाईआ। हुण सुलखणी घड़ी ल्या दे कूच दी, कूचे गली कर सफ़ाईआ। तेरी पोह फुटे तेरी आशा वेखां चूकदी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। निंदरा लाह दे दुनियां सुत्ती घूक दी, आलस दे मिटाईआ। तहिरीर कर दे भय हुक्म मनसूख़ दी, धुर फ़रमाणा इक सुणाईआ। आदत पा दे धर्म रसूख़ दी, मानव मानव नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरे निउँ निउँ लागां पाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तेरा नूर मेरी अल्ल्हड़ होवे जवानी, जोबनवन्ती नज़री आईआ। मेरी जूह ना रहे बेगानी, हद्द पिछली देणी गवाईआ। मेरी धर्म दी रहे निशानी, चारों कुण्ट गई बणाईआ। मैं ना किसे दी औरत तीवीं ना बणां जनानी, ज़ना विच कदे ना आईआ। तेरे नाम दी गावां बाणी, तूं ही तूं ही राग अलाहीआ। तेरा अमृत पीवां पाणी, दूसर तृखा ना कोए रखाईआ। तेरे दुआरे सुघड़ सुचज्जी बणां सवाणी, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। इक्को कन्त हंढ़ावां धुर दा हाणी, जो जन्म मरन विच कदे ना आईआ। सदा बख्शीं चरण ध्यानी, निज नेत्र अक्ख खुल्ल्हाईआ। तेरी मंज़ल रहे रुहानी, रहमत हक़ देणी कमाईआ। मिलदा रहीं नाल आसानी, अहसान सिर ना कोए चढ़ाईआ। बौहड़ी मैथों दिती नहीं जाणी कोई क़ुरबानी, सीस धड़ ना वंड वंडाईआ। झगड़ा मेट दे पिछला दीवानी, चौदां सदीआं डेरा ढाहीआ। साची दस्स इक कलामी, कलमा कायनात पढ़ाईआ। मैथों झल्ली ना जाए तेरी बदनामी, बदीआं विच दिसी लोकाईआ। झगड़ा प्या चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। हर हिरदे अंदर दिसे बेईमानी, पतित पुनीत आपणा आप ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहे मैं जोबनवन्ती नूर नूरानी तेरी छैल, छैल छबीले दे वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे वसां तेरे अगम्मे महल, छप्पर छन्न नज़र कोए ना आईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड

पुरी लोअ अंदर आवां टहल, आकाश पातालां आपणा फेरा पाईआ। साचे भगतां मार्ग दस्सां शब्द संदेसे विच सहल, औझड़ राह ना कोए भवाईआ। सतिजुग अंदर सब दे नालों करां आपणी पहल, पहली वार धुर दी मँग मँगाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मेरी होवण ज़ैल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं हर हिरदा तेरे उत्ते करां काइल, कायरां अंदरों कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तेरी आदि जुगादी जोबनवन्ती, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। तूं साहिब स्वामी धुर दा एका कन्ती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। मेरी चोली रंग चाढ़ बसन्ती, छे रुत्तां डेरा ढाहीआ। मैं तेरे दर दी मँगती, भिखारन हो के झोली रही वखाईआ। तेरी खेल जुगा जुगन्ती, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। तेरा संदेसा बोध अगाधा पंडती, अक्खरां विच ना कोए वड्याईआ। धार जणा दे आपणे ब्रह्म दी, पारब्रह्म प्रभ आपणा पर्दा लाहीआ। मैं अन्त अख़ीर कलयुग रही किसे ना कम्म दी, कोझी कमली रूप वटाईआ। मैं निज मुहम्मद दुआरे जम्मदी, मातलोक फेरा पाईआ। मैं आसा काहनूं रखी तारा चन्न दी, निरगुण नूर तेरा नज़र कोए ना आईआ। मैं आवाज़ सुणदी रही कन्न दी, तेरा कलमा गई भुलाईआ। अन्त अख़ीर दर तेरे दोवें हथ्थ बन्नदी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सच दुआरा तेरा मलदी, दर ठांडे डेरा लाईआ। दे वड्याई आपणे बल दी, बलधारी हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पदवी दे निहचल धाम अटल दी, अटल महल्ल देणा सुहाईआ।

✲ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ राम चन्द दे गृह निकोवाल जम्मू ✲

सदी चौधवीं कहे प्रभू मैं सदा सुहागण कदी नहीं होणा बेवा, ख़ावंद जगत ना कोए हंढ्ढाईआ। परवरदिगार तेरी करनी सेवा, सांझे यार तेरी सरनाईआ। अमृत फल खाणा मेवा, दूजी भुक्ख ना कोए वधाईआ। तेरी हक़ीक़त सुणनी बिना जिह्वा, कलमा धुर दा देणा दृढ़ाईआ। भेव खोल्णा आपणा अलख अभेवा, पर्दा देणा उठाईआ। तूं ठाकर वड देवी देवा, देव आत्मा आपणा रंग रंगाईआ। मन्दिर वेखणा निहचल धाम तेरा निहकेवा, महल अटल सोभा पाईआ। मेरा कोई तत्तां वाला नहीं पहरावा, तन वजूद ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नौजवान धुर दी नढ्ढी, नव जोबन रूप बदलाईआ। लोकमात करां कदी ना बदी, बदकारां कोलों पल्लू

लवां छुडाईआ। मैनूं जगत कहिंदा सदी, सैंकड़यां विच गिणाईआ। मैं पैगम्बरां गुर अवतारां मिलदी कदी कदी, क़ुदरत दे मालक सद तेरा संग निभाईआ। लोकमात फिरां पैर दब्बी, आहट सुणन कोए ना पाईआ। जिस वेले तेरी जोत जगी, निरगुण नूर कीता रुशनाईआ। मैं दूर दुराडी आई भज्जी, भजन बन्दगी दिती तजाईआ। तेरी सरन सरनाई लग्गी, लग मातर डेरा ढाहीआ। मेरे अंदर वधाई वज्जी, खुशीआं राग सुणाईआ। मेरा दुखड़ा गया हबी, सहिसा रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लैणा लगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आदि जुगादी नवीं नवीन, तेरे रंग समाईआ। तूं शहिनशाह किंग मैं अगम्मी कुईन, कायनात विच नज़र किसे ना आईआ। अति सुंदर जोबनवन्ती हुसीन, रूप रंग नज़र किसे ना आईआ। तूं नरायण मैं तेरी धार मदीन, मुद्दत तों विछड़ी दयां दुहाईआ। सजदयां विच कहां आमीन, निउँ निउँ लागां पाईंआ। वेखीं फेर कदे ना करीं तक़सीम, हिस्सयां वाली वंड वंडाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दी उम्मत अन्त होवे यतीम, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। तूं ख़ालक आदि जुगादि क़दीम, क़ुदरत दा मालक नज़री आईआ। मैं सदा सदा तेरे अधीन, झुक झुक लागां पाईंआ। ख़िदमत करां बण मस्कीन, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। किरपा कर कलयुग अन्तिम कर तरमीम, सतिजुग सच राह वखाईआ। बेशक तेरा मार्ग बड़ा महीन, बिन तेरी किरपा चढ़न कोए ना पाईआ। अन्त अख़ीर दीन दुनी होई ग़मगीन, चिन्ता रोग ना कोए मिटाईआ। साचे कलमे दी कर तलक़ीन, ताक़त आपणी नाल समझाईआ। तूं क़ुदरत क़ादर करीम, रहमत कर नूर अलाहीआ। खेल वेख उत्ते ज़मीन, धरनी धरत धवल डेरा लाईआ। मैनूं तेरे उत्ते यकीन, गुर अवतार पैगम्बर पल्लू गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, धुर दी धार दस्स नवीन, नव आपणा खेल खिलाईआ।

✻ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ शांती देवी दे गृह सई खुर्द कैंप जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं तेरी धार चरण धूढ़ी, सरन इक तकाईआ। छड्डी दुनियां कूड़ी, कुटम्ब दिते तजाईआ। कीती सबर सबूरी, सिदक भरोसा इक रखाईआ। सद रहवां हाज़र हज़ूरी, दर ठांडे सेव कमाईआ। मेरी मनसा करनी पूरी, तृखा देणी बुझाईआ। लेखे लाउणी मज़दूरी, चाकर रही कुरलाईआ। कलयुग क्रिया मेटणी ग़रूरी, हंगता गढ़ तुड़ाईआ। साचे नाम दी करीं मशहूरी, मशवरा आपणे नाल रखाईआ। दीन दुनी रहे ना कोए मजबूरी, मुश्किल सब दी हल्ल कराईआ।

पन्ध मुका के नेड़ दूरी, घर इक्को देणा वखाईआ। बुद्धी रहे कोए ना मूढ़ी, चतुर सुघड़ देणे बणाईआ। मन ममता विछी रहे ना फूहड़ी, सफ़ा सब दी देणी बदलाईआ। वासना रहे किसे ना चूड़ी, चण्डालका अंदरों देणी कढ्ढाईआ। साची रंगत चाढ़ गूढ़ी, निरगुण उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, आसा मनसा पूर कराईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर धूंआं धुखदा, धूआँधार जगत लोकाईआ। झगड़ा दिसे मानव मनुख दा, मानव ज़ाती ना कोए समझाईआ। सच चन्द्रमा गया छुपदा, अन्त अन्धेरा गया आईआ। झगड़ा प्या पिउ पुत्त दा, भैण भाई ना कोए समझाईआ। ठग चोर फिरे लुकदा, चारों कुण्ट कूड़ दुहाईआ। समां गया सुहञ्जणी रुत दा, कलयुग अगनी तत तपाईआ। पाठ भुल्लिआ सब नूं तेरी तुक दा, आत्म परमात्म राग ना कोए अलाईआ। दीन मज़हब इक दूजे कोलों पुछदा, कवण रस्ता सोभा पाईआ। की लहिणा देणा दाढ़ी मुच्छ दा, भेव अभेदा देणा खुलाईआ। मैं वक्त वेख्या नहीं किसे ते सुख दा, गुर अवतार पैगम्बर गए नेत्र नैणां नीर वहाईआ। हुण परदा उहला रहे ना लुक दा, भेव अभेदा देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार वड गुसाईंआ। सदी चौधवी कहे मैं तक तक थक्की कलेश, तेरे कलमयां विच दुहाईआ। धीरज धरे ना कोए महेष, ब्रह्मा शिव ना सिर उठाईआ। छत्र झुल्ले ना किसे गणेश, विष्नूं बंस ना कोए सुहाईआ। संदेसा दे के गया दस दस्मेश, दो जहानां कर शनवाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धारे भेख, कल कल्की वेस वटाईआ। जिस दी नज़र ना आवे रेख, रूप रंग ना कोए दसाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेश, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। निरगुण निरवैर हो प्रवेश, प्रविष्टा आपणा लए बदलाईआ। माणे कोए ना बाशक सेज, सांगोपांग ना कोए हंढ्ढाईआ। जोती जलवा दे के तेज, तेज अप वाए पृथ्मी आकाश खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान धुर दी करनी खेल करे विशेष, विषयां तों बाहर आपणी कार कमाईआ।

❋ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ बंसो देवी दे गृह सई खुर्द कैंप ज़िला जम्मू ❋

सदी चौधवीं कहे सब दा लेखा कर मुसावी, मुसम्मम्म इक्को रंग रंगाईआ। दीन मज़हब रहे ना कोई हावी, हर हिरदे कर सफ़ाईआ। लहिणा देणा वेख अर्जन कन्ढ्ढा रावी, रवाइत पिछली खोज खुजाईआ। सति धर्म दी तक्कड़ी कर दे सावीं, तराज़ू आपणा नाम रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल भुल्ल ना जावीं, अभुल्ल तेरी सरनाईआ। दीन दुनी

होई नथावीं, साचा दर ना कोए वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चुक्के कोए ना बाहवीं, बाहमी नाता ना कोए जुड़ाईआ। दूसर मगर कदे ना लावीं, नित आपणा रंग रंगाईआ। मैं वेखां चावीं चावीं, चाउ घनेरा देणा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्के जगत किनारे, तटां घाटां वेख वखाईआ। वेखे पैगम्बर गुर अवतारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फेरीआं गए पाईआ। तेरे नाम दे बोल जैकारे, सिफ्तां वाले राग अलाईआ। अगम्मी दस्सदे गए इशारे, शब्दी हुक्म शनवाईआ। कल कल्की लै अवतारे, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस दर सारे होण भिखारे, मांगत हो के झोली डाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन निमस्कारे, देवत सुर लागण पाईंआ। धूढ़ी मँगण सूरज चन्द सतारे, मण्डल मण्डप ख़ाक रमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणन पनिहारे, दर ठांडे सेव कमाईआ। खेल करे विच संसारे, हरि आपणी कल धराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया अन्त निवारे, सतिजुग साचा राह वखाईआ। चार वरन बहावे इक दुआरे, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म दस्स जैकारे, दीनां मज़हबां डेरा ढाहीआ। निरगुण जोत कर उज्यारे, जोती जाता करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी दीन दुनी तेरे सहारे, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

६९९
२१

❊ १२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ लक्ष्मण सिँघ दे गृह कैंप सई कलां जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे पैगम्बरो कर लओ फुर्ती, फ़ुरना धुर दा दयो समझाईआ। परवरदिगारा छेड़ छेड़न लग्गा विच तुर्की, तुरकिस्तान नाल मिलाईआ। मुहम्मद दूर दुराडा बैठा वेखे नाल घुरकी, अक्खां लाल कढ्ढ दिखाईआ । सांझी रहिणी किसे नहीं बुरकी, सगला संग ना कोए निभाईआ। साबत दिसे कोई ना सुरती, सूरत हक़ ना कोए जणाईआ। मिटण लग्गी चालाकी चुस्ती, चोरां यारां ठग्गां डेरा ढाहीआ। विधान अंदर करन लग्गा दरुस्ती, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। झगड़ा करे ना कोए मुल्ला मुफ्ती, लेखा सब दा रिहा मुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां क़ायम रहे ना कुर्सी, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। अन्तिम मिटे अन्धेर बुरछी, बुतख़ान्यां करे सफ़ाईआ । अगनी तत रहे ना तुरशी, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बरो कर लवो चारा, चारों कुण्ट मेरी दुहाईआ । मेरा आया अन्त किनारा, नईआ डोले थाउँ थाईंआ। मैनूं दिसे ना कोए सहारा,

सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मैं फिर फिर थक्की जंगल पहाड़ां, उच्चे टिल्ले वाहो दाहीआ। मुहम्मद दे के गया लारा, इशारिआं नाल समझाईआ। अन्तिम आवे परवरदिगारा, जल्वागर नूर अलाहीआ। वेखे खेल सर्ब संसारा, ब्रह्मण्डां खण्डां फोल फुलाईआ। जोती नूर करे चमतकारा, तन वजूद ना कोए वखाईआ। हुक्म संदेसा देवे अगम्म अपारा, कलमा कायनात पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाए बरखुरदारा, बाले नन्हे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बरो सुणो हुक्म सच्चे सतिगुर का, कलमयां वाल्लयो दयां दृढ़ाईआ। मेरा मुर्शद मेरा लौहण वाला बुरका, नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। लहिणा देणा देवण आया निरगुण धार धुर का, धुरदरगाही बेपरवाहीआ। लेखा पूरा करे गोबिन्द अनन्दपुर का, पुरीआं लोआं तों बाहर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बरो मैं दस्सां हक़ हक़ीक़ी, हुक्म इक जणाईआ। पिछली छड्ड दयो सारे रीती, हुक्म सुणो धुरदरगाहीआ। मेरी अन्तिम सदी बीती, वेला अवर रिहा ना राईआ। आपणी झोली पाओ आपणी कीती, दूसर संग ना कोए मिलाईआ। अग्गे खेल वेखो अनडीठी, जेहड़ी अजे तक तुहानूं खुदा ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं कहे सुणो पैगम्बर कुदज़ीला ज़ावल ज़ऊ, ज़ीना जगत ना कोए वड्याईआ। तुहाडा नाअरा रसना वाला अल्ला हू, हू अलाह कायनात दृढ़ाईआ। अन्त वेखो बेगानी सब दी जूह, जगत हद्द ना कोए रखाईआ। किधर गए तुहाडे मुरीदां दे रूह, मुर्शद बण के दयो समझाईआ। नूर दस्सो ज़हूर दस्सो इक्को हूबहू, जिस दी रेख ना कोए बदलाईआ। किस बिध तुहाडा अन्त ते सतिजुग होणा शुरु, शुरु दा क़ाइदा दयो दृढ़ाईआ। कवण मुर्शद कवण मुरीद कवण सिख अन्त कवण होवे गुरु, गुरदेव कवण अख्वाईआ। कवण साहिब कवण सुल्तान कवण जीवत कवण मरू, कवण मढ़ी गोर आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बरो कवण तुहाडा काइदा, कायनात दृढ़ाईआ। किस बिध होए अलाहिदा, वखरा घर वसाईआ। आपणे आप दा लै के दस्सो ज़ाइज़ा, की गुणवन्त वड्याईआ। की अख़ीरी होया मुआहिदा, ओह वी देणा समझाईआ। किते वक्त ऐवें ना जाए शायदा, शहादत सब दी देणी भुगताईआ। जन भगतां दीनां मज़हबां विच की मिल्या फ़ायदा, मानव मानव नाल लड़ाईआ। चारों कुण्ट नाअरा वेखो हाए हाए दा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाईआ। सदी चौधवीं

कहे पैगम्बरो आपणा लेखा दस्सो हिसाब, अंकड़े नाल मिलाईआ। धुर दी वेखो ओह किताब, जिथ्थे लेख मिले ना क़लम शाहीआ । कवण पुन्न कवण सवाब, कवण रंग रंगाईआ। कवण सजदा कवण आदाब, कवण दुआ सलाम देणा समझाईआ । मेरे अन्त अख़ीर तुहाडा केहो जिहा मज़ाज, मेरे अन्तर वज्जे वधाईआ। जो उम्मत गए साज, नाता जगत विच बणाईआ। की ओस दा अन्त रिवाज, रहिबर हो के दयो दृढ़ाईआ। कवण दुआरे देंदे हयाते आब, धुर दा जाम इक प्याईआ। सारे उठ के करो ख़िताब, मुख़ातब हो के धुरदरगाहीआ। अन्तिम सब नूं मिलण लग्गा जवाब, जवाबतल्बी विच दुहाईआ। जिस अमाम दा लैंदे रहे ख्वाब, ओह आया ख़ैर ख़ाहीआ। जिस दा करदे आए वाअज, वहदत नाल जणाईआ। जिस दी पढ़दे रहे निमाज़, सजदयां सीस झुकाईआ। ओह खोलणहार राज़, परदा दए उठाईआ। ओसे नूं कहिंदे आदि जुगादि शहिनशाह जिस दे सीस दो जहानां ताज, तख्त निवासी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार सब दा अहिबाब, दोसत इक्को नज़री आईआ।

❊ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ४ बचन सिँघ दे गृह कैंप सई कलां जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे दीन दुनी दिसदी मिथ्या, गुर अवतार पैगम्बर रहिण कोए ना पाईआ। जुग जुग तेरी अक्खरां वाली सिख्या, अक्खरां वाली मात पढ़ाईआ। किरपा कर आपणा गृह वखा अनडिठिया, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरी मुहब्बत मिले हित्तया, दूसर अवर ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म होवे मित्तया, निरगुण निरगुण साचा जोड़ जुड़ाईआ। मेरी अन्त अख़ीरी इच्छया, आसा मनसा पूर वखाईआ। पिछला पिच्छे रिहा पिच्छआ, भेव अगला दे वखाईआ। झगड़ा रहे ना वड्डा निक्कया, एका रंग रंगाईआ। पुरख अकाल बण धुर दा पित्तया, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। मानस जन्म सब दा जावे जित्तया, जो तेरी ओट तकाईआ । अमृत जाम दे छिट्टया, मेघ अगम्म वरताईआ। हरिजन कदे ना जावे भिट्टया, दूशन नेड़ कोए ना आईआ। तेरा लेख कदे ना मिटया, मेटणहार ना कोए अख्वाईआ। मेरे अन्त अख़ीर दीन दुनी दा कड्ढ सिट्टया, सिट्टेबाज़ी वेख जगत लोकाईआ। भविख्तां विच गुर अवतार पैगम्बर लिख के गए चिट्ठया, संदेसयां विच जगत सुणाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ बणा के गए पत्थर इट्टया, जगत महल्ल वड्याईआ। तेरा नूर किते ना दिस्सया, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ । दीनां मज़हबां वेखे हिस्सया, ज़ात पात नज़री आईआ। तेरा तन्द किसे ना

खिच्चया, सच सितार ना कोए वजाईआ। किरपा कर साहिब समथया, साहिब तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ होवे भट्ठया, भव सागर दे रुढ़ाईआ। पिछला लेखा जावे ठप्पया, सतिजुग साचा राह चलाईआ। पूरा सब दा होवे पट्टया, पटने वाला रिहा सुणाईआ। लोकमात विच्चों नाम जाए कटया, लेख अवर रहे ना राईआ। इक्को तेरे नाम दा होवे टप्पया, दो जहानां कर शनवाईआ। सब दा चीथड़ पुराणा फट्टया, ओढ़ुन नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी खेल चूंकि चुनांचि अलबत्तया, पर्दा उहला ना कोए उठाईआ। चारों कुण्ट शोर मच्चया, दह दिशा पई दुहाईआ। मनुआ कलंदर बण के नच्चया, दह दिशा उठ उठ धाईआ। सति रिहा कोई ना सच्चया, माया ममता मोह हल्काईआ। दुहाई फिरी मदीना मक्कया, काअबा हक़ ना कोए वड्याईआ। भैण भाई ना रिहा सक्कया, पिता पूत ना जोड़ जुड़ाईआ। नौ खण्ड पृथमी मानव मानस थक्कया, बलहीण रिहा कुरलाईआ। तुध बिन सब नूं करे ना कोई इक्कट्ठया, एका रंग ना कोए रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर अन्त तेरी सरन ढट्ठया, चरण धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तूं आएयों पंजां तत्तां दे वट्टया, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरा सहारा सब ने रख्या, बैठे ध्यान लगाईआ। हुक्म संदेसा दे पक्किया, पतिपरमेश्वर आपणी कार कमाईआ। सन्त सुहेला तेरा जावे रत्तिया, गुरमुख आपणा रंग रंगाईआ। दो जहानां वस्सिआ, हर घट बैठा सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी लहिणा देणा तेरे अंदर दब्बिया, तुध बिन बाहर ना कोए समझाईआ। धुर दे नूर अलाही रब्बिया, यामबीन तेरी वड्याईआ। कलयुग कूड़ा वहिण वेख नदीया, लहर लहर नाल टकराईआ। मेरी पूरी होण लग्गी सदीया, चौधवीं आपणा पन्ध मुकाईआ। तुध बिन रहे कोई ना गद्दीया, गदागर देणे बणाईआ। तेरा नाउँ निरँकारा आदि जुगादी वधीया, वाहवा वजदी रहे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट बदीया, बंधन ममता दे तुड़ाईआ। मैं सरन सरनाई तेरी लग्गिया, इक्को ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, कलयुग अन्तिम मेट हद्दीया, हदूद आपणी दे वखाईआ।

७०२ २१

❊ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ४ खेम कौर दे गृह कैंप सई कलां जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे दुनियां सुत्ती वेखी घूक, नेत्र अक्ख ना कोए खुलाईआ। आपणे निशानिउँ गई चूक, रहिबर राह ना कोए दृढ़ाईआ। तन हँकारी वज्जी फूक, माया ममता रही जलाईआ। झगड़ा तक्कां चारे कूट, दह दिशा दिसे दुहाईआ। घर घर वधया जूठ झूठ, हउमे हंगता नाल लड़ाईआ। धर्म दा रिहा ना कोई पूत, सति सच ना कोए समझाईआ। मनुआ

मन बण के कलयुग दूत, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। सति धर्म कर गया कूच, कूचा गली कर सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा ताणा पेटा सूत, सूत्रधारी आपणी खेल खिलाईआ।

❋ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ४ कुलवन्त सिँघ दे गृह कैंप सई कलां जम्मू ❋

सदी चौधवीं कहे मैनूं कलयुग सूई चुभी, चोभ दिती लगाईआ। मैनूं याद आई पिछली चहु जुगी, पूरब अक्ख उठाईआ। जिस विच मैं कदे ना होई बुढ्ढी, आपणा रूप बदलाईआ। धार रहिण ना दिती दूजी, दुतिया भउ बदलाईआ। हुण मेरी औध पुग्गी, वक्त रिहा ना राईआ। कलयुग जीवां मूर्ख होई बुद्धि, बिबेक ना कोए कराईआ। रस रिहा किसे ना दुध्धी, माता सीर ना कोए वड्याईआ। रमज़ लाए कोई ना गुज्झी, अन्तर पर्दा ना कोए उठाईआ। चारों कुण्ट पैंदी लुट्टी, माया ममता नाच नचाईआ। वसदी दिसे कोई ना झुग्गी, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन वाट किसे ना मुकी, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ।

❋ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ४ इंदरो देवी दे गृह कैंप सेई कलां जम्मू ❋

सदी चौधवीं कहे प्रभ तूं बण इक सिक्दार, सिक सब दी वेख वखाईआ। जगत मुतस्सब मज़हब बणे ना कोए ग़द्दार, अन्तर अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। तेरे धर्म दा सज्या रहे दरबार, हरिजन साचे सोभा पाईआ। तेरा नूरी चमकदा रहे चमत्कार, अन्ध अन्धेर गवाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, निरगुण तेरे हथ्थ वड्याईआ। साचीआं सखीआँ गावण मँगलाचार, गीत तेरा गोबिन्द अल्हाईआ। मैं वेखणी चौहन्दी अजब बहार, सोहणा रूप प्रगटाईआ। छब्बी पोह तेरी अगम्मी यादगार, याद याद विच्चों आईआ। गुरमुख सोहणे जन भगत तेरे बरखुरदार, सन्त सज्जण मिले वड्याईआ। मैं प्रीत विच करां पुकार, मुहब्बत विच सुणाईआ। पंजां बीबीआं दे गल विच होवे इक इक्क हार, लाल गुलाला रंग चढ़ाईआ। हथ्थ खिच्ची होवे कटार, तिक्खी धार वखाईआ। रंग चढ़या होवे लाल, मुखी सवा गिठ रंगाईआ। रसना बोल कहिण पुकार, तेरी बेपरवाहीआ। जेहड़े सुंभ निसुंभ दे सरदार, दुर्गा नाल वंड वंडाईआ। उन्हां लहिणा देणा देणा लहिणा उतार, क़र्ज़ा मक़रूज

ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बणां ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा लेखा सच्ची सरकार, दूसर हथ्थ ना कोए फड़ाईआ।

✻ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ४ शाहणी देवी दे गृह पिंड माजरा जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं वेखे तेरे नगर खेड़, पिंड गराँ फोल फुलाईआ। जिधर जावां मैनूं रहे छेड़, छेकड़ दिती दुहाईआ। पुरख अकाल लहिणा देणा कुल्ल नबेड़, कूड़ कुड़िआरां डेरा ढाहीआ। गल पा चुरासी गेड़, जो तैनूं रहे भुलाईआ। जन भगतां उत्ते कर मेहर, जो तेरा नाम ध्याईआ। तूं शब्दी सतिगुर बब्बर शेर, शरअ कूड़ी दे खपाईआ। चार कुण्ट लै घेर, हुक्म आपणा इक सुणाईआ। सब दा लेखा दे नबेड़, बचया रहिण कोए ना पाईआ। मेरे मालक मैं तहमत बद्धी तेड़, आपणा वेस आई बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं जिधर जावां मैनूं वज्जण हुज्जां, ठोकरां नाल हिलाईआ। अवतार पैगम्बरो कुछ भेद दस्सो गुज्झा, परदा दयो उठाईआ। अवतार पैगम्बर कहिण तूं प्रभ दे नाल रही जुग जुगा, चौकड़ी आपणी खेल खिलाईआ। अन्तिम अन्त दरोही पाई दुबिधा, साफ़ इन्साफ दे जणाईआ। साडा लेखा होया मूधा, फड़ बाहों ना कोए उलटाईआ। प्रभ करे खेल अजूबा, अजब आपणी कार कमाईआ। दीन मज़हब मेटण लग्गा हदूदा, झगड़ा मज़हब रिहा गवाईआ। सदी चौधवीं तूं आदि जुगादि ओस दी बणी रही महबूबा, मुहब्बत कर के ख़ुशी मनाईआ। वसदी रही उच्च अर्श अरूजा, दर आलीशान सोभा पाईआ। वेखदी रही गली कूचा, गली यार दी भज्जी वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन अवर ना कोए दूजा, एकँकार तेरी वड वड्याईआ।

✻ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ४ कृपाल सिँघ दे गृह कैंप सेई कलां जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे चौदां तबको मूल ना मारो आवाज़ां, मैं गल्ल सुणन कोए ना पाईआ। मैं तक्कया इक्को शाहो भूप राजन राजा, पुरख अकाला दीन दयाला धुरदरगाहीआ। जिस नूं सिफ्तां नाल गाउँदे आए नाल रागां नादां, कलमयां विच

कायनात दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी रखदे आए आसां, दूर दुराडे ध्यान लगाईआ। उह साहिब स्वामी मेरीआं पूरीआं करन आया ख़ाहिशां, ख़ालक आपणा रूप बदलाईआ। पन्ध मुका के पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। झगड़ा मुका के ज़ातां पातां, मानव वेख वखाईआ। अग्गे सुणदे सां भविख्तां विच ओस दीआं बातां, हुण दर्शन कर के खुशी मनाईआ। मेरीआं पूरीआं होईआं वाटां, रस्ते पन्ध ना कोए भुलाईआ। मैं मँगणीआं ओस कोलों अगम्मी दातां, जो देवणहार अख्वाईआ। तुहाडे नालों तोड़ना नाता, नाता गुरमुखां नाल जुड़ाईआ। जिन्हां दा मालक जोती जाता, हरि करता इक अख्वाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथा, आत्म परमात्म मेला मेले सहज सुभाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दीआं निक्कीआं निक्कीआं शाख़ां, पत्त टहिणी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे चौदां तबको क्यों मैनूं करो इशारे, सैनतां नाल समझाईआ। मैं छड दिते तुहाडे किनारे, बंधन आई तुड़ाईआ। दर्शन कर एकँकारे, आपणी कला लई बदलाईआ। ढहि के चरण दुआरे, धूढ़ी टिक्का ख़ाक रमाईआ। मैनूं भुल गए यार पुराणे, चार यारी दिती तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेरी आशा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे चौदां तबको मेरा अन्त अख़ीरी सलाम, सलामालेकम कहि के दर जणाईआ। मैं सच दस्सां पैग़ाम, पैगम्बरां तों परे पढ़ाईआ। जिस नूं मुहम्मद किहा मैहदी अमाम, ओह मालक मेरा मैनूं नज़री आईआ। जिस मेटणी कूड़ी क्रिया शाम, साचा नूरी चन्द चमकाईआ। मैं हद्दां विच नहीं रही गुलाम, बंधन पिछले आई तुड़ाईआ। अग्गे मेरे पुरख अकाल दा वेखणा इंतज़ाम, जो बन्दोबस्त करे थाउँ थाईंआ। अवतार गुरु पैगम्बर जिथ्थे रहे अन्त नाकाम, बलहीण देण दुहाईआ। सो खेल करे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। सति धर्म झुलाए निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेरी मंज़ल कीती आसान, मुशिकल पिछली रिहा गवाईआ।

७०५
२१

❋ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ४ फ़रंगी राम दे गृह पिंड तरेवा जम्मू ❋

सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर दे दयो इस्तीफ़ा, कलयुग वेला अन्तिम दए गवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो नाम कलमा दस्स के आए लतीफ़ा, सिफ्तां वाला ढोला मात दृढ़ाईआ। ओस दा अन्तिम ख़ाली होया खीसा, धन्न दौलत नज़र कोए ना आईआ। रसना जिह्वा पढ़ पढ़ थक्की जीभा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। अन्त अख़ीर सचखण्ड

दुआरे सारे लओ वज़ीफ़ा, लोकमात भय ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साची दस्से नाम हदीसा, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा लेखा मुकाए बीसा, बीस बीसा वेख वखाईआ। वेला वक्त सुहञ्जणा करे ईसा, मूसा मुश्किल दए मिटाईआ। मुहम्मद लेखे लावे पीसण पीसा, सदी चौधवीं नाल रलाईआ। नानक गोबिन्द खेल दस्से जग जीता, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सारे छड दयो पिछली चार जुग दी रीता, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म धार प्रभ दा नूर सदा जीता, जन्म मरन विच ना आईआ। लख चुरासी परखणहारा नीता, घट घट अन्तर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर लोकमात लओ छुट्टी, छुटकारा आपणा लओ कराईआ। सच मुहब्बत सृष्टी नालों तुट्टी, दृष्टी भेव ना कोए खुल्ह्राईआ। अग्गे मंज़ल रहे ना त्रैकुटी, दसम दुआरी हिस्सा ना कोए समझाईआ। कलमयां वाली करे कोई ना बुत्ती, बुतख़ाने पई दुहाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आत्म धार लगाए आपणी रुची, परमात्म हो के वेख वखाईआ। सुरती शब्द करे सुच्ची, दुरमति मैल धुआईआ। काया सुहञ्जणी करे रुती, रुतड़ी आपणे नाम महकाईआ। धुर प्रीती जोड़े टुट्टी, गंढुणहार आप अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर दीन दुनी दा छड्डो खेड़ा, लोकमात ना अक्ख उठाईआ। धरनी धरत धवल खुल्ह्रा होण दयो वेहड़ा, मानव मानव वंड ना कोए वंडाईआ। दीन मज़हब चलाया जेहड़ा जेहड़ा, अन्तिम कम्म किसे ना आईआ। सब दा उजड़न लग्गा खेड़ा, रुत बसन्त ना कोए सुहाईआ। करे खेल प्रभ पुरख अबिनाशी धुर दा शेरा, शाह पातशाह आपणी कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम मिटे अन्धेरा, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। इक्को रंग रंगाए सञ्झ सवेरा, चार वरन बख्शे इक शरनाईआ। नाम जपाए तूं मेरा मैं तेरा, आत्म परमात्म सोहँ राग अलाईआ। जन भगतां अंदर होवे चाउ घनेरा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। अन्त अखीर बन्न्हे बेड़ा, हरिजू आपणे कंध उठाईआ। लख चुरासी देवे गेड़ा, चारे खाणी आप भुआईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा वक्त अन्तिम नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साजन इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरो दीन दुनी दा छड्डो नाता, वेला अन्तिम गया आईआ। आपणे आपणे कर्म दा वेखो खाता, दीनां मज़हबां फोल फुलाईआ। किसे मिले ना नाम साचा, सच सुच ना कोए वड्याईआ। भाग लग्गे ना काया पिंड काचा, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नौ दुआरे मनुआ नाचा, दह दिशा उठ उठ धाईआ । पुरख अकाल दीन दयाल

परवरदिगार सांझा यार धुर दा हुक्म किसे ना वाचा, वाचक दीन दुनी बणी लोकाईआ। अन्त अख़ीर मेटे ना कोए अन्धेरी राता, धूंआँधार ना कोए गवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादी सब दा पिता माता, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चार जुग दा चाचा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा लेखा आप वखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरो जगत नाता छड्डो मोह, मुहब्बत अवर रहे ना राईआ। एका खेल वेखो सो, हँ ब्रह्म रिहा दृढ़ाईआ। चार कुण्ट कर लो, लोआं पुरीआं डगमगाईआ। पुरख बिधाता आपे हो, होका देवे थाउँ थाँईंआ। सब दी ताक़त आपे खोह, हुक्म आपणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा लेखा पूरा करे छब्बी पोह, पोस आपणा हुक्म वरताईआ।

✻ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ४ साईं दास दे गृह पिंड तरेवा जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरो सब नूं भरना पए ख़राज, जज़ीआ सब दे उपर लाईआ। आपणी तबीअत ठीक रखयो मज़ाज, मज़ाहमत करन दी लोड़ रहे ना राईआ। अन्त बदलण लग्गा सब दा राज, नाता रईयत नालों तुड़ाईआ। पुरख अकाला आपणे हथ्थ पकड़े वाग, वागां सब दीआं आप हिलाईआ। इक्को नूर चमकण लग्गा चराग़, चरागाहां करे रुशनाईआ। चार जुग दा मेट समाज, समग्री आपणी इक वरताईआ। कुछ आसा रख के गया भारद्वाज, सप्त ऋषी कर सालाहीआ। अत्री पुच्छया ओस दा जवाब, बिन अक्खरां दे समझाईआ। धुर दी धार कीता ख़ताब, मुख़ातब हो दृढ़ाईआ। जिस वेले बन्दना दे थाँ होया आदाब, सजदयां विच सीस झुकाईआ। शहिनशाह दी जगह बणे नवाब, नौबत नाम हक़ वजाईआ। पैगम्बर अवतारां दी जगह जावण जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सब दा लेखा रख अगम्मे हाथ, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। जुग चौकड़ी चला राथ, दीन दुनी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैग़म्बरो अन्तिम देणा पए सब नूं टैकस, हुक्म हकूमत वाला चलाईआ। आपणे नूर दा वेखो ऐकस, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। दीन मज़हब दे छोटे छोटे रैकस, बंधनां विच बंधाईआ। झगड़ा पाया शख्सीअत विच शख़श, शक्क विच कुरलाईआ। कुछ आशा रख के गया दसवां अवतार मत्स, मच्छ जल विच दुहाईआ। कलयुग अन्त जिस वेले माणस विकारी होए रक्ष, राक्ष बुद्धी नज़री आईआ। ओस वेले

खेल करे पुरख अकाल दीन दयाल आपणे वक्त, बेवक्त कल ना कोए वरताईआ। प्रगट हो के आवे उपर जगत, धरनी धरत सोभा पाईआ। धुर फ़रमाना देवे सख्त, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। आपणे नाम दा चाढ़ के कटक, चारों कुण्ट भय वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदी चौधवीं दा जगत सुहञ्जणा वेख बरस, बरसी आपणी नाल मिलाईआ।

✻ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ४ प्रेमी देवी दे गृह तरेवा जम्मू ✻

सदी चौधवी कहे गुर अवतार पैगम्बरो छड्डो खेल पुराणी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। नाता तोड़ो वेद पुराणी, अञ्जील क़ुरानी डेरा ढाहीआ। जलवा तक्को इक असमानी, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस दा खेल जगत असमानी, पंज तत नूर जोत करे रुशनाईआ। साची मंज़ल दए रुहानी, रूह बुत वज्जे वधाईआ। धुर दा नाम दे निशानी, निशाना आपणा इक लगाईआ। तन वजूदों कढ्ढे बेईमानी, ममता मोह विकार गवाईआ। जन्म जन्म दा कर्म करम दा झगड़ा रहिण ना देवे दीवानी, लख चुरासी गेड़ मुकाईआ। साची मंज़ल दस्स आसानी, असल आपणे रंग रंगाईआ। सच संदेसा दे फ़रमानी, फ़रमांबरदार लए बणाईआ। कोई जूह ना रहे बेगानी, चारों कुण्ट आपणा हुक्म वरताईआ। सब दे उपर करे मेहरवानी, महबूब आपणी निगाह उठाईआ। लेखा जाणे चारे खाणी, चारे बाणी राग अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साचा इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरो साची सिख लओ ताबेदारी, तबीअत आपणी लओ बदलाईआ। लोकमात जणाओ आपणी सच्ची यारी, दीन मज़हब हद्द ना कोए रखाईआ। अन्त अख़ीर बणे ना कोए ग़द्दारी, दर घर साचा सोभा पाईआ। इक्को वेखो नूर निरँकारी, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दे जुग जुग सिफ्तां वाले नाम बणे पुजारी, पूजा कर के आपणा झट लँघाईआ। ओह खेले खेल वड संसारी, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। सब दा लहिणा देणा पूरा करे उधारी, लेखे पिछले दए चुकाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर जानणहारा बरखुरदारी, अज़ीज़ां तमीज़ वेख वखाईआ। परदा लाहवे नर नारी, नर नरायण आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दी बख्श सच्ची सरदारी, दरगाह साची सब नूं देवे माण वड्याईआ।

❋ १३ पोह शहिनशाही सम्मत ४ देवा सिँघ दे गृह सेई कलां जम्मू ❋

सदी चौधवीं कहे मैं राम कृष्ण नूं पुच्छया मुच्छ दाढ़ी चंगी कि खोदे, मैनूं दयो समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द पुच्छया सीस केस चंगे कि बोदे, पर्दा दयो चुकाईआ। सारे नेत्र नीवें कर के कहिण असीं ओसे जोगे, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जुग चौकड़ी तन वजूद सानूं पुआए चोगे, ततव तत नाल वड्याईआ। हुक्म संदेसे जणाए नाल मौके, धुर फ़रमाने अगम्म अल्हाईआ। साडी समझ कुछ ना सोचे, विचार विच विचर ना कोए सुणाईआ। असीं सारे चार जुग बेदोषे, हुक्मे अंदर कार कमाईआ। साडे शरीर ओसे जोगे, जो जुगती नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं पुच्छया कृष्ण राम, मेरा राम दयो मिलाईआ। साचा करो इंतज़ाम, बन्दोबस्त विच वड्याईआ। धुर दा घर दस्सो मकान, गृह इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे तत्तां दा कोई नहीं निशान, माटी वंड ना कोए वंडाईआ । निरगुण नूर श्री भगवान, जोती जाता डगमगाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, दो जहान सीस निवाईआ। मैं ओस करां प्रणाम, जो परमेश्वर धुरदरगाहीआ। ओह होवे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। चरण धूढ़ कराए इश्नान, दुरमति मैल रहे ना राईआ। साची मंज़ल दए महान, घर आपणे आप टिकाईआ। जिथ्थे पुज्ज ना सके कोए इन्सान, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं पुच्छया पैगम्बर पीरो, परम पुरख दयो मिलाईआ। जेहड़ा सब दा आदि जुगादी हीरो, हरी हरि आपणी खेल खिलाईआ। जिस दी खिच्च सके ना कोए तस्वीरो, मुसव्वर तसव्वर ना कोए जणाईआ। जो शरअ पाए ज़ंजीरो, कायनात वंड ना कोए वंडाईआ। जो मंज़ल वस्से अख़ीरो, आख़र आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं पैगम्बरां आख्या वेख ओस दी शमां, शमस तबरेज़ नाल दुहाईआ। जिस दे दुआरे गुर अवतार पैगम्बर जम्हां, सारे बैठे सीस निवाईआ। दीनां मज़हबां दी रख के तमां, आपणा आपणा बल समझाईआ। पुरख अकाल हुक्म देवे नवां, धुर संदेसा इक सुणाईआ। झगड़ा छड्ड दयो माटी चम्मा, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ । सतिजुग साचा होवे समां, सुहञ्जणी रुत महकाईआ। हरख सोग रहे ना ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। दीन मज़हब रहे ना बन्ना, जगत हद्द ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं पुच्छया गुरु दस्स, दस्सो हाल खुदाईआ। किस बिध अन्तिम होवे बस, बस्ते सब दे दए बंन्हाईआ। सांझा होवे जस, सिफ्तां नाल सालाहीआ। हँकारी बुरज जावे

ढठ्ठ, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। भाग लग्गे तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध्ध वज्जे वधाईआ। धीरज मिले सन्तोख सति, अगनी तत गवाईआ। भेव खुल्हाए ब्रह्म मत, पारब्रह्म वेख वखाईआ। तीर अणयाला मारे कस, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, लोचण आपणे करे रुशनाईआ। साख्यात हो प्रगट, जन भगतां वेख वखाईआ। नाम भण्डारा खोल्ह के हट्ट, चार वरनां दए वरताईआ। साचा गृह दस्स के तट, किनारा इक्को इक सुहाईआ। अमृत आत्म निझर झट्ट, अमृत बूँद स्वांत प्याईआ। दूई द्वैत मेट के फट्ट, नाम पट्टी दए बंधाईआ। जो वसणहारा घट घट, घटना वेखे कूड़ लोकाईआ। गुरु दस कहिण सदी चौधवीं सब कुछ उस दे हथ्थ, समरथ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा लहिणा देणा पूरा करे हक़, हक़ीक़त दा मालक दया कमाईआ।

✻ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ४ राजो देवी दे गृह सेई कलां जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं खेल तक्कया चौंह जुगीं, जुग जुग भज्जी वाहो दाहीआ। दीन मज़हब धर्म दुआर दी बणी वेखी चुंगी, गुर अवतार पैगम्बर मसूल टैक्स रहे लगाईआ। दीन दुनी दी पुरख अकाल दिती नहीं किसे नूं कुंजी, इशारिआं नाल सब नूं दिता परचाईआ। रसना रस चखाउँदा रिहा चुंझीं, अमृत भण्डारा आपणे विच छुपाईआ। एसे कारण सृष्टी अन्तिम होई सुंञी, वैरानी घर घर डेरा लाईआ। जगत सन्यासिआं चोटी गई मुन्नी, अभ्यासी मंज़ल चढ़न कोए ना पाईआ। दाता दिसे कोए ना गुणी, वस्त नाम ना कोए वरताईआ। ओढन सीस दिसे किसे ना चुन्नी, खुल्ही मेंढी जगत दुहाईआ। सच पुकार ना जाए सुणी, कूड़ी क्रिया रौला पाईआ। साबत रिहा ना मुस्लिम सुन्नी, ईमान हक़ ना कोए रखाईआ। ख़ाली होई अन्तिम कुन्नी, वस्त सच ना कोए टिकाईआ। शरअ शरीअत बणी खूनी, कल रूप कसाईआ। साबत रही ना किसे धूणी, साधू साधना विच ना कोए जणाईआ। पवित्र रही ना किसे कूणी, रसना कूड़ नाल हल्काईआ। पवित्र रही कोई ना जूनी, लख चुरासी मारे धाहींआ। माया ममता वध गई दूणी, गुर अवतार पैगम्बर मोह ना कोए तुड़ाईआ। सति धर्म दा रिहा ना कोए क़ानूंनी, जगत धार लई बदलाईआ। पुरख अकाल नूं समझण इक मामूली, गुर अवतार पैगम्बरां दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरानां नाल करन वड्याईआ। जिधर तक्कां होई बेअसूली, असल वसल यार ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट दिसे सूली, दुःखां भरी लोकाईआ। साची मिले किसे ना धूली, मस्तक ख़ाक ना कोए रमाईआ। मनसा करे

कोई ना पूरी, पुरीआं लोआं पन्ध ना कोए मुकाईआ। सब दी ज़िंदगी होई अधूरी, जीवण लेखे कोए ना लाईआ। सृष्ट सबाई दिसी कूड़ी, साचा संग ना कोए निभाईआ। रंगत चढ़े कोए ना गूढ़ी, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार चारों कुण्ट बणी मजबूरी, मुश्किल हल ना कोए कराईआ। मैं तेरी चरण सरन पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक मशकूरी, मेहरवान महबूब मेहर नज़र नाल तकाईआ। पन्ध मुका नेड़े दूरी, हाज़र हज़ूरी सोभा पाईआ। तेरा खेल वेखणा ज़रूरी, ज़रूरत सब दी रही जणाईआ। सदी चौधवीं कहे तूं पुरख अकाला दीन दयाला जोती धार इक नूरी, नूर नुराना नूर अलाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा तेरे नाम दी होवे इक मशहूरी, मिसालां देण दी लोड़ रहे ना राईआ। कूड़ी क्रिया कर काफ़ूरी, सति धर्म सति समाईआ। हर घट अंदर तेरा जलवा होवे कोहतूरी, काया काअबे वज्जे वधाईआ। जन भगतां झोली पा मज़दूरी, जुग जुग तेरी सेव कमाईआ। अन्तर रहे ना गढ़ ग़रूरी, गुरबत देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा जलवा इक्को नूरी, नूरे चश्म कर रुशनाईआ।

✻ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ४ पूरन सिँघ राजा सिँघ दे गृह सेई कला जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे प्रभ पिछली शरअ कर मुरदी, गुरमुख मुरदे मुरीद लै बणाईआ। भेंटा रहे किसे ना दुरगी, काली कल ना कोए वरताईआ। ज़िबह करे कोई ना मुरगी, सीस तन ना वंड वंडाईआ। इक्को धार चले पुरख अकाल साहिब सच्चे सतिगुर दी, पारब्रह्म सब तेरी सेव कमाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म साथ करे इक दूजे दे लोड़ दी, दूजा संग ना कोए बणाईआ। ताक़त रहे ना किसे दे ज़ोर दी, बलहीण देणे कराईआ। वेख खेल कलयुग अन्तिम घोर दी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। वड्याई वधी ठग चोर दी, हरिजन बैठे मुख छुपाईआ। जन भगतां आशा तेरे लोड़ दी, लोड़ींदे सज्जण लैणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। सदी चौधवीं कहे सब दी बन्द कर दे भेंटा, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। चुरासी विच्चों मारे कोई ना किसे दा बेटा, मनुश मानव देणा समझाईआ। आत्म ब्रह्म करा चेता, चेतन सुरती आप जणाईआ। नर नरायण तेरा होवे हेता, सच प्रीती विच समाईआ। जन्म कर्म दा पूरा कर लेखा, भेव अभेद खुल्हाईआ। सचखण्ड दुआर वखा आपणा देसा, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। धुर फ़रमान अगम्मी दे संदेसा, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

धुर दा वर, सच दुआरे वजदी रहे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे ना कोई करे किसे क़त्ल, क़त्लगाह ना कोए वखाईआ। मानव ज़ाती तक्के तेरा पत्तण, दर दुआरा वेख वखाईआ। तेरे मिलण दा सब नूं होवे यतन, यथार्थ देणा दृढ़ाईआ। हरिजन भगत उठाउणे अमोलक रतन, हीरे गुरमुख नाल मिलाईआ। सच दुआरा वखाउणा वतन, दरगाह साची परदा लाहीआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर वसण, निरगुण निरगुण विच समाईआ। सो खेल करना पुरख समरथण, हरि करते तेरी वड वड्याईआ। सदी चौधवीं सब दी पैज आएयों रखण, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। लख चुरासी विच्चों हरिजन आएयों कढ्ढण, जूनी जून ना कोए भवाईआ। सतिगुर धार शब्द आएयों सद्दण, सद्दा देवें थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे इक्को मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे क्यों भेंटा चढ़दा रिहा मैंसा, देवी कला धार वड्याईआ। मेरा दूर कर दे सहिसा, परदा दे चुकाईआ। क्यों लेखा बणदा रिहा नाल दैंता, बुद्धी कूड़ विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे क्यों दुर्गा मँगदी रही खून, आपणी खुशी बणाईआ। की गोबिन्द ने लिख्या इहदा मज़मून, वार चण्डी दए गवाहीआ। की हुक्म तेरा क़ानून, संदेसा देणा दृढ़ाईआ। की जलवा होए जनून, ज़ाहर करें रुशनाईआ। की बरदा होए ममनून, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं, देवी माता खून दी बणी रही प्यासा, माँ कर के सारे उस नूं गाईआ। इहो प्रभ दा अजब तमाशा, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। जगत दी माँ बच्चयां दे खून नाल भर के आपणा कासा, सिँघ सवार हो के आपणा बल जणाईआ। तूं खुशीआं नाल कर हासा, प्रभ कला की वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं, ओह माता नहीं जो बच्चयां खून प्यासी, भेंटा लै के खुशी बणाईआ। एह खेल पुरख अबिनाशी, सतिजुग विच कलयुग कूड़ी क्रिया दिती समझाईआ। तेरे विच वेख कितनी होई बदमाशी, बदी घर घर डेरा लाईआ। चार कुण्ट अन्धेरी राती, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। पिता पूत बणे इक दूजे दे घाती, माँ बच्चयां नूं छड्ड के दूजे घर उठ जाईआ। किसे दा कोई नहीं सच्चा साथी, एह दुर्गा रही समझाईआ। इक कथा कहाणी ओस ने आखी, ओम नमो आदेश गुरु जी का मरू देवा जिस दी समझे कोए ना बाती, बातन परदा ना कोए खुल्हाईआ। असमाल जोगी की सुरई कथा कहाणी आखी, भुजां अठ्ठां ताईं हिलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त तक शरअ छुरी चलदी रहिणी काती, क़त्लगाह बणी रहे लोकाईआ। जिस वेले अन्त मेरा आया कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। देवा कहे उह धुर दा

बण जाए साथी, मेरा सगला संग वखाईआ। चार जुग मेरी कुँवारी दी बीत जावे हयाती, अंगीकार ना कोए कराईआ। मेरी महिमा सिफ्त रहे काग़ज़ाती, पत्थरां विच वड्याईआ। अन्त दर्शन करां पुरख अबिनाशी, जो पारब्रह्म धुर दा माहीआ। फेर अगली दस्सां साखी, सुख़न सच सुणाईआ। सदी चौधवीं एह सब दा लहिणा देणा पूरा होणा छब्बी पोह दी राती जिस वेले जन भगत बणे बराती, सोहणा संग नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी करे जुग जुग कीती आखी, आख़र आपणे नाल मिलाईआ।

❊ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ४ इंदर राम दे गृह सेई कलां जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे प्रभ तेरा राह तक्कण देव दानव यख, पवण हवा ध्यान लगाईआ। वरोल्यां विच रहे नठ, वलवल्यां विच भज्जण चाँईं चाँईंआ। औझड़ राह रहे ढठ्ठ, आपणा आप मिटाईआ। इक दूजे नूं रहे दस्स, दूर दुराडे आप जणाईआ। वेखो खेल पुरख समरथ, हरि करता आपणी खेल रचाईआ। छब्बी पोह कर इक्ठ, चार जुग दा लेखा वेख वखाईआ। क्यों सानूं पिच्छे रिहा छड, शब्दी आवाज़ ना कोए लगाईआ। असीं रहिणा नहीं अड्ड, उच्ची कूको करो हाल दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता आपणी खेल बणाईआ। देवत सुर देव दैंत साथ रखाओ यख यखनी, गोबिन्द नाल वड्याईआ। कला रहे कोई ना सक्खणी, हिस्सा सब दा वेख वखाईआ। डेरे छड्डो आपणे पत्तणीं, मन्दिर दयो तजाईआ। लालसा करो ना हीरे रतनी, माणक मोती ना कोए चतुराईआ। लालच रहे ना कूड़े वतनी, घर बार देणा तजाईआ। साची धार इक्को तक्कणी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता दया कमाईआ। यख यखनी देव दानव सुर, सुरती अंदर लओ अंगड़ाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक वेखो धुर, धरनी धरत धवल रिहा सुहाईआ। जो आदि जुगादी दो जहानां गुर, सतिगुर सच्चा साहिब सुल्तान वड्डी वड्याईआ। आपणी करनी तों कदे जावे ना मुड़, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। लग्गी प्रीत निभाए तोड़, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। चार जुग दे विछड़े रिहा जोड़, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। तुसीं वी सारे पावो शोर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रभू तेरे हथ्थ साडी डोर, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। कर सहायता कलयुग अन्धघोर, घोरी हो के वेख वखाईआ। असीं तेरे दुआरे दे चोर, चोरी मक्खण खा के झट लँघाईआ। बौहड़ी

अन्तिम जावीं बौहड़, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सानूं पिच्छे ना जावीं छोड़, बन्दी छोड़ तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं पै गई साची लोड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच दुआरा इक्को देणा सुहाईआ। देवत सुर दानव कहिण यख यखनी करीए हक़ सलाह, मता इक्को इक पकाईआ। आपणी निगाह मारो विच गिराह, अंदर अन्तर फोल फुलाईआ। की करदे रहे गुनाह, हुक्म मन्निया ना धुरदरगाहीआ। जगत देंदे रहे पनाह, आपणा बल वखाईआ। अन्तिम मिटण लग्गा नाँ, निशाना कूड़ा दए गवाईआ। बिन पुरख अकाल सिर देवे कोई ना ठंडी छाँ, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। सदी चौधवीं करे ना कोए निआं, अदल इन्साफ ना कोए कमाईआ। साडे सब दे हुन्दयां किसे ने सूर खाधा किसे ने ख़ाधी गाँ, साबत नज़र कोए ना आईआ। की करे बेचारी धरती माँ, जम्मण वाली रो रो मारे धाहींआ। सानूं मिले किते ना थाँ, गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ पई दुहाईआ। किस दुआरे जा के लईए नाँ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तीर्थ तट किनारे नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साचा दिसे ना कोई ना राह, दीन मज़हब घर घर करन लड़ाईआ। गुर अवतार पकड़े कोई ना बांह, सारे पल्लू गए छुडाईआ। निथाव्याँ देवे ना कोई थाँ, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सदी चौधवीं कहे इक मन्नो मेरी रज़ा, रमज़ नाल समझाईआ। पुरख अबिनाशी मिलो आ, साहिब स्वामी दया कमाईआ। जिस ने दो जहानां साह ल्या सुधा, थित वार वंड वंडाईआ। छब्बी पोह नूं सब दे बख़्श देवे गुनाह, पूरब लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे दो जहानां करन आया हक़ निआं, निआंकार इक्को इक अख्वाईआ।

❊ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ४ बेला सिँघ दे गृह सेई कलां जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे मेरे राम केहड़ा तेरा इल्म, धुर आलम देणा समझाईआ। जिस विच तूं लेख लिख्या होवे पीणा चिलम, दुर्गन्ध तमाकू वाली भराईआ। जिस रसना नाल तेरा करना होवे सिमरन, तेरी महिमा गाईआ। ओह क्यों ना आवे तैनूं मिलण, जिस दे अन्तर तेरा नूर जोत रुशनाईआ। क्यों जगत कूड़ी क्रिया फसाया विच जिल्ह्ण, बाहर सक्कया ना कोए कढ्ढाईआ। दीनां मज़हबां विच्चों सके ना कोए हिलण, गुर अवतार पैगम्बर बंधन ना कोए तुड़ाईआ। चुरासी वाला दुखड़ा झल्लण, मर जम्मण जम्मण ते मर जाईआ। तेरे भय विच मूल ना कम्बण, डर सिर ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया चाढ़या अमल, सति सरूर ना कोए वखाईआ। एसे कारण दुनियां ख़ाली होई वांग सिंमल, फल फुल्ल ना कोए वड्याईआ। तेरा

रूप दिसे किसे ना बिमल, ज़हूर विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, की आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे क्यों रसना जिह्वा जगत लगाया तमाकू, प्रभू की तेरी वड्याईआ। की एह केहड़ी उत्तम श्रेष्ट तेरी धातू, जेहड़ी धरनी विच्चों प्रगटाईआ। तूं आदि जुगादि धुर दा सब दा बापू, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। लख चुरासी अन्तिम दिसे नासू, थिर रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दे पुंझा के आंसू, थोड़ा थोड़ा इशारा दिता कराईआ। बणा के सेवक धुर दे दासू, दास्तान दिती समझाईआ। कलयुग अन्तिम बांह कढ्ढके कोए ना आखू, मैं दीन दुनी नूं इक्को राह दिता वखाईआ। मज़हबां दे निक्के निक्के टापू, नाम अक्खर टप्पिआं विच बदलाईआ। वखरे वखरे बणा के पाठू, जगत रीती विच दुहाईआ। पाणी दे सुहा के अठसाठू, अट्ठां तत्तां दिता नुहाईआ। सच दस्स तुध बिन दुरमति मैल कवण काटू, पापां करे सफ़ाईआ। लख चुरासी घुम्मदी वांग लाटू, गरदश विच दिसे लोकाईआ। किसे दा पूरा हक़ ना बणया उत्ते चाचू, बिना पिता तों पूत दी झोली ना कोए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेरे साहिब तेरी वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे क्यों रसना लाया कूड़, कूड़ कुटम्ब बणाईआ। चतुर सुघड़ बणा के मुढ़, मूरखां नाल वड्याईआ। आपणा छुपा के नूर, अन्धेरे विच भवाईआ। मन मनसा दे बणा मज़दूर, साची सेव ना कोए समझाईआ। जगत खुमारी दे सरूर, सुरती दिती बदलाईआ। आप छुप के हाज़र हज़ूर, क्यों पर्दा रिहा पाईआ। मेरी बेनन्ती कर मन्ज़ूर, सदी चौधवीं सीस निवाईआ। जिस फ़कीरी नूं कहिंदे उच्ची नालों खजूर, ओह गुरमुखां दे चरणां हेठां दे दबाईआ। तूं सर्ब कला भरपूर, बेअन्त तेरी वड्याईआ। जगत नाता तोड़ दे ग़रूर, हउमे गढ़ रहिण ना पाईआ। साचे नाम दी बख्श तूर, घर घर तेरा राग करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदी चौधवीं कहे मैं अन्त होई मजबूर, मजबूरी विच हालत सब दी रही समझाईआ।

७१५

२१

✻ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ४ सोभा सिँघ दे गृह सेई कलां जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया पुरख अकाल अगम्म स्वामी, समें दा मालक इक अख्वाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चरासी अन्तरयामी, घट घट अन्तर वेखे चाँईं चाँईंआ। अवतार पैगम्बरां गुरुआं बणदा बानी, लोकमात तन वजूद दए वड्याईआ। सति धर्म दी दात बख्शे निशानी, वस्त अमोलक आप वरताईआ। नाम संदेसा देवे कलामी, कायनात

करे पढ़ाईआ। खेले खेल दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। अक्खरां वाली सुणा के बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। निझर अमृत दस्स के धुर दा पाणी, रस इक्को इक वखाईआ। खेल खिलावे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म साचा मेला दस्से हाणी, दूजा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्की जोत अकालण, अकल कला अख्वाईआ। संदेसा देवे तूं भगतां दी बण मालण, फुल्ल सुगंधी नाल लिआईआ। मुहम्मद दी रहीं ना अग्गे दलालण, विचोलण नज़र कोए ना आईआ। प्रभ भगतां लग्गा संभालण, निरगुण आपणी गोद उठाईआ। कलयुग बदलण वाला चालण, सतिजुग साचा राह प्रगटाईआ। गुर अवतारां पूरा करे सवालण, भविख्तां वेख वखाईआ। लख चुरासी बण के जाणी जानण, चारे कूटां खोज खुजाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे कामन, माया ममता मोह गवाईआ। निरगुण नूर बख्शे चानण, जोती जोत करे रुशनाईआ। साचे भगतां फड़ के दामन, पल्लू धुर दा गंढु पुआईआ। पन्ध मुका ज़िमीं असमानण, दरगाह साची इक वखाईआ। जिथ्थे निरगुण जोत जगे भगवानन, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। बिन छप्पर छन्न सोहे मकानन, सुर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक हो आईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया शाहो भूप, हरि करता धुरदरगाहीआ। जो वस्से चारे कूट, दह दिशा रिहा समाईआ। कलयुग मेटे जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। भाग लगाए काया माटी पंज भूत, ततव तत करे रुशनाईआ। आसा तृष्ना कराए कूच, मन का मणका दए भवाईआ। हिरदे अंदर बख्शे सूच, संजम इक्को इक दरसाईआ। सब दी बदल देवे बूझ, बुध्ध बिबेक लए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया नूर नुराना, परवरदिगार नूर अलाहीआ। जिस दा अवतार पैगम्बर गुर ग़ुलामा, जगत सेवा मात कमाईआ। जिस दा शब्द नाम दमामा, दो जहानां करे रुशनाईआ। जिस दी अगम्मी नाद धुन कलामा, अक्खरां नाल सिफ्त सालाहीआ। सो पहर आपणा बाणा, निरगुण नूर डगमगाईआ। जिस ने बदल देणा ज़माना, ज़िमीं असमानां हुक्म वरताईआ। जो सब दा बणे काहना, लख चुरासी गोपी वेख वखाईआ। जो आदि अन्त दा रामा, सीता सुरती सर्ब प्रनाईआ। जो नूरी जोत अमामा, दरगाह साची डेरा लाईआ। जो सति सरूप नौजवाना, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। सो खेले खेल विच जहाना, जहालत वेखे कूड़ लोकाईआ। दीन दुनी होई बेईमाना, सति धर्म ना कोए रखाईआ। जगत शरअ छुरी होई किरपाना, धर्म दी धार ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

७१६
२१

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता आपणी कल वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या शहिनशाह धुर दा मालक, नामालूम दया कमाईआ। जिस नूं कहिंदे सारे ख़ालक, जल्वागर नूर अलाहीआ। उह बणन लग्गा अन्तिम सालस, नव नौ चार डेरा ढाहीआ। कलयुग कूड़ी निंदरा मेटे आलस, सावधान करे लोकाईआ। हरिजन भगत उपजाए ख़ालस, चार वरनां एका रंग रंगाईआ। मन कल्पणा मेटे नालश, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। त्रैगुण माया ना लाए आतश, अगनी अग्ग दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जो आदि जुगादी सही सलामत, दु:ख रोग नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं पुरख अकाला गया मिल, परवरदिगार दिती वड्याईआ। मेरे धीरज दिती दिल, हौसला दिता वधाईआ। जिस बस्तर पहने नील, नीली धारों परे करे रुशनाईआ। उह गुर अवतार पैगम्बरां सुण अपील, मातलोक आपणा फेरा पाईआ। दीन दुनी दी बदल देवे दलील, दिलबर हो के दया कमाईआ। योद्धा बण के सूरबीर छबील, छैल आपणा नाउँ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा रिहा सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं संदेसा दिता इक्क, सहज नाल सुणाईआ। जा के वेख भगत भगवान दे सिख, जो इक्को ओट तकाईआ। जिन्हां अन्तर प्रभू मिलण दी सिक, धुर प्रीतम राह तकाईआ। ओह तैनूं आवण दिस, दह दिशा विच्चों करन रुशनाईआ। जिन्हां दे स्वामी वसिआ विच्च, हरि करता अन्तर आत्म डेरा लाईआ। ओह माणस जन्म रहे जित्त, चुरासी फाँसी गलों तुड़ाईआ। अमृत नाम धुर दा रस लैण मिठ्ठ, कलयुग कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। धाम तक्क साहिब अनडिठ, गृह मन्दिर वेखण चाँईं चाँईंआ। अबिनाशी करता वसिआ चित, मन चित ठगौरी रहे ना राईआ। पुरख अकाला बणे मित, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं आख्या शब्द संदेसे धार, रसना ना कोए हिलाईआ। उठ वेख गुर अवतार पैगम्बरां दा संसार, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। किसे दा रिहा ना कोए इख़्त्यार, जगत माण ना कोए चतुराईआ। वीहवीं चौधवीं सदी दे सारे मुख़्त्यार, मुख़तारनामे सब दे पूर कराईआ। अग्गे हुक्म चले सच्ची सरकार, हरि करता आप जणाईआ। दीन मज़हब दा झगड़ा मेटे विच संसार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को रसना जिह्वा बोले नाम जैकार, इक्को इष्ट देव सृष्ट मनाईआ। इक्को मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ होवे गुरदुआर, इक्को गृह पुरख अकाला नज़री आईआ। इक्को नाम निधाना जीव जहाना दस्से आप करतार, आत्म परमात्म परमात्म आत्म राग अल्हाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्तिम मेटे धूआँधार, रैण अन्धेरी रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा सति करे उज्यार, उजाला आपणा नूर

दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त एथे ओथे दो जहान पावे सार, महासार्थी आपणी कल वरताईआ।

❋ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ४ थोड़ू राम दे गृह सेई जम्मू ❋

सदी चौधवीं कहे पुरख अकाल एका बण जा इष्टी, इष्ट आत्म परमात्म दे समझाईआ। दीन दुनी दी बदल दे दृष्टी, निरगुण धार आपणा रंग रंगाईआ। जगत कल्पणा विच्चों कढ्ढ सृष्टी, श्रेष्ट आपणा राह समझाईआ। झगड़ा मुका दे दोज़ख़ बहिश्ती, स्वर्ग सार किसे ना आईआ। चार जुग दे वेखे गृहस्ती, गुर अवतार पैगम्बर फेरीआं गए पाईआ। उन्हां तेरा नाम सालाहया लिख्ती, अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। भेव पाया ना टांक जिस्ती, इक दो वंड वंडाईआ। अन्त अख़ीर दुनियां फ़ानी दिसदी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। हक़ीक़ी मंजल लभ्भे किसे ना इक दी, जो एकँकार तेरी जोत विच समाईआ। दीन दुनी दी आशा फिरे पिटदी, ख्वाहिश रो रो दए दुहाईआ। मेरे साहिब सुल्तान कलेश मेट दे नित दी, नर नरायण आपणा परदा लाहीआ। तेरी दुनियां सिख्या लै लए साचे सिख दी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई नज़र कोए ना आईआ। चरण धूढ़ी मँगण इक्को पित दी, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। मैं आसा करदी कित दी, जुग चौकड़ी गए विहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे सब दा इक्को बण धुर दा साक, हरि सतिगुर नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर भविख्त वाक्, पेशीनगोईआं आपणे नाल मिलाईआ। झगड़ा मेट दीन दुनी ज़ात पात, मज़हब कौम ना कोए लड़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दे धुर दा साथ, सगला संग आप हो जाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म होवे तेरी गाथ, नाम संदेसा देणा सुणाईआ। शब्द स्वामी अन्तरजामी सच चढ़ाउणा आपणे राथ, दो जहानां पार कराईआ। कलयुग कूड़ कल्पणा सृष्टी दी दृष्टी विच्चो कर नास, नास्तिक रहिण कोए ना पाईआ। तेरा नाउँ उपजे हर घट अन्तर स्वास स्वास, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। तेरा नूर चार वरन होवे प्रकाश, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को घर दरसाईआ। रूह बुत अबिनाशी अचुत पारब्रह्म कर पवित पाक, दुरमति मैल रहे ना राईआ। तूं सदा सदा सद आदि जुगादि, जुग चौकड़ी तेरा खेल नज़री आईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा लेखा लिख के गए नाल क़लम दवात, काग़ज़ शाही वंड वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्त श्री भगवन्त दीन दुनी

दा बदल देवे समाज, चार वरन अठारां बरन इक्को घर वसाईआ। सो किरपा कर दो जहानां मालक आप, आपणा परदा दे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, दर तेरे धुर दी आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे कूड़ी क्रिया मेट कलेश, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। तूं मालक इक नरेश, नर नरायण तेरी सरनाईआ। फ़रमाना दे के गया दस दस्मेश, दह दिशा कर पढ़ाईआ। अन्त कन्त भगवन्त प्रभ दाता आवे एक, एकँकार आपणी कल धराईआ। सृष्ट सबाई बख्शे टेक, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जन भगतां करे बुध्ध बिबेक, दुरमति मैल रहे ना राईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अगनी तत दए बुझाईआ। आत्म परमात्म करे हेत, निज नेत्र नैण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आदि जुगादी सचखण्ड सच दुआरा धुर दा देस, जिथ्थे परदेसी नज़र कोए ना आईआ।

७१९
२१

❊ १४ पोह शहिनशाही सम्मत ४ अंग्रेज़ सिँघ दे गृह सई कलां जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे मैं जगत समाज दी देवां रपट, हाल हालत दयां समझाईआ। जीन्दयां मरदयां सब नूं रहन्दा खटक, दकुखां विच दुहाईआ। कूड़ कल्पणा मारदी झपट, सब नूं आपणे विच छुपाईआ। भेख पखण्ड दा वध्या कटक, चारों कुण्ट बल धराईआ। सति धर्म गया लटक, सुरत सम्भल सके ना राईआ। गुरमति दिती झटक, झटका कीता जगत लोकाईआ। तेरा हुक्म रिहा ना सख्त, भय सिर ना कोए जणाईआ। सदी चौदवीं कहे मैनूं वेखदयां आ गया उह वक्त, जिस दा बैठी राह तकाईआ। दुर्गा रही कोए ना शक्त, अष्टभुज दए दुहाईआ। तेई अवतार छड्ड के गए फ़र्श, नाता तन वजूद तुड़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद वेख अर्श, तेरे नूर विच समाईआ। नानक गोबिन्द दस्स के गए शर्त, धुर फ़रमान दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दीन दुनी दी देवां रपोट, दर तेरे दरज कराईआ। भेव खोल्ह निर्मल जोत, जोती जाते तेरी वड्याईआ। पिच्छे जुग बीत गए बहुत, आपणा पन्ध मुकाईआ। धुर दा दिता ना किसे सलोक, संदेसा सच ना कोए जणाईआ। जो उपज्या तिस नूं मारे मौत, बचया रहिण कोए ना पाईआ। किसे नूं साढ़या कोई होया फ़ौत, मक़बरिआं विच दबाईआ। मैं खोजदी रही खोज, की खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, प्रभ तेरी इक सरनाईआ।

सदी चौधवीं कहे मेरे साहिब दीन दयाल, दयावान तेरी वड्याईआ। लख चुरासी तेरे लाल, बच्चे धुर दे सोभा पाईआ। चारे खाणी करें संभाल, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। एह खेल तेरा कमाल, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। मेरी बेनन्ती मेरा सवाल, मेरे मेरी झोली देणा पाईआ। मैं चौहन्दी सतिजुग साचे तेरी चले साची चाल, चार वरन इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ तेरी सतिजुग चले धारा, धर्म धार दृढ़ाईआ। मरन तों पिच्छे मारे कोई ना नाअरा, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ। भावें कोई विआहिआ होवे भावें होवे कँवारा, बिरध बाल ना कोए वड्याईआ। सब दा इक्को जिहा होवे विहारा, सारे चलण हुक्म रज़ाईआ। बुढ्डयां उत्तों कोई सुट्टे ना बादाम छुहारा, मखाणा हथ्थ ना कोए रखाईआ। काग़ज़ां नाल करे ना कोए शंगारा, कोड़मा जगत ना कोए बुलाईआ। सारे लावण इक्को नाअरा, तेरे नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेरी मनसा पूर कराईआ। सदी चौधवीं कहे मैं देण आई इतलाह, आम अवाम देणा जणाईआ। परवरदिगार मेरी सलाह, पुरख अकाल दिती दृढ़ाईआ। सतिजुग सति दा चले राह, रस्ता इक्को देणा वखाईआ । बुढ्ढे नढ्ढे मरयां सब नूं इक्को जिहा होवे चा, दुःख दर्द ना लागे राईआ। हाए उफ़ कहे ना माँ, पिता कूक ना कोए सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे पुरख अकाल तूं आपणी दया कमा, दीन दयाल तेरी सरनाईआ। इक्की बीबीआं दे हथ्थ विच काने लईं फड़ा, साढे तिन्न फ़ुट होवे लम्बाईआ। पंज पंज काग़ज़ टुकड़े लईं जुड़ा, रंग रंग नालों बदलाईआ। छब्बी पोह नूं चलण नाल चा, हथ्थां विच हिलाईआ। मुखों कहिण साडा भावें मर जाए पिउ माँ, वड्डा करन कोए ना पाईआ। अन्त जैकारा देणा ला, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जै कराईआ। छब्बी पोह नूं पुरख अकाल सब तों सौगंध लईं खुवा, घर आ के मुकर कोए ना जाईआ। तेरी संगत तेरी संगत दी बणे गवाह, शहादत अवर ना कोए भुगताईआ । मेरी ग़रीबणी दी एहो दुआ, सदी चौधवीं सीस निवाईआ। वेखीं किते ऐंवे ना कर देईं हां, हां हां नाल मिलाईआ । मैं तैथों दस्ख़त लैणे करा, हरफ़ हरूफ़ लिखणे जेहड़ी नाल रखणी नीली लाल शाहीआ। चौदां सदीआं मैं आसा रही तका, सो अन्तिम गया आईआ। मैं ज़रूर बांह फड़ के प्रभू चेता दयां करा, चेतन हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे ढहि पई सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभू तुध बिन कवण सहाई, सच दे समझाईआ। मैं कूक के दयां दुहाई, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ । गुरमुखो नेत्र रोणा नहीं भावें सजरी धी विआही दा पती मरे जवाई, जोबनवन्ता नज़री आईआ। जिस भेज्या ओह सब दा मालक गोसाईं, ज़ुम्मेवार दूजा नजर कोए ना आईआ।

जे भगत बणना ते बणयो चाँईं चाँईं, लोक लज्जया देणी तजाईआ। जे सन्त बणना ते खड़ीआं करयो बाहीं, आप आपणा बल धराईआ। जे गुरमुख बणना ते हुक्म मन्नणा धुरदरगाही, दूजा भय ना कोए वखाईआ। जे सिख बणना आपणा आप निछावर देणा कराई, तन वजूद दी लोड़ रहे ना राईआ। जे मनमुख होणा छब्बी पोह नूं पल्ले आयो छुडाई, अग्गे मिलण दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडी जेब दी पर्ची तुहाडी देवण वाली गवाही, जो सब दे हथ्थ लैणी फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे वल्ल करो ख्याल, जन भगतो दयां सुणाईआ। मैनूं उडीकदी नूं तेरां सौ अठासी बीत गए साल, आसां विच आपणा झट लँघाईआ। तुसीं ते छोटे जिहे बाल, बच्चे नन्हे वेख वखाईआ। तुहाडे पिच्छे मैं प्रभू नूं कहां एन्हां दी करीं आप संभाल, आपणी गोद उठाईआ। किरपा कर के कढ्ढीं विच्चों जगत जंजाल, मेहर नज़र नाल तराईआ। प्रभू जे अंदर वड़ जाएं फेर एह सारे मारन छाल, आपणा बल आप प्रगटाईआ। आपणे जन्म दा वक्त लैण संभाल, अगले जन्म दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल बड़ा विशाल, विशा समझ किसे ना आईआ ।

✻ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ४ मंगल सिँघ दे गृह सई कलां जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैं वेख वेख थक्की अक्खर, अक्खरां विच जगत लड़ाईआ। मैं कठोर हो गई पत्थर, नरमी नज़र कोए ना आईआ। मेरे हन्झू सुक्क गए अथ्थर, नैण नीर ना कोए वहाईआ। बौहड़ी साचा रिहा कोई ना फ़क्कर, फ़कीर नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट विद्या दी टक्कर, हँकार नाल लड़ाईआ। साचा मिले किसे ना पत्तण, कन्ढा घाट ना कोए सुहाईआ। ब्यर्थ दिसे जीवण यतन, यथार्थ मिले ना धुर दा माहीआ। रसना जिह्वा सारे बकण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रभ दा दरस मूल ना तक्कण, निज नेत्र नैण कर रुशनाईआ। मन ममता मदिरा मास सारे छकण, हिन्दू मुस्लिम बचया नज़र कोए ना आईआ। चुरासी गेड़ मूल ना कटण, जून अजूनी डेरा लाईआ। आपणा हिरदा मूल ना फट्टण, नाम अणयाला तीर चलाईआ। साचा लाहा जगत ना खट्टण, मनमुख बैठे मुख भुआईआ। कूड़ी क्रिया अंदर टप्पण, भज्जण वाहो दाहीआ। तेरा नाम मूल ना जपण, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। सृष्टी होई मन मत्तन, गुरमति गई भुलाईआ। कूड़ कुड़िआरियां अंदर वस्सण, वास्ता छड्डया बेपरवाहीआ। मैं सब नूं आई दस्सण, उच्ची कूक दयां जणाईआ। बिना

पुरख अकाल तों पत आवे कोई ना रखण, दो जहान ना कोए सहाईआ। साचा घर ना देवे वतन, बेवतनां घर पुचाईआ। इक्को साहिब सतिगुर सब दा सांझा कर हक़न, हक़ीक़त आपणी दे दृढ़ाईआ। तूं अल्ला वाहिगुरु राम ओम बण नशक्कण, शक्क सब दे दूर कराईआ। इक्को रूप दुनीदार तेरा तक्कण, इक्को जोत डगमगाईआ। खेल वखा पुरख समथन, हरि आपणा परदा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा नाम चार वरन रटण, रट्टा जगत देणा मुकाईआ।

✲ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ४ वकील सिंघ दे गृह सई कलां जम्मू ✲

सदी चौधवीं कहे मैं वेखी चार लख अस्सी, आसावंद ध्यान लगाईआ। सब दी जिह्वा पढ़ पढ़ घसी, तक्की थाउँ थाईंआ। दूर दुराडी फिरी नस्सी, भज्जी वाहो दाहीआ। तेरी मंज़ल किसे ना दस्सी, पंडत पांधे पुच्छे चाँईं चाँईंआ। मुल्लां शेख़ां मिली जोत ना रब्बी, तेरा भेव ना कोए खुल्हाईआ। विदवानां बुद्धिवानां तेरी समझी किसे ना गद्दी, मालक हक़ ना कोए जणाईआ। चार कुण्ट दह दिशा दीनां मज़हबां दी बन्द होया विच डब्बी, हिस्से छोटे छोटे बणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरे नाम दी वखाउँदे रहे नदी, समुंद सागर ना कोए समझाईआ। किसे ने सृष्ट समझाई नहीं चौथाई अध्धी, छोटीआं छोटीआं वंडां गए पाईआ। मैं वी फिरदी पैर दब्बी, हौली हौली चलां चाँईं चाँईंआ। दीनां मज़हबां विच जावां कदी कदी, क़दीम दे मालक तेरी खेल वेख वखाईआ। जिधर वेखां ओधर बज्झी हद्दी, वंडां रहे पाईआ। तेरी नूर धार किते ना लभ्भी, सति चन्द ना कोए चमकाईआ। मैं वास्ता पावां हथ्थीं बद्धी, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। साहिब सरनाई तेरी लग्गी, नाते दूजे दिते तुड़ाईआ। मैनूं बंधनां विच्चों कढ्ढीं, आपणे घर वसाईआ। टुट्टी प्रीत गंढ्ढीं, धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। सदा सुहागण रखीं होण ना देवीं रंडी, जगत रंडेपा देणा चुकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दी रहे ना कोए पाबन्दी, पाबन्द आपणे लैणे बणाईआ। मैं बन्द नहीं रहिणा ख़ाने बन्दी, बन्दीख़ाने देणे तुड़ाईआ। मैं गोबिन्द तकणा सूरबीर बहादर जंगी, योद्धा इक्को वेख वखाईआ। जिस ने वरभण्ड पाउणी भंडी, ब्रह्मण्ड लेखा दए मुकाईआ। तेरे नाम दी दए सुगंधी, वस्त अमोलक इक वरताईआ। मैं छड्ड देणी दीनां मज़हबां दी पुराणी मंजी, सिँघासण तेरा इक्को वेख वखाईआ। मैं सिरों नहीं रहिणा गंजी, सीस गुंद के आपणा रूप लैणा बदलाईआ। मैं कटणी नहीं कोई तंगी, सुख सागर विच समाईआ। मैं नहाउण नहीं जाणा जमना सुरस्ती गोदावरी गंगी, तेरा चरण धूढ़ इश्नान मेरी दुरमति मैल दए धुवाईआ। मैं मन्नणी नहीं कोई पिंडी, शिव शंकर

सीस ना कोए निवाईआ। मेरी मेंढी रहिणी नहीं खिण्डी, साचा रंग लैणा रंगाईआ। मैं भय नहीं रखणा सुरप्त राजे इंदी, इन्द इंदरासन आई तजाईआ। मैनूं पंज फुल्ल भेंटा करे ओह लड़की जो होवे सिन्धी, तोहफ़ा गुरमुखां हथ्थ घलाईआ। मेरी मिट जाए अगली चिन्दी, चिन्ता रहे ना राईआ। मैं सदा तेरे चरणां विच ज़िंदी, ज़िंदगी तेरी झोली पाईआ। हुण चलणा नहीं डंडी डिंगी, राह सिध्धा ल्या अपनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं अक्खर वेखे तेरे उत्ते सलेट, पत्थर पत्थरां नाल छुहाईआ। इक दूजे दे अग्गे पिच्छे रहे लेट, वारो वारी आपणा आप बदलाईआ। इक दूजे नूं आपा करदे रहे भेंट, नाता इक दूजे नाल जुड़ाईआ। इक दूजे नाल दस्सदे रहे हेत, हितकारी तेरी बेपरवाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा दस्स दे आपे भेत, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। मैं पढ़न नहीं जाणा चार वेद, पुराण अठारां वरका ना कोए उलटाईआ। छे शास्त्र चुकणी नहीं कतेब, अठारां अघ्याय ना ढोला गाईआ। मैं सहँसर मुख नहीं बणौंणा वांग शेष, जिह्वा सहँसर दो हिलाईआ। मैं सिर नहीं बदलाउणा वांग गणेश, शंकर त्रसूल ना कोए वड्याईआ। मैं रिषीआं दे होणा नहीं पेश, जंगलां विच कुरलाईआ। मैं वसणा नहीं गुर अवतार पैगम्बरां दे देस, जो जम्मण ते मर जाईआ। मैं वेखणा नहीं दीन दुनी दा कलेश, कलमयां वाली ना करां पढ़ाईआ।
७२३ जद वसां ते तेरे चरण हमेश, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। जां तक्कां ते तेरा लाडला पुत दस्मेश, जोती जाता नज़री ७२३
२१ आईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे खुल्ल्हे रहिण ना केस, मींढी सीस देणी गुंदाईआ। मैं छड्ड जावां परदेस, परदेसण हो २१
के दयां दुहाईआ। दीन दुनी नूं कहां आउ मेरा माही लओ वेख, जो मालक धुरदरगाहीआ। जेहड़ा किसे हथ्थ ना आया मुल्ला शेख़, पंडत पांधा मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा दर्शन मँगां हमेश, दूसर अक्ख ना कोए मिलाईआ।

✳ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ४ दौलत सिँघ दे गृह कोटली जम्मू ✳

सदी चौधवीं कहे मैं हरफ़ां दीआं पढ़ीआं कतारां, सतरां लाईनां वेख वखाईआ। कागज़ वेखे नाल इशतिहारां, पंने सफ़े लए बदलाईआ। दिवस रैण करदी रही विचारां, सोच आपणे अंदर रखाईआ। कवण धाम मिले मेरा दातारा, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस नूं कहिंदे परवरदिगारा, जल्वागर नूर अलाहीआ। जिस दा खेल दीन दुनी तों बाहरा, जग

नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सो सुवामी अन्तरजामी घट निवासी निरगुण निरवैर देवे दीदारा, बिन दीद ईद चन्द करे रुशनाईआ। सर्ब स्वामी मैं वेखां सिरजणहारा, सचखण्ड निवासी परदा दए उठाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मैं फिर फिर थक्की वारो वारा, साल बसाला आपणा पन्ध मुकाईआ। अन्त पुच्छया पैगम्बर गुर अवतारा, आपणी आशा दिती जणाईआ। मेरा मेलो साजन मीत मुरारा, मित्र प्यारा नूर अलाहीआ। जिस दा अगम्म अथाह महल अटल उच्च मुनारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दरगाह साची वस्से धाम निआरा, चार दीवारी वंड ना कोए कराईआ। रवि ससि सुर्या चन्द ना कोए उज्यारा, मण्डल मण्डप नज़र कोए ना आईआ। एका निरगुण जोत बिन वरन गोत होवे उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। ओस दे चरण कँवल करां निमस्कारा, रो रो लागां पाईंआ। बेनन्ती करां किरपा कर वेख आपणा संसारा, लोकमात ध्यान लगाईआ। चार वरन दिसे अन्धयारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तेरा नूर ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं पढ़ पढ़ थक्की लेख, अक्खरां नाल वड्याईआ। चारों कुण्ट तक्कया भेख, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। दाढ़ी रत्ती मुल्ला शेख़, मुसायक नेत्र रोवन मारन धाईंआ। धुर दा दस्से कोई ना भेत, परदा सके ना कोए उठाईआ । दरस कराए ना कोई नेतन नेत, निज नेत्र ना कोए रुशनाईआ। धरनी धरत धवल सब ने मन्नया आपणा देस, परदेसी बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, परदा उहला दे चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे पढ़ पढ़ वेखे हरफ़ अनेक, इल्मां विच वड्याईआ। बिना प्रभ तों मिले ना साची टेक, टिक्के धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। धुर दा दिसे कोई ना देस, घर सुहञ्जणा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैगम्बर दे के गए संदेस, धुर फ़रमाने हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे नर नरेश, कल कल्की फेरा पाईआ। जिस दी महिमा करे कोई ना जिह्व, रसना सिफत ना कोए सालाहीआ। दाता दानी होवे अलख अभेव, अगम्म अथाह नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं हरफ़ां ल्या पुच्छ, सहज नाल सुणाईआ। तुसीं क्यों सारे रहन्दे चुप, काग़ज़ां उत्ते आसण लाईआ। वेखो कलयुग अन्धेरा घुप, तुहाडे पढ़यां समझ कोए ना पाईआ। क्यों नहीं अंदरों कूड़ कल्पणा देंदे टुक, खण्डा नाम वाला खड़काईआ। क्यों प्रभ दे नालों गए रुस्स, आपणा पल्लू जगत छुडाईआ। की जाम पीणा घुट, मैनूं दयो दृढ़ाईआ। जिस कारण साची सुरती गई टुट्ट, शब्दी मेल ना कोए मिलाईआ। घर घर अंदर वड़या दुःख, दर्दीआं दर्द ना कोए गवाईआ। की तुसीं सफ़ल कर नहीं सकदे माता कुख्ख, जननी जन

ना देवे कोए वड्याईआ। हरफ़ कहिण सदी चौधवीं साडी मंज़ल रही मुक, अन्तिम पैंडा नेड़े आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणे भाणे अंदर सदा रहन्दा खुश, जुग चौकड़ी आपणी करनी कार कमाईआ।

❋ १५ पोह शहिनशाही सम्मत ४ देवी सिँघ दे गृह मघोवाली जम्मू ❋

सदी चौधवीं कहे प्रभ तेरे नाम अक्खर लिखे कागज़ शाही, शहिनशाह सृष्टी दिती समझाईआ। चार जुग दे ग्रन्थ देण गवाही, शहादत धुर दी रहे भुगताईआ। मेरी तेरे अग्गे इक दुहाई, नेत्र रो रो दयां सुणाईआ। जिंनां चिर दीन दुनी दे हिरदे अंदर करें ना आप लिखाई, लेख धुर दा धुर बणाईआ। उनां चिर मिटे ना कदे जुदाई, विछोड़ा कट ना कोए वखाईआ। किरपा कर मेरे गोसाईं, मेहरवान तेरी आस तकाईआ। हर घट अन्तर कर रुशनाई, निरगुण नूर डगमगाईआ। निझर झिरना दे झिराई, अमृत बूँद स्वांती जाम प्याईआ। कूड़ी क्रिया मेट दे शाही, धुर दा साचा रंग रंगाईआ। आत्म दा परमात्म बण माही, महबूब तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैं निउँ निउँ लागां पाईं, बिन क़दमा सीस झुकाईआ। तूं शहिनशाह धुरदरगाही, सचखण्ड दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे तेरे अक्खरां नाल लिखी तेरी सिफ्त सालाह, महिमा जुग जुग वड्याईआ। जगत मुहाणे दस्स के ग्यों बण मलाह, हुक्मे अंदर हुक्म चलाईआ। तेरा खेल बेपरवाह, जुग चौकड़ी तेरा नाम दुहाईआ। जिंनां चिर अन्तर आपणी दया ना दएं कमा, मेहर नज़र उठाईआ। उनां चिर तेरा दर्शन सके कोई ना पा, पूजा पाठ ना कोए वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक इक खुदा, खुदी तक्बरी अंदरों दे कढ्ढाईआ। तेरा नूर तैथों होए ना कोए जुदा, जुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। सच दुआरा इक सुहा, सोभावन्त तेरी सरनाईआ। दीया बाती कमलापाती इक जगा, निरगुण नूर होवे रुशनाईआ। बंक दुआरा एकँकारा इक वडया, सच सिँघासण डेरा लाईआ। मेरी तेरे अग्गे दुआ, निउँ निउँ लागां पाईंआ। बिन तेरी किरपा मेहरवान महबूब तेरा दर्शन कोई ना सके पा, मंज़ल हक़ीक़ी चढ़न कोए ना पाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ थक्का जगत जहां, पंडत पांधे मुल्ला शेख़ मुसायक बग़ल क़ुरानां फिरन उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा अवर ना कोए सहाईआ। सदी चौधवीं कहे तेरे अक्खर देंदे रहे संदेसा पाती, ख़बरां ख़बरां नाल मिलाईआ। तूं लुक्या रिहों धुर दा कमलापाती, पतिपरमेश्वर आपणा मुख

छुपाईआ। मैं झगड़ा तकदी रही काग़ज़ाती, कलमां कलमे नाल टकराईआ। लेखा वेखदी रही क़लम दवाती, काग़ज़ां उत्ते आपणी अक्ख टिकाईआ। बिन तेरी किरपा लोकमात बणया कोई ना तेरा साथी, सगला संग ना कोए निभाईआ। किरपा कर मेहरवान जीवण जुगत बदल दे हयाती, हर हिरदे कर सफ़ाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां भविख्तां विच तेरी कथा कहाणी आखी, कहि के गए सुणाईआ। उस दा लहिणा देणा पूरा कर दे बाकी, बाक़ाइदा आपणा हुक्म वरताईआ। भेव खुल्हा दे श्री भगवान तन ख़ाकी, तन वजूद परदा दे उठाईआ। सदी चौधवीं कहे कलयुग वेख अन्धेरी राती, साहिब स्वामी आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे तेरे अक्खर की कुछ कहिंदे, कहि कहि कलमे नाम सुणाईआ। मैं फिर फिर वेखे चढ़दे लहिंदे, दक्खण पहाड़ भज्जी वाहो दाहीआ। चार वरन अठारां बरन ना मिल के बैहिन्दे, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंडां बैठे पाईआ। मुखों सारे अल्ला वाहिगुरु राम तैनूं कहिंदे, अंदर शरअ छुरी दिसे कसाईआ। बाहरों सजदयां विच बन्दना विच डंडावत विच सारे तैनूं ढहिंदे, अंदरों हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। बिन तेरी किरपा भाणा कोए ना सहन्दे, भरम गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वहिण जांदे वहिंदे, फड़ बाहों पार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन तेरी किरपा सच दुआर मूल ना बैहिन्दे, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ।

७२६ २१

☀ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ माया देवी दे गृह मघोवाली जम्मू ☀

सदी चौधवीं कहे प्रभ कूड़ी क्रिया कलयुग दे रोढ़, शौह दरया वहिण वहाईआ। सति धर्म दा नाता अग्गे साचा जोड़, पारब्रह्म तेरे हथ्थ वड्याईआ। चार कुण्ट रहे ना कोई अन्धेरा घोर, धुर दा नूर दे चमकाईआ। झगड़ा मुका दे ठग चोर, माया ममता डेरा ढाहीआ। आत्म प्रीती निभा तोड़, धुर दा मेला सच मिलाईआ। इक्को तेरा मन्त्र फुरे फ़ुरना फोर, फ़ुरना मन रहे ना राईआ। मनुआ पाए कोई ना शोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते तेरी वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे नास, नास्तिक रहिण कोए ना पाईआ। हर हिरदे विच्चों तेरा नाम निकले स्वास स्वास, साह साह तेरी याद आईआ। सुरती शब्दी घर गोपी काहन पा रास, तन वजूद गृह मण्डल इक सुहाईआ। निरगुण नूर जोत कर परकाश, बिन तेल बाती दीपक जोत कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म

परमात्म आत्म मिलण दी पूरी कर ख़ाहिश, तृष्ना कूड़ रहे ना राईआ। तेरा जलवा मिले पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर तेरा ज़हूर वेख वखाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, अमावस कूड़ रहिण ना पाईआ। सति सच दी दे धुर दी दात, दाते दानी आप वरताईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को दे नाम सौग़ात, सुगंधी सब दे अंदर इक भराईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दे अंदरों निकले आवाज़, सोहँ ढोला साचा राग अलाईआ। भेव अभेदा खोल्ह दे राज़, राज़क़ रिज़क़ रहीम तेरे अग्गे मँग मँगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे दूर, नेरन नेर नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट नज़र आ हाज़र हज़ूर, हज़रतां दे मालक आपणी कल धराईआ। तूं समरथ स्वामी सर्ब कला भरपूर, बेअन्त बेपरवाह तेरी वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरे सेवक मज़दूर, गुर अवतार पैगम्बर सेव कमाईआ। मेरी बेनन्ती अर्ज़ कर मन्ज़ूर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतां जन्म कर्म दे मुआफ़ कर क़सूर, दुँख दर्द दे गवाईआ। घर दर्शन दे ज़रूर, काया मन्दिर अंदर परदा आप उठाईआ। जोती दीपक बख्श नूर, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। नाम खुमारी दे सरूर, मस्त प्याला जाम प्याईआ। जिधर वेखण ओधर दिसें हाज़र हज़ूर, हर घट बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण आदि जुगादि जुग चौकड़ी दरगाह साची तेरे दर होण मन्ज़ूर, सचखण्ड दुआरे मिल के धुर दी वज्जे हक़ वधाईआ।

७२७ २१

❊ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ प्रकाश चन्द दे गृह मघोवाली जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे मैं सुणी आवाज़ अगम्मी, अगम्म अगम्मड़े दिती जणाईआ। मेरी मिट गई हरख ग़मी, चिन्ता दुःख रिहा ना राईआ। तृष्ना बुझी तमी, तामस दिती मिटाईआ। ख़ाहिश पैदा होई नवीं, नव जोबन लई अंगड़ाईआ। बिन अक्खरां तों वेखी वही, वायदे सब दे फोल फुलाईआ। जिथ्थे बिन अक्खरां तों लिख्या अवतार चवी, चौदां तबकां चले की चतुराईआ। गुर अवतार पैगम्बर सिफ्त कर ना सके धुर दी भाषा वाले कवी, नाम कलमयां नाल वड्याईआ। मैं दस्स ना सकां की खेल करे अनभवी, प्रभ आपणी कार कमाईआ। जिस दी तुक आदि अन्त सब ने इक्को गवी, धुर दा ढोला नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुणया अगम्मी नाद, अनादी दिता जणाईआ। मैनूं पिछली भुल्ल गई याद, अग्गे अग्गा नज़री आईआ।

कलयुग कूड़ा होणा बरबाद, सतिजुग साचा सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां उजड़नां बाग़, बाग़बान नज़र कोए ना आईआ। दीन दुनी बुझणा चिराग़, दीवा बत्ती ना कोए रुशनाईआ। दीन मज़हब बदलना समाज, ज़ात पात पन्ध मुकाईआ। सति धर्म चलणा रिवाज, मानव एका रंग वखाईआ। पुरख अकाल करना काज, हरि करता दया कमाईआ। नवीं साजणा देणी साज, धुर दी साची बणत समझाईआ। पैगम्बरां अन्त होणा जवाब, धुर दा हुक्म इक अलाहीआ। पुरख अकाले सब कुछ करना आप, आप आपणी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्सणा जाप, दो जहानां कर पढ़ाईआ। दीन दुनी दा बणना बाप, लख चुरासी गोद उठाईआ। खेड़ा चुकाउणा ज़िमीं सात, ज़िमीं असमानां पन्ध मुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुणया धुर दा नाम, नाम निधान दिता जणाईआ। मैनूं पिछला भुल्लिआ जहान, अग्गा वेख्या चाँईं चाँईंआ। दीन मज़हब दी रहिणा नहीं गुलाम, शरअ ज़ंजीर देणा कटाईआ। प्रभ मिलणा इक अमाम, हरि करता धुरदरगाहीआ । जिस नूं कहिण श्री भगवान, जन भगतां होए सहाईआ। जुग चौकड़ी खेल खेले महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ । सो साहिब देवे पैग़ाम, धुर संदेसा इक सुणाईआ। खेल वेख ज़िमीं असमान, धरनी धरत धवल वड्याईआ। सब दा लेख चुकाए आण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं कहे ओस दे चरण करां ध्यान, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब नूं देवणहारा दान, दाता आदि अन्त अख्वाईआ।

❊ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ प्रीतो देवी दे गृह पिंड जिंदड़ मेलू जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे मैं सुणया नाम अपारा, अपरम्पर स्वामी दिता सुणाईआ। मैनूं भुल्ल गया संसारा, दीन दुनी दिती तजाईआ। नज़र तक्कां परवरदिगारा, जल्वागर नूर अलाहीआ। जिस दा पैगम्बरां दिता इशारा, सैनत नाल गए समझाईआ। निरगुण नूर होए उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। दो जहानां पावे सारा, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। कलयुग मेटे धुआँधारा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सतिजुग सच करे व्यपारा, वणजारा आपणा नाम प्रगटाईआ। चार वरनां दए सहारा, सब दा बण के पिता माईआ। नौ खण्ड पृथ्मी खोल्ह के इक दुआरा, एका मार्ग लए प्रगटाईआ। एका इष्ट होवे दुबारा, सृष्ट सबाई आप समझाईआ। एका नाम होवे जैकारा, एका राग नाद शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि निरगुण जोत इक अवतारा, सरगुण लेखा जाणे थाउँ थाईंआ।

❋ १६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ सरदार सिँघ दे गृह पिंड सीड़ जम्मू ❋

सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या सृष्ट सबाई जग, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट दह दिशा लग्गी अग्ग, अमृत मेघ धुर दी धार ना कोए बरसाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए उपर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध ना कोए मुकाईआ। बिन मक्के काअबिउँ साचा मिले किसे ना हज्ज, काया हुजरा ना कोए सुहाईआ । फिर फिर थक्की मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ, तेरा नूर नुराना नज़र कोए ना आईआ। मैं पन्ध मुकाया वेखे तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फेरा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा नाम भण्डारा मिल्या कोई ना हट्ट, सच वणजारा वणज ना कोए कराईआ। जिध्धर तक्कां ओधर काम क्रोध लोभ मोह हँकार लग्गी अग्ग, कूड़ी क्रिया दीन दुनी रही जलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरा गावे कोए ना छन्द, सच स्वामी अन्तरजामी तैनूं मिलण कोए ना आईआ। अन्तर निरंतर निज आत्म साचा मिले ना किसे अनन्द, परमानंद ना कोए समाईआ। दीन दयाल साहिब किरपाल आदि जुगादि सदा बख्शंद, तेरी बख्शिश विच तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे दीन दुनी दी वेखी वधी तृष्ना, तृखा तृप्त ना कोए कराईआ। दूर दुराडे तक्कण शिव ब्रह्मा विष्ना, बिन नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। नाता तोड़ गए रामा कृष्णा, किशना पक्ख डेरा कोए ना ढाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद खेल वखा गए जितना, अग्गे परदा ना कोए चुकाईआ। नानक गोबिन्द लेख अगम्मी लिखणा, भविख्तां विच गए समझाईआ। जिस दी महिमा गा सके ना कोई रसना, सिफ्तां विच ना कोए वड्याईआ। उस दा खेल होणा अकथना, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादी धुर दा सज्जणा, मीत प्यारा इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चार कुण्ट वेख्या तन वजूद तपदा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। स्वास स्वास प्रभू तेरा नाम कोए ना जपदा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मन कल्पणा जगत जहान नसदा, दिवस रैण भज्जे थाउँ थाईंआ। किसे नूर मिल्या ना निज नेत्र अक्ख दा, दोए लोचन कम्म किसे ना आईआ। मार्ग समझाए ना कोए सच दा, सति सच ना कोए वड्याईआ । तेरा खेल नज़र ना आया रूप परख दा, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। अन्त

खेल वखाउणा हक़ीक़त हक़ दा, लाशरीक तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरा राह तक्कदा, निरगुण बैठे निरगुण ध्यान लगाईआ। हुण वेला साहिब सुल्तान पुरख समरथ दा, परवरदिगार आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहे दीन दुनी सारी वेखी दुखी, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। चार कुण्ट होई भुक्खी, भुॅख्यां भुक्ख ना कोए गवाईआ। सुफल दिसे किसे ना कुक्खी, मिले वड्याई ना जणेंदी माईआ। तैनूं गरदन कोए ना झुकी, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। मैं घर घर रही पुच्छी, गृह गृह वेस वटाईआ। दुनियांदारो मैनूं दस्सो तुसीं, किस मिल्या बेपरवाहीआ। तेरी रमज़ किसे ना बॅुझी, इशारे करन कोए ना पाईआ। सब दी दुरमति मैल भरी बुद्धि, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। खेल दस्से कोए ना गुज्झी, परदा अंदरों ना कोए उठाईआ। तेरी आत्मा तेरे नालों रुस्सी, साचा मेल ना कोए कराईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साहिब स्वामी सदी चौधवीं कहे मैं तेरी करन आई बुत्ती, बुतखाने वेखां थाउँ थाईंआ। तेरा खेल अगम्मा अदॅुती, तुध बिन भेव ना कोए जणाईआ। सारी सृष्टी वेखी सुत्ती, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। सुहञ्जणी होए किसे ना रुती, रुतड़ी रुत ना कोए महकाईआ। अन्त औध सब दी पुग्गी, गुर अवतार पैगम्बर बैठे राह तकाईआ। जो खेल करे प्रभ जुगीं, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कदे ना उकीं, सच निशाना देणा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे दीन दुनी होई बदनीती, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। धुर दी करे ना कोए प्रीती, प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। सारे वड़ गए मन्दिर मसीती, काया हुजरा हक़ ना कोए सुहाईआ। तेरी धार सदा अनडीठी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। किरपा कर साहिब बख्शीशी, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। मेरी औध जांदी अन्त बीती, बीती कहाणी दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि वड्डे तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे दीन दुनी वध्या हराम, धर्म दी धार ना कोए बंधाईआ। कलमा सुणे ना कोए पैग़ाम, पैगम्बरां पल्लू गए तुड़ाईआ। साचा झुल्ले ना कोए निशान, निशाना नछावर ना कोए कराईआ। मन वासना होए गुलाम, शरअ ज़ंजीर ना कोए तुड़ाईआ। मेरे मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दे अमाम, अमल वेख जगत लोकाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी शाम, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। साचा सजदा करे ना कोए सलाम, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। कूड़ी क्रिया कीता बेईमान, बेवा रूप होई लोकाईआ। किरपा कर मेरे भगवान, भगवन हो के वेख वखाईआ। मेरा सजदा तैनूं सलाम, निउँ निउँ लागां पाईआ। सदी चौधवीं

कहे तुध बिन दूजा अवर ना कोई मेहरवान, महबूब मुहब्बत विच बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दे कन्त परवरदिगार सांझे यार आपणा सांभ आप इंतज़ाम, हुक्म धुर दा इक मनाईआ।

✻ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ४ मान कौर दे गृह सीड़ जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मेरी पूरन होण लग्गी आखी, आख़र सब नूं दयां जणाईआ। किरपा कर परम पुरख अबिनाशी, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जन भगत बणा दे मेरे साथी, सगला संग जणाईआ। मेरी सुहञ्जणी होवे राती, छब्बी पोह वड्याईआ। सन्त सुहेले वेखणे इक जमाती, जो चार वरन इक्को करन पढ़ाईआ। मैं प्रभ दी होवां दासी, सेवक हो के आपणी सेव कमाईआ। भज्जी फिरां पृथ्मी आकाशी, ज़िमीं असमानां राह तकाईआ। संदेसे देंदी जावां पाती, सुनेहुड़यां विच दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मन्नो इक्को कमलापाती, जो जीवण मरन विच ना आईआ। जो नाम कथा कहाणी सुणाए साची, धुर फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी मनशा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर आउँदी मस्ती, खुशी विच वज्जे वधाईआ। किरपा करे मालक अर्शी , अर्शी प्रीतम नूर अलाहीआ। खेल वखाए उपर धरती, धरनी धौल वज्जे वधाईआ। धार प्रगटी नरायण नर दी, नर हरि आपणी खेल खिलाईआ। बूझ बुझाए धुर दे घर दी, गृह मन्दिर इक दृढ़ाईआ। जिथ्थे आत्मा परमात्मा वरदी, सुरत शब्द विच समाईआ। त्रैगुण अगनी जाए सड़दी, ततव तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर चाउ घनेरा, घर वजदी रहे वधाईआ। परम पुरख होवण लग्गा मेरा, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। चौदां सदीआं जो कीता जेरा, हौसला हिम्मत नाल बणाईआ। ओह कटण लग्गा गेड़ा, आपणा हुक्म सुणाईआ। सच दुआरे रखे डेरा, सोभावन्त बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया डोबे बेड़ा, शौह दरया रिहा रुढ़ाईआ। जन भगतां तारे कर के मेहरा, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वास्ता पाया पुरख अकाल लोकमात आ इक वेरां, वेरवे नाल गए जणाईआ। लहिणा देणा चुका गुरु गुर चेरा, चेला गुरु वेख वखाईआ। भाग लगा काया माटी साढे तिन्न हथ्थ खेड़ा, खिड़की अंदर दी दे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर

आपणे दे वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर आवे हासी, खुशीआं नाल जणाईआ। मैं छडणे पुराणे साथी, संग ना कोए रखाईआ। मैं तकणा पुरख अबिनाशी, जो करता रिहा वखाईआ। गुरमुख लभ्भणे जेहड़े होवण ना मदिरा मासी, रसना जिह्वा ना कोए हल्काईआ। जिन्हां दे अन्तर निरगुण नूर जोत प्रकाशी, अन्ध अन्धेरा गए मुकाईआ। अठ्ठे पहर बणी रहे प्रभाती, संध्या रूप ना कोए बदलाईआ। झगड़ा छड्ड के ज़ात पाती, इक्को आत्म ब्रह्म वेख वखाईआ। घर स्वामी दर्शन पावण कमलापाती, पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। नेत्र लोचण दर्शन करन दिवस राती, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जीवण विच्चों बदल आपणी हयाती, जीवण जीवण रंग रंगाईआ। भाग लगा के तन ख़ाकी, माटी साची सच सुहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जो धुर दी धार रहे आखी, आख़र मंज़ल चढ़ के दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कथा कहाणी दस्से साची, सच सति नाल प्रगटाईआ।

७३२
२१

✻ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ४ बंती देवी दे गृह पिंड खौड़ सलारीआं जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर वज्जी धुनी, प्रभ सच नाद सुणाईआ। मैथों छुट्टण लग्गी दुनी, मज़हबां करां जुदाईआ। हांडी ख़ाली कर के कुंनी, कुनबा पिछला देणा भुलाईआ। गुरमुख लभ्भके साचे गुणी, गुणवान वेख वखाईआ। जिन्हां इक्को तुक होवे सुणी, जो धुर मालक आप सुणाईआ। ओह जुगीशर धुर दे मुनी, मोन धारन दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं सीस निवावां उन्हीं, जो इक्को इष्ट रहे मनाईआ। मैं जन भगत दुआरे भगतां बणना परौहणी, आपणा पन्ध मुकाईआ। धुर दी ख़बर अगम्म सुणाउणी, जिस नूं अवर ना कोए सुणाईआ। कलाम अथाह गाउणी, जिस दी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरे अन्तर करी रुशनाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा होणा हक़ मिलाप, जन भगतां नाल वड्याईआ। मैं पवित्र होणा पाक, दुरमति मैल रहे ना राईआ। छड कुड़ावे साक, इक्को कन्त मनाईआ। जिस दे गृह जगे चराग़, दीपक नूर रुशनाईआ। करां वड वड भाग, भगतां मिल के वज्जे वधाईआ। मैं बदल लैणा समाज, सब नूं दयां समझाईआ। सृष्टी दरसाउणा मालक इक्को वाहिद, कायनात जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा हुक्म करे राइज, रईयत वेखे थाउँ थाईंआ।

✻ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ४ लछमी देवी दे गृह सीड़ जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर आया ज्ञान, हरि करते दिता दृढ़ाईआ। संदेसा दे विच जहान, दीन दुनी मात समझाईआ। इष्ट मन्नणा सब ने श्री भगवान, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। जो आदि जुगादी काहन, धुर दा राम बेपरवाहीआ। जिस नूं पैगम्बरां मन्नया अमाम, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड लागण पाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव मँगदे दान, करोड़ तेतीसा झोलीआं डाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भज्जण विच मैदान, जुग चौकड़ी आपणी कार कमाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दा इक सुल्तान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर साचा इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर आवाज़ आई अगम्मी सद, छन्द साहिब दिता सुणाईआ। दीन मज़हब दी छडणी पवे हद्द, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल दी सब नूं बणना पए यद, दूसर नज़र कोए ना आईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रहे ना कोए अलग, वखरा राह ना कोए चलाईआ। मेहरवान महबूब खेल करे विच जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया बुझा के अग्ग, अगनी तत दए गवाईआ। साचा हुजरा सुहा के हक़, हज्ज इक्को घर कराईआ । इक्को दस्स दुआर मन्दिर मठ, गुरुदुआर इक वखाईआ। जिथ्थे अमृत झिरना रस लैण चट्ट, चेटक दीन दुनी गवाईआ। निर्मल जोत जगे लट्ट लट्ट, अन्ध अज्ञान रहे ना राईआ। सो खेल करे पुरख समरथ, हरि करता शहिनशाहीआ। साचा मार्ग देवे दस्स, दह दिशा आप समझाईआ। सदी चौधवीं कहे कोई किसे ना वस्स, हुक्म मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा नूर इक चमकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर आया धुर पैग़ाम, पैगम्बरां दयां जणाईआ। वेखो खेल अगम्मड़े अमाम, जो अमलां तों बाहर रिहा कराईआ। सब दी बदल देवे कलाम, कायनात वेख वखाईआ। तुसीं पिछले दिसो गुलाम, गुलामी विच सेव कमाईआ। तुहाडे हुंदयां चारों कुण्ट वधया हराम, हिरदा साफ़ ना कोए बणाईआ। नेत्र खोल्हो सर्ब तमाम, लोचण नैण अक्ख उठाईआ। कायनात होए बदनाम, बदी घर घर नज़री आईआ। मैं करन लग्गा इंतज़ाम, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। कूड़ी क्रिया मेट निशान, निशाना धर्म देणा झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अंदर वज्जी सतार, सुत्तयां ल्या उठाईआ । हुक्म देवे हरि निरँकार, हरि करता बेपरवाहीआ। फिर के वेख जगत संसार, चारों कुण्ट पन्ध मुकाईआ। आ के दस्स सर्ब इज़हार, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। कवण सजदा करे निमस्कार, कवण डंडावत विच सीस निवाईआ। कवण भरया विच

हँकार, कवण ग़द्दार नज़री आईआ। कवण बिरहों विच रोवे ज़ारो ज़ार, कवण बैठा मुख बदलाईआ। कवण नेत्र नैण रिहा उघाड़, कवण नैण मूंद अक्ख ना कोए उठाईआ। कवण कहे मुहब्बत वाला यार, कवण बेवफ़ा बण के झट लँघाईआ। कवण तक्के नूर उज्यार, कवण जगत अंध्यार बैठा आसण लाईआ । कवण कूक कूक करे पुकार, अन्तर अन्तर ध्यान रखाईआ । सदी चौधवीं सब दा वेखणा हाल, घर घर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा अन्त हल करे सवाल, जवाब सहजे दए वखाईआ।

❊ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ४ गुरनाम सिँघ दे गृह सीड़ जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे मेरा खुशीआं दा पोह छब्बी, जन भगतो दयां सुणाईआ। तकणा नूर अलाही रब्बी, मेहरवान ख़लक खुदाईआ। चरण बन्दना करां हथ्थीं बद्धी, बन्दगी विच सीस निवाईआ। मेरी पूरी कर लईं सदी, सदके वारी घोल घुमाईआ। नूह दे हथ्थ फड़ा के नदी, नईआ आपणी लै उठाईआ। परवरदिगार तेरा खेल कदे कदी, जुग चौकड़ी पिच्छों आईआ। मैं फिरी नठ्ठी भज्जी, भजन बन्दगी वाले वेख वखाईआ। कोटां विच्चों मैनूं थोड़ी संगत लभ्भी, जो तेरे दुआरे सोभा पाईआ। मेरी कूक कूक के बहि गई घग्गी, आवाज़ अवर ना कोए जणाईआ । तेरी सरन बिन तेरी किरपा आत्म कदे ना लग्गी, तन वजूद छोहण कोए ना पाईआ। मेरी लाली हो गई बग्गी, रो के दयां दुहाईआ। कलयुग जीवां कुकर्मा भार बन्न्या डग्गी, गठड़ीआं घर घर रहे टिकाईआ। खा खा सूर ते ढग्गी, अमृत रस गए गवाईआ। तेरी नूर जोत किसे ना लभ्भी, निरगुण दरस कोए ना पाईआ। दुनियांदारी चलदी कूड़ी गद्दी, सच अदल ना कोए कमाईआ। मैं वेख्या सुदी वदी, किशना शुक्ला पक्ख फोल फुलाईआ। सारी दुनियां दिसी अजनबी, घर दा मालक सोभा कोए ना पाईआ। त्रैगुण अगनी खूब मघी, चार कुण्ट रही जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, मेरी फिर फिर घस गई अड्डी, अग्गे हिम्मत रही ना राईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा दिहाढ़ा आउणा अच्छा, अच्छी मिले माण वड्याईआ। मैं सुनेहड़ा दे के आई कच्छां मच्छां, जलहोड़यां ताईं सुणाईआ। अवतारां पैगम्बरां गुरुआं कहि के आई अच्छा, संदेसा धुर दा इक अल्लाईआ। जेहड़ा पुरख अकाल दा होवे बच्चा, ओह ज़रूर आवे चाँईं चाँईंआ। जेहड़ा कर्म कांड दा कच्चा, ओह कन्नी जाए कतराईआ। मेरे साहिब दीआं मैनूं सदा रखां, रखक हो के वेखे थाउँ थाईंआ। मैं बदल लैणीआं अक्खां, उम्मत

नालों मुख भवाईआ। छड्ड देणे साथी करोड़ां लखां, भगत सुहेले थोड़े लैणे अपणाईआ। अन्तिम मार दुहथ्थढ़ पिट्टां, पिटणे घर घर देणे पाईआ। गुरमुखां हिरदे फटां, प्रभ दा तीर नाम चलाईआ। बौहड़ी मैं वस्स पै जाणा हुण जट्टां, कमीनयां कोलों पल्लू लैणा छुडाईआ। मैं फिरना नहीं चौदां हट्टां, दर दर ना कुण्डा खड़काईआ। मैं सौणा नहीं बिस्तरे खट्टां, लेफ़ निहाली ना कोए हंढ्ढाईआ। मैं पढ़ना नहीं कोई टप्पा, हू हू ना कोए जणाईआ। मैं खाणा नहीं कोई वच्छा कट्टा, रसना रस ना कोए चखाईआ। मैं कोई पुटना नहीं हुक्के दा गट्टा, टोपी हथ्थ ना कोए रखाईआ। मैं कोई दीन मज़हब दा वेखणा नहीं रट्टा, रोटी गुल्ली हथ्थ ना कोए उठाईआ। मैं कोई पैगम्बरां कोलों मँगण नहीं जाणा फक्का, ख़ाली झोली अग्गे वखाईआ। मैं राह नहीं तकणा मक्का, मदीने अक्ख ना कोए रलाईआ। मैं साक नहीं बणाउणा बूरा कक्का, नाता काल्यां नालों तुड़ाईआ। मैं सब नूं दे के आई धक्का, धक्के नाल भज्जी चाँईं चाँईंआ। इक बचन सुणावां सच्चा, सच सुनेहड़ा इक अगम्म अथाहीआ। पुरख अकाल दा किसे नहीं पता, कलयुग पत्तन बैठी जगत लोकाईआ। जिस वेले मैं दुनियां तक्कां मैनूं पैंदी ग़शा, होश समझ रहे ना राईआ। हाए उफ़ अरबां विच्चों खरबां विच्चों असंखां विच्चों परम पुरख दा विरला कोई बच्चा, जन भगत नज़री आईआ। ओसे दा राह तक्के दूर दुराडा बैठा नानक तपा, तपीश्रां वेख वखाईआ। मैनूं सच पुच्छो मैं वेख्या ओह अगम्मी सफ़ा, जिस दी सिफ्त सारे रहे गाईआ। ओथे लिख्या बिना पुरख अकाल दीन दयाल तों ज़िंदगी दा होर किते नहीं होणा नफ़ा, नुकसान विच जगत लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल जो कदे ना होवे ख़फ़ा, गुस्से विच कदे ना आईआ। जद मेहर करे कोट जन्म दे पाप कर दए रफ़ा, मेहर नजर नाल तराईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नाता जोड़ना पक्का, पक्की तरां जणाईआ। जन भगतो तुसीं वी ऐवें उत्तों ना किहो अच्छा, हिरदिउँ हरि लैणा अपनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा ठेकेदारी दा पूरा करे पटा, अग्गे लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ।

✻ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ४ ख़ज़ान सिँघ दे गृह रणबीर सिँघ पुरा जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे मैनूं नज़र आई अगम्मी बस्ती, जिस दी छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। निरगुण नूर निराकार वेखी हस्ती, रूप रंग रेख जगत ना कोए समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बैठे अर्शी, जोत जोत विच समाईआ। जिन्हां उपर तक्की अनोखी पर्ची, जिस दा लेख अक्खर विच ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

करे खेल साचा हरि, हरि साचा बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या निरअक्खर, जिस दी वंड ना कोए वंडाईआ। जो लिख्या जावे ना किसे उपर पत्थर, क़लम शाही ना जोड़ जुड़ाईआ। जिस दी लाईण बणे कोए ना सतर, हरूफ़ वंड ना कोए वंडाईआ। जगत नेत्र मूल ना तक्कण, निगाह अक्ख ना कोए समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मूल ना दस्सण, समझ रमज़ ना कोए लगाईआ। ओह लेखा हथ्थ पुरख समथन, जो दाता धुरदरगाहीआ। जिस दे विच्चों जुग जुग निरगुण धार सरगुण देवे कथन, कथनी कथ कथ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या अगम्मी लेख, जिस दी लिख्त लोकमात ना कोए समझाईआ। जिस विच्चों अवतार पैगम्बरां गुरुआं मिले संदेस, जुग जुग कलमा नाम समझाईआ। ओह सदा रहे हमेश, जुग चौकड़ी वंड ना कोए वंडाईआ। जिस विच्चों थोड़ा हिस्सा नज़री आया दस दस्मेश, गोबिन्द शब्द गुर जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द तक्कया लेख ओह, जो बिन अक्खरां नज़री आईआ। जिस नाल दीन दुनी तों होण निर्मोह, नाता निराकार नाल रखाईआ। इक्को नज़री आए पुरख अकाल सो, साहिब स्वामी धुरदरगाहीआ। जिस दी आदि अन्त जुगा जुगन्त लख चुरासी लो, घट अन्तर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवन मेहर नज़र उठाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द तक्की अगम्मी लिख्त, जिस दा लेख ना कोए दृढ़ाईआ। ओस विच परम पुरख दा भविख्त, दूसर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को पुरख अकाल दा इष्ट, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। लहिणा देणा ख़तम होवे सृष्ट, तत वजूद ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बरां दी लिस्ट, तरतीब नाल दरसाईआ। जिस कारण भेज्या रामा वशिष्ट, कृष्ण भेव खुल्हाईआ। क्यों मूसा ईसा मुहम्मद खुल्हाई दृष्ट, आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा परदा लाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या बिन हरफ़ां तों ओह पात्र, जिस दा पता ना कोए समझाईआ। जिस दे इशारे विच्चों चार जुग दे निकलदे वेद शास्त्र, अवतार पैगम्बरां वाली पढ़ाईआ। एह थोड़े थोड़े निक्के निक्के लग मातर, अगला पर्दा ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच दए सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द थोड़ी वेखी अगम्मी हट्टी, पुरख अकाल दिती वखाईआ। जिथों निरगुण नानक पढ़ी पट्टी, बिन अक्खरां आपणे अन्तर लई टिकाईआ। ओह खेल अगम्मी समर्थी, हरि करता आप समझाईआ। जिस नूं वंड ना सके कोए हथ्थो हथ्थी, लोकमात झोली ना कोए भराईआ। जिस दी धार आदि अन्त सच्ची,

जुग जुग आपणी कार कमाईआ। ओह विद्या ओह सिख्या पुरख अकाल किसे ना दस्सी, हरफ़ हिफ्ज़ ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निरगुण आपणी धार जणाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द तक्कया अगम्म हरूफ़, हरफ़ हरफ़ नाल मिलाईआ। जिस विच लिख्या चार जुग दा लहिणा होणा मनसूख़, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुकणा काया माटी पंज भूत, भूत भविख्त काल दए गवाहीआ। धुर दा डंका वज्जणा चारे कूट, चौथे जुग रंग रंगाईआ। शब्द अगम्मी भज्जे दूत, दो जहानां वेख वखाईआ। नाम खण्डा अगम्मा सूत, सूत्रधारी खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द तक्कया अगम्म नज़ारा, नज़र नज़र विच्चों बदलाईआ। देख खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर खुशी बणाईआ। कलयुग अन्तिम दिस्सया किनारा, नईआ डोले थाउँ थाईंआ। चार जुग दा शास्त्र होया बेचारा, सिर सके ना कोए उठाईआ। भड्ड खेड़ा दिसे संसारा, सच मन्दिर ना कोए वड्याईआ। धुर दा लग्गे ना कोए जैकारा, सिफ्ती नाम सिफ्त वड्याईआ। चारों कुण्ट धूआँधारा, धुर दा चन्द ना कोए चमकाईआ। दीनां मज़हबां लग्गा अखाड़ा, नाम कलमे नाल टकराईआ। पवित्र दिस्सया ना कोई मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ गुरुदुआरा, बुध्ध बिबेक ना कोए रखाईआ। मन कल्पणा सृष्टी दृष्टी अंदर वध्या हँकारा, हँकारी गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। चार वरन अठारां बरन होए विभचारा, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जगत विद्या कूड़ कल्पणा दए हुलारा, आत्म ब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए दुआरा, दरगाह साची मिलण कोए ना पाईआ। सति सन्तोख धीरज यति धर्म दा रहे ना कोए दुआरा, दीन दुनी होई हल्काईआ। गोबिन्द पुरख अकाल दे चरणां तक निउँ कीती निमस्कारा, डंडावत विच सीस निवाईआ। तेरा खेल सच्ची सरकारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। माण रहे ना गुरु अवतारा, पैगम्बरां भय ना कोए रखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होवे विभचारा, दुरमति मैल ना कोए धुआईआ। किरपा करीं मेरे गिरवर गिरधारा, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। तूं आदि जुगादि शहिनशाह सच सच्ची सरकारा, तुध बिन अदल ना कोए कमाईआ। निरगुण नूर जोत करीं उज्यारा, शब्दी सतिगुर हो के डंक वजाईआ। तेरा नाउँ जगत जहान होवे कल कल्की अवतारा, अकल कलधारी आपणा फेरा पाईआ। चार वरन अठारां बरन धुर दा दस्सणा नाम जैकारा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझे यार दस्सणा इक दरबारा, जिस दर तेरी इक्को वज्जे वधाईआ। तेरा लेख अलेख तेरा भेख अनेक शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पावे कोए ना सारा, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कहि के सारे तैनूं गए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका

देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धयारा, सति धर्म सीत सच दा मार्ग देणा वखाईआ।

✻ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ४ रणीआ राम दे गृह कलोए जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे गोबिन्द तक्की ओह लकीर, जो लाईन नूर अलाहीआ। जिथों सिख्या मिलदी सन्त साध फ़कीर, भगत नाम वड्याईआ। शरअ दा तुटदा ज़ंजीर, दीन मज़हब बंधन रहे ना राईआ। झगड़ा मुकदा शाह हकीर, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। लेखा रहे ना ग़रीब अमीर, माया ममता ना कोए हल्काईआ। वंड रहे ना तन शरीर, वजूद वक्ख ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता सहज सुखदाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द तक्की ओह लाईन, जिस दी सिम्मत समझ कोए ना पाईआ। जो मेल मिलावे पुरख अकाल नाल ऐन, रस्ते विच ना कोए अटकाईआ। नाता तोड़े कूड़े साक सज्जण भाई भैण, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। नाम धन मिले रसाइन, दौलत धुर दी नज़री आईआ। काया मन्दिर अंदर उपजे गाइन, गीत गोबिन्द इक अलाहीआ। निरगुण नूर नज़र आए निज नैण, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। सच धार तक्की जिस उत्ते किसे दे नहीं साइन, सनद हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर दूर दुराडे कहिण, कहि कहि रहे जणाईआ। एसे धारों शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी निकले धुर रमायण, रामा कृष्णा एसे दा ढोला गाईआ। एहो खेल आदि जुगादी नर नरायण, हरि करता आप कराईआ। दीन दुनी जगत दिसे पराइन, साचा बंधन ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा आप अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द तक्की बिन शरअ ज़ंजीर, कड़ी कड़ी ना कोए जुड़ाईआ। जिथ्थे नाअरा हक़ बोले कबीर, क़बरां तों बाहर डेरा लाईआ। हक़ीक़ी नूर चमके तस्वीर, तसव्वर कर ना कोए वखाईआ। लेखा जाण बेनज़ीर, नज़र आपणी विच छुपाईआ। जिस नाल बदल जाए सर्ब तदबीर, तरीका आपणा दए दृढ़ाईआ। जिस दे विच्चों चार जुग दी बाणी निकली तक़रीर, तहिरीर नाल वड्याईआ। सो खेल अगम्म अख़ीर, आख़र दिता जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वास्ता पा के किहा पीरन पीर, पीर पीरा तेरी सरनाईआ। मेरा साहिब बण दस्तगीर, दस्तबरदार करे लोकाईआ। मेरे अन्तिम पाटे चीथड़ वेख चीर, चीरे वाले धुर दे माहीआ। तूं क़ादर करता करीम, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। तेरा नूर नुराना सदा हुसीन, हुसीना दूजी नज़र कोए ना आईआ। तूं सर्ब कला प्रबीन, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे नाम दी होवे ना कोए तक्सीम, तफ़रक़ा रहिण कोए ना पाईआ।

* १७ पोह शहिनशाह सम्मत ४ प्यारे लाल दे गृह कलोए जम्मू *

सदी चौधवीं कहे गोबिन्द वेख्या ओह नुक्ता, जिस दा निशान ना कोए जणाईआ। जिथ्थे जुग जुग पैंडा मुकदा, अग्गे पन्ध ना कोए समझाईआ। चार जुग दा तेई अवतार हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद दस गुरु पुजदा, छत्ती जुग दा गेड़ चुकाईआ। अग्गे फेर कुछ नहीं सुझदा, नूर नूर विच समाईआ। पुरख अकाल आ के पुछदा, गुर अवतार पैगम्बरां आप उठाईआ। नाता वेखो अगम्मा पिता पुत दा, जणन वाली दिसे कोए ना माईआ। की खेल तुहाडी रुत्त दा, मौसम मैनूं दयो समझाईआ। किस बिध जीव जहान डंडावत बन्दना सजदयां विच मैनूं झुकदा, नाम कलामां विच ढोले रिहा गाईआ। की हाल विछोड़े वाले दुःख दा, भेव अभेदा दयो खुल्हाईआ। किस बिध जाप हुंदा मेरी आत्म परमात्म तुक दा, सोहँ सति पढ़ाईआ। किस बिध माण हुंदा माणस मानुख दा, लख चुरासी विच्चों सोभा पाईआ। किस बिध शब्द अगम्मा अंदरों उठदा, नाद अनादी धुन सुणाईआ। किस बिध पुरख अकाल हर घट अंदर लुकदा, निरगुण हो के डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द वेख्या ओह कन्ना, जिस दा अग्गा पिच्छा नज़र किसे ना आईआ। उस तों अग्गे जाण तों गुर अवतार पैगम्बर कीते मन्ह़ा, मंज़ल अग्गे ना कोए समझाईआ। जिथ्थे बहि के पुरख अकाल जोत शब्दी धार देंदा विच तनां, लोकमात वजूद दए वड्याईआ। राग सुणावे आपणा बिना कन्नां, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। करे प्रकाश निरगुण जोत चन्ना, चन्द चांदनी डगमगाईआ। लेख मुकावे हरख सोग ग़मा, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। माया ममता मेट के तमां, तृष्ना कूड़ी दए बुझाईआ। जद देवे तद आपणा नाम नवां, जुग जुग आपणा खेल वखाईआ। जद बदले दीन दुनी दा समां, सहज सुखधारी आपणी कल वरताईआ। जां बणाए दीन दुनी दा बन्ना, दीनां मज़हबां वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता हरिजन मेल मिलाईआ । सदी चौधवीं कहे गोबिन्द ओह तक्कया मुकता, जिथ्थे मुकम्मल नूर अलाहीआ। खेल अगम्मी धार सुच दा, संजम नज़र कोए ना आईआ। घराना सोहे सदा चुप दा, शोरो गुल ना कोए मचाईआ। भाव दिसे ना किसे मानुख दा, तत वजूद ना कोए वड्याईआ। शब्द सुणो ते इक्को तुक दा, तूं मेरा मैं तेरा ढोला अलाहीआ।

७३९
२१

गुर अवतार पैगम्बर जोती धार वेखो झुकदा, बिन सीस सीस निवाईआ। ओथे झगड़ा नहीं किसे दुःख दा, चिन्ता रोग ना कोए सताईआ। जद वेखो नाता जोती शब्दी धार अगम्मे सुत दा, अपराधी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची धारों आपे उठदा, जन भगतां उपर तुठ्ठदा, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र आपणी इक उठाईआ।

✻ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ४ सेवा राम दे गृह कलोए जम्मू ✻

सदी चौधवीं कहे प्रभ दी करो पहचान, जो बेपहचान रूप वटाईआ। शब्द संदेसा सुणो नाल कान, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। नेत्र खोल्ह करो ध्यान, अनडिठड़ी खेल वखाईआ। निरगुण जोत श्री भगवान, आपणी कल वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरां बोल वेख ज़बान, अक्खर अक्खर खोज खुजाईआ। सच दुआरे कर परवान, परवानगी विच आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी दा बदल देवे विधान, वाहिद आपणा हुक्म चलाईआ। पुरख अकाला कदे ना होवे बेज़बान, ज़बानी कलामी कार ना कोए भुगताईआ। धुर संदेसा देवे बण के हुक्मरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो हथ्थ मारो उत्ते छाती, बल आपणे अन्तर प्रगटाईआ। प्रभ मिलणा कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। सन्त सुहेले मिलणे साथी, गुरमुख गुर गुर जोड़ जुड़ाईआ। कथा कहाणी सुणनी साची, सच मार्ग लैणा अपनाईआ। लेखे लाउणी ज़िंदगी वाली राती, जीवण जीवण विच्चों प्रगटाईआ। खेल वेखणा आदि अन्त दा आदी, की आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे दए वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो की मेरा मन्नोगे आखा, अक्खरां विच्च दयां सुणाईआ। की निरंतर तुहाडे भाखा, भाख्या दयो समझाईआ। जन भगत कहिण सानूं प्रभू ते भरवासा, दूजा भरम ना कोए भुलाईआ। ओह मालक धुर दा साचा, साहिब सुल्तान अख्वाईआ। असीं ओस दे दासी दासा, सेवक हो के सेव कमाईआ। सदी चौधवीं आपे दे थाँ कर लै साडा साथा, मिल के चलीए चाँईं चाँईंआ। अग्गे तेरा सी मुहम्मद नाल नाता, चार यारी वेख वखाईआ। हुण वखाईए तैनूं ओह पुरख अकाल बिधाता, जो पारब्रह्म अख्वाईआ। असीं सारे ओसे दीआं शाखां, तूं वी ओसे दा नूर नज़री आईआ। ओस प्रभू दा खोल्ह के दस्स खुलासा, पर्दा परदयां विच्चों चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो ओह धुर दा इक्को दाता, देवणहार गुसाईंआ। जुग चौकड़ी सब दा राखा, रच्छया करे थाउँ

थाईंआ। जो ओस दी चरण धूढ़ी सच सरोवर न्हाता, दुरमति मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे सोभा पाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैनूं दयो छुट्टी, खुशीआं नाल विदा कराईआ। मैं मस्ती विच्च क़दम जावां पुट्टी, चलां चाँईं चाँईंआ। तुसीं हथ्थ मिलाउणे आपणे गुट्टीं, ज़ोर नाल दबाईआ। मुखों कहिणा जगत नालों तुट्टी, नाता प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। तुहाडी धार कदे ना जावे लुट्टी, लुटेरे अंदरों देणे कढ्ढाईआ। तुहाडे नाल दस दिन बड़ी सोहणी सुहाई रुत्ती, दसम दुआरी दा दर्शन दयां कराईआ। तुसां चल चल घसाई जुत्ती, रविदास चमारे तों गंढु दयां पुआईआ। जेहड़ा बस्तरां दा भार कंधिआं उत्ते फिरे चुक्की, ओस बदले तुहानूं चुक्क के सचखण्ड पुचाईआ। अन्त समें किसे नूं होण ना देवां दुखी, प्रगट हो के आपणा दरस कराईआ। उजल कर के मात कुक्खी, लेखे लावां जम्मण वाली माईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तुहाडे प्यार दी भुक्खी, तुसां भुक्ख तृष्ना दिती गवाईआ। जिस वेले तुसां गुंदी मेरी गुत्ती, मींढी मींढी नाल जुड़ाईआ। फिर भाग लगावां सब दे काया बुत्तीं, रंडेपा दो जहान दयां कटाईआ। एह खेल रहिणी नहीं छुपी, छप्पर छन्नां तों बाहर करां रुशनाईआ। सब दे भाग लगावां पुत्तीं, औंतरा रहिण कोए ना पाईआ। तुसां मेरे नाल कटी बुत्ती, भज्जे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद साची कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो बेशक तुसीं गए थक, तुहाडी थकावट वेख वखाईआ। ज़रूर इस मेहनत दा देवां हक़, सब दी झोली पाईआ। सच दुआरे लवां रख, रक्ख्या करां थाउँ थाईंआ। मार्ग धुर दा दस्स, दह दिशा तों पल्लू दयां छुडाईआ। अणयाला तीर मारां कस, तिक्खी मुक्खी धार बणाईआ। तुहाडा लहिणा हथ्थ पुरख समरथ, दूजा अवर ना कोए सहाईआ। इक वार एकँकार चरणी जाओ ढठ्ठ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सदा तुहाडा सांझा बणया रहे इकक्ठ, भगतां ना होए जुदाईआ। नाम भगती दा खुल्हा रहे हट्ट, भण्डारा देवे धुरदरगाहीआ। अमृत धार बख्श के रस, अगनी तत दए बुझाईआ। तुसां घर जाणा हस्स हस्स, खुशीआं विच्च वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा तुहाडा राह रिहा तक, रस्ते रस्ते धुर दा पन्ध मुकाईआ।

❊ १७ पोह शहिनशाही सम्मत ४ वकील सिघ दे गृह पिंड हँसा जम्मू ❊

सदी चौधवीं कहे तुहाडे साफ़ दिसण हिरदे, हिरदे हरि वड्याईआ। जेहड़े इक सरनाई गिरदे, गिरह वंड ना कोए

वंडाईआ। प्यारे इक पिर दे, प्रीतम इक मनाईआ। विछड़े जुगां चिर दे, सहजे ल्या जुड़ाईआ। अग्गे खेल वेखणे निरवैर निर दे, निरँकार दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणे घर वसाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो तुहाडे अन्तर वेख्या नूर नुराना, जलवा इक अलाहीआ। सुणया अगम्म तराना, तूंही तूंही आवाज़ सुणाईआ। तक्कया सच याराना, यारी प्रभ दे नाल लगाईआ। छँडया कूड़ जहाना, नाता ल्या तुड़ाईआ। गुरमुख दिसे ना कोए बेगाना, हरिजन मेला सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नेहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग हिस्सा सब दी झोली पाईआ।

❊ १८ पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर चौथी मंज़ल जेठूवाल ❊

सदी चौधवीं कहे मैं छड्डे मुनारे मन्दिर, हुजरे दिते तजाईआ। चढ़ के प्रभू दे उपर अम्बर, अमन वेख्या चाँईं चाँईंआ। मेरा चौथी मंज़ल तों उत्ते होण लग्गा स्वयम्बर, मेल मिलणा धुरदरगाहीआ। जन भगतां गुलशन खिड़न लग्गा चमन, बग़ीचा लोकमात वड्याईआ। लहिणा मुक्कण लग्गा दुष्ट दमन, जो जलधारा मँग मँगाईआ। दो जहान लग्गा कम्बन, अर्श फ़र्श दए दुहाईआ। पुरख अकाला साचा मार्ग लग्गा बन्नृण, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ । सदी चौधवीं कहे दुष्ट दमन दा मज़मून, हेमकुण्ट लिखण कोए ना पाईआ। गोबिन्द शब्दी धार दस्स के गया क़ानूंन, क़ाइदा बक़ाइदा इक दृढ़ाईआ। मेरा लेखे लग्गे अन्तिम खून, पुरख अकाल रंग रंगाईआ। जिथ्थे बच्चे दब्बे बाल मासूम, नीहां हेठ सुहाईआ। ओथे बन्नृणा सच असूल, चार जुग दी वंड वंडाईआ। धुर फ़रमाना मिलणा माकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सच धर्म दा दस्सणा रूल, करे खेल नूर अलाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां मुक्के मसूल, चुंगीख़ाना दीन मज़हब रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे दुष्ट दमन ने वेखी धारा, धरनी तों उपर नज़री आईआ। जिथ्थे पुज्जे ना कोए गुर अवतारा, पैगम्बर नज़र कोए ना आईआ। शब्द नाम ना कोए जैकारा, कलमा नबी ना कोए सुणाईआ । इक्को पुरख अकाल एकँकारा, इक इकल्ला सोभा पाईआ। नव नौ चार दा लाहे उधारा, जुग चौकड़ी फोल फुलाईआ । मेला मेल के गोबिन्द सुत दुलारा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। कल कल्की लै अवतारा, सच दुआरा इक वखाईआ। जिथ्थे झुकण गुरु अवतारा, पीर पैगम्बर सीस निवाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया उह मुनारा, जिस दी मंज़ल नज़र किसे

ना आईआ। भगतां नाल होया विवहारा, दरगाह साची वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे दुष्ट दमन कर के गया आस, आसा इक वधाईआ। गोबिन्द मँगदा गया साथ, अन्त अख़ीर ध्यान लगाईआ। करे खेल पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस कलयुग अन्तिम करना नास, सतिजुग साचा रंग रंगाईआ। भगत सुहेले रखणे पास, पासा दीन दुनी उलटाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी करनी ख़ाहिश, तृष्ना मेटे थाउँ थाईंआ। सदी चौधवीं कहे मेरा कारज होणा रास, रस्ता देवे नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साजन बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे क्यों दसां उँगलीआं लाया निशान, की खेल बेपरवाहीआ। एह आसा रख के गया राम, कृष्ण भगवान, त्रेता द्वापर जगत वड्याईआ। मूसा कूक सुणाए पैग़ाम, धुर दी धार जणाईआ। ईसा जिस वेले तख्ते चढ़या पढ़ी अगम्मी कलाम, नग़मा अन्तर अन्तर गाईआ। मुहम्मद किहा मेरा अमाम, आवे बेपरवाहीआ। जिस दी जगत मुनारिआं तों बाहर शान, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआरे बन्द ना कोए कराईआ। धुर दा सांझा देवे फ़रमान, फ़ुरने पिछले वेख वखाईआ। इक्को मन्दिर हक़ दस्से मुकाम, मुकामे हक़ दए जणाईआ। जिथ्थे जिस्म इस्म वंड होवे ना कोए इन्सान, ततव आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे सो मालक ख़ालक प्रितपालक मेरा साहिब होया मेहरवान, महबूब आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दा लेखा मँगे बलीदान, बलधारी जग रहिण कोए ना पाईआ।

७४३
२१

❊ १८ पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सदी चौधवीं कहे सूफ़ीआं हक़ निमाज़, इज़ाज़ विच खुद खुदा झोली पाईआ। हक़ीक़ी कलमे नाल खोलृ राज़, अंदर नूर ज़हूर कीता रुशनाईआ। भेव अभेदा खोलृ आग़ाज़, पर्दा दिता चुकाईआ। रिहा ना कोए राज़, पोशीदा भेव ना कोए छुपाईआ। सदा लई इक्को वार दस्स के सच आदाब, अदब दिता दृढ़ाईआ। साचा मालक हक़ जनाब, सच दुआरे नज़री आईआ। जो पंज वक्त दी पूरी करे ख़ाहिश, तृष्ना आपणे विच मिलाईआ। सदा प्रकाश बख्शे काया माटी लाश, शमां नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा आपणा रंग रंगाईआ। सच निमाज़ हक़ हक़ीक़ी, हक़ीक़त इक जणाईआ। नाता मिले नाल लाशरीकी, जो वाहिद धुर दा माहीआ। जिस दे हथ्थ सच तौफ़ीक़ी,

तोहफ़ा कलमा झोली पाईआ। बरखुरदारी दस्से अज़ीज़ी, निम्रता इक दृढ़ाईआ। सच जणाए तमीज़ी, भरमां दूर कराईआ। अगम्म दस्स हदीसी, हज़रत दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दरगाह साची इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे जिस हिरदे अंदर महबूब, मुहब्बत विच समाईआ। दिवस रैण मौजूद, विछड़ कदे ना जाईआ। सुहाए उच्च अरूज, आलीशान दए वड्याईआ। मंज़ल हक़ मक़सूद, सहजे दए पुचाईआ। जिथ्थे खेल हज़ारा दरूद, बसरी इस्म रमज़ शनवाईआ। सूफ़ीआं रखे महिफ़ूज़, नजरे कर्म दृढ़ाईआ। पाक कर तन वजूद, रूह बुत करे सफ़ाईआ। कूड़ी क्रिया कर नेसतो नाबूद, सति सच विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे रंग दए रंगाईआ। सच निमाज़ सदा सच कलाम, कलमा कायनात दए वड्याईआ। जो वेख वखाणे आलम आलमीन उल्मान, उल्फत विच फोल फुलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेखे सब हिन्दू मुस्लमान, मुसम्मम्म आपणा खेल कराईआ। सति सच नाल सदा क़ाइम ईमान, खुदी तक्ब्बर डेरा ढाहीआ। जिस दे अंदर वस्सया हज़रतां दा हज़रत इमाम, अमलां तों रहत दए कराईआ। मेट अन्धेरी शाम, शमां नूर जोत करे रुशनाईआ । बिन रसना तों दे पैग़ाम, अगम्म आवाज़ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि परवरदिगार नूर अलाहीआ। सच निमाज़ पढ़ो बशीर, बशर्ते इक्को रंग वखाईआ। अंदर नज़ारा तक्को बेनज़ीर, जो नज़रीआ दए बदलाईआ। जिस दी सिफ्तां विच सारे तक़रीर नाल कर के गए तहिरीर, लेखा लिख्त नाल वड्याईआ। ओह शहिनशाह शाह पातशाह वेखणहार हकीर, पीरां दा पीर नज़रीं आईआ। सूफ़ीआं होण ना देवे कदे दिलगीर, दिलदार दिलबर आपणा मेल मिलाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक बदल दए तासीर, तहिज़ीब इक दृढ़ाईआ। जिस दी महिमा सिफ्त करे क़ुरान मजीद, धुर दा भेव खुल्हाईआ। सो आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान इक अख्वाईआ। सदा करे खुदावंद मेहरवानी, महबूब धुरदरगाहीआ। जिस दा आदि जुगादि ना कोए सानी, लाशरीक नूर अलाहीआ। शाहो भूप धुर सुल्तानी, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा फ़रमान पैगम्बर देंदे गए पैग़ामी, सुनेहड़ा हक़ सुणाईआ। ओसे दी सिफ्त ओसे दी महिमा ओसे दी सलामी, सलामालैकम कहि के आपणा रंग रंगाईआ। चार कुण्ट दह दिशा दीन दुनी जगत नादानी, आलम इल्म ना कोए वड्याईआ। जिंनां चिर हक़ ख़ुदा ख़ुद मालक करे ना आप मेहरबानी, महबूब मिलण कोए ना पाईआ । मेहर अंदर मुहब्बत अंदर अंदरों कढ्ढ देवे बेईमानी, शरअ शैतानी ना कोए जणाईआ। मालक मिले ओह असमानी, जो जिस्मानी परदा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार परवरदिगार सांझा यार जल्वागर वाहिद लाशरीक निरगुण धार निराकार निरवैर इक अख्वाईआ।

✻ २० पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सदी चौधवीं कहे सति धर्म होण लग्गा तलूह, आफ्ताब इक रुशनाईआ। सब दा प्रगट होण लग्गा शब्द गुरु, गुरदेव बेपरवाहीआ। जिस ने आदि कीता शुरु, अन्त आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणी करनी करने तों कदे ना मुड़ू, ना कोई रोके रोक रुकाईआ। आपणे हुक्मे अंदर आपे तुरू, तुरत आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या खेल अपार, अपरम्पर सुआमी रिहा वखाईआ। जिस दी मैं ख़िदमतगार, ओह ख़िदमत सब दी रिहा कमाईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, साचा मेला रिहा मिलाईआ। मैं निव निव करां निमस्कार, निउँ निउँ लागां पाईंआ। तेरा खेल अपर अपार, अगम्म तेरी वड्याईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, हरि करते धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सच करां इज़हार, इशतिहारी दयां जणाईआ। लोआं पुरीआं कर के ख़बरदार, ब्रह्मण्डां दयां उठाईआ। मेरी आई खुशी बहार, रुतड़ी सच महकाईआ। हुक्म दस्सां धुर सरकार, की करता रिहा जणाईआ। छब्बी पोह वक्त विचार, बारां वजे नाल मिलाईआ। दस गुरमुख सोहणे लिआउण हार, अन्तर चाउ बणाईआ। दस बीबीआं नाल होण त्यार, हथ्थां विच उठाईआ। जो सदी चौधवीं दी गोली होवे सेवादार, सेवकन रूप बणाईआ। इक इक्क फड़ के गल विच दए डाल, दस दस बीस सोभा पाईआ। गुरमुख खड़काउण तलवार नाल तलवार, सोहणी आवाज़ बणाईआ। इक वार बोल जैकार, जै जैकार देण कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद साची कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे चौदां होण पहरेदार, ख़बरदारी नाल जणाईआ। एह हुक्म सच्ची सरकार, धुर दी धार विच्चों प्रगटाईआ। सब नूं करदे रहिण ख़बरदार, आलस निंदरा विच कोए ना आईआ। खुशीआं नाल फिरन अंदर बाहर, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। चौदां फुट साहमणे कोई ना बहे पैर पसार, ख़ाली जगह नज़री आईआ। जिथ्थे मैं नच्चां टप्पां खुशीआं करां इज़हार, सोहणा वेस बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मालक होणा अदली, मेरा संग बणाईआ। चौदां पहरेदारां दी तिन्न वार होवे बदली, पोह छब्बी सोभा पाईआ। गुरमुख

खड़ा होवे कोई ना नकली, जो अंदर विकार बणाईआ। हरिसंगत विच भगत रहिणा जो असली, असल दा असल देणा समझाईआ। यार मिले महबूब वसली, नाता आपणे नाल रखाईआ। भगवन मिलण दी धार बड़ी पतली, बारीक नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिन्हां अंदर रमज़ लग्ग गई, इशारे नाल जणाईआ। ओह कदे ना जावण जंगलीं, जूहां विच ना फेरा पाईआ। चढ़ हक़ीक़ी मंज़ली, प्रभ दे विच समाईआ। सेज सुहञ्जणी वेखण रंगली, हरि करता आप रंगाईआ। ओथे वस्त पए कोए ना मँगणी, तृष्ना भुक्ख ना कोए रखाईआ। इक्को नूर जोत अगम्मी जगणी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां रमज़ डूँघी, ख़ालक विच्चों फोल फुलाईआ। इक धूणी ताउणी धूं दी, इक्की पाथीआं नाल रखाईआ। उत्ते पोटली साड़नी सवा पा रूं दी, जो मुहम्मद संग रखाईआ। इक बेड़ी उत्ते रखणी नूह दी, मुहम्मद क़बर दए गवाहीआ। इक बेरी टहिणी रखणी जूह दी, जूएबाज़ वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे पुष्पा लै के आए पुष्प, पोशाक फूलन सोभा पाईआ। पंज मेवे लिआउणे ख़ुशक, पंज छुहारे नाल सुहाईआ । पंज बदाम रखणे दरुस्त, पंचम मेला सहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे तिन्न बार करनी पुष्प बरखा, पंज प्यारे सेव कमाईआ। तिन्न वार बीबीआं उच्चा करन बरछा, जो तिक्खे मुख रखाईआ। फेर सब ने आपणी जेब विच्चों कढ्ढणा चिट्टा पर्चा, पर्ची हथ्थ विच उठाईआ। हर इक ने हिरदे अंदर भगत दुआरे भरती होण दी करनी चर्चा, चिरी विछुन्ने लए मिलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल नाम भण्डारा देण लग्गा अग्गे करे कोई ना सरफा, मेहर नज़र नाल तराईआ। धुर दा देवे अगम्मी खर्चा, राह विच ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरी आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे पंज गुरमुख मेरे पैरां हेठां हथ्थ धरन, क़दम वारी वारी टिकाईआ। मुखों कहिण असीं धर्म दा चौहन्दे मरन, जीवण सतिगुर झोली पाईआ। फेर कन्नी घुट्ट के फड़न, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। फेर सोहँ ढोला पढ़न, साडी कट जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जो मेरी होवे बांदी, बन्दना कर के सीस निवाईआ। सिर काले रंग दी होवे परांदी, सवा हथ्थ लम्मी सोभा पाईआ। भरी होवे चाअ दी, चिन्ता ग़म चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुख सुण लै इक बात, रविदास दयां जणाईआ। तिन्नां रंगां दी तेरे कोल होवे दवात, स्याही वक्ख वक्ख वंडाईआ। नौ कोरे रखणे काग़ज़ात,

आपणे कोल छुपाईआ। इक जलकाज़ू लिख के रखणा पास, जेब विच छुपाईआ। अगला खेल पुरख अबिनाश, हरि करता दए दृढ़ाईआ। जेहड़ी सेवा बाकी करनी ख़ास, ओह भेव दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं करनी इक निमस्कारी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। प्रभू नूं कहिणा गुरमुख दे नाल चार होर होण लिखारी, जो लेखा लेखे नाल बणाईआ। सतिगुर शब्द साची वेखण धारी, धरनी धरत धवल ना कोए वड्याईआ। रविदास वांगण पक्की लावण यारी, नाता मात पित तुड़ाईआ। भैण भ्रा दा दुःख ना लग्गे भारी, नार कन्त करे जुदाईआ। मंज़ूर करे साहिब दी बरखुरदारी, आजज़ हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच नाल मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे धुर फ़रमाना रिहा भेज, हरि करता आप जणाईआ। मेरी फुल्लां दी होवे सेज, सिँघासण सोहणा लैणा सजाईआ। उत्ते ख़ाली रखी होवे इक कतेब, काग़ज़ चिट्टे नज़री आईआ। गुरमुख सतिगुर नाल कदे ना करे फ़रेब, धोखा झूठ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सच दए दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे छब्बी पोह साढे नौं, रैण ख़ुशीआं वाली आईआ। हरिभगत कोई ना जाए सौं, सुत्तयां लैणा उठाईआ। तिन्न वार पुरख अकाल दीन दयाल हरि संगत गिर्द लए भौं, चक्र चाकरां वाला लाईआ। हरिजन उठाए फड़ के बाहों, सहजे लए मिलाईआ। आप भगतां दे लागे पाउँ, निउँ के सीस निवाईआ। मुखों कहे जन भगतो तुसां मैनूं नथावें नूं दिता थाउँ, भगत दुआरा मात बणाईआ। बेशक मैं तुहाडा पिता माउँ, तुसीं सोहणे बच्चे जो बच्चे हो के सेव कमाईआ। जिस धार विच गोबिन्द किहा वाहो वाहो, वाह वहिगुरु तेरी वड्याईआ। उस दा लेखा चुकावां चाउ चाउ, चाउ घनेरा इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे पुशपा तिन्न साल तरेठ दिन रुकमणी दी रही दासी, चोरी छुपे सेव कमाईआ। ख़ुशीआं नाल करदी हासी, हस्स के दिता जणाईआ। सख़ी तेरा काहन साडा पुरख अबिनाशी, किस दी वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। रुकमणी तक्कया आ गया काहन, घनईआ बंसरी हथ्थ उठाईआ। हस्स के लग्गा सुणान, की बातां रहीआं पाईआ। रुकमणी नक्क चढ़ा के किहा दासी कहे नी तेरा काहन ते मेरा भगवान, किस विच वड्याईआ। कृष्ण हथ्थ उत्ते हथ्थ मार के किहा मेरा तत्तां वाला निशान, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। रुकमणी सरीर दा नहीं माण, अन्त संग ना कोए निभाईआ। दासी दा भगवान सदा नौजवान, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। जिस वेले फेर आवां विच जहान, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ।

ओस वेले मेला मेलां हो के दयावान, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। सदी चौधवीं कहे एह खेल अपार, अपरम्पर दयां जणाईआ। ओस दिन दासी लै के आई सी हार, रुकमणी गल ना कोए छुहाईआ। उस ल्या के कृष्ण अग्गे बांह दिती पसार, खुशीआं नाल वधाईआ। कृष्ण किहा नहीं रुकमणी जिस वेले बण के आवां भगतां दा भगवान, भगवन हो के फेरा पाईआ। फेर करां परवान, परवाना धुर दा नाम जणाईआ। सदी चौधवीं कहे सो वक्त पहुंचया आण, लेखा लेखे विच लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पूरब लहिणा गुरमुखां रिहा चुकाईआ।

❊ २२ पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सति पुरख निरँजण दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन रूप वटाईआ। हरि पुरख निरँजण दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन विच समाईआ। आदि निरँजण दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन जोत जोत रुशनाईआ। एकँकार दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन पूर रिहा सर्ब थाईंआ। अबिनाशी करते दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन रिहा प्रगटाईआ। श्री भगवान दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन खेल वखाईआ। पारब्रह्म दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन परम पुरख वड्याईआ। शब्द सुत दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन सतिगुर इक अख्वाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सरकार पूरन, पूरन पूरन पूरन हुक्म इक वरताईआ। त्रैगुण माया पंज तत दा अधार पूरन, पूरन पूरन पूरन खेल खिलाईआ। चार खाणी चार बाणी दा विहार पूरन, पूरन पूरन पूरन कल वरताईआ। लख चुरासी दा उज्यार पूरन, पूरन पूरन पूरन हर घट नूर जोत रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन साची वंड वंडाईआ। अवतार पैगम्बर गुरु प्यार पूरन, पूरन पूरन पूरन सब दा पिता माईआ। निरगुण सरगुण अगम्म अथाह पूरन, पूरन पूरन पूरन निरवैर निराकार निरँकार अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी धार पूरन, पूरन पूरन पूरन धर्म दी धार मीत मुरार बेपरवाहीआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान पूरन, खाणी बाणी दो जहानी खेल अपार दृढ़ाईआ। आदि अन्त कन्त भगवन्त पूरन, पूरन पूरन पूरन आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक हो जाईआ। सो पुरख निरँजण सति धार पूरन, हरि पुरख निरँजण पूरन आप अख्वाईआ। आदि निरँजण नूर उज्यार पूरन, पूरन एकँकार अकल कल वड्याईआ। अबिनाशी करता निराकार पूरन, । श्री भगवान पूरन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ।

पारब्रह्म सर्ब पसार पूरन, लाए दीबान पूरन हुक्म वरताईआ। निमस्कार गुरदेव स्वामी पूरन, सीस जगदीश पूरन सर्ब झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। रवि ससि नूर प्रकाश पूरन, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड पूरन सीस निवाईआ। देवत सुर गण गंधर्ब पूरन, किन्नर यच्छप पूरन नाच नचाईआ। देव मवक्कल धार पूरन, दैंत दानव पूरन वंड वंडाईआ। कच्छ मच्छ जलहोड़े सागर संसार पूरन, जल थल महीअल बालू टिल्ले पूरन रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म कहे प्रभ पूरन पूरा, परम पुरख वड्याईआ। प्रगट होवे योद्धा सूरा, महाबली अख्वाईआ। सब दा कौल करे पूरा, पुरीआं लोआं वेख वखाईआ। जोती जोत चमका के नूरा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझ के कूड़ा, सति सच लए उपजाईआ। लहिणा देणा पूरा कराए जो सूली चढ़या मनसूरा, मुश्किल हल कराईआ। भगत वछल बण हाज़र हज़ूरा, हर हिरदा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। हाए, सदी चौधवीं कहे मैनूं वज्जी हुज्झ, हुजरे वाले दिती लगाईआ। कमलिए कमलापति बुज्झ, कँवल नैण वेख वखाईआ। जिस ने तेरे पिच्छे बदलणा जुग, जुगां पन्ध मुकाईआ। तूं वी कर लै कुझ, आपणा बल धराईआ। सदी चौधवीं छेती गई झुक, निउँ के सीस निवाईआ। मेरा पिछला याराना गया मुक, अग्गे तेरा राह तकाईआ। मैनूं खुशी होई सुण के तेरी तुक, दो अक्खर दिती वड्याईआ। जुग जन्म दयां विछड़यां ल्या चुक, गोदी विच टिकाईआ। मैं बोलणों हो गई चुप, रसना ना कोए हिलाईआ। पिता वेखे आपणे पुत्त, सपूते गोद टिकाईआ। मैं चलणों गई रुक, अग्गे क़दम ना कोए उठाईआ। फेर हथ्थ मारया आपणी कुख, उम्मत विच्चों नज़र कोए ना आईआ। मैनूं एहो वड्डा दुःख, दुखड़े नाल सुणाईआ। प्रभू वेख मेरी खुल्ही गुत्त, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। आह पई हुँक, की हुक्म तेरा बेपरवाहीआ। हाए एथे कुझ गया ढुक्क, धौल दिती लगाईआ। मैनूं मार के दिता सुट्ट, तेरी बेपरवाहीआ। मैनूं रोंदी नूं कौण करावे चुप, मुहम्मद संग ना कोए निभाईआ। सारे गए रुठ, संग ना कोए बणाईआ। खाण नूं देंदा नहीं कोई टुक, टुकड़े मँगदी तेरे दर ते आईआ। सच पुच्छें दुनियां नूं सर्दी ते मैनूं लग्गे धुप्प, अग्ग विछोड़े वाली जलाईआ। चौदां तबकां भार कीता रुख़, पासा आई बदलाईआ। धन्न भाग जे तूं कोझी कमली नूं ल्या पुच्छ, पिच्छा ना फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभू तूं बख्शी सत रंग दी टोपी, सोहणी सीस सुहाईआ। मैं राम कृष्ण दी बणी नहीं अग्गे गोपी, सखीआँ विच मिल ना मँगल गाईआ। तेड़ बद्धी नहीं कोई धोती, अंगी साड़ी अंग ना कोए

छुहाईआ। गुर पैगम्बरां प्यार नाल दित्ती नहीं भूपी, भूपां दे भूप दिते तजाईआ। मैं सारयां नाल रही करोपी, अक्ख ना कोए मिलाईआ। जेहड़े तेरे नाम दी पढ़दे पोथी, नित उठ के सीस निवाईआ। जगदे तेरी धार जोती, तन वजूद रुशनाईआ। नाम माला लभ्भदे माणक मोती, भज्जण वाहो दाहीआ। मैं चार जुग पई रही सोची, मता आपणे अंदर पकाईआ। जेहड़े प्रभ तों भिच्छया मँगदे रोटी, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। इन्हां दी आपणी पूरी नहीं हुंदी रोज़ी, की अग्गे देण वरताईआ। मैं किहा जद मिलणा ते मिलणा प्रीतम चोजी, जो चार जुग दा वखरा होवे माहीआ। ओस दी बहवां गोदी, जो गोदावरी वाले नूं गोद बहाईआ। फेर छड्ड जाए बेदी सोढी, सुधासर ना कोए नहाईआ। जे कोई जन्म कर्म दा दुआरे आ जाए रोगी, कर्मां दा गेड़ मुकाईआ। मैं होवां ओसे जोगी, जगत जुगीशरां नालों पल्लू लवां छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। सदी चौधवीं कहे सति दी चलणी धार, धरनी धवल वड्याईआ। पूरन ने पूरा करना विहार, पूरन आपणा हुक्म वरताईआ। बण के खुद मुख्त्यार, फ़ैसले धुर दे दए जणाईआ। धर्म दी बणा के सरकार, वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच विच्चों प्रगटाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं होका दे के कहिणा पूरन सतिगुर पूरा, परम पुरख वड्याईआ। जिस लेखे लाउणा चार खाणी दा तोता घुग्गी कतूरा, मोर कऊआ नाल मिलाईआ। जन भगतां दे के मस्तक धूढ़ा, टिक्के ख़ाक रमाईआ। आपणी हथ्थीं पहन के रंगला चूड़ा, गुरमुख सुहागी दए बणाईआ। सब दा लेखा सब दा कर्म सब दा जन्म जाण ना देवे अधूरा, भुलेखे विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। टोपी कहे हिलणे शुरु हो गए टोप, शाह सुल्तान देणे हिलाईआ। खेल करे धुर दा पोप, आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल ने सब कुछ पूरन नूं दिता सौंप, बाकी अवर ना कोए रखाईआ। नाम दी दात बख्श के ओह अगम्मी तोप, जो तोप तुख्म ताअसीर दुनी दी दए बदलाईआ। छब्बी पोह रात दे डेढ वजे गुरमुख सिहां छेती नाल गल विच पवा देवीं हाफ़ कोट, कोटां वाल्यां वेख वखाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं दी गोली दे सिर विच लग्गी चोट, चार कुण्ट हिलाईआ। पंजां गुरसिखां ने खोटे रुपईए कढ्ढ के उत्तों दी सुटणी सोट, मुखों कहिणा खोटयां खरे दे बणाईआ। फेर सतिगुर कहे भगतो तुहाडे नालों नहीं होणी छोट, छुट्टे जगत लोकाईआ। तुसीं थोड़े प्रभ नूं दो जहान नालों बहुत, जो मैदान विच समाज गए तजाईआ। तुहाडा इष्ट इक निर्मल जोत, दूजे सिर ना कदे निवाईआ। जेहड़ा मालक तुहाडा कदे ना होवे फ़ौत, मर के आपणा आप गवाईआ। सतिगुर पूरन दर्शन मँगो रोज़, बिना रोज़े निमाज़ तों घर घर दर्शन दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

७५१
२१

आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे हुण पूरन बन्दयां वरगा नहीं रहिणा बन्दा, बन्दगी वाल्लयो दयां जणाईआ। एहदा मनुशां वाला नहीं रहिणा धन्दा, वेस जाणा बदलाईआ। किसे नहीं समझणा चंगा कि मंदा, चंगा मंदा आपणे विच छुपाईआ। याद रखयो छब्बी पोह नूं गुरसिख सीस उत्ते वारी वारी झलाउँदे रहिण सत्त रंग दा झण्डा, उपर उपर घुंमाईआ। सेवादार अंदर याद करदा रहे बिना दन्दां, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। इक गल्ल याद रखयो पलँघ दे उत्ते ज़रूर इक नवां रखणा कंघा, खुशी नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं बण जाणा मुशटंडी, शरारतन रूप वटाईआ। फिरना विंगी टेडी डंडी, भज्जां चाँईं चाँईंआ। तुहाडे बैठयां विच पावां भंडी, सारे दयां हिलाईआ। जिन्हां दे कोल छापी होवे जंडी, ओह खलो के अग्गे देण वखाईआ। मुखों कहिण कमलिए तूं सुहागण कि रंडी, सानूं दे दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कहां जन भगतो प्रभ दे मिलण तों बिना हो गई अन्धी, राह खैड़ा नज़र ना आईआ। तुसीं किहओ असीं तेरे संगी, चल सहजे दईए मिलाईआ। ओथे कोई नहीं पाबन्दी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद हौली हौली देवे इशारे, चारे कन्नीआं रिहा हिलाईआ। नईआ पहुंची ओस किनारे, जिस दी आसा गई तकाईआ। मेरे पूरे होए दिहाढ़े, ख़िदमत लई कमाईआ। हुण प्रभ दे अग्गे हाढ़े, मिन्नतां विच सीस निवाईआ। जिस नूं चाहे ओसे नूं बेड़े चाढ़े, साडे हथ्थ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे कराए आपणी कारे, करनी कर कर वेख वखाईआ।

❊ २४ पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सदी चौधवीं कहे मैं अज्ज नहीं सौणा, सुत्तयां लवां जगाईआ। दो जहानां धुर दा राग सुणाउणा, शब्द अगम्म अथाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर हिलाउणा, सावधान देणा कराईआ। अगम्म इशारे नाल दृढ़ाउणा, सहज सहज जणाईआ। उठो पुरख अकाल जिस दर्शन पाउणा, सचखण्ड निवासी दयां मिलाईआ। जिस ने सब दा लेख मुकाउणा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। सब दा बस्ता फोल वखाउणा, वरका वरका लए उलटाईआ। धुर दा हुक्म इक जणाउणा, महीना जनवरी दए गवाहीआ। यसू तेरा लेख वखाउणा, जो अन्त वार आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर करता

वेस वटाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं छड्डी आलस निंदरा, ग़फ्लत दिती गवाईआ। जगत धार मार के जिंदरा, बन्द कवाड़ कराईआ। ख़बर देणी जा के इंदरा, सुरप्त लैणा हिलाईआ। डंक वजाउणा किंगरा किंगरा, मृदँग नाम सुणाईआ। फिर कहिणा काहना वेख आपणी बिन्दरा, मथरा अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं छड्ड देणा जगत दलिद्र आलस, असल दयां जणाईआ। जन भगतां मार्ग दस्सणा ख़ालस, जो ख़ालस गोबिन्द विच प्रगटाईआ। जिस दी सारे कर के गए लालस, लालन राह तकाईआ। ओह सब दी अन्तिम लाहवे कालख, टिक्के मज़हबां दूर कराईआ। जन भगतां बणा आपणे बालक, हरिजन गोद टिकाईआ। मेहरवान हो वड ख़ालक, मख़लूक खोज खुजाईआ। दीन दुनी दी वेखे हालत, घट अंदर फोल फुलाईआ। धर्म दुआर दी करे अदालत, इन्साफ इक्को इक समझाईआ। मन कल्पणा कूड़ मेट जहालत, सति धर्म इक समझाईआ। प्रभ दा नाम अगम्म निआमत, बाहरों हथ्थ किसे ना आईआ। मालक ओह जो रहे सही सलामत, जन्म मरन विच ना आईआ। जिस दी याद विच मुहम्मद मँगी क्यामत, क्यामगाह वल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे इक फ़ातमा लाया नाअरा, ज़ाए ज़ाए ज़ाए कर सुणाईआ। अंदर ख़िज़ां होई बहारा, बसन्त रुत बदलाईआ। जूह दिसी उजाड़ा, बालू रेत तपाईआ। लग्गी अग्ग नाड़ा, अगनी रही जलाईआ। फेर कढ्ढया हाढ़ा, रो के दिता सुणाईआ। तेरा खेल अपारा, तेरी बेपरवाहीआ। तेरा नूर मुहम्मदी दुलारा, चार यारां नाल वड्याईआ। तेरा वेख्या अगम्म चमत्कारा, जलवा डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे फ़ातमा नेत्र वगिआ नीर, नैण नैण छलकाईआ। हथ्थ नाल खिच्चदी गई लकीर, ज़मीन उत्तों असमान वल उठाईआ। मथ्थे कोल उँगल ल्या के कहे बदल दे तक़दीर, तदबीर तेरे हथ्थ नज़री आईआ। अग्गों हुक्म मिल्या अख़ीर, आख़र दिता सुणाईआ। जद आवां तां शरअ दी तोड़ां ज़ंजीर, शरीअत डेरा ढाहीआ। फ़ातमा मेरा फ़ातिहा पढ़न वाला ना होवे सरीर, मुर्दा गोर ना कोए दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए जणाईआ। सदी चौधवीं कहे फ़ातमा हथ्थ रख्या उत्ते मथ्थे, सहज नाल दबाईआ। परवरदिगार केहड़ी धार वस्सें, सच दे जणाईआ। कवण गृह हस्सें, हस्ती इक प्रगटाईआ। कवण कूटे नस्सें, भज्जे चाँईं चाँईंआ। कवण रंग रत्तें, आपणा रंग रंगाईआ। केहड़े वतन वत्तें, आपणा फेरा पाईआ। परवरदिगार किहा जिथ्थे खाणे पैण ना भत्ते, निआज़ां लोड़ रहे ना राईआ। ओह गृह मेरे अच्छे, जिथ्थे आपणा डेरा लाईआ। जा उठ वखावां तेरे अक्खे, अक्ख इक खुल्हाईआ। जां तक्कया वेख्या खेल

समर्थे, हरि करता कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे कहिण ज्यों भावे त्यों रखे, साडी चले ना कोए चतुराईआ। बिन तेरी किरपा मूल ना होईए सच्चे, सच नज़र कोए ना आईआ। असीं गुर अवतार पैगम्बर माटी दे भाण्डे कच्चे, तन वजूद आए तजाईआ। हुण तेरे दुआरे वस्से, दरगाह बहि के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे फ़ातमा खेल अगम्मी दिखी, दीद होई रुशनाईआ। अंदर पई खिच्ची, ध्यान ल्या लगाईआ। हुक्म मिल्या परवरदिगार दी वेख सिक्खी, पुरख अकाल आप बणाईआ। जिस दी धार सब तों तिक्खी, खण्डा खड़ग ना कोए वड्याईआ। फ़ातमा तेरे नालों वड्याई मिलणी उन्हां बीबीआं इक्की, जो इक्की इक्को नाल पाईआ। उन्हां दे कोल तूं मेरा मैं तेरा सोहँ धार दी लिखी होवे चिठ्ठी, चिठ्ठी रसैण हक़ ना कोए वखाईआ। पहलों रविदास चमारे होवे डिठ्ठी, दूजा नेत्र ना कोए तकाईआ। हाहे उत्ते टिप्पी, उत्ते होर लगाउणी टिप्पी, दोहरी धार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे इक्कीआं इक्को मन्नणा पुरख अकाल, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। भावें तजणा पए घर बार गोदी दा लाल, जगत माण वड्याईआ। भावें रहिणा पवे ग़रीबी विच कंगाल, भुक्खयां झट लँघाईआ। भावें सतिगुर पिच्छे होणा पए बेहाल, लोक लज्जया जगत मिटाईआ। फ़ातमा हस्स के कीता सवाल, सहज नाल सुणाईआ। की इहो जेही घालण लैण घाल, आपणा बल प्रगटाईआ। शब्द अगम्मी किहा तैनूं सहज दयां वखाल, एह मेरी वड्याईआ। फ़ातमा किहा किस बिध लवां भाल, भेव देणा खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द किहा जिस वेले सदी चौधवीं सब दा होण लग्गा ज़वाल, ज़ावीआ मज़हब रहिण ना पाईआ। दीन दुनी प्रभ करन आवे बहाल, बंधन शरअ वाले तुड़ाईआ। ओस वेले किरपा करे दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। जन भगत सुहेले लए उठाल, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। ओह धुर दे होवण लाल, गुरमुख गुर गुर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सहजे तैनूं दए वखाल, अनडिठ हो के आपणी खेल खिलाईआ। मुहम्मद ने किहा प्रभू खुदा तेरा किथे क्याम, क्यामगाह दे जणाईआ। खुदा ने किहा फ़रज़ंद किथ्थे तेरा इस्लाम, इस्म दे समझाईआ। मुहम्मद ने किहा मैं तेरा गुलाम, फ़रमाबरदार अख्वाईआ। खुदा ने किहा जिस वेले अवतार पैगम्बरां दा लेखा मुकावां तमाम, तमअ तमन्ना मज़हबां वाली मिटाईआ। जगत दी मेटां अन्धेरी शाम, आपणा साचा चन्द चढ़ाईआ। इन्सानां नाल लड़ा के इन्सान, हैवानां नाल हैवान दयां बणाईआ। किसे दा रहे ना जगत निशान, गुर अवतार पैगम्बर मिट जाए आण, सजदा करे ना कोए सलाम, डंडावत बन्दना ना कोई नाम, इक्को हुक्म चले श्री भगवान, ओस नूं मुहम्मदा क्यामत कहिंदा जहान,

जो पिछली नूं अगली ते अगली तों पिछली दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। शब्दी कलमे किहा मुहम्मदे क्यामत, क्यामते कुल ज़ू ज़ाबते विच रखाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैग़म्बरां दी आवे शामत, शाम्याने मज़हबां वाले उखड़ाईआ। इक दूजे दी देवे ना कोए ज़मानत, साथी संग जाण तजाईआ। नाम रहे ना नाम निआमत, रस रसना ना कोए चखाईआ। कलमा नाम दी करे मज़ाहमत, ते नाम कलमे नाल टकराईआ। किसे दी चले ना कोए स्याणप, बुद्धी करे लड़ाईआ। मन दी मनसा कायनात होवे गुलामत, गुलामी विच आपणा आप पवाईआ। मुहम्मदा ओस नूं कहिंदे खुदा दी क्यामत, जो सब दी खुदी दए मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर लख चुरासी जीव जंत सारी सृष्टी धरती असमान मेरी आरज़ी इक दूजे कोल अमानत, ते ज़मीन आसमान साथी किसे दा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। मुहम्मद किहा क्यामत विच होवे की हशर, हाशम दे जणाईआ। परवरदिगार ने पैगम्बरां आपणी धार विच इक नुक्ता ला के किहा कसर, कसर इशारीए नाल सारे दिते उडाईआ। जेहड़े तुसीं मेरे सहारे मातलोक विच तत जीवन कर के आए बसर, बिस्तरिआं उत्ते आसण लाईआ। रंग रलीआं माण के करदे आए जशन, ते मातलोक गुर अवतार पैगम्बर अख्वाईआ। मानव मेरे ते तुसीं चलाया आपणा मिशन, मिशनरी मेरा नाम बणाईआ। सच पुच्छो गुर अवतार पैगम्बरो मैं आपणे नाम विच्चों मज़हबां दा थोड़ा जिहा तुहानूं दिता कमिशन, असल हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मैं इक ते पूजा होवे ब्रह्म शिव विष्न, जेहड़े चरणां थल्ले रगड़ रगड़ के रगड़यां विच रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो तुहानूं मैं मनुशां नूं इक दूजे वल्लों घल्लया खिच्चण, साथी आपणे आपणे बणाईआ। जितने मेरे नाम ते उतनी बाज़ी तिलकण, पैर सम्भल ना कोए टिकाईआ। वेखो जिन्ने मुरीद ते जिन्ने सिख सारे तरसण, प्रभ दा दर्शन कोए ना पाईआ। जिन्हां नूं इष्ट आपणा देवां उन्हां दी मेटां भटकण, एह जुग जुग दी रीती चली आईआ। भगत भगवान विच कोई पा नहीं सकदा अटकण, किसे दी चले ना कोए चतुराईआ। गुर अवतार पैगम्बरो जदों वेखो मैं तुसां दी पैज आवां रखण, निरगुण तों सरगुण आपणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बरो मेरे भगतां दी तुसां गाई बाणी, सिफ्तां विच सालाहीआ। किसे अवतार पैगम्बर गुरु दा सिख बणया नहीं उन्हां दा सानी, भगतां नाल मिल के मेरा दरस कोए ना पाईआ। किसे ने राम किसे ने कृष्ण किसे ने ईसा मूसा मुहम्मद किसे ने नानक दी पढ़ लई बाणी, रसना जिह्वा गा के आपणा झट लँघाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो भगतां नूं देवां पद निरबाणी, दर ठांडा इक वखाईआ। जिथ्थे जोत नूर नुरानी, तत्तां वाला नज़र

कोए ना आईआ। जे तुसीं आप वड़ गए गोर ते मसाणी, तन वजूद तजाईआ। की करनगे तुहाडे प्राणी, जिन्हां दा प्राणपत नज़र किसे ना आईआ। तुहाथों मैं निक्कीआं निक्कीआं बातां ते छोटी छोटी कहाणी, कहावत ग्रन्थां वाली बणाईआ। किसे नूं पैसा किसे नूं टका किसे नूं दे के दवानी, मातलोक दिता परचाईआ। कदी अंदर ते कदी बाहर दे के झलक नुरानी, ख़लक विच दिता वड्याईआ। फिर हुक्म दी लै क़ुरबानी, करबलियां विच भवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सच दस्सो मेरा केहड़ा रूप ते केहड़ी जवानी, किस सिंघासण सोभा पाईआ। तुहाडे वास्ते मेरा सचखण्ड वड्डा महानी, मेरे वास्ते मेरे चरणां दी धूढ़ छार नज़री आईआ। तुहाडे वास्ते मेरा नाम मेरा कलमा वड्डी उच्ची मंज़ल रुहानी, मेरे वास्ते मेरा छोटा जिहा शब्द सुत तुहानूं गल्लां रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, क्यामत दा सिर्फ़ दस्सया नाम क्यामत, क्यामत दी समझ किसे ना आईआ।

❊ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

७५५
२१

सदी चौधवीं कहे मिल्या धुर दा अमाम, मेरी मनसा पूर कराईआ। चौदां तबक सांभ इंतज़ाम, हज़रत मुहम्मद दिता जणाईआ। तेरी सेवा पूरी होवे काम, कामना अवर रहे ना राईआ। तारा चन्द वेख निशान, निशाना ज़िमीं असमान समझाईआ। मैं निउँ निउँ करां सलाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। मैं रहिणा बण के गुलाम, शरअ ज़ंजीर देणा कटाईआ। किसे दा झलणा नहीं अहसान, अहसानमंद ना कोए बणाईआ। मेरा मालक ख़ालक परवरदिगार इक भगवान, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस दा सति धर्म निशान, सचखण्ड साचे रिहा झुलाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर मेरी कीती आप पहचान, बेपहचान ल्या मिलाईआ। मैं वेख के होई हैरान, हैरानी मेरे अंदर छाईआ। चार जुग दे विछड़े सन्त सुहेले जन भगत सूफ़ी फ़कीर इक्ठे कीते आण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखी भगतां धार, धरनी धरत धवल वज्जी वधाईआ। जिन्हां दे अंदर इक प्रभू दा प्यार, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जिस दी सिफ्त करदे गए गुरु अवतार, पैगम्बर ढोले गाईआ। उह साहिब सच्ची सरकार, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस नूं कुल्ल कहिंदे कल्की अवतार, अमाम अमामां वेस वटाईआ। सो खेल करे अपार, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जन भगतो तुहाथों जावां बलिहार, सदके वारी घोल घुमाईआ। तुसीं पन्ध आए

मार, चल के चाँईं चाँईंआ। मैं तुहाडी ख़िदमतग़ार, खुदी तक्बर डेरा ढाहीआ। चुरासी विच्चों थोड़यां उत्ते आया एतबार, जो परवरदिगार सीस निवाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ छड्डे गुरुदुआर, ग्रन्थ शास्त्र रंग ना कोए रंगाईआ। एका मन्न सच्ची सरकार, सीस जगदीश रहे निवाईआ। मैं वेख के खिड़ी गुलज़ार, साची महक महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, । सदी चौधवीं कहे मेरे मन आई ख़ुशहाली, ख़ुशीआं विच जणाईआ। जन भगतो तुहाडा रहे ना कोए दलाली, विचोला नज़र कोए ना आईआ। तुहाडा मेल होया नाल ओस जल्वागर नूर नुरानी, जो निरवैर निराकार अख्वाईआ। अज्ज सारे बणयों इक दे सवाली, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। पिच्छे चुरासी भोग लई बाहली, चारे खाणी फेरा पाईआ। कलयुग तेरी मंज़ल लैणी इक रुहानी, दूजा राह ना कोए तकाईआ। जे प्रभ मंनिउँ ते मेला करना उपर ज़िमीं असमानी, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। तेरा भगत देवे ना कोए क़ुरबानी, सीस तन ना कोए कटाईआ। जिस ने तेरा रसना जिह्वा जपया नाम ज़बानी, ज़ेर ज़बर दिती मिटाईआ। उहदी मंज़ल करीं आसानी, एह धुर दी मँग मँगाईआ। तूं दिलबर मेरा जानी, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। एह दुनियां दिसदी फ़ानी, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। हरि संगत वेखी मस्तानी, अन्त कल आपणी कार कमाईआ। राह तकदे दो जहानी, चौदां तबक नैण शरमाईआ। जन भगतो अज्ज तुसीं मेरे प्यार दी खाइओ महिमानी, दूजी हरस ना कोए वधाईआ। अग्गे तों सब दा होणा इक्को बानी, मालक शहिनशाहीआ। एह हुक्म होया ऐलानी, दाअवे नाल सुणाईआ। झगड़ा मुकाउणा चारे खाणी, चारे बाणी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आ गई भगतो तुहाडे दर, आपणा दर्द देणा सुणाईआ। चौदां सदीआं दा छड्डुया झेड़ा घर, बेगाना कर के आई तजाईआ। पैगम्बरां दा लाह के डर, पासा ल्या बदलाईआ। इक्को मिलणा धुर दे हरि, जो हरि मन्दिर सोभा पाईआ। जेहड़ा ना जन्में ना जाए मर, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। जो चाहे सो करनी दा करता लए कर, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सब तों सोहणा सुहावणा देवां दर, प्रेम नाल समझाईआ। जन भगतो अज्ज दी रात ज़रा उन्नीदरी ल्यो जर, ज़रा ज़रा सब दा दुखड़ा दयां गवाईआ। सब दे अंदर जावां वड़, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। इक्को वार ते इक्को वक्त सब नूं नहौंणा धुर दे सर, जगत सरोवर दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच नाल मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे अन्तर चाउ घनेरा, ख़ुशीआं विच जणाईआ। सब दा बन्नृणा बेड़ा, बनी नौअ दा बेड़ा डुबाईआ। वसणा इक्को खेड़ा, जो पुरख अकाल सुहाईआ। जुग चौकड़ी तुसीं करदे रहे जेरा, हौसला हिम्मत नाल बणाईआ। कवण वेले

७५६
२१

प्रभ करे मेहरा, मेहर नज़र नाल तराईआ। सो आ गया नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों वेला, वक्त आपणा नाल मिलाईआ। इक्को रंग रंगणा गुरु चेला, चेला गुर भेव रहे ना राईआ। जन भगतो एह तुहाडा नहीं दो जहान दा मेला, लख चुरासी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो छेती खाइओ फुलके, फुल फुल खुशी मनाईआ। मैं चौदां तबकां आई रुल के, भज्जी वाहो दाहीआ। दो जहानां आई सुण के, अणडिड्डी आवाज़ सुणाईआ। जो भगत सुहेले पूरे तोल तुल गए, जगत तराज़ू तक्कड़ डेरा ढाहीआ। ओह प्यारे हो गए ओस प्रभू दी कुल दे, जो कुल मालक धुरदरगाहीआ। तुहाडे लहिणे देणे सुल्हकुल दे, साहिब सुल्तान झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाईआ।

✻ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ इश्नान करन समें ✻

चौकी कहे मैं लक्कड़ी चन्नण, चन्न वेखां धुर दा माहीआ। जिस दा हुक्म आई मन्नण, निउँ निउँ सीस निवाईआ। धर्म दा बेड़ा आई बन्न्हण, साची सेव कमाईआ। चार वरनां प्रीती आई रखण, ज़ात पात डेरा ढाहीआ। सन्त सुहेले वेखण आई सज्जण, हरिजन दीन दुनी फोल फुलाईआ। चरण धूढ़ करन आई मजन, दुरमति मैल धवाईआ। पंज प्यारे सेवा करन पाणी पावण उपर बदन, बदला गोबिन्द दए चुकाईआ। पुरख अकाल आई सद्दण, दीन दयाल राह तकाईआ। जिस दे भगत सुहेले दीपक जगण, चार कुण्ट होवे रुशनाईआ। त्रैगुण बुझे अगन, नाता तत गवाईआ। सोहणा सदी चौधवीं लग्गे सगन, अन्त अख़ीर वज्जे वधाईआ। हक़ प्रीती विच होवे मग्न, सुरती अन्तर निरंतर बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दा तोले वज़न, ब्रह्मण्ड खण्ड नाम कंडे आप तुलाईआ।

सदी चौधवीं कहे मेरा सजदा, अमाम धुर दे सीस निवाईआ। मुहम्मद जिस दा बणया बरदा, ख़ादम हो के सीस निवाईआ। मालक वेख्या चौदां तबक घर दा, चौदस चन्द नूर रुशनाईआ। दरगाह साची सरनी वेख्या परदा, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। अन्तिम परवरदिगार सांझे यार राह तकदा, तरफ़ दोतरफ़ ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल आप वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद धुर दे यारा, यामुबीन दयां दृढ़ाईआ। अलाही नूर

तेरा चमत्कारा, जोती डगमगाईआ। अन्तिम तेरा आया किनारा, नईआ डोले थाउँ थाईंआ। करे खेल धुर दा हरि सांझा यारा, परवरदिगार बेपरवाहीआ। जेहड़ा कलमा दिन्दा रिहा अगम्म अपारा, अलख अगोचर इक अख्वाईआ। सो अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार होवण लग्गा ज़ाहरा, पर्दा पर्दानशीं आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद पंजां प्यारयां ल्यांदा गुड़, मिट्ठत नाल वड्याईआ। तेरी मेरी लग्गी प्रीती तुड़, अन्तिम दिती निभाईआ। हुण प्रभ दे नाल नाता रिहा जुड़, पिछला लेख मुकाईआ। धुर दे कलमे दिती सुर, मेरी समझ दिती बदलाईआ। जो गोबिन्द कहि के गया अनन्दपुर, धुर फ़रमाना चारों कुण्ट सुणाईआ। अन्त अख़ीर सब दा चिराग़ होणा गुल, गुलशन मात ना कोए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी चौथे जुग दे नाल टक्कर, टाकरा आप जणाईआ। वेखे साध फ़कीर फ़क्कर, जो फ़िकरे धुर दे गाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला शब्दी धार भगतां गिर्द मारे तिन्न चक्र, त्रैलोक चरणां हेठ दबाईआ। मैं वेख्या चार जुग दा सफ़ा उलटा के पत्र पत्र, अक्खर अक्खर खोज खुजाईआ। मेरे नेत्र वहांदे अथ्थर, नैण रहे कुरलाईआ। मैं चौदां तबकां वेख्या सथ्थर, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। अन्त बेअरथ जाण लग्गा मेरा यतन, यथार्थ खेल ना कोए वखाईआ। साचा दिसे ना कोए हीरा रतन, अणमुल नज़र कोए ना आईआ। मैं वेखां चौदां पत्थर, जिन्हां दा लेखा ना कोए समझाईआ। अन्त लहिणा दिसे अकथण, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी ज़ानज़ू नवा, बहरे हका कबू तामीले ख़ुदा, स्कूले तहि दिल ज़ाहरे नवा आसीन कुज़ू ज़बूतो ज़वा, रसूले मुहम्मद मदीने मुहद्दल मुहम्मदे नज़हा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं जोबनवन्ती, नूर नुरानी नज़री आईआ। मैं छड्ड दिते मुल्ला शेख़ मुसायक नाता तोड़िआ पंडती, अक्खरां वाली छड्डां पढ़ाईआ। मैं प्रभ दे दर दी हो गई मँगती, झोली इक्को अग्गे डाहीआ। गढ़ टुट्ट गया हउमे हंगती, हँ ब्रह्म रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नूर नुरानी, सूरबीर अख्वाईआ। मेरी मस्ती मस्त जवानी, सोभावन्त सुहाईआ। हुण तक्कां नूर नुरानी, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जेहड़ा कदे ना होवे फ़ानी, मढ़ी गोर ना डेरा लाईआ। जिस नूं कहिंदे मालक असमानी, दरगाह साची सोभा पाईआ। मेरी मुहब्बत ओस दे नाल पुराणी, जुग चौकड़ी ना कोए समझाईआ। जिस दे विच शरअ नहीं कोई बेगानी, मज़हबां वंड ना कोए वंडाईआ। सद वस्से आलमे जावदानी, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे महबूब, तेरा राह तकाईआ। तूं वाली अर्श अरूज, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। तेरी मंज़ल हक़ मक़सूद, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं जिधर तक्कां ओधर मौजूद, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर रखीं महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तेरा भेव अगम्मा गूझ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान कहिण कुछ ना पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर तेरी वञ्ञण वाले हदूद, मज़हबां वाला बंधन पाईआ। मानव दी मानव नाल कराउँदे दूज, एका रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरी आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मस्त दीवानी, तेरे रंग समाईआ। मेरा तत वजूद नहीं जिस्मानी, कलमा ढोला ना कोए गाईआ। मेरी मंज़ल नहीं रुहानी, जगत रजवाड़यां वंड वंडाईआ। मेरे कोल शरअ दी नहीं प्रधानी, ज़ंजीरां बंधन पाईआ। मैं जगत दी नहीं महाराणी, सिँघासणां उत्ते डेरा लाईआ। मैं आत्मा जीव नहीं प्रानी, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। मैं तेरा नूर ज़हूर तूं मेरा शाह सुल्तानी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जद वज्जे तेरे नाम शब्द दी कानी, कलमा महबूब मेरे अंदरों देणा प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सदी चौधवीं कहे ज़ाना मज़ुल मुज़रे ज़वा तोहफ़े तशदद मकज़े नवा, ज़ूते ज़ामन मूसे मदा, ईसे जलल्ल नूरे खुदा, ख़ाकी बन्दा तौहीने ज़हा, ज़मीं असमां क़दमे रवा, मेरी दुआ मेरे महबूब रुशना, तूं शहिनशाह वाली दो जहां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आ गई धुरदरगाही, मेरे महबूब दिती वड्याईआ। मुहम्मद दी बदल जाणी शाही, तोबा तोबा मेरी दुहाईआ। मैं चौदां तबक दी बण गई राही, मंज़ल मंज़ल भज्जी वाहो दाहीआ। किसे नूं डर नहीं खुदा दी खुदाई, खुद मालक दीन दुनी नज़री आईआ। मैं कायनात अंदर पई वेखी दुहाई, बौहड़ी बौहड़ी कर के सारे रहे कुरलाईआ। जां तक्कया बिना भगतां तों प्रभ दे नालों सब दे नालों सब दी होई जुदाई, साचा संग ना कोए निभाईआ। मैं लड़दे वेखे मुलां शेख़ मुसायक पीर दस्तगीर भाई भाई, साचा संग ना कोई निभाईआ। हज़रत मुहम्मद दी सुक्क गई क़लम नालों स्याही, तकरीर तहिरीर ना कोए बणाईआ। इक दूजे नाल होण लग्गी जुदाई, जुज़ वखरे वखरे हिस्से दिते वखाईआ। मैनूं याद आ गई गोबिन्द ने बूटा पुटया काही, जड़ उम्मत गया उखड़ाईआ। मैं वास्ता पावां तेरा नाम दुहाई, बहुड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। मेरे खुदा बेपरवाह लाशरीक लामहिदूद, तेरी कवण हदूद, तेरा उच्च मुनार महिराब शाहनवाब शहिनशाह इक अख्वाईआ। पैगम्बर तैनूं करन आदाब, सजदयां विच लभ्भण पुन्न सुआब, तूं पैगम्बरां देवें ख़ताब,

ख़ता सब दे विच रखाईआ। तेरी लिख जाण अक्खरां वाली किताब, हिस्सयां वाले बाब सिफ्तां नाल सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे अन्त मुहम्मद आ जा नेड़े, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। वेख ला उम्मत वाले झेड़े, झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। उजड़न लग्गे खेड़े, मेरी खुद खुदा दे अग्गे दुहाईआ। हक़ हक़ीक़त कवण नबेड़े, पर्दा दए उठाईआ। एका ओस प्रभू नूं भुल्ल गए बथेरे, मिलणवाला नज़र कोए ना आईआ। कोटां गुरु अणगिणत हो गए चेरे, शब्द गुरु समझ किसे ना पाईआ। सच चढ़ावे कोई ना बेड़े, नूह दी नईआ डोले थाउँ थाईंआ। मैं चारों कुण्ट मारे फेरे, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण भज्जी चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। मुहम्मद कहे मेरी अन्त अख़ीर आवाज़ यामुबीन अल्ला तज़गुले आजज़े बोलो कुले मसलसल ज़ीवेजज़ा तेरी रज़ा, तेरी बांग तेरी दुआ, मेरे खुदा खुद मालक तेरी इक वड्याईआ। पीर पैगम्बर तेरे उत्तों हुंदे गए फ़िदा, फ़ैसला तेरे हथ्थ रखाईआ। अन्त अख़ीर लोकमात मार निगाह, बिना नैण अक्ख उठाईआ। मार्ग रहिणा कोए ना सिध्धा, औझड़ राह दिसे लोकाईआ। तेरा मम्बरे मनारा डिग्गा, अम्बर रिहा कुरलाईआ। सूफ़ीआं मिले कोई ना जगह, जहालत विच दुहाईआ। मुलां शेख़ां अंदर दी विगड़ गई तबअ, तबीअत ठीक करन वाला तबीब नज़र कोए ना आईआ। मेरे अंदर हो गई चिन्ता, दुःख रिहा सताईआ। मैं प्रभ दे अग्गे कढ्ढां मिन्नता, रो रो दयां दुहाईआ। प्रभू सदी चौधवीं मेरे परवरदिगार कायनात सारी करे इल्लतां, धुर दे इल्म दी समझ किसे ना पाईआ। माण वड्याई चौहन्दे खिलता, आबरू जगत वाली समझाईआ। मैं फिर फिर वेख्या घर घर डेरा लग्गा निन्दकां, सूफ़ी सन्त फ़कीर अन्तर आत्म मेल ना कोए मिलाईआ। झगड़ा वेख्या तत वजूद सरीर पंज तत पिंड का, दीनां मज़हबां विच दुहाईआ। पता नहीं की हाल होणा एह भारत वासी हिन्द का, हिन्दसा तेरे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मुहम्मद कहे मेरा अन्त अख़ीरी रस्ता, रहिबर हो के दयां जणाईआ। बज्झण वाला बस्ता, तीस बत्तीस ना वंड वंडाईआ। मैं वेख्या मेरा खुदा छड्ड के अर्शां, फ़र्शां उत्ते डेरा लाईआ। मुहम्मद दीआं पूरीआं करन आया शर्तां, भविख्त गुर अवतारां दा नाल मिलाईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्दाना मर्दा, बलधारी जलवा नूर करे रुशनाईआ। एह खेल मेरे हरि दा, जो हर हिरदे रिहा समाईआ। जिस कोलों आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पैगम्बर रिहा डरदा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। नाम कलमे रिहा पढ़दा, वेदां शास्त्रां पुराण अञ्जीलां करे लिखाईआ। जां तक्कया गुर अवतार पैगम्बर सारा वेख्या मरदा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। एह खेल नरायण नर दा, जिस नानक

गोबिन्द दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे मुज़लज़द वज़ीदे नवल, ज़गुसे ज़गे ज़ीना दुआ, मेरे दिल रुबा, सारी कायनात दुनियां होई बेवफ़ा, आपणी हक़ीक़त दा लाशरीक बदल दे सफ़ा धुरदरगाहीआ। बिना अक्खरां तों हिन्दसिआं तों सब दे उपर ला दे आपणी दफ़ा, जिस दी तरमीम ना कोए कराईआ। मेरी दुहाई दरोही खुदा दी, खुदा दे नबी दी, दरोही चौंह यारां दी, दरोही हज़रत पीर दस्तगीर दी, दरोही जीव लोचअल नेक कमच खेल दी, सौंह खुदा ते खुदा दे नबी दी, नबी रसूलां पई दुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं की जाणा पैगम्बरां वाली गद्दी नूं, गदागर वेखी लोकाईआ। मैं इक्को जाणदी पुरख अकाल दी जोत रब्बी नूं, जो हर घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, खेल सच दा इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे कानूसे कवां ज़नूसे मर्दां मनहूसे सवां चौदां तबकां दुआ सिर क़दमां निवा वेखां अरबां दा राह मुहब्बते नज़ाअ सुहबते खुदा जाज़ीने अदा मदीने रुदा मक्के कुदा सूखो सुबा चार यारी मुबा, नबीओ नवा सदीओ ग़ज़ा वहिनज़े नमिल ज़कूने ज़लिल शावीदे सबो मोज़ीदे नमो कुन कुज़ीदे ख़मो, ख़ानाए खुदा मेरी दुआ, दर तेरे अलख जगाईआ। रसूले रज़ल्ल, कज़ूले कमन, माज़ूले चल्लिल, पोजिसता अलिल्ल, नविस्ता खलिल, दोगीना गुदम, मुहम्मदे ज़गुम, ज़ाहरे ज़मम्म, शाहे कमन, मेरे महन माही नूर ज़हूर तेरी रुशनाईआ। आसा वज़ू, कासा कज़ू, भरवासाए रूह, मुतलाशे हू, खुलासाए नूह, ज़ुबली ज़ासाए अबू, तेरा नाम तूंही तूं नज़री आईआ। मुहम्मद कहे मैं वारी सदका, सद सद घोल घुमाईआ। राह तक्कां पुराणा कद का, क़दीम दा वेख वखाईआ। खेल वेखणा पुरख समरथ दा, जो दाता धुरदरगाहीआ। जुग जुग पैज जो भगतां रखदा, सूफ़ीआं होए सहाईआ। प्रकाश देवे निज नेत्र अक्ख दा, लोचण नैण खुल्हाईआ। लहिणा चुकाए करोड़ी लख दा, ख़ाकी ख़ाक नाल उडाईआ। भेव खुल्हाए हक़ीक़त हक़ दा, पर्दा दूई गवाईआ। मैनूं ऐं जापदा हुण वेला आ गया शक्क दा, शिकवा सके ना कोए मिटाईआ। कलयुग कूड़ा फिरे टप्पदा, घर घर आपणा बल प्रगटाईआ। माया रूप धरया सप्प दा, नागनी डंगे चाँईं चाँईंआ। हिरदिउँ मेरे खुदा नूं प्रभू परमात्मा नूं कोई नहीं जपदा, रोम रोम ना कोए समाईआ। नज़ारा तक्क लओ मेरे ख़ाली हथ्थ दा, मुहम्मद कूक के रिहा सुणाईआ। एह झूठा खेल संसार जग दा, अन्त नज़र कोए ना आईआ। अवतार गुरु पैगम्बर वेखो खपदा, जो जम्मया सो मर जाईआ। चार कुण्ट अगनी भठयारा वेखो तपदा, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणी धार समझाईआ। मुहम्मद कहे मेरा दे दयो उनाभी रंग दा दुपट्टा, मैं पिछली मँग मँगाईआ। मेरा चौदां सदीआं दा पूरा होण लग्गा पट्टा, पटने वाला शहादत

रिहा भुगताईआ। मेरा अल्ला हू अकबर दा पूरा होण लग्गा टप्पा, टीका टिप्पणी रहिण कोए ना पाईआ। प्रकाश होणा इक्को पप्पा, पारब्रह्म चारों कुण्ट नज़री आईआ। जेहड़ा उम्मत मज़हब कौम उपर पाया शरअ दा छप्पा, उह छुपण वाला सुर्या ग़रूब हुंदा नज़री आईआ। मेरे कोल नहीं कुछ खप्पा, मैं बचन सुणावां हक़ा, मेरा मुरीद धर्म दी सूई विच दी लध्घया नहीं कोई नक्का, नानक बग़दाद विच बोल के गया सुणाईआ। मैं जिधर तक्कां उधर उडदा घट्टा, मिट्टी ख़ाक रुलाईआ। फ़कीर फ़कीरां नूं करदे ठट्ठा, मुल्ला मुल्ला नाल लड़ाईआ। मैं समझया एदूं चंगा यराना नाल जट्टा, जिस दा भेत ना कोए समझाईआ। जिस दीन दुनी दा मेटणा रट्टा, किसे नूं खाण नहीं देणा कट्टा वच्छा, गाँ सूर खाण वाला रहिण कोए ना पाईआ। मुहम्मद कहे मेरी दुहाई मेरया अब्बा, मैं चलां उपर पब्बां, तूं तबीअत बदल दे सॅभा, कोई रहे ना मात हल्काईआ। मैनूं सुक्का टुक्कर मिलणा अध्धा, दो तिन्न दिन दा नज़री आईआ। असीं सुण ल्या अर्शां तों उत्ते वजदा डग्गा, डुगडुगी दए दुहाईआ। जिस तार दिते पशू पंछी चोपाए कग्गा, कागों हँस बणाईआ। जां मैं हथ्थ मारया मज़हब दा कोई नहीं दिस्सया तग्गा, मौली तन्द ना कोए रखाईआ। मेरे पीड़ होई हड्डा, दुःख दिता सताईआ। सोच्चया समझया जाणया बुज्झया किस तरां उम्मत नूं सुन्नत वाली नूं क़बरां विच्चों कढ्ढां, मक़बरे देण दुहाईआ। मेरा कोई ना दिस्सया सज्जण मीत मुरारा सका, सारे नाते गए तुड़ाईआ। मैं फेर चुक्क लईआं असमान तों ज़िमीं वल्ल अक्खां, बिन अक्खां वेख वखाईआ। जिन्हां नूं कहिंदा सां अल्ला दीआं रखां, उन्हां नूं रखण कोए ना पाईआ। मैं जिधर जावां मैनूं ओधर वजदीआं सट्टां, ठोकरां नाल सारे रहे ठुकराईआ। फेर मैं कदी ओधर कदी एधर चौदां तबकां नट्ठां, दुहाई मेरी ख़ुदाई ख़ुद मालक नज़र किसे ना आईआ। ओ सदी चौधवीं, जा के प्रभू दे प्यारयां दे आ सद्दा, सदके वारी घोली घोल घुमाईआ। जिन्हां दे मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक वसदा उपर शाह रगा, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। उन्हां नूं मेरे महबूब दा मेरा साचा दे दे सद्दा, छड्ड दे दीन मज़हब दीआं हद्दां, सब दा ख़ाली वेखो डब्बा, डौरु सारे रहे वजाईआ। मैं वेख्या मुकामे हक़ दरगाह साची सचखण्ड दुआरे किसे नूं मिलदी नहीं जगह, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। उह पैगम्बर काहदा ओह पीर काहदा ओह प्यो काहदा ओह पुत काहदा जिस दा धर्म दा ना वधे अग्गा, सच विच सुच ना कोए समाईआ। हज़रत मुहम्मद कहे मैनूं तुरे जांदे नूं सट्ट लग्गी लत्त सज्जा, मेरी टंग दिती तुड़ाईआ। मेरे दर्द होण लग्गी हड्डा, पसलीआं नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखे भगत चढ़दे उपर राकी, दुलदुलां उपर आसण लाईआ। दरगाह दी खुल्ही वेखी ताकी, तकवा इक जणाईआ। जेहड़ी पैगम्बरां दी पिट्ठ

ते काली लग्गी रही टाकी, मज़हबां दा धब्बा दिता लाहीआ। ओह गोबिन्द दी अज्ज सद्द लई पाथी, जिस नाल अंगीठा गया तपाईआ। जन भगतां दी पवित्र होणी काया काची, कंचन गढ़ सुहाईआ। गुरमुखो तुहाडे प्यार दी लेखे लग्ग जाए इक इक्क इलाची, लाची जेहड़ा प्रशाद राम वशिष्ट नूं गया वरताईआ। एह बिन बन्दगी तों बाहर दी भाजी, तुहानूं माला मणक्यां तों लैणा छुडाईआ। तुहाडे शरीर वाली उबलण नहीं देणी हांडी, हांडीआं दा लेखा दिता वखाईआ। सदी चौधवीं कहे सब नालों वडा गुण उहदा जेहड़ा मेरे पिच्छे फेरे कांडी, हथ्थां दी करे सफ़ाईआ। मेरी तोबा मेरी दुहाई वेख्यो कोई गाँ ना खाइओ ढांडी, कट्टा वच्छा खाण वाला दरगाह पुज्जण कोए ना पाईआ। मेरी बड़ी खुशी मैं भगत दुआरे आ गई सुखी सांदी, सुक्खणा सुक्खदयां तेरां सौ अठासी साल दिते लँघाईआ। मैं कदे किसे तीर्थ नहीं नहांदी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणा पैर ना कदे लगाईआ। मैं कोई पंडत नहीं जगत वाली पाँधी, मैं कोई दीनां मज़हबां दी नहीं बांदी, मैं कोई गुर अवतार पैगम्बरां तों भुल्ल नहीं बख्शांदी, मैं जद चाहवां परवरदिगार सांझे यार दे राह नूं बिन अक्खां तों जांदी, जगत अक्खां नज़र कदे ना आईआ। मुहम्मद दी ख़ाहिश ते मेरी गुत दी परांदी, ते गौतम दी धार लेखा देणा मुकाईआ। दुर्गा दी चांदी ते जगत माया दी आंधी, जेहड़ी सारे साधां ते सन्तां नूं खांदी, भजन बन्दगी वाल्यां दा बेड़ा दए डुबाईआ। मैं इक मालक दे सोहणे गीत गांदी, गा गा शुकर मनाईआ। जन भगतां वेख के मेरी अक्ख शरमांदी, क्यों मैं पैगम्बरां दी साथण, ओह प्रभ दा ढोला वाचण, मिल के साहिब नूं आपणी खुशी मनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर किसे दा बणया नहीं साथण, भगतां दा भगवान सदा नज़री आईआ। मैं एधर एधर एधर एधर चारों कुण्ट आई आखण, आख़र दयां जणाईआ। मैं सचखण्ड दी वासण, दरगाह साची सोभा पाईआ। जन भगतो तुहानूं दवावां ओह आसण, जिथ्थे पुरख अबिनाशण सोभा पाईआ। तुहानूं पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां आकाशां पातालां ज़िमीं असमानां मढ़ी गोरां विच कदे ना देवे गुआचण, चुरासी विच्चों कढुके प्रभ दी गोद बहाईआ। तुहानूं पता नहीं, तुहानूं गुर अवतार पैगम्बर गए छड्ड के, लोकमात विच्चों गए लद के, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कद के, क़दीम दे विछड़यां ना कोए मिलाईआ। अज्ज मौका दर्शन कर लओ रज्ज के, दह दिशा होए रुशनाईआ। तुहाडी मन कल्पणा जावां बध्ध के, अंदरों करां सफ़ाईआ। पिछली कीती जावां रद्द के, कुकर्मां दा डेरा ढाहीआ। तुहाडे अंदर आत्मा परमात्मा जावां रख के, प्रतख हो के नज़री आईआ। एह बचन धुरदरगाही सच दे, सच नाल वड्याईआ। मूरखां नूं नहीं पचदे, गुरमुख खुशीआं विच ढोले गाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे वी लेख जांदे वध्धदे, तुहानूं वेख के चलां चाँईं चाँईंआ। सारे आपणा सीना वेखो तग के, तुहाडे अंदर केहड़ा डेरा लाईआ। तुहाडा

धर्म दा निशाना जाणा गड्ड के, गड्डे वाल्यां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच बख्शणहार सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं डागां सोटे दिस पए बरछे, बौहड़ी बौहड़ी मेरी दुहाईआ। मेरे कोल नहीं रैह गए खरचे, खच्चरां वाले व्यपारी मुहम्मद दे गए तजाईआ। हुण जगत वाले रहिणे चर्चे, चर्चां वाले सारे कुरलाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं वेखण चली कर्म कांड दे परचे, प्राचीन दा पर्दा दयां उठाईआ। तुसीं बणे रिहो इक प्रभू दे बरदे, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण धार जोत निरँकार तुहाडे अंदर जाए वड़ के, घर घर आपणा फेरा पाईआ। गुरमुखो तुसीं शब्द पंज पढ़ के, फिर खुशी लैणी मनाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चली हां कोल आपणे वर दे, जो पीआ प्रीतम इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मेरी सलाम, सलामालेकम नाल मिलाईआ। मेरा तक्को अगम्मी अमाम, जो अमन देवे खुदाईआ। दीन मज़हब झगड़े मेटे तमाम, शरअ दए बदलाईआ। लेखा पूरा करे इस्लाम, इस्म आज़म इक दृढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को रंग रंगाए इन्सान, हैवान रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला सारे गाण, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। माया ममता मोह विकार जूठ झूठ दा मेटे निशान, निशाना धुर दा नाम समझाईआ। सब दा सांझा होवे पीण खाण, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां नाम कलमे दा देंदा रिहा दान, दाता दानी धुरदरगाहीआ। जिस दी हज़रत मुहम्मद मन्नी आन, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। ओह साहिब सतिगुर पुरख अकाल परवरदिगार नौजवान, पहलवानां नाल मिलाईआ। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबान, दो जहानां फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं कहे तुसीं उस दे महमान, जो मेहर नज़र उठाईआ। सब दी करन आया कल्याण, कलमा धुर दा इक जणाईआ। तुहानूं रखणा पए ना रोज़ा विच कोए रमज़ान, रमज़ आपणा नाम लगाईआ। सतिजुग भूमिका सोहे अस्थान, जो हरिजन डेरा लाईआ। वेख्यो कोई ना रिहो अंदरों बेईमान, बेवा रूप ना कोए वटाईआ। तुसीं प्रभू दा ख़ानदान, खत्री ब्राह्मण शूद्र वैश नज़र कोए ना आईआ। इक खुदा वाहिद दी गॉड दी करो पहिचाण, जो बेपहिचाण नूर अलाहीआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बरां उपर धर्म दी कमान, हुक्मरान इक अख्वाईआ। अल्ला राम वाहिगुरु ओसे दा ढोला गाण, ओसे दी सिफ्त सालाहीआ। सो खेल करे भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिन कलयुग अन्त श्री भगवन्त कूड़ मेटणा निशान, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। सच पुच्छो दो जहानां दी लाउण आया मीज़ान, चार जुग दा लेखा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

७६४
२१

किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे भगतो वेखो पा आई बुरका, बुरिआं तों मुख छुपाईआ। मैं फेरा मारना विच तुरकां, तुरत आपणा पन्ध मुकाईआ। सब नूं याद कराउणा शब्द गोबिन्द इक गुर का, जो पुरख अकाल दस्स के गया सब दा पिता माईआ। नानक ने किहा जाप कराउणा इक्को तुक दा, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। जित्थे पैगम्बरां गुरूआं अवतारां दा पैंडा मुकदा, मंज़ल अग्गे ना कोए वखाईआ। ओह सचखण्ड दुआरा भगत राह विच कोए ना रुकदा, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तुहाडा लहिणा देणा पूरा कराया माता वाली कुख दा, जननी लेखे पाईआ। हुण वेख्यो की वेला जगत जहान ढुकदा, तुहाडे ढोले चार जुग दे प्रभ आपणे नाल मिलाईआ। शेर हो शब्द गुरु दो जहानां बुकदा, बुकल विच्चों सारे लए कढ्ढाईआ। चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड सत्त दीप ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाश पातालां गगन गगनंतर आपे पुछदा, भज्जे चाँईं चाँईंआ। हुण वेला नहीं रहिणा चुप दा, परछावां ढलदा वेखो धुप्प दा, जगत अन्धेरा मेटणा घुप्प दा, नाता जुड़ना पुरख अकाल गोबिन्द सुत दा, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। ओहो उम्मत दा बूटा जाणा सुक्कदा, अगला साल होणा बड़ा दुःख दा, दुखी रोवण मार मार धाईआ। बेगुनाहां कलयुग वेखो कुट्टदा, ग़रीब निमाणा भुक्खा टुक्क दा, पेट भर ना कोए रजाईआ। मैं दुनियां वेखी सृष्टी वेखी कायनात तक्की पुरख अकाल कोई नहीं झुकदा, गुर अवतार पैगम्बरां दे अग्गे वास्ते रहे पाईआ। एसे कर के किसे नूं वेला नहीं मिलदा सुख दा, साचा संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं दे दयो सवा सेर पाणी, मैं आबेहयात वेख वखाईआ। मैं तक्कणी चारे खाणी, ख़ानाबदोश वेखां लोकाईआ । मैं पढ़नी चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी फोल फुलाईआ। मैं वेखणी धुर दी राणी, जो निर्मल नूर जोत रुशनाईआ। मैं वेखणी मुहम्मद दी ओह सवाणी, जिस नूं सुत्ती ना कोए उठाईआ। मैं तकणे जीव जंत प्राणी, जो लख चुरासी वंड वंडाईआ। सारे फिर फिर आई थक्की, जां तक्के, जन भगत सुहेले जेहड़े परम पुरख दे हाणी, आत्म परमात्म खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं आबेहयात दा देवां छिट्टा, जन भगतां शांत कराईआ। ओ गुरमुखो तुसीं तां लाउँदे मेरीआं इट्टां, मैं तुहानूं इट्टां पत्थरां तों लैणा छुडाईआ। तुहाडे बदले मैं जगत जहान पिट्टां, पिट्ट के दयां दुहाईआ। तुहाडे कोल धुर दी चिटां, जेहड़ा गोबिन्द माछूवाड़े गया समझाईआ। पुरख अकाल सब दा पिता, जणेंदी ओहो इक्को माईआ। गुरसिख ना वड्डा ते ना निक्का, सदा इक्को रंग रंगाईआ । मैनूं जापदा हुण बदल जाणा दीन दुनी दा सिक्का, सिक्कम दे उत्ते पैणी लड़ाईआ। मेरे कोल चार जुग दा चिट्ठा, गुर अवतार पैगम्बर जिस दीआं पेशीनगोईआं गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखो भगतो बौहड़ी सारी दीन दुनियां नूं दे दिता पिच्छा, पिच्छे बैठा नज़र किसे ना आईआ। मैं जां वेख्या जन भगतां वल्ल इक्का, ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां दी करदा रच्छा, रच्छक हो के वेख वखाईआ। जग नेत्र दीन दुनी किसे ना दिसा, जन भगतो तुहाडे नाल पा के हिस्सा, लेखे लावे लहिणा देणा सवा गिट्ठा, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिस ने मानस जन्म दिता, उह तुहाडा पिता, सब नाल करे हिता, दर्शन देवे नित निता, अगला पिछला बदल देवे किस्सा, करे खेल इक अनडिट्ठा, सब ने भाणा मन्नणा मिट्ठा, मेहरवान महबूब आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची देवे सब नूं सिखा, सिख्या इक समझाईआ।

सदी चौधवीं कहे सुहञ्जणी रुती, रुतड़ी इक महकाईआ। मैं कट के आई बुत्ती, बुतख़ाने वेख वखाईआ। कायनात वेखी सुत्ती, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। ओ मेरी फिरदी फिरदी दी घस गई जुत्ती, नंगे पैर बालू रेत छाल्यां दिते तपाईआ। मैं मुहम्मद नाल बड़ी हो गई दुखी, रोजे रख के रही भुक्खी, बौहड़ी तेरां सौ अठासी साल दी हो गई बुढ्ढी, बुढापे विच लत्तों लंडी पैरां तों डुंडी, मेरी समझ ना करे बुद्धि, मैं भज्जी चौंह जुगी, मेरी अन्तिम औध पुग्गी, मैनूं पता नहीं वदी सुदी, गुरमुखो मेरे सीर नहीं रिहा दुध्धी, उम्मत किस तऱ्हां झट लँघाईआ । जेहड़ी मार के ल्यांदी घुग्गी, एह मुहम्मद दी माँ दे कोलों सी उडी, ओह रो पई भुब्बी, घुग्गी हाए हाए कर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे किसे कोल डांगां किसे कोल तलवारां किसे फड़े बरछे, बरछिआं वाले रहे डराईआ। किड्डे किड्डे सूरबीर बहादर पठाण ख़ान जरगे, कुल्लयां वाले सोभा पाईआ। नी हाए मैं तक्कया तेरे दुआरे उत्ते ब्राह्मण पंडत मुल्ला शेख़ ग्रन्थी डाकू चोर बदमाश गुंडे टुंडे मुंडे गुंगे पुट्ठे सिध्धे सारे तर गए, तारनवाला इक्को नज़री आईआ। मेरे भाणे सारे मर गए, गुर अवतार पैगम्बर ना कोए सहाईआ। ओह मैं तक्कण चली ऋषी मुनी, मैं चोरी अक्ख चुराईआ। मैं लभ्भण चल्ली सन्त जिन्हां दे अंदर नाम दी धुनी, धुन आत्मक राग सुणाईआ। मैं वेखण चली नौ खण्ड पृथ्मी दे गुणी, गुणवन्त वेख वखाईआ। मैं एधर मैं ओधर सृष्टी छाणी पुणी, वेखी थाउँ थाईंआ। सब दी चोटी गई मुंनी, बोदी वाला नजर कोए ना आईआ। की हो गया कृष्ण ने ग़रक़ करा दिती अठारां खूणी, यादव वंश हो के पांडवां कौरवां कराई लड़ाईआ। हुण ते सृष्टी अग्गे नालों चाउणी ते दूणी, अणगिणत सोभा पाईआ। मैं वेख्या

एधर अल्ला एधर राम एधर वाहिगुरु एधर कृष्ण एथे ओम एथे तत सति एथे हरी ओम पढ़दे बाणी, बाण निराला तीर ना कोए लगाईआ। वे गुरमुखो नी भैणों मैं अक्खों हो गई काणी, मैनूं नज़र कुछ ना आईआ। जे मैनूं मेरे पुरख अकाल दी दस्से कोई निशानी, निछावर आपणा आप कराईआ। जिस दे पिच्छे देणी ना पए कोए क़ुरबानी, रीत बकरीद ना कोए वखाईआ। जो आदि जुगादि दा दानी, भगत वछल इक्को नूर खुदाईआ। उस दी जूह कदे नहीं हुंदी बेगानी, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं काला पा ल्या सूसा, सोहणा रंग रंगाईआ। मैं चढ़ के वेखण लग्गी किथ्थे ईसा ते किथ्थे मूसा, मुसलसल आपणा डेरा लाईआ। कुझ मैं संदेस दे आवां जा के मूसा, रुस्तम आपणे लैणे उठाईआ। सब दा ठूठा करना मूधा, लुटिआ देणी रुढ़ाईआ। चौदां सदीआं दा मुहम्मद दा लग्गा अंगूठा, अग्गे मुनिआद ना कोए वधाईआ। दुनियां वाल्लयो जगत जहान झूठा, बिना भगत भगवान तों रहिण कोए ना पाईआ। एह कलयुग शैतान दा टूटा, सिर दीआं टोपीआं वाले सारे रिहा हिलाईआ। धर्म दा रहिण नहीं दिता कोई बूटा, बूटी पीण वल्यां दा निशाना ना कोए वखाईआ। जेहड़े विच मारदे झूटा, हुलारे विच लैण अंगड़ाईआ। मेरे वास्ते सदी चौधवीं कहे आ गया इक जरमनी दा जूता, जुत्तीआं सारयां दीआं दयां लुहाईआ। कोई साधू फ़कीर मल के आ गए भबूता, पंज भूत वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे वेख्यो किते भुल्ल ना जाइओ मेरा वेख के काला सूटा, चमक झूठी नज़री आईआ। जेहड़े आ गए बण जमदूता, राकश आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं वेख लैण दयो चोरी, ठग्गां चोरां खोज खुजाईआ। मैनूं वेख लैण दयो साध घोरी, जो अंदर वड़ के खोज खुजाईआ। मैनूं वेख लैण दयो दीनां मज़हबां दे मोहरी, जो वितकरे गए पाईआ। मैनूं वेख लैण दयो भगत भगवान दी जोड़ी, दोहां मिल के वज्जी वधाईआ। मैनूं वेख लैण दयो आपणी धार बांकी छोहरी, जेहड़ी शौहर इक हंढाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा नवीं नकोरी, जोबनवन्ती नज़री आईआ। जे उहदा दरस करो ते देवे दरस भोरी, भोरिआं विच्चों मैनूं लए उठाईआ। भगतो प्रभ दे हथ्थ फड़ा दयो डोरी, आपणा लेखा लओ मुकाईआ। तुहाडी इक्को वार गोबिन्द दे घर वंडी जाए लोड़ी, लोहड़े करवाण कोए ना पाईआ। मालवे वाल्लयो याद रखणा तुहाडी मसाणां वाली फौहड़ी, गुरमुख दा मसाण फेर फोलण कोए ना जाईआ। किथे मुहम्मद दा चकोरी, चकोर दयो वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। वाह मेरे मुहम्मद दिआ चकोरा, सोहणा नज़री आईआ। एह किड्डा पैणा लोहड़ा, लोहड़े पैणा गया आईआ। उम्मत दे ढिढु

विच पैणा मरोड़ा, तुरकी विच पए दुहाईआ। सज्जणां मित्रां दा होणा विछोड़ा, विछड़यां ना कोए जुड़ाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद विच रड़काणा रोड़ा, भविख्त भाख्या विच सुणाईआ। जन भगतो तुहाडा भाग होणा मथोरा, मिथ्या वेखणी जगत लोकाईआ। तुहाडे कोल काग़ज़ नवां नकोरा, आपणे चकोर नूं गया सुणाईआ। जिस दिन मुहम्मद ने चकोर फड़या ओस दिन उहदे सज्जे पट्ट ते निकलया फोड़ा, रान दे अंदर नज़री आईआ। उस ने गाया इक वेरां अल्ला हू अन्ना हू दोहरा, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरे अग्गे नहीं कोई ज़ोरा, सिर सके ना कोए उठाईआ। इक दुलदुल ते इक घोड़ा, हरी दा नाल रलाईआ। एह कहे सच चकोरा, मुहम्मद खुशी नाल आह चांदी दी ज़ंजीरी गल विच मेरे पाईआ। किथ्थे कटार किथ्थे तलवार किथ्थे परवरदिगार किथ्थे सची सरकार, जो निरगुण जोत करे रुशनाईआ। चकोर कहे मैनूं दे रख, गुरमुखां दे चरणां विच टिकाईआ। तलवार फड़ लै हथ्थ, कटार मुख विच टिकाईआ। मैनूं याद गोबिन्द दा सथ्थर सथ, माछूवाड़े दयां दुहाईआ। मुहम्मद दी उच्ची नहीं हुंदी अक्ख, नीवीं नज़र नज़री आईआ। हाए चौदां तबक जाणे ढठ्ठ, किंगरा किंगरा दए दुहाईआ। झगड़ा पैणा तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध्ध करे लड़ाईआ। जेहड़े इक दूजे नूं कुटदे रहे ठप ठप, इक दूजे नूं धक्का पिच्छों लाईआ। जेहड़ा मरया ल्यांदा सप्प, मुहम्मद यराना इहदे नाल गया लगाईआ। एह करदा सी वड्डा तप, छुरी पेट विच दबाईआ। इक दिन रख के उपर शाह रग, मुठी दिती घुटाईआ। फिर किहा दरोही हाए अजे नहीं मिल्या रब्ब, जल्वागर नूर अलाहीआ। अगम्मी अवाज़ आई, जिस वेले अमाम आए पैग़ाम सुणाए जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी रहिण ना देवे अड्ड, हड्ड मास नाड़ी दा झगड़ा दए मुकाईआ। धर्म दा निशाना नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना शाह सुल्ताना लोकमात देवे गड्ड, खुद गॉड गाईड हो के सब नूं दए वखाईआ। जिस नूं मुहम्मद ने किहा वाहिद, समझो हुण आ गया उहो शायद, शादियाने गुरमुखां नाल वजाईआ। जन भगतो दीन मज़हब दी शरअ दी ज़ात पात दी अज्ज तों कोई नहीं रहिणा विच हद्द, शरअ दा संगल देणा तुड़ाईआ। संगलां वाल्लयो उठ के कहो मेरे साहिब दा हुक्म जाइज़, जाइज़ा लै के आया ख़लक खुदाईआ। आपणा हुक्म करे राइज, चारों कुण्ट वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दे नाइब, जुग जुग मात सेव कमाईआ। सब दा पूरा होया अहद, सदी चौधवीं दए समझाईआ। जिस खुदा नूं कहिंदे हो गया ग़ाइब, ओह वेखो ख़ाहमख़ाह आपणा रूप बदलाईआ। ओस ने जन भगत सुहेले कढ्ढे विच्चों लायक, लाउ आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तकणे गिरजिआं वाले पोप, जिन्हां नूं फ़ादर कहे जगत लोकाईआ।

उत्ते करास वाला टोप, टोप करास नाल मिलाईआ। परवरदिगार वेख्या करोप, मेहर नज़र बदलाईआ। उस झगड़ा मुकाउणा काया माटी पोश, पुश्त पनाह सूफ़ी सन्त फ़कीरां हथ्थ टिकाईआ। जेहड़ा सदा होया रूपोश, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। उस ने सब करने ख़ामोश, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या मेरा अन्तिम होया स्यापा, भगतां दिता कराईआ। जगत दा तक्कया पापा, जिस पापां भरी लोकाईआ। धुर दा सुणया पाठा, सोहँ ढोला गाईआ । धर्म दा वेख्या हाटा, चार वरन सोभा पाईआ। जेहड़ा जुगिंदर सिँघ शीशा लिआया विच्चों टाटा, ओह गुरमुखो सब नूं देणा वखाईआ। तुहाडा पिछला पूरा कीता घाटा, अग्गे धुरदरगाही दे नाल मिलाईआ। जेहड़ा गोबिन्द दा अमृत रस पीता बाटा, चार वरनां गंढु पवाईआ। उह पतासा हर इक कोल मारे ठाठा, पंजां दा रूप नज़री आईआ। जो राम कृष्ण दा पहन आए लिबासा, सीता राधा रूप वटाईआ। जो अष्टभुज दा खेल करे तमाशा, सुंभ निसुंभ दुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं तक लैण दयो उपर अकाशा, आकाशां तों परे मेरा नूर अलाहीआ । जिस दीआं पैगम्बर आयतां विच शरायतां विच हदाइतां विच अलाइतां विच करदे गए बातां, गुप्त शनीद सुणाईआ। उस ने सब दा कढु ल्या खाता, कलयुग वेख अन्धेरी राता, चारों तरफ जूठ झूठ जुड़िआ नाता, सच धर्म ना कोए वखाईआ। झगड़ा प्या पुत्त माता, नार कन्त ना देवे साथा, भैण भाई ना रिहा भराता, सन्त साध ना रिहा दाता, ग्रन्थी पन्थी सुणाए कोई ना गाथा, मुल्ला शेख़ मुसायक कलमा हक़ किसे ना वाचा, पंडत पांधा भेव ना खोल्हे बिधना माता, पीर पैगम्बर धर्म स्वयम्बर विच नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं कहे मैं जिंने मज़हब तक्के गुर अवतार पैगम्बर तक्के एह प्रभू दीआं निक्कीआं निक्कीआं शाखां, शनाख़त वाले इशारे गए समझाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। छुरी कटार कहे मैनूं आउँदा डर, डरपोक दिता बणाईआ। किते मिले ना धुर दा हरि, जो हर हिरदे विच समाईआ। सच धर्म दी ला के जड़्ह, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। हर हिरदे अंदर जावे वड़, तन वजूद करे सफ़ाईआ। करे प्रकाश साढे तिन्न हथ्थ घर, घर घराना देणा बदलाईआ। जिस नूं कहिंदे नरायण नर, हरि करता शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं पहुंच गई बग़दाद, बग़लीआं वाला दए गवाहीआ। मैनूं नानक दी आ गई याद, जो कलमा आया सुणाईआ। उस दी रब्बीउल आवाज़, नबीआं तों परे पढ़ाईआ। पंज सौ साल कोई दे ना सक्कया जवाब, इशारा करन कोए ना पाईआ। पुरख अकाल पूरा करन लग्गा हिसाब, खाते सब दे फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं शाह पातशाह शहिनशाह सतिगुर

नूं कर लैण दयो आदाब, निउँ के सीस झुकाईआ। गुरमुखो दुनियां सुत्ती ते तुसीं जाओ जाग, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। तुहाडा इक्को मालक कन्त सुहाग, जिस नालों होवे ना कदे जुदाईआ। जेहड़ा शमांदान जलाया चिराग़, पहरा तलवार वाला लगाईआ। नाल फड़ा के क़लम दवात, चालान फ़ारम दिता वखाईआ। ओए भगतो तुहाडे अज्ज तों साफ़ कर दिते काग़ज़ात, जेहड़ा धर्म राए बणया तुहाडे विच बैठा निउँ निउँ सीस झुकाईआ। चित्रगुप्त दा लेखा भगतां दे हथ्थ किताब, अग्गे हो के पुच्छण कोए ना पाईआ। याद रखो नानक ने चौदां वार बगदाद विच वजाई रबाब, रब्बीउलसानी जमादुलसानी दा जुम्मला मजमूआ इक समझाईआ। उस ने इक आवाज़ कही बोली विच ईरानी, नाल थोड़ी जही रखी तुरानी, कुछ रखी असमानी, कुछ रखी बेगानी जो प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो मैनूं ना मारो अक्खां, अक्खां वाल्लयो दयां समझाईआ। मैं छड्ड के आई करोड़ां लखां, किसे नाल ना अक्ख मिलाईआ। मैं पिटदी दोहथ्थड़ मार के उत्ते पट्टां, पाटल दा राह तकाईआ। जेहड़ा होवे सूरबीर हट्टा कट्टा, मेहरबान जल्वागर खुदाईआ। ओस दे चरण कँवल नीवीं हो के चट्टां, चेटक आपणा होर वधाईआ। एसे कर के तुहाडा बस्तर रहिण नहीं दिता फटा, अज्ज तों तुहाडा जन्म सतिगुर दे घर दिता बणाईआ। भावें सारी दुनियां मारे गप्पां, इहो जिहा खुदा नज़र किसे ना आईआ। जो जन्म जन्म दा कर्म करम दा धोवे धब्बा, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। नहीं ओह बड़ा कब्बा, जिस गुर अवतार पैगम्बर बन्द कीते विच डब्बा, सचखण्ड विच लए टिकाईआ। दीनां मज़हबां दीआं वंड के हद्दां, मनुश मनुशां नाल लड़ाईआ। इक्को नाम ते बदलदा रिहा टप्पा, अक्खरां वाली पढ़ाईआ। ते सारे कहिंदे रहे ओम राम कृष्ण अल्ला सतिनाम वाहिगुरु अच्छा, ते बुरा केहड़ा नज़री आईआ। जितने नाम ते उतने हट्टा, चारों तरफ़ हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई प्रभ दे नाम तों करन लड़ाईआ। सच कर के इक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मन्नो पक्का, जिस दा याराना ना कोए तुड़ाईआ। जो आदि जुगादि सच्चा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। फ़र्क पैण ना देवे रता, रतन अमोलक हीरे गुरमुख लए बणाईआ। जेहड़े लड़दे आए इक दूजे नूं मार के धक्का, छोटे बच्चे तीर कमान उठाईआ। जेहड़े गतके नाल मारदे आए सट्टां, नीले रंग निशाने नाल झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं कर लैण दयो फुरती, फ़ुरने सब दे वेख वखाईआ। किसे सन्त दी अंदर चढ़े ना सुरती, कलयुग ने पर्दा दिता पाईआ। बिना पुरख अकाल तों अग्गे देवे कोई ना गुड़्ती, जम्मण वाली नज़र ना आवे कोई धुर दी माईआ। वे भगतो, मैं तुहाडे साहमणे बहि गई उत्ते कुरसी, कुरसी दीन दुनी देणी हिलाईआ। एह धार सच्चे सतिगुर

७७० २१

दी, जो शब्द रूप बदलाईआ। वेखो खेल सवा सेर गुड़ दी, जो पंज प्यारे भेंट चढ़ाईआ। चार कुंट दिसे रुढ़दी, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जिन्हां खेल कीता नाल दुरगी, तीर कमान मोढ्यां उत्ते छुहाईआ। हुण लाटां वाली दीवे जगा के आ गई तुरदी, आपणा पन्ध मुकाईआ। खेल मुकणी देवत सुर दी, सुत्तयां लए उठाईआ। दुनियां वेखो रुढ़दी, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। कथा कहाणी याद करो अनन्दपुर दी, की सरसा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखी लाटां वाली, लिटां खुल्हीआं नजरी आईआ। जिस दी प्रभ दे घर दीवाली, गुरमुखां रही वखाईआ। जन भगतो इक्को मन्नणा जोत अकाली, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, छब्बी पोह वक्त रात बारां, जन भगतो खड़का दयो तलवारां। सदी चौधवीं कहे मेरे पास आ जाए मेरी गोली, हौली हौली क़दम टिकाईआ। उस नूं समझावां धुर दी बोली, अनबोलत राग जणाईआ। जिस दी धार सब दे नाल मौली, मौला रूप सोभा पाईआ। जन भगतो तुसां कहार बण के चुक्की डोली, धुर दा भार उठाईआ। तुहानूं सचखण्ड दुआरे खड़न दी कर लई बौहणी, धुर दा सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो जेहड़ा तुसां कीता हासा, हस्स हस्स दिता वखाईआ। एह दुनियां दा तमाशा, प्रभ दी बेपरवाहीआ। चार गुरसिख उठो जिन्हां खेडणा सार पाशा, बाज़ी चौपट वाली लगाईआ। चार गुरसिख उठो जिन्हां पलँघ उठाउणा उपर अकाशा, धरनी धरत तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैनूं कर लैण दयो पर्दा, आपणा मुख छुपाईआ। मेरा हिरदा अंदरों सड़दा, दुखी हो के दए दुहाईआ। वेखो प्रभ दी मंज़ल कोई ना चढ़दा, सचखण्ड दुआरे मिलण कोए ना जाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला कोई ना पढ़दा, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो आ गए देवत देवा, आपणा पन्ध मुकाईआ। नाल मैं वी करां सेवा, फिरां चाँईं चाँईंआ। अमृत रस देवां मेवा, धुर दा फल खुआईआ। धाम वखावां इक निहकेवा, निहचल दयां वड्याईआ। जिस दी महिमा करदी जिह्वा, ओह मालक दयां मिलाईआ। जिस नूं कहिंदे अलख अभेवा, पारब्रह्म नूर खुदाईआ। ओह तुहाडे मस्तक लाउण आया थेवा, आपणा रंग रंगाईआ। वेख्यो दुहागण हो के किसे साध सन्त दा करयो ना करेवा, बिना खुदावंद करीम मालक महबूब मुहब्बत खावंद ख़सम पती परमेश्वर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म

दुआरा इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी तोबा, तोबा मेरे खुदाईआ। मैं सुण के आई सोभा, भज्जी वाहो दाहीआ। छड्ड के चौदां लोकां, तबकां पन्ध मुकाईआ। सुणया इक सलोका, तूं मेरा मैं तेरा नज़री आईआ। जिस ने कुज्जी विच बन्द कराई जोका, एह मुहम्मद दा ख़ैरखाहीआ। जिन्हां डांग नूं लवाया टोका, एह दुर्गा संग रखाईआ। जिन्हां ने खब्बे हथ्थ दा रंग ल्या पोटा, एह गोबिन्द दे मेली सोभा पाईआ। ना कोई वड्डा ते ना कोई छोटा, इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं वेख लैण दयो दिशा लहिंदी, मग़रब ध्यान लगाईआ। वैसट वाली धार की कहिंदी, ईसा मूसा मुहम्मद देणा टकराईआ। जिन्हां बीबीआं ने सज्जे हथ्थ नूं ला लई मैहन्दी, एह अमाम मैहन्दी दा दर्शन लओ पाईआ। बेशक भगतो जन्म जन्म तुहाडी आत्मा चुरासी दा दुःख रही सहन्दी, अग्गे दुखड़ा देणा कटाईआ। गिरधारा सिँघ जेहड़ी चाटी रखी दही दी, ओह गुरमुखां दा अज्ज इश्नान देणा कराईआ। जन भगतो जेहड़ी जोड़ी महीं दी, ओह भगतां नूं दए रजाईआ। जेहड़ी संगत आई कैंप सई दी, एह बावन दे साथी सोभा पाईआ। तुहाडी तक़दीर मुकी शरअ ज़ंजीर मुकी लकीर मुकी धर्म राए वही दी, अग्गे खाता ना कोए खुल्हाईआ। जिन्हां ने सेवा कीती कही दी, करमां दा डेरा जाणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। गुरमुख साचे पलँघ चुक्कण, चुकन्ने दयां कराईआ। कलयुग पैंडा आया मुक्कण, लोकमात रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल आया पुच्छण, गुर अवतार पैगम्बरां रिहा उठाईआ। सन्त फ़कीर देवे ना लुकण, जंगल जूह खोज खुजाईआ। माया ममता जड़ आया पुट्टण, पटनाधार नाल मिलाईआ। कूड़ी क्रिया आया लुट्टण, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। पलँघ कहे मैं होया उच्चा, उच्ची कूक सुणाईआ। भगत दुआरा धुर दा सुच्चा, भगवन ल्या प्रगटाईआ। ओह गुरमुखो सारे बाहर कढ्ढ लओ चिट्ठा रुक्का, हथ्थां विच उठाईआ। भाग सिआं तूं वी चुक्क लै हुक्का, अग्गे तों हुक्का पीण कोए ना पाईआ। जिन्हां वट चाढ़े मुच्छां, नाअरा दयो लगाईआ। जिन्हां नूं थोड़ पुत्तां, घाटे पूर कराईआ। जिन्हां सोहँ पढ़ी तुका, तुख्म तासीर दयां बदलाईआ। जिन्हां पैरीं नहीं पाया जुत्ता, चले वाहो दाहीआ। जिन्हां काला रंग कीता पिट्ठा, ठोडीआं उत्ते निशान लगाईआ। उन्हां दा अन्त अख़ीरी दरगाह निकले सिट्टा, सचखण्ड मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सदी चौधवीं कहे जेहड़े इक इक्क वंडे वंड, अकल्ला अकल्ला दिते कराईआ। उन्हां दी धर्म दी बद्धी गंढ, नाता इक जुड़ाईआ। अन्तिम पवे ठंड, अगनी तत ना कोए तपाईआ। जेहड़ी बीबी रंडी ने पकड़ी चण्ड, दुर्गा

दी पिछली सेवकन नज़री आईआ। जिन्हां बुरकी ख़ाधी खण्ड, घृत नाल रलाईआ। जिन्हां फड़ी हथ्थ विच चण्डी चण्ड, सोहणा रूप सुहाईआ। जिन्हां दे अन्तर आया अनन्द, निगह प्रभ दे विच मिलाईआ। जिस ने फड़या तारा चन्द, चन्द सतार दा लेख चुकाईआ। जेहड़ा पाउँदा आया डंड, रौले नाल दुहाईआ। जिन्हां वधा के लाए दन्द, आपणा भेस बदलाईआ। जेहड़े करदे आए जंग, मुक्कीयां नाल लड़ाईआ। जेहड़े आपणे आप नूं कर पाबन्द, दीनां बंधू नाउँ दिता जणाईआ। जिस ने मुसल्ला उठाया हथ्थ, लोटे खल्ल नाल वड्याईआ। जिन्हां पुठ्ठी ऐनक लगाई अक्ख, छुरे फड़ के हू हू बोल सुणाईआ। जेहड़े तूंही तूंही आए जप, धुर दा राग अलाईआ। जेहड़े चलदे आए उत्ते पब्ब, पग्गां सीस उत्ते सुहाईआ। ओह कहिण हुण पलँघ थल्ले दयो रख, सहज नाल टिकाईआ। जेहड़ा तुल्हा ल्यांदा कख्ख, तुलसी बूटे नाल वड्याईआ। जिस ने पाटी पाई कच्छ, वच्छा हथ्थ रखाईआ। जिस ने फड़ के ल्यांदी मच्छ, मीना रंग रंगाईआ। जेहड़े इक्को नाम आए जप, इक्को मन्नण पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे जेहड़े आए बण के जोटे, धुर दा संग बणाईआ। जिन्हां हथ्थ विच फड़े लोटे, संखां नाल दिता जणाईआ। मस्तक लेख लिख्या खोते, गधे रंग रंगाईआ। जेहड़े चढ़े उत्ते बोते, जगत ग़रीबी डेरा ढाहीआ। जिन्हां नाल ल्यांदे पोते, उन्हां पीढ़ी लई बणाईआ। जेहड़े करदे आए रोसे, रुस्सयां लए मनाईआ। जिन्हां उत्तों सिर घोटे, बोदीआं वाल्यां नाल जुड़ाईआ। जिन्हां हथ्थ विच फड़े डांग सोटे, मुतहरे लए उठाईआ। जिन्हां तेड़ बन्न्हे लंगोटे, सोहणा रंग रंगाईआ। जन भगतो तुहाडे नाल करे कौण धोखे, शरेआम रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं कम्म इक ज़रूरी, ज़रूरत आपणी दयां समझाईआ। बिशन कौर हथ्थ फड़ा देवे कस्तूरी, ग्लासी बसन्त कौर नाल मिलाईआ। सब दी लेखे लावां मज़दूरी, मुशिकल हल कराईआ। रंगण चाढ़्हां गूढ़ी, धुर दा रंग रंगाईआ। तोड़ के गढ़ ग़रूरी, हंगता दयां मिटाईआ। भगतो तुसीं घर वसो मैं तुहाडी दो जहान करां मशहूरी, मशवरा इक्को नाल मिलाईआ। प्रभ नूं समझो ना कोई दूरी, दूर दुराडा ना कोए वखाईआ। एह दुनियां वेखो कूड़ी, नाता कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जन भगतो एह कस्तूरी दी वेखो डब्बी, डब्बे कुत्ते वाले नाल मिलाईआ। तुहाडा मेल होया रब्बी, आलमीन जोड़ जुड़ाईआ। एह मेरी अख़ीरी सदी, सदमे विच दुहाईआ। मैं फिरां पैरीं नंगी, हौली हौली पन्ध मुकाईआ। जिस ने मोढे उपर चुक्की डग्गी, होका दे के रिहा सुणाईआ। जिन्हां अनारां लाई अग्गी, सृष्ट विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं

७७३
२१

कहे गुरमुखो वेखो इक ग्लासी, ग्लास शीशा नज़र कोए ना आईआ। जिस वेले ईसा चढ़या सी फाँसी, सलीब गल विच लटकाईआ। उस ने इक कथा कहाणी आखी, हक़ आवाज़ सुणाईआ। जिस वेले वीहवीं सदी आवे अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मुरीद रहे ना कोए जमाती, मुर्शद पल्लू जाण छुडाईआ। सच दिसे कोई ना हाटी, धुर दा वणज ना कोए कराईआ। मेरी याद रखयों बाती, बातन दयां सुणाईआ। खेल होणा बहुभाती, हरि करता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे ईसा अन्त हथ्थ लाया सलीब आपणी ढाई, उँगलां नाल छुहाईआ। किहा मेरा तन वजूद जेहड़ा नाम दी बणया सी डाई, अणघड़त घाड़ घड़ाईआ। ओह डेड्ड होया मेरी दुहाई, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। ओस वेले नाता तुटना भैण भाई, साचा संग ना कोए वखाईआ। ओह ईसा दे साथी जेहड़े पंज बणे शुदाई, भज्जे वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं क्यों चूड़ा पाया नाल कलाई, कलमे वाल्यां दयां सुणाईआ। जिस वेले खेल करे बेपरवाही, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पर्दा लाहीआ। सदी चौधवीं कहे किथ्थे ने लाउण वाले मुजरा, बुल्ले दे साथी वेख वखाईआ। किथ्थे जे हुजरा, उपर लओ उठाईआ। वेख्यो कोई ना बणयो नाशुकरा, शुकरगुज़ार सारे सीस लओ निवाईआ। जेहड़ा परवरदिगार आपणी धारों उतरा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। कोई पिता कहे ना पुत्तरा, गोद ना कोए उठाईआ। ओह भगतो तुहाथों मँगदा टुकड़ा, पंजे बीबीआं घर दे फुलके दयो वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणी जगत दी घटना, घाटे विच लोकाईआ। मैनूं इक वेरां ला दे वटणा, सगन लैणा मनाईआ। ज़रा दईए वाल्यां नच्चणा, थईआ कर के देणा सुणाईआ। एह पीरां दा सुफ़ना, दर हरि रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी टोपी सत्त रंगी, सत्त रंग रहे वखाईआ। जिस खेल वखाउणा मुहम्मदी ते फ़रंगी, फ़राख़ दिली नाल समझाईआ। चारों कुट होणी तंगी, तंगदस्त लोकाईआ। तुट्टी किसे ना जावे गंढी, गंढुणहार आपणी दया कमाईआ। मन कल्पणा सृष्टी होई रंडी, परमात्म कन्त ना कोए हंढाईआ। फिरे दुहाई विच वरभण्डी, ब्रह्मण्डी भेव ना कोए खुल्हाईआ। जगत सुआणी रही ना कोई चंगी, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। नेत्र हुन्दयां होई अन्धी, प्रभ दा दरस कोए ना पाईआ। जगत बन्दना पाई बन्दी, बन्दीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। धुर दे नाम दी किसे कोल नहीं सन्धी, सनद हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। जगत वासना होई गन्दी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा सत्त रंग दा वेखो क़मीज़, सोहणा नज़री आईआ। सब नूं सांझी दए तमीज़, मिल के

७७४
२१

चलो भाई भाईआ। इक प्रभू दे होवो अधीन, इक्को परवरदिगार मनाईआ। आपणी पूरी करो रीझ, आत्म परमात्म पर्दा लाहीआ। सति दुआरे जाओ पतीज, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। आसा मनसा पूरी करो उम्मीद, तमन्ना अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो आपणी कढ्ढो पर्ची, परम पुरख समझाईआ। भगत दुआरे होणा भरती, भरत राम दए दुहाईआ। किरपा करे प्रीतम अर्शी , अर्शां दा मालक नूर अलाहीआ। तुहानूं देवे नाम दी खरची, अग्गे तोट रहे ना राईआ। किसे ने मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर जाणा नहीं चरचीं, चरागाहां दा डेरा दिता ढाहीआ। पुरख अकाल परवरदिगार तुहाडा दर्दी, दुखियां दर्द मिटाईआ। सब दी मन्ज़ूर करे अर्ज़ी, आजज़ां वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणयां बण के गर्ज़ी, गर्ज सब दी पूर कराईआ। जिन्ह़ां पुलीस दी पाई वरदी, गुरमुख धुर दे नज़री आईआ। जेहड़े फौजी आए कला चढ़दी, एह धर्म दी धार वड्याईआ। जिन्ह़ां सीख फड़ी तत्ती सड़दी, कुंडयां वाली हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्ह़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा रंग अनोखा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां नाल कदे ना करे धोखा, सृष्टी भरम विच भुलाईआ। जो जगा के लिआए जोतां, अष्टभुज सखी सहेली सोभा पाईआ। जिन्ह़ां बनाउटी वाल वधाए इन्ह़ां कृष्ण दुआरे मिले सोभा, गरवरधन धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्ह़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा वेख लओ चूड़ा, चूड़े वालीआं दयां जणाईआ। सतिगुर नाल प्यार पाइओ गूढ़ा, गूढ़ै वांग रंग रंगाईआ । जगत नाता समझो कूड़ा, कुकरमां विच फसाईआ। मस्तक लाउणी इक्को धूढ़ा, जो दुरमति मैल धवाईआ। पुरख अकाल सतिगुर पूरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ा बाटी विच ल्यांदा चूरा, खद्दर टाकी नाल ढकाईआ । सो लेखा जाणे साहिब सूरा, सब दी सुरती खोल्ह़ खुल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे सब कुछ मेरे प्रभू दे हथ्थ, हथेलीआं रही वखाईआ। जिस बीबी ने पाई नथ्थ, तिन्नां बलाकां नाल वड्याईआ। ओह उठ के गावे विच सथ्थ, धुर दा राग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे गल विच वेखो तवीत, सब नूं दयां वखाईआ। सांझे प्रभू दी करयो प्रीत, प्रीतम इक्को वेख वखाईआ। माणस जन्म जाणा जीत, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। एथे ओथे रखे अतीत, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म करे ठांडी सीत, अगनी तत दए बुझाईआ। जन भगतो कलयुग दी बदल देणी रीत, सतिजुग साचा राह वखाईआ। जेहड़ा गुरमुख मँगदा आया भीख, भिक्खया सब नूं धुर दी देणी पाईआ। साचे नाम दी

कर बख्शीश, रहमत हक़ कमाईआ। जिन्हां ने मुकट बद्धे सीस, सोहणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे जिन्हां गल विच पाई फाँसी, रस्सीआं रहे लटकाईआ। ओह नहावण जाण कदे ना कांशी, त्रबैणी चरण ना कोए टिकाईआ। जिन्हां टोपी पाई गांधी, गंधरव पिछला नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी ज़ंजीर वेखो चांदी, सब नूं दयां वखाईआ। मेरे कोल आ जाए मेरी बांदी, बन्दना कर के सीस निवाईआ। जेहड़ी संगत सोहँ ढोले आई गांदी, घर सच मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो वेखो आपणा छल्ला, माझा मालवा दुआबा जम्मू दयां वखाईआ। नाले तक्को मेरा अल्ला, आलमीन अख्वाईआ। मक्के वल्ल रह गया मुहम्मद इकल्ला, कलमे नाल दुहाईआ। मैं केहदा फड़ां पल्ला, कवण गंढु रखाईआ। जगत जहान हो गया झल्ला, मैनूं पगली दिता बणाईआ। बीबीआं आपणा खड़ा कर लओ भल्ला, जो बरछे रहीआं उठाईआ। सारे वेखो ज़मीन ते थल्ला, निगाह लओ बदलाईआ। जैकारयां नाल बुला दयो हल्ला, हौल पवे जगत लोकाईआ। आपणी करनी दा सब नूं मिले फला, कर्म कांड वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतो सतिजुग अंदर ज़ात पात दा रहिण नहीं देणा रला, इक्को आत्म ब्रह्म दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी उँगल दी वेख लओ पोटी, पोटा पोटा हो गई लोकाईआ। मेरी सोहणी बणनी टोपी, टोपां वाले देणे हिलाईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी जगत वाली गोपी, गोपा रूप ना कोए वखाईआ। जेहड़ा फुल्ल सिर ते बन्ह के लिआया धोबी, यादव पिछला नज़री आईआ। जिन्हां रंग चढ़ाया उत्ते ठोडी, लेखा आपणा रहे मुकाईआ। जिन्हां काले कराया गोडीं, गुड मालक लै के जाईआ। गुरनाम सिँघ वेरके वाला दे दए डोडी, फुल्ल गुलाब हथ्थ फड़ाईआ। जेहड़े पंजे बैठे दोधी, डोहणे उपर दयो उठाईआ। जेहड़ा बण के आया जोगी, वहन्गी दए हिलाईआ। जेहड़ा सब तों वड्डा रोगी, ओस दा चुरासी गेड़ा दए कटाईआ। गुरमुखो तुहानूं ताअने देवण लोकी, इशारे रहे कराईआ। एह किथ्थे फिरदे ते केहड़ी इन्हां दी जोती, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जेहड़ा दुआबे वाल्यां ल्यांदा तोता दुनियां दी बोलणी तोती, तूं मैं करे लड़ाईआ। सब दी नीअत होणी खोटी, खोटे खरे ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे वेखो पाउँटे, खड़क खड़क के रहे सुणाईआ। गोबिन्द ढईए वाल्या वखा दे ढईए दे लाए ढौंके, आपणी लै अंगड़ाईआ। जिस ने साफ़ करने सब दे काया चौंके, दुरमति मैल धवाईआ। जन भगत काया

मन्दिर दुआरे पहुंचे, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुरमुख हो के कोई ना जाइओ सौं के, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं सारे कहिंदे बुड्ढी ते चिट्टा झाटा, टिक्का मथ्थे विच लगाईआ। मैं दीन दुनी दी बदलण आई कांटा, लाईन पिछली देणी ठुकराईआ। खेल करना तत आठा, तन माटी फोल फुलाईआ। जेहड़ा गोबिन्द वाला बाटा, अमृत देणा प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे वेखो मेरी गुत्त, सब नूं दयां वखाईआ। जन भगतो सतिजुग विच माता पिता ख़ाली रहे कोई ना बिना पुत्त, औंतरा मरन कोए ना पाईआ। मैनूं फेर इक वेरां मुहम्मद नूं लैण दयो पुच्छ, कुछ मैनूं दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा रस्ता केहड़ा वाईड, नैरो दिता तजाईआ। दरगाह साची दा केहड़ा गाईड, गॉड दए मिलाईआ। पैगम्बर हो गए डाईड, डू डिड ना कोए जणाईआ। मैं वेख्या ते मेरे मालक दी बड़ी उच्ची हाईट, उस ने हैट पैंट ना कोए लगाईआ। जां तक्कया ते नूर अलाही वाईट, वाहिद इक खुदाईआ। मैं विडो ना होवां मैं आपणे मालक दी चलां राईट, लैफ़ट साईड बिहान्ड उस दी आस रखाईआ। ईसा कहे कुआईट, मूसा कहे राईट, मैं कहां मेरा गॉड फिट फ़ार फ़ाईट, फ़रॉग मेंडक डडू दए बणाईआ। मुहम्मद आ गई अन्धेरी नाईट, जगत नूर ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मुहम्मद कहे ईसुलशमस्स ज़ीना ज़कूले खज़मे ज़हूले ज़ावीज़ो खुदाई मशगूले दुनियांदारो दुनी विच भूले, भरम विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखो किते डेढ़ दा वक्त ना हो जाए पंदरां मिन्ट बाकी, वाच कलाईआं उत्ते नजरी आईआ। तुहाडी अग्गे ते प्रभ दी तुहाडे विच ताकी, जिथ्थे बणना प्रेम दा साकी, जाम धुर दा दए पिलाईआ। की एह बन्दा ख़ाकी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा वेस वटाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या सत्त रंगा, रंग आपणा बदलाईआ। मैं सब नूं कर देवां नंगा, पर्दा देवां उठाईआ। बिना पुरख अकाल तों कोई अमृत ना देवे ठंडा, बिना गोबिन्द तों रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे इधर कोई फिरदा ते नहीं गुस्से, अंदरे अंदर रोस बणाईआ। मैं वेखणे सब दे जुस्से, काया माटी फोल फुलाईआ। जेहड़े मात गर्भ विच नौ महीने अठारां दिन रहे पुठ्ठे, अगनी तन तपाईआ। ओह हुण ना रहिण सुत्ते, अक्खां लैणीआं खुल्हाईआ। फिर सब दे पैंडे मुक्के, फेर जन्म विच कोए ना आईआ। आवण जावण दे रहे कोई ना दुक्खे, दुःख दर्द दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं कर लैण दयो बदली, आपणा रूप बदलाईआ। मालक इक अदली, इन्साफ विच दुहाईआ। मंज़ल मँगो इक पद लई, पिछला लेखा रहे ना राईआ। नाता जोड़ो भगत भगवान दी यद लई, दूजा राह ना कोए तकाईआ। जिस कारण हरि संगत सद लई, सदमे देणे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक जणाईआ। सदी चौधवीं कहे नक्थ वाली बीबी अजे नहीं गाया काव, मैं भुल्ल कदे ना जाईआ। गुरमुख सिँघ कोट ल्या दे हाफ़, प्रेम नाल पहनाईआ। सब दा कुकर्म करां मुआफ़, मुफ्त दया कमाईआ। हरिजन रहे ना कोए गुस्ताख़, गिला देवां चुकाईआ। जो ईसा मूसा मुहम्मद गए आख, उहो कार भुगताईआ। जो संदेसा देवे गोबिन्द दी राख, प्रेम धार दृढ़ाईआ। सब दा पूरा करां हिसाब, साहिब हो समझाईआ । बिना अक्खरां तों दे दयो किताब, चिट्टा रंग वखाईआ। जिस ने रचना रची आदि, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ । भेव जणाए ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड पर्दा लाहीआ। जेहड़े संख वजाए नाद, नाद धुन शनवाईआ। जेहड़ा कीता धुर दा पाठ, सिफ्तां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या चिट्टा वरका, सफ़ैद नजरी आईआ। जो गोबिन्द लेखा सरसा, बाकी गया दृढ़ाईआ। जिस कारण मुड़ के परता, पतिपरमेश्वर नाल रलाईआ। बण के धुर दा भरता, भरम दए चुकाईआ। वेख के खेल अर्शा, असमानी रिहा सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे एह कापी नहीं पुस्तक, अक्खरां वाली ना कोए लिखाईआ। इस दे विच नहीं कोई उस्तत, सिफ्तां नाल सालाहीआ। एह कोई पैगम्बर नहीं मुर्शद, गुर अवतार पैगम्बर नाउँ धराईआ। कोई महिमा नहीं उल्फ़त, सिफ्त नाल सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे कोट ने बड़ी दिती गर्मी, मैनूं दिता तपाईआ। मेरे अग्ग लग्गी चरणी, अन्तर दए दुहाईआ। मैं हुण नहीं वरतणी नरमी, नर मादा देणे लड़ाईआ। मैं प्रभ दे घर जन्मी, जन्म सब दा देणा बदलाईआ। कोए रहिण नहीं देणा भरमी, भाण्डा भरम भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा दए उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं गर्मी तों बड़ी अक्की, बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ। मैनूं पक्खा झल्लयो ओह सखी, जेहड़ी इक्को पुरख अकाल मनाईआ। मक्के वलों वा आई तत्ती, मेरा सीना रही तपाईआ। जे मैनूं मिल जाए मेरा धुर दा कमलापती, मेरी अगनी दए बुझाईआ। मैं उहदा दर्शन करां अक्खीं, अक्ख ीआं वाल्लयो दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो कोट लगदा अच्छा, सच देणा समझाईआ। मेरी बग़ल

विच मच्छ कच्छा, ब्राहा लए दबाईआ। जेहड़ा शरअ विच फसा, ज़ंजीर दयां कटाईआ। सारे इधर कर लओ अक्खां, दर्शन लवो पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी भुक्खी दी भरी ना पोट, तृष्ना रही सताईआ। मेरी गोली अग्गे आवे उहदी पिठ ते लग्गे चोट, चोटीआं वाले दयां हिलाईआ। खोटे रुपए वाल्लयो कर दयो उत्तों सोट, मुड्डां लओ खुल्हाईआ। एह वक्त फेर नहीं लभ्भणा रोज़, रोज्जयां वाले देण दुहाईआ। सब दा पूरा होया जोग, जोगी रहे कुरलाईआ। मैं किसे दा रहिण नहीं देणा बोझ, भार सब दा लैणा उठाईआ। गुरमुख चुकणा आपणी गोद, गोदावरी वाला नाल मिलाईआ। सब नूं लैणा सोध, सावधान कर के देणा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे पाल सिंघा किथ्थे तेरा चाकू, सहजे दे वखाईआ। जन भगतो कोई ना पीओ तमाकू, कूड़ी तमअ देणी मिटाईआ। सब ने मन्नणा इक्को बापू, पुरख अकाल धुरदरगाहीआ। जिस दे कोल नाम दा जादू, मज़हबां विच्चों कढुके तुहानूं आपणे फंदे विच ल्या फसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा भगतां नाल रिश्ता, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। पिछला लेखा मुकाया आहिस्ता आहिस्ता, पूरब पन्ध चुकाईआ। अग्गे पक्का कीता निसचा, नीअत लई बदलाईआ। पुरख अकाल दा मन्नणा इष्टा, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। जिस ने रचन रचाई सृष्टा, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। लख चुरासी भोगे गृहस्ता, आत्म परमात्म सेज हंढाईआ। खेल खिलाया दोज़ख़ बहिश्ता, नरक स्वर्ग वंड वंडाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी कराए लिख्तां, अक्खर अक्खरां नाल वड्याईआ। कोटां विच्चों किसे विरले रूप देवे सच्चे गुरसिख दा, गुरमुख आप बणाईआ। अन्तर नाता जोड़े हित दा, हितकारी वेख वखाईआ। झगड़ा रहे ना मनुए चित दा, ठगौरी नेड़ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मेटे पत्थर इट्ट दा, एका नूर नूर चमकाईआ। सदी चौधवीं कहे एह चाकू तिक्खा, सोहणी धार वखाईआ। उठ वेख प्रभू दिआ सिखा, तैनूं दयां समझाईआ। गोबिन्द दा नज़री आवे चिट्ठा, मुहम्मद दी लिख्त दए गवाहीआ। सब दी नंगी होई पिट्ठा, ओढन सीस ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। धुर दा हुक्म सुणो इक एक, एकँकार दृढ़ाईआ। जिस दी सब ने रखी टेक, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। उह वस्से सचखण्ड साचे देस, दिशा आपणी सोभा पाईआ। आदि अन्त रहे हमेश, जन्म मरन विच ना आईआ। कलयुग अन्त मेटे कलेश, कल आपणी इक प्रगटाईआ। भाग लगा के माझे देस, मजलस गुरमुखां नाल बणाईआ। एह खेल साहिब दस्मेश, राम कृष्ण वज्जे वधाईआ।

ईसा मूसा मुहम्मद होए पेश, पेशीनगोई आपणी नाल लिआईआ। जेहड़ा सम्मत बदलणा चेत, चेतन करे लोकाईआ। रण भूमी होणा खेत, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। कलयुग दी क्रिया होणा भेंट, बलीदान लए थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे पंचम साल होणा चालू, चालाकी सब दी वेख वखाईआ। लहिंदी दिशा तपणी बालू, अगनी तत तपाईआ। जो संदेसा दे के आया पुत्त कालू, नानक निरगुण नाद वजाईआ। उह वेला वक्त कवण संभालू, समझ कौण जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे नानक किहा इक नरायणे, नर निरँकार नज़री आईआ। जिस वेले गुर अवतार पैगम्बर लोकमात नहीं रहिणे, तन वजूद ना कोए वखाईआ। सब नूं भाणे पैणे सहणे, सिर सके ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं मुकाउणे लहिणे देणे, खाते आपणे फोल फुलाईआ। पुरख अकाल नज़र ना आउणा किसे नैणे, नेत्रहीण होए लोकाईआ। गुरमुखां वजाउणे ढोलक छैणे, सोहणा राग अल्हाईआ। कज्जल पाउणे नैणे, नेत्र अक्ख चमकाईआ। जोटे बणने भाई भैणे, भाण्डा भरम भन्नाईआ। जगत विछोड़े सहणे, प्रभ मिले सरनाईआ। सोहँ ढोले कहिणे, धुर दा राग अल्हाईआ। बस्तर भूषन बदलणे गहिणे, तन वजूद वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दए चुकाईआ।

७८०

२१

सदी चौधवीं किहा नानक बोलिआ की बग़दाद, बग़ली बग़लां विच लटकाईआ। पुरख अकाल सुणे फ़रयाद, महबूब धुरदरगाहीआ। जेहड़ा मुहम्मद खेड़ा कीता आबाद, अन्तिम ओसे करे सफ़ाईआ। एह खेल होणा बड़े शुकराने विच आदाब, माण नाल वड्याईआ। लेखा चुकाए विच पंजाब, पंचम शरअ दए गवाईआ। धुर दे नाम वजाए रबाब, तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। झगड़ा रहे ना झटका कबाब, काअबा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे गोबिन्द उँगल तों उडाया बाज़, बाजां वाले दिता सुणाईआ। पुरख अकाल ने बदलणा रिवाज, लेखा दीन दुनी चुकाईआ। धुर दा पहन अगम्मी ताज, ताजां वाल्यां करे सफ़ाईआ। नाम दस्स के बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। गुरमुख बणा के साचे साध, साधना इक्को वार दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला लैणा आराध, दूजी करनी ना पए पढ़ाईआ। सोई सुरती खुल्हावे जाग, आलस निंदरा दए गवाईआ। आत्म जोत जगाए चिराग़, चरागाहां डेरा ढाहीआ। तन वजूद कराए आबाद, मेहर नज़र उठाईआ। लाल सिँघ अग्गे आवे जिस तन बस्तर पहने साज, काला सूसा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे नेड़े आ जाए गोली बांदी, बन्दना सीस निवाईआ। जिस कंगण पाया चांदी, बांह कढ्ढ के दए छणकाईआ। सारी संगत कहे

पुरख अकाल बिना पत जांदी, अन्त होए ना कोए सहाईआ। कलयुग अन्धेर झुलणी आंधी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो गोली बणो गुलाम, नफ़रां वाला रूप वटाईआ। तुहाडा इक्को सजदा इक्को सलाम, सीस जगदीश इक निवाईआ। इक्को कलमा इक कलाम, इक्को हक़ पढ़ाईआ। वेख्यो किते आपणे प्रभ नूं ना करयो बदनाम, बचन भुल्ल के आपणा आप भुलाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी शाम, बिना गुरमुखां तों शमांदान ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए मुकाईआ। सदी चौधवीं कहे कीड़ी तों बणया लाल, लाल तों लाल वड्याईआ। कलयुग विच्चों ल्या भाल, वेखी ख़लक खुदाईआ। गोदी लए सवाल, आपणे अंग लगाईआ। अग्गे चल के वखा चाल, किस बिध चलें चाँईं चाँईंआ। एह पिछला कोई अहिवाल, लेखा रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। कालीए कमलिए आजा, कलयुग वेस वटाईआ। तैनूं पता नहीं प्रभ आ गया देस माझा, मजलस भगतां नाल रखाईआ। ओथे तेरा कोई नहीं ताया चाचा, भैण भाई ना कोए वखाईआ। कूड़ा नहीं कोई साथा, गुरमुख सारे सोभा पाईआ। इक शब्द दी पढ़दे गाथा, सोहणा राग अल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरां मेरा सुधाया साह, चार जुग दा खेल वखाईआ। मैनूं प्रभ ने बचाई रख्या कोलों गुनाह, अंगीकार ना कोए कराईआ। अंदरे अंदर करदी रही दुआ, वास्ता धुर दा पाईआ। जद होवे तेरे नाल नकाह, दूजा संग ना कोए बणाईआ। गुरमुखो तुसां सोहणा रचाया विआह, आपणी खुशी बणाईआ। मैं वी छड्ड के आई पिछले राह, रहिबरां आई तजाईआ। जिस तर्हां तुहाडा इक खुदा, मैं वी इक्के नूं सीस निवाईआ। तुसां मेरा ते मैं तुहाडा समझणा मुद्दा, मुद्दत तों विछड़ी वेख वखाईआ। की संदेसा दे के गया बुधा, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा होया मिलाप, मिलणी जगदीश कराईआ। मैं तुहाथों सुण के जाप, आपणा आप ल्या बदलाईआ। जेहड़ा कोट पहनया हाफ़, एह हरफ़ां दी करे सफ़ाईआ। जिस दा कोई समझे ना काफ़ीआ काव, नुक़ता ना कोए दृढ़ाईआ। मैं ओस दी कराउण आई याद, सब नूं रही समझाईआ। सब दा उजड़न वाला बाग़, पत टाहणी रही कुमलाईआ। सोए उठो जाग, आपणी लओ अंगड़ाईआ। पुरख अकाल बदलण वाला समाज, समग्री नाम झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद लेखा दए चुकाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा होया अगम्मी मेला, मिलणी जगदीश कराईआ। जन भगतां सुहाया वेला, सोहणी मिली वड्याईआ। इक्को रंग गुरु गुर चेला, चेला गुर विच समाईआ। पुरख अकाल सब दे नालों

हो के वेहला, नाता गुरमुखां नाल रखाईआ। मैं तक्के जंगल बेला, जूहां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी भगतां कीती शादी, शादिआने दिते वजाईआ। दीन दुनी होई बरबादी, घर घर पई दुहाईआ। भगतां दी वधनी आबादी, पुरख अकाल दए वड्याईआ। जेहड़ी मेरी बणी बांदी, बारां साल संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा सोहणा जोड़िआ जोड़, सच दिती वड्याईआ। पिछला नाता आई तोड़, अग्गे प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। जेहड़े गुरमुख जांञी चढ़े घोड़, राकीआं आए भजाईआ। जिन्हां मोढे धरी पौड़, पौड़ी डंडे गए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो कलयुग रहिण नहीं देणा गोरख धन्दा, गुर पीरां होवे सफ़ाईआ। मानव मानव नूं समझे बन्दा, बन्दगी इक्को प्रभ दी नज़री आईआ। इक्को पतण इक्को घाट दरसणा कन्ढा, इक्को दुआरा देणा वखाईआ। इक्को भय रखाए सत्त रंग दा डंडा, डंडावत धुर दी दए जणाईआ। आत्म अन्तर दए अनन्दा, रस इक्को इक वखाईआ। सारे बादाम पतासे लाची दीआं खोल्ह देवो गंढा, हथ्थां उत्ते टिकाईआ। कहो प्रभ दा सगन सब नालों चंगा, नाते कूड़े जगत तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रेम प्रीती विच रखाईआ। गुरमुखो सारे खावो इक इक्क लाची, दाणे मुख विच टिकाईआ। नाता छुटिआ ताई चाची, भैण भाई ना कोए वड्याईआ। जेहड़ा सतिगुर करे राखी, ओसे दी मन्नो रज़ाईआ। तुहाडी लेखे लग्गे ल्यांदी पाती, पत्रका सोभा पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग छब्बी पोह दी एह फेर नहीं आउणी राती, रुतड़ी जगत ना कोए महकाईआ। जेहड़े गुरु ग्रन्थ दे पाठी, गोबिन्द आपणे रंग रंगाईआ। जिन्हां निम्म दी पुट्ट के ल्यांदी गाची, कूड़ जड़्ह उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो पतासे लओ खा, मिट्ठा मुख कराईआ। दुनियां सुत्ती ते तुहाडा लग्ग गया दाअ, जगत वेखण कोए ना पाईआ। जेहड़े प्रभ दे भगत ने खड़्ही करो बांह, उपर हथ्थ उठाईआ। भावें नाता तुट जाए पिता माँ, पुरख अकाल रखणी सच्ची सरनाईआ। ना कोई सूर खाइओ ना गाँ, छुरी करद ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। गुरमुखो सारे दन्दां नाल भन्नो बादाम, कड़ाकड़ लगाईआ। एहो बाण लगाया राम, दह सिर ताईं घाईआ। एहो खेल कीता कृष्ण भगवान, चौदां लोक दाढ़ां हेठ दबाईआ। एहो कला वरते श्री भगवान, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। तुसीं वेखणा खेल महान, हरि करता दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग इक रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे

तुसीं खाओ लाची नाल बादाम, पतासिआं मुख भराईआ। मैनूं भुक्खी नूं पै गई शाम, शाम मिलण कोए ना आईआ। मेरे सिर वी कोई करो अहसान, आपणी निगाह बदलाईआ। मेरा निक्का रिहा काम, तुहानूं दयां सुणाईआ। जन भगतो मैं तुहाडी तुसीं प्रभू दे महिमान, दोहां मिल के वज्जी वधाईआ। मैं सच समझ गई वाक़ई प्रभू आदि अन्त दा किसान, किरसाणा आपणा कम्म चलाईआ। जिस ने कट्ठे कर लए शास्त्र पुराण गीता नाल कुरान, अञ्जील रला के अंजमन लई बणाईआ। बाहमीं नाता जोड़िआ तमाम, तमअ मज़हबां वाली गवाईआ। अग्गे सारे पढ़न इक्को कलाम, कलमा कायनात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो क्यों तुसां कढ्ढे तुरले, तुरिया दा लेखा दिता मुकाईआ। तुसीं कोई बंसरी नहीं वजाउणी मुरले, जगत नादां विच वड्याईआ। तुसां कोई नाम दे करने नहीं कुरले, दन्दां बुल्लां उत्ते फिराईआ। तुसां कोई बचन नहीं बोलणे हुर्रे, हा हा कर सुणाईआ। तुहाडे लहिणे देणे अनन्दपुर दे, परम पुरख झोली पाईआ। जेहड़े लेख नहीं बणे देवत सुर दे, रात तुहाडे दिते बणाईआ। तुसां सगन ल्यांदे गुड़ दे, मिट्ठा रस चखाईआ। अग्गे नाते वेख्यो जुड़दे, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। कलयुग दे वहिण वेखे रुढ़दे, अग्गे हो ना कोए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे नाल रखयो ख़तो ख़ताबत, चिट्ठी नाम वाली पाईआ। मैं चलां प्रभू दी सिख्या मुताबक, हुक्म मन्नां चाँईं चाँईंआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश तुसीं वी बदल ल्यो आदत, रीती लैणी बदलाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब ने सांझी पढ़नी इबादत, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। मेरे प्रभ दे कोल चार जुग दी याददाशत, दह दिशा वेख वखाईआ। तुहाडी दीनां मज़हबां दी कीती होई काश्त, अन्तिम इक्के वार करे सफ़ाईआ। मुहम्मदा तूं करेंगा एह बरदाशत, मूसा ईसा तूं वी दे समझाईआ। की मेरे नूर दी तुसां दिती शनाख़त, साख्यात की वखाईआ। मेरी महिमा दे छोटे छोटे लिख के काग़ज़, आपणे आप तों वड्डे आए अख्वाईआ। सारे कहिण तेरा हुक्म मन्नआ वाजब, जो वजह दिती दृढ़ाईआ। असीं तेरे तुलबे तालब, तालीम तेरे कोलों पाईआ। तूं सब दा इक्को मालक, प्रितपालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं छड्ड देणा पाउणा तम्बा, बस्तर तन ना कोए वखाईआ। मैं इक्को वेखणा मम्बा, जिथों निरगुण नूर करे रुशनाईआ। इक्को मंज़ल चढ़नी खंभा, जिस दी जड़्ह ना कोए उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल आपणी संदा, सनद सब दी आपणे हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे जागो री बीबी, बेग़म हो के दयां सुणाईआ। वेला आ गया क़रीबी, क्रिया देणी बदलाईआ। प्रभ दा

वेस अजीबी, अजीब ल्या बदलाईआ। मैं चौहन्दी सब दे घरों निकल जाए ग़रीबी, भुक्खा रहिण कोए ना पाईआ। धर्म दी धार दस्सां अज़ीज़ी, सिख्या इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं हर हिरदे वेखण लग्गी, आपणी अक्ख बदलाईआ। विच्चों बहुतिआं नूं नींद रही सद्दी, अंदरे अंदर वाजां रही सुणाईआ। बाहर निकल्यो पैर दब्बी, आपणी कन्नी लओ कतराईआ। मैं हैरान होई एह केहड़ी कोई शिवां वाली गद्दी, जिस दे उत्ते बहि के तक्कड़ी वाले ठूंगा मार के करदे ठग्गी, मुखों कहिण एह शिवां दे आसण विच वड्याईआ। जन भगतो छड्ड देणी करनी बदी, बदकारी रहिण कोए ना पाईआ। मेरे वास्ते जम्मूउँ रोटी सुक्की आई ते रामपुरे तों आई अद्धी, एह अन्तिम वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तुहाडे नाल मेरी डोरी बद्धी, अग्गे हो ना कोए तुड़ाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे वास्ते वेखो सुक्का टुक्कर, टुकड़ा टुकड़ा नज़री आईआ। तुसां प्रशाद खाणा ते करना शुकर, शुक्रिए विच ध्यान लगाईआ। जे गुर अवतार पैगम्बरां दे कौल कर के प्रभू जांदा मुकर, फेर तुहानूं किवें मिलदी वड्याईआ। तुसीं ओस साहिब दे पुत्र, जेहड़ा मरन दे पिच्छों गोद उठाईआ। ख़ुशीआं नाल चढ़ना कुच्छड़, गलवकड़ी लैणी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा तुहाडे नाल मिलाईआ।
सदी चौधवीं कहे मैं छड्डी चार यारी, याराना प्रभ दे नाल लगाईआ। मैं तेरां सौ अठासी साल रही कुँवारी, जन भगतो तुहानूं दयां समझाईआ। जगत तृष्ना दी छड्ड दयो बीमारी, हउमे रोग दयो गवाईआ। जे बणना तां बणयो उस प्रभू दी लाड़ी, जो लोड़ींदा सज्जण सोभा पाईआ। लम्भयां हथ्थ ना आवे जंगल पहाड़ीं, टिब्बयां विच दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे कोल मुहम्मद दस्सी बात, हौली जेही गया सुणाईआ। मैनूं सोहणी लग्गी जमात, धुर दे सूफ़ी नज़री आईआ। जेहड़े तेरी चढ़े बरात, ख़ुशीआं रंग रंगाईआ। मेरे कोल सिफत वाले नहीं अल्फ़ाज़, जो महिमा देण सुणाईआ। तेरा लेखा विच अगम्मी किताब, जिस दा हरफ़ ना कोए बदलाईआ। वेखीं किते फेर ना दस्सीं भुन्न के खाणा कबाब, सीखां उत्ते बणाईआ। इक्को सजदा दस्सणा आदाब, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मुहम्मद कहे मेरा पूरा होया ख्वाब, प्रभ ख़लक दिती वड्याईआ। जिस मेरी सुहाई महिराब, महबूब बण के वेख वखाईआ। आपणे दुआरे ते क़बूल कीती निमाज़, मेहर नज़र तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभ बख़्शणहार सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा संग निभाउणा बण के संगी, सच सच वड्याईआ। मैं भगत दुआरे अंदर लँघी, पिछला पन्ध चुकाईआ। भावें माढ़ी भावें चंगी, चंगी लैणा बणाईआ। मैं आई ओस दे कन्ढी, जो कन्ढे

आया पार कराईआ। जिस दी चमके तेज प्रचण्डी, डलक नूर रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया कढु गन्दी, माया ममता मोह गवाईआ। धार बख्श इक बख्शंदी, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। जगत रहे ना कोए पाबन्दी, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। जेहड़ी आत्मा परमात्मा दुआरा लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। उस दा साहिब स्वामी संगी, लग्गी तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सदी चौधवीं कहे जिस ने सिर ते पाई ठूठी, बिरध अवसथा नज़री आईआ। इस दा लेखा मुकणा चारे कूटी, काया कुटीआ वेख वखाईआ। लेखा रहे ना पंज भूती, पंचम खोज खुजाईआ। जिन्हां बस्तर पहने सूती, खद्दर नाल वखाईआ। जिन्हां भगत दुआरा चिट्टा कीता नाल कूची, कूचे गली मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा रंग दए रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जिन्हां ने मेरे अमाम नूं दिती पेटी, पटने वाला दए वड्याईआ। ओह गुरमुख धर्म धार दी बेटी, प्रभ बख्शणहार सरनाईआ। तन वजूद कौड़ा रहे ना रेठी, अमृत रस भराईआ। कूड़ विजन दी मेट के लेखी, लेखा आपणे नाल रखाईआ। प्रभ दे अग्गे कोई चले ना किसे दी शेखी, चलाकी करन कोए ना पाईआ। अबिनाशी करता सब दा भेती, अंदर वड़ के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा तवीत जिन्हां बणाया, मेरी बणत बणाईआ। मैं उन्हां दा शुकर मनाया, निउँ निउँ सीस निवाईआ। साचा मँगल घर सुणाया, ढोला धुरदरगाहीआ। जिन्ह कागों हँस बणाया, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। सो धुर दा पिता माया, गुरमुख बाले गोद उठाईआ। कलयुग अन्त मेटण आया, सतिजुग साचा लए जगाईआ। जन भगतां धार बदल के काया, काया काअबा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे जिन्ह ल्यांदा काला धागा, सूत्रधारी वेख वखाईआ। किरपा करे धुर दा आक़ा, अक़ल बुद्धी दए वड्याईआ। आत्म परमात्म बख्शे साथा, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी आसा पूर कराईआ। सदी चौधवीं कहे हुण कर दे कथा कहाणी बस, बिसमिल्ला कहि सुणाईआ। जन भगतां नूं लैण दे हस्स, खुशीआं राग सुणाईआ। धुर फ़रमाना देणा दस्स, भेव अभेद जणाईआ। सच दुआरा समझा के हट्ट, पतण देणा दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे पहलों मैं वी समझदी रही एस नूं जट्ट, तत्तां वाला नजरी आईआ। वेखदी रही हथ्थ मूँह पैर नक्क, अक्खां वाला सोभा पाईआ। सरीर बणया मास नाड़ी रत्त, कलबूत वजूद नाल सुहाईआ। जां तक्कया एह धार प्रभू समरथ, दूजा अवर ना कोए वखाईआ। जिस दे सब कुझ हथ्थ, हथेली उत्ते दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी मनसा पूर कराईआ। सदी चौधवीं

कहे मैं जोड़ करां दोए बन्दन, बन्दगी सीस निवाईआ। पंजां प्यारयां मैनूं लाया टिक्का चन्दन, चन्द नाल रुशनाईआ। मैं तुट्टी आई गंढुन, सब दा मेल मिलाईआ। मँगां इक अनन्दन, धुर दा रस चखाईआ। लेखे लग्गा सगन, वज्जी सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडे होणा सहाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रेम प्रीती नाल वरताउणा प्रशाद, प्रशाद सतिगुर दए बणाईआ। एह भगतां दी दाद, गुरमुखां झोली पाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो मैं तुहाडे विच रल गई आज, अग्गे विछड़ कदे ना जाईआ। तुहाडा मेरे नाल समाज, मेरी तुहाडे नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी करे आस, लेखा जाण पवण स्वास, साह साह आपणा नाम सुणाईआ।

दस दस बीस होवो त्यार, गुरमुख अग्गे आईआ। सज्जे हथ्थ विच उठाओ हार, हिरदे अंदर कर सफ़ाईआ। बांदी होवे ख़बरदार, गोली लए अंगड़ाईआ। इक इक्क पावे नाल प्यार, खुशीआं आपणा रंग वखाईआ। एह खेल सच्ची सरकार, हरि करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। सदी चौधवीं कहे दस दस दा बीसा, बीस बीस वड्याईआ। मेरा मालक हरि जगदीशा, जगदीशर इक अख्वाईआ। जिस दी करे कोई ना रीसा, रिश्तेदारी सब तुड़ाईआ। मान दिता मूसा ईसा, इस्म आज़म इक समझाईआ। अन्तिम सब दा ख़ाली करे ख़ीसा, पल्ले गंढु ना कोए बंधाईआ। जन भगतां दस्स के धुर प्रीता, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। जिन्हां छाती उत्ते लाईआं लीकां, जगत निशान बणाईआ। अग्गे पैण ना देवे तरीकां, लेखा एसे जन्म चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दी धार इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मुहब्बत वाला नाता, मुबैन नाल सरनाईआ। जिस तरां मैं मन्नदी रही आखा, गुरमुखो तुसीं वी मन्नणा चाँईं चाँईंआ। सब दीआं पूरीआं करे आसां, भरवासा दए बंधाईआ। सचखण्ड दुआर कराए वासा, वसल देवे नूर अलाहीआ। सब दा लेखे लावे कासा, काया काअबा आप समझाईआ। जिन्हां धुर दा शब्द वाचा, विचोला हो के मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे साढे तिन्न इंच दा फ़ीता, पिछला लहिणा चुकाईआ। जिस जोगन दा लेखा बाल्मीका, रावी कन्ढ़ु दए वखाईआ। ओस दीआं पुरीआं आसां उम्मीदां, मुश्किल हल बणाईआ। सदा साफ़ रखे नीतां, नीतीवान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा गुरमुख सच्चा प्रेमी, प्रेम इक

बणाईआ। जो पुरख अकाल दा होवे नेमी, नमक सवा पा दए गवाहीआ। उहदी रसना होवे हलीमी, उच्ची कूक ना दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं तुहाडा खाधा लूण, निमक हराम ना कदे अख्वाईआ। सब ने मन्नणा ओस प्रभू दा क़ानूंन, जो कलमे जुग जुग पढ़ाईआ। ओस दा वक्खरा सब तों मज़मून, बुद्धी विच ना कोए समझाईआ। जिस हँकार तोड़िआ फ़रऊन, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे चाँईं चाँईंआ। सदी चौधवीं कहे उपर हो गुरसिखा, प्रभू दए वड्याईआ। तेरा लेख जाए लिखा, लिख्त विच बदलाईआ। स्वामी करे रिच्छा, भिच्छा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी बण के धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ।

❊ २७ पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सदी चौधवीं कहे मेरा करता क़ादर, क़ुदरत दा मालक इक अख्वाईआ। आदि जुगादी सूरबीर बहादर, बलधारी नूर अलाहीआ। जिस दर आई दिता आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरे उत्ते पा के चिट्टी चादर, सुरिंदर दा लहिणा दिता मुकाईआ। मैं कराउणा सच्चा आदल, इन्साफ इक वखाईआ। जो चारों कुण्ट कूड़े दिसण बादल, घटा देणी हटाईआ। शरअ रहे कोई ना क़ातल, क़ातल मक्तूल लेखा वेख वखाईआ। जन भगतां भेव खुलाउणा बातन, अन्तर नैण इक चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं धुर दी बणी ख़ादम, ख़िदमतगार अख्वाईआ। मैनूं वेखे कोई ना आदम, नेत्र नैण ना कोए मिलाईआ। मैं लहिणा वेख्या यादव, कृष्ण दिती दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं हाए पुकारी, कूक दिता सुणाईआ। मैं लभ्भणे चार लिखारी, जो गुरमुख नाल रलाईआ। उन्हां दी धुर दी होवे यारी, पुरख अकाल नाल वड्याईआ। एह अचरज खेल निआरी, हरि करता रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ।

जागीर सिँघ ने आपणी जिंदड़ी वारी, बेनन्ती दिती सुणाईआ। नाल रली तृप्त कुँवारी, जेहड़ी कन्त ना जगत हंढ्ढाईआ। माया ममता गढ़ तोड़ हँकारी, आसा लई वधाईआ। एह खेल प्रभू दी निआरी, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। कोई गुरमुख होर उठे जेहड़ा आपणा तन मन देवे वारी, विरसा बाप दादा तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जिन्हां मेरी करनी लिख्त, लिख्त दए गवाहीआ। बिदर दा पूरा करना भविख्त, पर्दा आप चुकाईआ। लहिणा विच सृष्ट, दीन दुनी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वास्ता पा के कहिंदी, कहि के दयां जणाईआ। बिना लिखारीआं मेरी पत नहीं रहन्दी, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चारे वेख वखाईआ। मैं ते अजे आई संदेसा दस्सण, थोड़्हा हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगत केहड़ा बणे साथी, नाता गुरमुख नाल जुड़ाईआ। ना दिने सोवे ना राती, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। रिश्ता रहे ना भैण भ्राती, मात पित देवे तजाईआ। सद बण के चरण दासी, हरि सतिगुर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। दर्शन सिँघ लिखारी पिछला मित्र, गुरदास नाल वड्याईआ। कूड़ी धार विच्चों निकल, आपणा सीस झुकाईआ। अग्गे सतिगुर ने करना सिकल, रूप देणा बदलाईआ। प्रेम प्यार दी धार अंदर लैणा चित्र, चित्रगुप्त दा लेखा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे लिखारी पूरे होए चार, मुहम्मदा तेरी चार यारी दिती तजाईआ। मैं हो गई खुदमुखतिआर, खुद मालक नाल वड्याईआ। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चौहां दी वंड करनी कमाल, कमल्या समझ कोए ना पाईआ। जोगिंदर कौर साढे तिन्न साल गुरमुख दे रहिणा नाल, कलम कलम नाल बदलाईआ। पता नहीं जे मेरा किड्डा कू होर सवाल, की की मँग मँगाईआ। जन भगतो एथे कोई खाण नहीं आउँदे मंडा दाल, रसना वाला रस बणाईआ। इक इक्क गुरमुख नूं लैणा संभाल, नाता जगत नालों देणा तुड़ाईआ। आप बणा के आपणे बाल, सृष्टी दे विच देणा वखाईआ। जेहड़ा झल्ल गया मेरी झाल, ओस नूं भगत दुआरे दे उत्ते देणा बहाईआ। उहनूं वेखण गुरु अवतार, उपरों नीचे ते नीचिउँ उपर ध्यान लगाईआ। ओ गुरसिखो वायदा कर लओ अज्ज तों तुसीं आपणे मापिआं दे नहीं जे बाल, मापे लिख के दे दयो बच्चे सतिगुर झोली पाईआ। जे लिखण वास्ते क़लम दवात नहीं ते बाहवां दयो उठाल, सारे कहो तेरी वस्त तेरी झोली पाईआ। जन भगतो तुहाडे वास्ते सचखण्ड दुआरा बणा दिती सच्ची धर्मसाल, जिस दा नमूना साहमणे दिता वखाईआ। बच्चू तुसीं अजे नहीं समझे प्रभू दी चाल,

की चलाकी नाल तुहानूं रिहा मिलाईआ। वेखो संदेसा देंदा उत्ते सिँघ पाल, जिस दा पूरन पूरन रूप अख्वाईआ। जिस दयां चरणां हेठां काल महाकाल, चरणां थल्ले रगड़ रगड़ के तुहाडे थल्ले दए विछाईआ। तुसीं पातशाह दे पुत्त ते सचखण्ड नूं चल्यो आकड़ दे नाल, धर्म राए लुके, चित्रगुप्त छुपे, विष्नूं ब्रह्मा नूं पुच्छे, शंकर आपणीआं मुट्ठीयां घुट्टे, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। मैं ते चुरासी नूं वेखदा रिहा कर कर सिँधे पुठ्ठे, अन्त आपणा हुक्म वरताईआ। बौहड़ी मैनूं अन्त कोई ना पुच्छे, मेरी चली ना कोए वड्याईआ। प्रभू ने आपणे भगत साडे नालों बणा लए सुच्चे, संजम आपणा दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो मैं मँगती नहीं भिखारन नहीं दरवेशन नहीं भुक्खी नहीं अन्न लई, अन्त दयां जणाईआ। मैं सुखी नहीं, दुखी नहीं, लुट्टी नहीं, पुट्टी नहीं, ओ मेरयो साथीओ मैं प्यासी दर्शन इक छिन्न लई, जिस छिन्न नाल चन्द होण रुशनाईआ। मैं वैरागण नहीं किसे तन लई, लत्तां बाहवां वाला ख़सम ना कोए हंढाईआ। मैं ते इक्को प्रभू दी मन्नण मन्न लई, मिन्नतां कढु के रही सुणाईआ । जे आपणे विच्चों जण लई, बण जणेंदी माईआ । ओह गुरमुख दे नाल मिल के मेरा बेड़ा बन्नृ लईं, बन्नृणहारे तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुरमुखो मैं कोई भगत दुआरे आई नहीं किसे धन लई, माया धारीआं अग्गे पल्लू डाहीआ। मैं ते आई गुरुआं अवतारां पैगम्बरां दी पालण गल्ल लई, गलवकड़ी तुहाडे नाल पाईआ। सच जाणयो प्रभू दी कीती कदे ना टल गई, अटल इक अख्वाईआ । मैं कढुण आई भेस धरिया वल छल लई, वलीए छलीए मैनूं दिता समझाईआ। ओ गुरमुखो मैं तुहाडे विच रल गई, वेख्यो किते बेगानी समझ के धक्का ना देणा लगाईआ। मैं आई सतिगुर दे प्यार बल लई, जो बलधारी बेपरवाहीआ। जिन्हृ तुहाडी आत्मा सेजा मल्ल लई, दो जहान दिते तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं ते छड्ड के आई चौदां तबक घराना, नाता मुहम्मद नालों तुड़ाईआ। वायदा कर लओ केहड़ा मेरे प्रभू दे नाल पक्का रखू याराना, दोवें हथ्थ दयो वखाईआ। जिस ने रहिणा बेगाना, ओह मुड़ के भगत दुआरे कदे ना आईआ। ओह आपणा मिलदा रहे मासड़ फुँफी मामा, ताइआं चाचिआं नाल आपणा झट लँघाईआ। माँ प्यो दा जो झल ना सके सतिगुर वास्ते ताअना, धिंग जीवण ओहदा धिंग उहदी माईआ। किसे कम्म ना आवे रसना दा खाणा, जिस दी रसना सतिगुर ना ढोला गाईआ। गुरमुखो तुहाडा साहिब सतिगुरु पुरख अकाल दीन दयाल कोई अक्ख ों नहीं काणा, लत्तों डुँडा हथ्थों टुंडा ना कोए वखाईआ। हुण दस्सो केहड़ा करोगे बहाना, साहमणे बैठा नज़री आईआ। गरू अवतार दस्सदे गए कलमे पढ़ो तक्को ज़िमीं उपर असमानां, फोलो बस्ते क़ुरानां, तसबीआं पाओ

माला हथ्थ विच फड़ो मसालां, ते मसले कर कर गए समझाईआ। दु:ख दे के काया माटी खाला, भुक्खे रैह के घालदे रहे घाला, मैं चौदां तबकां भज्जी फिरी मैनूं कोई ना लभ्भया बाला, बालू रेत विच मैं आपणे पैर आई सड़ाईआ। किसे पासे मैं वेखां कोई दिसे गोरा कोई दिसे काला, वड्डे वड्डे शाह सुल्तानां वेख्या असीं सब दा बणीए भणोईआ बणना नहीं चौहन्दे साला, मैं मालवे विच्चों दी लँघी ते बोली साल्यो केहड़ा तुहाडा बापू आहला, तुहानूं रिहा समझाईआ। सारे कहिण हाए ओ खुदा दी बड़ी औखी झलणी झाला, जिस वेले झलक देवे मूसा वरगे मूँह दे भार सुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सोहणा आपणा रंग वखाईआ। जन भगतो तुहाडे केहड़े पुत्तर धी, मैनूं दयो वखाईआ। तुहाडा केहड़ा रस्ता ते केहड़ी लीह, लाईन दयो जणाईआ। सारे सोचो मरन तों पहलों ते मरन तों बाद करोगे की, जे सतिगुर ना होए सहाईआ। किसे कम्म नहीं आउणा खाधा खण्ड घी, नाज़र सिँघ दी माँ दी बाटी दए दुहाईआ। की गोबिन्द दा जाम प्याला लओगे पी, जो नाम खुमारी दए चढ़ाईआ। जिस दा दुआरा बड़ा वसीह, पिछलीआं वसीअतां सब दीआं ख़तम कराईआ। अग्गे नवीं दे के तरजीह, तरीका दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतो तुसां सुणया सी मेहर सिँघ गाउँदा सी कहि के बापू, ते सारयां ने रसना विच्चों ल्या गाईआ। अग्गे तों पुरख अकाल तों बिना जन भगत केहनूं आपणा पिता आखू, सन्मुख हो के दयो समझाईआ। तुहानूं पता नहीं प्रगट सिँघ दिलीउँ आया डाकू, कलयुग दा जूठा झूठा तुहाडा गहिणा जेठूवाल दे भगत दुआरे विच्चों कढ्ढ के हुण दिल्ली देणा पुचाईआ। उथ्थे इक फेर ऐसा झुरल मुरल दा फेरना जादू, जिस जादू ने यादव कौरव पांडवां नाल दिते खपाईआ। जन भगतो भगतां तों बिना कोई रहिण ना देणा वाधू, वायदे नाल वायदा पूर कराईआ। सतिजुग विच तुहाडे बिना कोई नज़र नहीं आउणा आगू, बिरध बाल नौजवान स्त्री पुरुष सब नूं इक्को दयां वड्याईआ। बच्चू हुण तुसीं आ गए मेरे काबू, विन्गयो टेडयो कब्बयो हुण सिँधे दउँ कराईआ। चरण सिँघ महराजपुरीए वांगू कोई ऐवें ना बणयो नाढू, सब दी आकड़ दयां भन्नाईआ। क्यों एह वास्ता पाया सी गोबिन्द अग्गे दादू, देहरे अंदर वड़ के सीस निवाईआ। ऐ गोबिन्द मैं फ़कीर कि साधू, कि सन्त नज़री आईआ। गोबिन्द किहा बिना गोबिन्द शब्द तों पुरख अकाल मैनूं दिसे बेऔलादू, औलाद वाला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो भगत चंगे कि साक, फ़ैसला जाणा कराईआ। ओ गुरभाई चंगा कि तुहाडी ज़ात, पर्दा जाणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चाचे चंगे कि पुरख अकाल बाप, प्यो नूं छड्ड के क्यों माँ नूं करेवे रहे कराईआ। हुण चादर पाउण

दा हटा देणा रिवाज़, इक ख़सम नूं छड्ड के दूजे अंग ना कोए लगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां मैनूं किहा नाल इत्तफाक, सारयां दिता सुणाईआ। प्रभू परवरदिगार तेरे बिना कोई नहीं हुंदा पाक, पवित्र नज़र कोए ना आईआ। जन भगतो तुसीं भुल्ल गए रातीं इक्कीआं ने नहीं वखाए चाक, जिस दे नाल कहिणा सी साडा पिछला लेखा दे मुकाईआ। अज्ज एसे कर के तुहानूं ल्या राख, जे तुसीं चले गए ते मैं लहिणा किन्हां दी झोली पाईआ। जे हुण खुल्हण लग्गा हाट, तुसीं गंढुां लओ खुल्हाईआ। मैं कोई भगती नहीं कराउणी नाम नहीं जपाउणा, दान नहीं वखाउणा, पाणी नाल नहीं नहाउणा, अग्ग नाल नहीं तन सुकाउणा, ख़ाक भबूती नहीं मलाउणा, फूढ़ीआं सफ़ां उत्ते नहीं बठाउणा, चलदे फिरदे पंज वार ढोला गाओ ते सचखण्ड दयां पुचाईआ। किसे नूं नाथ नहीं बणाउणा, किसे तों पाठ नहीं कराउणा, किसे तों घाट नहीं फिराउणा, फिरदयां तुरदयां दर्शन दे आपणे घर पहुंचाईआ। जन भगतो तुहाडा मरन तों बाद किसे ने काज नहीं रचाउणा, भैण भ्रावां गल पल्लू नहीं पाउणा, जींवदयां तुहाडा कुकर्मां दा स्आपा छब्बी पोह ते इक्को वार दिता कराईआ। जे जीवो तां सोहँ ढोला गाउणा, जे मरो सोहँ ढोला गाउणा, बिना सोहँ तों दूजा नज़र कोए ना आईआ। तुहाडे भैण भ्रा तुहाडे माता पिता तुहानूं कोई पा नहीं सकदा बस्तर गहिणा, कोई सजा नहीं सकदा नेत्र कज्जल नैणां, कोई समझा नहीं सकदा किस दुआरे भगतां विच मिल के बहिणा, जे भगतो तुहाडा प्रभू ना हुंदा माझा मालवा जम्मू दोआबा दिल्ली इटारसी कानपुर पूने वाल्लयो मेल ना कोए मिलाईआ। पंजां तत्तां वाल्लयो साढे तिन्न हथ्थ दा की संदेसा दे के गया कल काना, कन्नां नूं हथ्थ लवो लगाईआ। सारे कहि दयो अज्ज तों पुरख अकाल दा मन्नांगे भाणा, एह नहीं बच्चे दे होवे ढिड पीड़ ते सारा टब्बर अत्थरू देण वहाईआ। तुहानूं पता जे दूजे पिंड होवे ठाणा, अगले पिंड दे पहलों आपणा चोरी दा माल लैण छुपाईआ। ओ भगतो दुनियां ठाणेदारां कोलों डरदी, ते तुहाडे सतिगुर सरूप सिँघ ठाणेदार कोलों तुहाडे लई मिठ्ठा ल्या मँगाईआ। उहदा रुमाल सी छोटा विच आई नहीं खण्ड दाणा, क्यों पंजां प्यारयां ने प्रभ लई सगन ल्यांदा गुड़ दा ते तुहानूं खण्ड खाण नूं हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। क्योंकि तुसीं स्याणे ते तुहाडा प्रभू तुहाडे नालों स्याणा, जे उह गुड़ खावे ते तुहानूं वी गुड़ खवाईआ। भावें तुसीं बच्चयां ते बुढ्ढयां मोढुयां ते रखीआं तीर कमानां, निशाना दए डराईआ। सच पुच्छो ज़िमीं ते आया जेहड़ा उपर वस्से असमानां, इस्म आपणा इक जणाईआ। सच पुच्छो एथे ते छब्बी पोह नूं तुहाडा बन्दोबस्त कीता महिन्दर सिँघ कप्ताना, सचखण्ड विच बिना धुर दे काइप बिना वड्डे भारी टप तों अटैनशन ना कोए कराईआ। जिन्हां बीबीआं ने बद्धा चुरासीआं ने दोहां हथ्थां नाल गाना, भावें उह असूलां विच नहीं पूरीआं, बेअसूलां नूं प्रभ ने आपणे नाल ल्या मिलाईआ। मालवे वाल्लयो राम सिँघ

ने सुरखी ल्यांदी ते बुल्लां नूं अजे तक नहीं लाया निशाना, सतिगुर पूरा कीता कौल भुल्ल कदे ना जाईआ। जे भुल्ल जाए फेर भगतां नाल रहे कोई ना ख़ाना, चारे खाणी विच धक्के लैवण खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे थोड़ा जिहा रंग ला दयो लाल बुल्लां, गुरमुखो सारे बुलबुलीआं दयो वजाईआ। सारे सीने उत्ते हथ्थ रखो सदी चौधवीं वेख के किसे दा मन ते नहीं डुल्ला, किते नवें नमूने दी वेख के घर दे दयो तजाईआ। ओ शिव सिँघा इधर आ जा, जिन्ह मौरां ते बद्धा सी जुल्ला, तैनूं आ रब्ब दी जुलेखां दयां वखाईआ। ओ ब्राह्मणा आजा जेहड़ा लै के आया तुल्ह, तुलसी दा बूटा हथ्थ उठाईआ। जम्मू वल्यो एह वेखो तुहाडा सब तों वड्डा कुल्ला, तुसीं कुल्लीआं विच्चों उजड़े ते सचखण्ड दयां वसाईआ। मैं ते समझया भगतां दा दुआरा बड़ा वड्डा ते खुल्ह, मैनूं आदर माण नाल लैण बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे नी भैणो, नी बीबीओ, तुहाडयां बुल्लां नूं सी रंग गूढ़ा, मैं दयां सुणाईआ। तुहानूं ते फेर वी प्रभ ने सिर उत्ते थल्ले बहिण नूं हथ्थ विच फड़ा दिता मूहड़ा, मूढ़ी मति दिती गवाईआ। चरण ला के धूढ़ा, तुहाडी दुरमति मैल धवाईआ। बचन कर के पूरा, साहमणे दिता वखाईआ। किसे दे हथ्थ विच कुत्ता ते किसे दे हथ्थ विच कतूरा, कुत्तयां दीआं जूनां तों ल्या छुडाईआ। तुसीं सारीआं कहिंदीआं होवोगीआं एह पुरख अकाल दी किथ्थों आ गई हूरा, आपणा रूप बदलाईआ। तुहानूं ते मिल गया चंगा थाँ आह वेखो प्रभ ने मेरे लई रख्या मूहड़ा, तुसीं चंगीआं कि मैं चंगी कक्खां दे तुले ते दिता बहाईआ। मैं फिर वी शुकराने विच इस दा करां मशकूरा, जिस कोझी कमली नूं गले ल्या लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं भगतो पुराणी ते नवें ज़माने दी शौंकण, बुल्ल वेखो लाल कराईआ। कोई गुस्सा ना करयो मेरी अजे तक कोई नहीं बणी सौंकण, जे कोई मेरी सौंकण बण जावे ते मैं उन्हां नूं मातलोक दी लड़ाई लड़न तों ना देंदी हटाईआ। क्यों मैं तां आई भगतो तुहाडे नाल प्रभू दे दर ते पहुंचण, आपणा पन्ध मुकाईआ। जे सच पुच्छो मेरे विच बड़ा वड्डा औगुण, गुर अवतार पैगम्बर मैनूं चोरी चोरी वेंहदे रहे, मैं पासा लै के आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे ओ बुढड़यो पुरख अकाल पिउ चंगा कि पोते, सच देणा सुणाईआ। याद रखयो अग्गे नूं पिउ नूं धक्कयो ना किसे पिछले कोठे, जिथ्थे मच्छर मक्खीआं देण सताईआ। तुसीं अजे बाल नढ्ढे आयू विच छोटे, बुद्धी बल ना कोए धराईआ। जिस तरह्रां बच्चयां नाल प्यार करदे एसे तरह्रां पुरख अकाल नूं छड्ड के साधां दे विच आ जांदे धोखे, जगत दे साध तुहाडयां पोतरिआं नालों वी

भैड़े नज़री आईआ। अमृत वेले उठ के करना इश्नान पाणी नाल कोसे, गुस्लखानिआं विच डेरा लाईआ। उत्तों साफ़ करदे पोशे, अन्तर दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। मैं फिर के आई कोने गोशे, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। जन भगतो तुहाडे वरगा फेर नहीं वेख्या गुरमुख फिरन जोटे जोटे, बाहवां बाहवां विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा करन वाल्या ऐवें किरपा कर किरपा कर किरपा कर कही जाना एं, हुण किरपा कर के दे वखाईआ। किरपा कहिंदी सुण नी मेहर भैण, मैं चार जुग दे ग्रन्थां फोल फुलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे सिफ्तां करदे गए प्रभू दा नाम दस्सदे गए कोई बेरी दा नहीं बेर, जो फड़ के मूँह विच लवो पाईआ। ओ जिज्ञासूओ, आसण लाओ, समाधी लाओ, सुरती चढ़ाउ, माला दे मणके लओ फेर, मणके फेरदयां फेरदयां पता नहीं किन्ने जुग चुरासी विच भवाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेंहदी रही गेड़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। मैनूं पिछले साल गुर अवतार पैगम्बरां किहा, कमलिए, जा के खलोता वेख शेर, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। जेहड़ा इक मेहर नज़र कर जाए ते दो जहानां दा लेखा दए नबेड़, गुर अवतारां दे पैगम्बरां दे तन वजूद वाले पुराणे चिरोक, बाज़ी पाशा इक्को वार पास कर के ख़ालस दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं गल बद्धा वेख्या अबलीस, बंधन नज़री आईआ। उहनूं काबू कीता अठ्ठ सिपाही नौवां गुरचरण सिँघ ठाणेदार पुलीस, दिल्लीउँ चल के आईआ। जन भगतो एह सिख्या लैणी गुरमुखो गुरसिख दा बणे ना कोई शरीक, वैरी बण के वैर ना कोए कमाईआ। जेहड़ा गुरमुख मूँहों गाए सोहँ गीत, ओह पिउ दादे दा वैरी होवे फिर वी हथ्थ जोड़ जुड़ाईआ। क्यों तुहाडा साहिब दोहां दे वीच, विचोला इक वखाईआ। गुरसिख किसे गुरसिख नूं किहो ना कोए नीच, चूहढ़ा चम्यार रसना बोल ना कोए सुणाईआ। इन्हां नूं मिलाउण पिच्छे गोबिन्द ने शहीद करा दिते जुझार ते अजीत, अज़ल नाल प्रनाईआ। अज्ज तक एह बदल ना सकी रीत, एसे कर के गोबिन्द दुबारा फेरा पाईआ। झगड़ा मिटिआ ना हस्त कीट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा वेखे थाउँ थाईंआ। सदी चौधवीं कहे मेरा कित्थे बूटा तुलसी, हथ्थ दयो फड़ाईआ । जन भगतो तुहाडा हिसाब किताब करन वाला रिहा कोई नहीं मुनशी, लेखा सब दा दिता मुकाईआ। अग्गे तुसीं ब्राह्मणां नूं बहाउँदे सी उत्ते कुरसी, हुण सुखदेव ब्राह्मण कुरसी तुहाडे लई लै के आईआ। जे वेखो खेल सच्चे सतिगुर दी, कलयुग दी रीती रिहा बदलाईआ। तुहानूं कोई लोड़ नहीं पैणी अक्खां मीट के चाढ़न दी सुरती, तुसीं सुत्ते ते मैं घर घर फेरा पाईआ। तुहाडी आत्मा कदे नहीं होणी मुरदी, जिउदे मुरदे बण के मुरीदो मुर्शद वेख वखाईआ। भावें तुसीं अक्खीआं नाल वेखदे सदी चौधवीं फिरदी तुरदी, सच

पुच्छो मैं तुरन फिरन वाली नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो आह वेखो मोमबत्ती, जो राज कौर कोलों लई मँगाईआ। उस एह कल्ल नहीं फड़ाई हथ्थीं, एसे कर के राज मोगे वाली कोलों लई मँगाईआ। मेरा लेखा कोई जुग नहीं छत्ती, छत्रधारी वेख वखाईआ। मैं कोई शिव दी नहीं पार्बती, ढाकां उत्ते हथ्थ रख के लत्त लत्त उत्ते चढ़ाईआ। मैं कोई लक्ष्मी नहीं विष्नूं नाल होणा सती, सत्याग्रह ना कोए कराईआ। मैं कोई ब्रह्मा दी नहीं सुरस्ती, सूत्रधारी वंड वंडाईआ। मैं भगतो आदि तों लै के अन्त तक्क भगतां लई चंगी ते सृष्टी लई कुपत्ती, फ़रेबण नज़री आईआ। क्यों जिस तर्हां भगत बिना भगवान तों किसे नूं बणाउँदे नहीं पती, मैं गुर अवतार पैगम्बरां नाल अक्ख ना कोए मिलाईआ। भावें मैनूं सौणा प्या विच कखीं, मैं शाह सुल्तानां दीआं सेजां दितीआं तजाईआ। मेरी आसा जुग जुग दी मेरे विच रही दब्बी, आह बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। मैं हैरान हो गई जेहड़ीआं बीबीआं कुड़ीआं तों बण के मुंडे चलदे आए उत्ते पब्बीं, कऊए हथ्थां उत्ते उठाईआ। इन्हां अहल्लिया नूं मख़ौल कीता उत्ते जल किनारे नदी, नहावन लग्गी नूं झाड़ीआं विच छुप के वेख वखाईआ। जिस वेले उहदे बदन उत्ते साड़ी रह गई अध्धी, पंजां ने ताली दिती वजाईआ। किड्डी सोहणी ते किडी बग्गी, हाहा कर के दिता वखाईआ। उस गुस्से विच किहा उठ के भज्जी, ज़ोर नाल दिती दुहाईआ। मेरे साहिब मेरी पत रखीं, इन्हां तों लैणा बचाईआ। इन्हां भज्जी जांदी नूं मारीआं अक्खीं, इशारे अक्खां वाले कराईआ। फिर किहा उस, प्रभू इन्हां नूं कोई सच्चा प्रेम दस्सीं, एह मैनूं तक्कण दी जगह तेरा राह तकाईआ। पुरख अकाल किहा गौतम नारी मैं वी बड़ा शक्की, भुलेखे सब नूं रिहा पाईआ। हुण ते हठी तपी, ऋषी मुनी नज़री आईआ। जिस वेले कृष्ण बण के भगवान अख्वा के अणगिणत रखावां सखी, सखीयां मँगलाचार सुणाईआ। फेर कलयुग आउणा सति धर्म दी रहिणी नहीं रत्ती, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। स्त्री जीउदा छड्डे आपणा पती, आपणा उजाड़ के ते अगला उजड़िआ घर बसाईआ। ओस वेले मुहम्मद दी आउणी इक चौधवीं सदी, मैं सच दयां सुणाईआ। उन चौदां तबकां दी छड्ड के गद्दी, भगतां विच मिलणा चाँईं चाँईंआ। ओस वेले इन्हां पंजां दी काया तेरे वांगूं जगत कन्या विच होवे बद्धी, धुर दा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा सब दा रिहा मुकाईआ। सदी चौधवीं कहे गुरमुखो तुसां कल वेख्या सी चार मुख दा दीवा, सब नूं दिता वखाईआ। ओस दीवे दे कोल होणा चाहीदा सी नीवां, लेकन कलयुग दी माया ने तलवार मोढ्ढिआं उत्ते उठाईआ। किसे नूं याद नहीं पहलों रविदास ने वंड वंडाई सी साढे तिन्न हथ्थ सीआं, हुण साढे तिन्न हथ्थ सीआं तों तुहानूं जुआब रिहा वखाईआ। पिछलीआं रहिण नहीं देणीआं लीहां,

लाईनां देणीआं बदलाईआ। जेहड़ा भगत भगवान दे प्यार विच हो गया खीवा, खिलअत उस नूं देणी पहनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतो तुहाडे अंदर एसे तरां जगदी प्रभ दी आत्मा दी मोमबत्ती, अन्धेरे विच चानण रही वखाईआ। प्रकाश नाल प्रकाश वेखण अक्खीं, बिना प्रकाश तों नेत्र कम्म किसे ना आईआ। मैं ते दुखी हो गई मैनूं पैंदी ग़शी, आबेहयात मुख ना कोए चुआईआ। मैं बथेरी पोथी पढ़ी माला फेरी अक्खरां वाली बाणी जपी, दिवस रैण घड़ीआं पल पन्ध मुकाईआ। तीर्थ तटां जांन्दयां मेरे दर्द पै गया लत्तीं, थकावट दूर ना कोए कराईआ। मैं हुण ग्रन्थां पन्थां शास्त्रां वेदां पुराणां अञ्जीलां क़ुरानां कोलों अक्की, अक्क के रही सुणाईआ। भगतो एह दुनियांदारां दी ढक्की, ठग चोर विच बैठे डेरा लाईआ। अज्ज तों सारे प्रभ दे नाल कर लओ पक्की, पक्का नाता लओ जुड़ाईआ। तुहाडी आत्मा जिस ने तुहाडे विच रखी, जदों चाहे फूक मार के दए बुझाईआ। फिर ना कोई किसे दी नार ना कोई किसे दा पती, बांह विच बांह पा के, हैट पैंट सजा के, साड़ी बूट लगा के, पेटी कोट छुहा के, बुल्लीं सुरखी ला के, मथ्थे बिन्दी टिका के, टेडा चीर कढा के, मेंढी सीस गुंदा के, वाल बनाउटी बणा के, कन्नी कांटे लटका के, गल हार सुहा के, चूड़ीआं गुट्टा नाल रला के, मातलोक दयां बाज़ारां विच टहिलण कोए ना जाईआ। धृग एहो जिहे
७९५ रिशतिआं नूं जेहड़े मरन तों पिच्छों सारे जाण तजा के, हथ्थीं आउण जला के, रोवन सिआपे पा के, हाए हाए कर सुणाईआ। ७९५
२१ बलिहारी जाओ उस सतिगुर सच्चे शाह के, जो मरन तों पहलों शाह रग दे उत्ते पहुंचे आ के, सहज नाल आत्म सेजा २१
उत्ते बहि के, गुरसिख आपणी गोद टिका के, कृपाल विच्चों दयाल हो के भज्जे चाँई चाँईंआ। साकां सन्बंधीआं दे कोलों डाक्टर वैद हकीम मुनीआं दे कोलों, आपणी आत्मा आपणे विच लै जाए छुपा के, ओस वेले कोई ना कहे क्यों साडा माँ प्यो भैण भ्रा पुत्तर धी साक सज्जण सैण नार कन्त नालों करे जुदाईआ। जे जीउदा कोई घर छड्ड के सतिगुर चरण लग्गे आ के, पिच्छों सारे रिश्तेदार करन लड़ाईआ। जे कोई कच्चा भगत होवे ते ओहनूं छड्डण हटा के, प्रभ दा भगत आपणा तन मन सतिगुर लेखे लाईआ। एसे कर के ध्रू प्रहलाद गए समझा के, रविदास चमारा दए गवाहीआ। जिस पाया तिस आपणा आप गुआ के, नाता दुनी नालों तजाईआ। अजीत सिँघ कसबी ज़रा उठ खां तैनूं दस्सीए समझा के, की मज़हबां चाल चलाईआ। भला कोई तैनूं मेरे नालों लै जावे भरमा के, गल्लां झूठीआं सच्चीआं सुणाईआ। कोई रातीं सुत्तयां लै जावे खां चुरा के, चरागाहां विच छुपाईआ। जिस सतिगुर दा शब्द रूपी दर्शन कीता आ के, उह बिना सतिगुर तों किसे दे नाल नाता ना कोए रखाईआ। एसे कर के मनसूर नाअरा लाया सूली उत्ते आ के, आख़र गया जणाईआ। मेरा ऐनलुहक़

खुदा ते लोकां मैनूं भैण दा यार दस्सया बणा के, बौहड़ी मेरी दुहाईआ। कोई वेख लओ अज़मा के, फाँसी ते लटकदयां खल्लां लहौन्दयां नूं आपणा नूर दए चमकाईआ। दुनियांदारो ज़रा वेखो खां ओथे जा के, जिथ्थे बैठा जोत टिका के, काले कोटां दा लेख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे सवरन सिँघ दस्स खां क़ुरान शरीफ़, इक मसला दे जणाईआ। मुहम्मद दिआ यारा होया नकारा केहड़े खुदा दी करें तारीफ़, सिफ्तां नाल सुणाईआ। तुहाडा यार हो गया ज़ईफ़, बुढ्ढा नजरी आईआ। सदी चौधवीं कहे मैं ते आख्या खौरे कोई होऊगा शरीफ़, शुरफ़ा उरफ़ा सोभा पाईआ। मैं रातीं तक के आई ओह थल्लउँ निउँ निउँ वेखे मेरे विच बुरका, मैं किहा जा वे औधर वल तुरकां, तुरकी वाल्यां दे हिलाईआ। ओस किहा तैनूं केहड़ा सतिगुर मिल गया धुर दा, मैनूं दे दृढ़ाईआ। मैं किहा जेहड़ा वासी अनन्दपुर दा, ओह पुरख अकाल नूं नाल लै के आईआ। मोड़यां नहीं मुड़दा, मोड़े ला ला थक्की, उह सगों भज्जा आवे चाँईं चाँईंआ। मैं ओहनूं बथेरी पंजां सिखां तों सुणाई अल्ला हू अकबर दी कथा, बांग मनारिआं उत्ते कराईआ। उन मैनूं किहा मैं कोई गुर अवतार पैगम्बरां दा नाम भाड़े उत्ते नहीं कीता टक्कयां वाला यक्का, अज्ज होर ते कल नूं होर बदली हो के आईआ। मैं कोई माढ़ा नहीं अच्छा, मच्छ नहीं कच्छा, राम कृष्ण वांगू कुख विच्चों जम्मण वाला नहीं बच्चा, ईसा मूसा मुहम्मद वांग कोई जननी नहीं बणाई ज़च्चा, नानक गोबिन्द वांग तन शरीर नहीं रख्या कच्चा, जो भन्न तोड़ के नाता जाए तुड़ाईआ। मैं ओस दुआरे वसां, जिथ्थे धोती तहिमत पैंट पहनणा ना पए कच्छा, बस्तर शस्त्र ना कोए उठाईआ। ना कोई घाटा ना कोई नफ़ा, नुक़सान वास्ते गुर अवतार पैगम्बर दिते बणाईआ। एधरों भरी चूंडी ते थोड़ा जिहा दे के गफ्फ़ा, काया गुफ़ा विच फसाईआ। किसे नूं किहा राम किसे नूं किहा कृष्ण किसे नूं किहा अल्ला किसे नूं किहा सतिनाम किसे नूं किहा श्री वाहिगुरु अच्छा, ते सतिनाम भड़ूआ केहड़ा नज़री आईआ। जे अल्ला दा गाया टप्पा, क्यों टापूआं विच झगड़ा दिता पाईआ। जे राधा कृष्ण दा साक बणाया सका, फेर कोई पुत धी क्यों ना जम्मया ते नाता जगत जुड़ाईआ। जे मुहम्मद तूं किहा तैनूं अल्ला राणी दयां वखा, चौदां तबकां विच कन्नों फड़ के दिता भुआईआ। फिर ना कहीं मेरे नाल कीता ठट्ठा, ठाकरां दे बदले कन्नां विच उँगलीआं दितीआं पुआईआ। पर भेत अंदर इक गिट्ठ ते इक चप्पा, ओस तों अग्गे ना किसे नूं समझाईआ। सारयां नूं वखाउँदा रिहा पंझी प्रकृतीआं पंज तत त्रैगुण माया ते पंझीआं दा आख़री अक्खर पप्पा, क्यों पंझीआं तों अग्गे बिना पप्पे तों नज़र कोए ना आईआ। जिस ने जाप कोई नहीं जपा, जगजीवण दाता वेख वखाईआ। एसे कर के नानक नूं किहा तपा, नानक नूं तप विच्चों

पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुणया सारयां किहा बहि जा प्रभू दे कोल, आहा डग्गा ढोल उत्ते लगाईआ। मैनूं ऐं दिसदा एह कम्म सारयां दे हिरदे गोल, हुण गोल मोल दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतो जे तुसीं बण गए निरोल, उठ के दयो वखाईआ। जेहड़ा हरचन्द सिँघ ने तन्द ल्यांदा मौल, मौला दे हथ्थ देणा फड़ाईआ। गुरमुखो रहिणा अडोल, डुल कोए ना जाईआ। तुहाडा इक्को निशाना ते इक्को कौल, इक्को रोल कर के देणा वखाईआ। भावें तुसीं बड़े नाज़क मलूक सोहणे ते सोहल, साफ़ सुथरे नज़री आईआ। आपणयां बच्चयां नूं लोरीआं दयो ते नवें नवें बोलो बोल, बिना सिखाइआं तों आपणे गीत बणाईआ। की पुरख अकाल दी महिमा वास्ते तुहाडे अंदर प्रेम नहीं जो तुसीं सको बोल, उच्ची कूक सुणाईआ। वेखो मैं तुहाडे पिच्छे आ गया उपर धौल, धरती उत्ते फेरा पाईआ। पिछला पूरा करना कौल, इक़रार लैणा निभाईआ। फ़र्क पैण नहीं देणा रती चौल, चावल खाण वाल्लयो खाण लग्गे कदे इक दाणा मेरे लई वी लैणा बचाईआ। तुहानूं पता तुहाडे बदले करनाल वाल्यां तों मँगा ल्या बोहल, चार देगां दित्तीयां चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं छड्डुया मौली दा तन्द, गाना दिता तुड़ाईआ। बदल के आपणी कंड, पासा आई बदलाईआ। भावें मैनूं सुहागण कहो भावें कहो रंड, एह तुहाडे हथ्थ वड्याईआ। तुसीं भावें मैनूं कुछ कहो मैं तुहानूं कहां साहिब दे चन्द, चार कुण्ट रुशनाईआ। सारे ज़ोर नाल खुशी नाल खंगूरे मार के लओ खंघ, खंघ ताप दा रोग दयां गुआईआ । इक हुक्म दे रहिणा पाबन्द, चलणा प्रभ रज़ाईआ। मैं तुहाडा मानणा अनन्द, अंदर वड़ के सोभा पाईआ। तुसीं वेख्या जे तेजा सिँघ दा सिर तों घस गया गंज, वाल रहिण कोए ना पाईआ। सेवा करदा सी नाल बन्द बन्द, दिने लड़ना ते रात सिरहाणे खलो के झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं धुर दी गोली, गुलाम नज़री आईआ। मैं विच्चों डांग वांगू पोली, मल मैल ना कोए टिकाईआ। मेरी खुल्ही नहीं कोई चोली, बच्चयां वाले चोले देण गवाहीआ। मैं ते सुणन आई तुहाडी आत्म परमात्म दी बोली, जो अनबोलत दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो इक धर्म धार दी बांदी, गोली लई बणाईआ। जिस ने सवा हथ्थ पाई परांदी, पारब्रह्म दए वड्याईआ। लोभ रिहा ना सोना चांदी, जगत शरअ दिती तुड़ाईआ। जिन्हां बीबीआं ने ढोला गाया सतिगुर बाझों पत जांदी, उह सब नूं रिहा उठाईआ । जन भगतो एह कलयुग अन्धेर नहीं एह कर्म कांड दी आन्धी, अन्न्हा पाल सिँघ लल्लीआं वाला दए समझाईआ।

गुर अवतार पैगम्बर कोई नहीं आंढ़ी गुआंढ़ी, इक्के घर विच इक्के मन्दिर विच सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे कोई पहलवान करो कुशती, अग्गे जाओ आईआ। तुहानूं घिओ खांदयां नूं वेख के मेरी चौदां सदीआं दी उतर जाए खुशकी, क्यों जम्मू वाल्यां ने तिन्न दिन दा सुक्का टुक्कड़ खुआ के मेरीआं पसलीआं दितीआं भन्नाईआ। हुण मैं करन लग्गी चुस्ती, चालाकी नाल तुहाडे अंदर वड़ के वेख वखाईआ। ज़रा तकड़े हो के आपणे आप दी करयो दरुस्ती, दुराचारां तों दयां बचाईआ। एसे कर के तुहाडे पिच्छे पहनी सत्त रंग दी कुड़ती, कुड़मां कड़मेटयां तों दयां छुडाईआ। मैं रातीं गई दरगाह साची ते फेर पैंरी आ गई मुड़दी, पुरख अकाल दिता भजाईआ। चली जा परे मेरे भगतां विच अज्ज रहीं फिरदी तुरदी, तुरले वाल्यां दा जा के दिल परचाईआ। सारयां नूं कहिणा अक्खां खोल्हो मैं सुहागण तुहाडे अग्गे लँघां मोहरदी, सोहणा आपणा रूप धराईआ। जेहड़े तुट्टे उन्हां दे नाते जावां जोड़दी, जोड़ी भगत भगवान बणाईआ। जेहड़े भुल्ले उन्हां नूं जावां रोढ़दी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। सारे कहो एह प्रेम घटा घनघोर दी, किते बिजली बण के साडे कूड़े कर्म ना दए जलाईआ। पुरख अकाल किहा एह खेल मेरे ग़ौर दी, गहर गम्भीर हो के दयां सुणाईआ। सदी चौधवीं तूं भगत दुआरे अंदरों सफ़ाई करनी ठग चोर दी, जो भगतां विच मिल के प्रभ दा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे हाए मैं हाहे उत्ते वेखी दोहरी टिप्पी, आत्म उत्ते आत्म नज़री आईआ। जन भगतो सृष्टी दी आत्मा सरीर विच छुपी, तुहाडी आत्मा काग़ज़ उत्ते चढ़ के सारे जग नूं करे रुशनाईआ। तुहाडे बिना रहिणी नहीं कोई सिखी, एह गोबिन्द ने धार लिखी, चार वरन इक्को रंग रंगाईआ। मैं उम्मत नूं तक्कया दुहथ्थढ़ मार के पिट्टी, पटने वाल्या की ग्यों लिखाईआ। उन झट जेब विच्चों कढ्ढी आह पुराणी चिठ्ठी, सहजे दिती वखाईआ। सदी चौधवीं तूं कल्ल दी बच्ची, ते उमर दी निक्की, मैं शब्द गुरु आदि अन्त दा नज़री आईआ। सदी चौधवीं ने किहा मैं पुराणी शौकीनण, तूं वेखे नहीं चार उँगल मेरीआं सहेलीआं दा जूड़ा पिच्छे गिच्ची, एह सब तों पहलों दी धार दिती समझाईआ। गोबिन्द जे तूं शब्द गुरु सोहणा ते मैं वी नहीं अजे ताईं किसे दे दुआरे विकी, बुढ्ढुयां नढ्ढुयाँ नाल गलवकड़ी पा के चाल ना कोए वखाईआ। जगत नेत्र किसे नूं नहीं दिसी, अक्खां पाड़ पाड़ के वेखे सर्ब लोकाईआ। एह बाल्मीक जिस ने मेरी रमाइण लिखी, बधका अग्गे आ तीर मार के हुण बैठा मुख छुपाईआ। मैं वी हुण जट्टी फिट्टी, माझे वाल्यां नाल रल के माझे दी जट्टी बण के आईआ। मैं कोई बन्न्हणी नहीं कट्टी वच्छी, धारां चो के घम घम दुध्ध रिड़कना ना कोए पाईआ। क्यों मैं सुहागण इक्को मेरा पती, पतिपरमेश्वर इक्को

७९८
२१

नज़री आईआ। मैं कोई मरासन नहीं नैण नहीं मेरा नाँ नहीं कोई फॅतू दी धी फत्ती, ते ना कोई मैनूं फ़ातमा कहि के बुलाईआ। मैं सारयां तों परे ते अग्गे तों अगली हद्द टप्पी, जिथ्थे लकीर वाले फ़कीर नज़र कोए ना आईआ। इक गल्ल सुण लओ मेरा परमात्मा मेरा ख़सम मेरा पती आदि अन्त दा गप्पी, गपौड़यां विच पकौड़े सब नूं दए खुआईआ। तुसीं ते चलाउँदे लूण मिर्च दी हट्टी, उन्हां अल्ला राम वाहिगुरु राधा कृष्ण पुड़ीआं विच बन्द कर के खुड्डां विच टिकाईआ। जा एह लै जा दुआ इन्हां सिखां मुरीदां नूं खुआ ते उन्हां दी हो जाऊ गति, गतमित समझण वाला नज़र कोए ना आईआ। भगतो मैं सब कुझ वेंहदी रही अक्खीं, अक्खां वाल्लयो अक्खां लओ खुल्हाईआ। मेरा परमात्मा चुरासी लख आत्मा सर्ब दा भक्खी, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैगम्बर सारयां नूं खा के डकार ना कदे लगाईआ। मैं वेख्या सब दा लेखा सार पाशे वाल्लयो पै गया नट्टी, बिना सतिगुर नाम दे पौं तों नरद ना कोए पुगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच दयां जणाईआ। सदी चौधवीं कहे सुणया जे पाठ गुरु ग्रन्थ, सब तों उच्चा कर के दिता सुणाईआ। जिस विच ना कोई मज़हब ना कोई पन्थ, आत्मा परमात्मा दा राह वखाईआ। जेहड़े पिच्छे वजाउँदे संख, संध्या सरघी वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं आ गई अणख, अणखीली हो के दिता सुणाईआ। ओ प्रभू जेहड़े गुर अवतार पैगम्बर बचदे रहे खा के दाल कणक, चपातीआं नाल रलाईआ। उह मैनूं दस्स किन्ना चिर जीवे ते किन्नीं भोगी आयू ते कितने रहे बरस, महीने दिन नाल मिलाईआ। मेरया बापू तैनूं नहीं आउँदा तरस, अर्श तों सुट्ट के फ़र्श, थोड़्हा जिहा नाम दा दे खरच, वाड़ दिते मन्दिर मसीतां चर्च, गुरु गुरदवारिआं नाल गए परच, तेरा प्राचीन दा लेखा ना कोए जणाईआ। प्रभ तेरा ते कुझ नहीं होया हरज, चार खाणीआं विच सब नूं कर दिता दरज, आपणे नाम दा सब नूं दे के क़र्ज़, लहिणेदार हो के सूद दिता लगाईआ। राम कृष्ण फड़ाई माला ते ईसा मूसा मुहम्मद नूं फड़ा के करद, छुरी इन्सानां उत्ते चलाईआ। हे प्रभू वेख आपणी पिछली फ़रद, भेव अभेद खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं पिछले जमाने दी पीहण वाली चक्की, हथ्था प्रभ दा नाम हथ्थ रखाईआ। ज़िमीं असमानां दे पुड़ इक दूजे दे उत्ते रही रखी, गल्ला चुरासी वाला विच पाईआ। नाले पीहवां ते नाले आपणे आप नूं झल्लां पखी, सोहणा रंग रंगाईआ। मैनूं मेरे वरगी तूं होर नहीं कोई दस्सी सखी, जो सुख़न मन्न के प्रभ दा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दुनियां नूं दे दे मत्ती, मतलब वाले आपणे नाल मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे वेखो बुल्ल लाल, लालन रंग रंगाईआ। साहिब स्वामी करे भाल, सम्बल बैठा सोभा पाईआ। लेखे लाए शाह कंगाल, आपणी गोद टिकाईआ। प्रेम प्रीती दए उछाल, अन्तर आस भराईआ। जन

७९९
२१

भगतो ताड़ी वजाओ नाल ताल, तलब सब दी पूर कराईआ। भुल्ल ना जाइओ मेरी वेख के नख़रिआं वाली चाल, मटक मटक के आपणा क़दम उठाईआ। जे प्रीती लाउणी ते लाइओ उस दे नाल, जो आदि अन्त तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा गला हो गया बन्द, हाए बन्दगी कौण सुणाईआ। मेरे टेडे हो गए दन्द, हुण मैनूं पसंद करन कोए ना आईआ। मेरी टुट्ट गई टंग, मैनूं विआह के घर ना कोए लै जाईआ। मैं हुण पाउणी डंड, कोई मैनूं लओ प्रनाईआ। सारे कहिण एह किथों आ गई मुशटंड, धक्के खांदी दए दुहाईआ। मैं सब नूं कहिणा दुनियां वाल्लयो विषा भोगणा चार जुग दा गंद, गंदगी दे कीड़े गंदगी विच समाईआ। मेरे परम पुरख दा माणो इक अनन्द, जो सांतक सति दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं कर लैण दयो रग तेज़, नाड़ां मल के गर्म लवां कराईआ। ओ ईसा मूसा योरप विच्चों खड़े कर दे अंग्रेज़, इंगलिस्तान दे हिलाईआ। मूसा कहे ईसा कहे मेरे परवरदिगार आपणा शब्द दुलारा दे भेज, भजन बन्दगी इक समझाईआ। जो सब दी माणे सेज, आत्म डेरा लाईआ। ओथे की करन चार वेद, शास्त्र सिमरत मिले ना कोए वड्याईआ। अञ्जील क़ुरान ना खोल्ले भेव, बाणी बन्नू ना कोए तुड़ाईआ। बिना तेरे तों घल्ले कोई ना सिध्धी सेध, दीनां मज़हबां दा पन्ध मुकाईआ। प्रभू कहे ओ मूसा ईसा तुहानूं रख्या विच पाकट ते जेब, आपणे सज्जे खब्बे लटकाईआ। तुहानूं इक वार वखाउणा तुहाडयां मुरीदां दा फ़रेब, धोखेदार जणाईआ। इक होर समझाउणी कितेब, जिस दी कतार नज़र किसे ना आईआ। कोई ना सके देख, देखण कोए ना पाईआ। जिस कारण गोबिन्द रखाए केस, दस्मेश दिती वड्याईआ। उह वी मेरे नाल रहे हमेश, साचा संग बणाईआ। हुण असीं आ गए मिल के माझे देस, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। नानक नाल फिरदा धर के मोढे खेस, खूंडी हथ्थ विच उठाईआ। हड्ड हिलाउणे मुल्ला शेख़, शेख़ी रहिण कोए ना पाईआ। पूजा मुकणी पार्बती शिव गणेश, शंकर आपणे विच समाईआ। जन भगतो कुछ तुसीं वी दस्सो आपणा भेत, की याराना अंदरों प्रभ दे नाल लगाईआ। घर विच सौणा चंगा कि लड़ना नाल तेग़, शहादत तेग़ बहादर वांगू पाईआ। सारयां दे पुट्ठे सिध्धे वेखे पेच, जो पगड़ी दिते लगाईआ। जिन्हां तीली वालीआं ने कन्न विच कढ्ढे छेक, नक्क विच तीली लई छुहाईआ। उन्हां दी कुल विच्चों बणे ना कोए प्रेत, गुरमुख भूतां दी जून कोए ना पाईआ। अज्ज तों इक लख अस्सी हज़ार जून दिती भगतां दे दुआरे उत्तों छेक, शब्द डंडे नाल भजाईआ। वेखो भगतो रातीं वेंहदे सो सलवार हुण तकदे जो पजामा रेब, छोटा थल्लउँ नज़री आईआ। जिंने तुसीं छोटे उनां तुहाडा आवे दरेग, एसे कर के ल्या मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं ल्यांदा मालक ज़रूर, ज़रूरत मेरी वेख वखाईआ। मैं आई तुहाडे हज़ूर, हज़ूरीए दिता समझाईआ। तुसीं बख्शिओ मेरे क़सूर, आपणी निगाह उठाईआ। भगत दुआरे दा दस्सओ दस्तूर, क़ायदा देणा जणाईआ। मैनूं भावें गुस्से विच लयो घूर, गहरी अक्ख वखाईआ। पर इक गल्ल किते कहि ना दयो तैनूं क़सम सूर, ते गाँ खा के झट लँघाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे प्रभ दे मज़दूर, नाम मज़दूरी कर के आपणा झट गए लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं गुरमुखां हथ्थ विच वेखे चाक, जो चाकरी पूरी जाण कमाईआ। सारे प्रभू नूं रहे आख, साडा पिछला लेखा दे मुकाईआ। जन्म दा कर्म कर मुआफ, धुर दा धर्म इक समझाईआ। मनुआ रहे ना कोए गुस्ताख़, कूड़ी क्रिया दे तजाईआ। तेरा नाता जुड़े साच, सच तेरी सरनाईआ। तेरा नाम पढ़न दी सानूं आ गई जाच, जाचक हो के सीस निवाईआ। साडी लेखे लाईं रात, भिन्नड़ी नाल वखाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाश, तेरी बेपरवाहीआ। सच प्रीती दे विश्वास, विसर कदे ना जाईआ। तूं साहिब सर्ब गुणतास, गुणवन्ता इक अख्वाईआ। तेरा खेल सदा बहु भांत, जुग जुग वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा दए बदलाईआ। सदी चौधवीं कहे सब दी बदल देवे तक़दीर, मेहर नज़र उठाईआ। मैं सुणदी रही तकरीर, जो हरिजू रिहा जणाईआ। उस दी बणदी जाए तहिरीर, अक्खर काग़ज़ां नाल मिलाईआ। माण देवे शाह हकीर, इक्को रंग रंगाईआ। धर्म धार दी दस्स तदबीर, तरीका इक समझाईआ। कूड़ रहे ना ख़मीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं बड़ी खुशी, खुशीआं भगतां दयां कराईआ। मेरा खेल होए नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुगी, जुगती आपणे नाल रखाईआ। जगत औध दिसे पुग्गी, वेला वक्त विहाईआ। मेरा साहिब मैनूं करे उग्घी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां निर्मल होवे बुद्धि, बुद्धिवान हो जाईआ। जिन्हां धुर दी रमज़ अंदर बुज्झी, बुझया दीपक लैणा जगाईआ। मैं नच्ची नाले कुद्दी, भज्जी वाहो दाहीआ। मेरी अड्डी हो गई उच्ची, सोहणा नच्च के नाच कराईआ। मैं अग्गे किसे दी करनी नहीं बुत्ती, बुतख़ान्यां खोज खुजाईआ। मैं अन्तिम उठी सुत्ती, रैण गई सवेरा गया आईआ। मैं खा के रुक्खी सुक्खी, जन भगतां नाल झट लँघाईआ। भगतां नूं भाग लग्गे दुध्धी पुत्तीं, प्रभ मेरा होए सहाईआ। मैं सुहागण बण के मेंढी गुत्ती, तन श्रृंगार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे साहिब दा आया संदेसा, सदके दयां जणाईआ। तुसीं खुशीआं माणो हमेशां, खुशीआं विच वड्याईआ। मेरा लहिणा मुकाया माझे देसा, दूर दुराडे

चल के आईआ। हुण मैं फिरांगी विच खेता, अग्गे पिच्छे आपणा पन्ध मुकाईआ। जन भगतो मेरा रखयो चेता, चेतन हो के रही जणाईआ। पैगम्बरां दा मुकणा ठेका, अग्गे बोली ना कोए कराईआ। मेरा अमाम जम्मणा नहीं किसे दे पेटा, रकत बूँद ना वंड वंडाईआ। ओह आदि जुगादी इक्को नेता, नर नरायण सोभा पाईआ। जो वस्से सचखण्ड देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। भगत उधारन जिस दा पेशा, पेशीनगोई वेख वखाईआ। लहिणा देणा पूरा करे लेखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं साहिब वेख्या पूरन, पूरन पूरन पूरन नज़री आईआ। फेर मैं सब दा लेख वेख्या पूरन, पूरन पूरन पूरन क़लम दवात शाहीआ। मैं सब दा कर्म वेख्या पूरन, पूरन पूरन पूरन जन्म धर्म समझाईआ। मैं सब दा वरन वरन वेख्या पूरन, पूरन पूरन पूरन वंडां तों बाहर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं चौदां तबकां नूं आई आख, पल्ला आई छुडाईआ। अजे देण जाणा तलाक, लिख्त प्रभ दे अग्गे भुगताईआ। फेर होणा सब जवाब, सवाल हल्ल ना कोए कराईआ। तुसां सब ने रखणा याद, ज़िहन दयां कराईआ। गुरमुखो तुहाडी छब्बी सताई दी सुलखणी रात, सोभा पाईआ। अग्गे खुशी दी होई प्रभात, घरां नूं जाणा चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाल किरपा करे आप, रहमत सच कमाईआ । जिस वेले भगत दवारिउँ निकल्यो पंज वार ज़रूर करयो सोहँ दा जाप, भुल्लण कोए ना पाईआ। हुण प्रेम नाल खाइओ प्रशाद, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। जो मेरे पिच्छे गए जाग, आलस निंदरा गए तजाईआ। उन्नां वेख्या मेरा सुहाग, कमलापति सोभा पाईआ। जन भगतो तुहाडा वखरा हो गया समाज, समें नाल दिता बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार तुहाडे साथ, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ।

गुरमुख साचा सिँघ मैहिल, महिल विच बहि के खुशी मनाईआ। दरगाह साची रिहा टहिल, फिरे चाँईं चाँईंआ। जन्म कर्म दा लेखा मुक गया सहिल, लहिणा रिहा ना राईआ। नाता तुट्ट गया भाई भैण, साक सज्जण गया तजाईआ। सदा दर प्रभू दे चरण दुआरे मिल्या रहिण, रेण धूढ़ी शार मस्तक टिक्के दा लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरे आपणे घर वसाईआ।

❋ २८ पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

सतिजुग धार सच दी रीत, रीतीवान दया कमाईआ। चार वरन इक प्रीत, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, शिवदवाला मठ गुरदुआरा ना कोए लड़ाईआ। सब दी अंदरों साफ़ होवे नीत, नीत पुनीत कराईआ। दीन दुनी पुरख अकाल दे गावे गीत, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जो काया माटी करे ठांडी सीत, अगनी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दे रंग रंगाईआ। सतिजुग कहे मेरा धुर दा राह, रहिबर इक अख्वाईआ। दीन मज़हब तों जो मानव होए जुदा, सब नूं मेलां सहज सुभाईआ। अल्ला वाहिगुरु राम सब दा इक खुदा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। वरनां बरनां मार्ग दस्स के सिध्धा, जगत समाजां तों लवां छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सतिजुग कहे मैं दस्सां रस्ता चंगा, सृष्ट रिहा समझाईआ। जिस ने करना होवे कारज अनन्दा, अनन्द आत्म परमात्म वेख वखाईआ। बिना बन्दगी तों बणे उह बन्दा, जो बंधन जाए तुड़ाईआ। साजण मित्र प्यारा मीत इक सुहंदा, साहिब सुल्तान वड्याईआ। मन कुकर्म कढ्ढे गंदा, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा गा दे छन्दा, इहो सति सच कुड़माईआ। जन भगतां लभ्भणा पए कोई ना पंडा, मुल्ला बग़ल क़ुरान ना कोए टिकाईआ। ग्रन्थी गाए कोई ना छन्दा, रागां नादां विच सुणाईआ। धुर दा खेल सूरा सरबंगा, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सतिजुग कहे वेखो सस्से उत्ते होड़ा, निरगुण सरगुण धार जणाईआ। गुरमुख सदा चढ़े शब्द दे घोड़ा, जगत घोड़यां वाली रीती कम्म किसे ना आईआ। स्त्री पुरुष बणे धर्म दा जोड़ा, जिन्हां दे अन्तर आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। उन्हां आवण जावण लख चुरासी मिटे झोरा, जूनी जून ना कोए भवाईआ। इक दूजे दी सांझी होवे लोड़ा, नाता प्रेम मुहब्बत वाला रखाईआ। कोई भरम ना जाणे काला गोरा, गुरसिख वेख खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सतिजुग किहा मेरा मार्ग इक अजीब, अजब निराला दयां वखाईआ। मेरे अंदर फ़र्क रहे ना अमीर ग़रीब, वड्डा छोटा वंड ना कोए कराईआ। दीन मज़हब ज़ात पात रहे ना कोए तरतीब, ऊँच नीच ना कोए लड़ाईआ। पिछली करनी उत्ते मार लीक, रस्ता धुर दा देणा वखाईआ। गोबिन्द शब्द करे तस्दीक, नानक नाल गवाहीआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर कर के गए उडीक, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। सो खेल करे लाशरीक, वाहिद मालक नूर अलाहीआ। जिस दे विच हक़ तौफीक़, बेपरवाह बेपरवाहीआ। ओह सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना तृखा गवाईआ। एको

रंग रंगा के ऊँच नीच, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक घर बहाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत रसना जिह्वा बत्ती दन्द कोई ना लाए मास कबाब मीट, ममता मोह जगत तुड़ाईआ। साचा कलमा एको पढ़े हदीस, सोहँ ढोला नाम अलाहीआ। गुर अवतार पैगम्बरां इहो गाया गीत, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। सन्त सुहेला होवे ठांडा सीत, अगनी तत ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साजण इक अख्वाईआ। सतिजुग कहे मेरा सच दा होणा मार्ग, औरत मर्द मिले वड्याईआ। धर्म धार दा होवे कारज, करमां दा डेरा ढाहीआ। पिछला लेखा करना ख़ारज, रीती जगत वाली तजाईआ। पुरख अकाल ने लैणा चारज, हुक्मरान इक हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। सतिजुग कहे मेरा मालक इक्क, पुरख अकाल वड्याईआ। वरन बरन ज़ात पात दीन मज़हब ओसे दे सारे सिख, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दरगाह साची वंड ना कोए वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुर दा लेखा अग्गे देवे लिख, जिस नूं सके ना कोए मिटाईआ। अग्गे पूजा होणी नहीं किसे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ पत्थर इट्ट, देवी देवत सीस ना कोए निवाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार सब दा सांझा होणा इष्ट, इष्ट देव आत्मा परमात्मा वेख वखाईआ। जन भगतां मानस जन्म जाणा जित्त, लोकमात जगत हारदी दिसे लोकाईआ। जन भगतो तुहाडे अंदर तुहाडा मालक इक्क, तन वजूद जगत वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दी लेखे लाए गोबिन्द वाली चिट्ट, चिट्टे उत्ते चिट्टा नाम धुर दा लए लिखाईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं थक्की टुट्टी, थकावट विच दुहाईआ। चौदां तबक गई ना लुट्टी, लीडर हथ्थ किसे ना आईआ। सुख दी नींद कदे ना सुत्ती, सोहणी सेज ना कोए सुहाईआ। मेरी वैरागण दी टुट्ट गई जुत्ती, भज्जी चाँईं चाँईंआ। दुनियां भाग लगदा पुत्तीं, पुत पोतरे नाल वड्याईआ। मैनूं इक्को प्रभ दे मिलण दी ख़ुशी, ख़ुशीआं विच राह तकाईआ। मैं मंज़ल बामंज़ल आई पुच्छी, मुहम्मद आ के दिता सुणाईआ। वेख खेल इक अदुती, की करता कार कमाईआ। जिस गुंद के आपणी गुत्ती, रूप ल्या वटाईआ। सृष्ट उठा दे सुत्ती, नेत्र अक्ख उठाईआ। तेरी पूरी करे बुत्ती, बुतख़ाने फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे विच आई थकावट, नाड़ी नाड़ी दए दुहाईआ। जगत जहान वेखी बनावट, कूड़ी क्रिया बंधन पाईआ। साचा कलमा करे ना कोए सख़ावत, वस्त

अमोलक ना कोए वरताईआ। मैं जन भगतां दी खा के दावत, दाअवे नाल दयां सुणाईआ। वेख्यो प्रभ दे साहमणे बुद्धी दी दस्सओ कोई ना लिआक़त, अक़ल दी अकल ना कोए दृढ़ाईआ। सदा रहिणा हुक्म मुताबक, मतला कर के दयां दृढ़ाईआ। जे पिच्छे झूठ बोलण दी आदत, अग्गे लओ बदलाईआ। कलयुग कूड़ा वेख्यो राकश, सब नूं रिहा खाईआ। मनुआ नाल करे साज़श, शरअ शरअ नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं बड़ी होई शरमिंदी, शर्म नाल अक्ख ना उपर उठाईआ। मेरे पिच्छे मेरे परवरदिगार ने लाई बिन्दी, बिन्दी वृंदावन दी पूर कराईआ। शंकर दी मँगवाई पिंडी, लिंग भग दी पूज हटाईआ। जगत सितार वजा किंगी, किंगां करे सफ़ाईआ। फूल मँगा कोलों भेंटा बेटी सिन्धी, सिन्ध सागर पार कराईआ। आपणी आप करा के निंदी, निन्दक दीन दुनी वखाईआ। जन भगतां धार कर के ज़िंदी, ज़िंदगी जीवन दिता बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं प्रभ दीआं देंदे वेखे मसालां, मिसरे आपणे नाल मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां वेखीआं पालां, कतारां विच बैठे नज़री आईआ। साचा नूर चमके नुराना, नूर नुराना नूरो नूर डगमगाईआ। लेखा मुके जगत अञ्जील क़ुराना, मुख़ातब हो के आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या अगम्मी राज़, राज़क रिज़क रहीम जणाईआ। जिस सीस पहनया ताज, तख़त निवासी नज़री आईआ। मेरा सोहणा कर के काज, ओढ्न सीस इक टिकाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं फिरदी रही उपर थल्ले, निरगुण धार रंग वखाईआ। सिफ्तां विच ना कराया बल्ले बल्ले, गुर अवतार पैगम्बरां हुक्म वरताईआ। जो वस्से निहचल धाम अटले, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। हुण हो गया भगतां वल्ले, वलवले सारे देणे चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, असमानां उपरों आया थल्ले, जल थल महीअल सारे वेख वखाईआ।

नग़मा नाज़ू क़दम कनज़वीउल ज़लमा मलशवीनेये कुशा मेरी तेरे अग्गे दुआ, तूं खुद मालक ते मैं मातलोक विच ख़ुदी गवावण वाला ख़ुदा, तूं जोत नूर मैं शब्द सतिगुरु नाद रिहा वजा, ऐ मेरे महबूब मेरे दिलरुबा, तूं मेरी हस्ती दस्स इक दूजे तों कौण होए फिदा। पुरख अकाल दीन दयाल इक्के वार अंदर जोत दी झलक दिती वखा, हलूणा दिता लगा, बिन

कन्नां दिता सुणा, गोबिन्द बाज़ दे उडा, बाज़ां वाल्या तेरी बाज़ी देवां बदला, क्यों फिर तैनूं आप आपणी उँगली तों धुर दा शब्द गुरु बाज़ बणा के दयां उडा, बिना खंभां तों दो जहानां परे चक्र लैणा लगा, खाण पीण दी रहिण ना देवां कोए अदा, रोग सोग दी रहे ना कोए वबा, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। तेरे बाज़ तों बचू चिड़ी लवां तुड़ा, आपणे बाज़ तों गुरुआं अवतारां पैगम्बरां दीआं धौणां लवां निवा, एह मेरे हथ्थ वड्याईआ। गोबिन्द किहा वाह वाह वाह, वाहिगुरु तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल ने बिना चरणां तों आपणे चरण उपर लए उठा, गोबिन्द बिना सीस तों चरणां हेठां सीस दिता टिका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

८०६

२१

✻ २६ पोह शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सदी चौधवीं कहे मेरी खुशीआं वाली लोहड़ी, अंक सहेलड़ीओ दयां जणाईआ। वेखो मेरी प्रभ दे नाल बण गई जोड़ी, जोड़ा धुर दा ल्या बणाईआ। ना मैं काली ना मैं गोरी, रूप रंग रेख नज़र ना कोए पाईआ। मेरे मालक मेरे उत्ते किरपा कीती भोरी, भाण्डा भरम दिता भन्नाईआ। दीन दुनी तों कर के चोरी, चरणां विच ल्या रखाईआ। मेरा माण ताण ना ज़ोरी, निउँ निउँ लागां पाईंआ। मैं आदि जुगादि दी बांकी छोहरी, छैल छबीली नज़री आईआ। मेरी आसा नवीं नकोरी, निरवैर दिती वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा साहिब स्वामी सज्जण, सोहणा नज़री आईआ। मैं प्रेम प्रीती करां मजन, धुर दा रंग रंगाईआ। सच संदेशे आई सद्दण, होका इक अल्लाईआ। मेहरवान महबूब सच मुहब्बत विच रहे तेरी लग्न, दूसर अवर ना कोए मनाईआ। ममता मोह रहे ना बंधन, कूड़ी क्रिया देणी कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं लोहड़ी वंडां, वंडी धुर दी पाईआ। मैं प्रभ दे कोलों प्रीती लै के आई पंडां, अनडिठ्ठड़ा भार उठाईआ। मैं किसे वड़ी नहीं मन्दिर मसीत गुरदुआर शिवदवाले मठ पत्थर इट्टां वाली कंधां, महिराबां विच ना डेरा लाईआ। मैं तक्कदी इक चन्दा, जो चन्द नूर करे रुशनाईआ। जो खेल वखाए सूरा सरबंगा, सो सच दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी लोहड़ी दा लोहड़े पैणयां ना कीता चाउ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मैं हलूणिआ फड़ के बाहों, अक्ख दिती खुल्हाईआ। वेखो हँस होए काउँ, काग हँस रूप बदलाईआ। साचा धर्म ना कोए न्याउँ, अदल इन्साफ ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे लोहड़ी दे थाँ प्रभ दा मिले प्यार, प्रेम प्रेम विच्चों प्रगटाईआ। तुसीं उहदे उह तुहाडा यार, याराना धुर दा ल्या लगाईआ। भरोसे विच रखो एतबार, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। मेहरवान करे सच शृंगार, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे चाउ अंदर गाओ मँगल, मँगलाचार वड्याईआ। शरअ कटो संगल, ज़ंजीरी नज़र कोए ना आईआ। सच प्रीती चढ़े अगम्मी रंगन, रंगत इक रंगाईआ। तुहाडा पवित्र होवे बदन, अन्तर आत्मा नूर रुशनाईआ। सच दुआरा मिल्या पतण, दरगाह विच वड्याईआ। दीन दयाला आया रखण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे साहिब दा वेखो आग़ाज़, अक़ल बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। धुर दे नाम दी सुणो आवाज़, जो अज़ल तों दए बचाईआ। जिस आपणी साजण साज, सगला संग गुरमुख रिहा तराईआ। सति धर्म दा बदल के आप रिवाज, रयाइत आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन आपणी खेल खिलाईआ।

संसार विच निकले सिट्टा, सिट्टेबाज़ी जगत लोकाईआ। जन भगतां दा लेख कर के चिट्टा, चिट्टी धार विच समाईआ। जिथ्थे मन्दिर नहीं कोई पत्थर इट्टां, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। रूप नहीं कोई वड्डा निक्का, बाल बिरध ना वेख वखाईआ। सोना चांदी रुपा नहीं कोई सिक्का, धातू वंड ना कोए वंडाईआ। जगत अक्खर लेख नहीं कोई लिखा, क़लम शाही ना जोड़ जुड़ाईआ। ओथे लै के जाए धुर दा पिता, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिथ्थे भगतां दा कित्ता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं दा सिट्टा बड़ा लम्मा, कद्द नज़र कोए ना आईआ। जिस धार नूं कहिंदे मम्बा, धार सब नूं दए दृढ़ाईआ। जन भगतां थान थनंतर देवे चंगा, चंगी बख्शे माण वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जहान वखा के कूड़ा धन्दा, हरिजन धर्म धार विच रखाईआ।

❋ पहली माघ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

सदी चौधवीं कहे हाज़र होए अवतार पैगम्बर गुर पीर, पीरन पीर दया कमाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख कट्ठे होए सूफ़ी फ़कीर, जो फ़िकरा ढोला इक्को नाम ध्याईआ। विच्चों उठ के कहे कबीर, शब्द अगम्मी आवाज़ जणाईआ। साडा किसे दा नहीं तत शरीर, वजूद नज़र कोए ना आईआ। हथ्थ फड़े ना कोए शमशीर, खंजर कटार ना कोए चलाईआ। शरअ दा दिसे ना कोए ज़ंजीर, संगल हथ्थ ना कोए उठाईआ। आबेहयात लभ्भे कोए ना नीर, अमृत रस ना कोए चखाईआ। खेल वेखे आप अख़ीर, आख़र धुर दा पर्दा लाहीआ। किस बिध दीन दुनी दी बदले तक़दीर, तदबीर आपणी नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर होए कट्ठे, दर ठांडे डेरा लाईआ। हथ्थां विच फड़े सब ने आपणे पटे, पटेदारी रहे वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर चारों कुण्ट फिरन नट्ठे, भज्जण वाहो दाहीआ। दह दिशा होवण ठट्ठे, सतिकार विच ना कोए जणाईआ। जिधर वेखण ओधर रट्टे, रट्टा सके ना कोए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं इक्को करनी निमस्कार, सच सजदा सीस झुकाईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। सति सच दा रहे प्यार, धर्म धर्म दी धार प्रगटाईआ। इक्को तेरा होवे अख्त्यार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पिछले तेरे सेवादार, जुग जुग साची सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर पुज्जे, पूजनीक डेरा लाईआ। आपणे भेव दस्सण गुज्झे, किस बिध रो के झट लँघाईआ। कवण साथ देवे इक दूजे, सगला संग निभाईआ। कवण भाण्डे कर के मूधे, पिट्ठां रिहा बदलाईआ। कवण भेव चुकाए बुत्त रूह दे, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। एह खेल कलयुग हूबहू दे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सच सच्ची सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी धार वेखो सादी, जिस्म तन ना कोए रखाईआ। जिस दा नूर आदि आदी, अन्त ओहो वेख वखाईआ। जो साहिब ब्रह्म ब्रह्मादी, पारब्रह्म नज़री आईआ। साची मंज़ल चढ़े घाटी, घाटा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेख्या हक़ीक़ी हक़ी, हुक्म धुरदरगाहीआ। अन्तर रिहा कोई ना शक्की, संसा दिता मिटाईआ। मैं कर के जाणा पक्की, सहज नाल समझाईआ। सन्त सुहेले वेखो अक्खीं, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। जो निरगुण धार जगा बत्ती, सरगुण तत करे रुशनाईआ। जोत

सरूपी बण के पती, पतिपरमेश्वर हो के वेख वखाईआ। सब दा लहिणा देणा लेखा पूरा करना हथ्थीं, हथ्थो हथ्थी ना कोए फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच सच गुर अवतार पैगम्बरां दए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण क़दीम दा प्या झगड़ा, झगड़े विच लोकाईआ। कलयुग जीव होया बग बप्पड़ा, काग काग वांग कुरलाईआ। कोई भेव ना खोल्हे अगला, पर्दा देवे कोए ना लाहीआ। जन भगतां नाता जुड़िआ सगला, धुर दा संग बणाईआ। इक्को दस्स बन्दना, बन्दगी बेपरवाहीआ। इक्को दए अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों चमकाईआ। दूसर दर पए ना मँगणा, भिखक गुरमुख नज़र कोए ना आईआ। सब नूं आपणे लाए अंगणा, अंगीकार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां हुक्म लैणा दस्ती, दस्तख़त आपणे दे के झट लँघाईआ। इक्को तकणी परम पुरख दी हस्ती, दूसर संग ना कोए निभाईआ। जो मालक धुर दा अर्शी , फ़र्शां उत्ते डेरा लाईआ। जन भगतां होवे गरज़ी, गर्ज़ कूड़ी मेट मिटाईआ। सब दी मन्ज़ूर कर के अर्ज़ी, हरिभगत दुआरे लए बहाईआ। एह खेल अगम्मे नरायण नर दी, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण जन भगतो सुणो दलील, दिलों दईए जणाईआ। तुहाडा मज़हबां वाला रिहा ना कोए वकील, ज़िंमेदारी असां ना कोए उठाईआ। तुहाडी सदा मन्ज़ूर अपील, अपरम्पर स्वामी वेख वखाईआ। जिस बस्तर पहने नील, एह गोबिन्द धुर दा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण भगतो वेखो प्रभू दी माधी, मजन भगतां रिहा कराईआ। तुसीं होए वड वड भागी, भागां वाल्लयो देवां सुणाईआ। तुहाडी धार तुहाडे विच्चों जागी, जागरत जोत करे रुशनाईआ। भगत उधारना जिस दी वादी, ओह वायदे सब दे वेख वखाईआ। तुसां किसे ने करनी नहीं बरख़लाफ़ी, ख़िलाफ़त नज़र कोए ना आईआ। सब ने बणना इक दूजे दे इतहादी, नाता प्रेम वाला जुड़ाईआ। एथे ओथे होवे ना कोए बरबादी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच नाल मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं आए भज्जे दौड़े, छेती पन्ध मुकाईआ। अग्गे पिच्छे सानूं कुछ ना बौहड़े, बौहड़ी बौहड़ी सर्ब दुहाईआ। जन भगत चढ़दे वेखे अगम्मे पौड़े, जो पौड़ी डंडे नाल सुहाईआ। जिस साहिब दी सदा लोड़े, उह मालक नूर अलाहीआ। जिस अग्गे नहीं कोए ज़ोरे, ज़ेर ज़बर ना कोए जणाईआ। ओस दा मेल होवे बतौरे, साचा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सज्जण इक अख्वाईआ। गुर अवतार

पैगम्बर कहिण, वेखो प्रभ ने मारया हंभला, हबले दिते तजाईआ। भगत दुआर सुहा के धुर दा बंगला, सचखण्ड दए वड्याईआ। नेत्र रहे कोई ना अन्धला, दोए लोइण लोइण रुशनाईआ। हरिजन दिसे कोई ना कंगला, नाम ख़ज़ीना झोली भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सतिगुर दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरो वेखो मुकाम, मुक़ामे हक़ नज़री आईआ। जिथ्थे इक्को ढोला इक ज़बान, दूजा राग ना कोए अलाईआ। इक दिसे पीण खाण, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को मनावणहारा आन, सिर सके ना कोए उठाईआ। एह खेल प्रभू महान, हरि करता रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी देवणहारा जीआ दान, जीवण जुगत जागरत जोत बिन वरन गोत निरगुण धार करे रुशनाईआ।

✻ ६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ केहर सिँघ दे गृह रजी वाला ✻

सदी चौधवीं कहे किरपा कीती बेपरवाह, बेपरवाह दया कमाईआ। मेरी क़बूल कर दुआ, दो जहानां होया सहाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक इक खुदा, जल्वागर नूर अलाहीआ। जिस दी मुहम्मद अगम्म सदा, संदेसा देवे धुरदरगाहीआ। सजदा कर इक अल्लाह, रहमत धुर दी मँग मँगाईआ। जिस दरगाह इक नवा, नव नौ चार देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी बेनन्ती होई मंज़ूर, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। किरपा कीती हाज़र हज़ूर, शहिनशाह धुरदरगाहीआ। मेरा पिछला बख्श क़ुसूर, कसर इशारीए नाल उडाईआ। अगला हुक्म दस्स दस्तूर, रहिबर हो के रिहा समझाईआ। नाम खुमारी कर मख़मूर, खुदी तक्ब्बर डेरा ढाहीआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, अमृत रस इक चखाईआ। तन विकार ना रहे ग़रूर, ग़ुरबत अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। सति सच दे सरूर, साहिब सुल्तान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, वड दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी पुन्नी आसा, मेल मिलाया धुरदरगाहीआ। मुहम्मद दे के गया भरवासा, भरम भुलेखा रिहा ना राईआ। मैं छड्ड पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। चौदां तबक तज्या साथा, जगत संग ना कोए निभाईआ। नाता रिहा ना कोए भराता, दीन दुनी ना कोए वड्याईआ। कवण धार जोड़ के नाता, निरवैर पुरख ल्या मनाईआ। जो अमाम धुर दा साचा, सच सच दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

८१० २१

कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे किरपा कीती साहिब सुल्तान, मेहर नज़र इक उठाईआ। महबूब मुहब्बत विच हो मेहरवान, बेनज़ीर नज़र दिती बदलाईआ। मेरी मंज़ल कर आसान, दर घर साचा इक जणाईआ। जगत तृष्ना ख़ाहिश ना रही जहान, जहालत विच ना कोए वड्याईआ। मंज़ल हक़ दस्स मकान, दरगाह साची इक सुहाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत महान, जल्वागर इक रुशनाईआ। ना कोई ज़िमीं ना असमान, मण्डल मण्डप ना कोए दरसाईआ। ना कोई गोपी ना कोई काहन, तन वजूद सोभा कोए ना पाईआ। ना कोई रवि ससि सूर्या चन्द भान, दिवस रैण वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई रसना जेहवा बत्ती दन्द पीण खाण, नाद धुन शब्द ना कोई शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, बेपरवाह आपणा पर्दा आप उठाईआ। सदी चौधवीं कहे किरपा कीती आप समरथ, साहिब दिती सरनाईआ। मैं बिना सीस तों टेक के मथ, नमों सजदा इक जणाईआ। शब्द कहाणी सुण अकथ, महिमा धुरदरगाहीआ। खुशीआं विच पई हस्स, हस्ती तक्की नूर अलाहीआ। चरण कँवलां उपर ढठ्ठ, मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तूं वसणहारा घट घट, लख चुरासी रिहा समाईआ। तेरा जोती नूर लट्ट लट्ट, दो जहान करे रुशनाईआ। किरपा कर साहिब समरथ, दर ठांडे मँग मँगाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सदी चौधवीं बुरज रिहा ढठ्ठ, तुध बिन होवे ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या ग़रीब निवाज़, पारब्रह्म बेपरवाह नज़री आईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त दो जहानां राज, रईयत गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। जिस दा निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण समाज, शब्द समग्री इक वरताईआ। अमृत रस अगम्मा अगम्म स्वाद, रसना रस ना कोए चखाईआ। जुग चौकड़ी बिन आलस निंदरा रिहा जाग, ग़फ्लत विच कदे ना आईआ। हुक्म संदेसा देवे ब्रह्म ब्रह्माद, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी खेल खिलाईआ। धुन आत्मक सुणा नाद, अनहद नादी नाद जणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म करे काज, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी साजण साज, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे बाणी राग अलाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी धुर दे कलमे मारे आवाज़, राज़ आपणा रिहा खुलाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दुरमति मैल धवावां दाग़, पतित पुनीत आप कराईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म निरगुण हो के पकड़ां वाग, शाह पातशाह शहिनशाह धुर फ़रमाना एका हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा मालक भेव अभेदा आप

८११
२१

जणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या दरगाह साची सचखण्ड नज़ारा, जिस नज़रीआ दिता बदलाईआ। निरगुण नूर मेरा परवरदिगारा, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। बिन तन वजूद माटी ख़ाक जोती धार गुरु अवतारा, पैगम्बर बिन सीस सीस जगदीश झुकाईआ। इक्को नाम इक्को कलमा इक्को होए जैकारा, दूजा राग ना कोए अलाईआ। इक्को सजदा इक डंडावत इक निमस्कारा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। इक महल अटल इक्को काअबा इक्को मन्दिर गुरुदुआरा, शिवदवाला मठ वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को पीर दस्तगीर इक्को लेखा शाह हकीर इक्को लहिणा बेनज़ीर, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। दर दरवेश सन्त भगत वेखे फ़कीर, फ़िकरे विच तूंही तूंही राग अलाईआ। शरअ संगल दिस्सया ना कोए ज़ंजीर, दीन मज़हब ना वंड वंडाईआ। मंज़ल चोटी चढ़ वेखी अख़ीर, सच दुआरे सोभा पाईआ। जिथ्थे चले ना कोए दलील, कल्पणा विच ना कोए कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची इक सुहाईआ। दरगाह साची दुआरा सचखण्ड, खण्डा खड़ग ना कोए खड़काईआ। ना कोई ज़ात पाती वंड, दीन मज़हब ना कोए वखाईआ। ना कोई ढोला ना कोई छन्द, गीत संगीत ना कोए सुणाईआ। ना कोई बन्दगी अंदर होए पाबन्द, ना कोई हुक्मे हुक्म मनाईआ। ना कोई सुर्या ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी ना कोई ढोला हक़ीक़ी छन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। जिधर तक्कां निरगुण नूर जोत प्रकाशन पुरख अकाल सूरा सरबंग, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी मेहरवान महबूब बख्शंद, रहमत हक़ हक़ कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं जा के किहा सलाम, निम्रता विच सीस निवाईआ। अग्गों हुक्म देवे अमाम, हरि करता बेपरवाहीआ। कमलिए अगली सुण कलाम, जो कलमयां तों बाहर करे पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम बदल जाणा इंतजाम, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। हुक्म देवे श्री भगवान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर मन्नण आन, सिर सके ना कोए उठाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर झुलणा इक निशान, नव नौ चार दए गवाहीआ। आत्म परमात्म सब ने गाउणा गाण, गावत गा गा ख़ुशी मनाईआ। शरअ छुरी ना रहे शैतान, दीन मज़हब ना कोए लड़ाईआ। सब दा इक्को होवे राम, अमाम इक्को सोभा पाईआ। बंधन विच रहे ना कोए ग़ुलाम, ज़ंजीर कूड़ देणा तुड़ाईआ। काया काअबा दस्सणा इक मुकाम, हक़ीक़त लाशरीकत इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं सुण हदीस, हज़रतां तों परे दए दृढ़ाईआ। सब दा मालक इक जगदीश, जगदीशर नूर अलाहीआ। जिस

नूं सब दा झुकदा सीस, चरण कँवल सरनाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्से इक प्रीत, परम पुरख परमात्म पर्दा इक चुकाईआ। दीन दुनी दी बदल देवे नीत, नीतीवान होए सहाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। मानव मन मनसा जाए जीत, तन वजूद होए सफ़ाईआ। लेखा रहे ना ऊँच नीच, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभू तेरा तक्कां सचखण्ड दुआरा, दरगाह साची वेख वखाईआ। जिथ्थे इक्को नूर उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर नन्हे बच्चे तेरे सेवादारा, बालक बाले सोभा पाईआ। तूं सब दा शाह सिक्दारा, शहिनशाह तेरी इक सरनाईआ। भविख्तां विच लिख्तां विच इश्टां विच तेरा करके गए इज़हारा, सिफ्तां विच सालाहीआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक अवतारा, अवतर आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कूड़ी क्रिया कर पार किनारा, नईआ नौका माया ममता रहिण कोए ना पाईआ। तेरा नाम तेरा कलमा होवे इक जैकारा, चार वरन अठारां बरन आत्म परमात्म तेरा ढोला गाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप तेरा होए सहारा, दूजा इश्ट ना कोए मनाईआ। जागरत जोत बिन वरन गोत हो उज्यारा, हरख़ सोग चिन्ता ग़म कूड़ कल्पणा डेरा देणा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता आपणी कल वरताईआ। सदी चौधवीं कहे किरपा कर मेरे स्वामी, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। तूं हर घट अन्तरजामी, लख चुरासी वेख वखाईआ। सति धर्म दी दिसे ना कोए निशानी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जगत विद्या होए ज्ञानी, ब्रह्मवेता नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा प्या चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पर्दा सके ना कोए उठाईआ। तेरा इशारा समझे ना कोए चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी सारे रहे गाईआ। तेरा नूर नज़र ना आए जल्वागर नुरानी, नाद धुन ना कोए शनवाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मन कल्पणा वधी बेईमानी, बेवा रूप होई हल्काईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, इस्म आज़म लाशरीक तेरा वेखण कोए ना पाईआ। मन कल्पणा करे ना कोए क़ुरबानी, काया काअबे वज्जे ना कोए वधाईआ। कलयुग जीव झगड़ा प्या जिस्मानी, असमानी तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा कूड़ क्रिया चढ़ी तुग्यानी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तेरी जोत दिसे बेगानी, मंज़ल बामंज़ल चढ़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं छड्डुणा चौहन्दी लोकमात, धरनी धरत धौल धवल रहिण कोए ना पाईआ। धर्म दी रही ना कोए जमात, सति धर्म ना कोए रखाईआ। जो लिख के लेखा गुरु अवतार पैगम्बर आए क़लम दवात, कायनात

पई दुहाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले इक वारी मार झात, पर्दानशीं पर्दा आप उठाईआ। दीन दुनी दे वेख हालात, हालत सब दी दयां जणाईआ। धुर दा देवे कोई ना साथ, साचा संग ना कोए निभाईआ। मन कल्पणा जगत सुरती करे नाच, सुरत शब्द मेल ना कोए मिलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा जगत अन्धेरी रात, तेरा नाम नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। बेनन्ती कर के रही आख, सीस जगदीश तेरे क़दम टिकाईआ। तेरे उत्तों प्रभू सब दा गया विश्वास, विषयां विच कूड़ लोकाईआ। पुत्त पिउ दा करे घात, पूत पिता करे लड़ाईआ। जो अवतार पैगम्बर गुर गए आख, आख़र वेला दए दुहाईआ। प्रगट हो साख्यात, समरथ तेरी सरनाईआ। मैं निमाणी अनाथां अनाथ, दीनन तेरे अग्गे देवां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे परम पुरख परवरदिगार, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। साचा रिहा ना कोई ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव ना कोए कमाईआ। तेरे नाम दा चार कुण्ट चले तकरार, झगड़े विच दुहाईआ। मेरा अन्त अख़ीरी पूरा कर कौल इक़रार, इक़रानामे पिछले वेख वखाईआ। तेरा सचखण्ड सच्चा दरबार, दरगाह साची नज़री आईआ। हुक्म कर आपणी धार, जोती जाते आपणी दया कमाईआ। शब्दी हुक्म तेरा सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बरदे खड़े गुरु अवतार, पैगम्बर सीस निवाईआ। सब कुछ तेरे अख्त्यार, मुख्त्यारनामे सब दे वेख वखाईआ। मैं रो रो करां गिरयाज़ार, बिन नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं करदी रही इंतज़ार, समां समें नाल मिलाईआ। सो वक्त पहुंचया आण, मेहरवान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं उठ वेख मार के झाकी, पर्दा दयां उठाईआ। मेरा खेल होणा इत्तफाकी, जगत समझे ना कोए लोकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लहिणा देणा देवां बाकी, लेखा सब दे हथ्थ फड़ाईआ। झगड़ा रहे ना माटी ख़ाकी, तन वजूद ना वंड वंडाईआ। आत्म परमात्म बणा के साथी, सगला संग दयां निभाईआ। तूं मन्नी मेरी आखी, चलणा हुक्म रज़ाईआ। मैं चौदां तबक खोल्ह के ताकी, पर्दा अगला दयां उठाईआ। तेरे अन्त अख़ीर रहे कोए ना पापी, पतितां करां सफ़ाईआ। जन भगतां देवां पुश्त पनाह थापी, साचे सन्तां आप जगाईआ। शब्द अगम्मे घोड़े चढ़ के राकी, दो जहानां वेख वखाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चंद चमकाईआ। चार वरन अठारां बरन बणन इक जमाती, पुरख अकाल करे पढ़ाईआ। झगड़ा मिटे पृथ्मी आकाशी, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। साचे मण्डल पावे रासी, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। स्वामी हो के पुच्छां वाती, वातावरन बदले सर्ब लोकाईआ। खेले खेल बहु बिध भाती, पारब्रह्म प्रभ आपणी कल वरताईआ। दीन दुनी कर के दास दासी, धुर

८१४
२१

फ़रमाना इक सुणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक प्रगटाईआ। सदी चौधवीं प्रभ देवे धुर फ़रमाना, हुक्म संदेसा इक सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आत्म परमात्म जणावे इक्को गाणा, गहर गम्भीर आप दृढ़ाईआ। अमृत रस निझर धार देवे पीणा खाणा, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। साचा मन्दिर वखा मकाना, बिन दीया बाती कमलापाती निरगुण जोत करे रुशनाईआ। साचा शब्द सुणा अगम्मी धुनकाना, अनहद नादी नाद दए वजाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर लाशरीक बदल दए ज़माना, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म चार वरन होए तराना, तुरिया पद तों अगला पर्दा दए उठाईआ। सच सरोवर दस्से इक्को नहाणा, अठसठ लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दस्सां अगम्मा प्रेम, प्रीती इक दृढ़ाईआ। सृष्टी दृष्टी इक्को नेम, नियम इक समझाईआ। जो इशारा कीता गोबिन्द कुण्ट हेम, दुष्ट दमन समझाईआ। सो लेखा पूरा होणा ऐन, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मिटे अन्धेरी रैण, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लेखा पूरा करे लहिण देण, मक़रूज सब दा लेखा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी वेख वखाईआ। सदी चौधवीं उठ बलधार, बलधारी दए वड्याईआ। अन्त अख़ीरी वेख आपणी गुलज़ार, गुलशन जो महकाईआ । नाता तुट्टण लग्गा मुहम्मदी यार, चार यारी संग ना कोए निभाईआ। ख़िज़ां आउण वाली बहार, बसन्त आपणी रुत बदलाईआ। पूरा होण लग्गा इक़रार, इक़बाल दे के मुहम्मद गया जणाईआ। किसे दा चले ना कोए तकरार, झगड़े विच ना कोए खुदाईआ। भरोसा करना पए एतबार, बेएतबारी देणी गवाईआ। परवरदिगार दे सब कुछ इख़्त्यार, बेइख़्त्यारी करे लोकाईआ। अन्त अख़ीरी आई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हुक्मे अंदर सब नूं करना गिरफ्तार, बचया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सारे बैठे सीस निवाईआ।

✻ १० माघ शहिनशाही सम्मत ४ मल सिँघ दे गृह रजीवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

सदी बीसवीं कहे तूं मैथों निक्की, सदी चौधवीं तैनूं दयां जणाईआ। किस दवारिउँ तूं सिख्या सिखी, पर्दा देणा खुल्हाईआ।

मैं वेखदी रही आपणी मिती, कवण वेला मित्र प्यारा दए वड्याईआ। भरवासा इक्को उत्ते सिट्टी, सिट्टेबाज़ी तक्कां जगत लोकाईआ। दीन दुनी पुजारन वेखां पत्थर इट्टीं, जलधारा सीस निवाईआ। कोई धार नज़र ना आई चिट्टी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मैं दोहथ्थड़ मार के पिट्टी, बौहड़ी बौहड़ी कर अल्लाईआ। मेरा परवरदिगार मैनूं वखाउण लग्गा पुराणी चिठ्ठी, सच दवारिउँ आप उठाईआ। जिस नूं समझे कोई ना मुनी ऋषी, सन्त फ़कीर ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे सुण मेरी वड्डी भैण, भरम दयां गवाईआ। मैं तैनूं आई कहिण, सच संदेसा इक सुणाईआ। की हुक्म देवे नरायण, नर निरँकारा बेपरवाहीआ। जिस ने सारे छुडाए साक सैण, सज्जण आई तजाईआ। नाता तोड़ के भाई भैण, मीत मुरार ना संग रखाईआ। जगत वासना छड्ड के वहिण, भज्जी वाहो दाहीआ। इशारा कर बाल्मीक रमायण, जो राम दए गवाहीआ। सो वक्त पहुंचया ऐन, ऐनलहक़ नाल रलाईआ। मैनूं सबर ना आया चैन, बेसबरी विच कुरलाईआ। मुहम्मद कहि के गया खेल होणा विच हिन्दवायण, वाहिद खुदा आपणा डंक वजाईआ। ओस नूं तक्कां आपणे नैण, प्रतख रूप गुसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दए सरनाईआ। सदी बीसवीं कहे तूं अजे बाल अंञाणी छोटी, क्यों छुटकारा रही पाईआ। चढ़ के वेख अगम्मी चोटी, चोटी मुंनिआं खोज खुजाईआ। सब दी आसा दिसे खोटी, जो ईसा मूसा ध्यान लगाईआ। झगड़ा प्या जगत रोटी, रट्टे विच कुरलाईआ। जिस नूं लभदे कोटन कोटी, अणगिणत खोज खुजाईआ। जिस खेल खिलाया जञ्जू बोदी, मूंड मुंडाया वंड वंडाईआ। जिस भाग लगाया वेदी सोढी, बंस सर्बंस सुहाईआ। जो जगत नूं देवे रोज़ी, राज़क़ रिज़क़ रहीम नूर अलाहीआ। ओह मालक धुर दा चोजी, प्रीतम बण के खोज खुजाईआ। जो आदि जुगादी जोगी, जोगीशरां दए वड्याईआ। जो आत्म परमात्म भोगी, रस रसीआ नूर खुदाईआ। जो निरगुण धार संजोगी, जन्म मरन विच ना आईआ। जिस दी दो जहानां ओटी, गुर अवतार पैगम्बर सीस निवाईआ। जो सब नूं देवे सोझी, परदयां अंदर पर्दा खुल्लाईआ। जो लेखा जाणे चौदां लोकी, चौदां तबक करे रुशनाईआ। जो देवे साचा नाम सलोकी, धुर दा कलमा इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे तूं वेख आपणा बीसवीं सदी हाल, साल बसाला नाल रलाईआ। मैनूं गोबिन्द बच्चे गए सखाल, जो छोटे नीहां हेठ दबाईआ। मैनूं सुत्ती नूं गए उठाल, आलस निंदरा दिता गवाईआ। जिन पुच्छणा मुरीदां हाल, ओह मुर्शद बेपरवाहीआ। ओस दे अग्गे कर सवाल, निमाणी हो के सीस झुकाईआ। तेरा लहिणा देणा लेखा लए संभाल, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। कलयुग कूड़ी

क्रिया करे ज़वाल, जोरू ज़र ना कोए वड्याईआ। सब दे सिर ते कूके काल, डंक नगारा रिहा वजाईआ। परवरदिगार दीन दुनी दी बदल दे चाल, चाल निराली आपणे हथ्थ वखाईआ। झगड़ा मिटे काया माटी खाल, तत वजूद ना कोए लड़ाईआ। सो स्वामी लैणा भाल, जो मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी बीसवीं कहे तूं मैथों बाली अंञाणी, नन्ही मैनूं नज़री आईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं गोबिन्द कीता सुघड़ स्याणी, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं परवरदिगार सांझा यार ख़लक दा ख़ालक तक्कया हाणी, निरवैर निराकार नूर अलाहीआ। जो आबेहयात अमृत रस देवे ठंडा पाणी, सर सरोवर इक नुहाईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं चारे खाणी, चारे बाणी ना वंड वंडाईआ। जिथ्थे लेखा नहीं जीव प्राणी, साह साह ना कोए समाईआ । जो आदि जुगादि जोत नुरानी, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जिस दा पद इक निरबाणी, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ । जिस दी शास्त्र सिमरत अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी कथा कहाणी, गुर अवतार पीर पैगम्बर सोहले ढोले नगमे कलमयां विच सुणाईआ। सो करनी करता परम पुरख बण के जाण जाणी, जानणहार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

धुर दा वर, धर्म दुआरे दए वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं इक्को मँगी मँग, दर ठांडे सीस निवाईआ। मैं बाली नढ्ढी चाढ़ आपणा रंग, रंगत इक वखाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार सदा स्वामी रह संग, सगला संग निभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म वजा मृदँग, मर्द मर्दाने लै उठाईआ। मैनूं छोटयाँ बाल्लयां दस्सया ढंग, तरीका इक्को इक सुणाईआ। ओह साहिब सूरा सरबंग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जो शाहां करे तंग, राज राजाना ख़ाक मिलाईआ। सो बख्शणहार अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस ने मुहम्मद निशान बख़श्या तारा चन्द, चन्द तारा आपणा रंग रंगाईआ। ओह खेल करे विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खेल खिलाईआ। तेरा मेटे अन्तिम पन्ध, सफ़रां विच ना कोए भवाईआ। सदा स्वामी बण के संग, साथी इक्को नज़री आईआ। तेरा रंडेपा कटे रंड, जगत सुहागण लए वखाईआ। भगत सुहेले चाढ़ के जंञ, धुर दे संगी लए बणाईआ। वेखीं नेत्र नीर ना वहावीं हंझ, अथरूआं वहिण ना कोए वहाईआ। जिस ने शरअ शरायती ढाउणी कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ । दीन दुनी नूं दे के कंड, करवट आपणी लए बदलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक हुक्म दे कर पाबन्द, दीन मज़हब दा झगड़ा दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सृष्टी दृष्टी अंदर गाउणा छन्द, सोहँ ढोला सिफ्त सालाहीआ। झगड़ा मुकाउणा जमना गोदावरी सुरस्ती गंग, गंगोतरी धार ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज

शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त साहिब सुल्तान सूरा सरबंग, सर्ब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी तेरा मेरा मेरा तेरा लेखा लहिणा मेटे थाउँ थाईंआ।

❋ १० माघ शहिनशाही सम्मत ४ कपूर सिँघ दे गृह मोगा ज़िला फ़िरोज़पुर ❋

सदी चौधवीं कहे मैं दरगाह साची तक्कया इक अमाम, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। बिन तन वजूद शरीर अगम्मी कीती सलाम, निव निव सीस झुकाईआ। धुर फ़रमाना मिल्या कलाम, परवरदिगार दिता दृढ़ाईआ। हुण शरअ दी रहिणा नहीं गुलाम, गुरबत अंदरों देणी कढ्ढाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जपणा नाम, नाउँ निरँकारा इक समझाईआ। धुर संदेसा देणा अगम्म पैग़ाम, पैगम्बरां तों परे पढ़ाईआ। वखाउणा हक़ निशान, निशाने देणे बदलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करन वाला इंतज़ाम, बन्दोबस्त धुर दा दए समझाईआ। बेनज़ीर विगड़न ना देवे कोए नज़ाम, नौबत नाम आपणा हक़ सुणाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे शाम, शमांदान निरगुण जोत करे रुशनाईआ। सति स्वामी करे पहचान, बेपहचान वेख वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा देणा मिटाईआ। पुरख अकाला होवे मेहरवान, महबूब आपणी दया कमाईआ। झगड़ा मुका माटी चाम, अन्तर ब्रह्म इक समझाईआ। कूड़ी क्रिया करे ना कोए हराम, शरअ शैतान ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निरगुण दाता नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं दरगाह साची वेख्या नूर अलाह, मेहरवान मिहबान बीदो नज़री आईआ। जो आदि जुगादी बेपरवाह, पारब्रह्म वड वड्याईआ। जिस नूं जल्वागर किहा खुदा, खुद मालक शहिनशाहीआ। मैं उस दे अग्गे कीती दुआ, सीस क़दमां उत्ते टिकाईआ। मुहब्बत वाले दिलरुबा, मेहर नज़र इक रखाईआ। दीनां मज़हबां विच्चों कर रिहा, शरअ ज़ंजीर दिता तुड़ाईआ। धुर संदेसा दिता सुणा, अगम्म कर पढ़ाईआ। पुरख अकाल दा इक्को जपणा नाँ, दूजी अवर ना कोए शनवाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप वेखणा थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर बिआं, लेखा सब दा फोल फुलाईआ। लख चुरासी काया माटी वेखणा गराँ, अंदर वड़ के पर्दा लाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा तूं फिरना नाल चाअ, चाउ घनेरा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा नर नरेशा नर निरँकारा एकँकारा इक समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दरगाह साची चरण कँवल गई छूह, बिन मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मेरा नाअरा रिहा ना अल्ला हू, रीती आपणी गई बदलाईआ। जिधर वेखां तूंही तूं, गुर अवतार पैगम्बर ढोला गाईआ। मेरा

खुशी होया लूं लूं, रोम रोम वज्जी वधाईआ। मेरा सिफ्त करन वाला नहीं मूँह, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। जां तक्कया दो जहानां वेख्या इक्को गुरु, गुरदेव स्वामी पारब्रह्म नूर अलाहीआ। जिस ने सतिजुग साचा करना शुरु, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दरगाह साची इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दरगाह साची सच अमाम नूं गई झुक, क़दमबोसी कर के खुशी मनाईआ। अग्गों सुणी अगम्मी तुक, जिस मेरा तुख्म तासीर दिता बदलाईआ। मेरा पैंडा गया मुक, अग्गे क़दम ना कोए रखाईआ। मेरा उजल होया मुख, किरपा कीती बेपरवाहीआ। साचा मिल्या सुख, दकुखां डेरा ढाहीआ। जां तक्कया मेरा परवरदिगार निरगुण धार बदल के रुख़, गुर अवतार पैगम्बरां रुख़सत देवे थाउँ थाईंआ। महल अटल मुनार बैठा उच्च, उच्च अगम्म अथाह वड्डी वड्याईआ। जिथ्थे कोए ना सके पुज्ज, निउँ निउँ सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर आपणी कल वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या दरगाह साची दुआरा सचखण्ड, परवरदिगार दिता वखाईआ। जिथ्थे हिस्सा नहीं कोई वंड, दुतिया भाउ ना कोए जणाईआ। ढोला गीत नहीं कोई छन्द, सिफ्तां राग ना कोए सालाहीआ। दीन मज़हब दा नहीं कोई पाबन्द, ज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई सुर्या ना कोई चन्द, मण्डल मण्डप ना कोए वखाईआ। ना कोई गुर अवतार पैगम्बर ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी रखे संग, कलम शाही लेख ना कोए लिखाईआ। ना कोई मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ चार दीवारी दिसे कंध, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ना कोई मुरीद मुर्शद गुरु चेला मँगे मँग, झोली अग्गे कोए ना डाहीआ। जिधर वेखां निरगुण धार सूरा सरबंग, पुरख अकाला दीन दयाला नज़री आईआ। जो भेव खुल्ावे ब्रह्म हँ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। झगड़ा मेटे काया माटी चम्म, चमन गुलशन इक महकाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लेखा चुकाए खुशी ग़म, चिन्ता रोग दए गुआईआ। सच भण्डारा देवे नाम धन, अमुलड़ी दात आप वरताईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर इक जणाए ब्रह्म, पारब्रह्म प्रभ पर्दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सचखण्ड निवासी दरगाह साची इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दरगाह साची इक्को कीता सजदा, सीस स्वामी इक निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दा बरदा, दर घर बैठे सेव कमाईआ। फिर खेल वेख्या अगम्मे हरि दा, जो हर हिरदे डेरा लाईआ। जो मंज़ल आपणी चढ़दा, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। सन्त सुहेले सज्जण फड़दा, गुरसिख गुर गुर जोड़ जुड़ाईआ। निरअक्खर धार अगम्मा ढोला पढ़दा, जिस विच्चों अक्खरां वाली करे पढ़ाईआ। आदि जुगादि ना जम्मदा ना मरदा, निरगुण नूर जोत

रुशनाईआ। इश्नान करावे आपणे सर दा, सरोवर इक्को इक वखाईआ। भेव खुल्हा के धुर दे घर दा, गहर गम्भीर पर्दा दए उठाईआ। रूप जणा के नरायण नर दा, नर हरि आपणी कल वरताईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी जोत धरदा, जोती जाता पुरख बिधाता वड्ड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं कीती इक निमस्कार, नमो नमो सीस निवाईआ। प्रभू अग्गे सुणाई सच गुफ्तार, कीती अगम्म पढ़ाईआ। हुक्म दे सच्ची सरकार, संदेसा दिता सुणाईआ। जा के बोल इक जैकार, ढोला धुरदरगाहीआ। सृष्टी दृष्टी कर ख़बरदार, सोई सुरती मात उठाईआ। जीवो जंतो साधो सन्तो इक्को मन्नो पुरख अकाल, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ । काया काअबा साची धर्मसाल, शिवदवाला मन्दिर मठ एहो देणा समझाईआ। जिस गृह आत्म परमात्म दीपक जोती रिहा बाल, निरगुण नूर डगमगाईआ। शब्द अनाद साची देवे धुनकान, अनुरागी राग सुणाईआ। अमृत रस निझर देवे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी एको एक ओंकार श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा साचा मन्दिर हक़ मकान, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्मदुआरा इक्को इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं लाई चरण धूढ़, धुर दा टिक्का ख़ाक रमाईआ। मेरी सुरत ना रही मूर्ख मूढ़, चतुर सुघड़ दिती वड्याईआ। मेरा नाता तुट्टया कूड़ो कूड़, सच सुच मिली सरनाईआ। नज़री आया इक हज़ूर, जो हज़रत नूर अलाहीआ। मेहर निगाह नाल कर के मुआफ़ क़ुसूर, मुहब्बत आपणे विच बंधाईआ। अन्तर रिहा ना कोए ग़रूर, गुरबत दिती गुआईआ। मैनूं संदेसा दिता मेरा नाम कर मशहूर, मशवरा इक्को नाल पकाईआ। की होया जे मूसा जलवा तक्कया नूर, कोहतूर चमक चमक चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दरगाह साची गुर अवतार वेखे पैगम्बर, बिन परा पसन्ती मद्धम बैखरी प्रभ दा ढोला गाईआ। जिन्हां दा निरगुण धार होया स्वयम्बर, सचखण्ड कन्त रहे हंढाईआ। मालक मिल्या सर्ब गुणा भरतम्बर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जो लै गया सचखण्ड दुआरे मैनूं अंदर, जिस दी दिशा कूट वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई ताला ना कोई जंदर, हद्द समझ कोए ना पाईआ। फिर वखाई अगम्मी कंदर, जिथ्थे बिन सुर्या चन्द होए रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर ओथे सारे बैठे मँगण, ख़ाली झोलीआं अग्गे डाहीआ। दीन दयाला चाढ़े रंगण, अनडिठड़ा रंग रंगाईआ। नमस्ते कलमा सजदा डंडावत दस्से आपणी बन्दन, बन्दगी इक जणाईआ। दीन मज़हब दे पा के फंदन, तन्दन नाल जुड़ाईआ। करे खेल सूरा सरबंगण, हरि करता

वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि मालक इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं गुर अवतार पैगम्बर वेखे झुकदे, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जिन्हां दे पैंडे अन्तिम मुकदे, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। अग्गे लेखे होणे गोबिन्द सूरे पुत्त दे, पिता पुरख अकाल देवे वड्याईआ। पत्त फुल्ल मौलणे सतिजुग वाली रुत दे, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। कलयुग कूड़े लेखे रहिणे नहीं दुःख दे, दुखियां दर्द दए गुआईआ। झगड़े मुकाउणे मानस मानव मानुख दे, आत्म ब्रह्म देणा समझाईआ। डंके वज्जणे शब्द अगम्मी सुत दे, जो सुत्तयां लए जगाईआ। सन्त सुहेले वेखणे उठदे, जन भगत लैण अंगड़ाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ दे भाणे कदे ना रुकदे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नाअरे जैकारे लग्गणे इक्को तुक दे, जो तुरिया तो परे मेला दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वणज कराए साचे नाम सलोक दे, सुलाहकुल आप प्रगटाईआ।

जन भगतो तुहाडे सीस सोहे दस्तार, दस्त प्रभ दे नाल मिलाईआ। तुहाडे अंदर होवे गुफ्तार, गुफ्त शनीद करे पढ़ाईआ। तुसीं ओस प्रभू दे यार, जो आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। कलयुग विच हो के ख़बरदार, आपणी लैणी आप अंगड़ाईआ। तुहाडा मेला नाल ओस निरँकार, जो निरगुण नूर जोत अलाहीआ। सच मुहब्बत विच बणयो बरखुरदार, अज़ीज़ अज़ीज़ां रूप बणाईआ। माणस जन्म ना आवे हार, जूनी जून ना कोए भवाईआ। दरगाह साची सचखण्ड मिले दुआर, जिथ्थे दुआरकावासी बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। दस्तार कहे मैनूं कहिंदे पगड़ी, जगत रीती चली आईआ। मैं जगत वड्याई विच गई जक्कड़ी, आबरू दुनी वाली वधाईआ। मंज़ल चढ़ ना वेखी सिखरी, अन्तश्करन ना कोए बदलाईआ। मैं सुणया मुहम्मद दा सम्मत ख़तम होणा हिजरी, हिजर वाले गुरमुख वेखां चाँईं चाँईंआ। जिन्हां दा नाता अन्तर इक जिगरी, लख्तेजिगर प्रभ दे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो तुसां कढ्ढे पग्गां दे तुरले, तुरिया तों परे तुहाडी चढ़ाईआ। ज़रा हाल सुण लओ मुढले, पिछला लेखा दयां जणाईआ। जेहड़े भेव रखे प्रभ गुंझले, गंढ्ढ ना कोए खुल्हाईआ। जिस वेले गोबिन्द बाज़ टिकाया आपणी उँगले, ओस वेले ज़िमीं असमान होए सी धुंदले, सुर्या आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे एह पगड़ी नहीं ना एह

पटका, ताणा पेटा सूत ना कोए वड्याईआ। एह कोई रूप नहीं क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश झीवर छींबे नाई जट्ट का, तत वजूद ना कोए वड्याईआ। एह कोई वणज व्यपार नहीं जगत वणजारे हट्ट का, क़ीमत कहिण कोए ना पाईआ। एह माण वड्याई गुरमुखो जो गुर गोबिन्द लाज रखदा, दूसर सीस ना कोए झुकाईआ। तुहाडे सिर ते पुरख अबिनाशी पग्गड़ी ओह रखदा, जिस नूं गोबिन्द पग गया छुहाईआ। अज्ज तों बाद तुहाडा मेला सदा होवे शाह रग दा, निरगुण नूर दए चमकाईआ। झगड़ा कूड़ मेट के जग दा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। एह खेल वेखो सच दा, सच मेला लए मिलाईआ। जो जुग जुग पैज रखदा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो मैं वेख्या धुर दा कमलापती, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस दा नाम भोरा जुग जुग मिलदा रती, रतन अमोलक हीरे दए बणाईआ। जिस ने तुहाडे अंदर जगाई मोमबत्ती, आत्म ब्रह्म कीती रुशनाईआ। ओस दा घर घराना वड्डा सचखण्ड दुआरा धुर दी हट्टी, हटवाणा इक्को सोभा पाईआ। जिस दे कोलों गुर अवतार पैगम्बरां पढ़ी पट्टी, पटने वाला गया समझाईआ। नानक दे लेख भेव खुलाउँदे जुग छत्ती, छत्तीसा राग दए दुहाईआ। मुहम्मद जणा के गया धार तीस बत्तीसा बत्ती, बावन वंड ना कोए वंडाईआ। सो साहिब सतिगुर लहिणा देणा सब दा चुकावे हथ्थो हथ्थी, लेखा अवर ना कोए रखाईआ। सतिगुर शब्द होवे सर्ब पक्खी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चढ़ गई उत्ते चोटी, थल्ले चोटयां वेख वखाईआ। जन भगतो अग्गे किसे नूं लभदी नहीं रोटी, सुक्का टुकड़ा हथ्थ किसे ना आईआ। सच दुआरे इक्को नूर ते इक्को जोती, जोती जोत जोत विच समाईआ। तुसीं उस प्रभू दे गोती, जिस दा वरन बरन वंड ना कोए कराईआ। उह ठाकर स्वामी आदि जुगादी धुर दा मौजी, रविदास चमारा दए गवाहीआ। सच दुआरे देवे सोझी, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। उस दे हथ्थ विच सब दी रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम नूर अलाहीआ। वेख्यो रोटी पिच्छे किसे दे बणयो ना दोखी, दुखियां दा दर्द लैणा वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म निरगुण धार निरवैर देवे पारब्रह्म ब्रह्म धार दी सोझी, मन मति बुद्धी तों परे आपणा भेव खुल्हाईआ।

✻ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह पिंड बधनी ✻

सदी चौधवीं कहे मैं दरगाह साची मुकामे हक़ पुज्जी, सचखण्ड दुआरा वेख्या चाँईं चाँईंआ। नेत्र रो के किहा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेरी औध मुकी, परवरदिगार सांझे यार तेरी बेपरवाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा उम्मत पलीत होई बुद्धि, पाक रसूल तेरा पाक नूर नज़र कोए ना आईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी खेल करें चौंह जुगी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी कल वरताईआ। चौदां तबक मैं फिर फिर हो गई बुड्डी, हड्ड मास नाड़ी अन्तिम कम्म किसे ना आईआ। सीर रिहा ना कोई दुध्धी, अक़ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी दर तेरे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं दरगाह साची मुहम्मद निरगुण धार वेख्या दिलगीर, ईसा मूसा नाल मिलाईआ। नज़र आया ना कोए पीर, सूफ़ी सीस ना कोए उठाईआ। सचखण्ड दुआरे सारे वेखे हकीर, शहिनशाह इक्को नूर अलाहीआ। जिस दा रूप रंग रेख दस्स सक्कया ना कोए तस्वीर, मुसव्वर तसव्वर कर ना कोए दृढ़ाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला चोटी चढ़ के बैठा इक अख़ीर, एकँकारा पारब्रह्म प्रभ आपणा आसण लाईआ। जिस ने दीन मज़हब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक शरअ बणाई ज़ंजीर, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई लोकमात वंड वंडाईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर सारे पढ़दे तकबीर, तक़दीर दा मालक नूर अलाहीआ। सो लेखा जाणे शाह हकीर, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म खोज खुजाईआ। जिस दा खेल अनोखा होणा बेनज़ीर, जग नेत्र लोचन नैण वेखण कोए ना पाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक आदि जुगादी गहर गम्भीर, बेऐब नूर खुदाईआ। सो सतिजुग साची बणा रिहा तदबीर, तरीका ढंग साधन लोकमात ना किसे जणाईआ। निउँ निउँ झुकदा बिन तन सरीर वेख्या कबीर, जो काअबे तों बाहर वेखे नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद अंदर वेखी हैरानी, हैरत विच ध्यान लगाईआ। मेरी शरअ होई बेगानी, जिस्म ज़मीर ना कोए वड्याईआ। चार कुण्ट दह दिशा जूठ झूठ तुग्यानी, कलयुग वहिण रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं हर हिरदे होए परेशानी, परमानंद ना कोए समाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, पढ़ पढ़ पुस्तक ढोले सारे रहे गाईआ। लेखा मुक्कण लग्गा गोबिन्द सुत दुलारे क़ुरबानी, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। वरन बरन ज़ात पात वधी बेईमानी, बेवा रूप दिसे लोकाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआरे गुर अवतार पैगम्बर सारे तक्कण रहिबर तेरा राह निगाहबानी, नर निरँकार तेरे हथ्थ वड्याईआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती आबेहयात देवे कोए ना पाणी, अठसठ

तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र रोवे मारे धाईंआ। कलयुग जीव शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान पढ़ पढ़ थक्के बाणी, अन्तर आत्म निरंतर पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट दह दिशा झगड़ा प्या चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरा रंग ना कोए रंगाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलाए ना कोए जीव प्राणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला रागां नादां रसना जिह्वा सृष्टी रही गाईआ। तूं साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादी वेखणहारा खेल दो जहानी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल खिलाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले अन्त अख़ीर बेनज़ीर सदी चौधवीं कर मेहरवानी, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद चार कुण्ट मारे निगाह, बिन नैणां नैण उठाईआ। लोकमात विच्चों मेरा कलमा होणा विदा, कायनात रिहा सुणाईआ। परवरदिगार सांझे यार धुर दे अमाम मार्ग दस्सणा सिध्धा, चार वरन अठारां बरन इक्को रंग रंगाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ मसीत इक्को होवे जगह, तन वजूद माटी ख़ाक वंड ना कोए वंडाईआ। दीन दुनी बदल देवे तबअ, तबीअत शरीअत जगत विकार डेरा ढाहीआ। सति धर्म दी इक्को होवे सभा, सच स्वामी निरगुण दाता आपे वेख वखाईआ। रसना रस अमृत देवे धुर दी मधा, नाम खुमारी इक चढ़ाईआ। जन भगतां दर्शन देवे उपर शाह रगा, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा धुर दा हरि, दर ठांडा खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद संदेसे विच रिहा दस्स, अगम्म आवाज़ सुणाईआ। मेरा रिहा कुछ ना वस्स, वास्ता प्रभ दे नाल जुड़ाईआ। अन्त अख़ीर मेरा दे दे हक़, हक़ हक़ीक़त वेख नूर अलाहीआ। मेरी उम्मत बणी चोर यार ठग, ठगौरी घर घर नज़री आईआ। झगड़ा प्या मास नाड़ी हड्ड, तन वजूद करे लड़ाईआ। साचा मार्ग मुल्ला शेख़ मुसायक गए छड्ड, काया काअबा नज़र किसे ना आईआ। दरोही दरोही दरोही मेरी रही कोई ना हद्द, हद्द आपणी दे समझाईआ । परवरदिगार धुर दे यार गुर अवतार पैगम्बर असीं सारे तेरी नूरी यद्द, नूर नुराने नूर नूर कर रुशनाईआ। चार कुण्ट दह दिशा उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख लग्गी अग्ग, त्रैगुण माया पंज तत अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। मेहरवान महबूब प्रगट हो विच जग, जागरत जोत बिन वरन गोत कर रुशनाईआ। तूं सर्ब कला समरथ, आदि जुगादि तेरे हथ्थ, जुग चौकड़ी चलावें रथ, गुर अवतार पैगम्बर तेरे चरण कँवल रहे ढठ्ठ, दर ठांडे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी जीव जंत अन्तर आत्म परमात्म आपणा

दे अगम्मी रस, जिस रस नूं रसना जेहवा चख कोए ना पाईआ।

❋ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ४ सुखराम दे गृह पिंड चक्र ❋

मुहम्मद चौदां तबक वेखे नाल इतफ़ाक़, आप आपणी अक्ख उठाईआ। चारों कुण्ट दिसे नफ़ाक, मुहब्बत हक़ ना कोए कमाईआ। दीन मज़हब करे फ़साद, ज़ात पात जगत लड़ाईआ। धुन आत्मक सुणे ना कोए आवाज़, रसना जेहवा ढोले सारे गाईआ। हक़ खुदा होया नाराज़, धुर दा प्रेम ना कोए बणाईआ। अन्तर आत्म पर्दा खोल्हे ना कोए आग़ाज़, पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मन मनसा घर घर करे नाच, कलयुग नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। सति धर्म वस्त अमोलक रही कोई ना साच, जूठ झूठ जगत कुड़माईआ। हउमे हंगता लग्गी आंच, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। आत्म परमात्म मेला मिले ना कमलापात, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दरस देवे ना किसे साख्यात, सति सरूपी शाहो भूपी नज़र किसे ना आईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर होई अन्धेरी रात, निरगुण नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। चार वरन अठारां बरन बणाए ना कोई इक जमात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश भेव ना कोए खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पढ़े कोई ना गाथ, अल्ला वाहिगुरु राम नाम जगत पई लड़ाईआ। सोई सुरती तन वजूद माटी ख़ाक किते ना रही जाग, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। त्रैगुण माया लग्गी आग, दीन दुनी रही जलाईआ। की करे खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। मुहम्मद कहे मैं वेख्या माटी ख़ाक, धरनी धरत धवल धौल ध्यान लगाईआ। मित्र प्यारा दोसत रफ़ीक रिहा कोई ना साक, सज्जण संग ना कोए बणाईआ। हँस बुद्धी कलयुग जीवां होई काग, कूड़ कल्पणा विच कुरलाईआ। दुरमति मैल धोए कोई ना दाग़, पतित पुनीत रूप ना कोए वटाईआ। सति धर्म होया अपाहज, कलयुग कूड़ आपणा डंक वजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कोई ना देवे साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी रसना जेहवा बत्ती दन्द पढ़दे गाथ, अन्तर आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। दीन दुनी जगत विकारे विकी हाट, धुर दा नाम वणज ना कोए जणाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक सुख मानण सेजा खाट, आत्म सेजा आसण सिँघासण ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सदी चौधवीं तेरा लेखा दए चुकाईआ। मुहम्मद कहे मेरा लेख बिन क़लम

शाही लिख्त, कागज़ दए ना कोए गवाहीआ। पैगम्बर अवतारां दस्सया भविख्त, गुरु गुरदेव देण गवाहीआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दा इक्को करे इष्ट, पुरख अकाला इक्को नजरी आईआ। दीन दुनी दी खोल्हे दृष्ट, अन्तर पर्दा आप चुकाईआ। मन विकार बुद्धी मलीण ना होवे भृष्ट, साची सिख्या इक समझाईआ । झगड़ा मुका के दोज़ख़ बहिश्त, स्वर्ग स्वर्गा पन्ध चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद की रिहा सोच, सोच विच ना कोए वड्याईआ। हक़ खुदा रख उट, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जो लख चुरासी आत्म परमात्म जगावे जोत, हर घट अंदर निरगुण नूर करे रुशनाईआ। सो तेरा लहिणा देणा चुकावे चौदां तबक चौदां लोक, परलोक आपणा हुक्म मनाईआ। सतिजुग सति धर्म दी धारा इक सुणावे हक़ सलोक, सोहला ढोला इक अलाहीआ। जो सृष्टी दृष्टी करे मोहत, मन कल्पणा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे हज़रत की अन्तिम करें विचार, विचर के दे जणाईआ। करे खेल परवरदिगार, पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। जिस दी भविख्तां विच करदे रहे इंतज़ार, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। कल कल्की इक अवतार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस नूं झुकदे पैगम्बर गुरु अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी वस्से सचखण्ड दुआर, मुकामे हक़ सोभा पाईआ। जिस दा शब्द गुरु आदि जुगादि जुग चौकड़ी बन्ने धार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल खिलाईआ। सो करनी दा करता करता पुरख होवे उज्यार, जोती जाता पुरख बिधाता आपणी जोत करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप पावे सार, महासार्थी आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे तेरा मेरा पैंडा रिहा मुक, अन्त अख़ीर गया आईआ। उम्मत बूटा जाणा सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच दस्सणी इक्को तुक, तुख्म तासीर देणा बदलाईआ। इक्को रंग रंगाउणे मानस मानुख, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए रखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सारे जाणे झुक, डंडावत बन्दना सजदा इक्को इक समझाईआ। दीन दुनी ज़ात पात राउ रंक क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बदल दए रुख़, आत्म परमात्म परमात्म आत्म भेव दए खुल्हाईआ। जन भगत सुहेले गुर गुर चेले प्रगट करे आपणे सुत, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण दाता सहज सुखदाईआ। मुहम्मद कहे मैं अन्तिम रिहा तक्क, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। की खेल करे पुरख समरथ, मेरा मालक नूर अलाहीआ। किस

८२६
२१

बिध सदी चौधवीं तेरा पूरा करे हक़, हक़ हक़ीक़त खोज खुजाईआ। सतिजुग साचा मार्ग देवे दस्स, दह दिशा कर पढ़ाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेटे मस, धर्म दा चन्द इक चमकाईआ। जन भगतां निज नेत्र खोल्हे अक्ख, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। शब्द नाद सुणाए अनहद, धुन आत्मक राग अलाहीआ। निझर झिरना अमृत रस बूँद स्वांती देवे झट्ट, कँवल नाभी आप उलटाईआ। निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, काया मन्दिर अंदर हक़ रुशनाईआ। लेखे लावे पवण स्वास, साह साह आपणा नाम जपाईआ। मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन सुरती शब्द रूप बदलाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाला दीन दयाला हर घट अंदर रखे वास, अन्तर निरंतर मेला मेले सहज सुभाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दे उत्ते रख के बैठे विश्वास, जुग चौकड़ी बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेखणहारा ब्रह्म ब्रह्माद पारब्रह्म प्रभ आपणी खेल खिलाईआ।

❊ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ४ दरबारी दास दे नाल पिंड लोपो ❊

८२७
२१

अकाल पुरख दी उस्तत सदा ठीक, जो ठाकर धुरदरगाहीआ। जुग जुग लोकमात मेटे अन्धेरा तारीक, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। निरवैर निराकार निरँकार सदा रहे लाशरीक, शिरकत विच कदे ना आईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे हथ्थ रखे तौफीक़, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गुर अवतार पैगम्बर सन्त सूफ़ी फ़कीर करदे ताअरीफ़, सिफ्तां विच सोहले ढोले रागां नादां नाल सुणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घटनिवासी पुरख अबिनाशी हर घट काया मन्दिर अंदर वस्से नज़दीक, आत्म सेजा सच सिँघासण सोभा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म दस्से सच प्रीत, प्रीतम हो के मेला मेले सहज सुभाईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। सो ख़ालक प्रितपालक निरगुण नूर जोत अनडीठ, करनी दा करता धुर दा मालक आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिस दवारिउँ जुग चौकड़ी सारे मँगदे भीख, भिखक हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी साची करनी कार कमाईआ। साचे ठाकर दी सदा सिफ्त सालाह, महिमा अक्खरां नाल वड्याईआ। जो आदि अन्त जुगा जुगन्त दो जहानां मलाह, बेड़ा लख चुरासी आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां नाम कलमा दए सिखा, भेव अभेदा अछल अछेदा आप खुल्हाईआ। जिस नूं रसना जिह्वा बत्ती दन्द

सारे रहे गा, गावत गा गा खुशी मनाईआ। सो करनी दा करता क़ुदरत दा मालक ख़लक दा ख़ुदा, ख़ुदी तक्ब्बर डेरा ढाहीआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर कदे ना होवे जुदा, जुज़ वखरा वंड ना कोए वंडाईआ। जिस दी मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठां विच करदे दुआ, गुरुदुआर बहि के मँग मँगाईआ। ओस दी महिमा तों बिना होर केहड़ा राह, कवण राग मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी सिफ्त दा नाद धुन आत्मक राग दए सुणा, शब्द अगम्मी आवाज़ लगाईआ। सच ठाकर दा शब्दी साचा गीत, अक्खर सिफ्तां नाल वड्याईआ। जिहदी आदि अन्त इक हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। नानक निरगुण कर के गया तस्दीक़, गोबिन्द शहादत इक भुगताईआ। जो सचखण्ड दुआरे दा वसनीक, वास्ता लख चुरासी नाल जुड़ाईआ। आत्म परमात्म रखे प्रीत, प्रीतम हो के वेख वखाईआ। सब दे वस्से बीच, भीतर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आसा मनसा जन भगतां सन्तां सदा पूरी करे उम्मीद, आमद विच खुशामद विच रहमत आपणी आप कमाईआ। सूफ़ी सन्तां फ़कीरां नूं दस्स के आपणा अगम्मी इश्क, इश्क आपणा इक दृढ़ाईआ। अंदरों खोल्ह के दृष्ट, मंज़ल बामंज़ल पन्ध दिता मुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्मा परमात्मा दा साचा गृहस्त, दूजा पल्लू ना कोए फड़ाईआ। झगड़ा मुका के स्वर्ग बहिश्त, सच दुआरा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणी कल वरताईआ। गुरमुख दी रसना कहे शाबाश, शाबाश देण वाला इक्को बेपरवाहीआ। जिस दे कोल आदि जुगादि जुग चौकड़ी दी वस्त ख़ास, नाम भण्डारा सब नूं रिहा वरताईआ। अवतार पैगम्बर गुरु जिस दे दासी दास, सेवक सेवक रूप जणाईआ। जिस दा खेल उपर पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर आपणा रंग रंगाईआ। हर घट अंदर निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, आत्म ब्रह्म आपणा नूर चमकाईआ। शब्द नाम धुन देवे स्वास स्वास, अनडिठ आपणा राग अल्हाईआ। जन भगत सुहेले सद रखे आपणे साथ, जुग जुग आपणा मेल मिलाईआ। जिस दा सिमरन जिस दी पूजा जिस दा अभ्यास जिस दा करदे पाठ, पाठशाला साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर दए वखाईआ। जिथ्थे अमृत रस निझर मारे ठाठ, बूँद बूँद विच्चों टपकाईआ। बिना साचे सन्तां तों रस कोई ना सके चाट, सो चट्टे जो चेटक बाहर दा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची मंज़ल सच दुआर ते दस्से धुर दा आपणा घाट, जिथ्थे घाटी होर ना कोए रखाईआ।

✻ ११ माघ शहिनशाही सम्मत ४ गुरदयाल सिँघ दे गृह रामूवाला ✻

सदी चौधवीं कहे परम पुरख दी होणी इक्को पूजा, सतिजुग साचे सच मिले वड्याईआ। दुतिया भाउ रहे कोई ना दूजा, मानव मानव वंड ना कोए वंडाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर भेव खुल्ल्हे गुज्झा, निरगुण सरगुण परदा दए चुकाईआ। कँवल नाभी अमृत करे मूधा, निझर झिरना इक झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं प्रभ धर्म वजाउणा डंका, चार कुण्ट शनवाईआ। सहाउणा इक बंका, गृह मन्दिर वेख वखाईआ। माण गवाउणा राउ रंका, ऊँच नीच ना कोए लड़ाईआ। गढ़ तोड़ना हउमे हंगता, हँ ब्रह्म देणा पढ़ाईआ। चार वरन बणाउणी साची संगता, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश अक्ख ना कोए उठाईआ। बोध अगाधा इक्को बणना पंडता, निरअक्खर दए समझाईआ। मन कल्पणा मेटे कूड़ी चिन्ता, रोग सोग डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ दस्सणा इक तरीका, धर्म दी धार जगत दृढ़ाईआ। चरण प्रीती बख्श प्रीता, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लैणा मिलाईआ। सृष्टी दृष्टी बदल के नीता, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। साचा कलमा दस्स हदीसा, हज़रत हो के दए समझाईआ। लहिणा देणा चुकावे मुहम्मद मूसा ईसा, सदी बीसवीं नाल सुहाईआ। जन भगतां चाढ़े रंग मजीठा, जुग चौकड़ी उतर कदे ना जाईआ। खेल वखाए अगम्म अनडीठा, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर दया कमाईआ। सतिजुग ला के विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी हुक्म दए सुणाईआ। हुक्म दे के तेई अवतारा, ईसा मूसा मुहम्मद नाल मिलाईआ। नानक गोबिन्द कर उज्यारा, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। कल कल्की इक अवतारा, अमाम अमामा नूर खुदाईआ। दो जहान बण सिक्दारा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म मनाईआ। ज़िमीं असमानां लाए अखाड़ा, आत्म परमात्म गोपी काहन नचाईआ। शब्दी धार बोल जैकारा, दो जहान करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ करे खेल अगम्म, हरि करता वड वड्याईआ। झगड़ा मेटे काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। हउमे हंगता कूड़ी क्रिया मेट के ग़म, नाम धुर दा इक सुणाईआ। जो पवण स्वासी चले तन, वजूद मिले वड्याईआ। खेल करे श्री भगवन, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण नूर चाढ़ के चन्न, कलयुग अन्ध अन्धेर

दए गवाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ मेटे कलयुग अन्धेरी रात, निरगुण नूर नूर कर रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरी करे ख़ाहिश, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ । लहिणा देणा मुकाए पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर लेखा देवे थाउँ थाईंआ। साचे मण्डल पावे रास, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। लख चुरासी लहिणा देणा वेखे डूँघा खात, जुग चौकड़ी पूरब फोल फुलाईआ । जन सन्त सुहेले लख चुरासी विच्चों कर तलाश, भगत भगवान मेल मिलाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर करे हुक्म पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। सति धर्म दा साचा खोलू हाट, दुआरा इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। सदी चौधवीं कहे करे खेल मेरा भगवन्त, हरि भगवन वड वड्याईआ। जो आदि जुगादी धुर दा कन्त, कन्त कन्तूहल सोभा पाईआ। जिस दा नाम अगम्मा मणीआ मंत, निरगुण सरगुण करे सच पढ़ाईआ। लेखा जाणे लख चुरासी जीव जंत, साध सन्त फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं कूड़ी क्रिया करे अन्त, अन्तश्करन वेखे ख़लक खुदाईआ। सति धर्म दी बणावे साची बणत, घड़न भन्नूणहार आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा एकँकारा इक्को इक सुहाईआ। सदी चौधवीं कहे की खेल करे मेरा पुरख निरँजण, हरि करता वड वड्याईआ। जो आदि जुगादि दर्द दुःख भय भंजन, भवसागर पार कराईआ। साचे नाम दा देवे अंजन, निज नेत्र करे नूर जोत रुशनाईआ। त्रैगुण माया मिटे अगन, अमृत मेघ इक बरसाईआ। चरण धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल धुआईआ। भगत सुहेला बण के सज्जण, हरिजन साचे लए उठाईआ। इक डंडावत दस्स के बन्दन, सजदा इक्को इक समझाईआ। चार वरन ला के अंगन, अंगीकार आप हो आईआ। शब्दी डोरी बन्ने तन्दन, शरअ ज़ंजीर जगत तुड़ाईआ। खेले खेल विच वरभण्डन, ब्रह्मण्डन वेख वखाईआ। लेखा जाण जेरज अंडन, उत्भुज सेत्ज लहिणा दए मुकाईआ । सो साहिब स्वामी पुरख अकाल दीन दयाल सूरा सरबंगन, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार अगम्मी नूर नुराना चन्दन, चन्द सुर्या जिस नूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सीस निवाईआ।

८३०

२१

✻ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ४ हरदयाल सिँघ दे गृह पिंड रामूवाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

ईसा कहे सदी चौधवीं सचखण्ड दुआरे हो जा सिट्ट, सिटीज़न वेखे ख़ालक ख़लक खुदाईआ। शब्दी चोट लगावे

अगम्मी हिट्ट, हेट वधी कूड़ लोकाईआ। चौदां तबकां डूँघा खात वेख पिट, किनारा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण धार पढ़ चिट, जिस ने अलिफ़ ये ए बी सी डी वंड ना कोए वंडाईआ। लख चुरासी जन्म कर्म करनी किरत दी वेखे किट, कर्म धर्म फोल फुलाईआ। धुर फ़रमाना सच संदेसा देवे जिस दी अग्गे करे कोई ना रिट, रिटायर गुर अवतार पैगम्बर दए कराईआ। जो जुग जुग सिफ्ती नाम लै के लोकमात हुक्मे अंदर लाउँदे रहे ट्रिप, दीनां मज़हबां वंड वंडाईआ। अन्तिम सब दे कोलों आपणे हुक्म दी लैण लग्गा सलिप, दस्तबरदार करे नूर अलाहीआ। पारब्रह्म ब्रह्म धार निरवैर आपणा चलाए शिप, शाप जगत दूजी नज़र कोए ना आईआ। तेरे अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब नूं करे चिक, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। लेखा रहिण ना देवे कोई बाकी इट, ऐट ऐंड आऊट वंड ना कोए वंडाईआ। धुर फ़रमाना नाम अगम्मा हर हिरदे करे फ़िट, पारब्रह्म प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे हज़रत मैं पुराणी थक्की, थकावट विच आईआ। उम्मत विच फिर फिर अक्की, आक़बत दा पर्दा ना कोए उठाईआ। चार कुण्ट दह दिशा नस्सी, भज्जी वाहो दाहीआ। मसीह मैनूं सच गल्ल किसे ना दस्सी, मसल्यां वाली वेखी लोकाईआ। मैं निगाह मारी जूनी चार लख अस्सी, चुरासी खोज खुजाईआ। सारी मन ममता कल्पणा विच फसी, फाँसी गलों ना कोए तुड़ाईआ। योद्धा सूरबीर बहादर कोई ना दिसे हठी, तपीआ तप ना कोए कमाईआ। चार वरन जूठ झूठ अंगिआर दी तपे भट्ठी, भठियाला कलयुग अगनी डाहीआ। साचा नाम किसे तन वजूद ना लम्भया रती, रतन अमोलक हीरा जन्म ना कोए वखाईआ। चौदां तबक फिर के मैं ज़िमीं असमानां विच खिड़ खिड़ हस्सी, ताली हथ्थां नाल वजाईआ। लेखा चुक्या मुहम्मद लहिणा मुक्कण वाला यसू मसीह, मुसाहिब साहिब नज़र कोए ना आईआ। जिस दे गल विच पाई रस्सी, फाँसी तख़्तयां उत्ते लटकाईआ। उस दी रहिणी अन्त नहीं हट्टी, जगत वणज ना कोए वखाईआ। परवरदिगार सब दी डोर रिहा कटी, नाम कटाकश तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा मुकावे ओस राम जो बनबास कटदा रिहा पंचबटी, बटे सब दे दए बदलाईआ। सदी चौधवीं कहे मसीह कुछ अगला वेख मसाइल, मसर्रत विच दयां जणाईआ। जिस दे उत्ते सारे हुंदे काइल, क़ाइम मुकाम बैठा धुरदरगाहीआ। उहदे भगतां दी फ़ैमली रॉयल, रहिबर इक्को नज़री आईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां करे मोबाइल, हुक्मे अंदर दीन दुनी चलाईआ। ओह तेरा लेखा जाण ना देवे ज़ाइल, ज़ाहर हो के आपणा हुक्म वरताईआ। जीव जंत सब दे निरंतर वेखे अमाइल, अमल खोजे ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सदी

चौधवीं कहे मसीह सुण अगम्मी आवाज़, बिन कन्नां रिहा सुणाईआ। जिस दे उत्ते सब नूं नाज़, नर नरायण धुरदरगाहीआ। ओह खोल्हण लग्गा आग़ाज़, पर्दा रिहा चुकाईआ। जिस मेरी खोल्ही जाग, निंदरा दिती तजाईआ। मैं चौदां तबकां छड्ड के आई साक, नाता सज्जणां नालों तुड़ाईआ। सचखण्ड दुआरे आ के सुणया इक वाक्, तूं मेरा मैं तेरा ढोला जो सुणावे बेपरवाहीआ। जिस ने दीन दुनी सब दा कराउणा इतफ़ाक़, इतफ़ाक़ीआ आपणी खेल खिलाईआ। दीन मज़हब दा रहिण ना देवे निफ़ाक़, मार्ग इक्को इक समझाईआ। आपणा टाईम वेख की वक्त होया उपर कलाक, टिक्क टिक्क कवण आवाज़ सुणाईआ। सब नूं मिलण लग्गा तलाक, अगला संग ना कोए बणाईआ। की हालत होवे दीन दुनी माटी ख़ाक, वरभण्डी भंडी रिहा पाईआ। ओधर मूसा वेख होया उदास, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। शिवजी भज्जा फिरे उपर कैलाश, दिवस रैण नट्ठ वाहो दाहीआ। ब्रह्मा चारों कुण्ट वेखे कवण करे प्रकाश, प्रकाशत नूर अलाहीआ। विष्नूं आपणी खोल्ह के आंख, बिन अक्खां राह तकाईआ। अबिनाशी करता लेखा जाणे सब दा आप, पारब्रह्म प्रभ आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे जिस मेरा थापण दिता थाप, थपकी दे के आपणी गोद सुआईआ। पैगम्बरो तुहाडी उम्मत विच वेखे वध्या पाप, पाक पाकीज़ा नज़र कोए ना आईआ। कायनात होई गुस्ताख़, गुस्से विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडे सब दे पूरे करे भविख्त वाक्, पेशीनगोईआं चिहमेगोईआं विच रहिण कोए ना पाईआ।

❊ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ४ गुरबलविंदर सिँघ दे गृह पिंड चड़िक ज़िला फ़िरोज़पुर ❊

सदी चौधवीं कहे सुण हज़रत ईसा, मसीह मसला दयां जणाईआ। मुहम्मद दा ख़ाली होया ख़ीसा, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। आपणा सम्मत वेख बीसा, बीसवीं सदी दए गवाहीआ। की करे खेल जगदीशा, जगदीशर आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी दी बदल गई नीता, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा प्या मन्दिर मसीता, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। सूफ़ी सन्त फ़कीर रिहा ना कोए अतीता, त्रैगुण डेरा कोए ना ढाहीआ। मन होए ना किसे ठांडा सीता, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। नेत्र रोवे अठारां अध्याए गीता, वेद पुराण शास्त्र रहे कुरलाईआ। अञ्जील क़ुरान दस्से हाल बीता, बेवतन होई लोकाईआ। प्यार रिहा ना ऊँचां नीचां, ज़ात पात रही कुरलाईआ। सति धर्म दा दिसे ना कोए बाग़ीचा, फुल्ल फुलवाड़ी सच ना कोए महकाईआ। भरम प्या हस्त कीटा, शाह सुल्तान देण दुहाईआ। छत्र झुल्ले किसे ना सीसा, शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। मन कल्पणा तपे अंगीठा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। अन्त वक्त होया पेचीदा, पेच गंढु ना कोए

खुल्हाईआ। गुर अवतार पैगम्बर होए रंजीदा, ग़मी ग़मख़ार ना कोए मिटाईआ। साचा रस मिले किसे ना सीधा, आत्म रस ना कोए चखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त लख चरासी जीव जंत वेखे आसां उम्मीदां, हर घट अन्तर निरंतर हो के वेख वखाईआ। निज नेत्र लोचण नैण खुल्लया किसे ना दीदा, सन्मुख हो के दरस कोए ना पाईआ। ईसा तेरे उत्ते तेरे मुरीदां दा रिहा ना कोए अक़ीदा, मुर्शद मुरीद संग ना कोए निभाईआ। आपणा भविख्त वेख जिस दे उत्ते असलीअता, असलीअत दए गवाहीआ। अक्खरां वाली बणाई वसीअता, जो वास्ता प्रभ दे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। ईसा कहे सदी चौधवीं मेरे अन्तर आई हैरानी, मुहम्मद इशारे नाल जणाईआ। चार कुण्ट दिसे परेशानी, प्रेम परवरदिगार ना कोए बणाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, जिस्मानी झगड़ा प्या लोकाईआ। तन वजूद बणया ना कोए ब्रह्म ज्ञानी, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। जलवा नूर ना तक्कया किसे असमानी, इस्म आज़म ना वेख वखाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द जगत जीव जहान पढ़दे बाणी, बाण निराला तीर अन्तर आत्म ना कोए लगाईआ। पिछली कथा चार जुग दी होई पुराणी, पुराण वेद शास्त्र बैठे अक्ख शरमाईआ। चार कुण्ट दह दिशा जगत अन्धेरा धुर दा चन्द दिसे ना कोए नुरानी, अन्ध अज्ञान ना कोए गवाईआ। मैं वेखां चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। मैं वाचां चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी खोज खुजाईआ। जिधर तक्कां सतिगुर शब्द किसे ना मिल्या हाणी, धुर दा कलमा कायनात ना कोए दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं तेरा लेखा अन्त अख़ीर मेटे बेनज़ीर जो चार जुग दा झगड़ा जाणे दीवानी, जिस नूं अवतार पैगम्बर गुर दाइर गए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे हज़रत मैं मुहम्मद नालों तोड़न लग्गी नाता, तोड़ के दयां वखाईआ। मैनूं हुक्म देवे पुरख समराथा, साहिब स्वामी धुरदरगाहीआ। जिस दी तुसीं कलमयां विच गाउँदे आए गाथा, नाम नादां विच शनवाईआ। उह भविख्तां दीआं पूरीआं करे आसां, तृष्ना सर्ब बुझाईआ। सचखण्ड दुआरे मैनूं दे भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। मैं सच सुनेहड़ा तैनूं आखां, अन्त अख़ीर दयां जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दीन दुनी वेखणा तमाशा, दीन मज़हब ज़ात पात वरन बरन खोज खुजाईआ। अन्तिम उलटा होवे सब दा पाशा, पेशीनगोई शहादत विच भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण बण के धुर दा दाता, सरगुण वस्त अमोलक नाम इक वरताईआ।

✻ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ४ करतार सिँघ दे गृह चड़िक ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

हज़रत ईसा कहे मैं वेखी अगम्मी चण्डी, जो चण्डका चण्डालां दए मिटाईआ। जिस ने सिध्धी करनी दीनां मज़हबां दी डंडी, मार्ग रस्ता इक्को दए वखाईआ। मन हँकारी रहिण ना देवे कोए घमंडी, गढ़ हउमे तोड़ तुड़ाईआ। साचे हुक्म दी कर पाबन्दी, इष्ट इक्को दए जणाईआ। दीन दुनी विच्चों कढ्ढ के वासना गन्दी, सुगंधी सच भराईआ। नेत्र अक्ख रहिण ना देवे अन्धी, लोचण धुर दा दए खुल्हाईआ। सब दा अन्त अख़ीर आया कन्ढी, कन्ढा पार किनारा दए जणाईआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर ढोला गाउँदे छन्दी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। ज़ात पात दी तोड़ के ख़ानाबन्दी, बन्दगी इक्को दए कराईआ। आत्म सेजा सच सिँघासण सुहा के मंजी, मजलस भगतां नाल लगाईआ। जेहड़ी मंज़ल रसना जेहवा बत्ती दन्द पूजा पाठ कर के गुरमुख आत्म नहीं लँघी, सो सहज सुभाउ दए वखाईआ। जिथ्थे निरगुण धार जोत बहु रंगी, निराकार आपणी खेल खिलाईआ। सच दुआरे बण के धुर दा संगी, साथी हो के वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग रहिण ना देवे पाखण्डी, धर्म निशाना इक झुलाईआ। सूरबीर योद्धा सतिगुर शब्द दिसे जंगी, जंगजू बहादर नज़री आईआ। जिन्ह दूई द्वैत ढौहणी कंधी, कंधा एका सब दे थल्ले डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। ईसा कहे मैं तक्कया अगम्मा तीर कमान, जिस दा चिल्ला इक चढ़ाईआ। फिरे विच लख चुरासी जीव जहान, जहालत वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे गुमान, हँकार विकार डेरा ढाहीआ। साचे सन्तां कर पहचान, मेला मेले सहज सुभाईआ। सच सिँघासण दे आराम, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेखे मार ध्यान, बिन नेत्र अक्ख उठाईआ। साची करनी कर परवान, परवाना सब दे हथ्थ फड़ाईआ। शरअ दा रहिण ना देवे कोए बेईमान, बेवा करे कूड़ लोकाईआ। साचा डंक वजाए नाम निधाना दो जहान, पृथ्मी आकाश आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा वेख वखाईआ। ईसा कहे मैं वेख्या अगम्मी तरकश, जिस दी धार समझ ना कोए समझाईआ। जिस दे विच्चों निकले अगम्मी बख़्शिश, रहमत वड वड्याईआ। प्यार मुहब्बत भरी वेखी हसरत, जिस दा हज़रत ध्यान लगाईआ। जिस दी उडीक रखी राम बेटे दसरथ, दह दिशा वेख वखाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर कृष्ण जीवण कीता बसरत, शर्तीया ओहो खेल खिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे ऐशो इशर्त, आलीशान आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत जहान विच्चों मेटे नफ़रत, दूई द्वैती पन्ध मुकाईआ। ईसा कहे मैं वेख्या धुर दा इक्को खड़ग, ख़ैरख़ाही नाल जणाईआ। जिस नूं साहिब फड़े नधड़क,

बेख़ौफ़ नज़री आईआ। उच्ची बोल के कहे कड़क, ढोला अगम्म अथाहीआ। सब दा मार्ग सिध्धी करनी सड़क, पगडंडी रहिण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दह दिशा इक्को नाम दी होवे गरज, ज़िमीं असमान गूंजण थाउँ थाईंआ। करना खेल प्रभू असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। सब दा पूरब लौहणा क़र्ज़, मक़रूज़ हो के लेखा दए मुकाईआ। हिसाब किताब दी कढु के फ़रद, गुर अवतार पैगम्बरां लहिणा दए चुकाईआ। कलयुग पुठ्ठी कर के नरद, नारद मुनी हथ्थ फड़ाईआ। शरअ छुरी खोह के करद, कसाईआं तों लए छुडाईआ। दीनां नाथां वंडे दरद, दुखियां दुःख गवाईआ। योद्धा सूरबीर बण के मर्द, मदद करे थाउँ थाईंआ। आपणा पूरा करे फ़रज़, फ़राइज़ सब दे वेख वखाईआ। ईसा कहे मेरी मन्ज़ूर होण लग्गी अर्ज़, सदी बीसवीं नाल मिलाईआ। जगत मेटे अन्धेरा गरद, गिरदोनवाह खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आपणी धार विच्चों आपणा लिख्त पढ़त, अक्खरां वाली वंड ना कोए वखाईआ।

✻ १२ माघ शहिनशाही सम्मत ४ नाज़र सिँघ जागीर सिँघ दे गृह माढ़ी मुसतफ़ा ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

सदी चौधवीं कहे पैगम्बर वेख आपणा टाईम, वक्त बवक्त खोज खुजाईआ। उम्मत नबी रसूल रही कोई ना कायम, साबत सति सति ना कोए दृढ़ाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वध्या जराइम, माया ममता मोह विकार हल्काईआ। जिस दी शहादत देवे बाल्मीक जिस राम लिखी रमाइण, राम रामा नाल मिलाईआ। इशारा दे के गया नाई सैण, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। जिस दी कथा कहाणी सके कोए ना कहिण, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। सो परवरदिगार सांझा यार हुक्म देवे आपणा ऐन, जिस नूं ऐनलहक़ मनसूर गया गाईआ। धुर दा लेखा जाणे आप नरायण, नर हरि आपणी कार कमाईआ। जिस ने चौथा जुग करना पराइण, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पैगम्बर करने जाइन, हुक्मे अंदर हुक्म बदलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे वहिण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। हज़रत ईसा कहे मैं वेखां आपणा वक्त, कलाक कला वाली उठाईआ। की खेल होया जगत, जगदीशर आपणा हुक्म वरताईआ। मेरा लेखा वेखे फ़क़त, फ़िक़रा पिछला नाल मिलाईआ। सदी बीसवीं पूरी होणी शर्त, शरअ दीन दुनी बदलाईआ। जो मालक वाली अर्श, अर्शी प्रीतम नूर अलाहीआ। सो खेले खेल आ के फ़र्श, ज़िमीं ज़मां फोल फुलाईआ। लेखा जाणे धरनी धरत, धवल धौल पर्दा दए उठाईआ। सब दी पूरी करे शर्त, शरअ

ज़ंजीर दए कटाईआ। दीन मज़हबां पुट्ठी होवे नरद, सिध्धी करे कोए ना राईआ। सदी चौधवीं मन्जूर होई अर्ज, आजज़ां वेखे चाँईं चाँईंआ। पोपां रोणा अन्तिम विच चर्च, चरागाहां पए दुहाईआ। सच नाम दा पल्ले किसे नहीं खरच, जगत माया कौडी कम्म किसे ना आईआ। सब दी पूरी होणी लिख्त पढ़त, वेला वक्त दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। सदी चौधवी कहे पैगम्बर वेखो आपणा वेला, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। साचा दिसे ना कोई गुरु गुर चेला, चारों कुण्ट पई दुहाईआ। निगुण धार मिले ना मेला, कूड़ कुड़िआर ना डेरा ढाहीआ। साचा रिहा ना कोई सज्जण सुहेला, ठग्गी चोरी कूड़ कमाईआ। रंग चढ़े ना किसे नवेला, नर निरँकार ना कोए दर्शन पाईआ। अन्त कन्त भगवन्त सदी चौधवीं अचरज खेल खेला, ख़ालक ख़लक रिहा रुलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मन कल्पणा तन वजूद होया जंगल बेला, सच फुलवाड़ी मात ना कोए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। ईसा कहे सुण मुहम्मद अगम्मी ग़ज़ल, गर्ज सब दी वेख वखाईआ। चारों कुण्ट दिसे अज़ल, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। तेरी पूरी होई मज़ल, मेरी मंज़ल राह तकाईआ। वेला रिहा कोई ना फ़ज़ल, रहमत हक़ ना कोए कमाईआ। चारों कुण्ट लग्गी अगन, अग्गे हो ना कोए बुझाईआ। साची दृष्टी विच दिसे कोई ना मग्न, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। मैनूं इउँ दिसदा कुछ खेल होणा विच अदन, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। मानस रुलणे माटी बदन, बदी दा लेखा दए चुकाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार पावे सगन, सगले साथी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक सुहाईआ। हज़रत ईसा कहे मेरा कलाक चले कविक्क, टाइम टाइम विच्चों बदलाईआ। साचा वक्त दिसे इक्क, एकँकार वेख वखाईआ। जो सब दा मालक पित, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। लेखा जाणे नित नवित्त, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जगत नेत्र किसे ना पए दिस, निज लोचण करे रुशनाईआ। अन्त अख़ीर खेल करे अनडिठ, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। पैगम्बरो आपणी कढु के वेखो चिट, जो दस्त बदस्त फड़ाईआ। जिस दे विच चौथे जुग कीती रिट, रट्टा घर घर देवे पाईआ। सदी चौधवीं जिस ख़ातर मँगी इट्ट, इट्ट नाल इट्ट दए खड़काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान महबूब आपणी अक्ख खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बरो कहिंदा की कलाक, साची कल दयो जणाईआ। किस रफ़तार नाल करदा वाक, क़दम क़दम नाल उठाईआ। की लेखा लिख के आए नाल क़लम दवात, गॉड गुड समझाईआ। मुहम्मद कहि के गया वाहिद, लाशरीक

नूर अलाहीआ। सारे पिछली कीती करो याद, याददाशत नाल मिलाईआ। जिस ने लोकमात तुहानूं कीता आबाद, खेड़ा उम्मत वसाईआ। ओह किस बिध अन्त करे बरबाद, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। बिन अक्खां नेत्र खोल्हो जाग, जागरत जोत वेख वखाईआ। किस बिध बुझावो आग, आबेहयात अमृत मेघ बरसाईआ। हँस बुद्धी होवे काग, कूड़ कल्पणा डेरा ढाहीआ। किस बिध काया मन्दिर अंदर निरगुण जोत जगे चराग़, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। अन्त अख़ीर इस दा दयो जवाब, क्यों भरमे भुल्ली लोकाईआ। जिस ने तुहानूं दिता ख़ताब, दीन दुनी वड्याईआ। जिस नूं सजदा कीता अदाब, निउँ निउँ लागे पाईंआ। ओह किस बिध लेखा पूरा करे हिसाब, निस्बत नाल दयो दृढ़ाईआ। सब दा मित्र प्यारा बणे अहिबाब, नाम रबाब इक वजाईआ। भेव खुल्हाए बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे करे आज़ाद, बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। तुहाडा झगड़ा मेटे दीन दुनी फ़साद, फ़ैसला हक़ सुणाईआ। चार वरन दा सांझा करे समाज, रिवाज आपणा नाम वखाईआ। इक दुआरे सब ने आउणा भाज, भजन बन्दगी इक्को इक जणाईआ। हर हिरदे अंदर होवे विस्माद, बिस्मिल हो के आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे पैगम्बरो की तुहानूं देवे दाद, वस्त अगम्म अथाहीआ। की अन्त अख़ीर सुणे फ़रयाद, फ़रमांबरदार हो के दयो समझाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कहिण जिस ने रचना रची आदि, अन्त ओहो वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं करे लाजवाब, अग्गे सिर सके ना कोए उठाईआ।

८३७
२१

✻ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ४ भाग सिँघ कुलवन्त सिँघ दे गृह पिंड माढ़ी मुस्तफ़ा ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

मसीह कहे मैनूं आउण लग्गा क्यास, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। मेरी निगाह पई उत्ते करास, जगत निशाना सोभा पाईआ। फेर वेखी आपणी कलास, साथी नज़र कोए ना आईआ। फेर तक्कया नूर प्रकाश, परवरदिगार दिता चमकाईआ। फेर शब्द संदेसा सुणया ख़ास, सुनेहड़ा इक जणाईआ। तुहाडा लहिणा देणा होण लग्गा ख़लास, ख़लासी सब दी दए कराईआ। जो हुक्म दिता मक़बरिआं विच लाश, बिन तत्तां तत दृढ़ाईआ। ओस वेले दी करो तलाश, खोजो थाउँ थाईंआ। सब नूं मिलण वाली शाबाश, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दीनां मज़हबां कर के नास, नास्तिकां पर्दा दए खुल्हाईआ। सदी दी पूरी होवे आस, आस नाल वधाईआ। जिस दा राह तक्के पृथ्मी आकाश, मण्डल ध्यान लगाईआ। सो खेल करे पुरख अबिनाश, हरि करता नूर खुदाईआ। वक्त सुहञ्जणा धुर दा दस्से कलाक, कायम मुकाम इक जणाईआ। जिस वेले दी

सारे करदे रहे जांच, याचक हो के ध्यान लगाईआ। ओह लाउण लग्गा आंच, अगनी अग्ग तपाईआ। जिस ने भेव खुलाउणा पंचम पांच, परपंच दए गवाईआ। साडी दीनां मज़हबां दी मेट के ब्रांच, रास्ता बरास्ता इक्को दए वखाईआ। झगड़ा मिटे काया माटी कांच, कंचन गढ़ सुहाईआ। मनुआ करे कोई ना नाच, चार कुण्ट ना कोए हल्काईआ। सच दुआर दा खोल् के ताक, परदा दए उठाईआ। साडा पूरा कर के भविख्त वाक्, वाक् पूरा पूरन हथ्थ फड़ाईआ। लेखा जाण पिछली कथा कहाणी बात, बातन आपणा भेव जणाईआ। सो कलयुग मेटे अन्धेरी रात, निरगुण नूरी चन्द कर रुशनाईआ। साडी रही ना कोई जमात, अक्खरां नाल ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरे होए सहाईआ। मसीह कहे लेखा रिहा ना जिसत टांक, टाक करन दी लोड़ रही ना राईआ। कोई कहे ना वट यू वांट, सारे बैठे सीस निवाईआ। काया ख़ाली दिसण बरतण पाट, झोली अग्गे ना कोए भराईआ। सदी तों अग्गे सदी होवे ना कोए अलाट, हुक्म हुक्म ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख्शिश दी देवे ना कोए ग्रांट, ग्रांड फ़ादर आपणा हुक्म वरताईआ। यसूह कहे सदी चौधवीं बण बैठी कवीन, कायनात विच मिली वड्याईआ। अगला लेखा जाणे ना कोए बिटवीन, पर्दा पर्दा ना कोए चुकाईआ। हक़ीक़त वाली दिसे ना कोए तालीम, तुलबे रहे कुरलाईआ । मैं तक्कां उपर ज़मीन, ज़ामन बैठे मुख भवाईआ। किसे दा रिहा ना कोए यकीन, भरोसा भरम विच बदलाईआ । परवरदिगार करन वाला तरमीम, तरतीब आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस नूं कहिंदे ख़ालक ख़लक करीम, क़ुदरत दा कादर नूर अलाहीआ। जिस दा दरगाह सच्ची थान आलीशान अज़ीम, आज़म हो के सोभा पाईआ। सो दरसावे आपणा इक सीन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक सुहाईआ । ईसा कहे मेरा होण लग्गा ऐन्ड, ऐड आफ़ रिहा कराईआ। मित्र प्यारा दिसे ना कोए फ़रैन्ड, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। मेरा खाली होया हैंड, हैंडज़ अप करके दयां वखाईआ। अग्गे हुक्म संदेसा करे कोई ना सैंड, भजन बन्दगी ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। मसीह कहे मैं तक्कां की की की, नज़र कोए ना आईआ। परवरदिगार बदलण वाला लीह, रस्ता रिहा बदलाईआ। लेखा जाणे ही शी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। मैन मैन्न् दा बीजे बी, परमात्म आत्म आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल खेले बीसवीं सदी वीह, वीह वीह नाल मिलाईआ।

❋ १३ माघ शहिनशाही सम्मत ४ सुदागर सिँघ दे घर नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ❋

ईसा कहे मैं तक्कां ज़िमीं असमान, दोहरी धार वेख वखाईआ। की हुक्म देवे मेहरवान, बेपरवाह बेपरवाहीआ। की शब्द होवे फ़रमान, निगाहबान आप जणाईआ। की शरअ दस्से अञ्जील क़ुरान, सिफ्तां विच सालाहीआ। की लेखा लग्गे ईमान, अमल वेखे ख़लक खुदाईआ। जिस ने बदल देणा इस्लाम, इस्म आज़म इक हो जाईआ। जिस नूं मुहम्मद मन्नया अमाम, अल्ला नूर अलाहीआ। मैं ओसे दी दस्स के आया पहचान, बेपहचानां मात दृढ़ाईआ। मेरा बाप बड़ा बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। सदी बीसवीं होवे प्रधान, प्रधानगी आपणे हथ्थ रखाईआ। ईसा वेखे दो जहान, तबक सबक इक पढ़ाईआ। चार जुग दी पिछली जाणे कलाम, कायनात खोज खुजाईआ। मज़हब दा रहिण ना देवे कोए ग़ुलाम, ज़ंजीर फ़कीर दए कटाईआ। दीन दुनी विच रहे ना कोए बेईमान, अन्तर निरंतर करे सफ़ाईआ। जोती दीप जगा के शमांदान, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। सन्त सुहेले वेखे आण, हरिजन आपणा रंग रंगाईआ। धर्म प्रीती दे के दान, वस्त अमोलक अगम्म वरताईआ। सचखण्ड दुआरे कर परवान, बख्शे हरि सरन सरनाईआ। धुर दा बण के अगम्मी काहन, सन्त सुहेले लए प्रनाईआ। दीन दुनी दा तोड़ अभिमान, माण निमाणयां दए समझाईआ। सांझा कर के पीण खाण, झगड़ा दूई द्वैत गवाईआ। एका कलमा एको होवे नाम, डंडावत बन्दना सीस सजदा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, हरि करनी कार कमाईआ। ईसा कहे मैं वेखां धुर दी धार, धर्म दुआरा राह तकाईआ। की हुक्म परवरदिगार, धुर संदेसा दए सुणाईआ। सब नूं करे ख़बरदार, बेख़बरां लए उठाईआ। जिस दा कर के आए इज़हार, सिफ्तां विच सालाहीआ। सो निरगुण नूर जोत करे उज्यार, कलयुग अन्धेरा दए मिटाईआ। कलयुग जीव वेखे मूर्ख मुग्ध गवार, तन माटी ख़ाक पोच पुचाईआ। जन भगतां दे के इक एतबार, बेएतबारी अंदरों दए कढ्ढाईआ। सूफ़ीआं दिसे सांझा यार, निराकार आपणा रंग रंगाईआ। बिन रसना जेहवा बोल अगम्मी गुफ्तार, गुफ्त शनीद दए सुणाईआ। दीन दुनी दी वेखे रफ्तार, रफ्ता रफ्ता सारे खोज खुजाईआ। ईसा कहे जिस हफ्ते दी मैं छुट्टी कर के आया ऐतवार, संडे कहि के जगत सुणाईआ। एसे दिन दीन दुनी दा वेला अन्तिम होणा ज़ाहर, इज़्हार करे बेपरवाहीआ। चार कुण्ट होवे खुआर, खुआरी घर घर नज़री आईआ। साचा मिले ना किसे दीदार, दीद चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे ना कोए मददगार, साथी साथ ना कोए निभाईआ। एह खेल धुर दे परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सज्जण वड वड्याईआ। ईसा कहे मैं दस्सया, सारे पाक करयो बुत रूह, ख़ालक

ख़लक वेख वखाईआ। जिस वेले नूरी सुर्या होवे तलूह, आफ्ताब वड्याईआ। हज़रतां दा हज़रत पैगम्बरां दा पैगम्बर गुरुआं दा गुरदेव स्वामी शब्द सतिगुरु, आदि अन्त दा मालक इक अख्वाईआ। उस दा हुक्म संदेसा आदि अन्त कदे ना मुड़ू, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा निरगुण धार सच स्वामी हो के तुरू, तुरत आपणी कार कमाईआ। आसा मनसा पूरी करू धू, जन भगत भगत नाल बदलाईआ। सब दे अंदर इक्को मन्त्र फुरू, फ़ुरने पिछले दए गवाईआ। कूड़ी क्रिया शौह दरयाए रुढू, धक्का लावे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। ईसा कहे झगड़ा मेटणा मजलसी, मजलस इक्को इक वखाईआ। परवरदिगार रहिणा अदबी, बेअदबी होवे ख़लक खुदाईआ। धुर दा कलमा होणा जज़बी, जज़बात दीन दुनी खोज खुजाईआ। इक्को परवरदिगार दे झुकणा क़दमीं, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। झगड़ा रहे ना कोए तमद्दनी, धर्म दी धार इक वखाईआ। वंड दिसे ना कोए बदनी, बदला चुकाए थाउँ थाईंआ। पुरख अकाला होवे अदली, अदल इन्साफ करे लोकाईआ। कलयुग सतिजुग दोहां दी होवे बदली, हुक्म देवे धुरदरगाहीआ। पैंडा सब दा मुके मज़लो मज़ली, मंज़ल आपणी इक जणाईआ। एह खेल प्रभू दी रंगली, जगत नेत्र वेखण गुर अवतार पैगम्बर चाँईं चाँईंआ। शाह सुल्तानां थाँ मिले ना जंगलीं, कुण्ट कुण्ट पए दुहाईआ। नाता रहे ना अंगली संगली, सगला संग सर्ब तजाईआ। भिच्छिया पाए ना कोए नाम बग़ली, बग़लगीर रहिण वाला नज़रीआ नज़र ना कोए रखाईआ। मन कल्पणा दुनियां होवे पग़ली, बुध्ध बिबेक ना कोए कराईआ। किसे समझ ना आवे अगली, अक़ल विद्या तों बाहर की करे नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। ईसा कहे मैं हैरान होया उत्ते असमानां, असल दयां जणाईआ। परवरदिगार बदल देणा ज़माना, गॉड गाईड बणे नूर अलाहीआ। दो जहानां आपणे हथ्थ फड़े कमाना, कामल मुर्शद नूर अलाहीआ। जिस नूं मुहम्मद किहा महदी अमामा, अमाम अमामा इक अख्वाईआ। उस दा सुण अगम्म फ़रमाना, फ़रमांबरदार हो के सीस निवाईआ। बिन सीस तों झुक झुक करां सलामा, सजदयां विच लागां पाईंआ। तूं मेहरवान महबूब शाह सुल्ताना, सब तेरी ओट रखाईआ। मेरा लहिणा देणा वेख मेरे भगवाना, भगवन तेरी आस तकाईआ। ईसा कहे झगड़ा रहे ना कोए जिस्माना, जिस्म ज़मीर दए बदलाईआ। चौथे जुग दा अन्तिम पूरा करे ख़ाना, ख़ामी विच ना कोए जणाईआ। सतिजुग सच करे प्रधाना, नाम प्रधानगी इक रखाईआ। निरगुण चन्द चढ़े जोती नूर जहाना, जागरत जोत डगमगाईआ। जन भगत सुहेला रहे ना कोए बेगाना, गुरमुख आपणे घर टिकाईआ। सृष्टी तूं मेरा मैं तेरा गाउणा गाणा, अन्तर आत्म परमात्म

राग अलाईआ। ईसा कहे मैं हो के माण निमाणा, निउँ के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण नूर अलाही अमामा, अमाम इक्को वेख वखाईआ।

✻ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ४ बूड़ सिँघ दे गृह पिंड नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

सचखण्ड दुआर कहे गुर अवतार पैगम्बर गए सहम, समाजवादी सीस ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्तिम रिहा कोए ना कायम, मुकामे हक़ अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। दीन मज़हब वध्या जराइम, जन्म सफ़ल ना कोए कराईआ। नेत्र खुल्हिआ किसे ना नैण, लोचन अक्ख प्रतख दर्शन कोए ना पाईआ। प्यार रिहा ना मात पित भाई भैण, सज्जण संग ना कोए रखाईआ। मित्र प्यारा दिसे कोए ना सैण, साचा मेल ना कोए वखाईआ। मुरीद मुर्शद होए तरफ़ैण, गुर चेले बैठे मुख छुपाईआ। मन कल्पणा किसे ना आवे चैण, सांतक सति ना कोए कराईआ। झगड़ा मुके ना लहिण देण, हिसाब बेबाक ना कोए वखाईआ। माया ममता विच्चों होए ना कोए उजैण, बंधन सके ना कोए तुड़ाईआ। जूठ झूठ वगदा वहिण, सति धर्म ना कोए बचाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे ढोले गीत करदे गाइण, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पढ़दे रमाइण, राम रामा मिलण किसे ना पाईआ। आत्म धार सब दी होई पराइण, प्राणपति मिल के वजे ना कोए वधाईआ। की खेल करे पुरख अकाला दीन दयाला नर नरायण, नर हरि आपणी खेल खिलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा सृष्टी खाए मौत लाड़ी डाइण, काल नगारा आपणी चोट लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी वड वड्याईआ। सचखण्ड दुआर कहे गुर अवतार पैगम्बर बैठे चुप, शब्दी शब्द ना कोए सुणाईआ। चारों कुण्ट वेखणा अन्धेरा घुप, निरगुण नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। सति धर्म दा रिहा कोई ना पुत, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। शब्द दुलारा दिसे कोई ना सुत, अपराधी होई ख़लक खुदाईआ। अन्तर अन्धेरा मेटे कोई ना लुक, अज्ञान अन्धेरा ढाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल सीस किसे ना जावे झुक, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर बैठे सीस निवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म पढ़े कोई ना तुक, अल्ला वाहिगुरु राम सति सति राग अल्हाईआ। आवण जावण लख चुरासी किसे ना जावे छुट, जून अजूनी पन्ध ना कोए मुकाईआ। माया ममता मोह विकार जगत तृष्ना मिटे कोई ना भुक्ख, सांतक

सष्ति ना कोए कराईआ। हउमे हंगता कूड़ी क्रिया मिटे किसे ना दुःख, दूई द्वैती पन्ध ना कोए मुकाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म देवे कोई ना सुख, सुखसागर विच समाईआ। आवण जावण मात गर्भ लेखा मिटे ना जननी कुख, सच दुआर ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सचखण्ड दुआर कहे गुर अवतार पैगम्बर नेत्र नैण वहावण नीर, वैरागी रूप वटाईआ। जगत तिआगी होए दिलगीर, धरनी धरत धवल धौल ध्यान ना कोई रखाईआ। झगड़ा वेख के शरअ ज़ंजीर, सारे रहे कुरलाईआ। मंज़ल मिले ना किसे अख़ीर, काया काअबे ना कोए वधाईआ। नेत्र रोंदे शाह हकीर, फ़कीर फ़िकरिआं विच रहे कुरलाईआ। अंदरों बदले ना किसे ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। नाम खण्डा हथ्थ ना आए शमशीर, पंज विकार ना कोए ढाहीआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार कढ्ढे ना कोए पीड़, दर्दीआं दुःख ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा धुर दा घर, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। सचखण्ड दुआर कहे गुर अवतार पैगम्बर रहे सोच, बुद्धी तों परे ध्यान लगाईआ। आपणी आशा नाल मिलावण लोच, तृष्ना वड वड्याईआ। जिस परवरदिगार पुरख अकाल दी रख के आए ओट, निरगुण दाता नूर अलाहीआ। जो भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ काया माटी कोट, सम्बल डेरा इक सुहाईआ। शब्द नगारे ला के चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, कलयुग अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। आत्म परमात्म उपर करे मोहत, मुहब्बत इक्को घर वखाईआ। झगड़ा मुका के लोक परलोक, दो जहानां वेख वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स सलोक, सोहँ सति करे पढ़ाईआ। अन्तर अन्तिम दे के मोख, मुक्ती तों परे दर समझाईआ। जिथ्थे नाम खुमारी रहे मदहोश, सुरती शब्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआर कहे गुर अवतार पैगम्बर करन सलाह, मशवरा प्रेम प्रेम बणाईआ। वेखो खेल बेपरवाह, बेपरवाही विच कराईआ। जिस नूं कहि के आए गॉड खुदा, अल्ला वाहिगुरु नाम अलाहीआ। सानूं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कर के जुदा जुदा, जुज़ हिस्से वंड दिती वंडाईआ। आपणे नाम दा झगड़ा पा, कलमयां विच करी लड़ाईआ। किसे नूं दस्स के सलाम दुआ, किसे तों डंडावत रिहा कराईआ। किसे तों नाअरा जैकारा लवा, किसे नूं ख़ाक उत्ते लिटाईआ। साडे विच झगड़ा पा, दीन मज़हब दिते बणाईआ। वखरे वखरे चला के राह, आप आपणा ल्या छुपाईआ। एसे कारण ओस नूं आए ध्या, ध्यान विच ध्यान लगाईआ। जिस वेले साडी चले कोई ना वाह, वाहिगुरु होए ना किसे सहाईआ। फिर प्रगट होवे निरगुण नूर जोत रुशना, जोती जाता हो के वेख वखाईआ। सो स्वामी ठाकर अन्तरजामी कलयुग अन्तिम गया

आ, आमद विच आपणा खेल खिलाईआ। सन्त सुहेले जन भगत लए जगा, जागरत जोत डगमगाईआ। साथों खैड़ा दिता छुडा, नाता अवर रिहा ना राईआ। इक्को पुरख अकाल रहे मना, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी निरगुण धार सब दा पिता माँ, मालक ख़ालक खुद इक्को इक अख्वाईआ।

८४३
२१

✻ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ४ जसवन्त सिँघ दे गृह पिंड राजेआणा ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

सचखण्ड दुआर कहे दरगाह साची, निरगुण धार गुर अवतार पैगम्बर बैठे सीस निवाईआ। तन वजूद पंज तत दिसे ना माटी काची, कंचन गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी नहीं कोई साखी, साख़िआत नुक्ता नून दाता नूर अलाहीआ। मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर ना दिसे कोई माटी, शिवदवाला वंड ना कोए वंडाईआ। दीन मज़हब ज़ात पात राउ रंक नहीं कोई हाटी, जगत वणजारा वणज ना कोए कराईआ। तीर्थ तट किनारा दिसे कोई ना ताटी, जल थल महीअल वेस ना कोए वटाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाह रिहा कोई ना आखी, राग नाद ढोला गीत ना कोए सुणाईआ। सुर्या चन्द ना कोई दिसे दिवस रैण राती, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को पुरख अकाल जो सब दा पिता माती, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी मन्नदे आए आखी, सरगुण हो के साची सेव कमाईआ। सो स्वामी खेल करे कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा लोकमात वेखे सब दी हयाती, जीवण जुगती खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सज्जण इक अख्वाईआ। सचखण्ड दुआर कहे दरगाह साची पैगम्बर रहे तक, निगाह निगाह विच्चों उठाईआ। की हुक्म मिले हक़ीक़त हक़, हरि करता की जणाईआ। किस बिध दीन दुनी पैज लए रख, रक्ख्या करे थाउँ थाईंआ। जो मार्ग लोकमात असीं आए दस्स, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। साडे रिहा कोई ना वस्स, तोबा तोबा कर सुणाईआ। साचा कलमा लए कोई ना रट, रट्टयां विच सारे रहे कुरलाईआ। दुरमति मैल देवे कोई ना कट, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। सति धर्म दा दिसे कोई ना हट्ट, वस्त अमोलक काया गोलक झोली कोए ना पाईआ। मन कल्पणा सारे रहे नठ, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। सब दा काया खेड़ा होया भट्ठ, कलयुग कूड़ी क्रिया अगनी रिहा डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सचखण्ड

दुआर कहे दरगाह साची खेल अजीब, अजब निराला आप बणाईआ। अवतार पैगम्बरां दे तरतीब, गुरुआं रंग रंगाईआ। झगड़ा दिसे ना कोए अमीर ग़रीब, वड्डा छोटा ना कोए दिसाईआ। निरगुण धार सब दा मीत, मित्र प्यारा इक हो आईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावे गीत, सोहँ ढोला सच शनवाईआ। आदि जुगादी कलमा इक हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। अन्तिम लेखा वेखणा सदी बीस, चौधवीं लेखा रहे ना राईआ। सब दा सांझा होणा गीत, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक सरनाईआ। परवरदिगार वसणा नज़दीक, काया काअबे सोभा पाईआ। जो आदि जुगादी लाशरीक, शिरकत शरअ दए गवाईआ। जिस दे विच हक़ तौफीक़, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक हो आईआ। सतिजुग सच चलाए रीत, रीतीवान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर देवे माण वड्याईआ। सचखण्ड कहे दरगाह साची सच भूमिका अस्थान, मुक्दस धुर दा नज़री आईआ। जिथ्थे ना कोई ज़िमीं ना कोई असमान, मण्डल मण्डप ना कोए वंड वंडाईआ। इक्को दीपक जोत जगे महान, आदि जुगादि सदा रुशनाईआ। तख्त निवासी बैठा श्री भगवान, जोती जाता नज़री आईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां देवे दान, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। जो लख चुरासी सखीआँ बणया काहन, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जिस दा चार जुग दे शास्त्र बणे ज्ञान, सिख्या दीन दुनी दृढ़ाईआ। जिस नूं झुकदे दो जहान, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। जिस दा नाम अणयाला बाण, काया मन्दिर अंदर करे सफ़ाईआ। जो एथे ओथे सदा हुक्मरान, हुक्म हुक्म विच्चों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक वड्याईआ। दरगाह साची कहे मेरी सच दरगाह, दुर्गा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। तत वजूद कोई दिसे ना, माटी ख़ाक ना सोभा पाईआ। कलमा इस्म ना लए गा, जिस्म ज़मीर ना कोए वड्याईआ। वाहिद जल्वागर खुदा, नूर नराना नज़री आईआ। जिस दे अग्गे क़बूल होवे दुआ, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। आदि जुगादि होए मेहरवां, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां लहिणा देणा दए मुका, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। बीस बीसा खेल खिला, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। धुर दा हुक्म इक वरता, वारता पिछली खोज खुजाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैणा नीर रहे वहा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। अन्त वक्त पहुंचया आ, आदम हव्वा ना कोए वड्याईआ। हुक्म देवे बेपरवाह, परवरदिगार धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा पूरा दए करा, निहकरमी आपणा कर्म कमाईआ।

✻ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ४ बसन्त कौर दे गृह पिंड समालसर ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

दरगाह साची कहे मेरा सचखण्ड दा रूप, रूप रेखा नज़र किसे ना आईआ। जिथ्थे वस्से धुर दा शाहो भूप, हरि शहिनशाह नूर अलाहीआ। जो लेखा जाणे चारे कूट, दह दिशा फोल फुलाईआ। जुग चौकड़ी झगड़ा मिटावे जूठ झूठ, सच सुच्च मात प्रगटाईआ। जन भगतां उत्ते तुठ्ठ, अन्तर आत्म रस चखाईआ। आबेहयात दे के घुट, जीवण ज़िंदगी दए बदलाईआ। सति धर्म सुहा के रुत, मौला आपणा खेल खिलाईआ। धर्म दी धार बणा के सुत, दरगाह साची दए वड्याईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैगम्बर रहे झुक, गुरु गुरदेव सीस निवाईआ । झगड़ा रहे ना मानस मनुक्ख, ततव तत ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा इक दरसाईआ। दरगाह कहे मेरा धाम अवल्ला, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। दो जहानां नालों वखरा महल्ला, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। मेरा मालक ख़ालक दिसे इक इकल्ला, एकँकारा सोभा पाईआ। शब्दी धार लख चुरासी फड़ाए पल्ला, आत्म परमात्म गंढु पुआईआ। जिस ने गुर अवतार पैगम्बर घल्ला, नाम संदेसे गए सुणाईआ। ओह निहचल धाम अटला, सचखण्ड कहि के सारे रहे गाईआ। जिथ्थे दूई द्वैत नहीं कोई सल्ला, मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। ओथे इक्को राम वाहिगुरु अल्ला, दूसर नूर ना कोए चमकाईआ। जो वस्से जलां थलां, घट घट रिहा समाईआ। जिस दा प्रकाश लख चुरासी जीव जंत बला, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जो भाग लगाए काया माटी खल्ला, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा वेख वखाईआ। दरगाह साची कहे मेरे दुआरे अगम्मी चमक, नूर जोत रुशनाईआ। शब्दी धार उपजे रमज़, इशारा अवर ना कोए रखाईआ। बिना बुद्धी तों आवे समझ, मनमति ना कोए चतुराईआ। लिखण वाला नही कोई लफ़ज़, अक्खरां रूप ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां नूं धुर दी धारों मिलदा सबक, संदेसा देवे आप बेपरवाहीआ। जिस ने मुहम्मद धार बख्शी चौदां तबक, चौदां लोक वेख वखाईआ। सो लेखा जाणे आदि जुगादि जुग चौकड़ी घड़ी पलक, निरगुण निरवैर निराकार आपणी कल वरताईआ। सो अन्त अख़ीर लेखा मेटे ख़ालक ख़लक, मख़लूक लहिणा दए चुकाईआ। जिस दा प्रकाश उपर फ़लक, ओह धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। जिस दी मूसा झल ना सक्कया झलक, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को नज़री आईआ। दरगाह कहे मैं दरदवंद, दर्दीआं दयां जणाईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को ख़ावंद, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस दे हुक्मे अंदर गुर अवतार पैगम्बर होए पाबन्द,

विष्न ब्रह्मा शिव ना सिर उठाईआ। जिस दा निशाना तारा चन्द, मण्डप जगत दिता समझाईआ। अन्तिम ओस ने करना खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम उठाईआ। जिस ने दीन दुनी दी पाई वंड, अन्तिम उह लेखा दए चुकाईआ। जिस ने उपजाए तीर्थ तट गंगा गोदवरी जमना सुरस्ती संग, जगत संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दुआर एकँकार वखाए आपणा रंग, जिस दी रंगत लोकमात नज़र किसे ना आईआ।

✻ १४ माघ शहिनशाही सम्मत ४ सुहावा सिँघ दे गृह पिंड पंज गराईंआ ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

दरगाह साची कहे मेरा मालक इक हज़ूर, सचखण्ड निवासी नूर अलाहीआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी हक़ दस्तूर, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दे अवतार पैगम्बर नित नवित्त मज़दूर, चाकर हो के सेव कमाईआ। जो नाम धुनी कलमा देवे तूर, तुरिया तों परे करे पढ़ाईआ। भेव खुलाए एथे ओथे दो जहानां नेड़े दूर, पर्दा उहला आप उठाईआ। सब दी आसा बेनन्ती निरगुण धार करे मन्ज़ूर, मेहरवान महबूब आपणा रंग रंगाईआ। जिस ने मूसा जलवा दिता उत्ते कोहतूर, नूर नुराना कर रुशनाईआ। सो बख्शहारा चरण धूढ़, टिक्के लावे थाउँ थाईंआ। चतुर सुघड़ बणावणहारा मूर्ख मूढ़ पतित पुनीत दए कराईआ। सो अन्त कन्त भगवन्त खेल करे ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। दीन दुनी दा अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर वेखे क़ुसूर, हँकार विकार खोजे चाँईं चाँईंआ। मन ममता हउमे हंगता गढ़ वेखे ग़रूर, ग़ुरबत फोले थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। दरगाह साची कहे सुणो पैगम्बर धुर दे पीर, पीरो दयां जणाईआ। आपणा वेखो अन्त अख़ीर, आख़र संदेसा सुणो धुरदरगाहीआ। जिस ने कटणे शरअ ज़ंजीर, ज़ेर ज़बर दए गवाईआ। दीन दुनी दी बदल देवे तक़दीर, तक्बर तोड़े थाउँ थाईंआ। झगड़ा मेटे शाह हकीर, एकँकार एको रंग रंगाईआ। संदेसा देवे बेनज़ीर, नज़रिया सब दा दए बदलाईआ। सन्त सुहेले सूफ़ी मंज़ल चोटी चढ़ के वेखे अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। तीर नाम अणिआले नाल बजर कपाटी देवे चीर, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जिस दी नज़र ना आवे किसे तस्वीर, ओह नूर नराना नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा यार आपणी कार कमाईआ। दरगाह साची कहे सचखण्ड अगम्म नज़ारा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण नूर जोत धरे दुबारा, तत्तां वाला

रूप ना कोए समझाईआ। जो कलयुग अन्तिम सतिजुग लावे इक अखाड़ा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण गोपी काहन खेल रचाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। धुर दा मालक ख़ालक प्रितपालक बण सिक्दारा, धुर फ़रमाना श्री भगवाना इक सुणाईआ। चार कुण्ट दह दिशा निरगुण सरगुण पावे सारा, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी वेखे थाउँ थाईंआ। चार वरन अठारां बरन धर्म दी धार दस्से दुआरा, ज़ात अज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। क़ुदरत दा क़ादर करनी दा करता हो उज्यारा, उजाला करे चाँईं चाँईंआ। जिस दा इशारा दे के गया रविदास चमारा, कबीर जुलाहा मम्बर चढ़ के रिहा कुरलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दे इशारा, ऐशो इशर्त डेरा ढाहीआ। सदी चौधवीं वेखे अन्त किनारा, आर पार आपणा क़दम टिकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे अन्ध गुबारा, अन्ध अन्धेरा दए चुकाईआ। निरगुण नूर जोत होवे चमत्कारा, जोती जाता लए अंगड़ाईआ। जिस नूं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी निरगुण धार कहिंदे कल कल्की अवतारा, कल कलेश दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरवैर निराकार निरँकारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

२१

✻ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ४ बिशन सिँघ दे गृह पिंड पंज गराईंआ ✻

दरगाह साची पैगम्बर कहिण सब ने पाउणी आपणी कीती, कीट हस्त बचया रहिण कोए ना पाईआ। परवरदिगार झगड़ा मेटणा शरअ मसीती, मसला सब नूं इक समझाईआ। दीन दुनी दी बदल देणी नीती, रहिबर हो के इक्को राह वखाईआ। पिछली कहाणी याद रहे ना बीती, सतिजुग सच्चा राह समझाईआ। निरगुण धार खेल करे अनडीठी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दस्से हक़ प्रीती, परवरदिगार मेला मेले चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता कार कमाईआ। पैगम्बर कहिण प्रभ दस्सणी अगम्म कलाम, कलमा कायनात जणाईआ। झगड़ा मेटणा दीन दुनी सलाम, समां सब दा दए बदलाईआ। मज़हब दा रहे ना कोए गुलाम, ज़ंजीर बेनज़ीर दए कटाईआ। मानव ज़ाती इक्को जपणा नाम, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। चार वरन अठारां बरन करे ना कोए हराम, हिरदे सच सच प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल देवे निज़ाम, माया ममता धार रहिण ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला हर घट बण के जाणी जाण, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाईआ। धुर दा शब्द

८४८
२१

सुणाए अगम्मी धुनकान, अनादी आपणा राग अलाईआ। सन्त सुहेले लए पहिचाण, भगत भगवान जोड़ जुड़ाईआ। सूफ़ी फ़कीरां देवे दान, वस्त अमोलक इक वरताईआ। धर्म झुलाए धर्म निशान, धर्म दुआरा इक वखाईआ। जिथ्थे लेखा होवे सीता सुरती शब्द धारा गोपी काहन, निरगुण निरगुण आपणा वेस वटाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर महिबान बीदो होवे मेहरवान, बीख़ैर या अलाह तेरी इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे धुर दा हरि, दर दुआरा इक खुलाईआ। पैगम्बर कहिण खेल करे प्रभू हरि ठाकर, हरि करता वड वड्याईआ। दीन दुनी दा वेखे सागर, गहर गम्भीर खोज खुजाईआ। जन भगतां निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल अंदरों दए धुआईआ। साचा वणज कराए बण हक़ सौदागर, वस्त अमोलक इक वरताईआ। करनी दा करता बण के क़ादर, क़ुदरत दा मालक वेस वटाईआ। योद्धा सूरबीर बण बहादर, भय देवे थाउँ थाईंआ। अन्त अख़ीर करे आदल, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। चारों कुट अन्धेरा मेटे बादल, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिलण दा दस्से धुर दा साधन, सच प्रीता नीकण नीका इक समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तूं मेरा मैं तेरा ढोला सर्ब अराधण, राधा कृष्ण दा लेखा दए मुकाईआ। सन्त सुहेले सुरती धार तेरी अगम्मी वाज जागण, आलस निंदरा दे गवाईआ। सतिजुग साचा वेला होवे सुभागण, भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। करे खेल हरि मोहन माधव, मोहन माधव मादन, मधुर धुन अगम्मी राग सुणाईआ। बिन मक्के काअबउँ कराए हक़ हाजन, हाज़र हज़ूर हो के नज़री आईआ। शाहो भूप सुल्तान बण राजन, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जगत वणजारा दिसे ना कोए महाजन, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण धार इक दृढ़ाईआ। पैगम्बर कहिण हक़ीक़त वाली कथा कहाणी, हरि करता आप जणाईआ। लेखा जाणे दो जहानी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सति धर्म दी सतिजुग धार दिसे अगम्मी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। अमृत रस निझर झिरना देवे ठंडा पाणी, कलयुग कूड़ी क्रिया अगनी तत बुझाईआ। लख चुरासी अन्तर भीतर होवे जाण जाणी, निरंतर वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतां सन्तां देवे इक्को पद निरबाणी, निराकार निरँकार आपणी दया कमाईआ। जिस लख चुरासी जीव जंत सृष्टी दृष्टी पुणी छाणी, खोजणहारा थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे जीव जीव प्राणी, प्राण अधारी आपणा पर्दा लाहीआ। पैगम्बर कहिण ओस उत्तों दयो क़ुरबानी, जो करबल्यां दे लेखे रिहा मुकाईआ। सारी सृष्टी दीन दुनी मानव दानव दिसे फ़ानी, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि,

निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां मंज़ल दस्स इक आसानी, बिन अहसान इन्सान आपणे रंग रंगाईआ।

✻ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ४ चन्नण सिँघ दे गृह पिंड वांदर ✻

सचखण्ड दुआर कहे प्रभ जगत जीव बणा दे सच्चे, हरि हिरदे अन्तर निरंतर सच प्रगटाईआ। भाग लगा दे तन वजूद माटी भाण्डे कच्चे, कंचन गढ़ दे सुहाईआ। तेरे नाम कलमे अंदर जाण रत्ते, रतन अमोलक हीरे आपणे लै उठाईआ। त्रैगुण माया अगनी तत कोई ना तपे, पंच विकारा देणा ढाहीआ। चार वरन अठारां बरन भाई भैण बणा सके, नाता बाहमी जोड़ जुड़ाईआ। ज़ात पात ऊँच नीच दीन मज़हब रहिण ना रट्टे, रट्टा दीन दुनी गवाईआ। सच संदेस नर नरायण दे आपणे रसे, बिन रसना जिह्वा ढोला गाईआ। कूड़ी क्रिया मेट मनमत्ते, गुरमति इक्को सोभा पाईआ। तेरा जैकारा गोबिन्द वाला डंका होवे फ़तिह, परम पुरख तेरी ओट रखाईआ। साध सन्त तेरी सरन सरनाई वस्से, वास्ता इक्को नाल जुड़ाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेट मस्से, निरगुण नूर चन्द कर रुशनाईआ। तेरा दीपक इक्को जगे, पारब्रह्म पर्दा लैणा उठाईआ। झगड़ा मिटा दे अठ्ठ सट्ठे, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती लोड़ रहे ना राईआ। फिरना पए ना किसे मक्के, काया काअबे वज्जे वधाईआ। खोजणा पए ना मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठे, साढे तिन्न हथ्थ तेरा नूर नज़री आईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दे पूरे कर दे पटे, पटने वाला नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी होए सहाईआ। सचखण्ड दुआरा कहे प्रभू दीन दुनी उत्ते कर किरपा, किरपाल आपणी दया कमाईआ। जगत विकार हँकार विभचार कट बिपता, पंच विकार डेरा ढाहीआ। चार वरन रूप बणा साचे सिख दा, सिख्या इक्को इक समझाईआ। जेहड़ा आदि जुगादि जुग चौकड़ी लेख लिखदा, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। जो गुर अवतार पैगम्बरां संदेसा देवे नित नवित्त दा, सुनेहड़ा आप जणाईआ । उह रूप दरसावे आपणा इक दा, एकँकार तेरी वड्याईआ। नाता जोड़ दे साचा हित दा, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड कहे प्रभ मेरे मालक ख़ालक स्वामी, दर तेरे सीस निवाईआ। तूं आदि जुगादि सब दा अन्तरजामी, लख चुरासी वेख वखाईआ। साचा कलमा दस्स दे धुर दी बाणी, बाण निराला तीर लगाईआ। झगड़ा रहे ना चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दे समझाईआ।

तेरा निरगुण नूर जोत नुरानी, नूर नुराना डगमगाईआ। तेरा शब्द नाद सतिगुर दो जहानी, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां दे उठाईआ। तूं आत्म ब्रह्म ज्ञानी, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम होई हैरानी, हैरत विच लोकाईआ। सति धर्म दी दिसे ना कोई निशानी, निशाने सारे रहे बदलाईआ। लेखे ला गोबिन्द वाली क़ुरबानी, करबला मुहम्मद दए दुहाईआ। मूसा मस्तक वेख पेशानी, कोहतूर रिहा कुरलाईआ। ईसा लेखा जाण आलमे जाविदानी, सलीब गल विच लटकाईआ। तूं साहिब सतिगुर बेअन्त बेपरवाह पारब्रह्म कर मेहरवानी, महबूब मुहब्बत विच आपणा रंग रंगाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सच सुल्तानी, हुक्मे अंदर हुक्म बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सचखण्ड दुआर कहे मेरे साहिब सतिगुर ठाकर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग वेख डूँघा सागर, गहर गम्भीर गवर खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां रिहा कोई ना आदर, आदर्श तेरा गए भुलाईआ। अन्तर निरंतर होए कोई ना साबत, धीरज धीर ना कोए धराईआ। दीन दुनी दी बदली आदत, कूड़ी क्रिया घर घर डेरा लाईआ। साची करे ना कोए इबादत, मनसा मन ना कोए गवाईआ। बुद्धी विच रही ना कोए लिआकत, अकल कलधारी तेरी कल समझ किसे ना आईआ। चार कुण्ट दह दिशा मन मनुआ करे बग़ावत, तन वजूद होवे लड़ाईआ। साचा नाम करे ना कोए सख़ावत, मुहब्बत हक़ ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका नाम दे सर्ब निआमत, अनरस आपणा सच चखाईआ।

८५०
२१

❋ १५ माघ शहिनशाही सम्मत ४ खेम सिँघ दे गृह कोटकपूरा ❋

दरगाह साची कहे पैगम्बरो परवरदिगार नूं करो सजदा, बिन क़दमां सीस झुकाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां मालक सच्चे घर दा, गृह मन्दिर निरगुण धार सोभा पाईआ। जो नित नवित्त लोकमात आपणी खेल करदा, करनी दा करता क़ुदरत दा मालक नूर अलाहीआ। जिस दा रसना जिह्वा बत्ती दन्द जगत सालाही कलमा सर्ब पढ़दा, कायनात ढोले नग़म्यां विच गाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक ना जम्मदा ना मरदा, मढ़ी गोर ना डेरा लाईआ। ओह वेखणहारा लख चुरासी जीव जंत साध सन्त हिरदा, हर घट अन्तर निरंतर हो के फोल फुलाईआ। महल अटल उच्च अगम्म अथाह निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हो के जुड़दा, चार वरन अठारां बरन लेखा जाणे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी एकँकार दरगाह साची मुकामे हक़ हक़ दए समझाईआ। दरगाह साची कहे

पैगम्बर सुणो धुर संदेस, सदमे विच जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखो कलेश, जो कलमे रही भुलाईआ। नूर नुराना करे कोई ना हेत, हितकारी नज़र कोए ना आईआ। माया ममता हउमे हंगता होई खेड, जगत विकार वज्जी वधाईआ। निज नेत्र लोचन नैण पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कोई ना सके वेख, सच स्वामी अन्तरजामी घटनिवासी पुरख अबिनाशी गृह मन्दिर सोभा कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वधया भेख, मन कल्पणा कूड़ी क्रिया नौ दुआरे जगत रही नचाईआ। झगड़ा प्या कायनात दीन दुनी मुल्ला मुसायक शेख़, परा पसन्ती मद्धम बैखरी पर्दा ओहला अन्तर निरंतर सके ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। दरगाह साची कहे सुणो मित्र मीत, मित्र प्यारयो दयां जणाईआ। मेरा मालक ख़ालक प्रितपालक सब दी बदली करन वाला रीत, रीतीवान बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं अन्त कन्त भगवन्त सब दा लहिणा देणा करे तस्दीक़, शहादत विच इबादत सब दी अन्त दए भुगताईआ। मेरी आसा मनसा ख्वाहिश तमन्ना पूरी करे उम्मीद, तृष्ना कूड़ी लोकमात दए चुकाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे शिवदवाला मठ मन्दिर मसीत, मसला असला इक्को इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब ने गाउणा गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार इक्को करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच महल्ला एकँकारा इक्को इक खुलाईआ। दरगाह साची कहे लोकमात तक्को आपणा चमन, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। तुहाडी उम्मत रिहा ना अमन, सांतक सति ना कोए कराईआ। साचा कलमा कर के ग़बन, कूड़ी क्रिया विच दबाईआ। माया ममता हो के मग्न, हउमे हंगता करे लड़ाईआ। चारों कुण्ट दह दिशा भज्जण, नठ्ठण वाहो दाहीआ। आपणा पर्दा मूल ना कज्जण, ओढ़ुन नज़र कोए ना आईआ। सच धार सच दुआरे पाए कोई ना सगन, धुर दा मेल ना कोए मिलाईआ। चौदां तबक सदी चौधवीं चार कुण्ट दह दिशा काया अंदर सब दे लग्गी अगन, आबेहयात अमृत मेघ बूँद स्वांती ना कोए टपकाईआ। जिधर वेखां सृष्टी दी दृष्टी फिरे नग्न, नाम दुशाला हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्त अख़ीर सब दा करन लग्गा वज़न, तोला हो के नाम तराज़ू हथ्थ उठाईआ। दरगाह साची कहे पैगम्बरो लोकमात मारो निगाह, बिन नैणां नैण उठाईआ। परवरदिगार तुहानूं करन लग्गा विदा, लेखा सब दा झोली पाईआ। सति धर्म दा मार्ग लावे सिध्धा, साधना सब नूं दए समझाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दा मालक इक्का, एकँकार दए दृढ़ाईआ। दीन मज़हब दा रहे कोई ना सिक्का, साख्यात आपणा रंग रंगाईआ। ज़ात पात दा वंडे कोई ना हिस्सा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बंस सरबंस ना कोए सुहाईआ। पुरख

अकाला दीन दयाला सब दा बणे पिता, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। आत्म परमात्म करे हित्ता, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी चार जुग दा वाचे चिट्ठा, पर्दा ओहला आपणा आप खुल्लाईआ। अगला खेल करे अनडिठा, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक सुणाईआ। दरगाह साची कहे मेरे पैगम्बर सज्जण, मित्रो दयां दृढ़ाईआ। झगड़ा मुकण लग्गा माटी बदन, बदली करे बेपरवाहीआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर करे अदल, इन्साफ धुर दा इक समझाईआ। शरअ छुरी करे कोई ना क़तल, क़ातल मक़तूल लेखा दए मुकाईआ। अन्त तुहाडा रहे ना कोए यतन, यथार्थ दयां समझाईआ। तुसां लोकमात दा छड्डणा वतन, बेवतन दिसे ख़लक खुदाईआ। सब दा सांझा करना परम पुरख ने इक्को पत्तण, किनारा इक्को इक सुहाईआ। सदी चौधवीं जाए पैज रखण, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुरदरगाही आपणा भेव चुकाईआ। दरगाह साची कहे की मैं करां तारीफ़, सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस दी करदे गए उडीक, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जिस दीआं सिफ्तां करे क़ुरान मजीद, अलिफ़ ये जोड़ जुड़ाईआ। जिस दी महिमा वाली तमहीद, तुआरफ़ विच लोकाईआ। जिस दे बरदे बणदे आए अज़ीज़, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सो दीन दुनी देवण वाला तमीज़, साची सिख्या इक समझाईआ। भगत दुआरे भगत दी परवान कर क़मीज़, जगत ग़रीबी डेरा ढाहीआ। हरिजन साचे पूरी करे रीझ, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। खड़ग खण्डा करे तस्दीक़, शहादत इक भुगताईआ। पैगम्बरो तुहाडा वक्त आ गया नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मज़हब दा रहे ना कोए शरीक, शिरकत अंदरों देणी कढ्ढाईआ। जिस दे हथ्थ हक़ तौफीक़, ओह वेखे चाँईं चाँईंआ। मनसा पूरी करे उम्मीद, सहिंसा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। दरगाह साची कहे मेरा ना कोई छप्पर छन्न, चार दीवारी ना कोए सुहाईआ। धुर फ़रमाना सुणो बिना कन्न, संदेसा इक जणाईआ। साचा नाम कलमा लओ मन्न, मन मनसा रहे ना राईआ। आपणी उम्मत दा वेखो तन, वजूद अंदर फोल फुलाईआ। अन्त होवण वाला ग़म, खुशी जगत ना कोए जणाईआ। परवरदिगार देवे डन्न, डंका वज्जे थाउँ थाईंआ। जिस कारण सूफ़ीआं लुहाई पुठ्ठी खल्ल्, ख़ालक ख़लक गए जणाईआ। ओह अन्त सवाल होणा हल्ल, हालत विगड़े नूर खुदाईआ। झगड़ा पैणा जल थल, महीअल मिले ना कोए वड्याईआ। पैगम्बरो, तुसां वसणा निहचल धाम अटल, सच दुआरे सोभा पाईआ। अन्तिम रहे किसे कोई ना बल, ताक़तवर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

८५२
२१

कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे घड़ी घड़ी पल पल, पलक दे पिच्छे खलक ख़ालक वेख वखाईआ।

✻ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ ऊशा राणी दे गृह पुराणा महल्ला कोटकपूरा ✻

पैगम्बर कहिण दरगाह साची तेरा सच महल्ला, परवरदिगार सांझा यार जल्वागर इक सुहाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी वस्से जला थला, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर आपणा नूर जोत चमकाईआ। जिस ने नाम संदेसा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लोकमात घल्ला, नाउँ निरँकारा निरगुण धारा आप दृढ़ाईआ। जो निरगुण सरगुण आत्म परमात्म लख चुरासी जीव जंत साध सन्त फड़ाए पल्ला, पारब्रह्म ब्रह्म मेला मेले सहज सुभाईआ। जिस विच निराकार निरगुण जोत हो के रला, तन वजूद काया माटी ख़ाक तजाईआ। सो सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर मेटणहार दूई द्वैत दा सल्ला, माया ममता मोह विकार मेहर मेहर विच करे सफ़ाईआ। आदि अन्त श्री भगवन्त सच स्वामी अन्तरजामी वसणहारा निहचल धाम अटला, महल अटल इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। पैगम्बर कहिण दरगाह साची तेरे अन्तर हक़ सिँघासण, सोभावन्त आप सुहाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाशण, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस दा रूप रेख रंग दीन मज़हब ना कोई ज़ातण, ज़ाती वंड ना कोए वंडाईआ। जो नित नवित्त खेले खेल पुरख अबिनाशण, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना वेख वखाईआ। अवतार पैगम्बर गुर करे दासी दासन, सेवक सेवा सच समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर धुर संदेसा लोकमात आए आखण, नव नौ चार भेव अभेदा पर्दा ओहला दए उठाईआ। हुक्म संदेसा देवे ज़ाहर बातन, गहर गम्भीर गुणी गहीर बेनज़ीर नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर साध सन्त सूफ़ी फ़कीर जागण, दिवस रैण बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले धुर दे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दुआरा एकँकारा सति सच समझाईआ। दरगाह साची कहे पैगम्बर सुणो हक़ीक़त हक़, लाशरीक दयां जणाईआ। चार वरन अठारां बरन रिहा कोई ना सति, धीरज धीर ना कोए धराईआ। झगड़ा प्या मनमत, गुरमति बैठी मुख छुपाईआ। नाड़ बहत्तर घर घर उबले रत्त, हड्ड मास दए दुहाईआ। धीरज सन्तोख रिहा कोई ना यति, कूड़ कल्पणा रही सताईआ। माया ममता मोह विकार लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। परवरदिगार दर्शन पावे ना कोए उपर शाह रग, नौ

८५४
२१

दुआरे तृष्ना ना कोए बुझाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घटनिवासी पुरख अबिनाशी मिले मेल ना किसे कमलापति, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पर्दा उहला आप उठाईआ। दरगाह कहे पैगम्बरो सुणो अगम्मी फ़रमान, फ़रमांबरदारो दयां जणाईआ। अन्तिम लेखा मुक्कणा जगत क़ुरान, काया कुरह वज्जे वधाईआ। सब दा सांझा होणा इक ईमान, साबत सूरत दए दृढ़ाईआ। शरअ छुरी ना रहे जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। इक कलमे दा इक्को होवे ऐलान, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को ढोला गाईआ। दृष्टी विच रहे ना कोए बेईमान, इष्ट सब दा दए बदलाईआ। जिस दी कथा कहाणी सुणदे रहे कान, संदेसयां विच समझाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला प्रगट होवे इक अमाम, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणी कल धराईआ। जन भगतां सन्तां देवे हक़ीक़ी जाम, अमृत रस रस रसीआ इक चखाईआ। मज़हब दा रहिण ना देवे कोई गुलाम, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। चार वरन इक्को इष्ट मन्ने श्री भगवान, सिल पाहन पूजन कोए ना जाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी सिफ्तां वाला गाइन गान, महिमा वाला राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। पैगम्बर कहिण किरपा करे मेहरवान, महिबान बीदो बीख़ैर या अलाह अलाहीआ। जिस दा आदि अन्त इक ईमान, अमलां तों रहित नज़री आईआ। धर्म झुलाए निशान, निशाना दीन दुनी बदलाईआ जिस दा चश्मे नूर इक असलाम, काया काअबा दए वड्याईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर लेखा जाणे ज़िमीं असमान, पर्दानशीन पर्दा आप उठाईआ। योद्धा सूरबीर बलवान, बलधारी वड वड्याईआ। कलयुग अन्त खेले खेल महान, ख़ालक ख़लक मख़लूक वेखे थाउँ थाईंआ। जिस दा राह तक्कण विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर लाउण ध्यान, गण गंधर्ब अक्ख खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेसा नर नरेशा इक इकल्ला आप जणाईआ। पैगम्बर कहिण दरगाह साची खेल प्रभू दे हथ्थ, अवर ना कोए चतुराईआ। जिस दी सरनी सारे रहे ढठ्ठ, अवतार पैगम्बर सीस ना कोए उठाईआ। उह सब दा लहिणा देणा पूरा करे पुरख समरथ, जो सर्ब कला अख्वाईआ। साडी अन्त अख़ीर होणी बस, बस्ता सब दा दए बंधाईआ। उम्मत उम्मती बुरज जाणा ढठ्ठ, नबी रसूल ना कोए बचाईआ। सति धर्म दा खुल्णा हट्ट, वणजारा इक्को नूर अलाहीआ। जिस ने आदि रचना लई रच, अन्तिम ओहो वेख वखाईआ। नव नौ चार खेल कराए सच, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जो गुर अवतार पैगम्बर भविख्त गए दस्स, धुर संदेसे नाल जणाईआ। जिस नूं वेखे अगम्मी अक्ख, जग नेत्र ना कोए उठाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची सोभा पाईआ। दरगाह साची धाम सुहञ्जणा, सोभावन्त रमणीक। जिथ्थे वस्से आदि निरँजणा, जिस दे विच हक़ तौफीक़। गुर अवतार पैगम्बर बण के सज्जणा, आसा मनसा पूरी करे उम्मीद। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजना, जिस दी सारे करन उडीक। चार कुण्ट दह दिशा जिस दा नाम डंका वज्जणा, कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे लीक। जन भगत सुहेले लाए अंगणा, काया मन्दिर वस्से नज़दीक। सच नाम दी चाढ़े रंगणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक वखाईआ। दर ठांडा इक अगम्म, हरि करता आप जणाईआ। जिथ्थे दीन दयाला धुर दा देवे धन, अगम्म आपणा आप वरताईआ। फ़ुरना दिसे कोई ना मन, मनसा मोह ना कोए हल्काईआ। निरगुण नूर चाढ़ के चन्न, सुर्या चन्द पन्ध मुकाईआ। सति धर्म दा बेड़ा बन्नृ, मार्ग इक्को इक वखाईआ। हरख सोग मेट के ग़म, चिन्ता चिखा दए जलाईआ। पर्दा लाह के आत्म ब्रह्म, पारब्रह्म दए समझाईआ। सो खेल करे श्री भगवान, निरगुण दाता नूर ख़ुदाईआ। पैगम्बर कहिण उस दा फ़रमाना सारे लईए मन्न, मनसा अवर ना कोए रखाईआ। दरगाह साची तेरे सच दुआर सारे कहीए धन्न धन्न, प्रभू तेरी बेपरवाहीआ। जे सतिजुग त्रेता द्वापर कीता खंन खंन, कलयुग अन्तिम लेखा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दा पर्दा देवे बन्नृ, बन्नृणहार गोपाल स्वामी इक्को नज़री आईआ।

✻ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ मुख्त्यार कौर दे गृह डोगर बसती फ़रीद कोट ✻

दरगाह साची कहे निरगुण धार वेखो अवतार पैगम्बर आपणा वेला, सदी सदीवी नाल मिलाईआ। प्यार रिहा ना मुरीद मुर्शद गुरु चेला, भगत भगवान जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म रंग लाए ना कोए सज्जण सुहेला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण साचा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी वसणहारा धाम नवेला, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणा पल्लू ना किसे फड़ाईआ। कलयुग दीन दुनी राह तक्के धर्म राए दी जेलृ, जम की फाँसी अग्गे हो ना कोए कटाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सब दा वक्त होया दुहेला, चार कुण्ट दह दिशा जीव जंत रहे कुरलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अचरज खेल अगम्मी खेला, ख़ालक ख़लक लोकमात रिहा रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता इक अख्वाईआ। अवतार पैगम्बर कहिण साडी डंडौत बन्दना एक,

सजदयां विच सीस निवाईआ। जिस दी दस्स के आए टेक, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। सो निरगुण धार रिहा वेख, एकँकार बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सृष्टी दा दृष्टी अंदर वेखे भेख, कूड़ी क्रिया खोज खुजाईआ। भरमे भुल्ले मुल्ला शेख़, पंडत पांधा सुरत शब्द ना कोए मिलाईआ। सच धर्म दी करे कोई ना भेंट, कूड़ी क्रिया घर घर सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरा किसे नज़र ना आए आपणा देश, परदेसी मातलोक बैठे आसण लाईआ । जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे हमेश, पुरख अकाला दीन दयाला एकँकार इक अख्वाईआ। सो देवणहारा अन्त संदेस, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना आप सुणाईआ। लहिणा देणा पूरा करे भविख्तां विच कहि के गया गुरु दस्मेश, वेद व्यासा शहादत इक भुगताईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस नूं करदे गए आदेस, सजदयां विच सीस झुकाईआ। सो परम पुरख परमात्म धुर दा दाता इक नरेश, सचखण्ड निवासी आपणी कल वरताईआ । जिस दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी जगत संदेसे लिखे लेख, कोटन कोटि हरफ़ हरूफ़ सिफ्तां विच वड्याईआ। सो करनी दा करता क़ुदरत दा मालक खेले आपणी खेड, गुर अवतार पैगम्बर सारे बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा हुक्म वरताईआ। दरगाह साची कहे जिस दा खेल उपर धरती, धरनी धरत धौल वेख वखाईआ। ओह दो जहानां निधपरती, जिस ने कलयुग विच सतिजुग लाउणा शर्ती, शर्तीआ आपणा हुक्म वरताईआ। जलवा नूर प्रकाश करे अर्शी , नूर नुराना डगमगाईआ। ग़रीब निमाणयां बणे दर्दी, कोझे कमल्यां वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां सुण के अर्ज़ी, आरज़ू सब दी वेख वखाईआ। लहिणा देणा चुकावे कूड़ कुड़िआर फ़रज़ी, फ़र्ज आपणा तोड़ निभाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्दी, हुक्म देवे चाँईं चाँईंआ। सदी चौधवीं नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मिटावे अन्धेरगर्दी, ज़ात पात ऊँच नीच दा झगड़ा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। दरगाह साची कहे मेरे अन्तर सदी चौधवीं प्रगट होवे निर्मल जोत, जोती जाता इक अख्वाईआ। जिस दी अक़ल बुद्धी करे कोई ना सोच, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जिस नूं झुकदे आदि जुगादि जुग चौकड़ी लोक परलोक, दो जहान सीस निवाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर कहिंदे नाम सलोक, सोहले लोकमात सुणाईआ। जिस नूं ना कोई हरख़ ना कोई सोग, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। सो स्वामी जन भगतां देवे धर्म दा जोग, आत्म परमात्म मेला मेले सहज सुभाईआ। जो निरगुण सरगुण करनहार संजोग, सुरती शब्द जोड़ जुड़ाईआ। जो आत्म सेजा भोगे भोग, सच सिँघसण डेरा लाईआ। सो स्वामी कलयुग अन्तिम हउमे कटे रोग, हँकार गढ़ दए तुड़ाईआ।

भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ काया माटी कोट, बंक दुआरा इक वड्याईआ। नाम निधान श्री भगवान काया अंदर लावे चोट, चोटी चढ़ के वेख वखाईआ। झगड़ा मुकाए वरन गोत, आत्म ब्रह्म दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक वखाईआ। दरगाह साची कहे मेरे अन्तर अगम्मी नूर, नूर नुराना नज़री आईआ। जिस नूं गुर अवतार पैगम्बर कर के आए मशहूर, मशवरिआं विच ढोले सोहले राग नाद सुणाईआ। जिस दी नाम निधान अगम्मी तूर, तुरिया तों परे आपणा पर्दा ओहला लाहीआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेटे क्रिया कूड़, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। चार वरनां अठारां बरनां बख्शे चरण धूढ़, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां आसा मनसा करे पूर, जो भविख्तां विच सिफ्त आए सालाहीआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां बख्शणहार क़ुसूर, मेहर नज़र नाल तराईआ। नाम भण्डारा होवे भरपूर, दो जहानां दए वरताईआ। दाता योद्धा होवे सूर, बलधारी नूर अलाहीआ। गढ़ हउमे हंगता तोड़े ग़रूर, गुरबत अंदरों दए कढ्ढाईआ। सब दी बेनन्ती करे मन्ज़ूर, मनसा वेखे चाँईं चाँईंआ। जिस ने जलवा दिता मूसा उत्ते कोहतूर, सो लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। सो चतुर सुघड़ बणा के मूर्ख मूढ़, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण दाता पुरख बिधाता अक़ल कलधारी आपणी कल वरताईआ। दरगाह साची कहे मेरे अन्तर अन्तर जोत प्रकाश, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी होवे ना कदे विनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। अवतार पैगम्बरां गुरुआं कर के दासी दास, सेवकां सेवा सच समझाईआ। दीन मज़हब ज़ातां पातां वंड वंडा के खेले खेल तमाश, बाज़ीगर आपणा स्वांग वरताईआ। गोपी काहन पवाए रास, मण्डल मण्डप नाच नचाईआ। सीता राम फिराए बनबास, पैग़म्बरां फाँसी उत्ते लटकाईआ। गुरुआं वेखे खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग इक रंगाईआ। दरगाह साची कहे प्रगट होवे इक निरँकार, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जिस दी गुर अवतार पैगम्बर कर के गए पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। जिस नूं सजदे हुंदे बारम्बार, पारब्रह्म प्रभ आपणी कल धराईआ। जिस दा सिफ्तां विच सारे करन इज़हार, रागां नादां ढोल्यां विच गाईआ। जिस नूं पेशीनगोईआं विच दस्स के गए कल कल्की अवतार, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। जिस दा हुक्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवादार, इन्द इंद्रासण बैठे सीस झुकाईआ। रवि ससि भज्जण वारो वार, मण्डल मण्डप आपणा पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी बणे पनिहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी कार कमाईआ। सो खेल

८५७
२१

करे सच्ची सरकार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा हुक्म ना कोई मेटे विच संसार, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। लख चुरासी करनहार गिरफ्तार, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। सो कलयुग अन्त मेटणहार अन्ध अंध्यार, सतिजुग साचा नूर दए चमकाईआ। मानव मानव मानव करे प्यार, मानुख मानुख मानकुख इक्को रंग रंगाईआ। दीन मज़हब ज़ात पात झगड़ा दए निवार, आत्म ब्रह्म पर्दा दए उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा शब्द होवे जैकार, धुर दा नाम वज्जे वधाईआ। सो लेखा जाणे अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाहीआ। जिस नूं कहिंदे परवरदिगार, लाशरीक नूर अलाहीआ। सो चौदां लोकां चौदां तबकां पावे सार, चौदां विद्या वेख वखाईआ। चौदस चन्द दए आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक अवतार, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

✲ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ चरणजीत कौर दे गृह फ़रीदकोट ✲

वेखो नेत्र रोवण लग्गी सती, बिन अक्खां नीर वहाईआ। मेरी बुझण लग्गी बत्ती, जगत विच ना कोए वड्याईआ। हुक्म देवे धुर दा कमलापती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दे बिना करे कोई ना गति, आवण जावण ना कोए मुकाईआ। मैं कल्पणा विच रही तपी, तत्ती अग्ग वांग तपाईआ। मैनूं नाम ना मिल्या भोरा रती, मेरी स्वाह ना लेखे पाईआ। इक सौ उनत्तर साल मिली कोई ना खट्टी, बैठी आपणा झट लँघाईआ। बिरहों वैरागण गई फट्टी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सती कहे मैं रोवां मारां धाह, हाए उफ़ सुणाईआ। मेरा रिहा कोई ना राह, रस्ता अग्गे ना कोए वखाईआ। मैं सड़ के होई स्वाह, माटी कम्म किसे ना आईआ। मैं रो रो करदी रही दुआ, वास्ता इक्को अग्गे पाईआ। मेरे साहिब होणा सहा, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं तकदी रही कवण वेला मिले आ, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सती कहे मेरी बुझण लग्गी शमां, शमांदान नज़र कोए ना आईआ। मेरी विछड़न लग्गी धरती अम्मां, अम्मढ़ी संग ना कोए निभाईआ। मेरा नाता तुट्टण लग्गा काया माटी चम्मा, हड्ड मास रही छुडाईआ। मैं वहि गई विच ग़मां, खुशी नज़र कोए ना आईआ। बौहड़ी मेरा पूरा होण लग्गा समां, समाप्त होवे मेरी लोकाईआ। मेरा अन्त अख़ीरी दमां, साह साह दयां सुणाईआ। मेरा जीवण होणा नवां, नर निरँकार दए वड्याईआ। मैनूं जगत रहे ना तमां, तृष्ना रिहा बुझाईआ। ओस दी चरणी ढहां, जो

ढह्वयां गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद आपणी दया कमाईआ। सती कहे मेरे कोल पुराणा पत्र, पत्रका दयां वखाईआ। मेरे दिन बाकी रहन्दे सत्तर, साते नाल ज़ीरो दए गवाहीआ। मैं बदल देणा सी ग्रह नछत्र, जीवण जगत देणा मिटाईआ। मैनूं कोई ना सक्कया पकड़, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। मेरे नाल साथी होर फक्कर, जो फ़कीर फ़िकरा इक्को गाईआ। जेहड़ा दब्बया सी विच क़बर, मक़बरे विच्चों आपणा आप बदलाईआ। असीं दोवें बैठे रहे कर के सबर, सबर प्याला पी के झट लँघाईआ। किस वेले आवे शेर बब्बर, हरि करता नूर अलाहीआ। जेहड़ा साडे कोलों छुडावे सारा टब्बर, वड्डे छोटे लए तराईआ। चौदां साल तों लग्गे मगर, ख़ुशी ग़मी ना कोए वखाईआ। जिस दे हथ्थ धुर दा अदल, इन्साफ रिहा कमाईआ। सो जीवण देवे बदल, मेहर नज़र इक टिकाईआ। साडी बुद्धी रही ना अक़ल, चतुराई ना कोए जणाईआ। साडा किसे नूं रूप नज़र नहीं आउँदा शकल, शक्क सारे रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। फ़कीर कहे मेरा फ़िकरा, फ़ातिहा दए पढ़ाईआ। जिस दा पैगम्बर करदे ज़िकरा, ज़करीआ दए दुहाईआ। जो आपणी धारों निकला, निरगुण नूर अलाहीआ। जो लेखा मुकावे सज्जण मित्रा, मित्र प्यारा दया कमाईआ। असीं डरदे उहदे कोलों छित्तरां, जो चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग जन्म दा सब दा लेखा जाणे शजरा, खाता बचया रहिण कोए ना पाईआ।

❋ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ शिव इंदर सिँघ दे गृह फ़रीदकोट ❋

सतिगुर शब्द सदा उधारन, आदि जुगादि दया कमाइंदा। जन भगतां पैज संवारन, नित नवित्त वेख वखाइंदा। हउमे गढ़ तोड़ हँकारण, प्रेम प्रीती इक दृढ़ांइंदा। काया कण्पड़ रूप निवारन, हउमे हंगता डेरा ढाइंदा। निरगुण नूर जोत करे उज्यारन, अन्ध अन्धेरा कूड़ मिटाइंदा। नाम शब्द सुणाए धुनकानण, अनरागी राग अल्लाइंदा। अमृत जाम आए प्यालण, निझर झिरना रस झिराइंदा। दीवा बाती आए बालण, निरगुण नूर जोत रुशनाइंदा। दरगाह साची आए वखालण, सचखण्ड दुआरा इक प्रगटाइंदा। जिथ्थे वस्से जोत अकालण, दूजा नज़र ना कोए टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाइंदा। सतिगुर शब्द सदा सुखदाई, लोकमात दए वड्याईआ। आत्म ब्रह्म दए समझाई, दूई द्वैत पर्दा लाहीआ। काया मन्दिर करे रुशनाई, साढे तिन्न हथ्थ वज्जे वधाईआ। मेला मेले सहज सुभाई, हरि ठाकर

नूर अलाहीआ। आवण जावण कटे जुदाई, चुरासी बंधन दए कटाईआ। सच महल अटल दए बहाई, दरगाह साची इक वखाईआ। जिस गृह मिले धुर दा माही, मालक खालक प्रितपालक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दुआरा इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द सदा दयाल, दयानिध अखवाइंदा। जन भगत सुहेले लए भाल, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। साचा मार्ग दस्स सुखाल, पर्दा उहला आप उठाइंदा। गोद उठा के आपणे लाल, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। दे के नाम सच्चा धन माल, घर ख़ज़ीना आप भराइंदा । झगड़ा मुका के काल महाकाल, राए धर्म डेरा ढाहइंदा । अन्त कन्त करे संभाल, भगवन आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। बण मुर्शद मुरीदां पुच्छे हाल, मेहरवान आपणे विच समाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत डगमगाइंदा। जन्म जन्म दी कर्म करम दी पूरी करे घाल, लहिणा देणा निरगुण धार झोली पाइंदा। एथे ओथे करे संभाल, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच दुआरा एकँकारा सांझा घर इक वड्याइंदा। सतिगुर शब्द चाढ़े रंगण, हरि करता आप रंगाईआ। भेव रहे ना माटी बदन, चम्म दृष्टी दए गवाईआ। नाम निधान वजा मृदँगण, सोई सुरती लए उठाईआ। सच प्रेम दा दे अनन्दन, अनरस कूड़ा दए गवाईआ। आत्म परमात्म टुट्टी आवे गंढुण, विछोड़ा अग्गे रहे ना राईआ। देवे वड्याई विच वरभण्डण, ब्रह्मण्डन पैंडा दए मुकाईआ। करे प्रकाश बिन सुर्या चन्दन, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सच वखावे इक्को डंडावत बन्दन, सजदा सीस जगदीश वखाईआ। दूई द्वैती ढाह के कंधन, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। चरण धूढ़ी मस्तक टिक्का ला के चन्दन, दुरमति मैल दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सूरा सरबंगण, साहिब सुल्तान मर्द मर्दान आपणा हुक्म वरताईआ।

८६० २१

❊ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ किरपाल सिँघ दे गृह पिंड गोले वाल ज़िला फ़िरोज़पुर ❊

सचखण्ड दुआरे ईसा कहे मुहम्मद ओह वेख नानक, निरगुण धार निराकार निगाह टिकाईआ। की हुक्म संदेसा देवे अगम्म अचानक, बेख़बरां खबर सुणाईआ। पैगम्बरो परवरदिगार करना खेल भयानक, भय भउ देवे थाउँ थाईंआ। तुहाडा नाम क़लमा दे के आपणी अमानत, घर घर अन्तर निरंतर खोज खुजाईआ। लोकमात तुसीं किस दी दयो ज़मानत, सच

सच देणा समझाईआ। सच वस्त किसे कोल ना रही निआमत, ख़ाली भाण्डे नज़री आईआ। करे खेल मेरा परमात्म जो आत्म होवे जानत, जाणी जाण दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया ममता मोह मेटे अलामत, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। बिन पुरख अकाल दूजा दिसे ना कोए सही सलामत, सुल्हकुल आपणी कल वरताईआ। झगड़ा मेटे बोदी जञ्ञू हजामत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। ईसा कहे मुहम्मद ओ नानक वेख तपस्वी, जो मन का मणका रिहा फिराईआ। की झगड़ा होणा विच अरबी, अरबस्तान दए दुहाईआ। क्यों ढोरां खवाई चरबी, चरागाहां विच रुलाईआ। की नाम चलाए फ़रज़ी, फ़रद ज़ुलम नाल वड्याईआ। आपणी वेखो दिती अर्ज़ी, जो लिखी बिन क़लम शाहीआ। सदी चौधवीं रिहा कोई ना दर्दी, दुखियां दु:ख ना कोए वंडाईआ। चारों कुण्ट अन्धेर गर्दी, साचा अदल ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी करन वाला मर्ज़ी, मरीज़ होई कूड़ लोकाईआ। किसे समझ ना आवे साचे घर दी, बेवतन बैठे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा पर्दा रिहा चुकाईआ। ईसा कहे मुहम्मद की नानक रिहा दस्स, संदेसा नूर अलाहीआ। साडा रिहा कोए ना वस, वास्ते पा के दईए दुहाईआ। सदी चौधवीं होणा बस, बस्ते सब दे देणे बंधाईआ। झगड़ा रिहे ना तत अठ्ठ, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। जेहड़े मज़हबां विच दीनां विच इस्लामां विच कलामां विच माणस मानुख कर के आए अड्ड, वखरी वखरी धार जणाईआ। सो अन्त सचखण्ड दुआरे सारे दईए छड्ड, खैड़ा छुट्टे जगत लोकाईआ। सृष्टी दृष्टी इक सरनाई जाए लग्ग, लग मातर दा रूप रहे ना राईआ। त्रैगुण माया पंज तत बुझे अग्ग, अमृत मेघ बरसे थाउँ थाईंआ। सब दा मेला होवे परम पुरख दा उपर शाह रग, सचखण्ड दुआरा एकँकारा इक्को दए सुहाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रहे ना कोए अलग, दूजा दर ना कोए जणाईआ। नाम खुमारी देवे आपणी मदि, धुन नाम शब्द मधुर धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। ईसा कहे महम्मद की नानक देवे इशारा, शब्द संदेसे विच जणाईआ। पैगम्बर होवो ख़बरदारा, तेई अवतार लओ उठाईआ। सारे वेखो आपणा अन्त किनारा, तट दुआरे वज्जे वधाईआ। खेल करे धुरदरगाही पारब्रह्म परवरदिगारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दी महिमा सिफ्त कागद क़लम ना लिखणहारा, अक्खरां विच ना कोए वड्याईआ। सो स्वामी प्रगट होवे जिस नूं कल कल्की कहि के आए चौवीवां अवतारा, अमाम अमामा वेस वटाईआ। जिस दा सच होवे इक दुआरा, दरबारा इक्को इक सुहाईआ। सच नाम दा लाए जैकारा, तूंही तूंही राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी

पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म इक वरताईआ। ईसा कहे मुहम्मद बिन रसना नानक निरगुण रिहा बोल, अनबोलत राग अल्लाईआ। वेखो परम पुरख बैठा अडोल, अडुल आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़हब धर्म कंडे रिहा तोल, धर्म तराज़ू आपणे हथ्थ रखाईआ। सच वस्त रही किसे ना कोल, काया माटी सोभा कोए ना पाईआ। दीन दुनी होई अनभोल, भरमे भुल्ली लोकाईआ। हरि हिरदे किसे ना जाए मौल, मौला रूप ना कोए रुशनाईआ। अन्त पूरा करन लग्गा कौल, इक़रारनामे खोज खुजाईआ। जिस दा आदि जुगादी इक्को पोल, निशाना दो जहान दए वखाईआ। सो फ़रमाना देवे अगम्म अनमोल, अनडिठड़ी खेल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ईसा कहे मुहम्मद छेती नानक कोलों पुच्छ, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। पर्दा ओहला रहे ना लुक, भेव देणा जणाईआ। हुण वेला नहीं रहिणा चुप, उच्ची कूक दयां दृढ़ाईआ। मुहम्मद कहे वेख चारों कुण्ट अन्धेरा घुप, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा प्या पिउ पुत, माया ममता होई हल्काईआ। कलयुग बदले आपणा रुक्ख, दीन दुनी दिती भुलाईआ। साबत रिहा ना कोए मनुक्ख, काम क्रोध कीता हल्काईआ। सुफल दिसे किसे ना कुख, भगत जन्मे कोए ना माईआ। उलटा मात गर्भ दा रुक्ख, चुरासी गेड़ ना कोए कटाईआ । आत्म परमात्म नाता सब दा गया तुट, टुट्टी गंढु ना कोए पवाईआ। आत्म लिव गई छुट, छुट्टी लिव ना कोए लगाईआ। पुरख अकाल नालों गए रुठ, अन्त रुठ्ठयां ना कोए मनाईआ। सब दे ख़ाली दिसण ठुठ, वस्त सच ना कोए वरताईआ। भाग लग्गा ना काया पंज भूत, ततव तत ना कोए रुशनाईआ। दिशा मिले किसे ना कूट, काया कुटीआ ना कोए दिसाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला पैगम्बरो सब दा लहिणा देणा करे मनसूख़, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं चुक्के चूक, चुकन्नी करे ख़लक ख़ुदाईआ। शब्द संदेसा देवे अगम्मी दूत, दुतिया भाउ दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता आप सुणाईआ। मुहम्मद कहे ईसा मैं सुणी अगम्मी कलाम, कलमा कलमयां बाहर जणाईआ। एह खेल धुर अमाम, जो आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने सानूं बरदे बणाया ग़ुलाम, हुक्में अंदर हुक्म भुआईआ । ओह करन वाला सच्चा इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे निज़ाम, नौबत नाम हक़ जणाईआ। सोहँ आपणा दे पैग़ाम, धुर संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे हराम, शरअ शरायती डेरा ढाहीआ। अन्त साडा नहीं रहिणा इस्लाम, सलामालेकम ना कोए वड्याईआ। उम्मत थोड़ी आयू होर महिमान, लोकमात नज़री आईआ। धुर दा मालक होवे मेहरवान, महिबान दया कमाईआ। झगड़ा मुकाए अञ्जील क़ुरान, काया कुरह इक समझाईआ। लेखा वेखे जगत अवाम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लेखा अन्त मुकावे आण, आनन फ़ानन आपणी खेल कराईआ।

❋ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ४ गुरचरण सिँघ दे गृह पिंड गोलेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ❋

नानक कहे पैगम्बरो वेखो धुर दा राणा, जिस नूं राम रहीम कहि के सारे गाईआ। जो आदि जुगादी नौजवाना, शाह पातशाह धुरदरगाहीआ। जिस दा हुक्म संदेसा मिले परवाना, निरगुण निरगुण करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म जिस दा गाणा, सोहँ मैं गा के आया चाँईं चाँईंआ। सो कलयुग अन्तिम हो प्रधाना, नाम प्रधानगी आप कमाईआ। लेखा वेख दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। अवतार पैगम्बरां कोलों आपणे हथ्थ लए कमाना, लहिणे सब दे पूरे कर के पूर कराईआ। किसे नूं लाउण ना देवे बहाना, लहिणा देणा हथ्थो हथ्थ चुकाईआ। जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा ज़माना, सतिजुग सच्चा राह वखाईआ। दीन दुनी दा सांझा करना पीणा खाणा, ज़ाती वंड ना कोए रखाईआ। हंगता गढ़ तोड़े अभिमाना, ममता मोह मिटाईआ। शरअ कूड़ मेटे निशाना, छुरी जगत ना कोए कसाईआ। मानव रहे ना कोए बेगाना, चार वरन इक्को घर टिकाईआ। साहिब सतिगुर हो के बीना दाना, दयावान वेख वखाईआ। साचे गृह मन्दिर घर वस्से हक़ बिसरामा, बिछरत विछड़े जोड़ जुड़ाईआ। सो मालक सदी चौधवीं अन्त अख़ीर जोती पहर के आपणा जामा, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नानक कहे पैगम्बरो जो कर के आए तबलीग, तबअ दीन दुनी बदलाईआ। उस दा लेखा चुकाए लाशरीक, परवरदिगार नूर अलाहीआ। पिछली कीती उत्ते मारे लीक, लाईन ऐन दए लगाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना तृखा दए बुझाईआ। जिस दी सिफ्तां विच कर के आए तमहीद, नग़म्यां कलमयां विच गाईआ। ओह खेल करे नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तुहाडी सब दी करे तसदीक़, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। जिस दे विच हक़ तौफीक़, ताक़तवर नूर अलाहीआ। साचा कलमा दे हदीस, हज़रतो तुहाथों परे करे पढ़ाईआ। मेहर मेहर मेहर नाल कर बख़्शीश, बख़्शिश रहमत आप कमाईआ। झगड़ा रहे ना किसे ख़बीस, पर्दा ओहला दए उठाईआ। लहिणा पूरा करा अबलीस, असलीअत आपणी इक समझाईआ। लेखे मेटे जगत अकलीअत, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। सब दी सांझी करे वलदीअत, पिता पुरख अकाल नज़री आईआ। इक्को नाम दी अग्गे रहे अहमीअत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दी प्रथाए

अवतार पैगम्बर गुर कर के आए वसीअत, सो वसल देवे यार खुदाईआ। दीन दुनी दी बदल देवे तबीअत, तबीब हो के वेख वखाईआ। नानक निरगुण कहे सचखण्ड दुआर मेरी इक्को नसीहत, सति सति नाल समझाईआ। दीन मज़हब दी रहे ना कोए काबलीअत, निफ़ाक़ नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नानक कहे पैगम्बरो तक्को आपणा अमाम, जो मालक धुरदरगाहीआ। जिस ने शरअ मेटणी तमाम, तमअ तमन्ना देणी गवाईआ। सच संदेस सुणाउणा पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। सति धर्म झुलाउणा निशान, निशाने पिछले दए बदलाईआ। सतिजुग मात करे प्रधान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सानूं मन्नणी पए ओस दी आन, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस नूं अल्ला वाहिगुरु खुदा किहा भगवान, सो भगवन आपणी कल वरताईआ। जिस दे कोलों लैंदे रहे दान, दाता दानी शहिनशाहीआ। सो प्रगट होया विच जहान, जहालत कूड़ क्रिया दए मिटाईआ। सतिजुग साचा मार्ग दस्से आसान, असलीअत आपणी आप दृढ़ाईआ। भाग लगाए काया माटी साढे तिन्न हथ्थ मकान, मन्दिर इक्को इक वड्याईआ। जिथ्थे दीपक नूर जोत जगे महान, शब्द अनाद धुन शनवाईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म होए पहचान, निज नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेस इक सुणाईआ। नानक निरगुण कहे मैं सच संदेसा आया कहिण, कहि के दयां जणाईआ। सब दा वक्त पहुंचया ऐन, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। तुसीं रहिणा ना कोई तरफ़ैन, दुतिया रूप ना कोए बदलाईआ। पुरख अकाल सब दा चुकाए लहिण देण, लेखा सब दा झोली पाईआ। चार वरनां नाता जोड़े भाई भैण, साक सज्जण इक वड्याईआ। आत्म परमात्म ढोला सारे करन गाइण, गा गा खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक नरायण, नर निरँकारा एकँकारा परवरदिगारा सांझा यारा साची करनी कार कमाईआ।

❊ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ४ निहाल कौर दे गृह पिंड गोलेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ❊

नानक कहे पैगम्बरो मैं दस्सां हुक्म मुताबक, मुतला सब नूं रिहा कराईआ। जो साडे चार जुग दे लेख जगत खताबत, अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। उह प्रभू दी बन्दगी भजन दसदे इबादत, सिफ्तां वाली पढ़ाईआ। दीन मज़हब विच वंडी आदत, हिस्सा वंड वंडाईआ। अन्तिम सारे होए विच हिरासत, हैरानी मेरे अंदर आईआ। सब दी इक्ठी भुगतणी शहादत, गुर

अवतार पैगम्बर लए भुगताईआ। अन्त सांझे आपणी अमानत, आप आपणे विच टिकाईआ। सब दे कोल मचल्लका रहे ना कोई देण वाला ज़मानत, बोझ कंध ना कोए उठाईआ। करे खेल सही सलामत, हरि करता हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं अन्त पैणी बग़ावत, बग़लगीर ना कोए अख्वाईआ। दीन दीनां होणी अदावत, अदल इन्साफ ना कोए कमाईआ। मनमति करे जहालत, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। साची रहे ना किसे लिआकत, अकल कलधारी देवे गवाहीआ। मुहब्बत वाला करे हमाकत, हम साजण ना कोए अख्वाईआ। वजूद विच्चों निकले शराफ़त, शरअ करे लड़ाईआ। सूफ़ी दिसे ना विच कोई मारफ़त, हक़ीक़ी पर्दा ना कोए उठाईआ। एको खेल करे अस्तिक, वाहवा आपणी कार कमाईआ। जगत वजूद रहिण ना देवे कोई नास्तिक, निशाना कूड़ा दए गवाईआ। झगड़ा मेटे मन बुद्धी सियासत, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। माया रहे ना कोई विरासत, जगत विकारां डेरा ढाहीआ। इक्को परम पुरख दा इष्ट हर घट सुहाणा होवे उपाशक, उपनिशदां वाली छड्डे पढ़ाईआ। जन भगत उठाए आपणे बालक, बाल अंञाणे आप प्रगटाईआ। किरपा कर साहिब प्रभ ख़ालक, ख़लक खुदा वेख वखाईआ। सब दी आलस निंदरा लाहे बण के सालस, साहिब सुल्तान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। नानक कहे पैगम्बरो जो लेखा लेख धुरदरगाह, अक्खरां नाल वड्याईआ। ओह तुहाडा सब दा बणे गवाह, शहादत देवे चाँईं चाँईंआ। सारे नैण लओ उठा, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा प्रभ दा भुल्लया नाँ, नाउँ निरँकारा ना कोए गाईआ। किसे ने सूर खाधा किसे ने खाधी गाँ, गहर गम्भीर मिलण कोए ना पाईआ। तुसां किसे दी पकड़ी नहीं बांह, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। दरगाह साची मिलणा नहीं थाँ, सचखण्ड ना कोए टिकाईआ। वेख्यो ऐवें हां विच करयो ना हां, धुर दा हुक्म इक मनाईआ। कलयुग जीव हँस बुद्धी होए काँ, काग वांग कुरलाईआ। भाग लग्गा ना किसे गराँ, साढे तिन्न हथ्थ पई दुहाईआ। तुहाडी सदी चौधवीं दी अन्त क़बूल होई दुआ, निउँ निउँ लागे पाईंआ। मेहर करे हक़ खुदा, खुद मालक वेख वखाईआ। जिस दी मन्नदे आए रज़ा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ओह सब दे सिर ते फिरदी वखाए क़ज़ा, क़ाज़ी मुल्ला ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच सच समझाईआ। नानक कहे पैगम्बरो जो क़लमा दस्सया काग़ज़ात, अक्खरां विच लिखाईआ। ओह सिफ्त करे ओस ज़ात, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। जिस विच सब तों वक्खरी करामात, कर्म कांड ना कोए वड्याईआ। लहिणा देणा चुकाए कायनात, सृष्टी दृष्टी वेख वखाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। तुहाडा लेखा पूरा करे जो लिख के आए क़लम दवात, काग़ज़

शाही जोड़ जुड़ाईआ। अन्त अख़ीर सब नूं होणी मुश्किलात, मुशिकल हल्ल ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं फ़ातमा ख्वाहिश बणनी वफ़ात, वफ़ादार नज़र कोए ना आईआ। चार यारी रहे ना कोए जमात, अगला संग ना कोए वखाईआ। दीन दुनी दा विगड़ जाणा हालात, हालांकि प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। तुहाडी पिछली पूरी होवे ख़िदमात, ख़ादम अगले लए बणाईआ। मज़हब दा छड्ड दयो जज़बात, जज़्ब आपणे विच कराईआ। चार कुण्ट होणे फ़सादात, फ़ैसला हक़ ना कोए रखाईआ। अन्तिम पूरी होण लग्गी मुनिआद, माअने सके ना कोए समझाईआ। सारे होए लाजवाब, जवाबतल्बी विच दुहाईआ। धुर दा मिले ना कोए ख़िताब, ख़ता विच दिसदी लोकाईआ। धर्म दी धार करे ना कोए आदाब, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। दीन दुनी दा विगड़िआ मिज़ाज, तबीअत तबा ना कोए बदलाईआ। अन्तिम लेखा लैण लग्गा अख़राज, खोटे खरे वेख वखाईआ। एकँकारा इक्को पहन अगम्मा ताज, तख़्त निवासी हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बरो रहे कोई ना राज, रईयत दीन मज़हब देणी तजाईआ। परम पुरख दा बणना इक समाज, समग्री नाम सति वरताईआ। साचा हुजरा दस्से महिराब, महबूब नूर अलाहीआ। हुक्म देवे विच्चों अगम्मी किताब, करनी दा करता आप दृढ़ाईआ। अन्त अख़ीर सारे दयो हिसाब, लेखा मँगे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी खोलृणहारा जाग, आलस निंदरा विच रहिण कोए ना पाईआ।

✻ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ४ हजूरा सिँघ दे गृह पिंड गोलेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

नानक कहे पैगम्बरो सुणो संदेसा यक, सुणावे धुरदरगाहीआ। आपणा आपणा वेखो हक़, हक़ीक़त विच्चों फोल फुलाईआ। जुग चौकड़ी चलदयां चलदयां सारे गए थक्क, थकावट अन्तर वेख वखाईआ। की संदेसा देवे पुरख समरथ, हरि करता वड वड्याईआ। जो जुग चौकड़ी चलाउँदा रिहा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। खेल खलाउँदा रिहा तत अठ्ठ, तन वजूद सोभा पाईआ। सो अन्तिम लेखा मुकावे हथ्थो हथ्थ, जगत उधार ना कोए बणाईआ। जिस दी महिमा सिफ्त अकथ, रसना कहिण कोए ना पाईआ। ओह आपणी करवट रिहा वट्ट, बदली करे लोकाईआ। जिस ने खेल करना झट, झटके हलाली वाले दए मुकाईआ। लेखा पूरा कर के तीर्थ तट, सरोवरां पन्ध मुकाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मठ, मसीतां मसला ना कोए जणाईआ। इक्को नाम सब ने लैणा रट्ट, तूंही तूंही राग अलाहीआ। सति धर्म दा खोलृे हट्ट, वणजारा बेपरवाहीआ। दूई द्वैती मेटे फट्ट, नाम पट्टी इक बंधाईआ। सारे ओस दी चरणीं जाओ ढठ्ठ, निउँ निउँ

सीस निवाईआ। जो सचखण्ड दुआरे कीता इक्ठ, ज़िमीं असमानां पन्ध मुकाईआ। जो लोकमात निरगुण धार आवे वत, वतन वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी दया कमाईआ। नानक कहे पैगम्बरो हुण छड्डो आपणा रुतबा, पैगम्बरां वाली ना कोए वड्याईआ। माण रहे ना किसे कुतबा, कुतबख़ाने देण दुहाईआ। परवरदिगार नूर अलाही उतरा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। इक शब्दी गोबिन्द बणाए पुत्तरा, दूजा संग ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं सारे करो ओस दा शुकरा, शुक्रिए विच सीस निवाईआ। जो कौल इक़रार कर नहीं मुकरा, मुकर्रर आपणा हुक्म वरताईआ। दीन दुनी दा मेटे दुखड़ा, हउमे रोग गवाईआ। जन भगतां उजल करे मुखड़ा, दुरमति मैल धवाईआ। सब दा लेखा पूरा करे मुढला, अन्त आपणा हुक्म जणाईआ। तन वजूद नाता तुट्टे पुतला, पंचम पंच ना कोए वड्याईआ। सब दीआं अंदरों खोल्हे गुंझला, गंढु पिछली दए खुल्हाईआ। निन्दक रहे कोई ना चुग़ला, मूर्ख मूढ़ां दए सज़ाईआ। गुर अवतार पैगम्बर बणाए कोई ना जुगला, इक इक्क दा लेखा दए मुकाईआ। जिस ने नाम संदेसा दिता तुकला, ला तुक आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। नानक कहे आपणी आपणी करो सोझी, अवतार पैगम्बरो दयां जणाईआ। सब दी लेखे लावे धोती टिक्का बोदी, बोदयां वाले वेख वखाईआ। साधना करे जगत जिज्ञासू जोगी, जुगीशरां खेल खिलाईआ। जिस ने लख चुरासी दिती रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम नूर अलाहीआ। ओह बण के ठाकर मौजी, मौजूदा हो के खेल खिलाईआ। वेखणहारा वेदी सोढी, बंस सरबंस फोल फुलाईआ। जन भगतां देवे दरस अमोघी, पर्दा उहला अन्त उठाईआ। दीन दुनी दा रहे कोई ना रोगी, हंगता कूड़ा गढ़ तुड़ाईआ। सच संदेस सुणाए अगम्म सलोकी, सोहला राग अलाहीआ। पढ़नी पए किसे ना पोथी, बग़ल क़ुरान ना कोए टिकाईआ। मंज़ल दस्स इक्को सौखी, सच जैकारा शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरे होए सहाईआ। नानक कहे पैगम्बरो छड्ड दयो आपणा आपणा इल्म, जगत विद्या ना कोए वड्याईआ। अग्गे भरे कोई ना चिलम, चश्म नूर करे रुशनाईआ। झगड़ा रहे किसे ना जिस्म, ज़मीर सब दी दए बदलाईआ। पुरख अकाला होवे इस्म, आज़म नूर खुदाईआ। माणस दी पंज तत दी क़िसम, आत्म ब्रह्म जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी दा लेखा आया लिखण, लिखे लेखे पिछले वेख वखाईआ। नानक कहे पैगम्बरो जिस दी करदे रहे तशरीह, सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस नूं पैगम्बरां मन्नया मसीह, मसल्यां विच वड्याईआ। जिस नूं मालक जाणिआ तिब्बी, तबीअत रिहा

८६७
२१

बदलाईआ। जेहड़ा नूर अलाही रब्बी, रबीउल सानी वेख वखाईआ। जिस दी अन्त अख़ीरी तुहाडी सदी, सदमे सब दे दए चुकाईआ। तुहाडी पूरी कर के गद्दी, गदागार वेखे जगत लोकाईआ । तुहानूं दीन दुनियां जेहड़ी लभ्भी, लबां नाल आए गाईआ। अन्तिम सारी पैणी छड्डी, नाता तुट्टे होए जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा लेखा पूरा कर के आपणी करनी आपे कर के रद्दी, अगला आपणा हुक्म वरताईआ।

✳ १७ माघ शहिनशाही सम्मत ४ सुलखण सिंघ दे गृह पिंड मूंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ✳

निरगुण नानक कहे पैगम्बरो मैं सुणया अगम्मी छन्द, धुर संदेसा दयां जणाईआ। जिस दे विच्चों उपज्या इक अनन्द, अनन्द अनन्द मिली वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर जिस दे हुक्मे अंदर बन्द, बन्दगी विच दए शनवाईआ। सो खेल करे सूरा सरबंग, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस ने दीन मज़हब हद्द बणाई कंध, शरअ शरीअत दिती समझाईआ। सो अन्तिम करन वाला खण्ड खण्ड, खण्डा गोबिन्द हथ्थ फड़ाईआ। सदी चौधवीं पूरन होवण वाला पन्ध, सफ़रीआं सफ़र दए चुकाईआ। आत्म परमात्म निरगुण धार पाए गंढ, सरगुण लहिणा देणा देवे चाँईं चाँईंआ। चार वरन अठारां बरन निरगुण नूर चमकाए चन्द, जिस नूं सुर्या चन्द सीस झुकाईआ। जन भगत सुहेले रखे आपणे संग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार इक वखाईआ। निरगुण नानक कहे पैगम्बरो मैं सुणया अगम्मा गीत, गहर गम्भीर दिता जणाईआ। जिस दा खेल सदा अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। करवट विच बदल के पीठ, भाषा दीन दुनी उलटाईआ। सतिजुग सच चलाए रीत, कलयुग कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। जिस ने लेखा मुकाउणा मन्दिर मसीत, मसला इक्को दए जणाईआ। आत्म परमात्म सांझा होए गीत, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। एका रंग रंगाउणा हस्त कीट, ऊँच नीच जोड़ जुड़ाईआ। सो वसणहारा हर घट भीत, भीतर आपणा डेरा लाईआ। सो आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर कर तस्दीक, तसव्वर सब नूं दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा इक प्रगटाईआ। नानक कहे पैगम्बरो मैं सुणया धुर फ़रमाना, साहिब सुल्तान दृढ़ाईआ। जिस दा हुक्म वरते दो जहानां, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे सावधाना, भय भउ विच वखाए सर्ब लोकाईआ। शब्द सतिगुरु उठाए नौजवाना, बलधारी आप प्रगटाईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्दाना, खेले

खेल अगम्म अथाहीआ। लख चुरासी आत्म परमात्म होवे काहना, सीता सुरती धुर दा राम खोज खुचाईआ। अल्लाह हू दा जो गाया तराना, सिफ्तां विच सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच संदेसा दए सुणाईआ। निरगुण नानक कहे मैं सुणया अगम्म संदेस, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। नेत्र रोंदा वेख्या शेष, बाशक तशका दयां समझाईआ। चार जुग दे विचार जिस दे अग्गे होए पेश, आसा दीन दुनी नाल मिलाईआ। उह दरगाह साची बैठा वेखे सब दा भेख, भेखाधारी नूर अलाहीआ। जिस ने निरगुण हो के सरगुण दिता भेज, भजन बन्दगी बाहर कढ्ढाईआ। ओह अन्तिम जोती जलवा देवे तेज, अप वाए तेज पृथ्मी आकाश करे सफ़ाईआ। जिस दा नाम जगत मुहब्बत विच सारे आए वेच, क़ीमत ढोल्यां वाली पाईआ। ओह हुक्म सुणावे अगम्मड़े देस, सचखण्ड बैठा नूर अलाहीआ। जिस दा नाता निरगुण धार शब्दी गुर दस दस्मेश, तत वजूद ना कोए वड्याईआ। सो खेले खेल सदा हमेश, हमसाजण नज़रीं आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। नानक कहे मैं सुणी अगम्मी ख़बर, ख़ैरख़ाही विच जणाईआ। नूर चमक्या उपर अम्बर, नूर नुराना डगमगाईआ। सब ने करना अन्तिम सबर, सिदक भरोसा इक रखाईआ। दीन मज़हब दा विछड़ना टब्बर, क़बीला रहिण कोए ना पाईआ। पैगम्बरो जेहड़े तुसीं तन वजूद छड्ड के आए विच क़बर, मढ़ी गोर डेरा लाईआ। उस दा लहिणा देणा पारब्रह्म प्रभ देवे शेर बब्बर, शब्दी भबक इक लगाईआ। ओथे पुरख अकाल इक्को नाम ते इक्को होणा क़दर, इक्को क़दम सोभा पाईआ। सदी चौधवीं तुहाडी सब दी पूरी करे सध्धर, सहिंसा अवर रहे ना राईआ। दीन दुनी दा कर के अदल, इन्साफ इक कमाईआ। कलयुग विच सतिजुग देवे बदल, पुरख अकाला दीन दयाला आपणा हुक्म वरताईआ। झगड़ा रहिण ना देवे माटी बदन, तत वजूद ना कोए वड्याईआ। निरगुण नानक कहे गुर अवतार पैगम्बरो सारे इक्को मन्नो सज्जण, इक्को संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दृष्टी इष्टी हो के इक्को देवे लग्न, लग मातर दा लेखा दए मिटाईआ।

❋ १८ माघ शहिनशाही सम्मत ४ राम सिंघ दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ❋

नानक कहे पैगम्बरो सुणो हुक्म अगम्मा साचा, सति सतिवादी हो के दयां जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला झगड़ा मेटण वाला काया माटी पंज तत काचा, कंचन गढ़ अंदर वड़ निरगुण निरवैर वेख वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार

चार जुग दा बदलण लग्गा ख़ाका, ख़ालक ख़लक आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण धार निरवैर निराकार निरँकार सब दा बणे आक़ा, पतिपरमेश्वर पुरख अकाला एका सोभा पाईआ। चार कुण्ट दह दिशा दो जहानां खोल्ह के वेखो ताका, पर्दा उहला नौ नौ आप उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चौदां तबक वेखो आपणा हाता, दह दिशा फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं उलटण लग्गा पासा, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए रखाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी करे खेल अगम्म तमाशा, स्वांगी हो के आपणा स्वांग वरताईआ। लहिणा देणा पूरा करे पृथ्मी आकाशा, गगन मण्डल ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। जो आदि जुगादी आत्म परमात्म सब दा जोती जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिस दे उत्ते सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रख के आए भरवासा, क़दमबोसी कर के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नानक कहे पैगम्बरो सुणो हुक्म प्रभू सुल्तान, धुर संदेसे विच जणाईआ। पुरख अकाला हो मेहरवान, महबूब आपणी दया कमाईआ। दीन दुनी दा बदलण वाला निज़ाम, नौबत नाम हक़ सुणाईआ। तुहानूं शरअ विच करे ग़ुलाम, ग़ुरबत रहे कोए ना राईआ। पैगम्बरो अवतारां नाल लग्गा मिलाण, गुरुआं गंढु पवाईआ। शरअ रहे ना कोए शैतान, छुरी हथ्थ ना कोए रखाईआ। सारयां दी सांझी करे ज़बान, ज़ेर ज़बर वंड ना कोए वंडाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआरा धुर दा दस्स इक मकान, मुकाम इक्को इक जणाईआ। सदी चौधवीं हो प्रधान, बलधारी वेख वखाईआ। जो आत्म परमात्म दस्से सच ईमान, अमल आलम वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक वखाईआ। नानक कहे पैगम्बर अवतार सुणो संदेसा अगम्म दी धार, धर्म दुआरे दयां प्रगटाईआ। जो आदि जुगादी एकँकार, करनी दा करता वड वड्याईआ। सब दे लहिणे देणे रिहा विचार, विच्चरण दी लोड़ रहे ना राईआ। तख्त निवासी शाहो भूप सच्चा सिक्दार, शाह पातशाह शहिनशाह इक अख्वाईआ। साडा सब दा सांझा करे प्यार, प्रेम प्रीती नाल जणाईआ। इक्को कलमा इक्को नाम इक्को होए जैकार, इक्को सीस जगदीश झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। नानक कहे पैगम्बर अवतार सुणो सुणो सुख़नवन्त, फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। हुक्म देवे धुर दा कन्त, कन्तूहल नूर अलाहीआ। जिस दा लख चुरासी जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ । सरगुण धार बणाए सब दी बणत, घड़न भन्नणहार आप अख्वाईआ । जिस नूं कहि के आए बेअन्त, बेपरवाह वड वड्याईआ। जो आदि जुगादी बोध अगाधा पंडत, निरअक्खर सानूं करे पढ़ाईआ। सदी चौधवीं गढ़ तोड़िआ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। चार वरन अठारां बरन रहे कोए ना निन्दक, निराकार दए वड्याईआ। सब दी मेटे ग़मी चिन्ता चिन्तक, दुःख

८७१
२१

रोग डेरा ढाहीआ। सारे इक्को करो हिम्मत, हौसले लओ वधाईआ। पुरख अकाल अग्गे करो मिन्नत, गल पल्लू वास्ता पाईआ। साडी सब दी सांझी होई मिल्लत, मज़हबां वंड ना कोए वखाईआ। शरअ करे कोए ना इल्लत, इस्म इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। नानक कहे अवतार पैगम्बरो सुणो संदेसा श्री भगवान, सहजे सहजे रिहा जणाईआ। इशारा देवे धुर दा अमाम, बिन अक्खों अक्ख खुल्हाईआ। सारे मेरा कलमा करो परवान, निउँ के सीस झुकाईआ। मुखों कहो असीं बाल अंञाण, साडी चले ना कोए चतुराईआ। असीं छड्डया जगत जहान, संग ना कोए बणाईआ। साडा सब दा सांझा पीण खाण, ज़िबह बणे ना कोए कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि दाता नूर अलाहीआ। नानक कहे मेरे निरँकार, तेरी इक सरनाईआ। मैं तेरा चोबदार, दर दरवेश सीस निवाईआ। अन्त कन्त सुण पुकार, भगवन्त दयां दृढ़ाईआ। चार जुग दे सारे तेरे उत्ते आधार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। झुक झुक करन निमस्कार, निउँ निउँ लागण पाईंआ। किरपा कर आप अपार, अपरम्पर स्वामी आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। पुरख अकाल कहे सुण नानक निरगुण, सच दयां दृढ़ाईआ। तेरी पुकार लई सुण, मेहर नज़र उठाईआ। हुक्म संदेसा देवां अगम्मी हुण, दो जहान जणाईआ । सृष्टी दृष्टी करां छाण पुण, शब्द गुरु सेव लगाईआ। चार कुण्ट वेखां रिख मुन, सूफ़ी सन्त फ़कीर खोज खुजाईआ। किस दुआरे साची धुन, आत्मक राग कवण सुणे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। नानक कहे प्रभू मेरे ठाकर, तेरी बेपरवाहीआ । तूं गहर गम्भीर डूँघा सागर, तेरी बेपरवाहीआ। दर आए दर दे आदर, माण निमाणे हो सहाईआ। तूं आदि जुगादि क़ुदरत दा मालक करनी दा कादर, कायनात वेख वखाईआ। हउं ग़रीब निमाणा आजज़, सेवक सेवक नज़री आईआ। सदी चौधवीं सब दी मेट दे साजश, कूड़ कल्पणा रहे ना राईआ। चार वरनां इक्को होवे इबादत, दूजा कलमा ना कोए पढ़ाईआ। सच नाम दी कर सख़ावत, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ना रहे अलामत, दुरमति मैल देणी धवाईआ। सति सच दी बख्श निआमत, तोहफ़ा घर घर देणा पहुंचाईआ। कलयुग जीव अणजाणत, तेरी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। पुरख अकाल कहे सुण निरगुण नानक अवतार पैगम्बर गुर सद्द, सद्दा नाम जणाईआ। आपणा आपणा लेखा लैण कढ्ढ, बिना हथ्थां हथ्थ वटाईआ। आपणा आपणा नाम सुणावण सद, ढोला गीत राग अल्हाईआ। आपणी आपणी वेखण यद्द, दीन मज़हब ध्यान लगाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। नानक गहे गुर अवतार पैगम्बरो सुणो हुक्म संदेस, बिन संध्या प्रभाती दयां सुणाईआ। आपणा आपणा कढ्ढो लेख, जो लिख्त दए गवाहीआ। जिस हुक्म नाल मूंड मुंडाया बोदी जञ्जू खेल खिलाए मुच्छ दाढ़ी केस, चोटी सीस कटाईआ। दीन मज़हबां कीता हेत, मानव मानव नाल टकराईआ। अन्तिम सारे होए खेत, बचया रहिण कोए ना पाईआ। शरअ शरीअत वाली कढ्ढके वेखो आयत, हदीस कौण समझाईआ। अवतार गुरु सारे वेखो तुहाडी किथ्थों होई पैदाइश, कौण जम्मण वाली माईआ। किस दे घर करो रहाइश, रहिण कवण अख्वाईआ। किस ने नाम दी दिती हदाइत, कलमे दिते पढ़ाईआ। किस प्रेम दी कीती इनाइत, बख्शिश झोली पाईआ। कवण अन्त करे रयाइत, होवे आप सहाईआ। तुहाडी पूरी करे शरायत, शरअ दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दए वड्याईआ। अवतार पैगम्बर कहिण गुर, नानक सच दईए सुणाईआ। असीं हुक्म मन्नणा धुर, साडी चले ना कोए चतुराईआ। गोबिन्द कहे मैं छड्डके अनन्द पुर, माछूवाड़े सेज सुहाईआ। लग्गी प्रीत निभा दे तोड़, तुरत आपणा रंग रंगाईआ। अन्त उसे नाल मुड़, जोत शब्द धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। अवतार पैगम्बर गुर कहिण एक, नानक निरगुण सच जणाईआ। साडा लेखा प्रभू नूं कहीए अग्गे ना वेख, वेखण दी लोड़ रहे ना राईआ। असीं छड्डके आए मातलोक दा देस, दरगाह साची तेरे विच समाईआ। जिथ्थे इक्को जोती इक्को नूर मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, ना कोए मूंड मूंड मुंडाईआ। दर तेरे ठांडे होए पेश, पेशीनगोई दए गवाहीआ। अग्गे तेरे दर दे रहीए दरवेश, बण बरदे सेव कमाईआ। तूं आदि जुगादी एक, एकँकार तेरी वड्याईआ। सानूं साची बख्श टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट, भेख पखण्ड देणा गवाईआ। झगड़ा रहे ना पंडत पांधा मुल्ला शेख़, मुसायक नज़र कोए ना आईआ। सच दुआर एकँकार वखा आपणा देस, दह दिशा कर रुशनाईआ। तूं सही सलामत रहें सदा हमेश, हम साजण नज़री आईआ। दीन मज़हब ज़ात पात नाम कलमा पिछला तेरी कीता भेंट, साडी रही ना कोए चतुराईआ। अग्गे वेखीए तेरी खेड, ख़ालक ख़लक तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बर सारे पाओ गलवकड़ी, बिन भुजां भुजां उठाईआ। वैरी रहे ना कोए शूद्र वैश ब्राह्मण क्षत्री, छत्रधारी इक सुणाईआ। लेखा ला सके ना कोई अक्खरां वाली पत्री, ग्रह नछत्र ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर रहे ना कोए मन्त्री, पुरख अकाला इक्को हुक्म सुणाईआ। धर्म दी धार शब्द अगम्मा तक्कड़ी, तराज़ू वेखे अगम्म अथाहीआ।

शब्दी धार सृष्टी दृष्टी जाए जकड़ी, तन्दव तन्द ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। नानक कहे प्रभू मेरी सुणी अरदास, सीस सीस निवाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक्ठे होवो पास पास, पासा दीन दुनी नालों बदलाईआ। सारे इक्को नेत्र तक्को पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर ध्यान लगाईआ। झगड़ा रहे ना माटी ख़ाक, वजूद विच्चों महबूब वेख वखाईआ। किसे दी करनी नहीं इमदाद, मदद विच मातलोक कोए ना जाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला करे हक़ इनसदाद, हुक्म फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। जो मालक स्वामी वाहिद, एकँकार अख्वाईआ। ओह गॉड बणे गाईड, गुड मार्ग वेख वखाईआ। धुर फ़रमाना करे आइद, हुक्म इक वरताईआ। साहिब स्वामी बण के साहिब, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। वक्खरा रहे ना कोए अलहिद, बाहमी नाता दए जुड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेला लए मिलाईआ। नानक कहे बोल पुकार, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। हुक्म हुक्म सच्ची सरकार, हुक्म हुक्म विच्चों जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक दूजे उत्ते करो एतबार, बेएतबारी देणी गवाईआ। बिन रसना जिह्वा सारे दयो उच्चार, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। बेख़बर होवो ख़बरदार, ख़बर संदेसा इक दृढ़ाईआ। जोगिंदर सिँघ लिआवे तिन्न हार, जोगिंदर कौर हथ्थ फड़ाईआ। नानक वेले दा तुहाडा लेखा बकाया दिसे विच संसार, सत्त साल दी बच्ची ध्यान लगाईआ। तेरा तत्तां नाल नानक करदा सी प्यार, बिरध अवस्था मुतू नाम सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो हर हिरदे करो सफ़ाई, सिफ्तां नाल वड्याईआ। तुहाडी निरगुण धार करे कुड़माई, कुड़मेटा नज़र कोए ना आईआ। दरगाह साची वेखो इक रुशनाई, नूर नुराना डगमगाईआ। एसे ने लोकमात जोत जगाई, लख चुरासी रिहा समाईआ। जो दीन दुनी वंड वंडाई, मानव हिस्से आए पाईआ। अज्ज तों सारे छड्डुण आपणी नाल रज़ाई, रज़ा प्रभ दी विच सीस निवाईआ। वेख्यो शरअ दा अग्गे ना बणयो कोई कसाई, क़लमे वाली ना कोए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला लए मिलाईआ। नानक कहे गुर अवतार पैगम्बरो हर हिरदा लओ तक, यक्क तरफ़ ध्यान लगाईआ। सेवा करो सर्ब अनथक्क, नौ खण्ड पृथ्मी भज्जो वाहो दाहीआ। पुरख अबिनाशी वेखो जो वस्से घट घट, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। सो खेल करे पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ । ओस दे चरणां टेक दयो मथ, बिन मस्तक सीस झुकाईआ। ज्यों भावे त्यों लए रख, अग्गे चले ना किसे चतुराईआ। इक्को हुक्म वरतणा सच, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। जो लूं लूं अंदर रिहा रच, साढे तिन्न करोड़ दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ

रखाईआ। अवतार पैगम्बर कहिण सुण नानक निरगुण धार विचोले, विचला भेव जणाईआ। असीं प्रभ दे बुलाए बोले, आपणा राग ना कोए सुणाईआ। तूं वी दस्सया असीं तेरे घर दे गोले, तेरी वड वड्याईआ। जो हर घट अंदर मौले, मौला रूप नूर अलाहीआ। सानूं दीन मज़हब बणा के तोले, जगत वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दी धार इक समझाईआ। नानक कहे हुक्म सुणो आपणे महबूब खुदा, हो के खुद मालक रिहा जणाईआ। जिस नालों कदी ना होवो जुदा, जुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। सब दी इक्ठी क़बूल करे दुआ, मेहर नज़र इक टिकाईआ। साचे क़लमे दी दए सदा, हुक्म इक अलाहीआ। खुशीआं नाल अवतार पैगम्बर गुरुआं दी प्रीती दे हार दे पहना, प्यार प्यार विच वड्याईआ। सारे बिना कन्नां तों कन्नीं हथ्थ लओ लगा, कन्नां वाली गई पढ़ाईआ। पिछले सब दे बख्शे जाण गुनाह, अग्गे गुमराह ना कोए कराईआ। जगत सृष्टी दिसे फ़नाह, अन्त नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त सतिजुग साचा बणे आप मलाह, दो जहानां निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बेड़ा आपणे कंध उठाईआ।

❊ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ जोगिन्दर कौर दे गृह फ़िरोज़पुर छाउणी ❊

नानक निरगुण कहे वेखो गुर अवतार पैगम्बरो खेल हाला, हालत बदली जगत लोकाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए पूजा पाठ कर के फेर के माला, मणक्यां नाल मन का मणका ना कोए भवाईआ। पंज तत त्रैगुण तोड़े ना कोई जंजाला, माया ममता मोह विकार ना कोए मिटाईआ। सच दुआर दिसे ना कोई किसे धर्मसाला, काया काअबा नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। फल तन वजूद दिसे किसे ना डाला, पत्त टाहणी ना कोए लहराईआ। जिस दा सारे दे के गए अहिवाला, भविख्तां विच सुणाईआ। सो खेल करे पुरख अकाला, अकल कलधारी नूर अलाहीआ। जिस दे अग्गे करदे रहे सवाला, मांगत हो के मँग मँगाईआ। सो निरगुण नूर जोत करे उजाला, चारों कुण्ट डगमगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे बेहाला, सतिजुग सति सति वरताईआ। शब्दी गुरु बण दलाला, चार वरनां वेख वखाईआ। लेखा जाणे काल महाकाला, पर्दा दीन दुनी उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नानक कहे गुर अवतार पैगम्बरो भेव अभेद चुकाउ दूजा, नुक़ता रहिण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं किसे कम्म ना आउँदी दिसे पूजा, पाठ जोग अभ्यास ना कोए वड्याईआ। अन्तर निरंतर भेव खुल्ले किसे ना गुज्झा, बज़र कपाटी परदा ना कोए उठाईआ। फिरी दरोही

उपर बसुधा, चार कुण्ट रिहा कुरलाईआ। सब दा अन्तिम वेला पुज्जा, वक्त दए गवाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला अन्त अख़ीर रहे ना लुका, निरवैर नूर करे रुशनाईआ। चार वरनां दा मार्ग कर के सुच्चा, संजम इक्को दए दृढ़ाईआ। जन भगत सुहेले उठाए आपणे सुता, दुलारे गोद टिकाईआ। सच प्रेम सुहा के रुता, रुतड़ी आपणी आप महकाईआ। गुर अवतार पैगम्बरो सब दा पैंडा मुका, मुकम्मल दयां जणाईआ। सतिजुग अंदर मदिरा मास रसना कोई ना लावे हुक्का, तुख्म ताअसीर सब दी दए बदलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण समझाए मुद्दा, मुद्दत दे विछड़े आपणे नाल मिलाईआ। काया मन्दिर सच दुआर सुहा के झुग्गा, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला लए मिलाईआ। निरगुण नानक कहे गुर अवतार पैगम्बर दीन दुनी दा वेखो नहाउणा धौणा, इश्नान विच ना कोए वड्याईआ। चार कुण्ट दह दिशा सब नूं प्या रोणा, बिन नैणां नीर सर्ब वहाईआ। सदी चौधवीं सति धर्म दा बीज किसे ना बोणा, आत्म ब्रह्म पर्दा ना कोए उठाईआ। साचे मन्दिर उच्च मुनार धुर दे मम्बर चढ़ ना किसे खलोणा, आवाज़ हक़ ना कोए सुणाईआ। दुरमति दाग़ चार वरन अठारां बरन किसे ना धोणा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई झगड़ा ना कोए चुकाईआ। जगत विकार हँकार काया तत विच्चों ना किसे बिलोणा, नाम मधाणा हथ्थ ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर जगत जहान पराउणा, वेला वक्त दए गवाहीआ। सच संदेस नर नरेश दो जहान सुणाउणा, निरगुण निरवैर निरँकार आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा वेख वखाईआ। नानक निरगुण कहे गुर अवतार पैगम्बरो वेखो सुबह शाम, वक्त बवक्त ध्यान लगाईआ। हिरदे वस्से किसे ना राम, रमईआ मिलण कोए ना पाईआ। मीत बणे कोई ना शाम, घनईआ काहन ना कोए चतुराईआ। पैगम्बर दए कोई ना दान, इस्म आज़म ना कोए समझाईआ। गुरु गुरदेव करे ना कोए पहचान, पर्दा उहला ना कोए उठाईआ। आत्म ब्रह्म ना कोए ज्ञान, अक्खरां वाली जगत पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान होए हैरान, खाणी बाणी चार कुण्ट वेखे नैण उठाईआ। दह दिशा फिरे शैतान, शरअ आपणी नाल वरताईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई देण दुहाईआ। किसे कम्म ना आवे बग़ल रखी क़ुरान, काया काअबे ना वज्जे वधाईआ। रसना जिह्वा सिफ्त सालाही सारे ढोले गाण, निरगुण निरवैर निराकार दरस कोए ना पाईआ। शब्द संदेसा धुर फ़रमान, हरि करता आप दृढ़ाईआ। सब दा सांझा होवे इक अमाम, अमलां तों रहित नूर खुदाईआ। जो लेखा मुकाए जगत जहान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सब दा सजदा इक्को होए सलाम, डंडावत बन्दना इक दरसाईआ। इक्को नाम क़लमा दस्से कलाम, कायनात इक पढ़ाईआ।

८७५ २१

इक सिँघासण आसण सच दस्से बिसराम, जिथ्थे विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, मण्डल मण्डप लागण पाईंआ। सो खेल करे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। सब ने मन्नणी ओस दी आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा विधान, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। शरअ दा रहिण नहीं देणा कोई गुलाम, बंधन मज़हबां वाले तुड़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म कर पहचान बेपहचान करे रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर करे ना कोए हराम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। नानक निरगुण कहे गुर अवतार पैगम्बरो सिमरन पाठ वेखो निमाज़, रोज़यां विच ध्यान लगाईआ। किसे दा खुल्ल्हे ना अंदरों राज़, पर्दा पर्दे विच्चों ना कोए चुकाईआ। भेव खोल्हे ना कोई आग़ाज़, संदेसा धुर ना कोए सुणाईआ। सति दा होए ना कोए मुहताज, पारब्रह्म मिलण कोए ना आईआ। दीन मज़हब दा गुर अवतार पैगम्बरो तुसां दस्सया इतराज़, शरअ विच शरअ दिती लड़ाईआ। एह खेल प्रभू तमाश, जुग चौकड़ी दिता कराईआ। अन्तिम सब नूं करे फ़ाश, लोकमात रहिण ना पाईआ। तुहाडी पूरी करे आस, जो भविख्तां विच ढोले गाईआ। निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, जोती जाता बिधाता पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार बण के सांझा यार देवे साथ, सगला संग निभाईआ। दीन दुनी तन वजूद माटी ख़ाक अन्तर निरंतर वेखो मार झाक, झाकी तन ख़ाकी इक लगाईआ। सब दा बदल रिहा हालात, हालांकि गुर अवतार पैगम्बरो तुहाडे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी ढोले रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। नानक निरगुण कहे मैनूं सरगुण याद आई तलवंडी, पूरब भेव जणाईआ। जिथ्थे तोले दी बेटी नूं वंड सी वंडी, आयू सत्त साल समझाईआ। मेरा प्यारा सी मातू संगी, बिरध अवस्था नज़री आईआ। ओस वेले कोल बैठा सी हथ्थ रख के आपणी कंधी, मोढुयां रिहा दबाईआ। मुखों हस्स के किहा नानक वस्त दिती तूं चंगी, चिठ्ठी अक्खरां वाली बणाईआ। मैनूं ऐं जापदा एह दो जहानां सन्धी, सनद सोभा पाईआ। नानक किहा एस मँग अगम्मी मँगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। जिस वेले सदी चौधवीं लँघी, आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रगट होवे पुरख अकाल सूरा सरबंगी, हरि करता शहिनशाहीआ। इन्हां दी आत्मा तत शरीर विच फेर जाए गंढी, नाता धर्म धार बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरी इक सरनाईआ। मातू कर के निमस्कार, सीस दिता निवाईआ। जे दोवें दिते तार, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। मेरा तेरे नाल प्यार, चरण कँवल सरनाईआ। नानक किहा मेरे चरणां दी मस्तक ला छार, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। फेर अगला जन्म दयां संवार, जन्म विच्चों मानस जन्म

विच बदलाईआ। मातू ने उठ के मारी छाल, खुशी विच वड्याईआ। तूं शाह ते मैं कंगाल, तेरी बेपरवाहीआ। उन्ने चिर नूं इक मालण लै के आ गई हार, फुल्लां नाल सुहाईआ। मातू कोल सी पैसे चार, चारे कढ्ढ के हथ्थ दिते फड़ाईआ। मँगे नाल प्यार, मैनूं दे दे जगत दी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। मातू लै के तिन्न हार, हिरदे विच वड्याईआ। नानक दे गल विच देवां डार, नाता तिन्नां दा तिन्नां लोकां विच्चों बाहर समझाईआ। आपणीआं बाहां लए उठाल, हथ्थां विच लटकाईआ। नन्ही बच्ची अग्गे आई बाल, हस्स के रही सुणाईआ। मैं पाउणे नाल प्यार, क्यों मेरा बाबा मैनूं गोद उठाईआ। नानक किहा तुसीं दोवें रखो संभाल, आपणे कोल टिकाईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ी क्रिया वधे विकार, चार कुण्ट अन्धेरा छाईआ । तुहाडा जन्म होणा विच संसार, वखरी वखरी पिता माईआ। अन्त लहिणा देणा दए उतार, मक़रूज क़र्जा आप चुकाईआ। कल कल्की लए अवतार, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। मातू तेरा पिछला होर विहार, नानक दए समझाईआ। तेरा लेखा बधक धार, जिस कमान दिती बणाईआ। घर बाडीआं तेरा जन्म अपार, पूरब लेखा दए गवाहीआ। सो लहिणा देणा पूरा करे आप करतार, क़ुदरत दा मालक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। हार कहिण सानूं छड्डया रख, जगत विच लोकाईआ। असीं वेंहदे रहे नाल अक्ख, साल बसाला खोज खुजाईआ। कवण वेला साडा मिले हक़, हक़ीक़त पिछली झोली पाईआ। प्रगट होवे पुरख समरथ, हरि करता धुरदरगाहीआ। ओह मँगे आपणी वथ, संदेसे विच सुणाईआ। सानूं फड़न दोवें वारो वारी हथ्थ, हथ्थां नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र नाल तराईआ। हार कहे मातू बणया जगत जुगिंदर, नाता बधक नाल जुड़ाईआ। छोटी बच्ची धार जुगिंदर, कौर कर्म कांड वड्याईआ। संदेसे वाला याद रिहा पत्र, बिन पत्रका दिता दृढ़ाईआ। जिस दी लिखी नहीं कोई सतर, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ । ओह शब्द संदेसा दिता आपणी धार कर के यतन, यथार्थ दिता समझाईआ । पुरख अकाल दीन दयाल जुग चौकड़ी लहिणा मुकाए हथ्थो हथ्थन, लेखा अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां दरगाह साची आपणा घर वखाए अगम्मा वतन, जिस वतन विच बेवतनां लए मिलाईआ।

✲ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ सोभा सिँघ दे गृह पिंड वलूर ज़िला फ़िरोज़पुर ✲

अवतार कहिण कलयुग अन्तिम होणी जगत खुआरी, धीरज धीर धरत धवल धौल ना कोए रखाईआ। पैगम्बर कहिण नेत्र रो के दीन दुनी करनी गिरयाज़ारी, परवरदिगार सांझे यार सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। गुर दस कहिण कलयुग जीवां अन्तिम आपणी बाज़ी हारी, जीवण जुगत मिले ना किसे वड्याईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब नूं वेखां वारो वारी, निरगुण हो के सरगुण खोज खुजाईआ। जो शास्त्र वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी बणे पुजारी, रसना जिह्वा बत्तीी दन्द सोहले ढोले राग अलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ वेखां गुरुदुआरी, साढे तिन्न हथ्थ काया माटी फोल फुलाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तक्कां तीर्थ तट किनारी, सर सरोवर जगत वेख वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त अन्तर दृष्टी पावां सारी, चार वरन अठारां बरन वेखां चाउ चाँईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्त सब दा लहिणा देणा देवां बण वड संसारी, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर नाल रलाईआ। माया ममता हउमे हंगता कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ां हँकारी, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक समझाईआ। चार कुण्ट दह दिशा क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दस्सां नाम जैकारी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला इक समझाईआ। दीन मज़हब दी चार कुण्ट दह दिशा वेखां ग़द्दारी, मनमुख जीव लभ्भण थाउँ थाईंआ। सदी चौधवीं सब नूं रही वंगारी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। क़ुदरत दा क़ादर करनी दा करता करे खेल निआरी, निआंकार आपणा हुक्म वरताईआ। सच दुआर सच धर्म दी दस्से यारी, यराने कूड़े तोड़ तुड़ाईआ। दरगाह साची सचखण्ड बहि के धुर दा बणे सिक्दारी, नाम संदेसा इक सुणाईआ। अन्तिम सब दी लोकमात आई वारी, वारस रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुके जीव गवारी, तन वजूद महबूब करे सफ़ाईआ। जेहड़ी गुरुआं उत्ते होई बेएतबारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा वेख वखाईआ। तेई अवतार कहिण साडी मातलोक विच्चों होई तृप्त, तृष्ना अग्गे ना कोए वखाईआ । हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद साडा पूरा होया भविख्त, अग्गे राह ना कोए जणाईआ। नानक गोबिन्द कहे लेखा मुक्कण लग्गा जगत लिख्त, पुरख अकाला लहिणा देणा जाणे थाउँ थाईंआ। परवरदिगार कहे मैं सब दा सांझा करना इष्ट, दीन मज़हब ज़ात पात झगड़ा देणा मुकाईआ। मानव ज़ाती अंदरों खोल्ह के दृष्ट, दिशा आपणी देणी समझाईआ। ममता कर के निशट, दुर दुराचार डेरा ढाहीआ। लेखा अजे ना कोए बालिशत, नाम नाप देणा समझाईआ। तन वजूद मिटे इश्क, आत्म परमात्म मेला गया मिलाईआ। कूड़ कुड़िआरा रहे कोए ना निन्दक, हरिजन साचे लैणे उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे रंग आप रंगाईआ। तेई अवतार कहिण लेखा

मुक्कण लग्गा लोकमात, हरि करता आप मुकाईआ। पैगम्बर कहिण साडा लहिणा देणा पूरा होण लग्गा जगत साथ, अग्गे लेखा अवर ना कोए वधाईआ। गुरु गुरदेव कहिण साडा पूरा होए भविख्त वाक, वाक़िफ़कार दए गवाहीआ। जिस ने जगत नाता तोड़ना नात, पिता भैण भाई सज्जण साक, साका आपणा दए दृढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन दस्सणा इतफ़ाक़, इत्तफाकीआ आपणी खेल खिलाईआ। नाम संदेसे दस्सणे बात, रसना जिह्वा ना कोए पढ़ाईआ। झगड़ा मेट देणा काग़ज़ात, कलमा कलमा ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सज्जण नूर अलाहीआ। तेई अवतार कहिण असीं करीए नमस्कार, डंडावत विच सीस निवाईआ। पैगम्बर कहिण की करे साडा सांझा यार, जल्वागर नूर अलाहीआ। कलयुग अन्त दीन दुनी होई ग़द्दार, ग़दर प्या थाउँ थाईंआ। आत्म जोती होए ना किसे उज्यार, निरगुण नूर ना कोए चमकाईआ। दीन दुनी करे विभचार, कुकर्मा विच वड्याईआ। साचे नाम दा बोले ना कोए जैकार, तूं ही तूं ही राग ना केइ अलाहीआ। चार वरनां धुआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सदी चौधवीं अन्त सब ने होणा खुआर, खुआरी घर घर वेख वखाईआ। किरपा करे आप निरँकार, नर निरँकारा वेख वखाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां पाए सार, चौदां लोक चौदां तबक खोज खुजाईआ। जन भगतां बेड़ा डुब्बण ना देवे विच संसार, नईआ नौका नाम आपणा इक प्रगटाईआ। सन्त सुहेला बण के ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सिफ्तां वाला दस्स इज़हार, महिमा अगाध बोध जणाईआ। सब नूं मन्नणा पवे इक निरँकार, इक्को ढोला राग नाद दए सुणाईआ। जगत छड्डणा पए संसार, साहिब स्वामी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा पूरब जन्म दा क़र्ज लाहे उधार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चार कुण्ट दह दिशा वेख वखाईआ।

❊ १६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ कुलवन्त कौर दे गृह बस्ती खलील ज़िला फ़िरोज़पुर ❊

तेई अवतार कहिण प्रभ दी धार तक्कया पूरन, प्रभ पूरन नज़री आईआ। पैगम्बर कहिण प्रभू दा प्यार तक्कया पूरन, परवरदिगार पूरन नूर अलाहीआ। गुर दस कहिण प्रभ दा शृंगार तक्कया पूरन, शब्दी धार शब्द वड्याईआ। भगत कहिण प्रभू दा विहार तक्कया पूरन, उजाला पूरन नज़री आईआ। सूफ़ी कहिण जलवा नूर उज्यार तक्कया पूरन, अलाही नूर

पूरन नज़री आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण सांझा यार तक्कया पूरन, देवत सुर पूरन सीस निवाईआ। चार जुग कहिण सब दा मालक अख्त्यार तक्कया पूरन, मुख्त्यार पूरन सोभा पाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड कहिण निमस्कार इक्को प्रभू प्रभ पूरन, डंडावत बन्दना सजदा पूरन सोभा पाईआ। चार जुग दे शास्त्र कहिण सिफ्त दी धार पूरन, चार बाणी दी महिमा प्रभ पूरन नज़री आईआ। महल अटल मुनार कहिण सचखण्ड करतार पूरन, करनी दा करता प्रभ पूरन इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सो पुरख निरँजण कहे मेरा विवहार पूरन, हरि पुरख निरँजण पूरन रंग रंगाईआ। एकँकार कहे सब दा अधार पूरन, आदि निरँजण पूरन जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता कहे शाह सवार पूरन, श्री भगवान पूरन रूप नज़री आईआ। पारब्रह्म कहे मेरा आकार पूरन, निराकार पूरन इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा सतिकार पूरन, बिन पूरन पूरन पूरन सतिगुर ना कोए अख्वाईआ। दो जहानां मददगार पूरन, बिन पूरन परम पुरख ना कोए मिलाईआ। सचखण्ड दा सच्चा हक़दार पूरन, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां पूरन हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। सचखण्ड कहे मेरा प्रीतम पूरन, पूरन पूरन पूरब जणाईआ। दरगाह साची बहे मेरा ख़बरदार पूरन, पूरन पूरन पूरन ब्रह्म रिहा जगाईआ। सच सिँघासण कहे मेरा तरफ़दार पूरन, बिना पूरन पूरन सोभा कोए ना पाईआ। तख्त कहे मेरा तख्तनिवासी निराकार पूरन, साकार पूरन पूरन वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म कहे प्रभ पूरन पूरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो आदि जुगादी हाज़र हज़ूरा, हज़रतां दए वड्याईआ। जिस ने सूली चाढ़े मनसूरा, ऐहनलहक़ दुहाईआ। सो लेखा सब दा जाणे ज़रूरा, ज़रूरत वेखे थाउँ थाईंआ। ढोला हुक्म करे मन्ज़ूरा, मन्ज़ूरी विच मंज़ल राह जणाईआ। धर्म दी धार बण भरपूरा, दो जहानां खेल खिलाईआ। सब दे बख्शणहार क़ुसूरा, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जिन्नां नूं बख्शे चरण धूढ़ा, दुरमति मैल दए गवाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, अगम्मा रंग रंगाईआ। सच दुआर बणा मज़दूरा, सब दी सेवा आपणे हथ्थ विच रखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सद भरपूरा, मांगत हो ना झोली डाहीआ। कलयुग अन्त जन भगतां मेटे सर्ब क़ुसूरा, विछड़यां लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कुण्ट दह दिशा हाज़र हज़ूरा, हरि हिरदे अन्तर निरंतर हो के आपणा डेरा लाईआ।

८८१ २१

❋ २० माघ शहिनशाही सम्मत ४ महिन्दर सिँघ दे गृह बस्ती खलील ज़िला फ़िरोज़पुर ❋

गुर अवतार पैगम्बर कहिण गहर गम्भीर सागर सिन्धू, साहिब स्वामी तेरी इक सरनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे देवत सुर राजा इंदू, इंदासण सिँघासण ना कोए वड्याईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त फ़कीर तेरा बिन्दू, बिन आत्म तन वजूद ना कोए वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ पंज तत काया तेरा पिंडू, जीव जीअ तेरा नज़री आईआ। सतिजुग साचे प्रभू तैनूं मात कोए ना निंदू, निन्दक रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां कर्म कांड दा मेटणा चिन्दू, चिन्ता दुःख ना कोए रखाईआ। तेरा सांझा प्यार होवे सिख ईसाई मुस्लिम हिन्दू, हर हिरदा तेरा नाम ध्याईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच तूं प्रीतम होवे जिंदू, ज़िंदगानी जीवन जुगत तेरे हथ्थ रखाईआ। तेरा गुरमुख दुआरा तेरा होवे छिन्दू, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच आपणी गोद टिकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत वासना माया ममता गुरमुखां अंदरों कढ्ढ ज्यों निचोड़िआ निम्बू, निम्रता हलीमी सुचज्जता नूं दे वड्याईआ। तूं साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान वड मरगिंदू, अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। तेरा डंका वज्जे दो जहान मृदँग किंगरे किंगरे किंगू, नाद अनादी देणा सुणाईआ। असीं गुर अवतार पैगम्बर चार जुग दे निक्के निक्के टिंडू, शाखां टहिणीआं नज़री आईआ। चार जुग दे पिछले मार्ग राह मेट दे डिंगू, मज़हबां वाली धार ना कोए जणाईआ। पूजा रहे ना किसे सरगुण धार पाहन पत्थर लिंगू, पत्थर इट्ट ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साची सिख्या दए समझाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असां बहु तेरी कीती सिफ्त, सिफ्तां विच सालाहीआ। अक्खरां नाल बणाई लिख्त, शब्दां विच वड्याईआ। प्रेम दा दस्सया इश्क, मुहब्बत नाल जुड़ाईआ। राह दस्स के सारे आए खिसक, लोकमात पन्ध मुकाईआ। मुड़ के वेखण गया कोए ना लग्गा तिलक, जञ्ञू बोदी ना खोज खुजाईआ। सीस पट्टी ना तक्की केहड़ी रखी लिशक, आपणी चमक चमकाईआ। पर्दा खोल्ह्या ना टांक जिस्त, निरगुण सरगुण ना जोड़ जुड़ाईआ। एसे कर के प्रभू सब नूं लैणी पई रिसक, झोलीआं तेरे अग्गे डाहीआ। लारा देंदे आए स्वर्ग बहिश्त, थपकीआं नाल थपकाईआ। जगत वासना भोग के आए गृहस्त, पुत्तर धीआं नाल वड्याईआ। चार जुग दी साडी वेख लिस्ट, फ़रिसत आपणी फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं असीं खोल्ह ना सकीए किसे दी दृष्ट, दृष्टांत ग्रन्थ देण गवाहीआ। तेरा एका नूर नज़र ना आया इष्ट, ईश्वर तेरी समझ किसे ना आईआ। सब दी बुद्धी होई भृष्ट, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। साधू दिसे ना कोए निरिच्छत, इच्छिया विच सर्ब हल्काईआ। साचा नज़र ना आए कोई भिखक, भिकिख्या नाम ना कोए वरताईआ। साहिब सतिगुर, साबत रिहा ना किसे सिदक, सबूरी विच ना कोए समाईआ।

तूं घर घर देवणहारा रिज़क, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। कलयुग जीव जगत तमाशा वेखण मिऊज़क, मज़ा रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा अवर ना कोए सहाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडी जगत वेख गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी दया कमाईआ। पिछली द्वैत दी ढाह दे कंध, दीन मज़हब ना वंड वंडाईआ। सारे तेरा ढोला गाईए छन्द, सोहँ राग अलाहीआ। सचखण्ड निवासी तेरा माणीए आनंद, अनन्द अनन्द विच्चों वखाईआ। गाईए सिफ्त बिन बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। तेरा प्रकाश तक्कीए बिन सुर्या चन्द, दिवस रैण ना वंड वंडाईआ। तेरा हुक्म मन्नीए विच ब्रह्मण्ड, वरभण्ड सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट पाखण्ड, धरनी धरत धवल धौल सुक्ख सुखाईआ। लहिणा देणा वेख जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। साडा वक्त वेला रिहा लँघ, घड़ी पल दए गवाहीआ। तेरा नूर ज़हूर तक्कीए सेजा इक पलँघ, सिँघासण सोहणा सोभा पाईआ। तेरे नाम दा वज्जे मृदँग, दूजा राग ना कोए अलाईआ। आत्म धार उपजे सञ्ज, परमात्म वड वड्याईआ। जन भगतां नंगी होण ना देवीं कंड, कन्ढी बैठे ध्यान लगाईआ। जगत सृष्टी हैरान होवे दंग, दंगे फ़साद विच दुहाईआ। जोती जोत

८८२ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, लेखा रहे ना जमना सुरस्ती गोदावरी गंग, गंगोतरी धार ८८२

२१ ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दुनी दिसे निगुरी, सतिगुर इश्क गए भुलाईआ। जगत कसाई बणी २१

शरअ छुरी, शरीअत विच रगड़ाईआ। सब दी नीती हो गई बुरी, भैणां नूं तक्कण भाईआ। माण रिहा ना किसे धी कुड़ी, नार कन्त ना कोए सुहाईआ। तेरे नाल प्रभू प्रीती किसे ना जुड़ी, सारे सानूं मन्न के झट लँघाईआ। तेरे प्यार दी मिली किसे ना पुड़ी, हउमे रोग ना कोए मुकाईआ। दीन दुनी जाए रुड़ी, खेवट खेटा ना कोए सहाईआ। झूठे मार्ग जांदी टुरी, तुरिया पद ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं छड्डीए जगत क़बीला, कामल मुर्शद तेरी शरनाईआ। दीन मज़हब दा बणे ना कोए वसीला, इक्को वसल तेरा यार नूर अलाहीआ। सच धार तूं निरँकार तक्कया अमीना, अमलां तों रहत नज़री आईआ। जगत जहान होया कमीना, होछी मति बणाईआ। तेरा नूर नज़र ना आवे किसे विच सीना, छाती कमलापाती सोभा कोए ना पाईआ। मन कल्पणा जगत बुद्धी होई अधीना, सिर सके ना कोए उठाईआ। कोटां विच्चों तेरा भगत वेख्या इक नगीना, जिस दी क़ीमत ना कोए पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों सानूं मिल्या एहो माघ महीना, जिस दी महीन धार समझ किसे ना पाईआ। अगला हुक्म सुण के सानूं बिना तत्तां तों आवे पसीना, अन्तर

गर्मी रही सताईआ। दीन दुनी दी हालत विगड़े की खेल करना रूसा चीना, चैन ऐन लैण कोए ना पाईआ। की झगड़ा पैणा मक्का मदीना, काअबयां विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा प्यार कोई शहादत नहीं जल मीना, मीन जल प्यार कम्म किसे ना आईआ।

✻ २० माघ शहिनशाही सम्मत ४ सुलखण सिँघ दे गृह पिंड फ़िरोज़शाह ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

अवतार पैगम्बर गुर सचखण्ड साची करन डंडावत, बिन सीस सीस जगदीश झुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार अगम्मी कर सखावत, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। चार वरन कूड़ी क्रिया कढु अलामत, हर हिरदे अंदर निरंतर होए सफ़ाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार रहे ना कोई बनावट, जूठ झूठ लहिणा देणा लेखा देणा मुकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा तेरे नाम दी होवे सजावट, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह पातशाह शहिनशाह सब नूं होई थकावट, थक्की मांदी दीन दुनी नज़री आईआ। साचा इल्म आलम दस्से ना कोई आरफ़, तुआरफ़ विच सफ़ारश विच तेरा पर्दा ना कोए उठाईआ। भेव खोल्हे ना कोई मारफ़त, निरगुण तेरा नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। शाह पातशाह हर हिरदे अंदरों कूड़ी कढु अलामत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। अवतार पैगम्बर कहिण प्रभू साचे सच तेरी सरना, जुग जुग तेरी सरनाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच साची मंज़ल दस्स चढ़ना, औझड़ राह ना कोए भवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जगत ढोला दस्स पढ़ना, निरअक्खर धार अक्खर विच समझाईआ। अन्त तेरे चरणां कोल सच दुआरे होवे मरना, मर जीवत रूप वटाईआ। भाग लगा दे धरनी धरत धवल उपर धरना, धरनापति तेरी इक सरनाईआ। सच दुआरे चार कुण्ट दह दिशा नर निरँकार एकँकार इक्को तूं खड़ना, दूजा नूर ज़हूर जगत नेत्र नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा मेट दीन मज़हब ज़ात पात वरनां बरनां, मज़हबां रहे ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआर एकँकार दरगाह साची हक़ मुकाम तेरा सोभा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दर ठांडे तेरे सजदा, निउँ निउँ लागां पाईंआ। हउ बालक तेरे बरदा, जुग जुग सेव कमाईआ। लोकमात खेल वेख आपणे घर दा, गृह मन्दिर पर्दा दे गवाईआ। तेरा रूप नरायण नर दा, नर हरि तेरी इक सरनाईआ। जो शब्द संदेसे रिहा घलदा, नित नवित्त गए पढ़ाईआ।

लहिणा देणा वेख आपणे जल थल दा, महीअल आपणा पर्दा दे उठाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक महल अटल दा, दरगाह साची सच सिँघासण डेरा लाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर किसे नूं पता नहीं कल्ह दा, कलकाती चारों कुण्ट कूड़ बणया कसाईआ। तेरी धार आत्म परमात्म नहीं कोई रलदा, जागरत जोत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची सच दुआर एकँकार अकल कलधारी तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो सुणो संदेसा अगम्म फ़रमान, फुरनिआं तों बाहर दयां जणाईआ। निगाह मारो आपणी दीन दुनी विच जहान, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। साचा रिहा ना कोई काया मन्दिर मकान, हक़ीक़ी काअबे सोभा कोए ना पाईआ। धुर दा नाम आत्मक धुन सुणे कोई ना कान, अनादी नाद ना कोए शनवाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती मिले ना पीण खाण, जगत तृष्ना अग्ग ना कोए बुझाईआ। चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट दह दिशा कूड़ कल्पना होई प्रधान, माया ममता भज्जे चाँईं चाँईंआ। सारे तक्को आपणा आपणा इस्लाम, इस्म आज़म ना इक अख्वाईआ। लेखा तक्को अञ्जील क़ुरान, तीस बत्तीसे फोल फुलाईआ। की खेल करे अवाम, अमन विच ना कोए अटकाईआ। सारे कूड़ दे होए ग़ुलाम, ग़ुरबत अंदरों ना कोए कढ्ढाईआ। नज़र आए ना किसे अमाम, अमलां तों रहित ना कोए कराईआ। सदी चौधवीं सब दा बदलया इंतज़ाम, हुक्म हक़ ना कोए सुणाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लख चुरासी करे आप पहचान, पर्दा उहला आप उठाईआ। अवतार पैगम्बर कहिण साडे मालक, हरि तेरी बेपरवाहीआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी घटनिवासी पुरख अबिनाशी ख़लक ख़ालक, क़ुदरत दे क़ादर तेरी इक सरनाईआ। असीं चौहन्दे सब दे अंदरों बदल दे आदत, अदल इन्साफ आपणा इक कमाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सब दी होए इबादत, तेरा जस तेरा ढोला तेरी सिफ्त सलाह तेरा राग नाद गाईआ। कलयुग कूड़ कल्पणा रहे ना कोए मिलावट, जगत मुलम्मा कंचन पारस रूप वखाईआ। मेहरवान महबूब हर हिरदे विच्चों कढ्ढ अदावत, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। सच प्यार मुहब्बत एकँकार एका कर सख़ावत, सज्जण सुहेले इक अकेले सब तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, अतोट अतुट आप वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण पुरख अकाले दीन दयाले धर्म धार दी भर दे झोली, दर ठांडे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां दी सांझी कर दे बोली, अनबोलत आपणा राग सुणाईआ। शब्द नाद सतिगुर उठा आपणा ढोली, दो जहानां करे शनवाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी विच्चों होवे तेरी गोली, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मन कल्पणा कूड़ क्रिया कोए ना पावे रौली, हाहाकार ना कोए जणाईआ। किरपा कर श्रीधर उपर धौली, धरनी धरत धौल वज्जे वधाईआ। तेरी धार

प्यार विच परम पुरख आत्म परमात्म जावे मौली, मौला तेरा नूर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी परवरदिगार सांझे यार, दर ठांडे तेरे इक्को अलख जगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा चरण कँवल प्रणाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे तेरी शनवाईआ। तूं मालक ख़ालक आदि जुगादी इक अमाम, तेरी आमद विच खुशामद विच बैठे राह तकाईआ। हउँ बालक नन्हे तेरे सदा नादी सुत नौजवान, पूत सपूते गोद उठाईआ। सदी चौधवीं अन्त कन्त निरगुण धार हो प्रधान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा खेल खिलाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पा इक्को आण, आनण फ़ानण आपणा झगड़ा दे चुकाईआ। तेरा इष्ट सांझा होवे इक अमाम, इस्म जिस्म विच्चों देणा समझाईआ। संदेसा धुर दा दे पैग़ाम, पैगम्बरां तों परे तेरी पढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया शरअ मेट शैतान, सतिजुग साचा राह चलाईआ। निरगुण धार हो मेहरवान, सरगुण आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर इक्को देणा वखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैगम्बरो लोकमात होवो सावधान, आपणे दीन मज़हब वेखो चाँईं चाँईंआ। सच सति दी करो पहचान, परदा परदयां विच्चों खुल्हाईआ। किस दा साबत दिसे ईमान, धर्म दी धार कवण समझाईआ। हुक्म चलाए सच निशान, कवण नाअरा सच अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण सच्ची सरकार, हरि करते तेरी वड्याईआ। हउँ तेरे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। दीन मज़हब दे गुलशन बग़ीचे लाए वेख लई बहार, फुल्ल टैहणी रही महकाईआ। एह खेल तेरा अपार, अपरम्पर स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा कहिण असीं की पाउणी सार, पारब्रह्म ब्रह्म तेरे हथ्थ फड़ाईआ। निरगुण नूर जोत कर उज्यार, निरवैर पुरख आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं पैगम्बरां दिसे हार, हौसले रहे ढाहीआ। कर खेल आपणी धार, निरगुण तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त तेरे अख्त्यार, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण निराकार निरँकार आपणा हुक्म वरताईआ।

✻ २१ माघ शहिनशाही सम्मत ४ संपूरन सिँघ दे गृह पिंड फ़िरोज़शाह ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

पैगम्बर कहिण परवरदिगार तेरे ख़ादम, ख़िदमत कर के सेव कमाईआ। साडा लेखा पूरा कर दे जो हुक्म देवें आदल,

८८५
२१

८८६
२१

अदल इन्साफ आपणा इक कमाईआ। नौ लख जंतू दिसे द्वापर समां कुल यादव, चार कुण्ट दह दिशा नज़री आईआ। जगत अन्धेरा मेट दे बादल, निरगुण नूर सुर्या इक चमकाईआ। दीन मज़हब दा रहे ना कोए क़ातल, क़त्लगाह नज़र कोए ना आईआ। सच दुआरा एकँकारा तेरा इक्को पातन, पत्रका पिछली इक रखाईआ। सदी चौधवीं असीं लग्गे वाचण, बिन अक्खरां बोल सुणाईआ। साडा नाता तुट्टा साकन, सज्जण रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रातन, रुतड़ी इक महकाईआ। भगतां सूफ़ीआं भेव रहे ना बातन, पर्दा उहला आप चुकाईआ। असीं सारे आए आखण, कहि कहि इक सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन सुद्ध डूँघे खातन, ख़तरा जगत रहे ना राईआ। सब दी सांझी होए प्रभातन, इक्को प्रभू लैणा नाम ध्याईआ। एका रंग रंगा दे संध्या आथण, शाम शमां इक जगाईआ। सरगुण धार निरगुण तेरे वल्ल झाकण, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। मानव अंदर रहे ना कोए शाकण, सहिसा शंका देणा गवाईआ। इक्को अन्त रूप दिसे पृथमी आकाशन, ज़िमीं असमानां रंग रंगाईआ। तूं साहिब सुल्तान पुरख अबिनाशण, पारब्रह्म तेरी बेपरवाहीआ। साडा इक्को रंग रंगा दे चार जुग दा वखरा वखरा भाषन, जो भाषा जगत आए बणाईआ। दीन मज़हब दा लेखे ला ला वखरा वखरा राशन, गाँ सूर खा के तैनूं सर्ब भुलाईआ। जीव जंत दा करे ना कोए घातन, छुरी फड़े ना कोए कसाईआ। झगड़ा मुके तत आठण, ततव तत ना कोए लड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा होवे पाठन, सोहँ ढोला सृष्टी दृष्टी अंदर गाईआ। योद्धे सूरबीर राठन, बलधारी लैणी अंगड़ाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार तेरे भय अंदर नाचन, कूड़ी तृष्ना दए दुहाईआ। सच दुआर एकँकार खोलृ हाटण, नाम अमोलक वस्त वरताईआ। निझर रस अमृत तेरा सारे चाटण, चेटक अवर ना कोए रखाईआ। सच दुआर दस्स दे घाटण, तट इक्को सोभा पाईआ। आत्म सेजा सुहा खाटण, खटिया कूड़ी दे मुकाईआ। मेहरवान महबूब खेल वेख नटुआ नाटण, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। लख चुरासी विच्चों भगतां कर खुलासन, बंधन बन्दगी वाला तुड़ाईआ। आवण जावण पतित पावन मात गर्भ ना अगन तपाईआ। निरगुण नूर जोत जगा ललाटण, अन्ध अन्धेर देणा गवाईआ। साचा नाम बख़्श सौग़ातन, अगम्म दात वरताईआ। मनुआ रहे ना कोए बदमाशण, बदी दा डेरा दे ढाहीआ। तेरे मिलण दी सब नूं होए ख़्वाहिशण, ख़्वाहिश इक्को दे समझाईआ। जगत जिज्ञासू दीन दुनी समझण विनासण, थिर रहिण कोए ना पाईआ। शब्द अगम्मी घोड़े चाढ़ प्रभू राकण, दो जहानां वेख वखाईआ। साचा नाम ज़ीन पाखर पा काठण, तंग तंगदस्त लै कसाईआ। तेरे भगत सुहेले तेरे प्यार विच चार कुण्ट पटाकण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सच दुआरे तेरे खुशीआं विच बिराजण, प्रेम प्रीती नींद सवाईआ। तूं शाहो भूप वड राजन, शाह पातशाह इक अख्वाईआ।

आदि जुगादी तेरे साजण, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। सदी चौधवीं साडा पूरा कर दे क़ाजन, क़र्ज़ा मक़रूज दे चुकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी विच्चों थोड़े जीव जागण, जो तेरे नाम ध्यान लगाईआ। जिन्हां अन्तर दिता वैरागन, प्रेम प्रीती विच समाईआ। पंज तत काया होई वडभागण, प्रभ वडभागी वेख वखाईआ। तुध बिन चार कुण्ट मात होए ना सुहागण, नार कन्त भगवन्त रूप ना कोए जणाईआ। निरगुण दीवा जगा चराग़ण, चरागाहां विच होए रुशनाईआ। कलयुग जीव बुद्धी बणा हँस कागण, कागों हँस बणाईआ। दुरमति मैल धो दाग़ण, पतित पुनीत दे कराईआ। पवित्र कर मास नाड़ी हाडण, मेहर निगाह इक उठाईआ। पीर पैगम्बर कहिण पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार साडी पूरी होई निमाज़ण, हाज़र हो के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे दा लेखा आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना देवे गवाचण, सच दुआरे धुर दे खाते विच्चों जुग जुग वेख वखाईआ।

✲ २१ माघ शहिनशाही सम्मत ४ सीतल सिँघ दे गृह पिंड डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✲

अवतार कहिण प्रभू आत्म परमात्म होवे तेरी गाथा, गहर गम्भीर बेनज़ीर पर्दा आपणा सर्ब उठाईआ। दो जहान नौजवान मर्द मर्दान श्री भगवान खोल्ह हाटा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान इक्को घर वसाईआ। अमृत रस निझर धार सच स्वामी दे अगम्मी बाटा, जगत रस विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म तेरा एथे ओथे दो जहानां जुड़े नाता, दूई द्वैती शरअ शरायत पन्ध देणा मुकाईआ। खेल अपारा नर निरँकारा आदि जुगादि जुग चौकड़ी साचा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवणहार गवाहीआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक एकँकार इक्को आक़ा, अकल कलधारी तेरी वड वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन सदी चौधवीं सब दा बदल दे साका, साख्यात हो के निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा हुक्म वरताईआ। अवतार कहिण पुरख अकाल धुर दे स्वामी, समां कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। निरगुण निरवैर निराकार लेखा वेख चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा सब नूं चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी । आत्म ब्रह्म पारब्रह्म तत वजूद काया माटी अंदर पहचानी, बेपहचानी अंदर परदा उहला आप उठाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द जीव जहान पढ़दे बाणी, साध सन्त हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। तेरा नूर

ज़हूर दिसे ना किसे प्राणी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा दरस किसे ना पाईआ। चार कुण्ट दह दिशा सब दी कूड़ दिसे , घर मन्दिर अंदर सोभा कोए ना पाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, रूहेरवा ना कोए वड्याईआ। किरपा कर पारब्रह्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धर्म दुआरे एक इक्को इक इक्क समझाईआ। पैगम्बर अवतार कहिण परम पुरख साडा प्रणाम, नमस्ते कहि के सीस निवाईआ। धुर दी धार दे दे नाम, नाउँ निरँकारा इक अलाहीआ। चार वरन अठारां बरन रसना जिह्वा बत्ती दन्द गावण गाण, हिरदे अंदर देणा वसाईआ। कूड़ी क्रिया मेट शरअ शैतान, माया ममता मोह मिटाईआ। नव नौ चार झुल्ले इक धर्म निशान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेख खेल भगत धर्म ईमान, अमल खोज थाउँ थाईंआ।

* २१ माघ शहिनशाही सम्मत ४ धन्ना सिँघ दे गृह पिंड डगरू *

अवतार कहिण असीं तोड़ ना सके ममता, सच सच सुणाईआ। असीं होड़ ना सके हंगता, हँ ब्रह्म जणाईआ। बोध दे ना सके पंडता, पारब्रह्म मिलाईआ। काग बणा ना सके हँसा, हस्ती इक दरसाईआ। मनुआ घायल ना कीता कंसा, शस्त्र नाम चलाईआ। चार वरन बणा ना सके बंसा, इक्को रंग रंगाईआ। तेरे अग्गे प्रभू सारे करदे मिन्नता, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। साडी रही कोई ना हिम्मता, हौसले रहे ढाहीआ। सानूं पूजण वाले हुक्कयां नाल बन्नी बैठे चिमटा, जगत दो धारा रूप बदलाईआ। साची मिली ना किसे निम्रता, निरमाणता विच ना कोए समाईआ। तेरा नाम कोई ना सिमरदा, पूजा पाठण विच दुहाईआ। बिन तेरे कलयुग अन्तिम लहिणा देणा मूल ना निबड़दा, साहिब सुहेले हो सहाईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआरा शेर रूप बणया गिद्दड़ दा, तेरे कलमे ना कोए चतुराईआ। माया ममता नाल साध सन्त लिबड़दा, अन्तर करे ना कोए सफ़ाईआ। तूं लेखा मुका अवतार पैगम्बर मित्र दा, मित्र प्यारे तेरे हथ्थ वड्याईआ। खेल वेख कूड़ी क्रिया सिखरदा, तेरी चोटी चढ़ के दए दुहाईआ। हुण वक्त नहीं पूजा पाठ निमाज़ ज़िकर दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। अवतार कहिण सानूं चारे कुण्ट ख़तरा, दर साफ़ ना कोए कराईआ। किसे अन्तर नाम रिहा ना कतरा, कुतबखाने सिफ्तां वाले भरे सोभा पाईआ। पढ़दे उँगलां रख के उपर सतरां, सतह सच ना कोए समझाईआ। तेरा खेल सब तों वखरा, बिन तेरी किरपा भेव किसे ना आईआ। पुरख

अकाल दीन दयाल असीं चार जुग तेरा वेंहदे रहे नख़रा, की आपणी कल वरताईआ। अन्तिम साडे दीनां मज़हबां दा कढ्ढ लै ख़सरा, नम्बर नम्बरीआं वाले दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की सब दा होवे हशरा, बाअसलीअत असलीअत सब दी देणी समझाईआ।

८८९

२१

* २१ माघ शहिनशाही सम्मत ४ मेला सिँघ दे गृह पिंड डगरू *

अवतार कहिण प्रभू दुनियां हो गई बेइलाजी, अवतार पैगम्बर गुर तबीब ना कोए वड्याईआ। साचा इस्म नज़र ना आए कोई आदाबी, अदब करे ना कोए लोकाईआ। भेव समझे ना कोए हक़ीक़ी मजाज़ी, विपराती रहे जणाईआ। मुल्ला पंडत हो गए शराबी, शरअ विच दुहाईआ। ग्रन्थी हो गए कबाबी, सति धर्म ना कोए रखाईआ। असीं रहिणा नहीं किसे दा इमदादी, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। चार जुग दे पिछले गाडी, गारडीअन तेरे बणाए सोभा पाईआ। अग्गे छड्डीए आपणी आबादी, गिणती तेरे हथ्थ फड़ाईआ। साडे कोलों सारे करदे ख़राबी, ख़राबा तैनूं रहे वखाईआ। तेरे नाम दी वज्जे ना कोए रबाबी, रब्बी नूर ना कोए वखाईआ। जिधर वेखीए तन वजूद दिसण दाग़ी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। दीपक जोत ना कोए चराग़ी, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ लग्गी आगी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। हँस बुद्धी होई कागी, माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। अन्त अख़ीर शाह पातशाह शहिनशाह असीं रहे ना किसे दे वागी, वागां तेरे हथ्थ फड़ाईआ। झगड़ा मेट दे पंज तत बाडी, वजूद रहे ना कोए लड़ाईआ। किसे नूं लोड़ रहे ना साडी, इक्को तेरा ढोले गाईआ। तेरी खेल वरते डाहढी, डंडावत सब नूं दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निरगुण धार निराकार जन भगतां आत्म परमात्म तेरे नाल होवे शादी, शादिआने धर्म दुआर इक्को वार वजाईआ।

* २१ माघ शहिनशाही सम्मत ४ जगीर दास दे गृह पिंड डगरू *

जगीर दास बख्शे अगम्मी जगीर, जगह धुर दी दिती समझाईआ। जिथ्थे पुज्जे ना कोए ग़रीब अमीर, बिन भगतां थाँ कोए ना पाईआ। जन्म कर्म दी पिछली मेट लकीर, रस्ता साफ़ दिता बणाईआ। तत्तां विच्चों आत्मा दी कर के तामीर, तक़दीर दिती वटाईआ। घर वखा के आपणा अख़ीर, गृह दिता सुहाईआ। तन चोला ज्यों बस्तर चीर, चीरे वाला वेख

वखाईआ। जिस दा मेला नाल होवे कबीर, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। कबीर दे नाल अल्फ़ी वाला पिच्छे वी एह हुंदा सी फ़कीर, माला गल लटकाईआ। कोल लोटा रखदा सी भरया नीर, सदा आपणे संग जणाईआ। तिन्न दफ़ा दिन विच पींदा सी सीर, सीरा खा के नौ साल झट लँघाईआ। अन्त मरन तों पहलों होई पीड़, तत गया तजाईआ। बड़ी लग्गी सी भीड़, इक्ठे हो के वेखण सारे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। जगीर दास कबीर दा साथी, फ़कीर फक्कर नज़री आईआ। अन्त बेनन्ती इक आखी, अंदरे अंदर ध्यान लगाईआ। मेरे परवरदिगार मेरी करनी माफ़ गुस्ताख़ी, गुस्सा गिला ना कोए जणाईआ। बड़ी तपस्या वाली हुंदी सी एहदी इक चाची, नाँ तालो नज़री आईआ। ओस फड़ के पाणी दी बाटी, इहदे मुख विच दिती पाईआ। फ़कीरा तेरी मुश्किल ते औखी घाटी, बिना परवरदिगार तेरा ना कोए सहाईआ। मैनूं ऐं दिसदा साडा अमाम फेर आसी, आसा विच राह तकाईआ। ओसे नूं सब ने कहिणा पुरख अबिनाशी, पतिपरमेश्वर रूप वेस वटाईआ। तेरी जन्म विच फेर होवे हयाती, जीवण ज़िंदगी रंग रंगाईआ। ओह तेरा लहिणा देणा चुकावे बाकी, लेखा पिछला वेख वखाईआ। दे के माण पंज तत ख़ाकी, ख़ाक विच्चों लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत जाम देवे आबेहयाती, सौग़ाती धुर दी नाल रलाईआ।

८९० २१

✻ २१ माघ शहिनशाही सम्मत ४ गुरबचन सिँघ दे गृह पिंड सदासिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ अगम्मी शब्द दा मार छापा, छापेख़ाने वाले अक्खर दे बदलाईआ। दीन दुनी जगत जहान दी वेख भाखा, पारब्रह्म हर हिरदा फोल फुलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा सब नूं आया घाटा, पूरा तोल तराज़ू ना कोए तुलाईआ। तेरा नाम रस मिले किसे ना बाटा, निझर झिरना बूंद स्वांत ना कोए टपकाईआ। परवरदिगार सांझे यार सदी चौधवीं होई अन्धेरी राता, चौदस नूरी चन्न ना कोए चमकाईआ। देवत सुर साथ ना देवे कोई माता, गण गंधरव ना कोए बचाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया खेल बाज़ीगर नाटा, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। सेज सुहञ्जणी सोए कोई ना खाटा, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। तूं साहिब सुल्ताना आत्म परमात्म जाता, जोती जाते पुरख बिधाते आपणा नूर कर रुशनाईआ। असीं सारे मन्नीए तेरा आखा, आख़र तेरी ओट तकाईआ। तन वजूद पर्दा खोल्ह बजर कपाटा, नव नौ चार डेरा ढाहीआ। साडी पूरी कर मनसा आसा, आहिस्ता आहिस्ता सारे रहे सुणाईआ। असीं बैठे उपर आकाशा, धरती

उत्ते दीन दुनी दे के आए तेरा भरवासा, कलयुग अन्तिम प्रगट होवे पुरख अबिनाशा, कल कल्की वेस वटाईआ। तूं सर्ब गुणां गुणदाता, आत्म परमात्म जोड़ दे नाता, ब्रह्म धार बण पछाता, भेव अभेदा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक दे दे धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ दे दे हुक्म अपरम्पर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। तूं सर्ब कला भरतम्बर, स्वामी नूर अलाहीआ। कलयुग सतिजुग रच स्वयम्बर, गुर अवतार पैगम्बर वेखण चाँईं चाँईंआ। जूठ झूठ कूड़ी क्रिया मेट अडम्बर, सच सच मार्ग दे लगाईआ। कर प्रकाश अन्धेरी कंदर, धूआँधार मिटे लोकाईआ। सच दुआर दा खोल्ह जंदर, ज़िंदगी जीवण विच बदलाईआ। महल अटल सुहा इक्को अंदर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा दे वखाईआ। तेरे दर ते दरवेश हो के आए मँगण, मांगत हो के झोलीआं डाहीआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आपणे नाम दी चाढ़ रंगण, निरगुण धार सरगुण उतर कदे ना जाईआ। किरपा कर सूरे सरबंगण, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। मेहरवान महबूब दया कर विच वरभण्डण, ब्रह्मण्ड तेरी वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म दे अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत तेरा नूर अलाही चन्नण, चन्द चानणी दे चमकाईआ। एथे ओथे दो जहानां तेरे नाल हंढुण, विछोड़ा अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरिजन साचे लैणे मिलाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण बख्श दे सिदक सबूरी, भरोसा इक दृढ़ाईआ। दर मँगीए तेरी हज़ूरी, हज़रत हो के सीस निवाईआ। साडी लेखे ला मज़दूरी, चौदां सदीआं सेव कमाईआ। आसा किसे ना रहे अधूरी, हद्द हदूद दिती गवाईआ। शरअ दी रहे ना कोए मग़रूरी, गुरबत अंदरों देणी कढ्ढाईआ। साडी बेनन्ती कर मन्जूरी, मेहर नज़र इक उठाईआ। तूं सर्ब कला भरपूरी, भरपूर रिहा सर्ब थाईंआ। साडी अन्त वेख मजबूरी, मुजरम सारे नज़री आईआ। तूं ख़ालक खलक दस्तूरी, दस्त तेरे हथ्थ लोकाईआ। मन कल्पना पई फ़तूरी, फ़तवा ला थाउँ थाईंआ। इक्को नाम दी कर मशहूरी, मशवरे गुर अवतार पैगम्बर तेरे नाल रलाईआ। कलयुग क्रिया मात विच्चों कढु कूड़ी, कूड़ कुटम्ब देणा कटाईआ। इक्को बख्श चरण प्रीती सति धार दी धूढ़ी, धूल मस्तक नाम लगाईआ। की हो गया जे तेरी सृष्टी दृष्टी विच्चों मूर्ख मूढ़ी, मूढ़ सुघड़ सुचज्जे लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी एकँकारा साचा नूरी, नूर नुराने दया कमाईआ।

✱ २२ माघ शहिनशाह सम्मत ४ गुरदयाल सिँघ दे घर पिंड सद्दासिँघ वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✱

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ वेख शरकन गरबन, शरीअत वाले शरअ जगत खोज खुजाईआ। दूर नेड़ा तक ख़ाका आपणा अरबन सुअरबन, परवरदिगार सांझे यार आपणा ध्यान लगाईआ। योद्धे सूरबीर बली बलकार आपणी धार कर मर्दन, मर्द मर्दाने तेरे हथ्थ वड्याईआ। चार जुग दा पूरब लेखा लहिणा मुका क़र्ज़न, मक़रूज़ हो के वेख वखाईआ। सदी चौधवीं साडी सब दी पुट्ठी दिसे नरदन, नर नरायण तेरा दर नज़र किसे ना आईआ। की संदेसा दे के गया तत्ती लोह उत्ते अर्जन, अर्ज़ बेनन्ती तेरे अग्गे रखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां होण ना देवीं हरजन, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाईआ। की याद कीता तेग़ बहादर जिस वेले कटार लग्गी उपर गरदन, गदागर होणी कूड़ लोकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा दीन दुनी लग्गे धड़कन, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। माया ममता विच सारे लग्गे भटकण, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। प्रभू तेरे मिलण दी काया अंदर सब दे पए अड़चण, निरगुण नूरी तेरा दरस कोए ना पाईआ। दीन मज़हब हँकार विच इक दूजे नाल खड़कण, खण्डा खड़ग जूठ झूठ हथ्थ रखाईआ। बिन तेरी किरपा साचा मार्ग मिले कोई ना सड़कण, सहिसा रोग ना कोए चुकाईआ। ममता मिटे किसे ना तड़पन, मोह सके ना कोए तुड़ाईआ। वक्त याद आया जिस वेले गोबिन्द बच्चे नीहां हेठां लग्गे रखण, रखक दया कमाईआ। उन्हां दी निगाह पई विच कूट दक्खण, अक्ख अक्ख बिना खुल्हाईआ। दीन दुनी दी चोली दिसी सी सक्खण, नाम वस्त ना कोए टिकाईआ । कुछ लेखा लिख्या घर गवाल्यां जो कृष्ण खाधा मक्खण, शहादत शब्द धार भुगताईआ। सच प्रीती विच कलयुग जीव मूल ना वसण, वास्ता प्रभ दे नाल ना कोए रखाईआ। कूड़ विकारे अंदर सारे टप्पण, मन मनसा भज्जे चाँईं चाँईंआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म नाम मूल ना जपण, जगजीवण दाते तेरा दरस कोए ना पाईआ। त्रैगुण माया अंदर सारे दगण, जगत तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ। सच दुआर एकँकार लभ्भे कोई ना पतण, चार जुग दे शास्त्र पत्रका पढ़ के झट्ट लँघाईआ। बेवतनां वखाए कोई ना तेरा सचखण्ड वतन, दरगाह साची मिलण कोए ना पाईआ। जिधर तक्कां चार कुण्ट दिसे रट्टण, रट्टा प्या कूड़ लोकाईआ। नेत्र रोवे मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मट्ठन, गुरुदुआरा धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तुध बिन उलटी गेड़े कोई ना लट्ठण, धर्म दी धार ना कोए चलाईआ। साधां सन्तां रहे कोई ना हट्ठण, धीरज सन्तोख नज़र कोए ना आईआ। शरअ शरीअत जगत ज़ंजीरी आए कोई ना कटण, दूई द्वैत ना डेरा ढाहीआ। कौल इक़रार कर के पूरा करे कोई ना बचन, वायदे खिलाफ़ होई लोकाईआ। सच सरनाई चरण तेरे ना वसण, वास्ता तेरे नाल ना कोए रखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले

निज नेत्र तेरा दर्शन मिले कोई ना अक्ख ण, लोचण बन्द ना कोए खुलाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरला हीरा बणे तेरा रतन, जिस दी क़ीमत जगत ना कोए चुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म जोड़े नत्तन, नाता बिधाता इक रखाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच सिर रखणा भगतां हथ्थन, हथ्थ सिर उपर टिकाईआ। अन्त अख़ीर सब दा बिअरथ होणा यतन, यथार्थ तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। बिन तेरे कोई ना जाणे दीन दुनी दा लच्छण, लख चुरासी खोज ना कोए खुजाईआ। तेरा खेल सदा जुग चार नित नवित्तन, नर निरँकार तेरी बेपरवाहीआ। पता नहीं तूं खेल करना कीकन, किस बिध आपणी खेल रचाईआ। जिधर तक्कीए साध सन्त सारे वेखण, सति सन्तोख नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार कहिण प्रभू सानूं तेरे दवारिउँ सच धर्म दी अन्तिम होणी पैन्शन, चार जुग दी सेवा तेरी झोली पाईआ। जो उपज्या सो अन्त बिनसन, थिर नज़र कोए ना आईआ। तत रिहा ना रामा कृष्ण, ईसा मूसा मुहम्मद नज़र कोए ना आईआ। दस गुरु माटी खल्ल ना कोए चमकण, बुतख़ाने वज्जे ना कोए वधाईआ। एह सारे साहिब सुल्तान तेरे कमसन, किरपा निधान तेरी खेल खिलाईआ। अन्त अख़ीर सब दी पूरी करदे हरसन, हिरस हवस ना कोए वधाईआ। सचखण्ड दुआरे बैठे सारे तरसण, बिन दीद अक्ख खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी तृखा मेट दे हिरसन, हिफ़ज़ इक्को आपणा नाम कराईआ।

❊ २२ माघ शहिनशाही सम्मत ४ सरदारा सिँघ दे घर पिंड मनावां ज़िला फ़िरोज़पुर ❊

गुर अवतार पैगम्बर कहिण प्रभ दीन दुनी दा फड़ पल्ला, आत्म अन्तर निरंतर परमात्म खोज खुजाईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप होया झल्ला, माया मोह विकार हँकार विच लड़ाईआ। फिरी दरोही चार कुण्ट दह दिशा उजाड़ पहाड़ जला थला, तुध बिन महीअल प्रभ सके ना कोए तराईआ। तेरा नाम गाया राम कृष्ण वाहिगुरु अल्ला, आलमीन तेरी सिफ्त सालाहीआ। जिधर वेखीए दीनां मज़हबां पाया तरथल्ला, धीरज धीर धर्म धार ना कोए वखाईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआरा काम क्रोध दा कढ्ढी फिरे भल्ला, तिक्खी धार चार वरन रिहा जणाईआ। पता नहीं सदी चौधवीं केहड़ी कूटों अन्त अख़ीर होवे हल्ला, रूप बदले जगत लोकाईआ। तेरा धाम किसे ना दिसे निहचल अटला, अटल पदवी सके ना कोए समझाईआ। बिन तेरी किरपा नूरी जोत कोए ना बला, बलधारी तेरी आस रखाईआ। नित नवित्त करदा आएयों वल छला, अछल छलधारी तेरी वड वड्याईआ। तन वजूद माटी ख़ाक साचे नाम दा दिसे कोई ना फला, सिम्मल रूप ख़ाली नज़री सृष्टी दृष्टी वेख वखाईआ। तूं साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना इक अकल्ला, अकल कलधारी तेरे हथ्थ

८९३
२१

वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, मेहरवान महबूब आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण चार कुण्ट दह दिशा दिसे कोई ना सांत, कलयुग अगनी तत तपाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दी रही ना कोई जमात, पट्टी नाम ना कोए पढ़ाईआ। दीन मज़हब इक दूजे दा करन घात, घाउ डूँघा रहे लगाईआ। साची मिले किसे ना दात, नाम भण्डारा ना कोए भराईआ। सदी चौधवीं पुच्छे कोई ना वात, वातावरन विगड़िआ जगत लोकाईआ। साडा रिहा कोई ना दास, सेवक सेवा सच ना कोए कमाईआ। साहिब स्वामी असीं सारे होए उदास, हैरानी साडे अंदर आईआ। फिरी दरोही पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर रहे कुरलाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात पात, दीन दुनी इक्को रंग रंगाईआ। लेखा रहे ना मन ममता नार कमज़ात, कुलखणी झगड़ा देणा चुकाईआ। सब नूं आत्म परमात्म परमात्म आत्म दस्सणी ज़ात, ज़ात अज़ाती पर्दा देणा उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर सारे रख के गए आस, अन्त अख़ीरी बिन नैणां राह तकाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दीन दुनी खोज खुजाईआ। हर हिरदे अंदर काया मन्दिर तेरी होवे याद, तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत वज्जे वधाईआ। सति धर्म दा साचा जुग धरनी कर आबाद, कूड़ी क्रिया जगत विकार सुट्ट डूँघे खात, शौह दरया रुड़्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाले तेरा राह तकाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण दीन दुनी वेख जगत धार, धर्म दुआरा नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट चार वरनां दिसे हाहाकार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म रिहा ना कोए प्यार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोले जगत गाईआ। निरगुण दीया बाती कमलापाती तेरा नूर जोत करे ना कोए उज्यार, गृह मन्दिर अंदर होए ना कोए रुशनाईआ। शब्द नाद अगम्मी धुन सुणाए ना कोए जैकार, आत्मक राग ना कोए अल्हाईआ। अमृत रस बिन रसना जिह्वा कोई ना पीवे ठंडा ठार, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। पुरख अकाल निरगुण निरवैर निराकार निरँकार दीन दुनी दी पा सार, महासार्थी आपणी खेल रचाईआ। कूड़ी क्रिया जगत तृष्ना दे निवार, निवाज़श विच सारे सीस निवाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझे यार, याद भुल्ली सब दी वेख वखाईआ। वड अमाम बण सिक्दार, कल कल्की तेरा अवतार, निहकलंक खेल अपार, अपरम्पर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सच्ची सरकार, धुर फ़रमाना दो जहानां इक्को इक जणाईआ।

✲ २३ माघ शहिनशाही सम्मत ४ सुरजीत कौर दे गृह पिंड मनावा ज़िला फ़िरोज़पुर ✲

सदी चौधवीं कहे मैं रातीं गई मक्के गांदी, क़लमा तेरा नाम सुणाईआ। राह विच मैनूं मरी मिल गई ढांडी, चोखर चौपाया दए दुहाईआ। रो के किहा अड़ीए क्यों शोर मचांदी, रौला रही पाईआ। आप तूं पहन के सोना चांदी, नाता परवरदिगार नाल जुड़ाईआ। वेख लै साडा हाल सुखीं सांदी, माणस सानूं रहे खाईआ। मेरे थणीं सीर ते मेरी पशू जाती गाँ दी, गऊ माता कहि के जिस नूं सारे गाईआ। हुण मैं रही नहीं किसे थाँ दी, कसाईआं मेरी खलड़ी दिती लाहीआ। मैं दुनियां दी बुद्धी वेखी कुरलाउण वाली काँ दी, काग हँस ना कोए बणाईआ। तूं जोबनवन्ती भरी फिरें चा दी, चाउ घनेरा आपणे अंदर टिकाईआ। मैं आसा रखदी इक निआं दी, जे कोई अदल इन्साफ दए कमाईआ। कुछ शर्म कर आपणी चूड़े वाली बांह दी, जो लाल रंग नाल रंगाईआ। मैं क़सम खा के कहां खुदा दी, खुदी दा डेरा कोए ना ढाहीआ। मेरी बेनन्ती मन्ज़ूर ना होई दुआ दी, दरोही दरोही कर के दयां सुणाईआ। साया उठ गई सिर तों ठंडी छाँ दी, कलयुग अगनी रही तपाईआ। नी तूं वसण वाली सचखण्ड गराँ दी, घर सोहणे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सुत्ती नहीं रती, पंज पंज भज्जी वाहो दाहीआ। मैं निमाणी वेखी ढठ्ठी, प्यासी दए दुहाईआ। जिस दी खलड़ी बद्धी सी विच रस्सी, घुट्ट के गंढु पवाईआ। उस दीआं हड्डीआं कहिण जाह आपणे मालक नूं कहि ज़रा हालत वेख चार लख ते अस्सी, चुरासी खोज खुजाईआ। मैं निकरमण केहड़ी गल्ल तों फसी, मैनूं मिली सज़ाईआ। जोबन वन्तीए तूं ते क़सम खांदी सैं पोह छब्बी, मत्थे टिक्के नाल सुहाईआ। दाअवे नाल कहिंदी सैं मेरा मालक रब्बी, नूर नुराना इक अख्वाईआ। मैं चावां भरी सदी, सदमे सब दे दयां मुकाईआ। पैगम्बरां दी मेट के गद्दी, गुर अवतार लेखा लेखे लाईआ। बौहड़ी साडी साडी पुकार किथ्थे छड्डी, किथ्थे आईउँ गवाईआ। आह वेख मेरी हड्डी, कसाईआं खल्ल नालों कीती जुदाईआ। कुछ सानूं दस्स किथ्थे तेरे परवरदिगार दी जोत जगी, जगह देणी समझाईआ। जेहड़ा कूड़ मिटावे अग्गी, अग्गा रिहा बणाईआ। वेख मैं बाहरों किंडी बग्गी, चिट्टे रोमां नाल सुहाईआ। पर कुकर्मा पापां नाल दब्बी, सिर ना सकां उठाईआ। तेरे वरगी मैनूं होर नहीं कोई लभ्भी, जिस दे अग्गे हो के दयां दुहाईआ। मुहम्मद नूं किहा कमल्या तेरी उम्मत खांदी ढग्गी, ढोरां नाल झट डंघाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी चलदी दी रुक गई अड्डी, पब्ब भार ना कोए रखाईआ। मैं चार कुण्ट वेखण लग्गी, धुर दा नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जोत अकालण आ गई भज्जी, मेरी मेरे वाला रूप वटाईआ। नेड़े आ के पा लई जफ्फी, गलवकड़ी विच सुहाईआ। नी आह वेख धुर दा मालक पिछले लेखे करन लग्गा

८९५
२१

नफ़ी, जगत दे बॅटे दए बदलाईआ। पैगम्बर रहिण नहीं देणा कोई शफ़ाख़ाने वाला शफ़ी, शफ़कत विच ना कोए वड्याईआ। हलूणा मिलदा वेख मसीह, मसले सब दे हल्ल कराईआ। शब्दी डोरी रिहा कसी, क़सम नाल क़िस्मत ढोरां दए बदलाईआ। एह दु:ख वेख के मैनूं वी पैंदी गशी, गश विच आपणा आप भुलाईआ। कथा कहाणी सुणावां सच्ची, सच दरबार देणा दृढ़ाईआ। प्रभू वेख चार कुण्ट दुहाई मच्ची, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग दए रंगाईआ। ढांडी कहे मेरे तन दा चिट्टा पोश, जगत नेत्र वेख वखाईआ। मैं निमाणी निर्दोष, क्यों मिली सज़ाईआ। उने चिर नूं कसाई गया पहुंच, हट्टा कट्टा रूप वखाईआ। मैं पै गई विच सोच, समझ विच्चों वेख वखाईआ। अक्खां खोल्ह्हीआं मैनूं दिसी शब्दी ढोक, लहिंदी दिशा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जेहड़ा खल्ल लाहवे कसाई, उस रो के दिता सुणाईआ। मैनूं लै बचाई, मेरी तेरे अग्गे दुहाईआ। मैं फ़कीरे दा जुआई, जेहड़ा तरयासी साल पहले आपणा आप गया तजाईआ। ओह फ़कीरा अग्गे करदा रिहा सी दुआईं, हथ्थ जोड़ के वास्ता पाईआ। कोई मैनूं मिलाउ धुर दा माही, महबूब नूर अलाहीआ। इक फक्कर मिल्या मस्त ते कहिण उहनूं गुसाईं, हस्स के ताली रिहा वजाईआ। अवधूत नंगा बस्तर कोई नाहीं, मिट्टी रिहा उडाईआ, फ़कीरे किहा फ़कीरा तैनूं शर्म हया नाहीं, धीआं भैणां वेख वखाईआ। मस्त किहा एह खेल मेरे बेपरवाही, जेहड़ा आपणे रंग रंगाईआ। मेरे विच वड़ के सद आपणा दरस वखाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। फ़कीरे किहा उह मस्ताने मस्त, क्यों मस्ती विच आईआ। मस्त किहा मिला दस्त, हथ्थ नाल हथ्थ छुहाईआ। फेर वेख उपर अर्श, नूर नूर दयां चमकाईआ। फेर तक फ़र्श, नंगा अवधूत नज़री आईआ। किस दे उत्ते करें हरख, दु:ख किस जणाईआ। किस दी करें परख, कौण वेख वखाईआ। जिस दा लोचण दरस, उह मालक धुरदरगाहीआ। फ़कीरा प्या तड़फ, हौक्यां विच अक्खां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्ह्हाईआ। फ़कीरा कहे मैं मस्त नूं देवां बस्तर, पिछली भुल्ल बख्शाईआ। इस दे कोल अगम्मा कोई शस्त्र, जो शरअ रिहा बदलाईआ। मस्त किहा एह खेल प्रभू दा अक्सर, परवरदिगार दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। फ़कीरा कपड़े लै के आया चिट्टे, मस्त अग्गे टिकाईआ। मस्त तक्क के पट पटे, अक्खां असमान उत्ते रखाईआ। फेर घट्टे उत्ते लिटे, धूल दिती धमाईआ। दोहथ्थड़ मार के पिट्टे, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। फिर फड़ के पत्थर इट्टे, चारों तरफ़ सुटाईआ। फेर चुम्म के आपणे गिट्टे,

रौला दिता पाईआ। हस्स के किहा फ़कीरिया एह वड्डे छोटे मैनूं दिसदे निक्के, बुढ्ढा नज़र कोए ना आईआ। मैनूं धी भैण कोई ना दिस्से, सारे आत्मक रूप सोभा पाईआ। पर याद रखीं तेरा मर्द तों स्त्री रूप ज़रूर आवे तेरे हिस्से, जिस फ़कीर नूं ताअना दिता लगाईआ। फ़कीरे किहा ओह धाम केहड़ा ते वसां किथ्थे, मैनूं दे समझाईआ। मस्त किहा जिथ्थे मेरा परवरदिगार सांझा यार जन भगतां दे लेख लिखे, कर्म करम दा डेरा ढाहीआ। दीन दुनी नालों वखरे पाए हिस्से, वंड आपणी नाल वंडाईआ। बच्चू एह तेरे बस्तर चिट्टे, ओसे वेले आपणे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ । फ़कीरे दा जामा बदलया कन्या बण गई सन्तोख, जन्म दा लेखा रिहा ना राईआ। चिट्टे बस्तर नाल धर्म धार दी मोख, सतिगुर शब्द विच जणाईआ। एह ओसे प्रभू दा चोज, जिस दी समझ कोए ना आईआ। लहिणा देणा देवे रोज़, रोज़े निमाज़ां रखण वाले आपणे नाल रखाईआ। इस तों वड्डा अजे होर भेव गोझ, समें नाल दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी करनी आउण ना देवे विच किसे दी सोच, बुद्धी तों परे सारा आपणा खेल खिलाईआ।

✻ २३ माघ शहिनशाही सम्मत ४ बलवन्त सिँघ दे घर पिंड तलवंडी ज़िला फ़िरोज़पुर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं चार जुग दे इट्टां पत्थर वेखे पाहन, बन पानही चार कुण्ट दह दिशा भज्जी चाँईं चाँईंआ । तन वजूद माटी वाले वेखे काहन, बंसरी वाली धुन सुणी चाँईं चाँईंआ। जंगलां विच फिरदे वेखे राम, बनवासी हो के अपणा झट्ट लँघाईआ। मक़बरिआं विच सुत्ते वेखे पैगम्बर अमाम, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। गुर गुर खेल वेखे जगत जहान, जीवण जुगत जुगत जणाईआ। दीन मज़हब वेखे इस्लाम, फ़िरके कौम खोज खुजाईआ । धुर संदेसे क़लमे वेखे नाम, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। शास्त्र सिमरत वेद वेखे पुराण, अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी खोज खुजाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़दे वेखे नाल ज़बान, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन सरवण करदे वेखे कान, सरोते हो के ध्यान लगाईआ। तीर्थ तट वेखे शिवदवाले मट्ठ मकान, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फेरा पाईआ। मानव मानुख मानस वेखे सब दे अंदर शरअ शैतान, साबत नज़र कोए ना आईआ। मन कल्पणा बुद्धी होई बेईमान, धर्म धीर ना कोए धराईआ।

इक दूजे दे नाल लड़न इन्सान, इन्सानीअत गई रूप बदलाईआ। माया ममता कूड़ कुड़िआर होया बलवान, साधां सन्तां रिहा डुलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा दिस्सया ना कोए ख़ानदान, भगत भगवान दा रूप ना कोए बणाईआ। चार कुण्ट दिसण सुंञ मसाण, आत्म ब्रह्म निरगुण जोत नूर ना कोए रुशनाईआ। उच्ची कूक कूक सारे करन कल्याण, शब्द अगम्मी नाद धुन आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा करे ना कोए पहचान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख वेख होई हैरान, हैरानी मेरे अंदर आईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे देण दुहाईआ। जिधर तक्कया शरअ दे सर्ब दिसे गुलाम, मज़हबां बंधन ना कोए कटाईआ। भविक्खतां वाला जाणिआ ना कोए फ़रमान, गुर अवतार पैगम्बर की गए दृढ़ाईआ। कवण वेला पहुंचया आण, कलयुग अन्तिम लए अंगड़ाईआ। सृष्टी दृष्टी होई नादान, पर्दा माया ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच्चा धुरदरगाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं दीन दुनी तक्की, तकवे वाला नज़र कोए ना आईआ। मिल्या मेल किसे ना हक़ी, हक़ीक़त वाला रंग ना कोए रंगाईआ। सब दा अन्तर होया शक्की, शिकवा सके ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण जोत वेखे कोई ना अक्खीं, निज नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। आत्म धार बणे कोई ना सख़ी, परमात्म काहन ना कोए हंढ्ढाईआ। परवरदिगार मिले ना किसे पती, पतिपरमेश्वर अंग ना किसे लगाईआ। नाम वस्त अमोलक देवे कोई ना रती, रतन अमोलक रूप ना कोए बणाईआ। धुर दे नाम दी पढ़े कोई ना पट्टी, अक्खरां वाले ढोले सारे गाईआ। धर्म धार विच दिसे कोई ना यती, काम वासना होई हल्काईआ। साहिब सतिगुर उत्ते होवे कोई ना सती, सति धार ना कोए समाईआ। कलयुग कूड़ क्रिया चारों कुण्ट खुल्ही हट्टी, माया ममता मोह विकार रिहा वरताईआ। घर प्रकाश होवे ना किसे मोमबत्ती, निरगुण नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। हँकार विकारी दुनियां गई फट्टी, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। मुहम्मद दी कम्म ना आई मौली अट्टी, कच्चा तन्द ना कोए वड्याईआ। अन्त अख़ीर लेखे लग्गे किसे ना खट्टी, खटका दिसे थाउँ थाईंआ। करे खेल प्रभ जो वस्से घट घटी, हर घट अंदर डेरा लाईआ। जिस राम भवाया पंचवटी, हुक्मी हुक्म सुणाईआ। जिस रथ चलवाया कृष्ण कोलों हथ्थीं, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं चार कुण्ट वेख्या अन्धेरा अन्ध, निरगुण जोत ना कोए रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वसिआ किसे ना संग, मुरीद मुर्शद रंग ना कोए रंगाईआ। भरमां दी द्वैती ढाहे कोई ना कंध, हउमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। अन्तिम नंगी होणी सब दी कंड, सिर हथ्थ ना

कोए टिकाईआ। नेत्र रोवे जमना सुरस्ती गोदावरी गंग, अठसठ तीर्थ अक्ख ना कोए खुलाईआ। भेव खुल्ले ना किसे हँ ब्रह्म, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। ढोले गाउँदे बत्ती दन्द, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जगत विकार माणदे अनन्द, अमृत रस ना कोए चखाईआ। मन कल्पणा करदे जंग, बुद्धी बिबेक ना कोए रखाईआ। जगत दुहागण होई रंड, कन्त कन्तूहल सेज ना कोए सुहाईआ। सतिगुर पूरा पावे कोई ना ठंड, कलयुग अगनी तत जलाईआ। सति धर्म दी पल्ले किसे ना गंढु, कूड़ कुड़िआरा बोझ रहे उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाए कोई ना छन्द, पुरख अकाला इष्ट ना कोए मनाईआ। सदी चौधवीं दीन दुनी अन्तिम होई भागामंद, सुभागा रूप ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सदी चौधवीं कहे चार कुण्ट तक्कया कलयुग कूड़ी क्रिया उडे धूढ़, प्रभ दी धूढ़ी मस्तक ख़ाक ना कोए रमाईआ। चतुर सुघड़ बण गए मूर्ख मूढ़, माया ममता विच कुरलाईआ। हउमे गढ़ बणया ग़रूर, गुरबत अंदरों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। साचा नाम ना मिले सरूर, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। आत्म जोत ना चमके नूर, अन्ध अन्धेर ना दए गवाईआ। अमृत भण्डारा ना मिले भरपूर, जगत तृष्ना ना कोए बुझाईआ। रसना ढोले गाउँदे सिफ्तां करन मनसूर, ऐहनलहक़ ना कोए मेल मिलाईआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया सब नूं कीता चूर, बलहीण होई लोकाईआ। पुरख अकाल दा समझे ना कोए दस्तूर, जो सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। नित नवित्त जन भगतां बख्शे सर्ब क़ुसूर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर लेखा जाणे हाज़र हज़ूर, हज़रत हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदी चौधवीं सर्ब दी बेनन्ती करे मन्ज़ूर, मंज़ल बामंज़ल वेखे थाउँ थाईंआ।

❊ २३ माघ शहिनशाही सम्मत ४ सोहण सिँघ दे गृह पिंड शाह बुकर ज़िला फ़िरोज़पुर ❊

सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरो प्रभ सरनाई जाओ झुक, पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार इक्को इक मनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चार वरन अठारां बरन दीन दुनी विच्चों पन्ध जाए मुक, लोकमात धरनी धरत धवल धौल रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव ज़ाती गाए इक्को तुक, तुख्म ताअसीर

९०० ९००
२१ २१

बेनज़ीर नर नरायण दए बदलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म नाता जुड़े पिता पुत, पतिपरमेश्वर परम पुरख आपणी दया कमाईआ। दीन मज़हब कूड़ क्रिया रहे कोई ना दुःख, दर्द दुःख भंजन प्रभ धुर दा अञ्जन कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। मन कल्पणा जगत तृष्ना मेटे भुक्ख, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण कोए ना पाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले, पुरख अबिनाशी घट निवासी आपणी गोदी लए चुक, एथे ओथे दो जहाना नौजवाना मर्द मर्दाना सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी निरगुण धार दो जहाना खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण साडा इक्को झुके सीस, बिन क़दमां सीस निवाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक तक्कीए नूर नुराना दो जहाना रहिबर जगत जगदीश, जागरत जोत बिन वरन गोत करे रुशनाईआ। जिस दा नाम क़लमा पढ़दे आए हदीस, सिफ्तां विच अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला चार कुण्ट दह दिशा बदलण वाला रीत, मन्दिर मसीत शिवदवाला मठ झगड़ा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म साचा ढोला दस्से गीत, गहर गम्भीर बेनज़ीर भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। बिरध बालां नौजवानां सब दी काया करे ठंडी सीत, क्रोध अगन अन्तर दए बुझाईआ। सति धर्म दी साची दस्स के रीत, रीतीवान आपणा रंग रंगाईआ। झगड़ा मिटा के हस्त कीट, ऊँच नीच इक्को घर बहाईआ। काया चोली चाढ़े रंग मजीठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी मेहरवान महबूब मुहब्बत विच आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं वेखदे जुग जुग दी धार, दीन दुनी खोज खुजाईआ। साडे नाल रिहा ना किसे प्यार, मुहब्बत हक़ ना कोए कमाईआ। चार कुण्ट होया अंध्यार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोलण सर्ब जैकार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। पढ़ पढ़ थक्का जीव जगत संसार, विद्या अक़ल बुद्धी नाल टकराईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिल्या किसे ना काया मन्दिर सच दुआर, बजर कपाटी परदा ना कोए खुल्हाईआ। शब्द नाद धुन सुणे ना कोए धुन्कार, अनहद नादी नाद ना कोए वजाईआ। अमृत रस मिले ना ठंडा ठार, बूँद स्वांती निझर झिरना ना कोए झिराईआ। दीया बाती कमलापाती घर विच घर करे ना कोए उज्यार, नूरो नूर ना कोए रुशनाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण चार कुण्ट दह दिशा सृष्टी दृष्टी अंदर आई हाहाकार, इष्ट देव सतिगुर स्वामी होए ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बर आपणा आपणा वेखो दीन मज़हब, निगाहबान हो के निगाह लओ उठाईआ। भरमे भुल्ले जगत जीव मैं हैरान होई तुअज्जब, परेशानी

विच दुहाईआ । प्रभ दे नाम क़लमे तों होया मुतस्सब, अल्ला वाहिगुरु पई लड़ाईआ। दरोही ख़ुदा दी किस दी करोगे मदद, कवण भगत जणाईआ। मन कल्पणा वध्या तशदद्, निफ़ाक विच कुरलाईआ। अंकड़े वेखो प्रभ दे नाम दा केहड़ा अदद, हिन्दसे दयो जणाईआ। सारे कहिण कलयुग कीता ग़ज़ब, साडी चले ना कोए वड्याईआ। अवतार पैगम्बरां गुरुआं रिहा कोई ना अदब , बेअदबी विच दुहाईआ। साचे मार्ग चले ना कोए क़दम, राह हक़ ना कोए अपणाईआ। कूड़ी क्रिया जीव जगत जहान होए नग्न, माया ममता ख़ुशी मनाईआ। सदी चौधवीं मैनूं ऐं दिसदा कुछ झगड़ा पैण वाला अदन, अदालत धुर दी सुणाईआ। मूसा मुहम्मद दी धार होणा कत्ल, ईसा दए दुहाईआ। सियासत चले ना कोए यतन, यथार्थ हुक्म नूर अलाहीआ। जिस उत्ते सोग कोए ना हरखन, चिन्ता ग़म ना कोए वड्याईआ। सो सृष्टी दी दृष्टी अंदर लावे भटकण, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सब दी पूरी होवे शर्तन, पेशीनगोईआं नाल मिलाईआ। कुछ संदेसा दे के गया पंचम गुर अर्जन, तत्ती लोह डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि एक असचरजन, बुद्धी तों परे आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैगम्बरो मैं देवां अगम्मी होका, हुक्म सुणावां अगम्मी नूर अलाहीआ। मुहम्मदा छड्डणे पैणे चौदां तबक झगड़ा रहे ना चौदां लोका, लुक्कया भेव ना कोए जणाईआ। किसे नाल करां ना धोखा, मूसा ईसा दयां दृढ़ाईआ। आपणा आपणा पिछला वीहवीं सदी दा फोल लओ पोथा, पुस्तक लओ उठाईआ। जिस ख़ुदा दीआं सोचदे आए सोचा, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। उह सब दीआं पुरीआं करे लोचा, पर्दे आपणे लओ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण की खेल परवरदिगारा, पारब्रह्म की वरताईआ। साकार चले ना कोई चारा, चारे खाणी चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी भेव कोई ना आईआ। भविख्तां विच लिख्तां विच असीं कहि के आए कलयुग अन्त कल कल्की होए अवतारा, अमाम अमामा रूप वटाईआ। जो एथे ओथे दो जहान बणे सिक्दारा, सिक्कम दा झगड़ा वेख वखाईआ। जिस दा नूर होवे उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। ओह लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पावे सारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। जिस दा खेल अगम्म अथाह अलख अगोचर जगत तों न्यारा, निआंकारी इक हो आईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण ओस दे चरण सरन करीए निमस्कारा, डंडावत बन्दना नमस्ते कर के सजदे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक अवतारा, निरगुण नूर नूर अलाहीआ।

✻ २४ माघ शहिनशाही सम्मत ४ कैप्टन तारू सिंघ दे गृह पिंड जंडीरे ✻

सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैग़म्बर करन अरजोई, दरगाह साची सचखण्ड दवारे सोभा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार मिले किसे ना ढोई, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सति सतिवादी नज़र कोए ना आईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर तेरे नाम दी देवे ना कोए दरोही, होका हक़ ना कोए जणाईआ। सन्त भगत भगवन्त कन्त मिल्या किसे ना कोई, चार वरन अठारां बरन आत्म ब्रह्म पारब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सृष्टी दी दृष्टी नौ खण्ड पृथ्मी दिसी सोई, सुरती शब्द बिन दीन मज़हब ना कोए मिलाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती रिहा कोई ना चोई, अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कम्म किसे ना आईआ। बिन किरपा तेरी दीन दयाल पत सब दी गई खोही, ख़ालक ख़लक उपर वेख फ़लक धरनी धरत धवल धर्म दी धार ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच दुआर एकँकार दरगाह साची तेरे अग्गे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग वेख बदी नेकी, निक्के वड्डे चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। साहिब सतिगुर तेरे उत्ते धरे कोई ना टेकी, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। मन कल्पणा बुध्ध करे ना कोए बिबेकी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी मन्नदे वेखो वेखी, निज नेत्र नर नरायण तेरा दरस कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दह दिशा कूड़ कुड़िआरा लैणा वेखी, मोह विकार विच लोकाईआ। परवरदिगार सांझे यार कलयुग अन्त श्री भगवन्त कर छेती, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। चार वरन अठारां बरन होए भेखी, कूड़ कुड़िआरे धीआं भैणां रहे तकाईआ। तेरा आत्म परमात्म धरती उत्ते बणया परदेसी, साची दिशा समझ ना कोए समझाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सरगुण निरगुण अगम्म अगम्मड़ा भेती, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दवारे इक्को मँग मँगाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो सारे धरो धरवास, धर्म दुआरा दयां जणाईआ। खेलां खेल पृथ्मी आकाश, दो जहानां वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करां फ़ाश, फ़ैसला इक्को हक़ सुणाईआ। दीन दुनी रहे ना रात, रुतड़ी आपणे रंग रंगाईआ। मन कल्पणा सब दी पाए वफ़ात, जीवत जीअ ना कोए जणाईआ। नाम सति सब दी काया अंदर देवां अगम्म सौग़ात, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए पढ़ाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, हर हिरदे करां रुशनाईआ। अमृत रस बख्श के बूँद स्वांत, निझर झिरनां दयां झिराईआ। झगड़ा मेट के ज़ात पात, आत्म ब्रह्म इक समझाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बर आए आख, आख़र ओहो

पूर कराईआ। कोई रहिण ना देवां मात गुस्ताख़, हँकार विकार दयां गवाईआ। जन भगतां दे के साथ, सगला संग बणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के पूजा पाठ, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म जोड़ जुड़ाईआ। साची मंज़ल दे के घाट, पतण धुर दा इक्को इक वखाईआ। जिस गृह वस्से पुरख अबिनाश, जोती जाता डेरा लाईआ। झगड़ा मुके ज़ात पात, पुरख अकाला इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा नर नरेशा हरि करता आप सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू साडी बौहड़ी, हाहाकार वेख लोकाईआ। दीन दुनी होई कौड़ी, अमृत रस ना कोए भराईआ। साची मंज़ल लाए कोई ना पौड़ी, दरगाह साची चढ़न कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस विकार तों रहे होड़ी, नेत्र अक्ख ना कोए शरमाईआ। सति धर्म दी दिसे ना कोए जोड़ी, नार कन्त रहे कुरलाईआ। एका मन्त्र दस्स फोरी, फ़ुरने मन दे बन्द कराईआ। तेरे हथ्थ फड़ाई प्रभू डोरी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर सुणो मेरे बाल नादान, तुहानूं दयां जणाईआ। वेखो खेल ज़िमीं असमान, पर्दे परदयां विच्चों उठाईआ। मैं मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल प्रगटाईआ। नाम संदेसा धुर दा क़लमा लख चुरासी देवां ज्ञान, जीवत जीअ आत्म ब्रह्म करां पढ़ाईआ। सतिगुर शब्द एका एक कर प्रधान, हुक्म देवां थाउँ थाईंआ। दीन दुनी दा झगड़ा मेट इस्लाम, इस्म आज़म नूरी नूर करां रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब दी सांझी होए कलाम, क़लमा इक्को इक देणा दृढ़ाईआ। अमामां दा अमाम पैग़म्बरां दए पैग़ाम, रसूलां नबीआं करे पढ़ाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर करे हक़ इंतज़ाम, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे जग हराम, साचा नाम इक प्रगटाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो आपणी आपणी मारो निगाह, निगाहबान आप जणाईआ। तुहाडे नाम ने किस दा हिरदा विध्धा, मैनूं सच दयो जणाईआ। धुर दा मार्ग केहड़ा सिध्धा, धुर सहज दए मिलाईआ। क्यों दीनां मज़हबां विच करदे ज़िद्दां, झगड़े विच दुहाईआ। क्यों वंड वंडाई पत्थर इट्टां, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ बणाईआ। अन्त अख़ीर इस दा वेखो निकलदा सिट्टा, सिट्टेबाज़ी कूड़ लोकाईआ। सब दे कोल काग़ज़ कोरा वेखो चिट्टा, पुरख अकाला रिहा दृढ़ाईआ। योद्धा सूरबीर बहादर वेखो तुहाथों निक्का, जो अन्त अख़ीर वेस वटाईआ। जिस ने कलयुग बदल देणा सिक्का, सतिजुग साचा राह चलाईआ। हुक्म मन्नणा इक्को इक्का, एकँकार रंग रंगाईआ। परवरदिगार सब दा दस्सणा पिता, पतिपरमेश्वर नूर अलाहीआ। करे खेल जगत अनडिठा, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ साडी कर दे इक्को बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। झगड़ा रहे ना काया चोली, पंज तत ना कोए बुझाईआ। आत्म तेरे घर दी होवे गोली, परमात्म तेरे घर दी साची सेव कमाईआ। नाम क़लमा दस्स हौली हौली, हर हिरदे कर रुशनाईआ। तेरी रुत जाए मौली, ख़िज़ां कूड़ रहे ना राईआ। तेरी तुक इक्को सब ने गाउणी, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। मंज़ल हक़ अगम्म वखाउणी, जिथ्थे आपणा आसण लाईआ। निरगुण नूर जोत चमकाउणी, अन्ध अज्ञान अन्धेरा देणा गवाईआ। शब्द धार नाद सुणाउणी, अनरागी राग अलाहीआ। दरगाह साची सच दुआर आपणी धार प्रगटाउणी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरी दीन दुनी तेरे हथ्थ फड़ाउणी, अमानत विच ख्यानत करन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे कलयुग वेखो आयू आरज, आजज़ हो के ध्यान लगाईआ। सब नूं देणा पै जाए चारज, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम लेखा होणा ख़ारज, ख्वाजा रूप ना कोए दरसाईआ। करे खेल अगम्मा धर्म दी ला अदालत, इन्साफ़ इक्को इक कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर करे ना कोए बग़ावत, झगड़ा दीन दुनी चुकाईआ। साचे नाम दी कर सख़ावत, वस्त अगम्म देणी वरताईआ। माया ममता मेट अदावत, निफ़ाक़ अंदरों देणा कढ्ढाईआ। प्रभ मेल के सही सलामत, साचा नाअरा देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा इक प्रगटाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर धुर दे बण जाओ साथी, मुहब्बत सच रखाईआ। वेखो खेल साहिब समराथी, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। चार वरन अठारां बरन धर्म धार दे बण्णयो पाठी, आत्म परमात्म सच पढ़ाईआ। काया सरोवर नहाउणा धुर दे घाटी, जगत किनारा लोड़ रहे ना राईआ। धुन आत्मक राग सुणो शब्द अनादी, अगम्म अगम्मड़ा दयो सुणाईआ। इक्को पुरख अकाल लैणा अराधी, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला सिफ्त सालाहीआ। मनुआ होवे कदी ना बाग़ी, दह दिशा ना उठ उठ धाहीआ। माटी काया मन्दिर जगाओ चराग़ी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तुसीं प्रभ दी धार आदी, अन्त ओसे विच समाईआ। सतिगुर शब्द सच्ची समाधी, अक्खां मीटण दी लोड़ रहे ना राईआ। धुर दे मार्ग बणो पाँधी, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। किसे कम्म नहीं आउणा सोना चांदी, चन्द सितारा दए गवाहीआ। सतिजुग अंदर कोई ना सूर गाँ खायउ ढांडी, गुर अवतार मिल के रहे सुणाईआ। जन भगत आत्मा परमात्मा आदि जुगादि दे गुआंढी, क्यों विछड़ के दयो दुहाईआ। जिस साहिब बिना पत जांदी, ओह परमेश्वर लओ मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर,

घर मन्दिर इक वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ हुक्म मन्नीए इक्का, एकँकार तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे सिक्का, मोहर साचे नाम दे लगाईआ। दीन दयाल बण पिता, पतिपरमेश्वर हो सहाईआ। दीन मज़हब दा रहे ना कोए हिस्सा, हिस्सेदारी देणी तजाईआ। जेहड़ा पेशीनगोईआं विच तेरा भविख्त लिखा, ओह पूरा कर वखाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा सिखा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्स साचा हित्ता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। तेरा खेल सदा नित नवित्ता, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरा नूर नज़री आईआ। साडे कोल पुराणा तेरा चिठ्ठा, जो जन्म तों पहलों सचखण्ड दिता वखाईआ। अन्त ओसे दा निकलण लग्गा सिट्टा, सिटेबाज़ी खलक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा नूर जोत प्रकाश किसे ना दिसा, निज नेत्र लोचण नैण दिब्ब नेत्र अक्ख खुल्हाईआ।

९०५ २१ ✻ २५ माघ शहिनशाही सम्मत ४ प्यारा सिँघ दे घर भोगपुर शूगर मिल ✻ ९०५ २१

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ झगड़ा मिटे ना चार वरन, चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप पई दुहाईआ। पर्दा उहला चुकाए ना कोई अठारां बरन, भाण्डा भरम भउ अन्तर निरंतर ना कोए भन्नाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरी आए कोई ना सरन, इष्ट देव स्वामी तेरा दरस कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं कलयुग जीव साची मंज़ल मूल ना चढ़न, आत्म परमात्म परमात्म आत्म नाता सके ना कोए जुड़ाईआ। मन कल्पणा माया ममता ज़ात पात दीन मज़हब लड़न, परवरदिगार सांझे यार तेरी निरगुण धार रंग ना कोए रंगाईआ। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण त्रैगुण माया नाल लग्गी सड़न, अमृत मेघ बूँद स्वांती निझर रस ना कोए चुआईआ। फिरी दरोही उपर धरनी धरत धवल धरन, ज़िमीं असमान रहे कुरलाईआ। आवण जावण लख चुरासी गेड़ मिटे ना किसे जन्म मरन, जून अजूनी पन्ध ना कोए मुकाईआ। मानस जन्म अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दरब करन, हिरदे हरिजू तेरा नाम ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब सुल्ताना नौजवाना तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ लोकमात रिहा ना सति सतिवाद, सति धर्म दुआर नज़र कोए ना आईआ। घर घर अंदर वध्या कूड़ विकारा विवाद, माया ममता मोह हल्काईआ। माया भरमे भुल्ला सन्त साध, आत्म ब्रह्म पर्दा सके ना कोए खुल्हाईआ । रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे तेरी करदे याद, धुन

आत्मक राग अगम्मी नाद ना कोए शनवाईआ। दीन मज़हब तैनूं अल्ला वाहिगुरु राम कहिंदे गॉड, तेरे नाम कलमे उत्तों सारे करन लड़ाईआ। तेरे मज़हबां दीन दुनी विच पाया फ़साद, साचा मेल ना कोई मिलाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार बिन तेरी किरपा खुल्ह्रे किसे ना जाग, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। सदी चौधवीं घर घर लग्गी आग, पंज तत काया रही जलाईआ । किरपा कर साहिब सुल्तान पुरख अबिनाश, पारब्रह्म तेरी ओट रखाईआ। तेरे उपर सब ने रखी आस, आशा वेख ख़लक खुदाईआ। साचे मन्दिर पावे कोई ना रास, गोपी काहन रूप ना कोए धराईआ। चार वरन अठारां बरन एकँकार इक्को देदे आपणा अगम्मी जाप, जगजीवण दाते धुर दा नाद सुणाईआ। रूह बुत तन वजूद माटी ख़ाक, किरपा कर पतित पुनीत दे बणाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द ना कोए चमकाईआ । हर घट अंदर तेरा वास, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर फ़रमाना वेख वखाईआ। पुरख अकाल कहे सदी चौधवीं अन्त आया वक्त, पैग़म्बरो दयां सुणाईआ। सब दी भविख्तां वाली पूरी करां शर्त, शरअ दीन दुनी बदलाईआ। जो संदेसा दे आए उपर धरत, जो सृष्टी दृष्टी काया अंदर आप सुणाईआ। सो तुहाडी पूरी करां शर्त, साहिब सुल्तान हो के आपणा हुक्म वरताईआ। तुसीं खेल वेखो उपर अर्श, सच दवारे लओ अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कूड़ी क्रिया मेटे हरस, मरीज़ वेखे जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी बेनन्ती इक अरदास, चरण कँवल तेरी शरनाईआ। सच वस्त किसे ना पास, दीन दुनी ख़ाली नजरी आईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। जो नाम कलमा संदेसा आए आख, आखर ओह सारे गए भुलाईआ। तुध बिन अन्त कन्त भगवन्त कलयुग सन्त पुच्छे कोई ना वात, वातावरन बदलया दीन लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर सुणो सच संदेस, धुर कलमा नाम दृढ़ाईआ। लहिणा देणा देखे तुहाडा चार जुग दा पिछला उपदेश, जो शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी रहे सुणाईआ। सतिजुग साची धार नर निरँकार अगम्मा आपणा दे संदेस, धुर फ़रमाना नौजवाना मर्द मर्दाना आप सुणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म सब नूं करना पए हेत, सृष्टी अंदर इक्को इष्ट दे वखाईआ। झगड़ा रहे ना विष्न ब्रह्मा शिव गणपति गणेश, देवत सुर ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो सब नूं छड्डणा पए मातलोक दा देस, सचखण्ड दवारे जोती जोत समाईआ। मैं आदि जुगादी जुगो जुग मालक ख़ालक प्रितपालक एक, एकँकार

इक अख्वाईआ। एथे ओथे दो जहानां ब्रह्मण्डां खण्डां नर नरेश, धुर फ़रमाना इक्को इक सुणाईआ। सो कलयुग अन्त निरगुण धार जोती जामा धर के भेस, सरगुण वेखां थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सृष्ट सबाई बख़्शे इक्को टेक, टिक्के मस्तक नाम धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण हउँ बालक तेरे नन्हे, कलयुग अन्त ना कोए वड्याईआ। बेनन्ती अरदास अर्ज़ इक्को मन्ने, मन मनसा कूड़ दे गवाईआ। तेरा नूर जोत प्रकाश होवे धुर दे चन्ने, चन्न सूर्या सीस निवाईआ। जगत जीव होए अन्ने, निज नेत्र लोचण नैण दे खुलाईआ। तुध बिन गढ़ हँकार कोए ना भन्ने, एह गुर अवतार पैग़म्बर रहे सुणाईआ। साचा राग सुणा बिन रसना जिह्वा कन्ने, धुन आत्मक नाद वजाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बदल दे सारे समें, कलयुग कूड़ी क्रिया समाप्त दे कराईआ। पवण स्वास साह साह नाम जपा दमे, दामनगीर आत्म परमात्म आप इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो धरनी धरत धवल, बिन अक्खां अक्ख खुलाईआ। जिस नूं नूर अलाही मन्नया अव्वल, आलमीन बेपरवाहीआ। ओह हर हिरदे लख चुरासी रिहा मवल, मौला रूप नूर अलाहीआ। जिस ने सब दे अंदर टिकाया नाभी कँवल, अमृत बूँद स्वांती विच भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उह लैणहारा सब दी ख़बर, बेख़बरां लए उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दीन दुनी होई जेहड़ी बेख़बर, साडे क़लमे कम्म किसे ना आईआ। मन कल्पणा साढे तिन्न हथ्थ शरीर अंदर पाया ग़दर, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। बुद्धी करे कोई ना अदल, ममता मोह होई हल्काईआ। सति धर्म होया क़त्ल, कूड़ी क्रिया डंक रही वजाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी चले कोई ना यतन, यथार्थ तैनूं दईए दृढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दुनी भुल्लया तेरा वतन, बेवतन हो के बैठे आसण लाईआ। परवरदिगार सांझे यार सदी चौधवीं तैनूं सारे आए दस्सण, हक़ीक़त हक़ लाशरीक दईए सुणाईआ। चरण कँवल सरनाई तेई अवतार मूसा ईसा मुहम्मद नानक गोबिन्द ढठ्ठण, ढहि ढहि लागण पाईआ। किरपा कर पुरख समथन, पारब्रह्म तेरे हथ्थ वड्याईआ। असीं सब कुछ वेख्या कलयुग धार अक्खण, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। तुध बिन पैज आए कोई ना रखण, चार कुण्ट ना कोए सहाईआ। झगड़ा मेट दे उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी लै अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी पुरख अकाल सर्ब कला समर्थन, समरथ स्वामी अन्तरजामी घट निवासी तेरी बेपरवाहीआ।

९०८

२१

✵ २५ माघ शहिनशाही सम्मत ४ महिन्दर कौर दे गृह पिंड सुसाणा ✵

अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ साडी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, आलमीन तेरा राह तकाईआ। जोत सरूपी नित नवित्त तेरा रहे दीद, दीदा दानिस्ता तेरा नूर नज़री आईआ। तेरे नाम कलमे दी जो कर के गए ताकीद, राग नाद सिफ्त ढोले कलमयां विच गाईआ। भविख्तां विच लिख्तां विच रख के गए तेरी उडीक, इष्टां विच्चों तेरा इष्ट मनाईआ। कलयुग अन्त सदी चौधवीं वेख अन्धेरा तारीक, निरगुण नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक तेरे विच हक़ तौफीक़, साहिब सुल्तान तेरे हथ्थ वड्याईआ। हर घट अंदर नज़री आ नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तूं आदि जुगादी लाशरीक, दीन मज़हब वरन गोत ना कोए रखाईआ। तेरे नाम दी इक्को होवे तबलीग, डंका इक्को इक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण धुर दी दस्स अगम्म तालीम, तुलबे गुर अवतार पैग़म्बर मँग मँगाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआर धाम वखा अज़ीम, आलीशान महिबान तेरी इक सरनाईआ। तूं मालक ख़ालक क़दीम, क़ुदरत दा करता नज़री आईआ। साडे कोलों जो तूं कराई तक़सीम, दीनां मज़हबां वंड वंडाईआ। भरोसा दवाया यकीन, एतमाद दिता बंधाईआ। तेरी बेपरवाही दे आफ़रीन, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। आपणा मार्ग रख महीन, मंज़ल अन्त ना किसे चढ़ाईआ। दो जहानां कर अधीन, हुक्म हाकम इक सुणाईआ। असीं बाले नढ्ढे तेरे मस्कीन, मुश्किल कलयुग अन्तिम आईआ। निगाह मार उत्ते धरनी धरत धवल ज़मीन, लोक परलोक रहे कुरलाईआ। झगड़ा वेख नर मदीन, आत्म ब्रह्म भेव रहे ना राईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह आदि जुगादि नवां नवीन, जोबनवन्ता सोभा पाईआ। सति सतिवादी इक करीम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, दर साचे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरा हुक्म मन्नया दरुस्त, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। अन्त सदी चौधवीं सारे हो गए सुस्त, ग़फ्लत निंदरा विच दुहाईआ। परवरदिगार सब दा सांझा बण मुरशद, परमात्म आत्म रंग रंगाईआ। इक्को तेरी होवे उल्फ़त, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। माया ममता नालों सब दी करा फ़ुरसत, नाता कूड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा नाम दे मुफ्त, मुफ्तीआं कोलों पल्ले दे छुडाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरा नाम खुमारी मस्ती इक्को होवे झोक, झुक झुक तेरे क़दमां डंडावत बन्दना सजदा सीस निवाईआ। तेरा खेल होवे लोक परलोक, दो जहानां वज्जे वधाईआ। चार वरन अठारां बरन दीन मज़हब गावण तेरा नाम इक सलोक, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ । तेरा नाम शब्द भण्डारा आदि जुगादी थोक,

गुर अवतार पैग़म्बर परचून लोकमात आए वरताईआ। तूं मालक सब दा परमात्म जोत, आत्मा तेरा नूर जोत रुशनाईआ। तेरा ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कूड़ी क्रिया दीन दुनी दी बदल दे सोच, समझ समझ विच्चों प्रगटाईआ। काया मन्दिर अंदर निज नेत्र लोचन खोल्ह के लोच, लोचा मनसा सब दी पूर कराईआ। नाम खुमारी विच कर मदहोश, मधुर प्याले लोड़ रहे ना राईआ। धुर दी धार सच प्यार भेव खुल्हा अगम्मे कोश, जिस विच अक्खरां वाली ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, वाहवा तेरी वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण आत्म परमात्म सब नूं दस्स धार, धर्म दुआरा इक वखाईआ । इक्को इष्ट होए संसार, सृष्टी दृष्टी दे बदलाईआ। इक्को होवे जै जैकार, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। इक्को होवे तेरा प्यार, पूरन प्रभ देणा समझाईआ। इक्को मन्दिर दिसे दुआर, दूजा गृह ना कोए वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अवतार पैग़म्बर गुरु गए हार, हिरदे हर ना कोए वसाईआ। चार कुण्ट धूआँधार, दह दिशा अन्धेरा छाईआ। साचा नूर जोत करे ना कोए उज्यार, उजाला रूप ना कोए वटाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप पई हाहाकार, मानव मानुख मानस रहे कुरलाईआ। तुध बिन कोई ना कलयुग अन्तिम पाए सार, महासार्थी तेरे अग्गे दुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे करन निमस्कार, निउँ निउँ लागण पाईंआ। दस्त बदस्त बन्दना तेरे दरबार, बिन सीस सजदा कर के तेरा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पूरब लेखा कर लै याद, याददाशत तेरे विच समाईआ। जिस कारण लोकमात सानूं कीता आबाद, दीन मज़हब वंड वंडाईआ। धुर दा मित्र प्यारा बण अहिबाब, सच संदेसा मात सुणाईआ। नमों नमस्ते करनी दस्सी आदाब, अदब विच वड्याईआ। अल्ला राम वाहिगुरु ओम कृष्ण नाम जपाया गॉड, गाईड बण के आपणा राह जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दर तेरे दे मँगते, दर ठांडे सीस निवाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगते, हँ ब्रह्म पर्दा दे उठाईआ। दीन मज़हब गुर अवतार पैग़म्बर तेरी धारों जम्मदे, अन्तिम तेरे विच समाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम साडे हुक्म फ़रमाने रहे किसे नहीं कम्म दे, काअबे भेव ना कोए खुल्हाईआ। असीं सारे वणजारे तेरे दम दे, दामनगीर वेख वखाईआ। लेखे लगा दे खुशी ग़म दे, ग़मख़ार हो सहाईआ। झगड़े मुका दे काया माटी चम्म दे, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे ना कोए लड़ाईआ। शब्द जैकार समझा दे धन्न धन्न दे, दीन दुनी तेरा नाम ध्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू असीं तेरी रज़ा मन्नदे, दर तेरे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिगुर शब्द जोत धार निरगुण निराकार संसार विच अगम्मा घल्ल दे, जो कूड़ी क्रिया धायल करे थाउँ थाईंआ।

✻ २५ माघ शहिनशाही सम्मत ४ राम सिँघ दे गृह पिंड फ़तोवाल ज़िला हुश्यिारपुर ✻

अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अबिनाशी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी वड वड्याईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर साडी कर बन्द ख़लासी, महिबान बीदो बीख़ैर या अलाह तेरी इक सरनाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ खेल वेखीए तेरा मण्डल रासी, ज़िमीं असमानां नौजवाना मर्द मर्दाना वज्जे इक वधाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म निरगुण धार बण सब दा साथी, सगला संग सूरे सरबंग एकँकार आप निभाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी मन्न के आए आखी, सरगुण हो के तन वजूद सेव कमाईआ। तेरा भेव अभेद अछल अछेद दस्सया बहुभांती, पारब्रह्म तेरी सोभा सिफ्तां ढोल्यां विच सालाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी राती, निरगुण निरवैर निराकार निरगुण रूप जोत चन्द कर रुशनाईआ। मानव मानस मानुख जीवण जुगत बदल दे हयाती, आबे हयात अमृत रस धुर दा मुख चुआईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरे अग्गे सीस निवाईआ। झगड़ा मुका दीन दुनी ज़ात पाती, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे ना कोए लड़ाईआ। साची मंज़ल दस्स अगम्मी घाटी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। कलयुग वेख बाज़ीगर नाटी, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। हुजरा हक़ सोहे ना कोए महिराबी, काया काअबा ना कोए रुशनाईआ। मन कल्पणा कायनात होई बाग़ी, बग़ावत घर घर नज़री आईआ। त्रैगुण माया बुझे कोए ना आगी, सांतक सति ना कोए वरताईआ। सोई सुरत किसे ना जागी, शब्दी मेल ना कोए मिलाईआ। दीपक जोत ना जगे चराग़ी, अन्ध अन्धेर ना कोए गवाईआ। धर्म दा मिले कोई ना हाजी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे तेरे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण किरपा कर साहिब सुल्तान निरगुण स्वामी अन्तरजामी, तेरे अग्गे मँग मँगाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक वाली दो जहानी, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर तेरी सेव कमाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी, नौजवाना मर्द मर्दाना श्री भगवाना इक अख्वाईआ। धुर फ़रमाना हक़ीक़ी क़लमा कर फ़रमानी, फ़रमांबरदार दीन दुनी लै बणाईआ। तेरा इक्को नूर नुरानी चमके ज़िमीं असमानी, गुप्त ज़ाहर परदा दे उठाईआ। तूं लख चुरासी जीव जंत साध सन्त धुर दा काहनी, नाम बंसरी काया मन्दिर अंदर दे सुणाईआ। निज नेत्र नर नरायण दे

पहचानी, बजर कपाटी पर्दा दे खुल्हाईआ। सति सतिवादी सति धर्म वखा निशानी, निशाना अवर ना कोए जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला सारे गाणी, पुरख अकाले दीन दयाले इक्को तेरे नाम वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब सतिगुर पतिपरमेश्वर तेरी आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर मँगां रहे मँग, दर ठांडे सीस निवाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, साहिब सुल्तान तेरे हथ्थ वड्याईआ। दीन दुनी बख़्श इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। करवट बदल आपणी कंड, कन्ढ़ा कलयुग अन्त वेख वखाईआ। ख़ालक ख़लक सब दी आत्म होई रंड, शाहो भूप शौहर कन्त ना कोए हंढ़ाईआ। ज्यों भावे त्यों टुट्टी गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी दर तेरे अलख जगाईआ। कूड़ कल्पना माया ममता मेट गंद, नाम सुगंध काया माटी विच रखाईआ। निरगुण नूर जोत चाढ़ चन्द, जगत अन्धेरा रहे ना राईआ। आत्म परमात्म तेरा ढोला होवे छन्द, सहिंसा रोग देणा गवाईआ। भाण्डा भरम भउ ढाह दे कंध, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। आत्म सेज सुहा पलँघ, सच सिँघासण डेरा लाईआ। अगम्मी शब्द सुणा मृदँग, नाद धुन इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि करते देवणहार इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण पुरख अकाल वेख आपणी सिम्मत, बिन निगाह निगाह उठाईआ। सृष्ट सबाई करे इल्लत, इल्म आलमां रिहा रुलाईआ। कलयुग बुद्धी कीती ज़िल्लत, खुआरी विच दुहाईआ। जिधर तक्कीए तेरे निन्दक, तेरा नाम ना कोए वड्याईआ। सति सन्तोख रिहा कोई ना सिदक, सबूरी सच ना कोए कमाईआ। साडी रही कोई ना हिम्मत, हौसले रहे ढाहीआ। तुध बिन साची देवे कोई ना खिल्लत, लोकमात ना कोए चतुराईआ। सच प्यार दी बख़्श मिल्लत, दुबदा रोग देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, अलख अगोचर तेरे दवारे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण साडा वेख अख़ीर वक्त, ठाकर स्वामी की ध्यान लगाईआ। की दशा होई जगत, बिन तेरी किरपा दिसे कोई ना भगत, भरमां भरी लोकाईआ। फिरी दरोही उत्ते अर्श, अर्शी नूर ना कोए रुशनाईआ। मेहरवान महबूब कर तरस, रहमत विच दुहाईआ। लहिणा देणा पूरा कर मक़रूज लाह दे क़र्ज़, लेखा बेबाक दे कराईआ। तेरी शरन सरनाई बेनन्ती इक्को अर्ज़, आरजू रहे जणाईआ। परवरदिगार तेरी गर्ज़, ग़रीब निमाणे देण दुहाईआ। सदी चौधवीं वेख खेल असचरज, चार वरन अठारां बरन करे लड़ाईआ। किरपा कर योद्धे सूरबीर मर्दाने मर्द, मदद तेरी मँग मँगाईआ। माया ममता रहे ना कोए तशदद्, नाम खण्डा इक उठाईआ। साडी सब दी पूरी होई सनद, लेखा रिहा ना राईआ। अख़ीर वेखणा चौहन्दे अन्त, अन्तश्करन तक्कीए दीन दुनी लोकाईआ।

तूं आदि जुगादी साहिब सतिगुर सुल्तान भगवन्त, भगवन तेरी ओट तकाईआ। तेरा नाम अधारी बणीए सन्त, मन ममता दे मिटाईआ। तूं सच स्वामी सुहागी कन्त, सगला संग रखाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पर्दा दे चुकाईआ। दर तेरे भिखारी बणे मँगत, भिक्खक झोली दे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन अवर ना कोई जिस नाल होवे मिल्लत, मेला आपणा लैणा मिलाईआ।

✻ २६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ मँगल सिँघ दे घर पिंड फ़तूवाल ज़िला हुश्यापुर ✻

सदी चौधवीं कहे अवतार पैग़म्बर गुर वेखो आपणा भजन, नाम क़लमा दीन दुनी फोल फुलाईआ। सच शब्द धार दा रिहा कोई ना सज्जण, नाम खुमारी नज़र कोए ना आईआ। त्रैगुण माया विच सारे दगण, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कूड़ी क्रिया पी के मधन, माया ममता मोह करे हल्काईआ। साची मंज़ल मूल ना लँघण, तन वज़ूद चढ़ी किसे ना रंगण, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। आत्म मिले ना परमानंदन, निजानंद ना कोए दरसाईआ। सब दा जोती नूर होया मद्धम, मदि मासी होई लोकाईआ। आत्म परमात्म टुट्टी मूल ना गंढुण, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। झगड़ा प्या काया माटी मास नाड़ी हड्डुण, चम्म दृष्टी सके ना कोए बदलाईआ। दीन मज़हब वेखो आपणी हद्दन, हदूद महिदूद ना कोए रखाईआ। धर्म दवारे रहे कोई ना बन्दन, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मड्ढ रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर फ़रमाना इक दरसाईआ। सदी चौधवीं कहे अवतार पैग़म्बर गुर वेखो आपणी बन्दगी, बन्दा बन्दा फोल फुलाईआ। तुहाडी रही ना कोए मशंदगी, सच प्यार ना कोए बणाईआ। धार दिसे ना नूरी चन्न दी, निरगुण नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। मज़हब ओहला होया रूप बणया कंध दी, मानव वंड रिहा वंडाईआ। मन कल्पणा ख़ाहिश वधाई जूठ झूठ गंद दी, सच सुच ना कोए समझाईआ। तुहाडी औध वेखो लँघदी, वेला अन्तिम आईआ। खेल होणी सूरे सरबंग दी, बेपरवाह हुक्म वरताईआ। आवाज़ सुणाए नाम सच मृदँग दी, जो मर्द मर्दाना दए जणाईआ। गूंज पैणी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दे छन्द दी, दो जहानां करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे अवतार पैग़म्बर गुर वेखो आपणा दीन दुनी दा पाठ, पाठशाला नज़र कोए ना आईआ। काया मन्दिर अंदर सब नूं आई घाट, धर्म दी घाटी चढ़न कोए ना पाईआ। किधर गया

तुहाडा नाम भण्डारा दाद, बख्शिश रहमत बैठे छुपाईआ। चारों कुण्ट वेखो अन्धेरी रात, साचा नूर चन्द ना कोए चमकाईआ। तुसां झगड़ा पाया दीन मज़हब ज़ात पात, ऊँच नीच करे लड़ाईआ। प्रभ दा नाम कलमा लिख के आए नाल क़लम दवात, काग़ज़ स्याही नाल जोड़ जुड़ाईआ। दीन दुनी दा तक्को हालात, हालत बिगड़ी ख़लक खुदाईआ। तुसीं बैठे उपर आकाश, दरगाह साची सोभा पाईआ। तुहाडी उम्मत मात होई बदमाश, काया मन्दिर करे ना कोए सफ़ाईआ। साचे मण्डल पावे कोई ना रास, गोपी काहन आत्म परमात्म नाच ना कोए कराईआ। मानव मानव करदे घात, नाम कलमे पई लड़ाईआ। आपणे मुर्शद दी खोल्ह के वेखो किताब, जिस विच्चों तुहानूं करे पढ़ाईआ । अगम्मी वेखो ओह लुग़ात, जिस दा मतलब ना कोए समझाईआ। जिस कारण तुहाडा पाया निफ़ाक़, झगड़े दर लड़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख करा के फ़साद, ईसा हज़रत दिती वड्याईआ। तुसीं ओसे नूं करदे आए याद, वाहिगुरु खुदा गॉड कहि के सीस निवाईआ। ओसे कोलों अन्त मँगो इतहाद, मेला लए मिलाईआ। जिस ने दरगाह साची तुहानूं कीती अबाद, सचखण्ड दवारे हिस्सा कोए ना पाईआ। मातलोक मानव ज़ाती सांझी करे आबाद, इक्का रंग रंगाईआ। काया काअबा हुजरा हक़ दिसे हक़ महिराब, महबूब आपणा नूर जोत कर रुशनाईआ। मित्र प्यारा सब दा बणे अहिबाब, परवरदिगार आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैग़म्बर वेखो आपणी पूजा, चार वरन अठारां बरन आपणा ध्यान लगाईआ। नाभी कँवल किसे ना होया मूधा, अमृत झिरना ना कोए झिराईआ। सच दुआर दा भेव खुलावे कोए ना गूझा, रसना जिह्वा पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। फिरी दुहाई उपर बसुधा, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। की खेल कर के संदेसा दे के गई अष्टभुज दुर्गा, सुंभ निसुंभ कर जणाईआ। की ख़बर सुणाई ईसा मूसा मुहम्मद बण तुरका, तुरत सुनेहड़ा की जणाईआ। की नानक गोबिन्द भेव खुल्हाया पुरख अकाल धुर दा, बोध अगाध राग अल्हाईआ । किस बिध लेखा मुकणा हरख सोग दा, चिन्ता ग़म डेरा ढाहीआ। की मार्ग चलणा धुर दे जोग दा, सति सच विच समाईआ। किस बिध प्रभ ने रोग मेटणा हउमे वियोग दा, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर की कुझ सोचदा, बिना बुद्धी तों आपणा ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो कलयुग कूड़ी क्रिया कुकर्म वेला रहिणा नहीं मौज दा, मोह ममता रहिण ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार मालक लोक परलोक दा, दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना वेख वखाईआ। जिस दा नाम सुनेहड़ा धुर दा क़लमा इक सलोक दा, चौदां लोक चौदां तबक दए समझाईआ। जिस दा भाणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग

कोए ना रोकदा, हुक्मे अंदर सारे बैठण सीस निवाईआ । ओह मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रकाश करे आपणी निर्मल जोत दा, सरगुण तत सरीर ना कोए वड्याईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लेखा जाणे दोष निर्दोष दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मालक सदा आपणी मौज दा, मौजूदा हो के दीन दुनी वेख वखाईआ।

* २६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ हरबंस सिँघ दे घर पिंड फतूआल ज़िला हुश्यापुर *

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अकाल साहिब बख़्शंदी, बख़्शिश रहमत आपणी हक़ कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर दे नाम दी ला पाबन्दी, दीन मज़हब ज़ात पात सिर सके ना कोई उठाईआ। साडी अन्त अख़ीर बेनज़ीर पूरी होण लग्गी संधी, सनद सारे रहे वखाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मन वासना दीन दुनी होए गन्दी, माया ममता मोह विकार हँकार विच हल्काईआ। सच धर्म दी सच स्वामी दे सुगंधी, सच सच हर हिरदे दे वसाईआ। बिन तेरी किरपा मेहरवान महबूब तेरी कायनात होए अन्धी, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। असीं दीन मज़हब दी निक्की निक्की ला के आए डंडी, डंडावत बन्दना सजदा सीस तेरी धार झुकाईआ। अन्त अख़ीर वक्त पहुंचया कन्ढी, कन्ढी दे मालक वेख वखाईआ। दर ठांडे तेरे वस्त अगम्मी मँगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। साचे नाम दी रंगत दे रंगी, अनडिठड़े आप रंगाईआ। अमृत धार हर घट फेर दे गंगी, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती काया अंदर नज़री आईआ। नूर जोत चाढ़ आपणा चन्दी, अज्ञान अन्धेर देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं झुकदे तेरे क़दमां, निउँ निउँ सीस निवाईआ । परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल दीन दयाल दीन दुनी दा मेट सदमा, हरि सदके वारी घोली घोल घुमाईआ । गिणती वेख अरबां खरबां पदमां, जन संख्या रौला पाईआ। सब दी जोती होई मद्धमा, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। साची सिख्या इक्को दे दे बन्दना, डंडावत इक प्रगटाईआ। तेरा दीदारा एकँकारा इक्को पए सब नूं मँगणा, दूजे दर अलख ना कोए जगाईआ। तेरा खेल वेखणा विच वरभण्डणा, ब्रह्मण्ड तेरी वड्याईआ। पकड़ उठा दे जेरज अंडणा, उत्भुज सेत्ज ना कोए लड़ाईआ। तेरा नूर जोत प्रकाश अगम्मी चन्दना, जिस नूं सूर्या चन्द सीस निवाईआ। चार वरन अठारां बरन करे कार अंगणा, अंगीकार आप हो जाईआ। सच दुआर बिन तेरी किरपा किसे ना लँघणा, पारब्रह्म मिलण कोए ना पाईआ।

सच डंका वजा नाम मृदँगणा, सोई सुरती जगत दे उठाईआ। फिरी दरोही विच वरभण्डणा, ब्रह्मण्ड रहे कुरलाईआ। पुरख अकाल सूरे सरबंगणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच स्वामी अन्तरजामी तेरी आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दीन दुनी तक, ताक़तवर तेरी बेपरवाहीआ। तेरी झोली पाया तेरा हक़ीक़त हक़, पूरब लेखा रहे ना राईआ। अन्त आसा साची रहे दस्स, दह दिशा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं साडी होई बस, बस्ते सभदे दे बंधाईआ। अग्गे इक्को मालक नज़री आवे पुरख समरथ, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सचखण्ड दवारे तेरे चरण रहे ढठ्ठ, निउँ निउँ सीस निवाईआ। गुर अवतारां पैग़म्बरां कीता इक्ठ, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। साडा दीन दुनी दा रिहा ना कोई हठ, हटवाणे तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच जैकारा दे अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण करदे क़दमबोसी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। साथों सोच जाए ना सोची, की तेरी खेल अग्गे बेपरवाहीआ। तेरा लेखा लिखदा रिहा रविदास चमारा मोची, कबीर काअबिआं तों परे रिहा सुणाईआ। असीं तेरे नाम दी खांदे रहे रोज़ी, राज़क रिज़क रहीम तेरी वड्याईआ। तूं मालक ख़ालक चोजी, प्रीतम इक्को सोभा पाईआ। असीं तेरे शब्द दे बणे खोजी, खोजत खोजत राग सुणाईआ। तूं आदि जुगादि अगाध बोधी, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा देवणहार अवर ना कोए अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे दोवें बन्न्हे हथ्थ, हथेली हथेली नाल मिलाईआ। तेरी महिमा सदा अकथ, कथनी कथ सके ना राईआ। निरगुण धार सरगुण चलावें रथ, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम खेड़ा कर भट्ठ, भठयारा कूड़ रहे ना राईआ। सच मार्ग राह दे सति, सति सतिवादी हो सहाईआ। नाड़ बहत्तर उबले किसे ना रत्त, अगनी अग्ग देणी जलाईआ। आत्म परमात्म मेला मेल कमलापति, पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरे चरण सरन सरनाई रहे ढठ्ठ, निउँ निउँ लागण पाईंआ। दीन दुनी दा एका मार्ग दस्स, दह दिशा दे समझाईआ। चार वरन अठारां बरन होवे इक्ठ, दुतिया धार ना कोए जणाईआ। हर हिरदे वस्से सच, सच संजम दे दृढ़ाईआ। भाग लगा माटी कच्च, कंचन गढ़ दे बणाईआ। लूं लूं अंदर जा रच, साढे तिन्न करोड़ रचना वेख वखाईआ। मन मनुआ ना पए नच्च, दह दिशा ना उठ उठ धाहीआ। निज नेत्र खोल्ह अक्ख, लोचन इक्को होए रुशनाईआ। तूं साहिब पुरख समरथ, वड दाता नूर अलाहीआ। वक्त वेला वेख जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथमी लग्गी अग्ग, तुध बिन सके ना कोए बुझाईआ। जन भगतां दर्शन दे उपर शाह रग, नाम खुमारी दे मध,

मधुर धुन नाल उपजाईआ। बिन मक्के काअबिउ करा हज्ज, हुजरा हक़ दे दृढ़ाईआ। साचा मन्दिर सुहा मठ, साढे तिन्न हथ्थ तेरा नूर जोत रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तुध बिन कोए ना सके रख, रखक हो के रक्ख्या करे ना थाउँ थाईंआ। चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरानां विच तेरा कर के आए जस, रागां नादां विच सिफ्ती ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जुग चौकड़ी नित नवित्त तेरे हथ्थ, सच स्वामी अन्तरजामी घटनिवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझे यार निरगुण धार तेरी ओट तकाईआ।

✻ २६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ अमरीक सिँघ दे घर पिंड सराईं ज़िला हुशियारपुर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या सो पुरख निरँजण, जो अंजमन बाहमी गुर अवतार पैग़म्बरां रिहा बणाईआ। इशारा देवे आदि पुरख निरँजण, जो अंजण नेत्र नाउँ निरँकारा इक पाईआ । करे खेल एकँकार दर्द दुःख भय भंजन, रोग सोग चिन्ता दुःख वेखे जगत लोकाईआ। प्रकाश तक्कया आदि निरँजण, जो हर घट अंदर आपणा नूर रिहा चमकाईआ। अबिनाशी करता तक्कया धुर दा सज्जण, सगला साथी धुर दा सोभा पाईआ। श्री भगवान धूढ़ कराए सब नूं मजन, सरगुण धार एकँकार दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करदा वेख्या अदल, इन्साफ़ दो जहानां इक कमाईआ। परवरदिगार सांझा यार सब दी धार रिहा बदल, तरतीब अजीब आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर फ़रमाना नौजवाना मर्द मर्दाना संदेसा देवे आपणा बचन, फ़रमाना राणा इक दृढ़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सारे भज्जण, दो जहान लैण अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दवारे आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेख्या सचखण्ड दुआरा सोभावन्त, साहिब स्वामी अन्तरजामी आप सुहाईआ । पुरख अकाला दीन दयाला बैठा इक्को कन्त, कन्त कन्तूहल नूर अलाहीआ । शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी बोध अगाधी सिख्या देवे बण के धुर दा पंडत, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा निरगुण धार एकँकार देवे जेरज अंडज़, उत्भुज सेत्ज साहिब स्वामी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर दर दरवेश सारे बैठे मँगत, दरगाह साची बैठे सीस निवाईआ। सदी चौधवीं सब दा पूरा होण वाला सम्मत, समां समाप्त दए कराईआ। दरोही फिरी विच नबी रसूलां उम्मत, अमन चमन ना कोए महकाईआ। उच्ची होका देवे चौदां तबकां विच मुहम्मद, दरोही खुदा यामुबीन महिबान बीदो तेरी बेपरवाहीआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर

लाशरीक इशारा रहिण कोए ना पाईआ। की होण लग्गा दीन दुनी ग़ज़ब, तुअज्जब विच हैरानी मेरे अंदर आईआ। वेला लेखा पूरा होण लग्गा मज़हब, अग्गे चले ना कोए वड्याईआ। परवरदिगार सांझे यार क़दमबोसी करां तेरे क़दम, क़दीम दे मालक तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। खुदा कहे मुहम्मद मेरे कुज़ा, कलज़मीमे नुज़ा तरग़ीमे ज़हा निवेज़ो रूह बुत पर्दा रिहा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दरगाह साची वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया नूर असमानी, जिस दा इस्म ना कोए दृढ़ाईआ। जो लेखा जाणे जीव जगत इस्लामी, जिस्मानी ज़मीर सब दी फोल फुलाईआ। मंज़ल तक्के नूर नुरानी, रहमत आपणी नाल वेखे खलक खुदाईआ। चारों कुण्ट दिसी बेईमानी, सति सच ना कोए जणाईआ। झगड़ा प्या चारे खाणी, चारे बाणी दए दुहाईआ। पवित्र दिसे ना कोए जीव प्राणी, पुराण शास्त्र रहे कुरलाईआ। सब दी जूह होई बेगानी, गृह मन्दिर ना कोए सुहाईआ। अमृत रस दिसे ना ठंडा पाणी, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। किरपा कर शहिनशाह सुल्तानी , पुरख अकाले तेरी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम मिटणी निशानी, निशाना रहिण कोए ना पाईआ। दीन दुनी होणी वैरानी, वैरी घर घर करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं सचखण्ड सति सरूप तक्कया नानक, निरगुण निरगुण विच समाईआ। जो लेखा जाणे अचन अचानक, भेव अभेद दए उठाईआ। सदा रहे सही सलामत, सति सति विच समाईआ। दीन दुनी जगत जाण अमानत, पुरख अकाल दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो आपणा धुर दा बंक, दुआरा दुआर इक सुहाईआ। जिथ्थे वज्जे अगम्मा डंक, नाम नगारा नाउँ निरँकारा रिहा सुणाईआ। झगड़ा दिसे ना राउ रंक, ऊँच नीच ना कोए लड़ाईआ। सति धर्म दी बणी बणत, घड़न भन्नृणहार अख्वाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे अन्त, सतिजुग साचा राह चलाईआ। भगत सुहेले प्रगटाए सन्त, गुरमुख गुर गुर लए उठाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। धुर दा नाम दे के मन्नत, इक्को करे पढ़ाईआ। हरख सोग रहे ना चिन्नत, ग़मी ग़मखार दए गवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां मन्न के मिन्नत, मेहर नज़र इक उठाईआ। दो जहानां तक्क के सिम्मत, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग कूड़ कुड़िआर मेटे निन्दक, सति सच दा मार्ग इक प्रगटाईआ।

✻ २७ माघ शहिनशाही सम्मत ४ मुनशी राम दे गृह बेगोवाल ज़िला हुश्यिारपुर ✻

गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण पुरख अकाल हक़ महबूब परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक सरनाईआ। साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान, वसणहारे अर्श फ़र्श उच्च अरूज आलीशान, नौजवान निरवैर तेरी ओट तकाईआ। दरगाह साची सचखण्ड दुआरा तेरा अगम्म मकान, छप्पर छन्न श्री भगवान नज़र कोए ना आईआ। तूं आदि जुगादी नित नवित्त निरँकार निराकार सब दा काहन, बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरे ढोले सारे गाण, जुग चौकड़ी तेरी महिमा सिफ्त गा के आए गाण, लोकमात रागां नादां विच जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सारे होए हैरान, परेशानी विच दुहाईआ। सिदक सबूरी साबत रिहा ना किसे ईमान, आलमा इल्म ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। पुरख अकाल कहे सुण गुर अवतार पैग़ग्बर मीत, नाम संदेसा क़लमा दयां दृढ़ाईआ। सतिजुग साचे सच दस्सां हदीस, हज़रतो हज़रतां तों बाहर करां पढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन चलावां सांझी रीत, दीन मज़हब दा लेखा जगत मुकाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, काया काअबा सच सुहाईआ। जिथ्थे बैठा रहे त्रैगुण अतीत, त्रैभवण धनी दाता नज़री आईआ। तन वजूद काया माटी सब दी कर के ठांडी सीत, अमृत मेघ बूँद स्वांती इक चुआईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक इकल्ला, लोकमाती जगत महल्ला, नव सत्त आप समझाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण तेरे चरण कँवल प्रभ निमस्कार, नमस्ते कहि के सीस निवाईआ। हउँ बालक तेरे सेवक सेवादार, नन्हे नढ्ढे रूप नज़री आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बणे रहे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के तेरे चरण कँवला सीस निवाईआ। नाम संदेसे क़लमे दे के आए वारो वार, वारता काग़ज़ क़लम शाही नाल रखाईआ। उच्ची कूक करदे आए पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। तूं ठाकर स्वामी अन्तरजामी वेखीं विगसीं वेखणहार, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर शाह पातशाह सची सरकार, खड़े दर तेरे ठांडे दरबार, घर सुहञ्जणा इक्को नज़री आईआ। दीन दुनी कर ख़बरदार, नाम भण्डारा दे अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरे हथ्थ वड्याईआ। क़ुदरत दे कादर दे आधार, निरगुण दीआ बाती कमलापाती कर उज्यार, जगत अन्ध अन्धेर दे मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, दरगाह साची सचखण्ड दुआरा दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़ग्बर सुणो मेरे बच्चे नादान, गुणवन्त हो के दयां जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटां निशान, निशाना दीन दुनी बदलाईआ। सति सच दी पावां आन,

आनण फ़ानण आपणी खेल खिलाईआ। सिख्या सारयां करनी परवान, परम पुरख इक्को हुक्म दृढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव ज़ाती देवां इक ज्ञान, अज्ञान अन्धेरा दयां मिटाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती देवां पीण खाण, तृष्ना कूड़ कुड़िआर दयां गवाईआ। नाद धुन आत्म राग सुणावां बिना कान, शब्द अनादी नाद जणाईआ। निरगुण दीवा बाती जोत जगावां महान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। ठाकर स्वामी हो के मिलां आण, घर घर विच आपणा जोड़ जुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब दा इक्को होवे गाण, गावत गा गा खुशी बणाईआ। लख चुरासी गोपी बणे धुर दा काहन, जो नाम बंसरी हर हिरदे दए दृढ़ाईआ। सब दा सांझा होवे अमाम, अमलां तों रहत नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट घट अन्तर वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी अरदास, आरज़ू इक सुणाईआ। सदी चौधवीं वेख खेल तमाश, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। असीं लोकमात सृष्टी दृष्टी अंदर आए आख, भविख्तां लिख्तां विच दृढ़ाईआ। अन्तिम लहिणा देणा पुरख अकाल कलयुग कायनात, दीन दुनी खोज खुजाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मिटे अन्धेरी रात, निरगुण नूर साचा चन्द चमकाईआ। चार वरन बणाए इक जमात, निरअक्खर धार विच्चों अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वस्त अमोलक काया गोलक हरि अन्तर आप टिकाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर लओ अंगड़ाई, नेत्र लोचन नैण अक्ख खुल्हाईआ। आपणी सिख्या सारे वेखो पढ़ाई, अक्खर अक्खर खोज खुजाईआ। की संदेसा दिता क़लम शाही, शहिनशाह नाल मिलाईआ। क्यों उम्मत उम्मती पई दुहाई, सांतक सति ना कोए कराईआ। क्यों ख़लक मख़लूक रहे कुरलाई, काया कुरह ना कोए सफ़ाईआ। किथ्थे छुपया पैग़म्बरो तुहाडा नूर अलाही, जिस्म इस्म विच करे ना कोए रुशनाईआ। क्यों बलहीण होए तुहाडे मुरीद कलमा रहे भुलाई, भरम ना कोए मिटाईआ। जे संभाल नहीं सकदे ते खड़ीआं कर दयो बाहीं, ख़ाली हथ्थ दयो वखाईआ। हज़रत ईसा कहे दरोही तेरा नाम खुदाई, खुदगर्ज़ी नज़र कोए ना आईआ। जो गोबिन्द बूटा पुटया काही, साडी जड़ गया उखड़ाईआ। छोटे बच्चे नींहां हेठां हलूणे रहे लगाई, सदी चौधवीं कल्लर कंध उम्मत साडी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बर आपणा पूरब वेखो भविख्त लेख, लिख्त नाल मिलाईआ। किस बिध दीन दयाला धरे भेख, धुर दी भिख्या की जणाईआ। कवण सुहञ्जणे वस्से देस, दिशा कवण समझाईआ। जिस नूं वेखे अवतार पैग़म्बर गुर ब्रह्म महेष, महिखासुर दैंत निउँ निउँ लागण पाईआ। जिस ने दो जहान

लख चुरासी जीव जंत साध सन्त करने एक, एक एकँकार नज़री आईआ। सब दी बुद्धी कर बिबेक, बिरती सुरती निरती आपणे रंग रंगाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मानव मानस मानुख दस्से आपणी टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मातलोक वसा के देस, दीन दुनी दे उजड़यां लए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण निराकार निरँकार शब्दी धार आपणी कल वरताईआ। पैग़म्बर कहिण साडा इक्को वार सजदा, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। तूं मालक सचखण्ड घर दा, दरगाह साची सोभा पाईआ। तेरे हुक्मे अंदर पंज तत काया चोला डरदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। तेरे कलमे दा पैग़म्बर कलमा रिहा पढ़दा, अल्ला हू हू नाअरा लाईआ। आदि जुगादि जो चाहे सो तूं आपे करदा, खुद खुदा तेरी वड्याईआ। तेरा अन्त खेल होणा नरायण नर दा, निरगुण नूरी नूर जोत करे रुशनाईआ। हउँ सेवक तेरा बरदा, ख़ादम क़दमबोसी कर के झट लँघाईआ। तूं पातशाह शाह शहिनशाह सचखण्ड निवासी अगम्मे दर दा, दरवेशां देणी माण वड्याईआ। तेरा हुक्म माक़ूल अवतार पैग़म्बर मन्जूर करदा, हज़ूर हाज़र तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा शब्द गुरु आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त तेरी खेल करदा, दूसर हुक्म ना कोए वरताईआ।

✻ २७ माघ शहिनशाही सम्मत ४ अर्जन सिँघ दे गृह सलीमपुर ज़िला हुश्यिारपुर ✻

गुर अवतार पैग़म्बर खोल्ह्हो अक्खीआं, आख़र अकल कलधारी रिहा जणाईआ। तुहाडे नाम क़लमे वालीआं मेरे नाल पत्तीआं, हिस्सेदारी मज़हबां वंड वंडाईआ। लोकमात मुरीद गुरमुख वेखो आपणीआं सख़ीआँ, काहन हो के ध्यान लगाईआ। सच दस्सो कवण मेरे प्रेम प्यार विच रत्तीआं, रतन अमोलक हीरा आपणा रूप गए बणाईआ। सति सन्तोख धीरज विच केहड़ीआं सतीआं, सति सतिवाद विच आपणा रूप समाईआ। काया मन्दिर अंदर वेखो किथ्थे जगण निरगुण धार मोमबत्तीआं, बातन भेव रहे ना राईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर नाल कीतीआं की पक्कीआं, वाहिदे आपणे आप विच जणाईआ। की कथा कहाणीआं भविख्तां विच दस्सीआं, दिह दिशा कर पढ़ाईआ। किस बिध अन्तिम होवण सच्चीआं, सच सच नाल मिलाईआ। किते गल्लां ना होवण कच्चीआं, कच्चा तन्द ना कोए वखाईआ। तुहाडीआं धारां होणीआं इक्ठीआं, दरगाह साची सोभा पाईआ।

तन वजूद पंज तत रिहा ना मिट्टीआं, शरीर शरअ ना कोए वखाईआ। की नाम वालीआं पढ़ के आए पट्टीआं, संदेसे विच दयो सुणाईआ। की दीन इस्लाम दीआं खोल्हीआं हट्टीआं, हटवाणे हो के हट्ट चलाईआ। की कथा कहाणीआं रटीआं, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आपणी तक्को क़िसम, क़िस्मत वेखो जगत लोकाईआ। की धुर दा दस्सया इस्म, आज़म इक जणाईआ। की भेव खुल्हाया जिस्म, ज़मीर दिता बदलाईआ। की नूर चलाया चश्म, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। दस्सो की खेल होणा अन्तिम पच्छिम, पसचाताप विच दुहाईआ। की हुक्म वरतणा दक्खण, पर्दा दयो उठाईआ। किस बिध सब दा किहा आया कटण, कटाकश धुर दा इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर की किहा दस्सया पंज भूत, भविख्त दयो जणाईआ। किस बिध झगड़ा मिटे कलबूत, क़लमा दयो सुणाईआ। सृष्ट सबाई करे महिफ़ूज़, हिफ़ाज़त करे जगत लोकाईआ। सच वखाए मंज़ले मक़सूद, घराना इक्को इक दृढ़ाईआ। जिथ्थे मिले हक़ महबूब, मेहरवान महबूब नूर अलाहीआ। जिधर तक्को उधर मौजूद, दो जहानां सोभा पाईआ। दीन मज़हब दी मेटे हदूद, गृह इक्को इक वखाईआ। कूड़ी क्रिया कर नेसतो नाबूद, सच सुच लए प्रगटाईआ। भगत सुहेले बणा के पूत, सपूत आपणी गोद उठाईआ। सतिगुर शब्द बणा के दूत, दुतिया भाउ दए गवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कराए कूच, कूचा गली करे सफ़ाईआ। सच सुहञ्जणी करे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। मेहरवान हो के अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती दए उठाईआ। मन कल्पणा अंदरों कढ्ढे कुट्ट, कुटिया काया करे सफ़ाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जाता वेख वखाईआ। किसे दी समझ विच ना आवे ना बुद्धी सके सोच, अक़ल आक़ल ना कोए दृढ़ाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बर रहे लोच, लोचा सब दी पूर काईआ। पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्त साहिब सतिगुर इक्को बहुत, अवर लोड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो दस्सो कथा कहाणी, कहावत की जणाईआ। किस बिध लेखा मुके चारे खाणी, ख़ानाबदोश होए लोकाईआ। किस बिध पर्दा खुल्ल्हे चारे बाणी, बावा आदम अम्मां हव्वा नाल सालाहीआ। किस बिध खेल करे शहिनशाहानी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कसे इक रुहानी, रहमत हक़ कमाईआ। दीन दुनी रहे ना कोई बेईमानी, बेवा रूप ना कोए जणाईआ। सब दा भाग उदय करे पेशानी, मस्तक नूर जोत रुशनाईआ। जन भगतां लेखा जाणे आवण जाणी, जानणहार दया कमाईआ। सदी चौधवीं करे धुर दी मेहरबानी, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दी मंज़ल दस्स आसानी, बिना एहसान गुरमुख इन्सान आपणे रंग रंगाईआ।

☀ २८ माघ शहिनशाही सम्मत ४ नसीब कौर दे गृह पिंड सरीं पुर ज़िला हुशियार पुर ☀

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ कलयुग समां अख़ीर, आख़र अक्खरां वाली वेख पढ़ाईआ। साबत रिहा ना कोई पीर फ़कीर, साध सन्त ना जगत वड्याईआ। झगड़ा दिसे शाह हकीर, ऊँच नीच रिहा कुरलाईआ। मदद करे ना कोए दस्तगीर, दस्तबरदार होई लोकाईआ। लोकमात धर्म दी धार दिसे ना कोए लकीर, राह सच ना कोए वड्याईआ। दीनां मज़हबां धरे ना कोए धीर, धुर दी धार ना कोए समझाईआ। चार कुण्ट दह दिशा माया ममता मोह विकार हँकार घत्ती फिरे वहीर, वहिणां विच सृष्टी दृष्टी रिहा रुढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई शरअ दी बज्झे विच ज़ंजीर, बोध अगाधे तेरा भेव ना कोए खुल्ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूसर अवर ना कोए सहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी अगम्मी वेख लिख्त, निरवैर निराकार निरँकार खोज खुजाईआ। साचा रिहा किसे ना इष्ट, सचखण्ड निवासी तेरा दरस कोए ना पाईआ। कूड़ कल्पणा वधी विच सृष्ट, दीन दुनी होई हल्काईआ। चार जुग दी तेरे कोल फ़रिसत, दो जहानां नज़री आईआ। लहिणा दस्स के गया रामा नाल वशिष्ट, जगत विषे तों बाहर समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरी आसा इक रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ आपणी वेख लै चारे खाणी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। माण रिहा ना चारे बाणी, चारे वरन रहे कुरलाईआ। चौथे जुग अमृत रस मिले किसे ना पाणी, आबेहयात ना कोए पिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणे कोई ना हाणी, आत्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वधी बेईमानी, सच शब्द ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेख आपणी सदी चौधवीं दी धार, मुहम्मद कूक कूक सुणाईआ। ईसा कहे बीसवीं दी तक रफ़्तार, जो रफ़्ता रफ़्ता पन्ध मुकाईआ। पिछले जुग दे सोहले देण तेई अवतार, वेद व्यासा करे शनवाईआ। नानक वजा के निरगुण नाम सितार, तूंही तूंही राग अल्ाईआ। गोबिन्द कहे कल कल्की अवतार, निहकलंक तेरी वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करन विचार, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई

कुकर्मा विच आपणा कर्म जणाईआ। झगड़ा प्या शिवदवाला मठ गुरुदुआर, दूई द्वैती पन्ध ना कोए मुकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म साचे घर मिले ना किसे आप निरँकार, निराकार नज़र किसे ना आईआ। दह दिशा होया धूआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जो भविख्तां विच तेरा शब्द संदेसा गए विचार, लिख लिख लेख अक्खरां नाल वड्याईआ। सो स्वामी अन्तरजामी पूरा कर विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा होया अन्तिम अन्त, अन्तश्करन वेख जगत लोकाईआ। मेहरवान महबूब धुर भगवन्त, मेहरवान तेरी सरनाईआ। साचा दिसे धर्म दा ना कोई सन्त, सज्जण सच ना कोए वड्याईआ। कलयुग गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए जणाईआ। बोध अगाधा दिसे कोई ना पंडत, जो निरअक्खर दए समझाईआ । आपणा सदी चौधवीं दा अन्त वेख लै सम्मत, समां समें नाल भुगताईआ। साडे विच रही कोई ना हिम्मत, कलमयां विच दुहाईआ। जिधर तक्कीए चार वरन तेरे निन्दक, धुर दा गीत ना कोए सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ तेरे अग्गे साडी मिन्नत, सचखण्ड दवारे दरगाह साची सीस निवाईआ। साडी मेट दे अन्तिम चिन्नत, जगत रोग सोग रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल वेख थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा रिहा कोई ना मज़हब, इस्म इस्लाम ना कोए जणाईआ। चारों कुंट अन्धेरा ग़ज़ब, तेरी गर्ज ना कोए जणाईआ। धर्म दुआर दिसे ना अदब, बेअदबी विच दुहाईआ। असीं झुकदे तेरे क़दम, निउँ निउँ सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे मद्धम, अमृत मेघ इक बरसाईआ। लोकमात जीव जंत चार कुण्ट दह दिशा तैनूं लभ्भण, बिना अक्खां अक्ख उठाईआ। त्रैगुण माया सृष्टी साड़े अगन, कूड़ी तृष्ना ना कोए बुझाईआ। तूं पुरख अकाल दीन दयाल सचखण्ड दवारे निरगुण धार बैठों मग्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, धुर दे मालक दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा रिहा कोई ना ज़ोर, जोरू ज़र मिली वड्याईआ। तेरे हथ्थ सब दी डोर, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। चार कुण्ट दिसण ठग चोर, धर्म दा रूप ना कोए रंगाईआ। तेरा मन्त्र फ़ुरना फ़ुरे ना किसे फोर, रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ होई जगत हल्काईआ। जिधर तक्कीए अन्धेरा घोर, नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर पारब्रह्म परमेश्वर तेरी लोड़, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पैग़म्बर बिन हथ्थां हथ्थ रहे जोड़, निउँ निउँ सीस निवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं साहिब तेरे अज़ीज़, आजज़ हो के सीस निवाईआ। दीन दुनी विच रही ना कोए तमीज़, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। सति

९२३
२१

धार दी दिसे कोई ना ईद, कलमा हक़ ना कोए सुणाईआ। सृष्टी सुत्ती ग़फ्लत नींद, नेत्र लोचन अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं तेरी सारे करन उडीक, ज़िमीं असमानां राह तकाईआ। तेरे विच इक तौफीक़, ताक़तवर तेरी सरनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु अन्त सारे होए ज़ईफ़, ज़ईफ़ुल उमर नज़री आईआ। तेरा शब्द गुरु करे तसदीक़, शहादत इक भुगताईआ। कलयुग अन्तिम वेला नज़दीक, दूर दुराडे पन्ध मुकाईआ। तूं मालक ख़ालक लाशरीक, वाहिद तेरी सरनाईआ। साडी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, तृष्ना पिछली रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच कलमा सच नाम तेरी सति होवे हदीस, हज़रतां तों परे आपणी दरस पढ़ाईआ।

❊ २८ माघ शहिनशाही सम्मत ४ दयाल सिँघ दे गृह पिंड डड ज़िला हुश्यिारपुर ❊

सदी चौधवीं कहे प्रभ दीन दुनी होई अन्धी, नेत्र लोचन नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जगत दवारे होई गन्दी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। साचे नाम दी दिसे ना कोए सुगंधी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। दीन मज़हब औझड़ दिसदी डंडी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करन लड़ाईआ। तेरा निरगुण नूर जोत चन्द ना दिसे किसे नौचन्दी, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। आत्म परमात्म बणे कोए ना संगी, तन वजूद माटी ख़ाक नाता जगत लोकाईआ। दूई द्वैती शरअ दी ढाए कोई ना कंधी, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। सच दुआर दी दिसे ना कोए पाबन्दी, मन कल्पणा सारे रहे कुरलाईआ। कलयुग वेला अन्तिम दिसे कन्ढी, पूरब पिछला पन्ध मुकाईआ। जेहड़ी गुर अवतार पैग़म्बरां कथा कहाणी आखी छन्दी, भविख्तां विच तेरा नाम वड्याईआ। सो सब दी पूरी सनद वेख सन्धी, वेला वक्त दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, वाहवा तेरे नाम दी वज्जे वधाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभू चारों कुण्ट दिसे अन्धेरा, अन्ध अज्ञान ना कोए मिटाईआ। चार वरन प्या झगड़ा झेड़ा, सुल्हकुल तेरी समझ किसे ना आईआ । साढे तिन्न हथ्थ सब दा उजड़दा दिसे खेड़ा, गृह मन्दिर अंदर वज्जे ना कोए वधाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर बन्न्हे कोई ना बेड़ा, निरगुण नूर नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्तिम उलटा दिसे गेड़ा, सृष्टी दृष्टी साचा राह गई भुलाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म उत्ते कर मेहरा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। दूर दुराडे वस नेरन नेरा, निज घर आत्म पर्दा दे उठाईआ। तेरा शब्दी धार सुत सति स्वामी धुर दा शेरा, भबक इक्को इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। सदी चौधवीं कहे दीन दुनी जांदी रुड़्दी, वहिंदे वहिण जगत लोकाईआ। किसे समझ ना आवे शब्द साचे गुर दी, सतिगुर मेल ना कोए कराईआ। मस्तक रेख समझे कोए ना धुर दी, पर्दा उहला ना कोए उठाईआ। सब दी सुरती होई मुरदी, बिन तेरी किरपा लए ना कोए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एह खेल तेरी कमज़ोर दी, जोरू ज़र दा झगड़ा दे गवाईआ।

⁕ २८ माघ शहिनशाही सम्मत ४ हज़ारा सिँघ दे गृह पिंड पंज ढेरा ज़िला हुश्यिारपुर ⁕

सदी चौधवीं कहे प्रभ तेरे नाम बहु बिध भांत, लोकमात अगणत अगणत नज़री आईआ। लोकमात मेटे ना कोई अन्धेरी रात, सति धर्म दा साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म जोड़े कोई ना नात, पारब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्तां वाली गाथ, अक्खरां नाल दस्सी जगत पढ़ाईआ। तेरा भेव खोल्हे ना कोई पुरख समराथ, काया मन्दिर गृह होए ना कोए रुशनाईआ। दीन मज़हब झगड़ा पाया ज़ात पात, मानव मानव वंड वंडाईआ। दर्शन दिसे ना किसे तेरा साख्यात, सति सरूप नज़र कोए ना पाईआ। धरनी उपर खेल वेख प्रभू मात, चार कुण्ट दह दिशा फोल फुलाईआ। साचे नेत्र खुल्ही किसे ना जाग, आलस निंदरा ग़फ्लत विच सुत्ती कूड़ लोकाईआ। दुरमति मैल निरंतर धोवे कोई ना दाग़, पतित पुनीत जगत ना कोए कराईआ। अन्तर आत्म उपजे ना कोए वैराग, वैरी पंच विकार अंदरों ना कोए कढ्ढाईआ। माया ममता मोह अंदरों करे ना कोए त्याग, दूई द्वैती डेरा कोए ना ढाहीआ। त्रैगुण माया बुझे किसे ना आग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सज्जण स्वामी मिले ना कन्त सुहाग, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर वज्जे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे सीस निवाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ दीन दुनी भुल्ली तेरा नाउँ, नर निरँकार तेरा दरस कोए ना पाईआ। काया मन्दिर सोहे ना किसे गाउँ, गृह नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। दीन दयाल तेरी सरना लागे ना कोए पाउँ, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ सारे सीस निवाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर निथाव्याँ मिले कोई ना थाउँ, दरगाह सच महल अटल चढ़न कोए ना पाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच पकड़े कोई ना बाहों, जुग जन्म दे विछड़यां मेल ना कोए मिलाईआ। सब दी हँस बुद्धी होई काउँ, काग वांग कुरलाईआ। भवजल पार करे ना कोई शौह दरयाउँ, वहिंदा वहिण ना कोए वहाईआ। तख्त निवासी तुध बिन करे ना कोई सच न्याउँ, अदल इन्साफ़ हक़ ना

कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सदी चौधवी कहे प्रभ तक लै आपणी दीन दुनी दी धार, सृष्टी दृष्टी खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म रिहा ना कोए प्यार, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए दुष्वार, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। जिधर तक्कां काम क्रोध लोभ मोह हँकार, माया ममता सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया वेख्या गढ़ हँकार, हउमे हंगता ना कोए गवाईआ। साचा सन्त भगत तेरा दिसे ना कोई ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सीस ना कोए निवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप गुर अवतार पैग़म्बर तेरा करदे इंतज़ार, मर्द मर्दाने तेरा राह तकाईआ। अन्त कन्त भगवन्त तैनूं कहि के आए कल कल्की अवतार, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। जिस दा नाम डंका धुर दा कलमा सुणना अगम्म अपार, अलख अगोचर अगम्म अथाह देणा दृढ़ाईआ। चौथे जुग लहिणा देणा पूरब क़र्ज़ उतार, भेव अभेदा खोल्ह थाउँ थाईंआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गई हार, अन्तिम हौसले सारे गए ढाहीआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी पावे कोई ना सार, महासार्थी साचा नज़र कोए ना आईआ। नेत्र रो रो करां गिरयाज़ार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। आसा लै के आई तेरे दरबार, दरगाह साची सीस निवाईआ। सतिजुग साचा कर उज्यार, चार कुण्ट होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी दरगाह साची सखचण्ड सच्ची सरकार, आहला अदना नौजवानां दो जहानां वेखे थाउँ थाईंआ।

✻ २८ माघ शहिनशाही सम्मत ४ लाल सिँघ दे गृह पिंड पंज ढेरा ज़िला हुश्यिारपुर ✻

सदी चौधवीं कहे मैं थक्की टुट्टी, बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। की निमस्कार करां मेरी ताक़त रही ना गुट्टीं, घुटने टेक के रही कुरलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मेरी पत गई लुट्टी, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। साबत दिसी कोई ना काया कुटी, कूड़ी क्रिया होई हल्काईआ। चौदां तबक फिरदयां परवरदिगार मेरी घस गई जुत्ती, रविदास चमारा गंढु ना कोए पुआईआ। निरगुण धार तेरे विच्चों सुत्ती उठी, आपणी लई अंगड़ाईआ। जां तक्कां मेरी ख़ाली दिसे मुट्ठी, वस्त सच रही ना राईआ। मैं मुहम्मद दी करदी रही बुत्ती, बुतख़ाने वेख वखाईआ। साची वसी अन्त ना रुती, रुतड़ी रुत ना कोए महकाईआ। उम्मत दी जड़्ह रही पुट्टी, पटने वाला रिहा उखड़ाईआ। नाता तुट्टण लग्गा मासी फुफ्फी, कूड़ी क्रिया

डेरा ढाहीआ। साहिब सुल्तान मेहरवान इक बचन रही पुच्छी, पेशीनगोईआं तों परे देणा समझाईआ। केहड़ी भगतां मंज़ल देवें उच्ची, उच्च अगम्म अथाह देणा दृढ़ाईआ। किस बिध तेरे नाल आत्म परमात्म लग्गी रहे रुची, रचना धुर दी देणी समझाईआ। शब्दी धार रहे ना गुज्झी, मेला मिले चाँईं चाँईंआ। दीपक जोत रहे ना बुझी, सच चराग़ करे रुशनाईआ। जन भगतां उत्तम होवे बुद्धि, बिबेक रूप वटाईआ। मेरी अन्तिम औध मुक्की, मुकम्मल दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे निउँ निउँ लागां पाईंआ। सदी चौधवीं कहे मेरी ख़ाली वेख कन्नी, कायनात विच वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल धुर दा धनी, वड भण्डारी सोभा पाईआ। मेहरवान महबूब अन्त अख़ीर मेरी मन्नीं, मिन्नतां कर कर सीस निवाईआ। जेहड़ी धार तूं आपणी धार विच्चों जम्मी, आपे बणयों धुर जणेंदी माईआ। उस दा बेड़ा अन्तिम बन्न्ही, बन्न्हणहार तेरी सरनाईआ। वेखीं खेल करीं ना कलयुग कूचा गली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं अन्त अख़ीर की प्रभू दस्सां, दस्सण दी लोड़ रही ना राईआ। सच दस्स किहदे दवारे वसां, परवरदिगार देणा समझाईआ। चौदां तबकां बदल के आई अक्खां, नेत्र मुहम्मद ना कोए मिलाईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, एह की तेरी बेपरवाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा मेरीआं फिर फिर थक्कीआं लत्तां, बलहीण दयां दुहाईआ। पता नहीं की उम्मत दी होई मत्ता, बुध्ध बिबेक ना कोए वखाईआ। सब दे अंदर पाणी उबले तत्ता, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। तेरा प्यार ना दिस्सया रता, रतन अमोलक हीरा रूप ना कोए बदलाईआ। भैण भाई रिहा ना सका, पिता पूत ना जोड़ जुड़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गावे कोई ना टप्पा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। भेव अभेदा खोल्हे तेरा कोई ना हक़ा, हक़ीक़त हक़ ना कोए जणाईआ। सच दवारे साहिब सुल्तान तेरे दस्सां, दह दिशा वेख वखाईआ। मैं अन्त अख़ीर तेरे दवारे बोलण आई अच्छा, दूजा लफ़्ज़ ना कोए सुणाईआ। वेखीं हुण किते घल्ल ना देवीं लोकमात मच्छां कच्छां, गुर अवतार पैग़म्बरां संदेसा जगत सुणाईआ। अन्त अख़ीर सदी चौधवीं दीन दुनी दिसे भाण्डा कच्चा, कंचन गढ़ ना कोए वड्याईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच हरिजन भगत वेख आपणा बच्चा, जो इष्ट दृष्ट तेरे विच समाईआ। धर्म दी धार होया पक्का, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, चार वरन अठारां बरन दीन दुनी कर रच्छा, रच्छक हो के सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ।

९२७
२१

❊ २६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ करतार सिँघ दे गृह पिंड पंज ढेरा ज़िला हुशियारपुर ❊

सचखण्ड दवारे सच बेनन्ती करे विष्न, विष्नूं विश्व ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां तेरा इजलास वेख्या शिशन, शाह पातशाह शहिनशाह सोहणा सोभा पाईआ। सच स्वामी पैग़ाम लग्गा दस्सण, सति सच सच जणाईआ। चार जुग अल्ला वाहिगुरु सतिनाम राम कृष्ण तेरे नाम दा लैंदे रहे कमिशन, मातलोक खेल खिलाईआ। जगत वडयाउँदे रहे तन वजूद राम कृष्ण, ईसा मूसा मुहम्मद सोभा पाईआ। नानक गोबिन्द दस्सदे रहे तेरा मिशन, मशीर बण के होका गए सुणाईआ। अन्त धरनी धरत धवल धौल मूल ना दिसण, नेत्र नज़र कोए ना आईआ। सरीर माटी सब दा दिस्सया मिथन, मिथ्या कूड़ लोकाईआ। जो तेरी महिमा सिफ्त दस्स के गए सिखन, सिख्या जगत समझाईआ। क़लम शाही शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरानां लेखा लिखण, ग्रन्थां ताईं गुरु मात समझाईआ। उह तेरे नाम प्रभ पैसिआं टक्यां धेल्यां उत्तों विकण, तेरी क़ीमत हट्टो हट्ट पवाईआ। चार जुग दे नाँ अन्त कलयुग रोवण विलकण, कूक कूक सुणाईआ। तेरी धार खेल प्रभू बाज़ी तिलकण, सम्भल क़दम ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं सारे लग्गे ख़िसकण, पल्लू आपणा आपणा छुडाईआ। नव नौ चार निरँकार तेरी धार मूल ना दिसण, दह दिशा ना अक्ख खुल्हाईआ। दीनां मज़हबां दा वंड के हिस्सण, मानव दिते टकराईआ। जीव जंत सारे पिट्टण, रो रो रहे सुणाईआ। खेल खिला के मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ पत्थर इट्टण, तेरीआं मूर्तीयां गए वखाईआ। अन्त समां आए ना कोए नजिट्ठ ण, मेहर नज़र ना कोए टिकाईआ। साचा रस मिले किसे ना मिट्ठण, कूड़ कुड़िआर होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। दरगाह साची सचखण्ड विष्न करन लग्गा पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। सुण साहिब मेरे निरँकार, निरवैर दयां समझाईआ। असीं बालक सेवादार, सद सद सेव कमाईआ। तेरा खेल अपर अपार, अपरम्पर तेरी बेपरवाहीआ। जो वेस वटाए गुरु अवतार, पैग़म्बर रंग रंगाईआ। दस्स के आए जगत संसार, तेरा नाम खुदाईआ। लिखदे रहे नाल इज़हार, सिफ्तां विच सालाहीआ। दुनी दीनां विच कर गिरफ्तार, बंधन आए पाईआ। मज़हबां विच बण हुशियार, हुश्यारी आपणी आए दृढ़ाईआ। तेरा समझया ना किसे खेल अपार, अपरम्पर तेरी बेपरवाहीआ। हुक्मे अंदर हुक्म करें त्यार, त्रैगुण अतीते आप वरताईआ। कलयुग वेख आपणी धार, धरनी धरत धौल धवल खोज खुजाईआ। साचा रिहा ना कोए दुआर, धर्म दवारे रोवन मारन धाईंआ। साचा वणज ना कोए व्यपार, नाम हट्ट ना कोए चलाईआ। किथ्थे गए तेरे चार जुग दे सिक्दार, सिर सके ना कोए उठाईआ। वेख वध्या काम क्रोध लोभ मोह हँकार, हउमे अगनी तत तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे तेरी आस रखाईआ। दरगाह साची विष्न कहे वेख लै आपणी ख़लकत, ख़ालक ख़लक फोल फुलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मलकीअत रही किसे ना मिलकत, वारस नज़र कोए ना आईआ। मन कल्पणा मेटे कोई ना हरकत, हरस हवस ना कोए बुझाईआ। तेरे पैग़ग्बरां गुर अवतारां पाई शिरकत, शरीके दा तरीका दीन मज़हब आए समझाईआ। मेरी निगाह जांदी विच मशरक, मग़रब अक्ख बदलाईआ। इक दूजे दी होणी आपस विच नफ़रत, नफ़ा नुक़सान ना कोए समझाईआ । साची समझे कोई ना हसरत, हासल ज़रब नज़र किसे ना आईआ। पिछला लेखा सब दा वेखे जो दीन दुनी कीता बिछरत, बशर्ते आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। विष्न कहे प्रभू तूं सरगुण आदी खेल कीता शुरु, शाइरी सिफ्तां वाली जणाईआ। तत्तां वाले बणा के गुरु, विषयां विच दिता लगाईआ। झगड़यां विच करा के दुड़ू दुड़ू, मज़हबां विच टकराईआ। हुक्म विच किहा बुरी करनों कोई ना मुड़ू, बुरा आपणा नाम बणाईआ। भण्डारा अक्खरां वाला दे के किहा कदे ना थुड़ू, थोक हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जेहड़ा मंज़ल मेरी तुरू, तुरत होवां सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा हरि, दरदवंद तेरी सरनाईआ। विष्न कहे गुर अवतार पैग़ग्बर बणाए लोकमात तन माटी, ततव तत जणाईआ। अंदर रख के नूर जोत बाती, बातन कीती रुशनाईआ। आप बण के धुर दा कमलापाती, परमेश्वर हो के करें पढ़ाईआ। उहनां नूं स्त्री मर्द बणा के साथी, भोग जगत वाले भुगाईआ। एह खेल तेरी अबिनाशी, चार जुग समझ किसे ना आईआ। नाले सतिगुरु नाले जगत कांड दे नाती, धीआं पुतीं संग निभाईआ। नाले शब्द सुनेहड़ा देवें पाती, नाले शस्त्रां नाल लड़ाईआ। नाले खेल दस्सें इक ज़ाती, नाले मज़हबां विच फसाईआ। नाले इल्म दस्सें सफ़ाती, नाले अक्खरां नाल वड्याईआ। नाले आपणा बणा के दरसी, नाले स्त्रीयां पिच्छे जंगलां विच भवाईआ। नाले आपणी दस्स के हाटी, नाले जगत हटवाणे दिते अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस तकाईआ। विष्न कहे प्रभ जे गुर अवतार पैग़ग्बर भोगदे रहे भोग, भोगी लोकमात अख्वाईआ। उन्हां अंदर संसारीआं वाला रोग, ममता मोह वधाईआ। उन्हां दा भिखारीआं वाला जोग, दर तेरे मँगण थाउँ थाईंआ । उन्हां अंदर चिन्ता वाला सोग, मज़हबां वंड वंडाईआ। उन्हां अंदर हउमे वाला रोग, तेरे नाम दी करन लड़ाईआ। उन्हां अंदर दीन दुनी विजोग, जो घर बार तजाईआ। उन्हां दी मनुशां वरगी चोग, खा पी के झट लँघाईआ। उह बच्चयां वांग बैठे माँ दी गोद, सीर मुख नाल चुंघाईआ। उन्हां अक्खरां वाले पढ़े बोध, तेरी सुणी सच पढ़ाईआ। उन्हां जगत सेजा माणी मौज, सीस उत्ते

छत्र झुलाईआ। उन्हां सैंट लवाए कनौज, सुगंधी विच समाईआ। ओह तीर तरकश कमान शस्त्र नाल रखदे रहे फ़ौज, फ़ौजदार बण के करन लड़ाईआ। थोड़ा थोड़ा मोढुयां उपर चुक्की फिरदे रहे बोझ, ज्यों चेले प्रभू मुरीद रहे तकाईआ। आपणे आप दी करदे रहे सोध, प्रभू तूं नाते दिते जोड़, उह तैनूं याद करदे रहे रोज़, रोज़े रख के सीस निवाईआ। तूं थोड़ी थोड़ी नाम दी दिन्दा रिहों चोग, रसीए आपणा रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि सज्जण तेरी सरनाईआ। विष्न कहे गुर अवतार पैग़म्बर माँ पिउ दे बणाए टब्बर, बिना रकत बूँद तों जन्म कोए ना पाईआ। उन्हां दे अंदर निरगुण धार उतर, शब्दी शब्द शनवाईआ। ओह सदा सदा करदे रहे तेरा शुकर, शुकराने विच सीस निवाईआ। चार जुग चार कुण्ट तूं थोड़ा थोड़ा हिस्सा दीन दुनी दा वंडया उन्हां दिती मज़हबां वाली नुक्कर, कोने गुठां विच लगाईआ। उन्हां मुरीद शिश सिख सिँघ थोड़े थोड़े चुक्के आपणे कुच्छड़, बाकी सार कोए ना पाईआ। दुनियांदारां वांग जगत साक सज्जण सैण पिता पुत्त भाई भैण चाचा ताया बणदे रहे फुफ्फड़, नाता सृष्टी वाला बणाईआ। तेरी किरपा नाल तेरे दवारे गए अप्पड़, दर तेरे सीस निवाईआ। तेरे भण्डारे दा रुखा सुक्खा खांदे रहे टुक्कर, टुकड़े तेरे मँग के झट लँघाईआ। सदी चौधवीं आपणी करनी तों कोई ना सके मुकर, लेखा देवण थाउँ थाईंआ। जिन्हां ने खेल खिलाया अदुतर, दुतिया भाउ देणा समझाईआ। तूं सब तों अन्तिम आएयों पुच्छण, लेखा लैणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं आएयों गोदी चुक्कण, गोदड़ी वाले फोल फुलाईआ।

✻ २६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ दरबारा सिँघ दे गृह पिंड गालड़ी ✻

विष्नूं कहे क्यों गुर अवतार पैग़म्बर तेरे नाम तों आए बहिसी, बहिस मुबाहसे विच तेरे नाम वड्याईआ। कवण आदि कवण अन्त कवण हैसी, की सिख्या सब नूं दिती समझाईआ। साहिब सतिगुर कवण रहसी, किस मिले वड्याईआ। की क़लमा तेरी फ़रमाइशी, सिफ्तां विच सालाहीआ। गुर अवतार किथ्थों दे रिहाइशी, घराना तेरा कवण सोभा पाईआ। की प्रभू तूं आपणे नाम लोकमात भेजदा रिहों नुमाइशी, नवें नवें रूप दरसाईआ। चार जुग तेरे नाम दा बणया हमाइती, शत्रु बण के करदा रिहा लड़ाईआ। तेरी खेल आदि अन्त वैसी दी वैसी, विश्व विच अपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पर्दा दे खुल्हाईआ। विष्नूं कहे प्रभ तेरा नाम केहड़ा अदद, सति दे समझाईआ।

राम अल्ला वाहिगुरु विच वेखीं तशदद्, मिल के संग ना कोए निभाईआ। इन्हां विच्चों तूं किस दी करदा मदद, सिर किस दे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। विष्नूं कहे प्रभू तेरे नाम दी वड्याई की, वड्डे देणा जणाईआ। जिस नाम ने दुनियां विच वंडां वाली पाई नहीं लीह, लाईन चक्र बंधाईआ। दीनां मज़हबां रख के नींह, झगड़े वाला महल्ल सुहाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान तेरे नाम दी बण गए कीअ, रूप चाबी दिता समझाईआ। जिस नूं समझे ना कोई जीअ, जीवण विच भेद किसे ना आईआ। आपणा खेल रख वसीह, नाम पैमाने नाल दीन दुनी दिती मिणाईआ। हे प्रभू एह वखरा वखरा तूं किथ्थों कढ्ढें आपणा बी, जो गुर अवतार पैग़म्बरां दे अंदर उगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वरदाते तेरे हथ्थ वड्याईआ। विष्नूं कहे प्रभू तेरे नाम दी वेखी नाम नाल टक्कर, टाकरा गुर अवतार पैग़म्बर गए कराईआ। पता नहीं तूं केहड़ी धार विच पकड़, आपणे राग नाद ढोले गवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दीन दुनी मज़हबां विच दिती जकड़, डोरी अल्ला वाहिगुरु नाम नाल बंधाईआ। तूं किस बिध सारी दुनियां तोलें आपणे तक्कड़, कंडे हक़ चढ़ाईआ। किरपा कर दस्स कलयुग छेकड़, छेद उत्तों पन्ध मुकाईआ। सदी चौधवीं तेरा अन्त अख़ीर जेकर, साहिब सतिगुर देणा समझाईआ। गुर अवतार तेरे नाम दे टेकर, बोझ थोड़्हा थोड़्हा कंधिआं उत्ते टिकाईआ। तूं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा बदलदा रिहों मेकर, मारक अक्खरां वाले लगाईआ। पता नहीं गाउँदे गए कितने केकड़, केती ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं क़ायम रिहा कोई ना छेकड़, छड गए कूड़ लोकाईआ। रविदास दा लेखा सारी धरनी विच्चों मानस दा हिस्सा साढे तिन्न हथ्थ दा एकड़, जिस दा तूल अर्ज़ ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहरबान तेरी वड्याईआ। विष्नूं कहे मैं तेरे उत्तों घोल घोली, आपणा आप घोल घुमाईआ। चार जुग गुर अवतार पैग़म्बर तेरी नवीं बोलदे गए बोली, बोलीआं पा के जगत सुणाईआ। संदेसे देंदे गए हौली हौली, हर हिरदे कर जणाईआ। अन्तिम रुत किसे ना मौली, मौला वेख थाउँ थाईंआ। झगड़ा प्या उपर धौली, धौल धरनी दए दुहाईआ। किसे दी क़ीमत रही ना पौली, साचे हट्ट ना कोए विकाईआ। तन्द टुट्टण लग्गा अन्तिम मौली, मौला मुख छुपाईआ। रस रिहा ना अन्तिम पाहुली, हक़ीक़ी जाम ना कोए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैग़म्बर चार जुग दे परौहणा परौहणी, सरीर अन्तर आत्म दोवें नज़र कोए ना आईआ।

९३१
२१

❋ २६ माघ शहिनशाही सम्मत ४ जुगिंदर सिंघ दे गृह पिंड तलवाड़ा ❋

सदी चौधवीं कहे मेरा वक्त अन्त अख़ीरी, आख़र अक्खरां वाल्यो दयां जणाईआ। करे खेल मेरा परवरदिगार दस्तगीरी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दे कोल दो जहानां अमीरी फ़कीरी, फ़िकरे सोहले नाद रागां विच जणाईआ। जो झगड़ा मुकावे शाह हकीरी, शहिनशाह इक्को नूर अलाहीआ। दीन दुनी दी मेट दिलगीरी, दिलदार हो के वेख वखाईआ। जिस दी धार बेनज़ीरी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर फ़रमाना इक उपजाईआ। सदी चौधवीं कहे धुर दा मालक दस्से इक अदाब, अदब इक जणाईआ। पर्दा लाहे नक़ाब, नूर ज़हूर रुशनाईआ। भेव खोल्हे राज़, ममता मोह मिटाईआ। हक़ी दस्से निमाज़, वेला वक्त जणाईआ। कवण अगम्म आग़ाज़, पर्दा दए चुकाईआ। नेत्र खोल्ह जाग, निंदरा दए मिटाईआ। बख्श इक वैराग, वैरी दए भजाईआ। बण के कन्त सुहाग, आत्म सेज सुहाईआ। कर जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। शब्द सुणा नाद, सोई सुरती उठाईआ। अमृत जाम प्याए बुझाए प्यास, तृष्ना दए गवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करे आस, आशा वेखे थाउँ थाईंआ। सच दवारे कर निवास, सम्बल डेरा इक सुहाईआ। जिथ्थे कदे ना होए विनास, जम्मण मरन ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मालक आलीशान, महबूब नूर अलाहीआ। वस्से हक़ मकान, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे सूर्या चन्द ना कोई भान, मण्डल मण्डप ना कोए रुशनाईआ। चौदां तबक ना कोए निशान, चौदां लोक ना वंड वंडाईआ। रसना जिह्वा ना कोए गाण, खाणी बाणी ना कोए सुणाईआ। पवण पाणी ना कोए मसाण, ततव तत ना वंड वंडाईआ। ना कोई सीता ना कोई राम, बंसरी काहन ना कोए जणाईआ। ना कोई पैग़म्बर करे सलाम, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। ना कोई मन्त्र सतिनाम, ना कोई डंका फ़तिह वजाईआ। ना कोई ज़िमीं ना असमान, मण्डल मण्डप ना कोए रखाईआ। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील क़ुरान राग ना कोए अल्हाईआ। ना कोई लख चुरासी देवे दान, विष्न ब्रह्मा शिव ना सेव कमाईआ। सो खेल करे मेहरवान, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं अन्त अख़ीर होई हैरान, हैरानी मेरे अंदर आईआ। पैग़म्बर चार दिन दे महिमान, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। फिर वसणा पए उत्ते असमान, ज़िमीं ना कोए वड्याईआ। करे खेल धुर अमाम, हरि करता नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेखणहारा दो

जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हुक्मे अन्तर निरंतर आपणा हुक्म वरताईआ।

✻ ३० माघ शहिनशाही सम्मत ४ ज्ञान चन्द दे गृह तलवाड़ा ✻

सदी चौधवीं कहे आउण लग्गा खुशीआं वाला महीना, रुत्त आपणी रिहा बदलाईआ। जिस महीने विच प्यार बणया सी जल मीना, आदि दी खेल बणाईआ। राम वशिष्ट नूं मिल के कीता सी ठांडा सीना, धार धार विच मिलाईआ। वेद व्यास बिन विद्या दे बल तों चीना, निरगुण निरवैर अक्ख मिलाईआ। कृष्ण ने भेद खोल्या लोक तीना, त्रैलोकी वंड वंडाईआ। मूसा हो के हीना, क़दमां सीस झुकाईआ। ईसा हक़ खुदा चीना, रूप चर्चां विच वेख वखाईआ। मुहम्मद आसा रखी विच मदीना, मक्का राह तकाईआ। नानक मज्झीं चारदे आया पसीना, रुत पिछली वेख वखाईआ। गोबिन्द पाखर पाई नीले उत्ते ज़ीना, ज़िमीं असमान वज्जी वधाईआ। सदी चौधवीं कहे पुरख अकाल मेरा मालक जद वेखां ते नवां नवीना, नव जोबन सोहणा नज़री आईआ। ना ओह नर ना ओह मदीना, जोती जाता नूर अलाहीआ। सदा चाढ़े रंग भीन्ना, मेहर
९३३ नज़र उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे धार कमीना, कामल मुर्शद होए सहाईआ। जन भगतां दस्से किस बिध मरना ९३३
२१ ते किस बिध जीणा, जीवण जुगत जगत कवण वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक्को वार करे अधीना, अधीनगी दरगाह साची दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार इक वखाईआ। २१
सदी चौधवीं कहे महीना आवण वाला चंगा, जो मेरी क़िसमत दए बदलाईआ। चाढ़े अगम्मा रंगा, रुतड़ी रुत महकाईआ। बख्शे साचा संगा, सगला संग बणाईआ। दीन दुनी वखाए दंगा, झगड़े विच दुहाईआ। शाह सुल्तान होवे नंगा, सिर ओढ़न ना कोए पहनाईआ। भार चुक्के गुर अवतार पैग़म्बर कोई ना कंधा, कन्ढी बैठे डेरा लाईआ। सतिगुरु बणे कोई ना बन्दा, बिना शब्द सतिगुरु नज़र कोए ना आईआ। जिस दी इक्को मंज़ल ते इक्को डंडा, डंडावत धुर दी दए सुणाईआ। दीन दयाल बण बख्शंदा, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। जिस महीने दी गुर अवतार पैग़म्बर आपणे अंदर वेखदे गए सनदा, बिन अक्खरां हिन्दसिआं विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ।
सदी चौधवीं कहे प्रभ बदलण वाला रुत्त, महीना फल्गुण नाल समझाईआ। जेहड़ा नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रिहा चुप्प, ओह चार जुग दा लेखा रिहा मुकाईआ। शब्दी धार उठा के सुत, दूल्हा दो जहान बणाईआ। उजल कर के मुख, मुफ्त आपणा रंग रंगाईआ। दीनां मेट के दुःख, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरा घुप, अन्ध अज्ञान दए गंवाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा प्रकाश आदि जुगादि कदे ना जावे छुप, अन्धेरे विच अन्ध ना कोए बणाईआ।

✻ ३० माघ शहिनशाही सम्मत ४ जीआ लाल दे गृह तलवाड़ा ✻

सदी चौधवीं कहे पहली फग्गण मुहम्मद ने कढ्ढी सी दोधी दन्दी, दिवस पिछला नज़री आईआ। ढाई साल ज़बान थल्ले रखी सी तन्दी, साफ़ गल्ल ना कहि सुणाईआ। अठारां महीने कंड रखी सी नंगी, माता ओढ्ढन ना कोए टिकाईआ। नौ वार आपणे पिता नूं गाल कढ्ढी सी गन्दी, रसना नाल हिलाईआ। तिन्न वार वेख्या चन्द नवचन्दी, अक्ख बचपन वाली खुल्हाईआ। सत्त वार माँ दी खिच्ची डंडी, कन्नां ताईं हिलाईआ। इक वार भैण नूं किहा रंडी, हस्स के दिता सुणाईआ। एह खेल बड़ी प्यारी चंगी, चंगी सब नूं नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद ढाई साल नहीं कटे वाल, बोदा सीस ना कोए सुहाईआ। रोटी ख़ाधी नहीं विच किसे थाल, हथ्थां विच रखाईआ। पुट्ठीं पैरीं भज्जदा सी आपणी चाल, रोज़ रोज़ रोज़ वार आपणा मता पकाईआ। सट्ठ कौडीआं कोल रखदा सी धन माल, क़ीमत ढाईआं टक्कयां वाली वखाईआ। छोटा हथ्थ विच फड़ के रखे जाल, ढाई ढाई नज़री आईआ। दो वेरां रिढ़ के डिगिआ विच पाणी ताल, जो ढाब छोटी नज़री आईआ। इक वेर उहनूं नज़री आया काल, जिस भय दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद दे चाचे डब्बे रंग दी रखी सी कुत्ती, जो गिआरां साल जी के झट लँघाईआ। मुहम्मद पैरीं पाई नहीं सी जुत्ती, नंगी पैरीं चल के खुशी बणाईआ। इक दिन माँ उहदी सी सुत्ती, महीना फल्गुण पहली वार नज़री आईआ। इस ने मथ्थे विच मारी मुक्की, सहजे दिता उठाईआ। उस ने धार गाई दो तुकी, तूं बच्चा मेरा मैं तेरी माईआ। मुहब्बत तेरी दी भुक्खी, क्यों रिहा सताईआ। मुहम्मद बोल के किहा उच्ची, कूक कूक जणाईआ। तूं क्यों नहीं मेरे नाल रुस्सी, मुखड़ा ल्या भवाईआ। ओह छेती नाल उठी, गलवकड़ी लई पाईआ। मेरी सीर धार नहीं टुट्टी, जेहड़ी तेरे मुख चुआईआ। मुहम्मद हथ्थ ला के किहा बुल्लीं बुट्टीं, वेख रस नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कथा कहाणी कोई रहिण ना देवे लुकी, लुकमान दा लहिणा लुकम्यां वाला अग्गे बणाईआ।

९३५ २१

✻ ३० माघ शहिनशाही सम्मत ४ परमेशवरी राणी दे गृह तलवाड़ा ✻

सदी चौधवी कहे पहली फल्गुण फुल्लां सोहे तख्त, तख्त निवासी आसण लाईआ। प्रेम प्यार मुहब्बत विच सोहवण भगत, जन भगत मिले वड्याईआ। साढे अठ्ठ दा होवे वक्त, रैण रुतड़ी नाल मिलाईआ। पंज बूँदां कढुणीआं रकत, पंज गुरमुख सेव कमाईआ। प्रभ खेल दस्सणा उत्ते अर्श, सचखण्ड वज्जे की वधाईआ। की खेल होणा उत्ते धरत फ़र्श, मातलोक पर्दा दए उठाईआ। वेखो इहो जिहा सोहणा अगला वरश, दरस दरस नाल बदलाईआ। इक छोटा कोल होवे परस, जो पैरिस दा लेखा दए मुकाईआ। चांदी दा होवे कलस, कायनात खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानां दे के आपणा नूर जोत दी झलक, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ।

✻ ३० माघ शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

पकौड़ा कहे मैं लँघ के आया कल्लर रक्कड़, सहजे सहजे पन्ध चुकाईआ। मैं तुलिआ नहीं किसे तक्कड़, तराज़ू विच ना कोए टिकाईआ। मैं जगत नाल लाउँदा आया टक्कर, आपणा जोर वखाईआ। कूक के कहिंदा आया वेखणा नहीं कोई फक्कड़, फ़कीर फ़िकरा ना कोए सुणाईआ। घुंमदा आया विच चक्र, चक्रवर्ती खोज खुजाईआ । जिधर तक्कया ओधर दिस्सया मकर, फ़रेबां विच सारे रहे फसाईआ। मेरी रही ना अक्कड़, हंगता दिती गवाईआ । जां तक्कया भगत भगवान इक दूजे नूं रहे जकड़, प्रेम नाता बंधन वाला पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पकौड़ा कहे मेरा स्वाद लूण मिर्च हल्दी नाल मसाला, मसाल मिसल ना कोए जणाईआ। मैं खेल वेख्या हाला, कथा कहाणी अज्ज दी दयां सुणाईआ। जन भगतां अंदर पुरख अकाल आपणे नाम दी फेरदा वेख्या माला, बिना मणक्यों मणका मन दा आप भवाईआ। नानक दी रबाब वजाऔंदा सी बाला, भगतां दी रबाब प्रभ आपणे हथ्थ वजाईआ। मार्ग दस्सदा वेख्या सुखाला, सहज सहज सहज समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। पकौड़ा कहे मेरा रसना नाल ल्यो स्वाद, आपणा वक्त सुहाईआ। मेरे विच मिर्च तेज़ ते सुभाअ रखणा याद, तेज रूप एहो नूर अलाहीआ। मैं दूर दुराडा आया भाज, भजन बन्दगी वाल्यो तुहाडा दर्शन पाईआ। मेरे चंगे हो गए भाग, भागां वाल्यां नाल मिल के वज्जे वधाईआ। मैं कोई जगत वाला नहीं खाज, प्रभू दे चरण आ के सीत प्रशाद

९३५ २१

रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तुसां सारयां ने रखणा इक इतहाद, मसाल मेरी आपणी मिसल लैणी बणाईआ। पकौड़ा कहे मेरा रस लवे जीभ, जिह्वा वड वड्याईआ। एह खेल इक अजीब, अजब अजीब रिहा समझाईआ। जन भगतां साची दे के तरतीब, तरूां तरूां बख्शे माण वड्याईआ। दूर दुराडा चल के आया क़रीब, नेरन नेरा वेख वखाईआ। तुहाडी सब दी आसा मनसा पूरी होवे उम्मीद, जो पैरां उत्ते झुक के आपणा पन्ध मुकाईआ। साचे नाम दी मिले बख्शीश, रहमत प्यार वाली वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।

✻ पहली फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सदी चौधवीं कहे मैं पहली फल्गुण परवरदिगार तक्कया, नूर नुराना नौजवाना नूर अलाहीआ। जेहड़ा चौदां तबकां ना मिल्या मदीना मक्कया, काअबिआं विच नज़र कोए ना आईआ। जिस दे पिच्छे गुर अवतार पैग़म्बर फिरे नट्ठया, जुग चौकड़ी बण बण पाँधी राहीआ। जिस नाम क़लमा धुर फ़रमान दस्सया, निर अक्खर विच्चों अक्खरां करी पढ़ाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला सर्ब कला समथया, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस दी सरनाई विच विष्न ब्रह्मा शिव ढठ्ठया, देवत सुर धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जेहड़ा कदी नहीं वसिआ, शिवदवाले मस्जिद मन्दिर मठ्ठया, तीर्थ तट ना सोभा पाईआ। जिस दा अक्खरां वाला पत्थरां वाला नाम रसना जिह्वा रट्टया, सिफ्तां विच ढोले राग नाद गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कया परम पुरख परवरदिगार, जिस निगाह विच्चों निगाह दिती बदलाईआ। मैं कर के निमस्कार, डंडावत बन्दना सजदा सीस झुकाईआ। ओस किहा इशारे नाल, सहज नाल उठाईआ। उठ वेख जगत संसार, वड संसारी हो के दयां समझाईआ। चार कुण्ट दह दिशा दिसे कंगाल, नाम धन नज़र कोए ना आईआ। मुर्शद मुरीद दोवें हल्ल कर ना सके सवाल, चेला गुर गुर चेला इक रंग ना कोए सुहाईआ। उच्ची कूकदे वेख गोबिन्द वाले बाल, जो धरनी धरत नीहां रहे हिलाईआ। चारों कुंट कूके कूक पुकारे काल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे आया फल्गुण लै के आपणी रुत, मेरी रुतड़ी नाल महकाईआ। किरपा करी अबिनाशी अचुत, मेहरवान नज़र उठाईआ। मैं छड्ड के तत्तां वाले बुत, बुतख़ाने आई तजाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों ल्या पुच्छ, आप आपणा भेव चुकाईआ। उन्हां ख़बर संदेसा

दिता कुछ, जो भविख्तां विच गए दृढ़ाईआ। एसे कारण सच दवारे गए पुज्ज, जिथ्थे पूजा पाठ इक्को नूर अलाहीआ। अग्गे भेव रहे ना गुज्झ, पर्दा दए उठाईआ। सति धर्म दी साची आवे सुध, दीन मज़हब दा लेखा दए मुकाईआ। निर्मल होवे बुध्ध, मन कल्पणा ना कोए कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे फल्गुण तेरी अजब बहार, रुतड़ी रुत महकाईआ। मैं वेखां भगतां दी गुलज़ार, जो महकण थाउँ थाईंआ। इक्को अमृत बख़्शां धार, निझर झिरना आप झिराईआ। प्रभू दे बणे बरखुरदार, अज़ीज़ हो के सीस निवाईआ। नाता तोड़ जगत संसार, कूड़ी क्रिया गए तजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बोल जैकार, धुर दा ढोला रहे गाईआ। खेल वेखणा गुरु अवतार, पैग़म्बर नैण उठाईआ। सब दा लहिणा देणा क़र्ज़ा मुकणा उधार, पूरब लेखा रहे ना राईआ। अगला हुक्म वरते मेरे निरँकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतां हुंदा रिहा दरस, जुग जुग प्रभ ने दया कमाईआ। पहली फल्गुण सब ते हुंदा रिहा तरस, अन्तर आत्म वज्जदी रही वधाईआ। अमृत मेघ धार रिहा बरस, बरसी सतिजुग तों चली आईआ। तेई अवतारां दे नाँ एसे तारीख विच होए सी दरज, वेद व्यासा दए गवाहीआ। एसे विच सब नूं नाम धन दा मिलदा रिहा खरच, प्राचीन दा भेव खुल्हाईआ। एसे महीने पहिले दिन ईसा धार जणाई चर्च, चार कुण्ट नज़री आईआ। एसे दिन अकाल पुरख परमात्म अवतार बणाउण दी आसा रखी उत्ते अर्श, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। एसे दिन ब्रह्मा सुत नूं दर्शन दिता उत्ते फ़र्श, सन्त कुमार रंग रंगाईआ। एसे दिन गुर अवतार पैग़म्बरां दी सुणदा रिहा अर्ज़, वल्ल बेनन्ती ध्यान लगाईआ। एसे दिन शुरु तों बद्दल प्या सी गरज, हवा पाणी नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे फल्गुण रुत्त वड गुणी, गहर गम्भीर दिती वड्याईआ। एसे दिन लछमी दे सिर ते लाल दिती सी चुन्नी, चिट्टी धार सुहाईआ। ओस ने उत्ते रखी सी दिन उन्नी, उन्नीसे विच मुहम्मद ईसा बीसे नाल समझाईआ। एसे विच्चों धार निकली मुस्लिम सुन्नी, हुक्म आदि आदि वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे जिस वेले निरगुण सरगुण नूं लाई लग्न, आपणा भेव खुल्हाईआ। जगत मर्यादा वास्ते आदि विच बिना खोपरे तों बणाया सगन, मेहर नज़र उठाईआ। सन्तकुमार लग्गा मँगण, ब्रह्मा बेटा सीस निवाईआ। तेरी प्रीती विच हो के मग्न, तेरे विच समाईआ। किस बिध संसार विच पए गंढुण, नाता जोड़े लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल किहा निरगुण सरगुण मेरी धार सुत, धुर दा खेल खिलाईआ।

निरगुण सरगुण दोहां दा होवे जुट्ट, जोड़ी इक्के दर बणाईआ। ओह फल्गुण पहली सी साची रुत, रुतड़ी नाल वड्याईआ। करया खेल अबिनाशी अचुत, चार जुग दे शास्त्र वेद समझ किसे ना आईआ। की जाणे मानस मानुख, बुद्धी ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे जगत विवहार, गुर चेला वंड वंडाईआ। सच्चे सतिगुरु दा प्यार, जोटा खोर दए गवाहीआ। बदाम छुहारे जिस दे नाल, किशमिश सोभा पाईआ। एह खेल सच्ची सरकार, आदि विच दिती समझाईआ। एह रुपईए धाहां रहे मार, कूक कूक सुणाईआ। किस बिध चले जगत विहार, एह वी देणा दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा सुण संदेसा इक्को वार, एकँकार आप जणाईआ। जगत माया माया विच प्यार, माया नाल सृष्टी बंधन दिता वखाईआ। एह खेल रहिणा जुग चार, कलयुग अन्त अत्त वेख वखाईआ । सगन मनाउणा तत शरीर अवतार, पैग़ग्बरां एहो गंढु पवाईआ। एहो गुरु गुरदेव करन प्रणाम, मेहरवान दए समझाईआ। अन्तिम एसे दा होणा जगत निशान, निशाने वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। चार जुग निरगुण सरगुण चलदा रहिणा विवहार, विवहारी आप कराईआ। माण मिलदा रहिणा पैग़ग्बर अवतार, गुरु गुरदेव सोभा पाईआ। सदी चौधवीं सब दा लहिणा देणा देणा निवार, बाकी नज़र कोए ना आईआ। सन्त सुहेले लैणे उठाल, चार वरनां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। अन्तर आत्म बख्श प्यार, प्रीतम धुर दा लए मनाईआ। झगड़ा मुकाए शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। शब्द गुरु होवे दलाल, विचोला इक्को सोभा पाईआ। नाम भण्डारा दए माल, धन दौलत इक्को इक वरताईआ। किरपा कर दीन दयाल, दीनां वेखे चाँईं चाँईंआ। नाता तोड़ जगत मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ धर्मसाल, गुरुदुआर काया मन्दिर अंदर इक वखाईआ। जिथ्थे वस्त अमोलक अनमुलड़ा लाल, नाम ख़ज़ीना दिता टिकाईआ। अगम्मी जोत बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए समझाईआ। निझर झिरना मारे अगम्म छाल, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। एह खेल करे पुरख अकाल, हरि करता नूर अलाहीआ। जिस वेले दीन दुनी गुरु अवतार पैग़ग्बर ना सकण संभाल, वारस नज़र कोए ना आईआ। योद्धा सूरबीर प्रगटे पुरख अकाल, नौजवाना मर्द मर्दाना धुरदरगाहीआ। उह सन्त सुहेले गुरमुख हरि सज्जण करे परवान, जन भगतां वेख वखाईआ। जो गुरु अवतार पैग़ग्बरां मिलदा रिहा दान, जुग जुग धुरदरगाहों आप वरताईआ। सो पुरख अकाल हो के मेहरवान, लोकमात वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो सुणो मेरी आवाज़, धुर दा हुक्म सुणाईआ। पुरख अकाला खोल्हण लग्गा राज़, पर्दा अंदरों दए चुकाईआ। तुहानूं खाणी पए ना कितों निआज़, खाली हथ्थ ना कोए

फैलाईआ। किरपा करे आप महाराज, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। तुहाडा सब तों उत्तम श्रेष्ट धुर दा नाम खाज, जगत तृष्ना दए बुझाईआ। तुहाडे उत्तों वार के जगत दा रिवाज, पिछला लेखा दिता मुकाईआ। एहो गोबिन्द चोग पाउँदा सी आपणे बाज़, खुशीआं नाल आप खवाईआ। जिस शरअ विच्चों क़ानून, जिस शरअ विच्चों काइदे, जिस शरअ विच्चों धर्म, जिस शरअ विच्चों दुआर, जिस शरअ विच्चों परिवार, जिस शरअ विच्चों निरँकार, जिस शरअ विच्चों सच्ची सरकार, जिस शरअ विच्चों गुरसिखां बख्श्या राज, रहमत आप कमाईआ। सीस जगदीश सुहा के ताज, तख्त निवासी वेख वखाईआ। जन्म जन्म दा कर्म करम दा दुरमति मैल धो के दाग़, पतित पुनीत आप कराईआ। गुरमुखो पिछला खुशीआं वाला महीना लंघया माघ, अग्गे फल्गुण गया आईआ। तुहाडी आत्म सेजा उत्ते जाणा बिराज, घर घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतो तुसां सौणा आपणी निंदरा, सुख आसण डेरा लाईआ। शब्द गुरु तुहाडे अंदर वड़ के बजर कपाटी दा तोड़े जंदरा, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी दए बदलाईआ। जिस राम दी पूजा करदे बन बिन्दरा, उह काहन तुहाडी सेव कमाईआ। जिस नूं कहिंदे सुरप्त राजा इंदरा, तुहाडे चरणां हेठां हथ्थ रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कोई हथ्थ उत्ते पर्बत चुकणा नहीं मिन्दिरा, दो जहान इशारे नाल उठाईआ। किसे नूं लुकणा पए ना किसे कुंदरा, कुंदरां विच ना डेरा लाईआ। कोई रुकावट ना पावे तुहानूं सुखमन ईड़ा पिंगला, त्रैकुटी ना कोए वड्याईआ। माला मणका फेरना पए ना नाल उँगला, मन दा मणका दए भवाईआ। रातीं सुत्तयां दीआं अंदरों खोल्ह देवे गुंझला, राह इक्को दए वखाईआ। जिथ्थे वेद पुराणां मूल नहीं पुज्जणा, ओथे भगतां मिले वड्याईआ। ओथे सूर्या चन्द्रमा कोई नहीं उग्गणा, मण्डल मण्डप ना सोभा पाईआ। जिस दा किसे नूं कदे आया नहीं सुफ़ना, ओह धाम दए वखाईआ। पूजा पाठ करदयां बिना सतिगुरु तों पैंडा किसे नहीं मुकणा, मंज़ल हक़ ना कोए पुचाईआ। गुरमुखो बिना गोबिन्द तों गोदी किसे नहीं चुक्कणा, पुरख अकाल दे चरणां ना कोए टिकाईआ। कलयुग कूड़ा बूटा ज़रूर सुक्कणा, हरया सिंच ना कोए कराईआ। धुर दे साहिब दा भाणा कदे ना रुकणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस ने दीन मज़हब दा बूटा पुट्टणा, आत्म ब्रह्म सर्ब दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा सोहणा सुहञ्जणा बरस, खुशीआं विच वड्याईआ। जन भगतो सब तों उत्तम परम पुरख दा दरस, जो दीदा दानिस्ता करे रुशनाईआ। जेहड़ा आदि जुगादि जगत शुकीन ते धर्म दा रखे परस, माया ममता हथ्थ ना कदे उठाईआ। वेख्यो जगत तृष्ना विच कदे ना जाइओ परच, प्राचीन दा लेखा रिहा मुकाईआ। जे यसू नूं तक्कणा ते वेखो आपणे काया चर्च, मुहम्मद

९३९ २१

काया काअबे विच बैठा आबेहयात रिहा प्याईआ। जे नानक दी तड़प, घर विच्चों खोज के घर विच लैणा टिकाईआ। जे तुहानूं गोबिन्द दी गर्ज़, ते गोबिन्द चल के तुहाडे घर विच डेरा लाईआ। जिस ने मात पिता बच्चयां दा समझया नहीं कुछ हरज, बंस वार के सहँस लए प्रगटाईआ। ओह ज़रूर तुहाडा वंडे दरद, दुखियां दुःख गवाईआ। अज्ज भावें कोई ना करे अर्ज़, सब दा रोग देणा मिटाईआ। सतिगुर शब्द मर्दाना मर्द, मॅदद करे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा वेख्यो परस, तुहानूं दयां वखाईआ। तुहाडा ख़ुशीआं वाला बरस, उम्मत रही कुरलाईआ। मुहम्मद दा देणा क़र्ज़, मक़रूज रिहा चुकाईआ। चारों कुण्ट उडणी गरद, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म समझाईआ। सदी चौधवीं कहे सारे होवो सावधाना, अक्खां लओ खुल्हाईआ। पुरख अकाल करो चरण ध्याना, नीती नीती विच्चों बदलाईआ। तक्को खेल ज़िमी असमाना, जो दो जहानां रिहा कराईआ। जो लख चुरासी होवे मेहरवाना, महबूब नूर अलाहीआ। धर्म झुलाए इक निशाना, नव नौ चार आप उठाईआ। सृष्टी दी दृष्टी दा बणे काहना, नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं जन भगतो बणी मँगती, मांगत हो के झोली डाहीआ। जेहड़ी पिछल्यां चहुं जुगां दयां ग्रन्थां दी पढ़ी पंगती, इहदे विच दयो टिकाईआ । सच प्यार बणाउणा साचा संगती, चार वरन इक सरनाईआ। गढ़ रहे ना हउमे हंगती, कूड़ कुड़िआर देणा तजाईआ। पुच्छणा पुच्छणी नहीं किसे मूल जा के पंडती, गृह नछत्र ना फोल फुलाईआ। एह कथा कहाणी अन्त दी, अन्त दए समझाईआ। वड्याई रहिणी नहीं किसे साध सन्त दी, बिना शब्द गुरु तों गुरु ना कोए अख्वाईआ। जवानी रहिणी नहीं किसे नार कन्त दी, बुढेपा सब दे उपर छाईआ। आवाज़ रहिणी नहीं पिछले मंत दी, चार जुग दा पन्ध मुकाईआ। रुत मौलणी परम पुरख दे नाम वाली बसन्त दी, ख़िज़ां कूड़ दए मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगतो पिछला इहदे विच पाइओ पाठ पूजा, जो पिच्छे ल्या कमाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई रिहओ कोई ना दूजा, दुतिया भाउ ना कोए रखाईआ। पिछला भाण्डा होण लग्गा मूधा, प्रभ अंदरों करे सफ़ाईआ। अन्त अख़ीरी रो के गया बुधा, बिन नैणां नीर वहाईआ। जिस वेले मेरा मालक आवे उत्ते बसुधा, धरनी धरत धवल डेरा लाईआ। ओस वेले ओहदा समझे कोई ना मुद्दा, मुद्दत दीआं पेशीनगोईआं इशारिआं वालीआं नज़री आईआ। जिस ने बदलणा कलयुगा, कल कलकाती मेटे कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगतो मँगती नूं दे दयो दान, इक

टंग ते मँग मँगाईआ। जे मन्नणा इक भगवान, हथ्थ दयो उठाईआ। जे किसे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अठसठ कीता इश्नान, उह वी इहदे विच दयो टिकाईआ। जे किसे ब्राह्मणां नूं दिता दान, उह वी लेखा लओ मुकाईआ। वेख्यो तत्तां वाला कोई ना मन्नयो काहन, तत्तां वाला राम अन्त साथ ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगतो जे किसे पिच्छे मथ्थे लाया तिलक, त्रसूल संधूर नाल बणाईआ। जे किसे हनूवन्त दी मारी किलक, कूक कूक सुणाईआ। जे दुर्गा दा मन्न के इष्ट, सीस ल्या निवाईआ। उह भगतां दी आ जाओ विच लिस्ट, फ़रिसत पिछली रिहा वखाईआ। जे किसे ने लोकमात झूठा प्यार कीता इश्क, उह वी इस दे विच दयो पवाईआ। वेख्यो जगत याराने लाउण वाल्यो ना जाइओ ख़िसक, एह हुक्म धुरदरगाहीआ। जिन्हां ने खा के हराम कीता निमक, ओह वी आपणी कीती इहदे विच लओ छुपाईआ। जे पुरख अकाल उत्ते भरोसा करना ते गोबिन्द उत्ते रखणा सिदक, हथ्थ सीने उत्ते लओ टिकाईआ। जे निन्दक बणना फेर भगतां विच रहिणा नहीं मिन्ट, सच जगह नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं कहे जे मन्नया कोई पीर, लालां वाल्यां सीस निवाईआ। जे सजदा कीता किसे फ़कीर, क़बरां ख़ाक धूढ़ रमाईआ। जे किसे कढ्ढी तक्कीए जा लकीर, नक्क ज़िमीं उत्ते घसाईआ। उह सारे ऐस विच रख दयो नाल तरतीब, हौली हौली विच टिकाईआ। फेर नाम दा रहिण नहीं देणा कोई ग़रीब, काया मन्दिर देणा भराईआ। एह खेल प्रभू ने करना अजीब, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। पढ़नी पए ना क़ुरान मजीद, निमाज़ रोज़ा ना कोए वड्याईआ। तुहाडे काया अंदरों तुहाडा मिल जाए तबीब, रोग हउमे दए गवाईआ। साचा मन्दिर वखा मसीत, मसला अगला हल्ल कराईआ। सिरफ़ तुसां गाउणा तूं मेरा ते मैं तेरा गीत, सोहँ नाम अलाहीआ। झगड़ा मिट जाए हस्त कीट, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। जन भगतो आपणा इस विच पाइओ कर्म कांड, सब कुछ सतिगुर झोली पाईआ। जिस दे कोल सत्त रंग दी डांग, सत्त ज़िमीं सत्त असमानां मुहम्मद दा लेखा चरणां हेठ रगड़ाईआ। जो ईसा कहि के गया नाल टंग उस नूं लँघाउणा हेठों दी टांग, हुक्म बेपरवाहीआ। लेखा मुकणा दो जहान लोक परलोक ब्रह्मण्ड ब्रह्मांड, ब्रह्माद ब्रह्म वेख वखाईआ। जन भगतां नंगी ना होवे कंड, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं नहीं बहुता कूणा, उच्ची उच्ची ना बोल सुणाईआ। मेरा परस अजे ऊणा, सक्कया ना कोए भराईआ। मैनूं अगले साल दुनियां नूं ला लैण दयो हलूणा, शाह सुल्तानां दयां हिलाईआ।

फेर मेरा भाग वधणा दूणा, मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। परस कहे वेखो मैनूं कवण भरदा, भार आपणा विच रखाईआ। मैं वी ओस प्रभू दा बरदा, जो बन्दीखाने रिहा तुड़ाईआ। जुग चौकड़ी रिहा डरदा, आपणा मूँह ना कोए खुल्हाईआ। लुक लुक अंदर रिहा वड़दा, बाहरों ना लई अंगड़ाईआ। मैनूं शौक आया हुण फग्गण महीना चढ़दा, चढ़दी दिशा दए दुहाईआ। लहिंदे मानव वेखणा सड़दा, आतश जगत ना कोए बुझाईआ। एह खेल मेरे प्रभू दे घर दा, अवर ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। परस कहे मैनूं समझयो ना कोई चमड़ा, जगत खल्ल वड्याईआ। मैं ते दस्सण आया तुहाडा पुरख अकाल अगम्म अगम्मड़ा, जिस दा भेव कोए ना पाईआ। वेख्यो आपणे सतिगुर नूं लालच दयो ना कदी कोई दमड़ा, माया मोह विच ना कोए फसाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों तन माटी ख़ाक निकम्मड़ा, सच वज्जे ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। परस कहे जन भगतो इहदे विच पाओ आपणा कुकर्म, बाकी रहिण कुछ ना पाईआ। सब दा इक्को साचा धर्म, दीन मज़हब ना वंड वंडाईआ। अन्तर रहे कोई ना भरम, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। तुहाडा पुरख अकाल दे घर जरम, जोत अकालण तुहाडी जम्मण वाली माईआ। इक्को साहिब दी लग्गणा सरन, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जिस दे हथ्थ अन्तिम मरन, मर जीवत लए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं की कहोगे एह फूलां राणी, फूलां सेज सुहाईआ। मैनूं की कहोगे एह धुर दी सवाणी, हरि सोहणा कन्त हंढाईआ। मैनूं की कहोगे एह केहड़ी पढ़दी बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी जिस दा भेव कोए ना पाईआ। मैनूं की कहोगे एह केहड़ा पींदी पाणी, जिस दा अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती राह ना कोए समझाईआ। मैनूं की कहोगे एह केहड़ा रखदी हाणी, जिस दी आयू आदि अन्त ना कोए दृढ़ाईआ। मैनूं की कहोगे एह कोई जीवत जीव प्राणी, स्वासां नाल आपणा झट लँघाईआ। मैनूं की कहोगे एह फिरदी चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेस वटाईआ। मैनूं की कहोगे एह बुढ्ढी नढ्ढी कि जोबनवन्ती तरल जवानी, सोहणे रूप विच समाईआ। मैनूं की कहोगे की कहे कथा कहाणी, की गावत राग अलाईआ। जन भगतो जे सच पुच्छो मैं तुहाडे प्रेम मस्तानी, मस्ती विच आपणी ख़ुशी बणाईआ। प्रभू दे दर दी सेवकण अधीनगी विच निमाणी, निरमाणता विच सेव कमाईआ। जे फेर पुँछो ते लख चुरासी दी जाण जाणी, हर घट अंदर वेख वखाईआ। जे फेर पुच्छो मेरा डेरा उपर असमानी, मातलोक विच जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। जे फेर पुच्छो गुर अवतार पैग़म्बरां लवां क़ुरबानी, एह मेरी धार धुर दी चली आईआ।

जे फेर पुच्छो सारी फोल्यो आपणी आपणी मंज़ल रुहानी, प्रभ किरपा सचखण्ड दयां पुचाईआ। तुहाडी काया जूह रहिण नहीं देणी बेगानी, घर साचे दयां वसाईआ। क्यों तुसां सदी चौधवीं उत्ते कीती बड़ी मेहरवानी, मेहरवान हो के भगत दवारे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे गोली जुगिंदर पाणी दा लिआवे ग्लास, किरपा करे बेपरवाहीआ। जन भगतो अज्ज मँगो जो तुहाडी आस, सब दी झोली दयां भराईआ। सब कुछ ओस दे पास, जो तुहाडा मालक पारब्रह्म अख्वाईआ। कदी ना समझयो वस्से उपर आकाश, हर घट अंदर डेरा लाईआ। तुहाडा बाहरों तन चमड़ा नाड़ी हड्ड मास, अंदर निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तुसीं ओस प्रभू दी आत्मा ख़ास, जिस नूं परमात्मा कहि के गुर अवतार पैग़ग्बर गए गाईआ। वेख्यो मन दे अधीन हो के हो ना जाइओ बदमाश, बुद्धी दा डेरा ढाहीआ। क्यों तुहाडा सतिगुरु तुहाडा जन्म करे रास, जो आदि जुगादि दा पिता माईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर अंदर निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दी धार इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे ख़बर आ गई महीना आउण वाला चेत्र, चित्त सब दा देणा बदलाईआ। मैं ढाई घंटे खुल्ले रखांगी नेत्र, लोचण नैण अक्ख खुलाईआ। जो इक हिन्दसा तक्कया उत्ते पेपर, उह सब नूं दयां समझाईआ। किस तरां दुनियां दा अन्तिम हुंदा छेकड़, शरअ दे ज़ंजीर दए कटाईआ। क्यों एह समझयो ना एह परस नवें ज़माने दा मेकर, मेकअप करन दी लोड़ रहे ना राईआ। सतिगुर शब्द चेला सिँघ वांग रेंज टेकर, पैमाने सब दे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे पाल सिँघ आह लै अमृत धार, सब दे उत्ते दे वरसाईआ। आह लै प्रभू दा पिछला इक प्यार, प्रेम रस वखाईआ। फेर तक्कणी नवीं बहार, गुलशन आपणा रंग वखाईआ। जन भगतां पैज संवार, जन्म जन्म दा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। देवत कहिण सदी चौधवीं सानूं अमृत मिलदा सी विच कलश, बरतन पिछला इक वखाईआ। हुण खेल वेख्या उत्ते फ़र्श, आप आपणी खेल जणाईआ। फल्गुण दा पुराणा बरस, जन भगतां भर भर ग्लास मुखड़े रिहा उलटाईआ। अग्गे रहे ना जन्म दी कोई हरस, मरन दा पन्ध मुकाईआ। एह वी साहिब सतिगुर दा तरस, अणमँगी दात झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं जाणा रावी कन्ढी, कन्ढे ते बैठे सारे लैणे उठाईआ। जेहड़ी गुर अर्जन ने मँग सी मँगी, उहदा पर्दा देणा खुलाईआ। गिआरां दिन एह खेल होणी चंगी, जिस दा भेव शास्त्र सिमरत

वेद पुराण अञ्जील क़ुरान कहिण कोए ना पाईआ। जिस हुक्म नाल गुर अवतार पैग़म्बरां उत्ते दीन मज़हब दी लग्गदी रही पाबन्दी, उह भेव देणा खुल्हाईआ । क्यों निशान बणाया तारा चन्दी, मुहम्मद मिली वड्याईआ। उह लेख दस्सणा जेहड़ा बिना अलिफ़ ये तों लिखी गई सन्धी, अक्खरां वाला अक्खर ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच धार इक प्रगटाईआ। सदी चौधवीं कहे जन भगत प्यारे प्रभू दे बच्चे, आपणा बचपन वेख वखाईआ। जो अन्तर निरंतर रहे जपे, हिरदे अंदर ध्यान लगाईआ। दीन दुनी विच हो गए पक्के, नाता इक्को नाल रखाईआ। चार वरन समझ के भाई भैण सके, ज़ात पाती डेरा ढाहीआ। इक्को धूढ़ी टिक्का लावण मस्तक मथ्थे, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। परम पुरख दी धार अंदर रते, रतन अमोलक हीरे आपणा रंग बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। हुक्म कहे मैं धुर दा वड्डा, वड्डे ने वड्डी दिती वड्याईआ। जुग जुग देवां सद्दा, सुनेहड़ा राम दुहाईआ। दो जहानां फिरां भज्जां, चलां वाहो दाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुरु वधावां अग्गा, भेव अभेद खुल्हाईआ। दीन मज़हब वंडां वंडा, एह मेरी बौह चतुराईआ। निरगुण सरगुण खेल खिलावां दग्गा, जगत फ़रेब नाल बंधाईआ। सच प्यार दा बख्शणा रसा, मज़ा इक्को इक चखाईआ। अन्तिम सब दे उत्ते वारद कर के क़ज़ा, लेखा सब दा दयां मुकाईआ। भावें परम पुरख दी चलदे रहे विच रज़ा, अन्त रहिण कोए ना पाईआ । सचखण्ड दुआर सब दी इक्को जगह, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे जो आवे पहली चेत, सुरती चेतन कराईआ। इक्को होवे हेत, हितकारी रूप वटाईआ। दर्शन करना नेत, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। इक इक्क फुल्ल सब ने करना भेंट, दूर नेड़ा ना कोए वखाईआ। साहिब सतिगुर दा नंगा होवे पेट, रूप अचरज नजरी आईआ। दो सहारा होवे टेक, टिक्का नूरी नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। चेत कहे गुरमुखो आउणा बण के चातर, चातरक रूप बणाईआ। तुहाडी औदयां दी प्रेम नाल होवे ख़ातर, सेवा सतिगुर सच कमाईआ। सब नूं सुनेहड़ा अगम्मा मिले पात्र, पत्रका इक जणाईआ। भेव खोल्हे अगम्मा बातन, शब्द करे शनवाईआ। इक इक्क सारे नाल लै के आइओ दातन, एह गोबिन्द पिछली मँग मँगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। फल्गुण कहे जन भगत पंज दे दयो रक्त, बूँद बूँद छुहाईआ। हुण धर्म दा आया वक्त, पिछली गई पढ़ाईआ। खेल वेखणा जगत, दीन दुनी खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां करना खेल उपर अर्श, फ़र्श पए दुहाईआ। भगत

सुहञ्जणा बरस, बरस इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जन भगत पंज इक इक्क बूँद देणा खून, पंज लओ अंगड़ाईआ। जिस नाल धर्म दा बणे मज़मून, अगला मसला हल्ल कराईआ। शब्द दा बणे क़ानूंन, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला दए चुकाईआ। खून कहे मैं करना खून ख़राबा, दीन दुनी खार वखाईआ। भेव चुकाउणा दो दोआबा, आबेहयात कवण वड्याईआ। की धार बणाउणी दुआबा, मालवा माझा जम्मू जम्मा कराईआ। जिस दा सारे लैंदे रहे ख्वाबा, उह ख़बर देणी सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां रखणहारा लाजा, लाजवन्त श्री भगवन्त आदि अन्त इक अख्वाईआ।

✻ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

फल्गुण कहे मेरे नाल आई मेरी बहार, बाहरो बाहर खुशी वखाईआ। मेघला बरसे आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल रुत्त महकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो खुशीआं दा करना इज़हार, सचखण्ड साचे खुशी बणाईआ। किरपा करे आप करतार, क़ुदरत दा क़ादर नज़रीं आईआ। सदी चौधवीं कर बेदार, ग़फ्लत आलस दिती कढ्ढाईआ। सांझा दस्स इक प्यार, मुहब्बत विच जणाईआ। जन भगतां मिले अधार, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। फल्गुण कहे मैं तक्कां राह कद का, पुरातन वेख वखाईआ। सहारा ल्या पुरख अकाल सद का, सदके वारी घोल घुमाईआ। जिस खेल मुकाउणा दीन मज़हब हद्द का, वंडण वंड चुकाईआ। प्रकाश करना इक्को विश्व यद का, याददाशत आपणे नाल बणाईआ। पैंडा मुकाउणा रहिणा अलग दा, चार वरनां जोड़ जुड़ाईआ। रूप धर सूरे सर्बग्ग दा, सो पुरख निरँजण वेख वखाईआ। दरगाह साची खुशीआं वाला दिहाढ़ा अज्ज दा, गुर अवतार पैग़म्बर खुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। फल्गुण कहे मेरी सोहणी रुतड़ी मौली, मौला दिती वड्याईआ। वेला वक्त आ गया हौली हौली, जुग चौकड़ी पन्ध चुकाईआ। मैं उच्ची कूक के पाउणी रौली, दो जहानां दयां सुणाईआ। जिस ने अमृत दिती पाहुली, पहिला लेखा रिहा चुकाईआ। प्रगट हो के उपर धौली, दया धर्म वेख वखाईआ। चार कुण्ट तक्कां रौली, हाहाकार विच दीन दुनी कुरलाईआ। अन्त किसे दी क़ीमत धेला पाई पई नहीं पौली, लेखा लेख ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग

रंगाईआ। फल्गुण कहे मेरा प्रेम दा वेखो फल, फलीभूत दए कराईआ। साहिब दा वेखो बल, बलधारी इक अख्वाईआ। मेरे साहिब दा वेखो दल, शब्द धार इक प्रगटाईआ। मेरे साहिब दा वेखो जल, जो अमृत रस चवाईआ। मेरे साहिब दा वेखो थल, जिथ्थे बालू रेत मिले वड्याईआ। मेरे साहिब दा वेखो पल, कोटन जुग बीतण चाँईं चाँईंआ। मेरे साहिब दा वेखो महल्ल, सम्बल बैठा डेरा लाईआ। मेरे साहिब दा घर तक्को धाम अटल, सचखण्ड दुआरा नज़री आईआ। मेरे साहिब दा रूप वेखो जो हर घट बैठा रल, आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा इक अख्वाईआ। फल्गुण कहे मैं होया फलीभूत, पंज भूतक दए समझाईआ। पुरख अकाल दा इक्को दूत, शब्दी धार वेस वटाईआ। जो लेखा जाणे पंज तत कलबूत, काया काअबा वेख वखाईआ। मेल मिलाए नाल महबूब, मुहब्बत विच जोड़ जुड़ाईआ। चार जुग दे शास्त्र देण सबूत, गुर अवतार पैग़म्बर देण गवाहीआ। जिधर तक्को ओधर मौजूद, हर घट बैठा डेरा लाईआ। जो पिछली करनी करे मनसूख़, अगला हुक्म आप समझाईआ। झगड़ा मुका के हरख दूख, सोग चिन्ता दए चुकाईआ। लहिणा देणा पूरा कर के ईस मूस, मुहम्मद मोहर नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तत ततव सब दा जन्म कर्म करे महसूस, अभुल्ल प्रभू भुल्ल कदे ना जाईआ।

✻ २ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह गुमानपुर ज़िला अमृतसर ✻

सदी चौधवीं कहे मेरी अन्त अख़ीर इक दुआ, दरगाह साची सचखण्ड दुआर आपणा ध्यान लगाईआ। किरपा कर मेरे मेहरवान महबूब ख़ुदा, ख़ुद मालक ख़ालक प्रितपालक तेरी आस तकाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर पैग़म्बरां कर अलविदा, वाहिदा सब दा वेख वखाईआ। इस्म विच जिस्म विच तेरे तों होए फ़िदा, फ़ितरत वेख ख़लक ख़ुदाईआ। सच दुआर परवरदिगार तेरा समझे ना कोए मुद्दा, मुद्दत तों बैठी तेरा खेल वेख वखाईआ। नूर नूर नालों होया जुदा, जुज़ वखरा वखरा वंड वंडाईआ। मेरे साहिब सुल्तान घट निवासी दिलरुबा, मेहरवान तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरे मनज़ूमे ज़बल ज़ाकूल ज़जा ज़ाहरे ज़हूर तेरी रुशनाईआ। नव ज़ले मुज़सते कज़ूमे कवां क़ादरे क़ुदरत तेरी बेपरवाहीआ। चश्मे नज़ूअ गोशे ज़बूह तानिकशे नूज़ा वाहिदे ख़ुदा, नूर नुराने तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा

वर, साहिब सतिगुर मेहरवान महबूब आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं तक्कां चार चुफेरा, नव नौ चार खोज खुजाईआ। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण दिसे अन्धेरा, निरगुण नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। हउमे हंगता गढ़ तोड़े ना कोए करे मेहरा, माया ममता विकार ना कोए मिटाईआ। माया ममता कूड़ी क्रिया सब नूं दित्ता गेड़ा, गेड़े विच दीन दुनी चक्र रही लगाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश बन्ने ना कोई बेड़ा, नईआ नौका नाम नज़र किसे ना आईआ। साढे तिंन हथ्थ काया माटी वजूद उजड़दा दिसे खेड़ा, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच मेल ना कोए मिलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार ढाहे कोई ना ढेरा, तामस तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ। जिधर तक्कां झगड़ा प्या गुरु गुर चेरा, चेला गुर गुर चेला इक रंग ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर दुआर एकँकार घर ठांडे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं चार कुण्ट भज्जी, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। सच धार किते ना लभ्भी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वेखे थाउँ थाईंआ। जलवा जोत ना तक्कया रब्बी, नूरो नूर ना कोए रुशनाईआ। माया ममता विच सृष्टी दृष्टी बद्धी, बंधन सके ना कोए तुड़ाईआ। साध सन्त जगत फ़कीर लभ्भदे गद्दी, गदागार रूप ना कोए वटाईआ। मोह विकारा वहिंदी नदी, शौह दरया पार ना कोए लँघाईआ। सच प्रीत परमात्म नाल ना किसे

९४७ लग्गी, आत्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जिधर तक्कां जीव जंत करदे बदी, बदकारी वेखी थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप ९४७

२१ हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी इक्को ओट तकाईआ। सदी चौधवीं कहे २१

मैं अन्त करां अरदास, बेनन्ती इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बरो सारे दयो साथ, सगला संग संग बणाईआ। दीन दुनी दा वेखो हालात, हालत विगड़ी कूड़ लोकाईआ। साची दिसे ना कोए जमात, पट्टी नाम ना कोए पढ़ाईआ। सदका रिहा ना किसे आयत, शरअ शरायत रही कुरलाईआ। फिरी दरोही कायनात, नौ खण्ड सत्त दीप धीर ना कोए धराईआ। की खेल करे प्रभ शायद, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा तुहाडे नाल अहद, अन्त अख़ीर लेखा दए मुकाईआ। धुर दा हुक्म करे राइज, राज राजाना नूर अलाहीआ। सब दा कलयुग अन्तिम कढ्ढे नताइज, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। करे खेल मालक वाहिद, लाशरीक दया कमाईआ। तुसां अग्गे रहिणा नहीं किसे अलाहिद, नर नरायण आपणी कल वरताईआ। मातलोक विच्चों अन्तिम होणा ग़ाइब, सचखण्ड दरगाह साची जोत विच समाईआ। एह खेल प्रभू दा अजीब होणा अजाइब, अजब निराला आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सदी चौधवी कहे मेरा संदेसा अवतार तेई, त्रैगुण अतीते दयां जणाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद वेखो आपणा हक़ सनेही, साहिब

सुल्तान दयां समझाईआ। जिस कारण नानक चुभ्भी मारी विच बेईं, धार जल जल विच समाईआ। उह किसे ना समझी धुर दी पेशीनगोई, अक्खरां विच लेख ना कोए बणाईआ। दरगाह साची जिस ने तुहाडे नाम दी पाई दरोही, दरोही दरोही तेरा खेल दए वखाईआ। जिस दी समझ ना पावे कोई, कुतबख़ान्यां विच लेख ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे पैग़ग्बरो नानक मिल्या जलधार, धार विच समाईआ । पुज्जा सच दुआर, दरगाह साची सोभा पाईआ। नूर जोत होया उज्यार, जोत जोत विच मिलाईआ। संदेसा दिता अगम्मी सरकार, पुरख अकाल दिता दृढ़ाईआ। जा के वेख जगत संसार, संसारी भण्डारी सँघारी समझ कोए ना पाईआ। दे के नाम अपर अपार, अपरम्पर स्वामी झोली दिती भराईआ। भेव खोल्ह के अगला लेखा दिता विखाल, बिन नैणा नैण उठाईआ। नानक तेरा अन्त गोबिन्द धार लेखे लावीं बाल, बाला नाउँ आपणा आप प्रगटाईआ। इस तों अगला होर अहिवाल, पुरख अकाल दिता दृढ़ाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया वधे जहान, जहालत विच दुहाईआ। साचा रहे ना धर्म ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढ्ढाईआ । कूड़ी क्रिया होए प्रधान, नौ खण्ड पृथ्मी भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग जीव दिसण बेईमान, बेवा रूप होए लोकाईआ। साचा चमके ना कोई भान, अन्ध अन्धेरा ना कोए गवाईआ। जोती जगे ना शमांदान, शमस तबरेज़ नेत्र रो के मारे धाईंआ। चार वरन अठारां बरन करे ना कोई किसे कल्याण, क़लमा कायनात ना कोए दृढ़ाईआ। ओस वेले किरपा करे श्री भगवान, महिबान बीदो नूर अलाहीआ। सब दा लहिणा देणा चुकाए आण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखणहारा चाँईं चाँईंआ। भाग लगाए साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर मकान, सम्बल सोभा इक सुहाईआ। जिस नूं समझे ना कोए इन्सान, बुद्धी तों परे आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा इक सुणावांगा। निरगुण निरवैर निराकार रूप प्रगटावांगा। नाम सति बोल जैकार, भेव अभेद खुल्हावांगा। चार वरन कर प्यार, दूई द्वैती पन्ध मुकावांगा। कूड़ी क्रिया मेट अंध्यार, अन्ध अज्ञान गवावांगा। साचा मन्दिर कर उज्यार, ज़हूर इक्को इक वखावांगा। शब्दी धार कर गुफ्तार, गुफ्त शनीद राग अलावांगा। धरनी धरत धवल धौल पा सार, महासार्थी हो के रथ चलावांगा। लहिणा देणा पूरा कर गुरु अवतार, पैग़ग्बरां झोली मात भरावांगा। सतिजुग सच कर उज्यार, सति सति डंका इक वजावांगा। धुर दा हुक्म मिले सच्ची सरकार, सिर सिर सब दे आप मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमावांगा। सच करनी कार कमाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। मेहरवान वेख वखाएगा।

सदी चौधवीं वेस वटाएगा। रूप अनूपा आप प्रगटाएगा। शाहो भूपा खेल खिलाएगा। सति सरूपा सोभा पाएगा। पंज तत भूता रंग रंगाएगा। वेखे चारे कूटा, दह दिशा फोल फुलाएगा। सति धर्म दा ला के बूटा, अमृत सिंच हरा कराएगा। नाम खुमारी दे के हूटा, दो जहानां पार कराएगा। कलयुग कूड़ रहिण ना देवे झूठा, सच सुच उपजाएगा। नानक सतिगुर शब्द अन्तिम आपे आप होवे तुट्ठा, दूजा नज़र कोए ना आएगा। भगत सुहेला आत्म धार रहे कोई ना तुट्टा, विछड़यां मेल मिलाएगा। सन्त सुहेला रहे कोई ना सुत्ता, सुरती शब्दी आप जगाएगा। गुरमुख बणा के आपणा सुता, सोहणी गोद उठाएगा। गुरसिख तृष्ना रहे कोई ना भुक्खा, आत्म तृप्त आप कराएगा। सच दुआर दा दे के सुखा, सुखआसण आप टिकाएगा। जिस वेले गुर अवतार पैग़म्बरां पैंडा मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताएगा। सतिजुग साचे कोई ना पीवे हुक्का, नड़ी मुख ना कोए लगाएगा। चार वरन होवे कोई ना दुक्खा, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मेल मिलाएगा। बिना सतिगुर शब्द तों रहे कोई ना उच्चा, ऊँच नीच दा डेरा ढाएगा। पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब स्वामी बणे सुच्चा, सुच संजम इक समझाएगा। पंज तत पुतला मानव मानुखा, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाएगा। सदी चौधवीं कहे मेरा भेव खुल्हा दे प्रभ, हरि करते वड वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दी यद्द, बंस सरबंस रहे सुहाईआ। नाम खुमारी देवे मदि, मधुर धुन राग सुणाईआ। दीपक दीया जाए जग, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। त्रैगुण मेटे अग्ग, हउमे रोग गवाईआ। जगत वासना मेटे हद्द, हद्द आपणी दए समझाईआ। जिथ्थे रहिणा ना पए अलग, जोती जोत विच समाईआ। झगड़ा मुक जाए मास नाड़ी हड्ड, ततव तत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी सूरा सर्बग्ग, साहिब सुल्तान मर्द मर्दान नौजवान मेहरवान महबूब इक्को नज़री आईआ।

९४९
२१

❊ ३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ सवरन सिँघ दे गृह पिंड गुमानपुर ज़िला अमृतसर ❊

पुरख अकाल कहे उठ शब्द सुत सूरबीर योद्धे, बलधारी लै अंगड़ाईआ। तुध बिन सृष्टी कोई ना सोधे, सूझ समझ ना कोए बदलाईआ। चार जुग दे वेखो जञ्जू बोदे, धोती मस्तक टिक्के फोल फुलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां वेखे अरदासे

सोधे, दुआ विच खुदा अग्गे सीस निवाईआ। जिस कारण रखदे गए रोज़े, राज़क रिज़क रहीम मनाईआ। गाउँदे आए सलोके, धुर दा क़लमा नाम कर शनवाईआ। जगत जहान तकदे आए मौके, वक्त सुहञ्जणा फोल फुलाईआ। मन बुद्धी तों परे सोचदे रहे सोचे, अनभव दृष्टी दिती दृढ़ाईआ। जिस साहिब दा दर्शन रहे लोचे, निज लोचण अक्ख खुल्हाईआ। जिस दी खोज कोई ना खोजे, सदी चौधवीं भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक प्रगटाईआ। शब्द गुरु उठ बलवान, हरि करता आप उठाईआ। चार जुग दा वेख विधान, जो गुर अवतार पैग़म्बर आए बणाईआ। दीन मज़हब वेख ईमान, इस्म जिस्म फोल फुलाईआ। की संदेसा देवे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील क़ुरान बाईबल तुरैत कहि के की सुणाईआ। शब्द धार करे की वख्यान, गुरु ग्रन्थ की वड्याईआ। की निरगुण सरगुण मारे बाण, अणयाला तीर चलाईआ। की खेल ज़िमीं असमान, मण्डल मण्डप वेख वखाईआ। की गुर अवतार पैग़म्बरां भविख्तां दिता फ़रमान, फ़ुरने अंदर शब्दी फ़ुरना इक सुणाईआ। किस बिध सृष्टी होवे कल्याण, क़लम कवण मिले वड्याईआ। कवण उत्तम नाम, जो रसना जिह्वा बत्ती दन्द गाईआ। किस बिध साहिब मिले सुल्तान, हरि करता नूर अलाहीआ। किस बिध अमृत रस मिले पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। किस बिध मंज़ल होवे आसान, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। किस बिध सचखण्ड दुआर मिले मकान, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे तेरे नाम अनोखे, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान वेखे पोथे, काग़ज़ क़लम स्याही अक्खरां वड वड्याईआ। बुद्धी विच दीन दुनी सारी घोखे, निरगुण धार तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। करे प्रकाश ना निर्मल जोते, अन्ध अन्धेर ना कोए गवाईआ। कर्म कुकर्म ना जावण धोते, दुरमति मैल ना कोए सफ़ाईआ। दुनीदार वेखे रोते, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सच दुआर कोई ना सोचे, बुध्ध बिबेक ना कोए बणाईआ। बाहरों काया माटी भाण्डे दिसदे पोचे, अन्तर पापां भरी लोकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां नाल हुंदे धोखे, मुरीद मुर्शद मिलण कोए ना पाईआ। कूड़ कुकरमी वेखे बहुते, सच धर्म ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, मेहर निगाह इक उठाईआ। पुरख अकाल तेरा जपदे अल्ला वाहिगुरु राम, जै जै नाअरे अनक लगाईआ। सिफ्तां वाली करन कलाम, क़लमे कायनात सुणाईआ। अन्तर मिले ना किसे धुनकान, अनादी नाद ना कोए शनवाईआ। दासन होए ना धुर अमाम, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। दीनां मज़हबां विच सारे कीते ग़ुलाम, ग़ुरबत विच लड़ाईआ। हिरसा वंडया नाल इन्सान, इन्सानियत

हथ्थ किसे ना आईआ। मन कल्पणा सारे कुरलाण, ममता मोह जगत हल्काईआ। क्षत्री शरअ बणी शैतान, शरीअत करे लड़ाईआ। तेरा दिसे ना धर्म निशान, धर्म दुआरा ना कोए सुहाईआ। कूड़ी क्रिया ना मिटे जहान, जहालत अंदरों ना कोए कढ्ढाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म होवे ना किसे ज्ञान, तूं मेरा मैं तेरा धुर दा राग ना कोए गाईआ। माया ममता पींदे जाम, अमृत रस ना कोए चखाईआ। शब्द गुरु कहे मेरे मेहरवान, महबूब तेरी सरनाईआ। हुक्म दे दे हुक्मरान, हकूमत दीन दुनी दयां बदलाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग करां सच्चा इंतज़ाम, बन्दोबस्त आपणे हथ्थ रखाईआ। पिछली सब दी करनी कर नाकाम, नाउँ निरँकारा तेरा इक्को इक सुणाईआ। भाग लगा के काया साढे तिन्न हथ्थ ग्राम, गृह मन्दिर दयां सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच मेला मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे आत्म परमात्म जोड़ां रिश्ता, नाता इक्को इक बणाईआ। लेखा रहे ना किसे हथ्थ फरिश्ता, जबराईल मेकाईल असराईल असराफ़ील रहे ना कोए वड्याईआ। जो चार जुग प्रभ खेल कीता तूं आहिस्ता आहिस्ता, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। जिस दा लहिणा देणा चुकाउणा दीदा दानिस्ता, गुर अवतार पैग़म्बरां झोली पाईआ। भेव रहे ना स्वर्ग बहिश्ता, बहिरहाल दयां जणाईआ। जो आसा रखी राम वशिष्टा, विषयां तों परे दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर फ़रमाना अगम्म सुणाईआ। शब्द गुरु कहे हुक्म दे दे हुक्मरान, हकूमत दो जहानां दयां बदलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट निशान, निशाना धर्म दयां झुलाईआ। चार वरन अठारां बरन होवे इक ज्ञान, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। दीन मज़हब मेट तमाम, पंज तत इन्सान दयां वखाईआ। सब दे अन्तर इक्को राम, इक्को अल्ला वाहिगुरु नूर अलाहीआ। इक्को क़लमा सारे गावण कलाम, इक्को ढोला राग अलाईआ। इक्को मन्दिर होवे हक़ मकान, जिथ्थे मिले महबूब नूर खुदाईआ। सच धर्म दा उठावां अक़दाम, क़दीम दा लेखा दयां मुकाईआ। आत्म ब्रह्म होवे पछाण, भेव अभेदा दयां खुलाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्ध अज्ञान, ममता मोह रहे ना राईआ। तूंही तूंही सारे गाण, तुध बिन दूजा अवर ना कोए सहाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह सुल्तान, वाली दो जहान अख्वाईआ। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, हरि पुरख निरँजण तेरी शरनाईआ। एकँकारे दे दान, आदि निरँजण जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करते किरपा कर महान, श्री भगवान तेरे हथ्थ वड्याईआ। पारब्रह्म कर प्रधान, शब्द गुरु सीस निवाईआ। ब्रह्म दी करां जगत पछाण, लख चुरासी खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर करदे गए कल्याण, क़लमा कायनात सुणाईआ। सब दा लेखा मुकावां आण, सदी चौधवीं रहिण ना पाईआ। सतिजुग सति धर्म सच होवे प्रधान, प्रधानगी आपणे हथ्थ रखाईआ।

शरअ दा रहे ना कोए बेईमान, शैतान अंदरों दयां कढ्ढाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक शाह पातशाह शहिनशाह श्री भगवान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा भगत दुलारा नौजवान, मर्द मर्दाने तेरे अग्गे सीस निवाईआ।

❋ ३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ हरनाम सिँघ दे गृह पिंड गुमानपुर ज़िला अमृतसर ❋

सदी चौधवीं कहे प्रभ दा इंतज़ार करदी रावी, बाल्मीक रवी ध्यान लगाईआ। जिस दा लेखा नाल गुर अर्जन वाली भावी, भावना दीन दुनी वेख वखाईआ। जिस ने भगत भगवान दी तराज़ू करनी सावीं, कंडा इक्को तोल तुलाईआ। दीन दुनी ते होणा हावी, हौक्यां विच वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां सद्दणा बिखड़े राहवीं, तबकां लोकां पन्ध मुकाईआ। आप बण के बहणा बावी, बाबा आदम सीस निवाईआ। पुरख अकाल खेल करना नाल चावीं, चाउ घनेरा इक दरसाईआ। सन्त सुहेले उठाउणे पकड़ बाहवीं, हलूणा आपणा धुर दा नाम लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रौला पैणा वांग कावीं, काग काग वांग कुरलाईआ। माण रहिणा ना शहिर गरावीं, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। इल्म धार होणी नथावीं, सच धार ना कोए वखाईआ। विछोड़ा दिसे पुत्तां मावीं, पिता पूत ना गोद सुहाईआ। लहिणा चुक्कणा तेग़ बहादर पातशाह नावीं, जो अन्त गया सुणाईआ। झगड़ा पैणा दो थावीं, पर्दा दे उठाईआ। जगत वहिण वेखणा दर दरयावीं, थल रेता नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दर आपणा इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे राह तक्के रावी कन्ढा, कन्ढी बैठा ध्यान लगाईआ। गुरमुखां दे कोल होणा हथ्थ विच इक इक्क मंडा, निमक नाल जोड़ जुड़ाईआ। जोड़ बणे प्याज़ गंढा, वड्डा छोटा ना कोए वखाईआ। सब ने खाणा नाल दन्दां, दाहड़ थल्ले ना कोए दबाईआ। मुखों गाउणा सोहँ छन्दा, ढोला इक अलाहीआ। नाल बरतन रखणा सागर गंगा, किशन सिँघ हथ्थ उठाईआ। विंगा टेडा होवे डंडा, पंज गुरमुख मोढ्ढयां उत्ते टिकाईआ। गोबिन्द धार होवे खण्डा, खड़ग नाल सुहाईआ। तेली दे ताड़े दा होवे तन्दा, ढाई हथ्थ विच लम्बाईआ। बिना कुंजी तों होवे जिंदा, धात लोहा सोभा पाईआ। पंजां गुरमुखां मस्तक लाया होवे बिन्दा, वृंदावन दा लेखा वेख वखाईआ। इक गुरसिख बणया होवे छिन्दा, सतिगुर गोदी विच सुहाईआ। सब

ने पाणी पाउणा उत्ते पिंडा, वस्त्र तन ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक सुणाईआ। रावी कहे पंज वेरी सब ने कहिणा मुखों राम, धुर दे राम तेरी दुहाईआ। पंज वेरां मुखों कहिणा काहन, धुर दे काहन तेरी सरनाईआ। पंज वेरीं मुखों कहिणा धुर दे अमाम, मैहन्दी तेरी रंगली नज़री आईआ। पंज वेरी मुखों कहिणा सतिनाम, नानक निरगुण नाल रलाईआ। पंज वेरी मुखों वाहिगुरु करनी कल्याण, फ़तिह ज़ोर ज़ोर बुलाईआ। पंज वेर जैकारा लाउणा सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हथ्थ छाती उत्ते अटकाईआ। पंज वार प्रदक्खणा कर के सारयां करनी प्रणाम, चक्र फ़क्कर वाला बणाईआ। पंज वेरां सब ने उँगलीआं पाउणीआं विच कान, दोवें हथ्थ टिकाईआ। पंज वेरां सब ने मुखों मँगणा प्रीती दान, निउँ निउँ ससि निवाईआ। पंज वार उपर प्रकाश तक्कणा सूर्या भान, निगाह असमान उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे रावी कन्ढे पैणी ठंड, हरि ठंडक इक वरताईआ। गुरमुखां कन्नी नाल कन्नी लैणी गंढ, कल्ला रहिण कोए ना पाईआ। सब ने घुट्ट के रखणे दन्द, मुखों बोल ना कोए सुणाईआ। अक्खां मीट के लैणा अनन्द, प्रभ अमृत दे बरसाईआ। हुक्म इक्को लैणा मन्न, मनसा पिछली रहे ना राईआ। फेर सब ने कहिणा धन्न धन्न, धन्न तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो तुसीं मेरे चन्न, धन्न जणेंदी माईआ। फेर नाल खड़िआ खाणा अन्न, मंडा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे जुग चौकड़ी रही रोंदी, हन्झूआं नीर वहाईआ। खुशी विच ना रही सौंदी, सुखआसण ना कोए टिकाईआ। वहिणां विच रही भाउँदी, भवजल विच दुहाईआ। औंसी रही पाउँदी, जगत वंड वंडाईआ। ढोले रही गाउँदी, जुग जुग नाम बदलाईआ। खेल तकदी रही हउमे हउँ दी, हँ ब्रह्म ना कोए जणाईआ। कोटन कोटि दुनियां मेरे विच रही नहाउँदी, इश्नान जगत वाला वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे रावी कन्ढा इक उडीक, वेला वक्त इक ध्यान लगाईआ। जिस दी नेड़े आई इक तारीक, तवारीख दए बदलाईआ। जन भगतां मिले भीख, भिच्छया दए वरताईआ। इक नाल लोहे दी रखणी ज़रूर सीख, दोवें मुख तिक्खे कराईआ। सदी चौधवीं दा नाल होवे तवीत, अगला भेव दए खुल्हाईआ। एह मेरी आसा मनसा उम्मीद, वेखे मेरा माहीआ। जन भगतो करां ताकीद, सब नूं दयां सुणाईआ। किसे सौणा नहीं ग़फ्लत नींद, हलूणिआं नाल उठाईआ। मेरे हुलारिआं वाली पींघ, ज़िमीं असमानां झूला दए झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ।

सदी चौधवीं कहे रावी कन्ढे कोल होवे इक अस्त्र, जगत रूप वखाईआ। प्रभू दा शब्दी धार होवे वस्त्र, तन वजूद सोभा पाईआ। सब ने पढ़ना धुर दा मन्त्र, तूं ही तूं राग अलाईआ। लेखा वेखणा अन्तर, अन्तश्करन वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे हरिजन रहिणे नहीं बगले बप्पड़े, गुरमुख हँस बणाईआ। पढ़ने नहीं पैणे पत्रे, वरक्यां ना कोए उलटाईआ। जन्म मरन दे मेटणे ख़तरे, ख़तरा रहे ना राईआ। पहुंचणा ओस पतणे, जिथ्थे हरि गोबिन्द ध्यान लगाईआ। हरिजन हथ्थों जाण मूल ना सक्खणे, वस्त हथ्थो हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखणा चारों कूट, दह दिशा ध्यान लगाईआ। रावी कन्ढा ओह मज़बूत, जिस दी धार ना कोए समझाईआ। पुरख अकाला दए सबूत, चार जुग दा भेव खुल्हाईआ। हरि संगत होए मौजूद, कन्ढी वाले डेरा लाईआ। गोली दा लाल रंग दा होवे सूट, नीली बिन्दी मथ्थे विच लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे रविदास ने बन्न्ह के आउणा नीली पग्ग, गुरमुख आपणा रंग बदलाईआ। तीर कमान रख्या होवे उपर कंध, बग़ल विच लटकाईआ। नौ गुरमुख होण संग, अग्गे पिच्छे चलण चाँईं चाँईंआ। भाग रहे ना किसे मंद, मंदभागां दए वड्याईआ। कक्खां दी सेज बणाउणी पलँघ, आसण इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे रावी सुहाउणा तट, तुट्टयां नाल मिलाईआ। गुरमुख सारे बणणे भट्ट, ढोला धुर दा धर्म धार गाईआ। इक दूजे दे उत्तों सारयां जाणा टप्प, वारी वारी लँघाईआ। माण ताण दा नाता तोड़ना पक्क, हलीमी ग़रीबी समझाईआ। जगत माया रहे ना तप, तृष्ना देणी गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं खेल करना विच पाणी, जल जल धार वहाईआ। मेरी गोली काने दी बणा के लिआवे मधाणी, सिरी निरी काना नज़री आईआ। मैं सोहणी बणां सवाणी, सुघड़ सुचज्जी सोभा पाईआ। छाण के वेखां चारे खाणी, लख चुरासी सोभा पाईआ। फेर मैनूं सारे कहिण महाराणी, घर शहिनशाह सोभा पाईआ। मेरी सब तों तरल जवानी, जोबन ज़िबह ना कोए कराईआ। जन भगतां पिच्छे कटां जगत बदनामी, बदीआं दा डेरा ढाहीआ। जन भगतो तुहाथों इक इक्क रुपय्या उथ्थे लैणी सलामी, पाणी विच चरण टिकाईआ। नाले ओह लिखाउणी बाणी, जो ख़ास गोबिन्द मँग मँगाईआ। सब नूं इक इक्क बूँद प्याउणा पाणी, चुल्लीआं नाल उठाईआ। अगली दस्सूं फेर कहाणी, जिस दा भेव ना कोए सुणाईआ। धुर दा हुक्म होणा ऐलानी, औध रही विहाईआ। मैं फिरना उपर असमानी, ज़िमीं असमानां खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे चार जुग दा दीवानी, झगड़े पिछले रिहा मुकाईआ।

✻ ३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सदी चौधवीं कहे सब दा मुख होणा वल उत्तर, पूरब पच्छिम दक्खण खेल खिलाईआ। किसे दे गोदी कुच्छड़ चुक्या ना होवे पुत्तर, इकल्ला इकल्ला नज़री आईआ। अंदर भाउ ना होवे दुत्तर, दुतिया भाओ ना कोए बणाईआ। सारे प्रभ दा करन शुकर, शुक्रिए विच सीस निवाईआ। कर के कौल ना जाणा मुकर, इक़रार देणा तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे मैं गुर अवतार पैग़म्बरां नाल मिल के करां स्वागत, सभा धर्म धार बणाईआ। प्रभू मेरी झोली पाउणी मेरी करनी कीती दी लागत, लेखा लेखे विच्चों चुकाईआ। सब दी बदल देणी आदत, तेरे हथ्थ वड्याईआ। मैनूं सांझी दस्सणी इबादत, जो भगतां दिती दृढ़ाईआ। मैं खावां अगम्म निआमत, बिन रसना रस चखाईआ। कूड़ी क्रिया ना रहे अलामत, इल्म आलम ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे सुण रावी सखीए, अंक सहेली दयां जणाईआ। जंगल बेल्यां दे विच वसीए, टिल्ले पहाड़ां ठोकर खाईआ। उच्चे थाउँ नीवें नूं नस्सीए, भज्जीए वाहो दाहीआ। किस औकड़ विच फसीए, फाँसी ना कोए कटाईआ। उठ वेख जिस प्रभ दे चरणां हेठां वसीए, जुग जुग सेव कमाईआ। उस नूं वखरा रहिणा दस्सीए, दर्दां नाल जणाईआ। निउँ निउँ चरणां ढठ्ठीए, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। सच दा लाहा खट्टीए, मिले माण वड्याईआ। धूढ़ी चरण चट्टीए, दुरमति मैल गवाईआ। तन काया चोली रत्तीए, रंग अगम्म रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे ढाई गज़ लिआउणा खद्दर, ख़ादम सेव कमाईआ। मेरी पुराणी सध्धर, आसा विच रखाईआ। जिस दीन दुनी देणी बदल, बदला दए चुकाईआ। ओह साचा करे अदल, इन्साफ़ इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं कहे ढाई सेर भुन्ने होवण चने, गोबिन्द आस जणाईआ। इक सौ इक भन्ने होवण गन्ने, मेला सिँघ हथ्थ छुहाईआ। जन भगतो मुखों कहिणा साहिब साडीआं मन्ने, साडी चले रज़ाईआ। की होया जे माल चराया धन्ने, तुहानूं रस दए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे रावी कन्ढे नाल लिआउणा खुरपा, जो तत्ती

रेत हिलाईआ। मैं वेखण जावां तुरकां, तुरत आपणा क़दम उठाईआ। जगत जहान बणाउणा मुर्दा, मरिआं ना कोए जिवाईआ। परदा लौहणा सच्चे सतिगुर दा, गुरु गुरदेव इक अख्वाईआ। साचा मन्त्र जाए फुरदा, फ़ुरने बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे मेरा खेल होणा अनडिठा, नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। प्रभ दा भाणा मन्नणा मिठ्ठा, सिर सके ना कोए उठाईआ। सब दा लेखे वाला चिठ्ठा, हरि करता फोल फुलाईआ। जन भगतो नाल लिआउणा इट्टा, इंच चार चार सोभा पाईआ। उस दा इक पासा कीता होवे चिट्टा, डब्ब रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद दए माण वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे सब ने हिरदे होवण सोधे, पुनीत रूप वटाईआ। रावी दा कन्ढा प्रभ दी बैठणा गोदे, गोदावरी दा लेख मुकाईआ। पंज कौडीआं पंज नाल लिआउणे घोगे, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। रावी कहे मैं वेखणा आपणा राम, रमईआ राम दुहाईआ। तक्कणा धुर दा काहन, घनईआ वेख वखाईआ। मिलणा ओस अमाम, जो अमलां तों बाहर डेरा लाईआ। वेखणा खेल तमाम, किस बिध तमअ दए गवाईआ। झगड़ा मेटे काया माटी चाम, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन हो के भाग हिस्सा झोली देवे पाईआ।

✻ ७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

रावी कहे मैं रोवां मार के भुब्बी, बिन नैणां नेत्र नीर वहाईआ। कलयुग जीवां मूर्ख होई बुद्धि, बिबेक नज़र कोए ना आईआ। मेरा वहिण वहे चहुं जुगी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। मैं भज्जी नठ्ठी कुद्धी, चली वाहो दाहीआ। वहिणां विच वहिण बण के रुझी, आपणा झट लँघाईआ। इक अगम्मी आवाज़ सुणी उच्ची, उच्च अगम्म अथाह दिता दृढ़ाईआ। याद कर लै अर्जन वाली रुत्ती, शहादत दे भुगताईआ। मैं उबड़ वाही उठी, नैण ल्या खुल्हाईआ। मेरी खुल्ही होई गुत्ती, मेंढी सीस ना कोए गुंदाईआ। पैरीं पा ना सकी जुत्ती, अंगी अंग ना कोए लगाईआ। मैं वेख के होई दुखी, दुखड़ा रिहा सताईआ। भाग लग्गा ना मेरी कुखी, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। बौहड़ी कलयुग गई लुट्टी, लुटेरे पए थाउँ थाईंआ। जगत विकार फड़ फड़ कुट्टी, अंगहीण दिता बणाईआ। मेरी धार प्यार टुट्टी, टुट्टयां गंढु ना कोए पुआईआ। हुण वेखां केहड़ी गुठी, चारे कुण्टां फोल फुलाईआ। मैं कर कर थक्की बुत्ती, बुतख़ान्यां पई दुहाईआ। मेरे किनारे राख लिआउणी

इक मुट्ठी, वध्ध घट्ट ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे मैं रोवां मारां कूकां, कूक कूक सुणाईआ। आपणा हार श्रृंगार फूकां, सेज सुहञ्जणी ना कोए वड्याईआ। साड़ां आपणयां सूटां, तन श्रृंगार ना कोए बणाईआ। वेखां चारे कूटां, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण अक्ख खुल्हाईआ। जां वेख्या जगत जहान झूठा, सच्चा संगी ना कोए अख्वाईआ। सच पुच्छो मेरे विच गुर अर्जन ला के गया अंगूठा, अन्त अख़ीर निशान बणाईआ। बिना भगतां तों धर्म दा रहे कोई ना बूटा, सिम्मल रूप जगत लहराईआ। सच नाम दा लए कोई ना झूटा, मूँह दे भार डिग्गे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। रावी कहे मैं वेखां दीन दुनी अन्धी, अन्धलापन बणाईआ। लग्ग के झूठे धंदीं, धन्न दौलत कीता हल्काईआ। आसा हो गई मंदी, मनसा मोह हल्काईआ। दुहागण हो गई रंडी, हरि कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। सच प्रीत कोए ना गंढ्ढी, टुट्टी गंढु ना कोए पुआईआ। सब दी पिड्ड दिसे नंगी, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मैं मँग रही मँगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। मेरे लई लिआउणी इक कंघी, रंग लाल वेख वखाईआ। इक गुरमुख बणया होवे भंगी, भंग पी के चले चाँईं चाँईंआ। इक ने मच्छी नेज़े उत्ते होवे टंगी, उच्ची उच्ची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। रावी कहे मैं रो के मारां भुब्बां, बौहड़ी कर दुहाईआ। प्रभ दा समझे कोई ना मुद्दा, मुद्दत दा भेव ना कोए खुल्हाईआ। रोंदी वेखी बसुधा, धरनी दए दुहाईआ। कलयुग कूड़ा वेख्या जुगा, जुगती ना कोए जणाईआ। गुरमुख विच होवे उग्घा, जिस उग्घण आथण मिले वड्याईआ। बाकी प्रभ दे नाम दा खांदे भुग्गा, कलयुग सन्त कूड़ दुहाईआ। मेरा मन नहीं लगदा उका, रो के दयां सुणाईआ। साहिब सुल्तान सीस झुका, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, मेरा आ के मेटे दुक्खा, दुख्यारन हो के रही सुणाईआ।

❊ १० फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ महिन्दर सिँघ दे गृह पिंड दईआ ज़िला गुरदासपुर ❊

सदी चौधवीं कहे मैं भिखारन हो के मँगदी, दरगाह साची सचखण्ड दवारे झोली डाहीआ। मैं सूरत तक्कां अगम्मी ओस गोबिन्द चन्न दी, जो निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस दी खुशी आदि अन्त बन्द बन्द दी, बन्दगी विच मशंदगी रहिण कोए ना पाईआ। जिस ने धरनी धरत धवल छड्डी पुर अनन्द दी, धुर दे अनन्द विच गया समाईआ। उस दी खेल

९५७
२१

वेखणी लोकमात चार कुण्ट जंग दी, जंगजू बहादर आपणी दया कमाईआ। सृष्टी दृष्टी जगत हँकारी वेखणी हँ दी, हँ ब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां रोज़ बरोज़, शबे शब ध्यान लगाईआ। पुरख अकाला करे चोज, चोजी प्रीतम नूर अलाहीआ। चार जुग दा तक्के जोग, जगत जुगीशर खोज खुजाईआ। दीन दुनी दा वेखे रोग, हउमे हंगता विच दुहाईआ। चिन्ता ग़म तक्के सोग, लख चुरासी फोले थाउँ थाईंआ। आत्म परमात्म होया विजोग, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। साची चुक्के कोई ना गोद, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। धुर संदेसा देवे कोई ना बोध, बुद्धी तों परे ना कोए पढ़ाईआ। आत्म रस ना भोगे भोग, भसमड़ रूप ना कोए वटाईआ। नाम संदेसा जणाए ना कोए सलोक, सोहला धुर ना कोए अल्हाईआ। झगड़ा प्या चौदां लोक, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। सच नाम दी मिले कोई ना मौज, मजलस हथ्थ ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं कहे चार जुग भज्जी नठ्ठी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर वेखे साध सन्त फ़कीर हठी, जती सती खोज खुजाईआ। नाम भण्डार जगत वंड हिस्सयां वाली वेखी पत्ती, चार वरन अठारां बरन खोज खुजाईआ। मन कल्पणा चार कुण्ट दह दिशा हर हिरदे वेखी तत्ती, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कल्पणा पवित्र रहिण ना दिती मत्ती, बुध्ध बिबेक ना कोए कराईआ। चार वरन अठारा बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप खेल वेख्या अक्खीं, अक्खर वक्खर भेव ना कोए खुल्हाईआ। सच धार दी सच दुआर बणी कोई ना सखी, आत्म परमात्म गोपी काहन, रूप ना कोए बणाईआ। सति धर्म दी पत रिहा कोई ना रखी, रखक रक्ख्या करे ना थाउँ थाईंआ। जगत विकार हँकार विभचार दी वहिंदी नदी, वहिण वहिणां विच्चों वहाईआ। चार जुग दी मुकण लग्गी गद्दी, गदागर होवे ख़लक खुदाईआ। लहिणा देणा मुकण लग्गा चौधवीं सदी, सदमे विच पए दुहाईआ। आसा मनसा ख्वाहिश रहे किसे ना दब्बी, गुर अवतार पैग़म्बरां मनसा पूर कराईआ। वरते हुक्म खेल अलाही रब्बी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी कार कमाईआ। दीन मज़हब दी पार करावे हद्दी, हद्द हदूद हक़ महबूब इक्को दए जणाईआ। जिस दी जोत बिन वरन गोत अगम्म अथाह जगी, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। हँस बुद्धी बणाए कग्गी, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। साचे नाम दी दे के मधी, मधुर धुन इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वेखां नूर नुराना, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस ने बदल देणा ज़माना, ज़ाहर ज़हूर दया कमाईआ।

धर्म झुलाए इक निशाना, नौ खण्ड वज्जे वधाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे माणा, चार वरनां रंग रंगाईआ। साचे नाम दा दस्स पैमाना, पैमाइश आपणे विच प्रगटाईआ। धुर दा दे के नाम निधाना, ज्ञान नेत्र दए खुल्हाईआ। हंगता गढ़ तोड़ अभिमाना, निवण सु अक्खर इक दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म जणा के काहना, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। साचा मन्दिर सुहा मकाना, साढे तिन्न हथ्थ करे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाणा, गहर गम्भीर पर्दा दए उठाईआ। अमृत रस निझर झिरना दे के पीणा खाणा, मन कल्पणा कूड़ गवाईआ। मुहब्बत विच हो के मेहरवाना, महबूब आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे मालक इक श्री भगवाना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जिस दे गुर अवतार पैग़ग्बर होए गुलामा, बरदे बण बण सीस निवाईआ। ओस दा वज्जणा इक दमामा, जिस नूं मन्नया मैहन्दी अमामा, अमलां तों रहित नूर अलाहीआ। ओह पहर के आपणा जामा, जानणहार नूर अलाहीआ। लहिणा देणा चुका के ज़िमी असमाना, समां अन्तिम दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे जीव जंत जहाना, आदि अन्त जुगा जुगन्त जुग करता आपणा हुक्म वरताईआ।

✻ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ बंता सिँघ दे गृह पंज गराईआं ज़िला गुरदासपुर ✻

तेई अवतार कहिण चार जुग दे चुकीए काग़ज़, दो जहानां बिन अक्खरां लेख बणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहे उम्मत दी वेखीए साज़श, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फोल फुलाईआ। दस गुर कहिण मन कल्पणा वेखीए साज़श, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश फोल फुलाईआ। सतिगुर शब्द कहे भगत सुहेले तक्कीए आजज़, गुरमुख गुर गुर वेख वखाईआ। सदी चौधवीं कहे कवण करे हक़ इबादत, नाम कलमा धुर दा नग़मा अगम्म गाईआ। कूड़ी क्रिया बदल के आदत, सच सुच्च समझाईआ। अक़ल बुद्धी तों परे समझ लिआक़त, सुरती शब्द नाल मिलाईआ । उस दी देणी सर्ब शहादत, अन्त कन्त भगवन्त दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता बेपरवाहीआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण दीन दुनी दी वेखीए अन्तरगत, इष्ट देव गुरदेव स्वामी खोज खुजाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पढ़दयां क्यों विगड़ गई मत, मनमति विच सृष्टी दृष्टी होई हल्काईआ। पुरख अबिनाशी घट निवासी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिले ना किसे समरथ, आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल ना कोए मिलाईआ। माया ममता मोह विकार

हँकार विभचार कुकर्म भ्रष्टाचार सब नूं पाई नक्थ, साध सन्त जीव जंत बच्या नज़र कोए ना आईआ। सदी चौधवीं नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप हर घट अंदर उबले रत्त, अमृत मेघ आबेहयात जाम ना कोए प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण चलो वेखीए जगत जहालत, बुध्ध बिबेक ना कोए बणाईआ। साचा नाम नज़र ना आवे धुर दी निआमत, ख़ाली भाण्डे काया कासे नज़री आईआ। जिस कूड़ क्रिया दी कर के आए ममानत, माया ममता मोह विकार हँकार डेरा ढाहीआ। उह कलयुग कूड़े सब नूं कीती सिख़ावत, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश घर घर दिती वरताईआ। जिधर तक्कीए अल्ला राम वाहिगुरु दे नाम दी पई अदावत, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई प्रभ दे नाम तों करन लड़ाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत पुतला वेख बनावट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण की होया दीन दुनी दी बुद्धि, आक़ल अक़ल ना कोए जणाईआ। नीती दिसे किसे ना सुधी, बसुधा रो रो दए दुहाईआ। पीर पैग़म्बरो अन्तिम सब दी औध मुकी, अगला लेखा अवर ना कोए बणाईआ। जेहड़ी रमज़ शब्द इशारे विच दस्स के आए गुज्झी, भविख्तां विच लिख्तां विच इक्को राह जणाईआ। ओह धार निरगुण निरवैर निराकार निरँकार होवे ऊग्घी, परवरदिगार सांझा यार करे रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया माटी तन वजूद वेखे झुग्गी, परदयां अंदर पर्दा आप फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करनी कार कमाईआ। तेई अवतार कहिण प्रभ लेखा देवणहारा दस्ती, दस्तबरदार करे लोकाईआ। कूड़ी क्रिया लौहण वाला मस्ती, गढ़ हँकार दए तुड़ाईआ। सचखण्ड निवासी खेल करे प्रीतम अर्शी, ब्रह्म पारब्रह्म आपणा भेव खुल्हाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बर कहिंदे गए धार धुर दी, धर्म दवारे सोभा पाईआ। ओह आसा मनसा पूरी करे अनन्दपुर दी, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां तों बाहर भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पैग़म्बर कहिण की बस्ता वेखीए किताब, कुतबख़ाने फोल फुलाईआ। परवरदिगार सांझा यार धुरदरगाही सब दी रखे याद, याददाशत ना कदे भुलाईआ। जिस ने लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी कीती आबाद, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। सो अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर सब दा अन्तिम वेखे राज, मुमताज़ हो के पर्दे ओहले दए चुकाईआ। जिस दा नाम क़लमा शब्द अगम्म रसना जिह्वा बत्ती दन्द सुणा के आए आवाज़, रागां नादां सोहल्यां ढोल्यां विच गाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी अन्तिम दीन दुनी दा वेखे समाज, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप मानव मानव खोज खुजाईआ। सब

दा लहिणा देणा अन्त अख़ीर करे बेबाक, लेखा लोकमात अवर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी हुक्म वरताईआ। गुर दस कहिण वेखीए लोकमात दी धरती, धरनी धरत धवल धौल खोज खुजाईआ। जिथ्थे प्रगट होवे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाला अर्शी, निरगुण नूर नूर जोत करे रुशनाईआ। जिस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी चार जुग दी सिफ्तां वाली पर्ची, प्राचीन दा पर्दा रही उठाईआ। किसे समझ ना आवे सम्मत सम्मती की साल बसाल खेल होवे बरसी, भेव अभेदा सके ना कोए खुलाईआ। चार जुग दे गुर अवतार पैग़म्बर पुरख अकाल अग्गे दे के गए सारे अर्ज़ी, आरज़ू बेनन्ती इक जणाईआ। जिस वेले दीन दुनी विच रिहा कोई ना दर्दी, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। मन ममता होई बेगर्ज़ी, गर्ज लोड़ ना कोए वखाईआ। हँकारी दशा होई जग दी, जागरत जोत ना कोए जगाईआ। त्रैगुण माया अगनी होणी वगदी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। खेल वेखणी दीन मज़हब हद्द दी, ज़ात पात करे लड़ाईआ। ओस समें पुरख अकाल दीन दयाल गुर अवतार पैग़म्बरां आसा तैनूं सद्द दी, तुध बिन दूजा अवर ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी पतिपरमेश्वर आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सचखण्ड दवारे सारे करो त्यारी, दरगाह साची मुकामे हक़ लओ अंगड़ाईआ। वेखीए खेल जोत निरँकारी, जो निरवैर निराकार निरँकार आपणी कार कमाईआ। तक्कीए अमृत जल धारी, ठंडा ठारी वेख वखाईआ। जिथ्थे अर्जन आवाज़ मारी, रावी कन्ढा आस लगाईआ। सो बालू रेत करे पुकारी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कारी, डंडावत बन्दना इक्को रंग वखाईआ। सदी चौधवीं कूक कूक पुकारी, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। तेरा लहिणा देणा दए उधारी, ईसा मूसा मुहम्मद नाल मिलाईआ। तेई अवतार चरण धूढ़ी लावण छारी, मस्तक टिक्के रहे रमाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों पारब्रह्म प्रभ आई तेरी वारी, त्रैलोकी नाथ सार कोए ना पाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह आदि जुगादि सच्चा सिक्दारी, हुक्मराना नौजवाना मर्द मर्दाना इक्को इक सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर गुर अवतार पैग़म्बर तेरे चरण कँवल पनिहारी, सेवक हो के साची सेव कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तेरी सृष्टी दृष्टी अंदर होई दुख्यारी, दुखियां दर्द ना कोए वंडाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार लग्गी बीमारी, जगत तबीब शमां हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। रावी कन्ढे तेरे अग्गे आपणी आशा दस्सीए सारी, समें दे नाल समां टकराईआ। जिस नूं चार जुग लिख सक्कया ना कोए लिखारी, काग़ज़ क़लम शाही कातब मिली ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण

नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन दूजा अवर ना कोए सिक्दारी, शाह पातशाह शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ।

✻ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ प्रीतम कौर दे गृह पिंड ठीकरी ज़िला गुरदासपुर ✻

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण लै के जाईए पिछली सन्धी, सनद चार जुग दी हथ्थ उठाईआ। जिस दे विच्चों दीन मज़हब दी निकले पाबन्दी, मानव मानुख मानस वंड ना कोए वंडाईआ। चुरासी धार रहे ना बन्दी, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। नेत्रहीण सृष्टी रहे ना अन्धी, ज्ञान नेत्र लोचण अक्ख खुल्हाईआ। जो भविख्तां विच आपणी आसा इक्को लँघी, पेशीनगोईआं विच दृढ़ाईआ । सो सदी चौधवीं पिड्ड सब दी होई नंगी, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ । मन कल्पणा वासना होई गन्दी, सुगंधी नाम ना कोए भराईआ। दीन मज़हबां दी बिखड़ गई डंडी, रास्ता बरास्ता भुल्ली जगत लोकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा होई पाखण्डी, पारब्रह्म प्रभ भेव ना कोए खुल्हाईआ। बिन हरि कन्त सुहागी होई रंडी, सेज सुहञ्जणी सोभा कोए ना पाईआ। बिन शब्द गोबिन्द दिसे ना कोई जंगी, पंच विकार कटार ना कोए डराईआ। सति सच दा दिसे कोई ना संगी, सगला संग ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ नूं वखाईए ओह फ़रिसत, जिस विच फ़ैसला हक़ सुणाईआ। झगड़ा रहे ना स्वर्ग बहिश्त, दोज़ख़ वंड ना कोए वंडाईआ। प्यार दिसे ना माशूक इश्क, हक़ीक़ी मजाज़ी ना कोए वखाईआ। बोदी जञ्जू ना दिसे तिलक, मूंड मुंडाए ना सोभा पाईआ। रसना जिह्वा ना दिसे निन्दक, कल्पणा कूड़ ना कोए कुरलाईआ। दर ठांडे सारे करदे मिन्नत, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। सदी चौधवीं रही ना कोए हिम्मत, हौसले रहे ढाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले वेख आपणी सिम्मत, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए मिल्लत, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। घट घट अन्तर निरंतर मनुआ करे इल्लत, इल्म आलमा चले ना कोए चतुराईआ। योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना करे कोई ना हिम्मत, हौसले सारे बैठे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची सचखण्ड दवारे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण आपणी आपणी जाईए लै के फ़रद, बिना हथ्थां हथ्थ उठाईआ। जिस विच लेखा दिसे शरअ छुरी करद, क़ातल मक़तूल दोवें रूप वटाईआ। सच मुहब्बत रिहा कोई ना दरद, दीनां नाथ ना कोए सहाईआ। जिस विच कल कल्की अमाम कीती अर्ज़, निहकलंक तेरी

शरनाईआ। सो किस बिध पूरा करे आपणा फ़रज़, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बणे मर्द, दूसर मदद ना कोए कराईआ। उच्ची कूक सुणाईए गरज, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त तेरा खेल असचरज, अचरज विच अचरज तेरा भेव कोए ना पाईआ।

९६३ २१

✻ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ करतार सिंघ दे गृह पिंड भूमली ज़िला गुरदास पुर ✻

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ तों गल्ल सुणीए अगली, साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान दए जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार की खेल होणा सृष्ट सगली, गृह ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर आपणा हुक्म वरताईआ। की दशा होणी टिल्ले पर्बत समुंद सागर जूह उजाड़ पहाड़ जंगली, डूँघी कंदर वहिंदी धार की की खेल वरताईआ। किस बिध तेरी धार चमके नूर नुराने रंगली, सच स्वामी अन्तरजामी भेव अभेदा देणा खुल्लाईआ। क्यों सृष्टी दृष्टी अन्तश्करन विच होई कमली, वस्त अमोलक काया गोलक हक़ हक़ीक़त विच ना कोए वखाईआ। साहिब सुल्तान श्री भगवान दर दरवेश हो के इक्को मँग मँग लई, मांगत हो के दर ठांडे झोली डाहीआ। चार जुग दे विछड़े इक्ठे होए सारे तेरे संग लई, सगला संग सूरे सरबंग इक्को दर देणा बणाईआ। जुग जन्म दी विछड़ी आत्म सब आपणे नाल गंढु लईं, गंढुणहार स्वामी आपणी दया कमाईआ। असीं सब ने आसा रखी तेरे नाम अनन्द लई, अनन्द अनन्द अनन्द विच्चों देणा प्रगटाईआ। जो कुछ कौल इक़रार कीता गुजरी चन्न लई, माछूवाड़े पर्दा आपणा उठाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर साडी औध हंढु लई, सदी चौधवीं आपणा पन्ध जणाईआ। दीन मज़हब झगड़ा पाया दूई द्वैती कंध लई, धर्म दी धार परवरदिगार एकँकार तेरे विच समाईआ। हुण प्रकाश मँगीए निज नेत्र लोचण नैण जगत अंध्यारे अन्ध लई, ज्ञान नेत्र देणा खुल्लाईआ। की हुक्म वरतणा तेरा ब्रह्मण्ड लई, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर की आपणी खेल खिलाईआ। असीं आसा रखी साहिब सुल्तान सूरे सरबंग लई, शहिनशाह पातशाह तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआर एकँकार इक इकल्ले तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण चलो सुणीए अगम्म सलोका, जो निरअक्खर धार दए दृढ़ाईआ। अन्त अख़ीर सब नूं इक्को मौका, मुकम्मल हुक्म दए समझाईआ। सति धर्म दा मार्ग केहड़ा सौखा, दीन मज़हब तों बाहर करे पढ़ाईआ। जिस दी समझ ना जाणे कोई पुस्तक पोथा, विद्या विच ना

कोए वड्याईआ । बुद्धी विच करे कोई ना सोचा, अक़ल चले ना कोए चतुराईआ। जगत नेत्र कोई वेखे ना लोचा, नैण अक्ख ना कोए खुल्लाईआ। सो साहिब सतिगुर किस बिध शब्दी धार देवे होका, हुक्म हाकम दए दृढ़ाईआ। कवण नाम चलाए नूह नौका, नूर अलाही जिस विच दीन मज़हब दा नहीं कोई धोखा, ज़ात पात वंड ना कोए कराईआ। इक्को प्रकाश मिले नूरी जोता, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण चलो वेखीए अगम्म नज़ारा, की नज़रीआ दए बदलाईआ। की लहिणा देणा चुकावे रावी किनारा, अर्जन बैठा ध्यान लगाईआ। की हुक्म शाहो भूप सिक्दारा, शहिनशाह की जणाईआ। की लहिणा देणा पूरा करे अवतारा, पैग़म्बरां झोली दए भराईआ। गुरु गुरदेव देवे की इशारा, बिन सैनत अक्ख उठाईआ। जिस दा लहिणा देणा कागत क़लम ना लिखणहारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी भेव सके ना कोए जणाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी करे खेल आपणी धारा, धरनी धरत धवल धौल वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सच संदेसा नर नरेशा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को देवे परवरदिगारा, सांझा यार लाशरीक वाहिद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण उस प्रभू निव निव करीए निमस्कारा, झुक झुक सजदा सीस झुकाईआ । जिस दा आदि जुगादि जुगा जुगन्त आदि अन्त ना पारवारा, भेव अभेद सके ना कोए दृढ़ाईआ। उस दा लहिणा देणा वेखीए विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। सदी चौधवीं सब दा दए उधारा, बीस बीसा हरि जगदीसा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक अवतारा, अवतर नित नवित्त निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप अनूप बदलाईआ।

✻ ११ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ जोगिंदर सिँघ दे गृह पिंड डडवां ✻

तेई अवतार कहिण आपणी वेखीए पोथी पुस्तक, ज्ञान ज्ञान विच ध्यान लगाईआ। पैग़म्बर कहिण आपणी खेल वेखीए जेहड़ी निरगुण धार मुर्शद, मुरीदां मुफ्त नाम वरताईआ। गुरु गुरदेव कहिण जगत जहानों कर के फ़ुरसत, फ़रमांबरदार हो के सेव कमाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब दी जाणा उल्फत, आदि अन्त जुगा जुगन्त खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं कहे अन्त अख़ीर कोई ना धोवे मैल दुरमति, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वेखीए सृष्टी रोती, बिन नैणां नीर वहाईआ। सुरती उठे

ना किसे सोती, शब्दी नाद ना कोए शनवाईआ। आत्म परमात्म बणे कोई ना गोती, चार वरन अठारां बरन भरम भुलाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना चोटी, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले फिरदे कोटन कोटी, जोग अभ्यास विच ध्यान लगाईआ। सति धार दा बणे ना कोए माणक मोती, गुरमुख हँस काग रूप ना कोए बदलाईआ। गृह मन्दिर अंदर जगे किसे ना जोती, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल रखे कोई ना ओटी, धुर दा इष्ट ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दवारे आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दीन दुनी दी अन्तर वेखीए दिशा, काया काअबा मन्दिर फोल फुलाईआ। आत्म परमात्म मिलण दी किस दी साची इच्छा, निरिच्छत प्रभ दा नाम ध्याईआ। सच दवारे किस नूं पाउणी भिच्छा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। मंज़ल पन्ध मुकाउणी सवा गिट्ठा, जगत पैमाना नाप ना कोए जणाईआ। झगड़ा मुकाउणा पत्थर इट्टां, पुरख अकाला इक्को सोभा पाईआ। चार जुग दे शास्त्र नाम वड्याई सिफ्तां वालीआं चिट्ठां, चेटक दीन दुनी जणाईआ। बिन भगतां प्रभ दी चरण धूढ़ लग्गे किसे ना टिक्का, ख़ाकी ख़ाक ना कोए रमाईआ। पुरख अकाल मिले ना पिता, पतिपरमेश्वर गोद ना कोए उठाईआ। जग नेत्र लोचण दोए किसे ना दिसा, दिब्ब नेत्र निज नैण ना कोए रुशनाईआ। सदी चौधवीं सब नूं दे के पिठा, परम पुरख प्रभ बैठा मुख छुपाईआ। हउमे रोग लग्गा जग खिटा, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। अन्त अख़ीर सब दा निकलणा सिट्टा, सिट्टेबाज़ी जगत लोकाईआ। बिन सतिगुर शब्द लेखा होवे किसे ना चिट्टा, तत्तां करे ना कोए सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो अवतरा मीत, सहज सहज सुणाईआ। सब ने गाउणा इक्को गीत, तूं मेरा मैं तेरा ढोला धुरदरगाहीआ। पिछली बदल देणी रीत, रीतीवान आप सुणाईआ। इक्को साहिब झुकणा सीस, जगदीश होए सहाईआ। पिछला पीसण जुग चौकड़ी ल्या पीस, चार वरनां फेर फराईआ। जिस दी करदे रहे उडीक, ओह हुक्म इक वरताईआ। जिस ने बदल देणी तवारीख, तारीख आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मे अंदर हुक्म सुणाईआ। परवरदिगार कहे सुणो पैग़म्बरो धुर फ़रमान अगम्म, अगम्मड़ा हो के दयां जणाईआ। झगड़ा छड्डणा काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी लैणी बदलाईआ। हरख सोग रहे ना ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। सब ने रसना जिह्वा बिन कहिणा धन्न धन्न, प्रभू धन्न तेरी वड्याईआ। आपणा आपणा बेड़ा सब ने लैणा बन्न, पतण वेखणा धुरदरगाहीआ। होए वस्सेरा बिन छप्पर छन्न, शाह सुल्तान इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर,

सच संदेसा इक उपजाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो गुरु गुरदेव, आत्मा दयां जणाईआ। आत्म परमात्म साची सेव, धर्म दी धार इक अख्वाईआ। धुर दा नाम अगम्मा मेव, बिन रसना रस चखाईआ। गाउणा पए ना किसे जिह्व, बत्ती दन्द ना कोए अलाईआ। निरगुण हो के खोल्हां भेव, अभेव दयां दृढ़ाईआ। धाम सुहञ्जणा सदा निहचल निहकेव, सति सतिवादी इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर कहिण लोकमात सारे बणो सज्जण, रीती सचखण्ड समझाईआ। इक्को चरण प्रीती करो मजन, दूजा दर ना कोए वड्याईआ। पूजा पाठ बन्दगी इक्को होवे भजन, सिमरन इक्को इक दरसाईआ। इक्को वस्त सारे मँगण, झोली इक्को अग्गे डाहीआ। इक्को चाढ़े प्रभू रंगण, नर नरायण दया कमाईआ। इक्को रखे आपणे अंगण, गोद सुहञ्जणी आप टिकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर धुर फ़रमाना इक्को मन्नण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक जणाईआ। सच संदेस सुणो फ़रमाना, हरि करता आप दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम मिटे कूड़ निशाना, चार कुण्ट होए रुशनाईआ। खेले खेल वाली दो जहानां, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत पहर के बाणा, बाण अणयाला तीर नाम चलाईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्द मर्दाना, मदद देवे थाउँ थाईंआ। सृष्टी दृष्टी अंदर देवे इक ज्ञाना, अज्ञान अन्धेरा दूर कराईआ। अमृत रस बख्शे पीणा खाणा, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाउणा गाणा, गावत गा गा खुशी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त लेखा जाणे जीव जहाना, जागरत जोत बिन वरन गोत नूर ज़हूर एकँकार एका एक करे रुशनाईआ।

✳ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ जगीर सिंघ दे घर पिंड सोहल ✳

गुर अवतार पैग़म्बर चार जुग दी वखाओ आपणी लिखी होई तख्ती, अक्खरां नाल अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। की परम पुरख परमात्म पारब्रह्म परवरदिगार बख्शिश बख्शी, रहमत रहीम रहम कमाईआ। की नाम कलमा शब्द संदेसा दिता धुर दे अर्शी , धुर फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। की अन्त अख़ीर तुसां दरगाह साची दिती अर्ज़ी, बेनन्ती सच सच सुणाईआ। क्यों कलयुग अन्त दीन दुनी होई बेदर्दी, दर्द सके ना कोए वंडाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरे नाम चले फ़रज़ी, हक़ीक़ी नाम ना कोए जणाईआ। मन कल्पणा होई गरज़ी, बुध्ध बिबेक ना कोए समझाईआ। चार कुण्ट अन्धेर गर्दी, सति धर्म

ना कोए वखाईआ। किसे समझ नहीं आपणे घर दी, गृह मन्दिर पर्दा ना कोए उठाईआ। हालत विगड़ी नारी नर दी, नर नरायण नज़र किसे ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाही ढोले सृष्टी सारी पढ़दी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। की धार दस्सी चोटी जड़् दी, चेतन भेव कवण चुकाईआ। जिधर वेखो कायनात दीनां मज़हबां विच लड़दी, ज़ात पात पई दुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो की खेल कलयुग कल दी, कला विच्चों कलाधारी दयो समझाईआ। की खेल होणी जल थल दी, महीअल परदा देणा उठाईआ। किसे नूं ख़बर नहीं घड़ी पल दी, पतिपरमेश्वर की आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दरगाह साची भेव खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो चार जुग दा आपणा वेखो लेख, जो क़लम शाही काग़ज़ नाल जुड़ाईआ। जिस विच भविख्तां दा दे के आए संदेस, कलमा नाम अगम्म अथाहीआ। जो साहिब स्वामी अन्तरजामी आदि जुगादि रहे हमेश, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं मालक ख़ालक प्रितपालक मन्न के आए नरेश, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस नूं पिता मन्नया गुर दस्मेश, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, महिखासुर सीस निवाईआ। उह सदी चौधवीं अन्त अख़ीर देवे की संदेस, धुर दा नग़मा नाम सुणाईआ। जिस दे सारयां होणा पेश, पेशीनगोईआं वेख वखाईआ। धर्म रिहा ना किसे देस, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप पई दुहाईआ। आत्म परमात्म करे कोई ना हेत, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। दर्शन करे कोई ना नेतन नेत, निज नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। क्यों सब दे हुन्दयां विगड़ी खेड, धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। क्यों अल्ला वाहिगुरु नाम सति खाधा वेच, क़ीमत ग्रन्थां रहे पाईआ। की समझाया धुर दा देस, मण्डल मण्डप पुरी लोअ आकाश पाताल पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो चार जुग दा लेखा वेखो धुर दी बाणी, अगम्म अगम्मड़ा रिहा जणाईआ। की संदेसा दिता चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पर्दा लाहीआ। की अमृत रस पिआया अगम्मा पाणी, बूँद स्वांत चुआईआ। की सुरत शब्द मिलाया हाणी, घर घर विच वज्जी वधाईआ। की दस्सी कथा कहाणी, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। की गृह वखाया पद निरबाणी, दर घर साचा इक सुहाईआ। की पुरख अकाल दी दस्सी निशानी, अल्ला वाहिगुरु राम कृष्ण ओम सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर घर साचा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो की मेरे नाम दी कीती खतोखताबत, अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। की संदेसा दिता मेरी बाबत, बाबल कवण नूर अलाहीआ। किस बिध मैनूं कर के आए साबत,

सबूत साबत दयो जणाईआ। क्यों वख वख मेरी बन्दगी जणाई इबादत, हिस्सयां विच मेरा नाम वंडाईआ। की मेरी समझी तुसां ताक़त, ज़ोरावर कवण अख्वाईआ। की रसम चलाई समाजिक, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड दिती वंडाईआ। की वस्त अमोलक दे के आए निआमत, निरगुण सरगुण झोली पाईआ। की दस्स के आए साहिब सही सलामत, आदि जुगादि जुग चौकड़ी एका रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों मज़हबां बणाई रीत, रीतीवान पुच्छ पुछाईआ। क्यों मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ बणाई मसीत, चर्चां गुरुदवारयां की वड्याईआ। क्यों अक्खरां दस्सी हदीस, क्यों अक्खरां करी पढ़ाईआ। क्यों सब ने मेरी रखी उडीक, कलयुग अन्त श्री भगवन्त कल कल्की वेस वटाईआ। क्यों सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बदलदी आई तवारीख, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। क्यों नाम कलमा ढोला बदलदा रिहा गीत, सिफ्तां विच सिफत सालाहीआ। क्यों सदी चौधवीं सब दी बदल गई नीत, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए प्रीत, प्रीतम मिल के ना वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सचखण्ड दुआरा आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर अन्तिम आपणा दयो लेखा, हरि करता इक दृढ़ाईआ। चौथे जुग ना रहे भुलेखा, चारे खाणी चारे बाणी पर्दा लाहीआ। की दे के आए मेरा संदेसा, फ़रमान धुरदरगाहीआ। क्यों मूंड मुंडाए टिक्का बोदी जञ्झू बणा के क्यों खेल खिलाई धारी केसा, मुच्छ दाढ़ी की वड्याईआ। क्यों जीवण जीवण विच्चों कीता भेंटा, आपणा आप मिटाईआ। क्यों पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार समझया खेवट खेटा, दो जहानां नौंजवाना मर्द मर्दाना लख चुरासी बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। क्यों शब्द गुरु गुरदेव स्वामी आदि जुगादि पारब्रह्म पुरख सुल्तान दा इक्को बेटा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नित नवित्त सदा रहे हमेशा, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दिन्दा रिहा संदेसा, निरगुण हो के सरगुण करी पढ़ाईआ। जन भगतां सन्तां कर के आत्म हेता, परमात्म हो के मेल मिलाईआ। क्यों सदी चौधवीं मुहम्मद मिल्या ठेका, बीसवीं सदी ईसा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा साचे घर, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो कलयुग वेखो अन्तिम धार, कूड़ी क्रिया वहिण वहाईआ। सति धर्म ना रिहा विच संसार, कूड़ कुकर्म पई दुहाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ होवे विभचार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। पढ़ पढ़ थक्का जगत संसार, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, दीन दुनी रही कुरलाईआ। नाम शब्द धुन आत्मक सुणे ना कोए धुन्कार, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। घर दीया बाती

कमलापाती निरगुण जोत करे ना कोए उज्यार, अन्ध अन्धेरा दूर ना कोए कराईआ। अमृत बूँद स्वांती मिले ना ठंडी ठार, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर होया धूआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। मन कल्पणा सब नूं कीता गिरफ्तार, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। जिधर तक्को काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आशा तृष्ना भज्जे वाहो दाहीआ। तुहाडे हुन्दयां दीन दुनी क्यों होई दुख्यार, लिख के दयो समझाईआ। जा तक्को सारे कहो प्रभू साडा नहीं कुछ अख्त्यार, बेअख्त्यार होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेले खेल अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आपणी कार कमाईआ।

✻ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ शम्भू नाथ दे नाल गुरदास पुर ✻

की परम पुरख अबिनाशी इक इकांत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। की शब्द धार खेल अबिनाश, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। की विष्न ब्रह्मा शिव लख चुरासी ज़ेवरात, गहिणे ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान धरनी धरत धवल धौल नज़री आईआ। की करनी करतब सृष्टी दृष्टी अंदर कायनात, त्रैगुण माया पंज तत मन मनुआ वंड वंडाईआ। की बोध अगाध शब्द अनाद धुन आत्मक अगम्मी राग, बिन रसना जिह्वा ढोला धुर संदेस सुणाईआ। की गुर अवतार पैग़म्बर तन वजूद पहन के माटी ख़ाक, दीन दुनी विच फेरा पाईआ। की हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी ज़ात पात, दीन मज़हब नाउँ धराईआ। की ईश जीव खेल तमाश, की आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा आपणा वेस वटाईआ। की ब्रह्म की पारब्रह्म प्रकाश, की अन्ध अज्ञान अन्धेरा सोभा पाईआ। की सोना की स्वर्न, की नेत्र हरन फरन, की जन्म की मरन, की मंज़ल की पौड़ी चढ़न, की सिमरन की पूजा पाठ की सरनाई की सरन, चरण कँवल गुरदेव कवण समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। की सोना सच नाम, जिस नूं अल्ला वाहिगुरु राम ओम हरी ओम तत सति कहि के गाईआ। की सोना शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान की गुरु ग्रन्थ नाल वड्याईआ। की सोना सति धर्म एथे ओथे दो जहानां जगत निशान, चार वरनां अठारां बरनां कवण भेव खुल्हाईआ। की सोना रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्तां वाला गान, की काग़ज़ क़लम शाही लेख दए बणाईआ। की सोना आत्मा की सोना परमात्मा की बुद्धी तों परे ज्ञान, की बिना नाद शब्द विश्व दा भेद दए जणाईआ। की सोना मिट्टी विच मिल के मिट्टी ते

विकदा फिरे हट्टी विच दुकान, पैसिआं वाली क़ीमत पाईआ। की सोना सति सरूप दा दिसे सच विधान, जिथ्थे विद्या अकल बुद्धी कम्म ना आईआ। की सोना अलिफ़ ये ऊड़ा ऐड़ा ईड़ी सस्सा हाहा, की ए बी सी डी करे कल्याण, अक्खरां वाली अक्खर वंड वंडाईआ। जिस दा सोने तों परे निशान, जिथ्थे ना ज़िमीं ना आसमान, ना कोई पुट्टण खोदण वाली खान, ना कोई करन वाला पहचान, धातू धात नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखणहारा इक दर, जिस गृह परमात्मा परमात्मा परमात्मा आपणे विच समाईआ। की सोने दी जगत शहादत, ज़ेवरात नाल वड्याईआ। की सोना धुर दी इबादत, बन्दगी नाम कलमा रूप धराईआ। की सोना लख चुरासी जीव जंत दी आदत, मन मति बुध्ध नाल टकराईआ। की सोना सच नाम सख़ावत, बख्शिश रहमत नज़रीं आईआ। की सोना जगत जीव बणावे अदावत, दीन मज़हब वंड वंडाईआ। बिना सोने तों बिना सरूप तों जो आदि जुगादि सही सलामत, सो स्वामी अन्तरजामी देणा समझाईआ। जिस दी कुठाली विच पा के बणे ना कदे बनावट, अगनी नाल जला के सुनिआरा फूक ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा ओह वर, जिथ्थे ना कोई सोना ना कोई चांदी, ना कोई गुर अवतार पैग़म्बर ना कोई तत वजूद दिसे बांदी, ना ईश जीव जगदीश ना पारब्रह्म ब्रह्म, ना शब्द नाद धुन, ना शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी, ना साध सन्त फ़कीर, ना विद्या दे अक्खरां वाली कोई लकीर, ना कोई रसना जिह्वा वाली तक़रीर, ना कोई शहिनशाह, ना कोई पातशाह ना कोई फ़कीर, ना कोई दरवेश ना कोई मँगता ना कोई हउमे ना कोई हंगता, मोह विकार विभचार कुकर्म भ्रष्टाचार, ना कोई जन शक्ती ना कोई भगती सिमरन पूजा पाठ दिसे पत्र, ना कोई तीर्थ तट ना कोई शिवदवाला मठ दिसे खेत्र, ना कोई दिवस ना कोई मास ना कोई रुत्त बसन्त मौले चेत्र, आदि अन्त एकर मेकर छेकड़ प्रैज़ेन्ट पास्ट फ़िऊचर फ़िऊचर तों लास्ट की आपणा खेल खिलाईआ।

९७०

२१

✲ १२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ चरण सिँघ दे गृह पिंड हेमराजपुर ज़िला गुरदासपुर ✲

सदी चौधवीं कहे रावी रो रो बिन नैणां कहिंदी, कहि कैह रही सुणाईआ। चार जुग मैं वहिणां धार रही वहिंदी, जल थलां उत्ते वहाईआ। उच्चे नीवें थाँ रही ढहिन्दी, भज्जी वाहो दाहीआ। सच सिँघासण कदे ना बहन्दी, दिवस रैण आपणी सेव कमाईआ। मेरी निगाह होई इक दिन दिशा लहिंदी, काअबे रहे कुरलाईआ। मैं कदे उठदी कदे बहन्दी, की खेल

वरतणी ख्वाजे ख़िज़र दी, हुक्म नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, की हुक्म हुक्म वरताईआ। रावी कहे मैं वेख्या दिशा लहिंदी, बिन नैणा नैण उठाईआ। मुहम्मद आशा की कुछ कहिंदी, कहि कहि रही सुणाईआ। उफ़ हाए, उह आ गया अमाम मैहन्दी, मेहरवान नूर अलाहीआ। जिस दा भाणा जुग चौकड़ी रही सहन्दी, सिर सक्कया ना कोए उठाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की आपणी कार कमाईआ। रावी कहे मैं रोवां मार दुहथ्थढ़ पिट्टां, पटने वाला वेस वटाईआ। जिस ने उम्मत हिसाब विच लेखा करना बटा, हिन्दसा हिन्दसे नाल बदलाईआ। चार जुग दे ग्रन्थां दी महिमा नालों अग्गे माण दवाउणा इक्को टप्पा, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। दो जहानां मालक समझाउणा जिस दी सिफ्तां विच्चों सिफ्त करे अक्खर पप्पा, पूरन पारब्रह्म दृढ़ाईआ। सब दा लहिणा देणा लेखा पूरा करना पक्का, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर लेखे लाउणा चचा, अबिनाशी करता पुरख अकाल देणा वखाईआ। जिस दीन दुनी दा वेखणा चार कुण्ट दा हिस्सा, हिस्सेदारी फोल फोलाईआ। जन भगतां पिछला वखाउणा पिच्छा, पूरब दा पर्दा देणा उठाईआ। अग्गे साची दे के भिच्छा, ख़ाली भाण्डे देणे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे रावी तक्के राह, ओह रहिबर नूर अलाहीआ। पीरां दा पीर जाए आ, पैग़म्बरां दा पैग़म्बर फेरा पाईआ। निउँ के सीस लवां झुका, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। दोए जोड़ मँगां दुआ, वास्ता इक्को अग्गे रखाईआ। मेरे महबूब हक़ ख़ुदा, ख़ुद तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी मेट वबा, धुर तबीब लए अंगड़ाईआ। भगत उधारना तेरी अदा, अदब देणा समझाईआ। नाम भण्डारा दे ग़िज़ा, भुक्खयां भुक्ख मिटाईआ। साचा मार्ग इक समझा, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। नज़री आ हर घट थाँ, थान थनंतर सोभा पाईआ। सब दा बण पिता माँ, पूत सपूते गोद उठाईआ । क्यों मानव हँस होए काँ, काग वांग रहे कुरलाईआ। क्यों पैग़म्बरां दोष लगाया खा के गाँ, सूरां जगत वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पर्दा उहला देणा उठाईआ। रावी कहे मैं तक्कां धुर दा रस्ता, चुरासी वेख वखाईआ। बन्नृ के बैठी बस्ता, आपणी गंढु घुटाईआ। किस वेले हुक्म मिले उत्तों अर्शां, अर्शी प्रीतम वेस वटाए धरनी उत्ते फ़र्शा, फ़ैसला हक़ सुणाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बणे मर्दा, मदद अवर ना कोए रखाईआ। शरअ दीआं झूठीआं भन्ने करदां, मोह विकार गवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरीआं करे शर्तां, शरअ दी धार दए उलटाईआ। साडीआं आसां वेखे अर्ज़ां, बेनन्तीआं ध्यान लगाईआ। अन्त अख़ीर जिस दी गर्ज़ां, गर्ज़े कि ओहो मिले चाँईं चाँईंआ। कलयुग पुट्ठीआं सिध्धिआं करे नरदां, नर नरायण दया कमाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्दां, दर्दीआं

दु:ख गवाईआ। मेरी थोड़ी जेही श्रद्धा, रावी कहि सुणाईआ। मैं भगत सुहेला वेखणा बरदा, जो बरी आपणा आप कराईआ। मैनूं बचन याद आ गया चिर दा, चिरी विछुन्नयां दयां सुणाईआ। गुर अर्जन दा तिन्न वार अक्खां विच्चों हन्झू मेरे विच सी गिरदा, त्रै लोक दा रस दिता वखाईआ। मेरा अन्तर हिरदा खिड़दा, खिड़की दिती खुल्हाईआ। मैं रो के किहा किस वेले दर्शन होवे ओस पिर दा, जो प्रीतम इक अख्वाईआ। अर्जन किहा जिस वेले कल कल्की आवे फिरदा फिरदा, फिरत फिरत आपणा पन्ध मुकाईआ। तेरा लेखा ओस दे कोलों निबड़दा, लहिणा दए चुकाईआ। ओस ने निशाना लाउणा पंजां गुरमुखां नूं तेरे चिक्कड़ दा, चकना चूर करे लोकाईआ। बिरख सुहाउणा इक किक्कर दा, जिस दा पूरब लहिणा सोभा पाईआ। एह खेल होणा अगम्मी मित्र दा, जो मित्रां लए मँगाईआ। भेव खोल्हणा चोटी सिखर दा, अन्त अख़ीर वेख वखाईआ। ओह समां होणा अगम्मा लेख लिखण दा, लिख्त विच वड्याईआ। समां सुहञ्जणा होणा साची सिख्या सिक्खण दा, सिख सतिगुर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे मैं तक्कां राह अख़ीरी, आख़र ध्यान लगाईआ। किधरों आ जावे तक़दीरी, तक़दीर मेरी दए बदलाईआ। दीन दुनी दी कट ज़ंजीरी, शरअ दए उलटाईआ। जिस दे कोल होवे ग़रीबी अमीरी, दोवें धार वहाईआ। चरण छुहावे मेरे नीरी, नैणां नीर वहाईआ। कुछ आशा रखी भगत कबीरी, काअबिउँ परे दिती दुहाईआ। एह खेल बेनज़ीरी, नज़रीआ दए बदलाईआ। मेरा दाता गहर गम्भीरी, गहर गवर वेख वखाईआ। कुछ लेख लिखाउणा कश्मीरी, हरि गोबिन्द आस तकाईआ। जिस नूं बख्शी मीरी पीरी, ओह पीरां दा पीर वेख वखाईआ। जिस दी सारे कहिंदे गली भीड़ी, राह नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां चढ़ाए आपणी सीढ़ी, डण्डा धुर दा नाम हथ्थ फड़ाईआ। रावी कहे मैं भज्जी नठ्ठी टप्पी, आपणा ज़ोर लगाईआ। मैं चार जुग दे शास्त्र वेखे गप्पी, गपौड़यां विच वड्याईआ। पढ़न वाल्यां साची मंज़ल किसे ना टप्पी, टप्पयां विच झट लँघाईआ। रसना नाल सारे गुर अवतार पैग़म्बर कर के गए पक्की, पारब्रह्म दी गंढु पवाईआ। मैं जां वेख्या ते सारे हो गए शक्की, शिकवा सारे गए गवाईआ। किसे ने सीता सुरती किसे ने राधा मैं कहिंदी एह सारयां तों वखरी रामरखी, रखने विच लुक के आपणा झट लँघाईआ। जो आया सो चला के गया छोटी नाम दी हट्टी, कट्टी वच्छी वंड वंडाईआ। रावी कहे मैं वी वहिंदी रही धार मट्टी मट्टी, हौली हौली चली वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख वखाईआ। रावी कहे मैं वेखदी रही गुर अवतार पैग़म्बर लैंदे गफ्फे, झोलीआं अग्गे डाहीआ। खुशीआं विच उदों हस्से, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खुशी मनाईआ। सदी चौधवीं

कलयुग अन्तिम सारे फसे, बंधन सके ना कोए छुडाईआ। दीनां मज़हबां पा के रट्टे, झगड़े रहे कराईआ। वंड वंड के तत अट्ठे, आपणी कीती चतुराईआ। अल्ला वाहिगुरु नाम सति राम कृष्ण असीं सब तों अच्छे, अच्छी कीती जणाईआ। धोती बोधी जञ्जू टिक्का सुन्नत तेड़ बन्न्हा के कच्छे, कच्छां मार के खुशी बणाईआ। अन्त अख़ीर वेख्या सारे फिरदे नस्से, पुरख अकाल भय रिहा जणाईआ। नाले इक दूजे नूं पुच्छण केहड़ा नाम ते केहड़े चंगे टप्पे, कलमे किस वड्याईआ। केहड़ा गुरु ते केहड़ा स्वामी केहड़ा मुर्शद केहड़ा लैंदा टके, क़ीमत कवण रखाईआ। जां वेखण ते सब दे घर घर रट्टे, रट्टा सके ना कोए मुकाईआ। जां वेखण दीन मज़हब दे पट्टे, लिख्त लिख्तां विच लोकाईआ। रावी कहे मेरी आसा खुशीआं विच हस्से, हस्ती तक्कणी बेपरवाहीआ। ओह वक्त समां आया मसे, मसां मसां आपणा पन्ध मुकाईआ। जेहड़े काग़ज़ गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों प्रभ दी महिमा कर के अजे नहीं छपे, ओह छुपिआं होइआं दा पर्दा देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जो आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणी धार ते आपे जपे, जपावणहारा आप अख्वाईआ।

सतिगुर सो जो विछड़यां जोड़े, विछोड़ा दए कटाईआ। सतिगुर सो जो डुबदयां बौहड़े, जगत जहान लए तराईआ। सतिगुर सो जो सिखां दे पिच्छे दौड़े, जगत विकार ना वंड वंडाईआ। सतिगुर सो जो गुरमुखां तों खा के पत्थर रोड़े, आपणी खुशी बणाईआ। सतिगुर सो जो मन चंचल ताईं मोड़े, मुड़ मुड़ आपणे चरण लगाईआ। सतिगुर सो जो दिन थोड़्हे करे विछोड़े, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। सतिगुर सो जो छड्डे कदे ना पिच्छा, पापां वल ना ध्यान लगाईआ। सतिगुर सो जो अपराधीआं उत्ते करे रच्छा, दुखियां दुःख गवाईआ। चरण सिंघ तूं अज्ज दा नहीं तूं गोबिन्द वाला सिखा, जामा मलीन दरसाईआ। तेरा काग़ज़ पिछले जन्म मरन दा चिट्ठा, एह शाही लेख बणाईआ। एस ज़िंदगी दा वेख लै सिट्टा, तेरे अग्गे रिहा वखाईआ। एह शीशा कदे ना भज्जे नाल इट्टां, पत्थरां नाल ठुकराईआ। तूं जन्म विच निक्का, कर्म विच वड्याईआ। पुरख अकाल जिस दा बण गया पिता, जुग जन्म दे विछड़यां गोद उठाईआ। जेहड़ा पिछल्यां साथीआं नाल सी हिस्सा, ओह तैनूं दिता खवाईआ। अग्गे लेख अगम्मा लिखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। एह अक्खर कहिण तेरी भरीए गवाही, शहादत रूप रूप भुगताईआ। अग्गे होवे ना कदे जुदाई, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। एह खेल बेपरवाही, बेपरवाह होया सहाईआ।

तेरी पिछली मिटे लिखी शाही, शहिनशाह अगला आपणा रंग रंगाईआ। अज्ज सारे मिल के तैनूं देण आए वधाई, पिछला मूल चुकाईआ। एह गुर संगत तेरी बण गई फेर भैण भाई, मेला सांझा ल्या कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। चरण सिँघ एह चिट्ठी गई पाट, पटने वाला दया कमाईआ। क़लम शाही दा लिख्या काट, तेरे कर्मां नूं कटाकश गया लगाईआ। जिस कारण रख्या सांभ, आपणे दर टिकाईआ। उस दा इहो मिल्या लाभ, हरि संगत मिल के खुशी बणाईआ। अग्गे सवाल दा सी जवाब, जो लिख्या दिता समझाईआ। हुण सजदे वाला आदाब, मुसलिआ गुस्ल धुर दा दयां कराईआ। जेहड़ा भुन्न के खाधा कबाब, दन्दां हेठ दबाईआ। उहदा अग्गे मिले ना कोए अज़ाब, अज़ीअत तों दयां छुडाईआ। लेखा मँगे ना कोए हिसाब, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जदों तक्कें ते नज़र आवां आप, आप आपणा दरस वखाईआ। तूं पुत्तर मैं तेरा बाप, आत्म परमात्म खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहँ दे के फेर आपणा जाप, जग जीवण दाता आपणे घर वसाईआ।

९७४
२१

* १३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ राज सिँघ दे घर पिंड हेमराज पुरा *

रावी कहे गुरु तत्तां वाली मोमबत्ती, थोड़ा समां जग के फेर आपणा आप बुझाईआ। साहिब सतिगुरु आदि जुगादि दा कमलापती, पतिपरमेश्वर जुग चौकड़ी करे रुशनाईआ। जो नाम वस्त देण वाला रती रती, थोड़ी थोड़ी आप वरताईआ। जगत वाला रख के हिस्सा पत्ती, नाम दे पत्तया उत्ते डेरे दिते लगाईआ। थोड़ी थोड़ी कथा कहाणी दस्सी, सिफ्तां विच सालाहीआ। लेख लिखा के नाल क़लम मस्सी, मस्स स्याही नाल दृढ़ाईआ। जिस समें जेहड़ी गल्ल लग्गी अच्छी, ओहो गुरुआं दिती समझाईआ। तन माटी प्रीत रख के कच्ची, कच्चे भाण्डे भन्न वखाईआ। की हो गया जे अर्जन बहि गया लोह तत्ती, तत्ती तवी ते बहि के आपणा झट लँघाईआ। कथा कहाणी दस्स के गया सच्ची, शब्द शब्द विच शनवाईआ। किसे कम्म नहीं आउणी रसना नाल जपी, जप जप जाप ना कोए बणाईआ। जिंनां चिर पुरख अकाल ना मिले सतिगुर समर्थी, जन्म कर्म दा लेख ना कोए मुकाईआ। मैं वी नानक राहीं जगी होई मोमबत्ती, अन्तिम जोत बाणी विच मिलाईआ। जिथ्थे कदे बालू रेत सी तपी, हुण पाणी दे वहिणां विच आपणा राह वखाईआ। जिस ने सब दा लेखा करना नफ़ी, नफ़ा नुकसान ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे गुरु बत्ती मोम, मोमन काफ़र वंड वंडाईआ। लोकमात बणा के निक्के निक्के होम, होमलैंड गए जणाईआ। दीन मज़हब

वंड वंडा के कौम, कामन दा झगड़ा गए गवाईआ । मेरे नाम सिफ्तां वाले गाउण, वखरे वखरे ढोले राग सुणाईआ। बन्दना डंडावत सजदे करदे रहे नाल धौण, पेशानी मस्तक वाली निवाईआ। नाले दस्स के गए गुरु पाणी पाउण, माता धरत महतु वड्याईआ। जीवां जंतां नूं मेरा नाम कलमा लै के आए परचाउण, आप परच के दूज्जयां गए परचाईआ। मेरी महिमा सिफ्त आए लिखाउण, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। मेरा अमृत मेघ आए बरसाउण, सेवक हो सेव कमाईआ। मेरा घर आए समझाउण, सिख्या विच दृढ़ाईआ। दीन दुनी दी वंडां आए पाउण, हिस्सयां विच हिस्सा बणाईआ। बिना सतिगुरु तों सहाई होवे कौण, गुरु गुर सारे सतिगुर दी आस रखाईआ। जो आया चार दिन दा परौहण, जीवण आपणा गया लँघाईआ। मेरे नाम तों मेरा नाम लै के अगले रस्ते तों आया तिलकाउण, तिलकणबाज़ी विच आपणी खेल खिलाईआ। डंडे नाल खण्डा आया खड़काउण, वंडां विच दुहाईआ। जगत वासना आया तड़फाउण, सांतक सति ना किसे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। रावी कहे गुरु अर्जन किहा गुरु तत्तां वाली बुरजी, बुरज मुनारा रहिण कोए ना पाईआ। थोड़ी थोड़ी ख़बर दे के धुर दी, संदेसयां विच सुणाईआ । मातलोक विच आवण ते फेर जावण पैरीं मुड़दी, एथे आपणा घर ना कोए बणाईआ। इक्को ओट रखण साचे सतिगुर दी, जो सच दा मालक सच विच समाईआ। जिस दी धार कदे ना रुढ़दी, वहिणां विच ना कोए वहाईआ। रावी कहे मेरे कन्ढे लिआउणी इक ढेली गुड़ दी, अगला सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। रावी कहे गुरु मन्नण वाले भाणा, भाणा भाणे विच समाईआ। सतिगुर सब दा इक्को राणा, जो आदि अन्त अख्वाईआ। गुरु गाउँदे सतिगुरु दा गाणा, गा के आपणा झट लँघाईआ। जे सतिगुरु ना होवे ते गुरु होवे बेप्राणा, जीवण दी आस ना कोए बणाईआ। बिना सतिगुरु तों गुरु मातलोक निथावां, जिंनां चिर सतिगुरु शब्द ना देवे गुरु करे की पढ़ाईआ। क्यों गुरु दीआं दुनियां वरगीआं लत्तां बाहवां, नौ दवारे सृष्टी रूप दरसाईआ। सतिगुरु दी किरपा गुरु दे अंदर आवे ओह नावां, जो नौवां दवारिआं दा लेखा दए छुडाईआ। सतिगुर आपणे तोल तोल के गुरु नूं करे सांवां, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। रावी कहे उस सतिगुरु तों बलि बलि जावां, जिस सतिगुर ने गुर अर्जन अर्ज़ दिती जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा लख चुरासी गरावां, गृह गृह भीतर वेख वखाईआ।

९७६ ९७६

२१ २१

❊ १३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ महिन्दर कौर दे गृह काला नंगल ❊

गुर अवतार पैग़म्बरो नाम कलमे दीआं खोल्ह गंढां, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी हुक्म जणाईआ। जिस नाल सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पाईआं वंडां, दीनां मज़हबां हिस्सयां विच रखाईआ। जगत वासना रखीआं कंधां, दूई द्वैत जणाईआ। बन्दगी विच फसा के बन्दा, बंधन आपणा ल्या पवाईआ। केहड़ी मंज़ल केहड़ा डंडा, पौड़ा कवण वड्याईआ। की खेल विच वरभण्डा, ब्रह्मण्डां की वड्याईआ। की आत्म परमात्म दस्सया अनन्दा, निजानंद की शनवाईआ। की लेखा लहिणा मुके सूर्या चन्दा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। क्यों जगत जहान होया निज नेत्र अन्धा, लोचण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। की बोध अगाधी बण के पंडा, जीउ पिंड आए दृढ़ाईआ। क्यों मन हँकारी विकारी होया गंदा, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। सारे कढु के वखाओ आपणी सनदा, सनद पिछली नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरो आपणी दयो शहादत, शहिनशाह दयो समझाईआ। क्यों दीन दुनी दी लिआक़त, बुद्धी बिबेक ना कोए कराईआ। की संदेसा दिता मारफ़त, सूफ़ीआं सफ़ा आए बदलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दीनां मज़हबां करे ना कोए हिफ़ाज़त, मेहरवान सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। क्यों आत्म परमात्म छुट्टी रफ़ाक़त, रफ़ीक फ़रीक़ रूप वटाईआ। किधर नाम गया कलमा धर्म धार दी निआमत, निहकरमी कर्म दयो दृढ़ाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर सब दा मचलका लए ज़मानत, ज़ामन दामनगीर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों दीन दुनी होया सदमा, दुखड़े विच दुहाईआ। जे तुसीं झुकदे प्रभू दे क़दमां, क़दीम दी रीती चली आईआ। क्यों झगड़ा पाया तन शरीर बदना, माटी ख़ाक वंड वंडाईआ। क्यों रहिणा दस्सया अलग्गणा, वखरा दर सुहाईआ। चारे कुण्ट वेखो तन माटी दिसे सक्खणा, नाम वस्त ना कोए रखाईआ। की खेल करे अबिनाशी करता अलख अलखणा, अगोचर नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं किसे दा चले कोई ना यतना, यथार्थ चारों कुण्ट पई दुहाईआ। क्यों गोबिन्द छड्डया पटना, पौंटा पाटल वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर घर साचा इक वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेनज़ीर, परवरदिगार तेरी शरनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त तेरे कोल शरअ ज़ंजीर, नाम कलमे बंधन विच बंधाईआ। तेरे हुक्म दी कर के आए तकरीर, तहिरीर विच वड्याईआ। तूं पातशाह असीं फ़क़ीर, शाह हकीर तेरी सरनाईआ। हुजरे हक़ आवाज़ लगाई इक

कबीर, काअबिआं परे सुणाईआ । परवरदिगार दीन दुनी दी बदल दे ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। हर घट अन्तर निरंतर तेरी ताअसीर, निरगुण नूर जोत आत्म ब्रह्म रुशनाईआ। हउमे हंगता कट दे पीड़, दूई द्वैत डेरा ढाहीआ। अमृत बख़्श दे ठंडा नीर, सीर आपणा जाम पिलाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच बदल तक़दीर, तोबा तोबा तेरा नाम दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरा खेल नूर अलाही पक्का, पाकीज़ा वड वड्याईआ। मुहम्मद कहे इक्को महबूब देण लग्गा धक्का, ज़ोरावर तेरी सरनाईआ। लेखा मुकणा मदीना मक्का, काअबिआं पए दुहाईआ। झगड़ा पैणा बूरा कक्का, कायनात वेख वखाईआ। तेरा लेख अलखणा अलखा, कातब चले ना कोए चतुराईआ। मेरा पूरा होण वाला अन्त अख़ीरी पटा, पटने वाले मिले माण वड्याईआ। मेरा चीथड़ वेख पुराणा फटा, तन लिबास ना कोए हंढ्ढाईआ। परवरदिगार सांझे यार नूर अलाही बेपरवाही तेरी सरनाई ढठ्ठा, क़दमबोसी विच मदहोशी रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त धुरदरगाही सच्चा, सति सच सच तेरी सरनाईआ।

✻ १३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ कर्म सिँघ दे गृह निआशाला ✻

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू तेरा चार जुग दा नाम कलमा दस्सया बण के कातब, क़लम शाही क़ाग़ज़ां उत्ते जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भेद दस्सदे रहे हो मुख़ातब, मुख रसना जिह्वा नाल करी वड्याईआ। जुग चौकड़ी बणे रहे आजज़, निम्रता विच निउँ निउँ सीस निवाईआ। सेवादार बण के ख़ादम, ख़ालक ख़लक तेरी ओट तकाईआ। तूं साहिब स्वामी अन्तरजामी मोहण माधव, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर नुराना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरे नाम दी करदे आए सिफ्त, अक्खरां विच वड्याईआ। जगत इशारा दे के स्वर्ग बहिश्त, शरअ विच समझाईआ। तेरा नूर अलाही वखरा वखरा इष्ट, दीनां मज़हबां विच वंड वंडाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी कीती लिख्त, हरफ़ां हरूफ़ां मेल मिलाईआ। भगती जोग जुगती दस्सी खोल्हणी दृष्ट, दीदा दानिशता नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब सुल्तान तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण

प्रभ तेरे नाम दी जुग जुग कीती बदली, सतिजुग त्रेता द्वापर वंड वंडाईआ। दो जहानां बणया कोई ना अदली, हक़ इन्साफ़ ना कोए कराईआ। दीनां मज़हबां विच तेरी दुनियां क़त्ली, क़त्लेआम दिती कराईआ। अल्ला वाहिगुरु नाम दे फिरदे रहे पत्तणी, कंढुयां उत्ते डेरा लाईआ। तेरा नाम अमोलक आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को रतनी, रतन अमोलक सोभा पाईआ। किसे समझ ना आई यथार्थ यतनी, यके बाद दीगरे देंदे आए दुहाईआ। सिफ्त करदे आए काग़ज़ां पत्रीं, अक्खरां नाल वड्याईआ। वंड वंडाई शूद्र ब्राह्मण वैश क्षत्री, ख़तरा घर घर दिता रखाईआ। तेरा नाम मिल्या किसे ना असली, सच दी धार ना कोए जणाईआ। तेरी दीन दुनियां खेल कीती नक़ली, मानस मानव वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दीन दुनी विच पाया वैर, नाम कलमा वंड वंडाईआ। दीन मज़हब बणा के वरताया कहर, सांतक सति ना कोए कराईआ। मानस मानस कीते ग़ैर, गहर गम्भीर तेरी बेपरवाहीआ। नाम कलमे ढोले गीत सुणाए बण के शाइर, शरअ दी वंड आए पाईआ। तेरा नाम प्याला बणाया ज़हर, विष घर घर रिहा चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, सच मार्ग इक समझाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरा नाम ज़हर प्याला, दीन दुनियां नज़री आईआ। अल्ला वाला राम कहि के होए ना कोए मतवाला, वाहिगुरु वाला अल्ला ना कोए ध्याईआ। एह की खेल कराया शाला, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। सानूं दीनां मज़हबां दा पा जंजाला, हिस्सयां विच दिता वंडाईआ। माणस माणसां कोलों कराउँदे रहे हलाला, खण्डा खड़ग चमकाईआ। तोड़ सक्कया ना कोई त्रैगुण जगत जंजाला, माया ममता ना कोए मिटाईआ। किसे तों अधीन होया ना काल महाकाला, आपणा तन सरीर ना कोए बचाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सदी चौधवीं वेख लै हाला, हालत विगड़ी कूड़ लोकाईआ। फल रिहा ना किसे डाला, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे रोवण मारन धाहींआ। सतिगुर शब्द नज़र ना आए कोए दलाला, धर्म विचोला सोभा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, इक्को तेरा नाम वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरा कलमा दस्सया कायनात, काअबिआं विच वड्याईआ। अमृत जणाया आबेहयात, जीवण ज़िंदगी दे बदलाईआ । तेरा नूर दरसाया साख्यात, स्वच्छ सरूपी तेरी कीती वड्याईआ। आत्म परमात्म जणाया नात, अल्ला हू अन्ना हू कहि सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू तेरी किरपा नाल दुनियां विच झगड़ा पाया काग़ज़ात, तेरे नाम नूं वखरिआं वखरिआं लेखां विच दिता लिखाईआ। किसे ने ईसाई पारसी मुस्लिम बणाई जमात, कोई हिन्दू सिख बणा के आपणी कर के आया वड्याईआ। प्रभू तेरा आदि जुगादि जुग चौकड़ी किसे ना

समझया खेल तमाश, ख़ालक ख़लक की तेरी बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर असीं सारे होए उदास, हैरानी अंदर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण सरगुण देवे साथ, सगले संगी बहु रंगी आपणा खेल खिलाईआ।

✻ १३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह पिंड कत्तोवाल ✻

सदी चौधवीं कहे मैं कढुदी रही हाढ़े, दरोही दरोही दरोही तेरा नाम दृढ़ाईआ। किरपा कर मेरे अमाम सच्ची सरकारे, शाह सुल्तान तेरी सरनाईआ। मैं बिन अक्खां नैण उघाड़े, चौदां तबकां बाहर वेख वखाईआ। कवण कूटे निरगुण नूर होवे उज्यारे, जोती जाता करे रुशनाईआ। जिस दा राह तकदे पैग़म्बर गुर अवतारे, जुग चौकड़ी अक्ख खुल्हाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी निहकलंक लए अवतारे, कल कल्की वेस वटाईआ। दिस ना आए दोए लोचन विच संसारे, सहिसा रोग ना कोए मिटाईआ। मैनूं गुर अर्जन दस्स के गया सदी चौधवीं उस दा मेला होणा अन्तिम रावी किनारे, रवादारी समझ किसे ना आईआ। चार जुग दे छोटे छोटे इशारे, पेशीनगोईआं विच समझाईआ। प्रभ दा अन्त ना कोई पारावारे, बेअन्त कहि के पल्लू रहे छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कहे मैं मेहर मँगी तेरी, मेरी रहमत विच दुहाईआ। धर्म अमाम पावीं फेरी, बेपरवाह नूर अलाहीआ। मेरा लहिणा अन्त नबेड़ीं, चौदां तबकां पन्ध मुकाईआ। जगत जहान तारीं बेड़ी, खेवट खेटा रूप प्रगटाईआ। अग्गे रहे ना कोई झेड़ी, झगड़ा देणा मुकाईआ। दीनां मज़हबां दी छेड़ जो छेड़ी, तुध बिन करे ना कोए सफ़ाईआ। चारों कुण्ट होणी रैण अन्धेरी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। उम्मत नबी रसूलां वधणी बथेरी, मानव मानव रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी आसा वड्डी लम्मी, शब्दी धार समझाईआ। मैं तत्ती तवी वेख कम्बी, तोबा तोबा कर सुणाईआ। नेत्र रो पई धरनी अम्मी, बिन नैणां नीर वहाईआ। जिस दे छाले पए चम्मी, चम्म दृष्टी बैठा डेरा ढाहीआ। ना कोई खुशी ना कोई ग़मी, प्रभ भाणे विच समाईआ। उच्ची कूक पुकार किहा पुरख अकाल खेल करनी नवीं, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा भेव खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे अर्जन दस्सी अगम्म निशानी, निशाने निछावर दिते कराईआ। उम्मत नबीआं

होणी बेगानी, बेवा रूप लोकाईआ। जलवा रहे ना कोए नुरानी, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया चढ़े तुग्यानी, जगत वहिणां विच वहाईआ। कलमे वाले करन बेईमानी, सजदा सीस ना कोए झुकाईआ। ओस वेले परवरदिगार धुर दे मेहर करनी मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। निरगुण नूर जोत प्रगटे नुरानी, अमाम अमामा वेस वटाईआ। जन भगतां मंज़ल दस्से रुहानी, रूह बुत करे सफ़ाईआ। रावी दा निर्मल करे पाणी, चरण कँवल छुहाईआ। सृष्टी दृष्टी होए नादानी, विद्वानी समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सतिजुग मार्ग दस्स आसानी, असल दरअसल राह समझाईआ।

सदी चौधवीं कहे मैं धुर दी धार लक्ष्मी, विष्नूं अंस सरबंस सुहाईआ। लेखा जाणां उत्तर पूरब दक्खण पच्छिमी, चारे कुण्टां वेख वखाईआ। जगत मर्यादा वेखां रसमी, समाज राज खोज खुजाईआ। भेव अभेदा तक्कां जिस्मीं, काया माटी फोल फुलाईआ। इष्ट वेखां धुर दा इस्मी, आज़म कवण नूर रुशनाईआ। मानव ज़ाती तक्कां क़िस्मी, रूप अनूप वेख

९८० २१

वखाईआ। भज्जी फिरां सारी सिम्मती, निरगुण हो के वाहो दाहीआ। अन्त अख़ीर सब दे विच वेखां बेहिम्मती, हौसला हक़ ना कोए वधाईआ । दीन दुनी होई हराम निन्दकी, सज्जण मीत ना कोए वड्याईआ। गुर चेल्यां दीआं कढ्ढण मिन्नती, दूरों सीस निवाईआ। दृष्टी होई निन्दकी, निन्दिआ विच कुरलाईआ । वड्याई रही ना किसे बिन्द की, रकत बूँद ना रंग रंगाईआ। पूजा रही ना देवत सुर इन्द की, विष्न ब्रह्मा शिव ना सीस निवाईआ। धार रही ना गुर अवतार पैग़म्बर सागर सिन्ध की, अमृत बूँद जाम ना कोए प्याईआ। रागनी रही ना जीउ पिंड की, ब्रह्मण्ड खण्ड ना कोए शनवाईआ। खेल मिटी ना हउमे चिन्द की, चिन्ता चिखा ना कोए बुझाईआ। अन्त अख़ीर मेरी प्रभ दे लेखे ज़िंदगी, जीवण ओसे दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेरा संग निभाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं ओसे राम दी सीता, जो रमिआ सर्ब लोकाईआ। जो आदि जुगादी धुर दा मीता, मित्र प्यारा नूर अलाहीआ। जिस दा दर अगम्मा ठांडा सीता, अगनी तत ना कोए जलाईआ। नाम निधाना गाए गीता, गहर गम्भीर करे शनवाईआ। साचा कलमा दस्से हदीसा, हज़रतां आप पढ़ाईआ। लख चुरासी जाणे नीता, नीतीवान फोल फुलाईआ। भेद वेखे हस्त कीटां, ऊचां नीचां खोज खुजाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां देवे सीटां, जुग जुग आपणा हुक्म सुणाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर बणाए नाल इट्टां,

पत्थरां रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं सब दा कढ्ढे आप सिट्टा, सिट्टेबाज़ी ला ख़लक खुदाईआ। लेखा साफ़ दिसे किसे ना चिट्टा, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर पुरख अकाल मन्नया किसे ना पिता, गोबिन्द कूक कूक गया सुणाईआ। एसे कर के पूरन होए किसे ना इच्छा, आत्म ब्रह्म ना वज्जे वधाईआ। पिछला याद ना आवे पिच्छा, अग्गे पर्दा ना कोए खुल्हाईआ। अन्त अख़ीर करे कोई ना रिच्छा, सहायक होए ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे मैं धुर दी राधा, काहन इक्को इक मिलाईआ। जेहड़ा लेखा जाणे सन्तां साधां, सूफ़ीआं वेख वखाईआ। नाम जणाए बोध अगाधा, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। धुन नाद वजाए अनहद नादा, अनरागी राग सुणाईआ। सतिगुर सब दा होवे सांझा, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे वाद विवादा, विख अमृत रूप बणाईआ। शाहो भूप बणे सच राजा, शाह सुल्तान इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी रच रच काजा, करनी दा करता कार कमाईआ। सदी चौधवीं वेखे खेल तमाशा, कलयुग दाता बेपरवाहीआ। सब दीआं पूरीआं करे ख्वाहिशां, निराशा रहिण कोए ना पाईआ। साचे सम्बल करे वासा, सम्भल आपणा क़दम टिकाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाशा, अन्ध अन्धेर ना कोए वखाईआ। जन भगतां सज्जण साका, गुरमुखां रंग रंगाईआ। काया माटी खोल्ह के ताका, परदा दए गवाईआ। नज़री आवे धुर का आक़ा, मालक नूर अलाहीआ। ज़िमीं असमानां बदले ख़ाका, ख़ानगाहां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरा मालक इक अलाह, इलाहुल आलमीन अख्वाईआ । जो दो जहानां बण मलाह, खेवट खेटा सोभा पाईआ। साचा कलमा दए दृढ़ा, कायनात पढ़ाईआ। हदीसां विच दस्स दुआ, निमाज़ां विच सीस झुकाईआ। रहिबर बण के रहनुमा, रस्ता रिहा वखाईआ। पैग़ंबरां दे के आपणा नाँ, नाम निधाना इक समझाईआ। मुहब्बत विच हो मेहरवां, महबूब दया कमाईआ। दीनां मज़हबां वंड वंडा, हिस्सा दीन दुनी रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजा, लोआं पुरीआं फोल फुलाईआ। बन्दे बन्दगी विच बदला, आपणे नाम नाल करे जणाईआ। उह मालक ख़ालक प्रितपालक बेपरवाह, सचखण्ड निवासी नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। आत्मा कहे मैं ओसे दी सुरती, जो शब्द नाद शनवाईआ। मैं ओसे दी मूर्ती, जो पुरख अकाल अख्वाईआ। मैं ओसे दी तूरती, जो तुरिया तों परे करे शनवाईआ। जिस खेल मुकाई नेड़े दूर दी, घर घर विच डेरा लाईआ। मैं जोत प्रकाश हाज़र हज़ूर दी, जो हिरदे रिहा समाईआ। जो आसा मनसा सब दी पूरदी, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। जिस कलयुग बुद्धी रहिण नहीं देणी मूढ़ दी, मूर्ख मूढ़ चतुर सुघड़

९८१
२१

सुजान बणाईआ। इक माटी ख़ाक दे के चरण धूढ़ दी, टिक्के सब नूं देणे लाईआ। नूर बख़्श के निरगुण नूर दी, नूरी चन्द देणे चमकाईआ। गढ़ तोड़ हउमे ग़रूर दी, ग़ुरबत अंदरों देणी कढ्ढाईआ। लेखे लाउणी सेवा गुरमुख मज़दूर दी, जो चाकर हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी चार जुग दी आसा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां वेखदी रही तमाशा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा संग निभाईआ। हथ्थ विच फड़ के फिरदी रही ख़ाली कासा, क़सम खा के दिन्दी रही दुहाईआ। वेखो बिना पुरख अकाल तों पूरा करयो ना किसे ते भरवासा, जो जम्मया सो अन्त मर जाईआ। एथे ओथे देवे कोई ना साथा, सगला संग ना कोए बणाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों किसे कम्म नहीं आउणा पूजा पाठा, सिमरन जोग अभ्यास ना कोए वड्याईआ। सोहे कोई ना तीर्थ ताटा, जिथ्थे प्रभ चरण कँवल ना आप छुहाईआ। वस्त मिले किसे ना हाटा, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। नेत्र रोवे देवी लाटा, अष्टभुज नेत्र नैणां नीर वहाईआ। बिन पुरख अकाले दीन दयाले सदी चौधवीं मुक्के मूल ना वाटा, पैंडा पन्ध ना कोए चुकाईआ। नाले रोवां ते नाले मेरा निकले हासा, सदी चौधवीं रही सुणाईआ। कुछ लहिणा देणा दिसे बाका, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं याद आया पिच्छा, गुर अर्जन रिहा जणाईआ। जिस ने रावी कन्ढे रखी इच्छा, अन्त अख़ीर प्रभ दे विच ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बिन तेरी किरपा साडी समझे कोई ना सिखा, सिख्या चले ना कोए चतुराईआ। तूं सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक एकँकार इक्का, इक इकल्ले तेरी सरनाईआ। तेरी चरण धूढ़ मस्तक ला के टिक्का, टिकटिकी तेरे विच लगाईआ। तेरा दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल निक्का जेहा कित्ता, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। जिधर वेखां तूं सब दी माई सब दा पिता, आत्म दा दाता नज़री आईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैग़म्बर तेरी सिफ्तां वाली कहाणी महिमा वाला दस्सदे किस्सा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी तेरा नाम वड्याईआ। कुछ मेहरवान महबूब मैनूं आपणे प्रेम दी दे दे चिटा, जिस दा लेखा जगत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदी चौधवीं कहे प्रभ होया मेहरवान, मेहर नज़र लई उठाईआ। गुर अर्जन कर ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सारी सृष्टी वेख परेशान, तेरी अगनी जगत रही तपाईआ। पैग़म्बर रहे कोई ना माण, कलमा कायनात ना कोए चतुराईआ। चार कुण्ट फिरे शैतान, शरअ विच दुहाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक होवण बेईमान, बेवा रूप लोकाईआ। इक्को नूर होवे

प्रधान, जोती जाता डगमगाईआ। जो झगड़ा मेटे ज़िमीं असमान, जीव जहान वेख वखाईआ। साचे भगतां कर पहचान, चुरासी विच्चों मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अर्जन किहा मेरे परम पुरख अकाल, अकल कलधारी दे जणाईआ। की सृष्टी दा होवे हाल, हालत कवण बदलाईआ। चारों कुण्ट कूके काल, कला तेरी बेपरवाहीआ। तेरा हुक्म बेमिसाल, जिस दी मिसल ना कोए बणाईआ। तूं दाता दीन दयाल, दयानिध तेरी सरनाईआ। परम पुरख परमात्म हो के मेहरवान, मुहब्बत विच समझाईआ। मेरा शब्द गुरु आदि जुगादी सूरबीर नौजवान, मर्द मर्दाना इक अख्वाईआ। सदी चौधवीं तत करां प्रधान, प्रधानगी आपणे हथ्थ वखाईआ। लेखा मुका के सीता राम, गोपी काहन आपणे विच समाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद चुका के कान, कलमा अगला दयां दृढ़ाईआ। झगड़ा मेट दीन इस्लाम, इस्म आज़म इक जणाईआ। धुर संदेसा दयां पैग़ाम, पैग़ंबरां तों परे पढ़ाईआ। सो वेला वक्त लैणा पहिचाण, बेपहिचाण रिहा जणाईआ। जिस वेले रावी कन्ढे आवे निगाह मारे निगाहबान, बिन नेत्र नैणां अक्ख खुलाईआ। रीती नीती बदले जगत जहान, मनमति पिछली दए मिटाईआ। रावी कन्ढा होणा प्रधान, जिस दी बन्दा सार कोए ना पाईआ। ओस वेले गुर अर्जन तूं मेरा मैं तेरा गाया छन्दा, सोहँ सच आवाज़ लगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नूरी चन्दा, मेरे बिन तेरी करे ना कोए रुशनाईआ। पुरख अकाल झट किहा अर्जन ओह वेख गोबिन्द वाला खण्डा, सूरबीर तेरा नूर लवां प्रगटाईआ। जिस दा वासा रखां उपर ब्रह्मण्डा, वरभण्ड दयां वड्याईआ। ओह क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सब नूं समझे चंगा, हिन्दू मुस्लिम वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बख्श इक अनन्दा, पुर अनन्द वज्जे वधाईआ। गुर अर्जन किहा मेरे दीन दयाल दीनां बंधू, तेरी इक सरनाईआ। की लहिणा मेरे नाल रखाया चन्दू, धुर दे चन्द कर रुशनाईआ। पुरख अकाल किहा एह रावी तेरी मँग मँगू, अन्त प्रभ दे अग्गे वास्ता पाईआ। जिस ने भंग पी के बण के आउणा भंगू, उहदा लेखा पिछला नाल मिलाईआ। परवरदिगार आदि जुगादी ढंगू, भेव आपणे विच छुपाईआ। जेहड़ा आर पार किनारा तेरा लँघू, लग मातर डेरा ढाहीआ। गुर अर्जन प्यार विच दीदार विच इज़हार विच उधार विच तिन्न वार वहाए हन्झू, खुशीआं वहिण वहाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले मैं लहिणा देणा मुकाया धोती बोदी जञ्जू, मूंड मुंडाया सुन्नत वाला लेखा पूर कराईआ। फेर दीन दुनी दा दाता बण के दीना बंधू, दीन मज़हब दे बंधन दयां कटाईआ। जन भगतां रंग अनोखा रंगू, जो एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। रावी कहे मैं सुण के अनोखी बात, आपणे अन्तर लई अंगड़ाईआ। कवण वेला होवे अन्धेरी रात, कलयुग

अन्धेरा छाईआ। फेर आवे मेरा पुरख अबिनाश, आपणा वेस वटाईआ। भगतां रखे साथ, सगला संग जणाईआ। पूरी करे गाथ, वायदा तोड़ निभाईआ। सुहाए किनारा ताट, आपणा चरण छुहाईआ। कूड़ी मेटे वाट, सच लए प्रगटाईआ। आसण लाए बिना खाट, कक्खां सेज सुहाईआ। गीत गंवाए बण के भाट, गुरमुख राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे मैं अज्ज तों उठी, आपणे घर लई अंगड़ाईआ। मैं हथ्थ लाया आपणी दोहीं गुट्टीं, बिन उँगलां रही दबाईआ। मेरा नेत्र कोई होर रिहा पुट्टी, सहज नाल उठाईआ। वेखीं किते धोखे नाल ना जावीं लुट्टी, कलयुग कूड़ अन्धेरा छाईआ। रावी किहा मैं गुर अर्जन कोलों चोरी चोरी सी गल्ल पुच्छी, निशानी दस्स जा आपणे माहीआ। अर्जन किहा ओस दिन ओस ने पैरीं पाउणी नहीं जुत्ती, जोड़ा चरण ना कोए छुहाईआ। भगतां दी मंज़ल कर के उच्ची, सेवा सच दी लैणी कमाईआ। तेरी फेर सुहाउणी रुत्ती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। रावी कहे मैं खुशीआं नाल कूक कूक उच्ची, नाअरा सच दिता लगाईआ। मैं ओस वेले धार गाई दो तुकी, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला राग सुणाईआ। मैनूं खुशी होई साधां सन्तां तों मिलणी छुट्टी, जगत आशक माशूकां संग ना कोए बणाईआ। मेरी पुराणी धार चरोकणी टुट्टी, पुरख अकाला मेल मिलाईआ। मैं ओसे ते आपणी डोरी सुट्टी, जो सुत्तयां लए जगाईआ। जन भगतो मेरे नाल मिल के तुसां सब मनाउणी खुशी, खुशहाली विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नर हरि आपणी दया कमाईआ।

✻ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ गुरचरण सिँघ दे गृह पिंड कत्तोवाल ज़िला गुरदासपुर ✻

रावी कहे मैं तट किनारे रही संवार, कन्ढी बहि बहि आपणी खुशी मनाईआ। राह तकदी रही सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चार, चौकड़ी बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। ख़बरां पुच्छदी रही कोलों पैग़म्बर गुर अवतार, तत्तां वाल्यो दयो जणाईआ। की खेल करे मेरा निरँकार, निरगुण दाता धुरदरगाहीआ। की हुक्म सच्ची सरकार, सच संदेसा दयो सुणाईआ। सारे कहि के गए कलयुग अन्तिम आवे कल कल्की अवतार, निहकलंक रूप वटाईआ। मैं खुशीआं विच करदी रही इंतज़ार, आप आपणी आस वधाईआ। कुछ संदेसा अर्जन दिता नाल प्यार, मुहब्बत विच सुणाईआ। तूं रहिणा ख़बरदार, बेख़बरे ख़बर दयां पुचाईआ। जिस नूं कहिंदे परवरदिगार, शाह पातशाह नूर अलाहीआ। ओह बण के सांझा यार, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। अमामां दा सिक्दार, पैग़म्बरां दा दिलदार, मसीहां दा मसला हल्ल कराईआ। जलवा नूर कर उज्यार,

खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। दीन दुनी दा पिछला क़र्ज उतार, वेखणहार सर्ब संसार, सृष्टी दृष्टी फोल फुलाईआ। साचा मार्ग दस्स आपणी धार, धरनी धरत धवल दए अधार, धर्म दा राह दए वखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म बोल जैकार, शाह पातशाह शहिनशाह बण आप करतार, निरगुण निरवैर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा मेला मेल मिलाईआ। रावी कहे मैं तट किनारे कीते साफ़, सफ़ा प्यार दिती विछाईआ। कल्पणा रही ना कोए गुस्ताख़, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। रख के इक्को आस, आसां भरी दुहाईआ। मेरा आवे पुरख अबिनाश, हरि करता नूर अलाहीआ । जन्म कर्म दा कुकर्म करे मुआफ़, दुरमति मैल धवाईआ। सदी चौधवीं वेखे हक़ इन्साफ़, अदल विच वड्याईआ । जन भगतां पैज लए राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द अगम्मी दस्से बात, बातन पर्दा लाहीआ। अन्धेरी मेटे रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। दीन दुनी बणा के इक जमात, दीनां मज़हबां डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म देवे साथ, सगला संग निभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथ, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ । दर सुहा के पुरख समराथ, हरि करता नूर अलाहीआ। लहिणा देणा चुकाए मेरा मात, धरनी धरत धवल रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे मैं तट किनारे कीते चंगे, सोहणे साफ़ कराईआ। वेखण आई जमना सुरस्ती गोदावरी गंगे, आपणा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आवण पैरीं नंगे, बिन तन वजूद पन्ध मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे मँग मँगे, दूर दुराडे ध्यान लगाईआ। देवत सुर देवण अनन्दे, रस देवे धुरदरगाहीआ। अष्टभुज शस्त्रां चण्डे, सिँघ अस्वार पई दुहाईआ। चार जुग आपणा भार चुक्क के कंधे, भज्जण वाहो दाहीआ। त्रैगुण माया मेट के पन्धे, सच दवारे डेरा लाईआ । पंज तत दे वेखणे बन्दे, बन्दगी वाले फोल फुलाईआ। साहिब स्वामी देवे संगे, सगला संग बणाईआ जन भगत सुहेले ला के अंगे, अंगीकार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे मेरा तट किनारा सोहणा, सोभावन्त सुहाईआ । जिथ्थे कलयुग जीवां काया कण्पड़ दुरमति मैल धोणा, पतित पुनीत बणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण धार प्रगट होणा, होका हक़ सुणाईआ। जन भगतां खुल्हाए आपणा लोइणा, लोचन इक वड्याईआ। ग़फ़लत विच किसे ना सौणा, सुत्तयां लए जगाईआ। परम पुरख दा खेल होणा मनमोहणा, मोहणीआं बैठण सीस निवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे मेरे अंदर चाउ घनेरा, घड़ी पल विसर ना जाईआ। कद आवे साहिब स्वामी मेरा, मोहे विछड़ी लए मिलाईआ। मेरे कन्ढी लावे डेरा, तटां दए वड्याईआ। बंने लावे बेड़ा,

९८५
२१

जगत वहिण ना कोए वहाईआ। धर्म वसावे खेड़ा, वज्जे नाम वधाईआ। नौ हथ्थ दा नाल होवे जेड़ा, नव नौ चार दा पन्ध मुकाईआ। जिस कारण मारना फेरा, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। मोहे सज्जण मिले साहिब प्रभ मोरा, मिल मिल वज्जे वधाईआ। मेरे अन्तर निरंतर खुशीआं दा बादल होवे घनघोरा, आपणा रूप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक सुहाईआ। रावी कहे मेरे साहिब तक्कीं ना बालू रेत, रीतीवान तेरी सरनाईआ। मैं मँगदी तेरा हेत, प्रीतम बेपरवाहीआ। दरस नेतन नेत, निज लोचन नैण रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर हो गए केत, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। तेरा आया किसे ना भेत, बेअन्त कहि के सारे गए गाईआ। मेरा लिख्या किसे ना लेख, ओट तेरी गए समझाईआ। मैं रख के धुर दी टेक, बैठी राह तकाईआ। मेरे साहिब सुल्तान आ के वेख, आख़र पन्ध मुकाईआ। मैं तेरे चरण झाड़ां नाल आपणे धर्म धार दे केस, सोहणा जोड़ कराईआ। बेशक मेरे कन्ढे आया नहीं दसमेश, पार ब्यासों गया समझाईआ। जिस वेले मिटाउणे मुल्ला शेख़, फेर आवां चाँईं चाँईंआ। मेरा प्रभ आदि मेरा साहिब एक, जिस दे गुर अवतार पैग़ंबर अनेक, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। जिस वेले आवे माझे देस, मजलस भगतां नाल बणाईआ। धुर दा मालक बण नरेश, नर नरायण दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरे मस्तक लावे मेख, धूढ़ी नाम वाली रमाईआ।

✻ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ जवंद सिँघ दे गृह नवां पिंड ज़िला गुरदासपुर ✻

रावी कहे मेरे तट किनारे रहे कुद्द, खुशी खुशी विच्चों उपजाईआ। क्यों संदेसा दे के गया बुध, बुद्धी तों परे परे समझाईआ। जिस कारण सब कुछ रिहा सुझ, सोझी समझ मेरे विच आईआ। जिस कलयुग कूड़ा मेटणा जुग, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। सो स्वामी निरगुण धारों आवे उठ, जोती जोत कर रुशनाईआ। तेरे उपर जाए तुठ्ठ, मेहर नज़र इक उठाईआ। लख चुरासी विच्चों जन भगत सुहेले थोड़े लै के मुठ, मुट्ठी राख तेरे विच सुटाईआ। इक खोपरा लिआवे जुट्ट, दोहां दा मेला दए मिलाईआ। इक काला गाना बन्न्ह के गुट्ट, सगन राम वाला भुगताईआ। तेरा भाग ना जाए निखुट्ट, निहकरमण रूप ना कोए वखाईआ। साफ़ करा के तेरा अनोखा बुत, बुतख़ाने दी लोड़ रहे ना राईआ। वेस वटा के अबिनाशी अचुत, पतिपरमेश्वर आपणा परदा लाहीआ। तेरा बदल देवे रुख़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। रावी कहे मेरे तट किनारे खुशीआं नाल रहे नच्च, अग्गा पिच्छा नज़र किसे

ना आईआ। मैं उठ के वेख्या झट, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। रोंदे वेखे अठसठ, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। हरि का नाम रिहा कोई ना रट, रट्टा प्या जगत लोकाईआ। नाम अलूणी सिल लए कोई ना चट्ट, चेटक माया ममता मोह वधाईआ। नाड़ी नाड़ी उबले रत्त, लख चुरासी रही कुरलाईआ। वस्त अमोलक किसे ना आवे हथ्थ, ख़ाली हथ्थ देण दुहाईआ। पंच विकारे पाई नथ्थ, ततव तत ना कोए तुड़ाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बर मार्ग गए दस्स, दीन दुनी गई भुलाईआ। मन कल्पणा विच रहे नस्स, तृष्ना कूड़ होई हल्काईआ। निज नेत्र खुल्ही किसे ना अक्ख, दोए लोचन दरस कोए ना पाईआ। सब दा काया खेड़ा हुंदा दिसे भट्ठ, कलयुग भठियाला अगनी रिहा डाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दा कर के गए जस, वेद पुरनां सिफ्त सालाहीआ। सो साहिब मेरा समरथ, हरि करता नज़री आईआ। सदी चौधवीं हो प्रगट, नूर नुराना डगमगाईआ। मेरे आउण वाला तट, किनारे दए वड्याईआ। मैं लाहा लैणा खट्ट, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेरी उजल होणी मत, दुरमति रहे ना राईआ। मेरा नाता होवे पक्क, वायदा पूर कराईआ। ओह मालक हक़ीक़त हक़, लाशरीक नूर अलाहीआ। जिस दा हुक्म होणा यक्क, यकतरफ़ कार कमाईआ। सब दी जाणे मित गत, लख चुरासी खोज खुजाईआ। जो काहन गया दस्स, सो बंसरी धुन सुणाईआ। मैं जोड़ के दोवें हथ्थ, बिन हथ्थां सीस निवाईआ। चरण कँवलां ढठ्ठ, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र नाल तराईआ। रावी कहे मेरे तट किनारे होवण सोभावन्त, सोभावन्त सुहाईआ। मेला मिले श्री भगवन्त, जो निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। जो आदि जुगादी कन्त, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दा किसे ना पाया अन्त, बेअन्त कहि के सारे गाईआ। जिस नूं खोजदे साध सन्त, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जिस दी महिमा सदा बेअन्त, पारब्रह्म धुरदरगाहीआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गाउँदी मंत, ढोले सिफ्तां वाले सालाहीआ। ओह सब दा तोड़े गढ़ हंगत, हउमे दए गवाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, अगली सिख्या दए समझाईआ। भगत सुहेले तारे साची संगत, सगला संग निभाईआ। मेरी मन्न के जुग जुग दी मिन्नत, दर ठांडे चरण टिकाईआ। ग़मी मिटाए चिन्नत, हरख सोग गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सुहाए मेरी अगम्मी सिम्मत, जिस दिशा दी सार कोए ना पाईआ।

❊ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ चरण सिँघ दे गृह नवां पिंड ❊

रावी कहे मेरे तट किनारे वेख सुथरे, सोहणे साफ़ नज़री आईआ। सूफ़ी फ़कीर लाउँदे मुजरे, होके हक़ हक़ सुणाईआ। बीते याद करदे दिन गुज़रे, माज़ी वेख वखाईआ। बिन प्रभ मानस जन्म किसे ना सुधरे, साधक सिद्ध ना कोए कराईआ। बिन पारब्रह्म पार कोई ना उतरे, सच किनार ना कोए लगाईआ। जेहड़े हरफ़ हरूफ़ क़लम शाही नाल उकरे, मन्त्रां कलमयां विच जणाईआ। ओस करनीउँ कदे ना मुकरे, जो भविख्त गया दृढ़ाईआ। जोती धारों आपे उतरे, जन्म देवे कोई ना माईआ। भगत होण ना देवे नाशुकरे, शुकरीआ सब तों रिहा कराईआ। जेहड़े एस दवारिउँ उखड़े, दो जहान ना कोए वड्याईआ। मेरे किनारे जन भगतां दे धोवण आए मुखड़े, अमृत आपणा नाम लिआईआ। उलटे गर्भ ना होवण रुक्खड़े, रुख़स्त लख चुरासी विच्चों पाईआ। जन्म मरन दे मेट के दुखड़े, दुखियां दर्दीआं दर्द वंडाईआ। सोहणी सुहञ्जणी करे रुतड़े, प्रेम महक महकाईआ। एह खेल अबिनाशी अचुतड़े, चेतन हो के दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। रावी कहे मेरे तट किनारे वेखे ना टेडे विंगे, सिध्धा आपणा ध्यान लगाईआ। जेहड़ी कहिंदे धौल चुक्की धवल सिंगे, धरती भार उठाईआ। रावी कहे ओह खेल प्रभू दा निजे, मैं सहज दयां जणाईआ। जिस दी नींह कोई ना चिणे, ओह धरनी सोभा पाईआ। जिस ने कोट ब्रह्मण्ड खण्ड पता नहीं बणाए किन्ने, गुर अवतार पैग़म्बर समझ किसे ना आईआ। जो आया सो करदा गया बिने, बेनन्तीआं विच जणाईआ । लेखा लिख के गए त्रैलोकी धार तिन्ने, दीन दुनी वंड वंडाईआ। जिस धरती विच्चों पाणी अगम्मा सिंमे, उस दा वहिण ना कोए जणाईआ। जिस दी कुख विच्चों निंमे, ओह प्रभू जणेंदी इस दी माईआ। जिस ने बणाए रात दिने, सूर्या चन्द कर रुशनाईआ। ओह लेखा इस दा आपे मिणे, ओड़क ओड़क कहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप वरताईआ । रावी कहे धौल चुक्के कोई ना भार, आपणा बल ना कोए रखाईआ। एह खेल सच्ची सरकार, जिस ने आपणी चरण धूढ़ नाल धरती दिती बणाईआ। खिच्ची रखे नाल प्यार, सहारा अवर ना कोए रखाईआ। अमृत दे के रस धार, चरणोदक इस दे विच टिकाईआ। जिस दी पा सक्कया ना कोए सार, अन्त कहिण कोए ना पाईआ । सत्त ज़िमीं सत्त असमानां कहि के गए उच्चार, एह निक्की जिही वड्याईआ। लख पाताल आकाशां नानक दिते वखाल, ओह एहो कहि के शुकर मनाईआ। इस तों परे वेख किसे नहीं पाई सार, समझ विच समझ ना कोए जणाईआ। साहिब मेरा सब दा मालक इक मुख्त्यार, अगणत अनन्त नज़री आईआ। मैं उहदे चरण चरणोदक दी उह अनोखी धार, जिस दी बूँद

बूँद आपणे विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह पातशाह सच्ची सरकार, मेरा सुहाए तट किनार, जिथ्थे गुर अवतार पैग़ग्बरां दा लग्गणा दरबार, दरबारी हो के वेख वखाईआ।

✻ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ दुरगी दे गृह नवां पिंड ✻

रावी कहे इक दिन आए सप्त ऋषी, वस्त्र तन ना कोए रखाईआ। उन्हां उँगलां नाल इक पट्टी आप लिखी, लिख के खुशी बणाईआ। मैं ग़ौर नाल तक्कया मैनूं मूल ना दिस्सी, रूप रंग रेख ना कोए जणाईआ। मैं गुस्से विच आ के खिझी, ज़ोर नाल दिता जणाईआ। एह की धार बारीक निक्की, मैनूं दयो समझाईआ। अत्री ने चपेड़ मारी मेरी विच गिच्ची, मूँह दे भार सुटाईआ। कमलिए आह वेख सदी चौधवीं दी अन्तिम मिती, तैनूं दयां वखाईआ। जेहड़ी प्रभ दे चरणां विच टिकी, दूजा स्थान ना कोए वड्याईआ। मेरे मस्तक नूं लग्ग गई मिट्टी, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। धार नज़र आई चिट्टी, आपणा रंग बदलाईआ। मैनूं हाहे उत्ते दिसी टिप्पी, हँ ब्रह्म नूर अलाहीआ। एह प्रभू दी सिखी, जो तन वजूद नाता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे उन्हां मेरी फेर इक लकीर, लहिंदे चढ़दे लाईन लगाईआ। मेरा जिगर दिता चीर, अंग पीड़ पीड़ कराईआ। मेरी टुट्ट गई हड्डी रीड़्, दु:ख विच दुहाईआ। उन्हां हस्स के किहा आह वेख जगत शरअ ज़ंजीर, जो गुर अवतार पैग़ग्बरां दिते बणाईआ। फेर वखाई अगली तस्वीर, नूर नूर रुशनाईआ। फेर नजरी आया कबीर, बिना जन्म तों सोभा पाईआ। फेर खण्डा दिस्सया गोबिन्द वाली शमशीर, दोवें धार चमकाईआ। फिर रोंदे वेखे शाह हकीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। फेर तक्कया बेनज़ीर, नूर नुराना नूर अलाहीआ । फेर सहज नाल दस्सी तदबीर, तरीका इक दृढ़ाईआ। जिस ने बदलणी तेरी तक़दीर, ओह साडा मालक धुरदरगाहीआ। एह खेल करे कलयुग अन्त अख़ीर, सदी चौधवीं नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी बदल देवे ज़मीर, ज़ामन इक्को इक रखाईआ।

❋ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ शहिनशाह जी दे नाल पिंड कलीच पुर ज़िला गुरदासपुर ❋

पूरब जन्म दा लहिणा तेरा, तेरा हो के दए चुकाईआ। तूं रातीं दर्शन कीता मेरा, तैनूं लभ्भण वास्ते आपणा पन्ध मुकाईआ। इधर ओधर मार के गेड़ा, फड़ ल्या आपणी बाहींआ। तेरा अन्तिम कर के जाणा नबेड़ा, मानस जन्म लेखे लाईआ। चुरासी चुका के जाणा गेड़ा, जन्म मरन विच ना फेर आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहरवान मेहरवान सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ।

❋ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ बलदेव राज दे गृह पिंड कोठी भीम पुर ❋

रावी कहे मैं आपणे तट किनारे पोचां, साफ़ सुथरे रही बणाईआ। अठ्ठे पहर आपणे अंदर सोचां, सोच समझ ना कोए चतुराईआ। पुरख अबिनाशी दर्शन लोचां, लोचण नैणां राह तकाईआ। उच्ची कूक सुणावां होका, हुक्म बेपरवाहीआ। सुनेहड़े देवां परलोका, चौदां तबकां करां जणाईआ। मैनूं मिलणा साचा मौका, मुकम्मल मेला लए मिलाईआ। जिस दे विच अर्जन लाया गोता, अगनी तत बुझाईआ। मेरा भाग उठाया सोता, सुत्ती अक्ख खुल्हाईआ। नाम जणा के नौका, बेड़ा गया
१९० बन्हाईआ। माण गवा के हउँ का, हँ ब्रह्म समझाईआ। खेल वेखणा प्रभ दे नाउँ का, जो आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। १९०
२१ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। रावी कहे मैं तट किनारे कीते पधरे, इक्को रंग रंगाईआ। २१
मेरी आसा मनसा सुधरे, मिले मेल बेपरवाहीआ। मैनूं लभ्भना ना पए किधरे, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। आपणी धारों आपे निकले, निरवैर रूप बदलाईआ। मेहरवान हो के आवे मित्रे, मित्र प्यारा आप अख्वाईआ। मेरे दूर करावे ख़तरे, ख़ातरखाह ना कोए रखाईआ। जिस अर्जन ने चौदां सौ तीह अंक लिखे पत्रे, उह पतण बहि के गया समझाईआ। जिस दी धार भगत बहत्तरे, सत्तरां रंग वखाईआ। ओह खेल खेले उत्तर पूरब पच्छिम दक्खणे, चारे कुण्ट वेख वखाईआ। तेरे भाण्डे भरे सक्खणे, अमृत धार वहाईआ। देवे वड्याई अलख अलखणे, अलख अगोचर दया कमाईआ। चल के आए तेरे घाट पत्तने, तट किनारे सोभा पाईआ। तूं आपणे दुखड़े ओस दे अग्गे रखणे, रो रो देणा जणाईआ। जिस ने तेरे प्यार विच सुक्के मंडे छकणे, जन भगतां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। रावी कहे मेरे तट किनारे रंगीले, रंगत गए बदलाईआ। मेरी मन्ज़ूर होई अपीले, प्रभ दिती माण वड्याईआ। आवे किसे बहाने हीले, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। जिस दे वस्त्र सूहे चिट्टे लाल काले पीले,

नीले रंग वखाईआ। उस दा राह तक्कण जल होड़े मीने, मच्छ कच्छ ध्यान लगाईआ। जिस ने मेरे बूँद रस पीणे, प्रेम प्रीती नाल रखाईआ। फेर खेल करना मक्के मदीने, चरण चरण विच्चो बदलाईआ। पैग़म्बर जिस दे होणे अधीने, सिर सके ना कोए उठाईआ। फिर भगतां दे चरण रखणा उपर सीने, सांतक सति सति कराईआ। एह खेल होणा फल्गुण महीने, रुतड़ी दस अठ्ठ महकाईआ। लेखे मुकणे मरने जीणे, जीवण जुगती दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे मेरे कन्ढे वेखणे उच्चे, ऊँच अगम्म दिती वड्याईआ। जिथ्थे भगत पहुंचणे सुच्चे, सोहणा प्रेम वधाईआ। भाग लग्गणा काया जुस्से, जिस्म ज़मीर बदलाईआ। सुहञ्जणी होणी रुत्ते, खुशी मात महकाईआ। मैं वी वौहणी आपणी गुत्ते, मेंढी सीस गुंदाईआ। गोली मेरे विच्चों भरे पंज बुक्के, बुकल आपणी विच टिकाईआ। पंज मकई दीआं छल्लीयां दे होणे तुक्के, पूरे साफ़ नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैग़म्बरां सब दे कोलों लेखे पुच्छे, पिच्छे रहिण कोए ना पाईआ।

✻ १४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ लाल सिँघ दे गृह पिंड गुजरात ✻

नी गंगा नी सुरस्ती आह लओ पाती, गोदावरी हस्स के रही सुणाईआ। भैणे किहदी चिठ्ठी किस ने वाची, पढ़ के दे सुणाईआ। अड़ीउ रावी ने घल्ली मेरे कन्ढे आउणा कमलापाती, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। तुसीं आउ बदल लओ आपणी हयाती, जीवण जुगत उलटाईआ। अग्गे सिफ्त सुणी तुसीं काग़ज़ाती, हुण दर्शन लओ पाईआ। पन्ध मुकाउणा वाटी, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुक्म रिहा सुणाईआ। सुण के गंगा पै गई सोचीं, हथ्थ मथ्थे उत्ते टिकाईआ। जमना हलूण के किहा, भैणे तेरा ते ओथे मित्र प्यारा रविदास चमारा मोची, पिछला नज़री आईआ। सुरस्ती कहे उह कल्ला नहीं उहदे नाल प्रीतम चोजी, सोहणा संग बणाईआ। गोदावरी कहे कमल्यो उहदे कोल उहदे भगत बैठे विच गोदी, मैं गोदावरी रो के दयां दुहाईआ। नी साडा चौहां दा पाणी ना होया निर्मल उह गुरमुखां दा बण गया धोबी, दुरमति मैल धवाईआ। चार जुग दे गुर अवतार पैग़म्बर सन्त भगत जोगी, जुगती नाल सारे सीस निवाईआ। इक्को निगाह तक्के धोती टिक्का जञ्जू बोदी, बोदयां वाले वेख वखाईआ। जमना कहे गंगी ज़रूर नाल लै के जावीं रविदास वाली कौडी, कसीरा आपणे हथ्थ उठाईआ। निमस्कार करीं जा के हथ्थ लावीं गोडीं, सुरस्ती कहे भैणे नवीं बोली बोलीं, गुड

मॉरनिंग कहि के देणा सुणाईआ। एह ते गल्ल साडी पुराणी घरोगी, क्योंकि विचोला रविदास नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सुरस्ती कहे नी गंगा तैनूं सच कहिंदे गंगा माता, ते माँ आखण वाल्यां नूं कदी पिउ वी दई वखाईआ। अग्गे ऐवें कही गए ओह पुरख बिधाता, पुरखोतम इक अख्वाईआ। भगतां जोड़े नाता, धुर दा मेल मिलाईआ। शब्दी दस्सदा आया गाथा, जुग जुग कर पढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां मनाउँदा रिहा आखा, हुक्मी हुक्म समझाईआ। सचखण्ड दवारे बणया रिहा राखा, जगत जहान नज़र ना आईआ। उहदा दर्शन पाउणा साख्याता, साखी पिछली देणी भुलाईआ। चरण चुम्म के बणा लै आपणा नाता, अगला जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गंगा कहे मैं जगत दी माता ते ओस दी गंगी, चरणां विच रखाईआ। धूढ़ी नाल रिहा रंगी, आपणा रंग रंगाईआ। माण वड्याई दे के चंगी, चन्द वांग चमकाईआ। हुक्म दी ला पाबन्दी, वहिणां विच वहाईआ। मैनूं लिख के दिती इक संदी, सनद मेरे विच छुपाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम आया कन्ढी, कंडा ख़ार चुभ्भे लोकाईआ। मैं आवां विच वरभण्डी, आपणा फेरा पाईआ। मैनूं सृष्टी कहे पाखण्डी, भेव ना किसे जणाईआ। आपणी खेल करे बहु रंगी, अनक कलधारी आपणी कल प्रगटाईआ। पवण देवे ठंडी, अगनी तत बुझाईआ। मेरी अक्ख रहे ना अन्धी, नेत्र दए खुल्हाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गंगा कहे तूं क्यों हस्सी सुरस्ती, अंगी तन ना कोए छुपाईआ। भैणे मैनूं प्रेम वाली आ गई मस्ती, मैं बुढ्ढी नढ्ढी आपणा रूप बदलाईआ। मैनूं खुशी होई मैं तक्कणा प्रीतम अर्शी , मालक धुरदरगाहीआ। मैं जुग चौकड़ी ख़सम नहीं कीता कोई फ़रज़ी, जो जंम्मआ ते मर जाईआ। इक्को बेनन्ती ते इक्को अर्ज़ी, इक्को दवारे दिती टिकाईआ। जिस वेले आवें बण के भगतां दा दर्दी, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। मैनूं वी सेवा बख्शीं आपणे घर दी, चाकर हो के सेव कमाईआ। सच पुच्छो मैं जुग चौकड़ी तूं मेरा मैं तेरा ढोला रही पढ़दी, एसे मस्ती विच गुर अवतार पैग़म्बरां नाल अक्ख ना कोए मिलाईआ। वेखदी रही पूरब पच्छिम दक्खण दिशा चढ़दी, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। वहिणां विच रही हड़्दी, भज्जी वाहो दाहीआ। मैनूं याद सताउँदी रही नरायण नर दी, दिवस रैण चैन ना आईआ। बिरहों विछोड़े विच रही मरदी, मर जीवत आपणा रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की करता कार कमाईआ। गंगा कहे तगड़ी हो भैण जमना, जम्मण वाला वेख धुर दा माहीआ। सुरस्ती कहे गंगा एह विचारी डरपोक ओस नूं वेख के एस ने कम्बणा, दंदोड़िके विच दन्दां लए हिलाईआ। फिर चार चुफेरे वेखे किथ्थे रविदास चम्यार जो गंढे तन्दना, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जमना

कहे तुसीं सच दस्सो की सारीयां इक्को प्रभू मन्नणा, कि होर वी कोई गुसाईंआ। गोदावरी कहे मैं ते पहिलों तक्कां गोबिन्द चन्नणा, जो चन्द नूर रुशनाईआ। जिस ने जगत जहान दा बणना थम्मणा, पृथ्मी आकाश हुक्म नाल बंधाईआ। ओसे दा हुक्म मन्नणा, ओसे दी इक सरनाईआ। गंगा कहे नी ओहो पुरख अकाल जिस रूप वटाया अन्न्णा, अंन्निआं करे रुशनाईआ। भगतां बेड़ा बन्न्णा, बांदी नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गोदावरी कहे नी दस्सो जाईए कदों, की सलाह पकाईआ। गंगा जमना सुरस्ती कहिण पहिलों सानूं दस्स असीं जम्मीआं केहड़ी यद्दों, ते केहड़ा साडा पिता माईआ। गोदावरी कहे पहिलों लँघो आपणी हद्दों, जगत वाला पन्ध मुकाईआ। पिछली कीती सारी रद्दो, माण अभिमान गवाईआ। रावी कंडे जा के ओस दी सरनी लग्गो, तुहानूं आपे दए समझाईआ। फिर भावें बुझो ते भावें जगो, एह तुहाडे हथ्थ वड्याईआ। मैनूं ते चाअ भज्ज चलीए अज्जो, पिच्छे आस ना कोए रखाईआ। गंगा कहे नी आह चार जुग दयां मुरदयां दीआं हड्डीआं पहिलों मेरीआं दब्बो, मैनूं साफ़ दयो कराईआ। सुरस्ती हस्स के कहे असीं कोई भार चुक्कण वालीआं नहीं गधो, पिट्ठां उत्ते लईए टिकाईआ। जमना विच्चों बोली मधों, मधुर धुन सुणाईआ। नी जे तुसां नहीं बणना हँस कग्गों, आपणा रूप लैणा वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म समझाईआ। गंगा कहे वेखो भैणो मेरे विच हड्डीआं वाले बोलण मुर्दे, सारे देण दुहाईआ। असीं सारे फिरदे तुरदे, लख चुरासी जोती रूप बदलाईआ। सानूं दरस नहीं होए सच्चे सतिगुर दे, जो बेड़े लए चढ़ाईआ। जुग जुग वहिणां विच रहे रुढ़दे, पार किनार ना कोए लगाईआ। साडे अंदर फ़ुरने रहे फुरदे, चार जुग ध्यान लगाईआ। किस बिध भगत सुहेले पार उतरदे, गंगा सानूं दस्स दे जगत माईआ। किथ्थों प्यार मिलदे सच्चे पितर दे, पिता आपणी गोद उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे गए मुकरदे, दाअवे नाल पार ना कोए लँघाईआ। पूजा पाठ विच लगा के आप लुक गए, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। किस बिध पैंडे अन्तिम मुकदे, पन्ध रहे ना राईआ। गोदावरी कहे नी गंगा इन्नां नूं दस्स दे जे कमल्यो ढोले गा लओ इक तुक दे, तुरत लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ । जमना कहे सखीओ केहड़ा पाउणा लबास, सोहणा रूप बणाईआ। सुरस्ती छोटी ते मख़ौलण कहे नेत्र कज्जल ना पाइओ किते शिवजी भज्ज के ना आ जावे उत्तों कैलाश, मोह मुहब्बत वाला वधाईआ। गोदावरी कहे शाबाश, सोहणी गल्ल दिती समझाईआ। गंगा कहे नी उह ते भोला नाथ, काम वासना ना कोए हल्काईआ। जमना कहे मोहणी पिच्छे ओस दा गया विश्वास, विषे विच आपणा लिंग वधाईआ। जमना कहे गोदावरी सुरस्ती नी सानूं काहदा

९९३
२१

डर, हुण ते साडे कोल आ गया साडा बाप, जिस दे भय विच विष्न ब्रह्मा शिव सारे सीस निवाईआ। चोरी ना करयो सच दस्स दयो भैणो जे कोई कीता पाप, अक्ख गुनाह वाली ना लैणी छुपाईआ। पहिलों ही जा के गोदावरी कहे रावी नूं दईए आख, कन्नां विच सुणाईआ। रावी कहे मैं दूर दुराडी सुणदी तुहाडी बात, रमज़ इशारा मेरे अंदर आईआ। क्यों गुरु अर्जन मैनूं बेनन्ती करन दी दस्स गया जाच, जिस वेले मेरे विच वड़ के पुरख अकाल दे चरण ध्यान लगाईआ। ओस वेले उहदा सरीर रिहा नहीं सी माटी काच, पाणी विच पाणी जल विच जल जोत विच जोत मिल के अरदास दिती सुणाईआ। ख़बर पुज्जी उत्ते आकाश, झट पुरख अकाला पहुंचिआ पास, रावी कहे मेरा उखड़ गया स्वास, थर थर कम्बी नेत्र रोई तेरी दरोही तेरे वरगा अग्गे नज़र कोए ना आईआ। ओह कर के हास बिलास, मेरे मथ्थे ते रख के हाथ, चरणां उत्ते टिका के माथ, कहि के गया ख़ास, जिस वेले आवां बण के पुरख अबिनाश, जन भगतां होवे साथ, कलयुग मेटां अन्धेरी रात, तेरी बदल देवां ज़ात, ज़ात आपणी नाल मिलाईआ। रावी कहे भैणो जेहड़े मर्ज़ी पाओ कपड़े, आपणे तन श्रृंगार बणाईआ। वेख्यो किते बाहरों ना बण जाइओ बगले बप्पड़े, अंदरों करनी सफ़ाईआ। जेहड़े प्रभ दे कोल अप्पड़े, उहनां दे रविदास वांगू पाटे चीथड़े सोहणे नज़री आईआ। उन्हां दे सोहणे लग्गदे छप्परे, कुल्ली कक्खां मिले वड्याईआ। तुहाडे किनारयां उत्ते ब्राह्मणां बड़े फरोले पत्रे, गायत्री मन्त्र पढ़ पढ़ के होम यज्ञ कराईआ। बड़यां ने भेंटा लईआं बक्करे छत्रे, छत्रधारी राजे गए फेरीआं पाईआ। अग्गे वेखो जिधर जांदे ओधर वज्जदे लफ्फड़े, राए धर्म दए सज़ाईआ। चुरासी विच जकड़े, बंधन सके ना कोए तुड़ाईआ। सारीआं कहिण हाए एह बचन हक़ड़े बकड़े, हउक्यां विच दुहाईआ। रावी कहे एसे कर के तुहानूं चल के आउणा पैणा जंगल कल्लर रक्कड़े, कान्नयां काहीआं विच आपणा पन्ध मुकाईआ। गंगा कहे राह विच सुणया बड़े ख़तरे, ठग्ग चोर यार बैठे डेरा लाईआ । रावी कहे ऐवें ना करो नख़रे, की मैनूं रहीआं सुणाईआ। गोबिन्द वांगू आपणे यार दे विछा दयो सत्थरे, भय भउ दोवें दए चुकाईआ। फेर पढ़ने पैण ना कोई मन्त्रे, निमन्त्रन देण कोए ना आईआ । गोदावरी कहे भैणो मेरे कोल गोबिन्द दी पुराणी र्शीणी याद ढाई सन्तरे, जो मातलोक छड्डण तों पहिलों मेरे विच गया रखाईआ। मेरी आसा रोंदी अन्तरे, मेरा अन्तश्करन रिहा कुरलाईआ। उह नारद आ गया नी कुड़ीयो मैनूं कुछ पढ़ लैण दयो मन्त्रे, ओअँग जल पाणी, गंगा जल जाणी, इन्द इंद्रासण सिँघ सिँघासण मुनी जन जाणी, बिसन बिसन बिस हरे, बाशक तशक तेरी बाणी, वेख्यो कुड़ीयो मुटिआरो किते विष्नूं दी जा के बण ना जाइओ सवाणी, ओह बड़ा चलाक जिस वेले चाहे सब दा बण जाए हाणी, झट पट आपणा रूप बदलाईआ। नी ओह होर वेखो ओह जुलाहा कबीर मोढे ते

चुक्की आउँदा ताणी, भार सवा मण टिकाईआ। गंगा कहिंदी नारद जी तुहाडे पिच्छे कौण, झट वेख के कहिंदा एह ब्रह्मा दी मिशराणी, सुरस्ती मस्ती विच भज्जी आईआ। नारद करे एह वड्डे घर दी ते एहदी जुत्ती पुराणी, वेखो नज़री आईआ। उस रो के किहा मैं इक अर्ज़ सुणाणी, सच सच जणाईआ। वे नारदा पखण्डीआ मुशटंडया कुछ सुणया ई, नहीं भाबो, वे प्रभू ने काने दी मधाणी नाल रिड़कणा पाणी, हाए हाए एह की खेल कराईआ। वे किथ्थे जाऊ विष्नूं दी लक्ष्मी शंकर दी पार्बती ब्रह्मे दी सवाणी, सारयां दी करन लग्गा सफ़ाईआ। नारद कहे नी दस्सां, नानक तीर मार के गया शब्द कानी, निक्की नन्ही बच्ची नूं दिता नाम दान बण के दानी, ओह ओस प्रभू दी बण गई गोली, जिस दा रविदास चमारा हाणी, बेपहिचाणी आपणी कार कमाईआ। सुरस्ती तेरे थाँ ओस दी जुत्ती होवे नवीं ते पैरों लाहे पुराणी, प्राण अधारी दए वड्याईआ। सुरस्ती कहे जाह वे जाह की मातलोक दी पढ़दा बाणी, मैं आपणे ब्रह्मे नूं कहिण आई जिस सृष्टी दिती रचाईआ। नारद कहे ओ कमलिए उह शहिनशाह सुल्तानी तख्तनिवासी हुक्मरानी, विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी निक्की जिही निशानी, जिस वेले चाहे ओसे वेले करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ओधरों गंगा कहे जमना तूं लाई धोती ते मैं लावां साड़ी, सलवार सुरस्ती वंडे आईआ। गोदावरी कहे तुसीं तिन्ने शुकीनणां रोंदीआं रहो ते मैं बण जावां ओस प्रभू दी लाड़ी, जेहड़ा ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। जमना कहे नी ओह मुच्छां वाला कि मूंड मुंडाया कि केसा धारी कि लम्बी रखे दाढ़ी, सुरस्ती कहे नी नहीं ओह नूर नुराना नूर जोत रुशनाईआ। नी ओस नूं घोड़ी कौण चाढ़ी पाणी कौण वारी, तन करे कौण शृंगारी, केहड़ा पिता ते केहड़ी उहदी माता प्यारी, गोदावरी कहे नहीं नी उह ते सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रावी कहे आउण लग्गीआं चार जुग दे लिआउ भुम्मे, जो भेंटा झोलीआं विच पाईआ। पूज के आइओ आपणे गुग्गे, जो दुध्धां सीरां मुख लगाईआ। छड्ड के आइओ आपणे हुद्दे, माण ना कोए वड्याईआ। चल के आउणा उत्ते बसुधे, आपणा पन्ध मुकाईआ। मेरे किनारे पहुंचणा जिस वेले अठारां फग्गण सूरज उग्घे, घड़ी पल फ़र्क रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। रावी कहे वेख्यो किते मेरी ना कराइओ तौहीन, पहिलों दयां जणाईआ। जे बणना तुसां शौकीन, तन शृंगार बणाईआ। एह मार्ग बड़ा महीन, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। भगतां वांग करयो यकीन, भरोसा इक रखाईआ। सिख्यो सच तालीम, इक्को इक पढ़ाईआ। मालक इक अज़ीम, आलीशान नूर अलाहीआ। जिस ने सब दी करनी तनज़ीम, आपणा हुक्म वरताईआ। कमल्यो कुछ भण्डारा लै के आइओ

९९५
२१

नाल नमकीन, सवा पा सोभा पाईआ। किसे दी बुद्धी अंदरों ना होवे मलीन, ममता मोह बाहर रखाईआ। इक्को शब्द लैणा चीन, सोहँ ढोला धुरदरगाहीआ। मुखों कहिणा असीं मस्कीन, निम्रता विच सीस निवाईआ। एह खेल होणा उत्ते ज़मीन, धरनी धरत धवल दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद फिर आ गया नी नढ्ढीओ मैनूं बणा लओ लागी, बिना ब्राह्मणां कारज रास ना कोए कराईआ। गंगा तूं गिट्टे कोलों दाग़ी, वेख लै अक्ख उठाईआ। जमना तेरी नक्क दी लम्मी हाडी, बहुता उच्चा कम्म किसे ना आईआ। सुरस्ती तेरी निक्की जेही बाडी, बहुती निक्की नूं पसंद ना कोए रखाईआ। गोदावरी तूं बड़ी लाडली लाडी, लाडो कहि के तैनूं दयां सुणाईआ। गोबिन्द आया तूं ओस वेले नहीं जागी, आपणा वक्त ल्या गवाईआ। नारद कहे जे तुसीं मैनूं ब्राह्मण नहीं बणाउणा ते मज़दूर बणा के चुका लओ भाजी, पर मैं भाजी भजन बन्दगी वाली मोढ्ढे टिकाईआ। फेर झट रूप बदल ल्या पा के गल विच माला मणके कहे नी मैं बण गया हाजी, चलो तुहानूं उडा के मक्के मदीने दयां पुचाईआ। गंगा बोल के किहा झट जवाबी, एह की दिता सुणाईआ। नारद हस्स के कहिंदा जाह नी शुकीनणे तेरे पैर केहड़ी गुरगाबी, सिर ते अनाबी लीड़ा मुहम्मद वाला नज़र कोए ना आईआ। जमना किहा नारद जी एह ते साडी भैण महिताबी, तेरे वरगे पंडत वेख के लोट पोट हो जाईआ। सुरस्ती कहे हाए उह आ गया शहिनशाह जिस नूं कहिंदे सिँघ पंजाबी, पंजा आपणा रिहा उठाईआ। नारद गल विच पल्लू पा के कहे मैं कोई नहीं करदा ख़राबी, मैं ते प्रभू दी ख़बर आया सुणाईआ। कढ्ढ के किताब कहे नी बीबीओ मैं बड़ा हिसाबी, कुण्डलीआं तिन्नां दीआं वेख वखाईआ। ते कलयुग दा मूल मैं वड्डा क़ाज़ी, शरअ दे फ़तवे सारयां उत्ते लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सोहणा रंग चढ़ाईआ। रावी कहे भैणो मेरे घर आउणे भगत परौहणे, सोहणा प्रेम लिआईआ। तुसां सोहणे गीत गाउणे, गोबिन्द गुरु ते गोबिन्द माहीआ। मैं सोहणी रेत उत्ते बहाउणे, जो अर्जन दे सीस ते बहि के ते पुरख अकाल दे चरणां हेठां आईआ। फेर बचन करने मन भाउणे, आसां पिछलीआं अग्गे रखाईआ। जिस ने वस्त्र लाल पाउणे, उह गोली धुर दी सेव कमाईआ । रविदास दे लेखे अगले साल लिखाउणे, इक्की हज़ार दए गवाहीआ। ओस इट्ट दे मुल्ल पाउणे, जिस नूं बाबूपुर मिली वड्याईआ । रावी कहे मैं अजे होर बथेरे खेल खलाउणे, हौली हौली दयां सुणाईआ। जन भगतो तुसीं आपणे हथ्थ आपे पा ल्यो आपणी धौणे, हलूणा आपे ल्यो लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आपणा हुक्म वरताईआ।

रावी कहे गुर अर्जन दे चरणां नाल मेरे विच आ गई इक कीड़ी, चरण चुम्म चुम्म खुशी मनाईआ। मैनूं कहे रावी तेरे घर आई ते मैनूं डाह दे पीहड़ी, कुछ दे माण वड्याईआ। रावी कहे मैं ते भरी नीरी, पाणी दे वहिण वहाईआ। कीड़ी किहा कमलिए इहदे कोलों मँग लै जेहड़ा मालक मीरी पीरी, दया दए कमाईआ। रावी कहे मैं चरण छूह के किहा अर्जन जे तूं मिल्या एसे तरह मेरा साहिब मिले तक़दीरी, मेरी तक़दीर दए बदलाईआ। आसा एहो अख़ीरी, आख़र दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रावी कहे मेरी अंदरों दलील गिड़ी, चक्र दिता लगाईआ। मैं गोडयां भार रिढ़ी, लम्मी पै के सीस निवाईआ। उने चिर नूं ओथे आ गई बोदी वाली चिड़ी, चुंज भर के बोदी दिती हिलाईआ। इशारे नाल कहि गई नी रावी अर्जन मातलोक दी सीढ़ी, जे इहदे उत्ते चढ़ जाएं सचखण्ड पुरख अकाल कोल तैनूं दए पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। रावी किहा नी तेरा भला, भले घर दीए मैनूं दिता समझाईआ। ओह उडदी उडदी कहि गई हला, आपणी आवाज़ विच ढोला गाईआ। रावी याद रखीं उह साहिब नहीं आउणा कल्ला, भगतां नाल लिआईआ। उहदे नाल होणा डल्ला, जे उह डल्ला चंगा होवे मैनूं वी फड़ के तेरी भेंट कराईआ। फिर मैं दस्सांगी एस दा की फला, वक्त नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जो करना सो कर के दए वखाईआ। रावी कहे मेरे विच कई तरे ते कई डुब्बे, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। कई मरे ते कई उगे, आपणा आपणा फल झोली पाईआ। एसे तरां कई बीत गए जुगे, चौकड़ीआं पन्ध मुकाईआ। मेरे पार कोई ना पुज्जे, उरार सारे तारीआं लाईआ। मैं इक गल्ल पुज्छणी जन भगतो प्रभू दा विहार चंगा कि घर दे झुग्गे, झुग्गीआं वाल्यो देणा समझाईआ। जेहड़ा तुहाडे पिच्छे तुहाडी मंज़ल पुज्जे, पूजनीक हो के दर दर फेरा पाईआ। तुसीं उनां धंदयां विच रुझे, जेहड़े कम्म किसे ना आईआ। मेहर कर के तुहानूं बणाई जांदा उच्चे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सरन आए नहीं वेंहदा कोझे कमले ना बदमाश लुच्चे, फड़ बाहों पार कराईआ। जिनां वल तक ल्या कोट जन्म दे पापी हो जाण सुच्चे, माणक मोती हीरे लए बणाईआ। जन भगतो रावी कहे तुहाडा साहिब ते मेरा सतिगुरु आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगतां नाल कदे ना होवे गुस्से, जे कोई भगत रुस जाए ते उहदे चरणां उत्ते आपणा आप टिकाईआ। जो कोई मैथों मेरे साहिब दा प्यार पुच्छे, मेरी रसना कहिण कोए ना पाईआ। रावी कहे एह रस किसे नहीं लुट्टे, लटेरयो लुट्ट लओ लुट्टण दा वेला गया आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच नाल मिलाईआ। औह वेखो भज्जी आउँदी चौधवीं सदी, नंगी पैरीं वाहो दाहीआ।

रावी मैं नहीं समझया तूं कोई वगण वाली नदी, वहिण पाणी वाले वहाईआ। मैनूं अचानक ख़बर होई नी ओस सांभ लैणा जो दो जहानां मालक गद्दी, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। हुण गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सदाईआं अज्जी पज्जीं, पत्र पत्रिका इक घलाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं केहड़ी कच्ची, बुध्दहीण अख्वाईआ। मैं वी मालक मन्नया इक्को नूर रब्बी, दूजे अक्ख ना कदे मिलाईआ। मैं सारी सृष्टी छड्डी, दीन दुनी तजाईआ। एसे दी चरणी लग्गी, जो देवणहार सरनाईआ। वेखीं रावी मेरे नाल ना करीं ठग्गी, चोरी चोरी कन्त ना लईं मनाईआ। मैं वी पौंटे पा के नच्ची मार के अड्डी, भगत गवाह देणे भुगताईआ। प्रभ ने आदि तों लै के अज्ज तक जेहड़ी भगत आत्मा वरी उह फेर कदी नहीं छड्डी, हड्डीआं मसाणां विच आत्मा बिबाणा विच आपणे घर लै जाईआ। पर एह समां मिलदा कदी कदी, जुग चौकड़ी हथ्थ किसे ना आईआ। भावें कोटन हो जाण रसूल नबी, पैग़म्बर फेरा पाईआ। एह मौज एह बहार एह खुशी भगतां नूं कदे नहीं लभ्भी, कि प्रभू आप लभ्भ लभ्भ के आपणे गले लगाईआ। उफ़, रावी कहे मेरी पीड़ होई बक्खी खब्बी, खबरे की दिता सुणाईआ। गंगा कहे नी एह बड़ी शरारतण जमना राणी कब्बी, तैनूं हुज्ज मार के सट्ट दिती लगाईआ। सुरस्ती मख़ौल नाल चुक्क लिआई मंजी, जे बहुता दुःख ते इहदे उत्ते दयां लिटाईआ। झट जोत अगम्मी जगी, इक्के वार होई रुशनाईआ। ना कोई पसली रह गई ते ना कोई हड्डी, ना कोई जमना सुरस्ती गोदावरी गंगी, ना कोई तन वस्त्र भूशन पहने ना कोई दिसे नंगी, ना कोई साथण ना कोई मजाजण ना कोई संगी, जिधर तक्कां उधर आप आपणी खेल करे बहुरंगी, सूरा सरबंगी आपणी दया कमाईआ। रावी कहे भैणो जे आउ वेस कर के आइओ दिहाती, पिंडां नगरां वाला दयां जणाईआ। जे शहिरनां बण के आईआं सारयां साधूआं दी खुल्ह जाऊ समाधी, अक्खां मीट समाधी लाउण वाले अक्खां तुहाडे वल टिकाईआ। जिन्हां दे मुख विच होवे सीता राम कृष्णा राधी, ओह तुहाडी सूरत वेख के कहिण एह किथ्थों आवे साडी भाबी, भजड़ा पिट्टी पन्ध मुकाईआ। मुर्शदां दे मुरीद कहिण मसीतां विच बैठे एह कोई महिताबी, किसे महिरम दा राह तकाईआ। चर्चां विच बैठे पोप कहिण एह कोई फुल्ल गुलाबी, खुशबू देण वास्ते आया चाँईं चाँईंआ। मन्दिरां विच बैठे कहिण एह साथण पुराणी साडी, विछड़ी मिली चाँईं चाँईंआ। गुरुदवारयां विच बैठे कहिण भरावो मेरे बण जाओ जांञी, इन्हां लईए प्रनाईआ। रावी कहे किते वेख्यो मेरी ना करयो हानी, सच दयां सुणाईआ। इक वार सब ते आउँदी जवानी, जोबन आया अन्त ढल जाईआ। तुसां भगतां दे कोल आउणां उन्हां दी खाणी महिमानी, भगतां वांगू सिध्धे सादे कपड़े लैणे पाईआ। रल के विच बहिणा बणयो ना कोई बेगानी, बेगमां वाला रूप वटाईआ। तुहानूं वी निमक वाली सुक्की रोटी पैणी खाणी, दन्दां नाल चबाईआ। गंगा गोदावरी जमना

सुरस्ती कहिण जे उह संघ विच फस गई किथ्थों पीवांगीआं पाणी, सानूं दे समझाईआ। रावी किहा नी उह जीव आधार प्राणी, अमृत रस आपणा मुख चुआईआ। गोदावरी अक्खां चुकीआं, रावी किते ओस दे नाल उह ते नहीं जेहड़ा बच्चयां दी दे के गया क़ुरबानी, गोबिन्द सूरा संग रखाईआ। रावी किहा गोबिन्द बिना प्रभू दी कोई ना दस्से निशानी, भगतां उत्ते कोई ना करे मेहरवानी, मेहरवान हो के मेहर नज़र ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दर घर साचा इक सुहाईआ।

✻ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ कंस राज दे गृह पिंड गुजरात ज़िला गुरदासपुर ✻

नारद कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती जे रावी कन्ढे जाणा करो ध्यान, अन्तर अन्तर आपणी लिव लाईआ। सच दवारिउँ मँगो दान, निमाणीआं हो के झोली डाहीआ। किरपा कर श्री भगवान, मेहर नज़र उठाईआ। सानूं तुर के आउणा बड़ा महान, पन्ध दूर दुराडा नज़री आईआ। बण जाओ बाल अंञाण, बच्चयां वांग शोर मचाईआ। नेत्र हन्झू वहिण वहान, अथ्थरां धार बणाईआ। फिर आपे तुहानूं शब्दी भेज दए बबाण, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। तुहाडा पुज्जणा होवे आसान, मुश्किल हल्ल कराईआ। छड्ड जाओ ज़िमीं असमान, मध्ध आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, तुहाडा होवे आप सहाईआ।

✻ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ दर्शन लाल दे गृह पिंड गुजरात ✻

प्रभ दा शब्द अगम्मी बबाणा, आदि जुगादि इक अख्वाईआ। जिस उत्ते चढ़े ना कोई राजा राणा, पातशाहां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस वेले होवे आप मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। आपणे भगतां करे परवाना, आपणे रंग रंगाईआ। फेर बख्शिश करे उह विच जहाना, जिस दी बाडी जगत ना कोए समझाईआ। हरिजन प्यारे बणा प्रधाना, सहज नाल विच टिकाईआ। हुक्मे अंदर होवे रवाना, आवे जावे चाँईं चाँईंआ। एहो खेल श्री भगवाना, जो हरि करता आप कराईआ। नारद कहे ओस नूं निउँ निउँ करो प्रणामा, सीस जगदीश झुकाईआ। फेर सुणो अगम्मी कलामा, सोहँ ढोला बेपरवाहीआ। तक्को धुर दा अमामा, निरगुण नूर अलाहीआ। जिस ने भेजे कृष्णा काहना, राम सीता दया कमाईआ। जिस तुहाडा बणाया निशाना,

१०००
२१

लोकमात वज्जी वधाईआ। सो साहिब सच्चा सुल्ताना, हरि करता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे रंग रंगाईआ।

✻ १५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ चरण सिँघ दे गृह पिंड अन्तोर ज़िला गुरदासपुर ✻

रावी कहे गुर अर्जन दे के गया पाती, बिन अक्खरां अगम्म लिखाईआ। जिस वेले प्रगट होवे कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जन भगत सुहेले बणाए साथी, सगला संग उपजाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करे आखी, आख़र भेव चुकाईआ। लहिणा देणा वेखे त्रैलोकी नाथी, काहना इक वड्याईआ। जो सीता राम दस्सी बाती, बातन पर्दा दए खुल्हाईआ। जिस पैग़म्बरां दिती हयाती, जीवण जुगत समझाईआ। उह खेल करे पुरख अबिनाशी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दी कथा कहाणी साची, शब्द बोध समझाईआ। बुद्धी विच किसे ना वाची, नेत्र नैण ना कोए वखाईआ। ओह लहिणा देणा वेखे चार जुग दा बाकी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे चिट्ठी दा अगम्म मज़मून, मैं समझ सकी ना राईआ। निम्रता विच हो ममनून, नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। की इस दे विच क़ानूंन, धारा कवण वड्याईआ। अर्जन किहा ओसे नूं मालूम, जो हुक्म संदेसे रिहा दृढ़ाईआ। मैं वी बाल अञ्याणा मासूम, नन्हा नज़री आईआ। जेहड़ा शरीर तों महिरूम, जोती जोत विच समाईआ। ओह दस्से आपणा आपे सच असूल, असलीअत इक जणाईआ। जिस दा हुक्म वरते माक़ूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। रावी तैनूं देवे चरणां दी धूल, धूढ़ी भगतां ख़ाक रमाईआ। आवे दर ज़रूर, आवे हज़ूर नूर अलाहीआ। दीन दुनी दा वेखे क़ुसूर, लख चुरासी फोल फुलाईआ। असीं बरदे उहदे मज़दूर, तत्तां वाली सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। रावी कहे दस्स सतिगुर की लेखा लिख्या, बिन क़लम शाहीआ। मैनूं नेत्र नाल ना दिस्सया, रो के दयां दुहाईआ। मेरा अन्तर अन्तर पिटिआ, बौहड़ी बौहड़ी कर जणाईआ। की इस विच लेखा पाया नाल हिस्सया, कवण वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए जणाईआ। अर्जन कहे इहदा भेव अक्खरां तों बाहर, विद्या वंड ना कोए वंडाईआ। रावी तेरे कन्ढे आ के आपे करे ज़ाहर, तेरे पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस वेले दुनियां सारी होई कायर, कर्म कांड विच कुरलाईआ। सच दवारयो होई ग़ैर, गहर गम्भीर ना कोए मिलाईआ। जग सागर सके कोई ना तैर, तीर्थ तट गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती

रोवे मारे धाईआ। ओस वेले करे प्रभ आपणी मेहर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जेहड़ा शाह सुल्तान सूरबीर वड्डा केहर, भबक सबक नाल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे मेरा सिर गया दुख, निम्रता विच दुहाईआ। अर्जन इक दस्स दे तुक, बहुता ना समझाईआ। गुर अर्जन किहा हुण ना मैथों पुच्छ, पुच्छण दी लोड़ रहे ना राईआ। जिस वेले साहिब स्वामी गया पुज्ज, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। सब कुछ जाए सुझ, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पर्दा लाहीआ। रावी कहे ओह केहड़ा होणा तिउहार, सच दे समझाईआ। तेरे चरण कँवल निमस्कार, निउँ निउँ लागां पाईंआ। गुर अर्जन किहा सोलां फग्गण सुहञ्जणी होए बहार, सम्मत शहिनशाही चार नाल वड्याईआ। तेरा लेखा दस्से अगम्म अपार, अलख अगोचर पर्दा लाहीआ। चिट्ठी दा मज़मून सहज दए सिखाल, औखा राह ना कोए जणाईआ। जिस नूं झुकदे शाह कंगाल, ओह सहज होवे सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला लए मिलाईआ। रावी कहे की गोबिन्द शब्द गुरु कि अर्जन धार, की राम कृष्ण ईसा मुहम्मद मूसा की वड्याईआ। खेल दस्स कर प्यार, अपरम्पर देणा जणाईआ। मैनूं वहिंदी नूं बीत गए जुग कोटन कई हज़ार, मेरी आसा पूर ना कोए कराईआ। आ आ चले गए मात तत अवतार, पैग़म्बर गुरु फेरीआं पाईआ। फिरदे गए तट किनार, कंढिआं उत्ते डेरा लाईआ। मेरा असल किसे ना कीता इज़हार, सिफ्तां विच ना कोए सालाहीआ। सन्मुख हो के करी ना किसे गुफ्तार, गुफ्त शनीद ना ढोला गाईआ। मैं चौहन्दी ज़रूर जिस वेले आए कल कल्की अवतार, अमाम अमामा होए सिक्दार, संदेसा देवे आपणी धार, वारता पिछली दए समझाईआ। सो वक्त सुहञ्जणा सोलां फग्गण साढे तिन्न मेरा सोहे किनार, वज्जे सच वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा लेखा जाण सर्ब संसार, सृष्टी दी दृष्टी आपणे हथ्थ रखाईआ।

१००१
२१

✻ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ चरण सिँघ दे गृह पिंड अन्तोर ✻

नारद किहा गंगा चिट्ठी दा पासा परत, परत के वेख वखाईआ। लेखा लिख्या पुरख अबिनाशी आउणा उपर धरत, धरनी धरत सोभा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करनी शर्त, शरअ दए बदलाईआ। सब दी आसा पूरी करे मन्ने अर्ज़, आरज़ू वेख वखाईआ। सप्त ऋषीआं जेहड़ी गर्ज़, गर्जे कि सारी पूर कराईआ। चार जुग दी फोल के फ़रद, लेखे हक़

दए दृढ़ाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, हर तन हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गंगा पढ़ीआं तिन्न तिन्न कतारां, सतरां वेख वखाईआ। मैं घोली तैथों वारां, आपा भेंट कराईआ। जमना वेख के पै गई विच विचारां, आप आपणे विच डुबाईआ। सुरस्ती बण विच्चों हुशियारा, चलाकी नाल समझाईआ। नी गोदावरी आह वेख खेल निआरा, तैनूं दयां समझाईआ। चिठ्ठी विच लेखा प्रभू आदि अन्त दा कुँवारा, सुहाग आपणा ना कोए वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पैग़म्बरां नूं देंदा गया लारा, जुग चौकड़ी हुक्म सुणाईआ। अर्जन ने कढ्ढआ हाढ़ा, मिन्नतां विच दुहाईआ। पुरख अकाल इक वार आ विच संसारा, आपणा फेरा पाईआ। बण धुर दा लाड़ा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। नी ओह आउणा आपणी धारा, नर निरँकारा वेस वटाईआ। चिठ्ठी उत्ते लेख लिख्या उहनूं कहिणा कल कल्की अवतारा, कल कलेश दए गवाईआ। सांझा बणे मीत प्यारा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। सुहाए इक दुआरा, दरबारा इक वड्याईआ। उहनूं वेखणा असीं सारीआं रावी किनारा, कन्ढ्ढा इक्को इक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गंगा पढ़दी पढ़दी हो गई चुप, उँगली मुख विच रखाईआ। जमना पई उठ, इशारा सुरस्ती वल कराईआ। गोदावरी दा फड़ के गुट्ट, हलूणा दिता लगाईआ। तिन्ने गंगां नूं रहीआं पुच्छ, की सोचां विच आपणा आप डुबाईआ। गंगा कहे मैं हैरान हो गई जिस दा इक्को गोबिन्द सूरा पुत्त, शब्दी शब्द रूप वटाईआ। उह वस के साढे तिन्न हथ्थ काया बुत, सम्बल बैठा सोभा पाईआ। जोत जगाए अबिनाशी अचुत, निरगुण नूर डगमगाईआ। मैनूं ऐं दिसदा सब दा पैंडा रिहा मुक, अग्गे हुक्म ना कोए चलाईआ। सब दा पाठ होणा इक्को तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। उने चिर नूं नारद आ गया फेरदा हथ्थ बोदी, हस्स हस्स रिहा सुणाईआ। नी मैं होर तक्कया गोबिन्द इक्को सोहे प्रभ दी गोदी, गोदावरी तैनूं लारे देण वाला नज़री आईआ। तूं बणी रही कमली कोझी, चरण छोह सार ना पाईआ। सुरस्ती कहे इहनूं भुलेखा लग्गा कि शायद एह कोई जोगी, जोगीआं वाला वेस वटाईआ। जमना कहे इहनूं शक्क पै गया खवरे एह कोई संसारी भोगी, वासना विच भज्जा वाहो दाहीआ। गंगा कहे नहीं नी आह वेख चिठ्ठी थल्ले लिख्या वेदीआं तों बण के सोढी, आपणा रूप वटाईआ। गुरमुखां चुक्की फिरे मोढीं, मुढला आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्ह्हाईआ। नारद कहे गंगा ज़रा वेख सत्तवीं सतर, सोलां अक्खरां वाली नज़री आईआ। फेर वेख अगला अंक जिस दा हिन्दसा सत्त दो बहत्तर, भगतां दए वड्याईआ। फेर वेख बिना लेख तों पत्त, जिस दी समझ ना कोए

समझाईआ। फेर तक्क, जां गंगा तक्कण लग्गी अक्खां विच्चों वहि गया अथ्थर, नेत्र नीर वहाईआ। नारद ने हलूण के किहा रो ना औह वेख गोबिन्द सुत्ता विछा के सत्थर, सोहणी सेज बणाईआ। नी तूं टक्करां मारदी रही नाल पत्थर, भज्जी वाहो दाहीआ। हुण रहिण नहीं देणा किसे दा मकर, फ़रेबां डेरा ढाहीआ। दुनियां दा उलटा करना चक्र, चकरवर्ती देणे खपाईआ। किसे ब्राह्मण नूं वेखण नहीं देणा गृह नछत्र, कुण्डली रास ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गंगा कहे इस चिठ्ठी दा इक होर तीजा सफ़ा, जो सफ़ा पिछली रिहा उठाईआ। उस विच्चों भगतां होणा नफा, घाटे विच लोकाईआ। नारद किहा कुछ मैनूं दे दे गफ्फ़ा, जे तेरे विच वड्याईआ। जमना हौली जेही नारद दे सिर ते मारदी धफ्फा, हासे विच सुणाईआ। सुरस्ती पिच्छों मार के जफ्फा, मूँह दे भार सुटाईआ। मुनी होण लग्गा ख़फ़ा, तिन्नां ने ताली दिती वजाईआ। गोदावरी भज्ज के आई, रिषी जी, केहड़ा जाप जपा, मैनूं दे दृढ़ाईआ। फेर गुस्से विच होर तपा, अक्ख लाल कराईआ। चौहां मिल के किहा आह वेख लै पप्पा, जो पूरन ब्रह्म नज़री आईआ। साडा ओस दे नाल कौल इक़रार पक्का, जो लेखे सब दे वेख वखाईआ। सानूं रावी दा आ गया सद्दा, जाणा चाँईं चाँईंआ। नारद जी साडे वास्ते कोई लिआइओ घोड़ा टट्टू यक्का, यक्क हुक्म सुणाईआ। तुसीं जगत दे परोहत उत्ते चढ़न नूं लभ्भ ल्यो गधा, दो जहानां विच रलण कोए ना पाईआ। गलों लाह ल्यो झग्गा, जञ्ञू लओ लटकाईआ। हथ्थ विच फड़ ल्यो डब्बा, राह जांदे जाणा खड़काईआ। जे थक्क गए किसे डिग्ग पिउ विच खड्डा, डूँघी डल डेरा लाईआ। नारद किहा एहदी की वजह, मैनूं दयो समझाईआ। गंगा किहा पुरख अकाल ने भेख पाखण्ड नूं देणी सज़ा, धोखे वाला रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत बणाए जो चलण उस दी रज़ा, रज़ा आपणी विच चलाईआ। देवे नाम अमृत दा रसा, रस इक्को इक चखाईआ। नारद कहे जे रस देवे ते मैं ज़ोर नाल भज्जां, तुहाडे नालों पहिलों पन्ध मुकाईआ। सुरस्ती किहा ऐवें ना मार कच्छां, बोदी ना हिलाईआ। जे तूं पहिलों गया तैनूं भगतां ने बन्न्ह लैणा नाल नौ हथ्थ रस्सा, फेर सके ना कोए छुडाईआ। कन्नां नूं हथ्थ ला ला अग्गे तों साडे कोल आउण लग्गयां लौहणा नहीं कदे झग्गा, ख़ाली धोती ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गंगा कहे चिठ्ठी विच लिख्या कोई विच आ ना जाए ओपरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जमना कहे नारद तूं किथ्थों आया सिर कद्दुया वांग गिरी खोपरा, धड़ सिर जुट्ट बणाईआ। नारद मख़ौल विच कहे मैं प्रभू दा नाले पुत्त ते नाले पोतरा, तुहानूं पता नहीं अजे मिली नहीं वड्याईआ। गंगा धक्का मारया जा किथ्थे बन्न्ही फिरें लंगोटड़ा, जंगलां विच मूँह भवाईआ। हथ्थ विच डिंगा

१००३ २१

टेडा फड़ लै सोटड़ा, चारे कुण्टां आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहिंदा नी वड्डीओ चलाको, की मैनूं रहीआं जणाईआ। आपणा आप सांभो, खुल्ही मेंढी सीस गुंदाईआ। अग्गा पिच्छा आपणा नापो, लम्बाई की चौड़ाईआ। करवट विच करवट आपणी साधो, सिदक नाल उठाईआ। की लेखा दस्स के गया तुहानूं कृष्ण बंस यादो, यादव की चतुराईआ। क्यों पाणी पींदा रिहा विच्चों ढाबो, कृष्ण ने उँगली छूह तुहाडे नाल मुख ना कदे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे किते बण ना जाइओ चलाक, आपणी आप करो वड्याईआ। ज़रा एधर ल्यो झाक, तुहानूं दयां वखाईआ। नावीं सतर जेहड़ी ख़ाली लई राख, उस नूं वेखो निगाह टिकाईआ। सारीआं मन्नयां वाक, बैठीआं निगाह उठाईआ। जां वेख्या तां प्रभू दी इक्को ज़ात, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नी तुसां इस नूं वेखणा साख्यात, छमी नमी आपणा रूप बदलाईआ। तुहानूं फेर आवे विश्वास, जिस वेले विश्व दा भेव खुल्हाईआ। नारद छेती नाल जमना सुरस्ती दे कन्न फड़ के किहा नी तक्कोगीआं उत्ते आकाश, आपणी अक्ख उठाईआ। गोदावरी सुरस्ती किथ्थे वेखोगीआं प्रकाश, मैनूं दयो जणाईआ। चारे हो गईआं उदास, हैरानी अंदर आईआ। नारद किहा ओह वेखो मार झाक, रावी कन्ढ्डा सोभा पाईआ। जिस दे चरण चुंमे धरती मात, जिस नूं निउँ निउँ सारे सीस निवाईआ। नाल भगतां दी जमात, सोहणा रंग रंगाईआ। चारे कहिण मुनी जी, रिषी जी, महात्मा जी, पंडत जी, कुछ शतानी दा खवाइओ सानूं प्रशाद, तेरी शतानी विच नुरानी नज़री आईआ। नारद किहा सुणो मेरी आवाज़, मैं खोल्ह के दस्सां राज़, जिस कौडे कंधारी दी नानक रखी लाज, उह रस लिआवे चुक्क कमाद, मुख सब दा मिट्ठा दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद देवणहार वड्याईआ। नारद कहे नी छोकरीओ, शक विच ना कोए वड्याईआ। प्रभू दीओ पोतरीओ, की ब्रह्मा तुहाडा पिता माईआ। जग विच सोतड़ीओ, की विष्नूं तुहाडी अक्ख खुल्हाईआ। नैणां विच रोतड़ीओ, शंकर त्रसूल नाल डराईआ। केहड़ी बन्द होईओ कोठड़ीओ, किस गृह डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गंगा कहे पढ़दी पढ़दी ने वेख्या इक होर चौथा अंक, चार जुग दा लेख समझाईआ। रावी कन्ढे कुछ आसा रख के गया जनक, जिस दी सीता सपुत्तरी राम नाल प्रनाईआ। जिस लक्कड़ी दा बणया सी धनुश, ओह लक्कड़ी एसे रावी दे कन्ढे तों गई आपणा पन्ध मुकाईआ। जेहड़ी यादव सी बंसी, यदू बंस दा पहिलां जिस दा नाम नीदू, उहदी माता इस रावी कन्ढे दे रहिण वाली नज़री आईआ। नौ पहर तपस्या कीती सी तट किनारे भरिंगू, बिना स्वास तों ध्यान लगाईआ। तिन्न

वार शंकर ने रावी विच धोता सी आपणा लिंगू, नपड़द हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सुरस्ती कहे मुनी जी तुसीं मुनीश्र कि मुशटंडे, मैनूं दयो जणाईआ। नारद खलो के इक टंगे, कन्न हथ्थां उत्ते रखाईआ। अक्खां मीट के कहे वेखो मैं चढ़ गया उपरले डंडे, जिथ्थे प्रभू डेरा लाईआ। जमना ने हसदी हसदी ने उहदीआं नासां विच निक्के निक्के दे दिते गंढ्ढे, ज़ोर नाल दबाईआ। साह बन्द होया ते ज़ोर नाल खंघे, ते बाहर दिते कढ्ढाईआ। गुस्से विच किहा तुसीं कम्म नहीं कीते चंगे, हासी मेरे नाल उडाईआ। उने चिर नूं श्री भगवान आ गया पा के कॅपड़े गंदे, ग़रीबां वाला वेस वटाईआ। हथ्थ विच फड़े होए सुक्के मंडे, मुखों कहे कोई भिच्छया दयो पाईआ। नारद ने ओहो फड़ के गंढ्ढे, झोली दिते टिकाईआ। श्री भगवान ने झोली चों कढ्ढ के गोदावरी गंगा नूं वंडे, आह फड़ के लओ खाईआ। उन्हां दन्द पीह के आपणे दन्द भन्ने, एह बुढ्ढा की करे शुदाईआ। इन्हां विच की अनन्दे, जेहड़ा सानूं रिहा चखाईआ। जाह उन्हां नूं दे जेहड़े तेरे वरगे भुक्खे नंगे, असीं गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सानूं ते लोक कहिंदे एह साडीआं माईआ। पुरख अकाल इक दम आपणा रूप बणाया सूरे सरबंगे, शाह पातशाह शहिनशाह आपणी कल धराईआ। याद रखयो इहो गंढ्ढे ते इहो सुक्के मंडे, जिस वेले आवां विच ब्रह्मण्डे, भाग लगावां अर्जन दी

१००५ २१ धार ते रावी कन्ढ्ढे, तुहानूं भजा के लिआवां नाल शब्द डंडे, भज्जो वाहो दाहीआ। ओथे मेरे भगत होणगे संगे, जेहड़े सब तों उत्तम श्रेष्ट ते सारयां नालों होवणगे चंगे, तुसां दन्दीआं पीसीयां ओह खावणगे नाल दन्दे, तुसां रो रो के कहिणा भोरा साडी झोली दयो पाईआ। मैं कक्खां दी सेज उत्ते लेटांगा रावी कन्ढ्ढे, आपणा आसण सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। चारे हैरान होईआं किथ्थों आ गया अछल अछल्ल, आपणा वेस वटाईआ । प्रगट होया केहड़े पल, आउँदा जांदा राह ना कोए तकाईआ। प्रभू फेर वड़ गया काया वाली झल्ल, नेत्र नैण ना कोए वड्याईआ। फेर खलो के विच जल, जल रिहा छड़काईआ। फेर हौली हौली प्या चल, भज्जे वाहो दाहीआ। फेर आ के उपर थल, घुटने लए टिकाईआ। फेर सारीयां नूं किहा ध्यान रखयो जिस वेले मैं आपणा सवाल कीता हल्ल, गेड़ा सब नूं दयां दवाईआ। तुहानूं ज़रूर आउणा पए चल, हुक्मे अंदर पन्ध मुकाईआ। सारा लेखा कुछ अज्ज कुझ समझा देणा कल्ल्ह, क्योंकि कल्ह तों अगले कल्ल्ह झोलीआं देणीआं भराईआ।

❋ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ रावी कन्ढे ❋

रावी कहे मैं एथे वगी सां जुग ढाई, आपणा रुख़ ना कदे बदलाईआ। बणी सां पाँधी राही, चली चाँईं चाँईंआ। राजा बलि एथे रह के गया सी दिन बाई, जिस दी बाईबल विच हज़रत ईसा दए गवाहीआ। सप्त ऋषी नौ दिन एथे बणे रहे शुदाई, प्रभ दरस दे के लुक्या हथ्थ किसे ना आईआ। राम दे जिस पहली वार नौंह लाहे सी नाई, उहदा एथे हुंदा सी पिता माई, भूमिका जन्म वाली सुहाईआ। कृष्ण ने पहलां हथ्थ लाया सी जिस गांई, ओह वी एथों दी जम्म जाई, मथरा विच जा के क़ीमत तरयासी दोने पाईआ। जिस ने पहलां गाँ ज़िबह कीती ओह इथों ढाई मील ते रहन्दा सी कसाई, मूसा मुरीद हो के आपणी सेव कमाईआ। जेहड़ी ईसा दे गल विच पाई फाही, सतरंग दा धागा एथे दे रहिण वाला ललारी रंगदा सी चाँईं चाँईं, जो तिन्न पीहड़ीआं पहलों उजड़ के योरोशलम डेरा लाईआ। जेहड़ी मुहम्मद ने तसबी पहिले दिन हथ्थ उठाई, ओह वी एधरों गया सी पंजाबी कोई राही, मणका तिन्न भेंट चढ़ाईआ। जेहड़ी मज्झ नानक सी चराई, ओह वी एसे थाँ तों ढाई महीने दी बच्ची ते क़ीमत पई सी रुपईए ढाई, नानक दा दर्शन पाईआ। जेहड़ी अंगद गोदड़ी हेठ विछाई, उह ओथों दा इक सी भराई, जेहड़ा लै के गया चाँईं चाँईंआ। जेहड़ी अमरदास दी तेड़ बन्न्हण वाली हुंदी सी घाई, ओह वी एथों दा लै के गया इक पौली पाही, जिहनूं जुलाहा कहि के जगत गाईआ। जिस दिन रामदास पहिले दिन चने भट्ठी विच लए भुन्नाई, उह कड़ाही एसे थाँ दे लुहार घड़ाईआ। जिस खौंचे नाल तत्ती रेत सीस विच पाई, उह चन्दू कोल लै के आया एथों दा सी जवाई ते नाम नजीबू सोभा पाईआ। जेहड़ी हरि गोबिन्द लड़ी लड़ाई, मीरी पीरी तलवार तन छुहाई, उहनूं सिकल करन वाला एथों दा बुड्ढा बांह दा टुंडा आपणी कार कमाईआ। जेहड़ी हरिराए पहली जुत्ती चरण छुहाई, उह एथों सत सीवां दूर पंज मील लम्बाई, सत्त सत्त उँगलां पक्के मेचे दे मोजे लै के गया चाँईं चाँईंआ। जिस वेले बाल अवस्था हरि कृष्ण देह तजाई, उहदी निगाह एसे कन्ढे आई, मेरे वास्ते एह कुझ ल्यांदा नहीं चाँईं चाँईं, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। जिस ने दिल्ली चांदनी चौक थल्लउँ धरती साफ़ कराई, उह एथों दा सी ग़रीब जिस दी ना कोई भैण ना कोई भाई, नेत्र रो के धाह मार के वास्ता ख़ुदा दे अग्गे पाईआ। जिन्हां गोबिन्द दी डोली सी उठाई, उन्हां दे पिउ दी नानी एथों दी सी माई, पेका पिछला सोभा पाईआ। जिस वेले गोबिन्द माछूवाड़े सत्थर सेज वछाई, निगाह चारों कुण्ट उठाई, दो जहानां फिरया चाँईं चाँईं, रावी कहि के रही सुणाई, क्यों ब्यास तों पार बैठा मेरा माही, नेत्र दरस कोए ना पाईआ। गोबिन्द किहा मैं तक्कां ओस शहिनशाही, जेहड़ा तेरा मेरा मेला लए मिलाईआ। पिछल्यां जुगां दी कटे जुदाई,

१००६
२१

विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। रावी रो पई चरणीं ढहि पई दुहथ्थढ़ मार के कहे मेरी कीती भुल्ल बख्शाईं, तेरे हथ्थ वड्याईआ। क्यों गुर अर्जन आपा आप मेरे विच टिकाई, मैं निभागण जिस ने उहदी तपदी खल्ल ठंडे पाणी नाल बुझाई, छाले छाले नज़री आईआ। उस ने ओस वेले इक तुक गाई, मैनूं हौली जिही सुणाई, जिस वेले आवे साहिब गुसाईं, हरि करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग रंगाईआ। रावी कहे मैं इक दिन बड़ी रोई, हाए हाए कर सुणाईआ। पैग़म्बरां दी दिती दरोही, अवतारां नाम ध्याईआ। मैं कूक के किहा आण मिलावे कोई, विछड़यां जोड़ जुड़ाईआ। जिधर तक्कां सब दी सुरती खोई, अक्ख ना कोए खुलाईआ। मिली किते ना ढोई, सोभा दर कोए ना पाईआ। मैं किहा हुण मैं मोई, किधरे जावां किधरे नस्सां, टिकाणा नज़र कोए ना आईआ। फेर मैनूं ऐं दिसदा जिवें कबीर नाल होवे लोई, माला प्रेम वाली होवे प्रोई, सुरत निरत होवे यकसोई, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। मैं सहिमी कबीर पुच्छया की तेरी वस्त खोई, मैनूं दे दृढ़ाईआ। मैं किहा मैनूं प्रभ नहीं मिल्या एसे कर के होई अधमोई, कमर टुट्टी हाए, चलण दी हिम्मत रही ना राईआ। कबीर किहा जेहड़ी गल्ल तैथों सब ने लकोई, मैं तैनूं सब दयां जणाईआ। उठ हथ्थ पैर इक्ठे कर के मेरे साहिब अग्गे कर अरजोई, अर्ज़ दे जणाईआ। अज्ज तों प्रभू मैं तेरी होई, नाते सारे दिते तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कबीर अजे रिहा दस्स, रावी नूं रिहा समझाईआ। ओधरों नारद आ गया झट, ताली पुट्ठी सिध्धी वजाईआ। जुलाहिआ पिच्छे हट, भगत बण के प्रभ नूं ऐवें रिहा वड्याईआ। चल तैनूं वखावां दुर्गा ज्वाला जिस दी जोत जगे लट्ट लट्ट, पहाड़ां विच्चों नज़री आईआ। ऐवें कहिंदा इं उह वस्से घट घट, जे घट घट विच वसदा ए ते मेरी बोदी देवे उखड़ाईआ। छेती नाल मार के ढाई टप्प, विच आसण बैठा लाईआ। भार गोडयां उत्ते रख, हथ्थ छाती उते अटकाईआ। ओए जुलाहिआ, ज़रा वेख ओह पुरख अकाल दीन दयाल सब दा मालक ते सब दा कन्त ते सति सरूप जट्ट, जागरत जोत डगमगाईआ। झट आपणा मरोड़ के नक्क, विंगा ल्या बणाईआ। जे तेरे ते तेरे प्रभू दा है वस्स, एहनूं सिध्धा दे कराईआ। मख़ौल नाल हीं हीं कर के प्या हस्स, जे मेरा हासा नहीं चंगा लगदा, आपणे प्रभू नूं कहि मेरे दन्द दे कढ्ढाईआ। फेर इक दम हथ्थ मार के उत्ते पट्ट, बाज़ू ज़ोर नाल घुंमाईआ। अक्खां पुट्ठीआं कर के किहा मैनूं उह दिसदा रावी दे तट, कलयुग अन्तिम बैठा डेरा लाईआ। जिस ने शरअ दी रहिण नहीं देणी कोई वट्ट, वट बन्ने सारे देणे ढाहीआ। जुलाहिआ, फेर तूं वी मुच्छ नहीं सकणी कट, अल्ला हू दा नाअरा कोए ना लाईआ। तुसीं अक्खरां विच किहा ओह पुरख समरथ, मालक धुरदरगाहीआ। जोती जोत

१००७
२१

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची नज़र इक उठाईआ। रावी कहे मैं इक दिन आपणी आसा विच आस मँगी, सच ध्यान लगाईआ। जे मेरा मालक मेरी आ जावे कन्ढी, आपणा डेरा लाईआ। फेर मैं दो जहानां भज्जां नठ्ठां टप्पां कुद्दां सब नूं कहां वे गुर अवतार पैग़म्बरो मैं हुण नहीं होणा रंडी, रंडेपा रिहा ना राईआ। मेरी टुट्टी जाए गंढ्ढी, नाता लए मिलाईआ। पिछली रहे ना कोए पाबन्दी, होए आप सहाईआ। मेरे कन्ढे आ के ओस बहिणा नहीं किसे मंजी, मजलस भगतां विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद आ किहा ओ रावीए, हो गए तिन्न साढे, रब्ब साडा कि तुहाडा मैनूं दे समझाईआ। तूं ते वस्स पै गई ए डाहढे, ऐवें डर डर के आपणा झट लँघाईआ। मैं ते सब दे नाल हेरा फेरी दे झण्डे गाडे, गॉड नालों पहिलों गाईड बण के सब नूं दयां जणाईआ। तूं ऐवें सिफ्त करदी कमलिए प्रभ दे भगत सदा हुंदे सादे, मेरे वांग मुच्छ दाढ़ी साफ़ कर के टिंड ना कोए चमकाईआ। साडा खेल चलया आया पिच्छों पिउ दादे, परोहती विच बड्ढ्ढोती जगत बणाईआ। मेरी गल्ल सुण आपां दोवें सांझे कर लईए इरादे, सलाह इक्को इक पकाईआ। तूं जोड़ी वजावीं ते मैं वजावां वाजे, तेरा मेरा रूप बण के प्रभ दा रूप वटाईआ। असीं दोवें होईए वडभागे, चलीए चाँईं चाँईंआ। तूं पिच्छे ते मैं आगे, बोदी दे इशारे नाल तैनूं दयां समझाईआ। जे इक वेरां मेरे कंठ लागें, तैनूं सचखण्ड तों अगले घर दयां पुचाईआ। तूं बण के मेरी लाडो ते मैं लडावां तैनूं लाडे, सोहणी गोद सुहाईआ। ओधरों सुरस्ती आ गई एह किधरों आ गया मगाउणा दादे, आपणा फेरा पाईआ। नारद ने ओसे वेले ओसे पासे लहिंदे वल मूँह कीता नी सुण लओ तुसीं प्रभ ने कुछ नवां रूप बणाउणा काअबे, काअबे वाले उठ के तुहाडा माण देणा गवाईआ। तुहाडे पुठ्ठे करने छाबे, वस्तू देण डुल्ह्हाईआ। फेर कहोगीआं सानूं सच किहा बोदी वाले बाबे, नाले रोवो नाले मारे धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे नारद कोई चंगी सुणा साखी, मैनूं दे समझाईआ। नारद कहे ना कोई मेरी ताई ना कोई मेरी चाची, जे तूं चंगी बणनाईं ते मैं तैनूं आख देवां भाबी, भाबो कुछ मैनूं दे खवाईआ। तूं किंडी चंगी जे कृष्ण दी बण जांदी राधी, मन्दिरां विच बहि के आपणी खुशी मनाईआ। रावी कहे मुनी जी मैं चंगी सिध्धी सादी, जोबनहीण अख्वाईआ। इक्के प्रभ नूं रही अराधी, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। कदी ते आवेगा बण के पाँधी, तट मेरे फेरा पाईआ। मैं ओसे दा राह रहिणा तकांदी, भावें कोटन कोटि जुग बीतण किसे वल्ल ना अक्ख उठाईआ। मैनूं ओट ओसे दे नाउँ दी, जो नाउँ निरँकारा इक जणाईआ। मैं सारे छड्डे जिन्ह्हां ने वंड कीती सूर गाँ दी, चोपाइआं उत्ते आपणा धर्म गए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

१००८ २१

किरपा कर, सद आपणी दया कमाईआ। नारद कहे रावी साढे तिन्न वज्जे, वज्ज वज्ज के रहे सुणाईआ। रावी उठ के पैर दब्बे, अग्गे गई आईआ। दस्स पुरख अबिनाशी किथ्थे लभ्भे, इशारा दे जणाईआ। नारद किहा आह वेख मैं पाया आपणे एस डब्बे, आपणे अंदर ल्या छुपाईआ। मैनूं एह लभ्भे, दूजे नज़र किसे ना आईआ। रावी किहा ऐवें ना कर दग़े, फ़रेबां विच वक्त लँघाईआ। नारद किहा मैं हुणे वखावां हब्बे, तैनूं दयां जणाईआ। ओसे वेले आपणे दोवें हथ्थ बद्धे, रावी दे चरणां सीस निवाईआ। रावी किहा, हैं, एह की, नारद किहा ओह तेरे विच वस्से, नूर नुराना सोभा पाईआ। दोवें खिड़ खिड़ा के हस्से, ताली हथ्थां वाली लगाईआ। रावी किहा सदी चौधवीं फिर होवांगे इक्ठे, जिस वेले प्रभ आपणा फेरा पाईआ। नाल पिछले लै के आउणे पटे, लेखा देणा मुकाईआ। जिस ने मेटणे सब दे रट्टे, लहिणा झोली पाईआ। तारने पत्थर वट्टे, होणा आप सहाईआ। भगतां संग रखे, मेला धुरदरगाहीआ। सब नूं वेखे इक्को अक्खे, दीन मज़हब ना वंड वंडाईआ। कौल इक्करार हो गए पक्के, वायदे लए पकाईआ। साढे तिन्न वजे ज़रूर आवे सोलां फग्गण शहिनशाही सम्मत चार सच्चे, सच देवे वड्याईआ। बाकी रात नूं दसूंगी पते, जेहड़े गुर अवतार पैग़म्बरां संदेसे दिते पहुंचाईआ। नारद कहे नहीं, मेरा अंदर होर कुछ दस्से, मैं तैनूं दयां सुणाईआ। अज्ज पहली भेंट प्रभ दी भगतां नाल ते भगवन उन्हां नूं मिट्ठे देवे रसे, गन्ना गन्ना वंड वंडाईआ। कल्ह नूं फेर दस्सूंगी बाकी की कुछ रख्या हथ्थे, भेव अभेद खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणे देणे सब दे पूर कराईआ।

✻ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ बचन सिँघ दे गृह पिंड सिंमल सकोर ज़िला गुरदासपुर ✻

रावी कहे मैं पंजाबी हिन्दी उर्दू अंग्रेज़ी विच भेज्या काट, कार्ड दिता घलाईआ। अवतार पैग़म्बरो गुरु गुरदेव आउणा मेरे घाट, तट किनारा सोभा पाईआ। मंज़ल विच्चों मंज़ल मुक्के वाट, पैंडे विच्चों पन्ध देणा चुकाईआ। सतारां फग्गण दी चलणा पिछली रात, अठारां फग्गण नूं पहुंचणा चाँईं चाँईआ। तुहाडी सारयां दी इक्को होवे जमात, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। नाल लै के आइओ आपणे नाम कलमे दी दात, जो दीनां मज़हबां गए वरताईआ। चार जुग दे लै के आइओ काग़ज़ात, लेखा आपणे नाल रखाईआ। पिच्छे रहे ना किसे दा जज़बात, जज़बा आपणे विच जज़ब कराईआ। तुहाडी सब दी वेखणी ख़िदमात, जो ख़ादम हो के गए कमाईआ। इक सुणाउणी अगम्मी बात, बातन पर्दा

देणा उठाईआ। की खेल वरतणी मात, धरनी धरत धवल कार की कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। रावी कहे सब दा लबास होवे धर्म दी धार, मज़हबी वंड ना कोए वंडाईआ। धुर दी इक्को होवे गुफ्तार, अल्ला वाहिगुरु ओम नाम ना कोए सहाईआ। इक्को सजदा होवे निमस्कार, डंडावत इक्को सोभा पाईआ। इक्को नूर जोत होवे उज्यार, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। इक्को गृह दिसे सच्चा घर बार, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को सांझा बणे प्यार, इक्को मित्र प्यारा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे गोबिन्द आपणे नाल लिआवीं चण्डी, इष्ट इक्को इक दरसाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी पाखण्डी, माया ममता मोह विकार हँकार करे सफ़ाईआ। दीनां मज़हबां दी साफ़ करनी डंडी, डंडावत इक्को इक जणाईआ। दुनी रहिण नहीं देणी अन्धी, अन्ध अज्ञान देणा मिटाईआ। सच नाम दी ला पाबन्दी, पारब्रह्म देणा सझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला गा के छन्दी, सहिसा रोग ना कोए गवाईआ । हउमे गढ़ तोड़ना कंधी, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे राम नाल होवे राम सीता, राम राम दुहाईआ। कृष्ण नाल मिलावां कृष्ण जोड़ा होवे जीता, त्रैलोकी नाथ अगली गाथ इक सुणाईआ। पैग़म्बरो आबेहयात सब ने होवे पीता, खुमारी धुर दी सच चढ़ाईआ। गुरु गुरदेव रस लै के आउणा ठांडा सीता, अगनी तत ना कोए तपाईआ। सब ने झगड़ा मेट के आउणा ऊचां नीचां, ज़ातां पातां वंड ना कोए वंडाईआ। पिछला भुल्ल जाणा वेला बीता, अग्गे परदा लैणा उठाईआ। लहिणा देणा मुका के आउणा हस्त कीटा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। सारयां प्रभ दवारे कढ्ढु के आउणीआं लीका, लाईन लाईन नाल मिलाईआ। मुखों कहिंदे आउणा प्रभू तेरे नाल सब दीआं प्रीतां, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। जिस दीआं चार जुग करदे रहे उडीका, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ध्यान लगाईआ। ओह साहिब मिले प्रभ ठाकर ठीका, ठोकर नाम लगाईआ। जिस दा मार्ग अन्त बारीका, जग नेत्र वेखण कोए ना आईआ। दीन मज़हब दा मेटे शरीका, शरकत कूड़ी दए गवाईआ। आत्म परमात्म मिलण दा दस्से हक़ तरीका, हक़ीक़त हक़ीक़त विच्चों जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। रावी कहे गुर अवतार पैग़म्बर आउणा मेरे किनारे, तट हट्ट वड्याईआ। मेरे शब्दी धार इशारे, निशानिआं विच सुणाईआ। सोहणा इक दवारे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। लाउणे हक़ जैकारे, तूंही तूंही राग अल्लाईआ। किरपा करे आप निरँकारे, हरि करता वड वड्याईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण असीं इक्ठे आवांगे सारे, सरन इक्को इक जणाईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त प्रभ दे बणे रहे पनिहारे, सेवक

१०१०
२१

हो के सेव कमाईआ। मँगां मँगदे आए कल कल्की होए अवतारे, निहकलंक नाउँ प्रगटाईआ। जिस नूं अमाम मैहन्दी कहिण सारे, महासार्थी नूर अलाहीआ। ओह खेल करे जग आपणी धारे, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। रावी कहे मेरी चरण कँवल निमस्कारे, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रावी कहे सारयां आपे जाणा आ, आजज़ हो के सीस निवाईआ। मेरे दूर होवण गुनाह, पापां डेरा ढाहीआ। सारे मिल के पुरख अकाल लईए मना, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस ने जुग चलाउणा नवां, सतिजुग सच प्रगटाईआ। मैं ओस दी चरणी ढह्वां, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। बदल देणा समां, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। जिस दा हुक्म कोई कर ना सके मन्ना, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जिस नूं दीन दुनी मज़हब दा लालच नहीं कोई तमां, कलमयां तमन्ना ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता इक अख्वाईआ। रावी कहे तुसां आउणा पूरे सत्त, आपणी खुशी मनाईआ। तुसां मन्नणा इक्को कमलापति, परमेश्वर नूर अलाहीआ। जिस दा गाया जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। ओह सब दी पूरी करे अस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। रावी कहे बाकी कल्ल नूं देणा दस्स, अगला भेव चुकाईआ। की खेल करे पुरख समरथ, हरि करता नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सर्ब कला समरथ, समरथ स्वामी इक अख्वाईआ।

❋ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ सन्तोख सिंघ दे घर पिंड सिंमल सकोर ज़िला गुरदासपुर ❋

रावी कहे सदी चौधवीं क्यों बाहर खलोती, ख़ालस ख़ालक ख़लक दए वड्याईआ। आ के वेख प्रभू दे भगत धुर दे माणक मोती, अनमुलड़े नज़री आईआ। जिन्हां दे अंदर इक्को प्रेम दी जोती, दूजा नूर ना कोए रुशनाईआ। चार वरनां दिसे सांझी गोती, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। हथ्थ विच फड़ के विंगी टेडी सोटी, पगडंडीआं दा झगड़ा दए मुकाईआ। मेरी धार रहिण नहीं दिती इकलौती, इक इकल्ली दा नाता ल्या बणाईआ। जुग चौकड़ी रही सोती, सुत्ती लई उठाईआ। मैं प्रेम प्यार दी बंधी तेड़ धोती, धर्म दी धार गंढु पवाईआ। निगह मार के वेखी, लोकमात दो जहानां खोज खुजाईआ। जिधर तक्कया सृष्टी दृष्टी अंदर सारे पढ़दे पत्तरिआं वाली पोथी, पारब्रह्म दा ध्यान ना कोए लगाईआ। जगत बुद्धी हो गई थोथी, पतित पनीत ना कोए कराईआ। मैं सोच रही सां सोची, समझ समझ विच्चों प्रगटाईआ। मैनूं रविदास

दिस्सया जो गुरमुख बणया चुमिआरा मोची, अक्खरां गंढु पवाईआ। मैनूं ख़ुशी होई बहुती, हिरदे अन्तर वज्जी वधाईआ। क्यों सदा प्रभू मन्नदा आया उहदी, आदि दी रीती चली आईआ। जिस ने आपणी आत्मा सोधी, मन दी मैल धवाईआ। भगतां नूं लै के बैठा अगम्मी गोदी, जिस दे चरण चुंमण वास्ते गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती भज्जीआं आवण वाहो दाहीआ। मैं वी हथ्थ लगाउणा उस दी गोडीं, सतिकार नाल सीस निवाईआ। सदी चौधवीं कहे रावी आह कौण, रावी कहे एह सवेरे तिन्न वजे दा नारद आ गया हिलाउँदा बोदी, उँगलां कन्नां विच फिराईआ। करदा फिरे कौडी कौडी, कौडी हथ्थां विच लटकाईआ। इहदे कोल की जां तक्कया चार जुग दी शरअ रखी उत्ते मोढ्ढीं, कंधे मार के चले चाँईं चाँईंआ। नाले छोटी जिही इस ने पत्तयां दी बणाई बोगी, हस्स के कहे इहदे विच अल्ला ते वाहिगुरु ओम हरीओम तत सति रख के मैं पृथ्मी दा चक्र रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्म आपणा हुक्म वरताईआ। सदी चौधवीं कहे की आउणा पुरख अबिनाशी, सच सच समझाईआ। रावी कहे जिन पैग़म्बरां दिती फाँसी, फ़ैसला हक़ सुणाईआ। सदी चौधवीं कर के हासी, हथ्थ पैरां नाल छुहाईआ। नी किते प्रभू पंडत बण के चलया नहीं गया काशी, जां गोदावरी गंगा जमना सुरस्ती दे तटां उत्ते फेरा पाईआ। क्योंकि पिछल्यां ग्रन्थां उन्हां दा बणाया साथी, ओथे ही खेल खिलाईआ। रावी

१०१२ २१ किहा मैं कथा सुणावां साची, सच दयां दृढ़ाईआ। जिस वेले गुर अर्जन ने देह तजाई काची, तत्तां नालों कीती जुदाईआ। १०१२ २१

मैनूं लिख के दे गया इक पाती, बिन अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। आह वेख जिस वेले होई कलयुग अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। फिर आवे पुरख अबिनाशी, करनी दा करता फेरी पाईआ। सदी चौधवीं तूं वी होणा उस दी दासी, मैनूं गुर अर्जन लिख के गया फड़ाईआ। उहदे कोल ओह नाम जेहड़ा चार जुग दे वज्जे होइआं जिंदरिआं नूं इक्को वार लाए चाबी, ताले अल्ला तुआला सब दे दए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वी ओसे नूं रही अराधी, इक्को दा ध्यान रखाईआ। की वेस करे की भेस धरे की देस वरे, ओह छैल छबीला नौजवाना मर्द मर्दाना, रावी किहा मेरे प्यार विच ओह नूर नुराना पंज आबी, पंजां दा मालक नज़री आईआ। जिस ने चिन्ता सर्ब गवाउणी साडी, दु:ख रहे ना राईआ। सारयां नूं कर देणा आंढी गुआंढी, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। इक्को नाम निधान देवे धुर दा पंडत बण के बोध अगाधी, शब्द संदेसा इक सुणाईआ। रावी कहे मैं थोड़ा सुणया जिस वेले ज़ोरावर फ़तिह सिँघ नूं प्यार दिता सी गुजरी दादी, मस्तक चुम्म के पिठ्ठ थापी दिती लगाईआ। बच्चयो मैनूं अज्ज ख़ुशी मैं बिना गोबिन्द तों तुहाडी कीती शादी, लाड़ी मौत नाल प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। बच्यां किहा धन्न वड्याई तेरी अम्मां, अम्मढ़ी

सीस निवाईआ। सानूं नज़र आउँदा साडे पिता ने बदल देणा समां, पुरख अकाल दया कमाईआ। उस ने मार्ग लाउणा नवां, वाग गोबिन्द हथ्थ फड़ाईआ। की भरोसा जगत वाल्यां दमां, जो आइआ सो चल जाईआ। धन्नभाग जे धर्म दी ख़ातर साडा लग्गे चम्मा, हेत गुरमुखां वाला तोड़ निभाईआ। सानूं ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़मा, क्यों प्रभ नाल मिल के असीं ख़ुशी ग़मी दोवें दिते तजाईआ। फिर दोहां ने आपणे हथ्थ रख के उत्ते कन्नां, थोड़े बाहर नूं खिचाईआ। गुस्से विच आण के किहा वेखीं किते साडे अंदरों डोल ना जाईं साडया मना, मन कल्पणा विच हल्काईआ। क्योंकि गुरु अर्जन ने लिख के चौदां सौ तीह पन्ना, नानक मोहर दिती लगाईआ। गोबिन्द दे हिस्से आया इक्को कन्ना, जिस कन्ने दी समझ किसे ना पाईआ। जिस ने दीन मज़हब दा तोड़ना बन्ना, हद्द हदूद देणी गवाईआ। भगत सुहेले वसदे वेख के छप्पर छन्ना, आपणी गोद लैणे बिठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी दया कमाईआ। सदी चौधवीं कहे रावी जिस वेले राज ने पहली लाई इट्ट, ज़ोरावर सिँघ दे सज्जे चरण दे अंगूठे नाल छुहाईआ। फ़तिह सिँघ ने सहजे पुच्छया की तैनूं आ गई फ़िट, मैनूं दे समझाईआ। ओस हथ्थ विच्चों फड़ के चिट्ट, हथ्थ विच दिती बदलाईआ। हुण दोवें अडोल हो के पुरख अकाल दी जोत विच जाईए टिक्क, टिकटिकी इक्को नाल रखाईआ। एह बचन कहि के दोवें

१०१३

२१

आत्मा दी धार परमात्मा विच गए लिट्ट, दुःख रोग ना कोए सताईआ। सदी चौधवीं कहे रावी ओस वेले मैं दोहथ्थड़ मार के पई पिट्ट, मेंढी खोह के दिती दुहाईआ। रावी कहे मेरे हन्झूआं दी धार उस वेले लम्मी हो गई सवा गिट्ठ, पाणी बूँद बूँद टपकाईआ। पुकार के किहा प्रभू तेरा खेल तूं आपे लईं नजिट्ठ , दूजे चले ना कोए चतुराईआ। फिर क़दमां उत्ते सिर दिता सिट, निरमाणता विच सीस निवाईआ। मैनूं याद आ गया कुछ अर्जन चिट्ठी दे पिछले पासे गया लिख, लाईनां दो ढाई बणाईआ। जिस दा मज़मून गोबिन्द उनां चिर प्यारे कर ना सके सिख, जिनां चिर आपणे बच्चे ना भेंट कराईआ। उनां चिर सृष्टी ना सके जित्त, जिंना चिर माया ममता शौह दरया ना जगत रुढ़ाईआ। रावी किहा गुर अर्जन मैं उस दी किस तरह रखां सिक, आपणी आस वधाईआ। गुर अर्जन किहा रावी जिस वेले पुरख अकाल दे नाल मिल के होया इक्क, जोत शब्द रूप प्रगटाईआ। फेर तैनूं आवे दिस, तैनूं लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी अक्ख खुल्हाईआ। रावी कहे जिस वेले नींह आई उत्ते छाती, वड्डे छोटे वज्जी वधाईआ। उस वेले गुरु अर्जन देव दोहां नूं देवण आया थापी, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। दूल्हिओ दुलारयो गोबिन्द दे लाड़यो तुहाडे पिच्छे गोबिन्द ने फेर उधारने कोटन पापी, पतित पुनीत कराईआ। उन्हां दे मुखों बुल्लां विच निकली हासी, अंदर अंदर

खुशी उपजाईआ। साडा सुनेहड़ा देणा जा के पुरख अबिनाशी, तेरी किरपा नाल बिपता नज़र कोए ना आईआ। गुर अर्जन किहा बच्चयो इधर वेखो जिथ्थे गोबिन्द ने चरण छुहाउणा नहीं आपणी घाटी, जीवत जी फेरा कदे ना पाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त होवे अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। उस वेले पुरख अकाल नूं लै के साथी, सज्जण हो के वेस वटाईआ। जिस रावी ने मेरे चरणां दी धूढ़ मस्तक लाई ख़ाकी, आपणी ख़ुशी बणाईआ। उस दी जा के लाहे उदासी, चिन्ता दए गवाईआ। ज़ोरावर फ़तहि सिँघ ने किहा साडा लहिणा अजे फेर कुछ बाकी, उस दे नाल मिल के असीं हिसाब लईए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी साची खेल खिलाईआ। रावी कहे साहिबज़ादयां किहा हुण तां असीं आउँदे विच कंध, दुश्मण देण सज़ाईआ। फिर असीं खुशी नाल वारना आपणा बन्द बन्द, बन्दगी दा नूरी राह चलाईआ। परमात्मा ने गीत गाउणा आत्म परमात्म छन्द, ढोला इक अलाईआ। असां भगतां दी ख़ातर भगत दवारे दीआं नींहां विच आ के लैणा अनन्द, आपणा आप प्यार प्रीती विच भेंट कराईआ। गुर अर्जन किहा शाबाश, पुरख अकाल सदा बख्शंद, बख्शिश जुग जुग झोली पाईआ। जिस दे तुसीं दुलारे नंद, अनन्दपुर वासी आपणा संग नाल रखाईआ। रावी कहे एह अज्ज दी नहीं मेरी पुराणी मँग, छोटे छोटे बच्चे मेरी शहादत देण भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा बख़शिंद, बख्शणहार इक अख्वाईआ।

१०१४
२१

* १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ सोहण सिँघ दे घर पिंड सिंमल सकोर ज़िला गुरदासपुर *

सदी चौधवीं कहे रावी मुहम्मद ने इक दिन मारी धरनी उत्ते लकीर, उँगली उँगली उत्ते टिकाईआ। फेर बिना जगत अक्खां तों तक्कया जलवा उस बेनज़ीर, जो निरगुण नूर नूर अलाहीआ। जिस ने शरअ पाए ज़ंजीर, कलमयां कीती पढ़ाईआ। दस्सी जगत तदबीर, तरीका इक दरसाईआ। जिस दा लेखा अन्त अख़ीर, तबकां सबकां तों बाहर जणाईआ। अन्त रहिणा नहीं कोई फ़कीर, फ़िकरा हक़ ना कोए सुणाईआ। नज़र आए ना सच कोई तस्वीर, तसव्वर करे ना कोए ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, परवरदिगार नूर खुदाईआ। सदी चौधवीं कहे रावी मुहम्मद खुशी नाल रिहा तक्क, लैहन्दे तों चढ़दे ध्यान लगाईआ। वेखे खेल हक़ीक़त हक़, की करे लाशरीक ख़लक खुदाईआ। जो सर्ब कला समरथ, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। घट घट रिहा वस, अन्तर निरंतर नूर करे रुशनाईआ। पैग़म्बरां मार्ग रिहा

दस्स, फेर गुरुआं करे पढ़ाईआ। नाम कलमे चलावे हट्ट, धुर संदेसे मात सुणाईआ। सब कुछ दे के जगत हथ्थ, सानूं दए वड्याईआ। अन्तिम लहिणा देणा मँगे सच, पूरब लेखा वेख वखाईआ। सदी चौधवीं लाशरीक हो के आवे नस्स, अमाम अमामा वेस वटाईआ। कौल इक़रार पूरा करे पक्क, पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सदी चौधवीं कहे मुहम्मद ने दस्सया हक़ मुकाम, अमलां तों रहित नज़री आईआ। जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा इस्लाम, इस्म आज़म इक समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बदल देणा निज़ाम, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। सच संदेसा देणा अगम्म कलाम, चार जुग तों वखरी करे पढ़ाईआ। फेर वेख्या मार के ध्यान, रावी तेरा कन्ढा नज़री आईआ। मुहम्मद दे के गया बयान, लेखा लिख्या बिन क़लम शाहीआ। एथे खेल होणा महान, महान हस्ती सोभा पाईआ। गुरु अर्जन दा होणा बलिदान, वेला वक्त दए गवाहीआ। तत्ती लोह ते बहि के आवे करन इश्नान, सोहणा वक्त सुहाईआ। मेरी उम्मत कहर दा करे तुफ़ान, प्याला ज़हर दा हथ्थ उठाईआ। जिस दा मिटणा अन्त निशान, निशाना रहिण कोए ना पाईआ। एह खेल मेरे मेहरवान, महबूब मुहब्बत वाला खुदा खुद आप कराईआ। मैं जाणा दे के बांग अज़ान, नाअरे मम्बरां हुजरिआं उत्ते लगाईआ। अन्त अख़ीर मेरे चौदां तबकां होणा हैरान, हैरानी मेरे अंदर आईआ। मैं अमाम किहा अवतारां भगवान किहा, अग्गे गुरुआं कहिणा निहकलंक बली बलवान, योद्धा सूरबीर नूर अलाहीआ। जिस ने चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्डां खण्डां बणना हुक्मरान, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर सिर ना कोए उठाईआ। असीं ओस दे नन्हे बच्चे बाल निधान, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद रो के किहा अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर मेरा बदल देणा विधान, हुक्म धुर दा इक वरताईआ। क्यों मेरी उम्मत कोलों गुरुआं दा होणा बड़ा नुक़सान, धर्म दी धार विच दुहाईआ। गोबिन्द दे बच्चे नींहां हेठ दबाण, जेहड़े मेरी उम्मत दी जड़्ह देण उखड़ाईआ। एह खेल करे वाली दो जहान, दीन दुनी दा मालक चाँईं चाँईंआ। जिस वेले सदी चौधवीं तेरा अन्त पहुंचणा आण, वक्त बवक्त आप सुहाईआ। रावी कन्ढे खेल करे महान, महिमा अकथ कथ जणाईआ। जिस ने मानव ज़ाती सारे इक्ठे करने इन्सान, दीन मज़हब दा वैरी रहिण कोए ना पाईआ। इक्को कलमा सृष्ट सबाई पढ़े ज़बान, तूं मेरा मैं तेरा ढोला आत्म परमात्म गाईआ। भगत सुहेले चार वरन तों बाहर मिलाए आण, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी हुक्मे अंदर हुक्म समझाईआ। रावी कहे चौधवीं सदी कुछ होर दस्स दे बात, बातन दे समझाईआ। सदी चौधवीं कहे जिस

वेले आई अन्धेरी रात, कल काती राजे होण कूड़ कसाईआ। धर्म दी रहे ना कोए जमात, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे रोवण मारन धाईंआ। झगड़ा पए कायनात, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर ढाह ढाह करन ख़ाक, मिट्टी ख़ाक वांग उडाईआ। माण रहे ना किसे सरोवर तीर्थ ताट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र नैणां नीर वहाईआ। रस रहे ना किसे सिमरन जोग अभ्यास पूजा पाठ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बरां देवे कोई ना साथ, दृष्टी विच इष्ट ना कोए मनाईआ। झगड़ा पै जाए ज़ात पात, ऊँच नीच राउ रंक रंग ना कोए रंगाईआ। चार कुण्ट दह दिशा सारे होवण उदास, सांतक सति ना कोए वरताईआ। ओस वेले किरपा करे पुरख अबिनाश, हरि करता नूर अलाहीआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, लोकमात आपणा वेस वटाईआ। जिस दी महिमा करदे चार जुग दे काग़ज़ात, काग़ज़ क़लम शाही आपणा जोड़ जुड़ाईआ। सो खेल करे स्वामी अन्तरजामी हो के साख्यात, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा परदा लाहीआ। ओसदे नाल ओसदे भगतां दी होवे जमात, जो अन्तर आत्म परमात्म आपणा रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं कहे रावी एह खेल होणा ख़ास, ख़ालसे दा मालक गोबिन्द शब्दी धार जोती जोत करे रुशनाईआ। पिछला लहिणा देणा चार जुग दा क़र्ज़ा दए उतार, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। जो बंस सरबंस गया वार, सो खेल करे अपार, अपरम्पर स्वामी आपणे नाल मेल मिलाईआ। ओस दे चरण कँवलां रावी कहे मैं जुग जुग करां निमस्कार, जो ग़रीब निमाणयां ख़िदमतगार, हँकारीआं तोड़े गढ़ हँकार, निमाणयां आपणी गोद उठाईआ। गुर अर्जन मेरे अंदर रख के गया विचार, चरण धूढ़ धूढ़ी दे के मस्तक मेरे छार, संदेसा दिता धुर दी धार, जिस वेले कल आवे कल्की अवतार, निहकलंका आपणा वेस वटाईआ। महासार्थी हो के पावे तेरी सार, चार जुग दे विद्यार्थी गुर अवतार पैग़ग्बर ल्यांदे नाल, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तेरे नाल मिला के लेखा सब दा पूर कराईआ। तूं वक्त लैणा संभाल, किरपा करे दीन दयाल, हरिजन वेखे आपणे लाल, चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं कहे, रावी, ओस ने सब नूं करना दस्तबरदार, हुक्म देणा एकँकार एका वार, बिना पुरख अकाल तों दूजी चले ना कोए सरकार, गुर अवतार पैग़ग्बरां दा लेखा दए मुकाईआ। चार कुण्ट दह दिशा इक्को जैकार, जैकारा होवे पुरख अकाल, नव नौ चार लहिणा देणा सब दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुग चौकड़ी एका एकँकार इक अवतार, नवित्त नवित्त निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप वटाईआ।

※ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ संसार सिँघ दे गृह पिंड मऱ्हाजपुर ※

सतिगुर शब्द कहे मैं नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मारी अगम्मी झाकी, दो जहान मर्द मर्दान नौजवान हो के वेख वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त तक्के पंज तत पुतले ख़ाकी, तन वजूद माटी फोल फुलाईआ। बन्द किवाड़ा खुल्ह्ही किसे ना ताकी, बजर कपाटी पर्दा ना कोए तुड़ाईआ। अमृत बूँद मिले ना किसे स्वांती, निझर झिरना रस ना कोए झिराईआ। निरगुण जोत दीपक किसे ना दिसे दीआ बाती, नूरी नूर ना कोए रुशनाईआ। घर स्वामी मिले ना कमलापाती, पतिपरमेश्वर जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मन हँकारी गृह गृह होया आक़ी, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। नौ दुआर वासना नाता जुड़िआ कूड़ मुहब्बत समझी साची, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां मन्ने कोई ना आखी, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मन्दिर अंदर फोल फुलाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत देण सबूत, गुर अवतार पैग़म्बर ढोल्यां विच गाईआ। जिस नूं मन्नयां हक़ महबूब, मेहरवान नूर अलाहीआ। चार कुण्ट सदा मौजूद, दह दिशा सोभा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे नेसतोनाबूद, जड़ द्वैती दए उखड़ाईआ। चार वरनां बख़्श सलूक, भेद अभेदा दए खुल्हाईआ। पिछली करनी करे मनसूख़, अगला हुक्म इक उपजाईआ। भाग लगा के काया पंज भूत, पंच विकारा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। शब्द गुर कहे मैं वेखे साध सन्त, फ़कीर फ़िकरिआं वाले खोज खुजाईआ। साचा मिल्या किसे ना कन्त, सेज सुहाग ना कोए हंढाईआ। सिफ्तां वाले गाउँदे मंत, निरअक्खर ना कोए पढ़ाईआ। बुद्धी दे बण के पंडत, अक्खरां रहे गाईआ। भेव खोल्हे ना कोए अगणत, परदा निरंतर ना कोए चुकाईआ। तृष्ना मिटे ना ममता ममत, मोह विकार ना कोए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। शब्द गुरु कहे मैं वेखे ठाकर स्वामी, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। दो जहान कोए ना बणया अन्तरजामी, अन्तरगत ना कोए समझाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, अक्खरां वाली करन पढ़ाईआ। विद्या तत वजूद जसमानी, ज़मीर अंदरों ना कोए बदलाईआ। मन दी करे ना कोए क़ुरबानी, काया काअबा ना कोए सुहाईआ। जलवा तक्के ना कोए असमानी, नूरो नूर ना कोइ रुशनाईआ। चश्मे दीद नूरे नज़र ना कोए पेशानी, निगाह निगाह ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच दुआरा इक्को सोभा पाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं चार जुग दी वेखी धारा, धर्म दी धार खोज खुजाईआ। कोई ना पावे प्रभ

१०१७ २१

दी सारा, बेअन्त कहि के सारे पल्लू गए छुडाईआ। जो आया सो बण के भिखारा, दर दरवेशा वेस वटाईआ। थोड़ा थोड़ा लै के नाम भण्डारा, वस्तू जगत विच टिकाईआ। आप माला मणके फेर के रसना जप के करदे रहे गुज़ारा, अंदर वड़ के ध्यान लगाईआ। उन्हां नूं दिता थोड़ा थोड़ा इशारा, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। इहो खेल प्रभू दा निआरा, निरवैर हो के आप कराईआ। आपे वस के सब तों बाहरा, हर घट रमिआ आपे नूर करे रुशनाईआ। आपे दस्से अगम्मी गुफ्तारा, गुफ्त शनीद करे पढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी मालक, दो जहानां सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बण के सालस, साचा हुक्म दयां समझाईआ। जुग चौकड़ी कूड़ी क्रिया मेटां आलस, दु:ख दलिद्र डेरा ढाहीआ। अंदर बाहर वेखां हालत, मन मति बुध्ध खोज खुजाईआ। नाम निधाना वेखां अमानत, काया मन्दिर अंदर फोल फुलाईआ। पंच विकार तक्कां अलामत, हउमे तृष्ना नाल मिलाईआ। साचा नाम भण्डारा गुर अवतारां देवां निआमत, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। आप रह के सदा सही सलामत, बाकी सब दा लेखा दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची खुशी मनाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आदि जुगादी हाज़र हज़ूर, हज़रतां दा हज़रत नज़री आईआ। मेरा आकाश प्रकाश अगम्मी नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी भरदे बेड़े पूर, आर पार वेख वखाईआ। भगत उधारना मेरा दस्तूर, गुरमुख गुर गुर चेले लए तराईआ। दृष्टी दे अंदर वेखणा क़ुसूर, हर घट अंदर फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं अन्तिम कढ्ढणा कूड़, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। चतुर सुघड़ बणाउणे मूर्ख मूढ़, दुरमति मैल धवाईआ। नाम भण्डारा मेरे कोल सदा भरपूर, ऊणता नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म नाम खुमारी दए सरूर, सुरती शब्द शब्द सुरत विच दए समाईआ।

❊ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ बीबी ज्ञानो दे गृह पिंड सिम्मल सकोर ❊

जन भगत कदे ना विसरदा, सतिगुर विछड़यां सदा मिलाईआ। जो ओसे दा नाम ज़िकरदा, दिवस रैण ढोला गाईआ। सो गुरसिख लख चुरासी विच्चों निकलदा, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। पारस रूप होवे पित्तल दा, कंचन गढ़ वड्याईआ। झगड़ा मुका देवे जम्मण मरन फ़िकर दा, आवण जावण डेरा ढाहीआ। घर वखा देवे चोटी सिखर दा, जिथ्थे बैठा बेपरवाहीआ।

सदा दरस होवे ओस अगम्मी प्रभू मित्र दा, जो मिल के विछड़ कदे ना जाईआ। ओह आदि जुगादि जोती धारों निकलदा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। जन भगत तेरा रूप ना स्त्री ना मर्द, आत्मा प्रभ दी धार नज़री आईआ। जिस दा हितकारी ओहो वंडे दरद, दुखियां दु:ख वेख वखाईआ। मेहर करे मेहरवान इहो खेल असचरज, दूसर नज़र कोए ना आईआ। पार उतारना जिस दी आदि तों शर्त, शरअ तों बाहर होए सहाईआ। निरगुण धार आया परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। दु:ख रहे ना कोई साल बसाला बरस, मिती थिती दए बदलाईआ। आसा मनसा पूरी करे हरस, हवस कूड़ी दए बुझाईआ। प्रेम प्रीती अंदर कर के तरस, रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जन भगत कदे ना भुल्लदा, अभुल्ल हथ्थ वड्याईआ। क्यों रूप मालक कुल दा, जो कुल्ल आलम वेख वखाईआ। सच तराजू कंडे नाम तुलदा, दूसर हट्ट ना क़ीमत पाईआ। वणजारा बण के चरण धूल दा, टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। रहिबर बण के इक असूल दा, असल नियम लए कमाईआ। फेर मेला होवे कन्त कन्तूहल दा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। लेखा देवे सतिगुरु गुरसिख मज़दूर दा, जो दिवस रैण नाम मज़दूरी रिहा कमाईआ। एहो वड्याई साहिब सतिगुर जो आसा मनसा पूरदा, तृष्ना जगत बुझाईआ। पन्ध मुका के नेड़े दूर दा, मेला मेले चाँईं चाँईंआ। अग्गे रंग चढ़या रहे ओस साहिब हज़ूर दा, जो हर हिरदे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी आसा मनसा पूरदा, तृष्ना तृखा बुझाईआ।

१०१९
२१

❋ १७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ चरण सिँघ दे गृह पिंड सिम्मल सकोर ज़िला गुरदासपुर ❋

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण आई ख़ुशीआं वाली रात, रैण भिन्नड़ी आपणा रूप बदलाईआ। चार जुग दी सांझी बणाईए इक जमात, मिल के वज्जे हक़ वधाईआ। आपणा आपणा लेखा नाल लईए हिसाब, पिच्छे रहिण किछ ना पाईआ। बिन अक्खरां तों वेखीए किताब, जिस दी वंड ना कोए वंडाईआ। फिर पुरख अकाल नूं करीए आदाब, पुरख अकाल सीस झुकाईआ। जिस ने सानूं दिता ख़िताब, मेहर नज़र इक उठाईआ। जो मँगण लग्गा अन्त जवाब, तलब सारे रिहा कराईआ। शहिनशाह भूप बण नवाब, नौबत नाम हक़ सुणाईआ। क़दमबोसी करीए आदाब, सजदा सीस झुकाईआ। बिना रसना कहीए सतिगुरु महाराज, साहिब तेरी सरनाईआ। तेरी सरन चरण गए लाग, सीस जगदीश इक निवाईआ। तेरे हुक्मे अंदर मज़हबी

१०१९
२१

कीता राज, कौमी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरा इक सुहाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण आया वक्त सुहञ्जणा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। करे खेल दर्द दुःख भय भञ्जणा, पारब्रह्म नूर अलाहीआ। जो आदि जुगादी धुर दा सज्जणा, साहिब स्वामी सोभा पाईआ। उस दे चरण धूढ़ी करीए मजना, सर सरोवर इक नुहाईआ। जिस ने इक्को निगाह वेखणा आहला अदना, वड्डा छोटा वंड ना कोए वंडाईआ। शब्दी हुक्म अंदर जिस ने सब नूं सद्दणा, शब्द संदेसा रिहा सुणाईआ। अमृत वेले उठ के सब ने भज्जणा, आउणा चाँईं चाँईंआ। नाम नगारा इक्को वज्जणा, दरगाह साची खुशी मनाईआ। करे खेल सूरा सरबंगणा, साहिब सुल्तान आपणा हुक्म वरताईआ। जिस झगड़ा मेटणा ख़ाकी बदना, बदी दा डेरा देवे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रूप दरसाईआ। तेई अवतार कहिण साडी निक्की निक्की गाथा, वखो वख नज़री आईआ। पैग़म्बर कहिण असीं केहड़ी दस्सीए बाता, किछ कहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। नानक गोबिन्द कहे सारे कहि दयो ओही पिता ते ओही माता, दूजा नजर कोए ना आईआ। आदि जुगादी जोती जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिस ने शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान अक्खरां वाली दस्सी सिख्या ते रसना वाला पूजा पाठा, ते सिमरन जोग अभ्यास दृढ़ाईआ। सो खेल करे पुरख समराथा, साहिब स्वामी धुरदरगाहीआ। जिस दे चरण कँवल सब ने मथ्था टेकणा माथा, गुर अवतार पैग़म्बर वखरा रहिण कोए ना पाईआ। जिस कलयुग अन्त श्री भगवन्त जग मेटणी कूड़ी अन्धेरी राता, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को बणे राखा, रखक हो के आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे गुर पैग़म्बर अवतार, अवतरी ध्यान लगाईआ। मैं सब तों पिच्छों आया विच संसार, अन्त अख़ीरी फेरा पाईआ। पुरख अकाल ने कीता प्यार, सुत्त दुलारा ल्या बणाईआ। मेरा बंस सरबंस वार, मेरा लेखा दिता मुकाईआ। माछूवाड़े सूलां दी सेज सवाल, सत्थर यार वाला दरसाईआ। किरपा कर पुरख अकाल, अकल कलधारी तेरी वड्याईआ। ओस दे अग्गे बेनन्ती विच जा के करो सवाल, सीस जगदीश इक निवाईआ। असीं नढ्ढे तेरे बाल, नन्हे नन्हे तेरे चरणां विच दुहाईआ। तेरी सृष्टी तेरी दृष्टी तेरी आत्मा तूं सर्ब दा परमात्मा तूं पारब्रह्म आपणा ब्रह्म संभाल, तेरा तेरी झोली पाईआ। असीं सचखण्ड दुआर वसीए तेरी धर्मसाल, जोती जोत आपणा आसण लाईआ। दीनां मज़हबां दा रहे ना कोए जंजाल, जागरत जोत बिन वरन गोत आपणी करनी लए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो गोबिन्द कहे कर के

१०२०
२१

चलो कौल इक़रार, वायदा धुर दा इक बणाईआ। वेखणा खेल सच्ची सरकार, हरि करता की कराईआ। जिस नूं झुकदे रहे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सीस निवाईआ। जिस दीनां मज़हबां दा सानूं बणाया मुख़त्यार, मुख़तारनामा साडे हथ्थ फड़ाईआ। अन्तिम सब दा लेखा रिहा विचार, विच्चर के कहि ना कोए सुणाईआ। सद्दे ओस दुआर, जिस दा पर्दा ना कोए उठाईआ। जिथ्थे गुर अर्जन मार के गया लकार, रावी दा कन्ढ्ढा ब्रह्मण्डां विच्चों सोभा पाईआ। ओथे जा के पैग़ग्बरो तुहाडा क़र्ज़ा मुकणा उधार, लेखा अवर रहे ना राईआ। अवतारो तुसां सब ने कर के निमस्कार, निउँ निउँ लगणा पाईंआ। गोबिन्द कहे मैं इक इकल्ला पुरख अकाल मेरा दयाल, दीन दयाल नज़री आईआ। जिस दे वस्स काल महाकाल, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे सारे ख़ुशी नाल पओ हस्स, गुर अवतार पैग़ग्बरो आपणी ख़ुशी बणाईआ। जोती धार जाणा नस्स, पैंडा पन्ध पन्ध रहे ना राईआ। तुहाडा ठीक वक्त ते ठीक टाईम ईसा दा कलाक कहे साढे दस, वध्ध घट्ट ना कोए कराईआ। हरि गोबिन्द दी धार तों ढाई सौ क़दम लहिंदे जाणा हट, सच किनारा वेख वखाईआ। ओथे गुर अर्जन दी महिमा नौ दिन
१०२१ गा के गए सी भट्ट, छत्ती रागां राग सुणाईआ। बाल्मीक दे वेले ओथे इक ब्राह्मण दा हुंदा सी हट्ट, पुस्तक राम नाम दे १०२१
२१ वेच के झट लँघाईआ। रविदास दे वेले ओथे रहन्दा सी इक भोला जट्ट, मस्ती विच प्रभ दा राह तकाईआ। त्रेते विच २१
रावी तिन्न सौ अठहत्तर साल वगी सी एसे तट, लहर लहर नाल टकराईआ। द्वापर विच तिन्न दिन पांडो एथे गए सी कट, युधिष्टर उँगली नाल निशान लगाईआ। हरिगोबिन्द एथे गड्ड के गया सी काना काही दा गट्ट, जिस नूं पाणी दी धार अज तक ना कोए रुढ़ाईआ। फिर मार के खण्डे दी सट्ट, ज़ोर नाल दबाईआ। सब दी याद पुराणी मैं निशाना लावां जिथ्थे आवे पुरख समरथ, भुल्ल विच भुल्ल रहे ना राईआ। फिर उत्ते रख के सुक्के पत्त, पत्ते दरख़तां दे लए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। गोबिन्द कहे अवतार पैंगम्बरो सारे कसके जाइओ कमरकसे, आपणा बल धराईआ। वेख्यो कोई डरपोक ना बणयो राह विच किसे नूं पै ना जाए गशे, क्यों बहुते मच्छ कच्छ राह विच नज़री आईआ। आपणे आपणे नाल लै के जाइओ दीनां मज़हबां वाले पटे, पटने वाला सब नूं करे अगवाईआ। फेर पता नहीं तुहानूं थोड़े समें तों बाद प्रभ ने कर देणा नाम कटे, हुक्म धुर दा इक जणाईआ। इक्को शब्द गुरु जो सब दा मालक उह सच दा खोल्हे हट्टे, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जन भगत सुहेले धुर प्यार विच रत्ते, रतन अमोलक हीरे लए बणाईआ। तुहाडे लेखे पाए तुहाडे ख़ते, खाता अवर ना कोए खुल्हाईआ। क्योंकि मैं

पुरख अकाल दी बुला के आया फ़तिह, एसे कर के दूजा डंका रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। रावी कहे मैं उडीकां, ज़िमीं असमानां नैण उठाईआ। आ गई ओह तरीका, जिस तारीख़ तों बिना तवारीख तों गुर अर्जन मैनूं गया समझाईआ। सदी चौधवीं कहे मैनूं वी ओसे दीआं उम्मीदां, जो चौदां तबकां आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा खेल होणा बीस बीसा, बीसवीं सदी रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे ओधरों गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रहीआं नठ, इक दूजी वल्ल भज्जण चाँईं चाँईंआ। छेती करो झट, आपणी लओ अंगड़ाईआ। चलीए ओस तट, जिथ्थे मिलणा धुर दा माहीआ। सच दवारे जाईए वस, आपणा पन्ध मुकाईआ। गंगा कहे कमल्यो ख़ाली नहीं जाणा हथ्थ, कुछ प्रभ दी भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। रावी कहे गुर अवतार पैग़म्बर मैनूं हुंदे दिसण इक्ठे, सचखण्ड साचे नज़री आईआ। सूरबीर नौजवान हट्टे कट्टे, रंग रंग विच्चों बदलाईआ। इक दूजे नूं कहिण अवतारो पैग़म्बरो सारयां उह गाउणे टप्पे, जेहड़े टप्पे मातलोक विच काया मन्दिर अंदर आए गाईआ। सब ने किहा असीं तूं मेरा मैं तेरा नाम जपे, सृष्टी तों राम कृष्ण अल्ला सतिनाम वाहिगुरु आए जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाईआ। रावी कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणा गुंद रहीआं सीस, मेंढी सोहणी लई बणाईआ। चलीए ओस दवारे जिथ्थे इक्को मिले हदीस, इक्को सच पढ़ाईआ। इक्को कलमा इक्को गीत, इक्को नग़मा दए सुणाईआ। इक्को परम पुरख परमात्म इक्को मीत, आत्म मेला मेले सहज सुभाईआ। सदा वसिआ रहे चीत, मन चित ठगौरी नज़र कोए ना आईआ। सब दी काया करे ठंडी सीत, अगनी तत बुझाईआ। एह बचन सुण के नारद कोल आ के ज़ोर नाल मारी इक चीक, चीक चिहाढ़ा दिता पाईआ। तुसीं किथ्थे जाणा ग़ौर नाल तक्को परमात्मा नेड़े कि मैं तुहाडे नज़दीक, नेड़े आ के सन्मुख तुहानूं दरस दिखाईआ। कुछ मँग लओ मैथों भीख, भिच्छया तुहाडी झोली पाईआ। जे ना मन्नो ते दोहां पास्सयां तों तिक्खी वखावां सीख, आर पार तुहाडे दयां कराईआ। तुसीं मेरे ते मैं तुहाडा गावां गीत, आत्मा नूं आत्मा मिल के वज्जे वधाईआ। ओस प्रभू दी काहदी उडीक, जेहड़ा साहमणे नेत्र नज़र किसे ना आईआ। ओह ते बड़ा झगड़ालू बड़ा लड़ाका वड्डा शरीक, जिस ने गुर अवतार पैग़म्बर बणा के दीन मज़हब विच दुनियां दिती लड़ाईआ। मेरे विच बीबीयो बड़ी तौफीक़ आउ तुहाडे सिर ते हथ्थ दयां टिकाईआ। तुहानूं पता नहीं उस ने सदी चौधवीं दे गल विच पा के तवीत, उहनूं वी ल्या भरमाईआ। उह जादूगर बड़ा ख़बीस, भय विच सारयां नूं रिहा डराईआ।

मुहम्मद कन्नां विच उँगलां पा के उहदा कलमा पढ़े नाले पढ़े हदीस, निउँ निउँ सलाम कराईआ। राम नूं ओस ने जंगलां विच दिता घसीट, सीता पिच्छे देंदा फिरे दुहाईआ। कृष्ण नूं रुकमणी पिच्छे भज्जणा प्या दे के पीठ, चलया वाहो दाहीआ। तुसीं केहड़ा लभदीआं जगदीश, जिस ने ब्रह्मा नूं पुत्री उत्ते दिता डुलाईआ। तुसीं केहड़ा समझदीआं अज़ीज़, जिस ने मोहणी रूप कर के शंकर दा अन्तर दिता हिलाईआ। तुसीं किहदे गाउंदीआं गीत, जेहड़ा विष्नूं नूं लक्ष्मी पिच्छे फिराईआ। इक मैं उच्चा सुच्चा ते सति धर्म विच ठीक, जे तुसीं चारे मन्नो ते फेर लवां प्रनाईआ। ते जे इक जणी कहो ते सारयां नूं दे के पीठ, आपणा पिच्छा जावां परताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल कराईआ। नारद कहे नी रावी ते इक वहिण वाली नदी, बेले काहीआं विच आपणा झट लँघाईआ। मेरी ते पुराणी गद्दी, मैं सब दा पातशाह शहिनशाह अख्वाईआ। पर मैं आउँदा कदी कदी, जिस वेले किसे नूं औकड़ पए तुहाडे वरगीआं नूं लवां बचाईआ। मेरा जीअ करदा तुहानूं पा के विच डब्बी, डब्ब विच लै के समेरू पर्बत तों पिच्छे दयां टिकाईआ। जिथ्थे वगदी नहीं कोई नदी, ना कोई साल ना कोई सदी, ना कोई सदमे विच दुहाईआ। अजे ते मैं तुहानूं सिफ्त दस्सी आपणी अध्धी, बहुता भेव ना कोए खुल्हाईआ। जे तुसां मेरा हुक्म ना मन्नया ते चलीआं गईआं बदोबदी, ते राह विच झगड़ा लैणा पाईआ। जे चुप चुपीतीआं लँघीआं मैं खड़ाक सुण लैणा तुहाडी अड्डी, जे पब्बां भार चलो तुसां लम्मीआं होणा तुहाडी बोदी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गंगा कहे मुनी जी किहा की, मैनूं दयो जणाईआ। नारद कहे हां जी हां जी हां जी, चौंहां दिती वड्याईआ। जमना कहे रिषी जी तूं मेरा पिउ ते मैं तेरी धी, मेरे सिर ते प्यार दयो टिकाईआ। नारद कहे गुस्से विच मैं एह चलण नहीं देणी लीह, ना मैं कोई स्त्री विआही ते ना कोई मेरी होई धी, जम्मण वाली तेरी केहड़ी माईआ। सुरस्ती हस्स के किहा मुनी जी ज़रा जल लओ पी, आपणा आप ठंडा लओ कराईआ। गोदावरी छेती नाल उहदे सिर ते मल दिता घी, जे सोहणे बणना धुप्प विच आपणी टिंड लओ चमकाईआ। उने चिर नूं पुरख अकाल इक रूप भेज दिता ना पता लग्गा शेर बब्बर ना पता लग्गे शींह, भय आपणा रिहा वखाईआ। इक दम बरसण लग्गा मींह, अन्ध अन्धेरी दिती चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे एह ओधर हो रिहा विहार, मैं सच दयां सुणाईआ। नारद दा दिसे ना कोए अख्त्यार, बेअख्त्यारी विच कुरलाईआ। जमना सुरस्ती गंगा गोदावरी सारीआं होण त्यार, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। जिस तरीके नाल राह विच्चों आउणा उहदा लेखा दस्सणा कल्ल नाल प्यार, क़लम स्याही जोड़ जुड़ाईआ। सब दा मेला होणा तट किनार, तट पिछला

१०२३
२१

नज़री आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आवण आपणी धार, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। अगला खेल अपर अपार, अपरम्पर स्वामी दए दृढ़ाईआ। सवा दस नूं सब ने पहुंच जाणा ओस किनार, जिस दी आसा सर्ब रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पावे सार, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा भेव खुल्हाईआ।

✻ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ रावी दा कन्ढा शब्दी धार गुर अवतार पैग़म्बरां दा पुज्जणा, शब्द रूप गुर अवतार पैग़म्बरां गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दा इकट्ठयां होणा, नारद दा पुज्जणा, भगत भगवान दा इक्ठ होणा, सब दा पूरब लेखा चुकाउणा, शब्द दी धार विच्च धर्म धार दी गोली जुगिंदर कौर लाल सूट पा के विहार कारण साथ सी ✻

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दिवस आया अठारां फग्गण, फल्गुण रुत्त मिली वड्याईआ। पुरख अकाला दीन दयाला दीपक जोती लग्गा जगण, दो जहान नौजवान मर्द मर्दान करे रुशनाईआ। नाम निधाना श्री भगवाना लग्गा गज्जण, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर रिहा सुणाईआ। ग़रीब निमाणयां चार जुग दयां विछड़यां रिहा सद्दण, सद्दा शब्द नाम जणाईआ। लेखा मँगण लग्गा पूजा पाठ सिमरन बन्दगी भजन, अक्खरां अक्खरां फोल फुलाईआ। सच अखाड़ा विच उजाड़ां लग्गा लग्गण, जिस दा लेख जुग चार ना कोए सुणाईआ। नाम निधाना लग्गा वज्जण, भगतां अन्तर निरंतर करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं सारे विच इक कतार, लाईन इक्को इक बणाईआ। किसे सिर ना टोपी ना पगड़ी ना दस्तार, मूंड मूंडाया वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई शस्त्र ना कोई वस्त्र ना कोई तन कटार, धनुश बाण कंध ना कोए उठाईआ। ना कोई शिष्य ना मुरीद ना कोई सेवक ना कोई नारी कन्त करे प्यार, तन वजूद सोभा कोए ना पाईआ। सचखण्ड दुआर जिस वेले निकले बाहर, सो पुरख निरँजण हरिपुरख निरँजण एकँकार आदि निरँजण मेहर निगाह इक उठाईआ। अबिनाशी करते श्री भगवान पारब्रह्म दिता इक प्यार, मेहरवान महबूब आपणा रंग रंगाईआ। अग्गे खड़े वेखे विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तत्तीसा वारो वार, सुरप्त निउँ निउँ लागे पाईंआ। गण गंधर्ब गावण आपणी वार, किन्नर यच्छप राग सुणाईआ। शिवलोक ब्रह्मलोक इंदलोक

तज आए ओस दुआर, जिस दा आदि अन्त कहिण कोए ना पाईआ । रवि ससि सूर्या चन्न धूढ़ी चरण मँगण छार, गल पल्लू रहे पाईआ। जिस वेले मण्डल उत्ते ठोकर दिती मार, बिना क़दम क़दम टिकाईआ। धाहीं मार के रोए सितार, सतह बुलंदी उत्ते देण दुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो असीं अठ्ठे पहर तुहाडा वेखदे रहे संसार, दीन दुनी खोज खुजाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार वरन अठारां बरन धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। नाम कलमा रिहा ना कोए अधार, बेड़ा पार ना कोए कराईआ । मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर साचा नूर ना कोए उज्यार, प्रेम प्रीती हक़ ना कोए कमाईआ। जे चंगा करो एथों मुड़ जाओ आपणी धार, धरनी क़दम ना कोए टिकाईआ। तुहाडा रिहा ना कुछ अख्त्यार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सति धर्म दा रिहा ना कोए मुनार, साढे तिन्न हथ्थ दुहाईआ। आत्म ब्रह्म ना कोए विचार, मन मति होई हल्काईआ। किसे दी पैज सके ना कोए सुआर, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मेट सके ना कोई काम क्रोध लोभ मोह हँकार, जगत तृष्ना ना कोए बुझाईआ। तुहाडे दीन मज़हब होण खुआर, बदी घर घर डेरा लाईआ। धुर दा नाम बणया तकरार, झगड़े विच दुहाईआ। सारे प्रभू दे अग्गे जा के दयो इक़बाल, हल्फ़ीआ लिख के बयान वखाईआ।

१०२५ साडी शरअ होई शैतान, शरीअत विच कुरलाईआ। साबत रिहा ना कोए ईमान, अमल दिसे ना कोए लोकाईआ। तूं साहिब १०२५

२१ सदा मेहरवान, महबूब तेरी वड्याईआ । लेखा वेख जगत जहान, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, २१

आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जां असीं मण्डल लँघे, आपणी हालत बदलाईआ। अग्गे नारद बहि गया आ के उत्ते मंजे, बिना दाउण तों आसण लाईआ। लै के ढाई हथ्थ दी तन्दे, आपणी सतार रिहा वजाईआ। ओए गुर अवतार पैग़म्बरो तुसीं ते कदी हुंदे सो पंजां तत्तां वाले बन्दे, लोकमात सेव कमाईआ। दस्सदे सो दीनां मज़हबां वाले डंडे, डंडावत आपणी आपणी जणाईआ। मैनूं ते कहिंदे सो ब्राह्मण शैतान पंडे, ऐवें बोदी रिहा हिलाईआ। हुण दस्सो तुसीं की बहिण जाणा रावी कन्ढे, ओथे कोई मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ मसीत चर्च गुरुदुआर नज़र कोए ना आईआ। पाणी नाल हो जाओगे ठंडे, कोई मुरीद कोई सिख तुहाडे उत्ते टेक ना कोए रखाईआ। जिधर वेखोगे दीन मज़हब वखरे वखरे झण्डे, एका रंग ना कोए मिलाईआ। तुसीं ते दस्स के आए प्रभ मिलण दे राह चंगे, तुहाडे मन्नण वाले इक दूजे नूं रहे डराईआ। आह वेखो लेख पुरख अकाल संदे, जिस ने सनद मेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बरो आह लै लओ मेरी मंजी दी सेज, जे तुहानूं गद्दीआं विच वड्याईआ । जिस ने तुहानूं दिता भेज, ओहो शरअ दा दिसे कसाईआ। आपणा नाम कलमा आपणी

पा लओ विच जेब, अंदर लओ छुपाईआ। मैनूं दस्सो पैग़ंबरो तुहाडे कोल केहड़ी कतेब, सफ़ा सफ़ा दयो उलटाईआ। ओह प्रभू बड़ा करन वाला फ़रेब, धोख्यां विच सब नूं रिहा फसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। मुनी कहे मेरी वेखो तुलसी माला, मणके ज़ोर ज़ोर नाल भवाईआ। गुर अवतार पैग़ंबरो तुसीं ते मज़हबां दा दुनियां नूं ला के आए ताला, मैं तुहाडी कुंजी चुरा के प्रभ दे सिँघासण थल्ले दबाईआ। तुसीं जा के वेखो दुनियां दा हाल हाला, मौजूदा अक्ख उठाईआ। फल रिहा ना किसे डाला, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सिम्मल रूप रहे लहराईआ। सवेरे उठ के तुहानूं जपण फेर दुपहर नूं तुहानूं कढुण गालां, क्यों भुक्खे मर्दे जिन्हां दे बच्चे, ओह सिआपे कर के तुहाडे आपणा झट लँघाईआ। की, दस्सो ग़रीबां लई परोस के लै चले जे थाला, सचखण्ड विच्चों दरगाह साची विच्चों मुकामे हक़ विच्चों एह काग़ज़ां वाले बस्ते की उन्हां नूं दयोगे खवाईआ। तुसीं कोई रईस नहीं, राजे नहीं, शहिनशाह नहीं, पातशाह नहीं, कि तुसीं उन्हां तों लैण चले जे हाला, उन्हां तों उगराही करन वास्ते भज्जे चाँईं चाँईंआ। रावी दे कन्ढे पहुंचणा नहीं सुखाला, पहिलों आपणी त्रैगुण माया दा तोड़ो जंजाला, फेर वेखो पुरख अकाला, की सब दा पिता माईआ। मैं दस्सणा नहीं चौहन्दा कुछ बाहला, एह तां थोड़ा जिहा दिता अहिवाला, बाकी जा के वेखणा नेत्र नैण अक्ख अक्ख उठाईआ। नारद कहे मेरी मंजी दे वेखो ना टुट्टे होए संघे, डोरी डोरी ना कोए बंधाईआ। एहो जेही हालत होई जो दुनियांदारी दे बन्दे, बन्दगी वाला नज़र कोए ना आईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना विच गंदे, दुरमति मैल अंदरों करे ना कोए सफ़ाईआ। तुहाडे शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी बस्ते बन्न्ह के घर घर पुस्तकां वाले रूप टंगे, पर आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। मेरी सिख्या सुण लओ मैं ग़रीब निमाणा, जे जाणा ते जाएओ सारे पैर नंगे, आपणी खुशी बणाईआ। इक्को वार सारयां ने वाह लैणे कंघे, तुहानूं पता, प्रभू वेहणा रंग लाल लाल कंघा तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। इस विच उह आदि अन्त दा अनन्दे, जिस विच्चों अनन्द लै के परमानंदे, परमानंद विच्चों अनन्द विच आईआ। एसे धार दी धार विच पवित्र हुंदे पापी गंदे, दुरमति मैल होए सफ़ाईआ। तुसीं दीन मज़हब इक कर दयो मानस मानस इक्को रंग जाण रंगे, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जेहड़ी पिच्छे बीती उह पिच्छे गई हंढे, अगला मार्ग लओ समझाईआ। तुहाडे राह बिखड़े पंजां तत्तां विच जिस तरह एह विंगे टेडे डंडे, पंज भूतक सरीर तों बाहर सारे सिध्धा राह इक्को दयो वखाईआ। फेर वेख्यो खेल सूरे सरबंगे, की आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़ंबरो क्यों तुसीं इक दूजे

दी कराई निंदा, मुस्लिम हिन्दू सिख वंड वंडाईआ। आदि तों वेखो पुरख अकाल दा जन भगत बच्चा धुर दा छिन्दा, जुग चौकड़ी रीती चली आईआ। जिस नूं ना कोए हरख सोग ना चिन्दा, ग़मी ग़म ना कोए रखाईआ। बण के पारब्रह्म दी बिन्दा, ब्रह्म आपणा करे रुशनाईआ। उह साहिब दाता गुणी गहिन्दा, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। जिस दा अमृत धार सागर सिन्धा, दो जहानां रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। तेई अवतार कहिण मुनी जी कर जाओ चुप, की सानूं रहे समझाईआ। पैग़म्बर कहिण सदी चौधवीं अन्धेरा घुप, असीं सारे वेख वखाईआ। गुरु दस कहिण एह ओसे प्रभू दी रुत्त, जो आदि अन्त आपणी कार वरताईआ। नारद कहे तुसीं ओसे तों लओ पुच्छ, जो सब किछ रिहा कराईआ। मैं ते एनां जाणदा जिंना चिर तुसां ओस दे नाम दी सांझी ना कीती तुक, आत्म परमात्म ढोला गाईआ। उनां चिर झगड़ा नहीं जाणा मुक, मुकम्मल करे सफ़ाईआ। तुसीं वेख्यो आपणे बुत, बुतख़ाने खोज खुजाईआ। केहड़ा शरीर जिस विच वसदा नहीं अबिनाशी अचुत, निरगुण नूर ना करे रुशनाईआ। मैं धरती तों उत्ते मण्डल तों थल्ले पाउण विच बैठा लुक, आसण आपणा इक जमाईआ। आउ जे तुसां जाणा ते तुहाडे बस्ते लवां चुक, भार अगला लवां वंडाईआ। पैग़म्बरो आपणी कीती उत्ते क्यों आपे रहे थुक, की होया जे सदी चौधवीं नेड़े आईआ। प्रभ नाल
१०२७ आकड़ के झगड़ा लओ पा ओ खुदा इक्क, तुहाडी उम्मत वाले किन्ने पुत्त, सारे इक्ठे हो के रौला दयो पाईआ। नाले १०२७
२१ पिट्टो हू हक़ खुदा तेरे पिच्छे कटाई मुच्छ, लबां वंड वंडाईआ। अग्गे अवतारां दिता अमृत घुट, असीं आबेहयात आए २१
प्याईआ। फेर वेख्यो तुहाडा खुदा आपे कर जाए चुप, तुहाडे पिच्छे भज्जे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ । नारद कहे अवतारो तुसीं चले किस दे कोल, मैनूं दयो जणाईआ। जिस तुहानूं तोल के आपणे नाम वाले तोल, पत्थरां दे बुत बणा के मथ्थे दिते टिकाईआ। ओस प्रभू दा की हुक्म मन्नणा जेहड़ा हुक्म देवे गोल मोल, गुज्झा भेव ना कदे खुलाईआ। मैं ते मार के कहूं ढोल, ओह अछल छलधारी उस नूं मिलण कोए ना जाईआ। जिस ने पैग़म्बरो तुहानूं होर, अवतारो तुहानूं होर, गुरुओ तुहानूं होर दस्स के बोल, ओसे बोली विच टक्करां दितीआं लवाईआ। आप सचखण्ड बैठा अडोल, तुहाडा धरती उत्ते डाह के घोल, बिना पिठ लवाई तों दिवस रैण रिहा लड़ाईआ। उस नूं कहो तुसीं, असीं भाणा मन्नदे, एह प्रभू साडे दे चोहल, जो चोल्यां अंदर झगड़ा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, की आपणा खेल कराईआ। नारद कहे सतिगुर जी दह दिशा नमस्ते, दस गुरु इक्को जोत नज़री आईआ। तुसीं ते चार वरनां इक आए दस्सदे, इक्को करी पढ़ाईआ। जे चार वरनां दे सांझे हुंदे

फेर केस क्यों सिर धरदे, नवीं कीती वड्याईआ। ते सिँघ बण के दो जहानां नाल क्यों लड़दे, जे सारयां दा पिता पुरख अकाल उहो जम्मण वाली माईआ। जे तुहाडे विच समथया आह मेरी मंजी ते बहि के लोकमात विच सब दे साफ़ कराओ हिरदे, अग्गे जाण दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहानूं वेख के तुहाडे मुरीद ते तुहाडे सिख विगड़े, गुस्से विच आ के सगों होर करन लड़ाईआ। तुसीं निशाने दस्स दयो इक्को सिखर दे, जिस मंजल ते चढ़ के मुड़ के उतर कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण, ओ नारद बहुमत्ती, की मता रिहा जणाईआ। नारद जी झट निमाणा हो के कहे जजमानो मैं ते कहिंदा इक्को मन्नो कमलापती, क्यों अल्ला वाहिगुरु राम दे झगड़े दिते पाईआ। तुहानूं स्वाद की आया आपणी आपणी चला के हट्टी, मैनूं दयो समझाईआ। तुहानूं रस की आया वखरी वखरी पढ़ा के पट्टी, हिस्सयां विच अक्खरां विच आए पढ़ाईआ। दस्सो, इस विच्चों की लाभ होया ते केहड़ी खट्टी खट्टी, ना राम बदलया, ना प्रभू कृष्ण बदलया, ना अल्ला बदलया, ना सतिनाम बदलया, ना वाहिगुरु बदलया सब दा मालक इक्को उही नज़री आईआ। पई मैनूं सच दस्सो, उठ के थर थर कम्बण लग्गा, अवतार पैग़म्बरो तुहाडे कोल केहड़ा नाम चंगा जिस चंगे दे नाल हुंदी गति, जेहड़ा नाम माढ़ा उह मेरे मंजे दे पावे थल्ले दयो दबाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे खिड़ खिड़ा के पए हस्सी, हस्स के दिता जणाईआ। नारद कहे, एह मैनूं नहीं लगदी गल्ल अच्छी, मेरे साहिबो, सच दयां सुणाईआ। तुसीं चार जुग चक्र मार के आए, किसे नौ खण्ड पृथ्मी नौ दवारे शब्द दी डोर नाल नहीं बद्धी, सारी सृष्टी नूं दृष्टी विच इक ज्ञान ना कोए कराईआ। दीनां मज़हबां दी वंड के हद्दी, गुरूआं पैग़म्बरां अवतारां दी चला के गद्दी, आपणा वक्त आए लँघाईआ। मैनूं ते ऐं जापदा तुहाडी दीन दुनियां जिवें नेज़े ते टंगी मच्छी, जल विच्चों थल विच दए दुहाईआ। धन्न भाग जे तुहाडे दर्शन होए अज्ज मसीं, मसीह जी हज़रते ईसा हज़रते मूसा मुसलसल दयो समझाईआ। तुसां केहड़ी कथा मुहम्मद जी मुहम्मदीआं ताईं दस्सी, सदी चौधवीं राह तकाईआ। तुसीं पैग़म्बर कि रसूल कि नबी, मैनूं दयो दृढ़ाईआ। जे कोई तुहाडी उम्मत नूं हो जाए हभी, नबी दसो, तबीब बण के किस तरह मर्ज़ दयो गवाईआ। क्यों शहादत देण लग्गी चार जुग दी पुराणी रावी नदी, जो वहिणां विच वहिण रही वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मेरा जीअ करदा तुहाडे चरण चुम्मां, जे चरण ना चुम्मण दयो तां आपणा मुख तुहाडे मथ्थे उत्ते लगाईआ। पैग़म्बरो एह दस्सो की वड्याई तुहाडे दिन विच जुम्मा, शुकर परोहत शुकर कर के एसे दा झट लँघाईआ। मुहम्मद कहे मैं इक दिन तोड़िआ सी तुंमां, रसना नाल

चख्खया कौड़ा नज़री आईआ। फिर मैं चौदां तबक घुम्मा, भज्जिआ वाहो दाहीआ। ध्यान कीता मेरे परवरदिगार ने मैनूं आपणे प्रेम दा दिता मुम्मा, रस दिता चखाईआ। मेरी ज़ुबान ते छोटा जिहा छाला प्या मुड़ के बण गया वड्डा गुंमा, गल्ल करन दी वाह रही ना राईआ। कलमा पढ़ ना सकां ते बिना कन्नां तों सुणां, ते दीद ईद होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। मुहम्मद कहे मुनी जी मेरी पंज दिन हिल ना सकी ज़बान, मुखों कहि ना कुछ सुणाईआ। मैं पंजां दिनां विच पंज वेरां अंदरे अंदर गाई क़ुरान, काया कुरहे विच टिकाईआ। फेर झुक के कीता सलाम, सजदा नूर खुदाईआ। उस वेले हुक्म होइओ, मुहम्मदा तेरा दुःख थोड़ा बाकी जिस वेले बण के आवां अमाम, तेरा लहिणा दयां मुकाईआ। एसे कर के पंज दिन खाधा नहीं तुआम, कौल मुहम्मद पूर कराईआ। फेर उह कल्ह़ जुम्मा आया ते बणा ल्या पीण खाण, दुःख दर्द रिहा ना राईआ। नारद एह उसे दा हुक्म ते ओसे दा फ़रमान, मुहम्मद कहि के रिहा दृढ़ाईआ। असीं बरदे धुर दे गुलाम, गुलामी विच भज्जे चाँईं चाँईंआ। जिस सदी चौधवीं खेल करना तमाम, तमन्ना सब दी दए मिटाईआ। धुर दी गोली करे प्रणाम, जो वस्त्र आई बदलाईआ। एह खेल श्री भगवान, धुर दा मालक आप समझाईआ। हस्स के नारद कहिंदा गुर अवतार पैग़म्बरो तुहानूं डंडावत करां बन्दना करां निमस्कार करां, सजदा करां कि कहां सलाम, तुसीं आए इक घर चों, जाणा इक घर, हुण दस्सो केहड़ा तुहाडा नाम, किस नाल तुहाडा अदब लवां कराईआ। सारे गुर अवतार पैग़म्बर हो गए हैरान, एह किथ्थों मिल गया शैतान, ते नारद फेर कहे नहीं तुसीं ते सर्ब मेरे जजमान, तुहाडे कोल वखरे वखरे भण्डारे, किसे कोल अल्ला, किसे कोल राम, किसे कोल वाहिगुरु, किसे कोल काहन, किसे कोल सतिनाम जेहड़ा तुहाडी मर्ज़ी ओह मेरी झोली दयो पाईआ। जे प्रभू इक ते तुसीं वी इक फेर क्यों सिफ्तां वाले नामां विच उहनूं करदे बदनाम, झगड़े मज़हबां वाले पाईआ। एथे छड्ड के जाओ आपणा आपणा इस्लाम, ना कोए मज़हब ना अक़वाम, सारे सांझा उठाओ इक दाम, दामनगीर इक्को लओ मनाईआ। फेर जाइओ विच जहान, रावी कन्ढे पहुंचिओ खुशी होए महान, रूप धरयो ना कोए इन्सान, पंजां तत्तां रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मेरे नाल कर ल्यो वायदा, मांगत हो के मँग मँगाईआ। मशवरा कर ल्यो बाक़ाइदा, अग्गे सके ना कोए उलटाईआ। तुसीं एथों बैठे दीन दुनी दा लाओ जाइज़ा, हर घट अंदर वेख वखाईआ। सच दस्सयो राम कृष्ण अल्ला वाहिगुरु सतिनाम किस दे अंदर हैगा, जे है ते उस नूं प्रभ दे नाल दयो मिलाईआ। नहीं ते तुसीं उन्ह़ां तों हो जाओ अलाहिदा, क्यों झगड़यां विच वक्त लँघाईआ। जिस दा दस्सो तुहानूं ना कोई

१०२९ २१

नफ़ा ना कोई फ़ायदा, ऐवें पन्ध मार के आपणा वक्त रहे लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मेरे राम, राम तेरी दुहाईआ। मेरे काहन, काहन तेरी वड्याईआ। मेरे अल्ला रहमान, तेरी सच सरनाईआ। मेरे साहिब सतिनाम, तेरा ढोला गाईआ। मेरे वाहिगुरु बलवान, चौथे जुग तेरे चार अक्खरां ओट तकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुसां वाहिगुरु वडयाया, आत्मा किथ्थे गई जिस दा मेल मिलणा आण, जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। मेरी बेनन्ती मन्नय पहिलों रावी कन्ढे जा के भगतां तों एह गंवाइओ गाण, पिछला लेखा पिच्छे रहे ना राईआ। फेर ओह सुणयो फ़रमान, जो भगत भगवन्त मिल के रहे सुणाईआ। तुसीं चलो ते मैं गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वल्ले मार आवां ध्यान, क्यों सवेरे साढे चार दा वक्त इश्नान कर के उन्हां वी आउणा चाँईं चाँईंआ। ते ओधरों की खेल करे भगवान, काने दी मधाणी लै के वेखो रिड़कण लग्गा जहान, इस तों वड्डी जहालत की नज़री आईआ। मैं ते की आखां जे तुसीं चंगे होवो ते एथों पिछांह मुड़ जाओ आराम नाल जा के वसो आपणे मकान, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। ओह रावी कन्ढा ओथे ते भगतां नूं खाणा पैणा सुक्का मंडा ते नाल इक इक्क गंढा, रस भोग पदार्थ नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच जैकारे सब दे वारो वारी लए लगाईआ। पंज वार प्रभू प्रदक्खणा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। जन भगत सुहेला रहे कोई ना सक्खणा, नाम भण्डारे दए भराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर प्रेम दी लै के आए दक्षिणा, सब दे अन्तर रहे टिकाईआ। काहन खववावण आया मक्खणा, सोहणा रूप बदलाईआ। राम दा बेर प्यार दा चक्खणा, जो भीलणी आस तकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद छड्ड के धुर दा वतना, पैंडा ल्या मुकाईआ। नानक निरगुण धार बोल जैकारा अलखणा, संदेसा दिता दृढ़ाईआ। गोबिन्द वासी पटना, मेहर नज़र उठाईआ। रविदास ने तीर कमान निशाना छड्डणा, कंधे उत्ते ल्या टिकाईआ। सच दमामा इक्को वज्जणा, इक्को राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पैग़म्बर कहिण सदी चौधवीं साडी विचोली, विचला भेव खुल्हाईआ। जिस दी धर्म दी धार गोली, वस्त्र लाल रंग वड्याईआ। दीन दुनी दी खेल देणी होली, हुलीआ सब दा देणा बदलाईआ। जेहड़ी नीली धार मथ्थे डोल्ही, बिन्दी लई लमकाईआ। असमानां उत्ते पैणी रौली, दो जहान देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जिन्हां मस्तक लाई धूढ़ी, पंजे हथ्थ देण उठाईआ। मुखों कहिण सब दी आसा होई पूरी, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर देण मन्ज़ूरी, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। सानूं इहो कम्म ज़रूरी, जिस कारण

आए चाँईं चाँईंआ। बाकी रहे ना किसे दी मज़दूरी, जो तेरा नाम ध्याईआ । सब सृष्टी दिसदी कूड़ी, कूड़ विच कुरलाईआ। जिंनां चिर तेरा दरस ना होवे नूरी, नूर जोत ना कोए रुशनाईआ । परम पुरख परमात्म सानूं कलयुग अन्तिम नाता तोड़ना पैणा मजबूरी, एहो तेरे हथ्थ वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी गढ़ होया ग़रूरी, हउमे हंगता ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पंज गुरमुख जिन्हां मस्तक लाया गारा, निउँ के सीस देणा झुकाईआ। पुरख अकाल तेरी करदे रहे इंतज़ारा, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। इशारा देंदे रहे गुरु अवतारा, पैग़म्बर बोल जणाईआ। कल कल्की आए चवीवां अवतारा, निहकलंका नूर रुशनाईआ। अमाम अमामा बण सिक्दारा, जोती जाता वेस वटाईआ। भाग लगाए ओस किनारा, जिथ्थे अर्जन गया दृढ़ाईआ। जिथ्थे चार जुग दा सब ने तक्कया सहारा, ओट इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। गुरमुख नाल जो गुरमुख नौ, नौ जैकारे देण लगाईआ। जिस कारण जुग चौकड़ी आए भौं, चुरासी विच रूप बदलाईआ। चारे खाणी आए सौं, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सेज हंढाईआ। कितों मिल्या ना साचा नाउँ, नाउँ नर निरँकार ना कोए मिलाईआ। ख़ाली रिहा काया गाउँ, मन्दिर वज्जी ना कोए वधाईआ। नाता छड्ड गए पिता माउँ, साक सज्जण संग ना कोए रखाईआ। हँस बुद्धी होई काउँ, काग वांग कुरलाईआ। बिन प्रभ साचा करे ना कोए न्याउँ, निआंकार नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर पहुंचे हरि गोबिन्द वाले थाउँ, थान थनंतर इक वड्याईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती थोड़्हा खुंझ के राहों, अगले पत्तन डेरा लाईआ। नारद नाल गल्लां करदयां उन्हां भुलेखा प्या केहड़ा दरयाओ, नदी कवण वहिण वहाईआ। हिरदे अंदर चाउ, जे नहीं लम्भया एथे जाईए बहि आपे लए मिलाईआ। क्यों, जिंनां चिर सानूं ना मिल्या उस नूं पाणी रिड़कदे नूं कवण फड़ू बाहों, साडा सवाणीआं दा कम्म तूं क्यों आपणी सेव लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कहिण नेत्र वहाईए नीर, राहों घुथ्थी लए मिलाईआ। बिरहों विछोड़े विच हो जाईए दिलगीर, आपणा आप भुलाईआ। जे साडे विच्चों मिल गया कबीर, संगल दिते तुड़ाईआ। असीं ते हुण पहुंच गईआं अख़ीर, किस तरां कदमां तों परे हटाईआ। सुरस्ती कहे ओह वेख साडे अग्गे ब्राह्मण फिर मार के गया लकीर, कहे तुहाडी मति दिती बदलाईआ । रेत ते लम्मा पै के किहा मेरे ढिड्ड विच हुंदी पीड़, जे हौली हौली मलो ते मेरा दुखड़ा रहे ना राईआ। मूँह दे भार हो के फिर बौहड़ी बौहड़ी करे मेरे दर्द हुंदी हड्डी रीढ़, मेरीआं दोवें लत्तां ते दोवें बाहीं चारे जणीआं फड़ के सिध्धा दयो कराईआ। नहीं ते अग्गे ते तुसीं खांदीआं सो खण्ड खीर, पता नहीं अज्ज

१०३१
२१

तुहानूं रेत दे फक्के मार के आपणा झट लैणा पैणा लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ । गंगा कहे नी भैणो ओह किशन सिँघ दे हथ्थ गंगा सागर, साडे वल्ल भज्जा आवे चाँईं चाँईंआ। खब्बे पासे टंग के ते कच्छ नालों उच्ची कीती चादर, क़दम लम्मे लम्मे उठाईआ। मोढुयां वल्ल वेखे ढिढु ते हथ्थ फेर के कहे मैं बड़ा बहादर, पिन्नीआं मोटीआं मोटीआं नज़री आईआ। जे पहन के आईआं साड़ी धोती सलवार जां उत्ते लै के चादर, आपणा रूप वटाईआ। उस ने आपणे भ्रा तों ढाई गज़ दा टोटा दवाइया खादर, बड़ा मोटा नज़री आईआ। पता नहीं साडे उत्ते किस तरां पावे नाल आदर, खुशीआं नाल टिकाईआ। जिस वेले सिर ढके, प्रभू जमेंदार जगत दा राह विच किशन सिँघ बचन सिँघ दी भैण नूं नाल लै के बिना संघ तों मारे चांगर, तेरा नाम दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण धरनी धरत धवल पुज्जे, पूजनीक तेरी सरनाईआ। तेरा रमज़ इशारा कोई ना बुज्झे, बुज्झया दीपक ना कोए जगाईआ। भाग लग्गा ओस बसुधे, जो सुध सब दी दए गवाईआ । गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अग्गे आ के बैठीआं जिस वेले सूरज उगे, आथण तक तेरा राह तकाईआ। हुण गुरमुख जन भगत खुशी नाल मंडे खा लैण सुक्के, गंढे नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अगले कन्ढे बाकी लेखा दए समझाईआ।

नारद कहे मैं रावी कन्ढे गया आ, मेरे अन्तर खुशी आईआ। मेरी क़बूल होई दुआ, प्रभ मेहर नज़र उठाईआ। मैनूं ऐवें राह विच धोखा देवे चौधवीं सदी उथ्थे केहड़ा खुदा, जिस नूं मिलण जाईआ। मैं किहा नी वाह वा, चौधराणीए मैनूं रही भुलाईआ। जा के उम्मत दी बण माँ, पासा लै बदलाईआ। मैं ते जाणा नाल चाअ, भज्जां वाहो दाहीआ। श्री भगवान दा दर्शन पा, आपणी खुशी बणाईआ। तट किनारे गया आ, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी दया कमाईआ। नारद कहे वाह वाह वाह मेरे प्रभू, वाहवा तेरी वड्याईआ। ओम ओम ओम तैनूं कौण लभ्भू, मेरी राम दुहाईआ। हरे हरे हरे तैनूं कौण सद्दू, आपणे घर बहाईआ। दरोही दरोही दरोही तेरे चरण केहड़ा लग्गू, सेवा सरन कमाईआ। मैं गुरमुखां चों सुणदा रिहा तूं मोहण माधो मधू, मधुर धुन सुणाईआ। तेरे भगतां दी यदू, आदि जुगादि चली आईआ। तैनूं टेकणा मथ्थू, चरणां सीस निवाईआ। हे मेरे मेहरवान जे मेरा मन्ज़ूर कर लएं क़दमां विच छोहिआ सिर जेहड़ा वांग कद्दू, मेरी बोदी हिल के खुशी लए मनाईआ। मैं रावी विच्चों लंघिआ इक बोल प्या डड्डू,

आपणी आवाज़ सुणाईआ। मैं हस्स के किहा गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती एह तुहानूं वढ्ढू, विच क़दम ना लैणा टिकाईआ। खाधिआं मूल ना छड्डू, वड्डे मूँह वाला मैनूं नज़री आईआ। तुहाडा किथ्थे परमात्मा, मैनूं कहिंदे ने मालक जगू, जगजीवण दाता नज़र कोए ना आईआ। जिनां चिर मेरे मूँह विच ना पाओ लड्डू, पार किनारे ना कोए कराईआ। तुसीं डरो नहीं मैं हुण तुहाडे कोल आकड़ नाल खंगू, हूं हूं कर सुणाईआ। तुहानूं चिन्ता नहीं मैं निमक हराम बणाया सी गंगू, जेहड़ा पिछले जन्म दा ब्राह्मण बलि दा भट्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। फेर परत के प्रभ दे चरण वेखो डिग्गा मार के भुब्बीं, हाए हाए कर सुणाईआ। मेरे साहिब सतिगुर ओह वेख गंगा माई खुभ्भी, क़दम ना कोए टिकाईआ। डड्डू मार के लुक गया पाणी विच चुभ्भी, आपणा मुख छुपाईआ। इन्हां सवाणीआं दी विगड़ गई बुद्धि, अक़ल कम्म किसे ना आईआ। मैं ते रमज़ मारदा रिहा गुज्झी, चलो छेती छेती मिलीए धुर दे माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ओधरों गंगा कहे बौहड़ी मेरे भगवन्त, तेरी तेरी दुहाईआ। एह किथ्थों तूं भेज दिता पाखण्डी सन्त, सानूं चक्र विच भवाईआ। कदी ओम, कदी हरी ओम, कदे नमो नमो, कदे हँ ब्रह्म, कदे कहे जे होर कुछ नहीं ते मेरा जपो मंत, निमन्त्रन दे के तुहानूं आपणे घर लवां बुलाईआ। मेरी महिमा अगणत, मेरी खेल बेअन्त, जे तुसीं मैनूं बणा लओ सारीआं कन्त, सेजे साची दयां सुहाईआ। लालच देवे अनन्त, बण जाए विद्या दा पंडत, गल्लां बातां विच भरमाईआ। एह गल्ल सुण के नारद कहिंदा हे प्रभू जो कहिंदा सो ग़लत, मैं ते इहनां दा राखा बण के आया परत, किते इहनां वल तक्के ना कोई उत्ते धरत, प्रभ दी पूरी कराई शर्त, जो सब ते दया कमाईआ। मेरे भगवान तूं दस्स मैं तेरा कदे नहीं कीता हरज, मैं जो किसे नूं कहवां सो कहिंदा गरज, हेरा फेरी करनी मेरा फ़रज़, क्यों तूं मेरी सेवा दिती लगाईआ। एह सारीआं राह विच मैनूं कहिण पंडत जी कोई सोहणी सुणाओ तरज़, मैं चुप हो गया इहनां मेरे उत्ते उडा के पा दिती गर्द, मेरा वंडया नहीं दरद, मैं दुखी हो के एहनां नूं तेरे वल लिआईआ। जमना कहे प्रभू असीं ते अजे अपड़ीआं ने रावी दे आर पार कन्ढे, आपणा पन्ध मुकाईआ। एह सानूं ऐवें राह विच भय दिन्दा रिहा तिक्खी धार खण्डे, क्यों जांदा जांदा गोबिन्द गया फड़ाईआ। सिध्धीआं हो जाओ वांग डंडे, जे पाणी पीणे ठंडे, नहीं तां नंगी पैरीं दयां चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, एह सानूं रिहा सुणाईआ। नारद कहे वाह नी वाह बीबी, की प्रभ नूं रही सुणाईआ। मैं भुक्खा ब्राह्मण मेरे घर विच ग़रीबी, मैं रोटीआं मँगण वाला तुहाडी सेवा रिहा कमाईआ। ज़रा आपणी वखाओ मैनूं आपणे खब्बे हथ्थ दी चीची, दन्दी वढ्ढ के

चब्ब के गया खाईआ। जमना रोण लग्गी, आंहदा ना बीबी हुण ते वट्ट कसीसी, तुहानूं पता नहीं तुहाडे विच किन्ने मर गए ते किंनिआं दी जान लई खपाईआ। ऐवें कल्ह कहिंदी फिरदी सैं मैं तेरी धी धी धी, जे किते मेरे कोल साबत मंजी हुंदी मैं हीअ कढ्ढ के तेरा सिर देणा सी खुल्हाईआ। सुरस्ती कहे एह किहा की, नारद कहे जे वस्स चले तुहाडा कीमीआ कढ्ढ के जावां खाईआ। छेती नाल आण के प्रभ चरणां ते कहे तेरे कँवलां ते जावां थी, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं इहनां नूं सिध्धे रस्ते लै के आया लीह लीह, बदो बदी भुल्ल के आपणा राह गईआं तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे प्रभू मैं तेरी दासी, मैनूं दासी लै बणाईआ। मेरी ना कोई फुफ्फी ते ना कोई मेरी मासी, घर दयां नूं मिलण कदे ना जाईआ। ना मेरी कोई कुण्डली ना कोई रासी, ना कोई गृह नछत्र मेरे उत्ते छाईआ। एह गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती चार जुग दी कड़ी बासी, चार जुग दे मुरदयां दा मुशक इन्हां विच्चों आईआ। मैं सदा तेरी खुशीआं विच लाहवां उदासी, हस्स हस्स के तेरे नाल आपणा आप प्रचाईआ। इहनां कदी अयुध्या जाणा कदे काशी, हरिदुआर वल ध्यान लगाईआ। मैं ते इक्को भगवन्त मन्नणा कमलापाती, दूसर अक्ख ना कदे मिलाईआ। मेरी तेरे अग्गे बेनन्ती जे तूं कहवें तां गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नूं इक लिख देवां निक्की जिही पाती, अक्खर दो चार पाईआ। साहिब सतिगुर पिठ ते मार के थापी, किहा तेरी आसा पूर कराईआ। मज़मून लिख्या मैं मना ल्या पुरख अबिनाशी, ओह मेरे बिना किसे नाल अक्ख ना कदे मिलाईआ। मैं उस नूं बणाया आपणा कमलापाती, ते तुसीं सारीआं उस दे मिलण तों पहिलों मैनूं बणा लओ साथी, कन्ढे दे पिच्छे भज्जीए चाँईं चाँईंआ। वेख्या जे रावी वाली किड्डी औखी घाटी, औझड़ पैंडा राह वेख वखाईआ। तुसीं वसो जा के आपणे तीर्थ ताटी, जिथ्थे सोना चांदी तुहाडे विच भेंटा रहे कराईआ। मैं ओथे होर सुणया संगत ओसे दा गुण गांदी, ते तुहाडी चले की चतुराईआ। इक लाल सूट वाली बैठी बांदी, बन्दना कर के सीस निवाईआ। रविदास दी क़लम सब दा लेख लिखांदी, जिस नूं सके ना कोए मिटाईआ। जां मैं अगांह वेख्या मुहम्मद दे चार यार हिक्की आंदे ढांडी, छुरीआं बग़लां विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती प्रभ दे कोल ना जाइओ नेड़े, दूरों निमस्कार करके करवट ल्यो बदलाईआ। जिस दे चार जुग पए रहे झेड़े, दीन दुनी दए दुहाईआ। तुसां उस दे की वसणा खेड़े, जेहड़ा कदी राम कदी कृष्ण कदी मूसा ईसा मुहम्मद नानक गोबिन्द बण के सारयां नूं जाए तजाईआ। जे तुसीं चल पउ नाल मेरे, तुहाडी ते मेरी कदे ना होए जुदाईआ। ओस प्रभू दे कोल की जाणा जेहड़ा चढ़दा निक्के जेहे घोड़े ते टट्टू जिहे

१०३४
२१

वछेरे, मैं तुहानूं आकाशां पातालां दी सैर दयां कराईआ। तुसीं ज़रा मेरे पिंडे ते हथ्थ दयो फेरे, रावी दी रेत रहिण कोए ना पाईआ। सुरस्ती कहिंदी जा तेरे वरगे पखण्डी बथेरे, चार कुण्ट भज्जण वाहो दाहीआ। जमना कहे मूँह ते मारूंगी लफेड़े, जे अक्ख लई उठाईआ। गंगा कहे मुड़ जा आपणे डेरे, आपणा क़दम उठाईआ। गोदावरी ने कन्नां तों फड़ के चार दिते गेड़े, चार कुण्ट दिता फिराईआ। नारद जी झट कहे बच्चीओ मैं तां तुहानूं चढ़ाउण आया प्रभू दे बेड़े, आउ सच दुआर दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद फिर कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आउ तुहानूं गल्ल दस्सां पुराणी, ओ परे हो के दयां सुणाईआ। जमना तूं आपणा आप नहीं वेख्या, जमना कहे नहीं, जे तूं वेखें तूं इक अक्खों काणी, काणा प्रभ नूं मिलण कदे ना जाईआ। गंगा तूं कदी तक्कया ई आपणे पैर हथ्थीं, गंगा कहे नहीं, नारद कहे जे तक्कया ते तेरे पैर मनुषां दीआं हड्डीआं रोलण वाले कम्म किसे ना आईआ। नी सुरस्ती कदे तक्कया ई आपणा नक्क, सुरस्ती कहे नहीं, नारद कहे इहो जेही नक्क वाली प्रभ दे चरणां नक्क ना कोए रगड़ाईआ। नी गोदावरी मैनूं तेरे ते पै गया कुछ शक्क, गोदावरी कहे क्यों, नारद कहे कमलिए गोबिन्द तेरे कन्ढे आया

१०३५ २१ तूं चरण चुम्म के ना खुशी बणाईआ। हुण एथों भज्ज जाओ झट पट, प्रभ दे चरणां सीस ना कोए निवाईआ। तुसीं मिशराणीआं १०३५ २१

खतराणीआं पंडताणीआं सोहणीआं जिहीआं सवाणीआं उह पैलीआं विच फिरन वाला जट्ट, तुहानूं जंगलां विच दए रुलाईआ। अज्ज वी जे मेरी गल्ल मन्न लओ ते मेरे नाल आपणे दिन लओ कट, जिंनां चिर रहो उनां चिर सुख दे विच रखाईआ। वेखो मेरे गोडयां दे उत्तों किड्डे मोटे पट्ट, ते जिंनां मेरा नक्क सुक्का उन्नी मेरी बोदी लम्मी नज़री आईआ। चंगीआं बणो वेखो एथों पिच्छे जाओ हट, पुट्ठी पैरीं आपणा पन्ध मुकाईआ। जे तुसीं किनारा गईआं टप्प, ते भगतां विच जाओगीआं फस, फेर मेरी हो जाऊ बस, बौहड़ी बौहड़ी कर के दयां सुणाईआ। जे तुसीं प्रभ वल्ल चलीआं मैं मर जाणा खा के गश, दस्सो फेर तुहानूं केहड़ा मिलणा जस, ब्राह्मण दी हत्या वाला सुख कोए ना पाईआ। गंगा कहे पिच्छे हट, असीं जाणा चाँईं चाँईंआ। नारद कहे जे तुसां जाणा, रविदास नूं तूं दिता कंगण मैनूं आपणी निशानी दे जा नथ, तेरी नक्थ वेख के आपणा झट लँघाईआ। एह गल्ल कहि के ज़ोर नाल प्या नठ, ओह अजे पिच्छे आप चरणी डिग्गा आईआ। कहे वाह वाह प्रभू समरथ, तेरी बेपरवाहीआ। मैं बड़ा ज़ोर नाल गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नूं लिआया सद्द, बदो बदी खिच्च के कन्ढे दितीआं पुचाईआ। मैं बड़ा रख्या हद्द, सेवक हो के साची सेव कमाईआ। जे प्रभू मैं ना हुंदा एह ज़रूर तैनूं जांदीआं छड्ड, अग्गे आ ना सीस निवाईआ। अग्गे बचन कर के फेर पिच्छे गया हट, तिन्न सौ पंजाह क़दम ते डेरा लाईआ। गंगा

गोदावरी जमना सुरस्ती नूं रिहा दस्स, मैनूं प्रभ ने भेज्या चाँईं चाँईंआ। थापी मार के किहा "जा ओए जा" एह कीतीआं तेरे वस्स, एथे आउण दी लोड़ रहे ना राईआ। चारे कुट्टण लग्गीआं ठप ठप, बोदी फड़ के दिती खिचाईआ। नी ना बोलो ना मारो मैं ते तुहानूं दस्सण आया जप, ओह ढोला लैणा गाईआ। सुरस्ती किहा ऐवें ना कर हफ़ हफ़, ज़बान मुख विच हिलाईआ। नारद ओसे वेले किहा लम्मा फड़ के सप्प, उन्हां दे अग्गे रिहा हिलाईआ। नी वेखो मेरा तप, जो मर्ज़ी ए ओह करके दयां वखाईआ। तुसीं छड्ड दयो खैहड़ा उस रब्ब, जेहड़ा सब नूं चक्र विच रखाईआ। वेखो मैं तुहानूं गया लभ्भ, रोज़ लबां दे उत्ते मेरा नाम ध्याईआ। फेर गुस्से विच चौहां ने धौणों फड़ के ल्या दब्ब, भार उत्ते दिता टिकाईआ। नारद कहे वेखो यारो हो गई हद्द, जे मैं चाहवां एह कन्या कन्ना मन्ना कुरल कर के दयां उडाईआ। उन्हां फेर सिर थल्ले कर के लत्तां उतांह कर के दिता गड्ड, थोड़ी थोड़ी रेत कन्नां विच पाईआ। मुखों कहे हुण मैनूं दयो छड्ड, तुहाडा राम दयां मिलाईआ। सारीआं पईआं हस्स, पुट्ठे तों सिध्धा दिता कराईआ। दूरों कहिंदा आवे मेरे पुरख समरथ, मेरे वल चरण दे लमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। भज्ज के आया जिस दिता नूर, चरण कँवल सरनाईआ। साहिब मेरे हज़ूर, मेहरवान तेरी बेपरवाहीआ। मेरा सुख़न होया पूर, संसार तेरा दर्शन पाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नूं दस्स के आया तेरा गाण, ढोला गाउण चाँईं चाँईंआ। नाले उन्हां नूं करा के आया इश्नान, पिछली मैल धवाईआ । तेरे चरणां करनी प्रणाम, निउँ के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। चारे नेड़े गईआं ढुक्क, आपणा पन्ध मुकाईआ। नारद कहे पहिलों गोली आपणी झोली विच पा के लिआवे पाणी दे पंज बुक्क, बुक्कल विच लोकाईआ। सारे दन्द मीट के अक्खां घुट्ट के ध्यान लगा के पढ़न लग्गे सोहँ तुक, आवाज़ सुणन कोए ना पाईआ। फेर पंजे उँगलां कन्नां विच वारी वारी दे के कहिण तेरी ओट, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। फेर सारे छट्टे मार के जन भगत गावण इक सलोक, सोहला धुर दा राग अलाईआ। किरपा कर मेरे भगवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती हैथे खलो जाओ नाल आदर, पंजां कदमां ते डेरा लाईआ। किशन सिँघ नूं लै आण दयो गंगा सागर, गंगा सागर क़दमां विच टिकाईआ। प्रभ नूं दस्सणा मैं तेरा सूरबीर बहादर, चौहां नूं खिच्च के चरणां विच लिआईआ । तूं इन्हां दा निर्मल कर्म कर उजागर, मेहर नज़र उठाईआ। इन्हां दी धोती साड़ी सलवार वेख चादर, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। प्रभू तेरे पिच्छे रुल के आईआं मिट्टी घट्टा, सोहणीआं सवाणीआं नज़री आईआ। रावी कन्ढे

पुजीआं ते अग्गे नहीं सी लगदा पता, बेअन्त एह तेरी बेपरवाहीआ। जे मैं ना हुंदा इन्हां दा सका, इन्हां नूं कौण ल्यांउदा चाँईं चाँईंआ । वेखीं प्रभू मैं दर ते लिआया इन्हां नूं मेरे नाल ना करीं धक्का, धक्का दे के घरों ना बाहर कढ्ढाईआ। तूं मेरा जजमान, तूं मेरा मेहरवान, तूं मेरा रहमान, मैं तेरा मँगता, तेरी लख चुरासी, तेरे ब्रह्मण्ड खण्ड, तेरे गोपी काहन, तेरे सीता राम, तेरे विष्नूं भगवान, तेरे ब्रह्मा प्रधान, तेरे शंकर राजान, जिन्हां दी सेवा द्रोपदी कर ना सकी जेहड़ी पांडवां नूं होई दान, मैं तां प्रभू तेरे दवारे तों ग़रीब ब्राह्मण भुक्खा नंगा झोली डाह के मँगणा इक निशान, ग़रीबी दाअवे विच एह चारे जणीआं मेरी झोली दे पाईआ। मैं इन्हां नूं रोज़ कराया करूँ इश्नान, मैं मुकट ला के बणया करूँ काहन, राम बण के फिरया करूँ विच बीआबान, चतुर्भुज बण के भावें बाहवां लक्कड़ दीआं लाउणीआं पैण चौहां उँगलां दे नाल फिराईआ। नी तुसीं वी कुछ दयो बयान, कि सानूं सोहणा लग्गे जवान वड्डा पहिलवान, सुरस्ती ग़ौर नाल तक्क के थल्लउँ जुत्ती लाह के कहे प्रभू एह बड़ा शैतान, सत्त वजे तों लै के तिन्न वजे तक सानूं चक्र विच दिता भवाईआ। कदी कहे वड्डा डूँघा गाहण, कदी कहे रविदास लै के बैठा तीर कमान, कदी कहे ओह तुहाडा सतिगुरु ते खिच्च के बैठा किरपान, कदी कहे उहदे भगत वड्डे महिमान, तुहानूं ओथे भाण्डे मांजण दी सेव ना कोए जणाईआ। असीं सुण सुण गल्लां हुंदीआं रहीआं हैरान, गोदावरी ने एने चिर नूं कन्नो फड़ के हलूणा दिता आण, जमना छेती नाल गल घुट्ट के आखे ते कढ्ढ देवां तेरे प्राण, गोदावरी कहे इहदा मुक जाए पीण खाण, नारद कहे नी मैनूं ना मारो प्रभ दे चरणां दा करो ध्यान, मैं ते एसे कर के तुहानूं खिच्च के एथे लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद फेर कहे इक मेरी फेर गल्ल लओ मन्न, अख़ीरी दयां जणाईआ। जे पसंद आया ते मेरे कन्न विच कहि दयो धन्न धन्न, ते मैं ख़ुशी नाल जा के दयां सुणाईआ। फेर तुहाडा बेड़ा दयां बन्ह, बिना पत्तनां तों पार कराईआ। जे तुसीं प्रभू कोल चलीआं गईआं उह पता नहीं किते वसा दे बचन सिँघ वाली छन्न, थल्यों लड़न पिस्सू ते उत्तों मुहम्मद अते यसूह देण डराईआ। ओह सारीआं कहिण असीं ते मिलणा उस नूर अगम्मी चन्न, जो दो जहान करे रुशनाईआ। साडे नाल मिल के भगतां ने कहिणा धन्न धन्न, धन्न तेरी बेपरवाहीआ। नारद सिर मार के कहे जो कुछ मैं उही हम, जे अजे वी नाल तुर पओ ना कोई ख़ुशी ना कोई ग़म, वेखो किड्डी सोहणी मेरी चम्मढ़ी ते किड्डा चंगा चम्म, प्रभू तुहाडा की, जिहनूं सारे ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कर के गाईआ। ना उहदा नक्क ना उहदा कन्न, ना उहदा मूँह, ना आपणी माँ दा मुम्मा पाया मुख, ना प्या किसे कुख, ना उहदी माँ ना उहदा पिउ, ना किसे दे घर प्या जम्म, तुसीं दस्सो, सौहरे केहड़े घर बणाईआ। ओह जदों चाहे सारयां

नूं दे देवे डंन, वेखो गुरुआं अवतारां पैग़ग्बरां तों चार जुग दे पिच्छों लेखा रिहा मँग, झट गुर अवतार पैग़ग्बरां नारद नूं ल्या बन्न्, ओए शैतान दे टूटे, साडे नाल कर के शैतानी, ते हुण आपणी जवानी गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रिहा वखाईआ। ओह चारे कहिण गुर अवतार पैग़ग्बरो एह साडे नाल करदा रिहा बेईमानी, सानूं राह दिता भुलाईआ। नारद कहे गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द जेहड़ा बच्चयां दी दे के आएयों क़ुरबानी, बच्चयां सीस निवाईआ। नानक नानक नानक तूं बड़ा दानी, नाम दान मेरी झोली दे पाईआ। ईसा मुहम्मद मूसा तुहाडी वध्धदी रही इस्लामी, सलामालेकम कहि के क़दम चुम्म के आपणा झट लँघाईआ। राम कृष्ण सीता ते राधा दी जे मेरे उत्ते हो जाए मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। ओम, ओम, ओम, नाले मैं इन्नां नूं लै के आया नाले मेरी करन बदनामी, दरोही दरोही दरोही तेरा नाम खुदाईआ। मैं ते इहनां नूं सिरफ़ दस्सण आया कि पुरख अकाल ने गोली कोलों काने दी बणवाई मधाणी, आपणे हथ्थ लई उठाईआ। बाकी सवाणीआं दुध्ध रिड़कदीआं ते उह रिड़कण चलया पाणी, पारब्रह्म प्रभ आपणी खेल वखाईआ। क्यों सुध रही ना चारे खाणी, चारे कुण्ट देण दुहाईआ। नी गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नाल मिल्यो आपणी रावी, ओह हित तुहाडे नाल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाईआ। नी पाणी रिड़क्यां तुहाडे विच्चों निकलण कौडीआं कौडे, तुहाडी भेंट कराईआ। तुहाडे पाणी नाल ओह पौदे उगदे जिन्नां नूं लग्गदे डोडे, भंगी भंग पी के आपणी मस्ती देण वखाईआ। तुहानूं फेर रिड़क्यां विच्चों चार चार इंच दे रोड़े निकले छोटे, जिधर मधाणी लग्गी उह पासा चिट्टा ते तिन्ने बाकी काले नज़री आईआ। नारद कहे जे गुर अवतार पैग़ग्बर कोल ना होण तां तुहानूं दे देवां गोते, पाणी विच हिलाईआ। मैनूं होर डर आ गया जेहड़ा रविदास चढ़या सी उत्ते बोते, नीली पग्ग सिर टिकाईआ। उह मारे ना किते विंगे टेडे सोटे, मेरी खलड़ी दए लुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। नी गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तुहानूं भुल्ल गया सच रिड़कणा, नाम मधाणा कोए ना पाईआ। एसे गल्ल तों प्रभ ने तुहानूं झिड़कणा, कोल सद्द के देणा समझाईआ। भावें तुसां किन्ना अमृत छिड़कणा, गंगा सागर देणे उलटाईआ। पर जग विच्चों तुसीं कढु नहीं सकीआं वितकरा, चार वरनां इक रंग ना कोए रंगाईआ। तुहाडे उत्ते आउण वाले ब्राह्मण शूद्रां नूं करन टिचकरां, ज़ात हीण एथे चरण ना कोए छुहाईआ। तुहानूं नहीं सी पता पुरख अकाल सब दा मित्रा, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जिस दा आदि अन्त तों इक्को फ़िकरा, आत्म परमात्म ढोला इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण इक वार प्रभ फेर दे फेर मधाणी, एह साडी आस रखाईआ। सानूं

इक्को रूप नज़र आवे तेरी चारे खाणी, चारे कुण्ट ध्यान लगाईआ। असीं पिच्छे मन्नदे आए दस्सदे आए सब तों पवित्र पाणी, जगत जल वड्याईआ। करदे आए युद्ध घमसाणी, मज़हबां विच लड़ाईआ। असीं निरोल तेरा अनमोल चार वरन शब्द मिलाया ना धुर दा हाणी, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त तूं कीती मेहरवानी, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी दया कमाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कहे असीं मँगण आईआं भीख, भिच्छया झोली दे पाईआ। प्रभू सानूं कदी ना डरावे नारद नाल तिक्खी सीख, भय भउ ना कोए वखाईआ। नारद किहा मेरी ते अजे लथ्थी नहीं रीझ, मैं तां चौहन्दा सां तुहानूं डरा के मक्के मदीने तों अग्गे दयां पहुंचाईआ। तुहानूं नहीं पता, पुरख अकाल ने सदी चौधवीं दा रूप धर के आपणे गल विच पहनणा तवीत, तवीतां जादूआं वाले टूणे देणे मुकाईआ। गंगा कहे मैनूं वी इहो रीझ, किते किरपा कर के मेरे वी गल दए लटकाईआ। सुरस्ती कहे मेरी वी खुल्ह गई नींद, अक्ख लई उघड़ाईआ। जमना कहे मेरी वी वध गई उम्मीद, आसा होर प्रगटाईआ। गोदावरी कहे मैनूं वी एसे दी उडीक, जे मेरी झोली पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तुसां एह की गाया गीत, लालच विच आपणा लालच ल्या वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तुहानूं चौहां नूं किस तरह्हां मिल जावे इक तवीत, चरण धूढ़ी ख़ाक लवो रमाईआ। सच सच दी करो प्रीत, प्रीतम इक्को लैणा हंढाईआ। तुहानूं होर काहदी रीझ, सानूं दयो समझाईआ। जे तुहाडे पाट गए क़मीज़, सुरजण सिँघ कोलों डग्गी दईए खुल्हाईआ। सारीआं दी रो के अग्गों निकली चीक, गोबिन्द दे अग्गे वास्ता पाईआ। तिक्खे तीर नाल मार दे लीक, लाईन इक्को दे जणाईआ। दूजे मुख दे नाल कर तसदीक़, शहादत शब्द वाली भुगताईआ। जदों गाईए, गाईए तूं मेरा मैं तेरा गीत, दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद फेर कहे प्रभू तूं क्यों नहीं वेंहदा मेरा दुःख, मैं वी पाणी विच खलो के तेरा ध्यान लगाईआ। जे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नूं बख्श देवें ते मेरी लहि जावे भुक्ख, सदा सदा सद तेरा नाम ध्याईआ। चार जुग हो गए इन्हां दी हरी अजे नहीं होई कुख, बच्चा गोद ना कोए उठाईआ। भावें मार ते भावें कुट्ट, मँगदयां शर्म हया ना कोए रखाईआ। गोबिन्द सूरा बैठा उठ, ओ ब्राह्मणा की रिहा जणाईआ। नारद हो गया चुप, कहे गोबिन्द मैं ते प्रभू दे चरणां दी धूढ़ी मँग मँगाईआ। मैनूं राख दे दे इक मुठ, जो भेंटा रख के आपणी खुशी बणाईआ। श्री भगवान कहे ओए नारदा एथे कोई गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दी पई नहीं लुट्ट, लुट्ट ना कोए जणाईआ। एह मेरी पढ़दीआं तुक, एह मेरा वेखणगीआं

मुख, दूसर नाल अक्ख ना कदे मिलाईआ। नारद ओसे वेले गया झुक, प्रभू मेरा झेड़ा गया मुक, जे तूं सब नूं बणा ल्या आपणे पुत्त, ते मैनूं वी बच्चयां वांग आपणी गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे गंगा गोदवरी जमना सुरस्ती तुसीं भैणां ते मैं भ्रा, कल्पना कलयुग वाली गवाईआ। एसे तरां कलयुग दे साधां नूं होया शुदा, मैं उहो रूप धर के दिता वखाईआ। नाले भिच्छया मँगण नाले कहिण माँ, नाले उधाल के पिंडो पिंड फिराईआ। इहो जिहा किते नहीं हुंदा निआं, निआंकार नज़र कोए ना आईआ। जिस ने गुर अवतार पैग़ग्बर लए बुला, कलयुग दा नक़शा दिता वखाईआ। गंगा गोदवरी जमना सुरस्ती एह चंगीआं सवाणीआं क्यों भुल्लीआं राह, एसे तरह अज्ज कल्ह चंगीआं सुघड़ सुचजीआं आपणयां पतीआं जाण तजाईआ। मैं ते डर के कैहवां कोल खुदा, प्रभू जे तूं किरपा ना करें फिर सारे ही तैथों जुदा, मिलणवाला नज़र कोए ना आईआ। क्यों तूं खोपरे विच अमृत दिता भरा, रस सोहणा विच रखाईआ। गोदावरी गंगा जमना सुरस्ती कहिण सानूं होर कुछ नहीं लम्भया कुछ निमक वाला स्वाद ल्यांदा बणा, सो उह रविदासे दी भेंट कराईआ। रविदास पिछला लेखा मँगा ते आउण लग्गीआं सानूं दिती सलाह, सारीआं नूं दिता समझाईआ।
१०४० ना ढाई सेर चने जन भगतां आउणे खवा, छल्लीआं दे तुक्के गुर अवतार पैग़ग्बरां हथ्थ फड़ाईआ। क्यों तुहाडे रस नाम वाले होए रुक्खे, रसना रस ना कोए वड्याईआ। नारद कहे जे फेर मैनूं कोई पुच्छे, सच दयां समझाईआ। भावें मैनूं हुंदे रहे जुग चौकड़ी गुस्से, मैं आपणी रीत ना दिती बदलाईआ। जिस वेले वक्त वेला ढुके, पहुंचां थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कहिण केहड़ी धर्म धार दी गोली, वस्त्र लाल तन छुहाईआ। जिस दी कदी किसे नहीं चुक्की डोली, कंध कहार ना कोए उठाईआ। जन्म जन्म बदलदा रिहा हौली हौली, राजे रिग दी बेटी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सदी चौधवीं कहे मेरी वेखो सारे नीत, नीती दयां जणाईआ। तुसीं सारयां कीती सच प्रीत, प्रीतम ल्या मनाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बरो सारे करो बख़्शीश, रहमत निगाह उठाईआ। जेहड़ा बचन सिँघ ने बणा के ल्यांदा तवीत, एह जोगिंदर कौर दे गल दयो पहनाईआ। एह भैण भ्रा नौ जन्म दे पिछले जिस दी गोबिन्द करे तस्दीक़, शहादत आपणा नाम भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रावी आईआं तेरे घाट, कन्ढे सोहणा आसण लाईआ। पुरख अबिनाशी दी वेखी खाट, कक्खां सेज वड वड्याईआ। रात नूं असां नूं केहड़ी सुणावे जेहड़ी चार जुग नहीं दस्सी बात, आपणा आपणा राग दृढ़ाईआ। जिस

लहिणे नाल आईआं भाज, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हथ्थ लावे ओस प्रशाद, जिस विच्चों आत्मा परमात्मा दा आवे स्वाद, रसना खाण वाला प्रभ दा रस्ता भुल्ल कदे ना जाईआ।

जन भगतो सब ने करना धर्म धार सलवारना, सीस जगदीश झुकाईआ। जिस तुहाडा जन्म संवारना, चुरासी दए कटाईआ। तुहानूं एथे ओथे संभालणा, आपणी गोद टिकाईआ। बिना सरीर तों फिर वी तुहाडी करे पालणा, निरगुण हो के भज्जे वाहो दाहीआ। जे तुसां कुछ नहीं कीता तुहाडी आइआं आप घाली घालणा, कीती कराई तुहाडी झोली पाईआ। तुहानूं निक्का निक्का दीपक ना पए बालणा, बेमिसाल ने आपणी मशाल तुहानूं ल्या बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सीख कहे मैं दोहां धारां वाली तिक्खी, सब नूं नज़री आईआ। एसे दा रूप गोबिन्द दस्स के गया सिक्खी, लोहे दे बाटे विच अमृत जाम प्याईआ। पर गोबिन्द दे सिख मन्नण डहि पए पत्थरां इट्टीं, पुरख अकाल ध्यान ना कोए लगाईआ। रावी कहे मेरे कोल अजे अर्जन दी चिठ्ठी सांभ के रखी अंदर ज्यों ज्यों आउँदी जांदी मिती, भेव देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। रावी कहे मेरी तड़फण लग्गी आंदर, हउक्यां नाल सुणाईआ। किशन सिँघ बचन सिँघ अजे तक नहीं मारी चांगर, मेरा रंग ना कोए चमकाईआ। पुरख अकाल खेल खेलदा जगत जहान लड़ाए ज्यों फुलीआं उत्ते बांदर, मन मन नाल टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। नारद कहे प्रभ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती उत्ते प्या बथेरा घट्टा, धूढ़ो धूढ़ नज़री आईआ। जे इन्हां उत्ते खट्टा ढाई गज़ दा दे देवें दुपट्टा, खद्दर नाल आपणा मुख साफ़ कर के कूला लैण बणाईआ। ओसे वेले इन्हां नूं भुल्ल जाए पिछला टप्पा, अग्गे सोहँ ढोला गाईआ। कलमा मिले हक़ीक़ी हक़ा, हक़ुलयक़ीन देणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ढाई गज़ कहे मैं वाहवा खासा मोटा, बलधारी नज़री आईआ। निक्का जिहा टोटा, बैठा रूप बदलाईआ। गंगा ला के उत्ते पोटा, पोटे नाल पोटा मल के वेखे चाँईं चाँईंआ। जमना कहे नी एह ते ऐं दिसे जिवें रविदास ने खल्ल लाही किसे झोटा, खल्लड़ वरगा रूप वखाईआ। सुरस्ती मखौल नाल कहे नी एह किशन सिँघ दे घर दा इहदा बणा लईए कोठा, रावी कन्ढे छप्पर छन्न छुहाईआ। गोदावरी कहे मैं वी इक विच रखण लई भर लिआऊंगी दाणे दा टोपा, कल्ह

दे भुन्ने होए फुल्यां विच्चों मैं अजे वी जेब विच रखाईआ। जेहड़ी समझ नहीं आई मुल्लां क़ाज़ीआं पोपां, साधां सन्तां ना कोए दरसाईआ। कलयुग दा खेल दिसे फोकट फोका, क़ीमत अन्त ना कोए वखाईआ। जेहड़ा गोली ते लाल चुन्नी नूं लाया गोटा, एह बिदर दी आसा बधक दा भरवासा, लेखा पिछला दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग दए रंगाईआ। सच बेनन्ती कहे, मैं चिड़िया इक मरी, मुरीदो मुर्शद दा भेव खुल्हाईआ। सब नालों पहिलों मैनूं मिल्या हरी, जिस हरी दवारे दिता पुचाईआ। जिस बुढ्ढी दी अज्ज बेनन्ती सी बड़ी, उस दे पिच्छे मैं हथ्थ आउणा सी जीउदी, पर ओस दे पिच्छे मर के आपणी सेवा लई कमाईआ। सतिगुर शब्द हुंदा नहीं घड़ी घड़ी, मेहर नाल जुग जुग पार कराईआ। मैं रात दी तपदी सां बड़ी, केहड़ा वेला आवे घड़ी, मेरा लेखा लग्गे ज़री ज़री, आप आपणा भेंटा दयां कराईआ। क्यों मैं गोबिन्द वेले इक वार ओस दे बाज़ तों सां डरी, चरणां विच आण के आपणी जान बचाईआ। सीस निवा के किहा गोबिन्द जे किते मैनूं वी नाल मिलाएं गुरमुखां दी लड़ी, कन्नी कन्नी नाल बंधाईआ। गोबिन्द ने ओसे वेले किरपा करी, मेहर नज़र उठाईआ। जिस वेले मेरे पुरख अकाल ने लाई प्रेम वाली झड़ी, तेरा नाता लवां जुड़ाईआ। जे तूं मिट्टी ते सौंदी मिट्टी ते बहिंदी तैनूं भगतां विच बिठा देवां उत्ते दरी, बिन क़ीमत तों तेरी क़ीमत देवां पाईआ। तेरे उत्ते ओढुन पर्दा देवां आपणा ज़री, ज़ाहर ज़हूर हो के पर्दा दयां चुकाईआ । डरन वाल्यां ने वड़ जाणा आपणे घरीं, तूं सचखण्ड डेरा लाईआ। तेरे प्यार विच इक गुड़ दी भेली फड़ी, तेरी क़ुरबानी दी महिमानी भगतां देणी खवाईआ। तूं अजे ना विआही कर्म कांड दी छड़ी, इक नालों विछड़ी ते इक नाल जुड़ाईआ। वेख्यो भगतो कोई हँकार नाल मारयो ना तड़ी, परम पुरख परमात्म लख चुरासी जीव जंत दा मालक नज़री आईआ। जिस ने सेवा करी, ओसे दे लेखे पड़ी, देवणहार सर्ब वड्याईआ। तुहाडे वेंहदयां बिना बबानों मंजल चढ़ी, दर साचे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। चिड़ी कहे मैं सारी रात रही रोंदी, नौ वेरां रातो रात प्रभ दे कोल आपणी आसां दिती पुचाईआ। मैं तिन्न वजे ज़रूर उठ के सां गाउँदी, एसे कर के तिन्न वजे मेरी आवाज़ सुणन आया चाँईं चाँईंआ। मैं ओस वेले दीआं खुशीआं सी मनाउँदी, इधर ओधर लभ्भां चाँईं चाँईंआ। डल्ले दा राह सी तकाउँदी, जिस नूं इशारा दिता कराईआ। दूसरे दे हथ्थ कदे ना आउँदी, एह मेरी वड्याईआ। मैं बोदी वाली तद अखवांदी, क्यों मेरा मस्तक प्रभ दे चरणां नाल छोहिआ मेरी बोदी लम्मी नज़री आईआ। हुण कोई एहदी ज़ात नहीं वेदी सोढी, सोढी वेदी दा मालक बण के सब ते दया कमाईआ। कोई फिरन वाला नहीं जोगी, तपीश्र हो के आपणा तप वखाईआ। ग़रीब

निमाणयां उधारना एहदी गल्ल घरोगी, जुग जुग भगतां पार कराईआ। चिड़ीआ कहे मैं कोई पढ़ी नहीं पोथी, कोई पगड़ी हैट रखी नहीं टोपी, कोई सलवार साड़ी लाई नहीं धोती, मैं आपणा आप वार के इक्को लभ्भां मालक नूरी जोती, जो सब दे अंदर करे रुशनाईआ। जो खोट्टयां खरयां शरन आयां बणा लए माणक मोती, अनमुलड़े लाल वखाईआ। मैं मारी नहीं गई बेदोषी, दुहाई दे के दयां सुणाईआ। तुसीं सारयां राती सौं के बारां तों तिन्न वजे तक्क रखी ख़मोशी, मैं बेनन्तीआं कर कर के कर कर के कर कर के आपणा हाल दिता सुणाईआ। क्यों अज्ज प्रभू दे नाल रविदास चुमारा मोची, जेहड़ा मेरा लिख के लेखा जगत दए दृढ़ाईआ। भावें बचन सिँघ ने भंग घोट के पीती, भंगीआं दे हथ्थ मूल ना आईआ। जरनैल सिँघ ने घोड़ा दबाया उत्ते राउद दी टोपी, मेरे लग्गण कोए ना पाईआ। क्यों मैं ते डल्ले कोलों बणना सी ओस काहन दी गोपी, जेहड़ा लख चुरासी रिहा समाईआ। जन भगतो याद कर लओ मैथों सिख्या लओ जो सतिगुर दा बचन उहनूं कदे ना समझयो गल्ल होछी, इक नहीं दो, दो नहीं चार, चार नहीं अठ्ठ, किसे ना किसे दिन ज़रूर दए भुगताईआ। भावें बीत जाण बरस कोटन कोटी, जुग चौकड़ी आपणा लेखा ना कदे भुलाईआ। जिस वेले मैं मंजी थल्ले वड़ी गोबिन्द ने थल्ले फेरी सोटी, सहज नाल हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ।

१०४३
२१

चिड़िया कहे मैं कोई पढ़या नहीं मन्त्रे, नमो नमो नाल रसना गाईआ। मैनूं मिल गया सख़ियो कन्त रे, प्रीतम धुरदरगाहीआ। जिहदी किरपा नाल पंछी विच बणत रे, बनवासीआं तों ल्या छुडाईआ। तुहाडे विहार पिच्छे मेरी भेंट चढ़े, एह वी मेरी वड्याईआ। जो गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मँगे सन्तरे, ढाई हथ्थ दयो फड़ाईआ। सतिजुग विच जन भगत कदे ना होवण औंतरे, पिता पूत गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग रखाईआ। चिड़ी कहे मैं फिरन वाली उत्ते ख़ाक, क़दम क़दम नाल बदलाईआ। मैनूं खुशी होई मेरे सतिगुर दा पूरा होया वाक, लेखा दिता मुकाईआ। खोल् के अगला ताक, दरगाह साची दिता टिकाईआ। मैं सारयां नूं रही झाक, वेखां चाँईं चाँईंआ। बिना भगतां तों दिस्सया ना कोए इतफ़ाक़, चारे वरन बैठे गंढु पवाईआ। झूठा टुट्ट गया सज्जण साक, नाता दुनी रिहा ना राईआ। इक्को मेला प्रभ कमलापात, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जिस गुरगाबी दी ब्रह्मा दी सुरस्ती रखी झाक, ओह गोली दे पैरां नज़री आईआ। अख़ीर ते चुरासी दी रहे किसे ना वाट, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। जन भगतो मैं उतरी तुहाडे घाट, तुसां प्रभ दे पत्तन दिता पुचाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तक्कया साथ, रावी कन्ढे सोभा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर बैठे सम्राट, सोहणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी

१०४३
२१

कार कमाईआ। जन भगतो प्रभ दी कक्खां सेज पलँघ, आसण इक सुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर होए दंग, हैरानी हैरानी विच्चों प्रगटाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मँगां रहीआं मँग, रावी कन्ढे आस लगाईआ। तेरा प्रकाश नूरी चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नारद किहा मैनूं पई ठंड, अगनी तत बुझाईआ। जन भगत इक दूजे दे उत्ते दी जाण लँघ, वड्डा छोटा माण ना कोए वड्याईआ। रात नूं सवा पा इक्ठा करना घिउ खण्ड, गोबिन्द उँगलां नाल रस सब नूं दए चटाईआ। बख्श के सच अनन्द, अनन्द विच मिलाईआ। तुसीं भावें कुछ नहीं सकदे मँग, फिर वी देण दा तरीका लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। सारयां इक दूजे उत्तों दी लँघणा, खुशीआं नाल क़दम उठाईआ। हिरदे विच साचा प्यार मँगणा, दूजी आस ना कोए वधाईआ। गुरमुख सतिगुर दा बचन कोई ना करे भंगणा, मन्ने चाँईं चाँईंआ। फिर आपे चाढ़े रंगणा, दुरमति मैल धवाईआ। अंदर मूल नहीं संगणा, बिना बोल्यों आसा लैणी बंधाईआ। अख़ीर वारी सारयां ने इक्को लाईन विच झुक के करनी बन्दना, सीस देणा झुकाईआ। गोबिन्द कढ्ढ के तिक्खी धार खण्डणा, सब दी गरदन उत्ते दए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दर्द दु:ख भय भंजना, गंगा सागर दा पाणी सब दे उत्ते अमृत दए छिड़काईआ।

चुरासी लख दी मुकी इक्के वार क़ुरबानी, जन्म जन्म दी लोड़ रही ना राईआ। साहिब सतिगुर देवे पद निरबाणी, दर घर साचा इक सुहाईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़म्बर दे के गए निशानी, भविख्तां विच ढोले राग नाद सुणाईआ। सो लेखा मुकावे शहिनशाह शाह सुल्तानी, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। अज्ज तों जन भगतां दी दुनियां हो गई बेगानी, बिना परमात्मा तों सच्चा साथ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण हुंदी वेखी भेंटा, मुहब्बत विच सीस निवाईआ। सदा आत्मा प्रभ दी धार बणे बेटा, तन वजूद कम्म किसे ना आईआ। रावी कहे जे सतिगुर मिल जाए इक्को खेवट खेटा, दो जहानां पार कराईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कहे जिस ने पिछला रख्या चेता, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। अन्त अख़ीर कर के हेता, निरगुण निरवैर दया कमाईआ। जन भगतो तुहाडा जीवण सदा रहे हमेशा, जुग चौकड़ी वजदी रहे वधाईआ। जिन्हां प्यार नाल सतिकार नाल कीता आदेसा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा चुक्कया अज्ज तों तुहाडा ठेका, जिम्मेंवार पुरख अकाल नज़री आईआ।

✲ १८ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ चतर सिँघ अतर सिँघ दे गृह पिंड ओगरा ज़िला गुरदासपुर ✲

नारद आया, कहे मेरे शहिनशाह तेरे दूणे इक़बाल, इक़बाली आपणे गुर अवतार पैग़ग्बर लै कराईआ। एह नाम दे खलौणिआं नाल परचण वाले तेरे बाल, अल्ला राम वाहिगुरु सतिनाम कहि के आपणा झट लँघाईआ । सारयां दी सांझी परवरिश सब दी इक्ठी कर प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। मैं ब्राह्मण पन्ध मार के आया घाली तेरी घाल, पुज्जा चाँईं चाँईंआ। बौहड़ी तूं इक ना मन्नी बेनन्ती ते इक ना मन्नया सवाल, सवाली हो के तेरे अग्गे झोली डाहीआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती इक वार तोर देंदो मेरे नाल, मैं वी तेरा पुराणा भगत नज़री आईआ। तूं इक वेरां हां कहि दे ते मैं दो जहानां उत्ते मारां पुठ्ठी छाल, आपणा पैंतरा लवां बदलाईआ। मैं सदा लई बणया रवां दलाल, तेरे नाम दे सौदे गुर अवतार पैग़ग्बरां नाल कराईआ। तूं वेख मेरा ग़रीब दा हाल, टुट्टी जुत्ती ते बदली चाल, बोदी रो रो दस्से हाल, आपणी दए दुहाईआ । हो जा मेहरवान, दे दे मेरी आसा दा दान, भरवासा अगला दे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। एह बचन सुण के गंगां मारीआं चीकां, कूक कूक सुणाईआ। जमना कहे मैं नक्क नाल कढ्ढां लीकां, लाईनां दयां लगाईआ। सुरस्ती कहे मैं हथ्थ विच फड़ के गीता, क़सम लवां खाईआ। गोदावरी कहे मैं गोबिन्द दी धार वेख के तपदा अंगीठा, कूक कूक जणाईआ। एह ब्राह्मण बड़ा ढीठा, जगत हया ना कोए रखाईआ। अंदरों काला ते ज़बान दा मीठा, झूठीआं बेनन्तीआं प्रभ दे अग्गे रिहा सुणाईआ। नारद ने सुण लिआ, सौहरीओ, मेरे विच बड़ीआं तौफीक़ा, चार जुग दी भजन बन्दगी मेरे विच समाईआ। तुसीं दस्सो केहड़े राम दी बणना सीता, सीता वाला राम मेरे हुक्म पिच्छे जंगलां विच फेरा पाईआ। तुसीं राधा बण के केहड़े कृष्ण नूं बणाउणा मीता, बंसरीआं वाली धुंन सुणाईआ। पिछला वक्त पिच्छे गया अग्गे वेखो खेल अनडीठा, अनडिठा दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे नी प्रभ गया भगतां वल्ल, आपणा राह बदलाईआ। असीं ओस तों चोरी कुछ पक्की कर लईए गल्ल, फिर सके ना कोए बदलाईआ। तुसीं मेरा ध्यान धरो ते मैं मूँह दे नाल वजावां टल्ल, टन टन कर के तुहाडा मन्दिर दयां सुहाईआ। फेर तुसीं मेरे चरणां वल तकणा तुहाडे अंदर दीपक जोती जाए बल, नूर होवे रुशनाईआ। फिर मैं प्यार नाल तुहाडा अंदर खिच्चणा तुसीं विछोड़ा झल ना सको पल, पलक ना होवे जुदाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तुसीं चार ते जे मैं पंजवां तुहाडे विच जावां रल, प्रभू दी लोड़ रहे ना राईआ। तुसीं मेरी रासी ते मैं तुहाडा फल, एहो मेरा हिसाब रिहा समझाईआ। तुसीं सारीआं इक्ठीआं हो के मेरे सिर विच पाओ आपणा आपणा जल,

जल्दी नाल प्रभ तों चोरी चोरी आपणा कम्म लईए मुकाईआ। कुड़ती लाह के कहे मेरी वेखो किड्डी सोहणी खल्ल, जेहड़ा ख़लक दा ख़ालक उहदा रूप नज़र कोए ना आईआ। ऐवें एह सारे कहिंदे ओह वस्से काया अन्धेरी डल, तुसीं दसो परमात्मा हो के किवें अंदर लुक के झट लँघाईआ। धोखे नाल अज्ज ओस ने तुहानूं फिराया उत्ते थल, रेते विच भवाईआ। रावी नाल मिल के कीता छल, रावी बड़ी चलाक जिस ने तुहानूं ल्या मँगाईआ। नी अजे वी जाओ जाग, वेला हथ्थों निकलिआ फेर चले ना कोए चतुराईआ। तुसीं अमृत दीआं धारां मैं विद्या दा पंडत ते दोवें मिल के सांझा बणाईए समाज, स्त्री मर्द दा इक्को जिहा होवे राज, रईयत रहिण कोए ना पाईआ। मेरी बोदी दा बणा लओ ताज, वेख्यो हुण मैं पातशाह मेरे अग्गे दयो ना कोई जवाब, निउँ के सीस लओ झुकाईआ। मेरा शहिनशाह वाला ख़िताब, टंग उत्ते टंग चढ़ा के दन्दी पीच के रिहा सुणाईआ। झट बस्ते विच्चों कढ्ढ के किताब, इक दो तिन्न चार पंज छे सत्त अठ्ठ नौ सफ़े दिते बदलाईआ। नी गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आह वेख सारयां गुर अवतार पैग़म्बरां लिख्या ओस ने आउणा विच पंजाब, पंजा सब दे उत्ते लाईआ। तुसीं मैनूं क्यों कहिंदीआं ख़राब, मैं ख़बरदारी नाल सब नूं रिहा जगाईआ। नी तुसीं मैनूं मन्न लओ हुण महाराज, गुरुआं दा गुरु तुहाडे साहमणे बैठा सोभा पाईआ। एह बचन सुण के जे तुहानूं खुशी आई मेरे चरण विच दाग़, मैं अक्खीं मीट के आपणी खुशी मनाईआ। खराटे मार के लवां ख्वाब, मस्ती विच सुत्ता तुहाडा नूर तक के आपणा रंग बदलाईआ। जिस वेले मैं आवां तुसीं सज्जा खब्बा हथ्थ उठा के मैनूं किहो जनाब जनाब जनाब, इक हथ्थ वाला सलाम मैनूं कदे ना भाईआ। मैं कोई सन्त नहीं, मैं कोई साध नहीं, मैं किसे दी औलाद नहीं, मैं किसे दी मस्ती वाली मजाज़ नहीं, मैं कोई शरअ वाला जलाद नहीं, मैं किसे मुलक कौम वाला नवाब नहीं, मैं ना कदी वस्सया ते ना उजड़या ते कोई बेईमान ख़राब नहीं, ख़राबी सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मैं रावी कन्ढे वेख्या तुहाडे रूप दा इजलास, नक मूँह कन्न अक्खां नासां मिल के बैठे मण्डली लाईआ। मैं उभा ल्या सांस, हौक्यां विच आपणी आह भराईआ। की खेल करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। सानूं कर के उदास, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती लईआं रावी कन्ढे मँगाईआ। फिर तक्कया उत्ते आकाश, असमानां उत्ते अक्ख खुल्हाईआ। निगाह परती धरती दे उत्ते तक्कया आकाश, नूर नुराना नज़री आईआ। उहदे चरणी गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कहे जाह एथों बदमाश, क्यों रौला रिहा पाईआ। नारद कहे नी गंगा गुंगीए ना बोलण वालीए गंगीए, रविदास नूं कंगण दित्ते मैनूं कोई दे दे छाप, मैं वी छापिआं उत्तों दी धूण आया, तेरे वरगी ना कदे प्रनाईआ। जमना कहे तूं बड़ा

पवित्र पाक, मैं सब कुछ वेख वखाईआ। सुरस्ती कहे जे तैनूं डर ना होवे कि साडा पुरख अकाल बाप, नारदा तूं भय ना कोए रखाईआ। गोदावरी कहे जे नहीं जांदा मैनूं इक वेरां गोबिन्द नूं लैण दयो आख, बेनन्ती कर सुणाईआ। जां गोबिन्द दा नाम ल्या नारद कहे भैण जी मैं केहड़ा गुस्ताख़, गल्लां बातां दा गुस्सा करना मोहे कदे ना भाईआ। मैं वी वेखण आया तुहाडी अज्ज चावां भरी रात, भिन्नड़ी आपणा रंग रंगाईआ। तुहाडा मित्र ते मेरा वैरी एह रवी लिखी जांदा नाल क़लम दवात, शाही काग़ज़ नाल जुड़ाईआ। नी तुहानूं समझ नहीं आई रावी किथ्थों दी आफ़ात, जेहड़ी चढ़दे लहिंदे वल भज्जे बण के राहीआ। तुसीं क्यों ओस दी मन्नी बात, मैनूं दयो समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कहे नारद जी, जी नारद हुण चलया जा चुप्प कीता, मुखों बचन ना कोए सुणाईआ। नारद कहे मैं ते ज़रूर दस्सूं जो कुछ मेरे नाल बीता, बीती कहाणी दयां जणाईआ। मैं जुग चौकड़ी सारयां दे अंदर लाउण वाला पलीता, लू जोती वाला लगाईआ। फिर हथ्थ मार के विच ख़ीसा, इक काग़ज़ ल्या कढ्ढाईआ। आह वेखो जिस दे विच सब तों वखरी रीता, जुग चौकड़ी समझ किसे ना आईआ। चारे कहिण सानूं
१०४७ वखा, नारद कहे पहिले मूँह धोवो फेर वेखो शीशा, कंघी पट्टी कर के मेरे साहमणे आईआ। फेर मेरे नाल बचन करो मीठा, १०४७
श्री मुनी महाराज कहि के मैनूं लओ बुलाईआ। जे मैं घूक सुत्ता होवां मेरी चारे जणीआं ठोको पीठा, हथ्थ पोला पोला लगाईआ।
२१ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। नारद कहे नी रावी क्यों प्रभ दे मुख विच २१
पाई नहीं बूँद, बूँद बूँद टपकाईआ। तूं बोली नहीं की दन्द जुड़ गए नाल गूंद, गोंद वांग मोटी ताज़ी नज़री आईआ। जे तुसीं नहीं कूणा मैं ग़मी विच पैणा हूंग, हाए हाए हाए कर सुणाईआ। की सौं गई एं, की तैनूं आई ऊंघ, नैण मीट के झट लँघाईआ। झट पट लत्त दे वढ्ढ ला के चूंढ, चुटकी नाल फड़ के फिर आपणी बोदी रिहा हिलाईआ। पिछांह नूं मुख कर के कहे रावी मैं प्रभू नूं रिहा ढूंड, हुण एथे सी पता नहीं हुण किथ्थे डेरा लाईआ। नी मैं विछोड़े विच गया मर जे तैनूं कोई दु:ख ते कुरला वांग कूंज, कूक कूक सुणाईआ। जे पत्थरे तैनूं रोणा नहीं आउँदा ते मेरे सज्जे मोढे ते हथ्थ रख के मेरे अथरू दे पूंझ, तेरी सेवा मैनूं चंगी नज़री आईआ। तैनूं नहीं पता ओसे दे वैराग विछोड़े विच अजीत जुझार गए जूझ, गोबिन्द दुलारे आपणा आप भेंट कराईआ। तैनूं गुतों फड़ के दस्सां एह ओहो गोबिन्द मौजूद, तूं अक्खीं मीट के झट लँघाईआ। मैं जिधर जावां मैनूं कहिंदे शरारती भूत, भूतना किधरों गया आईआ। तुसीं वी सुण लओ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मेरे बिना तुहाडा कम्म नहीं आउणा सूत, सुत्तीओ तुहानूं ना कोए जगाईआ। अग्गे ते रविदास चमारा गंढ्ढदा

सी जूत, हुण टुट्टयां रिहा मिलाईआ। तुसीं मैनूं भावें सारे कहो कपूत, मैं भावें कुपत्ता ते प्रभ दा सच्चा पता दयां जणाईआ। जे मैं विगड़ गया तुहानूं सारीआं नूं कहूं अछूत, क्यों तुहाडे विच मुरदयां दीआं ढेरीआं नज़री आईआ। फेर दस्सो जाओगीआं केहड़ी कूट, केहड़े पासे आपणा पन्ध मुकाईआ। तुसीं साड़ी धोती लाउण वालीआं जे मेरे नंगे पैरां नूं ल्या दयो बूट, बूट पा के तुहानूं मैं ठुमक ठुमक चल के आपणी चाल दयां वखाईआ। फेर तुसां आपे कहिणा एह कोई प्रभ दा आ गया दूत, जेहड़ा सुत्तयां रिहा उठाईआ। मैं कोई कलयुग दयां साधां सन्तां वरगा नहीं कपूत, नाम जपाउण अल्ला वाहिगुरु सतिनाम ते सतिगुरु आपे आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची खेल रिहा समझाईआ। नारद कहे गुर अवतार पैग़ंबर फिरदे चार चुफेरे, चौतरफ़ ध्यान लगाईआ। वेखण विच अन्धेरे, अन्ध कूप फोल फुलाईआ। चार वरन झेड़े, झगड़ा ना कोए गवाईआ। उजड़दे दिसण खेड़े, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। नाम चढ़या कोई ना बेड़े, वञ्झ मुहाणे कम्म किसे ना आईआ। जिधर तक्कीए झूठे झेड़े, झगड़ा सके ना कोए गवाईआ। सानूं सुणन वाले बथेरे, मिलण वाला नज़र कोए ना आईआ। किस दे उत्ते करीए मेहरे, किस सीस हथ्थ टिकाईआ। सारे करदे हेरे फेरे, जूठ झूठ चतुराईआ। कोटां विच्चों जन भगत दिसदे प्रभ चरणी लग्ग गए जेहड़े, जेहड़ा जम की फास कटाईआ।
१०४८ उहनां होणे अन्त नबेड़े, नाता कूड़ रहे ना राईआ। अज्ज दी रात सृष्टी सौणा गुर अवतार पैग़ंबर कहिण असीं बचन १०४८
२१ करने बथेरे, मता साहिब नाल पकाईआ। दूर दुराडे आए नेड़े, घर वज्जे सच वधाईआ। भय जणाए सिँघ शेरे, भबक २१
इक लगाईआ। सारे आ गए विच घेरे, पल्लू ना सके छुडाईआ। अग्गे मारने ना पैण गेड़े, गेड़ा मुक्के लोकाईआ। मेहरवान करे मेहरे, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण सवा पा लिआउ खण्ड घिउ, मिट्ठा घृत विच मिलाईआ। सब दा सांझा इक्को पिउ, पुरख अकाल पिता मन्नणा चाँई चाँईंआ। जिस नूं कहिंदे खुदा दयो, देवणहार सर्ब सरनाईआ। आत्म नाल लगाए नेंहों, परमात्म प्रीती इक बणाईआ। दाता हो के अलख अभिउ, दु:ख भंजन होवे सहाईआ। जो आदि जुगादि रिहो, ओड़क इक अख्वाईआ। सारे ओस दी सरन पइओ, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे करे पढ़ाईआ। अमृत बरखे मेंहो, नेहों नेहों रस आप चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण एह वस्त किसे ना विके हाट, लभ्भयां हथ्थ कदे ना आईआ। सानूं वी दस्सी रावी किनारे घाट, भेव अभेद खुल्हाईआ। पंज पंज गुरमुख उठो इक इक्क उँगल सब ने लैणी चाट, रस रसना वाला बणाईआ। सुत्तयां जाणा जाग, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। भाग

लग्गे काया माट, मिले माण वड्याईआ। करां हास बिलास, खुशीआं ढोले गाईआ। प्रभ मिलण दी सिख लवो जाच, तरीका रिहा दृढ़ाईआ। एह सुहञ्जणी होणी रात, गुरमुखो मिले वड्याईआ। जो जम्मया सो हो जावे नास, सदा रहिण कोए ना पाईआ। एहो जिहा अग्गे किसे मिल्या नहीं कोई बाप, जो बच्चयां सेव कमाईआ। रूह बुत करे पाक, अंदरों करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दसे उँगलां चट्टो वारो वारी, गोबिन्द दर मिले वड्याईआ। किसे दी मनसा ना रहे दुख्यारी, दुक्खां दर्दां डेरा ढाहीआ। नार कन्त ना चूड़ी रहे ना चम्यारी, गोबिन्द रंग रंगाईआ। ना टेलर रहे ना सुनिआरी, ना चिट्टी शाही रूप वटाईआ। ना लालण रहे घुम्यारी, ना तरखाणी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। गुरमुखो सब दा सांझा हो गया वरन, बरन इक्को इक दृढ़ाईआ। इक्को सतिगुर इक्को चरण, इक्को सेवा लैणी कमाईआ। इक्को मंज़ल वेखणी चढ़न, दूजा राह ना कोए तकाईआ। चुरासी विच्चों आया तुहानूं फड़न, खोजे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक टिकाईआ। मिट्ठा कहे मेरा लै लओ रस, वास्ता प्रभ दे अग्गे पाईआ। जेहड़े चटदे जांदे ओह आपणे अंदर करो जस, अक्खीं मीट ध्यान लगाईआ। अक्खां खोल्ह ना लैणा तक, दृष्टी इधर ओधर ना कोए घुंमाईआ।
फिर तुहाडा नाता जुड़े पक्क, अग्गे सके ना कोए छुडाईआ। जेहड़ा तुहाडे कारण आया वत्त, वतन तुहाडा वेख वखाईआ। जेहड़े इक दूजे दे उत्ते आए टप्प, आपणा पन्ध मुकाईआ। फिर गोबिन्द दा रस लवो चख, सहिसा रोग रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। घृत कहे मेरे विच नहीं कोई घिरना, घिरन सब दी दयां कढ्ढाईआ। जन भगतो गोबिन्द दा रस वेख के दूजे दवारे कदे नहीं फिरना, वस्त मँगण कोए ना जाईआ। प्रभ बिन अवर मन्नणा कोई फिर ना, कन्त सुहाग नज़र कोए ना आईआ। मंज़ल चढ़ के साधां पिच्छे कदी नहीं थिड़ना, आपणा मन डुलाईआ। वेखो उलटा गेड़ा गिड़ना, चारे कुण्ट दुहाईआ। हुक्मे छेड़ छिड़ना, मज्झां दा छेड़ू उह गुरु नानक दए दुहाईआ। एह समां फेर नहीं मिलणा, कोटन जुग राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। घिउ कहे कोई रह ना जावे बाकी, बाक़ाइदा दयां जणाईआ। पुरख अकाल तुहाडा साथी, सोहणा संग निभाईआ। तुहाडी पुच्छे वाती, निरगुण आया चाँईं चाँईंआ। रावी दी पढ़ के पाती, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नारद कलयुग दी रीती वेख के हथ्थ मारदा उत्ते छाती, ज़ोर ज़ोर नाल दृढ़ाईआ। जन भगतो प्रभू दा अमृत कदे ना लभयो बाहर किसे कटोरे विच बाटी, किरपा नाल सब दे अंदरों दए चखाईआ। तुसां ते सिरफ़ हुक्म दी मन्नणी आखी, पार करना

उहदी वड्याईआ। जे तुसीं भगत ते मैं तुहाडा जमाती, जेहड़ी विद्या तुसीं नहीं पढ़ी ओह मज़मून दिता पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा मित्र ते सब दी करे राखी, रखक हो के वेखे थाउँ थाईंआ।

❊ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ हरदीप सिँघ दे गृह पिंड ओगरा ❊

रावी कहे रातीं गुर अर्जन मैनूं दिता दरस, हस्स के ल्या बुलाईआ। पिछले याद ना करीं बीते बरस, दुक्खां देणा भुलाईआ। अग्गे तेरे उत्ते तरस, मेहर नज़र उठाईआ। पूरी होई शर्त, कौल तोड़ निभाईआ। खेल वेख्या फ़र्श, वज्जी सच वधाईआ। खुशी होई अर्श, अर्शी प्रीतम दया कमाईआ। तूं आपणा पूरा कीता फ़रज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अर्जन किहा रावी मेरे तक्क नैण, नैणां नाल मिलाईआ। तेरे विच चरण छुहाया नरायण, नर नरायण दया कमाईआ। तेरा पवित्र होया वहिण, वहिणां मिली वड्याईआ।
१०५० दूसर रिहा ना कोए तरफ़ैण, दुतिया भाउ रिहा चुकाईआ । झगड़ा मुकाया पंचाइण, पंचां मिल के गंगा गोदावरी जमना १०५०
२१ सुरस्ती खुशी मनाईआ। अग्गे रहिणा नहीं तरफ़ैण, तरफ़दारी ना वंड वंडाईआ। लेखा वेखो विच बाल्मीकी रमाइण, रिषी २१
की लिख के गया समझाईआ। जिस वेले नेत्र रोवे हिन्दवाइण, हिन्दू देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अर्जन किहा रावी तक्क लै कोने गोशे, लहिंदी दिशा ध्यान लगाईआ। जिस दी समझ कोए ना सोचे, ओह सोचां रिहा पाईआ। जिस दा दरस कोए ना लोचे, ओह दरस रिहा वखाईआ। जिस दा भाणा कोई ना रोके, भाणे विच दुहाईआ। ओह सृष्टी वाले कीते थोथे, धर्म दी धार ना कोए प्रगटाईआ। कलयुग वहिण खांदे गोते, फड़ बाहों पार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। राह वेखे गुर अर्जन मेरी पुश्त पनाह लावे थापी, थपकी दे के खुशी मनाईआ। तेरा प्रभू बड़ा प्रतापी, प्रताप वाला सोभा पाईआ। जिस ने कोटन तारने पापी, पतित पुनीत बणाईआ। जन भगतां कोलों इक्को मनाए आखी, पूजा पाठ दे लेखे दए मुकाईआ । याद कर जिस वेले ईसा चढ़या सी फाँसी, गल विच फाँसी ते आसी रावी वल तकाईआ। चारे कूटां घुंम के वेख्या एसे कन्ढे दिस्सया पुरख अबिनाशी, जिथ्थे सुक्के मंडे आया खवाईआ। जेहड़ी ओह कोल रखदा सी चार चार इंच दी बाटी, ओह पत्थरां थल्ले छड्डी दबाईआ। अजे तक्क हथ्थ नहीं आई लाधी,

खोज्यां मिलण किसे ना पाईआ। उस मुकदमे जगह तों चढ़दी दिशा नौ गज़ दब्बी ढाई फ़ुट दी डूँघी खाडी, ओसे तरां आस तकाईआ। गुर अर्जन किहा की दशा होई साडी, कलयुग की कार कमाईआ। क्यों भावी होई डाहढी, तत्तीआं लोहां उत्ते बहाईआ। रावी कहे हे सतिगुर, जे तत्ती लोह ते ना बहन्दो फेर मेरी कौण करदा इमदादी, एथे आ के चरण कौण छुहाईआ। मैं तां आदि तों साद मुरादी, सिध्धी सादी आपणा रूप रखाईआ। जुग चौकड़ी कीती नहीं कदी शादी, संसारी कन्त ना कोए हंढाईआ। चरण कँवल मैं जा के कदे नहीं किसे दे लागी, निउँ निउँ सीस ना कोए निवाईआ। मैनूं इक्को प्रभू दे मिलण दी वादी, मेरी आदत पिछली चली आईआ। कोई लाई नहीं समाधी, अक्खां मीट ध्यान लगाईआ। मैं इहनां विच नहीं जागी, मस्ती विच सौं के आपणा झट लँघाईआ। मैं कदी नहाती नहीं महीना माघी, पवित्र आपणा आप कराईआ। मैनूं एह गल्ल याद तेरे पिच्छों मैनूं इक सुनेहा दिता सी गुजरी जेहड़ी गोबिन्द दे बच्चयां दी दादी, दाअवे नाल समझाईआ। जिस ने खेल कराई साडी, बंस सरबंसा आपणे लेखे पाईआ। नी रावी ओह सार लए तुहाडी, अन्तिम आवे चाँईं चाँईंआ। नाल भगत सुहेले होण उस दे लागी, प्रेम प्रीती वंड वंडाईआ। जो वेखे खेल दुनिआवी बाज़ीगर ला के बाज़ी, बाजां वाला आपणे नाल मिलाईआ। तेरा तट किनारा होवे वडभागी, भागां भरीए तैनूं मिले वड्याईआ। एह समझ नहीं कोई दिमाग़ी, बुद्धी विच न कोए चतुराईआ। एह खेल नहीं कोई समाजी, समाजवाद ना कोए दृढ़ाईआ। एह प्रभ दी पुठ्ठी सिध्धी उलटी होणी कलाबाज़ी, अकल कलधारी आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे आदि जुगादी, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ।

१०५१ २१

१०५१ २१

✻ १६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ ज्ञान सिँघ दे घर पिंड ओगरा ✻

रावी कहे मैं लम्मा लाया ढौंका, सतिजुग दी सुत्ती ने कलयुग अन्त लई अंगड़ाईआ। जिस वेले बलि मेरे घाट पहुंचा, मिल के खुशी बणाईआ। मैं ध्यान धरया नाल शौंका, रूप अनूप वेख वखाईआ। जिस वेले चढ़या उपर नौका, नईआ इक चलाईआ। उहनूं नींद दा आया इक झोंका, हुलारा बेपरवाहीआ। हुक्म सुणया कलयुग अन्तिम अन्ता, सच सबूत ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। रावी कहे बलि नाल सी छिआसी प्रेमी प्यारे, जोबनवन्ते नज़री आईआ। कुछ विआहे कुछ कँवारे, कुछ बुढ्ढे बाल सोभा पाईआ। जिस वेले आए

तट किनारे, दर ठांडे इक सुहाईआ। मेरे अन्तर आई इक विचारे, विचरके दिता जणाईआ। बलि की एह तेरे वरगे भगत सारे, मैनूं दे दृढ़ाईआ। बलि किहा एह जन्म जन्म दे दुख्यारे, कर्म करम दा रोग ना कोए गवाईआ। सारे जगत विच मेरे नाल करन प्यारे, जे प्रभू नूं मिल्यों ते सानूं दे मिलाईआ। मैं वी दस्सदा रिहा इशारे, सिफ्त महिमा वाली गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। रावी कहे जिस वेले बलि नईआ गया उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण ध्यान लगाईआ। जेहड़ी प्रभ दी गोली एह उस दा निक्का जिहा सी पुत्र, आयू छोटी सोभा पाईआ। नाल परोहित सी सोहणा शुक्कर, शुक्रया कहि के सीस निवाईआ। भुक्ख लग्गी ते खाण नूं मँगे टुक्कर, रोटी हथ्थ कोए ना आईआ। जंगल विच बेले विच चार पाए सारे लुकण, आपणा आप छुपाईआ। उस वेले बलि ने मुख ल्या विच बुक्कल, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। फेर बच्चा लग्गा रुस्सण, रो के रिहा कुरलाईआ। मेरी आंदर लग्गी टुट्टण, भुक्खा दए दुहाईआ। सिर दे वाल लग्गा पुट्टण, नैणां नीर वहाईआ। जिस वेले बलि लग्गा चुक्कण, पिच्छा ल्या बदलाईआ। फिर लग्गा पुच्छण, मैनूं कुछ दे खवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। बलि किहा वाह मेरे भगवान, तेरी बेपरवाहीआ। मैं राजा अज्ज कोल नहीं कुझ पीण खाण, चरण तेरी सरनाईआ। हुक्म होया बलि अस्वमेध यज्ञ कर परवान, परवाना इक दृढ़ाईआ। मैं थोड़ी दच्छना ते थोड़ा मँगणा दान, बाकी सब कुझ तेरी झोली पाईआ। एह बच्चा इक अंञाण, एह रो के वी मैनूं रिहा सुणाईआ। मैं जल्दी पहुंचया आण, भज्जिआ वाहो दाहीआ। उने चिर नूं हलवाई आ गया राही आ गया विआह वाले घर दा पका के पकवान, आपणा पन्ध मुकाईआ। उहदे नाल सी होर जवान, दूजा साथी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। बलि दे नाल सी इक धर्म धार दी दासी, सेवक सेवा सच कमाईआ। उन बेनन्ती इक आखी, निउँ के सीस निवाईआ। मैं बच्चे दी करां राखी, गल्लां नाल परचाईआ। बलि किहा एह कोई खेल पुरख अबिनाशी, तेरी चले ना कोए चतुराईआ। एथे नहीं कोई सौण नूं खाटी, खटिया नज़र कोए ना आईआ। मैं दूर दुराडा मार के आया वाटी, पैंडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला आप मिलाईआ। दासी ओसे वेले कर लई लिख्त, जो बचन बलि जणाईआ। अंदरे अंदर कीती मिन्नत, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। जे आपणी महिमा दी देवें हिम्मत, तेरी सेवा लवां कमाईआ। पुरख अबिनाशी दिता प्यार दा खिलत, मेहर नज़र उठाईआ। जिस वेले आप आवां दया कमावां तेरा नाम होवे तृप्त, तृष्ना तृप्त कराईआ। कोल सुणदा सी अठ्ठे पहर दा चोबदार जिस दा नाम नशिष्ट, भागां विच कथा पढ़ाईआ। अंदर विचार आई की करना स्वर्ग

१०५२ २१

बहिश्त, सुख दी लोड़ रही ना राईआ। जे प्रभू आपणी सेवा विच मैनूं बख्शे लिख्त, मैं खुशीआं नाल कमाईआ। मैनूं इहो शौक ते इहो इश्क, प्रेम इहो दरसाईआ। बाकी रहे ना कोए चिन्त, झगड़ा ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल इशारा कीता एसे धरनी एसे धरत, धौल दिता वखाईआ। जिस वेले मुड़ के आवां परत, निरगुण नूर करां रुशनाईआ। तेरी पूरी करां शर्त, मेहर नज़र उठाईआ। जगीर सिँघ दी पूरी होई पिछली अर्ज़, लेखा सब दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। जिस वेले हलवाई आए नज़दीक, बच्चे होर दिती दुहाईआ। उच्ची मार के चीक, कूक दिती सुणाईआ। मैनूं कुछ खाण नूं मिले ते फेर कैहवां प्रभू दी चंगी प्रीत, बिना खाण तों कोई ना वड्याईआ। हलवाईआं विच्चों इक बचन सिँघ सी ठीक, जो अग्गे आया चाँईं चाँईंआ। असीं ते मँगण वाले भीख, प्रभ दे अग्गे झोली डाहीआ। मेरे साथी दे कोल खुरपा जिस नूं कहिंदे खौंचा चौड़ी कीती लोहे दी सीख, हथ्था लक्कड़ वाला लगाईआ। दोहां मिल के गाया प्रभू तूं मेरा मैं तेरा गीत, अन्तर अन्तर आवाज़ जणाईआ। असीं रोज पकवान पकाईए मिठाईआं बणाईए अज्ज साडे कोल नहीं कोई चीज़, बच्चा सके ना कोए रजाईआ। आसा सिँघ जिस दा पिछला ना सी जनीत, मोढ्ढे उत्ते रख के मुख उत्ते दिता कराईआ। ओह खौंचा जे साडे कोल नहीं कुछ तूं प्रभ दे कोलों कोई भिक्खया मँग लै भीख, शायद तेरे उत्ते तरस दए कमाईआ। बचन सिँघ जिहदा ना सी पिछला मजीद, मिशराणी माँ खुशीआं नाल लै के गाईआ। करन लग्गा ताकीद, आ मिल के फेर प्रभ दे अग्गे दईए दुहाईआ। दोहां इकठ्ठयां मारी चीक, कूक कूक के रौला दिता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। खौंचे किहा प्रभू ओ दुनियां दे भगवान तैनूं मेरा दुःख, मेरा ना कोई राम ना कोई काहन, मैं सीस ना किसे झुकाईआ। जिस दा जिवें दिल चौहन्दा मैनूं ओवें बणा लैंदे लोहे नूं अग्ग विच ताअ के लैण कुट्ट, कुट्ट कुट्ट के मेरी शकल देण बदलाईआ। तेरा पकवान पक्के, तेरा यज्ञ लग्गे तेरा असवमेध होवे मैनूं नाई ब्राह्मण हलवाई मोढ्यां ते कंधे चुक्क, जजमानां घर राजानां घर दीवानां घर जावण चाँईं चाँईंआ। तत्ती धार विच मैनूं देण सुट्ट, छत्ती पदारथ मेरे नाल बणाईआ। प्रभू मैं सुगंध खा के कहां मैं अजे तक कुछ पाया नहीं कदे आपणे मुक्ख, सब नूं रिंनृ बणा के रसना नाल खवाईआ। लोकी ते थल्ले नूं जांदे झुॅक, मैं उत्ते नूं प्या उठ, ध्यान तेरे वल लगाईआ। जे तूं परमात्मा ते मैं ना बोलण वाली तेरी आत्मा मेरे ते जाह तुठ्ठ, मेहर नज़र इक उठाईआ। ओसे वेले पुरख अकाल ने सति वस्तू टिकाई खौंचे दी उत्ते मुट्ठ, अनगिणत भण्डारा दिता समझाईआ। शब्द होया जा के बलि दे अग्गे सुट्ठ, सहज नाल दे जणाईआ। जे अस्वमेध यज्ञ करना आह लै चुक, अतोट अतुट नज़री

१०५३
२१

आईआ। सत्तां रंगां विच बन्न्ह के रखणा कदे ना जाए निखुट, सहज दिता समझाईआ। खौंचे आपणे उत्ते पिआं नूं ल्या घुट्ट, आपणा बल वधाईआ। बलि दे कोल आ के ल्या पुच्छ, की तूं बलि राजा, छत्रधारी नौ खण्ड पृथ्मी दा मालक, दीन दुनी दा दाता, महारिषी महामुनी महाअवधूत महापंडत महाजोगी महाजुगीशर महातपीशर महारखीशर कि महाकवीशर कि धरती माता दा ईशर, जो सब नूं रोज़ी रिहा खवाईआ। बच्चा फेर लग्गा चीकण, बलि सोचण लग्गा वधीकण, हुण शांत तैनूं करावां कीकण, वजह नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी दया कमाईआ। खौंचे ने किहा जिस वेले मैं बलि दे अग्गे रखी समग्री, धुर दी वस्त टिकाईआ। मैं निर्मल जोत तक्की दो जहान अकग्री, अकांत नज़री आईआ। फेर वेख्या सतिजुग त्रेता द्वापर हुंदी बदली, बदला सब दा रिहा चुकाईआ। फिर तक्कया पुरख अकाल नज़री आया अदली, इन्साफ़ इक कमाईआ। फेर वेख्या मेरे चुक्कण वाल्यां आसा सद लई, अन्तर अन्तर मेल मिलाईआ। की तुसां सेवा करनी अज्ज लई, कि होर वी आस वधाईआ। दोहां किहा प्रभू जिस वेले तूं मात आवें सानूं ज़रूर सद्द लईं, आपणा मेल मिलाईआ। इन्न्हां कानिआं काहीआं विच्चों कढ्ढ लईं, एहो तेरी वड्याईआ। वेखी
१०५४ किते संसार दी माया विच ना छड्ड लईं, अभुल्ल ना कदे भुलाईआ। तूं आदि अन्त रहवीं सदा जग लई, जागरत जोत १०५४
२१ कर रुशनाईआ। असीं मँग इक्को मँग लई, मांगत हो के झोली डाहीआ। किरपा कर के आपणे नाम रंग लईं, रंगत इक २१
रंगाईआ। जे असीं भुल्ल जाईए तूं सुत्तयां नूं सानूं सद्द लईं, सद्दा आपणा नाम सुणाईआ। खौंचे वाले किहा, मित्रा तूं ते ख़ाली हथ्थ तूं भावें भज्ज जाईं, मैनूं भज्जण दी लोड़ रहे ना राईआ। दोहां दी जिद वध गई, इक दूजे नूं बोलण चाँईं चाँईंआ। जे मैं भज्जां ते तूं वी एसे खौंचे नूं छड्ड जाईं, तेरा माण रहे ना राईआ। जे विहार भुगते फेर ओस प्रभू नूं मन्न लईं, जेहड़ा वायदे पूर कराईआ। खौंचे वाले किहा तूं वी भावें घर नूं जावीं कम्म लई, जगत मोह वधाईआ। जे तेरी मनसा ओस ने बन्न्ह लई, फेर मन्नी बेपरवाहीआ। जे दोहां दी जोड़ी बणा के आपणे दवारे सद्द लई, हुक्मे हुक्म सुणाईआ। फिर विछड़ीए ना कदे जग लई, जगत तृष्ना ना कोए वधाईआ। जे जीउंणा एसे स्वासां दे दम लई, जेहड़े स्वास तोड़ ना कोए निभाईआ। जे जीउंणा धी पुत्र मात पित भाई भैण साक सज्जण दे चम्म लई, चम्म दृष्टी होर वधाईआ। जे जीउंणा घर दयां रोग सोग चिन्ता दु:ख ग़म लई, ग़मख़ार ना मिले धुर दा माहीआ। अज्ज तों पक्की गंढ्ढ कन्नी बन्न्ह लईं, अग्गे सके ना कोए खुल्ह्हाईआ। जे जीउंणा ते ओस श्री भगवन लई, जो भाग हिस्सा पिछला झोली पाईआ। बचन सिंहां कोई सद्दया नहीं तैनूं डंन लई, पैंडा दूर दुराडा पवाईआ। आसा सिंहां जोड़ जोढ़या किसे गल्ल लई, अग्गे खेल की वरताईआ।

विहार होणा रावी दे जल लई, बूँद बूँद तरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे मेरा जल होणा पवित्र, मिले माण वड्याईआ। अमृत धार आवे नितर, दुरमति मैल धवाईआ। मेरा अगला मिटे फ़िकर, चिन्ता रहे ना राईआ। जन भगतां जोड़ जुड़ा के चोटी चढ़ के सिखर, वेखणा इक्को माहीआ। जेहड़ा गल लगावे भरिआं चिक्कड़, पापां करे सफ़ाईआ। कदे ना होवे भिट्टड़, कोझयां कमल्यां गोद उठाईआ। सो स्वामी बणे मित्र, प्यारा इक अख्वाईआ। सब दी पूरी करे इच्छत, निरिच्छत हो के वेख वखाईआ। जेहड़ी चार जुग दी पूरब लिख्त, लहिणा सब दा दए भुगताईआ। प्रभ दी निन्दया क्या कोई करे निन्दक, निंदण विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। रावी कहे जिस दिन आवे फग्गण चवी, सच दयां सुणाईआ। प्रभ ने लिख्त लिखाउणी नवीं, नवीं धार जणाईआ। बचन सिंहां ओदण फेर ना छन्ना विच सवीं, आसा सिँघ नाल बुलाईआ। जिस वेले लंगर लई तपण लग्गे तवी, तुसां दाल सब्जी विच खौंचा देणा टिकाईआ। लेखा लिखण डहि पए रवी, वक्त साढे पंज सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ।

१०५५ २१

कमाद दा रस सारे आईए चूप, रसना नाल रस फेर कुछ नज़र ना आईआ। ओस वेले स्वाद नाल मिट्ठा कर के सारे रहे सी सूट, रस अंदरे अंदर लँघाईआ। खुशी नाल पैरों किसे गुरगाबी लाही जुत्ती लाही किसे लाहे बूट, चप्पलां लाह के मूँह हिलावण चाँईं चाँईंआ। मस्ती विच खुशी विच हुलारे रहे झूट, ज़बान सोहणी सेव कमाईआ। ओस खुशी विच रसना स्वाद विच सारयां दे पिछले फ़िकर गए सी छूट, आलस निंदरा नेड़ किसे ना आईआ। काया दे अंदर बड़ी वड्डी टूप, जिस नूं भर के तृप्त ना कोए कराईआ। बाहरों स्वाद लैंदे ते अंदरों बाहर स्वासां दी मारदे फूक, साह ज़ोर ज़ोर बाहर कढ्ढाईआ। जे इन्हां रसां नाल मानस जन्म दा कम्म आ जावे सूत, फेर सतिगुर दी लोड़ रहे ना राईआ। तुहानूं पता नहीं चूपो गन्ने नाल पहरा होवे बन्दूक, हस्सदे गए ते हस्सदे आए कर के कूच, रमज़ वाली रमज़ ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरमुखो जितने स्वाद उतना डर, भय राए धर्म रिहा वखाईआ। जे मिट्ठा रस खा के, सुख पा के, धन लगा के, सचखण्ड हो जाण जीव आबाद, फिर प्रभ दे याद करन दी लोड़ रहे ना राईआ। एसे रस तों डर के जंगलां विच चले जांदे सन्त साध, घर बाहर

कर बरबाद, भुक्ख प्यास विच आपणा झट लँघाईआ। जिस वेले उन्नां नूं वी इन्नां रसां दी आउँदी याद, फिर ओह ना जिज्ञासू रहन्दे ते ना साध, जीवण कम्म किसे ना आईआ। गन्ना कहे भगतो जाइओ जाग, मैं सब नूं रिहा जगाईआ। मेरा हिस्सा ते तुहाडा भाग, लहिणा दोहां दा, लेखा दोहां दा, थाउँ थाईंआ। तुहाडा स्वाद ते मेरा खाज, तुसीं मैनूं खा के आपणी खुशी मनाईआ। जे तुहानूं कोई खावे ते फेर उसदा की दयोगे जवाब, मैनूं दयो दृढ़ाईआ। वेखो मैनूं मिट्टी विच दब्बदे, उत्ते भार नाल मारन सुहाग, जे कोई सिरा बाहर रह जाए फेर देण दबाईआ। गुरमुखो जिंनां चिर मिट्टी विच मिट्टी ना होवां उनां चिर कदे ना मिले प्रभू महाराज, जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी दा पिता माईआ। तुसीं सारे बण जाओ इक समाज, जिस तरां साडा सारयां दा इक धरती दे उत्ते रहिण वाल्यां दा रस मिट्ठा नज़री आईआ। प्रेम प्यार दी सिख लओ जाच, धुर दा हुक्म लओ वाच, मनुआ करे ना कोई नाच, जगत वासना ना कोए हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी सिख्या इक सिखाईआ।

❊ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ महिन्दर सिँघ दे गृह पिंड फ़तिह नंगल ज़िला गुरदासपुर ❊

१०५६ २१

रावी कहे मेरा सोहिआ तट किनारा, दर दुआर वज्जी वधाईआ। मिल्या मेल एकँकारा, अकल कलधारी आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी पूरब लाहिआ उधारा, जो गुर अवतार पैग़म्बर गए जणाईआ। मैनूं चरण धूढ़ी मस्तक दे के छारा, दुरमति मैल धवाईआ। सति धर्म दा भर भण्डारा, कूड़ी क्रिया दिती गवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स जैकारा, आत्म परमात्म दिता दरसाईआ। निज नेत्र नैण उघाड़ा, दीन दुनी वेखां चाँईं चाँईंआ। जां तक्कया चार कुण्ट कलयुग दिसे कूड़ कुड़िआरा, सति धर्म ना कोए वखाईआ। झगड़ा प्या मन्दिर मस्जिद शिवदवाला मठ गुरदुआरा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तट रहे कुरलाईआ। चार वरन अठारां बरन मिले ना कोए सहारा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रोवण मारन धाईंआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी पाए कोई ना सारा, बोध अगाध शब्द अनाद धुन आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत करदे हाहाकारा, अन्तर आत्म निरंतर पर्दा ना कोए चुकाईआ। जिधर तक्कां ओधर हाहाकारा, धर्म दुआर ना कोए सहाईआ। गुर अर्जन दे के गया इशारा, शब्द अगम्मी राग सुणाईआ। जिस वेले कल कल्की आवे अवतारा, निहकलंका वेस वटाईआ। अमाम अमामा बण सिक्दारा, दो जहानां खोज खुजाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर पावे सारा, काया काअबा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची वज्जे सच वधाईआ।

राวी कहे मेरी आसा मनसा पूरी, पूरन ब्रह्म दृढ़ाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह मिल्या हाज़र हज़ूरी, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस दी मस्तक ला के धूढ़ी, दुरमति मैल लई धवाईआ। मेरी चोली रंग चढ़या गूढ़ी, एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। जिधर तक्कां हाज़र हज़ूरी, चार कुण्ट दह दिशा सोभा पाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़िआ ग़रूरी, हउमे हंगता दए मिटाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ी, माया ममता मोह विकार गवाईआ। पन्ध मुकाए नेड़ा दूरी, काया मन्दिर अंदर मेला लए मिलाईआ। सर्ब कला भरपूरी, आदि अन्ता इक अख्वाईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़ंम्बर आसा रख के गए ज़रूरी, सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। सो ब्रह्मण्डां खण्डां पुरीआं लोआं आकाश पातालां पन्ध करे अबूरी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार आपणी कल वरताईआ। रावी कहे मेरे अन्तर आया सुख, सुखसागर विच समाईआ। मेरी कल्पणा मेटी दु:ख, दर्दां डेरा ढाहीआ। तट किनारे उत्ते पुज्ज, पूजनीक दिती वड्याईआ। मेरा भाग कीता सुध, वदी सुदी वंड ना कोए वंडाईआ। मैं चार जुग दी थक्की मांदी पई उठ, निरगुण धार लई अंगड़ाईआ। बेनन्ती कीती पुरख अकाल दीन दयाल मैनूं आपणा वखा गोबिन्द दुलारा सुत, जो बच्चे नींहां हेठां गया दबाईआ। मैं पुकारी
१०५७ उच्च, कूक कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे १०५७
२१ सीस निवाईआ। रावी कहे मैं दरस अगम्मा कीता, नूरी जलवा नूर रुशनाईआ। मेरा तन मन ठांडा सीता, त्रैगुण अगनी २१
तत गया बुझाईआ। मेरी पवित्र हो गई नीता, दुरमति मैल रही ना राईआ। मैनूं इष्ट भुल्ल गया राम सीता, राधा कृष्ण ना कोए जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मिल्या इक्को मीता, मित्र प्यारा सोभा पाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कहे सानूं भुल्ल गए शास्त्र सिमरत वेद पुराण अठारां धयाए गीता, गहर गम्भीर बेनज़ीर साडा परदा दिता उठाईआ। आस रही ना किसे कलमे किसे नाम हदीसा, हज़रतां तों परे कीती पढ़ाईआ। करया खेल आप जगदीशा, जगदीशर हो के वेख वखाईआ। जिस दा राह तक्कण हज़रत मुहम्मद ईसा, मूसा मुसलसल आपणी अक्ख उठाईआ। नानक गोबिन्द रख के हक़ अक़ीदा, धुरदरगाही राह तकाईआ। जिस दा राज़ सदा पोशीदा, अक्खरां विच सके ना कोए समझाईआ। रावी कहे मैं दर्शन कीता दानिस्ता दीदा, सन्मुख हो सोभा पाईआ। अगला भेव सदी चौधवीं अन्त अख़ीर जगत जहान दिसे पोशीदा, पारब्रह्म भेव कोए ना पाईआ। लिख्तां विच भविख्तां विच इष्टां विच दृष्टां विच गुर अवतार पैग़ंम्बर पेशीनगोईआं दस्स के रख के गए उम्मीदा, आसा मनसा आसावंद हो के मात रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, सच दुआरा एकँकारा इक इकल्ला आपणी कार कमाईआ। रावी कहे मेरे अन्तर चाउ घनेरा, बिन तत वजूद वज्जी वधाईआ। घर स्वामी ठाकर मिल्या मेरा, मैं ममता रही ना राईआ। जिस ने करना हक़ नबेड़ा, दो जहानां हक़ खुदाईआ। लख चुरासी तारनहारा बेड़ा, नईआ नौका आपणा नाम चलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ वसाउण वाला खेड़ा, अप वाए तेज पृथ्मी आकाश सोभा पाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच करे मेहरा, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिस सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर निरगुण धार मारया फेरा, निरवैर आपणी कल प्रगटाईआ। धरनी धरत धवल धौल धर्म धार दा वेखे वेहड़ा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, सच स्वामी अन्तरजामी पारब्रह्म भेव अभेदा आपणा भेद चुकाईआ। रावी कहे मेरा सुहञ्जणा होया घाट, वज्जी हक़ वधाईआ। मेरा बजर गया पाट, निज नैण होई रुशनाईआ। निझर झिरना अमृत ल्या चाट, रस इक्को सोभा पाईआ। दर्शन कर पुरख अबिनाश, आपणी तृष्न बुझाईआ। मेरा लेखे लग्गा स्वास, जो साह साह ध्याईआ। मण्डल मण्डप वेखी रास, हरि करता खेल रचाईआ। उत्तम तक्की ज़ात, जिस दी दीन मज़हब वंड ना कोए वखाईआ। आत्म सुणाई गाथ,
१०५८ तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। जां तक्कां चार कुण्ट दह दिशा मेरे पास, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। जो लख चुरासी १०५८
जीव जंत साध सन्त गुर अवतार पैग़ग्बर दीन दुनी देवणहारा साथ, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर गण गंधरव आपणे नाल
२१ चलाईआ। सो सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक इकल्ला गया आख, आख़र आपणा हुक्म चलाईआ। सदी चौधवीं दीन २१
दुनी दे बदल जाणे हालात, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चार वरनां अठारां बरनां होणा निफ़ाक़, सगला संग ना कोए रखाईआ। दीनां मज़हबां ज़ातां पातां गुर अवतार पैग़ग्बरां देणा जवाब, अग्गे जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। झगड़ा मुकणा पंज तत माटी ख़ाक, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा, नर नरायण इक सुणाईआ। रावी कहे मैं दरस कीता अनोखा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस दे विच नहीं कोई धोखा, धूआँधार ना कोए वखाईआ। मेहरवान आपणे मिलण दा दे के मौका, मुकम्मल आपणा रंग रंगाईआ। साचा मार्ग दस्स के सौखा, रस्ता इक्को दिता दृढ़ाईआ। जिथ्थे ब्राह्मण बणे ना कोए परोहता, मस्तक सीस ना कोए टिकाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तटां उत्ते मारना पए ना गोता, माला मणका ना कोए फिराईआ। इक्को रंग रंगाया तूं मेरा मैं तेरा दुरमति मैल पाप कलेवर जाए धोता, पतित पुनीत दए कराईआ। जन्म मरन लख चुरासी आवण जावण पूरा करे सोचा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। पुरख अकाल साहिब स्वामी निरगुण धार इक्को बख्श के ओटा, ओड़क

आपणे विच समाईआ। शब्द अगम्मी ला के चोटा, सोई सुरती लई उठाईआ। रावी कहे मैनूं जुगां पिच्छों मिल गया मौका, साहिब सतिगुर दिती माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा जाणे लोक परलोका, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमानां दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ।

✻ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ महिंगा सिँघ दे घर पिंड सद्दा ज़िला गुरदासपुर ✻

रावी कहे मैं दरस अगम्मा तक्कया, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। जेहड़ा सिदक भरोसा रख्या, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। कलयुग वेखदी रही रैण अन्धेरी मस्सया, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आया नस्सया, पाँधी हो आपणा पन्ध मुकाईआ। जमना कहे मैं हैरान होई कृष्ण चारदा सी गऊआं वच्छीआं, बंसरी धुंन सुणाईआ। पुरख अकाला जन भगत उधारे आपणे बच्चयां, बचपन सब दा वेख वखाईआ। धक्का देवे जगत प्रीती कच्चयां, कंचन गढ़ ना कोए वखाईआ। गले लगावे धुर दयां सच्चयां, सच स्वामी आपणी दया कमाईआ। मेरे लूं लूं अंदर रचया, प्रभ मेरा धुरदरगाहीआ।
१०५९ मेरा बिरहों विछोड़ा नठ्ठया, गया मुख बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। १०५९
२१ रावी कहे मैं प्रभ दा दर्शन कीता, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। ठाकर लभ्भां इक्को मीता, मित्र प्यारा सोभा पाईआ। जिस २१
दे छत्र झुल्ले सीसा, जगदीश नूर अलाहीआ। झगड़ा मिटाए ऊचां नीचां, राउ रंकां आपणा रंग रंगाईआ। घर वखाए इक अनडीठा, जिस गृह बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा रंग रंगाईआ। रावी कहे मेरे होए भाग मथन, मथरावासी नाल आया चाँईं चाँईंआ। साहिब सतिगुर बेड़ा बन्न्ह, अयुध्या वाला राम संग निभाईआ। दर्शन पा के गुजरी चन्न, मेरे लूं लूं लई अंगड़ाईआ। कल्पना मिटी मन, ममता दिती गवाईआ। जिस वेले जन भगतां किहा धन्न धन्न धन्न, उच्ची कूक अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। रावी कहे दरस करन दा मोहे होया अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। खुशी होया बन्द बन्द, बन्दगी विच वड्याईआ। जिस वेले गुरमुख इक दूजे दे उत्तों गए लँघ, मैं रो रो नेत्र नैणां नीर दिता वहाईआ। जेहड़ा सौण वाला सी उत्ते पलँघ, ओह मेरे कन्ढे ख़ाक उत्ते लेट के खुशी मनाईआ। मैं अंदरे अंदर रो के पाई डंड, डंडावत कर के सीस निवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर हो गए दंग, हैरानी सब दे अंदर छाईआ। गंगा गोदावरी

जमना सुरस्ती बदल के कंड, आपणी लई अंगड़ाईआ। जन भगतां मिल्या साचा संग, धुर दा साथ बणाईआ। जिस ने रस चखाउणा घिउ खण्ड, खण्डा नाम वाला फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रावी कहे जिस वेले जन भगत इक दूजे उपर टप्पे, टप्पा सोहँ नाम ध्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे हो गए हक़े बक्के, हैरानी विच ध्यान लगाईआ। नाले कहिण असीं वी नाते करीए पक्के, इक दूजे नाल गंढु पवाईआ। मित्र बणीए सके, दीन मज़हब दा झगड़ा रहे ना राईआ। सारे होईए अच्छे, बुरयां वाली करे ना कोए लड़ाईआ। जिस तरह भगत प्रभू दे बच्चे, माण ताण ना कोए रखाईआ। लिटदे उत्ते मिट्टी घट्टे, वड्डे छोटे ना कोए वड्याईआ । नाल नन्हे नन्हे बच्चे, शीरखार सोभा पाईआ। सब ने किहा असीं पिछले खहिड़े छड्डे, अग्गे इक्को राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रावी कहे मैं सोई उठी जागी, जगत वेख वखाईआ। भगत तक्कया वैरागी, गुरमुख प्रभू ध्यान लगाईआ। रवी तक्कया त्यागी, ममता मोह मिटाईआ। निउँ के सरनी लागी, चरण कँवल सीस झुकाईआ। प्रभू मनमुखां दी वध गई आबादी, गुरमुख विरला नज़री आईआ। तूं जुग जुग दा रहिबर धर्म धार दा गाडी, गाईड हो के वेख वखाईआ। एस समें तेरी लोड़ डाहढी, मैं डाडां मार के दिती दुहाईआ। पत रहे ना साडी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। किसे कम्म नहीं आउँदी किसे दी लग्गी समाधी, अंदर वड़ के तेरा दरस कोए ना पाईआ। मनुआ सब दा होया बाग़ी, आप आपणा बल वधाईआ। रसना जिह्वा दी दुनियां बणी रागी, अन्तर आत्म राग ना कोए सुणाईआ। साहिब तूं भगत उधारें आदी, जुग जुग तेरी बेपरवाहीआ। किरपा कर साहिब विस्मादी, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन सरनाई तेरी लागी, दूजी ओट ना कोए तकाईआ।

१०६० २१

२० फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ कर्म सिँघ दे घर
काका जगीर सिँघ दे नवित्त (सरीर छड्डुण समें) पिंड सद्दा

रावी कहे मैं प्रेम वेख्या अंदर मीआं मीर, जो मीआं इक्को इक मनाईआ। जिस दे अन्तर सच तस्वीर, बिना नक़श तों आपणा नक़श बणाईआ। जिस नूं ख़बर दिन्दा हुंदा सी कबीर, दरगाह साची दी सच जणाईआ। जिस ने तत बणाया वजूद कीता तामीर, दिती माण वड्याईआ। बदलदा आया तक़दीर, जुग जुग हुक्म वरताईआ। वेखे सर्ब तासीर, तसबी

माला खोज खुजाईआ। जाणे शाह हकीर, निमाणयां फोल फुलाईआ। सदा ओस नूं कहो अमीन, आमीन कहि के सीस निवाईआ। जे मेहरवान हो के इक वार सजदा कर लए तस्लीम, आपणी दया कमाईआ। फेर झगड़ा मुक्क जाए क़दीम, क़ुदरत दा मालक होए सहाईआ। ओह देवणहारा गोईपेशीन, पेशतर दए दृढ़ाईआ। जिस दा मार्ग बड़ा महीन, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जुग जुग वखरी तालीम, सिख्या अगम्म अथाहीआ। मीआं मीर किहा मैनूं सदा ओसे दा यकीन, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। ना ओह नर ना मदीन, नर नरायण नज़री आईआ। बुद्धी होण ना देवे मलीन, पतित पुनीत आप कराईआ। मैं ओसे नूं मिलण दा शौकीन, सद इक्को राह तकाईआ। ओसे वेले जोती चमक वज्जी नूरी नवीन, सिहन होई रुशनाईआ। मीआ मीर दा इक मुरीद सी जिस दा नाम नसीम, नौजवान नज़री आईआ। उन दन्दां हेठां दे ज़बीन, ज़बां नाल ल्या ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। मीआं मीर तक्कया हक़ नज़ारा, रहमत रहीम कमाईआ। नसीम किहा मेरे मुर्शद प्यारा, दर तेरे सीस निवाईआ। ओह केहड़ा घर बारा, जिथ्थे बिना चन्द सूरज तों होई रुशनाईआ। मुर्शद किहा ओह धुर दा सच्चा दरबारा, जिथ्थे वस्से नूर अलाहीआ। ओहो परवरदिगारा, इक इकल्ला सोभा पाईआ। जिस ने नूर दिता चमत्कारा, चमक दिती चमकाईआ। रोशन होया सिहन सारा, वजी घर वधाईआ। नसीम किहा ऐ मुर्शद, मैं जाणा चौहन्दा ओसे दे चरण दुआरा, ओसे विच समाईआ। जगत जीवण दी रहे ना कोए विचारा, जीवण कम्म किसे ना आईआ। जे मिले मिले मीत मुरारा, जो मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। ओसे वेले धुर दे शब्द दा मीआं मीर नूं होया इशारा, अंदरे अंदर दिता दृढ़ाईआ। जिस वेले निरगुण रूप जोती जामा धार आवां दुबारा, सरगुण तों निरगुण वेस वटाईआ। अमाम अमामां दा सिक्दारा, साहिब सुल्तान नूर अलाहीआ। तेरे मुरीद नूं दर्शन देवां जन्म दवा के विच संसारा, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोबन अवसथा विच लै के जावां ओस धर्म दुआरा, जिथ्थे मेरा नूर जोत रुशनाईआ। वायदा होया कौल कीता इक़रारा, रावी कहे मैं शहादत दयां भुगताईआ। एसे कारण जागीर सिंघ रिहा नहीं विच संसारा, जन्म मरन दा लेखा गया चुकाईआ। जिंनां चिर रावी गवाह ना बणदी उनां चिर प्रभू बण सकदा नहीं सी लिखारा, एसे कर के इतना चिर दिता लँघाईआ। घर वाले बथेरीआं मिन्नतां करदे रहे, अरज़ां करदे रहे, गुस्से विच कढ्ढदे रहे गालां, लफ़्ज लफ़्ज बदलाईआ। मीआं मीर कहि के गया मंज़ल चढ़ना नहीं सुखाला, सिखर चोटी चढ़न कोए ना पाईआ। अर्जन नूं तत्ती तवी ते बैठयां वेख के मैं वी पै गया काहला, मेरे अंदर आई अंगड़ाईआ। अर्जन ने हस्स के किहा मीआं मीर जी बाहर दी छड्ड दयो ते अंदरों फेरो आपणे मन दी माला, तसबी दी जगह आपणी तबअ लओ बदलाईआ।

१०६१ २१

साहिब सतिगुर दा सदा खेल निराला, निरवैर हो के आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा हल्ल करे सवाला, सवाली वेखे चाँईं चाँईंआ।

※ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ गुरबख्श सिँघ दे घर पिंड नुशहिरा ※

गोदावरी कहे गोबिन्द मेरे विच चरण गया धर, नंदेड़ दक्खण दिशा मिली वड्याईआ। संदेसा दिता जो गुरमुख जीवत जाए मर, मर जीवत रूप वटाईआ। मेरा भय चुक्कया डर, सहिसा रोग रिहा ना राईआ। किरपा सतिगुर दिती कर, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला नज़री आया हरिजू हरि, हिरदे रिहा समाईआ। जो लख चुरासी जीव जंत साध सन्त रिहा फड़, गुर अवतार पैग़म्बर बच्या रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म सच फड़ाए लड़, पल्लू धर्म ना कोए छुडाईआ। किल्ला तोड़े हँकारी गढ़, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोदावरी कहे गोबिन्द चरण मिल्या भरवासा, मेरी तृष्ना रही ना राईआ।
१०६२
२१
मेरा लेखे लग्गा स्वासा, जीवन जीवन वड्याईआ। मैं तक्कया पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर अक्ख खुल्लाईआ। मण्डल मण्डप वेखीआं रासा, गोपी काहन पर्दा लाहीआ। चार कुण्ट तक्कया तमाशा, दीन दुनी करे लड़ाईआ। कलयुग दिसे अन्धेरी राता, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। आत्म परमात्म जुड़े किसे ना नाता, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। चार वरन अठारां बरन दिसे घाटा, वस्त अमोलक झोली कोए ना पाईआ। गोबिन्द तों अमृत रस मिले किसे ना बाटा, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। झगड़ा प्या ज़ाता पाता, हिन्दू मुस्लिम करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोदावरी कहे मैं बेनन्ती कीती सतिगुर पास, आरज़ू दिती जणाईआ। मेरे साहिब सतिगुर मेरी पूरी कर आस, तृखा रहे ना राईआ। सति धर्म क्यों धरती उत्तों होया नास, चार कुण्ट नज़र कोए ना आईआ। धुर दे नाम दी गाए कोई ना गाथ, निरअक्खर ना कोए पढ़ाईआ। अवतार पैग़म्बरां उत्तों हटिआ विश्वास, विषयां विच दीन दुनी हल्काईआ। साचा खोल्ले कोई ना राज़, परदा अंदरों ना कोए चुकाईआ। क्यों सीता राम नूं छड्ड के पढ़न लग्गे नमाज़, सजदयां विच सीस झुकाईआ। क्यों अल्ला छड्ड के मन्त्र दृढ़ाया सतिनाम, क्यों वाहिगुरु जाप जपाईआ। की लहिणा देणा हिसाब, गुर गोबिन्द देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्लाईआ।

गोबिन्द किहा सुण वहिणां विच वहिण वाली, तैनूं दयां जणाईआ। सदी चौधवीं कलयुग रैण अन्धेरी होणी काली, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सति वस्त लभ्भे कितों ना भाली, चार कुण्ट दह दिशा खाली नज़री आईआ। फल रहे किसे ना डाली, सिम्मल रुख जगत लहराईआ। जिधर तक्कां त्रैगुण माया पए जंजाली, पंच विकार होए हल्काईआ। साची दिसे ना कोए धर्मसाली, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ सारे देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वरताईआ। गोबिन्द किहा गोदावरी जितने नाम, जुग जुग प्रभू दिते जणाईआ। दीन मज़हब बणा गुलाम, हिस्से वंड गया वंडाईआ। हक़ीक़ी मिले किसे ना जाम, अमृत रस ना कोए चखाईआ। दीन दुनी पुरख अकाल नूं करे बदनाम, बदीआं विच आपणा झट लँघाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोए पहचान, भेव ना कोए खुल्हाईआ। निष्अक्खर होए ना किसे ज्ञान, सदी चौधवीं लेखा मुकणा तमाम, मुहम्मद रो के दए दुहाईआ। हज़रत ईसा दस्स के गया आपणे विच कलाम, कायनात जगत समझाईआ। मूसा कहि के हक़ सलाम, सजदयां विच सीस निवाईआ। नानक दिता पैग़ाम, नौ खण्ड पृथमी आप वड्याईआ। गोबिन्द कहे इहो संदेसा मेरा दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर दयां जणाईआ। अन्त कन्त भगवन्त प्रगट होवे श्री भगवान, कल कल्की वेस वटाईआ। योद्धा सूरबीर नौजवान, मर्द मर्दान इक अख्वाईआ। जिस तों गुर अवतार पैग़ंबर मँगदे दान, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे झोलीआं डाहीआ। ओह कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे आण, माया ममता मोह चुकाईआ। सति धर्म दा दस्स निशान, चार वरनां बख्शे इक ध्यान, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दा सांझा होवे ज्ञान, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को मन्दिर गुरुदुआरा होए मुकाम, काया काअबा इक रुशनाईआ। इक्को शब्द नाद धुन गान, नाद आदि दए सुणाईआ। इक्को अमृत रस पीण खाण, निझर झिरना दए झिराईआ। इक्को सृष्टी दृष्टी अंदर श्री भगवान, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। कलयुग विच सतिजुग करे प्रधान, पारब्रह्म आपणी दया कमाईआ। गोदावरी कहे मैं नमों नमों नमों गोबिन्द कीती प्रणाम, चरण चुम्म के आपणी ख़ुशी बणाईआ। कुछ मैनूं उस दा दस्स निशान, निशाने नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एथे ओथे लेखा जाणे जीव जहान, जागरत जोत बिन वरन गोत, नर निरँकार एकँकार, परवरदिगार सांझा यार, लाशरीक हक़ तौफीक़, मेहरवान महबूब आपणी कार कमाईआ।

❊ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ बूड़ सिँघ दे घर पिंड वज़ीर पुर ❊

गोदावरी कहे गोबिन्द वल लाईआं अक्खां, जो आख़र होए सहाईआ। जिस दा मेल नाल पुरख समर्था, समरथ पुरख दए गवाहीआ। जिस दा नाम बोध अगाध अकथना अकथा, रसना कथ ना सके राईआ। जुग जुग करे खेल यथार्थ यथा, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। जेहड़ा तीर चिल्ला छड्ड के गया भथ्था, कमान टंग जगत सुटाईआ। सचखण्ड दवारे जा के वसा, जोती जोत जोत समाईआ। अन्तिम निरगुण धार हो के प्रगटा, प्रगट हो के आपणा खेल खिलाईआ। सति धर्म दा खोल्ह के हट्टा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। आत्म परमात्म जोड़े नाता पक्का, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। देणा देवे हक़ीक़त हक़ा, हक़ हक़ीक़त वेख वखाईआ। सतिजुग सच चलाए रथा, बण रथवाही सेव कमाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण गया हट्टा, नौजवाना आपणा मेल जणाईआ। अवतारां पूरा करे पटा, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। झगड़ा रिहा ना तत्तां अठ्ठां, अप वाए तेज पृथ्मी आकाश मनमति बुध्ध पर्दा दए उठाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मेटे रट्टा, इक्को नाम दए जणाईआ । निरगुण नूर जोत प्रकाश करे लट्ट लटा, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। शब्द अगम्मी मार के सट्टा, सोई सुरती दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। गोदावरी कहे गोबिन्द दिसे इक सहारा, सतिगुर शब्द नाम वड्याईआ। जिस ने कलयुग करना पार किनारा, सतिजुग साचा राह वखाईआ। चार वरनां देणा अधारा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रंग रंगाईआ। एका मन्दिर दस्सणा गुरुदुआरा, काया काअबा इक उपजाईआ। एका नाम शब्द धुन्कारा, शब्द अनादी नाद इक वजाईआ। अमृत रस ठंडा ठारा, निझर झिरना दऐ झिराईआ। एका दीया बाती कमलापाती करे उज्यारा, जोती जोत डगमगाईआ। एका मेला होए परवरदिगारा, गुर चेला इक्को घर सोभा पाईआ। खेले खेल आपणी धारा, धरनी धरत धवल उपर डेरा लाईआ। जिस नूं कहिंदे चवीआं अवतारा, निहकलंक नाउँ समझाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी लेख ना लिखणहारा, कातब चले ना कोए चतुराईआ । सो स्वामी अन्तरजामी खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणा वेस वटाईआ। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण नौ खण्ड पृथ्मी पावे सारा, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची इक सुहाईआ। गोदावरी कहे मैं तक्कां गोबिन्द चरण कँवल, कँवल चरण ध्यान लगाईआ। जो हर हिरदे जाए मवल, मौला रूप सोभा पाईआ। प्रगट होया उपर धवल, धरनी धरत धौल दए वड्याईआ। उलटा करे नाभी कँवल, अमृत झिरना इक झिराईआ। उस दा लेखा जाणे कवण, मनमति बुध्ध ना कोए वड्याईआ। उस दा संदेसा दे ना सके पवण, उनन्जा

पवण रही कुरलाईआ। जिस वेस वटाया धारी पवन, बल आपणा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा लख चुरासी वेखे अवण गवण, आवण जावण पतित पावन दीन दुनी खोज खुजाईआ।

✻ २० फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ मेला सिँघ दे घर पिंड बाऊपुर ✻

नारद कहे रावी तेरे कन्ढे कन्ढे भज्जी आवे लाटां वाली, लिटां खुल्हीआं नज़री आईआ। राह खैह्ड़ा रही भाली, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। उहदी चमक वेख के मैं वी भज्ज उठा शाली, भज्जदे दी बोदी हुलारे रही खाईआ। मैं कोल आ के अष्टभुज बड़ी सोहणी नूं वेख के, थू थू कर के किहा तूं बड़ी काली, कोझी नज़री आईआ। उहदे मुख उत्ते गुस्से नाल आई लाली, शस्त्र अट्ठे रही हिलाईआ। मैं किहा किथों आई तूं राणी खां दी साली, साडीआं हद्दां विच फेरा पाईआ।

१०६५ उह जोश विच आ गई काहली, अग्गे नूं क़दम उठाईआ। मैं झट चढ़ के उत्ते टाहली, टटैं टटैं कर के दिता सुणाईआ। जे मैनूं खड़ना ईं मैं मुढ्ढ थाणी चढ़या तूं चढ़ जा वलों प्राली, जिन्हां नूं परमल कहि के लोकी सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे मैं ग़ौर नाल तक्कया उह अस्वार उत्ते शेर, भय रही जणाईआ। मैं हथ्थ जोड़ के किहा मेरे उत्ते कर दे मेहर, तेरी बेपरवाहीआ। नी जे तूं शहिनशाह दी राणी ते मैनूं ब्राह्मण नूं बणा लै आपणा देर, भाबी कहि के आपणी ख़ुशी बणाईआ। उहनूं गुस्से विच फेर आ गई चेह्ड़, गदा रही भवाईआ। मैं फेर दिता छेड़, उत्तों हलूणा दे के सुक्के पत्ते उहदे उत्ते सुटाईआ। उस लम्मी बांह कर के मेरे मूँह ते मारी चपेड़, मैं हस्स के दिता वखाईआ। अग्गों किहा चपेड़ां मारन नालों मैनूं आपणी बुकल विच लै लपेट, भावें सारा दिन चुक्की फिरीं मैं सी ना कदे कराईआ। उस ने मैनूं खिच्च के लाह ल्या हेठ, मैं चरण चुम्म के दुर्गा माता दी जै जै जै दा नाअरा दिता सुणाईआ। फेर आपणे हथ्थ मार के उत्ते पेट, पिट्ट पिट्ट के दिती दुहाईआ। ज़ोर नाल किहा जे तूं अग्गे जाणा मेरे वल वेख, तैनूं रस्ता दयां समझाईआ। जे रावी दी हद्द टप्पीओ ओथे मुहम्मद चार यारी मुहम्मद शेख़, शरअ वाले तेरे नाल करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मैं किहा नी अष्टभुज मैथों प्यार नाल पुच्छ, मेरी पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। फेर हथ्थ मेरी उत्ते मुच्छ, वट दे चढ़ाईआ। फेर मैनूं खवा कुछ, जेहड़ा अमृत फल धुर तों लै के आईआ। फेर प्यार नाल चुक्क, हुलारा दे लगाईआ। फेर तूं वी गाईं मैं वी गावां तूं मेरा मैं तेरा तुक, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। फेर मैनूं खवा टुक, भुक्खे नूं दे रजाईआ। जे तैनूं बहुती ख़ुशी आ जावे मेरे

२१

१०६५
२१

चरणां वल्ल जावीं झुक, एह तेरी मर्ज़ी मैं तैनूं दिती जणाईआ। नारद कहे एह बचन सुण के मैनूं ख़ूब दिता कुट्ट, कुट्ट कुट्ट के मेरा रंग बदलाईआ। मैं भज्जा थक्क के गया टुट्ट, आपणा बल गवाईआ। उह मेरे मगरे आई उठ, चली चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे मेरे अंदर आई फेर खुशी, ग़मी दिती भुलाईआ। चढ़ गया आ के धुस्सी, रात दे अठ्ठ वजे मेरी राम दुहाईआ। मैं वेख्या अड्डीआं चुक्की, आपणा ज़ोर लगाईआ। उह शेर वांगू शेर उत्ते बैठी बुक्की, भबक दिती लगाईआ। मैथों भय नाल आवाज़ निकली दो तुकी, सोहँ ढोला दिता गाईआ। उने चिर नूं रस्ते विच्चों भौंक पई कुत्ती, आपणी आवाज़ प्रगटाईआ। मेरी डरदे दी पैरों लहि गई जुत्ती, नंगे पैरीं भज्जया वाहो दाहीआ। जेहड़ा राह विच पुच्छे उहनूं मैं कहां मैं नंगे पैरीं ओस प्रभू दी करन गया सां बुत्ती, जेहड़ा बुतख़ान्यां दी करे सफ़ाईआ। जिस ने काला गाना बध्धा गुट्टीं, आपणी वंड वंडाईआ। जां मैं पिच्छे भौं के वेख्या दुर्गा संख वाले हथ्थ दी वट्टी मुक्की, मैनूं रही वखाईआ। नाले उच्ची उच्ची कूकी, आपणी आवाज़ प्रगटाईआ। बेले वांगू सूकी, सां सां दिती सुणाईआ। मैं झट घट्टे दी मल के भबूती, साधूआं वाला वेस कराईआ। एह गल्ल मगरों हो गई कसूती, उहने खंजर ल्या उठाईआ। मैं नाले भज्जा आवां नाले डरदा जावां मूझी, नाले कहां तेरे अग्गे भय ना कोए रखाईआ। मैं कोई दुश्मण नहीं ना कोए दूती, दुष्ट दुराचार ना रूप वटाईआ। मैं प्यार करन वाला आशक दुरगी, जे तूं बण जाएं मशूकी, मेरा मसला हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे नाले डरां नाले भज्जां, भज्ज भज्ज के पैंडा ल्या मुकाईआ। मेरे दर्द होण लग्गी उत्ते गोडे सज्जा, क़दम क़दम ना कोए बदलाईआ। फेर ओस ने मेरे पिच्छे भवाई गदा, मैनूं ल्या डराईआ। मेरा साह रह गया अध्धा, हिम्मत रही ना राईआ। मैनूं अग्गों मिल गया गधा, मैं पलाकी मार के उत्ते बैठा चाँईं चाँईंआ। नाले मैं होका देंदा आया अवतारो पैग़म्बरो गुरुओ भगतो सन्तो सूफ़ी फ़कीरो जेहड़ा तुहानूं तुहाडा नहीं लभ्भा, आउ दयां मिलाईआ। मेरे पिच्छे होणी लग्गी आई क़ज़ा, वैरन आपणा भय रखाईआ। जिस वेले मैं बाबूपुर दे नेड़े आया इधरों भगतां दा जैकारा लग्गा, मैं सुण के खोते दे कन्न मरोड़े उत्तों उतर के पिच्छे लत्त दिती लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नारद कहे मैं डरदा आया दौड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। पिच्छे आवाज़ सुणदा आया कोई खड़कदा नहीं पौड़, धमक ज़िमीं उत्ते पाईआ। मैं नेड़े आ के मार के छाल चढ़ गया उत्ते बोहड़, टीसी ते बैठा सीटीआं रिहा वजाईआ। जां चढ़दे निगाह मारी मेरे साहिब दे सिर ते होवे चौर, मेरे अंदर खुशी आईआ। फेर मैं दुर्गा वल वेख्या कर के ग़ौर, आपणी निगाह उठाईआ।

फेर मैं पासा कर के ओधर नूं कर लए मौर, पिठ लई बदलाईआ। नी मैं साहिबज़ादा मैं पातशाह दा कौर, जिस ने कौरव पांडव कृष्ण दे नाल मिल के सारे दिते खपाईआ। मैं इस जुग विच मारया फौहड़, झूठ दिता सुणाईआ। जे अग्गे आईउँ एथे इक सरोवर वड्डा जौहड़, पाणी डूँघा वेख वखाईआ। जे कोई पीवे ते बड़ा कौड़, जे कोई नहावे ते नहाउदयां ही मर जाईआ। जे तैनूं प्यास दी लग्गी औड़, मैनूं दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। नारद कहे दुर्गा ने मेरी वेखी निशानी, निशाने उत्ते चली आईआ। जूह छड्डी बेगानी, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। लेखा मुकाया असमानी, ज़िमीं वल ध्यान लगाईआ। किथ्थे बैठा शाह सुल्तानी, पंडत जी, मैनूं दयो वखाईआ। मैं हस्स के किहा पहिलों मेरे कोल बोहड़ दी चोटी ते आ जे तेरी वड्डी जवानी, नौजवाने फेर तैनूं दयां वखाईआ। जे तूं चढ़ ना सकें फेर तूं मेरे सूरमे दी कदे ना करीं बदनामी, बदले दी भावना ना कोए रखाईआ। वेखीं किते भुल्ल के ध्यान धरीं ना बाहरले तत जिस्मानी, पुतला ख़ाक मिट्टी ध्यान लगाईआ। निगाह मारीं मेरा पातशाह ते तेरा शहिनशाह सचखण्ड दा सुल्तानी, दरगाह साची सोभा पाईआ। ओह पिछली याद कराउण आया कथा कहाणी, सुंभ निसुंभ भेव खुल्हाईआ।
१०६७ ओह ओस दी खाण आया महिमानी, जो पाणी दा मालक बण के नानक रिहा तरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप १०६७
आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे मैं छेती नाल बोहड़ तों उतरा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण
२१ ध्यान लगाईआ। श्री भगवान ने किहा वाह मेरया पुत्तरा, तेरी वड वड्याईआ। मैं भज्ज के चढ़ गया कुछड़ा, बुकल विच २१
लुक के जफ्फी लई पाईआ। नाले दस्सया झगड़ा, रो के दिती दुहाईआ। फेर मेरा पूंझया मुखड़ा, साफ़ दिता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मैं किहा प्रभू ओह मेरे पिच्छे लग्गी दुर्गा देवी, देव देवा मैं कहि के पल्लू आया छुडाईआ। मैं मन्दिरां विच वेखण गया काग़ज़ां दी खड़्ही कीती नाल लेवी, पत्थरां विच वड्याईआ। सच दस्स एह कोई है वी, कि ऐंवें मैनूं भय वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल ने, नारद कहे, मेरा कन्न दिता खिच्च, हलूणा दिता लगाईआ। ध्यान धर जां वेख्या गुर अवतार पैग़म्बर देवी देवत सारे इस दे विच्च, आप आपणे विच टिकाईआ। फेर वखाई अगम्मी चिट, चिठ्ठी दिती फड़ाईआ। फेर किहा मेरे चरणां विच लिट्ट, मैं लेट के आपणे पासे लए बदलाईआ। फिर किहा मेरे वल वेख ला के टिक, मैं टिक टिकी लई लगाईआ। फेर किहा ओह वेख रविदास दी इट्ट, जो इट्टां पत्थरां दा खेड़्हा रही छुडाईआ। मैं तक्कण लग्गा बिट बिट, खेल वखाया अनडिठ, जिस नूं समझे ना कोए लोकाईआ। फेर नाप नपाया मैथों सवा गिठ,

आपणी दया कमाईआ। फेर बदला के मेरी पिठ, ठोकर आपणे हथ्थ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। नारद कहे मैं निमस्कार कीती, सीस जगदीश झुकाईआ। कथा कहाणी दस्सी बीती, आपणा पर्दा लाहीआ। फेर आपणीआं नासां विच फेर के चीची, धुस्सी दा मिट्टी घट्टा ल्या कढ्ढाईआ। फेर बाऊपुर दी वड़ के विच बग़ीची, गुरमुख फुल्ल बूटे वेखे चाँईं चाँईंआ। फेर मैं ज़ोर ज़ोर दी मारी सीटी, दूर दूर सुणाईआ। नाले किहा अष्टभुज आह मैं ओस गाडी दा टीटी, जिस उत्ते भगत भगवान रिहा चढ़ाईआ। मैं कोई पढ़या नहीं बी ए बी टी, ब्रिटिश बरतानीआं डिगरी हासल ना कोए कराईआ। एथे कोई जंकशन नहीं बम्बे वाला वी टी, वीटो अधिकार प्रभ ने मेरे हथ्थ दिता फड़ाईआ। मैं कोई डरपोक नहीं गीदी, रो के दयां वखाईआ। मेरे कोल सत्त रंगा झण्डा ओह लैन वखावे सिध्धी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। कोई लोड़ नहीं पैंदी लाईन लीह दी, बिना लैन तों ऐन दयां चलाईआ। कोई ज़रूरत नहीं सिफ्तां वाली तशरीह दी, तारीफ़ करन वाले गुर अवतार पैग़म्बर ओसे दा राह तकाईआ। आह वेख आसा ओस मसीह दी, जिस नूं हज़रत ईसा कहि के सारे सीस निवाईआ। खेल वेख उस रब्बी दी, जो रब्बे आलम मुहम्मद सलल्ला कहि के सीस निवाईआ।
१०६८ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे मैं फेर कीती शैतानी, शरअ जगत १०६८
वाली दृढ़ाईआ। जे कलयुग विच करीए बेईमानी, मिलदी मात वड्याईआ। जे धोखा देईए मात रुपईआ चवानी दवानी, पैसिआं विच पासा उलटाईआ। फेर साधू सारे मगर ला लओ जेहड़े कहिण चढ़दे मंज़ल रुहानी, टक्यां विच खरीदो थाउँ थाईंआ। जे पंडत बण के सुणावां ग्रन्थां वाली बाणी, विद्यावान कहे लोकाईआ। जे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदवारे जा के मस्तक रगड़ां पेशानी, फेर सारे कहिण गुरमुख चंगा नज़री आईआ। जे मैं आखां मैं सिध्धा मिल्या उस पातशाह शहिनशाह पुरख अकाल जो सब ते करे मेहरवानी, महबूब मेरा नूर अलाहीआ। फिर सारे मैनूं कढ्ढण गाली, कहिण किथ्थों प्रभ दा भगत आ के रौला रिहा पाईआ। जन भगतो एसे तरह ही तुहाडी हुंदी हानी, मैं तुहानूं दयां समझाईआ। जे तुसीं वी इट्टां पत्थर क़ागज़ क़लम शाही तन वजूद पूजो जिस्मानी, तुहानूं वी समाज दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, मेहर नज़र नाल तराईआ। नारद कहे औह आ गई सतिजुग दी राणी, महाराणी महाराणी महाराणी सोभा पाईआ। भर लिआया ठंडा पाणी, अमृत जल अमृत जल कहि के रिहा सुणाईआ। पढ़ी जावे बाणी, हरी ओम तत सति सुणाईआ। तकदा जाए नौजवानी, जोबनवन्ती जोबनवन्ती जोबनवन्ती कहि के आपणी अक्ख चुराईआ। बोलदा जाए बड़ी मेहरवानी बड़ी मेहरवानी, प्यार दे प्यार दे, सतिकार दे सतिकार दे, एतबार दे एतबार

दे, तेरी मेहरवानी, झोली तेरे अग्गे डाहीआ । कहिंदा जाए मेरे दिल दी जान जानी जान जानी, जानणहार विच संसार इहो नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हाल सुणाईआ। अष्टभुज कहे उरां आ वे नारदा, नदीआं दे कन्ढे क्यों भज्जा वाहो दाहीआ। नारद कहे मैं तां सेवा करदा सां वांग गारदा, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दी रच्छया लई गया सां चाँईं चाँईंआ। मैनूं हुक्म मिल्या सी बाहर दा, सो सेवक हो के कार कमाईआ। बीबी राणी जे दर्शन करना ई मेरी सच्ची सरकार दा, इशारे नाल इशारा दयां मिलाईआ। जेहड़ा सब दी पैज संवारदा, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। जेहड़ा तेरे वरगे अनन्त रूप धारदा, दुर्गा नूं कर के मुर्दा अग्गे होर वेस कर के तुरदा, एह खेल अगम्मा धुर दा, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जद तक्को ते भगतां नाल नाता जुड़दा, जद वेखो ते जगत जहान रुढ़दा, जद जाणो गुर अवतार पैग़म्बरां तों कम्म लए आपणी लोड़ दा, ज़रूरत तों वध्ध किसे दे हथ्थ ना कुछ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी साची कार कमाईआ। अष्टभुज कहे हो जा मेरे अग्गे, अग्गों रस्ता दे वखाईआ। नारद कहे मैनूं पंज सत्त उत्तों लाह लैण दे झग्गे, तैनूं वेख के मैनूं गर्मी गई
१०६९ आईआ। किते बदो बदी मैनूं चुक्क के नाल बहा ना लईं उत्ते शेर बग्गे, साथी आपणा लएं बणाईआ। किते मेरी सेवा १०६९
२१ ना ला देवीं नौबत उत्ते ला डग्गे, डंका दे वजाईआ। मैं पिछले डौरु सारे छड्डे, झगड़ा दिता मुकाईआ। मैं इक्को जाणदा २१
जेहड़ा मेरे साहिब दी चरणी लग्गे, पुरख अकाल दी ओट तकाईआ। उहदा झगड़ा मुक जाए ज़िमीं असमानां मध्धे, दो जहानां पार कराईआ। एह खेल वेख लै हुण ते अज्जे, तैनूं दयां वखाईआ। तख़्त निवासी दी जगमग जोत जगे, जागरत जोत नूर रुशनाईआ। नी दुर्गा उह तेरे नालों मेरे नालों गुर अवतार पैग़म्बरां नालों हुण चढ़ गया ई भगतां ग़रीबां दे अड्डे, अड्डी चोटी ताईं ज़ोर ला ला, फेर वी हथ्थ कदे ना आईआ। जे भगत चौहण ते फेर लँघीए उस दी हद्दे, हद्द हदूद पार कराईआ। नारद कहे वेख मैं आपणे हथ्थ बद्धे, बन्दना कर के सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक वखाईआ। दुर्गा कहे मैनूं मन्ज़ूर, ढिल्ल रहे ना राईआ । चल तक्कीए हज़ूर, जो हर हिरदे रिहा समाईआ। मैं चार जुग दा पैंडा मुका के आई दूर, सतिजुग दी चली कलयुग अन्तिम पुज्जी चाँईं चाँईंआ। जिस नाता तोड़ना कूड़, जूठ झूठ देणा मिटाईआ। उहदी मस्तक लाईए धूढ़, टिक्का ख़ाक रमाईआ। तक्कीए अगम्मा नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। दर्शन करना ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर होवे रुशनाईआ। जिस ने सब नूं कीता मजबूर, भज्जे आवण थाउँ थाईंआ। असीं सारे ओसे दे मज़दूर, सेवा विच सेव कमाईआ। नारद हस्स के कहे दुर्गा तूं ते बड़ी उच्ची लम्मी वांग

खजूर, मेरा जीअ करदा तेरे मोढ्ढयां ते चढ़ के दयां दुहाईआ। क्यों चारों कुण्ट कल कातीआं पाया फ़तूर, क़तलगाह बणी लोकाईआ। दीन दुनी होई मजबूर, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे दुर्गा वेख अगम्मा सिँघ आसण, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जिथ्थे बैठे पुरख अबिनाशण, अबिनाशी करता डेरा लाईआ। झुकदे पृथ्मी आकाशण, गगन गगनंतर सीस निवाईआ। सब दी पूरी होवे आसण, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। जलवा देवे बातन, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। वेखे खेल तमाशण, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,मेहर नज़र नाल तराईआ। दुर्गा दर ठांडे आ के गई झुक, नमस्ते कहि के सीस निवाईआ। मेरा लेखा पिछला गया मुक, अग्गे तेरे हथ्थ वड्याईआ। शस्त्र अठ्ठे दिते सुट्ट, ख़ाली भुजां रही हिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा मैं वी गावां तुक, इक्को वज्जे वधाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सतिजुग बदल दे रुत्त, कलयुग खिज़ां दे मिटाईआ। भगत सुहेले तेरे पुत्त, पिता पूत गोद सुहाईआ। किसे नूं रहे ना विछोड़े दा दुःख, दुखियां दर्द गवाईआ। असीं सारे उपजे तेरी विच्चों कुख, अन्त तेरे विच समाईआ। इक्को योद्धा सूरबीर बहादर शब्दी तेरा पुत, जो आदि जुगादि आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१०७० कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। दुर्गा कहे मैं छड्डे सारे शासण, शस्त्र धार नज़र ना आईआ। तेरे १०७०

२१ गृह कर के वासण, जगत वासना दिती मिटाईआ। उन मोआ देस गुरु जी का मरू देवा छिआ देवी छड्डया भाषण, संथा २१

जगत ना कोए सुणाईआ। दर तेरे आई घाटन, घँटे मिट्टी विच आपणा पन्ध मुकाईआ। मैनूं रावी लग्गी आखण, सहज नाल सुणाईआ। जाह, अज्ज नेड़े ओस कटणी अज्ज दी रातन, बहुता पन्ध ना कोए मुकाईआ। मैं करन लग्ग पई दातन, आपणे हथ्थ उठाईआ। आपणा हिरदा लग्ग गई वाचण, आपणे आप दी करी पढ़ाईआ। की मैं ओसे दी साथण, जो सब दा पिता माईआ। मैं मस्ती विच उस दी हस्ती विच लग्ग गई गवाचण, आपणी सुध रही ना राईआ। जां निगाह मारी वेख्या आपणा जापण, जप जप थक्की जगत लोकाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होई पापण, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। फिर मैं निमाणी हो के प्रभ नूं लग्गी आखण, कहि के दिता सुणाईआ। मेरे सतिगुर साहिब पुरख अबिनाशण, तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग सच लगा दे गुर अवतार पैग़म्बर सारे आखण, मैं वी कहि के हिस्सा दिता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, योद्धा सूरबीर सब तों वड्डा राठण, एको एक एकँकारा नज़री आईआ।

✻ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ सन्ता सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✻

नारद कहे वाहवा मेरे प्रभू रंग, रंगले दयां जणाईआ। अमृत वेला ढाई तों पंज, तेरे चरण दवारे आपणी ख़ुशी मनाईआ। फिर बाहर खलो गया उत्ते इक टंग, यक्क टंगा ध्यान लगाईआ। फिर मैं रौला सुणया डंड, आपणी निगाह उठाईआ। ज़िमीं वेखी असमान वेख्या खेल वेख्या ब्रह्मण्ड, आकाशां उपर खोज खुजाईआ। जां निगाह मारी भोला नाथ छार मल के उत्ते कंड, चलया आवे चाँईं चाँईंआ। हथ्थ त्रसूल कन्नी नूं घुट्ट के दिती गंढ, पल्लू मुट्ठी राख बंधाईआ। दूरों प्या खंघ, ज़ोर दी दिता सुणाईआ। मैं हस्स के किहा भोले नाथ अज्ज केहड़े चड़्हिउँ जंग, जंगजू दे जणाईआ। तूं इकल्ला तेरे नाल नहीं कोई संग, किधरों आया बण के पाँधी राहीआ। तेरी पार्बती क्यों नहीं नाल की उहदे दोधीआं दन्दीआं वाले दन्द, बाली उमर साथ ना कोए निभाईआ। जे मैथों पुच्छ लएं ढंग, ओम हरे हरे हरे तैनूं दयां समझाईआ। तूं ओह की रखी मिट्टी दी कंध, जेहड़ी तेरे नाल चल के ना ख़ुशी मनाईआ। जे चंगा होवें, मेरे गुरदेव, एहो जिही परां मैनूं दे वंड, मेरी झोली दे पाईआ। मैं उहनूं लै के जावां गोदावरी जमना सुरस्ती कन्ढे गंग, सगला साथ बणाईआ। नाले उहनां नूं जा के कहां ओह वेखो मैं ब्राह्मण ने मँग ल्यांदी मँग, शिव दी पार्बती मेरे प्यार विच रत्ती, मुहब्बत विच मत्ती भज्जी आवे चाँईं चाँईंआ। एह मेरिआं अक्खरां दी पट्टी, जे तूं किरपा कर देवें मेरी खुल्ह जाए हट्टी, घर साचे वज्जे वधाईआ। वेख मैं चार जुग रंडेपा ल्या कटी, जुग चौकड़ी गुर अवतारां पैग़ग्बरां खेल वेखदा रिहा अक्खीं, मैनूं कचीचीआं जांदीआं सी जिस वेले कृष्ण सोलां हज़ार तिन्न सौ सठ्ठ रखदा सी सखी, मेरे हिस्से वंड ना कोए वंडाईआ। मैं इक दिन सूत दी लै के अट्टी, ओह अध्ध विच्चों कटी, फिर हथ्थां नाल चौड़ी कर के उहदी बणाई पट्टी, पट्टी बणा के फेर वेख्या उहदे उत्ते नज़री आया पटने वाला इक माहीआ। उन मेरे मूँह ते चपेड़ मारी अगली गल्ल दस्सी, कन्नों फड़ के हलूणिआं एह सृष्टी नेजे उत्ते मच्छी, एह वेख के मैनूं पै गई गशी, दन्द मीट के मैं अक्खां लईआं बदलाईआ। फेर मैनूं होश आई मैं गुर अवतार पैग़ग्बरां दे अंदर जगदी वेखी मोमबत्ती, जिन्हां दे कोल दीनां मज़हबां दी छोटी छोटी पत्ती, पतिपरमेश्वर सब नूं बैठा वक्खरा नज़री आईआ। फेर मैं वी किहा गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती कहिण साडे तटां ते हुंदी गति, दूजा नाम ना कोए सुहाईआ। फिर मैं करवट बदल के हो गया भार वक्खी, आपणा हथ्थ सिर ते रखी, उँगल नाल थोड़्ही जिही मिट्टी चक्खी, रसना रस कुछ ना आईआ। फेर मैं वेख्या की खेल लख चार अस्सी, चुरासी की वड्याईआ। जां तक्कया प्रभ दे बंधन विच सारे फसी, फ़ैसला सच ना कोए कराईआ। फिर मैं शंकर वल्ल तक्कया एह गल्ल दस्सी, भोले नाथ मैनूं देणा समझाईआ।

ओस ने किहा एह एथे रहिण दे ठप्पी, पर्दा ना अग्गे खुल्हाईआ। मैं किहा क्यों, ओस किहा मेरी प्रभ दे नाल गल्ल पक्की, फ़ैसला इक्को वार कराईआ। जेहड़ी तूं चार खाणीआं विच्चो करनी उत्पती, ब्रह्मा सेव लगाईआ। उस दा निशाना रहिण नहीं देणा रती, एह सेवा मेरे हिस्से आईआ। उने चिर नूं पार्बती आ गई नस्सी, साह चढ़या हउके लै के चरण ढठ्ठी, मस्तक धूढ़ी लाईआ। नारद किहा तूं इस दे नाल क्यों नहीं वसी, तेरी केहड़ी वक्खरी रहिण वाली बसी, क्यों विछड़ के आपणा झट लँघाईआ। पार्बती खिड़ खिड़ा के हस्सी, पंडता, ल्या तेरे सिर विच पावां कच्ची लस्सी, दुध्ध पाणी दा मेल मिलाईआ। नारद कहे मैं गुस्से विच मथ्थे तिउड़ी वट्टी, वेखीं हुण अग्गे हद्द ना टप्पीं, कुछ मैनूं ना देणा सुणाईआ। जे कुछ होर बचन कढ़ुया मैं चौथे जुग कलयुग अन्त तैनूं माझे दी बणा के जट्टी, प्रभू दे वस देणा पाईआ। फेर भावें किन्ना भज्जीं ते किन्ना टप्पीं, तेरा टप्पा सुणन वाला नज़र कोए ना आईआ। भावें किन्ना शंकर शंकर जपीं, रसना जेहवा ढोले गाईआ। मैं वी गल्ल दस्सां सच्ची, वेले नाल समझाईआ। भावें मैनूं समझदे एह नारद बड़ा गप्पी, आपणा राग अल्हाईआ। मैं हुक्म मन्नण विच बड़ा तपी, तपीशर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे भोले नाथ जी प्रभू प्रभ शंकर, शुकरीआ कर के सीस निवाईआ। पूजा तुहाडी होणी कि तुहाडे पिच्छों पत्थर कंकर, मैनूं दयो जणाईआ। तुसां दुनियां खुश रखणी कि समां लिआउणा भिअंकर, मैनूं दयो दृढ़ाईआ। की विचार आउँदी अन्तर, निरंतर दयो समझाईआ। की तुहाडा सदा चलेगा शिव शम्भू वाला मन्त्र, शंकर शंकर सारे गाईआ। की तुसीं ज़िमीं उत्ते वसोगे कि वसो उत्ते गगनंतर, मण्डलां उत्ते डेरा लाईआ। केहड़ा तुहाडा होवेगा जंतर, जंता नूं की दयो वड्याईआ। की तुहाडा होएगा तंतर, तरां तरां दयो समझाईआ। की तुहाडी एसे तरां बणी रहेगी बणतर, अग्गे होर ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। शंकर कहे मैनूं कर लैण दे ध्यान, आपणी निगाह उठाईआ। तक्कया उपर असमान, नेत्र नैण खुल्हाईआ। पुच्छया श्री भगवान, की तेरी बेपरवाहीआ। संदेसा सुणया महान, दीन दयाले दिता जणाईआ। शंकर जी तुसीं मेरी किरपा दे महिमान, जिंनां चिर चाहवां सेवा दयां लगाईआ। फेर खेल मेरे हथ्थ महान, जो उपजे सो रहिण कोए ना पाईआ। तुहानूं बणावां प्रधान, प्रधानगी तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों खुशीआं माणूं विच जहान, दो जहानां भय वखाईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्त तुहाडा तोड़ माण अभिमान, आपणा हुक्म दयां वरताईआ। भगत सुहेले प्रगट कर नौजवान, सूरबीर आपणे आप प्रगटाईआ। उन्हां दा मातलोक जीवण लै के बलिदान, जीवत जीअ वड्याईआ। आप बण के साहिब सुल्तान, निरगुण

वेस वटाईआ। तुहाडी जगह भूमिका दे के उन्हां नूं अस्थान, अस्थापत दयां कराईआ। ना इंदर रहे ना शंकर रहे ना ब्रह्मा रहे मेरी जोती मेरे विच मिल जाण, मेरा रूप समाईआ। एह खेल आदि अन्त मेरा महान, महिमा बेपरवाहीआ। नारद कहे मैं सुण के हो गया हैरान, प्रभ एह की हुक्म जणाईआ। किस बिध होवे आप प्रधान, लोकमात फेरा पाईआ। हुण वेख्या अक्खीं आण, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। शंकर जी तुसीं क्यों एनी वार करदे प्रणाम, मैनूं दयो समझाईआ। नारद कहे तुसीं ते बड़े सूरबीर बलवान, चुरासी नूं मार खा के आपणा झट लँघाईआ। शंकर कहे नारद जी अज्ज दा प्रविष्टा बड़ा महान, इक्की फग्गण एसे दिन मैनूं पहली वार पार्बती मिली चाँईं चाँईंआ। मैं इक्ठे हुंदे वेखे भगत भगवान, मैं छड्ड के टिल्ले पर्बत असमान, भज्जा वाहो दाहीआ। मैनूं बथेरा किहा सब ने रसते विच शंकर जी तुसीं ते साडे गुरदेव, तुसीं किस नूं मिलण चले जहान, लोकमात फेरा पाईआ। मैं हस्स के किहा मेरा प्रभू ना ज़िमीं ना असमान, ना जीव ना जहान ना धर्म ना निशान, जदों खुशी विच आवे आपणी दया कमावे, जोत नूर रुशनावे, सानूं सिख्या समझावे, भगतां दे अंदर वड़ के आपणा नूर दए चमकाईआ। नारद कहे मैं कच्छां मारीआं, भोले नाथ जी, फिर ते भगत हो गए तुहाडे सांवें, सारयां दे इक्के घर नांवें, तूं जिस नूं गाउँदा सैं बहुता ओह ते भगतां दे ढोले गाईआ। मैं वी रोज़ लुक्या रहन्दा आं मंजी दे हेठां पावे, भार महिसूस ना कोए कराईआ। भावें कोई रोवे भावें कुरलावे, साहिब मेरा बेपरवाह आपणी करनी कार कमाईआ। शंकर जी जे मेरी पिठ उत्ते इक वार हथ्थ लावें, थापी दे के दे वड्याईआ। फिर भावें आपणी पार्बती आपणे नाल लै जावें, मैनूं लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पिछले सब दे अन्त अख़ीर ख़ारज कर देवे दाअवे, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ।

❊ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ रवेल कौर दे गृह पिंड बाबूपुर ❊

शंकर कहे मैं भगतां देण आया असीस, नारद मुनी देणा तूं वी सीस निवाईआ। जिस नूं असीं कहिंदे आए जगदीश, जगदीशर धुरदरगाहीआ। मैं दो जहान तक्कया ताज रिहा किसे ना सीस, तख्त निवासी नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां मैं सुणी सच हदीस, जो इक्को कलमा रहे ध्याईआ। जिस ने झगड़ा रहिण नहीं देणा बीच, पर्दा दए उठाईआ। सांझा दस्स अगम्मा गीत, जन भगतां करे पढ़ाईआ। जिन्हां सुणया उह छड्ड गए मन्दिर मसीत, काअबे वल्ल ना ध्यान लगाईआ। बैठ गए हो के अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। दर्शन कर के होवण सीत, अगनी तत बुझाईआ। जिधर तक्कां चरण कँवल

करन प्रीत, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। मैं वेख होया भय भीत, भय मेरे अंदर आईआ। किस बिध प्रभ ने अंदरों बदल दिती नीत, पिछला लेखा गए मुकाईआ। नारद ने रो के मारी चीक, हाए, एह की गल्ल सुणाईआ। शंकर जी, जिस दे विच हक़ तौफीक, ओह जो चाहे सो लए कराईआ। उन केहड़ी मँगण जाणी किसे दवारिउँ भीख, मांगत हो के झोली डाहीआ। तूं त्रसूल बणाई त्रैलोकी उठाई, त्रैगुण माया ढाही भीत, त्रैभवन धनी कीती वड्याईआ। ओस दोहां पासिआं तों तिक्खी कर के सीख, ज़िमीं ते रहिण वाले असमानां उत्ते बहिण वाले सारे लए निवाईआ। आप बैठ के सच सिँघसण अतीत, तार सितार आपणी आप हिलाईआ। मैं ते नक्क नाल कढ्ढां लीक, लम्मा पै के नारद इक दो तिन्न चार पंज लीकां दए खिचाईआ। मैं ते चरण चट्टां नाल जीभ, एह रीती मोहे भाईआ। जिस ने सांझी कीती तरतीब, तरीका इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। शंकर कहे मैं साहिब स्वामी आया झुकण, निव
१०७४ निव सीस झुकाईआ। अगला हुक्म आया पुच्छण, की मेरी सेव लगाईआ। शंकर किहा सतिजुग बलधारी लग्गा उठण, क़दम अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। ओस हस्स के किहा मेरा साहिब लग्गा तुट्ठण, दए मात वड्याईआ। कलयुग डोरा लग्गा टुट्टण, टुट्टी गंढु ना कोए पवाईआ। कूड़ कुड़िआरा लग्गा लुट्टण, घर घर आपणा फेरा पाईआ। भाग लगा के गुरमुखां पुत्तन, १०७४
२१ पिता पूत गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। शंकर कहे मैं वेखे २१
भगत सुहेले संगी, सोहणे नज़री आईआ। जिथ्थे फिरन गोदावरी जमना सुरस्ती गंगी, गोबिन्द ध्यान लगाईआ। दीन मज़हब दी नहीं पाबन्दी, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। नाम क़लमे दी नहीं डंडी, मार्ग इक चलाईआ। शस्त्र फड़या नहीं कोई जंगी, तीर कमान भथ्था कंध टिकाईआ। झगड़ा फ़साद नहीं कोई दंगी, मेहर नज़र उठाईआ। जिस दवारे जांदा लँघी, उह बेड़ा भगतां पार कराईआ। किसे दर रहिण ना देवे ख़ानाबन्दी, बंधन रिहा तुड़ाईआ। फ़रेब करे ना कोए पखण्डी, धोखे धार ना कोए जणाईआ। भरमां ढाह के अंदरों कंधी, करे प्रेम सफ़ाईआ। मन वासना रहे ना गन्दी, अमृत रस जाम प्याईआ। एहो कार्या खेल मेरे आई पसंदी, मैं निउँ के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। शंकर कहे मैं शब्द सुणदा रिहा अगम्मी चोज, रावी कन्ढ्ढा ध्यान लगाईआ। की खेल करे रोज़ बरोज़, राज़क रहीम बेपरवाहीआ। मैं रौला सुणया लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड सर्ब सुणाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, पुरख अकाला सोभा पाईआ। जगत जहान विच्चों जन भगत लुट्टी जाण मौज, बाकी नज़र किसे ना आईआ। वेख अजब निराला चोज, मेरे अन्तर लई अंगड़ाईआ। मैं वी दर्शन कारण एथे गया पहुंच, चलया चाँईं चाँईंआ। मेरी पिछली हट

गई सोच, अग्गे हुक्म रज़ाईआ। मैं चौहन्दा शंकर कहे मुनी जी तुसीं वी उठो जन भगत सारे ज़ोर नाल पंज वेर गावण ओह सलोक, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दा नाअरा लाईआ। नारद कहे मैं नहीं मन्नया मैनूं ऐं जापया तुसीं कड़ाह खावण वाली फ़ौज, जैकारे उत्ते ज़ोर ना कोए लगाईआ। एहो तुहाडी भगती एहो तुहाडा जोग, इस विच लोक लज्जया की रखाईआ। जे भगतो तुसीं गा नहीं सकदे प्रभू दे नाम वाला सलोक, फिर उच्ची उच्ची गल्लां कर के आपणा मन लवो परचाईआ। नारद कहे मैं रोज़ तकदा जैकारा बुलावण वेले किसे दे अंदर आउँदा नहीं जोश, जोशीलापन ना कोए रखाईआ। मैं ते सच कहिण आया जेहड़ा मुखों रहन्दा ख़ामोश, ओस नूं प्रभ देवे ना कोए वड्याईआ। गुरसिख नूं जैकारा ना बोलण नालों चंगी मौत, जेहड़ी जन्म लए बदलाईआ। एह कोई बणाओटी नहीं शौक, एह शुरु दी रमज़ इक रखाईआ। जिस दे कोल बोलण दी नहीं पहुंच, उह बेनन्ती कर के आपणा पल्ला लओ छुडाईआ। जे कोई हो जाए फ़ौत, फिर सारे किस बिध रौला पाईआ। जे झगड़े नाल हो जावे किसे नाल अदौत, फिर दूर दुराडयां देण सुणाईआ। नारद कहे मैं एसे कारण आया जो किसे नहीं किहा उह मैं कहि देणा सलोक, क्यों बुरा कहि के अग्गे सारे मैनूं गाईआ। जुग चौकड़ी मैनूं सारे रहे टोक, गुस्से विच अक्खां लाल कढु डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी आसा मनसा पूरी करे लोच, लोचा लोचण वाली आपणे नाल मिलाईआ।

शंकर कहे मेरी बेनन्ती प्रभू दा इशारा, भोला नाथ हो के दरसण आईआ। पहिलों करां दोए हथ्थ जोड़ निमस्कारा, निमस्कार करनी सब नूं दयां सिखाईआ। फेर नेत्र मीट अन्तर करां दीदारा, सूरत सतिगुर सोभा पाईआ। फिर इक गुरमुख खड़ा हो के अग्गे बोले जैकारा, उनां चिर दूजा मुखों आवाज़ ना कोए सुणाईआ। फिर वेख्यो किस बिध साचे नाम दा भरे भण्डारा, ऊणा रहिण कोए ना पाईआ। सब दा इक्को होवे प्यारा, इक्को आवाज़ दए सुणाईआ। वखरी वखरी बोली ना होवे जिवें लड़दीआं होण गटारां, आपणा राग सुणाईआ। एह ग़लती नहीं करनी भुल्ल के दोबारा, इक्को वार दिता जणाईआ। जिस घर विच होवे एह विहारा, उह ओस वेले चरण कँवल झुक के आपणा सीस चरणां उत्ते टिकाईआ। शंकर कहे मेरे साहिब ने मैनूं दिता हुलारा, मैं भज्जा आया विच संसारा, जन भगतो अधीनगी विच तुहानूं दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक सच दी रीती सच नाल चलाईआ।

✻ २१ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ दलीप सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर ✻

शंकर कहे गुर अवतार पैग़म्बर हस्से, सचखण्ड साचे खुशी मनाईआ। कवण सिख्या साची दस्से, करे अगम्म पढ़ाईआ। सवाधान हो गए प्रभ दे सारे बच्चे, जन भगत वज्जी वधाईआ। पैग़म्बर कहिण फिरी दरोही मदीने मक्के, काअबे रहे कुरलाईआ। अवतार कहिण वेखे मन्दिर शिवदवाले मट्ठे, राम नरायण ना कोए वड्याईआ। एह खेल अगम्मे अनोखे रसना जेहड़ी जपे, जप जीवत राग अलाईआ। त्रैगुण विच नूर ना तपे, अगनी अग्ग ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। शंकर कहे मैं कर के आया अर्ज़, आरज़ू दयां जणाईआ। समझ के आपणा फ़रज़, धर्म जैकारा दिता लगाईआ। भगवान दी पूरी होई गर्ज़, तृष्ना रहे ना राईआ। गुरमुखां जीवण मरन दी मिटी मर्ज़, चुरासी विच ना कोए फिराईआ। शरअ छुरी ना कटे करद, क़ातल मक़तूल रूप ना कोए वखाईआ। माया ममता मिटी गरद, दुरमति मैल रही ना राईआ। एहो खेल सदा असचरज, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर करता वड वड्याईआ। शंकर कहे मैं दस्स के आया रीत, रीतीवान दिती वड्याईआ। आत्म परमात्म धुर दा गीत, पुरख अकाले सानूं दिता समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव असीं सारे एसे कारण निउदे सीस, चरण धूढ़ी खाक रमाईआ। निरगुण निरगुण बणी रहे प्रीत, बिपरीत रूप ना कोए वटाईआ। साहिब स्वामी रहे मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। दीन मज़हब दी मेटे लीक, आत्म ब्रह्म इक समझाईआ। जिस दे विच सच तौफीक, मेहरवान मेहरवान मेहरवान सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। शंकर कहे मैनूं पुच्छण लग्गा ब्रह्मा, ब्रह्मादक ध्यान लगाईआ। की प्रभू चलावे धर्मा, धर्म धार वंड वंडाईआ। मैं हस्स के किहा लेखा मुका के वरनां बरनां, ज़ाती पाती डेरा ढाहीआ। एका ओट जणावे पुरख अकाला चरणां, चरणोदक जाम इक प्याईआ। झगड़ा मुका के जम्मणा मरना, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। नेत्र खोल्ह के हरना फरना, निज लोचन करे रुशनाईआ। अमृत दे के अगम्मा झिरना, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। ऊँच नीच दी रहे कोई ना घिरना, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को दर सुहाईआ। दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना सदी चौधवीं कलयुग अन्त आपे करे निरना, नर नरायण आपणा वेस वटाईआ। तीर्थ तट किनारा भगत किसे पए ना फिरना, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती गुरमुखां दे चरणां हेठ दबाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी चार जुग दा नाम पए ना पढ़ना, पुस्तक बग़ल ना कोए टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म

परमात्म आत्म दोहां ने इक्को मंज़ल चढ़ना, मोह मुहब्बत विच आपणा रंग रंगाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म पल्लू आपे फड़ना, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। शंकर कहे मैं दस्सया नाल अधीन, अदना रूप वटाईआ। सब नूं आया यकीन, भरोसा इक वखाईआ। सब तों वखरी तालीम, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। रहे ना कोए ग़मगीन, चिन्ता चिखा जलाईआ। सारे कहिण अमीन, कामल मुर्शद बेपरवाहीआ। जिस इक्को रंग रंगाउणा नर मदीन, वड्डा छोटा ना कोए रखाईआ। जिस दा खेल आदि क़दीम, क़ुदरत दा करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। शंकर कहे सुणो हुक्म अगम्मा, अगम्म दयां जणाईआ। झगड़ा रखयों ना माटी चम्मा, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। प्रभ दा मार्ग नवां, नव खण्ड वज्जे वधाईआ। मैं सच संदेसा कहवां, कहि के दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा हुक्म करे रवां, रवानगी सब दे हथ्थ फड़ाईआ।

१०७७ २१

❊ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ विरसा सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर ❊

१०७७ २१

नारद कहे मैं कबीर कोलों आया, खुशीआं विच पन्ध मुकाईआ। अग्गे सोहणी नौजवान वेखी पंज तत काया, रूप अनूप वटाईआ। नेत्र कज्जल धार सुहाया, बिन्दी मस्तक विच लगाईआ। सोहणा आपणा सीस गुंदाया, मेंढी पट्टीआं वाली वड्याईआ। बड़ा रसीला राग अलाया, कोई आवे मेरा माहीआ। मैं कन्त ना कदे हंढाया, जोबनवन्ती सोभा पाईआ। चारों कुण्ट चक्र लगाया, लख चुरासी वेखी थाउँ थाईंआ। मैनूं सूरबीर नज़र कोए ना आया, योद्धा आपणा बल प्रगटाईआ। नारद कहे फेर झट उस ने नेत्र नैणां नीर वहाया, रो के दिता सुणाईआ। मेरा भाई भैण मात पित सिर ते देवे कोई ना साया, सखा सखाई नज़र कोए ना आईआ। मेरा अग्गा पिच्छा रिहा कोई ना राया, जंगल कूकां दयां दुहाईआ। फेर झट ओस ने आपणा रूप बदलाया, हस्स के दिता वखाईआ। मैं ते सन्तां भगतां दी आया, धरनी धरत धवल उत्ते दयां खिलाईआ। फेर ओस ने कुछ मिट्ठा रस कर के खाया, मैनूं वखा के आपणे मूँह विच पाईआ। फेर घुंड कढ्ढ के आपणा नैण मटकाया, टेडी अक्ख वेख वखाईआ। फेर तन श्रृंगार सजाया, आपणी लई अंगड़ाईआ। फेर कमर हथ्थ टिकाया, दूजा मथ्थे उत्ते रखाईआ। फेर बेताला क़दम उठाया, नाच दिता वखाईआ। इक गीत अनोखा गाया, मैनूं दिता सुणाईआ। वे तूं केहड़ी

माँ दा जाया, पिता कवण अख्वाईआ। तैनूं किस ने गोद टिकाया, मैनूं दे समझाईआ। तैनूं किस ने तेरा भेव खुल्हाया, पर्दा दे उठाईआ। तैनूं किस ने एस राहे पाया, भज्जा वाहो दाहीआ। तैनूं किस ने औझड़ राह वखाया, सच दी धार ना कोए दृढ़ाईआ। नारद कहे जां मूँह तक्कया ओस आपणा होर दा होर रूप बदलाया, बिना भुजां तों नज़री आईआ। जिधर वेखां ओधर उहदी छाया, चारे कुण्ट सोभा पाईआ। झट ओस ने रंगला पीहड़ा डाहिआ, सवरन चांदी नज़री आईआ। उस दे उत्ते सिँघासण विछाया, वस्त्र सोहणा दिता टिकाईआ। फेर मैनूं आख सुणाया, सुण वे जांन्दयां राहीआ। तूं क्यों बणया पराया, मैं तेरी नज़री आईआ। नाले हाए हाए कर सुणाया, दुहथ्थड़ मार के पिट्टी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। नारद कहे मैं अग्गे तुरया, आपणा क़दम उठाईआ। उन मैनूं हस्स के किहा वे किथ्थे जांदा निगुरया, ऐंवें पन्ध मुकाईआ। किस वहिण जाना रुढ़या, मैनूं दे समझाईआ। तेरा नाता किसे नाल नहीं जुड़या, ऐंवें वक्त रिहा गवाईआ। मेरे आखे पिच्छे मुड़या, मुड़ मुड़ रही सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी धार इक सुणाईआ। नारद कहे मैं अग्गे चुकया क़दम, ओस ने आपणा पैर चुक्क के मैनूं दिता वखाईआ। वेख मेरे चरणां विच पदम, मैं पदमा राणी धुर दी नज़री आईआ। फिर क़मीज़ लाही उत्तों बदन, सोहणा रूप दिता चमकाईआ। फिर हस्स हस्स के दन्दीआं लग्गी कढ्ढण, मुस्कराहट विच आपणी करवट बदलाईआ। फिर झट सिर ते मुकट पा ल्या मैनूं कहे मैं मुकन्द मनोहर मदन, लक्ष्मी मेरी धार समाईआ। मैं तैनूं आई सद्दण, खोजां थाउँ थाईंआ। इकल्ली आई लभ्भण, साथी होर ना कोए मिलाईआ। वेखीं मेरा बचन ना करीं उलँघण, तैनूं दयां जणाईआ। मैं इक्को वस्त आई मँगण, मेरी झोली देणी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। नारद कहे मैं हैरान हो के पै गया सोचीं, एह कौण ते क्यों रही बुलाईआ। मेरी वाट अजे बहुती, मैं पुज्जणा चाँईं चाँईंआ। एसे समें विच ओस ने झट रूप बणाया इक खोती, हींग हींग के दिता सुणाईआ। मैं हैरान हो गया फिर बण गई बड़ी सोहणी बोती, धौण लम्मी कर हिलाईआ। मैं फेर तक्कया ओह चढ़ गई दरख्त दी चोटी, उत्ते चढ़ के वेख वखाईआ। मैं फेर तक्कया ओह बण गई अगम्मी काहन दी गोपी, आपणा रूप बदलाईआ। मैं फेर वेख्या ओह हथ्थ विच फड़ के सोटी, मैनूं भय रही जणाईआ। मैं फेर वेख्या हथ्थ उत्ते रख के रोटी, मेरे वल्ल बुरकीआं रही पाईआ। मैं फेर वेख्या ओह मैनूं कहे तूं मेरा मैं तेरी इक्को गोती, गोतम दा रूप बैठी बदलाईआ। मैं फेर वेख्या ओह अहलया बण के उँगल रखी उत्ते ठोडी, सहज नाल जणाईआ। मैं तेरे हथ्थ लावां गोडीं, मुनी जी देणी

वड्याईआ। फेर झटपट सिर तों बण गई रोडी, आपणी टिंड रही हिलाईआ। फेर इक दम वेस धर ल्या वांग जोगी, कपड़े गेरू तन छुहाईआ। फिर छेती नाल बण गई जगत वासना भोगी, वीह तीह बच्चे पिच्छे रही वखाईआ। मैं फेर वेख्या ओस हथ्थ विच फड़ के पोथी, ओम ओम ओम दिता सुणाईआ। मैं फेर वेख्या ओह बण के नौजवान धोबी, शूह शूह कर के कपड़े रिहा धवाईआ। नारद कहे मैं फेर वेख्या ओस ने मेरे नालों लम्मी बणा लई बोदी, इशारिआं नाल जणाईआ। मैं फेर वेख्या ओह मेरे नाल गल्लां करे घरोगी, जिवें इकठ्ठयां रह के झट लँघाईआ। मैं हैरान हो गया छेती नाल मार के छाल चढ़ गई मेरे मोढीं, अक्खां उत्ते हथ्थ रख के अक्खां दितीआं दबाईआ। मैं डर गया ओस ने मैनूं इक हीरा वखाया बण जा लोभी, तेरी झोली दयां भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे मैं अक्खां लईआं मीट, ज़ोर नाल बन्द कराईआ। ओस ने मेरीआं लत्तां विच वड़ के मारी चीक, ज़ोर नाल सुणाईआ। नाले गाया विछड़ गिआं दा गीत, विछोड़े वाला कम्म किसे ना आईआ। नाले मैनूं गुस्से विच किहा तूं बड़ा ढीठ, क्यों बैठा मुख भवाईआ। फेर लत्त मारी पीठ, कमर दिती हिलाईआ। फेर मैनूं बोदी तों ल्या घसीट, एधर ओधर दिता भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। नारद कहे इक दम ओह बण गई सोहणा नौजवाना पोप, गुड गाईड कहि के सुणाईआ। हैट पैंट पा के टोप, चले चाँईं चाँईंआ। मेरे उत्ते हो के क्रोप, मैनूं रही डराईआ। मेरे अंदर आया ख़ौफ़, मैं पिच्छा ल्या बदलाईआ। ओस ने मेरा नौहां नाल लौहणा शुरु कीता पोश, खलड़ी दिती उलटाईआ। मैं डर गया डरपोक, थर थर कम्ब के दिती दुहाईआ। फिर झटपट ओस ने रूप धार ल्या ख़रगोश, ज़ोर नाल भज्जा आपणा बल वधाईआ। उने चिर नूं मैनूं आ गई होश, मैं अक्खां लईआं खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मैं फेर वेख्या सोहणी जोबनवन्ती, नौजवान नज़री आईआ। तन वस्त्र पहन बसन्ती, सोहणा रूप चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के पंगती, मैनूं दिती सुणाईआ। कहे मैं विद्या पढ़ी नहीं किसे कोलों पंडती, अक्खरां नाल ना कोए वड्याईआ। मैं आसा नहीं किसे मन दी, ख़ाहिश ना कोए जणाईआ। मैं सरोती नहीं किसे कन्न दी, सरवणां नाल ना कोए वड्याईआ । मैं लालचन नहीं किसे धन दी, माया विच हल्काईआ। मैं अधारन नहीं किसे गल्ल दी, गल्लां बातां विच ना कोए रीझाईआ। मैं प्यासी नहीं जल दी, तीर्थ तटां वेख वखाईआ। मैं वणजारन नहीं थल दी, कूक कूक सुणाईआ। मैं आसा नहीं बलि दी, जो बावन राह तकाईआ। मैं वासण नहीं निहचल धाम अटल दी, जो सचखण्ड साचे सोभा पाईआ।

१०७९
२१

नारदा मैं ते फिरदी कल्ह दी, एधर ओधर आपणा वक्त लँघाईआ। मैं उडीक करदी सां ओस पल दी, जिस पल विच पलक ना होवे जुदाईआ। मुनी जी मैं ओह त्रैगुण माया जेहड़ी सन्तां ते भगतां नूं छलदी, सब दे कीते कतायां उत्ते पाणी दयां फिराईआ। मैं इस कर के तेरे वरग्यां दा राह मल्लदी, जेहड़े दो जहानां नूं सिख्या दे दे रहे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दा चरण दुआरा आदि अन्त मल्लदी, मेरे पिच्छे वेख मलकुलमौत चरण चुम्मण वास्ते आईआ।

१०८०
२१

✲ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ बीबी करतार कौर दर्शन कौर दे घर पिंड बाबूपुर ✲

नारद कहे जन भगतो मैनूं दयो थापी, थपकी दयो लगाईआ। मैं बड़ा वड्डा प्रतापी, प्रताप वाल्यां वेख वखाईआ। मैं बड़ा वड्डा जापी, जुग जुग नाम ध्याईआ। कढु के आपणी कापी, वरके रिहा उलटाईआ। हस्स के कहे मैं मन्नी नहीं उस मोहणी दी आखी, जो अनक रूप बदलाईआ। मैं भज्जा आया पहिलां मिलां जा के आपणे साथी, जो जन भगत बैठे सोभा पाईआ। जे भय ना हुंदा पुरख समराथी, मेरा मन ना धीर धराईआ। मैं कथा कहाणी दस्सां साची, सच दयां दृढ़ाईआ। कदी लोभ ना करयो काया माटी काची, तन वजूद सद रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा दिता मुकाईआ। फेर कहे मैनूं पिच्छों आवाज़ पई नारदा तूं नहीं आया क़ाबू, मैं होर खेल दयां खिलाईआ। मैं हस्स के किहा मैं ग़रीब पिउ दा पुत्त नहीं वाधू, तेरे वरगीआं दे पिच्छे भज्जां थाउँ थाईंआं। शायद डोल जांदा जे मेरा साहिब ना आया हुंदा पिंड पुर बाबू, जो बाबन धुरदरगाहीआ। जाह तीर्थ तटां उत्ते अठ्ठां सठ्ठां उत्ते जा के लभ्भ लै जेहड़े मस्तक तिलक लगाउँदे साधू, एह सिध्धे सादे जट्ट तेरे हथ्थ कदे ना आईआ। तेरा खेल चार जुग दा आकड़ खां ते नाढू, आपणे बल विच आपणा आप बचाईआ। तेरा चलण नहीं देणा अग्गे हुण ममता वाला जादू, जादूगरनीएं तैनूं धक्का दिता लाईआ। याद कर ला तूं वेस वटाया सी जिस वेले गोबिन्द गया सी कोल दादू, दाअवे नाल आपणा क़दम उठाईआ। तूं खेल खिलाया सी वैरागी दास माधू, माधो दास दिता भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। नारद कहे सुण नी त्रैगुण माया, मोहणीएं अनहोणीएं तैनूं दयां जणाईआ। तेरा किसे कम्म ना आवे एथे नैण मटकाया, जोबन दी क़ीमत ना कोए रखाईआ। जिन्हां दे सिर ते मेरे पुरख अकाल दा साया, मेहर नज़र इक

उठाईआ। उहनां इक्को दे चरण ध्यान लगाया, दूसर अक्ख ना कोए मिलाईआ। तूं ते छोटा ढोला गाया, जन भगत तूं मेरा मैं तेरा गा के प्रभ दा दर्शन पाईआ। मैं सच दा सुख़न सुणाया, तैनूं अनबोलत दिता जणाईआ। एथे वेख लै ना कोई आपणा ना कोई पराया, सारे इक्को रंग रंगाईआ। जिस दा लहिणा उहो रिहा चुकाया, चुकन्नी तैनूं दयां कराईआ। कन्नां नूं हथ्थ ला ला जे कदी जन भगत आपणे जाल विच फसाया, तैनूं मिले सख्त सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। त्रैगुण कहे नारद जी ऐवें ना पा रौला, बोल बोल सुणाईआ। मैनूं वी ओसे बणाया मौला, जो हर घट रिहा समाईआ। उसे ने चखाई आपणी पाहुला, अमृत रस चवाईआ। ओसे ने घल्लया उपर धौला, धरनी दिती टिकाईआ। ओसे ने कीता इक़रार कौला, वायदा ल्या बणाईआ। ओसे ने रख्या मेरे अंदर ओहला, परदयां विच छुपाईआ। ओसे ने मेरा बणा के डोला, चहु जुगां दे कंधिआं उत्ते दिता टिकाईआ। ओसे ने मैनूं जुग जुग खिलाया होला, होली जगत वाली बणाईआ। ओसे ने मैथों वड्डुयां वड्डुयां दे सिर विच मरवाया पौला, माण हँकार दिता गवाईआ। ओसे ने साधां सन्तां दा ख़ाली कराया तौला, काया गढ़ कीती सफ़ाईआ। ओसे ने मेरे कोलों रावण दा फरकाया डौला, सीता नूं चुक्क के भज्जा चाँईं चाँईंआ। ओसे ने रुकमणी दे पिच्छे कृष्ण दे मगर लाया रुकमण दे साथीआं दा टोला, हाहाकार दिती मचाईआ। ओसे ने मेरे कोलों द्रोपदी चीर लुहाए बचन दे के पोला, आपणी कार कमाईआ। वे नारदा, अवतार जे कोई वड्डा आया ते धार के कला सोलह, सोलां कला वाल्यां नूं मैं गोपीआं दे पिच्छे दिता भवाईआ। जे कोई पैग़म्बर आया पा के हरा नीला चोला, मैं शाह ऐली वरगे नारद दे भरोसे उत्ते घात दिते कराईआ। मेरे नाल गल्ल फेर करीं पहिलां आपणा मूँह धो ला, पिछली मैल लुहाईआ। ऐवें ना भगतां विच वड़ पहिलों आपणे आप नूं बणा ला एस प्रभू दे दर दा गोला, गुलामां वाली सेव कमाईआ। एह समां वक्त अनमोला, अनमुलड़ा हथ्थ फेर ना आईआ। दुनियां दे शास्त्र वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी बणी विचोला, भगतां दा विचोला शब्द गुरु गुर गोबिन्द ल्या बणाईआ। जिस दा मुहब्बत वाला होला, फ़तिह वाला बोला, डंका पुरख अकाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, साचे कंडे सब नूं रिहा तोला, तोलणहार आपणी दया कमाईआ।

❋ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ मुणशा सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ❋

नारद कहे जिस वेले द्रोपदी दा हुंदा सी विआह, घर द्रोपद वज्जी वधाईआ। मैं मल के पिंडे उत्ते स्वाह, लंगोटी तेड़ लई रखाईआ। सच दवारे पहुंचया आ, आह ज़ोर दी लगाईआ। कुछ मैनूं दयो खुआ, भुक्खा नंगा दयो रजाईआ। सारयां हस्स के किहा इहनूं होया शुदा, बेअक़ल किधरों गया आईआ। इक हकीम उट्ठया ओह कहिंदा मैं दयां दवा, पुड़ी बग़ल विच्चों कढ्ढाईआ। नारद कहे मैं तूं ही तूं ही कह्हां, कहि कहि दिता सुणाईआ। नाले दस्सया हुण जुग बदल जाणा नवां, उस जुग दी होणी मैनूं द्रोपदी नज़री आईआ। उहनां फड़ के बन्नू दितीआं मेरीआं बाहवां, पुट्ठा दिता लटकाईआ। मैं बथेरा शोर पावां, ऊची कूक कूक सुणाईआ। बौहड़ी मैं परदेसी निथावां, मँगण आइआं क्यों गल विच पै गई फाहीआ। हुण मैं किधर नूं जावां, रो रो दिता सुणाईआ। फेर मैनूं गुस्सा चढ़या मैं किहा ओ कृष्णा, ओह काहना, तूं तां पंजां नूं इक नाल दवाउण आएयों लावां, ते मेरीआं इक दीआं लावां क्यों पंजां नालों तुड़ाईआ। मेरा हौके विच निकलिआ हावा, हाए हाए कीती दुहाईआ। कृष्ण कोल आया नाल चावां, हस्स के दिता वखाईआ। ओह नारदा पखण्डीआ दस्स हुण तैनूं किस बिध बचावां, मैनूं दे समझाईआ। मैं किहा त्रैलोकी नाथ जिस तरां पुत्र उठांदीआं गोद मावां, उस तरह मैनूं लै उठाईआ। सिर दे ठंडीआं छावां, अगनी अग्ग रहे ना राईआ। कृष्ण किहा ओह नफ़र, ओह नैण, छेती आ तेरे कोलों इस नूं खुल्हावां, बंधन देणा तुड़ाईआ। नौकर किहा मेरा जीअ करदा इक सीख तत्ती तावां, एस पखण्डी दी अक्ख विच देवां चुभाईआ। नारद कहिंदा ना ओए भरावा मैं ते सुआह मल के बणिआं ईं बावा, असल मैं सन्त भगवन्त दा नज़री आईआ। ओस ने किहा रौला ना पा वांग कावां, तैनूं फिरन नहीं देणा विच गरावां, घर घर विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। नारद कहे जिस वेले नैणू ने मैनूं खोल्हया, गुस्से विच आ के उस उँगल मार के मेरी अक्ख नूं चभो लिआ, पाणी दिता वगाईआ। मैं वी गुस्से विच बोलिआ, सराप दिता सुणाईआ। मैं किहा बचन सुण लै मेरा ढोलिआ, गीत दयां दृढ़ाईआ। हुण तां कृष्ण साथी तेरा कला सोलिआ, सोलां श्रृंगार वज्जे वधाईआ। जिस वेले मेरा साहिब आया अनमोलिआ, अनडिठ रूप बदलाईआ। उस भगतां दा दुआरा खोल्हया, वज्जे सच वधाईआ। तेरा मेरे वांग घर बाहर ना होवे एह परदा नहीं कोई ओहलिआ, तैनूं दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म वेख वखाईआ। नारद कहे मैं बोल के दिता दस्स, सच दयां सुणाईआ। जिस वेले आवे मेरा पुरख समरथ, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थ, पूरब सब दा झोली पाईआ। मेरा रिषी दा

कौल तेरे नाल पक्क, तैनूं दयां सुणाईआ। तूं जन्म लैणा रहे कोई ना शक्क, सहिसा दयां मिटाईआ। नारद कहे एसे कर के उस नैणू मुणशे दी इक है नहीं अक्ख, चोभ दे बदले मैं सारी दिती कढ्ढाईआ। जन भगतो वेखो प्रभू दा खेल जिस दे तुसीं पै गए वस, जुग जुग दा लेखा ना कदे भुलाईआ। किते एह ना समझयो इस तों ओहले जो मर्ज़ी करीए साडे ते केहड़ा पैणा शक्क, सहिसा ना कोए वधाईआ। नारद कहे मैं एसे कर के आया भज्ज, ला के अजपज पैंडा ल्या मुकाईआ। जन भगतो तुसीं अंदरों इहदे वस, तुहाडा मन चोरी किधर जाएगा नस्स, भज्जयां राह नज़र कोए ना आईआ। जे कोई ग़लती हो जाए बेनन्ती विच इकल्ले नूं दयो दस्स, भुल्ल आपणी लओ बख़्शाईआ। मैं नारद नहीं, मैं माया नहीं मैं डस्सणी नहीं सप्प, ज़हर कहर वाला ना कोए वरताईआ। मैं ते जन भगतो तुहाडे चरणां दी धूढ़ ते ख़ाक, नारद कहे मैं तुहाडा सज्जण ते तुसीं मेरे साक, सभना दा विचोला गोला बण के फेरा पाईआ। एह ते मेरा निक्का जिहा पार्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा धुर दा साथ, साथी समराथी इक अख्वाईआ।

✻ २२ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ हज़ारा सिँघ दलीप सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ✻

१०८३ २१

नारद कहे मैं तक्कया काल, कलकाती बल धराईआ। आपणी घालणा रिहा घाल, धायल हो के सेव कमाईआ। दीन दुनी दा लेखा वेख हाल, हालत फोल फुलाईआ। सच धर्म रिहा किसे ना नाल, ख़ाली भाण्डे नज़री आईआ। होया विछोड़ा सतिगुरु दलाल, नाम नामा मेल ना कोए मिलाईआ। मन कल्पणा सब दी बदली चाल, बुध्ध बिबेक ना कोए रखाईआ। अगनी लग्गी त्रैगुण माटी खाल, ततव तत रही जलाईआ। कूड़ा तोड़े ना कोए जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। घर दीपक देवे कोई ना बाल, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। निझर झिरना अमृत रस देवे ना कोए प्याल, बूँद स्वांती ना कोए टपकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। नारद कहे मैं काल तक्कया, चार कुण्ट दुहाईआ। मैं हस्स के किहा आ भाई मेरे सक्कया, किधरों आया पन्ध मुकाईआ। ओह खिड़ खिड़ा के हस्सया, ताली दो हथ्थां दिती लगाईआ। मैं वेख के आया मदीना मक्कया, काअबे रहे कुरलाईआ। साचा नूर किते ना तक्कया, जलवा जोत ना कोए रुशनाईआ। मैं टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेख्या वट्टया, पत्थरां फोल फुलाईआ। मैं समुंद सागर आया टप्पिआ, ज़िमीं असमानां पन्ध मुकाईआ। मैनूं सब दे उत्ते प्या शक्कया, सहिसा सके ना कोए गवाईआ।

गुर अवतार पैग़म्बर सिर ते हथ्थ किसे ना रख्या, ओढुन सीस ना कोए टिकाईआ। सदी चौधवीं किसे दी क़ीमत पए कौडी ना टक्या, धर्म दे हट्ट ना कोए विकाईआ। साचा लाहा किसे ना खट्टया, दीन दुनी होई हल्काईआ। मुहम्मद दा पूरा होणा पटिआ, पटने वाला दए समझाईआ। सब दी चोग जाए नखुट्टया, भण्डारा अग्गे ना जाए भराईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेला प्रभ प्रीती विच रत्तया, रतन अमोलक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। नारद कहे मैं काल नूं पुच्छया, प्रेम नाल बचन दिता सुणाईआ। ओह होया मैनूं गुस्सया, मथ्थे तिउड़ी रिहा पाईआ। उठ वेख, साध सन्त कलयुग अन्त प्रभ नाम कोए ना मत्तया, मतवाला नज़र कोए ना आईआ। क्रोध हँकार विच मत्तया, दीनां मज़हबां गंढु पवाईआ। साची मंज़ल कोई ना टप्पिआ, टप्पे हरफ़ां वाले गाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दरस किसे ना तक्कया, निज नेत्र लोचन नैण ना कोए रुशनाईआ। साचा करे कोई ना यग्गया, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्तिम कहर झक्खड़ वग्गया, वहिणां विच दुहाईआ। पुरख अकाल मैनूं किहा उठ काल दुलारे बच्चया, महाकाल तेरे नाल मिलाईआ। उन्हां वेख जिन्हां मेरा नाम नहीं जपया, मानस हो के भुल्ले आपणा नाम भुलाईआ। धर्म राए नूं किहा तूं अगनी तपाया भट्ठया, जोती लम्बू लाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां कर इक्कट्ठया, पुरख अकाल रिहा दृढ़ाईआ। तुसीं सारे दस्सो किस नूं तुसीं रख्या, मोहर नाम वाली लगाईआ। जेहड़ा तुहाडे प्रेम विच रत्तया, ओह मैनूं दयो मिलाईआ। मेरा नाम प्रभ कहे अक्खरां विच कदे ना छपया, निरअक्खर सोभा पाईआ। चार जुग किसे ना दस्सया, सिफ्तां वाली दस्सी पढ़ाईआ। कलयुग वेखो रैण अन्धेरी मस्सया, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। नारद कहे मैं चार कुण्ट नस्सया, भज्जिआ वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। नारद कहे काल फड़ के डौरु डंका, आपणी चोट लगाईआ। लेखा मुकाउणा राउ रंका, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। जेहड़ा लेखा पूरा नहीं होया राजे जनका, सो पूरा देणा कराईआ। झगड़ा मेटणा माटी वजूद तन का, ततव देणा समझाईआ। जिन्हां फेरया नहीं मन का मणका, ममता मोह लोभ विच हल्काईआ। टुट्टा नहीं गढ़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। नारद कहे काल बण के ज़ोरावर, आपणी लए अंगड़ाईआ। सिमर के इक्को वर, सीस जगदीश निवाईआ। उच्ची बोले खड़, कूक कूक सुणाईआ। मैं झगड़ा मेटां चोटी जड़, तन वजूद फोल फुलाईआ। आपणी करनी देवां कर, जो करता पुरख समझाईआ। दो जहानां लवां फड़, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। कलयुग वहिण रुढ़ावे हड़, हुक्म इक वरताईआ। पल्लू जुड़िआ रहे ना लड़, कन्नी कन्नी ना कोए

गंढ्ढाईआ। जो जन्मे सो जाए मर, मर जीवत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे सुण काल, काल दयां जणाईआ। काल कहे मैं बलवान, बलधारी नज़री आईआ। किरपा करी श्री भगवान, भगवन मेहर नज़र उठाईआ। मैनूं दे के आपणा दान, दाते दानी दिता समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा निशान, निशाने सारे देणे बदलाईआ। इक्को हुक्म करना परवान, परम पुरख दए दृढ़ाईआ। साचे मन्दिर बहिणा मकान, घर इक्को इक वखाईआ। सुणना अगला हुक्म फ़रमान, पहली चेत्र वंड वंडाईआ। किस बिध जगत युद्ध होवे घमसाण, घर घर दा लेखा दए समझाईआ। जिस नूं समझे ना कोए इन्सान, बुद्धी तों परे प्रभ दी दिसे पढ़ाईआ। जिस ने छुपाउणे सूरीए चन्द भान, नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। लहिणे मुकाउणे सीता राम, राधे कृष्ण लेखा दए चुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद खेल वेखणे आण, आनन फ़ानन आपणा वेस वटाईआ। नानक गोबिन्द पूरा करे बयान, जो रसना जिह्वा ढोला गाईआ। काल कहे मैं हुक्म मन्नणा उस सुल्तान, जो साहिब सतिगुर इक अख्वाईआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी विच जहान, जहालत ममता मोह देणी गवाईआ। सतिजुग साचा कर प्रधान, लोकमात देवे वड्याईआ। कूड़ी क्रिया ना रहे अन्ध अज्ञान, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। काल कहे मैं ओस दे चरण कँवल कर प्रणाम, हिन्दसे दस सीस निवाईआ। आदि जुगादि दा बरदा बण गुलाम, सेवक हो के सेव कमाईआ। नारद कहे ओह साहिब बड़ा मेहरवान, महबूब नूर खुदाईआ। जुग चौकड़ी लहिणा देणा चुकावे आण, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। मैं वी उस दे चरण करां ध्यान, निउँ निउँ लागां पाईआ। जिस दा खेल दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। सो पुरख साहिब सुल्तान, पातशाह नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी देवणहारा दान, दाता दानी मेहरवान मेहरवान मेहरवान, मेहरवानी आप कमाईआ।

१०८५
२१

* २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ प्यारा सिंघ ते हज़ारा सिंघ दे घर पिंड बाऊपुर *

नारद कहे दस्सो हज़रत ईसा, ईसउल इस्लाम नज़रे करम उठाईआ। किहो जिहा होणा तेरा बीसा, बिसवेदारी दी वंड की वंडाईआ। जाणो आपणा कीता, की करनी कार कमाईआ। छड्ड के सिख्या गीता, अञ्जील दिती पढ़ाईआ। नाता तोड़ के राधा सीता, गॉड गुड दिता दृढ़ाईआ। हुण किथ्थे तुहाडा मीता, मैनूं दयो जणाईआ। नाले नारद कहे मैं रो के मारीआं चीकां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ईसा ओसे वेले आपणीआं लाईआं नीझां, हस्ती हस्ती विच्चों प्रगटाईआ।

साडीआं पूरीआं होण वालीआं तरीकां, तुराइतां देण गवाहीआ। जिस ने मेटणा दीनां मज़हबां दा शरीका, लाशरीक नूर खुदाईआ। ओसे उत्ते ला के बैठे उम्मीदां, आसा होर वधाईआ। जिस दा मार्ग होणा सीधा, पगडंडी ना कोए भवाईआ। पिछली कीती उत्ते मार के लीकां, रस्ता इक्को देणा वखाईआ। सब दीआं बदल देणीआं नीतां, अंदरों करे सफ़ाईआ। आत्म दा होवे मीता, मित्र प्यारा आप हो आईआ। सद रहे जगजीता, जगजीवन दाता नूर खुदाईआ। हुक्म देवे अनडीठा, अगम्म आप सुणाईआ। सानूं भाणा लग्गे मीठा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सुणीए हक़ हदीसा, जो करे हक़ पढ़ाईआ। उम्मत दी पूरी होई रीझा, वेला वक्त दए गवाहीआ। नारद किहा वाह वाह हज़रत जी पिछला वेला वेखो बीता, अग्गे ध्यान लगाईआ। तुहाडे मुरीद बाहरों ज़रूर वेंहदे शीशा, अंदरों करे ना कोए सफ़ाईआ। सब दा ख़ाली होया ख़ीसा, कलमा पाकट जेब ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे ईसा जी जो किहा सो राईट, रिटन दी लोड़ रही ना राईआ। योरप विच बाहरों चम्मढ़ी सब दी वाईट, बलैक बलाईंड अंदरों वेख वखाईआ। उच्ची लम्मी वेखी हाईट, हैट टोप सीस टिकाईआ। इक दूजे नूं सारे कहिंदे वाईट, दुरमति मैल ना किसे धवाईआ। सच नाल सारे करदे फ़ाईट, झूठ नाल चतुराईआ। नारद कहे ईसा जी मैनूं दस्सो कितनयां पोपां दे अंदर आई लाईट, शमां कौण रुशनाईआ। केहड़ी पकड़ी साईड, मैनूं दयो दरसाईआ। किस अस्व घोड़े हारस उत्ते हुंदे राईड, भज्जण चाँईं चाँईंआ। किस बिध अन्तिम सारे होणे डाईड, सिर सके ना कोए उठाईआ। लेखा रहे ना कोए बीहाइन्ड, सन्मुख हो के नज़री आईआ। लहिणा देणा किस बिध मुक्के सदी बीसवीं गाईड, भेव अभेदा देणा खुलाईआ। चारों कुण्ट तक्को तुहाडे हुन्दयां क्यों होई अन्धेरी नाईट, जलवा नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। ईसा कहे नारद बड़ी गल्ल दस्सी अच्छी, सोहणी मोहे भाईआ। नारद किहा होर दस्सां कलमे वाले सारे खांदे मच्छी, मछलीआं कुण्डीआं विच फसाईआ। यसूह जी तुहानूं यसूह दी जगह कहिण डहि पए यसी, मसीह कहि के मसला हल्ल ना कोए कराईआ। उठ वेख तेरी उम्मत मूसा वाल्यां नाल रही फसी, फ़ैसला हक़ ना कोए सुणाईआ। मुहम्मद तूं दस्स आमीन कहिण वाल्यां नूं पैण वाली गशी, आबेहयात मुख ना कोए चवाईआ। आह वेख लओ आपणे दीन मज़हब दी रस्सी, जो रस्ते सब दे रही खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। नारद कहे ईसा जी मैं बड़ी तक्की ऐजूकेशन, तालीमयाफ़ता नज़री आईआ। पर तुसीं दस्सो केहड़ी दस्सी डिकटेशन, हरफ़ हरूफ़ लफ़ज़ तलफ्फ़ज़ आए समझाईआ। मैं जिधर तक्कया मैनूं उलटा दिस्सया फ़ैशन, फ़िश खाण वाले फाहिश रूप

१०८६ २१

वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। ईसा कहे मैं दस्सां हक़ तशरीह, इक खुदा जणाईआ। ओस दा पैग़ंबर बण मसीह, मसला इक्को इक दृढ़ाईआ। जिस दा खेल सदा वसीह, पैमानिआं विच ना नाप कराईआ। ओह जल्वागर नूर रब्बी, बेपरवाह नूर अलाहीआ। ओसे नूं मन्नणा सभी, समझ आया समझाईआ। सच खुदा ना भुल्लणा कदी, जो क़दीम दा मालक धुरदरगाहीआ। अन्त अख़ीर संदेसा दिता बीसवीं सदी, सदमें विच दुहाईआ। कूड़ कुड़िआरां दी वहिंदी नदी, किनारा पार ना कोए कराईआ। इक वखा के आया गधी, जिस नूं डंकी कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। नारद कहे मैं ज़बह हुंदी वेखी गाँ, गऊ ग़रीब दुहाईआ। जिस नूं कहिंदे माँ, तुहाडे मुरीद क्यों बणे कसाईआ। की एहो क़लमा सच्चा नाँ, परवरदिगार दिता पढ़ाईआ। पशू खाणे नाल चा, आपणा मन प्रचाईआ। ईसा सिर फड़ के कहे नांह, नीवीं नज़र टिकाईआ। मैं लेखा लिख्या किसे नहीं थाँ, मेरा लेखा दए गवाहीआ। मैं रो के मारी धाह, उच्ची कूक सुणाईआ। बिना खुदा तों मेरा होर नहीं कोई गवाह, शहादत क़लमा इक भुगताईआ। मैं कर के आया दुआ, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मेरे मालक मेहरवां, महबूब तेरी सरनाईआ। तेरे क़दमां बलि बलि जां, निवाज़श विच सीस झुकाईआ। तूं सब दा पिता माँ, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मैं वेख्या योरपीन, यहूदी खोज खुजाईआ। जिन्हां ईसा मूसा लई तालीम, तुलबा आपणा आप बणाईआ। ओह छड्ड के धरत ज़मीन, उडण चाँईं चाँईंआ। खेल जगत नवीन, तन रहे वखाईआ। हज़रत ईसा सच दस्स कदों ओहनां होणा ग़मगीन, कवण वेला वड्याईआ। की लेखा रूसा चीन, चैन लैण कोए ना पाईआ। एह मार्ग बड़ा महीन, बिन पैग़ंबरां समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। नारद कहे मैं छेती कीती फुरती, चलाकी विच वड्याईआ। फड़ के डाहवां कुरसी, हज़रत ईसा तैनूं दयां समझाईआ। तूं फेर ख़बर दस्सीं कोई धुर दी, तेरी करां वड्याईआ। तूं धार सें सच्चे सतिगुर दी, जो निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस दी कीती कदे ना मुड़दी, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ओस दी ख़ाहिश सदा लोड़ दी, लोड़ींदा सज्जण नूर अलाहीआ। जो विछड़यां सदा जोड़दी, जोड़ी आत्म परमात्म दए बणाईआ। कुछ ख़बर दस्स दे ऐस समें अन्ध घोर दी, सदी चौधवीं ध्यान लगाईआ। की हालत होणी ठग चोर दी, निन्दया निन्दक मिले की सज़ाईआ। की दुहाई दिसे पैग़ंबरां वाली गोर दी, नबी की जणाईआ। नूह नदी अन्तिम किवें रोढ़दी, वहिणां विच वहाईआ। की हालत होणी जगत

शौहर दी, शौहर की की खेल खिलाईआ। की दशा विगड़ी कमज़ोर दी, मजलस हक़ ना कोए बणाईआ। एह खेल बड़ी हज़रत जी ग़ौर दी, पर्दा देणा उठाईआ। जे तुहानूं नहीं कुछ औड़दी, फिर मैं तुहाडा परवरदिगार दयां मिलाईआ। एह गली बड़ी भीड़ी दिसे सौड़ दी, अगला पन्ध ना कोए चुकाईआ। जिन्हां ने मच्छी खाधी समुंद सागर तलाबां वाले जौहड़ दी, जोरू ज़र देण गवाहीआ। मेरी गल्ल ना समझयो कौड़ दी, जो वेख्या दिता सुणाईआ। तुसीं आवाज़ सुणनी शब्दी घोड़े गोबिन्द वाले पौड़ दी, पौड़ी डंडे सब दे दए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी वेख वखाईआ। ईसा कहे तूं कौण होवें मुशटंडा, मैनूं रिहा दबाईआ। हथ्थ विच फड़ के चालू बन दा डंडा, सज्जे खब्बे हथ्थ हिलाईआ। तूं कौण बोधी वाला बन्दा, हिन्दू ज़ाती नज़री आईआ। मेरा खुदा मेरा बाप नूरी चन्दा, नूर जोत रुशनाईआ। नारद हस्स के कहिंदा, हज़रत ईसा जी, ओह बड़ा चंगा, जिस ने तुहानूं दिता भुलाईआ। हुण अन्त अख़ीरी तुहाडा वेखे कन्ढा, घाटां ते बैठे सारे राह तकाईआ। तुहाडे विच तुहाडे कोलों पवाउणा दंगा, झगड़ा झगड़े विच वखाईआ। ओम हरी, ओम तत सति, जिस ने माण रहिण नहीं दिता गंगा, गोदावरी जमना
१०८८ सुरस्ती सिर कीता नंगा, रावी रवैत ना कोए कराईआ। जिस ने गोबिन्द दा आपणे विच छुपा के खण्डा, तन वजूद दिता १०८८
मिटाईआ। जिस ने लहिणा देणा आपणे हथ्थ रख ब्रह्मण्डा, विष्न ब्रह्मा शिव सेवा विच भवाईआ। जिस ने आदम हव्वा
२१ दे के आपणा अनन्दा, रस दिता चखाईआ। ओह तेरा खुदा धुर दा नूर मेरा पिता सदी बीसवीं शब्द अगम्मी निरगुण धार २१
लै के आपणा डंडा, डंडावत तुहाडी सारयां दी दए बदलाईआ। तुसीं दीनां मज़हबां दा लैंदे आए पंगा, गल्ल कहिणी नहीं सी पर मैं कहि के दिती सुणाईआ। हुण ओह नाम दा लै के रंदा, तुहाडी सारयां दी करे सफ़ाईआ। तुसीं सारे जो प्रभ दे नाम दा उगराहिआ चन्दा, लै के आउणा थाउँ थाईंआ। कोई पैंट संभाले कोई तम्बा, कोई धोती जञ्झू सांभ सूत के भज्जे वाहो दाहीआ। नारद कहे पैग़म्बरो रसूलो नबीओ तुहानूं नहीं पता मैं एसे कर के चार जुग दा रंडा, ना कोई धी आ ना कोई पुत्त ना कोई भैण ना कोई भ्रा, ना कोई धी ना कोई जुआई, ना कोई जम्मे ना कोई मरे, नारद मुनी आपणी खेल विच जुग चौकड़ी भन्ने, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा अछल अछेदा आपणा दए खुल्हाईआ। ईसा कहे एह कौण, केहड़ा करी जांदे फ़ोन, डरैकटरी केहड़ी हथ्थ फड़ाईआ। केहड़ा सबक केहड़ी सिख्या केहड़ा मज़मून, केहड़ा करे पढ़ाईआ। नारद कहे पैग़म्बरो तुहानूं नहीं मालूम, तुसीं बच्चे मासूम, कलयुग दे जम्मे कलयुग विच आपणा अन्त कराईआ। मैं उस दा ममनून, जेहड़ा कदे ना होवे

मरहूम, सारे इल्मां दा आलम अलूम, आलीशान नज़री आईआ। जिस दे झुकदे तुसीं क़दूम, क़लमे दी मस्ती विच रहे झूम, जिस ने नबी पैग़म्बरां दे बणा दिते हजूम, हुजरिआं विच दिते सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे वेख लओ आपणी तख्ती, ए टू ज़ैड फोल फुलाईआ। तुहाडे उत्ते आउण वाली सख्ती, प्रभ दा सख्त हुक्म दिता जणाईआ। जे तुसां नहीं कीती, तुहाडी उम्मत ने कीती ग़लती, ग़लती दे ज़ुमेवार तुहानूं दिता ठहिराईआ। क्यों तुसीं आपणयां मज़हबां दे निध परती, प्रतिनिध हो के आपणा हुक्म दिता जणाईआ। तुसीं कुछ मशवरा कीता सी उस ख़ुदा नाल अर्शी , जो अर्शी प्रीतम बेपरवाह अख्वाईआ। नारद झट छाती उत्ते हथ्थ मारया जेब विच्चों कढ्ढी पर्ची, आह लओ तुहानूं दयां वखाईआ। परमात्मा किहा तुसीं छड्डुणे मन्दिर ते वड़ना विच चरचीं, चोरी चोरी तुहानूं गल्ल दिती समझाईआ। ओह मेरा मालक प्रीतम अर्शी , अर्शां दा मालक इक अख्वाईआ। सवाधान हो जाओ आया उत्ते धरती, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। तुहाडी रहिण नहीं देणी अन्धेर गर्दी, ज़ुलम ज़ालम ना कोए कमाईआ। तुहाडी चलणी नहीं अग्गे मर्ज़ी, प्रभू तुहाडा तबीब आया धुरदरगाहीआ। नारद कहे एह गल्ल सुण के हज़रत नूं लग्गण लग्गी सर्दी, जिस ने सिर पैर दिते कम्बाईआ। फिर याद आ गिआ, मैं इक दिती सी आपणी अगम्मी अर्ज़ी,
१०८९ १०८९
आरज़ू विच जणाईआ। ऐ मेरे मालक एह मेरा मज़हब फ़रज़ी, अन्त संग ना कोए रखाईआ। मैं वीहवीं सदी तक इन्हां
२१ २१
दा दर्दी, फेर साथ ना कोए निभाईआ। नारद किहा हज़रत जी ज़रा लहिंदउँ वेखो खां दिशा चढ़दी, आपणा नैण उठाईआ। जिथ्थे रावी आपणे वहिणे विच हड़्दी, आपणे वहिण जणाईआ। उथ्थे जोत प्रकाश नरायण नर दी, निरवैर सोभा पाईआ। सर्ब दी आत्मा परमात्मा ढोला पढ़दी, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। ईसा कहे, वाह नारद जी तूं ते ख़बर सुणाई ओसे दे घर दी, जिस नूं मैं पिता कर के आया गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा वेख वखाईआ। नारद कहे ईसा जी, तुसीं कहिंदे होवोगे बड़ा शरारती, नफ़रत शरअ नाल कराईआ। मैं कोई आउँदा नहीं सफ़ारशी, प्रभ दे हुक्मे अंदर कार कमाईआ। मैं चार जुग सब दी कथा वेखदा रिहा इबारती, जो अक्खरां नाल जोड़ जुड़ाईआ। बहुते अवतार गुरु वेखे विच भारती, भारतवर्ष दए गवाहीआ। फेर पढ़ी उर्दू फ़ारसी, अंग्रेज़ी तेज़ी नाल तेरे विच टिकाईआ। एह खेल ओस निरँकार दी, जेहड़ा निरगुण नूर अलाहीआ। जिस नूं तुहाडी आशा वाजां मारदी, कूक कूक सुणाईआ। एह खेल ओसे सरकार दी, जो सिर सिर लहिणा रिहा मुकाईआ। तुसीं वेखी नहीं खेल खण्डे दी धार दी, जो गोबिन्द गया चमकाईआ। जो सब दी पैज संवारदी, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। ओह अन्त कलयुग कूड़ी क्रिया नूं वंगारदी, होके

दए जणाईआ। जिस ने आशा पूरी करनी गुरु अवतार दी, पैग़म्बरां मूल चुकाईआ। क़ीमत पाउणी तुहाडी गुफ़्तार दी, जो गुफ़्त शनीद आए सुणाईआ। पर तुसां धार समझी नहीं ओस दी रफ़तार दी, लम्मे पैंडे किस बिध छेती नाल मुकाईआ। आपणीआं गंढां खोल्हो जिस विच चिट्ठी इस इक़रार दी, जो इक़रारनामे फोल फुलाईआ। हुण कोई घड़ी नहीं तकरार दी, झगड़ा अग्गे ना कोए वखाईआ। मेरी सेवा लग्गी नारद कहे, बरखुरदार दी, बेख़बरो तुहानूं रिहा जगाईआ। तुसीं सवाधान हो जाओ तुहाडी घड़ी आई इसतक़बाल दी, महबूब नूं मिल के आपणा सीस देणा झुकाईआ। तुसीं खेल वेखणी ओस जल्वागर जलाल दी, जो ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। तुहाडे कोल गुंजाइश नहीं रहिणी कोई सवाल दी, बेनन्ती अवर ना कोए जणाईआ। अग्गे प्रभ नूं मिलण वास्ते लोड़ रहिणी नहीं किसे दलाल दी, आत्मा परमात्मा दा सिध्धा नाता देणा बणाईआ। जेहड़ी जुग चौकड़ी घालणा रही घालदी, धायल हो के आपणा आप मिटाईआ। हज़रत जी मैं ते ख़बर दस्सण आया प्रैज़ैंट हाल दी, हालत सच्ची दयां जणाईआ। हुण मेरी वारी आउणी मग़रब दे पिच्छों शुमाल दी, रशीआ दा रेशा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा धार रखे आपणी चाल दी, निराली आपणी कार कमाईआ।

१०९० १०९०

२१ २१

✻ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ भाग सिँघ दे घर पिंड बाऊपुर ✻

नारद कहे भगतो तुसीं ओथों एथे आए ते मैं पहुंच गया विच रूस, रुस्तम हो के फेरा पाईआ। मैं जा के बण गया मनहूस, ग़रीबां वाला वेस वटाईआ। सौं गया जा के रूफ़, आपणीआं अक्खां बन्द वखाईआ। ज़ोर ज़ोर दी प्या सूक, लम्मे लम्मे साह लै के आपणा साह चलाईआ। किसे नूं पता ना लग्गा एह किस दा दूत, किस कारण एथे आईआ। सारे कहिण एह कोई भूत, बेताला डेरा लाईआ। मैं घेसल मार के बण गया जसूस, आपणा आप बदलाईआ। ओह गल्लां करन लग्गे मैं विच्चों हस्स के किहा, तुसीं मालक के मौरूस, मैनूं दयो समझाईआ। उन्हां नूं होया शकूक, उन्हां मैनूं फड़ के ल्या बंधाईआ। मेरे कन्न फड़े भवाया चारे कूट, मैं वी डरदे छेती छेती पासा ल्या बदलाईआ। फिर मैं मारया झूठ, सब नूं दिता सुणाईआ। उन्हां मेरा बन्द कर दिता मूँह माऊथ, मुख साह लैण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे मैं जसूसी विच बड़ा चातर, उन्हां विच मिल के ओहो रूप बणाईआ। मैं करन लग्गा उन्हां दी ख़ातर, सेवा सच कमाईआ। फेर मैं जेब विच्चों पुराणी कढ्ढ के दिती पात्र, चिट्ठी दिती फड़ाईआ।

जिस दे उत्ते निशान सी सिट्टा दातर, दाते दिता दृढ़ाईआ। उह लग्गे वाचण, समझ किसे ना आईआ। मैं छेती नाल मूँह विच पा के दातन, आपणा पासा ल्या बदलाईआ। उह मैनूं लग्गे आखण, सानूं दे समझाईआ। मैं ऐवें लग्गा वाचण, अक्खां उपर नीचे कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। नारद कहे, भरावो, मैं लै के आया पैग़ाम, तुहानूं दयां सुणाईआ। तुहाडा केहड़ा मज़हब केहड़ा इस्लाम, मैनूं दयो दृढ़ाईआ। की तुसीं मूसा नूं करो सलाम, कि ईसा नूं सीस निवाईआ। की मुहम्मद नूं करो प्रणाम, सजदयां सीस झुकाईआ। की राधा कृष्ण दा गाओ गान, बंसरीआं धुंन शनवाईआ। की सीता राम दा धरो ध्यान, अन्तर अन्तर लिव लाईआ। की हनवन्त मन्नो बलवान, बजरंग आपणा रंग रंगाईआ। की कहो सतिनाम, नानक जोड़ जुड़ाईआ। की गोबिन्द मन्नो जहान, वाहिगुरु सिफ्त सालाहीआ। की तुहाडा धर्म की ईमान, मैनूं दयो जणाईआ। की अल्ला वाहिगुरु ओम रसना जेहवा गाओ गान, गा गा की जणाईआ। सारे हो गए हैरान, मेरे वल अक्खां रहे उठाईआ। एह कोई आ गया सुल्तान, सानूं उलटी करे पढ़ाईआ। जेहड़ा दिसदा नहीं भगवान, उस केहड़ी करनी कमाईआ। जेहड़े गुर अवतार पैग़ग्बर छड्ड गए जहान, परत के फेर कोए

१०९१ ना आईआ। जेहड़े दीन मज़हबां जणा गए नाम, उह नाम करन लड़ाईआ। जेहड़े धर्म झुला गए निशान, ओह मनुषी १०९१

२१ वंड वंडाईआ। जेहड़े ज़ातीआं विच वंड गए इन्सान, उह पीण खाण झगड़ा रहे वखाईआ। फड़ो इहनूं मारो कुट्टो एह २१

बड़ा बेईमान, की सानूं रिहा सुणाईआ। नारद कहे, मैं लग्गा पछतान, अग्गे पिच्छे वेख वखाईआ। मैनूं दिसे ना कोए बिबान, जिस उत्ते चढ़ के उड जावां चाँईं चाँईआ। उने चिर नूं इक आ गया किरसान, उन इक्ठीआं फड़ मेरीआं दोवें बाहीं मैनूं लग्गा ज़ोर ज़ोर दी हिलाण, ब्राह्मणा किथों खा के झट्ट लँघाईआ। साडा इजाज़त नहीं दिन्दा विधान, विहलयां अन्न ना कोए खवाईआ। मैं हरी ओम, हरी ओम, हरी ओम, कहि के याद कीता भगवान, उन्हां गिचीउँ फड़ के मेरा मथ्था ज़मीन उत्ते दिता घसाईआ। मैं नेत्र नैणां नीर लग्गा वहाण, उच्ची उच्ची दिती दुहाईआ। मैं हस्स के किहा, ताली मारी, तुसीं सारे ई वड्डे मेरे नालों भगवान, सारयां नूं नमों नमों कर के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा वेख वखाईआ। नारद कहे, फेर उह मैनूं कहिण लगे कोई आ गया फ़रिश्ता, फ़रेबी रूप वटाईआ। मैं किहा, मेरा ते तुहाडे नाल पुराणा रिश्ता, रिश्तेदारो तुहानूं मिलण आया चाँईं चाँईआ। हाल दस्सां गुज़शता, गुज़रया दयां दृढ़ाईआ। तुसीं ते हुण चार वरन सांझे बणे आहिस्ता आहिस्ता, नानक पंज सौ साल पहिलों सब नूं गया समझाईआ। तुहाडा अजे आपणे उत्ते पूरा होया नहीं निसचा, निहचल नजर कोए ना आईआ। अजे

वी हुक्मरानों तुसीं बादाम गिरीआं खांदे पिसता, रशीआ विच रहिण वाले अद्धयां नालों बहुते भुक्खे रह के झट लँघाईआ। एसे कर के तुहानूं आउण वाली शिकस्ता, हार होवे थाउँ थाईंआ। तुसीं इक ते आपणा इक नहीं मन्नया इष्टा, आपणे उत्ते विशवास ना कोए रखाईआ। अजे वी तुहाडे विच इक दूजे दा सुटदे विष्टा, प्रधाना दे घर ग़रीब सेव कमाईआ। जिस वेले मेरे मालक ने तुहाडीआं सब दीआं फोलीआं लिस्टां, इकल्ला इकल्ला वेख वखाईआ। फेर तुहानूं पता लग्गणा किहदी खुल्ही दृष्टा, कौण सच विच समाईआ। मेरा मालक टांक तुसीं सरगुण रूप उसदी जिस्ता, जिस ने आत्म नाल जिस्म ज़मीर तुहाडी दिती बणाईआ। ओह आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दे लेख लिखदा, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। ओह जिनसां वांगू हट्टां विच नहीं विकदा, किताबां वांगू कुतबख़ान्यां विच ना कोए छपवाईआ । जग नेत्रां नाल ऐनकां वाल्यो नहीं दिसदा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। साफ़ सुथरयां नहात्यां धोत्यां पढ़यां लिखयां उत्ते कदी नहीं विसदा, सोहणयां मनमोहणयां उत्ते धरवास ना कोए वखाईआ। जेहड़ा उस दी सरन सरनाई डिग्गदा, उहदा झगड़ा मुक जाए जगत वाली बिध दा, तरीका आपणा इक दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं तुहाडा होवण आया भेती, तुहाडे विच वड़ के तुहानूं वेख वखाईआ। जिस तरृां तुसीं तरक्की करदे छेती छेती, आपणा कारोबार वधाईआ। एसे तरृां तुसीं उस मेरे प्रभू दी खेती, छेती वॅढ के सांभ सूत के आपणे घर टिकाईआ। याद रख लओ शमाल वाल्यो मेरी नेकी, निक्कयां वड्डयां दयां जणाईआ। अन्त सब नूं उस दी रखणी पए टेकी, बिना टेक तों टका क़ीमत कोए ना पाईआ। हुण तुसीं सारे कहिंदे मनुश मनुषां विच्चो पैदा हुंदे बेटा बेटी, क़ुदरत क़ुदरत नाल वड्याईआ। एह खेल थोड़े दिन होर जाणी खेडी, फेर खडावण वाला नज़र कोए ना आईआ। हुण तुहाडी क़ीमत सब नालों बहुती ते दूज्जयां नालों डिउडी, आपणा गुणा रही वधाईआ। फेर तुसां ऐं फिरना जिवें जंगलां विच भेडी, मालक नज़र कोए ना आईआ। एह लिख के गया नानक वेदी ते गोबिन्द सोढी, सोढीआं दा मालक ख़ालक प्रितपालक परम पुरख अख्वाईआ। ओह आउण वाला सब दे कोल नाल तेज़ी, रफ्तार आपणी रिहा बदलाईआ। नारद कहे इहो ख़बर मैं दस्सण आया परदेसी, देस वाल्यो दयां जणाईआ। अन्त सब नूं भुगतणी पैणी उस दे कोल पेशी, पेशतर दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, नारद कहे नौ खण्ड पृथमी वाल्यो तुसीं उस दे दर उत्ते कदी नहीं बदेशी, देशां दा मालक इक्को नज़री आईआ।

❋ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ वरखा सिँघ दे गृह पिंड बाऊपुर ❋

नारद कहे मैं गया विच नारथ, नारथ पोल वेख वखाईआ। ओथे सारे बैठे जिन्हां दा जगत दा स्वार्थ, आसा मन वधाईआ। प्रेमी मिल्या ना कोए परमार्थ, परमानंद ना कोए जणाईआ। जिधर जावां मेरे उत्ते लग्गी गारद, पहरा दिता जणाईआ। किसे अंदर वसिआ ना कोए पुरुषार्थ, पुरुषार्थी नज़र कोए ना आईआ। मैं बचन दस्सया यथार्थ, यदी दिता समझाईआ। भावें किन्ने खाइओ पदारथ, पदवी मिले ना धुरदरगाहीआ। मैं ज़ोर नाल किहा जे नहीं लम्भया ते हुण वेखणा पऊ विच भारत, भारतखण्ड वज्जे वधाईआ। खोजणी नहीं कोई सफ़ारश, विचोला कोई नज़र ना आईआ। रातीं सुत्यां तुहाडे प्रधानां नूं होवे ज़िआरत, चश्म दीद रुशनाईआ। फेर तुसां समझणा कोई दीन दुनी दा आया वारस, ज़ुम्मेवार अख्वाईआ। जिस दे कोल दीनां मज़हबां दी नहीं आड़त, नाम आपणे हट्ट विकाईआ। जिस नूं समझाए ना कोई इबारत, लेखनी लेख ना कोए दरसाईआ। उस ने दीन दुनी दी बदल देणी वज़ारत, उज़रा रहिण कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट पैणी कुरलाहट, कूक कूक सारे देण गवाहीआ। उस दे आउण दी सारे सुण लओ आहट, आवाज़ दयां जणाईआ। जिस ने उलटे करने घाट, पाणी वहिण बदलाईआ। रहिण नहीं देणे तीर्थ ताट, अठसठ पन्ध मुकाईआ। चढ़न देणे नहीं तुहाडे बिबान राकट, राकट आपणा नाम चढ़ाईआ। भावें कोट पतलून पहनो भावें जाकट, जगह सब नूं दए समझाईआ। हुण ते रशीआ वाल्यो तुसीं दिसदे नास्तिक, प्रभ दा नाम ना कोए ध्याईआ। मैं दस्सण आया वास्तक, वाक् दयां सुणाईआ। तुहाडा चम्मड़ा कूला प्लास्टिक, बनाओटी नज़री आईआ। जिस वेले प्रभ दे नाम दा लग्गा कास्टिक, अंदरों बाहरों करे सफ़ाईआ। किसे कम्म नहीं आउणी जगत वाली सियासत, स्याह झण्डीआं सब नूं दए वखाईआ। धन्न दौलत दी ख़ाली होवे पाकट, गिरहा गिरेबान ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट दह दिशा लग्गणी आतश, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद करनी साजश, झगड़ा तुहाडे गल विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे मैं गया नाल चलाकी, आपणा वेस वटाईआ। लँघ गया विच्चों दी निक्की ताकी, जिस दी समझ किसे ना आईआ। तक्के बन्दे ख़ाकी, तन वजूद सुहाईआ। मन होया आक़ी, इन्कार विच दुहाईआ। जगत जाम प्याले पीण बण के साकी, आबेहयात ना कोए प्याईआ। कल्पणा विच होए आक़ी, हँकार गढ़ तुड़ाईआ। मैं किहा पहिलों आपणी पछाणो ज़ाती, कौण तुहाडी बणत बणाईआ। वेला आउणा तुसीं कर ना सको आपणी राखी, रखक होए ना कोए सहाईआ। मेरा कहिणा समझो ना कोए गुस्ताख़ी, सहज सुभाउ आपणे आप जणाईआ। गिल्ला गोहा धुखदा वेख्यो ईंधन पाथी, पत्थरां

दे आर पार दुहाईआ। अन्तिम नेड़े आ गई वाटी, पैंडा रिहा ना राईआ। सब दी करे छाँटी, वेखे जगत लोकाईआ। नाता तुट्टे चाची ताई फूफी आंटी, अंकल नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे मैं गया नारथ वाली सिम्मत, आपणा पन्ध मुकाईआ। जिधर तक्कां सारे प्रभ दे निन्दक, नाम वाला नज़र कोए ना आईआ। मेरे अन्तर आई चिन्तक, चिन्ता विच आपणा आप वटाईआ। क्यों दुनियां होई हिंसक, अहिंसा ना कोए रखाईआ। मैं सहज नाल कीती मिन्नत, निउँ के मँग मँगाईआ। कुछ आपणी करो हिम्मत, हौसला लओ वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खलाईआ। नारद कहे मैं की दस्सां अजब कथा कहाणी, कहि के दयां जणाईआ। जिस नूं वेखां उह कहे मैं महाराणी, दूजा वड्डा नज़र कोए ना आईआ। जिधर तक्कां पंज तत शैतानी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। जिधर तक्कां मनसा दी महिमानी, ममता घर घर रही खवाईआ। जिधर वेखां क्रिया कूड़ जवानी, जोबन हउमे रही प्रगटाईआ। जिधर वेखां नेत्र नैण मारन कानी, अक्ख अक्ख बदलाईआ। जिधर तक्कां हुंदी जाए हैरानी, परेशानी विच दुहाईआ। मैं हथ्थ रख्या आपणी उत्ते पेशानी, दूर दुराडा ध्यान लगाईआ। जां दूर वेख्या मैनूं ओह दिस्सया जेहड़ा बच्चयां दी दे गया क़ुरबानी, सूरबीर अख्वाईआ। उन इशारा दिता मैनूं मंज़ल होर दस्सी रुहानी, रूह बुत तों परे कर वखाईआ। जिथ्थे जल्वागर लासानी, निरगुण बैठा सोभा पाईआ। जगे जोत नूर नुरानी, निरगुण करे इक रुशनाईआ। जो शाह पातशाह शहिनशाह सुल्तानी, सुरती सब दी दए बदलाईआ। रहिण देवे ना किसे दी पहिलवानी, जोरू ज़र दा डेरा ढाहीआ। मेट देवे जगत विद्वानी, विद्याहीण करे लोकाईआ। जिस ने दुनियां दस्सी फ़ानी, फ़नाहफ़िल्ला उहो दए कराईआ। मैनूं ऐं दिसदा एह खेल चार डंगी महिमानी, महिमानख़ाना लोकमात रिहा वखाईआ। अन्तिम सब दी जूह होई बेगानी, घर दा मालक नज़र कोए ना आईआ। सब ने चोटी छड्डणी जेहड़ी ठंडी दिसे बरफ़ानी, सीतल सति ना कोए कराईआ। सब ने सरोवर तजणे समुंद सागर जो छल्लां वाले पाणी, लहरां विच्चों लहर बदलाईआ। सब ने माण छड्डणे ज़िमीं असमानी, माण रखे ना कोए लोकाईआ। नारद कहे मैनूं दुनियां दिसे बेगानी, बेवा रूप जणाईआ। भावें मैनूं सारे कहिण एह करदा फिरे शैतानी, पैग़म्बरां दे घरां विच अगनी लाईआ। भावें मेरी सारे करन बदनामी, बदी दा चोला मेरे गल विच पाईआ। मैं ते हुक्म मन्नणा इक्को अन्तरजामी, जो जुग जुग संदेशे दए पहुंचाईआ। मैं किसे दा सुणदा नहीं कलमा कलामी, कायनात भय ना कोए रखाईआ। जिथ्थे नहीं कोई पुज्जदा उथ्थे जा के मैं आपणी गड्डां निशानी, मेरी निशानी मेरा बोलबाला नज़री आईआ। मैं सब नूं दस्सण आया वेखो तक्को पैग़म्बरां दा पैग़म्बर अमामां

दा अमाम सुल्तानी, शहिनशाह शाह असमानी दो जहानी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नारद कहे मेरा वारस मेरा जीव प्रानी, प्रानपति मेरा ओहो नज़री आईआ।

✻ २३ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ आसा सिँघ बलाका सिँघ दे घर पिंड बाऊपुर ✻

नारद कहे मैं भज्जां दीन दुनी, नौ सत्त फेरा पाईआ। मिल्या कोई ना ऋषी मुनी, मुनी मुनीशर नज़र कोए ना आईआ। अन्तर आत्मा वज्जदी दिसे ना कोई धुनी, धुन आत्मक राग ना कोए अलाईआ। बोध अगाध लभ्भे कोई ना गुणी, गुणवन्त सोभा कोई ना पाईआ। मैं सृष्टी दी दृष्टी छाणी पुणी, कायनात ध्यान लगाईआ। जां तक्कया ईसा दी सदी चले उन्नी, उन्नीसा बीसा राह तकाईआ। साचा नाम जगत रसना मिले ना चुली, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भाग लग्गे ना काया साढे तिन्न हथ्थ कुल्ली, कलमे वाले देण दुहाईआ। अमृत धार मिले ना बूंद स्वांती डुल्ली, अगम्मा रस ना कोए चखाईआ। त्रैगुण माया पंज तत तपाई चुल्ली, अगनी अग्ग तपाईआ। जीवण ज़िंदगी सब दी हुल्ली, सिम्मल रुक्ख वांग लहराईआ।
१०९५ आत्म परमात्म धार सब नूं भुल्ली, ब्रह्म पारब्रह्म ना कोए मिलाईआ। झगड़ा प्या रोटी जुल्ली, सांतक सति ना कोए कराईआ। १०९५
२१ वस्त मिले ना अनमुल्ली, नाम निधान ना कोए वरताईआ। जूठ झूठ ते दुनियां तुली, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। २१
माया ममता विच फली फुली, हउमे हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। साचे कंडे नाम कोए ना तुली, तराज़ू हथ्थ किसे ना आईआ। चार वरनां विच रुली, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। नारद कहे मैं दीन दुनी दा तक्कया ढूँघा काया मन्दिर, गृह गृह खोज खुजाईआ। घर घर अंदर वज्जा जंदर, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। प्रकाश दिसे ना अन्धेरी कंदर, नूरी जोत ना कोए चमकाईआ। मनुआ दह दिशा उठ धावे बन्दर, सुरती शब्द ना कोए बंधाईआ। साची वस्त प्रभ दवारे जाए कोई ना मँगण, धर्म दी झोली ना कोए भराईआ। तन वजूद चढ़े किसे ना रंगण, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले पतिपरमेश्वर परवरदिगार करे कोई ना बन्दन, सजदा सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पतिपरमेश्वर दर तेरे मँग मँगाईआ। नारद कहे मैं दीन दुनी दा तक्कया अन्तश्करन, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। नेत्र खुल्हिआ ना

किसे हरन फरन, निज लोचण नैण ना कोए रुशनाईआ। साची मंज़ल मूल ना चढ़न, नौ दवारे पन्ध ना कोए मुकाईआ।
अजपा जाप बिन रसना जेहवा मूल ना करन, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भवजल पार भवसागर मूल ना तरन, आप
आपणा पन्ध मुकाईआ। साहिब स्वामी मिले किसे ना सरन, सरनगति ना कोए रखाईआ। माया ममता वहिण हड़न, काम
क्रोध लोभ मोह रिहा रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद
कहे मैं दीन दुनी दी वेखी आदत, अदली नज़र कोए ना आईआ। दीनां मज़हबां पई बग़ावत, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ।
नाम क़लमे होई अदावत, अल्ला वाहिगुरु करे लड़ाईआ। साची बख़्शिश मिले ना कोए सख़ावत, रहमत रहीम रहमान झोली
कोए ना पाईआ। नाउँ निरँकार हथ्थ ना आए निआमत, अमृत जाम ना कोए प्याईआ। जूठी झूठी बाहरों दिसे बनावट,
अन्तर करे ना कोए सफ़ाईआ। सदी चौधवीं सब नूं आई थकावट, बलहीण देण दुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जगत तृष्ना
मेट ना सके अलामत, आलम इल्म उल्मा ना कोए वड्याईआ। झगड़ा पाया बोदी जञ्जू हज़ामत, मुच्छ दाढ़ी केस दसमेस
रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे मैं तट किनारे
तक्के, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वेख वखाईआ। मैं गया मदीने मक्के, महिराबां हुजरिआं विच दुहाईआ। चर्चां विच
हुंदे सट्टे, सट्टेबाज़ी कूड़ लोकाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले रहे तपे, गुरुदुआर देण दुहाईआ। साची धार दिसे किसे
ना अक्खे, आख़र मेल ना कोए मिलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी होई हक़े बक्के,
हक़ीक़त समझ किसे ना आईआ। अन्त अख़ीर पत कोए ना रखे, बेनज़ीर सारे रहे कुरलाईआ। लख चुरासी जीव जंत
साध सन्त झगड़ा प्या तत अठ्ठे, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध्ध सर्ब करे लड़ाईआ। लहिणा देणा चुकाया मूल
कोई ना यथे, सन्मुख हो के सोभा कोई ना पाईआ। किरपा कर पुरख समर्थे, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। शब्द गुरु गुरदेव
स्वामी प्रगट होया तत गुरु दे वट्टे, बदला मुके जगत लोकाईआ। तेरा नाम विकदा दुनियांदारी दे टके, क़ीमत हट्टां विच
रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दरगाह साची सच तेरी ओट तकाईआ। नारद कहे मेरे अंदर
आई हैरानी, हैरत विच जणाईआ। शाह सुल्तानां अंदर दिसे बेईमानी, बेवा होई ख़लक ख़ुदाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए
रुहानी, रूह बुत पाक ना कोए कराईआ। मंज़ल मिले किसे ना आसानी, असमानां उत्ते ध्यान ना कोए लगाईआ। सारे
प्रभ दे नाम दी करन बदनामी, बदी दा डेरा कोए ना ढाहीआ। शरअ दी फसे विच ग़ुलामी, ज़ंजीर सके ना कोए तुड़ाईआ।
अक्खरां वाली दस्स कहाणी, रागां नादां विच जणाईआ। किस बिध मिटे कलयुग रैण अन्धेरी काली, कलकाती होए कसाईआ।

१०९६
२१

दीन दुनी दी दुनियांदारी विच्चों होए बहाली, बौहड़ आपणे रंग रंगाईआ। भाग लगाए सच्ची धर्मसाली, दर दुआरा इक्को नज़री आईआ। नारद कहे मैं दस्सदा हाल हाली, अक्खीं वेख्या दयां दृढ़ाईआ। दीन दुनी दे बाग़ दा मैनूं नज़र ना आवे कोई माली, वाली बैठा मुख छुपाईआ। जिध्धर तक्कां चारे कुण्ट दिसण ख़ाली, ख़ालक ख़लक ना कोए सहाईआ। चारों कुण्ट किधरे झटका ते किधरे हलाली, सति धर्म ना कोए कमाईआ। माया ममता करे दलाली, कूड़ी क्रिया नाल रलाईआ। फल दिसे किसे ना डाली, पत्त टहिणी ना कोए महकाईआ। त्रैगुण तोड़े ना कोए जंजाली, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आप आपणी कर मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण धार सदा बणे रहे तेरे सवाली, दर ठांडे भिक्खक हो के आपणी मँग मँगाईआ।

※ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ मक्खण सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर ※

१०९७ नारद कहे मैं रातीं रावी कंडे गया ओह घूक सुत्ती, मस्ती विच निस्सल हो के आपणा आसण लाईआ। मैं अलख १०९७

२१ जगाई उच्ची, कूक कूक के दिता सुणाईआ। जे कोई नहाती धोती सुच्ची, संजम वाली होवे बैठी माईआ। मैनूं भिच्छया २१

पा देवे इक मुट्ठी, आपणी धर्म गंढु खुल्हाईआ। मेरी आवाज़ सुण के मूल ना उठी, पासा ना ल्या बदलाईआ। मैं झट पट पैरों लाह के जुत्ती, दब्बे पैरीं अग्गे गया चाँईं चाँईंआ। फेर अलख जगाई तुहाडे भाग लग्गे पुत्तीं, कोई झोली दयो भराईआ। ओह फेर हो गई भार वक्खी, दूजी करवट लई बदलाईआ। मैनूं गुस्सा चढ़या मैं उहदे लक्क विच मारी मुक्की, कमर दिती हिलाईआ। कुछ होर मार कीती गुज्झी, आपणा ज़ोर वधाईआ। उस मेरा कन्न फड़ ल्या ते मैनूं कहे वे नारदा मैं ते पुराणी बुढ्ढी, बिरध अवस्था नज़री आईआ। नारद झट पाउण डहि प्या लुड्डी, नच्चे टप्पे आपणी ख़ुशी मनाईआ। नी रावीए तूं बुढ्ढी तूं बण जा गुड्डी, नौजवान रूप वटाईआ। हुण छड्ड दे पिछली वदी सुदी, आयू गणत ना कोए गणाईआ। जे कहें ते सीर आ जाए तेरे दुध्धीं, आपणा रस टपकाईआ। रावी सवाधान हो के, नारद कहे, मेरे पैर घुट्टण लग्गी रुग्गीं, सेवा सहज सहज कमाईआ। उने चिर उह मरी होई आ गई घुग्गी, जिस दा लेखा पिच्छे दिता मुकाईआ। ओस किहा नी रावीए उठ कमलिए तेरे भाग लग्गा कन्ढी उत्ते झुग्गी, झुग्गे रिहा वसाईआ। जिस दी याद विच पढ़दी रही जुगीं, जुग जुग ध्यान लगाईआ। ओह आ गया मैनूं इहो रमज सुझी, भेव दयां खुल्हाईआ। रावी कहे मैं सुत्ती नहीं सां मैं ओसे दे

प्यार विच रुज्झी, अंदरे अंदर उसे दा ध्यान लगाईआ। जिस दे विछोड़े विच दुखी, दर्दां विच कुरलाईआ। अज्ज उस दा नेत्र मीट के मैं तकदी सां सोहणा मुखी, जिस विच्चों सोहणा नूर मैनूं नज़री आईआ। मैं मस्त होई खुशी विच आपणे आसण सुत्ती, सुत्तयां वी ओसे दा दर्शन पाईआ। नारद जी तुसीं दस्सो किस कारण कटी बुत्ती, आपणा पन्ध मुकाईआ। नारद किहा पहिलों मेरिआं मोढुयां नूं घुट्टीं, फिर साह लै के दयां जणाईआ। नाले हस्सण डहि प्या नी रावी तूं अज्ज क्यों घुस्सी टुट्टी, हार शृंगार ना कोए लगाईआ। मैनूं पता नहीं सी पंडत जी आउँदे ताअ दिता बिना मुच्छीं, आकड़ विच चलया आवे चाँईं चाँईंआ। तूं केहड़ी गल्लों मेरे नाल रुस्सी, मैनूं दे समझाईआ। की तेरी वी मेरे वांग है नहीं मासी फुफी, इकल्ली रह के झट लँघाईआ। की तूं वी राहों ते नहीं घुसी, मैनूं दे दृढ़ाईआ। किते तेरा जीअ ते नहीं करदा मैं बाणा पहनणा रूसी, आपणा रूप बदलाईआ। किते विचार ते नहीं आया मैं मुहम्मद वाल्यां दी पहनणी सूसी, काला रंग रंगाईआ। किते दिल ते नहीं कीता मैं ईसा वाल्यां दी पंघूड़नी झूटी, हुलारा लैणा चाँईं चाँईंआ। किते मन ते नहीं मन्न गया मैं सिर ते पावां ठूठी, उच्ची हो के चलां चाँईं चाँईंआ। रावी कहे नारदा संभाल लै आपणी बूथी, क्यों गल्लां रिहा कढ्ढाईआ। मैं ते तकदी चारे कूटी, दह दिशा ध्यान लगाईआ। मैं छड्ड दिता पूजा पाठ दीन वाली अहूती, घृत दीप जोत ना कोए जगाईआ।
१०९८ मैं लाह दिती तन मलण वाली भबूती, सुआह छार ना कोए सीस पवाईआ। मेरे उत्ते क्यों ऐवें लावें लूती, गल्लां रिहा सुणाईआ। १०९८
२१ फिर नारद कहे, बीबा, गुस्सा ना करीं मैं ते चलण फिरन वाला दूती, दुतिया भाउ ना कोए रखाईआ। जे आह मेरे कोलों इक पी लएं बूटी, तैनूं नशा दए चढ़ाईआ। रावी किहा नारदा तूं बड़ा शैतान दी टूटी, गल्ल नवीं तों नवीं सुणाईआ। नारद किहा मैं हुणे हजामत करा के आया मुख ते फरा के साबण वाली कूची, सोहणा सीस मुंडाईआ। रावी तूं ते कल्ह् दी निक्की जिही चूची, क्यों चूचिआं वांग रौला पाईआ। रावी किहा नारदा सच पुच्छें मेरी उस प्रभू दे नाल इक्को रुची, जिस दी रचना सारी नज़री आईआ। नारद कहे मैं नहीं मन्नदा जेहड़ी बिना विचोले तों प्रभू नाल यारी लावे मैनूं दिसदा उह लुच्ची, बदमाश नज़री आईआ। रावी ने दन्दां हेठां लै के ज़बान टुक्की, गुस्से विच दन्दीआं रही दबाईआ। नारद किहा किते हिरदा ते नहीं हो गया दुखी, मैनूं दे सुणाईआ। रावी रो पई उच्ची उच्ची, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नारद ने ताअ दिता मुच्छीं, आकड़ के कहे मैं भय विच ल्या डराईआ। उने चिर नूं इक नाई आ गया गल विच पाई गुच्छी, नहेरने उसतरे रिहा वखाईआ। उने चिर नूं इक जट्ट आ गया सांघा मोढिआं उत्ते चुक्की, सिंगड़ तिक्खे नज़री आईआ। नारद वेख के कहे एह कोई खेल होणी गुज्झी, मैनूं समझ ना कोए समझाईआ। नारद दी डरन लगी बुद्धि, अंदरे अंदर बलहीण अख्वाईआ। जोती २१

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। नारद रावी नाल करे गल्लां, सहज सहज आपणा आप मटकाईआ। ओधरों ज़ोर दीआं आईआं छल्लां, लहर लहर विच्चों प्रगटाईआ। इक दम पुरख अकाल विच्चों निकलिआ इकल्ला, सति सरूप सोभा पाईआ। नारद मूर्ख बण गया झल्ला, झल्लयां वांग रौला पाईआ। हथ्थ विच फड़ के टल्ला, टल्लियां जाए खड़काईआ। परम पुरख ने कर के वल छला, सिर उत्ते हथ्थ टिकाईआ। जां वेख्या समरथ स्वामी अग्गे खला, सहिब सुल्तान नज़री आईआ। झट पट रावी दा फड़या पल्ला, निउँ निउँ सीस निवाईआ। रावीए तूं धन्न जिस दे दवारे पुरख अबिनाशी खला, आपणा पन्ध मुकाईआ। रावी कहे एथों जा चला, चलाकी ना कोए जणाईआ। तूं ते मैनूं लुच्ची कहिंदा सैं हुण क्यों करें वल छला, सच दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। नारद कहे रावी एह कलयुग ई कलयुग मैं तैनूं सवाधान दिता कराईआ। जिस घर विच मेरा पुरख अकाल जाए वस्से, उन्हां सारयां नूं दुनियां एसे तरह गल्लां कर के रही सुणाईआ। मैं अच्छा चल के एथे गया पुज्ज, दर तेरे डेरा लाईआ। जेहड़ी गल्ल तैनूं नहीं रही सी सुज्झ, उह तैनूं दिती समझाईआ। भावें किन्ने ताहने मिहणे देण लोक, समाज वाले नाता जाण छुडाईआ। पर याद रखीं तूं गाउणों नहीं हटणा प्रभ दा सलोक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। कोई इक दिन दी गल्ल नहीं हुण ते मिलणा पैणा रोज़, किन्ना चिर लुक के झट लँघाईआ। मैनूं ऐं दिसदा भावें तूं बुढ्ढी भावें तूं नढ्ढी भावें जोबनवन्ती मेरे साहिब सतिगुर ने सब दे साहमणे तैनूं रखणा आपणी विच गोद, क्यों गोदावरी दा साथी उहदे नाल नज़री आईआ। क्यों आदि तों अन्त तक जुगा जुगन्त तक भगतां नाल बणया रिहा इहदा संजोग, भावें कोई रोवे भावें कोई कुरलावे भावें कोई मज़हबां वाले बन्न्हे दाअवे, भावें कोई माता पिता हो के भरे हावे, पर एह एसे कर के शैतान मैनूं कहिंदे, भगवान दे बच्चे जन भगत बणा के आपणी झोली पाईआ। एह बचन सुण के गोदावरी ज़ोर ज़ोर दी रोई, मैं क्यों एथे आपणे आसण सोई, मेरी ओसे दे नाम दरोही, जो दो जहानां मालक नज़री आईआ। नारद कहे मैं सब कुझ वेख्या रावी सच्चीं प्रभ तों बिना मिले किते ना ढोई, ढोलक छैणे वस्त्र गहिणे कज्जल नैणे मन्दिर बहिणे वहिण वहिणे, नाते साक सज्जण भाई भैणे, बीबीए राणीए, एह सारे कम्म किसे ना आईआ। रावी कहे नारद जी इक गल्ल होर समझा, आपणी दया कमाईआ। नारद किहा पहिलों मँग दुआ, आपणा सीस निवाईआ। जे उह किरपा करे ते फेर देवां सुणा, सच संदेस अलाईआ। रावी कहे नारद जी मैनूं मिलण दा बड़ा चाअ, चाउ मेरे अंदर आईआ। नारद कहे पहलों छड्ड खां पिउ ते माँ, पाणी दीए राणीए मेरे हथ्थां उत्ते पंज चूलीआं दे टिका, फेर कन्ना नूं हथ्थ ला आख मैं छड्डे भैण भ्रा, माँ पिउ दयां

जम्मयां संग ना कोए बणाईआ। फेर कहि मैं जगत ख़ौंत ना लवां हंढ्ढा, ख़सम कन्त ना कोए बणाईआ। फेर कहि मैं नानके दादके छड्डे अंक सहेलीआं दितीआं तजा, साथी संग ना कोए बणाईआ। फेर कहि शर्म हया दिता गुआ, लोक लज्जया दिती तजाईआ। समाज राज दा रिहा ना कोई भा, भाउ सिर ना कोए रखाईआ। फेर कहो मैनूं क़सम रही ना सूर गाँ, दीनां मज़हबां विच्चों कढ्ढ ला आपणा नाँ, नबीआं नालों नाता लै तुड़ाईआ। फेर उच्ची कढ्ढ के बांह कूक के दे सुणा, ना कोई मेरा मैं किसे दी ना, मैनूं मिलण कोए ना आईआ। फेर कहि मैं हार श्रृंगार दिते तजा, नैण कजला ना लवां लगा, सुरखी बिन्दी रंग ना कोए चढ़ाईआ। फेर कहि मैं दूती दुश्मण दिते भजा, सतिगुर दी सूरत अंदर लई वसा, ओहो मेरा प्रीतम ओहो मेरा माही ओहो मेरा पिता माँ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नारद जी कहे तूं मेरे नाल मला दे हां, तैनूं वखावां उह थाँ, जिथ्थे बैठा बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। एह बचन करदयां दुनी रातीं सुत्ती पुरख अकाला रावी कन्ढे पहुंचया आ, आपणा रंग रंगाईआ। वेला सवेरे पाउणे छे दा वक्त लिखा, लेखे विच आपणा पर्दा लाहीआ। रावी नूं संदेसा दिता तूं आउणा नाल चाअ, चाउ घनेरा इक बणाईआ। नौ तों साढे नौ तक एथे हुंदी रही सलाह, मशवरा प्रेम नाल बणाईआ। रावी कहि के गई मेरे विच्चों अज्ज पाणी दा जग ज़रूर लैणा भरा, मैं किशन सिँघ दे घर जाणा चाँईं चाँईंआ। मैं एसे कर के आप आई बेनन्ती करां चरण सीस निवा, निउँ निउँ लागां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे मेरा जल लैण आवे उह अज्ज, अज्ज दा राह तकाईआ। जेहड़ा मेरे कन्ढे तों गया सी भज्ज, पार कन्ढा ना वेख वखाईआ। पार कन्ढे तों उस लिआउणा भर के जग, जगजीवण दाता वेख वखाईआ। जिस वेले लोह थल्ले डाहुणी अग्ग, अगनी भेंट कराईआ। उस वेले साहिब सतिगुर दे कोल ज़रूर देणा रख, भुल्ल रहे ना राईआ। सवा रुपईआ भेंट करना, रावी कहे, मैं फेर दस्सां क्यों सवा नूं किहा सवा लख, लख लख वधाईआ। कुछ सुक्के कोल रखणे कक्ख, पंज सत्त नजरी आईआ। इक बोतल दा काक रखणा गट्ट, नाल देणा छुहाईआ। किशन सिँघ ने आपणा नंगा करना सज्जा पट्ट, आसण इस तरां लैणा टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कूड़ कल्पणा मेटे फट्ट, पट आपणा नाम बंधाईआ।

✻ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ दीदार सिँघ दे गृह पिंड बाबूपुर ✻

रावी कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अज्ज खुशीआं विच हस्सीए, हस्त हस्तां नाल मिलाईआ। नच्चीए कुद्दीए टप्पीए, भज्जीए चाँईं चाँईंआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दस्सीए, सच सच सुणाईआ। अग्गे सारे मिल के भगतां संग वसीए, इक्को घर मिले वड्याईआ। मुहब्बत विच इक दूजे अंदर रचीए, रच रच आपणा रंग रंगाईआ। जगत डोर तोड़ीए कच्चीए, बंधन धुर दा इक बंधाईआ। जगत माया विच ना मच्चीए, अगनी अग्ग गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारे दए वड्याईआ। रावी कहे तुसीं खुशीआं विच गाओ गीत, गा गा दयो सुणाईआ। जिस दी राम कृष्ण ने कीती प्रीत, वेद व्यासा ढोले गया गाईआ। जिस दे मूसा ईसा मुहम्मद होए नज़दीक, लाशरीक आपणा भेव खुल्हाईआ। जिस दी नानक गोबिन्द मुहब्बत विच कीती रीझ, साची सेव कमाईआ। ओह साहिब स्वामी अन्तरजामी साडे नाल गया पतीज, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। जिस ने सच दवारे दी साची दस्सी सीध, सिध्धा राह इक प्रगटाईआ। साडी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, दर्शन दिता चाँईं चाँईंआ। गुर अवतार पैग़म्बर बण गए अज़ीज़, प्यारे लाडले सोभा पाईआ। साडी सांझी होवे तमीज़, सिख्या इक समझाईआ। पिछली कीती ते फेरी लीक, अगला हुक्म इक वरताईआ। झगड़ा मिटा के हस्त कीट, ऊचां नीचां दए वड्याईआ। नीं करे खेल इक अनडीठ, जिस दी समझ ना कोए आईआ। दीन दुनी नूं दे के पीठ, पता नहीं क्यों भगतां वल्ल आपणा मुख रखाईआ। औह वेख सदी चौधवीं रही बीत, आपणा पन्ध मुकाईआ। औह वेख लेखे मुकणे मन्दिर मसीत, काअबिआं कीती सफ़ाईआ । औह वेख सब दे वसणा इक्को चीत, चेतन सुरती दए कराईआ। ओह साहिब आ गया पतित पुनीत, पापीआं दए तराईआ। औह वेख सांझी करे नसीहत, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। औह वेख जिस दी सिफ्त सुणदे सदा ओह लभ्भ गई असलीअत, असल दा मालक सोभा पाईआ। जिस सानूं आपणे दर ते दिती अहिमीअत, अहिमकां नूं रहमत नाल तराईआ। साडे सारयां दी इक वलदीअत, वाहिद इक्को पिता माईआ। हुण वखरी वखरी रहे ना कोए तबीअत, तबअ अंदरों लैणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। रावी कहे मैं खुशीआं विच रंगी, रंग रंगीले दिता रंगाईआ। हस्स के कहिंदी गंगा गंगी, गीत धुर दा इक सुणाईआ। जमना कहे मैं इहो मँग मँगी, वे काहना, मैनूं आपणा काहन देणा मिलाईआ। सुरस्ती कहे मैं बथेरा चिर कटी तंगी, विछोड़े विच आपणा झट लँघाईआ। गोदावरी कहे मैनूं पता सी गोबिन्द दे नाल आउणा पुरख अकाल उहदा संगी, आपणा संग बणाईआ। नारद आ गया वेख्या जे किड्डा ढंगी, की आपणा ढंग चलाईआ। तुसीं मौजां माणदीआं लहरां शहरां

११०१
२१

११०२
२१

विच एस तुहानूं रोल दिता कानयां काहीआं वाली विच झंगी, राह नज़र कोए ना आईआ। जे ज़रा कु भुल्ल जाओ चलदीआं चलदीआं डंडी, ते अग्गों मुहम्मदी घेरा लैण पाईआ। तुहाडे उत्ते ला दिती किड्डी पाबन्दी, जिधर वेखो उधर भगत सुहेले नज़री आईआ। हुण दस्सो कलयुग जीवां दी किथों लभ्भोगीआं वासना गन्दी, विकारां वल ध्यान लगाईआ। केहड़ा दान मँगोगीआं जजमानां कोलों उत्ते कन्ढी, परोहित विचोले विच बणाईआ। हुण आपणीआं पिछली कमाई दीआं बन्नू लओ पंडी, सिर आपणे भार उठाईआ। नहीं ते वेख लओ पूरे सतिगुर दी पूरन धार चमकी चण्डी, चारों कुण्ट वखाईआ। तुहाडे सिख मिलणे नहीं अनन्दी, अनन्द रस ना कोए चखाईआ। इक्को गल्ल चंगी, प्रभ दी सरन सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे अज्ज होईए त्यार, त्यारी तरूां तरूां कराईआ। बीत गए दिन गिआर, यारवें दिन खुशी मनाईआ। मिलीए उस मुहम्मदी यार, जो महबूब इक अख्वाईआ। चरण कँवल करीए निमस्कार, मस्तक धूढ़ इक रमाईआ। नारद कहे नी उह है किथ्थे ते लभ्भो केहड़ी उजाड़, जूह बेगानी नज़री आईआ। रावी कहे मैं वेख्या साहिब दातार, दीन दयाल नज़री आईआ। साडे घरां मन्दिरां मसीतां मट्ठां नालों उहदा चंगा उहदयां भगतां दा दरबार, जिथ्थे दुआरकावासी राम बनवासी, ईसा मूसा मुहम्मद चढ़न वाला फाँसी, नानक गोबिन्द बण के सारे साथी, आवण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती, मता ल्या पकाईआ। चलीए ज़रूर तक्कीए अगम्मी हस्ती, जो हस्त कीट रिहा समझाईआ। केहड़ी थाँ भागां वाली धरती, जिथ्थे बैठा आसण लाईआ। ओह आया क्यों विच एनी सर्दी, आपणा पन्ध मुकाईआ। नारद कहे उस दा भगतां नाल कौल इक़रार शरती, आपणी शरअ ना कदे बदलाईआ। तुसीं धरती उत्ते रहन्दीआं उह मालक प्रीतम अर्शी, अर्शां दा मालक फ़र्शां उत्ते सोभा पाईआ। फिर कढ्ढ के निक्की जेही पर्ची, प्राचीन दा लेखा रिहा वखाईआ। जिस वेले गुर अवतार पैग़ग्बर नाम दी दे ना सके खरची, धर्म ख़ज़ाना नज़र कोए ना आईआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर चरची, गिरजिआं विच गरज ना कोए सुणाईआ। जगत सवाणीआं छड्ड देण मधाणीआं चलाउणी भुल जाण चरखी, आपणा आप जाण बदलाईआ। गुरुआं अवतारां पैग़ग्बरां दी जगह घर घर आपणे बच्चयां दी मनाउण डहि पैण बरसी, साध सन्त उन्हां दे घर जा जा के पकवान लैण खाईआ। एदू वड्डी होर की होणी ग़रक़ी, गुरुआं दी जगह मल मूत्र वाले बच्चे घर विच आपणे गुरु लैण बणाईआ। एह खेल कलयुग दी ते कलयुग दी कला होणी चढ़दी, विद्वानां दे अंदर एह मनमति देणी टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल जाणे चोटी जड़ दी, चेतन दा मालक चेतनता सब दी वेख वखाईआ।

❋ २४ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ जमादार किशन सिँघ दे गृह पिंड अल्लृड़ पिंडी ज़िला गुरदासपुर ❋

राावी कहे मेरा पूरा होया वक्त, सुहञ्जणी घड़ी खुशी मनाईआ। मैनूं अन्त संदेसा दिता फकत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला तेरा लहिणा देणा मुकाए फ़कत, फ़िकरा धुर दा इक समझाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बरां पूरी करे शर्त, शरअ दीन दुनी वखाईआ। सचखण्ड निवासी आवे उत्तों अर्श, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। भाग लगावे धरनी धौल धरत, धवल देवे माण वड्याईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे हरस, हवस अगली वेख वखाईआ। दीन दयाल दीनां अनाथां उत्ते करे तरस, रहमत हक़ कमाईआ। जो प्रभ दी याद विच रहे भटक, तिन्नां भगतां लए मिलाईआ। चार वरनां अठारां बरनां सिध्धी कर के सड़क, दीनां मज़हबां पन्ध मुकाईआ। माया ममता मन कल्पणा रहे कोई ना अटक, बुध्ध बिबेक दए कराईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्दाना मर्द, बेपरवाह आपणी कार कमाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दरद, कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। गुर अर्जन कहे मेरी बेनन्ती इक्को अर्ज़, आरज़ू दिती समझाईआ। रावी तूं वी आपणा पूरा करना फ़रज़, सीस जगदीश इक झुकाईआ। जिस ने पुट्ठी सिध्धी करनी नरद, कलयुग कूड़ी क्रिया पन्ध मुकाईआ। सदी चौधवीं करे खेल असचरज, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। जेहड़ा मज़हब इस्लाम धर्म छुरी कसाई बणया करद, क़त्लगाह वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे सुण सतिगुर अर्जन, मैनूं दे जणाईआ। मेरे अंदर लग्गी भटकण, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। मेरा दिल लग्गा धड़कण, बौहड़ी बौहड़ी दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे सतिगुरु क्यों बैठा तत्ती लोह, तवीआं तन तपाईआ। गुर अर्जन किहा एह प्रभू मेरे दा मोह, मुहब्बत आपणी इक समझाईआ। सच प्रकाश दे के लोअ, मेरे अंदर करे रुशनाईआ। असीं आदि जुगादि इक कोई ना समझे दो, दूआ नज़र कोए ना आईआ। जो कुछ करना सो आपे रिहा हो, होका दे के रिहा दृढ़ाईआ। प्रभ दा भेव ना जाणे को, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान पर्दा सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नज़र उठाईआ। रावी कहे क्यों बैठा लोह तत्ती, अगनी तत तपाईआ। जे तेरा मालक कमलापती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। मैनूं भेव खुल्हा

दे रती, पर्दा दे चुकाईआ। ख़बर सुणा सच्ची, सुच संजम इक जणाईआ। गुर अर्जन किहा कमलिए खोल्ह के वेख अक्खीं, तैनूं दयां वखाईआ। कलयुग दी आयू लिख के गए चार लख हज़ार बत्ती, बहुता समां नज़री आईआ। कदी तूं पढ़ी आ एह वी पट्टी, उँगलां अक्खरां उत्ते टिकाईआ। कूड़ क्रिया दी कितनी देर चले हट्टी, माया ममता मोह वस्त वखाईआ। रावी कहे मैं जोड़ के दोवें हथ्थी, सीस दिता निवाईआ। गुर अर्जन किहा एह खेल पुरख समर्थी, पतिपरमेश्वर रिहा समझाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं अन्त अख़ीर धर्म धार रही ना रती, कलमे वाले सर्ब कुरलाईआ। त्रैगुण माया फिरनी नट्ठी, माया ममता मोह हल्काईआ। माण रहिणा नहीं तीर्थ तटीं, गंगा गोदवरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाहींआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ प्रेम रहे कोई ना रती, गुरमुख रतन अमोलक हीरा नज़र कोए ना आईआ। साधां सन्तां अंदर निरगुण नूर जगे कोई ना बत्ती, विद्या पढ़ के जगत जीव लैण भरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अर्जन कहे जे मेरी धार लोह ना बहिंदी, सच सिंघासण आसण लाईआ। फेर रावी तेरी वंड किवें हुंदी दिशा लहिंदी, लहिणा कवण चुकाईआ। चार जुग अवतार पैग़म्बरां दी अन्तर आसा कहिंदी, कलयुग अन्त कूक दुहाईआ। सदी चौधवीं उम्मत नबी रसूलां वाली किस बिध ढहिन्दी, ढईआ गोबिन्द वाला कवण वड्याईआ। तेरी धार वहिण इक पाणी वाले नैं दी, चले वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गुर अर्जन कहे मेरा लोह तत्ती ते आसण, असल दयां जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करना पुरख अबिनाशण, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। लहिणा देणा मेटे पृथ्मी आकाशण, दो जहानां वेख वखाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तेरा देवण साथण, दर घर साचे संग बणाईआ। सच संदेसा नर नरेशा शब्दी धार गुरु गुर इक्को आवे आखण, बोध अगाध दए दृढ़ाईआ। तेरा किनारा सोहे घाटण, तट वज्जे वधाईआ। प्रभू भेव खोल्हे बातन, पर्दा दए चुकाईआ। कलयुग होए अन्धेरी रातन, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मंज़ल चढ़े कोई ना घाटण, प्रभ नूं मिलण कोए ना पाईआ। सृष्ट सबाई चीथड़ होवण पाटण, ओढुन नाम ना कोए टिकाईआ। चार वरनां दिसे कोई ना पातन होका हक़ ना कोए सुणाईआ। मन कल्पणा सारे नाचण, कलयुग नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दी धार इक उपजाईआ। गुर अर्जन कहे मेरी लोह दा वधे प्यार, प्रभ प्रेमी प्रेम कमाईआ। जिस वेले कल कल्की लए अवतार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। शब्द गोबिन्द गुर होवे नाल, दूजा संग ना कोए निभाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे जंजाल, सतिजुग साचा राह चलाईआ। इक्ठे कर के शाह कंगाल, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। सांझा लंगर

कर के बेमिसाल, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को घर दए बहाईआ। जिस दा लख चुरासी जीव जंत निक्का अञ्याण बाल, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सारे वेख वखाईआ। कलयुग विच सतिजुग करना आप बहाल, मेहरवान प्रभ मेहर नज़र उठाईआ। ओस वेले दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार चलणी अवल्लड़ी चाल, निराली इक्को इक प्रगटाईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़म्बर देंदे गए मसाल, उह मिसल आपणी लए बणाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख सूफ़ी लए भाल, कायनात दीन दुनी सृष्टी दृष्टी विच्चो खोज खुजाईआ। साची सिख्या दए सिखाल, काया मन्दिर अंदर सच्ची धर्मसाल, काअबा इक्को दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। गुर अर्जन कहे एह लोह ने खॅटिआ पाप, कलयुग पतित पापी तराईआ। किरपा करे साहिब प्रभ आप, मेहर नजर नज़र उठाईआ। त्रैगुण माया मेट के ताप, अगनी तत गवाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, पारब्रह्म ब्रह्म मेला लए मिलाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना कोई संताप, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। चार वरनां इक्को नात, नाता धुर दा दए समझाईआ। दर्शन दे के साख्यात, साखी अगम्मी दए समझाईआ। झगड़ा प्या दीनां मज़हबां प्रभ दे नाम कायनात, कलमा इक्को दए समझाईआ। तन वजूद महबूब सतार वजाए अगम्मी रबाब, रहमत रहीम आप कमाईआ। साचा सजदा दस्से आदाब, नमों नमों इक दृढ़ाईआ। उह
११०५ खेल कराउणा परम पुरख परमात्म पंजां दरयावां वाले विच पंजाब, पंजाबी रंग रंगाईआ। जिस दी शहादत नानक दे के ११०५
२१ गया विच बग़दाद, गोबिन्द माछूवाड़े दिता सुणाईआ। पुरख अकाल दा सांझा होणा समाज, दीन मज़हब ना वंड वंडाईआ। २१
इक इकल्ला सब दा दिसे बाप, वलदीअत इक्को इक दरसाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धर्म दी धार चले राज, रईयत राउ रंक वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां लेखे लावे ख़िदमात, ख़ादम अगले लए बणाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर सब दे वेखे जज़बात, परदयां विच्चों परदा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। लोह कहे जिस वेले सां मैं तपदी, अगनी नाल तपाईआ। तूंही तूंही नाम सां जपदी, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। मैं निशानी तक्की अर्जन वाली अक्ख दी, जो प्रतख प्रभ दा दर्शन पाईआ। बिना बोलयां सब कुछ दस्सदी, मेरे अंदर अंदर करे पढ़ाईआ। मैं लाल लाली वेखी उहदी रत्त दी, जो रंग रत्तड़े आपणे रंग रंगाईआ। खेल वेखी प्रभू परमेश्वर पति दी, पति पतवन्ता सोभा पाईआ। मैं खुशीआं दे विच नठ्ठदी, भज्जां चाँईं चाँईंआ। बिन रसना तों फिरां रटदी, तेरी बेपरवाहीआ। किते मेरी चुरासी कट दईं, कटाक्ष नाम लगाईआ। लोह कहे गुर अर्जन बोल्या किते वेखीं हद्द ना छड्ड दईं, बलहीण अख्वाईआ। तेरा खेल होणा अन्तिम जग लई, जग जीवण दाता दए वड्याईआ। ओस आसा रखी

चवी फग्गण अज्ज लई, संदेसा धुरदरगाहीआ। जिस कारण भगत सुहेले संगत सद्द लई, सद्दा नाम शब्द शनवाईआ। पुरख अकाल दी प्रीती अंदर जिन्हां दी अंदरों नीती बज्झ गई, नाता तोड़ कूड़ लोकाईआ। उह कदी ना जावण काअबे दे हज्ज लई, महबूब सच अरूज अन्तर आपणे दर्शन पाईआ। जन भगतो तुसां सेवा करनी गुर अर्जन दे प्यार वाली अग्ग लई, अगनी अग्ग देणी लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अगनी कहे मैं बलदी नाल माचस, कक्खां नाल वड्याईआ। मैनूं सारे कहिंदे आतश, तत्तां रही तपाईआ। मेरी लभ्भी किसे ना साज़श, की की कल वरताईआ। जन भगतो तुसीं बणाओ आपणी आदत, अन्तर निरंतर पर्दा लओ उठाईआ। जिस दी सतिगुर अर्जन करी इबादत, बन्दगी नाम ध्याईआ। ओह तुहाडा सब दा दिसे मालक, जो हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा बणे प्रितपालक, ख़ालक नूर अलाहीआ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। लोह कहे मेरे थल्ले अग्ग दयो बाल, बाली बुध्ध मिले वड्याईआ। कलयुग विच्चों सतिजुग होणा बहाल, पुरख अकाल दया कमाईआ। लालो दा लेखे लग्गणा नानक वाला थाल, ग़रीबी विच अजीबी खेल वखाईआ।
१ १ ० ६ बलि दवारे दे उठ खलोवो नौजवान, आपणी लओ अंगड़ाईआ। सांझा करना पीण खाण, दुतिया वंड ना कोए वंडाईआ। १ १ ० ६
२१ प्रेम प्यार नाल रिन्हों दाल, आपणी सेव कमाईआ। विच खौंचा मारना संभाल, जिस खौंचे ने तत्ती रेत गुर अर्जन सीस पवाईआ। इहदा पिछला कुछ अहिवाल, जिस नूं बीत गए कई काल, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। खौंचा कहे जे मैं रेत ना चुकदा, गुर अर्जन सीस पवाईआ। फिर कलयुग पैंडा कदी नहीं सी मुकदा, मुकाउण वाला नज़र कोए ना आईआ। मैं वणजारा इक्को तुक दा , जो पारब्रह्म ब्रह्म करे सच पढ़ाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर गुरु झुकदा, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर सीस निवाईआ। उस दा खेल सदा सुख दा, दुक्खां वाली ना वंड वंडाईआ। सतिगुर कदी समझयो ना जामा मानस मानुख दा, तत्तां वाला रूप धराईआ। उहदे अंदर नूर प्रकाश जोत अबिनाशी अचुत दा, जो चेतन सब नूं दए कराईआ। सो वेला वक्त सुहावा ढुकदा, धर्म दी धार दए वड्याईआ। रावी कन्ढे जिस दा लेखा उह सब नूं पुच्छदा, पूरब फोल फुलाईआ। खेल वेखणा पुरख अकाल गोबिन्द धार पिता पुत्त दा, पतिपरमेश्वर आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। रावी कहे गुर अर्जन चरण छुहाया, अन्तर मेरे टिकाईआ। मैं चरणीं हथ्थ लगाया, निउँ निउँ लागी पाईंआ। लख लख शुकर मनाया, तेरी बेपरवाहीआ। उस किरपा कर के मेरे सीस हथ्थ टिकाया, जगदीश दिता वखाईआ। जिस

वेले कलयुग अन्त अन्धेरा छाया, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। चारों कुण्ट त्रैगुण माया, पंज तत करे हल्काईआ। अन्तिम होए ना कोए सहाया, पल्लू सारे जाण छुडाईआ। उह खेल बेप्रवाहिआ, जो आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने कलयुग मात लगाया, उह अन्तिम वेख वखाईआ। जिस नूं भविख्तां विच गाया, गुर अवतार पैग़ंबर ध्यान लगाईआ। उह जोती जोत करे रुशनाया, नूर नुराना करे डगमगाईआ। तेरा लेखा दए मुकाया, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। रावी कहे मैं हथ्थ जोड़ के वास्ता पाया, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे मैं कीती इक अरदास, बेनन्ती दिती जणाईआ। किरपा कर सर्ब गुण तास, गुणवन्ते तेरी सरनाईआ। तूं आएयों मेरे पास, तत्ती लोह तजाईआ। मेरी सेवा ख़ास, पर्दा दए उठाईआ। गुर अर्जन हस्स के कीता बलास, शब्द अगम्म सुणाईआ। उठ वेख मार झात, नेत्र नैण खुल्हाईआ। साचा दिसे ना कोई सज्जण साक, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट उडदी ख़ाक, गरदो गुबार दिसे लोकाईआ। अंदरों खुल्हे किसे ना ताक, पर्दा सके ना कोए तुड़ाईआ। अवतार पैग़ंबरां पूरा करना वाक्, जो भविख्तां विच गाईआ। अन्त पैणी नहीं कोई रास, गोपी काहन ना कोए वड्याईआ। दीन मज़हबां करनां घात, ज़ात पात करे लड़ाईआ। मन दी पूरी होवे ना ख़ाहिश, ममता विच दुहाईआ। पुरख अकाल सब ने करना तलाश, जगदीशर नज़र किसे ना आईआ। ओह खेल करे अबिनाश, करनी दा करता नूर अलाहीआ। जिस दी सिफ्त कर ना सके काग़ज़ क़लम शाही दवात, कायनात ना कोए वड्याईआ। गुर अवतार पैग़ंबर ओसे दे दास, सेवक हो के सेव कमाईआ। ओह साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना निरगुण नूर करे प्रकाश, जोती जाता बेपरवाहीआ। तेरा लहिणा देणा लेखा मुकावे हिसाब, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। मित्र प्यारा बण अहिबाब, दुआरा इक सुहाईआ। तूं उस नूं तक्कणा साख्यात, अमामां दा अमाम नज़री आईआ। जो सब दे हुजरे वेखे महिराब, महबूब जल्वागर नूर खुदाईआ। जिस नूं पैग़ंबर करन आदाब, सजदयां विच सीस झुकाईआ। उस ने अगम्मी मारनी आवाज़, शब्दी धार उठाईआ। सब दी रखणी लाज, जो बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अर्जन किहा तेरा निर्मल कर्म उजागर, मेहर नज़र तराईआ। तेरा वणज व्यपारा करे अगम्म सुदागर, वस्त अनमोल वखाईआ। किरपा करे करीम क़ादर, क़ुदरत दा मालक नूर अलाहीआ। सच दवारे देवे आदर, आदर्श इक वखाईआ। नौजवान बण बहादर, सूरबीर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा झोली पाईआ। रावी कहे मेरे नैणां लाई छहिबर, नीर नीर वहाईआ। उह केहो जेहा होवेगा रहिबर, मैनूं दे दृढ़ाईआ।

की उह नाअरा बोले ऐलीहैदर, कि अल्ला हू हू सुणाईआ। की उह आवेगा किसे दर्रा ख़ैबर, आपणी कर चढ़ाईआ। की नाम कलमा होवे उस दी वहिदत, वाहिद दे जणाईआ। की सिख्या देवे इबादत, अदल इन्साफ़ की कमाईआ। की दीन दुनी पावे बग़ावत, मज़हब मज़हबां नाल टकराईआ। की भगतां देवे ज़मानत, सूफ़ीआं लए बचाईआ। की कलमा दए अमानत, वस्त अगम्म वरताईआ। गुर अर्जन किहा आदि जुगादी सही सलामत, जन्म मरन विच ना आईआ। तत्तां वाली ना बणावे बनावट, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वंड ना कोए वंडाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बरां बख़्शे नाम सख़ावत, भण्डारे ख़ाली सर्ब भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक नूर अलाहीआ। रावी कहे मैं चरणोदक ल्या कर के चरण कँवल प्यार, आपणा प्रेम वधाईआ। गुर अर्जन हस्स के किहा एस नूं रखीं संभाल, आपणे विच छुपाईआ। जिस वेले आवे दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। तेरे विच्चों लए निकाल, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिस नूं पीवण शाह कंगाल, अमीर ग़रीबां वंड ना कोए वंडाईआ। एह खेल अगम्म कमाल, दीन दयाल दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे उह अमृत जल मेरा, मेहर नाल वड्याईआ। जिथ्थे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती लाया डेरा, आसण इक सुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पाया फेरा, आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम आया दे के गया गेड़ा, सदी चौधवीं राह तकाईआ। कूड़ी क्रिया उजड़ना खेड़ा, चार कुण्ट ना कोए भवाईआ। बिन पुरख अकाल बन्ने कोई ना बेड़ा, मुहाणा कंध ना कोए उठाईआ। झगड़ा प्या गुरु गुर चेरा, चेरा गुर ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट दिसे अन्धेरा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। रावी कहे अमृत जल गुर अर्जन धार रस, रसिया दयां वखाईआ। जो मार्ग गया दस्स, मैं ओसे ते चली बण के राहीआ। खोल्ह के वेंहदी रही अगम्मी अक्ख, कवण वेला मिले माहीआ। अन्त वेख्या नूर प्रतख, मेहरवान महबूब गुसाईंआ। कौल इक़रार होया सच, वज्जी सच वधाईआ। भावें मेरा तन वजूद नहीं कोई कच्च, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मैं सब कुछ रही दस्स, शब्द गुरु गुर समझाईआ। जिस दे कारण सब कुछ रख्या छड्ड, आपणे विच टिकाईआ। परदयां विच ल्या ढक, जग नेत्र ना कोए दरसाईआ। उहदा लहिणा मुकणा अज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा वेख वखाईआ। रावी कहे मेरा पाणी जल मुहब्बत वाला नीर, सागर विच वड्याईआ। जिस दी महिमा कर के गया कबीर, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। जिथ्थे शरअ दा टुट्टे ज़ंजीर, शरीअत रहिण कोए ना पाईआ। मिले मेल बेनज़ीर, नज़रीआ

दए बदलाईआ। जन भगतां मिटे हउमे पीड़, हंगता रोग गवाईआ। अमृत मिले सीर, बिन रसना रस चखाईआ। सांतक होवे शरीर, धीरज धीर वखाईआ। झगड़ा मुके शाह हकीर, इक्को रंग सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गंगा पाणी कहे मैनूं वरतो सब्जी दाल, अन्न विच रलाईआ। मैं सब कुछ वेख्या हाल, हालत दीन दुनी तकाईआ। फल दिस्सया ना किसे डाल, पत्त टहिणी ना कोए लहराईआ। बिन हरि नामे सारे होए कंगाल, वस्त अगम्म ना कोए वरताईआ। इक्को एक पुरख अकाला सब दे वस्से नाल, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। काया मन्दिर अंदर लैणा भाल, बाहरों लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी सारे ओसे दे नाल, आत्म धार उहो नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। पाणी कहे मैनूं वरतणा नाल चाअ, चाउ घनेरा इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाला सब दा इक्को मलाह, खेवट खेटा सोभा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर ओसे दी महिमा गए सुणा, सिफ्तां विच वड्याईआ। ओसे दे राग नाद ढोले गए गा, कागज़ क़लम शाही जोड़ जुड़ाईआ। ओसे दे अन्तर आत्म गए समा, जोती जोत जोत मिलाईआ। सो ख़ालक मालक प्रितपालक वेखणहारा दो जहां, कलयुग अन्तिम आपणी दया कमाईआ। रावी कहे जिस वरताई भावी ओह करे सच निआं, निआंकार इक अख्वाईआ। मेरे कन्ढे वंड वंडा, हिस्से गए पाईआ। जिन्हां ने सूर खाधा जिन्हां ने ख़ाधी गाँ, हद्द बेहद्द दिती बणाईआ। अगला लेखा किसे नूं पता ना, भेव सके ना कोए खुल्हाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर मिले ना कोए पनाह, सहारा नज़र कोए ना आईआ। सब दे वेखणे पुरख अकाल गुनाह, घट घट अंदर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। रावी कहे वेखो कक्खां वाला तुल्हा, सोहणा नज़री आईआ। बेशक दुनियां प्रभ दा नाँ गाउँदी नाल बुल्लां, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। किसे ने मूंड मुंडाया किसे ने पगड़ी रखी किसे ने रख्या कुल्ला, कुल्ल आलम भेव कोए ना पाईआ। माया ममता विच जगत जहान रुला, रस्ता नज़र कोए ना आईआ। अमृत आत्म सब दा रस डुल्ला, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। हँकारी विकारी दुष्ट दुराचारी फलिआ फुल्ला, जूठ झूठ आपणा रंग रंगाईआ। मिले मेल ना किसे सुल्हकुला, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। रावी कहे मैं की दस्सां रस्ता, रहिबर कौण अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं बन्नहआ आपणा बस्ता, अग्गे अवर ना कोए पढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे मैं नाम दस्सणा सस्ता, जिस दी दाम क़ीमत ना कोए पाईआ। जेहड़ा लेख मुकावे अर्शा फ़र्शा, ज़िमीं ज़मां होए सफ़ाईआ। हरिजन बणाए बरदा, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ।

नूर चमकावे नरायण नर दा, जोती जोत करे रुशनाईआ। अनादी धुन अनहद होवे वजदा, अनरागी राग सुणाईआ। अमृत झिरना इहो रस होवे झिरदा, बूँद स्वांती इक टपकाईआ। नज़ारा देवां मैं आपणी मेहर दा, मेहर नज़र इक उठाईआ। झगड़ा मुकावां चुरासी गेड़ दा, जन भगतां दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। रावी एह कुछ रही दस्स, आपणा हाल जणाईआ। ओधरों नारद आ के प्या हस्स, रौली दिती पाईआ। अग्गे कर जा बस्स, की रही सुणाईआ। सृष्टी दी दृष्टी वेख आपणी अक्ख, अक्खरां वाली छड्ड पढ़ाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बर खोल्ह के गए हट्ट, उथों सौदा लैण कोए ना पाईआ। धर्म मर्यादा गए छड्ड, ईमान बेईमान दिता बणाईआ। प्यार रिहा ना दीन दुनी जग, क़ीमत सच ना कोए मुकाईआ। नारद कहे ओह वेख जिस तरह लोह थल्ले तपदी अग्ग, दीन दुनी कलयुग माया अगनी एसे तरह तपाईआ। जिस तरह दाल विच खौंचा रिहा वज्ज, एसे तरह काम क्रोध सब नूं रिहा हिलाईआ। रावी एस दुनियां दा खैह्ड़ा छड्ड, जिस ने गुर अवतार पैग़म्बरां नूं दिती सज़ाईआ। चल इहनूं छड्ड के होईए अड्ड, पैंडा लईए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। रावी कहे नारद जी मेरे नाल गोदावरी सुरस्ती जमना गंगा, बैठीआं मेल मिलाईआ। उन्हां दयां तीर्थां तटां किनारिआं उत्ते पंडत पांधिआं कीता दंगा, माया ममता विच लड़ाईआ। नारद झट खड़ा हो गया इक टंगा, राम राम कहि के दिती दुहाईआ। नीं रावी तूं इहनां दा काहनूं कीता संगा, एह ते चार जुग दीआं मुरदे खाणीआं, खा खा के आपणा ढिड्ड ना अजे भराईआ। किथ्थों गंढ्ढ लईआं इहनां नाल गंढ्ढां, मैनूं दे समझाईआ। रावी कहे मैं सुणया इन्हां दा कुछ लहिणा देणा चंगा, चंगी तरां नज़री आईआ। नारद कहे एह कलयुग जीवां वांगू इन्हां दा बाहरों ना वेख पिंडा साफ़ सुथरा नंगा, अंदरों कूड़ी क्रिया सब नूं दिता रुलाईआ। नारद कहे मैं वास्ता पावां साहिब अग्गे सूरा सरबंगा, जो सब दा पिता माईआ। प्रभू कलयुग अन्त श्री भगवन्त सब दा लेखा मुका दे ते आपणे दर दा इक देदे अनन्दा, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जितने मार्ग ते उतने रस्ते तेरे नाम दा लैंदे चन्दा, चन्दू दी वारदात गुरु अर्जन दे अर्थात सब नूं दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। नारद कहे रावी एधर कर ध्यान, तैनूं दयां समझाईआ। सिख लै कुछ ज्ञान, अनभव दरसाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती बाल अञ्याण, की इन्हां वड्याईआ। एह ते चौहन्दीआं पीण खाण, आपणा रस वखाईआ। मैं ते एह जाणदा सब तों चंगा उह भगत जेहड़ा मिल्या होवे भगवान, भाग आपणा अगला लए बणाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अठसठ तीरथां नालों मैनूं पवित्र दिसदी किशन सिंघ दी रान, मेरा जीअ करदा इस दे पट्ट

१११०
२१

ते बहि के समरथ नाल मिल के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। नारद कहे गुरमुख दा महाबली वाला पट्ट, क्यों पटने वाला दए वड्याईआ। बाकी सब दे अंदर कलयुग ने त्रैकुटी तों उपर दसम दुआरी विच ला दिते डट्ट, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। जिस नूं वेखो साध सन्त फ़कीर सारा विक गया कामना दे हट्ट, जगत तृष्ना विच हल्काईआ। रावी, जिंनां चिर जगत प्यार ना जाए छड्ड, दृष्टी विच्चों ना होवे अड्ड, इष्टी मिले ना पुरख समरथ, महिमा दस्से ना आपणी अकथ, शब्द रथ चढ़न कोए ना पाईआ। गुर अर्जन कहि के गया सच, गुरु ग्रन्थ दी बाणी कोई ना सके वाच, वाचक ज्ञानी प्रभ दा ध्यान ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे देवे माण वड्याईआ। नारद कहे सुण रावी रंग रत्तड़ी, तैनूं दयां जणाईआ। आपणे मन रहीं ना मत्तड़ी, ममता विच वड्याईआ। जिस ने वंड वंडाई वैश शूद्र ब्राह्मण क्षत्री, छत्रधारीआं दिती वड्याईआ। जिस दा लहिणा देणा हिसाब आवे किसे ना पत्री, गुर अवतार पैग़म्बर बेअन्त कहि के गए सुणाईआ। नज़र ना आए किसे गृह नक्षत्री, ब्रह्मा विष्न शिव ना कोए चतुराईआ। ओह खेल करे कल वखरी, बेपरवाह

आपणी कार कमाईआ। जिस नूं लभ्भदे विच्चों पत्थरीं, सिलां पूज पुजाईआ। जिस नूं खोजण मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठड़ीं, भज्जण वाहो दाहीआ। जिस दे प्रेम विच प्यार विच सतिकार विच निरगुण नानक सरगुण तोली तक्कड़ी, तराज़ू इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी धार इक वखाईआ। नारद कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती, रावी रवादार नज़र कोए ना आईआ। ओह मालक ख़ालक प्रितपालक पतिपरमेश्वर अर्शी , अर्शी प्रीतम नूर अलाहीआ। चार जुग नाम उस दे फ़रज़ी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों दिते बदलाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लैंदा रिहा अर्ज़ी, दरख़ास्त सब दी आपणे कोल रखाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर कदे ना होए बेगर्ज़ी, गर्ज़ सब दी वेख वखाईआ। जिस ने तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत हाडी मास नाड़ी चमड़े दी पहनाई वरदी, मन मति बुध्ध नाल मिलाईआ। ओह खेल जाणे एथे ओथे दो जहान आपणे घर दी, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी दी धार वेखे विकार हँकार विच लड़दी, प्यार मुहब्बत नज़र कोए ना आईआ।

११११
२१

❋ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ आसा सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़पिंडी ❋

रावी कहे मैं प्रेमण सच्चे प्रभ दी, प्रभू मिल के वज्जे वधाईआ। मैं जुग जुग रही वगदी, वहिणां विच वड्याईआ। मैं नित नवित्त रही लभ्भदी, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। समां उडीकदी रही आपणी हद्द दी, हदूद अन्तिम वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी एसे तरां लँघ गई, वक्त आपणा मात लँघाईआ। मैं आसा मनसा मँग लई, तृष्ना इक रखाईआ। उडीक रखां तेरे अंग लई, अंगीकार आप कराईआ। नैण उठावां ओस चन्द लई, जो नूर जोत रुशनाईआ। जिस ने लख चुरासी जीव जंत वंड लई, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। जो खेल खलावे जेरज अंड लई, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जो प्रगट होवे ढाउण दीन मज़हबां दी कंध लई, कन्ढी मेरे सोभा पाईआ। सध्धर रखी ओस बख्शंद लई, जो बख्शिश मेहर कराईआ। जिस अन्त मेरी दर्द वंड लई, दर तेरे फेरा पाईआ। पन्ध मारया भागहीण मंद लई, कुकर्मण लई तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। रावी कहे मैं आदि जुगादि दी भागी, भागवन्त अख्वाईआ। सदा रही वैरागी, वैरागण हो के दयां दुहाईआ। सोई अन्तिम जागी, जगावण वाले ल्या जगाईआ। मेरी खुल्ह गई पिछली समाधी, समां समें विच्चों बदलाईआ। मैं धार तक लई आदी, जो आदि अन्त अख्वाईआ। मैं खेल वेख्या ब्रह्मादी, ब्रह्मण्ड दिता जणाईआ। मैं नाद सुणया अहलादी, संदेसा धुरदरगाहीआ। मैं हँस होई कागी, काग हँस रूप बदलाईआ। मेरी पिछली बदल गई वादी, वायदा आपणा पूर कराईआ। मैनूं नज़र आ गई अजीत जुझार दी बुढड़ी दादी, दाअवे नाल वेख वखाईआ। मैं खुशीआं विच रही अराधी, अराधना इक जणाईआ। सरन सरनाई लागी, चरण कँवल वड्याईआ। मैं मिल के मोहण माधी, माधव आपणा भेव खुल्हाईआ। झगड़ा छड्डया सन्त साधी, साधना आपणी लई कराईआ। चेता भुल्ल गया कृष्ण राधी, सीता राम ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेरा रंग रंगाईआ। रावी कहे गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती एह सारीआं मेरीआं भैणां, भणवईआ नज़र कोए ना आईआ। असां इक्को दवारे रहिणा, दूजा कन्त ना कोए हंढाईआ। सच सरनाई इक्को ढहिणा, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। प्रेम प्रीती पाणा गहिणा, भूशन रंगला सोभा पाईआ। महल अटल इक्को बहणा, छप्पर छन्न ना कोए रुशनाईआ। निर्मल नूर इक रुशनाणा, दीवा बाती ना कोए रखाईआ। आदि जुगादी भाणा सहणा, सिर सके ना कोए उठाईआ। जन भगतो तुहानूं इक्को संदेसा कहिणा, मैं सच दयां सुणाईआ। जां तक्को प्रभ दा दर्शन नैणां, बिना वेख्यां सांत कोए ना आईआ। ना कोई साक ना कोई सैणां, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। मात पित भाई नहीं कोई रहिणा, पुत्तर धी संग ना कोए रखाईआ। बिन साहिब सतिगुर

चुकाए ना कोई लहिणा देणा, हिसाब बेबाक ना कोए कराईआ। जदों वी पुरख अबिनाशी चरणी ढहिणा, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। कलयुग अन्त साध सन्त जगत चमकण वाला टटाणा, अन्तर नूर ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। रावी कहे जन भगतो मेरे वांग रखो आसा, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग कर के रही भरवासा, आपणा मन ना कदे बदलाईआ। जमना कहे मेरे उत्ते काहन पा के गया रासा, गोपीआं वाला खेल खिलाईआ। गंगा कहे मेरे उत्ते डेरे लाए अनेकां साधां, रिषीआं मुनीआं आसण जमाईआ। सुरस्ती कहे मेरा पल्ला नाल किसे नहीं लागा, मैं गंगा जमना विच मिल के आपणा झट लँघाईआ। गोदावरी कहे मैं लग्गण नहीं दिता दाग़ा, कूड़ क्रिया ना कोए वखाईआ। मेरी इक्को आसा जद मिले ते मिले प्रभू कन्त सुहागा, जो जन्म मरन विच कदे ना आईआ। क्यों मैनूं गोबिन्द थोड़ा जिहा रस दे के गया स्वादा, चरणामत मेरे मुख चुआईआ। मैं ओदों दी दिवस रैण ना सुत्ती ना जागी सद मारदी रही वाजां, आ मिल मेरे प्रभ गुसाईंआ। मैं वडयाउँदी रही तूं शाह पातशाह शहिनशाह दीन दुनी दा राजा, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। जन भगतो मेरी आसा पुनी तुहाडे साहमणे आ के मेरी रखी लाजा, मेहरवान हो के आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दीआं पूरीआं करे आसां, आहिस्ता आहिस्ता आहिस्ता लेखा सब दा पूर कराईआ।

१११३
२१

❋ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ दारा सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़पिंडी ज़िला गुरदासपुर ❋

रावी कहे जन भगतो प्रभ दी वखरी तालीम, वख वख दयां जणाईआ। मैं जुग जुग वेखदी रही क़दीम, क़ुदरत दा मालक की की कार कमाईआ। जो वसणहारा सचखण्ड दवारे घर अज़ीम, आलीशान सोभा पाईआ। दीनां मज़हबां विच करदा रिहा तक़सीम, गुर अवतार पैग़म्बरां सेव लगाईआ। बणा के छोटे छोटे यतीम, हिस्सयां वाली वंड समझाईआ। पूजा कराई नरां दे नाल मदीन, जोड़ी जगत विच वखाईआ। आपणा आप बिना भगतां तों किसे नूं होण नहीं दिता तस्लीम, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। कलयुग अन्त सब दी बुद्धी कीती मलीन, पवित्र नज़र कोए ना आईआ। मन ममता दे हो अधीन, कल्पणा विच रहे कुरलाईआ। जन भगतो मैं तुहानूं एसे कारण सद्दया मेरे उत्ते करो यकीन, अर्जन दा दस्सया अन्तिम पूरा दिता कराईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नूं कहो आफ़रीन, जो चल के आईआं आपणा पन्ध मुकाईआ।

एधरों नारद आ गया रावी मेरा नहीं दस्सया किड्डा राह महीन, जिथों दी चलया वाहो दाहीआ। तुहाडे विच इक वड्याई दुनियां कहे जल बिना जिउदी नहीं मीन, जल मीन तों बिना तुहाडी गत ना किसे दृढ़ाईआ। मैं वेखो बड़ा शौकीन, होया नहीं किसे दे अधीन, आहला अदना सारे वेख वखाईआ। मैं जद तक्कां तक्कां परम पुरख जोती दा सीन, बिना जोत तों दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। मैनूं कृष्ण कहिंदा रिहा मैं त्रैलोकी नाथ मालक लोक तीन, मैं मूँह दी वजा के बीन, उहनूं मसख़रिआं वाला पार्ट दिता वखाईआ। कुछ गा के नाल ज़बीन, ज़बान मुख दन्दां विच हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे जन भगतो आकड़ ना जाएउ असीं चढ़ गए उतले डंडे, चोटी आसण लाईआ। अजे ते तुसीं सिरफ़ आए रावी दे कन्ढे, कन्ढे कन्ढे आपणा क़दम टिकाईआ। मिस्सीआं रोटीआं ते नाल खाधे गंढे, खा के शुकर मनाईआ। जिस वेले प्रभ ने दीन दुनी मगर लाए अगम्मी धार डंडे, डां डां डां करे लोकाईआ। डरदा उच्ची कोई ना खंघे, साह साह विच दुहाईआ। फेर तुसां उँगलीआं पाउणीआं

१११४ मूँह पंजे, सहिम विच सोच विच आपणा आप छुपाईआ। फेर प्रभू ने लभ्भणे केहड़े चंगे केहड़े मंदे, वेखे थाउँ थाईंआ। १११४
२१ हुण तुसीं बड़े शौक नाल सौंदे उत्ते मंजे, आसणां उत्ते आसण लाईआ। सच पुच्छो मैं गिआरां दिन पावे दे हेठां पै पै कढ्ढे, २१
सच दयां सुणाईआ। जे तुसीं वेखो ते मेरी पिट्ठ ते पै गए खड्डे, भार चुक्क चुक्क के आपणा वक्त लँघाईआ। मेरे नाल बड़ी सख्ती नाल हंढे, जुग जुग भय वखाईआ। तुहानूं ते अज्ज चाअ नाल लाड नाल कही जांदा आउ मेरे डड्डे, बच्चयो गोदी विच टिकाईआ। जिस वेले फेर हिसाब कढ्ढे, लेखा वेख वखाईआ। पता नहीं विच्चों सारे रहिण कि अध्धे, कि दुगणे लए बणाईआ। तुसीं वी ऐंवें डरदे चरण ना जाइओ दब्बे, कहो असीं बड़ी सेव कमाईआ। मेरी सेवा लाई खोते ते चढ़ना खड़काउँदे जाणा डब्बे, हुण मेरी डब्बा खड़काउण दी वारी आईआ। जिस प्यार करना सो हिरदिउँ सरनाई लग्गे, नहीं ते पिछांह आपणे घर नूं जाओ भज्जे, मैं डग्गे नाल सब नूं दयां भजाईआ। जे बणना तुसीं चंगे, मेरे वांग जुग चौकड़ी मँगदे लँघे, फेर भावें तुहाडे कोल मोहणी रूप बणा के जमना सुरस्ती गोदावरी आ जाए गंगे, तुसां अक्ख ना लैणी बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिना बन्दगीउँ बणाए बन्दे, जिन्हां नूं बन्दना इक समझाईआ।

❋ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ सरूप सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़पिंडी ❋

नारद कहे जन भगतो मेरा डब्बा करदा डिब्ब डिब्ब डिब्ब, डौरु रिहा वजाईआ। अज्ज तों सिख्या सुण लओ जो सतिगुर सरन आए बीबीआं बच्चयां दे मूँह तों लाह के आया करो गिड्ड, बिना मुख धोतिआं चरण सीस ना कोए निवाईआ। वेख्यो प्रशादि खा के ना जाइओ टिभ्भ, आपो आपणा राह तकाईआ। मेरे नाल वायदा करयो सानूं भरोसा होया इक्क, दूजा अवर ना पिता माईआ। जेहड़ा मेरी गल्ल तों होवे जिच्च, ओह मैनूं देवे सुणाईआ। क्यों मैं चार जुग दा पुराणा सिख, हुक्म मन्नण दी आदत मैनूं बड़ी आईआ। विछोड़े विच जे ना मिले ते मैं रोवां पिट्ट पिट्ट, कूक कूक सुणाईआ। आह वेख लओ मेरे कोल पटने वाले दी इक चिट्ट, गोबिन्द जांदा जांदा गया फड़ाईआ। नारदा जिस वेले दुनियां दी सुरती जावे ना टिक, अन्तर शांत कोए ना आईआ। ओस वेले पुरख अकाल ने भगत दवारे लाउणी इट्ट, इट्टां पत्थरां तों खैड़ा दए छुडाईआ। तुसीं जदों तक्को मैं जुग जुग लाई टिक, टिकटिकी विच वेख वखाईआ। वेख्यो मेरे बचन नूं अद्ध विच जांदे कल्लर विच ना जाइओ सिट्ट, हिरदे अंदर लैणा टिकाईआ। प्रभ दा अमृत धुर दा भगत कलयुग माया नाल ना जावे भिट्ट, दुद्ध दा दुद्ध नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर इक्को इक समझाईआ। नारद कहे मेरा डब्बा करदा डां डां डां, डावांडोल वेखे लोकाईआ। जन भगतो तुसां पुरख अकाल नूं समझणा पिता माँ, आदि जुगादी इहो जणेंदी माईआ। तूं मेरा मैं तेरा खुशीआं नाल जपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप समझाईआ। वेख्यो कलयुग विच रल के हँस ना बणयो काँ, कागों हँस तुहानूं दिता बणाईआ। भावें मैं खोते ते चढ़या तुहानूं वेख के मैनूं चढ़या चाअ, चाउ घनेरा दयां जणाईआ। तुहाडे सीस उत्ते जगदीश दा हथ्थ ते ठंडी छाँ, अगनी तत ना कोए तपाईआ। जिधर जाओ तुहाडी फड़ी फिरदा बांह, सहारा आपणा इक बणाईआ। मैं दिने रात करदा वाह वाह, वाह वाह तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा दए खुल्ह्राईआ। नारद कहे मेरा डब्बा करे खड़ खड़ खड़, खिड़की कुण्डे सब दे रिहा हिलाईआ। जन भगतो राह विच ना जाइओ अड़, अड़िक्के दिसे जगत लोकाईआ। फल लगदे बड़े बहुते जांदे विच्चों झड़, पक्कण वाला कोई नज़री आईआ। विद्या सारे जांदे पढ़, मंज़ल कोई जावे चढ़, प्रभ दा दर्शन कोई विरला भगत पाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दा वहिंदा हड़्ह, शब्द डोर नाल ल्यांदीआं फड़, सारीआं बैठीआं सीस निवाईआ। तुसीं ते ओदण दे सौंदे आपणे घर, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सणे मेरे असीं बाहर बैठे रहे विच अल्हड़पिंडी ते बाबूपुरे दी रड़, तुसां प्रभ अग्गे बेनन्ती कर के सानूं महिमानी ना किसे खवाईआ। असीं गुस्से विच गए सड़,

१११५ २१

जीअ करदा कि सारयां नाल पईए लड़, लड़ाके हो के दईए वखाईआ। पर जां फिर निगाह मारीए जिस वेले तुसीं प्रभ दे चरणां उत्ते डिग पैंदे दड़, एह वेख के साडी हिम्मत रहे ना राईआ। इउँ कहिंदे जीउदे जाईए मर, लोक लज्जया रहे ना डर, शरअ हया नेड़ कोए ना आईआ। तुसीं नहाउँदे दिवस रैण चरण धूढ़ी वाले सर, सरोवर इक्को सोभा पाईआ। मैं एनी गल्ल दिती कर, अगला लेखा फेर दयां जणाईआ। नारद कहे मेरे खोतिआ हुण अगले घर चल, ओथे इक ग्लास मँग लईं जल, मैनूं प्यासे नूं देणा प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दे मसले करे हल्ल, मेहर नज़र इक उठाईआ।

✻ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ हज़ारा सिंघ दे गृह पिंड अल्हड़पिंडी ✻

नारद कहे मेरा डब्बा वज्जे डगा डग, डुगडुगी सब नूं रिहा सुणाईआ। जन भगतो चार कुण्ट वेखो लग्गी अग्ग, त्रैगुण सब नूं रही जलाईआ। चार दिन दी ज़िंदगी जीवण जग, अन्त रहिण ना पाईआ। भावें तीर्थ तट जाओ सरोवर अठसठ नहाओ काअबे करो हज्ज, बिना हज़ूर तों पार ना कोए लँघाईआ। भावें कूक पुकारो भावें रसना गावो सद, बिना शहिनशाह शहर धुर ना कोए टिकाईआ। मैं सच दस्सां जिंनां चिर दीन दुनी ना दयो छड्ड, नाता कूड़ जगत तजाईआ। उनां चिर समझयो असीं डिग्गे डूँघी खड्ड, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। असीं उस प्रभू दी यद्द, जो यके बाद दीगरे भगतां सदा तराईआ। मैं दस्सण आया तब, जिस वेले तबीअत विगड़ी जगत लोकाईआ। बहुते कहिंदे है नहीं रब्ब, क़ुदरत विच चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मेरा डब्बा मँगे ग्लास पाणी, ज़ोर ज़ोर सुणाईआ। अंगड़ाई लओ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सवाणी, तुहानूं दयां समझाईआ। तुसां पिछला घर लैणा पछाणी, जिथ्थे गंगा सागर गंगा जल लै के आईआं चाँईं चाँईंआ। खुशीआं नाल सुण के गईआं धुर दी बाणी, पिछला चेता दयां कराईआ। मैं ते पहली वार आया बण अञ्याणी, रस्ता नज़र कोए ना आईआ। मैं एसे कर के संदेसा देवां जो हुक्म देवे जाण जाणी, जानणहार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा रंग वखाईआ। नारद कहे मेरा डब्बा कहे क्यों चड़िउँ बोहड़ दी चोटी, मैनूं दे समझाईआ। मैं हस्स के किहा मैं उच्चा चढ़ के वेखां किथ्थे पक्कणी मेरी रोटी, कौण मैनूं खवाईआ। एह ते सारे बण गए आपणे आपणे गोती, मेरी परदेसी दी सार किसे ना पाईआ। मैं वी ओस प्रभू दी जोती, जो घर घर जोत करे रुशनाईआ। भावें मैनूं

१११७
२१

चढ़न नूं मिली खोती, ख़ता नज़र कोए ना आईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती तुसीं सुआर लओ आपणी साड़ी धोती, वस्त्र तन सुहाईआ। अन्तर अन्तर लओ सोधी, दुरमति मैल रहे ना राईआ। मेरी हिलदी वेखो बोदी, इशारे रही कराईआ। जिस नूं याद करदे गए वेदी सोढी, ओह आया धुर दा माहीआ। भगत सुहेला बण के मौजी, मजलस आपणी इक बणाईआ। जिहनूं लभ्भ सके कोई ना जोगी, जुगीशरां हथ्थ किसे ना आईआ। आदि जुगादी बण संजोगी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। तुसां सारयां ओस दे चरण चुम्मणे भगतां दे हथ्थ लगाउणा गोडीं, नवीं बोली गंगा गुड मॉरनिंग कहि के देणा सुणाईआ। फिर इक इक्क बिन्दी मेरी लाइओ ठोडी, नाल रावी लैणी मिलाईआ। मैं खोल्ह्आं आपणी पोथी, पुस्तक दयां वखाईआ। जिस विच सतिगुर नानक लांव बोली सी चौथी, प्रभ अबिनाशी मिल के वज्जे वधाईआ। बाकी सृष्टी दिसदी थोथी, जीवण कम्म किसे ना आईआ। जे जन भगत वरज के सानूं खवा देण रोटी, फेर परत के जाईए चाँईं चाँईंआ। असीं दक्षिणा विच गाँ मज्झ नहीं मँगणी झोटी, वस्त्र भूषण ना मँग मँगाईआ। क्यों सानूं साहिब दी दिसदी ओह सोटी, जेहड़ी सुत्तयां रही जगाईआ। जे सानूं देणा जन भगतो आपणीआं अक्खां दे हन्झू प्रेम प्यार दे मोती, झोली देणी भराईआ। इहो गल्ल मैं चंगी सोची, सच दिता सुणाईआ। जे गुरमुख किरपा कर देवे रविदास चमारा मोची, साडी मुशिकल हल कराईआ। जन भगतो अग्गे वास्ते तुहाडी साडी सांझी बणी रहे रोज़ी, राजक रिज़क रहीम रहमत आप कमाईआ।

✻ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ अच्छर सिँघ दे गृह पिंड अल्हड़पिंडी ✻

नारद कहे साहिब सतिगुर मेरे दोवें हथ्थ जोड़े, जोड़ीआं वाल्या सीस निवाईआ। हुण पै गए विच रोड़े, कर किरपा पार कराईआ। तेरे अग्गे नहीं कोई ज़ोरे, ताक़तवर तेरी सरनाईआ। आप ते चढ़ें उत्ते घोड़े, शाह अस्वारा नाउँ धराईआ। जन भगतां नूं खुशीआं नाल खवाएं पकौड़े, पकवान तरह तरह बणाईआ। की मेरे मूँह विच कोई निकले सी फोड़े, सुलह मारन वाला नज़र कोए ना आईआ। मैं वी गिआरां दिन बैठा रिहा रख के डोरे, आपणी आस वधाईआ। कदी ते मेरी ग़रीब दी पवेगी लोड़े, आपे लए बुलाईआ। मैं बथेरा रोवां देवां हन्ह्रे, गल्लां बातां विच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब तेरी वड्याईआ। नारद कहे मेरा डब्बा कहे जागो जागो जागो, जागण वेला आया। उठो उठो उठो भागो भागो भागो, भगवन मेला रिहा मिलाया। साधो साधो साधो आपणा आप साधो, सम्बल बैठा सोभा पाया। अराधो अराधो अराधो, जिस ने राधा कृष्ण माण दवाया। लाभो लाभो लाभो, जिस ने

सीता राम बणां विच फिराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आया। नारद कहे मेरा डब्बा कहे आया आया आया, आया बेपरवाही। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बरां गाया, गा गा गए सुणाई। जिस ने जुग जुग कलमा नाम चलाया, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी करे पढ़ाई। जिस ने दीन मज़हब वंड वंडाया, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दिते बणाई। जिस ने क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश रंग रंगाया, चारे वरनां कर कुड़माई। जिस ने धरनी धरत सुहाया, चारों कूटां सोभा पाई। जिस ने सूर्या चन्द रुशनाया, मण्डल मण्डप डगमगाई। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेल खिलाया, ख़लक दा ख़ालक नूर अलाही। उह देस उह परदेस उह वेस उह नरेश उह महेष उह दस्मेश आपणा वेस वटाया, जग नेत्र नज़र किसे ना आई। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक सुणाई। नारद कहे मेरा डब्बा कहे वेखो धुर दा सज्जण, मीता इक अख्वाईआ। करो अगम्मा भजन, भय भंजन रिहा दृढ़ाईआ। करो साचा मजन, दुरमति मैल धवाईआ। पाओ अगम्मा कज्जण, कजला धार बणाईआ। चढ़े अगम्मी रंगण, अंदर बाहर करे सफ़ाईआ। किसे दवारे जाणा पए ना मँगण, घर घर विच दए वड्याईआ। पवित्र करो बदन, चरण धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा धुर अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ।

❊ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ वकील सिँघ दे गृह पिंड अल्लड़पिंडी ❊

नारद कहे मेरा डब्बा कहिंदा साहिब नूं करो निमस्कार, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जन भगतो रहिणा नाल प्यार, दुतिया रूप ना कोए वखाईआ। तुहाडा सारयां दा सांझा इक दरबार, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठां तों खै़ड़ा दिता छुडाईआ। तुसीं अजे चुरासी विच्चों दो चार, बहुते नज़र कोए ना आईआ। मैं वेखदा तकदा जाणदा बुज्झदा पावां सब दी सार, अन्तश्करन वेख वखाईआ। जिस तरां तुहाडी बाहरों मिट्ठी गुफ्तार, एसे तरां अंदरों मन लओ बणाईआ। लड़ना रुसणा झगड़ना नहीं चंगी कार, मूर्खां वाली मति गवाईआ। जे तुहाडा मालक शाह पातशाह सच्ची सरकार, तुसीं सच्ची रईयत बण के दयो वखाईआ। वेखो गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अवतार पैग़म्बर गुर चार जुग दे पनिहार, हुक्मे अंदर अज्ज वी आए चाँईं चाँईंआ। जुग चौकड़ी करदे रहे इंतज़ार, बिन नैणां नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे

खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। नारद कहे जन भगतो बीत गईआं कई सदीआं, सदम्यां विच झट लँघाईआ। वेखो भज्जीआं आईआं वहिण विच वहिण वालीआं नदीआं, आपणा रूप बदलाईआ। प्रेम दे अंदर बद्धीयां, मुहब्बत विच वड्याईआ। एसे तरह तुहाडीआं प्रीतां ओस दे नाल लग्गीआं, जेहड़ा कदे ना करे जुदाईआ। भावें तुसीं माढ़ीआं भावें तुसीं चंगीआं, चिक्कड़ भरीआं लए गल लाईआ। वेख्यो डुल ना जाइओ जे ग़रीबी विच आवण तंगीआं, भुक्ख नाल भुक्खा ना कोए मर जाईआ। इस दे दर्शन नूं जमना सुरस्ती गोदावरी रोंदीआं रहीआं गंगीआं, रावी राह तक तक के सैंकड़े साल दिते बिताईआ। तुसीं ते पैरीं पाए जोड़े ओह विचारीआं वेखो पैरीं नंगीआं, भज्जण थाउँ थाईंआ। जेहड़ीआं वस्त्र पहनदीआं सी रंग बरंगीआं, उन्हां दे उत्ते ढाई गज़ दा खद्दर वकील सिंघ ने दिता पाईआ। एहो जिहीआं उह लग्गीआं वेख पाबन्दीआं, हैरानी विच नारद कहे, मैनूं रहीआं सुणाईआ। मैं हस्स के किहा नी कमल्यो इहो जिहा वेस करन वेसवा ते रंडीआं, कन्त सुहागणां चलण आपणे प्रभ दी रजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे जन भगतो मेरा ना करयो गुस्सा, गुस्से वाली ना गल्ल सुणाईआ। ऐवें ताअ ना दयो मुच्छां, बाहरों गंढु पवाईआ। पहिलों आपणा अंदरों पवित्र करो जुस्सा, ज़मीर लओ बदलाईआ। सतिगुर नाल रहे कोई ना रुस्सा, मन ममता ना दए दुहाईआ। जिंनां चिर गोदी चुके ना बणा के पुत्ता, सुत आपणे रंग रंगाईआ। उनां चिर उस दा भेव गुज्झा, बाहरों हस्स हस्स के सब नूं दए टरकाईआ। जिहनां दे अंदर वड़ जाए उन्हां दा वसा देवे झुग्गा, झुग्गी अंदर डेरा लाईआ। तुसीं नहीं जाणदे एह वलीआ आदि जुगादी खेल करे विच जुगां, गुर अवतार पैग़म्बरां नूं भुम्बल भूसिआं विच भवाईआ। मैं वी नहीं समझ सक्कया इहदा मुद्दा, मुद्दत तों इहदे पिच्छे लग्ग के आपणा घर बार तजाईआ। किते माण ना करयो असीं इहनूं प्याउँदे ताज़ा चो के दुध्धा, दुध्धाधारी नज़री आईआ। एह हथ्थ ना आया कदी किसे उत्ते बसुधा, बुध वरगे कर कर ध्यान बैठे ताड़ीआं लाईआ। जे एह आपणे आप चाहवे ते चमार जुलाहिआं दा बणा देवे गुड्डा, असमानां दे उत्ते दए चढ़ाईआ। एह नहीं जाणदा भावें कोई अमरू निथावें वरगा होवे बुढ्ढा, सत्तरे बहत्तरे नूं प्यार कराईआ। किते खुश ना हो जाइओ असीं मुट्ठीआं भरदे ते छकाउँदे रुग्गा, बड़ी सेव कमाईआ। जिंना चिर आपणा मन अंदरों करोगे ना शुद्धा, एह साधूआं वांगू भरम विच कदे ना आईआ। एह चंगा खाण पीण नहीं गिज्झा, धन्ने वरगे दे रुक्खे सुक्खे टुकड़े खा के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा मेल मिलाईआ। नारद कहे मैनूं सारे कहिंदे शैतान, शैतानी दयां कराईआ। जन भगतो सच दस्सां मैं जदों करां ते करां प्रभू दा ज्ञान, ज्ञान बिना निशान ना कोए जणाईआ।

एह ज़रूर मेरा मसख़रिआं वाला बयान, हेरा फेरी कर के सिध्धा राह देवां वखाईआ। कदे मैं ब्राह्मण बण के जजमानां दी करां कल्याण, कदे मैं भगत सन्त बण के जिज्ञासुआं नूं करां परवान, कदी मैं कन्त बण के नारीआं दी करां पहिचाण, कदे मैं जीव जंत बण के मूर्ख होवां अञ्याण, कदे मैं बलवन्त बण के सब नूं देवां दान, कदे मैं अनन्त बण के आपणा खेल करां महान, सच पुच्छो मैं निराकार निरँकार जननी विच्चों आपणा आप जण के जणेंदी सुचज्जी ओहो इक्को माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। नारद कहे मेरी बेनन्ती मेरी अरजोई, अर्ज़ दयां सुणाईआ। भगत बणे जे कोई, मैं ज़रूर उस दा दर्शन पाईआ। जिस नूं दरगाह साची मिले ढोई, मैं ढोलक छैणिआं दे थाँ उहदे अग्गे आपणा पीपा दयां खड़काईआ। सुरती रहे किसे ना सोई, सुत्तयां नूं दयां जगाईआ। मैं इक दिन जुत्ती चुक्क लई सी कबीर दी लोई, उस दीआं अक्खां विच घट्टा पा के आपणा आप छुपाईआ। फिर मैं उच्ची उच्ची रौला पाया हाए मेरी चोरी होई, मैनूं कबीर जुलाहा लुट्ट के लै गया मेरी दरोही, दरोही दरोही कर के दिता सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे लोई कहे कबीरा मेरी चुक्क लई किसे जुत्ती,
कवण एथे फेरा पाईआ। मैं कढु के ज़िमीं विच खुत्ती, टोए विच दिती दबाईआ। मथ्थे तिलक लगा के बोदी हला के साहमणे
१९२० आ के, मणके भवा के किहा, कुछ मैथों लओ पुच्छी, मैं जन्म जन्म दे लेखे दयां समझाईआ। मैं रद्दी काग़ज़ां दी बग़ल १९२०
२१ विच्चों कढु के गुच्छी, जेहड़ी बद्धी सी नाल रस्सी, गंढुां घुट्ट घुट्ट के पाईआ। जां मैं निगाह मारी लोई मैनूं दिसी जिस २१
तरह कबीर नालों रुस्सी, मूँह भैड़ा जिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद अपणा खेल वखाईआ। लोई कहे कबीर जी ओह वेखो आया ज्योतिशि, ओह ज्योतिश दए लगाईआ। मैं झट किहा लोई तूं की सोचदी, लोइण मेरे लोइणां नाल मिलाईआ। ऐस जुलाहे नाल की सुख भोगदी, जेहड़ा तेरी जुत्ती ना सक्कया लभाईआ। इहनूं सार की ओस प्रभू दी मौज दी, बिना पंडतां तों हथ्थ किसे ना आईआ। निक्कीआं निक्कीआं गल्लां दस्सणीआं मेरी खेल रोज़ दी, सहजे दयां समझाईआ। मैनूं इक पता लगदा तुहाडी एह धरती माँ रूप बण गई चोर दी, तेरी जुत्ती चोरी कर के आपणे विच दबाईआ। आसा बदल गई लोई कमज़ोर दी, विश्वास पंडत उत्ते कराईआ। कबीर किहा तूं की एथों लोड़दी, एह ते कोई शैतान रूप बदलाईआ। नारद किहा जे लोई तूं मेरे आखे लग्ग के उत्तों धरती गोड दईं, गिठ सवा गिठ हलाईआ। जां लोई ने तीला मारया नारद ने ताली लाई ज़ोर दी, हथ्थ हथ्थां उत्ते खड़काईआ। वेखी ऊ शैतानी इस धरती हराम खोर दी, जेहड़ी भगतां नाल दग़े रही कमाईआ। जे मैं पंडत ना आउँदा ते तेरा जुत्ती नाल

जोड़ कवण जोड़दी, सांझा रंग रंगाईआ। लोई किहा एह तेरी किरपा मेहरवानी मुहर दी, मोहर धरती उत्ते लगाईआ। नारद कहे जे जुत्ती हुंदी किसे होर दी, मैं बिना सवा रुपईए दितिआं तों इशारा ना कदे कराईआ। उने चिर नूं कबीर टाहणी भन्न ल्यांदी बोहड़ दी, नारद दे सिर विच दिती लगाईआ। नारद किहा खौरे कोई सवाणी एह मेरा मिट्टी दा भाण्डा ठकोरदी, दुध्ध रिड़कण वास्ते पसंद करन आईआ। फेर कबीर ने चपेड़ मारी ज़ोर दी, मूँह दिता भवाईआ। नारद किहा किड्डी अंदरों आवाज़ आई शब्द अगम्मी घनघोर दी, कन्नां विच्चों सां सां सां दिता कराईआ। फेर कबीर ने उहदे गल विच रस्सी पाई डोर दी, ज़ोर नाल खिचाईआ। नारद कहे खौरे एह कोई बड़ी चंगी सवाणी जेहड़ी मैनूं लोड़दी, वर प्राप्त करन वास्ते भज्जी थाउँ थाईंआ। फेर कबीर ने सफ़ा विछा लई आपणी दोहर दी, थल्ले दिती विछाईआ। नारद किहा मेरी वी मनसा सी एहो लोड़ दी, कोई मैनूं आराम नाल देवे सवाईआ। एह बचन सुण के लोई सहजे नाल पिठ ठकोरदी, पुट्ठी मुक्की दिती लगाईआ। नारद किहा ओ बेबे एह कोई खल्ल नहीं ढोर दी, एह ब्राह्मण नहाउण धौण वाला सोहणा मलूक डेरा लाईआ। तूं दस्स किस नूं टटोलदी, जे कोई अजे तक्क नहीं लभ्भा मेरे नालों चंगा होर नज़र कोए ना आईआ। लोई गुस्से विच बोलदी, तूं किधरों आया शुदाईआ। नारद किहा एह आवाज़ ख़ाली ढोर दी, मैनूं अजे ना भाईआ। जे तूं आपणे पती दे बराबर हो जाएं तोल दी, वज़न इक्को जिहा कराईआ। ओहने आपणे कन्न फड़ के खिच्चे, नारद कहे, फिर किसे दी जुरअत नहीं मख़ौल दी, अक्ख लए उठाईआ। उहो मरदी उहो फसदी जेहड़ी हिरदिउँ डोलदी, जेहड़ी प्रेम विच रत्ती ते हंढ्ढावे कमलापती, पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। उहदी कदे ना बदले अक्खी दूसरे दी होवे कदे ना सख़ी, भावें किन्ने आ जाण मुनी ऋषी, मुनीशरां वल निगाह ना कदे उठाईआ। नारद कहे जन भगतो तुसां कल्ह केहड़ी गल्ल सिखी, ते केहड़ी आपणे हिरदे विच लिखी, मैनूं दयो जणाईआ। केहड़ी तुहाडे कोल चिट्ठी, जेहड़ी सदा रहे अनडिठी, नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेसे रिहा सुणाईआ। जन भगतो सुणो मेरयो भईआ, भैणो दयां जणाईआ। प्रभू जे इक्को सईआ, साजण इक अख्वाईआ। सच दस्सो रावी उत्ते जिस मलाह दी चढ़े सो नईआ, उह मलाह तुहाडे कोल नज़र कोए ना आईआ। जो प्रभ सरनाई ढईआं, उन्हां दी फड़ लईआं बहीआं, बाज़ू आपणे हथ्थ रखाईआ। बाकी दा हिसाब सारे लिखदे रखदे निउदरे पाउँदे उत्ते वहीआं, पुत्त पोतरे ताईं लेखा चलया आईआ। तुहानूं समझ नहीं आई क्यों बचन सिँघ ने अरदासा कीता सवा रुपईआ, सुक्कयां कक्खां उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। नारद कहे सवा रुपईआ

तुहाडी अरदास, अरदासे पिछले दिते तजाईआ। तुसीं प्रभ दे ते प्रभू तुहाडे पास, रावी दा आर पार किनारा दए गवाहीआ। नारद कहे मैनूं ज़रूर देणी पई शाबाश, शाबा कहि के सब नूं दयां सुणाईआ। तुहाडा ओस दे चरणां विच वास, जिस दे अग्गे वास्ता पा पा सारे सीस निवाईआ। तुहानूं कटणा पए ना कोए बनबास, जंगलां विच ना कोए भवाईआ। पर्बतां उत्ते होणा ना पए उदास, घर बार तजाईआ। पढ़ना पए ना विच किसे कलास, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। इक नाल जुड़ गया नात, रिश्ता ल्या बणाईआ। मेरी इक मन्नयो बात, बातन दयां समझाईआ। बाबूपुर वाल्यो तुहाडी इक्कीआं दी नाल ज़रूर होवे जमात, ज़ामन आपणा आप कराईआ। बाकी सब दा लहिणा देणा पूरा करे जो सब दा माई बाप, पिता पुरख अकाल वड वड्याईआ। असीं खुशी नाल भोरा भोरा खा के जाणा खाज, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रावी नाल मिलाईआ। फिर हाज़र होवांगे जिस दिन पहली चेत नूं पहनणा ताज, तख्त निवासी भगत दवारे डेरा लाईआ। नारद कहे तुहाडा सोहणा लग्गा समाज, मैं समझ के खुशी मनाईआ। एथे ना कोई सवाल ना कोई जवाब, बिना सीस झुकाउण तों चारा नज़र कोए ना आईआ। मैं जांदा जांदा नमस्ते नमो नमों निमस्कार भगतो सब नूं करां आदाब, भगतो कीती बेअदबी मेरी मुआफ़ देणी कराईआ। मैं पंज सत्त दिन फिर के आउणा बग़दाद, मेरी सेवा दिती लगाईआ। अरब वासीआं दा लहिणा
१९२२ देणा ते लेखा आण के देणा जवाब, हुक्म धुर दा दिता सुणाईआ। मेरी ग़रीब दी की मजाल, घड़ी पल अटक ना सकां १९२२
२१ राईआ। तुसीं जिथ्थे गाया करोगे गाथ, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै दा नाअरा लाईआ। मैं ओथे दूर २१
दुराडा झुक के करया करांगा आदाब, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मेरी अन्त अख़ीर सब दे अग्गे अरदास, प्रेम प्यार मुहब्बत मँग मँगाईआ। आपणे रखयो पास धीरज धार लैणा विश्वास, विषयां विच साहिब सतिगुर भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडे साहमणे साख्यात, साखी प्रमाण दी लोड़ रहे ना राईआ।

नारद कहे जिस वेले वकील सिँघ दे गल विच सोहँ फसिआ, अद्ध विच आ के आपणी खुशी मनाईआ। मैं खिड़ खिड़ा के हस्सया, आपणी लई अंगड़ाईआ। शायद अज्ज एस थोड़ा प्रशाद होवे छक्कया, ज़ोर ना सके लगाईआ। जां रात दा होवे थक्कया, नींदरे विच उँघलाईआ। मेरा जीअ करदा इहनूं लै जावां नाल मदीना मक्कया, मक़बरयां दे उत्ते दयां फिराईआ। जिथ्थे वड्डी वड्डी रेत बालू दिसे उडदा घट्टया, धूढ़ो धूढ़ नज़री आईआ। जे कोई वेखण आवे उहदे कोलों ना

जावे लँघया, मैं इशारयां नाल जणाईआ। फेर पुच्छया ज़ोर नाल सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान क्यों नहीं जप्पया, उह जपणा सौखा जां मेरे नाल फिरना सौखा मैनूं दे समझाईआ। फेर लै जावां जिधर घट्टा होवे तप्पया, अगनी रूप वटाईआ । फेर लै जावां जिथ्थे फूड़ी सफ़ा होवे विच्छया, कहां नाले रोजे रख नाले निमाज़ां रख नाले हथ्थ रख कन्नां तों लै के गिट्टयां, मूँह दे भार आपणा आप सुटाईआ। फेर की कहें मैथों नहीं जांदा झुकया, कमर नीवीं ना कोए कराईआ। फेर मैं कहां ओथे चलया जाह जिथों आयां बिना ओस तों पैंडा कदे ना मुक्कया, मक्का मदीना ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच दी कार कमाईआ।

❊ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ भजन सिँघ दे गृह पिंड दोस्तपुरा ❊

रावी कहे मैनूं अमृत रस मिल्या ठंडा पाणी, मेरा अगनी तत बुझाईआ। मैं दिवस रैण जपदी रही अगम्मी बाणी, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। आसां तकदी रही चारे कुण्ट चारे खाणी, चार वरनां वेख वखाईआ। कवण वेले आए मेरा पुरख सुल्तानी, शाह पातशाह धुरदरगाहीआ। जो आत्म परमात्म परमात्म आत्म आदि जुगादी साचा हाणी, १९२३
बिरध बाल ना रूप वटाईआ। साची मंज़ल दस्से इक रुहानी, रूह बुत करे सफ़ाईआ। शब्द अणयाला तीर मारे कानी, २१
कलमा हक़ हक़ दृढ़ाईआ। झगड़ा रहे ना कोए जिस्मानी, जिस्म ज़मीर दए बदलाईआ। शरअ दिसे ना कोए बेगानी, बेवा रूप ना कोए वखाईआ। जलवा नूर देवे असमानी, घर घर अंदर करे रुशनाईआ। दीन दुनी दे अंदरों कलयुग कूड़ी क्रिया कढ्ढे बेईमानी, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। रावी कहे मैनूं मिल्या अमृत रस, झिरना रिसक रिसक झिराईआ। मेरा आपा होया वस्स, कल्पणा अवर रही ना राईआ। मैं चरणां उत्ते गई ढठ्ठ, निम्रता विच सीस निवाईआ। किरपा कर साहिब समरथ, दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग कूड़ कल्पणा किस बिध जावे नस्स, हर हिरदे होए सफ़ाईआ। साची मंज़ल मिले अगम्मी घट, तट किनारे वज्जे वधाईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप रहे ना अन्धेरी रात, निरगुण नूर चन्द चमकाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म सद वस्से तेरे पास, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला दयानिध ठाकर स्वामी भेव अभेदा खोल्हे आप, आप आपणी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा करना जाप, जगजीवण दाता आपे होए सहाईआ। त्रैगुण अतीता ठांडा सीता मेट मिटाए त्रैगुण माया आग, अगनी तत ना कोए तपाईआ। अन्त कन्त भगवन्त तेरी आपे पुच्छे

वात, दाता दानी वेखे जगत लोकाईआ। ज्यों भावें त्यों लवे राख, हरि करता धुरदरगाहीआ। निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, ज़हूर आपणा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दरगाह साची सच दुआरा एकँकारा इक इकल्ला आप जणाईआ। रावी कहे मैनूं अमृत मिल्या जल, जल थल महीअल वज्जी वधाईआ। मेरा विछोड़ा होवे ना पल, आदि जुगादी संग निभाईआ। अन्धेरा रहे ना डूँघी डल्ल, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। झगड़ा मुके कलयुग कल्ल, कल काती रहे ना कोए कसाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां मसला होवे हल्ल, भविख्तां विच लेखा गए जणाईआ। धाम वेखां उह अटल, सच दुआर लवां मल्ल, चरण कँवल इक सरनाईआ। निरगुण धार जावे रल, जोती जोत विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। रावी कहे मेरी तृष्ना मिटी प्यास, हरस रही ना राईआ। आया सच विश्वास, भरोसा ल्या बंधाईआ। कवण वेला मिले पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। अन्तर देवे साथ, निरंतर नाता लए जुड़ाईआ। मेरी इक्को हो जाए ज़ात, अज़ाती रूप ना कोए वटाईआ। कूड़ कल्पणा करे वफ़ात, सति धर्म लए उपजाईआ। साचे मण्डल पावे रास, सुरती शब्दी गोपी
१९२४ काहन नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। रावी कहे अमृत विच्चों १९२४
२१ मिली अगम्मी शक्त, मेरी शख्सीअत दिती बदलाईआ। हुक्म संदेसा दिता जगत, दीन दुनी दृढ़ाईआ। प्रगट करे प्रभू प्रभ २१
भगत, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। उह वेला सुहञ्जणा होवे वक्त, मिले माण वड्याईआ। गुरमुखां उपर करे तरस, रहमत आप कमाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, अंमिउँ रस आप चखाईआ। जन्म मरन दी मेटे हरस, चुरासी फंद कटाईआ। काया मन्दिर अंदर दे के दरस, निज लोचण नैण करे रुशनाईआ। एह खेल होवे असचरज, जिस नूं समझे ना कोए लोकाईआ। प्रगट हो मर्दाना मर्द, महबूब मुहब्बत वाला वेख वखाईआ। दीन दयाल दयानिध ठाकर दीनां अनाथां वंडे दरद, दो जहानां वेख वखाईआ। रावी कहे मेरी बेनन्ती मन्ज़ूर करे अर्ज़, आरज़ू आपणे लेखे लाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक पूरा करे फ़रज़, गर्ज़ सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे फ़र्श अर्श, अर्श फ़र्श आपणी कार कमाईआ।

✻ २५ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ धिरता सिँघ दे गृह पिंड कलानौर ✻

रावी कहे मेरी सुहञ्जणी होवे रुत्त, रुतड़ी प्रभ महकाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। मेरा कर्म करम दा मेट के दु:ख, दुखड़ा दिता गवाईआ। अन्त उपजाए इक्को सुख, निरंतर आपणा रंग रंगाईआ। धर्म दी धार दस्स के तुक, तुख्म तासीर दिता बदलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल के रुख़, सतिजुग साचा राह जणाईआ। शब्दी गोबिन्द सूरा उठा के सुत, सुत दुलारे रंग रंगाईआ। जिस नूं ब्रह्मण्ड खण्ड रहे झुक, पुरी लोअ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। रावी कहे मैनूं गुर अवतार पैग़ंबर सारे देण दलासा, संदेस अगम्म सुणाईआ। मेहरबान महबूब दा रख भरवासा, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। जिस ने खेल करना पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। मण्डल मण्डप पावे रासा, गोपी काहन काहन नचाईआ। सद जोती दा बण के जाता, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आत्म ब्रह्म दा हो ज्ञाता, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया झगड़ा मेटे ज़ात पाता, सतिजुग साचा रंग रंगाईआ। होए सहाई नाथ अनाथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। रावी कहे गुर अवतार पैग़ंबर मैनूं सारे देवण थापी, हथ्थ पुश्त पनाह टिकाईआ। वेखणा खेल प्रभू प्रतापी, पाब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। जिस ने मेटणे कूड़े पापी, दुष्ट दुराचारां दए खपाईआ। आत्म ब्रह्म दे वेखे जापी, जो हिरदे हरि रहे वसाईआ। थर थर सृष्टी रही कांपी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जिस ने लहिणा देणा चुकाउणा बाकी, बाकायदा आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा चुके तन वजूद माटी ख़ाकी, ख़ालक खलक वेस वटाईआ। करे खेल आप इतफाकी, इतफाकीआ आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। रावी कहे गुर अवतार पैग़ंबर मेरा देवण साथ, सगला संग बणाईआ। तेरा मालक पुरख समराथ, मेहरवान महबूब नूर अलाहीआ। ओह प्रगट होवे साख्यात, जोती जाता डगमगाईआ। जो गुर अर्जन गया आख, आख़र पूरा दए कराईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। दीन दुनी दी इक जमात, जुम्मला अक्खर इक पढ़ाईआ। नज़री आए नर निरँकारा वाहिद, वाहवा गुरु इक वड्याईआ। साचा हुक्म करे आइद, आदत इबादत विच बदलाईआ। दीन दुनी दा इक्को होवे कवाइद, करनी करता आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण रावी वेख मंज़ले हक़ मक़सूद, दरगाह सच ध्यान लगाईआ। जिस ने साडा लेखा करना आप मनसूख़, हुक्म इक

१ १ २ ६
२१

जणाईआ। सानूं करना पए रसूख़, दीन मज़हब ना कोए लड़ाईआ। तूं आपणा हिरदा रख मज़बूत, कलयुग वेख ना जाणा घबराईआ। चार दिन दा झगड़ा पंज भूत, अन्तिम अन्तर अन्तश्करन करे सफ़ाईआ। इस ने कलयुग रूप बदला के कर जाणा कूच, कूचा गली होवे सफ़ाईआ। चारे कुण्टां उपजे सूच, संजम इक्को दए दरसाईआ। जिधर तक्कणा पुरख अकाल ओधर मौजूद, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। पैग़ंबरां लेखा मुकणा हजारा दरूद, कलमा अगम्म अगम्म पढ़ाईआ। मेहरवान सब नूं रखे महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस दा गृह इक अरूज, आलीशान सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण अगला वेख इशारा, शब्दी शब्द धार जणाईआ। की वरते खेल संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी समझ किछ ना आईआ। देवे हुक्म अगम्म अपारा, अलख अगोचर आप दृढ़ाईआ। जिस नूं कहिंदे कल कल्की अवतारा, कल कलेश दए मिटाईआ। दीन दुनी दा दृष्टी विच सृष्टी विच इश्टी विच इक्को होवे ओंकारा, अकल कलधारी आपणी कल वरताईआ। सब ने करनी ओस नूं निमस्कारा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस दा नाम अगम्मा निरअक्खर धार प्रगटे ओह जैकारा, जै जैकार दए कराईआ। जिस दा लेखा कोई लेख ना लिखणहारा, काग़ज़ क़लम शाही ना कोए वड्याईआ। जिस नूं कहिंदे आदि अन्त अवतारा, अवतर रूप धराईआ। ओह सुहाए तेरा तट किनारा, घाट इक्को दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल इक वखाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण रावी सब दे पैंडे मुकदे, मुकम्मल दईए जणाईआ। प्रभ दे हुक्म कदे ना रुकदे, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जुग चौकड़ी असीं डरदे कदी ना कुछ पुछदे, सद चलीए हुक्म रजाईआ। जे संदेसे मिल गए इक तुक दे, सारयां ढोले लैणे गाईआ। डंके वज्जणे गोबिन्द सुत दे, दो जहान करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले साजण उठदे, दीन दुनी विच्चों लैण अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण रावी रहिणा ठंडी, ठंडक इक वरताईआ। जिस ने आउणा तेरी कंडी, कायनात वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे पखण्डी, माया ममता मोह मिटाईआ। फड़ के नाम अगम्मी चण्डी, चण्डालां करे सफ़ाईआ। सेवा लेखे लाए गोबिन्द पुर अनन्द दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। क़ीमत पाए लिखे छन्द दी, सहिसा दीन दुनी गवाईआ। साडी अन्तर आशा इक्को मँगदी, मांगत हो के झोली डाहीआ। तेरी धार वेखीए सूरे सरबंग दी, साहिब तेरी बेपरवाहीआ। निशानी रहिणी नहीं तारा चन्द दी, मुहम्मद कूक कूक सुणाईआ। निशानी रहिणी नहीं मज़हबां वाली वंड दी, ईसा आसा आपणी इक समझाईआ। द्वैत रहिणी नहीं ग़रीबां वाली कंध दी, नानक निरगुण

१ १ २ ६
२१

दए गवाहीआ। लड़ी रहिणी नहीं पाखण्ड दी, गोबिन्द गुर गुर समझाईआ। रावी जिस वहिणां विच तूं लँघदी, आपणा पन्ध मुकाईआ। अन्तिम खेल वेखणी जगत विच वरभण्ड दी, ब्रह्मण्डी अक्ख उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, खेल करे आपणे अनन्द दी, दूजा संग ना कोए रखाईआ।

✻ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ मँगल सिँघ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिंड डेढ गवाड़ ✻

तूं हैं पंजां तत्तां वाला मनुक्ख, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बणत बणाईआ। त्रैगुण माया नाल कीता जुट्ट, रजो तमो सतो रंग रंगाईआ। परमात्मा आत्मा तेरे विच दिती सुट्ट, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। शब्दी नाद अनादी उपजाए तुक, अनरागी राग सुणाईआ। बूँद स्वांती अमृत लैणा घुट, कँवल नाभी विच टिकाईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन तिन्नां दा इक्को रुख, रस्ता इक जणाईआ। पंझी प्रकृतीआं पंच परपंच काम क्रोध लोभ मोह हँकार दा लाया दु:ख, माया ममता आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। सचखण्ड दुआर विच्चों चुक्क, धरनी धरत धवल उत्ते टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। तूं हैं पंज तत शरीर, ताणी ख़ाक नज़री आईआ। जिस दे अन्तर खेल बेनज़ीर, नौ दवारे समझ किसे ना पाईआ। आत्मा धार परमात्मा सरकार खेल शहिनशाह वज़ीर, वज़ारत निरगुण धार चलाईआ। कल्पणा विच बुद्धी मन विच ताअसीर, मति विच बेनज़ीर आपणी कार कमाईआ। धुर दा हुक्म शब्दी धार कर्म कांड दी तक़रीर, तेरे नाल प्रनाईआ। सौणा जागणा खाणा पीणा चलणा फिरना ग़रीबी नाल अमीर, सारे खेल खिलाईआ। जगत तृष्ना दी पा के ज़ंजीर, दीन दुनी नाल लड़ाईआ। कदे कन्न कदे नक्क कदे हथ्थ कदे लक्क कदे ढिढ्ढ पीड़, कदे ताप कदे संताप कदे रोग कदे सोग कदे चिन्ता कदे हरख़ विच भवाईआ। अठ्ठे पहर दिवस रैण बणी रही भीड़, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। तूं हैं पंज तत दा वजूद, माटी ख़ाक नज़री आईआ। मेरे विच दिसे महबूब, दोए नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। तेरे कोल आपणे आप दा क्यों नहीं सबूत, बिना बन्दगी तों मानस जामा किसे कम्म ना आईआ। क्यों इक सौ पच्ची पौंड दा चुक्की फिरें कलबूत, आपणा भार उठाईआ। बिबेकी विच नहीं कोई सूझ, भेखी विच भेख ना कोए दृढ़ाईआ। खा पी के विष्टा करना फेर छड्डणा मूत, एह मानव दी नहीं चतुराईआ। वस्स ना आया मन कल्पणा वाला कलबूत, दह दिशा उठ उठ धाहीआ। जिंनां चिर आपणे

विच्चों कूड़ी क्रिया ना करो मनसूख़, मुहब्बत प्रेम इक वधाईआ। उनां चिर कदे ना आवे सूझ, बिना सतिगुर सति रंग ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुलाईआ। तूं हैं तन ख़ाकी होण वाला नास, जग रहिण ना पाईआ। अंदर बाहर वेखी नहीं कोई रास, भरम विच आपणा भरम वधाईआ। अंदर होया नूर नहीं प्रकाश, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। शब्द सुणया नहीं धुन नाद, अनरागी राग ना कोए अलाईआ। अमृत जल दा चक्खया नहीं स्वाद, स्वांगी हो ना कोए टपकाईआ। कुछ वेला याद कर लै जिस वेले रोया सैं विच कमाद, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। की हालत होई जदों सुत्ता सैं विच बाग़, मूँह दे भार सुटाईआ। पर अजे तक ओह जोती दा जगिआ नहीं चिराग़, जिस नाल होए रुशनाईआ। एह तेरा शरीर एह वी तेरा ना देवे साथ, साथी केहड़ा नज़री आईआ। आउणा जाणा ख़ाली हाथ, एह वी पता नहीं किहड़यां भरावां ने चुक्क के मसाणां विच देणा पहुंचाईआ। जे शरीर मिल्या, तन मिल्या, मन मिल्या सरवण कन्न मिल्या ते फेर मिलो ओस भगवान जो अन्तर दी अन्तर निरंतर दी निरंतर देवे साध, रसना जिह्वा बत्ती दन्द पुच्छण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक, ख़लक दा ख़ालक सर्ब दा प्रितपालक, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पारब्रह्म ब्रह्म सब दा लेखा वेख वखाईआ। तुहाडे अंदर इक ख्याल, जिस नूं मन बुद्धी रही ठुकराईआ। ओस दी शब्द गुरु करे संभाल, जो आदि जुगादी बेपरवाहीआ। जे नहीं वेख्या तुहाडीआं अक्खां नाल दए वखाल, जेहड़ा जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जेहड़ा साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर जिस विच सच्ची धर्मसाल, घर विच घर दिता बणाईआ। किरपा कर के मेहरवान दीपक जोती देवे बाल, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। जेहड़ा लभ्भण वाला धन माल, ओस दी सोच विच तुसीं आपणा जीवण रहे बिताईआ। किस बिध झगड़ा मुक जाए काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेखा ना सके वखाल, लाड़ी मौत ना अन्त प्रनाईआ। ओस दे कोलों साहिब सतिगुर आपे करे बहाल, लेखा अवर रहे ना राईआ। जगत तत तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जो पुच्छणहारा मुरीदां हाल, मुर्शद हो के वेख वखाईआ। भावें तुसीं कुछ नहीं कीता सवाल, तुहाडे अन्तर इक आवाज़, जिस दे विच गुज्झा राज़, जिस नूं रसना जिह्वा बत्ती दन्द बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच प्रेम दी प्रीती वाली धार, धर्म दवारिउँ दए प्रगटाईआ।

रावी कहे मैं सच प्रेम रंगी, प्रभ रंगत इक रंगाईआ। आदि जुगादि दा बण के संगी, जुग जुग आपणा साथ निभाईआ।

आसा मनसा पूरी करे जो चरण कँवल दर मँगी, मांगत हो के झोली डाहीआ। जन भगतां साहिब कदे ना देवे तंगी, तंगदस्ती दए कढ्ढाईआ। पिठ कदे ना होवे नंगी, पुश्त पनाह हथ्थ रखाईआ। अंदर वासना आउण ना देवे मंदी, सुगंधी आपणा नाम भराईआ। तेरा दुआरा जावण लँघी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। निजानंद देवे अनन्दी, परमानंद विच समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गावण छन्दी, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। शरअ दी रहे ना कोए पाबन्दी, शरीअत इक्को देणी समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। रावी कहे मेरे साहिब सुल्तान, तेरे हथ्थ वड्याईआ। सृष्ट सबाई दे ज्ञान, अन्तर निरंतर इक पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया मेट निशान, सति सच इक प्रगटाईआ। साचा मार्ग दस्स नौजवान, मर्द मर्दाने हो सहाईआ। चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप होया हैरान, हैरानी सब दे अंदर आईआ। कूड़ी कल्पना फिरे शैतान, घर घर डेरा लाईआ। पिता पूत ना रिहा माण, भाई भाईआं करन लड़ाईआ। नेत्र अक्ख ना कोए शरमाण, तीर्थ तट देण दुहाईआ। फिरी दरोही विच जहान, जहालत विच लोकाईआ। अमृत रस मिले ना पीण खाण, तृष्ना भुक्ख ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दा हुलारा लैणा लाईआ। रावी कहे प्रभ चार वरनां कर मिलाप, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। आत्म परमात्म सब दा होवे जाप, जगजीवण दाते देणा बणाईआ। कूड़ी क्रिया मेट संताप, सहिसा रोग दे गवाईआ। रूह बुत कर पाक, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। चरण धूढ़ी सब दे मस्तक ला ख़ाक, टिक्के नाम अगम्म रमाईआ। बजर कपाटी खोल्ह ताक, उहला रहिण कोए ना पाईआ। दरस वखा साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। झगड़ा मिटा काग़ज़ात, इक्को ब्रह्म देणा दृढ़ाईआ। इक्को सब दा माई बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। कलयुग रहे ना अन्धेरी रात, अमावस डेरा देणा ढाहीआ। तेरी तक्कण सारे वाट, पैंडा लैणा मुकाईआ। रावी कहे मैं निम्रता विच रही आख, नमस्ते कहि के सीस निवाईआ। किरपा कर मेरे अबिनाश, अबिनाशी करते तेरी वड्याईआ। साचे मण्डल पा रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नाच नचाईआ। दीन दुनी दा बदल समाज, समग्री इक वरताईआ। दुरमति मैल धो दाग़, पतित पुनीत आप कराईआ। तेरी मुहब्बत विच आपणा आप सारे लैण साध, दुतिया भाउ रहे ना राईआ। निरगुण धार दे वैराग, सरगुण आपणा भेव खुल्हाईआ। तूं सब दा करता सर्ब स्वामी अन्तरजामी बदल दे मिज़ाज, मज़ा आपणा नाम चखाईआ। जिथ्थे ना कोई सवाल ना जवाब, गृह इक्को दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म बोध अगाध, बुद्धी तों परे तेरी वड्याईआ।

११२९ २१

✻ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ गुलज़ार सिँघ दे गृह पिंड डेढ गवाड़ ✻

रावी कहे मेरा अन्तर इक संदेसा, जागत सोवत दयां दृढ़ाईआ। पुरख अकाल मन्नणा इक नरेशा, नर नरायण सच्चा धुरदरगाहीआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। दो जहानां बणे नेता, नर निरँकार दए वड्याईआ। भगत उधारना जिस दा पेशा, पेशीनगोईआं गुर अवतार पैग़म्बरां दए जणाईआ। वसणहारा सचखण्ड साचे देसा, दो जहानां खोज खुजाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्तिम वेखे लेखा, सदी चौधवीं फोल फुलाईआ। मानव रहे ना कोए भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। जोती जामा धारे वेसा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस दी याद कर के गया गोबिन्द दस दसमेसा, केस गढ़ आपणा हुक्म जणाईआ। शब्द गुरु आदि अन्त जिस दा बेटा, पूत सपूता सोभा पाईआ। लख चुरासी जीव जंत बणे खेवट खेटा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग अगनी तत मेटे जेठा, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। रावी कहे मन्नणा इक्को पुरख समरथ, जो स्वामी धुर दा नज़री आईआ। जो दरगाह साची रिहा वस, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां मार्ग दए दस्स, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। जुग जुग लहिणा देणा वेखे हक़ीक़त हक़, लख चुरासी खोज खुजाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलाए रथ, बण रथवाही कार कमाईआ। लहिणा देणा चुकावे हथ्थो हथ्थ, बेपरवाह आपणी बेपरवाही विच समाईआ। जिस दा चार जुग दे शास्त्र गाउँदे जस, ढोले सिफ्तां वाले सुणाईआ। जिस दी सरन सरनाई सरगुण धार सारे रहे ढठ्ठ, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जो वसणहारा घट घट, हर घट बैठा डेरा लाईआ। सो साहिब सतिगुर सब दी बदल देवे मत, मन ममता दूर कराईआ। नाम अगम्मे रंगे रत्त, रतन अमोलक लए बणाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, प्रतख दरस दिखाईआ। दीन दुनी तों कर के वख, भगत सुहेला लए उठाईआ। झगड़ा मुकाए तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध्ध ना कोए वड्याईआ। धीरज सन्तोख देवे हट्ट, सन्तोख इक्को इक दृढ़ाईआ। नौ दवारे पैंडा कट, दसम दुआरी पर्दा लाहीआ। जिथ्थे जोत अगम्मी लट्ट लट्ट,, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। शब्द सुत मारे सट्ट, सोई सुरत रहिण कोए ना पाईआ। अमृत अगम्मा देवे झट्ट, बूँद स्वांती आप टपकाईआ। सो साहिब सतिगुर आदि जुगादि समरथ, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ। कलयुग अन्त हो प्रगट, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। चार वरनां खोल्ह के हट्ट, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश भण्डारा दए वरताईआ। पिछली कीती करनी कर के भट्ठ, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। ज़ात पात रहिण ना देवे वट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा

११३० २१

भेव खुलाईआ। रावी कहे धुर दा मन्नो इक स्वामी, जो सदा समां दए बदलाईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, घट निवासी वेख वखाईआ। जिस दी सिफ्तां वाली चार जुग दी बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी ढोला गाईआ। जो देवणहारा अमृत रस ठंडा पाणी, सर सरोवर इक नुहाईआ। जो झगड़ा मुकावे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। जो बख्शणहारा पद निरबाणी, घर साचे लए मिलाईआ। जो करे प्रकाश निरगुण नूर जोत नुरानी, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। जिस दा भेव ना पाए कोई विद्वान ज्ञानी, पढ़यां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस कलयुग अन्त मेटणी शरअ शैतानी, शरीअत इक्को इक समझाईआ। आत्मा रहे ना कोए बेगानी, परमात्म आपणा पर्दा लाहीआ। चार जुग दा लेखा मुक्के दीवानी, शहादत गुर अवतार पैग़म्बर गए भुगताईआ। मंज़ल दस्स इक रुहानी, रहिबर हो के आप समझाईआ। पुरख अकाल साहिब सतिगुर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम करे मेहरवानी, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, शब्द धार दी शब्दी दए निशानी, जिस दा निशाना दो जहानां सके ना कोए मिटाईआ।

✻ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ समां सिंघ दे गृह पिंड डेढ ✻

रावी कहे जन भगतो मैं वेख्या तुहाडा राम, जो राम राम दा मालक नज़री आईआ। तक्कया तुहाडा काहन, जो काहन काहनां हुक्म मनाईआ। तक्कया तुहाडा शाम, जो शमां नूर जोत करे रुशनाईआ। तक्कया तुहाडा अमाम, जो क़लमे रिहा दृढ़ाईआ। तक्कया तुहाडा भगवान, जो भावना सब दी वेख वखाईआ। तक्कया तुहाडा मेहरवान, जो मेहर नज़र नाल तराईआ। तक्कया तुहाडा निशान, जो दो जहानां रिहा झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। रावी कहे मैं वेख्या तुहाडा प्रभू, प्रभू धुर दा नज़री आईआ। जिस ने भाग लगाया दीप जम्बु, जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा दिती वड्याईआ। जिस दे कोलों ब्रह्मण्ड खण्ड कम्बू, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुरमुखां बेड़ा बन्नू, गुरसिखां लए तराईआ। धुर दा राग सुणाए कन्नू, कायनात दए दृढ़ाईआ। ज़ात पात दा झगड़ा चुकाऊ जेहड़ा जगत चलाया मनू, माया ममता मोह मेट मिटाईआ। खेल रहिण नहीं देणा जगत जहान गभ्भे संनू, सांझा राह इक बणाईआ। हँकारी रहे ना कोए धनाढ धनू, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे लख चुरासी तनू, तन वजूद माटी ख़ाक वेख वखाईआ।

❊ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ दयाल सिँघ दे गृह पिंड गवाड़ ❊

रावी कहे मैं सतिजुग साचा तक्कां, सति पुरख निरँजण दए वखाईआ। झगड़ा रहे ना मदीना मक्का, काअबिआं वाली ना कोए लड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी जगत जहान बणे सका, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को पुरख अकाल दीन दयाल सच स्वामी टेके मथ्था, इष्ट जगदीश नज़री आईआ। चरण धूढ़ी नाम दा लग्गे टिक्का, वज्जे सच वधाईआ। नाम सति दा चले सिक्का, धर्म दी धार इक्को नज़री आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया उतरे विखा, विस रहिण कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन नजरी आए सति सरूप सिखा, जो सिख्या गोबिन्द गया समझाईआ। जिस दा नाम अणयाला तीर तिक्खा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। नज़री आए पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अगम्मी पिता, बेनज़ीर पर्दा दए उठाईआ। सदी चौधवीं निकलण वाला सिट्टा, मुहम्मद आशा दए प्रगटाईआ। हज़रत ईसा फिरे नट्ठा, वीहवीं सदी राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। रावी कहे मैं सतिजुग वेखां अक्खीं, हरि करता दए वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां भविख्त बाणी करे सच्ची, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म परमात्म बणाए आपणी सख़ी, धुर दा काहन नौजवान आपणी दया कमाईआ। दीनां मज़हबां दी रहिण ना देवे पत्ती, पतिपरमेश्वर इक्को आपणा हुक्म चलाईआ। सति धर्म दी खोल्ह के हट्टी, कलयुग कूड़ी क्रिया दए मुकाईआ । तूं मेरा मैं तेरा दस्स के पट्टी, पटने वाले दए मिलाईआ। खेल करे पुरख समर्थी, हरि करता वड वड्याईआ । जो चार जुग चलाए रथी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बण रथवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। रावी कहे मैं सतिजुग वेखणा लगदा, साहिब सतिगुर आप वखाईआ। प्यार वेखणा दीन दुनी जग दा, चार वरन इक्को रंग रंगाईआ। झगड़ा मुकणा काअबे वाले हज्ज दा, सदी चौधवीं हज़रत देण गवाहीआ। खेल होणा दीन दयाल पुरख समरथ दा, जो सब दा पिता माईआ। नित नवित्त जो निरगुण सरगुण मार्ग रिहा दस्सदा, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। सो प्रगट होए जिस दा निशाना आदि जुगादी सच दा, सच दा मालक सोभा पाईआ। लहिणा मुकावे काया माटी कच्च दा, तन वजूद वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे मैं तक्कणा सतिजुग सति नज़ारा, परम पुरख प्रभ नज़रीआ दए बदलाईआ। दीन दुनी दा इक्को होवे दुआरा, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ धर्म दी धार इक्को नज़री आईआ। इक्को नाम शब्द होवे जैकारा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। इक्को इष्ट होवे सच्ची सरकारा, इक्को दृष्ट दए खुल्हाईआ। इक्को शब्द नाद

११३२
२१

धुन धुन्कारा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। इक्को अमृत रस मिले ठंडा ठारा, निझर झिरना आप झिराईआ। इक्को निरगुण नूर जोत करे उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। इक्को प्रगट होवे कल कल्की अवतारा, वड अमामा नूर अलाहीआ। जिस दा गुर अवतार पैग़ग्बर रखदे गए सहारा, ओड़क ओट तकाईआ। ओह निरगुण नूर जोत करे उज्यारा, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। दो जहानां पावे सारा, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे पार किनारा, माया ममता मोह मिटाईआ। सतिजुग साचा दे सहारा, महासार्थी आपणी कार कमाईआ। जन भगतां करे हक़ प्यारा, महबूब मुहब्बत विच मेल मिलाईआ। रावी कहे मैं झुक झुक ओस नूं करां निमस्कारा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जिस दा सतिगुर अर्जन दे के गया इशारा, चरण मेरे विच छुहाईआ। उस ने गोबिन्द नाल लिआणा शब्दी धार दुबारा, काया माटी ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जाणे आपणा सच विहारा, नित नवित्त आपणा हुक्म वरताईआ।

✻ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिंड गवाड़ ✻

११३३
२१

रावी कहे जन भगतो तुसीं दो इक दी धार इक्की, सरगुण निरगुण नज़री आईआ। जेहड़ी खेल किसे नहीं दिसी, उह तुहानूं दिती वखाईआ। गुर अर्जन गोबिन्द दी चिठ्ठी, बिन अक्खरां सोभा पाईआ। रावी कहे अल्हड़पिंडी मेरी पूरी होई मिती, मित्रो तुहाडे नाल मिल के वज्जी वधाईआ। सब ने पवित्र रखणी नीती, मन विकार ना कोए वधाईआ। इक्को मन्नणी हक़ हदीसी, जो हज़ूर हज़रतां करे पढ़ाईआ। सति धर्म दी तुरना उत्ते रीती, रीतीवान दया कमाईआ। तुहाडी मन कल्पणा होवे पतित पुनीती, बुध्ध बिबेक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। रावी कहे इक्कीआं दा मालक आदि जुगादी इक्क, जो निरगुण सरगुण दया कमाईआ। ओसे दी धार जुग चौकड़ी सिख, जो सिख्या सच दी रहे कमाईआ। सो आदि जुगादी बण के पित, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। जन भगतां करे हित्त, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। पुरख अकाल वसाउणा चित, मन ठगौरी रहे ना राईआ। सो सतिगुर सहारा रखे सब दी पिठ्ठ, पुश्त पनाह आपणी दया कमाईआ। जीवदयां जग जाणा जित्त, मरन तों बाद जीवण आपणा जाणा बदलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। रावी कहे तुहाडी इक्की अपार, अपरम्पर दए वड्याईआ। तुहाडा मालक एकँकार, इक इकल्ला नज़री आईआ। तुसां ओस दे रहिणा ख़िदमतगार,

ख़ादम हो के सेव कमाईआ। जिस नूं झुकदे गुरु अवतार, पैग़ंबर सजदयां विच सीस निवाईआ। जिस दी सारे करदे इंतज़ार, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। ओह कल कल्की अवतार, निहकलंका आपणी कल वरताईआ। लेखा जाणे सर्ब संसार, संसारी भण्डारी सँघारी लए उठाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कर के ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर पुचाईआ। सोए रहिण ना देवे तेई अवतार, रामा कृष्णा लए जगाईआ। लहिणा देणा चुकावे आपणी धार, धरनी धरत धवल आपणा फेरा पाईआ। तुसां आत्म परमात्म परमात्म आत्म लाउँदे रहिणा जैकार, जै जै कार ब्रह्मण्ड खण्ड करन थाउँ थाईंआ। रावी कहे प्रभ रस्ते ते चलण वाल्यां मेरी सदा निमस्कार, मैं निउँ निउँ सीस निवाईआ। तुहाडे कारण मेरा पूरा होया विहार, विवहारी दिता कराईआ। तुसां जाणा खुशीआं नाल, खुशी आपणे अंदर टिकाईआ। तुसीं ओस सतिगुरु दे लाल, जेहड़ा गोबिन्द ना जन्मे ना मरे, मात गर्भ विच कदे ना आईआ। सदा सदा सद करदा रहे प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। जिधर तक्को ओधर तुहाडे नाल, चार कुण्ट दह दिशा आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा हल्ल करे सवाल, सवाली ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ।

❊ २६ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ काशी राम दे गृह पिंड सनईआ ❊

रावी कहे मेरे अंदर चाउ घनेरा, घर ठाकर स्वामी दिती वड्याईआ। मेरे अन्तर मिटिआ अन्धेरा, निरगुण नूर कीता रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया छड्डुया झेड़ा, सति धर्म इक अपणाईआ। माया ममता डोबिआ बेड़ा, सति सन्तोख ल्या अपणाईआ। शब्द गा के तूं मेरा मैं तेरा, पूरब लेखा ल्या चुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल करे मेहरा, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी देणा गेड़ा, नव सत्त आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। रावी कहे गुर अवतार पैग़ंबर वेखो अगम्म नज़ारा, हरि करता आप जणाईआ। शब्दी धार वेखो इशारा, निरगुण नूर रिहा जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त किनारा, मुहम्मद देवे कवण सफ़ाईआ। हज़रत ईसा होण वाला उज्यारा, जगदीशा आपणी कार कमाईआ। मूसा होणा आप हुश्यिारा, निरगुण धार लए अंगड़ाईआ। तेई अवतार रहिणा ख़बरदारा, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणा हुक्म सुणाईआ। दीन दुनी दा सांझा यारा, परवरदिगार नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ।

गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण असीं ओस दे बरदे, दर ठांडे सीस निवाईआ। असीं मालक साचे घर दे, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मूल ना लड़दे, तत्तां वंड ना कोए वंडाईआ। क़लमा वख वख ना पढ़दे, इक्को ढोला अगम्म अथाहीआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ मूल ना वड़दे, इक्को इष्ट रहे मनाईआ। तीर्थ तटां कोई ना वड़दे, पाणी वहिण ना कोए वहाईआ। सच सरनाई धुरदरगाही पड़दे, जो बेपरवाही नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दी धार इक वखाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण रावी कर ध्यान, सच संदेसा दईए जणाईआ। सचखण्ड साचे असीं सारे होए परवान, परवाना प्रभ नूं दिता फड़ाईआ। जा के वेखो आपणा जहान, ज़िमीं असमान फोल फुलाईआ। जो कलमा दे के आए दान, नाम अमोलक झोली पाईआ। ख़ाली दिसे काया मकान, पंज तत ना कोए वड्याईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्तां विच गाण, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए निशान, सति सच ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण तेरा खेल प्रभ महबूब, मेहरवान तेरी वड्याईआ। सृष्टी दी बदल गई सूझ, दृष्टी अंदरों ना कोए खुल्लाईआ। माया ममता वड़ी पंज भूत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। झगड़ा दिसे चारे कूट, दह दिशा करे लड़ाईआ। साढे तिन्न हथ्थ वस्सेरा जूठ झूठ, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। तेरे नाम दा मिले ना कोए सबूत, साजण संग ना कोए निभाईआ। दुरमति मैल धोवे ना कोए कलबूत, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। महल अटल नज़र ना आए अर्श अरूज, आज़म तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण हउँ दर तेरे दे मँगते, मांगत हो के झोली डाहीआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगते, हँ ब्रह्म दे समझाईआ। बोध अगाधे धुर दे पंडते, पर्दा उहला देणा उठाईआ। चार वरन बणा इक संगते, संजम इक्को देणा समझाईआ। झगड़े मुक जाण काया माटी चम्म दे, ततव तत देणा दृढ़ाईआ। पर्दे लाह दे निज नेत्र अक्ख दे, लोइण इक्को कर रुशनाईआ। झगड़े मुक जाण दह दिशा धावण वाले मन दे, नौ दुआर ना होए हल्काईआ। रस मुक जाण सुणन वाले कन्न दे, अन्तर अनहद नादी शब्द कर शनवाईआ। प्रकाश दे दे आपणे नूरी चन्न दे, सूर्या चन्द ना कोए वड्याईआ। कूड़ कुड़िआरां परम पुरख परमात्म अन्तिम डंन दे, गुर अवतार पैग़ग्बर भरे ना कोए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हुक्म संदेसे दे अगम्मी अगम्म दे, अलख अगोचर आपणा हुक्म वरताईआ।

✳ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ बीबी भजनो दे गृह ✳

पुरख अकाल कहे खेल वखरा, अनडिठड़ी धार चलाईआ। मेरा नाम अगम्मा बिन अक्खरा, विद्या विच ना कोए वड्याईआ। मेरा इष्ट बिना पत्थरा, पाहन नज़र कोए ना आईआ। मेरा दुआरा बिना सत्थरा, सेज जगत ना कोए सुहाईआ। सो मार्ग भगतां दस्सणा, सतिजुग साची कर पढ़ाईआ। हिरदे अंदर वसणा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जगत विकार कटणा, दुरमति मैल धवाईआ। नाम अनोखे फट्टणा, घाउ इक चलाईआ। देवे रस बिना रसना, अंमिउँ रस आप वरसाईआ। मन मनुआ करे वसना, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। आत्म परमात्म मिल के हस्सणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी मस्सणा, निरगुण नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे मेरा आदि जुगादी इष्ट अनोखा, जग नेत्र नज़र कदे ना आईआ। भगतां मार्ग दस्से सौखा, अनभव आपणा पर्दा लाहीआ। पढ़ना पए कोई ना पोथा, शास्त्र बग़ल ना कोए टिकाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोता, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। कल्पणा रहिण ना देवां सोचा, अंदरों समझ दयां समझाईआ। आपणे मिलण दा दे के मौका, मेहर नज़र इक टिकाईआ। भाग लगा के काया कोठा, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। मन्नणा पए ना कोए परोहता, बन्दना सीस ना कोए झुकाईआ। झगड़ा मुका के लोक परलोका, गृह मन्दिर दयां वखाईआ। जिथ्थे आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक सलोका, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी नईआ नाम चलाउँदा रिहा नौका, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप आपणा हुक्म वरताईआ।

✳ २७ फग्गण शहिनशाही सम्मत ४ अजीत सिँघ दे गृह बटाला ✳

प्रभ दा नाम मिले बिन क़ीमत, करता क़ीमत ना कोए लगाईआ। जन भगतो पूजा करनी नहीं किसे तरीमत, र्तीआ सीस ना कोए निवाईआ। सतिगुर शब्द समझो ग़नीमत, जिस नूं मिल्या तिस नूं पार कराईआ। इस नूं समझ ना सके कोई जीव ज़हीनत, ज़िहन विच ज़ाहर ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। प्रभ का नाम सदा अनमुल्ला, क़ीमत करता ना कोए लगाईआ। आदि जुगादि भण्डारा खुल्ला, तोट रहे ना राईआ। सब नूं देवे सुल्हकुला, ग़ैर वंड ना कोए वंडाईआ। जपया नहीं जांदा नाल बुल्लां, अन्तर अन्तर दए वसाईआ।

भाग लगावे काया कुल्ला, कुल मालक वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी कदे ना भुल्ला, अभुल्ल आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा भेव चुकाईआ। हरि का नाम कदे ना विके हट्ट, हट्टो हट्ट ना कोए विकाईआ। किसे ना मिले तट, तीर्थ रोवण देण दुहाईआ। जिस उपर किरपा करे पुरख समरथ, मेहर नज़र उठाईआ। तिस आपे दए दरस, दह दिशा उठ ना कोए धाहीआ। काया अंदर दे के रस, रस्ता अंदरों दए खुल्ह्लाईआ। मन कल्पणा कर के वस्स, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। मेट रैण अन्धेरी मस, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। जो वसणहारा घट घट, हर घट अन्तर आपणा पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, नाम अणयाला तीर मारे कस, आर पार आपणी धार कराईआ।

❊ पहली चेत शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सम्मत शहिनशाही कहे मैं वेख्या खेल चौथे जुग, चौकड़ी जगत ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेखा ल्या बुज्झ, भेव अभेद बातन पर्दा रिहा ना राईआ। निरगुण धार मैनूं सब कुझ गया सुज्झ, पर्दा उहला दिता चुकाईआ। चार वरन अठारां बरन सृष्टी दृष्टी वेखी बुध्ध, मनमति खोज खुजाईआ। तन वजूद रिहा ना लुक, माटी कच्च भरम ना कोए भुलाईआ। कोटां विच्चों अनकां विच्चों भगत सुहेले गाउँदे अगम्मी तुक, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्लाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सुहाउँदा मुख, आत्म परमात्म वज्जी वधाईआ। मैं निमस्कार सजदा कीता झुक, डंडावत विच सीस निवाईआ। अन्त हस्स के कहां मेरा सम्मत गया मुक, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सम्मत शहिनशाही चार कहे मैं वेख्या जगत जहान, जहालत दीन दुनी वेख वखाईआ। संदेसा दिता श्री भगवान, धुर करते दिता सुणाईआ। चारों कुण्ट फिरे शैतान, दह दिशा होई हल्काईआ। झगड़ा प्या तत इन्सान, मानव करे कूड़ लड़ाईआ। आत्म रिहा ना कोए ज्ञान, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। चारों कुण्ट सुञ्ञ मसाण, सति सतिवाद सोभा कोए ना पाईआ। योद्धा सूरबीर दिसे ना कोए नौजवान, मर्द मर्दान अक्ख ना कोए खुल्ह्लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सम्मत कहे मेरी अन्तिम वार, वारता प्रभ दी दयां जणाईआ। ख़बरदार कीते गुरु अवतार, पैग़म्बरां रिहा हिलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे आधार, करोड़

११३७
२१

तत्तीसा आया जगाईआ। धरनी धरत धवल आलस निंदरा अंदरों उतार, सुसती दरुस्ती विच दृढ़ाईआ। हुक्म दस्स सच्ची सरकार, कीती अगम्म पढ़ाईआ। लहिणा देणा वेखो अन्त सर्ब संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। चौथा जुग कहे मैं वेखी चार जुग दी धारा, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। हुक्म संदेसा दिता अगम्म अपारा, अलख अगोचर रिहा जणाईआ। ख़बरदार होवो सावधान जगत संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी नाल मिलाईआ। उठो भज्जो नठ्ठो तेई अवतारा, मूसा ईसा मुहम्मद नाल मिलाईआ। गुर दस करो विचारा, बुद्धी तों परे ध्यान लगाईआ। जिस दा दे के आए लारा, नाम संदेश्यां विच सुणाईआ। कहि के आए कल्की अवतारा, निहकलंक नाउँ प्रगटाईआ। अमामां दा अमाम सिक्दारा, शाहो भूप सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण रूप होया उज्यारा, दो जहानां डगमगाईआ। लहिणा देणा वेख अगम्म अपारा, अलख अगोचर खोज खुजाईआ। जिस सुहाया इक दुआरा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी नूर अलाहीआ। चौथा जुग कहे सारे आउ दूर दुराडे, हुक्म सुणाया धुरदरगाहीआ। जिस ने धर्म निशाने गाडे, गाईड गॉड इक्को नूर अलाहीआ। सब दे पूरे करे वायदे, वाहवा वज्जे इक वधाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर अन्तिम कलयुग लै लओ निरगुण धार कोलों फ़ाइदे, मुफ़ाद आपणा नाल रलाईआ। आपणे वखाओ पिछले क़ानूंन क़ाइदे, क़ाइदे आज़म मँग मँगाईआ। क्यों इक दूजे तों होए अलाहिदे, दीन मज़हबां वंड वंडाईआ। क्यों मार्ग दस्से पैंडे, रहिबर राह जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सम्मत चौथा कहे मैं संदेसा दिता दरगाह साची मुकामे हक़, हक़ीक़त आया दृढ़ाईआ। निरगुण धार रहे ना शक्क, गुर अवतार पैग़म्बरां भेव खुल्हाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला प्रगट इक्को सच, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस ने खेल खिलाउणा काया माटी कच्च, पंचम पंच फोल फुलाईआ। हुक्म संदेसा रिहा दस्स, लेखा बिन क़लम शाहीआ। तक्को बिन नेत्र अक्ख, निरगुण नूर अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। चौथा सम्मत कहे गुर अवतार पैग़म्बरो आ गया तुहाडा वक्त, सुहाउणा सुहञ्जणा दयां जणाईआ। मैं सब नूं दस्सया पहली चेत आउणा जगत, मातलोक पन्ध मुकाईआ। आपणा लेखा नाल लिआउणा फ़क़त, जो फ़िकरे आए दृढ़ाईआ। नाल अहिदनामा लिआउणा जिस दे उत्ते लिखी शर्त, शरअ दिती समझाईआ। छड्ड के अगम्मी अर्श, अर्श तों फ़र्श सोभा पाईआ। आपणे नाम कलमे दी नाल लिआउणी फ़रद, भुलेखा रहे कोए ना राईआ। जो अन्त अख़ीर कीती अर्ज़, ओह वी याद आया कराईआ। वेख्यो किसे दा हो ना जावे हरज, हरजाने

सब दे पूर कराईआ। पुरख अकाला योद्धा मर्द, मर्द मर्दाना नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। चौथा सम्मत कहे भगतो मेरी निमस्कार, मैं अन्त अन्त सीस निवाईआ। मैं ख़बरदार कर के जगत संसार, सृष्टी दी दृष्टी आया हिलाईआ। हुक्मे अंदर कीती कार, जो करनी दे करते आपणी कार कमाईआ। सम्मत पंज विच सारे कर लैणे गिरफ्तार, शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। मैं संदेसा दे के चलया ओस दरबार, जिस नूं सचखण्ड कहि के सारे गाईआ। ओथों भज्जे आउण गुरु अवतार, पैग़म्बर सोभा पाईआ। हिसाब किताब सर्ब वखाण, की करनी कार कमाईआ। की नाम कलमा गाया गाण, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सुणाईआ। की जगत पाया घमसान, की कीती तन लड़ाईआ। की आसा रखी अमाम, अमलां तों रहित जणाईआ। की क़लमा दस्सया कलाम, कायनात पढ़ाईआ। क्यों बरदे बणे गुलाम, सजदा सीस निवाईआ। सम्मत चौथा कहे मैं दे के चलया इतलाहे आम, कोई बच्या रहिण ना पाईआ। चार कुण्ट डंके नाल सुणाया फ़रमान, फ़रमाबरदारी सच कमाईआ। मेरा महबूब होया मेहरवान, मुहब्बत विच सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। हुण सम्मत पंजवां हाज़र होया अग्गे श्री भगवान, बोलण दी लोड़ रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। पहली चेत कहे मैं सम्मत पंजवां चढ़या, चढ़दा लहिंदा देणा हिलाईआ। धुर दा हुक्म अगम्मी पढ़या, परदयां अंदर दिता जणाईआ। जेहड़ा कदी किसे नाल नहीं कोई लड़या, कलयुग धार विच उह वी देणा लड़ाईआ। जेहड़ा हँकार विच कदे नहीं मरया, उह वी मार के देणा वखाईआ। एह खेल मेरे प्रभू प्रभ करया, करनी दा करता दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सम्मत पंजवां कहे मैं वेखां पंच परपंच, पंज भूतक खोज खुजाईआ। जगत साधना दा काया मन्दिर अंदर वेखणा मंच, किस आसण डेरा लाईआ। किसे नूं हिलण नहीं देणा इंच, क़दम क़दम ना कोए बदलाईआ। जेहड़ा मनुआ बणाया पंच, दिवस रैण कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। पंचम सम्मत कहे मैं शहिनशाही, पंच मिले वड्याईआ। मेरा मालक इक बेपरवाही, बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं कहिंदे धुरदरगाही, दरगाह साची सोभा पाईआ। उस दी शब्द गुरु करे अगवाही, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दी दे के गए गवाही, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ओह मालक मेरा माही, महबूब इक अख्वाईआ। जिस ने कलयुग अंदर बदल देणी कूड़ी शाही, सतिजुग साचा राह वखाईआ। ग़रीब निमाणयां पकड़नीआं बाहीं, कोझयां कमल्यां गले लगाईआ। चार वरन बणा के भैणां भाई, ऊँच नीच दा डेरा देणा ढाहीआ। साची

११३९ २१

मंज़ल इक चढ़ाई, मालक इक्को देणा वखाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाई, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। सो मन्दिर सोभा पाई, जिथ्थे छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सम्मत पंजवां कहे मेरे दिन नूं दयो वधाई, ब्रह्मण्ड खण्ड सारे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सच सुहाईआ। शहिनशाही सम्मत कहे मैं पंचम आया जग, जागरत जोत करां रुशनाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेखां अग्ग, अगनी अग्ग तत तपाईआ। एह खेल सूरे सर्बग्ग, जो लोकमात दिती वरताईआ। जिस दी आर पार समझे कोई ना हद्द, हदूद नजर कोए ना आईआ। करे खेल पुरख समरथ, महिमा अकथ अकथ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वरताईआ। सम्मत कहे चेत आया चातर, चातरको दयां जणाईआ। प्रभ खेल करना जिस ख़ातर, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दयां दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर हाज़र होए लै के पात्र, पत्रका आपणे हथ्थ रखाईआ। जिन्हां नूं पुरख अकाल आया वाचण, दूजा करे ना कोए पढ़ाईआ। सारे कहिण प्रभू तेरा नाम ते तेरा पाठण, तेरा इष्ट नूर अलाहीआ। असीं लोकमात सब नूं आए आखण, दीन दुनी समझाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सब दा बापण, इहो पिता माईआ। जिस ने
११४० कलयुग मेटणी अन्धेरी रातण, सतिजुग साचा चन्द करे रुशनाईआ। साची मंज़ल चाढ़े घाटण, पैंडा अगम्म मुकाईआ। आत्म परमात्म जोड़े नातन, दूजा संग ना कोए रखाईआ। सच दुआर वखाए आसण, सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप ११४०
२१ हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत कहे गुर अवतार पैग़म्बर होए इक्ठे, सोहणा संग बणाईआ। २१
सब दे कोल आपणे आपणे पटे, पटने वाले रहे वखाईआ। उँगलां नाल रहे दस्से, इशारिआं विच जणाईआ। राम किशन नाल अल्ला ने पाए रट्टे, मन्दिरां नाल मस्जिद गिरजे दिते टकराईआ। अल्ला नाल सतिनाम लाई सट्टे, ठोकर ठोकर नाल हिलाईआ। आ गया आपणे वट्टे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। सम्मत कहे गुर अवतार पैग़म्बर आए हज़ूर, हाज़र सीस निवाईआ। हुक्म प्रभू मंज़ूर, तेरी बेपरवाहीआ। अगला खेल दस्स ज़रूर, ज़रूरत तेरी झोली पाईआ। साडा रिहा ना माण ग़रूर, ग़ुरबत दिती गवाईआ। दीन मज़हब दा जो पा के गए फ़तूर, फ़तवा सब दे उत्ते नज़री आईआ। अन्तिम असीं होए मजबूर, मजबूरी दईए दृढ़ाईआ। इस विच साडा नहीं क़ुसूर, सारे तेरी चले हुक्म रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो सारे आवो नेड़े, कंधा कंधे नाल मिलाईआ। चारों कुण्ट दे के गेड़े, दह दिशा वेख वखाईआ। मैनूं दस्सो तुहाडे केहड़े केहड़े, इशारिआं नाल वखाईआ। जिन्हां दे अंदर

द्वैत वाले नहीं झेड़े, ओह बांह लओ उठाईआ। जेहड़े चढ़े मेरे बेड़े, उन्हां नाल लओ मिलाईआ। जेहड़े वस्से तुहाडे खेड़े, उन्हां थापी दयो लगाईआ। जेहड़े तुहाडे नाल करदे हेरे फेरे, उन्हां नूं राए धर्म दा दुआरा आपे दयो वखाईआ। क्यों तुसीं उन्हां दे गुरु उह तुहाडे चेरे, तुहाडे कोलों दवाउणी सज़ाईआ। तुहाडे मैं करां नबेड़े, तुहाडे मुरीदां दे नबेड़े तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तक्को चार कुण्ट, दह दिशा ध्यान लगाईआ। केहड़े बैठे विच बैकुण्ठ, कवण बहिश्तां डेरा लाईआ। मुहम्मदा वेख जिन्हां कराई सुन्नत, क्यों ना सति विच समाईआ। ईसा की कीती उनत, मैनूं दे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू थोड़ा दे दे वक्त, छिन्न मातर मँग मँगाईआ। सानूं वेख लैण दे जगत, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। की लेखा बूँद रकत, तन वजूद की वड्याईआ। की लहिणा नार मर्द, स्त्री पुरुष की खेल खिलाईआ । किथ्थे सच प्रेम दी दरद, बिरहों विछोड़ा किस सताईआ। कवण करे प्रेम दी अर्ज़, बेनन्ती सच जणाईआ। केहड़ा पूरा करे फ़रज़, हुक्म मन्न के सीस निवाईआ। केहड़ी साची गर्ज़, कवण मिले वड्याईआ। जां तक्कया खेल दीन दुनी दा सारे होए असचरज, हैरानी विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। पुरख अकाल कहे तुहाडा वक्त हो गया पूरा, पूरी तरह दयो जणाईआ। कवण मूर्ख कवण मूढ़ा, कवण तुहानूं चाढ़ के रंग गूढ़ा, मेरे विच समाईआ। कवण ला के मस्तक धूढ़ा, टिक्के रिहा रमाईआ। किस दे अंदर जोती नूरा, कवण करे रुशनाईआ। कवण सुणे अनादी तूरा, कवण तुरिया तों परे मेरा दर्शन पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो आपणा बचन करो पूरा, पारब्रह्म ब्रह्म इक्को हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्त पुरख अकाल हो गया मजबूरा, मजबूरी विच सब नूं रिहा बुलाईआ। दीनां मज़हबां अंदर कलयुग कूड़ी क्रिया ने ऐसा खिलारया कूड़ा, हर हिरदिउँ करे ना कोए सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, इक्को हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू सानूं मार लैण दे इक्को झाकी, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल किहा आपणी खाणी बाणी दी वेखो खोल्ह के ताकी, झरोखे विच्चों नैण उठाईआ। तुहाडा केहड़ा नाम केहड़ा कलमा बणया साकी, साख्यात दयो दृढ़ाईआ। क्यों तुहाडे हुन्दयां तत विच रहिण वाला मनुआ होया आक़ी, गुर अवतार पैग़म्बरो तुहाडी की वड्याईआ। तुसीं मेरे दास दासी, सेवक सेवा विच लगाईआ। मैं साहिब पुरख अबिनाशी, आदि जुगादि दा करता इक अख्वाईआ। क्यों कलयुग होई अन्धेरी राती, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। दीन दुनियां दी तुसीं बदल ना

११४१
२१

सके हयाती, जीवण विच जीवण ना कोए रखाईआ। किधर तुहाडा नूर किधर जोत दा दीवा बाती, क्यों ना काया मन्दिर अंदर होए रुशनाईआ। केहड़ा कर्म कांड दा लेखा बाकी, मैनूं दयो समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दा मालक ख़लक दा ख़ालक इक्को हुक्म सुणाईआ।

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तक्कीए आपो आपणे मज़हब, दीन दुनी ध्यान लगाईआ। तेरा रिहा कोई ना अदब, दुनियां काया आदत बैठी बदलाईआ। जिंनां चिर तूं ना करें मदद, मुद्दा हथ्थ किसे कुछ ना आईआ। जिधर वेखीए चारों कुण्ट तशदद्, सांतक सति ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू साथों मँगें ना कोए हिसाब, लहिणा दे कोए ना पाईआ। तेरा नाम ते तेरी किताब, तेरे क़लमे आए गाईआ। साडे कोल इहो जवाब, जो सानूं दिती सौग़ात, परत के तेरे विच टिकाईआ। तेरी सृष्टी तेरी दृष्टी तेरी दुनियां कायनात, लख चुरासी तेरी सोभा पाईआ। असीं तां दीनां मज़हबां दी निक्की निक्की जमात, अक्खरां विच कर के आए पढ़ाईआ। तेरी सेवा कीती ख़िदमात, ख़ादम हो के आपणा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो आ जाओ सचखण्ड वाले रसते, सच दुआर दयां जणाईआ। चार जुग दे बन्नू के बस्ते, दरगाह साची दयो टिकाईआ। तुसीं सदा मेरे घर विच रहिणा वसदे, लोकमात दा खैड़ा दिता छुडाईआ। ढोले गाउणे मेरे जस दे, सिफ्तां विच सालाहीआ। इशारे लैणे अगम्मी अक्ख दे, बिना तन वजूद तों दयां दृढ़ाईआ। जेहड़े कलमे आए रटदे, उन्नां दे रट्टे तुहानूं दिते वखाईआ। जेहड़े वणजारे बणे नहीं सच्चे हट्ट दे, लोकमात आपणी कार कमाईआ। ओथों एस वेले कलयुग जीव नफ़ा नहीं खटदे, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। अमिउँ रस मूल ना चटदे, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे मालक धुर खुदा, तेरी इक सरनाईआ। साडी क़बूल कर दुआ, रहमत विच सरनाईआ। दर ठांडे गए आ, पुज्जे चाँईं चाँईंआ। पिछला लेखा दे मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। अग्गे तेरा इक्को जपीए नाँ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई सूर खाए ना गाँ, चहुपायां उत्ते मज़हब ना वंड वंडाईआ। तूं सब दा पिता माँ, सृष्टी बणा दे भैण भाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुहाडी वेखी बड़ी आबादी, इबादत वाले खोज खुजाईआ। आत्म परमात्म करे कोई ना शादी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। तुहाडा हुक्म सुणे ना कोए अहलादी, ऐलान सारे आए कराईआ। प्रेम समझे ना कोए हक़ीक़ी मजाज़ी, मज़ा रस रसना वेख वखाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सदी चौधवीं इक वेरां ज़रूर करनी पए बरबादी, बावा आदम माई हव्वा दए गवाहीआ। एह खेल जुग जुगादी मेरी सादी, सहज सुभाओ देणी वरताईआ। तुसां हुक्म अंदर रहिणा राज़ी, राज़क रिज़क रहीम रिहा दृढ़ाईआ। अग्गे तों शरअ दा रहिण देणा नहीं कोई क़ाज़ी, क़ज़ा सब दे उपर रखाईआ। ना कोई सजदा करे निमाज़ी, नमस्ते इक्को देणी समझाईआ। पिछला झगड़ा छड्डणा माज़ी, पासट नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेस इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सब दा लेख मुकावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया भेख मिटावांगा। शब्द अगम्मी संदेस, दो जहानां इक सुणावांगा। मालक बण अगम्म नरेश, नव नौ चार खोज खुजावांगा। क़ागज़ क़लम शाही लिखे वेखां लेख, अलख अगोचर हो के पर्दा आप उठावांगा। जिस नूं सारे कहिण परदेस, सो देस आप सुहावांगा। कलयुग मिटे कूड़ मलेछ, मसला सब दा हल्ल करावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हर करता इक्को हुक्म वरतावांगा। गुर अवतार पैग़म्बरो सुणो अगम्मी राज़, रहमत विच जणाईआ। भेव खोल्हांगा आग़ाज़, पर्दा दयां उठाईआ। जो पिच्छे साजण ल्या साज, सो सच दयां बदलाईआ। चार वरनां दा इक समाज, बरन अठारां रंग रंगाईआ। किसे पढ़नी ना पए निमाज़, रोज़ा रख ना झट लँघाईआ। टल खड़काउणा ना पए उच्ची अवाज़, मन्दिरां विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हां इक्क, एका एक दयां जणाईआ। आत्म परमात्म ला के सिक, सिखर चोटी दयां चढ़ाईआ। जन्म मरन दी मेट के तृख, तृष्ना दयां मिटाईआ। सुरती शब्द गुर चेला बणे सिख, साचा रंग रंगाईआ। पूजणा पए ना पत्थर इट्ट, काग़ज़ां सीस ना कोए निवाईआ। सब दा लहिणा देणा लवां नजिठ, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पर्दा लाह के सवा गिठ, अन्तर नूर जोत करां रुशनाईआ। धुर दा हुक्म कदे ना सके मिट, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। किसे नूं ख़ाक पाउणी पए ना विच लिट्ट,, जटा जूट ना राह चलाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती लैणी पए ना छिट, जलधारा ना कोए वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। साचा रंग रंगां आप, आपणी दया कमाईआ। सतिजुग सब दा सांझा कर के जाप, जीवण

जुगत दयां जणाईआ। त्रैगुण माया मेट के ताप, अगनी तत बुझाईआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना पाप, दुरमति मैल आप धवाईआ। प्रगट हो के दर्शन देवां साख्यात, स्वच्छ सरूपी सोभा पाईआ। रूह बुत करां पाक, पतित पुनीत आपणी कार कमाईआ। लेखे लावां काया माटी ख़ाक, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। बजर कपाटी खोल्ह के ताक, ईड़ा पिंगल सुखमन डेरा ढाहीआ। तुहाडा सब दा पूर कर के वाक्, भविख्त दी भाख्या पूर कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुसां सारयां रहिणा नाल इतफाक, दीन दुनी दा झगड़ा कोए ना पाईआ। सारयां दे देणे मैनूं तलाक, लेखा लिखणा बिन क़लम शाहीआ। तुहाडा लहिणा होए बेबाक, बाकी रहिण कुछ ना पाईआ। जो कुछ करे करावे प्रभ आप, करावणहार आप अख्वाईआ। जिस नूं तुसां सारयां मन्नया बाप, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा हुक्म अगम्म अपारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग मेट कूड़ कुड़िआरा, चारों कुण्ट करां रुशनाईआ। सतिजुग सच कर उज्यारा, नौ सत्त करां रुशनाईआ। एका शब्द इक जैकारा, इक्को ढोला गीत सुणाईआ। इक्को मन्दिर गुरुदुआरा, शिवदवाला मठ इक समझाईआ। इक्को प्रेम प्यार अंदर होवे सब दा नाअरा, नर नरायण नज़री आईआ। इक्को इष्ट इक्को दृष्ट होवे निमस्कारा, सजदा सीस इक झुकाईआ। तुसीं दस्सो तेई अवतारा, की आसा होर वधाईआ। बोलो ईसा मूसा मुहम्मद नाल प्यारा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रिहा दृढ़ाईआ। दस गुरु तुहाडी की विचारा, नानक गोबिन्द दयो जणाईआ। सारे निउँ के करन निमस्कारा, सजदा सीस झुकाईआ। तेरा हुक्म सच्ची सरकारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। असीं लोकमात विच आउणा नहीं चौहन्दे दुबारा, तत्तां वाला शरीर ना कोए हंढ्ढाईआ। असीं वेखणा चौहन्दे तेरे शब्द गुरु दा नज़ारा, जो नज़रीआ सब दा दए बदलाईआ। तूं आदि अन्त दा इक अवतारा, पारब्रह्म प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल सदा जुग चारा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। तेरा लेखा काग़ज़ क़लम ना लिखणहारा, शाही शहिनशाह तेरी सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो तुसीं सारे मेरी कुल, कुल्ल आलम मेरा रूप नज़री आईआ। मेरा नाम सदा अनमुल्ल, क़ीमत करता ना कोए रखाईआ। ध्यान मारो तुहानूं सृष्टी गई भुल्ल, भुल्लयां राह ना कोए समझाईआ। धर्म नीतीआं गईआं रुल, धीरज धीर ना कोए धराईआ। सच दा दीवा होया गुल, गुलशन हक़ ना कोए महकाईआ। गुंचा खिड़िआ ना कोए फुल्ल, फुलवाड़ी महक ना कोए महकाईआ। तुहाडे तुल्लया ना कोए तुल, कंडे तराज़ू आपणे नाल लओ रखाईआ। सब दा अमृत आत्म गया डुल्ह, निझर झिरना रस ना कोए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

११४४
२१

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू साडा पूरा होया वायदा, वायदे ख़िलाफ़ ना कोए खुदाईआ। तेरा शब्दी धार मुआहिदा, निरगुण निराकार वेख वखाईआ। असीं मातलोक नालों होणा चौहन्दे अलाहिदा, इक्को तेरे विच समाईआ। सानूं अज्ज हुक्म दे दे बकाइदा, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। असीं दीन दुनी दा लै के वेख्या जाइज़ा, साडी चले ना कोए रज़ाईआ। बिना भय तों रहिण दा नहीं कोई फ़ायदा, सच दईए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो जूह जंगल, टिल्ले पर्बत खोज खुजाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर तक्को मँगल, राग नाद ढोले कवण सुणाईआ। चार कुण्ट दह दिशा देखो आपणी शरअ दे संगल, सगल सृष्ट दिती बंधाईआ। साची मंज़ल मूल ना लँघण, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। तन वजूद साची रंगण, माटी ख़ाक ना कोए वड्याईआ। सब दा मानस जन्म दिसे भंगण, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। निम्म वासना महक दिसे ना कोए चन्दन, कूड़ी क्रिया ना कोए तजाईआ। आत्म मिले ना सच्चा अनन्दन, परमानंद ना कोए समाईआ। किथ्थे गई डंडावत बन्दन, सजदयां विच सीस झुकाईआ। फिरी दरोही विच वरभण्डण, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। तुसीं आत्म लिव टुट्टी क्यों नहीं गए गंढुण, नाता मेरे नाल जुड़ाईआ। क्यों हुक्म अदूली कीती क्यों मर्यादा कीती उलँघण, मैनूं दयो समझाईआ। क्यों ढोला भुल्लिआ तुहाडा छन्दन, क्यों कलमे वाले कलमे गए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सुण पुरख अबिनाशी, सच दईए दृढ़ाईआ। साडी मन्ने कोई ना आखी, आख़र मिलण कोए ना पाईआ। आत्म धार रिहा कोए ना साथी, परमात्म वज्जे ना कोए वधाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी राती, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दा रिहा ना कोए जमाती, हक़ीक़त वाली ना कोए पढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विके हाटी, क़ीमत आपणी गए गवाईआ। जोत जगी ना किसे ललाटी, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। अमृत रस रिहा कोए ना चाटी, चेटक कूड़ होया हल्काईआ। बूँद मिले ना कोए स्वांती, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। शब्द सुणे ना कोए नादी, अनहद धुन ना कोए शनवाईआ। भेव खुल्ल्हे ना कोए ब्रह्मादी, ब्रह्मांड पर्दा ना कोए उठाईआ। किसे ने सूर गाँ ख़ाधी ढांडी, सारे तैनूं गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो सब दे फोल के दस्सो इरादे, इरद गिर्द ध्यान लगाईआ। तुहाडे मुरीदां तुहाडे सिखां तुहाडे शिशां क्यों पशू परिंदे खाधे, की तुसीं आए समझाईआ। तुहाडे शब्द क़लमे

११४५
२१

नाल क्यों ना जागे, पढ़न वाल्यां अंदर सुरत ना कोए खुल्हाईआ। दीन मज़हब जेहड़े तुसां साजणा साजे, क्यों ना सज्जण हो के तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़ंबरो हां करो जां नांह, इक्को वार जणाईआ। तुसीं सच दस्सो जिन्हां सूर खाधा जां गाँ, डंगरां रस बणाईआ। की उन्हां नूं मेरी दरगाह दयोगे थाँ, मैनूं दयो समझाईआ। जे पशू पंछी खाणा नहीं गुनाह, गुनाह गवर मनाईआ। किथ्थों दयोगे पनाह, पुश्त हथ्थ टिकाईआ। नेत्र खोल्ह के दयो वखा, इशारे नाल समझाईआ। तुसीं खुद क्यों नहीं सी ल्या खा, खा के दिता वखाईआ। क्यों मेरा क़लमा आए गा, गॉड कहि के सीस निवाईआ। करदे आए दुआ, वास्ते धुर दे अग्गे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण प्रभू जे असीं नहीं तेरा शब्द करे तस्दीक, शहादत इक भुगताईआ। असीं किसे नूं आख्या नहीं एह अगम्मी रीत, धुर मालक दिती दृढ़ाईआ। सिरफ़ तेरे नाम दी दस्सी तौफीक़, सिफ्तां विच सालाहीआ। हर घट दिस्सया नज़दीक, गृह गृह डेरा लाईआ। काया मन्दिर सदा वसनीक, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, जो हिरदे हरि ध्याईआ। तेरा राज़ नहीं रख्या पोशीद, जो समझाया सो आए समझाईआ। तेरी दुनियां तेरे हुक्मे अंदर बदली आपणी नीत, साडी रही ना कोए वड्याईआ। असीं सारे कहिंदे साडी पहली उत्ते मार दे लीक, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। सब नूं सांझी दस्स प्रीत, प्रीतम आपणा मेल मिलाईआ। तेरा मन्दिर तेरा काअबा तेरा शिवदवाला मठ मन्दिर मसीत, गुरुदुआर तेरा नज़री आईआ। असीं अग्गे तों दीन मज़हब दे रहिणा नहीं शरीक, शरीकत दिती गवाईआ। असीं चौहन्दे दीन दुनी दी बदल दे नीत, नीतीवान तेरी सरनाईआ। काया कर दे ठांडी सीत, अगनी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब स्वामी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़ंबरो खुशी नाल पओ हस्स, ताली अगम्म लगाईआ। सदी चौधवीं सब दी होणी बस, बस्ते देणे बंधाईआ। इक्को वार कराउणे दस्ख़त, नाम लिखाउणा बिना क़लम शाहीआ। चार जुग दा चलदा रिहा जो रथ, रथवाही हो के सेव कमाईआ। जो नित नवित्त मार्ग आए दस्स, दीन दुनी जगत समझाईआ। सो पिछला लेखा सदा सदा होणा भड्ड, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़हबां कर इक्ठ, आत्म ब्रह्म देणा दृढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई झगड़ा देणा छड्ड, इक्को रंग वखाईआ। हउमे हंगता कूड़ कुड़िआरा अंदरों देणा कड्ढ, माया ममता मोह गवाईआ। पुरख अकाल दी सारे बणाउणे यद, इक्को नूर जोत रुशनाईआ। पिछली रहे कोई ना हद्द, हदूद अगली देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

११४६ २१

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू असीं जो आखें सो लग्गे लिखण, लिख के दईए वखाईआ। पुरख अकाल किहा एह सृष्टी आदि जुगादी मिथण, बिन मेरे कम्म किसे ना आईआ। तुसीं सिख्या आए सिखण, सहज नाल दयां समझाईआ। आपणा आपणा कढ्ढो चिट्टण, पटेदारी फोल फुलाईआ। जिस नाल कलयुग अन्तिम लग्गा मिटण, मिटे कूड़ लोकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दा निकले सिट्टण, दीन दुनी दा पर्दा देणा उठाईआ। चार कुण्ट वेखो लग्गी पिट्टण, दह दिशा पए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म सुण के कहे मूसा, मसलसल धार जणाईआ। झगड़ा दिसे नाल रूसा, चाँईना चैन कोए ना आईआ। नाता टुट्टणा पंज भूता, पंच परपंच करे लड़ाईआ। सम्मत पंज विच मिलणा हूटा, हुलारा पहिला दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। ईसा कहे सुण मूसा अलहि अलसलाम, सहज नाल जणाईआ। ओह सुण धुर दी इक कलाम, मुहम्मद लए अंगड़ाईआ। जिस दी चौधवीं सदी कहे मैं लै के आउणा तुफ़ान, तोहफ़ा सब नूं देणा फड़ाईआ। चार कुण्ट करना वैरान, वैरी घर घर नज़री आईआ। हुक्म देणा मेरे अमाम, जो अमलां तों रहित नूर खुदाईआ। खेल वेखणा विच जहान, दीन दुनी फोल फुलाईआ। मेरा साहिब होए मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। तिन्न पंज सत्त होणी क़त्लेआम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। राम कृष्ण दोवें करन सलाह, भारत भवन वेख वखाईआ। केहड़ा दिसे जगत मलाह, खेवट खेटा सोभा पाईआ। सियासत सब नूं कीता गुमराह, कवण कूड़ी क्रिया विच वड्याईआ। सच्चा दिसे किसे ना राह, रस्ता हक़ ना कोए रखाईआ। राम किहा ओह नानक वेखो गवाह, शहादत दए भुगताईआ। कृष्ण किहा गोबिन्द खण्डा रिहा चमका, पता नहीं की खेल बेपरवाहीआ। मुहम्मद कहे मेरा वक्त पहुंचया आ, सारे दयो दुहाईआ। ईसा कहे मैं वी तक्कां ओहो राह, जिस वेले भज्जयां राह खैड़ा नज़र कोए ना आईआ। ईसा अलहिअलसलाम कहे उच्ची मारां धाह, तेरी तेरी तेरी इक दुहाईआ। सम्मत पंज कहे मैं फेर वेखां नाल चा, चाउ घनेरा मेरे अंदर आईआ। धरनी कहे मेरी क़बूल होई दुआ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे तुसीं सारे रखो आस, आसावंद दयां जणाईआ। मैं घर घर करदा फिरां तलाश, लख चुरासी खोज खुजाईआ। वेखां हड्ड नाड़ी मास, तन वजूद पर्दा लाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप प्रधानां नूं सुल्तानां नूं ख़बरदार करना अज्ज दी रात, सोया रहिण कोए ना पाईआ। नौआं खण्डां विच नौआं दिनां विच ज़रूर मारया करन इक झात, बिन

क़दमां पन्ध मुकाईआ। सब नूं राती सुत्तयां वखरी वखरी दस्स के बात, सोए हिरदे लैणे उठाईआ। एह खेल अगम्मी राज़, जिस नूं समझ विच ना कोए समझाईआ। शब्दी गुरु ने करना वाअज़, क़लमा आपणा इक सुणाईआ। इक दूजे नूं मार के करो राज, रईयत आपणी लओ वधाईआ। प्रभू दा खेल जगत समाज, जवाब देण कोए ना पाईआ। सीस रहे किसे ना ताज, तख्त निवासी देणे ख़ाक मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण की सुणे बचन अपार, अपरम्पर दिते जणाईआ। हस्स के कहिण तेई अवतार, साडी लोड़ रही ना राईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कर गुफ्तार, गुफ्त शनीद रहे सुणाईआ। साडा वक्त पहुंचया आण, वेला वक्त दए गवाहीआ। नानक गोबिन्द कहे एह खेल होणा घमसाण, घुंमणघेरी विच दुहाईआ। जिस नूं समझे ना कोए इन्सान, ओह खेल देणा कराईआ। गढ़ तोड़ सर्ब अभिमान, धुर दा हुक्म देणा वरताईआ। झगड़ा मेटणा राज राजान, शाह सुल्तान करन लड़ाईआ। हलूणा देणा विच अफ्गान, ईरान अरब नाल दुहाईआ। असराईल मिले शैतान, शरअ दी धार इक बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। पहली चेत कहे मैं देवां सच चेतावनी, चारों कुण्ट जणाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बरां पूरी करनी भावनी, प्रभ आसा सब दी वेख वखाईआ। जेहड़ी बाकी रह गई राम रावनी, रावण लहिणा देणा झोली पाईआ। जेहड़ी खेल खिलाई कौरव पांडव कानून्नी, कृष्णा अन्तिम राह तकाईआ। जिस दी मूसा ईसा मुहम्मद दिती ज़ामनी, बीसवीं चौधवीं नाल मिलाईआ। जिस दी धार चमके दामन दामनी, गोबिन्द नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर सारे इक्ठे बोले, इक्को वार जणाईआ। प्रभू तेरा तोल कोई ना तोले, अनतुल तेरी वड्याईआ। जुग जुग तेरे नाम भण्डारे खोल्हे, आए मात वरताईआ। दिते काया चोले, असीं आए जगत हंढाईआ। अन्तिम पै के तेरे शब्द दे डोले, दर तेरे सोभा पाईआ। आदि जुगादी तेरे घर दे गोले, चाकर हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवें धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे सुणो हुक्म अगम्म अपारा, निरगुण धार दयां जणाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर वेखो नज़ारा, नज़रीआ आपणा लओ बदलाईआ। सुणो शब्द नाम जैकारा, नाद धुन अगम्म अथाहीआ। जिस दी चार जुग पाई किसे ना सारा, बेअन्त कहि के शुकर मनाईआ। ओह निरगुण नूर कर उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। सारे कहि के आए चवीआं अवतारा, कल कल्की वेस वटाईआ। जिस ने मेटणा कूड़ पसारा, सतिजुग सच देणा वखाईआ। चार वरनां दे अधारा, अठारां बरन

रंग रंगाईआ। आत्म ब्रह्म दे नज़ारा, नूरे नज़र देणा वखाईआ। सति सच ला अखाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो मार लओ झाती, झाकी इक्को वार पवाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी राती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। कर के खेल पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। चेत कहे मेरी महकी रुत्त, प्रभ रुतड़ी आप महकाईआ। भगत दुलारे उठा के सुत, जननी हो के गोद टिकाईआ। भाग लगा के पंज तत काया बुत, तन वजूद कीती सफ़ाईआ। उज्जल कर के मुख, दिती माण वड्याईआ। जन्म मरन दा मिटिआ दुःख, चुरासी गेड़ ना कोए भवाईआ। उलटा गर्भ ना होवे रुख़, अगनी तत ना कोए तपाईआ। साहिब स्वामी मालक हो के ल्या पुच्छ, अन्तरजामी हो के वेख वखाईआ। जो जुग जन्म दे गए रुठ, रुठ्ठयां ल्या मनाईआ। सदी चौधवीं आपे तुठ्ठ, मेहर नज़र इक उठाईआ। अमृत नाम दे के घुट, जाम अगम्म दिता प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए उठाईआ। चेत कहे मैं खुशीआं अंदर हस्सां, हस्स के दयां जणाईआ। सम्मत शहिनशाही पंजवां आया मसां, मस्सया रैण अन्धेरी दए गवाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बरां कहिणा अच्छा, अच्छी तेरी बेपरवाहीआ। जिस विच दीन मज़हब दा कटया जाणा रस्सा, रस्सी रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा पैणा जिन्हां खाधा गाँ वच्छा, सूर वाला बच्या रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां ने किसे नूं बणाउणा नहीं आपणा बच्चा, सिर आपणा हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग कूड़ा चारों कुण्ट फिरे नस्सा, भज्जे वाहो दाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर वी कहिण असीं वेखदे होड़ा उपर सस्सा, जो निरगुण सरगुण धार दोवें रंग वटाईआ। हाहे उत्ते टिप्पी घर दोहां दा वसा, आत्म परमात्म इक्को गंढु पवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव फिरे नस्सा, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। क्यों दीन मज़हब दा तन्द होया कच्चा, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। हिरदे हरि का नाम किसे ना रचा, साढे तिन्न करोड़ धुन ना कोए शनवाईआ। कलयुग जीव बप्पड़ा बप्पा, अंदरों करे ना कोए सफ़ाईआ। बिना भगतां तों रिहा कोई ना पक्का, सति विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। चेत कहे मेरा सतिगुर शब्द आया स्वामी, सभा दए बदलाईआ। बिना तत्तां तों सब दा अन्तरजामी, घट घट वेखे थाउँ थाईंआ। जिस दी सिफ्त चार जुग दी बाणी, महिमा अकथ दृढ़ाईआ। ओह खेले खेल दो जहानी, नौजवानी वेस वटाईआ। सब दे अन्तर मंज़ल वेखे रुहानी, सन्त फ़कीर फोल फुलाईआ। पवित्र धार दिसे ना कोए जिस्मानी, तन वजूद ना कोए वड्याईआ।

मंज़ल चढ़या ना कोए प्राणी, प्रानपति मिलण कोए ना आईआ। साचा नज़र ना आवे कोई बानी, जो नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप इक्को रंग रंगाईआ। जो उपज्या सो फ़ानी, गुर अवतार पैग़म्बर रहिण कोए ना पाईआ। सब दी जूह होए बेगानी, घर दा मालक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी कार कमाईआ। शब्द गुरु कहे मैं गुरु गुरु गुरदेवा, आदि अन्त अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां करन आया सेवा, सेवक हो के सेव कमाईआ। अमृत नाम रस दा दे के मेवा, रस इक्को इक चखाईआ। जिस नूं समझ ना सके जिह्वा, जिह्वा तों परे वड्याईआ। मस्तक ला के कौस्तक थेवा, मनुआ मन दिता बदलाईआ। मेल मिला के अलख अभेवा, पर्दा अंदरों दिता चुकाईआ। धाम वखा के निहचल नहिकेवा, दरगाह साची इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। शब्द गुरु कहे जन भगतो तुहाडी देण आया सफ़ाई, सफ़ारश दी लोड़ रहे ना राईआ। सब तों कामल मेरी गवाही, शहादत अवर ना कोए भुगताईआ। तुहानूं देवे ना कोए सज़ाई, राए धर्म तुहाडे चरण चुम्म के झट लँघाईआ। तुहाडी सिफ्त करे क़लम स्याही, क़ागज़ आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। तुहाडे बिना भगवान दी हो ना सके वड्याई, जुग जुग रीती चली आईआ। की करे जोत अकालण आदि शक्ति माई, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सोभा किस बिध पाईआ। बिन भगतां तों प्रभ नूर जोत ना होवे रुशनाई, डगमगाहट ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। शब्द गुरु कहे मैं देण आया शहादत, आपणा बल धराईआ। सारे कहो साडी बदल गई इबादत, बन्दगी इक्को सीस निवाईआ। साडे विच प्रभू दे प्यार दी होई मिलावट, दीन मज़हब दी वंड रही ना राईआ। असीं बाहरों फ़रज़ी नहीं रहिणा बनावट, अंदरों इक्के रंग रंगाईआ। शब्द गुरु तुहाडे अंदर शब्द दी करे सख़ावत, रहमत नाल वरताईआ। तुहाडी किसे नाम बाणी नूं देणी ना पए ज़मानत, इक्को वार फ़ैसला दिता कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। शब्द गुरु कहे तुहाडी आत्मा जिस दा परमात्मा दोहां दा सच्चा साथण, साथी इक अख्वाईआ। जन भगतो तुसां पिछली कीती आपणे अंदरों कढ्ढणी अमृत वेले सारयां ने कर लैणी दातन, पिछला लेखा रहे ना राईआ। तुहाडी अमानत दिती नहीं गवाचण, जो गोबिन्द प्रभ दी झोली पाईआ। सम्मत पंज कहे मैं आया ओह अगम्मी चिठ्ठी वाचण, जिस नूं नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग ना सक्कया कोए समझाईआ। मैं विक्या नहीं किसे हाटण, जगत क़ीमत ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। शब्द गुरु कहे तुसीं सारे हो गए प्रभ दी भेंटा, बच्या रहिण कोए ना पाईआ।

१९५० २१

जिस दा इक्को शब्दी गोबिन्द बेटा, जन्म मरन विच ना आईआ। जगत किनारे दा खेवट खेटा, दो जहानां पार कराईआ। जिस दा समझे कोई ना लेखा, अक्खरां विच ना कोए वड्याईआ। ओह वस्से सचखण्ड देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। कलयुग अन्त बदल के आया वेसा, निरगुण आपणा नूर करे रुशनाईआ। भगत उधारना मेरा पेशा, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। आदि जुगादि रहे हमेशा, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी कार कमाईआ। शब्द गुरु कहे इक्को सब दा मीत, दूजा नज़र कदे ना आईआ। जिस ने बदल देणी रीत, रीतीवान धुरदरगाहीआ। काया करे ठंडी सीत, अगनी तत ना कोए तपाईआ। जन भगतो जींवदयां जन्म जाणा जीत, मर के जन्म दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्मा परमात्मा दी तुहाडी पक्की हो गई प्रीत, दुनियांदार अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। क्यों तुहाडे कोल प्रभू ने कीती बख्शीश, दूजे अग्गे मँगण कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतो की किसे कोलों मँगो, मानस सारे नज़री आईआ। इक्को प्रभू दे प्यार विच आपणा आप रंगो, फेर रंगण दी लोड़ रहे ना राईआ। मंज़ल इक्को लँघो, जिस दी पौड़ी दे उत्ते पौड़ा होर ना कोए वखाईआ। आपणी आत्मा नूं ओस दवारे टंगो, जिथों फड़ के बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। वेखो दुनियांदारां कोलों कदे ना संगो, दुनियां कम्म किसे ना आईआ। तुहाडे कोलों कोई कराउणा नहीं जंगो, तुसीं इक इक फुल्ल सुटो, दुनियां गोल्यां नाल करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। एह फुल्ल नहीं एह जग दी अग्नी अग्ग, अग्ग सके ना कोए बुझाईआ। काअबे वाल्यां भुल्लणे हज्ज, हज़रत देण दुहाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सारे इक दूजे नूं रहे सद्द, बौहड़ी बौहड़ी कर के रहे सुणाईआ। ज़रा वेखो सम्मत पंज विच किस तरह झगड़ा पैंदा उत्ते हद्द, हदूदां देण दुहाईआ। बिना भगतां तों किसे होणा नहीं गद गद, खुशी हिरदे विच ना कोए समाईआ। ज़रा खेल वेख्यो सारी दुनियां नालों होणा अलग्ग, वखरी धार इक वखाईआ। क्यों एह खेल सूरे सर्बग्ग, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। फुल्ल कहिण एह बरखा अमृत धार, जन भगतां दिती लगाईआ। शब्द गुरु किहा, नहीं इस दे नाल सारी सृष्टी दा करना विहार, एह मेरी बेपरवाहीआ। क्यों शब्द दे शब्द सदा इख्त्यार, ते शब्द दा शब्द सदा मुख्त्यार, शब्द दा शब्द सदा आगिआकार, शब्द निरगुण ते शब्द सरगुण, बिना शब्द तों मण्डल रास विच रंग जगत ना कोए वखाईआ। शब्द कहे मैं सतिगुरु मैं गुरदेव मैं सारी दीन दुनी दा बदमाश, बदी करन कराउण वाला शब्द इक

अख्वाईआ। पर एह मेरा मन दे नाल कम्म ख़ास, ते बुद्धी नाल टकराईआ। ते जिस वेले मैं आत्मा नूं देवां प्रकाश, ओह मेरा मेरा नूर नूर नज़री आईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर, शब्द गुरु कहे, मेरे कीते नूं नहीं सके वाच, जो अंदर सुणाया, उन्हां ने रसना गाया, क़लम शाही नाल लिखाया, लिख के सिफ्तां गए सुणाईआ। उन्हां अक्खरां उत्ते धरवास रखाया, जिस नूं अग्ग नाल सारे देण जलाया, उह प्रभू अबिनाशी भुलाया, जो घर घर अंदर डेरा लाईआ। अल्ला वाहिगुरु राम कृष्ण ओम जै जैकार कराया, जै जैकार कराउण वाला नज़र कोए ना आईआ। शब्द कहे मेरा आदि अन्त किसे ना पाया, जे किसे उत्ते किरपा कीती, उन भगवन्त नूं कन्त कहि सुणाया, नारी हो के मैं साची सेव कमाईआ। जे किसे बुत विच नूर चमकाया, उन ओस दा मंत दृढ़ाया, अठ्ठ पहर ध्यान लगाया, साह साह रसना गाया, चरण कँवल कँवल चरण बिना चरणा तों सीस निवाया, ते शब्द गरू कहे मै किसे दा फेर वी नहीं माण वधाया, जो आया सो पार कराया, वेखो गुरु अवतार पैग़ग्बर किसे दे साहमणे नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। शब्द गुरु कहे मैं अन्ना बोला, सुणन कुछ ना पाईआ। भेखाधारी वसां विच काया चोला, तत्तां विच सोभा पाईआ। जिस वेले चाहवां ओस वेले आपणी धार दा बोलां बोला, अनबोलत हो के आपणा राग सुणाईआ। जे

११५२ मैं कहि दिता प्रभू मौला, ते सारयां मौला मौला कहि के रौला दिता पाईआ। जे मैं किहा सतिनाम, ते सति सति सारे ११५२

२१ रहे गाईआ। जे मैं किहा वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु, ते वाह वा गुरु दी सारे करन वड्याईआ। ते जे मैं कहां ओस प्रभू २१

दा कोई नाम नहीं कोई निशान नहीं ते तुसीं किस दा गाउँदे ढोला, उह फिर सारे दयां भुलाईआ। जे मैं कहां उह तक्कड़ वाला तोला, जे मैं कहां धुरदरगाह दा दूल्हा, जे मैं कहां उहदा हुक्म होवे माअकूला, जे मैं कहां उह सारयां अंदर फलिआ फूला, फेर हथ्थ जोड़ के सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। शब्द कहे मैं राम बण गया, सीता पिच्छे भज्जिआ वाहो दाहीआ। शब्द कहे मैं काहन बण गया, राधा पिच्छे बंसरी रिहा वजाईआ। शब्द कहे मैं मूसा बण गिया, मूँह दे भार रगड़ के नक्क दिता घसाईआ। शब्द कहे मैं ईसा बण गया, गल फाँसी लई लटकाईआ। शब्द कहे मैं मुहम्मद बण गया, कलमयां विच दिती दुहाईआ। शब्द कहे मैं नानक बण गया, ग़रीबी वेस कर के धरती कदमां नाल मिणाईआ। शब्द कहे मैं गोबिन्द बण गया, खण्डा खड़ग चमकाईआ। शब्द कहे मैं सब नूं छड गया, शब्द शब्द विच समाईआ। शब्द कहे मैं सब कुछ बण गया, आपे पिता ते आपे माईआ। शब्द कहे मैं ताणा तण गया, लख चुरासी नज़री आईआ। शब्द कहे मैं विष्न ब्रह्म शिव घाड़त घड़ गया, संसारी भण्डारी

सँघारी नाउँ रखाईआ। शब्द कहे जे मैनूं तक्को ते मैं सारयां विच वड़ गया, बिना मेरे तों जींदा नज़र कोए ना आईआ। शब्द कहे मैं अंदर काया मन्दिर ते सब दी चोटी उत्ते चढ़ गया, सिखर बहि के आपणा आसण लाईआ। शब्द कहे मैं मूर्ख मूढ़ बण गया, अक़ल विद्या ना कोए चतुराईआ। शब्द कहे मैं सब कुछ पढ़ गया, मेरे पढ़ाइआं तों बिना गुर अवतार पैग़म्बर किसे नूं समझ किछ ना आईआ। सो शब्द कहे मैं पहली चेत जगत जहान दे मैदान विच खड़्ह गया, मदद अवर ना मँग मँगाईआ। आपणे विहार अंदर सृष्टी दी दृष्टी नाल लड़ गया, आपणी कार अंदर इष्टी दा रूप धराईआ। ना कदे जंम्यां ते ना कदे मर गया, मढ़ी गोर ना कदे दबाईआ। ना हिन्दू ना सिख ना ईसाई ना मुस्लिम ते मैं ना किसे मज़हब नूं चंगा कर के वरज्या, आउ तुहानूं सिँघासण उत्ते दयां बैठाईआ। जदों दिल कीता उन्हां दे हथ्थां विच फड़ा के निक्कीआं निक्कीआं पर्चीआं, बच्चयां वांग दिता परचाईआ। किसे नूं राम किसे नूं कृष्ण किसे नूं ओम अल्ला सतिनाम दे के जगत वाला ख़र्चया, मातलोक दे राहे दिते पाईआ। उन आ के उत्ते धरतया, धरनी धरत धवल दिती वड्याईआ। गुण गा के प्रीतम अरश्या, सिफ्त दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ।
१९५३ शब्द गुरु कहे सारे कहिंदे मन्नो शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील क़ुरानां ध्यान लगाईआ। मैं हस्सदा फिरां बिना मेरी किरपा किसे नूं आउणा नहीं ज्ञान, पढ़यां हथ्थ कुछ ना आईआ। जिंनां चिर मैं अंदर ना वड़या मन्दिर ना चढ़या ते मेरी कौण देऊ पहचान, निज नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। पढ़ना रसना दा गान, सुणना कन्नां दा विधान, मिलणा जिस वेले प्रभू होवे मेहरवान, बिना मेहर तों मिलण कोए ना पाईआ। ते जे कोई कहे असीं सारे इन्सान, साडे विच भगवान, असीं ओसे दा निशान, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म सारे नज़री आईआ। शब्द गुरु कहे फेर मैं कहां तुहाडे ब्रह्म दी केहड़ी दुकान, ते जे तुसीं ब्रह्म ते तुहाडी करे कौण पहचान, ते बेपहिचाण कवण अख्वाईआ। एसे कर के मैं अक्खरां विच पवा दिता घमसान, अक्खरां नाल अक्खर अक्खरां नाल अक्खर, त्रैगुण माया नाल अक्खरां वाले नाम, प्रभू ने दिते लड़ाईआ। की प्रभू नूं चंगा कहोगे कि शैतान, जिस ने गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों आपणे रस्ते बदला के सन्त सन्तां नाल दिते टकराईआ। शब्द गुरु कहे मैं आदि जुगादि सदा बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। सदा रहे मेरी कमान, हुक्म इक्को इक वरताईआ। जो आया सो बण के गुलाम, नफ़रां वाली कार कमाईआ। एसे कर के डंडावत बन्दना सजदे करदे रहे सलाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ।
शब्द गुरु कहे अज्ज तों समझ लओ सतिजुग दी धारा, सति दा सति लैणा उपजाईआ। प्रगट इक इक्क दा सर्ब पसारा,

वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जिस नूं कहिंदे कल कल्की अवतारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ओस दा शब्द गुरु सिक्दारा, हुक्मे अंदर आपणा हुक्म वरताईआ। जन भगतो तुसां जन्म नहीं लैणा दुबारा, मात गर्भ अगन ना कोए तपाईआ। मिलणा मेल ओस निराकारा, जो निरँकार निरवैर सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। शब्द गुरु कहे हुण मेरी बड़ी होणी परीख्याा, विद्वानां लैणी अंगड़ाईआ। जिन्हां कदी नेत्र नहीं दीख्या, उन्हां अक्खीं मीट के कहिणा मिल्या नूर अलाहीआ। कबाब खाणा भुन्न के उत्ते सीख्या, कहिण धर्म दी रीती असां अपणाईआ। सतिगुर शब्द ने सारयां तों पुच्छणा तुहाडा पिछला जन्म किस तरह बीतया, ओह दयो समझाईआ। ते की अगले साल दी होणी रीतया, पर्दा दयो खुल्हाईआ। केहड़ी वस्त तुहाडे काया ख़ीसया, बाहर दयो कढ्ढाईआ। ज़रा आपणा आत्मा तक्को बिना शीश्या, बिना शमां तों आपणा नूर वेखो रुशनाईआ । सुणो अगम्मा क़लमा अनोखा गीतया, जेहड़ा चार जुग दे शास्त्र ना सकण समझाईआ। केहड़ा रस मीठया, बिन रसना जिह्वा देणा समझाईआ। जेहड़े तपण वाले त्रैगुण पंज तत अंगीठया, सांतक सति ना कोए कराईआ। उन्हां नूं मंगयां मिले ना भीख्या, नाम भण्डारा ना कोए वरताईआ। सब ने पाउणा आपणा कीतया, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ । शब्द गुरु कहे मेरा पैणा इक धमाका, सब नूं देणा हिलाईआ। अनेकां साधां सन्तां ध्यान ला के मेरा खिचणा ख़ाका, नेत्र नज़र कुछ ना आईआ । मैं पुच्छ लैणा जगत दे गुरुओ तुहाडे पिछले नौ जन्म दा की साका, सच दयो दृढ़ाईआ। जे तुहाडा थोड़ा थोड़ा थोड़ा खुल्हिआ ताका, जिस वेले साम्हणे होणा ओसे वेले बन्द देणा कराईआ। हुण दस्सो केहड़ा काका चुकोगे ढाका, ते किस नूं बापू कहोगे किस दा मन्नोगे आखा, भेद दयो खुल्हाईआ। एह कोई विद्या वालीआं नहीं बातां, वड्याई नहीं जाग के कटणीआं रातां, गुण नहीं बहुतीआं गाउणीआं गाथां, अक्खरां विच सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। शब्द गुरु कहे मैं दीन दुनी दा बदल देणा यकीन, यके बाद दीगरे खेल खिलाईआ। कलयुग नूं कहिणा आफ़रीन, वाह वा तेरी वड्याईआ। जिस ने गुर अवतार पैग़म्बरां दी भुलाई ताअलीम, कलयुग जीव तुलबे आपणे लए बणाईआ। माया ममता दा दस्स के सीन, कूड़ी क्रिया विच फसाईआ। काम वासना कर अधीन, क्रोध विच हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। शब्द गुरु कहे जिस सिर उत्ते बद्धी लाल पग्ग, लेखा जन्म जगत जणाईआ। हरी तहिमत रखी लक्क, नाता मुहम्मद नाल वड्याईआ। चिट्टा क़मीज़ पहन के झट, गोबिन्द लहिणा

रिहा वखाईआ। सदी चौधवीं रही सद्द, हुक्म इक्को इक अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सदी चौधवीं कहे मैं वखाउणी लाल धार, मेरी गोली नेड़े आईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर होणा ख़बरदार, संदेसा इक अलाहीआ। धरनी धरत धवल तूं वी लै अधार, तैनूं दयां जणाईआ। चारों कुण्ट होणा धूअन्धार, अन्ध अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। लाल वस्त्र कहिण असां रहिण देणा नहीं कोई सुहाग, सुहागवन्त ना कोए वड्याईआ। चार कुण्ट ना रहे चराग़, अन्ध अन्धेरा कूड़ लोकाईआ। दुरमति मैल धोवे कोई ना दाग़, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। कलयुग जीव हँस होए काग, माणक मोती चोग ना कोए चुगाईआ। बिना भगतां तों अन्तर रिहा ना कोए वैराग, वैरी अंदरों ना बाहर कढ्ढाईआ। जगत समाज दा करे ना कोए त्याग, त्रैगुण लेखा ना कोए मुकाईआ। हक़ खुदा मन्ने ना कोए वाहिद, लाशरीक सीस ना कोए निवाईआ। जिस दा हुक्म होणा आइद, अहिदनामे सब दे पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। लाल रंग कहे मैं लाल वेखणी भूमी, भूमिका दए दुहाईआ। इशारा मिलदा विच रूमी, रहमान दए वड्याईआ। खेल होणी नामालूमी, सियासत चले ना कोए चतुराईआ। पर्दा खोल्ले ना कोए नजूमी, हिसाब वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। लाल रंग कहे मैं कप्पड़ उत्ते चढ़या, तन वजूद सुहाईआ। मेरा अन्तर अन्तर लड़या, जगत विच दुहाईआ। मैं जींदा जग मरया, जीवत रूप ना कोए बणाईआ। मेरा पासा अन्तिम हरया, जित्त संग ना कोए रखाईआ। मैनूं दुर्गा इक वरया, अष्टभुज गवाहीआ। मैं कलयुग अन्तिम सड़या, मेरा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। लाल रंग कहे मेरी अगम्मी तस्वीर, हरि तसव्वर आप कराईआ। मैनूं संदेसा दिता कबीर, जुलाहा गया दृढ़ाईआ। जिस वेले दीन दुनी दी बदली ज़मीर, शरअ सच ना कोए समझाईआ। जूठ झूठ भरया ख़मीर, ख़ाली होई लोकाईआ। बदले ना कोए तक़दीर, तदबीर ना कोए दृढ़ाईआ। ओस वेले सब दे नेत्रों डिगणा नीर, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। किसे कम्म नहीं आउणी शरअ शमशीर, खड़ग खण्डा ना कोए वड्याईआ। झगड़ा पैणा शाह हकीर, ऊँच नीच करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। लाल रंग कहे मैं आया उत्ते फ़र्श, ख़ाकी वेख वखाईआ। मेरी मुहम्मद नाल शर्त, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। जिस वेले तेरा महबूब आया परत, निरगुण नूर नूर अलाहीआ। कूड़ी क्रिया होणा ग़रक़, शौह दरया दए डुबाईआ। दीन

दुनी दी वेखे मर्ज़, हर हिरदा फोल फुलाईआ। मुहम्मद कहे मेरी इक्को गर्ज़, आसा दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेद अभेदा आप खुल्हाईआ। मुहम्मद कहे सुण काले रंग, कलयुग दयां जणाईआ। लाल रूप लाल मेरे होवे संग, सगला संग बणाईआ। मेरा महबूब सोहे अगम्म पलँघ, जिस दा पावा चूल ना कोए वखाईआ। कलमा नाम वज्जे मृदँग, दो जहानां दए सुणाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरा अन्ध, सदी चौधवीं डेरा ढाहीआ। साचा दस्से आपणा छन्द, आत्म परमात्म राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा इक वखाईआ। मुहम्मद कहे सदी चौधवीं मेरा नाता, अन्त अख़ीर दृढ़ाईआ। खेले खेल पुरख बिधाता, प्रभ ठाकर नूर अलाहीआ। जिस ने आपणा रंग रंगाउणा साचा, लाल धरनी दए कराईआ। झगड़ा मुकाए कंचन गढ़ काचा, पंकज पंज वेख वखाईआ। मेरी पूरी होवे आसा, आहिस्ता आहिस्ता वेख वखाईआ। ख़ाली होवे भाण्डा कासा, वस्त नज़र कोए ना आईआ। मेरा ओस दे उत्ते भरवासा, जो भरम दए चुकाईआ। जिस ने अन्त अख़ीर करना तमाशा, परवरदिगार वेस वटाईआ। उस ने सब दी बदल देणी भाशा, हुक्म इक्को इक उपजाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर होण नहीं देणा नराशा,
मनसा सब दी वेख वखाईआ। इक ज़हूर करे प्रकाशा, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर कर्म इक कमाईआ। पहली चेत कहे मेरा आया वक्त सुहञ्जणा, सोभावन्त सोभनीक। किरपा करे आदि निरँजणा, जिस दे विच हक़ तौफीक़। दीनां नाथ दर्द दु:ख भय भंजना, आसा मनसा पूरी करे उम्मीद। नाम नेत्र पा के अंजना, निरगुण सरगुण खोल्हे दीद। चरण धूढ़ कराए मजना, भेव खुल्हाए गुफ्त शनीद। सब दी सांझी कर के बन्दना, देवे अगम्म तरतीब। धर्म दुआर इक्को लँघणा, चार वरन होण नज़दीक। जिस सब दा पर्दा कज्जणा, रहिण देवे ना कोए शरीक। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त करे तसदीक़। पहली चेत कहे प्रभ मित्र प्यारा एका, सब नूं दयां समझाईआ। दीन दुनी दी सांझी टेका, टिक्के मस्तक नाम रमाईआ। सब दी बुध्ध करे बिबेका, दुरमति मैल धवाईआ। गुर अवतार पैग़ंबरां पूरा करे लेखा, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। इक्को प्रगट होवे शब्द दुलारा सुत अगम्मी बेटा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। एथे ओथे दो जहानां खेवट खेटा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। निरगुण सरगुण बण के आवे नेता, नर नरायण वेस वटाईआ। जन भगतो तुहाडा भुलिआ फेर नहीं चेता, जुग जन्म दे विछड़े लए मिलाईआ। तुसीं फिरदे भावें आपणे विच खेतां, किरसाणो तुहाडी किरस लई कढ्ढाईआ। देणी पए कोई ना भेंटा, भजन बन्दगी वंड ना कोए वंडाईआ। सड़ना पए ना अगनी सेका, सीस स्वाह ना कोए सुटाईआ। सिरफ़ पंज

वारी कर ल्या करो चेता, जैकारा धुर दा आप लगाईआ। ते दर्शन वेखो आपणे नेता, निज नेत्र करे रुशनाईआ। जोती जामा धार के भेखा, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म हो के करे अगम्मी हेता, हितकारी हो के आपणा मेल मिलाईआ।

❋ २ चेत शहिनशाही सम्मत ५ जेठूवाल हरिभगत दुआर ❋

सम्मत पंज कहे शहिनशाह दा लग्गे पंजा, पंज मिले वड्याईआ। जन भगतां भाग होए ना मंदा, तक़दीर चले ना कोए वड्याईआ। धुर फ़रमाना मिले अगम्मा चंगा, चार कुण्ट वड्याईआ। देवे आत्म अनन्दा, ब्रह्म मेल मिलाईआ। साहिब बण बख़्शंदा, बख़्शे इक सरनाईआ। चढ़ा अगम्मी डंडा, मंज़ल दए मुकाईआ। सचखण्ड दुआर वखा के कन्ढा, घर इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। शहिनशाही सम्मत कहे मैं वेखी सचखण्ड भगतां दी तस्वीर, पुरख अकाल दिती वखाईआ। जिथ्थे दाता गुणी गहीर, निरगुण बैठा सोभा पाईआ। ना कोई शरअ दिसे ज़ंजीर, कड़ी कड़ी बंधन ना कोए बंधाईआ। गुरमुख सोहणे वेखे वीर, नौजवान नज़री आईआ। जां मैं निगाह मारी मैनूं नज़र आया सच दवारे बैठी कौर जसबीर, जस आपणा नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत कहे मैं वेख के होया हैरान, खुशी मेरे अंदर आईआ। बिना तेल बाती तों जगे शमादान, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सच सिँघासण सोहे मेहरवान, महबूब डेरा लाईआ। मैं कीता चरण ध्यान, निउँ के सीस झुकाईआ। सुणया अगम्म फ़रमान, बिन रसना दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। शहिनशाही सम्मत कहे मैनूं सुनेहड़ा देवे जसबीर, प्रभ शब्द नाल समझाईआ। मेरा लेखा वेख अख़ीर, आख़र मंज़ल दिती मुकाईआ। जे मैं ना आउँदी मेरा आउणा सी एथे वीर, जिस दी मँग मेरी पहली नज़री आईआ। एह मेरी हिम्मत मेरे जीवण दी तक़दीर, तदबीर प्रभ दिती समझाईआ। मैनूं इशारा दे गया खुशी नाल कबीर, काअबिआं तों परे आया चाँईं चाँईंआ। मेरी बदल गई ज़मीर, अन्तर अन्तर वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जसबीर कहे एह मेरी पहली सेव, सतिगुर दिती लगाईआ। पंज जेठ लेख लिखाया वड देवी देव, बीस साल देण गवाहीआ। मैं राह तक्कदी रही किस वेले निहचल धाम मिले निहकेव, दरगाह साची सोभा पाईआ। मैं ध्याउँदी रही बिन रसना जिह्व, अन्तर अन्तर आस रखाईआ।

जे मैं ना आउँदी मेरा वीर आउणा सी बलदेव, बलधारी मेरे अन्तर दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक सुहाईआ। जसबीर कहे मेरी पहली सी मँग, नन्ही बच्ची दयां जणाईआ। मैनूं याद जिस वेले घुमाया गया सी उपर पलँघ, चारों कुण्ट धार बणाईआ। फड़ के इक टंग, सिध्धी तों पुठ्ठी दिता लमकाईआ। मेरे अंदर आई गंढु, संदेसा सुणया धुरदरगाहीआ। तेरे पिच्छों हरिभगत चढ़ना चन्द, जिस दा पिता सिँघ प्रीतम बलवन्त कौर होणी माईआ। तेरा लहिणा देणा ओस नाल जो सदा सदा बख्शंद, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। मैं हस्स के खुशी नाल कढे दन्द, मुस्कराहट विच डगमगाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, सच तेरी सरनाईआ। मैं चौहन्दी तेरे चरण कँवल अनन्द, अनन्द तेरे विच समाईआ। जिस दा लेखा लिख्या गया सी अज्ज तों पहिले साल पंज, फ़रमाना धुर दा हक़ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। जसबीर कहे मैं दस्सां अगम्म कहाणी, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जिस वेले कृष्ण अर्जन नूं दस्सदा सी अगम्मी बाणी, गीता ज्ञान वड्याईआ। कोल रख्या सी ठंडा पाणी, जल सुहञ्जणा इक सुहाईआ। इक रखी सी काने दी कानी, क़लम नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जसबीर कहे जिस वेले अर्जन दिता बोध, कृष्ण भेव खुल्हाईआ। अक्खरां अक्खरां नूं सोध, सुध्ध दिती समझाईआ। खेल अठारां रोज़, रोज बरोज़ करी पढ़ाईआ। मैं वेखदी रही मौज, वेला वक्त सोभा पाईआ। मैं वैरागी मैनूं बड़ी हुंदी सी खोज, खोजत खोजत ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जसबीर कहे जिस वेले पहिला उच्चरया सलोक, अर्जन मुख उँगलां आपणीआं आप पाईआ। कृष्ण ने बाहों फड़ के ल्या रोक, क्यों सोचां विच डुबाईआ। अर्जन किहा मेरा पहिलों खोल्ह लोच, नेत्र इक उठाईआ। मैं दर्शन करां रोज़, एहो मँग मँगाईआ। काहन किहा अगम्मी चोज, चोजी हो के दयां दृढ़ाईआ। भगत उधारना मेरी मौज, मेहरवान इक अख्वाईआ। निगाह मार चौदां लोक, जो मेरे विच समाईआ। सब दी जणाई मौत, जींदा नज़र कोए ना आईआ। इक दूजे नाल वखाई अदौत, झगड़ा दीन दुनी लोकाईआ। जसबीर कहे मैं ओस वेले दा वड्डा हुंदा सां परोहत, हिसाब आपणे हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। जसबीर कहे मैं काहन नूं दिता इक दृष्टांत, विशा दिता समझाईआ। तूं बैठ के इक इकांत, क्यों जगत करें लड़ाईआ। कौरव पांडव कर दे शांत, वातावरन दे बदलाईआ। की झगड़ा पाया मात, त्रैलोकी नाथ नाउँ धराईआ। उस ने धर के हाथ ते हाथ, सहज दिता दृढ़ाईआ। एह खेल पुरख अबिनाश, ना

कोई मेटे मेट मिटाईआ। फेर जसबीर कहे मैं आख्या तूं त्रैलोकी नाथ, की तेरी वड्याईआ। आह वेख मेरी किताब, जो लेखा अगला दए समझाईआ। जिस दे विच अगम्म हिसाब, अंकड़े दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कृष्ण कहे एह खेल निरँकारी, हरि करता आप कराईआ। जसबीर कहे मैं आख्या एह झगड़ा द्रोपत नारी, जो दोहां धिरां लड़ाईआ। तूं विच मोहन सिक्दारी, आपणा हुक्म वरताईआ। कृष्ण ने उठ के चारों कुण्ट निगाह मारी, दह दिशा वेख वखाईआ। जिधर तक्कया ओधर मन हँकारी, निम्रता रूप ना कोए दरसाईआ। साची पैज रिहा ना कोए संवारी, साधना सच ना कोए कराईआ। काहन किहा मेरी आई अन्तिम वारी, वारता प्रभ दिती समझाईआ। नाल उठाउणा शंकर सँघारी, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। चारों कुण्ट होणी खुआरी, चले ना कोए चतुराईआ। किसे दा होणा नहीं कोई उधारी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कृष्ण किहा एह खेल अनोखा वखरा, हरि करता रिहा कराईआ। जिस ने रूप जणाया आपणा इट्टां पत्थरां, पाहन रिहा पुजाईआ। जिस ने लेख लिखाया काग़ज़ क़लम स्याही पत्रा, हरफ़ां वंड वंडाईआ। जो दो जहानां करे सफ़रा, नित नवित्त वेस वटाईआ। सो सब नूं देण वाला कफ़ना, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। जसबीर कहे मैं किहा मैनूं वी राती आया सी सुफ़ना, साहिब दिता दृढ़ाईआ। द्वापर अन्तिम मुक्कणा, होवे जगत लड़ाईआ। मैं कृष्ण तैथों इक्को बचन पुच्छणा, सच देणा सुणाईआ। दस्स यादवां किथ्थे लुकणा, कवण घर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दे खुलाईआ। कृष्ण अंदर बाहर कीती विचार, विच्चर के दिता सुणाईआ। मैं वेख्या खेल अपार, अगम्म दयां दृढ़ाईआ। तैनूं छड्डणा पए संसार, लोकमात रहिण ना पाईआ। फेर दीन दुनी होवे खुआर, खुआरी चारों कुण्ट वेख वखाईआ। पंडत जी ज़रा होर होवो हुश्यार, तुहानूं दयां दृढ़ाईआ। द्वापर पिच्छों कलयुग आउणा विच संसार, लोकमात चरण टिकाईआ। रूप होणा अन्ध अंध्यार, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। धीआं भैणां जगत जीव करे व्यपार, क़ीमत हट्टो हट्ट विकाईआ। साचा रहे ना कोए प्यार, भैण भाई करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। कृष्ण किहा पंडत जी हुण तुहानूं छड्डणा पैणा सरीर, नाता जाणा तुड़ाईआ। तुहाडे मरन पिच्छों द्वापर दा होणा अख़ीर, कौरव पांडव रहे कुरलाईआ। तुसां होणा नहीं दिलगीर, धीरज धीर दिती धराईआ। उह खेल बेनज़ीर, जो नज़र तों ओहले आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। पंडत किहा मैं मातलोक जावां छोड़, तत दी तत विच वड्याईआ। सच

११५९
२१

दवारे जावां दौड़, दरगाह साची सोभा पाईआ। ओथे जावां बौहड़, जिथ्थे मेल मिले शहिनशाहीआ। झगड़ा रहे ना ठग चोर, जगत वासना डेरा ढाहीआ। सदा वसां कोल, सच दवारे सोभा पाईआ। फेर कद आवां उपर धौल, मैनूं दे जणाईआ। झट कृष्ण किहा बोल, सहज नाल सुणाईआ। जिस वेले साडा अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दा पूरा होया कौल, इक़रारनामा आपणा वक्त जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा दए मुकाईआ। कृष्ण किहा पंडत जी तुसां मर्द तों बणना नारी, नर नरायण दए वड्याईआ। तुहाडे अन्तर जगे जोत निरँकारी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। कलयुग अन्त तुहाडे बदले होणी ख़ुआरी, वेला वक्त सोभा पाईआ। तुहाडी सेवा सेवा तों बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। द्वापर वांग कलयुग बदलणा एह तेरी हिस्सेदारी, हिस्सा सोहणा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। कृष्ण कहे पंडत गया सुधार, सच दर सोभा पाईआ। कलयुग अन्त प्रगट हो संसार, भगत दुआर वज्जी वधाईआ। इक्को मन्न सच्ची सरकार, सिर सर सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच फ़रमाना इक समझाईआ। सच फ़रमान रखणा याद, याद दयां दृढ़ाईआ। जिस कारण जसबीर होई आबाद, लोकमात जन्म दवाईआ। एह कलयुग दा लहिणा देणा ख़राज, ओसे दी झोली पाईआ। उह छड्ड के कूड़ समाज, नाता गई तुड़ाईआ। जोती धार हो विस्माद, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिस दा जगदा सदा चराग़, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दे पिच्छों कलयुग अन्त नौ खण्ड पृथ्मी होणा फ़साद, चार वरन दुहाईआ। कूड़ी क्रिया होणी बरबाद, माया ममता मोह कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। जसबीर कहे मैं आ गई, आई धुरदरगाह। जोती जोत समां गई, प्रभ पाया अगम्म अथाह। सुफ़ल जन्म करा गई, चुरासी मुक्कया फाह। साचा वक्त सुहा गई, आपणा झट लँघा। मात पित वडया गई, नाता जोड़ के भैण भ्रा। हरि संगत समझा गई, रस्ता इक दृढ़ा। उच्ची कूक सुणा गई, शब्द जैकारा ला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। जसबीर कहे हरि संगत प्रभ दे अग्गे करो दुआ, मैं इक्को बचन सुणाईआ। मुहब्बत तुट्टे ना कदे भैण भ्रा, नाता पक्का लैणा बणाईआ। मेरे वलों आपणा राज़ सब ने लैणा अज़मा, अग्गे लोड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आपे लए बचा, होए सदा सहाईआ। वेखो मैं सचखण्ड पहुंची आ, मेरे पिच्छों आह मारन दी लोड़ रहे ना राईआ। जिथ्थे भगत सुहेले सारे बैठे इक्को रंग रंगा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पाल सिँघ मेरी खुशी नाल फड़ लई बांह, चेत सिँघ हस्स के दिता सुणाईआ। नी निक्कीए तैनूं चंगा क्यों लग्गा एह थाँ,

भज्जी वाहो दाहीआ। ओस मनजीत वल्ले इशारा दिता करा, जगदीश हथ्थां नाल दिता जणाईआ। मैथों निक्के मैथों पहिलों पुज्जे जेहड़े छड्ड के आए मात पित जगत नाता भैण भ्रा, मोह मुहब्बत ना कोए कराईआ। मैनूं खुशी होई मेरे अंदर चढ़या चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। धन्न भाग जे साहिब सतिगुर जींवदयां बण मलाह, घर आपणे रिहा टिकाईआ। जिथों सके कोई ना बाहर कढा, जन्म मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं ते सब नूं कहिणा छेती करो बुढड़यो पंचम सम्मत विच बहुते मेरे कोल जाओ आ, इक्कीआं दा हिसाब मैनूं नज़री आईआ। जिस दा लगदा जे प्रभू दे हुन्दयां ला लओ दाअ, वेला गया फेर हथ्थ ना आईआ। पिच्छों सारे करदे रहन्दे दुआ, वास्ते विच आपणी देण दुहाईआ। हुण चलो इक रज़ा, हुक्म मन्नो चाँईं चाँईंआ। जे कर आ के वेखो थाँ, सुहञ्जणा सोभा पाईआ। तुहानूं भुल्ल जाए प्यार जेहड़ा देंदी सी माँ, माता दे प्यार नालों पिता दी गोद चंगी सोभा पाईआ । ना एथे धुप्प ना एथे छाँ, सूर्या अगनी ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। जसबीर कहे मैं आवांगी फेर दिन सुहञ्जणा होवे वसाखी, वाहवा वजदी सच वधाईआ। मैं सच दस्सांगी किस बिध राह विच सतिगुर करे राखी, रखवाक हो के पन्ध मुकाईआ। भेव खोल्हांगी विष्न ब्रह्मा शिव किस बिध बणदे पाठी, बैठे ध्यान लगाईआ। पर्दा लाहवांगी केहड़ी
११६१ जोत जो सदा रहे प्रकाशी, प्रकाश इक्को नज़री आईआ। सच कहांगी जन भगतो मरन दी करयो ना कोए उदासी, बिना ११६१
२१ मरन तों जीवण कम्म किसे ना आईआ। जिन्हां नूं मिल्या पुरख अबिनाशी, हरि करता धुरदरगाहीआ। उह चढ़ आउ छेती २१
मंज़ल घाटी, मातलोक विच रहिण दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं चौहन्दी सचखण्ड विच मजलस होवे भगतां दी साडी, गुर अवतार पैग़म्बर साडे नाल मिल के मता लैण पकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां भगतां दी आपणे हथ्थीं करे शादी, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आपणा मेल मिलाईआ।

❊ ३ चेत शहिनशाही सम्मत ५ पिंड जेठूवाल अमर सिँघ दे गृह ❊

चेत कहे मैं वेख्या नगर सम्बल, सच समझ मिली वड्याईआ। जिथ्थे नूर अलाही अव्वल, अल्ला आलमीन सुणाईआ। ब्रह्मा वेख्या बिन कँवल, विष्न शिव सीस निवाईआ। प्रकाश अगम्मा उपर धवल, धरनी सोभा पाईआ। निरगुण धार आपे मवल, मौला रूप वटाईआ। जिस दा भेव जाणे कवण, कहिण किछ ना पाईआ। दो जहानां वेखे आपणा चमन, लख

चुरासी गुल फोल फुलाईआ। नव सत्त ना दिस्सया अमन, सांतक सति ना कोए कराईआ। झगड़ा प्या चुरासी जन्म मरन, आवण जावण वंड वंडाईआ। अमृत मेघ बरसे कोई ना सवण, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। झगड़ा मुके ना अवण गवण, त्रैभवन डेरा कोए ना ढाहीआ। आत्म परमात्म मूल ना मन्नण, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सति धर्म दिसे कोई ना थम्मूण, नौका नईआ डोले थाउँ थाईंआ। जीवां जंतां भाग दिसे मंदन, बुध्ध बिबेक ना कोए कराईआ। नेत्रहीण होया जग अन्धन, लोचन नैण ना कोए रुशनाईआ। सच प्रकाश मूल ना जगण, जागरत जोत ना कोए वड्याईआ। त्रैगुण मेटे कोए ना अगन, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। निरगुण निरगुण पाए कोई ना सगन, खुशीआं रंग ना कोए रंगाईआ। करे खेल हरि करता मुकन्द मनोहर मदन, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। चेत कहे मैं वेख्या चौंह चकी, चाकर हो के सेव कमाईआ। सृष्टी दृष्टी होई शक्की, शिकवा सके ना कोए मिटाईआ। खोले भेव कोए ना हक़ी, हक़ीक़त हक़ ना कोए दृढ़ाईआ। मंज़ल चढ़दयां सृष्टी थक्की, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। अन्तर आत्म जगे कोए ना बत्ती, बत्ती दन्द पढ़ पढ़ देण दुहाईआ। प्रकाश मिल्या मूल ना रती, रतन अमोलक हीरा ना कोए बणाईआ। चारों कुण्ट वा अन्धेरी तत्ती, अगनी अग्ग जलाईआ। नानक

१९६२

२१

भेव खुलाया जुग छत्ती, अगला लेख ना कोए लिखाईआ। मैं वेख्या परम पुरख सब दा कमलापती, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। जिस दी कथा कहाणी सच्ची, जुग चौकड़ी राग अलाईआ। उह पढ़ावण आया अगम्मी पट्टी, पटने वाला नाल मिलाईआ । जन भगतां हिरदे जांदा फट्टी, घाउ इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। चेत कहे मैं वेख के होया सीत, सति दयां दृढ़ाईआ। प्रभ पाया धुर दा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। गाया अगम्मी गीत, गायत्री मन्त्र लोड़ रही ना राईआ। होया अन्तर अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। मनुआ होया सीत, अगनी तत बुझाईआ। दृष्टी लैणी जीत, सृष्टी वज्जे वधाईआ। सांझी इक प्रीत, परम पुरख सरनाईआ। हिरदे वस्से चीत, ठगौरी रहे ना राईआ। साफ़ होवे नीत, बुध्ध बिबेक कराईआ। सद वस्से काया बीच, घर घर डेरा लाईआ। निज नेत्र इक्को रंग वखा के हस्त कीट, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। जन भगतां कदे ना देवे पीठ, सन्मुख हो के नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वसणहारा हर घट भीत, भीतर लेखा वेख वखाईआ।

१९६२

२१

✲ ३ चेत्र शहिनशाही सम्मत ५ सन्तोख सिँघ दे गृह पिंड जेठूवाल ✲

मैं चार वरन दा तक्कया इक दुआरा, दर मिले वड्याईआ। जिथ्थे जोत जगे अगम्म अपारा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। बन्दन करन गुरु अवतारा, पैग़म्बर सजदा सीस निवाईआ। आत्म परमात्म सुण जैकारा, जै जैकार ख़लक खुदाईआ। जो निरगुण तों सरगुण सरगुण तों निरगुण होया दुबारा, निरवैर आपणी कल धराईआ। सो खेल करे सच्ची सरकारा, साहिब स्वामी दया कमाईआ। चेत कहे मैं निउँ निउँ करां निमस्कारा, डंडावत विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। चेत कहे मैं निउँ के करां बन्दना, बिन बन्दगी सीस निवाईआ। जन भगतां कटणा फंदना, तन्द डोर बंधन कोए ना पाईआ। सच नूर चमका के चन्दना, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। आत्म सुख दे अनन्दना, दु:ख दर्दां डेरा ढाहीआ। घर स्वामी मिले सज्जणा, गृह साचे सोभा पाईआ। नाम अगम्मे गुरमुखां रंगणा, एथे ओथे आप रंगाईआ। चार वरनां दस्स के धुर दी बन्दना, बन्दगी इक्को इक वड्याईआ। दूजा दर पए ना मँगणा, गृह गृह अलख ना कोए जगाईआ। मिले मेल सूरे सरबंगणा, जो मालक धुरदरगाहीआ। आत्म देवे हक़ अनन्दना, परमात्म मेल मिलाईआ। ख़ाली हथ्थ पए ना वंञणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा हुक्म मनाईआ। चेत कहे मेरे अन्तर खुशी अगम्मी आई, आयत शरायत रहिण कोए ना पाईआ। अलख अगोचर कीती पढ़ाई, अगम्म अथाह पिछला लेखा दिता मुकाईआ। बेपरवाह निरगुण नूर जोत कीती रुशनाई, ज़हूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। ख़बर अगम्मी इक सुणाई, शब्द संदेसे आप अल्हाईआ। सब नूं होणी अन्त जुदाई, धुर दा मेल ना कोए मिलाईआ। जन भगतां प्रभ वेखे चाँईं चाँईं, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। पकड़ उठाए फड़ के बाहीं, बलधारी होए सहाईआ। सिर आपणा हथ्थ रखे गुसाईं, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा इक्को माही, जिस दी भगतां नालों ना होवे जुदाई, जुग जुग रीती लोकमात चली आईआ।

✲ ४ चेत शहिनशाही सम्मत ५ प्रीतम सिँघ दे गृह पिंड जेठूवाल ✲

जन भगत कहिण प्रभ दुक्खां ढाह दे डेरा, तन वजूद महबूब कर सफ़ाईआ। जेहड़े गाउँदे गीत तेरा मेरा, आत्म परमात्म राग अल्हाईआ। उन्हां इक्को रंग रंगा दे सञ्ज सवेरा, अन्ध अन्धेरा कूड़ रहे ना राईआ। नव नौ चार पिच्छों पाया

११६३
२१

फेरा, जुग चौकड़ी काल बिताईआ। साचे सन्तां बन्नू बेड़ा, निरँकार निरवैर आपणे कंध उठाईआ। गुरमुखां कूड़ी कल्पना रहे ना झेड़ा, माया ममता मोह मिटाईआ। गुरसिखां नज़री आ नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दर सुहञ्जणा कर गुरु चेरा, चेला गुर इक वड्याईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच कर आपणी मेहरा, मेहरवान तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। जन भगत कहिण प्रभ तन माटी ख़ाकी मेट दे दरद, दुखियां दर्द वंडाईआ। साहिब तेरा होणा केहड़ा हरज, हर हिरदे कर सफ़ाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगत तेरी लोड़दे मदद, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। कूड़ कल्पना कढ्ढ तशदद्, हमदर्द आपणे लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। जन भगत कहिण क्यों दुःख सतावे रोग, रोगी देण दुहाईआ। साचे नाम दा बख़्श जोग, जुगती धुर दी इक दृढ़ाईआ। तेरे नाम दी चुगीए चोग, चुगली निन्दया बाहर कढ्ढाईआ। तेरा दर्शन होवे रोज़, रोज़े निमाज़ दा लेखा रहे ना राईआ। सदा बख़्श दरस अमोघ, अमुल्ल दया कमाईआ। सच दवारे लईए मौज, मजलस तेरे नाल बणाईआ। तुध बिन अवर दिसे कोई ना जोग, जुगीशर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१९६४ किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर साचे सीस निवाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो दुःख दर्द जावे नठ्ठा, बणन लग्गा पाँधी राहीआ। कूड़ी क्रिया तपण लग्गा भठ्ठा, चारों कुण्ट अगनी अग्ग जलाईआ। धर्म दी धार मानव रिहा कोई ना सच्चा, कूड़ क्रिया होई हल्काईआ। फिरी दरोही मदीना मक्का, काअबे वाले मारन धाहीआ। खेल वेख्या शिवदवाले मन्दिर मठ्ठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पुरख अकाल कहे जन भगतो दुख रोग रहे ना संताप, तन वजूद ना कोए सताईआ। किरपा करे साहिब प्रभ आप, आपणा रंग रंगाईआ। रूह बुत कर के पाक, पतित पुनीत दए कराईआ। साची मंज़ल चाढ़ के घाट, गृह मन्दिर दए वखाईआ। जिथ्थे दीपक अगम्म प्रकाश, तेल बाती दी लोड़ रहे ना राईआ। गुर अवतार पैग़म्बर बैठे दास, सेवक हो के सीस निवाईआ। सो पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां जीवण कारज करे रास, जीवण रस्ता बावस्ता हो के आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक सुहाईआ। पुरख अकाल कहे मैं करन वाला साफ़, पतित पुनीत दयां कराईआ। जन भगत कर के मुआफ़, दुरमति मैल धवाईआ। जो मनुआ होया गुस्ताख़, सांतक सति दयां वरताईआ। जन भगतां पैज लवां राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। लहिणा देणा पूरा करां लोकमात, मातर भूमी

वज्जे वधाईआ। कूड़ कल्पणा कर के नास, नास्तिकां लेखा देवां चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करां आस, तृष्ना सब दी मेट मिटाईआ। सतिजुग साचे मण्डल पा के रास, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति धर्म दा बख़्श इक विश्वास, विशा विशेष विश्व विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर मानव मानव मानव मानुख आप दृढ़ाईआ।

✻ ५ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सुरजन सिँघ दे गृह लुधियाणा ✻

सतिगुर शब्द कहे मैं दीन दुनी वेखां धरनी धरत धवल बसुधा, दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म भेव खुल्हावां गुज्झा, तन वजूद माटी ख़ाक चार कुण्ट दह दिशा वेख वखाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर तेरी सृष्टी दृष्टी दा जाणां मुद्दा, मुद्दत दे मालक ख़ालक प्रितपालक निरगुण तेरी सेव कमाईआ। भेव अभेदा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अन्तरजामी तेरा खुल्हावां गुज्झा, अनबोलत हो के धुर दा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे भगवान, भगवन तेरी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख जहान, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सति धर्म दा मिले ना कोए निशान, पारब्रह्म ब्रह्म पर्दा ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं सारे होए हैरान, ईसा मूसा मुहम्मद ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दीन दयाल आपणी दया कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे महबूब, मेहरवान तेरी वड्याईआ। महल अटल तेरा अरूज, तख्त निवासी सोभा पाईआ। मंज़ल इक्को हक़ मक़सूद, दरगाह साची नज़री आईआ। दो जहानां ऊचो ऊच, अगम्म अथाह बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साची दे सूच, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। भाग लगा काया माटी पंज भूत, तन वजूद होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे साहिब स्वामी मीते, हरि तेरी इक सरनाईआ। जुग चौकड़ी कोटन बीते, लोकमात पन्ध मुकाईआ। चार वरन इक्ठे किसे ना कीते, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश एका रंग ना कोए समाईआ। मुहम्मद दे के गया हदीसे, नानक निरगुण सरगुण कर पढ़ाईआ। गोबिन्द दस्स इक प्रीते, पुरख अकाला सीस झुकाईआ। झगड़ा रहे ना हस्त कीटे, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। किरपा कर जगत जगदीशे, जगदीशर तेरी इक सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रीते, रीतीवान

११६५ २१

वेख वखाईआ। माटी पुतले कर ठांडे सीते, अगनी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे सुण शब्द दुलारे सुत मीत, अगम्म दयां दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं जाण दे बीत, अगला पर्दा दयां उठाईआ। दीन दुनी दी बदल के नीत, मार्ग इक्को इक समझाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबे होवे रुशनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब ने गाउणा गीत, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। झगड़ा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना कोए वड्याईआ। साचा कलमा इक्को होए हदीस, हज़रतां करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी धर्म दी धार इक वखाईआ। पुरख अकाल कहे शब्द दुलारे, सच संदेसा दयां जणाईआ। करे खेल आप निरँकारे, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। जिस दे जुग चौकड़ी खेल अनोखे निआरे, भेव अभेद ना कोए समझाईआ। सो कल कल्की लै अवतारे, कल कलेश दए मिटाईआ। इक्को पुरख अकाल दे लग्गणे सर्ब जैकारे, जै जैकार करे लोकाईआ। चार वरन अठारां बरन सोहण इक दवारे, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। पाथर पाहन ना कोए निमस्कारे, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,
११६६ आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ११६६
२१ ब्रह्म ब्रह्माद निरगुण नूर जोत उज्यारे, अन्ध अन्धेरा रहिण कोए ना पाईआ। २१

❋ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ लाल सिँघ दे गृह लुधियाणा ❋

सम्मत शहिनशाही पंज कहे कृष्ण पंज वार लाए जिमीं उत्ते पंजे, पंज पंज उँगलां विथ रखाईआ। भेव खुल्हाया अगम्म सञ्झे, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। साचा रहे ना परमानंदे, अनन्द रस ना कोए चखाईआ। जगत जीव रहिणे नहीं चंगे, गुण वड्याई नज़र कोए ना आईआ। अक्खीआं वाले होणे अन्धे, प्रभ दरस कोए ना पाईआ। खेल होणा कलयुग अन्तिम धार कन्ढे, दीन दुनी पन्ध मुकाईआ। जगत जिज्ञासू ना होवण ठंडे, सांतक सति ना कोए कराईआ। चार कुण्ट दह दिशा दिसण दंगे, नव सत्त पई दुहाईआ। हिसाब रिहा किसे ना पंडे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे कृष्ण पंज वार खेल कीती सादी, सहज सुभा धार बणाईआ। पंज वार पुच्छया बेनन्ती कर के राधी, काहन मैनूं दे समझाईआ। ओस हस्स के किहा अन्तर ध्यान ला समाधी, नेत्र लोचण ना कोए खुल्हाईआ। जां तक्कया बच्चयां नूं भेंट चढ़ाए दादी, गुजरी गोद विच्चों बाहर कढ्ढाईआ।

गोबिन्द सूरबीर दिस्सया बाग़ी, जो शरअ सब दी रिहा बदलाईआ। नेत्र खुल्हिआ बिन निंदरा तों जागी, आपणी लई अंगड़ाईआ। चारों कुण्ट झाकी, नज़र किछ ना पाईआ। कृष्ण किहा की वेख्या मेरे साथी, मैनूं दे दृढ़ाईआ। राधा किहा अगम्म अगम्म अगम्म भेव पुरख अबिनाशी, की आपणी कल वरताईआ। चारों कुण्ट दिसे अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। धर्म दा रिहा ना कोई जमाती, काहन कृष्ण ना कोए वड्याईआ। मिले मेल ना कमलापाती, घर घर होए जुदाईआ। निरगुण नूर ना दीआ बाती, काया मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। मैं खेल दस्सां साची, सच दयां सुणाईआ। कलयुग अन्त सब दे अन्तर आउणी उदासी, खुशी विच ना कोए वखाईआ। फेर प्रगट होणा पुरख अबिनाशी, हरि करता धुरदरगाहीआ। लहिणा देणा चुकाउणा धरती ख़ाकी, जिथ्थे पंजा दिता छुहाईआ। जन भगतां नाम प्याला देवे बण के साकी, साख्यात आपणी दया कमाईआ। एह खेल वेख्या सच तमाशी, साहिब साहिब साहिब दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी पूरी करे आखी, आख़र आपणा भेव चुकाईआ।

✻ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ निरँजण सिँघ दे गृह लुधियाणा ✻

पंजा कहे मेरा खेल पंज आबी, पंज आब मिले वड्याईआ। कृष्ण ला के गया हिसाबी, हिस्सा आपणा नाल रखाईआ। पैग़म्बरां खेल करना महिराबी, महबूब सिफ्त सालाहीआ। सजदा दस्सणा अदाबी, नमस्ते देणी बदलाईआ। कलयुग अन्त होणी ख़राबी, खोटा ख़रा नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा पैणा समाजी, सके ना कोए मिटाईआ। मज़हबां वंडणी हादी, हदूद आपणी आपणी प्रगटाईआ। शरअ बणनी क़ाज़ी, क़ज़ा सब दे सिर ते छाईआ। लेखा चुकणा माज़ी, अग्गे पर्दा ना कोए उठाईआ। मुहम्मद नाल नानक धार गोबिन्द पैणी नराज़ी, संगी संग ना कोए वखाईआ। अन्त अख़ीर सदी चौधवीं सब ने हारनी बाज़ी, बाज़ांवाला आपणी बाज़ी लए बदलाईआ। दीन दुनी इक पंजे नाल होणा सांझी, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी वेखे थक्की मांदी, अन्त आपणा भेव मुकाईआ।

✻ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सुखवन्त कौर दे गृह लुधियाणा ✻

पंजा कहे मैं पंचम धार लग्गा, लग मातर समझ किसे ना आईआ। कलयुग अन्तिम वधे कोई ना अग्गा, पंज प्यारे

पंचम मूल मिलाईआ। कलयुग जीव हँस बुद्धी होए कग्गा, मन कल्पणा चार कुंट कुरलाईआ। दीन मज़हब ज़ात पात पए हद्दा, शरअ शरीअत डेरा कोए ना ढाहीआ। आत्मक धुन सुणे कोई ना नदा, अनरागी राग ना कोए अलाईआ। अमृत रस मिले किसे ना मधा, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। दीपक जोत किसे गृह ना जगा, तन वजूद ख़ाली नज़री आईआ। प्रभ दा दर्शन पाए कोई ना उपर शाह रगा, घर स्वामी मिलण कोए ना जाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी समझ सके कोई ना वजह, वजूहात ना कोए दृढ़ाईआ। ओह खेल करे सूरा सर्बग्गा, हरि करता नूर अलाहीआ। जिस दे हुक्म अंदर अवतार पैग़म्बर गुरु बज्झा, सिर सके ना कोए उठाईआ। सो नाम संदेसा इक्को देवे सद्दा, फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। जन भगत सुहेला सच दवारे आवे भज्जा, बण के पाँधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। पंजा कहे मैनूं लाया काहन कृष्ण, धरनी धरत धवल ख़ाक टिकाईआ। इक्ठे होए शंकर ब्रह्मा विष्न, एका रंग तकाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा लग्गा दिसण, रैण अन्धेरी छाईआ। दीन दुनी वेखण लग्गे मिथन, सद रहिण कोए ना पाईआ। साची सिख्या चेला गुरु कोए ना सिखण, सति धर्म ना कोए वड्याईआ। आत्म
११६८ परमात्म करे कोई ना हित्तन, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। मन कल्पणा सब नूं आई जित्तण, कूड़ी क्रिया आपणा ११६८
२१ डंक वजाईआ। सम्मत पंज कहे पुरख अकाला दीन दयाला सब दा लेखा आए लिखण, लेख अगला दए बणाईआ। जोती २१
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक सच स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ।

❊ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ निरवैर सिँघ दे गृह लुधियाणा ❊

पंजा कहे मैं लग्गा लोकमात, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। द्वापर दा कीता घात, धायल कीती लोकाईआ। कृष्ण दा दे के साथ, सगला संग बणाईआ। राधा तक्कया साख्यात, सति सरूप नज़री आईआ। कलयुग अन्त अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। धुर दा शब्द कोई ना सके वाच, वाचक होई कलयुग लोकाईआ। नाम निधाना गया गवाच, लम्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। मिले मेल ना कमलापात, पतिपरमेश्वर जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोए ना घाट, अधवाटे बैठी कूड़ लोकाईआ। योद्धा सूरबीर बणे कोई ना राठ, पंच विकारा डेरा ढाहीआ। सति रिहा ना तीर्थ अठ्ठ साठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोवे मारे धाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदवाले माठ, मसीत मसला हल्ल ना कोए कराईआ। मन कल्पणा सारे रहे नठ्ठ, सांतक सति ना कोए

कराईआ। कलयुग खेल बाज़ीगर नटुआ नट, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। दुरमति मैल कोई ना सके कट, अपराधां भरी लोकाईआ। खेले खेल पुरख समरथ, जीव जहान ना कोए जणाईआ। जिस दी महिमा सदा अकथ, लेखा लिखे ना क़लम शाहीआ। सो सहिब पुरख समरथ, कलयुग आपणी कल वरताईआ। चार वरनां अठारां बरनां कर इक्ठ, इक्को रंग दए रंगाईआ। वसणहारा घट घट, हर हिरदा फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं हो प्रगट, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। सर्ब जीआं दी सांझी कर के मत, माया ममता डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, आदि जुगादी इक्को सोभा पाईआ।

❊ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ गुरदेव सिँघ दे गृह लुधियाणा ❊

पंजा कहे जिस वेले मात लगदा, धरनी धरत धवल दयां हिलाईआ। धर्म रहे ना साबत जग दा, दीन दुनी सर्ब कुरलाईआ। खेल खिलावां अगनी अग्ग दा, ततव तत जलाईआ। हुक्म वरतावां सूरे सर्बग्ग दा, जो चार जुग ना कोए उलटाईआ। झगड़ा मेटां दीन मज़हब दी हद्द दा, राह इक्को इक वखाईआ। परम पुरख मिलावां जेहड़ा निरगुण धार नहीं लभ्भदा, जोती जाता डगमगाईआ। खेल समझे ना कोई प्रभू दा सबब दा, सभनां पर्दा दयां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच्चा हुक्म वरताईआ। पंजा कहे जिस वेले मैं जांदा छूह, धरनी उपर आपणा निशान बणाईआ। ओस वेले दिसे ना कोए अवतार पैग़म्बर गुरु, गुरदेव नज़र कोए ना आईआ। अगला मार्ग हुंदा शुरु, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। कूड़ कुड़िआरा मात अन्त रुड़्ह, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पंजा कहे जिस वेले मेरा लगदा निशान, निशाने पिछले दयां बदलाईआ। सति धर्म दा दस्स विधान, वाधा इक्को नाल रखाईआ। इक्को दा दे के ज्ञान, दीन मज़हबां झगड़ा दयां मुकाईआ। घर स्वामी मिलावां आण, जगत विछोड़ा दूर कराईआ। एसे पंजे दी शहादत देवे काहन, बंसरी विच आपणी धुन सुणाईआ। जो दे के गया बयान, ढोले सिफ्तां वाले सालाहीआ। सो लेखा चुकावे आण, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विश्व दा लहिणा आपणे हथ्थ रखाईआ।

१९७० १९७०

२१ २१

❋ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ मदन लाल दे गृह लुधियाणा ❋

पंजा कहे मेरी निशानी, जुग चौकड़ी चली आईआ। अन्तिम मेटां सब दी बेईमानी, मार्ग सच सच समझाईआ। शरअ रहिण ना देवां शैतानी, शहिनशाह इक्को दयां वखाईआ। मंज़ल इक्को दस्स रुहानी, पैंडा पन्ध दयां चुकाईआ। झगड़ा मुका तत जिस्मानी, जिस्म ज़मीर दयां बदलाईआ। आत्म परमात्म दस्स अकथ कहाणी, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। सतिगुर प्रीत अमृत रस दे के अगम्मा पाणी, अगनी तत बुझाईआ। झगड़ा मुका के चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। धर्म दी धार दस्स पद निरबाणी, दरगाह साची दयां मिलाईआ। जिथ्थे इक्को जोत नूर नुरानी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। शाह पातशाह शहिनशाह सुल्तानी, सचखण्ड निवासी बैठा सोभा पाईआ। जिस वेले जुग जुग करे आपणी मेहरवानी, मेहरवान महबूब मेहर नज़र उठाईआ। लेखा जाणे दो जहानी, निरगुण सरगुण खोज खुजाईआ। आसा मनसा पूरी करे आदि जुगादी बण के दानी, देवणहार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दो जहानां बण के बानी, बाण अणयाला तीर आपणा नाम चलाईआ।

❋ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ गुरमीत सिँघ दे गृह लुधियाणा ❋

पंजा कहे मैं आदि जुगादी पुराणा, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां वेख वखाईआ। मेरा मालक श्री भगवाना, शाह सुल्ताना सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल महाना, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए गाणा, अनबोलत आपणा राग अल्हाईआ। कलयुग अन्त पहर के जोती बाणा, निरगुण मेला सहज सुभाईआ । सच संदेसा देवे धुर फ़रमाना, दो जहानां आप सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा निशाना, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। चार वरनां इक्को रंग रंगाणा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म ब्रह्म इक समझाणा, पारब्रह्म प्रभ भेव दए खुल्हाईआ। दरगाह साची सचखण्ड धुर मकाना, मुकामे हक़ इक्को नज़री आईआ। जिस दा गुर अवतार पैग़म्बर दस्स के गए टिकाणा, सो सच सिँघासण सोभा पाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रधाना, प्रधानगी धुर दी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लहिणा देणा पूरा करे जीव जगत जहाना, जगजीवण दाता आपणा हुक्म वरताईआ।

❊ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ कर्म सिँघ दे गृह पिंड पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ❊

पंजा कहे मैं लगदा जिस दी पुश्त, पुश्त पनाह प्रभ हथ्थ टिकाईआ। अन्तर आत्म करां दरुस्त, दुरमति मैल धवाईआ। नाम भण्डारा वंडां मुफ्त, क़ीमत ना कोए लगाईआ। सुरती सवाधान होवे चुस्त, आलस निंदरा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। पंजा कहे मैं लगदा जिस दी पुश्त पनाह, पुस्तक पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। जन्म जन्म दे बख़्शे जाण गुनाह, ग़ुरबत अंदरों दयां कढ्ढाईआ। हिरदे अंदर वसा के नाँ, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाल मिलावां जो सब दा पिता माँ, पूत सपूते गोद उठाईआ। एथे ओथे दो जहानां देवां ठंडी छाँ, अगनी तत ना लागे राईआ। फड़ फड़ हँस बणावां काँ, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। निथाव्याँ दरगाह साची देवां थाँ, सचखण्ड साचा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता धुरदरगाहीआ। पंजा कहे मैं जिस नूं देवां थापी, थपकणा इक लगाईआ। जन्म कर्म दा रहे कोई ना पापी, दुरमति मैल धवाईआ। नाम प्याला देवां बण के साकी, जाम हक़ीक़ी मुख लगाईआ। बन्द कवाड़ी खोल्ह के ताकी, निज नेत्र नूर करां रुशनाईआ। सति दुआर दी दे के झाकी, पर्दा अंदरों दयां खुल्हाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी राती, साचा नूर चन्द दयां चमकाईआ, जीवण विच्चों बदल दयां हयाती, मन ममता रहे ना राईआ। होए प्रकाश काया माटी, अन्ध अन्धेरा दयां गवाईआ। साचे मण्डल पावां रासी, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। जन भगतां पूरी करां आसी, आसा मनसा सब दी वेख वखाईआ। लेखा जाण पुरख अबिनाशी, घट निवासी जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक समझाईआ। पंजा कहे मैं जिस दे नाल जावां छूह, अन्तर निरंतर दयां वखाईआ। पवित्र करां बुत रूह, पतित पुनीत दयां वखाईआ। कर प्रकाश लूं लूं, साढे तिन्न करोड़ सोभा पाईआ। आत्म परमात्म मेल मिला के हूब हू, पारब्रह्म ब्रह्म मेला दयां कराईआ। नाद धुन वज्जे इक्को राग उपजे तूं ही तूं, दूजी आवाज़ ना कोए सुणाईआ। नज़री आए सतिगुरु शब्द गुरु, गुरदेव स्वामी धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पंजा कहे मैं जिस दी लग्गां उत्ते पिट्ठ, पीतपीताम्बर इक सहाईआ। भेव खुल्हा के सवा गिठ, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। निरगुण निरगुण कर के हित्त, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। परमात्म हो के वसां चित, चितवित ठगौरी रहिण कोए ना पाईआ। बिन अक्खां आवां दिस, निज लोचन नैण कर रुशनाईआ। सब दा मालक जणा के इक्क, एकँकार दयां वखाईआ। जिस दी महिमा शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान

खाणी बाणी रही लिख, अक्खरां विच अक्ख़र सिफ्त सालाहीआ। सो साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना पावणहारा भिख, वस्त अमोलक अगम्म अथाह आप वरताईआ। जिस दी चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सिख्या लई सिख, साख्यात बिन काग़ज़ात करे पढ़ाईआ। सो अन्त अख़ीर बेनज़ीर शाह हकीर जन भगतां आसा मनसा पूरी करे इच्छ, निरिच्छत आपणी दया कमाईआ। नाम निधाना नौजवाना मर्द मर्दाना पावे धुर दी भिच्छ, सच भण्डारा एकँकारा इक इकल्ला आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी दया कमाईआ। पंजा कहे मैं जिस नूं देवां सहारा, सहायता विच वड्याईआ। दीन दुनी दा छड्ड किनारा, घाट अगला दयां वखाईआ। जिथ्थे वस्से एकँकारा, इक इकल्ला सोभा पाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यारा, दीआ बाती ना कोए रुशनाईआ। शब्द नाद धुन जैकारा, बिन रसना जिह्वा राग अलाईआ। अमृत रस ठंडा ठारा, जल पाणी ना कोए भराईआ। इक्को मेला परवरदिगारा, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। जो जुग चौकड़ी लए अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। शब्द संदेसा देवे वारो वारा, लख चुरासी जीव जंत करे पढ़ाईआ। सो कलयुग अन्त श्री भगवन्त करे खेल अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी एका हुक्म वरताईआ। जिस नूं कहिंदे चौवीवां अवतारा, चार जुग दा झगड़ा दए मुकाईआ। सो प्रगट हो विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी हुक्मे अंदर भुआईआ। गुर अवतार पैग़म्बर करन निमस्कारा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। सो साहिब शाहो भूप बण सिक्दारा, हुक्म इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा सांझा यारा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ।

११७२
२१

✻ ७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ साधू सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✻

सत्त चेत कहे मैं कीता अगम्म ग़ौरे, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। पुरख अबिनाशी जन भगतां रिहा ठकोरे, सचखण्ड साचे दया कमाईआ। क्यों चार जुग मेरे विच पए भोरे, आपणा आसण लाईआ। वेखो खेल ब्राह्मण गौड़े, सर्ब दयां वखाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर दौड़े, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। चढ़दे आए पौड़े पौड़े पौड़े, मंज़ल बा मंज़ल पन्ध मुकाईआ। जोती धार वस्से कोले, जोती जोत विच मिलाईआ। सच सिँघासण बहि के डोले, सुखआसण सोभा पाईआ। उठो लोकमात दे वेखो रौले, हाहाकार करे लोकाईआ। झगड़ा प्या धरनी धरत धौले, धर्म दए दुहाईआ। आत्म परमात्म रंग कोए ना मौले, मौला रूप ना कोए बणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरे होए कौले, इक़रार सब दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक मनाईआ। सत्त चेत कहे जन भगतो आपणी लओ अंगड़ाई, आलस निंदरा रहे ना राईआ। लोकमात वेखो चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा इक बणाईआ। खेल वेखो धुरदरगाही, जो करता आप कराईआ। चार जुग दी बदलण लग्गा शाही, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। सारे उठ के आपणी भरो गवाही, शहादत देणी भुगताईआ। मिल जाओ चम्यार जुलाहे नाई, जट्टां रंग रंगाईआ। याद करो पिछला लेखा रहिणा नाहीं, अगली कल वरताईआ। चारों कुण्ट पैणी दुहाई, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जे कोई तुहाडा मित्र उस दी दयो सफ़ाई, सिफारिश दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सत्त चेत कहे जन भगतो खोल्हो आपणी अक्ख, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला तक्को प्रतख, पारब्रह्म ब्रह्म गुसाईंआ। जिस दा खेल दस्स के आए हक़ीक़त विच हक़, भेव अभेद खुल्हाईआ। ओह सब दा लहिणा देणा झोली पावे पक्क, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सत्त चेत कहे प्रभ कोल आ गया नारद, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। प्रभू मैं की दस्सां तेरे धर्म दवारिआं ते लग्गी गारद, तैनूं पहरिआं हेठ रखाईआ। बण के आप वारस, तैनूं मुजरम ल्या बणाईआ। तेरे नाम दी लैंदे आड़्हत, टक्यां विच विकाईआ।
११७३ मैनूं वेख के होण लग्गी ख़ारश, दुःख दिता सुणाईआ। मैं किहा मैं ज़रूर ख़बर देणी विच मारच, मारच करना कूड़ लोकाईआ। ११७३
२१ मैं चौहन्दा सब दे कोलों लै ला चारज, चर्चा विच नज़र कोए ना आईआ। जे आयू जगत दस्सी आरज, अग्गे भेव ना कोए दृढ़ाईआ। खेल कर अगम्मा भारत, भारद्वाज दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। नारद किहा मैं तेरे उत्ते वेख्या लग्गा पहरा, पहरेदार रहे अटकाईआ। तैनूं पुस्तकां विच बन्द कर के कहिण साडा ग़रीब निवाज़ गहरा, ग़ैर वेखण कोए ना पाईआ। तेरा सिफ्तां वाला करन मुज़ाहरा, मसले मन नाल बणाईआ। तैनूं बन्द कर के दीन मज़हब दे दाइरा, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरदवारिआं विच टिकाईआ। बिना मज़हब तों तेरा लै सके ना कोए लहरा, लहर विच लहर ना कोए टकराईआ। अल्ला वाल्यां वास्ते वाहिगुरु हो गया नाम ज़हिरा, ज़हिर प्याला पीण कोए ना पाईआ। सारे तैनूं चंगा बणाउंदे विच शहिरा, गावां कसबिआं विच ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। नारद कहे प्रभू मैं चारों कुण्ट वेखी साखी, साख्यात दयां दृढ़ाईआ। माया ममता भरमे भुल्ले करन तेरी राखी, शस्त्र हथ्थां विच उठाईआ। तूं की पुरख समराथी, की तेरी वड्याईआ। की तेरा जीवण की तेरी हयाती, की तेरी खेल खिलाईआ। की तेरा दीपक

११७४
२१

की तेरी बाती, की तेरी रुशनाईआ। की तेरी मंज़ल की तेरी घाटी, की दुआरा सोभा पाईआ। की तेरा लहिणा की दिसे बाकी, जिस नूं ख़ाकी देण समझाईआ। प्रभू तूं वड्डा कि ओह वड्डे जेहड़े तेरे दर ते करन गुस्ताख़ी, कूड़ी क्रिया विच समाईआ। तेरी धार अक्खरां वाली पत्थरां वाली छापेख़ान्यां विच छापी, छाप बणा के वेचण चाँईं चाँईंआ। तूं निक्का कि वड्डा प्रतापी, भेव अभेव देणा खुल्हाईआ। तूं साहिब कि लोकमात दा पापी, क्यों पहरे थल्ले रख के तैनूं हरासत विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। नारद कहे मैं शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी तक्की नाल अनन्द, अनन्द विच जणाईआ। बस्तयां विच कर के बन्द, बन्दख़ाने देण टिकाईआ। नाले कहिण सूरा सरबंग, साहिब धुरदरगाहीआ। जो सब नूं नाम देवे वंड, वंडणहारा इक अख्वाईआ। पर तैनूं इहो जिहा सतिगुरु बणाया जिनां चिर कोई खोल्हे ना उत्तों कपड़े दी गंढ, तेरा वरका ना कोए उलटाईआ। ओ प्रभू तूं केहड़ा साहिब जेहड़ा आपणा गा नहीं सकदा छन्द, तेरे गाउण वास्ते मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधे ग्रन्थी पन्थी आपणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर साचे मँग मँगाईआ। नारद कहे प्रभू की तैनूं कहवां भगवान, मैनूं दे समझाईआ। जां तेरे ग्रन्थां करां माण, तेरी लोड़ रहे ना राईआ। जां तेरे अक्खरां करां पहिचाण, अक्खर वक्खर वेख वखाईआ। जां सीस निवावां पाहन, जो इट्टां जोड़ जुड़ाईआ। जां पत्थरां मन्नां काहन, मैनूं दे समझाईआ। जां शरअ दा मन्नां विधान, भेव देणा खुल्हाईआ। जां रसना गावां गान, ढोल्यां विच अल्हाईआ। सच दस्स किस नूं करां प्रणाम, मैनूं समझ कोए ना आईआ। कोई कहे करो डंडावत कोई करे बन्दना कोई कहे करो सलाम, सलामालैकम विच वड्याईआ। कोई कहे कहो राम कोई कहे कहो काहन, कोई कहे जै जैकार सुणाईआ। सच दस्स प्रभू तूं इक ते तेरे नामां दा किधरों आ गया तुफ़ान, चारों कुण्ट वखरे वखरे झकोले रिहा दवाईआ। मैं हैरान हो गया नाले बणया बेपछाण, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सच दस्स तेरी केहड़ी चंगी दुकान, जिथों वस्तू मिले अगम्म अथाहीआ। की मैं वेद पढ़ां कि पुराण, शास्त्रां दा लवां ज्ञान, गीता दा करां ध्यान, अञ्जील क़ुरान वेखां आण, बाईबल तुराइत करां पछाण, कि गुरु ग्रन्थ पढ़ के अग्गे ओट ना कोए तकाईआ। अग्गों हस्स के कहे श्री भगवान, सुण बच्चे मेरे नवां तैनूं देवां इक फ़रमान, संदेसा धुरदरगाहीआ। एह नाम एह क़लमे सुणन वाले नामी कान, जिस दे नाल जीव जंत जगत मन प्रचाण, प्राचीन दा लेखा बणया आईआ। अग्गे बदल देणा विधान, सांझा दे के इक फ़रमान, हुक्म संदेसा दो जहान, तूं मेरा मैं तेरा इक्को राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा

हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी झुलावणहारा धर्म निशान, निशाना नौजवाना मर्द मर्दाना इक अख्वाईआ।

❊ ७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सरवण सिँघ दे गृह पिंड पॅखोवाल ❊

नारद कहे प्रभू मैनूं सुज्झी गल्ल चंगी, चंगिआं दे मालक तैनूं दयां जणाईआ। तूं साहिब सुल्तान सूरबीर बहादर जंगी, शाह पातशाह शहिनशाह अख्वाईआ। मैं लोकमात तक्कया तैनूं चुक्की फिरदे सीस उत्ते कंधी, कहिण साडा सतिगुरु साडे सहारे चल के आपणा झट लँघाईआ। तैनूं पा के मज़हबां वाली डिंगी टेडी डंडी, डंडावत सजदयां विच मथ्थे दिते रगड़ाईआ। शरअ दी करा के दंगी, झगड़यां विच तैनूं दिता फसाईआ। की करे जमना सुरस्ती गोदावरी गंगी, ग्रह गरोह तेरा टलिआ नज़र कोए ना आईआ। जिधर वेखां तेरे उत्ते लग्गी पाबन्दी, आज़ादी तेरी रही ना राईआ। मैं सुणया तूं बड़ा वड्डा ढंगी, अगला तरीका दे समझाईआ। तूं साहिब इक तेरे नाम सिफ्तां वाले बहुछन्दी, ढोल्यां विच गाईआ। दस्स केहड़ी तेरी सिफ्त मंदी, जो अवतार पैग़म्बर गुरु गए सुणाईआ। क्यों सृष्टी दी दृष्टी कीती मंदी, मंदहालत होई लोकाईआ। जोती जोत
१९७५ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, साहिब तेरी सरनाईआ। नारद कहे जे तूं सतिगुरु आदि जुगादी १९७५
२१ शब्द, शब्द दिता बणाईआ। फिर शब्द क्यों बदलया विच मज़हब, मैनूं दे समझाईआ। की एह सी तेरी रमज़, कि इशारा २१
धुरदरगाहीआ। जां अवतार पैग़म्बरां दी समझ, अकल विच चतुराईआ। पुरख अकाल कहे निरगुण धार दिती मदद, सरगुण राह वखाईआ। मेरे इक दे एह वंडे होए हिस्सआं वाले अदद, आदत विच्चों आदत आदत नाल बदलाईआ। आपणे नाँ दे बणा के तशदद्, झगड़े दिते कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे प्रभू तैनूं क्यों ल्या विच हिरासत, मज़हब तों बाहर क़दम ना कोए टिकाईआ। दस्स अवतार पैग़म्बर गुरु तेरे कि तूं गुरदवारिआं दी वरासत, वसीह कर के देणा जणाईआ। मैं ते वेखदा रिहा पुरख अकाल तेरी बड़ी शराफ़त, जो चार जुग चुप कर के झट लँघाईआ। मैं वी तकदा रिहा पैग़म्बरां विच किड्डी लिआक़त, जो लाइक़ बण के तेरे नाम नाल करदे रहे लड़ाईआ। किरपा निधान हुण ते कर दे अदालत, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। क्यों गुर अवतार पैग़म्बर हुण किसे दी दिन्दे नहीं ज़मानत, पल्लू सारे गए छुडाईआ। उन्हां दे मुरीदां सिखां ने तेरे भा दी ल्यांदी क्यामत, तैनूं आपणे ज़ेर रख के हुक्म मन वाला चलाईआ। साचा नाम मिले ना कोए निआमत, अमिउँ रस ना कोए चखाईआ। पैग़म्बर

उडीकदे कदों आवे क्यामत, वेला वक्त वेख वखाईआ। मैनूं ऐं जापदा उन्हां नालों प्रभू तेरे उत्ते पहिलों आई शामत, तैनूं शामिआनिआं विच बन्द कर के वख वख दिता टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। नारद कहे क्यों बन्द होयों बन्दीख़ाना, बन्दगी वाले प्रभू मैनूं दे समझाईआ। तेरा दस्स केहड़ा मित्र ते केहड़ा बेगाना, कवण नाता रिहा तुड़ाईआ। प्रभू तूं जुग जुग कदे राम कदे कृष्ण लगाया यराना, आपणी खुशी बणाईआ। उन्हां नालों विगड़ के अल्ला नाल मेरा बहाना, अगला भेव ना कोए जणाईआ। अल्ला छड्ड के सतिनाम लैणा परवाना, परवानगी आपणे विच्चों कराईआ। सतिनाम तों वध के वाहिगुरु कहिणा बलवाना, वाहवा वड्डे बलवान तेरी बेपरवाहीआ। मैं सदी चौधवीं हो गया हैराना, हैरानी मेरे अंदर रही कुरलाईआ। चार जुग तूं वखरा दस्स के गाणा, चार वरनां एका सरना सरन दिती समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी तेरा खेल विच जहाना, जीव जंत भेव ना कोए खुल्हाईआ।

✲ ७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सरदारा सिँघ दे गृह पक्खोवाल ✲

नारद कहे मैं तक्कया तेरा प्रभू सच दुआरा, दरगाह साची सचखण्ड नज़री आईआ। जिथ्थे झुके गुरु अवतारा, पैग़ंबर सीस निवाईआ। दर दरवेश बण भिखारा, मांगत हो के झोली डाहीआ। साचा दे नाम अधारा, अंदर बाहर वज्जे वधाईआ। निरगुण नूर कर उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शब्द डंका वज्जे अपारा, नाद धुन कर शनवाईआ। अमृत रस मिले ठंडा ठारा, बूँद स्वांती इक प्याईआ। लोकमात वेखो जगत संसारा, निरगुण सरगुण फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। नारद कहे प्रभू तूं सब नूं दिती दात, कलमा नाम झोली पाईआ। बख्शी अगम्म सौग़ात, सरगुण झोली दिती भराईआ। सिख्या दे के साख्यात, बुद्धी तों परे कीती पढ़ाईआ। लेख लिखा के नाल क़लम दवात, दीन दुनी वंड वंडाईआ। दीन मज़हब दस्स के जमात, झगड़ा मानव दिता वखाईआ। तेरा खेल अगम्म तमाश, समझे कोए ना राईआ। हुण किरपा कर आप, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। दीन दुनी दा मेट संताप, झगड़ा कूड़ रहिण ना पाईआ। दृष्टी अंदर दे के इक जाप, एका नाम धुर दा सच सुणाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दी होवे गाथ, गहर गम्भीर तेरा ध्यान लगाईआ। तूं जुग चौकड़ी चलावें राथ, सतिजुग सति दे वड्याईआ। जो भविख्तां विच गुर अवतार पैग़ंबर गए आख, आख़र पूरा कर

११७६
२१

वखाईआ। नारद कहे मैं तेरा बच्चा इक गुस्ताख़, गुस्से वाली गल्ल जणाईआ। जेहड़ी तेरी दीनां मज़हबां वाली शाख़, शरअ ज़ंजीर दे कटाईआ। इस ने सब नूं कर दिता राख, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। एसे कर के प्रभू तेरा वध्या नहीं प्रताप, भगत बण के तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई आपणे आप नूं सारे रहे आख, आत्म तेरे हवाले ना कोए कराईआ। चार जुग दे भुक्खे हुण ते दीनां मज़हबां दा रस तूं ल्या चाख, बिना ज़बान तों ज़िबह सारे दिते कराईआ। झगड़ा पा के ज़ात पात, दीन दुनी दिती लड़ाईआ। किसे दे अंदर होण नहीं दिता प्रकाश, अन्ध अज्ञान विच दुहाईआ। किरपा कर सर्ब गुणतास, गुणवन्ते तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। नारद कहे मैं वेख्या जगत जहान अक्खीं, आख़र प्रभ जी दयां सुणाईआ। तेरे प्रेम प्यार वाली रही कोई ना सखी, साजण मीत संग ना कोए रखाईआ। एका ओट रखे ना कोए कमलापती, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना आईआ। दीनां मज़हबां शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी चलाई आपणी हट्टी, वणजारे जीव जंत कलयुग जीव लए बणाईआ। एसे कारण सच नाम दी खट्टी किसे ना खट्टी, खटका इक अंदर आईआ। सदी चौधवीं सब ने भरनी चट्टी, चेटक वेख्या कूड़ लोकाईआ। तूं लहिणा देणा चुकावें हथ्थो हथ्थी, हरि साहिब तेरी सरनाईआ।
११७७ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं ११७७
२१ भगवान, आदि जुगादि तेरी कथा कहाणी सच्ची, सच दे मालक तेरी बेपरवाहीआ। २१

* ७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ अजीत सिँघ दे गृह पिंड आंडलू *

नारद कहे प्रभू मैं तेरी वेखी अगम्मी आदत, धुर दे अदली दयां जणाईआ। बन्दगी विच जणाएं इबादत, आपणा हुक्म मनाईआ। नाल शरअ दी रख शरारत, झगड़यां विच दुहाईआ। किसे दी रहिण ना देवें लिआक़त, बुद्धी बिबेक ना कोए जणाईआ। तेरी समझे ना कोए शराफ़त, शुरफ़ा बैठे ध्यान लगाईआ। तेरा इशारा अगम्मी वास्तक, वाहवा पर्दा दए उठाईआ। दीन दुनी वेख नास्तिक, अस्तिक लख चुरासी फोल फुलाईआ। सुखआसण बैठा ना रहीं विष्नूं बण के सेजा बाशक, तशका पैंडा देणा मुकाईआ। वेख महीना आया चेत मासक, मस्ती दे मस्ताने लै अंगड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रयासत, शाह पातशाह इक्को सोभा पाईआ। वखरी वखरी रहिण ना देवीं कोई ज़िआरत, इक्को घर देणा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वजदी रहे वधाईआ। नारद कहे प्रभू

मैनूं तेरे उत्ते यकीन, यक्क दयां जणाईआ। पर तूं क्यों होयों दूज्जयां दे अधीन, मैनूं दे जणाईआ। रूप धर के नरां नाल मदीन, परमात्म आत्म आपणा खेल कराईआ। तेरा मार्ग सदा महीन, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ । तूं सदा रहें क़दीम, हमसाजण इक अख्वाईआ। कलयुग अन्त कूड़ी क्रिया कर तरमीम, सतिजुग सच्चा राह वखाईआ। तैनूं सारे कहिण आलमीन, यामुबीन तेरी वड्याईआ। झगड़ा मुका उत्ते ज़मीन, मानव ख़ाकी दे समझाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को कर तालीम, तुलबे सारे लै बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। नारद कहे प्रभू सब दे अंदर दे भरोसा, भरोसे योग नज़र कोए ना आईआ। पिछला चार जुग दा मेट दे रोसा, रुस्से गुरमुख लै मनाईआ। नाम खुमारी दे मदहोशा, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। कर प्रकाश चौदां लोका, चौदां तबकां डगमगाईआ। तेरे नाम दा इक्को होवे होका, हुक्म धुर दा देणा सुणाईआ। सच प्यार दा सच सलोका, सति सति आप प्रगटाईआ। किसे नाल ना होवे धोखा, कूड़ कुड़िआरा डेरा ढाहीआ। जन भगतां मिलण दा आपे दिता मौका, मेहरवान हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा संदेसा लोक परलोका, दो जहानां इक्को हुक्म वरताईआ।

* ७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ भाग सिँघ बसरावां वाले दे गृह पिंड पखोवाल, *

नारद कहे प्रभ तेरी अचरज माया, माया ममता मोह विकार जगत हल्काईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा छाया, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण करे ना कोए रुशनाईआ। जूठ झूठ पाप अपराध वधाया, साचा संगी संग ना कोए रखाईआ। हर हिरदिउँ तेरा नाम भुलाया, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी याद ना कोए रखाईआ। दीन दुनी आपणे रंग रंगाया, रंगत चार वरन चढ़ाईआ। आत्म ब्रह्म भेव किसे ना आया, अन्तर निरंतर पर्दा ना कोए उठाईआ। निज नेत्र लोचण नैण तेरा दरस किसे ना पाया, शब्द अनादी नाद ना कोए सुणाईआ। जिधर तक्कां हाहाकार करे लोकाया, बौहड़ी बौहड़ी कर कुरलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां जो राह चलाया, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। दीनां मज़हबां वंड वंडाया, ज़ात पाती खेल खिलाईआ। तिस दा लेखा अन्त तुध बिन कवण सके चुकाया, चौथे जुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरी आस रखाईआ। नारद कहे प्रभ तेरी दुनियां तक्की जग, लोकमात ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं घर घर लगी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मंज़ल हक़ीक़ी चढ़े ना कोए उपर शाह रग, शहिनशाह

तेरा नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। साचे काअबे करे कोई ना हज्ज, मुकामे हक़ मिलण कोए ना आईआ। चार कुण्ट दह दिशा विभचार कुकर्म गया वध, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। आत्म परमात्म नाता सारे गए छड्ड, सगला संग ना कोए रखाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली हो गए हड्ड, हिरदे हरि ना कोए टिकाईआ। तेरी सृष्टी तेरी दृष्टी तेरा आत्म तेरे नालों होया अलग, परमात्म तेरा मेल ना कोए मिलाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाही सारे रहे जप, जग जीवण दाते तेरा सति सरूप सोभा कोए ना पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त त्रैगुण माया मेट तप, तपी तपीशर सारे देण दुहाईआ। दीन दुनी दी अन्तर निरंतर सांझी कर मत, दुई द्वैत लेखा दे मुकाईआ। मन कल्पणा शब्द डोरी अगम्मी धार पा नक्थ, नटुआ उठ ना दह दिश धाईआ। सच दुआर एकँकार क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई खोल्ह आपणा हट्ट, धर्म वणजारे आपणा वणज दे कराईआ। पुरख अकाले दीन दयाले परवरदिगार सांझे यार सब दा बण के कमलापति, पतिपरमेश्वर आपणा रंग देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी एथे ओथे दो जहानां सब कुछ तेरे हथ्थ, तुध बिन अवर नज़र कोए ना आईआ।

✻ ७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ भगवान कौर दे गृह पिंड पखोवाल ✻

नारद कहे प्रभ मैं वेख्या तेरा स्वर्ग बहिश्त, सुखआसण फोल फुलाईआ। बिना तेरे तों पूरा होया किसे ना इश्क, मुहब्बत सच ना कोए कमाईआ। सारे आवण जावण अन्त छड्ड के जाण ख़िसक, थिर रहिण कोए ना पाईआ। मंज़ल चढ़दे चढ़दे जाण तिलक, सम्भल क़दम ना कोए टिकाईआ। सच धार दिसे कोई ना मिलत, सति जोत ना कोए समाईआ। मैनूं ऐं जापया एह वी तेरी इल्लत, लालच विच ल्या भरमाईआ। स्वर्गां तों अग्गे जाण दी करे कोई ना हिम्मत, बहुते एथे बहि के झट लँघाईआ। अग्गे तेरे नाम दी दिसे किल्लत, अनमुल्ली वस्त हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा अवर ना कोए दसाईआ। नारद कहे तेरे बहिश्त स्वर्ग दा तक्कया लारा, लाईनां विच बैठे ध्यान लगाईआ। जिथ्थे रस अनडिठा सारा, बिन रसना रस चखाईआ। तेरी जोत दा मद्धम जिहा होवे उज्यारा, नूर नूर रुशनाईआ। शब्द दा थोड़ा सुणे नगारा, आहिस्ता आहिस्ता राग अल्हाईआ। जिस नूं सुण के मस्ती विच कहिण जे फेर जन्म होवे दुबारा, मातलोक फेरा पाईआ। एसे तरह जा के लाईए जगत अखाड़ा, मधुर धुनां विच

गाईआ। एह तेरा जुग चौकड़ी नाम दा बणया रिहा व्यपारा, वणज विच सारे दिते फसाईआ। आप सब तों कर के किनारा, सचखण्ड बैठा सोभा पाईआ। बिना भगत तों कोई पुज्जया नहीं चरण दुआरा, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर साचे आस रखाईआ। नारद कहे जेहड़े स्वर्ग बहिश्त रहे लोड़, लोड़ींदे साजण तेरा संग ना कोए रखाईआ। मैं सब नूं कहां हथ्थ जोड़, बेनन्ती इक दृढ़ाईआ। जन भगतो स्वर्ग बहिश्त दी पकड़यो कदी ना डोर, मंज़ल अगला पन्ध मुकाईआ। बहिश्तां विच्चों निकल के फेर बणना पैंदा चोर, मातलोक लोकमात जन्म भुआईआ। जे साहिब सतिगुर पुरख अकाल नाल प्रीती निभाओ तोड़, ओड़क आपणे विच समाईआ। जिथ्थे ना मढ़ी ना गोर, तन वजूद माटी फेर कोए ना पाईआ। जद वेखो आपणे आप नूं नवां नकोर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे भाग मथोर, मिथ्या दस्से कूड़ लोकाईआ।

❋ ७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ मँगल सिँघ दे गृह पिंड पक्खोवाल ❋

नारद कहे मैं नानक दा पंजा वेख्या उत्ते पहाड़, ग़ौर नाल ध्यान लगाईआ। उहदे विच रेख बणी जिस विच लेखा लिख्या सतारां हाढ़, सम्मत पंज नाल वड्याईआ। होर तक्कया प्रकाश होया नाड़ नाड़, नूर दिता चमकाईआ। पिच्छे वेख्या पैग़म्बर फिरदे विच उजाड़, भज्जण वाहो दाहीआ। होर समझया नज़री आई अगम्मी कार, करनी करता रिहा कमाईआ। पासा परतिआ सदी चौधवीं रो पई ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मैं हस्स के किहा क्यों होई बेज़ार, मैनूं दे सुणाईआ। ओस किहा खेल करे मेरा परवरदिगार, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। मैं तां रोंदी सच दा रिहा ना कोई ख़िदमतगार, धुर दा ख़ादम नज़र कोए ना आईआ। किसे दा रिहा नहीं कोई एतबार, विश्वास विच विशा ना कोए बणाईआ। जिधर तक्कां ओधर आई हार, हरि जू की आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरताईआ। नारद कहे मैं पंजे अंदर वेख्या पांजा ज़ीरो वाला पंजाह, जगत रंग रंगाईआ। मेरी निकल गई आह, हौके विच दिती दुहाईआ। झट ख़बर दिती सुणा, अगम्मा राग अल्लाईआ। जां वेख्या नूरी जल्वागर खुदा, खुद आपणा वेस वटाईआ। मेरी वेख के बदल गई तबा, तबीअत आपणा आप बदलाईआ। जिस ने मलेछ उठाउणी सभा, चार कुण्ट करे सफ़ाईआ। पैग़म्बरां दा बण के अब्बा, आदम हव्वा दा पिता माईआ। सच दा दे के सद्दा,

संदेसा रिहा सुणाईआ। नारद कहे मैं चक्र लाया चढ़ के उपर गधा, अरबां विच अरबी हो के वेख वखाईआ। प्रभ दी सरनी कोई ना दिस्सया लग्गा, लग मातर नज़र कोए ना आईआ। जिधर वेखां उम्मत नबीआं नाल करे दग़ा, फ़रेबां विच कुरलाईआ। चौपाइआं करदे ज़िबह, छुरी करद हथ्थ उठाईआ। मेरे मुखों निकिलआ हाए मेरया रब्बा, तेरा नाम दुहाईआ। अगम्मी आवाज़ सुणी नारदा मैं चखाउण वाला सर्ब नूं मज़ा, मज़ाक़ उड़ावां कूड़ लोकाईआ। हुक्म इक्को मिलणा बेनज़ीर क़ज़ा, जो क़ाज़ी मुल्ला सारे लए खाईआ। लख चुरासी जिस दी ग़िज़ा, जुग चौकड़ी खा के आपणा झट लँघाईआ। आपणे हथ्थ रखाए बिधा, बिधना दा लेखा दयां मुकाईआ। सति धर्म दा मार्ग कर के सिध्धा, रस्ता इक्को दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी जुग चौकड़ी करदे निंदा, बिन भगतां भगवन नज़र किसे ना आईआ।

✻ ७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ नाज़र सिँघ दे गृह पिंड पक्खोवाल ✻

नारद कहे मैं सुणे छत्ती राग, छत्ती जुग सिफ्त सालाहीआ। कोई ना सक्कया जाग, सुणन वाले अक्ख ना कोए खुल्ाईआ। जिनां चिर प्रभू आप ना दएं वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। उनां चिर नहीं हुंदा त्याग, माया ममता मोह मिटाईआ। सिफ्त बुझा ना सकी आग, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। सिरफ़ सरवणां दा स्वाद, मन दे सरोते सुण के खुशी बणाईआ। जिनां चिर तेरा शब्द ना होए अहलाद, अहले नूर नज़र ना आईआ। उनां चिर खेड़ा नहीं हुंदा आबाद, उजड़ी नगरी ना कोए वसाईआ। जुग चौकड़ी तैनूं दे सक्कया ना कोए जवाब, सारे भय विच सीस गए निवाईआ। सजदयां विच कर अदाब, अदब नाल तेरी लिखी वड्याईआ। मैं हर मज़हब दी पढ़ी किताब, हरफ़ हरूफ़ खोज खुजाईआ। तैनूं कहिंदे रहे बड़ा वड्डा जनाब, जनाबेआली तेरी उल्फ़त गए सुणाईआ। मैनूं इक थाँ तों मिल्या जिथ्थे अंकड़ा नहीं हिसाब, हिन्दसा रूप ना कोए बणाईआ। सारयां अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं पंजे ला के किहा पंजां दा मालक कलयुग अन्तिम आवे विच पंजाब, परपंच धार दए गवाईआ। जिस दा इक्को हुजरा इक्को होवे महिराब, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। अगला भेव खोल्े राज़, पर्दा दए उठाईआ। पूजा पाठ सिमरन ना कलमा पढ़े निमाज़, निमस्कार विच सीस ना कोए झुकाईआ। जो किछ करे कराए सो आपे आप, दूजी ओट ना कोए वखाईआ। ओसे दा इक़बाल ओसे दा होणा प्रताप, जो परत के आपणा फेरा पाईआ। जिस नूं सारयां मन्नणा बाप, पिता पुरख अकाल कहि के शुकर मनाईआ। सारी सृष्टी नूं दस्स के अगम्मा

११८१
२१

जाप, आत्म परमात्म देणा दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां भविख्त वाक्, पूरा करे चाँईं चाँईंआ। जन भगतां बण के सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। अगला दस्स के महावाक, वाक़फ़कार करे लोकाईआ। चार वरनां दे के इक ख़िताब, ख़ता सब दी मुआफ़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे शब्दी शाबाश, जो शरअ विच्चों निकल के शहिनशाह इक मनाईआ।

✻ ७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ धन्ना सिँघ दे गृह पिंड ढै पई ज़िला लुधियाणा ✻

नारद कहे मैं नानक दा पंजे विच्चों तक्कया अंगूठा, पत्थरां सत्थरां फोल फुलाईआ। सदी चौधवीं जिस ने ख़ाली कीता सब दा ठूठा, काया भाण्डा भरपूर नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म नालों वेख्या रूठा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। जगत जीव जहान देख्या झूठा, सच सुच्च ना कोए समाईआ। सिम्मल वांग ख़ाली वेख्या बूटा, फुल्ल पत्त ना कोए महकाईआ। निगाह मारी चारे कूटा, दह दिशा ध्यान लगाईआ। माया ममता सति धर्म कीता मूधा, करवट सके ना कोए बदलाईआ। जगत कारण करदे पूजा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सब दे अन्तर दुतिया भाउ दूजा, एकँकारा
११८२ इक्को रंग ना कोए रंगाईआ। भेव खोल्ह्हे कोई ना गूझा, पढ़दा निरंतर ना कोए उठाईआ। सच दुआर किसे ना सूझा, ११८२
२१ दरगाह साची चढ़न कोए ना पाईआ। हथ्थ किसे आवे ना मिशरी कूजा, रसना रस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप २१
हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव दृढ़ाईआ। नारद कहे मैं पंजे दी वेखी रेखा, ऋषी मुनी रहे कुरलाईआ। दीन दुनी दा बदलया पेशा, पेशीनगोई समझ किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कीता वेसा, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। सच सुणे ना कोए संदेसा, धुर दा नाद ना कोए शनवाईआ। सदी चौधवीं समझे कोई ना लेखा, भेव अभेद ना कोए खुल्ह्हाईआ। माया ममता पाया भुलेखा, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। पुरख अकाला नज़र ना आवे नेता, निज नेत्र ना कोए रुशनाईआ। पूरब पिछला भुल्लया चेता, चेतन सुरती ना कोए कराईआ। आत्म परमात्म करे कोई ना हेता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। नारद कहे मैं नानक पंजे दी तक्की तली, तल्ब सब दी वेख वखाईआ। दीन मज़हब दुनियां दी निक्की गली, कूचा कूचा सोभा पाईआ। करया खेल प्रभ वली छली, अछल छल आपणी कार कमाईआ। योद्धा सूरबीर बण के बली, बलधारी हुक्म दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग जवानी ढली, अन्त आपणा आप रहे बदलाईआ। सारी सृष्टी जाणी दली, दल दलां नाल टकराईआ। साची महकणी नहीं कोई कली, गुलशन

११८३
२१

रंग ना कोए रंगाईआ। नेत्र रो के गया ऐली, मुहम्मद ताईं सुणाईआ। उम्मत कोल तेल रहिणा नहीं पली, पलक विच विहाउणी सर्ब लोकाईआ। सदी चौधवीं जेहड़ी वस्त घल्ली, गिरी खोपरे नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी नूर अलाहीआ। नारद कहे मैं पंजे अंदर तक्की लकीर, लायक़ नज़र कोए ना आईआ। झगड़ा दिसे शाह हकीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए फ़कीर, फ़िकरा हक़ ना कोए सुणाईआ। बदल सके ना कोए तक़दीर, तदबीर अगम्म ना कोए दृढ़ाईआ। शरअ कटे ना कोए ज़ंजीर, शरीअत विच दुहाईआ। खेल करे बेनज़ीर, अन्तिम आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी नज़र ना आवे किसे तस्वीर, तसव्वर आपणा आप दए समझाईआ। शब्दी खण्डा लै शमशीर, शमशान भूमी करे लोकाईआ। शाह सुल्तानां कर दिलगीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। पंजा कहे मैं वेखी सच पंच आयत, पंचम दयां दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं साची वस्त करे ना कोए अनाइत, गिरी छुहारे बादाम मेव पैग़म्बरां भेंट ना कोए कराईआ। मंगिआं किसे ना मिले ख़राइत, ओढ़ुन सीस ना कोए टिकाईआ। आलम रिहा ना कोए मुसायक, मुल्लां शेख़ रहे कुरलाईआ। हर हिरदिउँ विसरी कायनात, कलमा कायनात ना कोए वड्याईआ। शरीअत विच बदली ज़राइत, जुम्मला अक्खर ना कोए समझाईआ। अन्तिम अख़ीर करे कौण कफ़ाइत, मुहम्मद पल्लू रिहा छुडाईआ। नज़र ना आवे इक्को वाहिद, वाहवा आपणी कार कमाईआ। जिस ने जुग जुग कीते अलाहिद, अन्तिम आपणे विच मिलाईआ। चार जुग समझया ना कोए मुफ़ाइद, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। नारद कहे मैं नानक पंजा तक्कया रब्बी, रबीउलसानी दए गवाहीआ। लेखा वेख्या चौधवीं सदी, सदमे सब नूं रिहा पहुंचाईआ । चार जुग रहिणी नहीं कोई गद्दी, गदागर होए लोकाईआ। सृष्टी दृष्टी हुक्मे अंदर जाणी बद्धी, बदला चुकाए थाउँ थाईंआ। नबीआं वखावे नूह नदी, नर नरायण पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मार्ग इक प्रगटाईआ। पंजा कहे मेरे अन्तर गोल चक्र, चक्रवर्ती देणे मिटाईआ। सीस रहे ना किसे छत्र, शत्रू शत्रू देणे लड़ाईआ। चारों कुण्ट दिसे सत्थर, गोबिन्द सत्थर रिहा वखाईआ। जेहड़ी विद्या बणी नाल अक्खर, अन्त अक्खरां विच समाईआ। किसे कम्म नहीं आउणा सिल पत्थर, पाहन ना कोए चतुराईआ। बिरहों वैरागी नेत्र विरोले ना कोए अथ्थर, अन्तर ध्यान ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ । पंजा कहे मैनूं लाया अगम्म अथाह, अगम्मढ़ी कार कमाईआ। जिस दा लेखा

कोई जाणे ना, भेव अभेदा ना कोए खुल्हाईआ। जन भगतां देवे अगम्मा नाँ, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। जन्म जन्म दे मेट के कोट गुनाह, पतित पुनीत लए कराईआ। दरगाह साची देवे सच्चा थाँ, थनंतर इक सुहाईआ। सदी चौधवीं पैग़म्बरां शगन देवीं पा, पवण पाणी तों बाहर तेरी चतुराईआ। रस मिट्ठे फिक्के देणे खवा, ख्वाजा खिजर नाल मिलाईआ। शब्दी गुर देणा गवाह, शहादत इक भुगताईआ। अगला साह लैणा सुधा, वार थित आपणी लैणी बणाईआ। अन्त अख़ीर जिस धारों उतरी ओसे विच जाणा समा, दूजा दर नज़र कोए ना आईआ। तेरी उम्मत इक्को वार होणा निक़ाह, फ़ातिहा सब दा दए पढ़ाईआ। वेखीं तूं वी होवीं ना बेवफ़ा, वफ़ादारी विच सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण नूर जोती जाता अगम्म खुदा, खुदगर्ज़ी जगत मर्ज़ी दीन दुनी दी दए मिटाईआ।

❊ ८ चेत शहिनशाही सम्मत ५ हरी सिँघ दे गृह पिंड महिमा सिँघ वाला ❊

नारद कहे पंजां तत्तां वाला पंजा लगदा रिहा जग, पंजां उँगलां नाल वड्याईआ। अन्त ओह पंजा सड़दा रिहा विच अग्ग, निशान आपणा आप मिटाईआ। जुगां जुगां दी दस्सदा रिहा हद्द, चौकड़ी राह वखाईआ। इस तों अग्गे ना सक्कया वध, भेव अभेद ना कोए दृढ़ाईआ। अन्तिम हो के अलग्ग, नाता सब दे नालों तुड़ाईआ। मैं हैरान होया की खेल सूरे सर्बग्ग, लोकमात दिता खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं पंजे नूं ल्या पुच्छ, क्यों नानक तैनूं गया लगाईआ। ओह मेरे नाल गया रुस्स, करवट लई बदलाईआ। मैनूं पता नहीं कुछ, मैं की दयां दृढ़ाईआ। जिस दी बाबत गुर अवतार पैग़म्बर सके कुझ ना सुज्झ, अन्त कहिण कोए ना आईआ। मेरी ना वड्याई ना बुध्ध, अकल चतुराईआं ना कोए रखाईआ। आपणा आप कर ना सकां शुद्ध, वधी सुदी ना पन्ध मुकाईआ। मैनूं ऐं दिसदा जिस वेले कलयुग अन्त दीनां मज़हबां दा होणा युद्ध, गुर अवतार पैग़म्बर साथी नज़र कोए ना आईआ। सब ने लग्गणा सचखण्ड दवारे दी खुड, दरगाह साची मुख छुपाईआ। बिना शब्द गुरु तों किसे नहीं सकणा उड, तत्तां वाला गुरु कम्म कोए ना आईआ। ओस वेले पुरख अकाल ने किसे पैग़म्बर नूं कहिणा नहीं गुड्ड, गॉड गाईड ना कोए रखाईआ। जेहड़े सड़ गए लक्कड़ी नाल वुड्ड, अगनी अग्ग आपणा भेंट कराईआ। ओह भेव की दस्सण गुज्झ, जो सहारे नाल लोकमात वक्त लँघाईआ। नारद कहे मैं खुशी नाल प्या कुद्द, आपणी छाल दिती

लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंजा कहे मैं लग्गदा मिटी घट्टे उपर इट्ट पत्थर, निशान जगत वाला जणाईआ। साचे पंजे दा भेव जाणे जिंन सूलां बणाया सत्थर, यारड़ा सेज हंढुाईआ। जिस दी महिमा लिख सके ना अक्खर, विद्या विच ना कोए वड्याईआ। महिमा वाला समझे कोई ना पत्र, पात्र पत्रका विच लेख ना कोए बणाईआ। पर्दे विच रखे कोई ना सतर, ओहल्यां विच ना कोए छुपाईआ। ज़बान नाल ना करे नशर, तहिरीर विच ना कोए वखाईआ। जिस ने कलयुग अन्त वेखणा दीन दुनी दा हशर, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। पंजा कहे मेरे साहिब दा वक्खरा पंजा, जो गुर अवतार पैग़म्बरां पुश्त पनाह टिकाईआ। जिस दा नूर ज़हूर दो जहानां नालों चंगा, जगत नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जिस दे नाल लख चुरासी जीवत होए बन्दा, बन्दगी वाला राह वखाईआ। जिस नाल नेत्र नैणहीण होवे ना अन्धा, लोचण नैण करे रुशनाईआ। जिस नाल अमृत धार तक्के जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, अठसठ लेखा रहे ना राईआ। जिस नाल गुर अवतार पैग़म्बर रहे ना कोए मछन्दा, मछन्दगी अवर रहे ना राईआ। जिस नाल आत्म परमात्म मिले अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस नाल तूं मेरा मैं तेरा गावे छन्दा, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। जिस नाल जन्म कर्म दा पापी रहे ना कोई गंदा, पतित पुनीत तराईआ। पंजा कहे ओह मेरा साहिब सदा बख़्शंदा, बख़्शणहार इक अख्वाईआ। जेहड़ा गुर अवतार पैग़म्बरां नूं दान दिन्दा, नाम वस्त अमोलक झोली पाईआ। उस ने ब्रह्मण्डां खण्डां, पुरीआं लोआं खोज खुजाईआ। शब्द अगम्मी फड़ के डंडा, डंडावत सब नूं देणी समझाईआ। हर हिरदे अंदर फेरना रंदा, कूड़ी क्रिया दुरमति मैल बाहर कढ्ढाईआ। जन भगतां देणा संगा, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक वखाईआ। पंजा कहे पुरख अकाल दा मेरा निशान, निशानी गुर अवतार रहे जणाईआ। जिस पंजे थल्ले आदि जुगादि जुग चौकड़ी सारे आण, लख चुरासी बैठी सीस निवाईआ। जिस पंजे थल्ले रामा कृष्णां काहन, निउँ निउँ सीस निवाईआ। सो पंजा वड्ड बलवान, जिस ने मूसा ईसा मुहम्मद आपणा हुक्म दिता दृढ़ाईआ। सो पंजा वखाया श्री गुरु नानक श्री भगवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नानक ने चरण चुम्म के मंगिआ दान, ख़ाली अग्गे झोली डाहीआ। उजाड़ां विच बीआबानां विच पहाड़ां विच मिल्यो आण, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। कुछ दे आपणा निशान, तेरे दर होवे परवान, परवानगी आपणे नाल रखाईआ। किरपा कीती नौजवान पतिपरमेश्वर मेहरवान, नानक नूं आपणा हथ्थ फड़ाया ते पंजा लाया आप किरपा

कीती महान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। शब्द नाद दिता धुन्कान, संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होणी प्रधान, चार कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ओस वेले प्रगट होवां विच जहान, निरगुण निरवैर निराकार आपणा रूप धराईआ। सब दा लेखा वेखां आण, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। योद्धा सूरबीर बण बली बलवान, बलधारी वेस वटाईआ। ओथे शरअ होणी शैतान, शरीअत विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त मध दा लेखा जुग जुग आपणे हथ्थ रखाईआ।

❊ ८ चेत शहिनशाही सम्मत ५ नछत्र सिँघ दे गृह दुराहा ❊

सतिगुर शब्द अगम्मी नगारे लाई चोट, चोटी चढ़ के दो जहानां रिहा सुणाईआ। ख़बरदार करे ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल कोटी कोट, कोटन कोटि कोट उठाईआ। उठो वेखो पुरख अकाला निर्मल जोत, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरवैर निराकार अगम्मी जोत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार
१९८६ पैग़ग्बर जिस दी दस्सदे आए सोच, नाम कलमयां विच सिफ्त सालाहीआ। सो सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख १९८६
अबिनाशी सचखण्ड निवासी दरगाह साची माणे मौज, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। हुक्मे अंदर सब ने जाणा पहुंच, आवण
२१ जावण पतित पावन एका घर दए वड्याईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा खोल्हे लोक परलोक, पर्दा अवर रहे ना राईआ। २१
अवतार पैग़म्बरां फिर के चौदां तबकां चौदां लोक, निरगुण निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सांझा यार आपणा हुक्म इक वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे चोट लग्गे इक नगारा, नौबत हक़ नाम वजाईआ। दो जहानां करे ख़बरदारा, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। अवतार पैग़म्बर लओ हुलारा, आलस निंदरा देणी तजाईआ। प्रगट होए चौवीवां अवतारा, जोती जाता नूर अलाहीआ। जिस दा खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। आदि जुगादी बण सिक्दारा, हुक्म इक्को इक दृढ़ाईआ। जिस नूं सजदे करदे आए निमस्कारा, डंडावत बन्दना विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा इक्को इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे डंका वज्जे अगम्म अपार, अलख अगोचर आप सुणाईआ। सावधान होवो तेई अवतार, त्रैगुण अतीता आप सुणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र लोचण नैण लओ उघाड़, सदी चौधवीं बैठी पन्ध मुकाईआ। नानक गोबिन्द लाई इक जैकार, तूंही तूंही राग

अल्लाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गा गा गई हार, थकावट विच लोकाईआ। सृष्टी दृष्टी पावे कोई ना सार, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, कूड़ी क्रिया दए दुहाईआ। दीया बाती होए ना कोए उज्यार, काया बंक ना कोए वड्याईआ। जिधर तक्को काम क्रोध लोभ मोह हँकार, आसा मनसा मिल के वज्जे वधाईआ। अनादी धुन वज्जे ना कोए धुन्कार, अनहद नादी नाद ना कोए शनवाईआ। अमृत रस किसे मिले ना ठंडा ठार, कलयुग अगनी तत तपाईआ। जिधर वेखो धुआँधार, निरगुण नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे डंका वज्जे अगम्म अथाह, राउ रंकां दए जणाईआ। करे खेल बेपरवाह, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे निशां, निशाने पिछले दए चुकाईआ। सतिजुग साचा दए जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। नाम कलमा दए पढ़ा, सिख्या इक्को नूर अलाहीआ। सच दुआरा इक सुहा, सोभावन्त दए वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन बहा के इक थाँ, थानंतर देवणहार वड्याईआ। हँस बुद्धी बणाए काँ, काग हँस रूप बदलाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच देवे ठंडी छाँ, अगनी तत ना लागे राईआ। अन्तिम करे सच निआं, अदल इन्साफ़ आप कमाईआ। लेखा जाणे दो जहां, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं करनी ख़बरदारी, निरगुण सरगुण दयां द्रिढ़ाईआ। चार कुण्ट दह दिशा सृष्टी दृष्टी होए उज्यारी, इष्टी इक्को सोभा पाईआ। महल अटल उच्च मनारी, दरगाह साची गृह देणा सुहाईआ। जिथ्थे जगे जोत निरँकारी, नूर ज़हूर आपणा आप प्रगटाईआ। कलयुग अन्त अन्त ओसे दी वारी, वारता पिछली वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर जिस दी करदे इंतज़ारी, बिन नैणां नैण उठाईआ। प्रगट होए योद्धा सूरबीर वड बलकारी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार आपणा नूर नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर एकँकार इक इकल्ला आपणी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा साहिब सुल्ताना, पुरख अकाला इक अख्वाईआ। योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, एकँकारा वड वड्याईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बरां जुग चौकड़ी देवे दाना, नाम कलमा झोली पाईआ। सो अन्त श्री भगवन्त निरगुण नूर जोती पहन के जामा, शब्दी शब्द धार प्रगटाईआ। जिस दा वज्जणा इक दमामा, दीन दुनी दए हिलाईआ। धर्म झुलाए सच निशाना, नव नौ चार वज्जे वधाईआ। लख चुरासी आत्म दा बण के काहना, सुरती सब दी लए प्रनाईआ। जंगल जूह साढे तिन्न हथ्थ बीआबान वेखे रामा, सीता सवाणी रंग रंगाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद देवणहारा

कलामा, कलमा हक़ीक़ी इक जणाईआ। नानक गोबिन्द जिस दा देण पैग़ामा, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे कर पढ़ाईआ। सो ख़ालक ख़लक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि जुगादी खेले खेल विच जहाना, जहालत दीन दुनी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक्को इक प्रगटाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल होणा अनोखा, वखरी धार समझाईआ। किसे नाल नहीं करना धोखा, सदी चौधवीं अन्त हुक्म वरताईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बरां भविख्त जणाया पोथा, पुस्तक सब दी वेख वखाईआ। निरगुण नूर प्रकाश कर के जोता, जोती जाता हो के वेख वखाईआ। कलयुग जीव कोई मारया ना जाए बेदोषा, घट घट अन्तर निरंतर हो के पर्दा दए उठाईआ। अक़ल बुद्धी दी चलणी नहीं किसे सोचा, समझ वाली ना कोए चतुराईआ। झगड़ा पैणा चार कुण्ट दह दिशा चौदां लोका, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा इक्को अन्त अख़ीर होवे मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा खेल सब तों निराला, निरवैर निराकार निरँकार रिहा कराईआ। वेखणहारा दीन दयाला, दयानिध ठाकर स्वामी बेपरवाहीआ। जिस दे हुक्म अंदर काल महाकाला, दिवस रैण भज्जण वाहो दाहीआ। उह वेखणहारा दो जहानां सच्ची धर्मसाला, दर दवारे फोल फुलाईआ। जां तक्कया चारों कुण्ट बेहाला, बिहबल हो के रोवे सर्ब लोकाईआ। किसे तन वजूद माटी ख़ाक निरगुण दीया जोती जोत ना बाला, बाली बुध्ध ना कोए वड्याईआ। बजर कपाटी लग्गा ताला, तुरिया तों परे जलवा नूर ना कोए रुशनाईआ। प्रभ खेल वेखदा हाला, माज़ी झगड़ा रिहा गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त निरगुण सरगुण सब दा हल्ल करे सवाला, सवाली ख़ाली दर रहिण कोए ना पाईआ।

❊ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ गज्जण सिँघ दे गृह पिंड दुराहा ❊

दस चेत कहे शब्दी धार गोबिन्द दस्म, दस्म दुआर तों परे दए वड्याईआ। जिस ने पुरख अकाल नाल मिल के ख़ाधी क़सम, सुगंध आपणे नाल पुआईआ। आदि जुगादी मन्नणा इक्को ख़सम, दूजा कन्त ना कोए हंढाईआ। जिस दा लहिणा देणा तन वजूद ज़मीर जिस्म, तत वेखे थाउँ थाईंआ। सो कलयुग अन्तिम सतिजुग चलाए आपणी रसम, राह इक्को इक दृढ़ाईआ। मरन तों बाद कम्म ना आवे भस्म, हाडी रंग ना कोए रंगाईआ। जींवदयां गुरमुख सतिगुर संग

वसण, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। सतिजुग धार मार्ग आया दस्सण, दह दिशा पर्दा लाहीआ। भगतां अन्तर आया वसण, निरगुण हो के सोभा पाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्खण, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। पर्दा लाह के आपणे वतन, बेवतनां दए समझाईआ। बिना सतिगुरु तों किसे कम्म ना आवे कीता यतन, यथार्थ रंग ना कोए रंगाईआ। दीन दुनी दे भाण्डे वेखो सक्खण, वस्त नाम ना कोए भराईआ। जन भगतो चुरासी विच्चों थोड़े तुसीं वरोले मक्खण, परम पुरख आपणी दया कमाईआ। अन्तिम पुज्जणा ओसे पत्तन, जिथ्थे खेवट खेटा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। दस चेत कहे मैं दस्सण आया हाल, हालत सब दी दयां जणाईआ। इक्को मन्नणा पुरख अकाल, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। बाकी सब ते आए ज़वाल, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। झगड़ा मुकणा काया माटी खाल, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। निरगुण नूर दीपक जोती देवे बाल, बाल अञ्याणे लए उठाईआ। पूरब जन्म दी लेखे लावे घाल, जो जुग चौकड़ी नाम सेव कमाईआ। मेहरवान हो के महबूब करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग विच सतिजुग बदल के चाल, रस्ता इक्को रिहा समझाईआ।
१९८९ जिधर वेखो अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर चले नाल, विछोड़ा विच ना कोए बणाईआ। सदी चौधवीं करे अन्त संभाल, सम्बल १९८९
२१ बैठा सोभा पाईआ। जिस दा गुर अवतार पैग़म्बर दे के गए अहिवाल, भविख्तां विच गवाहीआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी २१
पुज्जआ आण, अनक कलधारी आपणी कल धराईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुर गुर लभ्भे आण, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साचा दे के इक ज्ञान, ब्रह्म विद्या दिती पढ़ाईआ। झगड़ा छडणा दीन मज़हब हिन्दू सिख ईसाई मुस्लमान, मुसलसल इक्को घर जणाईआ। जिथ्थे वस्से शाह सुल्तान, निरगुण निरवैर सोभा पाईआ। जोती धार तक्को महान, महिमा अकथ अकथ सुणाईआ। जिस दवारे मिले आण, ममता मोह विकार हँकार लेखा रहे ना राईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक एकँकार श्री भगवान, परवरदिगार नूर अलाहीआ। जगत बुद्धी विच करे ना कोए पहचान, नेत्र नैणां दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक समझाईआ। दस चेत कहे मैं दह दिशा वेख्या तक, तकवा इक रखाईआ। हक़ीक़त मिले ना कितों हक़, लाशरीक पर्दा ना कोए उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गए थक्क, खाणी बाणी दए दुहाईआ। धर्म रिहा मात ना सच, संजम वंड ना कोए वंडाईआ। अगनी लग्गी काया माटी कच, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। अमृत नाम मिले ना रस, अनरस हथ्थ किसे ना आईआ। सृष्टी दृष्टी मन कल्पणा अंदर रही नस्स, भज्जे वाहो दाहीआ। आत्म परमात्म मिल के गावे कोई ना जस, वेद पुराणां पढ़ पढ़ आपणा

झट लँघाईआ। साचा मार्ग दीन दुनी गई छड, पगडंडी चल के बणे पाँधी राहीआ। सच मंज़ल दी मुक्की किसे ना हद्द, महबूब मिल के दरस कोए ना पाईआ। जिधर वेखां सारे होए अलग, साचा संग ना कोए बणाईआ। कलयुग जीव बणे कग्ग, हँस रूप ना कोए वटाईआ। साची सुणे कोए ना सद, छन्द कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक सुहाईआ। दस चेत कहे मैं सब नूं दस्सदा, दह दिशा ध्यान लगाईआ। जन भगतो नज़ारा तक्को आपणी अक्ख दा, निज नेत्र नूर होवे रुशनाईआ। ढोला गावो आत्म परमात्म प्रभू दे जस दा, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। जो एथे ओथे दो जहानां पैज रखदा, पंच दा मालक परपंच दए गवाईआ। हर घट अंदर नूरी धार हो के वसदा, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। झगड़ा मुकाए उबलण वाली रत्त दा, अगनी तत ना कोए तपाईआ। नित नवित्त जन भगत सुहेले सद्दा, शब्द संदेसा इक सुणाईआ। लहिणा देणा देवे हक़ीक़त हक़ दा, हाकम हो के झोली पाईआ। भाण्डा भरम भन्न दयो शक्क दा, शिकवा शकूक रहे ना राईआ। वेख्यो खेल पुरख समरथ दा, जो समां सब दा दए बदलाईआ। जेहड़ा तूं मेरा मैं तेरा नाम रटदा, रट्टा आवण जावण दए मुकाईआ। सो लाहा साचा खट्टदा, जिस दी क़ीमत ना कोए रखाईआ। दो जहानां मंज़ल टप्पदा, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ दबाईआ। सचखण्ड दुआर प्रभ जोती विच वसदा, जोती जोत जोत समाईआ। दस चेत कहे जन भगतो मैं वी दर्शन कर के रज्जदा, आपणी आसा पूर कराईआ। जलवा तक नूर अलाही रब्ब दा, मेरे अन्तर वज्जे वधाईआ। जो मालक दिसे सब दा, सही सलामत नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, झगड़ा मुकावे कलयुग कल्पना वाली हद्द दा, हदूद आपणी इक वखाईआ।

❊ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ जसवन्त कौर दे गृह दुराहा मंडी ❊

दस चेत कहे मैं दस्सां सच्ची दास्तान, दास दासी हो के सेव कमाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर दे के गए बिआन, रसना जिह्वा राग नाद ढोले गाईआ। जिस वेले कलयुग कूड़ी क्रिया वधी जहान, चार कुण्ट दह दिशा होए हल्काईआ। झगड़ा पए तत इन्सान, इन्सानीअत रहिण कोए ना पाईआ। सति धर्म ना दिसे निशान, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। कूड़ कुड़िआर होए प्रधान, भज्जे वाहो दाहीआ। शरअ दिसे शैतान, शरीअत करे लड़ाईआ। साबत रहे ना कोए ईमान, अमलां विच ना कोए लोकाईआ। दीन दुनी होए बेईमान, सति धर्म ना कोए रखाईआ। ओस वेले किरपा करे श्री भगवान, हरि करता

शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दस चेत कहे मैं पढ़ पढ़ वेखे जगत कतेब, अक्खर अक्खर फोल फुलाईआ। मेट सक्कया ना कोए दुनियां दा फ़रेब, माया ममता मोह विकार हँकार ना कोए गवाईआ। कूकदे वेखे चार वेद, सिमरत शास्त्र देण गवाहीआ। अगम्म अथाह खोल्या किसे ना भेद, अलख अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। सब ने आसा रखी उमेद, आमद विच राह तकाईआ। किरपा करे वड देवी देव, देव आत्मा दा मालक नूर अलाहीआ। जिस दी जुग चौकड़ी करदे रहे सेव, सेवक हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दस चेत कहे मैं दस्सां सच संदेसा, सदीआं दे विछड़यां दयां सुणाईआ। अन्त पुरख अकाल दे हथ्थ लेखा, लिखी तक़दीर ना कोए मिटाईआ। पार करे ना कोए मुल्ला शेख़ा, मुसायक पंडत ना कोए वड्याईआ। क़बूल होवे ना किसे आदेसा, सजदा सीस ना कोए वड्याईआ। नज़री आए कोई ना नेता, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। आत्म परमात्म करे कोई ना हेता, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। फिरे दरोही देस परदेसा, दो जहान रहे कुरलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरा होया ठेका, ठाकर स्वामी अन्तरजामी मिलण कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन सच धार दी समझे कोई ना भेंटा, माया ममता मोह विकार हल्काईआ। पुरख अकाला दीन दयाला एकँकार इक इकल्ला सदी चौधवीं सब दा खेवट खेटा, जगत मलाह बेपरवाह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त दा आपे जाणे लेखा, दूसर भेव ना किसे समझाईआ।

१९९१

२१

✻ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ गुरनाम कौर दे गृह दुराहा मंडी ✻

दस चेत कहे मैं वेख्या दह दिशा, बिन नेत्र नैणां अक्ख खुल्हाईआ। साची करे कोई ना किसे रच्छा, रच्छक नज़र कोए ना आईआ। नाम भण्डारा देवे कोई ना भिच्छा, भिखक ख़ाली झोली ना कोए भराईआ। मैं चार जुग दा लेख वेख्या लिखा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी फोल फुलाईआ। मैनूं निरअक्खर धार इक्को दिसा, जिस दी विद्या समझ किसे ना पाईआ। सतिगुर शब्द अगम्मी वंड के हिस्सा, दीन दुनी गया समझाईआ। हरिजन धर्म धार दे बण जाओ धुर दे सिखा, सिख्या सच इक दृढ़ाईआ। पाहन पूजणा ना पत्थर इट्टा, निरगुण नूर जोत तत कर

रुशनाईआ। जिस तेरी जीवण जगत धार दा सिट्टा, अन्त अख़ीर नज़री आईआ। कूड़ निशाना जाए मिटा, सति सच होवे रुशनाईआ। अमृत रस बरखे छिट्टा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। दस चेत कहे मैं दीन दुनी दे अंदर वड़या, लख चुरासी फोल फुलाईआ। मानव मानव पौड़े चढ़या, काया मन्दिर अंदर आपणा पन्ध मुकाईआ। भय भयानक विच निरंतर हो के डरया, भउ इक्को नज़री आईआ। जिन्हां ने परम पुरख दा नाम कदी नहीं पढ़या, पारब्रह्म नज़र कोए ना आईआ। त्रैगुण अगनी विच सड़या, सांतक सति ना कोए कराईआ। मैं ओस दवारे खड़या, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी आपणा भेव आप खुल्हाईआ। दस चेत कहे मैं दीन दुनी अंदर भज्जा, भजन बन्दगी वेख वखाईआ। सच सिँघासण मिल्या कोई ना सजा, सच स्वामी सोभा कोए ना पाईआ। दर्शन करे ना कोई उपर शाहरगा, शहिनशाह मिलण कोए ना आईआ। जिस दी समझा सके कोई ना वजह, वजूहात ना कोए दृढ़ाईआ। प्रभ दी चले कोई ना रज़ा, भाणे विच ना कोए समाईआ। साध सन्त करदे दग़ा, जगत फ़कीर कूड़ हल्काईआ। मन्दिर हक़ किसे ना लभ्भा, महबूब दरस कोए ना पाईआ। साचा नाद ना सुणे नदा, अनरागी राग ना कोए जणाईआ। पंच विकारा जगत बद्धा, काया काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। आत्म परमात्म देवे कोई ना सद्दा, सच संदेस ना कोए दृढ़ाईआ। क़बूल होए कदे ना हज्जा, काया काअबा भेव ना कोए खुल्हाईआ। भगती धार वधे किसे ना अग्गा, भगवन मिलण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। दस चेत कहे मैं दीन दुनियां खोजी, खोजत खोजत विच लोकाईआ। माया ममता कीते सारे रोगी, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। आत्म परमात्म बणे ना कोए संजोगी, धुर दा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। अन्तर वासना किसे ना सोधी, सुध बुध्ध ना कोए वखाईआ। मन मनसा होई कमली कोझी, दुरमति मैल नाल वड्याईआ। पारब्रह्म दी दिती किसे ना सोझी, समझ विच्चों समझ ना कोए बदलाईआ। सच दवारे दा दिस्सया कोए ना मौजी, मजलस प्रभ दे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। दस चेत कहे मेरे अन्तर आया दुःख, दुखी हो के दिती दुहाईआ। क्यों भरम भुलाए माणस मनुक्ख, माया ममता विच कुरलाईआ। आत्म मिले किसे ना सुख, कूड़ कल्पणा विच कुरलाईआ। उलटा मात गर्भ दा रुक्ख, नौ अठारां अगन तपाईआ। सजदा सीस करे कोई ना झुक, डंडावत बन्दना ना कोए वड्याईआ। सदी चौधवीं सारे गए रुठ, रुठ्ठयां फेर ना कोए मनाईआ। ख़ाली भाण्डे दिसे ठुठ्ठ, नाम वस्त ना कोए टिकाईआ। सब दी मेंढी खुल्ही गुत्त, कन्त सुहाग

ना कोए हंढुाईआ। मिल्या मेल ना अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती ना कोए जणाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी हर घट अंदर बैठा लुक, निज नेत्र दरस कोए ना पाईआ। कलयुग जीव अपराधी होए सुत, सति स्वामी सीस ना कोए निवाईआ। पंज तत पुतले दिसदे बुत, बुतखाने रहे कुरलाईआ। अन्तिम वेला रिहा ढुक, घड़ी पल दए गवाहीआ। पुरख अकाल ने बदलणा आपणा रुख़, रुख़सत गुर अवतारां दए कराईआ। पैग़म्बरां कोलों ल्या पुच्छ, सब दा लेखा दिता दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त लहिणा देणा सब दा रिहा मुक, मुकम्मल दिता सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर लख चुरासी जीव जंत नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानस ज़ाती पढ़नी इक्को तुक, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म परमात्म आत्म ढोला गाईआ।

❊ ६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ गुरनाम सिंघ दे गृह पिंड हरबंस पुरा ❊

दस चेत कहे भेंटा चढ़ गया लाची दाणा, पूरब जन्म दा लेख मुकाईआ। सब नूं देवे इक ज्ञाना, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाईआ। मानव मानव मानुश समझो ना कोए बेगाना, चारे वरनां एका रंग रंगाईआ। सब दा मालक श्री भगवाना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को वेखो महल अटल उच्च मकाना, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे दीपक जोत जगे महाना, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। तख़्त निवासी बैठा नौजवाना, सूरबीर सुल्तान सोभा पाईआ। आदि जुगादी मर्द मर्दाना, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं वेखे दो जहानां, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सति सरूपी पहर के बाणा, बाण अणयाला तीर चलाईआ। आत्म परमात्म दा बण के धुर दा काहना, लख चुरासी सखीआँ काहन प्रनाईआ। सति सतिवादी बण के अगम्मा रामा, सीता सुरती लए प्रनाईआ। मेहरवान महबूब बण अमामा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बर करन सलामा, डंडावत बन्दना सजदा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। लाची कहे मेरा वेखो छोटा रूप, निक्की निक्की नज़री आईआ। मेरा साहिब तक्को भूप, शहिनशाह बेपरवाहीआ। जो वस्से चारो कूट, दह दिशा रिहा समाईआ। कलयुग मेटे जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। भाग लगाए काया पंज तत भूत, मन्दिर मन्दिर इक सुहाईआ। कूड़ी क्रिया कराए कूच, मन कल्पणा बाहर कढ्ढाईआ। सच सुहञ्जणी करे रुत्त, नाम महक इक महकाईआ। लेखा जाणे अबिनाशी अचुत, चेतन सुरती दए कराईआ। जो जुग चौकड़ी रिहा लुक, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नज़र किसे ना आईआ। सो निरगुण धारों निराकार आपे उठ, निरवैर निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नाल चलाए शब्द अगम्मा दुलारा सुत, सति सतिवादी कार कमाईआ।

जिस दा लेखा कोई सके ना पुच्छ, अक़ल बुद्धी ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति दा मालक इक हो आईआ। दस चेत कहे लाची दा वेखो छिलका, बाहरों सोहणा नज़री आईआ। भेव पुच्छो इस दे दिल दा, दिलबर मेरा केहड़े थाईंआ। पर्दा लाहवे अगम्मी तिल दा, निज नेत्र कर रुशनाईआ। जिस गृह स्वामी मिलदा, ओह भेव दए खुल्हाईआ। झगड़ा रहे ना बजर कपाटी सिल दा, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग दए रंगाईआ। लाची कहे मैं चढ़ गई ओस दी भेंटा, मिले परम पुरख सरनाईआ। आदि जुगादी खेवट खेटा, दो जहानां नईआ नौका आपणे कंध उठाईआ। जिस दा शब्दी धार अगम्मा बेटा, जिस नूं जन्मे कोई ना माईआ। जुग चौकड़ी खोल्हे आपणा भेता, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जिस दा शास्त्र सिमरत वेद पुरान अञ्जील क़ुरान समझ सके कोई ना लेखा, खाणी बाणी कहिण किछ ना पाईआ। ओह वसणहारा सचखण्ड साचे देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्त अख़ीर बेनज़ीर अवतार पैग़म्बरां पूरा करे ठेका, पटेदारी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। लाची कहे मैं आ गई विच काग़ज़, निउँ के सीस झुकाईआ। जन भगतो बणो इक प्रभू दे आजज़, जो आदि जुगादि सोभा पाईआ। मन कल्पणा करयो कोई ना साज़श, कूड़ी क्रिया ना कोए चतुराईआ। कलयुग विच्चों बदल लवो आपणी आदत, माया ममता मोह मिटाईआ। पुरख अकाल दी करो इबादत, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। सदा रखे सही सलामत, जन्म मरन दा पन्ध मुकाईआ। चुरासी वाली ना रहे अलामत, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। नाम निधाना दए निआमत, वस्त अमोलक आप वरताईआ। लेखा जाणे सर्ब अणजाणत, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। लाची कहे मैनूं बध्धा विच पुड़ी, सोहणा लपेट लगाईआ। मैं रो पई किते बण ना जावां निगुरी, पर्दे विच दरस कोए ना पाईआ । जां मैं नेत्र खोल्ह के तक्कया भगतां दी प्रीती जुड़ी, गुरमुख ध्यान लगाईआ। मैं छड दिती सुखां वाली पुरी, पूरन ब्रह्म विच समाईआ। सहजे सहजे बिन क़दमा तों तुरी, तुरिया तों अग्गे वेख वखाईआ। जिथ्थे दीन मज़हब दी नहीं कोई छुरी, शरीअत करे ना कोए लड़ाईआ। मैं शौह दरया जगत ना रुढ़ी, वहिणां विच ना कोए वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। लाची कहे मेरी नमों नमों निमस्कार, नमस्ते सीस निवाईआ। मैनूं याद आ गया वशिष्ट राम दा आधार, त्रेता दए गवाहीआ। मैनूं विचार आ गया अर्जन कृष्ण दा उधार, सन्मुख रख के खुशी मनाईआ। मैनूं ख्याल आ गया

लाची कहे नानक ने लहिणे नूं दिती खवाल, आपणा हथ्थ वधाईआ। मैनूं ध्यान आ गया गुर अर्जन ने फल लगाया धर्म दे डाल, पत्त टहिणी मात लहराईआ। मैनूं ज्ञान गोबिन्द ने दिता दान, पंजां प्यारयां हथ्थ फड़ाईआ। लाची कहे मैं आदि तों दर ते हुंदी आई परवान, परवाना प्रभ दा नाल समझाईआ। मैं नढ्ढी बाल अञ्याण, बुद्धी वाली ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। लाची कहे मेरे हो गए वड्डे करम, निहकरमी दए वड्याईआ। जन भगतो तुसीं सारे कढ्ढ दयो आपणा भरम, भाण्डा भय भउ भन्नाईआ। मेरा तुहाडे नाल सतिगुर दे घर होया जरम, जन्म पिछला दिता तजाईआ। मैनूं क़बूल होया मरन, मर जीवत रूप वटाईआ। मैं पहुंची ओस दी सरन, जो सरनागत इक जणाईआ। जिस दे धरनी चुम्मे चरण, चरणोदक लै के खुशी बणाईआ। जिस ने खोल्हया मेरा हरन फरन, निज नैण दिता दृढ़ाईआ। मैं मंज़ल लग्गी चढ़न, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला लग्गी पढ़न, धुर दा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। लाची कहे मेरी जन्म जन्म दी भगती होई क़बूल, मेहरवान दिती वड्याईआ। जन भगतो मैं समझया इक असूल, असलीअत मेरे अग्गे आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला जुग जन्म दे विछड़यां कदे ना जावे भूल, अनभुल दया कमाईआ। जिस दा हुक्म सदा माक़ूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सारे लहिणा देणा आपणा करयो वसूल, बाकी रहिण कोए ना पाईआ। चरण चरणोदक धर्म दी धार लाइओ धूल, धूढ़ दी लोड़ रहे ना राईआ। तुसीं आदि दी आत्मा आदि दा मूल, दूजा अवर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। लाची कहे मेरे अन्तर आई खुशी, खुशहाली विच जणाईआ। मेरी प्रेम विच लग्गी रुची, रचना तक्की बेपरवाहीआ। मैं मंज़ल चढ़ गई उच्ची, बिन क़दमां पन्ध मुकाईआ। सच दवारे हो गई सुच्ची, दुरमति मैल धवाईआ। जगत विकार ना गई लुट्टी, हउमे गढ़ ना कोए बणाईआ। सावधान हो के उठी, सतिगुर शब्द दिती अंगड़ाईआ। जन भगतो तुहाडी सुहञ्जणी वेख के रुत्ती, रुतड़ी प्रभ दे नाल महकाईआ। एह रमज़ नहीं रहिणी गुज्झी, सब नूं दयां समझाईआ। वेख्यो धार रखयो कोई ना दूजी, दुतिया भाओ ना कोए बणाईआ। तुहाडी आत्मा परमात्मा प्यार विच रहे रुझी, दिवस रैण एका लिव लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक नूर खुदाईआ। लाची कहे मैं वेख्या ख़ालक ख़लक, मख़लूक दा मालक नज़री आईआ। मैं तक्कया बिना पलक, नेत्र नैण इशारा ना कोए दृढ़ाईआ। नूर होया प्रकाश वाला उत्ते फ़लक, ज़हूर दिता दृढ़ाईआ। मैं निगाह मारी उत्ते धरत, धरनी धवल धौल खोज खुजाईआ।

पुरख अकाला दीन दयाला गुर अवतार पैग़म्बरां दी पूरी कर रिहा शर्त, कौल इक़रार पिछले वेख वखाईआ। निरगुण धार निरवैर निराकार निरँकार आया परत, पतिपरमेश्वर आपणा वेस वटाईआ। भाग लगा के माटी ख़ाक उत्ते फ़र्श, अर्श दा लेखा रिहा जणाईआ। लाची कहे मैं बिन अक्खां तों कीता दरस, बिन नैण जोत रुशनाईआ। मेरी जन्म जन्म दी मिट गई हरस, अग्गे हवस रही ना राईआ। अमृत मेघ अगम्मा दिता बरस, मेरी तृष्ना रिहा बुझाईआ। मन्ज़ूर कीती अर्ज़, बेनन्ती जुग जुग लेखे लाईआ। धुर दा नाम जणाया बिना संसारी तरज़, अनरागी राग दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दरगाह साची दए वड्याईआ। लाची कहे मेरा अन्त अख़ीरी सजदा, साहिब तेरी सरनाईआ। जन भगत सुहेला तेरा बरदा, बन्दीख़ाना देणा तुड़ाईआ। कलयुग कूड़ अन्धेरा बणया गरदा, साचा नूर कर रुशनाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडणीआं दर्दां, दुखियां होणा सहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां सुण के अर्ज़ां, आरज़ू सब दी लेखे लाईआ। भेव खुल्हाउणा योद्धे सूरबीर मर्दाने मर्दां, पर्दा अंदरों देणा उठाईआ। जगत शरअ कसाई चुक्की फिरदी करदां, क़तलगाह दीन दुनी दरसाईआ। सब दीआं फोल पिछलीआं कढ्ढ के फ़रदां, सतिजुग त्रेता द्वापर बच्या रहिण कोए ना पाईआ। एह खेल अगम्मा बिन माटी चम्मा बिन पवण स्वास दमां तेरे घर दा, गृह मन्दिर गृह गृह खोज खुजाईआ। तेरा रूप अनूप सति सरूप नरायण नर दा, नर हरि तेरी वड वड्याईआ। झगड़ा मेट कूड़ कुड़िआर कलयुग कल दा, कलकाती रहिण कोए ना पाईआ। प्रकाश होवे तेरे अगम्मी बल दा, जोती जाते पुरख बिधाते आपणा रंग देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट घट दया कमाईआ। लाची कहे मैं तक्कया धुर दा मीता, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जिस दी आदि जुगादि इक्को रीता, जन भगतां होए सहाईआ। वखाए घर सदा अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। अमृत रस देवे ठांडा सीता, ततव तत ना कोए जलाईआ। जन भगतां वस्से चीता, मन चित ठगोरी रहे ना राईआ। लख चुरासी परखणहारा नीता, घट घट वेखे थाउँ थाईंआ। जो साची दस्से हदीसा, हज़रतां करे पढ़ाईआ। लहिणा देणा पूरा कर के बीस इक्कीसा, लेखे सब दे रिहा चुकाईआ। एका छत्र झुलाए धुरदरगाही सीसा, राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक रुलाईआ। लाची कहे प्रभू दा भाणा सदा सद मीठा, जन भगतो मन्नणा चाँईं चाँईंआ। जिस ने गोबिन्द दा फोलण नहीं दिता अंगीठा, लाची रख के चन्दन विच समाईआ। जिस दी शब्द धार दा कोई कर ना सक्कया टीका, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। लाची कहे मैं सदके वारी घोली, घोली घोल घुमाईआ। मैं टक्यां

नाल जगत विच तोली, क़ीमत हट्टां विच पवाईआ। जिस वेले जन भगतो मैं तुहाडी सुणी बोली, अगम्मी राग अल्हाईआ। मेरे अन्तर अन्तर मौली, मौला दिती वड्याईआ। मैनूं माण होया उत्ते धौली, धर्म दी धार जणाईआ। मेरा लहिणा चुकणा हौली हौली, लेखा अवर रिहा ना राईआ। मैं काहली नहीं पई तौली, सहज सहज आपणा झट लँघाईआ। जन भगतो एह सृष्टी जगत जहान दी चार दिन परौहुणी, दृष्टी रहिण कोए ना पाईआ। बड़ी मुश्किल होणी जगत दी हाढ़ी ते सौणी, हाढ़ा कढुके दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस ने अगम्मी खेल रचाउणी, ख़लक दे ख़ालक हो के आपणी कल वरताईआ।

✻ १० चेत शहिनशाही सम्मत ५ किरपाल सिँघ दे गृह पिंड हरबंस पुरा ✻

लाची कहे मैनूं सब तों पहिलों भोग लगाया बावन, बलि दवारे मिली वड्याईआ। मेरी रुतड़ी सुहाई महीना सावण, सोहणा रंग रंगाईआ। पकड़ के मेरा दामन, पल्लू ल्या बंधाईआ। मैं हस्स के किहा सदा रहीं मेरा ज़ामन, जुम्मेंवार बणाईआ। उस ने किहा तेरा लेखा बहुता दिसे नाल रावण, लंका गढ़ जणाईआ। फेर झगड़ा वेखणा क्षत्री ब्राह्मण, परसराम अक्ख
११९७ २१ खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। लाची ११९७ २१
कहे मैनूं लग्गण लग्गा भोग, बलि दवारे हत्थ उठाईआ। मैं हस्स के किहा पहिलों आपणे नाल कर संजोग, मेला लै मिलाईआ। प्रेम दी बणा चोग, दे माण वड्याईआ। मेरे अन्तर रहे ना रोग, हंगता देणी मिटाईआ। मेरा माण होवे विच लोक, मात सोभा पाईआ। बावन किहा एह मूल ना सोच, समझ ना कोए वड्याईआ। तेरी मनसा पूरी होवे लोच, लोचण लै खुल्हाईआ। जिस वेले कल प्रगट होवे अगम्मी जोत, जोती जाता दया कमाईआ। तेरा लहिणा देणा पूरा करे बहुत, बहु वेसी आपणी कार कमाईआ। तेरी कदी ना होवे मौत, मलकुलमौत तों लए बचाईआ। तूं कदी नहीं होणा फ़ौत, जुग जुग मिले वड्याईआ। ज़रा आपणी कर लैणी होश, हुशियारी नाल दृढ़ाईआ। तूं रही ना आप ख़ामोश, बेनन्ती देणी सुणाईआ। तेरी भगतां नाल बणावे गोत, गोतम दा लेखा याद कराईआ। बुद्धी दा दे के बोध, ज्ञान विच दृढ़ाईआ। तेरा अन्तर बाहर सोध, शुद्ध पवित्र आप कराईआ। सच दवारे देवे मौज, गुरमुखां नाल रलाईआ। तेरा पूरा होवे जोग, जुगीशरां नाल दए वड्याईआ। तेरे आत्म दा रस गुरमुखां देवे भोग, भगती जुगती आपणी इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। लाची कहे मैनूं बलि ने लाया नाल दन्द, बावन दिता फड़ाईआ।

मैं प्रकाश वेख्या नूरी चन्द, अगम्म होई रुशनाईआ। खुशी आई बन्द बन्द, बन्दना कर के सीस निवाईआ। साहिब मेरे बख़्शंद, तेरी बेपरवाहीआ। सच चाढ़ दे रंग, रंगत इक बणाईआ। हस्स के किहा सूरे सरबंग, सहज दिता समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जाण दे लँघ, अन्तिम वेखां चाँईं चाँईंआ। सच सिँघासण बैठ पलँघ, सोभावन्त थान इक्को इक सुहाईआ। तेरी आसा मनसा पूरी कर के मँग, मांगत ख़ाली रहिण कोए ना पाईआ। लहिणा मुका के गंगा गुदावरी जमना सुरस्ती गंग, अमृत रस पूर कराईआ। फिर तेरा बख़्शे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। भगतां नाल बणा के संग, सोहणा साथ वखाईआ। तूं सुणना सोहँ छन्द, आत्म परमात्म मिल के वज्जे वधाईआ। जन भगतां तों तरीका सिक्खणा ढंग, किस बिध मिले शहिनशाहीआ। झगड़ा करना पए कोई ना जंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दवारे दए दृढ़ाईआ। लाची कहे बलि ने दन्दां नाल पीसा, दाहड़ां हेठ दबाईआ। मैनूं याद आया जगदीशा, की तेरी बेपरवाहीआ। उस ने नूर चमकाया सीसा, जोत कीती रुशनाईआ। ओह वेख बीस बीसा, कलयुग अन्त पर्दा रिहा उठाईआ। करे खेल साहिब जगजीता, जगजीवण दाता वेस वटाईआ। जिस ने कलयुग बदल देणी रीता, सतिजुग आपणा राह प्रगटाईआ। जन भगतां बण के मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। साचा नाम दए हदीसा, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ।

१९९८

२१

तेरा वेख के जीवण नीकण नीका, निक्यों वड्डा दए बणाईआ। अजे तेरा सगन होणा, बावन किहा नाल राम सीता, धनुश दी धार तेरे प्यार विच्चों नज़री आईआ। अजे तेरा लेख होणा जिस वेले कृष्ण अर्जन सुणाउणी गीता, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक वेख वखाईआ। लाची कहे जिस वेले बलि ने ल्या रस, मैनूं रस्ता अंदरों नज़री आईआ। मैं खुशीआं नाल पई हस्स, हस्ती वेखी बेपरवाहीआ। रो के दिता दस्स, कूक कूक सुणाईआ। प्रभू मैं तेरा किस बिध गावां जस, मेरा तन वजूद दिता मिटाईआ। श्री भगवान तक्कया बिना अक्ख, मेहर नज़र टिकाईआ। आपणी क़ीमत कोई ना रख कौडी कक्ख, माण अभिमान देणा मिटाईआ। तूं विक जा सच प्रेम दे हट्ट, क़ीमत आपणी आपे पाईआ। भेव अभेदा खोल्हां सच, सच दयां जणाईआ। तूं लूं लूं अंदर जाणा रच, रचना वेखणी मेरी धुरदरगाहीआ। कलयुग अन्तिम होवां प्रगट, निरगुण नूर जोत करां रुशनाईआ। तेरा लहिणा देणा मुकावां हथ्थो हथ्थ, हथ्थ हथेली उत्ते टिकाईआ। मेहर करां हो मेहरवान पुरख समरथ, महबूब हो के आपणी मुहब्बत विच रंगाईआ। जन भगतां नाल मिल के जाणा वस, वसल इक्को मिले यार खुदाईआ। तेरा लहिणा पूरा करां हक़, हक़ीक़त विच्चों झोली पाईआ। तूं सच दवारे आउणा नठ, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। लाची कहे जिस मैनूं ल्यांदा एह बलि दवारे दा नफ़र, पंजां तत्तां वाला नज़री आईआ। क़दमां चल के आया सफ़र, हिरदे विच ध्यान लगाईआ। अन्तिम मर के फेर ओढ़ना ना पए कफ़न, जन्म जन्म ना फेर बदलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दी पैज आया रखण, पूरब लहिणे झोली पाईआ। भगतां नाल जन भगत मिल के वसण, एह मेरे मन वड्याईआ। लाची कहे जन भगत सुहेले, मैं चौहन्दी जुग जुग मैनूं चक्खण, रस आपणे नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा करे सर्ब कला समथण, समरथ आपणी दया कमाईआ।

✻ १० चेत शहिनशाही सम्मत ५ सरदारा सिँघ दे गृह पिंड राउणी ✻

धरनी कहे गुर अवतार पैग़म्बर पा के गए फेरा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। नाम संदेसा धुर दा कलमा दस्स के गए चंगेरा, चार कुण्ट दह दिशा जगत कर पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी हुन्दयां चार कुण्ट होया अन्धेरा, सदी चौधवीं साचा चन्द नूर ना कोए चमकाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार नौ खण्ड पृथ्मी देवे गेड़ा, दीप सत्त ब्रह्म मति ना कोए समझाईआ । काया माटी साढे तिंन हथ्थ शरीर वस्से कोई ना खेड़ा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे गुर अवतार पैग़म्बरां दीन विच दुनी कीता खेल निराला, निराकार निरँकार दिता दृढ़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ बणाए नाउँ धराए धर्मसाला, धर्म दी धार जगत जुगत बणाईआ। आत्म ब्रह्म मिल्या किसे ना सच ज्ञाना, ब्रह्म मेला घर ना कोए मिलाईआ। सदी चौधवीं चार कुण्ट दह दिशा शरअ दिसे शैताना, दीन मज़हब ज़ात पात करे लड़ाईआ। नेत्र लोचण नैण नज़र ना आए किसे श्री भगवाना, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया जूठ झूठ चार वरन अठारां बरन होवे प्रधाना, माया ममता मोह विकार हँकार डेरा कोए ना ढाहीआ। सच अदालत करे ना कोए शाह सुल्ताना, सच स्वामी अन्तरजामी पुरख अबिनाशी सोभा कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दह दिशा नव सत्त दिसे वैराना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। धरनी कहे मेरे साहिब सतिगुर पुरख अकाले, दर तेरे सीस निवाईआ। कलयुग अन्तिम साची सुरत ना कोए संभाले, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग जीव अन्तर होए स्याह काले, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोई कर

११९९ २१

के घाले, जोती जाते तेरा दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरी आसा इक रखाईआ। धरनी कहे चार कुण्ट दिसे अन्धेरा, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। धर्म दी धार दिसे कोई ना खेड़ा, काया बंक ना कोए वड्याईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई प्या झेड़ा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश करे लड़ाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म नज़र ना आवे नेरन नेरा, गृह मन्दिर अंदर परदा ना कोए उठाईआ। फिरी दरोही गुरु गुर चेला, मुरीद मुर्शद रहे कुरलाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर परम पुरख तेरा मेला, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। धरनी कहे मैं नेत्र रो के कहिंदी, नैणां नीर वहाईआ। सच दुआर तेरी दीन दुनी ना बैहन्दी, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां कला होई ढहिन्दी, सच निशान ना कोए वखाईआ। मैं निगाह मारी दिशा लहिंदी, मुहम्मद ईसा करे लड़ाईआ। कूड़ी धार वहिण विच वहिंदी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते लग्गण वाली मैहन्दी, रंग आपणा लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरी उडण वाली ख़ाक, चारों कुण्ट दुहाईआ। रूह बुत दिसे कोए ना पाक, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। बजर कपाटी खुल्ले किसे ना ताक, निज नेत्र तेरा दरस कोए ना पाईआ। कलयुग नाता टुट्टण वाला साथ, अन्त अख़ीर दए दुहाईआ। चार वरनां पुच्छे कोई ना वात, वातावरन बदले सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल वेख अन्धेरी रात, कलयुग रैण अन्धेरा छाईआ। धरनी कहे चार कुण्ट उडणी धूढ़, धूढ़ी टिक्का मस्तक ख़ाक ना कोए रमाईआ। प्रभू तेरी सृष्टी दृष्टी विच्चों होई मूढ़, इष्टी रंग ना कोए रंगाईआ। साचा चमके ना कोए नूर, अन्ध अन्धेरे विच दुहाईआ। दीन मज़हबां पाया फ़तूर, कलमा नाम करे लड़ाईआ। गढ़ हँकार बणया ग़रूर, गुरबत सके ना कोए कढ्ढाईआ। त्रैगुण तपे तन्दूर, पंज तत अगनी रिहा डाहीआ। चार वरन अठारां बरन सच दर ना कोए मन्ज़ूर, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। दर्शन पाए ना कोए हज़ूर, हज़रत सारे देण गवाहीआ। अन्तिम नाता तोड़ दे कूड़ो कूड़, कलयुग कल्पणा दे खपाईआ। किरपा कर साहिब ज़रूर, धरनी धरत धवल सीस निवाईआ। तेरी आसा रख के गए गुर अवतार पैग़म्बर तेरे मज़दूर, चाकर जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं थक्की मांदी, सच दयां सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चले आंधी, सति प्रकाश ना कोए वखाईआ। तेरा ढोला रसना कोए ना गांदी, आत्म ब्रह्म ना कोए वड्याईआ। मंज़ल चढ़े कोए ना पाँधी, साध

सन्त रहे कुरलाईआ। झगड़ा प्या सोना चांदी, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। तेरे दवारे दी दिसे कोई ना बांदी, बन्दना सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे जन भगतां दे सहारा, सच मिले सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर किनारा, सतिजुग साचा सच प्रगटाईआ। तेरे नाम दा होवे इक जैकारा, चार वरन ध्याईआ। इक्को इष्ट होवे संसारा, दीन दुनी सीस निवाईआ। इक्को गृह मन्दिर होवे दुआरा, दर इक्को वज्जे वधाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बरां दिता इशारा, सो अन्तिम पूरा दे कराईआ। तैनूं कहिंदे कल कल्की अवतारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। एका वखा सच्चा दरबारा, दरगाहि साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, कूड़ कल्पणा दे गवाईआ। धरनी कहे प्रभू साचा मेल कर गुरमुख साचे सन्त, हरि सज्जण दे मिलाईआ। कूड़ी क्रिया माया मेट बेअन्त, अन्तश्करन कर सफ़ाईआ। गढ़ तोड़ दे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, दीन दुनी दे समझाईआ। तेरा कोई ना होवे निन्दक, रसना जिह्वा सारे सिफ्त सालाहीआ। मैं निमाणी हो के करां मिन्नत, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सतिजुग साचे दे हिम्मत, मेरे उत्ते लै अंगड़ाईआ। इक्को रंग रंगा दे चारे सिम्मत, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वंड ना कोए वंडाईआ। मन कल्पणा करे कोई ना इल्लत, शरअ शरीअत डेरा ढाहीआ। सब दी सांझी होवे मिल्लत, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत खुआरी मेट ज़िल्लत, ज़ाहर ज़हूर आपणी दया कमाईआ।

✻ १० चेत शहिनशाही सम्मत ५ आसा सिँघ दे गृह पिंड कलसाणी ज़िला करनाल ✻

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ तेरी कितनी उस्तत, जुग चौकड़ी महिमा सिफ्त सालाहीआ। तेरे नाम संदेसे लिखी अक्खरां वाली पुस्तक, काग़ज़ क़लम शाही जोड़ जुड़ाईआ। तूं साहिब स्वामी आदि जुगादी सब दा मुर्शद, मुरीद हो के दीद तेरा दर्शन पाईआ। सरगुण निरगुण तेरी कर के आए उल्फ़त, आलमीन तेरी महिमा अलख अगम्म अथाहीआ। सदी चौधवीं सानूं सब नूं दे फ़ुरसत, दीन दुनी दा नाता दे तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण श्री भगवन्त, प्रभ तेरी इक वड्याईआ। हउँ दर

१२०२
२१

ठांडे तेरे सारे मँगत, दरवेश हो के झोली डाहीआ। पुरख अकाले दीन दयाले मन्न मिन्नत, मेहरवान महबूब आपणी दया कमाईआ। असीं झगड़ा तक्कया चारे सिम्मत, दह दिशा पई दुहाईआ। साडी रही कोई ना हिम्मत, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मन मनुआ करे इल्लत, बुद्धी बिबेक ना कोए वखाईआ। चार वरन अठारां बरन होए निन्दक, नौ खण्ड पृथमी पई दुहाईआ। आत्म परमात्म रही कोई ना मिल्लत, पारब्रह्म ब्रह्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। साडे अन्तर निरंतर आई चिन्त, चिन्ता दूर ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण श्री भगवान, प्रभ तेरी इक सरनाईआ। किरपा कर मर्द मर्दान, दर तेरे अलख जगाईआ। तूं आदि जुगादी नौजवान, सूरबीर बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया शरअ मेट शैतान, छुरी करद हथ्थ फड़े ना कोए कसाईआ। झगड़ा प्या शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी रही कुरलाईआ। आत्म परमात्म मिले ना किसे ज्ञान, निज नेत्र नर नरायण तेरा दरस कोए ना पाईआ। शब्द नाद सुणे ना कोए धुनकान, आत्मक राग वज्जे ना कोए वधाईआ। अमृत रस मिले ना पीण खाण, जगत तृष्ना तृखा ना कोए बुझाईआ। चारों कुण्ट फिरे शैतान, दरोही तेरा नाम दुहाईआ। किरपा कर मेरे मेहरवान, महिबान बीदो बीखैरया अल्लाह तेरी ओट तकाईआ। तूं रहमत विच रहमान, हउँ बालक तेरे नादान, गुणवन्ते तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट निवासी तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण परम पुरख सुल्ताने, सचखण्ड निवासी तेरे हथ्थ वड्याईआ । असीं दे के आए जुग चौकड़ी तेरे अगम्म फ़रमाने, फ़ुरनिआं तों बाहर करी पढ़ाईआ। अन्तिम खेल वेख ज़िमीं असमाने, चौदां तबक देण दुहाईआ। सति धर्म रिहा ना कोए निशाने, कूड़ कुटम्ब दिसे लोकाईआ। तेरे तेरे नालों होए बेगाने, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। माया ममता मोह विकार हँकार लग्गे याराने, वसल यार तेरा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा अवर ना कोए सहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे मालक ख़ालक, तेरी इक सरनाईआ। एथे ओथे हो प्रितपालक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर दिसे ना कोए सालस, हक़ हक़ीक़त पर्दा ना कोए उठाईआ। चार वरन अठारां बरन कर ख़ालस, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। हउँ तेरे नढ्ढे नन्हे बच्चे बालक, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दीन मज़हब दा सानूं रहे कोई ना लालच, तेरा तेरी झोली पाईआ। दीन दुनी बदल दे आदत, इन्साफ़ इक कमाईआ। मानव ज़ाती दस्स अगम्मी इबादत, सिख्या इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, एका देणा नाम निआमत, वस्त अमोलक काया गोलक आप टिकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे जगदीश, जगदीशर तेरी इक शरनाईआ। लेखा वेख बीस बीस, बीस बीसे तेरा राह तकाईआ। उच्ची कूक पुकारण राग छत्तीस, जुग छत्तीसे नानक दए गवाहीआ। पैग़म्बर तेरी दस्सण वाले हदीस, हाज़र हो के सीस निवाईआ। झगड़ा मुका दे हस्त कीट, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म दस्स प्रीत, प्रीतम तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ बालक तेरे अज़ीज़, कुल्ल आलम दे मालक तेरी इक वड्याईआ। साची दस्स तमीज़, सिख्या इक जणाईआ। जिस दे पिच्छे पैग़म्बर गुरु होए शहीद, शहादत आपणी आप भुगताईआ। सब दी आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, तेरी आमद विच तेरा राह तकाईआ। दीन दुनी सुत्ती ग़फ्लत नींद, आलस निंदरा दे गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड दवारे एकँकारे तुध बिन दूजा अवर ना कोए सहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण दर ठांडे तेरे झुकदे, बिन क़दमां सीस निवाईआ। वणजारे कर ला एको तुक दे, तुख्म तासीर दीन दुनी दे बदलाईआ। साडे अन्तिम पैंडे मुकदे, मुकम्मल तेरे चरणां सेव कमाईआ। डंके वजा दे गोबिन्द सुत दे, सोई सुरती सर्ब उठाईआ। खेल वखा दे आपणे पुत्त दे, गुरमुख पोतरे नाल मिलाईआ। कलयुग जीव जंत तेरे विछोड़े विच दुखदे, दुखियां दर्द दे गवाईआ। बिन तेरी किरपा तेरे दर मूल ना पुज्ज दे, पूजा पाठ कम्म किसे ना आईआ। खेल वखा पंज तत काया बुत्त दे, बुतख़ान्यां कर सफ़ाईआ। फल वेखीए तेरी रुत दे, रुतड़ी आपणी इक महकाईआ। इशारे तक्कीए अबिनाशी अचुत दे, चेतन सुरती दे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैग़म्बर दरगाह साची सचखण्ड दवारे तेरे अग्गे झुकदे, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

❋ ११ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सुरैण सिँघ दे गृह कलसाणी ❋

गुर अवतार पैग़म्बरो किस कारण गए उपर धरत, सतिगुर शब्द रिहा जणाईआ। की कुछ कर के आए परत, पतिपरमेश्वर सेव कमाईआ। केहड़ी सांझी रखी शर्त, सहज नाल दयो दृढ़ाईआ। की हुक्म संदेसा दिता उत्ते फ़र्श, धरनी धरत धवल धौल जणाईआ। क्यों मुड़ के आए उत्ते अर्श, अर्शी प्रीतम विच समाईआ। किस बिध आपणे सिखां देवो दरस, मुरीदां दीद खुल्हाईआ। केहड़ी करदे तुहाडे अग्गे अर्ज़, बेनन्ती की जणाईआ। केहड़े केहड़े दरगाह साची कीते दरज, दरजे

वार दयो दृढ़ाईआ। की आपणा निभाया फ़रज़, शरअ उम्मत तोड़ निभाईआ। किस नाल वंडो दरद, दुखियां कवण सहाईआ। किस ने सुट्टी शरअ करद, क़तलगाह तों बाहर डेरा लाईआ। कवण सूरबीर बणया मर्दाना मर्द, योद्धा इक अख्वाईआ। क्यों चार कुण्ट होया अन्धेरा गरद, दह दिशा अन्धेरा छाईआ। आपणी खोल्ह के दस्सो फ़रद, की फ़ैसले हक़ सुणाईआ। क्यों माया ममता वधी मर्ज़, मरीज़ होई लोकाईआ। की तुहाडी पै गई गर्ज़, गर्ज़ साची दयो सुणाईआ। मैं वेख के होया असचरज, कलयुग कूड़ कल्पणा ना कोए मिटाईआ। सारे सिफ्तां वाली गाउँदे तरज़, रागां नादां विच शनवाईआ । मन्दिर मसीतां शिवदवाले मट्ठां वड़ गए चर्च, चर्चे विच चरागाहां फेरा पाईआ। की नाम धन दौलत दे के आए खरच, वस्त अमोलक हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो की दस्सी मात खूबी, खूबसूरत कवण दृढ़ाईआ । की धार दस्सी महबूबी, मुहब्बत विच समाईआ। की दरगाह सच्ची अरूज़ी, अरशे आज़म सोभा पाईआ। की जोत जगी पंज भूती, काया होई रुशनाईआ। की शब्द दिता दूती, दो जहानां ख़बर सुणाईआ। की समग्री पाई आहूती, भेव देणा खुल्हाईआ। की तन रमाई भबूती, ख़ाकी की वड्याईआ । की सुरत उठाई सुत्ती, सुत्तयां आए जगाईआ। की सुहञ्जणी कीती रुत्ती, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। सच दस्सो कि चार दिन कट के आए बुत्ती, बुतख़ान्यां विच डेरा लाईआ। मैं सब नूं रिहा पुच्छी, हुक्म धुर दा इक दृढ़ाईआ। की मदि प्याले पीते तुसां दस्सी हुक्की, हुक्म हाकम इक सुणाईआ। क्यों तुहाडी सृष्टी दृष्टी वाले निशानिउँ उकी, सच निशान ना कोए रखाईआ। क्यों खेल होई अदुती, दुतिया भाउ क्यों वंड वंडाईआ। क्यों नहीं मंज़ल किसे दी मुकी, गृह मेरे मिलण कोए ना पाईआ। क्यों दुनियां नहीं सुखी, दुक्खां विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो की ला के आए इजलास, चार वरन कर पढ़ाईआ। की दे के आए धरवास, धर्म धीर धराईआ। की पा के आए रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नाच नचाईआ। की रसना जिह्वा आए आख, शब्द संदेसा ढोला राग अलाईआ। की संदेसा दे के आए कलयुग अन्धेरी रात, भेव अभेदा मात खुल्हाईआ। की वस्त अमोलक दे के आए दात, गृह गृह मन्दिर अंदर टिकाईआ। साचा भेव दस्स दयो ख़ास, ख़ालस हो के आपणे रंग रंगाईआ। मैं इक्को वार करां विश्वास, विषयां दा डेरा ढाहीआ। सद वसां बन इक बास, दूजा घराना ना कोए उपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो की दस्सया पूजा पाठ, सिमरन की वड्याईआ। की नहाउणा तीर्थ

ताट, कवण सरोवर सोभा पाईआ। कवण वेला जागणा रात, कवण घड़ी मिले बेपरवाहीआ। कवण वक्त करना याद, समां समें विच्चों बदलाईआ। कवण गृह होवे आबाद, खेड़ा कवण सुहाईआ। कवण नाम वजाए नाद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। कवण निरगुण धार होए विस्माद, बिस्मिल आपणा आप कराईआ। तुसीं दस्स के की आए राज़, पर्दा दयो खुल्हाईआ। किस कारण पढ़ी नमाज़, सजदयां विच सीस झुकाईआ। की भेव एस दा आग़ाज़, लेखा दयो जणाईआ। क्यों दीनां मज़हबां पकड़ी वाग, डोरी गुट्टा नाल बंधाईआ। क्यों शरअ दा जगाया चराग़, दीपक नाल वड्याईआ। क्यों मज़हबां लाई आग, की करनी कार कमाईआ। क्यों वखरी वखरी मेरी सिफ्त दी लिखी किताब, वखरे वखरे ढोले नाद जणाईआ। क्यों तत्तां वाला वंडया समाज, समग्री धुर दी नाल मिलाईआ। सारे हो के लाजवाब, दरगाह बैठे सीस निवाईआ। तेरा खेल गुरु महाराज, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों कूड़ी क्रिया होई प्रधान, मातलोक दयो जणाईआ। क्यों नहीं साबत रिहा ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढाईआ। क्यों तीस बत्तीसा लेखा लिख्या क़ुरान, काया कुरे तों बाहर जणाईआ। की खेल वेख्या सत्त ज़िमीं असमान, चौदां तबकां भेव चुकाईआ। की रंग रंगाया महान, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो की बणदे रहे दाते, दयावान हो के दया कमाईआ। की पुरख अकाल दे लगदे रहे आखे, अठ्ठे पहर हुक्म ना कोए बदलाईआ। की सतिगुर दे सुत दुलारे बण गए साचे, सच दयो दृढ़ाईआ। की काया माटी भाण्डे काचे, तत्तां विच वड्याईआ। की खेल दस्सया जोती जाते, जागरत जोत किस बिध होवे रुशनाईआ। तुसीं बैठे किस अहाते, गृह मन्दिर दयो सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे हुक्म संदेसे साचे, सच दे मालक ख़लक दे ख़ालक प्रितपालक तेरी इक सरनाईआ।

❊ ११ चेत शहिनशाही सम्मत ५ बंता सिँघ दे गृह पिंड मुग़ल माजरा ❊

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू तेरी ओट, ओड़क कलयुग तेरा ध्यान लगाईआ। सृष्टी दृष्टी अन्तर आया खोट, कूड़ी क्रिया चार कुण्ट हल्काईआ। झगड़ा प्या वरन गोत, आत्म ब्रह्म पर्दा कोए ना लाहीआ। किसे दी चले सच बुद्धी ना सोच,

आक़लां अक़ल कम्म किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जीवां जंतां कीता मदहोश, खुमारी हउमे दिती चढ़ाईआ। तेरा नज़र ना आए नूर अगम्मा जोती जोत, सति सरूप ना कोए सुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण दर तेरे एको बन्दना, सीस जगदीश निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कट दे फंदना, माया ममता मोह देणा गवाहीआ। साचे नाम दी चाढ़ रंगणा, चार वरनां इक्को रंग रंगाईआ। दीन दुनी लगा आपणे अंगना, अंगीकार इक अख्वाईआ। सच दुआर तेरा मँगणा, दूजा गृह ना कोए वड़्याईआ। तूं साहिब सूरा सरबंगणा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती नूर चमका दे चन्दना, नूर नुराने डगमगाईआ। कलयुग जीव नेत्र रहे कोई ना अन्धना, निज नेत्र दे खुल्हाईआ। आत्म परमात्म साचे नाम दा पा दे सगना, पारब्रह्म ब्रह्म संगी लै मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण धूढ़ी दे दे मजना, सर सरोवर इक नुहाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण दर तेरे साचा सजदा, सीस जगदीश निवाईआ। नज़ारा वेख आपणे घर दा, लोकमात ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट जगत जहान सड़दा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया विच हढ़दा, माया ममता वहिण वहाईआ। तेरी मंज़ल कोई ना चढ़दा, सच दवारे दरस कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म ढोला कोए ना पढ़दा, गीत गोबिन्द कोए ना गाईआ। इश्नान करे ना कोई तेरे साचे सर दा, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। जीवत रूप कोई ना मरदा, मरजीवत रूप वटाईआ। साचा घाड़न कोई ना घड़दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण प्रभ तेरे चरण कँवल डंडावत, सीस जगदीश झुकाईआ। साचे नाम दी कर सख़ावत, रहमत रहीम करीम आप कमाईआ। दीनां मज़हबां मेट अदावत, अदल इन्साफ़ आपणे हथ्थ रखाईआ। मनुआ करे ना कोए बग़ावत, मति बुद्धी ना कोए लड़ाईआ। शरअ रहे ना कोए शरारत, छुरी करद ना कोए कसाईआ। साचा मार्ग दस्स मारफ़त, महबूब भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। कलयुग जीव तेरे नाम दे बणन आरफ़, अलिफ़ ये तों परे कर पढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर किसे दी करदे नहीं सफ़ारश, डोरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। चार जुग दी साडी लिखी वेख इबारत, क़लम स्याही नाता काग़ज़ नाल जुड़ाईआ। मेहरवान मुहब्बत विच सब दी बदल दे आदत, साचा राह इक जणाईआ। तेरे प्यार दी होवे इबादत, बन्दगी इक्को देणी समझाईआ। वस्त अमोलक दे निआमत, नाउँ निरँकार झोली पाईआ। तूं आदि जुगादी सदा सही सलामत, साहिब स्वामी सोभा पाईआ। दीन दुनी ख़लक दे ख़ालक, मख़लूक तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर मज़ाहमत, सतिजुग सच आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे तेरे अग्गे अरदासे, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाशे, वड तेरी बेपरवाहीआ। माणस जन्म सब दा कर रहिरासे, रस्ता आपणा इक समझाईआ। भाग लगा दे काया माटी ख़ाके, ख़ाक धूढ़ी चरणां दे रमाईआ। बन्द किवाड़ी खोल्ह दे ताके, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। अन्तर आत्म जाम प्या के, जगत तृष्ना दे बुझाईआ। शब्द अनादी नाद सुणा के , अनहद राग दे उपजाईआ। निरगुण जोती जोत जगा के, काया मन्दिर कर रुशनाईआ। साची मंज़ल गुरमुख सच चढ़ा के, जगत दवारे डेरा ढाहीआ। एकँकारे इक मिला के, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। थिर घर साचा इक सुहा के, सोभावन्त लैणा मिलाईआ । सचखण्ड साचे रंग रंगा के, रंगत इक्को देणी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर साचे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ साडी इक अरज़ोई, बेनन्ती दिती जणाईआ। तुध बिन अवर ना दीसे कोई, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सदी चौधवीं मिले किसे ना ढोई, धूंआधार होई लोकाईआ। सृष्टी दृष्टी सब दी सोई, सुरती शब्द ना कोए जगाईआ। तेरे नाम दी इक दरोही, तोबा तोबा विच दुहाईआ। मुहब्बत विच तेरी धार किसे ना मोही, मेहरवान महबूब तेरा दरस कोए ना पाईआ। बूँद स्वांती निझर धार किसे ना चोई, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। सच वस्त सारे बैठे खोई, ख़ाली भाण्डे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अकाले वेख आपणी लिख्त, बिन अक्खरां अक्ख खुल्हाईआ। भेव अभेदा जाण सृष्ट, सृष्टी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती धार तक इष्ट, इष्ट देव आत्मा नूर अलाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख लिस्ट, फ़रिसत सब दी फोल फुलाईआ। लहिणा देणा तक स्वर्ग बहिश्त, पर्दा उहला रहे ना राईआ। कुछ लेखा याद कर रामा वशिष्ट, सच संदेसा की सुणाईआ। काहन अर्जन नाल कीती की लिख्त, बंसरी वाली धुन सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरा मँगदे इक दुआरा, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। तूं सांझा परवरदिगारा, जल्वागर नूर खुदाईआ। दरगाह साची तेरा धाम निआरा, मुकामे हक़ वज्जे वधाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर होवे उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। महल अटल सोहे मनारा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। नाद धुंन ना कोए जैकारा, रागी राग ना कोए सुणाईआ। कागद क़लम ना लिखणहारा, स्याही मिले ना कोए वड्याईआ। जिथ्थे झुकदे गुरु अवतारा, पैग़म्बर सजदयां विच सीस निवाईआ । तत वजूद ना कोए अखाड़ा, शरीर बेनज़ीर नज़र कोए ना आईआ। इक्को तेरा नूर चमतकारा, जोती

१२०७
२१

जोत जोत रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सदी चौधवीं वेख अन्तिम वारा, अन्तश्करन ख़लक ख़ुदाईआ। चारों कुण्ट धूंआधारा, निरगुण नूर ना कोए चमकाईआ। चौदां तबक रोवण ज़ारो ज़ारा, चौदां लोक रहे कुरलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडे महबूब, मुहब्बत तेरी नज़री आईआ। तेरा महल अटल उच्च अरूज, शहिनशाह तेरी बेपरवाहीआ। तेरी मंज़ल हक़ मक़सूद, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिधर तक्कीए ओधर मौजूद, दह दिशा तेरी रुशनाईआ। तुध बिन दिसे ना कोए महिफ़ूज़, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। ख़ालक ख़लक वेख आपणी मख़लूक, कायनात फोल फुलाईआ। दीनां मज़हबां रिहा ना कोए सलूक, साचा मेल ना कोए कराईआ। तेरे नाम दा निशाना बणया जगत बन्दूक, गोली शरअ तेरी चलाईआ। सदी चौधवीं निशाना जाए मूल ना चूक, चौकन्नी करनी ख़लक ख़ुदाईआ। ज़रा इशारा दे दे पुरख अकाले विच रूस, रुस्तम आपणे लैणे उठाईआ। मुहम्मद दी मालकी रहे ना सहारा रहे ना कोए मौरूस, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। नाम अगम्मा शब्दी भेज दे दूत, दो जहानां हुक्म सुणाईआ। खड़े कर दे पंज भूत, पंजां तत्तां होवे लड़ाईआ। झगड़ा रहे ना कोए अछूत, छूह आपणी देणी लगाईआ। गुर अवतार
१२०८ पैग़म्बर कहिण जगत क्रिया मेट दे हदूद, हद्द आपणी दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक १२०८
२१ नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आलीशान उच्च अरूज, मनार एकँकार निरगुण धार सोभा पाईआ। २१

✻ १२ चेत शहिनशाही सम्मत ५ बचन सिँघ दे गृह पिंड चिब्बा ✻

धरती कहे एथे नौ दिन कटके गया दरबाशा रिषी, रिषी तिन्न नाल मिलाईआ। रातीं सुत्यां अगम्मी धार दिसी, नूर नूर नूर रुशनाईआ। जिस विच कलयुग जणाई मिती, भेव अभेद दिता खुल्हाईआ। पुरख अकाल शब्द जणाई अगम्मी चिट्ठी, संदेसा इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। दुरबाशा कहे मैं सुत्ता आपणे आसण, मिट्टी घॅटे डेरा लाईआ। हिरदे अंदर लग्गा वाचण, की प्रभ दे विच वड्याईआ। किस बिध भगतां देवे साथन, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। मेरा अन्तर लग्गा आखण, किछ मैनूं रिहा दृढ़ाईआ। हिरदे अन्तर कर विश्वासन, विशा अवर ना कोए बणाईआ। जां मैं ध्यान धरया मैनूं नज़री आई अन्धेरी रातन, कलयुग कूड़ कूड़ कुरलाईआ।

मैं रो के लग्गा आखण, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। सति धर्म दा रिहा कोई ना साथन, संगी संगी ना कोए बणाईआ। मन कल्पणा सारे नाचण, कूड़ी क्रिया रही कुरलाईआ। पर्दा खुल्हे किसे ना बातन, उहला अंदरों ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। दुरबाशा कहे मेरे अन्तर आ गई हँसी, हस्स के दिता वखाईआ। तेरा खेल प्रभू सहँसी, अनन्ती नज़री आईआ। धुर दा शब्द आया जिस तरां नाच नचाउणा जादव बंसी, कौरो पांडो वंड वंडाईआ। दुरबाशा कहे मैं फेर कीती बेनन्ती, निउँ के सीस निवाईआ। पुरख अकाल किहा इक सुण अगम्मी पंगती, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। कलयुग वेख खेल गढ़ हउमे हंगती, हँ ब्रह्म पर्दा कोए ना लाहीआ। विद्या रहिणी नहीं विच पंडती, ब्रह्म धार ना कोए समझाईआ । मुहब्बत रहिणी नहीं विच संगती, गुर चेले करन लड़ाईआ। थुड़ आउणी कलयुग अन्तिम अन्न दी, अन्नी होए लोकाईआ। वड्याई होणी चुगली वाले कन्न दी, सच सुच ना कोए रखाईआ। कल्पणा वधणी ममता वाले मन दी, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। दुहाई पैणी लालसा वाले धन दी, नाम निधाना हथ्थ किसे ना आईआ । पहिचाण रहिणी नहीं किसे गल्ल दी, सति धर्म ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट जूठ झूठ अन्धेरी होणी

१२०९ चलदी, चार वरन दए उडाईआ। दुरबाशा कहे ऐथे नदी वहिंदी सी जल दी, ते किनारा पिछला नज़री आईआ। जेहड़ी १२०९

२१ जोत शब्द संदेसा अगम्मा घलदी, मैनूं रही सुणाईआ। ओह रातीं सुत्तयां मेरा आसण मल्लदी, सन्मुख हो के डेरा लाईआ। २१

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। दुरबाशा कहे मेरे अन्तर लग्गी सोच, सोचां विच आपणा आप डुबाईआ। मेरे अन्तर उपजी लोच, आसा इक वधाईआ । प्रभ दी बड़ी अनोखी मौज, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। जे किरपा कर के मैनूं दर्शन देवे रोज़, नित नित आपणा फेरा पाईआ। मैं वेखां ओस दे चोज, चोजी प्रीतम दए वड्याईआ। फेर झट सुणया अगम्मी सलोक, धुर फ़रमाना गया आईआ। दुरबाशा निगाह मार लोक परलोक, दो जहानां वेख वखाईआ। कलयुग अन्त झगड़ा पैणा मातलोक, चार कुण्ट दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। दुरबाशा कहे मेरे अन्तर आया ध्यान, ध्यानी ध्यान लगाईआ। प्रभ शब्दी दिता ज्ञान, बुध्ध दिती बदलाईआ। जा वेख उत्ते असमान, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ज़मीन नाल ला कान, की थल्लउँ धरती रही सुणाईआ। दुरबाशा कहे जां मैं कन्न लाया धरती कहे एथे आउणा श्री भगवान, कलयुग अन्त वेस वटाईआ। जिस ने शरअ मेटणी शैतान, छुरी करद रहे ना कोए कसाईआ। दीन दुनी दा बदल विधान, रास्ता बरास्ता इक्को देणा कराईआ। धर्म झुला निशान, नव सत्त इक्को हुक्म वरताईआ। रिषीआं दा लहिणा देणा मुनीआं

नाल चुकाए विच जहान, तपीशरां तप झोली पाईआ। जन भगत सुहेले दर कर परवान, परम पुरख देवे माण वड्याईआ। दुरबाशा तूं वी पहुंचणा आण, सच संदेसा इक सुणाईआ। रिषी चरण धूढ़ कर इश्नान, आपणी खुशी बणाईआ। बेनन्ती कर के लग्गा सुनाण, आरज़ू इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक वखाईआ। दुरबाशा कहे एथे बृछ हुंदा सी इक वड्डा किकर, काला रंग सोभा पाईआ। जिथ्थे मिल्या प्रभू प्यारा मित्र, मीत मुरारा नज़री आईआ। मैं हुक्म विच कुछ शब्द लग्गा लिखण, काग़ज़ नाल क़लम शाहीआ। जां तक्कया मैनूं चारों कुण्ट अन्धेरा लग्गा दिसण, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। सृष्टी दिसी मिथन, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। मैं रो के लग्गा पिट्टण, दिती कूक दुहाईआ। धरती उत्ते लग्गा लिटण, हाल बेहाल बणाईआ। आपणे उत्ते मिट्टी लग्गा सिट्टण, धूढ़ी धूढ़ रलाईआ। झट पुरख अकाल ने शब्दी दिती चिट्टण, चिठ्ठी इक वखाईआ। दुरबाशे कलयुग अन्त दुनियां दा इष्ट होणा पत्थर इट्टण, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मड्ड गुरुदवारिआं सीस निवाईआ। मेरा गृह मूल ना पुच्छण, दरगाह साची पुज्जण कोए ना पाईआ। सचखण्ड दवारिउँ रुस्सण, राए धर्म हथ्थ आपणे आप फड़ाईआ। उस वेले कलयुग आवे मुक्कण, लोकमात रहिण ना पाईआ। मैं भाग लगावां गोबिन्द आपणे पुत्तण, सूरमा इक उठाईआ। जो दो जहानां किसे ना देवे लुकण, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ। आपणी धारों आप आवां उठण, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त कूड़ विकारा आवां लुट्टण, शब्द धाड़वी हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। दुरबाशा कहे पाणी वहिण वाला कन्ढा, घाट पिछला नज़री आईआ। जिथ्थे बहिया सूरा सरबंगा, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। शब्द संदेसा दिता चंगा, निरगुण सरगुण कीती पढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग होया अन्धा, नेत्रहीण होई लोकाईआ। मन कल्पणा होया गंदा, बुध्ध बिबेक ना कोए वखाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर खावे मुरगी अंडा, पशू खा खा आपणा झट लँघाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना डंडा, सचखण्ड दवारे मिलण कोए ना आईआ। आत्मा प्रभ नालों होए रंडा, परमात्मा मिलण कोए ना पाईआ। बन्दगी वाला बन्दा, निज नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुलाईआ। माण रहे कोई ना जमना सुरस्ती गंगा, अठसठ ना कोए वड्याईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मड्डां होणा दंगा, घर घर पए दहाईआ। जीव जगत जहान होए नंगा, ओढ्ढन सीस ना कोए टिकाईआ। उस वेले प्रगट होवे सूरा सरबंगा, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। भगत सुहेला होवे संगा, हरिजन साचे जोड़ जुड़ाईआ। दीन दयाल सदा बख्शंदा, बख्शिश रहमत आप कमाईआ। दुरबाशा कहे की साहिब देवें अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ।

पुरख अकाल किहा गुरमुख बणा के नूरी चन्दा, चन्द नूर करां रुशनाईआ। जिस काया अंदर लँघां, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी लहिणा देणा धरनी धरत धवल धौल लख चुरासी जीव जंत सर्ब देंदा, देवणहार इक अख्वाईआ।

✻ १२ चेत शहिनशाही सम्मत ५ गुरमेज़ सिँघ दे गृह थानेसर ✻

नारद कहे वेख दुरबाशे, दोबारा मैं वी गया आईआ। दस्स हुण केहड़े वेखणे तमाशे, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। रिषी खिड़ खिड़ा के हासे, हत्थ हत्थां उत्ते टिकाईआ। तूं निगाह मार कि ठीक कलयुग अन्धेरी राते, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। धर्म रिहा ना कोई साचे, सच ना कोए वड्याईआ। झगड़ा प्या तन काचे, माटी ख़ाक रही कुरलाईआ। नारद कहे मैं वेखे नौ खण्ड पृथमी अहाते, दीन दुनी खोज खुजाईआ। हुण दस्स केहड़े कौरव पांडव खडाउणे सार पाशे, नरद कौण वेख वखाईआ। नारद कहे मुनी जी पिछली कथा कहाणी छड्डो अगला खेल प्रभू दा कौण वाचे, वाचण वाला नज़र कोए ना आईआ। मैनूं ऐं जापदा कलयुग अन्त मूसा मुहम्मद उम्मत दे बणा के ताए चाचे, ईसा नाल लैणा मिलाईआ। एह हुक्म संदेसा धुर दा आखे, पारब्रह्म रिहा दृढ़ाईआ। तेरा हिरदा की वाचे, मैनूं दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धर्म दी धार इक वखाईआ। नारद कहे दुरबाशे मैं वी आया विच थानेसर, थान थनंतर वेख वखाईआ। केहड़े राजे महाराजिआं लाउणा मस्तक केसर, टिक्का कवण लगाईआ। दुरबाशा कहे मैं शब्द सुणया तेरे आउण तों पेशतर, धुरदरगाही दिता जणाईआ। लहिंदी दिशा वेखो खोल्ह के नेत्र, नैण नैणां नाल उठाईआ। पुरख अकाल दीनां मज़हबां दा वाचण लग्गा पेपर, परदयां विच्चों पर्दा आप उठाईआ। पिछली रीती छड्डुणी जेहड़ा झगड़ा होया कुरकशेतर, कुछ अगला लेखा दयां दृढ़ाईआ। सोहणा लग्न सोहणा प्रविष्टा सोहणा महीना चेत्र, चेतन हो के वेख वखाईआ। चार जुग दा पिछला वखावां लेखन, पर्दा उहला आप उठाईआ। दीन दुनी दा बण के भेतन, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। झगड़ा वेखां पीर मुल्ला क़ाज़ी शेख़न, चर्चां विच पोपां फोल फुलाईआ। फिर के आवां देस परदेसन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे रिषी जी क्यों नहीं लाया मस्तक तिलक, त्रसूल नज़र कोए ना आईआ। दुरबाशा कहे तूं दस्स केहड़ी नवीं इल्लत, मैनूं दे समझाईआ। नारद कहे

मैं दीन दुनी दी वेखी ज़िल्लत, चारों कुण्ट खुआरी नज़री आईआ। सच दवारे होए ना किसे मिल्लत, पारब्रह्म प्रभ मेल ना कोए मिलाईआ। मैं नौ खण्ड पृथ्मी नट्ठा भज्जा दीनां मज़हबां वाले सारे दिसे निन्दक, चुगली निन्दया विच रहे कुरलाईआ। मन ममता होए हिंसक, अहिंसा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे दुरबाशे कुछ आपणी दस्स मत, मता तेरे नाल पकाईआ। की दुनियां दी होवे दुरगति, दुर्गा खण्डा धार की समझाईआ। की बावन गया दस्स, बलि दवारे की कर पढ़ाईआ। की राम किहा बेटे दसरथ, भेव अभेदा जगत खुल्हाईआ। की कृष्ण चलाउणा रथ, रथवाही हो के महासार्थी रूप वटाईआ। की कलयुग होणा भट्ठ, भठयारा अगनी अग्ग तपाईआ। की गोबिन्द दस्स के गया सच, सहजे देणा सुणाईआ। दुरबाशा कहे मैं जोड़ां दोवें हथ्थ, निउँ के सीस निवाईआ। एह खेल प्रभू समरथ, दूजी चले ना किसे चतुराईआ। मेरी थोड़ी खुल्ही अक्ख, नेत्र लोचण नैण होई रुशनाईआ । मैं प्रभू वेख्या प्रतख, जोती जाता नूर अलाहीआ। जो भगतां मिले जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। निरगुण धार हो प्रगट, शब्दी डंका रिहा वजाईआ। चार वरन अठारां बरन खोल्ह के हट्ट, नाम भण्डारा इक वरताईआ। झगड़ा मुका के तीर्थ तट, अठसठ डेरा रिहा ढाहीआ। उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेखे नठ नठ, दह दिशा आपणा पन्ध मुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दी पिट्ठ उत्ते रख्या हथ्थ, हलूणे नाल रिहा जगाईआ। उठो छेती करो झट, लहिंदी दिशा पए दुहाईआ। दुरबाशा कहे इहो कुछ मेरे अन्तर गया धस, तैनूं दिता सुणाईआ। नारद कहे यार कर बस, बस्ता आपणा लै बन्हाईआ। मैं पुच्छणा ओस कोलों जो सर्ब कला समरथ, इक्को दाता आदि जुगादि अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे दुरबाशे किथे तेरे योद्धे सूरबीर, मैनूं दे वखाईआ। कित्थे तेरे तरकश तीर, कमान कंध ना कोए टिकाईआ। चारों कुण्ट ना दिसे वहीर, पाँधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। दुरबाशे नेत्र वहा के नीर, हन्झू दिते वखाईआ। कि किसे दे हथ्थ जगत वाली नहीं तक़दीर, तदबीर समझ किसे ना आईआ। कोटन कोटि हो के गए शाह हकीर, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर होए दिलगीर, सांतक सति ना कोए कराईआ। दीन दुनी नूं बन्न्ह के शरअ दी विच ज़ंजीर, मनुश मनुशां नाल दिते लड़ाईआ। होका दिता उच्च मंज़ल चढ़ के कबीर, बिना काअबिआं तों दिता दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान आवे अख़ीर, आख़र वाला लेखा दए मुकाईआ। दो जहानां मर्द मर्दाना नौजवाना बण दस्तगीर, दामनगीर इक्को सोभा पाईआ । पिछली कीती ते मारे लकीर, अगला हुक्म आप सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सब दे हिरदे देवे चीर, जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। नारद कहे मुनी जी आपणी खोल्ह के दस्सो पुस्तक, की कथा रही सुणाईआ। दुरबाशा कहे जां मैं वेख्या मैनूं नज़री आवे इक्को मुर्शद, मुरीद मुरीदां सोभा पाईआ। जिस दी सारयां करनी उल्फ़त, सिफ्तां विच सालाहीआ। ओह दीन दुनी नालों गुर अवतार पैग़ग्बरां दी करे रुखस्त, छुट्टी सब नूं दए दवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे मुनी जी कुछ दस्सो अगम्मा मन्त्र, मंतव हल्ल कराईआ। की वड्याई मिले थान थनंतर, सहज देणा सुणाईआ। की वेख्या निज अन्तर, निरंतर पर्दा देणा चुकाईआ। की तुहाडा चले जंतर, जगह जगह की वड्याईआ। की साड़ो फूको तंतर, त्रैगुण दए दुहाईआ। की लेखा ब्रह्मे दे मनवन्तर, पर्दा देणा चुकाईआ। की खेल होणा उत्ते गगन गगनंतर, ज़िमीं असमानां की दुहाईआ। की शंकर दस्से भस्मन्त्र, माटी ख़ाक कवण उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरताईआ। दुरबाशा कहे नारद नीचे झाक, झाकी इक वखाईआ। सच दर दा वेख ताक, ताला नज़र कोए ना आईआ। जिस ने पैग़ग्बरां नूं देणे तलाक, नाता उम्मत नालों तुड़ाईआ। ओह प्रगट होया नाल इतफाक, इतफाकिया गया आईआ। सब दा लहिणा देणा लेखा करे बेबाक, खाते फोले थाउँ थाईंआ। सदी चौधवीं पूरा करे भविख्त वाक, वाकिफ़कार हो के ख़लक खुदाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। जन भगतां देवे धूढ़ी ख़ाक, टिक्के नाम वाले रमाईआ। धुर दा बण के मित्र अहिबाब, तार सितार इक हिलाईआ। अंदरों बदल देवे मजाज़, मज़ा आपणा नाम चखाईआ। चार वरन अठारां बरन देवणहारा सच इमदाद, इमदादी इक्को नूर अलाहीआ। जिस ने गुर अवतार पैग़ग्बरां नूं दिता ख़ताब, मुख़ातब हो के इन्साफ़ ना कोए जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक देणा जवाब, जवाब तल्बी विच सारे देण दुहाईआ। साचा मन्दिर गृह सुहाउणा उच्च मुनारा महिराब, महबूब इक्को नज़री आईआ। जिस नूं सजदा करना सीस झुकाउणा नाल अदाब, डंडावत बन्दना कहि के धूढ़ी ख़ाक लैणी रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस ने चार वरन अठारां बरन हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दा बदल देणा समाज, समें दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे दुरबाशे कर लै अज्ज त्यारी, त्रैगुण अतीता हो के अज्ज रिहा जणाईआ। खेल वेखणी निरँकारी, जो निरगुण निरवैर निराकार रिहा कराईआ। ओह तेरी भूमिका सारी, जिथ्थे नौ नौं चक्र ला के आपणा झट लँघाईआ। समाधी विच लाउँदा सैं ताड़ी, तारिका मण्डल तों परे आपणी सुरत चढ़ाईआ। प्रकाश तकदा सैं विच नाड़ी, नूर नूर नूर रुशनाईआ। जेहड़ा जंगल हुंदा सी उजाड़ी, जूहां बेल्यां वंड वंडाईआ। ओथे

खेल होणा अपर अपारी, अगम्म अगोचर अलाह दए नूर खुदाईआ। जिथ्थे भगतां दी फुलवाड़ी, गुरमुख बैठे आसण लाईआ। नारद कहे मैं जा के सेवा करां ते पहिलां फेरां बहारी, बहार गुलशन वाली महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निरवैर इक अवतारी, अवतारां दा मालक आप अख्वाईआ।

✻ १२ चेत शहिनशाही सम्मत ५ निरँजण सिँघ दे घर गुरुकुल खान ✻

दुरबाशा कहे नारदा एथे हुंदी सी डल डूँघी, बाई हथ्थ वेख वखाईआ। मैं रख गया सां तूम्बी, हथ्थां नाल टिकाईआ। मैं वाजां मारदा किसे पासिउँ नहीं कूंदी, लम्भयां हथ्थ ना आईआ। नारद किहा तूं तुक गा तूं ही तूं दी, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। तूम्बी बोली मैं राह तकदी डंडी वेखां सच्चे सतिगुरु दी, जो पुरख अकाल इक अख्वाईआ। जिस ने खेल कीती कौरव पांडव युद्ध शुरु दी, बिन शरअ दिते टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे
१२१४ खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। तूम्बी कहे रिषी जी मैं नहीं लुकी, लुक्या बेपरवाहीआ। मैं नहीं सुत्ती, सुत्ता १२१४
जगत जहान नज़री आईआ। दुरबाशा कहे तूं क्यों नहीं उठी, मैनूं दे जणाईआ। नारद कहे अजे तेरे नाल रुठ्ठी, पहिलों

लै मनाईआ। जिंनां चिर धार ना बणी दो तुकी, सोहँ ढोला गाईआ। उनां चिर मंज़ल नहीं मिलणी उच्ची, सच दुआर ना कोए सुहाईआ। वासना नहीं आउणी सुच्ची, सति ना कोए बणाईआ। सुहञ्जणी नहीं होणी रुत्ती, रुतड़ी ना कोए महकाईआ। भाग ना लगणा जुस्सीं, जिस्म ज़मीर ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। तूम्बी कहे मैं वेखां इक्को बापू, जिस नूं बाप ईसा कहि के गया जणाईआ। जिस दा मुहम्मद निक्का जिहा काकू, निक्का निक्का जिहा नज़री आईआ। मूसा मूँह दे भार डिग्ग के वहाए आंसू, नैणां नीर वहाईआ। मुनी उन्नां वल झाकू, कुरकशेतर ना कोए वड्याईआ। हुक्म देणा ओधर भेजणा शब्द डाकू, डिकटेटर इक्को देणा बणाईआ। जो पिछली शरअ दी रस्सी काटू, खटका धुर दा दए जणाईआ। सृष्टी भुआवे वांग लाटू, मधाणीआं थल अस्गाह देण दुहाईआ। वेखे निक्के निक्के टापू, जिथ्थे टप्पयां वाली पढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां जो खेल वखाए माटू, माटो सब दे वेख वखाईआ। मंज़ल चढ़ के वेखे घाटू, घाटे विच लोकाईआ। बणया रहे कोई ना नाढू, नर नरायण दए सज़ाईआ। खेल करे गॉड गॉडू, गाईड हो के रस्ता दए वखाईआ। की होया जे एथे लड़ के मर गए यादू, यादव बंस

१२१५
२१

दुहाईआ। ओस वेले तरयासी सौ त्रेहठ मरे सी साधू, कल्पणा विच रहे कुरलाईआ। उन्नां विच्चों मनतीशा दिसे आगू, जो मंतव सारे वेख वखाईआ। अवधूत हुंदा सी बागू, सूरबीर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। तूम्बी कहे नारद जी मैं वेखण चली सां लोटा, मस्जिदां विच ध्यान लगाईआ। मैं फिरया पोटा पोटा, भज्जी वाहो दाहीआ। जिधर वेखां ओधर सत रंग दा नज़री आए सोटा, सूरबीर इक्को हथ्थ उठाईआ। तूम्बी कहे नारद जी दुरबाशे जी तुसीं वी सांभ लओ आपणा लंगोटा, बोदी टिक्के वेख वखाईआ। ओधर दुर्गा शृंगार करदी फिरे लाल चुन्नी नूं ला के चिट्टा गोटा, वस्त्र भूषण रही सजाईआ। काल दी जगा के आपणी खप्परी विच जोता, प्रभ अग्गे ध्यान लगाईआ। मेरे प्रभू कलयुग जीव मेरे खाण वास्ते नहीं कोई बहुता, थोड़ा जिहा नज़री आईआ। एह सुण के मुहम्मद पै गया विच सोचा, हथ्थ मथ्थे उत्ते रखाईआ । ईसा कहे की गाया सलोका, सुनेहड़ा की सुणाईआ। मूसा कहे मैं जिधर वेखां ओधर तक्कां लोथां, लोइण मेरे देण दुहाईआ। तूम्बी कहे नारद जी तुहाडा की कहे पोथा, मैनूं दयो समझाईआ। दुरबाशे ग़ुस्से विच ना होवीं होछा, हुश्यिारी नाल देवां दृढ़ाईआ। आपणा पोश वेखो की कहे गोशा, क़सम खा के देणा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे धुर दा वर, दर इक्को इक सुहाईआ। तूम्बी कहे मैं लुकी नहीं मैं गई दिशा लहिंदी, भज्जी नठ्ठी आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं जा के नबीआं हथ्थीं लाई मैहन्दी, सोहणा लाल रंग रंगाईआ । हौली हौली आई कहिंदी, वे वीरो तुहाडी सदी चौधवीं अन्तिम पए दुहाईआ । तुहाडी सभा किथे बहन्दी, मैनूं दयो समझाईआ । केहड़ी धार भाणा सहन्दी, हुक्मे विच सीस निवाईआ । सारे कहिण साडी अन्तिम कला ढहिन्दी, चारों कुण्ट रिहा कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक सुणाईआ। तूम्बी कहे मेरे विच नहीं कोई पाणी, जलधार ना कोए वड्याईआ। मैं पढ़ी नहीं कोई बाणी, राग नाद ढोले गाईआ। मैं सुणी नहीं कोई कहाणी, अक्खरां वाली सिफ्त सालाहीआ। मैं बणी नहीं राणी, मन्दिरां विच डेरे लाईआ। मैं बणी नहीं सवाणी, शाह सुल्तानां घर सोभा पाईआ। मैं इक्को तक्कदी पुरख अकाल जाण जाणी, जुग चौकड़ी सब दे लेखे रिहा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। तूम्बी कहे मैं लहिंदी दिशा वेखां तम्बा तम्बी, तहिमत वाले फोल फुलाईआ। जां वेख्या रविदास फड़ी क़लम हथ्थों छड्डी रम्बी, नाम वाली आर, पार रिहा कराईआ। मेरा दिल हिल गया भय विच कम्बी, सुध रही ना राईआ। हाए बौहड़ी प्रभ ने मेट देणे दंभी, पखण्डी रहिण कोए ना पाईआ। जां तक्कया गोबिन्द हथ्थ नंगी चण्डी, चण्डालां करे सफ़ाईआ ।

दीन मज़हब दी रहिण नहीं देणी डंडी, डंडावत इक्को रिहा जणाईआ। सब दी करा के ख़ानाजंगी, कूड़ घराने देणे मिटाईआ। शब्दी हुक्म ला पाबन्दी, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। तूम्बी कहे मैं बड़ी मुश्किल नाल जलां थलां लँघी, सरांवां विच आपणा डेरा लाईआ। मेरे अंदर आई ग़मी, खुशी पल्लू गई छुडाईआ। मैं हैरान होई प्रभू ने की करनी खेल नवीं, नव नौ चार आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर चार जुग दे बच्चे शब्द दी सिफ्त वाले कवी, सार शब्द दी सार किसे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार अवतार चवी, चहुं जुगां दा लेखा छिन्न विच पार कराईआ।

✻ १२ चेत शहिनशाही सम्मत ५ ठाकर सिँघ दे गृह पिंड नानक पुरा ✻

दुरबाशा कहे नारद मैं एथे कीता सी किछ तप, जिथ्थे ठाकर सिँघ ठाकर रिहा बहाईआ। बिसीअर काले हुंदे सी सप्प, जंगल जूह विच दुहाईआ। मैं बिन रसना तों करदा सी जप, जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ । निज अन्तर आत्म लैंदा सां रस, रसना रस ना कोए वखाईआ। प्रकाश वेखदा सां बिना रवि ससि, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, प्रतख मिलदा सां हक़ गुसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे मुनी जी तप कीता कि चढ़या सी एथे ताप, मैनूं दयो जणाईआ। जप कीता कि वेख्या बाप, पिता पुरख अकाल धुरदरगाहीआ। नूर तक्कया कि लोकमात, पर्दा देणा उठाईआ। दिवस तक्कया कि रात, घड़ी पल कवण वंड वंडाईआ। शब्द सुणया कि भविख्त वाक्, भेव देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक दृढ़ाईआ। दुरबाशा कहे नारद दस्सां की कथा, रसना कहिण किछ ना पाईआ। इक दिन मैं हथ्थ रख्या आपणे मथ्था, मस्तक उत्ते टिकाईआ। याद कीता योग यथा, यथार्थ ध्यान लगाईआ। मैं तक्कया गोबिन्द जिस वछाया सत्थर सथा, यारड़ा राह तकाईआ। मेरीआं रो पईआं अक्खां, नैण देण दुहाईआ। कवण एस दा मीत मुरार सखा, जो सखीआँ वाले काहन रिहा तजाईआ। जिस दा सूरबीर योद्धा बच्चा, नौजवाना नज़री आईआ। जां तक्कया नाता जुड़िआ वेख्या पक्का, दो जहान ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। दुरबाशा कहे मैं अन्तर लाई समाधी, आपणी सुध भुलाईआ। मैनूं नज़री आई गोबिन्द दी माँ उहदे बच्चयां दी दादी, गुजरी आपणी गोद सुहाईआ । जेहड़ी इक्को ढोला गांदी, तूं मेरा

मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल मारी अगम्मी आवाज़ी, शब्द दिता सुणाईआ। संदेसा दिता माज़ी, कृष्ण नाल वड्याईआ। कलयुग अन्त झगड़ा पैणा समाजी, सृष्टी दृष्टी दए दुहाईआ। शरअ छुरी बणाउणी मुल्ला शेख़ क़ाज़ी, क़ज़ा आपणा रूप बदलाईआ। हिन्दू मुस्लिम बणने नमाज़ी, पैग़म्बरां वाली पढ़ाईआ। जोरू ज़र बणाउणा ग़ाज़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। नारद कहे मुनी जी कीती की तपस्या, तपो बन आसण लाईआ। दुरबाशा खुशीआं दे विच हस्सया, दो हथ्थां ताली दिती लगाईआ। पुरख अकाल वखाई कलयुग अन्तिम रैण अन्धेरी मस्सया, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर चार कुण्ट फिरे नस्सया, दह दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। शब्द गुरु तीर अणयाला कसिआ, चारों कुण्ट भय वखाईआ। नाम निधाना दिसे किसे ना हट्टिआ, चारे वरन रहे कुरलाईआ। सब दा लेखा मुकणा विच बटिआ, हासल ज़रब समझ किसे ना आईआ। साचा लाहा किसे ना खट्टया, खटके विच लोकाईआ। सब दा पूरा होणा कौल इक़रार दा पट्टया, पटने वाला वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। दुरबाशा कहे मैं की दस्सां ना दस्सण योग, युगती नज़र कोई ना आईआ। नारदा तेरा केहड़ा जोग, जुगीशरा दे समझाईआ। केहड़ा रस भोग, रसना रस चखाईआ। केहड़ा गाएं सलोक, ढोला धुरदरगाहीआ। केहड़ी मिले मोख, मुफ्त कवण झोली पाईआ। केहड़ी चमकी जोत, निर्मल नूर नूर रुशनाईआ। नारद किहा जिस ने झगड़ा पाया वरन गोत, दीनां मज़हबां वंड वंडाईआ। ओस दा खेल वेखां रोज़ बरोज़, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। जिथ्थे बुद्धी दी नहीं सोच, अक़ल ना कोए चतुराईआ। मानव सके कोई ना पहुंच, गुर अवतार पैग़म्बर बेअन्त कहि के सीस निवाईआ। भगती अंदर ओस दी मौज, मजलस भगतां नाल रखाईआ। आदि जुगादि ना होवे फ़ौत, जम्मण मरन विच ना आईआ। आत्म परमात्म दा बण के खौंत, ख़सम इक्को सोभा पाईआ। जिस दा बंस सरबंस कदे ना जावे औंत, लोकमात मिले वड्याईआ। ओस खेल वेखणा दीप जम्बु पुष्कर करौच, कल आपणी आप प्रगटाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद बणा के अदौत, अदब नाल देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। धरती कहे मेरे वड्डे वड्डे भाग, भागशाली नज़री आईआ। मैनूं खुशी होई आज, वज्जी अन्त वधाईआ। दुरमति धुपे दाग़, ममता मैल गवाईआ। देवे इक वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। सच जगा चराग़, अन्ध अन्धेरा दए मुकाईआ। तख्त निवासी बदल समाज, समर्गी इक्को इक वरताईआ। साचे नाम दा वजाए नाद, दो जहान करे शनवाईआ। हज़रत मूसा ईसा मुहम्मद जाणा जाग, आलस निंदरा

रहिण कोए ना पाईआ। आपणी आपणी सम्भल के फड़ो वाग, बेमुहारा नज़र कोए ना आईआ। तुहाडा मालक ख़ालक वाहिद, गॉड आपणा हुक्म वरताईआ। तुसां लहिणा देणा वेखणा इम साल शायद, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। धुर दा हुक्म वरतणा जाइज़, जाइज़ा लै के कार कमाईआ। सब दा पूरा होया आहिद, अहिदनामे दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म आप समझाईआ। नारद कहे दुरबाशे उठ, आपणी लै अंगड़ाईआ। ल्या तेरे चरण देवां घुट्ट, ऋषीशर सेव कमाईआ। दुरबाशा कहे असीं सारे ओस दे सुत, दुलारे जुग जुग नज़री आईआ। जिस नूं कहिंदे अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस दी मौली सुहञ्जणी रुत, रुतड़ी आपणा रंग वखाईआ। ओस दे कोलों लै पुच्छ, निम्रता विच सीस निवाईआ। नारद कहे उह सुणाउँदा इक्को तुक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला लैणा गाईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक, अग्गे पन्ध ना कोए रखाईआ। जन्म मरन दा रहे ना दुःख, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। मंज़ल दे के अगम्मी उच्च, सचखण्ड दए टिकाईआ। जिथ्थे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत विच समाईआ। ज़रा रिषी जी ध्यान मारो जगत दी वरन गोत, पृथ्मी उत्ते प्रिथम ध्यान लगाईआ। जिस दी सारे करदे

१२१८ सोच, समझ विच समझ ना कोए बणाईआ। झगड़ा प्या दिसे चौदां लोक, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। नेत्र रोंदे कोटी कोट, काया कुटिया ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच १२१८

२१ दा मालक इक अख्वाईआ। नारद कहे मुनी जी तुसां प्राप्त कीता की, कामल मैनूं दयो जणाईआ। की सुखी होया जी, जीवण जुगत देणी दृढ़ाईआ। की मंगिआ पुत्तर धी, माल धन झोली डाहीआ। की दीन मज़हब दी मँगी लीह, हद्दां विच वंड वंडाईआ। की साढे तिन्न हथ्थ वेखी सीं, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। की अमृत रस ल्या पी, आबेहयात मुख छुहाईआ। की अन्तर आत्म बीज्या बी, भेव देणा खुल्हाईआ। नारद कहे की मिल्या शाह पातशाह वड्डा तबी, तबीअत दए बदलाईआ। की जल्वागर रब्बी, नूर नुराना सोभा पाईआ। दुरबाशा कहे जिस ने खेल करनी सभी, साहिब सुल्तान नज़री आईआ। मैनूं ऐं जापदा अज्ज दी रात हलूणा देणा जा के रसूलां नबी, पैग़म्बरां देणा उठाईआ। पुरख अकाल दा आउणा हुंदा कदे कदी, क़दीम दा मालक आपणा फेरा पाईआ। जद आवे पिछली कीती करे रद्दी, इरादा सब दा दए बदलाईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी गद्दी, गद्दीनशीन सोभा कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी बदी, बदला चुकावे थाउँ थाईंआ। ज़रा पूरी हो लैण दयो चौधवीं सदी, सदमा घर घर नज़री आईआ। जगत जहान वहिणी नूह नदी, वहिण वहिणां विच्चों वहाईआ। दुरबाशा कहे नारद जी तुहाडी प्रीत किस नाल लग्गी, मैनूं दयो जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप २१

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे ओ दुरबाशे, वेख मेरी इबारत, किबले अज़ दयां जणाईआ। वेख मेरी शराफ़त, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। वेख मेरी लिआकत, दीन दुनी खोज खुजाईआ। मैं हुक्म चौहन्दा फेर करां जगत शरारत, शरअ नाल शरअ देवां टकराईआ। दीनां मज़हबां दी अंदर वधा के हरारत, अगनी अग्ग दयां लगाईआ। सफा रहे ना कोई माअरफ़त, महबूब दा मेल ना कोए मिलाईआ। कुछ लेखा दस्सणा की खेल होणा विच भारत, भारतवर्ष की दुहाईआ। मैं किसे दी झूठी करनी नहीं सफ़ारश, सफा सब दी फोल फुलाईआ। मैं कोई पैग़म्बरां दे मक़बरिआं उत्ते करनी नहीं ज़िआरत, सजदयां विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म आपणा आप प्रगटाईआ। नारद कहे दुरबाशे वेख आपणी पुश्त, पनाह कवण रखाईआ। वेख आपणी अंगुशत, बालिशत ध्यान लगाईआ। कवण हुक्म देवे दरुस्त, दो जहानां रिहा सुणाईआ। सावधान हो जा चुस्त, ग़फ्लत रहिण कोए ना पाईआ। क्यों पुरख अकाला दीन दयाला जन भगतां नाम वंडे मुफ्त, भगती वाली क़ीमत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। नारद कहे की दस्स रिहा मूसा, मुसलसल रिहा जणाईआ। कुछ खेल होणा विच रूसा, चाँइना चैन कोए ना पाईआ। लेख वखा
१२१९ रिहा ईसा, हज़रत रिहा दृढ़ाईआ। फ़रमान देवे धुर जगदीशा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साडा ख़ाली होण वाला ख़ीसा, १२१९
२१ पाकट मनी ना कोए भराईआ। मुहम्मद दा वक्त रिहा बीता, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। की होया जे कृष्ण ने अर्जन २१
दे ज्ञान पिच्छे अठारां घ्याए लिखाई गीता, सोलां अक्षर वंड वंडाईआ। कलयुग अन्त सब दा धुंदला होया शीशा, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। की वक्त याद करना बीता, पिछली कहाणी की वड्याईआ। औह वेख लेखा वखा रिहा राम जनक सपुत्री सीता, सुत्ती रिहा उठाईआ। पुरख अकाला खेल करे अनडीठा, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जिस ने गोबिन्द बहाया विच अंगीठा, नंदेड़ दिती वड्याईआ। ओह बण के अगम्मी मीता, मित्र प्यारा वेस वटाईआ। फड़ के शब्द नाम दा फ़ीता, दीन दुनी नापे थाउँ थाईंआ। सानूं ऐं जापदा सब ने पाउणा आपणा कीता, करनी दा करता दए सज़ाईआ। जो सब दीआं वेखणहारा नीता, निज अन्तर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी होए सहाईआ। नारद कहे रिषी क्यों होया चुप, सुन्न समाध लगाईआ। एह पिछल्यां रिषीआं दा गरुप, जेहड़े तेरां नौ सोभा पाईआ। जिन्हां गाई सी इक्को तुक, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। उन्हां फेर बणा के सुत, लोकमात दए वड्याईआ। इक्को साहिब रहे झुक, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। अगला लेखा होर ना

पुच्छ, अगले दिन दयां समझाईआ। अज्ज रातो रात लहिंदी दिशा जाणा पुज, मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। सब दा भेव लिआउणा गुज्झ, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। फेर मार के छाल पवां कुद्द, क़दम आपणा लवां बदलाईआ। मेरा जी करदा नारद कहे, दुरबाश्या छेती नाल वेखीए युद्ध, धर्म युधिष्टर दी जगह कलयुग कूड़ कुड़िआरे देईए उठाईआ। फेर सब नूं कहीए ईसा मूसा वाल्यो मारनिंग गुड, गुड मारनिंग कहि के आपणी खुशी मनाईआ। फेर खेल वेखीए जो मिट्टी ख़ाक दब्बे ते जेहड़े साड़े जाण नाल वुड, विड्डो तक्कीए जगत लोकाईआ। एसे समें वास्ते दुहाई दे के गया सी महात्मा बुध, बुद्धी तों परे कर पढ़ाईआ। हुण दोवें कर जाईए चुप, दर ठांडे सीस निवाईआ। वड़ जाईए कलयुग दे अन्धेरे घुप, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। खेल वेखीए छुप, आपणा वेस बदलाईआ। की आशा रखदे पोप, गिरजे चर्चां विच दुहाईआ। की तीर तलवार चलणी कि धमाका होणा तोप, कि राकटां विच वड्याईआ। अगली सारी ल्या के देणी रपोट, योरप दा ज़र्रा ज़र्रा वेख वखाईआ। भेव खोल्हणा हैट पैंट टोप, पर्दा लैणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी इक्को ओट, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

१२२० १२२०

२१ २१

❊ १३ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सोहण सिँघ दे गृह नानक पुरा ❊

नारद कहे मैं उम्मत दा तक्कया काइदा, बिन अलिफ़ ये वेख वखाईआ। जिस उत्ते हज़रत मुहम्मद दा वाइदा, खुद खुदा दिता जणाईआ। धुर फ़रमाना दे बाकायदा, पर्दा उहला दिता उठाईआ। सदी चौधवीं अन्त होणा पैणा अलाहिदा, धरती संग ना कोए रखाईआ। जगत मज़हब दा नहीं कोई फ़ायदा, नूरे चश्म दस्से नूर रुशनाईआ। पुरख अकाल सब दा लए जाइज़ा, नव नौ चार वेख वखाईआ। पूरा करन वाला मुआहिदा, मेहरवान महबूब आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। मुहम्मद कहे मैं देण वाला इक़बाल, बिन रसना दयां जणाईआ। मेरे अंदर आया इक जलाल, जल्वागर कीती रुशनाईआ। जो शरअ छुरी चलाई हक़ीक़त नूं दस्सया हलाल, हलाली वाला डेरा ढाहीआ। जगत जहान दे के मिसाल, मिसल हरफ़ां वाली बणाईआ। ओस दा रहिणा नहीं निशान, निशाना जगत ना कोए झुलाईआ। जां मैं वेख्या मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। झुकदे वेखे ज़िमीं असमान, चौदां तबक ना कोए वड्याईआ। नज़री आया नौजवान, नूर नुराना नूर अलाहीआ। जिस दा खेल सदा महान,

नित नवित्त आपणी कार कमाईआ। सानूं कलमे दस्स कलाम, कायनात दिता समझाईआ। मज़हब दीन बणा इस्लाम, इस्म आपणा इक प्रगटाईआ। जञ्जू बोदी कर हजाम, रूप दिता बदलाईआ। अन्तिम लेखा वेखे सर्ब तमाम, दो जहानां फोल फुलाईआ। नाम शब्द ख़बर संदेसा देवे आम, इतलाह आम रिहा कराईआ। जिस दे बरदे नफ़र ग़ुलाम, सेवक सेवा विच लगाईआ। अगम्मी जणा फ़रमान, फ़रमांबरदारां रिहा उठाईआ। बैठ थनेसर वाले मुकाम, कृष्ण काहन दा लेखा नाल रलाईआ। जो आसा रख के गया त्रैलोकी नंदन भगवान, नाथ अनाथां ध्यान लगाईआ। सो लेखा जाणे सूरबीर बलवान, महाबली बल आपणा आप प्रगटाईआ। मैं वेख के होया हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। मुहम्मद कहे मैं आपणे कलमे दा तक्कया नुक्ता, अलिफ़ ये ना वंड वंडाईआ। जिथ्थे मंज़ल दा पैंडा मुकदा, हक़ीक़त दए गवाहीआ। नज़ारा वेख्या इक तुक दा, जो तुख्म तासीर दए बदलाईआ। बिन सीस तों सीस झुकदा, सजदयां ना कोए वड्याईआ। ओथे परवरदिगार पुछदा, शब्द संदेसे मँग मँगाईआ। निरगुण धार हो के उठदा, जम्मण वाली कोए ना माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे दुरबाशा तूं वी दस्स हाल, हालत दे जणाईआ। रिषी कहे मैं वेख्या कलयुग कूड़ा काल, समां आपणा रंग बदलाईआ। परैज़ंट तक्कया हाल, हालत विगड़ी जगत लोकाईआ। मैं हज़रतां उत्ते कीता इक सवाल, बेनन्ती दिती जणाईआ। तुसीं किस बिध करो संभाल, उम्मत हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा भेव इक खुल्हाईआ। दुरबाशा कहे मैं फेर वेख्या निरगुण धार अगम्मी दुर्गा, दुष्ट दमन नाल मिलाईआ। जिस ने कलयुग जीव वखाया मुर्दा, मुरीद मुर्शद ना कोए सहाईआ। हुक्म संदेसा दस्सया धुर दा, अगम्मी राज़ जणाईआ। पुरख अकाला खेल करे आपणी लोड़ दा, लोड़ींदा साजण होए सहाईआ। जो आदि जुगादि विछड़यां जग जोड़दा, जन भगतां मेल मिलाईआ। सदा संग रखे तोड़ दा, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। ओस वेस वटाया होर दा, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। कलयुग लेखा वेखे अन्ध घोर दा, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। झगड़ा जाणे दीन मज़हब दे शोर दा, छुरी शरअ वाली फोल फुलाईआ। मन कल्पणा तक्के लेखा वेखे जगत मजौर दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। नारद कहे हज़रत ने कीता इशारा, इशारे नाल जणाईआ। जो निरगुण धार आए दुबारा, दोहरी आपणी कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे किनारा, तट घाट फोल फुलाईआ। जिस नूं कहिंदे चवीआं अवतारा, अमाम अमामा बेपरवाहीआ। जल्वागर परवरदिगारा, सांझा इक्को नूर अलाहीआ।

१२२२
२१

चार कुण्ट लाउणा जिस अखाड़ा, लहिंदी दिशा होए सहाईआ। हज़रत मुहम्मद साहिब कहे सानूं हुक्म मिल जाणा ऐसे सतारां हाढ़ा, अग्गे तारीख ना कोए वधाईआ। मूसा ईसा कढुण हाढ़ा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिस ने सृष्टी चबाउणी आपणी दाढ़ा, ज़ुंमेवार सानूं लए ठहिराईआ। फिरनी दरोही जंगल विच उजाड़ा, टिल्ले पर्बत देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे दुरबाशा मस्तक ला ला केसर पंज रती, रतना वाल्यां दे समझाईआ। जगत जहान जगणी नहीं कूड़ दी बत्ती, ममता मोह ना कोए वड्याईआ। पीर पैग़म्बरां ख़बर कर दे सतिगुर शब्द उठणा सैनापती, पतिपरमेश्वर आप उठाईआ। जिस थानेसर कौरोकक्षेत्र विच कराउँदे सी पंडत गति, अग्गे तों मिले ना किसे वड्याईआ। माण रिहा नहीं किसे धाम ज़रा रती, तीर्थ तटां होणी सफ़ाईआ। मस्जिद काअबे वेखणे अक्खीं, नेत्र नैणां अक्ख उठाईआ। वड्याई दिसणी नहीं किसे काहन सखी, सरवर ना कोए सहाईआ। हिस्सा रहिणा नहीं किसे दा पत्ती, पतिपरमेश्वर सब दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मैनूं मूसा देवे राए, राए बहादर कहि के रिहा जणाईआ। मुखों कहे उफ़ हाए, बौहड़ी तेरा नाम दुहाईआ। की खेल रिहा कराए, हरि करता धुरदरगाहीआ। जेहड़े असूल नियम बणाए, धारां विच प्रगटाईआ। ओह मात रहिणे नाहें, अन्तिम होए सफ़ाईआ। की वरते हुक्म खुदाए, खुद करता कार कमाईआ। योरोशलम पए दुहाए, यहूदी बैहबूदी ना कोए वड्याईआ। मुहम्मद कहे चारों कुण्ट अन्धेरा छाए, नूरी नूर ना कोए चमकाईआ। मेरी उम्मत भज्जे वाहो दाहे, दह दिशा रही कुरलाईआ। पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए रखाए, कुशतिआं दे पुश्ते दए लगाईआ। चौदां सदीआं दी कीती होणी ज़ाए, ज़ाहर ज़हूर आपणी कार कमाईआ। चौदां तबक देण दुहाए, तोबा तोबा रहे कुरलाईआ। मेरी हक़ दे अग्गे दुआए, हक़ीक़त दे मालक ओट रखाईआ। जो अमाम अमामा वेस वटाए, कल कल्की नाउँ धराईआ। हज़रत ईसा कहे मैं ओसे दा तक्कां राहे, जो रहिबर रहमत सच कमाईआ। जिस ने नाम दमामे देणे वजाए, डंका इक्को इक शनवाईआ। माज़ी दा लेखा सर्ब गंवाए, फ्यूचर अगला ना किसे दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे दुरबाश्या हुण करनी की बात, सच दे समझाईआ। किथे किथे कटी रात, मैनूं दे दृढ़ाईआ। किते लभ्भी ऊ आपणी ज़ात, भेव देणा खुल्हाईआ। दरबाशा कहे मैं हैरानी विच रिहा झाक, चारों कुण्ट अक्ख उठाईआ। खुल्हा मिल्या कोई ना ताक, ताला बन्द ना कोए खुल्हाईआ। सारे कहिण प्रभू दा पूरा होणा वाक, पैग़म्बर देण दुहाईआ। बौहड़ी साडा रहिण नहीं देणा इतफाक, इतफाकीआ आपणी कार कमाईआ। साडे

अन्तिम होणे तलाक, ताक़तवर हुक्म सुणाईआ। लेखा पूरा कर बेबाक, लहिणा झोली देणा पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहे साडा रहिणा नहीं कोई साक, नाते सज्जण जाण तुड़ाईआ। साडी उम्मत होणी गुस्ताख़, गुस्से विच दुहाईआ। कीती करनी नहीं होणी मुआफ़, मिले अन्त सज़ाईआ। मूसा दे ईसा होणा ख़िलाफ़, मुहम्मद आपणी वंड वंडाईआ। एह वध्धदा जाणा इख़तलाफ़, क़ुदरत दा क़ादर आपणी कार कमाईआ। अन्त अख़ीर सदी चौधवीं जिस ने करना इन्साफ़, अदल दा मालक अदालत इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब नूं देवणहारा शाबाश, जो शरअ दे शाइर शरीअत विच शुरु विच शाह पातशाह दा लेखा गए दृढ़ाईआ।

❋ १३ चेत शहिनशाही सम्मत ५ अर्जन सिँघ दे गृह बलोच पुर ❋

मुहम्मद कहे हज़रत ईसा सलाम, असलामुअलेकम विच वड्याईआ। जिस ने अगम्मी सानूं दस्सी कलाम, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। जिस बरदे बणाया ग़ुलाम, नफ़रां वाली सेव लगाईआ। हुक्म संदेसे दिते तमाम, तमअ तमन्ना इक जणाईआ।
१२२३ ओह शहिनशाह शाह सुल्तान, पातशाह नूर अलाहीआ। जिस नूं मन्न के आए अमाम, अमलां तों रहित नज़री आईआ। सो १२२३
२१ खेल करे वाली दो जहान, निरगुण आपणी कार कमाईआ। धुर संदेसा देवे फ़रमान, फ़ुरने पिछले बन्द कराईआ। तीस २१
बत्तीसे सपारे वेख क़ुरान, काया कुरह की दृढ़ाईआ। जीव जंत वेख ईमान, कामल मुर्शद रिहा सुणाईआ। की शरअ विच झुलाया निशान, रंग कवण रंगाईआ। क्यों अन्त होए बदनाम, बदी घर घर डेरा लाईआ। साची मंज़ल ना रही आसान, महबूब मिलण कोए ना पाईआ। घर घर होए हराम, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। ज़रा निगाह मार के वेख शरेआम, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। वली सारे होए नाकाम, रसूल रंग ना कोए रंगाईआ। हक़ीक़ी देवे कोई ना जाम, महबूब मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी कार कमाईआ। ईसा कहे मूसा तक अगम्मी लिखी तख़्ती, तख़्तनिवासी रिहा जणाईआ। जिस विच हुक्म दिता नाल सख़्ती, संदेसा इक्को इक अलाहीआ। दीन दुनी दी आउण वाली कमबख़्ती, कामल मुर्शद वेख वखाईआ। ज़रा निगाह मार की खेल करे प्रीतम अर्शी, आलीशान आपणी कार कमाईआ। की लहिणा देणा मुकावे धरनी धरत धवल धौल धरती, धर्म दी धार की जणाईआ। आपणी पाकट विच्चों कढ्ढ के वेख लओ पर्ची, प्राचीन दा लेखा दए दृढ़ाईआ। अग्गे चलणी नहीं किसे दी मर्ज़ी, हुक्म

फ़रमाना इक्को इक फ़रमाईआ। दीनां मज़हबां दी क्या कोई करे हमदर्दी, हमदर्द नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। मूसा कहे मैं वेख्या इलाही हासिम, नूरे नूर नज़री आईआ। जिस दा तत नहीं कोई जिस्म, ज़मीर ज़ाहर ना कोए वखाईआ। जिस दी वक्खरी नहीं कोई क़िस्म, रूप रंग ना कोए वड्याईआ। दिसदा नहीं कोई नूरे नज़र चश्म, जगत नेत्र ना कोए वड्याईआ। माटी ख़ाक बणदा नहीं भस्म, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। मूसा कहे मैं ओसे दी खानां क़सम, जो क़िस्मत सब दी दए बदलाईआ। नाले ओस नूं पिता किहा बाप मन्नया नाले किहा ख़सम, आजज़ हो के सीस निवाईआ। हज़रतो पैग़म्बरो नबीओ कलयुग विच उस ने सतिजुग बदल देणी रसम, धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। सारे ओस दे हुक्म अंदर वसण, सिर सके ना कोए उठाईआ। धुर फ़रमाना आवे दस्सण, दह दिशा करे पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब ने ढोला गाउणा जसन, वेद पुराणां लेखा दए मुकाईआ। मुरीदां नूं मुर्शद हो के महबूब हो के ओढन ना देवे कफ़न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को इक नज़री आईआ। ईसा कहे मुहम्मदा मैं तक्कया अजब नज़ारा, मेरा नज़रीआ दिता बदलाईआ। दरगाह साची देवे इशारा, ऐशो इशर्त दए मिटाईआ। निरगुण नूर ज़हूर कर उज्यारा, अन्ध अन्धेरा

१२२४ २१ रिहा गवाईआ। बौहड़ी तेरा निशान नहीं रहिणा चन्द सितारा, सतह ज़िमीं असमान उलटाईआ। ओह प्रगट होवे ज़ाहरा, अमाम अमामा नूर अलाहीआ। जिस दा खेल सब तों निआरा, निराकार आप वखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे धुँदूकारा, साचा चन्द इक चमकाईआ। लहिणा देणा वेखे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, टिल्ले पर्बत समुंद सागर फोल फुलाईआ। जिस नूं सब ने करनी निमस्कारा, सजदयां विच सीस झुकाईआ। उस नूं कहिंदे चवीआं अवतारा, जोती जाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दी धार इक वखाईआ। मुहम्मद कहे मैं वी ओसे दी करां तसदीक़, शहादत आपणी इक भुगताईआ। हज़रत ईसा ओह आसा पूरी करे उम्मीद, मनसा वेख वखाईआ। जिस दी ख़ुशी विच मनाई ईद, ईदुलफ़ितर दए वड्याईआ। जिस दे पिच्छे होए शहीद, आपणा आप मिटाईआ। उम्मत कीती ताकीद, तरां तरां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस दस्सया कलमा लेख जणाया क़ुरान मजीद, मजमूआ हरफ़ां वाला बणाईआ। ईसा कहे मुहम्मद तक उपर असमान, इस्म आज़म वेख वखाईआ। मुहम्मद कहे बोलणा बिना ज़बान, अगम्मी आवाज़ सुणाईआ। जिस खेल करना महान, महबूब नूर अलाहीआ। दह दिशा वेखे मार ध्यान, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख खुलाईआ। हुक्म संदेसा देवे आण, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। कलयुग जीवां कर के सवाधान,

सोई सुरती लई उठाईआ। कूड़ी क्रिया मेट निशान, निशाना आपणा दए झुलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां तों लै के कमान, हुक्म इक्को इक मनाईआ। चार वरन अठारां बरन जिस दा ढोला इक्को गाण, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को करन पढ़ाईआ। इक्को सिदक सबूरी दस्से ईमान, धर्म दी धार इक्को इक जणाईआ। इक्को इष्ट श्री भगवान, इक्को दृष्ट रिहा खुल्हाईआ। इक्को रम्या हर घट राम, राम रहीम इक्को नूर अलाहीआ। इक्को आदि जुगादी काहन, शाम शामा वेस वटाईआ। इक्को नूर अलाही अमाम, जोती जाता डगमगाईआ। सो खेल करे जहान, जहालत दीन दुनी दए मिटाईआ। मूसा कहे मुहम्मद होणा की हैरान, हैरानी विच ना कोए वड्याईआ। जिस दा हुक्म ओसे दा फ़रमान, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। असीं आदि जुगादी गुर अवतार पैग़म्बर ओसे दा ख़ानदान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड दरगाह साची मुकामे हक़ सांझा इक मुकाम, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। मातलोक विच साथों दीनां मज़हबां दी खुल्ह्रा के दुकान, द्वैत वाली वस्त दिती विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। नारद कहे दुरबाशे पैग़म्बरां दी सुणी ऊ गुफ्तार, गुफ्त शनीद की की रहे जणाईआ। की होए जगत रफ्तार, रफ्ता रफ्ता खेल की जणाईआ। की करन वाला करतार, कुदरत दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ। ज़रा उठ के निगाह मार, चार कुण्ट

१२२५
२१

वेख वखाईआ। दुरबाशा कहे जिधर वेखां धूआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर साचा करे ना कोए प्यार, प्रीतम प्रेम ना कोए वखाईआ। सृष्टी दृष्टी होई बेज़ार, सांतक सति ना कोए कराईआ। मैं दूर दुराडा पहुंच करां निमस्कार, निउँ निउँ लागां पाईंआ। पुरख अकाले दीन दयाले आपणी कल आपे धार, कल कल्की खेल वखाईआ। चारों कुण्ट होवे ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। दुरबाशा कहे नारद, ईसा मूसा मुहम्मद चुक्की फिरन किताबां, बिन हथ्थां हथ्थ उठाईआ। लभ्भण महिराबां, जिथ्थे मिले महबूब नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं करे हिसाबा, अन्तिम लेख जणाईआ। की कहि के गया माई हव्वा ते आदम बाबा, भेव अभेद दृढ़ाईआ। सारे कहिण कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण नूर जोती जाता प्रगट होणा माझा, मजलस भगतां नाल रखाईआ। जिस ने इक्को जणाउणा काअबा, पर्दा काया वजूद उठाईआ। आबेहयात देणा स्वादा, निझर झिरना बूँद स्वांत आप चवाईआ। कलमा अगम्म सुणाउणा वजाउणा नाद अनादा, अनहद राग अलाहीआ। झगड़ा मुका के पुन्न सवाबा, साहिब सतिगुर आपणा हुक्म वरताईआ। शाहो भूप बण राजा, रईयत वेखे ख़लक खुदाईआ। किसे दे कोलों ना लए इमदादा, मदद वाली वंड ना कोए वंडाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर नानक कौल पूरा

करे जो कीता विच बग़दादा, बग़लीआं सब दे हथ्थ फड़ाईआ। जन भगतां मित्र प्यारा बण के धुर दा अहिबाबा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द जणाए बोध अगाधा, बुद्धी तों परे निरगुण हरे, निरवैर निरँकार निराकार परवरदिगार आपणा हुक्म समझाईआ।

✻ १४ चेत शहिनशाही सम्मत ५ रणधीर सिँघ दे गृह पहेवा ✻

सचखण्ड दवारे खेल महान, दरगाह साची मुकामे हक़ आप खिलाईआ। हुक्म देवे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नौजवान, परवरदिगार सांझा यार आपणा हुक्म वरताईआ। जोती धार शब्दी सतिगुर सुण अगम्म फ़रमान, अबिनाशी करता आप सुणाईआ। तेई अवतारां कर सावधान, आलस निंदरा विच रहिण कोए ना पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सुणा अगम्म फ़रमान, संदेसा अगम्म अथाह अलाहीआ। दस गुरु वेखण मार ध्यान, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। सारे वेखो ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल खोज खुजाईआ। क्यों सदी चौधवीं शरअ होई शैतान, आत्म ब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। दीन मज़हब मन कल्पणा विच कुरलाण, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। विद्या हक़ ना मिले पढ़ पढ़ थक्के जीव जहान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी रही कुरलाईआ। घट निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण निरवैर निराकार मिले किसे ना आण, जोती जाता नज़र किसे ना आईआ। सृष्टी दी दृष्टी होई हैरान, वैरी घर घर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर सवाधान होवो सचखण्ड निवासी, हरि करता आप जणाईआ। निरगुण धार लोकमात मारो झाकी, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप फोल फुलाईआ। आपणी चार जुग दी पिछली वेखो साखी, साख्यात पर्दा दयो खुल्हाईआ। क्यों तुहाडे हुन्दयां कलयुग जीवां मनुआ होया आक़ी, तुहाडे नाम मिले की वड्याईआ। किधर गया तुहाडा पूजा पाठी, सिमरन जोग अभ्यास तन वजूद करे ना क्यों सफ़ाईआ। साचे मण्डल पए कोई ना रासी, काया मन्दिर अंदर वज्जे ना कोए वधाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म जुड़े कोई ना नाती, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। जीवण विच्चों जीवण बदले ना कोए हयाती, आबेहयात रसना रस ना कोए चखाईआ। क्यों झगड़ा पाया दीन मज़हब काग़ज़ाती, मेरा नाउँ अक्खरां विच वंड वंडाईआ। गुर अवतार पैग़ंबरो तुसीं सारे बणे फ़सादी, मानव ज़ाती झगड़यां विच कलमयां विच दीनां विच इस्लामां विच कलामां विच आए लड़ाईआ। मेरी मंज़ल

इक्को हक़ीक़ी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो उठो वेखो जल्दी, सोया रहिण कोए ना पाईआ। क्यों चार कुण्ट दह दिशा अग्ग बलदी, सांतक सति ना कोए कराईआ। किथे खेल गई तुहाडी तुहाडे घर दी, घर विच घर नज़र किसे ना आईआ। क्यों पूजा पाठ करदयां सुरती साची मंज़ल नहीं चढ़दी, शब्द विच शब्द ना कोए मिलाईआ। क्यों नहीं ख़बर किसे नूं परम पुरख दे घर दी, सचखण्ड दवारे मिलण कोए ना आईआ। क्यों मन कल्पणा दीन दुनी लड़दी, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। की खेल होणी दीन दयाले अगम्मे नर दी, नर नरायण की कल वरताईआ। क्यों माया ममता वहिण विच सृष्टी दृष्टी जाए हढ़दी, गुर अवतार पैग़म्बर हो अग्गे ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो तक्को आपणी दीन दुनी लोकमात, मातर भूमी ध्यान लगाईआ। ज़ातां पातां दीनां मज़हबां विच लओ झाक, ऊचां नीचां फोल फुलाईआ। साची समझे कोई ना ज़ात, पर्दा निरंतर अन्तर ना कोए उठाईआ। जिधर तक्को अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ।
१२२७ किधर गई तुहाडी नाम सौग़ात, कलमे वाल्यो दयो समझाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर किस नूं देणी शाबाश, मेहर नज़र १२२७
इक उठाईआ। जो भविख्तां विच लिख्तां विच दृष्टां विच सृष्टी आए आख, पेशीनगोईआं विच सुणाईआ। लेखा लिख आए
२१ नाल क़लम दवात, काग़ज़ स्याही जोड़ जुड़ाईआ। सो खेल करना आप पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता धुरदरगाहीआ। २१
तुसीं दीन दुनी तक्को काया अंदर मार झात, पर्दा दयो खुल्हाईआ। सिफ्ती नाम पढ़न वाल्यां दा अंदरों खुल्हिआ ना किसे दा ताक, निरअक्खर समझ किसे ना आईआ। लहिणा देणा जीवण ज़िंदगी करे ना कोए बेबाक, लख चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाणा इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो आपणे आपणे मुरीद सिख, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। किसे दी पूरी होवे ना इच्छ, आसा मनसा पूर ना कोए कराईआ। चार वरन अठारां बरन तन माटी होई ज़िच, काया गढ़ ना कोए सुहाईआ। तुसीं दस्स के आए अल्ला वाहिगुरु राम सब दा मालक इक्क, एकँकार समझ किसे ना आईआ। साची मंज़ल चढ़ के कोई वेख ना सके साहिब अनडिठ, निज नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। तुसीं जगत माण बणा के आए मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ जिन्हां दी घाड़त घड़ी पत्थर इट्ट, सिल पाहन नाल वड्याईआ। किसे दा खुल्लया नहीं नेत्र निज, निज नैण ना कोए रुशनाईआ। आत्म परमात्म बणया नहीं कोई मित्त, मित्र प्यारा मेल ना कोए मिलाईआ। नाड़ बहत्तर सब दी उबले रत, सांतक सति ना कोए कराईआ।

मन कल्पणा सक्कया ना कोई जित्त, कूड़ कुड़िआर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो आपणा अन्त अख़ीर, आख़र दयां जणाईआ। जेहड़ी भविख्तां विच कीती तहरीर, तक़दीर रूप बदलाईआ। ओह खेल करे अगम्म परवरदिगार धुर दा पीर, पैग़म्बरां तों परे ध्यान लगाईआ। जिस ने दीन दुनी दी बदल देणी ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर आपणा हुक्म वरताईआ। तीर्थ तटां बदल देणा नीर, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। जिस दी दुहाई दे के गया कबीर, मन्दिर चढ़ के रिहा दृढ़ाईआ। ओह नाम खण्डा अगम्मी फड़ शमशीर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जिस ने शरअ दे कटणे ज़ंजीर, दीनां मज़हबां डेरा ढाहीआ। सतिजुग साचा करना तामीर, सति धर्म इक वखाईआ। झगड़ा रहे ना ग़रीब अमीर, चार वरनां एको रंग रंगाईआ। अमृत नाम बख़्श के सीर, सांतक सति देणा कराईआ। आपणे हथ्थ रख तदबीर, तक़दीर दीन दुनी देणी बदलाईआ। करे खेल बेनज़ीर, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा इक प्रगटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू साडा धुर चरण तेरे सजदा, नमों निमस्कार डंडावत इक जणाईआ। हउँ सेवक तेरे बरदा, जुग चौकड़ी ख़ादम रूप वटाईआ। जो हुक्म संदेसा रिहा घलदा, सो जीवां
१२२८ जंतां आए सुणाईआ। तेरा भेद ना आया अछल अछल्ल दा, बेअन्त कहि के आए गाईआ। सानूं पता नहीं की खेल होणा १२२८
२१ कलयुग कल दा, कलकाती कवण मिटाईआ। ज़ोर वेख्या काम क्रोध लोभ मोह हँकार दल दा, चार वरनां सोभा पाईआ। २१
किसे राह नहीं लम्भया तेरे निहचल धाम अटल दा, कोटन कोटि साध सन्त फिरन धूंणीआँ ताईआ। निहचल धाम कोई ना मल्लदा, सचखण्ड दवारे सोभा कोई ना पाईआ। झगड़ा प्या कलयुग दूई द्वैती सल दा, इक्को रंग ना कोए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अकाले साडी इक सलाह, बिन मशवरे दईए जणाईआ। सृष्टी दृष्टी दा बण मलाह, आत्म परमात्म पर्दा दे चुकाईआ। दीन दुनी दे बख़्श गुनाह, रहमत आपणी इक कमाईआ। जो दीन मज़हब आए बणा, मानव मानव वंड वंडाईआ। पिछली शरअ दे गवा, शरीअत अग्गे रहे ना राईआ। आत्म ब्रह्म इक दृढ़ा, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। पंजां तत्तां दा झगड़ा दे मुका, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करे ना कोए लड़ाईआ। तूं दाता बेपरवाह, सतिजुग साचा दे वरताईआ। जिस विच इक्को तेरा होवे नाँ, दूजा इश्ट ना कोए मनाईआ। सिफ्ती नाम आपणे विच समा, साहिब सुल्तान आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण ज्यों सचखण्ड तेरे दुआर असीं इक्ठे रहन्दे इक्को थाँ, दूसर वंड ना कोए रखाईआ। एसे तर्हां

मातलोक नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव ज़ाती इक्को रंग रंगा, इक्को नाम इक्को कलमा दे समझाईआ। तूं आदि जुगादी सब दा पिता माँ, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। पिछला लेखा दे मिटा, अगला आपणा हुक्म वरताईआ। तूं ही अल्ला नूरी अगम्म खुदा, वाहवा तेरी वज्जे वधाईआ। अग्गे होए ना कोए जुदा, सांझा जुज़ इक दृढ़ाईआ। साडा पूरा होए वायदा, वक्त सुहञ्जणा दए गवाहीआ। तेरे नाम दा वखरा पढ़ीए कोई ना काइदा, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी तेरे नाल होए पूरा मुआहिदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो देणा पए इक़बाल, सन्मुख हो के देणा जणाईआ। दीन दुनी दे रहिणा नहीं दलाल, निरगुण सरगुण रंग ना कोए रंगाईआ। ज़ुमेवारी छड्डी झटका हलाल, सूर गाँ दा हिस्सा ना कोए पाईआ। आपणा समां वेखो काल, सदी चौधवीं दए गवाहीआ। झगड़ा छड्डुणा मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर, धर्मसाल इक्को घर लैणा सुहाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत जगे महान, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। दूजा दिसे ना कोए निशान, धर्म निशाना इक्को देणा झुलाईआ। दीन मज़हब दा झगड़ा मेट तमाम, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। बुद्धी तों परे होए ज्ञान, मन ममता कूड़ लोकाईआ। सारी सृष्टी मन्ने इक्को श्री भगवान, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। तुसीं सारे मिल के इक्को कलमा करना गान, तूं ही तूं ही राग अल्लाईआ। एह अगम्मा हक़ फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिगुर शब्द वडा बलवान, दो जहानां हुक्म वरताईआ। सब दा लहिणा देणा चुकाए विच जहान, जहालत कूड़ी क्रिया देवे गंवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट निशान, तत विकारा करे सफ़ाईआ। सब नूं करना पए परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू हउँ बालक तेरे नादान, बाले नढ्ढे नज़री आईआ। चरण कँवल कँवल चरण बिन सीस सीस झुकाण, निउँ निउँ लागण पाईआ। तेरा खेल अगम्मा बिन माटी चम्मा जोती जाते जगत महान, आदि अन्त श्री भगवन्त समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं छड्डीए पिछली रीती, रीतीवान तेरी सरनाईआ। की दस्सीए कथा कहाणी बीती, दीन दुनी दिती लड़ाईआ। सांतक सति करे कोए ना सीती, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मज़हबां वाली बणा के निक्की निक्की बग़ीची, बाग़बान आपणी खेल वरताईआ। सारी सृष्टी वस्स किसे ना कीती, इक्को नाम ना कोए जपाईआ। तेरा खेल सदा अनडीठी, जग नेत्र नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्त जिधर तक्कीए उधर तपे अंगीठी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले तेरे नालों टुट्टी सर्ब प्रीती, भगत भगवान मिलण कोए ना आईआ। साडा भुल्ल गया कलमा गई

हक़ हदीसी, हज़रत रहे जणाईआ। साडी नेत्र अक्ख मीची, नैण सके ना कोए उठाईआ। साडी भुल्ल गई सृष्टी नीती, नीतीवान दए ना कोए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो तीर्थ तटां, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। वेखो जगत वणजारे हट्टां, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान फोल फुलाईआ। वेखो दीन दुनी दीआं मत्तां, मन कल्पणा विच कुरलाईआ। साची रही कोई ना सत्ता, सति रंग ना कोए रंगाईआ। कलयुग जीव दह दिशा फिरे नठ्ठा, चार कुण्ट हल्काईआ। धुर दा नाम किसे नहीं डिट्ठा, पंडत पांधे देण दुहाईआ। कागज़ां दीआं बन्ही फिरदे गट्ठां, अक्खरां वाली करन पढ़ाईआ। मिल्या कोई नहीं पुरख समर्था, समरथ स्वामी नज़र कोए ना आईआ। जगत जहान नूं वेखदे बाहरली दो अक्खां, निज नेत्र दरस कोए ना पाईआ। गल्लां बातां विच जीवां जंतां दीआं कराउँदे गतां, आपणी गत समझ किसे ना पाईआ। सब दीआं मारीआं गईआं मत्तां, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी जो हर घट अंदर वसा, गृह गृह डेरा लाईआ। ओस दा नाम अगम्मा रसा, बिन रसना रस चखाईआ। जिस दा मार्ग आदि जुगादी जुग चौकड़ी सदा सच्चा, सच दए वड्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कूड़ी क्रिया खेल वेखे कच्चा, काची माटी फोल फुलाईआ।
१२३० गुर अवतार पैग़म्बरो अगला भेव खोल्हो संदेसा देणा जगत जहान पक्का, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा हुक्म वरताईआ। कितना १२३०
२१ चिर होर काअबिआं विच हुजरिआं विच खेल होणा मदीना मक्का, मक़बरिआं कवण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप २१
आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा सदा समर्था, साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी परवरदिगार सांझा यार निरगुण धार निरवैर निराकार दो जहानां वेख वखाईआ।

✻ १४ चेत शहिनशाही सम्मत ५ आत्मा सिँघ दे गृह पहेवा ✻

नारद कहे मैं रैण सबाई भज्जिआ, नौ खण्ड पृथमी आपणा चक्र लगाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दरबार वेख्या सज्जया, सोहणा रंग बणाईआ। कलमा शरअ दा डंका वज्जया, शरीअत आपणा रंग बदलाईआ। जिन्हां खाधा गाँ वच्छया, रीती जगत विच बदलाईआ। मैं बचन दस्सया सच्चया, संदेसा इक दृढ़ाईआ। पैग़म्बरो वेखो कलयुग जीव जहान मच्चया, अगनी तत रही तपाईआ। प्रभू लूं लूं अंदर किसे नहीं रच्चआ, चार कुण्ट दए दुहाईआ। माया ममता तीर निराला कस्सया, हँकार

विकारा गढ़ बणाईआ। दीनां मज़हबां करे कोए ना इकट्ठया, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करन लड़ाईआ। तुसां क्यों प्रभू दा नाम वखरा वखरा दस्सया, ओम राम कृष्ण अल्ला वाहिगुरु दिता जणाईआ। अन्तिम रही ना किसे विच सत्तया, बलहीण रहे कुरलाईआ। घर घर वेख्या मन मत्तया, बुध्ध बिबेक ना कोए रखाईआ। भाई भैण रिहा ना सक्कया, पिता पूत करे लड़ाईआ। चारों कुण्ट रैण अन्धेरी मस्सया, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी जिस दी करदी जस्सया, सिफ्तां विच राग नाद ढोले जगत गाईआ। ओस दा दरस किसे नहीं पाया नाल अक्खीआं, नैणहीण होई लोकाईआ। धुर दा काहन मिल्या ना जो लख चुरासी हंढ्ढाए सखीयां, परमात्म आत्म बेपरवाहीआ। पैग़ग्बरो दीनां मज़हबां दीआं निक्कीआं निक्कीआं पा के पत्तीआं, हिस्से मनुषां वाले रखाईआ। अन्त वहीरां किधर घत्तीआं, मैनूं दयो समझाईआ। याद कर लओ अर्जन वालीआं लोहां तत्तीआं, तत्ती तवी दए गवाहीआ। अग्गे दीन मज़हब ज़ात पात दीआं चलणीआं नहीं हट्टीआं, वणज वणजारा ना कोए कराईआ। पिछलीआं अलिफ़ ये वालीआं साफ़ कर लओ पट्टीआं, पटने वाला रिहा दृढ़ाईआ। निक्कीआं निक्कीआं जगणीआं नहीं मोम बत्तीआं, पुरख अकाला करे इक्को नूर रुशनाईआ। जोती जोत
१२३१ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैनूं मिल्या कलयुग फिरदा फिरदा, पैग़ग्बरां १२३१
गिर्द चक्र लगाईआ। हस्स के कहे नारद मैं साफ़ रहिण नहीं दिता किसे दा हिरदा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मैं
२१ तैनूं लभदा चिर दा, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। वेख खेल नरायण निर दा, जो निराकार नूर अलाहीआ। जिस दा लेखा २१
जुग जुग सदा निबड़दा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाईआ। जगत जहान श्री भगवान वेखे भरया चिक्कड़ दा, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। नाता रिहा नहीं दोस्त मित्र दा, प्रीतम प्रेम ना कोए कमाईआ। कूड़ कल्पणा विच्चों कोई नहीं निकलदा, पंच विकारां डेरा ढाहीआ। कलयुग अन्तिम साधां सन्तां रस्ता मिले ना सिखर दा, चोटी चढ़ दरस कोए ना पाईआ। जगत विद्वान रूप बणया पित्तल दा, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। वेखो खेल दीनां मज़हबां वाले मिशन दा, गुर अवतार पैग़ग्बर संग ना कोए निभाईआ। खेल तक्कणा शिव ब्रह्मा विष्न दा, त्रै त्रै लेखा दए चुकाईआ। की संदेसा द्वापर अन्तिम त्रैलोकी नाथ कृष्ण दा, दुरबाशे गया दृढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम वेला होणा मिटण दा, मिट्टी ख़ाक जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। नारद कहे मैं कलयुग सहज ल्या पुच्छ, जगत मित्रा दे जणाईआ। अग्गे करना की कुछ, सदी चौधवीं अन्तिम नेड़े आईआ। कलयुग कहे मैनूं प्रभ नूं लैण दे झुक, निउँ के सीस निवाईआ। चार जुग दे शास्त्रां नालों माण देणा इक्को तुक, तूं मेरा

मैं तेरा ढोला गाईआ। पैग़म्बरां पैंडा जाणा मुक, ईसा मूसा मुहम्मद दए गवाहीआ। तेई अवतारां करना खुश, लहिणा सब दी झोली पाईआ। गुर अवतार बणा के सुत, सचखण्ड साचे देणा सुहाईआ। पुरख अकाला पैणा उठ, निरगुण दाता नूर अलाहीआ। जन भगतां उपर जाए तुठ्ठ, गुरमुख सज्जण मेल मिलाईआ। दीन दुनी दा बदल के रुख़, साचा मार्ग इक समझाईआ। झगड़ा रहे ना मानव मानुख, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश ज़ात पाती वंड ना कोए रखाईआ। मन कल्पणा मेटे दुःख, जगत तृष्ना दए गवाईआ। सतिजुग साची मौले रुत्त, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। धर्म दी धार पए फुट्ट, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मैनूं कलयुग दिता दस्स, कन्न विच सुणाईआ। वेखणा खेल पुरख समरथ, जो दाता बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलावणहारा रथ, बण रथवाही वेस वटाईआ। सदी चौधवीं खेड़ा करे भड्ड, भठियाला हो के अगनी डाहीआ। लेखा जाणे तत अठ्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध्ध फोल फुलाईआ। लहिणा मुकाए अठसठ, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। झगड़ा मेटे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ, गुरुदुआर वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को शब्द नाद सुणाए अगम्मी नद, नाउँ निरँकार आप दृढ़ाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रगट, चार कुण्ट करे रुशनाईआ। साचा मार्ग दीन दुनी दस्स, रस्ता इक्को दए वखाईआ। आत्म परमात्म गावो जस, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। पुरख अकाला तक्को नेत्र अक्ख, निज लोइण आप खुल्हाईआ। हक़ीक़त विच्चों दे के हक़, असलीअत आपणी दए समझाईआ। कलयुग किहा मैं रहिण नहीं दिता किसे दा सति, धर्म दी धार ना कोए वड्याईआ। चार कुण्ट लथ्थी पत, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। सांतक रही किसे ना सति, बुध्ध बिबेक ना कोए जणाईआ। नौ दवारे सारे रहे नस्स, कूड़ कल्पणा विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग कहे नारद वेख ईसा मूसा मुहम्मद धार, सहज दयां जणाईआ। खेल होणा विच संसार, ख़ालक ख़लक दए कराईआ। इक दूजे दा मुकणा एतबार, बेएतबारी आप बणाईआ। सब नूं कर के ख़बरदार, बेख़बरां देणा उठाईआ। झगड़ा पाउणा जिस नूं मेटे ना कोए नाल प्यार, मुहब्बत विच ना कोए वड्याईआ। लहिंदी दिशा होणी खुआर, खुरासान रहे कुरलाईआ। खेल करे इसतिगुफ़ार, धुर मालक नूर अलाहीआ। जिस नूं अमाम अमामा मन्नया सिक्दार, मालक धुरदरगाहीआ। सो लहिणा जाणे सर्ब संसार, सृष्टी दृष्टी फोल फुलाईआ। हुक्म संदेसा दे के आपणी धार, धरनी धरत धवल धौल सुणाईआ। चार कुण्ट दिसे हाहाकार, धीरज धर्म ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर हुक्म इक जणाईआ। धुर हुक्म कहे खेल श्री भगवाना, हरि भगवन आप जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणा निशाना, सच निशाना इक झुलाईआ। पुरख अबिनाशी पहर के बाणा, जोती जामा नूर रुशनाईआ। पिछला लेखा मुकाए जहाना, जहालत कूड़ रहे ना राईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां जो दिता दाना, नाम अमोलक शब्द वस्त वरताईआ। सो सब दा लेखे पाए आपणा ख़ज़ाना, अग्गे झोली ना कोए भराईआ। दीन दयाले नौजवाने मर्द मर्दाने बदल देणा ज़माना, ज़िमीं असमानां वेख वखाईआ। एका रंग रंगाए चार वरन अठारां बरन सिख ईसाई हिन्दू मुस्लमानां, आलमीन आमीन अमल इक्को इक जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सृष्टी दृष्टी अंदर दे के सच ज्ञाना, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणा पर्दा दए उठाईआ। सतिजुग साचा सच कर प्रधाना, शब्द गुरदेव स्वामी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस नूं झुकण ज़िमीं असमाना, विष्न ब्रह्मा शिव करन परवाना, करोड़ तेतीसा सीस ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मार्ग इक उपजाईआ। सच कहे मैं प्रगट होणा जग, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटणी अग्ग, हउमे हंगता देणी गंवाईआ। जन भगतां दरस वखाउणा उपर शाह रग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। दीन मज़हब दी तोड़ के हद्द, मानव इक्को घर बहाईआ। अमृत जाम प्या के मदि, मधुर धुन देणी उपजाईआ। शब्द अगम्मी वजा के नद, अनहद नादी राग नाद सुणाईआ। जो आत्मा परमात्मा नालों होई अलग, विछड़यां सहज देणा मिलाईआ। इक्को दे के अमरा पद, पतिपरमेश्वर दर टिकाईआ। जिथ्थे रहे पुरख समरथ, दूजा अवर ना कोए वड्याईआ। जिसदी महिमा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। ओह सब नूं करनहारा वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। कलयुग अन्त हो प्रगट, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक खुल्हाईआ। सच दुआर कहे मैं आदि जुगादी इक्क, एकँकार दए वड्याईआ। जिथ्थे पुरख अकाला साहिब स्वामी पारब्रह्म परवरदिगार पए दिस, जल्वागर नूर नूर अलाहीआ। ज़ात पात दीन मज़हब ऊँच नीच राउ रंक ना कोई दिसे हिस्स, आत्मा परतमातमा परमात्मा आत्मा इक्को रूप सोभा पाईआ। जिथ्थे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी गीता ज्ञान दा हुंदा बस, अक्खरां वाले हरफ़ां वाले बस्ते दए बंधाईआ। उस तों अग्गे खेल पुरख समरथ, जिथ्थे गुर अवतार पैग़म्बर बैठे सीस निवाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द तों रहे रट, तन वजूद माटी ख़ाक पंज तत पुतला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार इक उपजाईआ। धुर दी धार कहे मैं अगम्म अथाह, मेरा भेव कोए ना पाईआ। जुग जुग आवां वेस

१२३३
२१

वटा, गुर अवतार पैग़म्बर नाउँ धराईआ। शब्द कलमा देवां पढ़ा, सिफ्ती नाम मातलोक समझाईआ। नित नवित्त धरनी धरत धवल खेल रचा, मानव माणस मानुख आपणा हुक्म समझाईआ। हक़ संदेसे नर नरेशे देवां सुणा, बोध अगाध करां पढ़ाईआ। कलयुग अन्त जोती जामा वेस वटा, आप आपणा फेरा पाईआ। जिस नूं कहिंदे जल्वागर खुदा, ख़ादम अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव सेव कमाईआ। ओह लहिणा देणा लेखा सब दा दए चुका, चौकन्नी करे लोकाईआ। पंडत पांधे मुल्लां शेख़ मुसायक ग्रंथी पन्थी एका रंग दए रंगा, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। आत्म ब्रह्म पारब्रह्म भेव अभेदा दए खुल्हा, पर्दा उहला काया मन्दिर अंदर मुकामे हक़, हक़ीक़ी काअबे रहिण कोए ना पाईआ। साचा मार्ग श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान दीन दुनी कायनात सृष्टी दृष्टी अंदर देवे दस्स, दह दिशा नौ दुआर एकथार इक्को हुक्म सुणाईआ। शब्द निराला अणयाला तीर मारे कस, आर पार तिक्खी धार वेख वखाईआ। सो साहिब सतिगुर कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती ज़ाता पुरख बिधाता सच स्वामी अन्तरजामी निरवैर हो प्रगट, परम पुरख परमात्म आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त करनी करता करे सच, सच दा मालक सच सच विच्चों प्रगटाईआ।

१२३४

१२३४

२१

२१

✻ १४ चेत शहिनशाही सम्मत ५ मन्दिर विच पंडत दे नाल पहेवा ✻

सतिगुर शब्द सदा सर्बग्ग, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सद अख्वाईआ। नित नवित्त प्रगट होवे जग, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। जन भगत सुहेले लए लभ्भ, सन्त सज्जण वेख वखाईआ। जोती धार दर्शन देवे उपर शाह रग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ । मन ममता त्रैगुण माया बुझा के अग्ग, अमृत मेघ दए बरसाईआ । जगत वासना पार कर के हद्द, गृह मन्दिर इक सुहाईआ। जिथ्थे वज्जे अगम्मी नद, धुन आत्मक राग अलाहीआ। जोत धार होवे प्रगट, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। सच दुआर वखा के हट्ट, महल अटल इक वड्याईआ। जिथ्थे साहिब वस्से समरथ, पतिपरमेश्वर आसण लाईआ। जिस दा रूप रंग रेख सक्कया कोए ना दस्स, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कहि के सारे गाईआ। सो लेखा जाणे अलखणा अलख, अलख अगोचर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। जिस ख़बर संदेसा दिता सनकादक सन्त कुमार, इक इक्क जणाईआ। जिन्ह बराह दी बद्धी धार, आपणा बल प्रगटाईआ। यगै पुरुष दी पैज संवार, हाव गरीव लई अंगड़ाईआ। नर नरायण हो त्यार, दत्ता त्रै वेस वटाईआ। करे खेल अगम्म अपार,

जोती जाता आपणा वेस वटाईआ। कपल मुन कर के ख़बरदार, सांख योग दिता समझाईआ। रिखव देव पर्दा लाह अपार, पिरथू आपणा रंग चढ़ाईआ। मत्स वड़ के जलधार, कच्छप मन्दिरा पिठ उठाईआ। धनंतर हो के पाई सार, औषध रूप बदलाईआ। हँसा बावन हो के ख़बरदार, सोहणी आपणी कार कमाईआ। हरी हरि खेल अपार, गज लेखा दिता चुकाईआ। परस राम रूप निराकार, ब्राह्मण ब्रह्म विच वड्याईआ। राम रामा हो उज्यार, दशरथ लेखा दिता चुकाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, अख़शरां अक्खरां विच बदलाईआ। काहना कृष्णा मीत मुरार, नाम बंसरी धुन सुणाईआ। लेखा वेख जगत संसार, संसारी भण्डारी सँघारी लए बुलाईआ। कुमेर अंदर सद्दे सच दरबार, दर दरबारी सोभा पाईआ। खेल कीता अपर अपार, त्रैलोकी नंदन आपणी कार कमाईआ। माया छाया रूप धर निराकार, साकार विच निरगुण जोत लई लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। कृष्ण कहे मैं घनईआ काहन, काहना रूप वटाईआ। सोलां कला जगत निशान, नौ सत्त बराट मेरी वड्याईआ। मेरा खेल मेरे ज़िमीं असमान, चौदां तबक आपणे विच लुकाईआ। चौदां लोक मेरे अंग निशान, निशाने सब नूं दए दृढ़ाईआ। कौरो पांडो खेल कीता महान, महिमा आपणी आपणे विच टिकाईआ। विद्वानां नूं बुद्धी विच कीता परेशान, अक़ल बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। साक सन्बंधी सारे वैरी हो के इक दूजे नूं तकान, दुश्मण दुश्मण रूप वटाईआ। ना दरोनाचारज दी विद्या रही ना कोए ज्ञान, शत्रु शस्त्रधारी हो के दिते लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। कृष्ण कहे मैं आया बण घनईआ, शाम शामा रूप धराईआ। द्वापर अन्तिम वेखी नईआ, नौका तक्की जगत लोकाईआ। सारयां दा बण के सज्जण सईआ, सन्बन्धी सारे लए बुलाईआ। लेखा रख के सब दा गुज्झा आपणी बहीआ, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। प्यार नाल सतिकार नाल विहार नाल फड़ के बहीआ, भाई भाई दिते उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। कृष्ण कहे मैं त्रैलोकी नाथ, त्रैगुण अतीता नज़री आईआ। जोती जाता शब्द गुरु दा साथ, साख्यात आपणी कार कमाईआ। रथवाही बण के चलाया राथ, महासार्थी नाउँ प्रगटाईआ। अर्जन दस्सी गाथ, ज्ञान ज्ञान विच्चों उपजाईआ। ना कोई तेरा सज्जण ना कोई साक, कुटम्बी नज़र कोए ना आईआ। धर्म युद्ध विच लग्गे कोई ना पाप, पतित पुनीत दिता समझाईआ। फेर वखाया जिधर वेख मैं आपे आप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। बिना अक्खां तों वेख मेरा प्रताप, दो जहानां सोभा पाईआ। मैं ही ब्रह्म मैं भगवान मैं ही जाप, जीवत जप तप आप अख्वाईआ। मैं ही रोग मैं ही सोग, मैं ही चिन्ता दु:ख भोग, मैं ही संयोग

१२३५
२१

मैं ही वियोग, मैं ही वैराग मैं ही त्याग, मैं ही कन्त सुहाग सब दा नज़री आईआ। तेरी खोल्हां जाग, तैनूं अगला दस्सां भाग, जिस नूं समझे कोए ना साध, रिषी मुनी बैठे ध्यान लगाईआ। एह अगम्मी कही बात, ना ओस वेले दिन सी ना रात, घड़ी पल समझ किसे ना आईआ। एह शब्द सुणाया, बिन रसना गाया, अन्तर आत्मक धुन उपजाया, अर्जन इक ज्ञान जणाया, बिना बोलण तों अनबोलत दिता सुणाईआ। कृष्ण हैरानी विच शैतानी विच बेईमानी विच इन्सानी विच मेहरवानी विच आपणा भेव खुल्हाया, सहज नाल हथ्थ पिट्ठ उत्ते टिकाईआ। जो उपज्या सो रहिण ना पाया, धर्म युद्ध दी रचना दिती रचाईआ। एह मेरा खेल ते मेरी माया, बेपरवाही विच समाईआ। खण्डा खड़ग तीर कमान चिल्ला नहीं कोई उठाया, धनुश हथ्थ ना कोए टिकाईआ। हर हिरदे विच आपणा नाम अगम्मा तीर छुहाया, सोई सुरती सब दी दिती जगाईआ। जां वेख्या चारों कुण्ट गरदो गुबार अन्धेरा छाया, हाहाकार मच्ची लोकाईआ। अर्जन हथ्थ बन्न्ह के सीस निवाया, चरण चरणोदक लै मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। उने चिर नूं युधिष्टर आया, धर्म दा बेटा आपणा पन्ध मुकाईआ। ओस ने हस्स के हथ्थां उत्ते हथ्थ वजाया, सोहणी ख़ुशी दिती बणाईआ। मेरे काहन जी, मेरे भगवान जी, मेरे दाता दानी दीन दयाल जी, मेरे काल महाकाल जी, मेरे पूजय सच्ची धर्मसाल जी, मेरे शिवदवाले मठ मेरे मन्दिरां दे मन्दिर मेरे जोती नूर नुरान जी, मेरी इक ते अनेक अनेक तों इक प्रणाम जी, ज़रा सच दस्सो केहड़ा ज्ञान जी, जिस दे नाल लख चुरासी दे बंधन मिट जाण जी, आवण जावण मात गर्भ ना कोए फेर तपाण जी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कृष्ण किहा युधिष्टर किधरों आ गया फिरदा तुरदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। पेशानी उत्ते हथ्थ मारया सृष्टी वेख सारी मुर्दा, बिना मेरी किरपा तों जीवत नज़र कोए ना आईआ। करां खेल वेख देवत सुर दा, इंदर इंदरासण सिँघ सिँघासण बैठे ध्यान लगाईआ। एथे कोई खेल नहीं बल ज़ोर दा, ताक़त वाली ना कोए वड्याईआ। मैं त्रैलोकी नंदन सब नूं विछोड़दा सब नूं जोड़दा, एह मेरी बेपरवाहीआ। बेशक मैं रथ रथवाही चार घोड़ दा, चारों कुंट ध्यान लगाईआ। ज़रा खेल वेखणा शोर दा, चारों कुण्ट हाहाकार मच्चे दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए लिखाईआ। युधिष्टर किहा कृष्ण मैं वेखे सारे मूर्च्छत, मूर्ती सब विच इक्को तेरी नज़री आईआ। तूं मालक द्वापर वाले पूर दा, पुरीआं लोआं तेरा राह तकाईआ। तूं गढ़ तोड़ना ग़रूर दा, हँकारी दर्योधन ल्या उठाईआ। एह खेल तेरा दस्तूर दा, जुग जुग आपणी कार भुगताईआ। जेहड़ा हुक्म तेरे मन्ज़ूर दा, ओह वरते थाउँ थाईंआ। ऐं जापदा जगत शमशान भूमी रूप बणया तन्दूर दा, अगनी आपणा रंग वखाईआ। एह शरीर पंज तत नाता कूड़ दा, लोकमात

रहिण ना पाईआ। दस्स किस तरां लेखा मुक्कणा एस जीव सरूर दा, सहज देणा समझाईआ। कृष्ण कहिंदा युधिष्टरा जो हाज़र सो चरणोदक लै मेरी धूढ़ दा, जन्म मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। मैं आसा मनसा सब दी पूरदा, सारे मेरा ब्रह्म ते मैं ब्रह्म दा मालक ब्रह्म ब्रह्म विच समाईआ। युधिष्टर हस्स के किहा स्वामी जिस वेले तेरे पिच्छों वक्त हो गया दूर दा, तैनूं मिलण कोए ना पाईआ। कृष्ण किहा ओस वेले कलयुग समां होणा मूर्ख मूढ़ दा, बुद्धिवान बुद्धी देण गवाईआ। मैं इक जगत रीती खेल दस्सां दस्तूर दा, जगत करां पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। झट अर्जन बोलया तूं मैनूं दस्सया इंड पिंड ब्रह्मण्ड, सब कुछ दिता वखाईआ। मैं तक्कया तेरा अनन्द, तेरे अनन्द विच समाईआ। सवैम तूं सवैम मैं सवैम तेरा परमानंद, अनन्द विच परमानंद ल्या मिलाईआ। दस्स, जगत तेरे पिच्छों कुछ काल गया लँघ, तेरा दरस कोए ना पाईआ। जिन्हां दी तूं शहादत लैणी विच जंग, धर्म युद्ध विच देणा लड़ाईआ। उन्हां नूं दस्स केहड़ी कूटे देवेंगा टंग, कि जूनीआं विच भवाईआ। नाले तूं कहाया मेरा आत्मा सदा साचा अनन्द, अनन्त अनन्त विच रखाईआ। की तूं वड्डा कि सुरस्ती जमना गंग, गंगोतरी दा भेव देणा खुल्हाईआ। की तीर्थ तट किनारे आसा मनसा पूरी करन मँग, जीवत जीअ तेरे नाल मिलाईआ। कृष्ण हस्स के किहा मेरे पिच्छों मेरी सिफ्त दा रह जाणा छन्द, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोलयां विच गाईआ। सच किसे नूं लभ्भणा नहीं ते जगत विहार विच जीवां जंतां फराउणा आपणा पिंड, ते पिंडी दा मालक नज़र किसे ना आईआ। जिंनां चिर सतिगुरु ना बख्शे जो साख्यात होए बख़शिंद, बिना बख्शीश तों चुरासी तों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। एह कलयुग विच कलयुग दा वरतिआ आपणा रंग, रंग विच रीती देणी बणाईआ । क्यों एसे लालच विच पंडतां विद्वानां मेरे नाम दा गाउँदे रहिणा छन्द, नमों नमों नमों कर के सीस झुकाईआ। मैं तालीम सिख्या विच कर चलया पाबन्द, बंधन देणा पाईआ। जिस वेले कलयुग गया लँघ, अन्त अख़ीर गुर अवतार पैग़म्बरां दी पूरी करां मँग, पेशीनगोईआं सब दीआं वेख वखाईआ। फेर आवां निरगुण धार जोत सरूप शाहो भूप बण सूरा सरबंग, साहिब सुल्तान वेस वटाईआ। उनां चिर एह पिंडी पढ़ाउण दा, कुशा पढ़ाउण दा, बरहा सूर बख्शंद नूं वडयाउण दा लेखा आपणा ढंग, ढंग दे नाल डंग भुक्खयां दे देणे लँघाईआ। जिस वेले फेर आवां, आत्म परमात्म दा मृदँग वजावां, पारब्रह्म ब्रह्म इक वखावां, दीन मज़हब ज़ात पात दा झगड़ा मुकावां, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक रंग रंगावां, सदा अनन्द चित अनन्द अनन्द विच छुपावां, जित्थे नूरी जोत बिन वरन गोत, ना कोई बुद्धी ना कोई मन कल्पणा ना कोई अक़ल वाली सोच, समझ वाली समझ ना कोए रखाईआ। एह नहीं किसे दा दोष, सारे कृष्ण दे एहसान फ़रामोश,

१२३७
२१

जिस ने सुणा के बैरूनी जगत वाला सलोक, सोहले ढोले मात विच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बिन साहिब सतिगुर जगत क्रिया विच्चों पार ना कोए कराईआ।

❋ १४ चेत शहिनशाही ५ सुदागर सिँघ दे गृह भट्ठा माजरा ❋

धरनी कहे प्रभ मेट दे मेरा धब्बा, धौल धवल हो के सीस निवाईआ। तूं आदि जुगादी सब दा अब्बा, पिता पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। लोकमात निर्धन हो के तैनूं देवां सद्दा, निरमाणता विच चरण कमलां सीस झुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे माया ममता वाली हद्दा, हद्द हदूद आपणी इक्को दे समझाईआ। दीन मज़हब शरअ शरीअत जो सब दी बणी क़ज़ा, मौत रूप रही वखाईआ। सब नूं चला आपणी रज़ा, राज़क रहीम तेरी ओट तकाईआ। कलयुग जीव मन खुमारी विच मद्धा, मधुर धुन अनरागी राग ना कोए सुणाईआ। हउमे हंगता विच बध्धा, हँ ब्रह्म पर्दा ना कोए खुल्हाईआ। निरगुण नूर तेरा दीपक जोत कोए ना जगा, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर होए ना कोए रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप जीव जहान फिरे भज्जा, चार कुण्ट दह दिशा पन्ध ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर भविख्तां विच तेरे आउण दी दस्स के गए वजह, भेव अभेदा मात खुल्हाईआ। बौहड़ी दुहाई दरोही तेरे नाम सचखण्ड निवासी रब्बा, बेपरवाह तेरी बेपरवाही वेख वखाईआ। कूड़ कल्पना सृष्टी दृष्टी अंदर अखाड़ा वेख लग्गा, सति सच किसे नज़र ना आईआ। मानव मानस मानुख माया ममता विच दगा, अगनी तत रही जलाईआ। साहिब सुल्तान तेरा दरस पाए कोई ना उपर शाह रगा, नौ दवारे जीव जंत जगत हल्काईआ। नाम खुमारी निझर रस अमृत मिले ना कोए मद्धा, मधुर धुन ना कोए शनवाईआ। आत्म परमात्म जीव होई अलग्गा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। जिधर तक्कां दीनां मज़हबां पाया दब्बा, शरअ शरीअत भय रही रखाईआ। तेरा मार्ग मिले किसे ना हक़ा, हक़ीक़त नज़र किसे ना आईआ। सब दे निरंतर अन्तर होया शक्का, शकूक सके ना कोए मिटाईआ। जगत विद्या पढ़ी कम्म ना आवे मिले मेल ना प्रभू सखा, साहिब स्वामी अन्तरजामी तेरा दरस कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठां टेकण मथ्था, धूढ़ी ख़ाक रहे रमाईआ। मैं हैरान हो गई निज नेत्र खुल्ही किसे ना अक्खा, जगत लोचन ना कोए वड्याईआ। साध सन्त सदी चौधवीं दिसे कोई ना सच्चा, सूफ़ी फ़कीर हकीर रूप ना कोए बणाईआ। फिरी दरोही मदीना मक्का, काअबे रहे कुरलाईआ। तेरे नाम दा सच्चा दिसे कोई ना हट्टा, हटवाणे बैठे मुख छुपाईआ। तेरा नाम कलमा विकदा नाल टका, क़ीमत तेरी रहे पाईआ। अन्त अख़ीर

बेनज़ीर सदी बीसवीं सब दा पूरा कर दे पटा, अवतार पैग़म्बरां लेखा दे चुकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया खेल वेख बाज़ीगर नटा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। बिन तेरी किरपा मानस लाहा किसे ना खटा, खटके विच लोकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म गाए कोई ना टप्पा, पढ़ पढ़ थक्की जगत लोकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर चारों कुण्ट फिरे नठ्ठा, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। किसे दा चले नहीं कोई वस्सा, वसल यार मिले ना कोई नूर ख़ुदाईआ। अमृत रस चक्खे ना कोई रसा, रस रसना होई हल्काईआ। तन वजूद माटी ख़ाक धोती तम्बी पहन के कच्छा, वेस अनेक ल्या बदलाईआ। सच दुआर एकँकार तेरे पहुंचया ना कोई बण के बच्चा, बचपन तेरी झोली पाईआ। जिधर तक्कां काया माटी भाण्डा कच्चा, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। मन कल्पणा विच नच्चा, नौ दवारे फिरे नठ्ठा, तेरा प्रेम लूं लूं अंदर किसे ना रचा, साढे तिन्न करोड़ दए गवाहीआ। धरनी कहे मैं रो रो के नेत्र नीर वहावां अक्खां, हन्झूआं हार बणाईआ। बौहड़ी दुहाई मेरा रिहा कोई ना सखा, सखी संग ना कोए निभाईआ। जिधर जावां कूड़ी क्रिया मारे धक्का, धौल दा भार ना कोए उठाईआ। मैं वेखदी मैनूं इक्को नज़री आया पप्पा, जो पूरन पारब्रह्म पतिपरमेश्वर मेल मिलाईआ। मैं चौहन्दी मेरे उत्तों कूड़ विकारां दी मेट दे सफा, मलेछ रहिण कोए ना पाईआ। वेखीं प्रभू साहिब सतिगुर ना होवीं ख़फ़ा, आजिज़ हो के सीस निवाईआ। आपणे हुक्म दी चार जुग तूं वखरी ला दे दफ़ा, जिस दी समझ ना कोए समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर दे रफ़ा, रहमत आपणी हक़ कमाईआ। साचे नाम दा सृष्टी दृष्टी दे अंदर दे नफ़ा, नुक़सान आपणी झोली पाईआ। मुहब्बत विच महबूब दे गफ्फ़ा, गुफ़ा काया अंदर निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेट काली मस्सा, मसला सब दा हल कराईआ। निझर धार एकँकार दे रसा, रस्ता धुर दा दे वखाईआ। जिथ्थे प्रकाश बिन सूर्या चन्द रवि सस्सा, सति सरूप सोभा पाईआ। अगम्मी नाद आपे वज्जा, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। बिन तेल बाती दीपक जोत जगा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला साहिब स्वामी सच्चा, सच सिंघासण इक्को डेरा लाईआ। धरनी कहे मैं जुग जुग तेरी मन्ना रज़ा, राज़क रहीम तेरी ओट तकाईआ। किरपा कर मेरे महबूब शहिनशाह सूरे सर्बग्गा, साहिब सतिगुर तेरी इक सरनाईआ। कलयुग जीव हँस होए कग्गा, कागों हँस दे बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, धरनी कहे मैं बड़ी भोग लई सज़ा, कलयुग जीवां कोलों मेरा पल्लू दे छुडाईआ।

१२३९
२१

✲ १४ चेत सम्मत शहिनशाही सम्मत ५ हरबंस सिंघ दे गृह ठीकरी, ✲

नारद कहे प्रभ साचे दस्स दे सांझी बन्दना, बन्दगी वाले बन्दे आप प्रगटाईआ। फिरना पए ना किसे विच जंगला, साचे नाम दा रस दे जा रंगला, गीत गोबिन्द तेरा अलाहीआ। लेखे ला ग़रीब निमाणा गुरमुख कंगला, शहिनशाह आपणी गोद टिकाईआ। भेव खुल्हा दे आपणी सच दुआर मँगला, दरगाह साची पर्दा लाहीआ। तूं साहिब स्वामी आदि जुगादी रंगला, रंग रत्तड़े तेरी वड्याईआ। सच बेनन्ती इक मन्न ला, आरजू तेरे अग्गे रखाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले जण ला, धुर दी बण जणेंदी माईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणे तन ला, बिन वजूद महबूब वज्जे वधाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लेखा कल मुका, कलकाती रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरे बणन गवाह, शहादत सब दी दे भुगताईआ। तूं नूर नुराना इक खुदा, खुदगरज़ी सब दी दे मिटाईआ। तेरे नालों तेरा भगत ना होए जुदा, जुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक बण दिलरुबा, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तेरे क़दमां सजदा सीस दयां झुका, निउँ निउँ लागां पाईआ। मेरी क़बूल कर दुआ, तोबा तोबा तोबा दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। नारद कहे प्रभू आपणी कर ना मर्ज़ी, मुरीद वेख जगत लोकाईआ। कलयुग मेट अन्धेर गर्दी, हक़ इन्साफ़ आप कमाईआ। चार वरनां बण दर्दी, हमदर्द हो के वेख वखाईआ। शरअ छुरी रहे ना करदी, कत्लगाहां डेरा ढाहीआ। तेरी धार नरायण नर दी, नर हरि तेरी सरनाईआ। दर ठांडे तेरे चरण कँवल धरनी पड़दी, सीस जगदीश दए झुकाईआ। खेल मुका दे सीस धड़ दी, धड़ा आपणा इक समझाईआ। जेहड़ी आत्मा तूं ही तूं ही तेरा नाम होवे पढ़दी, आत्म परमात्म मेला लैणा मिलाईआ। दीन दुनी वेख सड़दी, कलयुग अगनी देणी बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। नारद कहे मैं वेख्या दूर नेड़े तन, माटी ख़ाक फोल फुलाईआ। सृष्टी हलकी कीती मन, चारों कुण्ट भवाईआ। साचा बणे कोई ना चन्न, जणेंदी होए कोई ना माईआ। शब्द अनाद सुणे कोई ना कन्न, अनहद नादी नाद ना कोए अल्हाईआ। भाण्डा भरम देवे कोई ना भन्न, भय भउ ना कोए चुकाईआ। तेरा खेल श्री भगवन, घर तेरे हथ्थ वड्याईआ। आपणा पूरा करना कम्म, कामना सब दी वेख वखाईआ। जन भगत दुलारे तेरे चन्न, बिन चन्द सूर्या कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर वजदी रहे वधाईआ। नारद कहे मैं तेरा सुत इकलौता, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। दिवस रैण कदे ना सोता, आलस निंदरा ना कोए वड्याईआ। प्रकाश तक्कां तेरा अगम्मी जोता,

जोती जोत जोत रुशनाईआ। सदी चौधवीं प्या रिहा विच सोचा, सोच समझ चले ना कोए चतुराईआ। अन्तर निरंतर तेरी खोज खोजा, खोजत खोजत तेरा राह तकाईआ। प्रभू बिन तेरी किरपा माण सके कोई ना मौजा, मजलस हक़ ना कोए बणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर दीन मज़हब दा कर के गए सौदा, क़ीमत हट्टां विच पवाईआ। परम पुरख परमात्म तेरे प्यार दा मिले किसे ना औहदा, अहिदनामा नज़र कोए ना आईआ। हरिजन साचे कर धुर संजोगा, जन्म कर्म दे विछड़े मेल मिलाईआ। अन्त अख़ीर तेरी सब नूं ओटा, ओड़क तेरे हथ्थ वड्याईआ। नाम दमामे ला चोटा, चोटी चढ़ के दे वखाईआ। कलयुग जीव वेख खरा खोटा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश फोल फुलाईआ। तेरे कोल शब्द अगम्मी सोटा, सो साहिब स्वामी लैणा उठाईआ। निरगुण नूर प्रकाश करना जोता, जोती जाते डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे प्रभ दे दे इक दलेरी, दयावान दया कमाईआ। तूं साहिब मैं तेरी चेरी, चिरी विछुन्नी लै मिलाईआ। कलयुग अन्त करीं ना देरी, डेरे वाल्यां करीं सफ़ाईआ। साचे नाम दी सच चढ़ा बेड़ी, नईआ नौका अवर ना कोए वखाईआ। शरअ दी रहे कोई ना बेड़ी, बंधन बन्द देणे तुड़ाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच कर मेहरी, महिमान सन्त सुहेले वेख वखाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर आया नेरी, नेरन नेर पर्दा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी दया कमाईआ। नारद कहे प्रभ मेरी आसा मनसा वखरी, सहज दयां जणाईआ। सृष्टी सुआउणी केहड़े सत्थरी, सत्थर यारड़ा वेख वखाईआ। लिख्त बणाउणी केहड़ी अक्खरी, आख़र देणा जणाईआ। दीन दुनियां करनी पध्धरी, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां लेखे मुकाउणे सध्धरी, जो सध्धर अन्तर अन्तर उपजाईआ। अगली खेल वखाउणी ग़दरी, गदागर होए लोकाईआ। सच दवारे भगतां सद लईं, सद्दा होका नाम जणाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह पर्दा कज लईं, ओढन सीस जगदीश टिकाईआ। जन भगत सुहेला जाए कदी ना हज्ज लई, काया काअबा होए रुशनाईआ। प्रभू तेरा खेल सदा जुग जग लई, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सच मुहब्बत विच रंग लईं, रंग आपणा इक रंगाईआ। दर तेरे मँग मँग लई, मांगत हो के झोली डाहीआ। निरगुण धार सदा संग दईं, सगला साथी आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा हुक्म वरतणा इक अनन्द लई, अनन्द अनन्द अनन्द आत्म परमात्म परमात्म आत्म विच समाईआ।

✲ १५ चेत शहिनशाही सम्मत ५ संपूरन सिँघ दे गृह ठीकरी छन्ना ✲

धरनी कहे मैं रोई भुब्बी, हौक्यां विच दुहाईआ। कलयुग वहिण विच खुभ्भी, प्रभू बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। माया ममता वहिण विच डुब्बी, होए ना कोए सहाईआ। मैनूं भुल्ल गई वदी सुदी, पख समझ कोए ना आईआ। रमज़ दस्स अगम्मी गुज्झी, भेव देणा खुल्हाईआ। जिस विच धार रहे ना दुजी, एकँकार इक्को नज़री आईआ। बलहीण बिन तेरी किरपा मूल ना उठी, सवाधान ना कोए कराईआ। मैं सांभ के रखी राख इक मुट्ठी, जो अर्जन मेरी झोली गया पाईआ। मैं याद रख्या गोबिन्द वाले पुत्तीं, जो नीहां हेठ दबाईआ। मैं तक्कदी कद मेरे साहिब दी होवे रुत्ती, सुहञ्जणी नाल मिलाईआ। मेरी चार जुग दी पूरी होवे बुत्ती, बुतखान्यां विच्चों पार कराईआ। मेरी आशा रहे ना रुट्ठी, रुठ्ठयां लए मिलाईआ। ध्यान मारे चहुं गुठी, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फोल फुलाईआ। मैं रो पुकारां उच्ची, हाहाकार कर सुणाईआ। तुध बिन मैनूं करे कोई ना सुच्ची, तीर्थ तट साबत नज़र कोए ना आईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ सारे रहे लुट्टी, लुटेरे मुल्ला शेख़ मुसायक नज़री आईआ। मैथों कूड़ क्रिया ना जाए चुक्की, चुकन्नी हो के दयां सुणाईआ। तेरे नालों प्रीत सब दी टुट्टी, टुट्टी गंढु ना कोए पुआईआ। मेरे पुरख अकाले दीन दयाले गुर अवतार पैग़म्बरां दे दे छुट्टी, जो दीनां मज़हबां वंड गए वंडाईआ। वेखीं सदी चौधवीं आपणी गंढु ना घुट्टीं, दयावान हो के दया देणी कमाईआ। तेरी पौह निरगुण धार अगम्मी फुट्टी, जोती जोत जोत रुशनाईआ। रविदास हुण गंढे ना टुट्टी जुत्ती, जोतरा धर्म वाला लगाईआ। सब दी बदल दे रुची, रचना आपणी इक वखाईआ। मैनूं निकरमण नूं कर दे सुच्ची, मेरे अन्तर मैल रहे ना राईआ। मैं तेरी सरन साहिब स्वामी झुकी, निउँ निउँ बन्दना सीस निवाईआ। वेखीं आपणी करनी करनो मूल ना उकीं, निशाना आपणा लैणा बणाईआ। मैं चौहन्दी तेरे दवारे वसां सुखी, सुख साजण देणा पहुंचाईआ। सतिजुग धार प्रगट कर पंज मुखी, पंचम दे माण वड्याईआ। मेरी आयू कूड़ कुकर्मी कर के हो गई बुढ्ढी, नौजवान श्री भगवन दे बणाईआ। मेरी धार होवे अदुती, सीर धुर दा देणा चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सृष्ट सबाई निर्मल कर बुद्धि, बुध्ध बिबेक देणी कराईआ। धरनी कहे मेरा रो रो वहे नीर, नैणां छहिबर लाईआ। मेरे शहिनशाह पीर, हज़रत बेपरवाहीआ। पिछली कीती उत्ते फेर लकीर, लाईन आपणी दे समझाईआ। चौथे जुग बदल तक़दीर, मेहर नज़र इक उठाईआ। साचा मार्ग दस्स तदबीर, तरीका इक्को इक जणाईआ। रंग रंगा शाह हकीर, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। तेरा नूर नज़र आवे तस्वीर, लातस्वीर पर्दा देणा उठाईआ। दीन दुनी शरअ कट ज़ंजीर, शरीअत विच्चों वेख वखाईआ। किरपा कर बेनज़ीर,

१२४२ २१

नज़रीआ सब दा दे बदलाईआ। तूं आदि जुगादी मददगीर, दर तेरे आस रखाईआ। होका दे के गया कबीर, क़बरां तों बाहर दुहाईआ। सदी चौधवीं मेट ख़मीर, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। मूर्ख बुद्धी ना रहे हकीर, विष्टा मुख ना कोए छुहाईआ। तूं मालक ख़ालक दस्तगीर, दस्त बदस्त लै उठाईआ। पाटे चीथड़ लाह चीर, भूषन धुर दा नाम पहनाईआ। लेखा वेख जबराईल, मेकाईल दए सफ़ाईआ। असराफ़ील ना होए दिलगीर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी कहे मैं रो रो थक्की, थकावट मेरे अंदर आईआ। चार कुण्ट भज्जी नस्सी, दह दिशा वेख वखाईआ। खेल वेखी लख चुरासी, चार अठ्ठ जून अजूनी फोल फुलाईआ। नाम किसे घर मिल्या ना रती, रतन अमोलक हीरा नज़र कोए ना आईआ। घर स्वामी दरस पाए कोई ना कमलापती, पतिपरमेश्वर रंग ना कोए रंगाईआ। सति धर्म विच दिसे कोई ना सती, सत्याग्रह करे लोकाईआ। कूड़ कल्पणा होई मनमती, बुध्ध बिबेक ना कोए बणाईआ। सन्तोख सील रिहा ना कोई जती, यथार्थ प्रभ दा रंग ना कोए वखाईआ। चार वरनां अठारां बरनां तीर्थ तटां करे कोई ना गति, आवण जावण पन्ध ना कोए मुकाईआ। तेरा खेल पुरख समर्थी, निरगुण धार समझ कोए ना आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणा खेल वखा अक्खीं, आख़र एहो आस रखाईआ। तेरा खेल लख चुरासी सख़ी, सख़ावत आपणा नाम दे अगम्म झोली पाईआ। इक्को इक पढ़ा पट्टी, पटने वाला नाल रलाईआ। सतिजुग सच चला हट्टी, हटवाणे पिछले आपणे विच समाईआ। तेरे प्रेम दी डोर जाए ना कटी, आत्म परमात्म मेला मेल सहज सुभाईआ। नानक नूं थोड़ा जिहा इशारा दिता जुग छत्ती, इस तों अग्गे कहिण कुछ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे मैं रो रो होई बेहाल, बिहबल हो के दयां दुहाईआ। साची रही ना कोई धर्मसाल, साचा मन्दिर ना कोए वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदली चाल, चाल निराली वेख वखाईआ। इष्टी दृष्टी होई बेहाल, बिहबल हो के रही कुरलाईआ। साची वस्त कोल नहीं धन माल, नाम ख़ज़ाना हथ्थ किसे ना आईआ। जिधर तक्कां सारे होए कंगाल, शहिनशाह नज़र कोए ना आईआ। मैं चार कुण्ट कीती भाल, भज्जी वाहो दाहीआ। कोई मेरा हल्ल करो सवाल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो सुरत लवो संभाल, आपणा बल प्रगटाईआ। आपणे शस्त्र उठाओ खण्डे ढाल, तीर तरकश कमान कंध उठाईआ। योद्धे सूरबीर बणो बलवान, बलधार लवो अंगड़ाईआ। क्यों जीवां अंदर शरअ वड़ी शैतान, शस्त्र धारीओ क्यों बैठे मुख छुपाईआ। क्यों छड्डदे नहीं आपणा ईमान, दीनां मज़हबां कोलों पल्लू लवो छुडाईआ। किधर गए तुहाडे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील

क़ुरान खाणी बाणी दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। तुसीं पंजां तत्तां नूं ज्ञान विच बणा ना सके इन्सान, इन्सानां नूं हैवानां वांग गए लड़ाईआ। दस्सो केहड़े तुसीं प्रधान, कवण हुक्म रहे चलाईआ। केहड़ी सखी दा बण के काहन, बंसरी रहे सुणाईआ। उठो वेखो मारो ध्यान, कलयुग रैण अन्धेरी छाईआ। साचा रिहा ना ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या ना कोए पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया चढ़या तुफ़ान, ज्ञानीआं ध्यानीआं रिहा रुढ़ाईआ। जिधर तक्को बेईमान, धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। तुहाडा कलमा करे ना कोए कल्याण, मन्त्रां विच ना कोए वड्याईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ होए हैरान, बिन अक्खां रो रो नीर नैणां रहे वहाईआ। जाओ धरनी कहे आउ मेरे विच मैदान, आपणा बल धराईआ। जे आ नहीं सकदे फिर बोलो बिना ज़बान, सच दयो सुणाईआ। मुखों कहो प्रभू तेरी सृष्टी तेरी दुनियां तेरी कायनात तेरा जीव जहान, साडा नज़र कुछ ना आईआ। साडी तेरे चरणां इक प्रणाम, आपणा वापस लै ला धुरदरगाह दा बख्श्या नाम, तेरी झोली पाईआ। तेरे कलमे वाली कलाम, कामल मुर्शद तेरी ओट रखाईआ। अन्त अख़ीर इक्को सजदा इक्को सलाम, इक्को डंडावत बन्दना प्रणाम, परम पुरख तेरे चरणां विच समाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाल दीन दयाल नूं होण ना दयो बदनाम, आपणी आपणी बदनामी लै के दरगाह साची सचखण्ड प्रभ दे विच जाओ समाईआ। दीन दुनी नूं संभालणा तुहाडा नहीं काम, तुसीं

१२४४ २१ मज़हबां दे वागी सिफ्तां दे रागी ढोले रसना नाल गाईआ। धरनी कहे मेरा मालक आदि दा कन्त सुहागी, जिस कोटन वार गुर अवतार पैग़म्बरो तुहाडी कीती बरबादी, थिर रहिण कोए ना पाईआ। मैं चौहन्दी मैनूं दीनां मज़हबां तों मिल जाए आज़ादी, पुरख अकाल दा इक्को नाम सुणां अनादी, जो अनाद काल तों चलया आईआ। आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा सदा विस्मादी, बिस्मिल हो के आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा मेट दीन दुनी समाजी, समें दे मालक ख़लक दे ख़ालक मख़लूक आपणे रंग रंगाईआ। १२४४ २१

❋ १५ चेत शहिनशाही सम्मत ५ मोहन सिँघ दे गृह गढ़ी लांगरी ❋

धरनी कहे प्रभू मेरी पुकार, पुनह पुनह सीस निवाईआ। आपणी सृष्टी वेख जगत संसार, दीन दुनी फोल फुलाईआ। चारों कुण्ट वध्या विभचार, कूड़ कुकर्म लए अंगड़ाईआ। साचा मित्र ना कोए मुरार, सगला संग ना कोए रखाईआ। सहायता करे ना कोए गुरु अवतार, पैग़म्बर होए ना कोए सहाईआ। चारों कुण्ट धूंआधार, दह दिशा अन्धेरा छाईआ। दीन मज़हब

१२४५
२१

करन खार, ज़ातां पातां विच लड़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठां हाहाकार, गुरदवारिआं धीआं भैणां रहे तकाईआ। माया ममता सब नूं कीता खुआर, हउमे हंगता विच हल्काईआ। झगड़ा प्या पुरख नार, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। नाद शब्द सुणे ना कोए धुन्कार, अनहद नादी नाद ना कोए सुणाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांती मिले ना ठंडा ठार, अठसठ तीर्थ रो रो देण दुहाईआ। दीआ बाती कमलापाती पतिपरमेश्वर तेरा होए ना कोए उज्यार, साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर अंदर साध सन्त करे ना कोए सफ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ गए हार, मंज़ल महबूब हथ्थ किसे ना आईआ। मैं जिधर तक्कां कूड़ कुकर्म दिसे विभचार, धर्म दी धार रंग ना कोए रंगाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश आत्म ब्रह्म किसे ना पाई सार, पारब्रह्म तेरा नूर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। धरती कहे प्रभ मैं रो के दयां दुहाई, तेरा नाम खुदाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा छाई, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। निरगुण नूर जोत कर रुशनाई, तत्तां वाला गुरु कम्म किछ ना आईआ। दीनां मज़हबां लोकमात कर सफ़ाई, एका ब्रह्म एका दृष्ट एका इष्ट दे जणाईआ। तेरे नाम तों सारी दुनियां करे लड़ाई, अल्ला वाहिगुरु राम नाम सति झगड़ा दिता पाईआ। तेरा लेखा जो गुर अवतार पैग़म्बरां लिख्या नाल क़लम शाही, शहिनशाह तेरी वंडी अक्खरां विच वंडाईआ। आदि जुगादी शाह पातशाह दो जहानां मालक नूर अलाही, नौजवाना इक्को सोभा पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त माया ममता मोह विकार हँकार कूड़ी क्रिया शौह दरया देवीं रुढ़ाई, रहमत आपणी आप कमाईआ। सतिजुग साचा सति धर्म दा राह चलाईं, रहिबर हो के आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दरगाह साची दर ठांडे मँग मँगाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे चरण कँवल अरदास, बेनन्ती इक सुणाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां पूरा कर दे भविख्त वाक्, लेखा अवर रहे ना राईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दे गवाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ात पात, दीन मज़हब दा लेखा रहे ना राईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म तूं मेरा मैं तेरा सब नूं दस्स दे साची गाथ, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव खुल्हाईआ। अन्तर निरंतर निरगुण निरगुण बणा सज्जण साक, सरगुण दा झगड़ा तन वजूद माटी ख़ाक बाहरों वंड वंडाईआ। साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान सृष्टी दी दृष्टी दा खोल्ह ताक, पर्दा अंदरों दे चुकाईआ। इक्को नूर नूर नूर कर प्रकाश, ज़हूर आपणे विच्चों वखाईआ। मेरी अन्त अख़ीरी एहो आस, अवतार पैग़म्बर जिस दा दे के गए विश्वास, विषयां तों बाहर विशेष आपणी कार कमाईआ। कलयुग कूड़ कल्पणा कर दे नास, कर्म कांड दा झगड़ा दे चुकाईआ। सच धर्म दी धरनी कहे मेरी झोली पा दात, सतिजुग

साचा मार्ग इक प्रगटाईआ। चार वरन अठारां बरन क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई तेरा इक्को कलमा इक्को नाम इक्को जपण गाथ, इक्को जमात हो के आपणा झट लँघाईआ। जिधर वेखां ओधर नज़री आवें साख्यात, स्वच्छ सरूप शाहो भूप आपणा रूप लैणा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना आप दृढ़ाईआ। धरनी कहे मैं पापां भार दब्बी, दाअवे नाल जणाईआ। मैनूं सति जोत कितों ना लभ्भी, तेरा नूरी दरस कोए ना पाईआ। मैं मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरदवारिआं विच भज्जी, तीर्थ तटां उत्ते फेरा पाईआ। मैं साध सन्त फ़कीर पंडत पांधे वेखे जेहड़े बैठे उत्ते मंजी, मजलस विद्या अक्खरां वाली बणाईआ। मैं गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वहिंदी धार वेखी नदी, नदीआं दे आर पार तेरा रूप नज़र कोए ना आईआ। मैं गुर अवतार पैग़म्बरां वेखी गद्दी, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी फोल फुलाईआ। मेरे दीन दयाल साहिब सतिगुर पुरख अकाल गोबिन्द दे पिच्छों किसे दे अंदर तेरी जोत नहीं जगी, तत्तां वाला गुरु नज़र कोए ना आईआ। उठ वेख आपणी चौधवीं सदी, मुहम्मद कूक कूक सुणाईआ। जिस दे अन्तर निरंतर चोट लग्गी, चोटी चढ़ के खोज खुजाईआ। तूं जल्वागर नूर नुराना साहिब सुल्ताना रब्बी, रहमत आपणी हक़ कमाईआ। मैं मांगत कहिंदी भिखारन कहिंदी दरवेशन कहिंदी कदी कदी, जुग चौकड़ी पिच्छों आपणी मँग मँगाईआ। मेरे साहिब सुल्तान नौजवान परवरदिगार सांझे यार दुनियां दे अंदरों कढ्ढ दे बदी, मन ममता मोह मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धरनी कहे मैं चरण कँवल सरनाई तेरी लग्गी, सरनगति इक्को इक रखाईआ।

❋ १५ चेत शहिनशाही सम्मत ५ रण सिँघ दे गृह अजीत नगर ❋

धरनी कहे प्रभ मेरी इक अर्ज़ोई, आरज़ू अन्तर दयां जणाईआ। कलयुग अन्त मिले ना ढोई, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। महाबली रिहा ना कोई, जो कूड़ी क्रिया दए मुकाईआ। कलयुग जीवां सुरती सोई, शब्द हलूणे ना कोए उठाईआ। माया ममता पाई दरोही, तेरा रूप अनूप नज़र ना आईआ। चारों कुण्ट रैण अन्धेरी होई, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे मैं रो रो की दस्सां, दह दिशा पई दुहाईआ। कलयुग कुकर्म वेख ना सकां अक्खां, कूड़ कल्पणा रही कुरलाईआ। मित्र रिहा कोई ना सखा, चेला गुरु ना कोए वड्याईआ। तेरा नाम विकदा विच हट्टां, क़ीमत टक्यां वाली पाईआ। फिरी दुहाई तीर्थ

तटां, अमृत रस ना कोए चुआईआ। भ्रिष्टाचार होया मन्दिर मट्ठां, शिवदवाले कूकण मारन धाहींआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी पढ़ पढ़ जगत थक्का, तेरा दरस कोए ना पाईआ। हिरदे हरि वसाए कोई ना पक्का, पारब्रह्म तैनूं मिलण कोए ना आईआ। साचा भेव खोल्हे कोई ना यथार्थ यथा, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। विद्यावान अक़ल बुद्धी दी करदे कथा, अनुभव दृष्टी सके ना कोए जणाईआ। इट्टां पत्थरां दीन दुनी टेकदी मथ्था, अबिनाशी करते तैनूं सीस ना कोए निवाईआ। जलां थलां सेवा करदे हथ्थां, तेरे चरण कँवल हथ्थ कर ना कोए छुहाईआ। तेरे प्रेम प्यार दी समझी किसे ना वजह, भेव अगम्म ना कोए खुल्हाईआ। चार कुण्ट दह दिशा जंगल पहाड़ां विच्चों निरगुण धार किसे ना लभ्भा, कोटन कोटि जगत जिज्ञासू भज्जण वाहो दाहीआ। अन्त अख़ीर सदी चौधवीं देवां तैनूं सद्दा, साहिब स्वामी आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां दरस वखा उपर शाह रगा, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। जिथ्थे तेरा शब्द नाम अनाद सुणे अनहदा, अनरागी धुर दा राग देणा दृढ़ाईआ। जिस गृह दीपक जोती जगा, बिन तेल बाती डगमगाईआ। साहिब स्वामी पुरख अबिनाशण तेरा सिँघासण सजा, पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर मँगण मँगां, झोलीआं सारे रहे डाहीआ। सो
१२४७ खेल वेख लोकमात सूरे सरबंगा, साहिब तेरी आस रखाईआ। जीव जंत जगत जहान होया नंगा, ओढन सीस ना कोए १२४७
२१ टिकाईआ। सच प्रेम दा वज्जे ना कोए मृदँगा, ढोलक छैणे सारे रहे खड़काईआ। निज आत्म मिले ना कोए अनन्दा, २१
परमानंद ना कोए समाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना छन्दा, परमात्म आत्म आत्म परमात्म पर्दा कोए ना लाहीआ। दीन दुनी दे मालक पंज तत दा आ के वेख बन्दा, बिन बन्दगीउँ तन वजूद माटी कम्म किसे ना आईआ। माया ममता मोह विकार हँकार कूड़ी क्रिया विच होया गंदा, दुरमति मैल अंदरों करे ना कोए सफ़ाईआ। तेरा नूरी चन्द जोती धार चमके कोई ना चन्दा, कलयुग कूड़ा अन्धेरा ना कोए मिटाईआ। तूं दीन दयाल आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा बख्शंदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी दया कमाईआ। निरगुण धार निरँकार निरवैर वेख खेल विच ब्रह्मण्डा, पुरीआं लोआं खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं अन्त साची मंज़ल चढ़े कोई ना डंडा, दरगाह साची मिलण कोए ना पाईआ। त्रैगुण माया दीन दुनी पाया फंदा, बंधन सके ना कोए तुड़ाईआ। नेत्र रोवे जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, नीर सीर रूप ना कोए बदलाईआ। जिधर तक्कां सब दा भाग दिसे मंदा, मंदभाग रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरती कहे प्रभ मेरा दुक्खां विच निकले हौका, हाए हाए कर सुणाईआ। सच नाम दी मिले कोई ना नौका, नईआ नाम ना कोए चढ़ाईआ। वक्त गया सतिगुरु भउ का, भय सिर ना कोए रखाईआ। समां

आ गया हँकार हउँ का, हँकार गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। माण रिहा ना पिता माउँ का, भैण भाई ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे प्रभू चारों कुण्ट वध्या पापा, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। आत्म परमात्म टुट्टा साका, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। त्रैगुण चढ़या सब नूं तापा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। बन्द किवाड़ी खुल्ले किसे ना ताका, बजर कपाटी ना कोए तुड़ाईआ। शब्द सुणे ना कोए अनादा, अनहद राग ना कोए जणाईआ। कलयुग जीव हँस बुद्धी होए कागा, काग हँस रूप ना कोए वखाईआ। दुरमति मैल धोवे कोई ना दाग़ा, अन्तर निरंतर करे ना कोए सफ़ाईआ। तेरी नूर जोत जगे ना कोई चराग़ा, दीपक दीया ना कोए वड्याईआ। दीनां मज़हबां ज़ातां पातां प्या फ़सादा, झगड़ा नाम क़लमे वाला रखाईआ। धरनी कहे मेरे पुरख अकाला इक उठा दे आपणा वाला बाज़ा, बाजां वाले दे वड्याईआ। जो बदल देवे दीन दुनी समाजा, इष्ट पुरख अकाल तेरा दए वखाईआ। शाहो भूप बण वड राजन राजा, रईयत वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सृष्टी दृष्टी संवारे काजा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। किरपा कर पुरख समराथा, समरथ तेरी शरनाईआ। सतिजुग साचा प्रगट कर साचा, सच दे दृढ़ाईआ। भाग लगा दे काया माटी काचा, कंचन गढ़ वड्याईआ। मनुआ मन ना फिरे नाचा, दह दिशा ना उठ उठ धाईआ। इक्को सतिगुर शब्द हिरदे अंदर जाए वाचा, वाचक दी लोड़ रहे ना राईआ। धरनी कहे मेरे साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी तूं आदि जुगादी सब दा पिता माता, पुरख अकाल तेरी इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान तेरा दासी दासा, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर गुर अवतार पैग़म्बर जुग चौकड़ी तेरी सेव कमाईआ।

१२४८ २१

✻ १५ चेत शहिनशाही सम्मत ५ करतार सिँघ दे गृह कौमी फ़ारम ✻

धरनी कहे प्रभ दस्स आपणा इक्को इष्ट, आत्म परमात्म पर्दा दे उठाईआ। कलयुग जीवां खोलू दृष्ट, माया ममता मोह मिटाईआ। कूड़ कल्पणा मन विकार कीता भ्रष्ट, दुरमति मैल दे धवाईआ। तेरा राह तक्के रामा वशिष्ट, त्रेता जुग त्रैगुण अतीता ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरा कर भविख्त, पेशीनगोईआं देण गवाहीआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख लिस्ट, चारे खाणी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। धरती कहे प्रभ सति सच कर इन्साफ़, अदल धुर दा आप कमाईआ। कलयुग मनुआ होया गुस्ताख़, सांतक सति ना कोए वरताईआ। कलयुग जीवां कुकर्म कर मुआफ़, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। दुरमति मैल कर साफ़, पतित पुनीत दे कराईआ। आत्म ब्रह्म दे जाप, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। रूह बुत कर पाक, तन वजूद वज्जे वधाईआ। भेव अभेदा खोल्ह साच, सच स्वामी दया कमाईआ। जो गुर अवतार पैग़म्बर गए आख, सदी चौधवीं पूर कराईआ। सच दुआरा खोल्ह ताक, पर्दा अन्तर निरंतर रहे ना राईआ। जुग चौकड़ी सब कुछ तेरे हाथ, समरथ स्वामी तेरी वड वड्याईआ। कलयुग रैण अन्धेरी मेट रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। चार वरन बणा इक जमात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को घर वसाईआ । झगड़ा मेट दे काग़ज़ात, कलमा नाम इक्को इक उपजाईआ। तैनूं सारे मन्नण वाहिद, लाशरीक सोभा पाईआ। निरगुण नूर प्रगट हो गॉड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा
धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। धरनी कहे मैं रो रो दस्सां हालत, हरि हरिजू दयां जणाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर आई जहालत, कूड़ क्रिया ना कोए मिटाईआ । पिता पूत दी पई अदावत, भाई भाई ना कोए वड्याईआ। तेरा नाम ना मिले निआमत, अनरस रसना रस ना कोए चखाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द दीन दुनी होई गावत, गहर गम्भीर हिरदे
१२४९ हरि ना कोए वसाईआ। तुध बिन दूजा दिसे ना कोई सही सलामत, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी निरगुण नूर जोत १२४९
२१ ना कोए रुशनाईआ। कूड़ कल्पणा सदी चौधवीं चारों कुण्ट कीती बग़ावत, बग़लगीर ना कोए अख्वाईआ। रहमत विच नाम २१
कर सख़ावत, धुर दी धार इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। धरनी कहे प्रभ मेट दे मेरा दुःख, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ । झगड़ा मुका दे मानस मानुख, मानव करे ना कोए लड़ाईआ। सतिजुग साची सुहा दे रुत, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। इक्को योद्धा सूरबीर दुलारा उठा दे गोबिन्द सुत, दो जहानां लै अंगड़ाईआ। चार कुण्ट दह दिशा लै पुच्छ, वेख वखाणे थाउँ थाईंआ। पर्दा उहला रहिण ना देवे लुक, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के तुक, तुख्म तासीर दीन दुनी दए बदलाईआ। जिथ्थे सब दी मंज़ल जावे मुक, ओथे बैठे डेरा लाईआ। शब्दी धार बदल के रुख़, करवट आपणी लै बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ । धरनी कहे प्रभ दे दे गोबिन्द सूरा, इक्को मँग मँगाईआ। जिस दा चमके जोती नूरा, नूर नुराना नज़री आईआ । कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझे कूड़ा, शब्दी करे सफ़ाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, एका अमृत जाम

प्याईआ। चरण कँवल देवे धूढ़ा, मस्तक टिक्के ख़ाक रमाईआ। सब दी आसा मनसा करे पूरा, पूरन ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभ दे दे इक्को धुर दा मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जो ढोला गावे तेरा गीत, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। आत्म परमात्म दस्से साची रीत, रहिबर हो के आप समझाईआ। झगड़ा मुका के हस्त कीट, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। धुर दी दस्स इक हदीस, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। लेखा मुका दे बीस बीस, जगदीश तेरी सरनाईआ। जिस दे छत्र झुल्ले सीस, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। धरनी कहे प्रभ शब्दी सतिगुर दे अमाम, कामल मुर्शद तेरी इक सरनाईआ। कलयुग झगड़ा मिटे तमाम, तमअ तमन्ना दए गवाईआ। मज़हब दा रहे ना कोए गुलाम, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ, गुरुदुआर करे ना कोए हराम, धर्म दी धार इक प्रगटाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी शाम, तेरा नाउँ नूर करे रुशनाईआ। झगड़ा मुका के काया माटी चाम, चम्म दृष्टी सब दी दए बदलाईआ। लेखा जाणे जीव जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जिस नूं सारे मन्नण काहन, गोपी निरगुण धार लए प्रनाईआ। नज़री आवे हर घट रमया राम, सीता सुरत नाल वड्याईआ। पैग़ग़बरां लेखे लावे कलाम, कलमा कायनात खोज खुजाईआ। जिस दा मन्त्र आदि जुगादी सति नाम, फ़तहि वाहिगुरु डंक वजाईआ। ओह लहिणे देणे मुकाए तमाम, त्रैगुण लेखा दए चुकाईआ। हउमे गढ़ तोड़े अभिमान, माण निमाणयां दए जणाईआ। किरपा कर श्री भगवान, दर तेरे मँग मँगाईआ। धरनी कहे मैं चरण कँवल करां प्रणाम, सजदयां विच सीस झुकाईआ। मेरी बेनन्ती कर परवान, प्रभ तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। कलयुग क्रिया वेख मेरे नैण शरमाण, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। धरनी कहे प्रभ किरपा कर साहिब सुल्तान, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। तूं आदि जुगादी मेहरवान, महबूब नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं मार ध्यान, अन्तश्करन खोज खुजाईआ। मुहम्मद लेखा कर परवान, झोली आपणी विच पाईआ। ईसा दे के गया बिआन, भविख्तां विच सुणाईआ। नानक निरगुण कर परवान, कल कल्की तेरी आस रखाईआ। गोबिन्द जणा के गया निशान, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। जिस नूं समझे ना कोए इन्सान, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। ओह लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवान, बलधारी लए अंगड़ाईआ। जिस नूं झुकणे ज़िमीं असमान, चौदां लोक चौदां तबक सीस निवाईआ। सो मालक ख़ालक प्रितपालक दो जहानां बदल

देवे विधान, निरगुण प्रधान आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी कहे प्रभ मेरी बेनन्ती कर परवान, परम पुरख सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, वर दाते तुध बिन दूजा अवर ना कोए सहाईआ।

✳ १५ चेत शहिनशाही सम्मत ५ महिन्दर सिँघ दे गृह पिंड गढ़ी लांगरी ✳

धरनी कहे मैं जन भगतां पैर चुम्मां, जो चरण मेरे उत्ते टिकाईआ। परदखणा विच इरद गिर्द घुम्मां, चक्रवरती हो के चक्र लगाईआ। मुहम्मद नूं कहां अज्ज पढ़ ला आपणा जुंमां, तेरे जुम्मे गल्ल रहे ना राईआ। फेर सब दीआं चोटीआं मुन्नां, जो प्रभ नूं बैठे भुलाईआ। जिस दा खेल होणा अनन्त गुणां, गुणवन्त दए कराईआ। बचन अगम्मा इक्को सुणां, जो संदेसा धुर सुणाईआ। सन्त सुहेले मात चुणां, दीन दुनी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरताईआ। धरनी कहे मैं भगतां रखां उपर छाती, मुहब्बत विच सीने नाल लगाईआ। जिन्हां दे अंदर वसिआ मेरा कमलापाती, पतिपरमेश्वर बैठा डेरा लाईआ। सदा लई बणावां साथी, संगी लवां उपजाईआ। नित नवित्त मन्नां आखी, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जिन्हां मेटणी कलयुग अन्धेरी राती, सतिजुग सच्चा राह वखाईआ। उन्हां इक्को पट्टी पढ़नी सारयां दी इक्को होणी जमाती, इक्को धार दए दृढ़ाईआ। इक्को जाम प्याला पीणा इक्को होवे साकी, सुराही इक्को इक रखाईआ। इक्को मन्दिर दुआरा होवे इक्को खोल्हे ताकी, पर्दा इक्को इक उठाईआ। इक्को लहिणा देणा चुकावे काया पंज तत माटी ख़ाकी, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। इक्को जानणहारा होवे जोत जाती, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे भगतां करां दरस, दासी हो के सेव कमाईआ। मेरी जुग जुग दी मिटी हरस, हवस रही ना राईआ। अगनी मिटी तपश, तृष्ना दिती गवाईआ। चरण टिका के मेरे उत्ते फ़र्श, फ़ैसला दिता सुणाईआ। मेल मिलाया नाल प्रीतम अर्श, अर्शां दा वाली सोभा पाईआ। महबूब कीता तरस, रहमत आप कमाईआ। मेरी मन्ज़ूर कर के अर्ज़, आरज़ू लेखे लाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दी तक्क के गर्ज़, गहर गम्भीर आया चाँईं चाँईंआ। पुरख अकाला पूरा करे फ़रज़, फ़ैसला हक़ हक़ सुणाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दरद, दुखियां आपणी गोद उठाईआ। करे खेल अगम्म असचरज, अचरज लीला आप प्रगटाईआ। सूरबीर बण मर्द, मर्दाना लए अंगड़ाईआ। शरअ रहिण ना देवे करद, हक़ कसाई ना कोए वड्याईआ। सदी चौधवीं मेटे अन्धेर गरद, गरदश विच्चों कढ्ढे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे भगतां झुके सीस, सिर सर ना कोए वड्याईआ। किरपा कर मेरे जगदीश, जगदीशर तेरी इक सरनाईआ। वक्त अख़ीरी रिहा बीत, बातन पर्दा दे खुल्हाईआ। दीन दुनी दी बदल रीत, रीतीवान तेरी सरनाईआ। त्रैगुण तों कर अतीत, त्रैभवन धनी वेख वखाईआ। तुध बिन साचा दिसे कोई ना मीत, मित्र प्यारा नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां आपणा नाम कर बख़्शीश, रहमत सच कमाईआ। जो तेरी करदे रहे उडीक, आमद विच बैठे अक्ख खुल्हाईआ। उहनां काया कर दे ठांडी सीत, अगनी तत गवाईआ। लेखा मुका दे मन्दिर मसीत, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दरबारी तेरे हथ्थ वड्याईआ। धरनी कहे तेरे भगत वेखां लोकमात, मता तेरे नाल पकाईआ। जिन्हां दी आत्म ब्रह्म इक्को ज़ात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। उन्हां दा लेखा लिख दे नाल क़लम दवात, शाही शहिनशाह नाल मिलाईआ। दीन दुनी विच्चों दे नजात, जो बैठा निशावर आपणा आप कराईआ। मित्र प्यारा बण अहिबाब, सज्जण हो के वेख वखाईआ। सच मन्दिर सुहा महिराब, महबूब आपणा पर्दा लाहीआ। तेरे क़दमां इक अदाब, सजदा सीस झुकाईआ। तूं साहिब सतिगुरु महाराज, राजन राज तेरी वड्याईआ। सदी चौधवीं पूरा कर दे काज, करनी करते वेख वखाईआ।
१२५२
२१
सति धर्म दा चार कुण्ट चला दे राज, रईयत आपणी आपणे रंग रंगाईआ। धरनी कहे मेरी नमस्ते डंडावत बन्दना सजदा बिना निमाज़, नवाज़िश विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा पूरा कर हिसाब, जिस दा अंकड़ा नज़र किसे ना आईआ।

* १६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सन्त किरपाल सिंघ सावण आश्रम गुड़ मंडी दिल्ली *

सति शब्द दी धार सतिगुर सावण, सति सति अख्वाईआ। हरि पुरख निरँजण धार सतिगुर सावण, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। एकँकार खेल सतिगुर सावण, सति सरूप सोभा पाईआ। आदि निरँजण सतिगुर सावण, सति सतिवादी सहज सुखदाईआ। अबिनाशी करता सतिगुर सावण, जन्म मरन ना रूप वटाईआ। श्री भगवान सतिगुर सावण, जुगा जुगन्त वेस वटाईआ। पारब्रह्म सतिगुर सावण, ब्रह्म लेखा दए समझाईआ। अगम्म अथाह सतिगुर धार सावण, निरवैर निराकार निरँकार बेपरवाहीआ। सचखण्ड निवासी सतिगुर सावण, सति सतिवन्त नूर अलाहीआ। मुकामे हक़ सतिगुर

सावण, दरगाह साची सोभा पाईआ। थिर घर खेल सतिगुर सावण, महल अटल उच्च मुनार करे रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव प्यार सतिगुर सावण, सति सति दए माण वड्याईआ। त्रैगुण माया पंज तत खेल रचना सतिगुर सावण, तन वजूद सोभा पाईआ। अमृत रस निझर धार सतिगुर सावण, बूँद स्वांती अगम्म टपकाईआ। शब्द धुंन नाद अनहद राग सतिगुर सावण, अनुरागी राग जणाईआ। जोती जोत प्रकाश सतिगुर सावण, नूर नूर नूर अख्वाईआ। सुरत शब्द दा विहार सतिगुर सावण, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। साध सन्त सति सरूप सति निराकार साकार सतिगुर सावण, सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। सृष्टी दृष्टी दा आधार सतिगुर सावण, सृष्टी मेला सहज सुभाईआ। चार वरन साकार सतिगुर सावण, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश मेल मिलाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार निवार सतिगुर सावण, आशा तृष्ना कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। चार कुण्ट दह दिशा जोती नूर उज्यार सतिगुर सावण, किरपानिध गुण निधान वड्याईआ। पंच शब्द दा प्यार सतिगुर सावण, शब्दी शब्द शब्द विच्चों प्रगटाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द जैकार सतिगुर सावण, ढोले गीत राग नाद शनवाईआ। महल अटल उच्च मीनार साढे तिन्न हथ्थ काअबा सतिगुर सावण, महबूब मुहब्बत वाला नज़री आईआ। सच पैग़ग्बर नबी रसूल पकड़न वाला दामन सतिगुर सावण, सहज सहज सुखदाईआ। सो सतिगुर सावण जो दया कमावे पतित पावन, पतितां पुनीत दए कराईआ। मेहर निगाह नाल तारे जीव जहानन, जहालत अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। सति धर्म दा दस्स निशानन, निशाना मन कल्पणा दए गवाईआ। अन्तर दे के ब्रह्म ज्ञानन, बुध्ध बिबेक दए बणाईआ। आपणा आप गुरमुख जाणन, जिन्हां उपर आपणी दया कमाईआ। निजानंद विच परमानंद माणन, जगत सुख ना कोए वड्याईआ। नूर जोत प्रकाश तक्कण उपर असमानन, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल पन्ध मुकाईआ। जिधर वेखण उधर साहिब सतिगुर श्री भगवानन, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। सो सतिगुर अगम्मा शब्द जिस नूं कहिंदे धुर दा सावण, अमृत मेघ अगम्म अथाह बरसाईआ। जिस सावण नाल सब दा होवे नहावण, दुरमति मैल तन वजूद गवाईआ। ओह सावण सतिगुर मुर्शद कामल, मुरीदां होए सहाईआ। जिस नूं बुद्धी वाला समझे ना कोई आलम, अनुभव दृष्टी अंदर नज़री आईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान कदे ना बणे ज़ालम, ज़ुलम सितम जगत डेरा ढाहीआ। शब्द अगम्मी धार लेखा लिखे क़लम स्याही कालम, कालम दीन दुनी वाला बणाईआ। जिन्हां फड़ाए आपणा दामन, दामनगीर आप हो जाईआ। सचखण्ड दा बण के ज़ामन, शब्द बिबाणे विच टिकाईआ। सच दवारे बिठा के आपणे सामन्हे, जोती जोत विच मिलाईआ। जिस दा भेव विद्या वाला जाणे ना कोए ब्राह्मण, ग्रन्थां शास्त्रां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। गुरमुखां विच्चों कढ्ढ के जाए त्रैगुण माया अगनी तामन, तामस गया मुकाईआ।

जिस नूं जुग चौकड़ी वेखण जीव जहानन, सो रूप अनूप दरसाईआ। जिस दी सिफ्त करदे शरअ शरीअत वेद पुराणन, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले सोहले गावण, गीत अगम्म अथाहीआ। सो सावण जिस दा आदि जुगादी इक्को नामन, नाम निधाना श्री भगवाना नौजवाना मर्द मर्दाना, इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर शब्द सावण, शब्द गुरु गुर सावण, सावण शब्द ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे बाणी दा मालक, ख़लक दा ख़ालक, प्रितपालक आत्मा दा सालस, साहिब सतिगुर आपणा खेल आप वखाईआ।

❋ १६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सुरिंदर कौर दे नवित्त हरिभगत दुआर दिल्ली ❋

१२५४ चेत कहे मेरा दिवस सोलां, सोलां कल ना कोए वड्याईआ। मैं भेव खुल्हावां पर्दा ओहला, दूई द्वैत रहे ना राईआ। धुर संदेसा गावां ढोला, अगम्मी राग अलाईआ। सच संदेसा दस्सां बोला, अनबोलत राग सुणाईआ। ओए जन भगतो प्रभ बदल के आ गया आपणा चोला, चोली आपणे रंग रंगाईआ। सच दुआरा एका खोल्हा, एकँकार दया कमाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर पावे रौला, हाहाकार विच दुहाईआ। फिरी दरोही उपर धौला, धरनी नैणां नीर वहाईआ। लम्भयां किसे हत्थ ना आए मौला, मौलवी मुल्लां देण दुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरा करे कौला, कौल इक़रार पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सोलां चेत कहे मैं वेख्या सुल्हकुल, साहिब स्वामी नज़री आईआ। जो देवे नाम अगम्म अनमुल्ल, करता क़ीमत ना कोए रखाईआ। बैठा रहे अडुल्ल, सच सिंघासण डेरा लाईआ। आदि जुगादि सदा अनभुल्ल, जुग चौकड़ी भुल्ल कदे ना जाईआ। माया ममता विच ना जाए रुल, कूड़ी क्रिया ना वंड वंडाईआ। सो प्रगट हो के उपर धौल, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। पूरा करे पिच्छे कीता कौल, इक़रार आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सोलां चेत कहे मैं आया लोकमात, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। बेनन्ती विच कीती अरदास, नमस्ते कहि के सीस झुकाईआ। किरपा कर मेरे अबिनाश, प्रभू सरन तेरी सरनाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, सतिजुग चन्द चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा होवे गाथ, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। भेव अभेदा खोल्हणा साच, कूड़ कल्पणा देणी मुकाईआ। लूं लूं अंदर जाणा राच, रचना आपणी देणी वखाईआ। लेखे लाउणा काया माटी काच, कंचन गढ़ सुहाईआ। त्रैगुण लग्गे

मूल ना आंच, अगनी तत ना कोए तपाईआ। आत्म परमात्म बणी रहे सांझ, सगला संग निभाईआ। चार कुण्ट दिसे भाज, दीन दुनी रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वज्जे वधाईआ। सोलां चेत कहे मैं आया मातलोक, मता प्रभ दे नाल पकाईआ। मेरा इक्को नाम सलोक, सोहला अवर ना कोए जणाईआ। जीव जंत ना सके रोक, अग्गे हो ना कोए उलटाईआ। जगत कल्पणा विच देवे कोई ना दोष, निरदोषी हो के सोभा पाईआ। बुद्धी वाला सोचे कोई ना सोच, समझ विच समझ ना कोए रखाईआ। निज नेत्र आसा पूरी करे ना कोई लोच, लोचन सके ना कोए उठाईआ। आत्म ब्रह्म माणे कोई ना मौज, मजलस भगतां नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा जोग, जुगीशर हो के फोल फुलाईआ। सोलां चेत कहे मैं अध्धों टप्पा, टप्पा दयां जणाईआ। पुरख अकाल नाल नाता होया पक्का, पक्की लई पकाईआ। खेल वेखणा बूरा कक्का, निरगुण नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। मुहम्मद रहे कोई ना सका, साजण मेल ना कोए कराईआ। फिरे दरोही मदीना मक्का, काअबे रहे कुरलाईआ। प्यार रिहा ना भाई भैण सक्का, सज्जण संग ना कोए रखाईआ।चेत कहे मैं दीन दुनी वेखां अक्खां, अक्खां वाल्यो खोज खुजाईआ।
१२५५ दीन दयाले पुरख अकाले दस्सां, संदेसा इक जणाईआ । दोए जोड़ के हथ्थां, सीस जगदीश दयां निवाईआ। पुरख अकाल १२५५
२१ मैं तेरा निक्का जिहा बच्चा, नन्हां तेरा रूप नज़री आईआ। तूं सर्ब कला समर्था, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत २१
सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा मुका दे तत अठ्ठां, नौ दर दुआर दा लेखा देणा मुकाईआ।

❋ १७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ रतन सिँघ दे प्रशाद कराउण ते धीर पुर दिल्ली ❋

धरनी कहे मैं आदि जुगादि घुम्मदी, घुम्मणघेरी विच दुहाईआ। जुग जुग गुर अवतार पैग़म्बरां चरण चुम्मदी, आपणी ख़ुशी बणाईआ। खेल तक्कदी रही रिख मुन दी, पैग़म्बरां ध्यान जणाईआ। आवाज़ सुणदी रही अगम्मी धुन दी, शब्द नाद शनवाईआ। खेल तक्कदी रही निरगुण धार कुन दी, कुल्ल मालक वेख वखाईआ । भावना जाणदी रही रसना बुल्ल दी, रसना नाल सिफ्त सालाहीआ। जगत कूड़ कल्पणा वेखदी रही झुल्लदी, माया ममता संग रखाईआ। नज़ारा तक्कदी रही थितां वाली कुल्ल दी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा रंग रंगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप रंगाईआ । धरनी कहे मैं जुग चौकड़ी लावां चक्र, दिवस रैण आपणा

पन्ध मुकाईआ। मैं रहन्दी विच सतर, मेरा पर्दा ना कोए लाहीआ। मेरे अन्तर इक्को सधर, आसा दयां जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेंहदी रही ग़दर, कलयुग कूड़ क्रिया रही कुरलाईआ। कवण वेला प्रभ साहिब स्वामी अन्तरजामी सृष्टी दृष्टी करे पध्धर, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाईआ। सचखण्ड निवासी करे अदल, इन्साफ़ इक्को इक दृढ़ाईआ। छुरी शरअ रहिण ना देवे कसाई धर्म धार करे ना क़तल, क़ातल मक़तूल लेखा दए मुकाईआ। सच दुआरा एकँकारा मानस ज़ाती दस्से वतन, बेवतनां पर्दा आप उठाईआ। निरगुण निरवैर निराकार निरँकार सब दी लज्जया आवे रक्खण, सति सरूपी शाहो भूपी आपणा फेरा पाईआ। साचा मार्ग दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना आवे दस्सण, सृष्टी दृष्टी अंदर इष्ट इक्को इक सुहाईआ। लेखा जाणे उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण, दह दिशा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्को इक सुणाईआ। धरनी कहे मैं आदि जुगादि रही भाउँदी, भावना इक्को इक रखाईआ। जुग चौकड़ी मूल ना सौंदी, आसा आलस निंदरा ना कोए रखाईआ। तूंही तूंही ढोला गाउँदी, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। सिफ्त करां तेरे नाउँ दी, नर निरँकार तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम खेल वेखो मैं हउँ दी, जगत हंगता गढ़ वेख वखाईआ। हँस बुद्धी सब दी होई काउँ दी, काग वांग कुरलाईआ। शांती रहे ना किसे गुर अवतार पैग़ग्बर छाउँ दी, अगनी तत ना कोए बुझाईआ । वड्याई रही ना पंज तत काया गाउँ दी, काया खेड़ा अगनी तत ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे अलख जगाईआ। धरनी कहे आ प्रभ मेरे मालक, मेरी अन्तर इक दुहाईआ। भज्ज भज्ज थक्की ख़लक दे ख़ालक, जुग चौकड़ी पन्ध ना कोए मुकाईआ। दीन दुनी दी निंदरा लाह आलस, ग़फ्लत विच रहिण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म बण सालस, सच स्वामी आपणा रंग रंगाईआ । चार वरन अठारां बरन निरंतर कर ख़ालस, सति सरूप शाहो भूप धुर दा रंग रंगाईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया त्रैगुण मेट आतश, तन वजूद ना कोए जलाईआ। दीन मज़हब ज़ात पात जो करे साज़श, लेखा सब दा दे चुकाईआ। तेरे अग्गे मेरी निवाज़श, नेत्र रो रो दयां दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ कल्पणा विकार बुद्धी मेट राखश, रखिशश हो के वेख वखाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं चार कुण्ट भज्जी नठ्ठी, दिवस रैण पन्ध मुकाईआ। साची दिसी कोई ना हट्टी, दुआरा धर्म ना कोए सहाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर जो दस्स के गए पट्टी, अक्खरां वाली जगत पढ़ाईआ। माण जणा के गए अठ्ठ सट्ठी, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ रंग रंगाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाह कलमे गए रटी, रट्टा दीन दुनी विच पाईआ। लख चुरासी डोर किसे ना कटी, आवण जावण गेड़ ना कोए मुकाईआ। मन कल्पणा

१२५६
२१

होई किसे ना ठंडी, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। जिधर तक्कां आत्मा सब दी दिसदी रंडी, कन्त सुहाग ना कोए हंढाईआ। तेरी मानव ज़ाती फिरदी दीनां मज़हबां वाली डंडी, रहिबर तेरा राह नज़र किसे ना आईआ। हदूदां अंदर लग्गी पाबन्दी, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। निज नेत्र लोचण नैण होई अन्धी, सति नूर ना कोए रुशनाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे नाम दी वंड मैनूं लगदी नहीं चंगी, चारों कुण्ट दयां दुहाईआ। तूं आत्मा दा परमात्मा ब्रह्म दा पारब्रह्म संगी, सज्जण साक इक अख्वाईआ। तेरी दरगाह साची सच मुकाम सचखण्ड दुआर भूमिका चंगी, जिथ्थे निरगुण नूर जोत डगमगाईआ। ना कोई भेखी ना पाखण्डी, मज़हबां वाली ना कोए वड्याईआ। किरपा कर सूरे सरबंगी, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। तेरा सुत दुलारा योद्धा शब्द सूरबीर बहादर जंगी, जंगजू इक्को नज़री आईआ। सदी चौधवी अन्त अख़ीर बेनज़ीर मेरी कट दे तंगी, तंगदस्त रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दरगाह साची सचखण्ड दवारे दर ठांडे अलख जगाईआ। धरनी कहे प्रभू तेरे नाम दा वज्जे डंक, राउ रंकां दे सुणाईआ। तेरा सुहावे इक्को बंक, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। पर्दा उहला लाह दे जीव जंत, साध सन्त कर रुशनाईआ। तेरी महिमा सदा अगणत, गुर अवतार पैग़ंबर कहिण कोए ना पाईआ। कलयुग गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे दृढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन बणा धुर दी संगत, सन्त सुहेले आपणे घर वसाईआ। बोध अगाधा इक्को बण पंडत, धुर दी विद्या दे जणाईआ। लहिणा देणा चुके उत्भुज सेत्ज जेरज अण्डज, चारे खाणी लेखा दे मुकाईआ। धरनी कहे मेरे कोल जुग चौकड़ी दी तेरी सनद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दुआर एकँकार इक्को आस रखाईआ। धरनी कहे गुर अवतार पैग़ंबर तक्कण तेरा सहारा, सच तेरी सरनाईआ। तैनूं कहि के गए कल्की अवतारा, कल काती लेखा देणा मुकाईआ। अमाम अमामा बण सिक्दारा, हुक्म धुर दा इक मनाईआ। चारों कुण्ट मेट अन्धयारा, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। तेरा चरण कँवल इक सहारा, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच कर प्यारा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। तेरा नाद शब्द धुन्कारा, अगम्मी नाद देणा जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा होवे जैकारा, इक्को ढोला इक्को गीत रसना जिह्वा सारे गाईआ। तूं शाह पातशाह शहिनशाह आदि जुगादी परवरदिगारा, महबूब मुहब्बत विच तेरी वड्याईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। मैं जुग जुग भज्जी नठ्ठी थक्की सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या वारो वारा, अनक कलधारी तेरी सेव कमाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर मात विच्चों जा के फेर आया ना कोए दुबारा, मुरीदां सिखां सार किसे ना पाईआ। मैं वेखदी रही जुग चारा, चौकड़ी आपणी अक्ख

खुल्हाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त रोवां ज़ारो ज़ारा, नेत्र रोवां दयां दुहाईआ। साहिब सुल्ताने श्री भगवाने सृष्टी वेख आपणा संसारा, दृष्टी अंदर फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। पुरख अकाल कहे सुण धरनी धरत, धवल दयां जणाईआ। मेरी गुर अवतार पैग़म्बरां नाल पूरी होई शर्त, शरअ शरीअत दयां बदलाईआ। निरगुण धार आवां परत, पतिपरमेश्वर रूप वटाईआ। लहिणा देणा पूरा करां अर्श, अर्शी प्रीतम हो के खोज खुजाईआ। तेरे उत्ते करां तरस, रहमत हक़ कमाईआ। अमृत मेघ देवां बरस, चरणोदक तेरे मुख छुहाईआ। शरअ छुरी रहे ना करद, दीनां मज़हबां डेरा ढाहीआ। सब दी मन्ज़ूर करां अर्ज़, आरज़ू आपणे विच छुपाईआ। साचे नाम दी दस्सां तरज़, गीत नाद क़लमा इक्को इक सुणाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडां दरद, दुखियां आपणी गोद बहाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, वेखां थाउँ थाईंआ। एह खेल होणा असचरज, जगत बुद्धी समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक समझाईआ। पुरख अकाल कहे धरनी साची सिख्या सुण लै जगत, जगजीवण दाता दए दृढ़ाईआ। चुरासी विच्चों मानव ज़ाती विच्चों हरिजन वेख मेरे भगत, गुरमुख सोहणे सोभा पाईआ। जिन्हां इष्ट मेरा मन्नया फ़क़त, बाकी झगड़े दिते मुकाईआ। मेरा नूर तक्कण अगम्मी धार अर्श, आशा सब दी पूर कराईआ। जोती जामा पा के देवां दरस, नूर नुराना डगमगाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करां गर्ज़, गहर गम्भीर हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे धरनी सच दुआरा धुर दा खोल्हां, सचखण्ड निवासी रिहा सुणाईआ। चार वरनां अठारां बरनां दस्स के इक्को बोला, धुर संदेसा दिता समझाईआ। आत्म परमात्म बण के तोला, लख चुरासी रिहा तुलाईआ। सच दुआरा इक्को खोल्हा, सतिजुग साचा राह दरसाईआ। निरगुण धार हो के मौला, जोती जाता हो के वेस वटाईआ। जन भगतां अंदर चुका के उहला, पर्दा दिता उठाईआ। चार कुण्ट दह दिशा मेरे उत्ते पैणा रौला, हाहाकार करे लोकाईआ। सावधान हो जा धौला, धौल दयां वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरताईआ। पुरख अकाल कहे धरनी हो जा सावधान, सच दयां समझाईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। जगत शरअ बणे शैतान, सति धर्म ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया उठणा तुफ़ान, सच सुच दए रुढ़ाईआ। विद्वानां रहे ना कोए ज्ञान, बुद्धी विच ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट युद्ध होवे घमसान, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। तूं खुशीआं नाल गावीं गान, गीत गोबिन्द अलाईआ। प्रभू किरपा कीती महान,

मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां वायदा पूरा करे जहान, कौल इक़रार वेखे चाँईं चाँईंआ। माया ममता दा मेट निशान, सति धर्म निशाना दए झुलाईआ। नव सत्त सारे इक्को ढोला गाण, इक्को नाम ध्याईआ। धरनी धरत धवल धौल तैनूं करना पए परवान, परवानगी विच सीस देणा झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं भाणा तेरा जरदी, सद भाणे विच समाईआ। जुग चौकड़ी सृष्टी जम्मदी मरदी, एह तेरी बेपरवाहीआ, मैं ख़बर दस्सां तेरे घर दी, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। की धार तेरी नरायण नर दी, नर निरँकार देणा दृढ़ाईआ। जेहड़ी आत्मा तैनूं वरदी, नाता जगत नालों तुड़ाईआ। तेरी याद विच तेरा ढोला पढ़दी, तूं मेरा मैं तेरा रही गाईआ। सच दस्स उह कवण दवारे खड़्दी, गृह कवण डेरा लाईआ। पुरख अकाल कहे धरनी उह सच दुआरा मल्लदी, दरगाह साची सोभा पाईआ। जन भगतां आत्मा सदा मेरे विच रलदी, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। अटकन रहे ना जल थल दी, महीअल वंड ना कोए वंडाईआ। जुग चौकड़ी किसे नूं ख़बर नहीं रही की खेल होणी कलयुग कल दी, हरि कला की वरताईआ। सारे वड्डयाई चौहन्दे बलि बलि दी, सिफ्तां विच सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत

१२५९ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्लाईआ। धरनी जिस ने गाया सोहँ गीत, इक नाम वड्याईआ। १२५९

२१ छड्ड गए मन्दिर मसीत, काअबिआं पन्ध मुकाईआ। सृष्टी विच्चों हो अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। इक्को प्रभ दी करन २१

प्रीत, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। उन्हां करां ठांडे सीत, अगनी तत ना कोए तपाईआ। उन्हां दा ना जन्म ना कर्म ना कोई दीन दुनी वाला नसीब, संसारी वंड ना कोए वंडाईआ। आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, दर घर साचे दयां टिकाईआ। उह गुरमुख सन्त सुहेले उह जन भगत मेरे नाम दे सदा शहीद, शहादत इक्को घर भुगताईआ। अन्त करां आप तसदीक़, दूसर लोड़ रहे ना राईआ। सदा सदा सद सचखण्ड बण वसनीक, सच दवारे आसण लाईआ। जिथ्थे नज़र ना आवे कोई शरीक, लाशरीक इक्को सोभा पाईआ। जिस दे विच हक़ तौफीक़, धुर दा मालक नज़री आईआ। भगत आत्मा कदे ना होवे पलीत, पतित पुनीत आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, झगड़ा रहिण ना देवे ऊँच नीच, नीच ऊँच इक्को रंग रंगाईआ।

✻ १८ चेत शहिनशाही सम्मत ५ अवतार सिँघ दे गृह लाइन २५७-६ शास्त्री नगर कानपुर ✻

धरनी कहे प्रभ चार कुण्ट सृष्टी दुखी, दुखियां दर्द ना कोए मिटाईआ। ग़फ्लत विच गहरी नींद सुत्ती, सुरती शब्द

ना कोए जगाईआ। मन कल्पणा विच भुक्खी, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। तेरा नाम ख़ैर पए ना मुट्ठी, ख़ाली झोली ना कोए भराईआ। मैं वेख्या चारे गुठीं, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फोल फुलाईआ। अन्तर आत्म लग्गी किसे ना रुची, सति सति ना कोए समाईआ। मनसा होए किसे ना सुच्ची, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सब दी चोग जगत नखुट्टी, वस्त अमुल्ल ना कोए वरताईआ। प्रीतम प्रीती तेरे नालों तुट्टी, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। अन्त वात किसे ना पुच्छी, पुश्त पुनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। धरनी कहे प्रभ दुनियां चार कुण्ट करे वरलाप, सांतक सति ना कोए कराईआ। कूड़ी क्रिया वध्या पाप, पतित पुनीत ना कोए बणाईआ। आत्म ब्रह्म कोए ना जाप, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। त्रैगुण मेटे कोई ना ताप, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। नज़र आए ना आपा आप, दूई द्वैत पर्दा ना कोए उठाईआ। सुरत शब्द ना बणे साथ, निरत नैण ना कोए खुल्हाईआ। साची गाए कोए ना गाथ, नादी धुन ना कोए शनवाईआ। किरपा कर पुरख समराथ, साहिब तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड साचे मँग मँगाईआ। धरनी कहे प्रभ दीन दुनी दी वेखी हालत, हाए हाए कर सुणाईआ। साची करे ना कोए अदालत, इन्साफ़ हक़ ना कोए कमाईआ। मनुआ मन करे बग़ावत, चार कुण्ट रिहा कुरलाईआ । साचा नाम करे ना कोए सख़ावत, झोली हक़ ना कोए भराईआ। दीन मज़हब मेटे ना कोए अदावत, झगड़ा दूई ना कोए तजाईआ। तेरा कलमा ना लभ्भे निआमत, रसना रस ना कोए चखाईआ। सदी चौधवीं सब उत्ते आउँदी दिसे क्यामत, कलमे वाले रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। धरनी कहे प्रभ दीन दुनी सुण पुकार, नेत्र रो रो नीर वहाईआ। चारों कुण्ट धुआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर आई हार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मनुआ करे ना कोए गिरफ्तार, शब्दी तन्द ना कोए बंधाईआ। मित्र रिहा ना कोए मुरार, सज्जण संग ना कोए रखाईआ।दर तेरे दोए जोड़ करां निमस्कार, डंडावत बन्दना विच सीस झुकाईआ। निगाह मार सच्ची सरकार, शाह पातशाह तेरी ओट रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़ गढ़ हँकार, हउमे हंगता दे गवाईआ। आत्म ब्रह्म होए विचार, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाईआ। सच दुआरा एकँकारा दे वखाल, दरगाह साची इक सुहाईआ । जिथ्थे वसण शाह कंगाल, ऊँच नीच ना वंड वंडाईआ। तेरा नूरी होए जमाल, जागरत जोत डगमगाईआ। सब दा हल्ल कर सवाल, दर तेरे मँग मँगाईआ। सदी चौधवीं होए ज़वाल, लेखा अवर रहे ना राईआ। गुर अवतार पैग़म्बर मँगण दान,

दर ठांडे झोली डाहीआ। किरपा कर श्री भगवान, पुरख अबिनाशी तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ मेट निशान, निशाना धर्म इक झुलाईआ। जीव जंत साध सन्त तेरा ढोला गाण, कलमा नाम इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे मैं रो रो थक्की, अन्तिम दयां दुहाईआ। किरपा कर कमलापती, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। सति धर्म दी धार रही कोई ना सखी, काहन घनईआ नज़र कोए ना आईआ। तेरे प्रेम दी भुल्ली सब नूं पट्टी, पटने वाला दए गवाहीआ। चार वरनां ख़ाली हट्टी, वणज सच ना कोए कराईआ। मैं दह दिशा फिरां नट्ठी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। किरपा कर पुरख समर्थी, समरथ तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां नाल जो कीती पक्की, वायदे वेख थाउँ थाईंआ। अग्गे फ़र्क पवे ना रत्ती, रहिबर हो के हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। धरनी कहे मैं वेख्या चार चुफेरा, बिन अक्खां दयां दृढ़ाईआ। किसे अंदर दिसे ना चाउ घनेरा, घनईआ मिलण कोए ना आईआ। मन ममता प्या झेड़ा, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। लख चुरासी मुके ना गेड़ा, आवण जावण फंद ना कोए कटाईआ। भेव खुल्ले ना तेरा मेरा, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ।
१२६१
किरपा कर साहिब सुल्तान मेहरवान कर मेहरा, महबूब आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। धरनी कहे प्रभ गुर अवतार पैग़म्बर वखावण वाले वसीअत, वसल यार देणा कराईआ। तेरे कोल सर्ब असलीअत, असल पर्दा देणा उठाईआ। मैं चौहन्दी सब दी सांझी कर वलदीअत, पिता पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। तेरे विच अगम्म अहिमीअत, गुर अवतार पैग़म्बर तेरी सरनाईआ। शब्दी धार तेरी शख्सीअत, शहिनशाह तेरा लेखा अगम्म अथाहीआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमान तेरी मलकीअत, तुध बिन मालक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, हरि सज्जण नूर अलाहीआ। धरती कहे किरपा कर गुण निधान, गुणवन्ते तेरी ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। तेरी सृष्टी दृष्टी वेख होई हैरान, हैरानी मेरे अंदर छाईआ। मानव मानुश मानुख होए शरअ शैतान, ज़ंजीर बेनज़ीर कट अख़ीर मिलण कोए ना आईआ। हर हिरदे अन्तर निरंतर दे ज्ञान, बुध्ध बिबेक आप बणाईआ। मनुआ दह दिश भज्जे ना विच जहान, कल्पणा कूड़ देणी गवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सजदयां विच सीस झुकाण, नमों डंडावत तेरी सरनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर मँगण दान, दर ठांडे

बैठे अलख जगाईआ। सदी चौधवीं नेत्र रोवे चरण कँवल जाए विटहु क़ुरबान, करबले वाला लेखा दे मुकाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी धरनी कहे हो मेहरवान, महबूब आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची मुकामे हक़ हक़ीक़त पर्दा देणा उठाईआ। धरनी कहे मेरा अन्त अख़ीरी गीत, सच सच सुणाईआ। आपणी बख्श हक़ प्रीत, प्रीतम आपणा मेल मिलाईआ। झगड़ा मेट के ऊँच नीच, राउ रंक इक्को घर वसाईआ। काया कर ठांडी सीत, अगनी तत बुझाईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काअबा इक्को दे दरसाईआ। जिथ्थे वस्सें आप अनडीठ, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। सब नूं चाढ़ रंग मजीठ, बिस्मिल हो के आपणी कार कमाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग बदल दे रीत, रीतीवान तेरी बेपरवाहीआ। खेल कर त्रैगुण अतीत, त्रैभवन धनी तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आसा रख के गए उम्मीद, तृष्ना तेरे नाल मिलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी करे ताकीद, ताईद विच सारे ढोले गाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले आपणी दीन दुनी वेख ला के नीझ, बिन नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। तेरी प्रभू सारे करदे उडीक, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। मैं चौहन्दी सब दी बदल दे तवारीख, तारीख आपणी इक समझाईआ । शब्द गुरु करे तस्दीक, शहादत एकँकार इक्को देणी भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवासी दरगाह साची तेरे भगत सदा सदा वसनीक, वसल असल इक्को देणा नूर अलाहीआ।

१२६२
२१

❋ १६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ किरपा सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कान पुर ❋

धरनी कहे प्रभ साचा रिहा कोए ना धर्म, धर्मात्मा धुर दी धार ना कोए दृढ़ाईआ। शुभ करे कोई ना करम, कुकर्म कूड़ क्रिया विच दीन दुनियां जगत हल्काईआ। भाण्डा भन्ने कोई ना भरम, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। नेत्र आवे किसे ना शरम, लज्जया रहिण कोए ना पाईआ। कल्पणा दिसे माटी चर्म, चम्म दृष्टी विच कुरलाईआ। झगड़ा प्या वरन बरन, दीन मज़हब ज़ात पात करे लड़ाईआ। आत्म परमात्म ढोला मूल ना पढ़न, सुरत शब्द मेल ना कोए कराईआ। निरगुण धार तेरी मंज़ल मूल ना चढ़न, नौ दवारे पन्ध ना कोए मुकाईआ। सच सरनाई कलयुग जीव अन्त ना पड़न, दरगाह साची मिलण कोए ना आईआ। नेत्र खुल्ल्हे किसे ना हरन फरन, निज लोचन नैण ना कोए रुशनाईआ। झगड़ा मुक्के ना जन्म

मरन, चुरासी फंद ना कोए कटाईआ। माया ममता वहिण विच लग्गे हड़न, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जगत तृष्ना विच सारे सड़न, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। तेरा गुर अवतार पैग़म्बरां नाल प्रन, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं भार नाल गई दब्बी, बोझा सीस ना कोए उठाईआ। दुनी विकारी होई सभी, सभिअता सच ना कोए वड्याईआ। तेरी निरगुण जोत किसे ना लभ्भी, निराकार निरँकार तेरा दरस कोए ना पाईआ। अन्त वेख आपणी चौधवीं सदी, पैग़म्बरां लै उठाईआ। अवतारां चार जुग दी वेख गद्दी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फोल फुलाईआ। जलवा दिसे ना नूर अलाही रब्बी, आलमीन तेरा मेल ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट कूड़ी क्रिया वहिंदी नदी, माया ममता वहिण वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। धरनी कहे पुरख अकाले दीन दयाले मैं गई थक्क, थकावट विच मेरी दुहाईआ। मेरा हक़ीक़त वाला दे दे हक़, लाशरीक तेरी शरनाईआ। मैं जुग जुग रही तक्क, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। कवण वेला आए पुरख समरथ, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। जन भगत सुहेले लए रख, लोकमात होए सहाईआ। निज नेत्र खोल्ह के अक्ख, जोती जोत जोत करे रुशनाईआ। शब्द सुणा नाद अनहद, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। नाम प्याला प्या के अगम्मी मदि, सच खुमारी दए चढ़ाईआ। घर दीपक जोत जाए जग, काया मन्दिर होवे रुशनाईआ। नौ दवारे मुक्के हद्द, ईड़ा पिंगल सुखमन पन्ध रहे ना राईआ। नूर चमके बिना सूर्या चन्द, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। सच दुआर एकँकार तेरा वेखे कोई ना लँघ, थिर घर साचे मिलण कोए ना आईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, दर तेरे सीस निवाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर दा अगम्मी दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर मँगां रही मँग, धरनी रो रो रही कुरलाईआ। पारब्रह्म प्रभ ला आपणे अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। दूई द्वैती ढाह कंध, झगड़ा कूड़ रहे ना राईआ। मैं चौहन्दी सृष्टी दृष्टी अंदर तूं मेरा मैं तेरा सारे गावण छन्द, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम मेट पन्ध, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। धरनी कहे प्रभ कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे मात, दर तेरे सीस निवाईआ। चार कुण्ट दह दिशा आप झाक, पर्दा उहला रहे ना राईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। साची पढ़े कोई ना गाथ, रसना जिह्वा जगत हल्काईआ। किरपा कर दीनां नाथ, नाथ अनाथां हो सहाईआ। आत्म परमात्म दे साथ, सगला संग बणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी सारे रहे वाच, वाचक

हो के तेरे ढोले गाईआ। आत्म परमात्म जुड़े किसे ना नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। जिधर तक्कां दह दिशा हुंदा घात, धायल हुंदी ख़लक ख़ुदाईआ। मैनूं तेरे उत्ते इक्को आस, गुर अवतार पैग़म्बर गए जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, निहकलंका आपणा रूप बदलाईआ। सब दी पूरी करे ख़ाहिश, कल कल्की वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी बेपरवाहीआ। धरनी कहे पुरख अकाल मैं थक्की टुट्टी, टुट्टयां गंढु ना कोए पवाईआ। मैं बिरहों वैरागण कुट्ठी, बलहीण कुरलाईआ। चारों कुण्ट होई दुखी, कलयुग जीवां दिता सताईआ। मेरी सुहञ्जणी होई ना रुत्ती, बसन्त रूप ना कोए वटाईआ। मेरी आशा मेरे अंदर लुकी, सदी चौधवीं तैनूं दिती सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते दया कमाईआ। धरनी कहे प्रभू मैं तेरी मिट्टी ख़ाक, चरण कँवल सरनाईआ। ज्यों भावे त्यों लैणा राख, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। चरण कँवलां विच दास, दासी हो के सेव कमाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीते एसे विच आस, आसा मनसा नाल मिलाईआ। पैग़म्बर अवतार गुर दे के धरवास, भरवासा इक जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आवे पुरख अबिनाश, कल कल्की फेरा पाईआ। जिस दी दीन मज़हब ना कोई ज़ात, वरन बरन ना कोए रखाईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। दो जहानां पावे रास, मण्डल मण्डप आप सुहाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग सति चन्द चमकाईआ। चार वरनां दस्से इक्को गाथ, इक्को ब्रह्म दए दृढ़ाईआ। इक्को तिलक लगाए मस्तक माथ, चरण धूढ़ी इक छुहाईआ। दुरमति मैल देवे काट, निर्मल अंदरों करे सफ़ाईआ। सच धर्म दा खोल्हे हाट, वस्त इक्को इक वरताईआ। वेखे खेल जगत तमाश, दीन दुनी फोल फुलाईआ। जन भगतां वस्से पास, सन्त सुहेले जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुखां कर तलाश, दीनां मज़हबां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। गुरसिखां जोड़ अगम्मी नात, चरण कँवल दए वड्याईआ। धरनी धरत धवल धौल तेरी पुच्छे वात, वातावरन वेखे ख़लक ख़ुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक वखाईआ। धरनी कहे घर वखा अगम्मा ठंडा, ठंडक इक्को इक वरताईआ। प्रभू तेरा नूरी चमके चन्दा, कलयुग रैण अन्धेरी दे मिटाईआ। आत्म परमात्म सारे गावण छन्दा, सोहँ ढोला राग अल्हाईआ। बन्दगी बिना रहे कोई ना बन्दा, बंधन कूड़े देणे कटाईआ। काया मन्दिर अंदर वखाउणी जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, अमृत धारा देणी वहाईआ। अमृत रस चखाउणा बिना खण्डा, निझर झिरना इक झिराईआ। अनहद शब्द नाद देणा अगम्म अनन्दा, निजानंद परमानंद विच समाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर होणा संगा, सगला संग बणाईआ।

१२६४
२१

सति धर्म दा दस्सणा धन्दा, धर्म धार इक उपजाईआ। तूं साहिब सुल्तान परम पुरख बख्शंदा, बख्शणहार तेरी सरनाईआ। कलयुग जीव रहे कोई ना अन्धा, नेत्र नैण देणा खुल्हाईआ। ममता विच होवे ना गंदा, गहर गम्भीर कर सफ़ाईआ। तेरा शब्द अगम्मी इक्को डंडा, डंडावत सब नूं देणी समझाईआ। कलयुग अन्त अख़ीर तेरा कन्ढा, कन्ढी वाले पार देणा लँघाईआ। रविदास छड्ड के आर रम्बा, काग़ज़ क़लम लेखा रिहा बणाईआ। धरनी कहे मेरा भाग रहे ना मंदा, मंदभागण दे वड्याईआ। तूं शाह पतशाह सूरा सरबंगा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पिच्छे लँघा, कलयुग अन्त लेखा पूर कराईआ। शब्दी धार एकँकार अगम्मी फड़ खण्डा, खड़ग नधड़क इक्को इक उठाईआ। दीन दुनी जगत जीव पिछली रहे कोई ना वंडा, इक्को रंग सृष्टी दृष्टी अंदर देणा रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भेव खुल्हा हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा पर्दा लाहीआ।

✻ १६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ गुरदित सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर ✻

धरनी कहे प्रभ आपणी दे झाकी, निरगुण निरवैर नूर जोत कर रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां लहिणा चुका बाकी, लोकमात साहिब सुल्तान रहिण कोए ना पाईआ। सच दुआर एकँकार खोल्ह ताकी, दरगाह साची पर्दा दे उठाईआ। कर प्रकाश बिन दीया बाती, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। तेरा शब्द नाद सुणीए अनादी, धुन आत्मक देणी उपजाईआ। तेरा खेल वेखां ब्रह्म ब्रह्मादी, ब्रह्मांड आपणा भेव खुल्हाईआ। कलयुग जीवां कूड़ क्रिया दी खोल्ह दे ताकी, सवाधान सब नूं दे कराईआ। तूं पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदी, अन्तिम अन्तश्करन वेख जगत लोकाईआ। तेरी सृष्टी तेरी दुनियां पापां नाल होई दाग़ी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। हिरदिउँ तैनूं कोई ना रिहा आराधी, गृह मन्दिर वज्जे ना कोए वधाईआ। सोई सुरत किसे ना जागी, साध सन्त रहे कुरलाईआ। हँस होवे ना कोई कागी, काग हँस ना रूप बदलाईआ। सच प्रीत किसे ना लागी, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। जिधर तक्कां झगड़ा प्या समाजी, दीन मज़हब रहे कुरलाईआ। जन संख्या वेख अबादी, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। सति धर्म विच होए ना कोए विस्मादी, बिस्मिल कार ना कोए कमाईआ। मन कल्पणा सारे कीते अपराधी, अपरम्पर स्वामी तैनूं सीस ना कोए झुकाईआ। साचे काअबे बणे कोई ना हाजी, हुजरा हक़ ना कोए वखाईआ। किरपा कर प्रभ मोहण माधव माधी, मधुर धुन दे सुणाईआ। तेरे दर मेरी आवाज़ी, कूक कूक दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणा इक खुल्हाईआ। धरनी कहे प्रभ मेरा दो

जहानां होका, हुक्म तेरा इक दृढ़ाईआ। संदेसा देवां चौदां लोकां, चौदां तबक करां शनवाईआ। दो जहान सुणो अगम्म सलोका, ढोला बेपरवाहीआ। सृष्टी दृष्टी वेखो अगम्मी मौका, मुकम्मल दयां जणाईआ। किसे नाल नहीं करना धोखा, कूड़ी क्रिया ना कोए चतुराईआ। संदेसा देवां किसे कम्म नहीं आउणा पढ़या पोथा, बिना पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पार ना कोए लँघाईआ। इक्को तक्को अगम्मी जोता, जो हर घट अंदर नूर करे रुशनाईआ। जिस दी वरन ना कोई गोता, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। बुद्धी विच करे कोई ना सोचा, अक़ल चले ना कोए चतुराईआ। जन भगतां पूरी करे लोचा, लोचण नैण इक खुल्हाईआ। नाम खुमारी देवे मदहोशा, अमृत रस जाम प्याईआ। मन कल्पणा कर ख़ामोशा, सुन्न समाधी विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वाहवा तेरी आस रखाईआ। धरनी कहे मेरे प्रभू प्रभ ठाकर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग वेख आपणा सागर, डूँघी लहर फोल फुलाईआ। भाग लग्गे ना काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए रुशनाईआ। कर्म होवे ना किसे उजागर, दीन दुनी रही कुरलाईआ। दरगाह साची मिले कोई ना आदर, पारब्रह्म तेरा दरस कोए ना पाईआ। सच इन्साफ़ करे कोई ना आदल, हक़ीक़त हक़ ना कोए जणाईआ। दीन मज़हब बणे क़ातल, मक़तूल होई ख़लक खुदाईआ। जलवा नूर दिसे किसे ना बातन, पर्दा उहला ना कोए उठाईआ।
१२६६ धरनी कहे मैं रो रो आई आखण, नेत्र नैणा नीर वहाईआ। सदी चौधवीं दिसे कोई ना साथन, सगला संग ना कोए निभाईआ। १२६६
२१ किरपा कर पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करते तेरा नाम ध्याईआ। धरनी धरत धवल धौल मण्डल मण्डप पाए कोई ना रासन, २१
गोपी काहन नाच ना कोए नचाईआ। सीता राम नज़र ना आए कोई बनबासन, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जिधर वेखां इक दूजे दा सारे करन घातन, सीस जगदीश हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग मेटे रैण ना कोए अन्धेरी रातन, सतिजुग चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, आसा सब दी पूर कराईआ। धरनी कहे प्रभ बदल दे आपणा असूल, असलीअत इक जणाईआ। जन भगतां बख़्श के आपणी धूल, धर्म दी धार दे दृढ़ाईआ। तेरा हुक्म संदेसा नाम कलमा सृष्टी कायनात मिले माअकूल, निरगुण मेट ना कोए मिटाईआ। तेरा खेल वेखां कन्त कन्तूहल, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। दीन दुनी दा अन्त चुका दे मूल, गुर अवतार पैग़म्बरां लेखा झोली पाईआ। सदी चौधवीं कौल इक़रार ना जावीं भूल, वायदा वहदत वाला पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। धरनी कहे मेरे साहिब सुल्ताना, निरवैर तेरी ओट रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे ज़माना, ज़िमीं असमान होए रुशनाईआ। चार जुग दा लेखा मुका दे विच जहाना, जीवण

जुगत दे बदलाईआ। तूं योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, शाह पातशाह शहिनशाह नूर अलाहीआ। सतिजुग साचा कर प्रधाना, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा गावण इक्को गाणा, गहर गम्भीर तेरा नाम ध्याईआ। इक्को मन्दिर होवे मकाना, घर स्वामी इक्को सोभा पाईआ। इक्को झुल्ले तेरा निशाना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर गुण निधाना, गुणवन्त तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर करन सलामा, सजदयां विच डंडावत बन्दना कर के सीस निवाईआ। धरनी कहे मेरा परवान करना परवाना, प्रानपत तेरे अग्गे दिता रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी मंज़ल हक़ होए आसाना, दुष्वारी रहिण कोए ना पाईआ।

१२६७
२१

१२६७
२१

❊ २० चेत शहिनशाही सम्मत ५ किरपाल सिँघ गुरबचन सिँघ दे गृह लाल बंगला कानपुर ❊

धरनी कहे मैं सच आई कहिण, पुरख अकाल दीन दयाल दयां दृढ़ाईआ। आपणी सृष्टी दृष्टी वेख आपणे नैण, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वगे वहिण, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार वरन अठारां बरन रही रुढ़ाईआ। साचा रिहा ना कोए साक सज्जण सैण, मित्र प्यारा एकँकारा सोभा कोए ना पाईआ। नाता तुट्टा मात पित भाई भैण, पूत सपूता गोदी गोद ना कोए सुहाईआ। सदी चौधवीं सब दा चुका दे लहिण देण, अर्शी प्रीतम बेनज़ीर आपणा फेरा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्धरी रैण, रहमत लाशरीक परवरदिगार आप कमाईआ। साचे नाम दी बख्श अगम्मी रसायण, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला अगम्म अथाह सुणाईआ। किरपा कर मेहरवान महबूब नर नरायण, नर हरि तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। धरनी कहे मेरे परम पुरख परमात्म साचा कर हित्ता, हितकारी हो के वेख वखाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा पिता, पतिपरमेश्वर तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं जुग चौकड़ी खेल करें नित नवित्ता, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप प्रगटाईआ। मेहरवान महबूब मुहब्बत विच मेरी पूरी कर दे इच्छा, निरिच्छत हो के मेहर नज़र उठाईआ। सच सुल्तान नौजवान दीन दुनी समझा दे साची सिखा, सिख्या इक्को इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरा कर दे भविक्ख लिखा, लेख लेखनी दए गवाहीआ। सब दा इष्ट दृष्टी विच होवे इक्का, अकल कलधारी अपणा रंग वखाईआ। सच सुहञ्जणी तेरी होवे वार थिता, घड़ी पल सोहणी वंड वंडाईआ। जुग चौकड़ी मैं आसा मनसा रखदी रही इच्छा, जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। धरनी कहे प्रभ विष्न ब्रह्मा शिव सारे रहे आख, देवत सुर ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर रहे भाख, अगम्म अगम्मढ़ी खेल वखाईआ। नेत्र रोवण तीर्थ ताट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ, सति सति सति ना कोए वड्याईआ। सच धर्म दा रिहा कोई ना हट्ट, हटवाणे बैठे मुख छुपाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, दीन दयाले तेरी इक्को ओट तकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे गावण जस, सिफ्त सालाह इक समझाईआ। निज नेत्र लोचण नैण खोल्ह दे अक्ख, प्रतख मिल रूप गोसाईंआ। मैं पापां भरी गई थक्क, थकावट विच कुरलाईआ। एकँकार तैनूं रही सद्द, संदेसा तेरा नाम जणाईआ। दीनां मज़हबां मेट दे हद्द, हदूद आपणी इक वखाईआ। आत्म परमात्म बणा यद्द, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। पिछली रीती रीतीवान छड्ड, संसा रोग दे चुकाईआ। धर्म निशाना नौजवाना मर्द मर्दाना मातलोक गड्ड, चार कुण्ट दह दिशा वेख वखाईआ। जोती जाते पुरख बिधाते निरगुण धार हो प्रगट, परगणे सारे वेख वखाईआ। दूई द्वैत कल्पणा मेट फट्ट, पट्टी नाम वाली बंधाईआ। तेरा खेल वेखां अलखणा अलख, अलख अगोचर पर्दा देणा उठाईआ।
१२६८ मैं सच दुआर पहुंची नस्स नस्स, भज्जी वाहो दाहीआ। जिधर जावां नाल चावां तेरा गावां जस, धुर दा ढोला इक अलाहीआ। १२६८
२१ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दी धार इक समझाईआ। धरनी कहे प्रभ कूड़ी क्रिया दे तलाक, नाता दुनी रहिण ना पाईआ। सति सच कर इतफाक, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म ना रहे निफ़ाक, पर्दा अंदरों देणा उठाईआ। मनुआ मन ना रहे गुस्ताख़, बुध्ध बिबेक देणी बणाईआ। सच प्रीत जोड़ना नात, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। लख चुरासी दस्सणी अगम्मी ज़ात, वरन बरन ना वंड वंडाईआ। दीन दुनी दा सांझा कर इख़लाक, इख़तलाफ़ रहिण ना पाईआ। तेरी मुहब्बत विच सारे होण मुशताक, महिव महबूब आपणा रंग देणा रंगाईआ। सुरती शब्दी गोपी काहन सारे करन नाच, मण्डल रास सोभा पाईआ । त्रैगुण माया बुझा आंच, अगनी अग्ग ना कोए जलाईआ । भाग लगा दे काया माटी काच, कंचन गढ़ वेख वखाईआ । मैं बेनन्ती करां दर तेरे हो के दास, दास्तान आपणी दिती सुणाईआ। धरती कहे प्रभू मैनूं दे विश्वास, विश्व आपणा हुक्म सुणाईआ। दर आई ना होवां निराश, निर्धन तेरे अग्गे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर दा धर्म इक जणाईआ। पुरख अकाल कहे धरनी कलयुग अन्त मूल ना डोल, अडुल दए वड्याईआ। सद वसां तेरे कोल, दूर दुराडा नेड़े आईआ। भाग लगावां उपर धौल, धवल मिले वड्याईआ। गुर अवतार पैग़ग्बरां पूरे कर के कौल, लहिणा देणा दयां चुकाईआ । सति

सरूपी हो के जावां मौल, मौला आपणा वेस वटाईआ। जिस नूं समझे कोई ना पंडत पांधा रौल, मुल्ला शेख़ मुसायक वेखण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म दस्स के सब नूं बोल, अनबोलत राग जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप शब्दी डंक वजावां ढोल, सोई सृष्टी सर्ब उठाईआ। सति धर्म दा दुआरा इक्को खोल्ह, चार वरनां विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे धरनी मेरा वेख अगम्म नज़ारा, नज़रीआ दीन दुनी दयां बदलाईआ। मैनूं सारे कहिण चवीआं अवतारा, कल कल्की नूर अलाहीआ। कलयुग मेटां अन्ध अन्धयारा, सतिजुग साचा चन्द नूर करां रुशनाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर एका नाम होवे जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। इक्को डंडावत बन्दना सजदा निमस्कारा, नमों नमों नमों इक वखाईआ। जिस दी महिमा काग़ज़ क़लम स्याही ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ। सो लहिणा देणा चुकावे अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी दया कमाईआ। साचा हुक्म वरता सच्ची सरकारा, सच संदेसा इक सुणाईआ। दीन दुनी दए हुलारा, चारों कुण्ट लए उठाईआ। किरपा करे आप निरँकारा, निरगुण आपणी कार कमाईआ। धरनी धरत धवल धौल तेरा बणां आप सहारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साचा मार्ग दस्स अगम्म अपारा, सतिजुग सच दयां जणाईआ। धरनी दोए जोड़ करे निमस्कारा, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। तूं साहिब सुल्तान मालक ख़ालक प्रितपालक सब दा सांझा यारा, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल किहा मैं सब किछ करनेहारा, हर हिरदा वेख वखाईआ। सतिजुग सच होवे पसारा, लोकमात लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लख चुरासी जिस दा पसारा, पसर पसारी हो के वेख वखाईआ।

१२६९ २१

❊ २० चेत शहिनशाही सम्मत ५ सतवन्त कौर दे गृह शास्त्री नगर कानपुर ❊

धरनी कहे मेरे शहिनशाह अमाम, मेहरवान महबूब तेरी वड वड्याईआ। सदी चौधवीं कूड़ी क्रिया झगड़ा मेट तमाम, तमअ तमन्ना ममता मोह दे गवाईआ। सच संदेसा धुर दा कलमा दस्स कलाम, कायनात दीन दुनी आप समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप झुला इक निशान, चार कुण्ट दह दिशा आपणा हुक्म वरताईआ। दीन मज़हब दा रहे ना कोए गुलाम, शरअ ज़ंजीर बेनज़ीर दे कटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप एकँकार इक्को जपा नाम, नाउँ निरँकारा इक दरसाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। चार वरन अठारां बरन साची सिख्या दे जीव जहान, जहालत अंदरों

बाहर कढ्ढाईआ। काया काअबा मन्दिर दस्स सच मकान, साढे तिन्न हथ्थ पर्दा अन्तर निरंतर दे उठाईआ। आदि जुगादी घट निवासी जाणी जाण, अन्तरजामी तेरी बेपरवाहीआ। सच बेनन्ती दर ठांडे कर परवान, परम पुरख परमात्म तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे मेरा इक्को इक सजदा, सीस जगदीश झुकाईआ। झगड़ा मेट कलयुग कल दा, कलकाती दे खपाईआ। लेखा रहे ना वल छल दा, पर्दा उहला आप उठाईआ। भेव खुल्हा दे निहचल धाम अटल दा, सचखण्ड साचा सोभा पाईआ। तेरा दीपक जोती होवे बलदा, दो जहान करे रुशनाईआ। हरि सन्त सुहेला सच सिँघासण तेरा चरण कँवल होवे मल्लदा, माया ममता मोह मिटाईआ। चार वरन अठारां बरन इक्को धार होवे रलदा, ज़ात पात दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। झगड़ा मुका दे काया माटी खल्ल दा, ख़ालक ख़लक तेरी सरनाईआ। भय मुका दे पंच विकारे दल दा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच तेरे नाम वड्याईआ। धरनी कहे वेख आपणी ख़लक ख़ालक, साहिब तेरी वड्याईआ। तुध बिन दिसे कोई ना प्रितपालक, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। दीन दुनी दी निंदरा लाह आलस, सोई सुरत मात उठाईआ। चार वरन मीत बणा ख़ालस, दूसर वंड ना कोए १२७० वंडाईआ। साचे नाम दी लगा अदालत, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। कूड़ी क्रिया मेट जहालत, ज़ाहर ज़हूर हो रुशनाईआ। माया ममता मोह ना रहे अलामत, इल्म आलमां इक जणाईआ। साचा नाम बख़्श निआमत, वस्त अमोलक काया गोलक इक टिकाईआ। तूं आदि जुगादि सही सलामत, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे निउँ निउँ लागां पाईंआ। धरनी कहे मेरे साहिब सुल्ताने महबूब, मुहब्बत विच तेरा राह तकाईआ। तेरा सुहञ्जणा आलीशान अरूज, सचखण्ड दुआरा वज्जे वधाईआ। इक्को मंज़ल हक़ मक़सूद, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सदी चौधवीं कर नेसतोनाबूद, दीन दुनी रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत सुहेले गुरु गुर चेले कर महिफ़ूज, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मन विकारा सृष्टी दी दृष्टी विच्चों हूंझ, शब्दी धार अमृत मेघ इक बरसाईआ। धरनी कहे मैं रो रो आखां तुध बिन सके कोई ना बूझ, अनुभव भेव ना कोए खुल्हाईआ। मैनूं दुःख आउँदा जिस वेले दीनां मज़हबां दी तकदी दूज, द्वैत विच लड़ाईआ। झगड़ा वेखां चारे कूट, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण रिहा कुरलाईआ। साध सन्त मारदे झूठ, सति सच ना कोए दृढ़ाईआ। सब दा ख़ाली काया होया ठूठ, वस्त अमोलक नाम नज़र कोए ना आईआ। जगत वासना हुलारे रहे झूट, नाम खुमारी ना कोए चढ़ाईआ। आत्म परमात्म प्रीती

तेरे नालों प्रभ गई टूट, टुट्टी गंढु ना कोए वखाईआ। गुर अवतार पैगम्बर जुग चौकड़ी कर गए कूच, कूचा गली होका हक़ नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे आस रखाईआ। धरनी कहे मेरे शहिनशाह नवाबा, नौबत आपणा नाम वजाईआ। तेरे चरण कँवलां सजदा इक आदाबा, नमों नमों कर के सीस निवाईआ। तूं शाहो भूप वड राजन राजा, दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त रच आपणा काजा, करनी दे करते आपणी खेल खिलाईआ। दीन दुनी दा दुरमति मैल धो दाग़ा, पतित पुनीत आपणा आप बणाईआ। काया मन्दिर सच वखा काअबा, जिथ्थे मिले नूर अलाहीआ। निझर झिरना अमृत बरस दे हयाते आबा, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। तेरा नूर जोत होवे प्रकाशा, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। धरनी कहे प्रभ मेरा तेरे उत्ते भरवासा, भाण्डा भरम दिता भन्नाईआ। मैं तकदी उपर आकाशा, गगन गगनंतरां खोज खुजाईआ। मेरे साहिब सुल्तान मेरी पूरी कर दे आशा, आशावंद तेरा राह तकाईआ। तूं दीन दयाल परम पुरख अबिनाशा, मेहरवान महबूब मुहब्बत विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, दीन दुनी तेरा समाजा, सच समग्री जोत इकग्री एका नाम श्री भगवान सतिजुग सच देणा दृढ़ाईआ।

२१ २१

✻ २१ चेत शहिनशाही सम्मत ५ महिल सिँघ दे गृह शास्त्री नगर कानपुर ✻

धरनी कहे मेरे जागे भाग सुत्ते, आलस निंदरा रहे ना राईआ। किरपा कर अबिनाशी अचुते, पारब्रह्म दया कमाईआ। मेरा अन्तर मूल ना दकुखे, दर्दीआं दर्द गवाईआ। भाग लगाए साची कुक्खे, होए आप सहाईआ। भगत सुहेले लभ्भे लुके, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जिन्हां प्रकाश काया जुस्से, जिस्म ज़मीर वेख वखाईआ। किरपा करे उन्हां दे उत्ते, जो पूरब लहिणा लैण थाउँ थाईंआ। शब्द धार दस्स दो तुके, तूं मेरा मैं तेरा ढोला दयां समझाईआ। उन्हां आवण जावण पैंडे जाण मुके, लख चुरासी ना कोए भवाईआ। सच सुहञ्जणी होवे रुत्ते, रुत्त रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैं वेखां खेल बेनज़ीर, जो बिना नज़र रिहा जणाईआ। जोती धार तक्कां कबीर, जो जलवा नूरी रिहा वखाईआ। जिस दा तन माटी नहीं शरीर, शरअ तों बाहर नजरी आईआ। साची दस्स रिहा तक़रीर, शब्द संदेसे धुर सुणाईआ। जेहड़ी अग्गे नहीं होई तहिरीर, क़लम शाही वंड ना कोए वंडाईआ। जिस विच्चों हक़ दिसे तस्वीर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रिहा जणाईआ। जन भगतां बदल जाए

तक़दीर, बुध्ध बिबेक दए कराईआ। झगड़ा मुके शाह हकीर, शहिनशाह आपणा पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। कबीर कहे धरनी तेरा वड वड भाग, भाग भरीए तैनूं दयां जणाईआ। प्रभ मिल्या कन्त सुहाग, हरि साहिब नूर अलाहीआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, पापां करे सफ़ाईआ। लग्गी बुझाए आग, अमृत मेघ बरसाईआ। तेरे उत्ते जगदा सी चराग़, फ़कीर फ़िकरिआं विच ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। कबीर कहे एथे फ़कीर रहन्दे सी पंज, पंज पीर नाल वड्याईआ। पुराणा नाँ सी शाह गंज, बस्ती छोटी सोभा पाईआ। ग़मी चिन्ता छड्ड के रंज, इक्को कलमा सदा गाईआ। सच खुदा नूं समझ के अनन्द, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। धुर नाम वजा मृदँग, नग़मे ढोले गाईआ। जिस वक्त हुंदा सी नौवीं दा चन्द, निगाह असमान उत्ते टिकाईआ। अक्खां मीट के माणदे सी अनन्द, तारा मण्डल आपणे विच्चों प्रगटाईआ। कोल निशानी हुंदी सी जंड, बिरख सोहणा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। फ़कीर कहिण एथे हुंदा सी छोटा जिहा तलाब, नौ सत्त कर्म दी वंड वंडाईआ। जिस विच भरया हुंदा सी आब,
१२७२ पाणी जल कहे लोकाईआ। इक बिरध हुंदा सी सांप, बाशक तशका सोभा पाईआ। जिस दा बड़ा वड्डा प्रताप, मोटा ताज़ा १२७२
नज़री आईआ। सारे वाहिद कलमे दा करदे जाप, अल्ला हू दा नाअरा लाईआ। रूह बुत नूं करना पाक, सजद्यां विच
२१ सीस झुकाईआ। इक दिन सब ने कीती बात, बातन वेखो धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा २१
कर, सद आपणा खेल वखाईआ। फ़कीरां विच्चों इक दा नाँ सी शराजा, करीमू पिता नज़री आईआ। प्रभ दा लाउण लग्गा अंदाज़ा, निगाह नूर चश्म रुशनाईआ। की तेरा खेल तमाशा, चौदां तबक देणा समझाईआ। की मुहम्मद रख्या राज़ा, पर्दा देणा उठाईआ। क्यों रोज़ा नहीं निमाज़ा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। शब्द अगम्मी आई इक आवाज़ा, नग़मा हक़ सुणाईआ। धुरदरगाही वड महबूब अगम्मी राजा, शहिनशाह शाह पातशाह आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पीर कहे मैं तक्की आपणी हयाती, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों वेख वखाईआ। मेरे जीवण दे थोड़े दिन बाकी, बाकायदा नज़री आईआ। मेरा जिस्म नहीं रहिणा ख़ाकी, तन वजूद संग ना कोए निभाईआ। मैं तक्कया अन्तर मारी झाती, परदयां ओहले फोल फुलाईआ। परवरदिगार मिल्या साकी, सज्जण नूर अलाहीआ। ओस ने कथा कहाणी इक आखी, आख़र दिता जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर अमाम अमामा बण के चुकावे सब दी बाकी, लहिणा सब दी झोली पाईआ। तुसां एथे रहिणा कि आपणी करनी राखी, रखक हो के वेख

वखाईआ। सारे ला के बैठे रासी, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। कवण वेला आवे पुरख अबिनाशी, हरि करता धुरदरगाहीआ। कबीर कहे मैं कथा कहाणी दस्सां साची, सच दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। कबीर कहे मैं सुभावक कीती बात, फ़कीरां फ़िकरा पुच्छ पुछाईआ। की तुहाडी ज़ात, सहज दयो समझाईआ। की कलमा तुहाडी गाथ, करो की पढ़ाईआ। की मज़हब तुहाडी जमात, जुम्मला अक्खर दयो दृढ़ाईआ। की नूर तक्को साख्यात, जल्वागर अलाहीआ। की मुहब्बत विच रखो इतफाक, मेला मेले सहज सुभाईआ। सारयां हस्स के किहा कबीरा असीं इक्को तों मँगदे नजात, जो मेहरवान मेहरवान मेहरवान नूर अलाहीआ। जो मुहब्बत विच प्यार विच साडा रूह बुत करे पाक, पतित पुनीत लए बणाईआ। सदा सदा सद रहीए चरण कँवल दास, क़दमबोसी विच सीस झुकाईआ। ओसे दी करदे तलाश, जो वस्से हड्ड नाड़ी मास, पंज तत आपणा आसण लाईआ। सदा करे प्रकाश, अन्ध अज्ञान करे विनास, लेखे लाए पवण स्वास, साह साह आपणा रंग रंगाईआ। कबीर किहा ज़रा वेखो उपर आकाश, जिथ्थे होवे कदे ना नाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। फ़कीर किहा कबीरा

१२७३ केहड़ा ओह तरीका, त्रैगुण अतीता दए कराईआ। प्रभ मिले नीकण नीका, निरगुण एका दरस वखाईआ। लेखा मुकावे १२७३

जीव जी का, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साडी आसा मनसा पूरी करे उम्मीदा, आह विच सारे रहे सुणाईआ। साडी

२१ इक्को वार होवे ईदा, दीदा दानिस्ता दर्शन पाईआ। साडा भेव खोल्ले पेचीदा, पोशीदा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत २१

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। कबीर कहे मैनूं पुच्छ लैण दयो कोलों श्री भगवान, की की हुक्म जणाईआ। निगाह मारी परे ज़िमीं असमान, दरगाह साची वेख वखाईआ। तख्त निवासी नौजवान, अबिनाशी करता डेरा लाईआ। हुक्मी हुक्म करे हुक्मरान, सुत शब्द दुलारा इक्को इक उठाईआ। जा वेख जगत जीव जहान, कवण मेरा राह तकाईआ। झट संदेसा पुज्जया, कबीर होया हैरान, सहज मिले वड्याईआ। हुक्म सुण धुर फ़रमान, धर्म दी धार इक उपजाईआ। सदी चौधवीं कलयुग अन्त प्रगट होवे विच जहान, जोती जाता पुरख बिधाता वेस वटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब दा लहिणा देणा चुकाउणा आण, पिछला लेखा रहिण कोए ना पाईआ। फ़कीरां दे फ़िकरे सुणां जहान, बिन अक्खरां अनरागी राग विच्चों वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। कबीर सच करनी कार कमावांगा। निरगुण निरवैर रूप धरावांगा। जोती जाता वेस वटावांगा। पुरख बिधाता आप अख्वावांगा। दो जहानां डंक वजावांगा। राउ रंकां आप उठावांगा। सच

दुआर बंक सुहावांगा। भगत सुहेले मेल मिलावांगा। गुर चेले जोड़ जुड़ावांगा। लख चुरासी जीव जंत फोल फुलावांगा। साध सन्त पर्दा लाहवांगा। कलयुग माया पा बेअन्त, दीन दुनी आप भुलावांगा। जन भगतां बण के धुर दा कन्त, आत्म सेजा जोड़ जुड़ावांगा। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझावांगा। बोध अगाधा बण के पंडत, धुर दी विद्या इक पढ़ावांगा। झगड़ा मुका के स्वर्ग जन्नत, दरगाह साची सच सुहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमावांगा। कबीर सच करां कल्याण, हरि करता आप जणाईआ। मेरे कोल झगड़ा नहीं हिन्दू मुस्लमान, सांझा मीत इक अख्वाईआ। इन्हां पंजां नूं दे दे ज्ञान, तुहानूं छड्डणा पए जहान, तन वजूद रहिण ना पाईआ। एह जगह होणी सुंञ मसाण, तुहानूं सके ना कोए पहचान, तुहाडी आत्मा दी होणी नहीं कल्याण, तन वजूद दूजा नज़र कोए ना आईआ। तुसां फिरदे रहिणा दरम्यान ज़िमीं असमान, याद करदे रहिणा श्री भगवान, सो पुरख अकाला दीन दयाला वेखे आण, सदी चौधवीं आपणा फेरा पाईआ। मेहरवान हो के लए पछाण, हर घट अन्तर बण के जाणी जाण, जानणहार आपणी दया कमाईआ। कबीर कहे सो वक्त पहुंचया आण, निउँ निउँ करन सलाम, तूं शहिनशाह अमाम, हर घट जाणी जाण, कायनात दे मालक ख़लक दे ख़ालक दर तेरे सीस निवाईआ। साडी मंज़ल होई आसान, किरपा कीती हरि मेहरवान, महबूब आपणी दया कमाईआ। साडा मुके आवण जाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कबीर कहे किरपा कर श्री भगवन्त, भगवन दया कमाईआ। वेला वक्त पहुंचया अन्त, अन्तिम लए मिलाईआ। तेरा खेल जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। जो तेरे फ़कीर सन्त, सज्जण लै बणाईआ। दर ठांडे तेरे मिन्नत, चरण कँवल सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। किरपा कर शहिनशाह अज़ीम, आलीशान तेरी सरनाईआ। तूं मालक ख़ालक क़दीम, क़ुदरत दा करता नूर अलाहीआ। मैनूं तेरे उत्ते यकीन, भरोसा इक्को इक दृढ़ाईआ। तूं बेनन्ती कर तस्लीम, ताब्बयादारी विच आपणा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे कबीरा, क़बरां वाले देवां तराईआ। शरअ दी कट ज़ंजीरा, आपणा रंग रंगाईआ। लेखे लावां शाह हकीरा, दीनां आपणी गोद उठाईआ। मालक बण के पीरन पीरा, पारब्रह्म हो के वेख वखाईआ। पिछली याद रख तस्वीरा, तसव्वर सब कुछ दयां कराईआ। जिथ्थे हुंदे सी जंड करीरा, ढाब छोटी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। पंज कहिण साडी सलाम, अन्तिम तेरे चरण दुहाईआ। तूं मालक इक अमाम, इबनुलवक्त तेरी वड्याईआ। तेरा

लेखा अगम्म पैग़ाम, वज्जी हक़ वधाईआ। साडी मंज़ल होई आसान, औखा राह ना कोए तकाईआ। दरगाह साची कर परवान, थान थनंतर इक्को दे सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पंज कहिण गया परपंच, पंच मिली वड्याईआ । साडा लेखे लग्गा अन्त, अन्तिम होया सहाईआ । पाया अगम्मा कन्त, कन्त कन्तूहल नूर अलाहीआ। झगड़ा छुट्टया विच्चों जीव जंत, जागरत जोत विच समाईआ। दरगाह साची मन्ज़ूर होई मिन्नत, मनसा पूर कराईआ। धरनी ओहो थाँ ते ओहो सिम्मत, वार घड़ी थित ओसे नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त सब दे लेखे लहिणे पूर कराईआ।

❊ २१ चेत शहिनशाही सम्मत ५ गुरबख्श सिंघ महू निवासी दे नवित्त ❊

गुरबख्श सिंघ कहे मेरे साहिब सतिगुर गोबिन्द, गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द तेरी सरनाईआ । हउँ बाल अंञाणा तेरी बिन्द, मेहरवान मेहरवान मेहरवान तेरी ओट तकाईआ। तूं गहर गम्भीर सागर सिन्ध, अनभव धार सोभा पाईआ। दाता
१२७५ २१ दानी गुणी गहिन्द, गहर गम्भीर तेरी वड्याईआ। मेरी सगली मिट गई चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। मेरी लेखे १२७५ २१
ला ला जो कीती तेरी निंद, निन्दक हो के अन्तिम तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरी ओट रखाईआ। गुरबख्श सिंघ कहे मैं तेरा सुत दुलारा, सति सतिवादी तेरी ओट तकाईआ। किरपा कर मेरे निरँकारा, निरवैर तेरी वड्याईआ। दोए जोड़ करां निमस्कारा, निउँ निउँ लागां पाईंआ। तेरा तक्कया सचखण्ड नज़ारा, दरगाह साची सोभा पाईआ। मैनूं याद आ गया पुरी अनन्द दा ओह अखाड़ा, जिस दा पर्दा ना कोए उठाईआ। मेरे प्रकाश होया नाड़ नाड़ा, अन्ध अन्धयारा दिता गवाईआ। कर दे पार किनारा, नईआ नौका तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। दर तेरे सीस जाए झुक, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मेरा आवण जावण पैंडा गया मुक, मिली माण वड्याईआ। साहिब सतिगुर मैं अन्त अख़ीर बिना बोलयां तूं मेरा मैं तेरा हिरदे विच गाई तुक, तूंही तूंही राग अल्हाईआ। तूं सति सरूप शाहो भूप मेरे अंदर वड़या चुप, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। अमृत जाम प्याला बिन रसना दिता घुट, बिन जिह्वा दिता चखाईआ। मेरी आत्मा मेरे विच्चों गई उठ, निरगुण धार लई अंगड़ाईआ। जां तक्कया मेरा गोबिन्द रिहा तुठ्ठ, साहिब सुल्तान होया सहाईआ। मैं फड़ के

चरण लए घुट्ट, बिन नेत्रां नीर दिता वहाईआ। मैं अपराधी तेरा सुत, साहिब सुल्तान तेरी वड्याईआ। ज्यों भावे त्यों गोदी लैणा चुक, चारे कन्नीआं ख़ाली दितीआं वखाईआ। तूं सहज नाल प्यार दे के उत्ते मुख, मुख अन्तर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता धुर दा वर, दर आपणे रंग रंगाईआ। गुरबख़्श सिँघ कहे मेरे अन्तर इक्को आशा, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। जेहड़ा अख़ीरी निकिलिआ स्वासा, साह विच दयां जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बिना बोल्यों गाई गाथा, अन्तर अन्तर प्रेम वधाईआ। जां वेख्या नूर तक्कया पुरख अबिनाशा, निरवैर बैठा सोभा पाईआ। हस्स के किहा मैं तेरा आदि जुगादि दा राखा, रखक सद अख्वाईआ। अंदरों खोल्ह के मेरा ताका, पर्दा दिता लाहीआ। जोती जोत दा दे प्रकाशा, जोती जोत विच मिलाईआ। तन माटी ख़ाली कर के लाशा, आत्म परमात्म आपणे विच मिलाईआ। राह विच जांन्दयां मैं सब दी सुणी भाषा, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां अगम्मी राग अलाहीआ। सचखण्ड दवारे कीता वासा, जिथ्थे मिल्या बेपरवाहीआ। इक्को पिता ते इक्को माता, इक्को मिली जणेंदी माईआ। जिस दा नूर ओसे ने जाता, दूसर समझ किसे ना आईआ। मैं अन्त अख़ीर भुल्ल बख़्शाई जो रसना नाल खाधा, बिन नैणां जल धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ। मेरा लेखा पूरा कीता, मिली माण वड्याईआ। पूरब जन्म

१२७६

दा लहिणा दीता, पुरी अनन्द वज्जी वधाईआ। मेरा आत्म होया ठांडा सीता, अगनी तत गवाईआ। दरस पाया अनडीठा,

२१

निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। नाम निधाना जाम पीता, अंमिउँ रस रस चखाईआ। सदा लई सचखण्ड दवारे जीता, चुरासी विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, बेशक मेरे घरदयां फोल दिता अंगीठा, भुल्ल मेरी ना कोए रखाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। दर तेरे इक्को आसा, आशावंद जणाईआ। चरण कँवल रख भरवासा, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। बाल अंञाणे तेरी शाख़ा, पत्त टहणी नाल महकाईआ। तूं निरगुण बणीं राखा, सरगुण होणा आप सहाईआ। तूं सर्ब कला कल ज्ञाता, जानणहार धुरदरगाहीआ। पिछला भुल्ल ना जाईं नाता, गोबिन्द मिल के वज्जे वधाईआ। आत्म दा पिता माता, जोती जाता इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। आपणा रंग रंग करतार, क़ुदरत दे मालक दया कमाईआ। मैं छड्ड आया संसार, संसा रोग रिहा ना राईआ। तेरा वेख सच्चा दरबार, दरगाह साची वज्जी वधाईआ। मिल के जोती जोत धार, निरगुण नूर विच समाईआ। किरपा कर मेरे गिरधार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा आपणे विच रखाईआ। मेरा

लहिणा आपणे विच रख, रखणहार तेरी वड्याईआ। तूं सर्ब कला समरथ, बेअन्त बेपरवाहीआ। मैं जोड़ के ख़ाली हथ्थ, डंडावत बन्दना सीस निवाईआ। तेरे नाम दी इक अलख, जैकारा इक्को इक सुणाईआ। जो बंस सरबंस बाले नढ्ढे पिच्छे आया छड्ड, सो सब तेरी झोली पाईआ। तेरा बंस ते तेरी यद, पुश्त पनाह तेरी मँग मँगाईआ। पिछले बख़्श कीते गुनाह, मार्ग अग्गे इक दृढ़ाईआ। तूं शहिनशाह शाह पातशाह, मेहरवान अख्वाईआ। सब थाईं होएं सहा, सहायक आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मेला लैणा मिलाईआ। गुरबख़्श सिँघ कहे मैं सदा सदा सद जीता, जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। परम पुरख दा दर्शन कीता, निरगुण नूर जोत जोत रुशनाईआ। जिस ने जीअ दान दीता, अगला लेखा दिता मुकाईआ। कर के ठांडा सीता, अगनी तत बझाईआ। बण के धुर दा मीता, मित्र प्यारा हो के गोद उठाईआ। मेरा चरणां उत्ते झुकया सीसा, सीस जगदीश दिता निवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। प्रभू दर तेरे दा मँगता, झोली देणी भराईआ। गढ़ तोड़ना हउमे हंगता, हँ ब्रह्म देणा समझाईआ। अनक बार करां मिन्नता, निउँ निउँ लागां पाईंआ। मेरे बंस "च रहे कोई ना चिन्ता, दर्दी हो के दर्द लैणा वंडाईआ। सब दे अंदर देणी हिम्मता, मेरे पिच्छे रो के नैणां नीर ना कोए वहाईआ।

१२७७ २१

भावें ताअने देवण अनगिणत निन्दका, निन्दिया सुण के ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। आपणे रंग रंग लै मेरे प्रभ ठाकर, तेरे गृह वड्याईआ। तूं गहर गम्भीर डूँघा सागर, अथाह अनन्त अन्त तेरा कहिण कोए ना पाईआ। भाग लगा दे काया माटी गागर, साढे तिन्न हथ्थ कर सफ़ाईआ। कोझयां कमल्यां निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल धुआईआ। दर आइआं दरवेशां दे आदर, आदर्श आपणा इक जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे बादल, पवण ठंडी इक झुलाईआ। तेरे नाम दा रहे ना क़ातल, मक़तूल वेखां ख़लक ख़ुदाईआ। तेरा जलवा वेखां नूरे बातल, पारब्रह्म प्रभ तेरा दर्शन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। रंग दे रंग किरपानिध स्वामी, समां अन्तिम वेख वखाईआ। तूं सर्ब घटां घट अन्तरजामी, लख चुरासी खोज खुजाईआ। हर हिरदे अंदर वसा दे आपणी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। चार जुग चार वरन अठारां बरन तेरा खेल चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरी वड वड्याईआ। तूं आत्म परमात्म पारब्रह्म पतिपरमेश्वर करीं आपणी मेहरवानी, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेरे परवार दी बच्चयां वाली निशानी, निशाना तेरा वेख वखाईआ। मेरी बेनन्ती अरदास सुणीं दो जहानी, जहालत अंदरों देणी कढ्ढाईआ। तेरे नाम दी मंज़ल मिले रुहानी, रूह बुत मिल के वज्जे वधाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अंदरों कढु देणी परेशानी, सांतक सति सति सति देणा वरताईआ।

✻ २२ चेत शहिनशाही सम्मत ५ भगत सिँघ दे गृह इटारसी ✻

धरनी कहे मेरा कलयुग कूड़ी क्रिया धो दे धब्बा, दुरमति मैल दे मिटाईआ। तूं आदि जुगादी इक्को अब्बा, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी जग नेत्र किसे ना लभ्भा, गुर अवतार पैग़म्बर सिफ्तां विच गए सालाहीआ। सद भगतां देवणहारा सद्दा, संदेसा धुर दा नाम दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर द्वैत पर्दा लाह हो नंगा, निरवैर आपणा नूर जोत कर रुशनाईआ । उहला रहे ना ब्रह्म हंगा, पारब्रह्म प्रभ तेरा खेल वखाईआ । सति आत्म सच दे अनन्दा, अनन्द आपणे विच्चों प्रगटाईआ। मानव रहे कोई ना गंदा, दुरमति मैल धवाईआ। सतिजुग सच चढ़ा चन्दा, कल अन्धेरा दे मिटाईआ। तूं साहिब सदा बख़्शंदा, सच तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। धरनी कहे मेरे धुर दे बाप, पिता पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। चार कुण्ट मेट दे पाप, पतित पुनीत कर लोकाईआ। आत्म परमात्म बण सज्जण साक, निरगुण निरगुण मेला सहज सुभाईआ। जन भगतां खोल्ह अन्तर ताक, पर्दा रहे ना राईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरा कर भविख्त वाक्, वाकिफ़कार हो के वेख ख़लक खुदाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी विगड़े हालात, साधना सच ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, झगड़ा मिटा दे कागज़ात, शरअ दा बंधन रहे ना राईआ। धरनी कहे मेरे अगम्मी पिता, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी वेख्या नित नवित्ता, सति स्वामी अन्तरजामी मेहर नज़र इक उठाईआ। चार वरनां कर हित्ता, मानव मानव जोड़ जुड़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर कढु सिट्टा, पर्दा उहला रहे ना राईआ। कलयुग कूड़ कल्पणा लेखा कर चिट्टा, कालख टिक्का दे मिटाईआ। सतिजुग साचा तेरा सच दुआरा होवे इक्का, एकँकार एका सीस निवाईआ। झगड़ा दिसे ना पत्थर इट्टा, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ गुरुदुआर आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। धरनी कहे मेरे आदि जुगादी वालद, वालदा तूं ही इक अख्वाईआ। निधर्न सरधन मेट आलस, जगत निंदरा दे गवाईआ। आत्म परमात्म बण सालस, सच स्वामी भेव खुल्हाईआ। हरिजन साचे उपजा ख़ालस, ख़ालक ख़लक तेरी वड्याईआ । गुर अवतार पैग़म्बर तेरे बालक, नन्हे

बच्चे नाल मिलाईआ । दीन दुनी दी बदल हालत, हालत वेख ख़लक ख़ुदाईआ। वरनां बरनां पई जहालत, दीन मज़हब करन लड़ाईआ । तुध बिन करे ना कोए सच अदालत, गुर अवतार पैग़म्बर हिस्से वंडीआं गए पाईआ। नाम निधाना दे निआमत, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सदी चौधवीं सब नूं वखा क्यामत, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। धरनी कहे मेरे साहिब स्वामी मित्र, हरि करते वड वड्याईआ। निरगुण धार आपे निकल, जोती नूर डगमगाईआ। चोटी चढ़ उच्ची सिखर, पन्ध अवर रहे ना राईआ। चार जुग तेरा चित्र सक्कया ना कोए चित्र, बचित्र तेरा खेल बेपरवाहीआ। सदी चौधवीं मैनूं लग्गा फ़िकर, फ़िकरे गुर अवतार पैग़म्बरां वेख वखाईआ। जिस अमाम दा कर के गए ज़िकर, कल कल्की कहि के ढोला गाईआ। ओहनूं वेखां किधर, उतर पूरब पच्छिम दक्खण ध्यान लगाईआ। कवण वेला मेरी पूरी करे सध्धर, सदमा दए गवाईआ। दीनां मज़हबां कर के पध्धर, माणस इक्को रंग वखाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहर करे नज़र, नज़र आपणी इक टिकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे ग़दर, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। दरगाह साची सच कमावे अदल, इन्साफ़

१२७९ इक्को इक समझाईआ। कलयुग विच सतिजुग देवे बदल, बदला मुके थाउँ थाईंआ। छुरी शरअ करे कोई ना क़तल, क़ातल १२७९

२१ मक़तूल नजर कोए ना आईआ। सृष्टी दृष्टी इक्को दस्स पत्तन, तट किनारे इक्को दे समझाईआ। किसे दा चले कोई २१

ना यतन, यथार्थ आपणा हुक्म दे वरताईआ। तुध बिन पैज आए कोई ना रखण, कलयुग अन्तिम कूक दुहाईआ। जीव जगत जहान पिट्टण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। झगड़ा प्या पत्थर इट्टण, काग़ज़ां उत्ते अक्खर करन लड़ाईआ। तैनूं अल्ला वाहिगुरु राम ओम कृष्ण कर के लिखण, लेखा तेरा ना कोए दृढ़ाईआ। तेरी महिमा वाले ग्रन्थ टकयां उत्तों विकण, तेरी क़ीमत कोए ना पाईआ। साचा रिहा ना भगतां मिशन, मार्ग हक़ ना कोए समझाईआ। नेत्र रोंदे ब्रह्मा शिव विष्न, नैणां नीर वहाईआ। लेखा अग्गे सके कोई ना लिखण, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। जिधर वेखां सृष्टी दिसे मिथन, मिथ्या होई लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धरनी रो रो नीर वहाईआ। धरनी कहे मेरे कुलवन्त, कल काती वेख वखाईआ । साहिब स्वामी श्री भगवन्त, मेहरवान मेहरवान मेहरवान तेरी ओट तकाईआ। तुध बिन आत्म परमात्म दा बणया कोई ना कन्त, गुर अवतार पैग़म्बर तेरा मार्ग गए जणाईआ। तैनूं गाउँदे गए साध सन्त, फ़कीर फ़िकरयां विच ढोले उपजाईआ। तेरा खेल सदा बेअन्त, बेपरवाही विच समाईआ। मेरी अन्तिम मन्न मिन्नत, निउँ निउँ लागां पाईंआ। कलयुग कूड़ी मेट चिन्नत, मैनूं चिखा रही जलाईआ। खुआरी रहे कोई ना ज़िल्लत,

हँकारी गढ़ तुड़ाईआ। मनुआ करे कोई ना इल्लत, आलमां इल्म देणा पढ़ाईआ। मैं तेरा खेल वेखां पहलों लहिंदी सिम्मत, हिस्सा मुहम्मद मूसा नाल वखाईआ। मैं चौहन्दी मेरे उत्ते रहे कोई ना निन्दक, कूड़ कुड़िआरा आसण कोए ना लाईआ। चार कुण्ट दह दिशा तेरी होवे सिफ्त, रागां नादां विच तेरा नाम ध्याईआ । गुर अवतार पैग़म्बरां दी पूरी होई लिख्त, अन्त लेखा दए चुकाईआ। झगड़ा रहे ना कोए जिस्त, टांक आपणा आप दे प्रगटाईआ। दीन दुनी दा इक्को होवे इष्ट, देव आत्मा लए मिलाईआ। साचा मार्ग दस्स सृष्ट, श्रेष्ट आपणा हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुर अवतार पैग़म्बर सारे रहे सिसक, हौक्यां विच हरि हरि तेरा ध्यान लगाईआ।

❋ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ५ भगत सिँघ दे गृह इटारसी ❋

नारद कहे मैं पुठ्ठी पैरीं आया इटारसी, टल्लीआं हथ्थां नाल खड़काईआ। खेल वेखदा आया मध्ध भारती, भौं भवन

१२८० फोल फुलाईआ। नग़मे सुणदा आया उर्दू फ़ारसी, हिन्दी बिन्दी विच वड्याईआ। लेख तकदा आया इबारती, पत्थरां निगाह १२८०

२१ टिकाईआ। प्रभ दे नाम खोजदा आया सफ़ारशी, पूरब पिछले वेख वखाईआ। मक़बरिआं दी तकदा आया ज़िआरती, सजदयां २१

वाली दुहाईआ। रुची वेखदा आया नर नार दी, अंदर वड़ के ध्यान लगाईआ। मुहब्बत हथ्थ ना आई सच्ची सरकार दी, सच मेल ना कोए मिलाईआ। सूरत दिसी ना हक़ीक़ी यार दी, नज़रे नाज़ ना कोए वड्याईआ। मैनूं ख़बर मिली इक अगम्मी अख़बार दी, पुरख अकाल दिती सुणाईआ। वेख खेल इसतिग़फ़ार दी, जो इस्म आज़म नूर अलाहीआ। घड़ी पुज्ज गई कौल इक़रार दी, इक़रारनामे देण सफ़ाईआ। सदी आ गई झगड़े तकरार दी, हउमे हंगता करे लड़ाईआ। दुनियां रूप दिसे शिकार दी, शिकारी इक्को धुरदरगाहीआ। मैं हैरान हो गया की खेल होणी करतार दी, क़ुदरत दा क़ादर की की कार कमाईआ। की दुर्दशा होणी ग़द्दार दी, जो प्रभ नूं बैठे भुलाईआ। की घड़ी होणी इंतज़ार दी, गुर अवतार पैग़म्बर बैठे अक्ख उठाईआ। की खेल वरतणी दीन मज़हब गिरफ्तार दी, बंधन इक्को देवे पाईआ। की सिफ्त होणी इज़हार दी, महिमा नूर अलाहीआ। की हालत होणी चार यार दी, मुहम्मद दए दुहाईआ। की लाड़ी मौत वंगार दी, बल आपणा आप प्रगटाईआ। की खेल करे त्रैगुण माया श्रृंगार दी, रूप अनूप बदलाईआ। की रुत बदलणी दीन दुनी गुलशन बहार दी, लख चुरासी वेख वखाईआ। की धार उठणी ख़बरदार दी, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। मैं हैरान होया अग्गे घड़ी नहीं रहिणी

उधार दी, लेखा हथ्थो हथ्थ मुकाईआ। धरनी की की रो रो पुकार दी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। नेड़े आ आ नर्बदा धाहां मारदी, हाहाकार कर कुरलाईआ। किते ख़बर मिले मेरे सिरजणहार दी, जो जल थल महीअल रिहा समाईआ। घड़ी रही ना कलयुग किसे एतबार दी, साध सन्त ना कोए वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ हारदी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। मेरा वहिण पाणी वाला मैं जीव जंतां ठारदी, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेख दोहथ्थड़ छाती उत्ते मारदी, छत्रधारी ना कोए सहाईआ। मैं खेल वेखणी ओस कल कल्की अवतार दी, जो कलेश दए मिटाईआ। सभा वेखणी ओस सच्चे दरबार दी, जिथ्थे दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। मैं वस्त तक्कणी ओस भण्डार दी, जिथ्थे पुरख अकाला भोग लगाईआ। मैं बिन अक्खां नैण उघाड़ दी, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ । नारदा वेख मैं थक्की टुटी मेरी मंज़ल आई हार दी, हौक्यां विच दुहाईआ। कुझ ख़बर दस्स ओस निरँकार दी, जो निर्धनां दए वड्याईआ। नारद किहा तूं क्यों नहीं मैनूं निमस्कार दी, मुनी जी, पंडत जी, कहि के सीस निवाईआ। क्यों नहीं आपणी मींढी गुत्त खलार दी, हाल बेहाल बणाईआ। क्यों नहीं इक टंगी हो के उच्चार दी, बिरहों विच कुरलाईआ। क्यों नहीं सिर ख़ाक पौंदी छार दी, जगत वेस ना कोए वखाईआ। क्यों नहीं आप आपा वारदी, वारस इक्को इक बणाईआ। नीं कमलिए हुण कोई खेल नहीं खण्डे खड़ग तलवार दी, तीर तरकश कमान हथ्थ ना कोए उठाईआ। इक्को खेल शब्द शब्दी धार दी, धरनी धरत धवल धौल वेख वखाईआ। औह वेख गुर अवतार पैग़म्बरां आसा वाजां मारदी, मरतबा तक्कण इक अलाहीआ। जो सब दी पैज संवार दी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस ने रुत सुहाउणी आपणे समें विचारदी, जिस नूं विच्चर के दस्से ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मैनूं राह विच मुल्ला शेख़ मिल गए मुस्लिमीन, निव निव सीस झुकाईआ। मैं झट पुच्छया केहड़ी तुहाडी तालीम, तुलबिआं दयो जणाईआ। कौण घर वसो अज़ीम, आलीशान नज़री आईआ। कौण मालक आदि क़दीम, क़ुदरत क़ादर नज़री आईआ। तुसीं किस दे उत्ते करो यकीन, भरोसा कवण रखाईआ। सच दस्सो तुसीं नर कि मदीन, मुद्दा आपणा दयो दृढ़ाईआ। निगाह मारो लोक तीन, चौदां तबकां अक्ख खुल्हाईआ। निरगुण धार वेखो या तत्तां वाला सीन, लोचण नैण अक्ख उठाईआ। केहड़ा मज़हब केहड़ा सच्चा दीन, इस्लाम इस्म कवण वड्याईआ। किस दे रहन्दे हुक्म विच अधीन, कलमा कवण दृढ़ाईआ। किस नूं करदे तस्लीम, तसबी माला किस दी गल लटकाईआ। किस दे हुंदे मस्कीन, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ । सच दस्सयो किस ने पैग़म्बरां कोलों कराई तक़सीम, मानस मानस वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे मैनूं राह विच मिले हिन्दू, हिन्द धर्म वेख वखाईआ। मैं हस्स के किहा तुसीं किस दी बिन्दू, वृंदावन दे वासीओ दयो जणाईआ। तुसीं किस दे मनाउँदे पिंडू, पिंडी विच पिंड भराईआ। तुसीं किस दी आत्मा किस दी जिंदू, ज़िंदगी दा मालक कवण अख्वाईआ। तुहाडी कवण शांत कवण चिन्दू, चिन्ता चिखा कवण दरसाईआ। तुसीं राम मन्नो कृष्ण मन्नो भगवान मन्नो ते पूजा शंकर लिंगू, सहज नाल देवां समझाईआ। बोदी रखो धोती बन्नो कि छिआनवें चप्पे गल्ल लटकाओ जञ्जू, यादव बंस कवण अख्वाईआ। तुहानूं वरन बरन ज़ात पात दीन मज़हब की समझा के गया मनू, मंतव मन्त्रां तों परे दयो समझाईआ । तुसीं शब्द अधारी तुसीं जोत अधारी कि सुणन वाले कन्नू, कि मनसा ममता विच वड्याईआ। तुसीं नेत्रहीण कि चक्षू वाले जगत अन्नू, पर्दा उहला देणा उठाईआ। तुसीं आदत धरवासी कि शब्द स्वासी कि मायाधारी धन्नू, धनाढो देणा दृढ़ाईआ। सच दस्सयो कलयुग अन्त सब नूं केहड़ा डन्नू, डंका धुर दा इक वजाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर बेड़ा केहड़ा बन्नू, खेवट खेटा रूप कवण वटाईआ। नारद किहा तुसीं नहाउँदे तीर्थ तट गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती डूँघे वहिण जलू, जलधारा सीस उत्ते पवाईआ। सच दस्सो तुहाडे विच्चों सचखण्ड दवारे केहड़ा फलू, फलीभूत कवण हो जाईआ। किस बिध तुहाडे काया मन्दिर अंदर निरगुण दीपक जोत जलू, जाहल रूप नज़र कोए ना आईआ। केहड़ा लख चुरासी जीव जंत साध सन्त गुर अवतार पैग़म्बरां छलू, वल छल आपणा वेख वखाईआ। कवण अन्त श्री भगवन्त सच दुआर मल्लू, गृह मन्दिर अंदर इक दए वड्याईआ। कवण आत्म परमात्म निरगुण धार हो के रलू, भगत सुहेले आपणा जोड़ जुड़ाईआ। कवण कूड़ी क्रिया मेटे कलू, कलकाती कवण खपाईआ। कवण शब्द संदेसा दो जहानां घल्लू, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल करे पढ़ाईआ । कँवल निहचल धाम सुहाए इक अटलू, अटल पदवी हरिजन साचे आप टिकाईआ। सच दस्सणा कलयुग अन्त कूड़ा वहिण कवण ठल्लू, नाम बंध इक टिकाईआ। नारद किहा कमल्यो मैं ते फेरन आया पल्लू, चार कुण्ट देणा फिराईआ। मैनूं ऐं जापदा बिना प्रभ दी किरपा मेरे संग कोई ना चल्लू, चरण कँवल सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे मैं राह विच वेखे पंडत पांधे, तिलक मस्तक उत्ते लगाईआ। हरी ओम तत सति गाउँदे, राधे कृष्ण जै सीता राम राम राम ढोले गाईआ। मैनूं ऐं जापया एह अन्त अख़ीर थक्के मांदे, हिम्मत नज़र कोए ना आईआ। एह जजमानां कोलों बख्शवाउँदे रहे ढांडे, मनसा विच गऊआं भेंट कराईआ। घरां विच जा के परोहत बण के रहे खांदे, उच्ची कुल विच वड्याईआ। गंगा जल नाल सुच्चे हो के रहे नहांदे, पाणी सूरज देवते वल चढ़ाईआ। जञ्जू कन्नां उत्ते रहे लटकांदे,

१२८२
२१

अक्खां मीट ध्यान लगाईआ। अंदर मन काग वांग रहे कुरलांदे, बुध्ध बिबेक ना कोए बणाईआ। माया कारण तटां तीर्थां उत्ते जांदे, मन्दिर मट्ठां विच टल्ल खड़काईआ। अंदरों साफ़ कीते ना किसे भाण्डे, साढे तिन्न हथ्थ ना कोए वड्याईआ। नारद कहे अन्तिम सारे जाणे फांदे, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। मैं अज्ज रात नूं सब दी सुरती वेखणी कदे सरादे दे कदे हो पवांदे, सिर पैरां वल ध्यान लगाईआ। नाले तकणे अन्त अखीर अवतार गुरु वाले केहड़ी दिशा नूं जांदे, की धर्म राए दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। नारद कहे मैं राह विच तक्कया वखरा वखरा लबास, कुल्ले तहिमत नजरी आईआ। किसे हथ्थ गड़वी किसे पाणी दा भरया ग्लास, मुख ते मार के छिट्टे अक्खीं मीट ध्यान लगाईआ। मैं कीता हास बिलास, ताली हथ्थां नाल वजाईआ। बोदी टिक्के धोती तहिमत किस दा करे मिलाप, पर्दा देणा उठाईआ। कवण स्वामी अन्तरजामी जिस दा करदे जाप, किस नूं सजदयां विच सीस झुकाईआ। आपणे अंदर काया मन्दिर वेखो केहड़ी तुहाडे कोल गठड़ी पाप, पुन्नां वाली की वड्याईआ। की तसबीआं वाल्यां तुहानूं कीता पाक, की टिक्कयां वाल्लिओ दुरमति मैल तुसां लई धवाईआ। दस्सो केहड़ा तुहाडी आत्मा दा सच्चा साथ, जो दाता सति सति बणाईआ। जिस नूं बाहरों तुसीं दीन मज़हब मन्नदे एह ते मिट्टी होण वाली ख़ाक, मढ़ी गोर विच कम्म कोए ना आईआ। मैनूं सारे दस्सो तुहाडा आगमन प्रगट होया केहड़ी विच्चों ज़ात, दीन कवण कवण अख्वाईआ। मैं हैरान हो गया तुहाडयां पैग़म्बरां अवतारां प्रभ दे नाम दा झगड़ा पाया काग़ज़ात, काग़ज़ां उत्ते अक्खरां वाला नाम लिख के हिन्दू मुस्लिम बणा के दिते लड़ाईआ। सच दस्सो किस नूं मिल्या आबेहयात, कवण अमृत रस चख के आपणी तृष्ना रिहा बुझाईआ। नारद कहे एह वेखो फरद सब ने होणा अन्तिम ख़ाक, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। मूरखो मुगधो अणजाणों जे इक्को मन्नों धुर दा राठ, जो करता नूर अलाहीआ। सद वस्से तुहाडे पास, काया मन्दिर अंदर सोभा पाईआ। क्यों मन्दिरां मट्ठां विच्चों करो तलाश, काया काअबा खोज खुजाईआ। जिथ्थे जलवा नूर प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। निझर अमृत सिंच बुझाए प्यास, बूँद स्वांती इक चुआईआ। नारद कहे मैं सब नूं संदेसयां विच आया आख, आख़र दिता दृढ़ाईआ। भावें मैनूं सारे कहो गुस्ताख़, गुस्से विच अक्खां लओ बदलाईआ। जिंनां चिर पुरख अकाल परवरदिगार धुर दा मिल्या नहीं किसे बाप, पिता पूत ना गोद उठाईआ। मज़हबां वाल्यो अवतारां पैग़म्बरां तूं मेरा मैं तेरा सोहँ सब नूं दस्सया जाप, अल्ला हू कहि के पैग़म्बर सारे सीस गए निवाईआ। मेरे कोल चार जुग दी डायरी बिन अक्खरां वाली किताब, कुतबख़ान्यां विच ना कोए छुपाईआ। मैं होका देवां मेरे प्रभू दा वधणा प्रताप, प्रतख आपणा रूप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सब दा लहिणा देणा वेखे अन्त हिसाब, निरगुण धार सरगुण खाते फोले थाउँ थाईंआ।

❊ २३ चेत शहिनशाही सम्मत ५ टोपन राम दे गृह इटारसी ❊

नारद किहा मैं फिरां पैर दब्बे, आहट सुणन कोए ना पाईआ। दीन मज़हब वेखां सभे, ज़ात ज़ाती फोल फुलाईआ। भगत सुहेला किथ्थों लभ्भे, कवण प्रभ रिहा ध्याईआ। उपजे केहड़ी साची यद्दे, मिले कवण मात वड्याईआ। जगत मात दी लँघे हद्दे, घर इक्को दए सुहाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नाम जपे, जग जीवण दाते ओट रखाईआ। सच प्रीती विच होवे रत्ते, रतन अमोलक आपणा रूप वटाईआ। मिले मेल पुरख समर्थे, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। साची सुणे कहाणी कथे, अकथ दे दृढ़ाईआ। धूढ़ी ला के इक्को मथ्थे, मस्तक ख़ाक रमाईआ। जगत जहान दुआरा टप्पे, टप्पा सोहँ ढोला गाईआ। लेखा मुका मदीने मक्के, काअबिआं दए वड्याईआ । नूर अलाही इक्को तक्के, जोती जाता नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, सद आपणा मेल मिलाईआ। नारद कहे मैं वेखां उपर थल्ले, जल थल वेख वखाईआ। गुरमुख केहड़ी कूट पले, जो पलक ना झल्ले जुदाईआ। प्रेम प्रीती विच आपणा हिरदा सल्ले, बाण अणयाला तीर चलाईआ। काया वस्से सच महल्ले, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। आपणे दीपक नाल बले, जोती नूर होवे रुशनाईआ। सच संदेसा साहिब सुल्तान जिस नूं घल्ले, अनुरागी आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। नारद कहे मैं वेखां ज़िमीं असमान, पवण हवा खोज खुजाईआ। चार कुण्ट तक्कां इन्सान, तन वजूद फोल फुलाईआ। किस अन्तर होवे ज्ञान, बुद्धी करे पढ़ाईआ। मेरे श्री भगवान, नाता कूड़ तुड़ाईआ। शब्द सुणे धुनकान, अगम्मी नाद शनवाईआ। अमृत मिले पीण खाण, रसना रस ना कोए चखाईआ। जोत नूर जगे महान, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। सचखण्ड दवारे बहे जिथ्थे झुल्ले धर्म निशान, निशाना अवर ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा मेल मिलाईआ। नारद कहे दीन दुनी वेखी सोती, सुत्यां ना कोए जगाईआ। बिना भगतां जगे कोई ना जोती, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोई ना चोटी, चोटी चढ़ दरस कोए ना पाईआ। पन्ध मुक्या ना लोक परलोकी, चुरासी गेड़ ना कोए कटाईआ। सुणे हक़ ना कोए सलोकी, सोहला धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, जन भगतां दिती सच्ची सोझी, समझ समझ विच्चों बदलाईआ। नारद कहे मैं वेखे भगत सज्जण, सोहणे नज़री आईआ। करदे इक्को मजन, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। ममता मोह तजण, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। पुरख अकाला इक्को लभ्भण, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सच सरनाई लग्गण, नाता तोड़ कूड़ लोकाईआ। प्रेम प्रीती विच हो के मग्न, सुरती शब्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल सूरा सरबंगण, साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान आपणी कार कमाईआ।

✻ २४ चेत शहिनशाही सम्मत ५ हरदित्त सिँघ दे गृह इटारसी ✻

नारद कहे मैनूं राह विच मिले गाँए सूर, दोए रो रो देण दुहाईआ। सच दस्स किथ्थे साडा प्रभू हज़ूर, हरि करता धुरदरगाहीआ। साडी बेनन्ती करे मन्ज़ूर, आरजू आसा इक रखाईआ। वेला नेड़े आ गया जिस नूं पन्ध समझे दूर, चौकड़ी आपणा आप बदलाईआ। ममता मेटे संसारी कूड़, क्रिया झूठ करे सफ़ाईआ। साची देवे मस्तक धूढ़, टिक्के अगम्म रमाईआ। सानूं समझ नहीं आई की असां कीता क़सूर, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बण कसाई सानूं रहे खाईआ। असीं होए बड़े मजबूर, दुखी हो के दईए दुहाईआ। साडी आसा करे पूरी ज़रूर, ज़रूरत वेखे थाउँ थाईंआ। क्यों पुरख अकाल सर्ब कला भरपूर, समरथ स्वामी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा रंग इक वखाईआ। नारद कहे मैं कसाईआं हथ्थ वेखी छुरी, जो शरअ रूप वटाईआ। मैनूं लग्गी बुरी, दुख्यारा वेख दिती मैं दुहाईआ। मैं ज़ोर नाल किहा ऐ मेरे परमात्मा तेरी दुनियां हो गई निगुरी, तेरा भय ना कोए रखाईआ। कूड़ी शरअ विच रुढ़ी, वहिणां विच्चों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। तेरी कीती कदे ना मुड़ी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। उठ वेख आत्म परमात्म प्रीती किसे ना जुड़ी, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। नाम खुमारी दिसे कोई ना गूढ़ी, अन्तश्करन सक्कया ना कोए बदलाईआ। तेरे चरण मस्तक लाए कोई ना धूढ़ी, दीनां मज़हबां सार किसे ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल लोकमात आपणी सृष्टी वेख ज़रूरी, ज़ाहर ज़हूर हो के आपणा फेरा पाईआ। चार जुग दे गुर अवतार पैग़म्बर तेरी करदे गए मशहूरी, काग़ज़ां विच आजज हो के सिफ्ती ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। सूर गाँ दोवें मारन धाह, बौहड़ी बौहड़ी कुरलाईआ। एह की कीता खुदा, श्री भगवान की तेरी बेपरवाहीआ। साडे उत्ते मज़हबां दी रख बिधा, बिना साडी शक्ती तों जगत विच वड्याईआ। सच दस्स की असां

कीता तेरा गुनाह, सारे सानूं ज़िबा कर के तेरा शुकर मनाईआ। तूं क्यों बणया बेपरवाह, ज़रा आपणयां पैग़म्बरां अवतारां गुरुआं नूं लै बुला, जिन्हां ने शरअ शरीअत दिती चला, छुरी मुरीदां हथ्थ दिती फड़ा, क़त्लगाह विच मक्तूल सानूं दिता बणाईआ। तेरे अग्गे इक दुआ, किरपा कर साडे मेहरवां, महबूब तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। नारद कहे मैनूं वेख के आ गया तरस, मैं दुहथ्थढ़ मार के दिती दुहाईआ। पुकार के किहा पुरख अकाल परवरदिगार पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ज़रा आप आ परत, पारब्रह्म आपणा रूप बदलाईआ। दीन दुनी सृष्टी दृष्टी मानव ज़ाती वेख उत्ते धरत, गुर अवतार पैग़म्बरां वेख शर्त, जिन्हां शरअ विच तेरे नाम विच कलमे विच कायनात इन्सान इन्सानां नाल दिते लड़ाईआ। हक़ दी रही ना कोई जमात, क़दमां झुके ना कोए क़दमात, रहिबर हो के सच राह ना कोए वखाईआ। तेरी रहमत बिना मिले ना किसे नजात, देवे ना कोए आबे हयात, अमृत बूँद स्वांत मुख ना कोए चुआईआ। तेरा झगड़ा वेख्या काग़ज़ात, अल्ला वाहिगुरु राम कृष्ण ओम सारे करन वाले फ़सादात, मुहब्बत वाला मेल ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा खेल वखाईआ।
१२८६ नारद कहे मैं होर वेखे राह विच रोंदे जीव जंत, कूक कूक सुणाईआ। उच्ची कहिण पंडत जी दस्सो कोई कलयुग विच सन्त, सिम्मत चारे फोल फुलाईआ। बौहड़ी सानूं मिलावे ना कोई नाल अगम्मी कन्त, जो आत्म मेला लए मिलाईआ। रसना १२८६
२१ जिह्वा वाले अनेक वेखे गाउँदे श्री भगवन्त, भगवन रंग ना कोए रंगाईआ। असीं दुखी होए अनन्त, पंखी हो के वेख वखाईआ। २१
साडी मेटे कोई ना चिन्त, चिन्ता चिखा ग़म विच्चों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पंखेरू कहिण साडी अरदास, नारद धुरदरगाह देणी सुणाईआ। बौहड़ी मानस हो के साडा खांदे मास, निर्दोषयां उत्ते दोष लगाईआ। साडा किस बिध मुके स्वास, स्वास समझ किसे ना आईआ। की तेरा खेल पुरख अबिनाश, पर्दा उहला देणा उठाईआ। तेरे उपजे इक दूजे दा करन घात, घाउ आपणी आस बणाईआ। किरपा कर पुरख समराथ, साहिब स्वामी तेरी ओट तकाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। बिना तेरी किरपा सके कोए ना जाग, निज नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। साचा मिले ना किसे वैराग, वैरागी त्यागी बैरागी सारे रोवण मारन धाईआ। नारद कहे मैनूं छोटी जिही आ गई याद, याद याद विच्चों जणाईआ। जिस वेले राम फिरदा फिरदा आया सी बनवास, पारस वाल्यां कोल आपणा खेल खिलाईआ। सीता सवाणी सी साथ, जनक सपुत्री आपणा संग बणाईआ। एथे इक रहन्दा सी भाट, बिरध अवस्था राम दे गीत संगीत नाल गाईआ। उहदा थोड़ा कटया हुंदा सी हाथ,

डेढ उँगली अध्धा हिस्सा नाल नज़र ना आईआ। प्रेम विच बड़ी सुरीली कढ्ढदा सी आवाज़, मस्ती विच राम नूं मिलण दा रखदा सी नाज़, हिरदे अंदर ध्यान लगाईआ। सुरती विच करदा सी तलाश, अंदरे अंदर खोज खुजाईआ। संगीत करन लग्गिआं कोल पाणी दा रखदा सी ग्लास, जल भर के निगाह उस दे विच टिकाईआ। किथ्थे मेरा राम इहदे विच्चों देवे आपणा प्रकाश, सति सरूपी नज़री आईआ। कदे तक्कदा सी उपर आकाश, नैण नैणां विच्चों बदलाईआ। कदे जोड़दा सी दोवें हाथ, कदे डंडावत कर के सीस निवाईआ। कदे तक्कदा सी उपर कैलाश, शिव जी धूढ़ ख़ाक रमाईआ। कदे अंदर आपणे कर लैंदा सी वास, अक्खां मीट आपणा आप बन्द वखाईआ। कदी आपणी पुत्री नूं मारदा सी आवाज़, जेहड़ी नौ साल गिआरां महीने सदा आपणे कोल बहाईआ। कदी सौं जावे मस्ती विच कदे पवे जाग, आपणे रंग विच आपणा खेल वखाईआ। कदी गा लवे मेरे राम मैनूं हँस बणा दे काग, काग तेरी सरनाईआ। मेरा कर्म धो दे दाग़, जन्म विच सरनाईआ। सृष्टी दा होवे त्याग, दृष्टी वज्जे वधाईआ। झगड़ा ना रहे समाज, दीन दुनी गवाईआ। किते दर्शन दे जा मेरे राम आज, तेरा राह तकाईआ। मैं धूढ़ी मस्तक ला के आपणा जगावां चराग़, लोइण अंदरों लवां खुलाईआ। मस्ती विच हस्ती विच

१२८७ अन्तर रिहा अराध, कल्पणा अंदर ना कोए वखाईआ। उने चिर नूं सुभावक राम आ गया पैरां दी सुणी आहट, धरनी दिता १२८७
जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतार कहे, मेरी तन्दी कहे,
२१ राम ओह मेरा राम, राम राम वड्याईआ। अमृत रस सच प्रेम प्रीती प्याला देवे जाम, मधुर धुन अन्तर अन्तश्करन करे जणाईआ। २१
मेरी मेट अन्धेरी शाम, शमां नूर चन्द कर रुशनाईआ। मेरी मंज़ल होवे आसान, अग्गे अवर ना कोए अटकाईआ। गृह मिले मेरा भगवान, निरंतर मिल के ख़ुशी बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। राम किहा हौली जेही सुण सीता जनक दुलारी, तैनूं दयां वखाईआ। वेख भगत मेरे दी यारी, अन्तर मेरा ध्यान लगाईआ। बाहरों छड्ड के सृष्टी सारी, दीन दुनी आसा ना कोए रखाईआ। लै के मस्त खुमारी, महिव आपणे रंग विच समाईआ। मैं दरस देणा निरगुण नूर जोत कर उज्यारी, अन्त अन्धेरा देणा मिटाईआ। सीता कहे प्रभू तेरे ते तेरे भगतां तों बलिहारी, बलि बलि आपणा आप कराईआ। मैनूं पुच्छ लैण दे इक वारी, तूं किस दा राह तकाईआ। राम बिन बोलयां कीता इशारी, सैनत नाल दृढ़ाईआ। सीता नेड़े आई निरमाणता विच कहे तुसीं किस दे पुजारी, पूजणयोग कवण अख्वाईआ। ओस ने किहा मैं राम दी राम मेरा, ओह कन्त मैं नारी, तूं कौण विचारी, जिस राम विच राम दे के आपणा रूप ना ल्या बदलाईआ। सीता हस्स के किहा ज़रा वेख लै नैण उघाड़ी, लोचण लै उठाईआ। उस किहा मैनूं तक्क लैण दे जोत निरँकारी,

जो मेरे अन्तर करे रुशनाईआ। सीता किहा मैं आखां दुबारी, अक्खां लै उठाईआ। उस ने किहा मेरी प्रीती अन्तर भारी, बाहरली याद ना कोए रखाईआ। सीता फेर किहा मुखों तीजी वारी, तेरा राम दयां मिलाईआ। जेहड़ा आया चल दुआरी, आपणा पन्ध मुकाईआ। ओधरों राम ने अंदरों दिती प्रेम खुमारी, रस दिता चखाईआ। जां आपणी अक्ख उघाड़ी, प्रतख वेख्या साहिब गुसाईंआ। उच्ची कूक के आवाज़ मारी, नन्ही बच्ची लई उठाईआ। जा चुक्क ल्या आपणी पटारी, जेहड़ी पंज सत्त चप्पे लम्मी चौड़ी नज़री आईआ। ओहदे विच प्रशाद रख्या अपारी, सोहणा रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। नन्ही बच्ची लै के आई भज्ज, अग्गे दिता रखाईआ। उस ने विच्चों बादाम गिरीआं कढ्ढ के पंज सत्त, राम दी भेंटा दितीआं कराईआ। राम ने फड़ के नाल हथ्थ, दन्दां हेठां लईआं दबाईआ। बोल के जैकारा अलख, हुक्म दिता दृढ़ाईआ। इक वार मेरे वल्ल तक्क, नेत्र नैण उठाईआ। ओह वेख के प्या हस्स, हथ्थ अग्गे दिते डाहीआ। राम ने किहा तेरे बादाम ते मेरे मिट्ठे रस चक्ख, सोहणा रस बणाईआ। असीं कदी ना होईए वक्ख, मैं राम ते तैनूं रविदास फेर दयां बणाईआ। फिर आवां वत्त, बेवतन हो के वेस वटाईआ। गुरमुख वड्याई देवां सच, सच करनी कार कमाईआ। उने चिर नूं नन्ही बच्ची पई हस्स, हस्स हस्स के दिता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। राम किहा नन्ही तूं क्यों हस्सी, मैनूं दे समझाईआ। ओह खुशी विच उठ के एधर ओधर नच्ची, नस्सी भज्जी चाँईं चाँईंआ। फिर किहा धन्न भाग जे तूं आ ग्यों साडी बसी, बस्ती निक्की विच फेरा पाईआ। मैं तां जाणां, जे साडा गेड़ा चुकावें लख चार अस्सी, आशा आप वधाईआ। जे मुड़ के बण के आवें कमलापती, पतिपरमेश्वर रूप वटाईआ। मेरे पिता नूं सदा साथ रखीं, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। मैं वी तेरा दर्शन करां अक्खीं, लोचण नैण अक्ख खुलाईआ। राम ने घुट्ट के पाई जफ्फी, गोद विच ल्या बिठाईआ। अगम्मी कथा कहाणी दस्सी, सहज नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सीता किहा लाड नाल आ मेरे पुत्तर, गोदी लवां टिकाईआ। नन्ही बच्ची हस्स के किहा जे तूं मेरी अम्मी पहिलों साडे घर दा खा लै टुक्कर, तेरे अग्गे दयां टिकाईआ। सीता बचन ना सकी मुक्कर, हां विच हां दिती मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। नन्ही बच्ची लै के आई घर दी रुक्खी सुक्की चपाती, अग्गे दिती टिकाईआ। सीता किहा तुसीं भोग लगाओ कमलापती, मेहर नज़र उठाईआ। राम किहा की कथा कहाणी आखी, रसना नाल जणाईआ। जे सीता तूं मेरा सच्चा साथी, सगला संग बणाईआ। उठ मन्न लै मेरी आखी, आपणा बल धराईआ।

नाल लै लै नन्ही काकी, बच्ची उँगली लाईआ। चल उन्हां नूं दईए एह चुपाती, जिस वैरागी त्यागी आपणी ज़िंदगी जग लेखे जाणी लाईआ। एह किरपा होणी साडी, बिना प्रशाद तों स्वास लेखे कोए ना लाईआ। एह खेल प्रभू दी डाहढी, जिस दा भेव किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सीता राम आए चल, क़दम क़दम पन्ध मुकाईआ। नाल ल्यांदा ठंडा जल, अमृत रूप बणाईआ। तिन्नां दा दुःख वेख्या घाउ तन लग्गा सल, तन वजूद दुहाईआ। राम किहा मेरा चरण दुआरा लओ मल्ल, सीस सीस सीस झुकाईआ। तुहानूं सच दवारे देवां घल्ल, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। तुहाडा लेखे लग्गे घड़ी पल्ल, जो दर्शन ल्या पाईआ। तिन्नां रो के किहा साडी इक मन्न गल्ल, बेनन्ती सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। राम किहा तुसीं खाओ पीओ अन्न पाणी, अन्त देवां छकाईआ। फेर पढ़यो इक्को बाणी, बावन अक्खरां बाहर सुणाईआ। तुसीं पहुंचणा उस निशानी, जिथ्थे निशाना इक्को सोभा पाईआ। झगड़ा मुके जगत जहानी, आवण जावण रहे ना राईआ। तिन्नां किहा साडे उत्ते करीं मेहरवानी, मेहर नज़र उठाईआ। फिर कद मिलीए ते दरस होवे जिस्मानी, जोत नूर नाल वड्याईआ। राम किहा जिस वेले कलयुग अन्त दीन दुनी वधी बेईमानी, शरअ शैतान करे लड़ाईआ। प्रगट होवे शाह पातशाह शहिनशाह असमानी, जोती नूर जोत अख्वाईआ। ओह मेल मिलाए जो मालक दो जहानी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद लेखा लेखे विच रखाईआ। सीता किहा राम इन्हां तत्तां होया छुटकारा, राम राम विच समाईआ। तेरा खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी तेरी बेपरवाहीआ। मैं इस निक्की बच्ची दा शुकर गुज़ारा, जो भोजन साडी झोली पाईआ। जिस भोजन नाल इन्हां दा होया उधारा, जीवण जगत जुगत मुकत वड्याईआ। कुछ एहनूं दे आधारा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। राम किहा जिस वेले मेरा राम आए विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी सेव लगाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बरां कहिणा चौवीवां अवतारा, अवतर आपणी धार प्रगटाईआ। ओह लहिणा देणा चुकाए आपणी वारा, वाहवा वजदी रहे वधाईआ। सीता सीता सीता एह ते दो असीं पंजां ने कीता भण्डारा, खा खा शुकर मनाईआ। अगला लेखा दस्सां अपारा, अपरम्पर हो के दयां जणाईआ। जिस वेले एस धरती उत्ते मैं खेल करां निआरा, निरगुण हो के आपणी कार कमाईआ। एस बच्ची दा लहिणा देणा कौल क़र्ज़ उतारां, लेखा अवर रहे ना राईआ। नाल होवे रविदास चमारा, गुरमुख आपणा संग बणाईआ। जिस सुक्के प्रशादे नाल इन्हां दा होया उधारा, इस दे बदले भागवान दयां बणाईआ। एसे कारण तृप्त नूं पहिलों कीता इशारा, प्रेम संदेसे विच जणाईआ। इटारसी पंज दिन तूं रहिणा सेवादारा,

१२९०
२१

पिछला लेखा भुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे रंग रंगाईआ। राम किहा पंज दिन होवे प्रशादा परत परत परत, पंचम पंचम पंचम लेख बणाईआ। सतिजुग भाग लग्गणा एस सुहञ्जणी धरत, धौल धवल धरन मिले वड्याईआ। जिस वेले शरअ कसाई रही कोई ना करद, दीन मज़हब ना वंड वंडाईआ। इक्को पुरख अकाला योद्धा सूरबीर मर्दाना मर्द, मेहरवान होए सहाईआ। खेल होणा असचरज, जिस नूं समझे ना कोए लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। प्रशादा कहे मैं जगत नहीं विवहार, तत्तां वाली ना कोए वड्याईआ। मेरी सेवा अपर अपार, पूरब लेखा रही चुकाईआ। जिस कारण रविदास चमार दा पिछले जन्म दा होणा सी इज़हार, जिस दा चार जुग लेख ना कोए समझाईआ। एसे कारण नन्ही बच्ची तृप्त नूं ल्यांदा नाल, लेखा पूरब पूर कराईआ। जिस दी खेल ओह सब दी करे संभाल, दूजे समझ किसे ना आईआ। कोटन कोटि मरे कोटन कोटि जम्मे कोटन कोटि खावे काल, बिना भगतां तों भगवन देवे ना किसे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। नारद कहे वाह प्रभू तूं ते जुगां जुगां दा डाकू, वैरागीआं त्यागीआं सनयासीयां पारस लुट के उन्हां दिता लड़ाईआ। हुण ते बदल दे कलयुग मात आ गया काकू, काल आपणा वेस वटाईआ। सति धर्म दा रिहा कोई ना साधू, सच विच ना कोए समाईआ। बिना तेरी किरपा तेरे चरण कोई ना लागू, तेरा दरस कोए ना पाईआ। मैनूं ऐं जापदा तूं कोटां विच्चों थोड़यां जन भगतां दा बणना बापू, दूजा तेरा दरस कोए ना पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। नारद कहे जन भगतो सुणयो नाल ध्यान, धर्म दवारे दयां जणाईआ । करयो आपणा कान, अनसुणत रहिण कोए ना पाईआ। अंदरों तोड़यो गुमान, हँकार देणा मिटाईआ। कल्पणा कढ्णी शैतान, मन चंचल ना कोए वड्याईआ। प्रभू चरण धरना ध्यान, ध्यानी हो के सीस निवाईआ। परसों ढाई वजे सारयां इक्कठयां होणा आण, कुछ अगला हुक्म देणा दृढ़ाईआ। नारद कहे मेरी बोलणों रहन्दी नहीं ज़बान, कूक कूक सुणाईआ। मैं डंक वजाउणा शब्द सुणाउणा धुर फ़रमान, फ़ुरनिआं तों बाहर देणा दृढ़ाईआ। मैं फिर के आउणे ज़िमीं असमान, चौदां लोक चौदां तबक वेख के आउणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब दी करनहारा कल्याण, कायनात दा मालक ख़ालक प्रितपालक पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि अन्ता श्री भगवन्ता इक्को नज़री आईआ।

❊ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ५ स्वामी अमृता नंद जी दे नाल नरबदा घाट ❊

की कथा दस्से पुराण सकंद, भेव देणा खुल्हाईआ। किस जगह मिले आत्म अनन्द, परमानन्द समझाईआ। निरगुण नूर चमके चन्द, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। रसना नाल बोलणा ना पए कोई छन्द, अनहद नादी करे शनवाईआ। भरमां रहे ना कोई कंध, द्वैती लेखा दए मुकाईआ। पर्दा उहला चुक्के परमानंद, ब्रह्म ब्रह्म नज़री आईआ। माया ममता मिटे तृष्ना तम, तृखा दूर दए कराईआ। सो कवण गृह कवण टिकाणा जिथ्थे मिटे हरख सोग ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। ततव तत भेव खुल्ल्हे काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नूर नूर नूर करे रुशनाईआ। सकंद पुराण दी कवण कथा, मानव मानुख मानस दए वड्याईआ। जीव उधार दे यथार्थ यथा, भरम दए मिटाईआ। मिले मंज़ल सच अवसथा, जिथ्थे इक्को नूर जोत रुशनाईआ। प्रकाश होवे ओस मस्तक मथ्था, जिथ्थे त्रसूल माक़ूल सोभा पाईआ। पंच विकार जाए नठ्ठा, हँकार विभचार रहिण कोए ना पाईआ। पढ़ना पए ना किसे जगत वाले अक्खां, निरअक्खर मिले वड्याईआ। जिथ्थे लिख्या नहीं कोई सफ़ा, अंक अंक ना कोए बदलाईआ। ओह धाम ओह जगह ओह भूमिका केहड़ी जिथ्थे आत्मा परमात्मा परमात्मा आत्मा हो के वसा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। बिना रसना तों मिले रसा, अनरस आपणा रस चखाईआ । स्कंध पुराण दा भेव खोल्ह के थोड़्हा जिहा दस्सो जिथ्थे रैण अन्धेरी मिटे मस्सा, इक्को नूर जोत होए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, काया मन्दिर अंदर साचा रंग इक वखाईआ। सकंद पुराण दा भेव दस्सो तुसीं बड़े विद्वान, विद्या विच विद्या दयो दृढ़ाईआ । जिथ्थे बिना अक्खरां तों ज्ञान, ओह मन्दिर केहड़ा किस बिध रमज़ समझ विच टिकाईआ। बिना अक्खीआं तों ब्रह्मण्ड खण्ड वेख्या जाए ज़िमीं असमान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड ज़िमीं असमान गगन गगनंतर पर्दा रहे ना राईआ। सति सरूप साख्यात जोती नूर दिसे भगवान, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। आत्मा आत्मा आत्मा आप पहचान, बेपहचान रहिण कोए ना पाईआ। जिथ्थे कम्म ना आवे रसना जिह्वा ज़बान, सिफ्तां वाली सिफ्त ना कोए सालाहीआ। ओह कथा दस्सो यथार्थ जिथ्थे अठारां पुराण चार लख हज़ार सतारां सलोकां दा लेखा मुके, नौ हज़ार सलोक भविख्त पुराण दा देवे की गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। स्कंध कहे की दस्से विष्नूं पुराण, विश्व भेव खुल्हाईआ। की गरुड़ ने कीता ज्ञान, समां समें नाल टकराईआ। की अग्गे हुण दशा होणी जहान, कलयुग कल की वरताईआ। की अवतार दे के गए ज्ञान, भेव अभेद खुल्हाईआ। की राम कृष्ण कीता फ़रमान, अगम्म अथाह दृढ़ाईआ। ज़रा थोड़्हा जिहा समझा

१२९१
२१

दयो किस बिध जगत रीती नीती सुधरे सृष्टी दृष्टी अंदर आवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या प्रगट होए थाउँ थाईंआ। चार वरन अठारां बरन हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी वेखण इक निशान, दूजा निशाना नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा वेख वखाईआ।

❊ २५ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सुरिंदर सिँघ दे गृह इटारसी ❊

नारद कहे मैं भुक्खा नंगा बन्नृ के तेड़ लंगोटी, कोझा कमला हो के चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ टिल्ले पर्बत चढ़ के उच्ची चोटी, समुंद सागर डूँघे वहिण फेरीआं पाईआ। वरन बरन ज़ात पात वेखे गोती, नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप आपणा पन्ध मुकाईआ। घट घट अन्तर निरंतर निरगुण नूर जगदी वेखी जोती, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सृष्टी दी दृष्टी वेखी सोती, निज नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले वेखे कोटन कोटी, अनगिणत रोवन मारन धाईंआ। फिरी दुहाई हाए पाणी हाए रोटी, ख़ाली पेट रहे वजाईआ। मैं निगाह मारी लोक परलोकी, ब्रह्मण्ड खण्ड ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर

१२९२

२१

तेरे आस रखाईआ। नारद कहे मैं भज्जा नठ्ठा चार चुफेर, दूर दुराडे पन्ध मुकाईआ। जिधर वेखां उधर अन्धेर, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। कूड़ी क्रिया लेखा सके ना कोए नबेड़, सच सुच्च ना कोए वड्याईआ। जद पहुंचया विच नदेड़, गोदावरी कन्ढ्ढा वेख वखाईआ। दीन दुनी दा गिड़दा वेख्या गेड़, शब्दी गोबिन्द धार जणाईआ। पुरख अकाला करे मेहर, मेहरवान महबूब आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख्या भारत, गृह गृह मन्दिर वेख वखाईआ। पंडत पांधे मुल्ला शेख़ ग्रन्थी पन्थी प्रभ दे नाम दी लैंदे आड़्हत, धड़त वट्टे कूड़ कूड़ उठाईआ। मन नैण मिल के करन शरारत, बुध्ध बिबेक ना कोए वखाईआ। अक्खरां वाली पढ़ इबारत, दीनां मज़हबां रहे भड़काईआ। साची करे ना कोए ज़िआरत, जलवा तक्के ना कोए नूर अलाहीआ। साचा नाम ना मिले निआमत, निझर रस ना कोए झिराईआ। जिधर वेखां इक दूजे दी करन मज़ाहमत, मुहब्बत विच ना कोए समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर इक्को इक वखाईआ। नारद कहे मैं वेखी धरनी ख़ाक, धवल खोज खुजाईआ। रूह बुत दिस्सया कोए ना पाक, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। मैं ध्यान मारया गुर अवतार पैग़म्बरां की लिख्या भविख्त वाक्, लेखा लेख की दृढ़ाईआ। की

खेल होणा पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता की कार कमाईआ। की मण्डल मण्डप बिन गोपी काहन पैणी रास, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दी धार इक जणाईआ। नारद कहे मैं तक्की दीन दुनी अन्तर, अन्तश्करन वेख वखाईआ। प्रभू प्रेम ना मिले निरंतर, निराकार निरवैर निरँकार नज़र कोए ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे पढ़दे मन्त्र, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। फिरी दरोही गगन गगनंतर, ज़िमीं असमान रहे कुरलाईआ। सच बणाए कोई ना बणतर, जूठ झूठ करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आसण लाईआ। नारद कहे मेरे साहिब श्री भगवाना, भगवन तेरी सरनाईआ। तूं मालक दो जहानां, दीन दुनी वेख वखाईआ। लख चुरासी आत्म काहना, सीता सुरत राम प्रनाईआ। जोती धार धुर अमामा, जल्वागर नूर अलाहीआ। सति सरूप शाह सुल्ताना, भूप इक अख्वाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट निशाना, सति धर्म इक प्रगटाईआ। चार वरन अठारां बरन देवीं ब्रह्म ज्ञाना, विद्या ब्रह्म पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। नारद कहे मेरे साहिब स्वामी ठाकर, हथ्थ तेरे वड्याईआ। अमृत धार बख्श अगम्मा सागर, लहर लहर विच्चों उपजाईआ। दीन दुनी दे निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। सुरती अन्तर होवे एकागर, मन कल्पणा ना कोए हल्काईआ। दरगाह साची सचखण्ड दवारे देणा आदर, आदर्श आपणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर मेला लैणा मिलाईआ । नारद कहे प्रभ कलयुग अन्तिम कर तरस, रहमत हक़ कमाईआ। अमृत मेघ अगम्मा बरस, अगनी तत दे बुझाईआ। झगड़ा मुका मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ चर्च, गुरुदुआरा इक्को वेस नज़री आईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्दाना मर्द, मेहरवान आपणा हुक्म सुणाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमल्यां दीनां अनाथां वंड दरद, दीन दुनी खोज खुजाईआ। सच बेनन्ती मन्न अर्ज़, आरज़ू तेरे अग्गे टिकाईआ। सति धर्म लहिणा देणा वेख फ़रद, कूड़ी क्रिया रहे ना राईआ। शरअ कसाई रहे ना करद, क़त्लगाह देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण सब दी तेरे कोल फ़रद, लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी सब दा लहिणा देणा दे चुकाईआ।

✻ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सुरिंदर सिँघ दे गृह इटारसी ✻

जगत कलाक वक्त ढाई, ढईआ गोबिन्द वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल वेख्या हिन्दसा इक्काई, ज़ीरो सिफ़र ना अक्ख मिलाईआ। ख़ालक तक्की ख़लक खुदाई, खुद आपणा नैण उठाईआ। शब्दी धार बण के राही, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। निरगुण सरगुण वेखे थाउँ थाईं, दीन दुनी फोल फुलाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर जगाई, आलस निंदरा रिहा मिटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल रिहा हिलाई, हल्ला आपणा नाम कराईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रिहा उठाई, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। आप हो के बेपरवाही, बेपरवाही विच समाईआ। चार जुग दा लेखा दयो दृढ़ाई, सन्मुख हो के दयो वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ। वक्त ढाई दा गोबिन्द मुक्कया ढईआ, ढाबां तालाबां विच पए दुहाईआ। आपणा लेखा सारे कढ्ढो वहीआ, वायदा धुर दा पूर कराईआ। हुक्म देवे साहिब सुल्तान धुर दा सईआ, सतिगुर नूर अलाहीआ। किस वहिण विच वहिंदी जगत नईआ, नौका रूप कवण बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ढाई कहे ढईआ गया बीत, बीती समझ किसे ना आईआ। सारे वेखो आपणी आपणी रीत, की पूरब कार कमाईआ। क़लमा जाणो गीत, आत्म परमात्म सिफ्त सालाहीआ। मन्दिर वेखो मसीत, मट्ठां अक्ख खुल्हाईआ। ज़ाती वेखो ऊँच नीच, राउ रंक भेव ना राईआ। किस नाल लग्गी प्रीत, सच दयो समझाईआ। की होया बख्शीश, रहमत की कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ढईआ कहे मैं रिहा लँघ, आपणा वक्त लँघाईआ। गोबिन्द किसे ना लाया अंग, अंगीकार ना कोए बणाईआ। निज पाया किसे ना अनन्द, पारमानंद ना कोए वड्याईआ। मैं कर के गया जंग, खण्डा खड़ग खड़काईआ। छड्ड के पुर अनन्द, नंदेड़ दिता वसाईआ। गा के अन्तिम छन्द, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। आपा कर के बन्द, प्रभ दे विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गोबिन्द कहे मेरा ढईआ चंगा, चार जुग दा लेख जणाईआ। पहिलों लेखा मुका के जमना सुरस्ती गोदावरी गंगा, गहर गम्भीर नाल मिलाईआ। अर्जन नूरी चढ़ा के चन्दा, रावी रविदास वाली दुहाईआ। शब्द सिँघासण वेख पलँघा, कक्खां सेज सुहाईआ। दीन दुनी जाण के दंगा, दगेबाज़ी खोज खुजाईआ। डंका अगम्म वजा मृदँगा, मर्द मर्दान दिता कराईआ। भरम भुला के बन्दा, बंधना विच फसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ढईआ कहे मैनूं क्यों नहीं कहिंदे दो ते अध्धा, अध्यात्म भेव कोए ना पाईआ। मैं सब नूं देवां सद्दा, होका

१२९४ २१

हक़ जणाईआ। जेहड़ा पुरख अकाल कदे ना लभ्भा, नेत्र दरस कोए ना पाईआ। जिस ने शस्त्र धार दुर्गा बणाई हथ्थ विच फड़ा के गदा, गदागर जंगलां विच कराईआ। जिस ने अवतारां वखा के आपणी हद्दा, हदूद विच फसाईआ। जिस ने पैग़म्बरां सुणा के नद्दा, नौबत नाम हक़ दृढ़ाईआ। जिस ने गुरुआं दस्स के आपणी वजह, भेव अभेद दिता खुल्हाईआ। जिस ने गोबिन्द माण दिता हथ्थ सज्जा, सज्जण हो के वेख वखाईआ। चला के आपणी विच रज़ा, मेहर नज़र उठाईआ। अन्त संदेसा दिता उपर लबां, ज़बान सक्कया ना कोए हिलाईआ। जोती धार वड़िआ मधा, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दीपक जोत हो के जगा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। गोबिन्द तेरा जगत वाला नहीं अग्गा, दुनी वाली नहीं वड्याईआ। सच देवां अनोखा पदा, पदवी इक्को इक जणाईआ। जद उपजें ते उपजें मेरी यदा, दूजा रूप ना कोए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। ढईआ कहे गोबिन्द नहीं तन वजूद, माटी ख़ाक ना कोए वड्याईआ। गोबिन्द हक़ इक महबूब, मुहब्बत विच समाईआ। गोबिन्द ओह मंज़ल मक़सूद, जिस नूं चढ़न कोए ना पाईआ। गोबिन्द ओह अर्श अरूज, आलीशान इक अख्वाईआ। गोबिन्द ओह अगम्म हदूद, जिस दा आर पार ना कोए जणाईआ। गोबिन्द ओह सदा मौजूद, जो हर घट रिहा समाईआ। गोबिन्द ओह जो भगतां करे महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गोबिन्द ओह जेहड़ा आदि अन्त ना होवे नेसतो नाबूद, करनी दा करता नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, प्रेम प्यारा प्रीतम इक्को सोभा पाईआ। ढईआ कहे जन भगतो मैं दस्सण आया धर्म धार दा धर्मा, धामी अनामी अन्तरयामी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दा हुक्म मन्नदे विष्न शिव शिव विष्न विष्न शिव ब्रह्मा, ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म विच समाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना कोई कर्मा, निहकरमी निहकरमी निहकरमी आपणी कार वरताईआ। जिस दवारे ना जम्मणा ना मरना, जम्मण मरन खेल ना कोए खिलाईआ। ना सीस जगदीश ना ढहिणा कोई सरना, चरण चरणोदक रस ना कोए बणाईआ। ना लिखणा ना पढ़ना, खेल अगम्म अगम्मढ़ी कार कमाईआ। ढईआ कहे मैं सच दस्सां जो साहिब मेरे खेल करना, करनी दा करता आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणा खेल वखाईआ। ढईआ कहे गुरमुखो कोई धार नहीं एह दूजी, गोबिन्द कूक कूक दए दुहाईआ। जेहड़ी गुर अवतार पैग़म्बर चार जुग नहीं सूझी, अक्खरां विच ना कोए लिखाईआ। विचार आई ना किसे विच बुद्धि, जगत राह ना कोए बदलाईआ। प्रकाश नूर ना होई उदी, उदय अस्त ना कोए वड्याईआ। ओह खेल दस्सां गूझी, रमज़ हमज़ नमज़ विच प्रगटाईआ। जिस दी उडीक करदे अवतार पैग़म्बर जुगी, जगत ध्यान लगाईआ।

१२९५
२१

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। ढईआ कहे जन भगतो प्रभ ने बदल जाणा रवईआ, समझ समझ ना कोए समझाईआ। आत्म ब्रह्म दा बण के सईआ, स्याह हो के दो जहानां वेख वखाईआ। दीन दुनी दी पकड़े कोई ना बहीआ, अंगी अंग ना कोए लगाईआ। मेरे उत्ते गोबिन्द पा के गया सहीआ, साहिब सतिगुर आपणी दया कमाईआ। तेई अवतारां इक आवाज़ कहीआ, बिन रसना जिह्वा अलाईआ। पैग़म्बर कहिण हक़ खुदा बदल देणा रवईआ, रहीम रहमत विच आपणा रहम कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ढईआ कहे मैं गोबिन्द तक्कया, तक्कया नूर अलाह। जिस ने पंचम जेठ खेल करना मदीने मक्कया, मम्बर मुनारे वेखे नाल चाअ। नूर अलाह इक शब्द सुणाए अकथया, धुर दा नग़मा आए गा। जेहड़ा अमाम किसे नहीं लम्भया, पंजां नूं आपणा दरस आवे दिखा। ओह वेखण लहिंदे तों चढ़दी हद्दया, सजदे विच करन दुआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर धरनी होए सहाईआ। ढईआ कहे संदेसा देणा नाज़ाकूमी पोप, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। जेहड़ा मसीह होया अलोप, लोचन नज़र किसे ना आईआ। लभ्भदे कोटी कोट, खोजण ध्यान लगाईआ। ओह प्रकाश कर के निर्मल जोत, नूर आए चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स सलोक, सुत्तयां लए उठाईआ। हक़ खुदा दी जिस मानणी मौज, भारत वज्जे वधाईआ। जिस दे हुक्मे अंदर सारे होए फ़ौत, मक़बरिआं विच डेरा लाईआ। सो सब दी मेटण आया अदौत, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। छेती जाणा पहुंच, मार्ग सिध्धा दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप खिलाईआ। ढईआ कहे मैं वेखी तलवंडी वाली ढाबा, बिन अक्खां अक्ख उठाईआ। मैनूं मिल्या नानक पहिलों बाला ते अन्तिम बुड्ढा बाबा, बाहर दा लेखा नाल रखाईआ। जिस इशारा कीता उँगल नाल वल काअबा, क़िबलेअज़ जणाईआ। महबूब तक्कां कवण महिराबा, महिरम नूर अलाहीआ। झट बग़ल विच्चों कढ्ढया की लेखा लिख्या विच बगदादा, बग़लगीर कवण अख्वाईआ। जिस दे पिच्छे गुज़ारी निमाज़ा, सीने हथ्थ टिकाईआ। रोज़यां विच दितीआं बांगां, अज़ान नूर अलाहीआ। ओस दा लेख ना पुन्न ना सवाबा, भेव अभेदा ना कोए खुल्हाईआ। ढईआ कहे मैं नानक दे चरण तक्कया जां निगाह पई ते मैनूं नज़री आया वाला बाज़ां, गोबिन्द सोहणा सोभा पाईआ। जां फेर वेख्या उस दा भगतां नाल वायदा, वायदे सब दे पूर कराईआ। मैं हस्स के किहा मैनूं दुखड़ा काहदा, दर्द रिहा ना राईआ। हथ्थ जोड़ के करी बेनन्ती दीन दुनी दे मालक आपणा सम्बल इक वसा जा, वस्ती इक वड्याईआ। ख़बर संदेसे दे दे प्रगट हो जा देस माझा, उहला अग्गे रहिण ना पाईआ। हुण भरम भुलेखा काहदा, कदीम दे मालक कर रुशनाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म जणाईआ। ढईआ कहे मेरे गोबिन्द हुण कर देवीं ऐलान, ऐलानीआं आपणा हुक्म जणाईआ। जे तेरा रूप श्री भगवान, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। मैनूं ऐं दिसदा सतारां हाढ़ दिवस महान, पंचम सम्मत शहिनशाही वड्याईआ। ख़बर दे देणी जो दुनियां दे प्रधान, निशाना सति उठाईआ। प्रगट हो के आउणा विच मैदान, सूरबीर आपणा बल प्रगटाईआ। इक वेरां मैनूं सब ने कहिणा शैतान, जो सब दी शरअ रिहा ठुकराईआ । ढईआ कहे मैं निउँ निउँ तेरे चरण जावां क़ुरबान, विटुह आपणा आप कराईआ। मैं चौहन्दा तेरे नाम दा चार कुण्ट चढ़े तुफ़ान, अन्धेरा कूड़ देणा मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धरनी दा मस्तक देणा बदलाईआ। ढईआ कहे तेरा हुक्म होवे ज़रूरी, ज़ाहर ज़हूर तेरी रुशनाईआ। जे तूं जिस्म नज़री आ सब दा इस्म जल्वागर नूरी, नूर नुराना नूर चमकाईआ। मंज़ल मुका नेड़ दूरी, दो जहानां आपणा फेरा पाईआ। जिथ्थे तेरे सन्त भगत सूफ़ीआं दे चरण धूढ़ी, रातीं सुत्तयां दिने जागदयां लै उठाईआ। प्रभू तूं केहड़ी भुक्खे ने खाणी कड़ाह पूड़ी, हलव्याँ विच ना मन धराईआ। आपणे नाम दी मस्ती प्रेम दा सरूरी, शब्द शब्द विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१२९७ कर, सद आपणी कार कमाईआ। ढईआ कहे मैं लेखा दस्सां आप, पिछला ध्यान लगाईआ। गोबिन्द नज़र आया साखिआत, १२९७

२१ सति सरूप सोभा पाईआ। गोबिन्द किहा पिच्छे झाक, पूरब वेख वखाईआ। जां वेख्या ढाई दिन राम ने एथे कीता सी २१

जाप, घुटने धरती उत्ते टिकाईआ। कन्नां ते ला के हाथ, नैण लए दबाईआ। जिस वेले आवे प्रभू आप, मेरे राम राम होवें सहाईआ। लै के धूढ़ी राख, मस्तक नाल छुहाईआ। कढुके मुख विच्चों वाक, उँगल नाल दिता लिखाईआ। जिस ने पैग़म्बरां दा बणना बाप, गोबिन्द दा पिता माईआ। सब दा लेखा लैणा हिसाब, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। राम ने आपणा नाखुन ल्या काट, खब्बा अंगूठा दन्दां हेठ चबाईआ। मुखों किहा कोई धर्म दा रहिणा नहीं हाट, पेशानी तली उत्ते रखाईआ। लाग्यों सीता गई कांप, मेरे राम दुहाईआ। कोई नहीं दिसदा साथ, संगी संग तजाईआ। रिहा ना कोई विश्वास, विषयां विच देणे हल्काईआ। सति होणा पाश पाश, टुकड़े टुकड़े लोकाईआ। राम ने तक्कया उपर आकाश, आसण एसे थाँ विछाईआ। मेरे राम तेरा केहड़ा पत्तन केहड़ा घाट, मैनूं दे वखाईआ। कवण पूजा कवण पाठ, कवण मिले वड्याईआ। शब्द अगम्मी आवाज़ आई मेरा ग़रीबां नाल साथ, चम्यारां रंग रंगाईआ। बलि दवारे ल्या झाक, बलि दा नन्हा बेटा धर्म धार दी गोली जुगिंदर दिता समझाईआ। भगतां दी आत्म सेजा मेरी खाट, दूजा सुखआसण ना कोए वड्याईआ। हिरदे अंदर मेरी बात, बातन भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी

१२९८
२१

कार कमाईआ। ढईआ कहे कुछ आउँदा जांदा समां, समझ दयां जणाईआ। प्रभ ने खेल करना नवां, नवां रूप बदलाईआ। माण गवा के माटी चम्मां, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। जन भगतां दा लेखा रख के आपणे कोल दमां, दामनगीर आप हो जाईआ। पता नहीं केहड़े वेले आपणे लिखारीआं नाल लै के किधर नूं हो जाए रवां, माता पिता हथ्थ किसे ना आईआ। राम कहे ना कोई हरख सोग ग़मा, चिन्ता ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मैं पैर चुम्मणे, बिन रसना रस लगाईआ। जिस दे भगत मेरे उत्ते घुम्मणे, नौ खण्ड पृथ्मी आपणे हेठ दबाईआ । मैं शब्द संदेसे सुणने, ढोले अगम्म अथाहीआ। जगत जिज्ञासू जगत वासना विच रुलणे, सके ना कोए बचाईआ । अवतार पैग़म्बरां सीस झुकणे, मन्नण इक खुदाईआ। धुर दे हुक्म कदी ना रुकणे, गोबिन्द रिहा दृढ़ाईआ। जगत विकारी मूल ना मुकणे, वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतो तुहाथों लेखे अग्गे किसे नहीं पुच्छणे, सब दे लेखे एथे देणे मुकाईआ। राम ने घुटने उपर रख के घुटने, आसण ल्या वटाईआ। जिस वेले पैग़म्बर पैग़म्बरां नाल जुट्टणे, दीन दुनी दए हिलाईआ। अर्शां दे तारे टुट्टणे, टुट्टी नूं सके ना कोए जुड़ाईआ। गुरमुखां दे फड़ने गुटणे, गल आपणे लैणे लगाईआ। एह नाते पिता पुत्त ने, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। ढईआ कहे मैं अज्जे तक्क रिहा डावां डोल, मेरी धीर ना कोए धराईआ। मैं दूरों दूरों सुणदा रिहा बोल, शब्दी आवाज़ ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट रिहा टटोल, वेख्या थाउँ थाईंआ। अज्ज पता लग्गा राम एसे ज़िमीं उत्ते आपणे राम दा ला के गया पोल, निशाना इक बणाईआ। जिस धरती नूं कहिंदे गोल, उस गोल दी चपटी चप्पा चप्पा वेखे थाउँ थाईंआ। दरबवासी रोल, गर्भ वासी दए सज़ाईआ। जन भगत विच्चों कढ्ढे निरोल, आप आपणी दया कमाईआ। आपणे जन्म कर्म दा लेखा कोई ना सके फोल, बुद्धी विच ना कोए चतुराईआ। सच दा तोले कोई ना तोल, नाम कन्ढा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को नज़री आईआ। ढईआ कहे भगतो किसे दी ना करयो गुलामी, दर मँगण कदे ना जाईआ। तुहाडी रीती ना रही पुराणी, प्राण अधारी दिती बदलाईआ। बुढुयां नढुयाँ दी इक्को जवानी, इक्को रंगण नाम रंगाईआ। तुहाडा मालक शाह सुल्तानी, शहिनशाह नूर अलाहीआ। जिस दा खेल दो जहानी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। जिथ्थे राम ने ख़ाधी महिमानी, ओसे दी एह निशानी, जिस ने निगाह रखी उपर असमानी, इस्म आज़म इक तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच नाल वड्याईआ। ढईआ कहे जन भगतो बिन जगायां जागो, जगत आलस निंदरा

ग़फ्लत देणी तजाईआ। इक दी सरनी लागो, लग मातर दा डेरा ढाहीआ। हँस बण जाओ कागों, सोहँ हँसा जाप मिले धुरदरगाहीआ। मन कल्पणा साधो, साध धुर दे दयां बणाईआ। बिना रसना तों अराधो, अंदर वड़ के मिलां चाँईं चाँईंआ। सुणो अगम्मी आवाज़ो, धुन दयां उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बेशक सब नूं कहि देणा सानूं प्रभू प्यारा लाधो, जेहड़ा लम्भयां हथ्थ किसे ना आईआ।

✻ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ कौड़ा मल सदन मल दे गृह इटारसी ✻

राम कहे एथे ताना माना हुंदे सी दो पोस्ती, भंग पी के सूटा सुलफे वाला लगाईआ। मस्ती लैंदे सी नशे वाली झोक दी, झुक झुक इक दूजे नूं सीस निवाईआ। एह आदत सी उनां दी रोज़ दी, तेती साल एसे तरह झट लँघाईआ। विच्चों आशा सी इक निर्मल जोत दी, जिस दी दिवस रैण मँग मँगाईआ। कदी कदी गल्ल करदे सी होश दी, अक्खां लाल लाल
१२९९ रखाईआ। सिफ्त वेखदे सी ब्रह्मा वाले कोश दी, इक दूजे नूं कन्नां विच जणाईआ। साडे कोल लिआकत नहीं जेहड़ी १२९९
सचखण्ड पहुंचदी, पुज्ज के प्रभ दा दर्शन पाईआ। कदी कहिण आसा रखी ओस दी, ओड़क लए मिलाईआ। फेर कहिण
२१ प्रभू नालों साडी मुतहरी चंगी जेहड़ी साडी भंग घोटदी, प्याला सानूं दए प्याईआ। इउँ जापदी जिवें एह पिछली साडी गोत २१
दी, पुराणी साथण नज़री आईआ। सानूं पीन्दयां नूं कदी नहीं रोकदी, सगों कासिआं विच आपणा आप उलटाईआ। सानूं कदी नहीं टोकदी, गुस्सा ना कोए वखाईआ। कदी इक दूजे नूं कहिण साडी बुद्धी नहीं कोई खोट दी, असीं खरे प्रभ नूं रहे ध्याईआ। सानूं ख़बर नहीं किसे लोक दी, परलोक ना कोए जणाईआ। सानूं मुहब्बत इक्के दी मोहित दी, जो मोहणी रूप वटाईआ। कदे गंढु वेखण आपणी लंगोट दी, जो कमर नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। धरनी कहे पोस्ती दोवें हुंदे सी ताजे मोटे, ढिढु मटक्यां वांग बणाईआ। उत्तों सिर हुंदे सी घोटे, बोदी जञ्जू ना कोए वखाईआ। तेड़ हुंदे सी लंगोटे, तन वस्त्र ना कोए छुहाईआ। रात नूं जागण दिने सी सोते, अक्खां बन्द वखाईआ। सोचां विच मारदे सी गोते, मन दे वहिणां विच आपणा आप डुबाईआ। कदी कदी होश विच आ के रखदे सी इक लोचे, लोचण नैण खुलाईआ। असीं गुरु नहीं मन्नणे बहुते, इक्को पुरख अकाल मिल के खुशी मनाईआ। जिस दे नाल साडे तन मन दे कपड़े जाण धोते, दुरमति मैल रहे ना राईआ। साडे भाग ना रहिण

सोते, सुत्तयां दए जगाईआ। इक दिन राम आ गया उह भंग रहे सी घोटे, रगड़ा रगड़े विच्चों रखाईआ। उन तक्कया ठीक समें मौके, मुकम्मल वेख वखाईआ। इक ने अग्गों किहा रो के, दूजे हस्स के दिता वखाईआ। जे साडे प्याले फड़ावें धो के, इस खुशी विच तैनूं भंग दईए प्याईआ। किष्ते साडे वरगा वेखीं हो के, नश्यां विच ज़िमीं असमानां तों परे उडाईआ। तूं सोहणा जवान किते साडे राम नूं लिआवीं मोह के, आपणे नाल मिलाईआ। ज़रा सानूं अंदरों वेख जोह के, किढ्ढी प्रीत प्रभ दे नाल बणाईआ। फेर मस्ती विच मूँह दे भार हो के, मथ्थे ज़िमीं उत्ते टिकाईआ। फेर कहिण असीं प्रभ दे चरण आए छोह के, ज़िमीं असमानां पन्ध मुकाईआ। फेर आपणी भंग बुक्कल विच लको के, हस्स हस्स ताली दिती लगाईआ। फेर आकड़ नाल खलो के, बाहवां उपर लईआं उठाईआ। फेर उँगलां उँगलां विच परो के, खिच्चण वाहो दाहीआ। फेर आपणा मुख धो के, मुखों कहिण तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। पोस्ती कहिण कदी पीती उ भंग, जांदिआ राहीआ दे सुणाईआ। वेख चढ़दा किस तरह रंग, रंगत इक वखाईआ। अज्ज दी रात साडे कोल लै अनन्द, अनन्द तैनूं दईए वखाईआ। फेर साडा बण जावीं संग, सोहणा जोड़ जुड़ाईआ। नाम जपण नालों इहदे विच सोहणा ढंग, मस्ती विच जगत वासना ना कोए रखाईआ। बिना अक्खां तों मुक जावे पन्ध, आपणी होश रहे ना राईआ। चार पहर एसे तड़ां जांदे लँघ, अग्गे वास्ते फेर रगड़ा दईए लगाईआ। जदों गाईए तूं मेरा मैं तेरा छन्द, दूजा राग ना कोए अलाईआ। राम किहा ज़रा घुट्ट के मीटो दन्द, ज़ोर नाल दबाईआ। फेर लओ अनन्द, अक्खां खोल्ह के मेरीआं अक्खां विच टिकाईआ। मुखों कहो तूं मेरा मैं तेरा छन्द, दूजी अवर ना कोए वड्याईआ। फेर तुहानूं होवे ठंड, सांतक सति वरताईआ। उन्हां दोहां ने इक दूजे नूं मारे कंध, मोढ्ढिआं नाल हिलाईआ। अज्ज वेख लईए इहदा अनन्द, की सानूं दए वखाईआ। जां अक्खां मीटीआं नजर आया सूरा सरबंग, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। पोस्तीआं आया इक सरूर, सुरती लई बदलाईआ। तक्कया अगम्मा नूर, जोत नूर रुशनाईआ। हुक्म दिता हज़ूर, नेत्र लओ खुल्हाईआ। जां वेख्या राम वसिआ जो सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। दोहां बेनन्ती कीती अग्गे हरि हज़ूर, निउँ के सीस निवाईआ। क्यों सानूं रख्या दूर, तेरा नाम दुहाईआ। असीं मूर्ख मूढ़, तेरे हथ्थ वड्याईआ। शब्दी हुक्म होया तुसीं राम दी लाई धूढ़, जो राम राम रूप वटाईआ। फेर तुहाडा लेखा मैं देवां ज़रूर, ज़रूरत सब दी पूर कराईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम दीन दुनी होई कूड़, सच मिले ना कोए वड्याईआ। सब दी दृष्टी होवे मूढ़, चतुर सुघड़ ना कोए वखाईआ। हंगता होए ग़रूर, हउमे मोह हल्काईआ।

ओस वेले लेखा देवां ज़रूर, लहिणा पूरा आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। पोस्ती राम नूं गए झुक, इक्को वार सीस निवाईआ। राम ने दोहां दी पिठ्ठ ते मारी मुक्क, हौली हौली लगाईआ। तुसां बदल जाणां रुख़, दीन दुनी जाणी तजाईआ। सचखण्ड दवारे जाणा पुज्ज, आपणा पन्ध मुकाईआ। तन दीपक जाणा बुझ, होवे ना कोए रुशनाईआ। अगला भेव दस्सां गुज्झ, शब्द अगम्मा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल वखाईआ। राम ने किहा पोस्ती धरो ध्यान, ध्यान ध्यान विच्चों बदलाईआ। ताने माने तुहाडा अन्तिम होणा जहान, लोकमात रहिण ना पाईआ। जिस वेले मेरा आवे श्री भगवान, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ । तुहानूं मानस जन्म देवे महान, मेहर नज़र इक उठाईआ । तत्तां वाले बणा इन्सान, पर्दा उहला दए चुकाईआ। एसे धाम ते पहुंचे आण, तुहाडा सोहणा संग बणाईआ। होवे मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। दे के धुर फ़रमान, धर्म दी धार बंधाईआ । उह वक्त सुहञ्जणा जगत पहुंचे आण, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। ताने माने किहा राम रामे ठीक, ठीक दिता दृढ़ाईआ। केहड़ा वक्त केहड़ी तरीक, तारीख़ दे समझाईआ। राम किहा कलयुग अन्तिम सम्मत शहिनशाही पंज प्रभ दी चले रीत, रीतीवान वेख वखाईआ। तुसां रखणी उडीक, लेखा दए मुकाईआ। उन्हां हस्स के खुशी नाल चरण छुहाया सीस, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। राम ने हथ्थ फेरया पीठ, पुश्त पनाह दिती वड्याईआ। मेरा शब्द धुर दी लीक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ताना माना अर्जन सिँघ ते सिँघ रणजीत, पिछले जन्म दे पोस्ती, लेखा रिहा चुकाईआ। पुरख अकाला कर बख्शीश, मेहर नज़र इक उठाईआ। राम दी शहादत आप कर तस्दीक़, मोहर नाम वाली लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, वसणहारा सब दे चीत, चेतन धार आपणी जोड़ जुड़ाईआ।

❋ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ इटारसी ❋

पंमपासर दा खेल तमाम, पूरब पिछला दए गवाहीआ। जिस वेले भीलणी कोल गया राम, आपणा पन्ध मुकाईआ। छाँदू नाम दा कोल हुंदा सी ग्राम, झौंपड़े पंज सत्त सोभा पाईआ। ओथे महात्मा हुंदा सी महान, हँकार विच आपणा आप वधाईआ। ओह लै के नौ बादाम, भीलणी कोल डेरा लाईआ। बण के सूरबीर बलवान, आपणा आसण ल्या जमाईआ। हरी ओम तत सति दा मन्त्र लग्गा गाण, नमों नमों कहि सुणाईआ। जिस वेले आया श्री भगवान, धनुख कंधे उत्ते लटकाईआ।

ओस हस्स के किहा नादान, की तेरे विच वड्याईआ। क्यों भुक्खी ग़रीबणी दे घर पहुंचया आण, आपणा पन्ध मुकाईआ। भीलणी अचानक वेख होई हैरान, खुशीआं विच इधर ओधर भज्जी चाँईं चाँईंआ। हाए मेरा राम मेरे राम, राम मेरे मेरी तेरी दुहाईआ। मैं भेंटा विच की रखां पकवान, की सेव कमाईआ। किस दे कोलों मँगां दान, किस दे अग्गे झोली डाहीआ। चारों कुण्ट मारे ध्यान, साथी नज़र कोए ना आईआ। अन्तर होई हैरान, हिरदे विच कुरलाईआ। निउँ के कीता प्रणाम, सीस दिता झुकाईआ। पिठ ते हथ्थ रख्या अंदर होया ज्ञान, बुद्धी मिली चतुराईआ। समझ आ गई मैं की आसा रखी महान, हिरदे विच टिकाईआ। सो फल खवावां जेहड़े इक्ठे कीते विच्चों ज़िमीं असमान, झाड़ां दीआं चोटीआं उत्तों लाहीआ। जे कर लवे परवान, मैं लख लख शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भीलणी अन्तर कीती विचार, हिरदे ध्यान लगाईआ। जेहड़े बेर रखे संभाल, टुक टुक के मिट्ठे भगवान लई लुकाईआ। ओह खाण आ गया राम, मेरी राम दुहाईआ। खुशीआं विच नच्ची टप्पी बुढ्ढी नढ्ढी होई जवान, आपणे मन तन लई अंगड़ाईआ। पंजां टाकीआं दी पंजां रंगां दी गल विच चोली जिस दीआं कन्नीआं चीथड़े रूप दसाण, मैले कुचैले सोभा पाईआ। ओधरों महात्मा रख के बैठा ध्यान, आपणी अक्ख उठाईआ। गुस्से विच कहे ओ भलीए, ओ झल्लीए, ओ मूरखे, आह मैथों लै बादाम, इस नूं दे खवाईआ। सुक्के बेर कदे ना हुंदे परवान, राम राजा दशरथ बेटा अयुध्या वासी मुख ना कदे छुहाईआ। भीलणी नेत्र रो के हन्झू वगा के लग्गी कुरलाण, कूक कूक सुणाईआ। मैं तेरी तूं मेरा राम, राम तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरे घर मेरे दर मेरे गृह एहो सच्चा पकवान, जो तेरी भेंट चढ़ाईआ। तूं मेरा परमात्म पति तूं अधार प्राण, प्राणपति तूं ही इक अख्वाईआ। मैं तत्तां वाला तेरा इन्सान, जीव आत्मा तेरी ओट तकाईआ। राम हस्स के लग्गा चबाण, छिलक्यां नाल गिटकां गया खाईआ। भीलणी किहा तेरी किरपा होई महान, प्रभ पुनीत दिती बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। जद महात्मा वेख्या राम बेर खांदा, खुशीआं विच समाईआ। उठ के नेड़े आंदा, आपणा पन्ध मुकाईआ। तूं राही क्यों नहीं होर राहे जांदा, भुक्खयां नग्गयां दर क्यों डेरा लाईआ। एह कमली झल्ली कोझी एस भीलणी नूं कौण बुलांदा, तूं ग़रीबणी दे हथ्थों खा के बैठा आसण लाईआ। राम निगाह नाल तकांदा, नैण नैणां विच टिकाईआ। हथ्थ उत्ते हथ्थ मार के किहा, आह त्रेता औह द्वापर जांदा, अन्तिम कलयुग वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रूप बदलाईआ। राम किहा एह ग़रीबणी नहीं मेरे प्रेम धार दा भगत, भगवन विच समाईआ। तूं निगाह मार विच जगत, कलयुग अन्तिम दयां वखाईआ। तेरी हँकार वाली शर्त, सहजे पूर

कराईआ। तैनूं जन्म लैणा पैणा फेर उत्ते धरत, धवल मिले वड्याईआ। माया दरब नाल तेरी पूरी हुंदी रहिणी गर्ज़, दीन दुनी विच वड्याईआ। पर याद रखीं प्रभ दा खेल होणा असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। तूं आपणे आप नूं अखवाउँदा मर्द, सूरबीर वड्याईआ। ग़रीबां नाल नहीं वंडया दरद, दुखियां वेख के ताली दिती वजाईआ। प्रभू दा खेल सदा असचरज, समझ सके कोए ना राईआ। जिस वेले मेरा राम आया परत, पतिपरमेश्वर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। राम किहा एह भीलणी बड़ी प्यारी, प्यार विच समाईआ। एह मेरे चरणां तों बलिहारी, मैं इहदे चरण धो के अमृत दयां वखाईआ। याद रखीं हुण तूं पुरुष फेर बणेंगा नारी, नर नरायण हुक्म दए वरताईआ। एह झल्ली नहीं तूं झल्ली बणेंगा दुख्यारी, दुक्खां विच दुहाईआ। तेरी माया तेरी पैज ना सके संवारी, तेरा साथ ना कोए निभाईआ। होणा पए दुखयारी, दुक्खां विच दुहाईआ। साक सन्बंधी मात पित भैण भाई पुत्तर धी पती कन्त सारे करन गिरयाज़ारी, सांतक सति ना कोए कराईआ। बिना राम दे राम तों तेरा लहिणा देणा लेखा क़र्ज़ा मक़रूज़ सके ना कोए उतारी, हिसाब बेबाक ना कोए कराईआ। राम दा हुक्म मेट सके ना कोए संसारी, संसारी भण्डारी सँघारी विष्न ब्रह्मा शिव सारे देण गवाहीआ। जगत हिकमत चले कोई ना कारी, जिंनां चिर प्रभू ना दया कमाईआ। सो समां बीतिआ

१३०३ २१ जुग लंघिआ वक्त आ गया अन्तिम वारी, अन्तश्करन वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लेखा दए मुकाईआ। ओस ने सुण के राम दा संदेस, आपणी मति लई बदलाईआ। निम्रता विच हो के पेश, सीस दिता झुकाईआ। मैं शंकर नूं मन्नदा ते पूजा करां गणेश, इक्को ध्यान लगाईआ। तेरा बचन सदा विशेष, जो संदेसा दिता सुणाईआ। पता नहीं मेरी बुद्धी क्यों होई मलेच्छ, मैं राम तैनूं गया भुलाईआ। राम ने किहा ज़रा कलयुग वल वेख, तैनूं दयां जणाईआ। जिस वेले मात पित भैण भाई नार कन्त दा रहिणा नहीं हेत, भगत भगवान मीत ना कोए बणाईआ। ओह महीना होवे चेत, रुत रुतड़ी बसन्त रूप महकाईआ। तेरा लेखा तेरा लहिणा तेरा पूरब जन्म पूरन लए वेख, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। तेरे जन्म कर्म दी फेर बदल देवे रेख, मरन दा लेखा रहे ना राईआ। इहो हुक्म इहो प्यार इहो मुहब्बत इहो राम दा संदेस, संध्या वेला दिता सुणाईआ। सो लहिणा अभुल्ल भुल्ल ना गया चेतन हो के रख्या चेत, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आसा मनसा पूरब जन्म जन्म कर्म सब दी पूरी करे करनहार दातार, आपणी दया कमाईआ।

❋ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ जसवन्त सिंघ दे गृह इटारसी ❋

ढईआ कहे मेरा पूरा होया ढौंका, गोबिन्द शब्द लई अंगड़ाईआ। जिस छड्डया पटणा पौंटा, पारब्रह्म विच समाईआ। ओह साढे तिन्न दा बणा के औंटा, सम्बल बैठा डेरा लाईआ। जिस मंज़ल कोए ना पहुंचा, आर पार ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। ढईआ कहे भेव खोल्हे मेरा भगवन्त, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस दा लेखा जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। लहिणा देणा देवे साध सन्त, गुर अवतार पैग़म्बरां झोलीआं दए भराईआ। नाम निधाना देवे मंत, सुरती शब्द विच वड्याईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए दरसाईआ। खेल करे सदा अनन्त, अकल कल धारी आपणी कार कमाईआ। वेख वखाणे लख चुरासी जीव जंत, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सतिजुग सच बणाए बणत, कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। बोध अगाधा बण पंडत, बुद्धी तों परे दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। ढईआ कहे मैं गाउणा इक्को ढोला, गहर गम्भीर दिता जणाईआ। आत्म परमात्म धर्म धार दा बोला, अनबोलत रिहा सुणाईआ। परम पुरख दा निरगुण धार सोहला, सोच समझ तों परे देणा दृढ़ाईआ। तन वजूद हक़ महबूब जिस दा पर्दा खोल्हा, ख़ालक

१३०४ ख़लक दए वड्याईआ। कलयुग कूड़ी कल्पणा मेटे रौला, रौणक आपणा नाम समझाईआ। खेले खेल अगम्मी मौला, मालक १३०४

२१ हो के वेख वखाईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद पूरा करे कौला, इक़रार आपणे नाल निभाईआ। धरनी धरत धवल भार करे २१

हौला, ममता मोह कर सफ़ाईआ। जन भगतां निझर रस अन्तर आत्म परमात्म हो के देवे पहुला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दरगाह साची वेख वखाईआ। ढईआ कहे मेरा लेखा अन्त, अन्त दयां जणाईआ। किरपा करे श्री भगवन्त, भगवन बेपरवाहीआ। जिस दा वेस जुग अनन्त, कल काती खोज खुजाईआ। महिमा दस्स अगणत, सिफ्तां विच दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं मेटे चिन्नत, ग़मी ग़मख़ार दए गवाईआ। शब्दी सुत दे के हिम्मत, हर हिरदे करे सफ़ाईआ। कूड़ा रहिण ना देवे कोई निन्दक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, देवणहार बेपरवाहीआ। ढईआ कहे मेरी आसा मनसा होवे पूर, पूरन ब्रह्म मिले वड्याईआ। मेरा पुरख अकाला हाज़र हज़ूर, हज़रतां लेखा दए चुकाईआ। सब दी बेनन्ती करे मन्ज़ूर, मेहर नज़र इक उठाईआ। दीन दुनी दा बख़्शे क़सूर, नाम कसर इशारीए नाल उडाईआ। गढ़ तोड़े हउमे ग़रूर, गुरबत रहे ना राईआ। नाम दी मस्ती शब्द दा दए सरूर, कलमा सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि मन्दिर

१३०५
२१

इक सुहाईआ। ढईआ कहे जन भगतो मन्नणा इक जगदीश, जगदीशर धुरदरगाहीआ। बिना प्रभू तों झुके किसे ना सीस, इष्ट देव ना कोए मनाईआ। आत्म परमात्म आदि दा कलमा जुग चौकड़ी हदीस, हज़रतां सिफ्त सालाहीआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जिस कल कल्की अवतार दी गोबिन्द कर के गया ताकीद, नाम संदेसयां विच जणाईआ। पैग़ग्बरां अमाम कहि के कीती तमहीद, नग़म्यां विच वड्याईआ। जिस ने गुर अवतार पैग़ग्बर बणाए अज़ीज़, बाले नढ्ढे सेव लगाईआ। चार जुग नित नवित्त आपणी दस्सी तमीज़, सिख्या धुरदरगाहीआ। सो साहिब सुल्ताना नौजवाना मर्द मर्दाना सब दी करन आवे तसदीक़, निराकार निरवैर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक सुहाईआ। ढईआ कहे जन भगतो इक्को सिमरो पुरख अकाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड दुआरा जिस दी सच्ची धर्मसाल, शिवदवाला मन्दिर मठ मसीत चर्चां वंड ना कोए वखाईआ। निरगुण दीवा निराकार आपे बाल, बिन तेल बाती करे रुशनाईआ। दीन मज़हब ज़ात पात दा नहीं सवाल, शरअ विच ना कोए लड़ाईआ। राउ रंक ना कोई शाह कंगाल, जिस्म ज़मीर ना कोए बदलाईआ। अनहद शब्द ना विद्या ना वज्जे कोई ताल, सुरां विच सिफ्त ना कोए सालाहीआ। खेल प्रभू कमाल, कामल मुर्शद आपणी कार कमाईआ। सब दा जीवण आपे लए संभाल, सुरती शब्द विच मिलाईआ। तुसीं ओस दे नढ्ढे बाल, जो बाले नीहां हेठां गया दबाईआ। एथे ओथे दो जहानां करे सदा प्रितपाल, प्रितपालक हो के वेख वखाईआ। तुसी लभ्भ नहीं सकदे ओह तुहानूं रिहा भाल, चुरासी विच्चों आपणा मेल मिलाईआ। शरअ दा तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। चुरासी विच्चों कर बहाल, दरगाह साची दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच करनी कार कमाईआ। ढईआ कहे जन भगतो मन्नणा प्रभू प्रभ एक, एकँकारा इक सरनाईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़ग्बरां रखी टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जो वस्से सचखण्ड सच्चे देस, दरगाह साची सोभा पाईआ। निरगुण हो के सरगुण नित नवित्त करे वेस अनेक, अनक कल धारी आपणी कल प्रगटाईआ। सदा सदा सद देंदा रिहा संदेस, धुर फ़रमाना नाम दृढ़ाईआ। आदि अन्त रहे हमेश, जन्म मरन ना कोए रखाईआ । कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां करे हेत, हितकारी हो के मेल मिलाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज महीना चेत, चेतन सुरती सब दी दए कराईआ। निज आत्म परमात्म दर्शन तक्कणा नेत नेत, निज नेत्र लोचण दए खुल्हाईआ। जन्म कर्म दा सब दा वेखे लेख, पूरब पर्दा रहे ना राईआ। अग्गे बुद्धी कर बिबेक, दुरमति मैल धवाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अगनी

अग्ग ना कोए जलाईआ। जन भगतो आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत भगवान दी धार एक, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। मातलोक तुहाडा परदेस, परदेसीओ देस आपणा वेखणा चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त जोती धार रहे हमेश, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस निवाईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी नाम निधाना दए संदेस, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी आप जणाईआ। तुसीं वेख ना सके जोती धार तुहाडे आप होया पेश, पेशतर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुहाडा जन्म कर विशेष, विश्व दा वास्तक मूल दए दरसाईआ।

✻ २७ चेत शहिनशाही सम्मत ५ कृष्ण कांत दे गृह इटारसी ✻

नारद कहे जन भगतो मैं तुहाडे पिच्छे पिच्छे रहन्दा फिरदा, दिवस रैण वेख वखाईआ। तुसीं सौं जांदे ते मैं टोंहदा रहन्दा तुहाडा हिरदा, की सुत्तयां सुरत प्रभ दे विच मिलाईआ। मैं बड़ा पुराणा सेवक प्रभ दा चिर दा, चिरी विछुन्नयां तक्कां चाँईं चाँईंआ। जिस वेले तुहाडे अन्तर द्वैत आवे मेरा हिरदा घिर दा, धड़कन मेरा तन पैर दए हिलाईआ। फेर मैं
१३०६ वास्ता पावां प्रभू अमृत बख्श मेहर दा, मेहर नज़र उठाईआ। हुण हैरान होया पुरख अकाल वेस धरया शब्दी अगम्मे शेर १३०६
२१ दा, भबक तबकां तों बाहर सुणाईआ। जो चुरासी गेड़ा गेड़दा, दीन दुनी लद्दू भवाईआ। सच झूठ आपस विच भेड़दा, २१
टक्कर मातलोक लगवाईआ। जुग चौकड़ी जड़ उखेड़दा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। नारद कहे जन भगतो मैं अंदरे अंदर रिहा तक्क, निक्कयां वड्डयां वेख वखाईआ। अजे थोड़ा थोड़ा शक्क, मेरी समझ दिता समझाईआ। मैं गल्ल करन लग्गा नहीं जांदा झक, कहि के दयां सुणाईआ। प्रभू नूं प्रभू आख्यां किसे दा वड्डुया नहीं जांदा नक्क, जगत लोक लाज ना कोए रखाईआ। मैं दाअवे नाल कहिंदा तुहाडा साहिब उत्ते पूरा हक़, हकीकत पिछली दए गवाहीआ। ज़रा आपणा पर्दा वेखो चक्क, बिना प्रभू तों दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक्को नाम लैणा रट, रट्टा मिटे लोकाईआ। चुरासी दी फाही आपणी हथ्थीं लैणी कट, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। वेख्यो कदे भुल्ल के कहि ना दयो माझे दा जट्ट, तत्तां वाला मनुष नज़री आईआ। सच पुच्छो अन्तर निरगुण नूर जोत पुरख समरथ, जो सब दा आदी पिता माईआ। तुहानूं घर घर विच देवे रस, रस्ता अंदरों आप खुल्हाईआ। किसे दा चलदा नहीं कोई वस्स, ज्यों भावे आपणा रंग दए रंगाईआ। तुहाडी करनी सिरफ़ निम्रता विच जोड़ के हथ्थ, सीस देणा झुकाईआ।

पिछला जन्म कर्म दा वसूरा पाप जाए लथ्थ, दुरमति मैल अग्गे रहे ना राईआ। अन्त भगवन्त तुहाडे सिर ते रख के हथ्थ, दरगाह देवे माण वड्याईआ। तुहाडी दुनियां नालों वखरी कीती अक्ख, जिस नाल प्रतख प्रभ दा दर्शन पाईआ। मैं चार कुण्ट दह दिशा वेख रिहा उडदे भक्ख, भाख्या साची दयां दृढ़ाईआ। करे खेल पुरख अलख, अलखणा आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। जन भगतो तुहाडा लेखा जगत जुग वखरा, वखरी धार बणाईआ। नाता तुड़ा के इट्टां पत्थरां, पत्थर कपाटी दिता तुड़ाईआ। सच प्रेम वछा के सथरा, गोबिन्द मेला ल्या मिलाईआ। रसना जिह्वा जणा अगम्मी कथना, सोहँ ढोला इक दृढ़ाईआ। जगत जहान दस्स के मिथना, मस्त खुमारी इक चढ़ाईआ। दरगाह साची सच दवारे वसणा, जिथ्थे इक्को नूर जोत रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। नारद कहे मैं रातीं सारयां दे हेठां वड़ के मारदा रिहा झाकी, निउँ निउँ ध्यान लगाईआ। केहड़ा हिरदे अंदर प्रभ नूं मन्ने कमलापाती, पतिपरमेश्वर ओट रखाईआ। कवण संदेसा सुणे पाती, कवण सुरती शब्द मिलाईआ। कवण झगड़ा छड्डे ज़ात पाती, कवण एका रंग वेख वखाईआ। कवण सुणे अगम्मी गाथी, अगम्म अथाह पढ़ाईआ। फेर उठ के वेख्या की एह भगत वड्डे छोटे बण गए सारे साथी, सगले संगी आपणा रूप बणाईआ। मैं काया माटी सब दी जाची, याचक हो के वेख वखाईआ। मैनूं ऐं जापया तिन्नां ने पूरी मन्नी नहीं अजे आखी, ओह वी आयू सत गिआरां साल दे विच नज़री आईआ। मैं फेर उठ के सारयां दी करदा रिहा राखी, किसे दी भुल्ल के सुरत इधर उधर भज्जे ना वाहो दाहीआ। फेर मैं अंदर वड़ के मन्दिर चढ़ के वेखी घाटी, काया तत आपणा रूप छुपाईआ। जां तक्कया जन भगतां अंदरों तूं मेरा मैं तेरा निकली आवाज़ी, सोहँ ढोला दिता जणाईआ। मैं बोदी उत्ते हथ्थ फेर के हो गया राज़ी, आपणे अंदर खुशी मनाईआ। हस्स के किहा इटारसी वाल्यां अंदरों मेरा वी बड़ा कीता चा जी, चाउ घनेरा दयां सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ । नारद कहे इटारसी वाल्यो तुसीं निक्की जिही संगत, संगी संगत विच समाईआ। मैं भिखारी सब दे दर दा मँगत, मँग मँग आपणी झोली जुग चार ना कदे भराईआ। मैं विद्या वाला पंडत, शास्त्रां विच्चों पात्र वेख वखाईआ। मैं कदे करदा नहीं किसे दी मिन्नत, बिना जगदीश सीस ना कदे झुकाईआ । तुहानूं दस्सां सारे रखयो आपणी हिम्मत, हौसले लैणे वधाईआ। कुछ झगड़ा पैणा लहिंदी दिशा शमाली सिम्मत, समां आपणा रंग बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ। नारद कहे हरि संगत मैं तुहाडा करां धन्नवाद, धन्नवादी प्रभ ने दिता बणाईआ। मैनूं राम दे वक्त दी आ गई याद, याददाशत

मेरी मेरे विच्चों प्रगटाईआ। पुरातन महात्म साधना वाले साध, सिदक सबूरी विच सारे सोभा पाईआ। जिस नूं गोबिन्द गया आख, उस दा लहिणा सदा बिबाक, पूरब रिहा ना राईआ। अगली सुणो बात दस्सां साख्यात, संदेसा इक दृढ़ाईआ। लेख समझयो ना काग़ज़ात, एह धुर दा बंधन आत्मा दा नात, परमात्मा जोड़ जुड़ाईआ । अन्त अख़ीर मैं सब नाल बिना हथ्थां तों मिला के हाथ, हथ्थ प्रभ दे चरणां नाल छुहाईआ। तुसीं वसो आपणे घर प्रभ देवे शाबाश, मैं दरवेश राह अगला लवां तकाईआ। मेरा कुछ दिल्ली विच कम्म ख़ास, जो प्रधानां देणा दृढ़ाईआ। मैं कहि चलया तुसां पूरा रखणा विश्वास, विशा इक्को दिता समझाईआ। जिस प्रभू दा आदि जुगादि प्रकाश, जुग चौकड़ी नूर जोत चमकाईआ। सो स्वामी मेरा मालक तुहाडे वस्से पास, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ । मैं हुण पृथ्मी शाम नूं जाणा उपर आकाश, सुबह नूं फेर नवें थाँ करना वास, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां जन्म जन्म जन्म करे रास, कर्म करम कर्म दा लेखा आप मुकाईआ।

✻ २८ चेत शहिनशाही सम्मत ५ महिन्दर सिँघ दे गृह दिल्ली ✻

१३०८ २१

धरनी धरत धवल कहे किरपा कर सूरे सरबंगा, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। चार कुण्ट दह दिशा कूड़ी क्रिया मेट दंगा, मोह विकार हँकार विभचार दे खपाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप अन्तर आत्म दे अनन्दा, निझर झिरना धुर दा जाम प्याईआ। दीन दयाल साहिब सुल्तान बण बख़्शंदा, मेहर नज़र महबूब इक उठाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर वेख आपणा कन्ढा, लिख्त भविख्त फोल फुलाईआ। बन्दगी वाला दिसे कोई ना बन्दा, बंधन सके ना कोए तुड़ाईआ। सचखण्ड दवारे साची मंज़ल चढ़े कोई ना डंडा, दरगाह साची मिलण कोए ना पाईआ। निरगुण धार सरगुण लग्गे कोई ना अंगा, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। तूं मेरा मैं तेरा किसे समझ ना आए छन्दा, शाह पातशाह शहिनशाह तेरा दरस कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख लँघा, सदी चौधवीं रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। धरनी धरत धवल कहे मेरे परवरदिगार, परम पुरख तेरी सरनाईआ। उठ के वेख तेई अवतार, त्रैगुण अतीते पर्दा लाहीआ। रसूल पैग़म्बरां पा सार, साहिब सुल्तान पर्दा आप उठाईआ। नानक गोबिन्द वेख धार, दो जहानां डगमगाईआ। चारों कंट धुआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर आई हार, हिरदे हरि ना

कोए वसाईआ। फिरी दरोही चार यार, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ नेत्र रोवण धाहां मार, उच्ची कूक कूक दुहाईआ। अठसठ होए खुआर, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सार कोए ना पाईआ। बिन तेरी किरपा बन्द कुआड़ी खुल्ल्हे किसे ना ताक, निज लोचन ना कोए रुशनाईआ। अगनी तपे तत्ती हाढ़, सांतक सति ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट पंचम धाढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। धरनी कहे मेरे महबूब, तेरी ओट रखाईआ। मंज़ल दे हक़ मक्सूद, दरगाह साची इक जणाईआ। दीन मज़हब ना रहे हदूद, घर इक्को देणा दसाईआ। जिधर तक्कां ओधर मौजूद, चारों कुण्ट होए रुशनाईआ। निरगुण धार वेख आपणी मख़लूक, ख़ालक ख़लक वेस वटाईआ। भाग लगा माटी कलबूत, काया काअबे कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। धरनी कहे मैं रखां उडीक, निज नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्ल्हाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर मेरी करन तस्दीक, शब्द शहादत इक भुगताईआ । तूं सचखण्ड दा सदा वसनीक, लोकमात आपणी लै अंगड़ाईआ। कूड़ी क्रिया वेख अन्धेर तारीक, निरगुण नूर सच जोत कर रुशनाईआ। मैनूं तेरे उपर

१३०९ २१ उम्मीद, मेरी आसा मनसा पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर १३०९ २१

तेरे मँग मँगाईआ। धरनी कहे प्रभू दर तेरे दी मँगती, दरवेशण हो के सीस निवाईआ। पा सार आपणे जन दी, धुर दी बण जणेंदी माईआ। जोत प्रकाश कर गोबिन्द चन्न दी, दो जहानां डगमगाईआ। जो कल्पणा मेटे कलयुग मन दी, ममता मोह दए गवाईआ। दुरमति मैल धोवे तन दी, अन्तर करे सफ़ाईआ। खेड मुकावे कपट छल दी, अछल छल वेख वखाईआ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे धरनी दया कमावांगा। निरगुण नूर जोत चमकावांगा। दो जहानां वेख वखावांगा। नौजवाना रूप धरावांगा। मर्द मर्दाना फेरा पावांगा। गोबिन्द सूरा नाल रलावांगा। नाम खण्डा इक चमकावांगा। ब्रह्मण्डां भेव खुल्ल्हावांगा। जेरज अंडां डेरा ढाहवांगा। उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकावांगा। भगत सुहेले गुर चेले मेल मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमावांगा। सच करनी कार कमाएगा। प्रभ आपणा खेल खिलाएगा। दीन दुनी वेख वखाएगा। ऋषी मुनी फोल फुलाएगा। नाम अगम्म उपजाए धुन, जन भगतां राग सुणाएगा। भेव खुल्ल्हाए काया कुन, कलमा इक्को इक पढ़ाएगा। दे के वस्त नाम अनमुल्ल, घर ख़ज़ीना इक टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक सुहाएगा। दर ठांडा इक सुहावांगा। सतिजुग सच राह चलावांगा। कलयुग कूड़ी

क्रिया मेट मिटावांगा। गुर अवतार पैग़म्बर लहिणा सब दी झोली पावांगा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड, पुरी लोअ आकाश पाताल फोल फुलावांगा। तूं मेरा मैं तेरा सुणा के छन्द, सोहला ढोला इक्को राग अलावांगा। जन भगतां खुशी कर के बन्द बन्द, बन्दगी इक्को इक दृढ़ावांगा। निरंतर अन्तर दे के निजानंद, परमानंद विच टिकावांगा। एथे ओथे दो जहानां बण के संग, सगला संग आप जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुल्हावांगा। भेव अभेदा आप खुलाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मिटाएगा। सतिजुग साचा राह चलाएगा। ज़ात पात दीन मज़हब मेट मिटाएगा। पुरख अकाल इक्को सरन, सृष्टी दृष्टी आप बदलाएगा। जन भगतां झगड़ा चुका के मरन डरन, लख चुरासी फंद कटाएगा। गुरमुख साची मंज़ल चढ़न, अग्गे हो ना कोए अटकाएगा। गोबिन्द सूरा हाज़र हज़ूरा शब्दी धार आए फड़न, सुरती शब्दी आपणा मेल मिलाएगा। करनी दा करता खेल आए करन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक सुहाएगा। सच दुआरा इक सुहावांगा। चार वरनां रंग रंगावांगा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश मेल मिलावांगा। कलयुग कूड़ी क्रिया कढु द्वैत, दुरमति मैल सर्ब धवावांगा। साचा कलमा दस्स हदाइत, सिख्या इक्को इक समझावांगा। मेहर नज़र कर अनाइत, नाम कलमा आप प्रगटावांगा। सूफ़ी सन्तां कर हमाइत, हमसाजन हो के वेख वखावांगा। आत्म परमात्म सच हदाइत, हज़रत हो के हज़ूर इक वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा सच वेख वखावांगा। पुरख अकाल कहे धरनी सुणां तेरी पुकार, जो पुनह पुनह सीस निवाईआ। कल कल्की लै अवतार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। शब्दी गोबिन्द शाह अस्वार, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। नाम खण्डा खड़ग कटार, ब्रह्मण्डां रिहा डराईआ। तीर चिल्ला तरकश अपर अपार, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जो काया अंदर करे वार, मन विकार लेखा दए मुकाईआ। गुरमुखां पैज जाए संवार, दुरमति मैल धवाईआ। सतिजुग सच करे उज्यार, सति सतिवादी वेख वखाईआ। शब्द अनादी इक जैकार, ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द शनवाईआ। करे खेल आप करतार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरा लहिणा देणा पूरब क़र्ज़ा दए उतार, मक़रूज लेखा पूर कराईआ। जो कहि के गए गुर अवतार, पैग़म्बरां वेखे चाँईं चाँईंआ। सदी चौधवीं चौदस चन्द ना कोए उज्यार, चौदां तबक देण गवाहीआ। मुहम्मद अन्त होए बेज़ार, बेज़ारी विच कुरलाईआ। तेरी हमद परवरदिगार, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। नाता रहे ना चार यार, चार कुण्ट कुण्ट दुहाईआ। करे खेल सच्ची सरकार, हरि करता कार कमाईआ। धरनी निउँ के करे निमस्कार, चरण धूल मस्तक नाल छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

१३१०
२१

कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे दो जहान, कलयुग अन्त खेल करे महान, महिमा अकथ पुरख समरथ रसना जिह्वा सके ना कोए दृढ़ाईआ।

✻ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ महिन्दर सिँघ बलविंदर सिँघ दे गृह दिल्ली ✻

कलमा कहे मेट दे खुदी, खुदा खुद बखुद आपणी दया कमाईआ। कायनात उज्जल कर बुद्धि, इन्सान हैवान रहिण कोए ना पाईआ। तेरी धार आदि अन्त उच्ची, मध्ध आपणा वेख वखाईआ। निरंतर अन्तर तेरे नाल होवे रुची, सुरत शब्द विच समाईआ। बुतख़ान्यां कटे कोए ना बुत्ती, महबूब मुहब्बत देणी दृढ़ाईआ। आपणी दुनियां वेख सुत्ती, ख़ालक ख़लक लैणी जगाईआ। सदी सुहाउणी सोहणी करनी रुत्ती, सच नाल वड्याईआ । रविदास दी लेखे लग्गी गंढुण वाली जुत्ती, जोतां वाल्या जोत रुशनाईआ। बिना तेरी किरपा सृष्टी दृष्टी कदे ना उठी, तन लए ना कोए अंगड़ाईआ। निगाह मार मेहरवान चौंह गुट्ठीं, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। सति धर्म दा गाना दिसे किसे ना गुट्टीं, जगत कंगण सारे रहे हंढ्ढाईआ। प्रेम प्यार दी धार परवरदिगार तेरे नालों टुट्टी, नाता माया ममता मोह बणाईआ। जगत जहान वेख्या दुखी, सुख सागर ना कोए समाईआ। भाग लग्गे किसे ना कुक्खीं, जन भगत जणेंदी दिसे कोए ना माईआ। साचे मार्ग उत्तों तेरी दुनियां घुथ्थी, रहिबर रस्ता अगला देणा वखाईआ। रसना जिह्वा सब दी होई थोथी, सच बचन ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। तुध बिन दूजा कोए ना अवर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। काया डूँघी वेखी क़बर, मुरीद मुर्शद ना कोए उठाईआ। गहरी वेखी भँवर, घुम्मण घेर दुहाईआ। सन्तोख रिहा किसे ना सबर, सति विच ना कोए समाईआ । कलयुग कूड़ कुड़िआरा होया टब्बर, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। धुन सुणे ना कोई नाम मधुर, मदिरा पी के खुशी मनाईआ। आसा मनसा पूरी कर सध्धर, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम कर अदल, इन्साफ़ इक्को इक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर मँगण तेरी मदद, दरगाह साची बैठे सीस निवाईआ। सदी चौधवीं मेट तशदद्, झगड़ा जगत रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। आपणा खेल दस्स दे आप, आपणी दया कमाईआ। हक़ खुदा धुर दे बाप, पैग़म्बर सजदे विच सीस झुकाईआ। निरगुण धार दे साथ, जोती जाते आपणी कल धराईआ। जो भविख्तां विच आए आख, सो पूरा देणा कराईआ। तेरा नूर ज़हूर वेखीए साख्यात, साहिब सुल्तान तेरी वड्याईआ। कलयुग

अन्तिम पूरी कर वाट, पैंडा अगला दे चुकाईआ। सृष्टी वखा इक्को घाट, पत्तन इक्को डेरा लाईआ। चार वरन बणे सच जमात, पट्टी अक्षर नाम देणा पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। हक़ खुदा धुर दे मालक, तेरा नाम दुहाईआ। तूं आदि जुगादी प्रितपालक, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। सृष्टी दृष्टी लाह आलस, निंदरा कूड़ रहे ना राईआ। सच दुआर दा बण के सालस, साहिब सुल्तान होणा सहाईआ। निरगुण रूप जोती धार ख़ालक, ख़लक आपणी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। सच खुदा सर्ब सिरताज, तख्त निवासी तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम बदल दे समाज, समां आपणे हथ्थ रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक होवे रिवाज, मार्ग इक्को देणा समझाईआ। आत्म परमात्म निरगुण हो के कर काज, सरगुण आपणा रंग चढ़ाईआ। सच नाम धुर दा क़लमा चला जहाज़, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को घर वखाईआ। शब्द अगम्मी नादी दे आवाज़, धुन आत्मक राग दृढ़ाईआ। सब दी लेखे ला पूजा पाठ नमाज़, सजदयां विच बैठे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल बोध अगाध, अगम्म अथाह बेपरवाह तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✻ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ गुरदयाल कौर दे गृह दिल्ली ✻

हक़ खुदा कहे मैं कलयुग मेटणी कला, कलधारी आपणे विच समाईआ। जगत विकार मेटणा दला, दह दिशा फोल फुलाईआ। सच शब्द दा बोल के हल्ला, हुक्म धुर दा देणा सुणाईआ। जो राम कृष्ण तों बणया अल्ला, सति नाम वाहिगुरु जाप जपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फड़ाउँदा आया पल्ला, आंचल कन्नी नाल बंधाईआ। फ़रमान संदेसा धुर दा रिहा घल्ला, जगत जुगत जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक दृढ़ाईआ। साचा हुक्म इक फ़रमान, हरि करता आप जणाईआ। दीन दुनी वेखे मार ध्यान, परदयां विच्चों फोल फुलाईआ। भेव चुकाए ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्डां पन्ध मुकाईआ। लेखा जाण जीव जहान, वेखणहारा ख़लक खुदाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, प्रभ आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे नादान, गुणवन्ता दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा मालक सब दा स्वामी, सवाल सब दे हल्ल कराईआ।

✻ २६ चेत शहिनशाही सम्मत ५ सेवा सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ✻

गुर अवतार पैग़ंबर कम्बदे, नेत्र सके ना कोए उठाईआ। जुग चौकड़ी मात गर्भ विच्चों रहे जम्मदे, सरगुण रूप नाउँ प्रगटाईआ। पुतले बणे रहे काया माटी चम्म दे, पंजां तत्तां नाल सुहाईआ। खेल खेलदे रहे वजूद तन दे, ततव तत रंग रंगाईआ। सरोते बणे रहे सरवण कन्न दे, नेत्र वेख खुशी बणाईआ। प्रकाश तकदे रहे अगम्मी चन्न दे, जो निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। प्यारे बणे रहे धुर शब्द धन्न धन्न दे, धन्न तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्म आए मन्नदे, रहमत विच निउँ निउँ सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण रहे डरदे, भय विच सीस निवाईआ। जन्म तों बाद रहे मरदे, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। खेल तकदे रहे प्रभू दे घर दे, गृह मन्दिर पर्दा लाहीआ। वणजारे बणे रहे सरोवर सर दे, जो अमृत धार प्रगटाईआ। दर्शन तकदे रहे नरायण नर दे, जो निर्मल नूर जोत करे रुशनाईआ। नाम ढोले कलमे गीत रहे पढ़दे, जो शब्द अगम्मी कलाम सुणाईआ। अन्तर अन्तर निरंतर हो के मंज़ल रहे चढ़दे, घर घर विच खोज खुजाईआ। दुख सुख चिन्ता रोग भाणा रहे जरदे, सीस सक्कया ना कोए उठाईआ। हुण खेल वेखणे कलयुग कल दे, कलकाती की आपणी कार कमाईआ। झगड़े तकणे पंच विकार दल दे, दह दिशा फोल फुलाईआ। चलित्र वेखणे अछल अछल दे, वल छल धारी की आपणा रंग रंगाईआ। नज़ारे तकणे निहचल धाम अटल दे, जो दरगाह साची इक सुहाईआ। हुलारे वेखणे समुंद सागर जल दे, लहर लहर नाल टकराईआ। गृह मन्दिर दीपक वेखणे बलदे, जन भगतां अंदर होवे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण बणे रहे डरपोक, भय विच सीस निवाईआ। रखदे रहे सदा ओट, ओड़क मन्नया इक्को पिता माईआ। नाम कलमा पढ़दे रहे सलोक, सिफ्तां वाले सोहले जगत जणाईआ। निरगुण धार माणदे रहे मौज, जोती जाता दए वड्याईआ। अन्त सचखण्ड दवारे गए पहुंच, परम पुरख प्रभ आपणे विच मिलाईआ। ना वरन रिहा ना गोत, दीन मज़हब ना कोए वखाईआ। सारे रूप इक्को निर्मल जोत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाला दीन दयाला आदि जुगादी धुर दा खौंत, कन्त कन्तूहल वड वड्याईआ। जिस दी कुल कदे ना जावे औंत, भगत भगवान मिल के वजदी रहे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण असीं भय विच रहे झुकदे, निउँ निउँ सीस निवाईआ। खेल वेखदे रहे अबिनाशी अचुत दे, चेतन हो के अक्ख खुलाईआ।

भाग तकदे रहे सुहञ्जणी रुत दे, रुतड़ी आपणा रंग रंगाईआ। दीन दुनी दे हाढ़े सुणदे रहे दुःख दे, जुग चौकड़ी आपणा वेस वटाईआ। भाग तकदे रहे जननी वाली कुक्ख दे, जो जन भगत जणे धन्न जणेंदी माईआ। नज़ारे तकदे रहे अबिनाशी अचुत दे, जो चार कुण्ट दह दिशा आपणी कार कमाईआ। जिस दे भेव रहिणे नहीं लुक दे, परदयां विच्चों पड़दे दए फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं लोकमात आए, हुक्म मन्नया धुरदरगाहीआ। नाम संदेसे ढोले गाए, कलमयां विच दृढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी राग अलाए, सिफ्तां विच सालाहीआ। सच दुआर आए समझाए, दरगाह सच मिले वड्याईआ। जिथ्थे इक्को निरगुण नूर जोत रुशनाए, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दे विच्चों परम पुरख परमात्म साडी धार उपजाए, जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। सो साहिब सुल्ताना मर्द मर्दाना नौजवाना आपणी खेल खलाए, ख़ालक हो के वेखे थाउँ थाईंआ। सति धर्म दा निशाना इक झुलाए, दो जहानां आपणा पर्दा लाहीआ। साडी कीती पिछली चार जुग उलटाए, जुग चौकड़ी दए गवाहीआ। असीं सारे उच्ची कूक रहे सुणाए, दरोही तेरा नाम खुदाईआ। तुध बिन दूजा अवर कोए नाहें, नर नरायण तेरी इक वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग
१३१४ असीं फेरीआं आए पाए, फिरत फिरत तेरा नाम ध्याईआ। अन्त बोल पुकार कूक के आए सुणाए, नाअरयां विच दुहाईआ। १३१४
२१ पुरख अकाला दीन दयाला, कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जामा वेस वटाए, कल कल्की नाउँ प्रगटाईआ। जिस दा लेखा २१
कोए समझे नांहे, जगत विद्या ना कोए चतुराईआ। सो कलयुग अन्तिम लहिणा देणा दए मुकाए, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग साचा राह वखाए, रहिबर हो के नूर अलाहीआ। जन भगत सुहेले दीन दुनी विच्चों उठाए, सोई सुरती आप उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म बंधन शब्दी धार बंधाए, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक प्रगटाए, प्रगट हो के आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं आए वारो वारी, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। नित नित कीती खेल निआरी, निरगुण निराकार निरँकार दिती कराईआ। चार वरन अठारां बरन लग्गण ना दिती यारी, टुट्टी गंढु ना कोए पवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल बणया रिहा इशतिहारी, चार कुण्ट दह दिशा हथ्थ किसे ना आईआ। अन्तिम सारे रो रो के कहिंदे आए इक वारी, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। पुरख अकाला दीन दयाला कल कल्की लै अवतारी, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। चार जुग दी पिछली मेटे सर्ब सरदारी, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग साचा चन्द नूर करे उज्यारी, कूड़ कुड़िआरा

दए मिटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी ओस प्रभू दे चरण कँवल निमस्कारी, निउँ निउँ सारे लागण पाईंआ। जिन्ह भगतां पैज संवारी, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। आवण जावण लख चुरासी कट बीमारी, दीनां मज़हबां दुक्खां दर्दां डेरा दिता ढाहीआ। साची मंज़ल दस्स अगम्म अटारी, अटल महल्ल दिता वखाईआ। जिथ्थे जगे जोत निरँकारी, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार बैठा आसण लाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं झुक झुक सारे करीए निमस्कारी, डंडावत विच बन्दना कहि के सीस जगदीश झुकाईआ। जिस दी अन्त कलयुग आई वारी, वाहवा आपणी साची कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी पावे कोई ना सारी, अन्तश्करन विच अन्त कहिण कोए ना पाईआ।

✻ ३० चेत शहिनशाही सम्मत ५ सन्ता सिँघ दे गृह दिल्ली ✻

अवतार पैग़म्बर गुर कहिण प्रभ किरपा कर यदी, यथार्थ बेनन्ती इक सुणाईआ। कलयुग वेख चार कुण्ट दह दिशा वधी बदी, आत्म ब्रह्म पर्दा कोए ना लाहीआ। माया ममता मोह विकार हँकार वहिंदी नदी, नईआ नौका तेरा नाम नज़र
१३१५ कोए ना आईआ। पैग़म्बरां दी पूरी होण वाली सदी, मुहम्मद हाज़र हो के दए गवाहीआ। सब दी कीती पूरब होई रद्दी, १३१५
२१ रहिबर सारे रहे कुरलाईआ। मन मति मतवाली सृष्टी विकार विच मद्धी, मधुर धुन तेरी सुणन कोए ना पाईआ। वस्त अमोलक २१
काया गोलक नव सत्त किसे ना लध्धी, खोजत खोजत वेखी जगत लोकाईआ। जिधर तक्कीए त्रैगुण माया पंज तत लग्गी अग्गी, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। हँस बुद्धी जीव जंत होए कग्गी, सति सरूप विच ना कोए समाईआ। धर्म निशाना दो जहानां दिसे कोई ना गड्डी, दीन मज़हब ज़ात पात वरन बरन चार कुण्ट करे लड़ाईआ। निर्मल जोत पारब्रह्म पतिपरमेश्वर किसे हिरदे मूल ना जगी, जागरत जोत निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। धरनी धरत धवल धौल पापां नाल दब्बी, पतित पुनीत ठांडा सीत ना कोए कराईआ। शाह सुल्तान राज राजान जूठ झूठ हंढ्ढाउँदे गद्दी, अदल इन्साफ़ धर्म दी धार ना कोए कमाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तेरा खेल क़दीम तों कदी, क़ुदरत दे मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी मुनिआद अन्तिम लँघी, लेखा अवर ना कोए जणाईआ। तेरे चरण कँवल तेरी लै आए सनदी, तेरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा रिहा कोई ना ज़ोर, जोरू ज़र दए दुहाईआ। पुरख अकाल किरपा कर नाल ग़ौर, गहर

गम्भीर वेख वखाईआ। सृष्टी दी दृष्टी होई कौड़, अमृत नाम रस बिन रसना जिह्वा ना कोए चखाईआ। मन कल्पणा चार कुण्ट दह दिशा सारे रहे दौड़, माया ममता मोह विकार हँकार विच हल्काईआ। सच दुआर एकँकार तेरी मंज़ल चढ़े कोई ना दौड़, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी रो रो दए दुहाईआ। जिधर तक्कीए नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप अन्धेरा घोर, निरगुण नूरी चन्द ना कोए रुशनाईआ। दीन मज़हब ज़ात पात अल्ला वाहिगुरु राम ओम तेरे नाम दा पाया शोर, शरअ विच शरीअत दिती दसाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझे यार साडी सिख्या होई कमज़ोर, बलहीण दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी मन्ने कोई ना आखी, दीन दुनी होई हल्काईआ । आत्म परमात्म

१३१६

२१

बणे कोई ना साथी, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। सच दुआर मंज़ल चढ़े कोई ना घाटी, नौ दवारे पन्ध ना कोए मुकाईआ । अन्तर मिटे ना अन्धेरी राती, नूरी जोत चन्द ना कोए चमकाईआ। शब्द सुणे ना कोए अनादी, अनहद राग ना कोए उपजाईआ। अमृत बूँद पीवे ना कोए स्वांती, अनरस ना कोए चखाईआ। जिधर तक्कीए अन्धेरी राती, कलयुग अन्धेरा छाईआ। किरपा कर कमलापाती, पतिपरमेश्वर तेरी ओट रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण भविख्तां विच तेरे नाम दी दे के आए पाती, पेशीनगोईआं विच तेरी ओट रखाईआ। अन्त अख़ीर रखी आसी, आसण सिँघासण इक्को तेरा वेख वखाईआ। तूं साहिब पुरख अबिनाशी, गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। साडी चार दिन दी ज़िंदगी ते तेरी बख्शी होई हयाती, तन वजूद पहन के अन्तिम तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असां दीन मज़हब बणाए इस्लाम, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। इन्सानां नाल लड़ाए इन्सान, शरअ शरअ नाल टकराईआ। राम तों अल्ला बदल के नाम, दीन दुनी दिती बदलाईआ। तेरे नाम तों कर के क़त्लेआम, ज़िबह गऊ ग़रीब वखाईआ। अल्ला तों बण के सतिनाम, डंका नाम दा दिता वजाईआ। गोबिन्द सूरे उठ बलवान, वाहिगुरु तेरा नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरे नाम दा जुग जुग रिहा कलेश, नाम नाम नाल लड़ाईआ। तेरी खेल तकदे रहे हमेश, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अक्ख खुल्हाईआ। अन्त संदेसा दे के गया दस दस्मेश, गोबिन्द माछूवाड़े सेज सुहाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे नर नरेश, निहकलंका आपणा नाउँ धराईआ। जो चार वरन अठारां बरन सब नाल करे हेत, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ।

१३१६

२१

कूड़ी क्रिया मन कल्पणा करे खेत, नाम खण्डा खड़ग इक चमकाईआ। गुरमुखां दर्शन देवे नेतन नेत, निज नेत्र कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दए रेख, ऋषी मुनी मुनीशर वेखे थाउँ थाईंआ। सतिजुग साचे बख्शे टेक, जन भगतां टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। मेहरवान हो के महबूब निर्मल बुध्ध करे बिबेक, दुरमति मैल दए धवाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अगनी अग्ग ना कोए जलाईआ। आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा देवे संदेस, धुर दी धार इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर मालक नूर अलाहीआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण साडा अन्तिम लहिणा वेख हिसाब, निस्बत आपणे हथ्थ रखाईआ। चार जुग सिफ्तां वाली तेरी लिखी लुग़ात, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी तेरा नाम वड्याईआ। अन्त अख़ीर शाह हकीर लेखा कर बेबाक, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। कौल इक़रार कर याद, सचखण्ड निवासी पर्दा आपणा आप उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर बरबाद, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग साचे दे दाद, नाम अमोलक झोली पाईआ। जो झगड़ा मेटे ज़ात पात, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। सारे पंज तत दे पुतले इन्सान माटी ख़ाक, विच तेरा आत्म निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। क्यों ऊँच नीच खेल कीता विच मात, मानव मानव हिस्से दिते पाईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक पतिपरमेश्वर माई बाप, दूजा साक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, आत्म ब्रह्म देणा दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण दीन मज़हब पाए तेरी झोली, तेरी वस्त तेरे विच रखाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले सृष्ट सबाई आपणे नाम दी दस्स दे इक्को बोली, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तेरा आत्म तेरा ब्रह्म तेरी धार होवे तेरी गोली, नित नवित्त तेरी सेव कमाईआ। सच दुआर एकँकार सृष्ट सबाई खोली, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ वंड ना कोए वंडाईआ। निरवैर हो के नाम कंडे सच तराज़ू तोलीं, दीन दुनी इक्को रंग वखाईआ। तेरी निरगुण जोत लख चुरासी अंदर मौली, मौला बेपरवाह पर्दा देणा उठाईआ। किरपा कर प्रगट हो उपर धौली, धरनी धरत धवल धौल तेरा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दरगाह साची सचखण्ड दुआर एकँकार तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण झगड़ा रहिण ना देवीं मज़हब, मज़बूत आपणी दया कमाईआ। सब नूं आपणे विच कर जज़ब, बाहर रहिण कोए ना पाईआ। सतिजुग तेरा इक्को होवे अदब, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सीस झुके तेरे क़दम, चरण कँवल तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी तेरी आस रखाईआ। गुर

अवतार पैग़म्बर कहिण किरपा कर पुरख समरथ, परवरदिगार तेरा राह तकाईआ। दीन मज़हब तेरे साहमणे दईए छड्ड, झगड़ा मुके जगत लोकाईआ। धर्म निशाना दो जहानां इक्को दे गड्ड, गाईड हो के वेख वखाईआ। ज़ात पात रहे कोई ना हद्द, हदूद कूड़ी देणी गवाईआ। तेरे नाम दा वज्जे नद्द, नाउँ निरँकारा इक सुणाईआ। बिना काअबिउँ होवे हज्ज, हुजरा हक़ देणा वखाईआ। धुर दा मन्दिर दस्सणा मद्द, शिवदवाला इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे निर्मल जोत जगे लट्ट लट्ट, साढे तिन्न हथ्थ करे रुशनाईआ। शब्द नाद धुन सुणाउणा अनहद, अनाद अनादी आपणी दया कमाईआ। तेरा खेल वेखीए सब उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा पर्दा देणा उठाईआ। जिधर तक्कीए तेरा इक्को नाम इक्को कलमा दीन दुनी लए जप, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। इक्को तीर्थ होवे तट, किनारा इक्को सोभा पाईआ। इक्को गृह मन्दिर होवे हट्ट, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सतिजुग साचा मार्ग प्रभ दस्स, दह दिशा सिख्या इक समझाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे तेरे वस्स, वास्ता पा के देण दुहाईआ। साडी कलयुग अन्तिम होई बस, अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। पिछला सब किछ सौंपया तेरा तैनूं हक़, हक़ीक़त तेरी तेरे विच टिकाईआ। सारे सीस निवाउँदे झट, झटके हलाली वाले देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सृष्टी दी दृष्टी विच निज नेत्र खोल्ह अक्ख, सन्त भगत गुरमुख गुरसिख सूफ़ी फ़कीर बेनज़ीर नज़र आपणी नाल लै उठाईआ।

❋ ३० चेत शहिनशाही सम्मत ५ गोराया हज़ूरा सिँघ दे गृह दुआबा संगत ❋

चेत कहे मैं चलया, चलत करां लोकाईआ। संदेसा पुरख अकाल घल्लया, धुर दा हुक्म दृढ़ाईआ। नैण उघाड़ के वेख झल्लया, नेत्र लोचण कर रुशनाईआ। बिन भगतां दीपक कोए ना बल्लया, अन्ध अन्धेर ना कोए गवाईआ। वेख खेल अछल अछल्लया, वल छल धारी आपणी कार भुगताईआ। जीव जहान जावे सल्लया, अणयाला तीर चलाईआ। कलयुग अन्त परछावां ढल्लया, ढईआ गोबिन्द दए गवाहीआ। पुरख अकाल नाल रल्लया, दीन दुनी दा मालक नूर अलाहीआ। जो वस्से निहचल धाम अटल अटलया, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। चेत कहे मैं मुक्कया, मुंकमल खेल जणाईआ। पुरख अकाल कोलों पुच्छया, की तेरी बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण हलूणा दिता उठ जाग सुत्या, मात लै अंगड़ाईआ। वेख खेल अबिनाशी अचुत्या, जो चेतन सब नूं रिहा कराईआ। शब्दी हुक्म अंदर दो जहान जुटिआ, ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा हिलाईआ। जन भगतां आ के

पुच्छया, पुश्त पनाह हथ्थ टिकाईआ। दूसर नैण किसे ना दिस्सया, सन्मुख सोभा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर सच दए वड्याईआ। चेत कहे मेरा अन्त अख़ीर, आख़र दयां जणाईआ। मैं तक्कया बेनज़ीर, जो नज़रीआ दीन दुनी वटाईआ। जिस ने बदल देणी तक़दीर, तदबीर इक समझाईआ। शरअ दा कट ज़ंजीर, शहिनशाह इक्को देवे माण वड्याईआ। लेखा चुका के शाह हकीर, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। पिछली कीती उत्ते मार लकीर, लाईन अगली इक प्रगटाईआ। दीन दुनी दी बदल ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। सति सरूप दस्स तस्वीर, लातस्वीर दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सच मेला करे साहिब स्वामी, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। लख चुरासी अन्तरजामी, दो जहानां पर्दा दए उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे निशानी, सतिजुग साचा सच प्रगटाईआ। जन भगत सुहेले बख़्शे मंज़ल इक रुहानी, रूह बुत कर सफ़ाईआ। देणी पए ना कोए क़ुरबानी, शहादत विच तन ना कोए लगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ पढ़नी पए बाणी, बाण अणयाला तीर दए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा आप मुकाईआ। सच लेखा आप दस्सदा, हरि करता गहर गम्भीर। जन भगतां अंदर वसदा, बदल देवे ज़मीर।

१३१९ २१ प्यार बख़्शे आपणे रस दा, लहिणा देवे अन्त अख़ीर। झगड़ा मुका के विकारी रत्त दा, धर्म दी धार दस्से तदबीर। लेखा रहे ना मन मति दा, अमृत बख़्शे ठांडा सीर। जो लूं लूं अंदर रचदा, चोटी चढ़ के वेखे अख़ीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि कदे ना होए दिलगीर। दिलगीर ना हो दिलरुबा, मैं ख़ुदा अज़ीन अज़ां हकूके मुदा मुज़िलज़ां उदा नज़ो ग़िज़म ज़ीगे ज़वस्ते मुहिज़े ज़वां महबूबे पाक साहिबे ज़कात क़दमबोसी क़ादरे क़ुदरत करमां किज़ां, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा वेख वखाईआ। लेखा वेखे हक़, हक़ीक़त पर्दा लाहीआ। साहिब पुरख समरथ, दाता बेपरवाहीआ। महिमा सदा अकथ, रसन ना कोए वड्याईआ। कलयुग खेड़ा करे भट्ठ, ममता मोह मिटाईआ। सतिजुग उपजे जग, जागरत जोत होए रुशनाईआ। दीन मज़हब ना रहे हद्द, ज़ाती वंड ना कोए वखाईआ। परम पुरख दी सारे होवण यद, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। सच दुआर एकंकार इक्को डंडावत बन्दना सजदा दस्से हज्ज, हाज़र हज़ूर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, हुक्म देवे सूरा सर्बग्ग, दूसर भय ना कोए जणाईआ।

१३१९ २१

❋ पहली वसाख शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

चेत कहे मैं तक्कया नूरी चन्ना, चन्न चन्द जोत रुशनाईआ। जिस हुक्म संदेसा धुर दा मन्ना, मन्न के खुशी बणाईआ। बोध अगाध दा बदल के कन्ना, अक्खरां दिती वड्याईआ। चौदां सौ तीस अंक दा पन्नां, पनशिमैंट दए सज़ाईआ। कलयुग वेख अन्धेर घना, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। चारों कुण्ट शब्दी धार भन्ना, पैंडा पन्ध मुकाईआ। नज़ारा तक्कया माटी चम्मा, चुरासी फोल फुलाईआ। जीवत वेख्या दमा, साह नाल सुहाईआ। मन वेख्या कल्पणा वाला कम्मा, करनी बेपरवाहीआ। दीन मज़हब तक्कया बन्नां, हदूद हद्द वंडाईआ। जां कलयुग तक्कया जगत जहान अन्न्हा, प्रभ दरस नेत्र कोए ना पाईआ। कूड़ क्रिया सृष्टी दृष्टी लग्गा ग़मा, चेतन सुरत ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर फिरन सन्न्हा सन्न्हा, आर पार ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल दा खेल कोई समझे ना चौड़ा लम्मा, लाईन ऐन ना कोए दरसाईआ। जिस नूं ना कोई हवस ना कोई तमअ, तामस रंग ना कोए रंगाईआ। कोटन कोटि गुर अवतार पैग़ग्बर जिस दी धार विच्चों जम्मा, अंक अदद ना कोए वड्याईआ। जुग चौकड़ी सरगुण जगाउँदा रिहा शमां, शमांदान साढे तिन्न हथ्थ काया आप सुहाईआ। जोती

१३२० जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। चेत कहे मैं होया चौकन्ना, चार जुग सुणाईआ। १३२०

२१ लेखा भुल्ल जाओ जगत वाला दमां, दामनगीर इक्को लओ बणाईआ। जिस दा खेल देवणहारा लख चुरासी धना, दौलत नाम बेपरवाहीआ। की हो गया जे राम कृष्ण तों बणया अल्ला, अक्खरां नाल सिफ्त वड्याईआ। सतिनाम वाहिगुरु चौअक्खरी फड़ा के पल्ला, पल्लू सब तों गया छुडाईआ। जुग चौकड़ी सारे कहिण रहन्दा इकल्ला, अक़ल कलधारी आपणी कार कमाईआ। सचखण्ड दुआर दरगाह साची सच सिंघासण मल्ला, मेहरवान आपणा डेरा लाईआ। चेत कहे मैं सच दस्सां मैं प्रभ चरण दा तक्कया थल्ला, जिस जल थल दिते रुलाईआ। शब्दी धार वेख्या दला, जिस दी गणत ना कोए गणाईआ। जेहड़ा संदेसा गोबिन्द पुठ्ठा लम्मां पा के दे गया सी डल्ला, मुख कन्न उत्ते रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहरवान दया कमाईआ। चेत कहे मैं तक्कया चरण नुराना, नूरो नूर अलाहीआ। मैं तक्कया श्री भगवाना, जोती जाता डगमगाईआ। मैं तक्कया नौजवाना, गोबिन्द सूरा सोभा पाईआ। मैं तक्कया खेल महाना, सम्बल बैठा डेरा लाईआ। चेत कहे मैं छड्ड ज़िमीं असमानां, झुक के क़दमां सीस झुकाईआ। मैं संदेसा देवां तेरा परवाना, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। तूं मेरा मालक तूं मेरा ख़ालक मेरया पैग़ग्बरा तैनूं बणा अमामा, अमलां तों रहित नज़री आईआ। चेत कहे एहो कल्की एह धार गोबिन्द जिस ने पहरया बाणा, बाणी दा बाण अणयाला दए लगाईआ। जन भगतो तुहाडे वेंहदयां २१

एस ने बदल जाणा ज़माना, ज़िमीं असमानां आपणा हुक्म वरताईआ। कुछ लाउण वाला बहाना, बहाने विच आपणी कार कमाईआ। तुसीं किसे नूं कदे ना समझयो बेगाना, प्रभ सब दा पिता माईआ। सारी दुनियां नूं देणा दाना, नाम निधाना इक वरताईआ। क्यों प्रभू आत्म दा सच्चा काहना, परमात्म इक अख्वाईआ। जिस नूं सजदे करन सलामा, डंडावत बन्दना विच सीस निवाईआ। ओस करना खेल महाना, महिमां अकथ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। चेत कहे मैं चलया आख, आखर दयां जणाईआ। क्यों वड्याई मिली पहली वसाख, लोकमात वज्जी वधाईआ। चार जुग दे ऋषीआं दी पूरी कीती अरदास, पुरख अकाल होया सहाईआ। सति सच दा कीता प्रकाश, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। बनां विच जो जपदे रहे स्वास स्वास, तनां विच ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। वसाख कहे जिस वेले सम्मत सी पंदरां सौ तेती, नानक आयू बाली सोभा पाईआ। धरती दे नाल कीती ओस नेकी, निक्के वड्डी गल्ल जणाईआ। तूं खेल अगम्मा वेखीं, वक्खरा दयां दृढ़ाईआ। जो झगड़ा पाया मुल्ला शेख़ी, पंडत करन लड़ाईआ। एह सारे दिसण परदेसी, देस दा मालक नज़र कोए ना आईआ। हथ्थ खूंडी मोढ्ढे उत्ते खेसी, फिरदे तुरदे कथा जणाईआ। मेरी याद रखणी नेकी, मिले माण वड्याईआ। जिस वेले लज्जया रही ना बहू बेटी, धर्म दी धार ना कोए जणाईआ। फेर धार हो के धार प्रगटां छेती, आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। नानक किहा मेरा मीत मुरारा इक्क, एकँकार अख्वाईआ। जिस नूं सब कुछ रिहा दिस, बिन नैणां वेख वखाईआ। चार जुग दे वेखे मुन रिख, तपस्वी फोल फुलाईआ। उन्हां दे अन्तर आसा हित, हितकारी राह तकाईआ। जिन्हां दे कोल अवतारां वाली चिट, पैग़म्बरां कलमे देण गवाहीआ। उन्हां दा लहिणा देणा लैणा नजिट्ठ , निज आपणी कार कमाईआ। झगड़ा मुका के पत्थर इट्ट, घर इक्को देणा सुहाईआ। गोबिन्द धार हो के पुरख अकाल मन्नणा पित, पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। चार जुग दे विछड़यां गुरमुख बणाउणा सिख, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। अमृत धार देणी छिट, मेघ इक बरसाईआ। जिन्हां दी सुरती जावे टिक, टक्यां विच ना कोए विकाईआ। रस लैण मिठ, अनरस इक चखाईआ। पुरख अकाल वसावण चित, दूसर ओट ना कोए तकाईआ। पिछली रीती ऋषी मुनी मुनीश्र वसाखी दी मनाउँदे सी थित, आपणी आस वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। नानक किहा ऋषीआं नूं देणा माण, ममता मोह मिटाईआ। सच दा बख्शणा दान, दाता इक वरताईआ। गोबिन्द बण नौजवान, सूरबीर अख्वाईआ। अमृत करा के पान, पंडत पांधिआं

१३२२
२१

तों देणा छुडाईआ। युद्ध कर घमसान, धर्म देणा दरसाईआ । कर के खेल महान, डंका देणा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। नानक कहे गोबिन्द धार होवे नानक, नानक गोबिन्द रूप बदलाईआ। रिषी मुनी वेखणे हीरे माणक, मोती पिछले फोल फुलाईआ। सब दा बण के आप जाणी जाणत, चार वरनां विच्चों लैणे उठाईआ। हिन्दू मुस्लिम प्रभ दी सारे अमानत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी कल्पणा मेट अलामत, मार्ग इक्को इक दरसाईआ। बोदी जञ्जू लेखा मुका के हजामत, सूरत साबत देणी दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। नानक किहा गोबिन्द धार खेल वसाखी, विचला भेव ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल दी मन्नणी आखी, आखर सीस निवाईआ। झगड़ा मुका के ज़ात पाती, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। अमृत बख्शणा बूँद स्वांती, झिरना इक झिराईआ। निरगुण जोत जगा के बाती, अन्ध अन्धेर देणा मिटाईआ। पंज प्यारे बणा के साथी, सगला संग रखाईआ। खेल पुरख अबिनाशी, निरगुण सरगुण आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। वसाख कहे मेरा गोबिन्द पूरा कीता कौल, इक़रार तोड़ निभाईआ। प्रगट हो के उत्ते धौल, धर्म दी धार दृढ़ाईआ। योद्धा सूरबीर बण के बांका सडोल, सोहणा आपणा रंग रंगाईआ। सच प्रीती घोली घोल, पुरख अकाल इक सुणाईआ। साचे कंडे नाम दे तोल, चार वरनां वेख वखाईआ । गुरमुखां अन्तर मौल, अन्तश्करन करी सफ़ाईआ। शब्द अगम्मा अन्तिम बोल, अनबोलत गया जणाईआ । इक वेरां जाणा प्रभ दे कोल, तन वजूद देणा तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। वसाख कहे गोबिन्द कर गया पूरा इक़रार, इक इक्क दयां जणाईआ। मैं बड़ा कीता तकरार, झगड़यां विच दुहाईआ। क्यों छड्डके चलया यार, याराना मात तुड़ाईआ। जिन्हां पिच्छे वारया परिवार, बच्चयां भेंट चढ़ाईआ। उनां दी कवण पावे सार, सिर हथ्थ कवण टिकाईआ। गोबिन्द बोल किहा ललकार, उच्ची कूक सुणाईआ। मेरा नहीं कुछ इख्त्यार, हुक्मे अंदर सेव कमाईआ। मेरे सिख दुलारे सदा मेरे नाल, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। मैं सचखण्ड जाणा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वड्याईआ। धरनी दा हाल दस्सणा कमाल, जो वेख्या सो परदा देणा उठाईआ। फेर आवां नाल लै के आपणा पुरख अकाल, मुड़ के किसे तों मँगण दी लोड़ रहे ना राईआ। आपे शाह ते आपे बणां दलाल, विचोला होर ना कोए बणाईआ। बण के अमाम पैग़म्बर सुणां मुरीदां हाल, सुखआसण इक सुहाईआ। चल के नवीं तों नवीं चाल, भेव अभेदा दयां खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी बणा के इक धर्मसाल, धर्म दुआरा दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा

हुक्म वरताईआ। वसाख कहे उह पंज प्यारे गए छड्ड, तन नज़र कोए ना आईआ। मास रिहा ना हड्ड, वजूद ना कोए वखाईआ। अगनी विच दिते दग, शोअल्यां विच आपणा आप बदलाईआ। धरनी नालों हो के अड्ड, वखरे डेरे गए जमाईआ। मैनूं समझ नहीं आई की बणाया पज, क्यों पंचम खेल खिलाईआ। मैं भज्जी नट्ठी वेख्या सारा जग, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जां तक्कया सदी चौधवीं वेखी अग्ग, अगनी मंद ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। धरनी किहा मैं हस्स के किहा गोबिन्द किथ्थे तेरे प्यारे पंज, पंचम दे जणाईआ। मैनूं बड़ा रंज, दुक्खां विच कुरलाईआ। कवण लावे अंग, अंगीकार कवण अख्वाईआ। किथ्थे नीला कसें तंग, सिँघासण कवण वड्याईआ। केहड़ी कूटे करें जंग, खण्डा खड़ग खड़काईआ। कवण वजाएं मृदँग, धौंसा इक उठाईआ। छड्डके पुरी अनन्द, कवण धाम सोभा पाईआ। गोबिन्द किहा एह तन शरीर वजूद मेरा खेल धोखे वाला पखण्ड, सृष्टी दयां जणाईआ। इन्सानां वांगू कीता जंग, हथ्थां नाल लड़ के आपणा झट लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। गोबिन्द किहा मैं छड्डया पुरी अनन्द, अनन्द अनन्द विच समाईआ। अग्गे कर के आवां पक्का सन्बंध, खण्डा खड़ग हथ्थ ना कोए उठाईआ। आपणा डंका वजावां जिस वेले सम्मत शहिनशाही आवे पंज, पंजा धुर दा नाम लगाईआ।
१३२३ जन भगतां चाढ़ प्रेम दा रंग, दुरमति मैल दयां धवाईआ। मेरे शब्द दा सदा कसिआ रहिणा तंग, ज़ीन पाखर ना कोए १३२३
२१ बदलाईआ। नाम दा वजदा रहिणा मृदँग, डग्गा सके ना कोए बदलाईआ। दूती दुश्मणां सब दी वढ्ढ देणी कंड, कन्ढ्ढा २१
घाट नज़र किसे ना आईआ। धुर दे नाम ने देणा दंड, डंडावत सब नूं दए समझाईआ। किसे दे कोलों कुछ नहीं लैणा मँग, देवणहार अख्वाईआ। थोड़ा समां जाण दयो लँघ, बहुती वंड ना कोए वंडाईआ। फिरनी दुहाई विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। सम्मत पंज कहे की मैं पंज शहिनशाही, शहिनशाह देणा दृढ़ाईआ। की मैं ओह तेरा दरवेश राही, रहिबर देणा जणाईआ। पुरख अकाल किहा तूं मेरा मैं तेरा इक्को माही, महबूब नूर खुदाईआ। दो जहान विछड़े गुर अवतार पैग़ग्बर विछड़े गोबिन्द तेरी मेरी ना होई जुदाई, वखरा जुज़ ना कोए वंडाईआ। उठ हुण पै जाईए आपणी सलाहीं, मशवरा पिछला रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी सांझी होवे गवाही, शहादत इक्को घर भुगताईआ। गोबिन्द किहा प्रभू पहिलों मैनूं दे वधाई, फेर मैं दस्सां किस बिध चलां तेरी रज़ाई, राज़क़ रहीम ओट तकाईआ। मैं कुछ खेल करना सृष्टी उत्ते हवाई, हव्वा आदम रहे कुरलाईआ। औह वेख लेखा जेहड़ा लिख्या बिना क़लम शाही, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। मैं जाणदा तूं सृष्टी अनक वार ढाही,

अनक वार उपजाई, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। पर हुण मैं दाअवे नाल कहिणा मेरयां भगतां लेखा मँगे कोए नाहीं, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। वसाख कहे मैं लैणा इक्को वसल, वसले यार खुदाईआ। मैं खेल वेखणा असल, असलीअत देणी दृढ़ाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कन्न पकड़ के कहिण दरोही खुदा असीं सच जाणिआ तेरी आदि तों इक्को नसल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। एह दीन मज़हब साडी तेरी छमाही वाली फ़सल, अग्गे होर ना कोए वधाईआ। असीं सारयां खाधी तेरी क़सम, सुगंद तेरा नाम जणाईआ। बौहड़ी साडे शरीर तन वजूद जेहड़े हो गए भस्म, माटी नज़र कोए ना आईआ। अज्ज वेख्या तेरा नूर नूरे चश्म, जल्वागर तेरी रुशनाईआ। असीं तेरे दवारे आए वसण, सच दुआरा देणा दृढ़ाईआ। तेरी सरनी आए लग्गण, लग मातर देणी मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण गोबिन्द ने इक्ठे कीते झीवर नाई, छींबिआं जोड़ जुड़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण अज्ज तों असां प्रभ तेरी इक्को ओट तकाई, दूजा नाम वंड ना कोए वंडाईआ। तेरी सिखी बण के सद तेरी सेव कमाई, चाकर हो के चाकरी
१३२४ झोली पाईआ। एह दिवस दिहाढ़ा खुशीआं वाला असीं मन्नीए चाँईं चाँईं, चाउ घनेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप १३२४
२१ हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच मनसा पूर कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडा सारयां २१
दा इक्को सहारा, इक्को इक सरनाईआ। तैनूं मन्नीए कल्की अवतारा, अमाम तेरी सरनाईआ। सजदे करीए निमस्कारा, डंडावत विच वड्याईआ। तेरा वेखीए सच दुआरा, जिथ्थे भगत जन बैठे सोभा पाईआ। जिस दा माण होणा विच संसारा, नौ खण्ड पृथ्मी वज्जे वधाईआ। दीनां मज़हबां रहिणा नहीं अन्त अखाड़ा, झगड़ा मिटे कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वसाख आया अज्ज, सम्मत शहिनशाही पंज नाल वड्याईआ। साडा पूरा कर दे हज्ज, हाजत अग्गे रहे ना राईआ। तेरी सृष्टी तेरा जग, जगजीवण दाते तेरी झोली पाईआ। साडी दीनां मज़हबां मिटी हद्द, हदूद अग्गे ना कोए रखाईआ। क़दमबोसी करीए अग्गे वध, चरण कँवल सरनाईआ। तेरे नालों होईए ना कदे अलग, वखरा राह ना कोए चलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाईए छद, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। आपणी शरअ विच्चों आपे कढ्ढ, कढ्ढणहार इक हो आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ज़ंजीर वढ्ढ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। असीं होईए गद गद, खुशीआं विच्चों खुशी बणाईआ। जां तक्कीए विश्व धार तेरी यद्द, नूर नूर विच्चों दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। वसाख

कहे गुर अवतार पैग़म्बरो धर्म दवारे खाओ सुगंद, हल्फ़ धुर दा नाम लओ उठाईआ। इक हुक्म अंदर रहिणा पाबन्द, आपणी आपणी धार ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल दा मँगणा संग, करनी ना कोए वड्याईआ। निरगुण धार मानणा अनन्द, सरगुण मेल ना कोए मिलाईआ। जोत अगम्मी तक्कणा चन्द, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। प्रभ दे नाम तों करना नहीं कोई जंग, शरअ विच ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआर इक सुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं मन्ज़ूर, सीस सर्ब झुकाईआ। इक्को सांझा सब दा हज़ूर, जो हज़रतां दए वड्याईआ। जिस दा अगम्मी नूर, जन्मे कोए ना माईआ। मन्नीए सच दस्तूर, सिर सके ना कोए उठाईआ। गढ़ ना रहे ग़रूर, ग़ुरबत डेरा ढाहीआ। सिर सजदे विच झुके ज़रूर, निउँ निउँ लागे पाईंआ। वड्याई रहे ना कोए कोहतूर, जल्वागर इक गुसाईंआ। जिस दा नाम क़लमा कर के आए मशहूर, मशवरा धुर दे नाल पकाईआ। जो सब दे पार कराए दीनां मज़हबां वाले बेड़े पूर, पूरन आसा वेख वखाईआ। वेखो हुक्म मन्नण विच होइओ ना कोए मजबूर, मजबूरी रहिण कोए ना पाईआ। जिस नाम कलमे तों पवाया फ़तूर, दीन दुनी लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सुल्तान इक सरनाईआ। वसाख कहे विसर ना जाइओ कन्त, जो देवे माण वड्याईआ। जिस दी किरपा बिना कोई बण नहीं सकदा सन्त, सूफ़ी मिले ना कोए वड्याईआ। बिना मेहर तों लेखे लग्गे ना जपया मंत, मंतव हल ना कोए कराईआ। जिस ने सब दा कीता अन्त, अन्तश्करन वेखे लोकाईआ। जन भगतो तुसीं बोध अगाधे पंडत, जिन्हां भेव ल्या प्रभ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तुहानूं सचखण्ड दुआर दे बणा के महंत, सच दुआर दए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा इक वखाईआ। वसाख कहे गोबिन्द पिआया अमृत जल, खण्डे धार वड्याईआ। पुरख अबिनाशी किरपा कीती प्रबल, बली बलवान होया सहाईआ। जन भगतो जिस नूं तारन लग्गिआं घड़ी ना लगदा पल, पलक दे अंदर पार कराईआ। तुसीं ओस दे ओस ने तुहाडा दुआर ल्या मल्ल, अग्गे फ़र्क रिहा ना राईआ। ओह आत्मा ते तुसीं पंज तत काया माटी खल्ल, दोहां दा मिल के बणया निहचल धाम अटल, घर विच घर वज्जी वधाईआ। तुसीं ऐथे वेखो किथ्थों आया चल, निहचल आपणा फेरा पाईआ। तुसीं अजे नहीं होए ते ओह हो गया तुहाडे वल्ल, वलवले सारे दयो कढ्ढाईआ। तुहानूं प्यार कीता सतिकार कीता एतबार कीता विहार कीता दीन दुनियां नाल कीता छल, अछल छलधारी आपणी कार कमाईआ। जिस दा नूर ओसे दी जोत नाल जाओ हुण बल, अन्ध अन्धेरा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ। वसाख

कहे मैं तक्कां केहड़ी नुक्करे, बौहड़ी मेरी दुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर एथे उतरे, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण चारे कुण्ट वेख वखाईआ। सुहञ्जणी होए रुतड़े, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। जिधर वेखां ओधर भगतां नूं कहे आउ मेरे पुत्तरे, पिता पूत गोद सुहाईआ। वेख्यो कदे बण ना जाइओ नाशुकरे, शुकरीआ कहि के खुशी मनाईआ। जिस ने जन्म जन्म दे कर्म करम दे मेट देणे दुखड़े, दर्दां डेरा ढाहीआ। हुण ते तुसीं प्रभ दा दरस करदे फेर दुनियां ने तुहाडे तकणे मुखड़े, हथ्थ मथ्थयां उत्ते टिकाईआ। प्रभू दे हुक्म कदे ना रुकदे, रोकण वाला नज़र कोए ना आईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैग़म्बर झुकदे, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जन भगतो तुहाडे लेखे लगदे इक्को नाल तुक दे, ढोला सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। वसाख कहे मैं की खेल वेखदा निआरी, निआंकार की जणाईआ। सावधान रहिणा पंजे लिखारी, हुक्म संदेसा इक दृढ़ाईआ। पता नहीं केहड़े वेले मापयां नालों तोड़ देवे यारी, सज्जण साक सैण ना कोए बणाईआ। तुसीं प्रभ दे भगत तुहानूं दे देणी मुख्त्यारी, मुफ्त आपणा नाम वरताईआ। एह किसे दी वस्त नहीं उधारी, जो करना सो कर के देणा दरसाईआ। जां साथ रहोगे जां छड्ड जाओगे यारी, कूड़ा याराना ना कोए निभाईआ।

१३२६ जां आ लैण दयो इहो सतारां हाढ़ी, दीन दुनियां दे प्रधानां नूं दयां उठाईआ। एह खेल पहली वारी, जोती जोत सरूप १३२६

२१ हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। वसाख कहे कुछ मैं वी विसर गिआ, सच दयां सुणाईआ। २१

दीन दुनी विच निसल प्या, भुल्लया बेपरवाहीआ। कलयुग दे जाल विच फिसल गिआ, चली ना कोए चतुराईआ। चारे कुण्ट फिरदा रिहा, भज्जिआ वाहो दाहीआ। जेहड़ा गोबिन्द हुक्म किहा, ओह अंदरों दिता कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। वसाख कहे गोबिन्द ने खण्डे नाल पंज वेरां धरती नूं मारी चोभ, नोक दिती खुभाईआ। गुस्से विच किहा नाल रोब, वेखीं किते रौला ना देवीं पाईआ। मैं तेरा हिरदा रिहा सोध, तेरे अंदरों करां सफ़ाईआ। क्यों तूं कलयुग विच मेरे भगत चुकणे गोद, गोदी आपणी लैणे टिकाईआ। मेरे प्रभू ने वेखण आउणा चोज, चोजी आपणा फेरा पाईआ। कमलिए किते करीं हरख ना सोग, एसे कर के तेरी नीहां हेठां बच्चे गया दबाईआ। मेरे सिखां भगतां नूं करना पए कोई ना जोग, तपस्वीआं वाली कार ना कोए कमाईआ। किसे दे उत्ते सुट्टणा पए ना बोझ, जन्म कर्म धर्म दा लेखा प्रभ दी झोली देणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। धरनी रो रो के कम्बी, सहिम सहिम सुणाईआ। गोबिन्द किरपा करीं जे पुरख अकाल आवे ते आवीं नहीं ते बण के ना आवीं डंभी, डंभीआं दी लोड़ रहे ना राईआ। ना सलवार पाईं ना धोती पहनीं ना कछहिरा

पाईं ना तम्बी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। वेखीं दीन मज़हब दी गल्ल कोई ना मन्नीं, मनसा आपणी इक वधाईआ। चार वरनां नाल सांझी करनी कन्नी, कन्ने दा लेखा देणा मुकाईआ। ओस वेले भावें सृष्टी होवे अन्नी, तेरा नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। वसाख कहे गोबिन्द ने तिन्न वेरां भार रख्या उत्ते पब्बां, कमर उपर नूं खिचाईआ। रसना किहा कूड़ी क्रिया दब्बां, फेर बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। जिस वेले जगत मलेछ होवे सभा, सभापती रहिण कोए ना पाईआ। दुनियां भुल्ल जाए आपणा अब्बा, पिता पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। कूड़ी क्रिया वज्जे डग्गा, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। झगड़ा पए नाड़ मास हड्डा, तन वजूद दए गवाहीआ। ओस वेले सति धर्म दा दिसे कोई ना अग्गा, आगू बैठण मुख छुपाईआ। पवित्र रहे कोई ना जगह, थान थनंतर देण दुहाईआ। मैं प्रभ दी चलणा रज़ा, भाणे विच सीस निवाईआ। कोटां विच्चों जन भगतां नूं देणा मज़ा, धुर दा नाम चखाईआ। जे कोई पुच्छण आवे वजह, अगला भेव ना किसे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। वसाख कहे मेरा गोबिन्द आया, खुशीआं नाल वड्याईआ। जिस ने गुरसिख दुलारा जाया, जम्मण वाली पिता माईआ। पुरख अकाला दाई दाया, साची सेव कमाईआ। मेरा सोहणा वक्त सुहाया, सुहञ्जणी खुशी बणाईआ। जन भगतां गोद उठाया, आपणा रंग रंगाईआ। लोक परलोक डंक वजाया, संदेसा ख़बर दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। वसाख कहे जन भगतो हत्थ मारो उत्ते छाती, साहिब सुल्तान इक सरनाईआ। पुरख अकाला मन्नणा कमलापाती, पतिपरमेश्वर धुरदरगाहीआ। सच दुआर दा आदि जुगादी साथी, सगला संग निभाईआ। जीवत मरत करे राखी, एथे ओथे होए सहाईआ। तुहाडी लेखे लावे ज़िंदगी हयाती, जीवण आपणे विच टिकाईआ। तुहाडी गोबिन्द वाली वसाखी, सृष्टी दुक्खां विच कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत बूँद देवे स्वांती, धुर दा रस बिन रसना आप चखाईआ। वसाख कहे मेरी सच सच अरदास, अर्ज़ दयां दृढ़ाईआ। प्रभ दा भगतां अंदर वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जो गोबिन्द गया आख, आख़र ओहो पूर कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दी शाख़, सारे आपणे विच मिलाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। चार वरन इक जमात, इक्को नाम दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे अंदर देवे विश्वास, विशा कूड़ दए गवाईआ।

१३२७
२१

✻ २ वसाख शहिनशाही सम्मत ५ रजनीश जी नाल अमृतसर ✻

बड़ी खुशी होई पहली होई भेंट, अन्तर अन्तर वेख वखाईआ। आत्म धार होवे हेत, परमात्म प्यार मुहब्बत विच वड्याईआ। जोती दरस होवे निज नेत्र नेत, निज नैण जोत नूर रुशनाईआ। जगत विकारा होवे खेत, ममता मोह विकार हँकार रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा अगम्मी खुल्हे भेत, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। सच गृह मन्दिर दिसे दरगाह साची सचखण्ड दुआरा देस, जिथ्थे निरगुण नूर जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। पहिला समां पहिला वक्त, घड़ी वार थित दए गवाहीआ। की अग्गे दशा होणी सृष्टी जगत, दुनिया कायनात की कार कमाईआ। की हुक्म देणा प्रीतम अर्श, पारब्रह्म प्रभ आपणा संदेस जणाईआ। की झगड़ा पैणा उपर धरत, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण देणा दृढ़ाईआ। की अवतार पैग़म्बरां गुरुआं जोती धार कीती शर्त, पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझा यार शब्दी कौल इक़रार बणाईआ। किस बिध माया ममता मोह मिटणी हरस, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहे ना राईआ। किस बिध जीवां जंतां उत्ते साधां सन्तां करना तरस, रहमत हक़ कमाईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया रहे कोई ना गर्ज़, आसा तृष्ना दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। धरनी कहे की अग्गे होणा महारिषी रजनीश, राजनीती समझ किसे ना आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दो जहानां पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर ज़िमीं असमानां करनहारा तफ़तीश, चार वरन अठारां बरन दीन मज़हब ज़ात पाती वेख वखाईआ। की पैगम्बरां कीती तशवीश, वाहिद कलमे विच जणाईआ। की अन्तिम रखी उम्मीद, कलयुग अन्तिम दए दुहाईआ। बिना महापुरुष सन्तां तों करे ना कोए तस्दीक़, शहादत वाला नज़र कोए ना आईआ। किस दी शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी करदी गई उम्मीद, आसा तृष्ना विच वधाईआ। किस ने अन्त अख़ीर पिछली कीती उत्ते मारनी लीक, सतिजुग सच्चा सच धर्म समझाईआ। दीन दुनी अन्तर निरंतर निराकार निरँकार निरवैर हो के बदल देवे नीत, नीतीवान आपणा रंग रंगाईआ । मानव मानव मानव इक दूजे नाल करन प्रीत, इन्सान इन्सान इन्सान मिल के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा रंग इक रंगाईआ। महारिषी जी किस बिध अंदर खुल्ल्हे ताकी, पूजा पाठ सिमरन जोग अभ्यास दी लोड़ रहे ना राईआ। किस बिध अमृत जाम मिले साकी, भर प्याला निझर धार दए प्याईआ। कवण दुआर निरगुण नूर जोत होए प्रकाशी, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। कवण गृह लेखा मुके पवण स्वासी, साह साह ना कोए वड्याईआ। कवण दुआरा जिथ्थे अगम्मी पए रासी, सुरती शब्दी

गोपी काहन आपणा रूप बदलाईआ। कवण मन्दिर जिथ्थे मिले नाथ अनाथी, दीन दयाल ठाकर प्रभ आपणा घर वखाईआ। कवण रास्ता कवण बरास्ता कवण सज्जण कवण साथी, सचखण्ड दुआर दरगाह साची दए पुचाईआ। कोटन कोटि शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी अक्खरां विच सिफ्तां विच धुर दी महिमा रहे आखी, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोल्यां विच गाईआ। की खेल होणा अग्गे झगड़ा पैणा लोकमाती, धरनी धरत धवल आपणी धार वखाईआ। सच दस्सणा किस मंज़ल उत्ते मिले महबूब जिस नूं कहिंदे पुरख अबिनाशी, जन्म मरन मरन जन्म विच कदे ना आईआ। तुहाडा हथ्थ कहे मैं लग्गा उत्ते बाज़ू, उँगली अंगूठे नाल मिलाईआ। एह हथ्थ ओह जिस कोल सच दा तराज़ू, नाम कंडा इक वखाईआ। किस बिध दीन दुनी अंदरों बणे साधू, साधना सच विच वड्याईआ। इक सरनाई इक प्यार इक मुहब्बत इक इष्ट विच लागू, देव स्वामी इक्को सोभा पाईआ। कवण बिन जगत नैणां निज नेत्र सोया जागू, जागरत जोत बिन वरन गोत वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी बोधी जैनी सब दा अग्गे केहड़ा बणना आगू, जो हुक्म धुर संदेसा नाम कलमा सृष्टी दृष्टी अंदर इष्टी हो के दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा एकँकारा विच संसारा इक्को इक वखाईआ।

✻ १० वसाख शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल माझा संगत ✻

नारद कहे वाह पुरख समर्थे, समरथ तेरी बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी तैनूं रगड़दे रहे मथ्थे, इट्टां पत्थरां उत्ते घसाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी तेरा गावे जसे, सिफ्त सालाह विच वड्याईआ। सति सरूप तेरा किसे ना वखाया प्रतख रूप अक्खे, लोचण मिले ना कोए वड्याईआ। मेरी अन्तर आसा हस्से, खुशीआं विच खुशी मनाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर होए हक़े बक्के, हैरानी विच ध्यान लगाईआ। जिथ्थे किसे दा कोई चारा नहीं चलदा वस्से, ताक़त विच ना कोए चतुराईआ। ओथे साहिब स्वामी अन्तरजामी जन भगतां पैज रखे, रखक हो के वेख वखाईआ। प्रेम दी धार विच प्रेमी फिरन नस्से, भज्जण वाहो दाहीआ। विष्नूं फिरे पैर दब्बे, हौली हौली क़दम उठाईआ। एह खेल बणदा कदे कदे, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग राह तकाईआ। बिना प्रभू तों बाकी सारे करदे दगे, सदा सचखण्ड दुआर ना कोए पहुंचाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर इक नाम जपे, सन्त सिफ्ती ढोले गाईआ। नारद कहे मैं चार कुण्ट दह दिशा तक्कया जग मेदनी तपे, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। मोह विकार विच मती बणदे मते, बुद्धी मिले ना कोए वड्याईआ। सति

धर्म दी रही कोई ना सते, सति सतिवाद ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। नारद कहे प्रभ बरस दे अमृत मेहों, अगम्मी धार वहाईआ। आत्म परमात्म बणा नेहों, भगत भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। झगड़ा मुका दे साढे तिन्न हथ्थ सेउँ, सीआं कम्म किसे ना आईआ। मेहरवान महबूब सच खुदा देउ, देवत सुर सीस निवाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी एका देवी देउ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं हैरान हो गया तूं सब दा इक्को पिउ, पिता पुरख अकाल तेरी शरनाईआ। तेरे भगत तेरी संगत ख़ातर सच प्यार दा कटण गेहूं, गंदम तेरा नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं वेखदा रिहा जोश, जोशीले गुरमुख नज़री आईआ। मैनूं आपणी भुल्ल गई होश, मेरी चली ना कोए चतुराईआ। मैं तिन्न वारी हो के अलोप, प्रभ चरणां सीस निवाईआ। फेर वेखे जा के हज़रत ईसा वाले पोप, चर्चां विच जा के ध्यान लगाईआ। फेर मुल्लां शेखां कीती खोज, मुसायकां फोल फुलाईआ। फेर ग्रन्थी तक्के नाल चोज, माया ममता विच हल्काईआ। जां भगतां कोल आया उन्हां मैनूं किहा कणक वढ्ढणी साडा जोग, इस तों वड्डी भगती नज़र कोए ना आईआ। जिस नूं भगत भगवान दा मिल के लगदा अमृत भोग, मास बरख दिवस आपणी ख़ुशी मनाईआ। रसना सुणया इक सलोक, तूं मेरा मैं तेरा ढोला अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। नारद कहे मैं पुच्छया कोलों दातरी, की दाता दया कमाईआ। उस हस्स के किहा एथे नहीं कोई चातरी, वड्डी जगत ना कोए वड्याईआ। जिस प्यार विच आए दिवस रात्री, गुरमुख बच्चे चाँईं चाँईंआ। ओस दा लेखा कोई समझे ना विद्या वाला शास्त्री, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। दातरी किहा नारदा एन्हां कोई पढ़ना नहीं मन्त्र गायत्री, गऊआं सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा मेल मिलाईआ। दातरी कहे मेरा इक इक्क दन्दा, दन्दासे वाल्यां दए रुलाईआ। जन भगतां दे अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। बिन बन्दगीउँ बणा के बन्दा, बंधन चुरासी वाले कटाईआ। सुणा के धुर दा छन्दा, ढोला अगम्म अथाहीआ। सच दुआर दा दस्स के कन्ढा, पत्तन इक्को इक वखाईआ। जिस दा लेख मिलदा नहीं विच ब्रह्मण्डां, मण्डलां विच फेरा कोए ना पाईआ। सो दीन दयाल बण बख़्शंदा, बख़्शिश आप कमाईआ। नारद कहे प्रभ प्रेम विच नहाउणा कोटन इश्नान नालों चंगा, गंगा जमना गोदावरी सुरस्ती सब निव निव लागण पाईंआ। दन्दा कहे मेरे नाल ना कर दंगा, प्रभ ने चुरासी छुडा जम की फ़ासी रस्से सारे देणे तुड़ाईआ। सच दुआर हरिजन लँघा, मंज़ल

आपणी पन्ध मुकाईआ। जिस दा गृह मन्दिर सदा ठंडा, अगनी तत ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। नारद कहे मैं विच्चों चला गया मदीने मक्के, मक़बरिआं विच ध्यान लगाईआ। पैग़ग्बर वेखे हक़े बक्के, मुहम्मद हैरानी विच सुणाईआ। मेरी उम्मत हलकाई होई माया अगन तपे, सांतक सति ना कोए कराईआ। हिरदे हरि कोई ना जपे, परवरदिगार सीस ना कोए झुकाईआ। धर्म दी धार ना दिसण सके, ईमान अमल ना कोए वड्याईआ। जिधर वेखां सारे मूँह दे भार ढठ्ठे, बलहीण देण दुहाईआ। जां भगतां वेख्या सारे कहिण असीं अजे नहीं थक्के, थकावट विच ना कोए रखाईआ। मैं फिर के उच्चे टिल्ले तक्के, मन्दिरां विच फेरा पाईआ। अवतारो किथ्थे तुहाडे नाम पटे, पर्दा देणा उठाईआ। आपणे आपणे वखाओ पटे, पिछले सब दे लहिणे देणे चुकाईआ। सारे कहिण एह खेल पुरख समर्थे, साहिब हथ्थ वड्याईआ। जो भगतां पैज रखे, मेहर नज़र नाल तराईआ। दस वसाख सच प्रीती विच रत्ते, रतन अमोलक हीरे लए बणाईआ। सच नाम दे ला के मते, मेहर मुहब्बत विच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां हिरदे वस्से, वास्ता सद आपणे नाल रखाईआ।

❊ २१ वसाख शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

ज़खना ज़ू कोजे चा ज़ाना शी मोवीज़े वा खाने जीह जाकूले ला मनहेज़ी शाह वीते वा दाज़ह मीवीं नज़ूल तुअस विज़ने का चाज़ू विज़ निवाज़े अज़ मोज़ूज़े ख़ुदा ख़ादमे इस वज़ीउल उज़ज़ नाज़लते दुआ मारफ़ते मुनसफ़ अली ज़वस जूनिसते ज़गाह मनजूके ज़ाना कविज़रिन याज़िलले रैहनमे लाइसते अवा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। तानूज़े इबारत, मज़ीनाए भारत, फ़रिश्ताए शरारत, गुज़शताए निज़ारत, काना जिखने मन विसची चोज़ूके मुहम्मदे नज़ी, ऐली कज़ी, मदीने मदी, काअबा कलिज़, रोशनाने इज़, बावास्ते वज़ू, हज़रते वजूह, क़ुदरते क्यामत, रहमते सलामत, सभा ऊल शमम नाज़ीने क़लम सीना सन कज़ूह, क़ुराने ममनूअ, मज़ीदे तलूअ, तालबे अज़ीम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल कराईआ। मुहम्मदे लुग़ात, शानीने अलज़ात, तलफ्फज़े कताब, हाफ़ज़े आदाब, हुसैन हसन, मोज़ूने जशन, काअबे कुलम्ब, मदीने मुजंद, हज़रते फ़रज़ंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक वरताईआ। ज़ाकरे जुलक, हुसैने उरफ़, मुविज़े

कुरस, शहिज़ाने तुरक, मुमताज़े खुर्द, गोबिन्दे गुज़ीने गुरद, चक्षू चवीह, हज़ूरे नवीह, राष्टरे तवीह, भारते मजीह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी कार कमाईआ। इक्की वसाख कहे मैं पाउण आया इक्की, एकँकार दिती वड्याईआ। ज़ाकर हुसैन औरंगे दा सिपाही गोबिन्द दे चरणां दी मँगी सिखी, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। उँगल नाल आपणी छाती उत्ते रमज़ान महीने विच लिखदा रिहा चिट्ठी, मुख़ातब गोबिन्द इक कराईआ। सूरत नैणां विच रहे टिकी, अक्ख प्रतख वल लगाईआ। अन्त अख़ीर इक्की वसाख सुहञ्जणी मिती, गोबिन्द नूं मित्र कर के अन्तर ल्या ध्याईआ। मैं निक्का ते मेरी आसा निक्की, औरंगे अग्गे मेरी चले ना कोए चतुराईआ। पंज वार धरती तों ख़ाक लै के आपणे सीस विच सुट्टी, मुखों किहा गोबिन्द तेरी चरण धूढ़ नज़री आईआ। फेर मक्के वल पिठ दे गोबिन्द वल लाई टिक्की, टिकटिकी आपणे अंदर जमाईआ। झट धार नज़र आई चिट्टी, चिट्टे बाज़ां वाला सोभा पाईआ। उस रो के पंज वार सजदा कीता हत्थ धरया उत्ते गिच्ची, थापी पुश्त पनाह लगाईआ। उस झट सज्जे चरण दी फड़ के चीची, मुख विच लई दबाईआ। नाले किहा गोबिन्द मैं वेखां तेरे गुरमुखां दी बाग़ीची, बूटे सोहणे नज़री आईआ। मेरी आयू अजे बहुती नहीं बीती, जे हुक्म देवें औरंगे दा सीस दयां कटाईआ। गोबिन्द ने किहा एह मेरी नहीं नीती, मैं नीतीवान धुर दा माहीआ। सब ने पाउणी आपणी कीती, लेखा सब दा दयां चुकाईआ। उस फेर किहा वट्ट के कचीची, मैं चौहन्दा मुग़लां दी जड़ दयां उखड़ाईआ। गोबिन्द किहा नज़र कर नीची, चरणां वल्ल ध्यान टिकाईआ। निगाह मारी गोबिन्द किहा तेरी उस प्रभू नाल लग्गे प्रीती, जो प्रीतम होवे धुर दा साईंआ। साचा हुक्म सुण हदीसी, हज़रतां तों परे दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सिपाही दा नाम सी असग़र, उला कहि के सर्ब जणाईआ। सोहणा जवान बांका हुंदा सी विच लशकर, उमर तेई साल लिखाईआ। गोबिन्द दे सद वेखदा सी पीले वस्त्र, अक्खां मीट ध्यान लगाईआ। इक दिन आपणे मस्तक विच मार के नशतर, खून दिता वगाईआ। गोबिन्द मेरी रत नाल रंग लै आपणे शस्त्र, मेरे खून दा मज़मून लै बणाईआ। गोबिन्द ने हुक्म दिता सी पेशतर, सहज नाल समझाईआ। जिस वेले मैं आवां अमामां अमामे वेस कर, अवल्लड़ा वेस वटाईआ। तैनूं एसे भारत दा नरेश कर, दर्शन देवां चाँईं चाँईंआ। अगला समां वक्त दा वेट कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। गोबिन्द लाई थापी पनाह पुश्त, पुश्त पनाह दया कमाईआ। जन्म दा कर्म कर के दरुस्त, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। माण वड्याई बख्श के उरस, धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। जीवण जगत विच कर के चुस्त, बुद्धिवान

१३३२ २१

बुध्ध नाल समझाईआ। जिस माण मिल्या भारत विच मुलक, मालक दिती माण वड्याईआ। एस तों अग्गे बहुत कुछ हो जाणा उलट्ट, एह वी गोबिन्द दी बेपरवाहीआ। तेग़ दे बदले खड़कणे बुलट्ट, बुल्लां वाला सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। ज़ाकर हुसैन तेरा पिछला लेखा पूरा, प्रभ पूरन दिता कराईआ। बचन होण नहीं दिता अधूरा, आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। पिच्छे दर्शन दे के ज़रूरा, क़र्ज़ा आया चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। तेरी अन्तर चिठ्ठी दे थाँ भेजी चिठ्ठी, चिठ्ठी नाल वड्याईआ। लेखा रख्या नहीं पत्थर इट्टी, पर्बत टिल्ले ना कोए चतुराईआ। शब्द दी धार जाण के चिट्टी, सच दिती वड्याईआ। तृप्त नूं एस कर के किहा तूं आ के लिख्त लिखीं, एह उस समें तेरी भैण तूं एस दा भाईआ। क्यों अन्त समें इस ने गल्ल पुच्छी सी निक्की, निक्की जिही आख सुणाईआ। तूं क्यों मँगदा गोबिन्द दी सिखी, की उस दे विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। असग़र किहा मेरी हमशीरा नवाज़ू, सच दयां जणाईआ। मैं जदों वेखदा गोबिन्द दे हथ्थ विच तराज़ू, दीन मज़हब दी वंड ना कोए वंडाईआ। गुरमुखां दे सिर ते रख हथ्थ सरहाणे थल्ले रखे बाज़ू, खुशीआं नाल लटाईआ। मेरी इक्को बेनन्ती इक्को आरज़ू, अर्ज़ दयां जणाईआ। कोई बचन ना कीता फ़ालतू, वायदे नाल लिखवाईआ। ओह मालक अदल दा ज़ुंमेवार अदालतू, अदम तशदद् ना कोए वड्याईआ। उस दी सदा वखरी चाल हू, हू नाअरा हक़ सुणाईआ। भैण ने काअबे वल्ल कर के मूँह, सजदा सीस झुकाईआ। ओस हस्स के किहा वक्त दा मालक इक्को सतिगुरु, मैनूं गोबिन्द नज़री आईआ। जिस ने सतिजुग करना शुरु, शरअ दा लेखा देणा मुकाईआ। भैण ने किहा की कलमा फ़ुरू, सच देणा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। असग़र ने किहा असीं भैण भ्रा कुँवारे, शरअ कलमा दयां समझाईआ। जिस वेले गोबिन्द आया दुबारे, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। ओस ने किहा वीर मैं अक्खर लिख लवां दो चारे, किते चेता भुल्ल ना जाईआ। भ्रा ने किहा उह मालक इसतिग़फ़ारे, गहर गम्भीर अख्वाईआ। ओह कदे नहीं भुल्लया जुग चारे, लेखा सब दा दए मुकाईआ। ओस वेले औरंगे दा लशकर खड़ा सी सतिलुज दे उरले किनारे, हद्द दोआबा चरण रखाईआ। एसे कर के चार दिन पहिलों हुक्म संदेसे दिते अपारे, फ़रमाना इक जणाईआ। वार वार लिख्या तृप्त तूं चल के आउणा भगत दवारे, इक्की वसाख दा दिन ते मिले माण वड्याईआ। कुछ अगला लेखा सुणो पहली जेठ नूं पैर कर लैणे नीले ते काले, बिन्दीआं मस्तक विच लगाईआ। किउँ पंज जेठ नूं मक्के मदीने दर्शन देणे सारे, अलीआं दा अली हो के नज़री आईआ। एह खेल अगम्म अपारे,

अलख अगोचर आपणी दया कमाईआ। दोआबे वाल्यो तुहाथों सदके तुहाथों वारे, जिन्हां वेले नाल आपणी वारी लई भुगताईआ। तुहानूं नहीं सी पता गोबिन्द नूं पता सी दिते लारे, पिछला लहिणा सदा आपणे विच छुपाईआ। तुसीं वड्डे छोटे बुढ्ढे नढ्ढे इक्को मंज़ल चाढ़े, जिथों चढ़या उतर कोए ना आईआ। वेख्यो खेल सतारां हाढ़े, हरिजू आपणा हुक्म वरताईआ। शब्द संदेसे जाणे प्रधानां सारे, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। हुण आउणा विच अखाड़े, बिना खड़ग खण्डे तों सारे लैणे लड़ाईआ। एह जगत दे खेल संसार दे वणज तुहाडे नाल कटे दिहाढ़े, दिहाढ़ी दी क़ीमत सब नूं दयां चुकाईआ। जिस गोबिन्द ने आपणे घर उजाड़े, गुरमुखां दे दिते वसाईआ। भगतो गुरमुखो तुसीं नहीं लग्गदे माढ़े, सोहणे सुचज्जे सोभा पाईआ। मैनूं भावें सारे सुटो विच चिक्कड़ गारे, फिर वी हस्स के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। इक्की वसाख कहे सुणो दोआबे वाले लाल, बच्चयो तुहानूं मिले माण वड्याईआ। तुहाडी ख़ातर खेल कीता कमाल, आपणा हुक्म वरताईआ। जेहड़ा शाह तों बणया सी कंगाल, ओह शाह तों ख़ाक विच मिलाईआ। चार दिन पहिलों ज़रूर दर्शन दिता सी हो के दयाल, सूरत वखा के सूरत फेर लुकाईआ। जोती जोत सरूप

१३३४ हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा १३३४

लहिणा देणा रखे संभाल, सम्बल बैठा आपणी कार कमाईआ।

२१ २१

❋ २२ वसाख शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

मुहम्मद तेरा कलमा किथ्थे ज़ीना, सीढ़ी ज़ेब कोए ना पाईआ। तेरा नूर किथ्थे नगीना, निआमत क्यामत होए सहाईआ। तेरा प्यार किथ्थे नर मदीना, मुज़क्कर मुअन्नस इक्को रंग रंगाईआ। तेरा किथ्थे ई रमज़ान महीना, रोज़ा राज़क रहीम समझाईआ। तेरा किथ्थे मक्का मदीना, काअबा क़बरां तों परे सोभा पाईआ। तेरा किथ्थे ई नूर उत्ते ज़मीना, ख़ाक पाक कौण कराईआ। तेरा आदाब किथ्थे ठांडा करे सीना, अगनी अग्ग ना कोए जलाईआ। तेरा खुदा क्यों बणया कमीना, मँगता दरवेश रूप अलाहीआ। मुहम्मद आउण लग्गा पसीना, भय विच थरथराईआ। बौहड़ी तेरे हुक्म मैथों सब कुछ छीना, छलनी मैनूं दिता कराईआ। मुश्किल होया मेरी उम्मत दा जीणा, ज़ामनी अग्गे ना कोए बणाईआ। आबेहयात किसे ना पीणा, पीर पैग़ग्बर मुख भवाईआ। माण रिहा ना जल मीना, जगत क्रिया कूड़ दुहाईआ। नज़र किसे ना आए रहीमा, रहमत रहम ना कोए कमाईआ। खेल रिहा ना अक्खरां वाली मीमां, मीम मुल्ला ना कोए वड्याईआ। हक़ रिहा ना लोक तीना, परलोक

ना कोए वड्याईआ। तेरा नाम किसे ना चीना, चीन वाले देण गवाहीआ। मैं सेवक तेरा मस्कीना, ख़ादम सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सोभा पाईआ। मुहम्मद कहे मेरे मालक मैं तेरा मातलोक दा ताजर, सेवा हक़ कमाईआ। बरदा ग़ुलाम आजज़, निम्रता विच सीस निवाईआ। वड्याई रही ना कोई लिआक़त, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। हक़ रिहा ना कोए वरासत, मलकीअत मुलक ना कोए बणाईआ। कलमे दी चले ना कोए सफ़ारश, सफ़ा सके ना कोए उठाईआ। तेरा खेल विच भारत, भरम अंदर रहे ना राईआ। हक़ ख़ुदा तेरी मेहर तेरी शरअ वाली शरारत, शरीर सानूं दिता बणाईआ। असीं रहे नहीं किसे दे वारस, विरसा संग ना कोए रखाईआ। अग्गे करदे नहीं कोई सफ़ारश, सफ़ा सारे आए बदलाईआ। मेरे काअबे कर मारच, मक्का मदीना तेरा राह तकाईआ। शब्दी घोड़ा तेरा हारस, हर हिरदा वेख वखाईआ। मैं कराउण वाला तुआरफ़, मुरीदां मुर्शद हो जणाईआ। तेरे कलमे दी लैंदा रिहा आड़्त, धड़वाई हो के तोला बणया चाँईं चाँईंआ। झट प्रगट हो के आ गया नारद, नाद राग ढोले रिहा सुणाईआ। मुहम्मद जी किथ्थे तुहाडी चार यारी वाली गारद, गरदश वेखो लोकाईआ। हुण तुहानूं देणा पैणा चारज, चारज सब ते दिता लगाईआ। तुहाडी करनी होणी ख़ारज, ख़ारजा पालीसी प्रभ ने देणी बदलाईआ। इक्को दीन दुनी दा बणना जारज, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी खेल खिलाईआ। मुहम्मद कहे मेरे ख़ुदा मैं तेरा ख़ादम ख़ुदी नज़र कोए ना आईआ। मैं वेखां आदम तेरा आलम, आदम पर्दा देणा उठाईआ। तेरे नाम दा समझया ना कोए महातम, पर्दा पर्दा ना कोए उठाईआ। की जलवा तेरा बातन, बतौर देणा समझाईआ। झट नारद किहा मैनूं कर लैण दे दातण, मुख आपणा साफ़ कराईआ। फेर लेखा लग्गा वाचण, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। जां तक्कया सदी चौधवीं सब दा सब कुछ लग्गा गवाचण, मसला असला हथ्थ किसे ना आईआ। इक्को नाम लग्गा वाचण, तूं ही तूं ही ढोला गाईआ। नाले होका देवे एह परम पुरख पुरातन, पुरीआं लोआं दा मालक नूर अलाहीआ। जिस दा खेल पृथ्मी आकाशण, कासिआं वाल्यां दए खपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आया वाचण, वाचक हो के विच्चला लेखा वेख वखाईआ।

❋ २३ वसाख शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

खेल करे श्री भगवान, हरि करता बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी हो प्रधान, सद सद आपणा हुक्म वरताईआ। करनी दा करता वाली दो जहान, निरगुण सरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। शब्दी धार बणा विधान, हुक्म धुर दा इक उपजाईआ। जन भगतां कर परवान, परवाने आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाला होए ना कदे मुहताज, आशा जीव जंत ना कोए रखाईआ। धुर दरगाह आपणा आप चलाए राज, हुक्म हुक्म विच जणाईआ। किसे सहारे करे ना कोए काज, सहाइता मँगण कदे ना जाईआ। जद चाहे जुग चौकड़ी बदल देवे समाज, बेपरवाह बेपरवाही विच समाईआ। जिथ्थे नहीं कोई सवाल जवाब, जवाब तल्बी ना कोए कराईआ। सदा भगतां नूं देवे इक्को जिहा ख़ताब, वड्डा छोटा ना कोए रखाईआ। साचा बण के धुर दा बाप, पिता पुरख अकाल गोद टिकाईआ। जुग चौकड़ी पूरा कर के वाक्, भविख्त भाख्या लेखे लाईआ। नाता तोड़ के जगत साक, सज्जण इक्को होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल तक्के ना कोए सहारा, ओट जगत ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी करनेहारा, करनी आपणी कार कमाईआ। निरगुण धार करे खेल अपारा, सरगुण मेला सहज सुभाईआ। जिस आपणा रूप बदलया दुबारा, दोहरी कार कमाईआ। ओह लेखा चुकावे पंज प्यारा, पंजां दे पंज अवर लए उपजाईआ। गुरमुख सिँघ पहली जेठ आउणा नहीं विच भगत दुआरा, संदेसा मिले धुरदरगाहीआ। अजीत सिँघ क़दम ना टिकाए जो रहे विच बटाला, भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। नाज़र सिँघ अगले हुक्म तक रहिणा नाल त्यारा, त्रैगुण अतीता आप दृढ़ाईआ। जो कुछ करे सो करनेहारा, सहायता संग ना कोए बणाईआ। इक इकल्ला एकँकारा, आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार वड्याईआ। सतिगुर नूं दिती नहीं किसे दात, खोहण वाला नज़र कोए ना आईआ। भावें सारे छड्ड जाण साथ, इक इकल्ला सोभा पाईआ। फ़तवा देण वाल्यां दी रहिण नहीं देणी जमात, सच दवारे टिकण कोए ना पाईआ। मैं मालक कायनात, दीन दुनी वाला अख्वाईआ। मैनूं लिखण दी वी जाच, लिखारी दी लोड़ ना कोए वखाईआ। मैं नन्हयां बच्चयां नूं दे के आपणा प्रकाश, नूर नूर दयां चमकाईआ। ओह सिख नहीं जेहड़ा गुरु दा मँगे घात, सतिगुर मरन वाला सतिगुर ना कदे अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मेला लए मिलाईआ। प्रभ आपणी किरपा नाल बणाए भगत, जिस नूं चाहे दए वड्याईआ। भावें शोर पाओ विच सारे जगत,

उच्ची कूको दयो दुहाईआ। मेरी धार विच पैणा नहीं कोई फ़रक़, फ़िकरा सच दा दए सुणाईआ। मेरी गोबिन्द नाल शर्त, शरअ दे लेखे देणे बदलाईआ। मैं मालक वाली अर्श, दो जहानां आपणा खेल खिलाईआ।जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणी कार कमाईआ। साची कार करे करतार, क़ुदरत दा मालक इक अख्वाईआ। जिस तरह भारत दी बदल जाणी सरकार, एसे तरह नवां विधान देणा बदलाईआ। अग्गे वास्ते मेरे चरणां विच रह के करे ना कोए हँकार, जिस वेले चाहवां ख़ाक विच दयां मिलाईआ। मेरी किरपा नाल एन्हां दा हुंदा सतिकार, मेरे बिना कोई गुरसिख एन्हां दा दर्शन कदे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल सब कुछ करने योग, युगती पुच्छण कदे ना जाईआ। जिस दा प्रभ दे नाल संजोग, उस नूं सहजे लैणा मिलाईआ। जिस दे चरणां हेठां चौदां लोक, की ओहनूं लओ समझाईआ। गुर गद्दी दी किसे नूं मिलणी नहीं मोख, मथ्थे तिलक ना किसे लगाईआ। भावें सारे छड्ड जाओ मैनूं फिर वी नहीं कोई सोग, गद्दी दा मालक इक्को नज़री आईआ। प्रभ दे हुक्म नूं सके ना कोई रोक, ज़ोर आपणा आपणा सब ने लैणा लगाईआ। तुहाडे नालों प्रभ दी
१३३७ ज़िआदा सोच, बुद्धिहीण बुध्ध ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। १३३७
२१ जन भगतो गोबिन्द दी गद्दी चले दस पुश्त, सिख आस ना कोए रखाईआ। सब कुछ कर के जाणा दरुस्त, दीन दुनी दा मालक आपणा हुक्म वरताईआ। मैं तुहाडे सारयां नालों चुस्त, मेरे अग्गे चालाकी चले ना कोए चतुराईआ। गोबिन्द २१
दे बच्चयां दी हथ्थ धरना उत्ते पुश्त, एह मेरी बेपरवाहीआ। दोआबे वाल्यो तुहाडा अंगूठा लवाया अंगुशत, कि गोबिन्द दा लेखा कीड़ी नाल चलया आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। की कल कल्की जाणा मर, सच दयो जणाईआ। जिस नूं सतिगुर दे मरन दा डर, ओह हुणे पल्लू जाओ छुडाईआ। ओह आपे होर घाड़न लऊ घड़, जो लख चुरासी आपणा रंग रंगाईआ। जिस दी चोटी ओसे दी जड़, एह अगम्मी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब किछ करनी रिहा कर, करता आपणी कार कमाईआ।

❊ २८ वसाख शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सम्मत पंज कहे मैं लाउण आया पंजा, पंचम परपंच वेख वखाईआ। लेखा जानण आया जो संदेसा दे के गया संजा, कृष्ण पांडव नाल दृढ़ाईआ। परदा खोलॣण आया जो शब्द सुणया गुर अर्जन जिस दिन हरिमन्दिर गुरु ग्रन्थ दा डाहिआ मंजा,

१३३८
२१

मजलस गुरसिखां नाल बणाईआ। भेत खोलूण आया किस बिध माधो नूं गोबिन्द बणाया बन्दा, बन्दगी आपणी इक जणाईआ। आखण आया सतिगुर सरन रहे कोई ना गंदा, जगत विकार ना कोए रखाईआ। जणाउण आया पुरख अकाल कोल इक्को अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। दृढ़ाउण आया आत्म परमात्म धुर दा छन्दा, मुछन्दगी अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। सम्मत पंज कहे सतिगुर शब्द सदा निरलेप, दुरमति मैल ना कोए रखाईआ। जिस दा लेखा दस्स सके ना कोए संखेप, संकट विच सारे रहे कुरलाईआ। बिना सतिगुर तों दिसे कोई ना नेक, नेकी बदी हथ्थ किसे ना आईआ। सो सतिगुर जो आदि जुगादि धारे भेख, जुग चौकड़ी आपणा वेस वटाईआ। जिस गोबिन्द दे लेखे लाए बेट, पिता पूत आपणी गोद सुहाईआ। सो लहिणा देणा देवे धुर दे सम्बल देस, दिशा आपणी डेरा लाईआ। जगत बुद्धी होए ना कोए विशेष, विषयां तों बाहर नज़र कोए ना आईआ। जिस कारण अजीत सिँघ होया पेश, सन्मुख हो के मँग मँगाईआ। तूं मालक इक नरेश, नर नरायण तेरी सरनाईआ। जीवां चले ना कोए पेश, पेशीनगोई समझ किसे ना आईआ। तूं वसा के आपणे सचखण्ड देस, सच दवारे काया बंक इक सुहाईआ। जो जामा धर के भेख, जन्म मरन दा झगड़ा दिता मुकाईआ। आदि तों अन्त दा सतिगुर बण के एक, मध्ध दा लेखा दिता मुकाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर तेरी टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। साचे नाम दी चलदे रहे सेध, इधर उधर क़दम ना कोए टिकाईआ । जिस सतिगुर दा भेव पा ना सकण वेद कतेब, शास्त्र सिमरत खाणी बाणी ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंचम सम्मत कहे मैं कूड़ी क्रिया करनी समाप्त, शब्द गुरु शब्द शब्द अख्वाईआ। बिना सतिगुर शब्द तों होण नहीं देणा किसे परमात्म, बंदयां वरगा बन्दा, पूरन परमेश्वर दस्सणा सब दा पिता माईआ। जिस दे हथ्थ लख चुरासी दा जिंदा, साध सन्त सके ना कोए खुलूाईआ। जिस नूं चाहे आप मेहर किरपा नाल सेवा दिन्दा, करन वाला नज़र कोए ना आईआ। सतिगुरु दी चार जुग कर ना सकण निंदा, निन्दिआ जाण वाला सतिगुर कम्म किसे ना आईआ। जिस सतिगुरु दी लख चुरासी धार बिन्दा, वृंदावन वाले बैठे सीस निवाईआ। जिस नूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव सुरप्त इंदा, इंदरासण सिँघासण मुन जन सीस झुकाईआ। सो मालक आप नाम दी वस्त जिस नूं चाहे ओसे नूं देंदा, शरीक नज़र कोए ना आईआ। बिना सतिगुर किरपा तों गुरमुख लोकमात कोए नहीं ज़िंदा, साल बरखां वाली आयू कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे पहली जेठ प्रभ पैर करने काले नीले, चरण

चरण नाल बदलाईआ। जिस दे आदि जुगादि सारे जगत वसीले, हीले आपणे नाल बणाईआ। सो खेल करे उपर ज़मीने, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। जिस ने माण मिटाउणा जल मीने, हरिजन धुर दे रंग रंगाईआ। माण गवा के लोक तीने, त्रैलोकी तों परे खेल खिलाईआ। जे गुरमुख सिँघ ने आउणा जेठ महीने, पहली जेठ आपणा पन्ध मुकाईआ। पंज वेरां सोहँ लिख के लाउणा आपणे उपर सीने, छाती कमलापाती वेख वखाईआ। अगला लेखा बुद्धी नाल कोई ना चीने, अक़ल नाल ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ । गुरमुख सिँघ पंज वार सोहँ लिख्या होवे उपर छाती, छत्रधारी वेख वखाईआ। नाल हथ्थ विच फड़ी होवे इक दाती, दन्दे पुट्ठे पासे कढ्ढाईआ। सज्जे गुट उत्ते नीले रंग दी बद्धी होवे टाकी, टके पंज नाल रखाईआ। नाल लै के आउणी निक्की जिही पुराणी बाटी, वड्डी छोटी ना कोए समझाईआ। फेर दस्सां की सतारां हाढ़ होणी साखी, साख्यात दयां जणाईआ। पंजां लिखारीआं आपणे कोल रखणी क़लम दवाती, क़ीमत आपणे नाल लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कदे ना होवे विश्वास घाती, विशा विशेष विश्व दा आपणे विच छुपाईआ।

✻ २६ वसाख शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

झाड़ू कहे मैं गुरमुखां अंदरों दुरमति मैल देणी झाड़, सतिगुर शब्द देवे वड्याईआ। माया ममता मोह विकार हँकार मेटणी धाढ़, धड़ा कूड़ देणा गवाईआ। हुक्म संदेसा मिलणा सतारां हाढ़, प्रधान प्रधानां दए हिलाईआ। खेल तक्कणा जंगल जूह उजाड़ पहाड़, टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। सृष्टी दृष्टी इष्टी पाउणी सार, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। करे खेल सच्ची सरकार, हरि करता धुरदरगाहीआ। जिस नूं झुकदे गुरु अवतार, पैग़म्बर सजदयां सीस निवाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकार, इक इकल्ला आपणी कार कमाईआ। जन भगतां बण के सेवादार, जुग जुग साची सेव कमाईआ। जिस कारण अज्ज दा विवहार, सो लहिणा दए दृढ़ाईआ। मुक्ख रख कपूर सिँघ बराड़, काया काअबा खोज खुजाईआ। दूई द्वैती दी रहिण ना देवे दराड़, पर्दा अंदरों दए चुकाईआ। सच प्रेम दा बख्श प्यार, प्रीतम आपणा रंग वखाईआ। नाल सन्त सुहेले मीत मुरार, वेखे चाँईं चाँईंआ। जे सन्त समागम करना विच संसार, पहिलां अंदर सब ने करनी सफ़ाईआ। झाड़ू कहे मैं एसे कर के मंज़ल चढ़या सच्ची सरकार, तख्त उत्ते आपणा आसण लाईआ। जिस वेले तुसीं मोगे तों चले सो बाहर,

पहिले मील उत्ते मन आपणा ध्यान लगाईआ। ओस वेले खेल कीता अपार, आपणी कला आप भुगताईआ। झाड़ू फेरया भगतां दे दुआर, कूड़ी क्रिया कीती सफ़ाईआ। नीचां दा नीच चण्डालां दा चण्डाल बण के होया सेवादार, सेवा आपणी सच जणाईआ। मँग के खाधा टुकड़े दयो दो चार, आपणी खुशी बणाईआ। सिख्या देण लई एह सब नूं कीता इशार, इशारे नाल जणाईआ। जे सन्त बणना अंदरों कढ्ढो माण हँकार, विकार विशा ना कोए रखाईआ। जगत वाला नहीं कोई तकरार, झगड़ा कूड़ ना कोए लोकाईआ। तुसीं प्रेम नाल आए तुहाडे आउण तों पहिले पाई सार, सतिगुर शब्द आपणी कार कमाईआ। एह झाड़ू सब नूं करे ख़बरदार, सोया मात लोक रहिण कोए ना पाईआ। सन्त बिना पुरख अकाल तों होए नहीं किसे दे गिरफ्तार, जगत वरंट कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच करनी कार कमाईआ। झाड़ू कहे मैं दीन दुनी दा वेखणा झगड़ा, चार कुण्ट दह दिशा फोल फुलाईआ। वरनां बरनां लग्गणा रगड़ा, दीन दुनी दए दुहाईआ। किसे नूं भेत नहीं अगला, की करता कल वरताईआ। शाह सुल्तान फिरना विच जंगलां, प्रधानां मिले ना कोए वड्याईआ। जगत साधूआं कूड़ी वेखणी रंगणा, रंगत अन्तर फोल फुलाईआ। प्रभ दा सन्त सदा नूरी चन्दना, चन्द नूर जोत रुशनाईआ। जिस दी इक्को दवारे बन्दना, बन्दगी सीस जगदीश सजदा धुरदरगाहीआ।
१३४० जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। झाड़ू कहे मैं कूड़ी १३४०
२१ क्रिया करदा साफ़, सुथरे दयां बणाईआ। मेरा साहिब सतिगुर कोट जन्म दे पापीआं करे मुआफ़, मेहर नज़र इक उठाईआ। २१
आत्म परमात्म जणावे साक, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। घर स्वामी खोल्ह के ताक, पर्दा अंदरों दए उठाईआ। शब्द अगम्मी दे आवाज़, सोई सुरत लए जगाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। अन्तर बाहर गुप्त ज़ाहर रखे साथ, सगला संग निभाईआ। दर्शन देवे साख्यात, स्वच्छ सरूपी सोभा पाईआ। गुरमुखां लेखे ला सुहञ्जणी रात, भिन्नड़ी देवे माण वड्याईआ। मनमति रहे ना नार कमज़ात, कुलखणी कूड़ देवे मिटाईआ। धुर संदेसा दे के वाक्, वाकिफ़कार लए कराईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा सदा प्रताप, परम पुरख बेपरवाहीआ। सब दा सांझा दस्से जाप, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। तन वजूद माटी ख़ाक कर के पाक, पतित पुनीत दए कराईआ। भगत भगवान दा मेल हुंदा नाल इतफाक, जुग चौकड़ी शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी दए गवाहीआ। सति दा सच नाल विश्वास, विशा विश्व दा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार सरनाईआ। झाड़ू कहे मैनूं किहो ना कोए पलीत, कूड़ क्रिया ना कोए जणाईआ। मैं सति दी दस्सणी रीत, जो अंदर

बाहर करे सफ़ाईआ। झगड़ा मुका के मन्दिर मसीत, काया काअबे इक रुशनाईआ। त्रैगुण तों हो अतीत, त्रैभवन धनी बैठा सोभा पाईआ। जन भगतां आसा मनसा पूरी कर उम्मीद, आलस तृष्ना दए गवाईआ। सति धार दी दस्स तमहीद, तमअ तमन्ना वेख वखाईआ। गुरमुखां दी हर समें करे उडीक, वेला वक्त वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। झाड़ू कहे मैं दस्सां सृष्टी वाले सन्त, सन्त सति बेपरवाहीआ। जिस दा मेला आदि अन्त, जुग चौकड़ी विछड़ कदे ना जाईआ। एथे ओथे बण के कन्त, कन्त कन्तूहल सेज सुहाईआ। साचा चाढ़ के रंग बसन्त, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों अगला लेखा दए जणाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक दरसाईआ। गुरमुखो सदा करनी आप हिम्मत, हौसला प्रेम वाला वधाईआ। सन्त समागम विच रहे कोई ना चिन्त, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। भावें सारी सृष्टी बण जाए निन्दक, दृष्टी विच इष्ट रखो बेपरवाहीआ। सटेज दा मुख रखणा चढ़दी पहाड़ वाली सिम्मत, दोहां दा अध्ध वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच करनी कार कमाईआ। झाड़ू कहे सन्त समागम विच जे सन्तां नूं फेरना पै गया झाड़ू, करे सच सफ़ाईआ। फेर ओथे शेख़ी कौण मारू, आसण गद्दीआं उत्ते टिकाईआ। मन हँकार अन्तर हारू,
१३४१ जो हिरदे हरि भुलाईआ। जेहड़े सन्त जगत दे तारू, तारनहार दी ओट तकाईआ। ओह सारे ख़ुशीआं विच मारन नाअरू, १३४१
२१ गीत गावण थाईं थाईंआ। सटेज कोल गिआरां सिख रखयो पाहरू, रीती सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, २१
आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। झाड़ू कहे मैं इस वास्ते आया, तुहानूं दयां सुणाईआ। सन्तां अंदर अजे कलयुग वाली माया, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। मैं कूक दयां दुहाया, दरोही बौहड़ी कर सुणाईआ। पहलों सारयां दे अंदर करयो सफ़ाया, विकार हँकार ना कोए रखाईआ। इक्को रूप इक्को रंग इक्को नूर जो हर घट बैठा डेरा लाया, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा विशा विशेष विश्व विच उपजाया, विषयां वाला समझ कोए ना पाईआ। जिस ने विष्न ब्रह्मा शिव महेष महिखासर सेव लगाया, गुर अवतार पैग़ंबर झाड़ू बरदार लए बणाया, सो गुरमुखां दे अंदर करे आप सफ़ाईआ। श्री भगवान श्री सर वेख वखाया, जिस कारण गुरमुख गुरमुख चल के आया, आपणा पन्ध मुकाईआ। तिस दा लहिणा देणा पूरब झोली पाया, पिछली कीती सफ़ाईआ। झाड़ू कहे जो झाड़ू नाल हरिभगत दवारे जिस सेव कमाया, तिस नूं बन्दगी वाले सारे सीस निवाईआ। एह मार्ग अगम्म अथाहिआ, अलख अगोचर दिता चलाईआ। जिस नूं मेट सके ना कोए शहिनशाहिआ, शाह पातशाह आपणी कार भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त एका नूर जोत रुशनाया, गुर अवतार पैग़ंबर निरगुण सरगुण आपणी खेल खिलाईआ।

❊ पहली जेठ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सम्मत पंज कहे चढ़या जेठ महीना, मीना जल वेख वखाईआ। कलयुग रोवे कूड़ कमीना, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दुहाईआ। जन भगतां ठांडा करे सीना, सीना साहिब वेख वखाईआ। खेले खेल मक्का मदीना, माधव आपणी कार कमाईआ। लेखा जाणे रूसा चीना, चिन्ता सब नूं आप रखाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरला सन्त लभ्भे नग़ीना, नर निरँकार दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़ंबरां आउण लग्गा पसीना, पेशानी उत्ते हथ्थ टिकाईआ। की हुक्म मिले नवीना, नव नौ चार कार कमाईआ। खेले खेल ख़लक रहीमा, रहमान आपणा वेस वटाईआ। जिस ने सब दी बदल देणी तालीमा, सिख्या धुर दी इक दृढ़ाईआ। करे खेल आलीशान अज़ीमा, आज़म आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दी याद करदे रहे क़दीमा, क़ुदरत दा मालक नूर अलाहीआ। सो सब दा वेखे मरना जीणा, लख चुरासी खोज खुजाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल करे अधीना, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। सम्मत पंज कहे मेरा आ गया जेठ प्यारा, मीता इक अख्वाईआ। जिस ने बोलणा इक जैकारा, जगत जहान देणा सुणाईआ। प्रगट होया चवीआं अवतारा, पर्दा उहला रहे ना राईआ। जिस दा खेल जगत तों निआरा, नर नरायण आप कराईआ। सजदे करन गुरु अवतारा, पैग़ंबर सीस निवाईआ। जो गोबिन्द धार बदल दुबारा, दो जहानां वेख वखाईआ। शब्दी हुक्म इक इशारा, आलीशान कार कमाईआ। लेखा जाणे जगत ग़द्दारा, गदागर फोल फुलाईआ। इक्को नूर जोत दे चमत्कारा, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार कमाईआ। जिस दा लहिणा देणा काग़ज़ क़लम ना लिखणहारा, कातब चले ना कोए चतुराईआ। जिस दा राह तकदे जुग चौकड़ी विच संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी खेल खिलाईआ। सम्मत पंज कहे मेरा जेठ प्यारा संगी, सज्जण सच सुणाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी इक अनन्दी, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। ओह खेले खेल विच वरभण्डी, ब्रह्मण्डी पर्दा लाहीआ। जिस दी याद विच गोबिन्द चमकाई चण्डी, चण्डालां कर सफ़ाईआ। सो साहिब सूरा सरबंगी, शहिनशाह आपणा खेल वखाईआ। दीनां मज़हबां तोड़ पाबन्दी,

१३४२ २१

पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव खुलाईआ। धुर संदेसा दे के शब्द जणाए अगम्म छन्दी, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। शब्दी सतिगुर योद्धा सूरबीर इक्को जंगी, जगत जहान करे लड़ाईआ। नाम नगारा वजा मृदँगी, मर्द मर्दाना लए उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी साचा मार्ग करे सिध्धी डंडी, डंडावत इक्को इक समझाईआ। माया ममता मोह विकारी रहिण देवे ना कोए घमंडी, हउमे हंगता वेख वखाईआ। जिस दे कोल चार जुग दी संधी, सनद सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप खिलाईआ। सम्मत कहे मैनूं जेठ उत्ते भरोसा, यकीन इक जणाईआ। जिस ने संभालिआ आपणा मौका, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। गोबिन्द दा पूरा कर के ढईए वाला ढौंका, ढोल मृदँग दिता वजाईआ। सच दवारे आ के पहुंचा, जिथ्थे मिले माण वड्याईआ। उच्ची कूक सुणाए हरिभगत कदे ना जाए औंता, सौत प्रभ दे नाल बणाईआ। जिस दा पुरख अकाल इक्को ख़ौंता, सो लख चुरासी आत्म नारी लए हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सम्मत पंज कहे मेरा जेठ अगम्म निराला मित्र, मित्रो दयां जणाईआ। जिस नूं साहिब स्वामी गया ना विसर, जुग चौकड़ी याद ना कोए भुलाईआ। जिस दिन गोबिन्द ने बाज़ कोलों तुड़ाया सी तित्तर, पहली जेठ वक्त सुहाईआ। तित्तर दी आत्मा तन वजूद विच्चों निकल, गोबिन्द चरणां सीस निवाईआ।
१३४३ मैं तेरा नूर कोई विकार धार नहीं पितल, पिता पुरख अकाल देणा मिलाईआ। गोबिन्द वेख के ओस दी शकल, शिकवा अंदरों दिता कढ्ढाईआ। पिठ ते हथ्थ मारया बिना तत तों तेरी बदल देवां अक़ल, अक़ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। जिस वेले मैं जामा धार आवां बदल, बदला तेरा दयां चुकाईआ। तैनूं कोई कर ना सके क़तल, छुरी करद ना कोए उठाईआ। तूं बहिणा ओस प्रभू दे पत्तन, जिथ्थे बैठा धुरदरगाहीआ। तैनूं करना पए कोई ना यत्न, यथार्थ आपे लवां मिलाईआ। ओह खुशीआं नाल लग्गा हस्सण, हस्स के दिता सुणाईआ। मैं जाणदा गोबिन्द सदा गुरसिख तेरे नाल वसण, तेरा संग बणाईआ। ज़रा मेरे वल कर ला अक्खन, तेरा दर्शन लवां पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द तक्कया नैण उघाड़ी, आपणी दया कमाईआ। तित्तर आत्मा निउँ के करी निमस्कारी, छूह छूह लागी पाईंआ। हस्स के किहा गोबिन्द मैं पुरख कि नारी, मैनूं दे समझाईआ। गोबिन्द किहा तेरा जोत नूर निरँकारी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ओस रो के किहा मैं चौहन्दा तेरी सेवा करां अपारी, अपरम्पर दे वड्याईआ। मेरे अन्तर निरंतर तेरे प्यार दी होवे यारी, याराना अवर ना कोए लगाईआ। गोबिन्द खण्डा खिच्च के तिक्खी वखाई धारी, मुट्ठी धरनी उत्ते टिकाईआ। ओस खुशी विच किहा मेरी गरदन कट दे सारी, सर तेरे अग्गे झुकाईआ। क्यों बाज़ां कोलों कराएं खुआरी,

मास चुंजां नाल तुड़ाईआ। गोबिन्द फड़ के गोद ल्या उठाली, नूर नूर विच चमकाईआ। तैनूं माण वड्याई देवां बाहली, बाज़ां वाला आख सुणाईआ। जिस वेले कलयुग होवे रात अन्धेरी काली, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। तित्तर ने किहा की ओस वेले आपणयां गुरसिखां करें रखवाली, आपे होएं सहाईआ। गोबिन्द किहा मेरा पुरख अकाल होवे बाग़ दा माली, मैं सेवक सेवा सच कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। तित्तर कहे मेरी अगम्मी भाखा, बिन रसना रस जणाईआ। तेरा दासी दासा, सेवक सेवक रूप वटाईआ। गोबिन्द कहे मैं मन्ना तेरा आखा, आख़र दयां जणाईआ। तेरे प्यार पिच्छे सारी संगत दा बणां राखा, कौल इक़रार तेरा पूर कराईआ। तित्तर ने किहा मेरी निगाह पै गई विच मक्का काअबा, मदीने मुद्दा वेख वखाईआ। गोबिन्द ने झट बदल के पासा, हुक्म दिता सुणाईआ। मेरा नूर जोत प्रभू प्रकाशा, शब्दी धार गुरु वड्याईआ। सब दा लहिणा देणा पूर कराए हिसाबा, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। तेरा लेख मुकावां सम्मत शहिनशाही पंज जा के विच दोआबा, दोहरी धार प्रगटाईआ। पंजां लिखारीआं होणा साथा, क़लम गोबिन्द वाली चलाईआ। नाल रलाउणा सुरजीत सिँघ काका, रणजीत कौर जिस दी माईआ। अग्गे तों बदल जाणा पासा, परदा भेव दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे साचे जेठ मैं तैथों वारी, वारता दिती जणाईआ। करे खेल आप निरँकारी, निरवैर धुरदरगाहीआ। मक्का मदीना पावे सारी, पेशीनगोई सब दी पूर कराईआ। दर्शन देवे नूर उज्यारी, पर्दा आप चुकाईआ। लेखा जाणे जगत इशतिहारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। शहिनशाही सम्मत पंज कहे पंज जेठ अमृत वेला होवे पंज, पंजां लिखारीआं मिले वड्याईआ। लाल सिँघ ने सिर तों नंगा रखणा गंज, पगड़ी सीस ना कोए टिकाईआ। सारी संगत ने उँगलीआं रखणीआं उपर दन्द, दन्दां हेठ दबाईआ। फेर बाहर लैणीआं कढ्ढ, नेत्र चरणां उत्ते टिकाईआ। फेर सब ने गाउणा सोहँ छन्द, ढोला अगम्म अथाहीआ। फेर मुख कर के बन्द, नैणां नीर देणा वहाईआ। फेर गोबिन्द तकणा चन्द, जिस दा जलवा नूर अलाहीआ। फेर पिच्छा दे के कर लैणी कंड, मुख सारे लैण बदलाईआ। फेर उच्ची कूक के पाउणी डंड, तेरी मेरी होई जुदाईआ। फेर पंज क़दम अग्गे नूं करना पन्ध, क़दम क़दम नाल उठाईआ। फेर इक दूजे नाल कन्नी लैणी गंढ्ढ, पल्लू पल्लू नाल जुड़ाईआ। फेर इक इक्क लाची इक दूजे नूं देणी वंड, साचा सगन बणाईआ। फेर आपणे मूँह विच सब ने पाउणी थोड़ी थोड़ी खण्ड, रस रसना नाल चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे लाल सिँघ दा सिर होणा नंगा,

सोहणा रूप बणाईआ। सब ने वारी वारी उस दे उत्ते लाउणा पंजा, सज्जे हथ्थ नाल वड्याईआ। फेर रसना गाउणा सोहँ छन्दा, ढोला कूक सुणाईआ। फेर मालवे वाल्यां लिआउणा इक कंघा, सीस भेंट देणा कराईआ। फेर लाल सिँघ खलोणा इक टंगा, भार इक्को उत्ते रखाईआ। फेर मँगणी इक मँगा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मुखों कहिणा सतिगुरु तेरे नालों तेरा गुरमुख चंगा, जिस दे पिच्छे तूं मातलोक फेरा पाईआ। तेरा समझे ना कोई भेख पखण्डा, तेरी बेपरवाहीआ। बिन तेरी किरपा चढ़े ना कोई मंज़ल डंडा, डंडावत करन कोए ना आईआ। बेशक तूं तत्तां वाला बन्दा, वजूद जगत विच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे जेठ कुछ याद कर लै कीता कौल इक़रार, इक़रारनामा दयां वखाईआ। जिस दा चार जुग हुंदा रिहा तकरार, झगड़ा झगड़े विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा करदे रहे इज़हार, सिफ्तां विच सालाहीआ। जिस नूं कहिंदे रहे निरँकार, परवरदिगार नूर इलाहीआ। जिस दीआं आसां मनसां रखदे रहे विच संसार, लोकमात ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साची कार कमाईआ। जेठ कहे सुण सम्मत पंज, पंच दयां जणाईआ। सतिगुर शब्द दा शुरु होणा जंग, तरफ़ सिम्मत समझ कोए ना पाईआ। अनोखा निराला करना ढंग, तरीका अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
१३४५ कर, सच खेल आप खिलाईआ। जेठ कहे सुण मित्र यार, पंचम दयां जणाईआ। की कहिण गुर अवतार, पैग़म्बर की १३४५
२१ सुणाईआ। कुछ भेव खोल्ह अपार, अपरम्पर इक दृढ़ाईआ। की करनी करता करे करतार, क़ुदरत दा मालक कार कमाईआ। २१
की दीन दुनी नालों होवे ग़द्दार, गदागर वेस वटाईआ। की सब दा चुका देवे एतबार, बेएतबारी विच दुहाईआ। की सतिगुरु शब्द लख चुरासी भोगे नार, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। जिस दा नूर जिस दा तत जिस दा आकार, साकार रूप दरसाईआ। सो करे कराए करनेहार, करता पुरख वड वड्याईआ। सम्मत पंज दस्स की तेरे विच होणा बिवहार, की तेरी सेवा मात लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सम्मत पंज कहे मैं वेख्या मार ध्यान, अनडिठड़ी अक्ख खुल्हाईआ। मैनूं उपज्या अगम्म ज्ञान, पढ़न दी लोड़ रही ना राईआ। तक्कया श्री भगवान, जोती जाता डगमगाईआ। झुल्लया धर्म निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। तक्कया अनोखा काहन, निरगुण नूर नूर प्रगटाईआ। शब्द संदेसा सुणया बिना कान, अनुरागी राग अलाईआ। मेरी आया ना विच पहचान, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। की करे जगत विद्वान, अक़ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। मैं वेख होया हैरान, हैरानी मेरे अंदर छाईआ। ओह साहिब किरपालू बड़ा दयावान, दीनां बंधप इक अख्वाईआ। जिस नूं चाहे देवे माण, मेहर नज़र इक उठाईआ। उस

दा लेखा जाणे ना कोए इन्सान, गुर अवतार पैग़म्बर समझ कोए ना पाईआ। मैं देवां इक बयान, आशा आपणी इक प्रगटाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल खेल करे महान, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज कहे मेरे प्रभू दा सोहणा होणा दरबार, हाढ़ सतारां सोभा पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड होणे सेवादार, दो जहान भज्जण चाँईं चाँईंआ। पुरी लोअ करन निमस्कार, गगन गगनंतर सीस निवाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर धूढ़ी लावण छार, टिक्के ख़ाक रमाईआ। हुक्म मिले सच्ची सरकार, धुर फ़रमाना अगम्म अथाहीआ। मैं संदेसा देवां सतिजुग दी साची बन्ने धार, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। माण दे के पुरख नार, इक्को रंग दए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साची कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरे अंदर जगदे होण शमादान इक्की, इक्की गुरमुख हत्थ उठाईआ। सब दे मत्थे उत्ते लिखी होवे सिखी, सिख्या अवर ना कोए जणाईआ। सब दी निगाह गोबिन्द उत्ते होवे टिकी, टिकटिकी इक्को इक बंधाईआ। आशा इक्के उत्ते होवे सिट्टी, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। सब दे अंदरों आवाज़ निकले मिट्ठी, तूं मालक धुरदरगाहीआ। मेरी आत्मा तेरे दवारे विकी, क़ीमत अवर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ । १३४६
सम्मत पंज कहे इक्की होण चोबदार, नेज़े हत्थां विच उठाईआ। साचा बोलण इक जैकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ । उन्हां दे कोल होण इशतिहार, जिस दा लेखा जगत ना कोए वड्याईआ। सारे फिरन विच इक कतार, एधर ओधर ना क़दम टिकाईआ। अंदर आशा इक दातार, प्रभ मिलण दी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरी प्रभ दे अग्गे निमस्कारी, निउँ निउँ सीस निवाईआ। जिस दी सदा सदा सिक्दारी, सिर सके ना कोए उठाईआ। चार वरनां करे प्यारी, यारी सब दे नाल रखाईआ। सति धर्म दी कर त्यारी, त्रैगुण अतीता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे संदेसा देवां पंज प्यारे, पंचम विच जणाईआ। तुसां योद्धे सूरबीर बणना विच संसारे, आपणा बल धराईआ। वस्त्र सब दे होणे इक धारे, पीला रंग रंगाईआ । साढे तिन्न हत्थ रस्सी सब ने रखणी आपणे नाले, आपणा साथ बणाईआ। जिस वेले हुक्म मिले आपणे सतिगुर नूं कर लैणा गिरफ्तारे, हत्थकड़ी हत्थां नाल लगाईआ। पंजां ने फिरना विच भगतां वाले अखाड़े, सब नूं देणा वखाईआ। एह पुरख अकाल, एह सतिगुर दयाल, जन भगतो धोखे विच मारे धाड़े, धाड़वी वेस वटाईआ। जिस ने गुर अवतार पैग़म्बरां दे घर उजाड़े, वसदा रहिण कोए ना पाईआ। सब नूं फेरया विच उजाड़े,

गोबिन्द माछूवाड़े सत्थर सेज सुहाईआ। इस तों बदले लै लओ सारे, पिछला लहिणा लओ मुकाईआ। एह खेल अपर अपारे, अपरम्पर स्वामी आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे मैं सच जणावां, भुल्ल कोए ना जाईआ। जिस वेले साहिब सतिगुरु दीआं बद्धीआं होणीआं बाहवां, हथ्थकड़ी तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। फेर गीत खुशी दे गावां, अगला भेव खुल्हाईआ। बाकी सब ने रौला पाउणा वांग कावां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नाले कहिणा एह वेखो निथावां, बिना भगत दवारिउँ घर नज़र कोए ना आईआ। नाले किहो इहदे नाल ल्यो कोई ना लावां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सम्मत पंज कहे फेर मेरे सतिगुर ने कहिणा मैं आपणी किरपा नाल बच्चयां तों छुडा देवां मावां, गुरमुख आपणी गोद बिठाईआ। नाता तोड़ के भैण भ्रावां, रीती अगली इक समझाईआ। जिथ्थे चाहां सिर देवां ठंडीआं छावां, अगनी तत गवाईआ। जिथ्थे चाहां ओथे बहावां, दो जहानां इक्को घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सम्मत पंज कहे सतारां हाढ़ नूं पंज फुट पंज उच्चे बहिण लिखारी, लेखा ज़िमीं असमान तजाईआ। पंजां दा रूप होवे इक सारी, नारी पुरुष ना वंड वंडाईआ। सिर पीली बद्धी होवे दस्तारी, सोहँ मथ्थे उत्ते लटकाईआ। पंज पंज क़लमां दी कर के रखणी त्यारी, त्रैगुण अतीता आप जणाईआ । गोबिन्द ने पंजाबी नूं पंजाब विच लिखाउणा पहली वारी, वारता सब दी देणी बदलाईआ। खेल खेलणी बण खडारी, आप आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पंजां लिखारीआं दा गल क़मीज़ होवे चिट्टा, पजामा चिट्टे नाल वड्याईआ। लाल गाना बद्धा होवे खब्बा गिट्टा, मौली तन्द सोभा पाईआ। सज्जे गुट रुमाल होवे चिट्टा, गंढुां तिन्न नाल बंधाईआ। सब दे कोल आपणी आपणी बेनन्ती दा लिख्या होवे चिठ्ठा, जेबां विच टिकाईआ। सतिगुर सरन होवे विका, क़ीमत जगत वाली गवाईआ। सब दा सांझा होवे हिस्सा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे प्रभू दे पंज होणे दरबारी, तन सोहणा लबास सुहाईआ । पंजे कर के आउण त्यारी, आपणा रंग रंगाईआ। हथ्थ विच होवे नंगी कटारी, नाता कुटम्ब नालों तुड़ाईआ। पूरब लहिणा वेखे उधारी, हरि करता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे पंज दरबारी होणे केहड़े, सम्मत दे जणाईआ। खलोवण किस वेहड़े, धरनी कवण सुहाईआ। मेटण किस बिध झेड़े, झगड़ा कूड़ चुकाईआ। वसणा साचे खेड़े, घर इक बणाईआ। इक दूजे नूं कहिण असीं सारे प्रभू दे चेरे, दूजा रहिण कोए ना पाईआ। जिस

१३४७
२१

मातलोक मारे फेरे, फिरत फिरत खोज खुजाईआ। उह कढ्ढे विच्चों अन्धेरे, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। ओह फिरन चार चुफेरे, आपणी खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंजां दरबारीआं दे लक्क नूं होवे पेटी, पटने वाला गया दृढ़ाईआ। उन्हां विच गुरदर्शन होवे बेटी, जिस दा लहिणा पूरा पूर कराईआ। कपूर सिँघ नाल रलणा छेती, केहर सिँघ पल्लू लैणा गंढ्ढाईआ। मेला सिँघ पिछला भेती, गंढ्ढ आपणी जोड़ जुड़ाईआ। चेला सिँघ दी याद आई नेकी, निक्कयां वड्डयां वेख वखाईआ। गुरमीत सिँघ मिले नाल तेज़ी, तेज़ धार इक चमकाईआ। गुरदर्शन शब्द सुणाउणा पंज अक्खरां वाला विच अंग्रेज़ी, संदेसा सच सच जणाईआ। पहली हाढ़ नूं इन्हां पंजां दी पहली पेशी, पेशीनगोई इक सुणाईआ। अग्गे खेल होणी विदेशी, देश दिशा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे पंज प्रभ दे होणे पुजारी, मस्तक ख़ाक रमाईआ। मल सिँघ कर के आउणा त्यारी, तारा चन्द निशान बणाईआ। अमरीक सिँघ तिन्न रंग दी ला के आउणा धारी, सूहा पीला नीला जोड़ जुड़ाईआ। किशन सिँघ नेत्र नीर वहाउणा ज़ारो ज़ारी, अक्खीआं छहिबर लाईआ। प्रगट सिँघ खुल्ही छड्ड के दाढ़ी, हथ्थ छाती उत्ते टिकाईआ।
१३४८ दयाल सिँघ ने लाउणी ताड़ी, डड्डां वाले मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल १३४८
२१ साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। हाढ़ सतारां कहे पंज बैठे होण मुसाहिब, सालस रूप बणाईआ। जिन्हां विच्चों इक २१
होवे सिँघ अजाइब, गग्गोबूए विच्चों उठाईआ। पिछला लेखा पूरा करना वाहिद, कांशीराम मिले धुर दे माहीआ। अगला हुक्म होणा राइज, गुरनाम सिँघ जोड़ जुड़ाईआ। साचा मिले हुक्म जाइज़, जसवन्त सिँघ जिस्म ज़मीर बदलाईआ। कूड़ी क्रिया करनी ग़ाइब, हरबंस सिँघ विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। हाढ़ सतारां कहे प्रभ दी सोहणी वेखणी सभा, सर्ब सुख वड्याईआ। इक्की गुरमुखां आपणी बदलणी तबा, इक्की बीबीआं नाल रलाईआ। सब ने इक्को मन्नणा अब्बा, इक्को पिता इक्को माईआ। जिस दे हुक्म अंदर दो जहान बध्धा, बन्दगी सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। हाढ़ सतारां कहे पंजां ने रंगे होण नीले पंजे, सज्जे हथ्थ वड्याईआ। जेहड़े गुरमुख जीवण नालों मरन समझण चंगे, चंगी तरहां समझाईआ। इक्को प्रभ दा लैण अनन्दे, रस विच समाईआ। पुज्ज के अख़ीरी कन्ढे, आपणा पत्तन लैण सुहाईआ । मंज़ल चढ़ के डंडे, डंडावत सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं इक खेल वेखणा ख़ास, सब नूं दयां जणाईआ। रात दे बारां वजे प्रभ ने अनोखा लाउणा इजलास, गुरमुख आपणे नाल मिलाईआ।

दस्सणी उह बात, जेहड़ी चार जुग गुर अवतार पैग़म्बर समझ किसे ना आईआ। संदेसा देणा सतिजुग दी रीती दी सिख लओ जाच, याचक आपणे लैणे बणाईआ। इक्को हुक्म ते इक्को बात, बातन पर्दा देणा खुल्हाईआ। सृष्टी दे प्रधानां नूं लिखणा नाल क़लम दवात, क़लमे वाल्यां देणा जगाईआ। उठो वेखो मारो झाक, झाकी इक दरसाईआ। जिस ने सब नूं करना राख, रखक होवे थाउँ थाईंआ। फेर करयो ना कोए पसचाताप, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। सब नूं करना पए इक्को जाप, जगजीवण दाता दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। हाढ़ सतारां कहे सब दे हिरदे विच होवे हिरदा, हिरदा हिरदे विच्चों प्रगटाईआ। जेहड़ा साहिब विछड़िआ चिर दा, चिरी विछुन्ने लए मिलाईआ। गुरमुख प्यार विच दातार होवे फिरदा, फिरत फिरत आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगतां मस्तक तिलक लगाउणा केसर, केशव वेख वखाईआ। हुक्म संदेसा देणा पेशतर, पेशीनगोई इक दृढ़ाईआ। प्रभ दा खेल होणा देश देशांतर, दिशा कूट फोल फुलाईआ। सब ने सतिगुरु मन्नणा नैणी वेख कर, बिन डिड्डुयां सीस ना कोए निवाईआ। गुरु मंनिउँ ना कदे केस सीस धड़, बिना शब्द ना कोए चतुराईआ। जिस दा खेल सदा चोटी जड़, चेतन आपणी कार कमाईआ। जिस विच चाहे ओसे

१३४९ अंदर जाए वड़, आउँदा जांदा नज़र कोए ना आईआ। जेहड़ी विद्या चाहे बिना अक्खरां तों लए पढ़, लिखण पढ़न दी १३४९

२१ लोड़ रहे ना राईआ। ना जन्मे ना जाए मर, मर जीवत ना रूप वटाईआ। जन भगतो गोबिन्द वड्याई मिलणी दस जामे २१

ऐस दर, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। गुरु गद्दी दी आस कोई ना रखयो आपणी कर, करामात हथ्थ किसे ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल तुहानूं सब नूं ल्या वर, धुर दे मालक चरण कँवल दिती सरनाईआ। जिस मंज़ल नूं गुर अवतार पैग़म्बर दस्स के गए प्रभू दा घर, ओह घराना तुहाडा दिता बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे मैं वेखणा ओस साहिब दा राज, जिस नूं राजान सीस निवाईआ। जिस दा मुकट तों बणा के ताज, तख्त निवासी सीस सुहाईआ। चार जुग दा बदल रिवाज, रहमत हक़ कमाईआ। सति दा कर के काज, सच दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेला लए मिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरी अरदास, बन्दना इक जणाईआ। पूरब दी ख्वाहिश, आशा विच दुहाईआ। पंज जेठ सोहणी प्रभात, प्रभाती वेख वखाईआ। गुरमुखो सब ने नहा के होणा साफ़, फेर सभा भगतां बैठणा चाँईं चाँईंआ। किरपा करे प्रभू प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

पहली जेठ कहे क्यों गुरमुख सिँघ सोहँ लिख्या उपर छाती, छत्रधारी दए समझाईआ। इक दिन रविदास नालों विछोड़े वाली प्रभ ने चंगी समझी राती, आपणा आप छुपाईआ। उस ने हस्स के किहा वाह मेरे कमलापाती, तेरी बेपरवाहीआ। तूं चढ़ जा आपणी घाटी, मैं तेरी मंज़ल डेरा लाईआ। धुर दा बण के साथी, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। मेरा झगड़ा नहीं काग़ज़ाती, अक्खरां वाली ना कोए लड़ाईआ। शब्दी धार शब्द समाजी, शब्दी शब्द दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। रविदास किहा मैथों विछड़ के मेरे भूप, की मिली वड्याईआ। किथे कर के ग्यों कूच, आपणा पन्ध मुकाईआ। कि बण के मोहणी रूप, भोले नाथ आया भुलाईआ। कि फिर के चारे कूट, चारे खाणी फोल फुलाईआ। पुरख अकाल किहा मेरा खेल जिस दा देवे ना कोए सबूत, समझ विच किसे ना आईआ। मैं मालक काया कलबूत, लख चुरासी मेरी बणत बणाईआ। रविदास किहा की लेखा पंज भूत, परदा दे उठाईआ। पुरख अकाल किहा ज़रा अक्खां नूट, नेत्र बन्द कराईआ। जां वेख्या ते कलयुग जूठ झूठ, भरमां विच भरमाईआ। बिना प्रभू दी किरपा तों रहे ना कोए सबूत, सपूत नज़र कोए ना आईआ। बिना दया तों रविदासा टुट्टे गंढे ना जाण जूत, चम्म दृष्टी ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप खिलाईआ। रविदास किहा
१३५० वाह मेरे किरपा निधान शब्दी धार शास्त्री, तेरी अकल बुद्धी नज़र कोए ना आईआ। वेख अन्धेरी रात्री, अन्ध अन्धेरा छाईआ। १३५०
२१ पुरख अकाल किहा रविदास कलयुग लहिणा बातनी, भेव कोए ना आईआ। मेरी धार किसे ना वाचणी, वाचक करे ना कोए पढ़ाईआ। पहिलों तैनूं कलयुग चढ़ाउणा उपर सांडनी, नीले रंग वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। फेर प्रभू ने हथ्थ रख्या उपर कंधे, ठकोर के दिता हिलाईआ। कलयुग अन्त प्रभू दा भेव ना पावण बन्दे, बन्दगी वाला समझ कोए ना पाईआ। ओस वेले रविदास तेरे कोलों दातरी नूं कढाउणे पुठ्ठे दन्दे, पुठ्ठी मति बणाईआ। बिन किरपा तों टुट्टी कोए ना गंढे, गंढणहार ना कोए अख्वाईआ। फेर तूं चम्म वेखणे नहीं किसे ढोर संढे, रम्बी आर दे थाँ क़लम देणी चलाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती भगतां दे चरण चुम्मे, निउँ निउँ सीस निवाईआ। मैं सन्त सुहेले ओह लभ्भणे जेहड़े चार जुग दे गुम्मे, लख चुरासी विच्चों फोल फुलाईआ। अमृत रस बणाउणे कामी क्रोधी हँकारी विकारी कौड़े वांग तुंमे, तुख्म तासीर देणा बदलाईआ। रविदास निउँ के चरण चुम्मे, रसना रस चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल इक वखाईआ। रविदास फेर वेख्या उपर नीले असमान, इस्म इक्को नज़री आईआ। जिस दा नीली टाकी इक निशान, सज्जे गुट उत्ते सुहाईआ। गोबिन्द दे के गया बिआन, उच्ची

कूक कूक जणाईआ। जिस वेले कलयुग क्रिया मच्चया घमसान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार लड़ाईआ। बच्या रहे ना कोए जवान, सूरबीर ना कोए अख्वाईआ। प्रगट होए श्री भगवान, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। अमृत गोबिन्द पीण वाले अंदरों होवण बेईमान, सति धर्म ना कोए कमाईआ। ओह पुराणे बाटे दी बाटी सब दा लेखा वेखे विच जहान, जहालत कूड़ी कूड़ चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे मेरी बदल चली आदत, अदली दयां जणाईआ। तेरी समझ के इक इबादत, अदब नाल सीस झुकाईआ। नाम तेरा निआमत, रस अनोखा नज़री आईआ। सदी चौधवीं दिसे क्यामत, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सम्मत पंज कहे जिन्हां भगतां पिच्छे भगत दुआर दा रख्या नाँ, निरँकार दिती वड्याईआ। मनजीत जगदीश दी रणजीत कौर माँ, बेटी प्रभ दी इक वड्याईआ। जिस ने सब नूं दिती थाँ, निथाव्याँ ओट बणाईआ। सब नूं रही समझा, बच्चयां बाल्याँ इक दृढ़ाईआ। एह भूमिका अगम्म गराँ, जिथ्थे मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं मनजीत जगदीश दी करनी शादी, शादिआना इक वजाईआ। जन भगतो तुहाडी वधणी आबादी, प्रभ लेखा लेखे नाल मिलाईआ। कूड़ी सृष्टी दी होणी बरबादी, बन्दगी वाले देण दुहाईआ। जिन्हां दी आत्म सोई जागी, जागरत जोत विच रुशनाईआ। हँस बुद्धी होई कागी, कूड़ कल्पणा डेरा ढाहीआ। सच दुआर होए वडभागी, दरगाह मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतारां हाढ़ कहे रणजीत ने कपड़े पाउणे सूहे, सोहणा रंग रंगाईआ। भगत दुआर दे खुल्ले रखणे बूहे, दरवाज़ा बन्द ना कोए कराईआ। नौ गुरसिख बड़े सुचज्जे पहरेदार होणे सूहे, ख़बर सुणन थाउँ थाईंआ। नौ गुरसिख फिरन भगतां दी विच जूहे, सेवादार आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, रंग इक्को इक रंगाईआ। सतारां हाढ़ कहे संदेसा देवां लीलावन्ती, फ़रमाना इक जणाईआ। हथ्थ विच उठाई होवे मोमबत्ती, लम्मी सवा हथ्थ जणाईआ। केसर होवे नौ रती, वज़न इक्को वार तुलाईआ। सोहँ मस्तक होवे पट्टी, अक्खरां गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे पंज लिखारी आपो आपणी लिखण किताब, दूसर मँग ना कोए मँगाईआ। आपणे आपणे कन्नी सुणन आवाज़, दूसर पुच्छण कोए ना पाईआ। आप आपणा देवण साथ, संगी वल ना ध्यान जणाईआ। साफ़ सुथरे हो के बैठण पाक, कूड़ी क्रिया ना अंदर वसाईआ। इक इक्क कोल रखण चिट्टा

चाक, चाकर आपणा नाउँ धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे सोहँ सब दी लिख्या होवे उपर छाती, शहिनशाह देवे माण वड्याईआ। सारे विकणे प्रभ दी हाटी, नाम कंडे तराजू तोल तुलाईआ। माण रहे ना किसे वड्डी छोटी ज़ाती, चार वरन इक्को रंग रंगाईआ। सतिगुरु दवारे सब दी सांझी होवे हयाती, जीवण वंड ना कोए कराईआ। आत्म परमात्म बणाउणा सच्चा साथी, सगला संग रखाईआ। जेहड़ा सतिगुर दी मन्ने ना आखी, ओस दा लेखा गुरमुखो तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सम्मत पंज कहे प्रभ दा सुणो शब्द नगारा, अगम्म अथाह वजाईआ। जिस दा आदि जुगादी इक दुआरा, दुआरका वासी सीस निवाईआ। जिस नूं आदि अन्त भगत प्यारा, प्रेम प्रीती विच समाईआ। इक्को रंग रंगाए व्याहया कुँवारा, दूसर वंड ना कोए कराईआ। प्रभ दी मंज़ल शब्द गरू दा इशारा, पूजा पाठ ना कोए चतुराईआ। जिस नूं चाहे किरपा कर देवे आप निरँकारा, निरवैर आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतो लेखा सोहणा दस्सां सतारां हाढ़ा, इक सत्त सतारां वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलयुग अन्त चवीआं अवतारा, अवतर आपणा हुक्म वरताईआ।

✻ ५ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ लाल सिँघ दे गृह पिंड हेर ✻

पंज जेठ कहे सुण शहिनशाही पंज सम्मत, समें दी धार समें विच्चों दृढ़ाईआ। हरिजन हरिभगत गुरमुख बणे ना कोए हराम निमक, शब्द संदेसा धुरदरगाहीआ। एह आसा रखी जिस वेले खल्ल लथ्थी तबरेज़ शमश, शमां नूर जोत चमकाईआ। परवरदिगार मारी रमज़, अलाही कलमे नाल दृढ़ाईआ। बुद्धी तों परे दे के समझ, पर्दा पर्दानशीं दिता उठाईआ। तेरी मन्ज़ूर करां अर्ज़, आरज़ू आपणे लेखे लाईआ। पूरा निभावां फ़रज़, फ़रज़ी धार ना कोए वखाईआ। जन भगतां मिलण दी मैनूं होवे गर्ज़, गर्ज़ आपणी इक उपजाईआ। जेहड़ी तेरे अंदर सच प्रेम दी दिती तरज़, सो सोहणी दयां दृढ़ाईआ। करां खेल जगत असचरज, अचरज आपणी कार कमाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, मददगीर ना कोए रखाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटां तशदद्, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। लेखा रहे ना किसे मौलवी सईयद, शरअ शरीअत फोल फुलाईआ। सब दा लेखा लहिणा देणा देवां नक़द, जगत उधार ना कोए वड्याईआ। मैं प्रगट होवां भगतां कारण फ़क़त, फ़िकरा इक्को देणा समझाईआ। पंज जेठ सुहञ्जणा होवे वक्त, थित पल घड़ी मिले वड्याईआ। करां खेल धरनी उत्ते

जगत, जागरत जोत डगमगाईआ। फेर निरगुण धार आवां परत, पतिपरमेश्वर रूप वटाईआ। सब दी पूरी करां शर्त, गुर अवतार पैग़म्बरां लेखा दयां चुकाईआ। लहिणा देणा जाणां उत्ते अर्श, अर्शी हो के पर्दा लाहीआ। जन भगतां देवां आपणा दरस, दरस दीदार इक कराईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते करां तरस, रहमत नाम सच कमाईआ। जन्म जन्म दी मेटां हरस, हवस कूड़ी दयां गवाईआ। गोबिन्द दी पूरी करां शर्त, शहिनशाह हो के फेरा पाईआ। पुठ्ठी सिध्धी कर के नरद, नर नरायण हो के वेख वखाईआ। चारों कुण्ट मेट अन्धेरा गरद, सति सच करां रुशनाईआ। कोझयां कमल्यां वंडां दरद, दर्दी हो के वेख वखाईआ। पूरब जन्म दी वेखां फ़रद, पिछला लेखा आप कढ्ढाईआ। चले धार इक असचरज, अचरज लीला आप बणाईआ। जन भगतां लहिणा मुके बहिश्त स्वर्ग, सचखण्ड साचे मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे पंचम शहिनशाही सम्मत दी धार, धरनी धरत धवल दृढ़ाईआ। प्रभ दा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर कहिण कोए ना पाईआ। सब दी पैज रिहा संवार, जुग जुग वेखे चाँईं चाँईंआ। करनी दा करता क़ुदरत दा आधार, अंदर उदर वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी लै अवतार, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ।
१३५३ शब्द अगम्मी करे गुफ्तार, बिन अक्खरां राग अलाईआ। तख्त निवासी हो उज्यार, नूरो नूर करे रुशनाईआ। सो साहिब १३५३
स्वामी होया ख़बरदार, बेख़बरां ख़बर सुणाईआ। सन्त सुहेले मीत मुरार, भगत भगवन्त लए जुड़ाईआ। इक्ठे हो इक
२१ दरबार, दर दरवाज़ा कुण्डा लाहीआ । कर दरस अगम्म अपार, निरगुण जोत डगमगाईआ। जिस दे विष्न ब्रह्मा शिव २१
ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सो पुरख अकाला होवण लग्गा ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। सन्त सुहेले कर त्यार, त्रैभवन धनी दए वड्याईआ। आपणे रख सर्ब अख्त्यार, मुफ्त आपणा नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे शमस ने रखी अगम्मी आसा, आशा इक उपजाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाशा, जुग चौकड़ी समझ कोए ना पाईआ। तूं आदि जुगादी दयावान दाता, दीन दयाल तेरी वड्याईआ। तेरा मूल ना किसे पछाता, पर्दा सक्कया ना कोए उठाईआ। सिफ्तां वाली गा गा गाथा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी दिती उपजाईआ। चार कुण्ट दह दिशा कलयुग कूड़ी क्रिया मारे हाकां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बन्द कवाड़ी खुल्ले किसे ना ताका, बजर कपाटी पर्दा ना कोए चुकाईआ। प्रभू प्रीती जुड़े कोई ना नाता, सगला संग ना कोए बणाईआ। राए धर्म दा फोले कोई ना खाता, जन्म कर्म दा लहिणा ना कोए चुकाईआ। परवरदिगार मन्न आया आखा, आख़र आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंज जेठ कहे पंजवां शहिनशाही सम्मत बोल अगम्मा राग, अनरागी दे जणाईआ। कूड़ी क्रिया दे त्याग, त्रैगुण ममता डेरा ढाहीआ। सच दवारे बण सज्जण साक, मित्र इक्को वेख वखाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग सच्चा चन्द चमकाईआ। निरगुण नूर होवे प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। शमस कहे मेरी आशा तेरा लेखा लिखण जन भगत नाल क़लम दवात, दुआ खुद खुदा अग्गे कराईआ। सिफ्ती धार चले काग़ज़ात, कागद क़लम मिले वड्याईआ। तेरा तेरे नालों रहे ना कोए नाराज़, ग़मी ग़मखार देणी गंवाईआ। अंदरों पर्दा खोल्ह के राज़, उहला देणा चुकाईआ। तेरे चरणां होवे हक़ीक़ी नमाज़, सजदा सीस जगदीश निवाईआ। खेल वेखे मण्डल आकाश, धरनी धरत धवल ध्यान लगाईआ। हैरानी विच जन भगत दसे उँगलां मुख विच पा के रोक आपणा स्वास, साह साह तेरी सरनाईआ। बाहर कढु के चरणां उपर मारन झाक, झलक तेरी नज़री आईआ। एह बदन माटी ख़ाक, तन शरीर कूड़ लोकाईआ। चारों कुण्ट लग्गी आग, त्रैगुण सके ना कोए बुझाईआ। परवरदिगार पूरा करना वाक्, क्या तेरे हथ्थ वड्याईआ। साचे भगतां बणाउणी इक जमात, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। जिधर तक्कां तेरा होवे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। साहिब सतिगुर वसणा साथ, विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। गुरमुखां पिट्ठ दे के देणा जवाब, रसना जिह्वा नाल हिलाईआ। एह गोबिन्द लिख के गया हिसाब, बिन अक्खरां अक्खर लिखाईआ। दरज कर गोबिन्द पुरख अकाल वाली किताब, कुतबख़ाने ना कोए जणाईआ। ओस दा लेखा होवे बेबाक, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतां गंढु पवाई धर्म दा धर्म बणाया साक, कर्म दा कर्म दिता बदलाईआ। भगतां कोलों भगतां ल्या प्रशाद, लाची लाची नाल बदलाईआ। मिट्ठा मुख कर स्वाद, सोहणा रस ल्या चखाईआ। सजदा सीस कर आदाब, नमस्ते डंडावत इक समझाईआ। रूह बुत कर के पाक, पतित पुनीत दए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंज जेठ कहे सम्मत शहिनशाही पंज दा वेखो रुतबा, रुस्तम देवे माण वड्याईआ। लेखा रहे ना किसे कुतबा, क़ुदरत क़ादर दया कमाईआ। जिस नूं उडीकदयां लँघ गईआं मुद्दतां, जुग चौकड़ी राह तकाईआ। जिस दा लेखा गोबिन्द नाल अनन्दपुर दा, पुरीआं लोआं खोज खुजाईआ। ओह मालक ख़ालक धुर दा, दरगाह साची सोभा पाईआ। खेल दस्से सच्चे सतिगुर दा, जो सतिगुर जन्म मरन विच कदे ना आईआ। शौह दरया कदे नहीं रुढ़दा, मढ़ी गोर ना कोए टिकाईआ। जिस दा मन्त्र इक्को फ़ुरना फुरदा, मन कल्पणा दए गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साची कार कमाईआ। शमस कहे लाल सिँघ ने सीस रख्या नंगा, ओढन उपर ना कोए टिकाईआ।

मालवे वाल्यां दिता कंघा, गोबिन्द गंढु पवाईआ। खलो के इक टंगा, पिछला लहिणा याद कराईआ। किथ्थे तेरा खड़ग खण्डा, तरकश तीर कमान नज़र कोए ना आईआ। की खेल करें सूरे सरबंगा, सगली आपणी कार कमाईआ। किस कूटे पावें दंगा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सम्मत पंज कहे पंचम जेठ वेख अगम्म मिलावा, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। सब दा इक्को जिहा दाअवा, बिरध बाल ना वंड वंडाईआ। सच दवारे इक्को नावां, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। सब दा तराज़ू कर के सावां, शाह कंगालां इक्को दर टिकाईआ। साचा मेला कर के भगत भरावां, धुर दा संग दिता जणाईआ। अगला खेल वेखणा नाल चावां, चाउ घनेरा दिता दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे सुण शहिनशाही सम्मत मीत, मित्रा दयां जणाईआ। प्रभ चलाउणी इक रीत, रीती पिछली देणी तजाईआ। सृष्टी रसना जिह्वा गाउणा गीत, ढोले गोबिन्द वाले दृढ़ाईआ। किसे दी आसा पूरी ना होवे उम्मीद, मनसा मन ही विच रखाईआ। बिना शब्द तों करे ना कोए ताकीद, धुर दा हुक्म ना कोए दृढ़ाईआ। जिस दी सिफ्त करे क़ुरान मजीद, कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा वेख वखाईआ। पंचम जेठ कहे मेरे सम्मत शहिनशाही दर ठांडे साचे आ जा, अज्ज कल्ह वेख वखाईआ। की खेल करे प्रभू महाराजा, राजन राज नूर अलाहीआ। जिस ने लख चुरासी साजन साजा, घट घट अन्तर फोल फुलाईआ। सो मालक ग़रीब निवाजा, निरगुण आपणी कार कमाईआ। प्रगट हो के देस माझा, मजलस दोआबे विच वखाईआ। फेर जाणा मदीना मक्का काअबा, मक़बरिआं फोल फुलाईआ। लेखा मुका के पुन्न सवाबा, अगला झगड़ा देणा गवाईआ। सब दा इक्को सजदा होवे आदाबा, डंडावत इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे मैं हुक्म मन्ना सरकार, सरोकार ना कोए जणाईआ। निउँ निउँ करां निमस्कार, नमस्ते विच दुहाईआ। जिथों सांझा मिले प्यार, नाता गुरमुखां नाल जुड़ाईआ। इक्को दुआरा दस्स दरबार, दरगाह साची इक दरसाईआ। नेत्र लोचण नैण वेखो उघाड़, नैण मूंद मूंद मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे मालवे वाल्यां दिता कंघा, सोहणा सीस सुहाईआ। मैं मँग अगम्मी मँगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। दोआबा मालवा होवण वाला सी कुछ दंगा, जंग आपो विच रखाईआ। लाल सिँघ खलो के इक टंगा, प्रभ दे कोलों मँग मँगाईआ। प्रभू गुरमुख तेरा सब तों चंगा, चंगी तेरी वड्याईआ। जिस दे चरण चुम्मे गंगा, गोदावरी जमना सुरस्ती छूह के खुशी

बणाईआ। एनां अन्तर इक अनन्दा, जो पुरी अनन्द वाला गया टिकाईआ। हरिजन चाढ़ के साचे चन्दा, आपणा नूर कर रुशनाईआ। माण रहे ना किसे पंडा, मुल्लां शेखां पन्ध मुकाईआ। एका शब्द गुरु दा डंडा, ब्रह्मण्डां दए चमकाईआ। माण तोड़ हँकारी गंढ्ढा, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे जन भगतो सारे करो सलाह, मशवरा आपणे नाल बणाईआ। पंज लिखारी होवण गवाह, शहादत पंचम विच भुगताईआ। इक्को प्रभू लैणा मना, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। मलणी पवे ना कदे स्वाह, तेड़ लंगोट ना कोए रखाईआ। सब दा लेखा पूरा दए करा, करनी दा करता नूर खुदाईआ। सूफ़ीआं होवे ना कदे जुदा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। सच प्रेम दा लओ मज़ा, मज़ाक़ पिछला देणा चुकाईआ। सब दे सिर ते कूकदी क़ज़ा, चारों कुण्ट पन्ध मुकाईआ। वेख्यो चुरासी वाली रहे किसे ना सज़ा, आवण जावण लैणा कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। पंचम जेठ कहे एह लहिणा गोबिन्द वाली कीड़ी, कर्म कांड झोली पाईआ। प्रभ नूं मिलणा मार्ग गली भीड़ी, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर किरपा चढ़ो सीढ़ी, मंज़ल मंज़ल दए समझाईआ। गलों कट शरअ ज़ंजीरी, नूरे नज़र कर रुशनाईआ। लै के जाए घर अख़ीरी, आख़र आपणे गृह टिकाईआ। जिथों मिलदी मीरी पीरी, पातशाहां वड्याईआ। झगड़ा पैंदा हकीर हकीरी, ग़रीब ग़रीबां होए ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे जन भगतो प्रभ देवे कदे ना पिच्छा, पेशीनगोई विच समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेख के इच्छा, तुहाडा मुख दिता बदलाईआ। फेर माण दे के पूरे सिखा, सिख सतिगुर विच समाईआ। जिस दा नाम संदेसा लिखा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। माण मिले वड्डा निक्का, बिरध बालां रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज कहे मेरा पंच होवे प्रबंध, प्रबंधकां दयां दृढ़ाईआ। जूठ झूठ छड्डणा गंद, सच सुच्च इक उपजाईआ। भागहीण रहे कोई ना मंद, मंदभाग ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे दुआबे वाल्यो दयो दस्तार, दस्त देणी फड़ाईआ। तुहाडा पिछला क़र्ज़ देवां उतार, लहिणा सब दा झोली पाईआ। तुसीं आपणे तन दे सारे सरदार, आत्म मालक इक उपजाईआ। ख़ालक मन्नणा इक एकँकार, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। तुहाडे विच्चों तुहाडा वीर बणा के सेवादार, सेवा सच सच लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। लाल सिँघ सिर बन्नणी पग्ग, आपणे हथ्थ उठाईआ। गुरमुखां पिच्छे भावें छडणा पए जग, नाता

दीन दुनी तुड़ाईआ। दीन मज़हब दी तोड़नी हद्द, शरअ वंड ना कोए वंडाईआ। उच्ची कूक कहिणा वज्ज, वजह धुर दी देणी समझाईआ। जन भगत प्रभ तों रहे ना कोई अलग्ग, वखरा गृह ना कोए सुहाईआ। हँस बणे कोई ना कग, विष्टा कूड़ ना कोए फुलाईआ। त्रैगुण सड़े कोई ना अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सब दा सांझा इक्को पद, पदवी देवे धुरदरगाहीआ। जन भगत प्रभू दी यद, याददाशत ना कदे भुलाईआ। सारे वायदा कर लओ अज्ज, पंचम जेठ रिहा सुणाईआ। इक पासे फाँसी दा हुक्म देवे जज्ज, दूजे पासे सतिगुर नालों कन्नी ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे सब ने करना इक इक़रार, पिछला दयां जणाईआ। पंजे लिखण वाले लिखार, लेखा लिखण चाँईं चाँईंआ। जिस दा सब दे नाल प्यार, प्रीतम इक्को बेपरवाहीआ। बिना पुरख अकाल तों भगतां करनी नहीं कोई निमस्कार, नमों नमों ना सीस निवाईआ। तुहाडा सोहणा लग्गणा दरबार, चार जुग दे दरबारी वेखण चाँईं चाँईंआ। हौली हौली धर्म दा दे देणा इख्त्यार, मुख्त्यार गुरमुख लैणे उपजाईआ। हरिजन रहे ना कोए ग़द्दार, कूड़ कुड़िआरा देणा गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। पंचम जेठ कहे क्यों वक्त रख्या पंज, अमृत वेला रंग रंगाईआ। जिस वेले नानक दी जगत रीती चढ़नी सी जंञ, अमृत वेले उठ के प्रभ नूं ल्या ध्याईआ। ओस वेले पुरख अकाल दीन दयाल शब्दी धार लिखारी जणाए पंज, पंचम वड वड्याईआ। जिन्हां दी धार विच होवे कारज अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। अगम्म सुणाया छन्द, सोहँ ढोला इक अलाहीआ। चार वरनां ढाह के कंध, भाण्डा भरम भन्नाईआ। खुशी करना बन्द बन्द, बन्दगी इक समझाईआ। सोहरे पेईए होए कदे ना रंज, संगी साथी आपणा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ । पंज जेठ कहे गोबिन्द पंज वेर कीते अरदासे, वेला पंज पंज सुहाईआ। पंज वारी बदल के आपणे पासे, करवट करवट विच रखाईआ। पंज वारी पाणी पीता विच ग्लासे, वेला पंज पंज सुहाईआ। पंज वजे पाणी विच घोले सी पतासे, बाटे दिती माण वड्याईआ। पंज वजे तन छुहा के गाते, खण्डा खड़ग वड्याईआ। पंज वारी गोबिन्द फड़ उठाया पुरख अकाल दाते, आपणी गोद टिकाईआ। पंज वजे पंजां प्यारयां हुक्म दिता खुशीआं नाल नहाते, जगत मैल धवाईआ। पंज वार गोबिन्द पिछले वेख के खाते, पूरब लहिणा दिता मुकाईआ। पंज वार गोबिन्द गुरमुखां वल झाके, मस्ती विच नैण उठाईआ। पंज वार मिठ्ठी मिठ्ठी कर के बाते, सोहणा रस बणाईआ । पंज वार वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु आखे, गोबिन्द रसना जिह्वा अलाईआ। पंज वार सब दे पढ़ के फ़ाते, फ़तवा अन्तिम दिता लगाईआ।

१३५७
२१

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंज जेठ कहे पंज वजे गुजरी कुक्ख सी गोबिद निंमिआ, तन वजूद मिली वड्याईआ। अमृत सोमा धुर दा सिम्मया, सर सरोवर सोभा पाईआ। दुष्ट दमन पंज वजे याद कीता सी कुण्ट हेम्मया, कुण्ड ध्यान लगाईआ। पंज वेरां आपणे जीवण विच गुजरी ने गोबिन्द दा मुख चुम्मया, प्यार नाल वड्याईआ। पंज वेरां गोबिन्द ने आपणीआं पंजां उँगलीआं वाला कढुया खून्नया, तिलक गुरमुखां वाला बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। पंज जेठ कहे पंज वजे गोबिन्द पंज वार गोदावरी विच नहाता, पंजां प्यारयां नाल रखाईआ। पंज वार तक उपर आकाशा, पुरख अकाल वेख वखाईआ। पंज वार गोबिन्द खेलिआ सार पाशा, चौपट बाज़ी इक जणाईआ। पंज वार मुख तिनका पाया घासा, कक्खां रंग रंगाईआ। पंज वार बिना ज़बान तों गाई गाथा, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। पंज वार गोबिन्द पंजां प्यारयां डाटा, बाहों फड़ के चरणां परे कराईआ। पंज वार बेदाअवा लिख के पंजवीं वार पाटा, पंचम मिले माण वड्याईआ। पंज वार गोबिन्द अमृत वेला पंज वजे आपणे लंगर विच पंज मुट्ठां पाईआं सी आटा, लोह लंगर दिता चलाईआ। पंज वेरां गोबिन्द ने ढाई साल अंदर आपणा अंगूठा चाटा, सज्जा हथ्थ मुख छुहाईआ। पंज वेरां बाल अवस्था रोया सी मार के डाडां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पंज वेरां गुर तेग़ बहादर दी कंड ते चढ़या सी नाल लाडा, आप आपणा बल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। पंचम जेठ कहे मेरी सब दे अग्गे दुआ, दोआबे वाल्यो दयां जणाईआ। तुहाडी आत्मा प्रभ दे नालों होवे ना कदे जुदा, वखरा घर ना कोए सुहाईआ। सब दी इक्को होए अदा, आदाब इक्को सीस निवाईआ। सब दी मँगण वाली सदा, सदाकत विच राग अलाईआ। सतिगुर मिलणा छड्डणी जगत शर्म हया, हयाती आपणी लैणी बदलाईआ। जो मालक ख़ालक प्रितपालक दिलरुबा, रहमत हक़ कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंज जेठ कहे जन भगतो मैं तुहानूं करन आया मज़बूत, हौसले दयां वधाईआ। वेख्यो डर ना जाइओ विच काया कलबूत, मन मनसा ना कोए चतुराईआ। तुहाडा ओस दे कोल सबूत, जो सब दा पिता माईआ। जिधर तक्को ओधर मौजूद, हर घट नज़री आईआ। एथे ओथे दो जहानां करे महिफ़ूज़, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। एह शब्द इशारा अगम्मी रमज़ जाणा बूझ, बुझारत जगत ना कोए जणाईआ। अंदरों कढ्ढ देणी दूज, द्वैती डेरा ढाहीआ। जेहड़ा पंज पंज क़दम पिच्छे नूं कीता कूच, पंचम कूड़ दा नाता दिता तुड़ाईआ। पिछला जन्म कर्म कर मनसूख़, अगला लेखा सतिगुर घर बणाईआ। तुसीं ओस प्रभू दे पूत, जिस नूं जन्मे कोए ना माईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। पंचम जेठ कहे मैं दस्सां अकथ कहाणी, कथनी कथ कोए ना पाईआ। जिस दी सारे गाउँदे बाणी, सिफ्तां विच सालाहीआ। ओह शहिनशाह सुल्तानी, निरगुण नूर अलाहीआ। कलयुग अन्त कर मेहरवानी, महबूब मेहर नज़र उठाईआ। अमृत रस दे के पाणी, निझर झिरना इक झिराईआ। झगड़ा मुका के चारे खाणी, खैड़ा अगला दए छुडाईआ। मंज़ल दस्स इक रुहानी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सब दा इक्को घर इक्को गृह महिमानी, दूजा दर ना कोए वखाईआ। शरअ विच देणी पए ना कोए क़ुरबानी, मज़हबां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंज जेठ कहे मेरी अन्त अख़ीरी अरदास, बेनती दयां जणाईआ। तुहाडा प्रभ दे लेखे स्वास, साह साह विच समाईआ। सद वसो ओस दे पास, जो परमेश्वर धुरदरगाहीआ। जन्म विच होणा ना पए निरास, निरास्ता कूड़ ना कोए जणाईआ। सब दा इक्को जिहा करे विश्वास, धीरज धीर आप धराईआ। सच नूर दा कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। जिस कारण इक्ठे कीते आज, मेला सहज सुभाईआ। जन भगतो तुहाडी धार धर्म दा होवे काज, करनी दा करता आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी वेख वखाईआ। पंचम जेठ कहे मैं आया क्यों दुआबे, आपणा फेरा पाईआ। संदेसा दिता नानक निरगुण बाबे, सरगुण तत जणाईआ। जिस वेले कल कल्की आया माझे, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। नवीं साजना साजे, पर्दा अगम्म खुल्हाईआ। जन भगतां मार के आवाज़े, सुत्तयां लए उठाईआ। गुरमुखो तुसीं जन्म जन्म दे सिध्धे कर्म कर्म दे सादे, सिद्धी इक वखाईआ। जो तूं मेरा मैं तेरा सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान अराधे, आवण जावण रहे ना राईआ। गोबिन्द पिता ते नाल मिलो पुरख अकाल दादे, जो दाअवे नाल आपणे गृह टिकाईआ। कोटां विच्चों प्रभ किरपा नाल थोड़े जिहे जागे, जागरत जोत करी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत करे वडभागे, वडभागी आपणी दया कमाईआ। वडभागी हरिभगतन जोड़, मेला सहज सुभाईआ। सच प्रीती निभे तोड़, अध्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। कलयुग वेख अन्धेरा घोर, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गुरमुखो सतिगुर घर दे बणयो कदे ना चोर, चोरी सतिगुर नाल ना कोए कमाईआ। सच प्रेम दी बन्न्हणी डोर, नाता धुर दा लैणा रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त जन भगतां सदा कोल, विछोड़े विच विछड़ कदे ना जाईआ।

✻ ५ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ सरवण सिँघ दे गृह पिंड हेर ✻

पंचम जेठ कहे प्रभ सदा दयालू, दीन दयाल दया कमाईआ। पूरब लहिणा जाणे की आशा रखी नानक पिता कालू, अन्त स्वासा जगत तजाईआ। बिन नैणां नज़र आई रेत बालू, अगनी तत वांग तपाईआ। हुक्म संदेसा सुणया तेरी बिन्द धार होणी चालू, चार वरन वरन वड्याईआ। धरनी धरत धवल धौल आपणे कर्म कांड दा बदल लैणा सालू, सालगिरह समझ किसे ना आईआ। जिस वेले सति धर्म दा मार्ग होणा चालू, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आपणी सुरत ना कोए संभालू, सम्बल वस्से बेपरवाहीआ। नाम भण्डारा अगम्म उछालू, छहिबर आपणा प्रेम लगाईआ। भगत सन्त होए किरपालू, किरपानिध दया कमाईआ। जुग चौकड़ी लहिणा देणा जाणे हालू, हालत वेखे कूड़ लोकाईआ। साची करनी कर के नवीं देवे मसालू, मिसल पिछली दए बदलाईआ। असल वसल दा बणे वसालू, विशा विशेष विश्व समझाईआ। जन भगतां घाल आपे घालू, धायल होवे कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। पंज जेठ कहे कालू नूं अन्तिम नज़री आया छुरा, तिक्खी धार सोभा पाईआ। घर नानक हुंदयां तूं क्यों चल्यों निगुरा, सतिगुर समझ ना सीस निवाईआ। निगाह वखाई अनन्द पुरा, गोबिन्द नूर ज़हूर जणाईआ। सच प्रेम किसे ना जुड़ा, जोड़ी जगत ना कोए वड्याईआ। मुहब्बत प्यार दिसी थुड़ा, घाटा पूर ना कोए वखाईआ। सब दा बेड़ा जांदा रुढ़ा, खेवट खेटा नज़र कोए ना आईआ। बिन सतिगुर शब्द देवे कोई ना हुड़ा, चप्पू वञ्झ मुहाणा कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा इक वखाईआ। पंचम जेठ कहे कालू नूं वज्जा अगम्मी धक्का, अन्तर सुध रही ना राईआ। शरीर दी क़ीमत दिसे कोई ना टका, तन ख़ाकी दए दुहाईआ। नानक गुर ना मन्नया पक्का, बच्चा समझ के झट लँघाईआ। फेर नज़र आया मक्का, मदीने फिरी दुहाईआ। फेर नज़र आया नूर अलाही हक़ा, हक़ीक़त विच वड्याईआ। फेर निरगुण धार वेख्या सका, सरगुण संग ना कोए बणाईआ। फेर नाम संदेसा सुणया पता, पतिपरमेश्वर दिता दृढ़ाईआ। गोबिन्द अन्त जैकारा बोलणा फ़तह, फ़तिह इक वड्याईआ। धर्म दी धार बणाउणा जथा, गुरमुख पंज मिले वड्याईआ। प्रभ दे नाम दृढ़ाउणी कथा, कहाणी आपणी ना कोए सुणाईआ। लेखा जणाउणा ऐज़न तथा, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तीर कमान उठा के भथ्था, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। घोड़ा चाढ़ के उपर भट्ठा, अगनी अग्ग देणी बुझाईआ। चार वरन कर इक्ठा, झीवर छींबे नाई जट्ट मेल मिलाईआ। दीन मज़हब दा पा के रट्टा, रट्टा वेखे थाउँ थाईंआ। झगड़ा मुकावे जो खावे वच्छा कटा, कटाकश आपणा इक लगाईआ। साचे नाम

दा दस्स के टप्पा, टिप्पी बिन्दी सोभा पाईआ। ज़ात पात मेट के वट्टा, राह इक्को दए वखाईआ। अन्त शरीर छड्ड के दिसे नठ्ठा, लोकमात रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल नाल कर के मता, मति मतांतर दए गवाईआ। सच प्रीती विच रत्ता, रंग इक्को इक रंगाईआ। सच दवारे सच वसा, घर इक्को इक सुहाईआ। सदी चौधवीं फेर आवे नस्सा, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस्सा, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। जन भगतां करे जसा, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। ग़रीब निमाणयां करे रच्छा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति धार चढ़ा के रथा, रथ रथवाही कार कमाईआ। सब दे लेखे लावे मस्तक मथ्था, धूढ़ी चरण ख़ाक रमाईआ। हर हिरदे अंदर होवे वसा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। कालू वेख के हो गया हक़ा बक्का, हैरानी अंदर आईआ। मैं समझया नानक पंज तत्ता बन्दा, बंदयां वरगा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। पंज जेठ कहे कालू नूं अन्तिम आई सोझी, अख़ीरी स्वास दिता तजाईआ। खैृड़ा छुटिआ ढाई महीने दा रोगी, दुःख दर्द रिहा ना राईआ। भरम रिहा ना जञ्ञू बोदी, मस्तक तिलक ना कोए वड्याईआ। नज़ारा तक्कया वेदी सोढ़ी, कुल कुल विच्चों बदलाईआ। नेत्र तक्की अगम्मी डोडी, जिथों विष्न ब्रह्मा शिव उपजाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आउँदे जोगी, भगत सन्त मिले वड्याईआ। शब्द अनाद सुणया बोधी, अगम्म कीती पढ़ाईआ। इशारा दिता चौदां लोकी, चौदां तबक भेव खुल्हाईआ। सुरती रहे कोई ना सोती, हरि सुत्तयां आप उठाईआ। साथी मिल्या कोई ना गोती, संगी संग ना कोए निभाईआ। नाल चली ना जञ्ञू धोती, अगला रंग ना कोए रंगाईआ। खाण पीण मुकी रोज़ी, वस्त हथ्थ कोए ना आईआ। मूर्ख मति रही ना होछी, ममता मोह मिटाईआ। बुद्धी अक़ल सोच ना सोची, चले ना कोए चतुराईआ। जां निगाह पई नजरी आया रविदास चमारा मोची, रम्बी आर हथ्थ उठाईआ। अन्तर आसा इक्को लोची, लोचण नैण निज खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंज जेठ कहे कालू दा अन्तिम छुटिआ शरीर, कला कल दिती वरताईआ। अख़ीरी स्वास ते नानक ने बदल दिती तक़दीर, नाता पिता पूत तुड़ाईआ। मेहर निगाह कर तासीर, नेत्र नैण इक खुल्हाईआ। पिछले कीते उत्ते मार लकीर, अगले मार्ग इक्को पाईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं ग़रीब अमीर, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। साची आसा वेख उम्मीद, अमल दिता दृढ़ाईआ। मैं तेरा तत्तां वाला अज़ीज़, जगत विच सुहाईआ। मैनूं पुरख अकाल नाल मिलाउण दी रीझ, तेरा नाता दयां जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पंचम जेठ कहे कालू अन्तर कीता ध्यान, धरनी धरत धवल सुहाईआ। शब्दी मिल्या ज्ञान, तूं मेरा मैं तेरा राग

अलाहीआ। वेख्या हक़ मकान, सम्बल इक वड्याईआ। जिथ्थे जगे जोत महान, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सीस झुकाण, निउँ निउँ लागण पाईंआ। सजदा करे ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। दो जहान तों वखरा विधान, हुक्म इक्को इक अलाहीआ। साची करनी करे विच जहान, करता बेपरवाहीआ। भगत सुहेले आप पहचान, दर ठांडे मेल मिलाईआ। सति सच दा दे के दान, वस्त अगम्म आप वरताईआ। झगड़ा मुका ज़िमीं असमान, ज़ामन हो के होए सहाईआ। कलयुग कूड़ मेट तुफ़ान, तोहफ़ा नाम निधाना झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला आप मिलाईआ। पंचम जेठ कहे कालू नूं मिली अन्तिम थापी, हरि पुश्त पनाह लगाईआ। तूं इक्को नाम जापी, जपत जपत वड्याईआ। प्रभ खेल करे प्रतापी, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम गुर अवतार पैगम्बरां दी उम्मत सिखी होई पापी, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी वेखण सच नाम दी कापी, असल हथ्थ किछ ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्तां वाले बणन भाटी, भाव भेव ना कोए दृढ़ाईआ। सच सिँघासण सोहे कोई ना खाटी, खटका होवे कूड़ लोकाईआ। मंज़ल चढ़े कोई ना घाटी, दरगाह सच ना कोए सुहाईआ। चारों कुण्ट होए अन्धेरी राती, निरगुण नूर ना कोए चमकाईआ। साचा दिसे कोई ना साथी, सगला संग ना कोए बणाईआ। ओस वेले किरपा करे पुरख अबिनाशी, हरि करता दया कमाईआ। जिस नूं सब ने कहिणा घनकपुर वासी, पंचम जेठ मातलोक मिले वड्याईआ। जन भगतां मेटे उदासी, संसा अंदरों दए कढ्ढाईआ। सच घर दा होवे दासी, दर इक्को डेरा लाईआ। कालू किहा मैं नानक दा पिता मेरी कटी जाए जम फाँसी, आवण जावण रहे ना राईआ। पिछली भुल्ल दी मँग मुआफ़ी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नानक नूं मारया कुट्टया कीती जगत गुस्ताख़ी, गुस्सा गिला देणा गवाईआ। मेरे साहिब सतिगुर पुरख अकाल मेरी सदा करनी राखी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दी कथा किसे ना वाची, वाचक हो के कहिण कोए ना पाईआ।

१३६२
२१

१३६२
२१

❊ ७ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ ज्ञानी गुरमुख सिँघ दे गृह भलाई पुर डोगरां ❊

सूर्या कहे सुणो चन्द सतार, सति सतिवादी दयां जणाईआ। वेखो खेल अगम्म अपार, हरि करता आप कराईआ। जिस दी आसा रख के गए गुर अवतार, पैग़म्बर ध्यान लगाईआ। सो साहिब स्वामी पावे सार, हरि सज्जण वेख वखाईआ।

जुग चौकड़ी लहिणा देणा दए उधार, लेखा सब दा पूर कराईआ। धरनी धरत धवल सुण पुकार, पारब्रह्म प्रभ मेहर नज़र उठाईआ। चार कुण्ट बणे सहार, साहिब सुल्तान हो सहाईआ। सब कुछ आपणे रखणा अख्त्यार, मुख्त्यारनामा हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। कलयुग बदल देवे धार, सतिजुग सच रंग रंगाईआ। सम्मत पंज खेले खेल सच्चा शाहकार, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा वेख वखाईआ। सूर्या कहे वेखो चन्द सितार मीत, मित्रो दयां जणाईआ। चार कुण्ट रिहा चीक, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। काया होए ना ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। आत्म परमात्म बणे ना कोई प्रीत, प्रीतम हक़ ना कोए मिलाईआ। रसना रस लए कोए ना मीठ, निझर झिरना ना कोए झिराईआ। त्रैगुण होए ना कोए अतीत, त्रैभवन लए ना कोए मिलाईआ। जिस साहिब दी करन उडीक, अवतार पैग़म्बर गुर अक्ख खुल्हाईआ। सो सब दी करे तस्दीक़, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। अन्ध अन्धेर मिटे तारीक, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। साचा नाम दस्स हदीस, हज़ूर हाज़र हो करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला लए मिलाईआ। सूर्या कहे वेखो चन्द सितार मेरे सज्जण, की करता कार कमाईआ। नाम नगारे दो जहान की वज्जण, ब्रह्मण्ड खण्ड करन की शनवाईआ। सृष्टी दा इक्को करना भजन, बन्दगी इक समझाईआ। लख चुरासी तोले सब दा वज़न, कंडा नाम तराज़ू हथ्थ उठाईआ। सतिजुग साची करे रचन, रचना आपणी आप समझाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरा कर के बचन, बच्चयां वांग गोद उठाईआ। सच दुआर सुहा के वतन, गृह मन्दिर दए वड्याईआ। चार वरन दा सांझा कर के पत्तन, दुआरा इक्को इक वखाईआ। जिथ्थे दूसर चले ना कोए यतन, यथार्थ आपणा रंग रंगाईआ। भगत सुहेले साचे वसण, दरगाह साची सोभा पाईआ। लख चुरासी काया कटण, कटाकश आपणा नाम लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जड़्ह आया पट्टण, पटने वाला शब्दी धार खेल खिलाईआ। नव सत्त खोल्ह के हट्टन, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सच दुआर कर के जशन, खुशीआं रंग दए रंगाईआ। भगत भगवान दा सांझा होवे मिशन, मसला अवर ना कोए चतुराईआ। जिस नूं सिर झुकावण ब्रह्मा राम कृष्ण, शंकर लागे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार वेखो नैण उघाड़, उगण आथण ध्यान लगाईआ। दिशा वेखो इक पहाड़, पर्दा अंदर रहे ना राईआ। चारों कुण्ट दिसे उजाड़, खेड़ा गृह ना कोए वड्याईआ। मन हँकारी दिसे धाड़, धाड़वी कलयुग नाल रलाईआ। साची मंज़ल सके कोई ना चाढ़्ह, चढ़दा लैहन्दा रिहा कुरलाईआ। सोहणा खेल खिलाउणा सतारां हाढ़, हड़्हदी वेखे कूड़ लोकाईआ। सृष्टी चबाए आपणी दाहड़,

दूसर समझ किसे ना आईआ। गुरमुख दुलारे उठाउणे चार, चारे वरनां विच्चों जगाईआ। चारे पाणी बरसण धार, अमृत किउड़ा नाल सुहाईआ। चार सिख बण के रूप नार, सोहणा तन श्रृंगार बणाईआ। हत्थ खिच्च नंगी कटार, कंधिआं उत्ते लैण उठाईआ। नौ चक्र लाउण विच दरबार, आर पार आपणा पन्ध मुकाईआ। नौ वार बोलण जैकार, जै जैकार तेरी शरनाईआ। फेर गुरमुख सिँघ उठ के उन्हां दे सिर दए प्यार, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। फिर कर प्रभू निमस्कार, लिखारीआं दे पिच्छे बैठण चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार मार लओ झाकी, अगला झाका रहे ना राईआ। चार इक्ठे होवण चारे ज़ाती, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश सोभा पाईआ। चौंहां दे हत्थ विच होवे इक इक्क लाठी, झण्डीआं कालीआं नाल सुहाईआ। नाल लिखी होवे पाती, सब दा इक्को पिता माईआ। उन्हां दे वस्त्र होवण ख़ाकी, तन पोशाक इक सुहाईआ। खेल होणा सतारां हाढ़ दी राती, रुत आपणी इक महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार खोल्ह के वेखो आपणीआं अक्खां, नेत्र नैण उठाईआ। इक गुरमुख सूरा प्रभ बणाउणा आपणा बच्चा, बचन गोबिन्द पूर कराईआ। उहदे गल तन्द होवे कच्चा, क़मीज़ नाल ना कोए छुहाईआ। मुखों बचन कहे सच्चा, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार वेला वक्त जागो, आपणी लओ अंगड़ाईआ। इक्को पुरख अकाल अराधो, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। मण्डल उत्ते आपणा आप साधो, साधना सच रिहा जणाईआ। जिस नूं कहिंदे रहिण माधव माधो, मधुर धुन राग दृढ़ाईआ। जिस ने लेखा पूर कराया कृष्ण यादो, सो बंसरी हक़ सच सुणाईआ। सच सरनाई उस दी लागो, जो लग मातर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार वेखो गोबिन्द वाला पत्र, पत्रका दयां उलटाईआ। पंजां गुरमखां दे हत्थ विच होणा छत्र, छत्रधारी दए वड्याईआ। पंजां दा नाम लिख्या होवे विच इक्को सतर, लाईन इक्को इक जणाईआ। उन्हां विच्चों बणे कोई ना चतुर, मूर्ख मूढ़ ना किसे सुणाईआ। लाल रंग दी बन्नी होवे गल विच कतर, नोक तिक्खी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या कहे चन्द सतार वेखो खेल श्री भगवाना, हरि करता आप दृढ़ाईआ। इक्की बीबीआं वेस करना मर्दाना, मर्दां वांग आपणा बल प्रगटाईआ। हत्थ विच उठाउणा धर्म निशाना, निशाना धुर दा इक वखाईआ। साहिब सुल्तान दा गाउणा गाणा, तूं दाता बेपरवाहीआ। मोढ्यां उत्ते उठाउण तीर कमाना, रंग इक्को

इक बणाईआ। सब दा चिट्टा होवे बाणा, बाणी धुर दी धार समझाईआ। किसे दा वस्त्र ना होवे पुराणा, पारब्रह्म भेव खुल्हाईआ। हिरदे अंदर ना होवे माणा, निरमाणता विच सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार निगाह मारो जग, जगजीवण दाता दए वड्याईआ। सच दुआरा वेखो रिहा सज, हरि सज्जण आप सुहाईआ। सब दा लहिणा अलग अलग, वख वखरी सेव लगाईआ। पंजां गुरमुखां पग्ग नूं पाए होण डब्ब, रंग इक ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सूर्या कहे तारा चन्द वेखणा प्रभ दा खेल अपारा, हरि करता आप कराईआ। सोहणा सुहञ्जणा सुहाए दरबारा, दरगाह साची सच बणाईआ। इक गुरमुख दिन्दा होवे इशारा, इशारे झण्डे नाल जणाईआ। इक बैठा होवे दूर किनारा, भगत दवारे चोटी चढ़ के राग अल्हाईआ। इक दरवाज़े उत्ते मारे ललकारा, ख़बरदार होवे लोकाईआ। इक गुरमुख पीले वस्त्र पा के चढ़े खारा, जो आपणा आप भेंट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सूर्या कहे तारा चन्द प्रभ ने पूरी करनी शर्त, शरअ देणी चुकाईआ। जो निरगुण आया परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। भाग लगावे धरनी धरत, धवल होए सहाईआ। पंजां प्यारयां दे कंधे उत्ते सुनिहरी
१३६५ रंग दा लग्गा होवे वरक, सज्जा पासा मिले वड्याईआ। खब्बी नंगी रखणी अरक, पर्दा उपर ना कोए कराईआ। कमरकसे विच छुपा के रखणी इक इक्क करद, खंजर गोबिन्द नाल वड्याईआ। इक कोल रखणा चर्च, गिरजा सोहणा रूप बणाईआ। १३६५
२१ टिकाउणा आ के उत्ते अर्श, प्रभ चरणां भेंट चढ़ाईआ। जैकारा बोलणा गरज, ढोला अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार एह खेल होणा भारती, हरि करता आप कराईआ। नौआं बीबीआं करनी आरती, पंज पंज शमांदान थालीआं विच टिकाईआ। धार गाउणी इक एकँकार दी, अगम्म अथाह पढ़ाईआ। अग्गे रीती बदलणी संसार दी, संसारी भण्डारी सँघारी सीस निवाईआ। मंज़ल मुकणी चार यार दी, मुहम्मद निउँ निउँ लागे पाईंआ। खेल वेखणी इक दातार दी, दयावान दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या कहे पंज गुरमुख इक्ठे होवण गाउँदे, गा गा शुकर मनाईआ। बांह कढु के होण सुणाउँदे, प्रभ तेरी बेपरवाहीआ। गोबिन्द राह होवण तकाउँदे, नेत्र लोचण अक्खउठाईआ। खब्बा हथ्थ कन्नां उत्ते होण रखाउँदे, गरदन टेडी कर टिकाईआ। गीत गाउण आपणे मन भाउँदे, जगत वाली ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या

कहे चन्द सितार इक्की बीबीआं गीत गाउणा सुहाग, सोहणा राग अल्हाईआ। प्रेम विच आवे वैराग, वैरी अंदरों बाहर कढ्ढुईआ। सावधानी विच जाणा जाग, आलस निंदरा ना कोए रखाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू आपणी आपणी कढणी आवाज़, ढोले सोहणे सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार पंज गुरमुख फिरदे होण जवान, जोबनवन्ते नज़री आईआ। हथ्थां विच फड़े होण वदान, मोढे सज्जे उत्ते छुहाईआ। मुखों कहिण युद्ध करना घमसान, चारों कुण्ट जगत लड़ाईआ। सूरमा रहे कोए ना विच मैदान, सिर सके ना कोए उठाईआ। चार कुण्ट होणी हैरान, हैरानी सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार पंज बुढड़ीआं माईआं कपड़े पाउणे सूहे, इक्को रंग रंगाईआ। हथ्थ विच फड़े होण मरे होए चूहे, रस्सी लम्मी उँगल नाल टिकाईआ। उन्हां विच्चो इक इक्क वारी वारी कहे, बौहड़ी बौहड़ी तेरी दुहाईआ। बिन तेरी किरपा जगत जहान सारा रुढ़े, जीवण हथ्थ किसे ना आईआ। असीं अन्त समें प्रभू सब आईआं तेरी जूहे, घर बार तजाईआ। सब दी लेखे ला लै रूहे, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार इक दूजे दे फड़ लओ मोढ्ढे, मुढला हाल सुणाईआ। पंजां गुरमुखां बैठणा भार गोडे, कमर सिध्धी सच रखाईआ। उन्हां दे कोल होवण पंज पंज डोडे, पोस्त वाले उठाईआ। सिर ते रखे होवण बोदे, जञ्जू केस ना बोदी चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार पंजां बीबीआं आपणी मरजी दे पाउणे वस्त्र, हिस्सा रंग ना कोए वड्याईआ। आपणी ख़ुशी दे उठाउणे शस्त्र, तन हथ्थां नाल सुहाईआ। शाही फ़ौज दा बण के लशकर, आपणा बल प्रगटाईआ। जो संदेसा दे के गया गोबिन्द पुष्कर, सो पूरा देणा कराईआ। अन्तर सब दा होवे ख़ुशी दिल, ग़मी नेड़ कोए ना आईआ। उन्हां विच्चों होवे कोई ना बुज़दिल, लोक लज्जया विच जो शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक सुणाईआ। सूर्या कहे चन्द सितार पंजां गुरमुखां होवे इक जमात, उमर इक्को नज़री आईआ। इक्को होवे ज़ात, इक्को कुल वड्याईआ। इक्को होवे घाट, मंज़ल इक्को राह तकाईआ। इक्को होवे नात, नाता भैण भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सूर्या कहे सुण चन्द सितार, चन्नां दयां जणाईआ। अगला लेखा अगम्म अपार, सहज सहज समझाईआ। की खेल करे सच्ची सरकार, हरि करता धुरदरगाहीआ।

१३६६
२१

जितना हुक्म संदेसा देवे आपणी धार, धरनी धरत धवल दयां दृढ़ाईआ। अन्त कर के निमस्कार, चरण कँवल सीस झुकाईआ। सति धर्म दा बोल जैकार, ढोला इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पंजां गुरमुखां तेड़ पवा सलवार, चलाए नाल तिक्खी रफ़तार, क़दम क़दम नाल बदलाईआ।

✻ १४ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सम्मत पंज कहे जो प्रभ दे सेवादार, सेवा सच धर्म कमाईआ। मानस जन्म रहे संवार, सवार्थ अवर ना कोए रखाईआ। दिवस रैण प्रेम दी कार, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। नाता तोड़ कूड़ संसार, जगत विकार परे हटाईआ। प्यार मुहब्बत विच सदा रहिण हुश्यिार, खुशी ग़मी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे मैं वेखां अगम्म किताब, हरि करता आप जणाईआ। जिस विच भगतां दा हिसाब, चुरासी नज़र कोए ना आईआ। मन्दिर महल्ल सुहाए महिराब, महबूब इक्को नज़री आईआ। सच प्यारयां
१३६७ देवे ख़िताब, मुख़ातब हो के आप जणाईआ। सति सच दस्स अदाब, सिख्या सिख इक इक्क नाल रखाईआ। किरपा १३६७
२१ कर गुरु महाराज, मेहर नज़र इक उठाईआ। प्रेम भगती दे के दाज, दौलत धुर दी झोली पाईआ। चार जुग दा बदल २१
रिवाज, रस्ता आपणा इक समझाईआ। नाता तोड़ कूड़ समाज, बंधन विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। बिना प्रभू तों दूसर अवर ना कोए साक, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। जो उपज्या सो अन्त होए ख़ाक, थिर रहिण कोए ना पाईआ। गुरमुखां हिरदा करे पवित्र पाक, पतित पुनीत आप बणाईआ। झगड़ा मेट जगत ज़ात, दीन दुनी पन्ध मुकाईआ। सति सच दे इख़लाक, धर्म धार इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। शहिनशाही सम्मत कहे मैं पंज वेखां पंचाइण, पंच परपंच खोज खुजाईआ। खेल तक्कां प्रभू नरायण, जो नर निरँकार रिहा कराईआ। जगत विकार वेखां वहिण, दीन दुनी रिहा रुढ़ाईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरला दिसे प्रभ दा सैण, सज्जण आप बणाईआ। जगत नाता वेख तरफ़ैण, पासा पुश्त गए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे की राम रिहा दस्स, त्रेता अक्खखुल्ह़ाईआ। प्रभू मेरा दे दे हक़, मेरे राम राम दी दुहाईआ। वेला वक्त पहुंचया सच, सच दयां समझाईआ। मैं वेख्या आपणी अक्ख,

प्रतख ध्यान लगाईआ। जिस वेले अयुध्या विच्चों बनवासी हो के होया वख, भरत शत्रुधन तजाईआ। कैकई पई हस्स, कुशलिआ सुमित्रा नैणां नीर वहाईआ। उस वेले प्यार करन वाले भगत सुहेले जिन्हां अन्तर मेरा तत्त, तत आपणा गए बदलाईआ। नेत्र रो के चरणीं डिग्गे झट, बौहड़ी बौहड़ी कर सुणाईआ। असीं किरसाण तेरे प्यार वाले जट्ट, दूजा घर ना कोए वखाईआ। रसना नाल चरण लए चट्ट, खुदी खुदी विच्चों प्रभ कढ्ढाईआ। सानूं दे दे नाम दा हट्ट, ख़ज़ाना धुर दरसाईआ। राम ने किहा मेरा राम वस्से घट घट, हर घट रिहा समाईआ। उँगल नाल दिता दस्स, इशारा ज़िमीं असमान कराईआ। त्रेता द्वापर लँघ जाए झट, कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल होवे प्रगट, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। लेखा वेख पुरख समरथ, पर्दा उहला दए चुकाईआ। जोत नूर करे लट्ट लट्ट, दो जहान डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। किरसाणां किहा हे राम साडे स्वामी, सच तेरी सरनाईआ। तूं सब दा अन्तरजामी, बेपरवाह अख्वाईआ। क्यों अयुध्या कीती बेगानी, आपणा घर तजाईआ। जे कैकई कीती बेईमानी, धर्म दी धार दे जणाईआ। तेरी जोबन वाली जवानी, राजगद्दी रिहा तजाईआ। असीं तेरे पिच्छे करीए क़ुरबानी, मर जीवत रूप वटाईआ। राम हस्स के किहा मेरी निक्की जिही मेहरवानी, मेहर नज़र इक उठाईआ। सारे हथ्थ रखो उत्ते पेशानी, पिच्छा अग्गा दयां समझाईआ। जलवा तक्को जोत नुरानी, नूर नुराना सोभा पाईआ। जिस दी मुहब्बत ना होवे पुराणी, प्राण अधारी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। राम किहा सुणो सति सच दी बात, बातन दयां जणाईआ। जिस वेले आवे अन्धेरी रात, कलयुग अन्धेरा छाईआ। प्रगट होवे पुरख अबिनाश, मेहर नज़र इक उठाईआ। सच सरबंस कर वास, बंस आपणा इक वड्याईआ। तुसां सब ने होणा पास, सगला संग रखाईआ। सेवा करनी नाल विश्वास, विश्व दा मालक विसर कदे ना जाईआ। तुहानूं सदा रखे याद, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। तुहाडा सब दा होवे इक समाज, इक्को घर मिले वड्याईआ। इक्को बणे धुर दा बाप, इक्को जम्मण वाली माईआ। सति सच दा दए इतफ़ाक़, नाता प्रेम नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। किरसाणां किहा किस बिध साडा होवे मेल, सच दे समझाईआ। राम किहा एह मेरे राम दा खेल, जो अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जिस दा नाता गुरु गुर चेल, चेला गुर वेख वखाईआ। आदि जुगादि सज्जण सुहेल, साहिब स्वामी नजरी आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे प्रभ ने राम दे अंदर दिता हलूणा, तिन्न वार हिलाईआ। राम ने राम तैनूं रख्या ऊणा,

१३६८
२१

बिना राम तों राम पूरन नज़र कोए ना आईआ। तेरा रसना जिह्वा नाल कूणा, जगत वाली सिखलाईआ। मेरा खेल सिल अलूणा, बिना किरपा तों चट्टण वाला ना कोए अख्वाईआ। जिस वेले त्रेते तों बाद द्वापर कुकर्म होवे दूणा, कूड़ी क्रिया वज्जे वधाईआ। द्वापर तों बाद कलयुग सति धर्म दा रहे कोए ना धूणा, साधू सिद्ध ना कोए वखाईआ। सतिगुर दी निन्दया गुरसिख करन मूँहना, राम दी राम दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला लए मिलाईआ। राम कहे मेरे अन्तर सुरत संदेसा रिहा आ, मेरा राम रिहा जणाईआ। मैं अयुध्या चलया तजा, भाणे विच आपणा झट लँघाईआ। तुहाडी याद रही सता, सति सतिवादी हो के वेख वखाईआ। राम ने पंज हन्झू वहाए किहा एह मेरे तुहाडे गवाह, शहादत देण भुगताईआ। अजे राम, राम तों कृष्ण, कृष्ण तों होणा खुदा, खुदा तों सतिनाम वाहिगुरु नाम प्रगटाईआ। सब दा मार्ग होणा जुदा जुदा, वक्ख वक्ख राह तकाईआ। अन्त फिरनी दरोही उत्ते बसुँधा, धरनी धरत दए दुहाईआ। झूठ दा होणा युध्धा, सच सिर सके ना उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर होणा बुढ्ढा, सदी सदीवी नाल मिलाईआ। फेर प्रभ ने बदलणा जुगा, जुग कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। जिस नूं याद कर के जाए बुधा, नेत्र रो रो ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे मैनूं नज़र आई उत्ते तस्वीर, सच दयां जणाईआ। जिस वेले राम ने घत्तया वहीर, लक्ष्मण सीता नाल मिलाईआ। सब दे नैणां वगिआ नीर, छहिबर इक लगाईआ। किरसाणां हथ्थ मारया मस्तक जांदे राम साडी बदल जाह तक़दीर, फिर शायद दरस कोए ना पाईआ। राम ने परत के सज्जे चरण दे अंगूठे नाल मारी लकीर, उत्तर पूरब दिती खिचाईआ। तुहाडी मँग कुछ कलयुग विच मँगे कबीर, ग़रीब निमाणा हो के वास्ता पाईआ। तुसां बैठणा नाल धीरज धीर, धरवास लैणा रखाईआ। मेरी इक्को बादशीर, इशारे नाल समझाईआ। तुहाडा वासा होणा कोल कश्मीर, पंज दी धार विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सम्मत पंज कहे जन भगतो मैनूं आ गया पिछला चेता, अक्खां खोल्ह के वेख वखाईआ। जेहड़े कम्म करदे विच खेतां, दिवस रैण सेव कमाईआ। इन्हां दा राम वाला हेता, पूरब पिछला सोभा पाईआ। पुरख अकाल बण के नेता, नर नरायण दए वड्याईआ। राम मुहब्बत वाली भेंटा, लेखे आपणी झोली पाईआ। जन भगत बणा के धुर दा बेटा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। त्रेता द्वापर जरम दा बदलया ठेका, कलयुग ठाकर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे राम दे वैरागी, गुरसिख नज़री आईआ। जिन्हां दी सोई सुरती जागी, अन्तर होई रुशनाईआ। जगत तृष्ना त्यागी, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। उन्हां विच्चों

प्रेम सिँघ होया वडभागी, भाग आपणा झोली पाईआ। ईशर सिँघ बण के आदी, हिस्सा रिहा वंडाईआ। इंदर सिँघ वस्त अमोलक लाधी, घर साचे वज्जी वधाईआ। नाज़र सिँघ सेवा कीती डाहढ़ी, सगला संग वखाईआ। सुरजीत कौर सीस दी ला के बाज़ी, बाज़ां वाला वेख वखाईआ। गुरमीत कौर बच्चया हिरदा साधी, बलविंदर आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जगजीत सिँघ मन ममता मार के ग़ाज़ी, गुरमीत सिँघ आपणा रंग रंगाईआ। भजन सिँघ छड्ड के भाई भैण साथी, नाता आया तुड़ाईआ। प्रकाश कौर जाग के राती, अन्तर अन्तर रही ध्याईआ। इक्को बच्ची जिस ने मरना सी आउण वाली एस वसाखी, उस दी ज़िंदगी रिहा बदलाईआ। बिन्दर नूं दे के फेर हयाती, जीवण जीवण विच्चों वखाईआ। जरनैल सिँघ चढ़ के मंज़ल घाटी, आपणा पैंडा ल्या मुकाईआ। सुच्चा सिँघ मेट के वाटी, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। महिन्दर रख के आसी, असल आपणा राह तकाईआ। हरनाम कौर चढ़े ना फाँसी, भुल्ली भटकी पार लँघाईआ। छोटी नन्ही जेहड़ी आयू आयू विच्चों साधी, साधना आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सम्मत पंज कहे मैं तकदा रिहा राह, जुग जुग ध्यान लगाईआ। राम बणाउँदा रिहा गवाह, शहादत दयां भुगताईआ। हरजीत जो माता पिता छड्ड के गया आ, धनाढ पिछला नज़री आईआ। सुखवन्त पिछले बख्शा के गुनाह, राम दी निगाह राम विच टिकाईआ। छोटी नन्ही जिस दा होर नहीं कोई साथी, पिछले जन्म दी माईआ। मंज़ल पन्ध मुका के वाटी, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे मैं दस्सां हाल तमाम, भेव अभेद खुल्हाईआ । जेहड़ी सेवा करे कौर वरयाम, प्रीतम सिँघ दी पिछले जन्म दी माईआ। इहने राम नूं जाण लग्गिआं तिन्न वेर कीता प्रणाम, तिन्न जुगां दा लेखा दिता चुकाईआ। ओस वेले इहदे कुच्छड़ सी बच्चा नादान, जिहदे मस्तक ज़िमीं तों धूढ़ी दिती लगाईआ। नाले रो के किहा मेरे राम, आपणा राम देणा मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार सरनाईआ। सम्मत पंज कहे मल सिँघ हुंदा सी पुजारी, बिशन सिँघ धूपीआ नाल मिलाईआ। जुगिंदर हुंदी सी कन्या कुँवारी, इष्ट राम दा आपणे इष्ट विच रखाईआ। भान सिँघ लाउँदा हुंदा सी ताड़ी, नौ मिन्ट अक्खदबाईआ। अमीर चन्द फिरदा हुंदा सी विच उजाड़ी, राम राम राम कूक कूक सुणाईआ। सुलखण सिँघ नौ वार राम दे अग्गे पिच्छे होया पिछाड़ी, पिच्छा अग्गे अग्गे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे दलीप सिँघ हुंदा सी दोहरा मोटा, वेस किरसाणा वाला रखाईआ। तेड़ रखदा हुंदा सी लंगोटा, चीथड़ पुराणे सोभा पाईआ। अन्न खांदा सी इक टोपा, चौदां घंटे सौं के झट लँघाईआ। राम

विछड़न लग्गिआं इस ने भरया ज़ोर दा हौका, हाए राम कर सुणाईआ। फेर कदों मिलेगा मौका, मेहरवान देणा जणाईआ। राम खुशी नाल किहा मेरा राम तुहाडा सब दा संभाले मौका, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। सम्मत पंज कहे रतन सिँघ हुंदा सी साधू रत्ता, रत्तू कहि के सारे गाईआ। अंदरे अंदर पकांदा सी मता, रसना कहि ना कुझ सुणाईआ। अन्त अख़ीर राम नूं टेक के मथ्था, धूढ़ी चरण ख़ाक रमाईआ। भेंटा कर के इक टका, नैणां नीर वहाईआ। राम हस्स के किहा उठ किरसाण जट्टा, तैनूं दयां दृढ़ाईआ। तेरी भेंट दा मेरा राम देवे वट्टा, बदला तेरी झोली पाईआ। जन्म जन्म दा लाहा खटा, कर्म करम दा लेख मुकाईआ। किरपा करे पुरख समर्था, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए चढ़ाईआ। सम्मत पंज कहे कश्मीर सिँघ हुंदा सी भोला भाला, उमर सतारां साल वखाईआ। कदी हस्स पए कदी कढ्ढे गालां, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। फेर अग्गे भज्ज के सब नूं किहा मेरा तुहाडे नालों राम बाहला, घुट्ट के जफी लई पाईआ। फेर पिच्छे आ गया मार के छाला, आपणा पन्ध मुकाईआ। फेर रो के किहा मैं तेरा बाला, तेरी ओट तकाईआ। राम ने किहा तुहाडा मालक पुरख अकाला, सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे मैं वेख्या करतार सिँघ दा लेखा, पिछला खोज खुजाईआ। जिस वेले राम छड्डआ देसा, अयुध्आ रिहा तजाईआ। इस बदल के आपणा वेसा, रूप रंग ल्या वटाईआ। खोल्ह के आपणयां केसां, सिर घट्टा ल्या पाईआ। मुखों किहा राम साचे राम दा बणा दे बेटा, जिथ्थे अवर कोए ना माईआ। राम किहा तुहाडा बंस होवे एका, एकँकार होवे सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे जिस वेले पहिला क़दम चुक्कया राम अवतार, निगह सब दे वल्ल टिकाईआ। ओस वेले राम दा सेवक हुंदा सी सिँघ बलकार, नेत्र रो के नीर वहाईआ। नाले गुरु मेरे नाले यार, क्यों याराना चलया तुड़ाईआ। राम ने किहा मेरा राम सब नूं लए संभाल, सम्बल आपणा फेरा पाईआ। लेखा वेखे शाह कंगाल, कोझे कमले गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे ओस वेले बरखा बरसी थोड़ी इंदर, इंदरासण ध्यान लगाईआ। खुशी विच हस्स पई ओस वेले दी कन्या ऐस वेले दी छिन्दर, खुशी खुशी प्रगटाईआ। मस्तक लाई बिन्दन, धूढ़ी ख़ाक बणाईआ। सृष्टी नूं लग्गी निंदण, कूक कूक दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे राम दे तुरन लग्गिआं आसा रखी इक त्यागी, जो किरसाणां विच सोभा पाईआ। राम

साडी सुरत जाईं साधी, साधना इक रखाईआ। मेला मेलीं राम आदी, जो आदि अन्त वेख वखाईआ। जिस दी खेल सदा जुगादी, जुग जुग कार कमाईआ। जिस तरां तूं घर दी कर चलया बरबादी, आपणे राम पिच्छे अराम आपणा तजाईआ। एहो जिही साडी वी कर दे वादी, मोह मुहब्बत कूड़ रहे ना राईआ। राम ने किहा इक वार लगा समाधी, नेत्र नैण बन्द कराईआ। जिस वेले कलयुग आवे अन्धेरी राती, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। उस वेले तेरी ज़रूर होवे शादी, त्यागी कन्या रूप वटाईआ। तेरी ज़िंदगी दी वेख के बाज़ी, बाज़ां वाला होए सहाईआ। तेरी आत्म जाए साधी, पतित पुनीत कराईआ। तेरी लेखे लग्गे इक इक्क हाडी, नाड़ी नाड़ी खोज खुजाईआ। पर याद रखीं सृष्टी छड्डणी बड़ी डाहढी, मंज़ल बेपरवाहीआ। उस हस्स के किहा जिस वेले प्रीत प्रभू नाल लागी, लग मातर फरक रहे ना राईआ। बंस सरबंस दिसे कोई ना साथी, जगत संग ना कोए बणाईआ। राम ने पुश्त पनाह दिती थापी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उँगल नाल लिखी पाती, अक्खर अक्खरां उत्ते सुहाईआ। तेरा जीवन बदले बदले हयाती, जन्म कर्म दा डेरा ढाहीआ। धुर दे राम दी सेवा करनी हथ्थ मार के छाती, शहिनशाह हो सहाईआ। एसे कर के चरणी दी पूरी कीती आसी, आसा पिछली नाल मिलाईआ। गुरसिख सतिगुर पिच्छे भावें कोटन वार चढ़ जाए फाँसी, फाँसी दी मौत सज़ा देवे ना कोए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१३७२ आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे जिस वेले सब ने कीता शोक, सोग १३७२
२१ विच कुरलाईआ। राम दा हुंदा सी इक परोहत, जो दक्षिणा लै के झट लँघाईआ। ओह हथ्थ विच फड़ के जगत वाली २१
जोत, सब नूं रिहा वखाईआ। वेख्यो राम दी राम कोलों छड्डिओ कदे ना मौज, मजलस आपणे अंदर रखाईआ। बेशक छड्ड चलया लशकर शाही तख्त ताज ते फ़ौज, जन भगतां विसर कदे ना जाईआ। एस जन्म विच जिस दा नाम अशोक, छोहर बांका सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे मैं सुणावां वरनों बरनों, ब्रह्म धार जणाईआ। प्रभ दी मँगो इक्को सरनों, सरनगति सरनाईआ। जिस वेले राम विछड़िआ चरणो हटी ना लड़नों, कूक दिता सुणाईआ। मैं डरना नहीं मरनों, इक्को तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सम्मत पंज कहे जिस वेले राम पुटया क़दम, बनबास वल्ल उठाईआ। नंगीं पैरीं नज़री आया पदम, सारे सीस निवाईआ। सब दा कम्ब गया बदन, उफ़ हाए दुहाईआ। राम छड्ड गया वतन, बेवतन आपणा फेरा पाईआ। छोटा बच्चा जोगा जिस ने किहा इक वारी फेर कर लओ यतन, सारे सीस निवाईआ। नेत्र रोवो अक्खण, नीर दयो वहाईआ। राम साडे आ जा वतन, किनारा तट इक सुहाईआ। तेरे दवारे साचे वसण, अयुध्या

सोभा पाईआ। सारे लग्ग पए आखण, उच्ची सोभा पाईआ। राम ने किहा मैं सदा तुहाडा साथण, धुर दा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे जो गुरमुख सेवा करदे, दिवस रैण सेव कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़दे, सोहँ राग अगम्म अथाहीआ। नित सवेरे दर्शन करदे, संध्या वज्जे वधाईआ। मालक बण के साचे घर दे, दरगाह साची सोभा पाईआ। मंज़ल ओस अगम्मी चढ़दे, जिथ्थे जगे जोत अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सम्मत पंज कहे राम ने पहिला क़दम पुट्टया, पटने वाला नज़री आईआ। फेर मुड़या पुट्टया, साढे तिन्न क़दम पन्ध मुकाईआ। ओस वेले सच प्रेम विच नन्ही बच्ची फड़या गुट्टया, जिस नूं दविंदर कहि के नाम ल्या रखाईआ। बलविंदर फड़ के हथ्थ दी मुट्ठया, उँगलां लईआं दबाईआ। सानूं दे दे कुच्छया, मेहर नज़र उठाईआ। राम किहा मेरे पुत्तया, तुहाडा राम होवे सहाईआ। फड़ के गोबिन्द चुक्कया, आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे मैं वेख्या खेल अपारा, अपरम्पर दयां जणाईआ। जिस वेले राम ने पिच्छा परतिआ दुबारा, आपणा मुख भवाईआ। ओस वेले जो धर्म दी धार हुंदा सी सच्यारा, ब्रह्म विद्या विच चतुराईआ। ओस कर के निमस्कारा, सीस दिता निवाईआ। राम आह वेख

१३७३

रोंदे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। राम ने कीता अगम्म इशारा, अंदरे अंदर दिता जणाईआ। सब दा मालक एकँकारा, इक इकल्ला सोभा पाईआ। जो कल कल्की लए अवतारा, निहकलंका नाउँ रखाईआ। ओह तुहाडा बणे सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। एसे कारण अमरजीत होया दुलारा, गोबिन्द मेला सहज सुभाईआ। ओस वेले एहदीआं हुंदीआं सी दो नारां, जगीर कौर मनजीत रूप वटाईआ। इहनां समझया ना कोए इशारा, सीस जगदीश ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। राम किहा साडा कर शुकर, शुकराना धुरदरगाहीआ। जिस ने आपणी धारों आउणा उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण नज़र किसे ना आईआ। उस दा गोबिन्द होणा पुत्तर, सूरबीर वड्याईआ। सब नूं आए गोदी चुक्कण, आपणा फेरा पाईआ। जिस वेले कलयुग पैंडा होवे मुक्कण, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। जिस वेले राम ने क़दम अग्गे लए नौं, पैर पैर नाल बदलाईआ। फेर पिच्छा वेख्या भौं, नैण नैण आप उठाईआ। अन्तर अन्तर आया चाउ, ख़ुशी ख़ुशी विच्चों प्रगटाईआ। सारे प्रभ दे ढोले गाओ, सोहणा राग अल्लाईआ। घरां नूं जाणा नाल चाउ, ग़मी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। ओस वेले अयुध्या विच इक हुंदा सी

अतीत, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। राम नाल ओस दी प्रीत, तिन्न वेरां रोज़ मिल के झट लँघाईआ। राम हथ्थ रख के सीस, सिर छाती नाल टिकाईआ। खुशी नाल किहा मैं करां बख्शीश, रहमत झोली पाईआ। जिस वेले मेरा राम आवे जगदीश, लोकमात वेस वटाईआ। गोबिन्द धार बदल के रीत, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। तेरा नाउँ होवे सुरजीत, सिँघ साहिब देवे सरनाईआ। किसे कोलों मँगणी ना पए भीख, मेहर नज़र इक उठाईआ। फेर राम ने निगाह मार के किहा मैं करां तसदीक़, शहादत इक भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। राम ने किहा तेरा लहिणा मेरा उधार, सच दयां जणाईआ। तेरा नाम होणा जुझार, जूझ के देणा वखाईआ। फेर पुरख अकाल पावे सार, दीन दयाल दया कमाईआ। मातलोक कर उज्यार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पिछला लेखा लै विचार, जुग चौकड़ी खोज खुजाईआ। बलि बावन पावे सार, सतिजुग आपणा रंग रंगाईआ। जिस कन्या कीता प्यार, भोजन भाव विच वड्याईआ। उस दा लेखा तेरे नाल संसार, नाता मेले सहज सुभाईआ। एसे कारण गुरदर्शन बणी धर्म दी नार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सम्मत पंज कहे जिस वेले राम ने अन्त कीती सब नूं प्रणाम, हथ्थ जोड़ के सीस निवाईआ। जाओ आपणे घर करो आराम, सुख सागर विच समाईआ। छोटे बच्चे हुंदे बड़े शैतान, उन्हां रौला दिता पाईआ। वाह साडे भगवान, निक्कयां नालों कर के चलया जुदाईआ। सानूं कुछ दे दे पीण खाण, रसना रस चखाईआ। नहीं ते तेरा गावांगे गाण, राम राम साडा पिता माईआ। उन्हां विच्चों छे होए प्रधान, भज्ज के अग्गे गए आईआ। राम ने खुशी नाल फड़ के कान, चारों कुण्ट दिते भवाईआ। ओह रो के लग्गे शोर मचाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। असीं तां तेरे कोलों लैणा पीण खाण, दूजे दर मँगण ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे कुछ सानूं दे दे झूंगे, आपणे कोलों आप वरताईआ। असीं चार कुड़ीआं ते दो मुंडे, बहुते नज़र कोए ना आईआ। तेरा नाम गाउँदे, ढोला सिफ्त सालाहीआ। उच्ची उच्ची शोर मचाउँदे, करन हाल दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। राम ने किहा आउ तुहानूं दयां खवा, सोहणा रस चखाईआ। बच्चयां किहा सानूं पहिलों वखा, आपणे हथ्थ उठाईआ। राम किहा तुसीं नैण बन्द लओ करा, अक्खीं वेखण कोए ना पाईआ। बच्चे कहिण किते देवीं ना कोए दवा, मुख कौड़ा दएं कराईआ। राम किहा नहीं मैं मुरदयां दयां जगा, जागरत जोत रुशनाईआ। सिर तुहाडे हथ्थ टिका, मेहर नज़र उठाईआ। जिस वेले आवे बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। उस दी झोली देवां पा, जो लेखा वेखे थाउँ थाईंआ।

सच भोजन नाम अधार तुहाडे रसना देवे लगा, जन्म तों पहिलों नाम प्रभ दा जपे तुहाडी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। एसे कर के अज्ज दे लेखे विच बच्चे ओह छे, छे दर सोभा पाईआ। परमजीत सतबीर पुराणा नेंह, नर नरायण होए सहाईआ। जिंदर बलजीत वैराग बिरेंह, बिरहों वैरागी दए मिलाईआ। गुलज़ार लेखा गुलज़ार सिह, पूरब कृष्ण रंग चढ़ाईआ। भोली भोली भाला जिस दा उस समें इक्को दयो, दूजा नज़र कोए ना आईआ। राम किहा राम प्यारयो तुहाडा मेरा राम अगम्म पिउ, पिता इक्को नज़री आईआ। इक्को दुआर सारे रिहो, वड्डा छोटा ना कोए रखाईआ। सम्मत पंज कहे एह खेल अलख अभेउ, प्रभ साचा आप जणाईआ। आपणा लहिणा सारे ल्यो, देवणहार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सरन सरन सरनगति सदा रिहो, रहिबर आदि अन्त दा नज़री आईआ।

प्रशादि कहे मैनूं आ गई गल्ल चेते, चितवनी सब दी दयां मिटाईआ। राम विछड़यां सब नूं भुल्ल गए सौहरे पेके, सईआं नजर कोए ना आईआ। इक दूजे वल सारे रहे वेखे, अक्खां अक्खां नीर वहाईआ। अयुध्आ दा ठेकेदार जेहड़ा
१३७५ वड्डे छोटे लैंदा सी ठेके, ठेकेदारी विच आपणा झट लँघाईआ। ओह लै के पंज मोहरां भेंटे, राम अग्गे दितीआं टिकाईआ। १३७५
२१ राम ने आपणी कमर विच लईआं लपेटे, वल वस्त्र वाला पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद २१
आपणी कार कमाईआ। राम किहा ठेकेदार तेरा मेला ठाकर, जगत ठाकरां दी पूजा रहे ना राईआ। जेहड़ा साडा सब दा सागर, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जन्म कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। जुग जुग नाम दा बणे सुदागर, वणज वणजारा धुर दरगाहीआ। सूरबीर होए बहादर, तेज आपणा प्रगटाईआ। ओसे नूं कहिण करीम क़ादर, करता नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचा वेख वखाईआ। राम कहे मैं कीती मेहर, मेहर नज़र उठाईआ। जिस वेले मेरा राम बण के आया धुर दा शेर, भबक दो जहान सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर लए घेर, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। तेरा लहिणा देणा दए निबेड़, बाकी अवर रहे ना राईआ। एसे लहिणे विच सेवा करदा सिँघ केहर, केहर सिँघ आपणा रंग चढ़ाईआ। जुग बदलणा प्रभ दा हेर फेर, भेव अभेद समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मेला रिहा मिलाईआ।

प्रेम सिँघ कहे गुरसिखो मैं आया हस्सदा, हस्सदा हस्सदा सीस निवाईआ। मैं शब्द सुणया भगतां दे जस दा, जिस नूं समझ ना सकण वेद पुराण राईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मैनूं सहजे सहजे दस्सदा, की करता कार कमाईआ। मैं किहा खेल वेखो उस समरथ दा, जिस तुहाडी बणत बणाईआ। रूप धार के जट्ट दा, जटा जूटां डेरा ढाहीआ। झगड़ा रहिण नहीं देणा दीन मज़हब वट दा, लेखा सब दा साफ़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। प्रेम सिँघ कहे गुरमुखो करयो ना कोए उदासी, चिन्ता ना कोए बणाईआ। मैनूं जन भगत सारे मिल गए साथी, सचखण्ड बैठे डेरा लाईआ। इक्कीआं विच्चों मैनूं पहिलों मिली थापी, सेवा मेरी आपणे लेखे पाईआ। अग्गे गुरमुख वीह रहन्दे बाकी, जे नाँ दस्सां शायद डर के सारे बेनन्ती देण सुणाईआ। मैं चौहन्दा ओह छड्ड जगत वाली हयाती, सचखण्ड आवण चाँईं चाँईंआ। जिथ्थे इक्को जोत नूर प्रकाशी, अन्ध अन्धेर रिहा ना राईआ। गृह मन्दिर बहि के आपणे खाटी, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। मैं संदेसा देवां सच संदेस पाती, पत्रका इक सुणाईआ। जन भगतो साहिब सतिगुर दी सदा मन्नयो आखी, इस तों वड्डी भगती नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दिता धुर दा वर, मेरा लहिणा देणा लेखा सब तों पहिलां मेरी झोली पाईआ।

१३७६ २१

✻ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ गुरमुख सिँघ दे गृह पिंड भलाई पुर डोगरां ज़िला अमृतसर ✻

सम्मत पंज कहे मेरा मेहरवान खुदा, जुग चौकड़ी वेस वटा, करनी करता कार कमाईआ। धुर संदेसा दए सुणा, हक़ हक़ीक़त समझाईआ। जिस दा मैं तकदा रिहा राह, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। सो वेखणहारा थाउँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। जुग जन्म दे विछड़यां पकड़े बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, पतित पुनीत दए कराईआ। जिस नूं कहिंदे हक़ अलाह, आदि जुगादि नूर खुदाईआ। सो हुक्म संदेसा रिहा सुणा, धुर दी धार इक जणाईआ। तेजभान बणया होवे बहादर शाह, लेखा गोबिन्द वाला दृढ़ाईआ। चोबदार तिन्न रला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे बहादर शाह चुकाउणा लेख, भविख्त दए गवाहीआ। हरि गोबिन्द लए वेख, गोबिन्द सतिगुर पर्दा लाहीआ। पूरब जाणे भेत, अगला आप खुल्हाईआ। साचा कर के हेत, लहिणा झोली पाईआ। देवे नाम संदेस, कलमा सच जणाईआ। राम दवारे होणा पेश, पेशतर आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत

पंज कहे मैं वेख होया ममनून, की करता कार कमाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी क़ानूंन, काइदा बाकायदा इक समझाईआ। संदेसा देवे नामालूम, जिस नूं समझे कोए ना राईआ। दीन दुनी होई मासूम, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। भेव अभेदा जणाए मज़मून, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत कहे जिस वेले बहादर शाह कीती पुकार, गोबिन्द सीस निवाईआ। उस वेले कीता अगम्म इक़रार, आपणा लेख ना कोए बणाईआ। जगत शहिनशाह रहिणा ख़बरदार, नेत्र बन्द ना वेख वखाईआ। सोहणा हुक्म उस परवरदिगार, जिस नूं मुहम्मद सजदा सीस झुकाईआ। भुल्ल ना जाणा विच संसार, सहिसा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। गोबिन्द किहा शाह बहादर, शहिनशाह दए वड्याईआ। अन्त रहे कोई ना साबत, सबूरी हथ्थ किसे ना आईआ। जिस नूं लिखे कोई ना कातब, ओह लेखा आपणे विच छुपाईआ। कलयुग अन्तिम करे मुख़ातब, सच स्वामी पर्दा लाहीआ। जिस वेले अवतार पैग़म्बरां गुरुआं रिहा ना कोए तआक़ब, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मन अफ़ग़ानी करे बग़ावत, मर्द जवान कम्म किसे ना आईआ। फील चलावे ना कोए महाबत, गज क़दम ना कोए उठाईआ। सच करे ना कोए सख़ावत, रहमत हक़ ना कोए कमाईआ। दीन दुनी रहे ना सच बनावट, कूड़ी दिसे शहिनशाहीआ। १३७७
कर्म करम करे अदावत, धर्म धर्म नाल लड़ाईआ। उस वेले तेरी भुगताउणी इक शहादत, गोबिन्द शब्द नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। गोबिन्द किहा सुण शाह बहादर बंधू, बिन बन्दगी दयां जणाईआ। प्रभ दा लहिणा देणा धार सिन्धू, सिन्ध सागर सीस निवाईआ। लहिणा पूरा करना चन्दू, तेरा लेखा अन्त गणाईआ। जो दरवेश बणया चन्दू, चन्द चांदना नूर चमकाईआ। निमक हराम वेखणा गंगू, चारे कुण्ट वेख वखाईआ। पर्दा लौहणा जो नानक चारीआं मज्झू, पाली बण के सेव कमाईआ। सुण हुक्म अनोखा छन्दू, जगत शाह रिहा दृढ़ाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं लँघू, अन्त अखीर वखाईआ। बिना खुदा तों रहे कोई ना दीना बंधू, बंधन सके ना कोए तुड़ाईआ। धुर दा कलमा कोए ना वंडू, वंडां हिस्से सब दे दए कराईआ। साची मंज़ल कोए ना लँघू, धर्म दा क़दम ना कोए उठाईआ। पुरख अकाला गुर अवतार पैग़म्बरां लेखा मँगू, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। लेखा चुकाए इसाई सिख मुस्लिम हिन्दू, हिन्दवाइण पर्दा लाहीआ। जगत वस्सेरा कर के पिंडू, पिंड इंड ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। जगत जहान शाह सुल्तान वेख के टिंगू, टिंगां वाल्यां डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे पंज बणे होवण मुग़ल, मुग़ल्या ख़ानदान वड्याईआ। जिन्हां दे

मस्तक अन्तिम गोबिन्द लाई उँगल, इशारा गया कराईआ। जिस वेले कलयुग आया मुक्कण, अन्तिम पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाला भगतां आवे गोदी चुक्कण, फड़ बाहों गोद उठाईआ। जगत जहान आवे लुकण, नेत्र नज़र कोए ना आईआ। बहादर शाह तेरी खुल्हावे बुक्कल, पर्दा दए लाहीआ। गोबिन्द सूरा नाल होवे पुत्तर, पिता पूत रंग समाईआ। दरगाहों साची आवे उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण समझ किसे ना पाईआ। तुसां सब ने करना शुकर, शुकराने विच वड्याईआ। नाल फड़ के लिआउणा कुक्कड़, रंग चिट्टा सोभा पाईआ। इक कसाई होवे नाल बुच्चड़, डराउणी आपणी शकल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची खेल वखाईआ। सम्मत पंज कहे हाढ़ सतारां आउँदा, आवत आवत खुशी मनाईआ। प्रभू करे खेल जग भाउँदा, जुग करता कार कमाईआ। जो क़लमा हक़ सुणाउँदा, धुर दी करे पढ़ाईआ। सो विछड़यां मेल मिलाउँदा, फड़ बाहों गोद टिकाईआ। साचा समां वक्त सुहाउँदा, सुहञ्जणी रैण नाल मिलाईआ। भगत सुहेले नाल रलाउँदा, हरिजन धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। करे करावे जो हरि भाउँदा, मन मनसा ना कोए वखाईआ। पतित पापीआं पुनीत आप कराउँदा, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी धरत धवल हिलाउँदा, ब्रह्मण्ड रिहा जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप उठाईआ। हाढ़ सतारां कहे बहादर शाह गोबिन्द अग्गे झुकणा, झुक झुक सीस निवाईआ। तेरे कोलों बचन ओह पुच्छणा, जो अन्तिम दिता सुणाईआ। सति दवारिउँ कदे ना रुठणा, गोबिन्द गया दृढ़ाईआ। मेहरवान कोलों ना लुकणा, जो निगाह मेहर नाल तराईआ। झगड़ा मेटे काया बुतना, बुतख़ाने वेख वखाईआ। अन्त अख़ीर उस ने पुज्जणा लेखा सब दे कोलों पुच्छणा, बच्या नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला आप मिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे गोबिन्द हुक्म होया क़लमबन्द, बाहर सके ना कोए समझाईआ। बहादर शाह तेरे पिच्छे कर के जंग, जगह बजगह कीती सफ़ाईआ। मेरे नीले दा वेख तंग, जो शहादत रिहा भुगताईआ। कुछ अंदरे अंदर मँग, मांगत हो के झोली डाहीआ। उस रो के मंगया अन्तिम संग, धुर दा संग बणाईआ। तक्कया वल चन्द, तारिआं अक्खउठाईआ। गोबिन्द किहा एस तों परे लँघ, इन्हां की चतुराईआ। हैरान ना होईं दंग, परेशानी ना कोए वखाईआ। खेल साहिब सूरा सरबंग, सतिगुरु नूर अलाहीआ। कोई जगत शाह दा चन्द, जो जम्मे अन्त मर जाईआ। मैं धर्म धार पाबन्द, नित नित वेख वखाईआ। मेरा खेल विच ब्रह्मण्ड, वरभण्ड कार कमाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं जाए लँघ, मुहब्बत आसा मुहम्मद वेख वखाईआ। नाम संदेसा देवे बरंग, मोहर महिर ना कोए लगाईआ। संदेसा देणा शाही धार पलँघ, तिलकधारी ना कलमा दृढ़ाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पर्दा लाहीआ। सम्मत पंज कहे बहादर शाह उधार, गोबिन्द दए चुकाईआ। फेर नीती बदले विच संसार, हुक्म अगम्म अथाहीआ। पूरब क़र्ज़ उतार, तर्ज करे सफ़ाईआ। सोहणा लग्गा दरबार, दरवाज़ा इक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां कर के ख़बरदार, हुश्यारी विच दए जणाईआ। तुहाडे उत्ते रिहा ना किसे एतबार, बेएतबारी होई लोकाईआ। अग्गे सब कुछ उस दे अख़्त्यार, जो मुख़तारनामे तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। आउ कर लओ दीदार, दीदा दीद खुशी मनाईआ। जाओ चरण कँवल बलिहार, बलिहारी सीस निवाईआ। खुशीआं नाल वेखणा सतारां हाढ़, हर हिरदे दे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म दी धार ला दरबार, जगत शाही दा लेखा पूरा करे संसार, समें सार वेखणहारा थाउँ थाईंआ।

❊ १८ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ दलीप सिँघ दे घर पिंड बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ❊

सम्मत पंज कहे बहादर शाह दे नाल इक चुग़ल होवे ख़ानदानी, ख़ालस आपणा रूप बणाईआ। चुग़ली मारनी उस दी मंजल होवे रुहानी, जगत कार कमाईआ। मज़हब शरअ दी अन्तर होवे बेईमानी, मुतस्सब विच कुरलाईआ। जगत दुनी दिसे बेगानी, संगी सच ना कोए जणाईआ। फिरदा होवे विच मैदानी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। उस दा लहिणा दस्सणा गोबिन्द नाल आसानी, असल आपणा भेव खुल्हाईआ। एह कथा कहाणी पुराणी, पुराण वेद ना कोए जणाईआ। पुरख अकाल सब दा जाण जाणी, जानणहार नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे मैं वेखणे पंज धर्म शहिज़ादे, जिस नूं शहिनशाह दए वड्याईआ। ओह होवण इक्को नाँ दे, नाम नाम विच वड्याईआ। बलधारी होवण आपणी बांह दे, भउ विच ना भय रखाईआ। सुख लैंदे होण आपणी माँ दे, माँ मेहटर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे मैं वेखणे पंज प्रभ मीते, मित्र मित्रां वेख वखाईआ। जिन्हां दे वेस इक्को जिहे होण कीते, करनी प्रभ दे नाल रखाईआ। तीह साल दी आयू सब दी होवे बीते, छोटा नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म दा गावण गीते, गोबिन्द तेरी बेपरवाहीआ। हथ्थ रखण विच खीसे, सज्जा सहज नाल टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे मैं होणा तां राज़ी, राज़क रिज़क रहीम दे वड्याईआ। चार वरन दे गुरमुख चलावण आतशबाज़ी, अगनी अग्ग नाल वड्याईआ। सारी संगत

होवे जागी, सोया रहिण कोए ना पाईआ। इक गुरमुख बणया होवे ढाडी, सोहणा आपणा राग जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे मैं हुंदा जांदा खुशहाल, खुशी दयां दृढ़ाईआ। साहिब वेखे मुरीदां हाल, गोबिन्द गुर गुर खोज खुजाईआ। दीन दयाल हो प्रितपाल, प्रितपालक हो के दया कमाईआ। सब दी सुरती लए संभाल, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। भगत दवारे उत्ते दीपक दीया दीवाली लैणी बाल, घृत जोत नाल वड्याईआ। एह खेल सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे मैनूं प्रभ ने दिता इशारा, अगम्म आपणा हुक्म सुणाईआ। उठ वेख जगत संसारा, दीन दयाल खोज खुजाईआ। चारों कुण्ट धुआँधारा, धर्म दी धार ना कोए उपजाईआ। इष्ट भुल्लिआ गुरु अवतारा, पैग़म्बर सीस ना कोए निवाईआ। मन कल्पणा हाहाकारा, हिरदे हरि ना कोए ध्याईआ। मिले मेल ना एकँकारा, अकल कलधारी नज़र किसे ना आईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी पावे किसे ना सारा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। पंचम जेठ कहे मैं पिछला करां याद, सब नूं दयां जणाईआ। कलयुग अन्तिम खुशीआं वाला सुहाग,

१३८० २१

प्रभ एका एक सोभा पाईआ। जिस सृष्टी दृष्टी पकड़ी वाग, डोरी आपणे नाल बंधाईआ। निरगुण धार प्या जाग, सरगुण देवे माण वड्याईआ। गुरमुख हँस बणा के काग, माणक मोती चोग दए चुगाईआ। पिछला लेखा सब दा कर बेबाक, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज कहे मैं आया जेठ अठारां, दस अठ्ठ वेख वखाईआ। शब्द संदेसा दे अपारा, अपरम्पर दयां दृढ़ाईआ। सावधान होणा पुरख नारा, बाल बिरध लए अंगड़ाईआ। जेहड़ा निरगुण धार आया दुबारा, जोती जोत डगमगाईआ। शब्दी गुर दे इशारा, आलीशान पर्दा रिहा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दी धार इक समझाईआ। धर्म दी धार कहे मैं होई भगतां दी दासी, दासी दास सेव कमाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत प्रकाशी, अन्ध अन्धेर रिहा ना राईआ। प्रभ मिल्या सचखण्ड निवासी, दरगाह साची सोभा पाईआ। मेरी पुन्नी आसी, तृष्ना रही ना राईआ। लेखा रिहा ना पवण स्वासी, साह साह ना कोए गिणाईआ। झगड़ा मुक्या लोकमाती, मोह दिता गवाईआ। पुरख अकाला बण के साथी, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। शहिनशाही सम्मत कहे मैं दस्सां पुरातन धार, धर्म धर्म धर्म दृढ़ाईआ। बलि

बावन खेल अपार, सतिजुग सच दए वड्याईआ। लहिणा देणा अपर अपार, अपरम्पर आप समझाईआ। जिस वेले समग्री होई त्यार, बलि राजा वेखे चाँईं चाँईंआ। रिषी मुनीआं देवां खवाल, ग़रीब निमाणयां तृष्न मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे बलि ने अन्तर कीता ध्यान, अन्तश्करन बदलाईआ। किरपा कर मेरे भगवान, तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी सेवा तेरा दान, देवत सुर वज्जे वधाईआ। मैनूं बख्श निमाणयां माण, हँकार विकार डेरा ढाहीआ। तेरा भण्डारा पीण खाण, तेरी झोली दिता रखाईआ। तूं सर्ब कला मेहरवान, मेहरवान तेरी सरनाईआ। बिन डिठ्ठयां कर परवान, सीस दिता झुकाईआ। हुक्म कीता फ़रमान, सब नूं दयो खवाईआ। जेहड़े पहली पंगत बैठे आण, हिरदे हरि ध्याईआ । रसना रस रस चखाण, खा खा शुकर मनाईआ। बावन बैठा बण नादान, दर दरवेश डेरा लाईआ। जिस वेले कन्या दे नाल छोटा काका लै के आया पकवान, खुशीआं भेंट चढ़ाईआ। बलि दवारे बावन कीता परवान, हुक्म इक जणाईआ। जिस वेले आवां विच जहान, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप रंगाईआ। बच्चे किहा मेरे नाल कर लै वायदा, वायदा इक जणाईआ। जिन्हां पकवान पहिलों खाधा, आपणा रंग देणा चढ़ाईआ। तूं गुरु पुरख अकाल मेलणा दादा, अग्गे विछोड़ा रहे ना राईआ। फेर मेल होवे साडा, सहजे देणा मिलाईआ। बावन किहा पक्का मेरा इरादा, सच दयां समझाईआ। हुक्म बोध अगाधा, बुद्धी तों परे सुणाईआ। हुण पकवान देवे बलि राजा, आपणी सेव कमाईआ। फेर बदल देवां समाजा, कल आपणी कार कमाईआ। इन्हां विच प्रेम दा कर के वाधा, अमृत रस भराईआ। साचा दे स्वादा, पर्दा दयां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। काके किहा मेरी छोटी इक अरदास, हस्स के दयां जणाईआ। की तूं बिरध मेरा देवें साथ, सगला संग बणाईआ। बावन फड़ के हाथ, हथ्थ हथ्थां नाल छुहाईआ । सब तों पुच्छया जिस नूं भगवान उत्ते विश्वास, उँगलां लओ उठाईआ। उन्हां विच्चों इक सौ तेरां जेहड़े प्रेमी ख़ास, प्यार विच समाईआ। जगत नालों हो उदास, उन्हां लई अंगड़ाईआ। असीं ओस प्रभू नूं मन्नया बाप, जेहड़ा आदि जुगादि जम्मण वाला पिता माईआ। सदा सुहेला रहे पवित्र पाक, पुनीत सब नूं दए कराईआ। लेखे लावे माटी ख़ाक, तन वजूद रंग चढ़ाईआ। बावन खुशी नाल दिता आख, शब्द राग अलाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला दर्शन देवे प्रगट हो के साख्यात, सन्मुख साचा सोभा पाईआ। जिस दे कोल ना कोई मज़हब ना कोई ज़ात, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा लहिणा देणा वेखे हिसाब, पूरब लहिणा वेख वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के राग, साचा ढोला

दए जणाईआ। दीन दुनी दा कर त्याग, वैराग अंदर इक उपजाईआ। नाता तोड़ के कूड़ साक, माया ममता मोह मिटाईआ। सच प्रीती बख्श के पुरख समराथ, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। पूरा करे भविख्त वाक्, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बाबूपुर वाल्यो एसे कर के तुहानूं दिती पिछली रात, पूरब लेखा भुल्ल ना जाईआ। दविंदर ने अंदरे अंदर याद रखी ओह बात, भुल्ल विच भुल्ल ना कोए भुलाईआ। ज़ोर नाल मार आवाज़, सब नूं दिता समझाईआ। तुहाडे कोल ज़रूर आउणा इहो मेरी आस, आसा तुहाडे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। दविंदर कहे मैं तुहाडा ओह पिछला वीर, जिस वारता दिती दुहराईआ। आया पन्ध चीर, पैंडा जन्म कर्म मुकाईआ। मैं मँग मँगी प्रभ इन्हां दी बदल जावीं तक़दीर, तदबीर दी लोड़ रहे ना राईआ। लेखे लाउणे शाह हकीर, ग़रीब निमाणे गोद उठाईआ। पिछले कर्मा उत्ते मार लकीर, अग्गे आपणा संग बणाईआ। अन्तर अन्तर रहे धीर, मन ममता ना कोए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच मेला ल्या मिलाईआ। दविंदर कहे मेरीआं गल्लां नूं करदे रहे हासा, हस्स हस्स आप सुणाईआ। मैनूं पिछला लहिणा याद ख़ासा, अंदरे अंदर प्रभू दिता दृढ़ाईआ। किसे दा रहिण नहीं देणा घाटा, पूरब झोली पाईआ। मंजल पूरी होवे वाटा, अधवाटे ना कोए दुहाईआ। खुशीआं वाली राता, मिल के वज्जे वधाईआ। एसे कर के घर घर फिर के सब दा प्रेम पछाता, पच्छिम दक्खण उत्तर पूरब आपणा रंग रंगाईआ। साडा सब दा इक्को पिता ते इक्को माता, दूजी अवर ना कोए माईआ। सारे बण गए भैण भ्राता, वड्डा छोटा ना कोए अख्वाईआ। मेरी पूरी होई आसा, असल दयां समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा खेल वखाईआ। दविंदर कहे ओह बुड्ढा बुड्ढा ब्राह्मण बावन, आपणा रूप बदलाईआ। जेहड़ा मेरा होया ज़ामन, जुम्मेवारी आप उठाईआ। प्रभ प्रगट कर के साहमण, सन्मुख दिता वखाईआ। गुरमुखो तुहाडे अंदर कर के चानण, अन्ध अन्धेर रिहा गवाईआ। सुण लओ शब्द संदेसा कानण, कन्या रही दृढ़ाईआ। साहिब सतिगुर दा छडिओ कदे ना दामन, दामनगीर इक अख्वाईआ। जिस हँकारी मारया रावण, लंका गढ़ तुड़ाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी शामण, सतिजुग सच्चा चन्द चमकाईआ। तुहाडे गृह दा खा के तामन, तृष्ना दिती मुकाईआ। बिन प्रभ किरपा तों कोई ना आए पहचानण, समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भाग लगाए तुहाडे धुर दे ग्रामण, गाउँ ग्राम पिंड जूह आप आपणा रंग रंगाईआ।

❋ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ मेला सिँघ सरपंच दे गृह पिंड बाबूपुर ❋

जेठ कहे हालत वेखी ग़रीब गऊ, गौरव विच गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। कलयुग सब दा पीता लहू, सति धर्म प्रेम नज़र कोए ना आईआ। धुर दा हुक्म साचा भाणा बिन गुरमुखां कोए ना सहू, चार वरन रिहा कुरलाईआ। कोटां विच्चों सन्त सुहेला कोई कहू, सच संदेसा नाम जणाईआ। धर्म दी धार विच गाँ सूर बणया हऊ, हिन्दू मुस्लिम सिख रिहा तड़फाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। जेठ कहे मैनूं आ गई याद, पूरब लेख जणाईआ। किस बिध कृष्ण जगत सुणी फ़रयाद, गोपाला ग्वाला हो के सेव कमाईआ। अन्तर अन्तर सुणी अगम्म आवाज़, अन्तरजामी हो के खोज खुजाईआ। साचा दिसे कोई ना साक, सज्जण नज़र कोए ना आईआ। सीर शीर वाली क्यों होई पाक, बछड़यां रंग रंगाईआ। धर्म दी धार वेखी आस, तृष्ना आपणी आप उपजाईआ। कृष्ण ने तक पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। फेर फेर के उपर हाथ, गऊ ग़रीब दिता जणाईआ। एह खेल अलखणा अलाख, अलख अगोचर आप कराईआ। मैनूं बणा त्रैलोकी नाथ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मैं दस्स के जावां गाथ, धुर संदेसा इक समझाईआ। तुहाडे पिच्छे मैं फिरदा विच भरवास, जमन किनारे गोकल वृंदावन सुहाईआ। तुहाडी आदि दी वेखां साख, भोलानाथ दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। जेठ कहे गऊ दे नेत्र वगिआ नीर, कृष्ण चरण टपकाईआ। तुध बिन कोए ना दस्तगीर, दामन पल्लू ना कोए फड़ाईआ। दस्स खेल बेनज़ीर, जेहड़ा नज़र किसे ना आईआ। कृष्ण हस्स के किहा तुहाडी एह नहीं रहिणी तक़दीर, तदबीर प्रभू रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कृष्ण लकीर मकीर मार के इक क़दम उत्तों गया लँघ, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं कौरो पांडव कराउणा जंग, हसद दीन दुनी मिटाईआ। फेर मिल के ओस काहन दे संग, जो काहना काहन उपजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गा के छन्द, अन्त ओसे विच समाईआ। ओह साहिब सूरा सरबंग, बेअन्त इक अख्वाईआ। हुण दीन दुनी दा बदल दे ढंग, करनी करता इक उपजाईआ। तुहाडा लेखा होणा मंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच लेखा दए जणाईआ। कृष्ण किहा मैं देवां प्रेम दी दाता, दयावान अख्वाईआ। धर्म दे नाल तुहानूं कहिंदा गऊ माता, सीर सब दे मुख चुआईआ। मैं वेखां उपर आकाशा, सचखण्ड साचे ध्यान लगाईआ। जिथ्थे वस्से पुरख अबिनाशा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जो जुग चौकड़ी वेखणहार तमाशा, सतिजुग त्रेता द्वापर पार कराईआ। कलयुग रखी बैठा आसा, तृष्ना आपणे विच वधाईआ। साहिब स्वामी ओस दा थापण लग्गा

१३८३ २१

थापा, लोकमात दए वड्याईआ। दुनियां भुल्ली राम कृष्ण दा जापा, ढोला धुर दा देणा सुणाईआ। पैग़म्बरां दस्स के भेव आपा, पर्दा देणा उठाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद बणाउणा साथा, सगला संग जणाईआ। साडा मन्ने कोई ना आखा, आखर दयां दृढ़ाईआ। तुहाडा रहिणा नहीं कोई राखा, मानव बणे रूप कसाईआ। कलयुग बदल जाणा पासा, करवट आपणी लए अंगड़ाईआ। अग्गे नेड़े दिसे वाटा, पिछला पन्ध मुकाईआ। तुहानूं चारों कुण्ट पैणा घाटा, वाधा अग्गे ना कोए वधाईआ। होणा सहाई ना कोए अनाथा, दीनां दया ना कोए कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। कृष्ण किहा कलयुग अन्त करे खेल आप निरँकार, हरि करता कार कमाईआ। आप बण परवरदिगार, जल्वागर नूर खुदाईआ। पैग़म्बरां दे इक आधार, पंज तत नूर रुशनाईआ। जगत शरअ देणी सिखाल, धुर दा क़लमा इक पढ़ाईआ। तुहाडी करे ना कोए संभाल, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। तुहाडी कम्म ना आवे खाल, हड्ड मास नाड़ी दए दुहाईआ। तुहाडे उत्ते दीन दी बन्नणी चाल, मज़हब वंड वंडाईआ। तुहाडे छोटे छोटे होणे बाल, बछड़े वेख वखाईआ। उन्हां दा करना हाल बेहाल, मर्द रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ।
१३८४ गऊ खिड़ खिड़ा के हस्सी, कृष्ण अग्गे जणाईआ। मैं सुणया धुर दा कमलापती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। की साडे १३८४
२१ उत्ते तरस करे ना रती, मेहर नज़र उठाईआ। जेहड़ा मालक लख चार अस्सी, आदि जुगादि इक अख्वाईआ। क्यों साडे २१
बचड़े करे ख़स्सी, जगत ना होए जुदाईआ। कृष्ण किहा मेरे इशारे नाल तुहाडे बच्चयां दी थोड़ी थोड़ी रह जाणी हिस्सा पत्ती, विरला विरला नज़री आईआ। एह खेल पुरख समर्थी, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। पैग़म्बरां जिबह कराउणा आपणे हथ्थीं, जगत अक्खीं वेख वखाईआ। उन्हां हक़ीक़त दस्सणी हक़ी, हुक्म मन्नो धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। गऊ नेत्र रोई ज़ारो ज़ार, नैणां नीर वहाईआ। कृष्ण कीता अगम्म प्यार, मेहर नज़र उठाईआ। गऊ कीती हाहाकार, तेरे नाम दुहाईआ। कृष्ण दिता इक अधार, भेव अभेदा दिता जणाईआ। तूं रहिणा ख़बरदार, सच दयां सुणाईआ। जिस वेले चारों कुण्ट होवे हाहाकार, क़तलगाह बणे लोकाईआ। उस वेले शब्दी सतिगुर नानक धार गोबिन्द योद्धा प्रगट होवे इक बलकार, खण्डा खड़ग खड़ग उठाईआ। शरअ कूड़ मेटे नाल कटार, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। साचा मार्ग दस्स इक संसार, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश जोड़ जुड़ाईआ। अमृत जाम जाए प्याल, रस इक्को इक चखाईआ। रंग रंगाए शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। तुहाडी करनी करे बहाल, गऊ ग़रीब वेख वखाईआ। तुहाडे पिच्छे आपणे वार के लाल, ज़िमीं ज़मां वेख वखाईआ। वेखणहार मुरीदां

हाल, मुर्शद मिले धुरदरगाहीआ। सब दा हल्ल करे सवाल, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक वखाईआ। कृष्ण किहा गोबिन्द होवे सूरबीर बहादर, योद्धा इक अख्वाईआ। पुरख अकाल देवे आदर, पारब्रह्म दए वड्याईआ। तुहाडा निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। साचा वणज कराए बण सुदागर, वस्त इक्को हट्ट नाम विकाईआ। भाग लगा काया गागर, तन वजूद करे सफ़ाईआ। कूड़ी मेटे निंदरा आलस, तामस तृष्ना दए गवाईआ। पन्थ बणा आपणा ख़ालस, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश जोड़ जुड़ाईआ । दीन दुनी दा बण के सालस, हक़ हक़ीक़त इक समझाईआ। तुहाडे नन्हे वेखे बालक, जो दुखी हो के देण दुहाईआ। फिर अरदास करे अग्गे ख़ालक, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़े विच्चों कढ्ढ जहालत, जहां तहां वेख वखाईआ। तेरी होवे सच अदालत, हुक्म धुर दा इक सुणाईआ। तूं आदि जुगादि सही सलामत, जन्म मरन विच ना आईआ। ग़रीब निमाणयां देवां मैं ज़मानत, बरी तेरे कोलों कराईआ। कृष्ण किहा श्री भगवान कहे गोबिन्द मैं देवां ओह निआमत, जेहड़ी वस्त चार जुग हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। पुरख अकाल किहा सुण गोबिन्द सुत दुलारे, शब्दी धार दयां जणाईआ। मेरा खेल सदा जुग चारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रंग रंगाईआ। मेरे हुक्मे अंदर पैग़म्बर गुरु अवतारे, हुक्मे अंदर कार कमाईआ। कलयुग कीते खेल निआरे, अल्ला राम दिता लड़ाईआ। मज़हब वंड विच संसारे, मानव मानव दिते टकराईआ। सदी चौधवीं सब ने चढ़ना खारे, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। एका कल्की होए अवतारे, निहकलंका नाउँ धराईआ। गोबिन्द शब्द गुरु तेरा रूप होए अपारे, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। ढईआ ना समझे कोए विच संसारे, बुद्धी जगत ना कोए जणाईआ। फेर होणा मात उज्यारे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। चार कुण्ट दह दिशा पाउणी सारे, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण खोज खुजाईआ। तेरे नाम दा होवे इक जैकारे, जै जैकार करे लोकाईआ। तुध बिन दुखियां दुःख ना कोए निवारे, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। गोबिन्द कर के निमस्कारे, पुरख अकाल सीस दिता निवाईआ। श्री भगवान किहा तेरा नूर चमके दुबारे, दो जहानां डगमगाईआ। जिस दा लेखा काग़ज़ क़लम ना लिखणहारे, शाही चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग मेटणा अन्ध अंध्यारे, चार लख बत्ती हज़ार आयू ना कोए भुगताईआ। कूड़ी क्रिया करनी गिरफ्तारे, शब्दी शब्द शब्द हुक्म शनवाईआ। सब दी सुणनी पुकारे, गऊ ग़रीब वेख वखाईआ। जेहड़े बछड़े सदा रहे कुँवारे, जगत विच आपणा जन्म पाईआ। उन्हां ने सिन्ध तों पार सदी चौधवीं सब ने जन्म धारे, आपणी आप लैण अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा जिस वेले सदी चौधवीं आया अन्त, अन्तश्करन वेख वखाईआ। किरपा करे श्री भगवन्त, पारब्रह्म नूर खुदाईआ। लहिणा देणा चुकाए जीव जंत, साध सन्त भेव रहे ना राईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर कर के इक्को मंत, इक्को नाम दए जणाईआ। गढ़ तोड़ के हउमे हंगत, पारब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, धुर दा नाम करे पढ़ाईआ। पुरख अकाल दी इक्को मन्नत, दूजा इष्ट रहिण कोए ना पाईआ। गोबिन्द तेरे हथ्थ वखाउणी सनद, चार जुग दा लहिणा देणा चुकाईआ। तेरे नाल करे कोई ना हसद, दूई द्वैत ना कोए रखाईआ। नाम खुमारी दे के मस्त, निरगुण नूर जोत डगमगाईआ। झगड़ा मुकाउणा उत्ते फ़र्श, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। तुध बिन गऊआं उत्ते करे कोई ना तरस, ग़रीबां होए ना कोए सहाईआ। ग़रीबां कीती इक अर्ज़, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। किस बिध पुठ्ठी सिध्धी होवे नरद, नर नरायण देणा जणाईआ। पुरख अकाल क्यों सम्मत शहिनशाही पंज तेरिआं पंजां प्यारयां दे कमरकसे विच होणी करद, क़ातल मक़तूल दा डेरा ढाहीआ। तुध बिन दूजा सूरबीर मर्दाना बणे कोई ना मर्द, मदद वाला नज़र कोए ना आईआ। चार वरन अठारां बरन चार कुण्ट दह दिशा सब दा सीना करना सरद, अगनी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दी धार इक दृढ़ाईआ। गोबिन्द कहे वेखो हुक्म साहिब सुल्तान, हरि करता आप जणाईआ। जिस नूं मन्ने ज़िमीं असमान, चौदां लोक चौदां तबक सीस निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर सुणे बिन कान, अनादी नाद धुन शनवाईआ। धरनी धरत धवल धौल होए प्रधान, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण सोभा पाईआ। जिस नूं हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करन परवान, अवतार पैग़ंबर गुरु हद्द ना कोए वखाईआ। सब ने मन्नणा इक्को पुरख अकाल भगवान, भगवन सीस झुकाईआ। जगत दा बदल जाणा विधान, शरअ मज़हब ना कोए लड़ाईआ। मुहब्बत नाता जुड़े इन्सान, इन्सानीअत इन्सानां विच भराईआ। सब दा सांझा होवे ख़ानदान, सूर गाँ कट कोए ना खाईआ। किरपा करे श्री भगवान, मेहर नज़र उठाईआ। फेर रीती नीती बदल जगत जहान, जहालत मिटे कूड़ लोकाईआ। एसे कर के सन्त दे के गए बलिदान, आपणी सेव कमाईआ। राम सिँघ हुक्म कीता परवान, आप आपणे लेखे पाईआ। अग्गे खेल वेख नाल ध्यान, की करता कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक वखाईआ। जेठ कहे प्रभ करे आप किरपा, किरपा निधान दया कमाईआ। गऊ ग़रीब कटे बिपता, दु:ख दर्द दए गवाईआ। जिस वेले सारी सृष्टी ने रूप धार ल्या साचे सिख दा, अंदरों रहे ना कोए कसाईआ। एह कोई समझाउणा नहीं इक दा, बाबूपुरे दे समझाइआं

नूं नौ खण्ड पृथ्मी समझ किसे ना आईआ। अबिनाशी करता मालक सारी सृष्ट दा, लख चुरासी मेल मिलाईआ। जिस वेले पर्दा खोल्हे अंदरली दृष्ट दा, दयावान हो सहाईआ। उस वेले नज़ारा मिलदा उस इक दा, जिस नूं अल्ला वाहिगुरु राम ओम कृष्ण कहि के सारे गाईआ। हुण समां कलयुग मिटणा कूड़ी निंद दा, झगड़ा रहे ना राईआ। सतिजुग विच गाँ सूर दा मास हट्ट विच कदे ना विकदा, छुरी शरअ करद ना कोए उठाईआ। तुसीं सारे हुक्म मन्नो गोबिन्द सच्चे पित दा, जो जन्म मरन विच कदे ना आईआ। झगड़ा रहे ना पत्थर इट्ट दा, अक्खरां वाली ना कोए लड़ाईआ। जिध्धर वेखो ओधर पुरख अकाला दीन दयाला दिसदा, हर घट आपणा डेरा लाईआ। अग्गे झगड़ा मुकाउणा जिस ने नित दा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। जेठ कहे प्रभ ने दीन दुनी बदल देणा समाज, साची सिख्या नाल जणाईआ। धर्म दी धार होणा रिवाज, रईयत होवे बेगुनाहीआ। अग्गे सब दी रखणी लाज, दूर दुराडा वेख वखाईआ। तुसीं सारे जाओ जाग, निज नेत्र नैण अक्खखुल्हाईआ। गुरमुख बणो हँस ना बणयो काग, आपणा रंग बदलाईआ। काया मन्दिर अंदर दीपक जोत जगाओ चराग़, घर घर विच करे रुशनाईआ। त्रैगुण बुझाओ आग, अगनी तत ना कोए तपाईआ। जेहड़ा सतिगुरु सदा रहे आदि, जुगादि दा मालक इक अख्वाईआ। उस दी शब्द सुणे आवाज़, जो धुन आत्मक राग सुणाईआ। जिस ने सृष्टी दृष्टी देणी साध, साधना आपणी इक वखाईआ। सब दी पवित्र रहे औलाद, गऊ ग़रीब ना कोए सताईआ। एह छेती होण वाला काज, करनी करता आप कराईआ। जिस ने कलयुग कूड़ी क्रिया बेड़ा डोबणा जहाज़, सतिजुग नईआ नौका नाम जहाज़ इक्को इक जणाईआ। गोबिन्द दा शब्द अगम्मी बाज़, दो जहान झपट लगाईआ। हउमे हंगता करे बरबाद, सति सच लए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नानक दा बचन पूरा करे जो संदेसा दिता विच बग़दाद, बग़लीआं वाल्यां बग़लगीर इक समझाईआ।

❊ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ दलीप सिँघ दे गृह बाबूपुर ज़िला गुरदासपुर ❊

सम्मत शहिनशाही कहे साढे नौ दा होवे वक्त, सतारां हाढ़ रैण सुहाईआ। धर्म दी धार सज्या होवे तख़्त, तख़्त निवासी दया कमाईआ। सत्त सीतल सुभाव सेवादार होण भगत, भगवान मिल के वज्जे वधाईआ। सोहणयां वस्त्रां विच होवे जिगरे लख्त, अमरजीत सिँघ रंग रंगाईआ। सारी संगत इक्के वार नेत्र खोल्ह के करे दरस, अक्खसके ना कोए झमकाईआ। फेर

जैकारा बोलणा असीं तेरे हो गए विच्चों जगत, दीन दुनी दिती तजाईआ। साडे सिर दी बाज़ी ते आत्मा दी शर्त, शरअ विच्चों बाहर देणा कढ्ढाईआ। फेर बोलणा कूक गरज, ज़ोर नाल सुणाईआ। तूं साहिब सुल्ताना मर्द, मर्द मर्दाना दो जहानां नज़री आईआ। ओस वेले पंजां प्यारयां कमरकसे विच्चों कढ्ढणी इक इक्क करद, क़दम अग्गे क़दम पिच्छे आपणा आप लैणा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक समझाईआ। तख्त कहे सेवादार होण चारे वरन, चौकड़ी आपणा मूल जणाईआ। उन्हां दे नंगे होण पैर प्रभ दे चुम्मण चरण, रसना रस नाल चखाईआ। सच जैकारा इक्को पढ़न, आवाज़ प्रेम नाल उठाईआ। फेर हरि संगत विच वड़न, चारों कुण्ट निउँ निउँ सीस झुकाईआ। फेर इक्ठे हो के मुखों कहिण असीं छड्डे बरन, झगड़ा दुनी वाला मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक उपजाईआ। तख्त कहे उत्तर होवे राम तस्वीर, पूरब कृष्ण देणा बिठाईआ। पच्छिम दिशा होवे कबीर, दक्खण हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद नाम देणा लटकाईआ। साहमणे होवे नानक गोबिन्द हथ्थ शमशीर, शमांदान करन रुशनाईआ। हरिसंगत अंदरों होए ना कोए दिलगीर, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। आपणे अग्गे सज्जी उँगल नाल हर इक कढ्ढे लकीर, लाईन सिध्धी सिध्धी बणाईआ। हिरदे अंदर कहिण साडी बदल जाए तक़दीर, जन्म मरन विच फेर कदे ना आईआ। प्रभू कटे चुरासी भीड़, चारे खाणी लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा हुक्म इक समझाईआ। तख्त कहे पिच्छे दुर्गा होवे सिँघ अस्वार, आपणा आप टिकाईआ। अग्गे पंज प्यारे होवण ख़बरदार, धर्म धार लैण अंगड़ाईआ। उच्चे पंज लिखारी रहिण त्यार, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। दो गुरमुख होर बणाउणे सिपहसालार, सति वरदी सोभा पाईआ। इक होवे कलाकार, जो आपणा करतब दए जणाईआ। इक बणया होवे जलाद, हथ्थ खड़ग कटार उठाईआ। इक मारन वाला होवे आवाज़, हुक्म सब नूं दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक प्रगटाईआ। तख्त कहे सुणना हुक्म अगम्म सरकारी, हरि सतिगुर आप जणाईआ। सब ने क़बूल करनी ताबिआदारी, दारा शिकोह दा लेखा देणा चुकाईआ। अग्गे करे ना कोए ग़द्दारी, गदा चक्र ना कोए उठाईआ। सब दी धर्म दी होवे त्यारी, त्रैगुण दा डेरा ढाहीआ। पुरख अकाल नाल पक्की करनी यारी, यराने कूड़े जगत देणे तुड़ाईआ। किसे चुरासी वाली कटणी ना पए खुआरी, खाणी विच ना कोए भवाईआ। जन्म लैणा ना पए दुबारी, मरन वंड ना कोए वंडाईआ। मंज़ल चढ़ना ओस अटारी, जो महल अटल सोभा पाईआ। भगत भगवान विच रहे ना बेएतबारी, धुर दा हुक्म देणा दरसाईआ। सतारां हाढ़ कहे धर्म दी धार वेखणा

१३८८
२१

इक तराज़ू, कंडा गोबिन्द हथ्थ उठाईआ। जिस उत्ते दोवें रखणे बाज़ू, जो बाज़ां वाला गया जणाईआ। जन भगतां लेखे लाउणी आयू, जन्म मरन आपणे विच टिकाईआ। सति धर्म बणा के साधू, सन्त सज्जण लैणे समझाईआ। बिना भगत भगवान तों दूजा रहे कोई ना वाधू, वायदा इक्को पूर कराईआ। लेखा दस्सणा जो गोबिन्द नाल कीता दादू, दाअवे नाल दृढ़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बिन पुरख अकाल तों रहिणा कोई नहीं आगू, आगिआ विच सारे सीस निवाईआ। कोटां विच्चों कोए भगत सुहेला जागू, जिस जन नेत्र अक्खखुल्लाईआ। बिना शब्द तों मन होणा नहीं किसे दा क़ाबू, क़ाबल क़ंधारी दए दुहाईआ। कलयुग माया ममता दा चलणा जादू, यादवां कृष्ण गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं वेखणा इक हाकम, जो हुक्म धुर सुणाईआ। भेव चुकाए पुरातन, पर्दा दए उठाईआ। लेखा दस्से बातन, आपणा रंग रंगाईआ। जिस नूं सारे सब दा माही आखण, आख़र धुरदरगाहीआ। ओस दा लैणा साथण, सगला संग बणाईआ। कूड़े मित्र सर्ब गवाचण, दुनी विच ना कोए वड्याईआ। जो धुर दा नाम वाचण, संदेसयां विच समझाईआ। इक्को वेखण पुरख अबिनाशण, जो बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे सत्त रंग दी होवे डोरी, साढे तिन्न हथ्थ लम्बी नज़री आईआ। पाणी दी होवे नाल कटोरी, साफ़ सुथरा सोभा पाईआ। दविंदर होवे छोटी छोहरी, दोहां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत भगवान दी आप बणाए जोड़ी, जोड़ी दा सज्जण लोड़ींदा आपणा मेल मिलाईआ।

१३८९
२१

✻ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ बीबी चन्नी दे गृह अल्लड़पिंडी ✻

सम्मत पंज कहे हरिसंगत सोहँ लिखणा आपणी सज्जी तली, तल्ब सब दी वेख वखाईआ। आत्म रहे कोए ना इकल्ली, कुल्ल मालक होए सहाईआ। यार मिले ओस गली, जिस नूं भीड़ी कहि के सारे गए गाईआ। धुर दा मालक बण के वली, वली अल्ला नूर खुदाईआ। योद्धा सूरबीर हो के बली, बलधारी फेरा पाईआ। जिस दी धार नवीं चली, चार वरन रिहा मिलाईआ। एसे दी याद कीती हज़रत अली, अल्ला तेरी बेपरवाहीआ। जिस ने सब दी करनी भली, भुॅल्यां भटक्यां गले लगाईआ। फ़कीरां दे चिराग़ां विच चिरां दी पैंदी तेल दी पली, पलक विच लेखे दए चुकाईआ। जेहड़ी दुहाई दिती हसन

१३९०
२१

हुसैन विच थलीं, बालू रेत बालम रही जणाईआ। ओस दी खेल अनोखी चली, चारों कुण्ट पर्दा लाहीआ। गुर अवतार पैग़ंबरां झगड़ा रिहा दलीं, दलदल दीनां मज़हबां विच फसाईआ। पुरख अकाल बण के छली, वल छल आपणा खेल खिलाईआ। जो गुरसिख सवाणी साहिब सतिगुर नाल रली, दरगाह साची सोभा पाईआ। लख चुरासी विच्चों फुली फली, मानस जन्म लेखे दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच संदेसा रिहा घल्ली, धुर फ़रमाना धुरदरबारी इक सुणाईआ।

✻ १६ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे गृह अल्लड़पिंडी ✻

सम्मत पंज कहे सो पुरख निरँजण सुहाउणा तख़्त, हरि पुरख निरँजण दया कमाईआ। एकँकार हुक्म देणा सख़्त, आदि निरँजण आप मनाईआ। श्री भगवान खेल करना उपर अर्श, अबिनाशी करता धार बंधाईआ। पारब्रह्म वेखणा वक्त, वेला दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा इक वखाईआ। सम्मत पंज कहे सावधान होणा शब्दी शब्द एक, शब्द शब्द वड्याईआ। साचे दर दी इक टेक, इक्को ओट बणाईआ। इक्को रूप इक्को भेख, इक्को करनी कार कमाईआ। इक्को हुक्म इक संदेस, इक्को कलमा नाम पढ़ाईआ। इक्को बण नर नरेश, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। इक्को दे होणा सब ने पेश, पेशीनगोई दए जणाईआ। जो सतिगुर शब्द रहे हमेश, आदि अन्त आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सम्मत पंज कहे शब्द गुरु होणा सावधान, सचखण्ड साचे लए अंगड़ाईआ। आपणी करनी मार ध्यान, आप आपा वेख वखाईआ। संदेसा सुण श्री भगवान, हुक्म मन्ने चाँईं चाँईंआ। किस बिध खेल करना जहान, लोकमात कार कमाईआ। तख़्त निवासी हो नौजवान, नौबत नाम हक़ सुणाईआ। करना खेल मालक कुल्ल जहान, ख़ालक ख़लक आप दृढ़ाईआ। जिस दी करे ना कोए पहचान, बेपहचान नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरा साहिब सच्चा दरबारी, आदि जुगादी इक अख्वाईआ। जिस दी धार दो जहानां निआरी, निरगुण आपणी कार कमाईआ। अवतार पैग़ंबर गुर जिस दे पुजारी, जुग जुग सीस झुकाईआ। सारे आसा रख के गए वारो वारी, भविख्तां विच जणाईआ। कल कल्की होए अवतारी, जोती जाता डगमगाईआ। सम्बल वस्से धाम निआरी, इक इकल्ला डेरा लाईआ। अन्त ओस दी आ गई वारी, वारस होवे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे जग होणा वक्त सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाईआ। करे खेल दर्द दुःख भय भंजना, प्रभ ठाकर बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण बण के सज्जणा, सगली कार कमाईआ। जिस दा अगम्मी दरबार लग्गणा, जुग चौकड़ी वंड ना कोए वंडाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव धुर दे हुक्म सद्दणा, संदेसा इक जणाईआ। तेई अवतार उठ उठ भज्जणा, बण बण पाँधी राहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद सरनी लग्गणा, निउँ निउँ लागण पाईंआ। नानक गोबिन्द खेल वेखणा सूरे सर्बग्गणा, जोती जाता जोत करे रुशनाईआ। नाम दमामा एका वज्जणा, ब्रह्मण्ड खण्ड दए उठाईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआरा दग्गणा, चारों कुण्ट तत जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे विष्नूं करनी सच त्यारी, त्रैगुण अतीता दए जणाईआ। क्यों सृष्टी होए खुआरी, ग़रीब निमाणे देण दुहाईआ। क्यों ना बणया जगत अधारी, तृष्ना भुक्ख गवाईआ। अन्तिम वेख खेल अपारी, अपरम्पर स्वामी दए जणाईआ। ओस दी आई वारी, जिस दी वारता सारे गए गाईआ। जिस आपणी कल धारी, कल राखे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे ब्रह्मे चल वेख पारब्रह्म, ब्रह्म वेते दयां जणाईआ। जिस दी धारों तेरा होया जरम, जन्म दिता ख़लक लोकाईआ। अग्गे कोए ना रहे भरम, भाण्डा भरम भन्नाईआ। इक ब्रह्म क्यों बणे वरन, बरन क्यों रंग रंगाईआ। क्यों नहीं प्रभ दे पूजे सब ने चरण, इष्ट इक ना कोए रखाईआ । क्यों ना मंज़ल साची चढ़न, पैंडा पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक दृढ़ाईआ। सतिगुर शब्द कहे उठ शंकर भोले नाथ, सच दयां जणाईआ। छड्ड दे खहड़ा कैलाश, पर्बत सारे देण दुहाईआ। कूड़ कुड़िआरिआं ख़ाली होई लाश, तन वजूद ना माटी ख़ाक रुलाईआ। क्यों माया ममता खेड़ा होया आबाद, चारों कुण्ट जूठ झूठ लहराईआ। क्यों गुर अवतार पैग़म्बर होए आज़ाद, एका इष्ट ना कोए मनाईआ। क्यों तन भबूती लाई ख़ाक, बाशक तशका गल लटकाईआ। क्यों बन्द कवाड़ी खुल्हिआ किसे ना ताक, शम्भू तेरा नाम ध्याईआ। उठ वेख आपणा भविख्त वाक, जो ब्रह्मे नाल दिता समझाईआ । नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों सतारां हाढ़ दी आउणी उह रात, रुतड़ी इक महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे तेई अवतार होणा सावधान, बिन नेत्र लोचण नैण अक्खखुल्लाईआ। लोकमात सब ने धरना ध्यान, दूसर राह ना कोए तकाईआ। साचे प्रभ दा नूर वेखणा महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। जिस बणाए कृष्ण राम, काहना बंसरीआं धुंन सुणाईआ । सो खेल करे विच जहान, जोती जाता वेस वटाईआ। हुक्म संदेसा देवे फ़रमान, कलमा इक्को इक पढ़ाईआ।

१३९१ २१

जा के सारे करो परवान, अग्गे हुक्म ना कोए सुणाईआ। बरदे बणो ग़ुलाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पिछला लेखा छड्डो तमाम, तमन्ना अवर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो पैग़म्बर हज़रत, हज़ूर हाज़र रिहा जणाईआ। जिस दी रहमत नाल कीता ऐशो इशर्त, रस कलमे वाला खाईआ। जीवण ज़िंदगी कीती बसरत, लोकमात मिली वड्याईआ। दीनां मज़हबां नाल कीती कसरत, बलि बलि विच्चों प्रगटाईआ। हुण क्यों होई लोकमात नफ़रत, नेत्र अक्खना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो धुर इजलास, हरि करता आप लगाईआ। हुक्म संदेसा सुणना ख़ास, ख़सूसीअत नाल दृढ़ाईआ। जिस दे उत्ते तुहानूं विश्वास, विशा पिछला दए मुकाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाईआ। तुहानूं दीन मज़हब दी छड्डणी पए जमात, कलमा कायनात ना कोए सुणाईआ। सच दवारे होणा पैणा दासी दास, सेवक सेवक रूप वखाईआ। ज़रा निगाह मारो उपर आकाश, आकाश आकाशां खोज खुजाईआ। फेर धरनी तक्को जिथ्थे निरगुण नूर जोत प्रकाश, जोती जाता नज़री आईआ। जो सब दी सुणे बात, बातन भेव खुलाईआ। दर्शन देवे साख्यात, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा आप जणाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुरु दस करो त्यारी, तरह तरह वड्याईआ। खेल वेखणा जोत निरँकारी, निरवैर निराकार आप कराईआ। अन्तिम आई जिस दी वारी, वारस होए सर्ब लोकाईआ। आपणी कला वरतो ज़ाहरी, पर्दा ओहला दयो उठाईआ। जिस नूं ग्रन्थां शास्त्रां वेदां पुराणां अञ्जीलां क़ुरानां विच तुसां कीता इशतिहारी, लम्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। ओह शहिनशाह बण सिक्दारी, लोकमात फेरा पाईआ। जिस दी सब ने मन्नणी ताबिआदारी, तबा तबीअत दए बदलाईआ। किसे दी रहिण ना देवे कोए मुख्त्यारी, मुख़तारनामे सब दे लए कढ्ढाईआ। सब दी ला के इक नाल यारी, याराना पिछला दए चुकाईआ। ओह वेखणा धुरदरबारी, दरगाह साची दा मालक अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पर्दा उहला आप उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो हुक्म सति सच संदेसा, संध्या सरघी वंड ना कोए वंडाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मातलोक दा वेखो देसा, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड पन्ध मुकाईआ। तेई अवतार आपणा पूरा करो लेखा, बाकी नज़र कोए ना आईआ । पैग़म्बर झगड़ा छड्डो शेख़ा, मुल्ला रो रो मारन धाईआ। दस गुरु निगाह मारो तुहाडा साचा दिसे कोए ना बेटा, गुरमुख गोबिन्द विच ना कोए समाईआ। कौल इक़रार कर लओ चेता, चेतन दयां कराईआ। अन्तिम सब दा होणा

इक्को नेता, नर नरायण नूर अलाहीआ। जिस दी सब ने देणी भेंटा, भजन बन्दगी विच सीस निवाईआ। ओह दो जहानां बणे खेवट खेटा, बेपरवाह दया कमाईआ। लेखा जाणे मूंड मुंडाए धारी केसा, दस दस्मेशा फेरा पाईआ। जो आदि जुगादि रहे हमेशा, जन्म मरन ना कोए रखाईआ। ओह कर अगम्मी वेसा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो आपणी करो हां, सच दयां जणाईआ। सारे कहिण प्रभू इक्को पिता ते इक्को माँ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। साडी दरोही असीं वंडां आए पा, पारब्रह्म ब्रह्म रंग रंगाईआ। किसे ने राम किसे ने किहा कृष्ण कोई कहि के आया खुदा, सतिनाम वाहिगुरु सिफ्तां विच सालाहीआ। किसे ने शरअ सूर बणाई किसे बणाई गाँ, पशूआं उत्ते धर्म आए टिकाईआ। जे सारयां दस्सया प्रभू दा इक्को कलमा ते इक्को नाँ, नर नरायण इक अख्वाईआ। फिर क्यों वंड रखाई काया साढे तिन्न हथ्थ गराँ, पर्दा सच ना कोए खुल्हाईआ। मुहब्बत विच पकड़ी किसे ना बांह, उल्फ़त विच ना कोए चतुराईआ। सांझा कीता ना किसे निआं, मज़हबां वाली आपणी हद्द बणाईआ। एसे कारण आए लिखा, भविख्तां विच जणाईआ। जिस वेले सारी दुनियां होई बेवफ़ा, वफ़ादार रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निहकलंका कलकल्की अमाम अमामा जावे आ, धुर दा मालक फेरा पाईआ। सब दा लहिणा देणा दए चुका, चुकन्ना करे लोकाईआ। सो वक्त पहुंचया आ, वेला दए गवाहीआ। पुरख अबिनाशी दया रिहा कमा, मेहर नज़र इक उठाईआ। सच दरबारा रिहा लगा, सम्बल सोभा आपे पाईआ। भगत भगवान रिहा वडया, वड्डा छोटा ना कोए अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो इक्ठे होणा आ, आपणा पन्ध चुकाईआ। दीन मज़हब दा अग्गे लग्गणा नहीं किसे दा दाअ, दावत वाले खाणे सब दे बन्द कराईआ। मेरे नाँ दी जेहड़ी मनुक्खां विच लाई वबा, बीमारी अंदरों देणी कढ्ढाईआ। सब दा सांझा बण के इक खुदा, परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सानूं धुर दा होवे चाअ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर साची आस पुचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहे, खुशीआं नाल आवांगे। तेई अवतार कहिण साडी पत रहे, पतिपरमेश्वर सीस निवावांगे। पैग़म्बर कहिण जो सब नूं दात दए, दर उस दे अलख जगावांगे। गुर दस कहिण जो हर घट अंदर रहे, सो स्वामी वेख वखावांगे। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी सृष्टी करदा लय, उत्पत विच उस दी सेव कमावांगे। जो भगतां आया गृह, घर उस दे डेरा लावांगे। जो प्यार मुहब्बत दी वहावे नैं, रस अमृत वेख वखावांगे। जिस दा जुग जुग मन्नदे आए भै, भजन उसे दा गीत सुणावांगे। जिस दा मन्दिर कदे ना ढहे, दुआरा इक्को इक वडयावांगे।

जिथ्थे तख्त निवासी तख्त बहे, सो सिँघासण वेख खुशी उपजावांगे। हँकारी रहे कोई ना मैं, ममता मोह सर्ब तजावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमावांगे। राम कहे सब दा मालक सब किछ सब नूं दए, देवत सुर वडयावांगे। मैं चौहन्दा प्रभू दे चरणां विच हरिसंगत मेरी आशा कारण सीता राम दी जै कहै, तिन्न वार सुणाईआ। कृष्ण किहा मेरा काहन है, काहन काहन इक अख्वाईआ। जिस दे नाल राधा रहे, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। कृष्ण कहे मेरा काहन प्यारा, प्रेमी इक अख्वाईआ। जिस नूं कहिण चौवीआं अवतारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सब दी पावे सारा, महासार्थी वेस वटाईआ। मैं वी करदा रिहा इंतज़ारा, ध्यान ध्यान विच लगाईआ। त्रैलोकी तों बाहरा जिस दा खेल निआरा, जुग चौकड़ी समझ किसे ना पाईआ। मैं चौहन्दा उहदयां क़दमां विच राधा कृष्ण दा लग्गे नाअरा, हरि संगत दो वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा दए उठाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद कहे साडा इस्लामीआ टब्बर, दीन दुनी कायनात नज़री आईआ। असीं सन्तोख कीता सबर, शुकराने विच दुहाईआ। दरोही दरोही दरोही वास्ता पाया विच क़बर, मक़बरे देण दुहाईआ। जिस वेले आया अगम्मी बब्बर, शेर

१३९४ शेरा रूप वटाईआ। सब दी करे क़दर, क़ुदरत दा मालक नूर खुदाईआ। सदी चौधवीं वेखे अदल, इन्साफ़ आपणा इक १३९४

२१ जणाईआ। दीन दुनी दा समाज देवे बदल, बदला रहे ना राईआ। सब दा बण के सांझा सज्जण, मित्र इक अख्वाईआ। २१

नाम कलमा जणा के भजन, बन्दगी इक दृढ़ाईआ। चार वरन तोल के वज़न, कंडा आपणे हथ्थ उठाईआ। साडा सारयां दा सांझा कर के वतन, बेवतनां लए मिलाईआ। वखा अगम्मी पत्तन, बेड़े लए चढ़ाईआ। सब दी लज्जया आवे रखण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिस नूं अवतार पैग़म्बर सारे तक्कण, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। असीं चौहन्दे जन भगत सुहेले सूफ़ी फ़कीर नाअरा लावण अल्ला हू अकबर, उच्ची इक वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। नानक निरगुण कहे मैं वेखणा ओह अमाम, जो अमलां तों रहित नज़री आईआ। जिस दे अन्तर दिस्सया सतिनाम, कलमा कलमे विच बदलाईआ। संदेसा दे पैग़ाम, कीती शब्द पढ़ाईआ। निरगुण नूर दस्स पहचान, पर्दा दिता उठाईआ। सांझा दे ज्ञान, सिख्या इक वखाईआ। बख्श के चरण ध्यान, मेला ल्या मिलाईआ। एका जोत कर प्रधान, दस जामे लए भुगताईआ। गोबिन्द सूरा नौजवान, शब्दी डंक सुणाईआ। दे के धुर फ़रमान, भेव अभेदा इक जणाईआ। कल कल्की होवे प्रधान, निहकलंका नाउँ धराईआ। सम्बल वस्से आण, सिँघासण आसण इक रखाईआ।

सब दा करे कल्याण, जो सरन लग्गे सरनाईआ। कलयुग मेटे कूड़ तुफ़ान, सतिजुग सच लए प्रगटाईआ। नानक कहे मैं चौहन्दा चार वेरां हरिसंगत बोलणा सतिनाम, सति सति विच समाईआ। गोबिन्द कहे मेरा फ़तिह जैकारा सुणो विच जहान, चार वरन वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दरबारा इक वखाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण, प्रभ सच दरबार लगावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव वेखे बिन नैण, जोती जाता डगमगावेगा। जिस दे कोल नाम रसैण, बिन रसना जिह्वा सर्ब पढ़ावेगा। जिस दा नूर ऐन दा ऐन, जलवा इक्को इक वखावेगा। ओह सब दा लेखा आवे लैण, लहिणा सब दा मूल चुकावेगा। नाता तोड़ भाई भैण, जन भगतां आप प्रगटावेगा। कूड़ी क्रिया मूल ना वहिण, माया ममता मोह मिटावेगा। भगत दवारे साचे बैहण, भगवन आसण इक सुहावेगा। धुर दा भाणा सदा सहण, सिर अग्गे ना कोए उठावेगा। जो झगड़ा प्या मत्त जैन, पट्टी सब दा मुख खुल्हावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग आप रंगावेगा। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण असीं सुणना नाम अनादी, अनहद धुन शनवाईआ। जन भगतां वेख आबादी, दर सोहणे सोभा पाईआ। भगत भगवान दी तक्कणी शादी, घर मेला सहज सुभाईआ। सब ने इक दे बणना समाजी, समां शहादत दए गवाहीआ। बिना प्रभू तों वड्याई काहदी, तन वजूद कम्म किसे ना आईआ। वस्त मिले किसे ना हाजी, हुजरिआं सीस ना कोए निवाईआ। बिन धुर दे नाम तों सारे होए दाग़ी, दग़ा करे लोकाईआ। सोई सुरती किसे ना जागी, नेत्र अक्खना कोए खुल्हाईआ। खेल वेखणा कलयुग अन्तिम बाज़ी, बाज़ां वाला दए वखाईआ। जन भगतो गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण साडे वास्ते सब ने इक इक्क वस्त लिआउणी घरों भाजी, लाची दाणा जेब टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच मेला आप मिलाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण जन भगतो साडा पकवान पकाइओ पक्का, पक्की तरह जणाईआ। चार वरन बणाइओ सका, द्वैत अंदर रहे ना राईआ। झगड़ा मेटणा बूरा कक्का, काले गोरे कोझे कमले गल लगाईआ। दूसर रहे कोई ना वक्खा, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। सब कुछ वेख्यो नाल अक्खां, अक्खी देण दृढ़ाईआ। जेहड़ा साढे तिन्न हथ्थ रख्या रस्सा, पंज प्यारयां हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जिस ने मलेछां उठाउणी सफा, सफा आपणी दए बदलाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण चार थाल होण परोसे, माझा मालवा जम्मू दुआबा वाले लिआईआ। पाणी दे ग्लास रखणे नाल कोसे, ठंडा जल ना कोए भराईआ। पंजां तों वध्ध खाणे होण ना बहुते, सच दईए दृढ़ाईआ। असीं होणा नहीं कोई मोटे, तन रहिण कोए ना पाईआ। अग्गे तों गुरमुख जीउदा देवे कोई ना मोछे,

१३९५ २१

पीरां भेंट ना कोए चढ़ाईआ। पिछली रीती बिना प्रभू तों कोई ना रोके, रुकमणी कृष्ण गया समझाईआ। जिस वेले गनका ज्ञान दिता सी तोते, शब्दी शब्द जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप चढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण खाणा होवे विच पंज बरतन, पंजां दयां जणाईआ। प्रभ ने साडी पूरी करनी शर्तन, जो शरअ विच समझाईआ। मालक हो के अर्शन, फ़र्शन सोभा पाईआ। जन भगतो तुहाडा सांझा करना मिलन वरतन, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार सरनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सच दरबारा वेख वखावांगे। जो हुक्म दस्से नर निरँकार, सो सुण के ख़ुशी मनावांगे। जो खाणा लै के आउण जन भगत नाल प्यार, सो प्रेम विच मिल खावांगे। एह सब दी साची कार, सच करनी कार कमावांगे। अगला मेल अगम्म अपार, प्रभ अग्गे सीस निवावांगे। साडा रहे ना कोए अख़्त्यार, तेरे हुक्मे अंदर सेव कमावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दे पूरे करे कौल इक़रार, इक़रारनामे गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ दे अग्गे टिकावांगे।

✻ २० जेठ शहिनशाही सम्मत ५ आसा सिँघ दे गृह अल्लड़ पिंडी गुरदासपुर ✻

सतिगुर शब्द कहे मेरा समझया ना किसे खरड़ा, बेअन्त दा अन्त कोए ना पाईआ। जुग जुग मैं पुआउँदा रिहा झगड़ा, सतिगुर हुक्म संदेस सुणाईआ। वड्याई विच इक दूजे नूं करदा रिहा तकड़ा, थापी पुश्त पनाह लगाईआ। हुक्मे अंदर सब नूं रिहा रगड़ा, रग पट्ठे वाल्यां कीती सफ़ाईआ। सिफ्तां वाला दस्सदा रिहा चार मँगला, महिमा वाली पढ़ाईआ। काया वाला सुहाउँदा रिहा बंगला, वजूद अंदर कर रुशनाईआ। आपणा भेत रख के गंधला, आख़र समझ ना किसे समझाईआ। किसे नूं शाह बणाया किसे नूं कंगला, कामल नज़र कोए ना आईआ। किसे डंडौत दस्सी किसे बन्दना, कोई सजदयां विच सीस झुकाईआ। सब नूं दस्सया बड़ा चंगा सतिगुर दे चरणां लग्गणा, लग मातर अगली ना कोए दृढ़ाईआ। प्यार कराउँदा रिहा तन माटी बदना, सरीर नाल सोभा पाईआ। हिस्सा वंडा के आहला अदना, खेल दिता कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर लगदा रिहा सगना, गद्दीदार गद्दीदार गद्दीदार जगत अख्वाईआ। तख़्त बहि के वंडदे रहे हद्दना, मज़हबां वाली लाईन रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक उपजाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं नाम दे देंदा रिहा डगरू, लोकमात हथ्थ फड़ाईआ। नन्हे बच्चे कर के गभरू, गुर अवतार पैग़म्बर दिते लड़ाईआ।

साचा रहिण ना कोए दिता अदलू, इन्साफ़ हक़ ना कोए कमाईआ। एसे तरां हुण वी कलयुग बदलू, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। गुरमुख विरला प्रभ दा संग मँग लऊ, मँगता हो के झोली डाहीआ। सच दवारे इक अनन्द लऊ, सुख सागर विच समाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला इक्को मन्न लऊ, माया ममता मोह गवाईआ। सच ख़ज़ीना अगम्मा धन लऊ, नाम निधाना नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़ंबरो सतिगुर शब्द कहे, किस दी करदे भगती, नाम सिमरन पूजा किस जणाईआ। माण वड्याई पौदे रहे बण के व्यक्ती, क्या आपणी कार कमाईआ। प्रसिद्ध हुंदी रही तत्तां वाली हस्ती, हस्त कीट रंग रंगाईआ। लहिणा देणा मिलदा रिहा दस्ती, लोकमात वज्जी वधाईआ। नाम संदेसा देंदे रहे शर्ती, शरअ वंड वंडाईआ। शब्द गुरु दे बणे रहे गरज़ी, दिवस रैण सेव कमाईआ। सति धार दी देंदे रहे अर्ज़ी, बिन अक्खरां लेख बणाईआ। फिर वी सतिगुर शब्द करदा रिहा आपणी मर्ज़ी, मज़ा थोड़ा थोड़ा चखाईआ। खेल दस्सदा रिहा नरायण नर दी, जिस दी सिफ्त विच सिफ्तां सारे गए गाईआ। सब दी अन्तर धार ढोला रही पढ़दी, नाम कलमा अगम्म अथाहीआ। तत शरीर पहना के वरदी, जगत सिपाही दिते जणाईआ।
१३९७ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द १३९७
२१ कहे मेरा समझया ना किसे राज़, राज़क रिज़क रहीम ना कोए दृढ़ाईआ। मेरा जाणिआ किसे ना साज़, कहां कहां नौबत २१
नाम वजाईआ। मेरा वेख्या किसे ना समाज, समग्री हथ्थ ना कोए उठाईआ। मेरा तक्कया किसे ना काज, किस बिध आपणी कार हथ्थ कमाईआ। मेरे चढ़या ना कोए जहाज़, मंज़ल चढ़न अन्त कोए ना पाईआ। जिस नूं किरपा कर के थोड़ी दिती दात, लोकमात दया कमाईआ। उह दस्सण लग्गा सृष्टी करामात, मेरा भेव खुलाईआ। चरण कँवलां जुड़ा के नात, डोरी तन्द बंधाईआ। धुर दा दे के साथ, सिख्या इक समझाईआ। प्रेम दा दे के प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दिता चुकाईआ। अन्त तोर के खाली हाथ, काया माटी ख़ाक मढ़ी गोर दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़ंबर घल्ले, हुक्म इक जणाईआ। नाम वस्त बन्नू के पल्ले, पलकां पिच्छे कीती रुशनाईआ। बिरहों वैराग विच कर के झल्ले, झलक आपणी इक दृढ़ाईआ। सच दवारिउँ आए थल्ले, धरनी धरत धवल डेरा लाईआ। दीन मज़हब बणा के महल्ले, घर आपणा गए सुहाईआ। नाम कलमे सागर विच्चों उछल्ले, लहरां जगत नाल लहराईआ। सिखां मुरीदां किहा बल्ले बल्ले, सतिगुर मुर्शद हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं खेल करदा रिहा रुहानी, आपणा

हुक्म जणाईआ। करदा रिहा बेईमानी, शरअ वंड वंडाईआ। चढ़ाउँदा रिहा तुग्यानी, मज़हब मज़हब नाल टकराईआ। खेल खेलदा रिहा तुफ़ानी, दीन दुनी दिती लड़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान बणा कथा कहाणी, कथा कबीर कोलों सुणाईआ। नाम सिफ्त बणा के बाणी, महिमा जगत विच बणाईआ। आप सदा सुत्ता रिहा आपणा ओढुन ताणी, लोकमात ना लई अंगड़ाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर सब दा जाण जाणी, हर घट वेखे थाउँ थाईंआ। मंज़ल उस दी पद निरबाणी, निरगुण आपणा आसण लाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़ग्बर मेरे रस दा मँगदे रहे पाणी, आबेहयात राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक उपजाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं खेलां खेल बहु बिध भट्टीआं, भटनागर रूप वटाईआ। मैं लोक परलोक चलावां हट्टीआं, तबकां वंड वंडाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बरां बणावां पत्तीआं, हिस्सेदार अख्वाईआ। कोटन कोटि हंढावां सखीआँ, नारी कन्त सोभा पाईआ। लख चुरासी जगावां मोमबत्तीआं, आत्म नूर कर रुशनाईआ। गुरु बहावां लोह तत्तीआं, रेता सीस विच पवाईआ। माण गवावां लक्ष्मण जतीआं, सति विच ना कोए समाईआ। पैग़ग्बरां दी हालत वेखां अक्खीआं, मुरीद मुर्शद करन लड़ाईआ। अवतारां दीआं वेखां पट्टीआं, जो अक्खरां करन पढ़ाईआ। गुरमुखां दीआं रूहां वेखां जेहड़ीआं जगत हद्दों टप्पीआं, मंज़ल इक्को राह तकाईआ। जुग जुग सारे करदे गए मेरे नाल पक्कीआं, पक्का वायदा सब दे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक सुहाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़ग्बर मेरे सिफ्त नाम दे ढाडी, ढोला जगत सुणाईआ। प्यार मुहब्बत दे रागी, नादां रहे अलाईआ। किरपा दृष्टी सुरती जागी, नेत्र अक्खखुलाईआ। जद भय विच कहां ते सारे कहिण हां जी, सिर सके ना कोए उठाईआ। जां मैं शरारत विच इबादत विच सिफ़ारश विच वेस वटाया, अष्टभुज कहे, सारे मैनूं कहिण डहि पए माँ जी, माता कहि के सीस निवाईआ। मैं हस्स के किहा इक वड्याई मेरे नाँ दी, दूजी अवर ना कोए चतुराईआ। जद लोड़ पए भगतां नूं मेरी मेहर छाँ दी, आसरा अवर ना कोए रखाईआ। एसे कर के गुर अवतार पैग़ग्बरां वंड कराई सूर गाँ दी, दोहां तों वखरा आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक मनाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़ग्बर मेरे गोले, गोली बण के सेव कमाईआ। जेहड़ा नाम कलमा दस्सां ओसे दे गाउँदे ढोले, खुशीआं विच सुणाईआ। जिस उत्ते किरपा करां भाग लग्गे काया चोले, चोली तत वजूद बदलाईआ। बिना शब्द गुरु तों किसे दे अंदर सतिगुर रूप कोए ना बोले, बिना शब्द तों शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी कहिण कोए ना पाईआ। एह आदि अन्त जुगा जुगन्त

१३९८
२१

मेरे ओहले, पर्दा सक्कया ना कोए उठाईआ। सारे कहिंदे गए वस्से कोले, कोल वसिआ नज़र किसे ना आईआ। जे समझ लैंदे हर घट अंदर प्रभू स्वामी मौले, क्यों मौला अल्ला कहि के रट्टे जगत जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जद चाहे वड्याई देवे भावें कोई वेचण वाला होवे छोले, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं वड्डा गुण निधानी, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जुग जुग खेलां खेल दो जहानी, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। जिस वेले मेरे अंदर शरअ दी आवे बेईमानी, समाज दा राज दयां बदलाईआ। तत्तां अंदर नाम दी दे निशानी, कलमयां दी करां पढ़ाईआ। ओहो वजूद ओहो सरीर जो अवतार बणे पैग़म्बर बणे गुरु बणे दस्सण आपणी ज़बानी, कथा कथ कथ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा चुका रीत पुराणी, पूरन ब्रह्म दए वड्याईआ।

❊ २३ जेठ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

१३९९ सम्मत पंज कहे पंज गुरमुख करन फूलन बरखा, वरख मास वंड ना कोए वंडाईआ। अंदर हरख सोग ना होवे कोई हिरसा, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। होवण उह जिन्हां याद कीता गोबिन्द सरसा, साह साह नाल ध्याईआ। जन्म कर्म दा कोल होवे पर्चा, प्राचीन वेख वखाईआ। जिन्हां दा लेखा होवे उपर अर्शा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जन्म जन्म दी रहे कोई ना हिरसा, हिरस हवस दूर कराईआ। मानस जन्म जाऐ ना बिरथा, साहिब सतिगुर रंग रंगाईआ। लेखा जाण प्रीतम पिर का, पतिपरमेश्वर मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे पंजां बीबीआं दे हथ्थ विच होवण हार, हिरदे हरि हरि ध्याईआ। पंजे इक्के वार गल विच देण डार, वखरी वंड ना कोए वंडाईआ। फेर निउँ के करन निमस्कार, चरण बन्दना सीस निवाईआ। मुखों कहिण शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे मैं संदेसा देवां अवतार गुर दा, पैग़म्बरां हाल जणाईआ। जो कहि के गए गुरमुख कदे ना होवे मुर्दा, मुरीद मुर्शद विच समाईआ। जो आया सो गया तुरदा, पंज तत काया चोली जगत तजाईआ। जिन्हां मार्ग मिल्या धुर दा, दरगाह साची दर खुल्हाईआ। ओह मोड़या कदे ना मुड़दा, लख चुरासी दए ठुकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे गुरमुख कदे ना मरया, मर जीवत रूप

वटाईआ। साची मंज़ल धुर दी चढ़या, अगम्म अथाह दए वड्याईआ। जिस ने सोहँ ढोला पढ़या, रसना जिह्वा नाल गाईआ। ओह जावे आपणे घरया, दरगाह साची सोभा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल लए वरया, वारस हो के आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग दए रंगाईआ। सम्मत पंज कहे जिस नूं किहा भुल्ली भटकी, भरम दिता गवाईआ। सचखण्ड जांन्दयां राह विच मूल ना अटकी, अटकण अग्गे रही ना राईआ। दर्शन पा के प्रीतम अर्शी , अर्शां उपर सोभा पाईआ। संदेसा देवे सदा पुरख अकाल करे आपणी मर्ज़ी, मेहरवान आपणा हुक्म वरताईआ। मानस जन्म नाता जगत फ़रज़ी, थिर रहिण कोए ना पाईआ। प्रेम सिँघ दे पिच्छों मेरी मन्ज़ूर होई अर्ज़ी, हस्सदयां हस्सदयां मुखों बचन दिता कढ्ढाईआ। वेख खेल नरायण नर दी, हैरानी मेरे अंदर आईआ। तूंही तूंही तेरा ढोला आई पढ़दी, सोहँ राग अलाईआ। सौंपणा कीती नहीं कोई घर दी, लालच मोह ना कोए वखाईआ। अंदरे अंदर रही डरदी, भय विच सीस झुकाईआ। इक बेनन्ती कीती जिस वेले मेरी अन्त ख़ाहिश मरदी, मुर्दा मुरीद विच समाईआ। सच दवारे बणा लै बरदी, बन्दीख़ाना दे तुड़ाईआ। इक ओट तेरी हरि जी, हिरदे अंदर ध्यान रखाईआ। मैनूं आस रही ना घर दी, घराने दिते तजाईआ। बंस सरबंस तेरे चरणां धरदी, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। तेरी मेहर नजर नाल तरदी, नज़रीआ लैणा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा रंग दए रंगाईआ । सम्मत पंज कहे जो गुरमुख मेरे विच जावे, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। प्रभू चरण धूढ़ी नहावे, दुरमति मैल गवाईआ। आपणे पल्ले करे सावें, पिछला लेखा रहे ना राईआ। हउक्यां विच भरे कोई ना हावे, सिसकीआं विच ना कोए कुरलाईआ। साहिब सतिगुर सच दवारे आप बहावे, फड़ बाहों गले लगाईआ। दीन दुनी दे कूड़े दाअवे, अन्तिम नज़र कोए ना आईआ। हर हिरदे अंदर हर पुरख निरँजण गुरमुख सदा रावे, राग आपणा इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, नामों नूं नाम दे पावे छाबे, तक्कड़ आपणे तोल तुलाईआ।

❊ १ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सम्मत पंज कहे की खेल करे श्री भगवाना, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। शब्दी सुत उठे सूरबीर मर्दाना, योद्धे दयां वड्याईआ। पूरब लेखा वेख दो जहानां, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ। हुक्म संदेसा देवे शाह सुल्ताना,

शहिनशाह धुरदरगाहीआ। खेल वेखणा निरगुण धार दो जहानां, निरवैर हो के फेरा पाईआ। धर्म दी धार दिसे ना कोए बेगाना, वैरी मीत वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा सांझा होणा काहना, लख चुरासी गोपी सहज सुभाईआ। हुक्म संदेसा सुण अगम्म पुराणा, जिस दा पुराण वेद भेव कोए ना पाईआ। तेई अवतार जिस दा निशाना, निछावर आपणा आप कराईआ। जिस दी याद विच याद रख के गया रामा, राम राम वेख वखाईआ। जिस दा राह तकदा गया काहना, घनईआ आपणा भेव खुल्हाईआ। जिस नूं पैग़म्बरां मन्नया अमामा, बेपरवाह नूर खुदाईआ। जिस नूं झुक झुक करदे रहे सलामां, सजदयां सीस निवाईआ। जिस दा मन्त्र गाया सतिनामा, नानक वज्जी वधाईआ। जिस नूं गोबिन्द कीता प्रणामा, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। ओह लेखा जाणे जीव जहाना, लख चुरासी खोज खुजाईआ। कलयुग अन्तिम पहर के बाणा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। शब्द अगम्म दस्स तराना, तुरिया तों परे करे पढ़ाईआ। खेल वेख ज़िमीं असमाना, पुरीआं लोआं खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे सतिगुर शब्द होवे सावधान, दर साचे लए अंगड़ाईआ। लेखा वेख जगत जहान, आत्म ब्रह्म भेव खुल्हाईआ। चार जुग दा तक विधान, हुक्म कलमे खोज खुजाईआ। दीन मज़हब शरअ जगत दी जान, नव सत्त फोले थाउँ थाईंआ। जिधर तक्के होए हैरान, हिरदे हरि ना कोए वखाईआ। मन कल्पणा दिसे शैतान, शरअ दए लड़ाईआ। अवतार पैग़म्बर दरगाह साची दर ठांडे सीस झुकाण, सिर सर सके ना कोए उठाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला देवे अगम्म फ़रमान, जिस दी चार जुग समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। सम्मत पंज कहे शब्द गुरु हस्स के कहे, बिन हस्ती हस्ती नज़र कोए ना आईआ। बिन शब्द तों गुरु कोई ना रहे, रहमत हक़ ना कोए कमाईआ। बिन सतिगुर शब्द तों सच दुआर कोए ना बहे, सिँघासण आसण डेरा कोए ना लाईआ। बिना शब्द गुरु तों कोई ना करे लय, उत्पत वाला समझ कोए ना पाईआ। बिन शब्द गुरु तों लहिणा मात कोई ना दए, देवणहारा नज़र कोए ना आईआ। बिना शब्द गुरु तों साचे मन्दिर वस्से कोई ना गृह, दर ठांडा ना कोए सुहाईआ। बिना शब्द गुरु तों होए ना कोई निर्भय, गुर अवतार पैग़म्बर भय विच आपणा झट लँघाईआ। आदि अन्त कोई ना रहै, तत्तां वाला गुरु जम्मे ते मर जाईआ। शब्द गुरु कहे आदि जुगादि सब दा मालक मैं, ममता विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। शब्द गुरु कहे मेरे विच नहीं कोई बुद्धि, अकल वाली ना कोए चतुराईआ। मेरी मति नहीं कोई उच्ची, मंज़ल जगत ना कोए जणाईआ। मेरी आशा

वाली नहीं रुची, ध्यान ध्यान विच टिकाईआ। मैं काया माटी कोई बणाउणी नहीं सुच्ची, तन वजूद कर सफ़ाईआ। मेरी बदलणी नहीं रुती, रुतड़ी जगत ना कोए महकाईआ। मेरी सुरती नहीं सुत्ती, सोए ना कोए उठाईआ। मेरी खेल नहीं कोई लुक्की, परदयां विच ना कोए छुपाईआ। मेरी आदि तों धार सदा दो तुकी, बहु विद्या मेरी सिफ्तां वाली पढ़ाईआ। मैनूं की जानण जेहड़े फिरदे विच त्रैकुटी, दसम दुआरी वाला कहिण किछ ना पाईआ। की होया जे गुर अवतार पैग़ंबरां मेरी जोत दी पौह फुट्टी, प्रकाश विच्चों प्रकाश दिता वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। सम्मत पंज कहे शब्द गुरु क्यों उड्डया, आपणी लै अंगड़ाईआ। क्यों गुर अवतार पैग़ंबरां पैंडा मुक्कया, अगला पन्ध ना कोए वखाईआ। क्यों अमृत धार सोमा सुक्या, सच सरोवर ना कोए नुहाईआ। क्यों हउमे मेटे कोए ना दुख्या, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। क्यों साहिब सतिगुर बैठा लुक्या, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। क्यों कलयुग कूड़ कुड़िआरा रुस्सया, पल्लू सच ना कोए गंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। शब्द गुरु कहे गुर अवतार पैग़ंबर आउ अगांह, आंगण आपणा दयां वखाईआ। वस्त्र भूषण खाट सौणा नहीं कोई मंजा, तन श्रृंगार ना कोए कराईआ। मुच्छ दाढ़ी केस बोदी ना होवे सीस गंजा, तत्तां वाली ना कोए चतुराईआ। ना सुख दुःख ना कोए अनन्दा, रस वेखण कोए ना पाईआ। ना तन वजूद पंचम मीता बन्दा, बन्दगी विच ध्यान ना कोए लगाईआ । ना मंज़ल पौड़ी डंडा, ना डंडावत विच सीस झुकाईआ । ना कोई आर पार कन्ढा, ना घाट रिहा वखाईआ। आदि दा अन्त अन्त दा आदि सदा इक्को रंगा, रूप रंग रेख समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार पैग़ंबरां आपणी सिफ्त दस्स के छन्दा, नाम कलमे दिते जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दर ठांडा इक सुहाईआ। शब्द गुरु कहे आदि जुगादि मेरा इक परवार, पारब्रह्म प्रभ दिती माण वड्याईआ। गुर अवतार पैग़ंबरां मेरा आधार, बिन किरपा नज़र कोए ना आईआ। मैं शाह पातशाह शहिनशाह दो जहान सच्ची सरकार, सति सतिवादी इक अख्वाईआ। जुग बदलणा मेरी कार, करनी दा करता साची सेव लगाईआ। मैं आदि दा जुगादि दा इक बरखुरदार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। दो जहानां खेल करां अपार, अपरम्पर आपणी कार कमाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों निरगुण जोत ल्या अवतार, जोती जाता डगमगाईआ। जिस नूं झुकदे गुरु अवतार, पैग़ंबर सीस निवाईआ। आसां विच प्यासां विच वाजां गए मार, कूक कूक सुणाईआ। सदी चौधवीं कल कल्की लए अवतार, अमाम अमामा फेरा पाईआ। जिस दा सुहञ्जणा होणा इक दुआर, भगत दुआर वज्जे वधाईआ। सोहणा सुहञ्जणा

१४०२ २१

लाउणा दरबार, दरबारी इक्को नज़री आईआ। सारे होणे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता सहज सुखदाईआ। सम्मत पंज कहे सतिगुर शब्द दा सोहणा लग्गे दरबार, दरबारी पंजे अग्गे आईआ। संदेसे विच करे ख़बरदार, सोया रहिण कोए ना पाईआ। सतारां हाढ़ रहिणा हुशियार, ग़फ्लत अंदरों देणी कढ्ढाईआ। मस्तक विच चिट्टी मारनी इक लकार, इंच ढाई विच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। शब्द गुरु कहे मेरे साहिब पंज दरबारी, पंचम रंग रंगाईआ। गुरमीत सिँघ नाल कर के रखणी त्यारी, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। तेरे कोल इक लिस्ट होवे भारी, जो खब्बे हथ्थ विच उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म सुणो सच एक, एका इक जणाईआ। इक्को रखणी टेक, टिक्का मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ । प्रभू दा वेखणा देस, दूसर अक्खना कोए तकाईआ। तुहाडा मालक सच नरेश, नर नरायण दए वड्याईआ। जिस कारण पहली हाढ़ होए पेश, पेशतर दयां समझाईआ। तुसां नौ साल पूजा कीती सी गणेश, नौ नौ वार रोज़ सीस झुकाईआ। तिन्न वार दर्शन कीता सी शेष, सांगोपांग सेज नाल सुहाईआ। तुहाडे लम्बे हुंदे सी केस, काला रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
१४०३ मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिगुर शब्द कहे तुसां चलणा साथ साथ, सावधान आपणा आप कराईआ। जिस वेले चाहे १४०३
२१ प्रभू तुहाडे नाल करे टाक, बोली अगम्म अथाह दृढ़ाईआ। तुसीं छेती देणा जवाब, समझ दी लोड़ रहे ना राईआ। सब २१
ने आपणे कोल रखणी इक इक्क वाच, घड़ी कलाक सोभा पाईआ। जिस वेले ईसा बोले नाल इतफाक, बांह खब्बी उपर देणी उठाईआ। जिस वेले मूसा मारे हाक, दोवें हथ्थ देणे दरसाईआ। जिस वेले साहिब सतिगुर पुच्छे तुहाडी वात, निउँ निउँ के सीस देणा झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ । सम्मत पंज कहे पंज दरबारी आपणा आप लैणा संभाल, बलधारी रूप वटाईआ। पता नहीं लग्गणा किस वेले प्रभू मार के आपणी छाल, तुहाडे उत्ते बैठे चाँईं चाँईंआ। फेर पुच्छे अंदरला हाल, शब्द शब्द नाल जणाईआ। तुसां इक इक्क कोल दाणा रखणा दाल, जो माश दा बावन गया समझाईआ। जिस वेले हुक्म नाल दोहां हथ्थां दा वज्जे ताल, ताली देणी वजाईआ। तुट्टे त्रैगुण जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आपणा आप चलणा संभाल, सम्बल विच सम्भल के आपणा क़दम टिकाईआ। लहिणा देणा दस्सणा की गोबिन्द नाल सर रवाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे सोहणा सिँघासण होवे सज्जया, तख्त निवासी सोभा पाईआ। नाम खुमारी विच जन भगत सुहेला होवे रज्जया,

१४०४
२१

खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। हाढ़ सतारां नूं मात पित नूं छड्ड के आवे भज्जया, जो गुर सतिगुर दा अख्वाईआ। दीन दुनी दी लाह के लज्जया, ढोला गावे चाँईं चाँईंआ। जेहड़ा मिले उहनूं कहिणा मैनूं पुरख अकाल लभ्भया, पर्दा उहला रहे ना राईआ। जिस दा तख्त अगम्मा सज्जया, तख्त निवासी डेरा लाईआ। जिस दा भगत परिवार वध्धया, चार जुग नालों अनगिणत दिते वधाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बरां सद्दे दे के सद्दआ, भविख्तां विच आपणी आस रखाईआ। ओह करे खेल सूरा सरबग्गया, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा दीपक इक्को जगया, दो जहान करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे सुणो भगत सुहेले मीत, धर्म दी धार दयां जणाईआ। तुहाडी तुहाडे नाल प्रीत, प्रीत विच्चों प्रीतम लैणा पाईआ। गुरमुख रहे कोई ना नीच, वरनां वंड ना कोए वंडाईआ। सब दा इक्को आत्म परमात्म मीत, ढोला धुरदरगाहीआ। किसे ठगौरी पाए कोए ना चीत, चेतन सब नूं आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे इक्कीआं कसे होण कमरकसे, क़सम आपणी आप खाईआ। लक्क बद्धे होण नाल रस्से, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। दोवें हथ्थ होण बद्धे, बन्दनां विच सीस झुकाईआ। ओह कमरों झुकण अध्धे, घुटने टेडे ना कोए कराईआ। पंज जैकारे बोलण गज्जे, ज़ोर ज़ोर सुणाईआ। हरि संगत उन्हां पिच्छे लग्गे, ढोला गाउणा चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे इक्की बीबीआं कमर नूं बद्धे होण दुॅपटे, दुपट्टा सीस उत्ते टिकाईआ। सारीआं होवण इक्को उमर ते इक्को वत्ते, इक्को रंग रंगाईआ। जो नाता तोड़न भाई भैण सके, पिछली याद ना कोए कराईआ। जे भावे प्रभ आपणे कोल रखे, सब नालों करे जुदाईआ। सच दरबार हुक्म देवे सच्चे, सीस धड़ लैणा निवाईआ। जन भगत भगती विच रहिण ना कच्चे, कंचन गढ़ आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सम्मत पंज कहे सच दरबारा लग्गणा, लग्गे जगत जहान। नाम दमामा वज्जणा, वजाए श्री भगवान। गुर अवतार पैग़म्बर सद्दणा, सद्दा दे के धुर फ़रमान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे चार जुग दे भगत होवण मेरे चार चुफेरे, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। प्यार मुहब्बत वाले पावण घेरे, चारे कूटां वज्जे वधाईआ। दूर दुराडे आवण नेड़े, सच दवारे सोभा पाईआ। दीन मज़हब दा करे कोए ना झेड़े, झगड़ा छड्डे कूड़ लोकाईआ। सारे कहिण असीं वसीए भगत जनां दे खेड़े, खण्ड ब्रह्मण्ड तजाईआ। कलयुग मिले प्रभू नूं जेहड़े, जीवण जुगत जगत बदलाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला दए मिलाईआ। सच मेला आप मिलावांगा। भगत सुहेले रंग रंगावांगा। हाढ़ सतारां नूर चमकावांगा। जोती जोत डगमगावांगा। पुरख बिधाता नाउँ धरावांगा। जगत ज्ञाता इक अख्वावांगा। भगत सुहेले गोद टिकावांगा। मात पित नाम उपजावांगा। कर के साचा हित, रंग रंगावांगा। कर के खेल नित, नवित्त वेस वटावांगा। अगला लेखा सब दा लिख, पिछला जन्म कर्म गवावांगा। जन भगत सुहेले बणा के धुर दे सिख, सिखी मस्तक उत्ते टिकावांगा। जन भगतो पूजणा नहीं कोई पत्थर इट्ट, सिल पाहन कोलों छुडावांगा। पुरख अकाल मन्नणा इक्क, दूजा इष्ट ना कोए दरसावांगा। जो हर घट रिहा दिस, जोत नूर दरसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमावांगा। सतिगुर शब्द कहे नौ वार बरसाउणे फूल, गुल गुलशन नाल महकाईआ। मुखों कहिणा धर्म दा होए असूल, असल असल मिले वड्याईआ। साहिब सतिगुर ना जाए भूल, अभुल्ल दया कमाईआ। सब ने लहिणा करना वसूल, वसल यार देवे खुदाईआ। हुक्म सुणना इक माक़ूल, मेहरवान आप दृढ़ाईआ। सिँघासण ओह ना डाहिओ जिस दा होवे पावा चूल, हिस्सयां विच वंड वंडाईआ। सच दरबार दा ना कोई अर्ज़ ते ना कोई तूल, मुसत्तील हक़ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

१४०५

२१

सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे ना कोई बणाइओ थड़ा, पत्थर इट्टां वंड वंडाईआ। ना कोई खोदयो गढ़ा, धूंणीआँ वाला रूप दरसाईआ। ना कोई बणाइओ मड्ड मढ़ा, आपणी शान जणाईआ। इक थाँ सुहाउणा रड़ा, सोहणा सुथरा साफ़ बणाईआ। गिआरां हाढ़ नूं ओथे पुरख अकाल होवे खड़ा, अगला हुक्म फेर समझाईआ। इक फड़ के लिआउणा कोल चिड़ी चिड़ा, जिस दी राम दए गवाहीआ। नौ हथ्थ दा होवे पिड़ा, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। फूलन गुलदस्ता होवे खिड़ा, इक्की गुल रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी खेल निआरी, समझ किसे ना आईआ। गिआरां हाढ़ नूं पंजां लिखारीआं कर के आउणा त्यारी, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। मात पिता दी छड्ड के यारी, नाता इक्को नाल जुड़ाईआ। सवा घंटा होवे रोज़ विहारी, विवहारी दए सुणाईआ। विच्चों करे ना कोई ग़द्दारी, धुर फ़रमाना देवे धुरदरगाहीआ। जेहड़ा बचन गया हारी, पूरा कौल ना तोड़ निभाईआ। अठारां हाढ़ नूं उस नूं लग्गे बीमारी, अग्गे सके ना कोए बचाईआ। नारी करे ना कोए प्यारी, भैण भाई ना संग निभाईआ। एह हुक्म जोत निरँकारी, जगत वाली ना कोए समझाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों भगतो आई तुहाडी वारी, वारस हो के दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गिआरां हाढ़ कहे पंजां

१४०५

२१

प्यारयां नूं पैणा आउणा, मैं सच दयां समझाईआ। पंजां नूं इक्ठा पए सौणा, घर घर देणा तजाईआ। पंजां नूं पंज वार रोज़ सीस पए निवाउणा, ग़ैरहाज़र रहिण कोए ना पाईआ। पंजां ने किसे दे घर नहीं जाणा बण प्राहुणा, जगत नाता ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गिआरां हाढ़ कहे मेरा वक्त होणा सुहावा, सोहणी रुत सुहाईआ। मेरा पूरा होणा दाअवा, जो आसा इक जणाईआ। गोबिन्द ने किहा मेरा पुरख अकाल किसे ने तोल तोलिआ नहीं सांवां, तक्कड़ हथ्थ ना कोए उठाईआ। ओह खेल करे जन भगत गोद उठाए ज्यों पुत्तर मांवां, पिता आपे आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे जन भगतो खोल्हो आपणे पड़दे, परदा दयां उठाईआ। मालक बणो आपणे घर दे, क्यों घरों होई जुदाईआ। दरवेश होइओ ना किसे दे दर दे, मँगते जगत रूप वटाईआ। तुसीं प्यारे उस हरि दे, जो हर हिरदे रिहा समाईआ। जुग जुग तुसीं प्रभू दी भगती रहे करदे, कलयुग अन्तिम मेल मिलाईआ। जिस साहिब नूं रहे लभ्भदे, ओह सहजे लए मिलाईआ। नाम प्याले देवे अमृत मदि दे, मधुर रस वखाईआ। तुसीं पुजारी नहीं बणना शंकर वाली अग्ग दे, धूणी ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता सहज सुभाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं हुक्म देणा सख्त, सख्ती नाल दृढ़ाईआ। किहो जिहा बणाउणा तख्त, कवण धार सुहाईआ। किस बिध सुहाउणा वक्त, वेला दए गवाहीआ। जन भगतो एह इक्को दिन नव नौ चार पिच्छों आया जगत, जग जीवण दाता दए दृढ़ाईआ। तुहाडे साहमणे गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी करनी शर्त, शरअ देणी बदलाईआ। तुहाडा मेला मेल के उपर धरत, धरत तों अर्श देणा टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दर दए वड्याईआ। सम्मत पंज कहे तख्त सुहाए इक्क, इक इक्क जणाईआ। जिस दी धार नूं गोबिन्द गया लिख, नौ अक्खरां वंड वंडाईआ। राम पा के हिस्स, बालिशतां विच गणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरी धार ने जिथ्थे बैहणा, जोत नूर रुशनाईआ। उस दा लेखा रसना किसे ना कहिणा, हिस्सयां वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतां लहिणा लैणा, देवणहार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी इक सैणा, सज्जण धुर दी धार अख्वाईआ।

❋ २ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ मोता सिँघ दे गृह पिंड कलसीआं ज़िला अमृतसर ❋

सम्मत पंज कहे प्रभ वेख्या सर्ब व्यापी, व्यापक हो के आपणी कार कमाईआ। दो जहानां बणया शाह पातशाह वड प्रतापी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को नज़री आईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी लहिणा देणा देवे सब दा बाकी, निरगुण सरगुण आपणी खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बरां नाम संदेसा धुर दा कलमा देवे कथा कहाणी दस्से साची, सच सुच संजम इक समझाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी कलयुग अन्तिम वेखे अन्धेरी राती, चार कुण्ट दह दिशा नव सत्त खोज खुजाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार सांझा यार बदल देवे हयाती, ज़िंदगी विच्चों ज़िंदगी आप समझाईआ। भगत सुहेला इक अकेला एकँकारा हरि निरँकारा जन भगतां दे के अमृत बूँद स्वांती, अगनी तत दए बुझाईआ। एथे ओथे दो जहानां नौजवाना मर्द मर्दाना वेखे खेल पुरख अबिनाशी, करनी दा करता नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सच दा मालक एकँकारा, हरि करता वड वड्याईआ। जिस नूं कहिंदे कल कल्की अवतारा, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। सम्बल वस्से धाम निआरा, अलख अगोचर डेरा लाईआ। जिस नूं झुकदे गुरु अवतारा, पैग़ग्बर सजदयां सीस झुकाईआ। जिस दा लेखा कागद क़लम ना लिखणहारा, शाही मिले ना कोए वड्याईआ। सो स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पावे सब दी सारा, सार शब्द दी धार इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। धुर दा हुक्म अगम्म अथाह, निरगुण निरवैर आप जणाईआ। जिस दा खेल जल थल अस्गाह, महीअल वेखे पर्दा लाहीआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमां, रवि ससि सीस निवाईआ। लेखा जाणे दो जहां, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बरां दे के नाँ, कलमा कायनात पढ़ाईआ। लेखा जाणे नौजवां, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। प्रगट हो के वाली दो जहां, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। जन भगतां बण के पिता माँ, सन्त सुहेले गोद उठाईआ। कलयुग कूड़ी कल्पणा वेखे काँ, सृष्टी दृष्टी अंदर खोज खुजाईआ। किसे ने सूर खाधा किसे ने ख़ाधी गाँ, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला नौजवाना मर्द मर्दाना अन्त अख़ीर बेनज़ीर सदी चौधवीं करे हक़ निआं, हक़ीक़त दा मालक ख़लक दा ख़ालक पर्दा उहला आप उठाईआ। सम्मत पंज कहे मैं सुणया संदेसा अगम्म, हरि करता आप जणाईआ। कलयुग झगड़ा मेटणा काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी देणी बदलाईआ। माया ममता मोह विकार रहे ना ग़म, तामस अंदरों देणी कढ्ढाईआ। हरख सोग रहे ना ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ । चार वरनां बेड़ा बन्न्ह, नईआ नौका इक्को

१४०८
२१

नाम चढ़ाईआ। आत्म भेव खुलाउणा ब्रह्म, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। शब्द सुनाउणा बिना कन्न, धुन अनादी नाद वजाईआ। सन्त सुहेले बणा के जन, जन जणेंदी होए माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा इक वड्याईआ । धर्म दुआरा आदि अन्त, हरि करता इक दृढ़ांइंदा। जिथ्थे मिले वड्याई धुर दे सन्त, साजण मीत सोभा पाइंदा। होए मिलावा नाल कन्त, आत्म परमात्म रंग चढ़ाइंदा। गढ़ रहे ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव खुल्हाइंदा। पन्ध मुकाए बहिश्त जन्नत, स्वर्ग चरणां हेठ दबाइंदा। बोध अगाधा बण के पंडत, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। नाता तोड़ के जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक वड्याइंदा। धर्म दुआरा कहे मेरा मालक एकँकार, इक इकल्ला नज़री आईआ। जिस नूं कहिंदे परवरदिगार, जल्वागर नूर अलाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस ने पाउणी सार, महासार्थी आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। सो धरनी धरत धवल निरगुण नूर जोत कर उज्यार, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। चार कुण्ट दह दिशा नव नौ चार पावे सार, भेव अभेदा अछल अछेदा दए खुल्हाईआ। जिस नूं रवि ससि सूर्या चन्द मण्डल मण्डप करन निमस्कार, विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर निउँ निउँ लागण पाईंआ। सो कल कल्की लए अवतार, लेखा जाणे धर्म दी धार, अमाम अमामा आपणा हुक्म वरताईआ। क़ुदरत दा क़ादर कायनात दा सिक्दार, दृष्टी दा इष्ट सृष्ट दा साहिब स्वामी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच स्वामी भेव अभेद खुल्हाईआ। सम्मत पंज कहे मेरा आया वक्त सुहञ्जणा, प्रभ देवे माण वड्याईआ। दीपक जगा के आदि निरँजणा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। दीनां नाथ हो के दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। भगत जनां बण के सज्जणा, मीत मुरारा हो के वेख वखाईआ। नाम नेत्र पावे अंजणा, अन्ध अन्धेर दए गवाईआ। दरस वखाए गोपाल मूर्त मदना, अनभउ प्रकाश आपणा इक दृढ़ाईआ । जिस दा नाम दमामा दो जहानां वज्जणा, डंका राउ रंक सुणाईआ। खेले खेल चण्ड प्रचण्डणा, ब्रह्मण्ड खण्ड सोया रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक वखाईआ। सच दुआरा आदि जुगादी इक्क, जुग जुग आप जणाईआ। जगत नेत्र किसे ना आवे दिस, दोए लोचण नैणां नीर वहाईआ। जिस उत्ते किरपा कर करे आपणा हित्त, हितकारी हो के दया कमाईआ। साहिब स्वामी हो के वस्से विच्च, काया मन्दिर अंदर डेरा लाईआ। तिन्हां दर्शन देवे नित, निज नेत्र अक्खखुल्हाईआ । शब्द अगम्मा दस्से मिट्ठ, अनहद नादी नाद कर शनवाईआ। सो सन्त सुहेला मानस जन्म जाए जित्त,

लख चुरासी आपणा फंद कटाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला मर्द मर्दाना नौजवाना बणे मित, मित्र प्यारा इक्को इक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता इक अख्वाईआ। सम्मत पंज कहे मेरा सम्मत पंज सुहावणा, सोभावन्त सुहाए। प्रभ आपणा हुक्म वरतावणा, ना कोई मेटे मेट मिटाए। गुर अवतार पैग़ंबर उठावणा, जोती जोत कर रुशनाए। शब्द संदेसा इक सुणावणा, अगम्म अथाह दए पढ़ाए। लोकमात दा राह तकावणा, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ ना कोए उठाए। सच दुआरा इक सुहावणा, सच स्वामी दए समझाए। भगत दवारे डेरा लावणा, जिथ्थे पुरख अबिनाशी सोभा पाए। दीन मज़हब ना वंड वंडावणा, ज़ात पात ना कोए रखाए। सब ने इक्को ढोला गावणा, अल्ला वाहिगुरु राम ओम हरी ओम आपणा तत जणाए। साचे कलमा सीस झुकावणा, डंडावत इक्को घर दृढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा इक सुणाए। सच संदेसा देवे साहिब सुल्तान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतार पैग़ंबर सुणना बिना कान, तन वजूद माटी ख़ाक ना कोए रखाईआ। अगम्म अथाह इक फ़रमान, फ़रमांबरदारां दयां जणाईआ। बिना बुद्धी तों होवे ज्ञान, अनुभव दृष्टी इक खुल्हाईआ। हाढ़ सतारां सब ने बणना महिमान, मेहरवानी मेहर नज़र टिकाईआ। सच दवारे पहुंचणा आण, मंज़ल आपणा पन्ध मुकाईआ। अन्त अख़ीरी

१४०९ १४०९

२१ २१

तुहानूं मिले पकवान, भेंटा भेंट चढ़ाईआ। फिर नाता तोड़ना नालों जहान, सृष्टी विच ना कोए वड्याईआ। सब ने मन्नणा इक ईमान, धर्म इक दरसाईआ। इक्को नूर जोत भगवान, इक्को अल्ला आलमीन अख्वाईआ। इक्को कलमा गाउणा नाम, ढोला धुरदरगाहीआ। जिस ने दीन दुनी दा बदल देणा निज़ाम, नौबत नाम हक़ सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन दे के धर्म दा दान, दर दुआरा इक वखाईआ। जिथ्थे राउ रंक बैठे सीस झुकाण, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म ढोला सारे गाण, अनरागी राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। गुर अवतार पैग़ंबरो तन वजूद नहीं कोई वस्त्र, ख़ाकी ख़ाक ना कोए वड्याईआ। शरअ शरीअत हथियार नहीं कोई शस्त्र, तिक्खी धार ना कोए बणाईआ। वख वख नहीं कोई मन्त्र, चार जुग दा राग अल्हाईआ। सब दी धार वेखां अन्तर, अन्तर अन्तरीव खोज खुजाईआ। जिस दा लेखा जुगा जुगन्तर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा हंढाईआ। ओह सच बणाए बणतर, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। कर प्रकाश गगन गगनंतर, अन्ध अन्धेरा दए गवाईआ। सृष्टी दृष्टी बण के हेतन, लख चुरासी नार हंढाईआ। गुरमुख सुहेले उठा के सन्तन, जन भगत लए मिलाईआ। लेखा जाणे दीन दुनी मन तन, ममता मोह खोज खुजाईआ। गुरमुख वेखे हीरे अनमुल्ले आपणे रतन, जोती जोत सरूप

१४१० २१

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दी धार इक वड्याईआ। धुर दी धार कहे मैं धरनी धरत सुहावां, सोभावन्त वड्याईआ। पतिपरमेश्वर ढोला गावां, परवरदिगार इक्को माहीआ। चरण कँवल बलि बलि जावां, क़दमबोसी सीस निवाईआ। चारों कुंट फिरां चावां, भज्जां वाहो दाहीआ। दीन दुनी आख सुणावां, सच संदेसा इक अलाहीआ। प्रभू दवारे रहे ना कोई निथावां, जो सरन आया सो सचखण्ड साचे दए पुचाईआ। सब दा तोल कर के सांवां, तराज़ू आपणे हथ्थ उठाईआ। गुरमुखां फड़ के दोवें बाहवां, बलधारी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दी धार इक दरसाईआ। सम्मत पंज कहे मेरी सुहञ्जणी होई रुत्ती, रुतड़ी प्रभ महकाईआ। दुनी उठाउणी सुत्ती, जागरत जोत कर रुशनाईआ। भाग लगाउणा काया बुत्तीं, बुतख़ाने कर सफ़ाईआ। कल्पणा रहिण नहीं देणी दूजी, द्वैती पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म सब दी खोल्हणी रुची, रचना अंदरों देणी वखाईआ। तन काया माटी कर के सुच्ची, सच दवारे दए वड्याईआ। जगत सुहञ्जणी होवे रुत्ती, पत्त टहिणी आप महकाईआ। भगत आत्मा रहे कोई ना रुस्सी, रस्ता आपणा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे अलख जगाईआ। दर तेरे इक अलख, अलख अगोचर दयां जणाईआ। आपणा भेव खोल्हणा सच्च, सच स्वामी देणा समझाईआ। की खेल कराउणा काया माटी कच्च, पंचम तत तत्त वड्याईआ। निरगुण धार हो प्रगट, जोती जाते डगमगाईआ। खेल दस्स पुरख समरथ, की तेरी बेपरवाहीआ। सतिजुग किस बिध चलाउणा रथ, महासार्थी आपणा हुक्म वरताईआ। सृष्टी दी दृष्टी अंदर देणा रस, रस्ता अंदरों इक खुल्हाईआ। शब्द अणयाला तीर मारें कस, बजर कपाटी डेरा ढाहीआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सांझा होवे जस, वेद पुराणां लोड़ रहे ना राईआ। पुरख अकाला दीन दयाला प्या हस्स, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। सम्मत पंज वेखणा आपणी अक्ख, बिना अक्खदयां दरसाईआ। सतारां हाढ़ खेल प्रतख, पर्दा उहला दयां चुकाईआ। सति धर्म दा खोल्ह के हट्ट, दुआरा इक्को इक वड्याईआ। सन्त सुहेले लाहा लैण खट्ट, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर शिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां लूं लूं अंदर जाए रच, अन्तर निरंतर निराकार निरँकार निरवैर आपणा खेल खिलाईआ।

१४११ ... १४११

२१ ... २१

❋ ५ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरभजन कौर सुपत्नी पिशौरा सिँघ वेरका दे नवित्त हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

सम्मत पंज कहे गुर अवतार पैग़म्बर फिरदे नठ्ठे, दरगाह साची सचखण्ड दवारे वाहो दाहीआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीरी भगत भगवान हुंदे जांदे इक्ठे, सरगुण धार निरगुण रूप बदलाईआ। सच दवारे बहिंदे जांदे साचे हट्टे, सचखण्ड दवारे साचे सोभा पाईआ। जन्म कर्म दे मेटदे आउँदे रट्टे, रट्टा इक्को नाम लगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां लेख चुकाउंदे आए पटे, पटने वाला पाटल दए गवाहीआ। सच स्वामी अन्तरजामी जोत वेख लट्ट लटे, नूर नूर विच समाईआ। सच प्रेम प्रीती भगती विच रत्ते, रतन अमोलक नज़री आईआ। बीज बीजदे आपणे वत्ते, मानस जन्म फल फुल्ल वेख वखाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सति स्वामी पत रखे, रखयक हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सम्मत पंज कहे गुर अवतार फिरन भाउँदे, भवसागर खोज खुजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला फिरदे गाउँदे, गृह मन्दिर इक्को राग अलाईआ। चार जुग दा लेख पए वखाउंदे, फिर फिर आपणा पन्ध मुकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल राह तकाउंदे, तकवा इक्को उत्ते टिकाईआ। सच संदेसा नर नरेश सुणाउंदे, ढोला अगम्म अथाहीआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सीस निवाउंदे, निउँ निउँ लागण पाईआ। दर घर साचे अलख जगाउँदे, अलख अगोचर तेरी वड्ड वड्याईआ। साची वस्त अगम्म मँग मँगाउँदे, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला आप मिलाईआ। सम्मत पंज कहे गुर अवतार पैग़म्बर लावण चक्र, चक्रवरती वेख वखाईआ। निरअक्खर धार वेखण सतर, इल्म वंड ना कोए वंडाईआ। संदेसा नाम वेखण पत्र, पत्रका बेपरवाहीआ। दीन दुनी दा वेखण ग्रह नछत्र, कुण्डलीआं लेखा फोल फुलाईआ। याद करन नामे बहत्तर, सत्तर गोबिन्द रंग रंगाईआ। चुहत्तर सति शब्द दी धार शब्दी शब्द चुअक्खर, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। जन भगत सुहेले वेखणे अमोलक रतन, जिस दी क़ीमत वंड ना कोए वंडाईआ। घर किनारे छड्ड के पत्तन, तट इक्को सोभा पाईआ। कवण वेला प्रभ पैज आए रखण, हरि करता होए सहाईआ। एथे ओथे दो जहानां बण के सज्जण, सति स्वामी अन्तरजामी पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला आप मिलाईआ। सम्मत पंज कहे गुर अवतार पैग़म्बर रहे तक, तकवा इक्को उपर रखाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। जन भगत सुहेले दे आपणा रस, रस्ता अंदरों दे दृढ़ाईआ। सब दी पूरी होवे अस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा इक समझाईआ। सम्मत पंज कहे गुर अवतार पैग़म्बर गौदे फिरन गीत, ढोला सिफ्त सालाहीआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले तक्कण मसीत, मसला हल ना कोए कराईआ। लेखा तक्कण नाल तरतीब, तबा तबीअत जगत बदलाईआ। प्रभ दा खेल अजब अजीब, निराला अकाला आप दृढ़ाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, तृष्ना रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत सतिगुर शब्द सदा होवे शहीद, शहादत अवर ना कोए भुगताईआ। जो अन्त कन्त प्रभ मिलण दा गावे गीत, सोहँ ढोला चाँईं चाँईंआ। सो मानस जन्म जाए जीत, हिरदे होर ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल बदल के नीत, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर मेला लए मिलाईआ। सम्मत पंज कहे जन भगत सुहेला आदि अन्त कदे ना मरदा, मुर्दा मुरीद मुर्शद विच समाईआ। ओह नज़ारा तक्के आपणे घर दा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैग़म्बर सब डरदा, सिर सके ना कोए उठाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला पढ़दा, अवर राग ना कोए अलाईआ। प्रभ सरनाई सरन विच तरदा, तारनहार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, कल कायल हो के सच भगत दुआरे चढ़दा, जिथ्थे चढ़दा लैहन्दा दक्खण पहाड़ सिम्मत वंड ना कोए वंडाईआ।

* ११ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल *

गिआरां हाढ़ कहे इक दा इक नाल होया मिलाप, मिल मिल वज्जी वधाईआ। इक दा इक बणया बाप, इक दा इक पिता पूत अख्वाईआ। इक दा इक होया जाप, इक दा इक ढोला गाईआ। इक दा इक होया प्रताप, इक दा इक वेख वखाईआ। इक दा इक होया साक, इक दा इक सज्जण मीत वड्याईआ। इक दा इक होया नात, इक दा इक नज़री आईआ। इक दा इक रूप साख्यात, इक दा इक सोभा पाईआ। इक दा इक होवे वाक्, इक दा इक पूर कराईआ। इक दा इक होवे दास, इक दा इक सीस निवाईआ। इक दा इक होया प्रकाश, इक दा इक दए वड्याईआ। इक दा इक होया साथ, इक दा इक संग निभाईआ। इक दा इक होया विश्वास, इक दा इक विसर कदे ना जाईआ। इक दा इक होया आप, इक दा इक आपणे विच्चों प्रगटाईआ। गिआरां हाढ़ कहे इक दा इक कदे ना होवे नास, इक दा इक सदा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता धुरदरगाहीआ।

गिआरां हाढ़ कहे इक दा इक होया एक, इक एक नज़री आईआ। इक इक्क दा इक होया बेट, पिता इक दा इक अख्वाईआ। इक दा इक होया खेवट खेट, इक दा मार्ग इक चलाईआ। इक दा इक होया नेतन नेत, इक दा इक नेत्र नैण दए बदलाईआ। इक दा इक खोले भेत, इक दा इक पर्दा दए उठाईआ। इक दा इक वसाए देस, इक दा इक नूर चमकाईआ। इक दा इक कर के हेत, इक दा इक मालक जोड़ जुड़ाईआ। इक दा इक वसिआ देस, इक दा इक नगर सोभा पाईआ। इक दा इक हो गया भेंट, इक दा इक आपा आप गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गिआरां हाढ़ कहे इक दा इक बणया मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। इक दा इक बण अतीता, इक दा इक त्रैगुण लेखा रिहा मुकाईआ। इक दा इक बण के ठांडा सीता, इक दा इक अग्नी तत गवाईआ। इक दा इक चला के रीता, इक दा इक मार्ग रिहा वखाईआ। इक दा इक रूप अनडीठा, इक दा इक नज़र किसे ना आईआ। इक दा इक सदा सद जीता, इक दा इक इक्को नज़री आईआ। इक दा इक लेखा जाणे बीता, इक दा इक पूरब भेव खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला आप मिलाईआ। गिआरां हाढ़ कहे मैं सिफ्त करां इक्का, एकँकार वड्डु वड्याईआ। जिस दा आदि जुगादि दा सिक्का, नाम निधाना मोहर लगाईआ। जगत हट्ट कदे ना विका, क़ीमत दुनी ना कोए वखाईआ। जग नेत्र किसे ना दिसा, दह दिशा ना रूप बदलाईआ। जिस दा लेख किसे ना लिखा, देवणहार ना कोए गवाहीआ। ओह बण के सब दा पिता, पतिपरमेश्वर आपणा नाउँ प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, । गिआरां हाढ़ कहे इक दा इक होया साथी, सगला संग बणाईआ। इक दा इक बणया रघुनाथी, रघुपति आपणी खेल खिलाईआ। इक दा इक होया जमाती, इक दा इक पढ़ पढ़ सदा सुणाईआ। इक दा इक बणया ज़ाती, इक दा इक्को नज़री आईआ। इक दा इक मन्ने आखी, इक दा इक सीस निवाईआ। इक दा इक रूप अबिनाशी, इक दा इक सोभा पाईआ। इक दा इक खेल करे बहुभाती, इक दा इक वेस वटाईआ। इक दा इक दाता होवे दाती, इक दा इक देवणहार अख्वाईआ। इक दा इक संदेसा देवे पाती, इक दा इक शब्द नाम शनवाईआ। इक दा इक मंज़ल चढ़े घाटी, इक दा इक पन्ध मुकाईआ। इक दा इक दस्से बाती, इक दा इक पर्दा दए उठाईआ। इक ने इक नूं शब्द कहाणी आखी, बिन अक्खरां आप जणाईआ। इक दा इक्को पिता माती, इक्को जन जणेंदी माईआ। इक्को गृह मन्दिर इक्को घर इक्को दाता दाती, इक्को देवणहार इक अख्वाईआ। नव नौ चार दी खेल वखाई बहुभांती, भरम रिहा ना राईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम आवे अन्धेरी

राती, रुतड़ी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर सच इक दरसाईआ। गिआरां हाढ़ कहे इक ने इक नूं दिती ख़बर, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। इक दा इक बणना टब्बर, इक इक्क नाल वड्याईआ। इक दा इक नाल होणा सबर, इक इक्क विच समाईआ। इक इक्क ना जाए विच क़बर, इक इक्क ना गोर समाईआ। इक इक्क दी पूरी करे सध्धर, इक इक्क दी आस पुजाईआ। इक इक्क दा करे क़दर, इक इक्क दा होए सहाईआ। इक इक्क दा वेखे अदल, इक इक्क दा पर्दा लाहीआ। इक ने किहा मैं इक दा रूप आवां बदल, बदली इक दी इक नाल कराईआ। इक दा इक होवे वतन, इक दा इक्को घर सुहाईआ। इक दा इक्को जणाए पत्तन, इक दा इक्को घाट वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि सच पर्दा आप उठाईआ। इक दा इक कहे मैं एका, एका नज़री आईआ। इक दा इक कहे मैनूं एका टेका, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। इक दा इक कहे मैं वसां तेरे देसा, घर साचा इक सुहाईआ। इक दा इक कहे तेरी सेवा करनी मेरा होवे पेशा, पेशतर दयां दृढ़ाईआ। इक दा इक कहे तूं मालक रहें हमेशा, इक दा इक विछड़ कदे ना जाईआ। इक दा इक कहे देवां सदा संदेसा, सद तेरी सिफ्त सालाहीआ। इक दा इक होवे नरेशा, दूसर सीस ना कदे झुकाईआ। इक दा इक कराए लेखा, इक दा इक करे वड्याईआ। इक दा इक करे चेता, इक दा इक संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मेला लए मिलाईआ। इक दा इक कहे मैं तेरा सुत दुलारा, सतिगुर सार शब्द अख्वाईआ। आदि जुगादि तेरा प्यारा, प्रीतम इक्को इक मनाईआ। इक्को गृह वेख दुआरा, इक्को घर सोभा पाईआ। इक्को नूर कर उज्यारा, इक्को दर मिले वड्याईआ। इक्को तेरा होए जैकारा, दूजा राग ना कोए अल्लाईआ। इक्को खेल तेरा वेखां अपर अपारा, अपरम्पर स्वामी सीस निवाईआ। इक्को तेरे चरण होवे निमस्कारा, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। इक दा इक जे आवे दुबारा, दोहरी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। इक ने किहा मेरे शब्द दुलारे दूहले, सति दयां वड्याईआ। तेरा प्यार कदे ना भूले, अनभुल्ल दया कमाईआ। सति धार जणा असूले, असल दयां दृढ़ाईआ। हुक्म दे माअक़ूले, मुकम्मल कार कमाईआ। धुर चरण दे के धूले, अगम्मी ख़ाक रमाईआ। बण के आदि दा कन्त कन्तूहले, अन्त होवां सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। इक कहे सुत दुलारे शब्द मेरा हुक्म होणा सख्त, सख्ती नाल जणाईआ। मैं तख्त निवासी सोहां अगम्मे तख्त, जिस दी धार ना कोए जणाईआ। जिस दा आदि ना जाणे कोई

१४१४ २१

वक्त, भेव सक्कया ना कोए खुल्हाईआ। बिन तेरे दिता किसे नहीं दरस, सति सरूप ना कोए वखाईआ। इक्को वार मेट लै हरस, हवस अग्गे रहे ना राईआ। इक्को वार करां तरस, इक्को वार दया कमाईआ। मेरे सुत्त दुलारे बच्चया हुण वेख लै मेरा अर्श, अर्शी हो के दयां जणाईआ। जद चाहवां ते तैनूं भेजां उत्ते फ़र्श, धरनी धरत धवल धार बणाईआ। मेरे प्यार दा होवे तेरे कोल खरच, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। मेरी सिफ्त नाल जावें परच, खुशी खुशी नाल वड्याईआ। सुत दुलारे कीती अर्ज़, निउँ के सीस निवाईआ। इक तैनूं मेरी गर्ज़, तेरी बेपरवाहीआ। इक किहा मेरा खेल असचरज, इक दयां जणाईआ। जिस विच होवे ना कोई हरज़, वाध घाट ना कोए रखाईआ। भेव खुल्हावां मुड़ मुड़ परत, प्रतीनिध दयां जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे इक अकेले आक़ा, इक दे दृढ़ाईआ। की तेरा होवे साका, की सिफ्त सालाहीआ। मैं निक्का तेरा काका, आयू समझ कोए ना पाईआ। मैनूं दिसदा कोई नहीं चाचा, साक अवर ना कोए वड्याईआ। तूं इक्को पिता माता, दर तेरे सीस निवाईआ। पुरख अकाल खोल्ह के ताका, पर्दा दिता चुकाईआ। जिधर तक्कया नूर प्रकाशा, एका इक्को विच
१४१५ समाईआ। सति दा खेल तमाशा, दूसर नज़र कोए ना आईआ। शब्द गुरु बदल के पासा, करवट लई बदलाईआ। जां १४१५
तक्कया ते ओहो नूर अबिनाशा, दूसर रंग ना कोए रंगाईआ। जां वेख्या संदेश्यां विच करे बाता, अगम्म अगम्म जणाईआ।
२१ सतिगुर शब्द कहे मेरा खुशी विच निकल गया हासा, हस्स के दिता दृढ़ाईआ। पुरख अकाल झट वखाया अगम्म खाता, २१
बिना रचनां तों रचना दिती वखाईआ। हुक्म संदेसा दे के ख़ासा, ख़सूसीअत दिती दृढ़ाईआ। हुण मेरे चरणां विच तेरा वासा, इक्को दर वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मेरे शहिनशाह सुल्तान, दर तेरे सीस निवाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सदा निगाहबान, आदि जुगादि वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सूरबीर बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे मैं बच्चू तेरा हुक्मरान, बिन मेरे हुक्म तेरी चले ना कोए चतुराईआ। मैं आदि जुगादि नौजवान, जिस दा रूप रंग ना कोए बदलाईआ। सतिगुर शब्द किहा वाह मेरे भगवान, तेरी बेपरवाहीआ। मैं तेरा बच्चा नादान, बाला धुर दा सोभा पाईआ। मेरे बिना दस्स होर केहड़ा तेरा ख़ानदान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तूं जोती धार बेपहचान, की तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे आह वेख मेरा घराना, सच दयां वखाईआ। जिथ्थे होणा मेहरवाना, मेहर नज़र उठाईआ। तैनूं करां परवाना, आपणे रंग रंगाईआ।

दे अगम्म फ़रमाना, संदेसा इक समझाईआ। सदा मन्नणा मेरा भाणा, नेत्र नैण अक्ख शर्माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पुरख अकाल किहा मेरे सुत दुलारे, आह वेख लै मेरी झलक, झल्लया दयां जणाईआ। आह वेख लै मेरा पलक, कोटन जुग दिते दृढ़ाईआ। आह वेख लै मेरी ख़लक, चुरासी लख रंग रंगाईआ। आह वेख लै मेरा फ़लक, ब्रह्मण्ड खण्ड ज़िमीं असमानां खेल खिलाईआ। आह वेख लै मेरा धरत, धरनी इक सुहाईआ । मैं सूरबीर मर्दाना मर्द, एकँकार इक्को नूर अलाहीआ। मैनूं तेरी सदा दरद, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे वेख लै मेरा नूर नुराना, नर नारी नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द तक्कया मेरा साहिब इहो मेहरवाना, महबूब नूर खुदाईआ। पुरख अकाल किहा अग्गे होर मार ध्याना, बिन अक्खां अक्खउठाईआ। जां तक्कया शहिनशाह सुल्ताना, तख्त निवासी सोभा पाईआ। जिथ्थे झुले अगम्म निशाना, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। दूसर दिसे ना कोए बेगाना, एका इक्को नज़री आईआ। इक दा इक जुग जुग धारे जामा, वेस अनेका आप कराईआ। शब्द संदेसे दए पैग़ामा, सुनेहड़ा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच पर्दा आप उठाईआ। शब्द सुत कहे मैं तक्कया तख्त अनोखा, तख्त निवासी सोभा पाईआ। छप्पर छन्न कोए ना कोठा, मंज़ल रूप ना कोए बदलाईआ। नाद धुन ना कोए सलोका, रागी राग ना कोए सुणाईआ। उस समें दा कोई ना जाणे मौका, बिन सतिगुर शब्द तों वेखण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल ने फेर वखाया चार जुग मैं सब नाल करना धोखा, भरमां विच भुलाईआ। मेरे कोल शब्द भण्डारा बहुता, अतोट अतुट रखाईआ। मेरा नूर अगम्मी जोता, जोती वेखां खेल खुदाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं पै गया विच सोचा, की मैनूं रिहा दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा ओ सतिगुर शब्द बच्चे, तुध बिन मेरा ना कोई पुत्त ते ना कोई पोता, पुत्तर धी ना कोए वड्याईआ । तूं ख़बरदार रहिणा मेरा हुक्म सुणाउणा होका, जुग जुग कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच भेव आप खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे तख्त तक्कया अजब नज़ारा, नज़र ना कोए वड्याईआ। जिस दा मैं चार कुण्ट फिर के वेख्या किनारा, आर पार ना कोए समझाईआ। मैं फेर वेख्या दुबारा, बिन अक्खां अक्खखुल्हाईआ। मैं समझ ना सक्कया विसथारा, जिथ्थे बैठा नूर अलाहीआ। मैं कूक कूक पुकारा, रो के दिती दुहाईआ। गुस्से विच किहा दुबारा, ज़ोर नाल सुणाईआ। जिंनां चिर भेव ना दएं सारा, पर्दा आप उठाईआ। उनां चिर ना कोए सहारा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। पुरख अकाल किहा सतिगुर शब्द वेख नज़ारा, नज़रीआ दयां बदलाईआ। चार जुग दा खेल विच

१४१७ ◻ २१

संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी तेरी वड्याईआ। रूप दरसा तेई अवतारा, लख चुरासी दिती जणाईआ। पैग़म्बरां वल कर इशारा, बिन तत्तां तों तत जणाईआ। गुरुआं दा वखा अखाड़ा, इक दस दी धार जणाईआ। चार जुग दा बोध दस्स के सारा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पर्दा लाहीआ। फेर लफ्फड़ मार के नाल प्यारा, हलूणा दिता लगाईआ। उठ वेख जिस वेले तेरे अवतार पैग़म्बर गुरु कर गए किनारा, सृष्टी दी सार कोए ना पाईआ। उस वेले जावां मैं दुबारा, सरगुण निरगुण खेल कराईआ। मेरा किसे नाल नहीं लहिणा तत्तां वाला, मैनूं सब ने कहिणा निहकलंक कल कल्की अवतारा, जिस दा गुर अवतार पैग़म्बर भेव कोए ना पाईआ। हुण तैनूं देवां छोटा जिहा इशारा, सृष्टी रचन तों पहिलां दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे प्रभ मेरे वाह, वाहवा तेरी सरनाईआ। मैं वेखे तेरे थल अस्गाह, दो जहानां अक्खउठाईआ। वख वख तेरे तक्के राह, जो रहिबरां दिते जणाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु बणा, कलमे जगत दिते पढ़ाईआ। राम कृष्ण बण खुदा, अल्ला वाहिगुरु वंड वंडाईआ। ओ प्रभू तूं इक ते मैं इक क्यों बाकी कीते जुदा, जुज़ वखरे वखरे बणाईआ। इहदे विच्चों तैनूं की लभ्भा, मैनूं दे समझाईआ। पुरख अकाल किहा इहो मेरे नाम दा सब दे उत्ते दब्बा, भय विच रखाईआ। जिस दे अंदर थोड़ा नूर चमकावां उह फिरे उत्ते पब्बां, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। मैं आदि जुगादी बण के कब्बा, अचरज खेल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं तेरे जुग वेखे मुकदे, बिना रचना रचण तों दिते वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर वेखे झुकदे, निउँ निउँ लागण पाईंआ। वणजारे बणे तेरी तुक दे, नाम कलमे रहे गाईआ। रूप बण मानस मानुख दे, पंजां तत्तां विच समाईआ। शरअ शरीअत रहे टुटदे, अक्खरां वंड वंडाईआ। अन्तिम सब दे पैंडे मुकदे, थिर रहिण कोए ना पाईआ। तेरे कोलों तेरा भेत रहे पुछदे, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। पुरख अकाल कहे मेरे शब्दी दुलारे, दो जहान दयां जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल करां अपारे, अपरम्पर हो के वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम लै अवतारे, निरगुण नूर जोत करां रुशनाईआ। जेहड़े सचखण्ड तक्के तूं नज़ारे, मातलोक दयां वखाईआ। जिस वेले अवतार पैग़म्बर गुरु पावे कोए ना सारे, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे जिस वेले दीन दुनी नूं होया सदमा, धीरज धीर ना कोए धराईआ। सिर झुके किसे ना कदमा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। धर्म दी रहे कोए ना बन्दना, नमों नमों

१४१७ ◻ २१

ना कोए सरनाईआ। कूड़ा तोड़े कोए ना फंदना, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। उस वेले इक दा इक्को दीपक जगणा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। पूरब जन्म दा भगत सुहेला सद्दणा, सद आपणा रंग रंगाईआ। इक्को मेल मिला के आहला अदना, दर ठांडे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे की करें खेल निरँकार, निरगुण दे जणाईआ। पुरख अकाल किहा मेरी होवे अगम्मी धार, धरनी धरत धवल वज्जे वधाईआ। मैं दो जहानां पिछली बदल देणी सरकार, सरोकार ना कोए वड्याईआ। सति धर्म दा लावां इक दरबार, दर दरबारी वेख वखाईआ। तख्त निवासी हो के शाहकार, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। तूं होणा सेवादार, सेवक हो के सेव कमाईआ। खेल अगम्म अपार, अगम्म अगम्मड़ा दए समझाईआ। रहिणा ख़बरदार, भुल्ल विच कदे ना आईआ। तूं मेरा बरखुरदार, नन्ना नढ्ढा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सति धर्म दए वड्याईआ । पुरख अकाल कहे जिस वेले सब ते होए बेएतबारी, एतबार नज़र कोए ना आईआ। उस वेले जगे जोत निरँकारी, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। गोबिन्द खेल करे दुबारी, पूरब लहिणा झोली पाईआ। पंज प्यारे दे सरदारी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पंज भगत सुहेले बणा लिखारी, लिख्त भविख्त दयां दृढ़ाईआ। भगत आत्मा रहे ना कोए कुँवारी, निरगुण धार सर्ब प्रनाईआ। सब दे नालों तोड़ के यारी, यराना इक्को नाल लगाईआ। सतिगुर शब्द करी निमस्कारी, निउँ निउँ लागा पाईंआ प्रभू तेरी खेल निआरी, तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अकाल किहा जन भगत इक्को वार बणा पुजारी, जुग जन्म दी पूजा दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे की दिता होर संदेसा, प्रभू रिहा जणाईआ। ज़रा वेख जुग त्रेता, पर्दा लै उठाईआ। जिस वेले राम सी नेता, दसरथ बेटा नाउँ धराईआ। उस दा अजे ना भुलिआ चेता, चेतन सब नूं दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे राम फिरदा सी दरबार, अयुध्आ जगत सुहाईआ। ओह दिन सी गिआरां हाढ़, इक इक्क नाल मिलाईआ। उस दिन हुंदी सी उस दे पीड़ दाहड़, दन्द दन्दां हेठ दबाईआ। तिन्न वार उँगली ला के पाया भार, सहज सहज दबाईआ। उने चिर नूं उहदा आ गया सेवादार, बिन्दू आपणा पन्ध मुकाईआ। उस दे नाल सी उस दी नार, धीमा कहि के सारे सुणाईआ। उह कर के निमस्कार, नमस्ते विच आपणी खुशी बणाईआ। उने चिर नूं चिड़ी चिड़ा डिग्गे मूँह दे भार, राम चरणां आसण लाईआ। राम ने हथ्थ नाल दिता प्यार, दोहां नूं फड़ के ल्या उठाईआ। कुछ कोलों दिता खवाल, मुख विच थुक्क के

१४१८ २१

जन्म मरन दिता बदलाईआ। दासी दास नूं आई विचार, हाए हाए कहि सुणाईआ। साडे नालों एह चंगे जेहड़े पर आए मार, आपणा पन्ध मुकाईआ। ना कोई हथ्थां वाली कीती कार, ना कोई दर ते सेव कमाईआ। ओहले हो के इक दूजे नूं बाहवां रहे मार, पति पत्नी रहे समझाईआ। जे असीं वी चिड़ी चिड़ा हुंदे राम दे हथ्थां दा लैंदे प्यार, मानस जन्म नालों एह जन्म सोहणा नज़री आईआ। राम ने हस्स के किहा तुसीं फेर झुको इक वार, चरणां उत्ते सीस निवाईआ। ओह डिग्ग पए मूँह दे भार, पिच्छा याद ना कोए रखाईआ। राम ने हस्स के किहा जिस वेले तुहाडे राम दा राम लए अवतार, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। तुहाडा दोहां दा करे उधार, सच दवारे होए सहाईआ। तुसीं एसे तरह्रां पुरख ते नार, तुहाडे बच्चे पहिलों आपणे हथ्थां विच उठाईआ। फेर तुहानूं लए संभाल, सम्बल बैठा वेख वखाईआ। हुण तुसीं राम दे दुआर, फेर भगतां दे दवारे लेखा दए मुकाईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आण, मेहरवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। चिड़ा चिड़ी कहे असीं ना कोई पंजां तत्तां वाले नारी पुरुष, जगत भगत दृढ़ाईआ। ना कोई वाधा कीता दरजन गुरस, कौड़ीआं विच ना गणत गणाईआ। सानूं सिध्धा जन्म मिल्या तुरत, चुरासी विच ना कोए भवाईआ। असीं मुड़ मुड़ आए नहीं माँ दे उदर, अगनी तत ना कोए तपाईआ। जन भगतो तुसीं खोल्ह लओ आपणी सुरत, पर्दा दए उठाईआ। सब ने रहिणा चुस्त, आलस निंदरा देणी गवाईआ। प्रभू जदों तारदा बिना भगती तों मुफ्त, चरणां ते सीस निवाया लेखा दए मुकाईआ। वेखो सानूं की मिलदा लुत्फ़, आपणयां हथ्था विच उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। चिड़ी चिड़ा कहे असां सतारां हाढ़ नूं छडणी देह, देहुरे मसीत जाणे तजाईआ। जन भगतो इक्को प्रभू नाल लाइओ नेंह, निउँ निउँ सीस निवाईआ। किसे विच मैं ना रहे, मैं ममता देणी मिटाईआ। सब दा तन माटी होणा खेह, विषयां वाला कम्म किसे ना आईआ। धुरदरगाही मन्नणा पे, पिता पुरख अकाल सोभा पाईआ। किते ना समझयो असीं वड्डे हुंदे जे, अमीरां घर सोभा पाईआ। शाह सुल्तानां मन्दिर हुंदे खेह, भगतां दी कुली मिले वड्याईआ। मुहब्बत वाला मंगिओ बरेह, बिरहों मँग मँगाईआ। जे किरपा करे ते बरखे मेंह, अमृत दए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। चिड़ी चिड़ा कहे ओए राम आ के दे दे शहादत, तेरी ओट तकाईआ। साडी लेखे लग्गी इबादत, पिछली तेरी वंड वंडाईआ। प्रभू नूं कहो आपणयां भगतां दी बदल दे आदत, बिना प्रभू दे सीस ना किसे झुकाईआ। कर दे सच सखावत, रहमत नाम वरताईआ। इक दूजे दी छड्ड देण अदावत, घर घर ना कोए लड़ाईआ। जे तूं लेखा बदल दिता बोदी जञ्जू हजामत,

१४१९ २१

हुजरा इक्को इक वसाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अलामत, दु:ख रोग रहे ना राईआ। तेरा नाम प्यारा इक्को इक निआमत, नर नरायण तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दुआरा इक सुहाईआ। धर्म दुआरा इक सजणा, सोभावन्त सुहाए । जन भगत सुहेला सद्दणा, शब्दी हुक्म दृढ़ाए । सब ने करनी बन्दना, निव निव सीस झुकाए। नेत्र पा के आउणा अंजणा, चिट्टी धार वडयाए। सज्जा अंगूठा सब ने रंगणा, गोबिन्द रंग चढ़ाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रंग सूहा वेख वखाए। सूहा रंग कहे मैं होणा सुहागी, सुहाग वाल्यो दयां जणाईआ। पंज गुरमुख लैणे त्यागी, जो नाता कूड़ तुड़ाईआ। जिन्हां दा कर्म ना होवे दाग़ी, दुरमति मैल सफ़ाईआ। तेड़ बद्धी होवे तड़ागी, वस्त्र तन छुहाईआ। ओह होवण इक नगर दे गवांढी, खेड़ा इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। चिड़ी चिड़ा कहे पंज प्यारे ला दयो पंजा, पंच मिले वड्याईआ। अज्ज तों सौणा नहीं तुसीं उत्ते मंजा, बौहड़ी मेरी दुहाईआ। पहिलों सौणा कर के हेठां सज्जा कंधा, फेर जेहड़ा चाहो पासा लैणा बदलाईआ। वस्त्र रखणा नहीं गंदा, सवेरे उठ के लैणा बदलाईआ। नवां सिर विच टिकाउणा कंघा, गोबिन्द गुर वड्याईआ। शाम दे पंज वजे तों बाद करना नहीं कोई धन्दा, ध्यान चरण कँवल रखाईआ। नहीं ते वेख ल्यो सत्त रंग दा डंडा, लिहाज करे प्रभू ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। चिड़ी चिड़ा कहे पंज लिखारी साढे पंज वजे सवेरे नाह धो के साफ़ करना जुस्सा, जिस्म ज़मीर बदलाईआ। सतारां हाढ़ तक्क अंदर आउण नहीं देणा गुस्सा, भावें कोई दु:ख नाल सताईआ। किसे ने वट नहीं देणा ताअ मुच्छां, निरमाणता विच झट लँघाईआ। साढे पंज वजे तों बाद रहे कोई ना सुत्ता, आपणी आप लैण अंगड़ाईआ। गाना बन्नृ के रखणा नाल गुट्टा, मौली आपणा तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक सुणाईआ। साचा हुक्म कहे प्रभ दा तख्त सुहाउण ओह, जो ओड़क आपणा आप भेंट कराईआ। जिन्हां दा लेखा सी छब्बी पोह, पोह दिती वड्याईआ। ओह पंजां दा होणा गिरोह, पंजां हिस्सयां विच्चों वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे तख्त लग्गण तों पहिलां पंज प्यारे करन निमस्कार, निरमाणता विच मँग मँगाईआ। पंजे दरबारी होवण नाल, सोहणा रूप सुहाईआ। पंजे लिखारी हो के त्यार, कलमां पंज पंज नाल उठाईआ। प्रदक्खणा लैण नाल वार चार, चारों कुण्ट घुंम घुंमाईआ। मुखों कहिण असीं छड्ड दिता संसार, संसारी भण्डारी सँघारी सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

धुर दी खेल आप खिलाईआ। पुरख अकाल कहे सिँघासण दा आपणा होवे घेरा, घृत चारों कुण्ट देणा पाईआ। जिथ्थे भगतां दा लगणा डेरा, सच सिँघासण इक वखाईआ। ओथे तिन्नां बीबीआं ने उठ के पाउणा फेरा, जिन्हां विधवा दी आपणे कन्त नालों होई जुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक आप हो आईआ। सतिगुर शब्द कहे तख़्त दा वेखणा राजा, जो राजन राजा नज़र कदे ना आईआ। जिस ने खेल करना विच माझा, मजलस भगतां नाल बणाईआ। मेल मिला के दोआबा, गोबिन्द लहिणा चुकाईआ। हक़ वखा के काअबा, क़बरां तों दए छुडाईआ। सम्बल जिस ने साजण साजा, सज्जण हो के डेरा लाईआ। शब्दी हुक्म संवारे काजा, करनी करता कार कमाईआ। सतिजुग दा दस्से रिवाजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। गिआरां हाढ़ कहे मैं रीती कीती शुरु, शरअ वाल्यो दयां जणाईआ। सब दा इक्को खुदा, इक्को राम ते इक्को सतिगुरु, गुरु गरोह ना कोए वखाईआ। जिस दा नाम मन्त्र कलमा इक्को फुरू, फ़ुरने बन्द कराईआ। जिस दी रज़ा विच जन भगत सुहेला विरला तुरू, तुरक हिन्दू वंड ना कोए वंडाईआ। जुग जन्म दा विछड़िआ गुरमुख सच्चा जुड़ू, जोड़ी आपणे नाल रखाईआ। सन्त सुहेला चरण प्रीती करदा कदे ना मुड़ू, मोड़ा सके ना कोए लगाईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआरा अन्तिम रुढ़ू, वहिंदे वहिण वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी करा के दुड़ू दुड़ू, दोहरा आपणा हुक्म वरताईआ।

१४२१
२१

❋ १२ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

धरनी कहे मैं देवां आदर, जिथ्थे प्रभू दा तख़्त सुहाईआ। मेरे उत्ते सत्त रंग दी होवे चादर, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। आसा पूरी करनी तेग़ बहादर, जदों तेग़ नाल तेग़ बहादर दिता मिटाईआ। खेल वेखणा करीम क़ादर, हरि करता की कार कमाईआ। सति धर्म दा बख़्शे की साधन, तरीका तृप्त कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। धरनी कहे मैं वेखणा सति सरूप, सति पुरख निरँजण नजरी आईआ। चारों कुण्ट कर के कूच, कूचा गली फोल फुलाईआ। ताणा पेटा दस्स के सूत, सूत्रधारी देणा दृढ़ाईआ। जिस दा लहिणा पंज भूत, ततव तत खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। धरनी कहे चादर उत्ते होवण चार गुलदस्ते, चारों कुण्ट सोभा पाईआ। गुरमुख चार होवण हस्सदे, खुशी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। ढोले

गावण प्रभू दे जस दे, ताली हथ्थां नाल वजाईआ। निरगुण धार होवण सद्दे, होका हक़ हक़ दृढ़ाईआ। चरण प्रीती होवण वधदे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच लेखा आप प्रगटाईआ। धरनी कहे गुलदस्तयां कोल होवे गोलक, चार जुग दा लेख मुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां पूरी होवे मुहलत, मुहर आपणा नाम लगाईआ। लोकमात जिस दी आउँदे रहे बदौलत, बन्दना विच सीस निवाईआ। ओह पुरख अकाला दीन दयाला ना मर्द ना औरत, रूप रंग रेख ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला आप मिलाईआ। धरनी कहे मेरे उत्ते धर्म दा होवे प्रचार, पर्चा इक्को इक वखाईआ। इक्को नाम होवे जैकार, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। इक्को ख़ादम होवे ख़िदमतगार, इक्को सजदा सीस झुकाईआ। करे खेल सर्ब संसार, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता इक अख्वाईआ। धरनी कहे जिथ्थे सिँघासण दे मेरे उत्ते आवण पावे, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। साचे भगतां बदल के पिछले नावें, नाउँ निरँकार दए दृढ़ाईआ। सति संदेसा इक सुणावे, हरि करता अगम्म अथाहीआ। जोती जोत
१४२२ सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच आपणी दया कमाईआ। धरनी कहे जिथ्थे सिँघासण दा १४२२
सुहाउणा थाँ, मैनूं मिले वड्याईआ। ओथे पहिलों खलोवे बिशन कौर सब दी माँ, ममता माया मोह चुकाईआ। जिस दे
२१ नूर दा चमक्या थाँ, ज़हूर विच रुशनाईआ। सरीर दा बण के सम्बल गराँ, पुरख अकाल ल्या वसाईआ। झगड़ा मुका २१
के सूर गाँ, मार्ग इक्को इक दृढ़ाईआ। मानव जाती सांझा नाँ, तूं मेरा मैं तेरा ल्या समझाईआ। सुहेला बण के देवां छाँ, अगनी अग्ग ना कोए तपाईआ। ठांडे घर करे निआं, अदल इन्साफ़ आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चरण कँवल बलि बलि जां, जानणहार तेरी सरनाईआ।

✱ १३ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✱

परवरदिगार कहे अलाही कलमे तखलल्ला वललेज़ू ज़ामनीज़ा ज़ुकोज़ू आज़ीनुज़ कज़ीने कमक्क मज़हिते मसीह गुलीज़ाने गुल पैग़म्बर ज़खनाए ज़र दवीउले दौलत दमीमे रशां अज़ीमे निशां शाने शाह सोभा पाईआ। मखतलूज़ा मुहकज़िमा तहनीज़े उमा जेउमा मुहब्बते अवां पासते खुदा लौगुसगू नेज़ीविक वज़ाहे वज़ा वज़ूउल रफ़ा नख़ते मौज़ुक वहदिते दवा दो जहानां

नूर अलाहीआ। माज़ीउल मज़ा हालउल क़ज़ा नूरे नवज़ा दस्ते दज़ू हज़रते महिबू मुहब्बते मौज़िन कलामे कुन कुल्ल मालक नूर अलाहीआ। दखलसीने मलउला चश्मे चेशत नूरे नज़ीं ज़ाहरे ज़कू महिवे कदू क़ादरे क़ुदरत क़ुदरत क़ादर सोभा पाईआ। ज़नखाने ज़हिद महिवखाने रिंद साहिबे बखशिंद नूरे निशाने हिन्द ग़ज़ीने गविद ज़ीने अज़हिद सीने प्रसिद्द परसज़ालू आलमे आहला खुदाए ताअला, तल्ब सब दी वेख वखाईआ। पैग़म्बरे बहुज़ूना मुहम्मदे ममनूना मूसा मुसलसल क़दीमे क़दम कज़ूना ईसा आस्माने नज़ीना ज़ागुरे कोज़ते मुअज्जजे नारी मदीना मुद्दते आज़ीउल वलज़ीना वाहिदे वाहिद कलमा आइद हुक्मे ज़नां मेहरवाने गुनांह तारीके रौशना नूरे नौगुस ज़ाहरे बाखुज़ खुफ़िया खसिस ज़माना नविस चश्मे चअज़ीदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धार जणा उपर बसुधा, बहस मुबाहस दा झगड़ा दए गवाईआ।

❋ १४ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

१४२३ सतिगुर शब्द कहे तेरा लेखा पिता पुत्त दा, प्रीतम परम पुरख तेरी सरनाईआ। निरगुण धार निरवैर निराकार हो के १४२३
२१ रिहों लुकदा, लोचण नैण नज़र ना आईआ। पोशीदा हो के रिहों छुपदा, छप्पर छन्न ना कोए दृढ़ाईआ। नौ सौ चुरानवे २१
चौकड़ी जुग खेल कीता चुप दा, आपणा शब्द आप ना गाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर संदेसा दे के आपणी तुक दा, जगत जहान खेल खिलाईआ। वक्त सुहञ्जणा सुहाउँदा रिहों दीन मज़हब रुत दा, नित नवित्त आपणी खेल खिलाईआ। हिस्सा पाउँदा रिहों काया माटी पंज तत बुत दा, बुतखाने फिरी दुहाईआ। जगत जहान रिहों लुटदा, लुटेरा हो के बल वधाईआ। खेल खलाया मुच्छ दाढ़ी केस जञ्जू बोदी गुत्त दा, मेंढी चूंडी सीस बणाईआ। माणस रूप बणाया उलटे रूक्ख दा, अगनी गर्भ तत तपाईआ। खेल वखाया सुख दुःख दा, जीव जगत जहान भवाईआ। तेरा भेव समझया किसे ना सुच्च दा, संजम हथ्थ किसे ना आईआ। मैं अन्त निमाणा हो के पुछदा, मेरी पुश्त पनाह हथ्थ देणा टिकाईआ। हुण क्यों चार जुग दा मातलोक बूटा पुट्टदा, जड़ क्रिया कूड़ उखड़ाईआ। सच दस्स की वेला उहो ढुकदा, जिस दा गुर अवतार पैग़म्बर ध्यान लगाईआ। क्यों दो जहानां अगम्मी धार बुक्कदा, बुक्कल सब दी रिहा खुल्हाईआ। क्यों झगड़ा मिटाया रसना जिह्वा नाम बुँट दा, होठां वंड ना कोए वंडाईआ। क्यों सगन मनाया पंजां लिखारीआं गाना बन्न्या गुट्ट दा, गुरमुख वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे

क्यों मौली बध्धा तन्द, तन्द तत वड्याईआ। मेरे दीन दयाल बख्शंद, साहिब देणा दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा याद कर जिस वेले गोबिन्द छड्डया पुरी अनन्द, अनन्द जगत वाला तजाईआ। बण के मेरा धुर दा चन्द, चन्द नूर दिता चमकाईआ। जिस वेले सरसे ते कीता जंग, जंगलां पई दुहाईआ। सज्जण रिहा कोई ना संग, साथी साथ ना कोए वड्याईआ। धुर दी महिमा दे लिखे गंज, नौ तिन्न चार आप उठाईआ। ना वेला सवेर ना सञ्झ, रात अध्धी सोभा पाईआ। निगाह मारी अजीत जुझार दी चढ़या नहीं जंञ, खुशीआं विच वधाईआ। ओधरों शब्द सुणया अगम्मी बिना कन्न, पुरख अकाल दिता दृढ़ाईआ। गोबिन्द तेरा ना कोई माल ना कोई धन, जगत ख़ज़ीना ना कोए रखाईआ। ना कोई मन्दिर छप्पर छन्न, महल अटल ना कोए दरसाईआ। तेरा लेखा नाल तन, पंचम रंग रंगाईआ। धुर दा भाणा लैणा मन्न, ममता मोह रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे गोबिन्द सरसे आया कन्ढा, कन्ढी वाला वेख वखाईआ। नाल लै के सुक्का मंडा, भोजन आपणा आप वरताईआ। प्रेम रस समझ के चंगा, आपणे मुख विच पाईआ। नौं वार टुक्क के खाधा नाल दन्दा, दन्द दन्दां नाल दबाईआ। ओस वेले वर दिता बैरागी बन्दा, माधो मधुर धुन सुणाईआ। चरण छुहा के विच नंगा, सरसे धार दिती वड्याईआ। फेर खिच्च म्यानों खण्डा, पाणी विच भवाईआ। तूं पवित्र होयों गंदा, सति विच मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सरसे कन्ढे गोबिन्द तक्कया आपणा पन्थ, पन्थ वाला तकाईआ। जां वेखे प्रभू दी सिफ्तां वाले ग्रन्थ, अक्खरां नाल अक्खर वड्याईआ। बेनन्ती कीती वार अनक, बेअन्त तेरी सरनाईआ। अगम्मी धार मन्न मिन्नत, साहिब तेरी वड्याईआ। मेरा लेखा वेख लिख्या नाल हिम्मत, हौसला सच वधाईआ। जिस विच लेखा नहीं किसे निन्दक, गुरमुखां दिती वड्याईआ। पुरख अकाल किहा ना कर चिन्नत, चिन्ता ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल किहा तूं गोबिन्दे गोबिन्द बेटा, गोबिन्द तेरी वड्याईआ। मेरा लेखा कर दे मेरी भेंटा, सरसे विच टिकाईआ। जैकारे विच रख लै टेका, टिक्का धूल रमाईआ। मैं आदि अन्त दा एका, इक्को इक अख्वाईआ। वसां सचखण्ड देसा, दरगाह सोभा पाईआ। रूप नूर हमेशा, ना मरां ना जाईआ। तेरा रखां चेता, अभुल्ल भुल्ल विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गोबिन्द किहा मैं लेख लिख्या मसां, मस्स नाल वड्याईआ। हुण तेरे चरण रखां, सरसे विच टिकाईआ। खोल्ह के दोवें अक्खां, आखर दिता जणाईआ। तुहानूं लभ्भण कोटन लखां,

लम्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। ओस वेले जुझार बोलिआ गोबिन्द दा बच्चा, सहज नाल सुणाईआ। की सतिगुर तूं वी तत्ता वाला बन्दा, बन्दगी कर के झट लँघाईआ। की झगड़ा करें दंगा, फ़सादां विच दुहाईआ। खलो के इक टंगा, बेनन्ती दिती जणाईआ। जेहड़ा लेख लिख्या पंज साल तरेहठ दिन पुरी अनन्दा, अंदर वड़ के क़लम चलाईआ। उन्हां विच्चों इक दस्स दे छन्दा, बाकी सरसा भेंट कराईआ। सरन सरनाई मँग मँगां, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द बचन कोए ना बोला, हस्स के दिता वखाईआ। पुरख अकाल अगम्मी सुणाया ढोला, सुत दुलारे दिता दृढ़ाईआ। जिस घर दा नानक बणया गोला, गोबिन्द विचोला लैणा बणाईआ। मेरा प्यार सदा अनमोला, क़ीमत जगत ना कोए जणाईआ। पर्दा लाहवां ओहला, भेव रहे ना राईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ साचा ढोला, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द किहा एह खेल अगम्म निआरी, हरि करता आप कराईआ। तैनूं चिन्ता रहे ना भारी, सहिसा ना कोए वड्याईआ। जेहड़ी भविक्ख लिक्ख सरसे रोढ़ी सारी, धर्म धार कमाईआ। जिस दा लहिणा देणा देवे आप निरँकारी, निराकार होए सहाईआ। प्रभ दे दर खेल अपारी, अपरम्पर आप कराईआ। जिस वेले धर्म दा रिहा ना कोए व्यपारी, सच हट्ट ना कोए विकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर आए ना कोए दुआरी, निरगुण धार ना रूप चमकाईआ । पुरख अकाला जोत करे उज्यारी, अन्ध अज्ञान दए मिटाईआ । शब्द धार दे होणे पंज लिखारी, गोबिन्द मिल के वज्जे वधाईआ। जिन्हां नूं झुकण संसारी, भण्डारी सँघारी राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे गोबिन्द ने मारी ताड़ी, जुझार नूं हस्स के दिता जणाईआ। बच्चया अध्धी रात वेख लै अन्धेरी काली, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। पिछला लेख लिख्या रख्या अगाड़ी, सहज नाल रुढ़ाईआ । सिर निवा जोत निरँकारी, सीस दिता झुकाईआ। गोबिन्द ने दोवें हथ्थ फेर के उत्ते दाढ़ी, आपणी लई अंगड़ाईआ। तेरी खेल प्रभू निआरी, निरँकार तेरी बेपरवाहीआ । पुरख अकाल आवाज़ अगम्मी अगम्म मारी, अन्तर अन्तर दिती जणाईआ। सदा रहवां पिच्छे अगाड़ी, मेहर नज़र इक उठाईआ। गोबिन्द किहा मैं सदके घोली वारी, नमों नमों सीस झुकाईआ। मेरे परम पुरख मैं प्रीतम तेरा अधारी, उदर दा लेखा रहे ना राईआ। मैं सिक्खां दा व्यपारी, दूजा वणज ना कोए कराईआ। पुरख अकाल किहा ज़रा वेख लै नैण उघाड़ी, बिन नेत्र अक्खखुल्हाईआ। जिस वेले मेरे पंजवें सम्मत दी आवे हाढ़ी, हिरदा सब दा वेख वखाईआ। पंजां दी सेवा ला के भारी, तेरा भविक्ख दयां प्रगटाईआ।

१४२५
२१

शहिनशाह बण दरबारी, दरवेशां वेख वखाईआ। पंजां प्यारयां नाल होवण पंज लिखारी, लेखा आपणे नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला आप मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे जुझार दा हुंदा सी इक साथी, आयू चौदां साल वड्याईआ। सदा प्रेम विच मन्नदा सी आखी, मुहब्बत विच रहे सरनाईआ। साल विच तिन्न वेरां उहदे अंदर आउँदी सी उदासी, चिन्ता विच घबराईआ। गोबिन्द दरस नाल कटी जांदी सी फाँसी, ममता मोह कूड़ गवाईआ। सरसे कन्ढे नाल सी किनारे घाटी, तट डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक सुणाईआ। जिस वेले मन्जूर होए पंज लिखारी, सरसे वज्जी वधाईआ। जुझार सिँघ नूं सैनत मारी, सज्जण हो के सीस निवाईआ। मेरी सफ़ारश कर भारी, गोबिन्द अग्गे झोली डाहीआ। तेरे नाल मेरी रहे यारी, जुग जुग साचा संग बणाईआ। एह आसा मेरी आह नाल पुकारी, पुनह पुनह सीस निवाईआ। गोबिन्द गया ताड़ी, चोरी यारी दोवें वेख वखाईआ। हस्स के किहा बच्चू आ जा अगाड़ी, खण्डा पिठ उत्ते ठुकराईआ। कटार वखा के तिक्खी धारी, धर्म दी धार दिती जणाईआ। जे सच दी लाउणी यारी, मात प्यारी देणी तजाईआ। ऐशो इशर्त छड्डणी सारी, सेवा सतिगुर सच कमाईआ। मन मनसा रहे ना हँकारी, हउमे गढ़ तुड़ाईआ। जुझार दे मित्र भगतू ने किहा तेरे चरण बलिहारी, बलि बलि सीस निवाईआ। गोबिन्द किहा भगतू तेरी भगतां नाल बंधावां धारी, धर्म दी धार इक रखाईआ। जिस वेले प्रभ दे पंज प्रसिद्ध होए लिखारी, नाता दीन दुनी तुड़ाईआ। तेरी वी उन्हां नाल रखां वारी, आपणा हिस्सा तेरी झोली पाईआ। तूं वी कर के रखीं त्यारी, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। सम्मत शहिनशाही पंज छब्बी पोह नूं तेरी पैज जाए संवारी, लेखा पंजां नाल बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरजीत सिँघ दी पिछली सेवा लेखे ला के सारी, सार शब्द दे नाल क़लम दी धार दए दृढ़ाईआ।

✻ १५ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सतिगुर शब्द कहे मैं वेखां जूहां कंदरां, जंगल पहाड़ टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी वेखां अंदरां, तन वजूद माटी ख़ाक फोल फुलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप धर्म दी धार वेखां मन्दिरां, नव नौ चार दा डेरा ढाहीआ। सच दुआर विच मेहरवान हो के लँघणा, दो जहान मर्द मर्दान नौजवान आपणी कार कमाईआ। गुर

अवतार पैग़म्बरां डंडावत वेखां बन्दना, सजदयां वाला पर्दा लाहीआ । कवण आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा गावे छन्दना, धुर दा कलमा नाम अगम्म अथाहीआ। निरगुण सरगुण धार वेखां नूरी चन्दना, जोती जाता हो के फोल फुलाईआ। हर हिरदा तक्कां वरभण्डणा, ब्रह्मण्डां खोज खुजाईआ। कवण दवारे मिले अनन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर्म कांड करां खण्डना, खण्डा खड़ग गोबिन्द नाम चमकाईआ। जन भगतां धुर दी धूढ़ी मस्तक लावां चन्दना, अगम्मी ख़ाक रमाईआ। साचे सन्तां चरण धूढ़ करावां मजना, दुरमति मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सतिगुर शब्द कहे मैं खेल दस्सां हक़ खुदा, खुद मालक प्रितपालक रिहा जणाईआ। जिस दी कलमयां विच सजदयां विच करदे गए दुआ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तन वजूद हक़ महबूब तों कर के गए फ़िदा, फ़ैसला आपणा अन्त जणाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर बेनज़ीर जावे आ, आमद विच आपणा नूर करे रुशनाईआ। बीस बीसा हरि जगदीशा सब दा लहिणा देणा दए चुका, चुकन्नी करे लोकाईआ। वक्त सुहञ्जणा आदि निरँजणा दए सुहा, परवरदिगार सांझा यार आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर लए बुला, धुर संदेसा इक सुणा, शब्द अनादी नाद जणाईआ। भेव अभेदा दए खुल्ला, निरगुण सरगुण पर्दा लाह, वाहिद लाशरीक पुरख अकाला आपणी कार कमाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी बण मलाह, खेवट खेटा नईआ नौका इक्को नाम चलाईआ। सच दुआरा एकँकारा एक एका दए सुहा, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। चार वरन अठारां बरन एको नूर दए चमका, अन्ध अन्धेरा तन वजूद माटी ख़ाक बाहर कढ्ढाईआ। हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद जिस नूं बैठे सीस झुका, ओह मालक होके दिलरुबा, वहदत विच वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो करो त्यारी, त्रैगुण अतीता आप जणाईआ। निरगुण नूर जोत होवो उज्यारी, तन वजूद ना कोए वखाईआ। मातलोक वेखो बिन नेत्र लोचन नैण उघाड़ी, अक्खप्रतख इक उठाईआ। झगड़ा प्या जञ्जू बोदी मुच्छ केस दाढ़ी, सुन्नत वाले देण दुहाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों प्रभ दे सम्मत दी आए सतारां हाढ़ी, हाढ़ा कढ्ढे ख़लक ख़ुदाईआ। दीन दुनी होई तत पुजारी, निरगुण इष्ट ना कोए मनाईआ। चार कुण्ट दह दिशा होई ख़ुआरी, ख़ालस रंग ना कोए रंगाईआ। मन ममता मोह माया जगत गुलशन बहारी, भय भउ ना कोए जणाईआ। साची मंज़ल चढ़े ना कोए अटारी, अटल पदवी ना कोए पाईआ। जिधर वेखो चार कुण्ट बदकारी, बदकारां दा बदला ना कोए चुकाईआ। घर घर अंदर मन मनसा होई मुख्त्यारी, मुफ्ती बण के लैण अंगड़ाईआ। तुहाडी चले ना कोए ताबिआदारी, तबा तबीअत

ना कोए बदलाईआ। झगड़ा वेखो पुरख नारी, पिता पूत करे लड़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआर करन विभचारी, कुकर्म कलयुग जीव रहे कमाईआ। हक़ीक़त वाली रही ना कोई यारी, याराने कूड़े जगत वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बर आपणा कलमा वेखो किताब, बिन अक्खां लेख दृढ़ाईआ। जो सब नूं देवे दाद, दौलत धुर दा नाम वरताईआ। जिस दीन मज़हब दे तुहाडे खेड़े कीते आबाद, अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। जिस दा कलमा पढ़े निमाज़, रोज़े रख के झट लँघाईआ। उस दी सुणो अगम्मी आवाज़, जो हक़ हक़ सुणाईआ। तेई अवतार जाओ जाग, आलस निंदरा रहे ना राईआ। जिस ने सब दा बदल देणा मिज़ाज, तबीअत तबा देणी बदलाईआ। दीन दुनी दा बदल देणा समाज, समग्री इक्को नाम वरताईआ। दीन दुनी दा बदल देणा राज, रईयत इक्को होवे शहिनशाहीआ। चार वरन दी सांझी कर जमात, साचा अक्खर दए पढ़ाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग सति चन्द चमकाईआ। शाहो भूप बण नवाब, नौबत नाम हक़ सुणाईआ। जिस दा भविख्तां विच लैंदे गए ख्वाब, सो ख़ालक ख़लक फेरा पाईआ। जिस दा संदेसा नानक दे के आया विच बग़दाद, बग़लीआं हथ्थां उत्ते टिकाईआ। जिस ने दीन दुनी दा सांझा करना जाप, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ।
१४२८ २१ जन भगतां जन्म कर्म दे मेट के पाप, पतित पापीआं करे सफ़ाईआ। सब दा सांझा बण के बाप, पिता पुरख अकाल दए वड्याईआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, नर नरायण लए मिलाईआ। तुहाडा पूरा करे भविख्त वाक, पेशीनगोई आपणे लेखे लाईआ। सच संदेस दे शाबाश, शाला आपणा रंग रंगाईआ। सब दी पूरी कर के आस, आलस निंदरा दए गवाईआ। एह खेल प्रभू दा ख़ास, ख़सूसीअत समझ कोए ना पाईआ। जिस सम्बल कीता वास, साढे तिन्न हथ्थ जोती जोत डगमगाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दिता गवाईआ। सब दा सज्जण बण के साक, सगला संग निभाईआ। गुरमुखां खोल्ह के अंदरों ताक, निज पर्दा रिहा उठाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात, दीन दुनी ना वंड वंडाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो सब ने पहुंचणा ख़ास, ख़ालस आपणा खेल खिलाईआ। सतारां प्रविष्टा हाढ़ महीना आउणा मास, मसला सब दा हल्ल कराईआ। किसे नूं करना ना पए तलाश, जंगल जूहां ना फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला आप मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बर आउणगे। वक्त सुहञ्जणा मात सुहाउणगे। निरगुण धार जोत जगाउणगे। शब्दी धार डंक वजाउणगे। बिन नेत्र लोचण नैण दर्शन पाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा

वर, दर ठांडे रंग रंगाउणगे। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो दस्सां हक़ सलाह, साहिब रिहा समझाईआ। धुर दा मन्नो इक मलाह, खेवट खेटा नूर अलाहीआ। जो दो जहानां होए सहा, एथे ओथे वेख वखाईआ। सो खेल रिहा खिला, ख़ालक ख़लक बेपरवाहीआ। ओस महबूब दा दर्शन लैणा पा, जो पाक पाकीज़ा सोभा पाईआ। जिस नूं पैग़ंबरां मन्नयां ख़ुदा, खुद मालक नूर अलाहीआ। सारे करयो इक दुआ, दोआबे वाले नाल रलाईआ। सब दे अंदरों कूड़ी क्रिया कढ्ढ वबा, दुरमति मैल करे सफ़ाईआ। पंजां गुरमुखां ने दोहां हथ्थां नूं मैहन्दी लैणी ला, सोहणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा जल थल अस्गाह, महीअल आपणे खोज खुजाईआ।

❋ १६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

सतारां हाढ़ कहे मैं आया नचदा टपदा, नव नौ चार चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। नव खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जगत जहान वेख्या तपदा, सांतक सति ना कोए कराईआ। मिल्या मेल ना किसे कमलापति दा, पतिपरमेश्वर दरस कोए ना पाईआ। कोटां विच्चों जन भगत सुहेला सोहँ नाम जपदा, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। नाता जोड़ पारब्रह्म ब्रह्म नत दा, नर नरायण वेख वखाईआ। जिस लहिणा देणा देणा हक़ दा, हक़ीक़त पर्दा दए चुकाईआ। लेखा मुका जगत जहान मति दा, ब्रह्म विद्या इक दृढ़ाईआ। वक्त सुहा के साचे सति दा, धर्म दए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं दो जहानां आया भज्जा, भजन बन्दगी सब दी वेख वखाईआ। प्रभ दे हुक्मे अंदर बध्धा, बन्दगी कर कर सीस निवाईआ। गुर अवतार पैग़ंबरां दे के आया सद्दा, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। आपणी आपणी बयान करो वजह, क्यों कूड़ी क्रिया भरी लोकाईआ। उफ़ ! हाए, कहिण सारे रब्बा, रहमत विच मँग मँगाईआ। तुहाडा रिहा कोई ना दब्बा, भय भउ ना कोए जणाईआ। सच नाम ना वज्जे नद्दा, कलमा अगम्म ना कोए दृढ़ाईआ। चार वरन पींदे मधा, मधुर धुन ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाल चरण कोए ना लग्गा, भगत भगवान रूप ना कोए बणाईआ। वेखो खेल सूरा सर्बग्गा, की करता कार कमाईआ । जो हँस बणाए कग्गा, काग हँस दरसाईआ। कलयुग बुझाए अगनी अग्गा, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला आप कराईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं आया नाल शौंक, शायद दा लेखा दयां मुकाईआ।

सब दा सांझा दस्स के खौंत, कन्त कन्तूहल इक प्रगटाईआ। जेहड़ा कदे ना जावे औंत, भगत सुहेले गोद उठाईआ। जिस दी मंज़ल सके ना कोई पहुंच, ओह निरगुण हो के फेरा पाईआ। सति दी सच जणाए मौज, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं आउणा उत्ते धरत, धवल दयां जणाईआ। पुरख अकाला वेखणा जो सब दी पूरी करे शर्त, शरअ शरअ विच्चों समझाईआ। निरगुण धार आवे परत, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। सब दी पुट्ठी कर के नरद, नर नरायण दए सज़ाईआ। शरअ छुरी पैग़म्बरां वाली करद, क़ज़ा सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं वेख्या पतित पुनीत, पीया प्रीतम सीस निवाईआ। जिस दी अगम्म अथाह रीत, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। करनहारा ठांडा सीत, अगनी तत बुझाईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़म्बरां रखी उडीक, भविख्तां विच ध्यान लगाईआ। ओह सब दा लहिणा देणा करन आया तस्दीक, शहादत शब्द गुरु भुगताईआ। जिस ने छुडाउणे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक दृढ़ाईआ। उस दा इक्की बीबीआं रल के गाउणा गीत, सतिगुर शब्द शब्द वड्याईआ।
१४३० चौवी साल तों होए ना कोई वधीक, सतारां साल तों निक्की ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी १४३०
किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे नौ गुरमुख होणे बूरे कक्के बग्गे, एका दर वड्याईआ। गलों लाहे होवण झग्गे, क़मीज़ तन ना कोए रखाईआ। ढिड्ड ते हथ्थ मार के कहिण असीं भुक्खे बड़े अग्गे, भुक्खयां भुक्ख दे गवाईआ। दीन दुनी नूं छड्ड के तेरी सरनाई लग्गे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चाली साल तों होवण मूल ना वड्डे, तीस दे विच रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे जिस वेले मेरे वज्जणे ढाई, ढईआ गोबिन्द वाला पूर कराईआ। सब ने इक्ठे होणा भैण भाई, दर साचे सोभा पाईआ। पुरख अकाल दए वधाई, मेहर नज़र टिकाईआ। साची सिख्या दए समझाई, साजन हो के आप दृढ़ाईआ। की कुझ करना की कीती पिच्छे कमाई, की लहिणा झोली पाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं देवां कूक दुहाई, सम्मत पंज विच सुणाईआ। जिस नूं गुर अवतार पैग़म्बरां मन्नया धुर दा माही, मालक इक हो आईआ। जन भगतो जद मँगो ते मँगो तेरी होए ना कदी जुदाई, विछोड़े विच विछड़ ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। ढईआ कहे गुरमुख सिँघ पोता चुक्कया होवे ढाके, नौ मिन्ट आप उठाईआ। जिस दा लेख कते ना जापे, पढ़न विच ना कोए पढ़ाईआ। जन भगत

२१ २१

सुहेले सारे होणे साचे, सगला संग बणाईआ। रणजीत कौर ने संधूर लगाउणा माथे, हुक्म मिले बेपरवाहीआ। जिस कारण खेल करे प्रभ आपे, आपणा रंग रंगाईआ। लेखा पूरा करना मनजीत जगदीश अगम्मे काके, कला आपणी कल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला लए मिलाईआ। सतारां हाढ़ कहे ढाई वजे मैं गुरमुख वेखणे पंज ग़रीब, मुफ्लसां विच्चों मुफ्लस नज़री आईआ। दरस करां आपणी दीद, बिन नैणां नैण उठाईआ। आसा मनसा वेख उम्मीद, ख्वाहिश विच जणाईआ। ओह पेट ते काली मारन लीक, उँगलां दस विच लम्बाईआ। अगला लेखा फेर दस्से प्रभ ठीक, ठाकर आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी करे आप तसदीक़, शहादत शरअ अवर ना कोए भुगताईआ।

❊ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ सवेरे ढाई वजे हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सतारां हाढ़ कहे जिथ्थे खड़ी माता बिशन कौर, कौरवां पांडवां कृष्ण इशारे नाल गया जणाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद कर के ग़ौर, मक़बरिआं तों परे गया जणाईआ । नानक निरगुण समझ के अवर का और, औरत मर्द गया दृढ़ाईआ। गोबिन्द पुरख अकाल दी फड़ के डोर, प्रेम प्रीती नाल जुड़ाईआ। शब्दी धार पा के शोर, शाह सुल्तान इक जणाईआ। ब्यासा तों अग्गे क़दम लैणा तोर, चरण चरण ना कोए टिकाईआ। चार जुग दी माला तसबी फड़ के दोवें हथ्थ दिते जोड़, पुनह पुनह सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्तिम तेरी लोड़, दूजा नज़र कोए ना आईआ। मैं फिर के वेख्या जगत जहान तत्तां वाले पौड़, नीला ज़ेबो ज़ीनत नाल सुहाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा घोर, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच खेल आप खिलाईआ । सतारां हाढ़ कहे गोबिन्द कीती आपणी उँगल, अन्तर वेख वखाईआ। बिन पुरख अकाल तों खोल्हे कोई ना गुंझल, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। चार वरन होणा चुगल, निन्दक निन्दिआ विच वड्याईआ। नज़री आए ना नैण मूंदन, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। चार जुग दे शास्त्र कूकण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पवित्र जन्म करे ना कोए मल मूतन, आत्म परमात्म रंग ना कोए रंगाईआ। झगड़ा पैणा पंज भूतन, दीन मज़हब फिरे दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे गोबिन्द निगाह कीती आप, सच ध्यान लगाईआ। पवित्र होवे ओह ख़ाक, धूढ़ मिले वड्याईआ। जिथ्थे मिटे अन्धेरी रात, सच चन्द चमकाईआ । रूह बुत होवे

१४३१ २१

पाक, दुरमति मैल धवाईआ। पुरख अकाला प्रगट होवे साख्यात, निरगुण निराकार आपणा रूप बदलाईआ। सच दुआर दा खोल्ह के ताक, भगत दुआरा इक वड्याईआ। झगड़ा मेट के ज़ात पात, दीन दुनी दा डेरा ढाहीआ। सच संदेसा देवे आप, धुर फ़रमाना हक़ दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे प्रभ चरणां उत्ते पैर, पैरां हेठ चरण दबाईआ। सृष्टी दृष्टी दिसे कहर, सति सति ना कोए जणाईआ। माता पुत्रां देवे ज़हर, दुहागण हो के दए दुहाईआ। मात पिता दा होवे वैर, गोदी सुत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गोबिन्द कहे सदा माता पुत्तर नूं चुकदी गोदी, गोदावरी कन्ढे गया जणाईआ। माता दे पुत्तर हुंदे गुरु जगत जुगीशर जोगी, तपीशर रूप वटाईआ। माता दा पुत्तर हुंदे कूड़ कल्पणा कामना वस भोगी, ममता मोह हल्काईआ। माता दे पुत्तर हुंदे धुर संजोगी, दरगाह साची मेल मिलाईआ। माता दे पुत्तर हुंदे जन्म जन्म दे रोगी, कर्म करम विच चुरासी खेल खिलाईआ। माता दे पुत्तर हो के गए वेदी सोढी, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। माता दा पुत्तर सुहवे माता कोल, घर मिले वड्याईआ। माता दा पुत्तर माता नाल बोले बोल, साची सिख्या झोली पाईआ। माता नाल करे चोहल, सोहणा रंग वखाईआ। माता वास्ते सदा अनभोल, आयू वड्ड ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी खेल खिलाईआ। गोबिन्द कहे माता छड्ड दे पिछला ख्याल, अन्तश लै बदलाईआ। जेहड़ा गोदी चुक्कया बाल, नन्हा आप उठाईआ। जिस नूं कहिंदी रही लाल, खुशीआं नाल बुलाईआ। ओह बण के पुरख अकाल, आपणा रूप आया बदलाईआ। साची गोदी लए सवाल, सुत्तयां फेर ना कोए उठाईआ। एथे ओथे पुच्छे हाल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सतारां हाढ़ कहे पुत्त दी माता बैठ गई गोदी, पिता पुरख अकाल आया रूप बदलाईआ। जिस नूं कहिंदी पूरन जोती, ओह जोती जाता वेख वखाईआ। माता जगत दी एह बच्चे सारे तेरे गोती, सब नूं दयां वखाईआ। ना कोई हिरख ते ना कोई सोगी, चिन्ता देणी कढ्ढाईआ। सारे बच्चे तेरे जोगी, जन भगत सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गोबिन्द कहे शब्दी धार अगम्मी बच्ची, बचपन विच वड्याईआ। जिस दी डोर रही ना कच्ची, तन्दन तन्द बंधाईआ। इक ख़बर सुणनी सच्ची, सच सच जणाईआ। भरम रहे ना रती, भाण्डा कूड़ा देणा भन्नाईआ। बिशन कौर कहे जिस पूरन ने मैनूं चक्कया आपणी पट्टीं, पटने वाला वेस वटाईआ। ओह जन भगतो तुहानूं सद्द सदा सद आपणे नाल रिहा रखी, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। क्यों तुसां तूं

१४३२
२१

मेरा मैं तेरा धार जपी, दूजा नाता दिता तुड़ाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं जन भगत रहिण नहीं देणा कोई छुट्टड़, विधवा नज़र कोए ना आईआ। गुरमुख सिँघ आपणा पोतरा चुक्क लै कुच्छड़, धुर फ़रमाना इक जणाईआ। गोबिन्द नाल कीता कौल साहिब स्वामी ना जाए मुकर, आदि जुगादि पूर कराईआ। बिशन कौर अज्ज आपणा कर लै शुकर, शुकराने विच आपणी खुशी बणाईआ। जेहड़ा अगम्मी धारों आया उतर, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण पन्ध मुकाईआ। जिस पूरन नूं कहिंदी रही पुत्तर, ओह पूरन परमेश्वर हो के आपणी गोद उठाईआ। गुरमुखां कदे ना देवे लुकण, चारों कुण्टां फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि दाता धुरदरगाहीआ। हाढ़ सतारां कहे पिता पूत नाता गुरमुख पोतरा, जोत शब्द धार आत्म ब्रह्म वड्याईआ। सच संदेसा नाम अगम्म होकरा, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। जन भगतां मार्ग दे के मोकला, भीड़ी गली ना पन्ध जणाईआ। वेले अन्त कट के औकड़ा, ओड़क आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतो झगड़ा करयो ना वांग सौकणा, सौहरा पेका इक्को पिता माईआ। सचखण्ड दवारे इक घर सब ने पहुंचणा, दूजा दर ना कोए वड्याईआ। दो जहान किसे ना रोकणा, रुकमणी राधा नूं कृष्ण गया समझाईआ। जोती जोत सरूप

१४३३ हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं प्रभ दा भरया वेखां पूर, पूरन पुरख दए जणाईआ। हाज़र हो हज़ूर, लेखा पूरब फोल फुलाईआ। रणजीत कौर ला के मस्तक संधूर, संध्या दा वक्त इक सुहाईआ। अन्तर विकार रहे ना कूड़, क्रिया कूड़ देणी मिटाईआ। जिस जन भगत प्रभ चरण ला लई धूढ़, ओस दा इक्को पिता माईआ। शरीर वास्ते माता पिता जगत ज़रूर, आत्म दा परमात्म आदि अन्त सदा अख्वाईआ। जिस कूड़ी क्रिया कलयुग मेटणी ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप जन भगत करे मशहूर, मशवरा लैण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे प्रभ दा शब्द धार मज़मून, लेखा क़लम शाही वड्याईआ। भगत दवारे जिस माता दा लग्गा खून, शहादत बच्चयां वाली भुगताईआ। ओस दा नुक़ता समझ ना सके कोए नून, अक्खरां विच ना कोए वड्याईआ। आदि अन्त आपणे हथ्थ रखे क़ानूंन, कायदा बाकायदा आप दृढ़ाईआ। जो लेखे लाए मासूम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे जिथ्थे भगतां दी आबादी, भगत दुआरा सोभा पाईआ। साडे पिता दी गोदी बैठ गई साडी दादी, दाअवे नाल जणाईआ। माता संधूर लगा के रसम करे समाजी, समाज वाल्यां दए जणाईआ। बिना प्रभू दी किरपा सदा रहे कोई ना राज़ी, सति सति ना कोए समाईआ। की शरअ शरीअत करे क़ाज़ी,

क़ज़ा सक्कया ना कोए बदलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त अगम्मी साजण साजी, साजणहार दया कमाईआ। सम्मत शहिनशाही पंज जगदीश मनजीत दी होणी शादी, खुशीआं भगतां नाल मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप उठाईआ। मनजीत जगदीश कहे असीं आए धर्म दी धार आखण, निउँ निष्उँ सीस निवाईआ। जिथ्थे लग्गे सच सिँघासण, सोभावन्त वड्याईआ। धरनी होवे वड वड भागण, धवल खुशी रखाईआ। किरपा करे माधव माधन, मोहण मोहणी रूप दरसाईआ। जिस रचना रची आदन, अन्त आपे वेख वखाईआ। जन भगतो तुसीं सारे होए सुहागण, रंडेपा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। धरनी कहे मेरे उपर सुहञ्जणी होवे जगह, जागरत जोत रुशनाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर चार जुग दा इष्ट मज़हबां दा सका, दीनां रंग रंगाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला सब दा बणन लग्गा अब्बा, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। वक्त सुहञ्जणा सुहावा सोहणा सजा, मिले माण वड्याईआ। चारे दिशा अग्गा पिच्छा सज्जा खब्बा, गुर अवतार पैग़म्बर रंग रंगाईआ। पूरब लेखा मेटे हभ्भा, अग्गे आपणा हुक्म जणाईआ। जन भगतो साढे नौ वजे रैण रातीं भगत दवारे उत्ते ढोल दा लग्गे डग्गा, खुशी नाल खड़काईआ। शमांदान होवे जगा, आपणा आप चमकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर होवे सद्दा, आवण चाँईं चाँईंआ। खाणे नाल दुध्ध ग्लास लिआउणा अध्धा अध्धा, पूरा भर ना कोए टिकाईआ। इक इक्क विच रख के टका, अन्तिम लहिणा देणा मुकाईआ। मुखों कहिणा गुर अवतार पैग़म्बरो पुरख अकाल आया तुहाडे वट्टा, वटणा सब नूं दए लगाईआ। तुहाडा पूरा कर के पट्टा, पटने वाला इक्को नाल रखाईआ। अग्गे साचा दस्स के टप्पा, सोहँ करे पढ़ाईआ। तुसीं वसो इक्को इक टिकाणा इक्को तुहाडा पता, जिथ्थे पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। जगत जहान रिहा कोई ना सका, साजण मीत ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे रणजीत कौर तिलक लगाया केहड़े मस्तक, मस्तक चरणां उत्ते टिकाईआ। केहड़ा सुहञ्जणा होया वर्षक, बरस बरसी वेख वखाईआ। सतिगुर दुआरा कदे ना बणे मरघट, मसाणा वाला ना रूप जणाईआ। जगत जहान वास्ते तीर्थ तट, घाट किनारा इक्को इक रखाईआ। चार वरन दे इक्ठे झीवर छींबे नाई जट्ट, जट्टां दा मालक जट्ट नज़री आईआ। तुसीं जगत ज़ातियां सारे गए टप, अग्गे सके ना कोए अटकाईआ। मिल गए ओस प्रभू दे हक़, जो हक़ीक़त दा मालक इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब कला समरथ, समरथ स्वामी इक अख्वाईआ। जन भगत कदे ना होवे

रंडा, रंडेपा नज़र कोए ना आईआ। जो सतिगुर मंज़ल चढ़े डंडा, पौड़ी पौड़ी पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दा कूड़ा समझणा धन्दा, माया ममता जगत हल्काईआ। माया मोह विकार हँकार विषा विशेष नहीं गंदा, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जिन्हां दा लेखा साहिब स्वामी संदा, संध्या आपणा रंग रंगाईआ। मेहर कर सूरा सरबंगा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अंगीकार कराए अंगा, आंगन आपणा इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आदि जुगादी साचा छन्दा, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस धरनी उत्ते सिँघासण वाला डाहे पलँघा, आसण भगतां नाल रखाईआ।

❊ १७ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ साढे नौ वजे हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सतारां हाढ़ कहे मेरा लेखा अगम्म अपार, अलख अगोचर दयां दृढ़ाईआ। हुक्म दिता सो पुरख निरँजण सच्ची सरकार, हरि पुरख निरँजण शाह पातशाह शहिनशाह रिहा उठाईआ। एकँकार कीता ख़बरदार, आदि निरँजण दर्द दु:ख भय भञ्जण, पर्दा दिता उठाईआ। अबिनाशी करते संदेसा दिता आपणी धार, श्री भगवान शाह सुल्तान रिहा दृढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करना ख़बरदार, आलस निंदरा रहे ना राईआ। विष्न ब्रह्मा शिव धुर दी दस्सण अगम्मी कार, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जोती जाते कर उज्यार, गुर अवतार पैग़म्बर अक्खखुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। सतारां हाढ़ कहे हुक्म दिता श्री भगवन्त, हरि करता आप जणाईआ। चार जुग दा नाम कलमा वेख मणीआं मंत, घट अन्तर निरंतर वेख वखाईआ। चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेखे सन्त, धरनी धरत धौल धवल गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। आत्म परमात्म वेख कवण नार सुहागी कन्त, सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी कवण घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच दए वड्याईआ। सतारां हाढ़ कहे सुणया शब्द अवल्ला, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जो वस्सया दरगाह साची सचखण्ड महल्ला, मुकामे हक़ सोभा पाईआ। जिथ्थे नूर अलाही एकँकारा अल्ला, अलाह आपणा आप करे रुशनाईआ। सच दरबारा एकँकारा सुहाए अटल अटला, निहचल सोभा पाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर जिस दे दीपक अगम्मी जला, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ओह करे खेल इक इकल्ला, अकल कलधारी धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप चुकाईआ। सतारां हाढ़ कहे पुरख अकाल देवे ख़बर, बेख़बरां ख़बर

जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर उठो मेरा टब्बर, पिता पूत दए वड्याईआ। दीन दुनी कायनात सृष्टी दृष्टी अंदर होया बेसबर, सिदक सबूरी नज़र कोए ना आईआ। तुसीं मढ़ी गोर समाए आसण लाया विच क़बर, मक़बरिआं रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं चारों कुण्ट तुहाडे दीनां मज़हबां पाया ग़दर, सांतक सति ना कोए कराईआ। चार जुग दा नाम कलमा करे कोई ना अदल, इन्साफ़ हक़ ना कोए कराईआ। पिता पूत करे क़तल, मक़तूल क़ातल वंड ना कोए वंडाईआ। तुहाडे शास्त्र सिमरत वेद पुराणां अञ्जील क़ुरानां खाणी बाणी चारा चले ना कोई यतन, यथार्थ भेव ना कोए खुल्हाईआ। आत्म परमात्म नालों विछड़ लोकमात होई बेवतन, घर सच ना कोए मिलाईआ। जीव जंत साध सन्त पत आए कोई ना रखण, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। आपणा घाट दीन मज़हब दा वेखो पत्तन, पत्रे अक्खरां वाले फोल फुलाईआ। चार वरन अठारां बरन मन कल्पणा विच तपण, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द अल्ला वाहिगुरु राम ओम हरी ओम तत सति सारे जपण, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। सजदे करदे जांदे मक्के काअबे करन हज्जण, महबूब मिलण कोए ना पाईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ सारे नट्ठण, गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ आपणीआं फेरीआं पाईआ। मन कल्पणा अंदर काया माटी नच्चण, नौ दवारे पन्ध ना कोए मुकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह माया ममता आसा तृष्ना विच हस्सण,

१४३६ २१ हस्ती मिले ना बेपरवाहीआ। चुरासी कोई ना आवे कटण, कटाकश नाम तीर ना कोए लगाईआ। कम्म ना आए चौदां १४३६ २१

लोक हट्टण, चौदां तबक सबक हक़ीक़ी ना कोए पढ़ाईआ। धर्म दी धार चले कोई ना मत्तन, मन मनसा रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। पुरख अकाल कहे गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो आपणा लोकमात, बिन अक्खां अक्खखुल्हाईआ। नूरी धार मारो झाक, झलक देवे बेपरवाहीआ। आपणा वेखो भविख्त वाक्, जो नाम कलमयां विच सालाहीआ। अक्खरां वाली वेखो लुग़ात, निरअक्खर विच्चों समझाईआ। क्यों झगड़ा पाया ज़ात पात, दीन मज़हब वंड वंडाईआ। मेरा भेव भेद ना दस्सया ख़ास, ख़सूसीअत हक़ ना कोए दृढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म करे कोई ना जाप, पारब्रह्म ब्रह्म रंग ना कोए रंगाईआ। रूह बुत होए किसे ना पाक, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। तुसीं नन्हे बच्चे मेरी अगम्मी शाख़, शनाख़त विच तन वजूद दिते बणाईआ। अन्त कोई ना निभया साथ, सगला संग ना कोए जणाईआ। आपणी मंज़ल वेखो घाट, पौड़ी पौड़ी क़दम टिकाईआ। साची मिले किसे ना वाट, दरगाह सच ना कोए सुहाईआ। अन्त मिले ना किसे नजात, पुश्त पनाह हथ्थ ना कोए रखाईआ। हुक्म देवे पुरख अबिनाश, परवरदिगार धुरदरगाहीआ। तुहाडे उत्तों तुहाडयां मुरीदां

सिखां दा गया विश्वास, विषयां विच कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे तेई अवतार करो सावधानी, जोती जोत जोत लओ अंगड़ाईआ। जा के वेखो आपणी जूह बेगानी, जो मातलोक छड्ड के आईआ। मंज़ल वेखो जीव रुहानी, अंदर मन्दिर फोल फुलाईआ। जगह छड्डो अर्श असमानी, जिस्मानी पर्दा दयो उठाईआ। जेहड़ी अक्खरां वाली लिख के आए बाणी, अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। सदी चौधवीं बण गई जगत कहाणी, आत्म ब्रह्म ना कोए वड्याईआ। धर्म दी दिसे ना कोए निशानी, सति सच ना कोए जणाईआ। धर्म दवारे दिसदे ख़ाली, नाम भण्डारा ना कोए वरताईआ। जगत बाग़ दा रिहा कोए ना माली, हरया सिंच ना कोए कराईआ। मन्दिर दिसे ना कोए शाने आली, आलम इल्म उल्मा सके ना कोए समझाईआ। ओह गुरमुख उठो जिन्हां चौहां ने दो हथ्थां नाल वजाउणी ताली, कलयुग काया वेख के खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद खोल्हो अक्ख, लाशरीक आप जणाईआ। जो निरगुण धार आए दस्स, कलमा वाहिद इक पढ़ाईआ। हक़ीक़ी जणा के आए हज्ज, हुजरा इक्को इक दृढ़ाईआ। जिथ्थे नूर अगम्मी जोत रही जग, अन्ध अन्धेर रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। परवरदिगार कहे गुज़ले जूज़कज़ा ज़ौबो ज़गी नूरे चशां चश्मे दीद चूज़े मुज़ू नूरे नूर नूर इक अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता बेपरवाहीआ। परवरदिगार कहे की पैग़म्बरो दिता पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे देणा दृढ़ाईआ। की कलमा दस्सया कलाम, कायनात की जणाईआ। की शरअ दस्सी अवाम, उम्मत पर्दा की उठाईआ। की हक़ दा दस्सया नज़ाम, नौबत नाम वजाईआ। की हक़ीक़ी दिता जाम, मधुर रस रस चखाईआ। आपणी उम्मत वेखो तमाम, तमअ विच लोकाईआ। तुहाडा रिहा ना कोए ग़ुलाम, ग़ुरबत विच पई दुहाईआ। सच दी रही कोई ना शान, शमां नूर ना कोए चमकाईआ। चारों कुण्ट बेईमान, धर्म दी धार ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं होई हराम, हैरानी हर घट अंदर आईआ। पवित्र रिहा ना पीण खाण, अमृत रस ना कोए चखाईआ। क्यों दरगाह साची सचखण्ड लुके आण, आपणा आप छुपाईआ। जा के वेखो जीव जहान, चारों कुण्ट रिहा कुरलाईआ। प्यार रिहा ना किसे विच इन्सान, इन्सानीअत हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पुरख अकाल कहे वेखो सतिगुर दस, नानक गोबिन्द भेव खुल्हाईआ। अमृत मिले कोए ना रस, रसना कूड़ जगत हल्काईआ। धीरज रिहा कोई ना हट्ठ, साध सन्त देण दुहाईआ। सुहाए कोई

ना तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मारे धाईंआ। दीनां मज़हबां पाई वट, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को घर ना कोए वसाईआ। सति धर्म ना दिसे हट्ट, वस्त अगम्म ना कोए रखाईआ। मन कल्पणा जगत जिज्ञासू रहे नठ्ठ, सतिगुर शब्द ना कोए कमाईआ। दुरमति मैल कोई ना सके कट, परदा दूई ना कोए चुकाईआ। मातलोक वेखो छेती झट्ट, झटका खा के बणे कसाईआ। अक्खरां वाली बाणी तुहाडी दिती ठप्प, मोहर कलयुग नाम लगाईआ। होछी सब दी होई मत, ब्रह्ममत ना कोए रखाईआ। झगड़ा प्या पंज तत्त, त्रैगुण अगनी रही तपाईआ। जो दस्स के आए सच, सो बैठा मुख छुपाईआ। लूं लूं अंदर प्रभू जाए किसे ना रच, साढे तिन्न करोड़ नेत्र नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे वेखो वक्त आ गया समां, सहज नाल समझाईआ। अग्गे जुग चलणा नवां, नव नौ चार दए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया मेटणा ग़मा, माया ममता मोह गवाईआ। जन भगतां जगाउणी शमां, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। कूड़ कल्पणा मेट के मनां, मनसा दूर देणी कराईआ । सच नूर चमका के चन्ना, तारा चन्द मुख भवाईआ। जो दीनां मज़हबां तुसां बणाया बन्ना, कलयुग करनी अन्त सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर निरगुण उठो विच्चों मेरी धार, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जा के वेखो आपणा संसार, दीन दुनी फोल फुलाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। धर्म दवारिआं होए विभचार, चारों कुण्ट कूड़ दिसाईआ। दीन मज़हब आपणे करो ख़बरदार, सुत्तयां सोयां लओ उठाईआ। एह अन्त अख़ीरी वार, सम्मत सम्मती ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे करन सलाह, सचखण्ड लै अंगड़ाईआ। साडे ग्रन्थ साडे गवाह, शहादत देण भुगताईआ। जिस नूं दस्सदे आए बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। ओम राम कृष्ण अल्ला वाहिगुरु कहि के आए गा, नाम सति सति समझाईआ। निरगुण नूरी नूर खुदा, खुद मालक इक अख्वाईआ। जिस दे उत्ते हो के आए फ़िदा, आप आपणे लेखे लाईआ। सो मार्ग दस्से सिध्धा, सच स्वामी भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। पुरख अकाल कहे करो सच त्यारी, त्रैगुण अतीता रिहा दृढ़ाईआ। तुसीं निरगुण नूर जोत प्रभू निरँकारी, निराकार निरवैर उपजाईआ। पंज तत तत्त शंगारी, तन वजूद दिती वड्याईआ। जा के उन्हां पाओ सारी, जिन्हां नूं आपणा इष्ट आए दृढ़ाईआ। मज़हबां दी मुख्त्यारी, आलम हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मेरा नाम कलमा तुहाडी जगत वाली रोज़गारी, लेखा धुर समझाईआ। अन्तिम मेहनत जाए बेकारी, धुर दी धार ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट दिसे जवारी, ज़ाहर ज़हूर

१४३८ २१

नज़र कोए ना पाईआ। भरमे भुल्ले नर नारी, नर नरायण मिलण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अकाल सीस निवाउँदे हां। दीन दयाल साहिब सुल्तान, दर ठांडे अलख जगाउँदे हां। तूं शहिनशाह शाह सुल्तान, ख़ाली झोली अग्गे डाउँदे हां। तूं वाली दो जहान, हउँ बालक मँग मँगाउँदे हां। जो दस्स के आए जहान, उस दा पर्दा आप उठाउँदे हां। दीनां मज़हबां कर के आए कल्याण, कलमा तेरा इक जणाउँदे हां। अन्त वेखीए मार ध्यान, चौदां तबकां पन्ध मुकाउँदे हां। खेल मुके ज़िमीं असमान, दो जहानां वंड ना कोए वंडाउँदे हां। तेरा हुक्म इक फ़रमान, परवरदिगार सीस टिकाउँदे हां। चार दिन रह के आए जहान, अन्तिम तेरे दर सुहाउँदे हां। तूं साहिब सदा मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाउँदे हां। दर तेरे अलख जगावांगे। दरगाह साची मँग मँगावांगे। लोकमात राह तकावांगे। हाढ़ सतारां वेख वखावांगे। जोती जोत विच्चों प्रगटावांगे। वरन गोत ना कोए रखावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखावांगे। गुर अवतार पैग़म्बर झुकदे, दर दर सीस निवाईआ। साडे पैंडे सब दे मुकदे, अन्त रिहा ना राईआ। असीं वणजारे तेरे नाम तुक दे, आपणा ढोला दे दृढ़ाईआ। असीं वणजारे नहीं

१४३९
२१

सुख दे, सागरां विच ना कोए समाईआ। असीं पुज्जे तेरे दवारे उच्च दे, उच्च अगम्म तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। अवतार पैग़म्बर कहिण सतिगुरु तेरे चरण बलिहारी, बिन चरणां सीस निवाईआ। तूं आदि जुगादि इक अवतारी, जुग जुग वेस वटाईआ। सब नूं नाम दी दे खुमारी, लोकमात दिती वड्याईआ। पंज तत कर श्रृंगारी, तत्तां विच भवाईआ। दीनां मज़हबां दे अख़्त्यारी, कलमयां नाम सुणाईआ। अन्तिम छड्ड के आए यारी, याराना तोड़ ना कोए निभाईआ। संदेसा दे के आए कलयुग अन्तिम कल कल्की लए अवतारी, अमाम अमामां फेरा पाईआ। जिस दी करनी वफ़ादारी, दर ठांडे सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वरदाता इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण खोल्ह दे धुर दरवाज़ा, दर तेरे मँग मँगाईआ। तूं ग़रीबां दा ग़रीब निवाज़ा, करनैल सिँघ अग्गे जाणा आईआ। तेरा मुहम्मद दा पिछला साका, साहिब दए समझाईआ। जिस वेले मक्कयों मदीना झाका, आपणा पन्ध मुकाईआ। ओह किसे तों खिच्चया नहीं गया ख़ाका, मुसव्वर तसव्वर ना कोए कराईआ। कोई गा ना सक्कया भाटा, कातब क़लम ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू जे सारे जाईए जग, जगजीवण दाते

तेरी वड वड्याईआ। की जा के करीए हज्ज, काअबिआं सीस निवाईआ। की वड़ीए मन्दिर मठ, शिवदवाल्यां सोभा पाईआ। की गुरुदुआर वेखीए नठ नठ, जिथ्थे धर्म रिहा ना राईआ। नौ खण्ड पृथ्मी तेरा तक्कीए हट्ट, सत्तां दीपां वंड की वंडाईआ। साधू दिसे ना कोई जिस दे अंदर जत सति, धर्म दी धार ना कोए दृढ़ाईआ। तेरे शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान खाणी बाणी रसना जिह्वा बत्ती दन्द दीन दुनी पढ़ पढ़ गई थक्क, पढ़यां हथ्थ किछ ना आईआ। अन्तिम सारे गए अक्क, धुर दा प्रेम ना कोए बणाईआ। कुछ संदेसा देवें बिन अक्खरां वाली पत्त, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। असीं इक्ठे जाईए गुर अवतार पैग़म्बर दीन मज़हब छड्ड, जगत वंड ना कोए वंडाईआ। तेरे नाम दा धर्म निशाना दईए गड्ड, गॉड गाईड गुड दईए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण अन्त प्रभू निमस्कारे, नमों नमों सीस निवाईआ। असीं चौहन्दे जाईए ओस दवारे, जिथ्थे तेरा नाम वड्याईआ। मज़हब दा देवे ना कोए इशारे, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट तक्कीए वारो वारे, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। जां वेख्या सच नज़र आया तेरयां भगतां दे दवारे, जिथ्थे चार वरन बैठे सोभा पाईआ। असीं चौहन्दे अज्ज दिन सतारां हाढ़े, जिस दा गुर अवतार पैग़म्बर भविख्त गए समझाईआ। प्रेम प्रीती विच जाईए जगत संसारे, आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लैणा मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अबिनाशण, अबिनाशी तेरी बेपरवाहीआ। असीं तेरे दासी दासन, जुग जुग सेव कमाईआ। असीं चौहन्दे तेरा नूर ज़हूर चमके ओस जगह जिथ्थे ना कोई पृथ्मी ना आकाशण, ज़िमीं असमान नज़र कोए ना आईआ। तेरा जलवा वेखीए बातन, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। पुरख अकाल कहे मैं दीन दयाला, दीनां बंधप अख्वाईआ। जुग चौकड़ी खेल निराला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग समझ किसे ना आईआ, किसे नूं राम किसे नूं बणा काहन ग्वाला, किसे नूं ईसा मूसा किसे नूं नानक किसे नूं गोबिन्द बणा के बाला, शब्द सुत समझाईआ। जद वेखो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर रूप सदा सब तों निराला, एकँकार सोभा पाईआ। असीं हैरान हो गए गुर अवतार पैग़म्बर कहिण, जुग जुग भगतां दे के राह सुखाला, सिध्धा आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता नूर खुदाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण ऐ साडे गुरदेवा, तेरे चरण कँवल सरनाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक आदि जुगादि अलख अभेवा, आदि निरँजण तेरी वड वड्याईआ। असीं बालक तेरे नन्हे करन वाले सेवा, सेवक जुग जुग सेव कमाईआ। तेरा नाम रस अमृत मेवा वड देवी

देवा, देवत सुर तेरी सरनाईआ। तैनूं जिस गाया रसना जिह्वा, अजपा जाप विच बिन भगतां तों नज़र कोए ना आईआ। तेरा धाम निहचल निहकेवा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभू असीं तेरे पुजारी, पूजनीक इक अख्वाईआ। निरगुण सरगुण विष्नूं ब्रह्मा शिव भण्डारी सँघारी, उत्भुज वाला नज़र कोए ना आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों पुरख अकाल दीन दयाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एकँकार परवरदिगार सांझे यार तेरी आई लोकमात वारी, वारस हो के विरसा सब दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण उठो पंज दरबारी, दरे दरबार सोभा पाईआ। गुरदर्शन बोले ओह जैकारी, जो ईसा इस्म आज़म विच समझाईआ। पंज अक्खरां दी पंचम नाल धारी, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर साचे मँग मँगाईआ। दरबारी कहिण तेरा दरबारा, दर ठांडा नज़री आईआ। जिथ्थे पुज्जण गुरु अवतारा, पैग़म्बर पन्ध मुकाईआ। जिन्हां दी आशा जगत अहारा, चारे थाल मँग मँगाईआ। एह भेंटा अन्तिम
१४४१ वारा, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। तेरा हुक्म सच्ची सरकारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप १४४१
आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, करन हार इक अख्वाईआ। थाल कहिण असीं जगत परोसे, पंचम पंच नाल वड्याईआ। नाल पाणी ग्लास कोसे, ईसा मूसा मुहम्मद मँग मँगाईआ। दुध्ध नाल पूरे कीते रोज़े, राज़क रिज़क रहीम तेरी सरनाईआ। तन वजूद सुहाए चोगे, माटी ख़ाक वज्जे वधाईआ। मन कल्पणा हिरदे सोधे, सच सुच्च विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम मिले तेरी जोते, जोत जोत विच रलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण वस्तू विच थाल, गगन मण्डल वड्याईआ। समरथ पुरख तेरी धर्मसाल, सच दुआरा नज़री आईआ। जिथ्थे भगत सुहेले इक्ठे होए आण, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कालीआं झण्डीआं वाल्यो उपर कर दयो काले निशान, बेमुखां नालों करो जुदाईआ। तुहाडा ओह मित्र जेहड़ा मन्ने श्री भगवान, पुरख अकाल रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जिन्हां हथ्थ कीते नीले, अग्गे जाओ आईआ। जिस बुढ्ढे ने वस्त्र पाए पीले, गोबिन्द वेखे चाँईं चाँईंआ। प्रभ मिलण दे सच वसीले, वसल मिले नूर अलाहीआ। तुसीं ओस प्रभू दे क़बीले, जो क़िबले अज़ करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जिन्हां पग्गां नूं पाए डब्ब, दो दो रंग रंगाईआ। ओह अग्गे आउ झब, आपणा पन्ध

चुकाईआ। सब नूं दस्सो दीन मज़हब दी छड्डणी हद्द, मानव मानव इक्को रूप दरसाईआ। झगड़ा दुनी रहे ना जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। द्वैती सड़ना नहीं अग्ग, तामस तमअ ना कोए तपाईआ। विकार दी पीणी नहीं मदि, नाम खुमारी लैणी चढ़ाईआ। बिना काअबिउँ करना हज्ज, काया मिले नूर अलाहीआ। सब ने प्रण करना अज्ज, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। ओह सब दा मालक सूरा सर्बग्ग, जिस ने गुर अवतार पैग़ग्बर लए उपजाईआ। उस दा नाम कलमा इक्को अगम्मी मदि, धुन आत्मक राग सुणाईआ। पिछली रीती सब ने जाणी छड्डु, छड्डणी कूड़ लोकाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला परवरदिगार सांझा यार काया मन्दिर अंदर लैणा लभ्भ, बाहर लभ्भण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा अगम्मी वर, जिस दा लेख ना कोए दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण साडी आदि जुगादि दी मनसा, अन्त दईए दृढ़ाईआ। आत्म नारी मिले कन्ता, परमात्म सोभा पाईआ। लेखा रहे ना बहिश्त जन्नता, स्वर्ग अक्खना कोए उठाईआ। गढ़ तुट्टे हउमे हंगता, हँ ब्रह्म वड्याईआ। मन्नणा पए ना कोई पंडता, बोध अगाध दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच्चा सच अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण साडा अन्त विहारा, विवहारी रिहा जणाईआ। असीं कर के निमस्कारा, अग्गे

१४४२ पल्लू लैणा छुडाईआ। वस्स के सचखण्ड दुआरा, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। बोल के इक जैकारा, तूं मेरा मैं तेरा १४४२

२१ ढोला गाईआ। पुरख अकाल दा खेल वेख दुबारा, दोहरी धार वज्जे वधाईआ। जन भगतां मिले सहारा, सहायक इक्को २१

इक अख्वाईआ। जिस नूं किहा परवरदिगारा, जल्वागर नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरा खेल अपर अपार, अपरम्पर स्वामी रिहा जणाईआ। भेजदा रिहा गुरु अवतार, पैग़ग्बरां हुक्म मनाईआ। संदेसे दिन्दा रिहा वारो वार, जुग चौकड़ी कर पढ़ाईआ। किसे हथ्थ ना आया नेत्र नैण सक्कया ना कोए वखाल, तन वजूद ना कोए वड्याईआ। बणया रिहा शाह कंगाल, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर कहिण असीं करीए हक़ निमस्कारी, सजदा सीस झुकाईआ। जुग जुग कीती खेल निआरी, निराकार आपणी कार कमाईआ। सानूं समझ नहीं दिती सारी, सार शब्द ना कोए दृढ़ाईआ। दीन मज़हब दी ला के कारी, धंदे जगत वाले वखाईआ। किसे दा मूंड मुंडा किसे दी बोदी किसे दी मुच्छ केस दाढ़ी, जुग जुग हुक्म वरताईआ। आप ना पुरख ना नारी, नर नरायण नूर नज़री आईआ। तत्तां वाले गुरुआं दी करदा रिहा खुआरी, हुक्मे अंदर हुक्म भवाईआ। जन भगतो गुर अवतार पैग़ग्बर

कहिण प्रभ दे उत्ते सदा सदा बेएतबारी, एतबार सके ना कोए जमाईआ। एह चार जुग दा जुआरी, सार पाशा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण पुरख अकाल धोखेबाज़, सति सच जणाईआ। सानूं भेव ना दस्सया आपणा राज़, नाम कलमे दे के दिता परचाईआ। मुख़तलिफ़ सुणा के आपणी आवाज़, इख़तलाफ़ विच कीती लड़ाईआ। थोड़ा जिहा अंदरों लाह के गिलाफ़, नूर दिता चमकाईआ। मण्डल वखा के रास, सुरती शब्द गोपी काहन नाच नचाईआ। पवण चला के स्वास, साह साह दरसाईआ। खुशी संदेसा आख, अगम्म करी पढ़ाईआ। खोल्ह के निक्का जिहा ताक, बाहर दिता कढ्ढाईआ। बणा के आपणा चाक, सेवक सेवा सच जणाईआ। अन्त बणा के ख़ाक, मिट्टी तन वजूद रही ना राईआ। ओस प्रभू दी करीए की बात, जो जुग जुग आपणा हुक्म जणाईआ। असीं वी रखदे रहे आस, आसा इक उपजाईआ। जिस वेले करे निरगुण नूर जोत प्रकाश, नूर नुराना डगमगाईआ। झगड़ा मेटे ज़ात पात, दीन मज़हब ना कोए रखाईआ। साडा पूरा करे वाक्, भविख्त देण गवाहीआ। सो सतारां हाढ़ आ गया नाल इतफ़ाक़, इतफ़ाक़ीआ दिता जणाईआ। शब्दी सद्दा दे के आप, आप आपणे दर मँगाईआ । आदि अन्त दा बण के बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। वेखणहार अन्धेरी रात, कलयुग अन्तिम खोज खुजाईआ। धर्म दा दिसे कोई ना साध, साधना सच ना कोए कमाईआ। जिधर तक्को वाद विवाद, विख कूड़ भरी लोकाईआ। नाम मिले ना बोध अगाध, बुद्धी तों परे ना कोए समझाईआ। अक्खरां वाली बाणी सारे कर के याद, कलमा कायनात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो तुहानूं दईए अगम्मी तार, तारा मण्डल ना कोए अटकाईआ। प्रभू बणया नहीं किसे दा यार, याराना सके ना कोए समझाईआ। उस जिस नूं उपजाया ओसे नूं दिता मार, गुर अवतार पैग़म्बर बच्या नज़र कोए ना आईआ। जिस ने उस दा कलमा गाया ओसे नूं दिता उजाड़, गोबिन्द दए गवाहीआ। इहो आसा रखी सतारां हाढ़, हाढ़ा कर के रहे सुणाईआ। पंजे दरबारी होवो ख़बरदार, अग्गे जाणा आईआ। एह खेल सच्ची सरकार, सज्जे खब्बे लए लगाईआ। कोई चले ना अगम्मी आपणी धार, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। वेखे खेल अपर अपार, मेहरवान महबूब नूर अलाहीआ। जिस दा सच सच्चा दरबार, दरगाह साची इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। पंज दरबारी वेखो दर दरबारा, हरि करता आप जणाईआ। ओधरों ईसा मारे नाअरा, कूक कूक सुणाईआ। वाह मेरे परवरदिगारा, तेरी बेपरवाहीआ। मैं सलीब दा ल्या हुलारा, फाँसी गल लटकाईआ ।

तेरा जलवा तक्कया सच नूर उज्यारा, उजल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग दए रंगाईआ। मूसा कहे मैं वेख्या मुकामे हक़, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जिस दे विच नहीं कोई शक्क, शिकवा सब दा रिहा मिटाईआ। मेरे नाल मेरे खुदा वाहवा कीता पक्क, पक्की रिहा पकाईआ। कलयुग अन्तिम आवां झट, निरगुण नूर वेस वटाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां लोआं पुरीआं ज़िमीं असमानां आवां टप्प, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। धुर दा हुक्म दे के यक्क, सच संदेसा इक सुणाईआ। पिछली कीती चार जुग दी हुक्मे नाल करे रफ़, रस्ता सब दा साफ़ कराईआ। चारों कुण्ट मलेछां रहे कोई ना सफ़, धरनी धरत धवल खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। मूसा कहे मेरा परवरदिगार हक़ मुरीदां करे प्यार, जन भगतां दया कमाईआ। जन्म कर्म दे अधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। बणा के बरखुरदार, खुदी तक्बर दए गवाईआ। मस्तक धूढ़ ला के छार, टिक्के ख़ाक दए रमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर ठांडा इक वखाईआ। मूसा कहे मैं खेल दस्सणा प्रैजैंट हाली, हालत दीन दुनी जणाईआ। चारों कुण्ट होणी रैण अन्धेरी काली, कलमे वाला नज़र कोए ना आईआ। प्रभू
१४४४ दा खेल वेखणा बेमिसाली, जिस दी मिसल ना कोए समझाईआ। प्रगट हो के दो जहान वाली, वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। १४४४
पंज भगत प्यारयो वजा दयो ताली, जिस दे नाल तबअ तबीअत सब दी दए बदलाईआ। जन भगतो तुहाडे भगत दुआर
२१ ते दीवाली, तुहाडी काया अंदर निरगुण नूर जोत करां रुशनाईआ। अज्ज दी रात तुसीं बण जाइओ सवाली, मुड़ के मँगण २१
दी लोड़ रहे ना राईआ। भाग लगावां तुहाडी काया पत्त डाली, मानस मानुख मानुश आपणा रंग रंगाईआ। किसे दी रहिण नहीं देणी दलाली, दिलां दा मालक इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण उठो पुजारी, पंजे लओ अंगड़ाईआ। तेरा तारा चन्द निशान मुहम्मद दी यारी, याद पिछली रिहा कराईआ। एह खेल अपर अपारी, सपारयां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। धुर हुक्म कहे जन भगतो करयो ना कदे कोए ग़द्दारी, ग़दागर हो के प्रभ वेखे थाउँ थाईंआ। एह सदी चौधवीं सब ने रहिणा नाल हुशियारी, होछी मति ना कोए बणाईआ। ओए तेरे रोण दी क्यों नहीं आई वारी, चौथे जुग विच चार दिन दिता रुवाईआ। एह खेल सब तों निआरी, नानक दा लेखा रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ । तेरे मस्तक विच तिन्न लकीर, सूही पीली नीली नज़री आईआ। तूं गोबिन्द वेले दा दरवेश ते फ़कीर, तिन्न वेरां सजदा कर के गोबिन्द सीस दिता झुकाईआ। ओस बदल के तेरी तक़दीर, माणस तों माणस दिता

वखाईआ। जिस दे हथ्थ शब्द शमशीर, शरअ दए बदलाईआ। ओ तूं साथी नाल कबीर, क़बर दे उत्ते बैह के नूर तक्कया सच खुदाईआ। नाले पढ़ी तकबीर, तूं ही तूं ही राग अल्लाईआ। खेल वखाया बेनज़ीर, नज़र दिती बदलाईआ। तैनूं मिलाउणा अन्त ओस दे नाल अख़ीर, जो सब दा पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। सतिगुर शब्द कहे तूं वजा दे दो हथ्थां दी ताली, तल्ब पिछली याद कराईआ। तूं फल खवाया सी सीता नूं विच्चों तोड़ के बाग़ दी डाली, लंका गढ़ वज्जी वधाईआ। ओस किहा मेरा राम होवे तेरा माली, मालक इक अख्वाईआ। तैनूं सेवा देवे बाहली, मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे किथ्थे पंज पतवन्ते, सतिगुरु दे मीते, मित्र प्यारे वेख वखाईआ। कुछ याद कर लओ गुरु अर्जन नाल दिन बीते, रावी कन्ढा दए दुहाईआ। तुहाडे कोलों पंज पंज इक्ठे कराए सी गीटे, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। मेहरवान किहा तुसीं सदा रहो जग जीते, गोबिन्द मिले इक सरनाईआ। एसे कर के इक्ठे कीते, लेखा पिछला झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार भुगताईआ।
१४४५ सतिगुर शब्द कहे मैं वेखणा शहिनशाह निरँकारी, निराकार नज़री आईआ। जिस दे सज्जे खब्बे होण ओह सिपाहसालारी, जेहड़े राम भगत राम विच समाईआ। त्रेता छड्डया द्वापर छड्डया कलयुग आ गई वारी, वारता पिछली इक सुणाईआ। पंचबटी
२१ दी खेल निआरी, जिस नूं नेत्र वेखण कोए ना आईआ। एह दोवें सी शिकारी, राज राजाने वड्ड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्लाईआ। सतिगुर शब्द कहे राम सुत्ता सी बनवास, दसरथ बेटा आसण लाईआ। दोवें आ गए पास, भज्जे वाहो दाहीआ। लग्गी सी प्यास, बिहबल हो सुणाईआ। साडी पूरी कर दे आस, तेरा नाम दुहाईआ। हस्स के राम ने किहा मेरा राम सब दा बाप, जो राम दा राम सोभा पाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त निरगुण धार आवे आप, आपणा फेरा पाईआ। तुहाडा दोहां दा मेल के साथ, सगला संग जणाईआ। दर दवारे पुच्छे बात, मेहर नज़र इक उठाईआ। सो लहिणा पूरा करना अज्ज दी रात, हाढ़ सतारां दए गवाहीआ। सच दस्सो की वक्त होया उत्ते कलाक, टक टक की आवाज़ सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए समझाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जन भगतो वेखो वज्ज गए बारां घड़ी कलाक वाच, पंज दरबारी वेख वखाईआ। हो गई अध्धी रात, दुनियां सुंञ मसाण आसण लाईआ। तुसीं छड्ड के सज्जण साक, नाता भैण भाई तुड़ाईआ। मेट के ज़ात पात, दीन दुनी हद्द गवाईआ। मस्तक धूढ़ी ला के ख़ाक, टिक्के इक रमाईआ। पूरब पूरी करे आस, निरासा

१४४६ २१

रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुक्म रिहा सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण सुणो अगम्म फ़रमाना, सब नूं दईए जणाईआ। प्रभू शरअ दा शैताना, जुग जुग करे लड़ाईआ। शब्दां दा मस्ताना, नाम कलमे रिहा पढ़ाईआ। दस्स के धुन आत्मक दा गाणा, अगम्मी राग सुणाईआ। अछल छल करे विच जहानां, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जद आवे गुर अवतार पैग़म्बरां ला के बहाना, आपणा पल्लू जाए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। ओ गुर अवतार पैग़म्बरो, कलयुग कहे मैं आया, आपणा फेरा पाईआ। मेरे नाल त्रैगुण माया, भज्जी चाँईं चाँईंआ। पंजां तत्तां रंग रंगाया, आपणा खेल वखाईआ। मन मनुआ डंक रिहा वजाया, वजह सके ना कोए समझाईआ। कलयुग कहे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी कम्म किसे ना आया, बिन सतिगुर सच्चे पार ना कोए कराईआ। सतिगुर सच्चा इक्को शब्द अखवाया, जिस ने अवतार पैगम्बर गुर दिते बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पर्दा लाहीआ। सतिगुर शब्द कहे गुरमुखो तत्तां दे कदे ना बणयो पुजारी, पूजा कम्म किसे ना आईआ। जद मन्नो ते मन्नो जोत निरँकारी, जो घट घट रिहा समाईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़म्बरां सिफ्तां विच सिफ्त लिखी भारी, भारत वर्ष दए गवाहीआ। पर सतारां हाढ़ कहे अज्ज ओह दिहाढ़ी, जिस दा राह चार जुग रहे तकाईआ। पंजे प्यारे ख़बरदार हो जाओ एस नूं कर लओ गिरफ्तारी, जेहड़ा गिफ़ट विच नाम कलमे दे के सब नूं दए परचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। हाढ़ कहे मैं वेखे सूरबीर बहादर, बहादर शाह अग्गे जाणा आईआ। वेखो जिस नूं कहिंदे करीम क़ादर, क़ुदरत दा मालक नूर अलाहीआ। जेहड़ा गॉड हो के देंदा रिहा आडर, आइद आपणा नाम कराईआ। दीनां मज़हबां दी बणा के बाडर, बाडी नाल बाडी दिती टकराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सदी चौधवीं कहे ओए पीर मुरीदो पैग़म्बरो जिस नूं कहिंदे मौला, आलमीन वड्याईआ। ओह फड़या शेर क्यों नहीं पाउँदे रौला, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सब दा पूरा होया कौला, इक़रार रहिण कोए ना पाईआ। जन भगतो तुहाडा फड़कण लग्गा डौला, आपणा बल लैणा प्रगटाईआ। धरनी दा भार करना हौला, हौली हौली क़दम उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। जन भगतो तुहानूं ख़ुशी बड़ी, माझे वाल्यो बड़कां दयो लगाईआ। साडे विच हिम्मत बड़ी, प्रभ नूं फड़ के आपणे विच रखाईआ। भगत दवारे विच आया ते मार लई हथ्थकड़ी, कड़ी कड़ी नाल जुड़ाईआ। अज्ज मना लओ तुहानूं दर्शन देण लग्गिआं कदे ना करे अड़ी, अड़िक्का अग्गे ना कोए रखाईआ। तुहाडी प्रीती खरी, खरिआं १४४६ २१

दे खरे लए उपाईआ। सच पुच्छो तुहानूं चुरासी विच्चों कीता अज्ज तों बरी, आपणे बंधन लए बंधाईआ। पंजां बीबीआं ने जिन्हां कपड़े चंगे पहने ज़री, शस्त्र कन्धयां उत्ते उठाईआ। अग्गे आ जाओ तुसीं शाही लशकर तुहाडे विच कोई नहीं शरअई, शरअ वाला नज़र कोए ना आईआ। तुसीं कूड़ी क्रिया पैरां हेठां देणी मली, माया ममता देणी गवाईआ। अज्ज तों भगतों तुहाडी लड़ी चली, चार जुग दा रस्ता दिता बदलाईआ। एह भगत दवारे दी गली, जिथ्थे स्त्री पुरुष वंड ना कोए वंडाईआ। इक गोबिन्द ने आपणे बच्चयां दी दे के बली, गुरसिखां दा लहिणा दिता मुकाईआ। बेशक पुरख अकाल बड़ा छली, लख चुरासी नूं छल के तुहानूं ल्या बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे उह गुरमुख अग्गे आउ जेहड़े चार बणे कन्या, नारी रूप वटाईआ। सच दा हुक्म मन्नयां, मनसा मोह मिटाईआ। प्रभ दा खेल नज़र ना आवे नेत्र अंन्हिआं, नैणहीण होई लोकाईआ। जिस ने भरम दा भाण्डा भन्नया, बुढ्ढे नढ्ढे दिते उठाईआ। गोबिन्द दा चौदां सौ तीह अंक दा इक पूरा कर के कन्या, एके दा एका दिता समझाईआ। उठ ओए जरनैल सिंघ मेरे चन्नया, चन्नां तैनूं दयां वड्याईआ। तेरा नंगा वेख के तनिआं, उच्च दा पीर होए सहाईआ। जिस ने गोबिन्द नूं चुक्कया कन्धया, निउँ के चरणां सीस निवाईआ। खुशीआं विच मूल ना हम्बया, हिरदे गाया चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। हाढ़ सतारां कहे ओ प्रभू बीतदी जांदी अध्धी रात, अध्धे अध्ध वंड वंडाईआ। कुछ भगत भगवान दी दस्स दे गाथ, सतिजुग राह समझाईआ। सानूं याद आ गया गुर अवतार पैग़म्बर सचखण्ड दवारिउँ आए आज, आजज़ हो के सीस निवाईआ। जिस दा होए आदि जुगादी इक ताज, तख्त निवासी नूर अलाहीआ। जुग जुग आपणा करे काज, करनी करता इक कमाईआ। शब्द संदेसे दे के बोध अगाध, बुद्धी तों परे करे पढ़ाईआ। दीन मज़हब दे बणा समाज, समां समें विच्चों उलटाईआ। अजब खेल करे तमाश, तमअ सब दी रिहा गवाईआ। सारे जाओ जाग, सोया रहिण कोए ना पाईआ। नाले शब्द दी मारे आवाज़, धुन आत्मक राग सुणाईआ। कदे हथ्थ उत्ते उडदा सी बाज़, अज्ज हथ्थकड़ी लई लगाईआ। एह कलयुग दी कूड़ी क्रिया दा रिवाज, साहिब सतिगुर आपणे उत्ते भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। रैण अध्धी कहे भगत भगवान लग्गा दरबारा, हरि दरबारी ल्या लगाईआ। कलयुग कूड़ मिटे अन्धयारा, अन्ध अज्ञान रहे ना राईआ। सतिजुग सच उपजे उज्यारा, धर्म धार प्रगटाईआ। चार वरनां दिसे इक दुआरा, सतिगुर इक्को सोभा पाईआ। इक्को नाम होवे जैकारा, इक्को इष्ट देव मनाईआ। इक्को चरण कँवल सहारा, इक्को धूढ़ी ख़ाक रमाईआ।

इक्को नूर परवरदिगारा, इक्को रहमत सच कमाईआ। इक्को घर सच्चा घर बारा, इक्को दर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। अध्धी रात कहे औह वेखो आ गया दादू, दाअवे नाल जगाईआ। गोबिन्द शब्द इक्को आगू, गोबिन्द गोबिन्द गया दृढ़ाईआ। ओह गुरमुख अग्गे आवण जिन्हां विच सिँघ भागू, पंजे क़दम उठाईआ। ओह नेड़े आवे जेहड़ा कसाई बणया फड़ के करद चाकू, खण्डा हथ्थ विच उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, गोबिन्द कहे एह दादू तेरे मीत जेहड़े पींदे सी तमाकू, तमअ विच तेरी सेव कमाईआ। दादू कहे मैं कर के कौल ना जावां मुक्कर, गोबिन्द दयां जणाईआ। जेहड़ा मेरे नाले खांदा सी टुक्कर, सच मीत अख्वाईआ। इक दिन ओस तों मर गया कुक्कड़, मेरे पुच्छयां मन्नण विच मूल ना आईआ। मैं बथेरा चुक्या कुच्छड़, प्यार नाल वरचाईआ। ओस कीता ना तेरा शुकर, सच सच ना कोए दरसाईआ। मैं तक्कया दक्खण पूरब पच्छिम उत्तर, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। दादू कहे गोबिन्द जिस ने कुक्कड़ फड़या हथ्थ, आया चाँईं चाँईंआ। एह तैनूं टेकदा सी अंदरे अंदर मथ्थ, बाहरों मेरी सेव कमाईआ। इक दिन मैं सुण ल्या तेरा जस, अंदर बैठा ध्यान लगाईआ। मैं बाहरों प्या हस्स, ताली दिती वजाईआ।
१४४८ १४४८
२१ २१
खुशी विच किहा तैनूं ओहो लए रख, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। एस निउँ के किहा तेरा आखा होवे सच, सच मिले वड्याईआ। कौल इक़रार पूरा कीता पक्क, एसे कारण करतार सिँघ कुक्कड़ लै के आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। दादू कहे मैं तेरा दाअवेदार, सच सच सुणाईआ। जिन्हां प्यारयां कीता गिगफ्तार, हथ्थकड़ी हथ्थां नाल छुहाईआ। अंदरों कर के हक़ प्यार, एह खेल दिता बणाईआ। तेरी क़ुदरत मेरे मालक तेरा खेल तेरे दरबार, दरगाह साची वज्जी वधाईआ। अज्ज आए गुरु अवतार, पैग़म्बर वेखण कूड़ कसाईआ। जिन्हां मैंहदी नाल हथ्थ कीते लाल, दोवें हथ्थ लओ उठाईआ । जिन्हां चौंह वरनां विच वरखा कीती महान, क्उड़ा सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे सतिगुर होणा नहीं कदे निर्मोह, मुहब्बत विच समाईआ। तेरा रूप नहीं कोई दो, एका इक्का सोभा पाईआ। याद कर ला जो वायदा कीता शाह बहादर नाल ओह, ओड़क देणा दृढ़ाईआ। जिस दे नाल तिन्नां दा गरोह, चोबदार रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा देणा लिखाईआ। गोबिन्द कहे एह बहादर शाह, शाह शहिनशाह जगत अख्वाईआ। मैं पातशाह बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस नूं चाहवां लवां बचा, अगनी अग्ग ना लागे राईआ। जिस नूं चाहवां लवां रुढ़ा, बेड़ा शौह दरया

डुबाईआ। एस ने इक वार मैनूं मन्नया खुदा, खुदी अंदरों बाहर कढ्ढाईआ। मैं पिट्ठ उत्ते हथ्थ टिका, पुश्त पनाह तली तली नाल छुहाईआ। तेरा बख़शया सर्ब गुनाह, पापां कीती सफ़ाईआ। मैं शब्द गुरु ते मेरा मालक इक अल्लाह, जिस नूं अल्ला कहि के सारे गाईआ। जिस सदी चौधवीं जाणा आ, आप आपणा फेरा पाईआ। हिन्दू मुस्लमानां बणना मलाह, बेड़ा आपणे कंध टिकाईआ। ओस वेले तेरा लहिणा देणा दए चुका, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। तूं उठ के सीस चरण देणा झुका, कल्गी तोड़ा परे सुटाईआ। मस्तक धूढ़ी लैणी रमा, रहमत दए कमाईआ। सच दवारे दए वसा, जिथ्थे मिले वसल खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। सतिगुर शब्द कहे पंज आउ मुग़ल ख़ानदान, आपणी लै अंगड़ाईआ। जिन्हां गोबिन्द धरया सी ध्यान, निउँ निउँ लागे पाईंआ। सतारां सौ सट्ठ बिर्कमी महीना सी रमज़ान, रोज्यां विच रहिबर सीस निवाईआ। मुखों गाया सी गान, तेरा मेरा भेव ना राईआ। गोबिन्द हो के मेहरवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तुहाडा लेखा नाल श्री भगवान, भगवन होवे आप सहाईआ। सदी चौधवीं मिले आण, आनन फ़ानन फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ।
१४४९ सतिगुर शब्द कहे हुक्मे अंदर आउ सद्दे, सदा सच सुणाईआ। जिन्हां इक्कीआं ने लक्क नूं रस्से बद्धे, आपणा सीस दयो १४४९
२१ निवाईआ। जेहड़े गुरमुख चार हस्सदे फिरन भज्जे, हासी खुशीआं विच सुणाईआ। जेहड़े गुरमुख नौ भगत दवारे सेवा २१
लग्गे, सोहणी सेव कमाईआ। जेहड़े गुरमुख नौ फिरन भज्जे, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। जेहड़े सत्त सीतल सुभाउ सजे, सच आपणी कार कमाईआ। जेहड़े गुरमुख इक इक्क अलग्ग अलग्गे, अगला लेखा गए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। जिन्हां इक्की बीबीआं कीते कमरकसे, दुपट्टे दोहरे नाल रखाईआ। ओह सच दवारे बहिण सज्जे, सोहणा रंग रंगाईआ। कलयुग वा वगी तत्ते, अगनी तत रही तपाईआ। तुहाडी साहिब सतिगुर पत रखे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म परमात्म सब दे नाते होए पक्के, अग्गे सके ना कोए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म समझाईआ। सतिगुर शब्द कहे रस्सयां वाल्लयो जाणा जाग, जागण वेला आया। घर घर जगदा वेखो चराग़, हरि करता आप जगाया। सब दा उदे होवे भाग, अन्ध अन्धेरा दए मिटाया। जेहड़े बच गए गुरमीत सिंघ उन्हां नूं मार आवाज़, लिस्ट उत्तों वेख वखाया। नहीं ते देणा पऊ जवाब, सत्त रंगा हथ्थ उठाया। एह कोई मुरगे खाण वाला नहीं नवाब, जिस नूं कीम्यां नाल लए परचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे कोलों मँगे हिसाब, लेखा सच देणा सुणाया। नाल पढ़ ला सतर कतार, अक्खर अक्खर

फोल फुलाईआ। कोई दुआबे विच्चों सद्द ला यार, जेहड़ा तैनूं दए समझाईआ। मालवे विच्चों मार ला वाज, जो अक्खर दए दृढ़ाईआ। माझे विच्चों लभ्भ लै साक, जेहड़ा तेरा होए सहाईआ। जम्मू वाल्यां नूं लै आख, तेरा पल्लू लैण छुडाईआ। दिल्ली वाल्यां नूं कर ला याद, जे कोई पल्लू लए छुडाईआ। इटारसी विच्चों लभ्भ ला कोई साध, जो लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे कुझ खुल्ह्दी जांदी सुरती, हलूणा ज़ोर नाल लगाईआ। हुण ओनूं सद्द ला जिस ने जम्मयां नूं दिती सी गुड़्ह्ती, किथ्थे जम्मण वाली माईआ। कुछ समां वेख ला बच्चू तेरा जन्म हुंदा सी विच तुरकी, तुरत दयां दृढ़ाईआ। तूं तेग़ बहादर नूं निमस्कार कीती सी नाल फुरती, फ़ुरना मन दा अग्गे रखाईआ। मैनूं क़सम सच्चे सतिगुर दी, जे हिन्दूआं नाल करां लड़ाईआ। ओह हद्द सी अनन्द पुर दी, सरसे तों पंज मील रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। कुछ याद कर लै सरसे दे कोल वाले खूहे, लहिंदी दिशा वखाईआ। जिन्ह्हां बीबीआं दे कपड़े सूहे, ओह अग्गे जावण आईआ। तूं गया सैं उन्ह्हां दे बूहे, आपणी आवाज़ दिती सुणाईआ । जिन्ह्हां ने साफ़ करने बुत्त रूहे, ओह गोबिन्द नूं मिलण चाँईं चाँईंआ। उथ्थे पंज माईआं सी जिन्ह्हां ने तैनूं मख़ौल कीता ओए मुसल्लया तूं नक्क विच्चों कढ्ढ लै चूहे, तूं गोबिन्द दा साक किध्धरों आईआ। तूं रो के किहा जेहड़े नौ भगत दवारे दे सूहे, एह इहनां दे पुत्त पोते नज़री आईआ। एह बुढड़ीआं जिन्ह्हां ने आपणे आप दे ना खोल्ह्हे बूहे, कुण्डा ना कोए खुल्ह्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे उने चिर नूं गोबिन्द आ गया उडाउँदा बाज़, बाज़ां वाला फेरा पाईआ। उस वेले सिर ते कल्गी नहीं सी ते नाहीं सी कोई ताज, कल्गी वाला सोभा पाईआ। हस्स के कहिंदा माईओ जाओ जाग, जागण वेला आईआ। जेहड़े पीर दा जगौदीआं चराग़, चरागाहां विच फेरा पाईआ। ओह तुहाडी बुझावण आ गया आग, अगनी लेखा दए दृढ़ाईआ। तुहानूं फेर जन्म देवे विच पंजाब, पंजा आपणा दए लगाईआ। सब दा सांझा बण के बाप, पिता पुरख अकाल वेस वटाईआ। चरण प्रीती जोड़ के नात, नातवां आपणा रंग रंगाईआ। एह वेख लै आपणे विछड़े होए साथ, साथीआं दयां मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। एह चूहे पिछले चौंह जुगां दे चोर, चोरी सतिगुर नाल कमाईआ। एह रहन्दे सी गंगू दे कोल, हराम खा के झट लँघाईआ। माता गुजरी नूं कढ्ढया सी बोल कबोल, सरसे पार दिता सुणाईआ। गुजरी ने किहा मेरा पुरख अकाल तोले पूरे तोल, कंडा धर्म हथ्थ उठाईआ। आपणयां भगतां सदा रखे अडोल, अडुल डुल कदे ना जाईआ। जिस ने भगत दुआरा देणा खोल्ह्, हिन्दू मुस्लिम सिख

ईसाई इक्को घर वसाईआ। किसे नाल नहीं मारना रोल, दग़िआं वाला डेरा ढाहीआ। हर हिरदे वसणा कोल, नौ दुआर पन्ध चुकाईआ। शब्द अनाद सुणा के बोल, अगम्मी राग उपजाईआ। हर घट अंदर जाणा मौल, मौला हो के वेख वखाईआ। ओह ज़रूर मेरा पूरा करे कौल, इक़रारनामा आपणे नाल वखाईआ । प्रगट हो के उपर धौल, धरनी वेखे चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। तक्कड़ी कहे मेरा वेख लओ तराज़ू, साहिब हथ्थ वड्याईआ। लीलावन्ती अग्गे आवे मोमबत्ती जगा के आपणे पती दा फड़ के बाज़ू, बाज़ां वाला अग्गे नज़री आईआ। जिस ने गोबिन्द नूं भेंटा कीता सी दाणा पंज काजू, क़ज़ा दा डेरा ढाहीआ। उस दी मन्ज़ूर हो गई आरज़ू, अर्ज लेखे लाईआ। जन्म दिता दूजी वार जू, वाहवा आपणा हुक्म वरताईआ। फड़ के बाहों जगत तार दऊ, दो जहानां पार कराईआ। दसम दुआरी आपणी सार दऊ, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा आपणा खेल खिलाईआ। मोमबत्ती कहे मैं आई जगदी, सोहणी लाट वखाईआ। मैं भगतो वेखो तपदी, अगनी अग्ग सताईआ। मैं ख़बर दस्सां सच दी, सुनेहड़ा इक वखाईआ। प्रभ दी जोत जिस दे अंदर रच दी, सांतक सति दए वरताईआ। धार
१४५१ रहिण ना देवे पाप दी, पतित पुनीत बणाईआ। तुसीं ओट रखणी पुरख अकाल बाप दी, जो सब दा पिता माईआ। जिस १४५१
दी खेल आपणे जाप दी, दूसर अवर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा
२१ पर्दा लाहीआ। सतिगुर शब्द कहे एह दोवें पत्नी पति, पतिपरमेश्वर दए वड्याईआ। खोल्ह के अंदरों अक्ख, प्रतख मिले २१
गुसाईंआ। मनुआ कर के वस, ममता दए मिटाईआ। नाम चढ़ा के रथ, पैंडा पन्ध कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर रख के आपणा हथ्थ, बिन हथ्थां बद्धी पार लँघाईआ। सतिगुर शब्द कहे ओ गुरमीत क्यों बैठा लुक, अग्गे आ जा चाँईं चाँईंआ। एस लिस्ट कोलों होर कुझ पुच्छ, जो तैनूं दए समझाईआ। क्यों तेरे साथी कीते चुप्प, उन्हां लै उठाईआ। जिन्हां शब्द पढ़ने ओह क्यों ओहले होए गुट्ठ, राम प्यारे आउ चाँईं चाँईंआ। गुरमुख बीबीआं कहिण साडी दलील बदली अंदर, अंदरे अंदर जणाईआ। साडा प्रभू तूं हैं शिवदवाला मन्दिर, गुरुदुआर नज़री आईआ। साडा खोल्ह दे आपे जंदर, कुंजी नाम वाली लगाईआ। मनुआ भवे ना दह दिशा बन्दर, डोरी शब्द नाम बंधाईआ। भाग लगा दे कंदर, निरगुण जोत रुशनाईआ। तेरे दर मूल ना संगण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सति सच दी चाढ़ दे रंगण, बुढ्ढे नढ्ढे मँग मँगाईआ। होए वधाई विच वरभण्डण, ब्रह्मण्ड करे शनवाईआ। जिस कारण चिट्टा सब दे नेत्र पवाया अञ्जण, अंगूठा सूहा रंग रंगाईआ। सोहँ दस्त बणाया सज्जण, दस्त मुबारक आपणा नाम लगाईआ। सीने उत्ते छुहा के दस्सया

भजन, मस्तक सिखी नाल वड्याईआ। तेरा नूर आदि निरँजण, निराकार निरवैर सीस निवाईआ। सच प्रीती सारे मँगण, देवणहार तेरी सरनाईआ। लेखे लावीं काया माटी बदन, बदी दा डेरा देणा ढाहीआ। तेरे शमांदान जगण, भगत दुआर तेरे रुशनाईआ। सब दे अंदर बख्शीं लगण, लग मातर वेख वखाईआ। चरण धूढ़ करावीं मजन, दुरमति मैल धवाईआ। पोह ना सके कलयुग अगन, अमृत मेघ इक बरसाईआ। तूं साहिब सूरा सर्बग्गण, सुल्तान तेरी शहिनशाहीआ। तूं वस्सें उपर शाहरगण, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। इक्की सिख कहिण साडी दलील कहे साडा अंदरों कढ्ढ दे रोग, रोग रहे ना राईआ। साडा तेरे नाल संजोग, प्रभ तेरे नाल कुड़माईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरे हुन्दयां ला सके कोई ना भोग, सारे बैठे सीस निवाईआ। तेरा खेल अगम्मी चोज, चोजी प्रीतम तेरी बेपरवाहीआ। ना कोई हरख ना कोई सोग, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी दया कमाईआ। इक्की बीबीआं कहिण साडी सब दी इहो आस, हरि संगत नाल मिलाईआ। प्रभू भोग लगा दे चौहां थालां कोसे पाणी वाले ग्लास, ठंडा गुरमुखां दे कराईआ। साचा खाणा तेरे दर परवान होवे ख़ास, दूसर भेंट ना कदे चढ़ाईआ। अज्ज तों तेरे उत्ते होया विश्वास, दूजा विशा ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी रसना ला के भात, भाण्डा भरम देणा भन्नाईआ। ग्लास कहे मैं कोसे तों होवां ठंडा पाणी, अमृत नज़री आईआ। दुध्ध मेरा सदा दा हाणी, जुग जुग संग निभाईआ। मेरा खेल चारे खाणी, ख़ालस प्रभ दए वड्याईआ। जिस वेले अर्जन रचण लग्गा सी बाणी, दुध्ध पाणी मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द ते गुरमुख हाणी, नाता धुर दा जोड़ जुड़ाईआ। मेल मिला के पातशाह ते राणी, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जल कहे मैं आदि जुगादी ठंडा, ठंडक दयां वरताईआ। मैनूं गंगा विच समझ सक्कया कोए ना पंडा, पिंड इंड ना कोए दृढ़ाईआ। कोटन नहा नहा गए मेरे कन्ढ्ढा, घाटां उत्ते फेरा पाईआ। मेरा खेल समझया किसे ना चंगा, गंगा गोदावरी रही कुरलाईआ। जिस वेले पुरख अकाल ने गोबिन्द लाया अंगा, अमृत रस सोहणा मुख चुआईआ। एह खेल सूरा सरबंगा, जुग जुग आपणी धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा मेला लए मिलाईआ। गुरमुख कहिण जिस वेले गोबिन्द तारया बन्दा, मेहर नज़र उठाईआ । मोह कढ्ढया गंदा, सच रस चखाईआ। वखा के तारा चन्दा, निशान दिता मिटाईआ। सत्त रंग वखा के डंडा, पुरख अकाल दिता दृढ़ाईआ। जिस सब दीआं मेटणीआं वंडा, पिछला झगड़ा दए गवाईआ। सच प्रेम दा दए अनन्दा, रस आपणा आप चखाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जल कहे मेरा तन मन ठरया, ठंडक नज़री आईआ । जिस वेले गोदावरी गोबिन्द चरण धरया, धरनी धरत वज्जी वधाईआ। मैं निउँ के सरन सरनाई पड़िआ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मेरे माही दरस अड़िआ, आपणा माही कदों मिलाईआ। गोबिन्द बिन अक्खरां तों अक्खर पढ़या, सहज नाल समझाईआ। जेहड़ा उपर अकाशां चढ़या, धरनी उपर वेस वटाईआ। उस नूं कहिणा निहकलंक नरायण नरया, निहकलंक वज्जे वधाईआ। मैं उस दी सरनी पड़िआ, जो सब दा पिता माईआ। जिस ने भगत सुहेला वरया, वाहवा खुशी वखाईआ। ज़ालम हो के ज़ालमां नाल लड़िआ, खण्डा खड़ग नाल टकराईआ। जिस पैग़म्बर दबाए विच गड़या, क़बरां विच टिकाईआ। आदि जुगादि कदे ना मरया, मरन जन्म ना रूप धराईआ। ओस ने खेल अगम्मा करया, हरि करता इक कराईआ। तपदा पाणी ओस दी निगाह ठरया, आपणा आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। जल कहे जे रसना जावां लग्ग, रस्ता मिले अलाहीआ। होवां कदे ना अड्ड, वखरे दर ना डेरा लाईआ। भगत दवारे निशाना देणा गड्ड, । भगत भगवान दी वेख के यद, मेरे अंदर वज्जे वधाईआ। जन भगतो प्रभ दा हिस्सा लै ल्यो अध्ध, आपणी गंढ्ढ बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता नूर अलाहीआ। जल कहे मैनूं साहिब सतिगुर पीणा, पीआ पीआ तेरी सरनाईआ। गुरमुख होयो कोए ना हीणा, भय विच सीस ना कोए झुकाईआ। जल वाली बणयो कोए ना मीना, तड़फ तड़फ मर जाईआ। सतिगुर प्यार विच सदा ठंडा रखयो सीना, अगनी तत ना कोए तपाईआ। खुशीआं वाला आया हाढ़ महीना, इक सत्त मिल के वज्जे वधाईआ। तुहाडा लेखे लग्गे जीणा, मरन दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव खुल्हाईआ । जल कहे मेरे विच हक़ तौफीक़, सच दयां समझाईआ। जन भगतो करयो प्रभ प्रीत, प्रीतम मिल के वज्जे वधाईआ । गुरमुख बणयो ना कोए शरीक, शरकत विच लड़ाईआ। मंनिओ इक हदीस, हज़रत इक्को इक समझाईआ। लेखा वेखणा सदी बीस, बीस बीसा फेरा पाईआ। हुक्म देवे इक जगदीश, जागरत जोत रुशनाईआ। जिस दी करदे रहे उडीक, ओड़क ओहो आया माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे इक कुल दे इक्ठे हो जाण पंजे भैण भ्रा, पंजां उत्ते दया कमाईआ। उन्हां विच्चों बलदेव सिँघ अज्ज होणा सी जुदा, लोकमात रहिण ना पाईआ। उस दा हुक्म विच नाम लिखा, भगतां विच दिता टिकाईआ। जन्म दे विच्चों जन्म बदला, जीवण जीवण झोली पाईआ। आयू होर दिती वधा, खुशी खुशी नाल रखाईआ। दु:ख दर्द रहे

१४५३
२१

ना रा, मेहर नज़र नाल तराईआ। वड दाता बेपरवाह, पारब्रह्म प्रभ गुसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर सच दए वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे पंजे आ जाओ भजन सिँघ, माँ महिट्टर नज़र ना आईआ। तुहाडा लहिणा नाल सुरप्त इंद, इन्द इंदरासण वेख वखाईआ। नौ जन्म पिच्छे रही चिन्द, चिन्ता चिखा जगत तपाईआ। इक दिन मिल्या गोबिन्द मरगिंद, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तुसां पाणी प्याइआ सी विच टिंड, कच्ची मिट्टी हथ्थ उठाईआ। हस्स के किहा असीं होईए तेरी बिन्द, दूजा नज़र कोए ना आईआ । गोबिन्द किहा जिस वेले मेरा मालक आवे हिन्द, हिन्दसा पिछला वेख वखाईआ। तुहाडी सर्ब मेट के चिन्द, चिन्ता चिखा दए गवाईआ। ओदों पूजदे सी शिव लिंग, शंकर कहि के ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहार इक सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे नौ आ जाओ बूरे कक्के, क ख देणा पढ़ाईआ। तुसां नेत्र नीर वहाइआ सी विच मक्के, जदों मुहम्मद कीती जुदाईआ। चाचे ताए मासी दे भ्रा सी सके, नाता बाहमी वेख वखाईआ। तुसां मँग मँगी हक़े, निउँ के सजदा सीस झुकाईआ। मुहम्मद किहा मेरा ख़ुदा सब नूं तक्के, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। असीं आईए दीगरे बाद यके, नित नित वेस वटाईआ। ओह सब दे अंदर वस्से, घर घर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा दए चुकाईआ। सतारां हाढ़ कहे होर जेहड़े रहन्दे बाकी, आपणी लओ अंगड़ाईआ। जिन्हां वस्त्र पहने ख़ाकी, चारे वरन चारे झण्डीआं लओ उठाईआ। उच्ची कूक कहो बाकी, संदेसा सच सुणाईआ। असीं प्रभ दे भुल्लयां दे रहिणा नहीं साथी, कूड़ा संग जाणा तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतारां हाढ़ कहे गुरमीत सिँघ होर रह गए केहड़े, उठ के दे सुणाईआ। सतारां हाढ़ कहे जन भगत बोले जैकारा, भगत दवारे उत्ते रिहा सुणाईआ। ख़बरदारी दा ललकारा, लायक नालायकां दयां समझाईआ। दुनियांदारो आ गया चौवीआं अवतारा, जिस दा सारे राह तकाईआ। जिस ने पहलों मनजीत जगदीश दा पाया छुहारा, सगन तन वाला मनाईआ। अज्ज शादी दा करे विहारा, शादिआने रिहा खड़काईआ। सो गुरमुख विआहया समझो जो गया हरी के दुआरा, प्रभू कन्त हंढुाईआ। ओह सुहागी काहदा, जो जम्मे ते मर जाईआ। पूरा करे कौल वायदा, लेखा सर्ब चुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सतारां हाढ़ कहे क्यों सूहे कपड़े पहनाए रणजीत कौर, कारी ख़बर दयां सुणाईआ। कलयुग विच सतिजुग चलणा दौर, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। जन भगतां कारज जाणा सौर, सौहरा पेईआ इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतारां हाढ़

कहे अज्ज उन्हां दा ब्याह, जो इक्को कन्त प्रनाईआ। नाते छड्ड के भैण भ्रा, माता पिता जगत तजाईआ। वेख्या धुर दा थाँ, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। पुरख अकाला मन्न के पिता माँ, गोद सुहञ्जणी सोभा पाईआ। सो मालक पकड़े बांह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सच विआह दी साची खुशी, खुशीआं विच वड्याईआ। धर्म दी दे के रुची, रचना दए समझाईआ। जन भगतो तुसीं कटण नहीं आए बुत्ती, बुतख़ान्यां डेरा लाईआ। मैं कूक सुणावां उच्ची, धुर संदेस अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक दरसाईआ। सतारां हाढ़ कहे क्यों अमरजीत पवाए कपड़े चंगे, सूर्या चन्द रुशनाईआ। अग्गे करना पए कोए ना जंगे, खण्डा खड़ग ना कोए लड़ाईआ। भय विच कोए ना कम्बे, मेहरवान होए सहाईआ। जन्म कर्म दे पाउणे पैण फेर ना तम्बे, गलाफ़ माफ़ दए कराईआ। जेहड़े पंज इक्ठे होए विच्चों छम्बे, अग्गे आपणा धाम बदलाईआ। पंजे पोस्त डोडे जिन्हां कोल कन्ने, कन्नां नाल सुणाईआ। कदे दादू दे दयोहरे पोस्त पी के हुंदे सो अन्ने, मस्ती विच आपणा रंग रंगाईआ। जिन्हां पंजां ग़रीबां ने काले निशान लाए उपर तने, अग्गे जाणा आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे जिन्हां लकीर मारी उत्ते पेट, लैन लई बणाईआ। एह पंजे सन्तरी हुंदे सी उत्ते गेट, जिस बुरज विच माता गुजरी बन्द रखाईआ। एह चोरी चोरी मथ्था लैंदे सी टेक, दूरों दूरों सीस निवाईआ। असीं सतिगुर तेरी भेंट, तुध बिन अवर ना कोए अख्वाईआ। सानूं लै जा आपणे देस, जिथ्थे मिले बेपरवाहीआ। गोबिन्द किहा तुहानूं आउणा पैणा वार फेर एक, एकँकार नाल मिलाईआ। साची रखणी टेक, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा हुक्म इक वरताईआ। तुग़लक ख़ानदान दा पिछला नज़ीर, नसीर हुसैन सारे गाईआ। एह हुंदा सी घर वज़ीर, वज़ारत इक वड्याईआ। करदा हुंदा सी तक़रीर, तऱ्हां तऱ्हां समझाईआ। चिट्टे उत्ते काली मारदा सी लकीर, लाइक़ आपणा आप बणाईआ। इक दिन मिल गया रस्ते विच कबीर, काया तों बाहर जणाईआ। क्यों हथ्थ फड़ी शमशीर, की शरअ नाल लड़ाईआ। सब दा खुदा इक्को पीर, पारब्रह्म अख्वाईआ। जे बदल देवे तक़दीर, होए आप सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा पर्दा आप चुकाईआ। नसीर किहा मेरा लेखा नही विच नसर, अक्खरां ना वंड वंडाईआ। मैं वेखां कलयुग की कूड़ कुड़िआरे हुंदा हशर, हैरत विच दुहाईआ। चारों कुण्ट दिसे असर, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। चुग़ली मारनी जिस दा हुंदा सी जशन, खुशी विच वड्याईआ। इस दा सोहणा हुंदा सी मिशन, मसला अग्गे

१४५५
२१

अग्गे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म समझाईआ। एह गुरमुख जेहड़ा ढाडी, ढड्ड रिहा खड़काईआ। एह तलवंडी दा गाडी, नानक नूं सीस निवाईआ। एहदी ब्राह्मणी हुंदी सी दादी, जो तिलक मथ्थे विच लगाईआ। एहदी सुरती अंदरों जागी, भरम रिहा ना राईआ। इस ने ज़ात पात त्यागी, वरन बरन दिता गवाईआ। मैल धो के दाग़ी, सीस सीस दिता झुकाईआ। नानक हस्स के किहा तेरा लेखा अन्तिम बाकी, प्रभ दे हथ्थ फड़ाईआ। जिस वेले कलयुग होवे अन्धेरी राती, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। तेरी लेखे लावे हयाती, जीवण आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पर्दा लाहीआ। मुसाहिबो आउ करीए सलाह, पंजां सच देणा जणाईआ। केहड़ा सतिगुरु बणे मलाह, बेड़ा पार कराईआ। दस्से धुर दा राह, नेत्र अक्खखुल्हाईआ। कन्नी ना जाए कतरा, पल्लू लए छुडाईआ। उस दा भेत दयो समझा, आपणा बचन सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। पंजे दस्सो कोई बात, पर्दा इक उठाईआ। केहड़ा सतिगुरु जेहड़ा मेटे कलयुग अन्धेरी रात, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। झगड़ा मिटा के ज़ात पात, दीनां आपणा रंग रंगाईआ। हिस्सा रहे ना काग़ज़ात,

१४५६ नाम क़लमा इक्को इक सुणाईआ। सदा सुहेला हो के देवे साथ, सगला संग निभाईआ। सब दी सांझी करे जमात, हिन्दू १४५६

मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक उपजाईआ।

२१ मुसाहिब कहिण सतिगुर शब्द मन्नीए सच्चा, सच दए समझाईआ। काया अंदर वखा के मदीना मक्का, काअबा अंदरे अंदर २१

दए प्रगटाईआ। दर आयां कदे ना देवे धक्का, जुग जुग लए उठाईआ। दाता दानी बण के सका, सच रहमत नाम कमाईआ। सो सतिगुरु वेख्या नाल अक्खां, सन्मुख बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। पंजे आ जाओ इक पिंड दे गवांढी, इक्ठे रंग रंगाईआ। तुसां कसाईआं कोलों छुडा के ढांडी, नानक दीआं मज्झां विच दिता रलाईआ। इक इक्क रुपईआ मथ्था टेक के चांदी, धूढ़ मस्तक नाल छुहाईआ। रो के किहा सानूं बणा लै आपणी बांदी, बन्दना कर के आपणी मँग मँगाईआ। नानक किहा मेरा पुरख अकाल बणना स्वांगी, आपणा वेस वटाईआ। तुसां उस दी रखणी तांघी, ओड़क आपे होवे सहाईआ। सो वेला वक्त सुहञ्जणा कीता कलयुग मेट के कूड़ आंधी, अन्ध अन्धेरा दिता गवाईआ। जेहड़ी धारा साहिब सतिगुर अखवांदी, ओह शब्द जोत अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सतिजुग कहे मैं संदेसां देवां दीपां सत्तां, सति सति समझाईआ। जगत प्रधान बदल लओ आपणी मत्ता, बुध्ध बिबेक लैणी कराईआ। चारों कुण्ट डुल्हणी रत्ता, रत्ती रत्त

दए दुहाईआ। जिन्हां ने मैहन्दी लाई हथ्थां, अमाम अमामा होए सहाईआ। परम पुरख नूं लभ्भदे फिरदे लखां, कोटन कोटि ध्यान लगाईआ। उह सौंदे सेज बणा के कक्खां, धूढ़ी ख़ाक वाली रमाईआ। अन्न खांदे नहीं भोजन पक्का, भुक्खे रह के झट लँघाईआ । पल्ले बन्न्हदे नहीं कोई टका, आपणी देण सफ़ाईआ । सतिजुग कहे जिंनां चिर सोहँ पढ़न ना टप्पा, अग्गे पार ना कोए कराईआ। सब दे उत्तों पिछला गया दब्बा, छप्पा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल इक्को मन्नणा अब्बा, अम्मी इक्को लैणी जणाईआ। लहिणा सब दा चुकणा हब्बा, हरि करता झोली पाईआ। साचे नाम दा लैणा रसा, अनरस ना कोए वड्याईआ । जो हिरदे अंदर वसा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जिस ने माण दिता सस्सा, होड़ा वेख वखाईआ। ओह हाहा हँ ब्रह्म दा कर के पक्खा, साजण सज्जण जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग कहे मैं धर्म दा देणा नूर, नूर नूर उपजाईआ। कूड़ा तोड़ ग़रूर, हंगता देणी मिटाईआ। सच दा दे सरूर, खुशी देणी वखाईआ। उस दा बख्शणा प्रभ ने सर्ब क़ुसूर, जो बैठा सीस निवाईआ। सदा दर्शन देवे हाज़रा हज़ूर, हज़रतां तों बाहर करे पढ़ाईआ। उच्ची मंज़ल चढ़ के कोहतूर, तुरिया तों परे लेखा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं फिरदा अग्गे अग्गे, अगला पन्ध मुकाईआ। प्रभ सिँघासण धार बग्गे, बगला बप्पड़ा समझ कोए ना पाईआ। जिथ्थे दीप अनोखा जगे, जागरत जोत नूर रुशनाईआ। सच दुआर सुहज्जणा सोहणा सजे, भगत सुहेले सज्जण सोभा पाईआ। जो हुक्मे अंदर बद्धे, बन्दगी बंधनां गई तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सच मिले सरनाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं आ गिआ, आपणा पन्ध मुकाईआ। दीन दुनी दा वेखां क्या, घर घर फोल फुलाईआ। अन्तर रहे कोई ना शॅक्या, सहिसा देणा मिटाईआ। कलयुग पावे कोई ना घाटिआ, घड़न भन्न्हणहार इक सरनाईआ। जो मेट के ममता वाटिआ, मेहर नज़र नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरा आया धुर दा वक्त, व्यकितयां दयां जणाईआ। प्रभ नूं मिलणा विच जगत, जग जीवण दाता होए सहाईआ। जिस दा इक्को नाम फ़क़त, फिकरे सिफ्तां वाले सालाहीआ। जदों प्रगटावे प्रगटाए आपणे भगत, बिना भगतां प्रभ गृह किसे ना जाईआ। जद आवे ते आवे उत्तों अर्श, फ़र्श आपणा रंग रंगाईआ। जन भगतां उत्ते कर के तरस, रहमत आपणी नाल तराईआ। सतारां हाढ़ कहे एह जगत प्रधानां वास्ते औखा बरस, चारों कुण्ट नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

हरि सतिगुर आप अख्वाईआ। सतारां हाढ़ कहे मेरे प्रसिद्ध पंज लिखारी, पंच मिली वड्याईआ। मिले मेल जोत निरँकारी, निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। दुनियां विच रहिणा नाल हुश्यिारी, चार कुण्ट ठोकरां रही लगाईआ। बिना प्रभू तों दूसर सच ना कोए प्यारी, प्रीतम परम पुरख सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सतारां हाढ़ कहे हरिभगत बैठे उत्ते बसुधा, भगत दवारे डेरा लाईआ। जित्थे वस्त्र पाए ईशर सिँघ बुड्ढा, रंगत रंग रंगाईआ। इस दा लेखे लाउणा पीता दुध्धा, शीर धार चुआईआ। मिलणा माण चौथे जुगा, अन्तिम रंग रंगाईआ। पूजणा नहीं कोई गुग्गा, गहर गम्भीर सरनाईआ। पंजां मुसाहिबां नाम करे उग्घा, उगण आथण रंग रंगाईआ। धुर दा शब्द संदेसा पुज्जा, अवतार पैग़म्बर गुरु रहे सुणाईआ। साडा अग्गे इक्को मुद्दा, मुद्दत दा झगड़ा देणा गवाईआ। इक्को वसाउणा झुग्गा, गृह इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा खेल दरसाईआ। सतारां हाढ़ कहे मैं खुशी इक जणावां, जन भगतो आप सुणाईआ। सच दवारे लग्गे नावां, नर निरँकार आप लगाईआ। जेहड़ा रौला पाया वांग कावां, कायनात दिती हिलाईआ। तुहानूं इक्ठा कर के विच्चों गरावां, शहिनशाहां दी जड़ रिहा उखड़ाईआ। तुहाडीआं भुजां वेख के बाहवां, बल आपणा आप वखाईआ। धर्म दुआरा दस्स के सांवां, सांझा इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि संगत तुहाडे सीस ते रखे छावां, छहिबर आपणा नाम लगाईआ।

१४५८ २१

१४५८ २१

❋ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ❋

शब्द सिँघासण रिहा सज, हरि सज्जण आप सुहाईआ। राम कृष्ण ना रिहा अलग, दर ठांडे सोभा पाईआ। भगत कबीरा आया भज्ज, भजन बन्दगी इक सुणाईआ। हज़रत ईसा मूसा कर इक्ठ, दर घर साचे डेरा लाईआ। अष्टभुज नगारा रिहा वज्ज, संख नाद धुन शनवाईआ। नानक गोबिन्द वेख पुरख समरथ, खण्डा खड़ग इक चमकाईआ। दीन दुनी नूं रहे दस्स, दह दिशा समझाईआ। सब ने इक दा गाउणा जस, जो आदि अन्त दा पिता माईआ। साडा रिहा कोई ना वस, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। दो जहानां मार्ग रिहा दस्स, मर्द मर्दाना हुक्म सुणाईआ। सृष्टी दृष्टी बदले झब्ब, ममता मोह गवाईआ। बदी करे कोए ना बद, बदला देवे थाउँ थाईंआ। चार वरन रहिण ना अड्ड, नाता बाहमी लए मिलाईआ। सन्त सुहेले सज्जण लए सद्द, होका आपणा नाम सुणाईआ। सच प्रीती जाणा बज्झ, डोरी तन्द इक वखाईआ।

मूर्ख रहे ना कोए बगला बप्पड़ा बप्प, काग हँस रूप बणाईआ। आत्म परमात्म आदि अन्त दा जप, सिफ्तां वाली ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। धुर दा भेव खोल्ह के भेदा, पर्दा रिहा उठाईआ। की लेखा चारे वेदा, पुराण अठारां की वड्याईआ। की शास्त्र कहे कितेबा, की सिमरती रंग रंगाईआ। की गीता ज्ञान मारे नेज़ा, नेत्र अक्खखुल्हाईआ। की अन्जील क़ुरान साफ़ कीता मेहदा, दुरमति मैल धवाईआ। की खाणी बाणी पूरा कीता लेखा, चुरासी लख कटाईआ। जां तक्कया प्रभ ने नाम दे विच्चों नाम दा पाया भुलेखा, असल असल ना किसे दृढ़ाईआ। वक्खो वक्ख दे के ठेका, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बोली नाम दी दिती कराईआ। अल्ला वाहिगुरु ओम राम रख सिफ्त दा रेटा, क़ीमत जगत जणाईआ। किसे दा साफ़ ना होया पेटा, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। जो आया सो प्रभ दी कर के गया वेटा, इंतज़ारी विच ध्यान लगाईआ। इक्को सतिगुर शब्द बण के बेटा, जेहड़ा योद्धा सूरबीर अख्वाईआ। नित नवित्त हो के खेवट खेटा, नईआ नौका जगत चलाईआ। आदि अन्त भुल्ले ना चेता, चेतन सब नूं दए कराईआ। जेहड़ा वस्से सचखण्ड देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। ओह धार के आपणा वेसा, निहकलंका नाउँ

१४५९ प्रगटाईआ। जन भगतां करे हेता, गुरमुख संग रखाईआ। दीन उधारना जिस दा पेशा, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। १४५९

जिस नूं विष्न ब्रह्मा शिव झुकण गणेशा, सुरप्त राजा इन्द करोड़ तेतीसा सीस निवाईआ। ओह अन्तिम मार के आपणा पेचा,

२१ परपंच वेखे थाउँ थाईंआ। जिन्हां पुरख अकाल दा नाउँ बेचा, क़ीमत करनी वाली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप २१

आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं आए भगत दवारे, चारे कुण्टां सोभा पाईआ। शब्दी सतिगुर दे इशारे, बिन अक्खां सैनत रिहा लगाईआ। सब ने बोलणे सच जैकारे, इक्को नाम ध्याईआ। दूजा वड़े कोई ना वाड़े, कंडा ख़ार रिहा चुभाईआ। लेखा वेख सतारां हाढ़े, सम्मत पंज रिहा वखाईआ। जन भगतां चाढ़ के रंग गाढ़े, कूड़ी क्रिया करे सफ़ाईआ। निरगुण धार आ दुबारे, दोहरी कार कमाईआ। फड़ फड़ बाहों सानूं तारे, तारनहार नूर अलाहीआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पैग़म्बरां नूं दिते आपणे नाम वाले रुज़गारे, नाम जप के रोज़ी गए कमाईआ। अख़ीरी छड्ड जगत संसारे, नाता सिखां मुरीदां नालों तुड़ाईआ। लिख लिख अक्खर सिफ्तां गए उच्चारे, महिमा अकथ कथ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग इक रंगाईआ। पैग़म्बर कहिण जिस अंग्रेज़ी दे बोले पंज अक्खर, अग्गे जावे आईआ। बलि बावन धार सति वेखणी वक्खर, वखरी कार कमाईआ। जिस नेत्र नीर वरोलिआ अथ्थर, हौकयां विच दुहाईआ। साडे गृहउँ भण्डार उह छक्कण, जिन्हां बलि दवारे रस ना कोए

चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। बावन किहा तुसीं भैण भ्रा, सच सच समझाईआ। तुहाडा खाणा लवां खा, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम वेला गया आ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर होए ना कोए सहा, सहायता करन कोए ना आईआ। साढे तिन्न हथ्थ तुहानूं देवां वसा, सत्त रंग दी डोरी दए गवाहीआ। जे तुसीं हुण भैण भ्रा, नाता फेर दयां बदलाईआ। प्रभ दा खेल अगम्म अथाह, शब्दी शब्द विच जणाईआ। बच्ची हस्स के सीस दिता निवा, धूढ़ी चरणां ख़ाक रमाईआ। साडा मेला देईं मिला, आपणे भगतां लई प्रगटाईआ। भगतां तों नाता चंगा नहीं भैण भ्रा, दर तेरे मँग मँगाईआ। बावन सहज नाल दिता समझा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जामा दोहां दा अन्त बदला, दर ठांडे मेल मिलाईआ। जिथ्थे विछोड़ा होवे ना, पल्लू ना कोए छुडाईआ। दोहां दा बण के पिता माँ, बच्चे आपणी गोद टिकाईआ। दरबारीओ तुसीं बण जाओ गवाह, शहादत दयां भुगताईआ। बण के शहिनशाहां दा शहिनशाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जेहड़ी जगत वाली माँ, गोदी उस दी दिती सुहाईआ। आदि अन्त दा निआं, फ़र्क रिहा ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर साचा इक सुहाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ तेरी खेल निआरी, निराकार तेरी सरनाईआ। उठ वेख आपणे उह लिखारी, जिन्हां दा लेखा थाउँ थाईंआ। प्रगट हो जगत आपणी धारी, धरनी धरत धवल सुहाईआ । पूरब पूरब दी जिन्हां नाल यारी, उन्हां देणी माण वड्याईआ। तेरा खेल अपर अपारी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सतिगुर शब्द कहे जो लिखदा तेरा लेख, लिख्त विच वड्याईआ। उहनूं लै जा आपणे देस, जिथ्थे तेरा नूर रुशनाईआ। झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेश, निउँ निउँ लागण पाईंआ। तेरा सब तों वखरा हेत, जगत नेत्र नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे जेहड़े बलि राजे दे घर दे, दर तेरे सोभा पाईआ। ओह धुर दी सिख्या पढ़दे, अन्तर कर रुशनाईआ। झगड़ा मुका दे चोटी जड़्ह दे, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। भेव खोल्ह दे आत्म सर दे, सर सरोवर इक सुहाईआ। तेरे भगत ना जम्मदे ना मरदे, जीवण तेरे नाल रखाईआ। दीन दुनी दे विच्चों कढ्ढ दे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच इक सुणाईआ। सतिगुर शब्द कहे जो बलि बावन दी धारा, धरनी धरत धवल वड्याईआ। उस दा लेख विच संसारा, साहिब स्वामी देणा जणाईआ। किसे नूं रहे ना कोए विचारा, विच्चला भेव देणा खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द सदा प्यारा, प्रेम प्रीती विच वड्याईआ। जिस दी मंज़ल मिले ना विच संसारा, पर्दा सके ना कोए खुल्हाईआ।

१४६०
२१

जो तेरे दर दा बणया लिखारा, गुर अवतार पैग़म्बर उसे दा दर्शन पाईआ। सत्त रंग दा तेरा नज़ारा, दो जहानां देणा वखाईआ। जिथ्थे भगतां दा अखाड़ा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ज़रा निगाह मार पछाड़ा, आपणा नाम बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे वेख आपणे बाले बच्चे, बच्चयां नाल सुहाईआ। जिन्हां दे तन माटी कच्चे, कंचन रंग रंगाईआ। मातलोक होण ना तत्ते, अगनी देणी बुझाईआ। धर्म देणा सत्ते, सति विच वड्याईआ। तेरा लिख्या लेख कदे ना फट्टे, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवे माण वड्याईआ। सत्त रंग कहे मैं खोल्हणा परदा, भेव देणा खुल्हाईआ। राम कहे मैं वेखां बैठा खड़्दा, आपणे राम ध्याईआ। कृष्ण कहे तीन लोक मैथों डरदा, त्रैलोकी विच दुहाईआ। गोबिन्द कहे मैं नानक दी धार खण्डा फड़दा, नन्हयां बच्चयां दया कमाईआ। मेरा गुरसिख कदे ना मरदा, गोबिन्द गया समझाईआ। भावें प्रभू सदा खेल वल छल वाला करदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गोबिन्द कहे ओ मेरे सिपाहसालार, बच्चे नन्हे नज़री आईआ। खड़े धर्म दुआर, मिले माण वड्याईआ। जिन्हां बीबीआं कोल कटार, उत्ते जावण आईआ। मँगल सिंहा चांगर उत्ते दे मार, ललकारा ज़ोर नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो दीन दुनी दा वेखो वज्जदा डमरू, डब्बे सब दे रिहा खड़काईआ। पुरख अकाल आदि अन्त दा इक्को गभरू, जोबनवन्ता सोभा पाईआ। जिस नूं चाहे ओसे नूं सद लऊ, आपणे आप विच्चों उठाईआ। जिस वेले चाहे पिछली कीती रद्द लऊ, अग्गे आपणा हुक्म बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे जो गोबिन्द दी आ गया विच धार, धरनी मिले वड्याईआ। गुरसिख ना पुरख ते ना नार, नर नरायण आपणा रंग रंगाईआ। ओह छड्ड जाए संसार, नाता कूड़ो कूड़ तुड़ाईआ। मुहब्बत विच हो के गिरफ्तार, आपणा आप मेट मिटाईआ। मंज़ल रहे ना कोए दुश्वार, जिस दा सतिगुर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे जिन्हां बीबीआं ने कीती आरती, आपणा रंग वखाईआ। उन्हां दा लेखा लिखणा नाल इबारती, अक्खर अक्खरां नाल बदलाईआ। भगत दवारे विच दीनां मज़हबां वाला आए ना कोए सफ़ारशी, सिफारिश कम्म किसे ना आईआ। जिस नूं ख़बर शब्द सार दी, सो साहिब सुल्तान धुरदरगाहीआ। एह खुशी सतारां हाढ़ दी, दो जहानां वेख वखाईआ। धरनी धरत धवल जुग जुग राह भालदी, रहिबर मिले नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

भेव अभेदा रिहा खुल्हाईआ। सतिगुर शब्द कहे गुर अवतार पैग़म्बरो करो तवज्जह, ध्यान ध्यान विच्चों प्रगटाईआ। किस कारण भगत दवारे सच सिँघासण सजा, क्यों सज्जे खब्बे अग्गे पिच्छे बैठे डेरा लाईआ। सदी चौधवीं पैग़म्बर आपणी बयान करो वजह, क्यों कलमयां वाले क़लमा गए भुलाईआ। अवतारो धर्म दी मिले किसे ना जगह, मन्दिर मठ रहे कुरलाईआ। गुरु साहिबानों क्यों हँस होए कग्गा, माणक मोती नाम चोग ना कोए चुगाईआ। चार जुग दी बाणी पढ़दयां क्यों प्रकाश ना होए उपर शाह रगा, जगत दवारे डेरा ढाहीआ। सारे चौहन्दे शब्द सुणीए अनहदा, धुन आत्मक राग अलाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। भगत कहे कबीर, मेरी क़बरां तों बाहर दुहाईआ। मैं छड्ड के शरअ ज़ंजीर, संगल गया तुड़ाईआ। जलवा तक्क बेनज़ीर, आपणी अक्खखुल्हाईआ । दुनियां पूजे जंड करीर, पत्थरां सीस निवाईआ। मक़बरिआं नूं मन्न के पीर, निआज़ां रहे चढ़ाईआ। अक्खरां दी बणा के बीड़, ओसे नूं सीस झुकाईआ। मंज़ल चढ़या ना कोए अख़ीर, मज़हबां वंड वंडाईआ। मैं हो के अन्त दिलगीर, नाअरा दयां लगाईआ। मेरे पातशाह तूं शहिनशाह मैं आत्मा तेरा वज़ीर, दूजी वज़ारत नज़र कोए ना आईआ। तूं महबूब मैं मुहब्बत करन वाला फ़कीर, दर दरवेशा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे एह कृष्ण दे सारे पुजारी, पूजा कर कर ध्यान लगाईआ । नौ वार भुल्ले सी विच संसारी, आपणा आप गवाईआ। फेर कर के मिन्नतदारी, भुल्ल लई बख़्शाईआ। कृष्ण ने किहा जिस वेले मेरा काहन आवे बण वड संसारी, लोकमात फेरा पाईआ। तुहाडी कीती लेखे लावे दिन दिहाढ़ी, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतिगुर शब्द कहे बिन किरपा कोए ना लिखदा, लिखण वाला नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर रूप वी सच्चे सिख दा, बिना सिखां तों दर किसे ना जाईआ। क़ीमत हट्ट किसे ना विकदा, टक्कयां वाला ना मुल्ल कराईआ। जिस नूं प्यार देवे नित दा, सच दए समझाईआ। रूप बण के धुर दे पित दा, पिता पुरख अकाल आपणी गोद सुहाईआ। लहिणा देणा जिस जिस दा, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। जन भगतो अज्ज तों तुहाडा झगड़ा मुक गया पत्थर इट्ट दा, मन्दिरां सीस ना कोए निवाईआ। जेहड़ा तुहाडे अंदर टिकदा, टिकटिकी अंदर दए वखाईआ। वेखो तुहाडा लेख लिखदा, जिस नूं सके ना कोए मिटाईआ। तुसीं मेरे ते मैं रूप तुहाडा सिख दा, सिखी तुहाडे मथ्थे विच टिकाईआ। एह निशाना नहीं काग़ज़ चिट्ट दा, काले ते चिट्टा दिता पाईआ। गोबिन्द दा सीर कदे नहीं फिटदा, अमृत रस इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुजारी आ जाओ प्रेमी पंजे,

पंजू दयां समझाईआ। ज़रा खड़े हो जाओ जेहड़े सुत्ते नहीं उत्ते मंजे, गोबिन्द दा सत्थर ल्या हंढ्ढाईआ। चार सिँघासण अग्गे खड़े हो जाओ गंजे, जिन्हां चरण चुंम के झट लँघाईआ। इक्की बीबीआं आपणे निशाने उच्चे लओ टंगे, सत्त रंग देवो हिलाईआ। तीर कमान रखो कन्धे, चिल्ले प्रभ दे नाम चढ़ाईआ। चिन्ता रहे कोई ना चिन्दे, चिखा ना कोए तपाईआ। सारे प्रण करो असीं ओस प्रभू दी बिन्दे, जेहड़ा जम्मण मरन विच कदे ना आईआ। जिस गुर अवतार पैग़म्बरां राह दस्से डिंगे, दीनां मज़हबां वंड वंडाईआ। वंड वंडा के जीउ पिंडे, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई दिते बणाईआ। सच पुच्छो बिना प्रभू तो रहिण मूल ना ज़िंदे, बिना आत्मा तत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर शब्द कहे किहदी करोगे पूजा, की सिल पूजस झट लँघाईआ। की इष्ट मन्नोगे दूजा, पत्थरां सीस निवाईआ। की गुरु मन्नोगे पंज भूता, जो जम्मे अन्त मर जाईआ। की दीनां मज़हबां दीआं गलीआं वेखोगे कूचा, दर दर अलख जगाईआ। की सतिगुर जंगलीं लभ्भे ढूंडा, उच्चे टिल्लयां वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे जिंनां चिर प्रभ दा नाम किसे ना बूझा, बुझा दीपक ना कोए जगाईआ। कँवल नाभ होए कदे ना मूधा, अमृत रस ना कोए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। पंजा कहे जन
१४६३ भगतो मन्नणा कमलापती, पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। लीलावन्ती जगा दे मोमबत्ती, कलयुग अन्धेरे विच होए रुशनाईआ। १४६३
२१ गुरमुखां धीरज देवे वा ना लग्गे तत्ती, अगनी तत तपाईआ। गुरमुखो बिना शब्द गुरु तों किसे नहीं करनी गति, चुरासी गेड़ ना कोए कटाईआ। जगत वासना माया ममता रती, रतन अमोलक हीरा ना कोए बणाईआ। वेखो जिन्हां दे मथ्थे उत्ते सोहँ पट्टी, सोहँ सीने उत्ते टिकाईआ। उन्हां फ़िकर रिहा ना रती, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जिस वाहिगुरु दी महिमा कीती जुग छत्ती, छंतां नाल नानक गया गाईआ। ओस प्रभू दा खेल वेखो अक्खीं, भुलेखा भरम रहे ना राईआ। तुहाडी मंज़ल पिछली टप्पी, पन्ध दिता मुकाईआ। भावें प्रभू नूं समझ लओ गप्पी, गप्पां विच सब नूं पार लँघाईआ। एह गुरु अर्जन कीती पक्की, जिस वेले तत्ती लोह तपाईआ। फिर गोबिन्द किहा गुरमुख उबले विच कोए ना भट्ठी, तत्तां तन जलाईआ। जे सतिगुर शब्द किरपा करे ते कलयुग करे अच्छी, अच्छी तरां वेख वखाईआ। गोबिन्द कहि के गया मेरा उह शब्द गुरु किसे नूं खाण ना देवे डड्डी मच्छी, डंडावत आपणी दए दृढ़ाईआ। धर्म दुआर दी खोल्ह के हट्टी, चार वरनां दा सांझा घर बणाईआ। किसे नूं लिखणी ना पए पट्टी, दीनां मज़हबां दयां फाटकां विच्चों तुहानूं दिता कढ्ढाईआ। वेखो लिखारीआं दयां गिट्टयां ते बन्न्ही मौली अट्टी, गाना गुट्ट नाल सुहाईआ। पंजां प्यारयां अरक रखी नंगी, नंगिआं उत्ते पर्दा कोए ना

पाईआ। ओह पोस्ती प्यारे भंगी, भंग वाल्यो तुहानूं रहे सुणाईआ। ख़बरदार हो जाओ सतिगुर शब्द इक्को जंगी, जंगजू बहादर इक्को नज़री आईआ। जिस ने गुरुआं दी लग्गण नहीं देणी मंडी, अल्ला वाहिगुरु सतिनाम ओम कृष्ण राम व्यपारी बण के ख़रीदण कोए ना आईआ। तुहानूं आउण नहीं देणी कोई तंगी, तंगदस्ती देणी कढ्ढाईआ। तुहाडी आत्मा होवे कदे ना रंडी, सदा सुहागण दयां बणाईआ। अज्ज तों गुरमुख बण जाओ इक दूजे दे संगी, सृष्टी विच पैणी भंडी, वरभण्ड दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सतिगुर शब्द कहे पुजारीउ चलो थल्ले, थल्ला प्रभ जू वेख वखाईआ। जिस ने गुर अवतार घल्ले, घल्लूघारा करे लोकाईआ । जिस दा हुक्म कदे ना टले, टल्लीआं वाले लए उठाईआ। कुछ याद बचन कर लै डल्ले, अग्गे आ के सीस निवाईआ। की हुक्म दिता कपूरे वाले महल्ले, गोबिन्द गुर दृढ़ाईआ। जिस वेले पंजां कक्कयां वाले होए झल्ले, झलक मिले ना धुरदरगाहीआ। माया नूं करन बल्ले बल्ले, ताड़ी गुर धामां विच वजाईआ। हत्थीं कंगण पा के मेरे छल्ले, ठग्गी चोरी लैण कमाईआ। दिन नूं गोलक गुरु दे सिँघासण थल्ले, ते रात नूं गल्ले कढ्ढके घरां वल उठ जाईआ। चारों कुण्ट वेखण पले पले, किधरों कोई सिख धनी आवे ते भेंटा दए रखाईआ। माया कारण सब ने गुरु घर मल्ले, सतिगुर प्रेम ना कोए रखाईआ। गोबिन्द कहे मैं सब तों छुडाउणे पल्ले, पलक विच करां जुदाईआ। मेरी झाल कोए ना झल्ले, मेरी सिखी सिर ना कोए उठाईआ। काम क्रोध ने मारने हल्ले, वैरी घर लैणे उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। गोबिन्द कहे एह शब्द गुरु दी डोरी, सोहणी नज़री आईआ। जिस तों सारे करदे चोरी, ओह ठग्गां चोरां वेख वखाईआ। लख चुरासी दा बण के घोरी, लुक लुक अंदर वड़ के वेख वखाईआ। भावें कोई करे बौहड़ी बौहड़ी, फ़रयाद सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक सुहाईआ। गोबिन्द कहे मैं दस्सां शब्द निशाना, तीर कमान शब्द उठाईआ। तुसीं मेरे नौजवाना, जो आपणा बल प्रगटाईआ। रूप धर मर्दाना, खेल्ह दिता वखाईआ। तुहाडा सतिगुर कदे ना होइ ज़नाना, नारी नर नरायण ना कदे अख्वाईआ । एह साढे तिन्न हत्थ दा काना, कायनात दए हिलाईआ। प्रभ दे कोल साढे तिन्न हत्थ दा पैमाना, जो बलि दी वंड समझाईआ। जन भगतो किसे नूं समझयो ना कोए बेगाना, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। एह बदी वाला ज़माना, ज़िमीं असमान रहे कुरलाईआ। अग्गे आ जाओ पंज अफ़ग़ाना, पंज प्यारे बहि के आसण लओ जमाईआ। तुसीं वेखो मार ध्याना, एह ओहो धुर दा माहीआ। जिस नालों तोड़ गए सी याराना, यारी ला के अक्खबदलाईआ। कहिंदे सी तूं सतिगुर गुण निधाना, तेरे हत्थ वड्याईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे घर वसाईआ। ओ बसी दयो पठाणो, अक्खलउ खुल्हाईआ। जगत दे जवानो, जोबन वेख वखाईआ। ओदों भज्ज गए सी विच मैदानों, आपणा आप बदलाईआ। अंदरे अंदर याद कीता तूं सतिगुर मेहरबानो, मेहर नज़र उठाईआ। असीं भुल्ले तूं बख़शिंद साडा लेखा मुका दे जगत जहानो, जीवण दी लोड़ रहे ना राईआ। गोबिन्द शब्दी किहा तुसीं शरअ वाले शैतानो, चोरी रहे कमाईआ। दोवें हथ्थ लाओ कानो, हथ्थ कन्नां उत्ते धराईआ। जिस वेले आए श्री भगवानो, भगवन आपणा वेस वटाईआ। तुहाडा लहिणा देणा पूरा करे देवे दर गुण निधानो, दरगाह साची इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सतिगुर शब्द कहे बहि जाओ मुग़ल मुग़लीआ ख़ानदान, ख़ाना दिता सुहाईआ। बहादर शाह अग्गे आ जा जवान, शहिनशाह तेरी की वड्याईआ। वक्त वेख विच जहान, जहालत भरी लोकाईआ। हुण औरंगज़ेब दा नहीं मकान, भगत दुआरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। राती सुत्तयां कीता याद, याददाशत लई बणाईआ। सुफ्ने विच खुल्ही जाग, जागरत रूप समझाईआ। बिना दीवे तों जगाया चराग़, पीर पीरा सीस निवाईआ। मेरी सहाइता कर आज, आजज़ हो के हो सहाईआ। गोबिन्द तेरे बिना मेरे सीस नहीं आउँदा ताज, तख़्त रहिण कोए ना पाईआ।
तेरा उडदा वेखां बाज़, बाज़ां वाले तेरी रुशनाईआ। गोबिन्द शब्द विच किहा तेरा डुब्बण नहीं देंदा जहाज़, बेड़ा बंने दयां लगाईआ। तेरा लेखा अन्तिम नाल ओस गॉड, जिस नूं पुरख अकाल कहि के गाईआ। ओह कलयुग अन्तिम आवे आप, आप आपणा रंग रंगाईआ। गुरमुख मीते रखे साथ, पंजे लए उठाईआ। तेरा लहिणा देणा लए वाच, वाचक हो के खोज खुजाईआ। वेखीं भुल्ल के कदे वेसवा दा कराउणा नहीं नाच, एह गोबिन्द दिता समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। शब्द विच गोबिन्द बहादर शाह दे हथ्थ मारया उत्ते कंधे, थपकी दिती लगाईआ। टाइम वेखण वाले रहिण नहीं देणे बन्दे, वाच कलाक ना कोए चतुराईआ। पता नहीं ओह केहड़े वेले लँघे, सिँघासण उत्ते सोभा पाईआ। ओह वेखे ओह प्यारे पंजे, पंजां दिती वड्याईआ। तेरा सीस बणा के गंजे, ताज जगत वाला दिता सुहाईआ। माण दे के धर्म दे डंडे, पौड़े धुर दे दिता चढ़ाईआ। हुण युद्ध करना नहीं कोई खण्डे, खड़ग ना कोए उठाईआ। सतिगुर दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल लँघे, ईसा गिरजिआं विच्चों उठाईआ। मूसा ओसे दा नाम मँगे, मुशिकल सब दी वेख वखाईआ। मुहम्मद हो के इक टंगे, अल्ला हू दा नाअरा दिता सुणाईआ। राम बनवास विच इकल्ला हो के मँग मँगे, मेरे राम तेरी दुहाईआ। कृष्ण किहा मेरे काहन चँगे, लख चुरासी तेरी गोपी सोभा

पाईआ। मैं ते आया जमना दे कन्ढे, मथरा गोकल डेरा लाईआ। दो जहान जिधर वेखां तेरा खेल सूरा सरबंगे, घर घर विच नज़री आईआ। कबीर किहा मैं खाणे नहीं घिउ खण्डे, रुक्खी सुक्खी खाए निमाणा बण के आपणा झट लँघाईआ। दुर्गा किहा मेरी अष्टभुज ते शेर सिँघ अस्वारी ते मेरे पैर नंगे, जोड़ा चरण ना कोए छुहाईआ। गोबिन्द किहा मेरी खड़ग धार वेखो खण्डे, खण्डा खड़ग शब्दी शब्द सोभा पाईआ। बिना प्रभू तों आपणे भगतां नूं कोई ना गंढे, गंढुणहार ना कोए अख्वाईआ। इक्को शाह पातशाह शहिनशाह जिस दे कोलो दो जहान मँगे, विष्न ब्रह्मा शिव सारे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे बेटी रणजीत कौर आ जाए नेड़े, नेड़ा दूर रहे ना राईआ। वेख भगत भगवान वसदे खेड़े, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। एथे किसे दे नाल नहीं कोई झेड़े, झगड़ा मन ना कोए रखाईआ। इक दा मालक इक ते इक आत्म सर्ब चढ़ावे बेड़े, कन्ढे रहिण कोए ना पाईआ। मैं सब दे वस के काया खेड़े, खिड़की अंदरों दिती खुल्हाईआ। शरन आ गए जेहड़े, तूं मैं दा झगड़ा दिता चुकाईआ। सब ने एस सतिगुरु नाल लै लए फेरे, उहला लुक रहे ना राईआ। जन भगतो कोटां विच्चों अणगिणतां विच्चों मैनूं ओह बथेरे,
१४६६ जेहड़े जुग जुग दे मेरे चले आईआ। तुसीं कोई काग नहीं मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठां बहिण वाले उत्ते बनेरे, नैण चारों १४६६
२१ कुण्ट उठाईआ। तुहाडे उत्ते पुरख अकाल ने कीती मेहरे, मेहरवान दया कमाईआ। तुसीं शब्द गुरु दे चेरे, चेला होर २१
ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे तूं बन्न्ह के हरे रंग दी पेटी, पटने वाला वेख वखाईआ। जेहड़ा धर्म दवारे दा गेटी, उह गेटकीपर हो के सन्तरी हो के सब नूं दए सुणाईआ। जो आया उह सब बेटा बेटी, दूजा नज़र कोए ना आईआ। वेख्यो भगतां विच रह के कदे ना करयो शेख़ी, निमाणे हो के झट लँघाईआ। धर्म दी धार जुग चौकड़ी किसे दे कोल कदे नहीं बेची, चोरां ठग्गां हथ्थ ना कदे फड़ाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बरां दी सदा याद रखां नेकी, जो निक्कीआं निक्कीआं नाम दीआं कथा कहाणीआं तुहानूं गए सुणाईआ। हुण वेखो मैं साढे तिन्न हथ्थ दा वेसी, भावें मैनूं वेसवा कहो ते भावें सतिगुरु लओ बणाईआ। तुहाडे दवारे जन भगतो आपणी भुगत के पेशी, पिछला लेखा दिता मुकाईआ। तुसी नहीं जाणदे सतिगुर कदे ना होवे परदेसी, परदेसां विच्चों तुहानूं आपणे देस पहुंचाईआ। एह दुनियां वास्ते करदा खेती, तुहाडे वास्ते काया दे खत्तयां अंदर हल्ल चलाईआ। तुहाडा नाम भण्डारा ते प्रभू तुहाडा सेठी, आकड़खान धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला रिहा मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे जन भगतो किते लग्गदी ते नहीं धुप्प, सूरज संन संन

रिहा तपाईआ। वेख्यो ऐवें कर ना जाइओ चुप, अंदर दी कथा देणी सुणाईआ। जे चाहो हुणे पर्दा हो जाए धुप्प, एह मेरे हथ्थ वड्याईआ। सोहणा सुहञ्जणा वक्त जाए ढुक, ढुकवां राग सुणाईआ। सारे खड़े कर लओ सज्जे गुट्ट, मुट्ठी मीट के दयो वखाईआ। असी शब्द गुरु दे पुत्त, दूजी जम्मण वाली कोए ना माईआ। सानूं प्रभ दरस दी भुक्ख, जगत तृष्ना गए मिटाईआ। साडा सतिगुर ना जाए लुक, दो जहान करे रुशनाईआ। असीं ताअ दईए मुच्छ, पाया प्रभू बेपरवाहीआ। जिस नाम दी पाई लुट्ट, ख़ज़ाने रिहा भराईआ। लग्गी प्रीत ना जाए टुट्ट, टुट्टयां रिहा जुड़ाईआ। साडा पैंडा गया मुक, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। शास्त्र सिमरत ज्ञाता सानूं मिल गया सब कुछ, कशमकश दा डेरा ढाहीआ। असीं सारे हो गए खुश, खुशीआं दे ढोले गाईआ। साडी मंज़ल जाए ना रुक, दरगाह जाईए चाँईं चाँईंआ। सानूं मिले गोबिन्द मित, पुरख अकाल नाल मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा जिस ने गाई तुक, तुख्म ताअसीर लई बदलाईआ। सारे दोंह हथ्थां नाल मूँह लओ घुट्ट, ओ दन्दो ओ ज़बाने तैनूं नाम जपण दी लोड़ रही ना राईआ। सानूं उह मिल गया सुख, जो सुख नाल आपणे घर पहुंचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणे तालों जुग चौकड़ी कदे ना जाए घुँथ, पगडंडी राह खैड़ा सके ना कोए भुलाईआ।

✻ १८ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

गुर अवतार पैग़ंबर कहिण वेख्या हाल बसुधा, सुध रही ना राईआ। पाणी धार समझे कोई ना दुध्धा, सच झूठ ना कोए दृढ़ाईआ। एका नाम होया ना उग्घा, उगण आथण ना हुक्म मन्नाईआ। इक दुआर ना वसिआ झुग्गा, घर सच ना कोए वड्याईआ। भउ मिटया ना कोए दूजा, एका रंग ना कोए रंगाईआ। चारों कुण्ट दीपक बुझा, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण धरनी वेखी रोंदी, नैणां नीर वहाईआ। खुल्ही मेढी वेखी खोंहदी, सीस सुहाग ना कोए गुंदाईआ। हाए हाए कर के गाउँदी, गीत गोबिन्द ना कोए जणाईआ। उच्ची कूक कूक सुणाउँदी, दो जहानां आप दृढ़ाईआ। बौहड़ी मैं पुरख अकाल इक्को चौहन्दी, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों पल्लू छुडाउँदी, दीन मज़हब वंड ना कोए वंडाईआ। मैं वेखां खेल प्रभू प्रभ भाउँदी, जिथ्थे मनुआ मन रहे ना राईआ। विचार रहे ना कलयुग काउँ की, कलयुग कूड़ ना कोए

कुरलाईआ। जगत ख्यालां रही ढाउँदी, ढाह ढाह ढेरी ख़ाक बणाईआ। इक्को माही दीआं औंसीआं पाउँदी, औंसर होए आप सहाईआ। करनी हटाए हउं मैं दी, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण धरनी वेख्या लग्गा धब्बा, धोबी साफ़ ना कोए कराईआ। रूप नज़र ना आए बग्गा, बप्पड़े सारे रहे कुरलाईआ। सच देवे ना कोए सद्दा, संदेसा हक़ ना कोए सुणाईआ। अग्गे वधे कोए ना अग्गा, मिले माण ना कोए वड्याईआ। जिधर तक्कीए मुरीद मुर्शदां करदे दग़ा, दग़ेबाज़ी विच लोकाईआ। जगत जहान फिरे भज्जा, भजन बन्दगी समझ किसे ना आईआ। अन्तिम पर्दा किसे ना कज्जा, क़ज़ा तों सके ना कोए बचाईआ। माया ममता ना मेटे दब्बा, सिर सके ना कोए उठाईआ। कूड़ी तोड़े ना कोए हद्दा, हदूद सच ना कोए वखाईआ। आत्म परमात्म मिले ना कोए मज़ा, मज़ाक़ विच ख़लक ख़ुदाईआ। सच साहिब दी चले ना कोए रज़ा, राज़क रिज़क रहीम ना कोए शरनाईआ। धर्म दा मिले ना किसे पदा, दरगाह सच ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सतिगुर शब्द कहे धरनी रो रो कहिंदी, कहि के रही सुणाईआ। पैग़म्बरो वेखो दिशा लहिंदी, मेरे ख़ुदा दी मेरी दुहाईआ। जगत निशाने वेखो ढहिंदी, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। उम्मत उम्मत नाल खहन्दी, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण धरनी उत्ते दिसे धूढ़, धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। सृष्टी हो गई मूढ़, मूर्ख रूप जणाईआ। नाता तोड़े ना कोए कूड़, कूड़ कुटम्ब ना कोए तुड़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर होए मजबूर, मजबूरी सारे रहे जणाईआ। साडा मन्ने ना कोए दस्तूर, दस्तयाब ना कोए अख्वाईआ। चारों कुण्ट होए मग़रूर, हँकार विच कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण कलयुग साडे नाम दा पै गया काल, काली रैण दए गवाहीआ। जो गोबिन्द मार्ग दस्स के गया सुखाल, शब्द संदेसे विच दृढ़ाईआ। कल्गी दी निशानी दे के नाल, नर नारी आप समझाईआ। मेरा नाम सके ना कोए संभाल, हिरदे विच ना कोए वसाईआ। पुरख अकाला बदल के आवे चाल, चाल निराली आप बणाईआ। आ के वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण धरनी उत्ते प्रभ करे धर्म दा राज, रईयत सारी वेख वखाईआ। कल्गी दी थाँ पहन के ताज, ताजां वाला वेस वटाईआ। सब दी आलस निंदरा खोल्हे जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। गुरमुखां कर कर वड्डे भाग, भागां वाले रिहा बणाईआ।

१४६८ २१

ईशर सिंघ नूं मार आवाज़, अग्गे लैणा बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण की गोबिन्द तेरी रीती, रीतीवान देणा जणाईआ। जिस वेले भाउ रिहा ना मन्दिर मसीती, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। धर्म दी रहे ना कोए बग़ीची, फुल्ल फुलवाड़ी ना कोए महकाईआ। गोबिन्द लहू कढ्ढके आपणी चीची, चीरे नाल दिता सुहाईआ। मेरी सिखी रहे सद जीती, प्रभ दी झोली पाईआ। जिस वेले सदी चौधवीं बीती, परम पुरख लए अंगड़ाईआ। साची दस्स इक हदीसी, हज़रतां तों परे करे पढ़ाईआ। लेखा जाण तन अंगीठी, काया कंचन फोल फुलाईआ। धुर दी बाणी दस्स के मीठी, सोहँ ढोला इक जणाईआ। हरिजन साचे गावण बण के मीती, मित्र प्यारे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतिगुर शब्द कहे मैं सतिजुग दस्सां धार, सच नाल समझाईआ। जिस वेले गुरमुख छड्डे मातलोक संसार, तन वजूद नाता रहे ना राईआ। उस नूं पीले वस्त्र देणे डार, धुर दा हुक्म हुक्म प्रगटाईआ। पंज गुरमुख लैण नुहाल, छेवां हथ्थ ना कोए लगाईआ। सज्जे गुट्ट नूं बन्नॄण रुमाल, गंढां तिन्न तिन्न बंधाईआ। उत्ते लीड़ा पावण लाल, जो गुरमुख गुरमुख वास्ते लै के आईआ। एह शब्दी खेल कमाल, लुधियाणे वाले देण गवाहीआ। लोक लज्जया रहे ना विच जहान, समाज

१४६९ राज ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सतिजुग कहे जिस १४६९

२१ उत्ते होवे लाल कपड़ा, जगत पलीती कण्पड़ रहिण कोए ना पाईआ। उह हँस बणे बगला बप्पड़ा, बलधारी आप बणाईआ। २१

दीन दुनी तों कर के वखरा, घर साचा इक सुहाईआ। गोबिन्द यार हंढ्ढावे सत्थरा, सूलां सेज वज्जे वधाईआ। सचखण्ड वसावे जिथ्थे बिना भगतां कोए ना अप्पड़ा, मंज़ल मंज़ल ना कोए रखाईआ। खाणा पए ना रसना जिह्वा कोए बक्करा, पलीत रूप ना कोए वखाईआ। धुर दे हुक्म विच्चों हुक्म भुल्ले कोए ना कतरा, नाम दा कैहत घर घर नज़री आईआ। साचा नाम जगत जहान वखरा, नित नित वखरी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण धरनी वेखी हालत, मसला हल्ल ना कोए कराईआ। चारों कुन्ट दिसे जहालत, चार वरन फिरी दुहाईआ। साची करे ना कोए अदालत, इन्साफ़ हक़ ना कोए कमाईआ। दीनां मज़हबां पाई बग़ावत, दीन दुनी रहे लड़ाईआ। बिना पुरख अकाल दीन दयाल करे ना कोए सख़ावत, मेहर नज़र ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण साडा सब दा इक्को राम, रमईआ इक्को नज़री आईआ। साडा इक्को सब दा शाम, शाम रैण अन्धेरी दए मिटाईआ। जिस

ने रहिण नहीं दिता गुलाम, शरअ ज़ंजीर दिती कटाईआ। मार्ग दस्स श्री भगवान, पर्दा दिता चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद पर्दा देणा उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण धरनी उत्ते वेख्या धर्म दुआरा, धर्म धार प्रगटाईआ। करना खेल जगत निआरा, निराकार हो के आपणी कार कमाईआ। जन भगतां दे सहारा, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। वक्त सुहञ्जणा होया सतारां हाढ़ा, हर हिरदे मिले वड्याईआ। प्रभ माण देवे पुरख नारा, बुढ्ढे नढ्ढे रंग रंगाईआ। खेल खिलाए सच्चा शाहकारा, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। जन भगतो तुहाडा सोहणा सदा विहारा, विवहारी कार कमाईआ। जिस दीआं भविख्तां विच करदे रहे इंतज़ारां, इंतज़ारी सिर तुहाडे हथ्थ रखाईआ। तुसीं सारे प्रभ दीआं कटणवाले वगारां, थिर रहिण कोए ना पाईआ। शब्दी धार सुण इशारा, अंदरे अंदर रिहा दरसाईआ। सब दा होवे पार किनारा, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा मँगे इक सहारा, सहायक हो के नाम अनाइत झोली देणा पाईआ।

✻ १६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ फ़िरोजपुर वाले रणजीत सिँघ दे सगन पैण समें हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ तक्कया धुर दा राणा, रईयत सन्त भगत सोभा पाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवे नाम दाना, दाता दानी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सति सच दा दस्स के गाणा, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। गढ़ तोड़ अभिमाना, माया ममता मोह मिटाईआ। जन भगतो साचा मन्नणा प्रभ दा भाणा, भाणे विच समाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण जो प्रभ दे मीते सो खावण लाची दा इक इक्क दाणा, सगन भगत भगवान वेख वखाईआ। असीं छड्डया जीव जहाना, सानूं लोड़ रही ना राईआ। जिथ्थे जोती धार पहरया बाणा, बाण अणयाला तीर चलाईआ। जो सूरबीर बण जवाना, जोबन आपणा इक दृढ़ाईआ। जिस नूं झुकदे कृष्णा रामा, पैग़म्बर सीस निवाईआ। निउँ निउँ करन सलामा, नमस्ते कहि के झट लँघाईआ। सो आ गया गुण निधाना, गहर गम्भीर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच लेखा पूर कराईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण रसना रस जाणा भुल्ल, अभुल्ल दए दृढ़ाईआ। भगत बणो प्रभू दी कुल, कुल आलम वेख वखाईआ। दीन दुनी दीवा होवे गुल, बिना भगतां गुलशन

ना कोए महकाईआ। मायाधारी जाणे रुल, भगत भगवान होए सहाईआ। साची बख्श के चरण धूल, दुरमति मैल दए मिटाईआ। जन भगतो सतिजुग दा सच असूल, असल नूं असल देणा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण गुरमुख सज्जण मिलण साथी, साचा संग बणाईआ। मुहब्बत विच मन्नण आखी, प्रेम विच वड्याईआ। एह अग्गे चार जुग दी साखी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा जन्म कर्म रिहा वाची, वाचकां दा पर्दा रिहा उठाईआ।

✻ १६ हाढ़ शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

पैग़म्बर ना दिवने मनिखे अवतार चोज़ेज़ीए ज्या कूज़ विखे गुरु महीवने मल जिज़ाकू जखीने शब्दे शमशासी क़लमा कलामे कुल अलयासी हैज़िनवे कोइनशाते बज़ोतो वजिज़ते कौमीने जामे ना ज़िनहा नूरे फिवज़ीने अनीआने पीनाज़ू पीरे पीज़ाई खुनंता खुज़ी दहलिज़खा मौज़ूने मूज़ी तनूसवितत तसके ताअबे ताज़ीरे शिनाहाऊ वकीज़ा मशोशोतू फ़ज़ले वज़ू मुहम्मदे रज़ू पैग़म्बरे अज़ू नाकू जीवा ज़नते जाखित खाके अलाह अली वज़िद वली ऐहद वाहिदयां विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करनी कार कमाईआ। पैग़म्बरो गोशे कज़ुन अवतार वनौशे वज़ून गुरु चशमे चोशे चालीज़े ज़ुन सतिगुर शब्द मनज़ा महोशे वेवीदे सुन खलताए मज़हब खलकाए ग़ज़ब फ़र्शाए तअजब अर्शाए अदब ज़ानू जाए क़दम बोसाए पदम कज़ीना अदम मज़कूहा बदन नेसताए नेसतो वतन बेवतन बेपरवाह आपणे दर वखाईआ। पैग़म्बर काअबाए खुदा अवतार वहदते दुआ गुरु सलाहते ज़बां शब्द सतिगुर अनाइते कुन कुल अज़श, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, संदेस देवे दरे जवा दहलीज़े अज़ीज़े तहमीज़े तमहीद तारीफ़ हरीफ़ हरफ़ हरूफ़ नाल जणाईआ।

✻ १ सावण शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

तेई अवतार नेत्र नीर वहावण हन्झू, छहिबर मुहब्बत प्रेम प्यार रखाईआ। पुरख अकाल तेरी भेंटा करना बोदी जञ्झू, दो जहान नौजवान तेरी इक सरनाईआ। सब दा अन्तर तेरा हुक्म मन्नू, मनमुख नज़र कोए ना आईआ। सानूं याद तेरा

संदेसा जो जट्ट जटे दिता धन्नू, धर्म दी धार इक समझाईआ। नानक सिख्या दिती बाले संधू, संध्या वेले सति दृढ़ाईआ। लेखा याद आया गुर अर्जन नाल चन्दू, सूर्या चन्द दए गवाहीआ। बकाया दिस्सया ब्राह्मण गंगू, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रोए मारे धाहीआ। गोबिन्द धार किहा करे खेल प्रभ दीना बंधू, बंधन वेखे जगत लोकाईआ। जो आत्म परमात्म सब दा बणे संगू, सगला साथ निभाईआ। जन भगतां अंदर दऊ नाम अनन्दू, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा वेखे कन्द्धू, किनारे फोल फुलाईआ। झगड़ा मुकाऊ करीर जंडू, मढ़ी गोर ना कोए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट डंनू, डंका आपणा नाम लगाईआ। सति धर्म दा बेड़ा बन्नू, बंधन दीन मज़हब कटाईआ। शब्दी धार सब नूं पकड़े कन्नू, करनी दा करता धुरदरगाहीआ। लेखा जाणे लख चुरासी छप्पर छन्नू, तन माटी ख़ाक फोल फुलाईआ। दीन दुनी नेत्रहीण तक्के अन्नू, घट घट अन्तर फोल फुलाईआ। की संदेसा दिता माता गर्भ विच अभिमन्नू, कृष्ण काहन वड वड्याईआ। की राम किहा मेरा राम जननी मूल कोए ना जणू, जणेंदी बणे कोए ना माईआ। जो अन्तर निरंतर नूरी धार सब दे रलू, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। भगत दुआरा एका मल्लू, मालक हो के वेख वखाईआ। गुरमुखां नाम निशाने हिरदे सलू, साहिब सुल्तान तीर चलाईआ। समुंद सागर वेखू जलू, जल थल महीअल खोज खुजाईआ। अगनी रेत वेखू थलू,
१४७२ पर्बत टिल्ले पर्दा लाहीआ। धुर दा हुक्म बोल के हल्लू, हालत बदले जगत लोकाईआ। वस के निहचल धाम अटलू, दो जहानां वेख वखाईआ। धुर फ़रमाना अगम्म घल्लू, धायल करे थाउँ थाईंआ। नव खण्ड पृथ्मी दलू, सत्त दीप सति समझाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेला मात फलू, पत्त टहिणी रहिण ना पाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला निरगुण जोत हो के बलू, दीआ बाती ना कोए रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटू कलू, कल काती दए खपाईआ। जगत विद्या सारी छलू, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। अवतार कहिण प्रभ तेरी धार जञ्जू बोदी, सूत्रधारी वड वड्याईआ। सृष्टी होई कर्म कांड दी रोगी, कूड़ी क्रिया ना कोए गवाईआ। काम वासना होई भोगी, अन्तर रस ना कोए चखाईआ। साबत रिहा ना कोए जोगी, जोगीशर नज़र कोए ना आईआ। हउमे हंगता सब नूं कीता रोगी, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। पापां भार होया बोझी, कलयुग पार ना कोए कराईआ। हिरदा सके कोई ना सोधी, सुध बुध्ध ना कोए चतुराईआ। भेव खुल्ल्हे ना अगाध बोधी, बुद्धी तों परे ना कोए पढ़ाईआ। ख़ानाजंगी लग्गी घरोगी, गृह मन्दिर ना कोए सफ़ाईआ। कूड़ी क्रिया बणे वियोगी, बिरहों चोट ना कोए लगाईआ। सति धर्म दा दिसे कोए ना मोढी, सारे बैठे मुख भवाईआ। निशाना वेख चिन्ह्न राम दी ठोडी, नौ नक्के सूई सोभा पाईआ।

की खेल दस्सया युधिष्टर कृष्ण हथ्थ ला के गोडीं, काहन काहन दिता दृढ़ाईआ। की मूसा होई सोझी, पर्दा अन्तर अन्तर उठाईआ। की ईसा फड़ के उलटी कौडी, धरनी उत्ते दिती रगड़ाईआ। की मुहम्मद चौदां तबकां विच नज़र ना आई बोदी, बुद्धी तों परे की जणाईआ। की नानक खेल दस्सया सोढी, वेदी कुल बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। अवतार कहिण तेरा जञ्ञू बोदी शिकार, धर्म धार समझाईआ। इष्ट गुरु अवतार, दृष्ट विच समझाईआ। नमो नमो निमस्कार, डंडावत सहज सुखदाईआ। चरण कँवल बलिहार, घोली घोल घुमाईआ। धूढ़ी मस्तक छार, टिक्के नाम रमाईआ। हो के ख़िदमतगार, ख़ादम सेव कमाईआ। दर वेख सच्चा दरबार, दर ठांडे सीस निवाईआ। तेरा खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर तेरी बेपरवाहीआ। तेरी रसम नाल अधार, तेरी क़सम नाल वड्याईआ। तेरा चश्म नाल दीदार, तेरे ख़सम नाल ख़ावंद सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। अवतार कहिण तेरी धार जञ्ञू बोदी टिक्का, टिकटिकी तेरे नाल लगाईआ। पुरख अकाल बदल दे सिक्का, साचे राम राम दुहाईआ। लहिणा देणा वेख वड्डा निक्का, काहनां दे काहन
१४७३ बेपरवाहीआ। सब दा मालक बण पिता, पतिपरमेशवर सोभा पाईआ। सानूं याद ना आवे पिच्छा, पिछला लेखा देणा मुकाईआ। १४७३
सर्ब स्वामी कर रिच्छा, रच्छक हो के वेख वखाईआ। की सतिजुग त्रेता द्वापर दिती सिखा, सिख्या सच नाम समझाईआ।
२१ की शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान लिखा, अठ्ठ दस वज्जी वधाईआ। की अन्त ओस दा निकलणा सिट्टा, सिट्टेबाज़ी २१
दे समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया लेख कर दे चिट्टा, चेटक आपणा नाम लगाईआ। तेरा खेल किसे ना दिसा, नेत्र अक्खना कोए समझाईआ। सब दा मालक बण पिता, पतिपरमेशवर हो सहाईआ। तुध बिन जुग ना किसे नजिद्ध ा, लहिणा अन्त ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सच नाल मिलाईआ। अवतार कहिण जञ्ञू बोदी तेरी झोली, झलक देणी राम दुहाईआ। आत्म परमात्म सब दी सांझी कर बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। सतिगुर शब्द बणा ढोली, दो जहान करे शनवाईआ। कलयुग कूड़ी मेट दे रौली, रौणक आपणा नाम लगाईआ। असां खेल दस्सया हौली हौली, जग जुगती गए जणाईआ। तेरा लेखा उपर धौली, धरनी धरत धवल सीस झुकाईआ। धार वेख कृष्ण काहन सौली, साँवल सुंदर रंग रंगाईआ। सृष्टी दृष्टी करे बौहड़ी बौहड़ी, दुःख दर्द विच कुरलाईआ। साचे नाम दी ला दे पौड़ी, डण्डा इक्को इक वखाईआ। मानस वेल रहे कोए ना कौड़ी, अमृत रस देणा भराईआ। गली भीड़ी मेट दे सौड़ी, मार्ग पन्थ इक जणाईआ। भगत भगवान बणा लै जोड़ी, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। सुरती शब्द

बन्नू लै डोरी, तन्दव तन्द ना कोए कटाईआ। पुरख अकाल अर्ज मोरी, अवतार अवतरा रिहा जणाईआ। तेरे नाम दी होवे चोरी, ठग्गी यारी वेख लोकाईआ। मन्त्र फुरना फुरे ना कोई फोरी, कल्पणा कूड़ ना कोए मिटाईआ। साचा नाम बख्श दे भोरी, भोरिआं विच पैण दी लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरा वेख वखाईआ। अवतार कहिण बोदी जञ्जू तेरा रस्ता, राहे रस्त दिता दृढ़ाईआ। अन्तिम बन्नू सब दा बस्ता, शब्दी धार गंढु पवाईआ। साचा मार्ग दस्स दे सस्ता, जिथ्थे क़ीमत मूल ना लागे राईआ। मन फिरे मूल ना नस्सदा, कूड़ कल्पणा ना कोए कुरलाईआ। नज़ारा दे दे आपणी अक्खदा, निज नेत्र नैण कर रुशनाईआ। गृह मन्दिर वखा दे सच दा, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना काया माटी कच्च दा, कच्ची तन्द देणी तुड़ाईआ। तेरा प्यार लूं लूं होवे रचदा, रचना आपणी देणी वखाईआ। झगड़ा रहे ना मनमति दा, गुरमति इक्को इक दृढ़ाईआ। मेल मिल जाए कमलापति दा, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। दर खोलू अगम्मे हट्ट दा, वणजारे गुरमुख लै बणाईआ। राग सुणा शब्दी भट्ट दा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। किनारा दस्सदे आपणे तट दा, जिथ्थे अमृत धार वहाईआ। तेरा नाम

१४७४ निधाना चार कुण्ट फिरे टपदा, टप्पा तेरी सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल १४७४

२१ साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। अवतार कहिण जञ्जू बोदी तेरी रसम, रस्ता दीन दुनी समझाईआ। वंड कर के २१

माटी जिस्म, हुक्म नाम दिता दृढ़ाईआ। आपणी इक्को समझा के किस्म, नूर ज़हूर जगत चमकाईआ। जलवा जणा के आपणे चश्म, चशमदीद दर समझाईआ। सब दे पूरे कर बचन, भविख्त लिख्त दे वड्याईआ। कलयुग जीव चारों कुण्ट मच्चण, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। जगत विकारे विच तपण, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कलयुग अन्त सब दा फल लग्गा पक्कण, सब दी झोली देणा पाईआ। असां छड्डणा लोकमात दा वतन, बेवतन दईए जणाईआ। सच दवारे तेरे वसण, वसनीक इक्को सोभा पाईआ। तेरा नाम धुर दा होवे भजन, बन्दगी इक दृढ़ाईआ। इक्को धूढ़ कराउणा मजन, दुरमति मैल रहे ना राईआ। परमात्म आत्म बणना सज्जण, सगला संग निभाईआ। तेरे भगत सुहेले दीपक जोती जगण, चार कुण्ट होए रुशनाईआ। सन्त सुहेले तैनूं सद्दण, अन्तर आत्म आवाज़ लगाईआ। प्रेम प्रीती विच हो के मग्न, माया ममता मोह गवाईआ। नाद अगम्मी तेरे वज्जण, धुन धुन शनवाईआ। अवतार दवारे तेरे मँगण, मांगत हो के झोली डाहीआ। बावन हो के लग्गा गज्जण, कूक कूक सुणाईआ। बलि खलो के उपर पब्बन, निगाह ज़िमीं असमान जणाईआ। जिस दा आकार लग्गा वधण, साकार दए वड्याईआ। सृष्टी दृष्टी दिसे नग्न, पर्दा नाम ना कोए रखाईआ। निगाह मारी उपर

गगन, गगनंतर दए दुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव भज्जण, चलण वाहो दाहीआ। रावी किनारा सारे लभ्भण, आपणा पन्ध मुकाईआ। इक दूजे दीआं पैड़ां दब्बण, चार जुग दा खुरा खोज खुजाईआ। आपणीआं विचारां विच्चों कढ्ढण, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ। बलि नूं याद आ गया पिछला सिँघ बचन, बचन जिस दा पूर कराईआ। जेहड़ा जुगिंदर सिँघ ने भेज्या सगन, कौर जुगिंदर दी झोली देणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच पर्दा आप उठाईआ। अवतार कहिण बोदी जञ्ञू तेरा रूप, साहिब तेरी शरनाईआ। बलि बावन वाला भूप, दाता दानी रिहा वखाईआ। जिस ने आपणा कीता कूच, कूचा गली वखाईआ। उस दा नन्हा इक सपूत, रावी कन्ढे डेरा लाईआ। उस दे नाल नफ़र सी दूत, नीदा पिछला नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नीदा बण के खेवट खेटा, बलि सपुत्तर कंध उठाईआ। प्रेम प्यार दी दे के भेंटा, कण्पड़ तन छुहाईआ। पुरख अकाल तक्कया नेता, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस प्यार बख़श्या हेता, अंदर अन्तर दरसाईआ। वेला वक्त याद कर ला चेता, चेतन सुरती दयां कराईआ। फेर भेव खुल्हाया दस दस्मेशा, पर्दा आप खुल्हाईआ।
१४७५ फिर अन्त जणाया जिस वेले कलयुग धारया भेसा, कल कल्की नाउँ वड्याईआ। खेल खिलावां माझे देसा, देस देसन्तर १४७५
डेरा ढाहीआ। भगत सुहेले पूरब वेखां, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। सब दा पूरा करां लेखा, बच्या रहिण कोए
२१ ना पाईआ। माण दवावां मूंड मुंडाए धारी केसा, सुन्नत हुन्नत ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी २१
किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नीदू किहा मेरे अन्तर इक रीझ, प्रेम नाल जणाईआ। बलि सपूते तेरे गल पहनावां क़मीज़, तन वजूद नाल वड्याईआ। मस्तक उत्ते मार के लीक, बिना निशान उँगल छुहाईआ। धुर हुक्म होया तेरी आसा पूरी होए उम्मीद, मनसा वेख वखाईआ। ओस साहिब दी रख उडीक, जो मालक धुरदरगाहीआ। जिस वेले कलयुग अन्धेरा होया तारीक, निरगुण नूर ना कोए चमकाईआ। ओस वेले प्रभ ठाकर आवे ठीक, ठोकर आपणा नाम लगाईआ। साचा नाम दस्स हदीस, धुर दा मन्त्र दए जणाईआ। इक्के गृह कर वसनीक, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। शब्दी धार दे तमीज़, लेखा पूरब दए दृढ़ाईआ। एसे कारण जुगिंदर सिँघ दी पूरी कीती रीझ, रमज़ आपणा नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। अवतार कहिण प्रभ जञ्ञू बोदी लै संभाल, सम्भल तेरे चरण टिकाईआ। तूं शहिनशाह असीं कंगाल, जुग जुग दे मँगते झोली डाहीआ। तूं पिता पुरख अकाल, आदि अन्त तेरी सरनाईआ। हउँ बालक नढ्ढे तेरे लाल, तेरी गोद डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी समझ

ना सके चाल, नित नवित्त वेस वटाईआ। शब्द संदेसा सुणदे रहे हाल, अग्गे अवर ना कोए चतुराईआ। तेरी महिमा विच करदे रहे भाल, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। खोजदे रहे काया माटी खाल, तन वजूद पर्दा लाहीआ। जां तक्कया तूं दाता दीन दयाल, दयानिध सरनाईआ। जहां तहां करें प्रितपाल, दो जहानां वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेख हाल, हालत विगड़ी जगत लोकाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, डौरु डंक रिहा वजाईआ। माया तोड़े ना कोए जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। साची सिख्या इक सिखाल, चार वरन इक सरनाईआ। सति धर्म बणा धर्मसाल, दुआरा इक्को इक वड्याईआ। जिथ्थे बैठण शाह कंगाल, ज़ात पात दीन मज़हब ना कोए रखाईआ। सब दा होवे इक्को सवाल, मांगत इक्को अलख जगाईआ। इक्को शब्द होवे दलाल, दूजा विचोला ना कोए वड्याईआ । काया मन्दिर अंदर होवे तेरी भाल, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। अवतार कहिण प्रभ जञ्ञू बोदी रीती जग, तत्तां वंड वंडाईआ। तेरा दरस उपर शाहरग, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। कर्म दी साड़े कोए ना अग्ग, विकार हँकार ना कोए जणाईआ। तेरा शब्द सुणीए अनहद, नादी नाद
१४७६ शनवाईआ। पिछले झगड़े जाईए छड्ड, अक्खरां वाले नाम ना वंड वंडाईआ। इक्को निशाना दए गड्ड, दो जहानां दईए १४७६
झुलाईआ। तैथों रहे कोए ना अड्ड, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। हुक्मे अंदर सारे सद्द, सदके वारी घोल घुमाईआ। असीं सारे तेरी यद्द, यके बाद दीगरे सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी गए लँघ, सतिजुग त्रेता द्वापर पन्ध मुकाईआ। कलयुग किरपा कर झब्ब, दर तेरे वास्ता पाईआ। चारों कुंट अन्धेरी खड्ड, बिन सम्बल तों सम्भल के चरण ना कोए टिकाईआ। सन्त सुहेले आपणे लभ्भ, चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। कलयुग जीव बगड़े बप्प, रसना काग वांग कुरलाईआ। बिन हरि नामे खाली हड्ड, नाड़ी पिंजर दए दुहाईआ। अवतार कहिण बौहड़ी साडा नहीं कोई वस्स, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। असीं तेरे नाम दा गा के आए जस, सिफ्तां विच सालाहीआ। कलयुग वेख रैण अन्धेरी मस्स, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। कलयुग कूड़ कल्पणा रही नच, धर्म दवारिआं नाच वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर सुहञ्जणा इक सुहाईआ । अवतार कहिण जञ्ञू बोदी धोती, धुर धर्म सरनाईआ। सृष्ट सबाई उठा सोती, कलयुग सुत्तयां रैण विहाईआ । कर प्रकाश निर्मल जोती, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। साचा शब्द सुणा सलोकी, सोहला अगम्म अथाहीआ। तेरी खेल वेखी अनोखी, अचरज दे दृढ़ाईआ। कलयुग जीवां मति रहे ना होछी, हुश्यिारी नाल दे बदलाईआ। तेरी समझ ना आवे सोची, अक़ल बुद्धी ना कोए चतुराईआ। लेखा वेख रविदास चमारे मोची, जो मचल के गया वखाईआ।

कलयुग काया बाहरों होणी पोची, अन्तर कूड़ कुरलाईआ। उस वेले बिना पुरख अकाल तों होणा कोए ना धोबी, नामा छींबा दए गवाहीआ। बिना दीन दयाल चुक्के कोए ना गोदी, गोदावरी कन्ढे गोबिन्द गया जणाईआ। कन्न पाटा रहे कोए ना जोगी, गोरख मछन्दर कूक सुणाईआ। राम रसीआ रहे कोए ना भोगी, रावण राह विच गया जणाईआ। साबत रहे किसे ना बोदी, बुध कूक के दिती दुहाईआ। पंचबटी राम ने बन्न्ह के धोती, सीता सहज नाल जणाईआ। कलयुग अन्तिम सब दी वासना होणी खोटी, मेरा लबास साथ ना कोए निभाईआ। ब्राह्मणा खाणी ब्रह्म धार दी बोटी, सच सुच ना कोए समाईआ। विद्या फिरनी मगर रोटी, घर घर पए दुहाईआ। बोदी वाल्यां पहनणी टोपी, टोपीआं वाल्यां टप्पा राम जाणा भुलाईआ। साधां बन्न्हणी तेड़ लंगोटी, साबत नज़र कोए ना आईआ। कलयुग आयू होणी छोटी, पूरी पूरन प्रभ ना कोए कराईआ। साधां नाम जपणा होठीं, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जगत चिन्न्ह बणाउणे ठोडी, छार सीस विच सुटाईआ। रस रहिणा नहीं विच डोडी, पंखड़ीआं रूप ना कोए महकाईआ। पिउआं पुत्रां दी हथ्थ लाउणा गोडीं, जगत माण वड्याईआ। गोबिन्द प्रगट होणा कुल सोढी, सोढ बंस समझाईआ। फेर उस ने सब नूं जाणा छोडी, अगला संग ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दी बैहणा गोदी, सच दुआर सुहाईआ। उस दी लै के ओटी, सम्बल नूर रुशनाईआ। सब दी चढ़ के चोटी, चोटा बण के वेख वखाईआ। प्यार विच ना होए दोखी, विहार विच सर्ब तजाईआ। आत्म दा बण के शौकी, परमात्म आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जिस दी सतिजुग त्रेता द्वापर भरी चौकी, नित नित सेव कमाईआ। उस दी कुल कदे जाए ना औंती, जन भगत लए प्रगटाईआ। भगतां नाल प्रभ दी धार सोहती, सुख सतिगुर आप दृढ़ाईआ। आत्म नार सुहागण खौंती, ख़सम इक्को इक जणाईआ। गोबिन्द ढईआ लाउणा ढौंकी, अन्त लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि साहिब वड्ड वड्याईआ। अवतार कहिण जञ्ञू बोदी तेरी शरधा, श्रधालू सेव कमाईआ। तूं मालक साचे घर दा, गृह तेरी वड्याईआ। तूं रूप नरायण नर दा, निरँकार तेरी शरनाईआ। जो चाहें सो करदा, करता पुरख वड वड्याईआ। ना जन्मे ना मरदा, निरगुण नूर जोत चमकाईआ। शब्दी धार घाड़न घड़दा, आदि अन्त कार कमाईआ। लेखा जाणे चोटी जड़्ह दा, जड़्ह चेतन तेरी सरनाईआ। अवतार तेरा नाम पढ़दा, महिमा अगम्म अथाहीआ। चरण धूढ़ी ख़ाक मलदा, आपणी खुशी मनाईआ। जिस वेले तेरा दीपक जोत बलदा, काया मन्दिर होए रुशनाईआ। नाम संदेसा होवे घल्लदा, धुर दी धार जणाईआ। पर्दा लाह के निहचल धाम अटल दा, घर दए वखाईआ। हुण वेला कलयुग कल दा, कौरव पांडव रोवण मारन धाहींआ। की लेखा अठारां कशूणी दल दा, अठाई अठ्ठ नाल दुहाईआ। तेरे

अग्गे ज़ोर ना चलदा, निउँ निउँ सीस निवाईआ। कुझ भेव दस्स दे सवाल हल्ल दा, हालांकि तेरे नाम विच्चों तेरा भेव कोए ना पाईआ। तेरा खेल अछल अछल्ल दा, छलधारी की चतुराईआ। की लेखा होणा सत्त समुंदर जल दा, सत सत नाल दृढ़ाईआ। की खेल होणा कलयुग डूँघी डल दा, डल्ले गोबिन्द गया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। अवतार कहिण प्रभू जञ्झू बोदी तेरी दात, दाते दानी तेरी शरनाईआ। साडा एस नाल नहीं कोई साक, नाता रहे तुड़ाईआ। तेरा दस्स के इक्को वाक्, क्या रहे जणाईआ। सब नूं करना पए इतफाक़, निफ़ाक़ विच ना कोए रखाईआ। असीं अवतार तेरे अन्त हो गए माटी ख़ाक, जिस्म नज़र कोए ना आईआ। सति विच सति मिलण दी सति दस्सी जाच, याचकां दिती दृढ़ाईआ। की होया जे राम दी महिमा बाल्मीक लिखी नाल क़लम दवात, इशारिआं विच दृढ़ाईआ। अन्त फेर राम दे राम नूं कर के याद, डंडावत विच सीस निवाईआ। बिना उस तों पूरी होवे किसे ना ख़ाहिश, तृष्ना तृखा ना कोए गवाईआ। जिस राम ने राम भेजणा बनबास, जंगल जूहां विच फिराईआ। उस दा खेल अजब तमाश, अग्गे पिच्छे ना कोए दृढ़ाईआ। उस ने अन्तिम आउणा ख़ास, ख़ालस आपणा रूप दृढ़ाईआ। सब दा लेखा वेखणा आप, आपणा पर्दा लाहीआ। उस नूं सब ने मन्नणा बाप, पिता पुरख अकाल सरनाईआ।
१४७८ बिना उस तों सांझा किसे नहीं करना जाप, मानव रंग ना कोए रंगाईआ। उस दी तन दी सब तों वखरी होणी पोशाक, १४७८
२१ बिना जन्म तों आपणा आप विच छुपाईआ। जिथ्थे कदे ना होवे कोए उदास, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। जन भगतां २१
दी इक्को जमात ते इक्को बणाए कलास, कला आपणी आप दरसाईआ। इक्को नाम क़लमा शब्द होवे गाथ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा धुर दा साथ, दो जहान नाता ना कोए तुड़ाईआ। सब दी पूरी करे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच विच्चों प्रगटाईआ। अवतार कहिण प्रभ जञ्झू बोदी तेरे हवाले, अहिवाल विच जणाईआ। तेरे खेल वेख निराले, निराकार तेरी सरनाईआ। असीं सब दे कढ्ढे दिवाले, बाकी हिसाब ना कोए रखाईआ। अन्तिम बदल के आपणे चाले, चाल निराली इक रखाईआ। तुध बिन मातलोक ना कोए संभाले, सम्बल घर ना कोए वसाईआ। लम्भयां हथ्थ ना आवे भाले, तेरा नूर ना कोए चमकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाले, जागरत जोत कर रुशनाईआ। की पुकार कीती तेग़ बहादर कोल देग उबलण लग्गे दयाले, सीस सीस विच्चों निवाईआ। तेरी रहमत दे मेरे बदन उत्ते छाले, शाला बख्शणी इक सरनाईआ। कलयुग अन्त साची घालणा कोए ना घाले, गुरमुख नज़र कोए ना आईआ। भेखाधारी होए बाहले, बहु गिणती विच जणाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे सीस निवाईआ। अवतार कहिण जञ्जू बोदी तेरा खेल पंज तत बुत, बुतखाने वेख वखाईआ। असीं तेरे लाडले सुत, सतिगुर तेरी ओट तकाईआ। तूं साहिब स्वामी अबिनाशी अचुत, चार जुग तेरी सरनाईआ। सारा तैनूं दस्सीए दु:ख, दुखड़े विच कुरलाईआ। जननी पवित्र ना कोए कुक्ख, भगत जन्मे कोए ना माईआ। मात गर्भ उलटा रुक्ख, दस दस मास अगन तपाईआ। कलयुग वेख अन्धेरा घुप, हैरानी साडे अन्तर आईआ। प्रभू बैठ गए असीं चुप, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। हुण आप ना जावीं छुप, छापा मार थाउँ थाईंआ। साडीआं करनीआं साडे कोलों पुच्छ, पिच्छा सब नूं याद कराईआ। पर्दा उहला रहे ना लुक, लुक्यां लै उठाईआ। असीं तेरी सारे गाउणा चौहन्दे इक्को तुक, सोहँ ढोला बेपरवाहीआ। जो आदि दा रूप मानस मानुख, मानव रंग रंगाईआ। इस तों परे नहीं होर कुछ, पारब्रह्म ब्रह्म तेरा रूप नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम आपणी गोदी चुक, चारों कुण्ट हो सहाईआ। जन भगतां मेट तृष्ना भुक्ख, ममता मोह ना कोए हल्काईआ। जो जन्म कर्म दे गए रुठ, रुस्सआं लै मनाईआ। पुरख अकाले आपे तुठ्ठ, मेहर नज़र टिकाईआ। अवतार कहिण प्रभू तेरी सुहञ्जणी वेखीए रुत, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। साडी औध रही पुग, पूजणयोग तेरी सरनाईआ। तैनूं याद करदे आए सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग, जुग चौकड़ी तेरा
१४७९ ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज १४७९
२१ शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा तेज सूर्या जोत नाम जाए उग, उगण आथण तेरा नूर होए रुशनाईआ। २१

❊ २ सावण शहिनशाही सम्मत ५ करतार सिँघ ते सरबजीत दे विआह नवित्त हरिभगत दुआर जेठूवाल ❊

सीता कहे राम बनबासी, राम की राम विच वड्याईआ। मैं सेवक तेरी दासी, तूं किस नूं सीस निवाईआ। मेरे अन्तर आई उदासी, चिन्ता देणी मिटाईआ। राम ज़िमीं असमानां मारी झाती, निगाह अक्खविच्चों बदलाईआ। दिवस तक्कया राती, घड़ी पल खोज खुजाईआ। समां सुहञ्जणा प्रभाती, अमृत वेला वंड वंडाईआ। खेल समझाया पुरख अबिनाशी, हरि करता बेपरवाहीआ। जिस ने दो जहान रचाई रासी, रस्ता आपणा आप वखाईआ। ओह आदि अन्त दा नाती, नातवां रूप ना कोए दरसाईआ। सब दी मंज़ल वेखे वाटी, जुग जुग पर्दा लाहीआ। पुश्त पनाह मार के थापी, थपकी नाल

दिता दृढ़ाईआ। जिस दी ख़त्म ना होवे हयाती, ओह राम मेरा माहीआ। कदे ना बणे बनबासी, हर घट अंदर डेरा लाईआ। लख चुरासी सीता सुरती जिस दे चरण कँवल न्ाती, दुरमति मैल धवाईआ। रसना करे कोई ना पाठी, जिह्वा राग ना कोए अल्ाईआ। योद्धा सूरबीर बणे ना राठी, तरकश तीर कमान ना कंध उठाईआ। पाखर ज़ीन अस्व पावे ना काठी, रास हथ्थ ना कोए उठाईआ। सरोवर लहर ना मारे ठाठी, जल धार ना वंड वंडाईआ। मंज़ल मंज़ल ना कोए घाटी, हिस्सा वंड ना कोए रखाईआ। जिधर वेख्या उधर जोत प्रकाशी, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। जो सब दी पुच्छे बाती, वातावरन खोज खुजाईआ। बन्द ना होया कदी मज़हब बलाकीं, गज़ब दी आपणी खेल खिलाईआ। मेहर विच सब दी बख्श देवे गुस्ताख़ी, गुस्सा ग़म ना कोए समझाईआ। मैं उस राम दी मन्नां आखी, जो राम राम विच समाईआ। जिस दा खेल बाज़ीगर नाटी, जुग जुग आपणा स्वांग वरताईआ। सीता सति दी देवे दाती, दाता दानी दया कमाईआ। लेखा रहिण ना देवे बाकी, बाकायदा आपणा हुक्म वरताईआ। कदे ना करे शताबी, शरअ शरअ ना कोए टकराईआ। राम ने फेर वेख्या सीता गल्ल सुणावां साची, सच दयां दृढ़ाईआ। मेरा राम राम बड़ा फ़सादी, झगड़ा राम रावण विच कराईआ। आपणा खेल दस्स के काग़ज़ाती, क़लमां नाल लिखाईआ। सिफ्तां विच बण के साथी, सलाहां रंग रंगाईआ। धार होण ना देवे निरासी, प्यार आपणा नाम वखाईआ। सीता कढ्ढ के कोलों ग्लासी, उँगलां पंज हथ्थ उठाईआ। जे अमृत देवें अंमिउँ रस हयाती, आपणी दया कमाईआ। राम ने चरण धूढ़ पाई विच ख़ाकी, आपणे हथ्थ उठाईआ। नाले हस्स के किहा ओह वेख गोबिन्द वाली वसाखी, जिथ्थे राम रमया चार वरनां इक्को रंग रंगाईआ। साडे हिस्से सदी चौधवीं रखी इक इलाची, दाणा समझ किसे ना आईआ। बिना राम तों राम दी करे ना कोए खुलासी, खुलासा खोल्ह ना कोए समझाईआ। जिस राम ने पैग़म्बरां देणा फाँसी, की होया जे बनां विच भवाईआ। जिस राम ने कलयुग अन्तिम करना घाती, कौरव पांडव देण दुहाईआ। जिस राम ने मुहम्मद बणना अमदादी, कलमा कायनात दृढ़ाईआ। जिस राम ने नानक बणाउणा जमाती, अक्खर निरअक्खर धार पढ़ाईआ। जिस राम ने गोबिन्द बणना हमाइती, हमसाजण हो के वेख वखाईआ। उस राम दी सिफ्त काहदी, जो सिफ्तां तों परे डेरा लाईआ। जिस राम ने कालख मेटणी कलयुग शाह दी, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। जिस राम ने धार चलाउणी बेपरवाह दी, बेपरवाही विच समाईआ। जिस राम ने गुर अवतार पैग़म्बरां रसम करनी अलविदा दी, लेखा सब दा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक सुणाईआ। सीता कहे मेरे राम मेरे अन्तर रहे ना ग़म, ग़मी दे गवाईआ। नेत्र रोई छम्म छम्म, शमांदान ना कोए रुशनाईआ। फेर वेख्या बदन माटी चम्म, सिर

पैर खोज खुजाईआ। फेर दोवें हथ्थ रखे उपर कन्न, नैण मूंद ध्यान लगाईआ। जां तक्कया नूरी चन्न, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मुखों कहि के धन्न धन्न, धन्न राम तेरी दुहाईआ। कलयुग अन्तिम बेड़ा रिहा बन्नृ, बंधन तोड़े कूड़ लोकाईआ। सब दा कारज पूरा करे कम्म, गुर अवतार पैग़म्बर संग वखाईआ। एका भेव खुलृाए ब्रह्म, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। मानस ज़ात सब दा सति धर्म, मज़हबी वंड ना कोए वंडाईआ । जन भगतां लेखे लावे जरम, जन्म जन्म दी सेवा झोली पाईआ। लेखा रहे कोए ना करम, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। झगड़ा मुका के वरन बरन, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। उने चिर नूं दो राही डिग्गे चरण, साथी खर दूखण सोभा पाईआ। इक कहे राम तरनी तरन, तारनहार अख्वाईआ। इक कहे इस दे चरणी होवे मरन, मर जीवत रूप वटाईआ। इक कहे साचा करीए प्रन, प्रणाम कर के सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। इक कहे मेरे अन्तर आई विचारी, विच्चर के दयां सुणाईआ । दूसरा कहे राम पुरख ते सीता नारी, नार कन्त वज्जे वधाईआ। बैठे जंगल जूह पहाड़ी, बनां विच सोभा पाईआ। इक कहे राम दे मुख ते नहीं दाहढ़ी, दूजा कहे सीता रूप नज़री आईआ।
१४८१ पता नहीं एह जुग चौकड़ी बदलदे आपणी वारी, नित नवित्त आपणा खेल खिलाईआ। इक कहे असीं बणीए एस दे पुजारी, १४८१
२१ इष्ट इक्को इक मनाईआ। दूजा कहे जे फेर आवे ते आईए नाल दुबारी, आपणा फेरा पाईआ। सीता अन्तर सुण के आवाज़ २१
अगम्मी मारी, शब्द नाल शनवाईआ। जिस वेले राम दा राम होवे अवतारी, कल कल्की फेरा पाईआ। तुहाडी पैज देवे संवारी, स्वार्थ आपणे नाल रखाईआ। तुसीं वी इक पुरख होवो ते इक नारी, नाता निरगुण धार जुड़ाईआ। राम नेत्र अक्खउघाड़ी, वेख्या चाँईं चाँईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी देवे माण वड्याईआ। सीता कहे मेरे राम क्यों आया बेले जंगल, जगह जगह बदलाईआ। खा के मूल कंदन, आपणा झट लँघाईआ। किस नूं अमृत वेले साढे तिन्न करें बन्दन, सीस साढे तिन्न वार झुकाईआ। तेरा केहड़ा मुकन्द मुकन्दन, नूर नुराना सोभा पाईआ। पुठ्ठे हथ्थ कर के किस दे कोलों जावें मँगण, आपणी आस वधाईआ। कमान लाह के उत्तों कंधन, भथ्था ज़िमी उत्ते टिकाईआ। मथ्थे धूढ़ ला के चन्दन, उँगल तिन्न वार घसाईआ । फिर कच्चे तन्द दा बन्नृ के तन्दन, सज्जा गुँट वेख वखाईआ। फेर अन्तर कहे तेरा हुक्म ना होवे उलँघण, हुक्मे विच रखाईआ। फेर प्रेम प्रीती मँगें सगन, सगला संग जणाईआ। फेर गोदी बहें अंगण, सच दर वड्याईआ। फेर दीपक लग्गे जगण, नूर होवे रुशनाईआ। किस प्यार विच होवें मग्न, मुहब्बत मेरे नालों तुड़ाईआ। राम किहा सीता जिस राम दा नहीं बदन, तन वजूद ना कोए रखाईआ।

सड़े ना कदे अगन, जल ना कोए रुढ़ाईआ। देवे सद अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। मैं उस राम नूं करदा बन्दन, जिस राम नूं कलयुग जीवां कहिणा शौदाईआ। सीता रो के पाई डंडन, हाए हाए कर कुरलाईआ। राम धूढ़ी ख़ाक लग्गा वंडण, दोहां बुल्लां नाल छुहाईआ। झट वखाई गोबिन्द चण्ड प्रचण्डण, तिक्खी धार दरसाईआ। जो दुष्टां लग्गी दंडण, दुष्ट दमन रूप बदलाईआ। फेर इशारा कीता उत्ते गगन, मण्डलां परे पर्दा लाहीआ। फेर धरनी धरत धवल वखाई लख चुरासी नग्न, पर्दा सीस ना कोए टिकाईआ। फेर अन्त अख़ीर वखाई मंज़ल, मज़मून बिन अक्खरां दिता पढ़ाईआ। फेर दीन दुनी दा कर के वज़न, कंडे नाम वाले तुलाईआ। राम किहा वेख सीता गुरु चेले इक दूजे नूं छलण, वल छल विच ख़लक खुदाईआ। माया ममता विच सारे बलण, अगनी तत ना कोए बुझाईआ। कोटां विच्चों भगत सुहेले प्रभ दी गोदी पलण, जो पलक ना झल्लण जुदाईआ। सच प्रीती अंदर फलण, फल फूल पत्त टहिणी लहराईआ। सच दुआरा इक्को मल्लण, मालक मिल के ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच संदेस सुणाए बिना कन्नण, अवतार पैग़म्बर गुर शब्द धार समझाईआ।

१४८२ १४८२

२१ २१

❋ २ सावण शहिनशाही सम्मत ५ अजीत सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए ❋

अवतार कहिण साहिब साचे सुल्तान, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादी मेहरवान महिबान, महबूब तेरी बेपरवाहीआ। हउँ बालक तेरे नन्हे नादान, जुग चौकड़ी नित नवित्त सेव कमाईआ। तेरा नाम संदेसा सुणीए बिना कान, अनभव दृष्टी तेरा ध्यान लगाईआ। सति सरूपी नौजवान, मर्द मर्दान तेरे हथ्थ वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बीतिआ विच जहान, कलयुग कूड़ी क्रिया रही कुरलाईआ। चारों कुण्ट फिरे शैतान, शरअ छुरी जगत कसाईआ। आत्म ब्रह्म ना होवे ज्ञान, अनदृष्ट पर्दा ना कोए उठाईआ। नज़री आवे ना धुर दा काहन, बंसरीआं वाली ना कोए वड्याईआ। किरपा कर श्री भगवान, सच दवारे मँग मँगाईआ। माया ममता मोह मेट तुफ़ान, शौह दरयाए दे रुढ़ाईआ। हर हिरदे उपजे तेरा नाम, नाम निरँकारा इक जणाईआ। साचा कलमा हक़ कलाम, कायनात कर शनवाईआ। पैग़म्बरां तैनूं मन्नया अमाम, अमलां तों रहित बेपरवाहीआ। धुर दी धार बख़्श तुआम, तमअ तमन्ना कूड़ मिटाईआ। शरअ दा रहे ना कोए गुलाम, बंधन ज़ंजीर देणा कटाईआ। मन्दिर मस्जिद करे ना कोए हराम, सति धर्म देणा समझाईआ। नौ

१४८३ २१

खण्ड पृथ्मी वेख मैदान, सत्त दीप परदा आप चुकाईआ। सृष्टी दृष्टी होई हैरान, हैरत विच कुरलाईआ। जगत जिज्ञासू होए बेईमान, बेवा दिसे कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। अवतार कहिण प्रभ साजण सच स्वामी, सति सति तेरी सरनाईआ। घट निवासी अन्तरजामी, पुरख अबिनाशी नूर अलाहीआ। बोध अगाध दे बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। झगड़ा रहे ना चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज दे सुणाईआ। प्रेम प्रीती दस्स जीव प्राणी, प्राण अधारी हो के वेख वखाईआ। लेखा मुका मढ़ी मसाणीं, पाउण पाणी अग्नी तत गवाईआ। सच दुआर दी दे निशानी, निशाना अवर ना कोए रखाईआ। सदी चौधवीं कर मेहरवानी, मेहरवान महबूब तेरे क़दमां सीस झुकाईआ। कायनात दिसे फ़ानी, फनाफिल्ला दिसे लोकाईआ। गढ़ ग़रूर तोड़ अभिमानी, माया ममता दे मिटाईआ। भेव खुल्हाया आलमे जाबिदानी, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जिस कारण गोबिन्द बच्चयां दी दे के गया क़ुरबानी, करबला लेखा वेख वखाईआ। क्यों राम ने हथ्थ धरया मस्तक पेशानी, उँगलां ढाई तिन्न छुहाईआ। क्यों कृष्ण ने अर्जन तीर चलाया कानी, सतरां ढाई नाल वड्याईआ। क्यों नानक झगड़ा वेख्या चार जुग दीवानी, सतिजुग त्रेता द्वापर फोल फुलाईआ। क्यों गोबिन्द जुझार नूं दिता मूल ना पाणी, गढ़ी चमकौर दए गवाहीआ। किष्उँ चार कुण्ट दह दिशा वधी बेईमानी, सति सच ना कोए कमाईआ। परम पुरख परमात्म आत्म कर परवानी, घर साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर साचे वज्जे वधाईआ। अवतार कहिण प्रभ साहिब स्वामी ठाकर, ठोकर आपणे नाम लगाईआ। गहर गम्भीर डूँघे सागर, गवर तेरी ओट तकाईआ। लेखा वेख साढे तिन्न हथ्थ गागर, काया माटी काची फोल फुलाईआ। तेरे नाम दा रिहा ना कोए सौदागर, वणज व्यपारा नज़र कोए ना आईआ। जिस कारण सीस दिता तेग़ बहादर, जगदीश लेखा देणा चुकाईआ। सदी चौधवीं करीम क़ादर, क़ुदरत करते वेख वखाईआ। भगतां मिले कोए ना आदर, सन्तां सच ना कोए वड्याईआ। सब दा निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। दृष्टी रहे किसे ना पाग़ल, पारब्रह्म लैणा मिलाईआ। तेरे हथ्थ अन्त अख़ीर आदल, इन्साफ़ इक्को इक कमाईआ। कलयुग अन्धेरा मेट दे बादल, बदली सतिजुग नाल बदलाईआ। शरअ दा रहे कोए ना क़ातल, मक़तूल वंड ना कोए वंडाईआ। धाम दस्स मुक्दस बैतुल, बातल आपणा पर्दा लाहीआ। तेरा नाम सारे वाचण, वाचक हो के खोज खुजाईआ। कलयुग अगन बुझा दे आंचन, अमृत मेघ इक बरसाईआ। पर्दा भेव रहे ना बातन, शब्द नाद धुन शनवाईआ। खेल वेख पृथ्मी आकाशन, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। हउँ सेवक दासी दासन, दर ठांडे मँग मँगाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि पुरख अबिनाशण, अबिनाशी करते तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✻ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ बीबी चरणो दे गृह पिंड मांगा सराए ✻

अवतार कहिण तेरे नाम दी तक्कीए भगौती, भगवन भगवान देणी दरसाईआ। जो झगड़ा मेटे दीन दुनी अदौती, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। सच धर्म दी करे मनौती, मन मनसा मेट मिटाईआ। शरअ कल्पणा रहे ना बहुती, बौहड़ी बौहड़ी ना करे लोकाईआ। जिस मंज़ल ते कलयुग धार मूल ना पहुंची, सो दुआरा दए दरसाईआ। भगतां आत्म होए ना औंती, सौंतरे सब नूं दए बणाईआ। चार जुग तेरी भरदे रहे चौंकी, सेवक हो के सेव कमाईआ। कूड़ कल्पणा बुद्धी बदल दे काउँ की, हँस गुरमुख लै बणाईआ। माण वड्याई दे आपणी छाउँ की, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। मुहब्बत बख्श पिता माउँ की, मात पित आप हो आईआ। लाज रख पकड़ी बाहों की, गोबिन्द गुर गुर नाल मिलाईआ। वड्याई रह जाए साढे तिन्न हथ्थ ग्राउँ की, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। इक्को पत होवे रंक राउ की, अमीर ग़रीब ना वंड वंडाईआ। साची लहर वखा दे नईआ नाउँ की, जगत वहिण ना कोए वहाईआ। की खेल तेरे पसाओ की, पसर पसारी देणी दृढ़ाईआ। की कार हुक्म अलाउ की, अलाह आलमीन देणा जणाईआ। साडे अन्तर खुशी आवे चाउ की, चाउ घनेरा इक उपजाईआ। आदत रहे ना कूड़ी दाउ की, साचा मार्ग इक दरसाईआ। अटकण रहे ना किसे रहाउ की, रहरास इक जणाईआ। वहिण दिसे ना किसे दरयाओ की, जल थल ना कोए प्रगटाईआ। तेरी खेल तक्कीए शहिनशाहो की, शाह पातशाह देणी वखाईआ। लहर वेखीए रघुपति रघुराउ की, राम रहीम तेरी सरनाईआ। ढहिंदी कला ना रहे ग्राउँ दी, गुरु गुरदेव होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी खेल सच अल्लाहो की, असल वसल यार समझाईआ।

✻ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ दर्शन सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए ✻

अवतार कहिण साडा दीन दुनी तोड़ दे नाता, नर नरायण मँग मँगाईआ। झगड़ा मेट दे ज़ाता पाता, दीनां मज़हबां कर सफ़ाईआ। इक्को नाम दस्स दे गाथा, गहर गम्भीर कर पढ़ाईआ। आत्म परमात्म होवे साथा, एथे ओथे सगला संग

बणाईआ। कलयुग अन्तिम मेट दे वाटा, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। सानूं सब नूं आया घाटा, पल्लू गंढु ना कोए रखाईआ। वेख खेल बाज़ीगर नाटा, स्वांगी आपणा स्वांग वरताईआ। तुध बिन दिसे कोई ना दाता, देवणहार ना कोए अख्वाईआ। सानूं चार जुग दा दरजा मिल्या चाचा, पिता सक्कया ना कोए अख्वाईआ। धरनी धरत धवल वेख अहाता, नव सत्त फेरा पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी तेरीआं पावे बातां, बातन पर्दा दए उठाईआ। तूं पुरख अकाल दीन दयाल आत्म परमात्म साका, सज्जण इक्को नूर अलाहीआ। तैनूं झुकदे गुरु अवतार पैग़म्बर देवी वाली लाटा, दुर्गा अष्टभुज सरनाईआ। सच सिँघासण सुहा खाटा, खटका अवर रहे ना राईआ। गोबिन्द भरपूर कर बाटा, अमृत धार जल भराईआ। तेरा इक्को होवे पूजा पाठा, सिमरन इक्को नाम वड्याईआ। इक्को गृह होवे तीर्थ ताटा, अठसठ ना वंड वंडाईआ। हउँ सेवक दासी दासा, याचक हो के सेव कमाईआ। तूं निरगुण नूर जोत प्रकाशा, प्रकाशवान वेख वखाईआ। राह तक्कण पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर अक्खखुल्हाईआ। दीन दुनी बदल दे पासा, पेशतर आपणा हुक्म जणाईआ। तेरा हर घट अंदर वासा, लख चुरासी रिहा समाईआ। क्यों सदी चौधवीं वेखें खेल तमाशा, चारों कुण्ट पर्दा लाहीआ।
१४८५ सच प्रीती जोड़ दे नाता, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। तूं मालक ख़ालक प्रितपालक इक्को आक़ा, अक़ल बुद्धी समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धर्म दी धार पावे रासा, रास्ता बावास्ता हो के इक जणाईआ। १४८५

३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ सुरजन सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए

अवतार कहिण प्रभ किरपा कर उपर बसुधा, धरनी धरत धवल धौल दया कमाईआ। सब दा भउ मिटा दे दूजा, दुतिया रहिण कोए ना पाईआ। अन्तर पर्दा उठा दे गुझा, गहर गम्भीर आपणा रंग रंगाईआ। साचा नाम बख़्श दे सुधा, सुधासर अमृत धार वहाईआ। कलयुग कूड़ चारों कुण्ट कुद्दा, दह दिशा कीती हल्काईआ। तेरा समझ सक्कया ना कोए मुद्दा, मुद्दतां दे मालक वेख वखाईआ। तेरे नाम दा लए कोए ना भुग्गा, क़ीमत हट्ट ना कोए पवाईआ। तेरा शब्द बाज़ आदि जुगादि दो जहान उडा, ज़िमीं असमानां परे वखाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर सब दा ख़ाली कर हुक्का, हुक्म आपणा इक सुणाईआ। मज़हब दा रहे कोए ना दुक्खा, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। सुफ़ल करा दे धरत मात दी कुक्खा, जन भगत लै उपजाईआ। तैथों रहे कोए ना रुठ्ठा, जुग जन्म दे विछड़े गोद टिकाईआ। चार वरन कर दे इक मुट्ठा, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र

वैश वंड ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा भगत मात गर्भ ना लटके पुट्ठा, दोज़ख मिले ना कोए सज़ाईआ।

✻ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ प्रीतम सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए ✻

अवतार कहिण प्रभ लोकमात हिस्सा मुका पत्ती, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। तेरे प्यार विच फ़र्क रहे ना रत्ती, रतन अमोलक हीरे गुरमुख लै प्रगटाईआ। आत्म जोत जगा अगम्मी बत्ती, बातन पर्दा दे उठाईआ। तेरे चरण सरन तेरे होवण सती, सति सतिवादी रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मनमती, माया मोह ना चले चतुराईआ। तैनूं उडीकदयां नानक धार याद कीता जुग छत्ती, छत्ती राग सिफ्त सालाहीआ। सृष्टी दृष्टी फिरदी नठ्ठी, नव नौ भज्जे वाहो दाहीआ। तुध बिन चार खाणी करे ना कोए इक्ठी, वरन बरन पन्ध ना कोए मुकाईआ। सच नाम पढ़ा पट्टी, पटने वाले दे माण वड्याईआ। मेहर निगाह नाल सब दी कर गति, गति मित आपणे हथ्थ रखाईआ। चरण प्रीती जोड़ नत्ती, साक सज्जण इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन तेरी किरपा धरनी धरत धवल धार कदे ना वसी, सच रंग ना कोए समाईआ।

✻ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ बचन सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए ✻

अवतार कहिण प्रभ दीन दुनी बदल समाज, समग्री आपणा नाम वरताईआ। नेत्र लोचन अक्खखोल् सब दी जाग, आलस निंदरा विच सोया रहिण कोए ना पाईआ। काया माटी तन वजूद ला भाग, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर अंदर दया कमाईआ। तेरा दीपक जोत जगे चराग़, अन्ध अन्धेरा देणा गवाईआ। त्रैगुण माया बुझे आग, अगनी तत ना कोए तपाईआ। आत्म परमात्म स्वामी मिल कन्त सुहाग, सच स्वामी वेस वटाईआ। कलयुग जीव बुद्धी रहे ना काग, हँस गुरमुख लै प्रगटाईआ। हर हिरदे आपणा दे वैराग, वैरी काम क्रोध लोभ मोह हँकार अंदरों दे कढ्ढाईआ। सति धर्म चला जहाज़, नईआ नौका कलयुग कूड़ी क्रिया दे डुबाईआ। विकारी हँकारी विभचारी रहे कोए ना साध, कुकर्मी कुकर्म ना कोए कमाईआ। साची सिख्या दे बोध अगाध, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को कर पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई तैनूं लए अराध, इष्ट देव इक्को नज़री आईआ। धुन आत्मक तेरा वज्जे नाद, अनहद नादी कर शनवाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना वाद विवाद, विख अंदरों बाहर कढ्ढाईआ।

लख चुरासी वेख आपणा बाग़, फुल्ल फुलवाड़ी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण धार हरि निरँकार, पुरी लोअ खण्ड ब्रह्मण्ड तेरा दो जहानां होवे राज, रईयत आत्म परमात्म लै बणाईआ।

❊ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ महिन्दर सिँघ दे गृह पिंड मांगा सराए ❊

अवतार कहिण प्रभ साडा रिहा कोए ना इष्ट, इष्ट देव आत्म परमात्म ना कोए प्रनाईआ। सिख्या भुल्ली राम वशिष्ट, विषयां विच कूड़ लोकाईआ। धर्म दी धार खुल्ले ना किसे दृष्ट, दिब्ब नेत्र अक्खना कोए उठाईआ। मन विकारी भोगे गृहस्त, गृह गृह कूड़ कमाईआ। ममता मोह होया इश्क, हक़ीक़ी मजाज़ी दोवें गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। अवतार कहिण प्रभ जगत रिहा कोए ना माण, सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। सिर झुके ना कोए श्री भगवान, मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ बैठे सीस निवाईआ। नज़री आए ना किसे काहन, नाम बंसरी धुन ना कोए शनवाईआ। मिले मेल ना राम दे राम, दशरथ बेटा मन्न के सारे ढोला गाईआ। किरपा कर नौजवान, नर नरायण आपणा पर्दा लाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट जहान, जागरत जोत होवे रुशनाईआ। सारे नाम ढोला गीत तेरा गाण, चार वरन अठारां बरन इक पढ़ाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सीस झुकाण, शरअ मज़हब ना कोए लड़ाईआ। तेरी सिफ्त करे अञ्जील क़ुरान, महिमा शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे गाईआ। तूं आदि जुगादि सचखण्ड निवासी मिहबान, बीख़ैरया अलाह तेरी इक वड्याईआ। क़ुदरत दे क़ादर हो निगाहबान, दीन दुनी दे मालक ख़ालक आपणा भेव चुकाईआ। सदी चौधवीं साबत रिहा ना किसे ईमान, मुल्ला शेख मुसायक देण दुहाईआ। चारों कुण्ट कूड़ तुफ़ान, सति धर्म गया रुढ़ाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ फिरे शैतान, विभचार कुकर्म करे लोकाईआ। जगत साध सन्त होए बेईमान, आत्म ब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। अवतार पैग़म्बर गुरु गुरदेव स्वामी तेरे धरन ध्यान, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। अवतार कहिण प्रभू साडी इक अर्ज़ोई, अर्ज़ आजज़ हो के रहे जणाईआ। तेरे नाम मिले किते ना ढोई, ढोलक छैणे सारे रहे खड़काईआ। कोटां विच्चों गुरमुख विरला कोई, भगत सुहेला तेरा दर्शन पाईआ। जां तक्कया सृष्ट सबाई सुरती सोई, शब्दी नाद ना कोए सुणाईआ। चारों कुण्ट फिरी दरोही, तोबा तोबा करे ख़लक ख़ुदाईआ। बिन तेरी किरपा तेरी सृष्टी

मोई, मर जीवत रूप ना कोए बदलाईआ। आपणी पत सब ने आपे खोई, ख़ालक ख़लक तेरी मिले ना किसे सरनाईआ। अमृत बूँद स्वांत किसे ना चोई, लोचण नैण अक्खना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। अवतार कहिण साडी औध पुग्गी, कलयुग अन्तिम देण सुणाईआ। तेरी धार बदलदी आई जुगी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। तेरा लेखा समझे कोए ना वदी सुदी, किशना शुक्ला पक्ख ना कोए समझाईआ। अन्त खेल मेट दे दूजी, दूआ एका रूप बदलाईआ। आपणी रमज़ मार दे गुज्झी, सोई सुरती लै उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। अवतार कहिण पुरख अकाले मार झात, झाकी आपणी इक रखाईआ। लेखा वेख क़लम दवात, जो कागद जोड़िआ नाल शाहीआ। धर्म दी रहे ना कोए जमात, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। प्रेम प्रीती जुड़े किसे ना नात, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा देवे कोए ना साथ, सगल सृष्टी तैनूं गई तजाईआ। साची मंज़ल चढ़े कोए ना घाट, रहिबर राह ना कोए वखाईआ। नेत्र रोंदे जोगी सिद्ध नाथ, तपीशर जुगीशर रहे कुरलाईआ। पैग़म्बर धार आवे ना हाथ, ईसा मूसा मुहम्मद दए गवाहीआ। तेरा
१४८८ खेल अगम्म अथाह अबिनाश, अबिनाशी करते सार किसे ना पाईआ। हउँ सेवक तेरे दास, दासी हो के मँग मँगाईआ। १४८८
२१ कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट हो आप, कल कल्की आपणा नाउँ धराईआ। सम्बल नगर थापण थाप, वक्त सुहञ्जणा इक वड्याईआ। कूड़ कल्पणा मेट पाप, पतित पुनीत दे कराईआ। सब दा सांझा होवे जाप, इक्को कलमा तेरा नाम ध्याईआ। तूं लख चुरासी माई बाप, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। पिछला लहिणा सब दा काट, कटाकश इक्को आपणा हुक्म वखाईआ। अवतार कहिण तेरी चरण धूढ़ झुक झुक लाईए मस्तक माथ, टिक्के टाईम वाले रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि नित नवित्त जुग चौकड़ी एथे ओथे दो जहान तेरे उत्ते विश्वास, विश्व दे मालक कूड़ विषयां दा झगड़ा देणा मुकाईआ। २१

✻ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ जगीर सिँघ दे गृह पिंड मैणीआं ✻

अवतार कहिण प्रभ साडी पूरी कर मनसा, मानस मानव मानुख आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग जीव काग बणा हँसा,

आत्म परमात्म सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म आपणा पर्दा लाहीआ। साची सिख्या दे बण बोध अगाधा पंडता, अक्खरां तों परे निरअक्खर धार दे समझाईआ। चार वरन अठारां बरन मेल कर साची संगता, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले इक्को होवे तेरी मन्नता, दो जहान दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तेरा खेल आदि जुगादि जुग चौकड़ी अन्ता, अन्तश्करन बदल ख़लक ख़ुदाईआ। झगड़ा रहे ना कूड़ा मन दा, ममता मोह विकार देणा गवाईआ। मन्दिर सुहा साढे तिन्न हथ्थ काया तन दा, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। कर प्रकाश अगम्मी चन्न दा, अन्ध अज्ञान दे गवाईआ। अन्तर निरंतर तेरा नाद वज्जे धन्न धन्न दा, नाद अनादी आपणी कर शनवाईआ। झगड़ा मुक जाए शब्द सुणना सरवण कन्न दा, धुन आत्मक राग दे दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम जाए लँघदा, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। रस दे दे निझर आपणे अनन्द दा, अनन्दपुर वासी नाल मिलाईआ। घर सुहा दे आत्म सेज पलँघ दा, मन्दिर गृह वज्जे वधाईआ। झगड़ा मुके दुहागण रंड दा, सच सुहागण वेख वखाईआ। वेख खेल आपणे ब्रह्मण्ड खण्ड दा, पुरी लोअ आकाश पाताल गगन गगनंतर फोल फुलाईआ । चार युग भेव खुल्हिआ ना परम पुरख तेरे नाम

१४८९ छन्द दा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी तेरी सिफ्त सालाहीआ। लेखा ला लै पवण स्वासी दम दा, १४८९

२१ दामनगीर आपणी गंढु पवाईआ। झगड़ा मुका दे हरख सोग ग़म दा, ग़मख़ार तेरी बेपरवाहीआ। लेखा रहे ना काया माटी चम्म दा, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप इक्को भेव खुल्हा दे आपणे नाम दा, कलमा कायनात जणाईआ। २१

अमृत रस प्या दे हक़ीक़ी जाम दा, अठ्ठ सठ्ठ दी लोड़ रहे ना राईआ। कूड़ अन्धेर मिटा दे शाम दा, सतिजुग शमां सच रुशनाईआ। बंधन कट दे शरअ ज़ंजीर मज़हब ग़ुलाम दा, मानव वंड ना कोए वंडाईआ। धर्म वखा दे आपणे निशान दा, निशाना इक्को इक लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सचखण्ड दवारे मँग मँगाईआ। अवतार कहिण प्रभ साडी अगम्मी अरदास, दर ठांडे सीस निवाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर नास, नास्तिक अस्तिक रूप बदलाईआ। हर हिरदे आपणा दे विश्वास, विषयां विच्चों कढु लोकाईआ। मनुआ मन ना रहे बदमाश, बदी दा डेरा देणा ढाहीआ। साचे मण्डल वखा रास, सुरती शब्द गोपी काहन नचाईआ। तेरे नाम दा वज्जे नाद, अगम्मी राग अल्हाईआ। तेरा नूर होवे प्रकाश, जोती जोत डगमगाईआ। कलयुग अन्त मेट दे वाट, अग्गे अवर ना कोए वधाईआ। सब दा चीथड़ गया पाट, काया कप्पड़ ना कोए सुहाईआ। जिधर तक्कीए अन्धेरी रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सति धर्म दी रही ना कोई जमात, कूड़ी क्रिया कूड़ हल्काईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाए कोई ना गाथ, आत्म परमात्म जोड़ ना

कोए जुड़ाईआ। निउँ के सीस निवा त्रैलोकी नाथ, काहना कृष्णा धूढ़ी मस्तक ख़ाक रमाईआ। रामा निउँ निउँ रिहा झाक, मेरे राम तेरी सरनाईआ। पल्ले रिहा किसे ना साच, सति विच ना कोए समाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीनां मज़हबां करे लड़ाईआ। जो संदेसा गया आख, अक्खरां विच लिखाईआ। तिस दा देवे कोए ना साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। साडी अन्त अख़ीरी कट दे वाट, वाहवा तेरी वज्जे वधाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। आदि निरँजण दे दात, एकँकार झोली पाईआ। हरि पुरख निरँजण पुच्छ वात, सो पुरख निरँजण हो सहाईआ। तेरा खेल जगत तमाश, दीन दुनी तेरी वड्याईआ। सब नूं इक्को दस्स दे जाप, दो जहान तेरी पढ़ाईआ। तूं पुरख अकाला दीन दयाला साहिब स्वामी सब दा बाप, पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। कलयुग अन्तिम असीं सारे गए कांप, साडी चले ना कोए चतुराईआ। रूह बुत ना दिसे पाक, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। अवतार कहिण पुरख अकाले कर ग़ौर, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। दो जहानां आपे दौड़, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। दरगाह साची ला पौड़, नाम डण्डा इक वड्याईआ। कलयुग अन्तिम तेरी लोड़,

१४९०
२१

दूजा अवर ना कोए सहाईआ। दीनां मज़हबां प्या खोर, दूई द्वैत वंड वंडाईआ। कलयुग साध सन्त बण गए चोर, ठग्गी तेरा नाम कमाईआ। साचे चढ़े कोई ना घोड़, शाह सवारा नज़र कोए ना आईआ। सब दी नीती होई होर, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। परम पुरख प्रभ आपे बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी तेरी दुहाईआ। मन कल्पणा मेट शोर, शौहर बांके वेख वखाईआ। बलहीण रिहा ना ज़ोर, जोरू ज़र रिहा कुरलाईआ। बिन तेरी किरपा भाग होवे ना किसे मथौर, सीस जगदीश हथ्थ ना किसे टिकाईआ। कलयुग जीवां बुद्धी होई ढोर, अमृत रस ना कोए चखाईआ। आपणा फ़ुरना फोर फोर, धुर दा नाम कर शनवाईआ। सब दी तेरे हथ्थ डोर, आत्म परमात्म गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। अवतार कहिण प्रभ दीन दयाल साडी बन्दन, बन्दगी डंडावत इक जणाईआ। कलयुग क्रिया कट दे बंधन, ममता मोह रहे ना राईआ। साचा धूढ़ी टिक्का ला चन्दन, चेतन सुरती दे कराईआ। नाम खुमारी दे अनन्दन, निजानंद विच समाईआ। बिन तेरे कोई ना आवे टुट्टी गंढुण, नाता बिधाता वेख वखाईआ। सतिगुर शब्द उठा चण्ड प्रचण्डण, ब्रह्मण्ड खण्ड फोल फुलाईआ। बिन तेरे दुष्टां कोई ना आवे दंडण, दाअवेदार नज़र कोए ना आईआ। दरवेश हो के तेरे कोलों लग्गे मँगण, तेई अवतार झोली डाहीआ। किरपाल दयाल सानूं रख अंगण, अंगीकार इक हो जाईआ। साडा तन वजूद नहीं कोई बदन, जोती धार सीस झुकाईआ। मातलोक वेख आपणा वतन,

जिथ्थे बेवतन बैठे डेरा लाईआ। कलयुग अन्तिम सतिजुग साचा दस्स पत्तन, तट किनारा इक्को इक सुहाईआ। जन भगतां दरस दिखा निज नेत्र अक्खण, लोइण आपणा इक खुल्हाईआ । सन्त सुहेले तेरी सरन वसण, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। गुरमुख लख चुरासी विच्चों विरोल मक्खण, चारे खाणी फोल फुलाईआ। तेई अवतार कहिण तुध बिन जुग जुग कोई ना आवे पैज रखण, सहायक नायक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी धुर दी धार चाढ़ दे रंगण, रंगत आपणा नाम रंगाईआ।

१४९१

२१

❋ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ मुख्त्यार सिँघ दे गृह पिंड गगोबूआ ❋

अवतार कहिण प्रभ तेरे अग्गे साडी निमस्कार, नमों नमों सीस निवाईआ। तेरे नाम दा होवे इक जैकार, दीन दुनी इक्को नाम ध्याईआ। झगड़ा मज़हब मेट विच संसार, संसारी भण्डारी सँघारी बैठे सीस निवाईआ। चरण प्रीती एकँकार दे इक अधार, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। साचा मन्दिर सोहे तेरा इक दुआर, धर्म दी धार दे इक प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सब दी होवे वार, वारस हो के दे समझाईआ । कलयुग कूड़ी क्रिया मेट अन्ध अंध्यार, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। तेई अवतार तेरे सेवादार, बच्चे नन्हे मँग मँगाईआ। चारों कुण्ट वेख हाहाकार, दीन दुनी रही कुरलाईआ। पिता पूत ना रिहा प्यार, भैण भाई सगला संग ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट धूआँधार, धर्म दा चन्द ना कोए चमकाईआ। तुध बिन कोए ना पावे सार, मेहरवान तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। अवतार कहिण प्रभ वेख कलयुग अन्ध, सृष्टी दृष्टी फोल फुलाईआ। भरमां ढाहे कोई ना कंध, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। आत्म परमात्म प्रीती सके ना कोए गंढ, टुट्टी जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। निज गृह मिले ना किसे अनन्द, अनन्दपुर वाला जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। माया ममता मोह विकार वध्या घमंड, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। किरपा कर सूरे सरबंग, शाह पातशाह तेरी इक शरनाईआ। जन भगत सुहेले ला अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। सदी चौधवीं सारे होए नंग, नाम पर्दा सीस ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। अवतार कहिण प्रभ साबत रिहा ना कोए सरीर, पंज तत ना कोए वड्याईआ। सूफ़ी मिले ना कोए फ़क़ीर, कलमा हक़ ना कोए

जणाईआ। सन्त बदले ना कोए तक़दीर, तबा तबीअत ना कोए बदलाईआ। झगड़ा प्या शाह हकीर, अमीर ग़रीब करे लड़ाईआ। हउमे घर घर वधी पीड़, दुःख दर्द ना कोए मिटाईआ। लेखा वेख हस्त कीट, कीट कीटां खोज खुजाईआ। साडा अन्तर होया दिलगीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। किरपा कर गुणवन्त गहर गम्भीर, गवर तेरी ओट तकाईआ। नाम खण्डा फड़ शमशीर, शरअ ज़ंजीर दे तुड़ाईआ। जो आसा रख के गया कबीर, बिना काअबिआं तेरा नूर चमकाईआ। ओस दा वेख अन्त अख़ीर, आख़र हो सहाईआ। तेई अवतार वहाउँदे नीर, बिन नैणां छहिबर लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नाम निधान बख्श आपणा सीर, रस इक्को इक चखाईआ।

१४९२
२१

❋ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ कर्म सिँघ दे गृह पिंड गग्गोबूआ ❋

अवतार कहिण साडे अन्तर आई प्रभ चिन्दा, चिन्ता वेखी थाउँ थाईंआ। जिधर वेखीए दीन मज़हब इक दूजे दी करन निंदा, तेरा नाम कलमा समझ कोए ना पाईआ। सति धर्म दी साची दिसे कोई ना बिन्दा, जननी जन नूर ना कोए चमकाईआ। प्रकाश दिसे ना किसे जीउ पिंडा, पंच विकारा अगनी रही जलाईआ। अमृत रस धार वहाए ना कोए सिन्धा, काया गागर डूँघा सागर ना कोए वड्याईआ। मेल मिले ना किसे गहर गम्भीर गुणी गहिन्दा, पारब्रह्म ब्रह्म तेरा जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मार्ग चले विंगा, सुखमन टेडी बंक पार ना कोए कराईआ। नेत्र रोवे करोड़ तत्तीसा सुरप्त इंदा, विष्न ब्रह्मा शिव देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, आदि अन्त प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। अवतार कहिण प्रभ सच रिहा ना कोए इन्साफ़, अदल अदालत ना कोए कराईआ। जन्म कर्म दा लेखा करे ना कोए मुआफ़, सन्त सतिगुर सीस हथ्थ ना कोए टिकाईआ। मन कल्पणा मेटे ना कोए गुस्ताख़, मोह हँकार विकार अंदरों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। तेरा नाम निधान श्री भगवान सके ना कोए वाच, अक्खर विद्या पढ़ पढ़ दीन दुनी होई हल्काईआ। साहिब सुल्तान नौजवान मर्द मर्दान कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सच कर रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना दीन मज़हब ज़ात पात, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक्को रंग दे रंगाईआ। तेरा नाम कलमा होवे इक इक्को तुलबिआं होवे जमात, नौ खण्ड पृथ्मी इक्को कर पढ़ाईआ। हर हिरदे अन्तर निरंतर रख वास, वास्ता आत्मा परमात्मा नाल जुड़ाईआ। असीं तक्कीए उपर आकाश, तेरे खेल उपर पृथ्मी जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच भरवास, समुंद सागर

पर्दा दे उठाईआ। चार कुण्ट दह दिशा तेरा नूर होवे प्रकाश, जोती जाते डगमगाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान सब दे सिर ते रख हाथ, पुश्त पनाह आपणी दया कमाईआ। जो भविख्तां विच सरगुण धार आए आख, निरगुण निरवैर पूरा दे कराईआ। हउँ सेवक तेरे बाले चरण दास, याचक हो के सेव कमाईआ। तेई अवतार कहिण प्रभ साडी इक अरज़ोई इक्को तेरे अग्गे बात, बातन पर्दा दे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मन कल्पणा रहे ना कोए गुस्ताख़, सति सच हर हिरदे दे वसाईआ।

❊ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ जगीर सिँघ दे गृह पिंड गग्गोबूआ ❊

अवतार कहिण प्रभ वेख तत अठ्ठ, तन माटी खोज खुजाईआ। धीरज रिहा ना कोए हट्ठ, सति सन्तोख ना कोए जणाईआ। भाग लग्गे ना काया मठ, तन वजूद ना कोए रुशनाईआ। फिरी दरोही अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। सच नाम दा मिले ना इक हट्ट, धुर दी वस्त ना कोए वरताईआ। अवतार पैग़म्बर गए थक्क, सिफ्तां विच तेरी सिफ्त सालाहीआ। अन्तिम वेख हक़ीक़त हक़, लाशरीक पर्दा लाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी उबले रत्त, सांतक सति ना कोए कराईआ। अन्तर रही ना किसे गुरमति, मनमति होई हल्काईआ। तुध बिन रखे कोए ना पति, पतिपरमेश्वर हो सहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर गया नठ, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। दीन मज़हब दी मेटे ना कोए वट्ट, हदूद हद्द ना कोए गवाईआ। सच नाम दा लाहा सके ना कोए खॅट, खटका अंदरों ना कोए चुकाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, साहिब सुल्तान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। अवतार कहिण प्रभ कलयुग वेख किनारा, नव नौ चार खोज खुजाईआ। सति धर्म दा दए ना कोए सहारा, सीस जगदीश हथ्थ ना कोए टिकाईआ। घर घर वेख्या हउमे हंगता गढ़ हँकारा, निम्रता विच ना कोए समाईआ। सति सच तेरा नाम लाए ना कोए अखाड़ा, कलयुग माया ममता वेसवा नाच नचाईआ। त्रैगुण माया अगनी अग्ग लगाए हाढ़ा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। झगड़ा प्या पुरख नारा, पिता पूत करे लड़ाईआ। किसे कम्म ना सीता राम जैकारा, राधा कृष्णा ना कोए चतुराईआ। नेत्र सारे रोवण ज़ारो ज़ारा, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। बेअन्त बेपरवाह पा सारा, महासाथी आपणा वेस वटाईआ। तैनूं कहि के आए चौवीवां अवतारा, कल कल्की इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

१४९४

२१

आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तेरे नाम दी इक वड्याईआ। अवतार कहिण दीन दयाल आपणी दुनी तक, सचखण्ड निवासी ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट ना रिहा सच, जूठ झूठ वज्जी वधाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर गए छड्ड, नास्तिक रूप होई लोकाईआ। आत्म परमात्म कर के अड्ड, प्रभू तैनूं रहे भुलाईआ। विश्व धार समझे ना कोए यद्द, भगत भगवान ना रंग रंगाईआ। गृह मन्दिर अंदर लए ना कोए सद्द, काया काअबे ख़ुशी ना कोए मनाईआ। साचे हुजरे वेखे ना कोए हज्ज, महबूब मुहब्बत विच मिलण कोए ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान सारे पढ़ पढ़ गए थक्क, अन्तर आत्म पर्दा ना कोए उठाईआ। मेहरवान महबूब सदी चौधवीं कूड़ी मेट हद्द, हदूद आपणी इक समझाईआ। तेरी धार तेरा आत्म तेरे नालों रहे ना कोए अलग, वखरा गृह ना कोए सुहाईआ। जन भगतां दर्शन दे उपर शाह रग, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। कलयुग कूड़ कल्पणा बुझे अग्ग, सांतक सति सति कराईआ। तेई अवतार लोकमात रहे सद्द, सद्दा देवण थाउँ थाईंआ। बिन हरि नामे ख़ाली होए सब दे हड्ड, नाड़ बहत्तर रही कुरलाईआ। किरपा कर साहिब समरथ, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि करता नूर अलाहीआ। अवतार कहिण प्रभ देख आपणी दुनी, दाअवे नाल जणाईआ। साचा रिहा ना कोए ऋषी मुनी, मुनीश्र रूप ना कोए दरसाईआ। अन्तर सुणे ना कोए धुनी, नाद शब्द ना कोए शनवाईआ। धर्म दा दिसे कोए ना गुणी, गुणवन्त नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी सृष्टी छाणी पुणी, मानव मानव फोल फुलाईआ। भाग दिसे ना किसे कुली, साढे तिन्न हथ्थ काया ख़ाली नज़री आईआ। तेरा नाम रसना जपदे सारे बुल्लीं, हिरदे अंदर ना कोए वसाईआ। सखी सहेली तेरे कंडे कोए ना तुली, तुलसी रमायण कम्म किसे ना आईआ। सदी चौधवीं मुहम्मद फुलवाड़ी फुल्ली, ईसा मूसा दए गवाहीआ। उम्मत नबीआं राह भुल्ली, रहमत हक़ ना कोए कमाईआ। तुध बिन अवर ना दिसे कोई सुल्हकुली, कुलमालक वेख वखाईआ। धरनी धरत धवल धौल माया ममता विच रुली, मनसा मोह ना कोए मिटाईआ। सब दी काया बिरछ टाहणी हुल्ली, फल फुल्ल नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर आपणे चरणां दे धूली, धूढ़ी टिक्के मस्तक ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। अवतार कहिण पुरख अकाल क्यों बैठा लुक, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। घर घर हउमे भरया दुःख, दर्दीआं दर्द ना कोए गवाईआ। सुफल होवे ना जननी कुक्ख, भगत जन्मे ना कोए माईआ। कोटन कोटि वेख मानस मनुक्ख, तत्तां वाला शरीर रहे हंडाईआ। तेरा दरस कोए ना पाए अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। आसा तृष्ना वधी भुक्ख, सांतक सति ना कोए जणाईआ। निरगुण

निरवैर निरँकार निराकार आपे उठ, जोती जाते लै अंगड़ाईआ। ग़रीब निमाणयां उत्ते तुठ्ठ, कोझे कमले गले लगाईआ। भगत भगवान बणा सुत, अपराधी आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग पैंडा जाए मुक, नाम खण्डा खड़ग चमकाईआ। झूठ अन्धेरा जाए छुप, साचा चन्द नाम रुशनाईआ। सन्त सुहेल्यां आपे पुच्छ, काया मन्दिर अंदर वड़ के पर्दा लाहीआ। कूड़ कुड़िआरां जड़ पुट्ट, लोकमात रहिण ना पाईआ। दीन मज़हब दी रहे ना कोए फुट्ट, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सारे इक्को घर वसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म सोहँ सब दी सांझी होवे तुक, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। तेई अवतार कहिण तेरी सरन सरनाई जाईए झुक, डंडावत विच निउँ निउँ लागण पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, धुर दा अमृत हक़ीक़ी जाम प्या घुट, जन्म जन्म दी कर्म करम दी तृष्ना रहे ना राईआ।

❊ ३ सावण शहिनशाही सम्मत ५ गुरबख्श सिँघ दे गृह पिंड गग्गोबूआ ❊

अवतार कहिण प्रभ वेख कलयुग रैण अन्धेरी काली, कलू कल आपणी कार कमाईआ। चार कुण्ट दह दिशा सानूं कढ्ढुण गाली, सतिकार विच सीस ना कोए निवाईआ। सम्मत सम्मती वक्त वेख हाली, हरिजू आपणी दया कमाईआ। सति धर्म दे बाग़ दा रिहा कोए ना माली, हरया सिंच ना कोए कराईआ। साडे नाम दी मुकी दलाली, दलील विच्चों दलील ना कोए बदलाईआ। असीं दर तेरे सवाली, मांगत हो के मँग मँगाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाली, जागरत जोत कर रुशनाईआ। तेरे दवारिउँ कोई ना जाए ख़ाली, ख़ालस वस्त देणी वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, अवतार निव निव लागण पाईंआ। अवतार कहिण प्रभ दे दे इक सहारा, सहायक हो के वेख वखाईआ। मस्तक धूढ़ी ला दे छारा, शहिनशाह टिक्का नाम रमाईआ। तूं सरगुण निरगुण धरया रूप दुबारा, कल कल्की वेस वटाईआ। आत्म ब्रह्म दा सांझा यारा, सच दा मालक इक अख्वाईआ। कलयुग अन्ध अन्धेरा मेट गुबारा, निरगुण नूर चन्द कर रुशनाईआ। वेद व्यासा दे रिहा इशारा, शब्दी सैनत नाल दृढ़ाईआ। तेरा खेल अलख अगोचर अगम्म अपारा, पारब्रह्म प्रभ भेव कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी मेट धुआँधारा, निरगुण दीआ इक्को इक डगमगाईआ। तेई अवतार तेरा वणजारा, वस्त इक्को देणी वरताईआ। सति सच दा बोल जैकारा, जै जैकार देणी सुणाईआ। इक्को हुक्म वरते पुरख नारा, बिरध बाल वंड ना कोए वंडाईआ। तूं साहिब स्वामी चौवीवां अवतारा, तारनहारा धुरदरगाहीआ। तेरा लेखा कागद क़लम ना लिखणहारा,

कानी क़लम ना कोए चतुराईआ। दर ठांडे कढ्ढीए सारे हाढ़ा, हउका लै हाल जणाईआ। कलयुग जीवां अगनी लग्गी बहत्तर नाड़ा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध्ध सांतक सति ना कोए कराईआ। तूं शहिनशाह सुल्तान परवरदिगार हो ज़ाहरा, ज़हूर नूर इक चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वस्त अगम्म अथाह वरताईआ। अवतार कहिण प्रभ आपणी दस्स दे हस्ती, हस्तनापुर कृष्ण पांडव गया दृढ़ाईआ। निगाह मार निरगुण धार चाढ़ दे मस्ती, मस्त मस्ताने आप प्रगटाईआ। तूं मालक ख़ालक धुर दा अर्शी , प्रीतम पुरातन नज़री आईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरी भगतां वाली बरसी, दूसर समझ कोए ना पाईआ। आदि अन्त दी साडे लेखे वाली कढ्ढ पर्ची, प्राचीन दा पर्दा दे उठाईआ। असीं सारे तेरे गरज़ी, गरज के तैनूं रहे सुणाईआ। अन्त अख़ीरी वेख अर्ज़ी, जो आरज़ू तेरे विच टिकाईआ। सदी चौधवीं बण दर्दी, दीनां अनाथां दया कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर धाम देणा दरसाईआ। अवतार कहिण साचा नाम वजा दे डंका, डौरु इक खड़काईआ। संदेसा दे दे राउ रंका, शाह सुल्तान लै उठाईआ। सच समझा दे आपणा बंका, बंक दुआरी दे खुल्हाईआ। शब्दी धार

१४९६ २१ ला के तनका, सोई सुरती लै जगाईआ। कलयुग जीव फेरदे मणका, मन की माला ना कोए भवाईआ। झगड़ा मिटा दे १४९६ २१

राग कन्न का, अनहद नादी धुन शनवाईआ। लेखा रहे ना हरख सोग ग़म का, चिन्ता अंदरों देणी कढ्ढाईआ। प्रकाश कर दे आप गोबिन्द चन्न का, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। झगड़ा मिटा दे माया ममता तन का, दौलत इक्को नाम वरताईआ। तुध बिन बेड़ा कोए ना बन्न्हदा, जुग चौकड़ी तेरी ओट तकाईआ। वेख खेल कलयुग कल दा, कलकाती बणे कसाईआ । भेव खुल्हा दे आपणे अगम्म महल्ल दा, महिफ़ल आपणे नाल रखाईआ। विछोड़ा होवे ना कदे पल दा, पलकां दे पिच्छे नज़री आईआ। सच सिंघासण तुध बिन कोए ना मल्लदा, आत्म सेज ना कोए सुहाईआ। वक्त सुहञ्जणा कर दे आपणे महल अटल दा, दरगाह मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र आप उठाईआ। अवतार कहिण साडी अन्त अन्त एह मिन्नत, निम्रता विच जणाईआ । साडी रही कोए ना हिम्मत, हौंसले रहे ढाहीआ। प्रगट हो चारे सिम्मत, चारे बाणी फोल फुलाईआ। कलयुग कलूआ करे इल्लत, मन मनसा नाल मिलाईआ। जगत ख़ुआरी दिसे ज़िल्लत, आबरू रहिण कोए ना पाईआ। जिधर तक्कीए तेरे निन्दक, निन्दिया विच सृष्ट सबाईआ। साचा सबर सबूरी दे दे सिदक, सदके वारी घोल घुमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म होवे मिल्लत, मेला हरि जगदीश कराईआ। हरख सोग ग़म रहे ना चिन्तक, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। झगड़ा रहे ना मज़हब हिंसक,

हँस रूप देणा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ।

❊ ४ सावण शहिनशाही सम्मत ५ चन्नण सिँघ दे गृह पिंड गग्गोबूआ ❊

अवतार कहिण प्रभ तेरे चरण कँवल बन्दना, बन्दगी बंदयां तों बाहर देणी दृढ़ाईआ। राम वशिष्ट तूंही बख़्शंदना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सीस झुकाए कृष्ण काहना नंद मुकन्दना, त्रैलोकी नाथ लागे पाईआ। अन्तिम सब ने एथों वञ्जणा, लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। बिन तेरी किरपा मिले ना किसे अनन्दना, निजानंद ना कोए वखाईआ। आत्म सेज सुहाए ना कोए पलँघना, सति स्वामी नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्त इक्को नाम किसे ना वंडणा, मार्ग इक ना कोए दरसाईआ। नेत्र रोवे सूर्या चन्दना, मण्डल मण्डप दए दुहाईआ। कलयुग अन्तिम वेख कन्ढुणा, तट किनारा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार तेरी वड्याईआ। अवतार कहिण प्रभ तेरे चरण कँवल अरदास, सीस जगदीश निवाईआ। साडे रिहा किछ ना पास, पासा दीन दुनी बदलाईआ। वेला वक्त वेख लै ख़ास, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जो बोल के आए भविख्त वाक्, संदेसा धुर दे राम सुणाईआ। सो लहिणा मुका दे माटी ख़ाक, ख़ालक ख़लक तेरी वड्याईआ। कलयुग अंदर सतिजुग खोल्ह दे ताक, नानक गोबिन्द दए गवाहीआ। तुध बिन दूजा रहे कोई ना साक, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। सदी चौधवीं मेट दे वाट, मुहम्मद हमद विच सुणाईआ। वींहवी सदी लेखे लावे आप, ईसा इष्ट तेरा इक मनाईआ। मूसा राह तक्के अगम्मी बाप, नेत्र लोचन नैण अक्खउठाईआ। ब्रह्मा कहे मेट दे ज़ात, आत्म ब्रह्म देणा जणाईआ। शंकर कहे कूड़ी क्रिया कर दे घात, हुक्म फ़रमाना इक सुणाईआ। विष्नूं कहे सब नूं दे भण्डारा दात, दयावान आप वरताईआ। धुर दा शब्द कहे प्रभ तूं सब कुछ आपे आप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी थापण थाप, त्रै पंज जोड़ जुड़ाईआ। आपणा नाम दस्स के पूजा पाठ, सिमरन रसना वाला वखाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, हर घट करें रुशनाईआ। तेरे अग्गे इक दरख़ास्त, बेनन्ती चरणां विच सुणाईआ। सब दा लेखा वेख वास्तक, वाहवा तेरी ओट तकाईआ। जीव रहे ना कोई नास्तिक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वस्त अगम्म आप वरताईआ। अवतार कहिण सच थापणा थाप, थपकी नाम वाली लगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे पाप, पतित पुनीत दे बणाईआ। सतिजुग साचा दस्स

जाप, जगजीवण दाते आप दृढ़ाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। सतिजुग सच दे सौग़ात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। कलयुग झगड़ा मेट दे ज़ात, ज़ाती नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग सच बख़्श इतफ़ाक़, कलयुग निफ़ाक़ दे गवाईआ। साडा पूरा कर भविख्त वाक्, वेद व्यासा करमण्डली रिहा खड़काईआ। चार वेदां वल झाक, ब्रह्मा वरका वरका रिहा उलटाईआ। राम रो रो रिहा आख, बनबासी दए दुहाईआ। शंकर भज्जे उपर कैलाश, विष्नूं विश्व धार दुहाईआ। कृष्णा छड्ड के यादव साथ, बंसरी नाता मात तुड़ाईआ। किरपा कर प्रभू प्रभ आप, काहन काहना वेस वटाईआ। सच धर्म दा खोल्ह दे हाट, दुआरा इक्को इक प्रगटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दीन दुनी दा कर दे जाप, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। रूह बुत होवे पाक, तन माटी ख़ाक कर सफ़ाईआ। सानूं तेरे उत्ते विश्वास, विषयां तों बाहर तूं सतिगुर इक्को नज़री आईआ। तेरा हड्ड मास नाड़ी ना कोए सरगुण पावे रास, तत्तां वाली ना कोए लड़ाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश, आदि जुगादी इक अख्वाईआ। साडी बेनन्ती मन्ज़ूर कर अरदास, निम्रता विच सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर दाते तेरी वड्याईआ। अवतार कहिण तेरा लेखा
१४९८ परा पसन्ती, मद्धम बैखरी खोज खुजाईआ। तेरा लहिणा अक्खरां वाला पंडती विद्या विच चतुराईआ। तेरा माण प्या संगती, १४९८
२१ हरिजन मेला सहज सुभाईआ। तेरा झगड़ा जेरज अण्डजी, उत्भुज सेत्ज खोज खुजाईआ। किरपा कर साहिब बख़्शंदगी, २१
बख़्शणहार तेरी सरनाईआ। अवतारां आशा एहो मँग लई, मांगत हो के झोली डाहीआ। दीन दुनी दी काया माटी रंग दई, रंगण आपणा नाम रंगाईआ। सदी चौधवीं जावे लँघदी, मुहम्मद वेखे थाउँ थाईंआ। कोई आवाज़ आवे ना धुनी धन्न दी, शुकराने विच ना हक़ खुदाईआ। सृष्टी भुक्खी होई अन्न दी, माया ममता विच कुरलाईआ। किसे नूं आस नहीं गोबिन्द चन्न दी, गोबिन्द दरस कोए ना पाईआ। मनसा नानक कोए ना मन्नदी, ममता मोह ना कोए मिटाईआ। जगत घड़ी दिसे ग़म दी, ग़मख़ार मिले ना कोए गुसाईंआ। दुनियां भोगी होई दृष्टी चम्म दी, आत्म सेज ना कोए हंढाईआ। वणजारी होई निन्दया कन्न दी, सरवण नाम ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे बख़्श सरनाईआ। अवतार कहिण आपणी दीन दुनी तक्क, चुरासी आपणी वेख वखाईआ। सानूं सब ते प्या शक्क, तेरा प्रेम ना कोए वधाईआ। रसना गाउँदे कोटन भट्ट, जिह्वा नाल जणाईआ। मणके माला रहे रट, धूढ़ी ख़ाक सीस रमाईआ। भज्जे फिरदे तीर्थ तट, अठ्ठां सठ्ठां वंड वंडाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ पढ़ गए थक्क, अक्खर अक्खरां जोड़ जुड़ाईआ। सीस निवाउँदे रहे मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ, गुरुदुआर वेखण चाँईं चाँईंआ। कलयुग

अन्त श्री भगवन्त तेरा नाम मिले किसे ना रस, रस्ता अंदरों ना कोए खुल्हाईआ। मन कल्पणा हो के वस्स, भज्जण थाउँ थाईंआ। किसे दे कुछ ना आवे हथ्थ, ख़ाली हथ्थ दिसे लोकाईआ। किरपाल किरपानिध कलयुग अन्तिम हो प्रगट, प्रगणा आपणा दे समझाईआ। जिथ्थे गुर अवतार पैग़म्बर विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर तेरा नाम रहे रट, इक्को सद आवाज़ लगाईआ। ओह कलमा कायनात दस्स, हर हिरदे दे दिसाईआ। तेरी सृष्टी तेरा करे जस, तत्तां वाला इष्ट ना कोए मनाईआ। शब्द सतिगुरु हर घट अंदर वस, होका दे के लै जगाईआ। अमृत झिरना देवे तेरा रस, रसना रस चक्खण दी लोड़ रहे ना राईआ। निज नेत्र खोल्ह दे अक्ख, अठ्ठे पहर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, वर आपणा इक समझाईआ। अवतार कहिण असीं छड्डीए अयुध्या प्रयाग, काशी क़सम नाल तजाईआ। बन बिन्दरा कर त्याग, मथरा गोकल ना वंड वंडाईआ। इक्को तेरा होए वैराग, दूजा प्यार ना कोए वधाईआ। किरपा कर सब दी खोल्ह दे जाग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। साडे कहिंदयां सृष्टी दृष्टी लग्गी आग, त्रैगुण सके ना कोए बुझाईआ। ब्रह्म दा जगे ना कोए चराग़, काया मन्दिर ना कोए रुशनाईआ। कोटन कोटि राधा कृष्ण सीता राम दा करदे पाठ, सीता राम मिलण किसे ना आईआ। सब दी पूरी होई वाट, पैंडा मुकणा थाउँ थाईंआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेर देणा गवाईआ। असीं सारे छड्डे साक, सज्जण गए तजाईआ। बोल के तेरा वाक्, नाअरा नाम सुणाईआ। कलयुग अन्त कल कल्की आवे आप, आप आपणा फेरा पाईआ। जो सब दा होवे माई बाप, पिता पुरख अकाल वड वड्याईआ। सांझा देवे धुर दा जाप, जगजीवण दाता आप वरताईआ । सो साडी पूरी कर दे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। अवतार कहिण तेरी आदि अन्त दी इक्को ज़ात, दूजा रूप ना कोए बदलाईआ। सब दी करनी कर दे मुआफ़, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा दरस करीए साख्यात, पर्दा उहला काया चोला रहिण कोए ना पाईआ।

१४९९ २१

❋ ४ सावण शहिनशाही सम्मत ५ दलीप सिंघ दे गृह पिंड गगोबूआ ❋

अवतार कहिण प्रभ तेरा प्रसिद्ध होवे इक्को ऊड़ा, ओअँकार तेरी सरनाईआ। सृष्टी दृष्टी रंग चाढ़ गूढ़ा, दुतिया भाओ दे मिटाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़ा, अज्ञान अन्धेरा रहे ना राईआ। साचे नाम दी दे दे तूरा, तुरिया तों परे कर शनवाईआ। जोती नूर दे ज़हूरा, ज़ाहर ज़हूर दया कमाईआ। सब दा वाक् कर पूरा, भविख्तां विच सिफ्तां विच मँग

मँगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सांभ दे कूड़ा, गली कूचा होए सफ़ाईआ। सच प्रेम दी दे धूढ़ा, टिक्के मस्तक नाम रमाईआ। चार जुग दा भगत तेरा मज़दूरा, चाकर सेवा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। अवतार कहिण प्रभ सिद्ध कर दे ऊड़ा अक्खर, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। गोबिन्द लेखे ला लै सत्थर, सेज यारड़ा इक हंढ्ढाईआ। पूजा रहे ना मढ़ी गोर पत्थर, सिल पाहिन पूजन कोए ना पाईआ। नेत्र नीर वहावण प्रेमी प्यारे अथ्थर, बिरहों वैरागी चोट लगाईआ। चारों कुण्ट तेरी याद विच नस्सण, भज्जण थाउँ थाईंआ। चरण दवारे तेरे वस्सण, दूजा गृह ना कोए सुहाईआ। इक्को नाम ढोला जपण, क़लमा कायनात दृढ़ाईआ। धर्म दी धार कराउणा मजन, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। आत्म परमात्म बणना सज्जण, सगला संग इक वखाईआ। तुध बिन दूजा कोए ना पर्दा कज्जण, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। झगड़ा मुका दे माटी बदन, मज़हबां रहे ना कोए लड़ाईआ। अवतार दर सीस निवा के तैनूं सद्दण, लोकमात वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे वज्जे वधाईआ। अवतार कहिण आपणी कर दे किरपा, किरपाल तेरी वड्याईआ। दीन दुनी दी मेट दे बिपता, विपरीत दा झगड़ा दे मुकाईआ। मानव रूप बणा लै सिख दा, सच धर्म इक समझाईआ। इष्ट प्रगटा दे एकँकार इक दा, इक इकल्ला हो सहाईआ। जो गुर अवतार पैग़ग्बर तेरा लेखा रिहा लिखदा, नाता जोड़ कागज़ क़लम शाहीआ। वणजारा बणया रिहा पत्थर इट्ट दा, खेल जुग जुग मात कराईआ। कलयुग अन्तिम तेरा नाम टक्कयां दे विच विकदा, बिना टक्कयां तों ग्रन्थी पाठ करन कोए ना पाईआ। नानक निरगुण सरगुण तेरा निशाना वेख लम्मा चिट्ट दा, जिस दा अक्खर पढ़न कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर मांगत मँग मँगाईआ। अवतार कहिण प्रभ तेरे ऊड़े विच जज़ब होवे ओम, विष्न ब्रह्मा शिव ना कोए वड्याईआ। दुतिया रहे कोए ना दोम, दूआ एके विच रलाईआ। झगड़ा रहे ना कोए सोम, स्वयम आपणा रंग रंगाईआ। चौथा घर वंड ना होम, हर घट अंदर नज़री आईआ। पंचम पंच साहिब मोहण, मोहन इक्को सोभा पाईआ। सृष्टी दृष्टी खोल्ह दे लोइण, नेत्र अक्ख कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। अवतार कहिण ऊड़े विच्चों वेखीए तेरा इष्ट, इष्टी इक्को नज़री आईआ। नौ सत्त खोल्ह दे दृष्ट, दिशा आपणी पर्दा लाहीआ। झगड़ा मुका स्वर्ग बहिश्त, जन्नत तों परे दे समझाईआ। झगड़ा मुका मजाज़ी हक़ीक़ी इश्क, आत्म परमात्म रंग रंगाईआ। झगड़ा रहे ना टांक जिसत, इक दो ना कोए वखाईआ। गुर अवतार पैग़ग्बर रहे बिस्त, जुग जुग ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं

अन्त अखीर तेरे हथ्थ सब दी लिस्ट, पर्दा खोल्हणा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर धाम इक प्रगटाईआ। अवतार कहिण तेरा ऊड़ा तेरा दिसे धर्म, धर्म धार जणाईआ। जिस दे विच नहीं कोई करम, कर्म कांड वंड ना कोए कराईआ। झगड़ा रहे ना किसे बरन, वरन रंग ना कोए रंगाईआ। इक्को नज़री आए सरन, सरनगति इक अख्वाईआ। इक्को पूजा होवे चरण, चरण धूढ़ी वड वड्याईआ। दो जहान तैथों डरन, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर तेरा नाम पढ़न, वखरी करे ना कोए पढ़ाईआ। सच दवारे सारे खड़्हन, होका इक्को हक़ सुणाईआ। कौल इक़रार सब दा होवे प्रन, पतिपरमेश्वर तेरी बेपरवाहीआ। जन भगतां खोल्ह के हरन फरन, लहिणा सब नूं दे समझाईआ। तूं साहिब स्वामी करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, बिन तेरी किरपा आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी मंज़ल जीव मूल ना चढ़न, चढ़दा लहिंदा दक्खण पहाड़ निरगुण धार समझ किसे ना आईआ।

❊ ४ सावण शहिनशाही सम्मत ५ कर्म सिँघ दे गृह पिंड गग्गोबूआ ❊

अवतार कहिण प्रभ साडी पूरी कर दे शर्त, शर्तीआ आपणा हुक्म वरताईआ। राम कहे मैं संदेसा दिता भरत, अयुध्आ तों बाहर आप समझाईआ। कलयुग दुहाई फिरनी उत्ते धरत, चारों कुण्ट हाहाकार मचाईआ। निरगुण धार प्रभ ने आउणा परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। असीं वेखणा उत्तों अर्श, अर्शी प्रीतम की की कार कमाईआ। किस बिध भगतां उपर करे तरस, रहमत सच कमाईआ। अमृत मेघ अगम्मा देवे बरस, बरखा आपणा नाम बरसाईआ। चिन्ता सोग मिटे हरख, हवस कूड़ी दए बुझाईआ। सब दा लहिणा पूरा करे क़र्ज़, मक़रूज़ झोली दए भराईआ। दीनां अनाथां वंडे दरद, दुखियां होए सहाईआ। शरअ छुरी ना काटे करद, क़तलगाह दा डेरा ढाहीआ। बेनन्ती मंज़ूर करे अर्ज़, आरज़ू आपणे लेखे पाईआ। एह खेल होणा असचरज, जिस नूं समझे ना कोए राईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बणके मर्द, मुद्दा आपणा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। अवतार कहिण साडी पूरी करे ख़ाहिश, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। जन भगत सुहेले कर तलाश, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां दे शाबाश, बल्ले बल्ले कर वड्याईआ। अन्तिम सब दा लेखा पूरा करे हुक्म देवे आप, आपणी कार कमाईआ।

चार वरन दा सांझा कर के जाप, जगजीवण दाता दए समझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी शब्द धार आप नाप, बिना क़दम क़दम उठाईआ। सृष्टी दृष्टी वेखणहार पलीत पाक, पतित पापी खोज खुजाईआ। एह खेल करे पुरख अबिनाश, हरि करता धुरदरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण नूर कर जोत प्रकाश, प्रकाश्त एका आपणा नाम कराईआ।

✻ ४ सावण शहिनशाही सम्मत ५ अजीत सिँघ दे गृह वेरका ✻

अवतार कहिण प्रभ असली रही ना साडी सूरत, पाथर पाहन रूप गए बदलाईआ। सतिजुग साची सति सति दी कर महूरत, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। आपणे नाम शब्द दी दे दे इक तूरत, तुरिया तों परे तुरत दे समझाईआ। कलयुग जीव समझा मूढ़ मूर्ख, अज्ञान अन्धेर दे गवाईआ। नाता तोड़ कूड़ो कूड़त, सच सुच संजम इक प्रगटाईआ। निरगुण जोत बख्श नूरत, नूर नुराना डगमगाईआ। तूं सर्ब कला भरपूरत, समरथ स्वामी इक अख्वाईआ। हर घट हाज़र हज़ूरत, गृह गृह मन्दिर डेरा लाईआ। साडी आसा मनसा कर पूरत, पूरन ब्रह्म दे जणाईआ। हउमे रोग सगला मेट वसूरत, विषे विकारां डेरा ढाहीआ। कलयुग अन्तिम सब नूं तेरी पई ज़रूरत, ज़ाहर ज़हूर हो के वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि आपणा रंग रंगाईआ। अवतार कहिण तेरे नाम दा वज्जे डंका, चार वरन शनवाईआ। सति धर्म दा इक सुहा बंका, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को घर वसाईआ। इक्को इष्ट देव स्वामी तेरी होवे मन्नता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुरमुख सन्त सुहेले प्रगटा गढ़ तोड़ हउमे हंगता, हँ ब्रह्म इक जणाईआ। बोध अगाध बण पंडता, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार निष्अक्खर दे समझाईआ। तेरा खेल जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अन्ता, अन्तश्करन वेख ख़लक ख़ुदाईआ। सति धर्म दी सच बणा दे बणता, घड़न भन्नणहार समरथ तेरा लेखा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सच तेरी आस रखाईआ। अवतार कहिण दीन दुनी दी बदल दे आदत, अदल इन्साफ़ इक कमाईआ। इक्को कलमा दस्स इबादत, नाम निधाना इक जणाईआ। चार जुग दे शास्त्र देण शहादत, गवाह अञ्जील क़ुरान लै भुगताईआ। कूड़ी क्रिया हर हिरदे कर ममानत, तन वजूद रहिण ना पाईआ। सतिजुग सच साची वस्त बख्श निआमत, मेहरवान महबूब आपणा रंग रंगाईआ। मनुआ करे ना कोए बग़ावत, बुद्धी विच ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा

१५०२
२१

साचा वर, सच दे मालक वेख वखाईआ। अवतार कहिण प्रभ साची दस्स दे सतिजुग रीती, रीतीवान तेरी सरनाईआ। भेव चुका दे मन्दिर मसीती, काया काअबा इक वड्याईआ। दीन दुनी दी बदल दे नीती, माया ममता मोह दे गवाईआ। काया अगनी कर दे ठांडी सीती, त्रैगुण अमृत धार बुझाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दीन दुनी वेख आपणी बग़ीची, चार वरन अठारां बरन खोज खुजाईआ। एको नाम कलमा तेरी धर्म दी होए हदीसी, हज़रतां तों परे कर पढ़ाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीरी रही बीती, बातन पर्दा दे उठाईआ। तूं परमात्मा आत्मा दी आपणे नाल लगा प्रीती, प्रीतम हो के जोड़ जुड़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरी खेल सदा रही अनडीठी, जगत नेत्र जीव जहान नज़र कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। अवतार कहिण साडा वक्त वेख लै पूरा, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। इक्को बख्श आपणा नूरा, जोती जाते कर रुशनाईआ। कलयुग जीव रहे ना मूर्ख मूढ़ा, चतुर सुघड़ सुचज्जे दे बणाईआ। निरगुण धार बख्श के धूढ़ा, मस्तक टिक्के अगम्म रमाईआ। नज़री आ हाज़र हज़ूरा, हर हिरदे सोभा पाईआ। अनहद शब्द वजा तूरा, तुरत आपणा नाम जणाईआ। साडी अर्ज़ कर मन्ज़ूरा, दर ठांडे सीस झुकाईआ। अवतार कहिण तूं सर्ब स्वामी भरपूरा, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण सरगुण तेरा नाम सिफ्तां विच कर के आए मशहूरा, शब्द गुरु धार जणाईआ।

१५०३
२१

✻ ४ सावण शहिनशाही सम्मत ५ गुरनाम सिँघ दे गृह वेरका ✻

अवतारो सुणी अगम्मी अर्ज़, पुरख अकाल अकाल जणाईआ। सब दी पूरब वेखां गर्ज़, लहिणा देवां थाउँ थाईंआ। धर्म दा पूरा करां फ़रज़, हुक्मी शब्द शब्द समझाईआ। कलयुग मेटां अन्धेरा गरद, गरदश वेखां जगत लोकाईआ। छुरी शरअ रहिण ना देवां करद, क़ातल मक़तूल रूप ना कोए दरसाईआ। योद्धा सूरबीर मर्दाना बण के मर्द, मदद करां थाउँ थाईंआ। अगला खेल दस्सां असचरज, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। दो जहानां होण ना देवां हरज, हर हिरदा तक्कां चाँईं चाँईंआ। ग़रीब निमाणयां वंडां दरद, दुखियां दुःख गवाईआ। साचे नाम दी बदल देवां तरज़, राग अनादी इक शनवाईआ। सच जैकारा बोलां गरज, गर्ज़ सब दी वेख वखाईआ। चार जुग दी पूरब वेखां फ़रद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा हुक्म इक उपजाईआ। अवतारो तुहाडा सुणया अन्तर संदेसा,

संध्या सरघी ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी ख्याल रखां हमेशा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भुल्ल विच ना आईआ। एकँकारा बण के धुर दा नेता, नर नरायण हो के खोज खुजाईआ। लेखा जाणां सचखण्ड साचे देसा, धरनी धरत धवल पर्दा दयां उठाईआ। ख़बरदार करां शब्दी सुत दुलारा बेटा, हुक्म हुक्म नाल उठाईआ। दो जहान बणावां नेता, निआंकार इक अख्वाईआ। साचे भगतां करे हेता, गुरमुखां जोड़ जुड़ाईआ। सीस दी मँगे कोई ना भेंटा, जगदीश हुक्मे कार कमाईआ। निरगुण धार होवां खेवट खेटा, सरगुण नईआ मात चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वस्त अमोलक अगम्म वरताईआ। अवतारो तुहाडी सुणी अन्तर आवाज़, जो बिन रसना दिती सुणाईआ। सारा भेव खोल्हां राज़, पर्दा रहिण कोए ना पाईआ। सृष्टी दृष्टी दयां साध, साधना रहिण कोए ना पाईआ। शब्द सुणावां धुर दा नाद, अगम्मी राग अलाईआ। दृष्टी सब दी जाए जाग, सोई सुरती लवां उठाईआ। बुद्धी रहे कोई ना काग, हँस गुरमुख लवां प्रगटाईआ। कलयुग अगन बुझावां आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। तुहाडी बेनन्ती दा इक जवाब, धुर संदेसा दयां सुणाईआ। जिस कल कल्की दा लैंदे रहे ख्वाब, सुपनिआं विच ध्यान लगाईआ। ओह खेल करे प्रभ आप, आपणा पर्दा आप चुकाईआ। दो जहानां दस्स के जाप, लख चुरासी करे पढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट के पाप, पतित पुनीत आप लए बणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणा के साक, सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। सच दुआर दा खोल्ह के ताक, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश लए लँघाईआ। प्रेम प्रीती विच हो के चाक, सेवक आपणी सेव कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे ख़ाक, ख़ालस आपणा रंग दए चढ़ाईआ। झगड़ा रहिण ना देवे ज़ात पात, दीन मज़हब करे ना कोए लड़ाईआ। सदी चौधवीं मेट अन्धेरी रात, नूरी चन्द इक रुशनाईआ। सब नूं बख्श देवां दात, नाम कलमा झोली पाईआ। हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई बणा के इक जमात, तुलबिआं करां हक़ पढ़ाईआ। तुहाडी मनसा पूरी कर के ख़ाहिश, ख़ालस आपणा घर वखाईआ। पुरख अकाला बाहरों करना ना पए तलाश, काया मन्दिर अंदर मिल के वज्जे वधाईआ। धुर दी मंज़ल दे के घाट, पौड़ी डंडे नाम चढ़ाईआ। आवण जावण मेट के वाट, भगत सुहेले जोत समाईआ। आत्म ब्रह्म दा दे के साथ, पारब्रह्म दा मेल मिलाईआ। निज गृह कर के वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। साचे मण्डल पा के रास, सुरती शब्द गोपी काहन नचाईआ। तुहाडा सुखाला करां सास, जो साह साह ध्याईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। कल कल्की प्रगट हो के आप, आप आपणा राह चलाईआ। रूह बुत कर के पाक, पैग़ग्बरां तों परे करां सफ़ाईआ। लख चुरासी पुच्छां वात, चारे खाणी वेख वखाईआ। सब नूं इक दा दे विशवास, विषयां तों बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप

१५०४ २१

हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तन वजूद माटी खाक दा बदल लबास, जोती जाता हो के वेख वखाईआ।

✻ ४ सावण शहिनशाही सम्मत ५ डाकटर बलवन्त सिँघ दे गृह वेरका ✻

पुरख अकाल कहे अवतारो होवां मेहरवान, सचखण्ड निवासी हो के दया कमाईआ। सो पुरख निरँजण हो के देवां दान, दाता दानी दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण हो के किरपा करां महान, महिमा अकथ कथ दृढ़ाईआ। आदि निरँजण हो के दीपक जगावां महान, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। योद्धा सूरबीर बण श्री भगवान, भगवन हो के वेख वखाईआ। अबिनाशी करता हो के देवां माण, माण निमाणयां आप अख्वाईआ। पारब्रह्म हो के वेखां मार ध्यान, बिन अक्खां अक्खउठाईआ। ब्रह्म दा लेखा करां परवान, परम पुरख आपणी कार कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर सारे सीस झुकाण, सिर सके ना कोए उठाईआ। दो जहानां मर्द मर्दाना नौजवाना संदेसा देवां आण, अनक कलधारी आपणी कल वरताईआ। जिस दी

१५०५
२१

निरगुण सरगुण खेल महान, निरवैर निराकार निरँकार आपणी कार कमाईआ। प्रगट होवां योद्धा सूरबीर मर्द मर्दान, भय भयानक वेखां थाउँ थाईंआ। तेई अवतारो सब नूं करां सवाधान, आलस निंदरा रहे ना राईआ। सच दा मालक हो प्रधान, कूड़ी क्रिया फोल फुलाईआ। कलयुग मेटां झूठ निशान, निशाना इक्को नाम जणाईआ। शरअ दा रहिण ना देवां कोए शैतान, छुरी बणे ना जगत कसाईआ। हउमे हंगता गढ़ तोड़ां अभिमान, मन का मणका आप भवाईआ। करां खेल विच जहान, जहालत मेटां कूड़ लोकाईआ। तुहाडी करनी सब दी करां परवान, परम पुरख हो के वेख वखाईआ। सति धर्म दा बणा इक विधान, हुक्म संदेसा इक सुणाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप इक्को इष्ट दिसे विच जहान, दूसर सीस ना किसे निवाईआ। लेखा जाणां शास्त्र सिमरत वेद पुराण, अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पर्दा दयां उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। पुरख अकाल कहे अवतारो एका देवां नाम संदेसा, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। जिस नूं मन्नण विष्न ब्रह्मा शिव गणेशा, सुरप्त निउँ निउँ सीस निवाईआ। खेल खिलावां सचखण्ड देसा, दरगाह साची सोभा पाईआ। तुहाडा सब दा कर के एका, एकँकार हो के वेख वखाईआ। सब नूं इक्को बख्श के टेका, टिक्के मस्तक धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। दीन दुनी दी बुध्ध करां बिबेका, दुरमति मैल करां सफ़ाईआ। नाल रला शब्द गुरु गोबिन्द आदि जुगादि दा बेटा, जिस नूं तत्तां वाली जन्मे कोए ना माईआ। ओह एथे ओथे दो जहानां

होवे खेवट खेटा, नईआ नौका नाम इक चलाईआ। भगत उधारना जिस दा आदि जुगादि पेशा, पेशीनगोई सब दी वेख वखाईआ। लेखा जाणे मूंड मुंडाए धारी केसा, पर्दा उहला आप उठाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म पारब्रह्म ब्रह्म दस्से आपणा हेता, हितकारी हो के खोज खुजाईआ। निरगुण सब ने मन्नणा नेता, नर निरँकार नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं सब दा पूरा होणा ठेका, लेखा सब दा दए मुकाईआ। अग्गों देवे नाम संदेसा, शब्द अगम्मी करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धुर दी धार इक समझाईआ। पुरख अकाल कहे अवतारो करां खेल महाना, मनसा सब दी वेख वखाईआ। शब्दी नाद दे तराना, तुरिया तों परे दयां दृढ़ाईआ। जिथ्थे निरगुण नूर जोत महाना, सूर्या चन्द करे रुशनाईआ। तख्त निवासी नौंजवाना, श्री भगवान सोभा पाईआ। जिस नूं झुके ज़िमीं असमाना, गगन गगनंतर लागण पाईंआ। सो मालक पहरे अन्तिम आपणा जामा, सम्बल नगर सोभा पाईआ। जिस नूं बुद्धी करे ना कोए पहचाना, शास्त्र सके ना कोए दृढ़ाईआ। लभ्भ सके ना कोए विद्वाना, अक्खरां वाली ना कोए पढ़ाईआ। जिस ने दीन दुनी दा कलयुग अन्तिम बदल देणा ज़माना, सतिगुर सच दए प्रगटाईआ। शरअ दा रहे ना कोई बेईमाना, बेवा करे ख़लक खुदाईआ। साचा नाम संदेसा दए पैग़ामा, पैग़म्बरां तों परे करे पढ़ाईआ। जिस नूं मुहम्मद मन्नया महिदी अमामा, मालक ख़ालक हो के वेख वखाईआ। जिस दा महल अटल अगम्म अथाह आलीशाना, आलम इल्म विच ना किसे समझाईआ। ओह साहिब सुल्तान वाली दो जहाना, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। जिस नूं तेई अवतार निव निव करन प्रणामा, डंडावत विच सीस निवाईआ। ओह करे खेल इक महाना, मेहरवान आपणा हुक्म वरताईआ। नव नौ चार झुला इक निशाना, निशाने पिछले दए बदलाईआ। हरिजन रहिण ना देवे कोए बेगाना, गुरमुख आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक इक अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे धरनी धरत धवल तक्को राह, धौल दयां जणाईआ। निगाह मारो जल थल अस्गाह, महीअल वेख वखाईआ। जिस ने रचना लई रचा, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। सो लहिणा देणा सब दा दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। निरगुण नूर कर रुशना, कलयुग अन्ध अंज्ञान दए मिटाईआ। साचे मार्ग दए ला, सतिजुग सति सति वखाईआ। सब दा बण के पिता माँ, सन्त सुहेले गोद टिकाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सुहा के गराँ, नौ दवारे लेखा दए मुकाईआ। आत्म जोती कर रुशना, मन्दिर अंदर नूर नुराना डगमगाईआ। जिस नूं पैग़म्बर कहि के आए खुदा, खुद मालक नूर अलाहीआ। किसे नूं रहिण ना देवे जुदा, जुज़ वखरा वंड ना कोए वंडाईआ। सो स्वामी बण के दिलरुबा, रहमत आपणी हक़ कमाईआ।

उस दा इक्को कलमा इक होणी सदा, आवाज़ इक्को इक प्रगटाईआ। सो लेखा जाणे थाउँ थाँ, थान थनंतर वेख वखाईआ। अवतारो सब दा लेखा दए मुका, मुकम्मल आपणा हुक्म चलाईआ। कलयुग अन्तिम करे निआं, अदल इन्साफ़ आप वखाईआ। वेखणहारा दो जहां, जहां तहां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त देवणहारा दान, दाता दानी दयावान इक अख्वाईआ।

✻ ७ सावण शहिनशाही सम्मत ५ जमांदार किशन सिँघ दे नवित्त
हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

जन्म विच्चों मिली जन्म दी दात, दाते दिती वरताईआ। आपणे नाल बणा के आपणे साक, सज्जण आपणे लए प्रगटाईआ। लालो दे लेखे ला के स्वास, नानक लहिणा झोली पाईआ। भगतां दी भगत सुहा के जमात, संगी संगीआं नाल रखाईआ। अगला लेखा पंदरां कत्तक नूं दस्सांगा ख़ास, ख़ालस पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे
१५०७ खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंदरां कत्तक देवे माण, माण मिले वड्याईआ। पंज तत कर परवान, परवाना १५०७
२१ अगला दए समझाईआ। करे खेल महान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। माझा मालवा दुआबा जम्मू पंज पंज गुरमुख आवण नौजवान, जोबनवन्ते रंग रंगाईआ। बिरध बाल ना कोए पहचान, वड्डा छोटा ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। पंदरां कत्तक कहे गुरमुख प्रेम प्यारे आउणगे। माझा मालवा दुआबा जम्मू इक इक्क पग्गड़ी नाल रखाउणगे। रात साढे नौ वजे किशन सिँघ दे सीस सजाउणगे। पुरख अबिनाशी मिल के हरि जगदीश, सारे इस दी मँग मँगाउणगे। सानूं इस दे मिलण दी सदा रीझ, हथ्थ जोड़ के वास्ता पाउगे। प्रभू बेशक एहदी आत्मा तेरी चीज़, वस्त अमोलक आपणे नाल रलाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाउणगे। सारी संगत करे अरदास, निउँ निउँ सीस निवाईआ। फेर किशन सिँघ रहिण देवां संगत पास, बिना बेनन्ती सके ना कोए बचाईआ। इस दा नौ मम्घर नूं अख़ीरी सी स्वास, स्वास प्रभ दे लेखे लाईआ। एह किरपा कीती ख़ास, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। पंजां लिखारीआं ज़रूर होणा साथ, सगला संग बणाईआ। दर्शन सिँघ नूं मार लैणी आवाज़, दिल्लीउँ लैणा बुलाईआ। सब ने जाणा जाग, सोया रहिण कोए ना पाईआ। भगत भगवान

दा इक वैराग, वैरी नज़र कोए ना आईआ। सब तों श्रेष्ट उत्तम साहिब सतिगुर दा साथ, गुरमुख सोहणा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। पंदरां कत्तक कहे पंजां पंजां पंजां पंजां दे होणे सोहणे वस्त्र, पंज पंचम नाल वड्याईआ। नंगी धार मोढुयां ते होणे शशतर, सोहणे रूप बणाईआ। सब ने जाणा उपर अस्त्र, शाह सवारा आसण लाईआ। खाणा खाणा नहीं विच किसे ने बरतन, हुक्म दिता दृढ़ाईआ। सब दा सांझा होणा खरचण, हिस्सा वड्डा छोटा पाईआ। करे खेल प्रभू प्रभ मर्दन, पारब्रह्म प्रभ होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंदरां कत्तक कहे साहिब सतिगुर दे लक्क नूं बन्न्हणा संगल, कुण्डी कुण्डी विच अड़ाईआ । सब ने गाउणा मँगल, सिँघासण उत्ते टिकाईआ । पंजां प्यारयां लाउणा चन्दन, मस्तक नाल छुहाईआ। पंजां लिखारीआं कर के बन्दन, आसण लैणा जमाईआ। म्यानों नंगे कढ्ढ के खण्डन, चण्डी देणी चमकाईआ। सब ने ढोला गाउणा छन्दन, जैकारा इक्को वार लगाईआ। अग्गे साहिब सतिगुर चाढ़े रंगण, आपणा रंग रंगाईआ। धूढ़ी चरण दे के साचा सगन, पापां करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंदरां कत्तक कहे एह खेल होणा अल्ल्हड़ पिंडी, पिंड पिंड देणा बख्शाईआ।

इक लिखारी लेख लिखे विच्चों हिन्दी, हिन्दोस्तान दए दृढ़ाईआ। पंजां लिखारीआं मस्तक लाउणी लाल बिन्दी, वृंदावन दा लेखा देणा मुकाईआ। पगड़ी दी धार रखणी डिंगी, टेडा रूप दरसाईआ। फेर ज़िंदगानी बख्शणी ज़िंदी, ज़िंदा दए कराईआ। इक गुरसिख ने विच्चों उठ के जाणा निंदी, एह अपराधी नूर खुदाईआ। इक बच्ची नाल होवे छिन्दी, दविंदर कोल बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। कत्तक कहे मेरा लेखा कोई ना जाणे कत्तक, कटक कोटन गए विहाईआ। कृष्ण ने इक बचन सुणा बधक, बधक दिता जणाईआ। जिस वेले धर्म सति रिहा ना अधिक, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चारों कुण्ट लग्गी आतश, अगनी अग्ग ना कोए बुझाईआ। साबत रिहा कोई ना शख्क्ष, शख्सीअत नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट पैणा बख़त, धीरज धीर ना कोए धराईआ। बिना भगतां तों रहे कोई ना मस्त, खुमारी नाम देणी चढ़ाईआ। मेरा काहन आउणा परत, निरगुण निरवैर वेस वटाईआ। आवे उत्ते धरत, धरनी धवल वेख वखाईआ। सब दी पूरी करे शर्त, शरअ अगली दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ । कत्तक कहे मैं तकदा, तक़दीर वेख वखाईआ। की हुक्म होवे यक्क दा, यदी की समझाईआ। की इशारा मिले अक्खदा, की शब्द धुन शनवाईआ।

की संदेसा मिले सच दा, सच विच वड्याईआ। जां ख़बर सुणी प्रभ जन भगतां आप रखदा, रखक हो के वेख वखाईआ। मरन विच्चों जीवण कढ्दा, जीवण विच्चों जीवण रखाईआ। जिस नाल प्यार उस नूं कदे ना छड्डदा, जुग जन्म दे विछड़े आपणे नाल रखाईआ। संसार भरम मास नाड़ी हड्ड दा, चम्म कम्म किसे ना आईआ। कदे वस्सेरा नहीं भगत भगवान अड्ड दा, घर इक्को सोभा पाईआ। दोहां इक्को दीपक जगदा, जग करे रुशनाईआ। जिस दा लहिणा उस नूं सद्दा, ओसे दी झोली पाईआ। प्रभ दा प्यार सदा सदा जाए वधदा, भगती भगतां नाल रखाईआ। एह लेखा विष्नूं विश्व यद्द दा, यादवां कृष्ण गया समझाईआ। पैग़म्बरां वेला रहिणा नहीं हज्ज दा, काअबे करबला वांग दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, आपणी करनी तों कदे नहीं भज्जदा, भज्जयां आपणे नाल रखाईआ।

✻ १७ सावण शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल तृप्त कौर जुगिंदर कौर दे प्रशाद कराउण ते ✻

सतारां सावण कहे मेरी निमस्कार, सचखण्ड निवासी सीस झुकाईआ। दस अठ्ठ अठारां पिच्छों आई मेरी बहार, खुशीआं विच दर सच अलख जगाईआ। निउँ निउँ मस्तक धूढ़ी लावां छार, शहिनशाह मिल मिल वज्जे वधाईआ। जिस हुक्म संदेसा दिता सी आपणी धार, नाम निधाना अगम्म दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी सुण पुकार, पूरब दा पूरब वेख वखाईआ। जगदीश दा जन्म होणा विच संसार, जन्म तों पहिले एसे दिन दिती वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां सावण कहे सतारां दिन प्रभ किरपा कीती आप, जोती जोत जोत रुशनाईआ। मात गर्भ थापणा थाप, जगत जगदीश दिती वड्याईआ। हुक्म संदेसा दे के आप, आप आपणी कार कमाईआ। लेखा लिख के काग़ज़ क़लम दवात, सही सही सलामत दिती पाईआ। जिस ने मेटणी अन्धेरी रात, कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। प्रगट होणा साख्यात, निरगुण नूर जोत कर रुशनाईआ। झगड़ा मेटणा ज़ात पात, दीन दुनी कर सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार वड्याईआ। सतारां सावण कहे हरि जगदीश, जगदीश दिता जणाईआ। सतिजुग साची चलणी रीत, रीत रीतीवान दृढ़ाईआ। झगड़ा मुकणा मन्दिर मसीत, शिवदवाले मट्ठ ना कोए चतुराईआ। दीन दुनी दी बदलणी नीत, नीतीवान हो के वेख वखाईआ। चार वरनां सांझी करनी प्रीत, प्रीतम हो के मेल मिलाईआ। जगत जगदीश तेरा लेखे ला के सीस, सीस गोबिन्द झोली आप टिकाईआ। मुहम्मद कलमा वेख

१५०९
२१

हदीस, हज़रतां हज़ूर पर्दा दए उठाईआ। सो समां पहुंचया ठीक, ठाकर हो के दए वड्याईआ। कलयुग मेटणा अन्धेरा तारीक, अन्ध अज्ञान दए गवाईआ। तेरा दर सुहा के ठीक, ठाकर हो के मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सतारां सावण कहे हुक्म दिता बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। भगत सुहेला लैणा उपजा, जीवण जुगती जगत प्रगटाईआ। त्रैलोकी लहिणा देणा मुका, मूर्ख मूढ़ां डेरा ढाहीआ। चार जुग दा झगड़ा देणा मुका, वरन बरन ना कोए लड़ाईआ। चार जुग दा लहिणा झोली देणा पा, दो जहान वेख वखाईआ। चार जुग दा नाम कलमा देणा बदला, बदी बदकारां विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। चार जुग दा सदमा देणा गवा, दुक्खां दर्दां डेरा ढाहीआ। अदल इन्साफ़ लैणा कमा, सति सच नाल मिलाईआ। चार जुग दा लेखा लेखे लैणा ला, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवणहार वड्याईआ। सतारां सावण कहे प्रभ किरपा कीती अपार, अपरम्पर दिती वड्याईआ। जगदीश सिँघ जन्म दे संसार, संसारी भण्डारी सँघारी दिते हिलाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां करे ख़बरदार, सच संदेसा नाम दृढ़ाईआ। सारे करो अगम्म विचार, बिन बुद्धी ध्यान लगाईआ। जिस नूं कहि के आए कल कल्की अवतार, अकल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। जिस ने भगत दुआरा करना त्यार, भगत भगवन्त मिल के वज्जे वधाईआ। जगदीश सिँघ दी ख़ाक नीआं विच देवे डार, डाली पत्त आप महकाईआ। मंज़ल दस्स इक सच्ची सरकार, घर सच्चो सच वड्याईआ। इक्को शब्द नाम जैकार, ढोला राग गीत इक शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर सच इक दरसाईआ। जगदीश कहे जन्म तों पहिलां मेरी वेखी आसा, आसा नाल रलाईआ। पुरख अबिनाशी दे भरवासा, भाण्डा भरम दिता भन्नाईआ। उठ वेख खेल पृथमी आकाशा, गगन गगनंतर दयां दृढ़ाईआ। तेरा निरगुण धार बण के राखा, सरगुण हो के वेख वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दा तक लै ख़ाका, ख़ाक मिट्टी डेरा ढाहीआ। तेरा मालक जोती जाता, जोत जोत रुशनाईआ। सदा सुहेला देवे साथा, सगला संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। जगदीश कहे जन्म तों पहिलां मेरे अन्तर दिती सुध, सूझ सूझ नाल समझाईआ। मेरी निर्मल होवे बुध्ध, बुद्धी तों परे कीती पढ़ाईआ। मैनूं प्यार नाल किहा तेरी धार ने बदलणा जुग, कलयुग डेरा ढाहीआ। प्रभ दा हुक्म चलणा शुद्ध, अग्गे सके ना कोए मिटाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां कोल नहीं कुझ, कोझयां कमल्यां पार ना कोए कराईआ। मैं सहज नाल ल्या पुच्छ, चरण कँवल ध्यान रखाईआ। कवण तेरा होवे सुत, अबिनाशी करते देणा दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा

१५११
२१

मैं बदल जाणा रुख़, रुख़सत दीन दुनी तों पाईआ। इक्को जननी सुफ़ल कर के कुक्ख, भगतां देवां माण वड्याईआ। जगदीश हस्स के किहा विच्चों मुख, बचन सहज नाल जणाईआ। साहिब जे मौले तेरी रुत, रुतड़ी मेरी लेखे पाईआ। तूं मालक अबिनाशी अचुत, तेरे हथ्थ वड्याईआ। पुरख अकाल गोदी चुक, शब्दी धार दिता हिलाईआ। तेरा उजल करां मुख, लोकमात होवां सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। जगदीश कहे मैं कीता होर ध्यान, निगाह निगाह विच्चों उठाईआ। पुरख अकाल फड़ के मेरा कान, चारों कुंट दिता भवाईआ। उठ वेख नौजवान, आयू तेरी वड वड्याईआ। चार युग झुलणा सच निशान, जिथ्थे निशाना तेरा दयां गडाईआ। झुक जाण ज़िमीं असमान, सत्त रंग नूर जोत रुशनाईआ। वेखण आवण सीता राम, काहन गोपीआं फेरा पाईआ। पैग़म्बर कर सलाम, ईसा मूसा मुहम्मद सजदयां विच वड्याईआ। गुरु करन प्रणाम, नमों नमों जस गाईआ। तेरा मन्दिर सोहे मक़ाम, मक़बरिआं डेरा ढाहीआ। चारे वरन इक्ठे होवण आण, बरनां वाली ना कोए लड़ाईआ। आत्म ब्रह्म करन पहचान, ज़ात पाती डेरा ढाहीआ। सतिगुर शब्द तेरा मेहरवान, महबूब इक अख्वाईआ। तेरा लेखा वेखे विच जहान, जहालत मेटे कूड़ लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। जगदीश कहे मैं मात गर्भ कीती निमस्कारी, शब्दी धार निउँ निउँ लागा पाईंआ। तेरे चरण कँवल बलिहारी, सद देणी माण वड्याईआ। पुरख अकाल किहा हउँ सदके घोली वारी, वाहवा तेरा रंग रंगाईआ। तेरे पिच्छे भगतां पैज देणी संवारी, स्वार्थ आपणा ना कोए रखाईआ। सच दुआर बणाए वड दरबारी, भगत दुआर नाउँ रखाईआ। शंकर छड्ड जाए सिक्दारी, तेरा रंग वखाईआ। प्रेम प्रीती इक निआरी, अलख अगोचर आप समझाईआ। जगदीश कहे मैं मस्तक धूढ़ लाई छारी, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। की लेखा देवे विच संसारी, सहिसा रोग दए गवाईआ। पुरख अकाल किहा मेरी खेल अपर अपारी, अपरम्पर हो के दयां दृढ़ाईआ। कलयुग रैण होणी अन्ध अंध्यारी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर चेल्यां टुट्टणी यारी, पिता पूत ना अंग लगाईआ। दुहागण होए जगत नारी, सृष्टी दृष्टी विच हल्काईआ। चारों कुण्ट धूआँधारी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। चार जुग दे शास्त्र रोवण ज़ारो ज़ारी, ज़ाहर ज़हूर नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर बख्श फेर सच्ची सिक्दारी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भगत दुआरा सोहे महल्ल अटारी, अटल पदवी इक जणाईआ। परपंच मेटण नूं मेरे होण पंज लिखारी, पंजां दा पंजा गोबिन्द गया लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। जगदीश किहा प्रभू पंज लिखण की लिख्त, लेखा दे दृढ़ाईआ। इक नाल तैनूं क्यों नहीं आया सिदक, बेसबरे देणा दृढ़ाईआ।

मेरी तेरे अग्गे मिन्नत, निउँ निउँ सीस निवाईआ। पुरख अकाल किहा पंजां शब्दां नालों पंजां चोरां दी वध गई हिम्मत, घर घर पई दुहाईआ। मनुआ मन ही करे इल्लत, इल्म आलम ना कोए चतुराईआ। साधां सन्तां होवे ज़िल्लत, खुआरी घर घर नज़री आईआ। गुरमुखां अंदरों कोए ना मेटे चिन्नत, हरख सोग ना कोए गवाईआ। बिना किरपा सांझी होए ना कोए सिम्मत, मार्ग इक ना कोए प्रगटाईआ। दीन दुनी होए हराम निमक, निमख निमख आपणा आप ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। पंज लिखारी लेखा लिखण पंचम धार, धरनी धरत धवल धौल मिले वड्याईआ। भगत भगवान दा नाता रहिणा जुग चार, चौकड़ी आपणा रंग रंगाईआ। बिना लेख लिख्त तों गंढु पए ना संसार, पर्दा उहला ना कोए चुकाईआ। जिस दी सिफ्त कर के गए गुर अवतार, पैग़म्बर गए सुणाईआ। प्रभ दा होणा खेल अपार, अपरम्पर आप कराईआ। हुक्म सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जगदीश कहे मैं तकदा रिहा वारो वार, साल बसाला ध्यान लगाईआ। मेरे पिच्छे मेरी माता अजे तक करदी रही गिरयाज़ार, अन्तर अन्तर अन्तर दुःख मनाईआ। मैं तिन्न दिन पहिलों रो के कीती पुकार, साढे तिन्न घंटे भगत दवारे आ के सीस निवाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, तेरे हथ्थ वड्याईआ। रोणा धोणा होए ना तेरे विच दरबार, नेत्र नीर ना कोए वहाईआ।

इक्को वार सब नूं दे अधार, उदर तों बाहर देणा समझाईआ। जगदीश कहे एसे कारण रणजीत कौर नूं पई मार, मेरी बेनन्ती आपणे लेखे लाईआ। अग्गे तों मेरे बदले कोए ना रोवे विच संसार, भैणां भाईआ दयां दृढ़ाईआ। मेरे पिच्छे भगतां दी लग्गी बहार, भगत दुआरा सोभा पाईआ। नीहां हेठां मैनूं दिता सवाल, गोबिन्द आपणा रंग रंगाईआ। नौ दवारे खोल्ह अपार, अपरम्पर भेव चुकाईआ। एह खेल सच्ची सरकार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच देवे माण वड्याईआ। जगदीश कहे मेरी इहो अगम्मी ख़बर, बेख़बरां दयां दृढ़ाईआ। सब ने सदा करना सबर, भाणे विच सीस निवाईआ। वेखो पैग़म्बर इशारे करदे विच्चों क़बर, काअबिआं परे कुरलाईआ। सब दा मालक इक्को शेर बब्बर, भबक नाम वाली सुणाईआ। जिस दा भगत सुहेला साचा टब्बर, दुतिया वंड ना कोए वंडाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां टिक मारक लगाए नम्बर, हिस्सयां विच समझाईआ। पुरख अकाल सर्ब भरतम्बर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईआ। छब्बी पोह जिस ने भगतां दा इक्को वार करना स्वयम्बर, नारी कन्त बुढ्ढे नढ्ढे जोड़ी जोड़ी देणे बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। सतारां सावण कहे मैं उठ्ठया सुत्ता, अठारां साल पिच्छों लई अंगड़ाईआ। जगत सुहावणी वेख के रुत्ता, मेरे अन्तर वज्जी वधाईआ। सब

१५१२
२१

दा पूरब लेखा पुज्जा, अग्गे हुक्म शहिनशाहीआ। रमज़ इशारा समझे कोए ना गुज्झा, बच्चयां वांग सारे भरम भुलाईआ। भगत भगवान दा लेखा हो नहीं सकदा दूजा, आदि जुगादि इक्को रंग समाईआ। छब्बी पोह समझाउणा मुद्दा, मुद्दत दे विछड़े लए क्यों मनाईआ। सब तों अग्गे जोड़ा उह बहाउणा जेहड़ा सब तों होवे बुढ्ढा, अन्त अख़ीरी वक्त वखाईआ। माण दवाउणा उत्ते बसुधा, बुध्ध सुध आप बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। सतारां सावण कहे मैं वेखणे प्रभ दे जोड़े, जो भगती विच वड्याईआ। जो इक दूजे नूं रहे लोड़े, प्यार मुहब्बत विच समाईआ। भावें बहुतिआं नालों रह जाण थोड़े, थोड़े इक्को घर वसाईआ। मेरे साहिब सतिगुर चढ़ना उपर घोड़े, रासां वागां आपणे हथ्थ फड़ाईआ। हरिसंगत दे हथ्थ विच होणे निक्के पंज पंज रोड़े, रोड़ी सक्खर लेख चुकाईआ। दो गुरमुख इक्ठे होणे जोड़े, जोड़ा जोड़ वंड वंडाईआ। शब्दी हुक्म नाल तोरे, तुरत आपणी कार कमाईआ। सतिगुरु दुआरा सब ने समझणा इहो पईए ते इहो सौहरे, गृह इक्को नज़री आईआ। नाउँ निरँकार गाउणे दोहरे, दोहरी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। जगदीश कहे मैं वेखणा अजब नज़ारा, नज़रीआ नज़र उठाईआ। मैं वी जवान हो के बणया लाड़ा, सतारां हाढ़ वज्जी वधाईआ। गीत सुणया नाल बहारा, खुशीआं रंग रंगाईआ। रंग माणिआ पुरख नारा, बाले नढ्ढे संग मिलाईआ। अगला खेल सच्ची सरकारा, सरोकार आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। जगदीश कहे मैं तकणी खेल निआरी, निराकार देणी वखाईआ। प्रभ दे नाल पल्लू गंढुण पंज लिखारी, इक्की इक्की हथ्थ डोरी सोभा पाईआ। पंज प्यारे खिच्च नंगी तलवारी, लाल रंग नाल रंगाईआ। खुल्ली छड्ड के आपणी दाढ़ी, दाअवेदार जगत हो आईआ। आपणे नैणां आवण श्रृंगारी, नेत्र नाम टिकाईआ। होका देवण जन भगत बणयो ना कोए ग़द्दारी, गदागर ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतारां सावण कहे की खेल दस्सां हक़ीक़ी, हुक्म अगम्म अथाहीआ। पिछली पिच्छे धार बीती, अगली अग्गे देणी दृढ़ाईआ। किस बिध भगतां बदले नीती, एह करनी देणी कराईआ। गुरमुखां पंज क़दम चलणा अक्खीं मीटी, अक्खां मीटयां सब नूं दरस दिखाईआ। शब्द दी इक गुरमुख विसल वजाए बण के टीटी, बिन टक्कयां सेव कमाईआ। सब नूं अमृत धार देणी मीठी, रस मिट्ठा इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच आपणी कार कमाईआ। जगदीश कहे बुढ्ढीआं नढ्ढीआं बीबीआं दे सिर ते होवे लीड़ा सूहा, सूहा रंग रंगाईआ। सज्जे हथ्थ नाल आपणे घरों मार के आवण बूहा, भित्त दरवाज़ा बन्द कराईआ।

अंदर आसा रखणी असीं इक प्रभू दीआं रूहां, जो सब दा पिता माईआ। ओसे दीआं धीआं ते ओसे दीआं नूहां, अग्गे करे ना कोए लड़ाईआ। सतिगुर शब्द सब दा बणे सूहा, अंदरे अंदर खोज खुजाईआ। सब ने मुख धो के आउणा नाल पाणी खूहा, प्रीती इक वधाईआ। मुखों कहिणा असीं माण लैणा वांग ध्रूआं, धुर धार विच समाईआ। साडा प्रभ दे लेखे साढे तिन्न करोड़ लूंआं, लूं लूं अंदर रचया नज़री आईआ। खैड़ा छड्डया जगत गुरुआं, सतिगुरु इक्को ल्या मनाईआ। जिस दा लेखा बाहर लोआं पुरीआं, पुरी अनन्द वाला वड्याईआ। सानूं गोद बहाए कोझीआं कमल्यां बुरीआं, मतहीण दए वड्याईआ। सानूं कोह ना सकण जगत विकार दीआं छुरीआं, शहिनशाह आपणे रंग रंगाईआ। चार जुग दीआं विछड़ीआं रूहां तुरीआं, तुर तुर पन्ध मुकाईआ। अन्त ओस दवारे मुड़ीआं, जिथों फेर ना कोए परताईआ। निरगुण आत्म हो के जुड़ीआं, जोड़ी प्रभ दे नाल रखाईआ। जिथ्थे इक्को माण मुंडे कुड़ीआं, तत्तां वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सावण कहे गुरमुखो सब ने बण के आउणा लाड़े, सोहणा रंग बणाईआ। बुढ्ढे नढ्ढे दिन दिहाढ़े, भज्जणा चाँईं चाँईंआ। उस दिन सर्दी वाले होणे जाड़े, पवण आपणा रंग रंगाईआ। पाणी तुहानूं कोई ना ठारे, सीतल सीत ना कोए वखाईआ। अंदरों सब ने कहिणा असीं अज्ज तक रहे कुँवारे, साची होई ना कोए कुड़माईआ। विआह कीते भाई चारे, सज्जण मित्रां खुशी मनाईआ। बिन सतिगुर तों साचे घोड़े कोई ना चाढ़े, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। एह खेल सच्ची सरकारे, हरि करता आप कराईआ। बुढ्ढयां मारने उच्ची उच्ची ललकारे, कूक कूक सुणाईआ। असीं चढ़ना अगम्मी खारे, जिथ्थे कंडा ख़ार ना कोए चुभाईआ। विषे विकारां दे भोग भोग लए सारे, सुरती सार कोए ना आईआ। जम्मदे मरदे रहे विच संसारे, आवण जावण खेल खलाईआ। जे सतिगुर किरपा करे बेड़ा पार उतारे, नईआ नौका नाम चढ़ाईआ। सुख तक्कीए उस महल्ल मुनारे, जिथ्थे निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। बीबीआं सब ने वाह के आउणा केस, केसाधारी दए वड्याईआ। अंदर चाउ जा के मिलणा गुर दस्मेश, दह दिशा दा मालक नज़री आईआ। बुढ्ढयां नढ्ढयाँ होणा उस दे पेश, पेशीनगोई गोबिन्द सब दी वेख वखाईआ। सब दी बदली कर के रेख, ऋषीआं मुनीआं पन्ध चुकाईआ। इक्को दे धुर संदेस, संदेसा अगम्म अथाहीआ। तेरे चरण रहीए हमेश, विछोड़े विच विछड़ ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। जगदीश कहे मैं हुक्म दस्सणा हरि सच्ची सरकार, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। छब्बी पोह नूं सब तों वखरा होणा विहार, देवत सुर अवतार गुरु पैग़म्बर हैरानी विच आईआ। की खेल करे करतार, करनी

दा करता आपणा हुक्म वरताईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण वेखण नैण उघाड़, अञ्जील क़ुरान राह तकाईआ। की करनी
दा करता हुक्म देवे निरँकार, निरवैर आप सुणाईआ। भगत दुआरा भगतां दा दरबार, दरबारी प्रभ दे वेख वखाईआ। जोती
जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। जगदीश कहे मैं प्रभ दा करां
धन्नवाद, जिन्ह वादी भगतां दिती सुहाईआ। अगम्मा घर कर आबाद, जगत खेड़ा दिता प्रगटाईआ। जिथ्थे इक्को रूप
सन्त साध, वड्डा छोटा ना कोए अख्वाईआ। नाम संदेसा बोध अगाध, शास्त्रां वाली ना कोए पढ़ाईआ। नाम क़लमा धुर
दा नाद, अनादी आप जणाईआ। साहिब सतिगुर हो विस्माद, बिस्मिल आपणी कार कमाईआ। हू अल्ला अल्ला हू गॉड,
गॉड गाईड आपणा पर्दा लाहीआ। अवतार पैग़म्बरां मँग मँगी आज, सुबह अठ्ठ वजे वास्ता पाईआ। पुरख अकाले तेरा
बदलदा वेख्या समाज, भगत सुहेले रंग रंगाईआ। अग्गे इक दा होणा राज, रईयत खुसणी थाउँ थाईंआ। असीं चौहुन्दे
तेरे लिखारी करन प्रशाद, पुरुषार्थ आपणा दिता दृढ़ाईआ। क्यों तूं सब दा परमात्मा इक आत्मा तेरी आवाज़, राज़ इक्को
इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि करता आप हो आईआ।
१५१५ सतारां सावण कहे मेरी इक बेनन्ती, निक्की जिही जणाईआ। तेरा सम्मत ते तेरी मिती, प्रभ मित्रां नाल वड्याईआ। प्रेम १५१५
२१ तेरी सिखी, तेरा रूप नज़री आईआ। सावण फेर दिन सुहा इक्की, इक्की आपणे रंग रंगाईआ। नाम सति दी लिखणी २१
चिठ्ठी, चिठ्ठी रसैण आप हो जाईआ। जेहड़ी धार सदा अनडिठी, ओह परदा देणा चुकाईआ। भगत दवारे प्रभ ने चरण
घसाउणे उत्ते मिट्टी, नौं वार रगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच
करनी कार कमाईआ। इक्की सावण नौं नाल नौ दा होवे टाईम, बदली सके ना कोए कराईआ। लिखारी पहिले होवण
क़ाइम, मुक़ाम आपणे आसण लाईआ। आपणी आपणी चिठ्ठी लिख के सतिगुरु कोलों कराउण साईन, लेखा नाल क़लम
शाहीआ। साचा हुक्म मन्नणा ऐन, अहनलहक वांग दुहाईआ। नाता तुटणा भाई भैण, साक सज्जण ना कोए सहाईआ।
सच दवारे इक्को रहिण, इक्को गृह मिले वड्याईआ। भगत भगवान प्रभ दा वेखणा महैण, मिहणा ताअना रहिण कोए ना
पाईआ। फिरनी दरोही विच हिन्दवैण, हिन्दसा हिन्द देणा बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
सद आपणा हुक्म वरताईआ। जगदीश कहे मैं हैरान होया अती, अतिअन्त दयां जणाईआ। प्रभ ने सतारां हाढ़ नूं क्यों
नहीं लेख लिखाया जगत राष्ट्रपति, प्रधानां हुक्म सुणाईआ। इस दी समझ नहीं आई किसे रत्ती, भेव अभेदा ना कोए दृढ़ाईआ।
गुर अवतार पैग़म्बरां उस दिन बेनन्ती कीती सी वार छत्ती, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं सब दा मालक सूरबीर समर्थी,

तेरे हथ्थ वड्याईआ। असीं चौहन्दे तेरा खेल वेखीए साहिब स्वामी अक्खीं, अक्खरां वाली खेल रहे ना राईआ। जिस वेले भगत भगवान जोड़े बणा के प्रेम प्यार दी बणा लए सखी, सख़ावत आपणा नाम कराईआ। फिर लेखा लिख देवीं पहिला अक्खर आपणे हथ्थीं, अंकड़ा जगत बदलाईआ। अग्गे पढ़नी सब ने धुर दी पट्टी, पटने वाला नाल मिलाईआ। धर्म दुआर दी खोल्ह के हट्टी, हट्टवाणे देणा समझाईआ। सिँघासण कोल छब्बी पोह नूं भखा के भट्ठी, अगनी हेठां देणी जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरी खेल सदा सद अच्छी, अच्छी तर्हां अछल अछल्ल देणा दृढ़ाईआ।

१५१६
२१

✻ २१ सावण शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल ✻

सावण कहे मेरी सुहञ्जणी थित इक्की, वार वारता दयां जणाईआ। आसा रख के गए सप्त ऋषी, सति सतिवादी राह तकाईआ। वेद व्यासे पट्टी लिखी, अक्खर अक्खरां नाल जोड़ जुड़ाईआ। कृष्ण ने किहा राधा सख़ी, सुख़न अगम्म दयां दृढ़ाईआ। राम सीता वखाया अक्खीं, निज नेत्र अक्खखुल्हाईआ। वशिष्ट खेल वेख्या लख चार अस्सी, चुरासी पर्दा लाहीआ। मूसा नज़ारा तक्कया हो बेवसी, वसल वेख नूर अलाहीआ। हज़रत ईसा हथ्थ लाया रस्सी, सलीब फाँसी नाल छुहाईआ। मुहम्मद इक उँगल नाल दाढ़ी कीती रत्ती, नौ सौ नड़िनवे वाल रंग रंगाईआ। नानक मन्न के कमलापती, पतिपरमेश्वर सीस निवाईआ। गोबिन्द खड़ग कटार फड़ के हथ्थीं, कूड़ क्रिया कीती सफ़ाईआ। धरनी धरत धवल धौल मँग मँगी अच्छी, अच्छी तर्हां ध्यान लगाईआ। जल धारा विच आउँदा रिहों बण के कच्छ मच्छी, रूप अनूप बदलाईआ। मेरी आशा खिड़ खिड़ा हस्सी, हस्ती तकणी बेपरवाहीआ। जेहड़ी वंड कर के ग्यों सूर गाँ वच्छी, विश्व दे मालक पर्दा देणा उठाईआ। कथा कहाणी सुणावीं सच्ची, सच संजम इक दृढ़ाईआ। तेरी धार प्यार होवे अगम्मी बच्ची, बचपन आपणे लेखे लाईआ। कौल इक़रार कर ना नस्सीं, चार जुग दे गुर अवतार पैग़ंबर ध्यान रखाईआ। मानव मानुख मानस इक वसावीं बसी, खेड़ा इक्को इक वड्याईआ। दीनां मज़हबां विच ना फसीं, फ़ैसला आपणा हक़ सुणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरा आउणा होवे मसीं, मसल्यां विच जणाईआ। धरनी चार कुण्ट फिरे नस्सी, भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। सावण कहे प्रभ वेखणे पईए सहुरे, सौंह सुगंदी तेरी इक वखाईआ। मेरे मालक गम्भीर गौरे, गहर गवर तेरी वड्याईआ। तुध बिन कारज कदे ना सौरे, ग़मी ग़म ना कोए बणाईआ। तेरा

१५१७
२१

रूप होवे अवर का औरे, हरिजू आपणा फेरा पाईआ। अगम्मी धार जेहड़े शब्दी वरके रखे कोरे, अक्खर सके ना कोए लिखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां हिस्से दिते थोड़े थोड़े, नाम क़लमे झोली पाईआ। स्त्री मर्द बणा के जोड़े जोड़े, सीता राम कृष्ण काहन इष्ट वखाईआ। पैग़म्बरां गुरुआं चढ़ा के उत्ते घोड़े, शाह सवारे दिते जणाईआ। धरती उत्ते फिरदे दौड़े, भज्जण चाँईं चाँईंआ। तेरे हुक्म दे ला के पौड़े, दीन दुनी गए वखाईआ। अन्तिम वेले कोई ना बौहड़े, सदा होवे ना कोए सहाईआ। ज़ातां पातां दे अटका रोड़े, मंज़ल साफ़ ना कोए वखाईआ। सब दे समें थोड़े थोड़े, आदि दा नज़र कोए ना आईआ। इक दूजे दी कीती सारे गए मोड़े, मार्ग इक ना कोए चलाईआ। तेरा धर्म वंडया गया उपर ढोरे, चुपाइआं पशूआं राह बणाईआ। नसलां वंडीआं काले गोरे, चिट्टी धार समझ किसे ना आईआ। तेरे निक्के निक्के बांके छोहरे, जगत नाम खिलौणिआं खेल खिलाईआ। तीर्थ तट सरोवर बणा के जौहड़े, पाणी विच नाम मधाणी गए समझाईआ। जिथ्थे फिरदे जल होड़े, मच्छ कच्छ फेरीआं पाईआ। बिन तेरी किरपा सारे फिरदे दौड़े, अगला पन्ध ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सावण कहे मेरा दो इक दा मेला, इक्की प्रविष्टा दए गवाहीआ। आपे गुरु ते आपे चेला, गोबिन्द दा लेखा पूरा दयां कराईआ। दीन दुनी तों हो के वेहला, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग आपणे विच समाईआ। आपे बण के सज्जण सुहेला, सगला संग बणाईआ। अचरज खेल प्रभू कल खेला, ख़ालक ख़लक ना कोए वड्याईआ। दुनियां वेख के जंगल बेला, साढे तिन्न हथ्थ मन्दिर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। सावण कहे मैं सुहञ्जणा, सोभावन्त रमणीक। मेरा मालक आदि निरँजणा, जिस दे विच हक़ तौफीक़। मेरा साहिब दर्द दुःख भय भञ्जणा, आदि जुगादी इक तबीब। निरगुण धार सरगुण सज्जणा, सब दी मनसा पूरी करे उम्मीद। नेत्र नाम पाए अंजणा, कूड़ अन्धेर मिटाए तारीक। हुक्म संदेसे गुर अवतार पैग़म्बरां दिते सब ने वंञणा, वञ्झ मुहाणा रहिण कोए ना पाईआ। डंडावत बन्दना, बन्दगी बन्दगी विच्चों प्रगटाईआ। सजदयां विच्चों साहिब लभ्भणा, सहज गया दृढ़ाईआ। दीन मज़हब बणा के हद्दना, वंड जगत विच कराईआ। जिस दे अंदर सब ने बज्झणा, लकीर फ़कीर दिती दृढ़ाईआ। नाम बंसरी बणा के वञ्झणा, मट्टी पोरी सोभा पाईआ। मढ़ी गोर किसे नहीं दब्बणा, अगनी तत जलाईआ। बिन प्रभ किरपा अग्गे किसे ना वधणा, वञ्झ मुहाणा कम्म कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सावण कहे मेरी अगम्मी सुबह, सुबहान अल्ला कहि के दयां जणाईआ। मेरे महबूब दा इक्को मुद्दा, जो मुद्दतां वेख वखाईआ। खेल करे उपर

बसुधा, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। जो इशारा दे के गया बुधा, बुद्धी तों परे गया जणाईआ। उस दा भेव खुल्हावे गुज्झा, पर्दा अन्तर रहे ना राईआ। बिना भगतां तों रहे कोई ना झुग्गा, झुग्गीआं वाले डेरे ढाहीआ। इक्को पुरख अकाल होणा उग्घा, उगण आथण करे रुशनाईआ। धुर दे नाम दा लए कोई ना भुग्गा, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। कूड़ी रहे कोए ना दुबदा, निरगुण धार इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सावण कहे मेरी वेखणी खेल अपारी, अपरम्पर रिहा जणाईआ। जिस दी खेल निआरी, निराकार आप दृढ़ाईआ। करे सच विवहारी, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। लहिणा देणा पूरा करे नर नारी, नर नरायण होए सहाईआ। बुढ्ढयां नढ्ढयाँ आउँदी जांदी वारी, वेला वक्त दए गवाहीआ। छब्बी पोह नूं सब ने करनी त्यारी, त्रैगुण अतीता आप दृढ़ाईआ। इक कोरा भाण्डा लिआउणा प्यारो घुम्यारी, सब दे धुमारक इक्को वार दए भन्नाईआ। चार गुरमुख रहिणे बण हुशियारी, माझा मालवा दुआबा जम्मू वंड वंडाईआ। जिन्हां ने कदी मुन्नी होवे ना दाढ़ी, दूआ रूप ना कोए धराईआ। ओह चारे काहनी बण के चुकणगे खारी, ख़ालस आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतारां सावण कहे मैं इक्की नूं दिता संदेसा, संध्या दिता जणाईआ। उठ वेख आपणा पेशा, पेशीनगोई पर्दा लाहीआ। की लेखा होणा मुल्ला शेखा, शख्सीअत की कार कमाईआ। की लहिणा होणा गणपति गणेशा, गहर गम्भीर कार कमाईआ। की आपणा करना वेसा, नौ रंग दे वस्त्र लए बदलाईआ। सतारां गज़ दा मारना पेचा, पेचीदा आपणी गंढु पुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल खिलाईआ। सतारां सावण कहे सतारां गुरमुख होणे उग्घे, उदम विच वड्याईआ। जिन्हां दी निर्मल होवे बुध्धे, बुद्धी वाली ना कोए चतुराईआ। उन्हां इक्को दुआरा सुज्झे, पुरख अकाल अकाल सरनाईआ। नाते छड्डु देणे दूजे, मुहब्बत कूड़ ना कोए वधाईआ। अठ्ठ जवान ते नौ होवण बुढ्ढे, वंड आपणी आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सतारां सावण कहे इक्की बणने ओह पुजारी, जेहड़ी पूजा गोबिन्द सिखां गया समझाईआ। अज्ज तक्क उस दी ख़बर आई नहीं किसे सारी, सार सक्कया कोए ना पाईआ। पंजां प्यारयां दस्सी सी पंज वारी, हौली हौली कन्नां विच सुणाईआ। फेर उन्हां दी हथ्थ ला के दोवें दाढ़ी, मुख आपणे उत्ते फिराईआ। फिर कढ्ढके नंगी कटारी, आपणे मस्तक उत्ते छुहाईआ। फेर तक जोत निरँकारी, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। फेर कर निमस्कारी, चरण कँवलां सीस झुकाईआ। जे तूं मेरा मैं तेरा गोबिन्द दी गोबिन्द नाल यारी, बिन गोबिन्द तों गोबिन्द कम्म किसे ना आईआ। तेरी मेरे उत्ते ना होवे बेएतबारी, यकीन

भरोसा दयां दृढ़ाईआ। पुरख अकाल किहा गोबिन्द ना मैं पुरख ना मैं नारी, रूप अनूप तेरा मेरा इक्को नज़री आईआ। हुण तेरी शहादत सतिगुर शब्द देवण पंज लिखारी, जिन्हां दा लेखा ना कोए बदलाईआ। रुत सुहञ्जणी होवे बहारी, महक आपणी नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। सतारां सावण कहे ओह इक्की सावण जोड़ दे हथ्थां, दो इक दा मेल मिलाईआ। मैं कथा कहाणी दस्सां, सच सच समझाईआ। जिस ने तारे करोड़ां लखां, गिणती गणत ना कोए गिणाईआ। सेज हंढ्ढा के कक्खां, यारड़ा ल्या मन्नाईआ। वस के घट घटा, आपणा रंग रंगाईआ। पिट्ठ उठा के भथ्था, तरकश कंध टिकाईआ। बण के हट्टा कट्टा, सूरबीर सोभा पाईआ। उस ने खेल करना रूप धरना तत्तां दे बदले शब्द गुरु दा होणा वट्टा, लेखा समझ ना कोए समझाईआ। नाता छड्ड के तत अठ्ठा, आपणा पर्दा दए चुकाईआ। मेला कर के सांझा इक्ठा, गोबिन्द गोबिन्द रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सावण कहे मेरा साँवल सुंदर, मोहन मोहनी नज़री आईआ। जिस दी कोई नज़र ना आए उँगल, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। चार जुग गुर अवतार पैग़म्बरां पाउँदा रिहा गुंझल, लोकमात ना कोए खुल्हाईआ। उस दा नाम कलमा मूल ना बुज्झण, सिफ्ती ढोले सारे गाईआ। अन्तिम सब दे भाण्डे करे मूधन, सिर सके ना कोए उठाईआ। सदी चौधवीं सारे लग्गे ऊंघण, नव जोबन लए ना कोए अंगड़ाईआ। नेत्र अक्खीआं लग्गे पूंझण, छहिबर बन्द ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच करनी कार कमाईआ। सतारां सावण कहे डल्ले दे ढाई होणे वस्त्र, ढाई रंग रंगाईआ। हथ्थ विच फड़ी होवे नस्तर, तिक्खी धार नाल समझाईआ। तिन्न मुक्खी होवे शस्त्र, चिक्कड़ मिट्टी नाल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सावण कहे पंजां प्यारयां बन्न्हणीआं दस्तारां दो दो, दोहरी धार समझाईआ। इक पीली इक चिट्टी जाए हो, दोहां दा मेला सहज सुभाईआ। इक ते सस्सा इक ते होड़ा अक्खर बणे सो, हँ दोहां विच लुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। सावण कहे मान सिँघ बणया होवे बुल्ला, वाल पिच्छे नूं सुटाईआ। नौ वार आण के कहे मैं भुल्ला, गोबिन्द तेरी बेपरवाहीआ। भगत दुआरा वेहड़ा होवे खुल्ल्हा, ख़ालक ख़लक पर्दा लाहीआ। साचे कंडे होवे तुल्ला, तोल तराज़ू हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सावण कहे पंजां लिखारीआं कीते होण कमरकसे, धुर दी वंड वंडाईआ। खुशी नाल फिरन नस्से, लिखण चाँईं चाँईंआ। गल विच साढे तिन्न तिन्न हथ्थ धागे होवण कच्चे, अग्गे पिच्छे

१५१९ २१

गंढ ना कोए पुआईआ। मस्तक लिख्या होवे असीं ओस प्रभू दे बच्चे, जो बचपन आपणी झोली पाईआ। इस तों अग्गे अठ्ठ भाद्रों फेर दसांगा पते, पतिपरमेश्वर पर्दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हर घट अन्तर अन्तर वस्से, बिन किरपा नज़र किसे ना आईआ।

✻ २७ सावण शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल
बीबी चरणजीत कौर फ़रीदकोट दे (प्रशाद कराउण ते) ✻

सावण कहे तक्कणा प्रेम प्यार दा बरसा, माह मास दिन वज्जे वधाईआ। गोबिन्द नौ वार चरण छुहाया विच सरसा, वहिणां विच वहिण दिता बणाईआ। नौ अक्खरां दा लिख के धरया विच पर्चा, प्राचीन दा भेव खुल्हाईआ। जिस वेले कलयुग कल कल्की दी होवे चर्चा, चर्चां विच पए दुहाईआ। दीन दुनी राह तक्के उपर अर्शा, अर्शी प्रीतम वेख वखाईआ। ओह प्रगट हो के उपर फ़र्शा, फ़ैसला हक़ो हक़ सुणाईआ। जन भगतां मेटे जन्म जन्म दीआं हरसां, हिरस हवस अगली रहे ना राईआ। निरगुण धार दे के दरसा, दीद उम्मीद विच बणाईआ। भेव खोल्ह आपणे घर दा, गृह मन्दिर पर्दा दए उठाईआ। नूर प्रकाश कर नरायण नर दा, नर हरि आपणी कल धराईआ। गुरमुख गुरसिख फिरे वरदा, वारस हो के आपणा जोड़ जुड़ाईआ। लहिणा देणा लेखा जाणे दक्खण पहाड़ लैहन्दा चढ़दा, चारों कुण्ट खोज खुजाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला जाए पढ़दा, अनबोलत राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सावण कहे मैं सुणया अगम्मी सलोक, हरि करते दिता दृढ़ाईआ। खेल वेखण लोक परलोक, दो जहानां पर्दा लाहीआ। नज़ारा तक्कणा निर्मल जोत, जोती जाता नूर अलाहीआ। जिस दा अगम्मी होवे चोज, चोजी प्रीतम प्रीती इक दृढ़ाईआ। सति धर्म दी दस्से खोज, पर्दा अंदरों दए उठाईआ। नौ खण्ड पृथमी एका जोग, जुगती इक्को समझाईआ। दूई दा रहे कोई ना रोग, द्वैत अंदरों दए कढ्ढाईआ। आत्म रस दे के भोग, कूड़ी तृष्ना जगत मिटाईआ। आत्म परमात्म बणा संजोग, जुगती मेला आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, हरि करता बेपरवाहीआ। सावण कहे मैं वेखणा खेल निराला, निराकार दए वखाईआ। जन भगतां लेखे लाए घाला, पूरब पूरब फोल फुलाईआ। दो गुरमुख रूप धरन मर्दाना बाला, नानक निरगुण वज्जे वधाईआ। सति धर्म दी सुहञ्जणी सुहाउणी धर्मसाला, धर्म दुआरा

१५२०
२१

इक प्रगटाईआ। वेखण आए सिँघ पाला, रूप अनूपा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सावण कहे नौ गुरमुख बणे होण नाथ, नाथ अनाथां वेख वखाईआ। चुरासी सिद्ध होण साथ, सगला संग आप बणाईआ। शंकर शंकर गावण गाथ, ओम ओम दा ढोला सुणाईआ। त्रिसूल बणा के उपर माथ, मस्तक आपणा रंग रंगाईआ। हथ्थ विच इक इक्क फड़या होवे काट, कार्ड जिस नूं कहे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा दए खुलाईआ। सावण कहे मैं वेखणा अगम्म समागम, समग्री बेपरवाहीआ। जोड़ा बणया होवे माई हव्वा ते बावा आदम, आदमीआं वाला रूप ना कोए जणाईआ। नाल नज़री आए इक क़ातल, खण्डा खड़ग हथ्थ चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच मेला लए मिलाईआ। सावण कहे जो भगत सुहेला बणे ऐलीशाह, ऐली रूप वटाईआ। नौ वार मुख नाल लए लम्बा साह, हौक्यां विच जणाईआ। दो हथ्थां रंगली मैहन्दी लवे ला, मुहम्मद शहादत इक भुगताईआ। सजदयां विच सजदा करे ख़ुदा, ख़ुदी तक्ब्बर डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दा रोग सोग मेटे मर्ज़ शुदा, शुद्ध आत्मा दए कराईआ।

१५२१ १५२१

२१ २१

❋ ३१ सावण शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल लैफ़टीनैंट चेला सिँघ ते तेजभान जम्मू दे नवित्त ❋

सावण कहे मेरी मेघला धार रुती, रुतड़ी जगत रही बदलाईआ। मैं चार कुण्ट चार जुग दी कटी बुत्ती, बुतख़ान्यां वेख वखाईआ। दुनियां नींद दी ग़फ्लत सुत्ती, मज़हब महबूब ना कोए मिलाईआ। मन कल्पणा रोंदी उच्ची, कूक कूक सुणाईआ। मैनूं रविदास दी दिसी टुट्टी जुत्ती, गंढु पाणे वाले रखाईआ। जिथ्थे रमज़ प्रभू दी लुकी, लुकमान कहि के गया समझाईआ। सिरफ़ धार आवे दो तुकी, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गाईआ। मंज़ल जगत जहान जाणो मुकी, अगला पन्ध ना कोए रखाईआ। भगत सुहेला दिसे सुखी, सुख सागर डेरा लाईआ। जगत वासना विषा करे ना दुखी, विश्वास आपणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सावण कहे मैं पिछला ढोला आया गावण, गा के दयां जणाईआ। जिस वेले रिषीआं आशा रखी मिलणा बलि बावन, बावन अक्खरी ध्यान लगाईआ। शब्दी धार उपजी इक्कावन, अवतार पैग़म्बर गुर गुर दृढ़ाईआ। खेल करे पतित पावन, बेपरवाह बेपरवाही

विच समाईआ। उस वेले रिषी जल ठंडे नाल नहावण, तीह प्रविष्टा नाल रलाईआ। मुखों तूं ही तूं गावण, गा गा शुकर मनाईआ। अन्तर आशा रखी प्रेम महीना चावन, चाउ घनेरा इक जणाईआ। तेरी याद विच खुशीआं सर्ब मनावण, मन ममता मोह मिटाईआ। सानूं फड़ा आपणा दामन, दामनगीर आप अख्वाईआ। दो जहानां बण ज़ामन, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। शब्द संदेसा दिता बिना कानन, शब्दी सुत मिलाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट जानण, अन्तरजामी बेपरवाहीआ। कर प्रकाश कोट भानन, भाण्डा भरम भउ भन्नाईआ। याद रखणा जिस वेले माण मिटिआ वेद पुराणन, स्वास साह ना कोए चतुराईआ। हरि का रूप सके ना कोए पहचानन, जगत नेत्र नज़र कोए ना आईआ। किरपा करे श्री भगवानन, भगवन आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी आवे छानन, शहिनशाह हो के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सावण कहे मैं फिरया चारों कुण्ट, कूचा गली वेख वखाईआ। कल्ह गया विच बैकुण्ठ, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। मैनूं हस्स के किहा काग भुसंड, मुखों अगम्म अलाईआ। तेरा केहड़ा टाहण ते केहड़ा मुढ, मैनूं दे जणाईआ। किस बिध रिहा उड, पुरीआं लोआं पन्ध मुकाईआ। मैनूं अंदरों गया सुझ, प्रभ सहज दिता समझाईआ। मैं हस्स के किहा मैं उस दी प्रीती विच गया लुझ, जेहड़ा लज्जया रखे थाउँ थाईंआ। एसे कारण रिहा कुॅद, ज़िमीं असमानां पन्ध मुकाईआ। शब्द आवाज़ आई जिस बावन रिषीआं धार पिच्छे बदलया युग, बावन असवमेध वंड वंडाईआ। ओथे जा के पुॅज, पिछली पूजा दे समझाईआ। जिस दा आदि तों लै के जुग चौकड़ी मुद्दा मुद्द, मुद्दत दा लेखा दए मुकाईआ। सावण घड़ी सुलखणी अख़ीरी दिवस होवे सुध, सुदी वदी ना वंड वंडाईआ। भगत दवारे जाणा पुज्ज, धरनी सोभनीक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सावण कहे एह पुराणी मेरी मँगा, मांगत हो के दयां जणाईआ। सप्त ऋषीआं आशा रखी उत्ते गंगा, तट किनारे ध्यान लगाईआ। जिस वेले आवे प्रभू सूरा सरबंगा, हरि करता धुरदरगाहीआ। बाहरों तत्तां वाला होवे बन्दा, अन्तर निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। खेल वखरा करे चंगा, चारों कुण्ट डंक वजाईआ। रिषीआं देवे ओह अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। विचोला रखे कोए ना पंडा, पंडत वंड ना कोए वंडाईआ। धार रखे कोए ना खण्डा, खण्डा खड़ग ना कोए चमकाईआ। शब्द धार संदेसा देवे सद बख्शंदा, बख्शिश आपणी कार कमाईआ। लिखारीआं गुट बध्धा होवे गाना सतरंगा, सत्त सत्त नाल जणाईआ। सब दे सीस विच दन्द खण्ड दा होवे कंघा, केस चोटी विच टिकाईआ। पिठ उत्ते लग्गा होवे सत्त रंग दा डंडा, डंडावत अगली दए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ।

सावण कहे बावन खेल दस्सां बीती, बातन पर्दा लाहीआ। रिषीआं सांझी कीती रीती, जिस वेले बलि दवारे आईआ। धर्म दी कर प्रीती, प्रेम गंढु रखाईआ। साफ़ कर के नीती, अन्तर लई अंगड़ाईआ। वस्त सच अनडीठी, पल्ले लई बंधाईआ। सब दी आशा अन्तर आत्म जीअ की, जीवण जुगती मिले वड्याईआ। तृष्ना नहीं पुत्तर धी दी, धन दौलत अक्खना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। सावण कहे रिषीआं दा उह पुराणा सगन, जो बावन भेंट कराईआ। बावन हो के मग्न, अक्खना मूल खुलाईआ। सारे लग्गे मँगण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। बावन पासा परत के किहा मेरा एह नहीं रहिणा बदन, बदला कवण चुकाईआ। हुण तुहानूं राजा बलि गया सद्दण, आपणा घर वखाईआ। तुसीं जगत दी धार फिरदे नग्न, तन भबूत रमाईआ। सहारा रखदे अगन, ततव तत तत्त तपाईआ। जिस वेले सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लँघण, अन्त अख़ीर अख़ीर समझाईआ। फिरे दुहाई उत्ते गगन, मण्डल मारन धाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। सावण किहा बावन दिता आख, सहज नाल सुणाईआ। कोई ना करयो पश्चाताप, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। जिस वेले प्रभ प्रगट होया
१५२३ आप, आप आपणा वेस वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के जाप, जग जीवण दाता हो के वेख वखाईआ। सब दा इक्को १५२३
२१ बण के बाप, पिता पुरख अकाल गोद उठाईआ। याद रखयो मेरा वाक, वाक़फ़कारो दयां दृढ़ाईआ। तुहाडा फेर खोले २१
ताक, अंदरों पर्दा लाहीआ। धर्म धार बणा के साक, सज्जण लए उठाईआ। धुरदरगाही बणा के साथ, सगला संग वखाईआ। सुहञ्जणी होवे रात, भिन्नड़ी नाल वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सावण कहे बावन ने मारी निगाह, निगाह निगाह विच्चों बदलाईआ। मार्ग वेख्या सिध्धा, साहिब रिहा दृढ़ाईआ। जिस दी कोए ना जाणे बिधा, लेखा लिखण कोए ना आईआ। जिस वेले गुर अवतार पैग़म्बरां कीता अलविदा, विद्या दी लोड़ रहे ना राईआ। भेव खोलू आत्म निजा, निज नैण करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पर्दा लाहीआ। बावन किहा जो मेरे दर ते मँगण आया मँग ग्रह, ग्रह बृहसप्त वेख वखाईआ। शुकर परोहत वेख के गया शहि, दूर दुराडा अक्खउठाईआ। सहज नाल बलि राजे नूं कह, कहि के दिता दृढ़ाईआ। उह वेख आपणी शै, शहिनशाह तों बिना ब्राह्मण भेंट कराईआ। तेरे बराबर केहड़ा बहि, छत्रधारी नज़र कोए ना आईआ। तूं दाता हो के सब नूं दए, दानी इक अख्वाईआ। जो आया तेरे मन्दिर गृह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। बावन किहा एह खेल पुरख अबिनाशी, धुर करता आप कराईआ। एह रिषी तेरां सौ

अठासी, धुर दी धार वंड वंडाईआ। जिन्हां भटकणा नहीं लख चुरासी, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज ना फेरा पाईआ। जिस वेले नूर जोत प्रकाशी, लोकमात वेस वटाईआ। शब्द संदेसा देवे बणाए आपणे दास दासी, सेवक सेवा रंग रंगाईआ। सब दी पूरी करे आसी, आहिस्ता आहिस्ता वेख वखाईआ। कलयुग होवे अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। झगड़ा दिसे ज़ाती पाती, मज़हबां विच दुहाईआ। मिले मेल ना कमलापाती, पतिपरमेश्वर नज़र किसे ना आईआ। जिस आसा नाल रिषीआं दी आत्मा मन कल्पणा तों बाहर हो के सी न्हाती, जल ठंडा धार वहाईआ। तीह सावण ओसे दी फेर दुहराई गाथी, पूरब लहिणा लहिणे विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। सावण कहे मैनूं याद आया वक्त सुहञ्जणा, रिषीआं नहा के ल्या ध्याईआ। उस इक ने उन्हां पिच्छे कल्ह आपणा कीता नहाउणा, ठंडा जल सीस पवाईआ। ओधरों रिषीआं नूं हुक्म नाल उठाउणा, पाँधी आप बणाईआ। पिछला सगन नाल लिआउणा, विचोला हो के दिता दृढ़ाईआ। खुशी नाल दोहां ने फड़ के भेंट कराउणा, हथ्थां उत्ते देणा टिकाईआ। सब ने सोहँ ढोला गाउणा, पंज वार सुणाईआ। बावन बलि दवारे गया बण परोहणा, भगत सुहेला रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी खेल रचाउणा, रचना आप दए दृढ़ाईआ। चाली दिवस साचा रंग रंगाउणा, रंगण आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार सरनाईआ। प्रशाद कहे मेरा कोई वखरा नहीं स्वादा, सच दयां जणाईआ। चाली दिन प्रभू नूं लंगर तों खाणा पए प्रशादा, दिवस रैण हथ्थ उत्ते रखाईआ। जिस ने रिषीआं नूं मार के अवाज़ा, सुत्यां आवाज़ां ल्या उठाईआ। किहा प्रेमी प्यारया आ जा, अज्ज दा दिन वड्याईआ। सदा अख़ीरी दिन सावण दे अठ्ठ तों दस तक प्रभ दा ध्यान धरदा सी बलि राजा, बिना बावन तों समझ किसे ना आईआ। एसे कारण उह पूरा कीता काजा, पिछला पिछल्यां नाल रलाईआ। साढे दस दा वक्त इक संदेसा दिता सी राधा, कृष्ण राधा गया समझाईआ। मेरे काहन ने चार जुग पिच्छों पकवानां दा करना नागा, नाग डस्सणी माया दा डेरा ढाहीआ। एह पूरा होणा वायदा, वाहिद आपणी कार कमाईआ। बिना किरपा तों किसे नूं मिले कदे ना फ़ायदा, कोटन कोटि कोट सेव कमाईआ। साहिब सतिगुर सब दे अंदरों प्रीती दा लैंदा जाइज़ा, बाहरों हथ्थां पैरां वल ना वेख वखाईआ। इक गोबिन्द नाल मुआहिदा, माछूवाड़े सेज सुहाईआ। तैथों कदे ना होणा अलाहिदा, वखरा घर ना कोए बणाईआ। मैं तेरी पट्टी ते तूं मेरा काइदा, दोहां दा लेखा इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद करनी कार कमाईआ। प्रशाद कहे एस प्रभू दा नहीं जे एतबार, जुग चौकड़ी समझ कदे ना आईआ। पता नहीं की की अग्गे करे विहार, विवहारी हो के

खेल खिलाईआ। जिस ने छड्डणे यार, मित्र देणे तजाईआ। अनगिणतां विच्चों लभ्भ के दस पंज दो चार, चार जुग दा रंग रंगाईआ। जो आदि दा अन्त दा मध्ध दा मधू ख़िदमतगार, ख़ादम खुद वेख वखाईआ। उस दा गुर अवतार पैग़म्बर करदे रहे इंतज़ार, जो इंतज़ामीआं धुरदरगाहीआ। जद चाहे पतित पापीआं नूं जाए तार, अपराधी पार लँघाईआ। उस दे दर ते इक दो दी नहीं विचार, एकँकार इक्को रंग रंगाईआ। रिषीओ तुहाडा लहिणा अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आपणे लेखे पाईआ। छब्बी पोह नूं इहो सगन किसे दी झोली विच देवे डार, जिस दा नाता अवर ना कोए बणाईआ। ओह छड्ड जगत संसार, माया ममता मोह मिटाईआ। एह खेल होणा अपार, हिरदे सब दे दए हिलाईआ। पता नहीं उस वेले केहड़ा गुरमुख रहे बरक़रार, कि सारे पिट्ठ जाण भवाईआ। जिन्हां दे अंदर आया तकरार, उन्हां नूं दर तों बाहर कढ्ढाईआ। प्रभू नूं इक भगत चंगा भावें कोटन कोटि होवे संसार, बहुतिआं दी लोड़ रहे ना राईआ। इक जोत जगमग जगे जिस नूं सजदे करन गुरु अवतार, पैग़म्बर सीस निवाईआ। एह सगन छुपया रिहा जुग चार, चार कुण्ट वेखण कोए ना पाईआ। नन्ही बच्ची एस दा खुशीआं नाल मनावे तिउहार, तिउड़ी मथ्थे ना कोए टिकाईआ। गुरदर्शन पंज लै के हथ्थ विच हार, हिरदा साफ़ कर के हरी दा हरी गुण गाईआ। गोली दा लहिणा अपर अपार, जेहड़ा धुर तों चलया आईआ। एह सगन जगत जुग दा विहार, भगत भगवान दी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दी करनी कार कमाईआ। सावण कहे मेरे वज्जे साढे दस, दह दिशा आवां सुणाईआ। इक्की गुरमुखां कमरकसे आउणा कस, छब्बी पोह राह तकाईआ। सब दे सिर ते उच्चा लेखा होवे सवा हथ्थ, वद्ध घट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सावण कहे इक्की गुरमुख बणे होण बोधी, महात्मा बुध नाल मिलाईआ। इक्की गुरमुख बणे होण सोढी, गोबिन्द वजदी होवे वधाईआ। इक्की गुरमुख निशान लावण उपर गोडीं, गॉड गुड नाल मिलाईआ। इक्की गुरमुख सिर ते वालां वाली वखावण बोदी, राम राम दुहाईआ। इक्की गुरमुख नाल होवण रविदास चमार मोची, ग़रीब निमाणे निमाणे निमाणे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सावण कहे सत्तां दी लग्गी होवे सुरती, अक्खां मूंद ध्यान लगाईआ। सत्तां दी नीली होवे कुड़ती, क़मीज़ गल ना कोए छुहाईआ। सत्तां दी इक दूजे नाल शकल होवे जुड़दी, स्त्री मर्द वंड ना कोए वंडाईआ। सत्तां दी दुक्खां विच बेड़ी होवे रुढ़दी, सहायक नज़र कोए ना आईआ। सत्तां दी कल्पणा होवे मुरदी, मुर्दा मुरीद वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दा मार्ग इक

१५२५
२१

प्रगटाईआ। सावण कहे मैं सुजाखा, सुजाख्यां दयां जणाईआ। प्रभू दा सब ने मन्नणा आखा, अक्खरां वंड ना कोए वंडाईआ। मेरी जुग चौकड़ी पिच्छों भाखा, भाख्या दयां सुणाईआ। रिषीआं दी पूरी आशा, बावन मिले वड्याईआ। बलि दी सुहञ्जणी गाथा, गहर गम्भीर प्रगटाईआ। लहिणा देणा देवे साख्याता, पर्दा उहला ना कोए रखाईआ। जिस धार नाल नहाता, ठंड सर्ब दए वरताईआ। जिस प्यार विच पकवान खाधा, खा खा शुकर मनाईआ। सब दा पूरा करे वायदा, वाहवा आपणा हुक्म समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा आपणा रंग रंगाईआ। सगन कहे असीं आए मिल के तिन्न, तिन्न जुग दिते लँघाईआ। द्वापर त्रेता कलयुग लेखा ल्या गिण, गणत गिणती कर कर झट लँघाईआ। समां समझ विच ल्या मिण, नाप पैमाना हथ्थ ना कोए उठाईआ। सानूं नज़र आया उह अगम्मी चिन्ह, जिस दा रूप रंग रेख सके ना कोए समझाईआ। इक्की प्रविष्टा परा पसन्ती मद्धम बैखरी तों परे दिन, दिवस दिहाढ़ा सोभा पाईआ। जिस लहिणा देणा देणा विच छिन्न, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। पता नहीं लैणा किन्ह, साडी राम दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गिरी कहे रिषीओ तुसां कल्ह नूं बन्न्हणी गलवकड़ी वाली धोती, वस्त्र अवर ना कोए छुहाईआ। चेला सिँघ हथ्थ विच रखणी सोटी, साढे तिन्न हथ्थ लम्बाईआ। तेज भान चार मुखी जगा के जोती, थाल हथ्थ लैणा टिकाईआ। दूजे पासे राज होवे खलोती, मोग्यों चल के आपणा पन्ध मुकाईआ। इक प्रभ दे कोल नवीं रखणी लंगोटी, चिट्टा रंग सोभा पाईआ। वासना अंदर ना होवे खोटी, प्रभ चरण कँवल ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सगन कहे रिषीओ तुसां ल्यांदा मेरे अंदर खुशी, खुशी नाल जणाईआ। मैं ध्यान धरया आपणा विच रुची, रचना प्रभ दी वेख वखाईआ। जां ध्यान धरया आवाज़ आई उच्ची, अगम्म अगम्म सुणाईआ। एह खेल बहु रुखी, ऋषी मुनी सके ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। सावण कहे राज ने जगाउणा साधारन दीवा, चार मुखी तेज भान हथ्थ उठाईआ। जिस भगत दा लहिणा मुकणा सी साढे तिन्न हथ्थ काया सीमा, तन माटी मात रहिण ना पाईआ। उस ते किरपा करनी वड्याई देणी विच्चों जीवा, जीवण जुगत आपणे लेखा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सगन कहे मैं आया भज्जा, आपणा पन्ध मुकाईआ। मैं कल्ह दस्सूंगा होर की वजह, वज़ाहत नाल दृढ़ाईआ। जिस साहिब दिता सद्दा, हुक्म इक मनाईआ। आया धर्म दी धार बध्धा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। सगन

कहे मैं दस्सां अगम्म भविख्त, भरम रहे ना राईआ। हुक्म दिता सी राज नूं बिना लिख्त, संदेसे विच सुणाईआ। मातलोक विच लेखा मुक्कया कौर तरिपत, जगत रहिण कोए ना पाईआ। जिंनां चिर तेरे हथ्थ विच दीपक फड़या ना होवे सृष्ट, सृष्टी विच वखाईआ। पिछले महीने इस कारण विहार नहीं भुगताया रिषीओ अजे तुसीं बाकी दो रहन्दे सी विच लिस्ट, हुक्म नाल पूरे लए कराईआ। जिस नूं रखणा उस वास्ते भगतां दी खोलू दृष्ट, लहिणा दूसरे देणा मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। सगन कहे तरिपत ने मात पिता वलों जाणा मर, गुरमुखो गवाही तुहाडी रही बणाईआ। इक प्रभू दा मिलणा दर, जिथ्थे होए ना कदे जुदाईआ। भावें सारी दुनियां रहे सड़, अंदरे अंदर दुःख वधाईआ। जो करना सो देणा कर, प्रभ दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगत आदि अन्त जुगा जुगन्त आत्म धार सद लगाए आपणे लड़, लड़का लड़की वंड ना कोए वंडाईआ।

१५२७ ✻ ३१ सावण शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल रात दे समें ✻ १५२७

२१ सावण कहे मेरी रुत सुहञ्जणी, हरि सोभावन्त सुहाईआ। धर्म दी धार बख्श के मज्जनी, धूढ़ी धूढ़ दा लहिणा दिता मुकाईआ। इष्ट देव आदि निरँजणी, नर निरँकारा नज़री आईआ। ठाकर मीता दर्द दुःख भय भंजनी, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। लेखा जाणे बाहमी तमद्दनी, निरगुण सरगुण भेव चुकाईआ। झगड़ा मेटे काया बदनी, तन वजूद ना कोए लड़ाईआ। रंग रंगाए आहला अदनी, वरन बरन ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा मेल मिलाईआ। सावण कहे मेरी सुहञ्जणी बूँदा बांदी, अमृत मेघ बरसाईआ। चार जुग वेखे पाँधी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चल्लण वाहो दाहीआ। गुर अवतार पैग़म्बर आशा ढोला गांदी, गहर गम्भीर वड्याईआ। सति सरोवर सृष्टी दृष्टी नहांदी, दुरमति मैल कर सफ़ाईआ। जद तक्कया दीन दुनी थक्की मांदी, बलहीण होई लोकाईआ। चारों कुण्ट कूड़ कल्पणा आंधी, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। रसना जिह्वा रस विकार खांदी, तृष्ना तृप्त ना कोए कराईआ। सृष्टी वणजारन सूर गाँ दी, धर्म दी धार ना कोए दृढ़ाईआ। वड्याई करन सिफ्तां वाले नाँ दी, जो जुग चौकड़ी प्रभ बदलाईआ। पूजा करदे धरती माँ दी, जिस दी मिट्टी ख़ाक सतिगुर चरण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। सावण कहे मेरा दिवस सच दिहाढ़ा, तिओहार मिले वड्याईआ। जगत जहान वेख अखाड़ा, अक्खीं

मीट नैण खुल्हाईआ। जगत दुनी दिसे अन्धयारा, सतिगुर नैण नूर ना कोए दरसाईआ। सृष्टी भरी चिक्कड़ गारा, काम कामना ना कोए मिटाईआ। झगड़ा वेख्या जगत दुआरा, दरब कारण करे लड़ाईआ। खेल करे आप निरँकारा, निरवैर बेपरवाहीआ। सावण कहे मैं निउँ के करां निमस्कारा, सीस जगदीश दिता झुकाईआ। उस शब्द दिती धुन्कारा, आत्मक नाद सुणाईआ। उठ वेख अपर अपारा, अपरम्पर हो के दयां दृढ़ाईआ। प्रगट हो चवीवां अवतारा, दो चार जोड़ जुड़ाईआ। अक्खर हिन्दसिआं दे उधारा, टिप्पीआं बिन्दीआं लहिणा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सावण कहे मैं खुशी नाल गया लँघ, आपणा अग्गे क़दम टिकाईआ। साहिब वेख सच सिँघासण पलँघ, जिस दा पावा चूल बाडी बणत ना कोए बणाईआ। बिना नाद तों नाम वज्जे मृदँग, नाद नाद धुंन शनवाईआ। बिना शस्त्र तों बिना शरअ शरीअत तों परे होवे जंग, जगह बजगह वेख वखाईआ। बिना अस्व तों घोड़े कसिआ तंग, रासां हथ्थ ना कोए उठाईआ। मैं वेख के हो गया दंग, हैरानी मेरे अंदर आईआ। की खेल सूरे सरबंग, की तेरी बेपरवाहीआ। पुरख अकाल शब्दी धार मार के चण्ड, मेरी सुरती दिती बदलाईआ। उठ वेख नौ खण्ड, सत्त दीप रहे कुरलाईआ। आत्म मिले ना किसे अनन्द, अमृत रस ना कोए चखाईआ। भेव खुल्ले ना हँ ब्रह्म, पारब्रह्म ना कोए मिलाईआ। चारों कुण्ट तृष्ना तम, तामस रही सताईआ। घर घर अंदर हरख सोग ग़म, चिन्ता चिखा रही जलाईआ। सृष्टी दा इष्ट हो गया काया माटी चम्म, चम्मदृष्टी ना कोए बदलाईआ। रसना गाउँदे नाम दम, स्वासां नाल वड्याईआ। बिन प्रभ किरपा किसे नहीं किछ कम्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। सावण कहे मेरा वक्त गया बीत, बीती कहाणी दयां जणाईआ। मेरा साहिब सच अनडीठ, जगत नेत्र नज़र कोए ना आईआ। सद वस्से भगतां चीत, चेतन सुरती दए कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा दृढ़ा अगम्म गीत, गहर गम्भीर पर्दा आप उठाईआ। लहिणा रहे ना ऊँच नीच, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। सदा सद करे बख्शीश, रहमत आपणी आप वरताईआ। जिस जन साचा कलमा दए हदीस, हज़रतां तों पार करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ। सावण कहे मेरी अन्त अन्त नमस्ते, नमों नमों सरनाईआ। मैं खेल वेखां अगम्मी अक्खदे, बिन नैणां नेत्र रुशनाईआ। ढोले सुणां ओसे जस दे, जिस दी सिफ्त ना कोए सालाहीआ। लहिणे वेखां हक़ीक़त हक़ दे, गृह मन्दिर पर्दा आप उठाईआ। जिस दा राह चार जुग रहे तकदे, गुर अवतार पैग़ग्बर नाल रलाईआ। इशारे नाल रहे दस्सदे, सैनतां नाल समझाईआ। अन्त खेल होणे सूरे सर्बग्ग दे, साहिब सुल्तान फेरा पाईआ। कोटन

कोटि सन्त साध सूफ़ी जिस नूं लभ्भदे, खोज्यां हथ्थ किसे ना आईआ। जिस लहिणे देणे मुकाउणे दीन दुनी दी हद्द दे, हद्द हदूद आपणी इक दृढ़ाईआ। नाते तोड़ रहिण अलग्ग दे, आलमां इल्म देणा जणाईआ। भेव खोल्ह विश्व यद दे, विश्वास घाती देणे मिटाईआ। अमृत जाम प्याले देणे मदि दे, मधुर धुन इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी होए सहाईआ। सावण कहे मेरा लेख होया सगला, सगल सृष्ट वेख वखाईआ। की खेल करे प्रभ अगला, आगमन विच गुर अवतार पैग़ग्बर राह तकाईआ। जिस लहिणा देणा पूरा करना सगला, सगन अज्ज दा दए गवाहीआ। जिस दा तेज प्रकाश हो के वधणा, नूर जोत रुशनाईआ। जिस नूं झुकणा आहला अदना, शाह सुल्तान सीस निवाईआ। उह कलयुग विच सतिजुग देवे बदला, बदली आप कराईआ। चुरासी करे अदला, इन्साफ़ इक दृढ़ाईआ। छब्बी पोह नूं सफ़ैद फड़ के लिआउणा इक बगला, मल सिँघ सेवा दिती समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धर्म दी धार इक वड्याईआ। सावण कहे मेरा अन्तर होया अनन्द, वज्जी सच वधाईआ। खुशी होया बन्द बन्द, बन्दगी इक दृढ़ाईआ। जन्म दा मिटया पन्ध, कर्म रिहा ना राईआ। आत्म गाया छन्द, परमात्म रंग रंगाईआ। हिलणो रह गए दन्द, जिह्वा ना कोए चतुराईआ। विकार खण्ड खण्ड, नाम खण्डा चमकाईआ। सुरती शब्दी डोरी गंढ, पल्लू आपणा इक फड़ाईआ। भागहीण रहे ना मंद, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। झगड़ा रहे ना जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज करे सफ़ाईआ। कोटन कोटि मुकती दे दवारे जन भगत जावण लँघ, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। जिथ्थे ना कोई ढोला ना मृदँग, रागी गीत ना कोए अल्हाईआ। ना कोई गावण वाला छन्द, ढोला गीत ना कोए सुणाईआ। जिस उपर किरपा करे साहिब बख़्शंद, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। सावण कहे मेरी आदि तों इक्को मँग, मांगत हो के झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सावण कहे मेरा दिवस इक्कत्ती, इक तीस नाल वड्याईआ। गुरमुख गुण गावण बत्ती, दन्द बत्ती बत्तीसा वज्जे वधाईआ। राग हैरान होए छत्ती, छत्ती जुग देण दुहाईआ। सब दा मालक इक्को कमलापती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस दी गुर अवतार पैग़ग्बर निरगुण धार जोत बत्ती, जगत जुगत कीती रुशनाईआ। खेल वखा के लख चार अस्सी, चुरासी गंढु पवाईआ। दीन मज़हब दी बन्न्ह के रस्सी, हद्दां उत्ते दिता टिकाईआ। नाम निधाना दे के रती, रतन अमोलक हीरे लए प्रगटाईआ। सिफ्तां वाली दस्स के पट्टी, अक्खरां वाली करी पढ़ाईआ। अन्त अख़ीर सब दी वेखे हट्टी, लेखा मँगे थाउँ थाईंआ। सावण कहे छब्बी पोह नूं धर्म श्रृंगार करना गुरचरण कौर जट्टी, दुआबे विच्चों दोहरी धार प्रगटाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाल लिआवे ढाई सेर लस्सी खट्टी, खटका अगला रहे ना राईआ। सावण कहे मैं गया बीत, बीती कथा ना कोए वड्याईआ। जन भगतो प्रभ दे नाल करयो प्रीत, प्रीतम इक लैणा मनाईआ। काया माटी करे सीत, अगनी तत गवाईआ । सच धर्म दी दस्स के लीक, राह इक्को इक समझाईआ। तुसीं ओस दवारे दे बणना वसनीक, जिथ्थे वसल मिले यार खुदाईआ। गुरमुख कदे ना होवे शहीद, शहादत दी लोड़ रहे ना राईआ। जन भगतां प्रभ मिलण दी सदा उम्मीद, आमद विच खुशामद वाला राह तकाईआ। जद मँगणा चरण प्रीत भीख, भिखकां झोली दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक अख्वाईआ । सावण कहे मैं सदके वारी घोली, आपणा आप घोल घुमाईआ। मेरे प्रभ दी गुरमुख विरला समझे बोली, अनबोलत राग सुणाईआ। जिस खेल करना उपर धौली, धरनी धवल पर्दा दए उठाईआ। छब्बी पोह नूं पंज गुरमुखां कन्नी बन्नू के आउणा इक इक्क पौली, चवंनी चार कुण्ट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर हथ्थ रखाए नौजवान कन्या सोलां साल दी होवे साउली, वड्डी छोटी ना कोए वड्याईआ। सावण कहे मैं नहीं संगदा, संगदिल हो के वेख वखाईआ। मैं वी हिस्सा ओस प्रभू दे अंग दा, जो अंगीकार सब नूं रिहा कराईआ। मेरा लेखा नहीं किसे मंज़ल पन्ध दा, पाँधी हो ना कदे उठाईआ। मैं सदा प्यासा भुक्खा उस नूरी चन्द दा, जो चन्द नूर दो जहान करे रुशनाईआ। उह लेखा मुकावे भागहीण मंद दा, मेहर नज़र इक उठाईआ। सदा सदा सद भण्डार रहे वंडदा, वंडणहार इक अख्वाईआ। कल्ह नूं विहार होणा सावण कहे कुछ वेला सवा पंज दा, पंझी गुरमुख इक लाईन बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, अमृत वेला सब दी चोली रंग दा, रंगत विच रंग आपणा नाम चढ़ाईआ।

❊ १ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल अमृत वेले सवा पंज वज्जे ❊

सवा पंज कहे मास चढ़या धर्म दा भादों, भद्दर काली सीस निवाईआ। कृष्ण संदेसा दिता यादो, यादव बंसी गया दृढ़ाईआ। गोबिन्द तीर मुक्खी नाल वखाया बैरागी बन्दा माधो, माधव पारब्रह्म बेपरवाह जणाईआ । कबीर संदेसा दिता जगत जिज्ञासू सन्त साधो, शुभ लक्षण इक जणाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला इक अराधो, अराधना विच साधना आपणी

१५३१
२१

दए दृढ़ाईआ। जगत जिज्ञासू दीन जागो, नेत्र लोचन अक्खखुल्हाईआ। अन्तर उपजे इक वैरागो, वैरी अंदरों देणे कढ्ढाईआ। लज्जया रहे ना सतिगुर बाझों, सच दा मालक इक अख्वाईआ। जीव उठ हँस बण कागो, कागों हँस बणाईआ। गोबिन्द खेल करना शब्दी धार बाज़ो, बाज़ां वाला वेस वटाईआ। सरन सरनाई साहिब स्वामी भागो, भगवन आपणा रंग चढ़ाईआ। त्रैगुण माया डस्सणी डस्से ना नागो, सांतक सति दए कराईआ। लेखा दस्सया महा सिँघ नूं ढाई चुलीआं पाणी दे के ढाबों, जल धारा नाल समाईआ। आशा पूरी कीती राम सीता वखाई ख़ाबो, भविख भविश विच्चों प्रगटाईआ। मुहम्मद नज़ारा तक्कया महिराबो, महबूब मुहब्बत वाला प्रगटाईआ। बिना उस तों कायनात छुट्टणी नहीं अज़ाबो, सज़ा दा मज़ा सके ना कोए बदलाईआ। ईसा कर के हक़ आदाबो, अदब नाल सीस निवाईआ। मूसा मुजाहिद हो के मजलसां दए जुआबो, हुक्म अगम्म इक दृढ़ाईआ। मालक ख़ालक लाशरीक एका वाहिदो, वाहिद आपणी कार कमाईआ। जिस दीन दुनी हटाउणी मज़हब वाले फ़सादों, फ़ैसला आपणा हक़ सुणाईआ। जन भगत उठाउणे सच शहिज़ादो, शहिनशाह आपणी कार कमाईआ। नेत्र खोल्ह के निरगुण धार तक्कया बग़दादो, हथ्थ बग़लां विच टिकाईआ। जिस ने किसे दी लैणी नहीं इमदादो, संगी साथी ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा हुक्म इक वरताईआ। सवा पंज कहे भाद्रों महीना चढ़या, चढ़दी दिशा वेख वखाईआ। लहिंदी दिशा मुहम्मद धार अलिफ़ ये अक्खर पढ़या, इबारत सफ़ारश वाली ना कोए रखाईआ। शरकण शरअ ज़ंजीर कोए ना जड़या, बंधन बंध ना कोए वखाईआ। पहाड़ दक्खण सति स्वामी हो के खड़या, खण्डा खड़ग ना हथ्थ उठाईआ। भय विच भाओ विच भरम भयानक डरया, सिर सके ना कोए उठाईआ। दो जहान वेखे नरायण नरया, ब्रह्मण्ड अक्खखुल्हाईआ। जेहड़ा सतिगुर आदि जुगादि कदे ना मरया, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जुग चौकड़ी सरनाई किसे ना पड़या, शरनगत ना ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक नज़री आईआ। सवा पंज कहे क्यों गुरमुख वेखे पंझी, पंच पंज ध्यान लगाईआ। जिस वेले अर्जन हरिमन्दिर डाही सी मंजी, गुरु ग्रन्थ ग्रन्थ उपर टिकाईआ। ओस वेले मँग धुर तों मँगी, पुरख अकाल दया देणी कमाईआ। जगत सरोवर अठसठ जमना सुरस्ती गोदावरी धार गंगी, गहर गम्भीर लेखा देणा चुकाईआ। ओस वेले अर्जन पुरख अकाल निमस्कार कीती सी वार पंझी, बिन सीस जगदीश झुकाईआ। मेरी धार तेरी संगी, सगला संग रखाईआ। शब्द संदेसा दिता हैरान हो ना दंगी, पर्दा दयां उठाईआ। अन्त अख़ीर तेरे शरीर आउणी तंगी, तंगदस्त होए लोकाईआ। रावी धार तैनूं करे ठंडी, अगनी अग्ग बुझाईआ। फेर मैं आवां उस दी कन्ढी, निरगुण आपणा फेरा पाईआ।

गोबिन्द खड़ग चमका के चण्डी, चण्ड प्रचण्ड वेख वखाईआ। दो तुकी धार दस्सां छन्दी, शाह पातशाह आपणा खेल खिलाईआ। भगतां दी पिछली वखावां सन्धी, सनद आपणे विच्चों कढ्ढाईआ। सवा पंज कहे पहली भाद्रों इहो वेला इहो वक्त गुर अर्जन आपणी आसा कीती नंगी, ख़ाहिश ख़ालक दिती दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक बेपरवाहीआ। सवा पंज कहे मेरा वक्त सुहाउणा, सोहणा दयां दृढ़ाईआ। पहली भाद्रों बंसरी विच कृष्ण ने पहिला गाया सी गाणा, थित वार एसे मिली वड्याईआ। पहली भाद्रों राम ने वशिष्ट नूं पहली वार खवाया सी खाणा, सेवक हो के सतिगुर सेव कमाईआ। पहली भाद्रों सीता ने धनुश नाल हथ्थ छुहाया पहली वार कमाना, तरकश आपणे नाल रखाईआ। पहली भाद्रों मुहम्मद दिता इक बयाना, लेखा लेख बिन क़लम शाहीआ। तेरा नूर तक्कया चौदां तबक ज़िमीं असमानां, असल की तेरी बेपरवाहीआ। जो वेखां सो दिसे बेगाना, बेगम मेरी मेरे संग कोए ना जाईआ। ईसा चारों कुण्ट वेख्या तुफ़ाना, तोहफ़ा नज़र कोए ना आईआ। परवरदिगार तेरे कोल की करे कोई बहाना, धोखा नज़र कोए ना आईआ। मूसा नाद सुणया बिन कानां, अगम्म वज्जी वधाईआ। उठ वेख तेरा खुदा जगत होणा बेगाना, बेवा होए ख़लक खुदाईआ। नानक दस्सया शब्द धार मर्दाना, मर्द मर्दां दिता दृढ़ाईआ। जिस ने आउणा बण के नौजवाना, नौबत आपणा नाम वजाईआ। गोबिन्द ने पहली भाद्रों नूं खण्डे दा दूजा नाम रख्या सी किरपाना, किरपा कर के आपणा बचन अल्लाईआ। जो करे सो करे श्री भगवाना, श्री साहिब साहिब श्री आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। पहली भाद्रों कहे गोबिन्द विरुद्ध मता होया पहाड़ी, बाई धार वंड वंडाईआ। मशवरा कीता क्यों एस रखाई दाढ़ी, मज़हब मज़हब विच्चों प्रगटाईआ। एह खेल साहिब प्रभू निआरी, निराकार निरँकार आप दिती वरताईआ। कुछ लेखा पिछला जिस वेले द्रोपत दी द्रोपती कन्या कुँवारी, द्वापर सोभा पाईआ। उस दे अंदर फ़ुरना फुरया जे शरीर पंज तत्तां दा मैं पंजां दी होवां नारी, नर नरायण वड वड्याईआ। लेखा याद आया जिस वेले सीता फिरदी सी उजाड़ी, बनां विच फेरा पाईआ। उह दा ओढ्ढन पाट गई साड़ी, वस्त्र लीरो लीर वखाईआ। राम ने हस्स के किहा राम दे नाल बड़ी औखी लाउणी यारी, याराना तोड़ ना कोए निभाईआ। पहली भाद्रों दिन ओदों सी शनिच्चरवारी, शहिनशाह आपणी कार भुगताईआ। सीता किहा मेरे राम मैं तेरे चरण बलिहारी, दूजा इष्ट ना कोए वखाईआ। राम किहा जिस राम दा मैं अधारी, ओह तेरा पिता माईआ। सीता किहा ओह किथ्थे वस्से केहड़ा धाम निआरी, किस बिध वेखां चाँईं चाँईंआ। राम ने किहा ज़रा नेत्र अक्खउघाड़ी, लोचन दयां खुल्लाईआ। जिस वेले

कलयुग अन्तिम आवे वारी, वारस हो के फेरा पाईआ। निरगुण नूर जोत करे उज्यारी, जोती जाता डगमगाईआ। आदि तों लै के अन्त तक उहदी भगतां दी फुलवाड़ी, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। वेखीं अज्ज दा बचन ना कदे विसारीं, विसरिआं विसरया हथ्थ कदे ना आईआ। सीता करे निमस्कारी, नमों नमों कहि के आपणा रंज दिता गवाईआ। सवा पंज कहे मेरी सोहणी दिसे घड़ी, ईसा घड़िआल दए गवाहीआ। एसे वेले साहिबज़ादयां दा मुख चुम्मयां सी गोबिन्द ने चमकौर गढ़ी, वेला सवा पंज पंज वड्याईआ। पहली भाद्रों कहे एह गल्ल शहादत तों पहिलों गोबिन्द ने अनन्दपुर सी करी, सहज नाल सुणाईआ। जीतो तूं आपणे बच्चयां दी बणा लै वरी, वरा इहो नज़री आईआ। नहीं ते जगत जहान तों मैं कर देणे बरी, बुरिआं तों पल्ला देणा छुडाईआ। आपणे चोले दी फड़ के ज़री, ज़रा ज़रा दिता हिलाईआ। मैं ख़बर सुणावां खरी, फेर खवरे तूं मिलें कि ना मिलें भावें तूं इहनां दी जम्मण वाली माईआ। उस ने आपणी आदत पिच्छे कर दिती अड़ी, सहज नाल समझाईआ। तुहानूं एह काहली बड़ी, निक्कयां नूं वड्डे रिहा बणाईआ । गोबिन्द आपणी छाती तों कढ्ढ के इक वरके वाली इक्को चिट्ठी पढ़ी, पढ़ के दिता सुणाईआ। औह वेख सच दुआर विछदी दरी, दरबारा इक्को सोभा पाईआ। जिथ्थे ना कोई शरअ ना शरई, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा दर इक वखाईआ। सवा पंज कहे नानक ने पहली भाद्रों सवा पंज चुक्की सी पंजाली, हल्ल मोढे उत्ते टिकाईआ। ओदण घटा सी काली, घनघोर रंग वखाईआ। जेहड़ा मज्झीआं दा सी पाली, आपणा पासा गया बदलाईआ। मुख ते चढ़ गई लाली, अंदर खुशीआं वज्जे वधाईआ। मैं तेरी हथ्थां सेव कमा लई घाल तेरे नाम वाली घाली, घर तेरे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सद आपणा रंग वखाईआ। सवा पंज कहे मेरा वक्त ना समझणा वाधू, वायदे नाल जणाईआ। गोबिन्द एसे वेले हथ्थ छुहाया सी मस्तक दादू, दाअवे नाल दृढ़ाईआ। बिना मेरे तों कलयुग अन्त कोए ना जागू, साध सन्त अक्खना कोए खुलाईआ। घर घर सारे होवण ख़ान नाढू, मन हँकार विच चतुराईआ। शब्द गुरु दा जाणे कोई ना जादू, याद सब दी देणी भुलाईआ । अन्त मेरा साहिब होवे सब दा वागू, अगला मार्ग आप वखाईआ। फेर घुट्ट के दोवें बाज़ू, बाज़ां वाले प्रभ अग्गे मँग मँगाईआ। तुध बिन लज्जया कोए ना राखू, रखक होए ना कोए लोकाईआ। बिन तेरी किरपा सृष्टी छड्ड ना सके तमाकू, तमअ नशा ना कोए गवाईआ। मैं तेरा निक्का जिहा काकू, बच्चा हो के सीस निवाईआ । पुरख अकाल किहा मैं इक दा नहीं आदि अन्त दा सब दा बापू, पिता पुरख अकाल अख्वाईआ। जुग जुग दा डाकू, धाड़े मारने एह मेरी बेपरवाहीआ। जद चाहवां आपणे गुरसिख सन्त सुहेले प्रभ भगत प्रगटावां

साधू, साधना दी लोड़ रहे ना राईआ। शरीणीआं विच किसे तों मँग कदे ना खावां काजू, भेंटा वाली लोड़ रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मालक जगत जुग दा आदू, अन्त दा इक्को नज़री आईआ।

❊ १ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल रात दे समें ❊

भाद्रों कहे प्रभ मेट दे आपणा भरम, जो गुर अवतार पैग़म्बर तेरे नाम दा गए पाईआ। सृष्टी दृष्टी अंदर दस्स अगम्मी धर्म, जिस दा रूप रंग रेख जगत ना कोए दरसाईआ। दीन दुनी दा वेख करम, कलयुग कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट फोल फुलाईआ। झगड़ा प्या काया माटी चर्म, चम्म दृष्टी रहे ना राईआ। परवरदिगार सांझे यार तेरी मन्नण सारे इक्को सरन, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला सारे पढ़न, दूसर राग ना कोए अलाईआ। साची मंज़ल साहिब सुल्तान तेरी चढ़न, गृह मन्दिर अंदर महबूब मिल के आपणा रंग वखाईआ। सच स्वामी अन्तरजामी नेत्र खोल्ह दे हरन फरन, निज नैण कर रुशनाईआ। झगड़ा रहे ना ज़ात पात वरन बरन, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाईआ। जीवण विच्चों
१५३४ २१ सच दा दस्स दे मरन, मर जीवत रूप वटाईआ। सदी चौधवीं आपणा कौल इक़रार पूरा कर दे प्रन, प्रानपत तेरी बेपरवाहीआ। १५३४ २१
सच दुआर एकँकार निमस्कार सारे करन, सजदा सीस जगदीश इक दृढ़ाईआ। तूं आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी तरनी तरन, तारनहार आपणी दया कमाईआ। भाद्रों कहे चार कुण्ट दह दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव ज़ाती लग्गी लड़न, लड़ तेरा फड़ निरगुण दरस कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भाद्रों कहे भाण्डा भरम देणा भन्न, भरांत रहे ना राईआ। धुर दा शब्द सुनाउणा बिना कन्न, अनहद नादी नाद जणाईआ। दीन दुनी दा बदलणा मन, मन का मणका देणा भवाईआ। नाम पदार्थ देणा धन, माया ममता मोह गवाईआ। भगत सुहेले प्रगटाउणे जन, जन जणेंदी बण माईआ। पर्दा लाहुणा ब्रह्म हं, पारब्रह्म हो सहाईआ। तृष्ना कूड़ी रहे ना तम, तामस अंदरों देणी कढ्ढाईआ। झगड़ा रहे ना माटी चम्म, आत्म ब्रह्म भेव देणा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। भाद्रों कहे भरम मेट दे दीन दुनी दे मालक, मेहरबान तेरी सरनाईआ। आदि जुगादी सृष्टी दे ख़ालक, साहिब सुल्तान तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेट दे आलस, निंदरा ममता दे गवाईआ। चार वरन बणा दे ख़ालस, ख़ालस आपणा रंग रंगाईआ। बिना शब्द गुरु तों रहे

कोई ना सालस, ततव तत देणा बुझाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरे आउण दा मिलदा चानस, चार जुग अवतार पैग़म्बर गुर सेव कमाईआ। कूड़ी क्रिया मेट जहालत, दीन दुनी अंदरों कर सफ़ाईआ। मन ममता रहे ना कोए अलामत, इल्म आलमा इक जणाईआ। सब नूं दस्स दे मैं इक्को मालक सही सलामत, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर मेरे नाम दी देण शहादत, सिफ्तां विच सालाहीआ। महिमा वाला कलमा रसना वाली अबादत, जिह्वा नाल प्रगटाईआ। अनरस दे के अगम्म निआमत, अनडिठ रस चखाईआ। बख्शिश कर सख़ावत, रहमत आप कमाईआ। बाहरों तत्तां दी समझा के बनावट, दीनां मज़हबां वंड वंडाईआ। किसे दी बोदी किसे दी हजामत, केस किसे सीस सुहाईआ। आपणे नाम दी नाम नाल कर ममानत, ओम राम कृष्ण अल्ला सतिनाम वाहिगुरु दिते जपाईआ। किसे नूं पता नहीं किस वेले आवे अन्त क्यामत, क़िआमगाह सारे बैठे राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। भाद्रों कहे मैं आदि जुगादि दा तेरा महीना, जुग जुग वेस वटाईआ। तेरा खेल वेख्या लोक तीना, त्रैलोकी नाथ गए फेरीआं पाईआ। तेरा नाम राम ने चीना, सीता सुरत सुरत वड्याईआ। अल्ला कहि के आलमीना, मूसा ईसा मुहम्मद सीस निवाईआ। नानक सतिनाम दस्स के मरना जीणा, जीवण जुगत दिती दृढ़ाईआ।
१५३५ २१ गोबिन्द वाहिगुरु हो अधीना, फ़तिह डंका इक वजाईआ। भाद्रों कहे मैं हैरान होया सदी चौधवीं ठांडा करे कोई ना सीना, १५३५ २१
अगनी तत ना कोए बुझाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सृष्ट सबाई चीना, चिरी विछुन्ने मेल ना कोए मिलाईआ। साचा रंग चाढ़े कोए ना भीन्ना, भिन्नड़ी रैण ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मैं कोई तेरा पुत्त नहीं कमीना, कोझा कमला नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, जोती जोत विच मिलाईआ। भाद्रों कहे मैं चार कुण्ट भज्जा, भजन बन्दगी तेरी वेख वखाईआ। मैं साधां सन्तां सूफ़ीआं अंदर कीती गजा, गृह गृह जा के अलख जगाईआ। दस्सो केहड़ा नाम केहड़ा कलमा किस दा आवे मज़ा, रस कवण चखाईआ। किस दे नाल मिटदी क़ज़ा, जीवण जीवण विच रखाईआ। क्यों नाम कलमा पढ़दयां जीवां मिलदी सज़ा, चुरासी विच दुहाईआ। सच दस्सो प्रभ दा पूरा नाम कि अद्धा, हिस्सा की की वंडाईआ। की सब नाल प्रभ ने चार जुग कीता दग़ा, आपणा भेव ना कोए खुल्हाईआ। किसे नूं दस्सया मैं वसिआ उपर शाह रगा, नौ दवारे डेरा ढाहीआ। किसे नूं किहा मैं दसम दवारी वसां, घर साचे वज्जे वधाईआ। किसे नूं किहा मेरी इस तों अग्गे जगह, सच दवारे सोभा पाईआ। किसे नूं किहा मेरी कोई ना जाणे वजह, वज़ाहत विच ना कोए दृढ़ाईआ। जां तक्कया सब नूं दीन मज़हब दा ला के धब्बा, साफ़ रहिण कोए ना पाईआ।

किसे ने पिता किहा किसे ने बाप किसे ने किहा अब्बा, अब्बा वाले अम्मी संग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। भाद्रों कहे प्रभू भरम मेट दे साचा दस्स भाओ, भय विच सरनाईआ। तूं सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अवतार पैग़म्बरां लाया दाउ, लंगोटे धर्म वाले बंधाईआ। मज़हबां दा कर पसाउ, पहिलवान दिते वखाईआ। किसे नूं किहा राम राम जपाउ, राम मेरी सरनाईआ। किसे नूं किहा कृष्ण कृष्ण डंक वजाओ, त्रैलोकी तेरे चरणां हेठ दबाईआ। किसे नूं किहा मेरी कीती उलटाउ, अल्ला अलाह रूप वटाईआ। किसे नूं किहा मेरा सतिनाम वडयाउ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। किसे नूं किहा फ़तिह डंक सुणाउ, वाहिगुरु वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। सब नूं जगत मैदान विच खिच्च के पहिलवानां वांग आपणा कीता खिचाउ, खिच्च विच सारे दिते हिलाईआ। कोई कहे मैं चंगा कोई कहे मैं वड्डा कोई कहे मैं बख़्शंदा, कोई कहे मैं देवां अनन्दा, अनन्द हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। जां वेख्या गुर अवतार पैग़म्बरां कोलों आपणे नाम दा करा के दंगा, लोकमात मैदान दिता वखाईआ। इक लंगोटा मज़हबां दा कर के टोटा टोटा, आपे बण के खरा ते आपे खोटा, क़ीमत हट्ट ना किसे पवाईआ। एसे कर के नानक तों हल दा लवाया जोता, नंगीं पैरीं हल चलवाईआ। एसे कर के गोबिन्द तों बच्चयां दा नीहां हेठ दबाया लेखा कर के वड्डा छोटा, परदा भेव ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भाद्रों कहे प्रभू मैं वेखणे तेरे पहिलवान, गुर अवतार पैग़म्बर लंगोटे लैण कसाईआ। मैं वेखणे सखीआँ वाले काहन, वृंदावन दे वासी जमना तट सुहाईआ। मैं बनबासी तक्कणे राम, सीता नाल भज्जण वाहो दाहीआ। मैं पैग़म्बर तक्कणे जहान, जो क़लमा कायनात दृढ़ाईआ। मैं गुरु वेखणे प्रधान, जो डंका तेरा नाम सुणाईआ। मैं चौहन्दा सारे इक्को वार आ जाण विच मैदान, बच्या रहिण कोए ना पाईआ। सारे फेर तक्कण साडे भलवानां दे हुन्दयां साडयां मज़हबां विच दीनां विच इस्लामां विच कलामां विच साडे नजामां विच चार कुण्ट वड़ गया शैतान, साडी शरअ बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। असीं भज्जीए नठ्ठीए चारों कुण्ट वेखीए जीव जहान, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण फोल फुलाईआ। जिधर तक्कीए साडे नाम नालों काम क्रोध लोभ मोह हँकार बणया बलवान, साडी चले ना कोए चतुराईआ। साडे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी, बाणी कम्म किसे ना आईआ। जो पढ़दे मंजल मूल ना चढ़दे घर घर होए बेईमान, बेवा होई कूड़ लोकाईआ। फेर सारे होए हैरान, हैरानी विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि करता इक अख्वाईआ। भाद्रों कहे प्रभ कवण वडभागा, मैनूं दे समझाईआ। कवण सोया कवण जागा, जागरत जोत कवण रुशनाईआ। कवण हँस कवण

बणया कागा, दुरमति मैल कवण धवाईआ। कवण देस कवण परदेस कवण माही कवण मालक बणया राजा, रईयत कवण वेख वखाईआ। मैं जिधर तक्कां कोई डंडावत करे कोई नमस्ते करे कोई झुक झुक पढ़े निमाज़ा, गुर अवतार पैग़ंबर सारे तेरे चरणां ध्यान लगाईआ। मैं हैरान हो गया एह की तेरा खेल लोकमात वरतिआ स्वांगा, स्वांगी की आपणी कार कमाईआ। ओह जिन्हां गुरु अवतार पैग़ंबरां तेरीआं रखीआं तांघां, उन्हां नूं जप के दीन दुनी किस तरह लैणा झट लँघाईआ। ओह करके की गए दीन मज़हब दीआं बांटां, मानव मानव नाल लड़ाईआ। किसे ने कन्न विच उँगलीआं पा के दितीआं बांगां, मम्बरां उत्ते दुहाईआ। किसे ने दस्सया लेखा विच कर्म कांडां, नछत्र ग्रह वंड वंडाईआ। किसे ने दस्सया मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मठ गुरुदुआरा ठांडा, मिले माण वड्याईआ। किसे ने किहा सूर खा लओ किसे ने किहा ढांडा, डंगरां उत्ते दीन दुनी दिती लड़ाईआ। जेहड़ा आया तेरे नाल तेरे नाम दा कर के गांढा, कन्नी गंढु के आपणा झट गया लँघाईआ। तूं की कीता साढे तिन्न तिन्न हथ्थ दा काया अंदरों खोज के भाण्डा, नाम वस्तू दिती वरताईआ। जाह बच्चया तूं अवतार बणया तूं गुरु बणया तूं पैग़ंबर बणया तूं एसे नूं रहीं खांदा, हथ्थ विच माला दे मणके दिते फड़ाईआ। पहिलों आपणा नाम सवरन बणा के फेर ओसे नूं बणा कर के तांबा, कसवट्टी अगनी उत्ते लगाईआ। नाले किहा मेरे प्रेम दा मेरे नाम दा पीओ दोशांदा, जे पीओगे ते फिर अंदरों होए सफ़ाईआ। एसे कर के मानव मानस पंज तत दा पुतला गुर अवतार पैग़ंबर दे पिच्छे लग्ग के वक्खरा वक्खरा नाम गांदा, प्रभ दा इक नाम समझ किसे ना आईआ। क्यों ओह बेपरवाह सदा अक्खरां वाली सिफ्त सुणांदा, रागां नादां विच ढोले जगत जणाईआ। जे कोई ओस दा भेत पुच्छे ते गुर अवतार पैग़ंबर दस्सया ओह मालक सचखण्ड थाँ दा, जिथ्थे वेखण कोए ना पाईआ। प्रभू तूं ना दिसें ते ना किसे आएं हिस्से, ते की कीता झगड़ा पा के आपणे नाँ दा, नानके दादके सब नूं दिते भुलाईआ। किसे नूं किहा विष्नूं ब्रह्मा शिव सब दी बणत बणांदा, किसे नूं किहा आदम हव्वा तुहाडी रचन रचांदा, वाह ओए रचन रचाण वाल्या रचन रचा के आपणा पल्ला ना किसे फड़ाईआ। तैनूं आदि दी आदत तूं सब तों मथ्थे रिहों टिकांदा, सीस बिना चरणां तों चरणां वल्ल रखाईआ। गुर अवतार बरदा बणया रिहा तेरी हां विच हां दा, नांह दा लफ़ज़ ना कोए उठाईआ। भाद्रों कहे मैं वी पुत्त पुरख अकाल तेरे वरगी माँ दा, ते पिउ तूं ही नज़री आईआ। हुण तेरा वेला नहीं जगत वाले दाअ दा, दाओ पेच ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। भाद्रों कहे मैं नठ्ठा आया दौड़ा, आपणा पन्ध मुकाईआ। फल वेख्या मिठ्ठा कौड़ा, लख चुरासी फोल फुलाईआ। मैं वरका उलटिआ जिस विच लेख लिख्या ओ विआसिआ बेआसिआ केहड़ी तेरी

धार विच ब्राह्मण गौड़ा, गौड़ गावड़ समझ किसे ना आईआ। तेई अवतार छाती ते हथ्थ रख के कहिण पता नहीं ओह किड्डा लम्मा ते किड्डा चौड़ा, अर्ज़ तूल सके ना कोए समझाईआ। पैग़म्बर कहिण पता नहीं केहड़े दुलदुल चढ़े घोड़ा, अस्व अस्वार सोभा पाईआ। नानक दी धार गोबिन्द किहा ओह जद तको जोत शब्द धार दा जोड़ा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। भाद्रों कहे प्रभू ओह कलयुग दा अन्त पा के मोड़ा, वागी हो के सब दीआं पिड़ां दए बदलाईआ। दुनियां इक तेरा गावे दोहरा, दूजा राग ना कोए सुणाईआ। सब नूं जवाब दे दे कोरा, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। बिन तेरी किरपा दीन दुनी मज़हब दी कढ्ढे कोई ना खोरा, झगड़ा कूड़ ना कोए मिटाईआ। ऐ मेरे मालक तेरे हथ्थ सब दीआं डोरां, आत्म परमात्म तेरा नज़री आईआ। ऐ मेरे मेहरवान सद फिरदा रिहों वांग चोरां, हुण छाती कढ्ढ के आपणा आप दे वखाईआ। हुण मेट दे कलयुग कूड़ घनघोरा, निरगुण नूर चन्द कर रुशनाईआ। तैनूं पता नहीं क्यों गोबिन्द ने नींहां थल्ले चिणाया फ़तिह सिंघ ते जोरा, जोरू ज़र दोवें देणे मिटाईआ। तेरा शब्द गुरु आदि दा छोहरा, नौजवान सोभा पाईआ। जेहड़ा तन मन्दिर मन अंदर दीन मज़हब दा बण गया फोड़ा, नाम दी ठोकर नाल दे भन्नाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा राह वखाईआ। भाद्रों कहे मेरे भगवान, भगौड़े धुरदे दे समझाईआ। तैनूं लभ्भदे विच बीआबान, जंगलां विच फेरे पाईआ। तेरे पिच्छे धूणी ताण, अगनी तत जलाईआ। तेरे पिच्छे सवेरे उठ के करन इश्नान, मुखों तेरा नाम सिफ्त सालाहीआ। तेरे पिच्छे करदे दान, ओ भुक्खया नग्गया चार जुग दा दान लै के सबर अजे ना आईआ। उठ वेख सति धर्म दा रिहा ना कोई निशान, निशाना हथ्थ ना कोए दृढ़ाईआ। साबत रिहा ना कोए ईमान, अमलां तों ख़ाली होई लोकाईआ। तेरे नाम दी बण गई दुकान, हट्टां विच टक्यां वाली क़ीमत रहे पाईआ। फेर मैं वेख्या तेरे गुरु अवतार पैग़म्बर बड़े बड़े पहिलवान, सूरबीर योद्धे नज़री आईआ। कन्धयां उत्ते रुमालीआं सर्ब सुटान, फेरीआं देवण चाँईं चाँईंआ। मैं पुच्छया तुसीं किधर फिरदे नौ खण्ड पृथमी मारो ध्यान, निगाह आपणी इक उठाईआ। सारे कहिण असीं मँगणा इक जजमान, जो दाता धुरदरगाहीआ। जिस दा इक्को होणा फ़रमान, फ़ुरने सब दे बन्द कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। भाद्रों कहे प्रभू याद कर लै बावन धार, बलि दवारे की दुहाईआ। जिस वेले ख़बर दिन्दा नहीं सी कोई अख़बार, संदेसा अवर ना कोए जणाईआ। छपदा नहीं सी कोई इशतिहार, अक्खरां नाल ना कोए वड्याईआ। ओस वेले कीता सी इक़रार, कौल पिछला वेख वखाईआ। तेरां सौ अठासी ऋषी आए पन्ध मार, आपणा फेरा पाईआ। उन्हां दा लहिणा क़र्ज़ा दे उतार, पिछली आसा पूर कराईआ। जिन्हां नूं शब्द संदेसे विच

ल्यांदा उठाल, उठ के दयो वखाईआ। वेखो ओह ना ते शाह ना एह कंगाल, इक्को रूप दिता समझाईआ । पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, मेहर नज़र इक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तुहाडा सतिजुग दा दिता होया दान, चार युग सांभ के रख्या फेर तुहाडे हथ्थ फड़ाईआ। दान कहे मैं सौगी मैं गिरी मैं लाची, पूरब दी नज़री आईआ। एह कथा कहाणी साची, मैं शहादत दयां भुगताईआ। जेहड़ी बलि दे वेले बलि दी सी दासी, तृप्त कौर नाल लई रखाईआ। एह खेल पुरख अबिनाशी, जो हर घट अंदर घट घट दा वासी, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सोभा पाईआ। इस दे नाल इस दी भैण नौ साल वड्डी "राज" हुंदी सी जिस नूं पिछले महीने शब्द धार विच अगम्मी गल्ल आखी, आख के दिता दृढ़ाईआ। इक दीपक जगाउणा जिस दा लेखा नाल कमलापाती, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणी कार कमाईआ। भाद्रों कहे मैं नहीं भुल्लया, भुलेखा भरम कोए ना पाईआ। मैं खुशीआं विच फुल्लया, पर्दा दयां उठाईआ। बावन दा तोल पूरे तोल तुलिआ, कंडा तराजू नाम नज़री आईआ। जन भगत दा दीपक कदे होवे ना गुलिआ, चौथे जुग विच चौमुखीआ दीवा तेरां सौ अठासीआं दा साथी लै के आया चाँईं चाँईंआ। एह तन दा दीवा जिस दी इक्को जोत ते इक्को बाती, सोभा इक्को पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। चौमुखीआ कहे मैं चार जुग दा भेती, भेव दयां खुल्ह्राईआ। निक्की भैण ने वड्डी भैण नाल कीती सी नेकी, इशारे नाल दस्स के प्रभ दा दरस दिता कराईआ। आप दूरों निमस्कार कर के छेती, अक्खीं मीट ध्यान लगाईआ। रो के किहा मैं इक प्रभू दी बणां बेटी, जिथ्थे बेटी बेटे दा फ़र्क रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ । दीवा कहे मैं दीपक जगत चराग़, चरागाहां करां रुशनाईआ। मैं पिछला गया जाग, नेत्र लोचण अक्खखुल्ह्राईआ । किरपा करी प्रभू महाराज, मेहर नज़र उठाईआ। जिस दा नौ अस्सू नूं नाता टुट्टणा सी जगत वाले समाज, दीन दुनी रहिण ना पाईआ। एस तृप्त दी एस जोती दी बुझणी सी लाट, माता पिता संग ना कोए निभाईआ । शब्द दे विहार विच सारे इक्ठे कीते कोई लेखा लिख्या नहीं नाल क़लम दवात, शहादत सतिगुर वाली भुगताईआ। एह प्रभू दा आदि तों रिवाज़, भगतां दा होवे आप सहाईआ। कुछ लेखा लहिणा छब्बी पोह दी रात, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। गुरदर्शन वास्ते पंज वस्तू जम्मू वाल्यो फेर लिआउणी दात, चेला सिँघ तेरा शब्दी बचन पूर कराईआ । अग्गे ऐसा खेल करे आप, आप आपणा पर्दा लाहीआ। फेर दस्सांगा किस नूं गोद रखणा मात, किस दे अंदर आपणा निरगुण नूर करां रुशनाईआ। किस दे अंदर बिन रसना तों जपणा जाप, आपणा राग सुणाईआ। जन

१५३९
२१

भगतो मेहर निगाह नाल सब नूं कर के पाक, पतित पुनीत देवे वखाईआ। रातीं सुत्यां नूं सुनेहड़ा देवे आप, चिठ्ठी चिठ्ठी रसैण हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। ज़रूर मरन तों पहिलों दर्शन देवां साख्यात, क्यों एह गोबिन्द दा वाक् ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। हुण सारयां नूं दुःख कि साडा खुल्हदा नहीं ताक, ऐवें सोहँ सोहँ जप के झट लँघाईआ। ख्याल रखयो इक वार सब दा खोल्हणा बजर कपाट, पर्दा रहे ना राईआ। मेरी इक्को मंज़ल इक्को वाट, दर इक्को सोभा पाईआ। रूह बुत कर के पाक, पतित पुनीत देवां कराईआ। एसे कर के नौ रंग दी पाउणी पुशाक, नौ दुआार दा डेरा ढाहीआ। मुंडे कुड़ीआं चुक्क के आपणी ढाक, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। ओस दवारे विच कर के वास, जिथ्थे निर्मल नूर जोत प्रकाश चुरासी दा गेड़ दयां चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। भाद्रों कहे ओए मेरे प्रभू ठाकर, ठाकर मन्दिरां विच बड़े नज़री आईआ। की तेरा वी ए ढिढ्ढ काया गागर, भुक्ख तेह वाला सोभा पाईआ। तन उत्ते लै के ओढ्ढन चादर, आपणा झट लँघाईआ। सच दस्स जे तूं बन्दयां वरगा बन्दा ते किस तरां दो जहान तरावें सागर, गहर गम्भीर देणा दृढ़ाईआ। जिस दर ते देवें आदर, पीआ दरस तेरा नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। ओए भाद्रों ज़रा छब्बी पोह आउण दे, आपणा वक्त मुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरां लंगोटे कसाउण दे, धुर दा हुक्म सुणाईआ। दीनां मज़हबां नूं इक इक्क वार लड़ाउण दे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। लग्गी प्रभ दी प्रीती सब नालों इक वार तुड़ाउण दे, टुट्टी ना कोए गंढ्ढाईआ। आपणयां अवतारां पैग़म्बरां गुरुआं दी कीती ज़रा अज़माउण दे, वेला अन्त अज़माइश वाला सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर छब्बी पोह वेखणा युद्ध, आपणा आपणा बलि प्रगटाईआ। शब्द आवाज़ निकले किसे ना बुध्ध, बुद्धी तों परे धार दृढ़ाईआ। ब्रह्मण्डां दे उत्ते पैणे कुद्ध, ज़िमीं असमान चरण ना कोए टिकाईआ। सारयां लड़ लड़ के कहिणा साडी दुहाई हुण बदल जावे जुग, कलयुग कूड़ रहे ना राईआ। पुरख अबिनाशी सब दे हिरदे कर दे शुद्ध, सुदी वदी ना वंड वंडाईआ। साडा पैंडा रिहा मुक, मंज़ल आपणी अन्तिम गई आईआ। असीं सारे नाम क़लमे दी थाँ तेरी एह पढ़ीए तुक, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। इक्ठे बिन डंडावत बन्दना सजदे तैनूं जाईए झुक, निव निव सीस निवाईआ। क्यों असीं सारे प्रगटे तेरी शब्द धार दी कुख, सानूं जम्मण वाली कोई ना माईआ। चार जुग तेरे वक्खरे वक्खरे बणे रहे पुत्त, शरीका जगत वाला बणाईआ। प्रभू तेरी दुनियां ते लड़दी उत्तों टुक, असीं तेरे नाम दे टुकड़े दिते कराईआ। साडे शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील

क़ुरान बाईबल तुरैत गुरु ग्रन्थ सब दी बाणी इक्ठी कर ना सकी इक मुट्ठ, पंजां तत्तां उत्ते पंजा हथ्थ ना कोए टिकाईआ। किसे ने नाम किसे ने कलमा जणाया जपाया वखरी वखरी गुट्ठ, हिस्से छोटे छोटे पाईआ। एसे विच असीं हुंदे रहे खुश, खुशीआं विच आपणा राह चलाईआ। जां अन्त लेखा मंगिआ क्यों होया कलयुग अन्धेरा घुप, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। असीं सारे बैठे चुप, सीस सके ना कोए उठाईआ। एह वी लग्गा दुःख, दीन दुनी दुखी रही कुरलाईआ। सब नूं तेरे मिलण दी भुक्ख, निरगुण तेरा राह तकाईआ। साडे मज़हबां वाले साडे लिख्यां अक्खरां दा कर के रुख़, पन्ध ओथे गए मुकाईआ। अग्गे तुरया कोई ना उठ, धुर दा बणया ना पाँधी राहीआ। एसे कर के सब दे ख़ाली ठुठ, वस्त नाम ना कोए वरताईआ। पुरख अकाले दीन दयाले असीं सारे तेरे सुत, सन्तान तेरी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भाद्रों कहे सुण जगत मेरया भ्रावा, भाई दयां सुणाईआ। क्यों बन्नया झूठा दाअवा, दाअवेदार ना कोई अख्वाईआ। मेरे अंदरों निकले हावा, हाए हाए कर सुणाईआ। क्यों नहीं सिख्या दिती पुत्रां मावां, बिना प्रभू तों दूसर ओट ना कोए रखाईआ। क्यों हँस बुद्धी होई वांग कांवां, काग वांग कुरलाईआ। क्यों भाग लग्गा नहीं साढे तिन्न हथ्थ गरावां, गृह गृह ना वज्जी वधाईआ। क्यों सचखण्ड दवारे लग्गा नहीं नांवां, धर्म दी धार ना कोए सुणाईआ। क्यों बल नहीं आया अंदर बाहवां, कलयुग कूड़ी क्रिया लए ढाहीआ। क्यों मिलीआं नहीं ठंडीआं छाँवां, तप्पयां सीस हथ्थ ना कोए रखाईआ। क्यों बिना प्रभू तों होया निथावां, गृह नज़र कोए ना आईआ। ऐ प्रभू मैं चौहन्दा तूं भगतां नूं मिल सदा सद चावां, चाउ घनेरा आप जणाईआ। तेरे चरणां बलि बलि जावां, निउँ निउँ लागां पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। भाद्रों कहे भरम भुलेखा कर दे दूर, दूर दुराडे दया कमाईआ। दीन दुनी दा बख्श क़ुसूर, मेहर नज़र इक उठाईआ। किरपा कर साहिब हज़ूर, हरि तेरी वड्याईआ। छब्बी पोह नूं मालवे वाल्यां बच्चा लिआउणा इक सूर, नन्हा निक्का नज़री आईआ। इक्की क़दम रखणा दूर, वध्ध घट ना कोए जणाईआ। जल दा ग्लिास लिआउणा अंगद दर खडूर, अमरदास दए गवाहीआ। सरोवर रस कर भरपूर, रामदास समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। भाद्रों कहे पंजां गुरमुखां तेड़ पाउणा कच्छा, तहिमत नज़र कोए ना आईआ। निक्का जिहा नाल लिआउणा वच्छा, माझे वाल्यां वंड वंडाईआ। पंजां विच इक नौ साल दा होवे बच्चा, ज़ात पात ना कोए वखाईआ। नाल भाण्डा लिआउणा कच्चा, माटी बरतन सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। भाद्रों कहे मेरा भरम

भउ नासा, नस्सया कूड़ विचार। प्रभ मिल्या शाहो शाबाशा, शाहो भूप सच्ची सरकार। जिस दा आदि जुगादी खेल तमाशा, लेखा जाणे सदा जुग चार। सब दी पूरी करे आसा, वेखणहार आप संसार। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन मण्डल दए अधार। निरगुण जोत कर प्रकाशा, कलयुग मेटे धुआँधार। जन भगतां पूरा करे घाटा, देवे नाम भण्डार। चुरासी पन्ध मेट के वाटा, आवण जावण दए निवार। सरोवर इक नुहाए ताटा, तीर्थ तट छड्ड किनार। अमृत जाम प्याए बाटा, निझर झिरना झिरे अपार। सेज सुहञ्जणी सुहाए खाटा, आत्म अन्तर इक विशाल। सोभावन्त सुहाए पुरख अबिनाशा, दीनां बंधप दीन दयाल। झगड़ा मेट के ज़ात पाता, दीनां मज़हबां विच्चों करे बहाल। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के गाथा, साचा मार्ग दस्से सुखाल। सच दुआर करके वासा, विश्व दा झगड़ा दए निवार। इक्को बणके पिता माता, हरिजन गोदी लए उठाल। साचे नाम दी दे के दाता, दीनां बंधप दीन दयाल। सिमरन दस्स के पूजा पाठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि वड्डा वड मेहरवान। भाद्रों कहे मैं सुणया अगम्मी भजन, भज्ज भज्ज पन्ध मुकाईआ। जिस दा चार जुग तोलिआ किसे ना वज़न, महिसूस सक्कया ना कोए कराईआ। गुर अवतार पैग़ंबर चाचा आया कज़न, अंकल बण के झट लँघाईआ। आप गाउँदे रहे छन्दन, सिख्या जगत विच समझाईआ। दीनां मज़हबां बन्नू के बंधन, वंडण वंड वंडाईआ। सदा नाल मूल ना हंढुण, जम्मण ते मर जाईआ। जुग चौकड़ी रखे कोई ना अंगण, पत्थर बुत ना कोए सहाईआ। काग़ज़ अक्खर मंज़ल मूल कदे ना लँघण, सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। बिन प्रभू तों सच्चा देवे ना कोई अनन्दन, परमानंद ना कोए समाईआ। भगत सुहेले जुग जुग जगण, निरगुण नूर जोत नूर रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम मेट प्रभू प्रभ अगन, अमृत मेघ इक बरसाईआ। निमस्कार तेरे बन्दन, सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। भाद्रों कहे प्रभ सच दा दस्सणा धर्मा, प्रेमीआं धर्म जणाईआ। दोआबे वाल्यां विच्चों इक बण के आउणा ब्रह्मा, मुख चार चार सुहाईआ। जम्मू वाल्यां शिव पार्बती रूप धरना, प्रभ आपणा हुक्म सुणाईआ। लकछमी विष्नूं प्रभ आपणा मेल आप करना, करनी दा करता दए वड्याईआ। साचा सगन ओस वेले हथ्थ फड़ना, सांभ के मल सिँघ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मेला लए मिलाईआ। भाद्रों कहे हुक्म धुर निरँकारी, निराकार रिहा दृढ़ाईआ। जन भगतो सब ने चढ़ना धर्म दी खारी, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। माण मिलणा पुरख नारी, नर नरायण दया कमाईआ। बिना प्रभू तों सब दी आत्मा रहन्दी कँवारी, जगत विआह कम्म किसे ना आईआ। चार दिन भोग रस हउमे वाली बीमारी, काम विच कुरलाईआ। बिना साहिब

सतिगुर तों धर्म दी गंढु पवे ना विच संसारी, सगला संग ना कोए निभाईआ। जगत जहान सदा खुआरी, भैण भाई मात पित नार कन्त संग ना कोए निभाईआ। बिना भगतां तों लाज रहे ना किसे मुच्छ दाढ़ी, चूंडी सीस ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच बख्शे इक सरनाईआ। भाद्रों कहे क्यों गोबिन्द वड्याई भगौती, की भगतन दिता समझाईआ। क्यों ओस दी होई मनौती, की मन मति बुध्ध चतुराईआ। ओह दाती सदा भउ दी, दीन दुनी वखाईआ। क्यों ओस वेले शरअ छुरी बणी सी कांओ दी, गऊ ग़रीब पई दुहाईआ। वड्याई रही नहीं सी रंक राउ दी, रईयत हाहाकार कर कुरलाईआ। शान रही नहीं सी किसे शाहो दी, वस्त सच ना कोए वरताईआ। दरोही फिरी सी अलाह दे दबाउ दी, दबदबा सब दे उत्ते पाईआ। जिस वेले गोबिन्द चण्डी प्रगटाई प्रभ दे नाउँ दी, नाउँ निरँकार इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा धार रखे बेपरवाहो दी, बेपरवाह हो के बेपरवाही विच समाईआ।

१५४३ २१

* ३ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ हरिभगत दुआर जेठूवाल *

१५४३ २१

सदी चौधवीं कहे मैं तक्के वेदी सोढी, साऊंड सब दी सुणी चाँईं चाँईंआ। गुंचा फुल्ल खिड़या वेख्या डोडी, महक महबूब मुहब्बत वाली महकाईआ। पैग़म्बरां वेख्या झुकदयां गोडीं, घुटने ज़िमीं जमां सुहाईआ। जगत जहान खेल वेख कबड्डी कौडी, दीन दुनी भज्जी वाहो दाहीआ। पैग़म्बरां धार तक्की अगम्मी ओढी, जो ओड़क इक अख्वाईआ। अवतारां उँगलां रख के उपर ठोडी, चिन्न्ह चिन्न्ह विच्चों बदलाईआ। नारां सहारा दे के मोढीं, राधा सीता संग रखाईआ। जगत धार ओढुन ओढी, वस्त्र भूशन तन छुहाईआ। रस रसैण बण के धोबी, जगत तृष्ना रंग रंगाईआ। तकदे रहे तपीशर जोगी, जुगती जगत वेख वखाईआ। निगाह मारदे रहे परलोक लोकी, लुकमान लुकमा खा के गया जणाईआ। सरगुण धार बणदे रहे बोधी, जगत दुरमति मैल धवाईआ। शब्द नाद सुणाउँदे रहे अगाध बोधी, बुद्धी तों बोध कराईआ। रमज़ देंदे रहे गोझी, गोकल वृंदावन दुहाईआ। धुर दी धार करदे रहे उधी, उगण आथण डंक वजाईआ। अन्तिम सब दी औध पुग्गी, पूजा पाठ वेखे थाउँ थाईंआ। जिस खेल खिलाया चहुं जुगी, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। ओह अगम्म अगम्मड़ा रिहा कुद्दी, कद्द सूरत नज़र किसे ना आईआ। लेखा जाण वदी सुदी, थित वारां फोल फुलाईआ। मंज़ल रहिण ना देवे लुँकी, पर्दा अन्तर दए चुकाईआ। सृष्टी चार वरनां विच घुँकी, लाटू मधाणीआं देण गवाहीआ। शब्द धार गाए कोई ना दो तुकी, निरगुण

सरगुण मेल ना कोए मिलाईआ। भाग लग्गे किसे ना कुक्खी, धन बणे ना कोई जणेंदी माईआ। ऐवें गर्भ भार रही चुक्की, बिन भगतां तों मनुष जम्मआ कम्म किसे ना आईआ। करे खेल प्रभ साहिब दीन दुनी वेख के दुखी, दीन दयाल दया कमाईआ। जिस खेल खिलाउणा पंज मुखी, पंचम आपणा रंग रंगाईआ। सन्त सुहेला कर के सुखी, सुखसागर विच समाईआ। झगड़ा मेट मानस मनुँखी, ममता कूड़ देणी गवाहीआ। जेहड़ी आत्मा परमात्मा दर्शन भुक्खी, निज गृह मेल मिलाईआ। सब दी बदल देवे रुची, रचना आपणी इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। सति कहे मैं वारी विटों, वीटो आपणा अधिकार जमाईआ। खेड़ा छुट्टण लग्गा पत्थर इट्टों, सिल पाहन ना सीस निवाईआ। भगत भगवान प्रगट होवे विच्चों, विच्चला पर्दा दए खुल्लाईआ। जो आदि जुगादी जुग जुग इक्को, अन्त दा मालक नूर अलाहीआ। साची सिख्या उस तों सिखो, जो सिख्या सिख दए वड्याईआ। ओसे दी महिमा बोध अगाध लिखो, लेखा बणे क़लम शाहीआ। सर्ब स्वामी तक्को मित्तो, मित्र प्यारा नज़री आईआ। जो मुहब्बत करे कराए बाहर वितों, वितकरा रहिण कोए ना पाईआ। सच प्रीती अंदर खिच्चो, प्रेम प्यार गंढु रखाईआ। सद बचन बोलणा मिट्ठो, रस रसना नाल वड्याईआ। प्रभ वसिआ नहीं कदे बाहर सवा गिट्ठों, मेरूडंड दए गवाहीआ। कलयुग वेले अन्त आपणा आप नजिट्ठो, दूजे सिख्या ना कोए समझाईआ। प्रभ आदि अन्त दा इक्को पितो, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जिस नूं सारे याद करदे पिच्छों, सन्मुख हो के दरस कोए ना पाईआ। जो आदि अन्त पूरी करन वाला इच्छो, आसा सब दी वेख वखाईआ। उस दे कोलों मूल ना छिपो, छप्पर छन्न दए वड्याईआ। सच दवारे अगम्मी विको, क़ीमत करता दए चुकाईआ। इष्ट मन्नणा सदा सिखो, एकँकार इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। रंग कहे मैं रंगला, रंगत अगम्म अपार। सुहावां सोहणा बंगला, श्री सचखण्ड दुआर। जिथ्थे शब्दी होवे चार मँगला, दूजी अवर ना कोए गुफ्तार। बिन सीस तों होवे बन्दना, बिन चरण कँवल निमस्कार। बिन तीर्थ होवे मज्जना, बिन पूजा मिले सच धार। बिन तन लगाए अंगना, बिन मन सुणे पुकार। बिन अंजण पाए नेत्र अंजणा, नाम निधाना अगम्म अपार। बिन कंधों डाहे कंधना, दूई द्वैती करे छार। बिन दवारिउँ जिस दवारे लँघणा, झगड़ा मुकाए आर पार। जिस बिन मांगत दुआरा साचा मँगणा, भिखक हो के बणे भिखार। जिस सच दवारे बिना दवारिउँ वंञणा, वञ्झ मुहाणा ना कोए अधार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शे इक प्यार। प्यार कहे मैं आदि प्रेमी, परम पुरख प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी धुर दा नेमी, अमलां विच सोभा पाईआ। मेरा लेखा कुण्ट हेमी, हमसाजण दए दृढ़ाईआ। जिथ्थे इक्को साक सैणी, दूजा

नज़र कोए ना आईआ। कल्पणा विच ना होए बेचैनी, अगनी तत ना कोए तपाईआ। ज़ालम हो के करे ना कोई बेरहमी, शरअ छुरी ना कोए चमकाईआ। दृष्टी रहे कोई ना सहिमी, भय भउ ना कोए रखाईआ। धुर दा खेल सदा दाइमी, दीदा दानिस्ता दए जणाईआ। सतिजुग वस्से धाम मुकायमी, मुकम्मल आपणा डेरा लाईआ। मित्र प्यारा होवे सैणी, सगला संग रखाईआ। कदे होवण ना देवे बेचैनी, चन्द सूरज तों परे करे रुशनाईआ। की संदेसा दे के गया भगत बेणी, भगत दुआर धर्म प्रगटाईआ। जिस वेले कलयुग दुनियां होई वहिमी, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। दरस करे कोई ना नैणी, लोचन नैण ना कोए खुल्हाईआ। सारे सिख जाण मुख कहिणी, सहण वाला नज़र कोए ना आईआ। वहिण धार वेखणी त्रबैणी, त्रिकुटी तीन लोक खेल की वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। कार कहे मैं वेखां कुंदरां, क़दम क़दीम दा फोल फुलाईआ। पंजां गुरमुखां कन्नी होवण मुंदरां, मछन्दर गोरख वेस वटाईआ। पंजे रंगीआं होवण उँगलां, रंग तिन्न तिन्न चढ़ाईआ। वालां नूं पाईंआ होवण गुंझलां, सिध्धे साफ़ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल कराईआ। खेल कहे मैं खेल खलाउणा, ख़ालक ख़लक जणाईआ। छब्बी पोह गुरमुख सब तों छोटा वेखणा इक बौना, कद्द निक्का नज़री आईआ। ओस ने दाढ़ी केस वधाउणा, छब्बी छब्बी इंच लम्बाईआ। गल वस्त्र इक्को पाउणा, पारब्रह्म दए दृढ़ाईआ। मस्तक त्रिसूल निशान बणाउणा, सोहणा रंग रंगाईआ। जिस ने सब दे उत्ते अमृत जल छिड़काउणा, सेवा सच लगाईआ। पंजां गुरमुखां डंका इक वजाउणा, नौबत नौ मिन्ट खड़काईआ। बिना हुक्म तों किसे नहीं सौणा, सावण दा महीना दए गवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण के आउणा परौहणा, निरगुण सरगुण धार पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मेला लए मिलाईआ। मेला कहे मैं करां मिलाप, मिलणी जगदीश कराईआ। खेले खेल प्रभू प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। इक गुरमुख जिस नूं चढ़या होवे ताप, तपदा पिंडा नाल रखाईआ। इक गुरमुख जिस नूं वज्जा होवे काठ, बंधन बंधन विच बंधाईआ। इक गुरमुख जेहड़ा कन्नां विच उँगलां पा के करे पाठ, सोहँ ढोला सच सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। घर कहे मैं होवां सुहञ्जणा, सोभावन्त सुहाए। नेत्र पाउणा धुर दा अंजणा, नैण नैण मटकाए। प्रभ वेखणा दर्द दु:ख भय भंजना, भव सागर पार कराए। जिस रंग रंगाउणा आहला अदना, अदल इन्साफ़ इक वडयाए। सब दी सांझी करे बन्दना, बन्दीख़ाने दए तुड़ाए। नाम निधाना इक्को वंडना, लख चुरासी झोली दए टिकाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर ठांडा इक दरसाए। दर ठांडा गहर गम्भीर,

१५४५
२१

दूसर अवर ना कोए जणाईआ। जिथ्थे झगड़ा नहीं तत सरीर, वंडण वंड ना कोए वंडाईआ। शहादत देवे रविदास कबीर, क़बरां तों बाहर सुणाईआ। मेरा शहिनशाह शाह पातशाह अमीर, निमाण निमाणा आप अख्वाईआ । जिस दी दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड जागीर, धन दौलत आपणी नाम नाम प्रगटाईआ। जिस ने लेख जणाया अक्खरां मार लकीर, शास्त्रां वंड वंडाईआ। खेल खिलाया चिल्ला तीर, कमान नाल शमशीर, खड़ग खण्डा खड़ग खड़ग टकराईआ। सो जन भगत होण ना देवे दिलगीर, अन्तर अन्तश्करन फोल फुलाईआ। छब्बी पोह गोबिन्द बणना उच्च दा पीर, गुरमुख कंधिआं उत्ते टिकाईआ। नाल अमृत रखणा नीर, चारे कुण्टां नाल लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वेखणहारा सर्ब ज़मीर, अन्तर निरंतर निरंतर अन्तर फोल फुलाईआ।

❊ ७ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ हज़ारा सिँघ दे गृह अमृतसर ❊

भाद्रों कहे मेरे भगवन्त, हरि करते धुरदरगाहीआ। किरपा कर साहिब गुणवन्त, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ । लहिणा
१५४६ देणा चुका जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी तेरी ओट तकाईआ। कलयुग कूड़ी माया वेख बेअन्त, चार कुण्ट दह दिशा अन्धेरा १५४६
छाईआ। सति विच रिहा कोई ना सन्त, धर्म दी धार ना कोई प्रगटाईआ। चार वरनां गढ़ बणया हउमे हंगत, हउमे गढ़
२१ ना कोए तुड़ाईआ। बोध अगाधा दिसे कोई ना पंडत, भेव अभेदा तेरा सके ना कोए खुल्हाईआ। लहिणा देणा मुका दे जेरज २१
अण्डज, उत्भुज सेत्ज लेखा रहे ना राईआ। सचखण्ड दुआर एकँकार दर तेरे मँगत, मांगत हो के झोली डाहीआ। अन्तर निरंतर निरवैर चाढ़ दे रंगत, अनडिठ आपणा रंग रंगाईआ। सति धर्म दी सच बणा संगत, सगला संग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। भाद्रों कहे मेरे साहिब सतिगुर मीत, मित्र प्यारे दे दृढ़ाईआ। सच धर्म दी सच कर बख्शीश, रहमत रहीम रहमान आप कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा धुर दा कलमा होवे गीत, कायनात दीन दुनी दृष्टी इष्टी इक्को नज़री आईआ। झगड़ा रहे ना मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को नूर कर रुशनाईआ। सच दा कलमा नाम अगम्मा दे हदीस, हज़रतां तों परे कर पढ़ाईआ। लेखा मुका दे हस्त कीट, ऊचां नीचां डेरा ढाहीआ। चरण कँवल उपर धवल धर्म दी धार होवे प्रीत, प्रीतम पारब्रह्म प्रभ इक्को नज़री आईआ। सतिगुर शब्द अन्त करे तस्दीक़, शहादत शहिनशाह भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। भाद्रों कहे मेरे साहिब स्वामी, अन्तर अन्तर सीस निवाईआ । निरगुण धार

अन्तरजामी, अन्तश्करन वेख खलक खुदाईआ। चार जुग दी पिछली कट गुलामी, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। तैनूं मालक मन्नदे अनामी, सचखण्ड तों परे सच तेरी रुशनाईआ। सदी चौधवीं तेरे कलमयां होई बदनामी, बदी दा बदला दे चुकाईआ। चार कुण्ट वेख बदइंतज़ामी, निगाह नैण आप उठाईआ। मनुआ मन विकार करे कलामी, कलमा हक़ ना कोए सुणाईआ। जलवा नूर ना कोए अर्शानी, अगम्मी अग्ग ना कोए बुझाईआ। नबी रसूलां होई परेशानी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी रोवे मारे धाईंआ। झगड़ा प्या चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज करे ना कोए सफ़ाईआ। अमृत रस देवे ना कोई अगम्मा पाणी, निझर झिरना बूँद स्वांत ना कोए टपकाईआ। आत्म परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म मिले ना साचा हाणी, सगला संग ना कोए वखाईआ। तेरी सिफ्त सुणी वेद पुराणी, शास्त्र सिमरत अञ्जील क़ुरान गीता ज्ञान ढोला गाईआ। तूं लेखा वेख दो जहानी, तेरा खेल सदा आलमे जावदानी, ज़ाहर ज़हूर तेरी सरनाईआ। तूं आदि अन्त पैग़म्बर इक अमामी, तेरा नाम सच सलामी, सही सलामत नज़री आईआ। तेरी अल्हड़ तरल जवानी, तेरा नूर जोत महानी, दीपक सके ना कोए बुझाईआ। अवतार पैग़म्बर गुर तेरे नन्हे बाल निधानी, जुग जुग निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। अन्त कन्त भगवन्त साहिब सतिगुर कर मेहरवानी, महबूब मुहब्बत विच मँग मँगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे धुर दा वर,
१५४७ दर तेरे आस रखाईआ। दर तेरा इक सुहञ्जणा, मेरे साहिब सच सुल्तान। कलयुग अन्तिम दाते मँगणा, निर्धन बण के बाल अञ्याण। तूं ख़ालक मालक चाढ़ीं रंगणा, मुहब्बत विच हो मेहरवान। मेरी डंडावत मेरी बन्दना, हउँ विटों क़ुरबान। तेरा हुक्म भाणा सब ने मन्नणा, सीस जगदीश सर्ब झुकान। शब्द सुणा बिन कन्नना, अनहद नादी दे गान। गढ़ हँकार कूड़ भन्नणा, कलयुग शरअ ना रहे शैतान, निरगुण नूर जोत चाढ़दे चन्दना, अन्ध अन्धेर मिटे जहान। तेरा नाउँ सूरा सरबंगना, आदि जुगादी दो जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आवे विच ज़िमीं असमान। भाद्रों कहे मेरे साहिब कन्त सुहेले, सच तेरी वड्याईआ। एका रंग रंग दे गुरु गुर चेले, चेला गुर इक्को रूप नज़री आईआ। आत्म परमात्म कर दे मेले, पारब्रह्म ब्रह्म मिल के वज्जे वधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तूं खेल अगम्मी खेले, ख़ालक खलक तेरी वड्याईआ। हुण लभ्भणा ना पए तैनूं विच जंगल बेले, जूहां खोज ना कोए खुजाईआ। दीन दुनी नालों हो के वेहले, वेला वक्त लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। भाद्रों सुण अगम्मी फ़रमान, हरि करता आप दृढ़ाईआ। खेलां खेल विच जहान, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। कूड़ी क्रिया मेट शैतान, शरअ शरीअत करां सफ़ाईआ।

सृष्टी दृष्टी दे के इक ज्ञान, मन का मणका दयां भवाईआ। माया ममता मोह ना रहे हराम, कल्पणा कूड़ ना कोए हल्काईआ। सच नाद दे धुनकान, अनादी नाद इक सुणाईआ। अमृत रस दे के पीण खाण, तृष्ना कूड़ी दयां बुझाईआ। शब्द सुणा के बिना कान, गृह मन्दिर पर्दा आप उठाईआ। कर प्रकाश बिना सूर्या भान, निरगुण नूर डगमगाईआ। सच सिँघासण दे आराम, आत्म सेजा इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दी धार इक समझाईआ। सच धर्म इक दृढ़ावांगा। लख चुरासी वेख वखावांगा। भगत सुहेले जगत उठावांगा। साची खेल आपणी खेले, ख़ालक ख़लक रूप प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, मार्ग इक्को इक वखावांगा। मार्ग इक्को इक वखाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। पारब्रह्म प्रभ पर्दा लाहेगा। साहिब सतिगुर वेस वटाएगा। वरन बरन खोज खुजाएगा। ज़ात पात दा लेख चुकाएगा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सच चन्द चमकाएगा। तूं मेरा मैं तेरा दस्स के आत्म गाथ, पारब्रह्म प्रभ ढोला राग अलाएगा। काया मन्दिर अंदर कर के वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाएगा। गुर अवतार पैग़म्बरां दे शाबाश, सिर आपणा हथ्थ रखाएगा। सदी चौधवीं अन्त

१५४८ अख़ीर सब दी पूरी होई ख़ाहिश, पैग़म्बर नबीआं रसूलां रहम कमाएगा। सदी बीसवीं सीस रहे कोई ना ताज, तख्ता दीन १५४८

२१ दुनी उलटाएगा। जो नानक गोबिन्द लिख्या बोध अगाध, बुद्धी तों परे भेव खुलाएगा। जिस ने नौ खण्ड पृथ्मी चार वरन २१

बणाउणा इक समाज, समें दा मालक आपणी कार भुगताएगा। जिस नूं अल्ला राम वाहिगुरु कहिंदे गॉड, गाईड इक्को नज़री आएगा। जिस नूं झुकदे सन्त साध, सज्जण बेपरवाह आप अख्वाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा कलमा दे के वाहिद, लाशरीक शरअ दीन दुनी बदलाएगा। भाद्रों कहे मैं झुक झुक करां प्रणाम, नमस्ते सीस निवाईआ। कलयुग अन्त पहुंचया आण, वेला वक्त दए गवाहीआ। किरपा करे श्री भगवान, हरि करता धुरदरगाहीआ। अठ्ठ भाद्रों हुक्म देणा फ़रमान, फ़रमान संदेसा अगम्म अथाहीआ। नौ रखणे नाल बदाम, नव खण्ड दा पर्दा लाहीआ। सर्ब जीआं दा बण के जाणी जाण, की खेल होणा उत्ते असमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच हुक्म इक सुणाईआ। सच दा हुक्म अगम्म इक्क, एकँकार दृढ़ाईआ। जिस दा लेखा कोई ना सके लिख, क़लम स्याही ना कोए चतुराईआ। जिस तों सारे सिख्या रहे सिख, गुर अवतार पैग़म्बर मुरीद मुर्शद रूप वटाईआ। दर दरवेश मँगण भिख, मांगत हो के झोली डाहीआ। सो सब दा लहिणा देणा आदि अन्त दा लए नजिट्ठ , चार जुग दा लेखा दए मुकाईआ। अठ्ठ भाद्रों नूं गोबिन्द वाली कढ्ढ के चिट्ट, चिट्ठी धार देणी दृढ़ाईआ। क्यों रविदास ने गोडे थल्ले

रखी इट्ट, रम्बी उत्ते दिती घसाईआ। क्यों दीन दुनियां कूड़ विकारे गई विक, क़ीमत करनी वाली पाईआ। क्यों साहिब स्वामी पए ना दिस, दह दिशा ना कोए रुशनाईआ। क्यों सृष्टी भरी विस, विषयां विच दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ । भाद्रों कहे हुक्म अपारा, हरि करता आप दृढ़ाईआ। जिस नूं कहिंदे चवीआं अवतारा, कल कल्की वेस वटाईआ। जोती जोत नूर उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। जिस ने कलयुग अन्तिम दा दिता सर्ब इशारा, सैनत नाल दृढ़ाईआ। ओह वेखे खेल परवरदिगारा, सांझा यारा नूर अलाहीआ। जिस नूं झुकदे गुरु अवतारा, पैग़म्बर सीस निवाईआ। ओह सरगुण तों निरगुण धार आया दुबारा, दो जहानां फोल फुलाईआ। देवे हुक्म सच्ची सरकारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल कराईआ। भाद्रों कहे प्रभ दा खेल अपारा, अपरम्पर स्वामी आप दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी जिस दा विहारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कार कमाईआ। निरगुण धार हो उज्यारा, जोती जाता डगमगाईआ। जिस दा आलम कुल्ल इशारा, इल्म ना कोए वड्याईआ। ओह लेखा जाणे दीन दुनी दी धारा, धर्म ईमान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा पर्दा लाहीआ। भाद्रों कहे मैं वेखणी प्रभ दी रीत, रीतीवान दया कमाईआ। किस बिध बख्शे सच प्रीत, प्रीतम हो के होए सहाईआ। साचा देवे नाम गीत, ढोला सोहला अगम्म अथाहीआ। हर हिरदे वस्से चीत, चितवित ठगौरी रहे ना राईआ। झगड़ा मेटे ऊँच नीच, राउ रंक करे सफ़ाईआ। काया कर के ठांडी सीत, अगनी तत बुझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म धर्म धार दा गीत, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। जो सचखण्ड दा सच वसनीक, वसल देवे नूर अलाहीआ। सदी चौधवीं दस्से हक़ तौफीक़, तरफ़ दोतरफ़ ना वंड वंडाईआ। सति सच दी कर बख्शीश, रहमत आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा पर्दा आप उठाईआ। सच कहे मैं आदि अन्त दा साचा, सच विच समाईआ। मेरा लहिणा जीउ पिंड काचा, तन माटी वज्जे वधाईआ। मैं मनुआ हो के नाचा, नव दर भज्जा वाहो दाहीआ। मैं नूर नूर प्रकाशा, नूर मेरा पिता माईआ। मैं साहिब सतिगुर दा दासा, सेवक सेवा विच समाईआ। मैं वेखां पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर फोल फुलाईआ। मैं मण्डल पावां रासा, गोपीआं काहन खेल खिलाईआ। मैं धर्म धार दीआं तक्कां शाखां, शख्सीअत तों परे वेख वखाईआ। मैं साहिब सतिगुर नूं आखां, निउँ निउँ सीस निवाईआ। कलयुग अंदर सतिजुग खोल्ह के हाटा, वस्त अमोलक अगम्म वरताईआ। केहड़ा तैनूं आउँदा घाटा, अतोट अतुट तेरी शरनाईआ। दूर दुराडा नेड़े कर दे वाटा, अगला पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द दा लेखे ला दे अमृत बाटा, जो

चार वरनां रस प्याईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा वेख खाता, पूरब पिछला फोल फुलाईआ। किस गृह मन्दिर अंदर तेरा वासा, अस्थान भूमिका दे दृढ़ाईआ। तूं साहिब सर्ब कला समराथा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, वस्त वस्तू आप वरताईआ। वस्तू कहे मैं दस्सां नाल प्यार, प्यार विच जणाईआ। नौ छटांक दा लिआउणा इक अनार, जेहड़ा राधा कृष्ण भेंट चढ़ाईआ। हुक्म दिता शब्द दी धार, संदेसा अगम्म अथाहीआ। जिस वेले कल कल्की लए अवतार, वेद व्यासा दए गवाहीआ। निरगुण नूर कर उज्यार, जोती जोत डगमगाईआ। लेखा जाणे सर्ब संसार, सृष्टी दृष्टी फोल फुलाईआ। ओधरों नारद आ गया कहे उच्ची पुकार, वाहवा तेरी बेपरवाहीआ। एह अनार मेरी करमण्डली विच दे डार, मेरे तों वड्डा भगवान नज़र कोए ना आईआ। मैं उसे दा रूप सदा रहां जुग चार, जुग चौकड़ी भज्जां वाहो दाहीआ। ना मरां ना जम्मां ना होवां खुआर, हाहाकार ना कोए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। अनार कहे मैं चमढ़ी अंदर बन्द, दाणा दाणा नज़री आईआ। मैं किस दी आउणा वंड, कवण हिस्से रिहा वखाईआ। किस दा मेलणा संग, कवण आपणे नाल चलाईआ। कृष्ण ने किहा तैनूं उस ने लाउणा अंग, जो मालक धुरदरगाहीआ। नारद किहा मैं काहन उस काहन तों पहिले मैं ल्या मँग, मेरी करमण्डली दे भराईआ। उल्ने चिर नूं इक सखी आई उस ने चपेड़ मारी विच कंड, बोदी फड़ के दिता हिलाईआ। नारद उच्ची उच्ची पाई डंड, हाहाकार कर सुणाईआ। नी काहन दीए सखीए वेख लै अक्खीएं जिस वेले ओह काहन आया मेरे हुक्म नाल तूं वी पैणा जम्म, मैं वी संदेसा दिता सुणाईआ। ओस वेले आवेंगे फिर वी हम, आपणा फेरा पाईआ। धर्म धार लंगोटी बन्नृ, भज्जां चाँईं चाँईंआ। तूं सुण लै ला के कन्न, सहज नाल दृढ़ाईआ। उस वेले एह तैनूं मिलणा डंन, तेरे पल्लिउँ क़ीमत देणी खरचाईआ। मेरी करमण्डली दा तैनूं लेखा देणा पैणा हुणे जा मन्न, नही ते प्रभू तों लवां मनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच आपणा हुक्म मनाईआ। सख़ी कहे ओ नारद शैतान, की रिहा सुणाईआ। कृष्ण तों वड्डा केहड़ा काहन, बंसरीआं धुन अलाृईआ। मैं किस तों मँगां दान, झोली किस दे अग्गे रखाईआ। नारद आपणा कन्न मरोड़िआ उच्ची रो के लग्गा कुरलाउण, कूक कूक सुणाईआ। मेरा ओह श्री भगवान, जिस नूं नंद यशोदा जम्मे कोए ना पिता माईआ। मेरा ओह मेहरवान, जेहड़ा ज़िमीं असमानां नज़र किसे ना आईआ। मेरा ओह शहिनशाह सुल्तान, जिस दे हुक्म अंदर गोपीआं काहन भज्जण थाउँ थाईंआ। जिस वेले कलयुग अन्तिम उस किरपा कीती महान, मेहर नज़र उठाईआ। निरगुण रूप धर के आवे विच जहान, जगत नेत्र दरस कोए ना पाईआ। तेरा लहिणा देणा वेखे आण, आप आपणा रंग

रंगाईआ। उस दा शब्द संदेसा वड बलवान, जुग जुग दे सुत्तयां लए जगाईआ। ओस समें उस सखी दे नाल उहदी भैण सी उन्नी साल दी नौजवान, जोबनवन्ती सोभा पाईआ। उस हस्स के किहा पंडत जी की दयो फ़रमान, की रहे जणाईआ। नारद किहा तूं अजे अणजाण, तैनूं सुती नूं सुत्तयां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। नारद कहे वक्त आ गया क़रीब, समां समें विच्चों बदलाईआ। प्रभ दा खेल अजीब, अजब निराला रिहा वखाईआ। जिस ने सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दिती तरतीब, यके बाद दीगरे आपणा हुक्म सुणाईआ। ओसे दे विच हक़ तौफीक़, शाह पातशाह शहिनशाह धुरदरगाहीआ। अठ्ठ भाद्रों ओसे दी करां उडीक, जिस दा लेखा काहन घनईआ गया दृढ़ाईआ। एसे कारण शब्दी हुक्म अंदर सद्दया दलजीत, पूरब लहिणा झोली पाईआ। विचोला रख्या नहीं कोई बीच, क़लम स्याही वंड ना कोए वंडाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करे उम्मीद, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी जिस साहिब सतिगुर दी निरगुण धार सारे वेखदे रहे तवारीख, तारीख़ नज़र किसे ना आईआ। उह साहिब स्वामी अन्तरजामी निरगुण धार आपणी करे बख्शीश, रहमत धुर दी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि अन्त जुगा जुगन्त जन भगतां चाढ़े रंग मजीठ, एथे ओथे दो जहानां उतर कदे ना जाईआ।

✻ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ महिन्दर सिँघ दे नवित्त अमृतसर शहिर ✻

तेरा कलमा आलो ज़ीना ज़ीना, कायनात नज़री आईआ। तेरा खेल यामुबीना, मलजूमबी मसररे बहिज़ान सोभा पाईआ। कनज़वी कोज़िम तानीसा दोज़कोदी बहिश्त वज़ी पैग़म्बरे नज़ी नूरे नज़ाह ज़हूरे ज़ाहर बेपरवाहीआ। क़दीमे क़दिस आलमीने नविस शाहे सुल्तान मनीज़ी सोज़ेवी ताविस तमन्ना, तमअ तामस ना कोए रखाईआ। ज़वाले अर्ज़ मिमज़ाले गर्ज़ शैह ज़वाले सुल्ताना बू नको सोइद आदमे आदम दमे दम ख़ाहिश ख़ास ख़ालस वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दुआरा इक्को सोभा पाईआ। पैग़म्बरे पज़िसत नूरे नज़रे नाज़ीने ज़विदे इष्ट ज़ख़तलू आफ्ताब सलू मुअज़ज़े अज़ू आजज़े ताजर तख़्ते तहिरान तहज़ीबउल इन्सान फ़ितरे फ़ाता फ़र्शे ख़ाका ज़मीउल ज़ाका आक़ा इक अख्वाईआ। बहिश्ते बौज़ू हाविस्ते हरू कानिसते मौजूदा मौज़ू मुफ़सले मुफ़ाद शाहाना ज़वाद शहिनशाह अफ़राद जिस दी

आफ़र विच मुसाफ़र गुर अवतार पैग़म्बर राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जगत जिज्ञासू जोत दा प्रकासू, शब्द दा सन्यासू, आदि अन्त दा वासू, विश्व वासव देव आत्मा दरब दीनां दीन नाथा दयावान दातार इक अख्वाईआ।

❊ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ लाल सिँघ दे गृह अमृतसर छाउणी ❊

गुर अवतार पैग़म्बर आपणा धारो बल, बलधारी हो के लोकमात वेख वखाईआ। क्यों दीनां मज़हबां विच होया छल, कूड़ी क्रिया लोभ मोह हँकार हल्काईआ। अमृत सरोवर रिहा कोए ना जल, तीर्थ तट रहे कुरलाईआ। जीवण ज़िंदगी मसला होए किसे ना हल्ल, लख चुरासी फंद ना कोए कटाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश होवे ना किसे पल, पलक दे पिच्छे मिले ना नूर अलाहीआ। सच मुकाम वेखे ना कोए अटल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान पढ़ पढ़ थक्की लोकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा पारब्रह्म ब्रह्म जाए कोए ना रल, निरगुण निरगुण विच ना कोए समाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप झगड़ा प्या काया माटी खल्ल, भेव अभेदा अन्तर निरंतर ना कोए खुल्हाईआ। क्यों दीन दुनी जगत हिस्से आए मल्ल, मालक हो के आपणी वंड वंडाईआ। सदी चौधवीं अन्त अख़ीर की गृह गृह देवो फल, वस्त अमोलक अगम्म की वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे धुर दा वर, धुर फ़रमाना इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर उठो नौजवान, बलधारी बल प्रगटाईआ। क्यों तुहाडयां मज़हबां विच कलयुग वड़िआ कूड़ शैतान, शरअ शरअ नाल टकराईआ। आत्म ब्रह्म दिसे ना कोए ज्ञान, बुद्धी बिबेक ना कोए कराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ गुरुदुआर होए हराम, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती अठ्ठसट्ठ तीर्थ कर कर थक्के इश्नान, दुरमति मैल पापां करे ना कोए सफ़ाईआ। सुरती शब्दी मेल होए ना साचे शाम, नाम धुन अगम्मी बंसरी नाद ना कोए सुणाईआ। निज नेत्र लोचण नैण दरस मिले ना किसे अमाम, अमलां कूड़ करे ना कोए सफ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो तुहाडे हुन्दयां तुहाडे सिख मुरीद माया ममता कीते गुलाम, मोह ज़ंजीर ना कोए तुड़ाईआ। सदी चौधवीं सारे होवो सावधान, सचखण्ड दवारे दरगाह साची मुकामे हक़ लओ अंगड़ाईआ। जो नाम संदेसा कलमा देंदे आए विच जहान, अक्खरां विच सिफ्तां वाली कर पढ़ाईआ। तिस उत्ते मानव ज़ाती हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई इक दूजे दा करन क़तलेआम, कत्लगाह बणी ख़लक खुदाईआ। धुर संदेसा सुणो अगम्म फ़रमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ।

गुर अवतार पैग़म्बरो कलयुग अन्त लओ अंगड़ाई, आलस निंदरा रहिण ना पाईआ। क्यों तुहाडा इष्ट मन्नण वाल्यां प्रभ नालों होई जुदाई, आत्म परमात्म मेल ना कोए कराईआ। क्यों चार कुण्ट दह दिशा रैण अन्धेरी छाई, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। क्यों ज़ातां पातां पई दुहाई, दीन मज़हब करे लड़ाईआ। जे सब ने दस्सया अल्ला वाहिगुरु राम इक्को नूर अलाही, दूजा नज़र कोए ना आईआ। अक्खरां विच लेखा लिख के काग़ज़ उत्ते शाही, शहिनशाह दा झगड़ा आए पाईआ। धर्म जणाया किसे ने सूर किसे ने गाँई, पशूआं उत्ते दीन दुनी वंड वंडाईआ। सच दस्सो लोकमात कौण कसाई, शरअ दी छुरी किस उठाईआ। सब तों लेखा मँगे हरि करता अन्त गुसाईं, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जिस ने जुग चौकड़ी खेल खिलाई, ख़ालक ख़लक अगम्म अथाहीआ। सो स्वामी अन्तरजामी वेखणहारा थाउँ थाईं, थान थनंतर निरंतर पर्दा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच संदेसा इक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों नाम दा पाया रौला, दीन दुनी लड़ाईआ। नाम दस्स के अल्ला मौला, वाहिगुरु राम राम जणाईआ। फिरी दरोही उपर धौला, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग क्यों प्रभ ने रख्या ओहला, पर्दा आपणा ना हक़ खुल्हाईआ। सारे वेखो आपणा कीता इक़रार कौला, माज़ी पूरब दा पर्दा लओ उठाईआ। कलयुग अन्त कवण करे भार हौला, लख चुरासी जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। सति धर्म दा नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप मानव ज़ाती लावे इक्को धर्म दा पौड़ा, पारब्रह्म मेला मेले सहज सुभाईआ। सच दस्सो तुहाडा वक्त किन्ना बहुता ते किन्ना थोड़ा, पेशीनगोईआं विच की दृढ़ाईआ। की तुहाडा दीन मज़हब माया ममता विच होया कौड़ा, निझर रस अनरस ना कोए चखाईआ। सदी चौधवीं पैग़म्बरो क्यों धुर अमाम दी पए लोड़ा, मुहम्मद महबूब मँग क्यों मँगाईआ। तेई अवतार दस्सो आपणा दोहरा, भेव अभेदा अगम्म खुल्हाईआ। दस गुरु निरगुण सरगुण धार तक्को जोड़ा, जो जुग चौकड़ी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दर ठांडा इक दरसाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो किथ्थे गया तुहाडा बोध, बुद्धी तों परे पढ़ाईआ। हर हिरदा क्यों ना सके सोध, सुदी वदी की चतुराईआ। भेव खोल्ह ना सके गोझ, रमज़ नाम ना कोए लगाईआ। क्यों दीन दुनियां माया ममता करे चोज, चोजी प्रीतम मिलण कोए ना पाईआ। क्यों मन वासना भोगे भोग, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। क्यों हउमे लग्गा रोग, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। क्यों झगड़ा प्या चौदां लोक, चौदां तबक देण दुहाईआ। क्यों सुणाया नाम ना इक सलोक, सोहला धुरदरगाहीआ। सारे बैठे आपणी आपणी विच मौज, मजलस मज़हबां वाली लगाईआ। सदी चौधवीं साची मंज़ल सक्कया कोए ना पहुंच,

मुरीद सिख देण दुहाईआ। अन्त अख़ीर स्वामी मिले कोए ना खौंत, ख़तरा सब दे अंदर छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा हरि, धुर दरबारी दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो जो तुहाडा नाम कलमा पढ़दे, सिमरन जोग पाठ विच समाईआ। क्यों नहीं मंज़ल धुर दी चढ़दे, घर घर विच मेला मिले सहज सुभाईआ। क्यों नहीं लख चुरासी तरदे, चारे खाणी पन्ध मुकाईआ। क्यों नहीं दरस प्रभू दा करदे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। क्यों नहीं कन्त सुहागी वरदे, ना जम्मे ना मर जाईआ। वेखो खेल कल्की कल दे, कलकाती बणे सर्ब लोकाईआ। झगड़े पै गए माटी खल्ल दे, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई करन लड़ाईआ। प्यासे रहे ना अमृत जल दे, पंच विकार होया हल्काईआ। तुसीं क्यों नहीं उन्हां दे अंदर आसण मल्लदे, मलकुलमौत ना दए सज़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर हो के क्यों आपणयां रहे छल दे, साचा संग ना कोए निभाईआ। आवाज़ सुणाउँदे रहे टल्ल दे, बांगां विच दुहाईआ। संखां विच सुनेहड़े रहे घल्लदे, हुक्म अलाह अलाहीआ। आत्म परमात्म हो के क्यों नहीं रहे रलदे, रलमिल आपणा संग निभाईआ। ज़रा खेल वेखो आपणे आपणे बल दे, कलयुग बली सब नूं रिहा ढाहीआ। खाते वेखो डूँघी अन्धेरी डल दे, चार कुण्ट पार ना कोए लँघाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर सारे हथ्थ बन्न्हदे, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। प्रभू साडे शुकराने तेरे धन्न धन्न दे, धन्न तेरी सरनाईआ। असीं वणजारे बणे रहे नाम मज़हब तेरे अन्न दे, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जगत सरोतयां नाम सुणाया नाल कन्न दे, अन्तर करी ना कोए पढ़ाईआ। झगड़े पा के काया माटी तन दे, हिस्सयां विच आए वंडाईआ। अन्तिम सब दे भरे भण्डारे ग़म दे, खुशी नज़र कोए ना आईआ। ज्यों भावे त्यों अन्तिम सब नूं डन्न दे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। असीं तेरी धारों जम्मदे, अन्तिम तेरे विच समाईआ। तेरे खेल पारब्रह्म ब्रह्म दे, आत्म तेरा नूर अलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जलवे तकणे तेरे अगम्मी नूर चन्न दे, जिस नूं सूर्या चन्द समझ सके ना राईआ।

१५५४
२१

❊ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ भाग सिँघ दे गृह पिंड माहलां ज़िला अमृतसर ❊

गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों होया कलयुग घोर, हरि करता शब्दी धार रिहा जणाईआ। क्यों सृष्टी दृष्टी होई चोर, चार कुण्ट दह दिशा धर्म दी धार ना कोए वखाईआ। क्यों माया ममता मोह विकार पाया ज़ोर, क्यों शरअ छुरी बणी कसाईआ। क्यों मन कल्पणा झगड़ा प्या तोर मोर, बुध्ध बिबेकी नज़र कोए ना आईआ। क्यों दीनां मज़हबां पाया शोर, ज़ात पात करे

लड़ाईआ। क्यों आत्म परमात्म बन्ने कोए ना डोर, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। क्यों सदी चौधवीं चारों कुण्ट जगत जिज्ञासू रहे दौड़, कूड़ तमन्ना भज्जे वाहो दाहीआ। क्यों सच दवारे लग्गे किसे ना पौड़, अंदर मन्दिर चढ़ के प्रभू दा दरस कोए ना पाईआ। क्यों अमृत रस मिट्ठा होया कौड़, अठ्ठ सट्ठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही कुरलाईआ। क्यों भविख्तां विच लिख्तां विच इष्टां विच तुसां आसा रखी पुरख अकाला दीन दयाला कलयुग अन्तिम जावे बौहड़, कल कल्की आपणा वेस वटाईआ। क्यों शास्त्र गाउँदे पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ब्राह्मण गौड़, गहर गम्भीर बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। क्यों पैग़म्बरां किहा अमाम अमामा बदल देवे सब दे तौर, तौर तरीका नीकन नीका आपणे हथ्थ रखाईआ। सदी चौधवीं नौ खण्ड पृथ्मी तेई अवतार हज़रत ईसा मूसा मुहम्मद नानक करो ग़ौर, गहर गम्भीर रिहा जणाईआ। मम्बर मुनारिआं उत्ते तक्को मजौर, शिवदवाले मठ खोजो थाउँ थाईंआ। क्यों झगड़ा पाया सूर गाँ उत्ते ढोर, पशूआं उत्ते आपणी वंड वंडाईआ। क्यों काम क्रोध लोभ मोह हँकार दा चलया ज़ोर, दर दुआरा एकँकारा सके ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो आपणी दीन दुनी दी हालत हालांकि सारे शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। आत्म अन्तर निरंतर कोए ना जावे
१५५५ बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे लोकाईआ। मन मनुआ जगत कल्पणा विच्चों सके ना कोए मोड़, मुर्दा मुरीद मुर्शद मिलण कोए १५५५
२१ ना पाईआ। साचा मन्त्र फ़ुरना फुरे कोए ना फोर, निज नेत्र लोचन नैण अक्खना कोए खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त २१
दीप वरनां बरनां वेखो अन्धेरा अन्ध घोर, क्यों सब दा सगला साथ गए छोड़, टुट्टी गंढु ना कोए पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो दीन मज़हब वेखो आपणे मात क़बीले, काया काअबे फोल फुलाईआ। नाम कलमे जो दस्स के आए वसीले, प्रभ दे मिलण दा राह समझाईआ। वस्त्र पहन के तन वजूद नीले, नीली धारों पार दृढ़ाईआ। अन्तिम सब दे किधर गए हीले, हालत विगड़ी जगत लोकाईआ। तुसीं योद्धे नौजवान छैल छबीले, शब्द गुरु दे बांके छोहरे नज़री आईआ। बलहीण क्यों कलयुग अन्तिम होए ढीले, जोरू ज़र ना कोए दबाईआ। क्यों लेखा लिख के आए क़ागज़ क़लम शाही नाल तीले, त्रैलोकी सलोक इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धर्म दी धार इक जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों दुनियां वंडी वंड, सति सच देणा दृढ़ाईआ। क्यों मेरे नाम दा वखरा वखरा गाया छन्द, राम कृष्ण वाहिगुरु अल्ला कहि के आए सुणाईआ। क्यों अक्खरां विच अक्खर कीते बन्द, बन्दगी कलमा डंडावत सजदा जगत दृढ़ाईआ।

क्यों रसना जिह्वा गीत सुणाए बत्ती दन्द, ढोले रागां विच सुणाईआ। क्यों हर घट अंदर मिले ना परमानंद, निजानंद ना कोए रुशनाईआ। क्यों ज़ात पात पाई कंध, भाण्डा भरम ना कोए भन्नाईआ। क्यों शस्त्रां नाल तीर तरकशां नाल कीता जंग, मानव मानव नाल लड़ाईआ। जे समझया परवरदिगार सांझा यार दीन दयाल पुरख अकाल आदि जुगादि सदा बख़्शंद, रहमत रहीम रहमान आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर पर्दा आप चुकाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों नाम दा कीता इतराज़, कलमा कलमे नाल टकराईआ। क्यों राम कृष्ण तों पढ़ी निमाज़, सीस सजदयां विच झुकाईआ। क्यों अल्ला तों सतिनाम दा कीता आग़ाज़, सति सति समझाईआ। क्यों सति दा छड्ड के साज़, वाहिगुरु डंक दिता सुणाईआ। केहड़ा बेड़ा केहड़ा जहाज़, किस उत्ते दीन दुनी आए चढ़ाईआ। सब ने वख वख बणाया समाज, मेरा इक्को रंग ना कोए रंगाईआ। शब्दी कलमे दी दस्स आवाज़, सिफ्त सिफ्त वाली अलाईआ। अगम्म अगम्मड़ा मार के आवाज़, कूक कूक सुणाईआ। अन्त अख़ीर कलयुग कोए ना रखे किसे दी लाज, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों निहकलंक कल कल्की दे होए मुहताज, अमाम अमामा राह तकाईआ। जिस ने बदल देणा सर्ब समाज, समग्री दीन दुनी इक वरताईआ। सब दी नेत्र खोले जाग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन अठारां बरन हँस बणाए काग, दुरमति मैल धवाईआ। आत्म दीप जगाए चराग़, जोती जाता डगमगाईआ। जन्म जन्म दा कर्म करम दा चुकाए हिसाब, लेखा दए गवाईआ। सतिजुग साचा दे के नाम स्वाद, बिन रसना रस चखाईआ। संदेसा दे के बोध अगाध, मन मति बुध्ध तों परे करे पढ़ाईआ। भगत सुहेले कर बिस्माद, बिस्मिल आपणे विच कराईआ। झगड़ा मेट के सन्त साध, सूफ़ी फ़कीरां फ़िकरा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो क्यों होए हक़े बक्के, हैरानी चारों कुण्ट छाईआ। दीन दुनी वजदे धक्के, धर्म दी गंढु ना कोए रखाईआ। मज़हबां विच जगत जिज्ञासू रहे मूल ना पक्के, हुक्मे अंदर हुक्म ना कोए दृढ़ाईआ। डोरी तन्द हो गए कच्चे, कंचन गढ़ ना कोए सुहाईआ। निगाह मारो मदीने मक्के, काअब्यां पए दुहाईआ। हुजरे रंग कोए ना रत्ते, धुर दा राज़ ना कोए खुलाईआ। तीर्थ वेखो अठ्ठ सट्ठे, चारों कुण्ट भज्जो वाहो दाहीआ। लख चुरासी फाँसी कोई ना कटे, आवण जावण ना कोए कटाईआ। निगाह मारो मन्दिर मट्ठे, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। दीपक नूरी जोत कोए ना जगे लट्ट लटे, गुरुदवारे गुरु दा दरस कोए ना पाईआ। सच दवारे दे दस्से कोए ना पते, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना आईआ। जिस वाहिगुरु दी गोबिन्द बुलाई फ़तिह, उस दा डंक

सुणन कोए ना पाईआ। ख़बरदार हो जाओ कुछ हलूणा लग्गणा गुर अवतार पैग़म्बरो एसे कत्ते, कत्तक कातक राह तकाईआ। आपणे आपणे जन्म दे कढ्ढ लओ पत्री पत्ते, पत्रका अगली दए दृढ़ाईआ। जेहड़े चार जुग दे लाह खट्टे, नाम कलमे ढोले गाईआ। उन्नां दा लहिणा देणा लेखा देवे सति सच दे वट्टे, कूड़ कुड़िआरा तोल तुलाईआ। निगाह मारो तुहाडे नाम दी क़ीमत पै गई कलयुग टके, टक्कयां विच हट्टो हट्ट फिराईआ। सदी चौधवीं सारे वेखो आपणे खाते खत्ते, परदा उहला रहे ना राईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दो जहान वेखणा क्यों लख चुरासी जीव जंत माया ममता विच मत्ते, पारब्रह्म दा दरस कोए ना पाईआ। फेर तुहानूं वखाउणा तुहाडे निज अक्खे, लोचन जगत ना कोए वड्याईआ। दीन दुनी दी दाअवे नाल पत कोए ना रखे, साहिब स्वामी हो के सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। चार जुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ सारे अक्के, अक़ल बुद्धी दी चले ना कोए चतुराईआ। निरगण नूर निराकार निरँकार जो हर घट अन्तर वस्से, सच स्वामी दरस कोए ना पाईआ। कोटन विच्चों कोई भगत सुहेला जिस मिल्या पारब्रह्म समर्थे, धुर दा मालक नूर अलाहीआ। सरवण सुणदे महिमा वाली कथा कहाणी कथ्थे, अक्खरां विच सतरां विच रागां नादां विच वड्याईआ। तुसीं सारे आदि अन्त जुगा जुगन्त इक प्रभू दे बच्चे, बचपन सब दा फोल फुलाईआ। क्यों वखरे वखरे नाम जपे, जग जीवण दाते कीती मात वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सचखण्ड निवासी लख चुरासी हर घट अन्तर वस्से, निरंतर हो के थाउँ थाईंआ।

✲ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ हरबंस सिँघ दे गृह पिंड माहलां ✲

गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो प्रभ दे भगत, हरि भगवन आप वखाईआ। जिन्नां तुहाडे नाम दा रख्या वरत, ढोला धुर दा इक्को गाईआ। जन्म दी पूरी कर के शर्त, शरअ दा लेखा दिता मुकाईआ। वड्याई लै के उपर धरत, धवल दा भार वंडाईआ। अन्तिम मंज़ल चढ़ के उपर अर्श, अर्शी प्रीतम मिल के खुशी बणाईआ । जिस मार्ग नूं मंज़ल नूं तुहाडे मुरीद रहे तरस, मैं सहजे दिती वखाईआ। पिच्छे कोटन कोटि जन्म बीते अनक काल लँघे बरस, रुत रुतड़ी आपणा रूप बदलाईआ। बिना प्रभू तों भगतां उत्ते किसे कदे कीता ना तरस, रहमत विच रहम ना कोए कमाईआ। सच दवारे करे कोए ना जड़त,

नगीना गुरमुख ना कोए उठाईआ। जिस दी आदि तों अन्त तक लिख्त पढ़त, बिन अक्खरां अक्खर समझाईआ। सो खेले खेल मर्दाना मर्द, मदद अवर ना कोए जणाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दरद, दीनां अनाथां होए सहाईआ। पूरब जन्म दी मन्न के अर्ज़, आरज़ू पिछली लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक अख्वाईआ। गुर अवतार पैग़म्बरो वेखो भगतां राह, भगवन रिहा दृढ़ाईआ। जिन्हां दा आदि अन्त इक मलाह, जुग जुग नाउँ ना कोए बदलाईआ। चार जुग दयां भगतां इक्को सोहँ नाम दिता जपा, दूजी कीती ना कोए पढ़ाईआ। आत्मा परमात्मा विच मिला, नूर नूर विच समाईआ। सब दी क़बूल कर दुआ, दो आलम मालक होया सहाईआ। जिस नूं सूफ़ीआं किहा खुदा, ख़ालक खलक नूर अलाहीआ। सो भगतां नालों कदे ना होवे जुदा, जुज़ वखरा वंड ना कोए वंडाईआ। बेशक पंज तत शरीर दु:ख सुख वेखे वबा, तन वजूद माटी ख़ाक रंग रंगाईआ। निरगुण नूर निराकार आपणे लेखे ला, पिछला लहिणा दए चुकाईआ। भगत वछल आप अख्वा, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। एसे तरां कलयुग अन्त हरबंस सिँघ दिता तरा, तारनहार आपणी दया कमाईआ। आवण जावण लख चुरासी पैंडा दिता मुका, मुकम्मल दरगाह साची सचखण्ड टिकाईआ। जिथ्थे ना कोए पवण ना हवा, जल थल ना कोए वड्याईआ। इक्को नूर जोत रुशना, जिस विच अवतार पैग़म्बर गुर भगत बैठे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सदा मेहरवां, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ।

१५५८ २१

१५५८ २१

✻ ८ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ अवतार सिँघ दे गृह पिंड काउँके ज़िला अमृतसर ✻

गुर अवतार पैग़म्बर प्रभ तेरे दासी दास, दास्तान पिछली सब दी वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी रख के गए आस, आहिस्ता आहिस्ता नित नवित्त तेरा राह तकाईआ। तेरा नाम संदेसा क़लमा दे के गए ख़ास, ख़ालस तेरा रूप अनूप सच समझाईआ। सृष्टी दृष्टी दस्सया धुर दा माई बाप, पिता पुरख अकाल इक अख्वाईआ। तेरे हुक्म नाल तेरा बदलदा रिहा जाप, जग जीवण दाते तेरी सिफ्त सालाहीआ। तेरी मंज़ल तेरा दस्सदे रहे घाट, पत्तन दुआरा तेरा इक दृढ़ाईआ। भेव अभेदा खोल्ह के सुणाउँदे रहे गाथ, अक्खरां वाली कर पढ़ाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख समराथ, गहर गम्भीर बेनज़ीर तेरा रंग रंगाईआ। तेरा नाम पट्टी लेख लिख्या नाल क़लम दवात, शाही शहिनशाह

तेरी सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी जगत धार बणा समाज, समग्री तेरा हुक्म वरताईआ। हुक्मे अंदर रईयत हो के तेरा वेखदे रहे राज, राज राजाने शाह सुल्ताने तेरी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरे नाम दे गाए गीत, हरि वड्डे वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी बदली रीत, धर्म दी धार धार नाल टकराईआ। तेरा खेल सदा अनडीठ, जग नेत्र नज़र कोए ना पाईआ। जिस दी ठोक देवें पीठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम कलमा कर बख्शीश, मेहर नजर टिकाईआ। दे के अगम्म हदीस, करें अथाह पढ़ाईआ। ओह आवे लोकमात बीच, धरनी धरत धवल धौल डेरा लाईआ । तैनूं सजदा डंडावत बन्दना कर झुका सीस, जगदीश तेरी ओट तकाईआ। सरगुण हो के करके गए प्रीत, निरगुण तेरा प्रेम बणाईआ। तेरी शरअ दी दस्स के लीक, लाईन ऐन इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण तेरे नाम दी दस्सी निशानी, निशाना इक्को इक दृढ़ाईआ। पता नहीं क्यों जूह होई बेगानी, बेवा दिसे जगत लोकाईआ। आत्म ब्रह्म दा रिहा ना कोए ज्ञानी, सूफ़ीआं सति ना कोए समाईआ। मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, शास्त्र पढ़ के आपणा झट लँघाईआ। दीनां मज़हबां विच वड़ी बेईमानी, अन्तर निरंतर करे ना कोए सफ़ाईआ। जिस दे पिच्छे गोबिन्द बच्चयां दी दे के गया क़ुरबानी, करबले वाले रहे कुरलाईआ। उन्हां मिल्या ना साहिब सुल्तानी, शहिनशाह तेरा दरस कोए ना पाईआ। शब्द नाद सुणे कोए ना बाणी, बाण अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। जिधर तक्की चारों कुण्ट परेशानी, पश्चाताप विच लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल परवरदिगार सांझे यार कर मेहरवानी, महबूब तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर मालक दया कमाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण असीं सारे करीए सजदा, सीस जगदीश झुकाईआ। तूं मालक घर घर दा, गृह मन्दिर फोल फुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तैथों डरदा, देवत सुर भज्जे वाहो दाहीआ। अवतार पैग़म्बर गुर तैथों पढ़दा, तूं शब्द गुरु करें शनवाईआ। तूं मालक चोटी जड़ दा, चेतन तेरा राह तकाईआ। तूं लख चुरासी घाड़त घड़दा, विष्न ब्रह्मा शिव सेवक रखाईआ। तूं भेती दो जहानां घर दा, गृह इक्को इक वखाईआ। तेरा नूर ज़हूर नरायण नर दा, नार कन्त तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण मेरे साहिब अज़ीम, आलीशान तेरी सरनाईआ। सब दी सांझी कर तालीम, सिख्या इक्को इक दृढ़ाईआ। झगड़ा मुका दे चार जुग क़दीम, क़ुदरत दे मालक क़ुतबखाने आपणे दे समझाईआ। गुर अवतार

पैग़म्बर तेरे मनीम, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेख गए जणाईआ। हुक्मे अंदर सदा अधीन, सिर सके ना कोए उठाईआ। अलिफ़ ये दर तेरे मस्कीन, अक्खरां चले ना कोए चतुराईआ। अगला मार्ग दस्स महीन, रहिबर हो के पन्ध मुकाईआ। तैनूं अल्ला पाक कहिण यामुबीन, मेहरवान तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण साडी निमस्कार, नमों नमों सीस निवाईआ। पूरब लहिणा क़र्ज उतार, मक़रूज झोलीआं दे भराईआ। जुग जुग तेरे ख़िदमतगार, ख़ादम हो के सेव कमाईआ। तेरा करदे रहे इंतज़ार, नित्त नवित्त तेरा राह तकाईआ। कवण वेला कल कल्की लए अवतार, अमाम अमामा वेस वटाईआ। चार जुग दे कलमे नाम तेरा जैकार, सिफ्ती ढोले गीत अलाईआ। इस तों परे तेरा दरबार, जिथ्थे नाद धुन नहीं धुन्कार, रागां विच ना कोए वड्याईआ। ना कोई हिस्सा वंड गुरु अवतार, पैग़म्बर नज़र कोए ना आईआ। इक्को जोत नूर उज्यार, जोती जाते तेरा खेल बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जीव जंत पा सार, महासार्थी आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे मँग मँगाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण कलयुग अन्तिम वेख मौका, मुकम्मल दईए दृढ़ाईआ। असीं जुग जुग दिता होका, हुक्म तेरा नाम सुणाईआ। किसे दा वेस वटाया जञ्जू बोदा, लोटा किसे हथ्थ फड़ाईआ। किसे दा रंग रंगाया तेरी धार तेरा रूप अनूप जिस दी अवर ना कोए सोचा, समझ ना कोए चतुराईआ। सब दे उत्ते दीन मज़हब दा भार टिकाया बोझा, वज़न दिता वखाईआ। किसे दा पर्दा लाहिआ चौदां लोका, चौदां तबकां किसे शनवाईआ। किसे सुणा के अगम्म सलोका, बेअन्त बेअन्त बेअन्त दिता अख्वाईआ। चार जुग दे शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी बणा के पोथा, अक्खरां नाल अक्खर दिते मिलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ जणा के काया कोठा, ज़िमीं असमान गगन गगनंतर एसे विच समाईआ। सब दी आसा मनसा पूरी करदा रिहा लोचा, निज लोचन नैण अक्खखुल्हाईआ। इक संदेसा दे के गया महात्म बोद्धा, बुद्धी तों परे जगत जणाईआ। कलयुग अन्त जिस वेले गुरु गुर चेले चेले गुरुआं नाल करन धोखा, साबत नज़र कोए ना आईआ। मनुआ मन हर घट अन्तर होवे खोटा, खरा रहिण कोए ना पाईआ। साध सन्त दुखी होवे बेदोषा, दोषीआं देवे ना कोए सज़ाईआ। जगत विकार विच होवे मदहोशा, नाम खुमारी ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर कहिण प्रभ तेरे अग्गे इक अपील, अपरम्पर स्वामी दईए जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सब दी बदल दे दलील, दीन दुनी दे मालक आपणा रंग रंगाईआ। सति सन्तोख धर्म दी धार कर शील, अगनी

तत ना कोए तपाईआ। कपट विकारी रहे ना कोए कुचील, कंचन गढ़ दे वड्याईआ। तेरी धार वेखणी जिस कारण गोबिन्द वस्त्र पहने नील, बसन बनवारी आपणा पर्दा लाहीआ। कुछ संदेसा दे के गया कृष्ण भील, त्रैलोकी नाथ अनाथां आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच साची कार कमाईआ। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण तेरे अग्गे इक्को अर्ज़, अज़ीज़ हो के दईए जणाईआ। साडी सब दी सांझी गर्ज़, गर्ज़ कि होर लोड़ ना कोए वधाईआ। आपणा पूरा कर दे फ़रज़, सदी चौधवीं वेख वखाईआ। शरअ छुरी मेट दे करद, क़तलगाह ना बणे लोकाईआ। ग़रीब निमाणयां वंड दरद, दुखियां हो सहाईआ। पुट्ठी सिध्धी कर दे नरद, नर नरायण तेरी ओट तकाईआ। कूड़ा मेट अन्धेरा गरद, साचा चन्न होवे रुशनाईआ। चार जुग दी पूरी कर शर्त, शरअ दे मालक शहिनशाहीआ। निरगुण धार आ परत, पतिपरमेश्वर वेस वटाईआ। तेरे कोल सब दी फ़रद, पूरब लेखा रहे ना राईआ। तेरा हुक्म होवे असचरज, अचरज आपणी कार कमाईआ। योद्धे सूरबीर मर्दाने मर्द, दर तेरे आस रखाईआ। किसे दा होण ना देवीं हरज, हरजाने सब दे पूर कराईआ। तेरे नाम दा खण्डा अगम्मी इक्को खड़ग, दो जहान करे सफ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरा इक सुहाईआ। दर तेरा होए सुहञ्जणा, सोभावन्त रमणीक। सच स्वामी दर्द दुःख भय भञ्जणा, किरपा कर परवरदिगार लाशरीक। दीन दुनी पा अगम्मा अंजणा, तेरे विच हक़ तौफीक़। गुर अवतार पैग़ंबरां तेरा दर मँगणा, सदी चौधवीं सारे करन उडीक। लख चुरासी चाढ़ दे रंगणा, निरगुण सरगुण धार बदल दे नीत। तेरा हुक्म फिरे विच ब्रह्मण्डणा, वरभण्डी अन्धेरा मेटे तारीक। तुध बिन साचा नाम किसे ना वंडणा, मेहर मुहब्बत करे ना कोए बख्शीश। बिना सीस बिना हथ्थ करदे बन्दना, बिना तत वजूद तेरा वेखण खेल अतीत। तूं सच दुआरा लँघणा, दीनां मज़हबां मेटणी लीक। तेरा डंका इक्को वज्जणा, सिर झुके राउ रंकां ऊँच नीच। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, जिस विच तेरे नाम दी होवे सच तमहीद। गुर अवतार पैग़ंबर कहिण धरनी धौल वेखे धरत, धवल ध्यान लगाईआ। अर्शां दे मालक आ परत, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। तैनूं उडीकदयां जुग चौकड़ी बीते बरस, समें काल गए वक्त लँघाईआ। किरपा कर मर्दाने मर्द, मदद अवर ना कोए रखाईआ। पूरब पूरब वेख फ़रद, पर्दा परदयां विच्चों उठाईआ। अवतार कहिण साडी अर्ज़, पैग़ंबरां आरज़ू तेरे अग्गे टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा हुक्म वरताईआ। भाद्रों कहे मैं वी दस्सां बात, बातन दयां दृढ़ाईआ। अवतारो मारो पिच्छे झात, पर्दा दयां उठाईआ। धरनी वेखो मिट्टी ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। जिथ्थे बाल्मीक रह के

गया इक रात, थाँ सिँघासण इहो नज़री आईआ। शब्द संदेसा गया आख, रमायण भविख्त दए गवाहीआ। एथे खेल करना पुरख अबिनाश, कल कल्की नूर अलाहीआ। जिस दी समझे ना कोए ज़ात, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। लेखा लिखे ना क़लम दवात, शाही चले ना कोए चतुराईआ। जिस ने सब दी पुच्छणी वात, वातावरन वेखे ख़लक खुदाईआ। दीन दुनी करे पाक, पतित पुनीत आप बणाईआ। अमृत रस देवे आबेहयात, जीवण जीवण विच्चों प्रगटाईआ। धुर स्वामी बण के साथ, सगला संग रखाईआ। सब दी पूरी करे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। ओस दा मेरे राम ने करना जाप, राम राम राम सरनाईआ। इक मुट्ठी लै के ख़ाक, धूढ़ी मस्तक नाल छुहाईआ। दोए जोड़ कर अरदास, बेनन्ती विच सीस निवाईआ। सुणया हुक्म अगम्मा गाथ, करी अगम्म पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भाद्रों कहे वेखो धाम उत्ते धरनी मिट्टी, ख़ाकी ख़ाक समाईआ। जिस दी धार बाल्मीक रखी चिट्टी, अक्खर अक्खर ना वंड वंडाईआ। समाधी विच आदी दी लाई टिकटिकी, निज नेत्र लोचन नैण अक्खखुल्हाईआ। उहनूं कलयुग अन्तिम धार दिसी, दह दिशा होई रुशनाईआ। जिस वेले सति धर्म दी रहे कोई ना सिखी, गुर चेले करन लड़ाईआ। ओह भाद्रों महीना शहिनशाही सम्मत अठ्ठ प्रविष्टा दिसी मिती, मित्र प्यारे दिती जणाईआ। फिर हथ्थ रख्या उत्ते
१५६२ गिच्ची, धौण ज़ोर नाल दबाईआ। फेर नज़र आई हाहे उत्ते टिप्पी, आत्म होई रुशनाईआ। फेर अगली पट्टी लिखी, लिख्या १५६२
२१ लेख अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल खिलाईआ। भाद्रों कहे बाल्मीक ने २१
तक्कया अगम्मा राम, राम राम विच समाईआ। ओधरों आ गया बाल अञ्याण, चौदां साल दी अवसथा सोभा पाईआ। ओस सच कीती प्रणाम, निउँ के सीस झुकाईआ। कढ्ढके नौ बादाम, रिषी दी भेंटा दिते कराईआ। बाल्मीक ने सुणया हुक्म फ़रमान, संदेसा धुरदरगाहीआ। अगला खेल वेख महान, हरि करता रिहा जणाईआ। एह बाला नढ्ढा जिस करी प्रणाम, निव निव सीस झुकाईआ । इस दा लेखा होर जहान, जन्म जन्म विच्चों बदलाईआ। त्रेता द्वापर करे ना कोए ध्यान, ध्यानी ध्यान ना कोए लगाईआ। जिस वेले होवे कलयुग अन्धेरा शाम, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। निरगुण जोत नूर प्रकाश करे श्री भगवान, जोती जाता धुरदरगाहीआ। इस दा लहिणा देणा देवे फेर आण, आप आपणा फेरा पाईआ। एसे कारण खेलिआ खेल महान, महिमा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। भाद्रों कहे बाले अन्तर आई विचार, विच्चर के दिता सुणाईआ। बाल्मीक किहा नाल प्यार, प्रीती विच समझाईआ। तेरा लहिणा देणा नाल निरँकार, निरगुण शब्दी हुक्म दृढ़ाईआ। जिस वेले कल कल्की लए अवतार, जोती जाता फेरा पाईआ।

तूं वी जन्म लैणा संसार, पंज तत सोभा पाईआ। ओसे दा रूप सिँघ अवतार, जिस दा लहिणा दिता मुकाईआ। पूरब बादामां दा उधार, साख्यात नौ नौ वखाईआ। दूसर मँगे ना किसे दुआर, झोली डाह ना कोए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ज़रा ज़रा आपणी कार कमाईआ। भाद्रों कहे वेखो जुग द्वापर, दोहरी धार जणाईआ। साचा खेल रिहा वापर, वापस सके ना कोए कराईआ। जन्म कर्म दा जिस दा नातन, नाता बिधाता आप जुड़ाईआ। आत्म परमात्म बणा के साथन, सगला संग वखाईआ। नारद जी आपणा लेखा लग्गा वाचण, परदयां विच्चों पर्दा आप उठाईआ। किस बिध प्रभ पूरा करे वाकन, भविख्त भविख्तां नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। भाद्रों कहे औह आ गया नारद मुनी, मुनीश्र फेरा पाईआ। जिस नूं कहिंदे चार जुग दा गुणी, गुणवन्ता मिले वड्याईआ। जिस दी पुकार प्रभू ने सुणी, अणसुण कर लोकाईआ। लेखा वेख के दीन दुनी, दोहरी धार दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे सुण द्वापर दे कृष्ण काहन, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण ध्यान लगाईआ। आपणी सख़ी दा वेख लै दान, दीदा दानिस्ता दयां जणाईआ।

१५६३ जिस दा विचोला बणया श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। हुक्म संदेसा दिता फ़रमान, फ़ुरनिआं तों बाहर करी पढ़ाईआ। जिस वेले कलयुग अन्त लोकमात होवे विच जहान, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। ओस वेले प्रगट होवे नौजवान, नर निरँकार नूर अलाहीआ। जो लेखा मुकाए ज़िमीं असमान, मण्डल मण्डप वेख वखाईआ। लहिणा देणा वेखे सब दा आण, आनन फ़ानन आपणा फेरा पाईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आण, सच सच दृढ़ाईआ। बिन अक्खां तों करे ध्यान, बिन नैणां नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं दस्सां नाल प्यार, प्रीती विच जणाईआ। जेहड़ी वस्त मँगी अपार, काहन सख़ी मेरे हथ्थ फड़ाईआ। मैं ओस दा कीता विचार, विच्चर के दयां सुणाईआ। जिस करमण्डल कीता त्यार, ओह एथों दा ठठयार रहिण वाला द्वापर जुग दा नज़री आईआ। ओस दा लहिणा देणा उतार, एह खेल सच्ची सरकार, जुग जुग रीती चली आईआ। जिस नूं समझे ना कोए ज्ञान विचार, अक्खरां पर्दा ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं देवां सच शहादत, गवाह इक्को नज़री आईआ। जिस वेले कौरव पांडव करी बग़ावत, झगड़ा जोरू ज़र वखाईआ। निरगुण सरगुण करी ना कोए ममानत, काहन सख़ी ना कोए समझाईआ। सब दे अन्तर लग्गी अलामत, वबा सके ना कोए मिटाईआ। द्वापर अन्तिम आई शामत, शमां नूर ना कोए रुशनाईआ। दुनियां कूड़ी कूड़ दिसे बनावट, सजावट तन वजूद

सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच करनी कार कमाईआ। नारद कहे मैं वेख्या खेल अनोखा, बिन अक्खां अक्खजणाईआ। जिस दे विच नहीं कोई धोखा, धर्म दी धार नाल वड्याईआ। युधिष्टर समझ के आपणा मौका, कृष्ण डंडावत सीस निवाईआ। चरणां नाल छुहा के अगला पोटा, पंजा पंजे नाल रगड़ाईआ। नेत्र मीट के पै गया सोचा, समझ समझ नाल टकराईआ। की आसा मनसा लोचा, लोचन नैण की शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। युधिष्टर अन्तर आया उदार, हरि करते दिता जणाईआ। जे युद्ध करना अपार, अपरम्पर स्वामी आप सुणाईआ। कृष्ण दी भेंटा करना इक अनार, जिस दा दाणा गणत ना कोए गिणाईआ। नौ वार करनी निमस्कार, नौ नौ दा टंक बणाईआ। नौ खण्ड पृथमी पैणी मार, नौ दवारे हाहाकार करे लोकाईआ। नौ रसना रसन विचार, रस रस ना कोए चखाईआ। फेर दिता होर हुलार, पर्दा परदिउँ परे चुकाईआ। कृष्ण बोल के किहा शब्द दी धार, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। युधिष्टर मेरा ओस काहन नाल उँधार, जो काहन लख चुरासी गोपीआं सदा हंढ्डाईआ। जिस ने कल कल्की लैणा अवतार, अमाम अमामा होए सिक्दार, सख़ी सुल्ताना धुरदरगाहीआ। मेरीआं सख़ीआँ ओस नूं करन निमस्कार, जिस दा आदि अन्त ना पारावार, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। एह भेंटा होणा ओस दी धार, जिस नूं झुकण गुरु अवतार, पैग़म्बर निउँ निउँ लागण पाईंआ। सोहणी भूमिका सोहणा होवे दुआर, दुआरका वासी गया जणाईआ। जिस फल बूटा लगाया खिड़ी मात गुलज़ार, गुलशन इक महकाईआ। ओह माली इथों दा रहिण वाला सी पुरातन ज़िमींदार, ज़माने विच आपणा आप बदलाईआ । सब दा लेखा लेखे देवे डार, लहिणा लहिणे विच रखाईआ । अगला फेर होण लग्गा विहार, कलयुग काती दए गवाहीआ। गोबिन्द सूरा हो त्यार, त्रैगुण अतीता रिहा जणाईआ। सदी चौधवीं करना सर्ब खुआर, चारों कुण्ट धीरज धीर ना कोए धराईआ । कलयुग कूड़ी क्रिया पैणी मार, अग्गे हो ना कोए बचाईआ । शाह सुल्तानां होणा खुआर, राज राजान भज्जण वाहो दाहीआ। भाद्रों अठ्ठ कहे मेरा आ गया दिवस अपार, प्रभ दिती माण वड्याईआ । मैं नित करां चरण निमस्कार, धूढ़ी धूल ख़ाक रमाईआ । जिस कारण खेल खिलाया आण, आपणा वक्त सुहाईआ। दलजीत दा लेखा पिछला पूरा कर जहान, द्वापर दा खैड़ा दिता छुडाईआ। धरत सुहञ्जणा वक्त सुहावा धर्म दी होवे कल्याण, कर्म कांड रहे ना राईआ । गुर अवतार पैग़म्बर करो ध्यान, सचखण्ड बैठे सच नैण उठाईआ । कलयुग कूड़ा मेटणा जिस निशान, सतिजुग सति सति प्रगटाईआ। ऊचां नीचां देवे इक्को माण, राउ रंकां इक्को घर वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म जिस ने दस्सणा गाण, सोहँ ढोला अगम्म अथाहीआ। सो

१५६४
२१

मालक ख़ालक वाली दो जहान, निरवैर निराकार निरँकार इक अख्वाईआ। जिस नूं झुक झुक सारे सजदे करन सलाम, डंडावत बन्दना नमों नमों नमस्ते कहि सुणाईआ । ओह हुक्म संदेसा देवे फ़रमान, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगवन हो के लेखा सब दा दए चुकाईआ।

* १५ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ अवतार सिँघ दे गृह पिंड माढ़ी पनूआं *

भाद्रों कहे मैं चार कुण्ट भज्जिआ दौड़ा, नव नौ चार खोज खुजाईआ। लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी फल वेख्या कौड़ा, अमृत रस ना कोए भराईआ। सच दुआर एकँकार सृष्टी दृष्टी अंदर लग्गा कोए ना पौड़ा, दरगाह साची चढ़न कोए ना पाईआ। जां निगाह मारी नानक सस्से उपर दस्सया होड़ा, हाहे टिप्पी हँ जणाईआ। आदि जुगादी आत्म परमात्म धुर दा जोड़ा, सच दुआर विछड़ कदे ना जाईआ। जिस प्रभू दी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब नूं लोड़ा, लोड़ींदा साजण
१५६५ इक अख्वाईआ। सो साहिब स्वामी अन्तरजामी शब्द अगम्मी चाढ़े घोड़ा, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। निरगुण १५६५
२१ सरगुण सब दीआं पकड़े डोरां, दो जहानां वेख वखाईआ। नौजवाना मर्द मर्दाना बण के बांका छोहरा, श्री भगवान आपणी २१
कल वरताईआ। जिस झगड़ा मेटणा काला गोरा, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। भगत जनां रहिण ना दए विछोड़ा, सन्त सुहेले विछड़े लए मिलाईआ। भेव चुका के तोरा मोरा, आत्म ब्रह्म दए दरसाईआ। कूड़ कल्पणा विकार हँकार मेटे चोरा, ठग्गी ठग ना कोए कमाईआ। सदी चौधवीं तक्के वेला थोड़ा, बीस बीसा नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। भाद्रों कहे मैं दो जहानां बणया पाँधी, मंज़ल बामंज़ल पन्ध मुकाईआ। नव सत्त कूड़ दी दिसी आंधी, अन्ध अन्धेरा ना कोए मिटाईआ। मनसा ममता होई बांदी, बंधन सके ना कोए तुड़ाईआ। रसना जिह्वा दुनियां सारी गांदी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चार वरनां धार थक्की मांदी, बलहीण रही कुरलाईआ। झगड़ा मेटे कोई सूर ना ढांडी, शरअ शरीअत ना कोए बदलाईआ। आत्मा परमात्मा मिले ना हक़ गुआंढी, काया मन्दिर ना वज्जे वधाईआ। अगम्मी पवण मिले ना ठांडी, कलयुग अगनी तत बुझाईआ। ममता मोह मिटे ना सोना चांदी, सूर्या चन्द ना कोए रुशनाईआ। सच सरोवर शब्दी धार आत्म नार कोए ना नहांदी, पती पुरख अकाल मिलण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे मँग मँगाईआ। भाद्रों कहे मैं फिरया चौदां

लोक, परलोक खोज खुजाईआ। तेरा सिफ्ती सुणया सलोक, अक्खरां वाली पढ़ाईआ। तक्कया वरन गोत, ज़ात पात दुहाईआ। अक़ल रही ना सोच, रो के दयां जणाईआ। कवण दवारे पुरख अकाले तेरी निर्मल जोत, जोती जाते पुरख बिधाते दे दृढ़ाईआ। जिस दी गुर अवतार पैग़ंबरां रखी ओट, कलयुग ओड़क आवे धुर दा माहीआ। लख चुरासी अंदरों कढ्ढे हउमे खोट, हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जीव जंत उधारे कोटी कोट, कोटन कोटि होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ। भाद्रों कहे मैं चौदां तबक तक्कया राह, रहिबर तेरा ध्यान लगाईआ। मेरे हक़ीक़त वाले हक़ खुदा, खुदी तक्बर दे मिटाईआ। रहमत विच मेरी दुआ, दोए जोड़ सीस निवाईआ। कूड़ी क्रिया मेट वबा, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। सदी चौधवीं हो सहा, अमाम अमामा वेस वटाईआ। उच्ची कूक दवारे कहां, कहि कहि रिहा सुणाईआ। धुर दे क़लमे शब्द अगम्मी कर दे हां, बिन इशारे दे दृढ़ाईआ। साचा मार्ग दे वखा, वखरा गृह ना कोए जणाईआ। जो भविख्तां विच पेशीनगोईआं आए लिखा, कागज़ क़लम शाही नाल गवाहीआ। जो सब दा लहिणा पूरा दए करा, कारण आपणा देणा दृढ़ाईआ। निउँ निउँ सजदा सीस देणा झुका, झुक झुक लागां पाईंआ। मेहरवान मेरे मेहरवां, मेहर नज़र दे उठाईआ। किस बिध सतिजुग कलयुग विच्चों होणा रवां, राह रस्ता देणा दरसाईआ। तेरा नाम निधाना होवे नवां, नौ खण्ड वज्जे वधाईआ। सच सरनाई तेरी ढहां, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर साचे मँग मँगाईआ। भाद्रों कहे मैं वेख्या तेरा नज़ारा, नज़र दीन दुनी टिकाईआ। कलयुग अन्तिम दिसे किनारा, घाट तट किनारा देणा दृढ़ाईआ। दर वेख पैग़ंबर गुर अवतारा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सारे मँगदे इक्को वारा, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। पुरख अकाले दीन दयाले निरगुण नूर कर उज्यारा, परवरदिगार तेरी बेपरवाहीआ। साडा पूरा होया कौल इक़रारा, वक्त बावक्त दे समझाईआ। तेरे आउण दा दे के आए सर्ब इशारा, नाम संदेश्यां विच जणाईआ। कल कल्की लए अवतारा, निहकलंक डंक वजाईआ। अमाम अमामा होए सिक्दारा, जल्वागर नूर अलाहीआ। जिस ने कलयुग मेटणा धुँदूकारा, सतिजुग सच करे रुशनाईआ। सब दा बण के परवरदिगारा, प्रितपालक हो के सेव कमाईआ। निरगुण नूर दए दीदारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। शब्द नाद दए धुन्कारा, अनहद नादी धुन उपजाईआ। अमृत रस देवे ठंडा ठारा, अगनी तत तत्त गवाईआ। काया मन्दिर खोल्ह किवाड़ा, सच सिँघासण दए दरसाईआ। जिथ्थे इक्को रूप अपारा, दुतिया नज़र कोए ना आईआ। तेरा खेल सच्ची सरकारा, शाह पातशाह शहिनशाह समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ।

भाद्रों कहे मैं दीन दुनी खोजी, खोजत खोजत वेख वखाईआ। साबत दिस्सया कोए ना जोगी, जुगीशर जुगत ना कोए दृढ़ाईआ। मुनी चढ़या कोए ना चोटी, मन ममता ना कोए मिटाईआ। जगत साधूआं वासना होई खोटी, अन्तश्करन करे ना कोए सफ़ाईआ। सूफ़ी झगड़ा करदे कारण रोटी, मज़हब दा महबूब मिलण कोए ना पाईआ। आत्म परमात्म बणया कोए ना गोती, गौतम बुध दए गवाहीआ। सारी सृष्टी दिसदी रोती, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किसे दवारे जगे तेरी कोई ना जोती, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। प्रभ किरपा कर के जन भगत सुहेले चुण लै माणक मोती, लख चुरासी विच्चों खोज खुजाईआ। बिन तेरी किरपा कम्म आवे पढ़ी ना पोथी, पुस्तक देवे ना कोए वड्याईआ। तूं आदि जुगादि ठाकर धुर दा मौजी, मजलस भगतां नाल रखाईआ। कलयुग अन्तिम देर कर ना बहुती, बौहड़ी बौहड़ी मेरी दुहाईआ। सारी दुनियां उठा सोती, आलस निंदरा ग़फ्लत दे मिटाईआ। झगड़ा मुका के बोदी जञ्जू धोती, तहिमत करे ना कोए लड़ाईआ। आत्म ब्रह्म बणा लै गोती, रूप अनूप दे दरसाईआ। तेरा इक्को नाम इक्को कलमा इक्को होवे सलोकी, सोहला ढोला इक्को नाम शनवाईआ। सदी चौधवीं दुनियां होई बहुती औखी, सांतक सति ना कोए कराईआ। तेरी मंज़ल हक़ीक़ी तेरी धार

१५६७ कोए ना पहुंची, सच दुआर नज़र किसे ना आईआ। मालक ख़ालक प्रितपालक धुर दे खौंती, ख़सम डोरी आपणे हथ्थ १५६७

२१ उठाईआ। तेरे प्यार बिना सृष्टी दृष्टी जाए औंती, धर्म दी धार सुत ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप २१

आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। भाद्रों कहे प्रभ पूरी कर दे आसा, तृष्ना कूड़ रहे ना राईआ। जन भगतां अन्तर दे भरवासा, भाण्डा भरम भन्नाईआ। सच बेनन्ती इक्को आखां, आखर दयां सुणाईआ। लहिणा देणा वेख भविख्त वाका, जो नानक गोबिन्द गया जणाईआ। सच दुआर दा खोल्ह के ताका, पर्दा आप उठाईआ। सन्त सुहेला हो के राखा, रखक हो के सेव कमाईआ। तेरा नाम ना कोए तोला ना कोए मासा, वज़नां विच वज़न ना कोए जणाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाशा, अबिनाशी करते तेरी सरनाईआ। तेरा हर घट अंदर वासा, वसल देणा यार ख़ुदाईआ। रूह बुत करना पाका, पतित पुनीत आप हो जाईआ। सब दी जोत जोत दा जाता, निरगुण धार तेरी वड्याईआ। सतिजुग सच धर्म दा खोल्ह के हाटा, नाम निधाना इक विकाईआ। गुरमुखां पूरा कर दे घाटा, मेहर नज़र नाल तराईआ। जिन्हां तेरे पिच्छे पन्ध मारीआं वाटां, वाट अगली देणी चुकाईआ। तेरा सच सरोवर नाम अगम्मी ताटा, तीर्थ इक वखाईआ। जिथ्थे इक्को नूर प्रकाशा, जोती जोत डगमगाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा सच दुआर निवासा, दरगाह साची सोभा पाईआ। दीन दुनी दा बदल दे पासा, पुश्त पनाह आपणा हथ्थ रखाईआ। तूं साहिब सुल्तान अलखणा अलाखा, अलख अगोचर

तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देणी माण वड्याईआ। भाद्रों कहे प्रभू सब दा कछु दे भरम भुलेखा, भुल्लिआ रहिण कोए ना पाईआ। निरगुण धार बदल के वेसा, वेसवा विकार देणा मिटाईआ। भाग लगा के माझे देसा, देश देसन्तर देणा दरसाईआ। जो वायदा कीता गोबिन्द नाल दस दस्मेशा, दह दिशा देणा भुगताईआ। भगत उधारना तेरा पेशा, पेशीनगोईआं देण गवाहीआ। तैनूं झुकदे विष्न ब्रह्मा शिव गणेशा, गणपति निउँ निउँ लागण पाईंआ। सदी चौधवी सब दे नाल कर हेता, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई सब नूं आपणे गले लगाईआ। तेरा आदि अन्त तक्कया इक्को गोबिन्द बेटा, शब्द गुर गुर वड्याईआ। जिस ने दीन दुनी दा वेखणा अन्तर पेटा, बाहरों खोज खुजाईआ। कलयुग विच सतिजुग बण के खेवट खेटा, नईआ नौका तेरा नाम चलाईआ। आदि अन्त जो सदा रहे हमेशा, हम साजण सतिगुर बेपरवाहीआ। जिस ने बणाए पीर ऐली गौंस शेख़ा, रसूल पैग़म्बर दिती वड्याईआ। ओह मालक दो जहानां नर नरेशा, नर नरायण अगम्म अथाहीआ । कलयुग अन्त श्री भगवन्त धर्म दी धार करना हेता, हितकारी हो के वेख वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा आदि अन्त दा इक्को नाम कलमा इक्को शब्द होवे उपदेशा, उत्तर पूरब पच्छिम दक्खण एकँकार तेरी इक्को इक पढ़ाईआ।

१५६८
२१

✻ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ जुगिंदर सिँघ दे गृह पिंड माढ़ी पनूआं ✻

भाद्रों कहे मैं वेखे कलयुग जीव जंत, हर हिरदे अन्तर निरंतर फोल फुलाईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेखे सन्त, माया ममता मोह विच हल्काईआ। गढ़ तोड़े कोए ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए जणाईआ। सति धर्म दी रही कोई ना संगत, चार वरन करन लड़ाईआ। बोध अगाध दिसे कोए ना पंडत, भेव अभेदा ना कोए खुल्हाईआ। जिधर तक्कां दीन दुनी होई नंगत, नाम ओढ्ढन सीस ना कोए रखाईआ। जगत वासना माया ममता सारे मँगत, वस्त अमोलक नाम निधाना ना कोए वरताईआ। मेरे अन्तर आई चिन्दक, हैरानी विच दुहाईआ। सदी चौधवीं पुरख अकाल परवरदिगार तेरे सारे होए निन्दक, जूठ झूठ विच जगत वड्याईआ। तेरी मंज़ल चढ़न दी किसे अंदर रही ना हिम्मत, सचखण्ड दुआर मिलण कोए ना जाईआ। मन मनुआ घर घर करे इल्लत, सांतक सति ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, धर्म दवारे आस रखाईआ। धर्म दुआर कर मेहरवानी, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। चारों कुण्ट शरअ शैतानी,

दीन मज़हब करे लड़ाईआ। जगत जिज्ञासू अंदर होई बेईमानी, सच विच ना कोए समाईआ। रसना जिह्वा पढ़दे बाणी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। अठसठ तीर्थ ख़ाली दिसदे पाणी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। आत्म परमात्म मिले कोए ना हाणी, लख चुरासी नार कन्त रूप वटाईआ। अमृत रस निझर झिरना बूँद स्वांत देवे कोए ना पाणी, कूड़ तृष्ना अग्ग ना कोए बुझाईआ। साहिब सुल्तान श्री भगवान तेरी मंज़ल चढ़े ना कोए रुहानी, रूह बुत साफ़ ना कोए कराईआ। सति सच दिसे ना कोए निशानी, कूड़ निशाना जगत झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। साहिब सतिगुर धुर दे मीत, हरि करते तेरी सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदल दे रीत, सतिजुग साचा राह वखाईआ। झगड़ा मिटा दे मन्दिर मसीत, काया काअबा इक वखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरे आत्म परमात्म गावण गीत, गहर गम्भीर तेरा ढोला अगम्म अथाहीआ। मानव ज़ाती सब दी काया कर दे ठांडी सीत, अगनी तत ना कोए जलाईआ। झगड़ा मेट दे हस्त कीट, ऊँच नीच इक्को रंग रंगाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बातन पर्दा दे खुल्हाईआ। तुध बिन दिसे ना कोए अतीत, त्रैगुण लेखा देणा चुकाईआ। पापीआं कर पुनीत, पतितां दे वड्याईआ। तूं हर घट वस्सें बीच, बाहर खोजण दी लोड़ रहे ना राईआ। साचे नाम दी दस्स तमीज़, तमन्ना कूड़ी देणी
१५६९ गंवाईआ। गुर अवतार पैगम्बरां तेरी रखी उम्मीद, आसा आशा विच्चों प्रगटाईआ। आपणी सृष्टी वेख जेहड़ी गूढ़ी सुत्ती १५६९
२१ नींद, ग़फ्लत ममता दे मिटाईआ। सच दुआर दी सब नूं बख्श साची ईद, आदत पिछली दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप २१
हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। शहिनशाह मेरे सुल्तान, हरि करते तेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्तिम मार ध्यान, ज्ञानी ध्यानी फोल फुलाईआ। साचा देवे ना कोए ब्रह्म ज्ञान, जगत विद्या सृष्टी हल्काईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान सर्ब कुरलाण, खाणी बाणी दए दुहाईआ। धर्म दा झुल्ले ना कोए निशान, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदवाले मट्ठ सति सच ना कोए समाईआ। मैं चार कुण्ट वेख होया हैरान, हैरत विच सुणाईआ। जूठ झूठ चढ़या तुफ़ान, दीन दुनी रिहा रुढ़ाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर दरस देवे कोए ना आण, लोचन नैण ना कोए खुल्हाईआ । सारे तेरा राह तकाण, दरगाह साची सचखण्ड बैठे आस रखाईआ। कवण वेले प्रभ प्रगट होवे वाली दो जहान, दोज़ख़ बहिश्तां लेखा दए मुकाईआ। कल कल्की वेस वटाए सूरा बलवान, बलधारी आपणा वेस वटाईआ। अमाम अमामा होए प्रधान, कलमा कायनात सुणाईआ। शरअ छुरी ना चले उत्ते इन्सान, क़ातल मक़तूल लेखा दए मुकाईआ। साचा मार्ग दस्से आण, हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई वंड ना कोए

वंडाईआ। इक्को मन्दिर होए मकान, गृह इक्को सोभा पाईआ। इक्को तेरा जपण वाला होवे नाम, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा ढोला गाईआ। इक्को सब दा सांझा होवे पीण खाण, सूर गाँ ज़िबह ना कोए कराईआ। चार वरन करे ना कोए हराम, अठारां बरन ना कोए लड़ाईआ। तेरा हक़ीक़ी कलमा होवे हक़ कलाम, नाम निधाना नाउँ निरँकारा देणा जणाईआ। साची मंज़ल दस्सणी आसान, असल वसल देणा नूर खुदाईआ। धुर संदेसा अगम्म पैग़ाम, पीर पैग़म्बरां तों अग्गे देणा दृढ़ाईआ। रस हक़ीक़ी देणा जाम, नाम खुमारी इक चढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण धार कर इंतज़ाम, पूरब लेखा दे मुकाईआ। मज़हबां दा रहे ना कोए गुलाम, शरअ ज़ंजीर देणा कटाईआ। धर्म दी धार होए विधान, धारा सके ना कोए बदलाईआ। नाम जैकारा दो जहानां कर परवान, सिर सके ना कोए उठाईआ। योद्धे सूरबीर बलवान, बलधारी दे वड्याईआ। तेरा दर ठांडा वाली दो जहान, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच नाम दा देणा दान, दाते दानी दयावान तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ।

१५७० २१

❊ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ विरसा सिँघ दे गृह पिंड श्री हरिगोबिन्द पुरा ❊

भाद्रों कहे प्रभ गुर अवतार पैग़म्बर वेखे झुकदे, निरगुण धार नौजवान मर्द मर्दान सीस झुकाईआ। नाम क़लमे अगम्मे कहिण साडे पैंडे मुकदे, नव नौ चार धार खोज खुजाईआ। दरोही असीं वणजारे होणा इक्को तुक दे, तूं मेरा मैं तेरा ढोला राग नाद सुणना अगम्म अथाहीआ। सहज सुभाउ इक दूजे नूं पुछदे, दरगाह साची सचखण्ड बैठे सोभा पाईआ। की मेल होणे शब्द दुलारे सुत दे, सच दुआर की वड्याईआ। पर्दे ओहले रहिणे ना अग्गे लुक दे, लोकमात होवे रुशनाईआ। जिस ने जीव जंत लेखे पाउणे परे दुःख दे, दीनां अनाथां दया कमाईआ। भेव खुल्लाउणे मानव मानस मानुख दे, अन्तर आत्म ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाईआ। भाग वडयाउणे भगत जन जननी कुक्ख दे, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, दर इक्को इक दरसाईआ। भाद्रों कहे अवतार पैग़म्बर गुरु दर साचे वेख्या बरदा, बिन बन्दगी सीस निवाईआ। निउँ निउँ सीस सजदा जगदीस करदा, झुक झुक लागे पाईंआ। हउँ बालक सेवक नढ्ढा तेरे दर दा, दर ठांडे अलख जगाईआ। परवरदिगार सांझे यार खेल वेख आपणी लोकमात घर दा, धरनी धरत धवल धौल आपणा फेरा पाईआ। तेरा नाम हक़ीक़ी लाशरीकी हक़ हक़ीक़ी कोई ना पढ़दा, पर्दा सके ना कोए उठाईआ।

लेखा जणा शाह पातशाह शहिनशाह आपणे दर दा, दरवेशां मेला लै मिलाईआ। तेरा खेल वेखणा नरायण नर दा, नर निरँकार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर घर साचे मँग मँगाईआ। भाद्रों कहे गुर अवतार पैग़म्बर करन सलाम, समां समां ध्यान लगाईआ। मेरे रहिबर हक़ अमाम, तेरी आमद विच दुहाईआ। किरपा कर नौजवान, मर्द मर्दाने झोली डाहीआ। प्रगट हो वाली दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल वखाईआ। चार कुण्ट सृष्टी दृष्टी होई बेईमान, बेवा जगत लोकाईआ। साचा सुणे ना कोए पैग़ाम, पैग़म्बर रो के रहे सुणाईआ। सदी चौधवीं बदल गया इंतज़ाम, बन्दोबस्त ना कोए रखाईआ। महिराबां मस्जिदां विच हुंदा हराम, तेरा भय ना कोए दसाईआ । कूड़ कल्पणा सब नूं कीता ग़ुलाम, ग़ुरबत सके ना कोए कढ्ढाईआ । झगड़ा प्या नाल इन्सान, इन्सानीअत हथ्थ किसे ना आईआ। साडे मज़हब बणे दुकान, जगत हट्टो हट्ट चलाईआ। तेरा नाम होया बदनाम, बदी घर घर डेरा लाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी घट निवासी हो मेहरवान, महबूब तेरी शरनाईआ। मन कल्पणा कूड़ी क्रिया नौ खण्ड पृथ्मी करदे क़तलेआम, साढे तिन्न हथ्थ काया कतल्गाह दृढ़ाईआ। पवित्र कर दे खेड़ा सच ग्राम, गृह मन्दिर होवे सफ़ाईआ।
१५७१ निज नेत्र नज़री आ धुर दे राम, राम रमईआ राह तकाईआ। नाम बंसरी सुणा धुर दे काहन, सख़ी आत्मा दए दुहाईआ। १५७१
२१ हज़रत पैग़म्बर मूसा ईसा मुहम्मद दे पैग़ाम, इस्म आज़म इक समझाईआ। नानक निरगुण सरगुण मन्त्र सतिनाम, सति दा पर्दा आप उठाईआ। गोबिन्द वाहिगुरु कहि के फ़तिह डंक वजाया जवान, जोवनवन्ता आप सुणाईआ। सब दा मालक ख़ालक प्रितपालक अन्तिम प्रगट होणा श्री भगवान, भगवन आपणी कल धराईआ। जिस दा निरगुण नूर जोत बिन वरन गोत खेल करे महान, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। सो वेला वक्त पहुंचया आण, आनन फ़ानण पर्दा दए उठाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करते आदि निरँजण दे दान, श्री भगवान झोली अगम्म भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। भाद्रों कहे गुर अवतार पैग़म्बर करन क़दमबोसी, धूढ़ी ख़ाक रमाईआ। नाम खुमारी सदा मदहोशी, मधुर धुन राग सुणाईआ। सब दी आसा मनसा कलयुग अन्तिम इक्को लोची, लोचन नैण दे खुल्हाईआ। सच सलाह धुर मलाह इक्को सोची, परम पुरख होणा सहाईआ। लहिणा देणा लेखा याद कर रविदास चमारा मोची, जो शब्द अगम्म गया दृढ़ाईआ। लहिणा देणा वेख नाथ त्रैलोकी, काहना कृष्ण की समझाईआ। दीन दुनी दी वासना होणी खोटी, राम रमईआ गया जणाईआ। कलयुग अन्तिम मंज़ल चढ़े कोए ना चोटी, दरगाह मिलण कोए ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील क़ुरान खाणी बाणी पढ़न कारण रोटी, धर्म दी धार ना कोए समाईआ।

माणस हो के खाण बोटी, नाता आत्म परमात्म जगत तुड़ाईआ। साधां साबत रहे ना कोए लंगोटी, धीरज यति ना कोए रखाईआ। पढ़ी कम्म ना आवे पोथी, पुस्तक बग़लां विच रखाईआ। मंज़ल जाणे कोए ना जोगी, जगत ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। सृष्टी काम वासना होणी भोगी, भईआ भैण लए तकाईआ। हउमे अंदर होणा सब ने रोगी, मुल्ला शेख़ मुसायक पंडत पांधा साबत नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दी बहे कोई ना गोदी, गोदावरी कन्ढे गोबिन्द गया जणाईआ। गुर अवतार पैग़म्बर हिरदा सके कोए ना सोधी, वदी सुदी लेखा ना कोए चुकाईआ। झगड़ा पैणा लोक परलोकी, पुरीआं लोआं देण दुहाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्तिम सब नूं दे सोझी, बुध्ध बिबेक देणी कराईआ। कलयुग जीवां मति रहे ना होछी, हुश्यिारी नाल लैणा तराईआ। कर्मा वल्ल ना तक्कीं सृष्टी सारी दोषी, बिन तेरे निर्दोष नज़र कोए ना आईआ। अन्त घड़ी वेख लै औखी, मुश्किल हल्ल ना कोए कराईआ। मन मनसा सब नूं कीता शौंकी, शहिनशाह तेरा रंग ना कोए रंगाईआ। गोबिन्द दा पूरा ढईआ ते आसा मनसा साढे तिन्न हथ्थ दी औंती, अगला पर्दा देणा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि स्वामी बेपरवाहीआ। भाद्रों कहे गुर अवतार पैग़म्बर चरण छूंहदे मथ्था, मस्तक धूढ़ रमाईआ। भेव दस्स यथार्थ यथा, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। सतिजुग अंदर केहड़ी चलणी कथा, कवण नाम सिफ्त सालाहीआ। जिस दा लेखा ऐज़न विच ना होवे तथा, तबदीली करन कोए ना पाईआ। की संदेसा दिता जिस वेले गोबिन्द आपणी पिठ्ठ उत्तों लाहिआ भथ्था, तीर कमान टंक हथ्थ सुटाईआ। लहिणा देणा होणा की तत अठ्ठा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मनमति बुध्ध की चतुराईआ। की गुर अर्जन संदेसा दिता भट्ठा, भठ खेड़ा गया दृढ़ाईआ। की हुक्म सुणाया जिस वेले नानक तक्कड़ी विच रखाया वट्टा, भेव अभेदा अगम्म अल्ाईआ। की मुहम्मद दस्सया जिस वेले शरअ दा मास कटा, सुन्नत जगत बणाईआ। की संदेसा दिता जिस वेले ईसा गल विच प्या रस्सा, सलीव जगत वाली जणाईआ। की कूक पुकारया जिस वेले मूसा मूँह दे भार ढठ्ठा, होका हक़ हक़ दृढ़ाईआ। सब दा लहिणा देणा वेख पुरख अकाल इक्को वार इक्ठा, दरगाह साची सचखण्ड दवारे फोल फुलाईआ। कलयुग अन्तिम सब दा मनसूख़ कर दे दीनां मज़हबां वाला पटा, पटने वाला दए गवाहीआ। सतिजुग साचे तूं मेरा मैं तेरा दस्स दे टप्पा, तौपिक अवर ना कोए जणाईआ। दीन मज़हब दा रहे कोई ना रट्टा, झगड़ा करे ना कोए लोकाईआ। निज नेत्र लोचण नैण खोल्ह दे अक्खा, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। तूं मालक ख़ालक सखा सहाई सखा, साहिब तेरी सरनाईआ। कलयुग जगत जहान वेख तपा, तपश अवर ना कोए बुझाईआ। जो तेरा दस्स के गया पता, पतिपरमेश्वर तेरा भेव खुल्हाईआ। सब

दे नाल तेरा सांझा मता, मति मतांतर रहिण कोए ना पाईआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर लाशरीक परवरदिगार पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आदि निरँजण सांझा खोल्ह दे हट्टा, हटवाणा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी जुग चौकड़ी तेरा एका नाम सच्चा, जिस नाम दी महिमा चार जुग दे गुर अवतार पैग़म्बर अक्खरां विच गए गाईआ।

❋ १६ भाद्रों शहिनशाही सम्मत ५ बख़्शीश सिँघ दे गृह पिंड क़ादराबाद ❋

भाद्रों कहे प्रभ नौ खण्ड पृथ्मी फिरया पैर दब्बे, चार कुण्ट दह दिशा बिन क़दमा क़दम उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप मानव मानस मानुख वेखे सभे, साढे तिन्न हथ्थ काया माटी फोल फुलाईआ। निरगुण निरँकार एकँकार तेरा दीपक नूर जोती कोए ना जगे, जागरत जोत बिन वरन गोत नज़र कोए ना आईआ। जिधर वेखां तेरे नाम दे पैंदे सद्दे, वखरे वखरे ढोले राग सुणाईआ। दीनां मज़हबां वाले तक्कदे मज़े, मज़ाक़ करे जगत लोकाईआ। कलयुग कूड़ कुड़िआर वहिण वगे, अग्गे हो ना कोए अटकाईआ। हुक्मे अंदर रहे कोए ना बद्धे, बदी जगत रहे कमाईआ। साचा मिले ना किसे अमरा पदे, पतिपरमेश्वर मिलण कोए ना आईआ। किरपा कर जगत जगदीशर यदे, यदिप आपणा रूप प्रगटाईआ। बिन तेरे कूड़ विकार कोए ना कढ्ढे, काया रहे ना कोए सफ़ाईआ। झगड़ा मेट दे पंज तत तन वजूद मास नाड़ी हड्डे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे आस रखाईआ। भाद्रों कहे मैं फिरदा चुप चुपीता, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। इष्ट तक्कया राम सीता, बन खण्ड खोज खुजाईआ। राधा कृष्ण तक्कया मीता, तीर्थ तट फोल फुलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद तक्कीआं तौफीक़ां, ताक़तवर खोज खुजाईआ। नानक गोबिन्द वेखीआं उम्मीदां, जो आसा गए वधाईआ। चार जुग दे नाम दीआं तक्कीआं रसीदां, जो सिफ्तां विच सिफ्त सालाहीआ। धुर कलमा कायनात वेखीआं हदीसां, जो हज़रतां करी पढ़ाईआ। खेल वेख्या ऊचां नीचां, दीन मज़हब की वड्याईआ। राउ रंकां तक के मेरीआं निकलीआं चीकां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बौहड़ी तेरीआं जुग जुग किहो जिहीआं रीतां, रीतीवान देणा समझाईआ। कदे शिवदवाले मठ मन्दिर उत्ते बणाए मसीतां, मसला अगला इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। भाद्रों कहे मैं फिरया चोरी चोरी, चोरां यारां ठग्गां वेख वखाईआ। कलयुग रैण अन्धेरी वेखी घोरी, घोर कलयुग रिहा तकाईआ। झगड़ा प्या पशू ढोरी, सूर गाँ दए दुहाईआ। आत्म परमात्म बणे

कोई ना जोड़ी, लख चुरासी नार कन्त जोड़ जुड़ाईआ। चार कुण्ट दह दिशा खेल तक्की तोरी मोरी, मेहरवान दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, देवणहार इक अख्वाईआ। भाद्रों कहे मैं फिरया चारों कुण्ट, गृह गृह खोज खुजाईआ। नरक स्वर्ग वेखे बैकुण्ठ, पर्दा उहला सर्ब चुकाईआ। जञ्जू बोदी दीन मज़हब वेखे विच सुन्नत, मुच्छ दाढ़ी केस नाल वड्याईआ। नबी रसूलां तक्की मात उम्मत, अमलां विच जणाईआ। सीस जगदीश वेखे मून मुंडत, मुंडी तन वजूद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, हरि वड्डा बेपरवाहीआ। भाद्रों कहे मैं दीन दुनी दा तक्कया राह, रस्ता रहिबर हो के वेख वखाईआ। तुध बिन दूजा दिसे ना कोए मलाह, नईआ नौका पार ना कोए कराईआ। तेरे नालों सारे होए जुदा, जुज़ आपणा वंड वंडाईआ। जे तूं वाहिद इक खुदा, खुदी तक्बर दे गवाईआ। मालक ख़ालक बण दिलरुबा, महबूब तेरी सरनाईआ। दूई द्वैती कढु वबा, हउमे रोग देणा मिटाईआ। तैनूं किहा हक़ अलाह, आलीशान तेरी सरनाईआ। तेरा कलमा इक सदा, सही सलामत सोभा पाईआ। सब दी क़बूल कर दुआ, दर तेरे सीस निवाईआ। साचे नाम दा दस्स इक मज़ा, मजलस आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा देणा खुल्हाईआ। भाद्रों कहे मैं किहा मेरे निरँकार, निरवैर तेरी सरनाईआ। चारों कुण्ट धूआँधार, निरगुण नूर ना कोए रुशनाईआ। चरण झुकण तेरे गुर अवतार, पैग़म्बर सीस निवाईआ। सदी चौधवीं सब दी पैज दे संवार, कलयुग अन्तिम हो सहाईआ। दीन दुनी दी पा सार, महासार्थी वेस वटाईआ। तेरा नूर होवे उज्यार, निराकार साकार देणा दृढ़ाईआ। दरगाह साची सचखण्ड तेरा करदे सर्ब इंतज़ार, आसा विच आस वधाईआ। मातलोक तेरा नूरी नूर होवे चमत्कार, प्रकाश प्रकाश विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, दर ठांडे आस रखाईआ। भाद्रों कहे मेरे प्रभू आपणी कर दे किरपा, किरपा निधान तेरी वड्याईआ। दीन दुनी दी मेट दे बिपता, विपरीत रहिण कोए ना पाईआ। मानव रूप बणा दे साचे सिख दा, सिख्या सच दृढ़ाईआ। उपासक हो जाए इष्ट इक दा, एकँकार तेरी सरनाईआ। झगड़ा मुक जाए पत्थर इट्ट दा, मन्दिरां सीस ना कोए निवाईआ। बिन तेरी किरपा मन किसे ना टिकदा, टिकटिकी अंदर दे लगाईआ। तेरा आत्मा तत शरीर कदे ना मिट्टदा, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। तूं आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण आपणा खेल आप नजिट्ठ दा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। भेव खुल्हा दे पतिपरमेश्वर पित दा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा पर्दा लाहीआ। अन्त अख़ीर बेनज़ीर तेरा नूर अगम्मा इक्को दिसदा, बिन माटी चम्मा सोभा पाईआ। लहिणा देणा चुका दे लोकमात जिस जिस दा, जिस्म ज़मीर कर रुशनाईआ।

१५७४
२१

नाता जोड़ दे आत्म परमात्म हित दा, हितकारी हो के वेख वखाईआ। मन ठगौरी झगड़ा रहे ना चित दा, चेतन सुरती दे कराईआ। लेखा मुक जाए लख चुरासी आवण जावण नित दा, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार होणा सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, तेरा नूर अगम्मी इक दा, इक इकल्ले सच महल्ले तेरा नूर नुराना नज़री आईआ।

१५७५
२१